

ROMANO

ROMANO

ROMANO

ROMANO

ROMANO

ROMANO

ROMANO

ROMANO

ROMANO

ROMANO

ROMANO

ROMANO

ROMANO

ROMANO

ROMANO

ROMANO

ROMANO

ROMANO

ROMANO

ROMANO

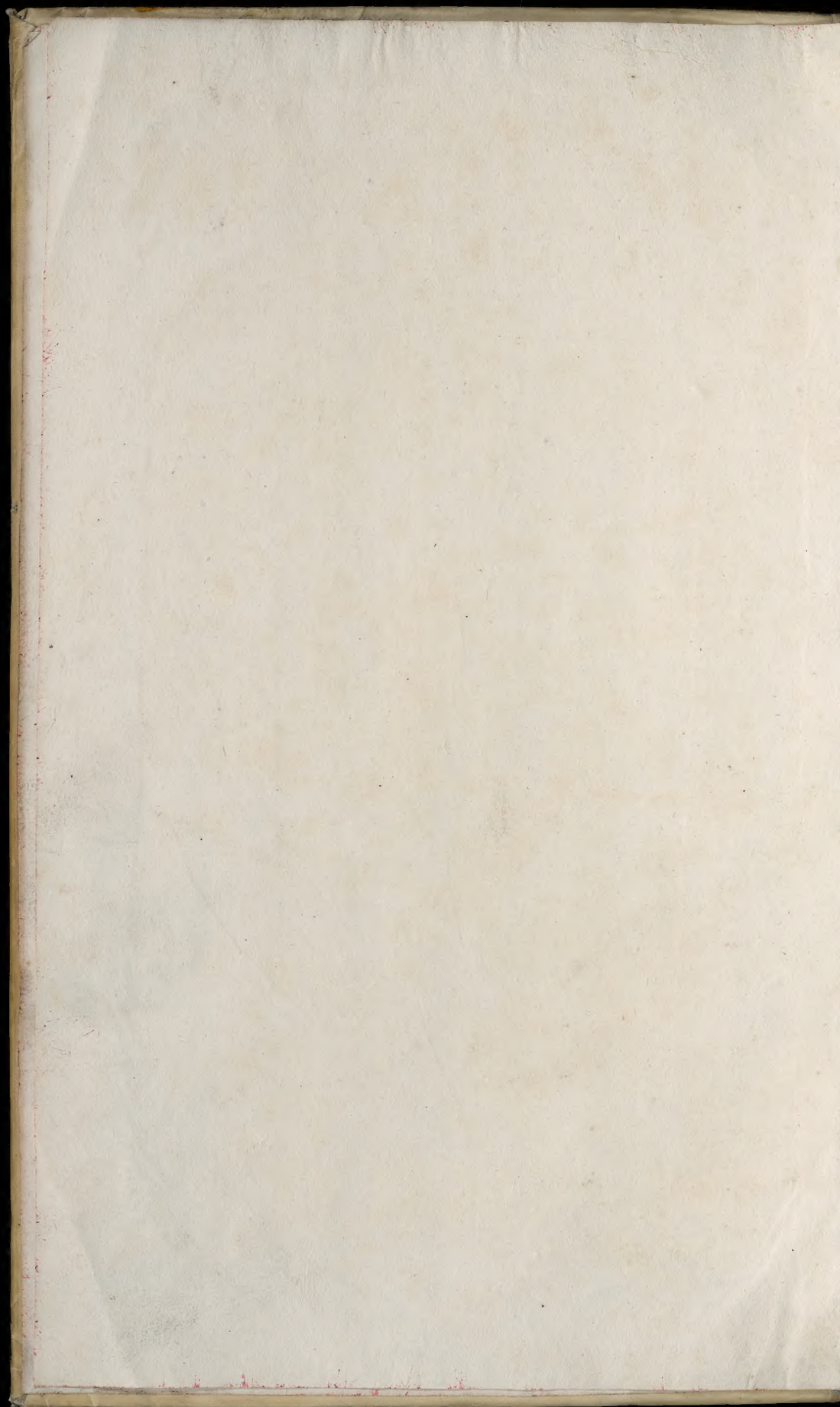
ROMANO

ROMANO

ROMANO

ROMANO

ROMANO



MAGNUM BULLARIUM ROMANUM,

A BEATO LEONE MAGNO

USQUE AD

S.D.N. BENEDICTUM XIV.

OPUS ABSOLUTISSIMUM,

LAERTII CHERUBINI, Præstantissimi Jurisconsulti Romani, à D. ANGELO MARIA CHERUBINO Monacho Cassinensi, deinde à R. R. P. P. ANGELO A LANTUSCA & JOANNE PAULO A ROMA, Ordinis Minorum S. Francisci Strictioris Observantiæ, ac tandem eorum cura & studio qui recentiorum Pontificum Constitutiones hæcenus promulgatas collegerunt, illustratum & auctum.

EDITIO NOVISSIMA.

Accedunt, prout in Editione Romana, Vita omnium Pontificum, Appendices insuper suis locis restituti.

CUM RUBRICIS, SUMMARIIS, SCHOLIIS, ET INDICIBUS LOCUPLETISSIMIS.

TOMUS SECUNDUS.

A PIO IV. AD INNOCENTIUM IX.

Conventus Peroniensis PP. Trinitarior. 5. Julii 1797.



Juxta Exemplar ROMÆ, Ex Typographia REVERENDÆ CAMERÆ APOSTOLICÆ.

LUXEMBURGI,

Sumptibus HENRICI-ALBERTI GOSSE & Soc. Bibliop. & Typograph.

M D C C X L I I.

CUM PRIVILEGIO SACRÆ CÆSARÆ ET CATHOLICÆ MAJESTATIS.



MAGNUM
BULLARIUM
ROMANUM

A BEATO ROMANO MAGNO
PAPAE
XIV. BENEDICTUM XIV.

OPUS
PAPAE
BENEDICTI XIV.

EDITIO
PRIMA
MDCCLXXIII.

TOMUS
PRIMUS
A PROLA AD INNOCENTIUM



IN
VENERABILIS
CONGREGATIONE
SACRAE THEOLOGIAE

MDCCCLXXIII
ROMAE

I N D E X

S E X R O M A N O R U M

P O N T I F I C U M ,

Quorum Constitutiones juxta temporum seriem continentur in hoc
Secundo Tomo.



IUS IV. <i>Mediolanensis</i> , habet	Const. 106.	fol. 1.
PIUS V. <i>Italus</i> ,	Const. 151.	189.
GREGORIUS XIII. <i>Italus</i> ,	Const. 102.	387.
SIXTUS V. <i>Italus</i> ,	Const. 107.	526.
GREGORIUS XIV. <i>Mediolanensis</i> ,	Const. 19.	756.
INNOCENTIUS IX. <i>Bononiensis</i> ,	Const. 2.	785.

Imprimatur, Si videbitur Reverendiss. Magistro Sacri Palatii Apostolici.
I. B. Episc. Camer. Vicefg.

Reimprimatur, Fr. Nicolaus Riccardius Sac. Pal. Mag.

INDEX SÆ ROMANORUM PONTIFICUM

Quorum Pontificatus hinc terminantur, hinc committunt in hoc
Sæculi Tempus.

100	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140	141	142	143	144	145	146	147	148	149	150	151	152	153	154	155	156	157	158	159	160	161	162	163	164	165	166	167	168	169	170	171	172	173	174	175	176	177	178	179	180	181	182	183	184	185	186	187	188	189	190	191	192	193	194	195	196	197	198	199	200	201	202	203	204	205	206	207	208	209	210	211	212	213	214	215	216	217	218	219	220	221	222	223	224	225	226	227	228	229	230	231	232	233	234	235	236	237	238	239	240	241	242	243	244	245	246	247	248	249	250	251	252	253	254	255	256	257	258	259	260	261	262	263	264	265	266	267	268	269	270	271	272	273	274	275	276	277	278	279	280	281	282	283	284	285	286	287	288	289	290	291	292	293	294	295	296	297	298	299	300	301	302	303	304	305	306	307	308	309	310	311	312	313	314	315	316	317	318	319	320	321	322	323	324	325	326	327	328	329	330	331	332	333	334	335	336	337	338	339	340	341	342	343	344	345	346	347	348	349	350	351	352	353	354	355	356	357	358	359	360	361	362	363	364	365	366	367	368	369	370	371	372	373	374	375	376	377	378	379	380	381	382	383	384	385	386	387	388	389	390	391	392	393	394	395	396	397	398	399	400	401	402	403	404	405	406	407	408	409	410	411	412	413	414	415	416	417	418	419	420	421	422	423	424	425	426	427	428	429	430	431	432	433	434	435	436	437	438	439	440	441	442	443	444	445	446	447	448	449	450	451	452	453	454	455	456	457	458	459	460	461	462	463	464	465	466	467	468	469	470	471	472	473	474	475	476	477	478	479	480	481	482	483	484	485	486	487	488	489	490	491	492	493	494	495	496	497	498	499	500	501	502	503	504	505	506	507	508	509	510	511	512	513	514	515	516	517	518	519	520	521	522	523	524	525	526	527	528	529	530	531	532	533	534	535	536	537	538	539	540	541	542	543	544	545	546	547	548	549	550	551	552	553	554	555	556	557	558	559	560	561	562	563	564	565	566	567	568	569	570	571	572	573	574	575	576	577	578	579	580	581	582	583	584	585	586	587	588	589	590	591	592	593	594	595	596	597	598	599	600	601	602	603	604	605	606	607	608	609	610	611	612	613	614	615	616	617	618	619	620	621	622	623	624	625	626	627	628	629	630	631	632	633	634	635	636	637	638	639	640	641	642	643	644	645	646	647	648	649	650	651	652	653	654	655	656	657	658	659	660	661	662	663	664	665	666	667	668	669	670	671	672	673	674	675	676	677	678	679	680	681	682	683	684	685	686	687	688	689	690	691	692	693	694	695	696	697	698	699	700	701	702	703	704	705	706	707	708	709	710	711	712	713	714	715	716	717	718	719	720	721	722	723	724	725	726	727	728	729	730	731	732	733	734	735	736	737	738	739	740	741	742	743	744	745	746	747	748	749	750	751	752	753	754	755	756	757	758	759	760	761	762	763	764	765	766	767	768	769	770	771	772	773	774	775	776	777	778	779	780	781	782	783	784	785	786	787	788	789	790	791	792	793	794	795	796	797	798	799	800	801	802	803	804	805	806	807	808	809	810	811	812	813	814	815	816	817	818	819	820	821	822	823	824	825	826	827	828	829	830	831	832	833	834	835	836	837	838	839	840	841	842	843	844	845	846	847	848	849	850	851	852	853	854	855	856	857	858	859	860	861	862	863	864	865	866	867	868	869	870	871	872	873	874	875	876	877	878	879	880	881	882	883	884	885	886	887	888	889	890	891	892	893	894	895	896	897	898	899	900	901	902	903	904	905	906	907	908	909	910	911	912	913	914	915	916	917	918	919	920	921	922	923	924	925	926	927	928	929	930	931	932	933	934	935	936	937	938	939	940	941	942	943	944	945	946	947	948	949	950	951	952	953	954	955	956	957	958	959	960	961	962	963	964	965	966	967	968	969	970	971	972	973	974	975	976	977	978	979	980	981	982	983	984	985	986	987	988	989	990	991	992	993	994	995	996	997	998	999	1000	1001	1002	1003	1004	1005	1006	1007	1008	1009	1010	1011	1012	1013	1014	1015	1016	1017	1018	1019	1020	1021	1022	1023	1024	1025	1026	1027	1028	1029	1030	1031	1032	1033	1034	1035	1036	1037	1038	1039	1040	1041	1042	1043	1044	1045	1046	1047	1048	1049	1050	1051	1052	1053	1054	1055	1056	1057	1058	1059	1060	1061	1062	1063	1064	1065	1066	1067	1068	1069	1070	1071	1072	1073	1074	1075	1076	1077	1078	1079	1080	1081	1082	1083	1084	1085	1086	1087	1088	1089	1090	1091	1092	1093	1094	1095	1096	1097	1098	1099	1100	1101	1102	1103	1104	1105	1106	1107	1108	1109	1110	1111	1112	1113	1114	1115	1116	1117	1118	1119	1120	1121	1122	1123	1124	1125	1126	1127	1128	1129	1130	1131	1132	1133	1134	1135	1136	1137	1138	1139	1140	1141	1142	1143	1144	1145	1146	1147	1148	1149	1150	1151	1152	1153	1154	1155	1156	1157	1158	1159	1160	1161	1162	1163	1164	1165	1166	1167	1168	1169	1170	1171	1172	1173	1174	1175	1176	1177	1178	1179	1180	1181	1182	1183	1184	1185	1186	1187	1188	1189	1190	1191	1192	1193	1194	1195	1196	1197	1198	1199	1200	1201	1202	1203	1204	1205	1206	1207	1208	1209	1210	1211	1212	1213	1214	1215	1216	1217	1218	1219	1220	1221	1222	1223	1224	1225	1226	1227	1228	1229	1230	1231	1232	1233	1234	1235	1236	1237	1238	1239	1240	1241	1242	1243	1244	1245	1246	1247	1248	1249	1250	1251	1252	1253	1254	1255	1256	1257	1258	1259	1260	1261	1262	1263	1264	1265	1266	1267	1268	1269	1270	1271	1272	1273	1274	1275	1276	1277	1278	1279	1280	1281	1282	1283	1284	1285	1286	1287	1288	1289	1290	1291	1292	1293	1294	1295	1296	1297	1298	1299	1300	1301	1302	1303	1304	1305	1306	1307	1308	1309	1310	1311	1312	1313	1314	1315	1316	1317	1318	1319	1320	1321	1322	1323	1324	1325	1326	1327	1328	1329	1330	1331	1332	1333	1334	1335	1336	1337	1338	1339	1340	1341	1342	1343	1344	1345	1346	1347	1348	1349	1350	1351	1352	1353	1354	1355	1356	1357	1358	1359	1360	1361	1362	1363	1364	1365	1366	1367	1368	1369	1370	1371	1372	1373	1374	1375	1376	1377	1378	1379	1380	1381	1382	1383	1384	1385	1386	1387	1388	1389	1390	1391	1392	1393	1394	1395	1396	1397	1398	1399	1400	1401	1402	1403	1404	1405	1406	1407	1408	1409	1410	1411	1412	1413	1414	1415	1416	1417	1418	1419	1420	1421	1422	1423	1424	1425	1426	1427	1428	1429	1430	1431	1432	1433	1434	1435	1436	1437	1438	1439	1440	1441	1442	1443	1444	1445	1446	1447	1448	1449	1450	1451	1452	1453	1454	1455	1456	1457	1458	1459	1460	1461	1462	1463	1464	1465	1466	1467	1468	1469	1470	1471	1472	1473	1474	1475	1476	1477	1478	1479	1480	1481	1482	1483	1484	1485	1486	1487	1488	1489	1490	1491	1492	1493	1494	1495	1496	1497	1498	1499	1500	1501	1502	1503	1504	1505	1506	1507	1508	1509	1510	1511	1512	1513	1514	1515	1516	1517	1518	1519	1520	1521	1522	1523	1524	1525	1526	1527	1528	1529	1530	1531	1532	1533	1534	1535	1536	1537	1538	1539	1540	1541	1542	1543	1544	1545	1546	1547	1548	1549	1550	1551	1552	1553	1554	1555	1556	1557	1558
-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------

BULLARIUM ROMANUM,

TOMUS SECUNDUS.

PIUS QUARTUS PONTIFEX CCXXVIII. ANNO CHRISTI MDLX.

ANNO
1560.

PIUS QUARTUS Mediolanensis, de familia Medicea, Jo. Angelus antea vocatus, Patre Bernardino, Cardinalis Tituli S. Priscæ, Creatus Romæ 7. Kalend. Januarii 1560. Coronatus in Festo Epiphaniæ Domini sequentis anni. Sedit annos quinque, menses duos, dies 15. Creavit Cardinales 46. Obiit anno Domini 1565. quinto Idus Decembris. Corpus ejus in Basilica S. Petri sepultum fuit. Vacavit sedes dies 26.

I.

Jurisdicção Gubernatoris Almæ Urbis, procedendi contra Mercatores cambia sicca & illicita contrahentes.

Contra eisdem procedit hodie in omnibus articulis hujus Bullæ A. Camera, ut habetur Tom. III. in Pauli V. const. 28. Eximia.

De Gubernatore Urbis vide addita ad Leonem X. Tom. I. Constit. 8. Etia.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Edita An. D.
1560.

Causa hujus
Constitut.



UM sicut accepimus non sine maxima animi nostri displicentia, etiam post publicationem cuiusdam proclamati five banni de expresso mandato nostro facti, & commissione venerabilis fratris nostri Hieronymi Episcopi Martorensis, tunc Almæ Urbis nostre Gubernatoris, in locis consuetis publicati, avaritiam omnium malorum pessimum genus inter dilectos filios Almæ Urbis nostre prædictæ Mercatores adeo serpuisse, atque in dies serpere, ut jam illorum unicuique brevi & modico tempore proximi iactura ditescere in pecuniis Curialibus ejusdem Urbis & præcipue Cispalpinis ad cambium & recambium (ut vulgo dicunt) mutuandis facillimus pateat aditus. Ita ut Dei timore postposito, animarumque suarum salutis, ac Christianæ charitatis & Evangelicæ eruditionis, qua bona nobis à DEO collata indigentibus, nihil lucri inde sperantes charitativè mutare monemur, penitus immemores, non solum ad pretium ejusdem Mercatoribus à summis Pontificibus nostris prædecessoribus retroactis temporibus toleratum, suas pecunias ad cambium & recambium hujusmodi Curialibus prædictis dederint, verum etiam in præsentiarum illas ad longè majorem, & nimis excessivam, penitusque usurariam, ad Christianam profitentibus religionem sacris Canonibus interdiciam atque damnatam summam dare conantur: unde event, ut plurimi dictæ Urbis Curiales hic necessitate coacti, eisdem pecuniis sub tam gravi fœnore accipientes & pro illorum amicis Mercatoribus præfatis fidejubescentes, ac se in ampliori forma Camera Apostolicæ obligantes, tum ob varia itin-

rum pericula, tum etiam aëris diversis in locis intemperiem pecunias, ut præmittitur, acceptas, eisdem Mercatoribus tempore convento, reddere nequeentes, maxima cum illorum iactura ad eorundem Mercatorum importunitatem pluries, ut ajunt, recambiare coacti, & nonnulli etiam carceribus inhumaniter cum illorum ingenti tum corporis & bonorum tum etiam honoris & famæ detrimendo diuturno tempore detenti fuerint.

§. 1. Nos igitur cupientes pro nostri Pastoralis officii debito præmissis quantum cum DEO possumus, via celeri remedium aliquod adhibere, eorundemque Mercatorum insatiabilis usuræ pravitati, eorumque animarum salutis, & mercantilis exercitii fidelitati, Curialiumque prædictorum tam enormibus læsionibus atque incommo datibus paterno affectu opportunè consulere, Motu simili, &c. Dilecto filio dictæ Urbis nostre moderno Gubernatori, ut ad Camera Apostolicæ Commissarii generalis, necnon partis lætæ querelam seu instantiam, omnibus & singulis Mercatoribus Rom. Cur. sequent. in posterum à die datæ præsentium sub majoris excommunicationis lætæ sententiæ, ac duorum millium ducatorum auri in auro eidem Camera irremissibiliter applicandorum ipso facto incurrendis pœnis, à dictæ Urbis Curialibus quibuscumque ratione quarumcumque obligationum etiam in ampliori forma Camera tam principali, quam accessorio & fidejussorio respectivè nominibus factarum, & deinceps quomodolibet fiendarum, pro pecuniis ad cambium & recambium hujusmodi sic usurariæ, & malo modo acceptis & accipiendis, ac in partibus non solutis, aut non solvendis, ultra summam convenientem quæ Mercatoribus realibus qui vera cambia realia & non sic faciunt, de jure & filio mercantili verè deberetur, hic in Curia petere exigere, aut eisdem Curiales via juris obligationum etiam in forma dictæ Camera celebratarum, & celebrandarum vigore seu prætextu cogere, seu cogi aut excommunicari, &c. vel alias quomodolibet in eorum personis & bonis molestari, seu inquietari facere audeant vel præsumant, districtius sub pœna quæ in constitutionibus Marchiæ contra usurarios statuitur, & aliis suo arbitrio moderandis pœnis inhibeat. Nec non quascumque obligationes etiam in præfata forma Camera occasione quarumcumque partitarum pecuniarum ad cambium & recambium hujusmodi à prædictis Mercatoribus cum eisdem Curialibus quomodolibet factas, & quas Mercatores

Facultas Gubernatoris, coercendi Mercatores Urbis exercentes cambia illicita, & infingendi pœnas hic expressas, & contentas in constitutionibus Marchiæ contra usurarios.

ipſi à prædictis Curialibus tamquam principalibus ſeu fidejuſſoribus hic in Urbe poſt dictum bannum dumtaxat repetierunt, & exegerunt, & recuperarunt, ac pro non ſolutis exigere & recuperare intendunt, cum cambia hujusmodi ſicca vel non realia à facris Canonibus prohibita ſint, uſurarias, pravas, iniquas, deteſtabiles, interdicitas, & damnatas, ac quacuſque obligationes etiam in forma præſata Cam. Apoſt. poſt dictum bannum dumtaxat deſuper illarum occaſione factas, nullas & invalidas exiſtere auctoritate noſtra decernat & declaret, totamque ſummam principalem per eodem Mercatores exactam & recuperatam, juxta formam dictorum bannimentorum, ex nunc ipſo facto eidem Cameræ Apoſt. parti verò læſæ id quod ultra prædictam ſummam principalem in cambiis & recambiis, &c. à dictis Mercatoribus irreſiſſibiliter exigendam, recuperandam, & reſtituendam applicet, & eodem Mercatores juxta Conſtitutiones prædictas Marchiz condemnet.

Et contra
eodem ſum-
marie, &c.
procedendi.

§. 2. Cum poteſtate eodem Mercatores & eorum quemlibet, omneſque alios & ſingulos ſua communiter vel diſiſim quomodolibet intereſſe putantes, in dicta Curia & extra eam citandi, ac quibus & quotiens inhiſcendum erit etiam ſub excommunicationis, ſuſpenſionis, & interdicii, aliſque Eccleſiaſticis ſententiis, cenſuris, & poenis, etiam pecuniariis ejusdem Gubernatoris arbitrio moderandis & applicandis inhiſcendi, inobediensque & rebelles quocuſque ſententiis, cenſuris & poenis hujusmodi incidiffe & incurſiſſe declarandi, aggravandi, reaggravandi & interdiciendi, invocato etiam ad hoc ſi opus fuerit brachii ſæcularis auxilio. Necnon ſuper præmiſſis omnibus ſummarie, ſimpliciter & de plano, ſine ſtreperu & figura judicii ſeu tela judiciaria, ſingulis diebus & horis, præterquam in honorem Dei feriatis procedendi, dictoſque Mercatores & eorum quemlibet ad exhibendum quocuſque libros etiam rationum vi juris, & ſub eiſdem cenſuris & poenis compelliendi, cæteraque alia faciendi, dicendi, gerendi, exercendi, & exequendi quæ in præmiſſis omnibus & circa ea omnia neceſſaria fuerint, ſeu quomodolibet opportuna committimus, & mandamus.

Clauiſulæ de-
rogatoria.

§. 3. Præmiſſis ac quibuſvis aliis conſtitutionibus & ordinationibus Apoſtolicis, ſtatutis, conſuetudinibus, capitulationibus, & pactis, necnon obligationibus etiam in dicta forma Cameræ etiam jramento, &c. vallatis, ac palatii Curie ac Mercatorum & hujusmodi ſtylo, necnon partitis, libris, & rationibus ac computis deſuper quomodolibet factis, & quibuſvis licentiis forſan dictis Mercatoribus per quocuſque etiam noſtros majores Officiales etiam Urbis Gubernatores conceſſas, quas contra expreſſam mentem noſtram factas eſſe declaramus, cæteriſque in contrarium quomodolibet facien. non obſtan. quibuſcumque, Mercatorum & Curialium hujusmodi nomina, cognomina, & qualis, & pecuniarum & creditorum quantis. aliorumque hic forſan de neceſſitate exprimi neceſſariorum tenores, continentias, formas & compendia pro plenè & ſufficienter expreſſis habentes.

Sola ſign. ſuf-
ficiat.

§. 4. Præſentique noſtri Motus proprii ſolam ſignaturam abſque illius regiſtratura ſufficere, & ubique fidem facere tam in judicio, quam extra, attento quod in Urbe.

Clauiſulæ
præſervati-
væ.

§. 5. At juxta illius formam & tenorem per quocuſque Judices, &c. ſublata, &c. judicari, &c. debere. Nec de ſubreptionis vel obreptionis vitio, ſeu intentionis noſtræ defectu ullo umquam tempore notari aut impugnari poſſe, illiſque copia per unum ex noſtris Curſoribus cum originali auſcultatæ, & Mercatoribus aliſque perſonis & Judicibus præſentatæ, vim validæ & efficaciſ inhibitionis habeant, ac ſi originale hoc præſentatum foret, quacuſque regula ſive conſtitutione in contrarium forſan edita nequaquam obſtante. Placet Motu proprio. I.

Pape ſubſ-
criptio.

II.

Juriſdictio Cardinalis Proteſtoris & Judicis cauſarum Archiepiſcopalis pauperum infirmorum Incurabiliſ de Urbe.

Hujus Archiepiſcopalis inſtitutionem, & privilegia, attende ſup. in conſt. 15. Leo. X. Salvatoris, ubi notavi, in Tom. 1.

PIUS PAPA QUARTUS,

Ad perpetuam rei memoriam.

AD charitatis & miſericordiæ opera Chriſti pauperibus in Archiepiſcopali Incurabiliſ S. Jacobi in Auguſta de Urbe, quæ maxima, & continua ſunt, ſine detrimento, vel intermiſſione exercenda, æquum eſt providere, ut illud ac pro ea famulantes, à noxis quantum poteſt liberentur.

Edita A. D.
1560.

Exordium.

§. 1. Cum itaque, ſicut accepimus, Archiepiſcopale ipſum, ob lites, & quaſtiones, quibus ad diverſa Urbis Tribunalia, occaſione locationum, cenſuum, dohationum, hæreditatum, legatorum, & diverſarum aliarum rerum ejusdem, tam tangendo, quam defendendo, jugiter implicium exiſtit, quamplurima damna & incommoda patiatur, & impenſe litis, valores rei de qua ex tempore agendi ſæpenumerò exuperent.

Cauſa iſtiſus
conſtituit.

§. 2. Nos Archiepiſcopale ipſum in quo piſſima charitatis & miſericordiæ opera, pauperibus Chriſti continuo impendi ſpectantur, ad hujusmodi diſpendiis quantum poſſumus ſublevare volentes, Motu proprio, & ex certa ſcientia noſtra, ac de Apoſtolicæ poteſtatis plenitudine, omnes & ſingulas cauſas, interdictionum Archiepiſcopalis, ſive dilectos filios Cuſtodes, Officiales, ac Miniſtros Societatis ejusdem Archiepiſcopalis, & quacuſque alias etiam ſingulas perſonas, Univerſitates, Societates, & loca coram Sanctæ Romanæ Eccleſiæ Camerario, Regente, Præſidente, & Clericis Cameræ Apoſtolicæ, necnon Vicario, Gubernatore, Senatore Urbis, illiſque Primo, & Secundo Collateralibus, ac Appellationum cauſarum Curie Capitoli ejusdem Urbis Capitaneo, & aliis quibuſcumque Judicibus ordinariis, & delegatis, & cauſarum Palatii Apoſtolicæ Auditoribus, ac ejusdem Sanctæ Romanæ Eccleſiæ Cardinalibus, nunc & pro tempore pendentes, ſuper quibuſcumque locationibus, venditionibus, dohationibus, legatis, fideicommiſſis, teſtamentis, executionibus, revocationibus, bonis, rebus, juribus, & actionibus, Archiepiſcopale, & Societatem, Officiales, litis conſortes, & alios prædictos, tam conjunctim, quam diſiſim, ac tam active, quam paſſive, concernentibus, & ad Archiepiſcopale, & Societatem quomodolibet ſpectantibus, in quacumque inſtantia, inter illos, necnon alia æquæ, vel magis pia loca, Univerſitates, & Collegia quomodocumque privilegiata, ſeu viduas, pupillos, & alias perſonas etiam exemptas cujuſcumque qualitatibus, ſtatibus, gradibus, ordinis, vel conditionis, & nature exiſtante, etiam præmiſſis expreſſis majores, quarum omnium ſtatum, & merita, ac judicium, & colligantium nomina, & cognomina, & qualitates, cæteraque etiam de neceſſitate exprimenda, præſentibus haberi volumus pro expreſſis, in ſtatu, & terminis, in quibus reperitur dummodò inſtruxæ non ſint, harum ſerie ad nos advocamus, & dilectum filium noſtrum Bartholomæum, t. S. Crucis in Hieruſalem, Presbyterum Cardinalem della Cueva nuncupatum, modernum, & pro tempore exiſtentem Proteſtorem, ejusdem Archiepiſcopalis Judicem ordinarium, & perpetuum, ad prædictas, necnon quacuſcumque alias ſimiles, vel diſſimiles cauſam & cauſas, civiles, criminales, & mixtas, ad Archiepiſcopale, & Societatem hujusmodi perſonantes, tam per eos, quam contra eos, & inter eos, ac perſonas, Univerſitates, collegia, ſeu loca etiam privilegiata & exempta, tam active, quam paſſive, pro tempore movendas, juxta ordinariam juriſdictionem, ſeu facultatem, tam Gubernatori, quam Regenti Cameræ Apoſtolicæ, ſeu Vicario præſatis, & eorum cuiſlibet attributas, ac prout rerum qualitas exegerit, ſeu poſtulerit, cum omnibus, & ſingulis earum incidentibus, dependentibus, emergentibus, annexis, & connexis, ſummarie, ſimpliciter, & de plano, & ſola facti veritate inſpecta, & abſque aliorum terminorum ſubſtantialium obſervatione,

Advocatio
cauſarum cor-
am quocum-
que Judice
veritatem,
Archiepiſ-
copale S. Jaco-
bi Incurabi-
lium de Ur-
be, & ejus
Officiales
quomodolibet
conſentientium,
& earum
commiſſio
Cardinali
pro tempore
Proteſtori
qui ſumma-
rie cognoscat
cum ſaculta-
te.

In Curia
& extra ci-
tandi, & in-
hibendi.

aut alicujus Registri confectio, per se, vel alium, seu alios, audiendas, & sine debito terminandas, auctoritate Apostolica, tenore presentium per prædicta constitutum, & deputamus.

§. 3. Et ad hunc effectum illi, etiam per alium, seu alios quoscunque, tam in Romana Curia, quam extra eam, etiam per edictum publicum, confito sibi prius, etiam summarie de non tuto accessu, citandi, & monendi, eisdemque & prædictis, & quibuscunque aliis ejusdem Urbis Curiarum Judicibus, & personis, tam Ecclesiasticis, quam secularibus, quibus & quoties opus fuerit, etiam sub sententiis, censuris, & penis Ecclesiasticis, ac etiam pecuniariis, quibus sibi, five ab eo pro tempore deputando Auditori videbitur inhiberi, & in eventum non paritionis, contra inobedientes, ac rebelles, ad declarationem incursum censurarum, & penarum hujusmodi, illarumque aggravationem, & alias juxta stylium, & morem dictarum Curiarum in similibus servari solita, ac alias prout sibi videbitur procedendum, sententiamque five sententias debita executioni demandandi five demandari faciendi, contradictores quolibet, & rebelles, per censuras, & penas Ecclesiasticas, ac etiam pecuniarias, aliaque juris & facti opportuna remedia, appellatione postposita compescendi, auxiliumque brachii secularis, ad hoc si opus fuerit invocandi omniaque & singula alia in præmissis, & circa ea necessaria, seu quomodolibet opportuna faciendi, & exequendi plenam & liberam licentiam, seu facultatem concedimus.

Annulatio
processus
aliorum Ju-
dicum.

§. 4. Decernentes Archihospitale & Societatem, ac ejus Officiales, & personas hujusmodi, ex nunc deinceps occasione præmissorum, alibi quam coram Bartholomæo Cardinali, & pro tempore Protectore prædicto conveniri, aut ad alios conveniendum, constringi non possit. Ac processus sententias, & decreta, per alium, vel alios, tam ordinarios, quam delegatos in causis prædictis, quomodolibet pro tempore formatos, latas, & factas, cum inde sequentis quibuscunque nulla, irrita, & inania, nullumque roboris, vel momenti fore.

Clausula
præservati-
væ.

§. 5. Præsentem quoque literas sub quibusvis revocationibus, suspensionibus, & exemptionibus, similibus vel dissimilibus gratiarum, etiam per nos, aut successores nostros Romanos Pontifices, & Sedem prædictam, vel ejus Legatos, & per regulas Cancellarie Apostolicæ, pro tempore factas etiam in favorem Fabricæ Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, nullatenus comprehendit, sed semper ab illis penitus & omnino exceptas esse, & censeri, nec eidem præsentibus per quascunque literas, & etiam quasvis regulas, generales, & speciales, & derogatorias derogatorias, efficaciores & insolitas, ac etiam irritantia decreta, vel quacunque verborum expressione in se continentes, derogari posse, & si illis ullo unquam tempore ex aliqua, etiam quantumvis necessaria, & urgenti causa derogari contingat, nisi tenor illarum de verbo ad verbum nihil omnino inferius, & hujusmodi derogatio constitutaliter facta, & per trinas, & distinctas literas, eundem tenorem continentes, tribus similibus distinctis vicibus, Administratoribus, five Custodibus, Gubernatoribus, Rectoribus, & Oeconomis Archihospitalis, & Societatis hujusmodi legitime intimata, & innovata fuerit, eorumque ad id expressus accedat assensus, derogationem hujusmodi nemini suffragari.

Decretum
irritans.

§. 6. Sicque per quoscunque Judices quasvis auctoritate fungentes, etiam prædictæ Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, sublata eis & eorum cuilibet, quasvis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, ubique judicari, & definiri debere, irritum quoque, & inane si secus super his à quoquam quasvis auctoritate fungente, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Clausula
derogatoria.

§. 7. Non obstantibus præmissis, & felicis record. Bonifacii Papæ VII. prædecessoris nostri de una in Concilio generali edita de duobus diebus, dummodò ultra tres dietas aliquis auctoritate presentium, ad judicium non trahatur, aliique constitutionibus

Apostolicis, necnon Fabricæ prædictæ, & Hospitalium, Ecclesiarum, Monasteriorum, & aliorum quoruncunque locorum, & Ordinum, etiam exemptorum, juramento, confirmatione Apostolica, vel quasvis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, & indultis, conservatoriis exemptionibus, & literis Apostolicis eisdem, ac dilectis filiis Populo Romano, necnon Judicibus, Curis, & Tribunalibus, eorumque personis, per quoscunque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac nos, & dictam Sedem, etiam scientia, & potestatis plenitudine similibus, ac aliis sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibusvis clausulis & decretis in contrarium quomodolibet concessis, confirmatis, & innovatis, necnon reformationibus, etiam noviter facientibus, ac paribus motu, & scientia approbatis, etiam disponentibus, quarum causæ hujusmodi ad forum, seu Curiam Capitolii reassumi debeant, quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, aliis de illis, eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per regulas generales idem importantes mentio, seu quasvis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, quorum tenores, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata inserti forent, presentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentis, hac vice dumtaxat harum serie, specialiter & expressè, ac eisdem motu & scientia, & potestatis plenitudine derogamus, ac sufficienter derogatum esse decernimus, contrariis quibuscunque aut si prædictis vel quibusvis aliis, conjunctim vel divisim, ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, vel excommunicari, aut extra, vel ultra certa loca, Curias & Tribunalia, ad judicium trahi non possint per literas Apostolicas, non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum, de indulto hujusmodi mentionem, ac quibuscunque aliis privilegiis, indultis, & literis Apostolicis, generalibus, vel specialibus, quoruncunque tenoribus existant, per quæ presentibus non expressa, aut totaliter non inserta, jurisdictionis ipsius Protectoris explicatio impediri valet quomodolibet, vel differri, & de quibus quoruncunque totis tenoribus de verbo ad verbum habenda sit in nostris literis mentio specialis.

§. 8. Et quia difficile foret præsentem literas ad singula loca, quibus illis pro tempore opus fuerit, deferre, volumus, & prædicta auctoritate decernimus, quod illorum transumptis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo Protectoris vel Societatis hujusmodi, seu personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ, vel Curie etiam secularis munitis eadem prorsus fides adhibeatur, quæ adhibetur eisdem presentibus, si forent exhibita vel ostensa.

Fides tran-
scriptum.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub anno Pificatoris, die 22. mensis Januarii 1560. Pontificatus nostri Anno primo.

Dat. P. A. r.
die 22. Jan.

Moderatio Constitutionis Pauli IV. editæ contra Religiosos apostatas, aut malè translatos, vel extra claustra vagantes.

I II.

De Regularibus apostatis & electis edidit Sanctiss. D. N. Urbanus VIII. Constitut. 26. Sacra, infra in Tomo 4.

PIUS EPISCOPUS,

Edita An. D.
1660.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Sedis Apostolicæ solertia dum ad salutarem quorundam remedium extructa, in eorum detrimentum vergere conspexit, ne quod illis profuturum maturitate summa produisse comperitur, noxium incerto ministerio efficiatur, ceteris provisionis operam afferre consuevit, prout in Domino conspexit salubriter expedire.

Exordium.

Paulus IV.
edidit constitu-
tionem de
qua hic.

In executionem
autem dictæ const.
Pauli IV.
multæ lites
ortæ fue-
runt ex cau-
sis hic ex-
pressis.

Ideb hic
Pont. absol-
vit omnes
Apostatas, &
translatos in
saeculo vagan-
tes, à
censuris, &
pœnis incur-
tis ob non
partitionem
dictæ consti-
t. Pauli IV.

Et super ir-
regularitate
per eisdem
contradicta
dispensat.

Et dictam
Pauli IV.
const. ad for-
mam juris,
& sacram
constitutioni-
um reducit.

Advocat
etiam ad se
omnes cau-
sas contra
eisdem co-

§. 1. Dudum siquidem postquam fel. res. Paulus Papa IV. prædecessor noster, &c.

Omittitur relatio Bullæ Pauli IV. quoniam eam habemus sup. in Tom. I. Postquam, n. 14. fol. 813.

§. 2. Cum autem, sicut accepimus, licet singule literæ prædictæ zelo religionis ejusdem prædecessoris emanarint, nihilominus cum post illarum publicationem per Ordinarios locorum ad earum executionem procedi cœptum foret, maximi in omnibus Regnis & Provinciis rumores, lites & contentiones, ac gravia scandala multipliciter exorta fuerint, cum propter maximum ipsorum Apostatarum, & translatorum numerum, tum etiam ex quo multi prætenderent vel prætendebatur damnari in dictis literis omnes ferè uniformiter, nulla inter causam & causam, ac lepram & lepram differentia & distinctione habita damnantur, cum tamen plerique eorum prævis dispensationibus, & indultis, ac licentiis ab eorum Superioribus, & à Sede Apostolica ex iustis & rationabilibus causis concessis muniferebant, & nihilominus quamplures ex eis zelo conscientie aut poenitentia ducti, literis prædictis parere, & ad Monasteria à quibus egressi fuerant redire sese paratos exhiberent, sed ab eorū Superioribus nullatenus recipebantur, sique ob earumdem literarum rigorem magnis confusionibus involuti, ac miseriis & calamitatibus oppressi, omnibus remediis destituti, an perpetuis censuris innodati, ciboque spirituali & temporalis privati remanerent, ita quod vel fame perire, aut in extremam desperationem adduci cogerentur, alique Christi fideles ob magnam dictorum Apostatarum multitudinem vix eorum conversationem effugere, & exinde excommunicationis incursum evadere possent, & propterea verisimile sit, quod si bonitati divinæ ejusdem prædecessoris vitam paulò ulterius prorogare placuisset, ipsemet literas suas hujusmodi zelo charitatis, ut par erat, ad justam moderationem formam & æquitatem reduxisset.

§. 3. Nos igitur per Pastoralis officii nostri debito omnibus jus & iustitiam, ut decet, ministrare, nemini injuriam inferre, aut quemquam suis iuribus, ac legitimis defensionibus privare, aut aliàs indebitè molestare volentes, sed singulorum Christi fidelium animarum salutem ante omnia prospicere cupientes, singularum literarum prædecessoris hujusmodi tenorem, ac si de verbo ad verbum infereretur, præsentibus pro expressis habentes, habita super his cum nonnullis venerabilibus fratribus nostris S. R. E. Cardinalibus super hoc negotio specialiter deputatis deliberatione matura, motu simili, ac ex certa scientia nostris, & de simili potestatis plenitudine omnes & singulos Apostatas seu translatos in dictis literis comprehensos & adhuc in saeculo vagantes, cujuscumque Ordinis fuerint, à quibusvis excommunicationis, suspensionis, & interdicti, ac aliis sententiis, censuris & pœnis quas ob non partitionem literarum prædictarum, seu alias quomodolibet incurrerunt, hac vice dumtaxat, specialiter & expresse absolvimus & liberamus.

§. 4. Necnon super irregularitate per eos contra tenorem dictarum literarum Missas celebrando, seu aliàs se divinis immiscendo forsitan contracta, dummodò in contemptum clavium id non egerint, misericorditer in Domino dispensamus, ac absolutos & liberatos, ac dispensatos fore censuimus.

§. 5. Singulaque literas prædictas, ac in eis contenta & inde sequuta quaecumque, ad formam juris & sacram constitutionum reducimus, & reducere fore. Si que ab infrascriptis & quibusvis aliis Judicibus, ac prædictis Auditoribus & Cardinalibus subla- ta eis & eorum cuilibet, quavis judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari & interpretari debere, ac quicquid secus à quoquam quavis auctoritate scierit vel ignoranter contigerit attentari, irritum & inane decernimus.

§. 6. Et nihilominus omnes & singulas lites & causas hætenus coram quibusvis Ordinariis, vel Delegatis Judicibus etiam in Romana Curia introductas, & in quacumque instantia contra dictos Apo-

statas vel translatos, vel alias inter quasvis personas præmissorum occasione pendentes, etiam si infrascriptæ sint, ad nos advocamus, ac causas tam ad nos advocatas in statu & terminis quibus reperiuntur reassumendas, necnon quam & quas quæcumque personæ Ecclesiasticæ & regulares ac etiam sæculares, necnon Conventus, Collegia, & Universitates dicta occasione seu in præmissis communiter, vel divisione interesse putantes, contra dictos Apostatas, vel translatos, aut alios quoscumque activè vel passivè civiliter, vel criminaliter, ac realiter & personaliter vel mixtum habent & movent aut habere vel movere volent & intendunt, cum omnibus & singulis incidentibus, dependen. annexis & connexis totoque negotio principali, quoad professos videlicet in Alma urbe & ejus districtu, & alios in ea presentes dilecto filio nostro Jacobo ut. S. Mariæ in Cosmedin Presbytero Cardinali Sabello nuncupato, nostro in dictis Urbe, & districtu Vicario generali, seu ejus Locumtenenti, extra Curiam vero Ordinario loci, ac Superiori Monasterii in quibus prima & originaria professio per quemlibet ex Apostatis & translatis prædictis emissâ asseritur, necnon obtinenti primam dignitatem in Ecclesia Cathedrali, seu Metropolitana, vel alii Superiori loci hujusmodi, seu antiquiori Canonico pro tempore residenti per eos conjunctim, visis in primis & diligenter inspectis & examinatis dispensationibus, facultatibus, licentiis, & indultis per eisdem Apostatas & translatos quomodolibet obtentis, ac processibus desuper habitis, & causis in eis allegatis maturè discussis, ac prout justum & æquum fuerit, verificatis & probatis, summarie, simpliciter & de plano, ac sine strepitu & figura judicii, ac sola veritate inspecta, appellatione postposita audien. cognoscen. & juxta juris & sacram constitutionum dispositionem sine debito terminan. committimus & mandamus.

§. 7. Ac eisdem Judicibus omnes & singulos prædicta occasione citandos etiam per edictum publicum, confito etiam summarie & extrajudicialiter de non tuto accessu citandi, necnon illis & aliis quibus, ubi, quando, & quoties opus fuerit, etiam sub sententiis, censuris, & pœnis Ecclesiasticis, ac etiam pecuniariis eorum arbitrio imponendis, moderandis, & applicandis etiam per edictum simile inhibendi. Necnon quoscumque Apostatas & translatos hujusmodi, qui sine canonica dispensatione aut licentia in saeculo vagari reperti fuerint, ad Monasteria à quibus exiverunt, aut alia regularia, vel alia honesta loca, prout melius pro ipsorum animarum salute eis visum fuerit, super quo ipsorum Judicium conscientiam oneramus, reverti seu intrare faciendi & compellendi, ac quæcumque alia, quæ per eos in præmissis statuta & ordinata fuerint, debite executioni demandandi, ac quascumque executiones per quosvis Judices ordinarios, vel delegatos in vim literarum prædecessoris hujusmodi aliàs contra juris formam factas causa cognita retractandis & annullandis, & in pristinum statum reducendis, contradictores quoslibet & rebelles per censuras, & pœnas Ecclesiasticas, appellatione postposita compendi, necnon censuras & pœnas prædictas incurrisse declarandi, atque illas legitimis desuper habendis servatis processibus, etiam iteratis vicibus aggravandi, interdictum Ecclesiasticum prout justum fuerit apponendi, & auxilium brachii secularis, si opus fuerit, invocandi, cæteraque in præmissis & circa ea necessaria seu quomodolibet opportuna faciendi, & exequendi, plenam, & liberam concedimus facultatem.

§. 8. Non obstantibus præmissis literis prædecessoris, ac constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon privilegiis, indultis, & literis Apostolicis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibusvis clausulis & decretis quotiescumque, & per quoscumque, ac quibuslibet, & ex quibusvis causis, necnon intuitu, consideratione, contemplatione, & ad instantiam quorumvis, aut etiam motu, scientia, ac plenitudine similibus, etiam quod nonnulli ex dictis Ordinibus professores se de causis eis

ram quibuscumque Judicibus introductas, calque summarie & juxta dispositionem juris, & sacram constitutionum cognoscendas committit Vicario Urbis, & respectivè Ordinariis locorum & Superiorib. Monasteriorum &c.

Facultates
eisdem Judicibus concedit, ut summarie procedant, &c.

Clausulæ derogatorie.

Apostatz, & translati absoluti penitentiam à Confessoribus injungendam facere debeant.

Apostatz, & translati dispensationes & inulta iudicibus præsentare, & causam expedire debent infra sex menses, alias in censuras antea incurras reincident.

Exemplorum fides.

Dat. P. A. L. die 3. April.

Publicatio.

IV.

Edita A. D. 1560.

Procurum.

Causa istius constituit.

per Sedem ipsam delegatis, nisi sub certis modo & forma ibidem contentis intrittere minimè teneantur, concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, illorum tenores præsentibus pro expressis habentibus, illis alias in suo robore permanfuris, quoad præmissa dumtaxat specialiter & expresse derogamus, cæterisque contrariis quibuscumque.

§. 9. Volumus autem quod singuli Apostatz & translati huiusmodi, ut præfertur absoluti, penitentiam per eorum confessorum sibi pro excessibus prædictis injungendam facere omnino teneantur. Quodque antequam sententiæ seu declaratorie per supradictos Iudices à nobis deputatos ferendæ paruerint, à celebratione Missarum & quocumque altaris ministerio omnino abstanteant.

§. 10. Volumus autem quod infra sex menses à die publicationis præsentium ipsi Apostatz seu translati licentias eorum, ac dispensationes, & indulta supradictis Iudicibus præsentent, & sententiam declaratoriam desuper ab eisdem promulgari, ac causam realiter & cum effectu totaliter expediri faciant, quo termino elapso, & causa, ut præfertur, non expedita, dicti Apostatz, & translati in eisdem censuras & penas, in quibus ante publicationem præsentium erant, reincidisse eo ipso censentur, nisi per ipsos Judices steterit, aut alio legitimo impedimento per ipsos Judices abstrahendo, dicti Apostatz & translati detenti fuerint.

§. 11. Cæterum, quia difficile foret præsentibus literas ad singula queque loca in quibus eis utendum erit deferri, volumus similiter, & prædicta Apostolica auctoritate statim atque decernimus, illarum transumptis sive impressis, sive manuscriptis, dicti Vicarii sigillo, & illius seu publici Notarii subscriptione munitis, eandem prorsus fidem ubique locorum in iudicio & extra adhibendam fore, quæ ipsis præsentibus adhiberetur si forent exhibite vel ostense. Nulli ergo, &c. Si quis autem, &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1560. tertio nonas Aprilis, Pontificatus nostri Anno primo.

Anno à Nativitate Domini 1560. Indiæ. 3. die verò 6. mensis Apr. Pont. Sanctiss. in Christo Patri & D. N. D. Pii Pape IV. Anno I. retroscripta litera Apostolica affixa & publicata fuerunt ad Valvas Basilicarum Ecclesiarum S. Joannis Lateranen. & Principis Apostolorum de Urbe, ac Cancell. Apostol. dimissis inibi copiis illarum affixis per nos Bernardinum Andreutium, & Triphonem Viskorellum Cursores. Jo. Andreas Panizza Magister Cursum.

Contra detinentes jocalia & alia quæcumque bona ad Sedem Apostolicam spectantia, ac scientes & non revelantes.

De materia posui concord. supra in Pauli Quarti constitut. 11. Incumbentia. Tom. I. fol. 829. Et signanter contra non restituentes scripturas, vide inf. Sixti V. constit. 56. Non sine, ubi notabo in hoc Tomo fol. 624.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memoriam.

Pastoralis officii auctoritas nos admonet, & ordinationis exposcit, ut circa ea potissimum versetur, per quæ res, & bona Rom. Ecclesiæ, præsertim usui & ornatui Romani Pontificis pro tempore existentis, & Sacri Palatii Apostolici deputata ab impiorum insultibus, & rapinis præserventur, & ab eis ausu sacrilego, aut aliis quomodolibet abinde asportata & distracta, nostræ operationis ministerio, cum animarum salute eorum, qui cæca cupiditate ducti in non parvam Sanctæ Matris Ecclesiæ injuriam, & ipsorum animarum perniciem. Dei timore postposito, ea surripere, seu sibi appropriare, aut istinc divertere ausi fuerint, eidem Romano Pontifici pro tempore existentis restituantur, & taliter in præmissis provideatur quod certis cedat in exemplum.

§. 1. Cum itaque, sicut non sine gravi animi no-

stri molestia accepimus, tam tempore infirmitatis diversorum Romanorum Pontificum prædecessorum nostrorum, ex qua, sicut Domino placuit, ab humanis decesserunt, quam exinde diversarum Sedium vacantium, quam plura etiam pretiosa jocalia, ornamenta, & alias res & bona usui præfato, ut præfertur deputata, & alias ad eundem Rom. Pontificem pro tempore existentem, & Cameram Apostolicam spectantia & pertinentia, tam ex dicto Palatio, quam aliis quibuscumque locis ablata & distracta fuerint, & à diversis eorum protervia invalescente detineantur, in nostrum & ejusdem Pontificis pro tempore existentis non solum detrimentum, sed etiam Sedis Apostolicæ ignominiam, & ipsius auctoritatis diminutionem, necnon illa detinentium animarum perniciem atque periculum non modicum.

§. 2. Nos huiusmodi inconvenientibus & animarum periculis quantum in nobis est obviare, & alias in præmissis, prout par est, providere volentes, Motu proprio, & ex certa scientia, omnes & singulas censuras & penas Ecclesiasticas per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros contra talium perpetratores, ac alias bonorum Apostolicorum usurpatores, raptos, receptores & possessores, ac detinentes & non restituentes, ac scientes & non revelantes, sub quibuscumque verborum formis promulgatas, quorum, & literarum Apostolicarum desuper confectarum tenores, ac si de verbo ad verbum inererentur præsentibus haberi volumus pro expressis, auctoritate Apostolica tenore præsentium approbamus & innovamus, ac ad infrascriptos extendimus & ampliamus.

§. 3. Et nihilominus motu & scientia similibus, omnes & singulas, tam sæculares, quam Ecclesiasticas, ac etiam militarium & Ordinum quorumcumque religiofas, etiam quacumque Episcopali, Archiepiscopali, & Patriarchali seu Superiori Ecclesiastica, etiam Cardinalatus honore, ac etiam Comitali, Marchionali, aut Ducali dignitate fungentes, ac alias mundanas personas, nullas penitus excipientes, cum dignitas quascumque sit in peccatis nemini excusationem præbere debeat, quæ jocalia, ornamenta, aurum, argentum, monetatum & non monetatum, gemmas, margaritas, lapides pretiosos quocumque nomine nuncupatas, pecunias, vestes, pannos, & tam manuscriptos, quam quovis alios libros, scripturas, necnon equos, mulos, imagines aureas, argenteasque, ac aeneas, & marmoreas, ac suppellectilia, & alia quæcumque res & bona mobilia & immobilia, spiritalia & profana quoscumque generis, qualitatibus, & quantitatibus, seu pretii existentia, pro usu & commoditate Romani Pontificis pro tempore existentis, & ornamento Palatii huiusmodi deputata, ac ad eundem Romanum Pontificem pro tempore existentem spectantia & pertinentia, tempore infirmitatis quovis Romani Pontificis prædecessoris nostri, ex qua postmodum decessit, ac etiam dictæ Sedis propter eam vacantis, necnon per annum ante obitum & vacationem huiusmodi ex dicto Palatio, & aliis undecumque & quocumque asportant, subtraxerunt & occultant, sui prætenso titulo donationis vel remissionis, quietantiæ, vel alio quovis pretextu detinent, seu sciunt ea per alios possideri, usurpari & detineri, aut occupata fuisse, & ad eorum manus pervenisse requirimus & monemus, eisque districtè præcipiendo mandamus, quatenus infra sex dierum spatium, quorum duos pro primo, duos pro secundo, & reliquos duos dies pro tertio & peremptorio termino eis & eorum cuilibet pro Canonica monitione assignamus, omnia & singula jocalia, ornamenta, aurum, argentum, gemmas, margaritas, lapides pretiosos, pecunias, vestes, pannos, libros, equos, mulos, imagines, suppellectilia, & alias res, & bona huiusmodi dilecto filio Francisco Odescalco dictæ Cameræ Præsidenti cum effectu restituant & consignent, & si donationem vel remissionem, aut quietantiam desuper sibi factam prætendant, illam seu illas, videndas, ut decet, & examinandas exhibeant & producant, ac illorum

Confirmatio penarum impositarum contra occupatores bonorum Cameræ Apoll.

Præceptum restituendi omnia bona dictæ Cameræ.

Pœnæ non
restitu-
entium, sci-
entiumque &
non revelan-
tium.

raptores, usurpatores, seu detentores vel occupa-
tores scientes revelent.

§. 4. Alioquin lapsis diebus hujusmodi, omnes &
singuli præfati Episcopali vel Archiepiscopali, aut Pa-
triarchali, ac etiam Cardinalatus honore seu digni-
tate præditi, interdicti ingressu Ecclesiæ penam,
alii verò excommunicationis & maledictionis æter-
næ sententiam, quam aliis in eos in his scriptis feri-
mus & à quibus nisi à nobis, & eodem Romano Pon-
tifici pro tempore existente, ac satisfactione prævia,
præterquam in mortis articulo constituti, relaxatio-
nis & absolutionis beneficium obtinere non possint,
eo ipso incurrant, & si Pontificali aut Cardinalatus
honore seu dignitate præditi sub interdicto hujus-
modi per octo dies præfatos, sex immediatè sequen-
tes permanere, alii verò inferiores ab eis eandem
excommunicationis sententiam animo quod absit,
indurato sustinere non formidaverint, ex tunc elap-
sis dictis octo diebus, Pontificali & etiam Cardina-
latus honore seu dignitate præditi à regimine Eccle-
siarum eis commissarum, eo ipso suspensio, ac tam
ipsi si alia beneficia Ecclesiastica obtineant, quàm
inferiores ab eis, omnibus & singulis Monasteriis,
prioratibus, dignitatibus, administrationibus, cano-
nicatibus & præbendis, cæterisque beneficiis Eccle-
siasticis cum cura & sine cura, secularibus ac Or-
dinum quorumcumque regularibus, quæ in titulum
vel commendam seu administrationem, aut aliis
quomodolibet etiam ex quibusvis concessionibus
seu dispensationibus Apostolicis obtinent, ac etiam
Officiis Romanæ Curie per eos obtentis. Seculares
verò Feudis, Vicariatibus, Dominis, & aliis juri-
bus, ac privilegiis quibuscumque eis per Romanam
Ecclesiam aut Sedem præfatam seu alios quoscum-
que, etiam quacumque alia auctoritate etiam Im-
periali, vel Regali eis concessis, etiam eo ipso pri-
vati existant, & ad similia beneficia, feuda, privile-
gia, vicariatus, dominia, & jura obtinenda, necnon
ad quoscumque actus legitimos exercendos inhabi-
les, ac etiam intestabiles similiter eo ipso fiant, pos-
sintque beneficia, officia, ac vicariatus & feuda,
aliæque jura hujusmodi tamquam vacantia absque
alia declaratione desuper faciendâ à nobis & Sede
præfata, ac aliis ad quos pertinet illa concedere &
dare, liberè impetrari. Scituri quod si ipsi, aut eo-
rum aliqui suæ salutis immemores in præmissis mor-
rosi fuerint, seu præmissa adimplere non curaverint,
aut contempserint, hoc eis pro gravi crimine & de-
lictis imputabitur, & Justitia mediante contra eos
ad graviores & tales penas absque ullo respectu
procedatur, quod illorum coercio eis perpetuò cedat
ad noxam, & aliis in exemplum, absque spe ali-
cujus veniæ inde consequendæ: si verò se humiles,
& ad satisfaciendum, aut confitendum promptos
exhibuerint, cum omni mansuetudine & respectu
excipiantur, & ex eorum spontanea restitutione, seu
confessione eis salutis misericordiz & gratiæ am-
plexus exuberanti Sedis præfatæ in singulos penam
pietate provenient. Ac singulas donationes eis de-
super factas, prout justitia suadebit, & ordo dicta-
verit rationis, admittemus. Ac ut præfertur, scientes,
& revelantes, ultra celeste præmium, à nobis
condignam mercedem & retributionem recipiant,
cum eorum omnium grata satisfactione.

§. 5. Non obstantibus constitutionibus, & ordina-
tionibus, privilegiis quoque, indultis, & literis
Apostolicis præfatis, necnon donationibus, concessio-
nibus, & aliis dispositionibus de bonis rebus &
aliis præmissis, etiam Cardinalibus & aliis prædictis,
etiam per dictos prædecessores, aut eorum aliquos
ex quacumque causa factis, & quibusvis aliis, sub
quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibus-
vis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque
efficacioribus & insolitis clausulis, irritantibusque
& aliis decretis, etiam motu & scientia paribus con-
cessis, confirmatis & innovatis, quibus, illorum te-
nores præsentibus pro sufficienter expressis habentes,
illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice
dumtaxat specialiter & expresse derogamus, &

quoad hoc eis nolumus aliquatenus suffragari, con-
trariis quibuscumque, aut si aliquibus communiter
vel divisiim ab eadem sit Sede indultum quod inter-
dicti, suspendi, vel excommunicari non possint per
literas Apostolicas non facientes plenam & expres-
sam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi
mentionem.

§. 6. Volumus autem quòd cum primum præ-
sentes literæ quatum transumptis manu Notarii pu-
blici subscriptis sicuti ipsi originalibus literis fidem
plenam adhiberi debere decernimus, in valvis Basi-
licæ principis Apostolorum de Urbe, & Ecclesiæ La-
teranen. ac acie Campi Floræ etiam de Urbe per
unum ex Curforibus nostris affixæ fuerint, perinde
singulos quos concernunt quoad præmissa omnia
ardent, ac si eadem præsentibus literæ eis singulari-
ter & personaliter insinuatæ & intimatæ fuissent.

Nulli ergo, &c. Si quis, &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis
Dominicæ 1560. tertio nonas Aprilis, Pontifi-
catus nostri Anno primo.

Exemptio Monialium & Sororum cujuscumque Or-
dinis Regularium, à decimis, subsidiiis, aliisque
oneribus.

*Aliam exemptionem pro Monialibus Ordinis Mendi-
cantium habemus infra in constitut. xi. Pii V. Dum
ad uberes. Et signatur ab onere hospitandi milites
attende const. 148. ejusdem Pii, Cùm scit.*

PIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

DE statu Ecclesiarum & Monasteriorum quo-
rumlibet curæ nostræ divina dispositione com-
missorum paterna diligentia cogitantes, ad ea per
quæ illorum, ac personarum præsertim feminei
sexus in illis sub regulari castimonia Altissimo fa-
mulantium statui & opportune subventioni valeat
salubriter provideri, ipsæque persone semotis per-
turbationibus universis, in pacis & quietis ameni-
tate divinis officiis liberius vacare valeant, libenter
attendimus, & in iis nostri Pastoralis officii partes
favorabiliter impartimur.

§. 1. Hinc est quod nos Motu proprio non ad ali-
cujus nobis super hoc oblata petitionis instantiam,
sed de nostra mera liberalitate omnes & singulas
Abbatissas, Priorissas, Ministras, Moniales, & Sorores
quorumcumque Monasteriorum, Domorum, &
regularium locorum Monialium, & Sororum quo-
rumvis Cisterciens. Præmonstraten. S. Claræ, necnon
Sancti Benedicti, & Sancti Augustini, ac Terti
Ordinis Sancti Francisci, & aliorum quorumvis Ordi-
num, etiam sub cura & regimine, ac secundum regu-
laritatem instituta Fratrum Minorum de Observantia
nuncupatorum, & Eremitarum ejusdem Sancti Au-
gustini degentium in Lombardia, & quibuscumque
aliis Italiæ partibus consistentium, ipsaque Mona-
steria, & Domos, & loca (deductis quatuordecim
ducatis auri de Camera pro victu cujuslibet Monia-
lis seu Sororis) alios redditus non habentia, eo-
rumque possessiones, & alia quæcumque decimarum,
& subsidiorum, ac aliorum onerum quomodolibet
nuncupatorum, per nos & Sedem Apostolicam seu
ejus Legatos, & Nuncios, aut quoscumque alios
quavis auctoritate fungentes, etiam pro expeditione
contra Turcas, vel fidei tuitione, ac Fabrica Basi-
licæ Principis Apostolorum de Urbe, aut quavis
alia urgentissima causa pro tempore impositorum
solutione, ex certa nostra scientia, auctoritate
Apostolica, tenore præsentium in perpetuum pro-
fess eximimus, & liberamus.

§. 2. Et nihilominus omnibus & singulis Collec-
toribus, Subcollectoribus, ac Commissariis, necnon
quibuscumque aliis, ad decimarum & subsidiorum
hujusmodi exactionem deputatis, & pro tempore

Justo publi-
candi hanc
Bullam.

Dar. P. A. 1.
die 3. April.

V.

Edita An. D.
1560.

Exordium.

Exemptio à
solutione
decimarum
& subsidio-
rum, ac alio-
rum onerum.
Hoc idem
specialiter
Monialibus
Mendicanti-
bus concessit
Pius V. cit.
in rubr.

Derogatio
contrario-
rum.

Prohibitio
Commissa-
riis, & aliis
exactoribus.

deputan-

deputandis, in virtute sanctæ obedientiæ, & sub no-
stræ indignationis, ac excommunicationis late sen-
tentię pena districtius inhibemus, ne Abbatissas,
Priorissas, Ministras, Moniales, & Sorores, Domos,
& Monasteria, & loca prædicta, etiam vigore qua-
rumcumque literarum à nobis, vel Sede prædicta pro
tempore emanatarum, etiam si in eisdem contineat-
ur, quod ad quævis exempta, & non exempta
Domos, Monasteria, & loca se extendant, vel al-
terius cuiuscumque tenoris existant, ipsius Sedis sibi
concessæ facultatis, nisi de præsentibus earumque
toto tenore, ac de dictis Ordinibus, & nomine eo-
rum quibus dictorum Ordinum cura, gubernatio,
& protectio pro tempore commissæ fuerint, plenam
& expressam ac de verbo ad verbum, non autem
per clausulas generales idem importantes, fecerint
mentionem, ad solvendum decimas seu subsidia,
aut onera huiusmodi quovis modo cogere aut com-
pelli, seu alias præmissorum occasione eas mole-
stare, seu inquietare præsumant.

Executorium
istius confi-
tur. depu-
catio, & facul-
tates.

§. 3. Quocirca dilectis filiis Cameræ Apostolicæ
Locum tenenti, ac Almæ Urbis nostræ Vicario in
spiritualibus generali, necnon universis & singulis
venerabilibus fratribus nostris Archiepiscopis, &
Episcopis, & etiam dilectis filiis eorum in spiritua-
libus Vicariis generalibus, cæterisque Ecclesiarum
Prelatis pro præsentibus committimus & mandamus,
quatenus ipsi vel duo, aut unus eorum per se, vel
alium, seu alios eisdem Abbatissis, Priorissis, Mi-
nistris, Monialibus, & Sororibus in præmissis effi-
caciis defensionis præsidio assistentes, eadem præ-
sentis & in eis contenta quæcumque inviolabiliter
observari faciant. Non permittebant eas ac Domos,
Monasteria, & loca huiusmodi per Collectores, aut
Subcollectores, & Commissarios præfatos, seu quocumque,
alios contra earumdem præsentium tenorem
quomodolibet molestari, contradictores quolibet,
& rebelles per censuras & penas Ecclesiasticas,
ac alia opportuna iuris remedia, appellatione post-
posita compescendo, necnon legitimis super his ha-
bendis servatis processibus, censuras, & penas ipsas,
etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam
ad hoc si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

Clausulæ de-
rogatoriæ.

§. 4. Non obstantibus præmissis, ac fel. rec. Bo-
nifacii PP. VIII. prædecessoris nostri de una, & in
Concilio generali de duabus dietis edita, dummodò
non ultra tres dietas vigore præsentium ad iudicium
non trahatur & aliis constitutionibus, privilegiis
quoque, indultis, & literis Apostolicis, etiam in
forma brevis, aut aliis quibuscumque per Romanos
Pontifices prædecessores nostros, ac etiam nos & Sedem
prædictam, cum quibuscumque irritativis, annul-
latis, revocativis, exceptivis, restitutivis, de-
clarativis, aut derogatoriis derogatoriis, aliis-
que efficacioribus & insolitis clausulis, etiam plu-
ries, ac alias quomodolibet concessis, confirmatis, &
innovatis. Quibus omnibus, etiam si talia forent,
quod pro eorum derogatione de illis eorumque to-
tis tenoribus specialis, specifica, & individua, ac de
verbo ad verbum, non autem per clausulas genera-
les idem importantes mentio, seu quævis alia ex-
pressio habenda foret, tenores huiusmodi præsen-
tibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis
in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat
specialiter & expresse derogamus, cæterisque con-
trariis quibuscumque.

Transumptis
fides danda.

§. 5. Volumus autem quòd earumdem præsen-
tium transumptis sigillo alicuius personæ in digni-
tate Ecclesiastica constitutæ munitis, & manu alicuius
Notarii publici subscriptis eadem proorsus fides
in iudicio & extra adhibeatur, quæ originalibus
adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Nulli ergo, &c. Si quis, &c.

Dat. P. A. 7.
die 5. April.

Dat. Romæ apud S. Petrum Anno Incarnationis
Dominicæ 1560. nonis Aprilis, Pontificatus nostri
Anno primo.

VI.

Approbatio Confraternitatis sub Invocatione SS.
Trinitatis nuper in Urbe institutæ, ad hospitan-

dum Peregrinos ad Urbem devotionis causa acce-
dentes, ac reficiendum pauperes Convalescentes
ex aliis hospitalibus dimissos; Et tam illos quàm
istos salubriter in mandatis Domini erudiendos;

*Ista Confraternitas in Archiconfraternitatem cum facul-
tate alias Confraternitates aggregandi, suasque gra-
tias communicandi, ab istomet Pontifice erecta fuit,
& pluribus Indulgentiis à Gregorio XIII. & aliis
Summis Pontificibus decorata: Sed eorum Bullas præ-
termisi, quoniam circa modum aggregandi novam
formam tradidit Clem. VIII. in Tom. 3. constit.
115. Quæcumque. Et circa Indulgentias novam
eisdem dispositionem edixit Paulus V. adhuc non
editam, licet firmatam die 2. Octobris 1606. ubi ali-
quid habetur etiam de instituto hujus Archiconfrat-
ternitatis, circa predicationem qua in ejus Oratorio
Judæis qualibet hebdomadâ fieri consuevit.*

Causas autem ejusdem Archiconfraternitatis cog-
noscit S. R. E. Card. ejus Protector, ex const.
123. Pii V. Cum sicut, hic infra.

PIUS EPISCOPUS,

*Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.*

Edita A. D.
1560.

Extordimus.

Illic qui pro dominici salvatione gregis, in ara
crucis, in pretium immolari non abnuat, quique
inter alia sibi beneplacita, opera charitatis exerceri
præcepit, vices licet immeritis gerentes in terris, cu-
ris angimur assiduis, & continua meditatione pul-
samur, circa quæcumque pia opera, ex Christifide-
lium devotione ordinata, ut firma perpetuò subsi-
stant omni studio intendere, & ut ad præmissa Chri-
stifidelium vota facilius concurrant, fideles ipsos
quibusdam spiritualibus & allecivis muneribus boni-
tenter prosequimur, ac eorum pia suffragia donis
cælestibus confavemus, ut exinde reddantur divi-
næ gratiæ aptiores, & charitatis devotio in dies
per amplius augeatur in eis.

§. 1. Cum itaque sicut pro parte dilectorum filio-
rum modernorum Confratrum Confraternitatis San-
ctissimæ Trinitatis in Alma Urbe, de consensu bonæ
memoriæ Philippii Archiepi Episcopi Salutarium,
in dicta Urbe & illius districtu Sedis Apostolicæ
domi videret Vicarii generalis, alias in pauperum
Peregrinorum, & Convalescentium personarum
subsidium institutæ & erectæ, nobis nuper exhibi-
ta petitio continebat, ipsi relictis peccatorum sordi-
bus, ad divinorum præceptorum quantum humana
patitur fragilitas observationem reduci, iramque
divinam poenitentia & orationibus præcipue placari
considerantes, ultima ejuslibet mensis Dominicæ
in unum congregati, peccata sua confessi, sacramen-
tum Eucharistiæ Sacramentum devotè recipiant,
factaque dein de processione, orationem in deputato
Oratorio inchoantes, & inter cætera, pro reipubli-
cæ Christianæ conservatione & augmento, ac inter
Principes Christianos universali pace, ac pro tempo-
re Romani Pontificis & Sanctæ Romanæ Ecclesiæ,
illiusque Prelatorum prospero statu, devotè orantes,
orationem ipsam partis inter se horis triduo red-
dant continuam, & in ipsius Confraternitatis Hos-
pitali quod multis annis in domo conductitia te-
nuerunt, & nunc in propria ad id Dei liberalitate
& benignitate per eos empta tenent, quoscumque
Peregrinos ex quibuscumque Mundi partibus ad Urbem
& Hospitale huiusmodi devotionis causa confluentes
recipiant, & tribus ac quandoque pluribus diebus
hospitentur & nutrant, ac aliis charitative tractant.
Pauperes quoque Convalescentes, qui dum ab infir-
mitate liberi quidem, sed debiles ex aliis Hospitalibus
exeuntes, quo se recipiant & reficiant non ha-
bent, in eodem suo Hospitali similiter recipiant, ac
eos non solum corporaliter ducere robustiores evadit
piè alant, verum etiam rones & ignaros interim
dum ibidem morantur in mandatis Domini erudiant,
cunctaque hæc opera ex bonis sibi à Deo collatis,
aliorumque Christifidelium elemosynis, cum ipsa

Confraterni-
tas Trinitatis
nuper in Ur-
be instituta
fuit, ad sub-
sidium pau-
perum Pere-
grinorum &
Convale-
centium.

Confraternitas proprios redditus ultra quindecim ducatos non habeat, hactenus exercuerint & exercent, exercereque perpetuo intendunt, pro parte eorumdem Confratrum nobis fuit humiliter supplicatum, quatenus ut ipsi & alii Christi fideles sui interioris hominis reformationi intendere, & in piis & charitativis operibus praefatis, sine quibus coeleste regnum acquiri non potest, perseverare studeant, & ceteri ad ingrediendum dictam Confraternitatem alliciantur eo libentius & promptius, quo spirituales donis se refici, animarumque suarum salutem facilius adipisci cognoverint, eorum animarum salutem, pauperumque ac dictae Confraternitatis successui consulere, ac ipsius Confraternitatis erectionem huiusmodi, illiusque statuta & ordinationes approbare & confirmare, ac alias in praemissis opportune providere de benignitate Apostolica dignemur.

Et modo à Pontifice cum suis ordinationibus confirmatur.

§. 2. Nos igitur qui divini cultus augmentum, & animarum salutem, & Hospitalium quoramlibet salubrem directionem, & in eis degentium pauperum subventionem nostris potissimum temporibus ubique vigere, & augeri sinceris desideramus affectibus, quique dictorum Confratrum tam salubria vota & pia opera, plurimum in Domino collaudamus, ipsos & eorum singulos, à quibusvis excommunicationis, suspensionis & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & poenis, à iure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, ipsius Confraternitatis erectionem & institutionem, necnon ordinationes & statuta pro salubri eiusdem Confraternitatis directione, nunc & pro tempore edita, sacris canonibus non contraria, ac inde pro tempore secuta quaecumque, licita tamen & honesta auctoritate Apostolica tenore praesentium approbamus, & confirmamus, ac rata & grata habemus, illisque perpetuae firmitatis robur adijcimus.

Indulgentia, quae conceditur visitantibus ejus Hospitalis, & Eccl. in festis Trinitatis, & Sancti Benedicti, & elemosinas largientibus. Scias omnes indulgentias pro quibus porrigenda sunt manus adiutrices, revocatas esse à Pio V. in constitut. 30.

§. 3. Et insuper universis, & singulis Confratribus Confraternitatis huiusmodi, nunc & pro tempore existentibus, aliisque Christi fidelibus utriusque sexus, etiam de dicta Confraternitate non existentibus, qui Hospitale praefatum, seu illius pro tempore Ecclesiam vel Capellam, in ejusdem Sanctissimae Trinitatis, & Sancti Benedicti, cujuslibet anni festivitatis devote visitaverint annuatim, & ibidem ter Orationem Dominicam, & toties Salutationem Anglicam devote recitaverint, & de bonis sibi à Deo collatis pro eorumdem Convalescentium & Peregrinorum manutentione, eorum arbitrio aliquam elemosynam porrexerint, plenariam omnium peccatorum suorum remissionem & indulgentiam misericorditer in Domino auctoritate & tenore praedictis, ex certa scientia, ac de Apostoli. potest. plenitudine concedimus, & elargimur.

Orantibus etiam tempore orationis indicenda à Confraternitate.

§. 4. Illis verò qui ultima cujuslibet mensis Dominica, vel illam immediate sequenti Lunae sive Martis aut aliis diebus, Orationi per dictos Confratres pro tempore fiendae & continuandae intervenerint, & illam per unam horam, vel si vires ad id non suppetant, breviori tempore continuaverint pro reipublicae Christianae conservatione & augmento, ac Principum Christianorum mutua & universalis pace, necnon nostro & pro tempore existentis Romani Pontificis, ac Rom. Ecclesiae huiusmodi, & illius Pastorum, felici & prospero statu, pias ad Christum Jesum preces effundendo, quoties id fecerint.

Confratribus quoque.

§. 5. Necnon qui de gremio dictae Confraternitatis esse pro tempore desideraverint, in ipsa eorum in Confratres receptione & descriptione, dummodo omnes & singuli Christifideles praefati temporibus & diebus ipsis, poenitentes & confessi sint, & sacratissimum D.N. JESU Christi corpus receperint, centum annos, & totidem quadragenas de injunctis eis poenitentis etiam misericorditer in Domino relaxamus.

Tu vide quoad indulgentias id quod notavi in rubric.

§. 6. Præterea eisdem ac omnibus, & singulis aliis praefatis, & eorum cuilibet, ut facilius & commodius ad praemissa se disponere possint. Quod temporibus & diebus praefatis, præterquam tempore Paschatis Resurrectionis ejusdem D.N. JESU Christi, quemcumque facilem, vel cujusvis etiam Mendicantium Ordinis regularem presbyterum, in suum possint eligere Confessorem, qui eos & eorum quemlibet ab omnibus & singulis eorum peccatis, criminibus, excessibus & delictis quantumcumque gravibus & enormibus, etiam Sedi praefatae reservatis (nullis proflus præterquam in Bulla in die Cenae Domini legi solita contentis exceptis) absolvere, & pro commissis poenitentiam salutarem, injungere possit & valeant licentiam & facultatem impartiri.

Facultas eligendi confessorum.

Hoc limitavit Clem. viij. in constit. 115.

§. 7. Et demum aliis quibusvis personis utriusque sexus Christifidelibus ubilibet constitutis, quae eidem Hospitali, pro ejus ac Convalescentium & Peregrinorum praefatorum manutentione & sustentatione aliquam elemosynam eorum arbitrio quomodolibet porrexerint, vel undecumque transmiserint, etiam quoties id fecerint, trecentos annos & totidem quadragenas de injunctis eis poenitentis similiter in Domino relaxamus.

Elemosynam praefatis indulgentia datur.

Tu vide mox citatam revocationem Pij V.

§. 8. Praesentibus, quas sub quibusvis similitum vel dissimilitum indulgentiarum, gratiarum & facultatum revocationibus, suspensionibus, limitationibus aut derogationibus, etiam intuitu fabricae Principis Apostolorum de dicta Urbe, aut Cruciatu sanctae, & ex quibusvis, quantumcumque urgentissimis causis, per nos & Sedem praedictam aut alios quoscumque, etiam Motu proprio, & alias quomodolibet pro tempore factis, nullatenus comprehensas, sed semper ab illis exceptas, & quotiens illae emanabunt, totiens in pristinum statum restitutas esse & censi debere decernimus, perpetuis futuris temporibus duraturas.

Clausulae hujus constitutionis praeservantur.

§. 9. Volumus autem quod praesentium transumptis manu Notarii publici subscriptis, & sigillo pro tempore existentis Protectoris dictae Confraternitatis munitis, plenaria fides in judicio & extra illud ubique locorum adhibeatur, prout originalibus litteris adhiberetur, si forent exhibitae vel ostense.

Fides danda transumptis.

§. 10. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrae absolutionis, approbationis, confirmationis, adjectionis, concessionis, elargitionis, relaxationum, impactionis, decreti & voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursurum.

Sanctio poenalis.

Dat. Romae apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicae 1560. tertio Kal. Maji, Pontificatus nostri Anno primo.

Dat. P. A. I. die 29. April.

Facultas Praelatorum Congregationis Monachorum B. Mariae Montis Oliveri, Ordinis S. Benedicti circa absolutionem & dispensationem Monachorum ab irregularitate, quibuscumque casibus, quatuor exceptis, incurfa.

VII.

Ad hoc vide moderationem Clem. VIII. infra Tom. 3. in ejus constitut. 115. Quaecumque. Cetera verò quae istam Congregationem concernunt, indicavi supra in Tom. I. Clem. VI. constitut. 1. Sollicitudinis. fol. 254.

PIUS PAPA QUARTUS.

Dilectis filiis Generali & aliis Abbatibus & Visitoribus Congregationis Montis Oliveri, Ordinis S. Benedicti.

Edita An.D. 1560.

Votis vestris, per quae vestrum & Monachorum vestrorum animarum salus provenire dignoscitur, inducitur, ut illis quantum cum Deo possumus, benevolam favorem impartiamur.

Exordium.

§. 1. Hinc est, quod nos volentes vos, qui, ut asseritis, ex iustis & rationabilibus causis, ad instar Sancti Augustini, & Minorum Sancti Francisci, seu

Facultas absolviendi & dispensandi, ac qua in rubr.

aliorum

Alios casus
puto reſerva-
tos fuiſſe à
Clem. viij.
ut inf. in ejus
Bulla 115.
Quæcumque
in Tomo 3.

aliorum Ordinum & Congregationum, quoscumque Monachos à quacumque irregularitate, (præterquam ratione homicidii volitarii, bigamiae, & mutilationis membrorum) absolvere, & cum illis, ut illa non obstante, ad omnes etiã sacros & presbyteratus ordines promoveri possint, dispensare desideratis, specialibus favoribus & gratis prosequi volentes, vestris in hac parte supplicationibus inclinati, Vobis & cuilibet vestrum, ut in foro conscientiae tantum, omnes & singulos Congregationis vestrae Monachos, etiam ante legitimam aetatem, ad aliquem ex sacris ordinibus promotos, à quacumque irregularitate per eos quomodolibet pro tempore, (præterquam ratione homicidii voluntarii, bigamiae, aut mutilationis membrorum) contracta, absolvere, & cum eis, ut illa non obstante, ad omnes etiam sacros & presbyteratus ordines, alias tamen ritè promoveri, & postquam in illis promoti fuerint, etiam in altaris ministerio ministrare, ac missas & alia divina officia celebrare, ac quoscumque administrationes & officia ipsius vestrae Congregationis recipere & retinere, illaque gerere & exercere liberè & licitè valeant dispensare, eosque in pristinum, & cum in quo ante præmissa quomodolibet erant aut existeret poterant, statum restituere, reponere, & plenariè reintegrare liberè & licitè valeatis. Quodque Confessor, quem quilibet vestrum pro tempore duxerit eligendum, vos & vestrum quemlibet si foran quod abſit, aliquam irregularitatem quomodolibet pro tempore incurreretis absolvere, & in statum pristinum restituere, ac ut administrationes & officia prædicta, ut præfertur, recipere & retinere, etiam licitè & liberè valeat, auctoritate Apostolica tenore præsentium concedimus & indulgemus.

§. 2. Non obstantibus præmissis, & Apostolicis, ac Provincialibus & Synodalibus constitutionibus & ordinationibus, ac vestri Ordinis & Congregationis, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis in contrarium quomodolibet concessis, confirmatis, & etiam iteratis vicibus innovatis. Quibus omnibus & singulis, etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quavis alia expressio habenda foret, tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum infererentur, præsentibus pro plenè & sufficienter expressis habentes, illis alijs in suo robore permanentis, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, cæterique contrariis quibuscumque.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 24. Maji millesimo quingentesimo sexagesimo, Pontific. nostri Anno 1.

VIII.

Spolia Personarum Ecclesiasticarum, de eorum bonis, etiam ad favorem locorum piorum, absque Sedis Apostolicæ licentia disponendum, spectant ad Rever. Cameram Apostolicam.

Hæc idem statuit Paul. III. ut supra in Tom. I. in ejus const. 29. Romani. fol. 750.

Hæc tamen licentia non suffragatur Curatis extra residentiam decedentibus, ut infra in const. 9. 1. In supremâ Sed Curiales habent privilegium circa spolia, ut infra in Tomo 3. in Paul. V. const. 18. In eminenti, ubi plenè notabo.

PIUS PAPA QUARTUS.

Dilecto filio Francisco Odescalco Cam. nostra Apof. Præsidenti, ac spoliis quorumcumque in universa Italia Collectori nostro generali. Dilecte fili, salutem & Apostolicam benedictionem.

Grave nobis & molestum accidere solet, cum de personarum Ecclesiasticarum actionibus, quæ integritatis exemplo cæteris præstare debent, ea nobis deferuntur, quæ & eorum famæ sinceritatem de-

nigrare, & Cameræ nostræ Apostolicæ incommodum ac detrimentum afferre videntur, unde nos ut malitiosorum pravis intentionibus occurrere valeamus, debitâ postmodum remedia in medium afferre, & perniciosos fraudibus, prout ex universalis nostræ Curæ sollicitudine tenemur, obviate cogimur.

§. 1. Cum itaque (sicut ex proborum, & fide dignorum hominum relatione nuper acceptis) quamplures prælati, presbyteri, & aliæ Ecclesiasticæ personæ diversarum provinciarum, locorum, & dominiorum, & præsertim Regni Neapolis, nulla à nobis seu Sede Apostolica facultate testandi suffulti vel muniti, sed temeritate propria, & forsan ad suorum importunam suggestionem impulsî, in eorum ultimis voluntatibus testamenta sua condendo, ac donationes seu legata, aut codicillos faciendos, de bonis suis diversimodè, licet id facere nullo modo possint, neque debeant, disponere audent, ipsaque bona sub diversis confictis prætextibus, & coloribus, hospitalibus ac piis locis, & forsan cum promissionibus clandestinis, quod eorum consanguineis vel affinibus, aut aliis personis ab eisdem testatoribus nominatis, post illorum obitum ab ipsis hospitalibus, & locis, de certa seu quota portione bonorum hujusmodi subveniant, testari, relinquere, legare, codicillari non erubescant, in dictæ Cameræ grave damnum, & præjudicium maximum dictæ Cameræ, indemnitati opportune consulere, & inconvenientibus hujusmodi pro officii nostri debito, congruum remedium adhibere volentes.

§. 2. Motu proprio & ex certa scientia, ac matura deliberatione nostra, non ad tuam vel alterius pro te nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, auctoritate Apostolica, tenore præsentium decernimus, & declaramus, omnia, & singula testamenta, donationes, in illis vel mortis causa factas, codicillos, legata, & quæcumque alia in ultimis voluntatibus per quoscumque Ecclesiasticarum prælatos, etiam si Patriarchali, Archiepiscopali, vel Episcopali præfulgeant dignitate, ac quorumvis monasteriorum cujuscumque Ordinis Abbates, seu Commendatarios, ac presbyteros, & alias quolibet Ecclesiasticas personas prædictas, & quascumque alias, quæ ex bonis, & redditibus Ecclesiasticis, & beneficiorum fructus percipiunt, absque nostra seu ejusdem Sedis speciali licentia & facultate, quomodolibet quæ in futurum ab illis quocumque prætextu, aut quæsito colore, etiam in favorem hospitalium & aliorum piorum locorum hujusmodi de dictis redditibus fieri, condi, & testari, seu relinquere, aut quovis ultimæ voluntatis titulo disponi contigerit, nulla, irrita, inania, invalida, ac nullius prorsus roboris vel momenti fore & esse, ac nemini, neque etiam hospitalibus, & piis locis præfatis, cum ad Cameram ipsam solùm fraudandum, prout ex multis fraudibus desuper commissis & repertis nobis conficit, præmissa fieri clarè appareat, ullatenus deinceps suffragari neque subsistere, aut testamentis suis hujusmodi quemquam juvare, aut tueri, nec effectum aliquem ulla ratione habere vel sorti.

§. 3. Quinimò te, de cuius probitate & fide specialem in Domino fiduciam obtinemus, bona quæcumque posthac in dictis testamentis relicta, tamquam spolia ad nos & eandem Cameram spectantia & devoluta, per te vel subcolletores tuos deputatos jam, vel deputandos liberè exagere & recuperare, illorumque possessionem absque vitio spoliis apprehendere, ingredi ac retinere posse, & debere.

§. 4. Necnon pro tollendis omnino fraudibus prædictis quæcumque testamenta, donationes, codicillos, legata, & alias quascumque ultimas voluntates, ut præfertur, in posterum faciendas, & faciendâ, atque in eis contenta, & inde secuta quæcumque etiam quoad subsecutas dictorum bonorum possessiones, & illorum apprehensiones hujusmodi, motu, scientia, & deliberatione prædictis, ex nunc, prout ex tunc revocamus, irritamus, cassamus, & annullamus, ac viribus prorsus evacuamus, pro revocatis, quæ, irritis, cassatis, annullatis, & penitus viribus

Capta constitutionis.

Prohibicio disponendi in ultimis voluntatibus de rebus Ecclesiasticis, absque licentia Sedis Apof.

Iussio illa uti spolia exigendi per Cameram.

Annulatio dispositionum de cætero faciendarum de dictis bonis.

omnibus

Derog. quorumcumque in contrarium.

Dat. P. A. 1. die 24. Maji.

Edita A. D. 1560.

Exordium.

Decretum
irritans.

omnibus, evacuatis ubicumque, tam in iudicio, quam extra, ab omnibus haberi debere volumus, decernimus, atque mandamus.

§. 5. Sicque per quoscumque etiam S. R. E. Camerarium, & alios Cardinales, ac Clericos, & præfidentes ejusdem Camerae, ceterosque iudices, & commissarios, ac alios tam Ecclesiasticos, quam sæculares, quavis dignitate & auctoritate, etiam Marchionali, Ducali, & Regali fulgentes, in quibuscumque causis, & instantiis, sublatæ eis, & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi, & interpretandi, ac decidendi facultate, & auctoritate iudicari, interpretari, atque decidi debere, irritum quoque, & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari decernimus.

Derogatio
contrario-
rum.

§. 6. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon Provinciarum, locorum, dominiorum Regni Neapolis, & quorumcumque aliorum Regnorum, ac hospitalium, & præsertim pauperum, incurabilium, & aliorum piorum locorum quousvis civitatis, etiam Neapolis, juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, & indulcis, ac literis Apostolicis, illis & quibuscumque aliis personis, & locis etiam actu hospitalitatem exercentibus, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis, etiam Motu proprio, & ex certa scientia per Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac Sedem Apostolicam, aut aliàs etiam per nos quomodolibet concessis, confirmatis, & innovatis, etiam si in illis expresse caveatur, quòd testamenta Clericorum, Presbyterorum vel etiam Prælatorum facultatem testandi à dicta Sede minime habentium, in favorem hospitalium, aut aliorum piorum locorum huiusmodi quomodolibet facta valeant, plenamque roboris firmitatem obtineant, & executioni demandari debeant, Quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi præsentibus pro sufficienter expressis, & totaliter insertis habentes, illis aliàs in suo robore permanentibus, hac vice duntaxat harum serie specialiter & expresse derogamus, illaque adversus præmissa nullatenus suffragari posse vel debere decernimus, cæterisque contrariis quibuscumque.

Dat. P. A. r.
die 26. Maji.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo piscatoris, die 26. Maji, millesimo quingentesimo sexagesimo, Pontificatus nostri Anno primo.

IX.

Confirmatio quamplurium gratiarum & immunitatum, exemptionumque & privilegiorum Fratrum Militum Conventus, & Hospitalis S. Joannis Hierosolymitani, ejusque Magni Magistri, Priorum, & aliarum personarum, à Pont. Prædecessoribus concessorum, cum eorumdem extensione, & aliorum concessione.

Hæc privilegia à successoribus Pont. ferè in omnibus confirmata, & in nonnullis extensa, & respectivè modificata fuerint, ut hic in apostillis indicavi. Cætera autem de hoc Ordine & Militia notavi supra Tom. 1. in consil. 2. Anast. IV. fol. 39. Christiana.

Edita A. D.
1560.

PIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

Exordium.

Circumspecta Romani Pontificis providentia prædecessorum suorum gestis, quæ suadentibus honestis causis pro personarum Ecclesiasticarum præsertim regularium pro fidei Catholicæ adversus Christi Crucis inimicos, defensione & conservatione

juxta laborantium, commodo & utilitate providè emanarunt, ut eo firmius perdurent, quo sæpius fuerint Apostolicæ Sedis præsidio roborata, libenter suæ approbationis robur adjicit, ea de novo concedit, aliasque desuper disponit, prout in Domino cõspicit salubriter expedire.

§. 1. Dudum siquidem postquam fel. rec. Martinus V. ex certa scientia per suas statuerat, & ordinarat, quòd quælibet querelæ, quæstiones, lites, causæ & controversiæ, quas ex tunc inter fratres & subditos hospitalis S. Joannis Hierosolymitani tunc præfentes & futuros, ex quibuscumque occasione oriri, & moveri contingeret quovis modo, cum omnibus suis incidentibus, emergentibus, annexis & connexis, ac omni cuiuscvis appellationis (præterquam in defectus, aut denegatæ justitiæ, vel illari perperam contra stabimenta, & consuetudines dicti hospitalis gravaminis casibus) remoto obficulo per pro tempore existentem Magistrum, & dilectos filios Conventum dicti Hospitalis, vel illos ex illis fratribus, quibus ipsi Magister & Conventus eas committerent, etiam usque ad tertiam definitivam sententiam inclusive audirentur, necnon juxta laudabiles consuetudines & stabimenta Hospitalis huiusmodi, & prout alias juris foret debito fine deciderentur, omnesque & singuli Piores, præceptores, bajulivi, castellani, & fratres Hospitalis prædicti, postquam de mandato seu auctoritate Magistri & Conventus præfatorum in quibuscumque ex prædictis contra eos intentandis causis, ad comparendum coram ipsis & commissariis per eos, ut præfatur, pro tempore deputatis, in locis quantumcumque ab eodem Hospitali remotis citati forent, coram eisdem Magistro, Conventu, & Commissariis prout contingeret, legitime comparere deberent, & tenerentur juri, & justitiæ secundum stabimenta, & approbationes, usus & laudabiles consuetudines præfati Hospitalis paritari. Quodque illi ex prioribus, præceptoribus, castellano, emposita, bajulivis, fratribus & subditis præfatis, qui contra eorum aliquem super quibuscumque querelis, rebus, vel negotiis, præterquam in casibus præfatis, coram alio quam præfatis Magistro & Conventu ac per eos pro tempore datis Commissariis in causam traherent, & ad alium quam eisdem appellationes quascumque interponerent, causas huiusmodi prorsus perderent, & excommunicationis sententiam incurrerent, neque super qua contenderent privati existerent eo ipso.

§. 2. Et Sixtus IV. inter alia, omnes & singulas collationes, provisiones, uniones, annexiones, & incorporationes, ac quascumque alias concessiones & dispositiones, de præceptoris, cameris, magistralibus nuncupatis, seu illarum fructibus, redditibus & proventibus, quibuscumque personis, cuiuscumque status, ordinis, vel conditionis existerent, quavis consideratione & sub quacumque verborum forma, ac cum quibuscumque clausulis derogatoriis, etiam Motu proprio, & ex simili scientia, ac cum expressa derogatione jurium Magistri dicti Hospitalis, seu annuæ responsionis illi faciendæ eatenus auctoritate Apostolica factas, nullas & invalidas, nulliusque roboris vel momenti fuisse & esse, etiam per suas declaraverat, & quatenus viribus subsistere dicerentur, revocaverat, cassaverat & irritaverat, ac illas & quas in futurum, etiam cum expressa derogatione litterarum Sixti prædecessoris huiusmodi fieri contingeret, pro infectis haberi voluerat. Ac monuerat & requisiverat omnes, & singulos earundem Camerarum magistralium deventores seu possessores qui tunc erant, aut pro tempore essent, prætextu concessionum, provisionum, & dispositionum quarumlibet, quæ ab alio quam pro tempore existente Magistro dicti Hospitalis eatenus emanaverant, & in futurum emanarent, etiam à dicta Sede, ut infra certum tunc expressum terminum camerarum per eos pro tempore detentorum, seu possessorum huiusmodi possessionem vacuum, liberam & expeditam Magistro dicti Hospitalis, aut illius legitimo procuratori traderent & assignarent,

alioquin

Mart. V. cognitionem causarum subditorum Hospitalis dedit M. Magistro, & Conventui.

Sixt. iv. quæcumque provisiones beneficiorum ad solum M. Magistrum spectare voluit.

alioquin ex tunc prout ex ea die, in omnes & singulos qui non parent, seu ut non parent, suaderent, aut aliis auxilium, consilium vel favorem præstarent, excommunicationis sententiam promulgaverat, à qua nisi in mortis articulo constituti, ab alio quam Romano Pontifice nequirent absolutionis beneficium obtinere, & præter sententiam excommunicationis huiusmodi, si dicti Hospitalis fratres forent, & excommunicationis sententiam huiusmodi per mensum animo sustinerent indurati, Prioratibus, Castellaniis, bajuliviis, præceptoris, & officiis præfati Hospitalis per eos tunc obtentis, eo ipso privati & inhabiles, ad illa & alia in posterum obtinenda essent, possetque per Magistrum & Conventum præfatos de illis sic vacan, per privationem huiusmodi liberè disponi, liceret quoque Magistro pro tempore existenti Hospitalis huiusmodi dicto termino decursu, per se vel procuratores suos possessionem Camerarum earumdem propria auctoritate liberè apprehendere, ac illarum fructus, redditus, & proventus percipere, ac in suos & eius magistratus usus, & utilitatem convertere, & retinere cuiusvis licentia super eo minime requisita.

§. 3. Et Innocentius VIII. ex certis causis tunc expressè inter alia, Sancti Sepulchri Dominici Hierosolymitani Ordinis S. Augustini, & Militiæ S. Lazari in Bethleem & Nazareth, etiam Hierosolymitani Ordines, eorumque Prioratus & præceptorias, nec non domum de Montemorillon, dicti Ordinis S. Augustini Pictaviensis diocesis nuncupatam, & alia ab eis dependentia membra cum suis pertinentiis, ac eorumdem Ordinum & Militiæ Archiprioratum, Prioratus & Magistratus Generales, ac in eorumdem Ordinum Prioratibus, præceptoris, domibus, & membris, illorumque quibus denominabantur nomina, dependentias & pertinentias de fratrurn suorum consilio per quædam suppresserat, & extirperat, illaque omnia & singula per universum Orbem existentia Hospitali præfato pro illius membris, ac domum prædictam expressè pro membro prioratus Aquitanie dicti Hospitalis de simili consilio perpetuò univèr, incorporaverat, concesserat & assignaverat, ac voluerat, quòd tam qui in titulum, quam qui in Commendam illam tunc obtinerent, ad aliorum Fratrum dicti Hospitalis instar juxta tunc Magistrum, & Conventum præfatorum, aut ab eis auctoritatem habentium providam moderationem pro temporum qualitate de eorumdem membrorum quæ sic obtinerent proventus, communi thesauro dicti Hospitalis suffragia & onera exhiberent annuatim, ac Magistrum, & Conventum prædictorum mandatis obtemperarent, nec quovis modo, clam vel palam illi qui Prioratus, beneficia & loca Ordinum suppresserunt huiusmodi tenerent, eis cederent, vel renunciarent, aut de eis donationem facerent absque expresso consensu, licentia & auctoritate Magistrum & Conventus præfatorum, & si secus facerent, irritum & inane, nulliusque roboris esse decreverat, & nihilominus penam privationis beneficiorum, & excommunicationis latæ sententiæ eo ipso incurrere censerentur.

§. 4. Et de simili consilio, omnes & singulas exemptiones priorum, bajulivorum, castellania, empositæ, præceptoriarum, & fratrum ejusdem Hospitalis, tam à superioritate, jurisdictione, obedientia & correctione tunc Magistrum & Conventus prædictorum, ac aliorum prælatorum ipsius Hospitalis, etiam cum eorum receptione in protectionem dictæ Sedis, ita ut illi solummodo essent subiecti, & Magistro ac Conventui, & prælati præfatis, parere, & ad Hospitalis prædicti accedere non tenerentur, quam ab onere solutionis, eorumque communi thesauro prædicto, & illius receptoribus annis singulis ratione prioratum, bajulivarum, castellania, empositæ, præceptoriarum, & aliorum membrorum ejusdem Hospitalis quæ obtinerent,olvere tenerentur; nec non quascunque speciales reservationes, & conferenda mandata de prioratibus, bajuliviis, castellania, præceptoris & membris prædictis quomodolibet, &

quacunque ratione vel causa, etiam impensorum per eos fidei, & Hospitali, aut Sedi præfatis obsequiorum, aut alia inexcogitabili consideratione ab Innocentio prædecessore & Sede præfatis, etiam cum Motu proprii & certæ scientiæ, aliisque favorabilibus & insolitis clausulis concessas, etiam si in eis contineretur expressè, quod per quascunque revocationes & derogationes, ac literas & concessiones non censerentur revocatz, immò illis non obstantibus in suis remaneret robore & efficacia, perinde, ac si revocatæ non essent, nisi dum & quoties sub certis tunc expressis modo & forma, ac verborum conceptione, revocarentur, per alias suas ex certa scientia, revocaverat, cassaverat, & annullaverat, ac voluerat pro infectis haberi, & illis quibus concessæ erant minime suffragari, liceretque Magistro omnem ejus superioritatem in eos sic exemptos exercere, ac receptoribus prædictis eos ad solvendum eis, & dicto thesauro, quæ pro tempore deberent, perinde ac si exemptiones ipsæ nunquam concessæ fuissent, de simili consilio decreverat.

§. 5. Ac in perpetuum valitura constitutione, de eorumdem fratrum consilio statuerat & ordinaverat, quod ex tunc de cetero perpetuis futuris temporibus prioratus, bajulivæ, castellania, empositæ, præceptoris, & membra quæcumque dicti Hospitalis, quæ pro tempore qualitercumque vacarent, tam in Romana Curia, quam extra eam sub quibuscunque generalibus, vel specialibus reservationibus Apostolicis, factis & quas fieri contingeret de beneficiis Ecclesiasticis, etiam apud Sedem præfatam pro tempore vacantibus, utpotè ad hospitalitatem & fidei tuitionem ordinata, nullatenus includerentur, nec reservata vel affecta existerent, sed hospitalium pauperum quæ sub reservationibus ipsis non includebantur, quoad id fortirentur naturam, deberetque de illis per pro tempore existentem Magistrum, & Conventum præfatos dumtaxat, & non alium juxta stabilimenta prædicta Fratribus dicti Hospitalis provideri, & quas fieri contingeret per ipsum Innocentium prædecessorem, aut successores suos Romanos Pontifices pro tempore existentes, ac dictam Sedem, vel ejus auctoritate, aut alia quacunque, de illis reservationes, provisiones, collationes, commendas, uniones, & quascunque alias similes, vel dissimiles dispositiones & exemptiones priorum, bajulivorum, præceptorum, & fratrum, à Magistrum & Conventum prædictorum obedientia & superioritate, aut debitis per eos præfato thesauro responsionibus annuis, & aliis juribus quacunque ratione vel causa, etiam motu & scientia similibus, ac de Apostolica potestate plenitudine cum derogatione priorum literarum Innocentii prædecessoris huiusmodi, nullius penitus essent roboris vel momenti, & haberentur prorsus pro infectis, nec censerentur statuto Innocentii prædecessoris huiusmodi unquam derogatum per quascunque clausulas etiam derogatorias derogatorias, fortiores & efficaciores, nisi dum, & quotiens ipsarum posteriorum literarum, de verbo ad verbum, verè & non per clausulas id importantes inserto tenore, de simili Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalium consilio derogari contingeret, nec etiam tunc nisi ad id Magistrum & Conventum prædictorum expressus accederet assensus, & non aliter, nec alio modo, censereturque semper in huiusmodi quæ sic fierent de consilio prædictæ derogationibus, apposita clausula, quod effectum fortirentur de consensu Magistrum & Conventus prædictorum, & non aliter, nec alio modo, decernens collationes, provisiones, commendas, uniones, dispositiones, & reservationes quilibet, quas per alios quam Magistrum & Conventum prædictos de eisdem prioratibus, bajulivis, præceptoris, castellania, & membris, etiam apud Sedem ipsam pro tempore, per cessum vel decessum, seu quamvis aliam dimissionem vacantibus fieri contingeret, & si per ipsum Innocentium prædecessorem, & pro tempore existentem Roman. Pontificem fierent, illis quibus sic fierent, nullum jus, nullamve coloratum titulum

tribuere

Beneficia etiam hujus Ordinis nec affecta nec sub reservationibus comprehendendi, & ad solum M. Magistrum, & Conventum eorum collationes spectare voluit.

Innocent. VIII. Ordinem S. Sepulchri & Militiam S. Lazari suppressit, & hunc Ordinem Hierosolymitano univèr.

Tu scias hunc Prium hanc unionem S. Lazari revocasse, ut in sua constit. 95. inter alias duas.

Nullamque exemptionem ab obedientia M. Magistrum, & conventus, minulque à solutione jurium communis exaril exculare voluit.

Hoc latius est distinctum in Sixt. V. constit. 43. Equum.

Julius II. ex-
pectativas.
& alias gra-
tias præven-
tivas absque
consensu M.
Magistri, &
Conventus
irritavit.

tribuere possidendi, & eos quoad omnes effectus etiam constitutionis suæ de trienniali possessore non molestando pro meritis detentoribus sine titulo haberi, & reputari, ac irritum & inane quicquid fecus super iis à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contingeret attentari.

§. 6. Necnon Julius II. omnes & singulas expectativas, reservationes, antianitates, mandata de providendo, concessionem, coadjutorias sine consensu, & omnes alias gratias, & literas super prioratibus, bajulivis, præceptoris, castellanis, empositæ, ac quibuscumque aliis beneficiis dicti Hospitalis quomodocumque, & qualitercumque absque Magistro & Conventu prædictorum consensu quibuscumque personis quiscumque dignitatis, gradus, ordinis, vel conditionis forent, etiam Cardinalatus honore fulgentibus, ex quibuscumque causis etiam onerosis eatenus concessas & concessas, etiam quavis clausulas illarum ab hujusmodi revocationibus præservativas in se continentes & continentia, similibus scientia, & potestatis plenitudine pro revocatis, cassatis & annullatis perpetuo valitæ constitutionis edicto per quodam decreverat. Et ordinaverat quod Prioratus, castellaniam, empositæ & bajulivæ, præceptoris, rectoris, administrationes, officia, domus, & loca Hospitalis hujusmodi, seu eorum aliquod, vel aliqua, sub quibuscumque dictæ Sedis, vel legatorum ejus literis, sub quacumque forma, vel expressione verborum, etiam motu, & scientia similibus, ac cum quibuscumque instrumentis, efficacissimis, & derogatoriis clausulis, irritantibusque decretis, in genere, vel in specie quovis modo in antea concedendis cadere, seu comprehendi nullatenus deberent, nec illarum vigore per quempiam acceptari, aut alicui de eis provideri posset, sed illorum commissiones, & omnimoda dispositio a Magistro, Conventu, Prioribus & Castellania, empositæ hujusmodi juxta consuetudines, usus & naturas dicti Hospitalis, & illi concessa privilegia & indulta liberè pertinerent, quod fratres dicti Hospitalis inobedientes, & male solventes juxta formam stabilimentorum Hospitalis hujusmodi privationis penam incurrerent.

Coadjutorias
& alias gra-
tias non fa-
ctas fratribus
hujus Ordinis revo-
cavit.

§. 7. Et per alias, omnes & singulas speciales reservationes, coadjutorum deputatores, regressus, accessus, concessionem, gratias & facultates in aliorum quam fratrum dicti Hospitalis favorem, commodum & utilitatem quiscumque dignitatis, status, gradus, ordinis, nobilitatis, præsentis vel conditionis forent, etiam si Cardinalatus honore fulgerent, quavis etiam Imperatorum, Regum, Reginarum, Ducum, vel aliorum Principum consideratione vel intuitu, aut ex quavis quantumcumque grandi, inexcogitabili, & urgentissima causa, & respectu per Sedem præfatam eatenus concessas & factas, quæ ad finem commendæ perpetuæ, vel temporalis tendere dignoscerentur, revocaverat, cassaverat & annullaverat, illaque cassa, irrita & inania, nulliusque roboris, vel momenti esse, nec illarum etiam regressuum, seu accessuum hujusmodi, aut aliarum facultatum seu commendarum, etiam ex tunc prout ex diebus vacationis earundem, & è converso pro tempore factarum prætextu, aliqua ex præceptoris, seu aliis beneficiis Hospitalis hujusmodi acceptari, vel assequi, aut jus in re vel ad rem cuiquam acquiri potuisse seu posse decreverat.

Canfarum,
& litium to-
talem jurisdi-
ctionem M.
Magistri, &
Conventui
tribuit.

§. 8. Et per alias, Motu simili literas Martini prædecessoris hujusmodi approbans, ac innovans, omnes & singulas lites, causas, querelas & controversias inter fratres præfatos, coram quibuscumque; causarum Palatii Apostolici Auditoribus, ac eorum Locatenensium, necnon Judicibus, etiam Cardinalibus, dicta auctoritate Apostolica, vel aliter deputatis, tam in dicta Curia, quam in quibuscumque mundi partibus pendentes, ad se advocans, illas & quas antea inter fratres eisdem, & quoscumque alios super prioratibus, bajulivis, castellaniam, empositæ, præceptoris, aut beneficiis Hospitalis hujusmodi moveri contingeret, per Magistrum & Conventum præfatos, seu eorum

Commissarios, juxta ejusdem Hospitalis stabilimenta, & approbatas consuetudines, decidendas remiserat, ac Auditoribus, Locatenentibus & Judicibus præfatis, ne in causis hujusmodi ad ulteriora procederent, seu de illis, vel aliis quibuscumque in futurum quomodocumque se intromitterent, inhibuerat, ac quicquid per eos contra inhibitionem hujusmodi, scienter vel ignoranter contingeret attentari, irritum & inane decreverat.

§. 9. Ac indulgentias per quoscumque Romanos Pontifices visitantibus domos, & loca ipsius Hospitalis concessas innovaverat.

§. 10. Necnon motu & scientia similibus, omnia & singula privilegia, immunitates, indulgentias, & exemptiones secularium exactionum, ac prærogativas, & alias quascumque gratias, concessionem, facultates, libertates, & indulta terram marisque concernentia, dicto Hospitali & illius Religionis prioratibus, bajulivis, castellaniam, empositæ, præceptoris, administrationibus, officiis, capellis, oratoriis & membris, ac Magistro pro tempore existenti, & Conventui præfatis, necnon prioratibus, bajulivis, castellaniam, empositæ, præceptoris, Ecclesias, oratoria, administrationes, & membra præfata obtinentibus, per piæ memorie Clementem V. Bonifacium VIII. Callistum III. ac præfatos Sixtum, & Innocentium, necnon quoscumque alios Romanos Pontifices prædecessores nostros tunc suos, in genere, vel in specie concessas, necnon libertates, & exemptiones secularium exactionum per eos, à Regibus & Principibus, ac aliis Christianissimis obtentas, ac decimas, primitias, census, fructus, redditus, proventus, agros, possessiones, dominia, prædia, jura, jurisdictiones, aliaque mobilia & immobilia, sive in terra, vel in mari existentia, & ad Hospitalis, prioratibus, bajulivis, castellaniam, empositæ, præceptoris, & membra hujusmodi, in genere, vel in specie spectantia, per reliquas suas literas de Apostolica potestatis plenitudine approbaverat, laudaverat, ratificaverat, & confirmaverat, supplens omnes & singulos defectus si qui forsan intervenerant in eisdem, ac omnia & singula ea ab universis Christianissimis, tam Clericalis ordinis, quam temporalis potestatis secularibus, & etiam aliis regularibus personis, sub penis & censuris in eisdem contentis inviolabiliter observari voluerat.

§. 11. Necnon omnibus & singulis Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, & locorum Ordinariis, eorumque Officialibus atque vicariis, in virtute sanctæ obedientie, & sub eisdem penis similiter injunxerat, ut quascumque indulgentias, & peccatorum remissiones, per eorum dioces, & loca publica nunciari permitterent.

§. 12. Ac Leo X. quondam Fabricii de Carreto Magistro dicti Hospitalis, & præfatorum Conventus, assensum se à tunc immemorabili tempore citra in possessione, vel quasi deputandi in singulis prioratibus unum Vicarium cum facultate præceptoris, bajulivis, & alias domos Hospitalis hujusmodi conferendi, antianitates, tam speciales, quam generales, dandi & concedendi, ac pensiones seu repositiones & onera, super domibus, præceptoris, & aliis beneficiis dicti Hospitalis imponi solita à quibuscumque clericis, etiam secularibus illa in commendam obtinentibus, eorumque colonis, & inquilinis etiam laicis, eo modo quo à fratribus dicti Hospitalis exigebantur, exigendi, & cum inhabilibus ratione ætatis, & defectus natalium dispensandi existere, supplicationibus inclinatissimas, singulas, non tamen Innocentii prædecessoris hujusmodi, ac omnnes & singulas alias, tam ipsius Martini, & recolendæ memoriæ Alexandri VI. Pii II. & ipsius Julii, quam aliorum quorumcumque Romanorum Pontificum similiter prædecessorum nostrorum tunc suorum eisdem Hospitali, & Magistro pro tempore existenti, ac Conventui & fratribus concessas, & in illis contentas quascumque, etiam quoad advocacionem omnium causarum etiam super prioratibus, præceptoris, & aliis beneficiis Hospitali hujusmodi etiam in eadem

Indulgentias
Ecclesiarum
Ordinis in-
novavit.

Exemptionem à deci-
mis, & aliis
oneribus
quibuscum-
que hæcenus
concessas ap-
probavit.

Hoc plenius
concessit
Pius V. in
const. 77. Et
si cuncta, ubi
notabo.

Publicationem indul-
gentiarum
concessit.
Ad hoc vide
formam tradi-
tam à
Conc. Trid.
sess. 21. cult.

Leo X. omnes
concessit.
Mart. V. Ale.
VI. Pii II. &
Jul. II. com-
probavit.

Curia pendendum, quas ad se tunc advocavit (exceptis tunc & pro tempore per appellationem à deo ita sententia iuxta formam stabilimentorum predictorum introductis & pendentibus) per quamdam sub plumbo approbaverat, innovaverat & confirmaverat, ac perpetuè firmitatis robore obtinere, & inviolabiliter observari debere decreverat, eique omnia de novo concefferat.

§. 13. Ac Fabritio & pro tempore existenti Magistro, & Conventui hujusmodi, ut in singulis prioratibus ipsius Hospitalis unum vicarium cum facultate conferendi præceptorias, bajulivas, & alias domos Hospitalis hujusmodi deputare, antianitates, tam speciales, quam generales dare & concedere, ac pensiones seu repositiones, & onera super domibus, præceptoris, & aliis beneficiis Hospitalis hujusmodi imponi solita à quibuscunque, etiam clericis sæcularibus illa in commendam obtinentibus, eorumque colonis & inquilinis etiam laicis eo modo quo à Fratribus dicti Hospitalis exigebantur exigere; & cum inhabilibus ratione ætatis, & defectus natalium quo ad prioratus, præceptorias, & alia beneficia dicti Hospitalis dumtaxat dispensare possent.

§. 14. Ac quod verbis in ipsorum Magistri & Conventus literis circa professionis emissionem, habitus susceptionem, debitum & obsequiorum in partibus Orientalibus præstationem plena fides adhiberetur facultatem concefferat. Et nihilominus quod ipse Fabritius & pro tempore existens Magister & Conventus, præmissa omnia & singula, prout eatenus consueverant, siue contradictione alicujus facere possent.

§. 15. Quodque quæcumque literæ antianitatis, seu provisiones à Magistro pro tempore existente, & Conventu præfatis eatenus concessæ, & in posterum concedendæ eo ipso confirmatæ & approbatæ censerentur.

§. 16. Et quod provisiones beneficiorum quorumcumque dicti Hospitalis, quæ per cessationem solutionis præfati Hospitalis, vel inobedientiam dumtaxat vacassent, nunquam ad superiorem ipsius Leonem prædecessorem, & Sedem præfatam devolverentur, quoad hoc ut dictus Magister pro tempore existens impediret quo minus illa quandoque libere conferre possent.

§. 17. Quodque omnes & singulæ donationes & alienationes bonorum immobilium dicti Hospitalis, seu ejus locorum in posterum faciendæ dumtaxat, ipso jure nullæ, nulliusque roboris, vel momenti existèrent.

§. 18. Et quod clausula cum derogatione privilegiorum dicto Hospitali concessorum latissime extendenda, & additione illorum pro expressis, tam in quibuscunque commissiõibus justitiam concernentibus, quam in quibuscunque gratiosis supplicationibus, tunc & pro tempore signatis non operaretur, nec ejus vigore in causis seu literis Apostolicis super ipsis supplicationibus conciliendis privilegia ipsa ultra quam in supplicationibus narrata essent narrari possent, neque illis si prætextu dictarum clausularum narrarentur derogatum censeretur, statuerat, & ordinaverat. Dicens sic per quoscunque Judices, etiam causarum Palatii hujusmodi Auditores, sublata eis quavis aliter judicandi & interpretandi facultate, judicari debere, irritum quoque & inane si fecus super his à quoquam quavis auctoritate scierit, vel ignoranter contingeret attentari.

§. 19. Et per reliquis in forma brevis literas Motu simili quoscunque gratias expectativas, speciales & generales reservationes, etiam in mente sua, & in nullius, seu quarumvis personarum favorem, ac uniones, annexiones, & incorporationes, suppressiones, extinctiones, & applicationes, ac uniendi, annexendi, incorporandi, & commendandi facultates & mandata, necnon coadjutorum deputaciones, etiam de consensu, & alias concessiones & dispositiones, de quibuscunque prioratibus, bajuliviis, castellania, empositæ, præceptoris, cameris magistratibus, & aliis beneficiis dicti Hospitalis vacaturis, nec-

non specialium reservationum, unionum, annexionum, incorporationum, suppressionum, extinctionum, facultatum, mandatorum, coadjutoriarum, regressuum, & accessuum, ac aliarum dispositionum hujusmodi executiones, ampliationes, revalidationes, reintegrationes, repositiones, restitutiones, & super illis & eorum efficacia, & quod illorum revocationibus, modificationibus, suspensionibus, restitutionibus, & ad jus commune reductionibus per Leonem prædecessorem & Sedem præfatos facti non includerentur declarationes, & intentionis mentis suæ attestaciones, quæ quorumvis etiam Imperatoris, Regum, Reginarum, Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalium, Prælatorum, Ducum, Principum, Marchionum, Universitatum, studiorum, jurium, cessorum vel oblatorum, etiam pro sedandis libris, aut servitoriis & obsequiis Leoni prædecessori, & Sedi præfatis etiam pro fide catholica impensorum, & damnorum eis etiam per infideles illatorum, seu quavis alia quantumcumque grandi consideratione pro quibuscunque personis, cujuscunque status, gradus, ordinis, & conditionis existentibus, & quacunque Ecclesiastica, etiam Cardinalatus, & mundana dignitate fungentibus, etiam cum Motus propriis, & certæ scientiæ, ac plenitudine potestatis, & quibuscunque præservatoriis ac aliis etiam derogatoriis derogatoriis, fortioribus & insolitis clausulis à Leone prædecessore, & Sede prædictis, ac ejus Legatis etiam de latere, & Nunciis, etiam cum eorumdem Legatorum potestate, quavis auctoritate eatenus quomodolibet emanaverant, quoad ea in quibus nondum vere fuerant effectum sortita, expresse revocaverat, & voluerat illas, & quas emanare contingeret in futurum, similes & dissimiles speciales reservationes, uniones, annexiones, incorporationes, suppressiones, extinctiones, applicationes, nominationes, nominandique, reservandi, & conferendi facultates, mandata, coadjutorum deputaciones, regressus, & accessus hujusmodi, & super illis provisiones, ampliationes, reintegrationes, restitutiones, repositiones, & declarationes, etiam expressa posteriorum literarum hujusmodi derogatione, etiam si in eisdem quæ emanaverant, & in futurum emanarent, specialibus reservationibus, unionibus, annexionibus, incorporationibus, suppressionibus, extinctionibus, nominationibus, mandatis, coadjutoris, regressibus, accessibus, & eorum extinctionibus, ampliationibus, revalidationibus, reintegrationibus, repositionibus, restitutionibus, & declarationibus, ac si super illis confectis literis contineretur expresse, quod in aliquibus specialibus, seu generalibus revocationibus, suspensionibus, modificationibus, & restrictionibus, quæ pro tempore fierent, nullatenus includerentur, nisi de personarum quas tunc concernebant, & in futurum concernerent, ac quarum consideratione emanaverant, & in posterum emanarent, nominibus, cognominibus, dignitatibus, officiis, ac causis propter quas eis concessæ erant, seu concederentur, expressa mentio fieret, idque ipsis personis intimaretur per diversas literas sub diversis datis, cum certi temporis intervallo inter datas hujusmodi, personarum earumdem in revocationibus hujusmodi expressus accederet assensus, intelligerenturque gratiæ ipsæ toties revalidatæ, & in pristinum statum repositæ, quoties eas revocari, restringi, & modificari contingeret, ac pro infectis, & non concessis haberi, & viribus omnino carere, etiam si per eas quæ emanarent speciales reservationes, & alias gratias viribus vacuatas hujusmodi eisdem posterioribus literis cum earum Dat. insertionem specificam quomodolibet derogari videretur, & ne similes reservationes ac gratiæ & priorum revalidationes quas ab ipso Leone prædecessore, etiam cum posteriorum literarum hujusmodi expressa derogatione, ac supra dictis, aliisque efficacioribus, fortioribus, & insolitis clausulis in posterum emanare contingeret, contra præmissorum tenorem fortiter effectum, sed quoties emanarent toties revocarentur, easque posteriores literas, ac omnia & sin-

Facultatemque M. Mag. & Conventui dedit, Vicarios in Prioratibus deputandi, cum facultatibus hic enunciatis.

Tum quoad facultatem dispensandi, vide constit. 115. Clementis Octavi. Quæcumque.

Literisque M. Mag. & Conventus credi iussit, quo ad professionis emissionem, &c.

Ejusque litteræ antianitatis & provisiones, eo ipso approbatæ censentur. Beneficiaque vacantia, ut hic non devolvantur ad Papam.

Alienationes non fiant.

Clausula Et cum derogatione non operetur ultra expressa.

Expectativasque reservationes, &c. concessas, & concedendas ipse idem Leo revocavit.

gula in eis contenta, ad id ut omnes & singulas speciales reservationes, uniones, coadjutorias, regressus & accessus, ac alias gratias prædictas semper includerent, de qualibet die Pontificatus sui repetierat, & innovaverat, decernens repetitionem, & innovationem hujusmodi eis, quorum interest de singulis diebus dicti Pontificatus prout magis expediret, in omnibus, & per omnia perinde, ac si eisdem diebus ab ipso Leone prædecessore actu emanassent, suffragari, & sic iudicari debere, ac quicquid secus attentari contingeret, irritum, & inane decreverat.

Clement. VIII. omnia supra dicta Privilegia & gratias confirmavit, & familiares, & famulos illis uti posse decrevit.

§. 20. Et cum nefandissimus Christiani nominis hostis Turcarum tyrannus validissima classe maritima, maximoque exercitu terrestri paratis, insulam Rhodi totius Christianitatis specimen acerrimis & multiplicatis conatibus invasisset, ac crudeli & inaudita obsequio affecisset, tandem insulam, & civitatem Rhodi hujusmodi vi & armis expugnasset, ac literæ, libri, & munimenta, seu documenta antiqua privilegiorum, & indultorum eis à dicta Sede concessorum perissent, & deperdita fuissent, similis memoriz Clementis Papa VIII. pariter prædecessor noster, motu, & scientia, ac potestatis plenitudine similibus, omnia, & singula privilegia, jurisdictiones, facultates, immunitates, concessiones, indulgentias, libertates, prærogativas, gratias, exemptiones, favores, & indulta dicto Hospitali, ac illius bajulivis, prioribus, præceptoribus, domibus, hospitalibus, Ecclesiis, capellis, iocis & membris, necnon Magistro, bajulivis, prioribus, præceptoribus, militibus, fratribus, & personis, ac eorum vassallis, subditis & servitoribus pro tempore existentibus eatenus per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, tunc suos, successivis temporibus, & demum per Leonem prædecessorem, & Sedem præfatos sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque clausulis, & decretis quomodolibet concessa, approbata & innovata, per quasdam approbaverat, confirmaverat, & innovaverat, ac valida & efficacia existere, necnon perpetua roboris firmitate subsistere, & inviolabiliter observari, ac Magistro, bajulivis, prioribus, præceptoribus, militibus, fratribus, personis, vassallis, subditis, & servitoribus præfatis suffragari debere decreverat, ac omnia & singula, prout per Leonem & alios prædecessores, ac Sedem præfatos concessa fuerunt, ita ut Magister, bajulivi, priores, præceptores, milites, fratres, personæ, vassalli, subditi, & servitores illis libere perpetuo uti possent de novo.

Jurisdictionemque etiam meri, & mixti imperii in personis, & bona Ord. M. Mag. & Conventui concessit. Tu de hac jurisdictione, vide etiam hic infra hujus Pii IV. Pont. extensionem.

Facultatem inobedientes privandi, &c. dedit.

§. 21. Necnon tunc, & pro tempore existentem Magistro, Conventui Hospitalis hujusmodi juxta illius stabilimenta, & laudabiles consuetudines, ac mores in bajulivis, prioratus, castellaniæ, emptæ, domos, hospitalia, membra, & loca, & bona, quæcumque, necnon quoscumque bajulivos, priores, castellanos, emptæ, præceptores, fratres, & personas Hospitalis & Religionis hujusmodi, ac illorum vassallos, subditos, & servitores ubicumque, tam citra, quam ultra montes, tunc & pro tempore constitutos, & commorantes, qui omnes eidem Magistro, & subdelegatis ab eo firmiter; tam personaliter, quam realiter omni exceptione cessante, & quocumque à Clemente prædecessore, vel Sede prædictis, obtento vel obtinendo indulto non obstant. parere & obedire tenerentur, plenariam & omnimodam, etiam meri & mixti imperii jurisdictionem, & superioritatem.

§. 22. Ipsique Magistro contra rebelles, & suis mandatis non obediens, etiam vigore literarum Apostolicarum, etiam in forma brevis ab ipso Clemente, & successoribus suis emanarunt, servatis quatuor terminis ad docendum se paruisse, & satisfecisse in loco Conventus Hospitalis hujusmodi post legitime executam primam citationem, ad multam sive poenam personaliter, juxta mores & stabilimenta prædicta, seu etiam privationem habitus, aut beneficiorum, domorum & prædiorum per eos obtentorum procedendi, vel etiam, si magis expedire videretur, beneficia, domos & prædia ipsa ad manus

suas, seu receptorum dicti Hospitalis reducendi, & donec ipsi inobedientes contumaciam purgarent, vel debita onera persolverent, sive sæculares, aut alterius Ordinis regulares beneficia dicti Hospitalis possidentes, forent pro suo arbitrio retinendi, illorumque fructus, redditus & proventus, arrendandi & percipiendi, necnon cameras magistræ prædictas ad se recipiendi, sive illas solitis pensionibus pro sue voluntatis libito imponendis & moderandis, onerandi, & aliis de illis tanquam de præceptoris & prædis mensæ magistrali unitis, & incorporatis disponendi.

§. 23. Ac in Romana Curia procuratorem generalem, cum generali vel speciali, & limitata potestate, & facultate constituendi, seu deputandi. Et in eadem Curia per se seu dictum procuratorem ad id potestatem à Magistro & Conventui præfatis habentem, quæcumque ejusdem Hospitalis beneficia, cujuscumque qualitatibus existentia apud Sedem prædictam quomodolibet (præterquam per resignationem in manibus suis, & successorum suorum Roman. Pontificum) pro tempore vacantia, juxta ipsius Hospitalis stabilimenta libere conferendi. Et tam Magistro, quam Conventui præfatis, etiam de illis, de quibus eatenus dispositum fuerat de novo, ac aliis beneficiis hujusmodi, etiam tanquam privatis prædis in titulum perpetui beneficii Ecclesiastici, seu etiam ad nutum, aut amovibilitatem, uti vel diversis personis assignari solitis, etiam dictæ Sedi reservatis, seu alias affectis, aut ad Sedem ipsam devolutis, libere providendi, & illa uniendi, dismembrandi, & aliis de illis disponendi, necnon antianates, tam generales, quam speciales super eisdem beneficiis fratribus ejusdem Hospitalis concedendi, ac resignationes dictorum beneficiorum recipiendi & admittendi, illaque resignantibus titulum, seu denominationem, ac omnes eorum fructus, seu illorum partem, aut super illis quæcumque pensiones annuas, quæ etiam transirent ad successores in eis, etiam sub censuris & penis Ecclesiasticis etiam privationis in talibus apponi solitis, ad vitam vel ad tempus reservandi, concedendi, constituendi & assignandi, & quod altero decedente, superstes in illius possessione succederet indulgendi, seu regressum ad illum concedendi.

§. 24. Ipsique Magistro & Conventui, privilegia, exemptiones & indulgentias eis, dicto Hospitali concessa ubique locorum, etiam absque alicujus Ordinarii licentia, sub sigillo tamen prioris illius Provincie, vel eorum conservatoris in ea degentis, publicandi & quæstandi, seu elemosynas & Confraternitatum obventiones quærendi, & recipiendi.

§. 25. Necnon cæmeteria in eorum parochialibus Ecclesiis habendi, ac quorumcumque Christi fidelium cadavera, etiam si excommunicati, vel interdicti forent, dummodo interdictum causam non dedissent, salvo jure rectori parochiano debito, absque aliquo onere & solutione Episcopo faciendi, recipiendi & sepeliendi.

§. 26. Legata & donata, tam inter vivos, quam quælibet ultima voluntate exigendi & percipiendi.

§. 27. Necnon bajulivis, prioribus, præceptoribus, militibus, fratribus & personis præfatis quæcumque Ecclesiastica sacramenta, ac omnes etiam sacros ordines à quocumque mallent catholico Antistite gratiam, & communionem dictæ Sedis habente nihil oblatum, vel soluto recipiendi.

§. 28. Et tam ipsius, quam eorum familiaribus arma quæcumque, & ubicumque locorum pro sui defensione, & hostium dictæ Sedis offensione gestandi.

§. 29. Necnon capellanis ejusdem Hospitalis, bajulivorum, priorum, præceptorum, militum, fratrum, personarum, vassallorum, subditorum & familiarium prædictorum confessiones audiendi, & penitentiam salutarem eis injungendi, ac Eucharistiæ & alia sacramenta Ecclesiastica ministrandi.

§. 30. Necnon tempore interdicti (dummodo illi causam non dedissent) excommunicatis & interdictis exclusis clausis januis, & submissa voce, Missas & alia divina officia celebrandi.

§. 31. Necnon quibuscumque Christi fidelibus in quibus-

Procuratoremque in Rom. Curia cum facultate beneficia etiam reservata, &c. præterquam in manibus Papæ resignata conferendi, &c.

Indulgentias publicandi, & quæstandi, & Mag. & Conventui licentiam dedit. Tu in hoc attende Conc. Trid. sess. 11. c. ult. Mortuosque in Ecclesiis Ordinis sepeliendi, &c. Tu vide Conc. Trid. sess. 15. c. 13. Legata recipiendi.

Sacros Ordines à quocumque Episcopo consequendi.

Tu serva Conc. Trid. sess. 7. cap. 11. Arma gestandi.

Confessiones audiendi, & sacramenta ministrandi.

Tu attende Bull. 115.

Clem. VIII. Interdicti tempore celebrare.

Tu vide Conc. Trident. sess. 24. cap. 12. Novas præ-

buf-

1560.
ceptorias ab
Ordinario-
rum supe-
rioritate
exemptas
erigendi.

Donationes
et alios
damnosos
contractus
revocandi.

Regressus
quoscumque
idem Cien-
tium. revoca-
vit.

Adversus
contractus
laivos in
integrum
restituunt.

Lites omnes
etiam in
Rom. Curia
verrentes,
M. Magistro
commisit.
Tum hoc vi-
de etiam
luc inf.

Exemptio-
nem à supe-
rioritate

busvis civitatibus, locis & dioc. præceptorias, domos & hospitalia sub dependentia & subjectione dicti Hospitalis per illius fratres obtinenda, quæ eisdem privilegiis, immunitatibus, indulgentiis, concessionibus & indulgiis, quibus alia dicti Hospitalis præceptorie, domus & hospitalia, utebantur, potiebantur, & gaudebant, uterentur, poterentur & gauderent, assignata illis congrua dote, Ordinarium, locorum, & quorumvis aliorum licentia minime requisita, & nulla præterea in illis, Ordinariis ipsis jurisdictione, aut oneris imponendi facultate reservata, constitui, & erigi facienda, plenam, & liberam facultatem & auctoritatem concesserat.

§. 32. Quaecumque donationes, concessiones, locationes, investituras & alias alienationes censuum, reddituum, jurium, jurisdictionum, & bonorum quorumcumque ad bajulivas, priores, castellaniam, empositæ, præceptorias, domos, hospitalia, beneficia, & loca Hospitalis hujusmodi pertinentium, in illorum læsionem, jacturam, vel detrimentum etiam per personas dictæ religionis, etiam cum renunciationibus, pactis, juramentis & poenis desuper impostis & adjectis, ac instrumentis, & literis desuper confectis, & confirmationibus forsan inde secutis etiam de licentia dictæ Sedis, absque tamen consensu seu expressa licentia Magistri & Conventus prædictorum, quacumque præscriptione, seu longissima pacifica possessione, & detentione non obstantibus.

§. 33. Necnon quoscumque accessus, ingressus, & regressus ad coadjutorias ad bajulivas, priores, castellaniam, empositæ, præceptorias, domos, hospitalia & alia beneficia hospitalis hujusmodi, præterquam ex causa onerosa, & de consensu dictorum Magistrum & Conventus etiam per Clementem, & prædecessores suos præfatos concessos cassaverat, revocaverat, annullaverat, & irritaverat, nulliusque roboris vel momenti fore, & pro infectis haberi decreverat.

§. 34. Ac census, redditus, jura, jurisdictiones, & bona alienata hujusmodi, ac etiam per quoscumque etiam sæculares occupata, usurpata, & detenta, ad jus & proprietatem dicti Hospitalis seu illius bajuliviarum, prioratum, castellaniam, empositæ, præceptoriarum, domorum, hospitalium, & beneficiorum prædictorum reducerat, illaque in integrum adversus concessionem, donationem, & alias quaslibet alienationes prædictas, necnon investituras illarum prætextu quomodolibet quavis auctoritate factas & concessas, in integrum, ac in pristinum, & eum statum in quo antea erant, restituerat, reposituerat, & plenarie reintegraverat, illarumque detentores cujuscumque dignitatis, status, gradus, ordinis, & conditionis existentes ad illorum relaxationem per censuras Ecclesiasticas, & alia juris remedia cogi, & compelli posse voluerat, & similes alienationes de cetero sub excommunicationis læte sententiæ, & privationis beneficiorum per eos obtentorum poenis per contravenientes eo ipso absque aliqua declaratione incurrendis fieri prohibuerat, & si fierent, illas viribus omnino carere decreverat.

§. 35. Necnon omnes & singulas lites, etiam in dicta Curia, & Rotæ Auditorio super quibusvis dicti Hospitalis beneficiis inter quascumque personas motas, & in quibusvis instantis pendentes, in quibus conclusum non fuerat, ad se advocaverat, & illas eisdem Magistro & Conventui per eos juxta formam stabilimentorum, & laudabilium consuetudinum prædictorum, & si eis videretur, tam in eadem Curia, quam extra eam, in statu debito reassumendas, & decidendas commiserat, eisque quorum interest etiam per eisdem publicum locis publicis assignandum (constito tamen summarie de non tuto accessu ad eas) citandi, ac quibus & quoties opus foret inhibendi, etiam sub censuris & poenis Ecclesiasticis, etiam contra condemnatos, etiam in Curia prædicta, tam realiter, quam personaliter exequi mandaverat.

§. 36. Et insuper Hospitalia, ac illius bajulivas, priores, castellaniam, empositæ, domos, cameras, hospitalia, & loca quaecumque, necnon magistrum,

bajulivos, empositæ, priores, præceptores, milites, & personas, ac eorum subditos, vassallos, colonos, & servitores, tunc & pro tempore existentes etiam Presbyteros curam animarum exercentes, quâvis illa exercebant, & in illorum obsequiis forent, ac illorum res, animalia, prædia, domos, molendina, & bona quaecumque quæ obtinebant & possidebant, ac in futurum canonice obtinerent, & possiderent, sub beati Petri, & dictæ Sedis, atque sua protectione susceperat, ac lib omni jurisdictione, correctione, onere, statutis, bannis, dominio, superioritate, & potestate quorumcumque Patriarcharum, Archiepiscoporum, Episcoporum, & Prælatorum, necnon quorumcumque temporalium dominorum quavis potestate, etiam Imperiali, Regali & Ducali fulgentium, ac Universitatum & illarum regentium etiam, præterquam dicti Hospitalis Ordinarium tam spirituum, quam temporalium ubicumque, tam citra, quam ultra montes, & mare constitutorum, cujuscumque dignitatis, status, gradus, ordinis & conditionis existentium, illorumque Vicariorum & Officialium, Locatentium, & Judicum, tunc & pro tempore existentium quorumlibet.

§. 37. Necnon ad solutionem & exactionem passagii, arreragii, gabellæ, dati, tractæ, collectæ, procuratoris jucundi adventus, jurium etiam synodali, censuum & decimarum, etiam novalum, & etiam hortorum, pratorum, piscationum, & molendinorum, ad quæ cuilibet accessus nullatenus, & directe vel indirecte prohiberi posset, & terrarum quas per se ipsos, vel alios eorum nominibus etiam colonos, arrendatarios & emphyteutas excolebant, & de quibus fructus percipiebant, & cujusvis alterius oneris personalis, seu mixti, ordinarius ubicumque, & ex quacumque causa impositi, vel imponendi pro tempore liberaverat & exemerat, ac sibi & dictæ Sedi immediate subjecerat, illosque & illa, etiam si in quibuscumque statutis, literis, constitutionibus, & regulis, etiam per Clementem prædecessorem, & Sedem prædictos pro tempore editis, nominatim specialiter & expresse gravarentur, seu onerarentur, semper liberos, immunes & exemptos, ac exceptos, & ipsi Clementi prædecessori immediate subiectos esse decreverat. Ita quod Archiepiscopi, Episcopi, Praelati, Ordinarii, Vicarii, Officiales, Locatentis, & Judices præfati, etiam ratione delicti vel contractus, seu rei de qua ageretur, ubicumque committeretur delictum, iniretur contractus, aut res ipsa consisteret, nullam in eos vel ea, jurisdictionem, correctionem, visitationem, superioritatem, dominium, partitionem, exactionem, seu potestates exercere, aut excommunicationis, aliusve sententias, censuras & poenas promulgare, aut etiam ratione personarum vel rerum, animalium, & bonorum lucrum ad aliquam solutionem pontium, fontium, furnorum, murorum, seu etiam aliarum Ecclesiarum quam dictæ religionis, etiam si forsan eatenus per abusum, seu alterius privilegium, aut negligentiam, etiam per longissimum tempus taliter observatum non fuisset. Quæ omnia etiam præscriptiones, nullo pacto saltem in posterum quo minus hujusmodi exceptionibus uti possent, obstat voluit, & decrevit eos coartare, aut alii quicumque cujuscumque Ecclesiasticæ vel mundanæ dignitatis, aut præcipientis, status vel conditionis existentem, etiam locis & terris S.R.E. etiam immediate subiectis, & ad instantiam cujuscumque Principis, seu Communitatis, sub excommunicationis læte sententiæ, & quadrupli ultra damna & expensas restitutionis poenis per contravenientes eo ipso incurrendis, eos in judicio & extra, super præmissis, & eorum usu, seu possessione, vel quasi, directe vel indirecte, quovis quæsito colore, vel ingenio, molestare, impedire, vexare, aut alias quomodolibet impetere præsumere, debere, seu etiam valere.

§. 38. Et insuper statuerat & ordinaverat, quod iustpatronatus, & præsentandi personas idoneas ad bajulivas, priores, præceptorias, hospitalia, membra, alia beneficia & loca Hospitalis hujusmodi, nisi ratione fundationis, aut donationis saltem ad tertiam partem illorum fructuum, quo casu liceat Magistro &

1560.

Ordinario-

rum con-

cessit.

Eoc intel-

lige jux-

tâ. Pri V.

n. 136. Ex-

posuit. &

Greg. XIII.

n. 63. Cir-

cum specta-

Exemptio-

nemque a

solutio ac

quodcum-

que onerum

dedit.

Hanc ap-

probavit

Pius V. in

constit. 77.

ubi notabo.

Iustpatrona-

tus ex fun-

dacione

donatione

ad tertiam

partem

creari, &

tunc facit.

tatem redi-
mendi Ordini
concessit.

Pensiones
aliis quam
fratribus
etiam per
Sedem A-
post. abque
consensu M.
Magistro as-
signari pro-
hibuit.

Beneficia,
& pensiones
inf. sex men-
ses professio-
nem regula-
rem huius
Ord. facere,
& habitum
suscipere
debere iussit.
Hoc idem
Gregor. XIII.
latus defini-
vit in con-
stit. 60.

Quicumque
per fratres
in Conserva-
tores electi,
teneantur
eos tutari
prout si
Conservato-
res deputati
fuissent.

Capellanos
Ordinis tan-
tum ejus pa-
rochialibus
deservire, &
per Ordina-
rios gratis
ad hoc reci-
pi precepit.

Habitu su-
scipientes, &
non alios,
privilegiis
Ordinis
gaudere vo-
luit.

Manus vio-
lentas in
confignien-
tes ad Ec-
cles. Ordinis
iurici prohi-
buit.
Litteris suis

Conv. uti prefatis, si dicta eorum beneficia & loca Hospitalis huiusmodi à dicto iurepatronatus libera-
re velint, aut dotantibus bona restituere, seu illo-
rum pretium persolvere, ac ex tunc bajulivas, prio-
ratus, pr. ceptorias, hospitalia, membra, & benefi-
cia huiusmodi c. c. ferre.

§. 39. Quodque super eorum fructibus, rediti-
bus, & proventus aliquæ pensiones annuæ, qui-
busvis personis secularibus, seu alterius Ordinis,
quàm dicti Hospitalis regularibus sine expresso con-
sensu Magistri & Conventus prædictorum, etiam
per Sedem prædictam reservari, constitui, & assigna-
ri nullatenus possent, & si reservarentur, concede-
rentur, constituerentur & assignarentur, reservatio-
nes, constitutiones, assignationes & concessiones
huiusmodi nemini suffragarentur, nec propterea
aliquas censuras, vel penas incurrere possent.

§. 40. Quodque omnes & singuli eorum bajuliva-
rum, prioratum, præceptorium, domorum & bene-
ficiorum in vim dictarum collationum possessores
faculares, aut alterius Ordinis regulares, seu pen-
siones super illorū fructibus, redditibus & proventus
huiusmodi eatenus etiam per Sedem eandem reser-
vatas percipientes, illas & alia infra sex menses à die
intimationis dictarū literarū in manibus Magistri &
Conventus prædictorum iuxta formam stabilimen-
torū dictæ religionis dimittere, & transferre, seu il-
larū cassationi consentire tenerentur, alioquin benefi-
cia & pensiones huiusmodi nisi illa possidentes, & il-
las percipientes infra dictum tempus habitum susci-
perent, & professionem regularem ipsius Religionis
emitterent, lapsis mensibus ipsis vacarent, ac cassæ
& extinctæ essent, & esse censerentur eo ipso.

§. 41. Ac quod quæcumque personæ in dignitate
Ecclesiastica, & ubilibet constitutæ, per eosdē bajuli-
vos, priores, præceptores & fratres, ac eorum singu-
los pro tempore eligendæ, sub excommunicationis
latæ sententiæ pena ipsos adversus inferentes eis in-
iurias, seu gravamina vel damna, in personis, rebus
& bonis, manutenerent, conservare, & quæcūque iu-
ridictionem exercere, necnon sententias, censuras &
penas Ecclesiasticas contra rebelles, ac inobedientes
cū effectu promulgare, necnon omnibus facultatibus
& concessionibus quibuscvis Conservatoribus eis per
quascumque literas Apostolicas eatenus deputatis
quomodolibet concessis, uti, potiri & gaudere debe-
rent, in omnibus, & per omnia, perinde ac si per eas-
dem literas Conservatores & Iudices deputati fuissent.

§. 42. Et quod presbyteris, qui in dicta Religione
professum non emississent, nisi de expressa licentia
vel consensu Magistri seu priorum, præceptorū, vel
fratrum, quos id tangeret, ad deserviendū parochia-
libus & aliis Eccles. aut capell. ipsius Relig. nullaten.
admitterentur, sed in quibuscumque parochialibus &
aliis Ecclesiis, ac capellis Hospitalis huiusmodi, capel-
lani ejusdem Religionis per locorum Ordinarios sub
eandem excommunicationis latæ sententiæ pena si
contrafacerent eo effectu incurrenda ad requisitio-
nem, seu præsentationem dictorū bajulivorū, prio-
rum, præceptorum & fratrum absque aliqua exactione,
& oneris impositione recipi & admitti deberent.

§. 43. Quodque illi dumtaxat fratres privilegii
prædicti gauderent, qui à præfato Magistro, seu de
ejus licentia habitum susceperunt, & professionē e-
mississent, seu de habitu suscipiendo, & professione
huiusmodi emitenda infra certū tempus arctati fuiss-
sent, nullusque bajulivorum, priorum, præceptorum,
& fratrum prædictorum absque mandato, seu licentia
præfati Magistri, aut saltem sui prioris, seu procurato-
ris ipsius Hospitalis in dicta Curia existentis, privi-
legii præfatis in eadē Curia uti valeret, nec illa abs-
que huiusmodi licentia vagantibus suffragarentur.

§. 44. Ac manus violentas in eos, qui ad Ecclesias,
seu domos ejusdem Religionis pro sua salute con-
fugerent, per quempiam injici, sub excommunica-
tionis latæ sententiæ pena prohibuerat.

§. 45. Decernentes litteris prædictis, & in eis cōten-
tis quibuscumque, etiā per quascumque literas Apos-
tolicas etiā quasvis clausulas generales vel speciales,

etiam derogatarum derogatorias, efficaciores &
insolitas, ac etiam irritantia decreta sub quacumque
verborum expressione, in se continentes, nullatenus
derogari posse, nec derogatum censeri, ni tenor illa-
rum de verbo ad verbum nihil penitus omisso in-
sertus, ac huiusmodi derogationis consistorialiter fa-
ctæ, & per trinas distinctas literas eundem tenorē
continentes, tribus similibus distinctis vicibus, Ma-
gistro & Conventui præfatis legitime intimatæ, &
insinuatæ forent, ac ipsorum Magistri & Conventus
ad id expressus accederet assensus, & aliter factas de-
rogationes nemini suffragari, ac Magistrum, & Con-
ventum præfatos ad parendum literis derogatoriis
huiusmodi, & decretis, super illis processibus, & illo-
rum executoribus & subexecutoribus, eorumque
mandatis, & monitionibus minime teneri, & literarum
huiusmodi executionē omnino impedire, nec ratione
resistentiæ huiusmodi censuris Ecclesiasticis, per eosdē
executores & subexecutores latis innodari posse.

§. 46. Et sic in præmissis omnibus, & singulis per
quoscumque iudices & commissarios, quavis auctori-
tate fungentes, tam in dicta Curia, quàm extra eam
pro tempore deputatos, sublata eis & eorum culti-
bet quavis aliter circa præmissa iudicandi, & inter-
pretandi facultate & auctoritate iudicari, & definiti
debere, ac irritum & inane si secus super præmissis
omnibus, vel eorum aliquo à quocumque quavis au-
toritate scienter, vel ignoranter cōtingeret attentari.

§. 47. Necnon literas etiam pie memorie Alexan-
dri V. Gregorii IX. Bonifacii VIII. Clementis etiā
V. Innocentii IV. & Callisti III. Romanorum Pon-
tificum etiā prædecessorum nostrorum, tunc suorum
eidē Hospitali, etiā super decimis ex eorum terris,
possessio-nibus & animalibus non solvendis concessas,
per alias suas literas approbaverat, ac quoad
terras & possessiones ad quantumcumque longum
tempus non tamen in perpetuum feudum, seu em-
phyteusum concessas observari debere decreverat.

§. 48. Et per alias motu simili, omnes & singulas
causas, tam inter priores, bajul. vos, castellanum, em-
polite, præceptores, fratres, & milites Hospitalis hu-
iusmodi, quàm etiam pro communi thesauro prædic-
to agente, tam ratione prioratum, bajulivarum,
præceptoriarum & domorum Hospitalis, huiusmo-
di, quàm etiam bonorum, & pecuniarum etiam dicti
thesauri, seu delictorum, etiam ex adverso aliqui
clerici faculares, vel regulares, aut laici existerent,
& adive, seu passive in dictis causis quomodolibet in
quacumque instantia intervenissent, & cum oppor-
tuna derogatione stabilimentorum, usum, morum,
consuetudinum & privilegiorum dicti Hospitalis,
etiam ab eodem Clemente prædecessore concessio-
rum, etiā prætextu juratæ perhorrescentiæ (dum-
modo non ex causa denegatæ iustitiæ, aut perperā
observatorum stabilimentorum processissent, commi-
ssas, & in futurum etiā cum similibus derogatio-
nibus pariter committendas, ad se in terminis in quib-
us reperirentur, etiā executivis advocaverat, illas-
que in eisdem terminis per Magistrum, ac Con-
ventum præfatos in eorum cōsilio ordinario, five in ge-
nerali Capitulo, ut moris erat, & eorum stabilimenta,
ac consuetudines exigebant, ipsaque privilegia ex-
postulabant, cum omnibus & singulis illarum inci-
dentibus, dependentibus, annexis & connexis,
tam cōiunctim, quàm divisim, etiā sine aliqua regi-
strum in huiusmodi causis factorum exhibitione &
productione, cognoscendas seu reassumendas, & sine
debito terminandas, prout tunc Magistro dicti Hos-
pitalis videretur expedire, cōmiserat & mādaverat.
Inhibens ex tunc iudicibus, & partibus extra Con-
ventum, & suos iudices contra formam stabilimen-
torum prædictorum litigantibus, ne ex tunc de ce-
tero in dictis causis quomodolibet procedere præsu-
merent, decreto irritanti desuper adjecto.

§. 49. Et per reliquas suas in forma brevis literas,
omnes & singulas speciales & generales, etiā menta-
les reservationes, expectativas, mādata de providen-
do, concessiones, coadjutorias, uniones, etiā perpetuas, necnō alias præventivas gratias, & literas Apos-
tolicas

nonnulli, ut
hic derogari
posse idem
Clemens
VIII. vertit.

Decretum
irritans ap-
positum.

Alexandri
V. Greg. IX.
Bonif. VIII.
Clement. V.
Innocent. IV.
& Callist. III.
exemptio-
nem à deci-
mis & cet.
confirma-
vit, & am-
pliat. Hoc
mox in f. a
hic Pius IV.
extendit.
Litem om-
nium perlo-
narum Or-
dinis M.
Mag. & Con-
ventui co-
gnitionem
dedit, duob.
bus exceptis
casibus.

Expectari-
vas quoque
& omnes
gratias præ-
ventivas a-
liis quàm
personis
Hospitalis
(super il-
lis benefi-

etis concessas etiam per Sedem Apostolicam revocavit, & illis non obstantibus M. Magistrum & Conventum de illis disponere potest declaravit.

[Exemptionem à solutione decimarum. servari iussit.]

De hac vide lationem const. 77. Pii V. Et si cuncta, ubi notabo.

stolice super prioratus, & Castellania, empositae, bajulivatus, præceptoris, rectoris, domibus, locis, & membris, ac aliis beneficiis dicti Hospitalis quovis modo nuncuparentur, etiam in Castellæ & Legionis, ac Valentia regnis, ac principatu Catalonia, quomodocumque & qualitercumque, etiam cum quibuscvis fortissimis, & insolitis, etiam derogatoriis derogatoriis, clausulis, irritantibusque & aliis decretis, ac inhibitionibus quibuscvis, etiam non dicti Hospitalis personis cujuscumque dignitatis, status, gradus, ordinis, conditionis, præeminentiae forent, etiam Cardinalatus honore fulgentibus & functionis, etiam ex quibuscvis iustissimis & urgentissimis causis, quam per Clementem prædecessorem, & Sedem præfatos, tam in genere, quam in specie concessas & concessa, & qualvis etiam præventivas & restructorias, ac præservativas clausulas in se continentes, & continentia, eorumque omnium vim & effectum revocaverat, cassaverat, & annullaverat, nulliusque roboris vel momenti fore & esse, ac nemini suffragari posse neque debere, nec per ea, cuiquam in prioribus, castellania, empositae, bajulivatus, præceptoris, dignitatibus, domibus, locis & membris, ac aliis beneficiis Hospitalis huiusmodi, vel ad illa jus acquiri potuisse vel posse, neque coloratum titulum possidendi, sed illis non obstantibus Magistrum & Conventum præfatos, cõjunctim vel divisim juxta cõsuetudines & stabilimenta huiusmodi Hospitalis de Castellania, empositae, bajulivatus, præceptoris, domibus, locis & membris, ac aliis beneficiis Hospitalis huiusmodi libere disponere potuisse & posse, & sic iudicari debere, ac quicquid fecus super his attentari contingeret, irritum & inane decreverat.

§. 50. Similis memorie Paulo Papæ III. similiter prædecessori nostro pro parte tunc Magistri, ac priorum, bajulivorum, præceptorum, militum & fratrum dicti Hospitalis exposito, quod etiam eisdem Magistro, prioribus, præceptoribus & fratribus, à dicta Sede concessum fuerat, ut in parochiis & locis in quibus veteres decimas percipiebant, similiter perciperent (licet de concessione huiusmodi, cum eorum munimentis in prædicta expugnatione perissent, ut præfertur, docere non possent) præfatus Paul. prædecessor, Magister, priorum, bajulivorum, præceptorum, militum & fratrum prædictorum in ea parte supplicationibus inclinat, concessionem, facultatem, cassationem, revocationem, annulationem, irrationem, reductionem, restitutionem, repositionem, reintegrationem, commissionem, mandatum, liberationem, exemptionem, derogationem, statum, & alia per Clementem VII. concessa & gesta, necnon suppressionem, extinctionem, applicationem, approbationem, concessionem, assignationem, abolitionem & translationem per Innocentium VIII. ac facultatem, seu indultum percipiendi decimas novalem pro ea parte qua veteres decimas percipiebant, necnon omnia & singula, tam per præfatos Alexandrum, Gregorium, Bonifacium, Clementem V. Innocentium IV. Callistum, Leonem, & Clementem VII. quam etiam similis memorie Joannem XXII. Martinum V. Alexandrum V. Pium II. Paulum etiam II. Alexandrum VI. & quoscumque alios Romanos Pontifices prædecessores suos, ac Sedem præfatam eisdem Hospitali, & illius prioratibus, bajulivis, præceptoribus, domibus, hospitalibus, Ecclesiis, capellis, & aliis locis, ac membris, necnon pro tempore existentibus Magistro, prioribus, bajulivis, præceptoribus, militibus, fratribus, & personis, ac eorum vassallis, & servitoribus catenus sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscvis clausulis & decretis quomodolibet concessa, approbata & innovata, ac cum inhibitionibus & decretis, necnon omnibus & singulis aliis in eis contentis clausulis singulas prædecessorum prædictorum desuper, tam sub plumbo, quam in forma brevis litteras confectas ex certa scientia, per suas sub plumbo confectas litteras approbavit, confirmavit, & innovavit, ac valida & efficacia existere, & perpetua roboris firmitate subsistere, suorumque effectus fore.

§. 51. Ac etiam quoad possessiones, terras & bona

quæ per quantumcumque longum tempus (quod nonaginta novem annos, seu trium vitam intelligi seu censeri debere decrevit, & declaravit) non tamen in perpetuum feudum, seu emphyteusim eate-nus concessa fuerant, & in futurum concederentur, inviolabiliter, ita quod ipsi priores, præceptores & fratres, necnon coloni, arrendatarii & firmarii, pro possessionibus, terris & bonis etiam ad nonaginta novem annos, seu trium vitam, non tamen in perpetuum feudum, seu emphyteusim, ut præfertur, pro tempore concessis, necnon suis & aliis in illis pro tempore natis, aut nascituris animalibus, & solutione quorumcumque datorum, seu decimarum, vel aliorum onerum, juxta tenorem litterarum Clementis VII. prædecessoris huiusmodi immunes & exempti perpetuò existerent per quoscumque quavis dignitate, & præeminentia præfulgerent, etiam sub sententis, censuris & penis in eis contentis perpetuò observari. Necnon Magistro, prioribus, bajulivis, præceptoribus, militibus, fratribus, personis, vassallis, subditis & servitoribus præfatis suffragari debere decrevit, omnesque & singulos juris & facti defectus, si qui forsant intervenissent in eisdem, supplevit, ac præmissa omnia & singula prout per singulos prædecessores & Sedem præfatos decreta, concessa, prohibita, statuta, ordinata, innovata & gesta fuerant, in omnibus & per omnia perpetuò concessit, decrevit, prohibuit, statuit, ordinavit & fecit.

§. 52. Illaque etiam ad hoc ut Mag. & singuli priores, bajulivi, præceptores, milites & fratres Hospitalis huiusmodi pro eorum libito voluntatis parochiales, ac etiam sine cura Ecclesias, vel earum vicarias, seu capellanas perpetuas, aut capellas, vel altaria, seu alia beneficia simplicia ad eorum collationem, provisionem, præsentationem, electionem, seu quamvis aliam dispositionem, ratione prioratum, bajuliviarum, præceptoriarum, etiam camerarum magistratum nuncupatarum, hospitalium, domorum & aliorum beneficiorum dicti Hospitalis per eos pro tempore obtentorum de jure, statuto, consuetudine, fundatione, aut privilegio, vel alias quomodolibet spectantia & pertinentia, & ab ipsis bajulivis, præceptoribus, domibus, hospitalibus & aliis beneficiis dependentia, seu illis annexa, quæ dudum fratribus saltem capellanis ejusdem Hospitalis, & ab eisdem Magistro, prioribus, bajulivis, ac præceptoribus & aliis prædictis conferebantur, à longo tamen & forsant longissimo tempore citra, de cujus initio memoria hominum forsant non existeret, per ipsos Magistrum, priores, bajulivos, præceptores, milites & fratres, per abusum aut ex defectu fratrum capellanorum, vel aliarum personarum ejusdem Hospitalis ad id idoneorum, clericis seu presbyteris secularibus collata, aut conf. rri, & per ipsos presbyteros, vel clericos seculares obtineri solita, etiam fratribus Hospitalis huiusmodi præsertim capellanis nuncupatis, qui ut asserebatur à presbyteris, seu clericis, nisi quoad gestationem crucis, vel habitus dicti Hospitalis ad pectus non differere, immo privilegii clericorum secularium juxta forsant eorum privilegia, & consuetudines gaudere solebant, si ad id alias idonei, & habiles reperirentur, conferre, ac alias de illis providere & disponere, ipsique fratres quibus beneficia huiusmodi conferri contingeret, illa si sibi alias canonice conferrentur, aut ipsi eligerentur, præferrentur, vel alias assumerentur ad illas, & instituerentur in eis recipere, & in titulum etiam quoad viverent, retinere respective libere, & licite valeret extendit & ampliavit eisque concessit & pariter indulgit, ac cum eis super hoc legitime dispensavit. Necnon Magistrum, priores, bajulivos, præceptores, milites, fratres, personas, vassallos, subditos, & servitores prædictos illis omnibus juxta illorum continentiam, & tenorem perpetuò uti, potiri, frui & gaudere, libere & licite posse decrevit, prout in singulis litteris prædecessorum huiusmodi plenius continetur.

§. 53. Nos igitur cupientes, ut Religio Hospitalis huiusmodi ejus fratres nullis parendo periculis, contra piratas, Turcas, & alios Christi nominis hostes,

Parochialibus, & aliis ecc. Essis Ordinis, capellanos ejusdem deputati concessis quibuscumque non obstat.

Hoc latus comprobatur G. egr. XII. constituit, 60. Quo magis.

Pius inter IV. Pontifex etc. ex causis hinc & preteritis.

1560.
privilegia,
& gratias
per Marti-
num V. &
alios præde-
cessores Hospi-
tali, &
Militie S.
Joannis Hiero-
solymitana-
ni, ejusque
personis, &
rebus, con-
cessas, juxta
Leon. X. Cle-
ment. VII.
& Pauli III.
concessio-
nes & juxta
constitutio-
nem super
in Curia
Regum Ara-
gonum edi-
tam confir-
mat.

dimicare, ac pro salute Christiana honestam mortem oppetere non cessant, & quæque veram classis Christianorum in infideles dirigitur, vocati se illi adjungant primoque congressus fortiter sustinent, sicuti novissime in expugnatione terræ Africæ priscam virtutem ostendentes, omnium primi illius muros vincenderunt, salubriter dirigatur & amplectur, Dilectos filios Joannem de Valeta modernum Magistrum, ac priores bajulivos, præceptores, milites, fratres & personas Hospitalis hujusmodi, ac eorum singulos à quibuscumque excommunicationis, suspensionis & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & pœnis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existant, ad effectum præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, Motu proprio non ad Joannis de Valeta Magistri, aut bajulivorum, priorum, præceptorum, militum, fratrum, vel personarum prædictarum, seu aliorum pro eis nobis super hoc oblata petitionis instantiam, sed de nostra mera liberalitate, & ex certa scientia nostra, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, statuta, ordinationes, declarationes, revocationes, cassationes, irritationes, voluntates, monitiones, requisitiones, promulgationes, suppressiones, extinctiones, uniones, incorporationes, concessiones, etiam facultatum assignationes, decreta, annulationes, advocaciones, remissiones, inhibitiones, injunctionem, moderationem, repetitionem, renovationem, approbationes, confirmationes, suppletiones, restitutionem, reposicionem, commissionem, mandatum, susceptionem, liberationem, exemptionem, subjectionem, & prohibitionem, extensionem, ampliationem, indulgentiam, & dispensationem Martini, Sixti, Innocentii, Julii, Leonis, Clementis, & Pauli prædecessorum hujusmodi, necnon omnia & singula privilegia, jurisdictiones, facultates, immunitates, concessiones, indulgentias, libertates, prærogativas, exemptiones, gratias, favores, & indulta, Hospitali, bajulivis, prioribus, castellanis, præceptoribus, domibus, conventibus seu Monasteriis, Ecclesiis, capellis, locis & membris, necnon pro tempore existentibus Magistro, bajulivis, prioribus, castellano, præceptoribus, militibus, fratribus, & personis, ac eorum vassallis, subditis & servitoribus, per prædictos, & alios quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, & Sedem prædictam sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis hætenus quomodolibet concessa, approbata, & innovata, necnon cum omnibus & singulis in eis contentis clausulis singulas eorumdem prædecessorum, tam sub plumbis, quam in forma brevis litteras, prout per antecessores nostros Leonem X. Clementem VII. & Paulum III. concessa, confirmata, & approbata fuerunt, & constitutionem eorum nuncupatam in novissime celebrata curia Regum Aragonum, ut accepimus, editam, qua inter alia caveri dicitur expresse, quod pro evitandis litibus & discordiis, quæ sæpius in præceptoribus dicti Hospitalis fuscitari solent, in præceptoribus, & beneficiis Hospitalis hujusmodi ad manus judicum ad id competentium apprehensis, in tenuta & possessionis, ac aliis articulis & processibus, qui coram iudicibus secularibus tractari possunt, illi obtinere debeant, qui per Magistrum & Conventum Hospitalis hujusmodi provisi, eorum bullas, & executionales regias habuerint & reportaverint, juxta litterarum ipsius Joannis prædecessoris continentiam & tenorem.

Statuta, &
Ordinatio-
nes, capituli
generalis an-
ni 1558. ap-
probat.

§. 54. Et insuper omnia & singula stabilimenta, ordinationes, & decreta in Capitulo generali novissime celebrato editis, præsertim de festis Apostolorum duplici officio celebrandis; Et responsione ac novis impositionibus juxta formam stabilimentorum, & privilegiorum eorumdem factis, super prioratibus, ac aliis beneficiis & locis dicti Hospitalis, ad sublevandum illius onera. Et de illegitimis in fratres milites ejusdem Hospitalis nequitiam cooperandis, nisi ex comitum, aut superiorum genere, nec etiam illis nisi à patre, avo, & proavo paterno per seriem illustribus prognatis. Necnon divisiones animalium quæ in

præceptoribus decedentium præceptorum reperitur, pro una præceptoribus ipsis, & pro alia medietatibus, vel etiam aliquando in totum ærario publico incertos casus applicandis. Ac pœna in non solventes responsiones, & impositiones ærario. Necnon commutatione solutionis jurium ratione mortuorum, & vacantium. Et dilutione divisionis bonorum, spoliatorum mortuo Magistro præfato. Et annuercatione certarum Præceptoriarum, quæ Magistratui sunt perpetuo unite. Ac forma licentiarum exercendi Militiam secularem per fratres cum pœnis in contrasacientes. Et provisione adversus malos administratores bonorum. Necnon acceptatione administrationis communis ærarii per Magistrum præfatum factam ad requisitionem sexdecim Capitularium, & reliqua, quorum omnium tenores, ac si de verbo ad verbum infereretur, præsentibus pro expressis, & insertis haberi volumus, Apostolica auctoritate tenore præsentium approbamus, confirmamus & innovamus.

§. 55. Ac ad Hospitale prædictum ad præfens in Meliten. & nō in Rhodi insula consistens, illiusque Magistrum, bajulivos, priores, præceptores, fratres & personas, ac alia infra scripta extendimus & ampliamus, & eaque omnia valida & efficacia existere, & perpetuam roboris firmitatem obtinere, suosque effectus sortiri, ac ab omnibus quavis dignitate & præeminentia fulgeant, etiam sub sententiis, censuris & pœnis in eis contentis perpetuo inviolabiliter observari decernimus.

§. 56. Necnon causas sub litteris Martini & Clementis prædecessorum hujusmodi comprehensas, ac omnes & singulas lites & querelas, siue in dicta Curia, tam in auditorio nostro, quam per commissiones, siue extra eam super quibuscumque dicti Hospitalis beneficiis, ac bonis & pecuniis thesauri, & fratrum quorumcumque, seu super eorumdem delictis, etiam si ex adverso aliqui clerici seculares vel regulares, aut laici existerent, & active, seu passive juxta alias formas stabilimentorum & privilegiorum prædictorum in dictis causis quomodolibet, & in quacumque instantia intervenissent hætenus motas, in quibus tamen non conclusum sit, & in futurum quovis prætextu movendas in quibuscumque instantiis pendentes, quarum status, & merita etiam præsentibus haberi volumus pro expressis, ad nos advocamus, ac illas eisdem Magistro & Conventui per eos juxta formam dictorum stabilimentorum, & laudabilem consuetudinem prædictarum in statu debito reassumendas, & desidendas committimus, eosque quorum intererit citandi, & quoties opus fuerit inhibendi, etiam sub censuris & pœnis Ecclesiasticis, tam in curia prædicta, quam extra facultatem concedimus. Necnon illorum sententias, & rem judicatam per priorem Ecclesiæ dicti Conventus, etiam sub censuris & pœnis Ecclesiasticis contra condemnatos etiam in curia prædicta, tam realiter, quam personaliter exequi mandamus, ita quod alibi quam in dicto Hospitali, aut extra illud ex Magistro & Conventu commissionem, juxta stabilimenta, & usus hujusmodi cognosci & terminari nequeat.

§. 57. Nec à sententiis per Judices dicti Hospitalis pro tempore latis ad alium quam Magistrum & Conventum prædictos, seu judices ab eis deputatos in quavis instantia, neque à sententiis, per ipsum Magistrum & Conventum latis, alio quam ad ipsum generale Capitulum, siue per ipsius Hospitalis fratres siue per ipsos subditos & vassallos quoquo modo appellari possit, immo usque ad tertiam sententiam in eodem Conventu procedere teneantur.

§. 58. Et similiter, quod omnes sententiae per eisdem Magistrum & Conventum latae, omnes item commissiones, citationes, collationes Bullæ, & omnia denique eorumdem rescripta ad omnes suæ jurisdictioni subditos, ac reliquos etiam quorum intererit causas, lites, seu querelas coram ipsis prætrahendi directæ exequi, & à nullis locorum, & terrarum dominis; etiam Ducali, aut Regali dignitate fulgentibus aliqua ratione expectandis consensu, seu alio quovis quæsito colore in eorumdem executione impediri possint, ser-

Et ad Hospi-
talis Ordini
nunc in
insula Meli-
ten. consi-
stens exten-
dit.

Canarium
omnium co-
gnitionem
M. Mag. &
Conventui
concedit.

Appellari à
Judicibus
Hospitalis
ad M. Mag.
& Con-
ventum, & ab
illis & ab
Cap. generale
permittit,
& non aliter.
Sententias,
& mandata
M. Magistri
nullo præ-
textu impe-
diri posse
decernit.

Facultatem
que contra
omnes cle-
ricos facu-
lares & re-
gulares, Or-
dines debi-
tos ex pro-
cedendi
concedit.

Conser-
vatores Ori-
nis, tam fra-
tres, quam
eorum iuri-
dictores tueri
debent.

Jura omnia
exigi man-
dat.
Hoc latus
dispositum
vide in con-
stit. 43. Sixt.
V. Equum.

Ordinari à
quocumque
Antistite, &
extra tem-
pora con-
cedit.
Hoc mone-
datur Conc.
Trident. sess.
7. cap. 11.

Exemptio-
nem à deci-
mis subdi-
dis, &c. e-
largitur.
Hanc fir-
mavit Pius
V. ut in ejus
const. 77.
Et si iuncta.

vato tamen in eis exequendis Dat. Ordine, ita quod eorum ultima primis antefieri nequeant.

§. 59. Ac quod contra Clericos seculares, seu laicos, prioratus, bajulivus, præceptoris, domos, & alia beneficia Hospitalis hujusmodi occupantes, seu illi, aut ejus communi thesauro, seu fratribus occasione responsum annuarum, vacantium, mortuorum, annatarum, passagiorum, arreragiorum, seu alias quomodolibet debentes, five agant, five conveniantur, etiam in quavis instantia, ad causam veniant, Magister & Conventus præfati modo, & forma quibus contra ipsius Hospitalis fratres procedi consuevit, libere procedere, et eos prioratus, bajulivus, præceptoris, domibus, & aliis beneficiis hujusmodi juxta alias formam privilegiorum prædictorum privare valeant, concedimus & indulgemus.

§. 60. Necnon personas in dignitate Ecclesiastica ubilibet constitutas, & quocumque locorum Ordinarios, ac eorum Vicarios, & Officiales, necnon Canonicos Metropolitanos, & Cathedralium, aliarumque Ecclesiarum prælatos, & rectores per eosdem bajulivos, priores, præceptores, & fratres, ac eorum singulos pro tempore eligendos in conservatores, qui quamdiu exercerint dictum officium, à nemine quominus illud exerceant sub aliquo prætextu impediri, vel molestari possint deputamus. Ita quod ipsi sic electi, sub excommunicationis lætæ sententiæ per eosdem priores, bajulivos, præceptores & fratres, ac eorum singulos adversus inferentes eis, aut eorum servitoribus, & familiaribus injurias, seu gravamina vel damna, in personis, rebus, & bonis, seu exigentes ab eis vestigia, datia, pedagia, gabellas, collectas, aut alia onera, defendere, & præservare, ac omnem eorum jurisdictionem exercere. Necnon sententias, censuras & penas Ecclesiasticas, contra rebelles, & inobedientes cum effectu promulgare, ac omnibus facultatibus conservatoribus dicti Hospitalis, & illius personarum per quascumque litteras Apostolicas quomodolibet concessis, uti, ac privilegia prioribus, bajulivus, præceptoribus & fratribus præfatis pro tempore concessa eis observare facere debeant, & teneantur.

§. 61. Ac jura mortuorum, & vacantium, necnon arreragiorum, passagiorum, & aliorum quorumcumque, ita ut quævis personæ cuiuscumque Ecclesiasticæ dignitatis existentes beneficia Hospitalis hujusmodi pro tempore obtinentes, illa solvere omnino teneantur, & adstricti sint, ac id etiam sub sententiis, censuris & penis Ecclesiasticis, ac alias juxta eorumdem privilegia privationis & apprehensionis etiam beneficiorum ad manus suas remediis cogi possint, solvi mandamus.

§. 62. Necnon exemptionem, & liberationem prædictas, ita quod Magistri bajulivorum, priorum, præceptorum, & dicti Hospitalis fratres, capellani, à quocumque catholico Antistite, sub Romanæ Sedis obedientia constituto sacros ordines, etiam extra tempora à jure statuta, tribus diebus festivis suscipere, & in quibusvis tam secularium quam regularium Ecclesiis absque alicujus licentia, etiam altari portatili celebrare possent.

§. 63. Nec omnino aliquis ex prædicti Hospitalis fratribus, donatis, servitoribus, vassallis & colonis in prioratibus, bajulivatus, commendis, domibus, membris, aut aliis quibusvis beneficiis, prædiis, five granis quomodocumque à dicto Hospitali dependentibus, in quibuscumque locis sub quorumcumque Patriarcharum, Episcoporum, Universitatum, Hospitalium, rectorum Ecclesiarum limitibus, & jurisdictione constituti, decimas, aut canonicam portionem, seu charitativum subsidium, aut quartas nuncupatas, seu alias quascumque collectas, vel contributiones, tam ex antiquis eorum cultis, quam ex receniter cultis novis aliquid quovis modo solvere teneantur, à quibus omnibus exactionibus, atque etiam tam novo subsidio dilecto filio nostro Philippo Hispaniarum Regi in suis Regnis pro quocumque Romanos Pontifices prædecessores nostros concessio, quam canonica portione, seu quarta nuncupata in Franciæ Regni nuper imposita, necnon à quibuscumque

aliis facultatibus Regibus hujusmodi, & aliis Principibus concessis, vel concedendis in futurum, omnia dicti Hospitalis loca, ut præfertur, necnon Ecclesiarum quomodocumque à dicto Hospitali dependentium fabricas libera & liberas, exempta & exemptas, sicut per prædecessores nostros Romanos Pontifices fuisse, ita modo esse declaramus & volumus.

§. 64. Aduentes quod præfati Magister & Conventus, priores, bajulivi, præceptores, aut quicumque alii ex dicti Hospitalis fratribus per quoscumque locorum, aut terrarum dominos, tam spirituales, quam temporales, etiam si regali dignitate præfulgeant, etiam in terris S. R. E. (sicut alias per suas olim Paul. III. prædecessor noster concesserat) ab extractione frumenti, hordei, vini, olei, leguminum, & quorumvis fructuum, atque etiam pecuniarum ex prioratibus, bajulivatus, commendis, membris, domibus, granis, aliisve prædicti Hospitalis locis provenientium nullo unquam modo impediri possint, quominus præfata omnia pro sua possessorum voluntate in quæcumque fidelium loca ab omni pedagio, datio, seu tracta quæ dicitur, libera & exempta valeant asportare. Et bona etiam patrimonialia, Magistri bajulivorum, priorum, præceptorum, & fratrum, ac aliarum personarum hujusmodi, tam acquisita, quam in posterum acquirenda, aut illis quovis modo etiam ex concessione Apostolica vel magistrali pertinentia ex die emissæ per eosdem Magistram, bajulivos, priores, præceptores, fratres, & personas, professionis, ut præfertur, ab omnibus decimis, & aliis oneribus libera, immunita, & exempta existant.

§. 65. Et ipsi Magister, ac Conventus, necnon prior Ecclesiæ alique priores, & præceptores intra limites suarum jurisdictionum, & administrationum veri Ordinarii juxta formam stabilimentorum, & privilegiorum prædictorum existant, & esse censentur Ac beneficia Ecclesiastica ad præsentationem, seu collationem bajulivorum priorum, præceptorum, & Hospitalis hujusmodi suffragari debere decernimus. Ita quod presbyteri seculares illas ad præsentem in commendam, seu alias quomodolibet obtinentes commendæ hujusmodi cedere, aut illa alias dimittere nequeant, nisi de consensu eorum ad quos præsentatio, seu collatio spectat, & in favorem dicti Hospitalis, seu personarum quæ habitum per fratres capellanos ejusdem Hospitalis deferri solitum suscipiant, & professionem per eos emitti solita emittant, nec illa decem ipsi, nisi infra sex menses à die intimationis habitum ipsius religionis susceperint, & regularem professionem infra alios sex menses emiserint, possidere possint, & si secus fiat, aut cessationem, seu resignationem hujusmodi, ac de dicti Ordinis beneficiis etiam in manibus nostris in futurum fieri contingat, hujusmodi cessationes, resignationes, & provisiones nullas sint roboris, vel momenti, nisi in illis expresse dicatur, & de consensu Magni Magi, & de illis juxta formam privilegii d. relig. provideatur.

§. 66. Ac quascumque indulgentias, & peccatorum remissiones hæcenus eis per prædecessores nostros concessas, & præsertim Sixti IV. de plenaria indulgentia, semel in vita, & in mortis articulo, pro eis eorumque servitoribus, & ministris pugnantibus, ac Honorii III. de alia plenaria pro his, qui eis manus porrexerint ad iudices, ac Clementis VII. & suorum prædecessorum de quadraginta annis, & totidem quarantenis, ac septima parte in iunctæ poenitentia: pro visitantibus eorum Ecclesias, & oratoria ubicumque existentia, & manus porrigentibus ad iudices in singulis secundis, quartis, & sextis feriis Quadrage, & capitis jejuniorum, ac festi Sancti vocabuli dictarum Ecclesiarum: Necnon Clementis V. quo ad facultatem super votis (Terræ factæ, & castitatis dumtaxat exceptis) ac super usuris, rapinis, & male ablati, vel acquisitis, quorum domini certi non reperiuntur, & indistincte relictis in ultimis voluntatibus pro sustentatione pauperum, ac super Divinis Officiis, & Horis Canonicis omisiss, cōponendi, & absolvendi, Ac Urbani etiam prædecessoris quoad cōfratras dicti Ord. pro colligendæ selectio-
mofynis semel in anno admittendas, & aliis cōfratribus;

Privilegium
extrahendi
bladæ, pecur.
&c. ubique
datio tri-
buit.

Vide mo-
derationem
Pauli V. ex
const. 10.
Imper.

Priores, &
præceptores
infra limites
sue jurisdic-
tionis ve-
ros orina-
rios declar-
at.

Ad hoc vi-
de d. const.
77. Pa V.

Indulgentias
Ordini
concessas
approbat.

Quoad
porrigentes
manus ad
iudices, vi-
de de revoca-
tionem Pii
V. in const.
30.

Beneficia. Ordinis non cit. per-
petui bene-
fici, sed ad
nutum con-
cedi jubet.

Rem judi-
catam M.
Magistro, &
Conventui
non citatis
non praeju-
dicare de-
ceruit.

Personas
religionis
in causis ip-
sis, testes
aut desin-
entibus
recipi man-
dat.

M. Magi-
strum Prio-
res, &c.
quoque
Frates deli-
quentes
ubique ca-
pere posse
concedit.
Ad hoc vi-
de etiam
Bul. am 37.
Clement
VIII. Aqua.

Huius Bul-
lae, & privi-
legiorum
transumptis
credi jubet.

Ejus, &
mandato-
rum M. Mag.
& Conventus
publica-
tionem om-
nes adire
decernit.

Habitu
extra Con-
ventum sus-
cip. entes,
aut bene-
fici, &c. pos-
sidentes, in-
fra annum
non com-
parentes in
Conventu,
privari posse
concedit.

non postponendas confirmamus, & approbamus.

§. 67. Et insuper cum prioratus, bajulvici, præceptoris, domus, & alia beneficia Hospitalis hujusmodi, eorumque bona omnia præfato Hospitali inserviant, & quodam modo unita sint, & pro tempore existentes Magister & Conventus Hospitalis hujusmodi plenam in ea jurisdictionem habeant, prioratus, bajulvici, præceptoris, domus, conventus, monasteria, & alia beneficia hujusmodi de cetero ex personis illa obtinentibus vacare non posse, sed cedentibus, vel decedentibus illorum pro tempore possessoribus, ea uni, seu pluribus, non in titulum perpetui beneficii Ecclesiastici, sed tamquam manualia ad nutum, seu amovibilia juxta formam stabilimentorum, & privilegiorum prædictorum concedi, & assignari debere.

§. 68. Et per quancumque rem judicatam Mag. & Conventui præfatis, nisi ipsis specialiter ad causam vocati fuerint, super jurisdictione prædicta, & sua civili eorum possessione præjudicari, aut præjudicatum censeri non posse, sed eos semper, re judicata hujusmodi non obstat, super possessorio hujusmodi agere, & de spolio dare posse.

§. 69. Ipsosque Magistrum, Priores, Bajulivos, Præceptores, Milites, Fratres, personas, vassallos, subditos, & servitores in ipsius Hospitalis, & Religiosorum causis, in omni judicio, & contra quoscumque ubi alie probationes non existunt, etiam juxta formam stabilimentorum, & privilegiorum prædictorum in testes adhiberi.

§. 70. Necnon Magistrum, & Conventum, quoscumque, & singulos Priores, Bajulivos, Castellanos, Empostes, suorum Prioratus, Bajulvici, & Castellaniæ Fratres, seu Religiosos delinquentes, vel inobedientes cujuscumque dignitatis, status, gradus, ordinis, & præeminentiæ existentes, etiam si quavis etiã Apostolica exemptione fungentur, in quocumque loco quantumvis privilegiato, & quavis etiam Imperatoris, Regum, seu aliorum Principum, etiã Ecclesiasticorum Curia, per se, aut suos officiales, & ministros capere, & incarcerare, ac captos à se, vel eorum nomine liberare, & ad Hospitalis prædictum per Magistrum & Conventum prædictos juxta eorum constitutiones, & stabilimenta puniendos sub debita custodia transmittere, & transmitti facere libere, & licite posse. Ac tam Ecclesiasticos, quam sæculares officiales, & locorum potestates, ad eisdem Magistro & Conventui, Prioribus, Bajulvis, & Castellano in præmissis assistendum, ac auxilium, consilium, favorem, & juvamentum standum sub excommunicationis, & alius sententis, censuris, & poenis Ecclesiasticis teneri, & obligatos fore.

§. 71. Necnon præsentium, & quorumcumque privilegiorum Apostolicorum eis hactenus concessorum, & in posterum concedendorum transumptis manu Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ, aut Curie Ecclesiasticæ munitis plenam, & eam quæ præsentibus adhiberetur fidem in judicio & extra, adhiberi debere decernimus.

§. 72. Ac volumus, quod tam præsentium, quam aliarum quarumcumque litterarum Apostolicarum, seu earum transumpti, ac mandatorum Magistri, & Conventus prædictorum publicatio & affixio, in singulis Prioratibus, Bajulvici, præceptoris, membris, & beneficiis dicti Ordinis factæ, perinde ardeant, ac si contra contentos sub eisdem personarum factæ essent, facta in primis diligentia de illis personarum rependiendis in dictis locis.

§. 73. Et nihilominus statuimus, ac dictis Magistro & Conventui perpetuo concedimus, quod si quisquam Priorum, Bajulvorum, Præceptorum, Militum, & Fratrum dicti Hospitalis Crucem, vel habitum extra dictum Conventum à Romano Pontifice, vel de ejus licentia receptum gestans, intra annum postquam illam suscepit, aut sibi de Prioratu, & Bajulvia, Præceptoris, officio, vel beneficio Hospitalis hujusmodi provifum, vel aliis in ejus favorem dispositum fuerit. Ac quicumque alius dicti Ordinis beneficium, vel pensionem obtinens, aut fructus per-

cipiens, quancumque pro servitiis Religionis, aut alias evocatus, seu in solutione jurium communis ærarii morosus fuerit, coram dictis Magistro & Conventu personaliter non comparuerit, & obedientiam, aliaque jura debita eisdem Magistro, & Conventui non præstiterit, eo elapso habitu, dignitate, administratione, & beneficio, ac quocumque honore, & officio juxta alias formas stabilimentorum, & privilegiorum prædictorum, eo ipso careat, privatusque censetur, seu si videbitur privari possit. Nec ulla hujusmodi statuti derogatio, aut exemptio, realis vel personalis, seu alia gratia præservativa, etiam motu, scientia & potestatis plenitudine similibus, quomodolibet pro tempore facta, seu concessa contra præmissa valeant, nec Magister, & Conventus præfati illis parere teneantur, sed illis non obstantibus de Prioratu, Bajulvia, Præceptoris, dignitate, officio, vel beneficio, sic ut per privationem hujusmodi vacante, juxta stabilimenta, & alia præmissa libere disponere, aut illa alias per eum, vel eos ad quem, seu quos Antiquitatis, vel alio jure pertinet, acceptari possint.

§. 74. Decernentes præsentibus, & in eis contentis omnibus, non nisi eisdem modo, & forma quibus in litteris Leonis, Clementis, & Pauli prædecessorum prædictorum concessum est, nullatenus derogari posse, nec derogatum censeri.

§. 75. Et sic in præmissis omnibus & singulis per quoscumque Judices, & Commissarios quavis auctoritate fungentes, tam in dicta Curia, quam extra eam pro tempore deputatos (sublata eis, & eorum cultibet quavis alia circa præmissa judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate) judicari, & desiniri debere, ac irritum & inane si secus super præmissis, omnibus & singulis à quocumque quavis auctoritate, scienter, vel ignoranter contigerit attentari.

§. 76. Quocirca venerabilibus fratribus nostris Archiepiscopo Tolentanensi, & Episcopo Parisiensi, ac pro tempore existentibus Curie causarum Camera Apostolica Regenti, seu generali Auditori, per Apostolicam scripta motu simili mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum per se, vel alium, seu alios præfatos litteras, & in eis contenta quoscumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Magistri, Priorum, Bajulvorum, Præceptorum, Militum, & Fratrum prædictorum, seu alicujus eorum de super fuerint requisiti, solemniter publicantes, eique in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra præfatos litteras, & in eis contenta hujusmodi firmiter observari, ac singulos quos ipsæ præfates litteræ concernunt, illis pacifice gaudere. Non permittentes eos desuper contra præsentium tenorem quomodolibet molestari. Contradictores & rebelles quoslibet per censuras, & poenas Ecclesiasticas, ac etiam pecuniarias eorum arbitrio moderandas, ac alia juris remedia, appellatione postposita, compellendo, ac quoscumque quorum intererit, etiam per edictum publicum locis publicis assignandum, confiso summarie de non tuto accessu, citando, ac quibus, & quoties inhibendum fuerit, etiam simili edicto, ac sub eisdem poenis, & censuris, inhibendo, ipsaque censuras & poenas Ecclesiasticas etiam iteratis vicibus aggravando, in vocato etiam ad hoc si opus fuerit auxilio brachii sæcularis.

§. 77. Non obstantibus præmissis, ac dicti Bonifacii prædecessoris, qua caveatur ne quis extra suam Civitatem, vel Diocesim nisi in certis exceptis casibus, & in illis ultra unam diem à fine sue Diocesis ad judicium evocetur, seu ne iudices à Sede præfata deputati extra Civitatem, vel Diocesim in quibus deputati fuerint, contra quoscumque procedere, aut alii, vel alius vires suas committere presumant, & de duabus dictis in Concilio generali editis, ac quibusvis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon dicti Hospitalis etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus, ac quibusvis privilegiis, indulgitiis, & litteris Apostolicis, etiam Ordinariis præfatis, & quibusvis Ecclesiis, Monasteriis, Ordinibus, locis, & personis cujuscumque dignitatis, status, vel conditionis existentibus sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum

Prædictis
cerro tan-
tum modo
derogari
posse decla-
rat.

Subsultum
sublata, &c.
appoint.

Executores
deputat.

Contrariis
derogat.

quibusvis clausulis, & decretis concessis, approbatis, & innovatis, quibus omittis illorum tenore, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso inferri forent presentibus pro sufficienter expressis habentes, illis alias in suo robore permanentis, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, contrariis quibuscumque aut si aliquibus eorum, vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per literas Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

Nulli ergo, &c.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1560. Kalendis Julii, Pontificatus nostri Anno primo.

D. P. A. I.
die 1. Julii.

X.

De residentia Episcopali, residentiumque privilegii, & non residentium penis.

Hoc idem postea decrevit etiam Concil. Trid. in sess. 6. c. 1. & sess. 23. cap. 1. & sess. 24. c. 12. Et ampliore dispositionem fecit contra omnes Curatos hic idem Pont. infra in const. 91. In suprema, quibus alias quoque penas imposuit, ibi videas.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memoriam.

Edicta An. D.
1560.

Causa litius
cor. statusio-
nis.

Episcopi
absentes re-
deant ad co-
rum Eccle-
sias.

Inobedien-
tes, & non
residentes
penas hic
expressas in-
currant.
Quas pœ-
nas imposuit
Conc. Trid.
sess. 6. c. 1.
de Reforma.

DE salute gregis Domini nobis ex alto commis-
si, attentius cogitantes, ad ea libenter intenden-
dus, per quæ grex ipse continus suorum cum eo re-
sidentia Pastorum præfervetur a noxiis, & in devium
prolabens, ad rectitudinis tramite reducatur, ut Pas-
tores ipsi residentiam ipsam, prout tenentur, commo-
dius facere, ac circa ipsius gregis curam libentius, ac
ferventius invigilare, & illum ab errorum præcipi-
tiis præservare, ac in fide orthodoxa, & devotione
nostra continere valeant, operam, & operam efficaces
impedimus, prout rerum, & temporum qualitate
pensata, conspiciamus in Domino salubriter expedire.

§. 1. Hinc est, quod nos Motu proprio, non ad ali-
cujus nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam,
sed de nostra mera deliberatione, universos, & singu-
los venerabiles fratres nostros Episcopos, Archiepis-
copos, Primates, & Patriarchas, ab Ecclesiis & Dio-
cesibus suis absentes in virtute sanctæ obedientiæ,
ac sub interdicti ingressus Ecclesiæ pena, eo ipso,
absque alia declaratione incurrenda, districte præci-
piendo monemus, ut omnibus postpositis quantoci-
pius, in Romana Curia videlicet moram trahentes, in-
tra unum, extra eam verò in Italia intra duos, extra
verò Italiam existentes, intra quatuor menses à die
publicationis præsentium in locis infra scriptis faci-
endam computandos, se itineri committere, & legiti-
mis itineribus ad Ecclesias, seu Dioeceses suas pro-
ficisci, & sese personaliter conferre, ac ibidem ut tenen-
tur residere, & Pastorale officium exercere debeant.

§. 2. Si quis autem à Patriarchali, Primatiali, Me-
tropolitana seu Cathedrali Ecclesia sibi quocumque
titulo, nomine, seu iure commissa, quacumque illi di-
gnitate, gradu, & præminencia præfulgeant, legiti-
mo impedimento, seu iustis & rationabilibus causis
cessantibus, sex mensibus continuis extra suam Dio-
cesim morando abfuerit, quartæ partis fructuum un-
ius anni, Fabricæ Ecclesiæ, & pauperibus loci per
Superiorem Ecclesiasticum applicandorum poenam
ipso iure incurrat. Quod si per alios sex menses in
huiusmodi aliquo perseveraverit, aliam quantam
partem fructuum similiter applicandam, eo ipso am-
mittat, crescente verò contumacia, ac severiori sa-
cro Canonum cæssura subiiciatur, Metropoli-
tan. Suffraganeos, Episcopos absentes, Metropoli-
tan. verò absentem, Suffraganeus, Episcopus anti-
quior residens, sub pena interdicti ingressus Eccle-
siæ ipso iure incurrenda, infra tres menses, per lit-
teras, vel nuncium Rom. Pontifici denunciare te-
neatur, qui in ipsos absentes, prout cuiuscumque
major, aut minor contumacia exegerit, suæ supre-
mæ Sedis auctoritate animadvertere, & Ecclesiis ip-
sis de Pastoribus uthoribus providere poterit, si-

cut in Domino noverit salubriter expedire.

§. 3. Eisdem autem Patriarchas, Primates, Archie-
piscopos, & Episcopos mandatis nostris parentes, &
apud suas Ecclesias, seu in earum Dioecibus perso-
naliter residentes, specialibus favoribus & gratis
prosequi volentes, ut liberius & commodius eorum
officio fungi valeant, eis & eorum cuilibet, & quando
resederint, etiam prætextu quorumcumque delicto-
rum, & excessuum atrociorum, etiam hæresis, & læ-
sæ Majestatis criminum per eos quomodolibet com-
missorum, ad comparandum personaliter in Romana
Curia per quoscumque Judices ordinarios, vel dele-
gatos, etiam S. R. E. Card. nisi vigore specialis
commissionis manu nostra, vel Rom. Pontificis pro
tempore existentis signatæ, trahi, aut citari non pos-
sint nec debeant, atque al ter factas citationes, & cen-
suras in eis appositæ, ac inde secuta quævisque nulla
& irrita, ac nullius roboris, & momenti fore, ac eos
minime afficere, aut arctare statuimus, & ordinamus.

§. 4. Necnon eos & eorum quemlibet ab omnibus,
& singulis decimis, subsidis, & aliis oneribus, ordin. &
extraordinariis quomodolibet nuncupatis, per nos &
successores nostros Romanos Pont. pro tempore exis-
sentes, ac Sedem Apostolicam, etiam Motu proprio,
& ex certa scientia, ac etiam consistorialiter etiam ad
instantiam Regum & Principum, quomodolibet, & ex
quavis etiam quantumvis urgentissima, iustissima, ac
pia & necessaria causa, etiam pro defensione fidei Ca-
tholicæ, ratione dictarum Ecclesiarum nunc & pro
tempore impositis, illorumque solutione, auctoritate
Apostolica, tenore præsentium ex simili scientia pe-
nitus, & omnino eximimus, & liberamus, nec ad id à
dilectis filiis modernis, & pro tempore existentibus
S. R. E. Camerario, necnon Cam. A. post. Thesaurario,
Præfidentibus, & Clericis, ac decimarum, sub-
sidiorum, & aliorum onerum huiusmodi Collectori-
bus, & Subcollectoriis, seu exactoribus, & Comis-
sariis ad id pro tempore deputatis, etiam vigore quo-
rumcumque privilegiorum, indultorum, & litera-
rum, etiam præsentibus derogantium, ac illarum totum
tenorem de verbo ad verbum experimentum, cõ-
si quomodolibet cõcessorum, & concedendorum, cogi
seu compelli, & ob non solutionem huiusmodi al-
iquas sententias, censuras & penas incurrere posse
decernimus. Illiusque & quibuscumque aliis in virtute
sanctæ obedientiæ, & sub nostræ indignationis, nec-
non excommunicationis, aut suspensionis, ac priva-
tionis suorum officiorum & beneficiorum, quæ ob-
tinent, & pro tempore obtinebunt, eo ipso incurren-
dis penis, ne eosdem Episcopos, Archiepisc. Primates,
& Patriarchas sic in dictis Ecclesiis, vel earum
Dioecibus residentes, quamdiu in illis resederint, ut
præfertur, ad solutionem decimarum, subsidiorum,
& onerum præfatorum cogere, ac propter illorum
non solutionem excommunicationis aut alias senten-
tias, censuras, & penas promulgare quoquo modo
audeant, sed præsumant districtius inhibemus.

§. 5. Et in super eisdem Episcopis, Archiepiscopis,
Primates, & Patriarchis sic ut præmittitur residen-
tibus, ultra privilegia, & indulta eis per quoscumque
Rom. Pont. prædecessores nostros, ac Sedem Apo-
stolicam, & Generalia Concilia, & Cancellaria Apo-
stolica Regulas concessa, quæ in suo robore per-
manere volumus, tanquam à dicta Sede delegati in
quibuscumque civilibus, criminalibus, vel iustis cau-
sis contra quoscumque clericos, sacculares particula-
res, ac etiam extra eorum Monasteria, seu regularia
loca degentes regulares quomodolibet exemptos
auctoritate nostra procedere, & causas ipsas cogno-
scere, si eque debito terminare, ac quicquid termi-
naverint exequi, & observari facere, ipsosque ex-
emptos pro tempore delinquentes iuxta eorum ex-
cessus, & delicta punire, corrigere, & omnem iurisdic-
tionem in eos exercere, omniaque alia & singula
in præmissis, & circa ea quomodolibet necessaria,
& opportuna quæ nosmet facere, exercere, & ex-
equi possemus, in omnibus & per omnia facere, ex-
ercere, & exequi libere, & licite valeant, plenam
& liberam licentiam, ac facultatem auctoritate,

Obedien-
tes, & resi-
dentes po-
tuntur pri-
vilegiis in-
fra scriptis
videlicet in-
fra non pos-
sunt ad com-
parandum in
Rom. Cur.
si de com-
missione Pa-
pe.

Exempti-
que sunt à
solutione
decimarum;
&c.

In iurisdic-
tionem quoque
habent contra
clericos
sacculares,
& etiam re-
gulares ex-
tra claustra
degentes
quomodolibet
exemptos.

A decretis
ante defini-
tivam & ubi
agitur de
correctio-
nem morum
appellatio non
admittitur.

& tenore prædictis concedimus & indulgemus.

§. 6. Decernentes ab eorum ordinationibus, interlocutionibus, & decretis ante definitivam sententiam, vel vim definitivam habentem, & ubi agitur de morum correctione, nullatenus etiam ad nos, & Sedem Apostolicam appellari posse, & nihilominus per appellationes quasvis contra præsentium tenorem quomodolibet interpositas minime causas devolvī, aut etiam per quasvis inhibitiones etiam cum quibusvis censuris, & poenis, eis à quibusvis Iudicibus ordinariis, vel delegatis forsan faciendas illarum ulteriorem cognitionem, & expeditionem, & ubi de morum correctione agitur etiam legitimam executionem minime impediri, aut censuris & poenis huiusmodi ligari, aut irritum censere.

Decretum
irritans.

§. 7. Sicque in præmissis omnibus, & singulis per quoscumque Metropolitanos aut alios Iudices & Commissarios, etiam Palatii Apost. Auditores, & S. R. E. Card. subiaci eis alteri iudicandi & interpretandi, aut definiendi potestate iudicari, definiti, aut interpretari debere, necnon irritum, & inane quicquid fecus à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contingerit attentari.

Executorum
restitutio
deputatio,
& facultates.

§. 8. Mandantes venerabilibus fratribus nostris Feltren. & Pisaurien. ac Amerin. Episcopis per Apostolicam scriptam, Motu simili, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum, per se vel alium, seu alios præsentis literarum & in eis contenta quaecumque ubi & quando opus fuerit, & quoties pro parte eorumdem Episcoporum, Archiepiscoporum, Primatum, & Patriarcharum, seu alicujus eorum desuper requisitus fuerint, solemniter publicantes eisque in præmissis efficacis defensionis presidio assistentes, faciant eadem auctoritate nostra illos, & eorum singulos omnibus & singulis præmissis pacifice frui, & gaudere, non permitte eos desuper per eorumdem Camerarium, Thesaurarium, Præsidentes, & Clericos, necnon Collectores, & Subcollectores, & Exatores, & Commissarios præfactos, seu quoscumque alios quomodolibet indebitum molestari. Contradictores quoscumque, & rebelles per similes censuras & poenas Ecclesiasticas, ac alia opportuna juris, & facti remedia, appellatione postposita compellendo, necnon legitimis super his habendis servatis processibus, censuras, & poenas ipsas etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

Clausula
derogato-
ria.

§. 9. Non obstantibus fel. rec. Bonifacii Papæ VIII. prædecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, dummodo ultra tres dietas aliquis auctoritate præsentium ad iudicium non trahatur, & aliis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac quibusvis Cameræ præfactæ statutis, decretis, & declarationibus, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, necnon privilegiis, indultis, exemptionibus, etiam Mari magno, aut aliis nuncupatis, Conservatorum deputationibus, & eorum ac aliis inhibitionibus, quibus dicti Episcopi, Archiepiscopi, & Patriarchæ deferre minime teneantur, sed illis reiectis ac non obstantibus, in dictis causis, ut præfertur, procedere, & illas iure debito terminare possint, ac litteris Apostolicis eisdem Cameræ Camerario, Thesaurario, Præsidentibus & Clericis, ac Collectoribus, & Subcollectoribus, & Commissariis, ac exemptis necnon Regibus & Principibus præfactis, ac dilectis filiis Archiepiscopo, & Capitulo Ecclesiæ nostræ Lateranen. necnon Hospitali nostro S. Spiritus in Saxia de Urbe, & quibusvis aliis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibusvis clausulis & decretis, etiam Motu & scientia similibus concessis, approbatis & innovatis, quibus omnibus etiam si pro illorum sufficienti derogatione de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, individua, & expressa, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exequi forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, & quæ adversus præmissa nemini suffra-

gari posse volumus, contrariis quibuscumque. Aut si Patriarchis, Primatibus, Archiepiscopis, & Episcopis vel quibusvis aliis communiter, vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§. 10. Et quia difficile foret præsentis literas ad singula, in quibus fides forsan facienda foret loca deferri, volumus, & eadem auctoritate decernimus, quod earum transumptis manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus Curie Ecclesiasticæ vel personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem pro suis fides adhibeatur in iudicio, & alibi, ubi opus fuerit, quæ præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ, vel ostensæ.

§. 11. Quodque publicatio præsentium cum dimissione copiae in valvis Basilicæ Principis Apostolorum, & Cancellariæ Apostolicæ, & ac in acie Campi Floræ eisdem præfactis, & eorum singulos etiam à dicta Curia abientes, sic ut præfertur, monitos, arctet, & afficiat, perinde ac si præsentis literæ eis, ac eorum cuilibet personaliter intimatæ forent.

Nulli ergo, &c.
Datum Romæ apud sanctum Marcum Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo, sexagesimo, Fride Nonas Septembris, Pontificatus nostri Anno primo.

Anno à Nativitate Domini 1560, Indict. 3, die verò 13. mensis Septembris. Pont. Sanctissimi in Christo patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa IV. Anno I. retroscripta littera affixa, lesa & publicata fuerunt Romæ in locis retroscriptis dimissis ibidem copis affixis iuxta illarum formam, & tenorem, per nos Jacobum Carra, & Bernardinum Andreutium præfati S. D. N. Papa Cursores.

Reductio ad terminos juris communis, Bullæ Pauli IV. edita super alienationibus, & locationibus bonorum Ecclesiasticorum, quoad causas pendentes, & futuras. Et licentia revivendi jam decisis.

Hanc Bullam Pauli IV. habes sup. in Tom. I. Injunctum num. 3. ibi videas quæ dixi in rubrica.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Provida Romani Pontificis circumspectione, ea quæ certis suadentibus causis emanarunt, ex aliis non minus attendendis rationibus, ac de rationis tramitem reducit prout rerum qualitate digesta salubriter conspexit expedire.

§. 1. Dudum siquidem fel. rec. Paulus PP. IV. prædecessor noster ex certis, tunc expressis, & nobis notis causis Motu proprio, & ex certa scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, &c.

Onitur residuum narrativæ, quia ipsam Bullam habes in loco cit. in rubr.

§. 2. Cum autem sicut accepimus occasione dictarum litterarum, & Motus proprii huiusmodi, diversæ lites, quæstiones, & controversiæ ortæ, ac diversæ gravamina, læsiones, perturbationes, & incommoda diversis personis generata, & illata, ac litteræ & motus proprii huiusmodi rigorosæ executioni demandatæ fuerint, in earumdem personarum animarum molestiam non modicam, plurimorum ad nos querelæ de late factis, & in dies deferantur, conquecentium potissimum de rigore vel potius in iustitia litterarum, & motus proprii, prædictorum, præsertim facta interpretatione prout à nonnullis dicitur esse facta, quod contra illos non possit opponi legitima præscriptio temporis, neque compensatio, vel etiam promelioramentis competens retentio, & pro fructibus bona fide perceptis, & consumptis excusatio, neque fori decurtatio, minuscule appellatio, aliaque juris communis remedia, & quod alienationes factæ à Rom. Pont. solemnitatibus aliis à jure requisitis, & etiam ad commo-

Transum-
ptorum fi-
des.

Forma, &
effectus pu-
blicationis.

D. P. A. I.
die 4. Sept.

Publicatio.

XI.

Edita An. D.
1560.

Exordium.

Paul. IV.
editis consti-
de qua hic.

Lites autem
& quæstio-
nes multe
ortæ sunt,
& quamp-
plurimi de ri-
gorosa exe-
cutione d.
consti. Pauli
IV. conque-
rebantur.

dum,

Ideo hic Pont. illam constit. reducit ad terminos juris communis, quoad causas pendentes & futuras.

Quo vero ad decimas, ablo. vit. condemnatis a censuris, & causas mandat revideri & eundem juris communis dispositionem.

Decretum irritans.

Forma, & effectus publicationis.

Clausula derogatoria.

Papae subscriptio.
D. P. An. i.
die 11. Sept.
Publicatio.

dum, & favorem, & ex necessitate S.R.E. non valent.

§. 3. Nos arbitantes indemnitate Ecclesiarum per anteriores Canones esse abunde provium, ac quietem & tranquillitatem singulorum Christi fidelium nostris potissimum temporibus, sinceris exoptantes affectibus, ad tollendam omnem querelam prædictarum occasionem, literarum & Motus proprii prædictorum veriores, necnon processum desuper formatum, & sententiarum litarum tenores, ac si de verbo ad verbum infererentur. Necnon quorumcumque litarum desuper formatarum, & pendens status, ac merita, ac nomina & cognomina iudicum, & colligan. præsentibus pro expressis habentes, volentes, consideratione etiam dilectorum filiorum Pop. Rom. ubi propter literas, & Motum proprium prædicti. novitates nullæ factæ esse dicuntur, literas & Motum proprium hujusmodi quoad pendens & futuras causas, ac si unquam emanassent ad jus commune, & terminos, & viam juris communis, & ex certa nostra scientia, & de Apost. potest. plenitudine omnino reducamus, revocamusque cassamus, & annull. ac viribus vacuumus.

§. 4. Quo vero ad eas causas in quibus vigore literarum, & Motus proprii prædictorum ad sententiam prolationem est processum, illos contra quos est sententiatum, si sunt propterea censuris Ecclesiasticis irritati, a censuris hujusmodi absolviimus, concedimusque & volumus, quod etiam si ab eisdem sententis non appellaverint, aut interpositæ per eos appellationes deserte remanserint, ac etiam ad earundem sententiarum executionem processum fuerit, possint nihilominus, firma remanente executione jam facta, pro eorum, & cujusque eorum libito voluntatis super sententiarum executionumque hujusmodi & quorumcumque inde secutorum injustitia, & nullitate coram suis competens ordinariis sive specialiter delegatis Judicibus agere, & experiri in causis, quæ ipsis secundum juris communis dispositionem, posthabitis Bulla & Motu proprio prædictis procedi, & sententari, & definiri debeat, ita ut si hujusmodi sententias cum inde secutus a dictis ordinariis, vel Judicibus specialiter delegatis per viam nullitatis, vel injustitiæ revocari contingerit etiam quod unica sententia sit fit in favorem priorum possessorum executioni demandetur, firma manente appellatione, quoad caput devolutum.

§. 5. Et ita per quoscunque Judices quavis auctoritate fungens, etiam casuum Palatii Apostolici Auditores, ac S.R.E. Cardinales, subblata, & Irritum quoque, &c. Judicari, & definiri.

§. 6. Præsentiumque (quas vim legis in perpetuum habere volumus) solam signaturam sufficere, & postquam per Curia res in locis consuetis more solito publicatæ fuerint, statim omnes afficere, & earum transumptis unius ex dilecti filii nostri in Alma Urbe Vicarii Judicibus manu subscriptis, ejusdemque Vicarii sigillo obfignatis, non minus quam ipsis originalibus credi, & fidem adhiberi decernimus & declaramus.

§. 7. Non obstantibus præmissis, ac quibuscumque renunciationibus, & de non contraveniendi obligationibus desuper factis etiam juramento, quod quoad hoc relaxamus, vallatis privilegiis quoque indultis & litteris Apostolicis sub quibuscumque tenoribus & formis ac cum quibuscumque, decretis, etiam Motu proprio, & scientia similibus quomodolibet concessis, &c. Quibus omnibus & singulis in litteris latiss. extenden. etiam si de illis, &c. tenores, &c. hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, ceterique contrariis quibuscumque, cum clausulis opportunis & consuetis:

Fiat Motu proprio. I.

Dat. Romæ apud S. Marcum, Tertio Idus Sept. Anno primo.

Anno a Nativitate Domini 1560. Indi. 3. die vero 24. mensis Septemb. Pont. Sanctiss. in Christo patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papæ IV. Anno Inter scripta littera affixa & publicata fuerunt in acie Campi Floræ, ac Basilicæ principis Apostolorum, & Cancell. Apost. valvis, seu portis tamquam locis ad similia facien. juxta ipsarum

litterarum tenores per nos Jacobum Carra, & Nicolaum de Mathias Curfor.

Joannes Magnus Mag. Curf.

Forma contrahendi in Statu Ecclesiastico Societates Officii nuncupatas.

Aliam ediderat dispositionem Paulus Quartus, ut supra in ejus const. 7. Inter cæteras, in Tomo 1. prout aliam quoque edixerat Leo X. die 12. Januarii 1514. sed Leonis Bullam veluti in totam antiquitatem volens prætermis.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Cum sicut accepimus felic. rec. Paulus Papa IV. prædecessor noster certis tunc expressis causis motus, quod nullus tam in Curia, quam in tota ditione Ecclesiastica Officialis cujuscumque status, gradus, ordinis, dignitatis, conditionis, & præeminentiæ existeret, tunc, & pro tempore aliquam societatem super aliquo, seu aliquibus ex Officiis ad tunc suam, seu Sedis aut Cameræ Apostolicæ, seu Camerarii, Vicecamerarii, Penitentiarii Majoris, & causarum Palatii Apostolici Auditoris, dispositionem quomodolibet pertinentibus, quæ vendi consueverunt per eum obtinen. pro tempore cum aliqua alia persona, seu personis, Communi, Collegio, seu Universitate, nisi præcedente Signatura ab eo, seu Rom. Pont. pro tempore existen. obten. in qua pacta, & conventiones partium exprimi deberent, pro cuius expeditione, & certa advocacy medium pro centenario quolibet scutorum, seu ducatorum cogere turolvere, inire præsumeret, & societates aliter quàm sic initæ non valerent, & earum prætextu agi non posse, & forsan alia, tunc expressa sua constitutione Motu proprio sub Datum Romæ apud S. Marcum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo quinquagesimo quinto, Nonis Octobris, Pontificatus sui Anno I. statuerit, & ordinaverit prout in ea latius continetur & habetur.

§. 1. Nos considerantes sicut fidei relatione percipimus, quod ex hujusmodi constitutione multæ, & diversæ tam nostræ Almæ Urbis, quàm ditionis Ecclesiasticæ, & extra eam personæ quæ aurum pecunias in societatis Officiorum hujusmodi contrahere solitæ erant, ea prohibitione uti re nova teritæ earum societates, quæ in notabili numero, & ingenti pecuniarum summa existerent statim discederent & revocarunt, ad exactionemque pecuniarum sic in societatis datarum agere, Officiales eorumque fidei iussores cogere cæperunt, & enixe insistunt, quo factum est ut Officiales ipsi, & eorum fidei iussores, tum etiam ob mala tempora quæ intervenerunt promptam non habent quam restituere pecuniam, nec ab aliis propter hujusmodi Constitutionis difficultatem pecunias in societatem reperirent eorum officia, seu bona alia villiori etiam pretio vendere, & alienare, vel pecunias alias sub gravioribus etiam illicitis usuris capere, vel potius quod pluribus contingit decoquere, & ab Urbe aufugere, & sic creditores defraudare omnino cogerentur, ob quod gravia damna, & incommoda tam Urbis, quàm ipsis particularibus Officialibus, & personis illata fuerint, quæ etiam hodie sustinent. Cupientes quantum tum Deo possimus his malis obviare pro tempore futuro, ac officiales ipsos, & alios interesse putantes ab hujusmodi gravibus, & damnatis usuris condebitis exactionibus liberare. Supplicationibus dilectorum filiorum nostrorum Populi Romani, & Conservatorum Almæ Urbis nostræ super hoc nobis porrectis inclinati, eisque instantibus, & cum eis more pii patris benigne agere volentes, Motu simili ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine dictam Constitutionem pro dictum Paulum Quartum, ut præmittitur factum, cum omnibus in ea appositis clausulis, cuius tenores, & si de verbo ad verbum infererentur, pro expressis haberi volumus,

XII.

Edict. A. D.
1560.

Paulus Quartus tradidit formam contrahendi societates Officiorum, nuncupatas, ut in ejus constit. Inter cetera, sup. fol.

Hic Pont. ex causis hic relatis eam revocavit.

Adverte quod non intelligitur revocari in vers. Nos cupientes, ut patet ex littera hujus Bullæ.

ANNO 1560.

PIUS QUARTUS.

ANNO 1560.

Novamque
dispositio-
nem indu-
cit.

callamus, irritamus, & annullamus. ac pro cassatis, irritis, & annullatis haberi volumus, illamque viribus tempore futuro penitus evacuamus.

§. 2. Volentes, & auctoritate nostra decernentes, quod de cætero ipsis Officialibus super tamen eorum Officiis societates quascumque cum pactis tamen licitis, & honestis prout & quemadmodum ante constitutionem præfatam solitum erat, etiam nulla à nobis, seu Rom. Pont. pro tempore existent. desuper expedita Supplicatione, seu Signatura, non tamen ultra valorem Officiorum super quibus illas fieri contineret, ita quod ad requisitionem secum societates contrahentium teneantur in ipso contractu specialiter exprimere alias societates super eodem Officio contractas si quæ sint & si eas falso negaverint, vel exprosserint in toto, vel in parte, poenam prævisionis officiorum ipsorum, super quibus societates huiusmodi contractæ fuerint, sine tamen præiudicio creditorum, quatenus aliunde illis satisfieri non possit, ipso iure incurrant. Et nihilominus tam ipsi, quam fidei iussores desuper præstiti ad satisfactionem societatum, & debitorum desuper contractorum teneantur, & obligati existant, facere, & inire, ac pecunias recipere, & contractus desuper celebrare, qui aliàs tamen legitime initii, validi & efficaces existant, & executioni demandari debeant, libere, & licite possint & valeant, licentiam & facultatem concedimus per præfcepta.

Contrariis
derogat.

§. 3. Dicta Constitutione ceterisque in contrarium quomodolibet facientibus non obstantibus quibuscumque præmissorum omnium & aliorum hic forsitan necessariò exprimendorum tenores pro plene, & sufficienter expressis habentes.

Papæ sub-
scrip.

XIII.

Placet Motu proprio I.

De solemnitatibus observandis in venditionibus, & locationibus bonorum & iurium Cameræ Apostolicæ.

De alienationibus autem, & infeudationibus Terrarum &c. Sedis Apostolicæ, vide prohibitionem Pii V. in ejus consil. 35. Admonet. ubi notabo. infra in hoc Tempore.

Edita A. D.
1560.

PIUS PAPA QUARTUS

Motu proprio, &c.

Exordium.

Cum in alienationibus rerum ad Ecclesias, & Fiscum pertinentium nonnulla sint à jure specialius disposita, ne Ecclesiæ, & Fiscus per malignitatem hominum gravius lædantur, eaque maxime in rebus ad Romanam Ecclesiam, quæ ceterarum est caput, & ejus Cameram Apostolicam pertinentibus observari conveniat, quorum omissionem plerumque damnosam fuisse, experientia rerum magistra docente, compertum est.

Quæ so-
lemnitates
observentur,
in aliena-
tionibus, &
locationibus
bonorum
Cameræ.

§. 1. Idcirco nos præfatæ Romanæ Ecclesiæ ejusque Cameræ Apostolicæ indemnitate, ex nostri officii debito consulere volentes, Motu simili, & ex certa scientia, hac in perpetuum valitura constitutione statuimus, & ordinamus, ut de cetero in omnibus venditionibus, locationibus, & alienationibus Thesauriarum, duhanarum, gabellarum, aliorumque iurium, bonorum, & reddituum quorumcumque tam in Alma Urbe nostra, quam in aliis Provinciis, Civitatibus, & locis nostræ, & S. R. E. ditioni subiectis ad prædictam Cameram quomodolibet pertinentium per eandem Cameram, seu ab ea deputatos, & deputandos ad quantumcumque, longum, seu breve tempus faciendis, debite, & de jure requisitæ solemnitates tam quoad publicam edicta, cum expressione locorum, & dierum, in quibus hæc fieri debebunt emittenda, & licitationes, & subhaftationes cum temporis, à jure seu Judicis arbitrio statuti præfixione, necnon plures offensibus deliberationes, quàm quoad cetera circa rerum Fiscus alienationes disposita, observari debeant.

Aliiterque
factæ nullæ
sint.

§. 2. Et aliter factæ venditiones, locationes, seu alienationes rerum huiusmodi non valeant, nulliusque roboris, & momenti existant, sed per eandem Cameram revocari, ipsæque res sic alienatæ cum

fructibus inde perceptis repeti, & aliis vendi, seu locari possint, & debeant, sique per quoscumque Judices etiam Palatii Apostolici Auditores, & S. R. E. Cardinales judicari, & declarari debere, sub lata eis aliter iudicandi, & declarandi facultate, irritumque & inane quicquid factus à quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit attentari, decernimus.

§. 3. Et ne in huiusmodi subhaftationibus facientis fraus aliqua fieri valeat, omnibus, & quibuscumque res præfatas emere, vel conducere volentibus, ne cum aliis quibuscumque pacta, seu conventiones, ut illi minora pretia offerant, & licentur, seu aliquam super præmissis societatem, seu conventiculum occultum in præiudicium prædictæ Cameræ incant, sub nullitatis, & invaliditatis omnium per eos in præmissis mediante fraude huiusmodi gerendorum, ac excommunicationis majoris, & decemmillium ducatorum auri eidem Cameræ applicandorum poenis districtius inhibemus.

§. 4. Mandantes dilectis filiis Guidoni Ascanio Sanctæ Mariæ in Via lata Diacon. Cardinali, nostro & S. R. E. Camerario, ac prædictæ Cameræ Præfidentibus, Clericis, ut præfentes, quarum solam signaturam nostram, etiam absque datæ appositione, regula Cancellariæ nostræ forsitan contraria non obstante, sufficere volumus in libris Cameræ registrari, ac in eisdem literis contenta omnia, & singula inviolabiliter observent, & à quibuscumque aliis observari mandent, & faciant cum effectu.

§. 5. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis eidem Camerario, & Clericis, & Cam. Apost. quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, illorum tenores, &c. quoad præmissa specialiter, & expresse derogamus, ceterisque in contrarium facientibus quibuscumque.

Placet, & ita motu proprio statuimus, & mandamus. I.

Dat. Romæ apud S. Marcum 16. kalend. Octob. Anno primo.

Regist. lib. 35. fol. 253. die 15. Novembris 1560.

Admissa, & regist. ex decreto Cam. collata, & concordata.

Hieronymus de Tarano.

Judices causarum Beneficialium, vel criminalium privationem Beneficiorum concernentium, eorumque affines, & familiares, beneficia illa impetrare non possint.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Cupientes unicuique iustitiam, prout par est, æqua lance ministrari, & omnem delinquenti occasione ab ipsis iustitiæ ministris, præsertim Judicibus in beneficialibus, ac etiam criminalibus privationem beneficiorum Ecclesiasticorum concernentibus causis, tam à Sede Apostolica, ac ejus Legatis, & Vice legatis, quàm aliis quomodolibet, & à quibuscumque pro tempore deputatis, seu ad quos illarum cognitio, tam de jure, quàm de consuetudine, etiam ratione eorum quæ obtinent officiorum, & aliis quomodolibet pertinet, & pertinebit, seu quibus causæ ipsæ tam Apostolica, quàm alia auctoritate commissæ sunt, & pro tempore committuntur, penitus removeri, ac eorum fraudibus obviare, & animarum saluti quantum cum Deo possumus salubriter consulere.

§. 1. Ex certa nostra scientia ac de Apostolicæ potestatis plenitudine decernimus, & declaramus quoscumque Judices etiam S. R. E. Card. necnon causarum Palatii Apost. Audit. seu Locat. & utriusque vel alterius Signat. Refer. & quovis alios etiam Archiepiscopali, Patriarchali, aut alia majori dignitate etiam Legationis munere fungentes, ad audiendum, cognoscendum, & decidendum causas super quibusvis Ecclesiis, monasteriis, prioratibus, & aliis bo-

Fraudulen-
tæ pactiones
damnantes.

Executo-
rum hujus
Bulle depu-
tatio.

Clausulæ
derogato-
ria.

Papæ sub-
scrip.
Dat. P. A. i.
die 16. Sept.
Admissio in
Cam. Apost.

XIV.

Edita An. D.
1560.

Causa con-
fir.

Judices cau-
sarum Bene-
ficialium,
eorumque
affines, &
familiares
beneficia
illa impetra-
re non pos-
sint.

neficiis Ecclesiasticis, tam in Romana Curia, quam extra eam quomodolibet, hæcenus motas, etiam privationem earumdem concernentes, & in futurum movendas, tam alia Sede ejusque Legatis, seu Vicelegatis prædictis, ac tam Apostolica, quam ordinaria, aut alia auctoritate, & a quibuscvis in dicta Curia, & extra eam, vel aliis ubilibet pro tempore deputatis, seu ad quos similium causarum decissio, seu quævisque cognitio etiam quomodolibet, ut præfertur, spectat & spectabit in futurum, aut quibus illas quovis modo audiendas, cognoscendas, & decidendas, & ut præfertur, alias committi contigerit, necnon eorumdem Cardinalium, Auditorum, Locatenentium, Referendariorum, & aliorum, ut præfertur, qualificatorum Judicum hujusmodi nepotes, consanguineos, affines, procuratores, sollicitatores, ac domesticos, vel familiares, cujuscumque status, gradus, ordinis, & conditionis fuerint, & etiam ex quorum sententis privationes Ecclesiarum, monasteriorum, prioratuum, & beneficiorum hujusmodi, aut alias emanaverint, ac emanabunt, eorum per privationem eandem, aut aliis quomodolibet occurrentia vacatione, nullo umquam tempore a nobis, seu Sede, aut aliis Legatis prædictis, vel quibuscvis illorum ordinariis collatoribus impetrare, aut ab aliis impetrari, seu sibi conferri, & de illis provideri facere quoquo modo posse, seu debere, sed illos penitus ad illa in posterum obtinenda inhabiles fore & esse, ac quæcumque impetrationes sic ab eis, etiam ut præfertur, qualificatis, necnon collationes, & provisiones, ac quævis alias dispositiones, aut alias concessionis de Ecclesiis, monasteriis, prioratibus, & beneficiis hujusmodi etiam per nos, aut prædecessores nostros etiam motu & potestatis plenitudine similibus hæcenus quomodolibet factas, & in posterum faciendas, nullas, irritas, & inanes, nulliusque roboris & momenti existere, nullumque per illas eis jus quæsitum fuisse, fore aut esse, seu dici vel conferri, ac de annali, & triennali possessore, aut alias Cancellariæ Apost. regulas, seu alias constitutiones eis adversus præmissa nullatenus suffragari posse, sed illos eis sic impetratis omnino privatos, & ab eis amovendos esse, prout nos harum serie privamus, & amovemus, ac privatos & amotos esse denunciavimus.

Decretum
irritatis,

§. 2. Et ita per eosdem Cardinales, Auditores, Locatenentes, ac alios quoscumque Judices quavis auctoritate fungentes, sublati, &c. judicari, &c. debere, irritum quoque, &c. decernimus & declaramus.

Clausula
derogato-
riz.

§. 3. Non obstantibus si opus sit de non tollendo jure quæsito, & aliis quibuscvis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis statutis, &c. etiam juramento, &c. roboratis, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis quibuscvis in genere, vel in specie etiam juramento, &c. ac Motu, scientia & potestatis plenitudine paribus concessis quibuscvis, omnibus in litteris latissime exten. etiam si de eis, &c. tenores, &c. hac vice specialiter, & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque, cum clausulis opportunis & consuetis.

Papæ sub-
scripti.
Repetitio
clausularum.

Fiat Motu proprio I. §. 4. Cum decreto, declaratione, derogatione, & aliis ac pro omnibus supra dictis, quæ hic pro sufficienter, & ad partes repetitis habeantur latissime exten. perpetuo in forma gratiosa, & si videbitur litteræ desuper ad perpetuam rei memoriam cum præmissorum omnium, & singulorum etiam nomen, & cognomen etiam beneficiorum sic impetratorum eorum qualitatem etiam majoritatis, & principalitatis, & illa impetrantium, in se continentium, etiam si Cardinales vel alii, ut præfertur, qualificati fuerint, ac tempus detentionis majori, & veniori expressione latissime exten. per breve nostrum expediri, & in dicta Cancellaria, & aliis ubilibet publicari possint, & si videbitur cum opportuno decreto, quod illarum transumptis manu Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ, seu Curie Ecclesiasticæ munitis, eadem prorsus fides in iudicio, & extra adhibeatur, quæ originalibus adhibetur si forent exhibite, vel offensæ, latissime exten-

di possint, seu si videbitur præsentis Motus proprii etiam absque illius registratura & data, sola signatura sufficiat, & ubique, fidem faciat in iudicio & quacumque regula, seu constitutione Apostolica contraria non obstante.

Dat. Romæ apud S. Petrum, quinto Idus Octob. Anno primo.

Approbatio & declaratio jurisdictionis, & indultorum, Archipresbyteri, & Judicis causarum Canoniarum, & Capituli B. Mariæ Majoris de Urbe,

Has jurisdictiones vide sup. in consil. 19. Pauli III. fol. 520. Tom. I. Cum sicut.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Cum sicut accepimus, dilectus filius noster Carolus tit. Sanctæ Prædix S. R. E. presbyter Card. Borromeus nuncupatus, Basilicæ S. Mariæ Majoris de Urbe Archipresbyter, & dilecti filii ejusdem Basilicæ Canonici, Capitulum, ac Beneficiati, & Clerici, & singule personæ præinsertos Motus proprios omniaque Basilicæ hujusmodi privilegia pro illorum subsistentia firmiori, nostris & Sedis Apostolicæ patrocinio, & munimine roborari desiderant.

§. 1. Nos Carolo Cardinali Archipresbytero, & Capitulo Canonici, Beneficiatis, & Clericis, & personis Basilicæ prædictæ ob singularem eorum erga nos, & Sedem Apostolicam devotionem benigne annuere, ac eos specialis gratiæ favore prosequi volentes. Ac omnes, & singulas causas civiles, & beneficiales, meras, & mixtas, Ecclesiasticas, seu spirituales, & profanas, necnon etiam criminales (citra tamen poenam sanguinis, & corporis afflictivam) tam inter Canonicos, & Capitulum, ac Beneficiatos, & Clericos, aliasque prædictæ Basilicæ, & alias quæcumque personas, cujuscumque status, gradus, dignitatis & præminentie existentes, de & super censibus, canonibus, pensionibus, responsionibus, & aliis quibuscumque rebus, & bonis ad dictam Basilicam spectant, & pertin. vel jus, aut interesse prædictæ Basilicæ, quomodocumque & qualitercumque concernent. directe, vel indirecte, quam etiam inter ipsosmet Canonicos, & Beneficiatos, Clericos, Capellanos, & Sacristanos, & alias ejusdem Basilicæ personas, & alios prædictos, & alias quæcumque personas, loca, Collegia, & Universitates, & ac Communitates super quibuscumque bonis, & pecuniarum summis, rebusque aliis quocumque nomine nuncupatis, & quomodocumque qualificatis ad dictos Canonicos, Beneficiatos, & Clericos, ac quemlibet eorum quomodolibet spectant, in genere, vel in specie, coram quibuscumque Romanæ Curie, seu aliis quibuscvis Judicibus & Locatenen. & Auditoribus, & S. R. E. Card. quomodolibet, & in quacumque instantia penden. in statu, & terminis in quibus repertiuntur, ab eisdem Judicibus, & ex tenore præsentium auctoritate Apostolica motu simili, & ex certa scientia nostra, ad nos advocantes, præinsertos Motus proprios, omniaque alia, & singula privilegia, facultates, exemptiones, libertates, prærogativas, antedationes, jurisdictiones, auctoritates prædictæ Basilicæ, necnon ejusdem Basilicæ stylium, mores, consuetudines, statuta, indulta, & gratias, aliasque præfate Ecclesiæ ac Carolo Card. Archipresb. necnon Capitulo, & Canonicis, Beneficiatis, & Clericis prædictis, etiam super collatione quorumcumque beneficiorum Ecclesiasticorum per prædictos, & quoscumque alios Rom. Pont. prædecessores nostros, in genere, vel in specie & aliis quomodolibet concessa, facta, edita, observata, & usu existens: ac desuper signat. ac consecratis litteris, Motus proprios, supplicationes, instrumenta, & alias scripturas, & in eis contenta, ac illorum vigore subsecuta, gesta, & emanata quacumque

Sola signa-
tura sufficit.D. P. A. I.
die 18. Oct.

X V.

Edita An. D.
1560.Motus pro-
prii sunt
Pauli III.
indicati in
rubric.Confirma-
tio jurisdi-
ctionis, &
indultorum,
cum declara-
tione quo-
ad causas
criminales.

auctoritate, motu, & scientia similibus tenore præsentium confirmamus, approbamus, & innovamus, ac aliis perpetue, & invariabilis firmitatis robur adicimus, omnesque & singulos tam juris, quam facti, & solemnitarum defectus, si qui forsan intervenierint in eisdem supplementis, ac singula præmissa, & in præsertis, aliisque motibus propriis, supplicatione, litteris, instrumentis, & scriptis Basilicæ Archiepiscopato, Capitulo, & Canonicis prædictis, ut præferatur concessa, & inde secuta quæcumque, valida & efficacia fore, & esse, ac perpetuis futuris temporibus invariabiliter observari debere, & ita per prædictos, & quoscunque alios Judices, &c. omnesque causarum Palatii nostri Apostolici Auditores, & S. R. E. Cardinales subblata, &c. judicari debere, irritumque &c. decernimus.

Nova eorundem concessio.

§. 2. Et nihilominus pro potiori cautela, eadem omnia, & singula eisdem auctoritate, motu, & scientia & tenore, modo & forma, quibus concessa sunt, de novo concedimus, ac omnes & singulos prædictos, ut præferatur, & aliis quomodolibet penden. & ad nos advocatas, & alias qualescunque causas, lites, & quæstiones, molestias, & differentias, ut præferatur, & alias quomodolibet specificatas, & qualificatas, modo & forma præmissis, ac inter Canonicos, Capitulum, Beneficiatos, Clericos, Capellanos, & Sacristas Basilicæ prædictæ, aliasque personas, motas & movendas, active & passive eidem Carolo Card. & pro tempore existent. Archiepiscopo Basilicæ prædictæ, illius Vicecellario deputato, & deputat. etiam summarie, simpliciter, & de plano, sine strepitu & figura Judicii, & etiam si videbitur quando opus fuerit manu Regia, aliis juxta præfentorum motuum propriorum tenorem, cum omnibus earum incident. audien. cognoscen. deciden. sineque debito termin. committimus, & mandamus. Cum potestate citan. & inhihen. &c. in eisdem causis, & quolibet earum, secundum dictorum motuum proprium tenorem proceden. citationesque per Curforem, seu Mandatarium ad id per Reverendiss. D. Archiepiscopum deputat. in causis quibuscunque vigore hujusmodi Motus proprii fieri facien. aliaque facien. in præmissis, & circa ea necessaria, seu quomodolibet opportuna.

Derogatio contrariorum.

§. 3. Præmissis, ac constitution. & ordination. Apost. statutiisque, privilegiis etiam novissime in favorem Populi Rom. concessis, & conceden. ac cum clausulis derogatariorum derogatoriis, stylo Palatii, & Rqm. Curie, ceterisque concessionibus in præfentis, & quibuscunque aliis motibus propriis concessis, non obstant. contrariis quibuscunque, statum pro sufficienter expressis haberi. cum clausulis opportunis.

Fiat Motu proprio I.

§. 4. Et cum absoluteione à censuris, effectum, &c. & de confirmatione, approbatione, innovatione, adjectione, supplementatione, decreto, nova concessione, commissione, mandato, derogatione, aliisque præmissis, ac supra, quæ hic pro sigillatim repetitis haberi perpetuo in forma gratiosa latissime extenden. & si videbitur cum opportuna executione deputatione qui assistant. &c. & sub censur. &c. Cum facultate aggravan. invocato brachii secularis auxilio latissime exten. Et quod præmissorum omnium & singulorum & cognomina Judicum colligan. stat. merit. invocation. denominat. annex. qual. nuncupat. aliorumque necessarium major, & verior, spec. & expr. fieri poss. in litteris expedien. & de Confirmatione privilegiorum tantum quatenus sint in usu, & decretis Conc. Tridentini non repugnent.

XVI.

Confirmatio Confraternitatis S. Rocchi à morbo Epidimie liberatoris in Urbe hæctenus institutæ, & ab Alex. VI. & Leon. X. nonnullis privilegiis decoratæ, cum aliarum Indulgentiarum & gra-

tiarum concessione. Et Judicis ad suarum causarum cognitionem deputatione.

Has Indulgentias moderatus est, & alias concessit Paul. V. in ejus const. adhuc non edita, quavis firmata die 3. Octob. 1606. Et normam aggregandi alias Confraternitates tradidit Clem. VIII. infra, Tom. III. in constit. 115. Quæcumque.

PIUS PAPA QUARTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Regimine universalis Ecclesiæ, meritis licet imparibus, superna dispositione præfecti, ad singulas Orbis Ecclesias, & Hospitalia, ac alia pia loca, præsertim Almæ Urbis nostræ, in quibus pias Christi fidelium Societates, diversa pietatis & charitatis opera sincera devotione exercentes, ad omnipotentis Dei, ac Sanctorum ejus gloriam & honorem institutas, cum odore bonæ famæ, & illorum ac aliorum Christi fidelium salute vigere cernimus, ut nostris præcipue temporibus votivis in spiritualibus & temporalibus proficiant incrementis, Pastoralis officii nostri partes libenter convertimus, & iis, quæ in illorum favorem & commodum, ac prosperum & felicem successum à diversis Romanis Pontificibus prædecessoribus nostris concessa sunt, ut firma perpetuo & illibata persistant, cum à nobis petitur, Apostolici muniminis firmitatem adicimus, illaque extendimus, & ampliamus, ac de novo concedimus, & aliis deluper providemus, prout personarum Societatum earundem pia vota depescunt, & nos in Domino conspicimus salubriter expedire.

§. 1. Sane alias se. rec. Alexandro Papæ VI. prædecessori nostro, pro parte dilectorum filiorum Confratrum Confraternitatis S. Rocchi Concessoris de dicta Urbe exposito, quod nonnulli Christi fideles in eadem Urbe commorantes pie considerantes, quod quamplures Christiani nominis professores intercessione ejusdem S. Rocchi à morbo epidimie non solum præservabantur, sed etiam dicto morbo infecti liberabantur, quodque in dicta Urbe nulla Ecclesia sub invocatione S. Rocchi hujusmodi constructa existebat, quandam Confraternitatem inter se sub invocatione ejusdem S. Rocchi fecerant, & ordinaverant, & ut haberent locum, in quo pro divinis celebrandis, & iis quæ ad directionem & gubernationem dictæ Confraternitatis pertinebant, & pertinerent, in futurum convenire possent, & quandam petiam terræ montis Augustæ de dicta Urbe prope viam publicam qualiter ad Ecclesiam S. Mariæ de Populo, etiam de ipsa Urbe, consistentem, sub annua responsione decem ducatorum, certis modo & forma tunc expressis conduxerunt, & quod ipsi Confratres intendebant inibi unam Ecclesiam sub dicta invocatione construere, & ædificari, ac in ea Missas, & alia divina officia per Capellanum, seu Capellanos alios idoneos celebrari facere, & illam ornamentis Ecclesiasticis munire, & fulcire, præfatus prædecessor aut Christi fideles illam visitare, & divina officia audire, ac ut intercessione ejusdem S. Rocchi apud Altissimum hujusmodi morbo epidimie conservari, & liberari possent, eorundem Confratrum supplicationibus inclinatus, Confraternitatem præfatam per quasdam Apostolica auctoritate approbavit, & confirmavit.

§. 2. Ac eisdem Confratribus tunc & pro tempore existentibus statuta, rationabilia & honesta, ac sacris canonibus non contraria pro directione & conservatione dictæ Confraternitatis, ac Officialis pro gubernatione ejusdem faciendi & condendi.

§. 3. Ac in loco dictæ petiæ terræ, unam Ecclesiam sub invocatione S. Rocchi hujusmodi sine alicujus præjudicio construere, & ædificari, & per quemcumque Catholicum Antistitem consecrari, & in ea postquam constructa & consecrata foret, seu etiam antequam consecraretur super altare

Edita An. D.
1560.

Proceum.

Alex. VI.
confirmavit
Confraterni-
tatem S.
Rocchi, cu-
jus interces-
sione multi
in Urbe
præserva-
bantur à
pete & li-
berabantur.

Statuta
condendi,
& officiales
deputati
facultatem
dedit.
Ecclesiam
que S. Roc-
chi Romæ
ædificandi
& conse-
crandi ar-
que conse-
crari facien-
di.

por-

Pias obla-
tiones reci-
piendi.

Mortuus in
dicta Eccle-
sia sepelen-
di.

Confesso-
rem pro
confratribus
eligendi &c.
Tu vide mo-
derationem
Clem. VIII.
cit. in rubr.

Indulgen-
tiam visitan-
tibus d. Ec-
clesias elar-
gitus est.
Hæc indul-
gentia est ple-
naria, ut mox
infra dicitur.
Et quoad
porrigentes
manus adju-
trices, revo-
cationem vi-
de in constit.
30. Pii V.
Eti.

Leo X. præ-
dicta consti-
tuavit.

partiti per Capellanum seu Capellanos Missas, & alia divina officia celebrari faciendi.

§. 4. Ac de elemosinis & aliis piis oblationibus quæ in dicta Ecclesia erogantur, ac bonis mobilibus & immobilibus quibuscumque, quæ dictæ Confraternitati quomodolibet relinquuntur, in constructionem dictæ Ecclesiæ, & illius manutenzioneem, necnon dictæ Confraternitatis utilitatem, ac alia pia opera charitatis, & alios pios usus, prout per dictos Confratres statutum, & ordinatum fuisset, disponendi; ita ut ipsi Confratres super illis per quosvis, tam religiosos quam sæculares tamquam eis debitis, vel ad eos pertinentibus, etiam prætextu quorumcumque privilegiorum eis concessorum molestari nequirent, sed illorum dispositio libera ad dictam Confraternitatem pertineret. Et ipsi Confratres, ac eorum Ecclesia nulli personæ religiose vel seculari, aut alteri Societati subessent, & a quorumcumque aliorum Superiorum quoad præmissa exempti existissent.

§. 5. Ac quibuscvis Christi fidelibus apud dictam Ecclesiam sepulturam eligendi cuiusvis licentia super & aliis minimè requisita, licentiam, & facultatem concessit.

§. 6. Nec non ducentis ex eisdem Confratribus, & eorum cuilibet ut ad dictum numerum duntaxat, & non ultra tunc præsentibus & futuris, ut aliquem idoneum presbyterum sæcularem, vel cuiusvis Ordinis regularem in suum possent eligere confessorum, qui vita sibi comite, in casibus Sedi Apost. reservatis, post finitum annum Jubilæi tunc proxime venturi, (præterquam offensæ Ecclesiasticæ libertatis, criminum hæresis & rebellionis, aut conspirationis in personam vel statum Rom. Pont. seu Sedem præstatam, falsitatis litterarum Apostolicarum, supplicationum, & commissioem, invasionis, & depraedationis, aut devaluationis terrarum, & maris Romanæ Ecclesiæ mediate vel immediate subiectorum, offensæ personalis in Episcopum, vel alium Prælatum, prohibitionis devotionis causarum ad Rom. Curiam, delationis aliorum prohibitorum ad partes infidelium) semel dumtaxat in vita, aliis verò quoties opportunum foret, confessionibus suis diligenter auditis, pro commissis eis debitam absolutionem impenderet, & injungeret poenitentiam salutarem. Necnon votâ quæcumque (ultramirino, liminum Apostolorum Petri & Pauli, ac S. Jacobi in Compostella, necnon Castri), & Religionis votis dumtaxat exceptis) in alia pietatis opera commutare valeret. Quodque confessor, quem cuilibet ipsorum Confratrum duceret eligendum, omnium peccatorum suorum, de quibus corde contriti & ore confessi forent post dictum annum Jubilæi, etiam semel in vita, & in mortis articulo plenam remissionem eis & eorum cuilibet, in sinceritate fidei, & unitate dictæ Romanæ Ecclesiæ, ac obedientia & devotione sua, ac successorum suorum Rom. Pont. canonicè intrantium persistenti sibi dicta auctoritate Apostolica concedere posset, indulgit.

§. 7. Præterea ut dicta Ecclesia facilius construatur & ædificari, & postquam constructa & ædificata foret, manuteneri, ac ornamentis Ecclesiasticis decorari at fulciri posset, ac congruis frequentaretur honoribus, & Christi fideles eo libentius ad illam confluerent, ac pro constructione prædictis manus porrigerent adjutrices, omnibus & singulis utriusque sexus Christi fidelibus vere poenitentibus & confessis, qui dictam construendam Ecclesiam, postquam constructa incepta foret in eisdem S. Rocchi & S. Martini festivitibus à primis vespere usque ad occasum solis festivitatem earundem devote visitarent, & inibi pro præmissis manus porrigerent adjutrices decem annos & totidem quadragenas pro qualibet dictarum festivitatum pro injunctis eis poenitentibus misericorditer in Domino relaxavit.

§. 8. Et deinde pro parte dictorum Confratrum pias mem. Leoni Papæ X. etiam prædecessori

nostro, etiam exposito quod dicta Ecclesia ad Dei laudem jam constructa & ædificata erat. Ipsique Confratres in eisdem Ecclesiæ fabrica, necnon quatuor Capellanorum, cuilibet in dicta Ecclesia Missas & alia divina officia celebranti, viginti-quinq; ducatos annuatim persolvebant, ac pro Sacrificiis, necnon Custodis sustentatione, ac exequis defunctorum, necnon cera, olea, calicibus, & aliis ornamentis Ecclesiasticis, ac pensione annua dictæ petiæ terræ, necnon gubernatione & manutenzione Hospitalis & infirmorum, ac Ministrorum ejusdem, sustentationeque & dotibus puellarum annis singulis sexcentos ducatos vel circa exponebat, ac fructus redditus & proventus ejusdem Ecclesiæ, vix ad solutionem pensionis dictæ petiæ annuatim sufficiebant, ac numerus Confratrum in dicta Confraternitate in dies perabundabat. Idem Leo prædecessor eorum supplicationibus similiter inclinatus litteras Alexandri prædecessoris, & per illas eisdem Confratribus concessa privilegia, indulta, & gratias humilmodi per alias suas litteras approbavit, & confirmavit.

§. 9. Necnon pro potiori cautela illa omnia & singula eisdem Confratribus de novo concessit, ac posteriores suas litteras, quoad id ut ipsius Confraternitatis Capellani pro tempore existentes, illius Confratribus etiam infirmis Eucharistia Sacramentum quoties oporteret ministrare, illudque ad eorundem Confratrum infirmorum domos de dicta Ecclesia cum ea qua decebat reverentia, prout alie Societates & Confraternitates ejusdem Urbis consueverant, deferre liberè & licite valerent. Rectorum Parochialium Ecclesiarum infra quorum parochias Confratres & domus hujusmodi consistebant, & cuiusvis alterius licentia super hoc minime requisita, jure tamen eorundem Rectorum Parochiorum in omnibus semper salvo.

§. 10. Quodque ut non solum ducenti ut præfetur, sed omnes & alii ipsius Confraternitatis Confratres pro tempore existentes in dicta Urbe tamen degentes Confessorem eligere possent.

§. 11. Illique ac omnes & singuli utriusque sexus Christi fideles vere poenitentes & confessi, qui dictam Ecclesiam in singulis S. Rocchi, & S. Martini festivitibus prædictis, & per octavas earum visitarent, & manus porrigerent adjutrices, pro singulis festivitibus & diebus hujusmodi, quibus id facerent, plenariam indulgentiam, & peccatorum suorum remissionem consequerentur, auctoritate Apostolica præfata extendi, & ampliavit.

§. 12. Et insuper eisdem Confratribus tunc, & pro tempore existentem Curie causarum Cam. Apost. generalem Auditorem in Judicem ordinarium, ita quod tunc, & pro tempore existens, Confratres præfati coram alio quam dicto Auditore etiâ ratione delicti aut contractus, seu quasi vel rei de qua ageretur, ubicumque committeretur delictum, iniretur contractus, aut res ipsa consisteret, nullo etiam quæsito modo aut colore conveniri, aut eorum, necnon Ecclesiæ Confraternitatis, & Hospitalis prædictorum negotia, controversiæ & causæ pertractari, cognosci aut definiri possint, eadem auctoritate Apostolica deputavit, statuit, & ordinavit, prout tam in Alexandri quam Leonis prædecessorum litteris desuper confectis prædictis plenius continetur.

§. 13. Cum autem sicut Confratres Confraternitatis S. Rocchi hujusmodi nobis nuper exponi fecerunt, Ecclesia ipsa ad Dei laudem ex piis tam dictorum Confratrum, quam aliorum Christi fidelium elemosinis constructa & ædificata fuerit & in ea divina officia celebrentur ac diversæ charitatis opera exercentur, ipsaque Ecclesia per eisdem Confratres laudabiliter regatur & gubernetur, ipsique cupiant eorum Confraternitatem ac omnia privilegia, & indulgentias, exemptiones, & indulta eis concessa præfata pro illorum subsistentia firmiori, & ut ipsi in hujusmodi piis operibus exercendis de bono in melius perseverare valeant, etiam per nos approbati,

Facultatem ministrandi Sacramenta Confratribus infirmis etiam in illorum domibus per Capellanos ejusdem concessit.

Confessorumque eligendi pro omnibus Confratribus. Tu vide quod supra proxime dixi. Indulgentiam plenariam visitantibus d. Ecclesiæ concessit.

Privilegium fori à C. Societari & Confratrib. subijcit. Tu de hoc vide etiam hic infra.

Hic modo Pont. dictas confessiones confirmat.

& confirmari, ac ampliari; Nos considerantes copiosam Sedis præfate benignitatem salutis operibus semper intentam ad illa præcipue attendere, per quæ singuli Christi fideles ad huiusmodi salutis & alia opera pia exercenda facilius inveniuntur, & in eorum pia devotione conserventur, ac diligentius eisdem divinis officiis intenti existant, eorumque loca Deo propitio fuscipiant incrementa, eorundem Confratrum supplicationibus in hac parte inclinati, Confraternitatem S. Rocchi de Urbe huiusmodi, ac alia privilegia, indulgentias etiam plenarias, exemptiones & indulta, eorumque confirmationem, approbationem, ac desuper concessas Alexandri, & Leonis prædecessorum literas huiusmodi, ac prout illa concernunt omnia, & singula in eis contenta, & inde secuta quæcumque Apostolica auctoritate prædicta tenore præsentium approbamus, & confirmamus, illisque perpetuæ firmitatis robur adjicimus, ac omnes & singulos tam juris quàm facti defectus, si qui forsan intervenerint in eisdem supplemus.

§. 14. Necnon Ecclesiæ Confraternitate illiusque Confratribus præfatis, & aliis ejusdem Ecclesiæ, & illius bonorum Administratores, Gubernatores, Rectores, Oeconomus, Capellani, Familiarii, Ministri, ac aliis personis de eadem Confraternitate nunc & pro tempore existentibus, seu aliquam curam de Confraternitate, Confratribus & Ecclesiæ præfatis, & illius manutentionem habentibus, necnon personis inibi pro tempore decedentibus, seu de bonis suis pro manutentione Confraternitatis & Ecclesiæ huiusmodi, ejusque Fabricæ bonorum gubernatione & augmento aliquid relinquuntibus. Quod omnibus & singulis privilegiis, exemptionibus, libertatibus, immunitatibus, indulgentiis etiam plenariis, & peccatorum remissionibus, ac aliis gratiis, spiritualibus & temporalibus Imagini S. Salvatoris ad Sancta Sanctorum, & Charitatis, ac Archihospitalis S. Jacobi, & Hospitalis S. Spiritus in Saxia, ac Corporis Christi, & Sacramenti, ac Campi Sancti & Archihospitalis Orphanorum ac aliis Confratribus Confraternitatum de dicta Urbe, necnon eisdem Imagini, & Archihospitali S. Jacobi, & Hospitali Sancti Spiritus, & Archihospitali Orphanorum, ac Campo Sancto. Necnon Fabricæ Basilicæ Principis Apostolorum de eadem Urbe illiusque deputatis, eorumque necnon ejusdem B. Mariæ de Populo, & Consolationis, ac S. Joannis Baptiste Florentinorum, aliisque ejusdem Almæ Urbis Ecclesiis, ac illa & illas visitantibus, eis bene facientibus, eorumque Administratores, Guardianis, Rectoribus, Capellanis, Familiaribus, Oeconomis, Gubernatoribus, & aliis personis similem curam in eis fumentibus, ac pauperibus & infirmis eorum, etiam per nos, ac præfatos seu quoscumque alios Rom. Pont. prædecessores & successores nostros, ac Sedem eandem concessis & concedendis, & quibus illi, illæ, & illa utuntur, potiuntur & gaudent, ac uti, potiri & gaudere poterunt quomodolibet in futurum, Confraternitas S. Rocchi illiusque Confratres, Ecclesia, Hospitalis, Domus, & Administratores, Rectores, Capellani, Servitores, Familiares, Ministri, Oeconomus, ac Gubernatores, huiusmodi alique personæ similem curam inibi fumentes, ac illa visitantes vel eis beneficientes, ex nunc in perpetuum utantur, potiuntur & gaudeant, ac uti, potiri & gaudere libere & licite valeant in omnibus & per omnia, perinde ac si eisdem Confraternitati S. Rocchi, Confratribus Ecclesiæ Hospitalis Gubernatoribus & aliis personis, ac illa visitantibus & beneficientibus, ac aliis præfatis pro tempore specialiter & expresse concessa fuissent, ac in futurum concederentur. Necnon quibuscumque presbyteris tam religiosis quàm secularibus, qui in ipsa Ecclesia S. Rocchi quocumque anni tempore celebraverint, & animabus Christi fidelium qui in charitate Dei decesserint, ac pro quibus idem presbyteri ibi celebraverint, ac celebrari fecerint ac oraverint, eisdem indulgentias & peccatorum remissiones quæ celebra-

tibus pro defunctis in Capella, Scala Coeli nuncupata, Monasterii Trium Fontium extra muros ejusdem Urbis, aut in Capella in Præsepe Domini, sita in Ecclesia ejusdem B. Mariæ Majoris de dicta Urbe, & animabus pro quibus inibi celebratur, & oratur, auctoritate & tenore prædictis concedimus & indulgemus. Ipsaque indulgentias, gratias, privilegia, indulta, exemptiones, immunitates, libertates, & alias concessiones ac remissiones, ad illos, illas, & illa extendimus & prorogamus ac ampliamus.

§. 15. Et quod Administratores, Rectores, Capellani, Servitores, Familiares, Ministri, Oeconomus, & Gubernatores Ecclesiæ, & Confraternitatis S. Rocchi huiusmodi, indulgentias, privilegia, indulta, exemptiones, immunitates, libertates & alias concessiones, ac remissiones huiusmodi, ac dies & festa in quibus, & causas propter quas illa consequi debeant ad eorum beneplacitum publicari facere, necnon elemosynas Ecclesiæ S. Rocchi ac Hospitalis, & illius domui præfatis ac aliis sub invocatione ejusdem S. Rocchi erigendis largiendas recipere, & ad illas recipiendas & quærendas ac indulgentias huiusmodi publicandas per dictam Urbem seu alibi quæsores seu quoscumque alias personas, Vicarii pro tempore existentis dictæ Urbis ac diocesis aut cujusvis alterius licentia desuper minime requisita, deputare & mittere, ac alias Confraternitates sub dicta invocatione, ubi vis locorum erigere & institueri, ac quibuscumque Ecclesiis, Hospitalibus & aliis piis locis, necnon Confratribus sic erectis omnia & singula privilegia indulgentias facultates & indulta, eisdem Confratribus Hospitalis & aliis præfatis concessa illis communicare & ad eorum instar concedere & in eos transferre.

§. 16. Necnon quæcumque statuta & ordinationes licite & honeste, tam circa regimen & tranquillitatem Ecclesiæ Hospitalis & domus S. Rocchi huiusmodi divinarumque celebrationem, quàm numerum Confratrum, & Ministrorum, Rectorum, Capellano- rum, Oeconomorum, Gubernatorum & familiarium prædictorum, illorumque personas & ornamenta ac bona mobilia & immobilia illorum, eorumque Administratores & alia præmissa concernentia concedere, alterare, mutare, ac de novo edere, & per eos hæcenus forsan facta reformare & mutare seu de novo edere ac quæcumque poenas in contravenientibus apponere valeant eisdem auctoritate & tenore licentiam & facultatem concedimus & indulgemus.

§. 17. Necnon quod non solum Confratres, sed etiam illius & Ecclesiæ huiusmodi Administratores, Gubernatores, Rectores, Oeconomus, Servitores, Familiares, Ministri, Capellani, Rectores seu Officiales, non solum a Vicariis Urbis huiusmodi, sed etiam aliorum quorumcumque jurisdictione, correctione, visitatione, & potestate penitus & omnino exempti, & solum juxta præfati Leonis prædecessoris dispositionem Cardinali S. R. E. Cameræ Apost. Regenti aut ipsius Cameræ Auditori pro tempore existenti subiacent, ejusque correctioni & punitioni subjaceant, & quod coram aliis respondere minime teneantur, nec ad cogi, seu compelli neque propterea aliquas sententias, censuras & pen. incur- rere, sed illis impune resistere, & obistere valeant.

§. 18. Quodque bona quæcumque etiam feudalia, ac emphyteutica, & Ecclesiastica præfate Confraternitati inter vivos, quàm causa mortis, seu testamento, vel codicillo dari, concedi & relinqui, ipsique illa prout cetera Ecclesiæ, & Confraternitatis huiusmodi bona regere, & gubernare, nec desuper à quoquam molestarì, seu perturbari possint, statuimus, & ordinamus.

§. 19. Ac quod præmissa omnia, & singula de subreptionis, & nullitatis vicio, seu intentionis nostræ defectu, etiam ex quo ea quæ super præmissis gesta fuerunt, & emanarunt plenarie expressa, seu prout existunt narrata minime fuerunt, seu quovis alio prætextu, occasione, vel causa notari, vel impugnari, aut in aliquo annullari, vel alterari non possint, neque notata seu impugnata, annullata,

Gratias indulgentias & indulta aliorum locorum huiusmodi hic enumeratim concedi: In hac indulgentia ad instar, revocatas esse quinimo omnes Confratribus concessas ultique ad S. D. N. Paulum V. qui novam circa indulgentias dispositionem fecit ut notat, in rubr.

Publicandi indulgentias licentiam impartitur. Tu vide Bullam Clem. VIII. cit. in rubr.

Statuta etiam concedendi.

Privilegium fore de quo supra ad omnes personas & ministros extendit. A. C. facultates vi de const. 20. S. D. N. Pauli V.

Bona etiam feudalia, & Ecclesiastica Confraternitati relinqui possunt. Clausula præservativa.

Clausula derogato- ria.

aut alterata conseantur, sed valida, & efficacia existant, ac si exprimentur de necessitate de verbo ad verbum inserta fuissent. Quodque præfentes litteræ sub quibuscumque revocationibus, suspensionibus, modificationibus, limitationibus, restitutionibus, responsionibus, & exceptionibus similium litterarum, gratiarum, & indulgentiarum etiam per nos, & recol. me. Marcellum Papam II. seu alios prædecessores, & successores nostros Rom. Pontif. & Sedem huiusmodi, vel ejus Legatos, ac etiam per regulas Cancellariæ Apostolicæ pro tempore factas, ac in favorem dictæ Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, & expeditionis contra infideles nullatenus comprehendantur, sed semper ab illis penitus, & omnino exceptæ sint, & esse censentur, illique per quascumque literas, & quasi in clausulas generales, & speciales etiam derogationum derogatorias efficaciores, & insolitas, ac etiam irritantia decreta sub quacumque verborum forma, & expressione in se contineri nullatenus derogari possit, nec derogatum esse censatur, nisi tenor illarum de verbo ad verbum nihil penitus omisso insertus, & huiusmodi derogationes consistoriales factæ, & per trinas distinctas literas eundem tenorem continentes tribus similibus distinctis vicibus contrariis, administratoribus, Gubernatoribus, Rectoribus, & Oeconomis præfatis legitime intimatæ, & insinuatæ fuerint, eorumque ad id expressus accedat assensus, & aiter factæ derogationes nemini suffragentur.

Decretum
iteratis.Alia Indulg.
plenaria
pro visitan-
tibus dictam
Ecclesiam
etiam alia
die, q. am
festivitate
eiusdem
Sancti per
Confratres
eligen.Et alia pro
Confratri-
bus.
Tu habes
revocatio-
nem in d.
const. d. N.
Pauli V. cit.
in rubr.Clausule
derogato-
riz.

§. 20. Et ita per quoscumque Judices quavis auctoritate fungentes, & causarum Palatii Apostolici Auditores, & ipsius Sac. Roman. Eccl. sublatæ eis quavis aliter iudicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, iudicari, & definiri debere, necnon si secus super his à quocumque quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit attentari, irritum, & mane decernimus.

§. 21. Et nihilominus, ut Ecclesia S. Rochi in majori veneratione habeatur, & ad illam visitandum, & beneficiendum facilius concurrat, de ipsius omnipotentis Dei misericordia, ac eorundem Petri, & Pauli Apostolorum ejus auctoritate confisi, universis, & singulis utriusque sexus Christi fidelibus vere penitentibus, & confessis, seu confitendi propositum habentibus, qui ultra S. Rochi, & S. Martini festivitates prædictas, alio die per eosdem administratores, Gubernatores, Rectores, & Oeconomos ad id nominando, à primis vespere usque ad occasum Solis sequentis diei, Ecclesiam S. Rochi præfatam devotè visitaverint, ac illius, aut ejus Hospitalis manutentionem, seu ornamentorum emptionem, vel alias ad illius utilitatem in aliquo manus porrexerint adiutrices.

§. 22. Necnon singulis Confratribus, administratoribus, capellanis, & aliis Ecclesiæ, & Hospitalis ministris, & personis præfatis, qui in eorum infirmitate, seu aliis in mortis articulo penitentes & contriti nomen Jesu nominaverint, aut signum penitentis, seu Crucis aut animum, seu vultum ad Deum, aut caput sursum ad cælum elevarint, plenariam omnium peccatorum suorum Indulgentiam ac Jubileum, & remissionem in forma Ecclesiæ consuetam misericorditer ni Domino largimur.

§. 23. Non obstantibus Apostolicis, ac in Provincialibus, & synodalibus Conciliis editis generalibus, vel specialibus constitutionibus, & ordinationibus, ac Ecclesiæ, monasteriorum, hospitalium, & confraternitatum prælatorum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque indultis, & literis Apostolicis illis, ac dilectis filiis Populo Romano, & dictæ Urbis Conservatoribus, & quibuscumque aliis per quoscumque Rom. Pontif. prædecessores nostros, & nos ac Sedem prælatam etiam per modum generalis legis ac statuti perpetui, ac Motu proprio, & ex certa scientia, ac quavis instantia, & cum quibuscumque etiam derogationum derogatoriis, aliisque quavis efficacioribus & insolitis clausulis irritantibusque, & aliis decretis etiam iteratis vicibus concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus

illorum tenores, ac si de verbo ad verbum inferrentur, præfentibus pro sufficienter expressis habentes illis aliis in suo robore permanens, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus. Ceterisque contrariis quibuscumque.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 18. Octobris 1560. Pontificatus nostri Anno primo.

Facultas Judicum lite pendente decernendi sequestra super fructibus beneficiorum Sedi Apost. reservatorum five affectorum, & ordinaria, vel alia auctoritate nulliter collatorum. Et pœnæ de super temere litigantium.

Fructus verò beneficiorum, lite pendente, apud personas idoneas à Judice eligendas deponi jussit Pius V. inf. in const. 57. Cordi.

Sanctissimus in Christo Pater, & Dominus noster, S. D. Pius divina providentia Papa IV. cupiens prout suo Pastoralis incumbit officio; unicuique, quod suum est tribui, iustitiamque inter omnes æqua lance ministrari, ac animarum periculis, & fraudibus eorum, qui passim beneficia Ecclesiastica in mensibus in quibus illorum collatio, & provisio per constitutiones suas, seu Cancellariæ Apost. regulas desuper editas, dispositioni suæ pro tempore reservatæ existunt vacantia, seu aliis eidem, & Sedi Apostolicæ dispositioni generaliter reservata, aut ex generali reservatione Apostolica, vel aliis affecta, ordinaria seu auctoritate contra dictarum constitutionum tenorem, aut aliis indebitè sibi conferri, & de illis etià provideri procurant, & in eis prætextu collationum, & provisionum huiusmodi se intrudunt, ad hoc ut illorum fructus suos faciant, & ex eis impetrantes Apostolicos, seu aliàs iusto titulo provisos molestant, & interim lites adeo in longum protrahant, ut impetrantes, & iustum titulum habentes, aut cum eis concordare, aut eorum juri cedere, & renunciare, aut in prosecutione litium huiusmodi omnes fere eorum facultates dissipare, & tandem in illarum prosecutione mori cogatur. Quicque beneficia in Rom. Curia, vel extra eam litigiosa resignant, aut eorum juri cedunt simpliciter, vel in favorem tertii in memorabilibus cum pravis datis, & consensibus desuper præfatis, quæ penes se retinent, & nihilominus lites huiusmodi prosequuntur, & dum cognoscunt nullum jus sibi in huiusmodi beneficiis litigiosis competere, ad effugendum sententiam, & expensas, vel fructuum restitutionem in quibus condemnati venirent, supplicationes desuper signari, ac datas, & consensu pravo huiusmodi extendi faciunt, asserentes se jamdum illa dimisisse, partes foventes bonum jus, & Judices iustitiam ministrantes deludendo, quantum in eo est obviare, ac omnem penitus talia præsumendi occasionem tollere.

§. 1. Hac sua perpetuè valitura sanctione statuit, & ordinavit, quod quoties in antea aliquem super quovis beneficio Ecclesiastico, ut præfertur, reservato, seu affecto & dicta auctoritate vel aliàs nulliter collato, tam in dicta Curia, quam extra eam litigare contigerit, & Judici ordinario, seu cui causa desuper commissæ fuerit, etiam summarie, & extrajudicialiter, quantum sibi pro rei qualitate sufficere parte legitime citata videbitur, constituerit beneficium ipsum in dictis mensibus vacavisse, aut aliàs, ut præfertur, reservatum, seu affectum, & nihilominus ordinariam, seu alia auctoritate nulliter collatum, & indebitè retentum existere, idem Iudex reproducta citatione, fructus, redditus, & proventus beneficiorum sic nulliter collatorum, & indebitè detentorum sequestrari mandet & faciat, ac alia exequatur in præmissis necessaria, & opportuna. Super quo eidem iudici omnem potestatem, & auctoritatè impartitus est. Idemque Sanctitas sua in causis nunc in quavis instantia coram eisdem Judicibus pendentibus similiter observari mandavit.

§. 2. Præterea decrevit, & declaravit significans, seu cedentes & nihilominus lites huiusmodi prosecutione ne eorum malitia illis prodesse, & foventibus

Dat. P. A. Y.
die 18. Oct.

XVII.

Edita A: D.
1560.Causa con-
stit.Facultas Ju-
dicum se-
questrari fa-
ciendi fru-
ctus benefi-
ciorum, lite
pendente
super illis
tamquam
Sedi Apost.
reservatis,
vel affectis,
& per ordi-
narios, vel
alios nulli-
ter collatis.Talesque
beneficio-
rum deten-
tores, & li-
tigantes,
etiam si liti
cesserunt,
teneantur ad
dammam, & in-
teresse, &c.

bonum jus nocere valeat, ad fructum, reditum, & proventum didorum beneficiorum per eos perceptorum restitutionem, ac expensarum in litibus hujusmodi factarum refectionem, omniaque, & singula damna, & interesse in quibus condemnauerint, si non cessaverint, vel resignaverint, per Judices, tam ordinaria, quam delegata, vel alia auctoritate fungentes, coram quibus litis ipsas pro tempore pendere, seu moveri contingerit commendandis fore, & condemnari debere ac ad id teneri, & obligatos esse. Ipsoque ac etiam in dictis beneficiis successores quoscumque ad partitionem sententiae, seu sententiarum, ac literarum executoriarum pro tempore late, seu latarum, & decretorum, à quibus appellare non liceat, ad restitutionem, seu relationem possessionis, ac fructum, reditum, & proventum, necnon refectionem expensarum, ac damnum, & interesse hujusmodi perinde, ac si contra eodem successores sententia, seu sententiae late, & literae executoriales hujusmodi deretate fuissent, cogi, & compelli. Sic tamen quod postquam alter ipsorum sententiae, seu sententis, ac restitutioni, vel relaxationi possessionis, & fructum, reditum, & proventum, necnon damnum, & interesse hujusmodi refectioni, aliisque praemissis realiter, cum effectu paruerit, aliter desuper molestari non possit.

§. 3. Et ita in præmissis omnibus, & singulis per
eosdem, & alios quoscumque Judices, & etiam
causarum Palatii Apostolici Auditores, sublata, &
cet. judicari, & debere irritum quoque, & cet.

Placet, publicetur, & describatur. I.
*Acta, & publicata fuit supra dicta Const. Romæ
in Cancell. Apost. Anno Incarnat. Dom. 1560.
die verò Sabbati 26. mensis Octobr.*

XVIII.

Vassallorum obligationes de cætero fiendæ pro eorum Dominis Sedi Apostolicæ subjectis, nullæ erunt. Et Domini eorum Vassallos ab obligationibus jam factis indemnes relevare, & pecunias solutas intra sex menses restituere cogentur.

Hec prohibitio quoad obligationes Communitatum, confirmata, & extensa fuit à Sixto V. inf. inf. ejus conf. 10. Pro commissa, ubi alia de Communitatibus videbis. Prout de Baronibus alia inspicies in constit. 41. d. Clem. VIII. Institue Tom. III.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Quia non solum ex debito charitatis, & Pastoralis officii, quo omnium nostrorum, & Rom. Ecclesie subditorum, præcipuum curam tenere debemus, sed pro interesse etiam pecuniario Sedis, Cameræ præfate, debemus prospicere, & curare, ut ex terris, civitatibus, oppidis, castris, villis, & locis temporalis dominio Comitum, Baronum, & Domicellorum, aut alias quomodolibet nuncupatorum, nobis subditorum orundum, ad illarum illorumque incolæ, & habitatores, suis facultatibus non exhauriantur, quandoquidem ad pauperum tantum redacti, non valent folvere subsidia, & sufferre onera quæ nobis, & Sedi, ac Cameræ præfatis, ratione superioritatis, & alias tam ordinariæ, quam extraordinariæ, pro contingit, præstare tenentur, & consueverunt. Et (sicut accepimus) pravus quidam abusus à multis annis citra inolevit, quod nonnulli ex Comitibus, Baronibus, & aliis temporalibus Domicellis, præfatis, per seipsos, vel per alias ad eorum commodum interpositas personas accipiendo pecunias mutuo, seu alias contractus faciendo, faciunt civitatum, oppidorum, castrorum, terrarum, villarum, & locorum sibi subditorum universitates, & homines, & plerumque etiam particulares, accedere, pro principaliter, & in solidum obligare, & adventiente tempore ad faciendam solutionem, vel satisfactionem, ipsis Dominis non solventibus, neque satisfaciens, miseris subditi coguntur, vel de suo folvere, & satisficere, ac depauperari, vel solvere, & satisficere non volentes, censuris, & interditiis subijci ac per executores tribulari, immensisque fastidiis vexari, & demum ad solvendum, & sufficere. Cameræ Apostolicæ subsidia, & alia præfata impotentes reddi.

§. 1. Nos igitur tot inconvenientibus occurrere, illorumque occasionem tollere velimus, Motu proprio, & ex certa scientia, ac de Apostolicis potestate plenitudine, univervis, & singulis Comitibus, Baronibus, Domicellis & aliis prefatis, sub excommunicationis late sententiæ, privationisque domini, civitatum, oppidorum, castroium, villarum, & locorum prætorum ipso facto incurrendis penis, in virtute tantæ obedientiæ precipimus, & mandamus, ut quicumque ex eis, pro quibus, seu pro quorum commodo, utilitate, & interesse, immediate, vel aliis personis median, vel suppositis eorum subditi universaliter, vel particulariter, ex quacunque causa, & quocumque modo obligati hæcenus fuisse reperiuntur, debeant per ipsos subditi, soluta, seu quomodolibet expolta, integrè infra sex menses proximos restituere.

§ 2. Et pro aliis obligationibus non solutis neque satisfactis debitis temporibus, de suis propriis, absque subditorum damno aliquo, solvite, & satisficite, ipsosque subditos, etiam non petentes, vere & realiter indemnes, & penitus sine damno relevavistis. Et nihilominus omnes, & singulas confessiones, & quæcationes, & liberationes dictorum Dominorum per ipsos subditos, circa relevationem indemnitate huiusmodi, non interveniente vera, & reali satisfactione etiam jurata fuerint, irritas, & nullius momenti fore, & esse decernimus.

§ 3. Insuperque omnes, & singulas fidei iussiones, & accēptiones, etiam cum clausula, Principaler, & in solidum, necnon uti principales, & tam personas, quam reales, & alias quascunque obligationes & promissiones, per Universitates, & personas subditas præfatas, five universaliter, five particulariter, etiam in ampliori forma Cam. Apoll. cum iuramento, censuram, & mandati executivæ fufceptione, & promissione, etiam jurata, etiam de non utendo remedio hujus noſtræ provisionis, ultro seu ad preces & instantiam, aut ad commodum, seu utilitatem fuorum in temporalibus Dominorum, immediate ipsi Dominis nominatis, seu illis non nominatis, aliis interpoſitis nominibus, & personis de cætero perpetuis futuris temporibus, quocunque modo facien, & prout illis concernet deſuper conficienda instrumenta, nullius roboris, & momenti fore & esse Universitatēque & personas subditas præfatas, nullo modo obligatas necque in judicio, vel extra, ullam omnino fidem facere,

§. 4. Sicque & non aliter quoscunque Judices, etiam S.R.E. Cardinales, & Palatii Apoft. caufarum Auditores, Cameræ Apoftolicæ Regentem, & alios quoscunque Judices, in Alma Urbe, & aliis quibuscunque S.R.E. Terris, & locis, fublata aliter judicandi facultate judicari debere. Acfi & quicquid fecus fieri contingat, irritum, &c.

§.5. Et presentium (quas postquam per aliquem ex nostris Curforibus in locis consuetis Urbis affixæ, & publicatæ fuerint, omnes etiam ignorantes, afficere volumus) solam signaturam, regula contraria non obstante, sufficere decernimus.

§. 6. Non obstant constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, privilegijs Camerae, & alijs quibuscumque concessis, cujuscumque tenoris existant, statutisque & consuetudinibus locorum, etiam juramento, &c. roboratis, ceterisque in contrarium facientibus quibuscumque. Placet & ita decernimus, & mandamus I.

Anno à Nativitate Domini 1560. Indiæ. 3. die verò
13. mensis Octobr. Pont. Sanctijj in Christo parris
& D. N. D. Pii divina providentia Pape IV.
Anno I. retroscriptæ literæ affixæ, & publicatæ fu-
erunt ad valvas Cancellariæ Apoft. & in acie Cam-
pi Floræ, ac ad valvas Boficæ Principis Apofto-
lorum de Urbe, per nos Julium Parinum Clericum
Terdonensem, & Jacobum Carra S. D. N. PP. curf.
Camillus Cherub. mag. curf.

De Spoliis Clericorum ob illicitam negotiationem.
Et de indultis Curialium, & Incolarum almæ
Urbis dd. Spoliis.

stituant inf.
sex menses
Vassallis pe-
cunias pro
eis solutas.

Et ab aliis
obligationi-
bus indem-
nes relevent
eosdem sub-
ditos.

Obligatio-
nes Commu-
nitatum &
Vassallorum
de cetero
pro Domi-
nis fiendæ
invalida e-
runt.

Decretum
irritans.

Publicata
in Urbe ligat
ignorantes.

Derogatio
contrario-
rum.

Papæ sub-
script.
Publ. P. A. 1.
die 13. Oct.

XIX.

Ad primam rubricam partem, habet confirmationem Sixti V. in ejus constit. 100. In conferendis. Et ad secundam vide pro Curialibus indultum Pauli V. in constit. 8. In cunctis, ubi plene notabo. Et precipue pro Militia S. Joannis Hierosolymitani, habet dispensationem hic infra in Tomo III. in constit. 29. Romani.

Scias autem Clericos in Agro Romano, & propriis Terris licere agriculturam exercere, ex permissione, & indulto Clementis VIII. in constit. 72. *Insuper multiplices lib. 3. Tom. 3.*

Edita An. D.
1560.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Dicens esse censentes, & æquum, ut nos, qui alios in sua justitia confavemus, Cam. Apost. jura non negligamus, quinimo ne prætextu incertitudinis, illa ab aliquibus usurpari, aut super eis dubia aliqua oriri contingat, ita nostræ declarationis remedium providemus, quod à nemine desuper dubium aliquod reduci possit.

Causa con-
stit.

§. 1. Cum itaque fuit acceptum, à nonnullis vertatur in dubium, an res & bona per Clericos, etiam in sacris ordinibus constitutos ex negotiatione illicita, aut aliis contra sacros Canones acquisita, uti Spolia, vel aliis ab Cameram præfatam jure legitime spectare, & pertinere debeant. Nos omnes desuper hæsitacionis materiam submovere, ac cavillationibus, & alterationibus, ac litibus viam præcludere, & denique malitis eorum, qui jura dicte Cameræ usurpare fatagunt, obviare, aliisque in præmissis opportune providere volentes,

Clericorum
bona ex il-
licita nego-
ciatione vel
aliis contra
sacros Ca-
nones acqui-
sita ad Cam.
Apostol.
spectant, ut
in rubr.

§. 2. Motu proprio, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine decernimus, & declaramus, omnia, & singula, res, & bona, cujuscumque qualitatis, & quantitatæ existentia, ac in quibuscumque regionibus, & regnis, ac dominis, tam citra, quam ultra montes, & maria consistentia, per quosvis clericos, tam sæculares, quam quorumvis, etiam Mandicantium Ordinum, ac Militiarum regulares, etiam in sacris ordinibus constitutos, cujuscumque status, ordinis, & conditionis fuerint, ac Archiepiscopali, Episcopali, vel alia majori dignitate præfulgeant, ex negotiatione illicita, aut aliis contra sacros Canones quomodolibet acquisita, quæ pro tempore post obitum eorum, qui etiam & facultate quam habuerint testandi, condito testamento, ubique locorum decesserint, & decedent, aut quibus illos, etiam eis viventibus privari, & eis destituti contigerit, & præsertim quondam Andree Japiro de S. Joanne Rotundo presbyteri, seu Religiosi, extra Rom. Curiam ad illam forsitan veniendo defuncti, hæc tenore remanserunt, remanent, & remanebunt, ad eandem Cameram, & non alios, etiam in quibusvis Cathedralibus, etiam Metropolit. & Collegiatis, ac aliis Ecclesiis, Monasteriis, Hospitalibus, Militiis, ceterisque beneficiis Ecclesiasticis cum cura, sæcularibus, & quorumvis Ordinum regularibus qualitercumque qualificatis successores, illa in titulum, commendam, administrationem, commissionem, ac aliàs quomodolibet pro tempore obementes, etiam si ad illa, vigore prioris tituli, jus regrediendi, seu accedendi, aliquibus concessum fuerit, spectasse, & spectare, ac sub nomine spoliatorum venire, illaque uti Spolia ad Cameram ipsam pertinentia perpetuo colligi, & recuperari potuisse, posse, ac debere.

Decretum
irritans.

§. 3. Et ita per quoscumque Judices quavis auctoritate fungentes in quacumque instantia, sublata eis quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, judicari, & definiri debere. Necnon irritum, & inane, quicquid fecerit super his à quocumque auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Executorum
deputatio
& facultates.

§. 4. Mandantes dilecto filio nostro Guidoni Ascanio Sanctæ Mariæ in Via lata, Diac. Card. de Sancta Flora nuncupato, Camerario nostro, & ejus in

Camerariatus officio successoribus, quatenus Spolia ipsa, prout aliis ipsius Cameræ jura, exigant, & recuperari, ac præsentis inviolabiliter observari faciant, nec permittat Cameram ipsam, vel pro ea agente, desuper modo aliquo molestari, perturbari, aut inquietari. Contradictores quoslibet & rebelles, per censuras & poenas Ecclesiasticas, & appellatione postposita compescendo, necnon legitimis super his habendis servatis processibus, censuras & poenas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii sæcularis.

Classula
derogato-
ria.

§. 5. Non obstant. fel. rec. Bonifacii PP. VIII. prædecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, & aliis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon Ecclesiarum, Monasteriorum, Ordinum, Militiarum, & beneficiorum prædictorum juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, illis & dilectis filiis illorum Capitulis, Conventibus, Superioribus & personis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibusvis clausulis & decretis, etiam Motu & scientia similibus, concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, illorum tenores præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanfuris, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim, ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem. Nulli ergo &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1560. Non. Novemb. Pont. nostri Anno primo.

Dat. P. A. I.
die 7. Nov.

Sequitur declaratio dicte Constitutionis.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memoriam.

Edita An. D.
1560.

Exordium

Romanus Pontifex ex sua circumspècta providentia attendens suam Almam Urbem, Apostolorum Petri & Pauli glorioso martyri cuore Domino nostro JESU CHRISTO consecratam, caput Orbis existere, & Altissimum in ea sacerdotii principatum, Christianæque Religionis caput instituisse, & adillam tamquam communem omnium Christi fidelium patriam de universis mundi partibus Christi fideles ipsos in copioso numero confluere, ut illa eo amplioribus prærogativis decoretur quo est omnium aliarum mater, cunctorumque ad eam undequaque accedentium benigna receptrix & alumna, acillius incolæ, & habitatores, ac Romanam Curiam sequentes eo quietius & tranquillius in ea degant, quo se amplioribus favoribus & gratis noverint communites, nonnumquam à suis prædecessoribus in illorum favorem concessa, pro illorum subsistentia firmiori, non solum approbat, sed etiam innovat, & quæ postmodum ab eo emanarunt litteræ Apostolicæ, ne defectu incertitudinis aliquid quod à mente sua alienum sit, oriri contingat, illas ita suæ declarationis adminiculo dilucidat, ut nulli hæsitacionis & dubitationis scrupulus relinquantur, & aliis desuper disponit, prout rerum & temporum qualitate pensata, conspiciet in domino salubriter expedire.

§. 1. Nuper siquidem postquam fel. rec. Julius PP. III. &c.

Julius III.
edidit Bullam
de qua hic.

Omittitur quia ipsa Bulla Jul. est sup. fol. lib. 1.

§. 2. Nos ex certis tunc expressis causis Motu simili, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, per alias nostras litteras sub dat. videlicet Non. Novemb. Pont. nostri Anno 1. decrevimus & declaravimus omnia & singula &c.

Hic Pont.
aliam edidit
Bullam hic
præceden-
tem.

Omittitur quia est ipsa Bulla quæ præcedit.

§. 3. Cum autem sicut nobis innouit, à nonnullis hæsitetur, an ex his litteris nostris statuto, & ordinationi

ideo dubi-
tabatur an
illa consti-
tutio præjudica-
verit d.
const. Julii
III. Unde
hic declarat
non fuisse
præjudica-
tum privi-
legii Contra-
lium & ejus
constit. non
se extendere
ad Cardd.
ubique de-
cedentes,
aut alios
testandi fa-
cultatem
habentes ex
privilegio
aut licentia
Sedis Apof.

Julii prædecessoris hujusmodi præjudicium aliquod
generatum sit, aut dici, seu censeri possit, Nos qui
Urbi decorem & venustatem, ac illius incolarum
prædictorum prosperum & felicem successum sinceris
exoptamus affectibus, quique illam non minoribus
favoribus quam dicti prædecessores profectui sunt
prosequi intendimus, ne propter nostræ declaratio-
nis defectum, & veritatis suppressione contra men-
tem & voluntatem nostras cuiquam præjudicium ge-
neretur, quantum in nobis est providere volentes,
ac dictarum nostrarum litterarum veriore tenorem
præsentibus pro sufficienter expresse habentes, nec-
non motu & scientia similibus, litteras nostras præ-
dictas ad S.R.E. Cardinales, etiam ubi vis locorum
decedentes, ac eorum bona ubique existentia nullo
pacto, ad Urbem & Curiam præfatas, necnon Præla-
tos, Officiales, ac alios sæculares, & cuiusvis Ordinis
regulares clericos, ceterosque tam in Urbe & Curia
præfatis pro tempore existentes, & in ea, seu ejus
districtu decedentes, quam alias alibi ubi vis locorum,
etiam ultra montes & maria existentes (testandi ta-
men codicillandi, & alias de bonis suis quibuscumque
quomodolibet disponendi facultatem, seu etiam quod
vis ab intestato decedentibus eorum bona ad ipsorum
proximos, & qui nullo beneficiarii essent succedere
deberent, devolvantur & debeant, specialem ab A-
post. Sede vel officiorum suorum ratione privilegio-
rum, aut ex alio quovis titulo pro tempore habentes,
cuiuscumque status, gradus, ordinis, conditionis,
& præminentiæ, personas minime se extendere,
neque illos, aut eorum aliquem comprehendere, sed
ab eis penitus exceptos fuisse, fore & esse, ac dici &
censeri, & alias easdem nostras litteras etiam absque
verbis, aut alias contra sacros canones, in illis appo-
sita non fuissent, seu illas sine eis emanassent, stare,
& in suis robore, & efficacia permanisse, & perma-
nere debuisse & debere.

Confirmatio
const. Sixti
IV. & alio-
rum.
7. eas vide
indicatas II
Bulla S.D.N.
Pauli V. cit.
in rubr.

§. 4. Declarantes eisdem Motu & scientia, tam
Julii statum, & ordinationem hujusmodi, quam
per Sixtum IV. & Alex. VI. Leonem X. & alios
Rom. Pont. etiam prædecessores nostros, ac etiam
nos, etiam in Conclavi in quo divina disponente cle-
mentia ad summi Apostolatus apicem assumpti fui-
mus, etiam in ipsius Urbis, & ejus ædificiorum, Ro-
manæque Curiae & ejus Officialium, ac aliarum per-
sonarum prædictarum, etiam extra Urbem, & in
quibuscumque provinciis, etiam ultra montes & maria, ut
præfertur, in genere, vel in specie, circa testandi,
& succedendi hujusmodi facultatem quomodolibet
concessa privilegia, & indulta, ac cum inhibitionum
decretorum, & in eis contentis clausulis Julii prædi-
ctas, ac aliorum prædecessorum prædictorum singu-
las de super confectas litteras, & inde secuta quacum-
que, quorum omnium tenores, ac si de verbo ad
verbum infererentur, præsentibus haberi volumus
pro expressis, etiam ad hoc ut omnes & singuli supra
dicti de omnibus, & singulis eorum rebus & bonis,
etiam nulla quantitate, & acquisitionis ipsorum bo-
norum distinctione habita, libere disponere valeant,
ac si dictæ nostræ litteræ non emanassent, aut alias in
posterum emanarent, dicta auctoritate Apostolica te-
nere præsentium approbamus, confirmamus, &
innovamus, necnon illis perpetuæ & inviolabilis
firmitatis robur adjicimus. Et nihilominus pro po-
tiori cautela, illa omnia & singula eisdem modis
& formis, quibus per dictos prædecessores con-
cessa fuerunt, de novo eisdem auctoritate, & te-
nore, ac Motu & scientia statum, ordinamus, &
concedimus, necnon illa valida, & efficacia existere
suoque plenariis & integris effectibus sortiri, & in-
violabiliter observari ac singulis supra dictis suffra-
gari.

Decretum
irritans.

§. 5. Sique in præmissis omnibus & singulis per
Camerarum, Præfidentes, & Clericos præfatos, ac
quoscumque alios Judices, & Commissarios, quavis
auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apo-
stolici Auditores, & ipsius Ecclesiæ Rom. Card.
sublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi,
& interpretandi facultate & auctoritate iudicari, defi-

niri debere, ac quidquid secus super his a quo-
quam, quavis auctoritate scienter vel ignoranter
attentari contigerit, irritum & inane decerni-
mus.

§. 6. Non obstant. præmissis ac quibuscumque consti-
tutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon
Cameræ, & Ecclesiarum, ac Monasteriorum, & Or-
dinum prædictorum, & quibuscumque aliis, etiam jura-
mento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmi-
tate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, nec-
non privilegiis, indultis, & litteris Apostolicis, illis
sub quibuscumque ten. & formis, ac cum quibuscumque
clausulis, & decretis, in genere, vel in specie, etiam
motu, & scientia similibus, concessis, & approba-
tis, ac innovatis. Quibus omnibus, illorum ten.
præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis
alias in suo robore permanentis, hac vice dumtaxat
specialiter & expresse derogamus; ac omnibus illis
quæ Julii, & alii prædecessores præfati in dd. suis
litteris voluerunt non ob stare, ceterisque contrariis
quibuscumque.

§. 7. Et quia difficile foret præfentes litteras ad
singula quæque loca deferri, volumus, & etiam de-
claramus, quod earum transumptis, seu copiis, etiam
impressis, manu Notarii publici subscriptis, & ali-
cujus Prælati sigillo munitis, eadem prorsus fi-
des in iudicio, & extra ubique adhibeatur, quæ
præsentibus adhibetur si forent exhibitæ vel offen-
sæ.

§. 8. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc pa-
ginam nostrarum declarationum, decretorum, appro-
bationis, confirmationis, innovationis, adjectionis,
statuti, ordinationis, concessionis, derogationis, &
voluntatis infringere vel ei ausu temerario contraire.
Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indi-
gnationem Omnipotentis Dei, ac Beatorum Petri
& Pauli Apostolorum ejus, se novent incursum.

Dat. Romæ apud S. Petrum Anno Incarnationis
Dominicæ 1560. nonis Febr. Pontificatus nostri
Anno secundo.

*Anno ad Nativitatem Domini 1560. Indiſt. 4. die ve-
ro 15. mensis Febr. Pont. Sanctiss. in Christo patris,
& D. N. D. Pii divina providentia Papa IV. An-
no I. retroscriptæ litteræ affixæ, & publicatæ fue-
runt in acie Campi Floræ, & valvis Cancellariæ
Apost. per nos Jacobum Carra, & Antonium
Clerici Cursores.*

Franciscus Rogerius Mag. Curs.

Confirmatio & nova concessio omnium facultatum,
& privilegiorum S. R. E. Camerario, hæcenus a
summis Pont. concessorum.

*Ad hæc vide consti. 65. Clem. VIII. infra in Tomo
III. In conferendis. ubi plene notabo.*

PIUS EPISCOPUS.

*Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei me-
morianam.*

PROVIDENTIA Romani Pontificis plurimum cir-
cumspecta, nonnumquam ea, quæ certis sua-
dentibus causis, per ejus prædecessores gesta sunt, ex
aliis non minus rationabilibus causis, alterat, & ad
pristinum statum reducit, ac quælibet in sua ius-
tificatione, & possessione conservat, & manent, pro-
ut æquitas suadet, & id in Domino conspicit salubri-
ter expedire.

§. 1. Sane cum dilectus filius noster Guido Asca-
nius S. Mariæ in Via lata Diaconus Card. de Sancta
Flora nuncupat. modernus, & qui ante cum pro
tempore fuerunt S.R.E. Camerarii, multa & diversa
privilegia, eis, eorūque Camerariatus officio à quan-
tibus Rom. Pont. prædecessoribus nostris concessa
habuerint & habeant, ac in illorum possessione

Clausula
derogato-
ria.

Transum-
ptorum fi-
des.

Sanctio
pœnalis.

D. P. A. 2.
die 5. Febr.

Publicatio.

X X.

Edita An. D.
1560.

Exordium.

Camerarius
habuit mul-
tas & privi-
legia usque
ad Paulum
IV. qui illa
imitavit.

pacifica & quieta, usque ad tempus fel. rec. Pauli Papæ IV. prædecessoris nostri, qui ex certis causis animum suum momentibus, id expedire ratus, illa limitavit, seu suspendit, aut revocavit, extirpavit.

§. 2. Nunc verò experientia rerum omnium magistra docente, privilegia ex rationabilibus causis concessa, ac publicæ commoditati utilia fore compertientes, & propterea eorumdem prædecessorum nostrorum vestigiis inhærentes, Motu proprio, non ad alicujus instantiam, sed ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, limitationem, seu suspensionem, prout revocationem privilegiorum hujusmodi per præfatum Paulum prædecessorem, ut præmittitur, factas harum serie revocantes, omnia, & singula privilegia, moderno, & pro tempore existentibus ejusdem S. R. E. Camerariis, eorumque Camerariatus officio hujusmodi, per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros concessa, quorum tenores præsentibus pro sufficienter expressis, ac de verbo ad verbum inserti haberi volumus, auctoritate Apostolica, tenore præsentium, in omnibus, & per omnia, prout ante limitationem, suspensionem, aut revocationem Pauli prædecessoris hujusmodi erant, confirmamus, approbamus, & innovamus. Et nihilominus potiori pro cautela, quatenus opus sit, ea omnia moderno, & pro tempore existentibus ipsius S. R. E. Camerariis eorumque Camerariatus officio hujusmodi de novo concedimus.

§. 3. Non obstantibus quibuscumque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, etiam per præfatum Paulum prædecessorem, etiam quodam Hebræorum vivendi modum, & tolerantias ejusdem Hebræis non concedendas, ac alias quomodolibet editis, quibus, illarum tenores ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, & forma in illis tradita omnino servata esset, inserti forent, præsentibus pro expressis habentes, quoad præmissa, motu simili, specialiter, & expresse derogamus, cæterisque contrariis quibuscumque.

§. 4. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ revocationis, voluntatis, confirmationis, approbationis, innovationis, concessionis, & derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1560. Idib. Novemb. Pontificatus nostri Anno primo.

XXI. Contra pugnautes in duello, & illud ubique gentium permittentes, spectantes, complicesque. &c.

Duellorum usum vetuit in Statu Ecclesiastico Jul. II. sup. const. 19. Tom. I. Regis & deinde Leo X. in constitut. 31. Quam Deo. Easque simpliciter confirmavit Clem. VII. & ideo ejus Bullam non posui, vide infra in hoc Tomo II.

Sanctio ista ampliata fuit à Clem. VIII. ut in ejus const. 11. Illius, ubi cætera notabo infra in Tomo III.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

FA quæ à prædecessoribus nostris Roman. Pontificibus, suadentibus legitimis causis emanarunt, libenter approbationis, & innovationis munimine solidamus, ut eo firmius illibata perdurent, quo sæpius fuerit Apostolica auctoritate munita, illaque de novo statuimus, & amplius prout rationabiles causæ persuadent, & hoc in Domino conspicimus salubriter expedire.

§. 1. Dudum siquidem à fel. rec. Clemente Papa VII. prædecessore nostro emanarunt literæ in quibus nonnullæ aliæ inferuntur tenorum subsecquentium.

Clemens Episcopus servus servorum Dei, ad perpetuam rei memoriam. Consequitur, &c.

Omittitur residuum, quia simpliciter confirmat Bullas citatas hic in rubrica.

§. 2. Cum autem scit nobis innotuit, quamplurimi Duces, Comites, Marchiones, Domicelli, Barones, & alii in temporalibus domini; vicarii, communitates, & universitates civitatum, terrarum, & locorum eidem Romanæ Ecclesiæ mediate, vel immediate subsectorum, nonnullique alii singularia certamina exoptantes, & alii etiam, ut præfertur, subditi illa videre cupientes, suorum status, salutis, & honoris immemores literis prædictorum hujusmodi contravenire, & censuras, ac penas in illis contentas parvipendere non vereantur in animarum suarum perniciem, & divinæ majestatis offensam, ac Reipublicæ læsionem.

§. 3. Nos quorum est sceleratorum insolentis quibus adversum Deum & proximum, ac dictæ Sedis auctoritatem veluti Catholice professionis inimici faciunt, salubriter reprimendis, ne ipsorum invalescat præsumptio, & perversitas extollatur intendere, & ne literæ prædictæ quæ provida deliberatione ab ipsis prædecessoribus emanarunt, contemptibiles reddantur, sed illarum transgressores debita animadversione puniantur, providere volentes, Motu proprio non ad aliquorum nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed de nostra mera deliberatione, & ex certa scientia, & singulas Julii, Leonis, & Clementis, prædecessorum prædictorum literas cum statutorum, ordinationum, adjectionum, decretorum, declarationum, confiscationum, incorporationum, applicationis, voluntatum, & mandatorum, ac omnibus, & singulis aliis in eis respective contentis clausulis, auctoritate Apostolica tenore præsentium approbamus, & innovamus, & perpetuo firmitatis robore subsistere, & singulos quos literæ ipsæ concernunt, & concernent, sub excommunicationis, anathematis, maledictionis, perpetuæ infamiae, diffidationis, criminis læsæ majestatis, seditionis, rebellionis, confiscationis, & privationis statuum, & dominiorum, ac Fœdorum, & Vicariatum, ac aliorum honorum suorum, ac depositionis illorum, necnon inhabilitatis ad illa, & alia in posterum obtinenda, ac interdicti, ac alius censuras, ac pœnis Ecclesiasticis, & temporalibus, aliisque in eisdem literis contentis, quas contravenientes eo ipso incurrant, & inextinguibiles fiant, ac ultra pœnas prædictas carceribus mancipati & detineri, & pœnis prædictis irremissibiliter puniri debeant, perpetuo observari, & per executores in dictis literis deputatos adversus eosdem contrasacientes ad totalem executionem dictarum pœnarum procedi debere decernimus.

§. 3. Illasque tam ad pugiles taliter pugnautes, quam eos ad id tentantes, & provocantes, aut locum, seu campum ad pugnandum dantes, seu cedentes, ac in illis adstantes, & intercessentes, ac certantes, comitantes, & comitivam præstantes, necnon consulentes, ac adhaerentes, & fautores, necnon chartas certaminis, seu duelli subscribentes, vel assignantes aut publicantes, etiam si prædictæ, seu cujuscumque alterius dignitatis, nobilitatis, status, gradus, & ordinis, tam Ecclesiasticæ, quam mundanæ existant, etiam ad hoc ut ipsi ultra pœnas prædictas excommunicationis majoris late sententiæ pœnam, à quo non nisi à nobis, seu Romano Pontifice pro tempore existente absolvi possint eo ipso incurrant, & si Ecclesiastici fuerint, etiam omnibus & singulis Ecclesiis, monasteriis, dignitatibus, & aliis beneficiis Ecclesiasticis per eos obtentis, seu in quibus, & ad quæ jus eis competit, eo ipso privari, & ad illa ac alia in posterum obtinenda inhabiles existant, necnon illa tanquam per privationem hujusmodi vacantia ab aliis impetrari possint, extendimus & ampliamus.

§. 5. Et nihilominus præmissa omnia & singula prout per Julium, Leonem, & Clementem prædecessores præfatos, statuta & ordinata, inhibita, decreta &

Causa edita.

Confirmatio const. Julii II. Leon. X. Clementis VII.

Extensio constitutionum ad fautores duellantium & assignantes, vel subscribentes chartas duelli.

Iteratio statutorum à Julio II. Leon. X. & Clem. VII.

Hic autem notar. illa const. mat. & de novo concedit.

Quibuscumque non obstantibus.

Sanctio poenalis.

D. P. An. 1. die 13. Nov.

Edita A. D. 1560.

Exordium.

Clem. VII. edidit Bullam de qua hic.

Revo cati
quar tuum
que licen tia
e m.

Monicio ad
omnes Prin
cipes Chris
tianos etiam
non subditos
R. E. ut du
ella & certa
mina prohi
beant.
Ad quod ha
bes Conc.
Trid. sess. 25.
c. 19. de re
form. ut in
Bulla Clem.
VIII. cit. in
rub.

Clausula de
rogatoria.

Dar. P. A. 2.
13. Novemb.

XXII.

mandata fuerunt, in omnibus & per omnia de novo statuimus, ordinamus, inhibemus, decernimus, declaramus, & mandamus.

§. 6. Ac omnes concessiones duellorum hujusmodi, & facultates desuper prædictis, seu aliis quibuscumque personis per quoscumque Roman. Pont. prædecessores nostros, sub quibuscumque formis & verborum expressionibus forsitan concessas, & approbatas, & innovatas, harum serie revocamus, cessamus & annullamus.

§. 7. Et insuper cupientes, illa & tam detestabilem pugnantium, & aliorum loca ad pugnandum, ac alias in præmissis favorem præstantium, & denique tanti sceleris fautorum nequitiam, non solum in terris & locis eidem Romanæ Ecclesiæ, ut præfertur, subiectis, sed aliis ubilibet penitus reprimi & aboleri, ac singulorum Christi fidelium animarum periculum obviare, per viscera Domini nostri JESU CHRISTI, rogamus & obtestamur universos & singulos totius Orbis Imperatorem, Reges, Duces, etiam armorum, Marchiones, Barones, ceterosque Principes Christianos, necnon dominia, potentatus, communitates civitatum, ac universitates oppidorum, castrorum, terrarum & locorum quorumcunque, illorumque in temporibus dominos, ac etiam militum, tam equestrium, quam pedestrium, capitaneos & præfectos etiam temporali ditioni ipsius Romanæ Ecclesiæ non subditos, ejusdemque status, gradus, ordinis, conditionis, nobilitatis, ac præcipientie fuerint, ut divini nominis intuitu, & pro sua in nos & hanc Sanctam Sedem Apostolicam devotione & reverentia, necnon fidei cultu & conservatione, ac animarum qui hujusmodi duella diabolica fraude decepti perquirunt salutem, dicta duella, seu alia singularia certamina in suis Regnis, Ducatibus, Marchionatibus, Baronis, Dominis, terris & locis nullatenus fieri permittant, immo ne fiant expresse prohibeant & dissuadeant: strictius præcipientes eis, ne ullo umquam tempore hujusmodi duella seu certamina; quovis prætextu, seu quavis occasione vel causa admittant, aut aliquos ad id irritare seu provocare, vel illis interesse, aut ut fiant pati, seu permittere audeant, vel præsumant; alioquin eos, ac etiam extra terras & loca ditioni Ecclesiæ hujusmodi non subiecta duella, seu singularia certamina hujusmodi, aut dissidationes de per facientes, & ad id irritantes, provocantes, & auxilium, consilium, vel favorem dantes, ac illis adfidentes & intersecantes, & similiter chartas desuper subferibentes aut publicantes, seu de illis se intromittentes, eorumque ac ipsorum singulos ab Imperatore & Regibus inferiores majoris excommunicationis, & ultra tam si Ecclesiastici fuerint, privationis & inhabilitatis poenis prædictis subiacere, illasque incurrere, & ab eis præterquam à nobis, seu dicto Rom. Pont. pro tempore existente, ut præfertur absolvi, aut adversus illas restitui, seu rehabilitari non posse neque debere decernimus & declaramus.

§. 8. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac omnibus illis quæ dicti prædecessores in singulis eorum litteris prædictis voluerunt non obstat; ceterisq; contrariis quibuscumque. Nulli ergo &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo sexagesimo, Idibus Novemb. Pontificatus nostri Anno primo.

Approbatio Archiconfraternitatis Orationis & Mortis nuper in Urbe institutæ, ad Orationem quadraginta horarum; singulis mensibus publicè peragendam. Et pauperum defunctorum cadavera, gratis & decenter sepelienda, cum indulgentiarum concessione.

Hujusmodi Orationem, in cunctis Urbis Ecclesiis locisq; piis, præscripta Ecclesiarum, & temporis distributione, absque intermissione fieri jussit Clem.

VIII. in sua constituit. 17. Graves, quæ adhuc servatur. De indulgentiis autem, attende const. Pauli V. mox edendam, quam vidi firmatam sub die 1. Decembris 1605. vide in fin. in Tomo 3.

PIUS EPISCOPUS;

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Divina disponente clementia ad summi Apostolatus apicem meritis licet imparibus sublatus, Christi fidelium omnium votis, præsertim ad charitatis, aliorumq; piorum operum exercitium; & devotionis sinceritatem, certumq; orationem & jejuniarum Altissimo pura mente consecrandorum ordinem tendentibus, ac ipsorum fidelium Societatibus, salubribusq; illarum ordinationibus, quo propterea pie institutæ fuisse dicuntur, libenter potissimum cum à nobis petitur, Apostolici muniminis præsidium adjicimus, ac eosdem fideles, ut ad opera hujusmodi ferventius amplexanda procliviores efficiantur, indulgentiis, & peccatorum remissionibus frequenter invitamus, ut exinde desiderabilia salutis æternæ præmia facilius valeant promereri.

§. 1. Sane sicut exhibitæ nobis nuper pro parte dilectorum filiorum Guardianorum, Administratorum, & Officialium Confraternitatis de Oratione, aliàs della Morte nuncupatæ, in Almâ Urbe institutæ, petitio continebat, jam multis annis elapsis nonnulli Christi fideles in ipsa Urbe degentes divino instinctu moti, & pia mente considerantes, Orationes humiliter & devote à Christi fidelibus in unum in Dei nomine convenientibus factas, divine Majestati gratas & acceptas existere, ac illis, & elemosynis, illisq; piis operibus ipsius Omnipotentis Dei clementiam & misericordiam impetrari, unam Societatem, seu Confraternitatem utriusque sexus personarum de Oratione, aliàs della Morte nuncupatam, in eadem Urbe instituerunt, & inter alia ordinaverunt, ut singulis mensibus, diebus, & horis ad id per pro tempore existentes ejusdem Confraternitatis Guardianos, seu Administratores, & Officiales designandis, & statuendis ad imitationem quadraginta dierum, quibus Dominus noster JESUS CHRISTUS in deserto vitam humanam agens jejunavit, ac etiam Sanctorum Apostolorum, & patrum primitivæ Ecclesiæ, qui ad Deum sine intermissione orabant, Oratio fieret, ac eundem Omnipotentem Deum vocalis & mentalis, horas quadraginta continuas per homines & mulieres dictæ Societatis, ac alias personas ibidem interesse volentes, etiam si Confratres non essent, ac ipsi Confratres in principio cujuslibet Orationis singulo mense in penultima ejus Dominicæ, vel alio die fieri solitæ Corpus Domini cum decenti pompa deferrent Necnon pauperum, ac miserabilium personarum decedentium corpora jam antea sæpenumero absque ulla forsitan cæremonia præter consuetudinem Christianam delata, exemplo Thobiæ etiam propriis humeris deferrent, ac propriis faculis, intortitis, & candelis adhibitis, aliisq; expensis necessariis sepeirent, necnon singulo mense pro animabus Confratrum defunctorum, ac eorum quorum corpora ab ipsis Confratribus humata forent anniversarium celebrarent, & infirmis egenis ipsius Confraternitatis de Medico & elemosynis pro posse succurrerent, illosq; & Confratrum charitate visitarent, atque officia divina, prout aliis Confraternitatibus concessum erat, exercerent.

§. 2. Cum autem sicut eadem petitio subjungebat dicta Confraternitas Spiritu sancto adjuvante concursu fidelium, qui ad illam confluerunt, augmentum, & in dictis piis operibus incrementum non modicum suscepit, ac in dies augeatur, dictiq; Confratres qui ipsam Confraternitatem primo in S. Laurentii in Damaso constituerunt; & ad præsens in S. Joannis Evangelistæ in Ayra dictæ Urbis Ecclesiis congregatam retinent; etiam pro illius directione & augmento nonnulla Capitula, & Statuta fecerint,

Edita An. D.
1560.

Proceci
um.

De Urbe
quidam
Christi fide
les institue
runt Con
fraternita
tem Oration
is & Mortis,
ad Oration
em 40. ho
rarum men
se quolibet
faciend
da.
Etpauperum
defuncto
rum corpora
decenter se
pelienda, &
alia pia ope
ra exercen
da.

Ordinatio
neque pro
regimine d.
Confratern.
constitue
runt.

& ediderint, ac Venerab. fratrem nostrum Federicum Episcopum Præfinitum S.R.E. Cardinalem de Cæs. nuncupatum in d. Confraternitate Protectorem elegerint, prout in uno vel pluribus documentis, & foras publicis desuper conceptis plenius dicitur contineri, Guardiani, & Administratores prædicti nobis humiliter supplicari fecerunt, ut institutioni Confraternitatis, ejusque status & Capitulis hujusmodi pro firmitatibus subsistentia Apostolicæ confirmationis robur adjicere, ac alias in præmissis opportune providere de beniguitate Apostolica dignaremur.

§. 3. Nos igitur, qui Christi fideliæ devotionem, orationes & penitentiam, ac charitatis opera ubique locorum, sed præcipue in ipsa Urbe feliciter adaugeri, sinceris desideramus affectibus, hanc dictorum Confratrum devotionem in Domino collaudantes, ac Guardianos, Administratores, & Officiales prædictos, ac eorum quolibet à quibusvis excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & poenis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existant, ad effectum præsentium duntaxat consequendum, harum serie abfolventes, & absolutum fore censentes, necnon omnium & singulorum documentorum prædictorum, tenores præsentibus pro expressis haberi. hujusmodi supplicationibus inclinati, dummodo dilectorum filiorum Archiconfraternitatis Charitatis etiam de Urbe ad infra scripta accedat assensus, institutionem Confraternitatis de Oratione, alias de Morte nuncupatæ hujusmodi, ac omnia & singula per Guardianos, & Confratres prædictos, circa præmissa edita, ordinationes & statuta, ac prout illa concernunt cætera in eisdem documentis contenta, licita & honesta, ac sacris Canonibus non contraria, Apostolica auctoritate, tenore præsentium ex certa scientia approbamus, & confirmamus, ac omnes, & singulos juris & facti defectus si qui forsan intervenerint in eisdem supplementis, illique omnibus perpetuæ firmitatis robur adjicimus. Et nihilominus eandem Confraternitatem de Oratione, alias de Morte nuncupandam eisdem modo & forma, quibus per ipsos Christi fideles institutum existit, de novo auctoritate tenore præmissis institutum, & etiam erigimus.

§. 4. Ac eisdem Guardianis, Administratores, & Confratribus quascumque utriusque sexus personis bene vias, ac gratas, & acceptas, tam Ecclesiasticas, quam seculares undecumque existentes, dictam Confraternitatem ingredi volentes, cujusvis licentiæ minime requisita, in eorum Confratres, ac Confraternitatis gremium recipientes & admittentes, licentiam & facultatem concedimus.

§. 5. Eisque cum ejusdem Federici Episcopi, & deinceps pro tempore existentis Protectoris sui auctoritate, seu approbatione, quæcumque statuta & ordinationes pro ejusdem Confraternitatis felici regimine, ad piorum operum hujusmodi exercitium, & alias circa præmissa, prout eis videbitur, & placuerit, concedere, & reformare, quæ postquam condita, & reformata fuerint, eo ipso Apostolica auctoritate approbata, & confirmata sint, & esse censentur, & per ipsos Guardianos, & Administratores, & Confratres observari debeant.

§. 6. Necnon tam in eorum Oratorio, quam in processionibus per Urbem faciendis Crucem ligneam, & habitum consueti de tela nigra cum capuccinis, sive piccis deferre, prout etiam de præsentibus deferunt.

§. 7. Necnon Eleemosynas, & oblationes quascumque, ac etiam piorum Christi fidelium, etiam S.R.E. Cardinaliumque Prælatorum, & officialium, aliarumque personarum, tam secularium, quam Ecclesiasticarum, tam hæcenus, quam in futurum ultimis voluntatibus, vel etiam inter vivos donationibus, vel largitionibus, relicta legata, hæreditatis, & bona quæcumque eidem Confraternitati relinquunt, & Confraternitatem illa sic relicta recipere, & de illis illorumque fructibus in dictos pios usus, prout illis videbitur disponere, ac omnia & singula alia recipere, obtinere, &

facere, & ad ea admitti posse ad quæ alia Urbis prædictæ Confraternitates à Sede Apostolica approbate possunt & valent, citra tamen illarum præjudicium.

§. 8. Et insuper Confraternitatem ipsam ad aliam Ecclesiam, seu locum ipsius Urbis sibi benevolum transferre, & inibi si Ecclesia non extet, Ecclesiam unam cum suis Oratoriis & mansionibus; si verò Ecclesia inibi reperiatur de illius pro tempore Rectoris consensu unam Capellam seu Oratorium, in qua, vel quo sacratissimi Corporis CHRISTI Sacramentum reconditum esse debeat, & ad ejus Altare Capellani ad id per eisdem Guardianos, & Officiales ad eorum nutum eligendum, & amovendum, prout hæcenus habuerunt, per quem Missæ, & alia divina officia celebrari, & ipsi Confratribus Eucharistiæ, & alia sacramenta Ecclesiastica ministrari possint, habere & retinere, ac construi facere.

§. 9. Et ipsi Guardiani, & Officiales, ac Confratres dictæ Confraternitatis, & eorum Capellani quorumcumque pauperum decedentium corpora in parochiali Ecclesia sub qua ipsi pauperes decesserint, seu illius Cœmeterio, si Cœmeterium habuerit dictæ Confraternitatis sumptibus & expensis, ac cum suis faculis, intorticiis, & candelis, cum licentia tamen atque intereſſentia ejus Rectoris, seu Vicarii si vocatus adesse voluerit, ita quod si adesse noluerit dictæ Confraternitatis janus Ecclesiæ prædictæ ad hunc effectum aperire omnino teneatur, in forma Ecclesiæ consueta, & solemniter sepelire, vel sepeliri facere, libere & licite valeant, eisdem auctoritate & tenore indulgemus.

§. 10. Et insuper ut Christi fideles eo libentius ad ingrediendum Confraternitatem hujusmodi inducantur, & animarum salus per amplius propagetur, De Omnipotentis DEI misericordia, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus auctoritate consiliis, omnibus, & singulis, præsentibus & futuris ejusdem Societatis utriusque sexus Confratribus, qui ad illam in diebus Orationis quadraginta horarum hujusmodi accesserint, & pro nostra, & pro tempore existentis Pontificis Rom. salute, necnon d. Sedis, ac Principum, omniumque Christianorum pace & tranquillitate pie oraverint, necnon Christi fidelibus, qui Ecclesiam Confraternitatis hujusmodi in Nativitate, Veneris sancti, & secunda feria octavæ Corporis Dom. Nost. JESU CHRISTI: festivitatum diebus devotè visitaverint, verè tamen confessi & contriti, vel firmum confitendi propositum habent, & similiter orantibus, plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam, & remissionem eisdem auctoritate & tenore concedimus & largimur. Eorum autem omnium & singulorum Confratrum, qui per totam primam, vel secundam dictæ Orationis noctem in eadem Oratione permanserint, ac pro viribus, ut supra, preces effuderint intuitu unius animæ cujuscumque; fidelis defuncti, pro qua quicumque ex ipsis Misere mei Deus, & De profundis, Psalmos, aut quinquies orationem Dominicam, & Angelicam salutationem humiliter in dictæ Orationis fine, coram Sanctissimo Sacramento dixerint quoties id fecerint, centum annos, Illis verò Confratribus, qui dictorum pauperum decedentium corpora ad locum sepulture detulerint, aut affocierint, & infirmos prædictos visitaverint, quoties id fecerint mille annos, & totidem quadragenas de injunctis sibi penitentis misericorditer in Domino relaxamus. Necnon eisdem Confratribus, quod liceat eis & eorum cullibet, durante eorum infirmitate Missam in domibus suis celebrari facere.

§. 11. Necnon confessores, seu confessores qui eos in mortis articulo ab eorum peccatis, & Sedis prædictæ in Bulla Cœnæ Dom. legi consueta reſervatis (Religionis, & castitatis votis duntaxat exceptis) dicta auctoritate absolvere possint, eligere.

§. 12. Ac ipsius Guardianis, Officialibus, & deputatis pro tempore existentibus qualesque Confraternitates extra Urbem prædictam sub hujusmodi vocabulo, & institutis pro tempore erectas omnibus &

Confraternitatem ad aliam Ecclesiam transferendi, & in ea Capellani habendi, ad ministrandum Confratribus Sacramenta;

Defunctorumque corpora in Ecclesiis eorum parochialibus, suis expensis requisitis Parochis sepeliendi.

Indulgentiarum concessio pro Confratribus, Sororibus, & aliis. Tu vide novam dispositionem Pauli V. cit. in rubr.

Facultas eligendi confessorem. Tu vide d. constit. Pauli V. Facultas aggregandi alias Confraternitatem. Ad hoc vide eandem constit. Pauli V.

finigu-

Hic aut, Pont. d. Confraternitatem ejusque ordinationes approbat, & de novo instituit, accedente consensu Archiconfrat. Charitatis de quo constat hic in fia.

Eisque Officialibus, dat potestatem, quoscumque in Confraternitatem recipiendi.

Statuta cum auctoritate Protectoris condendi & reformandi.

Crucem ligneam & habitum nigrum deferendi. Eleemosynas, oblationes, & legata recipiendi, & in dictos pios usus exponendi.

Clauſula
huius Bullæ
preſervati-
va.

Cauſula
derogato-
ria.

D. P. Ab. i.
die 17. Nov.

Conſenſus
Archicon-
fraternitatis
Charitatis
de Urbe.

Edita Ah. D.
1560.

Exordium.

ſingulis prædictis, aliſque privilegiis, & indulgentiis ſibi deinceps concedendis, ſub conditionibus, & formis ſibi benevolis aggregandi, illaſque eis, in toto, vel in parte comitandi facultatem ſimiliter concedimus, ac indulgemus huiusmodi.

§. 13. Et præſentes litteras ſub quibuſvis revocationibus, ſuſpenſionibus, derogationibus, vel limitationibus quatuorcumque ſimilium vel diſſimilium indulgentiarum per nos, & Sedem prædictam, etiam in favorem fabricæ Baſilicæ Principis Apoſtolorum de ipſa Urbe, expeditionis contra infideles & cruciatæ ſancitæ, vel aliter etiam ad Imperatorem, Regum, Ducum, aut aliorum inſtantiam quomodolibet pro tempore factis, nullatenus comprehendendi; ſed ſemper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt toties in priſtinum ſtatum reſtitutas, & de novo conceſſas fore, ipſiſque Conſatribus, & aliis fidelibus ſuffragari debere decernimus.

§. 14. Non obſtantibus quibuſvis Apoſtolicis, ac in Provincialibus & ſynodalibus Conciliis editis, generalibus, vel ſpecialibus conſtitutionibus, & ordinationibus; ac noſtra, de indulgentiis, & gratiis huiusmodi ad inſtar non concedendis, aliſque editis, & edendis Cancellariæ Apoſtolicæ regulis, necnon quorumvis Eccleſiarum, & aliorum locorum etiam iuramento, confirmatione Apoſtolica, vel quavis firmitate alia roboratis, ſtatutis, & conſuetudinibus, privilegiſque, indultis, & litteris Apoſt. illis, & eorum Superioribus, ac perſonis, aliſque quibuſlibet ſub quibuſcumque tenoribus & formis, ac cum quibuſvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliſque efficiationibus, & inſolitis clauſulis, ac irritantibus, & aliis decretis, & Motu proprio, ac aliis quomodolibet conceſſis, ac etiam iteratis vicibus, approbatis, innovatis, quibus omnibus etiam ſi de illis, ac totis illorum tenoribus ſpecialis, ſpecifica & individua, non autem per clauſulas idem importantes mentio, aut quævis alia expreſſio habenda, ſeu aliqua alia ex quaſita forma ad hoc ſervanda eſſet, tenores huiusmodi, ac ſi de verbo ad verbum infererentur, præſentibus pro ſufficienter expreſſis haberi. illis aliter in ſuo robore permanſuris, hac vice dumtaxat ſpecialiter & expreſſe derogamus, æterniſque contrariis quibuſcumque. Nulli &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dñicæ 1560. 15. Kalend. Decemb. Pontificatus noſtri Anno primo.

Anno Incarnationis Dominicæ 1561. die 7. Februarii, R. D. Antonius Lomellinus Protonotarius Apoſtolicus, Horatius de Marchianis, Chriſtophorus Lucianus, Franciſcus Sangaletus deputati per Franciſcum Puccium eorum procuratorem, omnibus & ſingulis retroſcriptis ſine tamen præiudicio privilegiorum ejuſdem Conſraternitatis Charitatis, & litterarum expeditioni conſenſerunt, &c.
Pro Jo. Baptiſta Doria. Jo. Baptiſta Zianus.

XXIII.

Indiſtio proſecutionis Sacri & Oecumenici Concilii Trid.

Concilium iſtud indiſtum fuerat à Paulo III. ut ſuper in Tomo I. in ejus conſtit. 33. Initio Abſolutum; & conſirmatum fuit ab iſto Pontifice Pio IV. ut inſ. in hoc Tomo II. in conſt. 73. Benedictus. ubi penam concord. Materie.

PIUS PAPA QUARTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

AD Eccleſiæ regimen, licet tanto oneri impares, ſola Dei dignatione vocati, ſtatim circumſpectis mentis oculis per omnes reipublicæ Chriſtianæ partes; cernentes non ſine magno horrore, quam longe, lateque peſtis hæreſum & ſchiſmatis pervafiſſet, & quanta Chriſtiani populi mores correctione indigerent; in eam curam, & cognitionem,

pro ſuſcepti muneris officio incumbere cœpimus, quemadmodum ipſas hæreſes extirpare, tantumque, & tam pernicioſum ſchiſma tollere, moreſque adeo corruptos, & depravatos emendare poſſemus.

§. 1. Cum autem intelligeremus ad hæc ſananda mala aptiſſimum eſſe remedium, quod ſancta hæc Sedes adhibere conſueviſſet; oecumenici, generalis; Concilii ejus congregandi, & Deo juvante celebrandi, conſilium cepimus. Indiſtum illud quidem antea fuit à ſel. rec. Paulo Tertiò, & ejus ſucceſſore Julio prædeceſſoribus noſtris, ſed variis de cauſis ſæpius impeditum, & interpellatum perfici non potuit. Siquidem Paulus cum id primò in Urbem Mannuam, deinde Vicentiam indiſſet, qualdam ob cauſas in litteris ejus expreſſas id primò ſuſpendit, poſtea Tridentum tranſiit. Deinde cum quibuſdam de cauſis ibi quoque ejus celebrandi tempus dilatum fuiſſet, tandem ſuſpenſione ſublata, in eadem Civitate Tridentina inchoatum fuit. Verum ſeſſionibus aliquot habitis, nonnullis decretis factis, ipſum ſe poſtea Concilium aliquibus de cauſis, accedente etiam Sedis Apoſtolicæ auctoritate, Bononiam tranſiit. Julius autem, qui ei ſucceſſit, in eandem civitatem Tridentinam id revocavit, quo quidem tempore facta alia quedam decreta ſunt. Sed cum novi in propinquis Germaniæ locis tumultus excitati fuiſſent, & bellum in Italia, & Gallia graviffimum exarſiſſet, ruſus Concilium ſuſpenſum & dilatum fuit, adnec nimirum humani generis hoſte, aliſque, ex aliis difficultates, & impedimenta obſtante, ut tantum Eccleſiæ commodum, quod proſus auferre non poterat, ſaltem quam diutiſſime retardaret. Quotopere verò interea auctæ fuerint, & multiplicatæ, ac propagatæ hæreſes, quantopere ſchiſma creverit, ſine maximo animi dolore, nec meminiffe poſſumus, nec referre. Sed tandem pius & miſericors Dominus, qui nunquam ita iraiſcitur, ut miſericordiæ oblivifcatur, Regibus, & Principibus Chriſtianis pacem, & unanimiſſimam donare dignatus eſt. Quia nos occaſione oblata, maximam in ſpem venimus, ipſius miſericordiæ freti, fore ut his tantis quoque Eccleſiæ malis eadem Concilii via ſanis imponatur. Nos itaque ad ſchiſma hæreſeq; tollendas, ad corrigendos & reformandos mores, ad pacem inter Chriſtianos Principes conſervandam, celebrationem ejus non eſſe duximus diutius differendam.

§. 2. Habita igitur cum Venerabilibus fratribus noſtris Sanctæ Romanæ Eccleſiæ Cardinalibus de liberatione matura, factis etiam conſiliis noſtri certioribus chariſſimis in Chriſto filiis noſtris Ferdinando Romanorum Imperatore electo, & aliis Regibus atque Principibus, quos quidem; ſicut de eorum ſumma pietatē & ſapientia nobis pollicebamur, paratiſſimos ad ipſius Concilii celebrationem adjuvandam invenimus, ad Dei Omnipotentis laudem & gloriam, atque Universalis Eccleſiæ utilitatem de eorundem fratrum noſtrorum conſilio, & aſſenſu, ſacrum Oecumenicum & generale Concilium, auctoritate ejuſdem Dei, & bactorum Petri & Pauli Apoſtolorum; qua nos quoque in terris fungimur, freti, & ſubnixi, in civitate Tridentina ad ſacraſſimum diem Reſurrectionis Dominicæ proxime futurum indiſtimus, & ibi celebrandum ſublata ſuſpenſione; ſtatuiſſimus atque decernimus.

§. 3. Quocirca Venerabiles fratres noſtros omnibus ex locis Patriarchas, Archiepiſcopos, Episcopos, & dilectos filios Abbates, ceteroſque quibus in Concilio generali accedere, & ſententiam dicere jure communi, vel ex privilegio, vel ex antiqua conſuetudine licet, vehementer in Domino hortamur, & monemus, atque etiam diſtrictè præcipiendo mandamus in virtute ſanctæ obedientiæ, in vi quoque juramenti quod præſtiterunt, & ſub poenis quas in eos, qui ad Concilia generalia convenire neglexerint ſacris ſciunt eſſe canonibus conſtitutas, ut ad Concilium ibi celebrandum convēniant intra eam diem; niſi forte fuerint impediti.

Paulus III.
& Julius III.
indixerunt
Conc. Trid.
ſed proſecutionem non fuit
ex variis
cauſis de
quibus hic,
& in Paul.
III. conſt.
cic. in rubr.

Iſte autem
Pont. ex
cauſis hic
expreſſis di-
ſtum Conc.
proſequi,
maniat ad
diem Reſur-
rectionis
Dominici
1561.

Monetur
Prælatos ut
accedant ad
Concilium.

Hortator
etiam Impe-
ratores, Re-
ges, & Prin-
cipes, ut
per se ipsos,
vel eorum
Oratores
Conc. inter-
sint &c.

to legitimo præditi, quod tamen impedimentum per legitimos procuratores Synodo probare debebunt, Monemus propterea omnes, & singulos quorum interest interesse potuerit, ut in Concilio esse non negligant.

§. 4. Charissimos verò in CHRISTO filios Romanorum Imperatorem electum, ceterosque Reges & Principes, quos optandum sane esset Concilio interesse possent hortamur, & rogamus, ut si ipsi interesse Concilio non potuerint, ut Oratores suos prudentes, graves, & pios viros utique mittant quo ipsorum nomine illi interfiant, curentque diligenter pro sua pietate, ut ex eorum Regnis atque dominiis Prælati, sine reculatione ac mora tam necessario tempore, Deo, & Ecclesiæ officium suum præstent, eisdem etiam curatores esse minime dubitantes, ut per ipsorum regna & dominia tutum, ac liberum iter Prælati, eorumque familiaribus, comitibus, & aliis omnibus ad Concilium cunctibus, & ab illo redeuntibus pateat, benigneque ac comiter omnibus in locis recipiantur atque tractentur, sicut, quod ad nos atinet, ipsi quoque curabimus qui nihil omnino prætermittere decrevimus, quod ad tam pium & salutare opus perficiendum à nobis in hoc loco constitutis præstari possit, nihil, ut Deus scit, quærentes aliud, nihil propositum habentes in hoc Concilio celebrando, nisi honorem ipsius Dei, dispersarum ovium reductionem, ac salutem, & perpetuam Christianæ reipublicæ tranquillitatem, ac quietem.

§. 5. Ut verò hæc literæ, & quæ in eis continentur, ad omnium quorum oportet, notitiam perveniant: nec quisquam ea excusatione uti possit quod illa ignoraverit, præsertim cum non ad omnes quos de his litteris certiores fieri oporteret, tutus forsitan pateat aditus, volumus, & mandamus, ut in Basilica Vaticana Principis Apostolorum, & in Ecclesia Lateranensi. tunc cum in eis populus, ut Missarum solemnibus interfit, congregari solet, palam, clara voce à Curia nostræ Curatoribus, seu Notariis aliquibus publicis recitentur, & postquam recitata fuerint, ad valvas earum Ecclesiarum, itaque Cancellariæ Apostolicæ, & in loco solito Campi Floræ affigantur: ibique quo legi, & omnibus innotescere possint, aliquandiu relinquantur. Cum autem inde amovebuntur, earum exempla in iisdem locis affixæ remaneant. Nos enim per recitationem hanc, publicationem & affixionem, omnes & singulos, qui his litteris comprehenduntur, post duos menses à die publicationis, & affixionis earum volumus perinde adstrictos, & obligatos esse, ac si ipsismet illæ eorum editæ, & lectæ fuissent.

§. 6. Transumptis quoque earum quæ ihu alicuius notarii scripta, subscriptæ, & sigillo, ac subscriptione alicuius personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munita, ut sine dubitatione ulla, fides habeatur, mandamus atque decernimus. Nulli ergo &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1560. tertio Kal. Decemb. Pontificatus nostri Anno primo.

Ego Pius Catholicæ Ecclesiæ Episcopus.

Si me non fuerint dominati tunc immaculatus ero.

Ego R. Card. de Catpo Episcopus Portuensis
Ego F. Card. Pisanus Episcopus Tusculanus
Ego Fed. Card. Caius Episcopus Prænestinus
Ego Jo. Card. Moronus Episcopus Albanus
Ego Christophorus Madrucius Card. Trid.
Ego Otto Truchses Card. Aug.
Ego B. de la Cueva Card. S. Crucis
Ego Ti. Card. Crispus.
Ego Jo. Mi. Card. Saracenus
Ego Jo. Card. Sancti Vitalis.
Ego Jo. And. Card. Mellanen.
Ego Jac. Card. Puteus.
Ego Jo. B. Cicada Card. S. Clementi; subscr.
Ego Scipio Card. Pisanus.
Ego Jo. Card. Romanus.

Ego Jo. Ant. Card. Capifuccus.
Ego Theod. Card. Gaddus.
Ego F. M. G. Card. Alexandrinus.
Ego Clem. Card. Aræaceli.
Ego J. Card. Sabellus.
Ego Jo. Ant. Card. S. Georgii.
Ego A. Card. Farnesius Vicecanc.
Ego Gui Afc. Card. Camerarius.
Ego Hipp. Card. Ferraricus.
Ego Jul. Card. Urbin.
Ego Aloy Card. Cornelius.
Ego Hier. Card. Simoncellus.
Ego Vitellotus Card. Vitellius.
Ego Jo. Card. de Medicis.
Ego Carolus Card. Borromæus.

Anno à Nativitate Domini 1560. indit. 3. die vtrò 2. mensis Decemb. Pontificatus Sanctiss. in Christo patris, & D.N.D. Pii divini providentia Papa IV. anno primo, retrospectiva littera Apostolica le-
gata affixa, & publicata fuerunt in locis superscriptis, iuxta earum seriem & tenorem, & etiam ut moris est, & illis amotis dimissi illarum copiarum affixis per nos Bernardinum Andreutium, & Jo. Andream Pamiziam Apostolicos Cursores.
Petrus Valtrini Mag. Curf

Ordo, quo Prælati in sacro Concilio Tridentino locum habere debent, in actibus publicis.

Istud Concilium hic idem Pontifex absolvit & approbavit infra in hoc Tomo II. in const. 73. Benedictus. ubi alia notabo.

PIUS PAPA QUARTUS &c.

Sicut ea, quæ pacem & concordiam nutriunt, pura mente semper inquirimus, ita ex debito nostræ Pastoralis sollicitudinis tenemur illa submovere, quæ discordiam suscitare, & scandalum introducere posse videntur.

§. 1. Itaque ad tollendam omnem controversiam materiam, quæ inter Prælatos ad celebrationem facti Oecumenici & generalis Concilii in civitate Tridentina pro tempore congregatos, super eorum præcedentia forte jam sunt exorta, & in dies oriri possunt. Volumus ac vobis per præsentem mandamus, ut omnes & singulos Prælatos prædictos, videlicet Venerabiles fratres Patriarchas primo, secundo Archiepiscopos, tertio autem loco Episcopos in quibusvis actibus publicis, secundum gradum & ordinem suarum ad eorum Ecclesias promotionum (ita quod qui prius promotus ad eas fuerit in suo quique ordine prior existat) incedere, sedere, ac locum habere (nulla habita ratione ad ipsorum dignitates primatiales, sive veræ, sive præsentis illæ fuerint) auctoritate nostra faciatis, studioseque & diligenter curetis, atque pro vestra prudentia, ac pietate geratis, ut cuncta istis concordibus animis, in virtute Spiritus sancti, cum Dei omnipotentis honore, atque timore, quiete, feliciterque procedere valeant.

§. 2. Non obstantibus præmissis, & quibusvis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, cæterisque contrariis quibuscunque.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die ultima Decembris 1560. Pontificatus nostri Anno primo.

Confirmatio, & extensio jurisdictionis, Præsidentis, & Camerarii Riparum Almæ Urbis in causis civilibus & criminalibus, & etiam indultorum Navitarum, & Mercatorum Ripalium.

Hanc jurisdictionem & indulta, vide in const. 6. Pauli III. Cum nobis & in aliis ibi indicatis, in Tomo I.

Publicatio.

XXIV.

Edita A. D.

1560.

Exordium

Declaratio
præceden-
tia Pæla-
rum in Con-
cilioHanc præ-
cedentia
Legati Apo-
stolici de-
clararunt,
nulli jus ac-
quirere au-
tollere, ut
legitur scilicet,
16. in fin.Clausula
derogato-
ria.D. P. A. 1.
die 31. Dec.

XXV.

Edita An. D.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Paulus III.
& alii his
mercatori-
bus indulta
concede-
runt, ut in
ejus Bulla
cit. in rubr.

Hic Pontif.
ea appro-
bat.

Jurisdic-
tionemque cau-
sarum civilium exten-
dit.

Et crimi-
natum am-
pliat.

Cupientes pro communi ac publica utilitate, & commodo Urbis nostrae, & praecipue Curiae, incolarum, mercatorum, & nautarum in Romana nostra Ripa, & Ripetta, commercia exercitum favoribus incumbere, & scientes etiam aliis per felices recordat. Innoc. VIII. Leon. X. Clem. VII. & Paulum III. Rom. Pont. praedecessores nostros, fuisse statutum, & ordinatum, ut favorabilibus dictis statutum, & nautis, liceret mercaturam profiteri, quod possent uti omnibus gratiis, & privilegiis ab antiquo illis concessis, contra, & adversus eorum debitores, bonaque illorum, & haeredes, occasione rerum Ripalium, ut latius in litteris dictorum praedecessorum nostrorum dicitur contineri.

§. 1. Nos attendentes, quod favorabilibus, & publicis utilitatibus esse succurrendum, & per contrarium fraudibus, caliditatibus, & cavillationibus obvian- dum, maxime illorum, qui curant & student perniciose protrahere causas, retardare solutiones, & impedire executiones, & indemnitates publicis, ac dictorum mercatorum, & nautarum, Curiaeque Ripae, & Ripettae consulere, & volentes illos & illas specialis gratiae favore prosequi, Motu simili, & ex certa scientia, &c. concessiones, gratias, indulta, & privilegia, litteras, statuta, & capitula, omnesque alias sententias latas per Cameram nostram, & inter ipsos mercatores, & dohanerios gabellae vini, & omnia alia inserta in dictis statutis, & consuetudinibus Ripalibus, in favorem dictae Curiae, & mercatorum, & nautarum, & inde secuta quaecumque, Apostolica auctoritate confirmamus, & approbamus, & quatenus opus sit de novo concedimus. Omnemque & singulos, tam juris, quam facti defectus, si qui forsitan intervenierint in eisdem, ac solemnitates omittas, si quae omisse sunt, supplemus.

§. 2. Ac volentes inconvenientis obviare, quae saepe oriuntur, a male forsitan judicantibus, gratias nostrorum praedecessorum concessas hujusmodi nostro Tribunali, ac illius nautis, & mercatoribus, Motu proprio, & ex certa scientia, & plenitudine potestatis, declaramus nostrae intentionis esse, ac nostrorum praedecessorum, quod omnes causas, tam introductae, quam introducendae in dicto Tribunali, in prima instantia, occasione rerum Ripalium, vel ab illis emergentium dependentium annexarum, & connexarum, & causa pretii illarum, de quibus certa habetur fides, ac quomodocumque, & qualitercumque, licite tamen & honeste, fuerint contractum, & conventum inter ipsos mercatores, nautas, & alios eorum debitores commercia pro rebus ripalibus cum illis habentes, quod dictae causae & lites, non possent modo aliquo, in dicta prima instantia, (ubi tamen non est deneganda appellatio) per statuta, & consuetudines Ripales, etiam per dependentia vel ratione universalis iudicii, excussionis hereditatum, & bonorum, seu dotorum, intentari, introduci, neque reassumi in aliquibus aliis Curis Urbis nostrae, sed omnino debeant finire, & determinari in dicta Curia Ripae & Ripettae per Camerarium ejusque notarium, & officiales, & in arduis, & ubi cadit punctus juris, habito consilio sapientis, juxta formam dictorum statutorum de hujusmodi loquentium, et si opus fuerit. Et sic etiam de contractibus, passionibus, & conventionibus habitis quocumque locorum, etiam in finitimis provinciis.

§. 3. Et simili Motu proprio volumus, quod omnes causae mixtae, & criminales inclusive, etiam usque ad ultimum supplicium, pro omnibus excessibus, delictis, & homicidiis in dicta Ripa perpetratis, tam in mari, quam in dicta Ripa, & ejus districtu, & pertinentiis & quocumque locorum in mari, tam contra res, & merces destinatas ad Ripam praedictam, vel ad nostrum portum Civitatis, Vetulae, per nautas, vel alios, etiam quod per terram postea ex aliquo portu pervenerint ad Urbem nostram, seu nostram Ripam, vel Ripettam, cognoscantur per Camerarium

dictae Ripae, ac supra, & debito fine terminentur, & incidenter contra quoscumque facinorosos homines & nautas, habeat merum, & mixtum imperium, animadversionem, & gladii potestatem prout olim habuit, & in praesentiarum habet, quam potestatem confirmamus, & quatenus opus sit, dicto Camerario & ejus Ripae, & Ripettae concedimus. Decernentes irritum & inane quicquid in contrarium attentari contigerit in futurum.

§. 4. Volumus etiam quod praesenti Motui proprio nostro per quamcumque nostram signaturam, etiam Motu proprio emanatam, & in futurum emanandam, etiam si de eorum clausulis derogatoriis mentio fiat, nisi illius expressa mentio de verbo ad verbum habeatur, nullatenus derogatum censeatur. Declaramus etiam nostrae intentionis nunquam fuisse, per quemdam nostrum Motum proprium confirmatorium capitolium gabellae Studii, &c. Velle auferre beneficium prelationis, prioritatis, & domini ipsorum mercatorum, & nautarum, in rebus, ac viis existentibus, juxta tenorem Motus proprii felices recordationis Pauli Terii praedecessoris nostri, sed fraudibus tantum obviare.

§. 5. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, stylo Palatii, statutis, ac novis reformationibus Urbis, ac litteris à nobis emanatis; privilegiis, indultis, & aliis facultatibus forsitan concessis, quovis modo debitoribus dictorum mercatorum, & nautarum, occasione rerum praedictarum ac aliis, & protempore A.C. Apostolicae, Vicario, Gubernatori, Senatori Urbis, Collateralibus illius, ac aliis Judicibus Urbis, & illorum Curis, & forsitan Dohaneris gabellae Studii, etiam per nos concessis, innovatis, & approbatis, & concedendis, &c. Quibus omnibus &c. ac si eorum tenores &c. hac vice duntaxat derogamus.

§. 6. Praesentemque nostram consili, cui non derogatum per quamcumque signaturam, & in qua omnia & singula decreta, formas, & alia in dictis Motibus, propriis contenta, & scripta, & repetita censerit debere, volumus in volumine statutorum dictae Curiae Ripae, & Ripettae describi, & registrari, & ejus signatura in iudicio, & extra ubique fieri faciat, & sufficiat, regula contraria non obstante.

§. 7. Mandantes omnibus quatenus sub excommunicationis sententia, & nulle ducatorum auri &c. ipsi facto incurrendis, toties quatenus contraventum fuerit, & processus sit ipso jure nullus. Et ita servari inviolabiliter mandamus.

Placet Motu proprio I. Videatur in Camera J. Videtur concedenda, Lide Torres in plena Camera.

Deputatio & facultates Cardinalis Camerarii cognoscendi cum voto Congregationis, & quaecumque causas interesset Rever. Camerae Apostolicae, ac revidendi computa Officialium, & aliorum etiam jam solidata & decisa, & contractus laesionem ejusdem Camerae continentes rescindendi, ac bonorum detentores coercendi.

De cognitione hujusmodi causarum, vide sup. Tom. I. Pauli III. consil. 9. Non sive, cum ibi nota. Et de redditione, ac revisione hujusmodi computorum, vide sup. in ejusdem Pauli consil. 40. Cum sicut. & infra proximè in consil. 87. Hujus Pontif. Cum inter.

De materia autem Camerarii & Camerae, vide infra in Tomo III. Clementis VIII. consil. 65. In conferendis.

PIUS PAPA QUARTUS

Motu proprio, &c.

Romanum decet Pontificem ex iuncto sibi de super Palatium officio, solerti diligentia procurare, ne res, & iura Camerae Apostolicae, fraude, malis, & periculis nonnullorum, detrimentum aliquod patiantur, sed ut malis, seu fraudibus, periculisque eorum detectis propterea punitis, castigatis,

Clausula
praeservati-
va.

Clausula
derogato-
ria.

Insilio de-
scribendi in
statutis.
Vide ibi
descriptum
fol. 19

Poenae con-
travenien-
tiam.

Papae sub-
scriptae
Camerae
approbatio.

XXVI.

Edita A. D.

Exc. diu. n.

dam-

Causa hu-
jus conti-
nuitur.

dammisque eorum, fraude, & malitia huiusmodi, dictæ Cameræ illatis, resectis, meliora, maioraque in dies efficiantur, etiam opem, & operam impendere effaceas.

§. 1. Cum itaque sicut accepimus diversi Sedis Apostolicæ Nunci, ac iurium, rerum, & bonorum Cameræ Apostolicæ præfate collectores, subcollectores, exactores, administratores, officiales, & commissarii, necnon thesaurarii, tam in Alma Urbe nostra, & Statu nostro Ecclesiastico, quam diversis aliis, etiam ultra maria, & montes, Regnis, Provinciis, & dominis, per nos, & diversos alios Romanos Pontifices prædecessores nostros, sive S. R. E. Camerarios, aut ejusdem status nostri superintendentes pro tempore existentes vel prædictam Cameram, seu alias à Ministris nostris deputati, illorumque ministri, & forsan aliae personæ Romano Pontifici pro tempore existenti, & dictæ Cameræ, seu ejus officialibus, de suis administrationibus, & gestis rationem reddere debentes, suarum administrationum, & rationum in Camera prædicta, seu alibi exhibitis, & præsentatis libris, & computis, dubitantes per eorumdem computorum exactam discussionem, & diligentem examinationem eidem Cameræ debitores reperiri, & declarari ad reliqua restituendum cogi, & aliquando eorum fraudes detegi, & pro præmissis debitis penis affici, eadem computa calculari, discutiri, examinari, solvendi, & declarari neglexerint, & procrastinaverint, negligantque & procrastinentur de præfenti: multi etiam dictorum computorum exhibitionem, & solidationem distulerint, & differant, quosque ob Pontificum, & officialium mutationem, quam in Curia Romana sæpius evenisse, & quotidie fieri experientia docuit, iudices talium computorum ignaros, rationales, sive alios pro eadem Camera agentes sibi propitios, & faventes obtinuerint, & obtineant, ex quorum postea in iuria, seu ipsis mutua quadam devinctis amicitia, computa prædicta secundum ipsorum Administratores, etiam injustam, voluntatem calculari, solidari, & declarari sæpe sæpius contingit, multaque non admittenda admilla fuerint, & admittantur, & quamplurima in fraudem ejusdem Cameræ occultentur, necnon plerique alii varia & diversa credita contra Cameram prædictam constringentes, ac antiqua, ac forsan bis soluta, & extincta repetentes, ac forsan facta collatione cum præfentis creditoribus parvo pretio illa, & mandata Cameralia desuper expedita redimentes, adveniente Sedis vacantis tempore, quo de patrimonio beati Petri, & aliis provinciis Sanctæ Romanæ Ecclesiæ subjectis, non ita sicut vivente Romano Pontifice diligenter exacta cura habetur, ab eadem Camera, etiam præcedentibus illicitis forsan modis procuratis sacri Collegii Cardinalium, vel illius capitis ordinum mandatis super dictis confictis redemptis, sive aliis prætextibus ex donatione liberali, seu servitorum remunerationis obtentis, multas, & notabiles pecuniarum summas indebite, & minus iuste exegerint, ac per varias artes favores, & illicitos modos extorserint, ex quo dicta Camera ad illorum satisfactionem nullatenus tenebatur, quodque ad præfatas fraudes, & indebitas pecuniarum exactiones, & aliarum rerum extorsiones colorandas Roman. Pontificibus, postea ad summum Apostolicum episcopem statim assumptis, ab eisdem in principio suorum Pontificatum obreptis, & subreptis mandata, cedulas, & diversas alias litteras, Motu proprio, indebitarum solutionum confirmatorias, revalidatorias, & præceptorias obtinuerint, & obtineant, prout etiam forsan à nobis diversis temporibus, subreptis tamen, & fraudulenter obtinuerunt. Multique sub diversis coloribus, & confictis exemptionum privilegiis, à nobis & diversis Romanis Pontificibus obtentis, ab annuis censibus, & impositionibus, etiam subsidii triennialis, necnon iuribus, etiam quinquenniorum Cameræ prædictæ debitis, se, subditosque suos de facto eximentes, ab illorum debita solutione, & solita contributione subtraxerint, & subtrahant, multaque castra, oppida, ter-

ritoria, villas, nemora, palatia, montes, bona, & jura, etiam regalia nostra, & prædecessorum nostrorum, ac ad nostrum, & eorum supremum dominium, sive ad illius recognitionem præstantia, & pertinentia, nulla saltem legitima præcedente causa, à quamplurimis Communitatibus, Universitatibus, Ducibus, Marchionibus, Comitibus, aut particularibus personis de se, occupaverint, & detinuerint, ac in præfentiarum detineant, & occupent in maximum S. R. E. & ejusdem Cameræ damnum, & præjudicium, ac faciant Apostolici patrimonii, & aerarii diminutionem, quod cum ob præfatas pecuniarum profusiones, & bonorum ac castrorum supra dictorum indebitas occupationes semper exhaustum reputatur, & defraudetur.

§. 2. Et propterea ejusdem Cameræ indemnitati providere, ipsamque similibus, & grayminibus, extorsionibus, ac similibus, illos, qui circa prædicta aliquo modo oppressi fuissent relevare cupientes, ac de fide, industria, doctrina, sufficientia, singularique rerum experientia, dilecti filii nostri Vitelloti S. Marie in Via lata, diaconi Cardinalis Vitellii nuncupati, ejusdem S. R. E. Camerarii plurimum in Domino confidentes, eidem Vitellio Cardinali & Camerario, Motu simili & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine committimus, & mandamus, quatenus adhibitis secum Venerabili fratre nostro Annibale Archiepiscopo Avenionen. ejusdem Cameræ Clerico, & dilectis filiis Donato Mattheo Minali Thesaurario nostro generali, & Francisco de Graffis familiari nostro, ac Jannotto Castilione Militari S. Lazari Hierosolymitani Magistro Magistro, & magistro Paulo Odescalco utriusque signaturæ nostræ Referendario, & Cancellariæ Apostolicæ correctore, ac de eorum, seu majoris partis illorum infimul congregatorum voto & assensu, cum præfentia & assistentia Venerabilis fratris nostri Aloysii Episcopi Montis pioli Cameræ prædictæ generalis Commissarii, omnes & quascumque causas civiles, & criminales, seu mixtas, prophanas, & spirituales, beneficiales, seu similes mixtas, in quibus directe, vel indirecte, ficti & Cameræ prædictæ interesse, seu præjudicium vertatur, seu quomodolibet verere sibi cum ejusdem Congregationis voto videbitur indecitas, pendentes, etiam instructas coram quibuscumque iudicibus ordinariis, seu etiam auctoritate Apostolica delegatis, etiam si S. R. E. Cardinales, ac Curie causarum Palatii Apostolici Auditores pro tempore fuerint, & hodie etiam reperiantur, seu etiam in Camera nostra Apostolica, in statu, & terminis, in quibus pro tempore reperiantur, & de præfenti existant, ad se de voto dictæ Congregationis, seu majoris illius partis advocet, illaque & omnes alias quas præfatus Aloysius Episcopus & Commissarius, coram eo proponas, moveatque & proponere volet & intendat, contra quascumque personas Ecclesiasticas, sæculares, & quorumvis Ordinum regulares, cujuscumque status, gradus, ordinis, præeminentiæ, & conditionis fuerint, etiam si Cardinalatus honore, aut Patriarchali, Archiepiscopali, Episcopali, Ducali, Marchionali, Comitali, vel quacumque alia dignitate, excellentia, & prærogativa præfulgeant, & quocumque nomine nuncupentur, etiam Communitates quarumcumque civitatum, etiam Metropolitan. Universitates, Conventus, Congregationes, & Collegia quacumque, etiam capita ordinum quorumcumque, unà cum incidentibus, dependentibus, emergentibus, annexis & connexis, ac toto negotio principali audiat, & cognoscat, & cum prædictorum voto, & assistentia, iustitia mediante terminet.

§. 3. Ac quacumque computa, quæ tamen ex rationabili causa eidem Vitellio Cardinali & Camerario de voto ejusdem Congregationis revidentur videbuntur, etiam per prædictam Cameram, sive illius Officialiales, & quoscumque alios, & sæpius solidata, declarata, & decisa, etiam si Roman. Pont. & nostram confirmationem, liberationem, & absolutionem contineant, diligenter revideat, de novo calculet, & calculari faciat, & ac si nunquam solidata, & declarata fuerint, mediante iustitia discutiat, declarat,

Deputatio,
& facultates
Camerarii
cognoscenti,
unà cum
quaque
Deputatis,
causas con-
cernentes
interesse
Cam. Apbst.

Computa-
que Mini-
strorum, &
aliorum,
etiam soli-
data revi-
dendi.

facultatem gratiandi homicidas, aut cum eis componendi.

Ad materiam bannitorum vide omnino const. 6. Sist. V. Hos nostri, ubi plene de singulis notabo in hoc Tomo II.

PIUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Edita A. D.
1561.

Proemium.

IN eminenti Sedis Apostolicæ specula, divina disponente clementia, licet immeriti constituti, inter multiplices nostræ sollicitudinis curas, quibus assidue premimur, illam pro nostro Pastoralis officio in primis suscipere debemus, per quam omnes Christi fideles, præsertim nostri & S. R. E. devoti, & peculiare filii, quiete & pacifice, & sine aliqua offensione vivere valeant. Unde nos ad id operarias manus libenter apponimus, ac illa, quæ pro eorum felici, prospero & pacifico statu per Rom. Pontifices prædecessores nostros facta fuisse comperimus, non solum Apostolico munimine roboramus, verum etiam pro illorum majori observantia innovamus, ac de novo statuimus & ordinamus, ac penas adjicimus, ut si non virtutis amore, saltem formidine pœnæ mandata Apostolica ætius serventur, & alias disponimus, prout in Domino conspiciamus salubriter expedire.

Clem. VII
edidit con-
stit. de qua
hic.

§. 1. Dudum siquidem à felicis recordationis Clemente Papa VII. prædecessore nostro emanarunt litteræ tenoris subseqentis. Clemens Episcopus servus servorum Dei, Ad perpetuam rei memoriam. In sancta beati Petri Sede &c.

Omniur tenor istius constitutionis quia habetur sup. fol. 174.

Hic modo
Pont. confir-
mat const.
Pont. de
quibus in
rubr.

§. 2. Cum nos post nostram ad summi Apostolatus apicem assumptionem ob non observationem dictarum fratrum litterarum, bellis quibus non solum civitates, terræ, & loca temporali dominio ejusdem Romanæ Ecclesiæ subiecta, sed etiam totius Italiæ superiorem annis magno cum omnium in eis habitantium incommodo vexata fuerunt, id forsan cavens, in eisdem civitatibus, terris, & locis, ac etiam in Alma Urbe nostra intestina, & diuturna odia, ac discordias, civileque dissensiones vigere, ac furta, latrocinia, homicidia passim perpetrari cognoverimus, ac mente revolentes præfatos Pium, Paulum, Sixtum, Julium, Leonem, Clementem prædecessores, ad tranquillum & felicem statum revolvendes, necnon commoda, tam personarum ejusdem Urbis, quam aliarum civitatum, terrarum, & locorum eidem Rom. Ecclesiæ subiectorum aciem suæ considerationis extendisse, illorum exemplo moti animum ad sedandum discordias, & odia, tam in Urbe, quam in aliis civitatibus, terris, & locis dictæ Ecclesiæ subiectis prædictis & ad firmandam perpetuam pacem, & quietem, pro dictorum subditorum commodis applicaverimus, & ut præmissa facilius votivum consequi valeant effectum, litteras prædictas omnino observandas esse decreverimus. Habita igitur super his cum fratribus nostris S. R. E. Card. deliberatione maturata, ac de illorum unanimi consilio, & assensu, singulas Pii, Pauli, Sixti, Julii, Leonis, & Clementis prædecessorum litteras hujusmodi cum statutorum, ordinationum, extensionum, ampliationum, revocationum, cassationum, irritationum, annulationum, decretorum, confiscationum, incorporationum, applicationum, voluntatum, hortationum, requisitionum, & mandatorum, ac omnibus, & singulis aliis in eis respective contentis clausulis, auctoritate Apostolica tenore præsentium approbamus, & innovamus, ac perpetua toboris firmitate subsistere, & per singulos quos litteræ ipsæ concernunt: in futurum, sub excommunicationis, anathematis, maledictionis, infamiae, suspensionis, diffidationis, criminis læsæ majestatis, seditionis, rebellionis, confiscationis, depositionis, privationis, inhabilitatis, & interdicti, ac alius censuris, & pœnis Ecclesiasticis, & temporalibus, ac

corporis afflictivis in eisdem litteris contentis, quas contravenientes eo ipso incurrant, perpetuo inviolabiliter observari.

§. 3. Illaque etiam ad homicidas, fideles, exitiosos, criminosos, rebelles, aliosque infames propter homicidia, & alia nefanda per eos perpetrata excessus, crimina, & delicta, etiam ad hoc, ut ipsi in civitatibus, terris, castris, vel locis eorum, seu in quibus tunc morabantur banniti, & condemnati, etiam habita pace ab hæredibus, filiis, seu consanguineis occisorum, aut partium læsarum, non solum à locis circumvicinis usque ad quinquaginta miliaria sed etiam ab omnibus, & singulis civitatibus, terris, castris, & locis, etiam Regni, & partium prædictorum nobis & dictæ Rom. Ecclesiæ mediatè, vel immediate quomodolibet subiectis banniti, & exules sint, & esse censentur, nec in illis, seu eorum aliquo etiam prætextu cujusvis licentiæ, salvoconductus, remissionis, reductionis, revocationis, vel alterius gratiæ per eos desuper quomodolibet pro tempore obtentæ moram trahere possint, & si in eis resederint, vel reperti fuerint, capi, & detineri, & incarcerari, ac juxta criminum & excessuum per eos perpetratorum qualitatem, & litterarum Pii & Clementis prædecessorum hujusmodi tenorem sub pœnis in eisdem litteris contentis per officiales civitatis, terræ, castris, vel loci in qua, vel quo deprehensi fuerint, debitis pœnis plecti, seu inde educi, & ad forum, seu officiales ad quos erimur, seu excessuum eorumdem puniri, de jure vel consuetudine pertinet, remitti debeant, extendi, & ampliari debere, & in eis locum habere decernimus.

Passque ex-
tendit ut
hic.

§. 4. Et nihilominus præmissa omnia & singula, prout per Pium, Paulum, Sixtum, Julium, Leonem, & Clementem prædecessores præfatos, statuta, ordinata, extensa, ampliata, revocata, cassata, annullata, inhibita, decreta & declarata fuerunt, etiam ad hoc ut Duces, Barones, Marchiones, Comites, Domini temporales, Vicarii, Feudatarii, Capitanei, Magnates, Principes, Communitates, Givæ, Officiales, & personæ, ac alii quos prædictæ, & præfentes litteræ concernunt, ac ipsorum singuli litteras, & in eis contenta hujusmodi non observantes, & illis directè, vel indirectè quomodolibet contravenientes, ac eis adherentes eorumque fautores complices, singulas censuras, & pœnas prædictas eo ipso absque aliqua declaratione incurrant, & incurrere censentur. Ipsique Duces, Barones, Marchiones, Comites, Domini in temporalibus, Vicarii, & Feudatarii, Civitatum, terrarum, castrorum, & locorum, etiam Regni & partium prædictorum nobis, & eidem Ecclesiæ immediate subiectorum nobis, & dictæ Ecclesiæ hostes & inimicos, aut subditos, exules, bannitos, & facinorosos cujuscumque status, vel conditionis fuerint, publicè vel occultè, ullo umquam tempore recipere, vel acceptare nullatenus præsumant, & si aliquos ad eorum dominia & territoria confugere contigerit, illos ex eorum dominiis, vel territorii hujusmodi expellere, seu ad simplicem iussionem, vel requisitionem nostram, & successorum nostrorum quo voluerimus, seu successores ipsi voluerint tute conduci facere. Ac quod præmissa à suis subditis inviolabiliter observentur omni exultatione cessante cum effectu curare, sub similibus privationis & rebellionis, ac criminis læsæ majestatis, pœnis, si contrafecerint, eo ipso incurrendis.

Receptato-
ribusque co-
rem, &
tautoribus
pœnas im-
ponit.

§. 5. Nec non ut homicidæ, fautores & complices præfati, facilius capi & puniri possint, quod communitates Civitatum, & Universitates terrarum, castrorum, & locorum in quibus, seu quorum territorio, districtu, & ditione, dicta homicidia perpetrabantur, sub paribus interdicti Ecclesiastici, & duorum millium per Communitates, ac mille ducatorum per Universitates, necnon Civitatum, terrarum, & locorum eorumdem Domicelli, Barones, Vicarii, aut alii in temporalibus Domini, sub majoris excommunicationis latæ sententiæ, & quinque millium ducatorum auri præfata Camera, irremissibiliter applicandum eo ipso, absque alia declaratione incurrendi.

Baronibus,
& Commu-
nitatib. præ-
cipi, ut eo-
rum territo-
ria expur-
gent ab ho-
micidis.

poenis eosdem homicidas, complices, & fautores statim capere, ac omnem exactissimam diligentiam, de qua per publica documenta fidem etiam facere teneantur, capi facere, & si eos capere nequiverint, statim committimus homicidium Universitatibus, seu incolis, & habitatoribus oppidorum, & locorum circumvicinorum, ad quæ declinabunt, seu declinare poterunt notificari, Communitates verò, & Domini in temporalibus prædicti, ad quorum ditiones tales declinabunt, cum primum id ad eorum notitiam devenierit, eos apprehendere, seu apprehendi facere, quod si non poterint, similiter Universitatibus, seu incolis, habitatoribus vicinorum locorum ad quæ declinabunt, aut verisimiliter declinare poterunt, insinbare, & captos ad eorum iudices ordinarios traducere, & tradere sub similibus poenis teneantur, & debeant, de novo statimur, ordinamus, inhibemus & declaramus.

Facultatem homicidas gratiandi revocatur.

Ad hoc vide declarationem hinc infra.

Executores deputati.

§. 6. Et similiter quibusvis dictæ Sedis Legatis, etiam de latere, ac Nunciis, & Provinciarum Rectoribus necnon nostris, & dictæ Romanæ Ecclesiæ Vicariis in temporalibus pro tempore existentibus, & præfatis Communitatibus, omnem super absolutio-nibus homicidiorum huiusmodi, per nos, & prædecessores nostros, ac Sedem eandem, sub quavis forma & verborum expressione concessam, approbatam, & innovatam, auctoritatem, & facultatem revocamus, cassamus, irritamus, & annullamus, & si quando similes absolutiones per nos & successores nostros Romanos Pontifices, & Sedem præfatam concedi contigerit, illa per Iudices, & Officiales ad quos pertinet, nisi trinæ litteræ Apostolicæ sub intervallo unius mensis pro singulis litteris huiusmodi cum expressa derogatione præsentium desuper emanaverint, nullatenus admitti vel observari volumus.

§. 7. Quocirca dilectis filiis Guidoni Ascanio S. Mariæ in via lata Diacono. Cardinali de Sancta Flora nuncupato, nostro, & pro tempore existentis Camerario, & Cameræ prædictæ Thesaurario, Præfidentibus, Clericis, ac universis & singulis Legatis, & Vicelegatis provinciarum nostrarum, & aliis Rectoribus, ac Officialibus civitatum, terrarum, & partium prædictarum, nobis & dictæ Sedi mediate, vel immediate subiectarum, Motu simili mandamus, quatenus præfentes litteras solemniter in singulis Provinciis, Civitatibus, terris, & locis prædictis publicari, necnon omnia & singula in eis contenta inviolabiliter observari faciant, & mandent. Contradictores quoslibet, & rebelles cuiuscunque status, gradus, & præminentie fuerint, sententias, censuras, & poenas prædictas dam-nabiliter incurrere declarent, & declarationem huiusmodi per eos faciendam in libris malefactorum conscribi, & annotari mandent, & faciant, necnon capitales prædictas sententias à ministris iustitiæ, absque alicujus incurfu irregularitatis exequi procurent realiter, ac irremissibiliter exigant, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii sæcularis, necnon pro exactione poenarum pecuniariarum huiusmodi contra Communitates, & Universitates, ac in eorumdem inobedientium in temporalibus dominiorum Vassallos propter eorum huiusmodi inobedientiam reprecasias concedant, necnon realiter & cum effectu exequi faciant. Attentius hortantes & requirentes in Domino Barones, & Domi-cellos, ac in temporalibus Dominos dicti Regni, necnon illius Provinciarum, Civitatum, & locorum Gubernatores, & Officiales pro tempore existentes, ut præfatos homicidas, fautores, & complices capiant, & capi procurent, captosque ad Præsides nostrarum Provinciarum, unde ipsi homicidæ, fautores, & complices originem traxerunt conduci, & eis realiter consignari similiter cum effectu faciant.

Clarissime de rogatoria.

§. 8. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis ac omnibus illis quæ dicti prædecessores in præfatis coru litteris voluerunt non ob-stare ceterisque contrariis quibuscunque, Aut si aliquibus communiter, vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari

non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de-indulto huiusmodi mentionem, & quibuscunque aliis privilegiis, indulgentiis, & litteris Apostolicis generalibus, vel specialibus, super recipiendis bannitis, homicidis, ac brigosis, & aliis prædictis quorumcunque tenorum existant, per quæ præsentibus non expressa, vel totaliter non inserta, effectus earum impediri valeat quomodolibet vel differri, & de quibus quorumque totis tenoribus de verbo ad verbum habenda sit in nostris litteris mentio specialis, quæ quoad hæc cuiquam nolumus ullatenus suffragari.

§. 9. Volumus autem quod præfentes litteræ nostræ postquam in valvis basilicæ Principis Apostolorum, & in campo Floræ de Urbe affixæ fuerint, omnes & singulos cives Romanos, & alios in Urbe commorantes effluxus quindecim diebus, alios verò Duces, Comites, Marchiones, Domiellos, Barones, & alios temporales Dominos & Vicarios, Communitates & Universitates, Civitatum, terrarum, & locorum Sedi præfate mediate, vel immediate subiectorum huiusmodi decurso mensurarcent, & contrasacientes poenas præfatas incurrant, in omnibus & per omnia, perinde, ac si eis omnibus & singulis contrasacientibus personaliter & particulariter intimatæ fuissent. Nulli ergo, &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1561. octavo Idus Januarii, Pontificatus nostri Anno secundo.

Anno à Nativitate Domini 1561. indictione 4. die vero 16. Aprilis, Pontificatus Sanctissimi in Christo Patris D. N. D. Pii divina providentia Papa IV. Anno 2. retroscripte litteræ Apostolicæ affixæ & publicatæ fuerunt ad valvas basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, ac in acie Campi Floræ, dimissis ibidem copiis affixis, per nos Julium Parinum, & Franciscum Sottocasa prælibati Sanctissimi D. N. Papa Cursores, Bartholomæus Sottocasa Mag. Curs.

Sequitur declaratio circa facultatem Officialibus interdictam gratiandi ac componendi bannitos ex causa homicidii.

Hæc eadem statuit Pius V. in sua constit. Et super-na, infra in hoc Tomo & Clem. VIII. in constit. 15. In regendis. ubi super hac Congregationem Cardinalium instituit. Tom. III.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Nuper siquidem cum nos nostram ad summi Apostolatus apicem assumptionem, ob non observationem litterarum felicis recordationis Pii II. Pauli etiam II. Sixti IV. Julii similiter II. Leonis X. & Clementis VII. prædecessorum nostrorum alias contra homicidas editarum, bellis, quibus non solum civitates, terræ, & loca, temporali dominio S.R.E. subiecta, sed etiam tota Italia retroactis &c.

Residuum omittitur quia ipsa Bulla est quæ præcedit.

§. 1. Cum autem, sicut accepimus, nonnulli ex Gubernatoribus, & Officialibus per nos in diversis civitatibus, terris, & locis Status nostri Ecclesiæ constitutis, deputatis, forsitan voluntatis nostræ ignari, aut alias, prætendant poenarum remissionem, inquisitis, bannitis, & condemnatis, super homicidis per eos pro tempore perpetratis, per eos remitti, gratiamque fieri, ac exinde ab eis compositionem exigi posse.

§. 2. Nos ad tollendum omne dubium quod exinde exoriri posset, & ne Gubernatores, & Officiales prædicti, ac quicumque alii, ignorantie ejusdem voluntatis nostræ, aut quovis alio prætextu, in his intro-mittere præsumant, veriores dictarum litterarum tenores, ac si de verbo ad verbum præsentibus infer-rentur, pro expressis habentes, decernimus, & declaramus, gratias, vel remissiones, aut composi-tiones quibusvis inquisitis, condemnatis, aut bannitis, ex causa vel occasione homicidii animo deliberato,

Forma & effectus publicationis.

Dat. P. A. 2. die 8. Jan.

Publicatio.

Edita An. D. 1561.

Causa declarationis.

Declaratio de qua in rubr.

vel

vel casu fortuito, aut in rixa vel alio quovis modo pro tempore perpetrati, pro quo poena ordinaria, vel extraordinaria, imposita, vel imponenda esset, per quocumque in Civitatibus, terris & locis prædictis, nostros & Sedis Apostolicæ Legatos, Vicelegatos, Gubernatores, vel alios Officiales deputatos & deputandos, fieri in posterum nullatenus posse, & illas tantum compositiones, & gratias cum inquisitis, condemnatis, & bannitis huiusmodi, ut supra, in posterum faciendas valere, illisque suffragari, qui habuerint supplicationes desuper manu nostra propria signatas, & per Datarium nostrum pro tempore existentem datas.

§. 3. Et ita per quoscumque Iudices, & Commisarios quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S.R.E. Cardinales, sublata, &c. irritum quoque, &c.

§. 4. Non obstantibus Apost. ac omnibus illis quæ in dictis nostris litteris volumus non obitare, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 5. Volumus autem, quod præsentis nostri Motus proprii sola signatura, etiam absque iudicio data, & registratura, sufficiat, ac ubique in illius & extrasidem faciat, regula seu constitutione Apostolica quacumque contraria non obstantibus.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sexto kalend. Maii, Anno quinto.

Decretum
irritans.Clausule
derogato-
riz.Sola signa-
tura sufficit.D. P. A. S.
die 16. April.

XXVIII.

Privilegia & exemptiones Prælatorum, sacro & Oecumenico Concilio Tridentino assistentium, eorumque familiarium.

De huius Concilii indictione, prosecutione & aliis, vide infra in constitut. 73. Benedictus. ubi notabo.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D.
1561.

Exordium.

Circumspecta Romani Pont. providentia, singulorum merita, & obsequia debita meditatione considerans, illos prout æquum est, specialibus favoribus, & gratiis prosequitur, quos universalis Ecclesiæ obsequiis jugiter intentos laborare, ac diversas subire cognoscit.

§. 1. Hinc est, quod nos, qui dudum omnia, & singula beneficia Ecclesiastica, cum cura, & sine cura, secularia & quorumvis Ordinum regularia qualitercumque qualificata, & ubilibet existentia, in singulis Januarii, Febr., Aprilis, Maii, Iulii, Augusti, Octobris, Novemb. mensibus aliis quam per resignationem extra Romanam Curiam vacatura, ad collationem provisionem, præf. nationem, electionem, seu quamvis aliam dispositionem, quorumcumque collatorum & collatricum, secularium, & regularium, non tamen S.R.E. Cardinalium, aut aliorum sub concordatis inter Sedem Apostolicam, & quoscumque alios initis, & per eos, qui illa acceptare, & observare debuerant acceptatis & observatis, quæ lædere non intendebamus comprehensionem, quomodolibet pertinentia nostræ dispositionis per constitutionem nostram desuper editā, & in Cancellaria Apostolica publicatam reservavimus.

§. 2. Et deinde per eandem constitutionem venerabilibus Fratribus nostris, Episcopis, Archiepiscopis, & Patriarchis apud suas Ecclesias, seu in illarum diocesis, pro tempore residentibus gratificari volentes, eisdem Episcopis, Archiepiscopis, & Patriarchis, quod quotiescumque, & quodcumque apud eorum Ecclesias, seu in earum diocesi. residenter duntaxat, de quibusvis dignitatibus, personatibus, administrationibus, officiis, canonicatibus, & præbendis, ac aliis beneficiis Ecclesiasticis, cum cura, & sine cura, secularibus, ac quorumvis Ordinum regularibus, ad eorum collationem, provisionem, præf. nationem, electionem, seu quamvis aliam dispositionem pertinentibus quæ antea in singulis Februarii, Aprilis, Junii, Augusti, Octobris, & Decembris mensibus vacare contingeret, dummodo aliā dispositioni Apostolicæ generaliter reservata, vel ex generali reservatione Apostolica non essent, etiam si præf. nationes, nominationes, vel electiones eorum, quæ

salvæ procedere consueverissent, reservatione præfata non obstante, quam quoad eos locum habere volumus, libere disponendi facultatem concessimus.

§. 3. Et successive eosdem Episcopos, Archiepiscopos, & Patriarchas, ut circa gregem sibi commissum ferventius invigilarent, ut quamdiu ipsi apud suas Ecclesias, seu in illarum diocesi huiusmodi residerent, ab omnibus, & singulis decimis, subsidii, & aliis oneribus ordinariis, & extraordinariis quomodolibet nuncupatis, per nos, & successores nostros Romanos Pontifices pro tempore existentes, ac Sedem Apostolicam, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, & etiam consistorialiter, etiam ad instantiam Regum, & Principum, quomodolibet, & ex quavis etiam quantumvis urgentissima, iustissima, ac pia, & necessaria causa etiam pro defensione fidei catholice, ratione dictarum Ecclesiarum, tunc & pro tempore impositis, illorumque solutione, per alias nostras litteras exemimus, & liberavimus.

§. 4. Ad labores, & impensas graves, quas præfati, & alii Episcopi, & Patriarchæ sacro Oecumenico, & generali Concilio in civitate Tridentina indicto pro tempore interessentes sustinere cogentur, debitum respectum habentes, ac animo revolventes eos inibi residentes universali Ecclesiæ deservire, & cum causa reipublicæ Christianæ ab Ecclesiis quibus præfunt, aut in quibus beneficiati existant, præfentes, & residentes merito reputari debere, Motu proprio, non ad eorumdem Episcoporum, Archiepiscoporum, Patriarcharum, Abbatum, Generalium Ordinum, ceterorumque præfatorum vel quorumvis aliorum pro eis nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed de nostra mera liberalitate, & ex certa scientia præfatis, qui apud suas Ecclesias, seu in earum diocesis residebant, ac alternativa huiusmodi gaudebant, in dicto Concilio, quamdiu illud duraverit residendo, & inibi interessendo, necnon in itinere ad illud accedendo, & inde legitima subsistente causa recedendo, & ad Ecclesias suas redeundo, alternativa, & exemptione huiusmodi, uti, gaudere, libere, & licite valeant in omnibus, & per omnia, ac si apud suas Ecclesias, seu in earum diocesis præfatis personaliter residerent, in omnibus, & per omnia concedimus, & indulgemus, dictamque exemptionem, & alternativam ad ipsos, ac universos, & singulos alios venerabiles fratres nostros Episcopos, Archiepiscopos, & Patriarchas, etiam ad hoc ut illi, ac eorum singuli, qui in dicto Concilio jam forsan ad præfens resident, aut ad illud in posterum accedent, quod quamdiu Concilium ipsum duraverit, & ipsi interfuerint, dicta alternativa gaudere possint, & occasione Episcopatum, seu Archiepiscopatum, vel Patriarchatum Ecclesiarum, aut Monasteriorum, vel aliorum beneficiorum Ecclesiasticorum, cum cura, & sine cura, secularium, & quorumvis Ordinum regularium, quæ etiam ex quibusvis concessionibus, & dispensationibus Apostolicis, in titulum & Commendam, ac aliis quomodolibet obtinent, & in posterum obtinebunt, quæcumque, quotcumque, & qualiacumque sint, quæ omnia præfentibus pro expressis haberi volumus, ad solutionem quorumcumque subsidiorum, seu decimarum, collectoribus, seu subcollectoribus, aut aliis executoribus, vel quibusvis aliis personis, quavis auctoritate fungentibus, cogi possint, Motu & scientia similibus extendimus, & ampliamus.

§. 5. Mandantes universis, & singulis personis in dignitate Ecclesiastica constitutis, quatenus ipsi vel duo, aut unus eorum, per se vel alium, seu alios, faciant auctoritate nostra præfentes litteras ab omnibus ad quos spectat inviolabiliter observari, contraditores per censuras Ecclesiasticas, ac alia opportuna juris remedia appellatione postposita compellendo.

§. 6. Non obstantibus quibusvis Apostolicis, necnon in provincialibus, & synodalibus Conciliis editis generalibus, vel specialibus Constitutionibus, & Ordinationibus, aut si eisdem collectoribus, & subcollectoribus, & quibusvis aliis communiter, vel divisim, ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non fa-

Exemptio
neque à so-
lutione de-
cimiarum, &
c. eidem
concessit, ut
sup. in consti-
t. De salu-
te, fol. 26.

Et modo
eadem pri-
vil. conce-
dit Præfatis
Conc. Trid.
interessenti-
bus pro
tempore
quo ibi refe-
derint, aut
in itinere
fuerint.

Executores
deputati.

Contrariis
derogat.

Hic Pontifex
reservavit
quædam be-
neficia de
quib. hic.

Et deinde
Episcopis, &
aliis apud
eorum Ec-
clesias resi-
dentibus fa-
cultatem
disponendi
de beneficiis
non reserva-
tis vacanti-
bus, ut hic.

ANNO
1561.

44

PIUS QUARTUS.

ANNO
1561.

Transump-
tis credi ju-
bet.

Sanctionem
pœnalem
addit.

D. P. An. 2.
die 1. Mar-
tii.

Edita An. D.
1561.

Causa hu-
jus indulti.

Superfede-
atur in causis
prohiscen-
tium ad
Concilium,
si ipsi volue-
rint.

Clausula
derogato-
ria.

Decretum
irritans.

Papæ sub-
script.

XXIX.

cientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum, de indulto hujusmodi mentionem.

§. 7. Et quia difficile foret præsentem literas ad singula, in quibus de eis fides forsitan faciendi fuerit, loca deferre, volumus, & eadem auctoritate decernimus, quod ipsarum transumptis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus Curie Ecclesiasticæ, vel personæ in dignitate Ecclesiasticæ constitutæ munitis, eadem prorsus fides in judicio, & extra, ubi opus fuerit adhibeatur, quæ præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ, vel ostensæ.

§. 8. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ concessionis, indulti, extensionis, ampliationis, mandati, voluntatis, & decreti infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem Omnipotentis Dei, ac Beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursurum.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1561. Kalend. Martii, Pontificatus nostri Anno secundo.

Sequitur indultum, quod in eorum libris supersedeatur.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Cum ob celebrationem Concilii per nos indicti oporteat Prælatos, tam ab Alma Urbe nostra, quam ab aliis Christiani Orbis partibus, ad civitatem Tridentinam, in qua indictum fuit, accedere, & quampures eorum habere varias, & diversas causas coram aliquibus ex venerabilibus fratribus nostris S. R. E. Cardinalibus, & in Auditorio Rotæ, ac in aliis nostræ Curie tribunalibus, ordinariis, sive delegatis, quæ propter illorum absentiam aliquod detrimentum suscipere possent.

§. 1. Nos volentes providere ne dicti Prælati, eorumque familiares, ac aliæ personæ dicto Concilio interesse habentes, causari hujusmodi curis distrabantur, Motu simili ac ex nostra certa scientia, & potestatis plenitudine mandamus, quatenus in omnibus, & quibuscunque, ubique, tam coram præfatis Card. quam Rotæ Auditoribus, Judicibus ordinariis, sive delegatis, pendens causis præfatorum, dicto Concilio adesse habentium, clericorum, sive laicorum, commissis, seu committendis, durante eorum absentia, & ipsis in Concilio, & servitiis hujusmodi residentibus, supersedere debeant præterquam in causis, in quibus ipsi Prælati, & alii supra scripti, per eorum procuratores duxerint procedendum, in quibus sit in eorumdem arbitrio, hoc nostro mandato, uti vel non. Et ita mandamus, decernimus, & declaramus. Mandantes insuper cuicumque etiâ S. R. E. Cardinali qui Signaturæ Justitiæ præfuit, vel præerit in dicta Alma Urbe, ne in causis pendens hujusmodi aliquas commisiones dependentes, citationes, seu vocationes ipsorum nostram Curiam sequentium stylo requirentium in eorum præjudicium admittant, etiam si in eis, aut aliqua supra dictarum causarum executione, non tamen occasione rei judicatur, procedatur. Status causarum hujusmodi & merita, pro expressis habentes.

§. 2. Non obstantibus privilegiis, constitutionibus, litteris Apostolicis, regulis Cancellariæ, ac quibuscunque contrariis.

§. 3. Sublata à quibuscunque judicibus, etiam S. R. E. Cardinalibus aliter judicandi facultate. Decretis irritum, & inane, si secus à quoquam fecerint, vel ignoranter contigerit attentari.

Placet Motu proprio. I.

Quod bona omnia Fratrum Militum Hospitalis S. Joannis Hierosolymitani, ubique decedentium, etiam ex illicita negotiatione acquisita, ut spolia, non ad Cameram Apostolicam, sed ad ipsum Hospitalis spectent, pertineant.

De hac Militia plenè notari sup. in constit. 2. Anast. IV. in Tomo 1. fol. 39. Christianæ.

PIUS PAPA QUARTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Romani interest Pontificis, ut cunctorum sibi, & Sedi Apostolicæ devotorum, præsertim fratrum Militum, qui tanquam fortissimum orthodoxæ fidei adversus crudelissimos Christiani nominis hostes pugnaculum, duos hostium expectant insultus, gratiæ, & alia eis concessa, ut illibata sibi remaneant providere, & eas concessionis quæ gratiis hujusmodi aliquod inferre præjudiciū, aut eas dubias reddere videntur, ad omnem tollendi hæsitandi materiam, ac pacem conservandam declarare aliasque & alia in his operari, prout in Domino salubriter cognoscit expedire.

§. 1. Sane nobis pro parte dilectorum filiorum Magni Magistri & Conventus Hospitalis S. Joannis Hierosolymitani fuit expositum, quod licet omnia, & singula fratrum Militum ejusdem Hospitalis bona, post eorum obitum relicta, ad Hospitale & Conventum prædictum in vim stabilimentorum, usum, & naturarum dicti Hospitalis, seu privilegiorum, & indultorum Apostolicorum eidem Hospitali, illiusque Magno Magistro, & personis per diversos Romanos Pontifices prædecessores nostros concessorum, ac etiam per nos approbatorum, & aliis legitime, & de jure spectant, & pertinent.

§. 2. Cum autem nos nuper postquam acceperamus à nonnullis verti in dubium, an res & bona per Clericos etiam in sacris Ordinibus constitutos, ex negotiatione illicita, aut alias contra sacros Canones acquisita, uti spolia, vel alias ad Cameram nostram Apostolicam jure legitime spectare, & pertinere deberent; Nos omnem super hæsitations materiam submovere, ac cavillationibus, & altercationibus, libi-busque præcludere, & denique malitis eorum, qui jura dictæ Cameræ usurpare satagebant obviam ire, aliasque in præmissis opportunè providere, tunc volentes, omnia, & singulas res, & bona cujuscunque qualitates, & quantitates existentia, ac in quibusvis rebus, & regnis, ac dominiis, tam citra, quam ultra montes, & maria consistentia, per quosvis clericos, tam sæculares, quam quorumvis etiam Mendicantium Ordinum, ac Militiarum regulares, etiam in sacris Ordinibus constitutos, cujuscunque status, ordinis & conditionis essent, ac Archiepiscopali, Episcopali, vel alia majori dignitate præfulgerent, ex negotiatione illicita, aut alias contra sacros Canones quomodolibet acquisita, quæ pro tempore post obitum eorum, qui etiam ex facultate, quam habuissent testandi condito testamento ubi vis locorum decessissent, & deederent, aut quibus illos destitui contingisset, remansissent, & remanerent, ad eandem Cameram, & non ad alios, etiam in quibusvis Cathedralibus, & metropolitanis, & collegiatis ac aliis Ecclesiis, Monasteriis, Hospitalibus, Militiis, ceterisque Beneficiis Ecclesiasticis, cum cura, & sine cura, secularibus, & quorumvis Ordinum regularibus, qualitercumque qualificatis successores, illa in titulum, Comendam, administrationem, ac alias quomodolibet pro tempore obtinentibus etiâ si ad illa, vigore prioris tituli, jus regredientibus seu accedendi & ingrediendi aliquibus cõcessum fuisset, spectasse, & spectare, & sub nomine spoliatorum venire, illaque uti spolia ad Cameram ipsam pertinentia perpetuo colligi, & recuperari potuisse, & posse, ac debere. Et ita per quoscunque judices quavis auctoritate fungentes in quacunque instantia, sublata eis quavis aliter judicandi & interpretandi facultate, & auctoritate, judicari, & definiri debere; necnō irritum, & inane, quicquid fecus super his à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter cõtingerit attentari, decreverimus, & declaraverimus, cum mandati, derogationis, aliisque clausulis, tunc expressis, prout in nostris desuper in forma brevis sub dat. videlicet, Nonis Novemb. Pontificatus nostri Anno primo, ex prædictis litteris quatuor tenores hic haberi volumus pro expressis, latius continetur.

§. 3. Cùmque Magnus Magister & Conventus, ac fratres Milites præfati occurrente fratrum Militum Hospitalis prædicti obitu, super eorumdem decedentium

Edita An. D.

1561.

Causa hujus declarationis, & concessionis.

Bona à fratribus, & Militibus relicta, post eorum obitum spectant ad religionem.

Hic autem Pont. bona ex negotiatione illicita per Clericos acquisita, uti spolia ad Cameram spectare decrevit, super in constit. 19. Decembr. fol. 28.

Ideo ista religio dubitat, vigere dictæ constitutionis potestatem militari à ministris Cameræ,

fra-

fratrum Militum bonis, per jurium, & spoliolum Cameræ nostræ Apostolicæ prædictæ Collectores, & ejusdem Cameræ Commissarios, eorumdem litterarum vigore molestari dubitent. Nosque ejusdem Hospitalis, & illius personarum maintenance, ac necessitatibus, quantum cum Deo possumus libenter providere procuramus, maxime considerantes attentius ejusdem Hospitalis fratres Milites, se & sua, pro fide, & illius defensione, in crudelissimos Christiani nominis hostes exponere necesse esse continuo, hoc præferimus instanti tempore, quo idem immanissimus hostis Turcarum tyrannus lucri proxime præteriti non immemor, in animarum Christi fidelium adeo spirat minas, ut omnibus fidelibus, magis tamen fratribus, Militibus pavore incutens, ipsos non immerito ad diligentem excitat rerum providentiam, propterea non convenire, ut iidem fratres Milites, qui superstitibus existunt, defensorum spoliati bonis, ad suorum, aliorumque Christifidelium defensionem, rebus priventur necessariis.

§. 4. Idcirco, ut omnis hæsitandi materia submoveatur, ejusdem Hospitalis, & illius personarum hujusmodi indemnitate paterno consulere affectu, ipsosque specialis gratiæ favore prosequi volentes, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, auctoritate Apostolicæ tenore præsentium declaramus, decernimus, & in verbo veritatis attestamus, nostræ intentionis nunquam fuisse, nec esse, nec in posterum fore, per dictas nostras, aut quasvis alias litteras, a nobis & Sede Apostolicæ, ac aliis quomodolibet pro tempore emanatas, etiam quasvisque generales vel speciales, etiam derogatorias derogatorias aliasque efficaciores, & insolitas clausulas, nec irritantia decreta, sub quacumque verborum expressione in se continentia statuti, stabilimentis, usus & naturis hospitalis prædicti, ac privilegii, indultus ac alius gratiæ, illi, ejusque personis, cõcessis, & concedendis in aliquo derogasse, nec derogare, seu aliquod ejus, vel eorum cuiuslibet præjudicium intulisse nec inferre, sed semper valida & efficacia, ac læsa, & in suo robore permanisse & permanere, nec eadem, neque Hospitalis, Conventum, Fratres, Milites, & personas præfatos, subscriptis, aut quibuscumque similibus aut dissimilibus litteris, decretis, declarationibus, onerum impositionibus, ullatenus comprehendendi, sed semper ab illis excipi, & quoties illæ emanabunt toties pristinum, & validum statum restitui debere, ac excepta & restituta, & de novo etiam sub dat. &c. per Magnum Magistrum, & Conventum præfatos eligenda, concessa fore, & censeri debere.

§. 5. Omniaque & singulas res, & bona cujuscumque qualitatibus & quantitatibus existentia, ac in quibusvis rebus, & regnis, necnon dominis tam citra, quam ultra montes, & maria consistentia, per quosvis Fratres, Milites, & personas dicti Hospitalis quomodolibet acquisita, quæ pro tempore post eorum obitum, ubi vis locorum decesserint, & decedent, aut quibus illos etiam eis viventibus (non tamen per Sedem Apostolicam privari, aut eis destitui contingeret) hætenus remanserunt, remanent, & remanebunt, ad Hospitalis, & Conventum præfatos, non autem ad eandem Cameram, seu alios quosvis alios juxta stabilimentorum, usum, naturarum, statutorum, & privilegiorum hujusmodi formam, & tenorem spectasse, & spectare.

§. 6. Necnon Hospitalis, & Conventum hujusmodi, aut pro eis, Agentes per Cameræ hujusmodi jurium spoliolum, & bonorum Collectores, & Subcollectores, Exactores, Commissarios, vel alios quacumque auctoritate, dignitate, vel officio fungentes, & functionarios, nullatenus molestari, inquietari, vel perturbari posse nec debere. Et ita per quosvis Judices quasvis etiam auctoritate Apostolica fungentes etiam Palatii nostri causarum Auditores, in quavis causa, & instantia, sub lata eis, & eorum cuiuslibet quasvis aliter juri, dicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, judicari, & definituri debere, necnon irritum, & inane, quicquid focus super his à quoquam quasvis auctoritate scienter, vel ignoranter attentatum est

foran hætenus, vel in posterum contigerit attentari, decernimus, & declaramus.

§. 7. Non obstantibus præmissis, ac quibusvis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quasvis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus, stabilimentis, usus, & naturis, ac reformationibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, & Cameræ hujusmodi jurium, spoliolum, & bonorum Collectores, Subcollectores, Exactores, Commissarios prædictis, & quibusvis aliis personis in genere, vel in specie, sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & efficacissimis, ac insolitis clausulis, necnon irritantibus & aliis decretis, etiam motu, scientia ac potestate similibus, ac aliis in contrarium quomodolibet concessis, & etiam iteratis vicibus approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, & singulis etiam si pro eorum sufficienti derogatione, & de eis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua ex quavis forma servanda foret, tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata, inserti forent, præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis alias in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter, & expressè derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque, aut si aliquibus communiter, vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspensi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 24. Martii, millesimo quingentesimo sexagesimo primo, Pontificatus nostri Anno secundo.

Confraternitatis sub invocatione Sanctiss. Crucifixi ad pauperes Virgines maritandum, aliaque pia opera exercendum primum in Urbe instituta; in Archiconfraternitatem erectio & cum indulto singulis annis in Festo S. Crucis, unum reum capitaliter condemnatum & carceribus liberandi. Jurisdictione Cardinalis ejus Protectoris, & quacumque ipsius causas cognoscendi.

Quoad formam aggregandi alias Confraternitates, attende Bullam 15. Clem. VIII. Quacumque. Et quoad Indulgentias Confratrum novam fecit dispositionem Paul. V. mox publicandam, quam videri firmatam sub die 28. Februarii 1608. vide in Tomo III.

Scias etiam quod ista Confraternitas curam in temporalibus charitative sustinet, Monasterii Monialium Capucinarum nuper in Urbe, illius Confratribus procurantibus instituti.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Cum sicut accepimus, venerabilis Confraternitas, seu Societas Imaginis Sanctissimi Crucifixi in Ecclesia S. Marcelli de Urbe, ejusque Confratres, ob lites, & quæstiones, quibus ad diversa Urbis Tribunalia occasione locationum, censuum, donationum, hæreditatum, legatorum, & diversarum aliarum rerum ejusdem, tam agendo, quam defendendo jugiter implicati existat, quamplurima damna, & interesse patiat, ac impensa huius rei de qua ex tempore agitur sæpenumero expueret.

§. 1. Nos Societatem prædictam, in qua piissima charitatis, & misericordie opera, elemosinas pauperibus, & miserabilibus puellis dotes elargiendo continuo impendi spectantur, ab hujusmodi dispendiis quantum possumus sublevare volentes, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, omnes & singulas causas,

lites;

Contraria non obstant.

D. P. An. 2. die 24. Mar.

XXX.

Edita An. D. 1561. & 1564.

Causæ hujus constitutione.

Advocat ad se iste Pont. omnes causas civiles; Societatem tangentes;

Hic ergo Pont. declarat sub d. constitutione, & aliis similibus dictis in Religionem non eo præsumendi.

Omniaque bona personarum dictæ Religionis decedentium ei applicat, & ad Cameram, aut alios non spectare declarat.

Agentes Religionis in hac actione non molestentur.

Sententias
exequendi.
Contradictores
coac-
cendi.

lites, quæstiones & controversias inter dictam Societatem, five ejusdem dilectos filios Custodes, Officiales, & Ministros, & quascunque alias etiã singulares personas, tam laicas, quàm Ecclesiasticas. Universitates, Societates, Congregationes, Monasteria, & alia hujusmodi loca quascunque gradus, status, ordinis, & conditionis existentia coram S. R.E. Camerario, Regente, Præfide, & Clericis Cameræ Apostolicæ, nec non Vicario, Gubernatore, ac Senatore Urbis, illius collateralibus, & Judicibus, ac appellationi causarum Curie Capitoli ejusdè Urbis Capiteo, & aliis quibuscunque Judicibus, ordinariis, & à nobis specialiter quomodocunque Commissariis deputatis, & delegatis, etiã causarum Sacri Palatii Apostolici Auditoribus, & Locatenentibus, ac ejusdè S.R.E. Cardinalibus, nunc & pro tempore motas, pendentes, & quomodolibet movendas, super quibuscunque locationibus, venditionibus, donationibus, legatis, fidei commissis, testamentis, hæreditatibus, ac illarum discussionibus, atque quoruncunque jurium, & actionum cessionibus, aliisque inter vivos cõtractibus, executionibus, revocationibus, bonis, rebus, juribus, & actionibus. Societate prædictam ejusque Custodes, Officiales, Ministros, & liti consores, tam conjunctum, quàm divisim, ac tam activè, quàm passivè concernentibus, ad Societatem ipsam quomodolibet spectantibus, in quacunque instantia inter illam ejusque Custodes, & alios præfatos, necnon alia æque, vel magis, pia loca, Universitates, Monasteria, Congregationes, & Collegia quomodocunque privilegiata, ac viduas, pupillos, & alias personas etiam exemptas, pendentes, & motas, & movendas, quascunque gradus, status, conditionis, ordinis, & naturæ existent, etiam præmissis expressis majores, quarum omnium statum, & merita, ac Judicium, & colligantium nomina, & cognomina, ac qualitates, ceteraque etiam de necessitate exprimenda, præsentibus haberi volumus pro expressis, in statu, & terminis in quibus modo reperiuntur, dummodo non sint instructæ, harum serie ad nos advocantes.

Illorumque
Judicem ordi-
narium e-
ligit Proce-
torem So-
cietatis, vel
ab eo depu-
tandum cum
facultate
procedendi
summariæ
&c.

§. 2. Dilectum filium nostrum Raynutum Farnesium tituli S. Angeli presbyterum S.R.E. Cardinalem, ac Majorem Penitentiarium, modernum ac pro tempore existentem Protectorem ejusdem Societatis, Judicem ordinarium, ac perpetuum ad prædictas necnon quascunque alias similes, vel dissimiles causas civiles, ad Societatem hujusmodi pertinentes, tam per eos, quàm contra eos, & inter eos, ac personas, Universitates, Collegia, seu alia loca prædicta etiam privilegiata, & exempta, tam activè, quàm passivè pro tempore movendas, juxta ordinariam facultatem, seu jurisdictionem tam Gubernatori, quàm Regenti Cameræ Apostolicæ, seu Vicario nostro præfatis, & eorum cuilibet attributis, ac prout rectum qualitas exegerit, seu postulaverit, cum omnibus, & singulis earum incidentibus dependen. emergen. annexis, & cõnexis summarie, simpliciter, & de plano, sine strepitu, ac figura judicii, & absque tela judiciaria, & sola veritate inspecta, & absque aliquorum terminorum substantialium observatione, aut alicujus registri, vel extractus confectioe, per se ipsum, seu alios ab eo deputandos, audiendas, cognoscendas, sineque debito terminandas, auctoritate Apostolica tenore præsentium perpetuò constituimus, & deputamus, & ad hunc effectum illi etiam per alium, seu alios quoscunque tam in Romana Curia, quàm extra eam, etiam per edictum publicum, consulto sibi etiam summarie de non tuo accessu, citandi, & monendi, eisdemque, & præfatis, ac quibuscunque aliis ejusdem Urbis Curiarum Judicibus, & personis, tam Ecclesiasticis, quàm secularibus, quibus, & quoties opus fuerit, etiam sub sententiis, censuris, & pœnis Ecclesiasticis, ac etiam pecuniariis, quibus sibi ab eo tempore deputando Auditori videbitur, inhibendi & in eventum non partionis contra inobedientes contumaces, & rebelles, ac declarationem incursum censuræ, & pœnarum hujusmodi, illarumque aggravationes, & reagravationes, & aliàs juxta morem, & stylium dictarum Curiarum in similibus fervari solitum, ac aliàs prout sibi videbitur, procedendi.

§. 3. Sententiamque five sententias debite executioni demandandi, five demandari faciendi.

§. 4. Contradictores quoslibet & rebelles per censuras, & pœnas Ecclesiasticas, ac etiam pecuniarias aliaque juris, & facti remedia opportuna appellatione postposita, compescendi, auxiliumque brachii secularis ad hoc si opus fuerit invocandi, omniaque alia, & singula in præmissis, & circa quomodolibet necessaria & opportuna faciendi, gerendi & exequendi plenam, & liberam, ac amplam licentiam, & facultatem atque auctoritatem concedimus.

§. 5. Decernentes, quod ipsius Reverendiss. Cardinalis Protectoris, five ipsius deputandi pro tempore Auditoris, sententiis, ordinationibus & decretis, nullitas aliqua opponi nullo modo possit, nisi ex defectu jurisdictionis, citationis & mandati.

§. 6. Et licet ad instantiam quoruncunque hæredum, five quorumbilibet aliorum committatur in futurum, vel etiam modo pendet commissa causa discussionis alicujus hæreditatis, & dictæ Societati, seu Custodibus, & Officialibus ipsius, etiam virtute commissionis fuerit inhibuit, tamen ne exactio creditorum in præjudicium ipsius Societatis proteuleret, data idonea cautione per dictos Custodes, & Officiales, de restituendo summam debitam, in eventum succumbentia prioribus, & potioribus creditoribus, dictus Reverendissimus Cardinalis Protector prædictos hæredes, five alios quoscunque debitores, seu ipsorum quorumbilibet ex quacunque causa cessionariorum, vel ab eis quorumbilibet, & ex quocunque titulo causam habentes, ad satisfaciendum integraliter dictæ Societati, de ejus credito juris, & facti remediis opportunis cogat, & compellat.

§. 7. Ac in omnibus, & singulis, & quibuscunque causis præfatis, ad dictam Societatem, ut supra spectantibus singulis diebus, & horis feriatis, & non feriatis, præterquam in honorem Dei, etiam tempore feriarum ob necessitatem hominum indicandarum procedat.

§. 8. Ac Notarium actuarium quem sibi placuerit deputet.

§. 9. Et quod citationes in causis prædictis etiam per Mandatarium Curie Capitoli fieri possint.

§. 10. Et quod quicumque executores Tribunalium Urbis, possint & debeant exequi, & effectualiter executioni mandare, omnes & singulas sententias, decreta, & mandata præfat. Raynutii Cardinalis Protectoris, five ab ipsorum five ab eo deputatorum, quæ non obstant regula Cancellariæ, &c. sufficienti si signata sint, ejusdem Raynutii Cardinalis parvo sigillo.

§. 11. Decernentes insuper Societatem prædictam ejusque Officiales, & personas hujusmodi ex nunc deinceps occasione præmissorum alibi quàm coram præfato Reverendiss. Cardinali Protectore conveniri, aut ad alios conveniri, constringi non posse, ac processus sententias, & decreta per alium five alios tam ordinarios, quàm etiam specialiter deputatos, & delegatos Judices in causis præfatis quomodolibet pro tempore formatos in prima instantia latas, & factas, cum inde secutus quibuscunque, nullas, irritas, & inanes, nullius roboris, & momenti fore.

§. 12. Præfentes quoque litteras sub quibuscunque revocationibus, suspensionibus, & exemptionibus, similibus, vel dissimilibus gratiarum, etiam per nos, & successores nostros Rom. Pontifices, & Sedem præfatam, vel ejus Legatos etiam per regulas Cancellariæ Apostolicæ pro tempore factas, etiam in favorem Fabricæ Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, nullatenus comprehendere, sed semper ab illis penitus, & omninò exceptas esse, & ceteri, nec eisdem præsentibus per quascunque litteras, etiam quasvis clausulas generales, & speciales, etiam derogatorias derogatorias efficaciores, & insolitas, ac etiam irritantia decreta, sub quacunque verborum expressione in se contententes, derogari posse, & illis ullo umquam tempore, ex alia etiam quantumvis necessaria, & urgenti causa derogari contingat, nisi tenor illarum de verbo ad verbum nihil omisso insertus, & hujusmodi

Rejctis
nullitatibus
præterquam
ex tribus,Cogendi
que debito-
res ad satis-
faciendum
Societati,
data cautione,
&c. non
obstante
pendentia
litis discus-
sionis.Singulis
diebus pro-
cedendi.Notarium
deputandi.
Mandataris
Capitoli
dat facultatem
ejus cit.
exequendi.
Executoresque
obligat
ad exequen-
dum manda-
ta.Annulat
processus
aliorum Ju-
dicum.Clausulas
hujus con-
cessionis
præservati-
vas apponit.

derogatio confistorialiter facta, ac per trinas, & distinctas literas, eundem tenorem continentes, tribus similibus distinctis vicibus, Administratores huiusmodi Cautidibus, ac aliis Officialibus Societatis huiusmodi legitime insinuata, & intimata fuerit, eorumque ad id expresse accedat assensus, derogationem huiusmodi nemini suffragari. Sique per quoscunque Iudices quavis auctoritate fugientes etiam præfate Romanæ Ecclesiæ Cardinales, sublata eis, & eorum cuiuslibet quavis aliter iudicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, ubique iudicari, & definiri debere, irritum quoque, &c. attendari.

§. 12. Non obstantibus præmissis, & fel. rec. Bonifacii PP. VIII. prædecessoris nostri de una, & in Concilio generali edita de duabus dietis, dummodo ultra tres dietas, aliquis auctoritate præsentium ad iudicium non trahatur, aliisque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon Fabricæ prædictæ, ac Hospitalium, Ecclesiarum, Monasteriorum, & aliorum quorumcumque locorum, & Ordinum, etiam exemptorum iuramento, cõfirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus, privilegiis, quoque, indultis, conservatoriis, exemptionibus, & litteris Apostolicis, eisdem ac dilectis filijs Populo Romano, necnon Iudicibus, Curis, & Tribunalibus eorumque personis, per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac uos, & Sedem etiam motu, scientia, ac potestatis plenitudine similibus, ac aliis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscvis causulis, & decretis in contrarium quomodolibet concessis, confirmatis, & innovatis; necnon reformationibus, etiam noviter factis, ac paribus motu, & scientia approbatis, etiam disponentibus, quod causæ huiusmodi ad forum, vel Curiam Capitoli reassili debeat. Quibus omnibus etiam si per illorum sufficientem derogatione alias de illis eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata inacta forent, præsentibus pro sufficienter expressis habentis, & illis alias in fuo robore permanens, hac vice dumtaxat harum serie specialiter, & expressè, ac eisdem motu & scientia, & potestatis plenitudine derogamus, ac sufficienter derogamus esse decernimus, contrariis quibuscumque, iter, vel præteritis, vel quibuscvis aliis contrariis, ter, vel diversimodè ex se Sedem indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari, aut extra vel ultra certam loca Curias, & Tribunaia ad iudicium trahi non possint, per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentione, & quibuslibet aliis privilegijs, indultis, & litteris Apostolicis, generalibus, vel specialibus quorumcumque; tenorum existant, per quæ præsentibus non expressa, aut totaliter non inserta iurisdictionis ipsius Protectoris explicatio impediri valeat quomodolibet vel differri, & de quibus quorunque totis tenoribus de verbo ad verbum habenda sit in nostris litteris mentio specialis.

§. 13. Et quia difficile foret præfentes litteras ad singula loca quibus illis pro tempore opus fuerit deferre. Volumus, & præfata auctoritate decernimus, quod illarum transfumptis manu Notarii publici subscriptis, & sigillo Protecōris, vel Societatis hujusmodi seu personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ, vel Curie etiam secularis munitis, eadem rursus fides adhibeatur, quæ adhiberetur eisdem præfentibus, si forent exhibite, vel offensæ.

Placet Motu proprio I.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Sexto Idus April.
Anno secundo.

Sequitur Erectio in Archiconfraternitatem, & indultum liberandi carceratum.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Cum sicut nobis innotuit, in Confraternitate Sanctiss. Crucifixi in Ecclesia Monasterii S. Mar-

celli de Urbe instituta, dilecti filii illius Confratres
quamplura opera charitatis, Domino bonorum om-
nium largitore opulente, hactenus tum in colenda
Sanctiff. Crucifixi Imagine quæ in ipsa Ecclesia iuxta
est, tum in visitandis pauperibus infirmis ejusdem
Confraternitatis, eidemque Medicum adhibendo,
& subsidium tranfmitiendo fepeliendique pauperi-
bus mortuis, maritandis virginibus, recitando Offi-
cium, illicque continuò quibusvis diebus festis, &
quadragimalibus intereffent. tum etiam in aliis di-
verfis piis, & laudabilibus operibus, & maxime ex-
penfis, & fumptibus quæ, & qui de præfenti in ere-
ctione, & fabrica eorum Oratorij fiunt, & fieri ope-
rantur, exercuerint: Nos qui nuper, fve alias gratiam
eidem Confratribus per fel. rec. Julium Papam III.
prædecessorem noſtrum factam, ut unum victum,
fve Carceratum, & ex caufa capitali damnatum quem
mallent ex quocunque crimine, excepto crimine hæ-
refis, & læfæ Majestatis, dummodo pacem ab hære-
dibus defuncti habeant anno fingulo in perpetuum in
feſto Inventionis S. Crucis de menſe Maii, fve in fe-
ſto Exaltationis ejusdem de menſe Septembris in
honorem S.D.N. Jeſu Chriſti liberare, & ex carceri-
bus extrahere poſſent, & prout præſatus fel. rec. Ju-
lius III. conceſſerat, cõfirmavimus, & approbavimus,
& quatenus opus etiam de novo cõfirmamus, prout
in notio Motu proprio latius conſtat, & apparet.

§. 1. Cupientes eandem Societatem, & Confratres spiritualibus gratis, & favoribus prosequi, ac ut ipsa opera non minuantur, sed in dies augeantur, ipsos Confratres aliquo devotos fideles allicere, & propriam ipsam Confraternitatem, & illius Confratres gratiarum muneribus ornare, & decorare volentes, motu simili, & ipsam Societatem, & Confraternitatem omnium aliarum Confraternitatum, quæ sub invocatione nominis Sanctiff. Crucifixi hæc. in toto Orbe Terrarum erectæ fuerunt, seu in posterum erigi contigerit, Archiconfraternitatem facimus, creamus, erigimus, confirmamus, deputamus, ordinamus, & esse volumus. Ita ut sit Caput omnium Societatum, & Confraternitatum sub Sanctiffimo Nomine Crucifixi erectarum, & erigend. Omnesque alias Confraternitates erectas, & erigendas sub nomine præfatto ubicunque locorum sitis, præfate Confraternitatis immediate subjiciamus, & membra Societatis præfate, & ab ea dependente constituiamus, deputamus, & ordinam, ac esse volumus.

§. 2. Necnon dictam Archiconfraternitatem cum illius Oratorio in loco dictæ Ecclesiæ vicino in quibusdam domibus ipsi Archiconfraternitatis, et illius Confratribus per Priorem, et Fratres dicti Monasterii, vel alios sub certis modo, et forma, tunc expressis, concessis confrui incepto, omnibusque ejusdem Archiconfraternitatis bonis, et legitimis, et elemofinis largiendis, et largiendis, ac acquisitis, et acquirituris. Itaque ejusdem Archiconfraternitatis, Confratres, seu Priores, vel Guardiani Archiconfraternitatem ipsam, et illius bona regere, gubernare, et administrare ac de eisdem bonis legitimis, et elemofinis ad eorum libitum, et prout eis videbitur, et placuerit disponere, et illam in usus eius viros convertere possit, ac omnia, et singula statuta, et constitutiones dictæ Societatis, quæ per dilectum filium nostrum Raymundum Parnicium titulo S. Angeli in foro Piscium presbyterum Cardinalem S.R.E. Majorem Penitentialium, et dictæ Archiconfraternitatis Protectorem confirmata, et approbata fuerint, confirmamus, et approbamus. Ac eisdem Confratribus, vel Prioribus, seu Guardianis quæcunque statuta, et ordinationes prosperi nati, ac regimini, et gubernium dictæ Archiconfraternitatis concernentia ad eorum libitum concedere, liceant, et mutare toties quoties eis videbitur, libere, et licite valeant, concedimus, et indulgemus, illaque ex nunc, prout ex tunc postquam condita, mutata, vel alterata fuerint confirmamus.

§. 3. Quocirca dicto Raynuto Cardinali, & Poenitentiario, & ac moderno Protectori Archiconfraternitatis præfate alius Protectoribus pro tempore deputandis. Necnō univerſis, & ſingulis Patriarchis, Archiepiſcopis, Episcopis, Abbaibus, & aliis quibuſcunq;

1561.
pia opera
exercenti,
confirmat
hic Pontif.
indultum
liberandi
unum con-
demnatum
in festo S.
Crucis, sed
ejus Bullam
om. si, quia
hoc iuffi-
cienter hic
est relatam.

Et nunc eam
in Archicon-
fraternita-
tem erigit,

Su una
confinar,
& ju it -
concedit.

Executores,
& defenso-
res deputat

Claufulas
contrario-
rum dero-
gatorias sub-
dit.

Transump-
tis fidem
præstari.

Papæ sub-
scriptio.
D. P. An. 2.
die 8. Apri.

Edita An. D.
1961.

Huic Soda-
licati multa

Clausulas derogatorias apponit.

Papae sub-
scriptae
Clausulas
in his pre-
sentibus.

Sola signa-
tura sufficit.

Fides ex-
emplorum.

D. P. An. s.
die 15. Maii.

XXXI.

Edita An. D.
1561.

Quidam
cerdotes
tendo
Sacramento
Poenitentiae
in actu confe-
ssionis ad ac-
tus inho-
nestos pro-
vocant.

in dignitate Ecclesiastica ubicumque locorum con-
stitutis, Motu praefato per Apostolica scripta man-
damus, quatenus ipsi, & eorum quilibet quoties
tuerint pro parte dictorum Archiconfratrum, vel
aliorum privilegiorum ab ipsis pro tempore habentium
requisiti, eisdem in praemissis, & eorum singulis
quomodolibet, assistant, eosdemque faciant gra-
tis, & privilegiis praefatis libere frui, & gaudere.
Non permittentes a quoquam desuper molestari,
Contradictores & rebelles per censuras Ecclesiasti-
cas appellatione postposita compescendo, invocato
etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii saecularis
irritum quoque, & inane decernentes quicquid in
contrarium contigerit attentari.

§. 4. Non obstantibus constitutionibus, & ordi-
nationibus Apostolicis, statutis, & consuetudinibus,
etiam iuramento, aut quavis alia firmitate robo-
ratis, privilegiis quoque indultis, & litteris Aposto-
licis, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, ac
de Apost. potestate plenitudine in praedictum, seu
contrarium praemissorum per nos, & quoscumque
Rom. Pont. praedecessores nostros debitis, & aliis
quibus Ecclesiae, Basilicae, Hospitalibus, Societa-
tibus, & locis sub quibuscumque tenoribus, & for-
mis ac cum quibuscumque clausulis, & decretis conce-
ssis, &c. confirmatis, &c. ac concedendis &c. Qui-
bus omnibus, & singulis etiam si de illis, &c. tenor
eorum pro expressis, & de verbo ad verbum
inseriris habentes hac vice derogamus, caeterisque
contrariis quibuscumque.

Concessit Motu proprio in praesentia D. N. Papae
C. Card. Borromaeus.

§. 5. Et cum absolutione a censuris ad effectum,
&c. Et de creatione, erectione, constitutione, &
deputatione, in Archiconfraternitatem cum confirma-
tione statutorum, &c. ac privilegiis, concessis gratis
facultatibus, & derogationibus, ac omnibus aliis, &
singulis praemissis, quae hic pro repetitis, & expressis
habeantur, perpetuo in forma gratiosa latissime ex-
tendi quatenus opus fuerit. Et quod praemissorum
omnium, & singulorum maior, & verior specialis
& expressio fieri possit in litteris per breve nostrum
expediendis.

§. 6. Seu si ipsi Archiconfratribus videbitur so-
la praesentium signatura nostra sufficiat, & ubique
fidem faciat in iudicio, & extra quacumque regu-
laria non obstantia.

§. 7. Ac quod praesentis transumpti auctoritate
manu Notarii publici, aut Secretarii dictae Archicon-
fraternitatis subscripti, & sigillo dicti Protectoris, vel
ipsius Archiconfraternitatis muniti, eadem prorsus
fides adhibeatur in iudicio, & extra ubi exhibitae
fuerint, vel offensae, prout originali adhiberetur si
offenderetur.

Datum Romae apud S. Petrum, Idibus Maii
Anno quinto.

In quosdam haereticæ pravitatis facultas, proce-
dentes contra Sacerdotes, qui mulieres poeniten-
tes in actu confessionis, ad actus inhonestos pro-
vocare, & allicere tentant.

PIUS PAPA QUARTUS.

Venerabili Fratri Archiepiscopo Hispanensi in Re-
gis Hispaniarum haereticæ pravitatis Inquisitori
generali.

Cum sicut nuper, non sine animi nostri molestia
accepimus, diversos Sacerdotes in Regnis His-
paniarum, atque etiam in eorum Civitatibus, &
Diocesisbus curam animarum habentes, sive eam pro
aliis exercentes, aut alias audiendi confessionibus
poenitentium deputati, in tantam proruperint iniqui-
tatem, ut Sacramento Poenitentiae in actu audiendi
confessiones abutantur, nec illi, & qui id instituit
Domino Deo, & Salvatori nostro Jesu Christo in-
iuriam facere viderentur, mulieres videlicet poeniten-
tes ad actus inhonestos dum earum audiunt confes-
siones alliciendo, & provocando, seu allicere, & pro-

vocare tentando, & procurando, ac locum earum per
Sacramentum huiusmodi Creatori nostro reconcilia-
tionis, graviori peccatorum mole casu onerando,
& in manibus Diaboli tradendo, in Divinae Maje-
statis offensam, & animarum perniciem, Christi
fidelium scandalum non modicum.

§. 1. Nos in animum inducere nequeantes, quod
qui de Fide Catholica recte sentiunt, Sacramentis in
Ecclesia Dei institutis abutantur, aut illis iniuriam
faciant, fraternitati tuae, de cujus eximia pietate, vir-
tute, atque doctrina plurimum in Domino confidimus,
per praesentes committimus, & mandamus,
quatenus per te, vel per alium, seu alios à te depu-
tandum, seu deputandos contra omnes, & singulos
Sacerdotes dictorum Regnorum, ac illarum Civita-
tum, & Dioecesium de praemissis quomodolibet diffama-
tos, tam saeculares, quam quorumvis etiam ex-
ceptorum, ac Sedi Apostolicae immediate subiecto-
rum Ordinum Regularium, cuiuscumque dignitatis,
status, gradus, ordinis, conditionis, & praerogative
existant, tam super praemissis, quam super Fide Catho-
lica, & quid de ea sentiant diligenter inquiras, &
iuxta facultatem tibi contra haereticos, aut de haeresi
quovis modo suspectos à Sede Apostolica concessa-
rum continentiam, & tenorem procedas, ac culpabi-
les repertos iuxta concessum suorum qualitatem,
prout juris fuerit punias, eos etiam si, & prout de
jure fuerit faciendum, debita praecedente degrada-
tione saecularis Iudicis arbitrio puniendos tradendo.

§. 2. Non obstantibus constitutionibus, & ordina-
tionibus Apostolicis, ac Ecclesiis, & Monasteri-
is, necnon Ordinum quorumlibet quorum ipsi
Sacerdotes fuerint, etiam iuramento, confirmatione
Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, sta-
tutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis,
& litteris Apostolicis sub quibuscumque tenoribus,
& formis, ac cum quibuscumque clausulis, & decretis, etiam
Motu proprio, aut aliis quomodolibet concessis, etiam
iteratis vicibus approbatis, & innovatis, quibus
omnibus eorum tenores praebentibus pro expressis
habentes, hac vice, dumtaxat specialiter, & expresse
derogamus, caeterisque contrariis quibuscumque.

Dati Romae apud S. Petrum sub annulo Piscato-
ris, die 16. Aprilis 1561. Pontificatus nostri Anno
secundo.

Applicatio Rev. Cam. Apostolicae, omnium fru-
ctuum beneficiorum Italiae Sedi Apostolicae refer-
vatorum, seu affectuorum, pro tempore quo aliter
quam per cessum ipsa beneficia vacaverint.

Ampliolem dispositionem de his fructibus habes in
Sext. V. const. 100. In conferendis, ubi Thesau-
rarius Papa eorum Collector deputatur.

De fructibus autem huiusmodi beneficiorum in Re-
gno Neapolis, est specialiter dispositum in
hoc Tomo II. in constit. 26. Pii V. Cupientes.

PIUS PAPA QUARTUS.

Ad futuram rei memoriam.

Cupientes malitis nonnullorum, qui in possessione
Monasteriorum, & aliorum beneficiorum
Ecclesiasticorum dispositioni Apostolicae reservato-
rum pro tempore vacantium, sine iusto titulo, ac si-
ne litteris Apostolicis, ut illorum fructus durante
vacatione huiusmodi usurpent, se intrudere non ve-
rentur, occurrere, & Camerae nostrae Apost. gra-
vissimis oneribus in aliqua parte sublevandis quan-
tum cum Deo possumus consulere. Motu proprio,
& ex certa nostra scientia, ac matura deliberatione
nostrae, deque Apostolicae potestatis plenitudine.

§. 1. Omnes & singulos fructus, redditus, & pro-
ventus, ac jura, obventiones, & emolumenta quae-
cumque quomodolibet, & qualitercumque nuncupa-
ta omnium, & singulorum Monasteriorum etiam
consuetudinaria, & beneficiorum Ecclesiasticorum
cum cura, & sine cura, saecularium, & quorumvis
Ordinum regularium nobis, & Sedi Apostolicae tam

Contra quos
iste Pont. ab
Inquisitori-
bus haereti-
cae pravitatis
inquiri
deceat.
Locus re-
stituitur.

Contrariis
derogatur.

D. P. An. s.
die 16. Aprilis.

XXXII.

Edita An. D.
1561.

Causae hu-
jus applica-
tionis.

Applicatio
R. Cam. A-
postolicae
fructuum
beneficio-
rum Sedi A-
post. refer-
vatorum seu
affectuum
in Italia à
die vacatio-
nis, usque
ad diem
provisionis,
&c.

per

per constitutiones Apostolicas, quàm Cancellarie Apostolicæ regulas editas, & edendas, seu alias quomodolibet, & ex quavis causa, generaliter, vel specialiter reservatorum, seu affectorum in partibus Italiæ in quibus Collectores, & Subcollectores spoliurum, & jurium Camere Apostolicæ prædictæ effecuerint, ac eorum Civitatibus, & Dioc. consentientium, per obitum, & aliis quovis modo; præterquam per cessum illa obtinendum, pro tempore vacantium, à die ipsorum Monasteriorum, & beneficiorum vacationis pro rata temporis usque ad diem provisionis seu commendæ de eisdem beneficiis, & Monasteriis per nos faciendæ, de qua per litteras nostras sub plumbo, & non aliter constare debere volumus, eidem Camere auctoritate Apostolica tenore præsentium reservamus, applicamus, incorporamus, & approbamus, illaque ei reservata, applicata, incorporata, & appropriata esse, & fore, & ad id illam spectare, & pertinere.

§. 2. Nullumque præter nos, & dictam Cameram, aut dilectum filium Donatum Matthæum Minalem, ac pro tempore existentem Thesaurarium nostrum, ac Spoliorum, & aliorum jurium ipsius Camere Collectorem generalem, vel ejus Subcollectores ea percipere, exigere, & recuperare, aut alias se in illis intromittere possit, aut debere tenore præsentium statumini & ordinamus.

Facultas
Collectoris
exigendi
dictos fru-
ctus.Inhibitio
contra alios
ne desuper
se intromit-
tant.

§. 3. Et nihilominus ne aliquid impedimentum huic nostræ ordinationi occurrat, quibuscumque Archiepiscopis, Episcopis, & aliis locorum ordinariis in virtute sanctæ obediencie, ac sub suspensionis à divinis, & interdicti ingressus Ecclesiæ quoad Archiepiscopos, & Episcopos, quoad aut verò alios inferiores, etiam sub excommunicationis, & aliis arbitrii nostri, & quoad omnes sub privationis facultatis conserendi beneficia in eorum mentibus pro tempore vacantiæ penis districtè præcipimus, & inhibemus, ne beneficia dispositioni Apost. reservata, seu affecta quovis prætextu, causa, aut quæsito colore cuiquam conferre, seu de illis providere, aut in illis vel eorum possessione sese intromittere quoquo modo audeant, vel præsumant.

Clausula
sublata, &c.

§. 4. Siquem in præmissis omnibus, & singulis per quoscumque quavis auctoritate fungentes Judices, Commisarios, & personas, sublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, iudicari, & definiri debere, irritum quoque, & inane decernimus, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit attentari.

Facultas
Collectoris
in exercitio
ne huiusmo-
di consilii.

§. 5. Mandantes eidem Donato Matthæo, & pro tempore existentem Thesaurario, & Collectori, ut nostro, & dictæ Camere nomine fructus, redditus, proventus, jura, obventiones, & emolumenta huiusmodi per se, vel ejus Subcollectores prædictos, etiam propria auctoritate exigat, percipiat, & levet sibi que nihilominus consignari, & tradi ab omnibus ad quorum manus pervenerint pro rata prædicta percensuras & penas Ecclesiasticas ab eo eligendas, fulminandas, & alia opportuna juris, & facti remedia quacumque appellatione postposita, faciat & curet, invocato etiam, si opus fuerit, auxilio brachii sæcularis, super quibus omnibus, & singulis plenam, & liberam illi per præsentis concedimus facultatem.

Clausula
derogato-
rie.

§. 6. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac Monasteriorum, & illorum Ordinum, ac beneficiorum prædictorum etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, illis, & quibuscumque aliis personis sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, efficacissimis, & insolitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis, etiam motu, & scientia similibus concessis, confirmatis, & innovatis, quibus omnibus etiam si pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus specialis,

specificas, expressas & individuas, ac de verbo ab verbis, non autem per clausulas generales idem importantes mentio seu quævis alia expressio habenda foret, tenores huiusmodi præsentibus pro sufficienter expressis, & insertis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat harum serie specialiter, & expresse derogamus, illaque adversus præmissa nullatenus suffragari posse, sive debere decernimus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 7. Volumus autem, quod ex fructibus, redditibus, & proventibus per dictum Thesaurarium, & etiam deputatos pro rata huiusmodi percipiendis onera quacumque dictis beneficiis incumbenda similiter pro rata temporis supportari debeant.

§. 8. Quodque præsentium manu Notarii publici subscriptis transumptis, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ, seu Curie Ecclesiasticæ munitis eadem prorsus fides in iudicio, & extra adhibeatur, quæ eisdem præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ, vel ostendæ.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 25. Aprilis 1561. Pontificatus nostri Anno secundo.

Jurisdicção, & facultates Auditoris causarum Curie Rev. Camere Apostolicæ.

Hoc officium est antiquissimum, & plures ei Pontifices, auxerunt jurisdictiones, ut notavi supra in Tomo I. in cons. 7. Innocent. VIII. Apprine & latius dicam in Pauli V. cons. 28. Eximie in Tomo III. cum ibi notandis. Et inde cognosces, quid his facultatibus auctum, quidve reformatum fuerit, & limitatum.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memoriam. Venerabili Fratri Flavio Episcopo Muran. Salutem & Apostolicum benedictionem.

Ad eximie devotionis affectum, quem cum fidei constantia, & sinceritate mentis, tu, & progenitores tui ad nos, & Romanam Ecclesiam gerere comprobamini, necnon generis nobilitatem, eximiamque doctrinam, ac in rebus gerendis experientiam, & dexteritatem, necnon fidei, & justitiæ zelum, ac integritatem, singularemque probitatem, necnon ceteras virtutes quibus personam tuam, illarum largitor Altissimus multipliciter insignivit, nostræ dirigentes considerationis intuitum, ac propterea iudicium spem gerentes, quod ea quæ tibi duxerimus committenda, summa cum providentia, & exacta cum diligencia laudabiliter exequeris, dignum quum potius debitum arbitramur, ut eandem personam condignis honoribus, & gratis prosequamur.

§. 1. Cum itaque nos nuper officium generalis Auditoris, seu Audientie Curie causarum Camere Apostolicæ, quod antea tunc per obitum quondam Francisci Alberici de Rachaneto, olim Curie causarum huiusmodi generalis Auditoris, extra Romanam Curiam defuncti vacans, fel. rec. Paulus Papa IV. prædecessor noster, ex certis tunc expressis causis nomine Auditoris in perpetuum suppresso, & extincto, in officium Regentis S.R.E. Camere Apostolicæ de fratrum suorum consilio Apostolica auctoritate transformasset, ac in illud exererat, & instituerat, ac postmodum officium huiusmodi ab ejus primæva erectione, tunc vacans, dicto filio nostro Alphonsio, tunc S. Nicolai inter Imagines, nunc verò sanctorum Joannis & Pauli Diacono Cardinali Neapolitano nuncupato, dicta auctoritate concesserat, & assignaverat.

§. 2. Cum dictus Alphonsus Cardinalis officium Regentatus huiusmodi in manibus vestris sponte, & libere resignasset, nosque resignationem huiusmodi duxilemus admittendam, habita super his cum venerabilibus fratribus nostris ejusdem S. R. E. Cardinalibus deliberatione matura, ac de eorum consilio

Declaratio
quod ex dictis fructibus onera beneficii, supportentur.
Exem. totum fides.

D. P. A. S.
die 25. Ap. 1561.

XXXIII.

Edita Ad. D.
1561.

Procedimus.

Officium Auditoris Curie vacavit olim per obitum Francisci Alberici, & in Officium Regentis Cam. transformavit, & illud Cardinali de Neap. concessit Paul. IV. cujus Bullam uti oculum præteriti.

Vacavit postea per resignationem, & illud hic Pontifex appressit.

lio, & unanimi consensu, Officium Regentatus hujusmodi ejus nomine, & denominatione hujusmodi per nos suppressis, & extinctis, ac illius erectione, & institutione prædictis, necnon litteris Apostolicis de super confectis revocatis, cassatis, & annullatis, adversus erectionem, & institutionem, necnon litteras Apostolicas præfatas, ac in pristinum, & cum, in quo ante illius suppressionem necnon erectionem, & institutionem hujusmodi erat, statum, pristinamque naturam in omnibus, & per omnia restitui- mus, reposuimus, & plenarie reintegravimus, pro- ut in litteris Apostolicis de super confectis, ac manu nostra, & dictorum fratrum nostrorum signatis plenius continetur.

Et modo
Officium
Auditoria-
tus Camere
conferre Fla-
vio Ursino
cum solitis
facultatib.
& maxime in-
fra dicendis.

§. 3. Nos, post longam super hoc habitam discus- sionem, & maturam deliberationem, in te oculos nostræ mentis conspicientes, ac de supra dictis tuis virtutibus specialem in Domino fiduciam fumentes, ac sperantes, quod tu qui Ecclesiæ Muran. præesse dignosceris, ac utriusque juris Doctor, & in utra- que Signatura nostra Referendarius, & Prælati do- mesticus noster existis, dexterâ Domini tibi assisten- te propitiâ, Officium hujusmodi scies, voles & po- teris, ad laudem, & utilitatem multorum fideliter exercere, Teque à quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & poenis à jure, vel ab homine, quavis occasione, vel causa latis, si quibus quo- modolibet innodatis existis, ad effectum præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absol- ventes, & absolutam fore consentes, ac suppressio- nis, erectionis, & institutionis, necnon litterarum præfatarum variore tenores, ac si de verbo ad ver- bum inferrentur, ad verum, & ultimum dicti Of- ficii Auditoriatus vacationis modum præsentibus pro expressis habentes, Motu proprio non ad tuam, vel alterius pro te nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed de nostra mera liberalitate, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, Officium Auditoriatu, seu Audientie Camere hujusmodi, sive per similem resignatio- nem Alphonsi Cardinalis, seu adhuc per obitum Francisci prædictorum, sive aliis quovis modo, quem haberi volumus pro expresso, vacet, cum Officio Correctoriæ Archivi Romanæ Curie, aliis- que illis annexis, necnon omnibus, & singulis illius honoribus, privilegiis, juribus, & regalibus, vel aliis nuncupatis emolumentis confectis, ac facultati- bus, & indultis, ac decretis etiam in ordine, & modo procedendi in causis eidem Francisco, & aliis, qui pro tempore fuerint causatarii Curie generalibus Auditoribus etiam per fel. record. Julium II. Leo- nem X. Clementem VII. Paulum III. & Julium etiam III. ac alios quoscumque Rom. Pont. prædecessores nostros, ac etiam nos, & Sedem Apostolicam sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis, tam sub plumbo, quam in forma brevis, & aliis ex usu, stylo, & consue- tudine quomodolibet concessis, tibi Apostolica au- thoritate, tenore præsentium concedimus, & assi- gnamus, Teque in nostrum, & dilecti filii nostri Guidonis Afcanii S. Mariæ in Via lata Diaconi Car- dinalis de Sancta Flora nuntupati moderni, & pro tempore existentis Camerarii nostri, ac causarum Curie hujusmodi, generalem Auditorem, cum honori- bus, oneribus, privilegiis, juribus, emolumentis, facul- tatibus, & decretis prædictis, constituimus, & depu- tamus, teque in locum dicti Francisci, quoad hujusmodi Auditoriatus Officium, ejusque exercitium, quoad vixeris, substituiamus, & subrogamus.

Causas obli-
gationum in
forma Came-
ræ private,
quoad alios
conoscendi.
Hoc exten-
sum est ad
alias obliga-
tiones, ut in
const. S.D.N.
Pauli V. cit.
in rubr.

§. 4. Tibique per te, vel alium, seu alios idoneum, seu idoneos Locumtenentem, seu Locumtenentes tuos, quos pro tempore duxeris assumendos, vel deputandos de omnibus, & singulis causis, modis, & formis, supra, & infra scriptis cognoscendi, & illas de- cidendi facultatem concedimus. Ita quod tu in causis obligationum in forma Camere celebratarum solu- tis (præterquam inter Civis Romanos inter quos Motam propriam, ultimo loco per nos desuper in fa-

vorem Pop. Rom. concessum observari volumus, alii- verò quicumque etiam Roman. Cur. Judices in simi- libus causis, nullatenus, nulloque modo procedere possint) procedere debeas. Necnon de omnibus, & singulis obligationibus in forma Camere, ubivis lo- corum, & inter quascumque personas, sibi, & faci- endis (his dumtaxat exceptis, quæ in dependenti- bus à litibus, & causis in eadem Camera, aut coram aliis iudicibus pro tempore introductis factæ, seu re- ceptæ fuerint, & tunc non per viam censurarum, sed mandati executivi) cognoscas.

§. 5. Ita ut quascumque causas, quæ de cætero perpetuis futuris temporibus in eadem Curia super ipsis obligationibus, in alio quam tuo, ac Curie cau- sarum hujusmodi tribunali (præterquam in vim specialis commissionis nostræ de dicta obligatione, specialem mentionem facientis) motæ fuerint, in illarum statu, gradu, & terminis, in quibus repe- riantur sua ordinaria auctoritate (exceptis causis in Curia Capitolii contra dictos Civis Romanos pro tempore juxta formam dicti Motus proprii motis) reasumere, & iudicibus, quibus sunt commissæ, ac coram quibus illæ pendebant in posterum, ne in eis, aut de illis, quocumque modo, vel quovis quæ- sito colore, directe vel indirecte, se intromittere præsumant, etiam sub sententiis, censuris & pen- nis Ecclesiasticis, ac etiam pecuniariis, arbitrio tuo moderandis, & applicandis inhibere, ac quicquid fecus super his contigerit attentari, irritum, & inane decernere.

§. 6. Ac etiam solus dictarum obligationum vigo- re censuras Ecclesiasticas promulgare.

§. 7. Necnon omnes, & singulas spirituales, & Ecclesiasticas, ac profanas, & quorumvis ejusdem Romanæ Ecclesiæ Cardinalium, eorumque, ac no- strorum familiarium, continuorum commensalium, & Prælatorum quorumcumque in ipsa Curia degen- tium, ac etiam Imperatoris, Regum, & aliorum Prin- cipum, ac Communitatum, & Universitatum, Ora- torum, necnon dictæ Curie Officialium, & eandem Curiam sequentium, ac familiarium eorumdem, & ipsius Curie causarum hujusmodi Auditoris Nota- riorum, & eorum familiarium, Campsorum quoque, & quorumvis Mercatorum, ac Pensionum annuarum super fructibus, redditibus, & proventibus Eccle- siasticis assignatarum, etiam si earum solutio non in ipsa Curia, sed in partibus sit facienda.

§. 8. Et quascumque alias etiam commissariis cau- sas, tam civiles, quam criminales, & mixtas, & conjunctim, vel divisim in eadem Curia quomodocumque, & qualitercumque motas, & movendas, & inter quascumque partes, etiam per viam inquisiti- onis, aut ex officio quomodolibet pendentes. Ac quæ per appellationem à gravaminibus illatis, & conferti comminatis, seu sententiis definitivis, vel interlocu- toriis, à quibuscumque iudicibus ordinariis, & arbitris atque arbitratoribus in Curia & Urbe prædictis (Vicario nostro, ac Governatore, & Senatore Ur- bis prædictæ, & iudicibus Capitolinis, dumtaxat exceptis) & extra cas à quibuscumque iudicibus, ordinariis, vel delegatis, seu arbitris, vel arbitrato- ribus, ac etiam dictæ Sedis Legatis, & eorum Vice- legatis in terris eidem Ecclesiæ Romanæ mediate, vel immediate subiectis, aut aliis earum Gubernato- ribus, vel Officialibus, & quibuscumque in feudum, vel Vicariatum, & aliis quomodolibet concessis, pro tempore latis, & promulgatis, interpositarum, seu aliis ad eandem Sedem, etiam per viam reclama- tionis judicialis, vel extrajudicialis, aut nullita- tis, vel recursus hæcenus devolutæ sunt, & in po- sterum devolventur.

§. 9. Eas videlicet, in quibus non ageat ultra summam ducentorum ducatorum auri de Camera, aut de re verum summatæ prædictæ valorem non ex- cedente, seu quæ inter, & contra Mercatores dic- tæ Curie, pro quibuscumque negotiis, ad quan- tumque summam ascendant, & inter, ac contra No- tarios suos, & eorum familias pro tempore vertentur, summarie, simpliciter, & de plano, sine strepitu,

Reasumen-
di causas
obligationis
Cameralis
specialiter
alteri non
committas.

Censuras
promulgan-
di.
Causas Præ-
latorum,
Mercatorum
Curialium
pensionum-
que, &c. co-
goscendi

Causarum in
Curia mo-
tarum
appellatio-
numque hic
indicata-
rum.

Summarie
procedendi
in causis
Mercatorum
Notario-
rum, & 100.
ducat. & 100.

& figura iudicii, sola veritate inspecta, etiam manu Regia, & absque observatione terminorum, qui de stylo, seu ordinatione Palatii Apostolici, aut aliis observari consueverunt.

Aliàs autem
privatis ter-
minis.

§. 10. Aliās verò dictam summam, aut illius valorem excedentes, & inter, ac contra alios quàm Mercatores vertentes, ferasis terminis, & alias summam, prout in beneficiabus; eisdemque terminis quomodocunque male; & nulliter, præposere, ac inculcate tentis, pro minori partium dispensare etiam unico contextu, citatione, & audientia reiteratis, etiam per affixionem citationum pro tempore faciendarum ad valvas habitacionis ipsorum citandorum, quoad obligatos in forma Camere, & quoad alios aliter obligatos, ubi non agetur de majori quàm viginti ducatorum summa audire, cognoscere, decidere, & sine debito terminare.

Causas criminales Urbis, & omnium exemplorum cognoscendi.

§. 11. Necnon de omnibus, & singulis criminibus, excessibus, & delictis, tam in Urbe, & Curia præfatis, quam extra eas per quoscunque, tam ejusdem Sedis Officiales, quam didam Curiam sequentes, & alios etiam à jurisdictione Ordinariiurum exemptos, & prædictæ Sedis immediate subiectos, cujuscunque Ecclesiasticæ, vel mundanæ dignitatis, etiam Episcopalis, vel majoris, & per quoscunque alios cujuscunque status, gradus, ordinis, vel conditionis fuerint, perpetratis, vel perpetrandis, tam ad Procuratores Fiscales denunciationem, & promotionem, quam etiam partium accusationem, vel etiam infirmationem, seu ex mero officio inquire, & super illis, tam per viam inquisitionis, quam accusationis, seu denunciationis, & infirmationis hujusmodi procedere, & culpabiles repertos juxta fuorum excessuum exigentiam, & qualitates punire, dummodo monitoria contra Episcopos, vel eorum Superiores, ad comparandum, personaliter, nisi prævia commissione manu nostra signata, non decernas.

Litteras A-
postol. exe-
quendi.

§. 12. Necnon quascunque litteras Apostolicas, generales, aut particulares, tam sub plumbo, etiam per officium Audientie litterarum nostrarum contradi-
cturam expeditas, quam in forma brevi, & qua-
rum solam signaturam sufficere concessum fuerit,
supplicationes per nos, & pro tempore existentes
Romanos Pontifices, aut in ejus, fide nostri præsenti-
a signatas, necnon litteras pro tempore existentium
Camerarum, & Penitentiarum Majoris nostrorum, dum-
modo in illis, & litteris Apostolicis prædictis alii ex-
ecutores deputati non fuerint, solus, in quibus verò
executores deputati erunt, accumulative cum illis
exequi, & super illis processus debitos in forma so-
lita, etiam cum promulgatione censurarum in simi-
libus promulgari solitarum decernere.

Sententias
in Curia la-
tas à Judi-
cibus hic
non excep-
tis exequen-
di, & pari-
ter proces-
sus Coenæ
Domini, &c.

§. 13. Ac tuarum; & per tuos Locutinentes, & quos alios, tam Ecclesiasticos, quam seculares Judices, & tam delegatos, quam subdelegatos & etiam causarum dicti Palatii Apostolici Auditores, vel nos, aut Rom. Post. pro tempore existentes, tam in specie, quam in genere, ac alios quomodolibet in eadem Curia pro tempore laudum sententiarum. Necnon quorumcumque processuum generalium, & specialium, tam in die Cense Domini, quam alias cum censuram, & penarum Ecclesiasticarum fulminacione fieri solitorum executiones, quas etiam si delegatos, aut subdelegatos prædictis, vel quibuscvis aliis etiam specialiter per nos, & Sedem prædictam commissas fuerintdicti Auditori accumulative, & non privative commissas esse volumus, & decernimus, servatis terminis in tribunali Aulæ toris hujusmodi ferendis solitis, & etiam singulis diebus, & horis, prout in ordinariis consuetum erat facere, illaque & illos debite executioni, etiam si opus fuerit cum auxilii gratia fieri in invocatione demandare.

Gaufas con-
tractuum
nitorum in
Curia co-
gnoscendi.

§. 14. Et quascumque Communitates, Universitates, Collegia, & Capitula, necnon etiam extra dictam Curiam degentes personas, pro debitis per eos in eadem Curia contractis, aut salario, seu contractu in dicta Curia inito.

Curialium-
que.

§. 15. Degentes verò in eadem Curia, seu Curia-
 Ecclesiasticis, sæculares, vel regulares, etiam ab

ipſa Curia abſentes, cujuſcumque ſtatus, gradus, ordinis, dignitatis, etiam Pontificalis, conditionis, et prææminentiæ exiſtentes, pro quibuſvis rebus, & pecuniarum ſummis ad quorumvis etiam abſentium, quorum pro tempore intererit, infantium, quoties expedierit, etiam per edictum publicum, conſtituto ſummarie, & extra judicialiter de non tuto ad eos acceſſu, ad ſatiſfaciendum de eorum debitis, & præſtandum ea ad quæ pro tempore tenebuntur monere. & citare.

§. 16. Ac litteras quascumque remissoriales, & compulforiales, & tam generales quàm speciales ubi & quoties opus fuerit arbitrio tuo decernere:

§. 17. Necnon etiam in vim Bullæ Eugen. in favorem Curialium emanatæ; & Leoninæ, necnon cujuscumque alterius extensionis inhibere;

§. 18. Ac monitoria, & citationes, ac inhibitiones ad partes etiam per simile edictum decernere, eos quodque arrestare, & incarceratione. Et si tibi videbitur, poenas, & multas dimittere, & relaxare, ac pro delictorum, excessuum, & criminum qualitate eis (extra tamen mortem, & membri mutilationem) per te, & tuos Locatentes infligere, & imponere.

§. 19. Necnon quoslibet inobedientes excommunicare, à divinis suspendere, generaliter & specialiter interdicere, ac sententias, censuras, & penas Ecclesiasticas, per te, tuosque Locatenentes pro tempore latas, etiam iteratis vicibus, aggravare. Et quod à te, vel Locatenentibus predictis pro tempore excommunicatis, seu aliis censuris, ab aliis quàm à te, vel eisdem Locatenentibus predictis, etiam de partium consensu, præterquam in mortis articulo constituti, absolvi non possint ad evitandas collusiones statueri.

§. 20. Et cum tibi vifum fuerit expedire, Communitates, Universitates, Collegia, Capitula, & perfonas quacunque a quibufvis fententis, cenfuris, & pœnis, ac multis Ecclefiafticis, fpiritualibus & temporalibus, per alios videlicet quam per te, & dictam tuam Curiam inflicis, in diebus Pafchalis cum reincidentia abfolvere, ac fententias, cenfuras, & pœnas, ac multas hujufmodi, & quacunque interdicta fufpendere, tollere, & eis relaxare.

§. 21. Necnon obligationes in forma Cameræ hujusmodi, etiam post mortem debitoris, quoad illius bona tantum, etiam per vim confessionis debiti, per aliam ex procuratoribus in qualibet obligatione confutis more solito faciendæ, & hæredibus legitime citatis seu alia arbitrio tuo exequi, & executioni demandari facere.

§. 22. Et generaliter omnia & singula alia quæ ad officium Auditoris Curie causarum hujusmodi de jure, vel ex privilegio, aut ulta, fide litteris, & consuetudine prædictis, olim spectabant, & quæ illi qui pro tempore fuerunt Curie causarum hujusmodi Auditores, ex concessis eis facultatibus facere, decernere, mandare, statuerè, ordinare, & exequi quomodolibet, poterant, fide consequenter, facere, dicere, mandare, statuerè, ordinare, & exequi. Habituri ratos & gratos, processus & sententias quos & quas, tu & tui Locutionis, prædicti pro tempore habueritis & tuleritis, ac reliqua omnia, quæ in præmissis, & circa ea, ac quodlibet eorum feceritis, dixeritis, mandaveritis, statueritis, ordinaveritis, ac facturi eamdem, auctore Domino in omnibus usque ad satisfactionem condignam, invariabiliter observari.

§. 23. Et insuper eidem auctoritate, & potestatis similitudine, tam Juli II. Leonis X. & aliorum prædecessorum litteras, quam omnia & singula privilegia, iura, facultates, jurisdictiones, & gratias, officio Auditoriorum, & Auditoribus prædictis quomodolibet concessa, & ac cum omnibus & singulis in eis contentis, singulis, singulas desuper concessas litteras, quarum omnium & singularum litterarum prædictarum tenores, ac si de verbo ad verbum infereretur, præsentibus haberi volumus pro expressis, approbamus, & confirmamus, ac innovamus, necnon perpetuæ firmitatis fore obtinere, & inviolabiliter observari debere decernimus, itaque omnia & singula ad officium Auditoriorum, & Auditorum pro tempore existentem, pendere ac si eis specialiter & expresse concessa, & pro-

Remissoriae
& compul
soriales dan-

di:
In vim Eug.
& Leonina
Curiales

Monitoria
&c. ad par-
tes decer-
nendi.

Censuras
promulgandi.

Absolutio
nes dandi.

Oblig. con
tra hæredes
exequendi.

Et alia om-
nia consue-
ta facienda.

Confirmatio omnium
cultarum
indulto-
rum.

Facultas in
cessibus,
bonorum,
& discussionib.

Tu vide
Bullam S. D.
N. Pauli V.
cit. in rubr.

Loens A.
C. in Capel.
la Papae.

Executo-
rum deputa-
tio.

Clausula
praeservati-
va.

Decretum
irritans.

Clausula de-
rogatorie.

Fides tran-
sumptorum.

D. P. An. s.
die 1. Maii.

XXXIV.

Edita An. D.

Romano-
rum & Inco-
larum Urbis
indultum
Capitoli
etiam in
obligati-
onibus
Gubernato-
ribus ubi
A. C. non
praevenerit.

Derogatio
facultatum
aliorum Ju-
dicum in his
causis.

eis, seu in illorum favorem, statuta, & ordinata fuissent, extendimus, & ampliamus.

§. 24. Quodque cap. *Odoardus*, & cap. *Perbenit*. ac quavis alternative seu moratorie, & dilationis etiā salutaris, per quoscunque etiam ejusdem R. E. Card. pro tempore decreta, obligatis in forma Cam. quoad bona, nullaten. profint. Quinimo obligationes in forma Cam. quoad bona tantum, debita executioni demandentur, etiam post mortem debitoris non obstant quacunque appellatione, & superinde obtenta commissione de hujusmodi obligatione expressam mentionem non faciente, aut discussione hereditatis ubilibet pendente, si per creditores data fuerit idonea cautio in forma depositi, de restituendo id quod receperint, prioribus, & posterioribus creditoribus, in eventum succumbentiae.

§. 25. Quodque tu in Capella, & reliquis aedibus, tam publicis, quam privatis, primum locum post Gubernatorem, & Oratores Principum, si Praelati fuerint, habes, tibi indulgemus, ac volumus, & statuimus.

§. 26. Mandantes, & districtius inhiabentes quibusvis Judicibus, &c.

§. 27. Decernentes praesentes litteras, ac in eis contenta quaecunque sub quibusvis revocationibus, suspensionibus, & aiterationibus, &c.

§. 28. Et ita per quoscunque Judices, & Commisarios, &c.

§. 29. Non obstantibus praemissis, & si opus sit de non tollendo jure quiescit, ac quibusvis aliis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac statutis, consuetudinibus, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis &c.

§. 30. Quodque praesentium transumptis manu Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus Curiae Ecclesiasticae, seu &c.

Datum Romae apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicae, 1561. Kal. Maii Pontificatus nostri Anno secundo.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Dilectos filios Senatorem, Conservatorem, Populūque Rom. specialibus favoribus, & gratis prosequi volentes, omnimodam & integram (prout illis per fel. rec. Sixtum IV. Jul. II. Leonem X. Paulum III. & alios Rom. Pont. praedecessores nostros a. s. concessa fuit) jurisdictionem, causarumque inter ipsos, ac etiam inter Romanos, & incolas pro tempore motarum cognitionem, & decisionem totalem Curiae Capitoli Romani, ita quod in praedictis, & aliis causis, obligationibus, etiam in forma Cam. Apost. in quibus videlicet per alios Judices praeventum non sit, aliisque quibusvis differentis, & actionibus inter ipsos Romanos, ac eorum aliquem, vel aliquos deinceps oriturus & movendis, nullus praeter Senatorem, & ipsius Capitoli Judices pro tempore existentes, seu privilegiorum Apostolicorum aut consuetudinum, seu quovis alio praetextu intrinsec. possit, et a dictorum praedecessorum concessiones hujusmodi, litterasque & alias desuper concessas scripturas approbantes, confirmari, & innovari. litterarumque & scripturarum eandem tenores praesentibus, pro expressis habentes, auctoritate Apost. ex certa scientia &c. perpetuū concedimus, & indulgemus.

§. 1. Ac Senatorem, Conservatores, & Pop. Rom. Curiamque & Judices Capitoli praefatos, quoad jurisdictionem hujusmodi, adversus quascunque alios A. mae Urbis Tribunalibus, & Magistratibus, etiā Re-

gentibus Camerae, Gubernatori, & nostro Vicario quomodolibet etiam consistorialiter concessas facultates, & alias contrarias dispositiones in praesentium, & cum in quo ante illarum concessiones quomodolibet erant statum restitutum, reponimus, & plenarie reintegramus, ac facultates, & alias dispositiones contrarias hujusmodi ad hunc effectum per praesentes revocamus, cassamus, & annullamus.

§. 2. Et insuper ne delicta romanescant impunita, quod Chirurgi, Barbitonfores, & alii vulnerū, aliorumque criminū notitia habentes, illa ad Curiam Capitoli hujusmodi juxta ipsius Senatoris desuper proponenda edicta & sub poenis inibi apponendis, aut ad Curiam Gubernatoris juxta solitū deferre teneantur.

§. 3. Quodque pro celeriori causarum expeditione, in eadem Curia Capitoli nullitatem nulla ratio habeatur nisi earum quae ex jurisdictionis, citationis, vel mandati defectu proveniant.

§. 4. Et ne feriarum accumulatio causarum expeditionem in longum protrahat, sublati de media ceteris feriis voluntarie, per ipsam, vel alias, non tamen in honorem Dei introductis, observatio tantum coarceatur ad ferias in antiquis Statutis expresse descriptas.

§. 5. Ac etiam Statuta de assentamentis loquentia declarantes, quod assentamentum peti non possit nisi in casibus, & articulis, quorum gravamen per definitivam reparari non valeat, qui ex Statuto sub Rub. de Appellationibus non recipiendis, lib. 6. positi colliguntur, nec in causis summa 10. ducat. non excedentibus, in aliis vero causis à decem supra in litis contestatione dumtaxat peti possit, & hoc arbitrio Judicis, in definitivis autem, vel interlocutoriis vim definitivae habentibus sententis Judex causas hujusmodi in assentamentis proponere, aliis in contrarium loquentibus Statutis nisi attentis omnino teneatur.

§. 6. Et praeterea quod si unum ex Judicibus Curiae hujusmodi abesse, vel aegrotare, aut suspectum jurari contigerit, assentamentum per tres reliquos praesentes Judices fieri possit, quorum unus in loco aegrotantis, vel absentis Judicis ad tribunal pro interlocutoris faciendis sedeat, & super incidentis, emergentibus & dependentibus usque ad sententiam definitivam exclusive provideat, etiam perpetuū statuimus, & ordinamus.

§. 7. Necnon Senatorem, Conservatores, Populū, & Curiam praefatos ad antiquam eorum jurisdictionem, ut praemittitur restitutos, & plenarie reintegratos esse. Ac praesentibus in eis contenta quaecunque valida, & efficacia fore, suosque plenarios, & integros effectus sortiri, & inviolabiliter observari debere, nec de subreptionis, vel obreptionis, aut nullitatis vitio, vel intentionis nostrae defectu quovis quaesito colore, praetextu, vel ingenio nullatenus notari, vel impugnari, nec per nos, vel Sed. Apost. ullo umquam tempore revocari, aut aliis illis derogari posse. Et si ac quoties illa revocari, aut aliis illis derogari contigerit, toties in praesentium statim restitui, & de novo etiā sub posteriori data per ipsos Senatorem, & Conservatores eligenda, concessa, & stabilita esse.

§. 8. Et sic per quoscunque Judices, & Commissarios S. R. E. Card. &c. sublati eis quavis aliter interpretandi, &c. facultate iudicari, & definituri debere, ac quicquid secus super his & quocunque quavis auctoritate scienter, vel ignoranter attentari contigerit, irritum, & inane decernimus.

§. 9. Non obstant. praemissis, ac constitutionibus & ordinationibus Apost. Statutis, &c. etiā Palatii Apost. Curiarumque Urbis styli, necnon privilegii, indultis, & litteris Apost. quibusvis Rom. Curiae Tribunalibus Curis, Magistratibus, Judicibus & aliis personis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibusvis clausulis, & decretis etiam Motu simili, etiam consistorialiter concessis, &c. quibus omnibus illorum tenores praesentibus pro sufficere expressis habentes hac latissime derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque cum clausulis oport. Placet M. proprio. I.

§. 10. Et cum absolute a censuris ad effectum, &c. Et cū approbatione, confirmatione, innovatione,

Chirurgi,
vel hic vel
coram Gab.
crimina re-
solvant.

Nullitates
tunc atten-
dantur, im-
mo levatur
Stat. cit.
in rubr.
Feriae quae
servandae.
Tu eas vide
lib. 1. c. 58.
Statuti.

Assentamen-
torum quan-
do peti pos-
sit.

Vide cap.
76. lib. 1.

Assentamen-
torum quomo-
do fiat, ali-
quo ex Judi-
cibus, absente
inferno vel
recusato.
Vide Stat.
lib. 1. c. 11.
& 12.

Clausula
praeservati-
va.

Decretum
irritans.

Clausula
derogatori-
ae.

Papae sub-
script.

concessione, indulto, restitutione, repositione, reintegracione, revocatione, cassatione, annulatione, statuto, ordinatione, decreto, & derogacione præmissis, ut sup. perpetuo. Et quod sola præsentium sufficiat signatura, & ubique etiam in Judicibus fidei faciat, regula contraria non obstante, seu si videbitur literæ desuper per Breve nostrum, etiam cum literarum prædecessorum prædictorum, & inde sequentium ten. aliorumque necessariorum majori, & veriori expressione expediri possint.

§. 11. Et quod ad obligationes in forma Camere servetur forma ipsius obligationis, ut si sit in potestate auctoris, vel creditoris convenire debitorem suum Romanum, vel incolam laicum non solum coram Rege, vel Auditore Cam. ipsarum obligat. Judice ordinario, sed etiam in Cur. Capitoli. Quoad reliquas vero causas civiles non tamen Fideles possit reus Romanus, vel incola declinare quodcumque aliud forum & petere se remitti ad Cur. Capitoli, nisi alterius Judicis jurisdictio prorogaverit, aut in eum tacite, vel expresse consenserit, & aliter facti reassumptiones vel inhibitiones per dictam Cur. Capitoli nullius sint roboris, vel momenti.

Sequitur declaratio d. const. respectu Jurisdictionis Gubernat. Urbis.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

NE per preinsertum Motum proprium aliquod præjudicium bono, & pacifico regimini Almae Urbis nostrae; quod in præsentiarum vener. fratri Hieronymo Episcopo Sagonen. per nos commissum extitit, inferatur

§. 1. Decernimus, & declaramus intentionis nostrae minime fuisse nec esse, quod per Signaturam præinserti Motus proprii prædicti in aliquo jurisdictioni & facultatibus ejusdem moderni, ac pro tempore existentis Gubernatoris, præsertim circa bannimentorum editiones, ac cognitiones causarum criminalium Mercedem, & pauperum, vel alias miserabilium personarum, ac alias quascunque causas fidei, aut alias Gubernatoribus, & ejus officio per quoscunque Rom. Pont. prædecess. nostros tam contra Cives Romanos, quam alios quoscunque quomodolibet concessas in omnibus, & per omnia perinde, ac si dictus præinsertus Motus proprius minime signatus, nec à nobis emanatus fuisset, minime præjudicaret, nec præjudicatum esse intelligatur. Et sic per quoscunque, &c. Sublata, &c. Irritum quoque, &c. solamque præsentis Motus proprii nostri Signaturam in iudicio, & extra sufficere, ac fidei facere regula contraria non obstante similiter decernimus, & declaramus.

§. 2. Præinserto Motu proprio; ceterisque contrariis non obstantibus quibuscunque, privilegiorum, & facultatum eidem, ac pro tempore existentis Gubernatori, & ejus officio concess. tenoribus, &c. pro plene, & sufficienter expressis habentes, & quæ & quas per præsentis innovamus.

Placet Motu proprio. I.

Quibuscumque non obstantibus.

Papæ subsc. r. p.

XXXV.

Extensio constitutionis Pauli III. circa causas civiles interesse Fisci Cam. Apost. concernentes; in eadem Camera cognoscendas:

Hanc Bullam Pauli III. habet supra in Tomo I. Non sine. Et consonas, hujus Pontificis altera Bulla 55. Romanus. Et ante eos, hoc idem statuerat Urb. VI. sup. in ejus const. 1. Apostolica.

Edita An. D. 1561.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Cum, sicut accepimus, licet Rom. Pont. prædecess. nostri, pro causis civilibus Fiscum nostrum tangen. proprium tribunal Camerarum, ac Præsidentium Cam. Apost. maximis rationibus, & non modico ejusd. Camere dispendio, ut causæ prælatæ per præfatos pro tempore Præsidentes in Cam. Apost. ubi & Procurator Fisci nostri Apost. intervenit, dis-

cutiantur, disputentur, & notentur, utque ipse Procurator Fisci nostri non cogatur pro causis Fiscum, ut præfatur, tangen. cum non modica ejus ab occupationibus sui Officii distractione, & non sine etiam indignitate Officii, quod loco præfati Caesaris successit, & illius privilegio in dictis causis utitur, saltem ratione interventus sui in Camera, dum ipsæ causæ ibi discutuntur, & notantur, & fel. rec. Paul. III. prædec. noster, tempore suo, ista ratione per præinsertum ejus Motum proprium dictis causis Fiscum tangentes extra Cameram coram aliis Judicibus, & tribunalibus Urbis inter Fiscum, & privatum commissas, vel aliter captas, sive in petitorio, sive in possessorio, ac quibuscunque statu & terminis, etiam si instructæ fuerint, ad se advocaverit, & eidem Camerario, & Præsidentibus, ac in proprio tribunali commiserit, necnon etiam in futurum committendas, vel alias incipiendas illis similiter, absque alia pro tempore Rom. Pont. signatura, vel mandato, propria eorum auctoritate ad se advocandi & reassumendi, liberam facultatem concessit.

§. 2. Cumque (sicut accepimus) non desint, qui post reassumptionem in Cam. Apost. ut præfatur, facta contra Fiscum, in signaturis adhuc ad alios Judices trahere conantur diversis pretextibus, ac præcipue quando pro tempore Procuratores Fiscal. coram aliis Judicibus, aliquando per incursionem, vel multiplicitatem negotiorum, proprii in hoc privilegio fori non memores, agere vel respondere, vel alias in Judices non suos consentire ceperunt, ac etiam quando in processu causarum inter privatos, interesse Fisci detegitur principaliter, vel secundarily.

§. 3. Nos attendentes quod privilegium fisci Fisci concessum, concernit publicum, & quod ista ratione idem Paulus prædecessor causas inter Fiscum, & privatum etiam alibi instructas, per præinsertum motum proprium advocavit, & quod quodcumque etiam in causis quæ inter privatos aguntur, detegitur Fisci interesse, sive principaliter, sive secundarily, idem Fiscus debet gaudere sui fori privilegio, & alios trahere, & non trahi, Motu simili, ex certa scientia habitationes, & difficultates hujusmodi submovere, ac etiam Fisci nostro, & illius pro tempore Procuratoris incommoditati, ac indignitati occurrere cupientes, & debentes Motu simili, ac ex certa scientia præinsertum Motum proprium, tam quoad jam alibi, etiam in Rotâ, & Motu proprio commissas, & alias captasque in posterum committendas, vel alias incipientes causas; innovamus. Declarantes, illum extendi & quatenus opus sit, extendentes; etiam ad causas, in quibus Procurator Fisci; agendo vel defendendo, coram aliis Judicibus; & tribunalibus comparitendo, vel alias consensisset, & illorum jurisdictionem prorogasset, ac etiam ubi interesse Fisci, sive principaliter, sive secundarily in causis jam inter privatos captis, detegeretur, dummodo sit interesse civile; & dummodo causæ hujusmodi, etiam quoad in illis vertatur interesse Fisci, non sint per commissiones manu nostra propria, scientes de interesse Fisci aliis Judicibus, & tribunalibus; cum speciali, & expressa præsentis Motus proprii derogacione, commissas non fuerint, quas nolumus præsentibus esse comprehensas, sed semper exceptas.

§. 4. Dantes, salvis præmissis, eidem Camerario, & Præsidentibus plenariam, & liberam facultatem, & auctoritatem, prædictis, & aliis quibuscunque inhibendum fuit in Rom. Curia, & extra cam, & sub censuris, & poenis, etiam quoad causas similes in futurum extra Cameram committendas; propria eorum auctoritate, sine alio nostro mandato, nec signatura, inhibendi, & in causis hujusmodi, non obstantibus quibuscunque signaturis, & inhibitionibus, hætenus factis, & in futurum faciendis nisi commissas in futurum præsentandæ; manu nostra cum præsentium de verbo ad verbum insertionem, & illarum derogacionem signatæ fuerint, procedendi, citandi, declarandi, aggravandi, reaggravandi; interdichum ponendi, auxiliumque brachii secularis invocandi ceteraque alia faciendi, dicendi, gerendi, & exequendi quæ in præmissis, & circa

Apostol. co-
gnoſci man-
davit, ut in
ejus consil.
tus in rubr.

Multis tamen
præceden-
tibus const.
Pauli non
procedere
quando ad
cur in juri-
sditionem
utentis ju-
dis con-
ceditur, vel
e. inter-
est fisci
non de-
gere, in
caus inter-
venien-
tibus.
Hic tamen
non ex-
cedit
conflicto-
nem eorum
ad illos ca-
sus.

Camerali-
busque dat
coꝛꝛoꝛio-
nem om-
nium cau-
ſarum a Pa-
pæ alibi
non com-
missarum.

Clausula de-
rogatoria.Sola signa-
tura sufficit.Pape sub
scrip.
Dat. P. A. 2.
die 26. Julii.

XXXVI.

Edita An. D.
1561.

Exordium.

Causa bu-
jus Coustit.Facultas In-
quisitorum
de qua in
rubr.Derogatio
contrario-
rum.

ea necessaria, seu quomodolibet opportuna fuerint.

§.5. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac Cam. Apost. clausulis, statutis & consuetudinibus, ac reformationibus, etiam juramento, &c. roboratis, privilegiis quoque indultis, & litteris Apostolicis, quibus (illorum tenores causas, & effectus pro expressis, & insertis habent, & expressim, ac de verbo ad verbum inferri posse decernent.) latissime derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque, cum clausulis opportunis, & consuetis.

§.6. Volentes præsentium solam signaturam sufficere, & ubique tam in iudicio, quam extra fidem facere, absque alia litterarum expeditione, seu quod litteræ in forma brevis ad perpetuam rei memoriam, cum majori, vera, & ampliori specificatione omnium, & singulorum præmissorum, & circa ea necessario, latissime exten. adeo quod contraria quæcumque penitus, & omnino tollantur, & non obstant.

Placet Motu proprio. I.

Die 26. Julii 1561.

Præsentetur B. Amerin. Regens. Andreas Panizza, Mag. Curs. præsentatus per Julium Parinum Curs.

Inquisitorum hæreticæ pravitatis facultas, eligendi, & creandi in Notarios quoscumque etiam Clericos sæculares, & regulares, in causis Inquisitionis.

Tu scias quod Alexand. IV. sup. in ejus constit. 22. Ne commissa. fol. 120. hoc idem concessit, quoad Clericos, qui in sæculo Notariatus officium habuerant.

PIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

Pastoralis officii cura meritis licet imparibus nobis ex alto commissa, nos assidue incitat, & inducit, ut vigilas sollicitudinis nostræ oculos diligenter circumflectamus, ad eaque potissimum nostræ provisionis remedia adhibeamus, per quæ sancta, & Catholica Fides, ubique prout debet conservetur, & augeatur, improbeque Hæretici illius impugnatores, quoad fieri potest debite compescantur, & comprimantur.

§.1. Sane pro parte dilectorum filiorum Inquisitorum, & Commisariarum hæreticæ pravitatis in diversis Regnis, Provinciis, Civitatibus, Insulis & aliis Christiani Orbis partibus deputatorum, nobis nuper exposuit fuit, quod ipsi in causis sanctæ fidei adversus eosdem Hæreticos prosequendis, personis probatis, & idoneis, quæ officio Notarii in eis fungantur plurimum indigere nescuntur, unde officio ipsius Inquisitoris propter ipsorum Notariatus penuriam, tum quia perique officium hujusmodi tamquam odiosum exercere reculant, ne illud suscipiendo quemquam offendere videantur, magnum incommodum, & detrimentum generatur.

§.2. Nos igitur nostræ vigilantie curam adhibere, in præmissis opportune providere volentes, omnibus, & singulis hæreticæ pravitatis Inquisitoribus, & Commisariis, in quibusvis Regnis, & Dominis, Provinciis, Civitatibus, Insulis etiam Græciæ, ceterisque Terris, & locis in quibus Christiana Religio colitur, constitutis, & quomodolibet pro tempore deputatis, quod quoties eis expedire videbitur, unum vel plures, etiam Clericos sæculares, vel quorumvis Ordinum Regulares, qui sibi sufficientes, & idonei visi fuerint, in quibuscumque causis sanctæ Fidei, & Inquisitionis hujusmodi in Notarios eligere, assumere, & creare, eosque ad officium Notariatus causarum prædictarum deputare, ipsique sic electi, & deputati, acta quæcumque, & processus causarum ipsarum diligenter, & fideliter describere, & annotare, ceteraque omnia ad id quomodolibet necessaria, & opportuna, facere, gerere, & exercere, libere, & licite possint, & valeant, plenam, & omnimodam, auctoritate Apostolica, tenore præsentium facultatem, & potestatem concedimus, & impartimur.

§.3. Non obstantibus quibusvis constitutionibus, & ordinationibus. Apostolicis, necnon quarumvis Civitatum,

& Terrarum, etiâ juramento, & confirmatione Apost. vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus privilegiis quoque indultis, & litteris Apost. illis, & quibusvis Notariarum Collegiis, etiam per Sedem Apost. quomodolibet concessis, quibus omnibus eorum tenores præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§.4. Volumus autem, & eadem auctoritate Apost. decernimus, quod quoniam difficile admodum esset præsentibus nostras litteras ad singula quæque loca ubi opus foret deferri, earumdem præsentium transumptis manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo Officii Inquisit. Almæ Urbis nostræ munitis, eadem prorsus fides, in iudicio, & extra adhibeatur, quæ ipsis originalibus adhiberetur si forent exhibitæ, vel ostensæ.

Datum Romæ apud sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo sexagesimo primo, sexto Kalend. Septembris, Pontificatus nostri Anno secundo.

Approbatio Confraternitatis, & Hospitalis sub invocatione B. Mariæ de Pietate nuper in Urbe instituti, ad egenos dementes charitative recipiendos, & curandos. Cum facultate alias ejusmodi Confraternitates extra Urbem, cum Indulgentiarum participatione erigendi.

Formam in aliis Confraternitatibus erigendis, vel aggregandis, tradidit Clem. VII. in constit. 115. Quæcumque. Quo verò ad Indulgentias, attende reformationem, nunc edendam à Paulo V. vide in Tomo III.

PIUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

Illius qui pro Domini saluatione gregis, in ara crucis, in precium immolari non abhorruit, qui que inter alia sibi beneplacita, opera charitatis exercere præcepit, vices licet immeriti gerentes in terris, curis angimur assidue, & continua meditatione pulsamur circa quæcumque pia opera, & Christi fidelium devotione ordinata, ut firma perpetuò, & illibata perflant, omni studio intendere, & ut ad ipsa Christi fidelium vota facilius concurrant, & fideles ipsos, quibusdam spiritualibus, & allectivis muneribus libenter prosequimur, ac eorum pia suffragia donis cœlestibus confovemus, ut exinde reddant divinæ gratiæ aptiores, & in eis charitatis devotio in dies peramplius augeatur.

§.1. Sane pro parte dilectorum filiorum Confratrum Confraternitatis Christi fidelium, sub nomine pauperum advenarum instituta petito continebat, quod aliis nonnulli Christi fideles in Alma Urbe devotes Dei spiritu (qui ubi vult spirat) ducti, ac zelo pietatis accensi, memoresque illius Prophetæ dicentis: Egenos, & vagos induc in domum tuam, & carnem tuam ne despexeris. Quodque hospitalitas Apostolicis doctrinis maxime commendabatur, pariterque considerantes, multos pauperes, pruinæ, & frigoribus expositos per cryptas, & ruinas dictæ Urbis jacere, & interdum maxima, & extrema frigoris calamitate, & fame perire, ac videntes etiam quosdam alios pauperes, mentis inopes, Christianorum omnium maxima miseratione dignos, qui rationis orbi iudicio, nudi per dictam Urbem ambulabant, universis ludibrio, & plagis, aliisque vitæ calamitatibus, animarumque salutis periculis expositos esse, & nulla receptacula in dicta Urbe existere, ac cupientes, hos & illos ab eorum miseris eximere, unam domum sitam in regione Columnæ de dicta Urbe eorum industria quæsitam, & suis sumptibus extructam, & aptatam, primò pauperibus advenis hospitantibus deputaverint,

Fides tran-
sumptorum.Dat. P. A. 2.
die 27. Aug.

XXXVII.

Edita An. D.
1561.

Exordium.

Instituta fuit
in Urbe
Confraternitas
B. Mariæ de Pie-
tate, ad egenos,
mentis inopes, edu-
candos atque curan-
dos, &c.

lectique & supplicetibus ac rebus aliis conquisitis ad vite usum necessarios munerum, & inibi pauperes advenas benignè recipi, eorumque pedes lavari, ac diebus aliquot juxta cusumque indigentiam cibari, pariterque fidei Christianæ rudimenta per Capellanum eorum Ministrum, ignorantes, ac simplices docere, & ad peccatorum suorum confessionem, & sacram Eucharistiam sumendam hortari curaverint, prout etiam ad præsens curant. Quodque in eadem domo unum Oratorium fuit invocatione B. Mariæ de Pietate, Apostolica auctoritate interveniente extruxerunt, & ornarunt, ubi sacra Eucharistia in sacario decenter servatur, & quotidie Missa celebratur, locisque luminariis semper accensis illustratur, ac pro manutenenda inibi hospitalitate, unam Confraternitatem Christi fidelium Pauperum Advenarum nuncupatam, dicta auctoritate crexerunt & instituerunt ac in dicto Oratorio in prima cujuslibet mensis die Dominica dictæ Confraternitatis Confratres, Christi Corporis viatico reficiuntur, nec his pietatis operibus contenti, sed pia piis operibus cumulant, ipsos pauperes, mentis inopes, per dictam Urbem, ut præferunt, vagantes ad eandem domum deduxerunt, & ad illorum infaniam curandam operam Medicorum habere cœperunt, animis gerentibus supra dictam hospitalitatem advenarum proficere, & in sanandos, curandosque demeritis prædictis, eorum facultates, junctis aliorum Christi fidelium elemosynis se extendere posse, ac quod pro dictæ Confraternitatis salubri directione, & augmento nonnulla statuta, & ordinationes ediderunt, necnon dilectum filium nostrum Bartholomæum titulo S. Crucis in Hierusalem, presbyterum Cardinalem de la Cueva nuncupatum, dictæ Confraternitatis Protectorem delegerunt, prout in litteris Apostolicis desuper confectis, ac per ipsos Confratres imperatris, ac eidem statuta, & ordinationibus, ac instrumentis publicis, sive aliis scripturis desuper forsan confectis, plenius dicitur contineri.

§. 2. Quare pro parte eorumdem Confratrum nobis fuit humiliter supplicatum, ut præmissis pro eorum subsistentia firmiori, robur Apostolicæ confirmationis adjicere, ac alias in prædictis opportune providere de benignitate Apostolica dignaremur.

§. 3. Nos igitur, qui pietatis, & charitatis opera ubique exerceri, sinceris exoptamus affectibus, eorumdem Confratrum pium, & laudabile opus plurimum in Domino collaudantes, necnon singularem litterarum, ac instrumentorum, seu scripturarum præfatarum tenores præsentibus pro sufficienter expressis habentes, hujusmodi supplicationibus inclinati, dictæ Confraternitatis erectionem, & institutionem, necnon prædictam, ac omnia, & singula alia per Guardianos, & Administratores dictæ Domus, & prædictos Confratres circa præmissa edita, statuta, & ordinationes, prout illa concernunt, omnia & singula, in dictis instrumentis, sive scripturis contenta (licita tamen, & honesta, ac sacris Canonibus non contraria) Apostolica auctoritate, tenore præsentium approbamus, & confirmamus, ac omnes, & singulos juris, & facti defectus si qui forsan intervenerint in eisdem supplementis, illisque omnibus perpetuæ firmitatis robur adjicimus.

§. 4. Et nihilominus quatenus opus sit, Confraternitatem ipsam pauperum advenarum, quæ etiam curandorum demeritum curam gerat, eisdem modo, & forma, quibus per dictos Christi fideles erecta, & instituta existit, auctoritate & tenore prædictis, de novo erigimus, & instituimus. Ac eidem Guardianis, & Administratores, ac Confratribus quascumque personas illis benevolas, & gratas, ac acceptas, tam Ecclesiasticas, quam seculares, & etiam Confraternitatem ingredi volentes, cuiusvis licentia desuper minime requiritur, in eorum Confratres, & Confraternitatis gremium recipiendi, & facultatem, eisdem auctoritate, & tenore concedimus. Eisque quod cum ejusdem Bartholomæi Card. & deinceps pro tempore existentis Protectoris sui auctoritate, seu consensu, alia quæcumque statuta, & ordinationes pro ejusdem Confraternitatis felici regimine, ad piorum

operum hujusmodi exercitium, & aliis circa præmissa, prout eis videbitur edere, condere, & restaurare libere, & licite possint, indulgemus, ac per eos Guardianos, & Administratores, & Confratres observari debere volumus, & decernimus.

§. 5. Et insuper eisdem Confratribus, quamdiu infirmi fuerint, quod liceat eis Missam in domibus suis celebrari facere.

§. 6. Necnon elemosynas, & oblationes quascumque, ac etiam piorum Christi fidelium, & S. R. E. Card. & aliorum Prælatorum, & Officialium, aliarumque personarum, tam Ecclesiasticarum, quam secularium, tam hæcenus, quam in futurum, ultimis voluntatibus, vel etiam inter vivos donationes, vel largitiones eidem Confraternitati relicta, donata, legata, hæreditates, & bona quæcumque recipere, & de illis, & eorum fructibus in pios usus prout eis videbitur dispendere, & alia omnia recipere, obtinere, & facere, ac ad illa admitti posse, quæ Urbis Confraternitates à Sede Apostolica approbare possunt, & valent, citra tamen illarum præjudicium.

§. 7. Ac universis utriusque sexus Christi fidelibus elemosynas, largitiones, oblationes, donationes, & legata hujusmodi facientibus, ut easdem Indulgentias, & peccatorum remissiones consequantur, quas consequuntur, qui Basilicis Principis Apostolorum, & S. Joannis Lateranensis ac illius, & S. Spiritus in Saxia de Urbe Hospitalibus, bona quæcumque porrigunt, donant, aut relicta, & legata faciunt.

§. 8. Præterea eisdem Confratribus ut totam Confraternitatem ipsam, & Oratorium ac eorum Hospitalia, ad aliam domum, Ecclesiam, sive locum ipsius Urbis eis benevolam transferre, ac inibi unum Oratorium, sive Capellam, aut Sacellum in quas, vel quo Sacratissimum Corporis Christi Sacramentum reconditum esse debeat, & ad ejus Altare Capellani ad id per eosdem Guardianos, & Administratores, ac eorum nutum eligendi & amovendi prout hæcenus habuerunt, per quem Missæ, & alia Divina officia celebrari, ac ipsius celebranda & aliis quibuscvis Christi fidelibus Eucharistia, & poenitentia Sacramenta ministrari facere possint, habere, & retinere, ac conservari facere.

§. 9. Et ipsi Guardiani, & Administratores, ac Confratres, vestes, pectinias, aurum, argentum, & alia bona quæcumque deservierint, & aliorum pauperum decedentium ab intestato, in dicto extructo, aut in posterum extruendo per dictos Confratres Hospitali percipere, & in usum, & utilitatem hujusmodi Hospitalis convertere.

§. 10. Dictisque Confratribus, & quibuscvis aliis Christi fidelibus, qui in dicto Oratorio, sive Capella, prima cujusque mensis in die Dominicæ sacram Eucharistiam sumperint, & quinquies Orationem Dominicam, & Salutationem Angelicam in memoriam quinque vulnerum Jesu Christi Domini nostri dixerint, precatique fuerint omnipotentem Deum pro pace, unitate, tranquillitate, ac felici statu Sanctæ Matris Ecclesiæ, totiusque Populi Christiani, qualibet vice, plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam, & remissionem.

§. 11. Necnon dictis Confratribus facultatem, ut Confessorem, sive Confessores, qui eos in mortis articulo, ab omni sententia excommunicationis, & ab omnibus eorum peccatis, à culpa, & pena, plenarie absolvant eligere perpetuo futuris temporibus.

§. 12. Necnon eidem Guardianis, & Administratores pro tempore existentibus ut quascumque Confraternitates extra Urbem, sub hujusmodi vocabulo instituere, & pro tempore institutas, omnibus, & singulis prædictis, & aliis privilegiis, & indultis deinceps concedendis, sub conditionibus, & formis eis bene visis decorare, illisque eis, in toto, vel in parte communicare libere, & licite valeant, similiter concedimus.

§. 13. Ac Indulgentias hujusmodi, & præsentis litteras, sub quibuscumque revocationibus, suspensionibus, derogationibus, vel limitationibus, quarum-

Confratri-
bulque Mi-
sam domibus
propriis ce-
lebrari fa-
ciendi.

Tu vide
Conc. Trid.
sess. 22. c. 16.
post Cano-
nes.

Elemosy-
nas & obla-
tiones, ac
legata recipi-
endi.

Indulgenti-
as porten-
tium elemo-
synam.

Tu vide re-
vocationem
in cons. 30.
Fu V. & fi.

Facultas
transfere-
ndi Confrater-
nitatem, &
Hospitalia ad
alium lo-
cum, & Sa-
cramentum ad
id ministran-
di.

Bona decedentium sine
testamento
in dicto Hospi-
tali ad il-
lus spectant.

Indulgenti-
as pro prima
cujusque
mensis Do-
minicæ.

Facultas eli-
gendi Con-
fessorem, qui
Confratres
absolvat, &c.

Ad hoc vide
reformationem
Clem.
VIII. cit. in
rubr.

Facultas eri-
gendi, vel
aggregandi
alias Confrater-
nitates, cum partici-
patione in indulgentia-
rum.

Et nunc à
Pont. confir-
matio postu-
latur.

Qui Pont.
dictam initi-
tutionem, &
statuta Con-
fraternitatis
approbat.

Iteratoque
eam erigit, &
eidem Con-
fraternitati
dat facultatem
statuta condi-
cendi.

In hoc habemus formam traditam à Clem. VIII. cit. in rubr. Clausula præservativa.

Clausula derogatoria.

D. P. Ann. 2. die 17. Sept.

XXXVIII.

Edita An. D.

Causæ concessionis huius privilegii.

Privilegium de quo in rubr.

cumque similibus, vel dissimilibus gratiarum, & Indulgentiarum per nos, & Sedem Apostolicam, etiam in favorem Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe huiusmodi, & expeditionum contra Infideles, & Cruciatæ Sanctæ, vel alias etiam ad Imperatoris, Regum, Reginarum, & aliorum Principum instantiam, quomodolibet per tempore facti nullatenus comprehensum sed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum statum restitutas, & de novo concessas fore; ipsisque Confratribus & aliis prædictis suffrag. debere decernimus.

§. 14. Non obstantibus quibuscumque Apostolicis, ac in Provincialibus, & Synodalibus Conciliis editis generalibus, vel specialibus constitutionibus, & ordinationibus, nec non statutis, & privilegiis, indultis, & literis Apostolicis sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque clausulis, & decretis concessis, confirmatis, & innovatis. Quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, ac illis eorumque tenoribus specialis, specifica, individua, & expressa, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis alias in suo robore permanens, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Nulli ergo, &c. Si quis, &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1561. Idus Septembris. Pontificatus nostri Anno secundo.

Quod Instrumenta pro interesse Hospitalis S. Spiritus in Saxia de Urbe rogata, per illius pro tempore Notarios, & Secretarios, in Cancellaria ejusdem Hospitalis custodiri, & per alios Notarios, & Secretarios successores gratis expleri, & in publicam formam redigi possint, illisque plena fides adhibeatur.

Omnia quæ spectant ad istud Hospitalis, videnda sunt sup. in Tomo I. in const. 7. Innoc. III. Inter fol. 50. & in const. 22. Six. IV. Religionis in d. Tomo I.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio &c.

DUM sicut accepimus, pro tempore existens Præceptor Hospitalis nostri S. Spiritus in Saxia de Urbe, Ordinis S. Augustini, soleat in Hospitali suis sumptibus, & expensis tenere unum Notarium, & quandoque etiam unum Secretarium, qui de omnibus instrumentis interesse ejusdem Hospitalis concernentibus, rogantur, & sæpius contingat, ut ipsi Notario, & Secretario à dicto Hospitali recedentibus, & officium Notariatus, seu Secretariatus huiusmodi in dicto Hospitali exercere desinentibus, aut decedentibus eorum scripturæ per eos, seu illorum hæredes ex eodem Hospitali aliò transportentur, & quandoque periant, seu dissipentur, vel ad Notarium, qui notas, vel imbreviaturas instrumentorum interesse prædicti Hospitalis concernentium absque premio explere, & in publicam formam redigere recusant, manus devenciant, in non modicum dicti Hospitalis, & illius pauperum detrimentum.

§. 1. Nos præmissis occurrere, & indemnitati Hospitalis, & pauperum prædictorum, paterno affectu consulere volentes, Motu simili Apostolica auctoritate, per præfentes statuimus, & ordinamus, quod de cetero perpetuis futuris temporibus Notarius, & Secretarius dicti Hospitalis ab eo recedentes, & officium Notariatus, & Secretariatus huiusmodi exercere desinentes, aut ipsorum Notarii, & Secretarii si decedant hæredes, imbreviaturas, seu notas

instrumentorum per eos rogatorum interesse prædicti Hospitalis quomodolibet concernentium aliò transportare nequeant sed eas in Cancellaria dicti Hospitalis ad hoc ut illi succedentes Notarius, & Secretarius prædicti, illas gratis, & sine premio explere, & in publicam formam redigere possint, dimittere teneantur. Et pro tempore existens Præceptor dicti Hospitalis, eos ad illas, ut præfetur dimitendas & propterea auctoritate cogere, & compellere valeat. Quodque pro tempore existens Notarius, & Secretarius prædicti Hospitalis, vigore præsentium, & absque alia desuper sibi concedendi ab aliquo licentia, & facultate, imbreviaturas, seu notas instrumentorum per anteriores Notarios, & Secretarios dicti Hospitalis rogato interesse ejusdem Hospitalis quolibet concernente explere, & in publicam atque autenticam formam redigere possint, illisque sic expletis, & in publicam atque autenticam formam redactis, ea prorsus fides adhibeatur, quæ adhiberetur, si per alium Notarium præcedentem licentia, & facultate sibi juxta statutorum, &c. & reformationum Almar Urbis, & Collegii Scriptorum Archivii Romanæ Curie, & aliarum servatis servandis concessæ, expletæ, & in publicam formam redactæ fuissent.

§. 2. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis prædictis, & quibuscumque statutis, &c. & reformationibus etiam juramento, &c. roboratis; privilegiis quoque indultis, & literis Apostolicis, Dilectis filiis Populo Romano, & prædictis Collegio, & quibuscumque aliis, sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis etiam motu simili, aut aliis quomodolibet concessis, &c. Quibus omnibus, etiam si de illis, &c. illorum tenores, &c. hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, & sufficienter derogatum esse decernimus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 3. Præsentium etiam, absque eo quod resistatur, aut nisi data apponatur solam signaturam sufficere, & ubique in iudicio, & extra regula contraria non obstante, fidem facere decernimus, &c.

Fiat Motu proprio I.

Quod Birretum Viride deferant etiam coram Iudicibus Urbis, & Carcerum Visitatoribus percentes alternativas, vel beneficium cap. Pervenit, & cap. Odoardus.

Hæc beneficia, quibus danda, & deneganda sint, vide supra in Tomo I. in const. 16. Clem. VIII. Cum ex multorum. Ubi etiam habes, quantum duret instantia istarum causarum.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio &c.

CUpientes Mercatoribus, & aliis personis tam Almar Urbis nostræ Civibus, quam forensibus in ipsa Urbe cum quibuscumque personis contrahendi omnem possibilem securitatem concedere, & omnem viam, ac etiam omnes dilationes, & per quas Mercatorum, & aliarum personarum debitores à debitorum solutione subterfugere, seu se quoquo modo subtrahere, & creditores eorum creditis defraudare, aut supplantare possent, de medio tollere, ac remedium opportunum præmissis ne fiant adhibere, & ut debitores ipsi à præmissis, si non Dei omnipotentis, saltem humanæ ignominie timore abstinere, & sic eorumdem Mercatorum, & personarum finitari providere volentes.

§. 1. Et considerantes Motum proprium à fel. record. Paulo Papa IV. prædec. nostro, quod ex tunc de cetero alternativæ, significationes, & dilationes quæcumque, nisi juxta juris dispositionem, ac formam statutorum ipsius Urbis concedi nullatenus possent, & qui illas obtinuerint, & ex tunc in futurum obtinerent, semper Birretum Viride portare

Derogatio contrarium.

Sola signatura sufficit.

Papæ subscript.

XXXIX.

Edita An. D. 1561.

Causa const.

Paulus IV. statuit debitores obviennes alternativas, vel dilationes teneri deferre Birretum Viride.

Nic autem
lont, de-
clara-
res tene-
gestare di-
dum bire-
tum coram
Judicib, Ur-
bis ante-
quam inhi-
bitionem
obrineat,
& promit-
tere ipsum
de cetero
deserre.

Deputatio
executoris.

Derogatio
contrario-
rum.

Sola signa-
tura sufficit.

Papæ sub-
script.

Publ. P. A. 2.

die 27. Oct.

X L.

Edita An. D.
1561.

Causa cons.

tenerentur emanatum, circa ipsorum debitorum ma-
litiarum, seu malos homines non sufficere, cum ipsum
Birretum Viride, nisi postquam ad alternativam, vel
alias dilaciones admisi fuerint portare non teneantur,
& sic beneficio temporis in grave creditorum præju-
diciu, & iacturam gaudeant.

§. 2. Nos igitur Motu simili, &c. Per præsen-
tes perpetuo statuimus, & ordinamus, quod de ce-
tero quicumque debitores, seu in forma Cameræ,
aut alias quomodolibet obligati, quancumque al-
ternativam, significationem, vel aliam quancum-
que dilacionem etiam secundum cap. *Pervenis*, vel
Odoardus, seu inhibitionem aliquam à Curie cau-
satum Cameræ Apost. Auditor, seu ejus Locumten-
nente, aut Almæ Urbis Vicario, vel Gubernatore,
vel Senatore, seu alius ipsius Urbis Judicibus etiam
Commissariis, aut etiam Carcerum Urbis Visita-
toribus petere non possint, nisi se prius coram il-
lis dictum Birretum Viride gestando præsentaverint,
et ipsum Birretum Viride publice, & secreta sub
fugatione, per Urbem pro prima vice, & treme-
mum pro secunda, qua sine dicto Birreto reperti
fuerint, deferre, per se, vel suos legitimos procu-
ratores ipsis absentibus promiserint, & medio ju-
ramento affirmaverint, acaliter à prædictis, & ali-
is quibuscvis Judicibus etiam vigore specialis com-
missionis nostræ, aut successorum nostrorum manu
signate, vel signandæ obtentæ, & obtinendæ, al-
ternativæ, & significationes, aut dilaciones quæcum-
que etiam secundum juris formam nullæ fiant, & ipsis
debitoribus etiam si Clerici existant, nullatenus suf-
fragentur.

§. 3. Mandantes eidem Auditori Cam. ut hujus-
modi constitutionem, & ordinationem perpetuò, &
inviolabiliter etiam in quibuscumque litibus, & causis
hactenus motis observari faciat, & mandet, contra
omnes, & singulos præmissis in aliquo contravenien-
tes per censuras, & penas, ac etiam pecuniarias, & alia
remedia opportuna sibi visa etiam manu Regia pro-
cedendo.

§. 4. Præmissis ac quibuscumque constitutionibus,
& ordinationibus Apostolicis, ac ipsius Urbis Statu-
tis, & reformationibus, ceterisque contrariis non ob-
stantibus quibuscumque.

§. 5. Volumusque quod præsentium sola nostra si-
gnatura sufficiat, & ubique sident faciat in judicio &
extra, quancumque regula contraria non obstante.
Placet Motu proprio I.

Anno à Nativitate Domini 1561. indi. 4. die vero
27. mensis Octobr. Pontificatus Sanctiss. in Christo
Patris, & D. N. D. Pii Divina providentia Papæ
IV. Anno secundo retroscripta litteræ Apostolicæ af-
fixæ, & publicatæ fuerunt in valvis Principis Apo-
stolorum, de Urbe, Cancellariæ Apostol. ac in acie
Campi Floræ, ut moris est, per nos Bernardinum
Andrenium, & Jo. Gherardi Curs. Apost.
Julius Patinus Mag. Curs.

PIUS PAPA QUARTUS

Ad perpetuam rei memoriam.

Cum sicut non sine magna animi nostri molestia
accepimus, humani generis hoste instigante ita
Schismaticorum, & aliorum Hæreticorum numerus in
provincia, statu, & diœcesi civitatis nostræ Avenio-
nensis prævaluerit, & propter eorum, seu aliorum ip-
sorum potentiam, & malitiam, nullus contra eos da-
ponere, seu eorum crimina revelare, & accusare audeat,
quo fit ut ipsi schismatici, & hæretici remaneant, im-
puniti, in non modicam divinæ Majestatis offensam,
& grave personarum Catholicarum scandalum.

§. 1. Nos ne in futurum aliquis metu ipsorum hæ-
reticorum, & schismaticorum, eorum crimina revela-
re formident, alias in præmissis opportune providere
volentes, Motu proprio, & ex certa scientia, nostris,
Dilecto filio Fratri Bernardo moderno Inquisitori
Avenionensi, vel pro tempore existent, in dicta pro-
vincia hæreticæ pravitatis Inquisitori, ut personas,
quæ schismaticos, seu hæreticos hujusmodi revelave-
rint, seu contra eos deposuerint, & testificaverint pub-
licare, seu revelare minime teneantur. Et si ab eo-
dem Inquisit. aliqua ipsorum testium d. publicari con-
tingat, ita truncata, & secreta publicentur, ut cog-
nitio nominum, & cognominum ipsorum testium, ad
aliquam notitiam devenire non possit.

§. 2. Quodque ipse Inquisitor à quoquam syndi-
cari nequeat, & nemini, nisi nobis, aut pro tem-
pore existent Romano Pontifici, & Almæ Urbis no-
stræ supremis Inquisitoribus de processibus per eum
contra dictos hæreticos, & schismaticos formatis ra-
tionem reddere teneatur, auctoritate Apostolica te-
nere præsentium concedimus pariter, & indulge-
mus.

§. 3. Districtus inhibentes universis, & singulis
venerabilibus fratribus Archiepiscopis, Episcopis,
& aliis Prælati, eorumque in spiritualibus, & tempo-
ralibus Vicariis, seu Officialibus generalibus, &
dilectis filiis omnibus, & singulis Judicibus, & per-
sonis tam Ecclesiasticis, quam secularibus cujuscum-
que dignitatis, status, gradus, & ordinis, vel
conditionis existentibus, ne ipsum modernum, & pro
tempore existentem Inquisitorem ad nomen, &
cognominum dictorum testium revelationem, &
publicationem, seu de processibus per eundem mo-
dernum contra ipsos hæreticos, & schismaticos
formatis, vel ab eo, & aliis Inquisitoribus pro tem-
pore in futurum formandis rationis redditionem ar-
dare, nec super præmissis, seu eorum occasione
quovis prætextu molestare, perturbare, vel inquietare
audeant, vel præsumant. Irritum nihilominus,
& inane decernentes si secus super his à quoquam
quavis auctoritate, scienter, vel ignoranter contige-
rit attentari.

§. 4. Non obstantibus constitutionibus, & ordi-
nationibus Apostolicis, & in Provincialibus, ac Syn-
nodalibus Conciliis editis generalibus, vel speciali-
bus, statutisque & consuetudinibus, etiam juramen-
to, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate
alia roboratis, privilegiis quoque, indultis & litteris
Apostolicis in contrarium quomodolibet concessis,
confirmatis, & innovatis. Quibus omnibus etiam ti-
de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica,
& expressa mentio habenda foret, illorum tenores
præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illi-
aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat
ad effectum præsentium specialiter, & expressi-
lissimèque derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub aîmulo Piscato-
ris, die prima Novembris 1561: Pontificatus nostri
Anno secundo.

Fructus & emolumenta ad Capitulum, & mensam
Ecclesiarum Urbis communiter spectantia, & dis-
tributiones pro defunctorum anniversariis largi-
endi, applicantur distributionibus quotidianis
pro intercessantibus Divinis officiis.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Cum, sicut accepimus; in hac Alma Urbe no-
stra, quæ caput existit totius Orbis, & in qua
cœlestis altitudinis consilii Sedem Apostolicam nullis
defectionibus temporibus mirabiliter stabilivit; ite
in Ecclesiis collegiatis divinus cultus diminutus fue-
rit, ut exteris nationibus scandalum non modicum
generetur.

Inquisitor
dicta tes-
tium contra
Hæreticos
examinato-
rum publi-
care non te-
neatur.

Syndicari-
que neque-
ant, nisi à
Rom. Pont.
vel supremis
Inquisitorib.
Urbis.

Inhibitio
contra mo-
lestantes In-
quisitorem
sup. prædi-
ctis.

Derogatio
contrario-
rum.

D. P. An. i.
die 1. Nov.

X L. I.

Edita An. D.
1561.

Causa cons.

ANNO
1561.
Dispositio
de qua in
rubr.

ANNO
1561.

§. 1. Volentes igitur, quantum in nobis est, divino cultui consilare, & abusus huiusmodi tollere, decernimus, statuimus, & ordinamus, omnes & quoscunque fructus, redditus, proventus, iura, obventiones, & emolumenta quaecumque, in quibuscumque rebus consistant, quarumcumque Ecclesiarum, tam sacrosanctae Lateranensis Ecclesiae, beati Petri Apostolorum Principis, ac Gloriosissimae Virginis sanctae Mariae Majoris nuncupatae, quam aliarum quarumcumque Ecclesiarum, ad Capitulum, & mensam earundem communiter spectantes, & pertinentes applicare, assignari, & adscribi debere, prout tenore praesentium (sine tamen praepudio pensionum super dictis fructibus reservatarum) applicamus, adscribimus, & assignamus distributionibus quotidianis, distribuendas, & dividendas inter Canonicos, & alios Beneficiarios Divinis officiis intererentes dicarum Ecclesiarum, juxta Ecclesiae cuiuslibet ordinationem rationabilem iam factam, seu etiam faciendam per nos, vel dilectum filium nostrum Almae Urbis Vicarium generalem. Qui vero aliter de dictis fructibus, redditibus, proventibus, juribus, emolumentis quicquam receperint (exceptis illis quos infirmitas, seu iusta, & rationabilis causa, aut Ecclesiae utilitas excusant) rerum sic receptarum dominium non acquirant, nec faciant causas suas, immo ad omnium restitutionem teneantur. Idem quoque de distributionibus pro defunctorum anniversariis largiendis decernimus observandum.

Vicarius
Papae ex-
ecutor,

§. 2. Mandantes dilecto filio Jacobo Cardinali Sabello, nostro in dicta Urbe, eiusque districtu Vicario, quatenus ordinationem, statutum, decretum, applicationem, & assignationem huiusmodi, in quibuscumque Ecclesiis in dicta Urbe consistentibus, inviolabiliter per quoscumque quavis auctoritate, etiam Cardinalatus honore fungentes, per censuras Ecclesiasticas, & alias penas etiam pecuniarias, arbitrio imponendas, quacumque appellatione remota, manu regia observari faciat. Contradictores, &c. sublati, &c. Sique per quoscumque Iudices, &c. irritum quoque, &c.

Clausula
delegato-
riae.

§. 3. Non obstantibus praemissis, constitutionibus Apostolicis, & consuetudinibus, ac constitutionibus quarumlibet dicarum Ecclesiarum, confirmatione Apostolica, aut quavis alia firmitate roboratis, latissime extendendis, quibus omnibus, illorumque tenores pro sufficienter expressis habentur, specialiter, & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Papae sub-
scrip-
t. An. 2.
1561, Nov.

Placet Motu proprio. I.
Datum Romae apud S. Petrum duodecimo Kalend. Decembris, Anno secundo.

1. LII.

Proxenetae Ripae Almae Urbis, tenentur Nautis, & Mercatoribus Vini, de pretio vini eis mediantibus venditi, emptoribus illud non solventibus.

Alia eorumdem Mercatorum, & nautarum indulta, ac privilegium fore, indicavi hic supra in consuet.
25. Cupientes.

Edicta A. D.
1561.

PIUS EPISCOPUS.
Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memoriam.

Exordium.

DEcet Rom. Pontificem ex debito sui Pastoralis officii, ad ea diligenter prospicere, per quae in hac Alma Urbe, ad quam veluti communem omnium patriam, frequens est hominum concursus, vini, ac rerum aliarum humano victui necessariorum ubertas, cum ejusdem Urbis incolarum in copioso numero existentium commode, Nautarum quoque, & Mercatorum vina, & res huiusmodi ad Urbem ipsam adventum, plena securitate, nostrae provisionis ope, unicuique quod suum est tribuendo, non solum manuteneri, sed augeri, ac in ea ad publicam omnium utilitatem, per amplius conservari salubriter valeat.

§. 1. Cum itaque sicut diversi diversarum partium Nautae, & Mercatores querelenter nobis nuper exponi fecerunt; ipsi quos vini, ac res huiusmodi ad Ripam fluminis dictae Urbis deducere saepe contingit, neminem cognoscentes, & diutius in dicta Urbe, seu Ripa absque eorum gravi detrimento morari nequeantes, vina huiusmodi mediantibus Proxenetis, Sensalibus nuncupatis, cauponibus, hospitibus, tabernariis, ac aliis diversarum qualitatum personis, a quibus vini venditi pretii solutio, seu exactio nimium tarda, & difficilis existit venderi, & deinde pro huiusmodi pretio recuperando cauponem, hospitem, tabernarium, ac personas huiusmodi, ad iudicium evocare, ac proinde varias lites, & quamplures sumptus, & expensas subire, procuratores cum mensuris salaris in dicta Urbe constituisse, & relinquere cogantur, ac saepius etiam capones, hospites, tabernarios, ac personas huiusmodi dolose, & fraudulentè decoxisse, solum vestisse, foro cessasse, atque alias solvendo non esse inveniri. Quo fit ut negotiatio circa haec, magna cum eorum iactura multum impediatur, & retardetur, ac ipsi vina praedicta longe dimidio etiam carius vendere additringantur, in grave totius Urbis, ac illius, & praesentium pauperum incolarum evidens detrimentum. Et propterea ipsi, seu eorum major, & sanior pars apud nos, ut eis in praemissis de opportuno remedio providere velimus, vehementer instantes, si nostrae provisionis auxilio ab eisdem damnis, & incommodis liberati fuerint, ultro per eorum propriis manibus subscriptas syngraphas nobis, & Cam. Apostolicae perpetuis futuris temporibus, pro impensis etiam Ministrorum in praemissis subeundis, quatuor julios pro quolibet oloio vini ordinario, ultra omnes alias praestaciones, & solutiones ad haec usque tempora introductas, se soluturos offerant, & longe esse minorem suam hanc quatuor juliorum praestationem, quam tot, & tanta incommoda, quae in dies subire compelluntur, attestentur, ac sublati dictis incommodis, etiam multo viliori pretio vina sua vendere posse affirmant.

§. 2. Nos igitur eosdem Nautas, & Mercatores specialibus favoribus, & gratiis prosequi, accorum indemnitate, & publice utilitati, quantum in nobis est, providere volentes, ac omnia, & singula privilegia, & hypothecas, tam de jure, quam consuetudine eis quomodolibet concessa, & competentes, quorum tenores praesentibus haberi volumus pro expresse, harum serie approbantes, & innovantes, ac de novo concedentes, necnon per eos nobis factam oblationem praedictam acceptantes, ratamque & gratam habentes, ac simul laudabilem alias in his, ut plene novimus introductum, licet postmodum nonnullorum, vel incuria, vel fraudibus, & malitiis a quibusdam annis citra male observatum usum, per quem Proxenetae quorum opera vina vendita fuerant, post trinam requisitionem illorum emptoribus factam, ad totalem pretii solutionem eisdem venditoribus tenebantur, amplectentes, consideratis prius natura negotii, quae in celeri expeditione consistit, ac ipsorum Nautarum, & Mercatorum, ac advenarum, & aliarum personarum in eadem Urbe degentium, ac cum eis contrahentium ignorantia, publicaeque utilitatis conservatione, necnon dictae Urbis excellentia, quae pluribus privilegiis a diversis Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris decorata fuit, & deinde habita super his cum diversis probis viris horum omnium peritis, deliberatione matura, ex certa nostra scientia auctoritate Apostolica, tenore praesentium statuimus, & ordinamus, quod de cetero perpetuis futuris temporibus pro tempore existentes Proxenetae, qui quotidie in dicta Ripa versantur, quique cauponem, tabernarios, & hospites, ac alias personas huiusmodi in eadem Urbe degentes, quae per eorum manus vina ab eisdem Nautis, & Mercatoribus emunt, per continuam, seu frequentem, & circularem cum eis ratione exercitii, eorum officii, ac cum aliis personis habitam conversationem, ac transactionem

Nautae vendebant mediantibus Proxenetis eorum vina, cauponibus, & aliis quos non cognoscebant, & pro consecutione pretii litigare cogebantur.

Pontifex igitur Nautarum & Mercatorum vini securi, ac vini ubertati consulendo, decernit, ipsos Proxenetes teneri pro pretio vini venditi, eis mediantibus quando emproptere recitant, vel dilatio ultra 20. dies concessa non sit ab ipsis Mercatoribus.

cognoscunt, & cognoscere possunt, seu facile de eis eorumque facultatibus se informare, ac certos reddi valeant, quorumque fidem in nominibus, & venditionibus faciendis in hoc negotio huiusmodi vinorum venditores quodam modo sequi videntur, ad solutionem precii cuiuscumque quantitatis vini, eis mediantibus venditi, & venditoribus non soluti, in omnibus, & per omnia, ac si ipsis venditum fuisset teneantur, adeo ut facta emptoribus, per eorum venditores, tria requisitione judiciali, seu extrajudiciali, etiam unico contextu, & de eadem requisitione coram iudice competenti etiam fide facta, ipso facto, nullaque admissa excusatione, ad eorum solutionem omnibus iuris, & facti remediis statim, unica tantum citatione præcedente, etiam si opus fuerit per substationem, & venditionem officii Proxenetae, quod per tempore obtinebunt, quacumque appellatione remota compellantur, nisi venditores præfati emptionibus ipsis ad solvendum pretium vini venditi dilationem ultra viginti dies fecerint, atque concesserint. Quo casu Proxenetae huiusmodi nullatenus teneantur, nisi mercatores ipsi opera, & interventu ipsorum Proxenetarum, dilationem huiusmodi fecisse probaverint, quo probato, Proxenetae prædicti ad huiusmodi solutionem, ut præfertur, teneantur.

Proxenetae
que ita sol-
ventes agere
posse decia-
tationem
contra em-
tores vini,
prout si ipse
met vinum
eis vendidit.

Et pro ma-
iori cautela
Mercatorum
vini, ac Pro-
xenetarum,
præcipit
quoscumque
cauponas, &
tabernarios
cavere debe-
re de stando
iuri, &c. oc-
casione vini,
cum quibus-
cumque per-
sonis.

§. 3. Salva tamen remanente præsentis statuti, & ordinationis vigore Proxenetae, in casibus in quibus teneantur, contra dictos emptores actione, in omnibus, & per omnia, ac si vinum prædictum per eos emptoribus venditum extitisset, ipse cum eis contraxissent, etiam absque alia desuper per dictos venditores actionum, aut aliorum iurium cessione faciendi.

§. 4. Et pro majori Proxenetarum, ac Mercatorum, & Nautarum, ac aliorum prædictorum cautela, quod moderni cauponas, hospites, & tabernarii, ac officia cauponis, hospitis, & tabernarii ad præfens exercentes infra quindecim dies, alii vero qui in futurum illa exercere voluerint, ante eorum exercitum, coram dictæ Ripæ Camerario, in forma depositi pro centum scutis pro quolibet hospite, seu quolibet taberna, vel caupona, de stando iuri, & iudicatum solvendo coram dicto Camerario, omnibusque aliis iudicibus competentibus cum omnibus, & singulis personis quomodolibet interesse habentibus occasione cuiuscumque quantitatis vini, per eos à Nautis, seu Mercatoribus ripalibus empti idonee cavere, & cautiones huiusmodi in fine cuiuslibet anni renovare etiam teneantur, ac ad id per Camerarium prædictum, omnibus iuris, & facti remediis ipso facto cogi, & compelli possint, quibuscumque appellatione, & subterfugio remotis. Super quibus ipsi Ripæ Camerario eos toties quoties ulque ad quancumque summam pro præmissorum executione multandi, ac multati huiusmodi pro una Cameræ prædictæ, & pro alia illius medietatibus Officii Camerarii huiusmodi, & executori applicandi, eamque exigendi, ac tabernas, hospitium, & cauponas huiusmodi claudendi, omniaque alia & singula in eisdem præmissis, & circa ea quomodolibet necessaria, & opportuna, decernendi, mandandi, faciendi, & exequendi, penam, & liberam auctoritate, & tenore prædictis concedimus facultatem aliquam ipsam, & Camerarium, & Notarium inde rogatum in præmissis negligentes pro dictis centum scutis de eorum proprio teneri, ac ad illorum solutionem cogi, & compelli, & ita per quoscumque iudices, & commissarios, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac præfatos Cardinales sublati eis, & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, iudicari, & definiri debere decernimus, & declaramus.

§. 5. Et nihilominus ne dicta Camerá propterea damnum aliquod patiatur, sed ut præmissa omnium suum plenarium effectum liberis foris valeant, ac ex causa onerosa concessa sint, & esse censentur, pro Ministrorum in his in dicta Ripa, & alibi, ac aliis præmissis necessarios mercede, &

manutentione eosdem quatuor iulios pro quolibet dolio vini ordinario, quod ad dictam Ripam appellere coegerint, modernis, & pro tempore existentibus Dolianæ Ripæ huiusmodi Appaltatoribus, & Ministris dictæ Cameræ per prædictos venditores ultra omnes alias hucusque introductas præstationes prædictas, in primis, & ante omnia persolveri, & ab eis exigi debere volumus, & mandamus. Percipientes eisdem Appaltatoribus, & Ministris, ut à publicatione earumdem præsentium illos tunc cum aliis eisdem Cameræ iuribus à prædictis venditoribus exigant, ac retineant in utilitatem ipsius Cameræ convertendos, ac in eorum libris annotent.

§. 6. Necnon dilectis filiis nostro Guidonis Ascanio S. Mariæ in Via lata Diacono Cardinali de Sancta Flora nuncupato Camerario nostro, ac ipsius Cameræ Thesaurario, Præsidentibus, Clericis, & personis, ut easdem præfentes in libris Cameræ prædictæ registrarent, illasque ac omnia in eis contenta huiusmodi inviolabiliter observari faciant. In contrarium facientibus non obstantibus quibuscumque. Nulli ergo, &c.

Datum Romæ apud sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo sexagesimo primo, duodecimo Kalend. Decembris, Pontificatus nostri Anno secundo.

Anno à Nativitate Domini 1561. indictione 4. die 12. mensis Decembris. Pontificatus Sanctissimi in Christo Patris, & D. N. D. Pii Divina providentia Papæ IV. Anno secundo retroscripte litteræ Apostolicæ, omniaque & singula in eis contenta lecta, affixa, & publicata fuerunt in valvis Basilicæ Principis Apostolorum, & Ecclesiæ Lateranensis, de Urbe, & Cancellariæ Apostolicæ, ac in acie Campi Floræ, in distichis locis per aliquod spatium temporis dimissi, ut moris est, per nos Bernardinum Andreum, & Franciscum Sottocasa præfatos S. D. N. Papæ Cursum.

Bartholomæus Sottocasa Mag. Cursum.

Pœna malefactorum Communis Status Ecclesiastici, vel locorum subceptorum applicantur Reverendæ Cameræ Apostolicæ quatenus ex causa vere onerosa, aut piis, vel publicis operibus, non sint applicatæ. Et gubernatores locorum decem pro centenariis consequantur de eiusmodi pœnis acculatores autem quartam partem pœnarum bannimentalium.

Hæc omnia approbavit infra in hoc Tomo II. Sixti. V. in consil. 93. Ad Romanum, ubi etiam præfati iussit terminum ad docendum, & de præfatis applicationibus ex causa onerosa, &c.

PIUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memoriam.

DEEET Romanum Pontificem id maxime omni studio curare, & efficere, ut populi suæ sanctæque Sedis Apostolicæ ditioni subiecti, in pace, & tranquillitate vivant, ac ut quietis status perturbatores, quos virtutis amor à malo non retrahit, pœnæ saltem formidine coercentur, omnique eis casu, quoad scelera committenda procliviores reddi possent videantur, penitus adimatur.

§. 1. Sane cum experientia rerum magistra docente luce clarius cognoverimus, pro eo quod in omnibus vere civitatibus, terris, castris, & locis, nobis, & præfate Sedi immediate subiectis, tam ex illorum statuti, & consuetudinibus, quam etiam ex reorum decretis, & edictis, seu proclamatis, quæ pro tempore geri contingit, seu aliis ex variis privilegiis illis concessis, pœnæ pro delictis, & excessibus impositæ, in totum vel pro parte Communitatibus,

re exigi de-
bere iubet.

Registrari-
que in datæ
in Camera
Apostol.
contur.
istam.

Dat. P. An.
2. 20. No-
vemb.

Publicatio.

XLIII.

Edita An. D.
1561. 1564.
& 1564.

Exordium.

Pœna pro
delictis im-
positæ vigo-
re statu-
rum, vel
bannimen-
torum appli-
cata erant
Communi-
tatibus, &
propterea
delinquentes
tanquam
potentes eas
non solve-
bant, & in
dies majora
delicta com-
mittabantur.

civi-

Et gabellam
juliorum
quatuor pro
quolibet do-
lio vini solvi
& p. Mini-
stros Came-

civitatum, terrarum, & locorum huiusmodi applicatur, & de delinquentibus, utpote qui de ipsarum Communitatum corpore existunt, & in illis quamplures sibi necessitudine, & amicitia conjunctos habent minime exigantur, plura, & enormia delicta committi, & perpetrari, ac impunita, ut plurimum remanere, indeque ad illa, & pejora committenda, homines proniores, & faciliores reddantur, plerumque inimicitias oriri, ortaque ingravescere, & foveri.

Ideo hic
ponit. dictas
poenas (non
tamen im-
positas pro
damnis da-
tis in vineis
&c.) Cam.
Apost. ap-
plicat.

§. 2. Nos propterea, pro nostri Pastoralis officii debito, his quantum in nobis est occurrere, & ne sub spe impunitatis quispiam audacior ad delinquendum fiat, providere volentes, habita prius super hoc cum Venerabilibus fratribus nostris S. R. E. Cardinalibus matura deliberatione, ac de eorum unanimi consilio, hac in perpetuum valitura constitutione sancimus, ut in omnibus & singulis civitatibus, terris, & locis, ut præfertur, nobis & Sedi Apostolicæ subiectis, in quibus poenæ aliquæ pecuniariæ, & multæ, sive certæ expressæ summæ, sive bonorum, sive aliquis partis illorum confiscationis, pro quibusvis criminibus, à iure communi, vel municipali, sive etiam per decreta, edita, proclamata, aut bannimenta à locorum Rectoribus, & Provinciarum Præsidibus, seu Gubernatoribus, ac etiam de latere Legatis, & eorum Vicelegatis, ceterisque officialibus, & iustitiæ ministris, edita, & facta inflicta, ipsarum civitatum, terrarum, & locorum Communitatibus, ex statuto, vel consuetudine, etiam à nobis, & Sede Apostolica approbatis, & confirmatis, aut privilegio Apostolico, etiam ex titulo oneroso, vel reparatione murorum, fontium, pontium, & viarum, & etiam Ecclesiarum, seu piorum locorum, aut pro aliis rebus publicis, vel alijs quomodolibet concessis, infertum, vel in partem applicatæ existunt, (illis tantum quæ pro damnis in possessionibus, vineis, agris, silvis, & nemoribus illatis impositæ fuerint exceptis) non prædictis Communitatibus, sed Cameræ Apostolicæ applicatæ sint, & esse censentur, & per officiales, seu executores ad id ipsa Camera deputandos etiam quæ hæcenus earumdem Communitatum negligentia, seu potius nimia indulgentia exactæ non fuerunt, exigantur, ac exigi possint, & debeant.

Inhibetque
locorum
Rectoribus,
ut de cetero
tales poenæ
applicent ei-
dem Cam. &
applicatio-
nes aliter fa-
ctas annul-
lent.

§. 3. Inhibentes universis, & singulis Legatis, sub indignationis nostræ, ac Rectoribus, & alijs supra dictis, sub excommunicationis, seu suspensionis à divinis, alijsque arbitrii nostri poenis eo ipso incurrendis, ne de cetero perpetuis futuris temporibus in eorum decretis, editis, proclamationibus, seu bannimentis faciant, aut sententiis ferendis poenæ pecuniarias, & multas, aut bonorum in partem, vel in totum confiscationes huiusmodi alicui alteri præterquam Fisco nostro, & Cameræ Apostolicæ applicare quovis modo audeant, & ubi etiam per eos alicui alteri applicari contigerit, illas nihilominus eidem Cameræ applicatas fore, & censesi, ac per ejus officiales, & executores præfatos excipi. Sicque per quoscunque Judices, & Commissarios quavis auctoritate fungentes, etiam præfatos Cardinales, sublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, iudicari, & definiti, irritum quoque, & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit attentari decernimus.

Preclaratio
circa appli-
cationes fa-
ctas pijs lo-
cis, vel ex
causa onero-
sa.

§. 4. Ne autem his quibus poenæ pecuniariæ, seu multæ prædictæ forsitan, ex titulo vere oneroso, pecunia scilicet actualiter numerata applicatæ extiterunt, præjudicium fiat, Volumus, ut hi, qui illas, seu illarum partem sic ex titulo oneroso sibi applicatas, seu applicatam fuisse docuerint, postquam illæ per officiales Cameræ Apostolicæ exactæ fuerint, de eorum manibus (prævis tamen dictæ Cameræ mandatis) illas integre, seu pro parte prout eis applicatæ erant accipiant. In illarum verò exactione nullatenus se intromittant. Et idem in illis poenis, & multis, ac confiscationibus quæ applicatæ esse ostenduntur pro reparationibus murorum, pontium, &

viarum, & in primis Ecclesiarum, & piorum locorum, alijsque rebus, publicis videlicet, observari mandamus.

§. 5. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac provincialibus, & municipalibus quorumcumque locorum, statutis, quocumque, indultis, & litteris Apostolicis Communitatibus prædictis, & alijs quibuscumque etiam ex titulo oneroso concessis, confirmatis, & innovatis, quibus omnibus illorum tenores præsentibus pro sufficienter expressis habentes, quoad præmissa specialiter, & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Nulli ergo, &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1561. Non. Decemb. Pontificatus nostri Anno secundo.

Clausula
derogato-
ria.

Publ. D. A. 1.
die 4. Dec.

Ego Pius Catholicæ Ecclesiæ Episcopus.

Papa sub-
scriptio.

Si mei non fuerint dominati tunc immulatus ero.

Ego R. Card. de Carpo Episcopus Portuensis.
Ego F. Card. Pisanus Episcopus Tusculanus.
Ego Fed. Card. Cæsius Episcopus Prænestin.
Ego Jo. Card. Moronus Episcopus Sabinen.
Ego Christophorus Madruetus Trid. Episc. Albanen.
Ego Otho Card. Augustanus.
Ego B. della Cueva Card. Sanctæ Crucis.
Ego R. C. Sancti Angeli, Major Pœnitentiaris.
Ego Ful. Card. Perus.
Ego Jo. Michael Card. Saracenus.
Ego Jo. Card. Sancti Vitalis.
Ego Marcus Antonius Card. Amulius.
Ego Hieronymus Card. de Corrigio.
Ego B. Card. Navagerius.
Ego Alexan. Card. Farnesius Vicecan.
Ego Gui. Alf. Card. Camerarius.
Ego N. Card. de Sermoieria.
Ego Jul. Card. Urbinas.
Ego Hier. Card. Simoncellus.
Ego Jac. Card. Puteus.
Ego Jo. B. Cicada Card. S. Clementis.
Ego B. Card. Tranen.
Ego Jo. Card. Reumanus.
Ego Jo. Ant. Card. Capifuccus.
Ego F. M. G. Card. Alexandrinus.
Ego Clem. Card. Araceli.
Ego Jo. Card. Sabellus.
Ego Jo. Ant. Card. S. Georgii.
Ego Aloy. Card. Cornelius.
Ego B. Card. Salvianus.
Ego Ph. Card. Aburd.
Ego Petrus Franciscus Card. Ferrerius.
Ego Alph. Carafa Card. Neapolitanus.
Ego Vitellotius Card. Vitellius.
Ego Carolus Card. Borromæus.
Ego Mar. Siticus Card. ab Alta Emps.
Ego Franciscus Card. Gonzaga.
Ego Ind. de Avalos Card. de Aragona.
Ego Alph. Card. Gesualdus.
Ego Jo. Franciscus Card. de Gambara.

Cardia-
lum 1 ab-
scriptiones.

Anno à Nativitate Domini 1561. indictione 5. die vero 13. mensis Januar. Pontific. Sanctiss. in Christo Patris, D. N. D. Pii divina providentia Papa IV. anno 3. retroscripta littera affixa, & publicata fuerunt ad valvas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, per nos Franciscum Rogerium, & Honorium Montarguli prælibati S. D. N. Papa Cursores.

Anton. Clerici mag. Curf.

Sequitur extensio d. constitutionis.

Publicatio.

Edita An. D.
1562.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

AD Romanum spectat Pontificem sua solitudine indefessa diligenter providere, ut ea quæ ab eo sancita sunt, ita suæ declarationis adminiculo dilucidentur, quod nulla desuper dubitandi occasio, cuiquam relinquatur.

§. 1. Cum itaque nos nuper ex certis, tunc expressis causis, &c.

Omittitur quia ipsa bulla est præcedens.

§. 2. Et forsitan ab aliquibus prætendi posset castra, villas, & loca jurisdictioni civitatum, & terrarum status nostri Ecclesiastici subiecta, sub eisdem litteris minime comprehendi, ac litteras ipsas ad illa non extendi, & proinde penas, multas, ac alias bonorum confiscationes huiusmodi, per officiales, seu executores dictæ Cameræ, in castris, villis, & locis huiusmodi nullatenus exigi posse, ac Cameræ Apost. prædictas litteras esse applicatas.

§. 3. Nos ne hoc, vel alio quovis prætextu Camera ipsa circa penarum, ac multarum, & bonorum confiscationum huiusmodi exactionem defrauderetur, ejus indemnitati, illiusque officialium, & executorum huiusmodi tranquillitati in præmissis quantum in nobis est providere, omnemque desuper hæstendi materiam exinde submovere, ac mentem nostram circa hæc pandere volentes, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, harum serie decernimus, & declaramus, castra, villas, & loca jurisdictioni civitatum, oppidorum, & terrarum dicti status nostri Ecclesiastici quomodolibet subiecta, sub prædictis litteris omnino comprehendendi, ac comprehensa esse, & censi, ac litteras ipsas ad illa se extendere, & extendi debere. Necnon illarum vigore officiales, executores prædictos penas, & multas, ac alias bonorum confiscationes huiusmodi in eisdem civitatibus, terris, castris, villis, & locis, ac alias juxta earumdem litterarum continentiam, & tenorem exigere possint, ac exactiones huiusmodi licitas, ac juxta mentem nostram factas esse, & censi in omnibus & per omnia, perinde ac si in eisdem litteris specialis, & expressa de eisdem castris, villis, & locis, mentio facta fuisset.

§. 4. Et ita per quoscumque iudices, & commissarios, quavis auctoritate fungentes, ac ejusdem S. R. E. Cardinales, causarumque Palatii Apostolici Auditores, seu eorum Locatenentes, subflata eis, & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate & auctoritate, judicari & definiri debere, irritum quoque & inane, si secus fuerit his à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit attentari.

§. 5. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac omnibus & singulis aliis que in dictis litteris volumus non obstat.

Nulli ergo &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1562. septimo Idus Februarii, Pontificatus nostri Anno tertio.

Sequitur declaratio circa portionem penarum dandam Officialibus, & Accusatoribus.

PIUS PAPA QUARTUS,

Ad futuram rei memoriam.

Cupientes pro injuncta nobis administrationis officio, confusio, ac controversiis, quæ quotidie inter officiales status nostri Ecclesiastici, & Cameram nostram Apostolicam, seu pro ea Agentes super participatione penarum malefactorum statutarum, & bannimentalium exoriantur, at-

que excitantur, mature obviare, & opportune providere, Motu proprio, & ex certa scientia, ac matura deliberatione nostra, auctoritate Apostolica tenore præsentium statuimus, ordinamus, atque præcipimus, quod portio decem pro centenario dictarum penarum, tam bannimentalium, quam statutarum, eisdem officialibus, nunc, & pro tempore existentibus solummodo competat & competere debeat, ipsique officiales dicta portione, & non ultra contenti remaneant, neque aliquid aliud præter portionem huiusmodi capere, aut habere possint.

§. 1. Ita tamen quod ex poenis bannimentalibus proprie & particulariter, accusatori, quando is vere existat, quarta pars ipsarum penarum juxta solitum dari valeat.

§. 2. Necnon tam officiales prædicti eorum portionem huiusmodi, quam ipsi accusatores eandem quartam partem de manibus Depositariarum Cameræ præfate, quibus cura exigendi similes penas injuncta fuerit, & non aliter, nec alio modo accipere debeant, & ad id faciendum omnino teneantur.

§. 3. Inhibentes eisdem officialibus, & eorum singulis in virtute sanctæ obedientiæ, & sub indignationis, aliisque arbitrii nostri poenis, ne quicquam aliud excepta dicta portione decem pro centenario, ex eisdem poenis capere, exigere, vel habere audeant seu præsumant, nec ipsi, & accusatores prædicti portionem, & quartam huiusmodi respective, ab aliis quam ab ipsis ejusdem Cameræ Depositariis, ut præfatur, accipiant, irritum nihilominus decernentes & inanè, quicquid fecus à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit attentari.

§. 4. Non obstantibus præmissis, ac quibuscumque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, statutisque & consuetudinibus quorumvis locorum, & civitatum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac etiam per nos forsan quomodolibet in contrarium concessit & confirmavit, quibus omnibus eorum tenores præsentibus pro sufficienter expressis, & totaliter insertis habentes, illis alias in suo robore permanens, hac vice dumtaxat ad effectum præsentium, specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 5. Volumus autem quod earumdem præsentium transumptis, manu notarii publici subscriptis, & sigillo Thesaurarii nostri generalis, seu personæ in dignitate ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ originalibus ipsis adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 26. Aprilis 1564. Pontificatus nostri Anno quinto.

Die 28. Aprilis 1564. admittitur hæc littera Apost. ex decreto Cameræ, & registrata libro notariorum Sanctiss. D. N. Papa, apud me Notarium fol. 60.

Hic de Tarano.

Reformatio Rotæ Romanæ.

Ordinationes, & reformationes hujus Rotæ, vide supra in Tomo I. in constit. 14. Joannis XXII. Ratio, & infra in hoc Tomo II. in constit. 44. Paul. V. Universi, §. 5. ubi notabo. Auditorum vero numerum præfinit Sixt. IV. in constit. 2. Romani, in Tom. I. Indultaque & gratias, & facultates eisdem concesserunt Innoc. VIII. supra in Tomo I. in constit. 13. Finem. Leon. X. constit. 3. Sedit. Clem. VII. in constit. 13. Convenit. & Paul. III. in constit. 12. Romani. in d. Tomo I.

Accusatores vero quartam de poenis bannimentalibus. Omnes capiunt à Depositario.

Prohibitio plus percipiendi.

Derogatio contrarium.

Fides transumptorum.

Dat. P. An. 5. die 20. April.

Admissa & reg. in Camera.

XLIV.

Edita An. D.
1561.

PIUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

Exordium

In throno iustitiæ, super omnes gentes & regna, meritis licet imparibus, superna dispositione constituti, ad ea quæ juris & iustitiæ cultum, ac observantiam concernunt, dirigimus potissimum aciem nostræ mentis, ut universis nationibus ad Sedem Apostolicam omnium fidelium Matrem & Magistram, pro litium, & controversiarum inter eos vigentium decisione recurrentibus, longis iudiciorum curculis sublati, ac minoribus quam fieri poterit dispendiis, opportune consulatur.

Rotæ commensio
causa hujus
reformatio-
nis.

§. 1. Sane postquam nos circa Curie nostræ reformationem solerti studio intendentes, reliquorum ejusdem Curie tribunalium, & officiorum emendationem, & correctionem cum Dei auxilio, & Venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. Cardinalium consilio, feliciter peregrimus, demum ad Palatii nostri Auditorium, in quo universorum Christianissimum graviores causæ per duodecim summæ virtutis & doctrinæ viros, ex omnibus mundi partibus magna cum diligentia conquisitos, mature cognoscuntur, & magna cum integritate, & iustitia terminantur, animum adjecimus. Et licet in eodem tribunali pauca admodum correctione digna offenderemus, nihilominus ut nihil intactum relinqueremus, nonnulla potius pro litibus abbreviandis, ac partium dispendiis evitandis, vel saltem minuendis, vocatis ipsi Auditoribus, ac pluries, tam in voce, quam in scriptis auditis, providenda censuimus.

Facultates
Auditorum
circa causas
eis commissas.

§. 2. Et idcirco de eorumdem fratrum nostrorum consilio, statimur & ordinamus, quod de cetero perpetuis futuris temporibus, ad tollendum multiplicationem commissionum, & parcendum laboribus, & expensis litigantium, unica commissio in qualibet instantia sufficiat, & illius vigore Auditor causam sibi commissam cognoscere, & cum omnibus & singulis dependentibus, & emergentibus, ac alias quomodolibet incidentibus decidere valeat. Possit etiam Auditor sine nova commissione præfigere terminum ad docendum de attentatis, ac nullitatibus, & causis propter quas quis in integrum resitui debeat, ac illo elapso & non docto, ad causæ expeditionem procedere; nec non remissorias decernere, dilaciones concedere, liquidationes fructuum in partibus delegare, ac omnia & singula alia usque ad finalem sententiarum suarum executionem inclusive facere, quæ jure ordinarii facere possunt.

Prærogationes
fatalium
concedantur
arbitrio Ro-
tæ.

§. 3. Prærogationes autem fatalium sæpius, & passim non concedat, sed tantum ex aliqua honesta causa, ac prævia illius cognitione, arbitrio Rotæ.

Sententiæ
non præferantur,
nisi
causa in Rota
proposita, &
habitis votis.

§. 4. Auditor tamen in aliqua honesta causa, sive magni, sive parvi momenti existat, etiam si ejus decisio clari juris esse videatur, definitivam sententiam, vel interlocutoriam vim definitivæ habentem ferre non valeat, nisi causa in Rota proposita, & habitis votis Coauditorum, nisi partes in actis expresse consenserint, quod causa sine voto Coauditorum expediri possit. Idemque in aliis quibuscumque præjudicialibus decretis servari volumus, si actor, vel reus quod negotium in plena Rota cognoscatur, inlitterit.

Sententiæ
publicentur
ut hic.

§. 5. Item sententiæ latæ per Auditores, prout in cedula, ut moris est, vel per viam termini pro servato, subscribantur, & publicentur in actis intra quindecim dies, & in ultima anni audientia late infra mensem, alioquin pronunciations hujusmodi pro circumductis habeantur.

Notarii acci-
pientes de
referendum,
referant ut hic.

§. 6. Terminum etiam pro servatis habitis, & cedula ipsarum sententiarum, quæ interdum per alium notarium quam actuarium ipsius causæ ad referendum accipi consueverunt, referantur ipsi No-

tario causæ eadem, vel sequenti die qua recipiuntur. In ultimis vero audientis, saltem infra triduum; & si Auditor qui pronuntiavit prout in cedula, vel terminum habuit pro servato, retinuerit citationem penes se, illam Notario causæ similiter intra prædictos dies consignare debeat, alias termini hujusmodi circumducti, & irriti censeantur.

§. 7. Auditor vero non pronunciet in causa, nisi perfectio registro, & illo ad Rotam delato, una cum dictis testimoniis, illisque ac juribus in eadem Rota, prout res exegerit, lectis. In ultima vero anni audientia, ac quodcumque agatur de ferenda declaratoria contra contumacem, etiam registro non perfecto, ex originalibus pronunciare valeat. Ita tamen quod pars ad cujus instantiam pronuntiatur fuerit, registrum ipsum pro actorum conservatione quanto citius perfici curare teneatur.

§. 8. Et insuper Auditor partibus petentibus copiam decisionis in causa factæ, cum iuribus ac rationibus, tradere debeat, prout antiquitus laudabiliter fieri consuevit.

§. 9. Causæ autem propriæ Auditorum, & eorum familiarium, ac consanguineorum, vel affinium usque ad secundum gradum juxta jus canonicum computandum, non cognoscantur in Rota.

§. 10. Nec Auditores in eorum domibus institutos, vel doctores, aut alios jurisperitos, etiam consanguineos, qui Substituti, vel Advocati, aut Procuratoris officio fungantur, aut in casibus rotalibus, vel eorum processibus sese quoquo modo intromittant, nec Advocatos, & Procuratores domesticos, aut aliquos ex suis notariis domesticos habeant. Item Advocati, aut Procuratores consanguinei, vel affines usque ad secundum gradum, aliquos Auditoris, ac etiam illius Notarii, in causis coram eo pendentibus nullatenus patrocinari valeant.

§. 11. Nec Auditores compellant, aut aliquo modo inducant partes per se, vel per alios, ut assumant certum Advocatum, vel Procuratorem, sed electio hujusmodi omnino ipsarum partium arbitrio relinquatur.

§. 12. Item Decanus, & alii Auditores, præsertim antiquiores, attendant, ne aliquid non solum contra jus, sed nec etiam contra stylum, & decisiones antiquas factas in Rota, quæ impressæ habentur, quoquo modo deciderint, etiam prætextu aequitatis in jure non criptæ, nisi maxima cum ratione, & discussione, omnibus votis, seu saltem illorum duabus tertis partibus, aliter faciendum esse judicaverit.

§. 13. Deinceps etiam in causis pendentibus non attendantur aliquæ nullitates, præterquam ex defectu jurisdictionis, citationis, vel mandati, nisi causa nullitatis specialiter ante datam præsentium commissio reperiretur.

§. 14. Et à liquidatione fructuum, & expensarum taxatione, semel tantum appellare liceat, ita quod duæ conformes rem judicant faciant.

§. 15. Auditores vero causas sibi commissas, pro sola partium importunitate ad Cancellariam remittere non possint, sed tantum habita licentia à Summo Pontifice, vel ex iustis causis deditis in Rota, & ab ea probatis.

§. 16. Et si Auditor cognoverit in actis adesse suspicionem criminis, remittat acta hujusmodi, vel illorum exemplum, prout res exegerit, ad iudicem ordinarium. Et si causa criminalis præjudicialis fuerit causæ civili, in ejus cognitione supersedeat. Et quodcumque Juxta ordinarius, in causis criminalibus coram eo pendentibus, indigerit depositionibus testium, vel aliquibus scripturis ad causas criminales faciendis, teneatur Auditor illas, vel earum exemplum, ut præfertur, exhiberi facere.

§. 17. Ut autem debitus modus sportulis imponatur, non possint Auditores partibus, per se vel alium quovis modo sportularum nomine aliquid

Sententiæ
non præferantur ante
perfectum
registrum.Decisionum
copia peten-
tibus detur.Causæ Audi-
torum, con-
sanguineorum,
& fami-
liarum non
cognoscantur
in Rota.
Affines, dom-
estici, vel
notarii Audi-
torum, non
se intromit-
tant in causis
Rotæ.Auditores
non inducant
partes ut as-
sumant cer-
tum Advocatum,
vel Procuratorem.
Nec dispo-
nant contra
jus &c.Nullitates
tres tantum
attendantur.A liquidatio-
ne fructuum,
& expensa-
rum semel
appellatur.
Auditores
quando ad
Cancellaria-
m causas
remittere
possint.
Criminalitates
ad Judi-
ces Ord. re-
mittantur.Sportulas sic
recipiant vi-
delicet.

petere,

In causis pro-
fanis.

perere, vel exigere, sed nec sponte dantibus ultra
taxam infra scriptam accipere, videlicet.

§. 18. In causis pecuniariis, seu profanis, au-
tē alias prelo nummario quoquo modo estimari
possint, si estimatio rei de qua agitur non excedat
summam mille ducatorum, usque ad aureos decem
à mille verò usque ad decem millia, viginti quin-
que à decem milibus usque ad viginti millia, quin-
quaginta: ab inde supra usque ad quancumque
summam, centum.

In causis be-
neficialibus.

§. 19. In beneficialibus vero, si redditus annuus
de quo agitur non excedat summam centum du-
catorum, similiter decem: à centum verò usque
ad mille, viginti quinque: à mille usque ad tria
millia, quinquaginta: abinde verò supra, cen-
tum aureos pro sportulis cuiuscumque sententię
definitivę duntaxat, ut præfertur, accipere va-
leant. Si verò causa æstimationem non facile re-
cipiat, sportulę moderatę pro rerum & perso-
narum qualitate, iuxta taxas prædictas recipi po-
sint: nec aliquid ultra non solum ipsi Audito-
ribus, sed nec eorum familiaribus, vel confan-
guineis, aut aliis quibuscumque personis directę vel in-
directę, quovis quæsito colore vel ingenio, ex-
ceptis esculentis & poculentis, quę triduo consumi
possint, ipsarum sententiarum, aut Auditorum
invenit præstari possit.

Sportula de-
ponatur pe-
nos Notarii
p. sitatam
sententiam.

§. 20. Quas quidem sportulas iuxta taxam prædi-
ctam, apud Notarium causę post subscriptam sen-
tentiam, & notario traditam & non antea, deponi,
& Auditori consignari volumus: quodque Notarius
depositionem, & configurationem huiusmodi in
actis notare & specificare teneatur.

Notarii ido-
rei eligantur
officię
non arren-
dent, & pro
Substituto-
rum facta ce-
neantur.

§. 21. Officia verò Notariorum Rotę, non con-
ferantur nisi personis peritis & idoneis, quę per se-
ipso illa exercere sciant, & exerceant, nisi aliqua
legitima causa impediatur. Nec eo casu officia
aliquibus arendare, aut substitutos deputare va-
leant, nisi à proprio Auditore approbati fuerint;
qui insuper de officio fideliter exercendo arbitrio
Auditoris cavere debeant. Et pro ipsorum sub-
stitutorum facto, Notarii ipsi quo ad interesse par-
tium, tamquam principaliter obligati omnino te-
neantur.

Hęc bulla
legatur anno
quolibet in
princ. Rotę.

§. 22. Districtius præcipientes modernis, & pro
tempore existentibus Auditoribus, & eorum De-
cano in virtute sanctę obedientię, ac sub indigna-
tionis nostrę, & excommunicationis lare senten-
tię, aliisque nostro & pro tempore existentis Ro-
mani Pontificis arbitrio insignendis penis, ut præ-
sentem constitutionem nostram singulis annis in
prima audientia, una cum aliis constitutionibus
antiquis, legi & publicari faciant, & illam, ac
omnia & singula in ea contenta diligenter obser-
vent, & ab eorum notariis, & aliis quatenus ad
eos pertinet, observari curent cum effectu.

Decretum
tribus.

§. 23. Decernentes nihilominus irritum & inane,
si secus super his ab ipsis, vel quibuscumque aliis, scien-
ter, vel ignoranter contigerit attentari.

Clausulę de-
rogatorię.

§. 24. Non obstantibus constitutionibus & ordi-
nationibus Apostolicis, ac ipsorum Auditorum
Collegii, etiam jramento, confirmatione Aposto-
lica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis
& consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis
& facultatibus, eisdem Auditoribus & Collegio,
etiam Motu proprio & constitutorialiter, sub quibuscumque
tenoribus & formis, ac cum quibuscumque
clausulis & decretis, in genere vel in specie, per
quoscumque Romanos Pontifices prædecessores
nostros, aut etiam nos concessis, approbatis, &
innovatis: quibus omnibus, etiam si pro illorum
sufficienti derogatione, de illis, eorumque totis re-
noribus specialis, specifica, & expressa ac indivi-
dua, & de verbo ad verbum, non autem per clau-
sulas generales idem importantes, mentio habenda,
seu quavis alia exquisita forma servanda foret,
tenores huiusmodi pro sufficienter expressis habentes,
specialiter & expresse derogamus, contrariis
quibuscumque: aut si præfatis Auditoribus, vel

quibuscumque aliis communiter vel divisim ab eadem
Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel
excommunicari non possint per litteras Apostolicas
non facientes plenam & expressam, ac de verbo
ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§. 25. Ut autem præfatis litterę ad omnium
noticiam deducantur, nullusque illarum ignoran-
tiam præterdere valeat, volumus & mandamus,
illas in ejusdem audientię Palatii nostri, ac Can-
cellarię Apostolicę valvis, & acie Campi Florę,
per aliquos ex Curforibus nostris affigi, & per ali-
quod temporis spatium, relicta ibidem earum co-
pia affixa, detineri, & exinde omnes & singulos
quorum interest, vel interesse poterit quomodolibet
in futurum, afficere, ac si eis personaliter
intimate forent.

Nulli ergo &c.

Dat. Romę apud S. Petrum Anno Incarnatio-
nis Dominicę 1561. sexto Kal. Januarii, Pontifi-
catus nostri Anno tertio.

Ego Pius Catholicę Ecclesię Episcopus.

Ego R. Card. de Carpo Episcopus Ostien.
Ego F. Card. Pisanus Episcopus Portuen. manu
prop.

Ego Fed. Card. Cæsius Episcopus Tusculan.
Ego Jo. Card. Moronus Episcopus Prænestin. ff.
Ego Otho Card. Augustinus Episc. Albanen.
Ego R. Card. S. Angeli, Major Penitentiarius.
Ego Ti. Card. Crispus.
Ego Fulvius Card. Per.
Ego Jo. Mi. Card. Saracenus.
Ego Jo. Card. Sancti Vitalis.
Ego Jo. B. Card. S. Clementis.
Ego B. Card. Trauen.
Ego Scipio Card. Pisarum.
Ego Clem. Card. Aræali.
Ego F. M. Card. Alexandrinus.
Ego Jo. Ant. Card. Capisuccus.
Ego Jo. Ant. Card. S. Georgii.
Ego Bernardus Card. Salviatus.
Ego Ph. Card. Aburd.
Ego Jo. Card. Reimannus.
Ego Marcus Antonius Card. Amulius.
Ego Aloysius Card. Cornelius.
Ego R. Card. Navegerius.
Ego Jo. Franciscus Card. de Gambara.
Ego Alex. Card. Farnesius Vicecan.
Ego G. i. Alf. Card. Camerarius.
Ego Jul. Card. Urbinas.
Ego Hier. Card. Simoncellus.
Ego Vitellotius Card. Vitellius.
Ego Carolus Card. Borromæus.
Ego Franciscus Card. Gonzaga.
Ego Ind. de Avalos Card. de Aragona.

Formę
& a-
ctioms.
qua habet
hic l. c.Dat. P. An. 3.
die 27. Dec.Pape sub-
scribo.
C. cardinalium
subscriptio-
nes.

Deinde retroscriptę præfate litterę lectę, affixę, &
publicatę fuerunt in locis in eisdem litteris designa-
tis iuxta earum litterarum seriem, & tenorem,
per nos Bernardinum Andrentium, & Julium Pa-
rinum Apostolicos Curf.

Petrus Valtrini Magister Curf.

Publicatio.

Annulatio quarumcumque legitimationum de na-
turalibus sportis factarum, in præjudicium vo-
catorum ex fideicommissa aut testamento, aut
quavis alia valida dispositione (dummodo non
sint sortitę effectum.) Et revocatio facultatum
eo modo legitimandi.

XLV.

Prohibitio autem testandi & disponendi de acquisitis
ex rebus Ecclesiasticis, & aliis bonis, ad commo-
dum illegitimorum, etiam legitimatorum, habetur
infra in Pii V. cons. 117. Quę ordini, & ibi not.
de materiā.

ANNO 64
1562.

PIUS QUARTUS.

ANNO 1562.

Edicta An. D.
1562.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

Exordium.

Quamvis à Sede Apostolica ad quam negotiorum multitudo undique confluit, curis continuo plena innumeris, nonnulla interdum ex quibusdam causis aliquando per occupationem ac importunam petentium instantiam concedantur, quæ in alieni juris præjudicium tendunt & detrimentum, non debet reprehensibile videri si Rom. Pontifex, ad cujus providentiam pro debito pastoralis officii spectat super his debite providere, illa rationabilibus & juridicis causis maturius, & attentius deinde cognitis quandoque revocat & annullat, ac in statum redigit rationis.

Causæ hujus
confluit.

§. 1. Sanè cum fide digna plurimorum relatione, non sine animi nostri molestia intellexerimus, nonnullos Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac prætextu quarundam sibi concessarum facultatum Comites Palatinos, & alios multos, spurios & naturales, & forsan incestuosos, etiam in præjudicium venientium ab intestato, & vocatorum ex testamento ad fideicommissa, ac hereditates & legata, vel donationes ita legitimasse, ut hujusmodi fideicommissis, hereditatibus, aut legatis, vel donationibus, non obstantibus testatorum voluntatibus succedant, ac proinde varis contentiones & scandala in grave multorum præjudicium, ac animarum salutem hæcenus exorta sint, & in præsentiarum oriantur.

Annulatio
legitimationum de
naturalibus, spuris
factarum in præjudi-
cium vocato-
rum ex testa-
mento &c.
non sint for-
titer effectus,
& revocato
facultatem
legitimandi
in præjudi-
cium vocato-
rum ex testa-
mento, &c.

§. 2. Nos illa utpote contra jus, & æquum existentia, de cetero ne fiant opportune providere, necnon eorum quos hoc ipsum tangit, ac tangere poterit, quomodolibet in futurum indemnitati consulere volentes, Motu proprio, non ad aliquem super hoc nobis oblata petitionis instantiam, sed de nostra mera deliberatione, & ex certa scientia, ac potestatis plenitudine, omnes & singulas legitimaciones de quibuscumque naturalibus spuris per Romanos Pontifices prædecessores præfatos, ac Comites Palatinos hujusmodi, & quoscumque alios ad id facultatem habentes in præjudicium vocatorum ex fideicommissis, aut testamento, vel quavis alia, valida tamen dispositione, sub quibusvis tenoribus & formis, ac cum quibusvis verborum formis & expressionibus, ac efficacissimis & insolitis causulis, & etiam irritantibus decretis, etiam Motu simili, etiam consistorialiter, ac de derogatione regule, seu constitutionis de non tollendo jure quæsitio, ac aliis cautelis quomodolibet factas (nondum tamen adhuc viventibus ultimis bonorum hujusmodi possessoribus per quorum obitum ad legitimos prædictos devolvi deberent, effectum fortias, nec jus in re consecutas) necnon eorundem Comitum Palatinorum, & aliorum facultates legitimandi habentium, ad hoc tantum ut deinceps tales legitimaciones in præjudicium fideicommissorum, & aliarum dispositionum hujusmodi facere non possint, auctoritate Apostolica tenore præsentium perpetuo revocamus, cassamus, & annullamus.

Extinctio li-
tium pen-
dendum cir-
ca eas.

§. 3. Necnon quascumque lites & controversias quas illarum status, & causarum merita, nominaque & cognomina Judicum & colligantium præsentibus pro sufficienter expressis habentes, in Romana Curia, vel extra eam super præmissa motas & indecissas pendentes, in statu & terminis in quibus reperiuntur harum serie ad nos advocamus, cassamus, & extinguimus.

Inhibitio
contra Co-
mites Palati-
nos, & alios
legitimandi
facultatem
habentes, ne
presument
legitimare

§. 4. Necnon partibus litigantibus, & Judicibus coram quibus illæ pependerunt, seu forsan adhuc pendente indecisæ, perpetuum silentium imponimus juxta declarationem prædictam, ac imponi volumus & mandamus. Distinctius inhibentes eisdem Judicibus ne in eisdem causis, necnon Comitibus Palatinis, ac aliis facultatem legitimandi hu-

jusmodi habentibus in virtute sanctæ obedientiæ, ac sub nostræ indignationis quos ad Comites, & alios facultatem legitimandi hujusmodi, etiam aliter quam ut præfatur habentes, & aliorum quorumcumque illorum facultatum, privilegiorum, & indultorum cassationis, annullationis, & totalis revocationis, necnon decem milium ducatorum auri de Camera quoties contravenerint, ipsi Camera Apostolica applicandorum penis similibus de legitimacionibus deinceps se respectivè contra dispositionem, & declarationem nostram hujusmodi intromittere quoquo modo audeant, seu præsumant.

Decretum
irritans.

§. 5. Decernentes Comites Palatinos, & alios quoscumque legitimandi facultatem habentes, ut præfatur, nullas in præjudicium fideicommissorum, & voluntatum testatorum hujusmodi legitimaciones in posterum facere possent, & aliter factas, & forsan faciendas juxta dispositionem, & declarationem nostram hujusmodi restringi & limitari. Ac sic in præmissis omnibus & singulis per quoscumque Judices & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, seu eorum Locatentes, ac S. R. E. Cardinales, sublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate & auctoritate interpretari, judicari, & definiri debere, necnon irritum & inane quicquid secus super his à dictis Comitibus & Judicibus, vel quibusvis aliis, quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit attentari.

Clansule de-
rogatorie.

§. 6. Non obstantibus nostra de non tollendo jure quæsitio, quatenus opus sit, ac aliis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac prædictis & quibusvis aliis facultatibus, privilegiis, indultis, & litteris Apostolicis eisdem Comitibus Palatinis, & quibusvis aliis, etiam pari Motu, ac alias quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, quorum omnium tenores, ac si de verbo ad verbum infererentur, præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis alias in suo robore permanentibus hac vice dumtaxat, specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque, aut si aliquibus communiter, vel divisim à prædicta sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem, & qualibet alia dictæ Sedis indulgentia generali, vel speciali cujuscumque tenoris existat, per quam præsentibus non expressam, vel totaliter non insertam effectus hujusmodi litterarum impediri valeat quomodolibet vel differri, & de qua cujusque toto tenore habenda sit in nostris litteris mentio specialis.

Hæc constit.
ligat ubique
quoad legi-
timationes
factas aucto-
ritate Apo-
stolica, quo
vero ad alias
factas Imperi-
ali concessi-
one, ligat
in terris
Rom. Eccles.
subjectis.

§. 7. Ut autem præsentibus litteræ ad omnium notitiam deducantur, nec aliqui de illis ignorantiam aliquam præterdere valeant, vel allegare, volumus ipsas præsentibus litteras quoad legitimaciones Apostolicas auctoritate factas ubivis locorum, quo vero ad illas que ex Imperiali concessione factæ fuerunt, in terris nobis & Romanæ Ecclesiæ, mediata & immediata subjectis, in casibus in quibus illa in terris hujusmodi, de jure fieri permittitur, locum habere, & effectum fortiter debere, necnon in valvis Cancellariæ Apostolicæ, ac acie Campi Floræ affigi, & publicari, ac eos quos concernunt perinde arcere, ac si eis personaliter intimatæ forent, cum non sit verisimile apud eos remanere incognitum, quod tam patenter extitit publicatum.

Nulli ergo &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Domini 1562. Calend. Januarii, Pontificatus nostri Anno tertio.

Dat. P. An. 3.
die 1. Januar.

Anno à Nativitate Domini 1564, indictione 7. die vero 17. mensis Aprilis, Pontific. Sanctiss. in Christo Paris, D.N.D. Pii divina providentia Papa 15. Anno 5. retroscripta litteræ affixæ, & publicatæ fue-

Publicatio.

vant Roma in locis retroscriptis, dimissis ibidem co-
piis affixis per nos Jacobum Carra, & Nicolaum
de Matheis Cursi.

Barth. Sottocasa Mag. Cursi.

XLVI.

Declaratio, & ampliatio jurisdictionis Consulum
Artis mercantiae pannorum de Urbe.

Hanc jurisdictionem primo instituit Mart. V. ut sup. in
Tomo I. in ejus const. 6. Cum inter. & Paul. III.
atque alii (quorum bullas consilio praetermissi) con-
firmarunt.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Edita An. D
1562.Confirmatio
jurisdictionis.Extenso
ejusdem.Contrario-
rum derogatio.Chusula
sublata.Selo signatu-
ra sufficit.Pape sub-
script.
Dat. P. An. 3.
15. Januarii.

XLVII.

Contra Franchitias in Urbe acclamantes, aut il-
las pro male factoribus, vel aere alieno adstri-
ctis tenentes, five Curiam in eorum captura im-
pedientes.

Hanc bullam approbavit Greg. XIII. infra in hoc
Tomo II. in ejus const. 12. Et ipsa. Quam penitus ad-
dictis innovavit Sixt. V. in ejus const. 6. Hoc nostri.

Bullarium Romanum. Tom. II.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei
memoriam.

Edita An. D.
1562.

Exordium.

Inter ceteras quibus ex injuncto nobis Apostoli-
cae servitutis officio assidue angimur, cura illa
nobis praecipue cordi est, ut Alma Urbs nostra ad
quam omnes Christifideles ex universis mundi par-
tibus veluti ad tutissimum refugium conflunt, fa-
cinorosis hominibus expurgata, & penitus vacua
permaneat, ac in ea boni omnes quieta securitate
fruantur, malis autem nullus quo se confovere
possint locus relinquantur. Et hi qui a Magistratibus
judicantibus justitiam consecuti fuerint, illius
etiam executionem libere, ut decet, contra con-
demnatos, ubicumque eos moram trahere conti-
gerit, consequantur.

§. 1. Sane cum non sine animi nostri perturba-
tione acceperimus, nonnullos tam ob crimina per
ipsos commissa, quam ob debita contracta, sibi
ipsis a ministris & executoribus justitiae timentes,
ad aedes Magnatum, & praesertim S. R. E. Cardi-
nalem, & Oratorum Principum, uti loca à dictis
justitiis ministris tuta, tametsi contrarium esse de-
beret, in dies confugere, & in illis se recipere &
confovere, sicque impositos quandoque evadere,
& creditores executione eorum creditorum ut plu-
rimum frustrari.

§. 2. Et licet ad hujusmodi abusum extirpandum,
à fel. rec. Julio Papa III. praedecessore nostro, qua-
dam constitutio edita fuerit, talium tamen justitiam
fugientium temeritatem in tantum excrevisse, ut
non solum se in dictis locis recipere, sed etiam illa
veluti justitiae minime subiecta, Franchitias appel-
lare non erubescant, tanquam in praefata Urbe;
in qua Summus Pontifex cum sacro Cardinalium
Collegio residet, & ut CHRISTI Vicarius toto
Orbi exemplum justitiae praebere debet, asylum,
& receptacula delinquentium, ac suis debitis fa-
tisfacere recusantium esse toleretur, neque execu-
tio justitiae libere fieri valeat. Rem quidem pessimi,
valdeque perniciosi exempli, quae non ab ipsis Car-
dinalibus, & Oratoribus utpote modestis, & justi-
tiae cultoribus, sed plerumque ipsorum familiarium
culpa, & facto processit.

§. 3. Nos volentes tam enormes, & detestandos
abusus penitus tollere, utque nullus improbis turis
locus detur, sed executores justitiae passim, & ubi-
que eorum officium libere, & intrepide exequi va-
leant providere. Motu proprio, & ex certa scien-
tia, ac de Apostolica potestatis plenitudine, omnes
in primis constitutiones circa praemissa, tam
per praedictum Julium, quam quoscunque alios
Pontifices praedecessores nostros editas, cum omni-
bus & singulis censuris, & poenis in eis contentis ap-
probantes, & innovantes, hac in perpetuum va-
litura constitutione sancimus, ut nullus de cetero
cujuscumque sit dignitatis, & praeminentiae, sub
indignationis nostrae, & aliis arbitrii nostri poenis,
aedes praedictas, aut alia quaecumque loca, Fran-
chitias appellare audeat. Nullique Cardinalium,
& Oratorum, & Magnatum, etiam si nostri, seu Ro-
mani Pontificis pro tempore secundum carnem ne-
potes, aut alio consanguinitatis, seu affinitatis
vinculo conjuncti fuerint, familiares, aut alias in
ipsorum domibus commorantes, seu locis circum-
vicinis, malefactores quoslibet, etiam non con-
demnatos, aut pro debitis obnoxios, contra quos
tamen mandata executiva ad instantiam creditorum
decreta, & relaxata extiterint, ut eos à manibus
Curiae eximant receptare, vel alias sub asserta Fran-
chitiae prae-textu, securos reddere, vel executores
justitiae quo minus eorum officium contra illos,
etiam in domibus & locis circumvicinis praedictis
libere, & sine ulla prosus contradictione exequi
possint, quovis modo directe, vel indirecte impe-
dire praesumant.

Causae hujus
constit.Julius III.
Franchitias
prohibuit, ut
sup. in ejus
const. 27.Hic Pont. il-
lam confir-
mat, & Fran-
chitias tene-
ri, aut accla-
mari prohibet.

1562.

Contravenientibus
pœnas imponit.

Iussione
Caru. & Ora-
tores talia
permittat.

Clausuræ de-
rogatoriz.

Dat. P. An. 3.
18 Febr.

Publicatio.

§. 4. Alioquin receptantes, aut securitatem præstantes, seu etiam executores iustitiæ quomodolibet, ut præmittitur, impediētes, necnon qui Cardinalium, aut Oratorum, seu Magnatum quorumlibet nomen acclamando, contra dictos iustitiæ ministros invocaverint, aut alias quoslibet alios in eisdem ministros concitaverint, velut criminis læsæ maiestatis rei condignis pœnis afficiantur, contra quos omnes & singulos ad supradictas, & etiam ad alias pœnas in quibus malefactoribus ipsi condemnati fuerint, vel quas promeruerint, interesseque & damna inde provenientia, necnon ad creditorum satisfactionem, etiam ex officio, & ad Fisci nostri, ac partium instantiam respective inquiri & procedi, & successive eos condemnari posse & debere, volumus atque decernimus.

§. 5. Mandantes nihilominus Cardinalibus, Oratoribus, & aliis prædictis sub eisdem nostræ indignationis pœna, ut familiares suos, & alias in ipsum domibus commorantes, ne præmissa committant omnino admoveant, & cum effectu cohibeant, neque per illos aliquid de præmissis fieri quovis modo tolerant, seu permittant.

§. 6. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, privilegiis quoque & indultis, sub quacumque tenore forma quomodolibet in contrarium concessis, confirmatis, & iteratis vicibus innovatis, assertis consuetudinibus, quas per præfentes improbamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Nulli ergo &c.

Dat. Ro. nra apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1562. duodecimo Cal. Martii, Pontificatus nostri Anno 3.

Anno à Nativitate Domini N. Jesu Christi 1562. indictione 5. die vero Lunæ 23. mensis Febr. Pont. Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divini providentia Papa IV. anno ejus 3. retroscripta littera Apost. affixa & publicata fuerunt ad valvas Cancell. Apost. & in acie Campi Fioræ, per me Joannem Baptistam Masinellum Cursores.

Camillus Cherubinus Mag. Curs.

XLVIII.

Declaratio, & limitatio constitutionis editæ à Paulo IV. super ordinationibus observandis per Hebræos in Statu Ecclesiastico degentes.

Has limitationes in his quæ adversantur d. constit. Pauli IV. in Tomo I. substituit Pius V. in hoc Tomo II. in constit. 6. Romanus, & Clem. VIII. in constit. 19. Cæca, infra in Tomo III. Et de materia Hebræorum, vide sup. in Tomo I. in ipsius Pauli IV. const. 3. cum nimis.

Edita A. D.
1562.

PIUS PAPA QUARTUS.

Universis & singulis utriusque sexus Hebræis in Alma Urbe commorantibus, & commorari solitis, viam veritatis agnoscere, & agnitam custodire.

Paul IV. multa statuit circa Judeorum vivendi modum in constit. in rubr.

Dudum à felicis recordationis Paulo Papa IV. prædecessore nostro zelo religionis Christianæ moto litteræ Apostolicæ circa vestrum, aliorumque Hebræorum vivendi modum, sub data videlicet pridie Idus Julii, Pontificatus sui anno primo emanarunt, quarum ut accepimus prætextu per calumniam & cavillationes nonnullorum vestris facultatibus inhiantium, litteras ipsas in multis præter ipsius prædecessoris intentionem interpretantium, vos diversimode vexati & inquietati fuistis.

Hic modo Pont. declaratio in itinere de loco ad locum eos

§. 1. Quare nos considerantes quod sancta Mater Ecclesia Hebræis quos in memoriam passionis Dominicæ tolerat, multæ plerumque concedit, ut Christiana benignitate allecti errorem suum recog-

noscant, & ad verum, quod est CHRISTUS, lumen tandem convertantur, plurimorum etiam prædecessorum nostrorum vestigiis inhaerendo, fiat vestro opportune providere volentes, ac litterarum prædictarum tenores præsentibus pro expressis habentes: Motu proprio non ad vestram, vel alicujus vestrum aut alterius pro vobis super hoc nobis oblata petitionis instantiam, sed de nostra mera deliberatione, & ex certa scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, Vobis omnibus & singulis, ut dum vos ab uno loco ad alium iter agere contigerit, possitis in ipso itinere biretum, seu pileum nigrum deferre, ea tamen conditione, ut si ultra unam diem uno in loco moram traxeritis, postea solum biretum glauci coloris gesseritis, Apostolica auctoritate tenore præsentium concedimus ac indulgemus. Volentesque quod si locus pro vestra habitatione assignatus amplius & capax, ac negotiis gerendis, & mercibus exercendis aptus & commodus sit, intra illum vos contineatis: alioquin in alio capaci commo vobis assignando, vel priori quantum opus fuerit ampliando, seu jam per dilectum filium Guidonem Afcanium Cardinalem Camerarium jam ampliando, & forsitan ejusdem Guidonis Afcanii, seu ab eo desuper deputandorum arbitrio in possumus ampliando.

§. 2. Et ultra domos in clausura existentes quas per vos acquiri forsitan contigerit, quæcumque alia stabilia, bona, seu prædia urbana, & rustica, usque ad valorem mille & quingentorum ducatorum auri tenere possitis: bonaque ipsa Christianis & colonis etiam partialis, vel sub certa annua pensione, prout cum illis convenietis, locare, ac etiam sine alicujus fraude, & monopolio culturæ terrarum, & animalium cujuscumque generis, aliorumque rerum societates cum eisdem Christianis contrahere, & quæcumque artes, & mercaturas quarumcumque mercium, & rerum humano usus quomodolibet necessariorum, etiam olei, seu nenti, vini, hordei, ceterorumque fructuum (nisi tamen superiores hujusmodi commercia, & emptiones publico edicto omnibus etiam Christianis negotiantibus interdixissent) exercere, & ubi etiam hac vobis à vestris debitoribus in solum data fuerint, illa recipere, acceptaque quibusvis personis etiam Christianis vendere, & cum illis pro aliis bonis permutare, & prout volueritis alienare.

§. 3. Et cum Christianis conservationem & familiaritatem honestas, non tamen eosdem Christianos in vestros famulos habere, aut quomodolibet tenere. Et de pecuniis per vos, & vestrum quemlibet mutuatis interesse pro tempore usque ad datam litterarum prædecessoris hujusmodi decurso, juxta capitula vobis antea concessa & tolerata, exceptis tamen casibus jam decis, vel per transactionem, vel sententiam quæ in rem judicatam transierit finitis, quas in suo robore permanere omnino volumus, nisi quæ arbitrio nostro nova revisione digna videbuntur, abinde vero circa juxta modum ex ejusdem prædecessoris ordinatione vobis datum, & donec alius modus vobis, per nos, seu nostrum & Sedis Apostolicæ Camerarium præfatum pro tempore statuatur, dummodo tum interesse de vestro interesse non exigatis, exigere.

§. 4. Etpignora quæ à Christianis quomodocumque per vos accipi contigerit, de illis lapsis decem & octo mensibus integris postquam vobis consignata fuerint, per publicam substationem assensit officiali publico, & parti legitima intimatione facta, & alias juxta morem & modum antequam dictæ litteræ emanassent in præfata Alma Urbe fervari solum vendere, & illorum pretium pro currenti summa vestri crediti, reliquum, si quod superflueret illorum dominis reddendo & consignando, vel in manibus officialis deponendo, vobis retinere, & de illis nullam rationem illorum do-

1562.
posse deferre
biretum nig-
rum.

Quod revocavit Pius V. cit. in rubr. sed tamen ita servatur.

Stabilia usque ad 1500. Ducat. habere valeant, & mercaturas quæ autem que rerum exercere possint.

Quæ revocavit idem P. V. ibidem.

Cum Christiani hanc conversionem.

Pignora post lapsum 18. mensium vendere valeant.

Statuta Urbis serventur, si non obstant induitis.

Dominum domum in lepis, eas locent pro penione ut hic.

Qui stabili ab eis emunt, solvant pretium abique cautione, vel illa cum fructu, restituant.

Delicta praeterquam in lexis epae jam patetata remittit.

Querelans contra eos occasione exactionis interesse, habet annum ad prosecutionem querelam respectu poenae.

Prescriptio juris communis contra Judicos opponi potest.

minis, seu cuiquam alteri reddere teneamini, sed velut de propriis bonis libere disponere valeatis, plenam & liberam eisdem auctoritate & tenore facultatem concedimus.

§. 5. Et insuper volumus ut vos sub statutis & decretis generalibus Almae Urbis praefatae, quae tamen privilegiis & concessionibus vobis indultis contraria non sunt, comprehendamini, & illa observare teneamini.

§. 6. Et ne ob certi loci intra quem habitare debeatis assignationem, & intra illum domos conducendi necessitatem, ab illarum dominis ultra bebitum modum praegravemini, ut domorum domini in locis praedictis illis vobis pro iusto pretio per Camerarium praefatum declarando, locare teneantur, neque illud quovis modo augere, vel alterare valeant.

§. 7. Praeterea si à vobis, vel vestrum singulis vigore Apostolicarum praedecessoris litterarum, bona stabilia quae possidebatis vendere coactis aliqui huiusmodi bona emerunt, & illorum etiam sub praetextu cautionum, de eversione, seu alias per calumnias requisitarum non praestitarum vobis nondum persolverint, ut praeterea conventa vobis abique aliquo cautionis praestatione integre persolvere, aut bona ipsa stabilia per eos empti in eo statu, quo erant tempore emptionis unum cum fructibus per eos perceptis restituere teneantur. Omnesque libros rationum vestrarum, & alias scripturas publicas, & privatas vobis ablatas, seu depositas & depositas, quibusvis sequentibus super illis factis sublati, vobis restitui mandamus, vosque ad reddendum rationem aliquam de contractibus, seu instrumentis etiam assis, & extinctis nullatenus teneri, neque adstringi posse decernimus.

§. 8. Et ulterius vos omnes & singulos ab omnibus, & quibusvis delictis, criminibus, etiam tam contra dictas Pauli praedecessoris, quam contra ejusdem Pauli Pontificatus tempore durante quorumvis S. R. E. Cardin. liam, aut aliorum quorumcumque litteras etiam libros exhibendo aut alias ipsi litteris non parendo excessus, & transgressionibus quantumcumque gravibus & enormibus per vos usque ad praesentem diem commissis, exceptis dumtaxat criminibus homicidii, homicidioque majoribus, ac laesae majestatis, & falsae monetae, falsificationis litterarum Apostolicarum, & in contemptum fidei Christianae commissis, & iuxta formam instrumenti per vos in Camera Apostolica cum dilecto filio Donato Mattheo Minali generali Thesaurario modo facto, seu celebrato quoad poenas tantum cuiuscumque praeterquam parti applicandas, & quae hactenus depositatae, seu exactae fuerint, & salvo in reliquis jure cojussit tertii, necnon à quibusvis relictis vigintiannorum, & talarum, & aliis quibuscumque, tam civilium quam criminalium Camerae Apostolicae debitum, auctoritate & tenore praemissis absolvimus & liberamus.

§. 9. Et insuper volumus quod pro futuris transgressionibus ratione exactionis vestri interesse querelans, seu accusator annum tantum habeat ad prosecutionem suam accusationem, seu querelam quantum sit respectu poenae, ut supra applicandae: quo vero actinet ad interesse civile ipsius querelantis, vel accusantis, vel cujuslibet alterius tertii, nulla alia sit praescriptio temporis, nisi ea quae à jure communi statuta est.

§. 10. Et pariter quod vestris creditis, tam praeteritis quam praesentibus & futuris ea solum opponatur praescriptio quae praefinita est à jure communi, & quod pro toto eo tempore quo quis pecuniis vestris frui, intelligatur interesse currere, computando tamen diem pro die, mensem pro mense, non autem diem pro mense, & pro transgressibus vestris poenae sint arbitrarie de cetero, exceptis tamen illis casibus pro quibus certa poenae sunt statuta à jure communi.

§. 11. Praeterea vobis permittimus quod possitis tenere Apothecas extra ghettoem, seu septum hebraicum, quantum tamen fieri poterit contiguas, & in illis ab ortu solis usque ad occasum, exceptis diebus festivis, permanere, & mercataram, ac artes vestras, & banchum, aliaque vobis permissa exercitia exercere, dummodo adveniente nocte, vos ad vestras solitas intra claustrum habitationes reducatis.

§. 12. Ceterum ut fraudibus occurratur, mandamus, ut vos rationes quas cum Christianis habueritis, characteribus linguae vulgaris Italicae scribere teneamini, alias vestris libris, seu rationibus alias quam ut praefertur scriptis, seu notatis nulla fides prorsus adhibeatur, possitis tamen ad libitum vestrum privatos libros in usus vestros conficere lingua vestra hebraica, dummodo ex eis Christianos non conveniat. Quodque non solum vos in Alma Urbe praefata commorantes, sed etiam ceteros extra illam in aliis quibusvis locis moram trahentes, qui in eadem negotia aut commercia aliqua habuerint, pro illorum modo & qualitate teneantur, obligati sint in solutione compositionis, per vos nuper cum Camera Apostolica factae, aliisque omnibus oneribus per vos sustinendis & fiendis, juxta ratam eis per taxatores imponen. concurrere & contribuire, ac denum instrumentum conventionis per vos cum Camera Apostolica sive ejus Thesaurario, sub die octava Januarii praesentis anni initae cum omnibus in eodem instrumento contentis de verbo ad verbum, prout jacet auctoritate & tenore praemissis approbamus, ratificamus & confirmamus, omniaque in illo concessa vobis damus, & concedimus, & condonamus, ac praemissa omnia & singula in praesentibus nostris litteris contenta invariabiliter observari.

§. 13. Si quoque per quoscumque iudices & commissarios quavis auctoritate fungentes etiam Palatii Apostolici Auditores, sublati eis, & eorum cuilibet quavis alteri iudicandi & interpretandi facultate, iudicari, & definiti debere, ac quicquid fecus à quocumque quavis auctoritate scierit, vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane decernimus.

§. 14. Quocirca dilectis filiis nostro & Romanae Ecclesiae Camerario, & etiam nostro in Alma Urbe, ejusque districtu in spiritualibus Vicario, & Curiae causarum Cam. Apost. Auditori generali motu simili per praesentes mandamus, quatenus ipsi, vel duo aut unus eorum, per se vel alium, seu alios praesentes litteras, & in eis contenta quaecumque, ubi & quando opus fuerit, ac quotiens pro parte vestra fuerint requisiti solemniter publicantes, vobisque in praemissis efficacis defensionis praesidio assistentes faciant auctoritate nostra vos concessione, indulto, voluntate, permissione, liberatione, absolutione, mandato, confirmatione, approbatione, decreto, aliisque praemissis, & praesentibus litteris pacifice frui & gaudere, non permittentes vos aut aliquem vestrum desuper per quoscumque quavis auctoritate fungentes quomodolibet indebitum molestari, contraditores quoslibet, ac inobedientes & rebelles, per censuras & poenas Ecclesiasticas, aliaque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita compescendo, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 15. Non obstantibus supradicti Pauli praedecessoris, & quibusvis aliis litteris, concessionibus, & ordinationibus Apostolicis, etiam per nos contra praemissa, seu aliquod praemissorum editis, necnon provincialibus, etiam per Sedis Apostolicae pro tempore de latere Legatos, etiam super praescriptione sex annorum sive alterius brevioris quae à jure communi indicta sit temporis contra Hebraeos praefinita similiter editis, etiam Urbis praefatae statutis & consuetudinibus, etiam per Sedem Apostolicam approbatis & confirmatis, pri-

Apothecas extra septum haberi possunt, ut hic.

Libri non probent contra Christianos, nisi scripti sint vulgari italico sermone.

Quod voluit etiam Paul. IV. cit. in rub.

Decretum irritans.

Executorum ipsius confite. deputatio & facultates.

Claustrale derogatoria.

vilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis dictæ Almaz Urbi, seu ejus populo, ac quibuscumque aliis sub quibuscumque verborum formis & clausulis, etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque fortioribus & emacioribus, & insolitis clausulis, irritantibusque & aliis decretis quibuscumque concessis, confirmatis, ac etiam iteratis vicibus approbatis, & innovatis, quibus omnibus, etiam si pro sufficienti illorum derogatione de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa & individua, non autem per clausulas generales ideim importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, aut alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum infererentur, præsentibus pro sufficienter expressis habentes illis alias in suo robore permanens, hac vice duntaxat specialiter & expresse derogamus contrariis quibuscumque, aut si aliquibus communiter, vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Dat. P. An. die 27. Febr.

Publicatio.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 27. Febr. 1562. Pontificatus nostri Anno tertio.

Anno à Nativitate D. N. Jesu Christi 1562. indit. 4. die verò 12. mensis Martii, Pontificatus autem Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii Divina providentia Papa IV. Anno 3. retroscriptæ litteræ Apostolicæ præsentate, & intimata fuerunt magnifico D. Cesari Contardo Auditori Illustriss. & Reverendiss. D. Card. de S. Flora, & D. Hieronymo de Tarano Cam. Apost. notario, & Bernardino de Monte Leone, & Jacobo alias Bevilacqua executoribus R. P. D. A. C. illi inhibens, juxta dictarum litterarum formam & tenorem, dimissa deinde copia in actis dicti D. Hieronymi de Tarano, per me Joannem Andream Panizzam prælibati S. D. N. Papæ Curæ.

Petrus Valtrini Mag. Curæ.

XLIX.

Prohibitio deferendi, retinendi, & vendendi Archibufetos brevioris mensuræ duorum palmorum in Statu Ecclesiastico.

Hec constit. extensa fuit etiam contra deferentes pugiones, cultellos, & aliud genus armorum brevioris mensuræ trium palmorum per Pium V. in ejus consti. 145. Cum vices ejus.

Edita A. D. 1562.

Causæ hujus prohibitionis.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Cum vices ejus, licet immeriti, geramus in terris, qui de celo ad ima descendens, pro salute humani generis seipsum ad Crucis patibulum obtulit, omni quo possumus studio, continuo invigilare debemus, ut omnis prorsus occasio, homicidia, tamquam in ejusdem humani generis perniciem tendentia, committendi, quantum in nobis est, submoveatur. Et quia experientia cognovimus, quamplura ex illis tormentulis igneis, Archibufetis vulgariter nuncupatis (quæ occulte deferri possunt, & ad necem inferendam aptiora, & fere inevitabilia esse videntur) in dies committi & perpetrari, nec hæc ob proclamata, etiam sub gravissimis penis, à Reoribus provinciarum & terrarum, nobis & S. R. E. subjeclarum, ab illis deferendis, ob ficiarium copiam & audaciam, cessari aut abstineri; quinimmo passim, & indistincte, non secus, ac cetera arma minus prohibita, ab omnibus fere gestari.

Prohibitio deferendi, & retinendi Archibufetos

S. 1. Nos propterea volentes proditorium, & abominabile, & detestandum armorum genus hujusmodi penitus & omnino destruere, ac ab Al-

ma Urbe, aliisque terris nostris prædictis, in totam eliminare Motu proprio, & ex certa scientia, hac in perpetuum valitura constitutione sancimus, nemini cuiuscumque sit dignitas, gradus, ordinis, conditionis, aut præminencie, licere genus armorum hujusmodi, quod brevioris duorum palmorum mensuræ existat, publice vel occulte, tam per Urbem, civitates, & loca nostra prædicta, quam etiam in itineribus quoquo modo, aut quovis etiam militie, aut executionis justitie, prætextu deferre, minisque in domibus, aut alibi retinere, vendere, emere, aut permutationis, in solutum dacionis, pignoris, vel quocumque alio titulo recipere, quinimo quicumque illa habuerit, intra viginti dierum spatium, à die publicationis præsentis constitutionis in locis infra scriptis faciendæ, computandum, in Alma Urbe nostra illius Gubernatori; in aliis vero locis prædictis Reoribus, vel Præfidi, aut etiam Gubernatori, seu cuivis alii superiori loci in quæ habentes fuerint, denunciare, & ad eum præferri facere, ac penes ipsum in loco ad id deputando, servanda dimittere teneantur.

S. 2. Qui vero contraxerit, dictumque genus armorum, lapsis dictis viginti diebus, retinuerit, crimen læsæ majestatis, & rebellionis, ac penas pro illo à jure inflictas eo ipso incurrat.

S. 3. Inhibentes (prout tenore præsentium inhibemus) omnibus & singulis, etiam de latere nostro Legatis, ne sub indignationis nostre, & quibuscumque Vicelegatis, Gubernatoribus, Rectoribus, Præfidentibus, ac aliis nostris, & Sedis Apostolicæ, seu civitatum & terrarum prædictarum officialibus, ne sub suspensionis à divinis, ac excommunicationis lætæ sententiæ, aliisque arbitrii nostri penis, cuiquam tale genus armorum, sub quovis colore deferendi, vel alias, ut præmittitur, retinendi, licentiam & facultatem ad quodcumque etiam brevissimum tempus, concedere audeant vel præsumant.

S. 4. Decernentes nihilominus licentias & facultates sic concedendas, nullas penitus & invalidas existere, ac illis non obstantibus, eos qui sub illarum clupeco, dictum genus armorum detulerint, aut ut præmittitur retinuerint, penas prædictas omnino incursum, illosque irremissibiliter puniendos fore, & contra omnes & singulos huic nostre constitutioni contravenientes, ad Fiscum nostri instantiam, & etiam ex officio procedi, & inquiri posse, ac ad penarum prædictarum executionem deveniri omnino debere.

S. 5. Ut autem præmissa ad omnium notitiam deducantur, nec aliquis prætextu ignorantie excusari possit, volumus quod præsentis litteræ per aliquos Curie nostre Cursores, ad basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, & Ecclesiæ Lateranensis, necnon Cancellariæ Apostolicæ valvas, ac in acie Campi Floræ affigantur, & publicentur.

S. 6. Quodque earum transumptis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, certa & indubitata fides adhibeatur, prout ipsis litteris originalibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensæ. Et transumpta hujusmodi, Legati, Vicelegati, Reoribus, vel Præfides, aut Gubernatores, seu alii Superiores provinciarum, terrarum, oppidorum, & locorum prædictorum, per publicum præconem publicari, & valvis Cathedralis, seu Matricis Ecclesiæ loci, aut palatii eorum residentie affigi faciant, publicationemque & affixionem prædictas, lapsis dictis viginti diebus, perinde omnes arctare, ac si personaliter intimatæ forent.

S. 7. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, privilegiis quoque, & indultis, quibuscumque personis forsan concessis, confirmatis, & innovatis, assertis consuetudinibus, quas (si quæ forent) per præsentem improbandas, nullasque & invalidas esse declaramus. Et quæ

Contravenientium pena.

Inhibitio contra Officiales ne licentias deferant concedant.

Licentia autem per Officiales dandæ nullæ sit, & à penis prædictis non excuset.

Justo publicandi.

Transumptorum fides.

Derogatio contrariorum.

ANNO
1562.

PIUS QUARTUS.

69 ANNO
1562.

Dar. P. An. 3.
die 6. Martii.

Publicatio.

omnia (illorum tenores pro sufficienter expressis habentes) revocamus, & annullamus, nullaque & irrita esse decernimus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Nulli ergo &c.

Dar. Romæ apud S. Petrum Anno Incarnationis Dominicæ 1562. pridie Non. Martii, Pontificatus nostri Anno tertio.

Anno à Nativitate Domini 1562. indictione 5. die vero 20. mensis Martii, Pontificatus Sanctiss. in Christo Patris & D. N. D. Pii divina providentia Papa Quarti anno 3. superscripta littera affixa, & publicata fuerunt in valois superscriptis, per nos Joannem Guerardum, & Philbertum Capuis Cursores Apostolicos.

Petrus Valerini Mag. Curs.

L.

Jurisdictioni, & facultates Cardinalis protectoris & judicis causarum Monasterii, & Monialium (impudicarum jam mulierum) Convertitarum de Urbe nuncupatarum.

Institutionem hujus Monasterii, & ejus indulta, vide sup. in Leon. X. constit. 39. Salvator, ubi notavi in Tomo I.

Edita An. D.
1562.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio &c.

Causa const.

Cum sicut accepimus, non sine animi nostri displicentia, Monasterium Convertitarum de Urbe, illiusque Moniales, ob lites, & questiones quibus ad diversa Urbis Tribunalia occasione bonorum meretricum curialium, & aliarum quarumcumque mulierum inhonestam vitam agentium, & ab intestato decedentium, seu quæ eisdem Monialibus juxta formam felicis recordationis Leonis Papæ V. & aliorum prædecessorum nostrorum partem debitam non donaverint, vel reliquerint, vel alias dictæ bullæ non satisfecerint, ac locationum, censuum, donationum, hæreditatum, legatorum, & diversarum aliarum rerum, tam in agendo, quàm defendendo ipsum Monasterium concernentium, & ad illud, ac ejus Moniales prædictas, quovis modo spectantium jugiter implicata existant, & quamplurima damna & incommoda patiantur, ac impensis litis valorem, de qua pro tempore agitur, sæpenumero exuperare, atque propter hujusmodi diuturnam prudentiam, & illarum expeditionis tarditatem, ipsum Monasterium à plurimis annis citra multis debitis involutum existat, ita ut vix ab eis possit explicari, aut habere unde illius onera, & dictarum Monialium alimenta proveniant, nisi de celeri & opportuno remedio provideatur.

Advocatio
causarum
Monasterii
non instru-
tarum cor-
tam quocum-
que iudice
veterenim
cum quibuf-
cumque
etiam privi-
legiatis.

§. 1. Nos Monasterium Convertitarum prædictarum, in quo mulieres carnis libidinum, & licentiose vitæ afluere, caritative recipiuntur, & in viam Domini diriguntur, earumque & illas sequentium animarum æterna salus paratur, tantoque hospitalia & alia pia loca, in quibus Christi pauperes, tam infirmi quàm alii recipiuntur, aluntur, & cooperiuntur excellere, quantò anima, & corpus, & cetera terrena antecellunt, ac earum perturbatis & indemitibus, paterna pietate favorabiliter consulere, & ut ab hujusmodi dispendiis & expensis quanto citius subleventur, providere volentes, Motu simili, & de certa scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, omnes & singulas causas inter dictum Monasterium & Moniales prædictas, five earum Gobernatores, ac Procuratores, & Agentes, & quascumque alias etiam singulares personas, Collegia, Universitates, Societates, etiam pia & religiosa loca, quiscumque status, gradus, ordinis, & qualitatibus, privilegiatis & privilegiata, tam coram S.R.E. Camerario, necnon Auditore & Præsidente ac Clericis Cam. Apost. necnon Vicario, & Governatore, ac Senatore Urbis, Capitaneoque

& aliis quibuscumque iudicibus, ordinariis & delegatis, etiam causarum Palatii Apostolici Auditoribus, ac S.R.E. Cardd. nunc & pro tempore existentibus occasione quorumcumque bonorum & rerum prædictarum Monasterium, & illius Moniales, & alios prædictos, tam conjunctim quàm divisim, ac tam active quàm passive concernentibus, & ad prædictum Monasterium & Moniales hujusmodi quomodolibet, & de interesse ipsarum quomodocumque & qualitercumque apparere possit spectantibus in quacumque instantia, inter illos, necnon alia æque, vel magis pia loca, Universitates, Collegia, quomodocumque privilegiata, viduas, pupillos, & alias personas etiam exemptas pendentibus quiscumque qualitatibus, status, ordinis, vel conditionis & naturæ existentibus etiam majores expressis, in eodem statu & terminis, in quibus reperiuntur (dummodo instructæ non sint) aut illas, ac omnes alias & singulas de cetero inter Monasterium & Moniales hujusmodi, illius Gobernatores, procuratores & agentes ac prædictos, & alios quoscumque quomodolibet, tam active quàm passive movendas harum serie advocamus.

§. 2. Ac in Venerab. fratrem nostrum Joan. Episcopum Sabinen. S.R.E. Cardinalem Moronum nuncupatum, modernum, & pro tempore existentem protectorem ejusdem Monasterii Convertitarum, iudicem ordinarium & perpetuum, ad prædictas, necnon quascumque alias, similes vel dissimiles, causam & causas, ac etiam criminales & mixtas, tam per eos, & contra eos, & eorum singulares personas super præmissis, à quibuscumque aliis rebus, iuribus, & actionibus, super bonis & rebus quiscumque qualitatibus, quantitatibus, valoris & naturæ existent, & ad Monasterium & Moniales præfatas hujusmodi pertinentes, inter eos, ac personas, Universitates, Collegia, seu loca pia, etiam privilegiata & exempta, tam active quàm passive pro tempore movendas juxta ordinariam jurisdictionem seu facultatem, tam Gobernatori quàm Auditori Camere, seu Vicario U. bis præfato, & eorum cuilibet attributam, seu attributas, per se, vel ejus Auditorem, nunc aut pro tempore existentem seu alium per eum deputatum, vel deputandum audiendi sineque debito terminandi & decidendi & quod decrevit in quocumque loco, & contra quascumque personas quantumcumque privilegiatas plenarie exequenda seu exequi faciendi quibuscumque inhibitionibus, etiam vigore specialium commissio- num, etiam nostra & successorum nostrorum hujusmodi manu signata, emanata, & emanante non obstante auctoritate Apost. tenore præsentium perpetuo constituimus & deputamus, & ad hunc effectum illi etiam per alium, seu alios quoscumque, tam in Rom. Curia, quàm extra eam, & per edictum publicum confito summarie sibi de non tuto accessu, citandi & monendi, ac eisdem & præfatis.

§. 3. Necnon quibuscumque aliis etiam Curie Capitolii primo & secundo illius Collateralibus, ac Appellationum Capitaneo, quam aliarum ejusdem Urbis Curiarum iudicibus & personis, tam ecclesiasticis quàm secularibus, quibus, & quoties opus fuerit, sub censuris, sententiis, & penis ecclesiasticis, ac etiam pecuniariis, de quibus eidem Protectori, five ejus deputandi Auditori, videbitur inhibendi & in eventum non partitionis, contra inobedientes & rebelles ad declarationem incursum censurarum, & penarum hujusmodi, illarumque aggravationem, & alia, juxta sylum & morem dictarum Curiarum in similibus servari solitum, & alias prout sibi videbitur.

§. 4. Sententiamque five sententias, debite executioni demandandi seu demandari faciendi in omnibus & per omnia, & juxta etiam facultatem dictis Audit. Camere, Urbis Gobernatori, & Vicecancellario per eandem bullam concessam.

§. 5. Contradictores quoscumque & rebelles, per censuras & penas ecclesiasticas, ac etiam pecuniarias, aliasque juris & facti opportuna remedia appellacione postposita compescendi auxiliumque

Deputatio & facultates iudicis dictarum causarum, & Protectoris Monasterii.

Facultas inhibendi quibuscumque iudicibus Urbis.

Sententias exequendi.

Inobedientes coercendi.

Cetera necessaria faciendi.

Causas realium di ab aliis iudicib.

Et cause alibi cognosci nequeant.

Clausulae preservativae.

Decretum irritans.

Clausulae derogatoria.

brachii secularis, ad hoc si opus fuerit, invocandi.

§. 6. Omniaque alia & singula in praemissis, & circa ea, necessaria, seu quomodolibet opportuna, faciendum exequendum.

§. 7. Ac causam & causas, motas & movendas, commissas & committendas, toties quoties opus fuerit, semel & pluries ejusdem Cardinalis arbitrio reassumendi plenam & liberam licentiam & facultatem concedimus.

§. 8. Decernentes Monasterium Convertitarum praedictarum, & illius Moniales & Gubernatores, seu Procuratores, & eorum agentes, personaeque praedictas, ex nunc deinceps occasione praemissorum alibi quam coram praedicto nunc, & pro tempore dicti Monasterii Convertitarum existente Protectore conveniri, aut alios convenientes constringi non posse. Ac processus, sententias & decreta per alium, vel alios, tam ordinarios quam delegatos in causis praedictis quomodolibet pro tempore formatas, latis, & factas, cum inde secutis quibuscumque, nulla, irrita, & inania, nulliusque roboris vel momenti fore.

§. 9. Praesentes quoque sub quibuscumque revocationibus, susceptione, & exceptionibus, similibus vel dissimilibus gratiarum, etiam per nos & successores nostros Rom. Pont. aut Sedem Apost. vel ejus Legatos, etiam per Regulas Cancellarii Apostolici pro tempore factas ad favorem fabricae Basilicae Principis Apost. de Urbe nullatenus comprehensas, sed semper ab illis penitus & omnino exemptas esse, & censeri, nec eisdem praesentibus per quascumque literas, & quavis regulas generales & speciales, etiam derogatarum derogatorias, efficaciores & insolitas clausulas, & irritantia decreta, sub quacumque verborum expressione in se continentia derogari posse, & si illi ullo umquam tempore ex aliqua etiam quantumvis necessaria & urgentissima causa derogari contingat, nisi tenor illarum de verbo ad verbum nihil omisso insertus, & hujusmodi derogatio consistorialiter facta, & per trinas, & distinctas literas eundem tenorem continentes tribus similibus distictis vicibus, Monialibus, Gubernatoribus, & Deputatis, ceterisque personis praedictis legitime intimata & insinuata fuerit eorumque expressus accedat ad id consensus, derogationem nemini suffragari, nec praesenti Motu proprio per quancumque concessionem, etiam nostra & successorum nostrorum manu signatam, fuisse & fore derogatum.

§. 10. Sique per quoscumque Judices quavis auctoritate etiam Cardin. sublata &c. iudicari debere, irritum quoque, &c.

§. 11. Non obstantibus praemissis, ac fel. rec. Bonifacii Papae VIII. etiam praedecessoris nostri de una, & in consilio generali edita de duabus dietis, dummodo non ultra tres dietas ad iudicium trahant, aliisque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, & Fabricae praedictae necnon Hospitalium, Ecclesiarum, Monasteriorum, & aliorum regularium, & piorum locorum, ac Ordinum quorum illi extiterint, & aliorum quorumcumque locorum exemptorum, juramento &c. roboratis statutis &c. privilegiis quoque, indultis, necnon conservatoriis, & exemptis, ac literis Apost. in forma Motus proprii ejusdem Capitoli Romani necnon Iudicibus, Curis, Tribunalibus, & eorum personis per quoscumque Rom. Pont. praedecessores nostros, ac nos & Sedem Apost. etiam Motu proprio, ac alias sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis in contrarium quomodolibet concessis, necnon reformationibus etiam noviter factis, ac etiam Motu proprio simili approbatis, etiam de reassumendis eisdem causis ad forum, seu Curiam Capitolii, quibus omnibus etiam si de illis &c. tenores &c. ac si in specie praesentibus infererentur, tam in genere quam in specie, ad effectum sufficiens, derogation. pro se sufficienter expressis haberi, & habere decernere. harum serie speciali-

& expresse Motu simili, & ex certa scientia, ac de potestatis Apostolica plenitudine derogamus, & sufficienter derogatum esse decernimus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 12. Volumus autem praesentis Motus proprii sola signatura sufficere, & ubique fidem faciat, tam in iudicio quam extra, clausula ordinaria non obstant, quodque praesentium transumptis manu alicujus notarii publici subscriptis, sigillo praedicti Protectoris, seu alterius quiscumque personae in dignitate ecclesiastica constitutae, vel Curiae secularis munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, tam in iudicio quam extra, quae praesentibus adhiberetur si exhibita vel ostensa fuerint.

Placet Motu proprio I.
Dat. Romae apud S. Petrum, 16. Kalend. Aprilis, Anno tertio.

Jurisdicção Inquisitorum haereticæ pravitatis, procedendi contra quoscumque regulares, & religiosos, quoquo modo privilegiatos, & exemptos, de haeresi culpabiles, dummodo eorum Superiores non praevenerint.

Hanc jurisdictionem etiam private quoad ipsos Ordinum, & religiosorum Superiores, Inquisitoribus concessit Paul. V. ut infra in Tomo III. in ejus cons. 26. Romanus. Et consonat consil. 22. Alex. IV. Ne commissa, quae est sup. fol. 120. Tom. I.

PIUS PAPA QUARTUS.

Ad futuram rei memoriam.

Pastoris aeterni vices, meritis licet insufficientibus gerentes in terris, sic vigilantia nostra sollicitudinem circa oves curae nostrae divina dispositione commissas exercere studemus, ne illae ab ovili suo, extra quod salvus nemo esse potest, aberrantes, in luporum rapacium insidias nullo modo incidere valeant, sed intra causas debite custodiam, ac coelestia pascua feliciter pervenire possint.

§. 1. Nuper siquidem accepimus, nonnullos Rom. Pontifices praedecessores nostros antea dictis temporibus ex causis tunc expressis, diversis Ordinibus etiam mendicantibus, quod contra eorum fratres & religiosos in quibuscumque causis etiam haereticis, & praeterea inquiri, aut procedi quoquo modo non possit, inter alia privilegia per suas literas concessisse, & nos forte illas confirmasse, supercrecente autem temporis, & hominum malicia, hac nostra potissimum aetate, (quod sane dolenter referimus) in agro Evangelici Patrisfamilias zizaniam etiam inter dictos fratres & religiosos in tantum pullulasse, messesque tritico rarescentes adeo pollueri videmus, ut vulpeculae jam in aperto vineam Domini demoliri nitantur.

§. 2. Quare nos pro pastoralis officii nobis divinitus crediti debito, quantum cum Deo possumus, opportuna in praemissis remedia adhibere volentes, ut quos Dei amor a malo non revocat, poena saltem formido a delinquendo retrahat. Et propterea considerantes, quod si dilecti filii Inquisitores haereticæ pravitatis, tam generales quam ubique locorum deputati particulares, in causis haereticis hujusmodi contra quoscumque quorumvis Ordinum etiam quomodolibet exemptorum & mendicantium fratres professores & religiosos, quando cumque causas ipsas haereticas ab eis inchoari contigerit, procedere valerent, profecto id in non modicam fidem catholicam cederet utilitatem, cum praesertim ex hoc superiores & praetati ordinum praedictorum, sicut verisimiliter credendum est, ad subditos suos sub probata religionis norma continendos, transgressoresque debitis poenis compescendos facile reddi possint diligentiores. Idcirco Motu proprio, &

Sola signatura sufficit.

Pope subscrip.
Dat. P. An. 3.
die 17. Martii.

I. I.

Edita An. D.
1562.

Exordium.

Pontifices concesserunt diversis Ordinibus de excessu in non posse nisi per eorum Superiores.

Sed hic Pont. id majorem fidei utilitatem, Inquisitoribus omnibus facultatem dat procedendi contra quoscumque fratres, & religiosos, & exemptos, dummodo eorum superiores non praevenerint.

ex certa scientia, ac matura deliberatione nostra, hac nostra firmiter valitura constitutione, auctoritate Apostolica tenore presentium statuimus, ordinamus, atque decernimus, quod de cetero in omnibus Christiani Orbis partibus Inquisitores hæreticæ pravitatis, tam generales, quam in quibusvis Provinciis, Civitatibus, Oppidis, Terris, & locis pro tempore deputati particulares, contra quoscumque Fratres, professores & Religiosos Ordinum prædictorum, ac etiam contra quoscumque quovis modo privilegiatos & exemptos, de hæresis crimine quomodolibet suspectos, aut culpabiles, dummodo ab eorumdem Fratrum professorum, & Religiosorum Superioribus, & Prælatibus in causis huiusmodi præventi fuerint, iuxta facultates officii ipsius inquisitionis inquirere & procedere, ac culpabiles, & delinquentes repertos secundum canonicas sanctiones castigare, aut punire, ceteraque omnia, & singula facere, gerere, & exequi libere, & licite possint & valeant, super quibus plenam & liberam eisdem Inquisitoribus, & eorum cuilibet facultatem concedimus & potestatem.

§. 3. Sicque per quoscumque Judices, & Commissarios quavis auctoritate fungentes, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi facultate, iudicari & definiri debere, irritum quoque & inane si secus super his & quocumque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, decernimus.

§. 4. Non obstantibus quibusvis Apostolicis, ac in provincialibus, & synodali Conciliis editis generalibus, vel specialibus constitutionibus, & ordinationibus, & Ordinum prædictorum etiam iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, etiam Mari magno, & Bulla aurea, vel alias quomodolibet nuncupatis, eisdem Ordinibus, & illorum Superioribus, ac Prælatibus, etiam per dictos Romanos Pontifices prædecessores nostros, & Sedem Apostolicam, ac etiam per nos, aut quoscumque alios quovis modo concessis, confirmatis, & iteratis vicibus approbatis & innovatis. Quibus omnibus, etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quavis alia expressio habenda, aut alia exquisita forma ad hoc servanda foret, eorum omnium tenores presentibus pro sufficienter expressis, & totaliter insertis habentes illis aliis in suo robore permanfuris, hac vice dumtaxat ad effectum presentium specialiter & expresse derogamus, ac sufficienter & plene derogatum esse volumus, atque decernimus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 5. Volumus autem quod presentium transumptis manu Notarii publici subscriptis, ac sigillo alicujus personæ in dignitate ecclesiastica constitutæ munitis, ea prorsus fides adhibeatur, quæ originalibus litteris ipsis adhiberetur, si forent exhibitæ, vel ostentæ.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die prima Aprilis 1562. Pontificatus nostri Anno tertio.

Anno à Nativitate Domini 1562. indictione quinta, die verò 10. mensis Aprilis. Pontif. Sanctiss. in Christo Patru. & D.N.D. Pii divina providentia Papa IV. Ann. tertio, retrospectiva litteræ Apost. affixæ & publicæ fuerunt ad vultus basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, Cancell. Apost. ac in acie Campi Floræ, limissis inibi illarum copiis auscultatis, & collationis eisdem originalibus litteræ, ut moris est, per Th. Thomam Roger. S. D. N. Papæ, sanctæ Inquisitionis Curs.

De Homicidiis, aliisque reis pænæ capitalis vel sanguinis, etiam non condemnatis, vel in contumaciam condemnatis, & infra sex menses non sponte se in carceribus constitutis, non audiendis, Appellationibus; condemnatorum in pœnam Fil-

co, & Cameræ Apost. applicatam non admittendis, nisi factis depositis. Ac de pœnis fractæ pacis vel treguæ, & allegatione novæ causæ, vel minoritatis. Et legitimæ filiorum confiscatione.

Quo ad prædictos reos extra carceres non audiendos, hanc bullam extendit ad omnes condemnatos in pœnam corporis afflictivam, & in quacumque instantia, Pius V. in constit. 40. Licet alias. Et terminum sex mensium, prærogavit ad annum in constit. 9. Cum ob. ubi videas declarationem etiam circa allegationem novæ causæ.

Bannitorum autem materiam, plene indicabo in constit. 6. Sixti V. Hoc nostri.

PIUS PAPA QUARTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

ET si cuncta, quæ ex multa Romanorum Pontificum prædecessorum nostrorum providentiæ processerunt, executioni debet demandanda esse censemus, illa tamen præcipue, quæ ad salubrem temporalis ditionis Apostolicæ Sedis directionem, & pro Cameræ Apostolicæ indemnitate prudenter ordinata comperimus, ut illibata, firmæque perpetuo subsistant, libenter non solum nostræ approbationis, verum etiam opportune innovationis munimine roboramus.

§. 1. Dudum siquidem cum fel. rec. Julius Papa II. prædecessor noster &c.

Omittitur hujus bullæ narratio, quia ipsa est supra. Fide.

§. 2. Et deinde piæ mem. Paulus Papa III. etiam prædecessor noster per eum ex plurimum fide dignorum testimonio accepto, quod nonnulli Civitatum, Terrarum, &c.

Omittitur narratio bullæ, quia tota est sup. Cum sicut ex.

§. 3. Nos igitur, ne litteræ prædictæ, ex eo quod illarum executio ab aliquibus fieri neglecta fuit, seu propter eorum forsitan non usum, in desertudinem abiisse & quocumque prætendi, seu aliter quomodolibet allegari, deque earum viribus hastitari contingat, sed illæ, ut par est, suos debitos sortiantur effectus, & ab omnibus observentur, providere volentes, Motu & scientia similibus, præfatas & alias quascumque (quarum, & inde fecutorum quorumque, aliorumque circa præmissa latius etiam de necessitate exprimendorum tenores, ac si de verbo ad verbum similiter inserti forent, presentibus pro sufficienter expressis haberi volumus) aliorum prædecessorum nostrorum super præmissis, tam sub plumbo, quam in forma Brevis editas litteras, & in eis contenta, ac inde sequuta quacumque, Apostolica auctoritate, tenore presentium approbamus, & confirmamus, eisque Apostolicæ firmitatis robur adjicimus, ac ea valere perpetuæque roboris firmitate subsistere, ac suos effectus plene fortiri, & ab omnibus quos illa concernunt, & concernere poterunt quomodolibet in futurum integre observari debere decernimus, omnesque & singulos, tam juris quam facti defectus, si qui forsitan tunc intervenireint, in eisdem supplemus.

§. 4. Et nihilominus motu, scientia, & auctoritate præfatis, per hanc nostram constitutionem in perpetuum valituram statuimus, & ordinamus. Quod nullus in pœnam capitis condemnatus, qui sub prætextu quod ipse aliquem bannitum occiderit, aut alias quovis modo ad manus Curie pervenire fecerit, & propterea à dicta pœna capitis in quam condemnatus fuit, liberari, & absolvi debere, aut alium bannitum per ipsum condemnatum nominandum, iuxta formam bannimentorum de super emanatorum remittere posse prætendit, per procuratorem, excusatorem, defensorem, vel ut quemlibet de populo, audiri, vel admitti possit, aut debeat, nisi prius reus ipse, qui liberationem, aut absolutionem, vel nominationem, & remissionem huiusmodi consequi, aut fieri posse, vel debere prætendit, seipsum in carceribus iuxta formam litte-

Edita An. D. 1562. & 1565.

Exordium.

Julius II. edidit constit. in rub.

Paulus III. similiter hic cit.

Hic Pont. eas approbat.

Et capitaliter condemnatum decernit non audiri extra carceres, etiam si petat remissionem ex eo quod bannitum occiderit.

Et ita ac non alias iudicari jubet.

Contrariis derogat.

Transumptis credi mandatur.

Dat. P. A. 3. die 1. April.

Publicatio.

LII.

ANNO
1562.

72

PIUS QUARTUS.

ANNO
1562.

Et ita judi-
cari jubet.

Quibusum-
que non ob-
stantibus.

Fides exem-
plorum.

Dar. P. An. 3.
die 10. April.

Publicatio.

Edita An. D.
1562.

Relatio præ-
cedentis con-
sistit.

Dubium de-
super exor-
tum.

rarum Julii II. prædecessoris nostri hujusmodi,
personaliter constituitur.

§. 5. Quodque litteris prædictis, & huic nostræ
dispositioni, nisi de ipsis clara, & expressa mentio-
ne facta, & per nostram, & successorum nostrorum
Romanorum Pontificum manus propriæ signa-
turam derogari non possit. Sicque, & non aliter in
omnibus, & singulis præmissis, ac tam præsentibus,
& pendentibus, quam futuris causis, & litibus, per
quoscumque Judices, etiam S. R. E. Card. & de late-
re Legatos, ac Palatii Apost. causarum Auditores,
sublata eis & eorum cuilibet aliter judicandi, & in-
terpretandi facultate & auctoritate, judicari debe-
re, ac quicquid contra præsentium tenorem contige-
rit attentari, irritum, & inane decernimus.

§. 6. Non obstantibus constitutionibus, & ordi-
nationibus Apostolicis, & Provinciæ nostræ Mar-
chiæ Anconitanæ statutis, & consuetudinibus, etiam
juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis
firmitate alia roboratis, privilegiis quoque, indul-
tis, & litteris Apostolicis, illi, Civitatibus, Terris,
& locis præfatis, eorumque Gubernatoribus, &
Communicatibus, sub quibuscumque verborum
formis & tenoribus, ac cum quibuscumque clausulis
& decretis, in genere vel in specie, etiam motu
& scientia similibus, etiam iteratis vicibus approba-
tis, & innovatis, quibus omnibus, illorum teno-
res, ac si de verbo ad verbum infererentur, præsen-
tibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis
in suo robore permanentis, hac vice dumtaxat spe-
cialiter, & expresse derogamus, ceterisque contra-
riis quibuscumque.

§. 7. Volumus autem quod præsentium transum-
ptis, etiam impressis, manu alicujus notarii pu-
blici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in di-
gnitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem
proflus fides, in judicio & extra, tam in dicta
Curia, quam extra eam, ubilibet adhibeatur, quæ
præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel
ostensæ.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Pisci-
toris, die 10. Aprilis 1562. Pontificatus nostri
Anno tertio.

Anno à Nativitate Domini 1562. indictione 5. die
22. mensis Maji, Pontificatus Sanctiss. in Christo
Patris & D. N. D. Pii divina providentia Papæ
Quarti, anno 3. suprascripta littera lectæ, affi-
xe, & publicata fuerunt in valvis basilicarum
Principis Apostolorum, & S. Joannis Lateranen.
de Urbe, ac Cancellaria Apostolica, & in acie
Campi Floræ, & illis amotis, copie earundem affi-
xe in dictis locis dimisse fuerunt, per nos Bernardi-
num Andreuntium, & Julium Parinum Curss.

Hon. Montarg. Mog. Curss.

Sequitur declaratio dictæ Constitutionis.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Cum nos dudum vestigiis fel. rec. Julii Papæ II.
prædecessoris nostri inhaerentes, nullum ho-
micidium reum, qui de illo etiam sub prætextu quod
alium bannitum occiderit, seu ab alio banniti oc-
cidere, juxta formam bannimentorum id permit-
tentium nominatus fuerit, aut ex alia quavis causa
absolvi debere pretendat, ad absolutionem peten-
dum per procuratorem, aut excusatorem, seu de-
fensorem, etiam velut quemlibet de populo com-
parentem, audiri vel admitti debere, nisi ipse reus
se in carcere personaliter constituerit, statuerimus
& ordinaverimus, prout in nostris desuper editis
litteris, quarum tenores præsentibus haberi volu-
mus pro expressis, plenius continetur.

§. 1. Verum eum, ut nuper accepimus, à non-
nullis in dubium revocetur, an in dictis nostris li-
teris solum homicidæ banniti, vel condemnati, non
autem illi qui nondum condemnati, vel banniti es-
sent, comprehendantur.

§. 2. Nos propterea omnem ambiguitatem circa
præmissa amputare, & penitus tollere volentes Mo-
tu simili, & ex nostra certa scientia, hac nostra per-
petuo valitura constitutione, nullum ab homicidio,
seu alio quovis crimine, pro quo pena corporalis
veniat imponenda, ex aliqua causa, etiam quia
alium bannitum occiderit, vel ab alio banniti oc-
cidere, juxta formam proclamatum, & bannimen-
torum id permittentium, vel constitutionum desu-
per editarum, nominatus fuerit, five etiam quia
ab ipso occisus, bannitus & condemnatus extiterat,
ac impune ex dispositione dictorum proclamatum
& bannimentorum, seu constitutionum occidi po-
tuerit, se absolvi debere prætendentem, five pro
homicidio, aut alio crimine per eum commissio ban-
nitus & condemnatus, five nondum bannitus nec
condemnatus, nec etiam inquisitus existat, per se
vel aliam personam pro eo quomodolibet com-
parentem, ad absolutionem petendum admitti vel
audiri posse, nisi se prius in carcere constituerit, &
ad causam heredes ab ipso occisi, citari, & in even-
tum quod quis ab homicidio pro ipsum commissio,
ex eo quod alium bannitum occiderit, vel ab ali-
quo banniti occidere, ut præfertur nominatus fue-
rit, se absolvi obtineat.

§. 3. Eum nihilominus à loco in quo heredes oc-
cisi commorantur, quousque ab illis pacem obti-
nuerit, exulare debere, neque ad eum locum ali-
ter, nisi pace ab illis habita remitti posse, perpetuo
statuimus, & ordinamus.

§. 4. Inhibentes nihilominus omnibus, & singu-
lis Judicibus quacumque auctoritate fungentibus,
sub excommunicationis latæ sententiæ, aliisque ar-
bitrii nostri pœnis, & nostris etiam de latere Læga-
tis sub indignationis nostre pœna, ne contra teno-
rem hujus nostre constitutionis, de cetero quem-
piam sicut præmittitur se absolvi petentem, nisi in
carcere constitutum, quoquomodo audeant, vel
admittant, & ubi secus fecerint, processus taliter
habitos, ac sententias desuper latus, nullius fore
momenti, ac vicio nullitatis subjacere, & illis non
obstantibus reos se absolutos pœnis debitibus pu-
niri, seu de novo inquiri posse.

§. 5. Sicque per quoscumque Judices etiam
S. R. E. Cardinales, & Palatii Apostolici Auditores,
sublata eis aliter judicandi & interpretandi facul-
tate, judicari & interpretari debere, irritumque &
inane, quicquid secus à quoquam quavis auctori-
tate scienter, vel ignoranter attentari contigerit,
decernimus.

§. 6. Non obstantibus constitutionibus, & ordi-
nationibus Apostolicis, legibus, ac provincialibus,
& municipalibus quorumvis locorum statutis, &
consuetudinibus, etiam juramento, confirmatione
Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, nec
non proclamatis, & bannimentis super præmissis
editis, & in posterum edendis, privilegiis quoque,
indultis, & litteris Apostolicis quibuscumque in contra-
rium forsan concessis, confirmatis, & innovatis,
quibus omnibus (illorum tenores præsentibus pro
sufficienter expressis habentes) quoad præmissa,
specialiter & expresse derogamus, ceterisque contra-
rariis quibuscumque.

§. 7. Ac præsentium solam signatram nostram
sufficere, & ubique fidem facere in judicio & extra,
regula contraria non obstante eorumque seu lite-
rarum desuper expediendarum exemplis, etiam
impressis, manu alicujus Notarii publici subscrip-
tis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesi-
astica constitutæ munitis, ac proflus fides in judicio
& extra judicium adhibeatur, quæ præsentibus ad-
hiberetur si forent exhibitæ vel ostensæ.

Placet Motu proprio I.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Pridie Non. Octob.
Anno tertio.

Anno à Nativitate Domini 1562. indictione 4. die vero
2. mensis Febr. Pontificatus Sanctiss. in Christo Patris,
& D. N. D. Pii divina providentia Papæ IV. An-
no 4. suprascripta littera Apostolica lectæ, & publi-

Declaratio
& extensio
dictæ consti-
tutionis
etiam ad
condemna-
tos.

Bannitosque
prohibet re-
mitti in loco
ubi sint ha-
redes occisi,
nisi habita
pace.
Omnibus
Officialibus
id vetat.

Et judicari
mandat.

Quibusum-
que non ob-
stantibus.

Transumptis
credi jubet.

Papæ sub-
script.
Dat. P. An. 3.
die 6. Octob.
Publicatio.

cata

cata fuerit in valvis basilicarum SS. Joannis Lateranen. & Principis Apostolorum de Urbe, ac Camcellarie Apostolicæ, & in acie Campi Floræ illis- que amotis illarum copiis affixis dimissis per me Bernardinum Andream Apóst. Curf.

Antonius Clerici Mag. Curf.

Sequitur plenior declaratio supradictarum constitutio- num.

PIUS PAPA QUARTUS,

Motu proprio, &c.

Edita An. D.
1565.

Relatio præ-
infectarum
bullarum.

Dubia desu-
per exortata

Licet dudum per felicis recordationis Paul. III. & forsan alios Rom. Pontifices prædecessores nostros, ac deinde per nos inter alia iustissimis rationibus tunc expressis provolum, ordinatumque fuerit, quod in causis criminalibus seu mixtis, Fiscum, & Cameram Apostolicam quomodolibet concernentibus, in quibus reos condemnari contingeret, appellationes vel provocaciones, nisi prius facto deposito penarum in quibus ex delicto delinquentes ipsi, aut illi qui pro eis fideiussissent, vel ex contractu quoquomodo condemnandi venirent, aut eatenus condemnati fuissent, omnino recipi, & admitti non possent. Sed appellationes, & provocaciones in causis huiusmodi interpositæ, & in futurum interponendas, ac appellante, ipsi rejici deberent. At si sententia esset in penam capitis condemnatoria, non admitteretur appellatio, neque aliter audiretur reus, nisi in carceribus constitutus. Et insuper quod quæcumque rescripta, & commissiones causarum similium appellationum, & provocacionum ad ejusmodi instantiam, per quemcumque ad commissiones Signaturæ Justitiæ signandus deputatus, aut etiam manu nostra, & successorum nostrorum signanda, non facto dicto deposito nullus essent roboris, vel momenti, sed illis non obstantibus, ad ulteriora in causis ipsis usque ad penarum prædictarum effectuale executionem debere procedi. Quodque commissiones causarum, in quibus interesse Fisci, & Cameræ prædictis ageretur non deberent signari, neque expediri nisi citato Procuratore Fiscali, & Thesauro Provincie ex qua qualibet causa existeret, aliasque & aliter prout in singulis Pauli & aliorum prædecessorum, & nostris sub annulo Piscatoris, sub die decima Aprilis, millesimo quingentesimo sexagesimo secundo, expeditis literis quarum tenores hic pro expressis haberi volumus, latius continetur.

§. 1. Tamen ordinationes, & dispositiones huiusmodi, nostræque & dictorum prædecessorum in illis edendis intentio, cavillantur calumniis in dies eliduntur, & super earum sinistris interpretationibus, Agentes pro Fisco, & Camera prædicta fatigantur, ex eo præsertim quod nonnulli circa faciendum depositum prædictum contentandis satisfactum esse statatis, & dispositionibus prædictis ex sola cautione in forma depositi, & quod citare Procuratorem Fiscalem, & Thesaurarium in expeditione singularum commissionum, tanquam nimis rigorosum, videatur esse præter nostre mentis intentionem. Insuper adversus obligationem constituendi reos appellatos in carcere, diversas etiam cavillationes opponunt. Unde provenit, quod ipsi rei non coacti facere actuale depositum, non curant causas suarum appellationum expediri, sed potius de industria procurant illas in longum protrahi, maxime cum non citatis Procuratore Fiscali, & Thesauro Provincie contingat par eos impetrari commissiones directas Judicibus, vel in Alma Urbe existentibus negotiorum multitudine impeditis, vel extra Curiam eorum amicis, & in locis in quibus non sunt qui jura Fisci tueri possint aut velint, arrando etiam in ipsis commissionibus multa mendacia, ut illorum medio possint ad retardandum executionem, & causam intricandum inhibitiones ab ipsis Judicibus ex-

torquere. Quæ omnia non solum tendunt in Cameræ prædictæ detrimentum (quod tolerabilis esset) sed etiam proveniunt inde delictorum impunitate, datur aliis materia delinquendi, & universis populis scandalum non modicum.

§. 2. Nos igitur calumniis, & aliis inconvenientibus huiusmodi quantum cum Deo possumus obviare, & in his opportune providere volentes, hac nostra in perpetuum valitura declaratione, ordinatione, constitutione, statuimus, & ordinamus. Quod in supradictis seu criminalibus, aut civilibus, vel ex delicto, five ex contractu, ut præfertur procedentibus causis, Fiscum, & Cameram prædictam, illiusque interesse quomodolibet concernentibus non liceat alicui condemnato ejusdemque status, gradus, ordinis, qualitatibus, & conditionibus, etiam si Universitates, & Collegia fuerint, & condemnationibus huiusmodi, & sententiis desuper latis, seu illæ definitivæ fuerint, seu interlocutorie, aut vim definitivæ habentes, appellare, provocare aut de nullitate dicere, neque quomodolibet interpositæ appellationes, provocaciones, & nullitatis dictiones huiusmodi, per quosvis Judices ordinarios vel delegatos in Romana Curia, vel extra eam commorantes, etiam per Camerarium nostrum, & Præsidentes & Clericos dictæ Cameræ, necnon ejusdem Cameræ Apostolicæ causarum generalem Auditorem, modernos, & pro tempore existentes, aut eorum aliquem, sub indignationis nostræ, ac excommunicationis pena recipi, seu admitti possint, nisi prius eis, & eorum cuilibet per publica instrumenta confito quod ante interpositam unamquamque appellationem, seu provocacionem, vel nullitatis dictionem, si condemnatio continet penam pecuniariam, seu pecunia æstimabilem, fuerit ejusdem penæ, seu illius æstimationis factum integrale, actuale, & purum depositum in manibus Thesauro Provinciali illius. Ad quod quidem actuale, & integrale depositum quoscumque teneri volumus, nisi forsan summa deponenda respectu personæ condemnatæ sit adeo magna, ut inspecta quantitate & qualitate facultatum ipsius, non sine maximo dispendio in brevi temporis spatio provideri possit. Quo casu habita fide super hoc à Governatore, seu Vicelegato illius Provincie, quod consideratis præfatis condemnatis integre deponere non valeat, volumus ad medietatis, seu alterius minoris sumæ, prout eorum facultates posse ferre per dictos Governatores, seu Vicelegatos judicabitur, & depositionem omnino teneri, dummodo hoc casu præstent cautionem in forma depositi de solvendo residuum penæ, in qua condemnati fuerint infra annum nisi absolutionem legitime obtinuerint, & de prædicta absolutione decuerint, dummodo per nos, vel signaturam aliud super dicto deposito, citato tamen semper Fisco, ordinatum seu decretum non fuerit.

§. 3. Et si pena sit capitalis pecunia non æstimabilis, nisi prius ipso condemnato in carceribus constituto, ac etiam facto deposito præfato talium appellationum, provocacionum, & nullitatum commissiones signari, aut alias jurisdictione ordinaria per Judices supranominatos, seu alios, inhibitiones, monitoria, aut citationes extra Curiam decerni, & expediri, vel per eorum Notarios scribi, & relaxari non possint, nisi prius antequam illorum singulari signentur, aut respective decernantur, cum competentis termino ad dicendum causam quare signari, aut expediri non debeat, ut moris est, Procurator Fiscalis, & Thesauro, vel Procurator in Curia Romana existentes, Thesauro illius Provincie ex qua fuerit condemnatio facta, conjunctim citati fuerint, & si signanda veniant, non nisi in Curia, vel in Curia generali, & loco residentis Præsidis illius Provincie ex qua causa ipsa est, committi possit. Et si ob inadvertentiam seu alias, aliquas commissiones, seu inhibitiones, aut monitoria, & citationes super præmissis, aut aliquo præmissorum expedire contingat, Judices quibus illa præsentantur respective, illorum vigore ad inhibitionis decretum,

Declaratio
circa deposti-
ta fienda à
condemna-
tis ad favo-
rem Fisci &
Cameræ.

Vide quod
dixi in rub.

Declaratio
quo ad capi-
tallyter con-
demnatos, &
commis-
siones mox si-
gnandas nisi
Fisco, & The-
sauro citati.

aut aliquem alium actum, sub simili indignationis nostræ, ac excommunicationis pœna, non audeant, neque possint procedere, nisi prius, & ante omnia fieri apud acta legitime constito, quod depositum fuerit, ut præfertur factum. Quodque in expeditione commissionis, inhibitionum, monitorii, & citationum extra Curiam, citationes prædictæ intervenerint, & rei ipsi se in carceribus constituerint.

Declaratio circa pœnam fractæ pœnæ, & treguarum, & cautionis de non offendendo.

§. 4. Et insuper quoniam eo hominum provitas devenit, ut hi qui homicidium, vel malefium aliquod committere deliberant, prius quarant eos quos pro hostibus habent, treguarum pacis prætextu assecurando, decipere, quo facilius postea delecti perpetratio reddatur, expeditque propterea ut quos Dei timor non retinet, pœnarum rigor deterrendo coerceat, populorum quieti consulere, & flagitiosos scilicet, ac scandalosorum ausus deprimere, necnon cavillationibus, quas ad solutiones pœnarum effugientes hominum malitia in dies excogitat, subvenire volentes, quod pœnæ conventionales pacis, & treguarum ruptæ, & fidei iustitias de non offendendo, stipulentur in futurum per Notarios in favorem Cameræ Apostolicæ, & non Communium vel aliorum, & si aliter factæ fuerint, in ipsius Cameræ favorem stipulare censentur.

Allegationemque bonæ causæ.

Tu vide quod dixi in rubricâ.

Declaratio circa promissiones de non offendendo.

§. 5. Quodque in causis treguarum pacisque fractarum, ipsi fractores, vel eorum fidei iustitias allegare non possint quod offensæ ex nova processit, nec allegata cuicumque suffragetur.

§. 6. Et quia in cautionibus de non offendendo, partes intendunt, ut sibi eo quo melius fieri potest modo, cautum sit ne offendatur impune, & ideo promittunt non solum pro seipsis, sed etiam pro aliis eorum conjunctis, quod non offendant, neque offendi faciant, sed aliquando Notariorum imperitia sensum, & intentionem partium pervertente contigit eos scribere, quod partes promittunt non offendere per se, & alios, ubi scriptum oportuisset pro se, & aliis, differentiam videlicet inter has voces per, & pro, necessitates, vel confundentes, ac propterea præbentes ansam cavillosis, & delinquentibus prætendendi, quod facta offensione per unum ex comprehensis in fidei iustitia, non sit commissæ stipulationis pœnæ, nisi constet quod ille qui offendit, de mandato principalis offenderit, unde etiam infinita scandala eveniunt, illaque remanent impunita. Idcirco quod si quis Notarius errorem humilimum commiserit, mille ducatorum auri Cameræ Apostolicæ applicandorum pœna plectatur, & nihilominus five ex dictione per, five ex dictione pro, stipulatio concepta, & offensus sequuta fuerit, principales promittentes ad pœnam conventionalem perinde teneantur, ac si ipsis mandantibus offensus emanasset, & de eorum mandato legitime constaret, iidemque Notarii sub simili pœna in instrumentis fidei iustitiarum de non offendendo, opponant clausulam. Quod data contraventione alicujus comprehensi in stipulatione, & si contingat, talem contravenientem vere & realiter confiteri, vel fidei propter contumaciam in non comparendo, pœna conventionalis committatur, & exigi possit a fidei iustitiis, nulla excusatione vel exceptione penitus admissa, immo habeantur crimen & contraventio ac si per testes vel alias legitime probatum, vel approbatum fuissent. Et si clausula in stipulatione omissa fuerit, illa nihilominus pro apposta, contraventio pro legitime approbata habeantur.

Declaratio quod sententia & contumacia rei, præiudicet fidei iustitiis, in his cautionibus.

§. 7. Et similiter si per principalem, five alium in fidei iustitia comprehensum, stipulationi contravenientem, & seu contraveniens contumax, ilque in meram contumaciam condemnatus fuerit, fidei iustitiam ad solvendum pœnam conventionalem cogatur, nec possit audiri, suum principalem offendisse ex causa necessaria defensionis allegando, & deducendo, ne videlicet delinquentes in-

directe per procuratorem, & interpositam personam audiantur, & quod dictum est in exemplo exceptionis huiusmodi, id etiam ad omnia alia extendatur. Et si talis clausula fuerit in prædictis stipulationibus omissa, nihilominus apposta similiter intelligatur.

§. 8. Quod & ad legitimam per parentes solvendam extendimus, ut illam solvere teneantur, etiam si eorum filii in meram contumaciam de aliquo delicto condemnati, aut banniti fuerint, non obstant quocumque statuto, aut forsan consuetudine in contrarium existente, quibus omnibus per præfentes in ampliori forma derogatum esse censuimus, & decernimus.

§. 9. Præterea, quoniam sæpe contingit, ut qui ex aliquo crimine in contumaciam condemnati fuerint, perdurant ad multos annos in contumaciam, expectantes occasionem, ut per temporis diuturnitatem criminis probatio impossibilis reddatur, & tunc querant contumaciam sibi remitti, & super defensionibus audiri, cum criminis probandi facultas est fisco sublata, causam plerumque vel coram Iudicibus in ipsos propositis, vel in locis ubi iura Fisci deduci non possunt introducunt, statuiamus, quod rei in contumaciam condemnati, ad suas defensiones faciendas admitti non possint, nisi infra sex menses, quo ad faciendam videlicet à die condemnationis, quo verò ad iam factas condemnationes, à die publicationis præsentium computandos, nec alibi quam in loco ubi condemnatio secuta est, vel in Curia generali Provincie ubi delictum fuerit commissum. Et si secus fieri contingat, quæcumque absolutiones desuper obtinende, etiam si vigore commissionis Signaturæ nostræ nullius sint roboris vel momenti, sed ad ipsarum condemnationem iam factarum executionem deveniri possit, & debeat. Quo termino sex mensium elapso, sententia in contumaciam lata, crimen notorium efficiat, & tamquam in rem iudicatam transiverint, realiter & personaliter executioni demandentur.

§. 10. Nec homicidii propter minor ætas viginti annorum, dum tamen majores quatuordecim annorum extiterint.

§. 11. Quod si banniti huiusmodi in contumaciam condemnati, veniant postmodum absolviendi, Iudices sub pœnam ille sententiarum, & infamie perpetuæ, illos gratis, & sine ulla sportularum solutione, absolvere debeant.

§. 12. In causis vero clericorum criminalibus mere Ecclesiasticis, Ordinarii ecclesiastici private ad seculares Iudices cognoscant, sed in aliis mixtis sit locus præventioni inter Ordinarium, & Iudicem secularem, dataque præventionem ex parte Ordinarii Ecclesiastici, non nisi contra clericos tantum procedere possit. Et si prætenderetur ratione connexitatis adiuncti, vel aliâs, quomodocumque laicum ejus forum sortiri, Iudex tamen secularis ita præveniens, quavis inhibitione sibi facta non obstante, absque censurarum vel aliarum pœnarum incurfu procedere possit. Necnon quibuscumque appellationibus, provocationibus, nullitatum dictionibus, commissionibus, inhibitionibus, & aliis decretis contra formam superius traditam per quoscumque etiam Iudices præfatos pro tempore quomodolibet emanatis, & factis non attentis, libere, & licite per ipsos Iudices à quibus, ad soarum condemnationum totalem executionem alias tamen legitime, sub similis indignationis, & excommunicationis pœna, procedi posse, & omnino debere, ac ut procedant precipuus, & mandamus.

§. 13. Et insuper tam Iudicibus præfatis, quam Notariis sub eadem excommunicationis, ac indignationis nostræ, privationisque officiorum pœna, ne contra præmissa aut quicquam prædictorum facere, & attentare præsumant, districtius inhibemus.

Et etiam in casu legitime solvendæ à parentibus Hoc valet in Urbe ex bulla 2. Innoc. IX.

Contumaces infra sex menses se constituant. Immo infra annum ut dixi in rubr.

Homicidæ majoris ætatis 14. non prodest minoritas. Banniti gratis liberandi si absolviunt.

Præventio declarat inter Iudices seculares, & Ecclesiasticos. Hoc redigit ad terminos juris Pius V. cit. in rub.

Contravenientium pœna.

§. 14. Sicque & non aliter, in præmissis omni-
bus, & singulis, per quicumque &c. Sublata &c.
judicari & interpretari in quavis causa & instantia
debere. Irritum quoque &c. decernimus.

§. 15. Non obstantibus præmissis, ac quibusvis
constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, sta-
tutisque & consuetudinibus singularum Provincia-
rum prædictarum, Civitatum, Oppidorum, & loco-
rum eorumdem, etiam juramento, confirmatione
Apostolica, vel quavis alia ratione ab aliis, privi-
legiis quoque, indultis, &c. Auctoritate, Uni-
versitatibus, Communitatibus, & hominibus Pro-
vinciarum, Civitatum, & locorum prædictorum, ac
etiam singularum personarum, & aliis quibuscumque
Judicibus, &c. per nos, & prædicto consilio con-
cessis, ac etiam iteratis vicibus innovatis, quibus
omnibus &c. illorum tenores &c. hac vice latissime
peragamus, ceterisque in contrarium facientibus
quibuscumque cum clausulis opportunitis, & consuetis.

Fiat Motu proprio I.

§. 16. Et cum declaratione, statuto, ordina-
tione, inhibitione, decretis, derogatione, & aliis præ-
missis, quæ ad partem, etiam quod singulas partes,
reperita esse censeantur & sint latissime extensa.
Et quod præmissorum omnium & singulorum, &
prædictorum singularum litterarum prædictarum,
privilegiisque, in auctoritate, & aliam contra-
trationem prædictorum, aliorumque forsitan latius ex-
primendorum tenore, pro sufficienter expressis ha-
beantur, ac exprimi, narrari, & inseri possint in lit-
teris per Breve nostrum expediendis, quæ in dictæ
Cameræ, & in Cancellariæ nostræ, & Audientiæ
causarum Palatii Apostolici valvis, & in acie Cam-
pitorie, dimissis ibi copis, affixæ, post mensum à
die affixionis hujusmodi computandum omnes, &
singulos ita affixæ atque ardent, ac si illis perso-
naliter intimatæ fuissent.

Fiat I.

Dat. Romæ apud S. Petrum, 12. Kalend. Junii,
Anno sexto,

Anno à Nativitate D. 1565. indictione 5. die vero
26. mensis Martii, Pontificatus Sanctiss. in Christo
Parris & D. N. D. Pii divina providentia Papa
Quarti, anno 6. superscriptæ litteræ Apostolicæ,
litteræ, affixæ, & publicatæ fuerant in Litis sacra-
scriptis, ut moris est dimissis illarum coram affixis,
per nos Bernardinum Andrentium, & Julium Pa-
rinum Apostolicos Secretarios.

Jo. Fraille Mag. Chrf.

LIII.

Reformatio Officii Penitentiariæ Apostolicæ.

Aliam reformationem edidit Pius V. qui etiam consti-
tuit, ac omnes Penitentiariæ facultates revoca-
vit, & novum statum indicavit, ut inf. in ejus consti-
83. In omnibus, ubi alia indicabo.

PIUS EPISCOPUS

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

IN sublimi beati Petri folio, meritis licet impari-
bus, & in ea dispositione locati, statim ab ipso
nostris Potentibus initio, officium in fuisse duximus,
ut omni a libita diligeantia errores, quos circa
omnes gradus & hominum conditores, nimis
forsan licentia & impunitate, magno cum ani-
marum hinc potissimum temporibus committi
animadvertimus, providentia nostræ ministerio
corrigere, & emendare, ac ea quæ hominum li-
centia crescente, deformata essent, reformare, illaque
præsertim circa Romanæ Curie officia, & tribuna-
lia ad veram debitamque normam, & observan-
tiam reducere curavimus.

§. 1. Hic est, quod nos ad Penitentiariæ nostræ
officium in quo morum censura, & animarum salus
præcipue vertitur, nostræ considerationis oculos

dirigentes, & attendentes in eo plures & diversos
abusus, propter superiorum temporum licentiam,
& incuriam irrepressibiles, ne illi sese latius diffusan-
t, quantum in nobis est, occurrere volentes, habita
desuper cum Venerabilibus fratribus nostris S.R.E.
Cardinalibus deliberatione matura, ipsoque Majore
Penitentiario, ac ejus officialibus auditis, & eorum
juribus diligenter visis, ac omnibus mature co-
sideratis, de ipsorum fratrum consilio, auctoritate Apo-
stolica tenore præsentium statuimus, & ordinamus.

§. 2. Quod de cetero perpetuis futuris tempo-
ribus pro tempore existens Major Penitentiarius,
ac ejusdem Penitentiariæ Regens, & correctores,
Scriptores, Procuratores, & alii quicumque ejus
officialis & ministri, ab eorum omnium, quæ in
ipsius scriptis Capitulis, & prohibitionibus, concessio-
ne, commissione, & expeditione penitus cessare,
& abstinere debeant.

§. 3. Et in primis idem Penitentiarius absti-
neat à commutationibus ultimarum voluntatum,
& earum derogationibus.

§. 4. Necnon ab unionibus perpetuis, & sup-
pressionibus, ac translationibus beneficiorum ec-
clesiasticorum, & applicationibus unius beneficii
alteri beneficio, & illorum confirmationibus.

§. 5. Item à concessione jurispatronatus, seu
præsentandi ab beneficia & ecclesiastica propter aug-
mentum fructuum, sed tantum ex causa fundatio-
nis, vel dotationis illud concedere possit.

§. 6. Similiter abstineat à licentia standi extra
pro monialibus ex quacumque causa.

§. 7. Necnon à declaratoriis pro religiosis
propter vim, & metum, quos in ingressu religionis
vel emissionem professionis sibi illatos fuisse præden-
dant, quod emissionem professionem hujusmodi sus-
ceperunt sacros ordines in religione, etiam si asse-
ratur, quod eisdem vim, & metum durantes, illos
susceperint. In aliis autem casibus declaratoriæ ipsæ
committantur Ordinariis loci, & vocato Priore Mo-
nasterii, in quo fuit ita emissa professio, & nunquam
in Curia, etiam si pars & testes præsentis essent.

§. 8. Nec concedant religiosis licentias standi
extra propter infirmitates, & similia impedienda,
& nec etiam pro subventionem parentum, aut pupi-
lorum, vel aliorum consanguineorum, nisi obten-
ta licentia suorum Superiorum, & in facultatibus
pro religiosis eisdem transiendi de Ordine ad Or-
dinem, etiam in casibus à jure permixtis apponatur
semper clausula, quod perpetuo ibidem in claustris
Domino famulari teneantur.

§. 9. Apostatis vero absolutionem non conce-
dat, nisi ea lege expressa, ut statim ad claustrum
proprii Ordinis redeant, vel ad alium Ordinem
transiant, equalis, vel æquioris observantiz, ut
ibi perpetuam vitam agant.

§. 10. Nec illis, aut aliis translatis prædis in-
dulgeatur ut beneficia ecclesiastica obtinere vel illis
ut mercenarii deservire, aut alias etiam de Superi-
orum suorum licentia extra claustrum quoquo-
modo degere valeant.

§. 11. Similiter non concedat commissionem alie-
nationum, vel permutationum, aut affectionum,
aut illarum confirmationem de bonis ecclesiasticis
in forma, quæ dicitur. Si in evidentem, pro rebus
quarum redditus annuus summam viginti ducato-
rum anni de Camera ex edat, & commissiones hu-
jusmodi semper Ordinario loci, & a tercio persona
dignitate Ecclesiastica constituta conjunctim comi-
mittantur. Et si de ipsius Ordinari interesse, vel
præjudicio agitur, tunc loco ipsius committantur
Metropolitano. Et si res ad ipsum Metropolitano
pertineat, Ordinario vi in omni, & nunquam similes
concedantur commissiones quando agitur de aliena-
tione jurisdictionum, vel vassallorum ad Eccle-
siam quovis modo pertinentium.

§. 12. Præterea ne Ordinarii in corrigendis sub-
ditis excelsis impediantur, & delicta in punia
remaneant, non concedat absolutiones, vel manda-
ta, de absolvendo ab homicidiis, vel aliis gravibus

R. formatio
super.

Commuta-
tionis ult-
ime in vo-
luntatem.
Unionibus.
&c. benefi-
cium.

Concessio ne
jurispatrona-
tus.

Licentia
standi extra
claustrum
Nulitate
professionis.

Licentia pro
religiosis in-
firmis.

Absolutione
apostatarum.

Commissio-
nibus, per-
mutandi, vel
alienandi bo-
na ecclesiasti-
ca.

Absolutione
à criminibus.

Simoniaco-
rumque &Homicida-
rum.Literis pro-
movendi ad
sacros Ordines.Absolutione
à juramentis.Dispensat.
matrimon.Licentis do-
ctorandi.Absolutione
à fructibus
indebite per-
ceptis.Usurpatio-
ne jurisdictione
ecclesiastica.Facultate
testandi.Confirmatio-
ne gestorum
ab Ordina-
riis.Dispensat.
super etate.Pœnitentia-
rius suas fa-
cultates non
excedat.

delictis, etiam occultis, pro quibus de jure civili pœna capitalis imposita sit, præterquam in foro conscientie dumtaxat. In reliquis vero minoribus, & levioribus excessibus, de quibus tamen delinquens non fuerit citatus, vel inquisitus, committere possit Ordinario, ut imposita illa pœna ejus arbitrio, cum etiam in foro fori absolvat, ipsumque ab executione Ordinum si secum super irregularitate dispensatum fuerit, similiter ejus arbitrio suspendat. Episcopis tamen, vel eorum Superioribus, aut aliis Prælati Sedi Apostolicæ immediate subiectis, & quibuscumque personis in terris Ecclesiæ, & multo minus in Urbe delinquentibus, ab aliquibus delictis extra forum conscientie absolutionem minime concedere possit.

§. 13. Caveat etiam Pœnitentiarius ne in absolutionibus à simonia, reali vel conventionali, etiam occultis, umquam concedat, ut ipsi simoniaci beneficia, super quibus simoniam commiserunt, seu pecunias, vel alia pro illis accepta, aut fructus exinde post commissam simoniam perceptos in toto vel in parte retinere possint. Episcopis tamen in absolutionibus hujusmodi apponatur clausula, quod uterque ad beneficium super quo fuit commissæ simonia perpetuo inhabilis existat.

§. 14. Et insuper homicidæ voluntario, etiam alias canonicè absoluto, altaris ministerium, aut ascensum ad superiores Ordines, & restitutionem, aut retentionem beneficiorum, quibus ipso jure quis privatus, vel privandus sit, concedere minime valeat.

§. 15. Nec minus litteras de promovendo ad Sacros Ordines, ac etiam ad primam tonsuram à quocumque Catholico Antistite nisi allegetur iusta causa propter quam ab Ordinariis suis promoveri, nec ab eis, aut eorum officialibus litteras dimissorias obtinere valeant, & tunc concedi possint à quocumque Ordinario, vel pro eo Pontificalia exercente, & si causa allegata falsa fuisse deprehendatur, sic promoti ab executione Ordinum per suos Ordinarios suspendi, vel illa etiam perpetuo privari possint.

§. 16. Similiter idem Pœnitentiarius non concedat absolutiones à juramento, nisi ad effectum agendi dumtaxat.

§. 17. Nec dispensationes matrimoniales in forma gratiosa, sed semper committantur Ordinariis, prout alias fieri consuevit.

§. 18. Neque concedat religiosis licentiam suscipiendi gradum doctoratus, vel magisterii contra statuta Ordinis, nisi ex aliqua probabili causa, & nisi de licentia suorum Superiorum.

§. 19. Nec absolutiones à fructibus indebite perceptis ratione intrusionis beneficii, vel ob non promotionem, aut alium tituli defectum, etiam in foro conscientie, nisi facta restitutione fructuum hujusmodi.

§. 20. Nec etiam absolutiones concedat pro usurpata jurisdictione, vel violata libertate ecclesiastica, etiam in foro conscientie (nisi cum clausula) Satisfactio prius de damnis, & expensis parti læsæ.

§. 21. Neque facultates testandi juxta formam quinterni simpliciter, sed cum clausula, Dummodo non supra summam centum ducatorum etiam ad pias causas, ac pro servientibus. Religiosis vero extra claustrum, etiam cum Apostolica dispensatione degentibus, facultates testandi nullo modo concedantur.

§. 22. Et insuper non confirmet gesta per Ordinarios, aut alios inferiores illis de jure communi non concessa, nec suppleat eorum defectus.

§. 23. Minus etiam dispenset super etate promovendorum ad sacros Ordines de jure requisita, nec tempus præfixat ad munus consecrationis suscipiendum, à jure statutum ultra tres menses, & terminum anni Rectoribus Parochialium Ecclesiarum, & aliis quibuscumque ad sacros etiam presbyteratus ordines suscipiendos, à jure aut in fundatione beneficiorum quomodolibet constitutum extra casus à jure permisos, ultra sex menses minime prorogare valeat.

§. 24. Et ultra præmissa abtineat etiam ab expeditionibus quibuscumque, quæ sibi per litteras suarum facultatum expresse non conceduntur, nisi aliàs de jure communi in casibus de quibus agitur Ordinario

concessæ reperiantur. Nec suffragetur prætextus consuetudinis seu styli, aut quasi possessionis ipsius Majoris Pœnitentiarii, & prædecessorum suorum in similibus concedendis, etiam si consuetudo, aut stylus, vel quasi possessio hujusmodi per litteras facultatum suarum generaliter approbata reperiantur.

§. 25. Volumus insuper quod officium sacræ Pœnitentiariæ Sede Apostolica vacante, in omnibus & singulis quæ ad forum fori quomodolibet pertinent, penitus, & omnino conquiescat. Quodque ea tantum pro animarum salute expedire valeat, quæ forum conscientie respiciunt.

§. 26. Districtius inhiibentes moderno, & pro tempore existenti Majori Pœnitentiario in virtute sanctæ obedientie ac Regenti, Correptoribus, Scriptoribus, Procuratoribus, Revisoribus, Sigillatoribus, aliisque dictæ Pœnitentiariæ Officialibus quibuscumque sub nostræ indignationis, & excommunicationis late sententiæ, necnon privationis, & amissionis suorum hujusmodi, & aliorum Officiorum & beneficiorum quorumcumque per eos obtentorum, & inhabilitatis ad illa in posterum obtinenda, aliisque gravioribus nostris & pro tempore existente Rom. Pont. arbitrio indigendis, & applicandis pœnis, ne de concessionibus, & expeditionibus sibi per præsentis interdictis contra præmissos tenorem, etiam prætextu quorumvis privilegiorum, & indulgentiarum eis quomodolibet concessorum se intromittere quoquo modo audeant, seu præsumant.

§. 27. Decernentes quascumque confessiones, gratias, ac expeditiones deinceps ab eodem officio Pœnitentiariæ contra præsentium tenorem, quod abbit, pro tempore emanatas, etiam si in illis asseratur, vivæ vocis oraculo, ac de mandato nostro, & pro tempore existentis Rom. Pontificis, speciali, & expresse factas fuisse, nullas nihilominus, & invalidas, ac extortas, & subreptitias esse, & censeri, neminique propterea suffragari posse, & ita per quoscumque locorum Ordinarios, ac Judices, & Commissarios quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac ejusdem S. R. E. Cardinales, sublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, judicari & definiri debere, irritū quoque & inane, secus super his a quoquā quavis auctoritate, scilicet vel ignoranter cõgesserit atteri.

§. 28. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, privilegiis quoque & indulgentiis eidem Majori Pœnitentiario, ac ejus officio, etiam in illius erectione, & institutione, etiam Motu proprio consistorialiter, ac de fratrurn eorumdem consilio & assensu, sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque clausulis, & decretis in genere, vel in specie, & alias quomodolibet, etiam per fel. rec. Eugenium IV. Sixtum etiam IV. & Paulum III. ac alios quoscumque Rom. Pontifices prædecessores nostros, ac etiam nos concessis, approbatis, & innovatis, ac decretis, & censuris in illis apposis, quibus omnibus etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de illis, eorumque totis tenoribus specialibus, specificis, individuis, & expressis, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi præscriptis pro sufficienter expressis habentes, illis alias in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus, communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem, & quibuslibet aliis privilegiis, indulgentiis, & litteris Apostolicis, generalibus vel specialibus quorumcumque tenoribus existant, per quæ præsentibus non expressa, vel totaliter non inserta esset, sed præsentium impediendi valeat quomodolibet, vel differri, & de quibus quorumque totis tenoribus specificis, individuis & expressis, ac de verbo ad verbum habenda esset in eisdem litteris mentio specialis.

Sede vacante Pœnitentiarii officium vacat, in his quæ ad forum fori, idem habes inf. in cons. 63.

Inhibetque Pœnitentiario & Officialibus ne aliud expediant contra prædictorum tenorem.

Decretum irritans.

Clausule derogatorias.

1562.

Forma & effectus publicationis.

Quem public habes hic in fine.

Sanctio poenalis.

Dat. P. An. 3. die 4. Maii.

Papæ subscript. Cardinalium subscriptiones.

Publicatio.

L.IV.

§. 29. Ut autem præsentis litteræ ad omnium notitiam deducantur, & omnes quorum interest, vel interesse poterit, omnino afficiant, volumus, & mandamus illas in Palatii nostri Apostolice, ac officii Pœnitentiariæ huiusmodi valvis, & acie Campi Floræ affigi, & per aliquod temporis spatium, relicta ibidem copia, detineri, ut illi quos litteræ ipsæ concernunt seu concernere poterunt, quomodolibet in futurum, quod ad ipsorum notitiam non pervenerint, vel illas ignoraverint, quo minus eos ardeant, perinde ac si eis personaliter intimatæ forent, nullâ possint excusationem prætere, vel ignorantiam allegare. Cum non sit verisimile apud eos remanere incognitum, quod tã patenter extiterit publicatum.

§. 30. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrorum statuti, ordinationis, voluntatis, inhibitionis, decreti, derogationis, & mandati infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursum.

Dat. Romæ apud S. Petrum Anno Incarnationis Dominicæ 1562. quarto Non. Maii, Pontificatus nostri Anno tertio.

Ego Pius Catholica Ecclesiæ Episcopus.

Ego R. Card. de Carpo Episcopus Portuen.

Ego F. Card. Pisanus Episcopus Tusculan.

Ego Fed. Card. Cæsius Episcopus Prænestin.

Ego J. Card. Moronus Episcopus Sabinensis.

Ego Christof. Card. Episc. Albanen. Triden.

Ego Ocho Card. Truchfess Card. Augustan.

Ego B. de la Cueva, Card. S. Crucis.

Ego Ti. Card. Crispus.

Ego Fulvius Card. Perusinus.

Ego Jo. Mi. Card. Saracenus.

Ego Jo. Card. Sancti Vitalis.

Ego Ja. Card. Puteus.

Ego Jo. B. Cicada Card. S. Clementis ss.

Ego B. Card. Tranen.

Ego Scipio Card. Pisarum.

Ego Jo. Card. Reomanus.

Ego Jo. Ant. Card. Capifuccus.

Ego Fr. M. Card. Alexandrinus.

Ego Jac. Card. Sabellus.

Ego Jo. Ant. Card. S. Georgii.

Ego Aloysius Card. Cornelius.

Ego B. Card. Salviatus.

Ego Ph. Card. Abard.

Ego Petr. Francisc. Card. Ferrerius.

Ego Marcus Antonius Card. Amulius.

Ego Hieronymus Card. Corrigenis.

Ego B. Card. Navagerius.

Ego Jo. Franciscus Card. de Gambara.

Ego Alex. Card. Farnesius Vicecanc.

Ego Gui. Alf. Card. Camerarius.

Ego N. Card. de Sermoneta.

Ego J. l. Card. Urbinas.

Ego Alphonus Carafa Card. Neapolitanus.

Ego Vitellotius Card. Vitellius.

Ego Carolus Card. Barromæus.

Ego Franciscus Card. Gonzaga.

Ego Indicus de Avalos Card. de Aragona.

Ego Alph. Card. Gesualdus.

Anno à Nativitate Domini 1562. indictione 5. die vero Veneris, mensis Maii, Pont. Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papæ IV. Anno 3. retroscriptæ litteræ Apostolica affixa & publicata fuerunt ad valvas palatii Apostolice, & palatii officii sacra Pœnitentiariæ, & in acie Campi Floræ, ut in retroscriptis litteris continetur, dimissi copias earumdem in dictis locis affixas, per nos Franciscum Rugerium, & Julium Parinum præbati S. D. N. Papæ Curæ.

Honofrius Montarg. Mag. Curæ.

Reformatio Officii Correctoris Cancellariæ Apostolicæ, & litterarum minoris Justitiæ, Contradictarum nuncupatarum.

Aliam reformationem edidit Pius V. ut infra in ejus constit. 90. Romani.

PIUS EPISCOPUS;

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

UNIVERSI gregis Dominici curam nobis divina dispositione commissam, pro Pastoralis officii debito divina favente gratia diligenter, & salubriter exercere cupientes, ad ea potissimum pro Christianissimum animarum salute nostræ dirigimus considerationis intuitum, per quæ juris & justitiæ cultus à nostris, & Sedis Apostolicæ Officialibus servetur, & inviolabiliter custodiatur.

§. 1. Sanè cum nos una cum Venerabilibus fratribus nostris S.R.E. Cardinalibus, singulorum Romanæ Curie Tribunalium, & Officiorum Correccioni & emendationi jugiter intendentes, inter cetera ad officium Correccionis Cancellariæ Apostolicæ, ac litterarum justitiæ contradictarum respexerimus, animadvertimus etiam officium ipsum quod antiquissimum existit, & per quod litteræ Apostolicæ justitiæ sub nomine Romani Pontificis, ac sub plumbo expediuntur pro superiorum temporum licentia antiquam disciplinam, ac puritatem in litterarum huiusmodi expeditione relaxasse, ac propterea pro illius reformatione & emendatione, vocato, & audito dilecto filio Magistro Paulo Odescalco, Cancellariæ & litterarum huiusmodi moderno Correctore, Motu proprio, & ex certa scientia de eorumdem fratrum consilio & assensu, statumimus & ordinamus.

§. 2. Quod deinceps perpetuis futuris temporibus dictus Paulus, ac pro tempore existens Corrector, necnon litterarum earumdem procuratores in causis in quibus rescripta à nobis, vel à Signatura nostra justitiæ pro tempore emanare contigerit, in eadem instantia se nullatenus intromittant. Possint tamen causas appellationum à sententiis definitivis, vel definitivæ vim habentibus committere.

§. 3. Item confirmationes Indulgentiarum, sive perpetuarum, sive temporalium, & testamentorum, aut ultimarum voluntatum, ac juris patronatus, & præsentandi nullo modo expediant, sed nec contractuum, nisi ad utriusque contrahentis supplicationem, & sine præjudicio terti.

§. 4. Et minus sententiarum nisi cum clausula, quatenus rite & recte late sint, & in rem transierint judicatam, neque adversus illas aliquid fuerit impetratum. A confirmationibus etiam compromissorum, & laudorum ante utriusque partis expressam homologationem.

§. 5. Necnon unionum perpetuarum, vel suppressionum, aut translationum beneficiorum Ecclesiasticorum, aut illorum fructuum applicationum omnino abstant.

§. 6. Similiter non concedant confirmationes alienationum, permutationum aut liberationum de bonis Ecclesiasticis, quorum annuus redditus summam quinque ducatorum excedat, id quod depositive in litteris exprimi debeat, & confirmationes huiusmodi semper Ordinarii loci, & alteri persone in dignitate Ecclesiastica constitutæ conjunctim committantur. Et si de ipsius Ordinarii interesse vel præjudicio agatur, tunc loco ipsius committantur Metropolitanis, & si res ad ipsum Metropolitanum pertineat, Ordinarii viciniore, & nunquam similes commissiones concedant quando de alienandis jurisdictionibus, vel vassallegis ad Ecclesiæ quomodolibet pertinentibus agitur.

§. 7. Litteras etiam declaratorias nullitatis professionis propter vim & metum, quando religiosi post ingressum religionis, vel emissam professionem sacros ordines in religione susceperunt, etiam si affectatur quod eisdem vi, & metu durantes dictos ordines susceperint, minime concedant. In aliis autem casibus declaratoriæ huiusmodi committantur

Edita Ap. D. 1562.

Exortatum.

Cause hujus reformationis quæ editur super.

Expeditionibus in causis in quibus Papa, vel ejus Signatura rescript. Vide declarationem Pii IV. in rubr. cit.

Indulgentiis, testamentis, contractibus, &c.

Sententis, laudis, compromissis.

Unionibus beneficiorum. Quid generale prohibuit Pius V. ibid.

Alienationibus bonorum Ecclesiasticorum. Quod idem prohibuit Pius V. ibid.

Professionibus Regularium. Quod etiam prohibuit totaliter Pius V. ibid.

Religiosorum
licentia standi
extra claustra
&c.
Hoc revoca-
rum est ibid.

Abolutio-
nis juramen-
torum
Facultatibus
testandi.

Ordinario-
rum gestis.

Beneficiorum
titulis, vel
possessionibus.

Ad hoc vide-
dum bull.
Pii V.

Declarato-
ris super ho-
miciis, &
irregularita-
te.

Decimarum
confirmatio-
nibus.

Reb. litigio-
sis.

Indultorum
confirmatio-
ne.

Rebus du-
biis.

Procurato-
res non im-
mutent facti
veritatem.

Pius V. poe-
nam falsi im-
positi in con-
stit. 21.

Contrave-
nientium
poena.

Ordinario loci, vocato Priore Monasterii loci ejusdem in quo fuit emissâ professio, & numquam in Romana curia etiam si pars, & testes in ea praesentes essent.

§. 8. Sed nec licentia religiosis eisdem standi extra Monasterium etiam in casibus infirmitatis, vel aliis à jure permixtis, nec pro subventione parentum pupillorum, aut aliorum consanguineorum, nisi de expressa licentia suorum Superiorum petita, & obtenta.

§. 9. Et similiter absolutiones à juramento, praeterquam ad effectum agendi, & excipiendi.

§. 10. Ac facultates testandi de bonis Ecclesiasticis in forma quaterni ultra summam centum ducatorum minimè concedere valeant. Religiosis vero etiam extra claustra cum legitima dispensatione degentibus, similes facultates testandi nullatenus concedantur.

§. 11. Item gesta per Ordinarios, aut alios inferiores, nisi in casibus illis expresse de jure permixtis, & quando ex eorum narrativa formam juris minime per eos servatam esse constet, nullatenus confirmantur, nec eorum defectus juris vel facti, aliquo modo suppleant.

§. 12. In primis autem ablineat à confirmatione tituli, vel possessionis beneficiorum Ecclesiasticorum, etiam pro pacificis possessoribus, etiam cum clausula, sicuti iuste, & pacifice possideris, cum sicut accepimus confirmationes hujusmodi plerumque petantur in fraudem ad conservandos intrusos, & alios qui litteras Apostolicas provisionis beneficiorum eorumdem minime expediverunt, ac minime curant expedire.

§. 13. Ablineant etiam à declaratoriis super homicidiis, & irregularitate exinde contracta, etiam si illa vim vi repellendo, & ad necessariam defensionem commissa fuisse asseratur.

§. 14. Item à confirmationibus decimarum, & illarum acquisitionum, etiam pro pacificis possessoribus, nisi illas ante Concilium Lateranense tempore recolendae memoriae Alexandri III. celebratum legitime acquisitas esse expresse dicatur.

§. 15. Et insuper à confirmationibus quibuscumque de rebus litigiosis omnino cessent.

§. 16. Privilegia vero, ac facultates, & gratias per Sedem Apostolicam concessa, in genere tantum non autem in specie confirmantur, nisi privilegia ipsa de verbo ad verbum inferantur, de quibus per litteras Apostolicas, aut earum transumpta authentica omni prorsus suspitione carentia, ipsi Correctori confiterentur, de quo in confirmatione ipsa expressa mentio fieri debeat.

§. 17. Postremo cum officium ipsum Correctoris, potissimum versetur in concessione, vel confirmatione eorum quae sunt de jure permixta, nullatenus cōcedendo, vel confirmando rescribat in materiis quoquomodo in jure dubiis, vel ubi variae sunt jurisperitorum opiniones, etiam pro communi illorum sententia, sed tantum ubi de re ipsa clara, & expressa de jure deciso apparet, & de cujus intellectu nullatenus apud juris interpretes dubitetur.

§. 18. Procuratores autem litterarum ipsarum contradictarum materias injustas, aut indebitas non procurent, nec minutatim litterarum forment contra, vel praeter continentiam memorialium, & veritatem facti illis à partibus exhibitae, nec facto variato, & veritate immutata litteras expediant, quae alias expediri non possent, prout lapsus attentatum fuisse accepimus. In reliquis vero per praesentes non immutatis aut alteratis, antiquum stylum in expeditionibus litterarum earumdem servari solitum inviolabiliter observent.

§. 19. Districtius inhibentes praefato, ac pro tempore existentem Correctori sub indignationis nostrae, Procuratoribus vero praesentibus, & futuris sub excommunicationis latae sententiae, necnon privationis officiorum, & beneficiorum quorumcumque per eos obtentorum, ac inhabilitatis ad illa, & alia in posterum obtinenda, aliisque nostri, & pro

tempore existentis Rom. Pont. arbitrio inferendis, & applicandis poenis, ne de causis, ac expeditionibus per praesentes interdictis, & alias quam ut praefertur, etiam praeterea quorumvis privilegiorum, & indultorum, eis & eorum officio quomodolibet concessorum, aut consuetudinis, vel quasi possessionis in similibus materiis prohibitis expediendis se intromittere quoquomodo audeant, vel presumant.

§. 20. Decernentes nihilominus quascumque concessiones, commissiones, & alias expeditiones ab illis, & à dicto officio deinceps contra praesentium tenorem pro tempore quomodolibet, quod absit, attentatas, nullas, & invalidas, ac exortas, & subreptitias fore, & esse, ac censeri neminique propterea suffragari posse.

§. 21. Sique per quoscumque locorum Ordinarios, ac Judices, & Commissarios etiam causarum Palatii Apostolici Auditores ac ejusdem S. R. E. Cardinales, sublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, judicari, & definituri debere, irritum quoque, & inane quicquid secus super his, à quocumque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 22. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, privilegiis quoque, & indultis eisdem Correctori, & Procuratoribus sub quiscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque clausulis, & decretis per quoscumque Romanos Pontifices praedecessores nostros, ac forsitan nos concessis, approbatis, & innovatis, ac decretis, & censuris in illis apposis (quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, individua, & expressa, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi praesentibus pro sufficienter expressis habentes illis alias in suo robore permanentibus, hac vice damtaxat specialiter, & expresse derogamus) contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter, vel divisim ab eadem sit sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem. Et quibuslibet aliis privilegiis, indulgentiis, & litteris Apostolicis, generalibus, vel specialibus quorumcumque tenorum existant, per quae praesentibus non expressa, vel totaliter non inserta effectus praesentium impediri valeat quomodolibet, vel differri, & de quibus quorumque totis tenoribus habenda sit in nostris litteris mentio specialis.

§. 23. Ut autem praesentes litterae ad omnium notitiam deducantur, & eos quorum interest, vel interesse poterit, omnino astant, volumus, & mandamus, illas in Palatii nostri Apostolici, ac Audientiae litterarum Contradictarum valvis, & acie Campi Florae per aliquos ex Curatoribus nostris affigi, & per aliquod temporis spatium, relicta ibidem earum copia, affixas detineri, ut ii quos litterae ipsae concernunt, seu concernere poterunt quomodolibet in futurum, nullam possint excusationem praetendere, vel allegare, quod ad ipsorum notitiam non pervenerint, cum non sit verisimile apud eos incognitum remanere, quod tam patenter publicatum fuerit.

§. 24. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrorum statuti, ordinationis, inhibitionis, decreti, derogationis, voluntatis, & mandati infringere, vel ei ausu temerario contraria. Si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursum.

Datum Romae apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicae 1562. sexto Kalendas Junii, Pontificatus nostri Anno tertio.

irritatio contrariorum.

Clausula sublata, &c.

Clausula derogatoria.

Justo publicandi.

Sanctio poenalis.

Dat. P. An. 3. die 27. Mai.

ANNO
1563.

PIUS Q U A R T U S.

79 ANNO
1562.

Papæ sub-
scripte.

Ego Pius Catholica Ecclesiæ Episcopus.

Si mei non fuerint dominati tunc immaculatus ero.

Cardinalium
subscriptio-
nes.

Ego R. Card. de Carpo Episcopus Ostien.
Ego F. Card. Pisanus Episcopus Portuen.
Ego Fed. Card. Cæsius Episcopus Tusculanus.
Ego Jo. Card. Moronus Episcopus Prænestin.
Ego Otho Card. Aug. Episc. Albanen.
Ego B. de la Cueva Card. S. Crucis.
Ego R. Card. Sancti Angeli, Major Pœniten.
Ego Ti. Card. Crispus.
Ego Fulvius Card. Perus.
Ego Jo. Mi. Card. Saracenus.
Ego Jo. Card. Sancti Vitalis.
Ego Jo. B. Cicada Card. S. Clemen. ff.
Ego B. Card. Tranen.
Ego Scipio Card. Pisarum.
Ego Vitellotius Card. Vitellius.
Ego Franciscus Card. Gonzaga.
Ego Jo. Suavius Card. Reumanus.
Ego Jo. Ant. Card. Capisuccus.
Ego Fr. M. Card. Alexandrinus.
Ego Jo. Ant. Card. S. Georgii.
Ego Bernardus Card. Salviatus.
Ego Ph. Card. Aburd.
Ego P. F. Card. Ferrerius.
Ego Hieronymus Card. Corrigenfis.
Ego R. Card. Navagerius.
Ego Jo. Franciscus Card. de Gambara.
Ego Alexand. Card. Farnesius Vicecanc.
Ego Gui. Alf. Card. Camerarius.
Ego Jul. Card. Urbinas.
Ego Alph. Catafa Card. Neapolitanus.
Ego Ind. de Avalos Card. de Aragona.
Ego Alph. Card. Gesualdus.

Publicatio.

Anno à Nativitate Domini 1562. indictione quinta,
die vero 19. mensis Junii Pontif. sanctiss. in Chri-
sto Patris, & D.N.D. Pii divina providentia
Papæ IV. Anno tertio, retroscriptæ litteræ Apost.
affixæ & publicatæ fuerunt ad valvas Palatii Apost.
solici, Audientie litterarum Contradictarum, &
in acie Campi Floræ, & deinde amotæ dimissis ibi-
dem in locis superscriptis copiis earundem affixæ, per
nos Julium Parinum, & Camillum Cherubinum
prelatis S. D. N. Papæ Cursores.

Franciscus Rogerius Magister Cursorum.

L.V.

Reformatio Tribunalis Rev. Cameræ Apostolicæ.

Hanc reformationem latius prosequitur hic idem Pon-
tiffex in constit. 87. Cum inter. Et quoad Camera-
rium aliam reformationem edixit Clem. VIII. in
const. 65. In conferendis, ubi de Camerarii & Ca-
mera materia plenè notabo. Et novissime eorum re-
formationem edidit Paul. V. in const. 71. Universi.

De munere autem Officialium Cameræ, ultra nota-
ta hic, & in dicta alia reformatione in apostolicis,
plene habet de Clericis in const. 13. Eug. IV.
Inter. sup. in Tomo I. & in const. 1. Call. III.
Quæ laudabili, in const. 8. Jul. II. Ex injuncto,
in d. Tomo I. De Auditore Cam. vide infra in
hoc Tomo II. in constit. 28. Pauli V. Eximia.
De thesauratio in Sixt. V. const. 100. In confe-
rendis, De Præfecto Annonæ, in Greg. XIII.
const. 35. Inter ceteras. De Commissario Came-
ræ in bulla 44. Sixt. V. Ad excelsum. De Fisco in
Clem. VII. const. 20. Quoniam, supra in Tomo
I. Et de ipso Camerario eorum omnium capite,
in Clemen. VIII. const. 65. In conferendis, To-
mo III.

PIUS EPISCOPUS,

*Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.*

Romanus Pontifex, Christi Vicarius, uti prudens
paterfamilias provide animadvertens; in agro
dominico multam messem, & multos jam operarios
esse, ut opus Domini rectè, & sine confusione ad-
impleatur, singulis curas partitur, & officia distri-
buit, ac ne quis muneris sibi commissi limites ex-
cedat, aut in alterius messem falcem imponat, fo-
lerti studio, & diligentia providet, sicut pro felici
ipsius agricultura, & directione in Domino conspi-
cit salubriter expedire.

§. 1. Sane postquam nos sacrum Oecumenicum,
& generale Concilium pro extirpandis hæresibus, &
Christiani populi moribus emendandis in Civitate
Tridentina celebrandum indiximus, prout illud di-
vina favente gratia frequentissimo Prælatorum con-
ventu jam feliciter congregatum extitit, & suos fa-
lutaes progressus habere cæpit, dum Concilium
ipsum generali totius Ecclesiæ reformationi diligen-
ter incumbit, nos Curia nostra, ac illius Officiorum,
& Tribunalium peculiari correctioni animum adje-
cimus, & à sacra Pœnitentiariæ officio, in quo salus
præcipue vertitur animarum, initio sumpto illius
reformationem feliciter absolvimus.

§. 2. Nunc vero Cameræ nostræ Apostolicæ tri-
bunal tanquam reliquis totius Curie dignis, & ex-
cellentius, in quo non solum patrimonii beati Pe-
tri, sed universorum Fisci Apostolici juriam conserva-
tio, & administratio versatur, direximus oculos
nostræ mentis, animadvertimusque in eandem Ca-
meram pro superiorum temporum licentia, & incur-
ria, pleraque negotia extra propriam ipsius tribunalis
naturam, tam circa ditioni ecclesiasticæ in tempora-
libus subjectas, quam reliquis totius Christiani Or-
bis provincias irrepsisse, per quæ Camerarii nostri,
ac Præsidentium, & Clericorum ejusdem Cameræ
studia, à propriis & peculiaribus eorum curiis distra-
hantur, aliorumque tribunalium, & officiorum dictæ
Curie, ac totius Ecclesiasticæ Status jurisdictionis, cum
magno Fisci nostri, ac partium litigantium detrimen-
to, & reliquorum Christianifidelium scandalo, confundi-
tur, & impeditur. Idcirco ad tollendos abusus hu-
jusmodi, & ut Camerarius, ac Clerici, & Præsidentes
prædicti eorum proprio muneri commodius & dili-
gentius intendere valeant, habita super his cum ve-
nerabilibus fratribus nostris S. R. E. Cardinalibus
deliberatione matura, & dilecto filio nostro Guidone
Alcanio S. Mariæ in Via lata Diac. Card. de Sancta
Flora nuncupato, mederno Camerario nostro, ac
dilectis filiis Præsidentibus, & Clericis dictæ Came-
ræ, ejusque Notariis auditis, & eorum facultatibus,
& juribus diligenter inspectis, omnibusque mature
consideratis de eorumdem fratrum consilio Aposto-
lica auctoritate tenore præsentium statuimus, &
ordinamus.

§. 3. Quod de cetero perpetuis futuris temporibus
prædicti Guido Alcanius Cardinalis, ac pro tempore
existentes Camerarius, ac Præsidentes, & Clerici
Fisci nostri negotiis diligenter incumbant, utque
illud liberius, & facilius facere, & exequi possint,
causis inter Fiscum nostrum, & privatos juxta pro-
priam eorum tribunalis naturam contenti sint, &
propterea a cognitione causarum inter privatos,
etiam per viam appellationis, etiam ex Terris Ec-
clesiæ ad Sedem Apostolicam interpositæ omnino
abstineant, nisi causæ a negotiis fiscalibus depen-
deant, aut ab illis originem trahant.

§. 4. Similiter abstineant à commissionibus, & a-
vocationibus causarum, necnon litteris monitoriali-
bus, & inhibitoriis, ac sequestrationibus, & aliis hu-
jusmodi, ubi non agitur de interesse Fisci, etiam in
Terris Ecclesiæ, cum hæc ad signaturam nostram spe-
ctare noscantur, & alias ordo judiciorum multiplici-
ter confundatur. Permittimus tamen illis pro mi-
nori pauperum dispendio, ut causas appellationum à

Edita An. D.
1562.

Exordium.

Studium Pa-
pæ reforman-
di ejus Cu-
riam.

Causa hujus
reformatio-
nis.

Camerarius,
& Clerici
causas Fisci
interesse con-
cernentes &
non alias cau-
sas privato-
rum cognos-
cant. Et se
abstineant à

Commissio-
nibus causæ-
rum.

Alienatio-
numque bo-
norum Eccl.
Tu vide
majorem
prohibito-
nem lvi V.in
constit. 69.

Abolutio-
nibus à deli-
ctis &c.

Moratoris.

Hebræorum
tolerantiis.

Repræfalis.

Possessione
beneficio-
rum, &c.

Veſtigialibus.

Spoliis Cle-
ricorum.

De Clerico-
rum juris-
dictione.

Notariorum
mu. etc.

Indultis circa
ſpiritualia.

ſententis definitivis, vel earum vim habentibus in-
terlocutoriis intra quadraginta milliaria ab Urbe in
rebus minimis, & profanis, ſummam vinctiquinque
ducatorum non excedentibus, de quo diſpoſitive
mentionem facere teneantur, per ſimplices litte-
ras alias juxta formam juris committere poſſunt.

§. 5. Interdicimus etiam illis commiſſiones aliena-
tionum de bonis eccleſiaſticis in forma quæ di-
citur, ſi in evidentem, pro rebus quarum redditus
annuus ſummam quinque ducatorum auri de Ca-
mera excedat, de quo redditu ſimiliter expreſſa
mentio in diſpoſitiva litterarum habeatur, & com-
miſſiones hujusmodi ſemper Ordinario loci, & alte-
ri perſonæ in dignitate eccleſiaſtica conſtitutæ con-
junctim committantur. Et ſi de ipſius Ordinarii in-
terſeſſe, vel præjudicio agatur, tunc loco ipſius com-
mittantur Metropolitanò, & ſi res ad ipſum Me-
tropolitanum pertineat, Ordinario viciniore, &
nunquam ſimiles commiſſiones concedant, quan-
do agitur de alienatione jurisdiſctionum, vel vaſ-
ſallorum ad Eccleſiam quovis modo pertinenti-
um.

§. 6. Inſuper ne delicta impunita remaneant, ab
abſolutionibus, & remiſſionibus delictorum quo-
rumlibet, etiam leviſum, aut illarum commiſſio-
nibus, necnon falſis conductibus pro delinquenti-
bus etiam de delictis extra Terras Eccleſiæ commiſ-
ſis omnino abſtineant.

§. 7. Et ſi niliſit à moratoris dilationibus niſi
ad modicum tempus, & non ultra meſem, ac
data idonea cautione, & pro his debitoribus tan-
tum qui aliam dilationem non obtinuerint.

§. 8. Hebræis vero tolerantias, aut alia privi-
legia præjudicium Chriſtianorum quomodolibet
concernentia.

§. 9. Et quibuſvis perſonis, frumentorum aut
aliorum viſualium ex Urbe, vel aliis Terris Ec-
cleſiæ.

§. 10. Et tam in illis, quàm extra eas ad co-
juſvis inſtantiam, repræſalias etiam pro debitis
ſiſcalibus, niſi de particulari, & expreſſo manda-
to noſtro, aut Pontificis pro tempore exiſten-
tis.

§. 11. Necnon litteras Cameraleſ pro adipiſcen-
da poſſeſſione beneficiorum eccleſiaſticorum, etiam
nobis, & Sedi Apoſtolice reſervatorum, & proro-
gationem temporis ad expediendas litteras Apoſto-
licas quarumcumque gratiarum aut ad ſolutionem
annatarum, vel aliorum jurium Collegio Cardina-
litum, aut Officialibus debitorum minime con-
cedere valeant.

§. 12. Caveant etiam ab impoſitione, vel aug-
mento veſtigialium, ſeu ditionum, vel illorum
diminutione, aut alteratione ex quacumque cauſa
etiam publicam utilitatem concernente.

§. 13. Sed nec ſpolia Clericorum decedentium,
aut decimas, vel alia regalia, aut credita ſiſcalia,
in toto vel in parte donare, vel remittere poſſint.
Commiſſarii vero ad præmiſſa exigenda, & recu-
peranda non niſi idonei, & probatæ vitæ, nullum
habentes in ea re intereſſe conſtituantur, qui etiam
jurejurando, ac idoneis cautionibus de eorum offi-
cio fideliter, & diligenter exercendo adſtringantur.

§. 14. Clerici vero Camere cum nullam jurisdi-
ctionem, ut ſinguli, ſed tantum collegialiter, &
in plena Camera habere noſcantur, nihil expediant
privatum, & ſingulariter, nec aliquas litteras, aut
patentes de quacumque re ſubſcribant, niſi ex
commiſſione eis facta in eadem plena Camera, in
qua omnia clare, & diſtincte proponi, ac in libro
propoſitionum annotari debeant.

§. 15. Notariique in expeditionibus, & ſcriptis
deſuper conſciendis, de propoſitione, & com-
miſſione hujusmodi mentionem expreſſam habere
teneantur.

§. 16. Sed & tam Camerarius, quàm Clerici ipſi
ultra prohibita in præſenti reformatione, à quibuſ-
cumque licentiis, gratiis, & indultis de rebus ſpi-
ritualibus in forma gratioſa, vel commiſſaria, etiam

cum clauſulis juſtificativis, & alias tam in Terris
Eccleſiæ, quam extra illas, omnino abſtineant.

§. 17. Et ſimiliter à quibuſcumque aliis expeditio-
nibus quæ ubi ratione ſuâ ordinariæ jurisdiſctionis
propter publicam utilitatem, vel alias expreſſe per
litteras ſuarum facultatum conceſſæ non reperiuntur.
Nec prætextus conſuetudinis aut quaſi poſſeſ-
ſionis etiam antiquiſſimæ, & immemorabilis in ſi-
milibus concedendis eis ſuffragetur, etiam ſi con-
ſuetudo, & quaſi poſſeſſio hujusmodi per litteras ali-
quorum Pontificum generaliter approbatæ fuerint.

§. 18. Notarii vero Camere abſtineant ab ex-
torſionibus, & indebitis exactiõibus, utpote pro
obligationibus ſolvendi annarar, quæ tamen in
promptu ſolvuntur, prout hæcenus uſurpatum eſſe
accepimus, & aliis hujusmodi, ſuper quibus, &
aliis per præſentes ſtatutiſ, & prohibitiſ, Came-
rarius, ac ejus Vicarius diligenter inqueſitionem
adhibere, & delinquentes condignis pœnis pro
modo culpæ punire debent.

§. 19. Sede autem Apoſtolica vacante, officium
Camerarii, quod per conſtitutionem pia memorie
Clementis Papæ V. etiam prædeceſſoris noſtri
in Concilio Viennenſi editam durare decernitur,
ita durare declaramus, ut tam ipſe Camerarius, quàm
Præſidentis, & Clerici, ac Notarii prædicti non
ſolum ea quæ præſenti conſtitutione prohibentur,
& quæ Pontifice vivente etiam pro ejuſdem
Pontificis reverentia, aut alias quomodolibet ex-
cercere, & expedire non conſueverunt, minime uſur-
pent, ſed tantum exactiõni pecuniarum Camere
Apoſtolice debitarum, ac illarum reſervationi,
necnon proviſionibus ratione Sedis Vacantis ne-
ceſſariis faciendis incumbere, & propterea à ſolu-
tione debitorum ante Pontificis obitum contracto-
rum, aut illorum declaratione, vel novatione, ac
rationum ſolidatione, & quibuſcumque aliis ex-
peditiõibus, tam gratiam, quàm juſticiam, aut
illarum executionem quomodolibet concernenti-
bus, omnino abſtineri debeant.

§. 20. Diſtrictius inhiſcentes præſato, ac pro tem-
pore exiſtenti Camerario in virtute ſanctæ obedi-
entia, Clericiſ vero, ac Notariis, & aliis officialibus,
& eorum miniſtris quibuſcumque ſub excommuni-
cationis lata ſententia, necnon privationis officio-
rum, & beneficiorum quorumcumque per eos ob-
tentorum, ac inhabilitatis ad illa, & alia in poſte-
rum obtinenda, aliisq; noſtri, & pro tempore exi-
ſtentis Romani Pontificis arbitrii pœnis, ne de cauſis,
negotiis ac expeditiõibus per præſentes interditiſ,
etiam prætextu quorumvis privilegiorum, & indulto-
rum eis quomodolibet conceſſorum, aut conſue-
tudinis, vel quaſi poſſeſſionis hujusmodi ſe intromit-
tere quoquo modo audeant, ſeu præſumant.

§. 21. Decernentes quaſcumque conceſſiones,
commiſſiones, & expeditiões ab illis, & à dicta
Camera deinceps contra præſentium tenorem pro
tempore forſan, quod abſit, attentatas, etiam ſi illas
vix vocis oraculo emanſſe aſſeratur, nihilominus
nullas, & invalidas, ac extortas, & ſubrepticias fore,
& eſſe, ac cenſeri, neminiſ propterea ſuffragari
poſſe.

§. 22. Et ita per quoſcumque locorum Ordina-
rios, ac Judges, & Commiſſarios, etiam cauſarum
Palatii Apoſtolici Auditores, ac ejuſdem Romanæ
Eccleſiæ Cardinales, etiam Provinciarum, ac Ter-
rarum ditionis Eccleſiaſticaſ Legatos eorumque Vi-
celegatos, Gubernatores, & alios Officiales, ſublata
eis, & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi, & in-
terpretandi facultate, & auctoritate, judicari, &
deſiniri debere, irritum quoque, & inane quicquid
ſecus ſuper his à quoquam quavis auctoritate, ſcien-
ter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 23. Non obſtantibus conſtitutionibus, & ordi-
nationibus Apoſtolicis, privilegiis quoque, indultis,
ac facultatibus eiſdem Camerario, ac Præſidentibus,
& Clericis, etiam Motu proprio, & conſiſtorialiter
ac de fratrurn eorundem conſilio, & aſſenſu ſub
quibuſcumque tenoribus, & formis, ac cum quibuſvis

Expeditioni-
bus.

Notariorum
extenſioni-
bus.

Camerarii &
Clericorum
officio, pro
tempore Se-
dis vacantis.

Contrave-
nientium
pœnæ.

Annulatio
aliter guto-
rum.

Claſſula
ſublata.

Claſſula de-
rogatoriæ.

clausulis, & decretis, in genere, vel in specie, & alias quomodolibet etiam per prius mem. Martinum V. Eugenium IV. Innoc. VIII. & prædictum Leonem X. & Paulum III. ac Julium etiam III. & alios quoscumque Rom. Pontifices prædecessores nostros, ac forsitan etiam nos concessis, approbatis, & innovatis, ac decretis, & censuris in illis appositis, quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, & expressa, ac individua, & de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanens, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter, vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti suspendi vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem, ac quibuscumque aliis privilegiis, indulgentiis, & litteris Apostolicis generalibus, vel specialibus quorumcumque tenoribus existant, per quæ præsentibus non expressa, vel totaliter non inserta effectus præsentium impediri valeat quomodolibet, vel differri, & de quibus quorumque totis tenoribus habenda sit in nostris litteris mentio specialis.

§. 24. Ut autem præsentibus litteræ ad omnium notitiam deducantur, & eos quorum interest, vel interesse poterit omnino afficiant, volumus, & mandamus illas in Palatii nostri, ac Cameræ Apostolicæ valvis, & acie Campi Floræ per aliquos ex Curforibus nostris affigi, & per aliquod temporis spatium, relicta ibidem earum copia, affixas detineri, ut ii quos litteræ ipsæ concernunt, seu concernere poterant quomodolibet in futurum, nullam possint excusationem prætere, vel allegare, quod ad ipsorum notitiam non pervenerint, cum non sit verisimile apud eos incognitum remanere, quod tam patenter publicatum fuerit.

§. 25. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrorum statuti, ordinationis, inhibitionis, decreti, derogationis, voluntatis, & mandati infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursurum.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1562. sexto Kal. Janui, Pontificatus nostri Anno tertio.

Ego Pius Catholicæ Ecclesiæ Episcopus.

Locus Signi.

Si mei non fuerint dominati tunc immaculatus ero.

Ego R. Card. de Carpo Episcopus Ostien.
Ego F. Card. Pisanus Episcopus Portuen. manu propr.
Ego Fed. Card. Cassius Episcopus Tusculanus.
Ego Jo. Card. Moronus Episcopus Prænestin. ss.
Ego Otho Truchses de Walburg. Episc. Card. Alban.
Ego B. de la Cueva Card. S. Crucis.
Ego R. Card. Sancti Angeli, Major Peniten.
Ego Ti. Card. Crispus.
Ego Fulvius Card. Perus.
Ego Jo. Mi. Card. Saracenus.
Ego Jo. Card. Sancti Vitalis.
Ego Jo. B. Cicada Card. S. Clementis.
Ego B. Card. Tranen.
Ego Scipio Card. Pifarum.
Ego Jo. Card. Reumanus.
Ego Jo. Ant. Card. Capifuccus.
Ego Fr. M. Card. Alexandrinus.
Ego Jo. Ant. Card. S. Georgii.
Ego Bernardus Card. Salviatus.
Ego Ph. Card. Aburd.
Ego P. F. Card. Ferrerius.
Ego Hieronymus Card. Corrigentis.
Ego R. Card. Navagerius.

Ego Jo. Franciscus Card. de Gambara.
Ego Alexand. Card. Farnesius Vicecan.
Ego Jul. Card. Urbinas.
Ego Alph. Carafa Card. Neapolitanus.
Ego Virellotius Card. Vitellius.
Ego Franciscus Card. Gonzaga.
Ego Ind. de Avalos Card. de Aragona.
Ego Alph. Card. Gesualdus.

Anno à Nativitate Domini 1562. indictione quinta, die vero 19. mensis Junii Pontif. Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina prov. dentia Papa IV. Anno tertio, retroscriptæ litteræ Apost. affixæ & publicatæ fuerunt ad valvas Palatii Apostolici, Cameræ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, & deinde amota dimissis ibidem in locis superscriptis earum copiis affixis, per nos Julium Parinum, & Camillum Cherbabinum prælibati S. D. N. Papa Cursores.

Franciscus Rogerius Magister Curforum.

Reformatio Tribunalis Auditoris causarum Curie Rev. Cameræ Apostolicæ.

Pius V. aliam edixit reformationem in cons. 113. Inter illa. in hoc Tomo II. & alteram Paul. V. in cons. 71. Universi. S. 4. ubi etiam notabo in Tomo III.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

I Nter multiplices Pastoralis officii nostri curas, illa nos potissimum urget, ut provisionis nostræ ministerio Romanæ Curie Tribunalia, iuste, & salubriter dirigantur, ac subditis nostris & aliis Christianidelibus causas, & negotia sua in eis tractantibus, jus, & iustitia æqua lance, & minoribus quam fieri poterit dispendiis ministrentur.

§. 1. Sane cum nos una cum venerabilibus fratribus nostris S. R. E. Cardinalibus, generali Tribunalium, & Officiorum ejusdem Curie reformationi solerti studio, ac vigilantia intenderemus, inter cetera respeximus ad antiquissimum, & nobilissimum Tribunal nostri, & Curie causarum Cameræ Apostolicæ generalis Auditoris, qui non solum Rom. Curie Juxta ordinarius existit, sed in tota temporalis Jurisdictione nostra, ac universis Christiani Orbis Provinciis & Regnis ex indulto diversorum Rom. Pontificum prædecessorum nostrorum in civilibus, & criminalibus, jurisdictionem exercet, animadvertimusque in eodem Tribunali pro temporum incuria, & negotiorum multiplicitate nonnullos abusos irrepsisse, ac non modica emendatione & correctione opus esse.

§. 2. Et propterea, ut tam Auditor, quam ejus Locumtenentes, & Notarii intra jurisdictionis suæ fines se continant, neque causas contra juris ordinem cum Reſtorum, & Gubernatorum ejusdem ditionis nostræ, & aliorum Ordinariorum injuria, ac subditorum nostrorum, & reliquorum Christi fidelium nimio dispendio ad se trahant, aliasque ut decet eorum officio rite, & recte fungantur, providere volentes, vocato, & audito venerabili fratre nostro Flavio Episc. Muran. moderno nostro & dictæ Curie Auditore, & habita super his cum eisdem Cardinalibus deliberatione matura, de eorum consilio Apostolica auctoritate, tenore præsentium statuimus, & ordinamus, quod de cetero perpetuis futuris temporibus Auditor, ac Locumtenentes seu Judices, & Notarii dictæ Curie pro tempore existentes, ad infraſcriptorum capitulorum, & in eis contentorum quorumque plenariam observationem, teneantur.

§. 3. Et in primis Auditor præfatus non decernat monitoria specialia in causis profanis etiam in terris Ecclesiæ ultra quadraginta miliaria ab Urbe, quando valor causæ non excedit summam centum florenorum.

§. 4. Deinde

Publicatio.

LVI.

Proœmium.

Causa hujus reformationis.

Reformatio super.

Monitoriis specialibus.

Forma, & effectus publicationis.

Sanctio pontificalis.

Dat. P. A. 3. die 27. Maji.

Papæ subscriptæ.

Cardinalium subscriptiones.

Ap. ell. ad
V. de
in ab.

M. ator's
g. m. b. u.

Ceduloni-
bus.

Sequestis

Vide etiam
in Bulla
Pauli.

Monitori's
in En f.

pos. &
eorum lue-
tores.

Vide ibi.

Expensis
con. in 13
lib. r. l. g. u.
toris.

Remissio
in causis
criminalibus.

Litteris pro
exon. indi-
cis.

Vide d. bul-
lam Pauli V.
de Examine
reorum &
testium.

Reorum in
carcere re-
tentionem.

Dilationibus
Fiscis.

Interess. Fisci
in causis pri-
vatorum.

Causis usura
c. r. Mer-
catores.

Appellatio-
nibus Fisci.

Inventariis
de bonis in-
quisitorum.

Sportulis Ju-
dicum.

Vide d. bul-
lam Pauli V.

Notariorum
procuratori-
bus, vel pa-
tis.

§. 4. Deinde non recipiat nec admittat appellationes de partibus, nisi cum clausula expressa, Quatenus à sententia definitiva, vel vim definitiva habeat appellatum sit.

§. 5. Et in monitoriis generalibus referre debet ad ordinario loci, absolvendi in eorum contentas.

§. 6. Præterea non permittat affigi cedulones eorum, & alios similes.

§. 7. Et non eiat sequestra, nisi juxta formam constitutionis felicis recordationis Clementis Papæ V. in illis, quæ incipit, Ad compendium, aut servatur in Rota, & in illis semper, propter clausula, Provisio quod de fructibus fructuum, aut us divinus manuteneatur, ac animarum eorum exerceatur, & alia onera beneficio incumbenti supportentur.

§. 8. Porro non decernat contra Episcopos, & eorum superiores monitoria ad personaliter compandendum, nisi prævia commissione signata manu notarii, aut non tempore existentis Romani Pontificis, & pro decreto, non nisi ad personaliter compa & dam, nisi recipiat.

§. 9. Subsequenter expensæ contumaciales restituantur imputatori, si illas fecerit, alioquin Notario cause, ac illis qui in ea expeditiones scripserunt, ac eas gratis ad instantiam Fisci concesserunt.

§. 10. Item concedat Auditor in causis criminalibus remissionem ad partes ad probandum delictum, vel fundandam Fisci intentionem, sed adnotetur testes ad Curiam, vel causa remittatur ad partes ubi delictum est commissum.

§. 11. Nec concedat litteras ad partes ad capiendam indicia contra aliquem, nisi prius in Curia aliquater confiterit de delicto.

§. 12. Præterea non permittat, quod procurator Fisci exa minet reos, sed tantum examini interesse possit, ac reus per Judicem examinetur, & idem servetur in testibus qui pro reo examinantur, vel det interrogatoria in scriptis.

§. 13. Deinde curet ne rei ultra triduum retineantur in carceribus secretis antequam examinentur, nisi tamen natura cause aliud sudeat.

§. 14. Studeatque generaliter dilaciones in Fisci favorem abbreviare, ne rei diutius laboribus, & expensis fatigentur.

§. 15. Nec differat expeditionem causarum interprivatos pendendum, licet procurator Fisci prosequatur causam non expediti nisi ipso citato pro ejus interesse, nisi de eo incontinenti saltem summarie doceat.

§. 16. Nec inhibeat aut retardet Mercatoribus creditorum suorum exactionem ad Fisci instantiam sub prætextu usurarie pravitate in eis commissæ, sed procedatur separatim in causa usurarum sine retardatione causæ civilis juxta juris dispositionem.

§. 17. Minus etiam admittat appellationem Fisci ab absolutoria lata pro reo, juxta laudabilem consuetudinem hæctenus in Curia servatam.

§. 18. Item inquisito reo non fiat inventarium illius bonorum, nisi agatur de delicto pro quo veniat imponenda pœna capitalis, vel confiscationis bonorum, aut alia notabilis pœna, nisi detur idonea fidejussio de stando juri, & judicato solvendo. Quando autem inventarium conficiendum fuerit, non describatur inventarium hujusmodi in Registro, sed tantum moderata merces pro qualitate rei à Notario accipiat.

§. 19. Et in causis ordinariis Auditor prædictus, seu ejus in civilibus Locumtenens non recipiat sportulas, neque Notarius aliquid pro nota sententiæ, sed in causis commissariis, & declaratoriis contumacialibus tantum.

§. 20. Insuper caveat dictus Auditor ne sui Notarii vel eorum substituti sint procuratores causarum ejusdem tribunalis, aut pacificentur de quotilibus vel lucris, cum procuratoribus, vel sollicitatoribus, sub pœna privationis & infamiae.

§. 21. Nec audeant Notarii ipsi facere ex se decreta etiam quantumvis ordinaria, & solita, sed semper ad Judicem recurrant, sub pœna falsi, & privationis exercitii.

§. 22. Curentque etiam Notarii, ut cognoscant contrahentes saltem per depositionem unius ex testibus in instrumento apponendis, ne fiat suppositio personarum.

§. 23. Item eorum officia arrendare non possint, nisi personis per ipsum Auditorem approbatis.

§. 24. Præterea Auditor præfatus non concedat monitoria, vel inhibitiones in vim constitutionis Eugenianæ in favorem Curialium, nisi pro illis qui saltem per annum in Curia continue residentiam fecerint.

§. 25. Et si contingat unum Notarium accipere terminum pro alio Notario ad referendum, teneatur ipse accipiens per totam illam diem qua acciperit, relationem facere.

§. 26. Et insuper Auditor præfatus non concedat mandata de manuteneendo aliquem in possessione in qua existit, nisi confito saltem extrajudicialiter eum accepisse, & retinuisse vere, & actualiter, non autem verbaliter, & momento tantum possessionem vacantem, & non cum spolio alterius.

§. 27. Porro non concedat mandatum de capiendi ratione suspicionis fugæ, nisi confito tibi saltem summarie, & extrajudicialiter de credito liquido, & de suspicione fugæ saltem per juramentum ipsius creditoris, & nisi facta solutione, vel deposito actuali per actorem de expensis capturæ in eventum in quem illa indebite facta detegatur.

§. 28. Insuper præfatus Auditor, seu ejus Locumtenens in criminalibus faciat semper dare copiam indiciorum reo, vel petentibus pro eo ante torturam, & pendente termino ad faciendas defensiones, detur commoditas carceratis libere loquendi cum eorum advocatis, & procuratoribus, etiam semper arbitris, nisi tamen qualitas causæ aliud necessario sudeat, quæ tamen indiciorum copie dentur pauperibus gratis & absque aliqua pecuniaria exactione.

§. 29. Præterea Notarii non conficiant regesta in causis ordinariis, nec commissariis non excedentibus valorem ducentorum florenorum, ac in ipsis regestis & extractibus, & quibuscumque aliis eorum expeditionibus teneantur servare taxas juxta reformationem in novissimo Concilio Lateranensi editam.

§. 30. Tandem, ut tollantur controversiæ inter tribunalia dictæ Curie, & unicuique sua jurisdictionis servetur, declaramus executionem obligationis in forma Cameræ ad præfatum Auditorem Cameræ privative ad alia tribunalia pertinere, præterquam in instrumentis dependentibus à causis, & actis in aliis tribunalibus hujusmodi gestis, & sine præjudicio Motus proprii per nos in favorem Populi Romani editi.

§. 31. Districtus inhiibentes Auditores sub indignationis nostræ, & Locumtenentibus five Judicibus, ac Notariis prædictis sub excommunicationis latæ sententiæ, ac privationis officiorum suorum hujusmodi, & aliis etiam gravioribus nostris, & pro tempore existentis Rom. Pontificis arbitrio infligendis, & applicandis pœnis, ne de expeditionibus, ac decretis, & aliis sibi per præfatos interdictis, ac contra prædictorum Capitalorum formam & tenorem etiam quorumvis privilegiorum, indultorum, ac litterarum eis quomodolibet concessarum, vel alio quovis prætextu se intromittere, aut alia immutare, vel alterare quomodocumque audeant, seu presumant.

§. 32. Decernentes quæcumque decreta, & acta ab eisdem Auditore, Judicibus & Notariis pro tempore contra præsentium formam, & tenorem, quod absit, emanata, & facta, nulla, & invalida, ac extorta, & subreptitia nullasque roboris, vel momenti fore, & censeri, neminique propterea suffragari posse, vel debere, & ita per quoscumque Judices, & Commissarios quavis auctoritate fungentes, etiam S. R. E. Cardinales, ac causas Palatii Apostolici Auditores in quavis causâ & instantia, sublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi, & interpretandi

Contrahentium & gnitione.

Officiorum arrendis.

Inhibitionibus & generalibus, de qua vide in Eugen. V. c. 16. §. 4.

Terminis referendis.

Mandatis de manuteneendo.

Ad quod vide dictam bullam Pauli V. c. 1. in ab.

Mandatis suspensivis fugæ.

Vide d. bullam Pauli V. & Pauli V.

Copis dandis ante torturam.

Registri in causis civilibus.

Inhibitione Auditoris Cameræ.

Inhibicio, & pœna in contravenientes.

Clausula sublata, &c.

Clausulæ de-
rogatorie.

facultate, & auctoritate, iudicari & definiri debere, irritum quoque & inane, quicquid fecus super per hunc quomquam auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 33. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis privilegiis quoque & indultis eidem Tribunali, ac illius Auditoratus officio, ac Auditori, etiam in eiusdem officii erectione, & institutione, ac Iudicibus, & Notariis ipsius, illorumque Collegio, etiam Motu proprio consistorialiter, ac de fratribus eorumdem consilio & assensu, sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque clausulis, & decretis in genere, vel in specie, & alias quomodolibet, etiam per nos concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, individua, & expressa, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio, seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi præsentibus pro sufficienter expressis habentes illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus, communiter vel divisim præfata sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem. Et quibuscumque aliis privilegiis, indulgentiis, & litteris Apostolicis, generalibus, vel specialibus quorumcumque tenorum existant, per que præsentibus non expressa, vel totaliter non inserta effectus præsentium impediri valeat quomodolibet, vel differri, & de quibus quorumcumque totis tenoribus specifica, individua, & expressa, ac de verbo ad verbum habenda esset in eisdem litteris mentio specialis.

§. 34. Ut autem præsentibus litteræ ad omnium notitiam deducantur, & omnes quorum interest, vel interese poterit, afficiant, volumus, & mandamus illarum copiam in Palatii nostri Apostolici, ac domus, seu Curie præfati Auditoris valvis, & acie Campi Floræ affigi, & ibidem relicta earum copia, aliquandiu detineri, ut ii quos litteræ ipse concernent in futurum quod ad ipsorum notitiam non pervenerint, vel illas ignoraverint, quo minus eos arceant, perinde ac si eis personaliter intimatæ forent, nullam possint excusationem præterdere, vel ignorantiam allegare, cum non fit verisimile apud eos remanere incognitum, quod tam patenter extiterit publicatum.

§. 35. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrorum statuti, ordinationis, declarationis, inhibitionis, decreti, derogationis, voluntatis, & mandati infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem, &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1562, quarto Non. Junii, Pontificatus nostri Anno tertio.

Ego Pius Catholicæ Ecclesiæ Episcopus.

Si mei non fuerint dominati tunc immaculatus ero.

Ego R. Card. de Carpo Episcopus Ostien.
Ego Fed. Card. Cæsius Episcopus Tusculanus.
Ego Jo. Card. Moronus Episcopus Prænestinus.
Ego Otho Card. Aug. Episc. Albanen.
Ego Jo. Mi. Card. Saracenus.
Ego Ja. Card. Puteus.
Ego Jo. B. Cicada Card. S. Clementis.
Ego B. Card. Tranen.
Ego Scipio Card. Pisarum.
Ego Jo. Ant. Card. Capisuccus.
Ego Fr. M. Card. Alexandrinus.
Ego Jac. Card. Sabellus.
Ego Jo. Ant. Card. S. Georgii.
Ego B. Card. Salviatus.
Ego Ph. Card. Aburd.
Ego Marcus Antonius Card. Amulius.
Ego Hieronymus Card. Corrigenis.
Ego B. Card. Navagerius.

Ego Gui. Asc. Card. Camerarius.
Ego Carolus Card. Borromæus.
Ego Franciscus Card. Gonzaga.
Ego Alph. Card. Gesualdus.

Anno à Nativitate Domini 1562. indictione 5. die 24. mensis Julii, Pont. Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papæ IV. Anno 3. retrospectæ litteræ Apostolica affixæ & publicatæ fuerunt in locis superscriptis, ut moris est, dimissis copiis earundem affixis, per nos Camillum Cherubinum, & Franciscum Rogerium prælibati S. D. N. Papæ Curæ.

Bartholomæus Sottocasa Mag. Curf.

Loca pia & Confraternitates etiam institutæ, vel dependentes à Capitulo Sacrosanctæ Lateranensis Ecclesiæ, vel S. Spiritus, aut S. Sebastiani ad Cateumbas de Urbe, subijciuntur jurisdictioni, & obedientiæ Ordinarii, ac Rectorum Parochialium. Et eisdem Capitulis prohibetur, de cetero erigere loca pia, & Ecclesias, vel in eorum membra recipere.

Quoad ultimam partem, Capitulum S. Joannis, certis additis modificationibus, reintegratum fuit à Six. V. in const. 19. Si cunctis, ubi notabo infra in hoc Tomo II.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Regimini universalis Ecclesiæ divina favente clementia præsidentes, inter cetera ad quæ nostri Pastoralis officii ratione tenemur, in primis satagendum nobis fore arbitramur, ut ne quid quorumvis privilegiorum, facultatum, & indultorum Apostolicorum quibuscumque personis & locis ob quasvis, etiam quantumlibet pias causas concessorum, aut alio quopiam prætextu, tam in eorum quos in partem universalis Ecclesiæ regiminis sibi Sedes Apostolica assumit, quam aliorum quorumvis jurisdictionis præjudicium, vel auctoritatis diminutionem temerè à quoquam agendo attentetur, & ex quo sumptis scandalorum causis universalis Christianitatis cœtus cum animarum periculo coinquantur.

§. 1. Cum itaque sicut magna cum animi nostri molestia accepimus, quamplurimi Ecclesiarum, Capellarum, Capellaniarum, Oratoriorum, Altarium, Societatum, & Confraternitatum Archipresbyteri, Rectores, Priores, Governatores, Guardiani, Societates, Officiales, & Ministri, ex eo forsitan, quod eorum Ecclesiæ, Capellæ, Capellanæ, Oratoria, Altaria, Societates, ac Confraternitates huius à primævillorum erectione, & institutione, vel aliis membris, seu grangias per Præceptorem Hospitalis S. Spiritus in Saxia de Urbe, S. Augustini, & Abbatem Monasterii S. Sebastiani ad Cateumbas prope, & extra muros dictæ Urbis Cisterciensis Ordinum, ac Capitulum Ecclesiæ S. Joannis Lateranensis de eadem Urbe, quorundam per nonnullos prædecessores nostros Rom. Pont. ac Sedem prædictam, ac forsitan nos eisdem Hospitali, Monasterio, & pro tempore existentibus illorum Præceptorum & Abbati, ac Ecclesiæ Lateranensis & Capitulo cum facultate illa aliis Ecclesiis, Capellis, Capellanis, Oratoriis, Altaribus, Societatibus, & Confraternitatibus impartiendi, & communicandi desuper forsan concessorum privilegiorum, facultatum, & indultorum prætextu, vel alias etiâ cum huiusmodi impartitione, & communicatione recepta existunt, ac ab eis dependent, ac alias se, ac Ecclesias, Capellas, Oratoria, Altaria, Capellanias, Societates, ac Confraternitates huiusmodi, illorumque bona quæcumque ab Ordinariis locorum eorumque jurisdictione, obedientia & visitatione, ac correctione exemptos & exempta esse prætendant, ac proinde nulla ab eis requisita, vel obrenta licentia in Ecclesiis, Capellis, Capellanis, Oratoriis, & Altaribus huiusmodi per quosdam Sacerdotes conductitis ad eorum nutum amovibiles Divina Officia

Publicatio.

LVII.

Edita An. D.
1562.

Ministri Ecclesiarum institutarum si ve dependentium ab Hospitali Sancti Spiritus, vel Monasterio S. Sebastiani ad Cateumbas, si ve Capitulo S. Joannis Lateranensi de Urbe prætendebant exemptos esse à Jurisdictione Ordinarii, & excessus commitebant.

Unde multe lites ortæ fuerunt inter illos, & locorum Ordinarios.

celebrare, ac Christifidelium eorundem confessiones audire, eisque sanctissimum Eucharistia, necnon Baptismatis, & alia sacramenta Ecclesiastica ministrari, defunctorum cadavera certa emolumenta mortuaria nuncupata percipiendo, ac in eorum utilitatem convertendo sepeliri, ac diversa alia Ordinariorum prædictorum, ac Parochialium Ecclesiarum Rectorum, infra quorum Diocesis & Parochiarum limites Ecclesiæ, Capellæ, Oratoria, Capellaniæ, & Societates, ac Confraternitates huiusmodi erectæ, & institutæ existunt iurisdictionis, & auctoritatis præiudicium facere audeant, seu præsumant, ac Ordinarios, & Parochialium Ecclesiarum Rectores huiusmodi suis debitis iuribus, & emolumentis defraudent, illorumque præcepta, & monitiones flocci pendentes, diversa excessus, & delicta committant, ob idque per Ordinarios, ac Parochialium Ecclesiarum Rectores huiusmodi, necnon Archipresbyteros, Rectores, Priores, Gubernatores, & Guardianos, ac Officiales, ac Ministros prædictos varias lites, & controversias coram diversis iudicibus, & commissariis in Romana Curia & extra eam ortæ sint, & forsan adhuc pendeant indecisæ, in grave Christifidelium eorundem animarum periculum, populoque scandalum, ac ordinis clericalis vilipendium non modicum.

Ideo Pont. iste eadem lites omnes ad se advocat. & extinguit. Et revocat Hospitalis, Monasterii, & Capituli prædictorum facultates erigendi Ecclesiæ, & Societates, five illas in eorum membra recipiendum facultatum & indulgentiarum communicatione Ecclesiæque & Societates huiusmodi subijciunt iurisdictioni Ordinariorum, & Rectorum Parochialium.

§. 2. Nos quorum est quilibet in suis iurisdictione, & auctoritate manutenerere, ac ne in eis indebitè à quoquam impediatur, solertia nostra curas impendere, cunctorum quoque Christifidelium animarum saluti, quantum cum Deo possumus consulere, litium, causarum, & controversiarum quarumcumque in præmissis motarum, & forsan pendentium status, & merita, nominaque & cognomina iudicium, & colligantium præsentibus pro sufficienter expressis habentes, ac lites, controversias, & causas huiusmodi ad nos harum serie advocantes, illaque penitus annullantes, cassantes, & extinguentes, partibusque litigantibus perpetuum silentium imponentes, necnon eisdem iudicibus ne se de eis ulterius intromittere, sub nostre indignationis & excommunicationis late sententiæ penis, audeant seu præsumant, districtus inhibentes, ac ulterioribus scandalis, quæ ex præmissis oriri possent, debite ac salubriter obviare volentes, Motu proprio, non ad alicuius nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed de nostra mera deliberatione, omnia, & singula privilegia, facultates, & indulta, etiam Motu simili, etiam consistorialiter, ac ad quorumvis instantiam, ac sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, efficacioribusque, & in solitis clausulis, ac irritantibus, & aliis decretis, in genere, vel in specie, per nos ac Sedem, seu prædecessores huiusmodi Præceptori Hospitalis, ac Abbati Monasterii, necnon Capitulo Ecclesiæ Sancti Joannis Lateranensis huiusmodi, etiam super facultate erigendi, & instituendi Ecclesiæ, Capellæ, & Capellaniæ, Oratoria, Altaria, Societates, & Confraternitates, vel in grangias, vel membra recipiendi, ac per eos erectis, & institutis Ecclesiis, Capellis, Capellaniis, Oratoriis, Altaribus, Societatibus, & Confraternitatibus, illorumque Archipresbyteris, Prioribus, Gubernatoribus, Guardianis, Sacerdotibus, Officialibus, & Ministris quocumque nomine nuncupatis, & aliis quibuscumque, etiam certa scientia concessa, ac forsan auctoritate Apostolica approbata, & confirmata, dicta auctoritate tenore præsentium ex simili nostra scientia cassamus, extingimus, irritamus penitus, & abolemus. Necnon Ecclesiæ, Capellæ, Capellaniæ, Altaria, Oratoria, Societates, & Confraternitates, illorum Archipresbyteros, Priores, Gubernatores, Guardianos, Sacerdotes, Officiales, & Ministros huiusmodi, cum omnibus illorum bonis iurisdictioni, correctioni, & obedientiæ Ordinariorum, ac Rectorum Parochialium Ecclesiarum, in quorum Diocesi & Parochiis illa respective extiterint, ut præfertur, prædictis, & aliis quibuscumque sibi alias concessis privilegiis, immunitatibus, facultatibus, exemptioni-

nibus, & gratiis non obstantibus, subijcimus, & supponimus. Ac Ordinarios, per se vel alium, seu alios quos duxerint eligendos, & deputandos, Ecclesiæ, Capellæ, Capellaniæ, Oratoria, Altaria, Societates, & Confraternitates, illorumque Archipresbyteros, Priores, Gubernatores, Guardianos, Sacerdotes, Officiales, & Ministros quoscumque quotiens eis videbitur visitandi, corrigendi, inobedientes quoque, & rebelles quoscumque, appellationis, & quibusvis aliis sublati atque remotis obstaculis, sententias, censuras & penas, Ecclesiasticas, & pecuniarias sibi beneficas, & in eis propterea latas incurrisse declarandi, aggravandi, reaggravandi, ac brachii secularis auxilium invocandi, & pena debita puniendi, plenam, & liberam facultatem concedimus.

§. 3. Districtus inhibentes Archipresbyteris, Prioribus, Guardianis, Gubernatoribus, Sacerdotibus, Officialibus, & Ministris prædictis ac aliis quibuscumque quavis dignitate, & auctoritate fungentibus sub eisdem, ac duorum millium ducatorum auri de Camera, Cameræ Apostolicæ applicandorum, necnon privationis quorumcumque beneficiorum Ecclesiasticorum qualitercumque qualificatorum per eos pro tempore obtentorum, concessorum, eo ipso absque aliqua desuper facienda declaratione per contravenientes incurrendis penis, ne deinceps perpetuis futuris temporibus quorumvis privilegiorum, facultatum, & indultorum sibi quomodolibet pro tempore concessorum, aut alio quovis prætextu, Præceptor videlicet, Abbas, & Capitulum prædicti Ecclesiæ, Capellæ, Capellaniæ, Oratoria vel Altaria, ac Societates, vel Confraternitates erigere, & instituere, ac illas & illa sic erectas, & institutas, seu erectas, & institutas, cum facultatum, & indulgentiarum participatione, & communicatione, in grangias, vel membra eorum Hospitalis, vel Monasterii, aut Ecclesiæ Lateranæ, huiusmodi recipere, Archipresbyteri vero, & Priores, & Gubernatores, ac Guardiani, Sacerdotes quoque, Officiales, & Ministri prædicti Divina officia celebrare, seu celebrari facere, confessiones audire, vel alia sacramenta Ecclesiastica cuiuspiam ministrare, defunctorum cadavera sepelire, aut aliquos Sacerdotes pro præmissis exequendis deputare audeant, seu præsumant. Immo sub penis prædictis mandantes, & præcipientes eisdem, ut Ordinariis, ac Rectoribus Parochialium Ecclesiarum huiusmodi, necnon piis eorum mandatis, monitionibus, & exhortationibus, in omnibus, & per omnia parere, & obedire debeant, salubresque eorum correctiones prompto, & libenti animo suscipiant, Decernentes eisdem Archipresbyteros, Priores, Gubernatores, Guardianos, Sacerdotes, Officiales, & Ministros, necnon eorum Ecclesiæ, Capellæ, Capellaniæ, Altaria, Oratoria, Societates, & Confraternitates, ac alios quoscumque sub eisdem privilegiis, indultis, & facultatibus comprehensos eisdem Ordinariis omnino subiecta fuisse, fore & esse.

§. 22. Et ita per quoscumque prædictos & alios Iudices, & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, sublata eis, & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, iudicari, & definiti debere, irritum quoque, & inane quicquid fecus fuerit his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter cõtigerit attentari.

§. 23. Non obstantibus si opus sit de non tollendo iure quæsito, & aliis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon Hospitalis, & Monasterii, ac Ecclesiæ S. Joannis Lateranæ, & Ordinum huiusmodi, etiam iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, illis eorumque Præceptorum, Abbati, & Capitulo prædictis respectivè, eorumque superioribus, & personis sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibusvis clausulis, & decretis, in genere, vel in specie, & aliis etiam motu, & potestatis plenitudine similibus etiam consistorialiter, ac alias quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, & singulis etiã si pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, individua,

Contravenientium poenæ.

Decretum irritans.

Clausulæ derogatorie.

& ex-

& expressa, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio, seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia requisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi præsentibus pro sufficienter expressis habentes, specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter, vel divisim à prædicta sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per literas Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi, mentionem, & qualibet alia dictæ Sedis indulgentia generali, vel speciali cuiuscumque tenoris exiit, per quam præsentibus non expressam, vel totaliter non insertam effectus huiusmodi gratiæ impediri valeat quomodolibet, vel differri, & de qua cuiusque toto tenore habenda fit in nostris literis mentio specialis.

Sanctio po-
nalis.

§. 6. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ advocacionis, annulationis, cassationis, extinctionis, irritationis, abolitionis, subjectionis, suppositionis, inhibitionis, concessionis, decreti, & derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursurum.

Dat. P. An. 3.
die 13. Junii.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1562, Idibus Junii, Pontificatus nostri Anno tertio.

LVIII.

Reformatio Tribunalium ordinariorum, & aliorum Judicum Romanæ Curie, officique tam Advocati, & Procuratoris pauperum, quam Fiscii Rev. Cameræ Apostolicæ.

De his omnibus Judicibus, & Officialibus, nimis prolixum hic esset annotationes intexere, ideo cuique ipsorum in bullis eos tangentibus opportune significavi ibi, vel in indice materiarum, quod locupletissimum erit, requiras. Et pariter in novissima reformatione Pauli V. in sua constit. 71. Universi, Tom. III.

Quod autem attinet ad Governatorem Urbis, ut possit cognoscere causas criminales super delictis quarumcumque personarum non obstantibus indultis concessis diversis Urbis Tribunalibus, & Judicibus, quæ intelligi vult cumulative cum Governatore Urbis, vide S. D. N. Urbani VIII. const. 93. Decret. inf. tom. 4.

Edita An. D.
1562.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

§. 1. Cum ab ipso nostri Pontificatus initio id præcipuum semper corde gesserimus, ut Romanæ Curie officia, & Tribunalia, sublatis omnibus, quæ ex nimia forsitan præteritorum temporum licentia invaluerant abusibus, in meliorem formam reducerentur. Ac ob id in primis ad Penitentiariam nostram, utpote in qua de animarum salute maxime agitur, mentis nostræ aciem convertentes, pro illius reformatione nonnulla statuta perpetuo observanda ediderimus. Et deinde considerantes nobis ex injuncto summi Apostolatus officio etiam incumbere, non solum rebus spiritualibus convenientia remedia adhibere, sed etiam temporali Sedis Apostolicæ dominio subiectos præsertim pauperes ab omnibus quantum fieri potest sublevare, ac ut in tranquillitate recte gubernatorum providere, Cameræ nostræ Apostolicæ officia ad honestum modum reducerimus, & illius etiam, ac nostri Auditoratus officium reformaverimus.

Hic Pont. re-
formavit Pen-
itentiariam
supra fol. 70.
& etiam Ca-
meram sup.
fol. 74. Au-
ditorumque
Cameram
sup. fol. 76.Nunc alio-
rum Judicum
reformatio-
nem profert.
Super.

§. 2. Verum pro ulteriori reformatione huiusmodi prosequenda, opportunum quinimo necessarium esse censentes reliqua etiam prædictæ Urbis, & Curie ordinaria tribunalia, & ab illis dependentia, nostrique etiam Fiscii procuratoris officium ad debi-

tam normam reducere, illorum Magistratibus, ac Notariis, & aliis officialibus in unum pluries congregatis, & in præsentia nostra, ac nonnullorum venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. Cardinalium ob hoc à nobis specialiter electorum auditis, ac omnibus mature consideratis, etiam de ceterorum omnium fratrum nostrorum consilio hac in perpetuum valitura constitutione sancimus, statuimus, & ordinamus.

§. 3. Quod nullus Judicum ordinariorum Almæ Urbis, & Romanæ Curie cuiuscumque sit dignitatis in causis civilibus ordinariis ratione sportularum aliquid prorsus accipiat, etiam à sponte dare volentibus.

Sportulis Ju-
dicum i. cau-
sis civilibus
ordinariis.

§. 4. In criminalibus vero pro sportulis sententiæ definitivæ absolutoriæ à præsentis criminalibus, in quibus aliàs pena à deportatione supra veniret imponenda, non ultra decem, à deportatione vero infra, non ultra quinque annos accipere possint. Et sibi ipsis caveant, ne pro extorquendis huiusmodi sportulis aliquem nolentem quovis modo absolvi ad petendum sententiam huiusmodi per causarum expeditionis dilationem, vel rei in carceribus detentionem, vel per cautiones de se prestantendo, vel non discedendo, ubi aliàs illis de iure locus non sit, præstandi cautionem, aut alias quoquo modo inducant. Pro sententia autem in causis capitalibus, & ultimis supplicii, vel in qua aliàs pena corporalis imponitur, etiam si in illa indemnitati partis offensæ, vel prosequeris proprium interesse etiam pecuniarum provideatur, & in illius favorem pronuntietur, nihil prorsus accipiant. Et pro ea, in qua pena pecuniaria, vel relegationis imponitur, & incidenter indemnitati consulitur, & in illius favorem etiam pronuntietur, non ultra quinque aureos habere possint. In commissariis causis criminalibus, quæ scilicet in vim commissionis à principio coram eis introducuntur, non ultra duplum ejus, quod in ordinariis accipere valeant.

Ecin crimina-
bus erat ac-
cipere, & cum
nullis.

§. 5. In civilibus simili modo commissariis, ubi de summa à viginti quinque infra agitur, nihil prorsus, à viginti quinque usque ad centum, scuta tria, à centum usque ad ducenta scuta sex, à ducentis usque ad quamcumque summam scuta decem, & non ultra. Pro quæcumque sententia declaratoria, ob non partitionem monitorii in contumaciam, non ultra decem carlenos. Pro declaratoria in vim literarum, alios habente vim definitivæ, si summa sit certa, accipiant prout supra taxarum fuit, ubi autem non sit certa, sed agatur ad ipsarum literarum executionem, accipiant secundum causæ, & personæ qualitatem, dommodo non ultra quinque aureos. Pro quocumque interlocutorio, seu decreto ante definitivam sententiam nihil omnino.

In civilibus
commissariis.

§. 6. Et similiter pro decretis in contradicibus, & obligationibus virorum, & mulierum, aut rerum Ecclesiæ, & piorum locorum, in domo ipsorum Judicum interponendis, ac etiam pro cassatione cuiuscumque querelæ sive processus nihil, pro decretis vero extra domum interponendis, dimidium unius scuti tantum accipiant. Quæ quidem decreta non nisi à Governatore, Auditore Cameræ, Vicario, & Senatore, ac eorum Judicibus in contradicibus, & obligationibus præfatis interponantur.

Mercede Ju-
dicum pro
decretis in
contradictis.

§. 7. Capitaneus tamen Appellationum Curie Capitolii recipiat sportulas secundum taxam per statuta Urbis eis rradiam.

Sportulis Ca-
pitanei Ap-
pelli. juxta ta-
xam Statut.
quod est in
cap. 40. lib. 1.

§. 8. Quas etiam sportulas superius taxatas non nisi à manibus Notarii causæ, & sententiæ prius ab ipsis subscripta accipere eis ullo modo liceat.

Tempore re-
ceptionis
sportularum.
Taxa pro si-
gillo Judi-
cum.

§. 9. Pro Sigillo præsertim in mandatis de relaxando carceratos pro quovis crimine etiam capitali, & in quovis alio genere expeditionem in causis criminalibus apponendo non exigant ultra julium unum, excepto Auditore Cameræ quoad ejus expeditiones taxam requirentes dumtaxat. In civilibus autem unusquisque exigar juxta solitum. Pro sigillo

	in expeditionibus quæ sunt in curia cum clausula, Si quis nihil.	tamen quod dicti duo ceteris de pretio officiorum suorum satisfacere teneantur.	
Prohibitione aliquid à B. rificio, &c. recipiendi.	§. 10. A Barigello & quibuscvis aliis executoribus etiam Curiarum suarum particularibus, & si sponte dare velint sub quovis pretexto nihil proflus recipere præsumant.	§. 12. Item Marefcallus officium Commentariensis, & Capitanei Curie sue nullo modo attentet, sed per fideles & idoneos Custodes, & executores illa exerceri faciat. Ipsis prius carcerum custodibus à Gubernatore Urbis approbatis.	Custodis d. Curie electione.
Observantia bul. Paul. III. sup. fol. 692.	§. 11. Et quoad expeditionem carceratorum observent in omnibus, & per omnia Motum proprium à fel. rec. Paulo III. circa eorundem carceratorum expeditionem editum.	§. 23. Judices Burgi, & de Sabellis, ac Turris Nonæ, coram Gubernatore & Auditore Cameræ in fine cuiuslibet anni, & Ripetæ, ac Ripæ in fine officii coram Clerico Cameræ ejusdem Ripæ præfidentis syndicati stare teneantur.	Judicum d. Curie, & Burgi Turris Nonæ, Ripæ, & Ripetæ indicatu.
Declaratio ne remittit pro servatis.	§. 12. Itemque Judices, tam in criminalibus, quam in civilibus, qui sententias prout in cedula ferre, & terminos pro servatis habere consueverunt, dictarum sententiarum cedulas subscribere, & terminos pro servatis habitos declarare intra decem dies omnino teneantur. Nec citationes in quarum terminis pronunciare, vel earum terminos pro servatis haberi contigerit, penes se ipsos retinere possint, sed penes Notarios actuarios dimittant. Alioquin sententia, & termini ipsi lapsis dictis decem diebus pro circumductis habeantur.	§. 24. Nec idem Camerarius Ripæ ultra sex menses in ejus officio permanere, nec confirmari valeat.	Camerarii Ripæ officio ad sex menses.
Nullitatibus attendendis.	§. 13. Non attendat nullitates, nisi ex defectu citationis, jurisdictionis, vel mandati, sed illis non obstantibus ad causarum expeditionem procedant.	§. 25. Cause tamen eorum qui in Burgo habitant, in prima instantia coram Judice Burgi cognoscantur, & terminentur, exceptis causis obligationum in forma Cameræ, quæ coram suis Judicibus, & mercedum, ac miserabilium personarum, quæ ad instantiam creditorum, coram omnibus ordinariis Judicibus introduci, & ab illis terminari possint.	Judicis Burgi jurisdictione. Ad quam vide conf. 4. Jul. III.
Expeditione causarum à duobus iuratis iust.	§. 14. Expediant causas à duobus scutis infra summarie, manu regia, partibus tantum oretenus auditis, & sine scriptis, nisi aliter ipsis ex rationabili causa visum fuerit, quam Burgi, de Sabellis, Ripæ & Ripetæ iudices exprimere in actis teneantur.	§. 26. Conservatores Urbis in Palatio pro ipsis deputato residere teneantur, hoc videlicet modo, primus ipsorum primo mense, secundus secundo, & tertius tertio, ita quod unus ipsorum in dicto Palatio semper præsideat.	Conservatorum Urbis residentia in Palatio Capitoli.
Carcerum visitatione.	§. 15. Gubernator semel in mense, una cum pauperum, ac Fisci Advocatis & Procuratoribus, ac deputato à Societate Charitatis, ultra visitationem ordinariæ semel in hebdomada fieri solitam, visitet carceres, tam secretos, quam publicos per seipsum, ne carcerati indebitè à custodibus carcerum opprimantur, ac ut tabula novissime à dilecto filio Guido Afcanio S. R. E. Cardinali, & Camerario nostro edita, & in ipsis carceribus affixa tenenda observetur, provideat.	§. 27. Non possint de pœnis statutariis, vel per eorum proclamata infligis, aliquo modo gratiam facere in totum, & præsertim de corporalibus, nec illas commutare, sine consensu ipsorum omnium infimul convocatorum, & eo casu non ultra medietatem pœnæ remittere, nec in domo super hujusmodi gratiis aliquid signare possint, sed earundem pœnarum executionem, postquam de illarum incurfu confiterit, celeriter procedant. Ad quarum etiam pœnarum præsertim corporali executionem in eventum in quem non mittantur executioni per ipsos Conservatores à die delati criminis intra quindecim dies quilibet alius Iudex ordinarius procedere possit, dummodo pœnas pecuniarias in manibus Camerarii populi à reis perfolvi faciat, nec ipsos reos à carceribus sine dictorum Conservatorum consensu relaxet. Et cum potissime ipsorum officium consistat in coercendis, & puniendis Pistoribus, Lanis, Salvamentariis, Olitoris, Fructuosis, & aliis artificibus, ut Urbis ipsa omnibus ad vitium necessariis magis quam fieri possit abundet, abstinere ab omni genere muneris, etiam ab esculentis, & proculentis, ab hujusmodi scilicet speciebus hominibus, nec ab eis aliquid sub quovis pretexto accipiant. A quibus etiam abstinere faciant omnino eorum Scribam, Notarium, & Secretarium, ac Fideles, & alios eorum officiales, & in primis Extraordinarios, corporali pœna eos coercendo, & deinde ab officio removendo.	Ad hoc vide Stat. Nov. lib. 1. c. 15. & lib. 3. cap. 4. & seqq.
Medicorum pro carceratis electione & munere.	§. 16. Protector vero Charitatis, & illius deputati cum intervenu Gubernatoris, & Procuratoris Fisci eligat duos Medicos fideles, & expertos, unum videlicet Physicum, alterum vero Chirurghum, qui visitent carceratos infirmos, & eos curent, ac de eorum infirmitate, cum opus fuerit, fidem faciant eidem Gubernatori, & aliis Judicibus, provideatque eidem de competenti salario ex pœnis malefactorum solvendo.	§. 28. Quos Extraordinarios ad officium Extraordinariatus hujusmodi exercendum nullatenus admittant, nisi recepta ab eis cautione saltem juratoria sub pœna ipsi Conservatoribus benefica de officium ipsum fideliter exercendo, & præmissa observando, ac de seipso representando pro omni eo quod in exercitio dicti eorum officii admittere possint.	Extraordinarium Pop. Rom. cautione, & fide. Aliam requirit cautionem Statutum lib. 3. cap. 19.
Confessorum pro carceratis electione.	§. 17. Et in primis eligat aliquem presbyterum secularem, vel regularem, qui confessiones ipsorum infirmorum, vel aliorum carceratorum, non tamen ultimo supplicio damnatorum, postquam in manibus executorum consignati fuerint, quorum cura ad Confratres Societatis S. Joannis Baptiste Misericordie nuncupati spectat, audiat, eosdem carceratos visitet, ac spiritaliter consoletur.	§. 29. Quibus quidem extraordinariis fidem adhibeat juxta formam decreti à modernis Conservatoribus ultimo loco editi, & non aliter. Cogant Extraordinarium majorem ad exercendum officium etiam per seipsum, & per substitutum idoneum ab ipsis Conservatoribus approbandum.	Fidei eidanda.
Fisco citando in causis criminalibus.	§. 18. Nullus Judicum etiam Burgi, de Sabellis, Ripæ, & Ripetæ in causis criminalibus procedat, seu sententiam ferat, nisi Fisco in omnibus actis, in quibus de jure citari legitime citato.	§. 30. Et idem Extraordinarius major, & ejus substitutus, ac minores Extraordinarii cogere possint quoscunque etiam per derentionem corporum, ut permittat ponderare carnes, & alia omnia quæ sub eorum cura sunt, & pretium deponent, & recusantes pro prima vice puniantur in duplum valoris rei penes eos inventæ, & pro alia voce, si illud idem a misserint, in duplum, & alia etiam corporali arbitrio Conservatorum, & nihilominus Extraordinarius, & ejus	Officio eorum dem. Ad quod vide dictum Statutum lib. 3. cap. 19.
Advoc. Proc. & Notarii domi Judicum non retinendis. Judicis de Sabellis depuratione.	§. 19. Non retineant domi sue familiariter aliquem Procuratorem, nec Advocatum, nec etiam Notarium suæ curiæ.		
Hoc idem jussit Greg. XIII. in fra. ejus bulla 26.	§. 20. Iudex de Sabellis nullas pecunias pro obtinendo iudicatus officium Marefcallo pro tempore existenti perfolvat, aut ei etiam post assecutum officium mutuet, nec sub quovis pretexto quicquam ei det, minus ipse Marefcallus ab eodem Iudice, quavis occasione, vel causa, etiam in vim cuiuscumque præfentis indulti sibi à Sede Apostolica concessi, aut præfentis consuetudinis, quod, & quam per præfentes revocamus, & improbamus, percipere audeat.		
Notariorum dictæ Curie numero, & assidu.	§. 21. Liceatque eidem Marefcallo duos tantum Notarios actuarios in ejus curia habere, nec quovis pretexto non erum Notariorum hujusmodi augere possit. Supprimendo ex nunc prout supprimimus omnia dictæ Curie Notariatus officia, duobus tantum exceptis ad ipsius Marefcalli electionem. Ita		

substitutus, ac alii minores Extraordinarii prædicti omnia Conservatoribus denunciant, & res taliter inventas nullatenus sibi retineant, sed ad ipsos Conservatores deferre teneantur. Et Barigellus, ac alii executores quorumcumque curiarum eidem Extraordinario majori, & ejus substituto in prædictis ac aliis eorum officium concernentibus obedire teneantur.

§. 31. Mandata executiva quæcumque, tam in civilibus, quam in criminalibus à quibuscumque Judicibus decreta, passim & indistincte ubique, tam in Urbe, quam in Burgo, & Ripa, nulla locorum distinctione habita, absque alicujus licentia, & præsertim Capitanei, & Judicis Burgi, ac Camerarii Ripæ, per quoscumque executores libera executioni demandentur: nec executio, sub eo etiam prætextu, quod locus Judici, qui mandatum decrevit, subiectus non sit, aliquo modo impediri possit.

§. 32. Magistri viarum, à Pistoribus, Laniis, Salfamentariis, Fructuolus, & ceteris hujusmodi pro pretio locorum ad exponenda venalia, tam in plateis, quam in viis illis concedi solitorum exigant quartam partem minus quam hæctenus exigi consueverit, præterquam à deferentibus res venales ad mercatum in platea Agonis, à quibus nihil proflus exigere possint.

§. 33. Ad strata latericia in viis, prout opus esse eis videbitur, domos contiguarum domorum cuiuscumque sit dignitatis, aut si ipsi abfuerint, vel solvendo non sint, illorum inquilinos juris remediis opportunis, ac sub eorum arbitrii penis cogant. Current ex pecuniis, quæ ab Urbis artificibus exiguntur, & deponuntur, etiam à carceratis, quæ similiter deponuntur, nec ab eisdem magistris quovis modo percipiantur, vias ejusdem Urbis continuo, ac Agonis, & ceteras plateas dictæ Urbis ad minus quater in anno, idemque in Martii, Junii, Septembris, & Decembris mensibus, munditiis purgari. Nullos ædus, nullaque negotia, quæ alicujus momenti fuerint, sine rogatu sui Notarii expediant.

§. 34. Submagistri vero illorum, relationes quas tantquam periti facere solent, non nisi mediante juramento faciant, & si quid dolo vel fraude egerint, perjuri & alias penas arbitrio Camerarii & Clerici Camere pro tempore Præsentis incurrant, & ad interesse partibus condemnentur.

§. 35. Edant in initio eorum officii proclamata sub nomine dicti Camerarii, & de penis in illis contentis, ac statutariis nullam sine ejusdem Camerarii, aut saltem Clerici præsentis mandato gratiam facere possint. In ceteris tam quoad appellationes ab eorum sententiis, quam quoad reliqua omnia, observent nova, & vetera statuta.

§. 36. Advocatus pauperum solite studeat ne carcerati in aliquo, tam à Judicibus, quam etiam ab executoribus, & carcerum custodibus graventur. Et propterea non desit umquam in visitationibus carcerum, tam publicis, quam privatis, & procuratores pauperum, ac illorum substitutos, & etiam carcerum visitatorem singulis hebdomadis una vice ad se evocet, & de omnibus carceratis præsertim his qui in secretis detinentur, diligenter se informet. Et si ipsos procuratores vel substitutos, & visitatorem negligentes invenerit, Visitatoribus carcerum denunciet, ac ut de ipsis provideatur instet. Et cum ratione officii sui gratis pauperes defendere, & illis patrocinari debeat, nihil proflus ab illis accipiat. Et ut facilius ipsis pauperibus operam suam impendere possit, visitator carcerum quolibet die post visitationem carceratorum ad ipsum accedere, & ipsi nomina eorum qui in dies carcerantur rescriptis, & pariter etiam Judicibus deferre teneatur.

§. 37. Procuratores vero eorumdem pauperum, & ipsorum substituti, singulo quoque die carceres visitare, & nomina omnium, qui ad illos ducuntur, ac Judicium de quorum mandato, ac etiam causas eorum detentionis, & diem cum ad largam ponuntur, & an ante vel post prandium sine cenam, annotare teneantur. Et similiter pecunias, & alias

quasque res, quas invenerint repertas fuisse penes ipsos carceratos, & deinde omnia invenerint repertas fuisse penes ipsos carceratos, & deinde omnia ad otitiam dicti Advocati deducant, ad quem etiam quod ab ipso minime requisiti fuerint, semel in hebdomada, & interim totiens quotiens carceratis opus sit, accedant. Nihil omnino accipiant à pauperibus, nec etiam ab aliis carceratis etiam quod divites sint sine speciali licentia Gubernatoris, aut saltem pauperum Advocati. Non possint aliquo modo dicti Procuratores, & Substituti contra reos ad offensam, etiam extra carceres ipsorum reorum causa agatur, neque etiam Advocatus patrocinado, vel alios quomodolibet sub quovis prætextu intervenire.

§. 38. Fiscus Advocatus in omnibus causis criminalibus, & alias fiscum tangentibus, ubi articuli juris emerferint, interveniat, & Procurator Fisci ipsum super hoc omnino requirere teneantur, & in eis absque ullo præmio patrocinetur, possit tamen ab instigatoribus propriam injuriam, vel interesse prosequentibus, si quid sponte dare voluerint, illud percipere. Idemque in omnibus Visitatoribus carcerum adesse teneatur, nec reorum etiam extra carceres existentium defensionem assumat, sed pro veritate, & iustitia causam Fisci teneatur.

§. 39. Procuratorantem Fisci in primis prospiciat, quod sicut in admissione ad ejus officium in Camera Apostolica de illud recte, & fideliter administrando juramentum præstat, ita in illius promotione taliter se gerat, ut causam nullam promoveat, quam calumniosam esse cognoverit, & cum primum de calumnia post litem ceptam, vel de rei innocentia constiterit, ab illa desistat, & aliter non expectata sententia.

§. 40. Et cum ratione sui officii cogatur ad introducendas causas, in quibus de interesse Fisci agitur, nihil omnino ab instigatoribus accipiat pro decreto, vel subscriptione cuiuscumque monitorii, etiam ad personaliter comparandum. In prosecutione vero causarum non nisi moderate pro labore per eum five ejus substitutos ad utilitatem, & commodum eorumdem instigatorum subeundo. Nihil vero accipiat à reis sub quovis prætextu, & præsertim ab iis qui obtinuerint sententiam absolutivam à qua ipse procurator appellare noluerit. Nec etiam pro appositione manus in mandatis de relaxando, quibus nihilominus custodes carcerum, ubi id eis à Judicibus committitur expresse five dicti procuratoris Fisci manus appositione obedire, & carceratos dimittere teneantur.

§. 41. Quoad expensas contumaciales, vel quæ alias à reo reiciantur, si instigator aderit, five apertus five secretus, qui ipsas fecerit, ipsi instigatori procurator Fiscalis, cui ratione condemnationis solvendæ veniunt, restituat, ubi vero nullus adfuerit instigator, satisfacto prius de illis Notariis pro mercede laborum suorum residuum dictarum expensarum (cum non sit iustum reum ex contumacia sua commodum consequi debere) eidem procuratori Fisci persolvatur. Reos non interroget, nec testes examinet, nisi in præsentia Judicis, & pro assensu five examine reorum, vel testium five ad offensam, five ad defensionem, vel alias pro reo inductorum, nihil proflus accipiat, nec etiam sui substituti accipiant, & ubi in termino citationis examini testium non interfuerit, vel interrogatoria non dederit, testes induci five ulteriori dilatione examinentur.

§. 42. Citatus originale citationem non possit retinere penes se ultra diem, sed illam cursori restituere sequenti die teneatur, illius copia dimissa si voluerit. In qua citatione pars ad cuius instantiam fit, nomen Notarii in cuius officio causa tractatur, vel tractari debet, & procuratoris, si principalis absit ab Urbe, apponere debeat, alioquin dicta citatio nulla censetur, nec ipsum procuratorem Fisci afficiat.

§. 43. Non det mandata de capiendi quæpiam voce, vel in scriptis, nisi ubi adfuerit periculum fugæ, & Judicis copia incontinenti haberi non possit.

Advocati Fiscalis officio. Vide eandem bullam Pauli V. §. 15.

Procuratoris Fiscalis officio, in causis prosequendis.

Fiscus à reis nihil, ac ab instigatoribus moderate recipiat.

Et de expensis contumacialibus instigatoribus & Notario, impensum, vel debitum solvat, & residuum retineat pro se.

Citationes expediat.

Capturam non committat nisi &c.

Appellet, & dei. d. Signatura iudicet de admisso vel refectione sua appellatio.

Superfluo-
rias causa-
rum civilium
non procu-
ret.

Remissio-
ris Fisco, & in-
figatori deneg-
gandis.

Littere pro
captendis in-
diciis quan-
do dantur.

Dilationes
reis qua con-
cedenda.

Compositio-
nes cum quib-
us tractan-
das.

Absolutorum
cautiones
non requi-
rendae.

Fiscus quan-
do appella-
tionem pro-
sequatur, si
ad sit insti-
gator.

Fiscus inter-
esse sciam
ostendat.

Fisco ubique
citanda.

Fisci facultate
deputandi
substitutos.

Prohibitione
participandi
cum eis.

Fisci Capito-
lini Statutus.

§. 44. Et cum ad Signaturam spectet causam appellationum nomine dicti procuratoris Fisci ad sententiam contra eum latis interpositarum sice-
re, vel committere idem procurator appellare non prohibeatur. Verum quoad illarum relectionem vel commissionem pro causarum, & personarum qualitate Signatura ipsa occurrentibus casibus huiusmodi providere poterit in cuius commissionis Signatura citetur prius, antequam signetur pars quae sententiam absolutoriam obtinuit, & alter Signatura nullius sit roboris vel momenti.

§. 45. Et cum officium procuratoris Fisci principaliter quo ad causas criminales constet, in prosecutione vindictae publicae non se intromittat pro obtinendis inhibitionibus de supercedendo in causis civilibus, & praesertim praetextu iuramentum, nisi ubi de iure ad ejus instantiam inhieri possit.

§. 46. Nec ei vel etiam instigatori concedatur remissoria etiam praetextu indulgi. fel. rec. Paulo III. concessit, nisi in casibus in quibus aliis de iure concedi debet.

§. 47. Minus si concedantur litterae ad partes pro captendis indicibus, nisi prius dato aliquo lumen arbitrio Iudicis a quo impetratur, & tunc non committatur alteri quam loci Ordinario, vel ejus Vicario, nisi subsistente probabili causa suspicionis.

§. 48. Nec etiam dilationes non necessariae, nec debito longiores, quinimmo potius studeant Iudices quam primum causas expedire, ne rei diutius tardo carceris, vel laboribus, & expensis fatigati componere, & se redimere cogantur.

§. 49. Procurator praefatus cum pro debito ejus officii curare debeat, ut rei puniantur, non tractet de compositione cum ipsis reis, sed expeditioni causarum incumbat, & ubi reus compositionem fieri petierit, non fiat nisi cum interventu Iudicis, & ipsius procuratoris Fisci.

§. 50. Nec ad ejus instantiam, aut aliis ex officio ejus absolutus definitive a crimine cogatur dare cautionem de se representando, vel non discedendo ab Urbe.

§. 51. Non prosequatur causam appellationis ad sententiam contra eum lata, ubi ad sit instigator, ferretur vel apertus, nisi data cautione pro eundem instigatore de reficiendo expensas, tam prius, quam ulterioris instantiae in eventum succumbentiae.

§. 52. Non audiat Fiscus protestando causam, quae agitur inter privatos, non expediri nisi ipso citato sub praetextu interesse ipsius nisi de illo incontinenti, quantum iudici sufficere videbitur docuerit.

§. 53. Et ut delicta impunita non remaneant, interveniat etiam in Curia de Sabellis, Ripa, ac Burgi. Et cum sit Fisci, & Camerae Apostolicae Procurator generalis, ratione convenit, ut de omnibus criminibus, & causis Fiscum ipsam tangentibus notitiam habeat.

§. 54. Propterea ad eum spectet Procuratores Fiscales uti ejus substitutos in terris Sanctae Romanae Ecclesiae deputare, quos legati etiam de latere cum litteris patentibus dicti Procuratoris Fiscalis ad eorum officia admittere teneantur, & admitti faciant. Qui substituti sub pena privationis eorum officii, ac aliis arbitrio nostro imponendis, ipsum Procuratorem generalem de omnibus Fiscum ipsum concernentibus, & praesertim de sententiis tam absolutoriis, quam condemnatoriis certiores facere debeant.

§. 55. Caveat autem idem Procurator generalis, ne a dictis ejus substitutis, five pro substitutione faciendis, five quavis alia ratione, vel causa quicquam recipiat, sed omnia emolumenta eisdem substitutis libere, & integre dimittat.

§. 56. Procurator Fisci Curiae Capitolinae, in omnibus & per omnia illud idem observet, quod Camerae nostrae Apostolicae procurator, quoad ea videlicet capitula superius adnotata, quae ipsum etiam concernere, & sibi convenire possint.

§. 57. Et si plus vel a personis supra prohibitis, aut alias quam ut supra adnotatum fuit, omnes supradicti receperint, vel super hoc contraverint, majores Iudices, & Advocati sententiam excommunicationis, & arbitrii nostri poenas, inferiores autem & omnes alii supradicti ultra dictam excommunicationis sententiam, etiam privationis officii poenam incurrant, & alias a bitrio nostro puniantur.

§. 58. Notarii Curiarum supradictarum, tam criminalium, quam civilium causarum non exigant, nisi juxta taxam eis praescriptam, & si plus exegerint, pro prima vice, viginti quinque, pro secunda quinquaginta, & pro tertia centum scutorum, & privationis officii, ac etiam corporales arbitrio Iudicum imponendas poenas respective incurrant. Quam taxam in vulgari sermone scriptam in eorum officii, huiusmodi poenis appeniam, ita quod ab omnibus legi possit, habere teneantur.

§. 59. Exerceant eorum officia per seipsos, nec illa arrendent sine licentia Iudicum, exceptis Notariis Gubernatoris, Burgi, de Sabellis, Ripa, Turris Nonae, & Ripetta, ac Capitolinis, qui nullo modo illa sine expressa licentia nostra etiam in scripta obtenta arrendare possint.

§. 60. Nec substitutos recipiant, nisi ab ipsis Iudicibus approbatos, pro quibus ad damna, & interesse quae illorum culpa partibus evenierint, etiam si ipsos exhibuerint, & solvendo non fuerint, teneantur, & obligati sint.

§. 61. Nihil scribant in causis a duobus scutis infra sine speciali licentia Iudicum.

§. 62. Non conscribant registra, nisi juxta formam nostri Motus proprii, nec illa vel etiam extractus in causis ordinariis, etiam utraque seu altera partium petente, nisi de Iudicum licentia in scriptis obtenta, vel nisi acta essent ad alium Iudicem transportanda. In causis tamen excedentibus summam ducentorum scutorum dammodo non sint causae mercedum, & miserabilium personarum, vel alias tales in quibus executive proceditur, si commissiones supervenerint, registra conscribere possint, servata semper in reliquis forma dicti Motus proprii nostri.

§. 63. Nec pro copia indiciorum, quam effectualiter reo non dederint, quicquam percipere, nisi loco arrhae habeant, & ubi reus amplius ipsam copiam habere noluerit, etiam quod arrham dederit, ab ipso non exigant nisi pro rata copiae conscripserint.

§. 64. Notarii Capitolini deservientes Collateralibus Senatoris pro actuariis non possint esse ultra numerum viginti, nec recipi nisi servata forma Statutorum, sed ad dictum numerum reducantur ad electionem Senatoris, & Conservatorum, & per se ipsos coram Collateralibus acta conscribant, nullumque aliud officium Notariatus in alia quavis Curia obtineant.

§. 65. Et tam ipsi, quam ceteri Notarii Curiarum Capitolii, ac etiam Scribae Senatus, & Secretarii Conservatorum, pro eorum mercede non accipiant ultra taxam eis a Statutis limitatam, & ubi non sit a Statutis limitata juxta taxam Notariorum causarum civilium Gubernatoris accipiant, excepto Notario Magistrorum viarum, qui indistincte exigere possit secundum dictam taxam Notariorum Gubernatoris.

§. 66. In criminalibus vero Protonotarius, & Notarius maleficiorum Senatoris taxam Notarii in criminalibus dicti Gubernatoris, prout, & Notarii aliarum Curiarum, etiam Auditoris, & Vicarii observent & nihil ultra quocumque praetextu accipere audeant.

§. 67. Non deferant Notarii praefati Capitolii extractus ad Iudices, nisi prius per Correctores, aut per unum ex eis visi taxati fuerint, & nihil praeter arrham ante dictam taxationem recipere possint, quam taxationem intra terminum unius diei a receptione dicti extractus correctores absque ullo praemio faciant.

§. 68. Eorumdem Notariorum Capitolii in po-

Penarum in-
flictione in
contrave-
nientes.

Taxa a Nota-
riis servanda.

Officiorum
Notariatum
arrendis.

Substitutis
per eos reci-
piendis.

Actis prohibi-
tis a duob.
scutis infra.
Registri
sunt juxta
Motum pro-
prium qui est
inf. in cons-
tit. 106.

Copis indi-
ciorum.

Notariorum
Capitolii nu-
mero, ele-
ctione, &c.

Taxa eorum-
dem.
Quam vide
in Statut.
lib. 3. c. 93. &
legg.
Et in cons-
tit. 45. Pauli V.

Protonota-
rium &
Notarii cri-
minalis Ca-
pitoli taxa.

Extractuum
taxatione.
Tu vide Stat.
lib. 1. cap. 16.

Notariorum
eorumdem
decedentium
scriptura.Regius ad
referendum
prohibitione.Plurium No-
tariarum
reventione
damnata.Et procura-
tione.Consilium
arum statu-
tis.Jurisdic-
tio-
neque.Notariorum
Artium taxa.Assessorum
que eorum-
dem.Judicis Tur-
ris Nonæ ju-
ridictione.Notariorum
ipsum taxa.Curforum
P. pe taxa
pro citatio-
nibus, &c.

iterum decedentium, & etiam defunctorum hæredes, quicumque alii eorum scripturas detinentes, intra quindecim dies ab obitu ipsorum Notariorum, & publicationis presentium respective computandos, dictas scripturas, & nomen Notarii cujus fuerint, sub pena amissionis dictarum scripturarum, & illarum emolumentorum, Secretario Conservatorum denunciant, & prefatus Secretarius librum teneat, in quo denunciations hujusmodi scribat.

§. 69. Nullus ex Notariis etiam Cameralibus, & Auditoris Camere, nec eorum in substituti de instrumentis, quæ extra judicium fient ad referendum alteri Notario, seu & Connotario, se rogare possint, sed Notarii principales per se ipsos, & eorum substituti pro ipsis Notariis in quorum officiis commorantur, de instrumentis se rogent, non autem ad alteri referendum.

§. 70. Nec possint Notarii omnium Curiarum supradictarum in futurum obtinere plura officia Notariatus in diversis Tribunalibus, sed officia Notariatus hujusmodi inter se incompatibilia censeantur.

§. 71. Et tam ipsi Notarii, quam eorum substituti, non possint esse procuratores in Curia in qua Notarii sunt, & officium substituti exercent.

§. 72. Consules artium quarumcumque observent eorum statuta legitime approbata, ac usu recepta.

§. 73. Nec reassumat causas, præsertim mercedum, & miserabilium personarum coram majoribus Magistratibus introductas.

§. 74. Et illorum Notarii taxam eis per dicta statuta præscriptam, & ubi aliqui ipsorum nullam habuerint minorem taxam, aliorum quam habuerint sequantur, & secundum illam exigant.

§. 75. Assesores autem dictorum Consulum, ac aliorum officialium Curie Capitoli salarium non habentes, caveant ne in causis minimis, videlicet à quinque scutis infra, quicumque pro eorum voto, & consilio, & aliis non ultra sportulas dictis statutis taxas percipiant.

§. 76. Judex Turris Nonæ non se intromittat in causis à decem scutis supra, nec in criminalibus, nisi levis & minimis.

§. 77. Ejusque Notarius observet tabulam Notariorum Curie de Sabelis, cujus Notariatus officium per obitum illud nunc obitantes extingui sit, & suppressum esse censeantur, prout in eventum prædictum illud ex nunc prout ex tunc supprimimus.

§. 78. Curfores nostri pro quolibet citatione, inhibitione, vel quavis alia intimatione cujuslibet actus judicarii non exigant ultra bolendos duos, nisi forsitan executio citationis, vel alterius actus judicarii hujusmodi faciendi esset in loco satis distante à Tribunalibus Urbis, quo casu exigere possint bolendos quatuor, & non ultra, & loca intelligantur esse distantia, si executio fit faciendi in regione Transiberim, Montium, Trivii, & prope Ecclesiam beatæ Mariæ de Populo, & si extra mœnia Urbis, in illius tamen suburbiis non ultra carlenum unum. Pro citatione vero, inhibitione, vel intimatione simili contra Episcopos & Prælatos, ac alias personas qualificatas, & procuratorem Fisci faciendi, non ultra bolendos quinque. Pro subhastatione quorumcumque pignorum, tam mobilium, quam immobilium exigant similiter, prout hæcenus exigere consueverunt. Nec aliquis ipsorum, pro ea intimatione, in qua parti intimatur mandatum procuræ esse in actis productum, vel procuratoris in causa esse revocatus, ultra julum unum percipere audeat. Minus officium ipsorum cuiquam impartiri dolose recusent, seu differant. Nec etiam sub prætextu modicæ mercedis, vel ob id quod majorem habere velent. Et quia de cetero in causis tot commissioes quot hæcenus fieri consuevit, pro reformatione Signaturæ nostræ de proximo publicanda fieri prohibemus, pro prima commissione, per quam scilicet causa coram aliquo iudice introducitur exigant bolendos quinquaginta, pro aliis vero, si

quæ in causa supervenerint, carlenos duos Cancel larii. In reliquis autem observent in omnibus, & per omnia normam eis à Concilio Lateranensi traditam, nec præmissis in aliquo contravenire præsumant, sub pena excommunicationis latæ sententiæ, & privationis officiorum eo ipso incurrenda.

§. 79. Mandatarii quarumcumque Curiarum non exigant ultra bolendin. unum pro citatione, nisi sit citatio faciendi in longinquis locis ab eorum Curis, quo casu exigant duos, & non ultra. Illud idem faciant in intimatione cujuslibet sequestri, monitorii, inhibitionis, decreti, & cujuscumque actus judicarii, exceptis citationibus faciendis contra fisco, pro quibus exigere possint bolendos tres. Pro subhastatione, & deliberatione pignorum, si ve rerum & bonorum mobilium, & immobilium, & usque ad summam trium scutorum, bolendinum unum pro quolibet scuto, ab inde supra bolendinos duos pro quolibet scuto, ita tamen quod ultra unum scutum non exigant pro quacumque summa, etiam quod res subhastatæ, & deliberate ad magnam summam ascendant.

§. 80. Barigellus, & executores quarumcumque Curiarum, ac custodes carcerum, observent in omnibus, & per omnia tabulam novissime à Camerario nostro editam sub penis in ea contentis.

§. 81. Idemque Barigellus, & ceteri executores contra committentes fraudes, quas inventiones vocant, eo modo ut extraordinarii, & alii Curie Capitoli, & Conservatorum executores faciant, ad executionem procedere possint, dummodo in fraude deprehensos ad ipsos Conservatores deferant, & deducant, habentque partem penarum hujusmodi inventionum, prout & dicti Extraordinarii. Nec eorum quispiam, qui executionem non fecerit, prætextu quod facta fuerit executio ab eo executore, à quo fieri non poterat, vel in loco in quo certus executor deputatus erat, aliquid proorsus à partibus contra quas executio facta fuerit, sub pena furti, exigere audeat.

§. 82. Si quis vero ex Notariis, & Consulibus, ac illorum Assessoribus, aliquid contra præmissa eos respective concernentia, in quibus specialiter pena adjecta non sit, admiserint, præter excommunicationis sententiam, quam ipso facto incurrere volumus, etiam pecuniariis, & corporalibus penis quoad Notarios & Mandatarios Curiam præfatarum ipsorum Judicum, & quoad Consules, & illorum Notarios, & Assesores, Conservatorum arbitrio efficiantur.

§. 83. Et nihilominus omnes, & singuli supradicti in hac nostra constitutione comprehensif, fiant & sane intelligant; id quod sibi in quibuscumque casibus accipere concessum extitit, ad pauperes & impotentes nullo modo extendi, à quibus aliquid proorsus accipi posse sub penis superius respective expressis, omnino prohibemus.

§. 84. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, legibus ac Urbis, & Rom. Curie præfatarum statutis, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, stylis & consuetudinibus, quos & quas per præfatos improbanos, privilegii quoque, indultis, & litteris Apostolicis, officii & illorum officialibus supradictis per quoscumque Rom. Pontif. prædecessores nostros, ac etiam per nos contra præmissa, vel aliquid præmissorum forsitan hæcenus concessis, confirmatis, & innovatis, quibus omnibus illorum tenores, ac si de verbo ad verbum præfentibus inferri forent pro plene, & sufficienter expressis habentes, quoad præmissa dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 85. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ sanctionis, statuti, ordinationis, voluntatis, prohibitionis & derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem, &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis

Mandatario-
rum taxa pro
citationibus,
&c.Barigelli, &
Executores
taxa.Eorumdem
potestate cir-
ca fraudes
Artificum.Penarum in-
flictione in
Notarios,
Consules,
Assesores
&c. præmis-
sis contrave-
nientes.Apauperibus
quicquam
exigi prohibe-
tur.Claufulæ de-
rogatoriæ.Sanctio pœ-
nalis.Dat. P. An. 3.
die 31. Junii.

ANNO
1562.

PIUS QUARTUS.

ANNO
1562.

Papæ sub-
script.

Cardinalium
subscriptiones.

Publicatio.

LIX.

Edita An. D.
1562.

Causa hujus
reformatio-
nis.

Dominica 1562. secundo Kal. Julii, Pontificatus
nostri Anno tertio.

Ego Pius Catholicæ Ecclesiæ Episcopus.

Si mei non fuerint dominati tunc immaculatus ero.

Ego R. Card. de Carpo Episcopus Ostien.
Ego F. Card. Pisanus Episcopus Portuen.
Ego Fed. Card. Cæsius Episcopus Tusculan.
Ego Jo. Card. Moronus Episcopus Prænestin.
Ego Christoph. Madruc. Card. Triden.
Ego Otho Card. Aug. Episc. Albanen.
Ego R. Card. S. Angeli Major Pœnit.
Ego Ti. Card. Crispus.
Ego Jo. Mi. Card. Saracenus.
Ego Jo. Card. Sancti Vitalis.
Ego Jac. Card. Puteus.
Ego Jo. B. Cicada Card. S. Clementis ff.
Ego B. Card. Tranen.
Ego Scipio Card. Pisarum.
Ego Jo. Card. Reomanus.
Ego Jo. Ant. Card. Capisuccus.
Ego Fr. M. G. Card. Alexandrinus.
Ego Clemens Card. Araceli.
Ego Jo. Ant. Card. S. Georgii.
Ego Aloysius Card. Cornelius.
Ego B. Card. Salvatus.
Ego Ph. Card. Aburd.
Ego Marcus Antonius Card. Amulius.
Ego Guid. Alf. Card. Camerarius.
Ego N. Card. de Sermoneta.
Ego Carolus Card. Borromæus.
Ego Franciscus Card. Gonzaga.

Anno à Nativit. D. N. Jesu-Christi 1562. indit. 6.
die vero 20. mensis Januarii, Pontificatus Sanctiss.
in Christo Patris & D. N. D. Pii divina providen-
tia Papæ Quartii, anno 4. retroscriptæ litteræ Apo-
stol. affixæ & publicatæ fuerunt in valvis S. Jo.
Lateranen. ac Principis Apostolorum de Urbe, nec-
non in acie Campi Floræ, per nos Jo. Guerardum,
& Julium Parinum prelibati Sanctiss. Domini no-
stri Papæ Curf.

Petrus Valtrini Mag. Curf.

Reformatio Referendariorum Signaturæ Justitiæ
Romani Pontificis, & ordinationes à Judicibus
Romanæ Curiz observandæ.

Referendariorum hujusmodi privilegia, vide supra in
Tomo I. in Pauli III. constit. 23. Debita. & in-
frâ in Six. V. constit. 41. Quemadmodum, ubi
idem Pont. numerum & qualitates Referendario-
rum prescripsit.

Officium autem utriusque Signaturæ, Sede Roma-
ni Pont. vacante, filere jussit hic Pont. infrâ in
const. 63. In eligendis. Et quoad commissiones
signandas in causis Fiscalibus, vide hic sup. in
const. 52. Et si cuncta & constitutionem hanc
precedentem. Et in causis Fabricæ S. Petri de Ur-
be vide infrâ Pii V. const. 95. Et si omnium. Et
quod hæc signatura non rescribat in causis Ca-
meralibus, declaravit Clem. VIII. inf. in sua
const. 65. In conferendis. Ejusque reformatio-
nem vide in Pauli V. constit. 71. Universi. §. 1.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Um nuper nos generali officiorum, & Tribu-
natum Romanæ Curiz pro abusibus extirpan-
dis, ac universali in ea litigantium commoditate,
reformationi intenderimus, & providerimus, Cu-
pientes eorumdem litigantium indemnitati in to-
tum consilere, ac ut celerius lites terminentur pro-
videre, valde opportunum, immò necessarium esse
censuimus etiam Signaturam Justitiæ, à qua ple-
rumque hi qui lites in longum protrahere, alios-

que diutius & gravioribus impensis defatigare qua-
runt cavillationibus & versutis diversæ rescripta,
aut superflua, aut dilationem inducentia extor-
queant reformare. Idcirco pro illius reformatio-
ne, visis & etiam mature discussis, nonnullis per
dilectos filios Referendarios nostros adnotatis, &
coram nobis etiam in præsentia nonnullorum ex
venerabilibus fratribus Sanctæ Romanæ Ecclesiæ
Cardinalibus propositis, de eorumdem, ac cete-
rorum fratrum nostrorum consilio, hæc in perpetu-
um validura constitutione sancimus.

§. 1. Quod nullus ex dictis Referendiariis pro-
positas, & rejectas in Signatura Justitiæ commis-
siones, in Signatura Gratiæ coram nobis propo-
nere audeat, nisi talis sit materia, quæ scientiam
nostram requirat, aut quæ per Signaturam Justitiæ
ad eandem Signaturam Gratiæ remissa fuerit.

§. 2. Nec in antiquis ac arduis materiis in quibus
plures hinc inde expeditæ fuerint commissio-
nes, & in avocatoriis à prioribus judicibus, & quo-
vis modo præjudicialibus, manum apponere nisi
ipsius citata coram eo parte interesse habente.

§. 3. Et cum agitur de revocatione, aut mode-
ratione alicujus præinsertæ, similiter manum non
apponat, nisi in præinserta appositum sit nomen
Referendarii, qui illi manum apposuit, ut ratio-
nem reddere, & eam justificare possit. Nec etiam
reformatio five moderatio ejusdem præinsertæ ab
habente Signaturam Justitiæ, nisi nomen Referen-
darii, ut præmittitur, in ipsa præinserta apposi-
tum fuerit, aliquo modo signetur.

§. 4. Minus in commissionibus appellationum
ab interlocutoris, nisi expresse relevanti grava-
mine. Nec cum appellatur à definitiva cum clau-
sula, aut vim definitiva habente, nisi res adeo ex-
primatur, ut videat Referendarius, an tale sit gra-
vamen, quod per definitivam reparari non possit.
Et si in commissione appositæ fuerit clausula, cum
toto negotio principali, tunc addatur, justificato
tamen dicto gravamine.

§. 5. Abstineant ulterius Referendarii ab appo-
sitione manuum in commissionibus nullitatum, &
attentatorum, nisi exprimantur nullitates ex de-
fectu jurisdictionis, citationis, vel mandati, & ip-
sa attentata. Et pariter in illis in quibus narra-
tur, pronunciatum fuisse prout in cedula.

§. 6. Nec etiam manum apponat in commissio-
nibus prorogationis fatalium, nisi in quibus pri-
ma vice ipsa prorogatio petatur, illas vero com-
missiones in quibus pro ulteriori prorogatione sup-
plicatur, in Signatura nostra gratiæ proponant.

§. 7. Causæ criminales, & matrimoniales non
inferioribus Episcopis, & in terris Ecclesiæ, cau-
sæ criminales clericorum in sacris constitutorum
Ordinario, reliquorum verò clericorum, & lai-
corum, locorum Gubernatoribus committantur.

§. 8. Et ut lites quanto citius fieri possint, ac mi-
nori parium dispendio expediantur, decernimus,
quod quilibet Judex qui causæ restitutionis in in-
tegrum, nullitatis & attentatorum, de cetero com-
mittentur, possit absque speciali commissione præ-
figere terminum ad docendum de causis restitu-
tionis, ac de ipsius nullitatibus, seu attentatis,
& eo lapsò & non docto, ad negotii principalis
expeditionem procedere.

§. 9. Similiter quilibet Judex in quibuslibet
causis coram eo introductis, & introducendis, &
etiam Auditor Rotæ, in causis extra Rotam com-
missis, possint omnes terminos substantiales in vim
commissionis à fel. rec. Innocentio Papa VIII.
prædecessore nostro, quam ad omnes Judices, &
etiam Auditores in causis præmissis tenore præ-
sentium extendimus, absque alia speciali commis-
sione reiterare.

§. 10. Quodque ab excessiva taxatione expen-
sarum, semel tantum appellatio committatur, &
duæ sententiæ habeant vim trium.

§. 11. Causæ discussionum inter creditores, & ha-
redes defuncti, seu alterius debitoris, de cujus bonis
inter

De Commis-
sionib. reje-
ctis in Signa-
tura Justitiæ.

Avocatoriis
& aliis præ-
judicialibus.

Præinserta-
rum refor-
matorum.

Appellatio-
num com-
missionibus.

Nullitatum
que & atten-
tatorum, &c.

Prorogatio-
nis fatalium.

Ad quod vi-
de hic infra.

Criminali-
bus & matri-
monialibus.

Reformatio
in causis re-
stitut. in in-
tegr. nullitatis
& attentato-
rum.

Termino-
rumque rei-
tatione.

Expensarum-
que taxatio-
ne.

Causis quo-
que discussio-
num.

ANNO
1562.

PIUS QUARTUS.

91 ANNO
1562.

De his vide
in Clem.
VIII. constit.
16.

Adicione ha-
redit. &
co. fessione
inventarii.

Discussio-
nem causis
pendentibus,
credita liqui-
da executio-
ni manden-
tur.

Decretum
irritans.

Claufulæ de-
rogatorie.
Sanctio pec-
nalis.

D. P. An. 2.
die 31. Junii.

Papæ sub-
script.

Cardinalium
subscriptio-
nes.

inter ipsos creditores agitur, intra tres menses, quoad presentes, quoad absentes vero, citra montes intra sex menses, ultra autem intra novem expediantur, & nullo modo nisi ex magna causa, & per Signaturam nostram Gratia instantia prædicta prorogetur.

§. 12. Et à die obitus debitoris intra duos menses hæredes præsentés, absentes autem citra montes intra quatuor, ultra vero montes intra sex inventarium conficere, & an velint hæreditatem adire, deliberare teneantur.

§. 13. Et interim Judices coram quibus causas discussionis hujusmodi pendere contigerit, bona ipsius debitoris defuncti, vel decoctoris debitoris creditoribus habentibus credita eorum liquida interim recepta idonea cautione de restituendo habentibus priora, & potiora, & contribuendo habentibus æqualia jura consignari mandent, & faciant.

§. 14. Si quis autem constitutioni nostræ hujusmodi in aliquo contravenerit, indignationis nostræ, ac alias arbitrii nostri penas eo ipso incurrat. Et nihilominus commissiones contra tenorem præsentium signatæ, nullius sint roboris, vel momenti, ac per præoccupationem extortæ censentur, illique Judices quibus eas præsentari contigerit, minime parere teneantur. Sicque per quoscunque Judices, & Commissarios quavis auctoritate fungentes, sublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, judicari, & definiri debere, irritum quoque, & inane, si secus super his quocunque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, decernimus.

§. 15. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis contrariis quibuscunque.

§. 16. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ sanctionis, & decreti infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc ac-
tuerit præsumptis, indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursum.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo sexagesimo secundo, Kalend. Julii, Pontificatus nostri Anno tertio.

Ego Pius Catholicæ Ecclesiæ Episcopus.

Si mei non fuerint dominati tunc immaculatus ero.

Ego F. Card. Pisanus Episcopus Portuen.
Ego Fed. Card. Casius Episcopus Tusulanus.
Ego Jo. Card. Moronus Episcopus Prænestinus.
Ego Christoph. Card. Episc. Sabin. Triden.
Ego Otho Card. Episc. Aug. Albanen.
Ego R. Card. Sancti Angeli, Major Peniten.
Ego Tib. Card. Crispus.
Ego Jo. Mi. Card. Saracenus,
Ego Jo. Card. Sancti Vitalis.
Ego Jo. B. Cicada Card. S. Clemen.
Ego B. Card. Tranen.
Ego Scipio Card. Pisarum.
Ego Jo. Card. Reumanus.
Ego Jo. Ant. Card. Capifuccus.
Ego Fr. M. Card. Alexandrinus.
Ego Clemens Card. Araceli.
Ego Jac. Card. Sabellus.
Ego Jo. Ant. Card. S. Georgii.
Ego Aloysius Card. Cornelianus.
Ego Bernardus Card. Salviatus.
Ego Ph. Card. Aburd.
Ego M. Ant. Card. Amulius.
Ego Jo. Franciscus Card. de Gambara.
Ego Alexand. Card. Farnesius Vicecanc.
Ego Gui. Alf. Card. Camerarius.
Ego Jul. Card. Urbinas.
Ego Hier. Card. Simoncellus.
Ego Vitellotius Card. Vitellius.
Ego Carolus Card. Borromeus.
Ego Franciscus Card. Gonzaga.
Ego Ind. de Avalos Card. de Aragoniis.

Declaratio dictæ Reformationis circa prorogationes
fatalium.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Cum nuper nostris litteris, quæ super reformatione Signaturæ edidimus, inter cetera caveatur, quod prorogationes fatalium non nisi semel à Signatura Justitiæ concedi possent, sperantes infra prima, vel saltem secunda fatalia, causas decidi, & terminari posse. Cumque ut accepimus, tam propter causarum multitudinem, quam etiam propter illorum implicitatem, sit quoddammodo impossibile id fieri, & propter eandem causarum multitudinem, contingere posse Signaturam nostram quandoque totam impediri in prorogationibus prædictis.

§. 1. Igitur cupientes non solum publicæ utilitati, sed etiam commoditati salubriter providere Motu simili decernimus, statuimus, & ordinamus, eorundem fatalium prorogationem, in quibuscunque causis à nostra Signatura Justitiæ, prout ante dictarum nostrarum litterarum editionem, fieri consuevit, concedi. Et quatenus post emanatas à nobis litteras super reformatione Signaturæ Justitiæ usque in diem publicationis præsentis nostri Motus proprii, instantia, seu fatalia alicujus causæ lapsa fuerint, defectu prorogationum, partes litigantes læsas adversus peremptorium instantiæ, ac fatalium hujusmodi in integrum arbitrio dilecti filii nostri Ludovici tit. S. Cyriaci in Thermis presbyteri Cardinalis Simonetæ nuncupati, dictæ Signaturæ Præfidentis, restitui posse, & indulgeri, & taliter concessas, & indultas suæ firmitatis robur obtinere, perinde ac si dictæ nostræ litteræ talem clausulam non habuissent, illis aliter in suo robore permanens. Et sic per quoscunque Judices, &c. sublata, &c. irritum quoque, &c.

§. 2. Præmissis ceterisque in contrarium facientibus non obstantibus quibuscunque.

§. 3. Volumus tamen quod in secunda five ulteriori prorogatione, & restitutione concedenda per dictum Ludovicum Cardinalem adhibeatur diligentia, ut ex causa & non aliter, tales prorogationes concedantur, super quo ejus conscientia oneramus.

§. 4. Ad quod præsentis nostri Motus proprii sola signatura sufficiat, & sumptus illius impressi ubique fidem faciat in judicio, & extra, attento quod in Urbe.

Placet Motu proprio. I.

Confirmatio Militiæ Ordinis S. Stephani, à Cosmo Medices Florentiæ, & Senarum Duce, de licentia hujus Pontificis nuper instituta, sub regula S. Benedicti, cum exemptionum, & indulgentiarum concessione.

Hanc licentiam habuit Cosmus die 1. mensis Octob. 1561. quam uti hic sufficienter relatum prætermisi. Et idem Cosmus Magnus Dux Hetruriæ creatus fuit à Pio V. ut in ejus const. 88. Romanus. Et deinde Franciscus ejus filius quedam Hospitalia præ hac Militia obtinuit à Sixto V. ut in ejus const. 65. Præclara. Prout & Ferdinandus alter filius (omnes Magni Duces) ab eodem Sixto impetravit pro Militibus etiam bigamis, & habitum clericalem non deferentibus, facultatem retinendi, & transferendi pensiones, ut in altera ejus const. 104. Circumspecta. Et nuper Paul. V. amplavit inf. in Tomo III. in ejus const. 46. Dum generosa.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

His quæ pro Religionis propagatione, & fidei catholicæ defensione, ac animarum salute, provide facta esse noscuntur, ut firma perpetuo, &

Causa hujus
deklarationis

Declaratio
quod Signat.
Justitiæ con-
cedat proro-
gationes fa-
talium juxta
ejus solium
non obstante
præmissa re-
formatione.

Derogatio
contrario-
rum.
Declaratio
de proro-
gationibus.

Sola signat-
ura sufficit.

Papæ sub-
script.

I X.

Edita An. D.
1562.

Exordium. I

illibata persistant, libenter Apostolici munimini robor adjicimus, ac illa de novo concedimus, & desuper disponimus, prout catholicorum Principum nobis, & Apostolicæ Sedi devotorum pia vota exposcunt, & id in Domino conspiciamus salubriter expedire.

Cosmus Medicus Florentinus, & Senarum Dux, licentiam à Pont. obtinuit alicuiam Militiam ut hic. Hanc licentiam habuit, ut dixi in rubr.

§. 1. Dudum siquidem pro parte dilecti filii Nobilis viri Cosmi Med. Florentinæ, & Senarum Ducis nobis exposito, quod ipse ad Dei laudem, & gloriam, ac fidei catholicæ defensionem, Marisque Mediterranei ab infidelibus tuitionem, ac posteritatis suæ decus & honorem, cupiebat unam Militiam sub certo approbato Ordine per eum eligendo cum dote competenti ex suis propriis bonis assignanda, pro uno Magistro, certoque Militum numero, ad aliarum in Hispaniis, vel alibi rite institutarum Militiarum instar, in ejus Dominio erigere, & instituere, si sibi ad id nostra, & Sedis prædictæ licentia suffragaretur. Nos præfato Cosmo Duci, ut ad Dei honorem, & gloriam, alioque effectus præmissos, in dicto dominio, & loco, ac adæ facta sibi bene visis, unam Militiam sub regula S. Benedicti, vel alterius approbati Ordinis, ac sub invocatione, & cum insigniis de quibus sibi videretur decentibus, postea privilegiis, facultatibus, & indultis, à nobis, & dicta Sede decorandam, cum dote convenienti per eundem Cosmum Ducem arbitrio suo, ut præfatur assignanda, pro uno Magistro, qui videlicet ipse Cosmus quod viveret, & deinde pro tempore existens Florentinæ Dux esse deberet, & certo Militum per ipsum Magistrum pro tempore existentem, tam à primæ erectione hujusmodi, quam ex tunc deinceps perpetuo instituendorum, ac habitu regulari donandorum, & ad regulam Ordinis hujusmodi professionem admittendorum numero, sub ejusdem Magistri obedientia, ac cum pactis, capitulis, conditionibus, & stabilimentis, per dictum Cosmum Ducem edendis, & per nos & dictam Sedem postmodum approbandis, ad aliarum Militiarum prædictarum instar, sine tamen alicujus præjudicio erigere, & instituere, ac pro Militia Militumque præfatorum salubri directione, quæcumque ordinationes, & statuta per nos, ut præfatur, confirmanda, condere possit, licentiam & facultatem per alias nostras in forma brevis literas concessimus.

Erexitque Militiam S. Stephani sub reg. S. Bened. & concedentes proventus assignavit.

§. 2. Cum autem sicut accepimus, idem Cosmus Dux omnipotentem Deum, ut christianum decet Principem, honorare, proximo prodesse, vitamque beatam promereri desiderans, in immensæ Majestatis divinæ, ac gloriosissimæ Dei genitricis, semperque Virginis Mariæ, totiusque cælestis Curie gloriam & honorem, earundem literarum vigore, unam sub invocatione, & protectione beati Stephani Militiam Militum S. Stephani nuncupandam, sub regula eisdem S. Benedicti exeret & instituerit, illicque nonnullos fructus, redditus, & proventus, ac bona pro ejus dote assignaverit, volueritque quod ejus Milites præfati in sua receptione, charitatem, castitatem conjugalem, & obedientiam expresse profiterentur.

Caritatemque & conjugalem castitatem, ac obedientiam Milites expresse profiteri jussit.

§. 3. Charitatem nempe cui tamquam solidæ basi militia ipsa inniteretur, honorem Dei rebus universis præponendo, sacræ Scripturæ præceptis parendo, Sedis prædictæ mandata servando, pro fide catholica pugnando, iustitiam colendo, pauperibus subveniendo, captivos ab infidelibus vinculis recuperando, & finaliter sese vitroneos cuicumque periculo pro Christianæ Religionis defensione, & pro ejus augmento non solum facultates, sed propriam vitam exponendo. Castitatem vero & pudicitiam, nullam aliam feminam præter propriam uxorem carnaliter cognoscendo. Obedientiam autem in omnibus sibi per Magistrum, vel ejus Locumtenentem, aliove Militiæ superiores, juxta illius ordinationes, & statuta injunctis, bono & hilari animo diligenter exequendis.

Statuta quoque super hujusmodi regula condidit.

§. 4. Ac pro salutaris Militiæ, Militumque prædictorum regimine, & perpetuitate, quamplura Canones, & Statuta, ac ordinationes super ipso Militum regula, super Militiæ statutis, & constitutionibus, super Militum officio, ac professione

super pœna transgressoribus regulæ statutorumque infligenda, super modo Milites ad professionem recipiendi, illorum habitu, Ecclesiæ, & cultu divino, Hospitalitate, communi thesauro, Capitulo generali, Magno Magistro, officiis & dignitatibus Militiæ, Militum officio, exercitio, & commendis, contractibus, alienationibus, & locationibus, necnon prohibitionibus, & pœnis, ac super aliis provisionibus, rebusque, ad divini nominis cultum, Militiæ decus, Religionis augmentum, & animarum salutem facientibus ediderit, atque sanciverit, prout in illis, variisque capitulis, desuper Italico sermone in uno quinqueno distincte conscriptis, ac de nostro mandato per dilectum filium nostrum Joannem Baptistam tit. S. Clementis presbyterum Cardinalem Cicada nuncupatum diligenter examinatis, ac perfectis, & emendatis, ac per nos manu propria subscriptis plenius continetur.

§. 5. Nos præfati Cosmi Ducis pium, & laudabile institutum, utpote fidei catholicæ exaltationem, & alia pia opera concernens, plurimum in domino collaudantes, necnon erectionis, institutionis, statutorum, canonum, ordinationum, & capitulorum, ac super illis concessi quinqueno prædictorum, & inde secutorum, veriores tenores præsentibus, pro sufficienter expressis habentes, ac ipsum Cosmum Ducem, quem speciali dilectione prosequimur, in hoc suo laudabili Militiæ Christianæ promovendæ proposito confovere, ac specialibus favoribus, & gratiis prosequi volentes, Motu proprio, non ad ipsius Cosmi Ducis, vel alterius pro eo nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed de nostra mera liberalitate, erectionem, institutionem, assignationem, aliaque omnia, & singula, canones, statuta, ordinationes, & capitula prædicta, ac prout illa concernunt cetera in prædicto quinqueno contenta, & inde secuta quæcumque, Apostolica auctoritate tenore præsentium ex certa scientia confirmamus, & approbamus, ac illis perpetuæ & inviolabilis firmitatis robor adjicimus, necnon omnes & singulos juris, & facti defectus, si qui forsan intervenerint in eisdem, supplementis.

§. 6. Et nihilominus postiori pro cautela Militiam prædictam eisdem modo, & forma quibus per ipsum Cosmum Ducem erecta, & instituta est, de novo ex simili scientia eadem auctoritate perpetuo erigimus, & instituiamus, illicque sic erectæ, omnia & singula, fructus, & alia mobilia, & immobilia, res & bona illi per eundem Cosmum Ducem hæcenus concessa, & deinceps tam per eum quam alios quoscumque licite concedenda, etiam perpetuo applicamus, & appropriamus, necnon canones, statuta, ordinationes, & capitula prædicta de novo statuimus, & ordinamus. Ac eundem Cosmum, & pro tempore existentem Florentinæ Ducem in Magnum Magistrum ejusdem Militiæ, cum honoribus, oneribus, prærogativis, & facultatibus, quibus alii aliarum Militiarum dicta auctoritate confirmatarum Magistri inter suos Milites quomodolibet untur, fruuntur, & gaudent, similiter perpetuo constituimus, & deputamus. Illicque prædicta immutandi, & reformandi, ac alia quæcumque ordinationes, & statuta ad ejusdem Militiæ directionem facientia licita, & honesta, ac sacris canonibus minime contraria quotiens sibi videbitur condendi facultatem concedimus. Ac præmissa omnia & singula valida, & efficacia fore, suosque plenarios, & integros effectus sortiri, & per Milites fratres, & alias ejusdem Militiæ personas, alioque quomodolibet inviolabiliter observari debere. Ac eosdem Milites, & religiosos ab illis nullatenus resistere posse, sed ad illorum observationem teneri, & efficaciter obligatos fore, censurisque, & pœnis ecclesiasticis, ac etiam pecuniariis ad id compelli posse.

§. 7. Et sic per quoscumque Judices quavis auctoritate fungentes, sublati eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, judicari, & definiri debere. Ac si secus super his à quocumque quavis auctoritate scierit,

An autem Milites propter inobedientiam Regulæ incident in peccatum, vide hic int.

Hic autem Pontificatus hujus Militiæ, ac statuta confirmat.

Et ipsum Cosmum pro tempore Ducem Florentinæ Magnum Magistrum ipsius Militiæ creat, cum facultatibus & privilegiis, quibus aliarum Militiarum Magistri inter Milites untur.

Decretum irritans.

Exercutorum
istius confit.
episcopatus, &
facultates.

vel ignoranter contigerit attentari, irritum, & inane decernimus.

Exercutorum
istius confit.
episcopatus, &
facultates.

§. 8. Quocirca venerabili fratri nostro Episcopo Amerino, & dilectis filiis Vicariis venerabilium fratrum Florentini & Pisantini Archiepiscoporum spiritualibus generalibus Motu simili per Apostolica scripta mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum, per se, vel alium, seu alios presentes litteras & in eis contenta quaecumque, ubi & quando opus fuerit, & quotiens pro parte dicti Cosmi, & pro tempore existentis Florentiae Ducis fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in praemissis efficacis defensionis praesidio assistentes, faciant auctoritate nostra praesentes litteras, & in eis contenta huiusmodi firmiter observari. Ac Cosmum & pro tempore existentem Florentiae Ducem necnon Milites praefatos, ac singulos alios quos ipsae litterae concernunt, & concernent in futurum, illis pacifice gaudere, non permittentes eos desuper per quoscumque quomodolibet indebitum molestari. Contradiatores quoslibet, & rebelles, per censuras, & poenas Ecclesiasticas, ac alia opportuna iuris remedia, appellatione postposita compellendo. Necnon legitimis super his habendis servatis processibus, censuras & poenas ipsas etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc si opus fuerit auxilio brachii secularis.

Exercutorum
istius confit.
episcopatus, &
facultates.

§. 9. Non obstantibus felicis recordationis Bonifacii Papae Octavi praedecessoris nostri, qua cavetur, ne quis extra suam civitatem, vel diocesim, nisi in certis exceptis casibus, & in illis ultra unam dietam a fine suae diocesis ad iudicium evocetur, seu ne iudices a Sede praedicta deputati extra civitatem vel diocesim, in quibus deputati fuerint contra quoscumque pro edere, aut alii vel alius vires suas committere praesumant, & de duabus non tribus diebus in Consilio generali edita, & quibuscumque aliis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac quorumcumque aliarum etiam Hospitalis sancti Joannis Hierosolymitani Militiarum, juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate aliorum statutorum, & consuetudinibus, privilegiis quocumque, indulgitiis, & litteris Apostolicis, illis, ac dilectis filiis illarum Magistris, conventibus, & fratribus sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decretis, etiam notis & scientia similibus, ac consistorialiter, etiam per viam contractus, ac universae legis, & ad Imperatorum, Regum, aut aliorum Principum instigationem, ac aliis quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, individua, & expressa, ac de verbo ad verbum, & aut per clausulas generales idem importantes mentio, seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi praesentibus pro sufficienter expressis habentes, illis alias in suo robore permanfuris, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus, commaniter vel divisim ab eadem sede indulgentium, quod interdici, suspendi, vel excommunicari non possit, per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulgentiis huiusmodi mentionem.

§. 10. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrorum constitutionum, approbationis, adjectionis, supplementationis, erectionis, institut. applicationis, statuti, ordinationis, constitutionis, deputationis, co-essiois, decreti, mandati, derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum eius se noverit incursurum.

Exercutorum
istius confit.
episcopatus, &
facultates.

Dat. Romae apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicae millesimo quingentesimo sexagesimo secundo, Kal. Febr. Pontificatus nostri Anno tertio.

Exercutorum
istius confit.
episcopatus, &
facultates.

Sequitur concessio privilegiorum dictae Militiae.

Exercutorum
istius confit.
episcopatus, &
facultates.

PIUS EPISCOPUS,

Exercutorum
istius confit.
episcopatus, &
facultates.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exercutorum
istius confit.
episcopatus, &
facultates.

Altitudo divinae providentiae nullis praescripta limitibus, nullisque terminis comprehensa coelestiter

pariter, & terrestria inscrutabili ratione disponit, & mortalium mentes ad ea, per quae benevolentia, & ferventi devotione Catholicorum Principum ad id tendunt, & quam in nos, & Romanam gerere commendantur Ecclesiae, mediante personarum quarumlibet sub regulari observantia degentium optata salus undique proveniat animarum, divinisque cultus suscipiat incrementa, incitat. Unde nos, quibus meritis licet imparibus, universalis Ecclesiae regimen eadem est providentia creditum, iuxta Sedis Apostolicae officium, pro eorum meritis dexteram in eos liberalitatis nostrae extendere censuimus, quo ipsi in perseverantia laudabilium operum ferventius animentur, quorum exemplo provocati, ad similia facilius inducantur.

§. 1. Hinc est, quod nos dilectos filios nobilem vitum Cosmum Medices Florentiae, & Senarum Ducem, Magnum Magistrum Militiae S. Stephani sub regula S. Benedicti, & Conventum eiusdem Militiae in Ducatu Florentiae per eundem Cosmum Ducem de licentia nostra instituta, specialibus favoribus, & gratiis prosequi volentes eisdem & eorum singulis a quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris & poenis, a jure vel ab homine, quavis occasione, vel causa latis, si quibus quomodolibet innotati existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, Motu proprio non ad eorum, vel alicujus pro eis nobis super hoc oblatam petitionis instantiam, sed de nostra mera liberalitate omnes, & singulos ipsius Militiae Milites, Priores, ceterosque ministros Ecclesiae S. dei Conventus, & alias personas, etiam in sacris, & presbyteratus ordinibus constitutas, etiam quoscumque quocumque, & qualiacumque, cum cura & sine cura beneficia ecclesiastica obtinentes, eorumque beneficia, commendas, res, & bona quoscumque ab omni jurisdictione, superioritate, visitatione, dominatione, & potestate quoruscumque Archiepiscoporum, Episcoporum, aliorumque locorum ordinariarum Apostolica auctoritate tenore praesentium ex certa scientia perpetuo eximimus, & totaliter liberamus, illosque, tam Cosmum Ducem, & Magno Magistro in spiritualibus, & temporalibus, eisdem modo, & forma, quibus in ipsius Militiae statutis, & ordinationibus continetur immediate subijcimus, & supponimus, ita quod ipsi locorum Ordinarii nullam in eos jurisdictionem, superioritatem, dominationem, vel potestatem, etiam ratione cuiuscumque contractus, delicti, vel alterius rei ubicumque inearum contractus, committatur delictum, & res ipsa consistat, exercere valeant, sed Milites, Priores, & aliae personae huiusmodi de iustitia coram solo Magno Magistro praedicto, vel ejus deputato respondere debeant. Decernentes quoscumque processus contra illos, vel eorum aliquem tam per ipsos locorum Ordinarios, vel eorum Vicarios, seu quovis alios, quam Magistrum, vel ejus deputatum praedictum, pro tempore factos, & quoslibet etiam excommunicationis, vel suspensionis aliasque sententias promulgatas nullas, & invalidas, nulliusque roboris, vel momenti fore.

§. 2. Ac singulis Militibus conjugatis, etiam bigamis, aliisque, presbyteris, ut singulas pensiones annuas usque ad summam ducatorum ducatorum auri de Camera super quorumvis Cathedralium etiam Metropoli, & aliarum Ecclesiarum monasteriorum, prioratuum, canonicatum, & praebendarum, dignitatum, personarum, administrationum & officiorum, aliorumque beneficiorum ecclesiasticorum cura, & sine cura, specularium, & quorumvis Ord. regularium, fructibus, redditibus, proventus, juribus, obventionibus, & emolumentis alias sibi canonice reservandas ac cumulative, cum quibuscumque aliis pensionibus annuis, quas illos ex quovis alio privilegio Apostolico, pro tempore percipere contigerit, & continget ad vitam percipere, exigere, & levare, ac in suos usus, & utilitatem convertere, illasque, ad aliquam expeditionem contra infideles accedendo, aut in ea existendo, in toto vel parte, simul vel successive quando sibi videbitur etiam in mortis articulo, in cuiusvis personae in dignitate Ecclesiastica constitutae, aut Canonici Cathedralis Ecclesiae, & in dictae Militiae Militum manibus, etiam quoscumque quoscumque, & qualiacumque beneficia Ecclesiastica obtinentium, & expectantium

favorem,

Exemptio a
jurisdictione
Ordinari-
orum.
Tu ad hoc
vide moder-
ationem
Conc. Tri-
dent. sess. 24.
cap. 11. &
const. Clem.
VIII. n. 39.
Suscepti.

Facultas re-
tinenti, &
transferendi
pensionis us-
que ad du-
cat. 100.

Hoc appro-
bavit, & ex-
rexit Sixt.
V. & iterum
Paul. V. d. c.
in rubr. cit.

Exercutorum
istius confit.
episcopatus, &
facultates.

Clausula de-
rogatoria.

Sanctio pe-
nalis.

Dat. P. An. 3.
die 1. Febr.

Edita An. D.
1562.

Exordium.

Privilegium
disponendi
de quoquo
modo acqui-
sitis.

Vide Paul.
cit. in rubr.

Presbyteri
Milit. benefi-
cium unum
habere pos-
sint, ut hic.
Quod intel-
lige ut h.c.
inf.

Milites ob
inobeyantiam
Regula pecc-
cent.

Exemptio
eorundem a
solutione deci-
marum, &
aliorum on-
rum.

Pensiones su-
per beneficio
Milit. imponi
non pos-
sint, nisi pro
personis dic-
tae Militiae.

Indulg. plen.
pro Militibus
in expediti-
one contra in-
fideles, vel
haereticos
decidentibus.

favorem, absque aliquo possessorum beneficiorum hujusmodi habendo consensu transferre, in omnibus, & per omnia perinde prout Militibus S. Pauli, & Pii nuncupatis, per Sedem Apostolicam indultum extitit etiam citra Cruciatz obligationem.

§. 3. Necnon tam in illis, quam ceteris omnibus Militibus, ac Priori, & Ministris, etiam presbyteris, & beneficiis ejusdem Militiae, ut de quibuscumque tam stabilibus, quam mobilibus bonis, pecuniarum sumis, gemis, & lapideis pretiosis, aliisque rebus quoscumque qualitatibus, & quantitatibus, ac valoris existant, per eos etiam ratione beneficiorum Ecclesiasticorum quorumlibet per eos obrentorum, ac alias undecumque, & quomodolibet acquisitis, & ad illos quovis modo spectantibus, dummodo quintam illorum partem Conventui praedicto relinquunt, inter quoscumque consanguineos filios etiam spurios, & alios illegitimos, aliasque quantumvis incapaces personas testari, ac alias etiam per codicillos donatione inter vivos, causa mortis, & alia quacumque via, prout sibi videbitur disponere, ac illa in pias, & non pias, alias tamen licitas causas erogare.

§. 4. Ac priori Ecclesiae dicti Conventus pro tempore existenti, ut quoties sibi placuerit, Missa, ac alia Divina officia in praedicta aliisque dictae Militiae Ecclesiis in habitu Pontificali, cum mitra, & baculo pastoralis celebrare, ac post Missam dummodo ibi non sit praesens aliquis catholicus Antistes, vel de illius consensu ibidem benedictionem Christi populo impartiri, & ita ille qua singuli presbyteri Milites ejusdem Militiae unum curatum beneficium Ecclesiasticum a dicta Militia dependens, seu illi unitum aut incorporatum, etiam si parochialis Ecclesiae vel ejus perpetua vicaria fuerit, si ad hoc sufficientes, & idonei fuerint, & beneficium hujusmodi alias sibi canonice conferatur, recipere, & retinere, libere, & licite valeat, auctoritate, & tenore praedictis de specialis dono gratiae dispensamus, sibi; prout indulgemus.

§. 5. Et insuper quod nullas ex Magistro & Militibus pro tempore existentibus, aliisque personis dictae Militiae propter ejus regulas, statuta, & capitula nunc & pro tempore edita non observata, vel minus rite adimpleta, in peccatum mortale incidat, praeterquam inobedientiam, & contumaciam pluries commissam, & continuatam, & ab ipsa religione rebellionem, & alios casus peccatum hujusmodi ex divinis praepceptis, sacrisque Canonibus generantes.

§. 6. Quodque Religiosis, & Militia hujusmodi bona, possessiones, & fructus, redditus, & proventus quoscumque tam per Magnum Magistrum commendis, aliisque beneficiis, & officiis dictae Militiae, in illorum institutione quam deinceps illis, dictoque Conventui, & ejus personis quomodolibet assignanda, concedenda, & applicanda sub quibusvis decimis, subsideis, aliisque ordinariis, & extraordinariis oneribus, per nos Rom. Pont. pro tempore existentes, ac Sedem Apostolicam ex quavis causa quantumvis necessaria, etiam pro Cruciatu Sancta, & defensione contra infideles nullatenus comprehendantur, neque ad illorum, annuarumque seu illorum dimidiatum fructuum, reddituum, & proventuum, beneficiorum, & in illorum provisionibus faciendam solutionem teneantur, sed ad illis excepta sint, & esse censeantur, nisi ea, quae haecenus oneribus hujusmodi fuerint, & de praesenti sunt obnoxia.

§. 7. Et quod nulla pensio annua super alicujus commendae, vel alterius beneficii Militiae hujusmodi fructibus, ex resignatione in manibus Rom. Pont. aut alia quavis probabili causa, nisi in persona persone Militiae, etiam per ipsum Pont. reservari, neque commendae, & alia beneficia dictae Militiae pensionibus hujusmodi aliter quam ut praefertur onerari possint. Et si pensiones desuper aliter assignari contingat, assignationes ipsae nullius sint roboris, vel momenti, nec titulares beneficiorum hujusmodi ad illarum solutionem teneantur, neque ad id censuris Ecclesiasticis aliisque poenis compelli possint, etiam statimur, & ordinamus.

§. 8. Propterea ut ipsi Milites Ecclesiae Catholicae, fidei, & defensionem contra infideles animo ferventiori, minori, perdende lucis humanae, & aeternae inde nanciscendam prospiciant, meru suscipiant de omnipotentis Dei misericordia, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus auctoritate concessi, uni-

versis & singulis Militibus, & aliis ejusdem Militiae personis qui in expeditione, tam maritima, quam terrestri, contra infideles, vel haereticos nedum hostilibus armis, sed etiam aliquo quovis mortis genere, de peccatis suis corde cōtriti, & ore cōfessi, vel saltem statutis a jure temporibus confitendi propositum habentibus in virtute fidei Catholicae decesserint.

§. 9. Ac tam Militibus, & personis praefatis, quam quibuscumque aliis utriusque sexus, etiam vere poenitentibus, & confessis, seu confitendi propositum habentibus, ut praefertur, qui Ecclesiam Conventus hujusmodi, quae sub invocatione S. Stephani Papae & martyris est consecranda, in singulo die festivitatis ejusdem S. Stephani Papae & martyris secundae Augusti, a primis Vesperis usque ad occasum Solis festivitatis hujusmodi annuatim devoto visitaverint, ac pro pace inter Principes Christianos confervenda ter orationem Dominicam, & toties Salutationem Angel. recitaverint, plenarium omnium, & singulorum peccatorum suorum indulgentiam, & remissionem.

§. 10. Qui vero de bonis sibi a Deo collatis unam ejusdem Militiae commendam fundaverint, vel dotaverint, aut Conventui, & Militiae praedictis ad ejus sustentationem, & onerum illi incumbendum supportandorum faciliiori supportatione aliquid juxta facultatem suarum modum piamque intentionem donaverint, eas omnes indulgentias, quas Hospitalis S. Joan. Hierosolymitani beneficiorum consequuntur, sive illorum praedictorum misericorditer in Dno. similiter perpetuo concedimus, & elargimur.

§. 11. Ac indulgentias, privilegia, exemptiones, statuta, & alia praemissa nullo umquam tempore de subreptionis vel obreptionis, aut nullitatis vicio, vel intentionis nostrae defectu notari, vel impugnari possint: neque sub quibusvis similibus, vel dissimilibus indulgentiarum, privilegiorum, exemptionum, statutorum, & aliarum gratiarum suspensionibus, revocationibus, limitationibus, aliisque contrariis dispositionibus a nobis, & successoribus nostris, ac Sede praedicta quavis de causa quantumlibet iustissima pro tempore emanatis, & emanandis comprehendunt, sed semper ab illis excepta, & quotiens illa emanabunt, totiens in pristinum statum restituta, & de novo concessa esse, & censeri.

§. 12. Et sic in praemissis per quoscumque iudices, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate, iudicari & definiti debere, ac quicquid super his factum sit a quocumque quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit attentari, irritum & inane decernimus. Quocirca Venerabilibus nostris Murano & Aretino, ac Pistoriensis Episcopis, per Apostolica Scripta, motu simili mandamus, quatenus ipsi vel duo aut unus eorum, per se vel alium, seu alios praesentes nostras litteras, & in eis contenta solemniter publicantes, dictisque Cosmo Duci, & Magno Magistro, ac Conventui praemissis efficacis defensionis praesidio assistentes, auctoritate nostra litteras, & in eis contenta hujusmodi firmiter observari, ac quos litterae ipsae concernunt, & concernent in futurum, & eorum singulos illis pacifice gaudere, non permittentes eos desuper per quoscumque contra earundem litterarum tenorem quomodolibet indubite molestari. Contradictores quolibet & rebelles, per censuras, & poenas ecclesiasticas auctoritate nostra, appellatione postposita coepescendo, necnon legitimis super his habendis servatis processibus, per censuras & poenas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus foret, auxilio brachii secularis.

§. 13. Non obstantibus. fel. rec. Bonifacii Papae Octavi praedecessoris nostri, quia caverit, ne quis extra suam civitatem, vel diocesim, nisi in certis exceptis casibus, & in illis ultra ultra dictam a fine suae diocesis ad iudicium evocetur, seu ne iudices a Sede praefata deputati extra civitatem vel diocesim, in quibus deputati fuerint contra quoscumque, procedere, aut alii vel alius vires suas committere presumant. Et de duabus dietis in Concilio generali edita, dummodo ultra tres dietas aliquis auctoritate praesentium ad iudicium non trahatur, & aliis Apostolicis, ac in provincialibus & Synodal. Conciliis editis, specialibus, vel generalibus consti-

Indulg. etiam
plen. pro vi-
sitantibus die
2. Aug. Eccl.
Conventus.

Hoc intellige
ut hic inf.

Indulg. pro
aliquo Militi-
ae donantibus.

Hoc revoca-
vit P. S. V.
in constit. 30.
Et si.

Clausula
praeservati-
va.

Decretum
irritans.

Clausula de-
rogatoria.

Curiam à
Summo Pon-
tificè delin-
tatum.

tutionibus & ordinationibus, necnon dictæ Militiæ, etiam juramento, confirmatione Apostolorum, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus, stabilimentis, usus, & naturis, contrariis quibuscumque. Aut aliquibus communiter vel divisim, ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem. Volumus autem si aliis visitantibus dictam Ecclesiam erigendam modo præmissis aliqua alia indulgentia in perpetuum, vel ad certum aliud tempus nondum elapsum duratura, per nos concessa fuerit, præsentis litteræ quo ad indulgentiam in eis contentam nullius sit roboris vel momenti. Quodque beneficia eisdem Militibus conferenda hujusmodi, debitis propterea non fraudentur obsequiis, & animarum cura in eis, si qua illis imminet nullatenus negligatur.

§. 14. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ absolutionis, exemptionis, liberationis, subjectionis, dispensationis, indulti, statuti, ordinationis, concessionis, elargitionis, decretorum, mandati & voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursurum.

Dat. Romæ apud S. Marcum Anno Incarnationis Dominicæ 1562. Non. Julii, Pontificatus nostri Anno tertio.

Sanctio po-
nalis.Dat. P. A. 3.
die 5. Julii.

LXI.

Decanatus Collegii Auditorum Rotæ Romanæ, cum omnimoda præcedentia, spectat ad Auditorem tempore vacationis in Curia præsentem, aut ex causa publica absentem, & extra Curiam à Rom. Pont. destinatum.

Eandem jam edidit sanctionem de Decanatu Collegii Cardinalium Paulus IV. ut sup. in Tomo I. in ejus consil. 5. Cum venerabiles.

Alia ad hanc Rotam spectantia indivisi tibi hic supra consil. 44. fol.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Udum siquidem à fel. rec. Pauli IV. prædecessore nostro emanarunt litteræ tenoris subseqentis. Paulus Episcopus servus fervorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam &c.

Omittitur tenor, quia habes sup. in ipsius Pauli IV. consil. 5. 1. Nos considerantes quod dilecti filii

causarum Palatii Apostolici Auditores ad causas audiendum, & jura reddendum constituti, personam in Rom. Curia residere debent, ac eorum in eadem Curia continua residentia id exigente, in affectione dignitatum, aliis absentibus merito præferendi, & amplioribus privilegiis honorandi veniunt, ex præmissis & diversis aliis causis animorum nostrum moventibus. Ne in posterum Decanatus Collegii dīctorum Auditorum illius occurrente vacatione, in aliquem ex causarum Palatii hujusmodi Auditorem nisi ex causis præmissis absentem, & propter absentiam suam, in injuriam aliorum ejusdem Palatii Auditorum tunc præsentium deveniat, aut super eodem Decanatu aliquæ controversiæ, seu dissensiones inter ipsos Auditores oriantur.

§. 2. Litteras prædictas cum decretis, ac omnibus & singulis in eis contentis clausulis, ad Decanatum Collegii Auditorum hujusmodi, etiam adhuc ut ejusdem Decanatus, quem dilectus filius Julius Oradinus Electus Perusinus, locum unius ex causarum Palatii hujusmodi Auditoribus de mandato nostro tenens, tempore provisionis de persona sua, & illius præfectionis Ecclesiæ Perusinae, tunc certo modo pastoris solatio destituta per nos nuper Apost. auctoritate facturum obtinebat, & exercebat per provisionem & præfectionem hujus-

modi, non nisi ad dilectum filium Jo. Baptistam de Rubéis causarum Palatii hujusmodi Auditorem in dicta Curia officium Auditoratus causarum hujusmodi laudabiliter exercendo residentem, & alias de Republica benemeritum, ex nunc & de cetero perpetuis futuris temporibus, occurrente vacatione ad antiquiorem causarum Palatii hujusmodi Auditorem in dicta Curia residentem, aut ex causa publica absentem, & extra eandem Curiam per Romanum Pont. destinatum devenire possit. Et Jo. Baptista, ac postquam dictus Decanatus ad eum devenerit, in dicta Curia præfens, aut ut præfetur absens, & extra dictam Curiam destinatus Auditor antiquior præfatus, omnes alios Auditores, etiam antiquiores, semper in quibuscumque sessionibus, disputationibus, votis, & aliis actibus, publicis & privatis præcedat, nec per alios Auditores etiam antiquiores tunc absentes, etiam si postmodum incontinenti ad dictam Curiam se conferant, & in ea continuo resideant, super ipso Decanatu, aut illius sessionibus, vel aliis actibus, seu disputationibus ad eum pertinentibus impediri, aut molestari valeat. Motu proprio, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine extendimus & ampliamus.

§. 3. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac stylo Palatii, necnon Collegii Auditorum præfatorum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus, ac omnibus illis quæ dictus prædecessor in dictis litteris voluit non ob stare, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 4. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ extensionis, & ampliationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis &c.

Dat. Romæ apud S. Marcum, Anno Incarnationis Dominicæ 1562. sexto Kal. Augusti, Pontificatus nostri Anno tertio.

Derogatio
contrariis.Sanctio po-
nalis.Dat. P. An. 3.
die 27. Julii.

LXII.

Revocatio Privilegiorum quibuscumque locis Pii, & aliis concessorum, dispensandi super irregularitatibus, impedimentisque matrimonialibus &c.

Hic idem Pont. revocavit etiam quascumque indulta confessionalis, Matre magnum, & similia quibuscumque Regularibus & aliis elargita, in his quæ Conc. Trid. adversantur, ut inf. in consil. 94. In Principis, ubi notabo. Et adde consil. 115, Clementis VIII. Quascumque, in Tomo III.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

DE commisso nobis universalis Ecclesiæ regimine, ita nos oportet esse sollicitos, ut propensiore studio caveamus, ne illa quæ hæcenus multorum precibus & instantiis pro animarum salute, tam a nobis mentis hominum abusu in gravem cedant animarum iacturam, neve Christiani fideles cuiusvis indulgentiæ, peccatorum remissionis vel facultatis, aut privilegii obtentu, procliviores ad illicita in posterum perpetranda reddantur, ac nimia veniæ facilitas eis peccandi tribuat incentivum.

§. 1. Sane cum nos, auspice CHRISTO, nuper ad generale Tribunalium Alimæ Urbis, Curieque nostræ officiorum omnium debitam, ac salubrem reformationem certis tunc rationabilibus causis moti perrexerimus, ac quosdam qui in illis diversimodo præter mentem nostram committebantur abusus, per nostram providentiam removerimus, reformationem hujusmodi insequentem, in alios etiam hominum status, non minores ob causas dirigere saluberrimum esse censuimus. Attendentes igitur quod licet aliàs nos, ac diversi Romani Pontifices prædecessores nostri, ut Christiani fideles præfati, ad caritativa & pia opera exercenda promptiores redderentur, sicque illorum animarum saluti, necnon Fabricæ basilicæ Principis Apostolorum de Urbe manutentioni & statui ac hospitalis nostri S. Spiritus in Saxia de eadem Urbe, ac aliorum piorum

Hic Pont. & alii prædecessores concesserunt Fabricæ S. Petri, & Hospitali S. Spiritus, & aliis locis piis multa privilegia.

Definitio quod Decanatus Collegii Auditorum Rotæ Rom. spectet ad Auditorem tempore vacationis in Curia præsentem, aut ex causa publica absentem, & extra

Edita An. D.
1562.

Exordium.

Causa hujus
consilii.

locorum, & Confraternitatum commoditati, & pauperum ac miserabilium, & aliarum personarum in eis pro tempore degentium sustentationi, ac opportune subventioni rite consuleretur, ac ex certis tunc expressis rationabilibus causis diversas indulgentias, peccatorum remissiones, concessiones, gratias, privilegia, facultates etiam dispensandi super impedimentis matrimonialibus, vel aliis quibuscumque defectibus, & irregularitatibus, & absolvendi, indulta eisdem Fabricæ & Hospitali, ac illorum Commissariis, Præceptoribus & Ministris concesserimus.

Quibus eorum ministri abutuntur.

§. 2. Nihilominus, sicut non sine gravi mentis nostræ perturbatione nuper intelleximus, tam basilicæ Fabricæ, quam Hospitalis & aliorum locorum, & Confraternitatum Commissarii & Ministri, huiusmodi indulgentias, peccatorum remissionibus, concessionibus, gratiis, privilegiis, ac dispensandi, ut præmittitur, ac absolvendi, & aliis facultatibus & indultis sibi concessis prædictis in grave illorum animarum periculum diversimode abutantur, ac circa illa, non mediocres committuntur errores, in scandalum plurimorum, ac divinæ majestatis offensam.

Hic ideo Pont. generaliter ea revocat, non tamen quoad Fabricæ reliquiorum legatæ.

§. 3. Nos igitur debitam gregis Domini curam, & ne tales abusus piorum mentes polluant, ac pie concessa, hominum malicia, animarum saluti detrimentum afferant, ut patet providere, quantum in nobis est, scandalis obviare, & animarum saluti consulere volentes, necnon indulgentiarum, remissionum, concessionum, gratiarum, privilegiorum, facultatum & indultorum Fabricæ, ac Hospitali, necnon aliis locis & Confraternitatibus, ac Commissariis, Præceptoribus, & Ministris concessionum huiusmodi veriores tenores præfatis pro expressis habentes, Motu proprio non ad aliquem super hoc nobis oblata petitionis instantiam, sed de nostra mera deliberatione, omnia, & singula, indulgentias etiam plenarias, ac peccatorum remissiones, necnon concessiones, privilegia, indulta & facultates, etiam dispensandi, ut præmittitur, & absolvendi (non tamen relicta, & hereditates etiam ad pias causas exequi faciendi, & illa, seu eorum partem dictæ Fabricæ juxta tenorem privilegiorum prædictorum applicandi, necnon Commissarios & debitores ipsius Fabricæ ad illi reddendum computa, & satisfaciendum de administratione, & debitis per eos, prout hæcenus fieri consuevit, cogendi & compellendi Fabricæ, & Hospitali prædictis) necnon Monialium Spiritus sancti Venetiarum, aliisque ejusdem S. Augustini, seu aliorum Ordinum, tam virorum quam mulierum Monasteriis, ac Hospitalibus, Ecclesiis, capellis, altariis, confraternitatibus, societatibus, & aliis piis locis à dicto Hospitali S. Spiritus dependentibus, seu in ejus membrum, aut grangiam quavis, etiam Apostolica auctoritate erectis, ac illorum Præceptoribus, Abbatibus, Abbatissis, Prioribus, & Priorissis, Confratribus, seu illorum Conventibus, ac Commissariis, necnon ministris, quod Fabricam videlicet in Italia dumtaxat, quo verò ad hospitalia, & monasteria, confraternitates, & societates, ac alia loca huiusmodi, tam in Italia, quam aliis ubivis locorum, ex quibuscumque causis, & ad quorumvis etiam Principum quorumcumque instantiam, vel eorum intuitu, consideratione, vel contemplatione, etiam Motu simili, etiam consistorialiter, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, etiam si illa sub quibuscumque revocationibus, alterationibus, vel limitationibus, similibus vel dissimilibus indulgentiarum, concessionum, gratiarum, privilegiorum, facultatum & indultorum, in toto, vel parte minime comprehenderentur, & quotiens illa revocari contingeret, totiens in pristinum statum restituta essent, & esse censerentur, irritanti etiam decreto desuper forsan adjecto, ac cum aliis quibuscumque clausulis quomodolibet concessa, ac iteratis vicibus approbata & innovata (præterquam quoad ea in quibus jam suum sortita sunt effectum)

tum) Apostolica auctoritate, tenore præsentium, perpetuo revocamus, cassamus, annullamus, irritamus & viribus vacuumus.

§. 4. Districtius inhibentes eisdem Præceptoribus, Abbatibus, Abbatissis, Conventibus, Confratribus, & Ministris quiscumque dignitatis, status, gradus, ordinis & conditionis existentibus, ac etiam Archiepiscopali, Episcopali, aut alia majori dignitate fungentibus, in virtute sanctæ obedientie, indignationis, necnon excommunicationis latæ sententiæ poenis, ne de cetero indulgentias, concessionibus, gratiis, facultatibus, etiam dispensandi, ut præmittitur, & absolvendi privilegiis & indultis prædictis uti, ac de illis se intrinsecus quocumque modo audent seu præsumant. Ac decernentes ex nunc irritum & inane quicquid fecus super his à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit attentari.

§. 5. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon quibuscumque privilegiis, indultis, & litteris Apostolicis forsan in contrarium, etiam Motu & scientia similibus, etiam per nos concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus illorum omnium veriores tenores præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter, vel divisi ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem. Et qualibet alia dictæ Sedis indulgentia generali, vel speciali quiscumque tenoris existat, per quam præsentibus non expressam, vel totaliter non insertam effectus huiusmodi gratiæ impediri valeat, vel quomodolibet differri, & de qua, cujusque toto tenore habenda sit in nostris litteris mentio specialis.

§. 6. Ut autem præsentis litteræ ad cunctarum notitiam deveniant, volumus, & mandamus illas in dictæ basilicæ valvis, ac acie Campi Floræ affigi, ut hi quos litteræ ipse concernunt, seu concernere poterunt quomodolibet in futurum, quod ad ipsorum notitiam non pervenerint, vel illas ignoraverint quominus eos arceant, perinde ac si personaliter intimatæ forent, nullam possint excusationem prætere, vel ignorantiam allegare, cum non sit verisimile apud eos remanere incognitum, quod tam patenter extiterit publicatum.

Nulli ergo, &c. Si quis autem, &c.

Dat. Romæ apud S. Marcum, Anno Incarnationis Dominicæ 1562. 13. Kal. Octobris, Pontificatus nostri Anno tertio.

Prohibitio eis de cetero utenai.

Contrariis derogat.

Fides danda etiam plurius hujus bullæ.

Dat. P. An. 7. die 19. Sept.

Ordinationes pro tempore Sedis Apostolicæ vacantis, circa electionem Summi Pontificis, & obsequiantiam Conclavis. Declarationemque Jurisdictionum Collegii S.R.E. Cardinalium, Camerarii, & Clericorum Cameræ, Majoris Penitentiarii, Datarii, Præfectorum, & Prælatorum Signaturæ Gratiæ & Justitiæ, & Custodum Conclavis.

LXIII.

Quoad electionem Papæ habes etiam sanctionem Greg. X. in cap. 3. de Elect. in 6. & aliam Clem. V. in dem. 9. eod. tit. necnon Clem. VI. sup. in cons. 5. Licet. & Julii II. in cons. 3. Cum tam. Pauli IV. cons. 16. Cum secundum in Tomo I. Et de materia Cardinalium, plene not. ibi in cons. 50. Sixti V. Postquam. infra in hoc Tomo II.

De electione Summi Romani Pontificis præter notata in præcedentibus rubricis, attende plenissimam dispositionem à Greg. XV. editam in cons. 13. Aterni. inf. Tom. IV. ad quam alias posteriores constitutiones habes indicatas circa caeremonias in huiusmodi electione observandas.

PIUS EPISCOPUS,

*Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.*Edita An. D.
1562.Electio Rom.
Pont. qua
mature fieri
debet.Ideo Pontifices in rubricati providas
conflic. edi-
derunt.Hic etiam
Pont. alias
addit videlicet
quod Cardinales
absentes decem
diebus expectantur,
& interim novem
diebus fiant defuncti
Pont. exequia.Elapsis decem diebus,
Cardinales
præsentes celebrata Missa
Spiritus sancti Conclave
ingrediantur, & electioni Pont.
incumbant.

IN eligendis Ecclesiarum Prælatibus, quibus & humana, & divina ministeria committuntur, quantum adhiberi curam oporteat, testantur Patrum nostrorum sacratissime constitutiones, quas illi magna severitate de Episcoporum, & aliorum Prælatorum qualitate ediderunt, propterea quod à bonis bona omnia, videlicet charitas, vigilantia, ecclesiastica disciplina, denique animarum eis commissarum salus proficeretur, à malis vero contrà, non nisi mala, nempe avaritia, negligentia, fastus, & animarum periculum possit expectari. Quod si in quibuslibet Ecclesiarum Pastoribus tantopere providendum est, ne quis assumatur indignus, majorem certe, & perspicuam diligentiam in Romano Pontifice eligendo, qui ceteris Pastoribus est præfuturus, & totius Domini gregis curam habiturus, oportet adhiberi.

§. 1. Hac sancta meditatione permoti prædecessores nostri, & præsertim fel. rec. Alexander III. Gregorius X. Clemens V. Clemens VI. & Julius II. nonnullas constitutiones sanxerunt ad providendum, ut summorum Pontificum electiones libere, & recte, & mature fierent. Sed quoniam res humane semper in deterius prolabantur, nisi sit qui eas assidue retineat & conservet, verendumque sit ne aliquando propter earum constitutionum transgressionem suboritur abusus longius serpent, & progrediantur.

§. 2. Nos quantum cum Deo possumus futuris casibus, & periculis occurrere volentes, eorumdem prædecessorum nostrorum constitutiones, tum innovando, tum declarando, & pro rerum & temporum necessitate supplendo, de Fratrum nostrorum unanimi consilio atque assensu definimus, statuimus, & declaramus, ut cum Pontificem de hac vita migrare contigerit, Cardinales præfentes decem tantummodo diebus, juxta dicti Gregorii prædecessoris constitutionem in Concilio Lugdunensi editam, Cardinales absentes expectare teneantur, & interim solitas novem continuorum dierum exequias omnino peragant, nec ullo prætextu ulterius differant. Et ne quid impedimento esse possit quo minus exequi ipsi non die absolvantur, si quando per observantiam alicujus magni impedimenti, & præcipui festi Cardinalibus videretur officium exequiarum intermitteri debere, dies illi sic intermissi in numerum novem dierum nihilominus computari debeant, & impensa quæ in eis pro exequiis facienda esset, inter pauperes Christi distribuatur. Ac ut superfluis quoque sumptibus, qui jam in immensum excreverunt, modus imponatur, funus simplicius quam consueverit fiat, ita ut illius ratione (præter regalia Populo Romano præstari solita) decem millium ducatorum summam, pannis lugubribus, & regalibus tam Camerarii, & Clericorum, ac aliorum Cameralium, quam aliorum quorumcumque Ministrorum, & Officialium, ac aliis omnibus omnino computatis, impensa non excedat. Summa autem decem millium hujusmodi, vel si Collegio visum fuerit etiam minor, aut nullo modo major, per tres Cardinales antiquiores, unum videlicet de quolibet ordine, & Camerarium proportionabiliter pro rata distributionis aliis fieri solite, inter prædictos omnes, & singulos dividatur.

§. 3. Lapsis vero decem diebus à die obitus Pontificis, ingressus Conclavis nullatenus prorogetur aut differatur, sed sequenti die Missa de Spiritu sancto celebrata, five Cardinales absentes venerint, five non, qui fuerint præfentes statim Conclave ingredi teneantur, & ingredienti ipsi absque mora aliqua omnia omnino Capitulorum confessione primis diebus fieri solitorum, in electionis negotio procedant, & singulis diebus scrutinium

fiat, & in primo scrutinio etiam accedere liceat.

§. 4. Si qui vero forte intrare noluerint, vel ingressi absque manifesta infirmitatis causa juramento Medicorum, & à majori parte Cardinalium per secreta suffragia approbata exiverint, dictæ constit. Gregorii penam incurrant.

§. 5. Declarantes nihilominus, quod postquam Cardinales præfentes, aliis Cardinalibus etiam de latere Legatis, aut ex alia quacumque etiam publica causa, etiam cum licentia summi Pontificis absentibus ulterius non expectatis, post tamen lapsum dierum decem dierum à morte Pontificis, electionem five intra, five extra Conclave fecerint, electio sic ex itineris, aut alterius etiam probabilis, & notorii ipsorum Cardinalium absentium impedimenti prætextu impugnari minime valeat, quum publica utilitas ex matura electione proveniens cuivis alteri rationi præferri debeat.

§. 6. Sedis autem vacatione durante, Collegium Cardinalium in iis quæ ad Pontificem maximum dum viveret pertinebant, nullam omnino potestatem aut jurisdictionem habeat, neque gratiam neque justitiam faciendi, aut factam per Pontificem mortuum executioni demandandi, sed ea omnia futuro Pontifici reservare teneantur. Neque de statu temporali Romanæ Ecclesiæ, neque de pecuniis Cameræ Apostolicæ aut Datarii, vel pro solutione debitorum ante obitum Pontificis quomodolibet contractorum, aut alias ex quavis causa (casibus infra scriptis dumtaxat exceptis) quicquam disponere, nec contra dictam Gregorii constitutionem pro seipsis aliquid percipere, nec as alienum ultra necessarios sumptus præfentibus comprehensos contrahere debeant, neque Camerarius, Thesaurarius, Datarius, Depositarius, Castellanus Arcis S. Angeli, aut alii Officiales contraharum constitutionum tenorem, Collegio obedire teneantur, five debeant, quinimmo si eis in talibus obtemperaverint, aut ipsi Cardinales, vel Officiales ex eorum Officiis contra præmissa aliquid attentare præsumpserint, de suo proprio Cameræ Apostolicæ plenarie satisfacere, & pecunias erogatas restituere, ac quævis damna ad eligendi Pontificis arbitrium rescarcire cogantur. Quod autem expendi possit erit præfata decem millium ducatorum summa. Illud item quod pro victu familiaris Pontificiæ ante Conclavis ingressum, ac post ingressum pro pauperum Officialium palatii tantum per Camerarium, & Priores Ordinum deservendorum victu, ac etiam pro elemosynis Sede vacante fieri consuevit. Itemque pro defensione Terrarum Ecclesiæ, vel partis earum. Necnon pro regalibus Populo Romano, & illius Magistratibus, ac custodia Urbis, & Conclavis, illiusque provisionibus opportunis necessarium erit. Quæ vero impensa pro defensione Terrarum, & locorum Ecclesiæ & securitate, ac provisionibus Conclavis facienda sit, Cardinales præfentes per secreta suffragia ordinare debeant, ita ut majoris partis sententia obtineant id quod observandum erit, etiam in Gubernatoribus Urbis, tam ultra pontem, quam citra, & aliis Officialibus, etiam pro status Ecclesiæ regimine si opus fuerit eligendis. Si vero ultra prædicta aliquod grande periculum immineret, qui omnibus & singulis Cardinalibus præfentibus juxta Ordinationem Gregorii X. aut saltem duabus illorum tertius partibus per secreta suffragia videretur celeriter occurrendum, tunc Collegium juxta majoris partis sententiam similiter per secreta suffragia de remedio opportuno, ac provide de necessaria impensa providere possit & debeat.

§. 7. Statuimus etiam quod tres Cardinales antiquiores, unus videlicet ex quolibet ordine, una cum Camerario post Pontificis obitum, reliquos Cardinales congregandi, & occurrentes necessitates in congregationibus generalibus proponendi, & ut conclave bene undique claudatur curandi jus habeant.

§. 8. Ipsorum autem officium tertia die post

Ingressi nolentes, aut absque causa inde recedentes penam constit. Greg. X. incurrant. Card. præfentes in Conclave & extra Pontificem eligere valeant, lapsis decem diebus.

Sede vacante Collegium Card. de hic enarratis tantum disponat.

Tres Card. & Camerarius occurrentes necessitates proponere, & Conclavis negotia cunct.

Ingressi Conclave, alii tres quolibet 3. die eorum loco subintrent.

Camerarius que Officiales, rebus hic præscriptis & non aliis incumbant.

Conclavis ingressam omnino expiret, eorumque loco tres alii sequentes in ordine, quolibet tertio quoque die, cum eodem Camerario in eadem potestate succedant.

§. 9. Camerarii quoque, & Majoris Penitentiarii officia, quæ etiam Sede vacante durante, ita durare decernimus, & declaramus, ut non solum ea quæ præsentis constitutione prohibentur, & quæ Pontifice vivente exercere non consueverunt, seu à quibus pro ejusdem Pontificis reverentia; aut alias quomodolibet abstinebant, minime usurpent, sed Camerarius, ac Præsidentes, & Clerici, alique Ministri, & Officiales Cameræ Apostolicæ exactiōni pecuniarum eidem Cameræ debitæ, ac provisionibus ratione Sedis vacantis juxta præmissa necessario faciendis dumtaxat incumbere, & propterea à solutione debitorum ante Pontificis obitum contrahendorum, aut illorum declaratione, rationum solidatione, extractionibus frumentorum, remissionibus delictorum, assecutionibus delinquentium, & quibuscumque aliis expeditionibus tam gratiam, quam justitiam, aut illarum executionem quomodolibet concernentibus omnino abstinere debeant.

Penitentiarius, & ejus Officiales quæ ad forum conscientie spectant, tantummodo expediatis.

§. 10. Penitentiarius vero, & ejus Officiales ea tantum facere & expedire valeant, quæ ad forum conscientie pertinent, in reliquis officium eorum conquiescat. Itaque à quibuscumque matrimonialibus, & aliis dispensationibus, ac absolutionibus, & declarationibus, necnon quibusvis aliis expeditionibus forum, quod adest, fori mixtim, vel separatim quomodolibet respicientibus omnino abstineant. Alioquin in quibus tam Camerarius Penitentiarius, & alii prædicti, etiam de licentia aut mandato totius Collegii contrafecerint, ea nulla, & irrita sint, ac nemini suffragentur. Et nihilominus eorum excessus, & inobedientiæ rationem, Pontificis arbitrio quandocumque reddere teneantur. Litteris etiam nostris super reformatione Cameræ, & Penitentiariæ hujusmodi editis in suo robore permanentis.

Datarii officium morte Pontificis expirat.

§. 11. Datarii vero ministerium per ejusdem Pontificis obitum omnino expiret, ita ut non solum datas per eum antea notatas extendendi potestatem minime habeat, sed quascumque supplicationes gratiarum, & justitiæ penes eum, aut ejus ministros adhuc existentes etiam si datæ fuerint, Collegio Cardinalium statim sub sigillo clausas presentare teneantur futuro Pontifici referendas. Quod si contra præmissa quicquam ad cunctis etiam Cardinalis instantiam attentare præsumperit, irritum, & inane existat, & nihilominus falsi crimen incurrant, illius rationem futuro Pontifici redduntur.

Cardd. & Prælatorum Signaturæ gratiæ & justitiæ officium conquiescit.

§. 12. Prohibentes insuper ne Cardinales, & Prælati Signaturæ gratiarum, & justitiæ præfæcti Sede vacante supplicationes, & commissiones aliquas, etiam si supplicantes, parvas daras, ut mortis est antea obtinuerint, signare valeant, sed officia eorum omnino cessare intelligantur. Quod si aliter fecerint, pro excessibus hujusmodi futuri Pontificis arbitrio puniantur.

Conclavis cellæ & ree distribuuntur.

§. 13. Mandamus quoque quod Cellæ conclavis Cardinalibus forte distribuuntur, nec liceat eas etiam infirmitatis pretextu mutare, aut de super edificare, aut illas dilatare, sed quilibet, etiam Decanus, sit sua forte contentus.

Apud Conclave habitare, vel morari prohibetur.

§. 14. Post Conclavis vero ingressum interdicimus, & expresse prohibemus sub officiorum, & beneficiorum privationis pœna, atque etiam sub alia arbitrio Gubernatoris ac custodiam Conclavis deputati soliti indigenda, ne quis immediate supra aut infra Conclave, seu à lateribus habitare vel morari possit. Quæ loca muris claudi, & à Præsidentibus custodiæ Conclavis, ac à dicto Gubernatore sæpius visitari debeant. Et si quis contra commissa fuerit, teneatur ipse Gubernator sub perjurii pœna eo ipso incurrenda, & alia futuri Pontificis indigenda, delinquentes hujusmo-

di Cardinalibus pro tempore deputatis revelare, curareque, ut delinquentes ipsi carcerentur, & acriter puniantur.

§. 15. Teneantur quoque Cardinales pro tempore deputati Cellas Cardinalium, & alia Conclavis loca sæpius visitare, & diligenter perquirere ne ipsius Conclavis muris, aut laquearibus, seu pavimentis vitæ foramina fiant. Et si quid tale deprehensum fuerit, auctores privationis officiorum, & beneficiorum, ac aliis etiam corporalibus, & severissimis pœnis, Gubernatores ac etiam futuri Pontificis arbitrio afficiantur, & conscii de præmissis eisdem pœnis teneantur, nisi statim, si intra Conclave fuerint, eisdem Cardinalibus deputatis, si vero extra Conclave, Gubernatori & Prælati præpositis revelaverint. Qui quidem Gubernator, & Prælati sub perjurii pœna in hoc invigilare, & opportune providere debeant.

§. 16. Quilibet autem Cardinalis in Conclavi duobus servientibus, Clericis vel Laicis contentus sit. Infirmi autem, & graviter affectis à majori parte Collegii per secreta suffragia tertius ad summum indulgeri possit.

§. 17. Qui servientes familiares domestici, & continui commensales ipsius Cardinalis, & ab anno ante fuisse, & tunc esse debeant, & non mercatores ministri Principum, Domini temporales & jurisdictionem habentes, neque fratres, aut nepotes Cardinalium, etiam si expensis eorum viverent. Et de qualitatibus Conclavistarum Cardinales deputati ante Conclavis ingressum diligenter inquisitionem habere, & eos approbare, ac post ingressum denuo diligenter providere debeant.

§. 18. Sacrificia quoque cum uno clerico coadjutore in officio Sacrificiæ; duo quoque Magistri ceremoniarum Conclave ingradientur Missis celebrandis, & aliis quæ ad ipsos pertinent vacaturi. Adit præterea unus Religiosus pro Confessionibus audiendis à majori parte Cardinalium per secreta suffragia eligendus; unus Collegii Secretarius tantum; duo Medici; unus Chirurgus; unus Aromatarius, cum uno aut duobus servientibus; unus Faber lignarius; unus Cementarius; duo Barbitonifores, cum uno aut duobus servientibus. Item octo aut decem servientes publicæ utilitati, & commoditati omnium, veluti pro lignis portandis, pro verrendo Conclave, & similibus necessariis ministrandis, qui omnes à Collegio Cardinalium, non tamen ex familia alicujus Cardinalis, per fabas secretas eligantur, ita tamen ut is obtineat, qui plura vota vulerit, & eis salaria de publico perfolvantur. Quod si ultra præfatas personas, in Conclavi aliquis inventus fuerit, expelli statim debeat. Et si quis usquam de occultasse comprehendatur, ignominiose expellatur, & infamia notetur, & officiis atque beneficiis privetur, conscii vero sub eadem pœna illos Collegio revelare teneantur, præmium reportaturi si indicaverint.

§. 19. Clauso Conclavi nulli ad colloquium etiam extra portam Conclavis etiam Principum Oratores, nisi ex magna & urgenti causa à majori parte Collegii approbata admittantur. Et si quis forte, quod absit, clam ipsum Conclave, & aliunde quod per ostium ingradientur, omni honore, gradu, ac officio, & beneficio ipso facto privatus existat, & tradatur Curia seculari acertimis pœnis puniendus.

§. 20. Litteras vero aut cunctis generis scripta ad eos, qui in Conclavi erunt, seu nuncium, vel notam, aut signum mittere, seu recipere, aut contra, e Conclavi ad eos qui foris erunt, ullo modo liceat, qui contrafecerint, quacumque dignitate etiam si Cardinalatus honore præfulgeant, pœnæ excommunicationis latæ sententiæ subjaceant, absolviendi facultate, præterquam in mortis articulo, soli Pontifici Maximo reservata, à quo nihilominus pro qualitate delicti ultra dictam excommunicationis pœnam puniendi erunt.

§. 21. Prohibentes etiam super futura electione

Conclave à Cardd. deputatis visitetur, &c.

Cardd. non infirmi duos, infirmi tres servientes habeant.

Conclavistæ à Cardd. approbentur.

Sacrificia unus ster in Conclavi, Magistrique ceteri novorum duo, Confessor unus, Medici duo, Chirurgus unus, Aromatarius unus, Faber lignarius unus, Cementarius unus, Barbitonifores duo, servientes decem.

Ex clauso colloquium prohibetur.

Litteras, vel signa transmitti prohibetur.

Excommunicat
super elec
tione dam
nantur.
Hoc strictius
damnabit
Greg. XIV.
in const. 4.
Cardd. unico
ferculo, &
moderato, &
in propria
cella vesti
antur juxta
bullam Clem. vi.
sup.

Praelati Cu
rtores Con
clavis ne liti
teræ &c.
transmittant
curent.

Conclavisti
dilectiores,
non ingre
diantur ulte
rius.

Card. non
Diat. votum
in electione
non habeat.

Cardd. in
electiōe ne ex
pressa.

Custodes
Conclavis
præmissa fa
ciant obser
vari.

Pontificis spontaneas, quas excommunicatas vocant, fieri, & si forte contra præsentem tenorem factæ fuerint, illas nullas, & irritas, in judicio & extra fore, & omnino censeri, & contrafacientes, ac proxenetas arbitrio Gubernatoris, & futuri Pontificis puniri debere decernimus.

§. 22. Cardinales autem primo ipso die quo Conclave ingressi fuerint, tam in prandio, quam in cena uno solo ferculo unius speciei tantum, eoque moderato, & alias juxta constitutionem præfati Clementis VI. qualificati contenti sint, & esse debeant, nec quisquam in alterius Cella, vel de alterius ferculo vescatur.

§. 23. Praelati quoque ad custodiam Conclavis deputati sub pena perjurii, & suspensionis à divinis, maxima, & exquisita diligentia utantur in inspicendis, ac præscrutandis epulis, & aliis rebus ac personis Conclave intrantibus, & de eo exeuntibus, ne sub earum rerum velamine litteræ aut notæ, vel signa aliqua transmittantur. Quod si tale quid inventum fuerit, familiares Cardinalium aut alii delinquentes penam privationis officiorum, & beneficiorum, ac inhabilitatis ad obtenta, & obtinenda intendant. Et ulterius per Gubernatorem carceribus mancipentur, exinde nisi de mandato novi Pontificis minime relaxandi, sed ejus arbitrio acris puniendi, omni facultate Collegio Cardinalium in favorem quorumcumque qui in præmissis vel eorum aliquo deliquerint, omnino interdicta.

§. 24. Conclavisti vero, & quicumque alii servientes Conclavi ex causa infirmitatis manifestæ, & notabili, à Medicis medio juramento probatæ, & de consensu deputatorum, quorum etiam conscientiam desuper oneramus, & non aliter exituri, nullo modo reverti possint, sed eorum loco alii eodem profus tempore quo infirmi exiunt, ingrediantur.

§. 25. Statuimus etiam, & declaramus, quod si forte aliquis Cardinalis saltem in Diaconatus ordine constitutus non fuerit, is nullatenus ad eligendum admitti debeat.

§. 26. Cardinales autem per viscera misericordie D. N. JESU CHRISTI enixe rogamus, & hortamur, ac eis nihilominus sub divini interminatione Judicii præcipimus, & mandamus, ut attendentes magnitudinem ministerii quod per eos tractatur, in dandis suffragiis, ac aliis omnibus & singulis electionem quomodolibet concernentibus, omni dolo ac fraude, factionibus, & animorum passionibus remotis, ac Principum secularium intercessionibus, ceterisque mundanis respectibus minime attentis, sed solum Deum præ oculis habentes, sese pure, libere, sincere, quiete, & pacifice gerere, & habere debeant. Nec propriis Pontificis electione, conspirationes, confecta, passionibus, & alios illicitos tractatus, inire, signa, aut contrasigna votorum suorum alteri dare, minasve aliquibus inferre, tumultus excitare, aut alia facere per quæ electio retardetur, vel minus libere suffragia præstentur per se vel alium, directe vel indirecte, quovis colore vel ingenio, audeant vel præsumant. Quod si fecerint, aut contra prohibita in præfenti constitutione aliquid admiserint, ultra divinam ultionem, arbitrio futuri Pontificis pro modo culpæ in eos quandocumque animadverti possit.

§. 27. Quia vero parum esset jura condere, nisi forent qui executioni ea demandarent, statuimus, & ordinamus, ut Praelati, Rectores, Officiales Urbis, ac Principum Oratores, illustres viri, quos omnes à Collegio pro custodia Conclavis eligi continget (eligere autem Collegium debebit eos qui ad id magis idonei videbuntur) præmissa omnia plene & inviolabiliter, ac sine fraude & dolo aliquo observari faciant, de quo corporale juramentum coram ipso Collegio ante ingressum Conclavis, & quoties opus fuerit, præstare teneantur, quæ quidem nisi fecerint, vel si in eis dolum & fraudem commiserint, prædictas penas, & ceteras in dicta constit. Greg. X. contentas incurrant.

§. 28. Volumus autem neque per Praelatos, neque per Rectores, aut Officiales præfatos ultra quam præmittitur, Cardinales archari, neque præfatos has nostras constitutiones per Collegium Cardinalium ullo modo alterari, corrigi, aut immutari posse, sed illas coram omnibus de verbo ad verbum in prima congregatione post obitum Pontificis fieri solita, & deinde post Conclavis ingressum legi, & jurari, eo modo quo leguntur & jurantur constit. Julii II. & aliorum prædecessorum nostrorum, quorum constitutionibus, & penis in eis contentis ultra præmissa per hanc nostram constit. derogare non intendimus, sed magis eas confirmare, innovare, & comprobare.

§. 29. Et ne dissensionis occasio, aut schismatis oriat, volumus, censuratum, & excommunicationem præfatarum, & aliarum quarumcumque prætextu, Cardinales à Pontificis electione, active vel passive excludi nullo modo posse, quas quidem excommunicationes, & censuras ad electionis effectum tantum, illis aliis in suo robore permanentibus, suspendimus, & suspensas esse volumus, & declaramus. Decernentes quoque excommunicationes, & censuras ipsas cum solum afficere, qui deliquerit, non autem alios Conclavi durante cum eo conversantes.

§. 30. Ac præfatos nostras ubicumque electionem summi Pontificis etiam extra Urbem fieri contigerit, locum habere, & observari debere.

§. 31. Ac insuper illas in valvis basilicæ principis Apostolorum, & Cancellariæ Apostolicæ, ac in acie Campi Floræ per aliquos Curiores nostros legi, & publicari, ac illorum copiam ibidem affigam diinitri, & deinceps omnes, & singulos Cardinales etiam absentes, præfatos, & futuros, & alios quoscumque quorum interest, vel interesse poterit quomodolibet in futurum, afficere, & ligare, nullumque earum ignorantiam præterdere posse, ac si eis personaliter intimata forent, præmissis ac aliis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis non obstantibus quibuscumque.

§. 32. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrorum definitionis, statutorum, declarationum, decretorum, prohibitionum, mandatorum, interdicti, præcepti, rogationis, hortationis, & voluntatum infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursurum.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1562. septimo Idus Octobris, Pontificatus nostri Anno tercio.

Ego Pius Catholicæ Ecclesiæ Episcopus.

Si mei non fuerint dominati tunc immaculatus ero.

Ego R. Card. de Carpo Episcopus Ostien.
Ego F. Card. Pisanus Episcopus Portuen. manu prop.
Ego Fed. Card. Casus Episcopus Tusculanus.
Ego Jo. Card. Moronus Episcopus Praenestini. si.
Ego Truchf. de Walburg. Episcopus Card. Alban.
Ego Ti. Card. Crispus,
Ego Jo. Mi. Card. Saracenus,
Ego Jo. Card. S. Vitalis,
Ego Ja. Card. Puteus.
Ego Jo. B. Cicada Card. S. Clementis.
Ego B. Card. Tranen.
Ego Scipio Card. Pisarum.
Ego Jo. Card. Reumanus.
Ego Jo. Antonius Card. Capisuccus.
Ego Fr. M. Card. Alexandrinus.
Ego Clemens Card. Araceli.
Ego Jo. Antonius Card. S. Georgii.
Ego Aloysius Card. Corneliuss.
Ego Bernardus Card. Salviatus.

Cardd. nihil
de hic con
tentis immu
rent, sed
hanc const.
servari, una
cum aliis cu
rent.

Cardd. non
excludantur
ab electione
prætextu
quarumcum
que censura
&c.

Hæc consti
tutio ubique
servetur.

Publicetur
quæ & omnes
afficiant.

Sanctio po
nalis.

Dat. P. An. 3.
die 9. Octob.

Papæ sub
script.

Cardinalium
subscriptio
nes.

Ego Ph. Card. Aburd.
Ego M. Ant. Card. Amalius.
Ego R. Card. Navagerius.
Ego A. Card. Farnesius Vicecancell.
Ego G. Alf. Card. Cam.
Ego Jul. Card. Urbinas.
Ego Hier. Card. Simoncellus.
Ego Vitellotius Card. Vitellius.
Ego Carolus Card. Borromæus.
Ego Franciscus Card. Gonzaga.
Ego Ind. Avalos Card. de Arag.

Publicatio.

Anno à Nativitate Domini 1562. indictione 5. die vero 21. mensis Octob. Pont. Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Pape IV. Anno 3. suprescripta littera Apostolica affixa & publicata fuerunt Roma in locis suprascriptis, ut est moris, inibi earumdem copis dimissis affixis, per nos Andream de Curia, & Franciscum Fays, ejusdem S. D. N. Pape Cursores.

Pro Mag. Curs. Franciscus Rogerius Curs.

LXIV.

Indulgentiarum gratiæ ab omnibus Officialibus, citra clausulam porrectionis manuum adiutricum, & gratis expediantur, excepto salario registraturæ.

Quinimmo hodie nec pro registratura quicquam solvitur, ut experientia hoc omnes docet.

Revocationem vero Indulgentiarum continentium facultatem quaerendi, ac pro quibus porrigenda sunt manus adiutrices, vide etiam in constit. 30. Pii V. Et si dominici.

Edita An. D.
1562.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio &c.

Exordium.

Indulgentiæ
gratis expedi-
antur, ex-
cepta solu-
tione regi-
straturæ, &
sine clausula
manuum ad-
iutricum.

DECET Romanum Pontificem quem Dominus noster JESUS CHRISTUS Vicarius suum cœlestibus thesauris dispensandis in terris constituit, providere, ut sicut ipse thesauros hujusmodi & gratias cœlestes gratis acceptas ad honorem Dei, & illius Sanctorum, animarumque Christianidelum salutem absque lucro dispensat, idem quoque à Romanæ Curie Officialibus quibus litterarum Apostolicarum super gratis à Sede Apostolica pro tempore concessis expeditio incumbit, observetur.

§. 1. Quapropter inconveniens esse censentes pro concessionibus Indulgentiarum, quæ in solis meritis passionis ejusdem D. N. JESU CHRISTI, & ejus gloriosorum Martyrum, & Sanctorum consistunt, aliquid temporale exigere, nos præmissis prout nostro incumbit officio de remedio opportuno providere volentes, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, dilectis filiis modernis, & pro tempore existentibus S.R.E. Vicecancellarii ejusque in Cancellaria Apostolica Locumtenentibus necnon Summis, Scriptoribus, illorumque pro tempore Rescribendario, Computatori, Receptoribus, & Defensoribus, necnon Secretariis litterarum Apostolicarum, illarumque tam majoris, quam minoris præfidentibus Abbreviatoribus, ac Sollicitatoribus, plumbique & Registris Magistris Collectoribus, earumdem litterarum Apostolicarum Registratoribus, Bullatoribus, Fratribus barbatis nuncupatis, & illorum famulis, necnon in registro supplicationum manu, & in præsentia nostra signatarum Magistris, & Scriptoribus, aliisque Romanæ Curie officialibus, & personis, etiam eorum officia ex causa quantumvis onerosa obtinentibus cujuscumque qualitatis, & conditionis existant, ac quocumque nomine appellentur, in virtute sanctæ obedientiæ, & sub majoris excommunicationis latæ sententiæ, necnon amissionis ad semestrem omnium emolumentorum eorum officiorum quæ ipsorum quoties contrafecerint, Fabricæ basilicæ Principis Apostolorum de Urbe applicata esse censentur, & crescente inobe-

dientia etiam privationis eorumdem officiorum ipso facto incurrendis penis Apostolica auctoritate tenore præsentium præcipimus, & mandamus, quatenus videlicet in registro supplicationum, Magistri & Scriptores hujusmodi ultra salarium inibi pro signaturis ordinariis exigere solitum, alii vero officiales litteras Apostolicas, tam sub plumbo, quam in forma Brevis, super gratis indulgentiarum & peccatorum remissione etiam plenariam, tam pro vivis quam defunctis, tam ad tempus quam perpetuo, ad futuram, seu perpetuam rei memoriam, vel alia forma, ac cum quavis narrativa pro quibusvis particularibus personis, seu Ecclesiis etiam Cathedralibus, & Collegiatis, Monasteriis, Prioratibus, Capellis perpetuis, Capellanis, Oratoriis, Hospitalibus, Capitulis, Collegiis, Conventibus, Confraternitatibus, Societatibus, Universitatibus, & quibuscumque aliis piis locis à nobis, & successoribus nostris Romanis Pontificibus, etiam facultatem eligendi Confessorem cum votorum commutatione in se continentibus pro tempore, citra tamen clausulam porrectionis manuum adiutricum concessis, & concedendis, conficentes gratis pro Deo ubique per eorum officia absque aliqua taxæ regalium, seu localium, aut cujusvis alterius generis solutione, vel exactione quantumvis ordinaria, vel extraordinaria, omnibus revocatione & contradictione cessantibus, illico nullo alio à nobis aut altero defuper expectato mandato expediant, & prosequentibus illarum expeditionem, etiam si partes quorum intuitu fuerint concessæ, in Romana Curia non sint præsentis, sed longe ab illa absint, expeditas tradant, & consignent.

§. 2. Mandantes dilectis filiis nostro, & pro tempore Rom. Pont. Datario, & ejusdem Cancellariæ Regenti, quatenus ipsi, vel aliter eorum per se vel alium, seu alios præfens mandatum nostrum, per omnes & singulos ad quos spectat inviolabiliter observari faciant. Inobedientesque & rebelles quoscumque censuras, & pœnas antedictas incidisse declarent, dictasque pœnas ab illis irremissibiliter persolvant, & in arcam Collegii dictæ fabricæ inferri, & reponi, & si contra præceptum hoc nostrum exactum aliquid fuerit, illico eis qui illud solverint, integre restitui curent, pro celeriori hujus mandati nostri observatione, dictarumque pœnarum exactione & ablati restitutione, mandatum executivum si eis videbitur contra eosdem inobedientes & rebelles quoties opus fuerit decernant, & relaxent.

§. 3. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac dictorum Officialium Collegiorum institutionibus & erectionibus, necnon statutis etiam iuramento &c. roboratis, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis eidem Vicecancellario, Summis, Officialibus, & personis, ac Collegiis, etiam in eorum institutionibus, & erectionibus hujusmodi sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibusvis etiam formis derogationum derogationibus, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis etiam vim contractus inducentibus decretis concessis, confirmatis, & innovatis, quæ eis aut eorum alicui quo ad præmissa volumus nullatenus suffragari, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 4. Volumus autem quod præceptum, & mandatum nostrum hujusmodi ad hoc, ut ad plenam & indubitatam notitiam deveniant, in dicta Cancellaria publicentur, & in illius libro describantur, ac perpetuis futuris temporibus inviolabiliter observentur.

Placet publicetur, & describatur. I.

Affixum & publicatum fuit supradictum mandatum Rome in Cancellaria Apost. anno Incarnationis Dominicæ 1562. die vero septima mensis Novemb. Pontificatus præfati Sanctissimi Domini nostri Pape Anno tertio.

Executorem
deputatio &
facultates.Clausula de-
rogatoria.Iussu publi-
candi.

PP. subscr. p.

Publ. P. A. 3.
die 7. Nov.

Facultas Collegii deputatorum Fabricæ S. Petri de Urbe, cogendi pro executione piorum legatorum, quoscunque Notarios ad ei tradendum exemplar instrumentorum, post annum obitus testatoris, soluta eis debita mercede.

Quanta sit hac merces, definitur à Paul. III. sup. in ejus const. 31. Dudum ad universas. Et alia de isto Collegio indicavi plene sup. in Tomo I. in const. 3. Clem. VII. admonet.

Edita An.D.
1562.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Sola signaturæ sufficit.

Collegium exequitur pias dispositiones testatorum infra annum non executas.

De hoc vide int. in const. 95. Pii V. Decret.

Sed multa testamenta quæ clausa Notariis dantur, non aperiuntur, & executioni mandari non possunt.

Hic ideo Pont. dat Collegiis facultatem de qua loquitur.

Et sic iudicari jubet.

Contrariis derogat.

ET si per diversos Romanos Pontifices prædecessores nostros, & nos, diversæ facultates, privilegia, & indulta dilectis filiis, Collegio Deputatorum Fabricæ basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, super executione testamentorum, & legatorum ad pias causas factorum, concessa fuerint; inter aliaque ut plenius piis testantium voluntatibus satisfieret, Collegio præfato, & per eum Commissariis deputandis, ut si infra annum à die obitus testatorum, eorum testamenta per hæredes, vel alios ad quos spectaret, plenarie executioni mandata non forent, ipsa illa debita executioni mandare facerent, indultum fuerit.

S. 1. Multa tamen testamenta in quibus diversa legata, & relicta ad pias causas reperiuntur, ex eo quod testatores illa dum vixerunt (sicut in Regno Neapolitano per multos fieri solet) clausa Notariis consignarunt, & hæredes ab intestato succedentes omniaque bona defunctorum possidentes non curant testamenta ipsa clausa aperiri facere, & testatorum voluntates adimplere, in grave animarum suarum periculum, & tam prædictæ fabricæ, quam aliorum piorum locorum, ac plurimorum pauperum detrimentum, & contra testatorum huiusmodi intentionem, hæcenus, sicut accepimus, executioni mandata non fuerunt.

S. 2. Nos Fabricæ, piorum locorum pauperumque subventioni, voluntatum testatorum implemæto, ac saluti animarum hæredum huiusmodi, quantum cum Deo possumus consulere volentes, Motu proprio ac ex certa scientia, & de Apostolicæ potestatis plenitudine, prædictis Collegio & ejus Commissariis, ut sub excommunicationis lætæ sententiæ, ac aliâs juxta formam facultatum, privilegiorum, & indultorum prædictorum, omnes & singulos Notarios, penes quos huiusmodi testamenta clausa ut præfatur, vel alias reperiuntur, vel in futurum reperiuntur, post annum à die obitus testatorum, ad illa aperienda, & ipsis Commissariis ostendenda solutaque ipsis Notariis debita mercede, juxta formam privilegiorum prædictorum, ad tradendum sibi exemplar ipsorum testamentorum in forma probanti, & authentica, etiam cum invocatione brachii secularis si opus fuerit, quacumque appellatione remota cogere possint, tenore præsentium concedimus & indulgemus.

S. 3. Sicquæ in præmissis, omnibus & singulis per locorum Ordinarios, ac quoscunque alios Judices, & Commissarios, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores &c. Cardinales, sublata eis, & eorum cuilibet aliter iudicandi & interpretandi facultate &c. iudicari, & definiti debere, & quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane decernimus.

S. 4. Non obstantibus Apostolicis, ac in provincialibus, & synodalibus Conciliis editis, generalibus vel specialibus constitutionibus, & ordinationibus, ac locorum Civitatum, & Provinciarum, in quibus Notarii existent, vel testamenta huiusmodi confecta fuerint, jramento, &c. roboratis statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis, sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscvis etiam derogatoriis derogatoriis, irritantibusque & aliis decretis, ac efficacioribus & insolitis clausulis in se continentibus quorum tenores &c. haberi volumus pro expressis, quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua &c. mentio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, hac vice dumtaxat derogamus, cæterisque contrariis quibuscumque.

S. 5. Volumus autem quod præsentis Motus proprii sola signatura sufficiat, ejusque exemplaribus etiam impressis, manu Secretarii ipsius Collegii, & sigillo præfate Fabricæ monitis eadem fides in iudicio, & extra adhibeatur, quæ præfenti Motui proprio adhiberetur, si esset originaliter exhibitus vel ostensus.

Placet Motu proprio. I.

Dat. Romæ apud S. Petrum, 15. Kalend. Januarii, Anno tertio.

Damnatio, & excommunicatio Odetti à Castillione, Cardinalis, in hæresim Hugonotorum prolapsi.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Onerosum supremi Pastoris officii munus nobis ex alto commissum, mentem nostram continuo premit, & urget, ut illud exequi in primis fatigantes, gregem Dominicum curæ nostræ divinitus creditum omni studio & diligentia in perfectâ, ac ea qua decet fidei unitate tueri, & conservare, ac ne in agro universalis Ecclesiæ zizaniam seminare tenentes, ac Domini nostri JESU-CHRISTI, cujus vices, quavis indigni, gerimus in terris, tunicam inconsutilem, videlicet ejusdem Ecclesiæ unitatem scindere molientes, eos præsertim, quos omni spe ad verum Dei cultum reverendi novimus esse destitutos, tanquam membra putrida, & infructuosos palmites ab eadem Ecclesia succidere, ac penitus evellere, & si qua gregis prædicti ovis morbo incurabili correpta reperiatur, illam ne ceteras contagione inficiat, foras ejicere, ac providere gregem ipsum ab omni labe purgatum servare, ne culpâ, ac negligentia nostris quandoque oves perditas, aut huiusmodi morbo infectas, summus ipsius gregis pastor Dominus justus iudex de eis in districto illius iudicio rationem à nobis exquirat, & quo in majori dignitate vel honore constituti reperiuntur, qui in eorundem gregis & Ecclesiæ perniciem talia præsumunt, eo severius in eos animadvertere, ipsosque spirituali & temporali mucrone ferire studeamus.

S. 1. Sanè cum nuper, magno cum animi nostri moerore, plurimorum fide dignorum relatione, ac fama publica, non quidem à malevolis & suspicis, sed gravibus & honestis, ac veridicis personis exorta, etiam per modum notorii facti permanentis, ad aures nostras pervenit, iniquitatis filium Odettum à Castillione S. R. E. Diaconum Cardinalem, & Ecclesiæ Belvacensis perpetuum Administratorem in spiritualibus & temporalibus, aliâs per Sedem Apostolicam deputatum, ad quem velut ipsius universalis & Romanæ Ecclesiæ Cardinalem, & honorabile membrum pertinebat, pro fidei Catholicæ defensione, Apostolicæque Sedis conservatione, proprium sanguinem ubi opus fuisset, effundere, vitamque exponere, ac hereticos undique, & præcipuè ab Ecclesiæ Belvacensis prædictâ, illiusque Civitate, & Diocesi, quarum curam gerebat, potissimum expellere, illosque totis viribus, ac omni conatu perfecti, suorum muneris, status, decoris, honoris, ac propriæ salutis, necnon beneficiorum, quibus illum Sedes Apostolica, tot tantisque dignitatibus decoraverat, receptorum, & fi-

Odetus à Castillione Card. Hugonotorum hæresim secutus est.

Ballarium Romanum. Tom. II.

I 3

de-

delitatis juramenti eidem Sedi per eum præstiti, nobilitatque suæ originis prorsus immemorem, Deique timore postposito contra Sedem eandem se temere erigente adeo in profundum malorum prolapsam fuisse, ut in pessimam illam quæ his calamitosi & deplorandis temporibus in inclyto Regno Franciæ, proh dolor! maxime invaluit, Hugonotorum nuncupatam hæresim, ne dum incidere, sed ipsos Hugonotos hæreticos, quos præsertim in Civitate, & Diocesi prædictis corrigere & punire, vel saltem ab eis profligare debebat, defendere, fovere, protegere, aut tueri curaverit, & quamplures hujusmodi pestiferæ Sectæ viros, pseudotheologos, in rectores & concionatores, quibus alios seducere ac inficere posset, familiariter retinuerit, arma sumperit, ac alia gravissima, hæresim manifestam denotantia, pertinaciter contra fidem Catholicam, sanctamque Romanam Ecclesiam commiserit & perpetraverit, in gravem divinæ Majestatis offensam, ac omnium Christifidelium scandalum.

Cujus adhesionis verificatio ab isto Pontifici Card. Inquisitoribus commissa fuit.

§. 2. Nos igitur, quorum est pro nostro Pastoralis officii ministerio præmissis debite providere, non valentes citra immensæ illius divinæ Majestatis offensam, necnon Christifidelium eorumdem scandalum, modo aliquo præmissa, utpote tam impia & enormia convenerimus oculis perscrutari, ut tamen videre-mus, clamorem qui ad nos pervenerat, idem Odettum opere complevisset, Venerabilibus fratribus nostris S. R. E. Cardd. hæreticæ pravitatis Inquisitoribus generalibus in Rom. Curia deputatis, ut de præmissis omnibus & singulis se diligenter informarent, veritatemque desuper inquirerent, ac deinde nobis in Consistorio nostro secreto referrent, commissimus & mandavimus.

Qua verificatione habita, & huic Pontifici relata, ipse contra Odettum procedi & ad sententiam citari jussit.

§. 3. Cumque Cardinales Inquisitores præfati, mandatis nostris hujusmodi parentes, super his diligenter inquisivissent, ac dictum Odettum nedum superius expressa, sed etiam longe deteriora commisisse & perpetrasse, nempe inter alia dixisse, & pertinaciter tenuisse, Ecclesiam usque ad ista tempora hæreticorum Hugonotorum errasse, necnon palam & publice partes dictorum Hugonotorum hæreticorum, illorumque conventicula & sectas fuisse, secutum, ac tutatum fuisse & laudasse, abjctisq; Cardinalatus habitu & insigniis, quibus se indignum reddiderat, ad Hugonotos hæreticos ipsos declinasse, eorumque sectam expresse professum fuisse seq. illorum exercitui ductorem fecisse, & adhuc existere, aliaque in sanctam fidem & Catholicam religionem commisisse comperiissent, & nobis in Consistorio prædicto retulissent, illaque adeo notoria essent, ut nulla posset tergiversatione celari, eisdem Cardd. Inquisitoribus, etiam vivæ vocis oraculo dedimus in mandatis, ut præfatum Odettum sub excommunicationis latæ sententiæ, aliisque censuris & penis tunc expressis ad personam tunc comparandum, & se à præmissis expurgandum infra certum tunc expressum, ac alias sub certis modo & forma moneant, requirent, & citarent, ac litteras monitoriales & citatorias contra eundem Odettum per edictum publicum in dicta Ecclesia Belvacensi & illius palatii Episcopalis valvis, ac in Alma Urbe nostra, in locis consuetis exequendas & publicandas decernerent, ac illis sic, ut præmittitur, executis, ac coram ipsis Inquisitoribus reproductis, terminisque ad docendum se illis paruisse, servari solitis servatis, dictoque Odetro prius ad audiendam sententiam per nos ferendam legitime citato, & dilecto filio Petro Belo Procuratore Fisci ejusdem hæreticæ pravitatis generalis Inquisitionis ad hoc instante, ad hujusmodi causæ expeditionem, justitiam mediante, devenire volentes.

Et modo de voto Cardd. illum excommunicatum, & bonorum privatam declarat.

§. 4. Habita desuper cum prædictis, & aliis Venerabilibus fratribus nostris ejusdem S. R. E. Cardinalibus matura deliberatione, de eorumdem unanimi voto, consilio, & assensu, CHRISTI prius Salvatoris nostri nomine invocato, in throno justitiæ pro tribunali sedentes, & solum Deum præ oculis habentes, per hanc nostram sententiam

quam ferimus in his scriptis, pronunciamus, decernimus, & declaramus, præfatum Odettum in excommunicationis latæ sententiæ, privationis, confiscationis omnium bonorum suorum, præsentium & futurorum, officiorum & dignitatum, etiam Cardinalatus, jurium, privilegiorum & actionum, ac criminis hæresis pro confesso habiti penas in dictis litteris monitorialibus, & citatoriis contentas ob ipsius Odetti illis non paritionem damnabiliter incidisse & incurrisse, & nihilominus quia tam ex processu contra eum formato, & per dictos Inquisitores, ut præmittitur, relato, quam notorietate facti quod nulla prorsus excusatione palliari, aut tergiversatione celari potest, & ex quamplurimis aliis quæ nobis innotuerunt, ac de quibus alias multiplicitèr conscientiam nostram plene informatam habemus de hæresis, & schismatis criminibus, hujusmodi omnibusque superius enarratis per eum commissis & perpetratis clare & aperte constituit, & constat, ipsum Odettum hæreticum, excommunicatum, Hugonotum, schismaticum, & blasphemum, ac à fide Catholica & S. R. E. apostatam, & transfugam, fidei fractorem, & perjurum pronunciamus & judicamus, ac declaramus, & propterea eum ab omni Cardinalatus commodo & honore, ac privilegio etiam clericali à die commissorum criminum hujusmodi ipso jure depositum, dictaque Ecclesiæ Belvacensi administratione, ac omnibus beneficiis, & officiis, honoribus, dignitatibus, ac prælaturis privatum, & ad illa inhabilem & perpetuo incapacem, ac ejus bona, jura, & jurisdictiones publicata fuisse & esse, & ab his ad quos spectant capi posse, dictamque Ecclesiam Belvacensem & cetera beneficia quæcumque & quælibetque Ecclesiastica, & officia per eum obtemperata vacavisse, & vacare similiter declaramus & decernimus, ac eundem Odettum quatenus opus sit deponimus, privamus, & inhabilem facimus, ejusque bona omnia, jura, & jurisdictiones publicamus, depositumque & privatum, ac inhabilem effectum, ac velut talem hæreticum, schismaticum, & blasphemum, & instructuosum palmitem ab Ecclesiæ præfatum ulterius legitime puniendum fore decernimus, ejusque personam à Christifidelibus capiendam & detinendam, & ad justitiæ & ministeriorum manus, ut penis debitis affici possit, tradendam, omni meliori modo & forma, quibus possumus & debemus, & exponimus.

§. 5. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ pronuntiationis, judicationis, declarationis, decretorum, depositionis, privationis, facti, publicationis, & expositionis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursum.

Sanctio pontificis.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1563. Pridie Kal. Aprilis, Pontificatus nostri Anno quarto.

Dat. P. A. 4. die 31. Mart.

† Ego Pius Catholicæ Ecclesiæ Episcopus.

Papæ subscript.

Si mei non fuerint dominati tunc immaculatus ero.

† Ego R. Card. de Carpo Episcopus Ostien.
† Ego F. Card. Pisanus Episcopus Portuen.
† Ego Otho Truchies Episc. Albanen.
† Ego R. Card. Sancti Angeli, Major. Peniten.
† Ego Fulv. Card. Perus.
† Ego Jo. Mi. Card. Saracenus.
† Ego Jo. Card. S. Vitalis.
† Ego Jo. B. Cicada Card. S. Clemen.
† Ego B. Card. Tranen.
† Ego Scipio Card. Pisanus.
† Ego Jo. Card. Reomanus.
† Ego F. M. Card. Alexandrin. hæreticæ pravitatis Inquisitor.

Cardinalium subscripti.

† Ego

† Ego A. Card. Farnesius Vicecan.
† Ego Gui. Afc. Card. Camerarius.
† Ego Hip. Card. Ferrarier.
† Ego Ju. Card. Urbinas.
† Ego Vitellotus Card. Vitellius.
† Ego Aloyius Card. Esten.
† Ego Marcus Sitticus Card. ab Altaemps.
† Ego Franciscus Card. Gonzaga.
† Ego Ind. de Avalos Card. Aragonius.

Publicatio. Anno à Nativitate Domini 1561. Indiæ. 6. die vero 11. mensis Sept. Pontif. Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii, divina providentia Papæ IV. anno 4. suprascriptæ litteræ Apost. affixæ, & publicatæ fuerunt Romæ ad valvas Principis Apostolorum de Urbe, Cancellaria Apostolica, palatii sanctiss. Inquisitionis, & in acie Campi Floræ, earundem ibidem dimissis copiis affixis, per nos Andream de Curia, & Bartholomæum Sotocafca, ejusdem Sanctiss. D. N. Papæ Curs. res.

Antonius Clerici Mag. Curs.

LXVII. Facultates Cardinalium Reipublicæ Christianæ generalium Inquisitorum in Urbe procedendi etiam contra Prælatos hæreticos, vel hæreticorum fautores.

Elujusmodi causas contra Episcopos Pontifici Romano referri iussit Pius V. in ejus const. 82. Si de protegendis. §. 6. Et prædictam jurisdictionem & alias confirmavit Sixt. V. in const. 74. Immensa. §. 1. Et ampliavit ad Regulares Paulus V. in const. 26. Romanus. vide infra in hoc Tomo II.

Edita A. D. 1563. PIUS EPISCOPUS, Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium. ROMANUS Pontifex, Christi Vicarius, ac beati Petri successor, cui ipse CHRISTUS Dominus noster oves suas pascendas enixe ter commendavit, ne oves deperditæ de ejus manu quandoque requirantur, omni studio, & solertia continue invigilare debet, ut à S. R. E. quæ ceterarum caput est, & magistra, deviantes, ac aberrantes, ad gregem Dominiaculi totis viribus reducat, & quas Dei timore proposito & salutaribus monitionibus ad illam allicere nequiverit, temporalium saltem pœnarum metu coerceat.

Causa const. §. 1. Cumque nos propterea postquam ad summi Apostolatus apicem, licet immeriti, divina favente clementia assumpti fuimus, statim mentis nostræ aciem eo direximus, ut hæreticæ pravitatis undique extirpatis erroribus, fides Catholica ubique augmentum suscipiat, & diffusus protendatur, nihilque quod huic rei profuturum cognovimus, prætermisimus. Et nihilominus sicut nuper non sine gravi cordis dolore, & animi amaritudine accepimus, nonnulli Prælati, & in dignitate Ecclesiastica, ac Episcopali ordine constituti, ad quos veluti in partem sollicitudinis nostræ vocatos, magis spectaret ceteros, præsertim eorum curæ creditos ab erroribus revocare, & in eisdem erroribus pertinaciter persistentes insequi, nedum in similes errores hæreticos graviter prolapsi fuere, sed etiam ceterorum hæreticorum fautores, receptatores, & auxiliatores existunt, & eandem fidem Catholicam cujus defensores esse deberent, in dies oppugnare non ventur.

Jurisdicatio Card. generalium Inquisitorum, procedendi contra quoscunque dignitate eccles. predictos hæreticos, &c. §. 2. Volentes igitur huic tam pernicioso morbo, prout nostro incumbit officio, occurrere, ac ne ulterius progrediantur, quantum in nobis est, providere, Motu proprio per Apostolica scripta venerabilibus fratribus nostris, & dilectis filiis nostris Inquisitoribus contra hæreticam pravitatem generalis in Alma Urbe nostra pro tempore residentibus, quibus ut contra quoscunque etiam Episcopali, ac quacunque alia etiam Cardinalatus prædictos dignitate procedere possint, per alias nostras

indulsumus, tenore præsentium, committimus, & mandamus, ut omnes & singulos hæreticos, & hæreticorum fautores, receptatores, & auxiliatores prædictos, de hujusmodi criminibus diffamatos, in Provinciis, & locis in quibus Lutherana secta invaluit, commorantes, ad quos ob ipsorum hæreticorum frequentiam notorium est, tutum, seu saltem liberum non patere accessum, etiam si Episcopali, Archiepiscopali, Patriarchali, & alia quacunque etiam Cardinalatus dignitate præfulgeant, nullis aliis desuper habitis super non tuto, vel non libero accessu, hujusmodi informationibus (receptis tamen summarie, & extrajudicialiter quantum ipsis Inquisitoribus sufficere videbitur prius indicii) etiam per edictum in valvis Palatii Officii sanctæ Inquisitionis, & Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, ac in Cancellaria nostra Apostolica, & acie Campi Floræ tantum per unum ex nostris Curforibus, vel etiam in locis hincitmis terrarum in Italia consistentium, nobis & eidem Sanctæ Romanæ Ecclesiæ immediate subiectis, prout ipsis Inquisitoribus visum fuerit, assignandum, & publicandum, citent, moneant & requirant, ut intra certum, & competentem terminum eis ipsorum Inquisitorum arbitrio præfigendum sub excommunicationis lætæ sententiæ, suspensionis à divinis, & privationis etiam à Cathedralibus Ecclesiis, & quibuscunque dignitatibus, & beneficiis ecclesiasticis, ac officiis & ordinibus quæ obtinent, & in quibus constituti existunt, & inhabilitatis ad illa, & alia quæcumque in posterum obtinenda, necnon confessionis criminum hæresis eis objectorum, aliisque tam ecclesiasticis, quàm temporalibus, etiam pecuniariis, & bonorum confiscationis, ac corporalibus, & etiam relapsus, & aliis per ipsos Inquisitores imponendis pœnis, coram ipsis personaliter, & non per procuratorem, defensorem vel excusatorem aliquem compareant, & se à criminibus prædictis expurgent, & si in termino prædicto non comparuerint, & se à dictis criminibus legitime non expurgaverint, ad observationem terminorum ad docendum se dictis litteris citatorii, & monitorialibus paruisse se sententia declaratoria, incursum censuratum, & poenarum in eisdem litteris contentarum ferenda servati solitorum, ac etiam in causa ipsa criminis hæresis inquirendum ad receptionem probationum pro definitiva super crimine etiam contra absentes, sic ut præfertur monitis ferenda sententia, usque ad ipsius sententiæ ferendas calculum procedant, ac demum processum omnem nobis, ut ad sententiæ quæ iusta visa fuerit, prolationem devenire possimus, in Consistorio nostro secreto referant. Nos enim citationem, & monitionem per publicum edictum, ut præfertur, decernendas, & exequendas prædictas, dictos sic citatos, & monitos perinde arctare, ac si personaliter citati forent, illasque ac processus desuper habendos sententiasque inde ferendas validos, & validas fore.

§. 3. Sicque per quoscunque Judices, & Commissarios etiam causarum Palatii Apostolici Auditores in quavis instantia, sublata eis, & eorum cui libet quavis aliter interpretandi, & definiendi facultate & auctoritate, judicari, & definiri debere, irritum quoque & inane quicquid secus super iis à quocunque, quavis auctoritate, scienter, vel ignoranter contigerit attentari, decernimus.

§. 4. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac Palatii nostri stylo, etiam certam aliam formam, quoad citationes per edictum decernendas, & exequendas, inducentibus, quibus, illorum omnium tenores præsentibus pro sufficienter expressis habentes, hac vice dumtaxat, illis aliis in suo robore permanfuris, specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscunque.

§. 5. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostre commissionis, mandati, decreti, & derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit,

Decretum irritans.

Clausulæ derogatorie.

Sanctio poenalis.

Dat. P. An.
die 7. Apr.

indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursum.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1563. septimo Idus Aprilis, Pontificatus nostri Anno quarto.

LXVIII.

Jurisdictio Cardinalis Protectoris, & Judicis causarum Hospitalis, & Societatis S. Hieronymi Illyricorum de Urbe.

Edita An. D.
1563.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Causa const.

Cum sicut accepimus Hospitale Illyricorum S. Hieronymi prope Ripetam de Urbe, ob lites, & quæstiones, quibus ad diversa Urbis Tribunalia, occasione locationum, censuum, donationum, hereditatum, & legatorum, & diversarum aliarum rerum, ejusdem, tam agendo, quam defendendo, fugiter implicitum existit, quantum plurima damna, & incommoda patiatur, ac impense litis, valorem, &c. de qua ex tempore agitur sæpenumero expuerit.

Jurisdictio
de qua la
rubr.

§. 1. Nos Hospitale ipsum, in quo piissima charitatis, & misericordiae opera pauperibus Christi continuo impendi spectantur, ab hujusmodi dispensis quantum possimus sublevare volentes, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolica potestatis plenitudine, omnes & singulas causas, inter dictum Hospitale sive dilectos filios Curios, & Officiales, ac Ministros Societatis ejusdem Hospitalis, & quascumque alias etiam seculares personas, Universitates, Societates, ac loca coram S. R. E. Camerario, Regente, Presidente, ac Clericis Cameræ Apostolicæ, necnon Vicario, Gubernatore, & Senatore Urbis, illiusque Primo, Secundo Collateralibus, ac appellationum causarum Curia Capitoli ejusdem Urbis Capitaneo, necnon Magistro Stratarum, aliisque quibuscumque Judicibus ordinariis, & Delegatis, etiam causarum Palatii Apostolici Auditoribus, & ejusdem Romanæ Ecclesiæ Cardinalibus, nunc & pro tempore pendentes, super quibuscumque locationibus, venditionibus, donationibus, legatis, fidei commissis, testamentis, executionibus, revocationibus, bonis, rebus, juribus, & actionibus, Hospitale, & Societatem, Officiales, lites consortes, & alios præfatos, tam conjunctim, quam divisim, ac tam active, quam passive concernentibus, ac ad Hospitale, & Societatem hujusmodi quomodolibet spectantibus, in quacumque instantia inter illos, necnon alia æque vel magis pia loca, Universitates, & Collegia quomodolibet privilegiata, ac Viduas, pupillos, & alias personas etiam exemptas, pendentes, cujuscumque qualitatis, status, gradus, ordinis, vel conditionis, & naturæ existant, etiam præmissis expressis majores, quorum omnium statum, & merita, ac Judicium, & colligantium nomina, & cognomina, & qualitates, ceteraque etiam de necessitate exprimenda præsentibus haberi volumus pro expressis, in statu & terminis, in quibus reperiuntur, dummodo instructæ non sint, harum serie ad nos avocantes, dilectum filium nostrum Rodolphum Pium, Episcopum Ostiensem, ac S. R. E. Cardinalium Decanum, Cardinalem de Carpo nuncupatum, modernum, & pro tempore existentem Protectorem ejusdem Hospitalis, Judicem ordinarium, & perpetuum, ad præfatas, necnon quascumque alias similes, vel dissimiles, causas & causas civiles & criminales, ac mixtas, ad Hospitale, & Societatem hujusmodi pertinentes tam per eos, quam contra eos, & inter eos, ac personas, Universitates, Collegia, seu loca etiam privilegiata, & exempta, tam active, quam passive, pro tempore movendas, juxta ordinatam jurisdictionem seu facultatem, tam Gu-

bernatori, sive Regenti, vel Auditori Cameræ Apostolicæ, quam Vicario præfatis, & eorum cuilibet attributis, ac prout rerum qualitas exegerit seu postulaverit, cum omnibus, & singulis eorum incidentibus dependentibus emergentibus annexis & connexis, summarie simpliciter, & de plano, ac sola facti veritate inspecta, & absque terminorum aliquorum substantialium observatione, aut alicujus registri confessione, per se vel alium seu alios audiendas & sine debito terminandas auctoritate Apostolica tenore præsentium perpetuo constituimus, & deputamus etiam ad hunc effectum illi etiam per alium, seu alios quoscumque tam in Romana Curia, quam extra eam, etiam per edictum publicum, confitto sibi prius, quam etiam summarie de non tuto accessu ad illos, citandi, & monendi, ejusdemque, & præfatis, ac quibuscumque aliis ejusdem Urbis Curiarum Judicibus, & personis, tam ecclesiasticis, quam secularibus, quibus, & quoties opus fuerit, etiam sub sententiis, censuris, & penis ecclesiasticis, ac etiam pecuniariis, quibus sibi, sive ab eo deputando Auditori videbitur, inhibendi, & in eventum non paricionis contra inobedientes, & rebelles, ad declarationem incursum censurarum, & penarum hujusmodi, illarumque aggravationes, & alias juxta styllum, & morem dictarum Curiarum in similibus servari solitum, ac alias prout sibi videbitur procedendi, sententiamque sive sententias debite executioni demandandi, sive demandari faciendi. Contradictores quoslibet, & rebelles, per censuras, & penas ecclesiasticas, ac etiam pecuniarias, aliaque juris, & facti opportuna remedia, appellatione postposita compescendi, auxiliumque brachii secularis ad hoc si opus fuerit invocandi, omniaque, & singula alia in præmissis, & circa ea necessaria, seu quomodolibet opportuna faciendi, & exequendi, plenam, & liberam licentiam, seu facultatem concedimus. Decernentes Hospitale, Societatem, & ejus Officiales, & personas hujusmodi ex nunc deinceps occasione præmissorum, alibi quam coram Rodolpho Pio Cardinale, & pro tempore Protectore præfato, conveniri, aut ad alios conveniendum constringi non posse, ac sententias processus per alium, seu alios Judices, tam ordinarios, quam delegatos in causis præfatis pro tempore formatas, datas, latas, & factas, cum inde secutis quibuscumque, nulla, irrita, & inania, nulliusque roboris, vel momenti fore.

§. 2. Præfentes quoque litteras sub quibuscumque revocationibus, suspensionibus, & exemptionibus similibus, vel dissimilibus grauarum, etiam per nos, & successores nostros Romanos Pontifices, & Sedem præfaram, vel ejus Legatos, etiam per regulas Cancellariæ Apostolicæ pro tempore factas, etiam in favorem Fabricæ Principis Apostolorum de Urbe, nullatenus comprehendî, sed semper ab illis penitus, & omnino exceptas esse, & censeri, nec eisdem præsentibus per quascumque litteras, & qualvis alias clausulas generales, & speciales, etiam derogatoriarum derogatorias, efficaciores, & insolitas, ac etiam irritantia decreta, sub quacumque verborum expressione in se continentes derogari posse, & si illis ullo umquam tempore, ex aliqua etiam quantumvis necessaria, & urgenti causa derogari contingat, nisi tenor illarum de verbo ad verbum nihil omisso insertus, & hujusmodi derogatio consistorialiter facta, ac per trinas, & distinctas litteras eundem tenorem continentes, tribus similibus distinctis vicibus, Administratores sive Custodibus, Gubernatoribus, Rectoribus, & Oeconomis Hospitalis, & Societatis hujusmodi legitime intimata, & insinuata fuerit, eorumque expressis ad id accedat assensus, derogationem hujusmodi nemini suffragari. Sicque per quoscumque Judices quavis auctoritate fungentes, & præfatas etiam Romanæ Ecclesiæ Cardinales, sublatas eis, & eorum cuilibet, quavis aliter judicandis, & interpretandis facultate, & auctoritate, ubique judicari, & definiri debere; irritum quoque, & inane si secus super iis a quoquam

Causæ
præfative
hujus
con-
cessionis.

PIUS PAPA QUARTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

quavis auctoritate scienter, vel ignoranter con-
tingerit attentari.

§. 3. Non obstantibus præmissis, & felicis recor-
dationis Bonifacii Papæ Octavi prædecessoris nostri
de una, & in Concilio generali edita de duabus dic-
tis, dummodo ultra tres dietas aliquis auctoritate
præsentium ad iudicium non trahatur, aliisque con-
stitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, nec-
non Fabricæ præfatæ, ac Hospitalium, Ecclesia-
rum, Monasteriorum, & aliorum quorumcumque
locorum, & Ordinum, etiam exemptorum, ju-
ramento, confirmatione Apostolica, vel quavis fir-
mitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus,
privilegiis quoque, indultis, conservatoris, exemp-
tionibus, & litteris Apostolicis eisdem, & dilectis
filiis Populo Romano necnon Iudicibus, Curis,
& Tribunalibus, eorumque personis, per quoscum-
que Romanos Pontifices prædecessores nostros,
ac nos & dictam Sedem, etiam Motu & scientia, &
potestatis plenitudine similibus, ac alias sub qui-
buscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscum-
que clausulis, & decretis in contrarium quomodolibet
concessis, confirmatis, & innovatis, necnon refor-
mationibus, etiam noviter factis, ac paribus motu,
& scientia approbatis, etiam disponentibus quod
causæ huiusmodi ad forum, seu Curiam Capitoli
reassumantur debeant. Quibus omnibus etiam si pro il-
lorum sufficienti derogatione, aliter de illis eorum-
que totis tenoribus, specialis, specifica, expressa,
& individua, ac de verbo ad verbum, non autem
per clausulas generales idem importantes, mentio
seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia
exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hu-
iusmodi, ac si de verbo ad verbum nihil penitus
omisso, & forma in illis tradita observata, inserti
forent, præsentibus pro sufficienter expressis hab-
entes, illis alias in suo robore permanens, hac
vice dumtaxat, harum serie specialiter, & expresse,
ac eisdem motu & scientia, ac potestatis plenitu-
dine derogamus, ac sufficienter derogatum esse de-
cernimus, contrariis quibuscumque, cum clausulis
opportunis, & consuetis.

Fiat Motu proprio. I.

§. 4. Et cum ablatione censurarum ad effectum
præsentium, & de auctoritate, constitutione, de-
putatione, licentia, facultate, concessione, decre-
to, & derogatione, & aliis præmissis, quæ hic pro
sigillatim repetitis ad partem habeantur, latissime
attenden, & quod præmissorum omnium, & singu-
lorum major, & verior specificatio, & expressio
fieri possit in litteris per breve nostrum ad perpe-
tuam rei memoriam si videbitur latissime expedi-
enda. Quodque earundem litterarum transum-
ptis manu alicujus Notarii publici subscriptis, &
sigillo Protectoris, vel Societatis huiusmodi, seu
personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ, vel
Curie etiam secularis munitis, eadem prorsus fides
adhibeatur, quæ eisdem litteris originalibus adhi-
beretur si forent exhibitæ, vel ostensæ. Et quod ad
causas in futurum movendas tantum.

Datum Romæ apud S. Marcum, Pridie Nonas
Septembris, Anno quarto.

Sacri Apostolatus ministerio meritis licet impa-
ribus superna dispositione præsidentes, ad ea
libenter intendimus, per quæ litterarum studia
ubique nostræ provisionis ope continua fuscipiant
incrementa, & iis quæ propterea, ac pro perso-
narum quarumlibet præsertim litterarum scientia
præditarum commodo provide facta fuisse dicun-
tur, ut firma perpetuo, & illibata persistant, nostræ
approbationis robur libenter adjicimus, ac alias
desuper providemus, prout locorum & personarum
qualitatibus debite pensatis, in Domino conspici-
mus expedire.

§. 1. Cum itaque sicut accepimus in Civitate
nostra Bononiensi Studium generale Juris Civilis,
& Pontificii semper adeo floruerit, & floreat, ut ad
eam veluti ad studiorum matrem undique con-
fluant varæ, & diversæ persone, & ex qua quam-
plures famosissimi viri prodierint, & in dies prodire
dignoscatur, quorum scientia, nedum ipsa Civitas,
sed etiam totus illustratur Orbis, & cum nuperrime
pro commodiori utilitate Scholarum in eadem Ci-
vitate, & Universitate studentium, ac etiam ibi-
dem legentium, per dilectum filium nostrum Car-
olum Tituli S. Martini in Montibus Presbyterum
Cardinalem Borromæum nuncupatum nostrum, &
Sedis Apostolicæ in dicta Civitate Legatum, dicta
Universitas, seu Sapiencia in qua Doctores legunt
in melius reformatam, & seu de novo constructam fue-
rit. Nos cupientes Universitatem ipsam, ac dilec-
tum filium Antonium de Raia Utriusque Juris Doc-
torem nuperrime ejusdem Universitatis Rectorem,
& ab ea ad id ad Nos deputatum, & Scholares ad
eum accedentes specialibus favoribus, & gratis
prosequi volentes, & ut facilius ad eam acceden-
dum, & studia prosequendum invitentur, ac exci-
tentur, Statutorum, Ordinationum, privilegio-
rum, & capitulorum dictæ Universitatis tenores,
ac si de verbo ad verbum infereretur præsentibus
pro expressis habentes, ipsosque Antonium, &
Scholares à quibuscumque excommunicationis, suspen-
sionis, & interdicti, aliisque ecclesiasticis senten-
tiis, censuris, & pœnis, à jure vel ab homine qua-
vis occasione, vel causa latis, si quibus quomodo-
libet innodati existant, ad effectum præsentium
dumtaxat consequendum, harum serie absolven-
tes, & absolutos fore censentes.

§. 2. Motu proprio non ad alicujus nobis super
hoc oblata petitionis instantiam, sed de nostra
mera liberalitate, & ex certa scientia, ac de Apo-
stolicæ potestatis plenitudine, pro tempore exis-
tenti Rectori ejusdem Universitatis, liberam & ab-
solutam facultatem eamdem Universitatem regen-
di, & gubernandi, ac ultra alias facultates, hono-
res, privilegia, & emolumenta quæcumque sibi
attributa, ac concessa, omnes & quascumque cau-
sas, civiles tantum inter ipsos Scholares ejusdem
Universitatis, & alios quoscumque in futurum mo-
vendas videndi, audiendi, cognoscendi, deciden-
di, ac sine debito terminandi, ita ut omnimoda,
& libera jurisdictio, respective dictarum causarum
civilium ad eundem Rectorem libere, & pleno
jure spectet, & pertineat, etiam privative ad Vice-
legatum ejusdem Civitatis, ac omnes alios, & quo-
cumque Judices auctoritate Apostolica tenore præ-
sentium concedimus.

§. 3. Ac ut eidem Universitas sive Rectore non
remaneat, quinimmo, ut Scholares ad Officium
Recloratus ejusdem Universitatis acceptandum in-
vitentur, auctoritate, & tenore prædictis volumus
& mandamus, quod de cetero Rectores ipsi,
finito dicto eorum officio, & postquam in dicta
Universitate Bononiensi publice doctores fuerint,
de aliquo Gubernio, seu Prætoria, aut alio officio
juxta qualitatem, & merita personæ in Provinciis

Exordium.

Studii Bono-
nienfis com-
mendatio.Recloris Stu-
dii jurisdic-
tio.Recloris pri-
vilegium.

Marchiz,

Clausula
derogatorie
contrario-
rum.Repetitio
clausularum.Dat. P. A. 4.
die 4. Sept.

LXIX.

Studii generalis Bononiensis, ejusque Recloris
arque Scholarum indulta.

*Hoc Studium antiquissimum est, & de eo habetur
sup. in Tomo I. in const. 2. Innoc. VI. Quasi. Et
in hac Civitate Bononiæ Rotam instituit Paul. III
ut in ejus constit. 4. Et in juncto.*

Ad materiam Studiorum generalium, vide cap. fin.
de Magistr. & cap. 2. de Privileg. in 6. Necnon
in specie hic infra const. 88. In sacrosancta, Et
etiam Conc. Trid. sess. 5. cap. 1.

Marchiæ, vel Romandioliæ per Legatos, seu Gubernatores earumdem pro tempore, sub indignationis nostris, & mille ducatorum pœnis Cameræ Apostolicæ applicandorum provideri debeat, ipsique gubernio, aut alii ex prædictis officiis in aliquibus Civitatibus ex dictis Provinciis præfici, ac ad Gubernium, seu Prætoriam, aut officium hujusmodi admitteandos fore, & esse. Mandantes pro tempore existentibus Legatis, seu Prolegatis, Vicelegatis, vel Gubernatoribus, ut eosdem ad Gubernium, seu Prætoriam hujusmodi, ut supra admittant, ac de illis, eisdem, ut præfertur, provideant, & seu admittant, & provideri faciant, juxta tamen qualitatem, & merita personarum ipsius Rectoris.

Privilegi-
orum & ordi-
nationum
eiusdem Stu-
dii confirma-
tio.

§. 4. Et insuper omnia, & singula dictæ Universitatis, & Gymnasii præfati statuta, ordinationes, privilegia, & capitula quæcumque ac desuper forsan confecta instrumenta, & documenta, five alias scripturas, publicas, & privatas, ac in eis contenta, ac inde sequuta quæcumque dummodo licita, & honesta sint, & contra canonicas sanctiones, & libertatem ecclesiasticam non tendant, eisdem auctoritate, & tenore perpetuo approbamus, & confirmamus, eisque perpetuæ firmitatis robur adjiciamus, illaque omnia, valida & efficacia existere, ac suos pœnarios, & integros etiam executivos effectus sortiri, ac perpetuis futuris temporibus ab omnibus quovisque gradus personis Vicelegatis, ac Judicibus, & Officialibus dictæ Civitatis, tam ordinariis, quam extraordinariis, ac delegatis & subdelegandis, necnon Collegiis, & Congregationibus, ac Auditoribus, & Magistratibus aliisve quibuscumque etiam in foris eorum propriis inviolabiliter, & inconcussè observari, ac juxta eorum dispositionem debite exequi, nec per quempiam illis contrariari, aut ea etiam in aliquo alterari posse, nec debere decernimus, suppleantes omnes, & singulos, tam juris, quam facti defectus si qui forsan intervenerint in eisdem. Et nihilominus potiori pro cautela præmissa omnia modo, & forma præmissis, ac in dictis documentis, & scripturis contentis, auctoritate, & tenore præfatis perpetuo statuimus, concedimus, & ordinamus.

Clausulæ
præservati-
væ.

§. 5. Quodque illis, ac præsentibus litteris etiam per quascumque litteras Apostolicas quasvis etiam derogatorium derogatorias, & efficaciores, ac insolitas clausulas, necnon irritantia, & alia decreta insolita continentes minime derogati, nec derogatum esse censi possit, & si illis derogari contingat derogatio hujusmodi nemini frustretur. Sicque in præmissis omnibus, & singulis per quoscumque Judices, & Commissarios sublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate in qualibet causa & instantia, judicari, & interpretari debere, irritum quoque & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari decernimus.

Executorum
deputatio,
& facultates.

§. 6. Quocirca Venerabilibus fratribus Episcopo Bononiensi, five ejus Vicario in spiritualibus generali, ac Vicelegato Civitatis nostræ Bononiensis, ac dilecto filio Curie causarum Cameræ Apostolicæ generali Auditori pro præsentibus committimus & mandamus, quatenus ipsi vel duo, aut unus eorum per se vel alium, seu alios præsentibus litteras, & in eis contenta quæcumque ubi, & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Rectoris, & Scholarium prædictorum, vel aliquis eorum, seu aliorum quorum intererit desuper fuerint requisiti solemniter publicantes, eisque in præmissis efficacia defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra easdem præsentibus litteras plenum effectum sortiri, ac juxta illarum tenorem firmiter observari, necnon singulos, quos litteræ ipsæ concernunt præmissis omnibus, & singulis pacifice frui, & gaudere, non permittentes illos, vel eorum aliquem per quoscumque desuper contra earumdem litterarum tenorem quomodolibet indebite molestari. Contradi-
dictores quoslibet & rebelles, per sententias, cen-

furas ecclesiasticas, ac pœnas pecuniarias eorum arbitrio moderandas & applicandas, appellatione postposita compescendo, ac legitimis super his habendis servatis processibus, censuras & pœnas ipsas etiam iteratis vicibus aggravando. Super quibus, necnon contradiectores, & rebelles prædictos, ac quoscumque molestatores, & alios præmissorum occasione citandos, confisto eis summarie, & extrajudicialiter de non tuto accessu, etiam per edicta publica locis publicis, ac ipsis citandis circumvicinis, de quibus sit verisimilis conjectura quod ad eorumdem citandorum notitiam pervenire valeant assignanda, quæ perinde illos arguent, ac si eis personaliter intimata fuissent citandi, eisque ac quibuscumque Judicibus, & aliis personis quibus dicta occasione inhiibendum fuerit, etiam sub sententiis, censuris, & pœnis prædictis, ac per similia edicta inhiibendi, eisdem auctoritate & tenore eis facultatem concedimus.

Clausulæ de-
rogatoriæ.

§. 7. Non obstantibus quibuscumque Apostolicis, ac in Provincialibus, & Synodalibus Conciliis editis generalibus, vel specialibus constitutionibus, & ordinationibus, ac dictæ Civitatis etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia, roboratis statutis & consuetudinibus, ac reformationibus, & decretis, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis quibuscumque sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decretis concessis, & approbatis, ac etiam iteratis vicibus innovatis. Quibus omnibus etiam si pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad verbum non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in eis tradita observata inferri forent, præsentibus pro expressis habentes, illis alias in suo robore permanens, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris die 25. Septemb. 1563. Pontificatus nostri Anno quarto.

Dat. P. An. 4.
die 25. Sept.

Renovatio antiquarum Ordinationum, gratiarum, & privilegiorum Ord. Cisterciensis Monachorum S. Benedicti, Jurisdictionisque & auctoritatis Abbatibus, & aliorum Prælatorum dicti Ordinis.

LXX.

Similem constitutionem edidit Greg. XIII. inf. in hoc Tomo II. in ejus bulla 18. Superna. ubi alia indicabo de eodem Ordine. Et ante eum non ab similem prius edidit Pius V. num. 102. Ex innumeris.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D.
1563.

IN eminenti dignitate Apostolicæ Specula meritis licet imparibus divina dispositione vocati, ad ea libenter intendimus per quæ singuli Religionum Ordines abusibus & incommodis quæ in eos tractu temporis diversimode irreperunt eliminatis, non solum antiquis suis prærogativis, & dignitati restituantur, sed etiam regularia eorum instituta ad divinæ Majestatis laudem, & gloriam in posterum stabiliantur. Et ut id votive succedat, his quæ per Rom. Pont. prædecessores nostros prudenter concessa, ordinataque fuerunt, ut firma perpetuo & illibata persistant, libenter cum à nobis petitur Apostolici roboris

Exordium.

firmatorem adjuvamus, illaque nonnunquam innovamus, & ampliamus, ac alias super his disponimus, prout personarum, temporumque conditione pensata conspiciamus in Domino salubriter expedire.

§. 1. Sane exhibita nobis nuper pro parte dilecti filii Ludovici Abbatis Monasterii Cistercii Cabilonenfis Diocesis petitio continebant, quod licet Ordo Cisterciensis in summa puritatis, & devotionis perfectione per multa retroactorum annorum secula, ac tamdiu exemplari religiosorum suorum vita atque sanctimonia, non solum in Regno Francie ubi supremum ejus caput, videlicet Cistercii prædictum cum aliis quatuor illius præcipuis, nempe Firmitatis, Pontinaci, Claravallis, & Moribundi Cabilonenfis prædictæ, ac Antistiodorensis & Lingonenfis Dioc. respectu Monasteriis, quæ filie Cistercii nuncupantur, sed etiam per alia fere universa Christiani Orbis climata, cum bonæ famæ, & virtutum odore, eximioque religionis decore ad edificationem militantis Ecclesiæ, quamdiu juxta SS. Patrum institutiones, & regularia illius instituta, præfatis, aliisque Monasteriis, de Monachorum dicti Ordinis personis provisa, ejusque laudabilia instituta, ritus, consuetudines, & privilegia firmiter observata fuerant, Domino cooperante floruerit; nihilominus à pluribus annis citra, præsertim postquam pleraque Monasteriorum, & Prioratuum suorum aliis quam dicti Ordinis personis commendari, à Superioris obedientia, per exemptionem unionem, aliasque diversas vias, tanquam membra à suo corpore divelli, abstrahi, & dismembrari ceperunt, specioso illo regularis discipline candore paulatim offuscato, universus Ordinis status in miserabilem dispersionem, & defolationem prolapsus est.

§. 2. Cum autem sicut eadem petitio subungebat, tantis hujus olim Deo mortalibusque gratæ religionis incommodis, alter quam per antiquorum statutorum, consuetudinum, rituum, & privilegiorum prædictorum undique convulsorum, & diversimode oppressorum restitutionem, mederi non posse videatur, pro parte ejusdem Ludovici Abbatis asserens se Romanis his periculosis temporibus, opis super hoc à nobis implorandæ gratia personaliter accessisse, nobis fuit humiliter supplicatum quatenus afflictis ejusdem Ordinis rebus succurrentes exemptiones ab ipsius Ordinis Superioribus, per ejus personas aliasque privilegia contra illum per quosvis ab Apostolica Sede obtemperari, ac præfatis statutis, consuetudinibus, ritibus, & privilegiis pro illorum firmiori subsistentia robur Apostolicæ confirmationis adjicere, illaque innovare, ac alias in præmissis opportune providere de benignitate Apostolica dignaremur.

§. 3. Nos igitur qui Ordinis prædicti, nobis & dictæ Sedi in primis devoti, decus, & integritatem, siveque pristini candoris restitutionem, sincero desideramus affectu ipsum Ludovicum Abbatem à quibusvis excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & penis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum præsentium, dumtaxat consequendum harum serie absolventes, & absolutum fore censentes, necnon omnium, & singulorum infra scriptorum immunitatum, libertatum, exemptionum, indulgentiarum, etiam plenariorum, conservatoriarum, facultatum, ordinationum, statutorum, privilegiorum, indultorum, & aliarum gratiarum, ac literarum super expeditarum, tenores præsentibus pro sufficienter expressis habentes, hujusmodi supplicationibus inclinati, omnes, & singulas ab Abbate Monasterii Cistercii aliisque Superioribus & Capitulo generali Ordinis hujusmodi, ejusque deputatis immunitates, libertates, & exemptiones quibusvis, tam virorum, quam S. Catharinæ Cajetanæ & S. Mariæ de Cælestia nuncupatæ Venetiarum, aliisque Monachialium Monasteriis, ac Prioratibus, & aliis regularibus locis dicti Ordinis, ac dilectis filiis Abbatibus,

& Prioribus, dilectisque in Christo filiabus Abbatissis, & Priorissis, necnon Conventibus, Capitulis, & personis eorundem, tam in Gallia, Italia, Hispania, Portugallia, Germania, Anglia, & Scotia, quam alibi ubilibet consistentibus.

§. 4. Ita quod immunitatibus, libertatibus, & exemptionibus hujusmodi non obstantibus pro tempore existentes Abbas generalis nuncupatus, & alii Superiores dicti Ordinis, eorumque Vicarii, juxta ipsius Ordinis instituta, Monasteria, Prioratus, & loca prædicta, ac illorum personas, tam in capitibus, quam in membris visitare, libere & licite valeant.

§. 5. Ac quæcumque privilegia, & indulta Apostolica visitandi Monasteria tam virorum, quam mulierum Ordinis hujusmodi, quibusvis Venerabilibus fratribus nostris, Patriarchis, Archiepiscopis, & Episcopis, ac dilectis filiis aliis locorum Ordinariis, Abbatibus, & aliis, quam generale Cisterciensi prædicto, ac aliis quatuor Primis nuncupatis, quatuor Monasteriorum filiarum Cistercii nuncupatorum prædictorum Abbatibus, ceterisque Superioribus ejusdem Ordinis ad id ab ipso generali Capitulo deputatis personis, cujuscumque status, gradus, Ordinis, & præminentie existentibus, per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac nos & Sedem prædictam, etiam ad quorumvis etiam Imperatorum, Regum, Reginarum, Ducum, & aliorum Principum instantiam, vel etiam Motu proprio, & ex certa scientia, etiam consistorialiter, & cum causæ cognitione sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, clausulis irritantibusque, ac aliis decretis hæcenus quomodolibet concessa, ac etiam iteratis vicibus approbata, & Apostolicas, ac alias literas desuper concessas, & inde secuta quæcumque, adhuc dumtaxat ut Abbati generali, & aliis Superioribus Ordinis, eorumque Vicariis Monasteria hujusmodi, ut supra dictum est, visitare liceat, auctoritate Apostolica tenore præsentium moderamus & limitamus.

§. 6. Inhibentes Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, & aliis Superioribus, Prælati videlicet sub interdicti ingressus Ecclesiæ, ac suspensionis à divinis, Abbatibus vero, & aliis inferioribus, præfatis, ceterisque quibuscumque personis sub excommunicationis latæ sententiæ penis, ne Abbatem generalem, & alios Superiores Ordinis eorumque Vicarios præfatos, quo minus visitationes juxta regularia Ordinis instituta hujusmodi libere facere possint, per se vel interpositas personas, directe vel indirecte, aut alias quocummodo impedire audeant, vel præsumant.

§. 7. Ipsis autem Monasteriorum, & aliorum locorum prædictorum Abbatibus, Abbatissis, Prioribus, Conventibus, Monachis, Monialibus, & personis, ut Generalem, aliosque Abbates Superiores, & Vicarios præfatos, ut præsertim visitare volentes, benigne recipiant, eisque, & eorum mandatis in concernentibus eorum visitandi officium hujusmodi pareant, & humiliter obediant, in virtute sanctæ obedientiæ, & sub similis excommunicationis pœna districte præcipientes mandamus.

§. 8. Et insuper, universa & singula privilegia, prerogativas, immunitates, exemptiones, libertates, indulgentias, etiam quatenus sint in usu, plenarias, conservatorias, facultates, indulta, & alias gratias Cistercii, & quatuor filiabus nuncupatis Monasteriis, & Ordini, ejusque Capitulo generali, defensoribus, & aliis Superioribus præfatis per patrem. Paschalem II. Callistum etiam II. Eugenium III. Alexandrum etiam III. Lucium similiter III. Honorium etiam III. Gregorium IX. Innocentium IV. Sixtum pariter IV. præsertim Commendas, & Commendatarios Monasteriorum, & aliorum locorum Ordinis hujusmodi concernentia, & quod Commendatariis pro tempore existentibus nullam in Monasteria dicti Ordinis sibi Commendata, & eorum Monachos jurisdictionem exercent

Abbatemque & alios Superiores, omnia loca & personas visitare, & corrigere posse jubet.

Indulta Episcopis & aliis concessa visitandi loca & personas annullat quatenus impediant Abbatem & Superiores Ordinis in visitando.

Inhibito contra Episcopos & alios, impediens eos in visitationibus.

Monasteria recipient eisdem visitatores.

Confirmatio omnium gratiarum & indultorum Ordinis Cisterciensis.

Ordo Monachorum Cisterciensis jamdiu in summa puritate, virtute, & sanctitate floruit, sed paulatim in defolationem prolapsus est.

Cujus reformatio & restitutio nunc fieri posse præponitur, si ejus institutum & ritus renoventur & exemptiones incontinenter concesso amoveantur.

Hic ideo Pont. exemptiones omnes ab Abbate, Capitulo, & aliis concessas adversus Ordinis statuta revocat.

Confirmatio
statutorum
eiusdem Or-
dinis.

Hanc & su-
pra dicta con-
firmavit Gre-
gor. XLI. inf.
in ejus bulla
18.

Renovatio
eorundem
indultorum.

In Monaste-
riis Commendatis
personis extra Ordinem
institui debet mensa
Conventualis distincta
ab Abbatibus, & sufficienti
pro Monachis
&c.

Hoc declarat
Greg. ibid.

Religiosi al-
terius Ordi-
nis, intrusi,
aut ejusdem Ord.
professionem
faciant.

Uniones, &
suppressiones,
& dis-
embratio-
nes fieri ne-
queant.

ac etiam super privilegiorum, aliarumque gratiarum ipsi Ordini concessarum confirmatione, sub quarto, & sexto Idus Martii, quinto Nov. & quarto Idus Martii, quinto, & sexto Idus Martii, sexto annis Pontificatus sui Dat. respective, & quoscumque alios Rom. Pontifices predecessores nostros, ac nos, & Sedem praedictam haecenus quomodolibet concessa.

§. 9. Necnon ordinationes, & statuta ab exordio foundationis ejusdem Ordinis usque in praesentem diem in dicto generali Capitulo concorditer edita, etiam si in usu esse desierint, dummodo infra lapsum temporis memorabilis videlicet centum annorum in desuetudinem non abierint, ac praeterea super contributionibus, per omnia & singula ejusdem Ordinis Monasteria Abbati Cistercii, seu Capitulo generali praedictis faciendis, & solvendis, ita quod omnes etiam Commendatarii ad illarum solutionem, etiam sub similis excommunicationis latae sententiae poena teneantur, & ad id etiam quibuscumque privilegiis, etiam ab ipsa Sede obtentis, non obstantibus compelli possint, ac prout illa concernunt omnia & singula alia in literis Apostolicis, aliisque documentis desuper confectis contenta, & inde secuta quaecumque, sicut tamen & honesta, eisdem auctoritate & tenore, ex certa scientia confirmamus & approbamus, ac illis perpetuae & inviolabilis firmitatis robur adjicimus, omnesque, & singulos juris, & facti defectus, si qui forsitan intervenerint in eisdem, supplemus.

§. 10. Ac poriori pro cautela, eadem omnia & singula privilegia, prerogativas, & facultates, exemptiones, indulgentias, conservatorias, indulta, & alias gratias eisdem modo & forma quibus Ordini ejusque Abbatibus, Capitulo generali, & Superioribus praefatis per dictos predecessores concessa sint, illis de novo auctoritate, & tenore praedictis concedimus, & innovamus.

§. 11. Et praeterea quod in Monasteriis dicti Ordinis, quae diversis personis (etiam si Episcopi, Archiepiscopi, Patriarchae, & S. R. E. Cardinales existant) de presenti commendata esse reperiuntur, & in futurum commendari, seu alias quoquomodo aliis quam Ordinis ipsius personis concedi continget, ubi non fuerit instituat mensa conventualis ab Abbatibus distincta & separata, cum annuis fructibus, redditibus, & proventibus juxta Monasteriorum ipsorum facultates, competentibus, & honestis, pro sufficienti Conventus & Monachorum, aliorumque religiosorum ejusdem Ordinis numero, in uno quoque ex ipso Monasterio per ipsos Generalem, & ceteros Ordinis ipsius Superiores, aut eorum Vicarios ordinando, ad quam mensam, sic instituendam, congruosque redditus assignandos ipsi Commendatarii omnino teneantur, & ad id etiam per censuras Ecclesiasticas fructuum, reddituum, & proventuum sequestrationes, & alia opportuna juris remedia cogi possint, & debeant.

§. 12. Et quia, sicut accepimus, in multis dicti Ordinis, tam virorum, quam mulierum Monasteriis quamplures Mendicantium, & aliorum Ordinum religiosi utriusque sexus, ab immemorabili tempore citra se intruserunt, & persaepe intrudere praesumunt, quod illi vel inde realiter, & cum effectu ejiciantur, vel saltem habitum infra annum, suscipiant, ac professionis regularis ejusdem Cisterciensis Ordinis expresse emitant, debitamque obedientiam, & reverentiam illius Abbati generali, & reliquis Superioribus praefatis praestent, ac divinum officium secundum ipsius Ordinis morem celebrent, seque regularibus ejus institutis omnino conforment.

§. 13. Uniones autem, annexiones, & incorporationes, ac suppressiones, & extinctiones Monasteriorum, & Prioratuum ejusdem Ordinis, aut fructuum, reddituum, & proventuum illorum, dismembrationes, & locis aliis quantumlibet piis, applicationes, & alia quavis perpetuae illorum alienationes, cuicumque alteri loco ex quavis causa quan-

tumcunque honesta, urgenti, & necessaria, absque speciali & expresse ejusdem Abbatis generalis pro tempore existentis consensu in scriptis, causaque prius a Capitulo praefatis, vel alias rite cognita, etiam per nos, & Sedem praedictam etiam de Fratrum consilio, ac ad quorumvis etiam Imperatoris, Regum, Reginarum, Ducum, & aliorum Principum instantiam deinceps nullatenus fieri possint, & si aliter fiant, nullius omnino sint roboris, neque Ordo, ejusque Superiores, & personae, praefatis literis desuper conficiendis obedire debeant.

§. 14. In his vero quo haecenus unita, annexa, & incorporata fuerunt, servetur praefata forma singularum literarum super his unionibus, incorporationibus, seu applicationibus, aut aliis quibuscumque dispositionibus expeditarum. Ita tamen quod Monaci in singulis Monasteriis hujusmodi degentes, sint, & remaneant sub obedientia, & correctione Abbatis Generalis, aliorumque Superiorum Ordinis Cisterciensis praedictorum, & suorum Vicariorum in omnibus, & per omnia, perinde ac si uniones, annexiones, & incorporationes hujusmodi non emanassent, etiam si in illis aliter caveatur, & usus, non tamen a tempore immemorabili, ut praefertur contrarium obtineat, quae contra praesentis statuti tenorem nemini suffragentur.

§. 15. Postremo quod nullae alterius Ordinis Moniales, Abbatissae Monasteriorum Monialium dicti Ordinis assumi, vel si assumantur in eisdem Monasteriis recipi possint, nisi illorum immediato patre Superiore praesente, qui illis habitum exhibeat, & ab eis tria substantialia vota, necnon juramenta observandi statuta dicti Ordinis, ac secundum ea vivendi recipiat.

§. 16. Quodque omnia & singula Monasteria, Ordinis hujusmodi, tam virorum, quam mulierum ubicumque existentia, seu eorum Abbates, vel Priores etiam Commendatarii, Abbatissaeque vel Priorissae, in signum obedientiae & superioritatis, solita regalia videlicet contributiones solitas, etiam Abbati Monasterii Cistercii, & Capitulo generali praefatis, omnibus exceptione, recusatione, praescriptione, & alia excusatione penitus cessantibus, annuatim solvere teneantur, & ad id compelli possint, sub excommunicationis latae sententiae poena eisdem scientia auctoritate & tenore, perpetuo statuimus & ordinamus.

§. 17. Ac limitationem, moderationem, inhibitionem, praecceptum, mandatum, approbationem, confirmationem, adjectionem, supplementationem, concessionem, innovationem, statuta, & ordinationes, aliaque praemissa, ac praesentes literas de subreptionis, vel obreptionis, aut nullitatis vitio, seu intentionis nostrae defectu, quovis praetextu quaestiove colore, aut ingenio, nullatenus notari, argui, vel impugnari posse, neminemque illa quavis de causa, etiam justissima impugnantem in judicio vel extra audiendum esse, nec illa sub quibuscumque similibus, vel dissimilibus concessionem, gratiarumque revocationibus, suspensionibus, modificationibus, limitationibus, vel derogationibus, etiam per nos & successores nostros, ac Sedem praedictam, etiam Imperatores, Regum, Reginarum, Ducum, & aliorum Principum intuitu & contemplatione, aut in eorum, vel etiam in nullius favorem sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis, ac etiam vim contractus, aut legis, seu statuti perpetui inducentibus decretis, & alias quomodolibet concessis & concedendis, a quibuscumque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis quomodolibet editis, & edendis aliquatenus comprehendendi, neque illis ulla unquam tempore, etiam per Sedem praedictam derogari posse, nec derogatum censeri, nisi de toto tenore, & data praesentium expressa mentio habita, & derogatio, suspensio, limitatio, revocatio, aliaque praedicta de Cistercii, aliorumque quatuor primorum nuncupatorum Abbatum praedictorum expresse consensu facta fuerint, & si aliter derogari, revocari, suspendi, li-

Monachi de-
gentes in Mo-
nasteriis, piis locis
remanere su-
periorum
hujus Ordinis.

Moniales al-
terius Ord.
quando reci-
pi possint in
Abbatissas
hujus Ordinis.

Monasteria
quocumque
teneantur ad
contributio-
nes solvendas
Abbatibus, &
Capitulo.

Clausulae hu-
jus consti-
tutionis
praeservativa

Decretum
irritans.

mitari, corrigi, aut emendari contigerit, huiusmodi derogationem, revocationem, suspensionem, limitationem, correctionem, & emendationem, nullius esse roboris, vel momenti, & quoties illa vel illa emanabunt, toties in primum, & validissimum statum restituta, & de novo etiam sub quacunque data per ipsum Abbatem Monasterii Cistercii pro tempore existentem eligenda, concessa esse, & censeri.

Clausula de
rogatoria.

§. 18. Et ita per quoscunque Iudices, & Commissarios quavis auctoritate fungentes, etiam S. R. E. Cardinales, ac causarum Palatii Apostolici Auditores, sublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi, & interpretandi auctoritate, & facultate, iudicari, definituri, & interpretari debere, & quicquid fecus & quouam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter attentari contingerit, irritum & inane decernimus.

Fides danda
transumptis
huius bullae.

§. 19. Non obstantibus praemissis, ac nostra de non tollendo ius quæsitum, & aliis quibuscumque Apostolicis necnon in Provincialibus, & Synodalibus Conciliis editis generalibus vel specialibus constitutionibus, & ordinationibus, ac quibuscumque etiam iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, declarationibus, & decretis, privilegiis quoque, indultis & litteris Apostolicis praefatis, aliisque Congregationibus, Praefulibus, Abbatibus, Ecclesiis, Monasteriis, Capitulis, Conventibus, Provinciis, ac personis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis in genere vel in specie, etiam motu simili, aut etiam consistorialiter, ac alias quomodolibet concessis, & etiam iteratis vicibus approbatis, & innovatis, quibus omnibus & singulis, etiam si pro illorum sufficienti derogatione de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum virescens tenores, formas, datas & decreta in eis apposita, ac si de verbo ad verbum infererentur, praesentibus pro sufficienter expressis & insertis habentes, illis aliis in fuo robore permanentibus, hac vice duntaxat specialiter & expresse derogamus, & sufficienter derogatum esse decernimus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Fides danda
transumptis
huius bullae.

§. 20. Et quia difficile foret easdem praesentes ad diversa loca Provincialia circumferre, volumus & dicta auctoritate decernimus, quod illarum transumptis, seu exemplis etiam formis impressis, manu alicujus publici Notarii subscriptis, & sigillo Abbatis generalis, aut alicujus ex aliis Superioribus Ordinibus huiusmodi munitis, plena & indubia, ac ea prorsus fides ubique etiam in iudicio adhibeatur, quæ ipsis originalibus litteris adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ. Nulli ergo &c.

Dat. P. An. 4.
die 26. Sept.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1563. sexto Kal. Octobris, Pontificatus nostri Anno quarto.

LXXI.

Caupones & Albergores Urbis, non tenentur de furtis rerum eis non consignatarum, commissis in eorum hospitibus, si hoc ipsi hospitibus notificent in eorum ingressu.

Solent hi Caupones & Albergores in eorum hospitibus publice affixam tenere hanc bullam idiomate vulgaris conscriptam, ad se liberandum ab huiusmodi notificatione.

Edita An. D.
1563.

PIUS PAPA QUARTUS.
Motu proprio, &c.

Causa huius
constitut.

Cum sicut non sine animi nostri displicentia nobis innotuit, à quampulvis annis citra in Alma Urbe nostra contigerit, & in praesentiarum saepe contingat, quod dilecti filii Societas Hospitum, Albergores, & Caupones dictæ Urbis, ab hospitibus & advenis ad dictam accedentibus, ac aliis in ea

moram trahentibus Hospitariis, & Albergores, super eo quod hospites, & advenæ, & Albergores asseruerint, & asserant, seu verius eorum versata & caliditate finxerint & fingant, se multas, & diversas pecuniarum, & aliorum bonorum quæ nunquam Hospitibus & Albergores huiusmodi consignaverant, neque consignarunt, aut in rei veritate forsitan habuerant neque habuerunt, quantitates fecum ad hospitibus attulisse, & deinde utrumque sumptibus & expensis per eos factis exoluti, & liberi evadere possent, atque possint, illas & illa perdidisse, ac ab Hospitibus, Albergores, & Cauponibus ipsis, vel aliis personis furto subtrahere & sublata fuisse, illos de facto huiusmodi accusando, & calumniando diversimode, etiam usque ad incarcerationem, & alia juris & facti remedia, etiam ultra refectionem fortis principalis molestati fuerint, ac quotidie molestentur & vexentur, in scandalum plurimorum, dictæque Societatis dedecus & vilipendium, ac rerum & bonorum suorum non modicum dispendium & gravamen.

§. 1. Idcirco ad fraudibus, versutis, calumniis, ac inconvenientibus, necnon coinquinamento, & gliscenti contagio huiusmodi, ac aliis praemissis omnibus & singulis obviandum, Motu simili & certa nostra scientia, ac de Apostolica potestate plenitudine volumus, statuimus, & ordinamus deinceps perpetuis futuris temporibus quascumque merces, pecuniarum summas, alias res & bona usque ad quancumque quantitatem ascendentes per eosdem hospites, & advenas, ac alios Albergores sibi quomodocumque & qualitercumque furto subtrahere, & sublata fore asserentes, ac prærendentes à dictis Hospitibus, Albergores, & Cauponibus, ac eorum quolibet insolitum, nisi illa prius per eosdem advenas, ac hospitarios, & albergores, eisdem Hospitibus, Albergores, & Cauponibus in custodiam data, & consignata fuerint, minime repeti, nec eosdem Hospites, Albergores, & Caupones desuper conveniri, capi, arrestari, incarcerari, detineri, aut quomodo realiter, vel personaliter molestari, vexari posse neque debere. Quæ omnia prædictis hospitibus, & advenis, ac albergores in eorum ingressu dicti Hospites, Albergores, & Caupones notificare & intimare debeant, & teneantur.

§. 2. Necnon omnia & singula, gratias, concessionem, immunitates, privilegia, & indulta per quoscumque Rom. Pont. prædecessores nostros, ac nos & Sedem Apostolicam prædictæ Societati, & eorum singulis, in genere vel in specie concessis & concessa, necnon quæcumque capitula, statuta, & ordinationes per eos hætenus quomodolibet condita & facta, licita tamen & honesta, quatenus sint in usu, eadem auctoritate Apostolica tenore praesentium confirmamus & approbamus, illisque perpetuæ firmitatis robur adjicimus, omnesque & singulos, tam juris, quam facti, si qui forsitan intervenierint ac solemnitarum desuper forsitan omisfarum defectus supplemus.

§. 3. Seu in eisdem si Societati videbitur sibi quæcumque alia statuta, ordinationes, & capitulationabilia & honesta, ac sacris canonibus non contraria condendi, & edendi, ac condita & edita pro temporum qualitate, quoties eis videbitur, alterandi, mutandi, & delendi, ac alia de novo faciendi, quæ postquam condita & edita, ac mutata, & de novo facta, & per Camerarium approbata fuerint, eo ipso auctoritate approbata & confirmata sint & esse censeantur, plenam & liberam facultatem, licentiam & potestatem concedimus.

§. 4. Et ita per quoscunque Iudices, & Commissarios, quavis auctoritate & potestate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Cardinales, necnon dilectos filios nunc & pro tempore existentes dictæ Urbis Conservatores, iudicari & definituri, ac observari debere, sublata &c. Si quis &c. irritum quoque &c. decernimus & declaramus.

§. 5. Non obstantibus constitutionibus, ordinationibus, ac statutis, etiam iuramento &c. roboratis, pri-

Hospites Urbis non possunt molestari pro rebus in eorum hospitibus furto subtrahatis, & eis antea non consignatis, per advenas quibus Hospites, & Caupones hoc notificaverint.

Ita notificationes fieri solent eodem modo, quo dixi hic in rubr.

Confirmatio privilegiorum & ordinationum Societatis Hospitum.

Facultas condendi statuta licita & sacris Canon. non contraria.

Decretum irritans.

Clausula derogatoria.

Claufularum
repetitio.Dat P An.4.
die 10 Dec.

LXXII.

Edita An. D.
1564.Causa con-
fist.Revocatio
exemptionis

vilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis prædictis, Conservatoribus, & quibuscumque aliis personis sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriarum derogationis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis etiam iteratis vicibus, etiam pari motu concessis, &c. & concedendis, quibus omnibus etiam si pro illorum sufficienti derogatione de illis &c. tenores &c. in literis latissime extendentes, hac vice derogamus, cæterisque contrariis quibuscumque, cum clausulis opportunis & consuetis.

Fiat ut petitur. I.

§. 6. Et cum absoluteione à censuris, ad effectum &c. & quod tenores capitulorum, ac statutorum, & ordinationum, per Societatem prædictam quomodolibet confectarum habeantur pro expressis seu in toto vel in parte exprimi possit. Et de voluntate, statuto, ordinatione, confirmatione, approbatione, adjectione, suppletionem, concessione, decreto, declaratione, & derogatione, ac aliis præmissis, quæ hic pro sufficienter ad partem repetitis habeantur, perpetuo in forma gratiosa latissime extendentes ex certa nostra scientia, & ad perpetuam rei memoriam. Et cum deputatione executorum opportuna qui assistant, cum potestate citandi &c. etiam per editum &c. etiam dictos Conservatores &c. inhibendi &c. etiam simili edito aggravandi, reaggravandi, interdicens &c. invocato &c. brachii secularis, &c. cum derogatione constitutionis de una & duabus non tamen tribus dietis, ac quorumcumque statutorum &c. privilegiorum, indulgentiarum & litterarum Apostolicarum, quibuscumque etiam S. R. E. Card. necnon dictis Conservatoribus, & aliis quibuscumque, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis in contrarium quomodolibet etiam aequali motu &c. concessis & concedendis: quorum omnium tenores &c. latissime exprimi possint, ad effectum sufficientis derogationis eorum, ita quod non obstant &c. latissime extendentes. Et quod præmissorum omnium & singulorum, aliorumque circa præmissa necessariorum, major & venior specificatio & expressio fieri possit, in literis per breve nostrum, seu officium contradicatarum in forma gratiosa si videbitur expedienda seu quod præsentis Motus proprii sola signatura sufficiat, & ubique fidem faciat in iudicio & extra, regula contraria non obstante.

Datum Romæ apud S. Petrum, quarto Idus Novembris, anno quarto.

Revocatio exemptionum à solutione Dohanæ Urbis, quibuscumque præterquam locis Pii concessarum, vel in capitulis Dohanæ expressarum. Et declaratio quoad exemptiones ob numerum duodecim filiorum.

Magis generalem revocationem vide inf. in hoc Tom. II. in Sixt. V. const. 2. Inter. & Pauli V. const. 11. In maximis.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Licet felices recordationis Paulus Papa Tertius prædecessor noster, rationabilibus causis prænaratis, Motum proprium ediderit, Nihilominus tanta est hominum importunitas, ut etiam Procuretor nostro Fiscalis nobis fuit expositum, quod multe similes & dissimiles prænarate exemptiones postea, tam ab ipsomet Paulo Tertio, quam à Julio Tertio Marcello Secundo, & Paulo Quarto successoribus Pontificibus, & etiam à nobis, etiam sub signatura Motus proprii, exortæ fuerunt, unde Dohanæ Urbis, illarumque Dohanerii in eadem, & forsan majores, quam in præinserto narrantur difficultates & controversas denno inciderunt, cum magno etiam nostro & Cameræ præfate præiudicio, cum omnia tandem in ipsius Cameræ detrimentum retorquantur.

§. 1. Nos igitur eisdem quibus præfatus Paulus prædecessor, & aliis rationabilibus animam nostrum

moventibus rationibus & causis, & præsertim quia nunc multo plures sunt ex proventibus dictarum Dohanarum in certos usus per ipsam Cameram assignatæ summæ, ita quod nihil restat unde summæ pro exemptionibus huiusmodi defalcari, seu detrahi possint, omnes singulares lites & causas præmissorum occasione quomodolibet in quacumque instantia, & coram quibuscumque iudicibus pendentes ad nos pari modo advocamus & extinguimus. Omnesque & singulas gratias per quoscumque prædecessores nostros, & etiam per nos quomodolibet, & ex quacumque etiam maxima causa, præter expressas in capitulis inter Cameram & Dohanerios præfatos stipulatis concessas, exemptiones, immunitates, ac privilegia, quo ad præfatas Almæ Urbis Dohanas, earumque Dohanarum solutionem, & inviolabilem observationem dictorum capitulorum cum Dohaneris præsentibus & futuris, per eandem Cameram factorum & faciendorum, præterquam pro piis & miserabilibus locis, & pro illis dumtaxat, quibus ob numerum duodecim filiorum concessa & concessa fuerint, & quousque duodecim illi superstitibus in communi vivent, ipsaque Urbe cum eorum familiis continuo degent, & pro rebus dumtaxat quas aliunde (excepto vino quod pro eorum usu in Ripa Almæ Urbis nostræ in barca existente comparaverint) in Urbem ipsimet suo sumptu convehi faciant pro suo proprio usu tantum, non autem pro mercimoniis & aliis rebus, quæ ad Urbem, ut vendantur, per eos, seu per alios convehentur, seu quas ipsi aliter quam pro usu proprio convehi & portari faciant, in ceteris autem rebus & pro aliis personis, nullis prorsus exceptis, præsentium tenore cassamus, irritamus, annullamus, & revocamus, ac pro cassis, irritis, & nullis habemus, haberique & eis nullatenus suffragari volumus.

§. 2. Insuper super eo quod res & bona præfata, etiam victualia, quas & quæ immunitates præfatas habentes pro usu velle, & esse dicent, debeant fieri mandata in scriptis subscripta per patremfamilias, si vivet, aut illo defuncto per illum ex ipsis duodecim filiis qui erit major natu, aut qui domus regimen habeat, etiam cum iuramento attestari, res, bona, & victualia huiusmodi esse pro eorum usu proprio, & ad eorum instantiam esse advecta. Et quod etiam fachini, gestatores, & barillarii, quorum opera in illis deferendis usi fuerint, fiat solita fides quomodo res, bona, & victualia præfata, in ipsorum immunitatem habentium, domum delata, & recondita fuerint, alias Dohanerii non debeant immunitates ipsas admittere, sed consuetam ab aliis non immunibus solutionem exigant. Et insuper quod si contingat aliquem ex ipsis filiis ob prælaturam fortasse adeptam, vel aliam quamcumque causam propriæ suæ familiæ, & sibi inservientium numerum augere, non debeat immunitas præfata suffragari pro numero personarum, ut præfertur, seu alias quomodolibet accrescentium, sed suffragetur, admittaturque dumtaxat pro numero, & habita ratione personarum quæ erant tempore impetratæ immunitatis. Et si ipsi Dohanerii aliter quam ut præfertur, immunitates ipsas receperint, pro illis quantitatibus, in quibus præmissa excedit, & non observabunt, Camera non teneatur eis facere aliquam remissionem.

§. 3. Et sic per ipsos Camerarium & Clericos Cameræ, & alios quoscumque iudices etiam S. R. E. Cardinales in quacumque instantia, sublata &c. iudicari, irritumque, &c. quicquid secus &c. decernimus.

§. 4. Mandantes Camerario, Præsidenti, & Clericis præfatis, ut revocationem, cassationem, irritationem, & annulationem, ac decretum nostrum, huiusmodi, omniaque & singula alia præmissa, sub indignationis nostræ pena observent, & ab aliis inviolabiliter observari mandent & faciant.

§. 5. Non obstantibus præmissis, constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, privilegiis, indultis, & immunitatibus prædictis, tam sub plumbo, quam

quoad solutionem Dohanæ Urbis quibuscumque præterquam Pii locis vel sub num. 12. filiorum concessarum.

Declaratio circa exemptiones ob numerum 12. filiorum.

Ad quod vide etiam Pauli V. const. cit. in rubr.

Decretum irritans.

Deputatio executoris.

Clausula derogatoria.

per breve, aut alias hæcenus, ut præferatur, concessis, & in futurum, etiam cum præsentis expressa derogatione, etiam in Motu proprio, & manu nostra propria concedendis, sub quibuscumque; verborum expressio- nibus, & clausulis etiam derogatoriis derogato- riis, irritantibus, & aliis quantumcumque; fortissimis decretis, etiam si de illis pro illorum sufficienti dero- gatione, certa, & expressa forma, & individua, ac de verbo ad verbum expressio, seu insertio faciendi ef- ferret; illorum omnium tenores &c. pro expressis &c. ceterisque; in contrarium facientibus quibuscumque.

§. 6. Præsentis autem cedulæ solam signaturam re- gula contrario non obstat sufficere, & ejus exempla manu unius ex Notariis Cameræ prædictæ subscri- ptis, ubique in iudicio & extra fidem facere in libris; Cameræ præfate consuetis registrari volumus & mandamus. Placet Motu proprio. I.

Confirmatio sacri & Oecumenici Concilii Tridentini.

Ipsud Concilium indixit Paul. III. in const. Initio 33. Et post Julium III. prosecutus est hic Pont. ubi sup. in const. 23. Ad Ecclesiæ. ac Prælati ei interessentibus indulta concessis in const. 28. Circumspecti. Ordineque loci quoniam ibi in actibus publicis Prælati ha- berent declaravit in const. 24. Sicut ea, in Tomo I. Et quando ligare incipiat habetur hic infra in hoc Tomo II. in const. 80. Sicut ad.

Super interpretatione decretorum hujus Concilii, quam hic Pontifex sibi reservat, necnon & super executione ejusd. Concilii Card. Congregatione instituit hieidem Pontifex in const. 81. Alias nos. & Sixt. V. in const. 74. Immenfa, in Congregat. 8.

PIUS EPISCOPUS, &c.

Ad perpetuam rei memoriam.

Benedictus Deus, & Pater D. N. Jesu Christi, Pater misericordiarum, & Deus totius consolationis, qui respicere dignatus est, clemens suam sanctam, tot pro- cellis & tempestatibus agitatam, atque vexatam, & gravius in dies laborantem, apto tandem ei subvenit, operatoque remedio. Ad plurimas & perniciosissimas hæreses extirpari, ad corrigendos mores, & resti- tuendam ecclesiasticam disciplinam, ad pacem & concordiam Christiani populi procurandam, indictum jam pridem in civitate Tridentina oecumenicum & generale Concilium a pie mem. Paulo III. prædeces- sore nostro, & sessionibus aliquot habitis coeptum fue- rat. Ab ejus autem successore Julio in eandem Urbem revocatum, post alias sessiones celebratas variis im- pedimentis & difficultatibus objectis, ne tum quidem peragi potuerat. Itaque diutius intermissum fuerat, non sine maximo merore populi omnium, cum quo- tidie magis Ecclesiæ ejusmodi remedium imploraret.

§. 1. Nos autem post susceptum Sedis Apostol. regimen, tam necessariam ac salutare opus sicut pas- toralis sollicitudo monebat, divinæ misericordiæ fi- ducia perficere aggredi, ad iuri pio studio charissimi in Christo filii nostri Ferdinandi Romanorum Imperatorum electi, & aliorum Christianorum Regum, Rerumpublicarum, ac Princ. tandem consecuti sumus, quod nec diutius, nec nocturnis curis laborare desistimus, quodque à Patre luminum assidue precati sumus, Cum enim eam in Urbem undique ex Christ. nominis nationibus convenisset nostris convocata litteris & sua etiam ipsorum pietate excitata Episc. & aliorum insignium Prælatorum in maxima, & oecumenico Concilio digna frequentia, præter plurimos alios pios, & sacrum litterarum scientiam, divini- que & humani juris cognitione præstantes viros, præ- sentibus ipsi Synodo Sedis Apostolicæ Legatis, nobis ad hoc Concilium libertati faventibus, ut etiam de rebus Sedi Apostolicæ proprie reservatis liberum ipsi Concilio arbitrium per litteras ad Legatos nostros scriptas ultro permiserimus, quæ de sacramentis & aliis rebus quæ quidem necessaria videri sint, tractan- da, definienda, & statuenda restabant, ad confutan- das hæreses, ad tollendos abusus, & emendandos mores à sacrosancta Synodo, summa libertate, diligen- tiaque tractata, & accurate, ac mature admodum de-

finita, explicata statuta sunt. Quibus rebus perfectis Concilium tanta omnium qui illi interfuerunt con- cordia peractum fuit, ut consensus eum plane à Do- mino effectum fuisse confiteretur, idque in nostris atque omnium oculis valde mirabile fuerit. Pro quo tam singulari Dei munere supplicat, statim in Alma hac Urbe indiximus, quæ magna Cleri, & populi pietate celebrata fuerant laudisque & gratias divine ma- jestati merito persolvendas curavimus, cum ejusmo- di Concilii exitus spem magnam, & prope certam attulerit, fore ut majores in dies fructus ad Eccl. ex ipsius decretis, constitutionibusque perveniant.

§. 2. Cum autem ipsa sancta Synodus pro sua erga Sedem Apostol. reverentia, antiquorum etiam Conciliorum vestigiis inhærens decretorum suorum omnium, quæ nostro, & prædecessorum nostrorum tempore facta sunt, confirmationem nobis petierit, decreto de eare in publica sessione facto. Nos ex Le- gatorum litteris prius, deinde post reditum eorum ex eis, quæ Synodi nomine diligenter retulerant, postu- latione ipsius Synodi cognita, habita super hac re cum Venerab. fratribus nostris S. R. E. Card. delibera- tione matura, sanctique Spiritus in primis auxilio invocato, cum ea decreta omnia Catholica, & populo Christiano utilia, ac salutaria esse cognovissemus, ad Dei Omnipotentis laudem, de eorumdem statum nostrorum consilio & assensu, in Consistorio nostro secreto illa omnia & singula, auctoritate Apostolica hodie confirmavimus, & ab omnibus Christi fidel. sus- cipienda, ac servanda esse decernimus, sicut harum quoque litterarum tenore ad clariorem omnium notitiam confirmamus, & suscipi observarique decernimus.

§. 3. Mandamus autem in virtute sanctæ obedi- entia, & sub penis à sacris Canonibus constitutis, aliisque gravioribus, etiam privationis, arbitrio nostro infligendis, universis, & singulis Venerab. fratri- bus nostris Patriarchis, Archiepisc. Episcopis, & aliis quibuscumque Ecclesiæ Prælati, cujuscumque status, gradus, ordinis, & dignitatis sint, etiam si Cardinalatus honore præfulgeant, ut eadem decre- ta & statuta in Ecclesiis suis, civitatibus, & diocæ- sibus, in iudicio & extra iudicium diligenter obser- vent, & à subditis quicunque suis, ad quos quomodo- libet pertinent, inviolabiliter faciant observari, contraditores quoslibet & contumaces, per senten- tias, censuras, & penas Eccl. etiam in ipsis decretis contentas, appellatione postposita compescendo, in- vocato enā, si opus fuerit, brachii secularis auxilio.

§. 4. Ipsum vero charissimum filium nostrum Im- peratorem electum, ceterosque Reges, Respublicas, ac Principes Christianos monemus, & per viscera mi- sericordiæ D. N. Jesu Christi obtestamur, ut quæ piete, ac pari studio divini honoris, & populorum suo- rum salutis causa, pro Sedis quoque Apostol. & sacre Synodi reverentia ad ejusdem Concilii exequenda, & observanda decreta Prælati, cum opus fuerit, auxilio & favore suo adfint, neque adversantes sanæ ac salu- tati Concilii doctrinæ, opinionones à populis ditio- nis suæ recipi permittant, sed eas penitus interdiciat.

§. 5. Ad vitandum præterea perverfionem, & confu- sionem quæ oriri posset funiculi; liceret, prout ei li- beret in decreta Concilii commentarios, & interpreta- tiones suas edere, Apost. auctoritate inhiemus om- nibus, tam ecclesiast. personis cujuscumque; sint ordi- nis, conditionis, & gradus, quam laicis quocumque; honore, ac potestate præditis, Prælati quidem sub inter- dicti ingressus Ecclesiæ, aliis vero quicunque; fuerint, sub excommunicationis latæ sententiæ penis, ne quis sine auctoritate nostra audeat ullos commentarios, glossas, annotationes, scholia, ullumve omnino inter- pretationis genus super ipsius Concilii decretis quo- cumque; modo edere, aut quiscumque quocumque; nomine, etiam sub prætextu majoris decretorum corroboratio- nis, aut executionis, aliove quocumque colore statueret.

§. 6. Si cui vero in eis aliquid obscurius dictum, & statutum fuisse, eamque ob causam interpretationem, aut decisione aliqua egere visum fuerit, ascendat ad locum quem Dominus elegit, ad Sedem videlicet

Confirmat modo Pont. fide dictum Conc. quam confirmatio- nem Synodus petiit, ut ha- beatur pro fin. de Conc.

Præcipitque Prælati, & aliis illud ob- servent. At quando ligare inci- piat dixi in rubr.

Hortatur etiam Imper. Reges, & Principes ad observatio- nem ejusdem Concilii.

Prohibetque etiam commen- tarios vel inter- pretationes super de- cretis Conc.

Declaratio- nemque Concilii sibi reservat. Hoc voluit etiam Syno- dus Trid. in sess. 25. cap. ult.

Decretum irritans.

Iussio publicandi hanc bullam.

Transumptorum fides.

Sanctio poenalis.

Dat. P. An. s. die 26. Jan. t. tertio.

Papæ subscript.

Cardinalium subscriptiones.

LXXIV.

Edita An. D. 1564.

Exordium.

Apost. omnium fidelium magistrum, cuius auctoritatem etiam ipsa sancta Synodus tam reverenter agnovit. Nos enim difficultates, & controversias si quæ ex eis decretis ortæ fuerint nobis declarandas, quemadmodum ipsa quoque sancta Synodus decrevit, reservamus, parati, sicut ea de nobis merito confisa est omnium provinciarum necessitatibus, ea ratione, quæ commodior nobis visa fuerit, providere.

§. 7. Decernentes nihilominus irritum, & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit attentari.

§. 8. Ut hæc autem ad omnium notitiam perveniant, neve quis excusatione ignorantis uti possit, volumus & mandamus, ut hæc litteræ per aliquos curiæ nostræ Cursores in Basilica Vatic. Princ. Apost. & in Eccl. Lateran. tunc cum in eis populus, ut Missarum solemnibus interfuit, congregari solet, palam, & clara voce recitentur & postquam recitata fuerint ad valvas earum Eccl. itemque Cancel. Apost. & in loco solito Campi Floræ affigantur, ibique ut legi & omnibus innotescere possint, aliquantisper relinquatur. Cum autem inde amovebuntur reliquis de more ibidem exemplis, in Alma Urbe ad impressionem tradantur, quo commodius per Christ. nominis Prov. & Regna divulgari possint.

§. 9. Transumptis quoque earum, quæ manu aliquis publici Notarii scripta, subscriptave, & sigillo ac subscriptione aliquis personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munita fuerint, fidem sine ulla dubitatione haberi mandamus atque decernimus.

§. 10. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ confirmationis, monitionis, inhibitionis, reservationis, voluntatis, mandatorum, & decretorum infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Dat. Romæ apud S. Petr. Anno Incarnationis Dñice millesimo quingentesimo sexagesimo t. quarto septimo Kal. Febr., Pontificatus nostri Anno quinto.

Ego Pius Catholicæ Ecclesiæ Episcopus.

Si mei non fuerint dominati tunc immaculatus ero.

Ego F. Card. Pisanus Episc. Ostien. Decanus.

Ego Fed. Card. Cæsius Episc. Portuen.

Ego Jo. Card. Moronus Episc. Tusculanus.

Ego A. Card. Farnesius Vicecanc. Episc. Sabinen.

Ego R. Card. S. Angeli Major Pœnit.

Ego Jo. Card. Sancti Vitalis.

Ego Jo. Mi. Card. Saracenus.

Ego Jo. B. Cicada Card. S. Clementis.

Ego Scipio Card. Pisarum.

Ego Jo. Card. Reomanus.

Ego Fr. M. G. Card. Alexandrinus.

Ego F. Clemens Card. Araceli.

Ego Jac. Card. Sabellus.

Ego B. Card. Salviatus.

Ego Ph. Card. Aburd.

Ego Lud. Card. Simoneta.

Ego F. Card. Paciecus, y de Tol.

Ego Marcus Antonius Card. Amulius.

Ego Jo. F. Card. de Gambara.

Ego Carolus Card. Borromæus.

Ego M. S. Card. Constantien.

Ego Alph. Card. Gesualdus.

Ego Hip. Card. Ferrar.

Ego Franciscus Card. Gonzaga.

Ego Guid. Afc. Card. Camerarius.

Ego Vitellotius Card. Vitellius.

Græci subijciuntur jurisdictioni Ordin. circa ea quæ Dei cultum, Sacram. administrat., animarumque salutem, & hærefum extirpationem concernunt.

Alia de Græcis notavi plenè in const. 14. Innoc. IV. Sub catholica. in Tomo I.

PIUS PAPA QUARTUS.

Ad futuram rei memoriam.

Romanus Pontifex precipuus æquitatis, & religionis assertor, facultates, & gratias ab Apost.

olica Sede concessas, ex quibus tempore procedente animarum pericula, & inter Catholicos scandala provenire animadvertit, pro sui pastoralis officii debito mature revocare consuevit.

§. 1. Sane nonnulli locorum Ordinarii nuper ad audientiam nostram referri curarunt, quod in quampuribus Regni Siciliæ citra, & ultra Pharus, & aliis Christiani nominis civitatibus, & locis magna Græcorum, tam religioforum, & secularium clericorum, quàm laicorum multitudo reperitur, qui Ecclesiæ Græcæ mores, & ritus obseverantes, seq. suos proprios ejusdem nationis Prælatos habere, ac illis, non autem locorum Ordinariis subesse, sed imunitatem, aliorumque privil. sibi per secl. rec. Leon. X. Paul. III. Jul. etiam III. & forsitan alios Rom. Pont. prædecessores nostros, & dictam Sedem antiquius concessorū prætextu, se ab eorumdem Ordin. jurisdict. & superioritate exemptos esse pretendentes, impunitate sibi propoita, in diversas hereticas, nefariasque opiniones, & absurda deliramenta passim prolabantur, afferentes inter alias eorum blasphemias nullum esse defunctorum purgatorium, Rom. Pont. aliquam in eos jurisdictionem, vel auctoritatem habere negantes, indentias ab illo concessas damnanter, ecclesiasti. sententias, & censuras ab eo latas spernentes, S. Dei genitricis V. Mariæ, beatorum Apost. & aliorum Dei Sanctorum felicitates ab Eccl. Rom. sanctisq. Patribus ordinatas non observantes, sanctiss. Eucharistiæ Sacram. suis infantibus in Bapt. exhibentes, inhumata defunctorum cadavera superstitione quadam impia, & plusquam barbarica è sepulchris eruentes igneque comburentes, Ordin. locorum, quos habitât, visitationem, jurisdictionemque contemnentes, & Ecclesiasti. disciplinam perturbantes; ac demum hujusmodi, aliisq. suis opinionibus erroneis atq. sacrilegis populos Latinos inficientes, correctionem legitimam suæ præsentis exemptionis clypeo repellentes, in suis impietatibus, abusibusq. consenscunt, & immoriuntur, in suarum vicinorumque populorum, præsertim simplicium animarum perniciem, & scandalum plurimorum.

§. 2. Nos igitur provide considerantes ejusdem Sedis intentionem numquã fuisse exemptionem, aliudve privilegium à se concessam iri, ut inde scelus impunitas, & animarum periculum emerget, abusibus, & periculis hujusmodi, quantum cum Deo possumus, tempestive obviare volêtes, ac quarcumque exemptionum, aliorumque privil. dictis Græcis, eorumque Prælati, Rect. Abbatibus, & aliis, tam Sancti Basilii, & alterius Ordinis regularibus, quàm secularibus, ac etiam laicis personis quocumq. nomine nuncupatis, præfatos, & alios quoscumque Rom. Pontifices prædecessores nostros, ac nos & Sedem præfatam, in genere vel in specie hæcenus concessorū, ac etiam iteratis vicibus approbatorum, & innovatorum, litterarumque defuper concessarum, & inde secutorum tenores præsentibus pro sufficienter expressis habentes, Motu proprio, & ex certa scientia nostra, ac de Apost. potestatis plenitudine, omnes & singulas exemptiones, ac prout illas concernunt, defuper concessas litteras præfatas, ad hoc videlicet, ut ipsi locorum Ordinarii quascumq. Græcorū Eccl. Monast. Prioratus, & alia pia loca, tam secularia, quàm cujusvis Ordinis regularia, eorumque Prælatos, etiam si Episc. Archiep. ac majori dignitate præfulgeant, necnon Abb. Rect. Ministros, & quasvis alias ejusdem nationis personas, in suis civitatibus & dioc. consist. quoties opus fuerit, visitare, ac in illis suam ordinariam jurisdict. plenamque & omnimodâ superioritatem, in iis quæ Dei cultum, Sacramentorum administrationem, & animarum salutem, hærefumque extirpationem concernunt, exercere, & exequi libere, & licite valeant, reliquis ipsorum Græcorum in divinis celebrandis, aliisque ritibus à Sede Apostolica approbatis, necnon privilegiis, & gratiis Apostolicis intactis remanentibus, auctoritate Apostolica tenore præsentium perpetuo revocamus, cassamus, & annullamus, ac revocatas, cassatas & annullatas esse, nec ipsis Græcis, clericis, vel laicis, eorumve Prælati, Ecclesiis, Cœnobiis, aut aliis

Græci præterdentes se exemptos à jurisdict. Ordinariorum impunitate sibi propoita committent multos errores hic expressos.

Idem Pontifex iste, eos subijci jurisdictioni Ordinarii, circa ea quæ spectant ad Dei cultum & c. & c. Ritus alios eorumdem Græcorum approbatos relevat. Sed quoad officiorum celebrationes, vide infra Pii V. const. 12. Providentia.

Decretum
irritans.

piis locis in aliquo suffragari, sed illos omnes & singulos locorum, in quibus moram traxerint Ordinariorum visitationi, correctioni, punitioni, jurisdictioni, & omnimoda superioriati in præmissis subesse, illisque tamquam superioribus suis, suarumque animarum pastoribus humiliter obedire.

Clausula
de
rogoria.

§. 1. Et sic quocumque iudices, & commissarios quavis auctoritate fungentes, etiam S. R. E. Cardinales, sublati eis quavis aliter iudicandi facultate, iudicari, & desiniri debere, ac quicquid secus à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane decernimus.

Declaratio
prædictorum.

§. 4. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque.

Fides trans-
umptorum.

§. 5. Per hoc tamen non intendimus, quod ipsi Greci ab eorum græcico ritu distrahantur, vel alias desuper quoquo modo per locorum Ordinarios, aut alios impediuntur.

§. 6. Et quia difficile foret præsentis ad diversa loca, in quibus illarum exhibitio forsan erit necessaria, circumferri volumus, & eadem auctoritate similiter decernimus, quod earumdem præsentium transcriptis etiam impressis, Notarii publici manu subscriptis, & persone in dignitate Ecclesiastica constitutæ sigillo signatis, plenaria & indubia, eaque prorsus adhibeatur fides, in iudicio & extra, quæ præsentibus adhiberi deberent, si forent exhibitæ vel ostendæ.

Dat. P. An.
die 16. Febr.

D. R. a. apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 16. Februarii 1564. Pontificatus nostri Anno quinto.

LXXXV.

Decisio in favorem Congregationis Lateranensis Canonorum regularium Ordinis S. Augustini, super lite quam de præcedentia habebat; cum Congregatione Cassinensi, alias S. Justinae, Monachorum Ordinis S. Benedicti.

De præcedentia autem eorumdem Canonorum cum omnibus regularibus, præter Canonicos saculares S. Georgii in Alga extat declaratio Pii V in ejus consil. 116. Cum ex ubi notabo. Alia de Congregatione Lateranensi notavi sup. in consil. 2. Paschal. II. Quanto in Tomo I. fol. 31. Et de Congregatione Cassinensi notavi pariter sup. in consil. 1. Julii II. Super. in d. Tomo I.

Edita An. D.
1564.

PIUS PAPA QUARTUS.

Ad futuram rei memoriam.

Exordium.

SEDIS Apostolicæ providentia circumspecta, ne sursum ea quæ in controversiis inter personas Ecclesiasticas, præsertim Altissimo sub regulari professione favulantes, exortis, pro tranquillo Religionis statu prudenter ordinavit, in molestos contentiones anfractus relabantur, majorem solet, dum id res ipsa requirit, adhibere cautionem.

Lis super
præcedentia
de qua in ru-
br. orta erat.

§. 1. Sanè nuper postquam sicut nobis innovebat, ab antiquis usque temporibus, etiam supra centum annos retroactis, lis & causa fæ controversia inter dilectos filios Rectorem generalem, & Canonicos regulares S. Augustini Congregationis Lateranensis, ex una, ac Monachos S. Benedicti Ordinis Cassinensis alias Sanctæ Justinae de Padua congregationum partibus ex altera; super illorum præcedentia, seu præcedendi subortæ, & coram diversis iudicibus, etiam in nostro Palatii Apostolicis auditorio ventilitate, dum non sine animi nostri molestia in œcumenico Concilio Tridentino, inter earumdem congregationum Abbates revocata fuerat.

Quoniam iste
Pontifex ex-
audendam
et sibi referendam
com-
missis tribus
Cardinibus
hic nomina-
tus.

§. 2. Nos considerantes, lites & controversias hi jussuodi in Ecclesia præsertim inter religiosas, & reformatas personas, quæ relictis mundi vanitatibus, votum suum in humilitatis spiritu, Domino, & Deo nostro, qui pro nobis usque adeo humiliavit, ut formam servi acciperet, persolvere profiterentur, non modicum illi præclare, Deoque præcipue dilectæ virtuti, quæ est humilitas, labem infundere,

populoque scandalum generare, ac propterea illas omni ratione submovendas, publicæque religionis tranquillitati, ac ministrorum Dei reconciliantibus, & mutua dilectioni quamprimum consulendum esserati; Motu proprio dictas causas, & controversias ubilibet, & coram quibuscumque iudicibus motas, & in quibuscumque instantiis indecisas pendentes, ab eisdem iudicibus ad nos advocavimus, illasque dilectis filiis nostris Joanni Michaeli Sanctæ Anastasie Saraceno, Joanni Baptiste S. Clementis Cicerone, ac Bernardino Scoro nuncupatis, S. R. E. presbyteris Card. audiendis, cognoscendis, & decidendis per quamdam Motus proprii schedulam, & deinde illas per aliud nostrum rescriptum eisdem Cardinalibus per eos audiendas tantum nobis referendas commisimus.

§. 3. Qui quidem Cardinales, dictis partibus earumve procuratoribus, & advocatis pluries auditis dubiisque emergentibus ad plenum discussis, & resolutis, comperto satis per eos ex compluribus literis Apostolicis, diversisque aliis documentis, rationibus & probationibus, quod ipsi Canonici fuerint, & sunt de illis clericis, à sancto Augustino, quin immo à sanctis Apostolis institutis, eisdem Canonicis, tam sæ ætque institutionis hujusmodi, quam etiam dignitatis clericalis, quæ eos statim quod professionem regularem nuntiant, insignitos esse oportet, aliarumque qualitatium in eis existentium ratione, dictamque illarum Congregationem Lateranensem præfatos Monachos, & eorum congregationem Cassinensem præcedere debere censuerunt, & concluderunt, suamque conclusionem hujusmodi ad audientiam nostram juxta ultimi nostri rescripti præfati tenorem reulerunt.

§. 4. Unde nos illorum relatione intellecta, eaque per nos diligenter examinata, quoniam eam in omnibus suis partibus veritati, & juri consonam comperimus, per nostram definitivam sententiam pronuntiavimus, sententiavimus, decrevimus, & declaravimus, Abbates, Prælatos, & Canonicos regulares congregationis Lateranensis uti clericos dimissa Superiori veste, pallio, seu cappis, in linea veste, clericali quoque habitu incidentes (quod etiam in Alma Urbe consuetum fuerat, & tunc observabatur, in processibus & omnibus aliis actibus publicis, & privatis, tam in dicta Urbe, nostroque & aliorum Romanorum Pontificum successorum nostrorum conspectu, quam alias in universis, & quibuscumque; aliis civitatibus, terris, oppidis, & locis, Abbates, Prælatos, & Monachos Ordinis S. Benedicti congregationis Cassinensis prædictos præcedere debuisse & debere, ac eosdem Abbates, Prælatos & Canonicos Regulares, dictamque eorum congregationem, ut præfertur incidentes, dictis Abbatibus, Prælatibus, & Monachis S. Benedicti & eorum congregationi in omnibus, & singulis præmissis præferendos, anteposendos, & in digniori loco collocandos fore, & esse.

§. 5. Abbates vero dictarum congregationum singulariter, & de per se absque eorum conventibus in Conciliis generalibus, provincialibus, & synodalibus, ac aliis actibus publicis, & privatis, in quibus Abbates de jure, vel consuetudine locum, & votum habent, vel pro tempore quomodolibet habebunt, inter sese juxta singulorum ipsorum Abbatum ibidem intervenientium priorem, & antiquiorem promotionem ad Abbatiam, ac illorum promotione dumtaxat, non autem Congregatione, & Ordinis cuius sint, attentis, præcedere, & præferri, & in digniori loco collocari debuisse & debere, prout ex tunc prætulimus, anteposui, & collocaimus, præferri quoque, molestationes, oppressiones, perturbationes, vexationes, & impedimenta quæcumque per Abbates, Prælatos, & Monachos prædictos, & eorum congregationem Cassinensem eisdem Abbatibus, Prælatibus, & Canonicis regularibus congregationis Lateranensis super præfatis omnibus & singulis, & illorum occasione quomodolibet factas, præstas, & illatas, factasque præfatis, & illatas, fuisse, & esse temerarias, illicitas, indebitas, & injustas, temerarias;

Qui Card.
reserunt
Pontifici
præfati ex
Canonicos præ-
cedere debe-
re.Pont. ideo
sententiavit
pr. Canonicos.Abbatesque
solarum Re-
ligionum de-
bere præce-
dere singula-
riter, & ne
per se absque
eorum Con-
ventibus jux-
ta antiqui-
orem promo-
tionem.

illicita, indebita, & injusta, ac de facto præsumptas, & præsumpta, illaque, & illa Abbatibus, Prælatibus, & Monachis congregationis Cassinensis hujusmodi fecisse, & facere minime licuisse, neque licere de jure. Et propterea de & super illis, ac dicto jure præcedendi, omnibusque, & singulis aliis præmissis perpetuum silentium imponendum fore, & esse, & tunc imposuimus, prout in rescripto, relatione, & sententia prædictis plenius continetur.

Et modo supplet ejusdem sententia defectus, & illam inviolabiliter observari mandat.

§. 6. Ne autem de sententiæ, illorumque præmissorum validitate ullo umquam tempore dubitari, ac propterea vel alio quovis prætextu rem mature discussam, & judicantem, rursus in controversiam retrahi, neve denno in Ecclesia Dei inter tales personas religiosas, contentiones exoriri, ac populo scandala generari contingat, tempestive providere, ac supremam huic negotio manum apponere cupientes, necnon veriores litterarum singulorum prædecessorum, ac rescripti processus, relationis, sententiæque præfatorum, & inde secutorum tenores præsentibus pro sufficienter expressis habentes Motu simili, non ad ipsorum Abbatum, Prælatorum, & Canonicorum regularium congregationis Lateranensis vel alterius pro eis nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed ex mera deliberatione, & ex certa scientia nostra, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine ad effectum executionis dictæ sententiæ tantum, omnes & singulos processus, & sententiæ præfatorum defectus etiam substantiales, si qui forsitan in eisdem intervenierint, harum serie supplemus, ac eadem, ac eandem sententiam una cum ejus processu validos, & efficaces esse, suosque plenarios, & integros effectus foriri, & inviolabiliter ab omnibus observari debere, nec partes ipsas ab eis ullo umquam tempore quovis prætextu quæsitive colore resistere posse, sed ad illorum observationem teneri, censurisque & penis, tam ecclesiasticis, quam pecuniariis ad id cogi & compelli, neque Monachos eorumve congregationem adversus sententiam, aliave præmissa in pristinum statum quovis quæsito colore, vel ingenio restitui, oppugnantes audiri.

Clausule præservatz, & Decretum irritans.

§. 7. Præsentisque litteras de subreptionis, vel obreptionis vito, aut intentionis nostræ, aut alio quovis defectu notari, seu impugnari posse, siquæ & non aliter per quoscunque Judices, & Commissarios, etiam S. R. E. Cardinales, sublata eis, & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, judicari, & definiri debere, ac quicquid secus à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane decernimus, præmissaque omnia perpetuo statuimus.

Executorum hujus constitut. deputatio, & facultates.

§. 8. Et quod ita fiant, & observentur, volumus atque mandamus similiter venerabili fratri Episcopo Amerino, & dilectis filiis nostro in Alma Urbe, & ejus districtu Vicario in spiritualibus, ac Curie causarum Cameræ Apostolicæ Auditore generalibus, per præfatos motu pari mandantes, quatenus ipsi vel duo, aut unus eorum, per se, vel alium, seu alios præfatos litteras, & in eis contenta quæcumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Rectoris generalis, & Abbatum, Prælatorum, ac Regularium Canonico-rum S. Augustini congregationis Lateranensis præfatorum, vel aliquis eorum fuerint requisiti solemniter publicantes, ac illis in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra illos supplere, decreto, statuto, voluntate, & mandato, aliisque præmissis pacifice frui, & gaudere. Non permittentes eos vel eorum quempiam desuper per quoscunque quomodolibet indebitè molestari, deturbari, vel inquietari. Contradiatores quoslibet, & rebelles per sententias, censuras, & tam ecclesiasticas, & pecuniarias, etiam arbitrio suo moderandas, & applicandas, quàm etiam privationis beneficiorum ecclesiasticorum per ipsos contrafactores obtentorum penas aliaque juris remedia, appellatione postposita compellendo, ac legitimis super his habendis servatis processibus, illos sententias, censuras

& penas hujusmodi incurrisse, declarando, illosque etiam iteratis vicibus aggravando, & interdictum ecclesiasticum imponendo, invocato etiam ad hoc si opus sit, auxilio brachii secularis.

Clausule derogatorias.

§. 9. Non obstantibus præmissis, ac fel. rec. Bonifacii Papæ VIII. prædecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, dummodo quispian præsentium vigore ultra tres dietas ad iudicium non trahatur, ac aliis quibuscunque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon Monasteriorum, & Ordinum, ac Congregationum præfatorum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, vel consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis illis, eorumque superioribus, ac personis, sub quibuscunque tenoribus & formis, ac cum quibuscunque etiam derogatorias derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis, in genere, vel in specie, etiam motu, & scientia similibus quomodolibet concessis, ac etiam iteratis vicibus approbatis, & innovatis, quibus omnibus illorum tenores pro sufficienter expressis, & insertis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat, specialiter, & expresse derogamus contrariis quibuscunque, aut si aliquibus communiter vel divisim, ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Fides transumptorum.

§. 10. Volumus autem, quod præsentium transumptis manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, in iudicio, & extra ubilibet locorum plena, & indubia, eademque prorsus fides adhibeatur, quæ ipsis præsentibus adhiberetur si forent exhibitæ, vel ostensæ.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die decima octava Januarii 1564. Pontificatus nostri Anno quinto.

D. P. An. 5. die 18. Jan.

Sequitur tenor sententiæ prædictæ.

Christi nomine invocato; pro Tribunali sedentes, & solum Deum præ oculis habentes per hanc nostram definitivam sententiam quam ferimus in his scriptis, in causa & causis, quæ coram nobis, & quas dilectis filiis nostris Joanni Michaeli Saraceno tit. S. Anastasiæ, Joanni Baptiste Cicadæ tit. S. Clementis, ac Bernardino Scoto tit. S. Marthæ S. R. E. Cardinalibus primo audiendas, cognoscendas, & per eos decidendas, & terminandas, & deinde per præfatos Cardinales per Apostolica nostra rescripta nobis referendas commissimus inter dilectos filios Abbates, Prælatos, & Canonicos regulares Ordinis S. Augustini, congregationis Lateranensis & universam Congregationem ex una, & Prælatos, Abbates, & Monachos Ordinis S. Benedicti congregationis Cassinensis alias S. Justine de Padua nuncupatos, & dictam eorum Congregationem, de & super præcedenti, & jure inter eos præcedendi, tam in processibus, quàm in generalibus, & synodalibus, seu provincialibus Conciliis, omnibusque actibus publicis & privatis, rebusque aliis in actis causæ & causarum hujusmodi latus deductis, & illorum occasione, in prima seu alia versæ fuerint, & vertebantur instantis, partibus ex altera, causa hujusmodi coram dictis Cardinalibus ad plenam ventilata, ac sapius auditis partibus, & dubiis in ea plene discussis, & resolutis, ac visis de jure videndis, & demum per dictos Cardinales nobis matura desuper facta relatione, pronunciamus, sententiamus, decernimus, & declaramus Abbates, Prælatos, & Canonicos regulares congregationis Lateranensis uti Clericos de dimissa superiori veste, pallio, seu cappa, in linea veste, clericali habitu incedentes (quod etiam in alma nostra Urbe Rome consuetum fuit, & nunc observatur) in processibus, & omnibus aliis actibus publicis, & privatis, tam in dicta Alma Urbe

Enarratio sententiæ.

Deciso quoad præcedentem inter præfatos Canonicos, & Monachos.

nostra,

PIUS PAPA QUARTUS,

Ad perpetuam rei memoriam.

Um pro munere quod sustinemus, id præcipue nobis propositum habeamus, & omni studio, diligentiaque curemus, ut omnes Christi fideles tam gravibus calamitosisque temporibus in recta, & Catholica fide contineamus, id agere & providere necesse est, ut omnem omnibus aberrandi ab ea occasione subtrahamus. Nemini autem mirum videri debet, si Romanus Pontifex nonnunquam facultates aliquas, quas ipse, vel prædecessores ejus probabili adducti ratione concesserint, postea revocet, cum ipso rerum usu edoctus animadverterit, eas justiori de causa esse revocandas.

§. 1. Ad notitiam nostram pervenit, ex data nonnullis licentia habendi, & legendi libros hæreticos, aut de hæresi suspectos, ad hæreses & errores, qui in eis libris continebantur, refellendos, non raro evenire solere, ut illis ipsis eorum libro- rum lectio noceat, quibus ob eam causam concessa fuerit, ut aliis prodesse possent, illis ipsis hæresibus, & erroribus propter humanæ mentis imbecillitatem eos implicans, à quibus se alios revocaturus esse consili fuerant.

§. 2. Huic rei providere, & animarum periculo, quantum fieri potest, pro pastoralis sollicitudine occurrere cupientes, cogitantesque nobiscum, nuper in sacro generali Concilio hæreses horum temporum ita confutatas, atque damnatas fuisse, ut tantæ Synodi auctoritas, ejus decreta hujus sanctæ Sedis auctoritate, cum deliberatione matura confirmata, & comprobata sunt, ad vitandos errores, & Catholicæ fidei veritatem agnoscendam sufficere omnibus debeat, nec ullius præterea confutatio requirenda sit, prædecessorum nostrorum præsertim felic. record. Julii III. & Pauli IV. vestigiis insistentes, Motu proprio, & ex certa scientia nostra, ac deliberatione matura, omnes & singulas facultates habendi, & legendi libros Lutheranos, aut aliorum hæreticorum, seu de hæresi suspectos, omnibus tam clericis secularibus aut regularibus, quam laicis, cujuscumque status, gradus, ordinis, vel conditionis sint, etiam si Episcopali, vel Archiepiscopali, aut alia majori ecclesiastica, seu seculari dignitate præfulgeant (inquisitoribus, & commissariis hæreticæ pravitatis à Sede Apostolica deputatis quo ad eo officio fungentur, exceptis) à nobis aut quocumque prædecessorum nostrorum, seu Apostolicæ Sedis Legatis, majorive Penitentiariorum, vel quibuscumque aliis, quibuscumque verborum formis, & clausulis etiam derogatoriarum derogatoriis, irritantibus, & aliis decretis quomodolibet, etiam motu, & scientia simili ad hoc tempus concessas auctoritate Apostolica tenore præsentium revocamus, & pro revocatis, & irritis, perinde ac si numquam concessæ fuissent, habemus & haberi volumus.

§. 3. Inhibentes omnibus sub censuris, sententiis, & poenis, tam à sacris Canonibus, quam à Sede Apostolica ad hoc tempus constitutis in eos, qui hujusmodi libros legant, aut habeant, ne quis eorum posthac eis facultatibus uti, neve illos omnino libros hujusmodi improbatos & prohibitos, aut quos in posterum à Sede Apostolica, inquisitoribusve hæreticæ pravitatis, aut locorum Ordinariis improbari, prohiberi contigerit, legere, habere, quacumque de causa audeat.

§. 4. Impressores autem & Bibliopolas, & alios, quicumque ejusmodi libros habent, habuerintve (inquisitoribus & Commissariis iisdem dumtaxat exceptis) monemus, & culibet eorum, in virtute sanctæ obedientiæ, & sub pena incursum criminis hæresis, & aliis contra hæreticos à jure indicis & irrogatis, tam ecclesiasticis, quam temporalibus sententiis,

Edita An. D.
1564.

Exordium.

Casu revoca-
tionis.Revocatio
licentiarum
habendi, &
legendi li-
bros Luth-
eranos, vel de
hæresi sus-
pectos.Prohibitio
legendi, &
habendi li-
bros prohi-
bitos.Monitio, ut
tales libri
inquisitori-
bus locorum
consignen-
tur.

nostra, nostrosque, & successorum nostrorum conspectu quam alias universis, ac quibuscumque aliis civitatibus, terris, oppidis, & locis, dictis Abbatibus, Prelatis, & Monachis Ordinis S. Benedicti Casinen. præcedere debuisset, & debere, eisdemque Abbatibus, Prelatis, & Canonicis regulares, dictamque eorum Congregationem, ut sup. incedentibus, dictis Abbatibus, Prelatis, & Monachis S. Benedicti, & eorum Congregationi, in omnibus, & singulis præmissis præferendos, anteposendos, & in digniori loco collocandos fore, & esse. Abbates vero dictarum congregationum Lateranen. & S. Benedicti singulariter, & de per se absque eorum conventibus, in Conciliis generalibus, provincialibus, & synodalibus, & aliis actibus publicis, & privatis, in quibus Abbates de jure, vel consuetudine locum, & votum habent, vel pro tempore quomodolibet habebant, inter sese juxta singulorum ipsorum Abbatum ibidem intervenientium, priorem, & antiquiorem promotionem ad Abbatiam, ac illa promotione dumtaxat, non autem Congregatione, & Ordine cujus fuerint attentis, præcedere, ac præferri, & in digniori loco collocari debuisset, & debere, prout præferimus, anteponimus, collocamus, præferri- que, anteponi, & collocari respectu mandamus. Jactationes quoque, molestationes, oppositiones, perturbationes, vexationes, & impedimenta quæcumque per præfatos Abbates, Prelatos, & Monachos dicti Ordinis S. Benedicti, & dictam eorum Congregationem eisdem Abbatibus, Prelatis, Canonicis regularibus dicti Ordinis, & eorum Congregationi, de & super præfatis omnibus & singulis, & illorum occasione quomodolibet factas, præfatas, & illatas, factaque, præfata & illata, fuisse & esse temerarias, illicitas, indebitas, & injustas, temerariæque, illicitæ, indebitæ, & injustæ, ac de facto præsumptas, & præsumptas & illasque illa præfatis Abbatibus, Prelatis, & Monachis fecisse, & facere minime licuisse, nec licere de jure. Et propterea de & super illis, ac dicto jure procedendi, ut supra, omnibus aliis, & singulis præmissis perpetuum silentium imponendum fore & esse, ac imponimus. Utramque partem in expensis justis ex causis absolventes.

Ita est. I.

Ita refero, & censo pronunciandum esse Joannes Michael Cardinalis Saracenus.
Ita refero, & censo pronunciandum Joannes Baptistæ Cardinalis S. Clementis.
Ita refero, & censo pronunciandum esse Bernardinus Cardinalis Tranen.

Nomina Car-
dinalium,
qui causam
cogoverunt
& Pont. re-
tulerunt.

LXXVI.

Revocatio licentiarum omnium quibuscumque (exceptis Commissariis, & Inquisitoribus hæreticæ pravitatis) concessarum, tenendi vel legendi libros Lutheranos, aut de hæresi suspectos. Et prohibitio illis de cetero habendi vel legendi.

Usus Inquisitoribus data est expresse facultas eos tenendi, & aliis licentiam dandi, ut inf. in const. 82. Cùm inter. Et hodie habemus etiam indicem librorum prohibitorum firmatum in const. seq. & à Clem. VIII. in const. 36. Sacrosanctum, in Tomo III. Et quoad opera Molinai vide ejusdem Clem. const. 89. Apostolicæ, ubi illa strictissime omnibus prohibuit.

Non dissimilem revocationem habes à Gregor. XV. factam in const. ipsius 40. Apostolatus inf. tom. 4. Et de Hæreticorum libris habes in bulla quæ legi solet in die Cænæ Domini, cujus ultimæ exemplar habes in S. D. N. Urbani VIII. const. 62. Pastoralis. tom. IV. §. 1.

Clausula de rogatoria.

Forma publicandi hanc constitutionem.

Fides transumptoria.

D. P. An. 5. die 14. Mart.

publicatio.

LXXVII.

Edita An. D. 1564.

Lectio liberum hereticorum reducta simpliciter ad verum sensum et scripturam.

cenfuris & penis, præcipimus ac mandamus, ut eos libros intra sexaginta dies à die quo hæc litteræ publicatæ fuerint, numerandos, quorum viginti pro primo, alios viginti pro secundo, reliquos viginti pro tertio, ac peremptorio termino, & monitione Canonica eis assignamus, Inquisitoribus hæreticæ pravitatis in civitatibus, in quibus hi libri sint, tradant, atque confignent.

§. 5. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis contrariis quibuscumque, aut si aliquibus communiter, vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§. 6. Ut vero hæc litteræ, & quæ in eis continentur, ad omnium quorum oportet notitiam perveniant, nec quicquam ex excusatione uti possit, quod illa ignoraverit, volumus, & mandamus, ut in Basilica Vaticana Principis Apostolorum, & in Ecclesia Lateranensi tunc, cum in eis populus, ut Missarum solemnibus interfit, congregari solet, palam clara voce à Curia nostræ Curioribus, seu Notariis aliquibus publicis recitentur, & postquam recitata fuerint, ad valvas earum Ecclesiarum, itemque Cancellariæ Apostolicæ, & in loco solito Campi Floræ affigantur, ibique quo legi, & omnibus innotescere possint, aliquamdiu relinquantur.

§. 7. Transumptis quoque earum quæ manu aliquis publici Notarii scripta, subscriptæ, & sigillo ac subscriptione alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munita fuerint, ut sine dubitatione ulla fides habeatur, mandamus atque decernimus.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 14. Martii 1564. Pontificatus nostri Anno quinto.

Anno à Nativitate D. 1564. indictione 7. die vero 7. mensis Aprilis, Pontificatus Sanctissimi in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa IV. Anno 5. retroscriptæ litteræ lectæ, & recitatae fuerunt alta & intelligibili voce, ac affixæ & dimissæ fuerunt in locis retroscriptis, dimissæ etiam ibi copias affixæ, & alias in omnibus & per omnia, juxta illarum formam, & tenorem per nos Thomam Rogerium, & Jacobum Carra, præfati S. D. N. Papa Curiores.

Bartholomeus Sottocasa Mag. Curf.

Approbatio Indicii librorum prohibitorum, cum regulis firmatis per Patres à sacro Concilio Tridentino deputatos. Et prohibitio illos de cetero habendi & legendi.

Hunc Indicem habes in fine d. Concilii. Et illius supplementum edidit Clem. VIII. infra in Tomo III. in cons. 36. Sacrosanctum, & consil. 89. Apostolica.

Super Indice huiusmodi, Congregationem Cardinalem instituit Sixtus V. ut in sua cons. 74. Immensa, in 7. Congreg. ubi notabo in hoc Tomo II.

Attende quæ addidi ad Constit. præcedentem.

PIUS PAPA QUARTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Domini gregis custodiæ Domino disponente præfati vigiliis more pastoris non desistimus, ut quæ ab immensis periculis quanta maxima potest curam, & sollicitudinem præstare, ne propter negligentiam, vel incuriam oves, quæ pretiosissimo Domini nostri JESU CHRISTI sanguine sunt redemptæ. Et ita ut quæ à fidei veritate per se, & a non horum temporum hæreses confutata, & in æcumenico, & generali Concilio Tridentino, sancti Spiritus assistente gratia, nuper adeo enucleata, ac definita fuerunt, ut facile jam sit unicuique sanam, catholicamque doctrinam

à falsa adulterinaque internoscere, tamen cum librorum ab hæreticis editorum lectio, non modo simpliciores homines corrumpere soleat, verum sæpe etiam doctos eruditosque in varios errores, & à veritate fidei catholicæ alienas opiniones inducere, huic quoque rei esse duximus providendum.

§. 1. Cum autem aptissimum ei malo remedium esse sciremus, si componeretur atque ederetur Index sive Catalogus librorum, qui vel hæretici sint, de hæretica pravitæ suspecti, vel certe moribus, & pietati noceant, id negotium ad sacrum Tridentinum Synodum rejeceramus, ea vero ex tanta Episcoporum, & aliorum doctissimorum virorum copia delegit ad eum conficiendum Indicem multos cum doctrina, tum judicio insignes Prælatos ex omnibus ferè nationibus. Qui quidem non sine maximo labore, plurimisque vigiliis, eum Indicem tandem, Deo juvante, perfecterunt, adhibitis etiam in consilium lectissimis quibusdam Theologis. Peractio autem Concilio, cum ex ipsius Synodi decreto is Index nobis oblatus fuisset, ut ne ante ederetur, quam à nobis approbatus fuisset, Nos doctissimis quibusdam, probatissimisque Prælati eum accuratissime legendum, examinandumque tradidimus, & ipsi etiam legimus.

§. 2. Cum igitur cum magno studio, acri judicio, diuturna cura confectum, & præterea commodissime digestum esse cognoverimus; Nos saluti animarum consulere, eamque ob causam providere cupientes, ne libri, & scripta cujuscumque generis, quæ in eo improbantur, sive ut hæretica pravitæ suspecta, sive ut pietati, ac morum honestati inutilia, aut aliqua correctione saltem indigentia, post hæc à Christi fidelibus legantur, ipsam Indicem, una cum regulis ei præpositis, auctoritate Apostolica tenore præsentium approbamus, imprimi ac divulgari, & ab omnibus universitatibus Catholicis, ac quibuscumque aliis ubique fuscipi, easque regulas observari mandamus atque decernimus.

§. 3. Inhibentes omnibus & singulis, tam ecclesiasticis personis secularibus, & regularibus cujuscumque gradus, ordinis, & dignitatis sint, quàm laicis quocumque honore, ac dignitate præditis, ne quis contra earum regularum præscriptum, aut ipsius prohibitionem Indicis libros ullos legere, habere, audeat. Si quis autem adversus eas regulas, prohibitionemque fecerit: is quidem, qui hæreticorum libros, vel cujusvis auctoris scripta propter hæresim, vel falsi dogmatis suspicionem damnata, atque prohibita legerit, habueritve, ipso jure excommunicationis poenam inciderit, eamque ob causam in eum tamquam de hæresi suspectum, inquiri & procedere liceat, præter alias penas super hoc ab Apostolica Sede, sacrisque Canonibus constitutas. Qui autem libros alia de causa prohibitos legerit, habueritve, præter peccati mortalis reatum Episcoporum arbitrio severe se noverit puniendum.

§. 4. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis contrariis quibuscumque, Aut si aliquibus communiter, vel divisim ab eadem sit Sede indultum ne excommunicari possint per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§. 5. Ut hæc autem ad omnium notitiam perveniant, neve quis excusatione ignorantis uti possit, volumus, & mandamus, ut hæc litteræ per aliquos Curia nostræ Curiores in Basilica Vaticana Principis Apostolorum, & in Ecclesia Lateranensi tunc cum in eis populus, ut Missarum solemnibus interfit, congregari solet, palam, & clara voce recitentur, & postquam recitata fuerint, ad valvas earum Ecclesiarum, itemque Cancellariæ Apostolicæ, & in loco solito Campi Floræ affigantur, ibique ut legi, & omnibus innotescere possint, aliquantisper relinquantur. Cum autem inde amovebuntur, earum exempla in iisdem locis affixa remaneant. Nos enim per recitationem hanc, publicationem & affixionem, omnes & singulos, qui his litteris comprehenduntur, post tres menses à die publicationis,

Ideo Concilium Tridentinum delegit & ita ad firmandum Indicem librorum prohibitorum.

Illud ideo jam periculum modo approbat hic Pont.

Eosque legi, vel teneri prohibet.

Contrariis derogat.

Formam publicationis huius bullæ prestat.

& affixionis earum numerandos, volumus perinde adstrictos, & obligatos esse ac si ipsimet illæ editæ, lectæque fuissent.

§. 6. Transumptis quoque earum, quæ manu alicujus publici Notarii scripta, subscriptæ, & sigillo ac subscriptione alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ, munita fuerint, fidem sine ulla dubitatione haberi mandamus atque decernimus.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die vigesimo quarto Martii 1564. Pontificatus nostri Anno quinto.

Approbatio Confraternitatis sub invocatione Sanctissimi nominis Dei, ad cavendum blasphemias, perjurias, illicitaque juramenta institutæ, cum indulgentiarum, & aliarum gratiarum concessione.

In quibus autem Ecclesiis hæc Sodalitas instituenda sit, vide infra in hoc Tomo II. in const. 130. Pii V. Decet, ubi alia quoque adnotabo. Quo vero ad indulgentias hujus Confraternitatis, attende constit. Pauli V. mox publicandam, & jam firmatam sub die trigesimo primo Octobris 1606.

PIUS PAPA QUARTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Injunctum nobis Apostolicæ servitutis officium, nos admonet, ut animarum salutem quantum cum Deo possumus, etiam multiplicatis gratiis omni ratione consulamus.

§. 1. Hodie siquidem per nos accepto, quod in Burgenfi, & pluribus aliis Hispaniarum civitatibus, & aliis locis una saluberrima Confraternitas sub vocabulo Nominis Jesu instituta erat, cuius Confratrum partes potissimum essent, diligenter cavere, ne vel ipsi, vel alii coram eis aliquo modo, nisi ob causam gravissimam jurarent, & contrasentibus modestè admonerent. Quodque ipsi Confraternitati plurimi Christiani se conscriberant, quorum opera, & studio blasphemias, perjurias, & aliis illicita juramenta commode prohibebantur.

§. 2. Nos ut ipsa Confraternitas in majori semper reverentia habeatur, & Christiani fideles eo libentius illam ingradientur, quo ipsa amplioribus decorata spiritualium gratiarum donis, & Apostolicis fuerit suffulta privilegiis, de Omnipotentis Dei misericordia, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus auctoritate confisi, omnibus, & singulis dictæ Confraternitatis, ubique terrarum, & locorum, nunc & pro tempore diffusæ utriusque sexus Confratribus in illa, nunc & pro tempore descriptis ubilibet constitutis, sive sub ejusdem Confraternitatis regula prius edita, sive sub alia simili comprehendatur, qui vere penitentes, & confessi die festo Circumcisionis Domini Nostri Jesu Christi annis singulis, in perpetuum, sacrosanctum Eucharisticum Sacramentum susceperint, & solemniter per ipsam Confraternitatem in dicto die festo ubivis locorum pro tempore celebrari solitæ, in toto vel in parte interfuerint, quoties id egerint, toties pro quolibet die festo hujusmodi plenariam omnium & singulorum, ac quorumcumque peccatorum suorum indulgentiam, remissionem & absolutionem, auctoritate Apostolica tenore præsentium, concedimus & clarimus.

§. 3. Illis vero dictæ Confraternitatis confratribus, qui quolibet prima die Dominica cujuscunque mensis anni, similiter in perpetuum ad missam, quam ipsi Confratres audire tenentur, audiendam convenierint, quotiescumque id egerint, decem annos.

§. 4. Qui vero temere jurantem, aut alias divinum nomen blasphemantem, modestè, & charitative, quandocumque admonuerint, pro quolibet vice centum dies. Et quicumque verbi Dei prædicatori, seculari, vel cujusvis Ordinis regulari, qui Christiani fideles, ut à juramentorum abutibus caveant, & hanc dictæ Confraternitatis regulam amplectantur hortatus fuerit, decem annos de injunctis sibi penitentiis in forma Ecclesiæ consueta, misericorditer in Domino relaxamus.

§. 5. Et ut ipsi Confratres dictæ Indulgentiæ plenariæ, Deo propitio, facilius efficiantur participes, illis & eorum singulis indulgentiam hujusmodi consequi volentibus, ut dicto die festo Circumcisionis occurrente, quoscumque sibi benevolos idoneos presbyteros, seculares, vel cujusvis Ordinis regulares, per Ordinarium loci approbando in suos possint eligere confessores, qui confessionibus ipsorum diligenter auditis, eos & eorum quemlibet ab omni & quancumque excommunicationis, etiam majoris, & ab omnibus & quibuscumque aliis Ecclesiasticis sententiis, censuris & penis, à jure, vel ab homine, aut mixtim, quavis occasione, vel causa latis (salvo tamen jure tertii) necnon ab omnibus & singulis eorum peccatis, criminibus, excessibus, & delictis quantumcumque gravibus, & enormibus, etiam locorum Ordinariis, ac Sedi Apostolicæ reservatis, præterquam in Bulla die Ccenæ Domini legi consueta contentis, dicta auctoritate Apostolica absolvere, eisque pro commissis penitentiam salutarem injungere, Ac vota quæcumque (Hierosolymitano, visitationis Liminum beatorum Apostolorum Petri & Pauli prædictorum de Urbe, ac Jacobi in Compostella, necnon castitatis & religionis votis dumtaxat exceptis) in alia pietatis opera commutare valeant, similiter auctoritate & tenore præmissis perpetuo concedimus, & indulgemus.

§. 6. Mandantes universis & singulis venerabilibus fratribus nostris Patriarchis, Archiepiscopis, & Episcopis, ac dilectis filiis ceteris Ecclesiarum Prelatis, & locorum Ordinariis ubilibet constitutis eorumque generalibus spiritualibus Vicariis, & Officialibus, quod ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro Confratrum prædictorum parte fuerint requisiti, eidem Confraternitati prædictæ pro posse faveant, favorabiliter assistant, & illam promovere procurent.

§. 7. Præsentibus quas nunquam etiam per nos aut alios Romanos Pontifices successores nostros, vel Sedem præfatam, aut alios quoscumque quomodolibet revocari, suspendi, limitari, reduci, modificari, aut eis in aliquo derogari posse, neque sub quibuscumque illarum, aut similibus, vel dissimilibus, indulgentiarum & gratiarum revocationibus, suspensionibus, alterationibus, modificationibus, limitationibus, derogationibus, aut aliis contrariis dispositionibus, in genere, vel specie, per nos vel successores nostros, aut Sedem præfatam, seu quovis alios, & ex quibuscumque etiam urgentissimis, & necessariis causis, etiam pro fabrica Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, Cruciatæ sanctæ, vel expeditione contra infideles, etiam ad Imperatoris, Regum, Reginarum, Ducum, Principum, vel aliorum instantiam, seu eorum contemplatione, vel etiam Motu proprio & ex certa scientia, ac alias quomodolibet canonice, vel de facto nunc & pro tempore impositis & factis, ullatenus umquam comprehensas, sed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt toties in pristinum & validissimum statum restitutas, & de novo concessas fore ac censeri decernimus, perpetuis futuris temporibus duraturas.

§. 8. Ut autem ipsi Confratres, majorem à nobis gratiâ reportasse latentur, eisdem confessoribus Confratribus juramenta quælibet sine alterius præjudicio relaxare. Et præterea eidem Confraternitati, illiusque

Ad nonentibus quoque tenore juramentis, & blasphemantibus.

Facultas Confratrum eligere in die Circumcisionis confessoribus approbatis, qui eos absolvant, &c.

Ad hoc vide reformationem Clem. VIII. in constit. 115.

Ordinarii favere promotioni hujus Sodalitatis.

Clausulæ hujus constit. præservativa.

In die Circumcisionis non obstante interdicto in locis Confraternitatis celebrari potest & sociorum corpora sepeliri valent.

Con-

Transumptis credi jubet.

Dat. P. An. 5. die 24. Mart.

LXXVIII.

Edita An. D. 1564.

Exordium.

Institutio Sodalitatis nominis Dei in Hispaniis.

Approbatio Pontificis dictæ Sodalitatis ubique terrarum pro die circumsionis.

Primaque Dominica cujuscunque mensis.

	<p>Confratribus, ac Ecclesiis, Capellis, & Altaribus ejusdem ubilibet constitutis, quod quocumque tempore cujusvis interdicti, & cassationis à divinis videlicet dicto die festo Circumcisionis, à primis vespere usque ad occasum Solis ejusdem diei inclusive, Vespere, Missæ, aliaque divina officia in ipsius Confraternitatis, Ecclesiis, Altaribus, ac Capellis, solemniter, & publice celebrari. Qualibet vero prima die Dominica cujuslibet mensis privati Confratres privatam eorum Missam ex ejusdem Confraternitatis instituto celebrari facere, illisque interesse. Ac insuper semel in mense Dominicum corpus suscipere. Et quoties aliquem vel aliquos ex ipsis Confratribus quocumque tempore interdicti, seu cassationis à divinis hujusmodi, mori contigerit, dummodo causam non dederit interdicto, eorum cadavera cum moderata pompa sepeliri, libere & licite valeant. Et interim interdicta & cassationes à divinis hujusmodi quæcumque sint, ad effectum præmissum omnino suspendantur, & suspensa esse censentur, auctoritate Apostolica tenore presentium concedimus, & indulgemus.</p> <p>§. 9. Ac præsentibus litteris sub quibusvis revocationibus, derogationibus, vel limitationibus similibus gratiarum, per nos vel successores nostros, in genere vel specie ex quibusvis etiam urgentissimis causis etiam ad Imperatoris, Regum, & aliorum Principum instantiam pro tempore quomodolibet emanatis, nullatenus comprehendendi, sed semper ab illis exceptas fore.</p> <p>§. 10. Et ita per quoscumque Judices & Commissarios quavis auctoritate fungentes, sublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi, & interpretandi auctoritate, & facultate judicari & definiri debere, ac quicquid fecus à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane decernimus.</p> <p>§. 11. Non obstantibus quibusvis Apostolicis, ac in provincialibus, & synodalibus Concilii editis generalibus, vel specialibus constitutionibus, & ordinationibus, ac Cancellariæ Apostolicæ regulis, editis & edendis, necnon etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus, ceterisque contrariis quibuscumque.</p> <p>§. 12. Volumus autem ne Confratres ipsi, quod absit, propter hujusmodi gratiam reddantur procliviores ad illicita committenda, quod si à sinceritate fidei, & unitate S. R. E. ac obedientia & devotione nostris vel successorum nostrorum Romanorum Pontificum canonice intrantium destiterint, aut confidentia ejusdem gratiæ aliqua commiserint, gratia & litteræ quoad eligendum confessorum hujusmodi illis nullatenus suffragentur.</p> <p>§. 13. Volumus autem quod si aliqua alia indulgentia fuerit per nos in aliquo loco eidem Confraternitati concessa, præsentibus quoad locum hujusmodi nullæ sint.</p> <p>Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, Anno Incarnationis Dominicæ 1564. Idib. April. Pontif. nostri Anno 4.</p>	<p>quarto Non. Augusti, Pontificatus nostri Anno quinto officio supremo in Alma Urbe, & Curia nostra, ac tota republica Christiana sanctæ Inquisitionis hereticæ pravitatis, ejusque causarum audientie, cognitioni, expeditioni, & terminationi præficerimus, & deputaverimus dilectos filios nostros Joannem Michaelem Sanctæ Anastasiæ Saracenum, & Jo. Baptistam S. Clementis Cicadam, ac Joannem Suaviu Sanctæ Priscæ Romanum, necnon Michaelem S. Sabinæ Ghislerium, & Clementem S. Mariæ in Araceli Monialium, & Ludovicum sancti Cyriaci Thermis Simonetam, & Carolum S. Martini in Montibus Borromæum presbyteros, & Vitellotum Sanctæ Mariæ in Porticu Vitellium diaconum, tunc titulum Misericordie divina S. R. E. Cardinales, cum facultatibus, jurisdictionibus, & auctoritatibus, prout in eodem Motu proprio latius continetur.</p> <p>§. 1. Cum postea etiam in eodem sancto Officio supremo inquisitionis hereticæ pravitatis, verbo deputaverimus Inquisitorem dilectum Filium nostrum Franciscum Alciatum tituli sanctæ Sufannæ Cardinem, ne in posterum de ipsius jurisdictione hesitari contingar, Motu simili & ex certa nostra scientia, deputationem hujusmodi tenore presentium approbamus, & confirmamus, & quatenus opus sit de novo eundem generalem Inquisitorem hereticæ pravitatis, prout superscripti alii octo Cardinales constituiamus, deputamus, & ordinamus, & in numero superscriptorum aliorum Inquisitorum unimus, & aggregamus.</p> <p>§. 2. Et insuper pro faciliiori causarum expeditione, & terminatione, statuiamus, decernimus, & ordinamus, ut quicquid per majorem partem S. R. E. Cardinalium, qui in Congregatione pro dicto officio intervenerint seu convenierint dictum, gestum, statutum, ordinatum, decretum, terminatum, seu sententiatum extiterit, sit validum, & firmum, ita & taliter quod nullo modo impugnari possit, perinde ac si omnes, & singuli Cardinales prædicti in dicta Congregatione convenissent, & major pars consensisset.</p> <p>§. 3. Cum plena & omnimoda jurisdictione, auctoritate, & potestate omnibus prædictis Cardinalibus, & eorum prædecessoribus, per nos vel alios Summos Pontifices, alias quomodolibet concessis, & attributis, irritum, & inane decernentes.</p> <p>§. 4. Non obstantibus præmissis, ac quibusvis aliis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, & omnibus illis, quæ nos, & prædecessores nostri voluerunt, & volumus non obstat, ceterisque contrariis quibuscumque.</p> <p>§. 5. Decernentes solam præsentis nostri Motus proprii signaturam sufficere, & ubique in judicio, & extra fidem facere, regula contraria non obstant.</p>	Alia deputatio.
Clausula præservativa.			
Decretum irritans.			Quod major pars facit, tota Congregatio fecisse dicitur.
Clausula derogatoria.			Omnimoda jurisdictio congregationis est.
Declaratio circa d. etiam facultatem eligendi Confessorem.			Derogatio contrarium.
Declaratio circa d. indulg.			Sola signatura sufficit.
Dat. P. A. 4. die 13. April.		Placet Motu proprio. I.	Papæ subscript.
LXXIX.	<p>Quod major pars Cardinalium Sanctissimæ Inquisitionis decernit, à tota Congregatione valide statutum censetur.</p> <p><i>Quinimo (aliquibus absentibus) duos tantum Cardinales hoc idem posse statuit Pius V. in sua constit. 23. Cum felicis. Institutionem vero hujus Congregationis habes sup. in Tomo I. in Pauli III. constit. 34. Licet.</i></p>	<p>Declaratio quod Concilii Tridentini decreta, circa Reformationem, & jus positivum tantummodo, ligare ceperunt à Kalend. Maii 1564.</p> <p><i>De materia Concilii notavi hic sup. in constit. 73. Benedictus Deus. fol. 111. Et de Congregatione instituta sup. ejus observantia, vide bullam subsequ.</i></p> <p>PIUS EPISCOPUS, Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.</p> <p>Sicut ad sacrorum Conciliorum decreta, ac Canones, auctoritas atque confirmatio Apostolicæ Sedis, & debet & solet accedere, ita si qua super eis exorta sit dubitatio, ejusdem Sedis judicio, & declaratione tollenda est.</p> <p>§. 1. Ad aures nostras pervenit multos esse, qui dubitent ex quo tempore ceperint decreta sacri generalis Concilii Tridentini, ad reformationem & jus positivum dumtaxat spectantia, eos ad quos pertinent</p>	LXXX.
Edita An. D. 1564.	PIUS PAPA QUARTUS. <i>Motu proprio, &c.</i>		Edita An. D. 1564.
Deputatio Card. Congr. S. Inquisit.	<p>Cum nos per nostrum specialem Motum proprium sub data Romæ apud sanctum Marcum</p>		Exordium.

Edita An. D.
1564.

Hic Pont. deputavit Cardinales Inquisitores generales, sed hanc bullam hic non habes.

Illi indigebant libris prohibitis ex causis hic expressis, quos tamen tenere non valebant stante Indice de quo supra in cons. 77. fol. 116.

Hic ideo Pont. licentiam, & facultatem de qua in rubr. cit. concedit.

Congregationem ejusmodi instituit in Urbe Paul. II. ut supra in Tomo I. in sua cons. 34. Licet. Adverte quæ adjecti sup. ad cons. 76. Cum pro. fol. 115.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio &c.

Cum inter crimina, quæ animadversione digna sunt, & in corrigere id exempla cunctis præbere debeant, hæresis sit gravius, & ceteris detestabilior: ideo cum nobis maxime displiceat, & ne illud latius serpat, pro illo extirpando, cunctis etiam de crimine hujusmodi infectis, & illius fautoribus, ne ad deteriora (quod Deus avertat) delabantur, per nos non modicum invigilandum sit: Cumque annis præteritis, & etiam forsan usque in hodiernum diem in diversis mundi partibus, proh dolor! hæreses, & falsa dogmata pullulaverint, & adhuc pullulent, sollicitante humani generis inimico, minusque etiam ejusdemque correctionis prætextu pullulare cessent. Propterea dilectos filios nostros Joannem Michaellem sanctæ Anastasie Saracenum, Joannem Baptista sancti Clementis Cicadam, Joannem Suavium sanctæ Priscæ Romanum, Michaellem sanctæ Sabine Alexandrinum Clementem Olera sanctæ Mariæ de Araceli, Ludovicum sancti Cyriaci in Thermis Simonetam, Carolum sancti Martini in Montibus Borromæum presbyteros, ac Vitellotium sanctæ Mariæ in Porticu diaconum Vitellium, Cardinales nuncupatos, pro erroribus, qui occasione quarumcumque hæresum dietim contingunt, reprimendis, & seu hæresibus hujusmodi, & illarum fautoribus. Domino nostro Jesu Christo auxiliante, extirpandis: ac eos in Inquisitores, seu in sanctæ Inquisitionis congregatione deputatos, cum omnimoda potestate constituimus.

§. 1. Et eis sæpe contingat, ne catholici, & Christiani veneno hujusmodi scædæ, illius fautorum afficiantur, ac etiam pro negotiorum, & causarum pro tempore incurrentium expeditione, ac hæreticorum, qui etiam ad præsens carceribus in Alma Urbe nostra mancipati existunt, ac pro tempore mancipentur, deprehensione, & eorum ad veram doctrinam reductione, nonnullos seu quamplures liberos ab ipsis impiis hæreticis, & scædæ Lutheranæ fautoribus compositos, & in lucem editos, ac qui in dies successu temporis edentur, & componentur, ac etiam aliquando oporteat, pro conservanda religione in cordibus Catholicorum, eisdem libris, & hæreticorum deceptionibus, fraudibus & dolis, ac machinationibus respondere, vel à viris catholicis, ac sacre doctrinæ peritis responderi facere, stantibusque constitutionibus hæcenus per nos editis, & per Indicem librorum correctorum de mandato nostro, vel alias factum, prohibitionibus factis, eosdem libros, pro hujusmodi erroribus reprimendis, tenere, & legere dubitent, ac ut filii obedientiæ eosdem libros perspicere, ut accepimus, non audeant.

§. 2. Ad omnem igitur hastandi materiam, & conscientie scrupulum in eis tollendum, Motu simili, & ex certa nostra scientia, & de Apostolicæ potestatis plenitudine, de eorumdem Joannis Michaelis, Joannis Baptiste, Joannis Suavii, Michaelis, Clementis, Ludovici, Caroli, ac Vitellotii Cardinalium fide, probitate, & constantia, singularem, tum noticiam tum fiduciam habentes, eisdem Cardinalibus, ut durante eorum officio, & quamdiu Inquisitioni hujusmodi præfuerint quoscumque, quæcumque, quocumque, & qualicumque, quorumcumque, tum antiquorum tum modernorum & futurorum, in fidelium, & hæreticorum, aut hæresis, & ejusdemque impietatis, vel superstitionis, vel reprobæ lectionis, condemnatorum, vel suspectorum, ac etiam incertorum, vel dissimulato- rum auctorum, & scriptorum, atque etiam Hugonotorum commentaria, tractatus, libros, collectanea, expositiones, annotationes, interpretationes, versiones, & alia ejusdemque inscriptionis & ar-

gumenti opera, quocumque nomine nuncupata; Latino, Græco, Hebræo, aut quocumque alio etiam vulgari ejusdemque regionis sermone composita, tam manu scripta, quam à quibuscumque impressori- bus, & in quibuscumque locis, etiam nominatim prohibitis vel suspectis, seu etiam sine impressorum, & locorum, ac temporis titulo, ac absque locorum Ordinariorum, & hæreticæ pravitatis Inquisitorum, aut aliorum ad id deputatorum licentia & approbatione impressa, etiam ex professo contra nos, & pro tempore existentem Romanum Pontificem, & Sanctam Romanam Ecclesiam, ac Sedem Apostolicam prædictam, composita, & conscripta, ac etiam divulgata, necnon hæreses & errores, seu reprobata & damnata disciplinas continentia, necnon impressorum & auctororum, aliorumque id genus hominum damnatorum memoriam, & nomina præferentia, tam per officium Sanctæ Romanæ & universalis Inquisitionis, quam aliis quomodocumque & qualitercumque in genere vel in specie pro tempore prohibita in quibuscumque mundi partibus, ad quas eos accedere contigerit, & potissimum in Alma Urbe nostra, & Romana Curia habere, tenere, legere absque aliquo conscientie scrupulo, & ejusdemque suspicionis vel infamie, aut censorum ecclesiasticarum incurfu, libere & licite possint & valeant. Ita quod in futurum nullatenus super retentione librorum, scripturarum, extraduum, explicationum, & commentariorum hujusmodi impediri, molestari, vel argui seu inquiri possint, plenam & liberam licentiam, facultatem, & auctoritatem concedimus & impartimur, ac desuper cum eis indulgemus.

§. 3. Distinctis inhiabentes quibuscumque aliis, tam Ecclesiasticis, quam secularibus personis etiam quacumque auctoritate, præcellentia, & dignitate fungentibus etiam Cardinalatus honore præditis, ne eosdem libros, extradus, seu scripturas & commentaria hujusmodi, etiam ut præfertur specificata, quovis quæsito colore, etiam ejusdemque privilegii, à nobis, & à prædecessoribus nostris, vel ab ipso Sanctæ Inquisitionis officio hæcenus concessi prætextu, penes se retinere, aut tenere, legere, & explicare, absque Cardinalium prædictorum nova facultate & licentia, sub excommunicationis majoris, & latæ sententiæ poena, quam eo ipso in his ferimus scriptis, ac aliis poenis à constitutionibus ac sacris Canonibus institutis, & in Indice hujusmodi contentis, audeant seu præsumant. & decernentes irritum &c.

§. 4. Et nihilominus eisdem supranominatis Cardinalibus dilectis filiis nostris, quando eis, vel eorum majori parti videbitur, si placuerit in plena congregatione tantum similem licentiam concedendi quibuscumque personis ejusdemque dignitatis, gradus, ordinis, & præminentie existentibus, supradictos libros etiam ejusdemque damnatæ lectionis tenendi, habendi, legendi, & interpretandi, seu explicandi ad tempus, vel in perpetuum, & concessam revocandi similiter licentiam, & facultatem concedimus, & impartimur de gratia speciali.

§. 5. Non obstantibus Lateranensis & quorumcumque Conciliorum ac aliis Apostolicis, necnon in provincialibus, & synodalibus Conciliis editis, generalibus vel specialibus, constitutionibus & ordinationibus, statutis &c. etiam juramento roboratis: privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis pro tempore existentibus Sanctæ Inquisitionis hujusmodi majoribus Inquisitoribus, & quibuscumque etiam Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalibus, ceterisque ad dictum officium, in dicta Urbe, & alibi deputatis, ac alias in genere, vel in specie, etiam cum censurarum & poenarum incurfu, aliisque decretis & clausulis sub quibuscumque tenoribus & formis, etiam Motu proprio, &c. seu etiam consistorialiter, ac aliis quomodolibet concessis, quibus omnibus etiam si de illis &c. tenores &c. hac vice latissime, specialiter & expresse derogamus ac sufficienter derogatum esse decernimus, ceterisque que contrariis quibuscumque: cū clausulis opportunis.

Fiat. Motu proprio, I.

Prohibetque ceteris aliis, ne libros prohibitos teneant vel legant, etiam vigore ejusdemque privilegii, absque eorumdem Card. Inquisit. licentia.

Facultatemque eisdem Inquisit. concedit tales licentias dandi.

Clauserog.

1564.

Clausularum
repetitio.

1564.

§.6. Et de concessionibus, impartitionibus, indultis, inhibitione, singulis decretis, derogatione, declaratione, de; ac pro omnibus & singulis præmissis, ut supra latissime extendentes. Et cum opportuna fidebatur executionum deputatione &c. etiam sub censuris &c. cum potestate aggravandi &c. invocato ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis, & cum derogationibus, constitutione. de una, & desuabus rebus, non tamen ultra tres, ac prædictorum & quorumcumque aliorum quomodolibet contrariorum ad effectum &c. latissime exten. & quod præsentis nostri Motus proprii sola signatura sufficiat, & ubique fidem faciat, in iudicio & extra, regula contraria non obstante, seu fidebitur litteræ per breve nostrum cum præmissorum omnium & singulorum etiam qualitatibus ac nominum, & cognominum consilium huiusmodi majori, & veriori specificatione, & expressione expendi possint.

Dar. Romæ apud sanctum Marcum 6. Cal. Septemb. Ann. 5.

deputatio ad Communitates aut Universitates, quas etiam circa officiorum damuorum datorum concessionibus variis modis aberrare nobis plene constituit, spectat, literarum & actus notariarum rudes profusus, & ignari, ac ad tale munus suscipiendum, & exequendum penitus inhabiles sint, in consiciendis instrumentis, & aliis actibus publicis, sive decretis, & declarationibus annotandis; infinitos committant errores & falsitates. Ac nulli revisores, qui se de notariarum idoneitate & sufficientia informant, ac de eis attestentur, existant, sed passim favore, pretio, vel passionibus, etiam super officiorum notariarum huiusmodi emolumentis, partim vero electores, partim vero iudices, & commissarios dividendis, & distribuendis conjunctim eligantur, ac propterea excessive scripturarum taxæ, & exactio, non minus injuste, quam indebite extorqueantur, causeque in longum protrahantur, & quasi immortales efficiantur.

§.2. Cumque institutio fel. rec. Pauli IV. prædecessoris nostri præmissis, ac forsitan aliis tunc suadentibus causis moti, super officiis notariarum huiusmodi in causis criminalibus Status nostri prædicti, proinde quidem ac permaxime utilium capitulorum editionem factam per Legatos & Vicelegatos, ac Gubernatores locorum ita negligantur, ut ipsi (nescitur qua ratione ducti) præter, & contra mentem & intentionem nostras, illa & capitulis huiusmodi omnino neglectis, Cancellarios, & notarios pro eorum libito, in civitatibus, terris, castris, & locis sub eorum Legationibus, seu Guberniis comprehensis ponere, aliis amotis, aut si non amotis, in eorum officia, aut ea, quæ ad illa spectant se ingerere non formidant, quam ob causam plura etiam ad præsens in huiusmodi criminalibus notariarum officia penes dictam Camerâ non sine maximo ejus detrimento vendenda remanent, in gravem divinæ majestatis offensam, partimque contrahentium & litigantium præjudicium & gravamen, Notariarumque, Judicum, & Commissariarum, necnon Communitarum, & Universitarum, aliarumque personarum animarum periculum & jacturam, ac plurimorum scandalum.

§.3. Nos igitur, quibus imminet, talia ad meliorem, & saniores statum reduciendi continua sollicitudo, præmissis ne fiant in posterum, debitas provisiones nostræ adminiculo, quantum nobis ex alto conceditur obviare, necnon animarum saluti, notrorumque civitatum, terrarum, castrorum & locorum huiusmodi, ac eorum incolarum, præsertim litigantium & contrahentium statui, quieti, commoditati, securitati, ac salubriori directioni illorum regiminis consulere volentes, necnon quæcumque provisiones, concessionis, assignationes, & qualvis alias dispositiones de prædictis civilibus, & quæ tam conjunctim, quam separatim exerceri solent, & nondum vendita penes dictam Cameram existunt, criminalibus huiusmodi, & ratione scripturæ dumtaxat damuorum datorum officiis, civitatum, terrarum, castrorum, & locorum huiusmodi etiam si ad Legatorum, Communitatum, Universitarum, & aliarum particularium personarum cuiuscumque dignitatis, præminentie, & auctoritatis existentium, quovis modo pertineant, & illa per deputatos ad Legatis, Vicelegatis, Gubernatoribus, seu Possessoribus, vel aliis iustitiæ ministris hæcenus exerceri solita sint, ac ad præsens exercentur, quibuscumque personis cuiuscumque status, gradus, & conditionis existentibus, per nos, aut quoscumque alios Rom. Pontifices prædecessores nostros, ac Sedem eandem, ac etiam Legatos, Vicelegatos, Gubernatores, Possessores, ac alios Officiales, & personas huiusmodi, perpetuo, vel ad tempus, præterquam tamen ex causa onerosa, solutionis videlicet, & exsurrectionis pecuniarum factas, illarum omnium veriores tenores, datas, & decreta etiam irritantia in eis apposita, ac causas propter quas factæ & concessæ fuerunt, præsentibus pro sufficienter expressis habentes, harum serie revocantes, cassantes, & annullantes, ac revocatas, cassatas, & annullatas, nulliusque roboris vel momenti existere, neminique suffragari, aut prodesse posse, seu

Pauli IV. constitutio edita super illis Cancellariis male observatur. Eam habes sup. indicatam in rubric.

Ideo ab isto Pont. revocantur omnes concessionis de eis factæ ex causa non onerosæ.

LXXXIII.

Cancellariæ criminales Status Ecclesiastici, ex causa vere onerosa aliis non concessæ, Rom. Cam. Apost. iterato applicantur. Et statuta pro Cancellariis præfinitur. Cum privilegiorum concessione, ac thesaurarii & A. C. super illis & eorum causis, jurisdictione, & auctoritate.

Eandem applicationem fecit Paul. IV. ut sup. in Tomo I. ejus consil. 10. Romanus.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Superna providentia, quæ cunctorum Christiani delum cæterum per diversa Reclorum officia statuit in rectitudine gubernandum, Pontificalem ad hoc nobis supremam executioni dignitatem, ut præceteris per congruam executione pastoralis officii, cuius ministerio numine affante divino, quamvis indigni præsidemus, cunctorum præsertim nobis & Sedis Apostolicæ subditorum, utilitati & indemnitati salubriter consulamus, ac ne in civitatibus, terris, castris, & aliis eidem Sedi immediate subiectis locis Notariarum, & Tabellionum, seu Scribarum incuria, vel omnia indulgentia, aut impunitate, partium contrahentium & litigantium actus & instrumentum aliumque cum eorum detrimento deperant, aut falsitatis, immutationis, vel alterationis vicio subiaceant, sed ad omnium commoditatem illa debite diligenterque, conserventur illæsa, & proinde ut jus suum unicuique intactum remaneat, opem, & operam efficaces impendamus.

§.1. Cum itaque (sicut magno cum animi nostri merore accepimus) in quamplurimis Status nostri Ecclesiastici civitatibus, terris, castris, & locis, nulla fere aut rara admodum Archivia, seu Registra pro contractuum, instrumentorumque & actuum aliorum, necnon varii alterius generis publicarum scripturarum debita conservatione sint instituta, & si quæ sint, ita incertis, usque, & consuetudine depravata reperiantur, ut qui illis præsent Notarii, Tabelliones, & Scribæ, etiam actuarii, cum ipsi, vel ad tempus à locorum Communitatibus & universitatibus, seu aliis superioribus, aut personis ad id se potestatem habere pretenduntibus, ad Notariatum officia exercenda sint electi, vel ex eo quod officia ipsa, à nobis vel prædecessoribus nostris Romanis Pontificibus, seu Camera Apostolica ipsius gratiose concessa sunt, exercitia suorum officiorum huiusmodi parvipendentes, illorumque amissionem, vel privationem, seu quodvis alterius generis multæ, vel pænæ nufquam metucentes, partes ipsas exhibendis instrumentis, quorum conservationem ipsi prorsus negligunt, in forma probanti, ac solutionibus superinde faciendis pro eorum arbitrio vexare non vereantur, ac (quod peius esse videtur) ipsorumque quam pluries præsertim in locis in quibus illorum electio &

Edita An. D.
1564. &
1565.

Exordium.

Causas istius
constit.

1564.

Paulique
prædicti bul-
la confirmatur.Thesaurario
facultas eas
alienandi
conceditur.Cancellarii
statim publi-
ci Notarii
efficiuntur.Thesaurarii
facultas ven-
dendi Can-
cellarii ex a
originis non
obstante
bulla Pauli
IV. sup. cit.Cameram
pro venditi-
onibus huius-
modi obli-
gandi.Cancellarii
occupantes
expellendi.

debere decernentes. Ipsaq; officia à quibuscumque Communitatibus, Legationibus, Guberniis, etiam perpetuis, vel temporalibus, necnon Magistratibus, Potestatibus, & aliis Iudicibus & personis, penitus, & omnino perpetuo dismembrantes, & separantes, ac eadem officia Cameræ præfatæ applicantes, & appropriantes, & ad illam in futurum perpetuo spectare declarantes & decernentes.

§. 4. Necnon Pauli prædecessoris huiusmodi super notariatum in criminalibus officiis confectas litteras veniorum illarum tenorem, ac si de verbo ad verbum inferis habentes, Apostolica auctoritate etiam perpetuo confirmantes & approbantes, Motu proprio, non ad alicuius nobis super hoc oblata petitionis instantiam, sed de mera nostra deliberatione, Dilectum filium Donatum Matthæum Minalem, modicum, & pro tempore existentem Thesaurarium nostrum generale totius status nostri Ecclesie & Cameræ huiusmodi Commissarium generale ad omnia & singula quarumcumque Legationum, civitatum, terrarum, & locorum totius status Ecclesie, notariatum in civilibus, & nondum vendita criminalia, necnon damnum datorum officia, etiam si illa, per unum vel duos, aut plures notarios exerceri consueverint, ac sub quorumcumque S.R.E. Cardinalium, vel aliarum personarum Legationibus, aut Guberniis, perpetuis vel temporalibus, comprehensa sint, cum eorum scripturis, si quæ sint, necnon honoribus, oneribus, & emolumentis, cum capitulis infra scriptis, ac alias cum obligationibus, clausulis, cautelis, decretis, pactis, & conditionibus, ac pro pretio, seu pretiis dicto Thesaurario benevisis in utilitatem ipsius Cameræ convertendis & applicandis ad vitâ quibuscumque personis, originariis vel forensibus, sibi benevisis.

§. 5. Ita quod liceat ipsi Thesaurario pro tempore existentis personas huiusmodi officia pro tempore ementes, in corporale, reale, & actuale, omnium & singulorum officiorum emptorum huiusmodi possessionem, si quasi inducere, induciturque defendere & manutenere, amoris exinde, etiam manu regia, appellatione postposita & cessante, quibuscumque eorum detentoribus, quos nos etiam per præfatos amovemus, & amotos esse denunciamus.

§. 6. Necnon personas officia huiusmodi pro tempore ementes, statim emptione, & illorum admissione factis, in notarios publicos & legales creamus, constituimus, & deputamus. Ita quod eis in posterum liceat quælibet instrumenta & scripturas, etiam ratione damnum datorum huiusmodi, ac in civilibus & criminalibus causis respective, conjunctim vel separatim, & alias juxta modum prædictum Thesaurarium præscribendum, coram quocumque, sive quibuscumque iudicibus & personis, secularibus vel Ecclesiasticis quacumque potestate, vel etiam Cardinalatus honore, aut alias fulgentibus & tam in iudicio quam extra scribere.

§. 7. Necnon officia in criminalibus huiusmodi nondum vendita, si dicti Thesaurarii illorum emolumentorum tenuitatem perpexerint, una cum civilibus officiis, litteris Pauli prædecessoris huiusmodi quoad hoc obstantibus, personis, etiam locorum originariis, & incolis, vel forensibus, ac alias prout eidem Thesaurario melius videbitur, nomine ejusdem Cameræ, & in illius utilitatem vendenda, concedenda, conferenda, alienanda, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine constituimus, & deputamus.

§. 8. Eique Cameram ipsam, omniaque illius bona præmissorum occasione in amplissima forma ejusdem Cameræ obligandi, aliaque in præmissis & circa ea necessaria ac opportuna faciendi, & exercendi; necnon detentores prædictos expellendi.

§. 9. Ac unum vel plures Commissarium, seu Commissarios loco sui, cum simili aut limitata potestate, facultate, & auctoritate, ac aliis, prout sibi videbitur, ad præmissa deputandi.

§. 10. Ac si quæ forsan super præmissis, omnibus & singulis, aut aliis illorum occasione per co-

ruandem officiorum emptores, aut Communitates, Universitates, Legatos, Vicelegatos, Gubernatores, aut alias personas dubitari contingeret, ac propterea jam forsan inter eos orta sint, & oriri in posterum contingere lites, & dubia, illa interpretandi, & declarandi, ac summarie, simpliciter, & de plano, sine strepitu & figura iudicii, appellatione remota, decidendi, & terminandi, plenam, & liberam, ac omnimodam potestatem, facultatem, & auctoritatem damus, concedimus, & impartimur.

§. 11. Districtius inhibentes quibuscumque Communitatibus, Collegiis, & aliis particularibus personis, & pro tempore existentibus Legatis, Vicelegatis, Gubernatoribus, Potestatibus, Officialibus, Judicialibus, & Commissariis, quibuscumque potestate, auctoritate, facultatibus, privilegiis, indulciis, prerogativis, præminentibus, & dignitatibus munitis, ne sub indignationis nostræ, ac excommunicationis latæ sententia, aliisque quoad inferiores à Legatis, & Vicelegatis prædictis ejusdem Thesaurarii arbitrio moderandis, applicandis, & infligendis penis, quovis quæsito colore, ingenio, vel prætextu, audeant se præsumptum se ulterius in eisdem Notariatum officis, tam per Camerâ venditis, quam deinceps vendendis, ac aliis præmissis, vel eorum interpretatione, ac originalibus scripturis officia huiusmodi ipsorumque Notariorum præjudicium concernentibus, per se seu eorum Cancellarios, seu Secretarios, aut scribas, vel alios, seu alios intrinsece, aut de illis quomodolibet disponentes, seu Notarios illa pro tempore ementes molestare, perturbare, vel impedire, aut contra eos procedere. Decernentes, & declarantes, detentores prædictos spoliatos esse, dici, & censeri, aut illis actionem spoliis propterea òpetere, aut desuper agere.

§. 12. Ac præfatas litteras ullo umquam tempore quovis quæsito colore, vel ingenio, de subreptione, vel obreptione, aut nullitatis vicio, seu intentionis nostræ defectu notari, argui, impugnari, seu restitutiones in integrum adversus illas, per eos amotos, vel alios quoscumque impetrari, aut eos illis etiam motu simili contra uti, ipsasque præfatas ad viam juris reduci, etiam enormissimæ læsionis, aut alio quovis prætextu nullatenus posse. Ac illas, & quascumque venditiones, alienationes, & concessiones de eisdem officiis per eundem Thesaurarium, & Commissarios ab eo pro tempore deputatos, nomine ejusdem Cameræ faciendas, sub quibuscumque revocationibus, suspensionibus, alterationibus, vel limitationibus contrariis minime comprehendendi, sed illas perpetuis futuris temporibus validas & efficaces fore, suasque plenarias & integros effectus sortiri, & inviolabiliter observari, & quoties ille emanabunt, toties in pristinum & validissimum statum etiam sub data posteriori per ipsam Thesaurarium, seu Commissarios, & emptores eligenda restitutas, & de novo concessas esse, & censeri; necnon personas, quibus officia huiusmodi venduntur, & conceduntur, si per Legatos, Vicelegatos, Gubernatores, Potestates, & alios Officiales prædictos pro tempore existentibus modo aliquo molestari, vel impediti contingerint, Camerâ ipsam ad ipsos deferendum, & manutenendum, ac alia præmissa omnino teneri.

§. 13. Ac officia Notariatum huiusmodi per triennium à data præsentium computandum, vacabilia non esse, neque censeri, sed dicto triennio elapso, singulorum officiorum prædictorum, quando per illa obtinentium resignationes vel obitus, seu quacumque aliam diminutionem, vel admissionem, aut venditionem vacaverint, illo præcedentibus supplicationibus manu Romani Pontificis, aut in ejus præsentia signandis, ac alias in omnibus & per omnia, prout in aliis Romanæ Curie officiis vacabilibus fieri consuevit, expediri debere. Necnon illa hæc prima vice tantum per dictum Thesaurarium pro pretio reperibili vendi, ipsamque Thesaurarium litteras patentes illorum concessorum, & assignationum desuper expedire, & concedere posse, ipsaque officia sub præfatis comprehendendi, & per eas Cameræ prædictæ applicata esse, & censeri.

Dubia interpretandi
Belles deciden-
di summarie,
&c.

Prohibito
ceteris omni-
bus, de Can-
cellariis dis-
ponendi.
Ad quod vi-
de etiam
mox inferius.

Præservatio
huiusmodi
venditionum.

Cancellarii
per trien-
nium proxi-
mum non va-
cantes à The-
saurario con-
cedantur.

Cum facultate
rogandi
quocumque
instrumentum
& acta.

§. 14. Necnon personas illa pro tempore ementes facultatem instrumenta quocumque rogandi, & scribendi, necnon aditandi; aliaque faciendi in quocumque, & quibuscumque Tribunalibus Gubernatorum, ac ejusdem Status Ecclesiastici Rotæ Auditorum, Civitatum, Communitatum, Potestatum, Commissariorum deputatorum, & deputandorum, & aliorum quorumcumque Officialium, & justitiæ Minorum, ac in Curia, seu Curis Mercatorum quorumlibet, ac coram quibuscumque, officiis Bulleatarum, Datorum, Gabeliarum, mercium, five pecudum, ac damnorum datorum hujusmodi, tam in causis civilibus, quam criminalibus, five mixtis juxta modum per Thesaurarium hujusmodi in illorum officiorum concessionum patentibus litteris præscribendum, & non alias habere.

Originarii
& exteri eas
consequi pos-
sunt.

§. 15. Ac tam cives, vel originarios, & incolas Civitatum, Terrarum, Castrorum, & locorum, in quibus officia hujusmodi instituta fuerint, quam extraneas personas officia ipsa emere posse.

Et ita & non
alias obser-
vetur.

§. 16. Et ita in præmissis, omnibus & singulis per quoscumque judices, & Commissarios, etiam Causarum Palatii Apostolici Auditores, seu illorum Locutenentes, ac etiam S. R. E. Cardinales, sublati, eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate judicari, & definituri debere, ac irritum, & inane quicquid secus super iis à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Cancellarii
structa Pauli
IV. & istas
ordinationes
servent.

§. 17. Volumus autem, quod personæ quibus officia hujusmodi conceduntur, Notarii Curiales nuncupentur. Ipsique infra scripta, ac ea quæ in ejusdem Pauli prædecessoris litteris continentur ordinationes, statuta, & capitula quocumque, & præsertim ea quæ illorum indicatum concernunt, omnino observare, liberosque conficere, ac eorum instrumenta in protocolla debite redigere sententias etiam, aliaque scripturas diligenter conservare teneantur.

Acta in ma-
nualibus
scribantur.

§. 18. Quodque de cetero omnia acta, quæ in litibus, & causis fieri & scribi contingerit, non in forma processus, sed in libris, manualibus nuncupatis, scribere teneantur.

Taxis obser-
ventur.

§. 19. Nec ratione tam criminalium, quam civilium officiorum hujusmodi pro mercede plusquam hodie capitur, capere possint, servatis modo, & taxa in litteris Pauli prædecessoris præfati circa hujusmodi officia criminalia præscriptis.

Indoleis, &
exemptioni-
bus à Paulo
IV. con. effis
perfruuntur
Sed. S. D. N.
Pau. V.
exemptiones
revocavit in
consil. y.

§. 20. Ipsique omnibus, & singulis privilegiis, prærogativis, & exemptionibus, Notariis criminalibus Pauli prædecessoris hujusmodi concessis, quoad personas, & res ipsorum Notariorum, & eorum Subditorum, ac familiarum usum, & vicum in Civitatibus, Terris, Castris, & locis prædictis, ac extra eas, per universum Statum nostrum Ecclesiasticum prædictum utantur, potiuntur, & gaudeant.

Contributio-
nes nemini
dare de-
beant.

§. 21. Quodque partem aliquam suorum emolumentorum contribuere, aut aliquod onus, vel responsum ratione suorum officiorum quibuscumque Communitatibus, Collegiis, Legatis, Gubernatoribus, aliisve personis solvere minime teneantur, non obstante, quod alias contribuerint, seu solverint aut onus aliquod habuerint, etiam ex causa onerosa, solutionis videlicet, & exburcationis pecuniarum dictæ Cameræ tantum factæ. Sed eo casu certior factus Thesaurarius ipse, prius iis quorum interest de forte principali quam solverint, aut alia aliqua remuneratione, vel assignatione providere, & circa ea in prima dictorum officiorum venditione advertere debeat, & teneatur. Sique pro ea vice dumtaxat merus iudex, ita ut ab ejus sententiis, seu declarationibus, vel decretis, verbo vel in scriptis, etiam ad partium instantiam latis, & factis. appellari non liceat, auditis prius iis, quorum interest, quibus interea emptores præfati nihil solvere teneantur.

Auditor
Cam. eorum
iudex de-
ratur, & de
Theaurar.
respective.

§. 22. Ac quod dicta Camera, & illius Curie caasarum pro tempore existens generalis Auditor, & Thesaurarius, ac eorum quilibet in solidum emptores eorumdem officiorum eorumque per eos

emptorum officiorum hujusmodi substitutos in pacifica possessione manutenere debeat, ac facta venditione prædicta dictus Auditor Notariorum Curialium hujusmodi in omnibus causis, tam ratione dictorum suorum officiorum, quam alias contra eos per quoscumque quomodolibet pro tempore motis merus iudex, & executor sit, esseque censeatur. Ita ut ipsi coram alio iudice, quovis prætextu vel causa, evocari seu trahi non possint, ac in eisdem litibus, & causis, quæ videlicet ratione personarum suarum inter eos, ac officiorum eorum contra quoscumque, idem Auditor manu regia sine strepitu & figura iudicii, sola facti veritate inspecta, appellatione ab ejus sententia remota, procedere possint, & debeat. Ita tamen quod pars, quæ gravata censetur, parito iudicato, & resectis expensis, sententia revisionem in Camera petere possint, & si damna aliqua per emptores Notarios hujusmodi, aut aliquem eorum passa, aut expensa in eisdem litibus, & causis ratione dictorum eorum officiorum factæ fuerint, idem Auditor prout iustum ei videbitur, à partibus condemnatis, aut Cameræ prædictis de illis satisfieri facere procuret, & teneatur.

§. 23. Quodque Legati, & Vicelegati Provinciarum, five Civitatum, Castrorum, Terrarum, & locorum Gubernatores, Communitates, & Collegia, Potestates, ac Commissarii, qui ad præsens administrant, aut administraturi sunt iustitiam, coram quibus Notarii, seu eorum Substituti, tam civiles quam criminales in toto Statu Ecclesiastico pro tempore scribentes existunt, non possint, nec debeant Notarios Curiales hujusmodi molestare, vexare, perturbare, seu impedire super possessione, seu quasi hujusmodi eorum officiorum, vel emolumentis, neque se eorum officiis aliquatenus ingerere, ad eaque officia alios Notarios quoquo modo intromittere, vel salaria eorum contra eorumdem præsentium, ac Pauli Prædecessoris desuper confectarum litterarum hujusmodi formam dinuere, nec dicta officia in assiduum recipere, neque conductores aliquos pi offerre, sub pena excommunicationis per contrafacientes eo ipso incurrenda, à qua non nisi à prædicto Auditore Cameræ, ac resectis prius ejusdem Auditoris arbitrio damnis & interesse ipsorum Notariorum Curialium, & non alias absolvi possint.

§. 24. Et si reperierint aliqua ex dictis officiis tam civilibus, quam criminalibus vendita, five alias quibuscumque personis quocumque titulo, tam per nos, quam prædecessores nostros, aut Cam. Apost. præter & contra, tam earundem præsentium nostrarum, quam prædicti Pauli prædecessoris jam desuper confectarum litterarum hujusmodi formam & tenorem quomodolibet alienata, si in alienatione hujusmodi dicta Camera ultra dimidium læsa fuisse reperitur, tunc illorum emptoribus per Cameram ipsam prius restitutus pretiis, illa ab eodem Thesaurario de novo uti vacantia vendantur. Illaque in omnibus, & per omnia sub præsentibus comprehendantur, & comprehensa omnino intelligantur.

§. 25. Quodve in omnibus Civitatibus, Terris, & locis totius Status Ecclesiastici prædictis, etiam si in illis Archivia aliqua, non tamen ex causa onerosa exburcationis videlicet pecuniarum eidem Cameræ factæ ut præfertur, instituta, etiam quibuscumque facultatibus, & privilegiis munita existant, Notarii ipsi Curiales diligentissime scripturas, & instrumenta suorum officiorum conservent, ac ad illorum delationem ad Archivia hujusmodi non teneantur, sed illa, occurrente eorum officiorum, five per cellum, aut venditionem, five per mortem, aut alias, vacatione, ei cui à Sede Apostolica officia hujusmodi sic vacantia conceduntur, assignari, & tradi debeant.

§. 26. Ipsique Notarii Curiales in Civitatibus Terris, Castris, & locis hujusmodi in quibus nulla Archivia existant, à reliquis Civitatibus, Terrarum, Castrorum, & locorum eorumdem non Curialibus Notariis pro Archivo habeantur, ac illorum scrip-

Prohibitio
ceteris offi-
cialibus de-
super se in-
tromittendi.

Cancellaria-
rum concessi-
ones reser-
vandum, si
Camera
Apost. ultra
dimidium
læsa sit.

Cancellarii
eorum scrip-
turas ad Ar-
chivia defer-
re non tenen-
tur, sed eorum
successoribus
consignare.
Vide formam
traditam à
Paulo IV.
cit. in rub.

Cancellaria
habeantur pro
Arch. vis
ubi illa non
sunt.

Officiales tenentur ad instantiam Cancellarium alios Notarios inquirere, & reperiendos inhables repellere.

Notariorum decessentium scripturas, Cancellarii custodiunt si Archivianon fiat in locis illis.

Causæ, inter plures Cancellarios per turnum à Cancellario distribuuntur, &c.

turarum custodes existant, nec tam eas, quam suas alias quavis de causa transportare valeant.

§. 27. Ac Civitatum, Castrorum, Terrarum, & locorum, in quibus Notarii ipsi Curiales instituti fuerint, Gubernatores, seu iustitiæ administratores, eisdem Curialibus Notariis instantibus ceteros Notarios non Curiales iure, vel privilegio, aut facultatibus instrumenta rogandi suffultos de eorum privilegiis, facultatibus, & iure huiusmodi inquirere sibi que suorum privilegiorum, facultatum, & juris patentes literas ostendi petere, & facere, ac eos quos habiles repererint, ad rogatus contractuum, & instrumentorum suscipiendos admittere. Alios vero minus habiles, etiam quantumvis idoneos, & sufficienti privilegio munitos repellere eis que ne contractus, & instrumenta conficiant, aut se de eis rogent, inhibere possint, & cogant admissos huiusmodi Notarios ad instrumenta redigenda in libros, & protocola, eisdem modo & forma, ac sub penis quæ in dicta constitutione Pauli IV. continentur. Quorum quidem Notariorum non Curialium inquisitione singulis saltem mensibus, & ad quamlibet ipsorum Curialium Notariorum instantiam, & adversus inobedientes executio à Gubernatoribus, & iustitiæ ministris huiusmodi sine aliquo temporis intervallo fiat, ad hoc ut scripturæ publicæ suum effectum sortiantur, sub penis contra Gubernatores, aliosque iustitiæ ministros, opem auxiliumque suum in, supra, & infra notatis casibus denegantes præfato Auditori Camerae benevisis.

§. 28. Quando autem in præfatis locis, ubi nulum est Archivium quispiam Notarius non Curialis decesserit, aliquis ipsorum Curialium Notariorum cum Cancellario Universitatis, seu Communitatis si talis Universitas vel Communitas Cancellarium habeat; sin minus cum alio, ubi scripturæ Notarii non Curiales defuncti reperirentur, se conferat, ac eas accipiat & de illis inventarium conficiat, quo confecto illud in libro penes se remansuro registret, & deinde illud Notarii defuncti hæredibus consignet, ac scripturas huiusmodi ad officium suum transportet, & simul cum aliis suis benevisis conservet. Ac casu quo extrahendum, aut dandum sit sumptum aliquod scripturarum, & instrumentorum Notarii defuncti huiusmodi, possit & debeat illa publicare tantamque mercedem recipere, quantum si rogatus de eodem sumpti instrumentum fuisset, relictis tamen mercedis ejusdem tribus ex quatuor partibus hæredibus præfatis, & si dicti Notarii non Curiales, dum infirmantur scripturas suas huiusmodi Notariis Curialibus consignare voluerint, teneantur Notarii Curiales huiusmodi eas recipere, & morte Notarii consignantis succedente, ordinem qui supra describitur, omnino sequi. Et circa hæc Gubernatores, ceterique iustitiæ ministri Civitatum, Terrarum, Castrorum, & locorum in quibus Notarii, non Curiales huiusmodi obierint, Notariorum defunctorum huiusmodi hæredes ad consignandum scripturas illorum, si quæ penes illos extiterint sub penis sibi benevisis cogere, & compellere auxiliumque, favorem, & operam efficaces de super impendere debeant, quæ si recusaverint, à præfato Auditore Camerae poena ejusdem Auditoris arbitrio imponenda & applicanda, puniri possint. In locis autem ubi plures Notarii aderunt Curiales, occurrente obitu aliquorum Notariorum non Curialium, tunc Notarius Curialis curâ scripturarum defuncti habeat, qui ad hoc à ceteris sociis forte extractus erit.

§. 29. Porro si in Civitate aut Terra, vel loco alio, plures fuerint Notarii Curiales, nulli partium litigantium causam inchoare liceat coram eo Notario quem volet, etiam si causa, vel lis sit ordinaria, seu extraordinaria, aut commissionis, sive appellationis sed per turnum causæ omnes distribuuntur inter Notarios prout in Alma Urbe, ac inter Rota Notarios Almae Urbis nostræ fieri, & observari solet, videlicet qui voluerit committere causam, vel litem, aut eam inchoare de mandato Superioris, sive per viam libelli, sive alterius cujusvis petitionis, seu appellationis, adibit Menfarius, qui quolibet mense forte ab illis

eligeretur, & mutabitur ipse, librumque ad hunc effectum custodiet cum inscriptione nominum, & cognominum aliorum Notariorum collegarum suorum in eodem Tribunali ubi pendebit causa, eaque nomina in bussula ad hoc apta imbussulabit, & unus illorum forte extractus in illa causa Notarius esse censetur. Idemque Menfarius in prædicto libro Notariorum extractum dictæ causæ faciet debitorem, cum descriptione tituli, & nuncupationis causæ, nominumque partium litigantium, & successive in aliis pro tempore advenientibus causis extrahatur unus reliquorum Notariorum qui super fuerint in bussula, & sic de aliis donec turnus finitus fuerit, & eorum quisque causam aliquam habuerit, & super hoc turno etiam comprehendatur nomen Menfarii, finitoque turno iterum nomina omnium Notariorum in bussula ponantur, nominaque, & causæ modo quo supra extrahantur & inter eos dividantur, quo fiet ut donec extractio nominum à bussula facta fuerit, partes litigantes lue causæ Notarium prorsus ignorabunt. Notario extractio, causaque per Menfarium Notario extractio assignata penes ipsum remaneat, ac in ea scribat, nec in illa aliis Collegii Notariis licet in eodem Tribunali in eadem causa scribere, aut ullo modo se in ea immiscere. Ita ut Notarius, cui forte causa obtigerit, etiam si illa non agitur, se iterum imbussulare petere non possit, donec turnus ipse finiatur.

§. 30. Et similiter singulis primis diebus cussilbet mensis forte extrahatur unus Menfarius, cui libri Menfariatus consignabuntur, & computa causarum ad quos pertinebant, cum bussula, aliisque nominibus quæ supererunt. Et quia multis in locis plurium causarum principium sumitur, vel ex præcepto, vel monitorio Superiorum, aut à fugæ suspicionis mandato, in quibus solitum est apponi sigillum Judicis, Volumus, ad hoc ut servetur aequalitas in distributionibus causarum inter Curiales Notarios huiusmodi, quod sigillo ipso penes Judicem remanente in eventum expeditionis præcepti, aut monitorii, vel mandati, antequam illa sigillentur, Notarius ex bussula extrahatur qui præceptum, seu monitorium, vel mandatum huiusmodi scribat, quo scripto, ipse ad Menfarium Notarium accedat, ac illo sigillari procuret. Et in locis in quibus ratione præceptorum monitoriorum, & mandatorum huiusmodi nihil ultra sigillum solvitur, sigillo huiusmodi Menfario pro tempore existenti soluto, Menfarius ipse in fine mensis Superiori seu Judici ad quem spectat sigilli emolumentum, computum sigillorum datorum reddere teneatur. In locis vero in quibus sigillum huiusmodi gratis datur, Menfarius illius ratione nihil exigat. In locis autem in quibus eorumdem præcepti, monitorii, & mandati ratione partim pro sigillo, partim vero pro scriptura aliquid solvitur, Notarius scribens suam ratam retineat; ratam vero Judicem, vel Superiorem ejusdem sigilli ratione tangentem, Menfario tunc existenti persolvat, ac Menfarius de similibus, ut supra, eidem Judici, seu Superiori in fine cussilbet mensis computum reddere debeat, nec hoc ordine intelligatur confundi causa unius tribunalis cum alio tribunalis, sed cussilbet tribunalis Notarii Curiales pro tempore existentes, & de per se suum turnum conficiant in divisionibus causarum.

§. 31. In Civitatibus vero in quibus pro conservatione scripturarum sunt Archivia, & registra, ac ordo publicus, nec de fraude, errore, ignorancia, aut scripturarum amissione dubitatur, Notarii Curiales præfati de aliorum non Curialium Notariorum scripturis rogantibus, vel instrumentis minime se intromittant, nihil tamen recognitionis, vel alterius oneris Archivio, aut matriculæ huiusmodi solvere, aut illis modo aliquo subijci, aut illorum legibus & statutis parere minime teneantur. Prohibentes reliquis Notariis dicti Status nostri Ecclesiastici ne actum aliquem litis, seu illius dependentiæ, aut præsentationis monitorii, citationis, executionis, pacis, concordia, aut alterius rei unde lis, seu iudicium inchoatur, vel deducitur, in ea Civitate in qua Notarii Curia extiterint, scribere, recipere, seu de illis præsumant.

Menfarii extractio, & officium.

Cancellarii non se intromittant in scripturis Notariorum, ubi sunt Archivia.

Partes cogi non possunt ad extrahenda instrumenta.

Arrham dantes pro scripturis, ad solutionem earum cogi possunt.

Cancellarii Collegium in Rom. Curia erigere tenentur.

Taxa solvenda in admissionibus cancellariorum.

Cancellarium officia non conficiantur.

Super eis Societates fiunt.

Taxa compositionis solvenda in concessionibus officiorum.

Facultas illa resignandi.

Cancellarium Collegium gaudet privilegiis Archivi Rom. Curie, & aliis hic expressis.

§. 32. Insuper quod nulla, vel Bononie vel aliter Civitatis, aut loci Archivia, vel regestra consuetudinem cogendi partes etiam invitata ad extrahenda a suis protocollis publica instrumenta, & acta, etiam multa necessitate requirente habentia, id deinceps facere, neque illorum Notarii, nec etiam ipsi Curiales & actuarii personam aliquam contra illius voluntatem ad extrahendum instrumenta non solum facta, sed etiam fienda cogere, aut alias contra illam desuper agere queant.

§. 33. Præterea quoties litem aliquam, ac illius actus transportare contigerit, si arrha a partibus litigantibus Notario causa data fuerit, Notarius ipse easdem partes pro rata qualibet earum tangente, etiam si partes ipsæ actibus, & scripturis huiusmodi non amplius indigeant, ad solutionem scripturarum actuum prædictorum omnino cogere, & compellere possit.

§. 34. Deinde quod omnes Notarii Curiales unum Collegii, & congregationis corpus efficiant, ac unum Collegium Romæ instituerent, & qui ex Notariis ipsis Romæ præsentibus fuerint, quolibet mense semel ad minus congregari, & de rebus officia prædicta concernentibus tractare, ac pro salubri illorum, & dicti Collegii conservatione, & directione, quæcumque statuta, & ordinationes, licita tamen & honesta cum voto tamen, & assensu prædicti Auditoris Camere, quoties eis videbitur, condere, facere, statuere, & ordinare, illaque postquam condita, facta, statuta, & ordinata fuerint, pro eorum libito, ac temporum qualitate id exigente mutare, alterare, aut penitus cassare, & alia de novo facere, statuere, condere, & ordinare. Necnon officia ipsa attentis singulorum valore, & pretio, prout eis illorum conscientia dictaverit, taxare. Ita quod taxa facta singuli singulorum officiorum huiusmodi Notarii illam singulis annis eidem Collegio per illud iuxta providam illius ordinationem de illa disponendam perolvere teneantur.

§. 35. Dummodo tamen taxa ipsa decem scuta auri non excedat, nec minor taxa unius scuti similis existat. Præterea vacatione aliquis ex dictis officiis per cessum, vel decessum, aut aliter pro tempore occurrente, in admissionibus novorum Notariorum eadem taxa, seu rata eidem Collegio de illa per illud, ut præfertur, disponenda solvatur.

§. 36. Insuper officia prædicta (exceptis læsæ Majestatis, falsitatis, aut homicidii criminibus, ac servata forma bullarum Pauli prædecessoris) huiusmodi ratione cuiusque alterius criminis conficari, aut illa obtruncari eis privari, vel cessiones, aut resignaciones de illis pro tempore scientiæ impediri, aut quavis de causa d' fieri non possint nec debeant.

§. 37. Et super illis liceat intrare Societates, prout in aliis Romanæ Curie officiis fieri solet.

§. 38. Et dum concedentur in posterum pro supplicationis expeditione, & compositione (hac priva vice dumtaxat excepta) quinque scuta auri pro centenario ratione pretii venditionis officii, usque ad summam mille scutorum inclusive, à summa vero mille scutorum huiusmodi, usque ad aliam quamcumque duo scuta similia pro quolibet centenario, nostro, ac pro tempore existentium Romani Pontificis Datario solvantur.

§. 39. Et quotiens Notarii Curiales præfati per se vel eorum procuratores officia resignabunt, aut iuri in illis, vel ad illa competenti in manibus nostris, ac pro tempore existentis Romani Pontificis cedent, Nos, ac pro tempore existentis Rom. Pontifex huiusmodi resignaciones, seu cessiones admittet, & in registro solito registrari facere, idemque Datarium datam parvam dare teneatur, secundum quam expeditur supplicatio quanto citius poterit.

§. 40. Quodque Notariorum Curialium Collegium huiusmodi, omnibus & singulis privilegiis, facultatibus, prærogativis, & gratiis Collegio Archivi Romane curie (sine tamen illius præiudicio) quomodo libet concessis, etiam quoad creationem Notariorum, aliaque id genus negotia utatur, potest, & gaudeat, omnesque, & singuli Notarii Cu-

riales statim ubi admissi, eorumque nomina in libro Collegii Curialium prædictorum descripta fuerint, Notarii Apostolici Curiales, ut præfertur nuncupati, vera sint, & esse censcantur, ac pro talibus habeantur.

§. 41. Quodque Notarii Curiales sua officia huiusmodi per se vel alium seu alios, fideles scilicet & sufficientes Substitutos, notarios tamen publicos Apostolica auctoritate creatos, ac habiles, & idoneos, & à prædicto Notariorum Curialium Romæ instituendo Collegio approbatos, quoque in eodem Collegio cautionem idoneam de probe, & legaliter exercendo, ac se syndicatum submitiendo, aliaque agendo iuxta formam litterarum Pauli prædecessoris huiusmodi exercere.

§. 42. Necnon quæcumque instrumenta ubicumque locorum rogare, & tales Substituti illa (patronis eorum à Civitatibus, Terris, Castris, & locis in quibus eorum Notariatus officia instituta fuerint, absentibus) publicare, & subscribere possint. Decernentes huiusmodi instrumenta, tam Romæ, quam alibi ubicumque locorum, plenam, & indubitatam fidem facere, nec de illorum validitate aliquo umquam tempore dubitari posse.

§. 43. Ac quod liceat eidem Collegio habere sigillum, & sub illo legalitates, aliaque huiusmodi expedire, prout in aliis ejusdem Rom. Curie Collegiis observatur. Quodque Notarii ipsi Curiales in Civitatibus, Terris, Castris, & locis dicti Status nostri Ecclesiæ, in quibus plures sunt Notarii, alia Collegia à Romano Collegio tamen dependentia, cum simili sigillo, & quæ ab omni alio Collegio, Societate, & matricula aliorum Notariorum, etque Doctorum liberi & exempti, nullumque superioritatem in illos eorumque Notarios, exercere possint, similiter facere, & insinuare possint.

§. 44. Porro quod Notarii Curiales huiusmodi in quibuscumque Provinciis, Civitatibus, Terris, Castis, & locis dicti Status nostri Ecclesiæ, ubi residerint, sint executores, ad eosque pertineant præsentatio, & intimatio, & executio videlicet Romanæ Curie expeditionum, vel litterarum in forma brevis, monitoriorum, citationum, inhibitionum, brachii secularis, & cuiuscumque generis executionum illuc à Romanis Iudicibus, ac Urbe prædicta pro tempore transmissorum, nec ibi præter ipsos alius rogare, vel scribere, nec alii intimationes prædictorum facere possint, alias intimationes, & rogatus huiusmodi nullius sint roboris, vel momenti, & illis fides nullatenus adhibeatur.

§. 45. Neque Legati, Vicelegati, alive Superiores, & iustitie ministri causas, tam criminales, quam civiles, coram Iudicibus inferioribus inchoatas, & acceptas ab illis, in Notariorum Curialium, & capitulo huiusmodi præiudicii evocare, vel alias ab eis amovere, præterquam in capitalibus causis, quo casu id (servatis tamen Curialium Notariorum huiusmodi emolumentis, ac sine illorum præiudicio) fieri possit.

§. 46. Decernentes præmissa omnia & singula nullo umquam tempore quovis quæsito colore vel ingenio, de subreptionis, opreptionis, aut nullitatis vitio, seu intentionis nostræ defectu notari, vel impugnari posse, sed illa semper valida, & efficacia fore, suosque plenarios, & integros effectus fortiri, & inviolabiliter observari, ac Notariis Curialibus, illorumque Collegiis prædictis, in omnibus & per omnia suffragari, ac ut præfertur iudicari, & definiri debere.

§. 47. Non obstantibus præmissis, ac nostra de non tollendo iure quæsito, non tamen ex causa onerosa prædicta proveniente, & aliis quibuscumque Apostolicis, necnon in Provincialibus Conciliis editis generalibus, vel specialibus constitutionibus, ac Provinciali, Civitatum, Terrarum, ac locorum huiusmodi iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus, privilegiis quocumque indultis, & litteris Apostolicis, quibusvis Legatis, Vicelegatis, Gubernatoribus, Potestatibus, & aliis personis de huiusmodi officiis quomodolibet, etiam ex causa onerosa eisdem Provinciis, Civitatibus, Terris, & locis, ac

Officia per substitutos exercant.

Instrumentaque ubi que rogant.

Collegium habeat sigillum, & nomini subiacet.

Executoresque sunt expeditionum Rom. Curie, etiam privata quoad alios. Hec non fervatur.

Gubernat. non advocet causas in eorum præiudicium.

Clausule præservative.

Clausule derogatorie.

nditor
C m execu-
tur deputa-
tur.

Dat. P. A. S.
die 6. Oct.

Edita An. D.
1565.

Exordium.

Hic Pont.
edidit conf.
de qua hic.
Et modo dat
facultatem
Thesaurario
d Gas Cen-
cellarias lo-
candi.

personis per quoscumque Rom. Pontifices, & Cameram ipsam, etiam Nos, & pretextu donationis, concessionis, & aliarum dispensationum etiam motu, & scientia similibus, ac alias concessis, approbatis, & innovatis, quas & quae illorum omnium vim, & effectum datas, & tenores pro expressis habentes, ad effectum praemissorum revocamus, irritamus, & annullamus, illisque specialiter, & expresse derogamus.

§. 48. Et insuper pro praemissorum omnium conservatione praefatum Auditorem Camerae in conservatorem, & executorem praesentis nostrae intentionis, ac omnium, & singulorum in ea contentorum specialiter, & expresse facimus, constituimus, & deputamus. Volentes quod praesentium transumptis etiam impressis, sigillo, & manu alicujus Praelati munitis, talis & tanta fides adhibeatur, qualis & quanta praesentibus adhiberetur, si illa in medio originaliter exhiberentur, vel ostenderentur. Aut si aliquibus communiter, vel divisim à praedicta sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem, & quibuscumque aliis dictae Sedis indultis, generalibus vel specialibus quorumcumque tenorem existant per quae praesentibus non expressa, vel totaliter non inserta effectus eorum impediri valeat quomodolibet, vel differri, & de quibus, quorumcumque totis tenoribus habenda sit in eisdem litteris mentio specialis. Nos enim ex nunc irritum decernimus, & inane si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari. Nulli ergo, &c.

Dat. Romae apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicae 1564. Pridie Non. Octobris, Pontificatus nostri Anno quinto.

Sequitur facultas Thesaurarii Papae, locandi & disponendi de dictis Cancellariis.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Continua mentem nostram sollicitudo vexare non cessat, ut circa ea quae pro nostrorum, & Sedis Apostol. subditorum utilitate, illorumque, necnon Civitatum, Terrarum, & locorum nostri Status Ecclesiastici, prospera salubrique directione, à nobis emanarunt, ita provide attendamus quod per ampliationem facultatum personarum desuper deputatarum, ac aliis viis opportunis illorum debita executio suum felicem celeremque consequatur effectum.

§. 1. Cum itaque nos nuper, &c.

Omittitur restitui narrative, quia ipsa bulla est quae praecedit.

§. 2. Et sicut accepimus idem Thesaurarius ad venditionem, & concessionem singulorum officiorum hujusmodi, certis sapientibus legitimis causis, ita prompte circa grave dictae Camerae damnum, & praedictum procedere nequeat, idcirco nos ejusdem Camerae indemnitati quantum in nobis est consulere, & si non venditionis, saltem alia non minus ipsi Camerae commoda atque utili via de ipsis officiis disponere, ac alia quae per nos in dictis litteris desuper statuta sunt, & ordinata executioni debite demandare volentes, litterarumque praedictarum anteriores tenores, ac si de verbo ad verbum inferrentur praesentibus pro expressis habentes, praefato Donato Matthaeo Minali moderno, & pro tempore existenti Thesaurario nostro generali hujusmodi, ut ultra eas quas litterarum eorundem vigore, tam circa officiorum hujusmodi dispositionem, quam alia in litteris ipsis contenta quaecumque debite exequenda sibi concessimus facultates etiam omnia & singula, tam civilium & criminalium, quam quoad scripturas dumtaxat damnoorum datorum, Notariatus, officia hujusmodi, in toto vel in parte, ac alias prout sibi commodius eidemque Camerae utilius facere videbitur, cum omnibus illorum scripturis, libris, Protocolis & instrumentis, si quae habeant, necnon honoribus, oneribus,

& emolumentis, uni feu pluribus personis, Civitatum, Terrarum, & locorum praedictorum, originariis vel forensibus, ad tempus per eum praefigendum, & determinandum, pro pretio seu pretiis reperibilibus, ac cum pactis, & conditionibus, ac alias modis, & formis prout eidem Donato Matthaeo moderno, ac pro tempore existenti Thesaurario hujusmodi melius videbitur Camerae praedictae nomine, ac in illius utilitatem, & commodum arrendare, locare, seu ad firmam, vel alia responsione annua, seu mensuam concedere. Ac pretiis seu firmam, vel alia responsionem hujusmodi, etiam unico contextu, & anticipata solutione recipere, & habere aut recipi, & haberi, ac de receptis, & habitis Arrendatarios, & solventes quoscumque quietare, & liberare seu quietari, & liberari facere, necnon quaecumque obligationes etiam dictae Camerae bonorum quorumcumque, ac promissiones, actus, & instrumenta desuper necessaria, ac in eorumdem Arrendatarios favorem, & cautelam tendentia facere aliqua opportuna circa ea exequi. Necnon personae seu personis cui vel quibus officia ipsa, in toto vel parte, ut praefertur arrendata fuerint, ut officia ipsa per quemcumque seu quoscumque; Substitutos, idoneos & habiles, ac in artis Notariatus hujusmodi peritos, & Notarios, praestita tam en de Substituto eorumdem fide, & legalitate idonea, & sufficienti cautione arbitrio dicti Thesaurarii exercere seu illa sublocare habere, & licite valeant, scientia, potestate, ac auctoritate similibus concedimus, & indulgemus, eisque liberam, amplam, & omnimodam desuper facultatem, potestatem, & auctoritatem damus, concedimus & impartimur.

§. 3. Districtius inhibentes tam officia praefata emptionis, & venditionis, ac arrendamenti seu locationis titulo pro tempore obvenientes, & exercentibus, quam Curiarum Episcoporum Notariis quibuscumque, ne sub excommunicationis lata sententia, ac ducentorum ducatorum per quemlibet contravenientium qualibet vice incurrendorum & eidem Cam. Apost. applicandorum poenis, ipsi in civilibus, & profanis tam ordinariis, quam communi ad Curiales, illi vero in spiritualibus causis, ut ad Curiarum Episcopatum Notarios hujusmodi dumtaxat spectant, scribere acitare seu se alias de illis respective in alterius praedictorum intromittere quovis pretextu seu quavis colore, aut ingenio, directe vel indirecte audeant, seu praesumant.

§. 4. Ac mandantes in virtute sanctae obedienciae, ac sub nostrae indignationis poena dilectis filiis nostro Vitellorio Sanctae Mariae in Via lata Diacono Cardini Vitellio nuncupato, moderno, ac pro tempore existenti S. R. E. Camerario, necnon dictae Camerae Thesaurario Clericis Praesidentibus, & personis, ac quibuscumque aliis ad quos id quomodolibet spectat, & spectabit in futurum, quatenus praesentem nostram Motu proprio cedulam, necnon arrendamenta, locationes, & concessionem de dictis officiis eo, unumque scripturis respective, ac desuper inter eundem Thesaurarium, ac quoscumque eorumdem officiorum, & scripturarum respective arrendatarios, & assignatarios pro tempore intervenientia pacta, conventiones, & capitula in dicta Camera recipiant, & admittant, illaque in ejusdem Camerae libris, & protocolis registrari, describi, & annotari, ac desuper necessaria contractus, & instrumenta, cum debitis, ac solitis clausulis, cautelis & obligationibus, fieri, conscribi & stipulari faciant, litteralque patentes, & mandata opportuna Arrendatariis, ac aliis quibus opus fuerit dent, tradant, & exhibeant realiter, & cum effectu.

§. 5. Necnon decernentes arrendamenta, locationes, & concessionem, ac scripturas & instrumenta desuper pro tempore facta valida, & efficacia fore, nec ob intentionis, seu voluntatis nostrae, aut alium quempiam defectum subreptionis, aut nullitatis vitio subiacere posse.

§. 6. Sique per quoscumque Judices, & Commissarios quavis auctoritate fungentes, sublati, &c. judicari & definiti debere, ac irritum, &c. attentari.

Cancellarii
praedicti, &
Notarii Episcoporum,
seipsos non
impediant.

Camerarius
& Clerici,
contractus
cum solitis
obligationibus
desuper
fieri curent.

Clausula
praeservati-
va.

Clausula
sublati.

§. 7. Non obftantibus noftris per quas inter alia volumus, res, proventus, jura & obventiones dictæ Camere non nifi licitatione prævia cuiquam locari, arrendari, vel concedi non poffe neque debere, ac aliis constitutionibus, & ordinationibus Apoftolicis, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apoftolicis quibufvis &c. etiam Motu proprio, ac alias in contrarium quomodolibet concessis, approbatis & innovatis, quibus omnibus illorum veriores tenores præsentibus pro fufficienter expreffis habentibus, illis alias in suo robore permanfuris, hac vice dumtaxat fpecialiter & exprefse derogamus, ceterisque contrariis quibufcumque.

§. 8. Volumus autem quod præfentis noftri Motus proprii fola fignatura fufficiat, & ubique fidem faciat in iudicio & extra, quacumque regula, feu constitutione Apoftolica contraria non obftante.

Placet Motu proprio. I.

Die 28. Maji 1565. admiffa hac est cedula Motus proprii ex decreto Camerae, & regiftrata libro fecundæ fignaturarum S. D. N. Pape apud me Notarium Hier. de Tarano.

Reintegratio privilegiorum, ac facultatis quærendi elemofynas pro Archihospitali Sancti Spiritus in Saxia de Urbe.

Alia de isto Archihospitali plene fcripta apud conf. 7. Innoc. III. Inter. fup. fol. 58. Tom. I.

PIUS PAPA QUARTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Cum Magiftrum illum cœlestem, & Dominum noſtrum, quamdiu ſub mortalitatis noſtræ exuviis in hoc mundo peregrinatus eſt, pauperum infirmorum curam non ſolum per ſeipſum aliſſime geſtiſſe, ſed etiam illam nobis in diſcipulis ſuis diligenter demandatſe recordamur, neceſſariæ Hoſpitalium in quibus infirmos quotidie cum maxima charitate recipi, & ſolicite curari cognovimus, ſubventioni, & miſerabiliſſimæ perſonarum, in eis degentium conſolationi deſſe non poſſumus. Unde majorem aliquorum neceſſitatem cognofcentes, tametiſi ſpirituales indulgentias, & alias gratias eis, aliſiſque ſimilibus piis locis per Sedem Apoſtolicam conceſſas, generaliter certis rationabilibus de cauſis revocandas duximus, majori tamen, & urgentiori nonnullorum neceſſitate proſpecta ſimiliter ex cauſis non minus comprobandis, illa adverſus revocationes huiusmodi aliquando reſtituenda cenſemus, ut quod ipſi perſonaliter præſtare nequimus, ad id fideles ipſos exequendum ſpirituallibus muneribus invitemus.

§. 1. Sane cum retroactis annis, privilegia, indulgentias, facultates etiam diſpenſandi ſuper impedimentis matrimonialibus, & aliis quibufcumque defectibus, ac ſuper irregularitatibus, necnon abſolvendi, & alias gratias variis Eccleſiis, & tam noſtro S. Spiritus in Saxia de Urbe Ordinis S. Auguſtini, quam certis aliis Hoſpitalibus, & piis locis per diverſos Romanos Pontifices prædeceſſores noſtros, ea etiam per nos, & Sedem prædictam varie conceſſa pluries limitaverimus, & reſtrinximus, & declaraverimus. Ac poſtremo ex certis tunc expreſſis cauſis, per noſtras fup. Dat. 13. Kal. Octobris, Pontificatus noſtri Anno III. deſuper expeditas litteras, Motu proprio revocaverimus, & caſaverimus, & annullaverimus, diſcretiſſis inhibentes eorundem Hoſpitalium, & aliorum piorum locorum Præceptoribus, Superioribus, & perſonis, etiam ſub excommunicationis lætæ ſententiæ pena, ne de cetero indulgentiis, conceſſionibus, facultatibus, privilegiis, indultis, & aliis gratiis, huiusmodi, uti, ſeu ſe de illis introrittere quoquomodo præſumerent, Ac decernentes irritum, & inane, ſi ſecus ſuper his à quoquam quavis auctoritate, ſcienter, vel ignoranter contingeret attentari, prout in dictis litteris plenius continetur.

§. 2. Ac in Concilio Tridentino ſtatutum ſit, ut quæſtores elemofynarum, eorumque nomen, &

uſus deinceps in quibufcumque Chriſtianæ Religio-
nis locis penitus aboleantur, nec quæſtores ad offici-
um quæſtarum huiusmodi exercendum ulterius
admittantur. Et nihilominus indulgentias, & alias
ſpirituales gratias, quibus non ideo Concilium ipſum
Chriſti fideles privandos eſſe cenſuit, in poſte-
rum per Ordinarios locorum adhibitis duobus de
Capitulo, debitis temporibus, populo publicandas
eſſe decrevit; Dans illis facultatem etiam elemofynas
huiusmodi, atque oblata ſibi charitatis ſubſidia
nulla proſus mercede accepta, fideliter colligendi,
ut tandem omnes vere intelligant cœleſtes hos Ec-
cleſiæ theſaurus, non ad quæſtum, ſed ad pietatem
exerceri.

§. 3. Nos præfati Hoſpitalis noſtri, ad quod non
ſolum magnus pauperum infirmorum ex omnibus
Chriſtiani Orbis nationibus Romam venientium
quotidie fit concurſus, ſed etiam in quo non parvus
utriuſque ſexus infantium expoſitorum numerus ha-
betur, alitur, & inſtruitur; ipſæque pauperes puella
nubiles, induſtriis viris matrimonio copulantur, &
alia pietatis opera diligenter exercentur. Ut tot
tantique ſumptibus ad id neceſſarii ſufficere valeat
ſubventioni, quantum nobis ex alto permittit
conſulere cupientes, ac omnia, & ſingula privilegia,
indulgentias, etiam plenarias, facultates, indulta,
& alias gratias, eidem Hoſpitali eſiſque Præceptoribus,
membris, & perſonis per quocumque Romanos
Pontifices prædeceſſores noſtros, ac nos, & Sedem
prædictam hætenus quomodolibet conceſſas, Litterarum
noſtrarum deſuper conceſſarum tenores præſentibus
pro ſufficienter expreſſis habentes, Motu proprio,
& ex certa ſcientia, noſtra eadem privilegia, indul-
gentias, etiam plenarias, & alias facultates, indulta,
aliasque gratias, quæ præfato Concilii decreto mi-
nime adverſantur, ſed illi commodè coaptari po-
tuerunt, adhuc dumtaxat, ut illis, omnibus, & ſingulis,
idem Hoſpitale, & ejus membra ad id per dilectum
ſuum Bernardinum Cynillum de Aquila modernum,
& pro tempore exiſtente Præceptorem dicti Hoſ-
pitalis, ad ejus beneplacitum in ſcriptis deſignanda,
& ſpecificanda, juxta ipſius decreti Conciliaris for-
mam, & tenorem ubilibet gentium uti, frui, & gau-
dere; ipſique fideles, indulgentias, & alias gratias in
eis contentas conſequi libere, & licite valeant, in
omnibus, & per omnia, perinde, ac ſi revocationi, ac
deſuper expeditæ litteræ noſtræ prædictæ non eman-
aſſent, Hoſpitali eſiſque Præceptoribus, & perſonis
præſatis in perpetuum, Apoſtolica auctoritate tenore
præſentium quatenus ſint in uſu, & dummodo
decretis Concilii huiusmodi non repugnent, vel præ-
judicent.

§. 4. Quodque publicatio locorum adhibitis do-
bus de Capitulo temporibus debitis fieri debeat, qui
& elemofynas, aliaque oblata ſibi charitatis ſubſi-
dia, nulla proſus mercede accepta fideliter colligi,
& ad effectum præmiſſum conſignari debeant, reſti-
tuimus, ac de novo concedimus, & elargimur, ac
idem Hoſpitale adverſus litteras noſtras huiusmodi,
quoad præmiſſa, in priſtinum, & eum in quo ante
dictam revocationem erat, ſtatum reponimus, &
plenarie reintegramus. Ac privilegia, indulgentias,
facultates, indulta, & alias gratias huiusmodi dicto
Hoſpitali reſtituta, & de novo conceſſa, Hoſpitale-
que adverſus revocationem noſtram huiusmodi plene
reintegratum eſſe, & cenſeri.

§. 5. Et ſic per quocumque locorum Ordina-
rios, & alios Judices, & Commiſſarios, quavis au-
thoritate fungentes, ſublata eis & eorum cuilibet,
quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate,
& auctoritate, judicari, & deſiniri debere. Ac quic-
quid ſecus ſuper his à quoquam quavis auctoritate
ſcienter vel ignoranter contigerit attentari, irritum
& inane decernimus.

§. 6. Non obſtantibus præmiſſis, ac quibufvis Apo-
ſtolicis, necnon in Provincialibus, & Synodalibus
Conſiliis editis, generalibus vel ſpecialibus conſtitu-
tionibus, & ordinationibus, ac omnibus illis, quæ in
litteris in ipſius Hoſpitalis favore expeditis prædictis,

1564.
ſtores ele-
moſynarum
abolere, in-
dulgentijs
per Ordina-
rios certo
modo publi-
cari.

Hic idem
Pont. pro
ſubventione
huius H. ſpi-
talis, ubi di-
verſa pia ope-
ra exercentur,
nunciat
tunc ſus
indulgentias,
& privilegia
Conc. Trid.
non contraria
dicto Hoſp-
tali tantum
ſed etiam
membris ac
generali Præ-
ceptore ſpe-
ciſandis.

Forma ele-
moſynas col-
ligendi ap-
ponit.

Claufula
ſublata.

Claufula de-
rogatoria.

Dat. P. An. 5.
die 11. Oct.

LXXXV.

non obulare concessum fuit, ceterisque contrariis quibuscumque.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 11. Octobris 1564. Pontificatus nostri Anno quinto.

Prohibitio confidentiarum beneficiorum, & reservatio dispositioni Sedis Apostolicæ, quorumcumque Beneficiorum in confidentiam receptorum, cum penarum inflicciónem in huiusmodi criminis reos.

Confidentia cognoscendi regulas, ac presumptiones, testesque in causis confidentiæ recipiendos, declaravit inf. Pius V. in constit. 85. Intolerabilis. Et facultates Judicis ejusmodi causarum confidentiæ, & si monia in Romana Curia habes inf. in Six. V. constit. 48. Divina Et quoad confidentias in Regno Francia, vide ejusdem Sixti constit. 61. Pastoralis.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D.
1564.

Exordium.

Romanum Pontificem in excelsa militantis Ecclesiæ specula constitutum, vigilans mentis oculos, non solum in absentium extendere, sed potissimum in presentium domesticorumque fratrum, & filiorum suorum mores diligenter perscrutandos, aliquando reflectere, ac eos, præsertim quos in Apostolicæ sollicitudinis partem evocavit Altissimus, ne dum ab omni passionis illicitæ contagione, verum etiam ab ejus omnimoda suspitione vacuos, & imunes conservare decet, ut qui ceteros illustri officii sublimitate antecellunt, eisdem priscæ etiam illa morum integritate præstare dignoscantur.

Causæ hujus
constitut.

§. 1. Sane licet dudum, cum certam simoniacæ, pravitatis speciem, quam beneficiorum confidentiam vocant, etiam Romanæ Curie atque adeo in sacrum venerabilem fratrum nostrorum S. R. E. Cardinalium Collegium, quasi per cuniculos irrepisset, ac nonnullos ex ipsis fratribus, nimia quadam facilitate seu potius importunitis amicorum familiariumque precibus adductos, beneficia Ecclesiastica in confidentiam huiusmodi recepisse, & frequentius recipere intelleximus, hanc illicitam beneficiæ exercendæ, seu amicitie colendæ viam, à tanto saltem Collegio prorsus eliminare cupientes, eosdem fratres in Consistorio nostro secreto, non semel admoventes, huic aliena beneficia custodiendi modo ne assuecerent, neve illa hoc pacto recipere, utque sic recepta dimitterent, nihilominus nuper ad aures nostras pervenit eorum aliquos monitionis nostræ immo potius sui inter obitum, ea quæ custodienda receperant beneficia, nondum tamen dimisisse. Et insuper illos, & nonnullos alios, etiam Patriarchas, Archiepiscopos, & alios Episcopos, ac etiam Cameræ Apostolicæ Clericos, Ecclesias, Monasteria, Dignitates, & alia beneficia huiusmodi, in favorem resignata, cessâ, vel alias dimissa, acceperat aut de illis, per obitum vel alias vacantibus à nobis, & prædecessoribus nostris, seu etiam ab Ordinariis, & aliis inferioribus Collatoribus, etiam ad patronorum præsentationem, ad alterius commodum sibi providere obtinuisse, illaque, ac etiam alia aliter vacantia, sibi in titulum, commendam, vel administrationem, aut alias dictâ auctoritate concessa, quandoque in resignantium, vel cedentium, seu etiam aliorum favorem cessisse, vel alias dimisisse. Ac sibi propterea pensiones annuas, ac fructus, redditus, & proventus Ecclesiarum, Monasteriorum, Dignitatum, & aliorum beneficiorum huiusmodi, in toto, vel in parte, etiam aliquando cum facultate illas, & illos transferendi, ac etiam collationem, provisionem, præsentationem, & aliam dispositionem beneficiorum ecclesiasticorum ad earundem Ecclesiarum, Monasteriorum, & dignitatum Prælatos pro tempore existentes, ac alios huiusmodi beneficia pro tempore obtinentes pertinentium, necnon regressus, sive accessus, & ingressus ad Ecclesias, etiam Cathedrales, Monasteria, ac alia diversa be-

neficia ecclesiastica, sibi reservari procurasse, & obtinuisse, ad hoc videlicet, ut confidentes sic decimarum Apostolicarum, vel communis dicti Collegii, & annatæ, aliorumque jurium dictæ Cameræ debitorum, solutionem eludant, integritque beneficiorum, etiam in mensibus Apostolicis vacantium, aut alias dispositioni Sedis Apostolicæ generaliter reservatorum collationibus, ac interdum, ut beneficia ipsa, tempore procedente, in aliquorum, tunc forsitan de jure inhabilium, & incapacium, vel nondum adhuc natorum favorem, cedantur seu resignentur, vel ut personæ inhabiles, & incapaces huiusmodi, etiam laici, pensionibus, ac fructibus, redditibus, & proventibus ecclesiasticis fruantur, & gaudeant, seu potius illis, & facultate transferendi prædicta abutantur, in animarum suarum periculum, & perniciosum exemplum.

§. 2. Quare nos hanc Cardinalium eorumdem in monitionibus nostris parendo incuriam, & tam illorum, quam ceterorum Prælatorum, etiam clericorum, ac aliorum quorumcumque indignam fallaciam, convitentibus oculis diutius minime distimulandam, sed huic erroris radices altius agat, occurrendam tandem esse censentes. Et quoniam hanc ipsorum, qui monitioni nostræ non parentes, beneficia huiusmodi in confidentiam, ut præsertim, retinuerunt, & fructus ex eis indebite, vel percipiendo, vel per alios nomine suo, etiam per simulas illorum locaciones, & fidas de receptis quietantias, ac donationes, & remissiones percipi sinendo, graviter exceperunt Cardinalium metam, potius ex immoderata erga suos indulgentiam quam aliquo præceptorum nostrorum spreto processisse facile reputamus. Idcirco omnes, & singulas Ecclesias, etiam Metropolitanas, & alias Cathedrales, ac Monasteria, etiam consistorialia, priores, præposituras, præpositus, dignitates etiam majores, & principales, etiam conventuales, personatus, administrationes, & officia, ceteraque beneficia ecclesiastica, cum cura, & sine cura secularia, & quorumvis Ordinum, regularia, etiam de jure patronatus, etiam laicorum, etiam nobilium & illustrium, etiam ex fundatione, & dotatione existentia, per ejusdem Rom. Ecclesiæ etiam Episcopos Cardinales, & quoscumque alios, etiam Patriarchas, Archiepiscopos, & alios Episcopos, ac etiam ejusdem Cameræ Clericos, in titulum, commendam, vel administrationem, aut alias, in huiusmodi confidentiam jure prohibitam cujusvis personæ, ut præsertim, contempatione, vel intuitu quovis modo recepta, illorum liberam collationem, & dispositionem nobis & Sedi Apostolicæ harum serie reservantes, ipso jure à die receptionis eorumdem vacavisse, & vacare. Ac fructuum, & pensionum reservationes, ac facultates transferendi, & collationis beneficiorum concessiones, eis, ut præmittitur factas, ac regressus, sive accessus, & ingressus concessos huiusmodi cessasse & cessare, ac extinctos esse.

§. 3. Et eosdem Cardinales, seu quovis alios, à prima die receptionis beneficiorum huiusmodi, citra fructus, redditus, & proventus earundem Ecclesiarum, Monasteriorum, dignitatum, & aliorum beneficiorum, ac pensiones prædictas, indebite percipere, suosque facere non potuisse, neque debuisse, sed illos, omnes & singulos ad Cameram eandem devolutos fuisse & esse, illique debere, ac ipsos Cardinales, & alios, ad quorum manus quomodolibet pervenerunt, & eorum hæredes ad integram illorum restitutionem in utroque foro teneri, & ad id opportunitis juris remediis compelli debere auctoritate Apostolica, tenore presentium decernimus, & declaramus.

§. 4. Et insuper universis, & singulis tam ejusdem Rom. Ecclesiæ Cardinalibus etiam Episcopis, quam Prælatibus, & Clericis, ac aliis prædictis, presentibus & futuris, ne deinceps ullo umquam tempore aliquas Ecclesias, Monasteria, dignitates, vel alia beneficia, etiâ de dicto jure patronatus uti præsertim existentia, aut fructus, vel pensiones, aut regressus, seu accessus, in

Beneficia in confidentia recepta à die receptionis vacasse, hic Pont. decretum, & Sedi Apost. reservat.

Huic reservationi derogavit quoad Regnum Franciæ Sixtus v. in rubr. cap. 11.

Redditusque dictæ Cam. Apost. applicat.

Immo in Regno Gallie in usum & in reparationem Ecclesiarum converti jussit Six. V. ibid.

Prohibet hæc cetero fieri sub poenis hic expressis. Immo majores poenas imposuit Pius V. in rub. cit.

confi-

confidentiam prædictam, aut ad effectum reservationum hujusmodi sibi postmodum cedentibus procurandarum, recipere præsumant, Cardinalibus videlicet, & aliis Prelatis hujusmodi, in virtute sanctæ obedientie, & sub interdicti ingressus Ecclesiæ, reliquis vero sub majoris excommunicationis lætæ sententiæ pœna, per contrafacientes eo ipso incurrenda, à qua nisi à nobis, aut Rom. Pontifice pro tempore existente, præterquam in mortis articulo constituti, absolvi nequeant, districtius inhibemus.

§. 5. Ac quascumque collationes, provisiones præfectiones, comendas, reservationes, facultates, etiam transferendi, ac regrediendi sive accedendi, & ingrediendi, ac alias dispositiones de Ecclesiis, Monasteriis, dignitatibus, & aliis beneficiis, eorumque fructibus, & beneficiorum collationibus, per nos & alios Rom. Pontifices successores nostros, etiam Motu proprio, seu consistorialiter, aut etiam per Ordinarios, & alios inferiores collatores, etiam ad patronorum eorumdem præsentationem, & alias quomodolibet cum interventu confidentiæ hujusmodi expresse, sive occulte, ac de jure præsumpto, & alias contra præmissa pro tempore factas, nullas, & invalidas, nulliusque roboris vel momenti fore, neque cuiquam suffragari, sed Ecclesiæ, Monasteria, dignitates, ac alia beneficia hujusmodi, ipso jure vacare, ac nostræ, & Sedis Apostolicæ dispositioni reservata, fructusque, & pensiones Cameræ Apostolicæ applicatos, ut præfertur esse, & censi.

§. 6. Sique in præmissis omnibus, & singulis, per quoscumque Judices, & Commissarios, etiam ipsius Ecclesiæ Rom. Cardinales, sub lata eis quavis aliter interpretandi, & judicandi facultate, etiam per præsumptiones, & conjecturas legitimas, & eorum arbitrio (cum alias confidentias hujusmodi in locum erui, & probari non posse constet) procedendo, judicari, & definiti debere: ac quicquid secus super his à quoquavis auctoritate, scienter vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane similiter decernimus.

§. 7. Non obstantibus, fel. rec. Bonifacii Papæ VIII. prædecessoris nostri de aliis, & Concilii generalis de duabus, dietis, ac uni constitutionibus Apost. necnon Collegii præfati juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia, roboratis, statutis, & consuetudinibus contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas, non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

§. 8. Et ne quisquam illo umquam tempore præsentium ignorantiam præterdere possit, volumus, & eadem auctoritate decernimus, quod ipsæ præfentes litteræ ad Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe valvas, per aliquem ex Curforibus nostris, illarum copia ibi affixa, & dimissa, & etiam in Cancellaria Apostolica de more publicentur, ac in ejusdem Cancellariæ quinterno, ad majorem partium illas in judicio producere volentium, commoditatem describantur.

§. 9. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ reservationis, declarationis, inhibitionis, decreti, & voluntatis, infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus se novet incursurum.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo sexagesimo quarto, 26. Kal. Novembris, Pontificatus nostri Anno quarto.

Supra scriptis locis supra scriptarum litterarum copiis affixis, ut moris est, per nos Julium Parinum, & Bernardinum Andrentium prelibati S. D. N. Papa Cursores.

Antonius Clerici Mag. Curforum.

De Electionibus ad regimina Monasteriorum, Præpositurarum, & aliarum dignitatum Conventualium.

Ad hoc vide pleniorē dispositionem Greg. XIV. in ejus const. 6. Onus. infra in hoc Tomo II.

Sanctissimus in Christo Pater, & D. N. D. Pius divina providentia Papa IV. Ad cujus pervenit notitiam, quod licet aliàs omnia Monasteria virorum, valorem ducentorum florenorum auri communi æstimatione excedentia, necnon priores, præposituras, ac alias dignitates Conventuales, & præceptorias generales, Ordinum quorumcumque, dispositioni suæ generaliter reservaverit, ac propterea illorum provisiones, & ad ea quæ speciali privilegio eligendi sibi per Sedem Apostolicam concessa suffulta sunt, canonice factarum electionum confirmationes, ad Sanctitatem suam, & dictam Sedem pertinere noscantur, nihilominus perique Religiosi cæca nimis ambitione agitati, partim electiones de suis personis ad Monasteria, Prioratus & alias dignitates Conventuales hujusmodi, vel privilegium eligendi prædictum habeant, vel illo careant, nullo juris ordine servato, nullaque boni vel æqui ratione habita, temere fieri, factasque per Ordinum Superiores, aut locorum Ordinarios de facto confirmari, partim vero nedum priusquam electiones de se ad Monasteria, & alias Conventuales dignitates eligendi privilegio suffulta factæ, rite confirmetur, sed ne electi quidem canonice, se in regimine, & administratione tam in spiritualibus, quam temporalibus Monasteriorum aliarumque dignitatum vacantium eorumdem, ac illorum bonorum immiscere non videntur, in animarum suarum periculum, auctoritatis Apostolicæ contemptum, & plurimorum scandalum.

§. 1. Volens tantis, qui paulatim in religiosis irreperunt abusibus, & ausibus nimis licentiosis aliquando, sicut par est, occurrere, suamque Sedi præfatæ prærogativam assertere, Omnes & singulas electiones quarumvis personarum ad regimina Monasteriorum, prioratum, præpositurarum, & aliarum dignitatum Conventualium, ipsarumque electionum confirmationes per quoscumque cuiusvis status, gradus, ordinis, & conditionis existant, & quavis etiam Archiepisc. Patriarchali, aut majori præfugeat dignitate hætenus sic præsumptas, nullas, & invalidas, ac pro nullis, invalidis, & prorsus infectis habendas esse, personasque sic ut præfertur electas & confirmatas, Monasteria, aliasque Dignitates hujusmodi sine legitimo titulo possidere, & possidere, necnon illorum fructus, redditus, & proventus indebite percepisse, & percipere. Ac personas ipsas ad absolutionem, & habilitationem super his, necnon confirmationem electionum de se factarum à Sanctitate sua seu Romano Pontifice pro tempore existente, aut Sede prædicta, infra sex menses à data præsentium computandos impetrandum, ac litteras Apostolicas super hujusmodi confirmatione in totum expediendas omnino teneri declaravit.

§. 2. Et nihilominus hac sua perpetuo valitura constitutione statuit & ordinavit, quod nullus de cetero se in regimine, & administratione Monasterii, vel alterius dignitatis Conventualis, ad quod seu quam illum eligi contigerit, in spiritualibus vel temporalibus antequam nite celebrata electio à Sanctitate sua, aut Romano Pontifice pro tempore existente, & Sede prædicta confirmata, & littera Apostolicæ desuper expeditæ fuerint, per se vel alium in toto, vel in parte quovis quæsito colore immiscere, aut ad aliud vel illam se recipi facere, vel alias se pro ejus Prælato gerere præsumant.

LXXXVI.

Edita An. D.
1564.Causæ hujus
constitutæ.Annulatio
electionum
factarum
abique Sedis
Apost. provi-
sione, vel
confirma-
tione.Forma defa
per in futu-
rum ser-
vanda.

Penam aliter
electorum,
vel electio-
nes confir-
mantium.

§. 3. Decernens omnes & singulos, qui secus fecerint, jure si quod illis ad Monasteria, vel eorum Regimina, & administrationes, ac alias Conventuales dignitates per electionem hujusmodi quasvis fuerint, eo ipso privatos, & deinceps ibi ineligibiles esse, ipsaque Monasteria & alias Dignitates ab eadem Sede impetrari posse, qui vero similes electiones confirmare presumpserit, etiam eo ipso Superiores Ordinum videlicet suis Dignitatibus privatos, Ordinarii autem locorum etiam si Archiepiscopi, & majori præcellant dignitate, ingressum Ecclesiarum interdictum, eosque ab Ecclesiarum suarum regimine, & administratione suspensos existere.

Placet, publicetur & describatur. I.

Papæ sub-
script.

Publ. P. A. 5.
die 31. Oct.

Lex & publicata fuit superscripta Regula Romæ, in Cancellaria Apostolica, Anno Incarnat. Dominice 1564, die vero Martis ultima mensis Octob. Pontific. præfati S. D. N. Papæ Anno V.

LXXXVII.

Alia & Secunda Reformatio Tribunalis Reverendæ Cameræ Apostolicæ, & Officialium ejus.

Primam quam hic Pontifex edixit reformationem, habes sup. in ejus cons. 55. Romanus. fol. 56. ubi plene notavi.

Edita An. D.
1564.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Hic Pont.
pro reforma-
tione regis
Dominici
celebrari vo-
luit Concil.
Trid. ut fu-
pra in ejus
cons. 73.
fol. 111.

Cum inter ceteras animi curas, quibus in hac præfata beati Petri Sedi meritis licet imparibus constituti quorundam sollicitamur, illa vel à primordiis assumptionis nostræ ad summi Apostolatus apicem præcipua fuerit, & universum gregem Dominicum fidei nostræ commissam, ad illicita valde proclivem, pro nobis injuncti muneris officio in viam salutis reduceremus, ejusque rei gratia, sacrum Oecumenicum, & generale Concilium in Civitate Tridentina indicendum celebrandum & Deo favente absolvendum convenimus.

Romanam
Cur. & ejus
officia reformavit,
ut in multis cons.
præcedenti-
bus.

§. 1. Et propterea, ne dum foris de reformandis in universali Ecclesia moribus tractabatur, interim ipsam morum censuram domi, videlicet apud Sedem ipsam detrectare, causamque Curie Romanæ, & Almæ Urbis nostræ, in qua Sacerdotii Principatum, & Christianæ Religionis caput, unde merito universi Christiani fideles, rectæ Catholicæque vitæ fumerent exemplum, divina instituit providentia, protellare videremur, quinimmo, ut à domo nostra judicium inciperet, Curiam ipsam, ac præcipuos illius Magistratus, ordines, & officia multis excessibus, & corruptelis quæ vana hominum libidine in eam sensim irreperant, summis tum studio tum diligentia repurgaverimus.

Ejusque Ca-
meram ut su-
pra in cons.
55. Roma-
nus. fol. 79.

§. 2. Et inde animum nostrum ad Cameram Apostolicam, ad quam negotia locorum omnium totius Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Status, assidue confluant, ejusque Tribunal, quod sive jurisdictionis antiquitate, & auctoritate, sive rerum gerendarum excellentia, sive virorum amplitudine, ceteris in eadem Curia præstat, intendentes, multa, quantum tulit temporis ratio, circa illius jurisdictionem hujusmodi, ac potestatem, & facultatem, necnon dilectionum filiorum Notariorum, & aliarum personarum suarum statum, & directionem salubriter ordinaverimus, prout in aliis litteris nostris desuper confectis plenius continetur.

Hanc dictæ
Cameræ re-
formationem
prosequendo
omnia ejus
privilegia
quatenus
huius reforma-
tioni non
sint contra-
ria confir-
mat.

§. 3. Nos semel inceptum reformationis hujusmodi negotium Domino cooperante diffusius prosequi, nec tamen ex iis, quæ pro ipsius Cameræ, & pro tempore existentis Ecclesiæ Romanæ Cameraarii, necnon Clericorum, & reliquarum personarum dictæ Cameræ statu, & directione, ac alias ibi hactenus salubriter instituta, & concessa fuisse reperiuntur, quicquam derogare sed his immotis in sua firmitate permanentibus, ea solum, quæ experientia,

vel deesse vel obesse probavit, opportune juxta rerum exigentiam supplere, & emendare volentes; Necnon omnium, & singularum Constitutionum, tam generalium, quam specialium, in favorem dictæ Cameræ editarum: ac quorumcumque privilegiorum, facultatum, gratiarum, concessionum, litterarum, & indultorum, illi ac præfatis Camerario, & Clericis, eorumque Collegio, & personis, per fel. rec. Gregorium IX. Bonifacium VIII. Urbanum VI. Martinum V. Eugenium IV. Sixtum etiam IV. Innocentium etiam VIII. Julium II. Leonem X. Paulum III. & Julium similiter III. ac alios quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, etiam Motu proprio, & ex certa scientia concessorum, confirmatorum, & innovatorum, Necnon statutorum, ordinationum, & decretorum in Cameræ, ac Cameraarii, & Clericorum prædictorum, eorumque Collegii causas, res, personas, & statum concernentium hucusque conditorum, & ab eisdem prædecessoribus, vel eorum aliquibus confirmatorum, necnon quarumcumque litterarum, & aliorum documentorum desuper confectorum tenores, ac si de verbo ad verbum infereretur, præsentibus pro sufficienter expressis habentes: Motu proprio, & ex certa scientia nostra, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, illa omnia, & singula, ac prout ea concernunt reliqua in ipsis litteris, aliisque documentis contenta, quatenus litteris nostris prædictis contraria non sint, nec illarum effectum impendant, auctoritate Apostolica, tenore præsentium, approbamus, & confirmamus, eisque perpetuam, & invariabilem roboris firmitatem adjicimus, ac omnes, & singulos, juris & facti defectus, si qui forsan intrevenerint in eisdem supplemus.

§. 4. Et nihilominus eadem præmissa, omnia & singula Cameræ, Camerario, Clericis, & Collegio prædictis concessa, & indulta, eisdem modis, & formis, quibus ab ipsis prædecessoribus nostris emanarunt, similibus auctoritate, & tenore de novo perpetuo concedimus, & indulgemus, ac ab illis statuta, & ordinata, statuimus, & ordinamus, volentes illa perpetuis futuris temporibus, sub censuris & penis in his contentis invariabiliter observari.

§. 5. Cum autem officio Clericatus dictæ Cameræ, quod in ipsa Curia primarium existit, munus potissimum incumbat ejusdem Cameræ res rite, & recte administrandi, jura & redditus utiliter locandi, contrahendisque desuper necessarios, & opportunos inveniendi, quorum occasione ipsi Clerici Cameræ, Procuratores patrimonii beati Petri, rerumque omnium totius Status Ecclesiæ Romanæ hujusmodi custodes, & Præfides merito nuncupantur. Necnon jura reddendi, & iustitiam tam Fisco & privato, quam ipsis privatis, si qua ratione de Fisci interesse agatur, administrandi. In his autem muneribus obeundis, vel temporum malicia, vel antiquorum Clericorum negligentia, vel desuetudine, res Cameræ detrimentum non modicum accepisse noscitur. Hinc est quod nos sicut rei magnitudinem postulat ad ulteriorem, etiam in his, reformationem procedendum esse censentes, Motu, scientia, potestatis plenitudine, & tenore similibus, perpetuo statuimus, & ordinamus, quod deinceps, ad ipsa Clericatus Cameræ officia cum vacabunt, nulli nisi vitæ, morum integritate præstantes, litterarum scientia præditi, rerumque humanarum experientia insignes, assumi debeant, quorum excellentia, virtute, doctrina, & auctoritate Camera, ipsa, & Romanæ Ecclesiæ Status universus recte gubernari, & latissimum ab eis incrementum suscipere possit.

§. 6. Et ut inde videbatur dire cupiditatis pernicies omnino eliminetur, quod posthac in quibuscumque contradibus super locationibus rerum, & juri ipsius Cameræ celebrandis, seu partitis, ut ajunt, faciendis, nullus Vicecamerarius, Thesaurarius, aut quispiam ex Clericis, & Cameralibus, Assistentibus, Notariis, aliisque ministris, & personis dictæ Cameræ, quocumque nomine nuncupatis, illarum peritices existat. Quin potius ipsi ab omni quantumvis omnino commodo & lucro, exinde quomodocumque

Iteratoque
ea concedit

Clericorum
dictæ Cameræ
qualitate
designantur

Camerales
con. radium
Cameræ par-
ticipes esse,
prohibetur.

Ad hoc vide
cons. 3. Jul.
III. fol. 692.

directe vel indirecte provenienti, omnino abstineant, quod si eorum aliquem fecus fecisse legitime confiteri, officio suo, ipso facto perpetuo privatus existat, perpetuaque infamia notetur, ac aliis penis nostro, nostrique successoris Rom. Pontificis, pro tempore existentis arbitrio subiaceat. Qui vero de præterito circa præmissa deliquerit, penis à jure, & constitutionibus à Prædecessoribus nostris super hoc editis, & inscriptis puniatur.

§. 7. Sed nec quisquam dictorum Vicecamerarii, Thesaurarii, Clericorum, aliorumque Cameralium, & Ministrorum, assensum, ullis contradicibus, quos inter Cameram ipsam, & eorum consanguineos, aut affines ad quatuor usque gradum actioentes fieri contigerit, sub mille ducatorum Camera præfatæ applicandorum, & alia nostro dictique successoris arbitrio incurrenda pœna, falsis nihilominus constitutionibus antiquis alias pœnas propter hoc irrogantibus, intervenire, vel alias sese in illos eorumque tractatibus, per se vel alium, seu alios quouomodo immiscere audeat.

§. 8. Causæ vero conjunctorum, & propinquorum alicujus Clerici, ad dictum quartum gradum exclusive ipsi Clerico nullatenus committantur, nec quicumque eorum sibi commissas audiat, sed eas expressa causa reoscat. Nec etiam tu discussionibus & defensionibus, tam illarum, quam aliarum quarumcumque causarum, in quibus aliquid interesse prætereundum posset, five Clericus five assistens illarum, ullo modo interesse, nec ullum votum habere, sed statim à dicta Camera etiam dum causa proponitur etiam injussus, cum in hoc ignorantiam prætereundum non possit, egredi debeat, & si fecus fecerit Clericus per mensum suspensionem ab exercitio, & perceptione emolumentorum sui officii, aliis Clericis applicandorum, ipso facto incurrat, Assistens vero vocalium, & salarium exactione, aliis Assistentibus applicanda, ipsiusque Camera ingressi trium mensum spatio mulgetur.

§. 9. Quicumque autem, five ex Clericis five ex aliis Cameralibus præfatis ab aliquo suspectus in causa recusans fuerit, accusans non nisi expressa suspicionis causa audiri, illaque expressa absente recusato, ut suspecto in Camera discuti, eaque à pluribus approbata, suspectus ipse in hujusmodi causa nullo modo se intrinicare, aut interesse debeat. Si vero suspicio probari nequiverit, nulla ejus allegata ratio habeatur.

§. 10. Et quoniam ubi periculum majus intenditur, ibi est plenius consulendum, quod super quibuscumque contradicibus Cameralibus deinceps in perpetuum inveniendis, capitula, & conventiones per Thesaurarium Camera, pro tempore existentem, vel alium ad quem spectaverit prius conscribantur, eorumque exempla singulis Clericis, & aliis omnibus Cameralibus per Commissarium ejusdem Camera, tribus saltem diebus antequam de negotio tractetur, transmitti debeant, quibus unusquisque seorsum instructus domi mature consolare, remque cum ceteris in Camera ipsa conferre possit, ut ibi omnes recte discernere valeant, ac tum demum ea quæ decreverint statuto die in plena Camera comprobanda, per quempiam alta voce legi debeant, ut solito inter eos ordine servato, cuique licitum sit super unoquoque capitulorum quid sentiat coram dicere, & allegare, & quod inde ipsi Camera utile, & optimum videbitur, executioni salubriter demandetur. Ceterum ut fraudibus, quæ in hujusmodi contradicibus fieri possunt, necnon periculis, controversiis, ac litibus obviatur, publicaque utilitati evidentius consulatur, quod hujusmodi capitula, quæ sic confecta, & expedita fuerint imprimi, aut scribi, & publicari, ac affigi in locis solitis debeant.

§. 11. Ac omnia, res, proventus, & jura Camera juxta formam aliarum litterarum à nobis super hoc Motu simili emanatarum, quas etiam per præfentes innovamus, subhasta licitari omnino debeant. Quæ omnia per dictos Vicecamerarium, Thesaurarium, Clericos, & alios supranominatos, sub excommuni-

cationis pœna, non nisi à nobis, & successoribus nostris præterquam in mortis articulo relaxanda, exacte servari mandamus, declarantes vota, & juramenta ipsorum aliter præfata eisdem non ligare. Ac contractus, & omnia inde secuta, nullius roboris, vel momenti existere, quinimmo per Cameram, quodcumque revocari, & contractus ipsos servata eadem forma, de novo celebrari debere.

§. 12. Cumque fidei curæ, & judicio dictæ Camera tamquam præfatæ Curie, & totius Ecclesiæ ditionis, necnon ipsius Principis in hujusmodi rebus, & bonis supremo Tribunali status ipse universis commissus sit, magnopere laborandum est, ut munus justitiæ virtutum omnium Dominicæ, & Regine, ac publicæ, privatique tutricis optime, non solum Imperio, sed etiam majestati, & dignitate fulciatur, & tamquam in bene composita corpore purus sanguis, ita in illa religionis justitiæ, & aequitatis, quasi sanitas perpetuo constet, quod statutis diebus, quibus dicta Camera in Palatio Apostolico, & ubicumque haberi consuevit, quisque ea interveniens, summo mane, & hora ab ipsa Camera statuta, sicuti alii bene constituti Magistratus dictæ Curie convenire debeat.

§. 13. Cursores vero, jubente ipso Camerario seu Vicecamerario, ipsam Cameram, certis loco, & hora, five ordinaria five extraordinaria fuerit, pridie sub pœna amissionis salarii mensurii, singulis tam Clericis, quam aliis Cameralibus personaliter, vel per cedulam domi dimissam, omni tempore prænunciare teneantur.

§. 14. Et cum absentia ipsa per se damno, & incommodo maximo omnibus sit, cum non solum rerum gerendarum cursum retardet, sed ipsa quoque negotia in discrimen manifestum constituit, & pleniusque destituat, quod nullus deinceps, five Clericus five alias Cameralis, ab ipsa Camera, sine expressa Camerarii, vel ejusdem Camera Decani licentia, impune abesse possit, excepta publicæ utilitatis privatæque necessitatis causa, quam tamen absens per Nuncium eidem Camera significare debeat. Qui vero id semel, & iterum neglexerit, fructibus, & emolumentis illius mensis, aut jocalibus & regalibus, aliis applicandis, quæ vel uno ex eisdem contradicente illi nequaquam remitti vel condonari possint, & aliis ipsius Camera arbitrio privari debeat, nec nisi de expressa nostra, aut successoribus nostris licentia ceteris in Camera significata, ab Urbe abesse possit, statutis, & decretis, quæ de absentia Clericorum, & aliorum præfatorum disponunt, integris permanentibus per præfentes innovatis. Illis tamen quæ à Tridentino Concilio super residentia statuta sunt falsis, & illatis manentibus.

§. 15. Clerici autem, & qui alias Rochetto, & Cappa utuntur, eisdem in qualibet Camera, reliqui vero solitis vestibus rubeis & violaceis, nulla deinceps Consistorii habita distinctione induantur, aliter vero induti excusari aut admitti non possint.

§. 16. Omnes itaque sic induti dicta hora, pulsata campanella ad Missam accedant, quæ Decano, & alio Clerico, vel absente Decano, duobus Clericis ad minus assistentibus incipi debeat, eaque peracta præeuntibus duobus Curforibus, omnes Cameram versus reudant, alius post alium servato ordine incidentes, quo quisque commodius ab agentibus, & colligitantibus de rebus pertractandis valeat informari.

§. 17. Ubi vero ad locum propositionum causarum pervenerint, impetrato omnibus per Camerarium, seu eo absente, Vicecancellarium, vel Decanum silentio, Advocati, Procuratores, & alii quibus id incumbit causas hujusmodi non turbare, aut confuse, ut plerumque consuevit, sed singulatim, & ita diserte, reverenter, & sine strepitu proponant, ut ab omnibus commodè intelligi, & à Clerico Mensario notari possint. Quod si illi à Camerario, seu Vicecamerario, vel Decano, semel, & iterum moniti non obtemperaverint, ad hoc munus deinceps non admittatur.

§. 18. Cumque Notarii dictæ Camera turpi

Camerales
co veniant
diebus statu-
tis summo
mane in Ca-
mera.

Cursores de-
bent Cam-
eram pridie
intimare.

Abesse non
debent Cam-
erales abs-
que licentia
Camerarii,
vel Decani.

Vestibusque
hic descriptis
Camerales
induti stent
in Camera.

Missamque
audiant, &
inde ad Ca-
meram se
conferant.

Ante causa-
rum propo-
sitiones, im-
perato silen-
tio, procuratores
audiantur.

Notarii Camerae procuratoris officium non exerceant.

Causae miserabilium personarum in Advocatum per Procuratorem pauperum in Camera gratis tradenda sunt.

Propositiones occurrentes scribendae sunt per Clericum Mensarium, antequam fiat Camera.

Oratio B. Ihsodori per Clericum novissimum postea legatur.

Deinde litigantes audiatur.

Camera postea claudatur, & nemo admittatur per Cursores custodes nisi cum licentia, & causarum propositiones pro Fisco vel Commissario Camerae, aut Procuratore pauperum scribantur.

Mensarius causarum propositiones legat.

Decanus distribuat causas per turnum, non ta-

lucro inhiantes ex procuracionibus causarum plerumque per eos, vel eorum Substitutos precibus, amicitia, vel pecunia factis, causas ipsas non modo affectare, sed in eis quoque Notarii, & Procuratoris officia in detrimentum partium conjunctim exercere noscantur, quod illi deinceps ab eisdem procuracionibus sub poena ducentorum ducatorum Camerae praefata applicanda, prorsus abstineant, sed Procuratores causarum, vel Solicitatores ipsarum, ad eas procurandas dumtaxat admittantur.

§. 19. Quodque Pauperum & miserabilium personarum causae, quarum in dicta Curia quo major est numerus, eo major praestitum quod impensas ratio est habenda de cetero à Procuratore pauperum, qui in eodem loco ubi describuntur contingit assistat, gratis & quandocumque voluerit, etiam extra ordinem favore paupertatis proponantur. Qui pro eisdem, ad consulendum, & informandum Advocatum eorumdem pauperum, ut eos in ipsa Camera defendere possit, accedere teneatur. Et si ab officio suo sic sibi injuncto quoquomodo defecisse, & pariter si Advocatus ipse suo officio gratis pro pauperibus exhibendo, & pro nullo alio qui contraxerit, aut litiget cum Camera patrocinando defuisse apparuerit, prima vice si legitime impeditus non fuerit, salarium trium mensium multetur, & si reinciderit in idipsum, officio suo perpetuo privatus existat eo ipso.

§. 20. Clerici autem ceterique Camerales Camera ipsam, priusquam omnes propositiones eadem die occurrentes per Clericum Mensarium descriptae fuerint, non ingrediantur.

§. 21. Ipsi vero illis expletis ingressi, cum sine Dei adjutorio, & Spiritus Sancti gratia nihil boni sperandum sit, erecta ad Deum omnipotentem mente, illiusque, ac Beatissimae semper Virginis Mariae genitricis suae, advocatae nostrae toto corde ab omnibus invocato flexis genibus suffragio, ea oratio B. Ihsodori Episcopi quae incipit, Adsumus Domine Sancte Spiritus, per novissimum Clericum tunc praesentem alta, & intelligibili voce legatur. Quasi ita quicumque in plena Camera audiri voluerit, liceat illi eam tunc ingredi ac proloqui, & informare, isque ab omnibus aequo animo, ac benigne audiat.

§. 22. Quibus sic rite peractis Camera ipsa claudatur. Et quia valde incommodum, quia etiam indecorum, videtur, ut postea quisque in differenter ad tantum Tribunal, sine illius Praesidentium licentia admittatur, quod saltem unus ex Cursonibus praefatis ante ostium ejusdem Camerae assidue maneat, illudque custodiat. Nec quemcumque cuiuscumque gradus, & conditionis, nisi praemonito per eum Vicecamerario, seu Decano praefato, indeque deliberato, admittere, vel introducere audeat, sed talis aut licentiam expectare, aut omnino recedere debeat. Ceterum clausa dicta Camera, nulla propositio, nisi forte Procuratoris Fisci, vel Commissarii Camerae seu Procuratoris pauperum, quibus jure merito quandoque est indulgendum, ulterius audiat, neque describatur.

§. 23. Demum ceteris semotis, & quibuscumque sermonibus, & colloquutionibus ad res Camerae minime facientibus, quae expeditiones Camerales impedire, vel in longum protrahere consueverunt, prorsus omitti, omnes toto animo ad propositiones audiendas, & decreta faciendi incumbant. Quod ut commodius, & facilius expediri possit, Camera ipsa per duas horas continuas posito praeculis horologio ad minus habeatur, & si negotia exegerint, ulterius producatur, ex qua interim nemo nisi à Papa, seu Cardinale curam negotiorum gerente, inde expresse evocatus, aut aliqua urgente necessitate ingruente, egredi debeat.

§. 24. Moxque silentio à Camerario, seu eo absente à Vicecamerario, vel Decano omnibus imposito, dictus Mensarius de more propositiones adscriptas legat.

§. 25. Et quoad eas quae distributionem causarum concernunt, ipse solus Decanus respondeat, nec quicumque illum causas distribuentem quoquomodo in-

terrumpere, vel aliquid dicere audeat, quo uni magis quam alteri, vel sibi potius causam aliquam committat, sed causas ipsas omnes, & singulas per turnum distribuat, incipiente tamen turno ab eo Clerico quem Camerarius praefens nominaverit, vel eo absente fors educta praetulerit, exceptis causis quarum universitas ratione guberniorum diversorum, vel officiorum quotannis unicuique Clerico distribuitur, eisdem Clericis omnino relinquendis.

§. 26. In causis autem expediendis haec ratio habeatur, ut quae iudiciali indaginem requirunt, nullus Clericorum, nisi prius eis in Camera communicatis, & parte ad informandum citata, audeat illas de cetero expedire. Quin etiam rescripta omnia etiam manu Papae signata, ac dictae Camerae decreta, quibus cognitio causarum ipsis Clericis demandantur, nisi in eis dicatur expresse, quod per solum seipsum audiat, & deciderit, ita intelligi, aut interpretari volumus, quod ipsis Clericis illas in plena Camera referre, & de voto omnium expedire teneatur. Verum ut prolixum dispendia, quo potest compendio arceantur, Clericus qui index, vel commissarius fuerit, causam aliquam proposituram, partibus prius auditis diligenter factum discutiat, illoque bene, & sufficienter instructus, cedulam manu sua subscriptam parti agenti, & instanti contra Fiscum, vel alium, seu Procuratori Fisci contra partem de more tradat, quae etiam Clericos, & Camerales omnes certiores faciat de huiusmodi causam praestituto die proposituram, ut unusquisque in eam intendere, & ad dicendum sententiam suam instructus accedere possit, dataque ipsa cedula, & adversario intimata, Iudicibusque ostensa, si die propositionis per ipsam cedulam statuto adveniente, per Fiscum, vel per partem expeditionem petentem, omnibus Iudicibus datae fuerint informationes, licet per adversarium illam diffugientem idem factum non fuerit, causae nihilominus proponantur, discutiantur, & si id negotium patiat, etiam altera parte non informante terminetur. Quod si unus ex Iudicibus in partis, vel Fisci gratiam, odium, vel favorem causae huiusmodi expeditionem, praetextu quod in ea informatum non sit impedire, aut in longum protrahere moliat, si talem conspexerit informationes habuisse illa pariter ab illis Iudicibus expeditur. Verum si advenientes die propositionis, informationes à parte, vel Fisco expeditionem desiderante omnibus datae non fuerint, cum id illi ad culpam debeat imputari, causae huiusmodi propositio atque expeditio, donec omnes fuerint informationes suspendatur, & interea superseatur. Et si praefato propositionis die adveniente, informationes huiusmodi ab utraque parte omnibus datae fuerint, Iudicibus tamen pro negotii difficultate, & gravitate de causa non liqueat, ipsi propositionem huiusmodi ad alium diem differre valeant, idemque eis licitum sit, si altera pars quae informationem non dedit, docuerit se fuisse legitime impeditam, impedimento huiusmodi saltem à maiori parte Iudicum approbato. Nullus autem qui informationes huiusmodi acceperit, se illas habuisse, sub excommunicationis poena ipso facto incurrenda audeat denegare.

§. 27. Cumque causae ipsae Camerales, quae multae sunt, & de sui natura maximam desiderant celeritatem, nisi certa ratione, & ordine propositae fuerint, nimia expeditionis tarditate, & partibus & Camerae certum & maximum pariant detrimentum, quod quilibet Clericus ex multis causis sibi, vel ex rescripto Pontificis, vel ex decreto Camerae commissis, eique cognitionem habentibus, in quilibet Camera servato inter eos solito ordine, unam tantum deligat, quae pro qualitate personarum, rei, & temporis (praecedis semper pauperibus, & viduis) maiorem postulat celeritatem, & illius feriem facit, unde quaestio, & dubium partibus dandum eliciatur, fideliter proponat. Eodemque iudicio dato, quaestione ipsam, ac iura, & rationes partium prius per eum pertracta, in alia Camera breviter referat, mox Decanus Camerales primum,

men concurren-
tes offi-
cia, vel Gu-
bernia Cleri-
corum.

Clerici deinde causas proponant, prout citatione ad informandum, & transmissa cedula propositionis, & servatis aliis hae descriptis.

Causae propositae ordinem ducantur, & iuxta maiorem partem votorum decidentur.

Votis autem
equivalentibus
causis prævalere
et cui Canonici ad-
scribitur vel
non absente
magis pars a-
liorum Cam-
eræ cum ha-
bentium vo-
ta consulantur.

Decanus vero
remittit
id Pontifi-
cem causas
gratiam fi-
dentes, &
Gubernatori
Auditori
Cam. vel
Thesaurario
remittit cau-
sas ad eos
spectantes.

Vota aliorum
revelantes
pœnas hic
descripsit in-
currunt.

Delinquentes
in Camera
coerceantur, & Pon-
tifici denun-
tiantur.

Proponentes
causas scrip-
turas secum
habeant.

Decisiones
causarum ad-
notentur à
Proponentibus
in lib. Decisionum
Cam.

deinde Clericos, ab eis exordiens, qui postremo in Camera admitti fuerint, ita ut secundum litteras præfati Eugenii Papæ Decanus ipse ultimus respondeat, de eare omnes interroget, & ad interrogationem illius, Camerales scilicet consulendo, Clerici vero decidendo, solum Deum illiusque extremum iudicium præ oculis habentes, ex ordine sententias suas dicant.

§. 28. Et ne contingat causas, & negotia diutius remanere indecisa, quod quodcumque vota decisiva fuerint æqualiter divisa, nec de maiori parte ipsorum appareat, tunc illa pars ipsorum quibus dictus Camerarius, vel eo absente maior pars votorum Consultivorum adhaerit, debeat prævalere, ut hac ratione & quamplures causæ brevi expediantur & partes ipsæ laboribus, & expensis subleventur. Dum vero causæ ipsæ proponuntur, suffragia rogantur, & sententiæ dicuntur, omnes magno silentio loquentem audiant, nec quisquam eum interpellare audeat, sed expleto sermone, si illum in facio errasse cognoverit, tunc liceat errantem humane benigneque admonere, ut is seipsum corrigere, & alii post eum dicturi possint eorum opinionem firmitus explicare.

§. 29. Si vero aliquam propositionem gratiam facientem, vel ad jurisdictionem Gubernatoris, seu causarum Curiae dictæ Cameræ Auditoris, vel illius Thesaurarii pertinentem, seri contigerit, Decanus prædictus propositione audita, si gratiam concernant, Summum Pontificem adendum respondere, reliqua vero ad Thesaurarium Gubernatorem vel Auditorem præfatos, prout suæ cuiusque jurisdictionis fuerit, veteri more non autem ad quempiam Clericum remittat, ut hac ratione partes ab expensis sublevantur, & jurisdictioni unicoque conservetur.

§. 30. Cumque nulla maior pestis graviorque perniciēs ex Collegiis proficiatur, quam sententias, & opiniones aliorum exteris aperire, unde libertas dicendi, quæ in iudiciis prævalet, eripitur, odia gignantur, & probis consultiis inimicitia parantur, quibus humanæ societati, & ipsi iustitiæ quam profitemur, nihil magis contrarium esse constat. Quod quicumque aliorum suffragia, vel suam, aut aliorum sententiam foris patefecerit, & alicui indicaverit, excommunicationis sententiam ipso facto incurrat, à qua nisi à nobis, aut successore nostro absolutionis beneficium nequeat obtinere. Ex prima quingentorum, & altera mille ducatorum dictæ Cameræ applicandorum, tertia vero vice aliis gravioribus poenis, nostro & successoris nostri puniantur arbitrio.

§. 31. In reliquis autem quoquomodo delinquentes in plena Camera, à dicto Decano primum moneatur, deinde iocalibus, & regalibus Cameræ arbitrio mulctentur, aliis poenis specialiter expressis falvis manebunt. Ipse vero Decanus, & eo negligente sublequens Clericus in ordine, statim illos nobis, vel successori nostro, sub nostræ indignationis poena, denunciare teneatur, ut inde à nobis, vel illo sicut expedit fuerit, amplius provideatur.

§. 32. Ut autem quisque in dicendis sententiis propriæ conscientie melius satisfacere valeat, & ea quæ dicenda sunt, ab ipsis fontibus potius hauriantur quam per rivulos confectentur. Quod Clerici dicæ propositionis per eos faciendæ, acta & scripturas earum causarum quas propositi sunt, necnon dicta testium in Camera penes se prompta habeant, quibus controversiæ, quæ in facto ipso plerumque oriuntur, & facilius dirimantur, & causæ ipsæ celebrius expediantur.

§. 33. Et quoniam plerisque necessariae sunt sententiæ, & conclusiones Camerales, quare varietatio, cum non aequè à pluribus ac ab uno fieri possit, plerumque controversiam movet. Quod uniuscuiusque decisionis argumentum sive substantia, statim atque per Cameram absoluta fuerit, ab ipso Clerico proponente, in certo ac proprio libro decisionum Cameralium nuncupato breviter describi,

descriptaque legi, & ab omnibus comprobari, eundemque librum una cum alio decretorum ordinariorum penes Mensarium singulo mense custodire, quo certus, ac fidelis ad utrumque recursus omnino habeatur.

§. 34. Eis vero litteris patentibus, mandatisque Cameralibus, quæ nisi prius facto verbo in Camera expediri prohibuimus, cum illa de consensu omnium expediantur, pariter ab omnibus Clericis tunc præsentibus subscribantur, sententiæ mandatisque pro illarum executione relaxandis dumtaxat exceptis, quæ licet de voto omnium proferantur, tamen à Clerico Iudice, & Commissario tantum scribi debeant. Quæ vero Clericorum jurisdictionem ordinariam, ac uniuscuiusque Clerici propriam, singulis specialiter demandatam concernant ratione guberniorum, quæ quotannis inter ipsos Clericos distribuuntur, ea ab unoquoque cuius fuerit ea jurisdictione, privatum de more expediantur. Quæ quidem omnia cum hucusque per Substitutos Notariorum, & eos quidem rudes, ac imperitos, & plerumque litterarum ignaros, ad Clericos deferri consueverint, quos nec etiam in causis cognoscendis instruere possunt, ab ipsismet Notariis principalibus, seu à Substitutis eorum, per Clericos approbandis tantum, qui eosdem Clericos de omnibus plene informare valeant, deferantur.

§. 35. Cum autem negotium acceptandi, consolidandi rationes quæ in Camera quotidie redduntur, quod per manus Clericorum, quorum id est præcipuum munus, non minore labore, quam periculo continue versatur, sicut est maximi ponderis atque momenti, ita maiori solito debeat cura, & diligentia pertractari. Quod omnes, & singuli Thesaurarii, Depositarii, Commissarii, & alii quicumque rerum, & pecuniarum Camera Administratorum, & Exactores, quovis nomine nuncupentur, de cetero rationes, & computa modo & forma infra scriptis in eadem Camera reddere, eaque vera esse, nec habere diversa jurare omnino teneatur, quacumque consuetudine hucusque servata, quæ potius corruptela est censenda, non obstantia. Nec quippiam cuiuscumque gradus, & conditionis existat, ad rationes prædictas afferendas, iurandasque per procuratorem si præsens in Urbe fuerit, sed per seipsum tantum admittatur. Absentes vero, & qui infirmitate, aut carceribus, seu aliquo legitimo fuerint impedimento decenti, per eorum procuratorem speciale ad id mandatum habentem, eidem iuramento adstringantur. Et nihilominus ad eos sic impositos, si in Urbe fuerint, Notarius Cameræ mittatur, qui ab eis quoque simile recipiat iuramentum, de quo etiam coram testibus semper rogetur.

§. 36. Rationes vero illas iuratas, Notarius ipse rogatus, ad Calculatores, seu Computatores rerum Cameræ statim deferat, ut inde ab eis ad Præsidentem, & Thesaurarium quamprimum portentur, & celeriter discutiantur.

§. 37. Cum vero Clericus solidationem computorum, quæ in domibus Clericorum fieri solent, aggredi voluerit, Cameræ Commissarium ad interfessendum solidationi huiusmodi omnino citari facere teneatur, ac in ipsomet decreto commissiois solidationis post deputationem Iudicum expresse addi debeat. Qui Commissario præfato citato, & præsentem, ad computorum solidationem procedant, & absque dicto Commissario, quem omnino semper adesse sub poena privationis officii mandamus, non possit ullo modo ullave in causa ad solidationem devenire.

§. 38. Omnes autem rerum Cameræ conductores, aliarumque Administratores, & pecuniarum Exactores, librum corio, vel membrana cooperatum habeant, in quo aliquibus ex primis foliis in albis dimissis, facultatum litteras, mandata, atque rescripta quæcumque, contractus denique ipsos ad verbum quibus huiusmodi curæ, & exactiois Præpositi, Administrationem ipsam gesserint transcribere, & deinde rationes ipsas modo & forma infra scriptis

Quæ prius verbo facta in Camera expedienda sunt, ab omnibus Clericis tunc præsentibus subscribantur, exceptis sententiis, & mandatis, ac expeditionibus concepcionibus officii Clericorum.

Administratores rationes redditæ, & moro, & forma hic expressis.

Pœnas autem computata fideliter non redentium vice supra in Pauli III. constit. 40. fol. 579.

Qua rationes Notarius ad Calculatores deferat.

Clericus ens fideliter præsentem Commissarium.

Administratores librum teneant in quo, &c.

conscribere, & conscriptas edere teneantur. Qui liber postmodum à Notario Cameræ, ut moris est, recipiatur. Et primo albo folio, nominibus Administratum, administrationis genere, rationum qualitate, temporis quo redduntur spatio, & iurifurandi substantia, brevioribus verbis inscribantur. Et subsequenter Præsident, & Thesaurarius, quid per Clericos Judices, in eis animadvertendum sit adnotare, & adnotationes ipsas manu eorum propria subscribere debeant.

§. 39. Et ut ipsa rationum redditio faciliore cognitione transigatur, earumque consolidatio semper, & ubique iusta & fidelis appareat. Quod huiusmodi rationum iustificationes in eodem, si id commodè fieri poterit, sin autem in alio libro, ab eo qui illas redditurus est, registrentur, & ad verbum litteræ, ac mandata Cameralia quæcumque, fides, ac instrumenta, & reliquæ omnes scripturæ ad rem pertinentes transcribantur, & ad earum singulas singule rationes, & particula, seu partitæ referantur, adjecto unicuique earum folio, necnon citato ejusdem libri chartarum numero, quo iustificatio quælibet descripta fuerit. Isque liber cum altero proferatur, ab ipsius Cameræ Computatore legatur, & cum originalibus scripturis, si eas rationem reddens penes se retinere voluerit; diligenter ab eodem conferatur, qui collatione priusquam in Camera una facta, & scriptura fidelis reperta, id attestetur manu propria, his verbis utrobique, in libro videlicet iustificationum, & quarumlibet ipsarum cum originali. In scripturis vero originalibus, & à tergo illarum cum Registro concordat, ejus nomine proprio subscripto.

§. 40. Et nihilominus in ipsa computorum solidatione Clerici ad id deputati originalia mandata, seu eorum transumpta authentica, & scripturas diligenter videre teneantur.

§. 41. Libri quoque præfati rationum eorumque singulæ partitæ, tam accepti, quam expensi, personas, causas, locum, annum, mensem, diem, ac summam adeo claros, atque distinctos contineant, ut qualis quantusque sit introitus, & exitus omnibus innotescat. Quin etiam fides acceptorum, tam privatas, quam publicas, Notariumque de eis rogatum, ac nomina debitorum ejusdem Cameræ, ac rationem illam spectantium ejusque quantitates pariter comprehendant. Et si ea de re contractus ullus celebratus, à iavè scriptura, tam publica, quam privata, confecta fuerit, ea omnia in eodem vel altero libro præfato simul cum aliis registrentur, & singulatim prout ipsa res exegerit, citentur. Et in qualibet exactione commissæ præponatur etiam taxa deinde scribatur. Et demum residuum pecuniarum quantum id fuerit, & à quibus exigendum adnotetur, per hoc enim introitum omnium Cameræ ratio hucusque in incerto posita, & valde obscura reddita omnibus perspicua fiet; ac negotia huiusmodi cautius expeditur, & Clericorum iudicium firmitus, atque tutius reddetur.

§. 42. Ipsorum denique computorum solidationes promptæ semper omnibus patebunt, cum libros huiusmodi in Archivio ejusdem Cameræ, Computatores præfati perpetuo retinere, & custodire teneantur.

§. 43. Quod si secus fiat, libri ipsi non admittantur, ac omni prorsus fide careant. Administrator etiam, qui rationes consecerit perjurio notetur. Notarius vero pro qualibet vice ducentorum ducatorum penam incurat. Et si libris præfatis sub præscripta forma non confecti Clerici Judices ad solidationes computorum processerint, ducatis mille auri præfata Cameræ applicandis mulctentur, & ad interesse Filii teneantur. Vicecamerarius vero, & Thesaurarius, Præsident, & alii Camerales, si & ipsi in culpa fuerint, nostro & successoris nostri arbitrio puniantur. Computator ab officio removeatur, rationes quoque superinde consolidate & calculi facti, ac inde secuta quæcumque sint nullius roboris vel momenti.

§. 44. Clerici vero Judices, quibus ipsa rationum redditio demandata fuerit, non ut prius separatim, & alter post alterum rationes ipsas discutiant, sed

antiquiorem posterior adeat, qui conjunctim, Adquisitorum & Computatorum præsentibus, citatoque Procuratore Filii, seu Commissario Cameræ cuncta perpendant, ponderent, & excutiant; admittenda admittant, rejicienda rejiciant, & dubia parti, & Filio disputanda relinquunt, quæ cum eisdem mature examinata, atque discussa, prout eis iustum videbitur ab ipsis facto prius verbo in plena Camera decidentur, & terminentur.

§. 45. Ex quia ex tarda rationum redditio omnia in dies obscuriora redduntur, & pleraque mala exinde provenire noscuntur, quæ quo longius protrahuntur & inveterascunt, eo impeditiora fiunt, & difficilior explicantur. Quod Administratores omnes rerum Cameralium quocumque nomine nuncupati qui rationes in Camera quocummodo reddituri sunt, illas non in fine administrationis eorum, ut prius, sed si administrationis ultra annum duraverit, singulo quoque anno in fine illius, vel sequentis principio, modo præmissis, reddere omnino teneantur. Idque nisi iuxta interdum suadente causa ipsi Cameræ aliter expedire videatur, in ipso contractu quem cum eis Camera de cetero inierit exprimatur, & ille ad id sub pena mille ducatorum similium etiam eidem Cameræ applicandorum, necnon ejusdem administrationis rationis amissione, quæ statim ab eis libere auferri, & aliis concedi possit, omnino adstringantur.

§. 46. Et insuper quod præfatus Thesaurarius generalis, de omnibus, & singulis rebus & pecuniis ab eo, vel deputatis suis in hunc usque diem undecumque, & quomodocumque receptis & expensis, ac etiam alius Thesaurarius noster secretus, de quibuscumque pecuniis quas habuit & percepit, necnon Magister Domus nostre accepti hucusque & impensis, ac Gubernator Urbis, Procurator Ficalis, necnon Magistri viarum ejusdem Urbis, & quicumque alii nostri in Alma Urbe Magistratus & Officiales, tam qui de præfati sunt, quam qui in præteritum fuerint, cujuscumque status, gradus, vel præminentie sint, de quibuscumque condemnationibus criminalibus, seu penis, aut compositionibus, ratione quoruncumque delictorum, & quarumcumque causarum ab eis hæcenus factis, aut administratis, vel exactis, & ad Cameram Apostolicam spectantibus, deinceps vero Thesaurarius ipse generalis singulo quoque semestri, Magister domus autem, ac Gubernator, Thesaurarius secretus, & alii omnes præfati singulo trimestri rationem dicte Cameræ in perpetuum reddere teneantur.

§. 47. Proprium autem sit inter cætera dicti Commissarii, munus, & demandata Judicibus redditiones, rationes, omnes, easdemque commissas adnotare, & illarum celerem expeditionem procurare, curareque, ut id totum quod perfectio calculi reliquum fuerit eidem Cameræ debitum ad manus Depositarii generalis, vel illorum ad quos spectaverit, vel decretum fuerit quamprimum re ipsa perveniat. Et ut debitores remediis opportunis ad illud donec omnia integre persoluta fuerint compellantur, contractum omnium, atque capitulorum, scripturarumque in Camera celebrandorum & discutierendorum exempla, singulis Clericis & Cameralibus, per dictos tres dies ante deferantur. Quod si ab officio sic sibi injuncto defecisse constiterit, unius mensis salario, & jocalium portione, sibi in proxima divisione obvenitura, & si iterum deficiat salario semestris integri puniatur, tertia vero vice officio suo perpetuo privatus exiliatur.

§. 48. Verum cum magna, atque ampla negotia quæ quotidie in Camera geruntur, præ eorum varietate atque multitudine quædam ab antecessoribus neglecta, partim in diuturna obscuritate latuerint, partim etiam prorsus evanuerint, unde dicti Clerici & Camerales in summa illorum ignorance versantes, plerumque consilii accipies sæpissime, quæ distracti, rem ipsam vel imperfectam relinquunt, vel cum magno ejusdem Cameræ detrimento

Rationum redditio ubi describenda sit.

Clerici in solidatione videant scripturas originales. Libri rationum quæ continere debeant.

Et in Archivio custodiuntur.

Contravenientes puniuntur.

Rationes à Clericis Judicibus quomodo videntur.

Administratores anno quolibet rationem reddant.

Thesaurarius & alii Papæ ministri quando rationem reddere debeant.

D. Thesaurarii munere vide bul. 100. Sixt. V.

Commissarii Cam. officium.

Ad quod vide etiam bul. 44. Sixt. V.

Computatorum Cameræ officium.

Ad quod vide inf. prox.

diversam agunt, facientque propterea ab ipsis Clericis, & Prædictis Computatoribus Camerae, una cum alio ab eis pro tempore substituto, superioribus mensibus constituti, atque præfecti curæ conficiendi librum majorem in quem omnia ad Camerae quomodolibet spectantia in dies singulos ab eis distincte conscribantur, atque certo ordine congregentur. Nos itaque hoc non minus necessarium, quam utile harum ferre approbantes, & innovantes finiliter statuimus, & ordinamus quod ipsi deputati, & Præfecti, omnes, & singulos introitus, ac exitus eidem Camerae in dies obvenientes quicumque fuerint, illiusque debitorum, & creditorum nomina, undequaque provenientia in hoc ipso libro majori describant. Concessionum quoque rerum Camerae omnium contractuum qui continuo in Camera celebrantur argumentum, atque substantiam, eorumque diem, & annum, Notariumque inde rogatum, quam brevissime perstringant, declarantque Camerae, & Administratores quoscunque prout res postulerint debitores, & creditores, eorumque quantitates claras, atque distinctas apponant. Nuntios etiam Apostolicos, Collectores, Subcollectores, Thesaurarios, Depositarios, & Commissarios, pecuniarum Exactores, ac reliquos omnes, qui ad aliquod negotium Camerae expediendum admittentur, breviter conscribant, breviter, litteras, patentes, & facultates, ac mandata Cameralia quaecumque adnotent, diem & annum quibus illa expedita fuerint, adjiciant, & à quo clerico subscripta, notarioque expedita, & denique ubi registrata sint, compendio explicent, & quae quidem omnia & singula incorrupta serventur, & integra custodiantur.

§. 49. Præterea volumus & ordinamus omnes quibuscumque negotiis Cameralibus, tam in Urbe, quam extra eam Præfectos, antequam illa exercent, & ab Urbe recedant, expeditiones suas quocumque nomine nuncupatas eidem Computatoribus in eodem libro adnotandas exhibere, ipsasque nisi sic adnotatas, & in illarum tergo per alterum ex eisdem Computatoribus de hoc fidem facientem subscriptas, illis restitui omnino prohibemus. Pro earum vero expeditionum adnotatione, subscriptione & restitutione, Computatores præfati caveant à partibus etiam ultro dantibus, quicquam accipere; quod si fecerint, poena privationis officii, seu alias arbitrio Camerae puniatur.

§. 50. Et insuper quod omnes cujuscumque gradus, atque dignitatis fuerint, res ipsius Camerae ubilibet & quomodocumque administraturi, priusquam administrationem suscipiant, jurent in manibus Camerarii nostri negotium, atque curam sibi commissam, recte & fideliter se esse gesturos, rationem tempore debito rite reddituros, reliquum restitutionis, librorumque rationum legitime conscripturos, ac illos intra tempus, quod eis, dum proficiuntur præfixum fuerit, etiam injustos, in Camerae exhibituros, eaque omnia se rite & fideliter præstituros penes unum ex Notariis Camerae idonee caveant. Ac cautio sic ab eis præstita in eodem libro majori ab eisdem Computatoribus summam adnotetur; quod si ab eis impedimento cessante prætermisum, nec intra dictum tempus impedimentum hujusmodi doctum atque comprobatum fuerit, ultra penas in cautione hujusmodi contentas, arbitrio Camerae puniatur.

§. 51. Idem quoque Computatores, Inventarium seu Indicem omnium & singulorum librorum, & rationum, quae hactenus in dicta Camera redditæ sunt, & in posterum reddentur, distincte & ordinate conficiant, in quo rationes ipsæ cujuscumque rei fuerint, à quo administratæ, & redditæ, illarum quoque dies, & annus stricte demonstrantur; ac hujus indicis seu inventarii exemplum uterque eorum continuo apud se contineat, quibus librum nullum, nullasve rationes ad Camerae spectantes cuiquam nisi Clerico, & Camerali tradere, vel in manibus dimittere liceat. Si quis autem ex Cameralibus eorum aliquem pro rebus Cameralibus videre,

& apud se retinere voluerit illum de manu dictorum Computatorum accipiat, & in eorum libello ad hoc tantum deputato se illum recepisse scribat, & intra dies quindecim ad summum restitutionem promittat. Qui vero ex Computatoribus id facere neglexerit, suo sit officio ipso jure privatus, & pro libro & scripturis propterea deperditis damnum & interesse, tam Camerae quam parti juxta formam litterarum piæ memoriæ Julii II. & Leonis X. etiam Romanorum Pontificum prædecessorum præfatorum omnino reficiat, vel alias arbitrio Camerae puniatur.

§. 52. Verum cum multi varii multique libri, ac quamplures, diversæque scripturæ rerum Cameralium, ob nullam, vel modicam in illis custodiendis, conservandisque hucusque adhibitam diligentiam, variis in locis, dispersi atque diffusi sint, & à plerisque derineantur in maximum Camerae detrimentum; Volumus etiam & ordinamus, omnes & singulos illorum derentores & occupatores, ac hujusmodi occultationis confocios, & participes, nisi in Urbe intra octo, & extra eam intra triginta dies à die notitiæ publicationis præsentium numerandos, pro qua nos alias litteras nostras, quæ publicentur, decernere intendimus, eosdem libros, & scripturas, ad Computatores & Custodes præfatos detulerint, vel easdem personas detinentes, conficias & participes denunciaverint, excommunicationis majoris laqueo subjacere.

§. 53. Quos quidem Computatores & Custodes pro tempore existentes, cum illorum officium sit maximi ponderis atque momenti priusquam ad illius exercitium admittantur, jurejurando, adstringi, & idonee cavere volumus, præfatum officium se recte & fideliter executuros, omniaque & singula eis præscripta stricte custodituros, & diligenter observaturos.

§. 54. Postremo cum valde inconveniens, & à jure alienum sit, quod quis in concernentibus proprium commodum suum se Judicem constituat; pariter constituimus & ordinamus, quod Clerici præfati pro aliquo munere, seu onere, ordinario vel extraordinario à Romano Pontifice pro tempore sibi injuncto, salarium seu mercedem sibi ipsis statuere & declarare non possint, sed illud ab eodem Pontifice, vel eo cui ea cura demandata fuerit, qualitate personæ & negotii commissi considerata ordinetur.

§. 55. Decernentes constitutiones, statuta, ordinationes & decreta nostra præmissa, sanctæ & inviolabiliter ab omnibus, etiam sub sententiis, censuris & penis præmissis, perpetuo observari, sicque & non aliter per quoscunque censeri, judicari, definiri & interpretari debere. Necnon ex tunc irritum & inane, quicquid secus super his, omnibusque & singulis aliis præmissis per præfatos, aut quoscunque alios, quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 56. Quocirca dilecto filio nostro Vitellotio S. MARIE in Via lata, Diacono Card. Vitellio nuncupato, moderno, & pro tempore esistenti nostro, & ipsius Ecclesiæ Rom. Camerario, per Apostolica scripta illi etiam in virtute sanctæ obedientiæ districte præcipiendo, & ejus etiam quoad hoc conscientiam onerando, pari Motu mandamus, quatenus præsentis litteras, & in eis contenta quaecumque, tam in d. Camera quàm extra eam, ubi, quando, & quoties opus fuerit, solemniiter publicari, & in ejusdem Camerae libris registrari, ac per omnes quos illa concernit, inviolabiliter observari, & debitæ executioni mandari, ac illa quoties pro parte alicujus interesse habetis requisitus fuerit, in judicio & extra exhiberi faciat. Ac universos præfatos ad illorum observationem censuris & penis præmissis, quacumque mora cessante cum affectu cogat & compellat; contradiatores quoslibet ac inobedientes, & rebelles, auctoritate nostra, appellatione postposita compescendo.

§. 57. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon dictæ

Librorum & scripturarum Camerae occupatores excommunicationis poenam incurrant.

Computatores Camerae jurent & caveant officium fideliter administrare.

Clerici salarium sibi ipsis statuere non possint.

Decretum irritans.

Executor deputatur Camerarius.

Clausula derogatoria.

Camerae juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, ac omnibus illis, quae in singulis praedecessorum praefatorum, ac nostris litteris praedictis cautum fuit non obstat, ceterisque contrariis quibuscumque.

Forma & effectus publicationis.

§. 58. Ut autem constitutiones, statuta, ordinationes, & decreta nostra hujusmodi ad singulorum, quos oportet notitiam perveniant, nec illorum ignorantia quempiam excuset, volumus, ac etiam dicta Apostolica auctoritate mandamus, quod praesentes litterae Basilicae Varicanae, & dictae Camerae valvis, necnon in acie campi Florae, aliisque publicis, & opportunis Almae Urbis praefatis locis, per unum ex Curforibus nostris de more assignantur, & ibi quantum ad lecturam earum opus fuerit permanent.

Hae conf. legatur anno quolibet in prima Camera.

§. 59. Ac singulo quoque anno in perpetuum in eadem Camera, quae mense Octobris prima habebitur, per novissimum Clericum tunc praesentem palam & alta voce ad verbum sine intermissione legantur.

Transumptum fides.

§. 60. Quodque illarum exemplis fideliter scriptis, ac etiam impressis unius notarii Camerae manu subscriptis, & Camerae ipsi praefati sigillo ob signatis, eadem prorsus fides ubique locorum, etiam in iudicio adhibeatur, quae ipsis praesentibus adhiberetur, si forent exhibitae, vel ostensae.

Dat. P. An. 5. die 1. Nov.

Nulli ergo &c.
Datum Romae apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicae 1564. Kal. Novemb. Pont. nostri anno 5.

Publicatio.

Anno à Nativitate Domini 1564. indictionis 7. die vero 20. mensis Decembris. Pont. Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina Providentia Papae IV. Anno ejus V. praesentes litterae Apostolicae litterae, affixae, & publicatae fuerunt ad valvas Basilicae Principis Apostolorum de Urbe, ad valvas Camerae Apostolicae, in acie campi Florae, & ad valvas Cancellariae Apostolicae, dimissis in omnibus praefatis locis praesentibus litteris per aliquantulum temporis spatium affixis, ut moris est, & deinde amoris, per nos Julium Parinum & Alexandrum Astencolum praebatos S. D. N. Papae, & Camerae Apostolicae Cursores.

Ant. Clerici Magister Curf.

LXXXVIII.

Forma professionis Fidei Catholicae, observanda à quibuscumque promotis & promovendis ad aliquam liberalium artium facultatem, electisque & eligendis ad cathedras, lecturas & regimen publicorum Gymnasiorum.

Hujusmodi professionem facere debent etiam provisi de beneficiis ecclesiasticis, ut in bulla seq. Et insuper Medici debent jurare contenta in constit. 3. Pii V. Supra gregem.

Edita An. D. 1564.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

IN sacrosancta beati Petri Principis Apostolorum Cathedra meritis licet imparibus, hisce procellosis militantis Ecclesiae tempestatibus constituto, plurimum nos oportet esse sollicitos, ut Domini gregem curae nostrae commissum, non solum ab apertis rapacium luporum undecumque caulis obstrepentium insultibus, sed etiam à magis formidolosis pestiferarum vulpecularum domi latitantium insidiis, per providum pastoralis officii ministerium, ipso Domino cooperante praeservemus, ac illis omnes nocendi occasiones, quantum cum Deo possumus, ubilibet auferamus.

Causa Conf.

§. 1. Cum itaque juxta notum Sanctissimi Vatis oraculum, timor Domini, sine quo vera Religio, & Catholicae fidei puritas nullibi reperitur, sapientiae sit initium, & qui vel in scientiis profice-

re, vel eas alios docere parant, supremum illum sapientiae parentem, benignumque largitorem devoto sanae fidei obsequio demereri, veraque sinceræ Religionis pietate sibi conciliare debeant.

§. 2. Idcirco hanc Fidei puritatem, scientiis doctrinisque quibuscumque, tum tradendis, tum addiscendis, tanquam necessariam basim, construere, & ne simplicia nonnullorum adolescentium, res novas audiendi cupidorum, ingenia in naufragos blandientium haereseum scrupulos imprudenter impingant, occurrere cupientes; Motu proprio, & ex certa scientia nostra, ac Apostolica potestatis plenitudine, quod deinceps nullus Doctor, Magister, Regens, vel alius cujuscumque artis & facultatis professor, five clericus, five laicus ac facultatis, vel cujusvis Ordinis regularis sit, in quibusvis Studiorum generalium Universitatibus, aut Gymnasiis publicis, aut alibi ordinariam vel extraordinariam lectoris Cathedram assequi, vel jam obtentam retinere, seu alias Theologiam, canonicam vel civilem censuram, Medicinam, Philosophiam, Grammaticam, vel alias liberales artes, in quibuscumque civitatibus, teritis, oppidis, ac locis etiam in Ecclesiis, Monasteriis, aut Conventibus Regularium quorumcumque, publice vel privatim quoquo modo profiteri, seu electiones aliquas in facultatibus hujusmodi habere vel exercere.

§. 3. Neque Doctores ipsi, aut Universitatum seu Gymnasiorum eorumdem Rectores, Cancellarii, vel alii Superiores, sed nec etiam Palatini Comites, aut alii particulares facultatem eruditio viros ad eisdem gradus promovendi, etiam à nobis Apostolica Sede, vel alias undecumque habentes, scholares, tam laicos quam clericos, & cujusvis Ordinis regulares, vel alios quoscumque quantalibet eruditione praeditos, ad ullum gradum in eisdem facultatibus suscipiendum recipere & admittere.

§. 4. Neque Doctores, Magistri & Scholares, ad electionem alicujus in Rectorem, vel Cancellarium Universitatis aut Gymnasi procedere; Nec ipsi Scholares vel alii quantumlibet docti, & aliquo habiles, gradus hujusmodi, vel eorum aliquem, palam, vel privatim, recipere valeant, nisi Doctores videlicet ac Regentes, Magistri, & alii professores jam ad Cathedras & lecturas recepti, in Italia infra tres, extra vero illam infra sex menses à die publicationis praesentium computandos, reliqui vero ad Cathedras & alias lecturas ibidem in possessionem assumendi ante illorum receptionem, in Rectoris, vel aliorum Superiorum, eligendi autem in Rectores vel Cancellarios ante illorum electionem, vel saltem admissionem in Ordinarii loci, vel ejus in spiritualibus Vicarii. Ac promovendi Scholares & alii praefati ante illorum promotionem in eisdem Ordinarii, seu ejus Vicarii, aut Doctorem, aliorumve promovendum manibus, praevio etiam processu, vel debita informatione, quantum eis sufficere videbitur, super Religione, Fideque Catholica, Rectorem, Cancellarium, Doctorem, Lectorem, & promovendorum eorumdem per ipsos locorum Ordinarios, vel eorum Vicarios rite facta praecedente, eandem Catholicam fidem, verbis, juxta formam infra scriptae tenorem conceptis palam, & solemniter profiteri teneantur. Et desuper instrumentum publicum confici, ac de processu, seu informatione & fidei possessione in privilegio Doctoratus, vel alterius gradus hujusmodi specialis, ac de verbo ad verbum mentio & relatio fieri debeat, auctoritate Apostolica tenore praesentium perpetuo statuimus & ordinamus.

§. 5. Ac omnibus & singulis earundem Universitatum & Gymnasiorum Rectoribus, Doctoribus, & aliis Superioribus, ac alias facultatem doctorandi habentibus, cujuscumque status, gradus, ordinis, conditionis & praeminentiae fuerint, etiam si Episcopali, Archiepiscopali, Patriarchali, vel majori dignitate, etiam Cardinalatus honore, ac Ducali vel alia etiam Regia & Imperiali auctoritate pra-

Doctores ac ceteri cujuscumque facultatis professores, tam etiam quam eligendi illas non exercent, nisi prius Catholicam fidem profiteantur, juxta formam hic traditam.

Rectores studiorum & alii superiores non eligantur, nisi praeservatis praemissis.

Scholares neque promoveantur ad aliquem gradum, nisi servatis eisdem.

Superiores non permittant aliter promoveri ad gradus, vel facultates profiteri sub poenis hic expressis.

fulgeant, ne quem in Universitatibus, Civitatibus, oppidis, vel aliis locis sibi, in spiritualibus vel temporalibus subjectis, aliter Cathedras, aut alias lectiones retineat, consequi, vel ad gradus promoveri respective patiantur, in virtute sanctæ obedientiæ, & sub interdicto ab ingressu Ecclesiæ quoad Antifites, quo vero ad inferiores, sub excommunicationis latæ sententiæ, necnon privationis omnium & singulorum dignitatum, beneficiorum, officiorum & feudorum Ecclesiasticorum per eos quomodolibet obtentorum, & inhabilitatis ad illa & alia in posteram obtinenda, eo ipso per contrascentes incurrendis penis distriguntur inhibentur.

§. 6. Ac quascunque receptiones, promotiones, electiones, & admissiones absque processu, certaque de Religione, & Fide Catholica notitia, ac dictæ fidei professione, sicut præfertur, præcedente, pro tempore factas, nullas, invalidas, nulliusque roboris, vel momenti esse, neque cuiquam in iudicio vel extra suffragari posse.

§. 7. Sicque per quoscunque Iudices & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, iudicari & desiniri debere, ac quicquid secus à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane decernimus.

§. 8. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac Universitatum & Gymnasiorum, Ordinum, & locorum quorumcumque etiam iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, facultatibus, & litteris Apostolicis eisdem Universitatibus & Gymnasiis, ac Ordinibus & locis, eorumque Rectoribus, Doctoribus, Superioribus, etiam in temporalibus Dominicis, Comitibus Palatinis, & aliis etiam regularibus personis præfatis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, etiam vim contractus inducentibus clausulis, irritantibusque & aliis decretis, in genere, vel in specie, etiam per nos ac Sedem præfatam, etiam moru, scientia, & potestatis plenitudine similibus, seu ad quorumvis, etiam Imperatorum, Regum, Rerumpublicarum, Ducum, & aliorum Principum instantiam, & alias quomodolibet concessis, ac etiam pluries approbatis & innovatis, quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de illis eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, expressa, & individua, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum virescentes tenores, ac si de verbo ad verbum infererentur, præsentibus pro sufficienter expressis & insertis habentes, specialiter & expresse Motu simili derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim, ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§. 9. Ne autem quispiam præsentium ignorantiam prætere, vel excusationem allegare possit; sed ipsæ ad omnium notitiam deducantur, volumus & mandamus, quod eadem præsentibus in Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, & Cancellariæ nostræ valvis, ac acie Campi Floræ per aliquem ex Curcioribus nostris affixæ copia illarum ibi dimissa, omnes in Italia intra tres, extra vero illam existentes intra sex menses proximos ab ea die afflictionis computandos, perinde ardeant, ac si illis personaliter intimatæ fuissent.

Forma autem dictæ Professionis Fidei hæc est:

EGO N. firma fide credo, & profiteor omnia, & singula quæ continentur in Symbolo Fidei, quo S.R.E. utitur, videlicet: Credo in unum Deum, Patrem Omnipotentem, factorem Cæli, & Terræ, visibilium omnium, & invisibilium. Et in unum Dominum JESUM CHRISTUM Filium DEI unigenitum. Et ex Patre natum ante omnia sæcula. Deum de Deo, lumen de lumine, Deum verum de Deo vero. Genitum, non factum, consubstantialem Patri, per quem omnia facta sunt. Qui propter nos homines, & propter nostram salutem descendit de cælis. Et incarnatus est de Spiritu sancto, ex MARIA Virgine, & homo factus est. Crucifixus etiam pro nobis sub Pontio Pilato, passus, & sepultus est. Et resurrexit tertia die secundum Scripturas, & ascendit in celum, sedet ad dexteram Patris, & iterum venturus est cum gloria iudicare vivos, & mortuos, cuius regni non erit finis. Et in Spiritum sanctum Dominum, & vivificantem, qui ex Patre, Filioque procedit. Qui cum Patre, & Filio simul adoratur, & conglorificatur, qui loquutus est per Prophetas. Et unam Sanctam, Catholicam, & Apostolicam Ecclesiam. Confitetur unum Baptisma in remissionem peccatorum. Et expecto resurrectionem mortuorum. Et vitam venturi sæculi. Amen. Apostolicas, & Ecclesiasticas traditiones, reliquasque ejusdem Ecclesiæ observationes, & constitutiones firmissime admitto, & amplector. Item sacram Scripturam, juxta eum sensum, quem tenuit, & tenet sancta Mater Ecclesia, cuius est iudicare de vero sensu, & interpretatione sacrarum Scripturarum, admitto; nec eam unquam, nisi juxta unanimum consensum Patrum accipiam, & interpretabor. Profiteor quoque septem esse vera, & proprie Sacramenta novæ legis, à JESU CHRISTO Domino nostro instituta, atque ad salutem humani generis, licet non omnia singulis necessaria, scilicet, Baptisma, Confirmationem, Eucharistiam, Penitentiam, Extremam unctionem, Ordinem, & Matrimonium; illaque gratiam conferre, & ex his Baptisma, Confirmationem, & Ordinem sine sacrilegio reiterari non posse. Receptos quoque, & approbatos Ecclesiæ Catholicæ ritus in supradictorum omnium Sacramentorum solemnè administratione recipio, & admitto. Omnia & singula, quæ de peccato originali, & de justificatione in Sacrosancta Tridentina Synodo definita, & declarata fuerunt, amplector, & recipio. Profiteor pariter in Missa offerri Deo, verum, proprium, & propitiatorium sacrificium pro vivis, & defunctis, atque in sanctissimo Eucharistiæ sacramento esse vere, realiter, & substantialiter, corpus & sanguinem, una cum anima, & divinitate Domini nostri JESU CHRISTI, fierique conversionem totius substantiæ panis in corpus, & totius substantiæ vini in sanguinem, quam conversionem Catholica Ecclesia transubstantiationem appellat. Fateor etiam sub altera tantum specie, totum atque integrum CHRISTUM, verumque Sacramentum sumi. Constante teneo Purgatorium esse, animasque ibi detentas fidelium suffragiis juvari. Similiter, & Sanctos una cum CHRISTO regnantes, venerandos, atque invocandos esse, eosque orationes Deo pro nobis offerre, atque eorū Reliquias esse venerandas. Firmiter assero imagines CHRISTI, ac Deiparæ, semper Virginis, necnon aliorum Sanctorum habendas, & retinendas esse, atque eis debitum honorem, ac venerationem impartiendam. Indulgentiarum etiam potestatem à CHRISTO in Ecclesia relictam fuisse, illarumque usum Christiano populo maxime salutarem esse affirmo. Sanctam, Catholicam, & Apostolicam Romanam Ecclesiam omnium Ecclesiarum matrem, & ma-

Forma professionis Fidei.

gistrum agnosco, Romanoque Pontifici beati Petri Apostolorum Principis successori, ac JESU CHRISTI Vicario, veram obedientiam spondeo, ac juro. Cetera item omnia à Sacris Canonibus, & œcumenicis Conciliis, ac præcipue à sacrosancta Tridentina Synodo, tradita, definita, & declarata indubitanter recipio, atque profiteor: simulque contraria omnia, atque hæreses quascumque ab Ecclesia damnatas, & rejectas, & anathematizatas, ego pariter damno, rejicio, & anathematizo. Hanc veram Catholicam fidem, extra quam nemo salvus esse potest, quam in presenti sponte profiteor, & veraciter teneo, eandem integram, & immaculatam usque ad extremum vitæ spiritum constantissime Deo adjuvante retinere, & confiteri, atque à meis subditis, seu illis, quorum cura ad me in munere meo spectabit, teneri, & doceri, & prædicari, quantum in me erit, curaturum. Ego idem N. spondeo, voveo, ac juro, sic me Deus adjuvet, & hæc Sancta Dei Evangelia.

Sanctio penalis.

§. 11. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ ordinationis, inhibitionis, derogationis, voluntatis, statuti, decreti, & mandati infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem Omnipotentis DEI, ac B.B. Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursum.

Dat. P. An. 5. die 13. Nov.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1564. Idibus Novemb. Pontificatus nostri Anno 5.

Publicatio.

Anno à Nativitate Dom. 1564. indit. 7. die vero 4. mensis Decembris, Pont. Sanctissimi in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa IV. anno 5. retroscripta littera Apostolica affixa, & publicata fuerunt ad valvas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, ad valvas Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, dimissis in præfatis locis presentium retroscripturarum litterarum copiis affixis, ut est moris per nos Julium Parinum, & Bernardinum Andrentium prælibati S. D. N. Papæ Cursores.

Ant. Clerici Mag. Curs.

LXXXIX.

Forma professionis Orthodoxæ Fidei, observanda à provisis de beneficiis Ecclesiasticis curatis, ac dignitatibus, Ecclesiis, Monasteriis, & aliis locis Ordinum Regularium, & Militiarum.

Hanc professionem emittunt etiam plerique alii, ut habetur in præced. const. Graci autem quam formam servant vide inf. in hoc Tomo II. in Greg. XIII. const. 33. Ego.

Edita An. D. 1564.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memoriam.

Hæc dispositio Conc. Tridentini in c. 12. sess. 24.

I Njunctum nobis Apostolicæ servitutis officium requirit, ut ea quæ Dominus Omnipotens, ad providam Ecclesiæ suæ directionem, sanctis Patribus in nomine suo congregatis divinitus inspirare dignatus est, ad ejus laudem, & gloriam incunctanter exequi properemus. Cum itaque juxta Concilii Tridentini dispositionem, omnes quos deinceps Cathedralibus, & superioribus Ecclesiis præfici, vel quibus de illarum dignitatibus, canonicatibus, & aliis quibuscumque beneficiis Ecclesiasticis, curam animarum habentibus, provideri contingeret, publicam Orthodoxæ Fidei professionem facere, sequere in Rom. Ecclesiæ obedientiam permanfuros spondere & juvare teneatur.

Extensio dicti Concilii.

§. 1. Nos volentes etiam per quoscumque, quibus de Monasteriis, Conventibus, Domibus, & aliis quibuscumque locis regularium quorumcumque Ordinum, etiam Militiarum, quocumque nomine, vel titulo providebitur, idem servari, & adhuc ut unus ejusdem fidei professio uniformiter

ab omnibus exhibeatur, uniceque, & certa illius forma cunctis innoteat, nostræ sollicitudinis partes in hoc alicui minime desiderari, formam ipsam præsentibus adnotatam, publicari, & ubique gentium, per eos ad quos ex decretis ipsius Concilii, & alios prædictos spectat, recipi, & observari, ac sub penis Concilium ipsum in contravenientes latis, juxta hanc, & non aliam formam professionem prædictam solemniter fieri, auctoritate Apostolica tenore presentium districte præcipiendo mandamus hujusmodi sub tenore.

E Go N. firma fide credo, & profiteor omnia, & singula continentur in Symbolo Fidei, quo S. R. E. utitur, videlicet, Credo in unum Deum, Patrem Omnipotentem, factorem Cæli, & Terræ, visibilium omnium, & invisibilium. Et in unum Dominum JESUM CHRISTUM Filium DEI unigenitum, Et ex Patre natum ante omnia sæcula. Deum de Deo, lumen de lumine, Deum verum de Deo vero. Genitum, non factum, consubstantialem Patri, per quem omnia facta sunt. Qui propter nos homines, & propter nostram salutem descendit de cælis. Et incarnatus est de Spiritu sancto, ex MARIA Virgine, & homo factus est. Crucifixus etiam pro nobis sub Pontio Pilato, passus, & sepultus est. Et resurrexit tertia die secundum Scripturas, & ascendit in cælum, sedet ad dexteram Patris, & iterum venturus est cum gloria judicare vivos, & mortuos, cujus regni non erit finis. Et in Spiritum sanctum Dominum, & vivificantem, qui ex Patre, Filioque procedit. Qui cum Patre, & Filio simul adoratur, & conglorificatur, qui loquutus est per Prophetas. Et unam Sanctam, Catholicam, & Apostolicam Ecclesiam. Confiteor unum Baptisma in remissionem peccatorum. Et expecto resurrectionem mortuorum. Et vitam venturi sæculi. Amen. Apostolicas, & Ecclesiasticas traditiones, reliquasque ejusdem Ecclesiæ observationes, & constitutiones firmissime admitto, & amplector. Item sacram scripturam, juxta eum sensum, quem tenuit, & tenet sancta Mater Ecclesia, cujus est judicare de vero sensu, & interpretatione sacrarum Scripturarum, admitto; nec eam unquam, nisi juxta unanimum consensum Patrum accipiam, & interpretabor. Profiteor quoque septem esse vera, & proprie Sacramenta novæ legis, à JESU CHRISTO Domino nostro instituta, atque ad salutem humani generis, licet non omnia singulis necessaria, scilicet, Baptismum, Confirmationem, Eucharistiam, Pœnitentiam, Extremam unctionem, Ordinem, & Matrimonium; illaque gratiam conferre, & ex his Baptismum, Confirmationem, & Ordinem sine sacrilegio reiterari non posse. Receptos quoque, & approbatos Ecclesiæ Catholicæ ritus in supradictorum omnium Sacramentorum solemnè administratione recipio, & admitto. Omnia & singula, quæ de peccato originali, & de justificatione in Sacrosancta Tridentina Synodo definita, & declarata fuerunt, amplector, & recipio. Profiteor pariter in Missa offerri Deo, verum, proprium, & propitiatorium sacrificium pro vivis, & defunctis, atque in sanctissimo Eucharistia sacramento esse vere, realiter, & substantialiter, corpus & sanguinem, una cum anima, & divinitate Domini nostri JESU CHRISTI, herique conversionem totius substantiæ panis in corpus, & totius substantiæ vini in sanguinem, quam conversionem Catholica Ecclesia transubstantiationem appellat. Fateor etiam sub altera tantum specie, totum atque integrum CHRISTUM, verumque Sacramentum sumi. Constantiter teneo Purgatorium esse, animasque ibi detentas fidelium suffragiis juvari. Similiter, & Sanctos una cum CHRISTO regnantes, venerandos, atque invocandos esse, eosque orationes Deo pro nobis offerre, atque eorum Reliquias esse venerandas. Firmiter assero imagines CHRISTI, ac Deiparæ sèpi-

Forma professionis fidei observanda sub penis hic expressis.

Iussu publi-
candi.

Sanctio poe-
nalis.

D. P. An. 5.
die 13. Nov.

Publicatio.

X C.

Edita An. D.
1564.

Proemium.

Virginis, necnon aliorum Sanctorum habendas, & retinendas esse, atque eis debitum honorem, ac venerationem impartendam. Indulgentiarum etiam potestatem à CHRISTO in Ecclesia relictam fuisse, illarumque usum Christiano populo maxime salutarem esse affirmo. Sanctam Catholicam, & Apostolicam Romanam Ecclesiam, omnium Ecclesiarum matrem, & magistratam agnosco. Romanoque Pontifici beati Petri Apostolorum Principis successori, ac JESU CHRISTI Vicario veram obedientiam spondeo, ac juro. Cetera item omnia à Sacris Canonibus, & ecumenicis Conciliis, ac præcipue à sacrosancta Tridentina Synodo tradita, definita, & declarata, indubitanter recipio, atque profiteor: simulque contraaria omnia, atque hæreses quasquæ ab Ecclesia damnatas, & rejectas, & anathematizatas, ego pariter, damno, rejicio, & anathematizo. Hanc veram Catholicam fidem, extra quam nemo salvus esse potest, quam in presenti sponte profiteor, & veraciter teneo, eandem integram, & immaculatam usque ad extremum vitæ spiritum constantissime Deo adjuvante retinere, & confiteri, atque à meis subditis, seu illis, quorum cura ad me in munere meo spectabit, teneri, & doceri, & prædicari, quantum in me erit, curatum. Ego idem N. spondeo, voveo, ac juro, sic me Deus adjuvet, & hæc sancta Dei Evangelia.

§. 2. Volumus autem quod præsentis litteræ in Cancellaria nostra Apostolica de more legantur, & ut omnibus facilius pateant, in ejus quaterno describantur, ac etiam imprimantur.

§. 3. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ voluntatis, & mandati infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem, &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1564. Idib. Novemb. Pont. nostri Anno 5.

Leſſæ, & publicatæ fuerunt ſupraſcriptæ litteræ Romæ in Cancellaria Apoſtolica, Anno Incarnationis Dominicæ 1564. die vero Sabbati 9. menſis Decembris, Pontificatus Sanctiſſimi in Chriſto Patris, & D. N. D. Pii Papæ IV. Anno V.
A. Lomelinus Cuſtos.

Approbatio Confraternitatis sub invocatione Duodecim Apostolorum nuper in Urbe institutæ, pro decentiori Sanctissimi Eucharistie Sacramenti veneratione, & egenorum mendicare erubescens, vel aliis oppressorum subventionem; Et elargitio indulgentiarum.

Iſtam Confraternitatem Sixtus V. erexit in Archiconfraternitatem, cum ſauultate alia Confraternitates aggregandi die 15. Julii 1586. ſed ejus bullam præſcripſiſſet, tanquam hoc dumtaxat continentem. Et formam aggregandi præſcripſit Clem. VIII. in conſtit. 115. Quæcumque.

Opus dictum venerationis Sanctissimi Sacramenti, mox diligenter curat Sodalitas Sanctissimi Corporis CHRISTI, de qua habetur in const. 20. Pauli III. Dominus. sup. in Tomo I. Hæc autem sedulo incumbet dictæ pauperum subventioni. Ejusque indulgentias immutavit Paul. V. in const. mox publicanda, jam firmanda sub die 3. Octob. 1606.

PIUS PAPA QUARTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

IN Apostolicæ dignitatis culmine, meritis licet imparibus, divina dispositione constituti, ad ea nostræ considerationis aciem libenter dirigimus, per quæ nostræ provisionis auxilio divinus cultus cum animarum salute, ubilibet activum suscipiat incrementum; & his quæ propterea ex pia fidelium devotione instituta, & ordinata dicuntur, ut firma

perpetuo, & inconcussa permaneant, cum à nobis petitur, Apostolici muniminis præsidium propensius impartimur, ac fideles ipsos spiritualium gratiarum muneribus prosequimur, ut exinde divinæ gratiæ aptiores reddantur, & charitatis devotio in eis per amplius augeatur.

§. 1. Sane dilecti filii confratres Confraternitatis sub invocatione duodecim Apostolorum in Ecclesia Conventus eorumdem Sanctorum duodecim Apostolorum de Urbe Ordinis Fratrum Minorum Conventualium nuncupatorum institutæ, nobis nuper exponi fecerunt, quod alias nonnulli Christiani fideles pia devotione ducti considerantes Sanctissimum Eucharistie Sacramentum inter cetera Ecclesiæ Sacramenta, præcipuis honore, reverentia, & veneratione dignum, præsertim dum ad infirmos deferretur, à nonnullis, vel paucis admodum Christianis fidelibus, & minus quam deceat honorifice comitari, idque ægre ferentes, & singulari zelo devotionis cupientes, ut eidem Sacramento debitus cultus, honor, & veneratio exhiberetur, quantum in eis erat providere, unam utriusque sexus Christianidelium Confraternitatem, sub invocatione præfata ad Omnipotentis Dei, sacratissimi quoque Corporis Dominici laudem, gloriam, & honorem instituerunt, & ordinarunt: ac pro ejus salubri directione, & incremento, piorumque operum exercitio inter alia, nonnullos ex eis, qui curam, & regimen Monasterii Monialium domus Piæ nuncupatæ, regionis S. Eustachii de Urbe, sub regula sanctæ Clare dicti Ordinis, mulierumque ibi pro tempore degentium noviter erecti, & ab ipsa Confraternitate trahentis originem, haberent, & alios, qui Christianidelium elemosynas perquirerent, ut exinde pauperibus erubescens, & miserabilibus personis in suis necessitatibus eorumdem Christianidelium ope, secrete, & alias subveniretur, alios vero, qui alia pietatis, & charitatis opera erga quoscumque pauperes ope destitutos, ac indigentia, paupertate, & litibus, & aliter oppressos illos consulendo, & iudiciis pro iustitia commendando, ac visitando; & ex eorum, & aliorum Christianidelium elemosynis quantum possent eis subveniendo exercerent, constituerunt, & deputarunt.

§. 2. Necnon dilectum filium nostrum Vitellium Sanctæ Mariæ in Via lata Diaconum Cardinalem Vitellium nuncupatum, S. R. E. Camerarium, in suam, & dictæ Confraternitatis Confratrem, & Protectorem elegerunt, & receperunt, prout in instrumentis, seu capitulis, aut aliis documentis desuper forsan confectis, plenius dicitur contineri.

§. 3. Quare pro parte Confratrum prædictorum nobis fuit humiliter supplicatum, quatenus institutioni Societatis, ac constitutioni, deputationsi, electioni, & receptioni præfatis, pro firmiori illarum substantia robur Apostolicæ confirmationis adjicere, & ac alias in præmissis opportune providere, de benigntate Apostolica dignaremur.

§. 4. Nos igitur qui pia, & salubria fidelium vota, ex quibus divinus cultus propagatur, & salus animarum provenire dignoscitur, pii patris affectu, ne libenter prosequimur, & ut optatum forsitan effectum, operam efficacem attentius impendimus, ac tam venerabile Sacramentum à cunctis Christianidelibus, ut per hoc eorum desideratam salutem consequi valeant peramplius honorari, venerari, laudari & magnificari sinceris exoptamus desideris, ac Omnipotenti DEO, quod tam salubria, necessaria, & utilia opera exerceantur, inensas gratias agentes, & ut illa perpetuo frequententur, ac Christiani fideles ipsi eis ferventibus insistant, quo nos erga eos amplioribus, & specialioribus gratiis liberales esse, seque propterea majori celestis gratiæ devotione refici posse cognoverint, quantum cum Deo possumus providere volentes, necnon virescens præmissorum instrumentorum, & aliorum documentorum desuper confectorum tenores, præsentibus pro expressis habentes, hujusmodi supplicationibus inclinati, institutionem, & ordina-

Quidam Christiani fideles in Urbe Confraternitatem, pro decentiori Eucharistie Sacramenti veneratione, & regimine Monasterii Domus Piæ, & subventionis egenorum medicarum erubescens aut aliis oppressorum.

Ad hæc vide quæ dixi in rubrica.

Et scias Domum Piæ hodie regiam alia Congregatione, ut habetur in const. 52. Greg. 13. Cupientes, ubi notabo.

Protectorem; dictæ Confraternitatis, Cardinalem Vitellium deputarunt.

Et modo supplicant Pontifici, pro confirmatione prædictorum.

Hic Pontifex, dictam institutionem, & Protectoris deputacionem, & ordinationes jam firmatas approbat.

Alique statuta de cetero edendi facultatem tribuit.

Indulgentias Confratribus elargiuntur.

Tu ad hoc adverte quod dixi hic in rubr.

tionem Confraternitatis, necnon constitutionem, & deputationem, ac Protectoris electionem, & receptionem huiusmodi, aliaque omnia, & singula per eosdem Confratres circa præmissa gesta, statuta, & ordinata, ac prout illa concernunt reliqua in instrumentis, seu capitulis, aut aliis documentis prædictis contenta, & inde secuta, quæcumque, (licita tamen, & honesta) Apostolica auctoritate tenore præsentium, approbamus, & confirmamus, ac illa omnia, & singula Apostolicis muniminis præsidio roboramus, omnesque & singulos, tam juris, quam facti defectus, si qui forsitan intervenerint in eisdem supplemus. Et nihilominus eundem Vitellotium Cardinalem, & quemcumque, qui ad id per ipsos Confratres pro tempore electus fuerit, in eisdem Confraternitatis Protectorem constituimus, & deputamus.

§. 5. Et insuper eisdem Confratribus quæcumque statuta, ordinationes, capitula, & decreta, felix regimen, & gubernium dictæ Confraternitatis concernentia (licita tamen, & honesta, ac sacris Canonibus non contraria) edendi, condendi, & faciendi, conditaque murandi, alterandi, ac penitus tollendi, seu cassandi, & alia de novo edendi, condendi, & faciendi. Quæ postquam edita, condita, facta, alterata, mutata, & pro tempore per existentem Vicarium Almæ Urbis approbata fuerint, eo ipso dicta auctoritate approbata sint, & esse censentur. Seque in dicta Ecclesia congregandi, & congregationes faciendi, ac dilectis filiis fratribus dicti Conventus Confraternitatem, suosque Confratres huiusmodi in dicta Ecclesia recipiendi, & admittendi, ac inibi congregari permittendi, plenam, liberam, & omnimodam potestatem, licentiam, & facultatem eisdem auctoritate, & tenore concedimus, & impartimur.

§. 6. Et insuper, ut Ecclesia, & Confraternitas in ea instituta huiusmodi, congruis frequententur honoribus, ac Confratres ipsi, alique Christiani fideles ad præfatum Eucharistiæ Sacramentum dum processionaliter, ac alias ad infirmos deferuntur, devoto, & honorifice comitandum alliciantur, & etiam ut se eo promptiores ad id exhibeant, quo se exinde æternæ vitæ præmia facilius consequi speraverint, de Omnipotentis DEI misericordia, ac beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus auctoritate cunctis, omnibus, & singulis ipsius Confraternitatis Confratribus pro tempore existentibus, & illam pro tempore ingredientibus, ceterisque utriusque sexus Christianis vere penitentibus, & confessis, seu statutis à jure temporibus confitendi propositum habentibus, qui dictam Ecclesiam in singulis diebus festivitatum duodecim Apostolorum annis singulis devoto visitaverint, ac processionaliter cum eisdem Confratribus dictum Eucharistiæ Sacramentum, dum illud tam ad infirmos quam alios, pro tempore deferunt, honorifice, ac cum debitis reverentia & honore, Deum orando, & mente recolendo, piæque preces ad eum effundendo comitati fuerint; ac qui missæ ultimo quoque die Domino cuiuslibet mensis in dicta Ecclesia alta voce, & alias solemniter celebrandæ interfuerint, vel inibi confessi & corde contriti ipsum Sanctissimum Eucharistiæ Sacramentum sumperint, ac præmissa adimpleverint, & quoties orationem quadraginta horarum nuncupatam per eosdem Confratres fieri contigerit, in dicta Ecclesia, seu eorum cappella interfuerint, quoties id fecerint, toties plenariam omnium, & singulorum peccatorum suorum indulgentiam, & remissionem in forma Jubilæi Sancti, auctoritate, & tenore præfatis, misericorditer in Domino concedimus, & elargimur. Ac institutionem Confraternitatis, ac constitutionem, electionem, & receptionem Protectoris, capitulaque, & alia per eosdem Confratres gesta huiusmodi, perpetuis futuris temporibus observari debere.

§. 7. Necnon indulgentias, & alia præmissa sub

quibusvis revocationibus, suspensionibus, aut derogationibus similium, vel dissimilium indulgentiarum, & gratiarum nullatenus comprehendendi, sed semper ab illis excepta fore, & censeri, dictosque Confratres, suosque officiales, aut eorum aliquem super præmissis, seu eorum aliquo à quoquam quovis prætextu etiam pro informatione Curie, tam ex officio, quam ad instantiam Fisci quomodolibet molestari, seu perturbari non posse.

§. 8. Et sic per quoscumque Judices, & Commissarios quavis auctoritate fungentes, sublata eis, & eorum cuilibet, quavis alteri iudicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate iudicari, & definiri debere. Ac quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter attentari contigerit, irritum, & inane decernimus.

§. 9. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, Ac Conventus, Monasterii, & Ordinis præfatorum juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, illis eorumque superioribus, & personis sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, irritantibusque & aliis decretis, per quoscumque Romanos Pontifices etiam prædecessores nostros, ac nos & Sedem prædictam, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, & alias quomodolibet, etiam iteratis vicibus concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio, seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata inserti forent, præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 10. Volumus autem quod transumptis præsentium, manu alicujus Notarii publici, vel Secretarii ipsius Confraternitatis subscriptis, & sigillo prædictæ Confraternitatis, seu Protectoris illius, aut alicujus Curie Ecclesiasticæ, seu persone in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, & adhiberi debeat, quæ literis ipsis originalibus adhiberetur, si exhibitæ forent, vel ostendat.

Datum Romæ apud sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris, die decimasepta Novembris 1564. Pontificatus nostri Anno 5.

De Spoliis Clericorum, extra residendum decedentium.

Extensionem etiam quoad Curiales, vide infra in Pauli V. const. 18. in eminenti. ubi plene notabo de materia.

Circa spolia vide const. 48. S. D. N. Urban. VIII. Superni, inf. tom. 4. §. 12.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

IN suprema militantis Ecclesiæ specula meritis licet insufficientibus divina dispositione constitutis, cunctos non solum vigilantie nostræ commissos dominicos greges, sed etiam singulorum Pastorum suorum actus intensa nostræ mentis acie collustrantes, studium efficacæ, operamque sedulam ad hoc omnino statum adhibere, ut quemadmodum operosum Sacri Concilii Tridentini progressum, felicemque exitum, Domino cooperante

Clausula huius bullæ præservata.

Clausula sublata.

Derogatio contrariorum.

F' des exemplorum.

D. P. An. 5. die 16. Nov.

XCI.

Edita An. D. 1564.

Proemium.

præstitimus, ita sanctissima illius decreta, ipsum præsertim, qui in Apostolicæ sollicitudinis partem vocati sunt Pastorum officium concernentia, non tepide, neque dissimulanter exequamur.

§. 1. Sane licet in Concilio præfato saluberrima fuerit ordinatione decretum, quod omnes, & singuli venerabiles fratres nostri Patriarchæ, Primates, Archiepiscopi, & Episcopi, & alii beneficiarii apud Ecclesias sponfas suas residere teneantur, nonnulli tamen (quod non sine animi nostri dolore referimus) adeo sui, gregumque quos olim perdidit Saluator noster proprio sanguine redimere dignatus est, sibi creditorum obliui sunt, ut etiam nunc in Alma Urbe, vel alibi commorantes, & sacrosancta spiritualis matrimonii, inter eos, suasque Ecclesias solemniter contracti iura confundentes, sponfas suas in longa quævis viduitate relictas, & prædictas Ecclesias quomodocumque sibi concessas invisere, & apud illas, ut probos, & providos patresfamilias decet, residere non curent, in perditione animarum suarum, & subditorum suorum, ac perniciosum exemplum, & scandalum plurimorum.

§. 2. Nos hanc illorum contumaciam alicuius etiam temporalis poenæ metu, frangendam, seu convincendam esse censentes, Motu proprio, & ex certa scientia nostra, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, omnibus, & singulis Patriarchis, Primatibus, Archiepiscopis, & Episcopis præfatis, ac aliis quibuscumque etiam quavis auctoritate, dignitate, gradu, vel præminencia præfulgentibus, dictas Ecclesias in commendam, vel administrationem, aut alio quovis nomine obtinentibus, & aliis quibuscumque beneficiatis curam animarum habentibus, qui juxta decreti super Residentia in Concilio prædicto promulgati tenorem, personalem in suis Ecclesiis residentiam facere tenerentur, in virtute sanctæ obediencie, ultra poenâ in dicto decreto Concilii contentas, etiam sub privationis eorum, à regimine, & administratione Ecclesiarum suarum, ac aliis nostro, & pro tempore existentis Romani Pontificis successoris nostri arbitrio imponendis poenis distinctè præcipiendo per Apostolicam scripta mandamus, quatenus omni more cessante in eisdem suis Ecclesiis, juxta formam, & tenorem dicti Concilii personaliter resident.

§. 3. Et nihilominus, si quos mandato nostro hujusmodi, quod absit, non parere contigerit, ne etiam tales absentes meliores in hac parte conditionis, quam ceteri in suis Ecclesiis residentes existant, hac nostra perpetuo valitura sanctione per præfatos statuimus, & ordinamus, quod deinceps omnia, & singula mobilia, & immobilia, etiam in Urbe, vel ejus districtu, existentia, & se moventia, res, & bona, jura, & actiones cujuscumque qualitatæ, & valoris, ac ubicumque locorum consistent, ad Patriarchas, Primates, Archiepiscopos, Episcopos, & alios quoscumque, etiam quavis auctoritate, dignitate, gradu, & præminencia præfulgentes, Ecclesias prædictas in titulum, vel commendam, sive administrationem, aut alio quovis nomine obtinentes, & alios quoscumque beneficiarios, curam animarum habentes, qui extra prædictas Ecclesias, ac diocesim ejusdem in Romana Curia, aut alibi degentes, juxta decretum, & formam Concilii hujusmodi non residentes decesserint peritinentia, & per illos suarum Ecclesiarum, ac quorumcumque Monasteriorum, Prioratuum, Præpositurarum, & aliorum beneficiorum Ecclesiasticorum, cum cura, & sine cura secularium, & regularium, quæ illi quomodolibet obtinuerint, ac fructuum, reddituum, & proventuum ecclesiasticorum, necnon pensionum annuarum sibi super similibus fructibus, redditibus, & proventibus reservatarum, & assignatarum occasione quaesita, etiam si facultatem specialem, de illis, aut eorum parte testandi, & alias libere disponendi, à nobis, & à quibuscumque aliis Romanis

Pontificibus prædecessoribus, & successoribus nostris, etiam cum clausulis, quod facultates hujusmodi revocari non queant, aliisque irritantibus decretis obtinuerint, & in vim illarum litterarum desuper confectarum, de rebus, & bonis hujusmodi jamque disposuerint, tamquam spolia ad Cameram Apostolicam legitime pertineant.

§. 4. Liceatque dilectis filiis moderno, & pro tempore existenti Commissario nostro generali, & suis dictæ Cameræ deputatis in eventum decessus hujusmodi, solitum inventarium super rebus, & bonis præfatis conficere, illaque prout de reliquis clericorum spoliis fieri solet, ad dilecti filii nostri moderni, & pro tempore existentis generalis Thesaurarii manus redigere, dictæque Cameræ applicare, cujusvis licentia desuper minime requiratur.

§. 5. Ac facultates, & desuper confectas litteras prædictas, etiam motu, & scientia similibus, etiam in recompensam laborum, & obsequiorum, etiam Nobis, & Ecclesiæ Rom. dictæque Sedi in penforum quomodolibet concessas, & etiam iteratis vicibus approbatas, illarum omnium tenores præsentibus pro sufficienter expressis, & ad verbum insertis habentes in eventum obitus hujusmodi, etiam si in Urbe, aut ejus districtu, vel alibi extra suas Ecclesias, ut præfertur, contigerit, ex nunc, prout ex tunc, & e contra, in dictæ contumaciæ poenam ejusdem potestatis plenitudine, & tenore revocamus, cassamus, & annullamus, & tam eas, quam earum prætextu quomodolibet pro tempore condita, factaque testamenta, codicillos, legata, donationes, & alias dispositiones quaslibet, etiam ad pias causas, vel in remunerationem servitiorum, nulla & invalida, nulliusque roboris, vel momenti fore, neque cuiquam contra præsentium tenorem suffragari.

§. 6. Et sic per quoscumque Judices, & Commissarios quavis auctoritate fungentes, & S. R. E. Cardinales in quavis instantia, sublata eis, & eorum cuilibet quavis alias judicandi, & interpretandi facultate, judicari, & definiri debere, ac quicquid secus à quoquam quavis auctoritate, scienter, vel ignoranter attentari contigerit, irritum, & inane decernimus.

§. 7. Per hoc autem nostris, & Romanorum Pontificum prædecessorum nostrorum ordinationibus, reservationibus, & decretis, quoad Prælatorum, & aliorum beneficiatorum, etiam in suis Ecclesiis, aut diocesibus residentium, & ibi decedentium, quæ etiam ampliamus, & extendimus ad habentes Ecclesias in Urbis districtu, obique residentes, & decedentes, spolia Cameræ Apostolicæ applicata hæcenus emanatis, nullatenus præjudicare, neque quicquam in eis alterare intendimus, sed ea in suo robore, ut antea, manere volumus, præterquam quoad eos, qui in suis Ecclesiis juxta formam prædicti Concilii resederint, & specialem licentiam testandi habuerint, hac enim tantum salvam esse volumus, ita ut generalis licentia testandi eis quamquam residentibus minime suffragetur, sed sola speciali si quam habuerint tueri se possint.

§. 8. Ceterum ut præceptum, mandatum, statutum, ordinatio, revocatio, cassatio, decretum, & alia præmissa, præsentisque litteræ ad eorum quorum interest notitiam deducantur, nullusque possit aliquam illorum ignorantiam prætere, vel excusationem allegare, sed illa perpetuo firma & illibata permaneant, volumus & mandamus quo eadem præfentes in Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, & Cancellariæ nostræ valvis, ac acie Campifloræ per aliquem ex Curforibus nostris affixæ, copia illarum ibi dimissa, ab ea die omnes perinde ardeant, ac si illis personaliter intimatæ fuissent.

§. 9. Non obstantibus præmissis, ac in favorem Curialium per fel. record. Sixrum Quartum, Leonem Decimum, Julium Tertium, & quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac etiam per nos editis & approbatis, necnon aliis litteris, constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque.

Instituto del
bendi dict.
bon, & a-
merz appli-
candi.

Licentias res-
tand non re-
sideribus
collit, dispo-
sitioneque
eorum an-
nullat.

Decretum
irritans.

Declaratio
quod alie or-
dinationes
Apostolicæ
circa spolia
firma reman-
eant.

Forma, & ef-
fectus publi-
candi quam
habes in fin.

Clausule de-
rogatorie.

ANNO
1564.

PIUS QUARTUS.

ANNO
1564.

Dat. P. A. S.
die 25. Nov.

Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno incarnationis Dominicæ 1564. 7. Kalen. Decembris, Pontificatus nostri Anno quinto.

Publicatio.

Anno à Nativitate Domini 1564. indictione 7. die vero 4. mensis Decembris, Pontificatus Sanctissimi in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papæ IV. anno 5. retroscriptæ littere Apostolicæ affixæ, & publicatæ fuerunt ad valvas Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, dimissis in præfatis locis præsentium retroscriptarum litterarum copiis affixis, ut est moris, per nos Julium Parinum, & Bernardinum Andrentium prælibati Sanctiss. D. N. Papæ Cursores.

Antonius Clerici Magister Cursorum.

XCII.

Revocatio cujuscumque privilegii, Communitatibus, Confraternitatibus, & aliis quibuscumque, etiam locis piis concessi, homicidam in die Veneris Sancti, aut alio tempore è carceribus liberandi, & reservatio ejusmodi gratiæ, consulto Pontifice ab ejus officialibus de cetero concedendæ.

PIUS EPISCOPUS,

Edita An. D.
1564.

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memoriam.

Exordium.

Um ad solitam Romani Pontificis JESU CHRISTI Vicarii clementiam, tamquam ad exuberantem pietatis fontem pro gratis impetrandis undequaque concurritur, ipsique more pii patris omnes uti filios dilectissimos in intimis charitatis, & misericordiæ visceribus indulgenter amplectimur, usu nonnumquam evenit inde privilegia flagitando reportari, quæ licet prima petitionis specie nihil incommodum secum afferri videbantur, illorum tamen concessionem subsequens experientia Reipublicæ damnosam, meritoque esse convincit improbandam.

Causa hujus
constitutionis.

§. 1. Sane quoniam & nostri pastoralis officii cura & præsentium temporum conditio plane nos coegit modum diversis abusibus, qui jam pridem in mores hominum, quos DEI providentia vigilantia nostræ committere dignata est, sensim irrepserant, aliquando salubriter imponere, prout in his non solum circa spirituales universales Ecclesiæ, cui licet immeriti præsidemus, sed etiam circa temporalem Sedis Apostolicæ statum, videlicet reformandum aciem nostræ mentis intendere dudum cooperante Domino non desistamus. Nos etiam non minimum operæ pretium facturos esse censemus, si cunctas quo ad ejus fieri poterit occasiones homicidiorum, quæ in divinæ majestatis offensam, & publicæ quietis perturbationem in dies passim increbrescunt patratorum conabimur e medio submovere. Considerantes itaque privilegia variis civitatibus, terrarum, & locorum, nobis & Sanctæ Romanæ Ecclesiæ in temporalibus immediate subjectorum, Communitatibus, Universitatibus, ac Confraternitatibus, & aliorum piorum locorum Rectoribus, & hominibus, super uno homicidia singulis annis Veneris in Parasceve, vel alio certo die, è carceribus, meritisque supplicii liberando, & salutiferæ cruci, vel altari præsentando aut patriæ dimittendo, per nonnullos Romanos Pontifices prædecessores nostros, & Sedem prædictam in Christianæ charitatis, divinique cultus, & fidelium subditorum favorem diversimode concessa, nonnumquam improbis, scariis, & sceleratis parvicidis anam in proximum quemque suum sub spe liberationis hujusmodi crudeliter sævienti, & humanum sanguinem effundendi præbuisse, ac illos in quorum manu privilegiorum usus aut executio sita est, eis ut plurimum non ad Christianam pietatem uti, sed potius ad quæstum, & favores importunos in animarum suarum perniciem, & bonorum scandalum imprudenter abuti solere, perditissimos homines, à necessaria, nec ulla ratione condonandi morte, celo, terraque multum indignantibus, atque reclamantibus impie sub prætextu pietatis eripientes.

§. 2. Nosque propterea omnino præstare censentes, quod hujusmodi gratiæ, à nostro, & qui, cum sit omni corruptela superior, ac tales hujus immanitatis damnati homines misericordiæ locum reliquerint, sincerius rimabitur, Rom. Pontificis pro tempore existentis, quam incertæ multitudini, corruptorumve Rectorum arbitrio dependeat. Necnon quorumcumque privilegiorum Communitatibus, Universitatibus, ac Collegiis prædictis, & aliis quibuscumque, etiam quorumvis Imperatorum, Regum, vel Religionis contemplatione, seu in damnum, recompensam, vel aliter quomodolibet concessorum, ac pluries etiam per nos approbatorum, & innovatorum, litterarumque desuper expeditarum, & inde secutorum, tenores præsentibus pro sufficienter expressis habentes Motu proprio, & ex certa scientia nostra, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, omnia, & singula privilegia præmissa, tam in Alma Urbe, quam extra eam in universo ejusdem Sanctæ Romanæ Ecclesiæ dominio temporali, sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis, etiam vim contractus inducentibus clausulis, irritantibusque & aliis decretis, etiam consistorialiter, ac Motu, & potestatis plenitudine similibus, per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac nos, & Sedem prædictam, vel ejus Legatos quibuscumque Civitatibus, Oppidis, Castris, Locis, seu Communitatibus, Universitatibus, Confraternitatibus, Collegiis, Ecclesiis, Hospitalibus, piis locis, & aliis personis, tam secularibus, quàm ecclesiasticis, etiam cujusvis Ordinis regularibus, cujuscumque dignitatis, status, gradus, qualitatibus, & præminentie fuerint, hæcenus quomodolibet concessa, ac etiam pluries approbata, & innovata, tenore præsentium revocamus, cassamus, irritamus, & annullamus, nulliusque roboris, vel momenti fore, neque deinceps cuiquam suffragari, neque Civitates, Oppida, Castra, Loca, seu Communitates, Universitates, Collegia, Confraternitates, aut eorum Rectores, vel alios quolibet eorumdem privilegiorum prætextu alicuius homicidæ gratiam, absolutionem, aut remissionem præterdum, requirere, vel homicidam absolvendum nominare, seu præsentare, vel hujusmodi privilegii alias uti, neque civitatum, terrarum, aut locorum prædictorum Gubernatores, Rectores, vel Magistratus pro tempore existentes, nominationes, aut præsentationes hujusmodi admittere, seu aliquem ita nominatum, vel præsentatum dimittere, vel absolvere posse.

§. 3. Sed si quis casus, gratia, & miseratione dignus occurrat, illum ad nos, & pro tempore existentem Romanum Pontificem, ut in hoc pro facti, personarumque qualitate fiat quod convenire videbitur, referri debere. Ac quicquid fecus à quocumque quavis auctoritate scienter, vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane decernimus, & declaramus.

§. 4. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque. Ut autem præsentibus ad omnium notitiam facilius deducantur, volumus, & mandamus quod illæ in Cancellariæ Apostolicæ valvis, ac in acie Campi Floræ de Urbe per aliquem ex nostris Cursores affixæ, copia illarum ibi dimissa, universos, & singulos, quorum interest intra mensem à die affixionis hujusmodi computandum, perinde afficiant, ac tenentque ac si illis personaliter intimatæ fuissent.

Nulli ergo omnino hominum, &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno in-

Revocatio privilegiorum Confraternitatis, & aliis concessum, liberandi homicidas carceratos.

Reservatio gratiæ de cetero concedendæ. Hoc hodie servatur, ut consulto Pont. concedatur.

Clausula derogatoria.

car.

1564. carnationis Dominicæ 1564. 19. Kalen. Januarii, Pontificatus nostri anno 5.

Publication. Anno ad Nativitatem Domini 1565. indictione 8. die vero 18. mensis Aprilis, Pontificatus Sanctissimi in Christo patris, & D. N. D. Pii divina providentia Pape IV. Anno 6. retroscripta littera Apostolica publicata, & affixa fuerunt in Cancellaria & Camera Apostolicas valvas, & acie Campi Floræ, ut moris est, dimissis eadem in supradictis locis presentium litterarum copiis affixis, per nos Julium Parinum, & Camillum Cherubinum prelati Sanctissimi. D. N. Pape ursores.

Nicolaus de Matthæis Mag. Curs.

XCIII. Jurisdictio Consulum Artis Merciariorum Almæ Urbis.

Confirmationem earumdem facultatum habes inf. in hoc Tomo II. in Greg. XIII. const. 61. Urbem. Et aliam concessit Clem. VIII. Tom. III. die 10. Februarii 1593. sed eam tanquam simpliciter confirmationem scilicet pratermittam.

PIUS PAPA QUARTUS,

Motu proprio, &c.

Exordium. Cum pastoralis nostri incumbat officio, juxta facti exigentiam, & temporum varietates, quocumque ad suas jurisdictiones temporum calamitate collapsas, restituere, & reintegrare.

Conservatores Urbis assignarunt. Universitati Merciariorum locum in foro Capitolii, ut ubi Consules jus dicent de rebus spectantibus, ad artem. S. 1. Nos attendentes dilectos filios Collegium, & Universitatem Merciariorum, & illis adhaerentium hujus Almæ Urbis, & Curie nostræ non modicæ utilitati, & commoditati, immo etiam necessitati, dum varia presertim mercimonia humano usui apprime necessaria, longinquis ex partibus, maximis eorum nedum sumptibus, verum etiam in sepe dispendiis, ac laboribus & periculis, quotidie ad Urbem, & Curiam præstatis, maxima etiam cum vestigalium & portorium Sanctæ Romanæ Ecclesiæ fructu & utilitate, terra, marique vehunt, & vehi procurant consulere. Et propterea dilectos filios Conservatores Almæ Urbis, considerantes eisdem Collegium, & Universitatem, illiusque particulares homines pro eorum creditis exigendis coram diversis Urbis tribunalibus & Jucibus, maximis cum laboribus & dispendiis defatigari, & ea de causa, bona & mercimonia hujusmodi fieri cariora eisdem Collegio & Universitati, ut Consularum, & peculiare tribunal, ad aliarum artium, & presertim Mercatorum instar, confluerent & erigerent, commisisse, & mandasse, eisdem solum & locum ad dictum tribunal, & Consularum construendum, inibi de rebus ad eorum artem spectantibus, & pertinentibus iudicandum, causasque sui fori cognoscendum, prout alias consueverant assignasse.

Senator Urbis, tempore consilii IX. idem Universitati facultatem vendendi quascumque res, etiam concernentes alias artes, & erigendi unum collegium. S. 2. Ac fel. record. Bonifacium Papam Nonum prædecessorem nostrum, seu de illius mandato quondam Zachariam Trivisanum Venetum, tunc Urbis Senatorem eisdem Collegio, & Universitati habilitatem, licentiam, facultatem, libertatem, & potestatem quascumque res, & spectiarias, ferreas, argenteas, aureas, vel alias humano usui necessarias, & pertinentes, etiam quascumque alias artes, & artificum quæcumque Collegia in specie quomodolibet concernentes exponendi, & expolitas publice etiam per Urbem portandi & vendendi sine aliquibus quomodolibet eis à quoquam aliarum Artium proposito obstaculo seu impedimento, imposto inferendo, concessisse; nec ob id aliud quam unum & idem Merciariorum Collegium, sed seorsum ab aliis uti hæc Alma Urbis in usu habebat censeferi mandasse; nec etiam ea re, cuique d. aliarum Artium Collegio, Collegique Præposito ipsos Universos, & singulos Merciariorum Urbis, fieri subiectos voluisse. Quinimo ipsos omnes tamquam ministrantes negotia, & exercitia, quæ uberiori Civitatem alunt tueri, & manuteneri, ac

defendi censuisse, ab omnibus contrariantibus, maxime ab his, qui avaritia ducti earum rerum faciebant pretia cariora. Idemque Senator præstans per concessam potestatem à Bonifacio prædecessore nostro, etiam auctoritate, & potestate Senatus præmissa sancivisse, & perpetuo vilitate mandavisse.

S. 3. Ipsumque Collegium, & universitatem nonnulla statuta ad dictum Tribunal, & ad artem hujusmodi necessaria, in libro Statutorum descripta edidisse, & ordinasse, illaque per Senatores, & Conservatores respective approbata, & confirmata fuisse. Et novissime inter cetera statuisse, & ordinasse, quod Consules jus & rationem inter homines artis, & pro quibuscumque causis ad artem hujusmodi spectantibus & pertinentibus & ab eis dependentibus usque ad quamcumque summam jus reddere valeant, & si aliquis ipsius artis conveniret in iudicio aliquam aliam personam, quæ non esset ejusdem artis, dummodo foret pro re ad artem ipsam spectante, Consules, qui pro tempore fuerint, jurisdictionem contra tales, cujuscumque status, gradus, aut conditionis existant ementes bona dictæ artis, & alias super eis quomodolibet contrahentes conventos, usque ad summam triginta ducatorum auri in auro de Camera habentes, & personæ sic conventæ jurisdictionem hujusmodi, usque ad dictam summam inclusive, sub quovis pretextu, causa, vel occasione, etiam si essent nobiles, & Romani Cives, Urbis incolæ, vel Curiales omnes, seu alias quoquo modo declinare non possint.

S. 4. Et ne unaquaque summa præsentia Notarii, & illius stipulatio requiratur, statuisse, quod Codicibus, & libris rationum Merciariorum, Velectariorum, Berrectariorum, Setarolorum, seu Banderariorum dictæ Universitatis, & aliorum ejusdem Collegii confectis usque ad summam triginta ducatorum auri de Camera, omnibus partibus ejusdem rationis simul computatis plene credatur, & fides adhibeatur cum juramento, contra quoscumque. Inter homines vero de arte usque ad quamcumque summam occasione merciarie, & cujuslibet alterius ad artem hujusmodi pertinentis. Ita quod agentes, & exigere volentes cum juramento, perinde plena fides dictis libris adhibeatur, ac si legitime, & concludenter probatum esset, dummodo ipsi libri, mercantiles, & mercatorum more, & ordine scripti, confecti, & tenti sint, rationabili suspitione carentes, ad personas scribentes respectu habito.

S. 5. Et si falsitas aliquo loco dolose annotata reperiretur, talis liber per Consules universitatis prædictæ in foro publico Capitolii sono tubæ comburatur, cum publicatione falsitatis, & illius auctoris; & alia penas incurrat, quas de jure communi vel municipali incurrisse diceretur, & perpetuo infamis remaneat, & per eum scribendis de cetero non credatur.

S. 6. Necnon à sententiis à summa decem scutorum, & infra aliæ ex partibus coram dictis Consulis litigantes quemadmodum aliis Iudicibus, & Curis concessum extitit, appellare, vel alias reclamare minime possint, nec valeant, & quicquid per eosdem Consules decerneretur, aut fieret esset validum, firmum & efficax, realique executioni demandandum.

S. 7. Hæcque & alia ultimo dictæ ordinationes, & statuta per dilectos filios modernos ipsius Urbis Senatorem, & Conservatores tanquam rationi consonantia, approbata, & confirmata fuisse.

S. 8. Idcirco idem Collegium, & Universitatem tanquam præmissis de causis de Republica optime meritis specialibus favoribus, & gratiis prosequentes, Motu simili, &c. non ad ipsius Collegii, & Universitatis, aut alterius ejusdem artis instantiam, & requisitionem, sed ex certa nostra scientia, ac potestatis plenitudine, mandatum, assignationem, consignationem, constructionem, & erectionem dicti Consularum, & tribunalis ut præmittitur faciam, necnon licentiam, libertatem, & habilitatem,

Collegium modo statuit Consules cognoscere causas de rebus spectantibus ad artem usque ad quamcumque summam inter homines de arte, & inter alios usque ad ducat. 30. Ad quod vide ampliationem hic in fine.

Librique eorum mercantilibus textis fides adhiberi.

Falsitatem contra dolose committentes in eorum libris coerceri.

Appellari quæ non possit à sententiis Consularum à x. scutis infra.

Quæ statuta Senator, & Conservatores approbaverunt. Hæc Pont. modo confirmat & innovat prædictas concessiones Senatorem, & Conservatorum, & statuta Universitatis & Consulum jurisdictionem, & facultates. mo ampliat ut hic in fine.

facul-

facultatem, & potestatem ab eodem Bonifacio prædecessore nostro, seu Zacharia olim Senatore præfatis concessas, ac ab ipsa Universitate condita Statuta, & Ordinationes, facta & ut supra approbata, & in posterum per ipsam Universitatem fienda, & per Senatorem, & Conservatores ejusdem Urbis juxta formam Statutorum præfata Urbis approbanda illorumque, & illarum confirmationes, ac ejusdem Bonifacii prædecessoris, seu Zacharie Senatoris concessionem illorum, ac omnium, & singulorum præmissorum, ceterorumque hic etiam de necessitate exprimendorum veriores tenores, & effectus, pro hic plene, & sufficienter expressis, ac de verbo ad verbum, penitus & omnino insertis habentes, Apostolica auctoritate tenore præsentium approbamus, confirmamus, & innovamus, eisque perpetuæ inviolabilis firmitatis robur adjicimus, ac ea omnia, & singula, perpetuo, & inviolabiliter observari debere decernimus, & mandamus, & quatenus opus sit de novo concedimus, & ut supra statuimus, & ordinamus, omniaque & singula in violabiliter perpetuis futuris temporibus observari mandamus. Ac omnes, & singulos, tam juris, quam facti defectus, si qui forsan intervenerint in eisdem, si quæ solemnitates omisæ fuerint supplemus. Ita quod ejusdem Collegii, & Universitatis moderni, & reliqui in posterum pro tempore existentes Consules super hujusmodi & in specie super præfato statuto de jurisdictione, juxta illius tenorem usque ad quamcumque summam exercendi quoad personas de arte hujusmodi, & qui de arte non fuerint, usque ad dictam summam triginta ducatorum auri de Camera absque aliquo alio obstaculo, vel impedimento aliarum Curiarum, jurisdictionem, & potestatem habeant, prout tenore præsentium damus, concedimus, & elargimur facultatem, licentiam, & potestatem, ac auctoritatem, in omnibus & singulis causis, litibus & differentiis, ex quavis causa, vel occasione ad artem hujusmodi spectantibus & pertinentibus seu dependentibus, una cum omnibus, & singulis suis incidentibus, emergentibus, dependentibus, annexis, & connexis coram eis vertentibus, & quæ in futurum contingerint moveri, procedendi summarie, simpliciter & de plano, nulla juris solemnitate, vel ordine servato, sine strepitu, & figura judicii, sola facti veritate inspecta procedant, & cognoscant, terminent & decident, & procedere perpetuis futuris temporibus, possint & valeant, usque ad totalem, finalemque, & effectivalem executionem, & partitionem omnium & singulorum eorum mandatorum, realiter, vel personaliter, prout eis videbitur relaxandum.

Et præcipit
Judicibus
his Consules
desuper im-
pediant.

§. 9. Nec præfatos modernos, & pro tempore existentes Urbis, Gubernatorem, Senatorem, Vicarium nostrum, & Cameræ Apostolicæ Auditorem, vel alios quovis ejusdem Urbis Judices, & Officiales, tam Ordinarios quam Commissarios, etiam prætextu obligationum in forma Cameræ Apostolicæ juxta Motum proprium Populo Romano concessum, sub pena excommunicationis late sententiæ incurrere impediri, vel alias quomodocumque, & qualitercumque molestari, seu reassumi, aut advocari, seu inhiberi possint, nec respectu valeant.

Clausula sub-
lata.

§. 10. Et ita per quoscumque Judices, quavis auctoritate, dignitate, vel facultate fungentes, etiam S.R.E. Cardinales, sublata eis, & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi, reassumendi, inhibendi, & interpretandi facultate, & auctoritate, judicari, interpretari, & definiri debere decernimus.

Clausula
reservati-
va.

§. 11. Et quod præsentibus, seu litteris desuper faciendis, sub quovis prætextu, per quascumque clausulas etiam derogatorias derogatorias derogari non possint, nisi cum tota præsentium præfatione, & specifica nominum eorumdem Consulium mentione, irritum, & inane, quicquid scienter, vel ignoranter contigerit attentari. Ita quod præfati pro tempore existentes Consules procedere

possint, & valeant, illis non obstantibus, absque aliquo attentatorum, & innovatorum vitio.

§. 12. Non obstantibus quibuscumque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac Gubernatori, Senatori, Vicario nostro, aut Cameræ Apostolicæ Auditori, ceterisque aliis Judicibus, quoad causas dicti fori, & de rebus ad artem spectantibus, & pertinentibus, nec non statutis, & consuetudinibus, etiam juramento, &c. confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, ac facultatibus eisdem Gubernatori, Senatori, Vicario nostro, & Cameræ Apostolicæ Auditori, Colateralibus, & quibuscumque aliis, in genere, vel in specie, sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque derogatoriis derogatoriis, etiam quantumvis efficacissimis clausulis, & decretis quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus pro illorum sufficienti derogatione, de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita servata foret, inserti forent, præsentibus pro sufficienter expressis, & insertis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus hac vice duntaxat, harum serie specialiter, & expresse omni meliori modo, &c. derogamus. Necnon omnibus illis quæ dictis Bonifacius seu idem Zacharias Senator in eorum litteris viderent non obstat, ceterisque contrariis quibuscumque.

Fiat ut petitur. I.

§. 13. Et cum absolute à censuris ad affectum &c. etiam in casibus regulari, &c. cum illis opportuna derogatione, quatenus opus sit extensa. Et quod tenores litterarum, & statutorum prædictorum habeantur pro expressis, & largissime, ac de verbo ad verbum exprimi & inseri possint, & de approbatione, & innovatione, confirmatione, indulto, decreto, derogatione, processu, & aliis præmissis, de omnibus & singulis prædictis quæ hic pro repetitis habeantur perpetuo in forma gratiosa & ex certa scientia.

§. 14. Quodque qui tacite vel expresse, in eorumdem Consulium jurisdictionem conferent, etiam usque ad quamcumque summam jus dicere & causas cognoscere & terminare possint & valeant, nec propterea per viam nullitatis impugnari vel retractari possint decernimus, Et quod præsentium sola signatura sufficiat, & ubique fidem faciat, in judicio, & extra, regula contraria non obstante, attento quod in Urbe, seu si videbitur litteræ desuper etiam cum deputatione executorum qui assistant.

§. 15. Cum potestate pro illis, ac dictis Consulibus monendi, cogendi, gravandi, & reaggravandi, ac citandi, per Senatorium edictum, infra dictum juxta formam Statutorum Urbis, ac etiam per edictum publicum, confito summarie & extrajudicialiter, de non tuto accessu & reassumendi quascumque causas ad instantiam rei volentis jurisdictionem dictorum Consulium & quibuscumque Judicibus, & inhibendi sub quibuscumque penis pecuniariis eorum arbitrio præmissorum omnium ac singulorum, ac cum qualitate, aliorumque circa præmissa necessaria, major specificatio, & expressio eorumdem, & quorumcumque statutorum ipsius Artis, ipsius Collegii arbitrio, etiam cum eorumdem præfatione toties quoties eidem Collegio videbitur, semel & pluries per breve nostrum simul vel separatim expediri possit.

Fiat. I.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum Nonis Febr. Anno 6. Vicar Vicarius I. Vifa M. Antonius Archiepisc. Theatinus Vicegerens.

Revocatio quorumcumque indultorum, confessionum, Maris magni, aliorumque privilegiorum

Clausula de-
rogatoria.

PP. subscrip-
tione
Repetitio
clausularum.

Ampliatio
jurisdictionis
Consulium
quando
partes con-
sentiant.

Facultas ci-
tandi infra
dictum.

Dat. P. An. 6.
die 5. Febr.

XCIV.

qui-

quibuscumque etiam Regularibus concessorum, in his quæ Concilio Tridentino adversantur.

Justificationem hujus Concilii, & ejus prosecutionem videre est his sup. in const. 23. Ad Ecclesiam. fol. 36. Et indulta Prælatorum ei interessentium sunt in const. 28. Circumpecta. fol. 43. Et quando ligare ceperis, vide in const. 80. Sicut ad. fol. 118.

PIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

IN Principis Apostolorum Sede, meritis licet imparibus divina dispositione constituti, nihil neque universalis Ecclesiæ curæ & sollicitudini nostræ commissæ, salubrius, neque juncto nobis Apostolica servitutis officio decantius præstare possumus, quam quod providentiæ nostræ ministerio æcumenicum Concilium Tridentinum, sicut nostris pontificum auspiciis, summaque sanctorum Patrum concordia per Dei misericordiam feliciter absolutum fuit, ita per universos, qui Christiana pietate censentur ubique suscipiatur, & remoris quibuslibet obstaculis ab omnibus æqualiter observetur.

Proœmium.

§. 1. Cum itaque in eodem Concilio quamplura salubria, & ad universalem morum reformationem valde utilia decreta atque statuta, maturo præsentium ipsorum examine præcedente, sint edita, quibus multa atque diversa privilegia, exemptiones, immunitates, dispensationes, facultates, conservatoriae, indulta, & ut vocant Confessionalia, & Mare magnum, & aliæ gratiæ, quæ variis, tam Cathedralibus, etiam Metropolitanis quam Collegiatis Ecclesiis, Monasteriis, conventibus, & aliis Religiosis, etiam Fratrum Mendicantium domibus, & Ordinibus, necnon sancti Spiritus in Saxia, Sancti Joannis Lateranensis ac Incurabilium de Urbe, Sancti Antonii Viennensis & Sancti Bernardi Jurensis aliisque Hospitalibus, Militibus, eorumque Capitulis, & Conventibus, ac Universitatibus, etiam Seniorum generalium Collegiis, tam secularibus quam Ecclesiasticis, Confraternitatibus, Societatibus, & tam Principis Apostolorum de Urbe, quam aliis Fabricis, Sanctæ Cruciatæ, aliisque piis locis & operibus, necnon Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, Prælatibus, Abbatibus, Abbatissis, Prioribus, Præpositis, & aliis Ecclesiasticis, tam secularibus quam diversorum Ordinis & militarium regularibus ac etiam laicis cujuscumque dignitatis, & status, ac gradus, & excellentiæ, ac etiam Ducali, Regia, & Imperiali dignitate fulgentibus utriusque sexus personis, necnon aliquibus Notariis, & etiam de latere Legatis, atque Nunciis, tam perpetuo quam ad tempus per Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac nos, & Sedem Apostolicam, ejusque Legatos hætenus, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, seu etiam Imperatorum, Regum, Ducum, & aliorum Principum contemplatione & intuitu, etiam de fratrum consilio diversimode, variisque temporibus, in genere, vel specie, ex quavis etiam honesta causa concessa, & etiam pluries confirmata, & innovata fuerunt in plerisque contrariantur.

Concilium Tridentinum multa statuta & morum reformationem, quibus plurimum indulta adversantur.

§. 2. Nos, quibus in primis cordi est, tam sancta, & Ecclesiæ Dei saluberrima decreta suos, ut par est effectus ubique consequi, & ab omnibus obedenter observari, privilegiorum, exemptionum, immunitatum, facultatum, conservatoriarum, indultorum, confessionarium, Maris magni, & aliarum gratiarum prædictarum, ac quarumcumque Apostolicarum & aliarum litterarum desuper concessarum, processuumque decretorum, & aliorum inde secutorum tenores, ac si de verbo ad verbum inferrentur, præsentibus pro sufficienter expressis, & plene insertis habentes, Motu proprio & ex certa scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, quod eadem omnia & singula privilegia, exemptiones, immunitates, facultates, dispensationes, conservatoriae, indulta, confessionalia, Mare magnum, & aliæ gratiæ in his omnibus & singulis, in quibus illa statutis & decretis Concilii hujusmodi contrariantur ipso jure revocata, cassata, & annullata, ac ad ipsius Concilii terminos, atque limites reducta sint, & esse censeantur, nec quicquam adversus ipsa decreta, & statuta quominus ubique, & apud omnes observentur, in aliquo suffragari possit, sed ea perinde haberi, & reputari debere, ac nunquam emanassent, auctoritate Apostolica renore præsentium declaramus, ac etiam statuimus & ordinamus.

Ex eorum vigore acta & agenda, à die qua dictum Concilium ligare coepit, nulla esse decernit.

§. 3. Decernentes nihilominus omnia & singula quæ vigore privilegiorum, exemptionum, immunitatum, & dispensationum, facultatum, conservatoriarum, indultorum, confessionarium, & aliarum quarumcumque gratiarum hujusmodi post id tempus, quo Concilium obligare coepit, facta & gesta quomodolibet fuerunt, & in posterum fient, in iis, in quibus dicti Concilii decretis adversantur, nulla, invalida, & irrita esse, & censeri, ac nemini etiam quantumlibet, ut præfertur qualificato, tam in foro quod aint fori, quam conscientiæ suffragari posse & debere.

Claufula sublatâ.

§. 4. Et ita per quoscumque locorum Ordinarios, atiosque Judices & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, etiam S.R.E. Cardinales, sublatâ eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi facultate, in utroque foro judicari & definiri debere, ac quicquid secus à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane decernimus.

Claufula derogatorie.

§. 5. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque.

Sanctio poenalis.

§. 6. Nulli ergo omnino hominum liceat hæc paginam nostræ declarationis, statuti, ordinationis, & decreti infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit indignationem omnipotentis DEI, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Dat. Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1565, 13. Kal. Martii, Pontificatus nostri anno 6.

Anno à Nativitate Domini 1565, indictione 6. die vero 24. mensis Februarii, Pontificatus Sanctissimi in Christo Patris, & D. N. D. Pii divini providentia Papa IV. Anno ejus 6. retroscripta litteræ Apostolicæ affixæ & publicatæ fuerunt in acie Campi Floræ, & valvis Cancellariæ Apostolicæ per nos Nicolaum de Matteis, & Camillum Cherubinum S. D. N. Papa Cursores.

Philibertus Chapuis Mag. Curf.

Confirmatio plurimarum gratiarum, & privilegiorum, Fratrum Militum Hospitalis S. Lazari Hierosolymitani, à Pont. prædecessoribus concessorum, in his quæ Concilio Tridentino non adversantur. Et concessio aliarum immunitatum, & indultorum.

XCIV.

Quod præcedentes gratias, habes etiam sup. in Tomo I. Alex. IV. const. 1. Cum à nobis fol. 106. & Clem. IV. const. 2. Cum dilectis. fol. 133. & const. 5. Venerabilibus fol. 140. Quo vero ad privilegia hic clargita, innovavit. limitavit, & abstulit Pius V. ut infra in ejus const. 28. Sicuti. ubi notabo.

PIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

INter assiduas Domini gregis nobis divinitus commissi, non solum à spiritualibus, sed etiam à corporalibus noxis, periculisque immunitatibus quantum nobis ex alto permittitur, præservandi curas, illi potissimum, post divini numinis auxilium frequentibus cordis nostri suspiriis imploratum, omni conatu nobis incumbendum esse statuimus,

Uta

ut a lversus inexplibilem Christiani sanguinis scim, quæ in terrimo illo Turcarum Tyranno, cum longo annorum numero pariter in dies adaugeri, conspicitur, bellica etiam fidissimorum Commilitonum præsidia comparemus: & nedum temporalis ditionis nostræ, totiusque Italiæ hostilis classis incurfioni undique expositæ portus, & littora validis arcibus, propugnaculisque firmemus, verum etiam strenuis militibus, qui Cruce Redemptoris & Domini nostri tanquam Dominico sigmate conspici sefe perpetuos pro salute domus Israel propugnatores fore iurejurando profiteantur, & præstent, præsidia nostra roboremus: antiquaque Ecclesiæ DEI Militias ac Hospitalitates, & præsertim pauperum leproforum Sancti Lazari Hierosolymitani Hospitalitatem ab illo Sanctissimo viro Basilio Magno, usque à recolendæ memoriæ Dan ahi I. Romani Pontificis prædecessoris nostri, ac Juliani Apostolæ, & Valentini Imperatorum temporibus illustratam, & per Orbem variaz ampliatam, & iniuria temporum imminutas, & quasi exanthoratas, pristinae dignitati restituamus: ac illis quo promptius votis nostris respondeant, & prisca sua privilegia confirmemus, & illa subinde novorum concessione liberaliter cumulemus.

Innoc. III. & H. nor. III. fulceperunt sub rote- chione Sedis Apost. perso- nas, et & bona Hospitalis, & Militiæ.

Greg. IX. Indulgentiam concessit san- ctibus elemo- synam. Hoc tamen revo- cavit Pius V. in const. 30.

Deditque eis licentiam profitendi u- nam ex regulis approba- tis.

Innoc. IV. dedit facultatem eligendi Militem sa- num Magi- strum.

Medietatem concessit in- iuncti in h- apha concedit.

Alex. IV. prioribus concessit fa- cultatem ab- solvendi Pa- tres qui quo- modo se per- cutescentes.

§. 1. Dudum liquidum postquam felices recordationis Innocentius III. & successive Honorius etiam III. varias ac diversas exemptiones, & alias gratias tunc & pro tempore existentibus Magistro, & Fratribus Hospitalis, seu domus Sancti Lazari Hierosolymitani, sub regula Sancti Augustini, & leprosa- rius concesserant, eorumque personas, leprosas & alia loca, sub sua & Sedis Apostolicæ protectione susceperant.

§. 2. Et Gregorius Nonus omnibus Christianis fide- bus manus charitativas, Magistro & fratribus do- mus Sancti Lazari Hierosolymitani, vel eorum nun- ciis elemosynas petentibus, pro solutione debitorum suorum, & fratrum eorumdem subfistentatione por- rigentibus, viginti dies de iniunctis sibi penitentis, per quasdam relaxaverant.

§. 3. Et per alias suas litteras, tunc Episcopo Tri- dentino mandaverat, ut ipsis fratribus, in suis do- mibus sive locis profiteri volentibus, aliquam re- gulam ex approbatis, juxta petitionem sibi ab eis factam concederet, si expedire videretur.

§. 4. Et Innocentius IV. per eum accepto, quod licet de antiqua, approbata, & eatenus pacifice observata consuetudine obtentum esset, ut miles leprosus domus Sancti Lazari Hierosolymitani in ejus magistrum assumere: verum quia vere om- nes milites leprosi dictæ domus, ab inimicis fidei miserabiliter interfecti fuerant, & hujusmodi con- suetudo nequibat commodè observari, idcirco tunc Episcopo Tusculano per quasdam commise- rat, ut si sibi secundum Deum visum foret expe- dire, fratribus ipsis licentiam, aliquem militem sanum, ex fratribus prædictæ domus Sancti Laza- ri, in ejus Magistrum (non obstante consuetudine hujusmodi) de cetero eligendi, auctoritate Apo- stolica concederet.

§. 5. Et per alias suas litteras medietatem mo- lendini, quod Ecclesia Romana, tunc cum quon- dam Buerio Camerario suo in Nympha habebat, Magistro & fratribus domus leproforum Sanctæ Mariæ Magdalænæ Terracinenfis sub annuo censu duodecim denariorum Senatus in perpetuum con- cesserat.

§. 6. Et Alexander etiam IV. narrans per quas- dam quod sicut Canonica constitutione cavebatur, quod Monaci & Canonici Regulares, quocumque modo se in classtro percussissent, non essent ad Apostolicam Sedem mittendi, sed secundum dis- cretionem, & prudentiam sui Abbatis, discipli- nam subdendi: quod si Abbas discretio ad eorum correctionem non sufficeret, providentia esset Dia- cesani Episcopi adhibenda, nisi excessus difficilis foret & enormis, propter quem merito esset ad Ro- manam Ecclesiam recursus habendus, statum hu-

jusmodi ad Magistrum, & fratres Hospitalis lepro- forum S. Lazari Hierosolymitani Ordinis S. Augu- stini duxerat extendendum: statuendo, ut in tali casu (nisi major esset providentia requirenda) per priores suos, qui (sicut audiverat) presbyteri esse noscebantur, fratribus absolutionis beneficium im- penderetur.

§. 7. Et per alias suas regulam beati Augustini, quam iidem fratres se asserabant professos esse, sicut illam eatenus servaverant, eisdem dicta auctoritate confirmaverat, atque communiverat, eadem au- thoritate nihilominus statuendo ut regula ipsa ab eisdem fratribus & successoribus suis, perpetuis fu- turis temporibus observaretur.

§. 8. Et per alias suas, donationem alias factam Magistro & fratribus Hospitalis leproforum Sancti Lazari Hierosolymitani Ordinis Sancti Augustini à Federico Romano Imperatore ante latam in eum depositionis sententiam, diversarum terrarum, possessionum, ac stantiarum de suo dominio exi- stentium in Sicilia, Calabria, Vallegratis, Apulia, & Terra Laboris, cum diversis secularium exactionum exemptionibus, ratam & firmam habens, eam auctoritate Apostolica confirmaverat atque com- muniverat.

§. 9. Ac eidem Hospitali, in quo (sicut acceperat) conventus nobilis strenuorum militum & aliorum, tam sanorum quam leproforum pro ex- pugnandis inimicis Christiani nominis manere so- lebat: & quod ad extremam fere pauperatatem, propter guerrarum discrimina erat redactus, pos- sessionibus suis pro magna parte à Paganis & ho- stibus Ecclesiæ occupatis, suisque Magistro & fra- tribus, eadem auctoritate concesserat, ut Eccle- siam de Galbis Lincolnensis diocesis, in qua jus- patronatus (sicut asserabant) obtinebant, cedente vel decedente ipsius Rectore, pro sua revelanda inopia, suis usibus deputare possent, ita tamen quod perpetuo Vicario in ea servitio de ipsius pro- venibus portio competens, ex qua congrue susten- taretur, & Episcopalia, ac alia ipsius Ecclesiæ onera supportarentur, assignaretur, diocesani Episco- pi jure in omnibus salvo.

§. 10. Et similiter per alias suas Magistro & fra- tribus hujusmodi, eorum necessitate paterno com- patiens affectu, auctoritate prædicta duxerat con- cedendum: ut de usuris, rapinis, & aliis male ac- quisitis, (dummodo illi quibus eorum restitutio fieri deberet, omnino inveniri & sciri non possent) necnon de redemptionibus votorum, auctoritate diocesano prius factis, (Hierosolymitano dum- taxat excepto) usque ad summam ducentarum mar- charum argenti recipere valerent, si pro similium receptione alias non essent ab ipso hujusmodi gra- tiam consecuti, ita quod si aliquid de ipsis ducentis marchis, dimississent vel restituisset vel dedissent illis à quibus eas accepissent, hujusmodi dimissum, vel restitutum, seu datum, nihil ad liberationem eorum prodesset, nec quantum ad illud, haberentur aliquatenus absoluti.

§. 11. Et cum ad ejus notitiam pervenisset, quod in nonnullis religiosis, & leproforum domibus in districtu Regni Navarræ, Campaniæ, & Briæ, Comitibus Palatini consistentibus locorum diocesani Rectores seu Administratores de novo ponere, seu instituere præsumebant pro suæ libito voluntatis, in earumdem domorum non modicum præjudicium & gravamen, contra antiquam, approbatam, & eatenus pacifice observatam in talibus consuetudi- nem veniendo, volens earumdem domorum gra- vamen indebitum auferre, tunc Abbati Monasterii Orbacensis dicti, vel alterius Ordinis, Sueffonen- sis diocesis dederat in mandatis, quatenus, si ita esset, præfatos diocesanos, ut ab hujusmodi præ- sumptione omnino desisterent monitione præmissa, dicta auctoritate Apostolica, appellatione remota prævia ratione compelleret.

§. 12. Præterea Nicolaus III. declaraverat, quod de redditibus, & provenibus Leprosariorum hu-

Et professio- nem regulæ S. Augustini approbat ut sup. in const. i. cit. in rub.

Donationem Federici Im- peratoris appro- bavit. Quam ego non polui.

Ecclesiam de Galbis con- cessit.

Facultatem componendi de usuris, &c. tribuit. Tu in his at- tendit bullam 90. Pii V. & Clem. VIII. const. 115.

Dioecesanos non posse ponere Recto- res in dom- bus Hospitalis declaravit. De hac vide etiam hic inf.

Nicolaus III. remittit à so- lutione deci- morum.

iusmodi, qui in usus miserabilium & infirmorum converterebantur decima non solveretur.

§. 13. Et Clemens etiam IV. per quoddam universis Archiepiscopis & Episcopis, ac aliis Ecclesiarum Prælati, exemptis & non exemptis, in virtute sanctæ obedientiæ, & sub excommunicationis poena, quam inobedientes ipso facto incurrere voluit, nisi mandatum huiusmodi diligenter exequi curarent; & nihilominus sub poena privationis officii, & beneficii suorum, præcipiendo mandaverat, quatenus dum aliqui de dictis Magistro, Fratribus, & Procuratoribus domorum Sancti Lazari Hierosolymitani, ad Archiepiscopos, & alios præfatos, & eorum loca pro capiendis infirmis leprosis pervenissent, eis in hoc adesse curarent; memores Dominum in lege Moysi præcepisse, quod omnes leprosi ejicerentur extra, volens, & ordinans, ut Domino complacere, quod tam mares, quam mulieres, clerici & laici, religiosi, &culares morbo lepræ laborantes, per eosdem fratres, & procuratores eorum caperentur, & ejicerentur extra, cum omnibus eorum bonis, tam mobilibus, quam immobilibus ad habitationem cum aliis infirmis domorum Ordinis S. Lazari huiusmodi. Si vero clerici, vel laici mandatum suum in aliquo negligerent adimplere, velut quod ipsi fratres, aut illorum procuratores, illos peremptorie citarent, ut eorum se comparere, facturi iusticiæ complementum.

§. 14. Ac rursum per alias suas mandaverat, quod fratres ipsi ipsius confratriæ ad aliqua loca accedentes pro elemosynis colligendis benigne reciperent, & honeste tractarentur. Ipsique locorum Ordinarii, & si ad quos spectat, ut permitterent eosdem fratres in Ecclesiis suis populum admonere, ac elemosynas colligere, ac etiam Confraternitates facere, illud præcaventes, ne occasione illorum elemosynæ pauperum CHRISTI deriperent, & impedirent opera pietatis.

§. 15. Necnon ipsi Archiepiscopis, Episcopis, & aliis Prælati injunxerat, ut curarent defendere, & manerent fratres præfatos adversus parochianos, qui domos illorum invadebant, aut indebitis molestiis opprimebant. Nec à fratribus, & personis religionis huiusmodi pro sepultura quicquam exigeretur, vel acciperetur, nisi ipsa spontanea decedentium liberalitas, vel parentum devotio eis contulisset.

§. 16. Nec ab eis contra privilegiorum dictæ Sedis tenorem de omnibus fructibus terræ, quibus propria industria, aut expensis colerent, & laborarent, ac etiam de nutrimentis animalium suorum, sed nec de ipsis animalibus decimas exigere præsumerent.

§. 17. Quodque ipsi Archiepiscopi & Episcopi oratoria pro usu fratrum, & personarum præfactorum, ac suæ familiæ dedicare, ac cæmeterium benedicere procurarent.

§. 18. Ac quod de cetero Fratres seu Milites, ac Donatos Militiæ Hospitalis huiusmodi, qui Cruces, & regularem habitum deponerent, & per abrupta sæculi vagarentur, quive Prioribus suis contumaces, & rebelles existerent, & Bolinas detinerent contra voluntates ipsorum, monerent instant, ac pro officii sui debito compellerent, ut habitum depositum reassumerent, in obedientia Prælatorum suorum, devote, & humiliter perseverarent, & Bolinas sive alia officia pro violentiam nullo modo detinere præsumerent, mandatorum suorum contemptores, excommunicationis sententia compellerent, eamque usque ad satisfactionem condignam inviolabiliter observari facerent.

§. 19. Et nihilominus quibuscumque, qui de facultatibus sibi à Deo collatis, fratribus Hospitalis præfati subvenissent, seq. tam sanctæ Fraternitati Collegas adhibere studuissent, easque beneficia persolverent, annuatim septimam partem injunctæ sibi penitentiæ relaxaverat.

§. 20. Eisdemque locorum Ordinariis, & aliis curam animarum habentibus, commutandi cus-

vis abstinentiæ, & quarumcumque peregrinationum vota (Hierosolymitano, ac beatorum Petri, & Pauli Apostolorum dumtaxat exceptis) in pecuniarum subsidium præfatis fratribus vel nunciis exhibendum, cum super hoc ab eis, vel eorum aliquo fuissent requisiti, dummodo conditione inspecta nunciatorum, & fratrum præfactorum necessitate pensata (super quibus eorum conscientias oneraverat) pretio, vel precibus, amicitia, favore, vel odio cuiuscumque nihil circa hoc, super quibus sciret se unumquemque eorum redditurum in examine districti iudicii rationem, ageretur in fraudem, vel diminutionem subsidii superscripti, plenam & liberam facultatem concesserat. Volens, ut huiusmodi pecuniarum subsidium præstandum per voventes peregrinationes eisdem, ad tantam pecunie summam extenderetur, quantam voventes ipsi pro complendo voto peregrinationis huiusmodi personaliter expendissent. Votum autem huiusmodi abstinentiæ juxta illius arbitrium intenderat redimi, qui votum huiusmodi commutarent.

§. 21. Personis autem ecclesiasticis volens plenius provideri, diocesanis earum dispensandi cum eis, qui cum à canone, vel ab homine latam excommunicationis sententiam incurtissent, irregularitatis notam immiscendo se divinis officiis contraxissent, vel ob id contrahere ipsos contigisset dummodo tantum erogassent fratribus, vel nunciis superscriptis, quantum expendissent eundo ad Romanam Curiam, & morando in ipsa pro dispensatione huiusmodi obtinenda, & redeundo etiam ab eadem, nisi forsitan in Episcopos, Abbates, vel alios Superiores proprias injectissent manus temere violentas, postquam ab excommunicationum sententiis, quas incurrerent, vel incurrere ipsos contigisset, juxta formam Ecclesiæ fuissent absoluti, concesserat potestatem.

§. 22. Volens ob reverentiam ipsius venerabilis domus, ut si, qui eorum fraternitatem assumpissent, si forsitan Ecclesiæ ad quas pervenissent, à divinis officiis interdiciæ forent, ipsis morientibus sepultura ecclesiastica minime negaretur, nisi nominatim excommunicationis vinculo fuissent innodati. Liceretque eis confratres suos, quos Ecclesiarum Prælati apud Ecclesias suas malitiose sepeliri non permitissent, nisi excommunicati, vel in interdici nominati fuissent, aut publici usurarii, tumulodos deferre ad Ecclesias huiusmodi Hospitalis.

§. 23. Et oblationes, tam pro eis quam pro aliis, qui in eorum cæmeteriis requiescunt, exhibitas, sine alicujus præjudicio retinere.

§. 24. Quodque receptiones Fraternitatis ejusdem, seu etiam collectarum, salvo jure dominorum suorum, sub beati Petri, & sua protectione consistere, Et si qui eorumdem fratrum, qui ad eas Fraternitates missi fuissent, vel collectas, in quambilibet civitatem, aut castellum, vel vicum, aut alium locum devenissent, si forte locus ille fuisset à divinis officiis interdictus, in eorum iucundo adventu, semel in anno aperirentur Ecclesiæ, & ejusdem excommunicatis divina officia ibi celebrarentur, salva tamen in omnibus declaratione Concilii generalis.

§. 25. Mandans etiam eisdem Archiepiscopis, & Episcopis, ut si qui de Clericis Ecclesiarum suarum, præfati Hospitalis fratribus, cum licentia Prælati & Capituli sui, sponte, ac gratias per annum, vel biennium decrevisset deservire, nequaquam impedirentur.

§. 26. Et subsequenter Joannes XXII. Universis Archiepiscopis, Episcopis, & aliis Ecclesiarum Prælati mandaverat, quatenus in præfatos Magistrum, & Fratres, ac Milites, Clericosque, Donatos, vel Nuncios, ac Ecclesias eorum, (quippe qui nullum habebat Episcopum, vel Prælatum præter Romanum Pontificem supra se, & speciali prerogativa gaudebant, & in quibus Ordinarii locorum auctoritatem, aut Ecclesiasticam potestatem nequaquam habebant) excommunicationis, vel interdicti sententiam promulgare nullatenus præsumerent, nec eos indebita vexatione gravarent, sed erga

Abfolvendi-
que ab irre-
gularitate da-
to simili sub-
sidio.
Hoc est etiam
revocatum à
Pio V. mox
citato & à
Clem. VIII.
in cons. 115.

Mortuos se-
pelire in eo-
rum Ecclesiis
permitti, ut
in dicta
cons. 2. Cum
dictis, fol.
105.

Oblationef.
que recipere,
ut ibi.

Etiam tem-
pore interdi-
cti, ut ibi.

Clericos
Hospitali ser-
vire permi-
sit, est ibi.

Joann. XXII.
exemptio-
nem à jurisd.
Ordinario con-
cessit.
Hoc plenius
vide in cons.
Pii V. cit. in
rubr.

Greg. X. feu
Alex. IV. Fra-
tres non mo-
lestari iussit.

Exemptio-
nemque con-
cessit a solu-
tione gabelle
&c. per eo-
rum bona.

Paul. II. le-
prosam Ca-
puanam sub
protectione
Sedis Ap. sus-
cepit, & ex-
emptionem
ab omni onere
concessit.

Alex. Urban.
Cle. & Greg.
visitantibus
leprosum
Perusinum &
elemosyna
danti-
bus, indul-
gentias con-
cessit.

Has revoca-
vit Pius V. in
consist. 30.

Nic. IV. illas
confirmavit
& alias con-
cessit.

iplos se taliter gereret, quod adversus eos ma-
teriam querelandi suscitare non haberet.

§. 27. Insuper Gregorius X. & seu Alexander IV.
eisdem Magistro, & Fratribus Hospitalis S. Lazari
Hierosolymitani paterna sollicitudine providere vo-
lens, adversus nonnullos Religiosos, & Clericos
seculares, & laicos, qui sub pretextu questionis in-
ter eosdem existentis, & cuiusdam pravæ consuetu-
dinis, animalia, & alia bona dictorum Fratrum Mi-
litem temeritate propria audebant invadere, & tam-
diu detinere præsumebant, donec esset eis de huius-
modi questionibus iuxta eorum beneplacitum satis-
factum, licet jurisdictionem ordinariam, seu delega-
tam, in eos non haberent, qua ipsi hoc facere
permisum esset, per suas litteras auctoritate Apo-
stolica inhihiberant, ne qui occasione prædictæ con-
suetudinis tamquam nullo iure subnixæ, eisdem Fra-
tribus, ac aliis supranominatis, seu eorum Nunciis
ab eis per totum Orbem destinandis, memoratis
inferrent molestias. Neve Fratres, & bona sua sine
iuris ordine occupare, invadere, seu quomodolibet
detinere præsumerent.

§. 28. Quodque de omnibus fructibus terræ,
quibus propria industria, aut expensis colerent, &
laborare facerent, ac de animalibus, aut de ipsis nu-
trimentis animalium, ac aliis quibuscumque bonis
suis, si contingeret quod bona præfata, aut fructus
huiusmodi, aut animalia ipsa, vel ex eis provenien-
tia, aliquid per ipsos Fratres, Milites, vel Dona-
tos venderetur, aut emeretur, tam pro subsenta-
tione cuiuslibet eorum, aut pauperum leproforum,
quam pro reparatione cuiusvis domus, aut Hospi-
talis, five Ecclesiæ præfate Militiæ, & per Civitates,
aut Castra, & Oppida, portus, pontes, ac
navigia, & loca alia quoruncumque Regum, &
Reginarum, aut Ducum, Marchionum, Comitum,
Vicomitum, Baronum, & aliorum Dominorum
in toto Orbe existentium, in quibus pro tempore
stare, vel transire, & reverti deberent absque aliquo
impedimento eos permitterent vendere, vel emere,
aut transire, ac reverti, & præsertim cuiusvis pe-
dagii, datti, gabelle, bullettarum, & quarumcum-
que exactionum solutione, mandaverat.

§. 29. Et Paulus II. Magistros, & Fratres domus
leproforum S. Lazari extra muros Capuanos eo-
rumque personas, & locum in quo divino erant ob-
sequio mancipati, cum omnibus bonis, quæ tunc
rationabiliter possidebant, aut ex tunc in futurum
iustis modis possent adipisci, sub beati Petri, & sua
protectione susceperat. Omnesque libertates, &
immunitates à prædecessoribus suis, five per alia
privilegia, five indulta, eis & dictæ domui concessa.
Necnon libertates, & exemptiones secularium
exactionum à Regibus, & Principibus, aliisque
Christianis rationabiliter eis, & eorum domui
indultas specialiter autem domos, prata, pascua,
hortos, vineas, & alia bona mobilia, & immobili-
a eorum, sicut ea iuste, & pacifice possidebant, eis,
& per eos eidem domui prædictæ auctoritate Apo-
stolica confirmaverat, districtius inhihibens, ne quis
de hortis, vignis, seu eorum animalium nutri-
mentis decimas ab eis exigere præsumeret.

§. 30. Et similiter Alexander, Urbanus, Clemens,
& Gregorius Romani Pontifices, similiter prædeces-
sores nostri, consideratis charitatis, & pietatis ope-
ribus, quæ erga infirmos, & pauperes Hospitalis le-
proforum de Colle Perusini Diocesis, jugiter exer-
cebantur, & quod ad id ejusdem Hospitalis propria
non sufficiebant facultates, cupientesque ad eorum-
dem pauperum consolatoria subsidia Christi popu-
lum spiritualibus numeribus invitare, omnibus vere
penitentibus, & confessis, qui devote ad Hospi-
tale memoratum accederent, manumque charitatis
porrigerent, Gregorius videlicet unum annum, &
unam quadragenam, singuli vero reliquorum præ-
decessorum eorumdem centum dies de injunctis
eis penitentibus misericorditer relaxarent.

§. 31. Et postmodum Nicolaus IV. remissiones,
& indulgentias huiusmodi per suas litteras appro-

baverat, & confirmaverat, aliasque indulgentias, &
peccatorum remissiones, & Christianidelibus diversa
pauperum, & leproforum loca, & hospitalia hu-
jusmodi visitantibus, & manus adiutricis, ac pias
elemosynas pro ipsorum pauperum leproforum
subventionem erogantibus, per quasdam conceffe-
rat, & relaxaverat.

§. 32. Ac per alias suas ad instar dicti Clemen-
tis IV. Custodi, & Fratribus Hospitalis leproforum
S. Lazari de Valloncellis, ut illi ad præstationem
procuracionum Legatis Sedis Apostolicæ, vel Nun-
ciis, aut exactionum, collectarum, seu subsidiorum
quoruncumque minime tenerentur, nec ad ea sol-
venda per litteras dictæ Sedis, Legatorum, Recto-
rum, vel Nunciorum, cuiuscumque tenoris existe-
rent, aut alia quavis auctoritate in perpetuum
compelli non possent, concefferat. Decretum irri-
tas, & inanes interdicti, suspensionis, & excom-
municationis sententias, si quas propter hoc in
eos, vel eorum aliquem, aut Hospitale præfatum
in posterum contigisset promulgari.

§. 33. Et Leo X. claræ memoriæ ad Caroli Ro-
manorum, & Hispaniarum Regis tunc in humanis
agentis preces, Hospitalia S. Joannis Leproforum
Panormitanorum & Sanctæ Agathæ Messanen-
sinis S. Augustini, olim Hospitali S. Lazari, tam-
quam membra capiti subiecta, Religioni, & Hospi-
tali Capuano S. Lazari præfati, cum omnibus iuribus,
& pertinentiis, ac membris eorumdem præfata au-
thoritate Apostolica sub certis modo, & forma per-
petuo restituerat; dictumque Hospitale Capuanum,
adversus suppressiones, & extinctiones, per Inno-
centium VIII. etiam prædecessorem nostrum factas
reposuerat, & reintegraverat, ac Magistro generali,
seu Præceptori ejusdem Hospitalis, seu Domus S.
Lazari Capuani ejusdem Ordinis S. Augustini, ut
Panormitanum, & Messanenfe Hospitalia prædicta,
cum illa legitime Gubernatore carerent, acceptare,
& de illis, personis sue Religionis, prout ante sup-
pressionem, & incorporationem præfatis dispo-
nere, & ordinare poterat, ac si illa non emanassent,
disponere, providere, & ordinare.

§. 34. Ac præfatorum Hospitalium possessionem
per se vel alium seu alios, propria auctoritate libere
apprehendere, & ejusdem Religionis nomine reti-
nere valeret, indullerat, districtius inhihibens, ne
quis eundem Magistrum super præmissis aliquo
modo molestaré, impedire, seu perturbare valeret.

§. 35. Ac Alexander VI. Nicolaus II. Honorius
etiam IV. Bonifacius VIII. Clemens etiam V. Inno-
centius VI. Urbanus VIII. Eugenius similiter
IV. Sixtus etiam IV. Innocentius etiam VIII. Ale-
xander similiter VI. Clemens VII. Paulus III. Julius
etiam III. & diversi alii Romani Pontifices præde-
cessores nostri ejusdem Magistro, & Fratribus, Do-
natis, & Ordini, illorumque Nunciis, Officialibus,
& aliis personis, necnon eorum Hospitalibus, Ec-
clesiis, Præceptoris, & membris, illaque, & il-
la visitantibus, ac illis beneficientibus, varia privi-
legia, indulta, libertates, immunitates, & alias
gratias concefferant.

§. 36. Postremo nos illa confirmavimus, & præ-
sertim super jurisdictione per Magistrum generalem
Hospitalis, & Militiæ prædictorum inter eorum
Milites, & personas exercenda, & iustitiam suis
Præceptoribus, Militibus, Fratribus, eorumque
Vassallis, subditis, Capellanis, familiaribus, ser-
vitoribus, clericis, nunciis, collectoribus, Dona-
tis, ac quibuscumque aliis personis dicti Hospitalis
pro quibuscumque rebus illud, ejusque Militiam,
personas, beneficia, & bona concernentibus, an-
nexis, connexis, vel dependentibus, aut super digni-
tatis, administrationis, Præceptoris, officiis, ju-
ribus, jurisdictionibus, proprietatibus, bonis, fructi-
bus, censibus, possessionibus, in quacumque instan-
tia, etiam usque ad ultimam sententiam inclusive
etiam summarie, simpliciter, & de plano per Ma-
gistrum generalem Hospitalis huiusmodi, seu ab eo
delegatos iustitiam ministrando, innovavimus,

Exemptio-
nemque de-
dit Hospitali
de Valloncel-
lis, à procura-
tionibus le-
proforum, &
quibuscum-
que collectis.

Leo X. resti-
tuit Hospi-
talia S. Joannis
Leproforum
Panormi-
tanorum & S.
Agathæ Mes-
sanen-
sinis olim
Hospitali S.
Lazari subje-
cta, adversus
suppressionem
Innoc.
VIII.

Facultatem
que dedit ca-
piendi posses-
sionem eor-
undem Hospi-
talium S.
Joannis Le-
proforum Pan-
ormitanorum
& Agathæ
Messanen-
sinum.

Alex. VI. ac
alii Rom.
Pont. eum-
dem alias
indulta, &
gratias con-
cefferunt.

Hic Pont.
Pius IV. illa
confirmavit,
præsertim
circa jurisdic-
tionem Ma-
gri Magistri.

& alias indulgimus (prout in diversis, tam ipsorum prædecessorum) quam nostris litteris desuper confectis plenius continetur.

§. 37. Nos igitur volentes dilectum filium Joannem Castrionem modernum Hospitalis, & Militiæ prædictæ Magni Magistrum, ejusque successores Magnos ipsius Hospitalis Magistros pro tempore existentes, ac Hospitalem, & Militum hujusmodi, eorumque Conventum, etiam amplioribus, quam quilibet nostrorum prædecessorum prædictorum eos persecuti fuerint, favoribus, & gratiis proficui, ac Hospitalitatem ipsius S. Lazari, ejusque Militiam ad miserabilem pauperum leproforum utilitatem, & contra Piratarum, & infidelium Christianæ Religionis incursum (quantum in Domino possumus) restaurare, augereque ac eisdem Joannem Magistram, Militem, Fratres, & alias personas, ac eorum singulos a quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & pœnis, à jure, vel ab homine quavis occasione, vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existant, ad effectum præsentium dumtaxat consequendum harum serie absolventes, & absolutos fore censentes. Necnon singularum prædictarum litterarum tenores præsentibus pro expressis habentes, Motu proprio, non ad Joannem, aut Priorem, Præceptorum, Militum, Fratrum, vel personarum prædictarum, seu aliorum pro eis nobis super hoc oblata petitionis instantiam, sed de mera liberalitate, & ex certa scientia nostra, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, institutionem, & erectionem Hospitalis, & Militiæ hujusmodi, ejusque translationem olim ad Præceptoriam, vel Domum Capuanam prædictam factam, ac Præceptoriam, seu Domum hujusmodi incorporationem, declarationem, revocationes, voluntates, irrationes, monitiones, requisitiones, promulgationes, uniones, incorporationes, concessionem, etiam facultatum assignationes, decreta, remissiones, inhibitiones, injunctionem, renovationem, approbationes, confirmationes, supplementationem, repositionem, commisionem, mandatum, susceptionem, liberationem, exemptionem, subjectionem, prohibitionem, extensionem, ampliationem, indulgentiam, & dispensationem, regulam, & ordinationem prænominatorum, & aliorum Romanorum Pontificum prædecessorum hujusmodi. Nec non omnia, & singula privilegia, immunitates, antelationes, exemptiones, libertates, prærogativas, indulgentias, indulgentias, spiritualia, & temporalia, favores, & gratias, etiam per modum communicationis, & extensionis eisdem Hospitali, & Militiæ, ac suis Magno Magistro, Militibus personis, & membris, per Romanos Pontifices, & Sedem hujusmodi sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibusvis clausulis, & decretis hæcenus, in genere, vel in specie concessa, approbata, & innovata. Nec non cum omnibus, & singulis in eis contentis clausulis, singulis eorumdem prædecessorum, tam suo plumbo quam in forma brevis expeditas litteras, ac ordinationes, statuta, stabilimenta, usus, consuetudines, & naturas in eisdem Hospitali, Militia, & Religione edita, & introducta, & quacumque Apostolicas, aliasque desuper confectas litteras sub quibuscumque tenoribus, & formis, etiam Motu, & scientia similibus, ac alias quomodolibet concessa, cum omnibus, & singulis decretis, & aliis clausulis in eis contentis, aliisque omnia, & singula inde secuta quacumque eorum omnium tenores, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, inserti forent, præsentibus pro expressis, & insertis habentes (quatenus decretis Concilii Tridentini tamen non repugnet) Apostolica auctoritate, tenore præsentium perpetuo approbamus, confirmamus, ac etiam plenarie innovamus, & concedimus, ac innovata, & concessa esse volumus.

§. 38. Necnon illa ad Hospitale prædictum ad præfens in Capuana, & non in Hierosolymitana Civitate consistens, illiusque Magistrum, Priores, Præcep-

tores, Fratres, & personas præfatos extendimus, & ampliamus, eaque omnia valida, & efficacia existere, & perpetuam roboris firmitatem obtinere, suosque effectus sortiri, ac ab omnibus quavis dignitate, & præeminencia fulgentibus, etiam sub sententiis, censuris, & pœnis in eis contentis perpetuo inviolabiliter observari decernimus.

§. 39. Necnon Hospitale, ejusque membra, & pertinentia universa adversus suppressiones, & extinctiones, appropriationes, applicationes, uniones, annexiones, incorporationes, & alias contrarias dispositiones olim per sanctæ memoriæ Innocentium VIII. & Pium II. ac forsan alios Romanos Pontifices, etiam prædecessores nostros, & Sedem præfatam, etiam Consistorialiter, vel Motu, & scientia, ac potestatis plenitudine similibus hæcenus quomodolibet emanatis, in pristinum, & cum, in quo antequam illæ emanarent erant, statum, eisdem auctoritate, & tenore restituimus, reponimus, & plenarie reintegramus, ac restituta, reposita, & plenarie reintegrata esse decernimus, & declaramus. Necnon litteras inde emanatas, omniaque, & singula in eis contenta, suppressiones, & extinctiones hujusmodi concernentia auctoritate, & tenore prædictis revocamus, cassamus, irritamus, & annullamus, ac prorevocatis, cassis, irritis, ac nullis, & infectis, & viribus omnibus vacuis haberi volumus.

§. 40. Et potiori pro cautela in præfato Hospitali eandemmet Præceptoriam, quæ in eo, ut præfatur, erat, quæ conventualis, & caput aliarum Præceptoriarum dicti Ordinis existit, ac privilegiis, indultis, favoribus, exemptionibus, libertatibus, jurisdictionibus, auctoritatibus, & facultatibus, ac demum juribus omnibus, quibus ante illius suppressiones, & extinctiones prædictas utebatur, potiebatur, & gaudebat, uti, potiri, & gaudere debeat, ac in eorum omnium possessione reali, & actuali, in qua prius erat, ex nunc existat, & esse censetur in omnibus, & per omnia, perinde ac si Præceptoriam præfata nunquam suppressa, & extincta, seu aliis unita fuisset, de novo erigimus, & instituiamus.

§. 41. Et eisdem Hospitali, Militiæ, fuisseque Magno Magistro, Conventui, Fratribus, ac Militibus, quod ipso Joannotto, & pro tempore existentibus Magnis Magistris cedentibus, vel etiam apud eandem Sedem decedentibus, seu ipsum Magnum Magistratum alias quomodolibet, etiam per liberam resignationem in nostris, vel successorum nostrorum pro tempore existentium Romanorum Pontificum manibus dimittentibus, vel amittentibus, & illo quovis modo vacante, Conventus ejusdem Militiæ, insimul ubi voluerint pro tempore congregati, alium Magnum Magistrum juxta ejusdem Religionis, & Militiæ stabilimenta de consensu sui Protectoris edita, vel edenda, quæ dicto Concilio Tridentino minime sint contraria, eligere, qui ex nunc prout ex tunc, & è contra, postquam sic electus fuerit, eadem auctoritate Apostolica confirmatus sit, & esse censetur, & ita perpetuo statuimus, & ordinamus.

§. 42. Necnon eisdem pro tempore existentibus Magistro, & Conventui principalem ipsius Militiæ Sedem ad quemcumque locum etiam maritimum, eisdem Magistro, & Conventui visum, etiam quoties sibi placuerit transferre.

§. 43. Habitumque suum Regularem, ac etiam Crucem, etiam si de suis antiquis habitibus, cruceque appareat, vel non appareat, in eum meliorem, qui sibi videbitur modum (citra tamen aliarum Militiarum, & Religionum præjudicium) reformare, in toto, vel in parte immutare, vel stabilire, ac innovare. Regulamque stabilimenta, & statuta dictæ Religionis, & Militiæ de consensu sui Protectoris instituere, & reformare, seu de novo condere, edere, & quoties eis placuerit, illas, & illa corrigere, & immutare (dummodo licita, & honesta, nec eidem Concilio contraria existant,) toties, quoties voluerint.

Omneque suppressionem revocat.

Illudque caput Militiæ S. Lazari constituit.

Electionem M. Magistri, ad Conventum & Militis spectare decernit. Hodie M. Magister est semper Dux Sabaudia, ex consuetudine. Greg. XIII. Pro commissa.

Sedi principalis translationem concessit. Hodie perpetua Sedes est in Sabaudia, ut in dicta consuetudine. Greg. XIII. Habitibus Crucis, & statutorum reformam iocundum permittit.

Et modo prædicta omnia quatenus Concilii Tridentini non sint contraria iterato confirmat.

Hospitalique Capuano communicat.

1566.

Erigendi in Commendas & Præceptoratus beneficia quælibet, cumque qualifcatis de jure patronatus laicorum, etiam si diglratas, aut Monasteria non tamen Confistorialia, &c.

Ad hoc vide Pii V. constit. in rub.

Præservandi ius patronatus, & præservandi personas, & insituendi præsentatos ac alios conferendi dicta beneficia.

Tu vide dictam bullam Pii V.

Hospitalia Leprosaria, & alia loca, ad hospitalitatem leprosororum destinata, hospitalia, & Militia S. Lazari esse censentur, etiam si sint ius patronatus laicorum.

Præservatio jurisdictionis Ordinariorum, & executio hujus Militie cum Militia S. Joannis in non exepis.

Facultas retinendi pensiones ducat. 500. Hanc reduxit ad ducat. 400. Clem. VIII. in const. 102. Decret.

§. 44. Necnon eidem Joannotto, & pro tempore existentem M. gno Magistro, ut quæcumque quorcumque, & quælibetque, etiam qualitercumque qualificata beneficia Ecclesiastica de iure patronatus laicorum ex fundatione, vel donatione existentia, & personale servitium in Cathedralibus, & Collegiatis insignibus non requirentia (dummodo illis animarum curæ non imminuat) etiam si illa Archiepiscopatus rurales, aut diglratas, vel nomen dignitatis habentia (extra tamen Cathedrales, & Collegiatis Ecclesiis consistorialia) etiam si præstimonialia, aut Monasteria, (non tamen Confistorialia) vel alia beneficia ecclesiastica regularia, cura tamen, & conventa carentia, fuerint, accedente tamen consensu patronorum, & sine præjudicio ea obtinentium, & ipsi cedentibus, vel decedentibus, in Præceptoribus, Commendis, Capellis, aut Ecclesiis ipsorum Hospitalis, & Militie perpetuo erigere, instituire, dictaque suæ Militie perpetuo incorporare, applicare, & appropriare.

§. 45. Ac illarum fundatoribus, vel donatoribus ius patronatus, & præsentandi dictis Magistro & Conventui, vel eorum deputato personas idoneas ad Præceptoribus, Domos, Capellas, seu Ecclesias, & Hospitalia hujusmodi, pro tempore vacantia, perpetuo præservare, & concedere, & eidem Magistro, & Conventui sic à patronis præsentatos, juxta stabilita dictæ Religionis, Ordinariorum locorum & quorumvis aliorum consensu minime requisito, in illis instituire, ac illas conferre, & de eis providere. Ita tamen, quod ibi debitus divinus cultus per personas idoneas, etiam si dicti Ordinis fuerint, ab Ordinario approbandas, in eisdem exerceatur.

§. 46. Necnon quod Hospitalia, Leprosaria, & alia loca quæcumque ubi ullo umquam tempore fuerint, sit, vel erit Hospitalitas leprosororum, seu infirmorum S. Lazari nuncupatorum, etiam si ius patronatus laicorum sint, Militie, & Hospitali S. Lazari hujusmodi subiecta, & incorporata, & ad jus, & proprietatem, ac ad omnimodam dispositionem, institutionem, & collationem moderni, & pro tempore existentis Magni Magistri, & Conventus eorumdem juxta ipsius Militie, seu Religionis stabilita (salvo tamen iure patronatus) pertinere censentur, prout alia etiam dictæ Religionis, seu Militie Hospitalia, Capella, Oratoria, beneficia, & loca spectant, & pertinent; dummodo in illis Hospitalitas debita servetur, & cultus divinus nullatenus diminuat, ac in illorum fundatione, vel donatione secus non fuerit ordinatum.

§. 47. Salvis tamen legitimis titulis, & præscriptionibus, & salva jurisdictione Ordinariorum, tam ea quæ de jure communi eis competunt, quam quæ ex decretis dicti Concilii Tridentini eisdem est attributa. Præterquam tamen in iis casibus, in quibus Concilium prædictum expresse, ut præfertur, eximit, & exceptit Religionem S. Joannis Hierosolymitani, in quibus, & hæc S. Lazari Religio pariter excepta, & exempta sit, & esse censetur.

§. 48. Et insuper Militibus, ac Presbyteris, & Capellanis Hospitalis, & Militie S. Lazari hujusmodi, nunc & pro tempore existentibus, ac eorum singulis, tam clericis, quam laicis, etiam conjugatis, & bigamis, ut unam, vel plures pensiones annuas usque ad summam quingentorum ducatorum auri de Camera novorum, super quorumvis Cathedralium, etiam Metropolitaniarum, & aliarum Ecclesiarum, ac earum mensarum, etiam Patriarchalium, Archiepiscopaliarum, & Episcopaliarum, necnon etiam Monasteriorum, etiam Confistorialium, Prioratuum, Canonicarum, & præbendarum, dignitatum, personatum, administrationum, & Officiorum, aliorumque beneficiorum Ecclesiasticorum cum cura, & sine cura, secularium, & quorumvis Ordinum Regularium, qualitercumque qualificatorum fructibus, redditibus, proventibus, juri-

bus, obventionibus, & emolumentis, ac distributionibus quotidianis alias canonicis sibi reservatas, seu reservandas, vel loco pensionum annuarum, omnes & singulos, ac quoscumque similes fructus, redditus & proventus, jura, obventiones, & emolumenta quæcumque, ac etiam distributiones quotidianas sibi reservata, & reservanda, etiam si post illarum, vel illorum reservationem uxorem duxerint, & bigami effecti fuerint, recipere seu retinere, & ad vitam percipere, exigere, & levare, ac in suos usus, & utilitatem convertere.

§. 49. Illaque, cum primum ipsa Militia S. Lazari in aliqua expeditione contra infideles militare cæperit, in toto, vel parte, simul, vel successive, quando sibi videbitur, etiam in mortis articulo, in cuiusvis persone in dignitate Ecclesiastica constitutæ aut Canonici Cathedralis Ecclesie manibus, & in Fratrum Militum dictæ Militie S. Lazari, vel cuiuscumque persone, seu quorumvis personarum, etiam quæcumque, quorcumque, & qualicumque beneficia ecclesiastica obtinentium, & expectantium favorem absque aliquo possessorum beneficiorum hujusmodi desuper habendo consensu, etiam absque super præsentibus consensu litterarum tamquam notariorum præsentia, seu ostensione, vel visione, aut alia solemnitate in Romana Curia, vel extra eam, in omnibus, & per omnia, perinde ac Militibus S. Pauli, Pii nuncupatis, & per Sedem Apostolicam indultum est, etiam citra Cruciatæ obligationem transferre, ac eisdem personis nominandis per ipsas, pensiones reservare, etiam absque aliqua litterarum Apostolicarum expeditione, ac alia desuper necessaria facere libere, & licite valeant, eisdem auctoritate, & tenore de speciali gratia concedimus, & indulgemus, ac plenam, & liberam licentiam, & facultatem illis impartimur. Et cum ipsis Militibus desuper, ac etiam, ut ipsas pensiones una cum dictæ Militie S. Lazari Hospitalibus, & Præceptoribus, aut aliis beneficiis, quoad vixerint, retinere possint, dispensamus.

§. 50. Et insuper idem Hospitalis S. Lazari, ac illius Prioratus, præceptoribus, domos, cameras, Hospitalia, & loca quæcumque; necnon Magistrum, Priores, Præceptores, Milites, & personas, ac eorum subditos, vassallos, colonos, & servitores, nunc, & pro tempore existentes, etiam presbyteros curam animarum exercentes, quamdiu illa exerceant, & in illorum obsequiis fuerint, ac illorum res, animalia, prædia, domos, molendina, & bona quæcumque, quæ obtinent, & possident, ac in futurum canonice obtinebunt, & possidebunt, sub beati Petri, & dictæ Sedis, atque nostra protectione suscipimus.

§. 51. Ac ab omni jurisdictione, correctione, onere, statutis, bannis, dominio, superioritate, & potestate quorumcumque Patriarcharum, Archiepiscoporum, Episcoporum, & Prælatorum, necnon quorumcumque temporalium dominorum quavis potestate etiam Imperiali, Regali, & Ducali, fulgentium, ac Universitatum, & illarum Regentium, etiam (præterquam dicti Hospitalis) Ordinariorum, tam spiritualium, quam temporalium obicumque, tam citra, quam ultra montes, & mare constitutorum, cuiuscumque dignitatis, status, gradus, ordinis, & conditionis existentium, illorumque Vicariorum, & Officialium, Locatenentium, & Judicum, nunc & pro tempore existentium, quorumlibet.

§. 52. Necnon à solutione, & exactione passagii, arreragii, gabellæ, datici, tractæ, collectionis, proactionis, iucundi adventus, iurium etiam synodalia, censuum, & decimarum, etiam novalium horum, pratorum, piscationum, & molendinorum (ad quæ culibet accessus nullatenus directæ, vel indirectæ, prohiberi possit) & terrarum, quas per se ipsos, vel alios eorum nominibus etiam colonos, arrendatarios, & emphyteutas excolunt, & de quibus fructus percipiunt, & cuiusvis alterius oneris personalis, realis, seu mixti, ordinarii, vel extraor-

nosque transirendi.

M. Mag. strit. & totius Militie iusceptio sub protectione Sedis Apostolicæ.

Exemptio à Jurisdictione ab omnium dominorum temporalium & spiritualium intelligenda juxta terminos Conc. Trid. ut declarat Pius V. cit. in rub.

Exemptio à decimis, &c. Tu attende declarationem Pii V. cit. in rub.

dinarii ubicumque, & ex quacumque causa impositi, vel imponendi pro tempore, liberamus, & eximimus, ac nobis, & dictæ Sedi immediate subicimus. Illoque, & illa, etiam si in quibuscumque statutis, literis, constitutionibus, & regulis, etiam per nos, & Sedem præfatam pro tempore editis, nominatim, specialiter, & expresse gravarentur, seu onerarentur, semper immunes, liberos, & exemptos, ac exceptos, & nobis, ac successoribus nostris Romanis Pontificibus, immediate subiectos, ac immunita, libera, exempta, & subiecta esse decernimus. Ita quod Archiepiscopi, Episcopi, Prælati, Ordinarii, Vicarii, Officiales, Locatenentes, & Iudices præfati, etiam ratione delicti, vel contractus, seu rei, de qua agitur, ubicumque committatur delictum, incurrat contractus, aut res ipsas constiterit, nullam in eos, vel ea jurisdictionem, correctionem, seu potestatem exercere. Aut excommunicationis, aliasve sententias, censuras, & penas promulgare, aut etiam ratione personarum, vel rerum, animalium, ac bonorum suorum ad aliquam solutionem, pontium, fontium, furnorum, murorum, seu etiam altarium Ecclesiarum, quam dictæ Religionis, etiam si forsitan hæcenus per abusum, seu alterius privilegium, aut negligentiam, etiam per longissimum tempus taliter observatum non fuerit. Quæ omnia etiam præscriptiones nullo pacto, saltem in posterum, quo minus huiusmodi exceptionibus uti possint, obstat volumus, & decernimus eos coartare, aut alii quicumque cuiuscumque Ecclesiasticæ, vel mundanæ dignitatis, aut præminentis, status, vel conditionis existant, etiam locis & Terris S.R.E. etiam immediate subiectis, & ad instantiam cuiuscumque; Principis, seu Communitatis sui excommunicationis lata sententia, seu quadrupli, ultra damna, & expensas, restitutionis penis per contrafactientes eo ipso incurrendis, ne eos, in iudicio vel extra super præmissis, vel eorum usu, seu possessione, vel quasi, directæ, vel indirectæ, quovis quasito colore, vel ingenio molestare, impedire, vexare, aut alias quomodolibet impetere præsumant, debeant, seu etiam valeant.

§. 53. Sed Priores, Milites, & aliæ personæ Hospitalis, & Militiæ S. Lazari huiusmodi de iustitia coram solo Magistro, & Conventu, vel eorum deputato respondere debeant. Decernentes quoscumque processus contra illos, vel eorum aliquem tam per ipsos locorum Ordinarios, vel eorum Vicarios, seu quosvis alios, quam Magistrum, vel eius deputatum præfatos, pro tempore factos, & quolibet etiam excommunicationis, vel suspensionis, aliasque sententias promulgatas, nullas, & invalidas, nulliusque roboris, vel momenti fore.

§. 54. Nec omnino aliquis ex Hospitalis, & Militiæ S. Lazari Fratribus, donatis, servitoribus, vassallis, & Colonis in prioratibus, Commendis, Domibus, Hospitalibus, Leprosariis, membris, aut aliis quibuscumque beneficiis, præditi, five Grangis quomodocumque à dicto Hospitali dependentibus, in quibuscumque locis, sub quoruncumque Patriarcharum, Archiepiscoporum, Episcoporum, Universitatum, Hospitalium, Rectorum Ecclesiarum limitibus, & jurisdictione constituti, decimas, aut canonicam portionem, seu charitativum subsidium, aut Quartas nuncupatas, seu alias quascumque collectas, seu contributiones, tam ex antiquis eorum culturis, quam ex receniter cultis novalibus alicui quovis modo solvere teneantur. A quibus omnibus exactionibus, atque etiam novo subsidio dilecto filio nostro Philippo Hispaniarum Regi in suis Regnis per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores concessio, & canonica portio, Quarta nuncupata in Franciæ Regnis imposita, necnon à quibuscumque aliis facultatibus Regibus huiusmodi, & aliis Principibus concessis, vel concedendis in futurum, omnia dicti Hospitalis loca, ut præfertur, necnon Ecclesiarum quomodocumque à dicto Hospitali dependentium Fabricas, libera, & liberas, & exemptas esse declaramus, atque volumus.

§. 55. Et insuper quod præfati Magister, & Conventus, Priores, Præceptores, aut quicumque alii ex dicti Hospitalis Fratribus, per quoscumque locorum, aut Terrarum dominos, tam spirituales, quam temporales, etiam si Regali dignitate præfulgeant, etiam in Terris S. R. E. ab extractione frumenti, hordei, vini, olei, leguminum, & quorumvis fructuum, atque etiam pecuniarum ex Prioratibus, Commendis, membris, domibus, grangiis, aliive præfati Hospitalis locis provenientium, nullo umquam modo impediri possint, quo minus præfata omnia pro sua possessorum voluntate in quacumque fidelium loca ab omni pedagio, datio, seu tracta, libera & exempta valeant alportare.

§. 56. Et bona etiam patrimonialia Magistri, Priorum, Præceptorum, & Fratrum, ac aliarum personarum huiusmodi, tam acquisita, quam in posterum acquirenda, aut illis quovis modo, etiam ex concessione Apostolica, vel Magistrali pertinentia, ex die emissionis per eosdem Priores, & Præceptores, Fratres, & personas professionis, ut præfertur, ab omnibus decimis, & aliis oneribus libera, immunita, & exempta existant.

§. 57. Et quod quælibet querelæ, quæstiones, lites, causæ, controversiæ, quas ex nunc inter Fratres, & subditos Hospitalis, & Militiæ S. Lazari nunc presentes, & futuros, ex quibuscumque occasionibus oriri, & moveri contigerit quovis modo, cum omnibus suis incidentibus, emergentibus, connexis, & annexis, ac omnium cuiusvis appellationis, (præterquam in defectus, aut denegatæ iustitiæ, vel illati perperam contra stabilita, & consuetudines dicti Hospitalis gravaminis casibus) remoto obstaculo per pro tempore existentem Magistrum, & Conventum dicti Hospitalis, seu illos ex Fratribus, quibus ipsi Magister, & Conventus id commiserint, etiam usque ad tertiam definitivam sententiam inclusive.

§. 58. Necnon juxta laudabiles consuetudines, & stabilita Hospitalis huiusmodi, & alias prout juris fuerit, debito fine decendantur. Omneque & singuli Priores, & Præceptores, Milites, & Fratres Hospitalis præfati, postquam de mandato, seu auctoritate Magistri, seu Conventus præfatorum in quibuscumque ex prædictis contra eos intentandis causis ad comparandum coram ipsis, & Commissariis per eos, ut præfertur, deputatis, in locis quantumcumque ab eodem Hospitali remotis citati fuerint, coram eisdem Magistro, Conventu, & Commissariis, prout contigerit, legitime comparere debeant, & teneantur, juri, & iustitiæ secundum stabilita, approbationes, usus, & laudabiles consuetudines præfati Hospitalis partiuri.

§. 59. Quodque illi ex Prioribus, Præceptoribus, Fratribus, & subditis præfatis, qui contra eorum aliquem super quibuscumque querelis, rebus, vel negotiis (præterquam in casibus præfatis) coram alio quam præfatis Magistro, & Conventu, ac per eos pro tempore datis Commissariis in causam traxerint, & ad alium quam ad eosdem appellationes quascumque interpoluerint, causas huiusmodi prorsus perdant, & excommunicationis sententiam incurrant, & reque super qua contenderint, privati existant eo ipso.

§. 60. Necnon moderno, & pro tempore existenti Magistro & Conventui Hospitalis huiusmodi, juxta illius stabilita, & laudabiles consuetudines ac mores, in Prioratus, & Præceptorias, domos, Hospitalia, membra, bona, & loca quæcumque, necnon quoscumque Priores, Præceptores, Fratres, & personas Hospitalis, & Religionis huiusmodi, ac illorum vassallos, subditos, & servitores ubicumque, tam citra, quam ultra montes, & nunc & pro tempore constitutos, & commorantes, qui omnes Magistro, & subdelegatis ab eo firmiter, tam personaliter, quam realiter omni exceptione cessante, & quocumque à nobis, vel Sede prædicta obtento, vel obtinendo indulto non obstante parere & obedire tenerentur, plenariam, & omnimodam etiam

Facultas extractendi frumentum, & quoscumque alios fructus, & pecunias ex locis dictæ Militiæ, & Hospitalis ad quæcumque fidelium loca sine datio, & gabella. Tu vide sanctionem S. D. N. Pauli V. n. 10. Inter.

Exemptio etiam pro bonis patrimonialibus post missam professionem.

Iurisdicção M. Magistri, & Conventus, seu eorum delegatorum inter personas dictæ Religionis, & Militiæ.

Citati coram Magistro, & Conventu, seu eorum delegatis comparere teneantur.

Milites, & alia persona religionis prohibentur coram aliis litigare, seu compere pro iustitia quam coram iudicibus Religionis.

Potestas, & iurisdicção M. Magistri, & Conventus super personis & rebus juxta stabilita.

Facultas M. Magistri pro-
cedendi contra inobedi-
entes, & re-
belles etiam
per edictum
publi cum
etiam ad pri-
vationem
quorumcum-
que benefi-
cium per
nos quomodo-
libet ob-
tentum.

Avocatio
quorumcum-
que causa-
rum, & com-
missio Ma-
gistro, & Con-
ventui termi-
nandi.

Hoc limitat
Pius V. cit. in
rubr.

Facultas exe-
quendi sen-
tentias, &
rem judica-
tam.

Appellatio-
nes à senten-
tiis delega-
torum ad M.
Magistrum,
& Conven-
tum, & ab eis
ad Capit. ge-
neral. juxta
formam sta-
bilimento-
rum devol-
vantur.

Omnes exp-
editiones
& execu-
tiones, M. Ma-
gistro, & Con-
ventus exe-
quantur abs-
que licentia, nec
per quem-
cumque etiam
Ducali, aut
Regali digni-
tatem impedi-
ri possint.

Facultas pro-
cedendi con-
tra clericos,

meri, & mixti imperii jurisdictionem, & superio-
ritatem.

§. 61. Ipse Magistro, contra rebelles, & suis
mandatis non obediens etiam vigore litterarum
Apostolicarum etiam in forma brevis à nobis & suc-
cessoribus nostris pro tempore emanatarum, servatis
quatuor terminis ad docendum se paruisse, & satisfac-
tione in loco Conventus Hospitalis hujusmodi, post
legitime executam primam citationem ad multam,
five penam personaliter juxta mores & stabiliamenta
prædicta, seu etiam privationem habitus, & bene-
ficiorum, domorum, & prædiorum per eos obten-
torum procedendi, vel etiam, si magis expedire
videbitur, beneficia, domos, & prædia ipsa ad
manus suas, seu Receptorum dicti Hospitalis redu-
cendi, & donec ipsi inobedientes contumaciam
purgaverint, vel debita onera persolverint, five
faculares, aut alterius Ordinis Regulares beneficia
dicti Hospitalis possidentes fuerint, pro suo arbitrio
retineant, illorumque fructus, redditus, & pro-
ventus arrendandi, & percipiendi.

§. 62. Necnon causas prædictas, ac omnes, &
singulas lites, & querelas, five in Romana Curia,
tàm in Auditorio nostro quàm per commissiones, five
extra eam, super quibusvis dicti Hospitalis bene-
ficiis ac bonis, & pecuniis ærarii, & Fratrum quo-
rumcumque, seu super eorumdem delictis, etiam
si ex adverso aliqui Clerici, faculares vel regulares,
aut laici extiterint, & active seu passive alias juxta
formam stabilimentorum & privilegiorum prædicto-
rum, in dictis causis quomodolibet, & in quacum-
que instantia interverint hæcenus motas, in qui-
bus tamen non conclusum sit, & in futurum quo-
vis prætextu movendas, in quibusvis instantiis
pendentes, quarum status, & merita etiam præ-
sentibus haberi volumus pro expressis, ad nos
advocamus, ac illas eisdem Magistro, & Con-
ventui per eos, vel ab eis deputatos juxta for-
mam dictorum stabilimentorum, & laudabilium
consuetudinum prædictorum in statu debito reas-
sumendas & decidendas committimus, eosque quo-
rum intererit citandi, & quoties opus fuerit inhi-
bendi, etiam sub censuris & penis ecclesiasticis,
tàm in Curia prædicta, quam extra eam, facultate
tem concedimus.

§. 63. Necnon illorum sententias, & rem judica-
tam per Priorem Ecclesiæ dicti Conventus, etiam
sub censuris & penis ecclesiasticis contra condem-
natos, etiam in Curia prædicta, tàm realiter, quàm
personaliter exequi mandamus, ita quod alibi
quam in dicto Hospitali, aut extra illud ex Ma-
gistro, & Conventus commissione juxta stabiliamenta
& usus hujusmodi, cognosci, & terminari ne-
queant.

§. 64. Nec à sententiis per Judices dicti Hospi-
talis pro tempore latis ad alium, quam Magistrum,
& Conventum prædictos, seu Judices ab eis depu-
tatos, in quavis instantia, neque à sententiis per
ipsum Magistrum, & Consilium latis, alio quam
ad ipsum generale Capitulum, five per ipsos
Hospitalis Fratres, five per ipsos subditos, &
vassallos quomodo appellari possit: quin immo illi
usque ad tertiam sententiam in eodem Conventu
procedere teneantur.

§. 65. Et similiter, quod omnes sententiæ per
eosdem Magistrum, & Conventum late, omnes
item commissiones, & citationes, collationes, &
omnia denique eorumdem scripta ad omnes sue
jurisdictioni subditos, ac reliquos etiam, quorum
intererit, causas, lites, seu querelas coram ipsis
pertractari, directe exequi, & à nullis locorum,
& Terrarum dominiis etiam Ducali, aut Regali di-
gnitate fulgentibus aliqua ratione expectandi con-
sensus, seu alio quovis quaesito colore in eorumdem
executione impediri possint: servato tamen in eis
exsequendis Data ordine. Ita quod eorum ultima
primis anteferri nequeant.

§. 66. Ac quod contra Clericos faculares, seu lai-
cos, Prioratus, Præceptorias, domos, & alia bene-

ficia Hospitalis hujusmodi occupantes, seu illi, aut
ejus communi ærario, seu Fratribus occasione res-
ponsionum annuorum, vacantium, mortuorum,
annatarum, passagiorum, arreariorum, seu alias
quomodolibet debentes, five agent, five conve-
niantur, & in quavis instantia ad causam veniant,
Magister, & Conventus præfati, modo & forma
quibus contra ipsos Hospitalis Fratres procedi con-
fueverit, libere procedere, & eos Prioratibus, Præ-
ceptoribus, domibus, & aliis beneficiis hujusmodi,
alias juxta formam privilegiorum prædictorum,
privare valeant, concedimus, & indulgemus.

§. 67. Necnon personas in dignitate Ecclesiastica
ubilibet constitutas, & quoscumque locorum Ordina-
rios, ac eorum Vicarios, & Officiales, necnon
Canonicos Metropolitanos, & aliarum Cathedralium,
aliarumque Ecclesiarum Prelatos, & Rectores per
eosdem Priores, Præceptores, & Fratres, ac eorum
singulos pro tempore eligentes in eorum Conservato-
res, qui quamdiu exerceverint dictum officium à
nemine quo minus illud exerceant sub aliquo præ-
textu impediri, vel molestari possint, deputamus:
ita quod ipsi electi sub excommunicationis late sen-
tentia pena eosdem Priores, Præceptores, & Fra-
tres, ac eorum singulos adversus inferentes eis, aut
eorum servitoribus, & familiaribus injurias, seu gra-
vamina, vel damna, in personis, rebus, & bonis,
seu exigentes ab eis vestigalia, datia, pedagia, ga-
bellas, collectas, aut alia onera, defendere, & præ-
servare, ac omnem eorum jurisdictionem exercere,
necnon sententias, censuras, & penas Ecclesiasti-
cas contra rebelles, & inobedientes cum effectu
promulgare, ac omnibus facultatibus, Conserva-
toribus dicti Hospitalis, & illius personarum per
quascumque litteras Apostolicas quomodolibet
concessis uti, ac privilegia Prioribus, Præceptoribus,
& Fratribus præfatis pro tempore concessa,
eis observari facere debeant & teneantur.

§. 68. Ac jura mutuorum, & vacantium, nec-
non arreariorum, passagiorum, & aliorum quo-
rumcumque, ita ut quavis persone cujuscumque
Ecclesiastica dignitatis existentes, beneficia Hospi-
talis hujusmodi pro tempore obvenientes, illa solvere
omnino teneantur, & ad id etiam sint, ac ad id etiam
sub sententiis, censuris, & penis ecclesiasticis, ac
alias juxta eorumdem privilegia, privationis & ap-
prehensionis beneficiorum ad manus suas remediis
cogi possint, solvi mandamus.

§. 69. Necnon exemptionem, & liberationem
præfatas, ita quod Magister, Priores, Præceptor-
es, & dicti Hospitalis Fratres, Capellani à quo-
cumque Catholico Antistite sub Romanæ sedis
obedientia constituto sacros ordines, etiam extra
tempora à jure statuta tribus diebus festivis suscipe-
re, & in quibusvis, tàm secularium quàm regula-
rium Ecclesiis absque alicujus licentia celebrare
possint.

§. 70. Et ipsi Magister, & Conventus, necnon
Prior Ecclesiæ, alique Priores, & Præceptores in-
tra limites suarum jurisdictionum, & administra-
tionum veri Ordinarii juxta formam stabilimen-
torum, & privilegiorum prædictorum, existant,
& esse censeantur.

§. 71. Necnon Magistrum & Conventum, quos-
cumque & singulos Priores, ac Commendatores
suorum Prioratuum, & Commendarum Fratres,
seu Religiosos delinquentes, vel inobedientes, cu-
juscumque dignitatis, status, gradus, ordinis, præ-
eminentiæ existentes, etiam si quavis etiam Apo-
stolica exemptione fungantur, in quocumque loco
quantumvis privilegiato, & quavis etiam Imperato-
ris, Regum, seu aliorum Principum etiam eccle-
siasticorum Curia, per se aut suos Officiales &
Ministros capere, & incarcerare, ac captos à se
vel eorum nomine liberare, & ad Hospitale præ-
fatum per Magistrum, & Conventum, præfatos
juxta eorum constitutiones & stabiliamenta punien-
dos sub debita custodia transmittere, & transmitti
facere, libere, & licite posse.

seu alios de-
tinentes loca
& bona di-
ctæ religio-
nis, seu non
solventes da-
bita commu-
ni ærario, &
procur contra
personas di-
cti Ordinis.

Sed Pius V.
limitavit ut
in cons. cit.
in rubr.

Qualiber
necne in
dignitate Ec-
clesiasticæ con-
stitutus possit
eligari in Con-
servatore, cum
facultatibus
opportunis, &
necessariis.

Sed Pius V.
limitavit in
cons. cit. alie
gata in r. br.

Quod jura
mortuaria-
rum, & va-
cantium solvi
debeat sub penis
&c.

Facultas su-
mendi ordi-
nes, & sacra-
menta à quo-
vis Antistite
etiam extra
tempora, &
celebrandi in
quibusvis
Ecclesiis.

Quod limita-
vit Pius V.
in rubr. M. Magister
Conventus, Priores, &
Præceptores
intra limites
suorum juris-
dictionum veri Ordina-
rii sunt.

Magister, &
Conventus
quoscumque
delinquentes
ubique
incarcerare,
& ad locum
Conventus, vel alium
transmittere
possint.

Sed Pius V.
ibid. limita-
vit id non li-
cere in Curia
Rom.

§. 72. Ac tam Ecclesiasticos, quam seculares Officiales, & locorum potestates, ad eisdem Magistro, & Conventui, Prioribus, Commendatoribus, aliisque in premissis assistendum, ac auxilium, consilium, favorem, & jvamen prestandum sub excommunicationis, & aliis censuris, & penis Ecclesiasticis, teneri, & obligatos fore.

§. 73. Ac omnes, & singulas speciales, & generales, etiam mentales reservationes, expectativas, mandata de providendo, coadjutorias, concessiones, uniones, etiam perpetuas, necnon alias preventivas gratias, & litteras Apostolicas super Prioratibus, Præceptoris, Rectoris, domibus, locis, & membris, ac aliis beneficiis Ecclesiasticis dicti Hospitalis quovis modo nuncupentur, etiam in Angliæ, Castellæ, Legionis, ac Valentiz Regnis, ac Principatu Cathaloniz, & Comitatu Flandriz, quomodocumque, & qualitercumque, etiam cum quibuscvis fortissimis & insolis, etiam derogatoriis derogatoriis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis, ac inhibitionibus quibuscvis, etiam non dicti Hospitalis personis cujuscumque dignitatis, status, gradus, ordinis, conditionis, vel præminentiz fuerint, etiam Cardinalatus honore fungentibus, & functuris, etiam ex quibuscvis iustissimis, & urgentissimis causis, etiam per nos, & Sedem præfatam, in genere, quam in specie concessas, & concessas, & quasvis etiam preventivas, & restitutorias, ac præservativas clausulas in se continentes, & continentia, eorum vim & effectum revocamus, cassamus, & annullamus, nullisque roboris, vel momenti fore, & esse, ac nemini suffragari possit, neque debere, nec per eas cuiquam in Prioratibus, Præceptoris, dignitatibus, domibus, locis, & membris, ac aliis beneficiis Hospitalis hujusmodi, vel ad illa jus acquiri potuisse, vel posse neque coloratum titulum possidendi tribuere, sed illis non obstantibus Magistrum, & Conventum præfatos, conjunctim vel divisim, juxta consuetudines & stabilitamenta hujusmodi Hospitalis, de Prioratibus, Præceptoris, domibus, locis, & membris, ac aliis Hospitalis beneficiis hujusmodi, libere disponere potuisse, & posse, & sic judicari debere, ac quicquid secus super his attentari contigerit, irritum & inane decernimus.

§. 74. Ac omnes, & singulas expectativas, reservationes, antianitates, mandata de providendo, concessiones, coadjutorias sine consensu, & omnes alias gratias, & litteras super Prioratibus, Præceptoris, ac quibuscvis aliis beneficiis dicti Hospitalis, quomodocumque, & qualitercumque (absque Magistro, & Conventu præfatorum consensu quibuscvis Personis cujuscumque dignitatis, status, gradus, ordinis, vel conditionis fuerint, etiam Cardinalatus honore fungentibus, ex quibuscvis causis etiam onerosis, huculque concessas, & concessas, etiam quasvis clausulas illarum ab hujusmodi revocationibus præservativas in se continentes, & continentia, similibus scientia, & potestatis plenitudine pro revocatis, cassatis, & annullatis hujus perpetuo valitæ constitutionis edicto pro præsentibus decernimus, & ordinamus.

§. 75. Necnon omnes, & singulas collationes, provisiones, uniones, annexiones, & incorporaciones, ac quascumque alias concessiones, & dispositiones de Præceptoris, cameris magistralibus pro tempore nuncupatis, seu illarum fructibus, redditibus, & proventus quibuscvis personis cujuscumque status, ordinis, vel conditionis extiterint, quavis consideratione, & sub quacumque verborum forma, ac cum quibuscvis clausulis derogatoriis, etiam Motu, & scientia similibus, ac cum expressa derogatione juris Magistris dicti Hospitalis, seu annuæ responsionis illi faciendæ, huculque auctoritate Apostolica factas, nullas, & invalidas, nulliusque roboris, vel momenti fuisse, & esse decernimus. Et quatenus viribus subsistere deciderunt, revocamus, cassamus, irritamus, ac illas, & quas in futurum etiam cum expressa de-

rogatione litterarum nostrarum hujusmodi fieri contigerit, pro infectis haberi volumus.

§. 76. Monentes, & requirentes omnes, & singulos earundem Camerarum Magistratum, & seu locorum detentores, seu possessores, qui nunc sunt, aut pro tempore erunt, prætextu concessionum, provisionum, & dispositionum quarumlibet, quæ ab alio quam pro tempore existente Magistro dicti Hospitalis hæcenus emanaverint, & in futurum emanabunt, etiam à dicta Sede, ut infra duorum mensium terminum Camerarum, & locorum per eos pro tempore detentorum, seu possessorum hujusmodi possessionem vacuum, liberam & expeditam Magistro dicti Hospitalis, aut illius legitimo procuratori tradant, & assignent. Alioquin ex nunc, prout ex tunc, in omnes, & singulos, qui non paruerint, seu aliis ut non pareant fuserint, aut alias auxilium, consilium, vel favorem præstiterint excommunicationis sententiam promulgamus, & eos in illa incidisse declaramus, à qua nisi in mortis periculo constituti ab alio quam à Romano Pontifice pro tempore existente absolutionis beneficium obtinere nequeant. Et præter sententiam excommunicationis hujusmodi, si dicti Hospitalis Fratres fuerint, & excommunicationis sententiam hujusmodi per mensem animo subintulerint indurato, Prioratibus, Præceptoris, ex officiis præfati Hospitalis per eos tunc obtentis eo ipso privati, & inhabiles ad illa in posterum obtinenda existant.

§. 77. Possitque per Magistrum, & Conventum præfatos de illis sic vacantibus per privationem hujusmodi libere disponi.

§. 78. Liceat quoque Magistro pro tempore existingi Hospitalis hujusmodi, dico termino decurso, per se vel procuratores suos possessionem Camerarum, & locorum eorumdem propria auctoritate libere apprehendere, ac illorum fructus, redditus, & proventus percipere, ac in suos, & ejus Magistralis mensæ usus, & utilitatem convertere, & retinere, cujusvis licentia super eo minime requirita.

§. 79. Præterea similiter perpetuo statuimus, & ordinamus, quod ex nunc de cætero perpetuis futuris temporibus Prioratus, Præceptoris, & membra quacumque dicti Hospitalis, quæ pro tempore quatercumque vacaverint, tam in Romana Curia quam extra eam, sub quibuscvis generalibus, vel specialibus reservationibus Apostolicis, factis & quas fieri contigerit de beneficiis Ecclesiasticis etiam apud Sedem præfatam pro tempore vacantibus, utpote ad Hospitalitatem, & fidei ruptionem ordinata, nullatenus includantur, nec reservata, vel affecta existant, sed Hospitalium pauperum, quæ sub reservationibus ipsi non includuntur, quoad id fortiantur naturam.

§. 80. Debeatque de illis per pro tempore existentem Magistrum, & Conventum præfatos duntaxat, & non alium, juxta stabilitamenta præfata, Fratribus dicti Hospitalis provideri, & quas fieri contigerit per nos, aut suc. effores nostros Romanos Pontifices pro tempore existentes, ac dictam Sedem, vel ejus, aut alia quacumque auctoritate de illis reservationes, provisiones, collationes, commendas, uniones, & quascumque alias similes, vel dissimiles dispositiones.

§. 81. Et exemptiones Priorum, Præceptorum, & Fratrum, à Magistris, & Conventus præfatorum obedientia, & superioritate, aut debitis per eos præfato arario responsionibus annuis, & aliis juri- bus, quacumque ratione, vel causa, etiam Motu, scientia, ac potestatis plenitudine similibus, etiam cum expressa derogatione posteriorum litterarum quarumcumque, quæ etiam per nos in contrarium fortasse fieri contigerit, nullius penitus sui roboris, vel momenti, & habeantur prorsus pro infectis.

§. 82. Nec censeatur statuto hujusmodi unquam derogatum per quascumque clausulas etiam derogatoriis derogatorias, fortiores, & efficaciores,

Monitorium
adversus occupantes, &
non restituentes loca,
& bona Relig.
onis infra
duos men-
ses.

Magnus Mag-
ister, &
Conventus
possint dispo-
nere de bonis
vacantibus
per privatio-
nem.

Facultas M.
Magistri ap-
prehendiendi
propria aucto-
ritate pos-
sitionem bo-
norum per
alios occupa-
torum.

Loca hujus
religionis
non comprehen-
duntur sub reser-
vationibus
Apostolicis,
sed sint ma-
nualia.

Loca hujus
Religionis
per M. Magis-
trum & Con-
ventum,
duntaxat, &
non alios
conferri de-
beant perso-
nis dictæ Re-
ligionis.

Exemptiones
concessæ
Prioribus, &
Milibus nō
sufficiunt
adversus de-
bita per ipsos
communi
arario dicti
Hospitalis
& obedi-
entiam M. Ma-
gistri, &
Conventus.

Ad hoc vide
Pium V. cit.
in rub.

Quod intel-
lige de his
quæ non sunt
fortitæ effec-
tæ ut in
dicti Pii V.
const.

Alia cassatio
similiter qua-
rumcumque
expectativas,
reservationes,
annuæ respon-
sionum, &
concessio-
nem &c.
etiam ex cau-
sa onerosi,
sine consensu
Magistri, &
Conventus.

Cassatio, &
revocatio
quarumcum-
que collatio-
num, provi-
sionum, unio-
num, annexio-
num, incorpo-
rationum, ac alia-
rum concessio-
num & dispo-
sitionum huculque
factarum,
etiam si vere
effectum, &
in futurum
fiendam.

Præsentibus
litteris non
censeatur de
rogari nisi
modis hic ex-
pressis.

Clausula de
consensu M.
Magistri, &
Conventus
semper sub
intelligitur
ad effectum,
ut derogatio-
nes non sub-
stantiam rati-
cum eorum
consensu.

Prohibitio
dispositionis
locorum dic-
tæ Religio-
nis, nisi de
consensu M.
Magistri, &
Conventus.
Hoc ultim-
um limita-
vit Pius V.
cit. in rob.

Relictio con-
tractuum, &
aliam aliena-
tionum,
donationum,
occupatio-
num in dan-
num Religio-
nis factum.
Pius V. res-
tringit ut
credo quas alie-
nationes.

Cassatio, &
extinctio ac-
cessuum, re-
gressuum, &
c. præter-
quam ex cau-
sa onerosa,
& de consen-
su M. Magis-
tri concessio-
num.

Loca, & bo-
na, ac jura
quæcumque
occupata, &
usurpata re-
ducuntur ad
jus, & prop-
rietatem
dicti hospita-
lis, ac ejus
membrorum
per censuras,
& poenas Ec-
clesiasticas.

Prohibitio
alienatio-
num in futu-
rum faciend-
rum.

Concessio,
& incorpora-
tio Hospita-
lium, & lo-
corum quo-
rumcumque
sub invoca-
tione S. La-

nisi dum, & quoties, ipsarum posteriorum litterarum de verbo ad verbum verè, & non per clausulas id importantes, inserto tenore de ipsorum S. R. E. Cardinalium consilio derogari contigerit, nec etiam tunc, nisi ad id Magistri, & Conventus præfatorum expressus accedat assensus, & non aliter, nec alio modo.

§. 83. Et semper in hujusmodi, quæ sic fiant de consilio præfato derogationibus, censeatur apposta clausula, quod effectum fortiantur de consensu Magistri, & Conventus præfatorum, & non aliter nec alio modo.

§. 84. Decernentes collationes, provisiones, commendas, uniones, reservationes, & alias dispositiones quaslibet, quas per alium quam Magistrum, & Conventum præfatos de eisdem Prioratibus, Præceptoribus, & membris etiam apud Sedem ipsam pro tempore, per cessum, vel decessum, seu quavis aliam dispositionem vacantibus, fieri contigerit, etiam si per nos, & pro tempore existentem Romanum Pontificem n. fient, & illis, quibus scilicet, nullum jus, nullumque coloratum titulum tribuere possident. Et eos quoad omnes effectus etiam constitutionis nostræ de triennali possessione non molestando, pro meritis detentoribus sine titulo haberi, & reputari.

§. 85. Ac quascumque donationes, concessiones, locationes, investituras, & alias alienationes censuum, reddituum, jurium, jurisdictionum, & locorum quorumcumque ad Prioratus, Præceptorias, domos, Hospitalia, beneficia, & loca Hospitalis hujusmodi pertinentium in illorum lesionem, iacturam, vel detrimentum, & per personas dictæ Religionis, etiam cum renunciationibus, pactis, juramentis, & poenis desuper appositis, & adjectis, ac instrumentis, & litteris desuper confectis, & confirmationibus forsan inde secutis etiam de licentia dictæ Sedis, absque tamen consensu, seu expressa licentia Magistri, & Conventus præfatorum, quacumque præscriptione, seu longissima pacifica possessione, & detentione non obstantibus.

§. 86. Necnon quoscumque accessus, ingressus, & regressus, ac coadjutorias ad Prioratus, Præceptorias, domos, Hospitalia, & alia beneficia Hospitalis hujusmodi (præterquam ex causa onerosa, & de consensu dictorum Magistri, & Conventus) etiam per nos, & prædecessores nostros præfatos concessos similiter cassamus, revocamus, & annullamus, ac irritamus, nulliusque roboris, vel momenti fore, & pro infectis haberi decernimus.

§. 87. Ac censuum, reddituum, jura, jurisdictiones, & bona alienata hujusmodi, ac etiam per quoscumque etiam secularis occupata, usurpata, & detenta, ad jus, & proprietatem dicti Hospitalis, seu illius Prioratus, Præceptoriarum, domorum, Hospitalium, & beneficiorum prædictorum reduciuntur. Illaque in integrum adversus concessiones, donationes, & alias quaslibet alienationes prædictas, necnon investituras illarum prætextu quomodolibet quavis auctoritate factas, & concessas, in integrum, ac pristinum, & eum statum in quo antea erant, restituimus, reponimus, & plenarie reintegramus, illarumque detentores quuscumque dignitates, status, gradus, ordinis, & conditionis existentes ad illorum relaxationem per censuras Ecclesiasticas, & alia juris remedia cogi, & compelli posse volumus.

§. 88. Et similes alienationes de cetero sub excommunicationis late sententiæ, & privationis beneficiorum per eos obtentorum poenis, per contrascentes eo ipso absque aliqua declaratione incurrendis, fieri prohibemus, & si fiant, illas viribus omnino carere decernimus.

§. 89. Et quod Hospitalia, Leprosaria, Capellæ, Oratoria, beneficia, & alia pia loca hujusmodi, etiam in Alma Urbe, & aliis quibuscumque Terris, dominiis, & locis sub dicti S. Lazari invocatione fundata, constructa, edificata, & erecta, & quæ in posterum perpetuis futuris temporibus fundari,

construi, edificari, & erigi contigerit, cum eorum applicationibus, unionibus, annexionibus, & incorporationibus factis, & deinde faciendis, ad Magistrum, & Conventum, ac Religionem hujusmodi spectent, & pertineant, illisque subiciantur, & subiecta existant, & à dicto Hospitali dependant.

§. 90. Illaque per ejusdem Religionis Fratres, & Religiosos, non autem per alias Ecclesiasticas, & seculares etiam Oppidorum, Locorum, Villarum, & Communitatum personas, nisi de Magni Magistri, & Conventus præfatorum expresso consensu, regi, & gubernari debeant.

§. 91. Et in signum recognitionis, & superioritatis hujusmodi de aliquo annuo rationabili canone, seu censu per eisdem Magistrum, & Conventum, & Definitorum generalis Consilii hujusmodi imponendo, & eis singulis annis persolvendo respondere debeant, & teneantur. Ac in eventum rebellionis, aut non subjectionis, ac responsionis, singulares Communitatem, & alia personæ hujusmodi, majoris excommunicationis sententia, per nos, & successores nostros præfatos innodata, eamque Ecclesiæ interdicitur sine, & esse censeantur, nec ab hujusmodi majori excommunicatione per nos, aut successores præfatos absolvi, aut interdicta ipsa relaxari possint, nisi ad id Magistri, & Conventus præfatorum expressus per eorum patentes litteras accedat assensus.

§. 92. Liceatque Joannotto, & pro tempore existentibus Magistro, & Conventui, necnon Præceptoribus, & Prioribus hujusmodi beneficiis, Oratoria, Hospitalia, & alia loca sub nomine S. Lazari pro tempore etiam in Urbe, & Curia præfatis fundata, & dotata, quæ eidem Joannotto, & pro tempore existentibus Magistro, & Conventui, ac Præceptoribus hujusmodi obedire, seu subijci, aut annuam responsionem solvere reculare contigerit, solo æquare, & demoliri, & imagines à parietibus delere, seu per easdem Communitates, & alias personas Ecclesiasticas, & seculares solo æquare, & demoliri, ac imagines hujusmodi deleri sub excommunicationis late sententiæ interdici, ac aliis censuris, & poenis, etiam cum invocatione auxilii brachii secularis facere.

§. 93. Quodque omnia, & singula alia Hospitalia, Præceptorie, leprosarie, membra, & pia loca dicti Ordinis, sub vocabulo S. Lazari inticulata, etiam si non sint possessa, vel recepta per Magistrum, Conventum, aut Fratres præfatos, nihilominus ab ipso Hospitali, S. Lazari dependere, nullique alii Monasterio, Præceptorie, five alio pio loco, præterquam dicto Hospitali, etiam si longeva consuetudine, aut submissio aliqua repugnent; pleno jure subesse auctoritate, & tenore præmissis decernimus pariter, & declaramus.

§. 94. Sratentes, ac etiam decernentes, quod ipsius Ordinis Hospitalia, Præceptorie, leprosarie, membra, & loca nulli cuiuscumque dignitatis, status, gradus, vel conditionis fuerit, præterquam ipsius Hospitalis Fratribus, & Ordinem ipsum expresse professis, eis tamen pro solo nutu dicti Magistri, & Conventus existentis, & pro tempore ad claustrum quoties expediret revocandis, in titulum, vel commendam conferri valeant, five possint.

§. 95. Quinimo presbyteri seculares illa ad præfens in commendam, seu alias quomodolibet obtinentes, commendæ hujusmodi cedere, aut illa alias dimittere nequeant, nisi de consensu eorum ad quos præfatorum, seu collatio spectat, & in favorem dicti Hospitalis, seu personarum, quæ habitum per Fratres Capellanos ejusdem Hospitalis deferri solitum suscipiant, & possessionem per eos emitte solitam emittant, nec illa deinceps ipsi nisi infra sex menses à die intimationis habitum ipsius Religionis susceperint, & Regularem professionem infra alios sex menses emisserint, possidere possint.

§. 96. Et si secus fiat, aut cessionem, seu resignatio-

ziri conf-
tricta, &
adjuvata.

Inhabilitas
omnium præ-
terquam Mi-
nistrum dic-
tæ Religio-
nis ad obtinen-
da Hospitalia, &
beneficia sub
invocatione
S. Lazari
constructa.

Facultas im-
pendendi sub-
sidium.

De demolien-
di loca quæ-
cumque sub
invocatione
S. Lazari pro
quibus obe-
dientia recu-
sabitur.

Alia concessio
locorum,
& beneficiorum,
sub invoca-
tione
S. Lazari in-
titulorum, etiam
si non sint
possessa per
Magistrum,
& Fratres præ-
dictos, & non
stante consue-
tudine, aut submis-
sione contra-
ria.

Hoc revoca-
vit Pius V.
in dicta ejus
const.

Alia inhabilitas
ad obtinen-
da loca dic-
tæ Religio-
nis præter
quam à Fra-
tribus ejus-
dem Ordinis
professis.

Presbyteri
seculares ob-
tinentes be-
neficia dicti
Ordinis, illis
cedere non
possint, nisi
de consensu,
&c.

1565.

Cessantes, & provisiones de beneficiis sine clausula, & de consensu M. Magistri, nullus sint roboris.

Revocatio juris patronatus nisi ex fundatione. Pius V. hoc declaravit in constit. cit. in rubr.

Prohibitio reservandi pensiones super beneficiis dicti Hospitalis nisi in favorem Fratrum.

Obtinentes beneficia, & pensiones cedant in manibus M. Magistri infra sex menses vel habitum suscipiant, & professionem emittant.

Ad Parochiales, & alias Ecclesias dicti Ordinis deputari possunt Fratres Capellani, non obstante tempore longissimo presbyteris secularibus fuerint collate, aut conferri consueverunt. Quod intelligi si valeant per dimissionem, ut in Pii V. constit. cit. in rubr.

nem hujusmodi, ac de dicti Ordinis beneficiis, etiam in manibus nostris in futurum fieri contingat, hujusmodi cessiones, resignationes, & provisiones nullius sint roboris, vel momenti, nisi in illis expresse dicatur, (& de consensu Magni Magistri) & de illis juxta formam privilegiorum dicti Religionis provideatur.

§. 97. Et insuper statuimus, & ordinamus, quod iurisdictionis, & presentandi personas idoneas ad Prioratus, Præceptoris, Hospitalis, membra, alia beneficia, & loca Hospitalis hujusmodi, nisi ratione fundationis, aut dotationis, saltem ad tertiam partem illorum fructuum: quo casu liceat Magistro, & Conventui præfatis, si dicta eorum beneficia, & loca Hospitalis hujusmodi ad dictum iurisdictionis liberare voluerint, aut dotantibus bona restituere, seu illorum pretium persolvere. Ac ex nunc Prioratus, Præceptoris, Hospitalis, membra, & beneficia hujusmodi conferre.

§. 98. Et quod nulla pensio annua super aliquo Præceptoris, Commendæ, vel alterius beneficii Militie hujusmodi fructibus etiam ex resignatione in manibus Romani Pontificis, aut alia quavis probabili causa, nisi in persona personæ dictæ Religionis, & Militie, etiam per ipsum Pontificem reservari, neque Commendæ, & alia beneficia dictæ Religionis pensionibus hujusmodi alter, quam ut præfertur, onerari possint. Et si pensiones desuper alter assignari contingat, assignationes ipsæ nullius sint roboris, vel momenti, nec rituales beneficiorum hujusmodi illarum solutiones teneantur, neque ad id censuris Ecclesiasticis, aliisve penis compelli possint.

§. 99. Quodque omnes, & singuli eorum Prioratus, Præceptoriarum, domorum, & beneficiorum in vim dictarum collationum possessoresculares, aut alterius Ordinis regulares, seu pensiones, super illorum fructibus, redditibus, & proventibus hujusmodi huncque etiam per Sedem eandem reservata percipientes, illas, & illa infra sex menses à die intimationis presentium litterarum in manibus Magistri, & Conventus, præfatorum juxta formam stabilitamentorum dictæ Religionis dimittere, transferre, seu illarum cassationi consentire teneantur, alioquin beneficia, & pensiones hujusmodi, nisi illa possidentes, & illas percipientes infra dictum tempus habitum susceperint, & professionem regularem illius Religionis emiserint, lapsis mensibus ipsis vacent, ac cassæ, & extinctæ sint, & esse censentur eo ipso.

§. 100. Et Magistro, singulisque Prioribus, Præceptoribus, Militibus, & Fratribus Hospitalis hujusmodi, ut pro eorum libito voluntatis Parochiales, ac etiam sine cura Ecclesias, vel earum Vicarias, seu Capellanias perpetuas, aut Capellas, vel Altitia, seu alia beneficia simplicia ad eorum collationem, provisionem, presentationem, electionem, seu quamvis aliam dispositionem ratione Prioratus, Præceptoriarum, etiam Cameralium Magistralium nuncupatarum, domorum, & aliorum beneficiorum dicti Hospitalis per eos pro tempore obtentorum de jure, statuto, consuetudine, fundacione, aut privilegio, seu alias quomodolibet spectantia, & pertinentia, & ab ipsis Prioratibus, Præceptoris, domibus, Hospitalibus, & aliis beneficiis dependentia, seu illis annexa, & quæ dudum forsan Fratribus saltem Capellanis ejusdem Hospitalis, & ab eisdem Magistro, Prioribus, & Præceptoribus, & aliis præfatis conferebantur, à longo tamen, & forsan longissimo tempore citra, de cujus initio memoria hominum forsan non existit, per ipsos Magistrum, Priores, Præceptores, Milites, & Fratres per absum, aut ex defectu Fratrum Capellanorum, vel aliarum personarum ejusdem Hospitalis ad id idoneorum, Clericis, seu Presbyteris secularibus collata, aut conferri, & per ipsos presbyteros, vel clericos seculares obtineri solita, etiam Fratribus Hospitalis hujusmodi,

§. 101. Præsertim Capellanis nuncupatis, qui à secularibus presbyteris, seu clericis, nisi quoad gestationem Crucis, vel habitus dicti hospitalis ad pectus, non differunt, si ad id alias idonei, & habiles reperiantur, conferre, ac alias de illis providere, & disponere. Ipsique Fratres, quibus beneficia hujusmodi conferri contigerit, illa, si sibi Canonice alias conferantur, aut eligantur, presententur, vel alias assumantur ad illa, & insistantur in eis, recipere, & in titulum etiam quoad vixerint retinere.

§. 102. Et tam Magister, quam singuli presbyteri, Milites ejusdem Religionis, & Militie, unum Curatum beneficium ecclesiasticum à dicta Militia, & Religione dependens, seu illis unicuique, aut incorporatum, etiam parochialis Ecclesia, vel ejus perpetua Vicaria fuerint, si ad hoc sufficientes, & idonei fuerint, & beneficium hujusmodi alias sibi canonice conferatur, recipere, & retinere libere, & licite valeant, auctoritate, & tenore prædictis de specialis dono gratiæ indulgemus, secumque pariter dispensamus.

§. 103. Et per quancumque rem iudicaram Magistro, & Conventui præfatis, nisi specialiter ad causam vocati fuerint, super iurisdictione prædicta, & sua civili eorum possessione præjudicari, aut præjudicatum censeri non posse, sed eos semper re iudicata hujusmodi, non obstante super possessio hujusmodi, ac etiam spolio agere posse.

§. 104. Ipsosque Magistrum, Priores, Præceptores, Milites, Fratres, & personas, vassallos, subditos, & servitores in ipsis Hospitalibus, & Religiosorum causis in omni iudicio, & contra quoscumque, ubi alias probationes non existunt, in testes adhiberi.

§. 105. Et quod Presbyteri, qui in dicta Religione professionem non emisissent, nisi de expressa licentia, vel consensu Magistri, seu Priorum, Præceptorum, vel Fratrum, quos id tangeret, aut deservendum Parochialibus, & aliis Ecclesiis, aut Capellis ipsius Religionis nullatenus admittantur, sed in quibuscumque Parochialibus, & aliis Ecclesiis, ac Capellis Hospitalis hujusmodi Capellani ejusdem Religionis per locorum Ordinarios sub eadem excommunicationis lætæ sententiæ pena, si contrafecerint, eo effectu incurrenda, ad requisitionem, seu presentationem dictorum Priorum, Præceptorum, & Fratrum absque aliqua exactione, & oneris impositione recipi, & admitti debeant.

§. 106. Quodque illi dumtaxat privilegii presentibus gaudeant, qui à præfato Magistro seu de ejus licentia habitum susceperint, & professionem emisissent, seu de habitu suscipiendo & professione hujusmodi emitenda infra certum tempus arctati fuerint.

§. 107. Nullusque Priorum, Præceptorum, & Fratrum, præfatorum absque mandato, seu licentia præfati Magistri, aut saltem sui Prioris, seu Procuratoris ipsius Hospitalis in dicta Curia existens, privilegiis prædictis in eadem Curia uti valeat, nec illa absque hujusmodi licentia vagantibus suffragentur.

§. 108. Ac manus violentas in eos, qui ad Ecclesias, seu Domos ejusdem Religionis pro sua salute confugerint per quempiam iniecti, sub excommunicationis lætæ sententiæ pena prohibemus.

§. 109. Ac jura mortuorum, & vacantium, necnon arrengiorum, passagiorum, & aliorum quorumcumque, ita ut quævis personæ cuiuscumque Ecclesiasticæ dignitatis existentes beneficia Hospitalis hujusmodi pro tempore obtinentes, illa solvere omnino teneantur, & adstricti sint, ac ad id etiam sub sententiis, censuris, & penis ecclesiasticis, ac aliis juxta eorumdem privilegia privationis, & apprehensionis beneficio rum ad manus suas remediis cogi possint.

1565.

Fratres Capellani presbyteris secularibus non differunt, nisi per gestacionem Crucis ad pectus.

Presbyteri Milites unum Curatum beneficium ecclesiasticum a dicto Ordine etiam si Parochialis existat redire possunt.

Res iudicata super iurisdictione, & civili possessione præfata non præjudicat nisi vocato Magistro generali.

Milites, & alie persone hospitalis, in ejus, & Religionis causis in testes recipi possunt, aliis deficientibus probationibus. Ecclesiis dicti Ordinis non nisi per Capellanos ejusdem deserviantur, qui presentati ab Ordinariis, absque alia examinatione admittantur.

Hoc declarat Pius V. cit. in rubr.

Privilegiis dumtaxat gaudeant qui habitum susceperint.

Vagabundi non gaudeant privilegiis.

Non iniiciantur manus violentas in confugientes ad Ecclesias dicti Ordinis.

Jura mortuorum, & arrengiorum, & vacantium solvi & exigi debeant quacumque exceptione non obstante.

1565.

Facultas deputandi Vicarium cum facultate conferendi beneficia, concedendi antianitates, & exigendi responsiones.

Ad hoc vide Pii V. constit. in rubr.

Dispensandi, quæ super ætate, & defectu natalium, & credatur litteris Magistris, & Conventus, ut hic.

Litteræ antianitatis, & provisionis Magistris, & Conventus eo ipso confirmata censentur.

Devolutio ad Sedem Apostolicam non datur.

Facultas deputandi procuratorem generalem in Rom. Cur. cum facultate conferendi beneficia. Tu vide Pium V. cit. in rubr.

Facultas conferendi beneficia etiam reservata, affecta, vel devoluta, etiam in titulum perpetui beneficii, vel ad nutum aut amovibilitatem.

Undique & dismembrandi, & concedendi antianitates, admittendi resignationes, ac reservandi tituli, fructus, pensiones, &c. pro resignantibus, quæ etiam transferant ad successores.

Facultas publicandi indulgentias & colligendi elemosynas Pius V. revocavit in constit. 30.

Sepeliendi in eorum Paro-

§. 110. Ac Joannotto, & pro tempore existenti Magistro, & Conventui præfatis, ut in singulis Prioratibus ipsius Hospitalis unum Vicarium cum facultate conferendi Præceptorias, & alias Domos Hospitalis huiusmodi deputare, antianitates, tam speciales quam generales dare, & concedere, ac pensiones, seu responsiones, & onera super domibus, Præceptoris, leprosariorum, & aliis beneficiis hospitalis huiusmodi imponi solita, à quibuscumque etiam clericis secularibus illa in Commendam obtinentibus, eorumque colonis, & inquilinis, etiam laicis eo modo quo à Fratibus dicti hospitalis exiguntur, exigere.

§. 111. Et cum inhabilibus ratione ætatis, & defectu natalium quoad Prioratus, Præceptorias, & alia beneficia dicti hospitalis duntaxat, dispensare possint. Ac quod verbis in ipsum Magistrum, & Conventum litteris circa professionis emissionem, habitus susceptionem, debitorum, & obsequiorum præstationem plena fides adhibeatur, facultatem concedimus.

§. 112. Et quod quæcumque litteræ antianitatis, & Conventui præfatis hucusque concessas, & in posterum concedendas, eo ipso Apostolica auctoritate confirmatæ, & approbatæ censentur.

§. 113. Et quod provisiones beneficiorum quorumcumque dicti Hospitalis, quæ per cessationem solutionis præfati Hospitalis, vel inobedientiam duntaxat vacaverint, nunquam ad nos, & Sedem præfatam devolvi censentur, quoad hoc ut dictus Magister pro tempore existens impediat, quo minus illa quodcumque libere conferre possit.

§. 114. Ac in Romana Curia Procuratorem generalem cum generali, vel speciali, aut limitata potestate, & facultate constituendi, seu deputandi, & in eadem per se, seu dictum Procuratorem ad id potestatem à Magistro, & Conventu præfatis habentem, quæcumque ejusdem Hospitalis beneficia quæcumque qualitatibus existentia apud Sedem præfatam quomodolibet, præterquam per resignationem in manibus nostris, & successorum nostrorum Romanorum Pontificum, pro tempore vacantia juxta ipsius Hospitalis, & Militiæ statuta libere conferendi.

§. 115. Et tam Magistro, quam Conventui præfatis etiam de illis, de quibus hucusque dispositum fuerit, de novo, ac aliis beneficiis huiusmodi etiam tamquam privatis præditi in titulum perpetui beneficii ecclesiastici, seu etiam ad nutum, aut amovibilitatem, uni, vel diversis personis assignari solitis, etiam dictæ Sedi reservatis, seu alias affectis, aut ad Sedem ipsam devolutis libere providendi.

§. 116. Et illa uniendi, dismembrandi, & aliàs de illis disponendi. Necnon antianitates, tam generales quam speciales, super eisdem beneficiis Fratibus ejusdem Hospitalis concedendi.

§. 117. Ac resignationes dictorum beneficiorum recipiendi, & admittendi, illaque resignantibus titulum, seu denominationem, ac omnes illorum fructus, seu illorum partem, aut super illis quæcumque pensiones annuas, quæ etiam transferant ad successores in eis, etiam sub censuris, & penis Ecclesiasticis, etiam privationis in talibus apponi solitis, ad vitam vel ad tempus reservandi, concedendi, instituendi, & assignandi.

§. 118. Ipsique Magistro, & Conventui privilegia, exemptiones, & indulgentias, eis, & dicto Hospitali concessa ubique locorum, etiam absque aliquo Ordinarii licentia, sub sigillo tamen Prioris illius Provincie, vel Conservatoris in ea degentis, publicandi, & seu elemosynas, & fraternitatum obventiones colligendi, & recipiendi.

§. 119. Necnon Cæmeteria in eorum Parochialibus Ecclesiis habendi, & quorumcumque Chri-

stifidelium cadavera, etiam si excommunicati, ac interdicti forent (dummodo interdictio causam non dederit) salvo jure Rectori Parochiano debito, absque aliquo onere, & solutione Episcopo faciendi, recipiendi, & sepeliendi.

§. 120. Legata, & donata, tam inter vivos quam qualibet ultima voluntate exigendi, & percipiendi.

§. 121. Necnon Prioribus & Præceptoribus, Militibus, Fratibus, & personis præfatis quæcumque Ecclesiastica Sacramenta, ac omnes etiam sacros ordines à quocumque maluerint Catholico Antistite, gratiam, & communionem dictæ Sedis habentæ, nihil oblatæ, vel soluto, recipiendi.

§. 122. Et tam ipsi, quam eorum familiaribus arma quæcumque, & ubicumque locorum pro sui defensione, & hostium dictæ Sedis offensione gestandi.

§. 123. Necnon Capellanis ejusdem Hospitalis, Priorum, Præceptorum, Militum, Fratrum, personarum, vassallorum, subditorum, & familiarium præfatorum concessiones audiendi, & penitentiam salutarem eis injungendi, ac Eucharistiæ, & alia Sacramenta Ecclesiastica ministrandi. Necnon tempore interdicti (dummodo illi causam non dederint) excommunicatis, & interdictis, exclusis, clausis januis, & submissa voce, Missas, & alia divina Officia celebrandi.

§. 124. Necnon quibuscumque Christianis fidelibus in quibuscumque Civitatibus, locis, Diocesis, Præceptoribus, & Domo, & Hospitalia, sub dependentia, & subjectione dicti Hospitalis, & Militiæ, per ejus Fratres, & Milites obtinenda, quæ iisdem privilegiis, immunitatibus, indulgentiis, concessionibus, & indultis, quibus aliæ dicti Hospitalis Præceptorie, Domus, & Hospitalia uterentur, fruerentur, & gaudebant, utantur, potiantur, & gaudeant, assignata illis congrua dote, Ordinariorum locorum, & quorumvis aliorum licentia minime requisita, & nulla præterea in illis Ordinariis ipsis jurisdictione, aut oneris imponendi facultate reservata, consrui, & erigi faciendi, plenam, & liberam facultatem, & auctoritatem concedimus.

§. 125. Et insuper dictis Joannotto, & pro tempore existenti Magistro, & Conventui, omnia, & singula privilegia, facultates, indulgentias, gratias, immunitates, exemptiones, libertates, concessiones, indulta præsentia quibuscumque Prioratibus, Ecclesiis, Capellis, Hospitalibus, Leprosariis, Oratoriis, Eremitariis, ac ejusdem S. Lazari Confraternitatum Confratribus, membris, & aliis locis ab eisdem Hospitali, & Militia dependentibus, ac Ministris, & servientibus in eisdem communicandi, dandi, & concedendi, ac easdem facultates impartiendi.

§. 126. Necnon quæcumque Confraternitates, & Ecclesias, Oratoria, Hospitalia, Leprosarias, Capellas, Capellanas, Altaria, & alia beneficia Ecclesiastica ubique locorum sub invocatione S. Lazari. cum reservatione annui census ad eorum beneplacitum, in membrum Hospitalis, & Militiæ S. Lazari huiusmodi erigendi, & instituendi. Ac dorem, seu dotes illis distribuendi, & assignandi, ac constitutibus huiusmodi dotes justipatronatus, & seu præsentandi personas idoneas ad illa, illorum pro tempore occurrente vacatione reservandi. Ac inibi Capellanos perpetuos, seu temporales ad ejus nutum ponendi, & destituendi. Ac ei, vel eis, cui, vel quibus sibi videbitur similem, aut limitatam potestatem concedendi, ac omnia, & singula alia faciendi, gerendi, exercendi, & exequendi, quæ ad divini cultus augmentum, ac Religionis & Militiæ conservationem, & mantutionem, ac Christianissimum spirituale consolationem in Domino cognoverint fore necessaria, & opportuna, plenam, & liberam licentiam, & facultatem concedimus, & impartimur.

§. 127. Ac omnibus Prioribus, Præceptoribus, ceterisque militibus, ac Fratibus, & Ministris etiã

1565.

chialibus etiam excommunicatis, & interdictis dummodo &c. exigendi data, & legata.

Sacramenta, & ordines, à quocumque recipiendi. Tu vide Pium V. cit. in rubr.

Arma defensionis.

Audiendi confessiones ministrandi Sacramenta, ac celebrandi divina per fratres Capellanos, etiam in tempore interdicti.

Erigendi Præceptorias, &c. absque licentia Ordinarii locorum, quæ gaudent privilegiis. Ad hac vide dictam constit. Pii V. ubi notabo.

Facultas communicandi Indulgentias, & alias gratias personis quibuscumque dicti Hospitalis, & Ecclesiis ab eo dependentibus, ac Confraternitatibus ejusdem.

Tu vide bull.

Clem. VIII. in constit. 115.

Hospitalia, &c. erigendi.

Tu vide constit. Clem. VIII. n. 99.

Facultas est
standi more
militari de
bonis etiam
ex fructibus
beneficiorum
acquisitis, &
inter quos-
cumque con-
fanguineos
inhabiles, &
dummodo
quintam par-
tem Hospitali
relinquant.

presbyteris, & beneficiis ejusdem Religionis, & Militie, ut de quibuscumque, tam stabilibus, quam mobilibus bonis pecuniarum summis, gemmis, & lapidibus pretiosis, aliisque rebus, cujuscumque qualitatibus, & quantitatibus, ac valoris existant, per eos etiam ratione beneficiorum Ecclesiasticorum quorumcumque per eos obtentorum, ac alias undecumque, & quomodolibet acquisitis, & ad illos quovis modo spectantibus (dummodo quintam illorum partem Conventui prefato relinquant) inter quoscumque confanguineos, filios etiam spurios, & alios illegitimos, aliasque quantumvis incapaces personas testari, ac alias etiam per codicillos, donatione inter vivos, causa mortis, & alia quacumque via prout sibi videbitur disponere, ac illa in pias, & non pias, (alias tamen licitas) causas erogare.

Hoc revoca-
vit Pius V. in
consilio. 73.

Celebrandi-
que in habi-
tu Pontificali
& danti be-
nedicti nem
dummodo
non sit praes-
ens aliquis
Audites, &
tunc de illius
licentia.

§. 128. Ac Priori Ecclesie dicti Conventus pro tempore existentis, ut quoties sibi placuerit Missam, & alia divina officia, in praefata, aliisque dictae Religionis Ecclesiis in habitu Pontificali, cum Mitra, & Baculo Pastoralis celebrare, ac post Missarum solemnia (dummodo ibi non sit praesens aliquis Catholicus Antistes, vel de illius consensu) ibidem benedictionem Christi Populo impartiri.

Hoc revoca-
vit Pius V. in
consilio. 73.

Milites, & alii, &c. non
incurrant
peccatum
mortale propter
regulam
non servata,
aut propter
inobedientiam,
& contumaciam
pluries
commissam,
& rebellionem
ad Religionem.

§. 129. Et insuper, quod nullus ex Magistro, & Militibus, ac Fratribus, pro tempore existentibus, aliisque personis dictae Militie, & Religionis, propter ejus regulam, capitula, ac statuta, nunc & pro tempore edita, non observata, vel minus rite adimplera in peccatum mortale incidat, praeterquam inobedientiam & contumaciam pluries commissam, & continuatam, & ab ipsa Religione rebellionem, & alios casus peccatum hujusmodi ex divinis praecipis sacrique Canonibus generantes.

Hoc revoca-
vit Pius V. in
consilio. 73.

Licentia re-
cipiendi Fra-
tres de quo-
cumque Ordine
praeter
Carthusian.
in Fratres Or-
dinis praedicti
de consensu
suorum Su-
periorum.

§. 130. Quodcumque Magister pro tempore existens dicti Hospitalis & Conventus, Fratres cujuscunque Ordinis, seu Religionis (Ordine Carthusiano dumtaxat excepto) in Fratres dicti Hospitalis recipere, & de quocumque Ordine quem antea professi erunt ad Hospitale, & Ordinem Sancti Augustini hujusmodi transferre, & ipsi sic translati in Hospitali, & Ordine Sancti Augustini hujusmodi quoad vixerint, remanere (eorundem Superiorum licentia desuper requisita) libere, & licite valeant.

Hoc non est
in consilio. Pii
V. cit. in revoca-
tum.

Indulgentia
plenaria pro
personis ejus-
dem Militie
S. Lazari in al-
iqua expedi-
tione contra
infideles, vel
haereticos de-
cedendibus.

§. 131. Et ut ipsi Milites Ecclesiae Catholicae fideliumque defensionem contra infideles animo ferventiori, minorique periculae lucis humane, si ad aeternam inde nanciscendam prospiciant, metu suscipiant, de omnipotentis Dei misericordia, ac Beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus auctoritate confisi, universis, & singulis Militibus, & aliis ejusdem Militiae personis, qui in expeditione, tam maritima, quam terrestri, contra infideles, vel Haereticos, nedum hostilibus armis, sed etiam aliquo quovis mortis genere, de peccatis suis corde contriti, & ore confessi, vel saltem statuti a jure temporibus confitendi propositum habentes in unitate fidei Catholicae decesserint.

Hoc non est
in consilio. Pii
V. cit. in revoca-
tum.

Indulgentia
plenaria ad
infirmitatem bene-
factorum Ho-

§. 132. Ac tam Militibus, & personis praefatis, quam quibuscumque aliis utriusque sexus etiam vere poenitentibus, & confessis, seu confitendi propositum habentibus, ut praefertur, qui Ecclesias, Conventus, & Hospitalia hujusmodi ubicumque existentia, in singulo die festivitatis illius Sancti sub cuius invocatione consecrata fuerint, a primis vespere usque ad occasum solis festivitatis hujusmodi annuatim devote visitaverint, ac pro pace inter Principes Christianos conservanda ter Orationem Dominicam & totidem Angelicam Salutationem recitaverint, plenariam omnium, & singulorum peccatorum suorum Indulgentiam, & remissionem.

Hoc non est
in consilio. Pii
V. cit. in revoca-
tum.

Indulgentia
plenaria ad
infirmitatem bene-
factorum Ho-

§. 133. Qui vero de bonis sibi à Deo collatis unam ejusdem Militiae Commendam fundaverint, vel dotaverint, aut Conventui, & Militiae praefatis

Hoc non est
in consilio. Pii
V. cit. in revoca-
tum.

spitalis S. Spiritus omni-
bus fundan-
tibus unam
Ecclesiam seu
Cappellam
dictae Reli-
gionis, vel
alias benefa-
cientibus.

Hoc revoca-
vit Pius V. in
consilio. 30.

Taxatio elec-
tionis pro-
ingrediendi
bus C. fra-
ternitatem.

Hoc revoca-
vit Clemens
VIII. in con-
silio. 115.

Concessio e-
ligendi Con-
fessionem cum
facultatem
absolvendi
semel in vita
singulo anno
in festo S. La-
zari, ab omni-
bus excommu-
nicatis, & re-
vocationem vid.
in dictum
Clem. VIII.
consilio. 115.

Ac votorum
& discur
Dominico-
rum &c. &
ab omni Ec-
clesiae man-
datorum trans-
gressio-
nibus.

Item ab om-
nibus pecca-
tis, & crimi-
nibus praeter-
quam con-
fessionis in Bul-
la in Cena
Domini quon-
iam legi con-
tra. Revoca-
tionem habes
in dicta
consilio Clem.
VIII. 115.

Ac votorum
& discur
Dominico-
rum &c. &
ab omni Ec-
clesiae man-
datorum trans-
gressio-
nibus.

rem, delicti, & voti hujuscemodi, ac contentis qualitate pensata arbitrandum, in capla pro indulgentia dicti Hospitalis colligenda per ejus Commissarios deputanda, ad commodum, & utilitatem dicti Hospitalis, & Militie perfolveri faciat, conscientiam dicti Confessoris super id onerantes. Quodque idem Confessor sic electus cum eisdem Confratribus eum in Confessorem eligentibus cunctosque dignitatis, status, gradus, ordinis, conditionis, & praeeminentiae fuerint Clericali Militie adscriptis etiam Religiosis etiam quacunque beneficia Ecclesiastica obtinentibus, qui praemissis sententia ligati, Missas, & alia divina officia celebrando, aut se illis alias immiscendo, vel alias quomodolibet irregularitatem contraxerint (bigamia, & homicidio voluntario dumtaxat exceptis) ut ad omnes superiores, etiam sacros ordines promoveri, & in illis, ac per eos susceptis ordinibus hujusmodi etiam in altaris ministerio ministrare, ac dignitates, beneficia Ecclesiastica quacunque se invicem comparentia retinere, & recipere, necnon Monasteriis, & Ecclesiis Cathedralibus, etiam Metropolitanis, ac Patriarchalibus praefici, & praesse, libere, & licite possint dispensare, ac eis de illis, quae tunc detinerent dignitatibus, & beneficiis hujusmodi providere, & eis quibus minus Canonice praerunt Ecclesiis, & Monasteriis hujusmodi praeficere, (in foro conscientiae dumtaxat) praefata auctoritate Apostolica valeat.

§. 138. Et insuper si iidem Confratres ut supra in dicta Confraternitate descripti; tempore interdicti quovis modo à Sede Apostolica impositi à vita decesserint, illorum cadavera (absque tamen funerali pompa) Ecclesiastica sepulturae traditi possint, dummodo causam non dederint interdicto.

§. 139. Necnon Quadragesimalibus, & aliis temporibus, & diebus Stationum Urbis Romae, unam vel duas Ecclesias, ac unum, vel duo altaria visitando in partibus, in quibus illos residere contigerit, eisdem gratias, indulgentias, & remissiones peccatorum consequantur, seu consequi possint, quas si dictis diebus, & temporibus, Basilicas, & Ecclesias Stationum Urbis Romae, & extra eam ad id deputatas personaliter visitarent.

§. 140. Praeterea Quadragesimalibus, & aliis temporibus, & diebus, quibus usus ovorum, butyri, & aliorum lacticiniorum de jure, consuetudine, vel alias quovis modo prohibitus existit, eisdem ovis, caseo, butyro, & aliis lacticiniis de consilio alterius necnon carnis tempore necessitatis tantum, & de utriusque Medici consilio vesci.

§. 141. Necnon mulieribus in Confraternitate ipsa descriptis, etiam si viduae remanserint, ut cum una, seu duabus honestis mulieribus quacunque Monasteria Monialium cujuscvis Ordinis, etiam S. Clara, vel licentia eorumdem Monasteriorum, Abbatissarum, seu Priorissarum, quater quolibet anno ingredi, & cum eisdem Monialibus loqui, & conversari, & refectionem corporalem (sumere dummodo ibidem non pernoctent) possint, & valeant.

§. 142. Quodque est primum ipsi Confratres in praefata Confraternitate describentur, omnibus, & singulis privilegiis, indulgentiis spiritualibus, & temporalibus, per nos, & alios praedecessores nostros praefatis Hospitali Sancti Spiritus in Saxia de Urbe, necnon illius Confratribus quibus inter cetera concessum existit.

§. 143. Ut quicumque poenitens, & contritus nomen JESU in mortis articulo nominaverit, plenariam peccatorum, suorum etiam de quibus nisi morte praeveniretur, confiteretur, remissionem consequatur.

§. 144. Necnon jejuniiis, vigiliis, orationibus, peregrinationibus Terrae Sanctae, & indulgentiis plenissimi S. Jubilei anni quinquagenarii, & Stationum, & Dedicationum Sanctae Romanae Ecclesiae,

à bonis omnibus, quae sunt in eodem sacro Hospitali, ac universali sacrosancta militante Ecclesia, quibus ceteri Confratres potiuntur, & in futurum gavisi sunt, uti, potiri, gaudere, & participare debeant.

§. 145. Et si infra annum obierint, plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam consequantur. Et si vixerint, praeter Stationes Urbis, infra scriptis etiam diebus sequentes indulgentias consequentur, videlicet singulis diebus vitae eorum, & per omnes dies Veneris totius anni, unius anni, & quadraginta dierum, in singulis Apostolorum festivitatis duorum millium annorum, in Festo Epiphaniae, & singulis diebus post Octavam centum millium annorum, in Dominica qua cantatur pro Introitu Missae, Omnis terra; de mense Januarii, & singulis diebus Dominicis mensium totius anni trium millium annorum, & totidem quadragenarum, & remissionem tertiae partis omnium peccatorum; in festivitatis Domini nostri JESU Christi, videlicet, Nativitatis, Resurrectionis, Ascensionis, & singulis diebus per Octavam duorum millium annorum, & octingentarum quadragenarum, in festo Pentecostes, & singulis diebus post Octavam octo millium annorum, & totidem quadragenarum in festo Corporis Christi, & singulis diebus post Octavam duorum millium annorum, & septima partis omnium peccatorum, in festo Nativitatis Beatae Mariae, & singulis diebus per ejus Octavam triginta millium annorum; in festo omnium Sanctorum, & singulis diebus usque ad festum Sancti Leonardi trium millium annorum, & totidem quadragenarum.

§. 146. Largientibus vero, seu transmittentibus, vel in eorum ultimis voluntatibus, vel testamentis legantibus aliquid de bonis suis eidem Hospitali in articulo mortis, plenariam à culpa, & à poena omnium peccatorum suorum remissionem, & indulgentiam. Ac cuicunque animae, quae unita Christo in charitate ab hac luce migraverit, in Purgatorio existenti, pro qua anima elemosyna per ipsum Magistrum, & Conventum, seu ab eis deputatos taxanda eidem Hospitali erogabitur, ut eandem indulgentiam plenariam à poena, & à culpa (quantum pietatis majestatis divinae placuerit) consequatur, concedimus, & indulgemus.

§. 147. Notariis vero, qui rogati fuerint de testamentis, vel aliis ultimis voluntatibus, in quibus aliquid disponi contigerit in favorem, & commodum eorumdem Hospitalis, & Militie, ut sub excommunicationis poena dispositionem hujusmodi, quanto citius commode poterint, Magistro, & Conventui dicti Hospitalis, vel alteri per quem id poterit ad ipsum Magistrum, & Conventum notitiam pervenire, intimare curent.

§. 148. Ipsi quoque Notarii, & Confessoribus eorumdem decedentium in suorum remissionem peccatorum eisdem testantibus, & contentibus commemorare non omittant, ut ad tam pia opera, quae in dicta Religione exercent manus porrigant adiutrices, praecipimus. Et quoscunque Christianifideles, ac praesertim Confratres Confraternitatis hujusmodi pro tempore existentes ad id per viscera misericordiae Domini Nostri JESU Christi hortamur.

§. 149. Quodque decedentes pro tempore in Hospitali, praefato, & Hospitalis, ac pauperum Leprosorum eorumdem obsequiis pro tempore insistentes, utriusque sexus quamdiu perseveraverint in obsequiis hujusmodi dumtaxat, eisdem omnibus privilegiis, facultatibus, & gratiis, quibus Confratres in libro Hospitalis hujusmodi descripti pro tempore potiuntur, & gaudebunt.

§. 150. Quodque Magister pro tempore, & Conventus dicti Hospitalis, siquae de eorum licentia pro tempore, legitimi Commissarii, Nuncii, vel Procuratores, de usuris, rapinis, incendiis, (non tamen Ecclesiarum damnis datis,) & alio quoque nomine, titulo, vel modo male

Decedente infra annum &c. indulg. consequuntur.) Ad haec vide dictam bull. Clem. VIII.

Donantes aliquid Hospitali plenariam habet indulg. Sed revocavit Pius V. in cons. 30.

Notarii notificent legata facta Hospitali & Militie.

Notarii, & Confessores, & Confratres hortentur infirmos ad subvenientium huic Religioni.

Decedentes in Hospitali, & insistentes obsequiis Hospitalis, gaudent omnibus privilegiis Confraternitatis. M. Magistri facultas componendi de usuris, rapinis, incendiis, in iunctis poenitentis, legatis Hospitali, vel ejus membris de bitis, & relictis ad pios usus.

ablati,

Mortuos sepeliendi in Ecclesiis Ordinibus.

Stationes Urbis concedendi. Tu vide dict. Bullam Clem. VIII. nu. 115.

Ova & lacticia, & carnes comedenda.

Mulieribus Ordinibus Monasteria ingredi permittitur. Revocavit Gregor. XIII. in cons. 28.

Personae Ordinibus gaudet gratiis Hospitalis S. Spiritus de Urbe cui inter alia licet quod contritum in articulo mortis Indulgentiam consequantur. Tu vide dict. Bullam Clem. VIII. nu. 115.

Jejuniiis, &c. Terrae Sanctae gaudet. Tu vide ibid.

Hoc non est
in constit.
Præd. cit. in
rub. ergo pu-
tum.

Facultas pu-
blica si In-
dulgentiis.
Tu vide
const. Pii V
nu. 30. Et si.

Confrate-
riaque insti-
tuendi.
Tu serva
const. 115.
Clem. VIII.

Omnia loca
sub invocac-
tione S. La-
zari sint huius
Ordinis sub-
jecta.

Ejusque pri-
vilegiis utan-
tur.

Priores Hof-
pitalium S.
Lazari quan-
do possint In-
dulgentiis pu-
blicare.

Confessio-
nesque audi-
re. vel Con-
fessores de-
putare.

Hoc intelli-
git de anno-
batiis ab Or-
dinaris ut in
const. Pii V.
cit. in rub.

ablati, vel illicite acquisitis (si tamen verus domi-
nus, cui eorum restitutio fieri deberet, ignoretur, de
penitentis à Sacerdotibus constitutis impositis
redimendis, seu commutandis. Necnon legatis ad
Hospitale ipsum, seu ejus membra debitis, vel alias
indistincte ad pios usus relictis ad utilitatem ipsius
Hospitalitatis, & Militiæ componere possint, ita
quod detinentes ad aliam restitutionem minime
teneantur.

§. 157. Necnon quod singulis annis in die Do-
minica Palmarum usque ad ejus Octavam inclusive,
& in die festo Nativitatis S. D. N. JESU CHRISTI,
& aliis diebus beneficis Magistro, & Conventui, &
eorum Commissariis, quibuscumque Christifidelibus
manus adjuvantes pro sustentatione dictæ Reli-
gionis, ejusque membrorum porrigentibus, indul-
gentias plenarias, & generales peccatorum omnium
remissiones ubique solemniter, etiam cum processio-
ne, & appositione truncorum, & Crucis, in medio
Ecclesiæ, publicare, & impartiri. Penitentia-
rios cum virgis (ut moris est) desuper deputare, &
alia facere, quæ circa hujusmodi facultatum, &
indulgentiarum, ac peccatorum remissionem, exe-
cutionem, & confessionem quomodolibet necessa-
ria, & opportuna fuerint.

§. 152. Quodque antiquas, & novas sanctas
Confraternitas S. Lazari omni tempore, & in quibus-
cumque locis erigere, ordinare & instituire, ac pu-
blicari facere, ac quoscumque Christifideles in Con-
fraternis recipere, illisque Confessionalia concedere.
Ita quod quæcumque institutiones, erectiones, &
ordinationes dictarum Confraternitatum absque
moderni, & pro tempore existentis Magistri dicti
Hospitalis expresse consensu in membris, Ecclesiis,
& locis hujusmodi pro tempore factæ, nullius sint
roboris, vel momenti.

§. 153. Ac omnia, & singula Hospitalia, Ora-
toria, Ecclesias, Capellas, Altaria, & loca Reli-
gionis, & militiæ hujusmodi in quibuscumque par-
tibus existentia, sub invocatione Sancti Lazari in-
titulata, etiam si non sint possessa, vel recepta per
Magistram, & Fratres præfatos nihilominus mo-
derno, & pro tempore existentis Magistro Generali,
& Conventui hujusmodi subjecta, & tamquam
membra dicti Hospitalis ab eo dependentia (ad in-
star aliorum annuatum respectue contribuentium)
contributorias, & contributoria esse; ac per ipsum
generalem Magistrum, & Conventum, seu eorum
legitimos Commissarios visitari, & reformari;
illorumque Rectores, & Gubernatores (si de jure
amovendi fuerint) amoveri: & alia personæ ido-
neæ loco eorum deputari possint.

§. 154. Et cum eis Confratribus tantum, ut
commodius Altissimo deservire possint, omnibus,
& singulis facultatibus, privilegiis, immunitati-
bus, gratiis, plenariis indulgentiis, & peccato-
rum remissionibus prædictis, quocumque tempo-
re, & in quibuscumque locis libere uti, etiam in
illis partibus, & locis, in quibus Indulgentiæ pro
Fabrica Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe
publicatæ extiterint.

§. 155. Necnon quod Priores, & Præceptores
quoruncumque Hospitalium, & domorum, à dicto
Hospitali Sancti Lazari dependentium, & illud in
caput suum recognoscendum, prædictam plenariam
indulgentiam, & peccatorum generalem remissio-
nem in die festo Dominicæ Palmarum, & per ejus
Octavam, & aliis beneficis diebus, ut supra, pu-
blicare.

§. 156. Et si in Sacerdotio constituti fuerint,
per se vel alium, seu alios probos, si vero Sacerdo-
tes non fuerint, per alios probos idoneos, & ho-
nestos, viros saculares, vel cuiusvis Ordinis Re-
gulares Sacerdotes in suis Hospitalibus, ac domibus
præfatis tantum, confessiones quoruncumque audi-
re, & cum hujusmodi constitutis quibuscum-
que facultatibus, & Indulgentiis, ac peccatorum
remissionibus uti, ac eisdem illis (de licentia tamen
expressa Magistri pro tempore existentis, & Con-

ventus præfati Hospitalis singulis annis renovanda)
impartiri plene & libere possint, aliis vero tempo-
ribus sint sicuti alii Sacerdotes nullam à Sede præ-
fata facultatem habentes.

§. 157. Possint tamen collectas solitas, & con-
suetas Nolis, & Campanellis sonantibus (citra
tamen publicationem Indulgentiarum, ac traditio-
nem Confessionarium) omni tempore, in terminis
suis (de licentia Magistri pro tempore, & Con-
ventus hujusmodi singulis annis renovanda, & non
aliter) facere.

§. 158. Ac Nolas, seu Campanas Porcis, seu aliis
quibusvis animalibus, quæ eidem S. Lazaro offerri
contigerit, appendere, seu aliqua nota subfiguare.

§. 159. Quodque Magister, & Conventus, ac
Commissarii præfati, etiam in locis, in quibus fra-
tres Ordinis Minorum de Observantia, vel Com-
missarii Apostolici pro Fabrica Basilicæ hujusmodi
pro tempore deputati fuerint, quascumque facul-
tates, & indulgentias solemniter ubique cum appo-
sitione truncorum, & Crucis in Ecclesiis publicare,
& facultatibus, privilegiis, & gratiis ipsi Hospitali
concessis uti.

§. 160. Necnon quod durante quacumque sus-
pensione temporali indulgentiarum, & gratiarum,
etiam pro Cruciatu contra Infideles cuicumque Im-
peratorum, Regi, aut Principi Christiano concessa-
rum, vel in posterum concedendarum, Indulgentiæ
enim plenariæ, ac omnes facultates, & gratiæ ei-
dem Hospitali, illiusque Magistro, Conventui, Fra-
tribus, & membris per prædecessores nostros, &
nostros, ac etiam Sedem præfata concessæ non
intelligantur suspensæ, sed in suo pristino, & vero
valore & firmitate existant, & permaneant.

§. 161. Necnon etiam ob reverentiam Sancti
Lazari, ut liceat ipsis Fratribus in eorum Ecclesiis
Missas, & alia quæcumque divina officia legere, vel
etiam alta voce celebrare, vel per alios presbyteros
idoneos celebrari facere.

§. 162. Ac omnibus, & singulis Christifidelibus,
& Leprosis, pauperibus, infirmis in dictis Hospi-
talibus pro tempore degentibus Ecclesiastica Sacra-
menta ministrare.

§. 163. Ac eorum, & aliorum quoruncumque
fidelium Corpora mortuorum id eligentium, &
petentium, in Cæmeteriis, & Ecclesiis dictorum
Fratrum Ecclesiasticæ tradi sepulture.

§. 164. Ac verbum Dei in Ecclesiis ipsorum,
pauperibus ipsis, & Leprosis hujusmodi propone-
re, & proponi facere, quoties eis visum fuerit ex-
pedire, alicujus licentia super hoc minime requi-
sitâ, similiter volumus, & ordinamus.

§. 165. Et insuper eisdem moderno, & pro tem-
pore existentis Magistro, & Conventui, ac
singulis Militibus, & aliis personis Hospitalis, &
Militiæ hujusmodi quod omnibus, & singulis pri-
vilegiis, immunitatibus, jurisdictionibus, & exemp-
tionibus, etiam per viam executionis in ipsa one-
rum impositione, dispensationibus, indultis, con-
cessionibus, dispositionibus, honoribus, gratiis, li-
bertatibus, favoribus, antelationibus, restitutioni-
bus, reintegrationibus, & aliis quibusvis gratiis
hucusque S. Joannis Hierosolymitani, S. Jacobi de
Spata, S. Stephani Militiis, ac Sancti Spiritus in
Saxia de Urbe, & S. Antonii Viennensis Hospitali-
bus, Religionibus, & Ordinibus, eorumque locis,
personis, rebus, & bonis per quoscumque Romanos
Pontifices, etiam prædecessores nostros, ac etiam
per nos, & Sedem præfata, vel Concilia generalia,
vel alios quoscumque, in genere, vel in specie,
etiam ad Imperatorum, Regum, ac aliorum Princi-
pum instantiam, vel Motu proprio, aut alias quo-
modolibet concessis, & in futurum concedendis
& quibus Hospitalia, Religiones, & Militiæ hujusmodi,
ac eorum Magni Magistri, Conventus, Fratres, & Mi-
lites utuntur, & potiuntur, & gaudent, ac uti po-
tuerunt quomodolibet in futurum pariformiter, & absq-
ulla penitus differentia uti, potiri, & gaudere in om-
nibus & per omnia, libere, & licite valeant eisdem

Eleemosynas
Nolis sonan-
tibus collige-
re.

Nolas anima-
libus sublati
appendere.

Indulgentias
ubique pu-
blicare.

Quæ Indul-
gentiæ non in-
telligantur um-
quam sus-
pensi.

Fratres pos-
sint in eorum
Ecclesiis di-
vina celebra-
re.

Sacramenta
infirmis Hos-
pitalium mi-
nistrare.

Mortuos se-
pulture.

Eisdem ver-
bum Dei
prædicare.

Concessio
quoruncum-
que aliorum
privilegio-
rum, gratia-
rum, exemp-
tionum, &
aliorum fa-
cultatum ha-
ctenus con-
cessarum, vel
in futurum
concedenda-
rum Hospi-
talibus, & Mi-
litiis respec-
tive S. Joan-
nis Hierosol-
ymitani, S.
Jacobi de
Spata, S. An-
tonii Vienn-
ensis, S. Spi-
ritus de Ur-
be ac S. Ste-
phani in
Thulcia,
dummodo
Concil. Trid.
non repu-
gent, & ju-
ribus alterius
tertiis non
præjudicent.

auâoritate, & tenore etiam perpetuo concedimus, & indulgemus; ac ea omnia, & singula, prout concessa fuerunt, & in dies concedentur, eorumque omnium, & quorumcumque litterarum desuper quomodolibet concessarum tenores, ac si de verbo ad verbum infererentur, præsentibus pro expressis, & insertis habentes, eisdem moderno, & pro tempore existentibus Magno Magistro, & Conventui, ac Hospitali S. Lazari, & Militiæ, eorumque Militibus, & personis, ac eorum Hospitalibus, Præceptoribus, domibus, Leprosariis, beneficiis, capellis, Ecclesiis, locis, rebus, & bonis, elargimur, ac concessa esse, & eos illis ubilibet, in genere, vel specie uti, potiri, & gaudere, libere posse volumus, decernimus, & declaramus. Ordinarios locorum, aut cuiusvis alterius licentia, vel consensu desuper minime requisitis. Ita quod super illis, vel eorum occasione per ipsos Ordinarios, aut quosvis alios molestari, perturbari, vel inquietari non possit, dummodo Concilio Tridentino prædicto non repugnent, & dictis Hospitalibus, & Militiis, ac iuribus cuiusvis alterius tertii non præjudicent. Ita tamen (quoad exemptiones) iurisdicção Ordinarium, tam ea quæ de jure communi eis competit, quam quæ ex decretis dicti Concilii Tridentini eisdem est attributa, semper salva existat.

§. 166. Præterquam tamen in iis casibus, in quibus Concilium præfatum expresse exceptit, & exemit Religionem S. Joannis Hierosolymitani, in quibus & hæc Sancti Lazari Religio, & Militia excepta & exempta pariter intelligatur.

§. 167. Et quod Indulgentias, prout Hospitali S. Spiritus concessæ sunt, & in futurum concedentur, concedimus, & elargimur.

§. 168. Præterea volumus, & decernimus, quod tam præsentium quam aliarum quarumcumque litterarum Apostolicarum, seu earum transumpti, ac mandatorum Magistri, & Conventus prætorum publicatio, & affixio in singulis Prioratibus, Præceptoris membris, & beneficiis Religionis hujusmodi factæ, perinde ardeant, ac si contra contentos sub eisdem personaliter factæ essent, factæ tamen in primis diligentia de illis personaliter reperendis in dictis locis.

§. 169. Et nihilominus statuimus, ac dictis Magistro, & Conventui perpetuo concedimus, quod si quicumque Priorum, Præceptorum, Militum, & Fratrum dicti Hospitalis Crucem, vel habitum extra dictum Conventum etiam à Romano Pontifice, vel de ejus licentia receptum gestans intra annum, postquam illum suscepit, aut sibi de Prioratu, Præceptoratu, officio, vel beneficio Hospitalis hujusmodi provissum, vel alias in ejus favorem dispositum fuerit.

§. 170. Ac quicumque alius dictæ Militiæ beneficium, vel pensionem obtinens, aut fructus percipiens, quodcumque pro servitiis Religionis, aut alias evocatus, seu in solutione jurium communis ærarii morosus fuerit, & citatus corâ dictis Magistro, & Conventu personaliter non comparuerit, ac illis obedientiam, aliaque jura debita non præstiterit, tempore sibi ad id præfigendo elapso, habitu, dignitate, administratione, & beneficio, ac quocumque honore, & officio, alias juxta formam stabilitamentorum, & privilegiorum prædictorum, eo ipso careat, privatusque censeatur, seu si videbitur privari possit.

§. 171. Nec ulla hujus statuti derogatio, aut exemptio realis, vel personalis, seu alia gratia præservativa, etiam Motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus quomodolibet pro tempore facta, seu concessa, contra præmissa valeat.

§. 172. Nec Magister, & Conventus præfati illis parere teneantur, sed illis non obstantibus de Prioratu, Præceptoratu, dignitate, officio, vel beneficio, sic, aut per privationem hujusmodi vacante, juxta stabilitamenta, & alia præmissa libere disponi, aut illa alias per eum, vel eos, ad quem, seu quos antianitatis, vel alio jure pertinet, acceptari possint.

§. 173. Decernentes omnia, & singula præmissa, ac præsentibus nostras litteras nullo unquam tempore

de subreptionis, vel obreptionis, aut nullitatis vitio, seu intencionis nostræ defectu notari, vel impugnari, aut argui posse, neque illa, omnia, & singula præmissa, tamquam eisdem Magno Magistro, & Conventui, Militiæ, vel Militibus, partim videlicet quoad antiqua restituta, & quoad nova ex causa onerosa concessa, sub quibusvis, tam præsentium, quam similium, vel dissimilium gratiarum in genere, vel in specie, suspensionibus, ac derogationibus, revocationibus, limitationibus, alterationibus, aliisque contrariis dispositionibus à nobis, & à successoribus nostris, & à Sede præfata quavis de causa quantumlibet iustissima pro tempore emanatis comprehendere, sed semper ab illis excepta, & quoties illa emanabunt, toties in pristinum statum restituta, & de novo etiam sub Data per Magnum Magistrum eligenda, concessa esse, & censer. Necnon præmissis, ac præsentibus litteris etiam per quascumque litteras Apostolicas, etiam quasvis clausulas generales, vel speciales, etiam derogatorias derogatorias, efficaciores, & insolitas, ac etiam irritantia decreta, sub quacumque verborum expressione in se continentibus, nullatenus derogari posse, nec quoad illa derogatum censer, nisi tenor illarum de verbo ad verbum nihil penitus omisso insertus & hujusmodi derogationes Consistorialiter factæ, & per trinas distinctas litteras eundem tenorem continentes tribus distinctis similibus vicibus Magno Magistro, & Conventui præfatis intimari, & infirmari fuerint, ac ipsorum Magistri, & Conventus ad id expressus accedat assensus, & aliter factas derogationes nemini suffragari, ac Magistrum, & Conventum præfatos ad parendum litteris derogatoriis hujusmodi, & decretis super illis processibus, ac illorum Executoribus, & Sub-executoribus, eorumque mandatis, & monitionibus minime teneri, sed illos litterarum hujusmodi executionem omnino impedire, nec ratione resistentie censuris Ecclesiasticis per eosdem Executores, vel Sub-executores latis innodare posse.

§. 174. Et sic in præmissis, omnibus, & singulis, per quoscumque Judices, & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, etiam S. R. E. Cardinales, & causarum Palatii Apostolici Auditores, sublati eis, & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi, & interpretandi facultate, iudicari, & definiti debere. Et quicquid seorsus super his à quocumque quavis auctoritate, scienter, vel ignoranter attentari contigerit, irritum, & inane decernimus.

§. 175. Quocirca venerabilibus Fratribus nostris Galcinensis & Montisfalconensis Episcopis, ac pro tempore existentibus Curie causarum Camera Apostolicæ generali Auditori per Apostolica scripta Motu simili mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum per se, vel alium, seu alios præfatos litteras, & in eis contenta quacumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Magistri, Priorum, Præceptorum, Militum, & Fratrum S. Lazari prædictorum, seu alicujus eorum desuper fuerint requisiti solemniter publicantes, eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra præfatas litteras, & in eis contenta hujusmodi firmiter observari. Ac eandem Militiam, & Magistrum, & Conventum Fratres, Religiosos, omnesque & singulos alios quos ipsæ præfates litteræ concernunt, illis pacifice gaudere. Non permittentes eos, vel eorum aliquem desuper contra præsentium tenorem quomodolibet molestari, perturbari, vel impediri. Contradiçtores, & rebelles quoslibet per censuras, & penas ecclesiasticas, & etiam pecuniarias eorum arbitrio moderandas, ac alia opportuna juris, & facti remedia, appellatione postposita compellendo, ac quoscumque, quorum intererit, etiam per edictum publicum locis publicis affigendum, consilio summariæ de non tuto accessu citando, ac quibus, & quoties inhibendum fuerit etiam simili edicto sub eisdem penis, & censuris inhibendo, ipsasque censuras, & penas ecclesiasticas etiam iteratis

Exemptio
hujus Reli-
gionis in om-
nibus casibus
ubi Conc.
Trid. excipit
Religionem
S. Joannis
Hierosolym.
Concessio
Indulgentiarum
Hospitali
S. Spiritus
de Urbe.

Publicatio
privilegio-
rum, & man-
datorum M.
Magistri ar-
det, ac si ef-
fet persona-
liter execu-
ta.

Suscipientes
habitu extra
Conventum
etiam à
Rom. Pont.
infra annum
in Conventu
comparere
teneantur,
alias priven-
tur.

Possidentes
beneficia di-
cti Ordinis,
vel fructus
aut pensiones
percipientes
vocati com-
parere tene-
antur.

Nulla exemptio
valens
adversus
obedientiam
M. Magistri,
quo minus
vocati com-
parere tene-
antur.

Magister, &
Conventus
possint dispo-
nere de be-
neficiis va-
cantibus per
privacionem.
Claufulæ hu-
jus constitu-

Decretum ir-
ritans, &
clausula sub-
lata.

Executores
hujus consti-
tutionis,
et eorumque
facultates.

Clausula
concretior
& obstanti
derogatoria.

vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit auxilio brachii secularis.

§. 176. Non obstantibus præmissis, ac fel. record. Bonifacii Papæ VIII. Prædecessoris nostri, qua cavetur, ne quis extra suam Civitatem, vel Diocesim, nisi in ceteris exceptis casibus, & in illis ultra unam dietam à ne suæ Diocesis ad iudicium evocetur, seu ne Iudices à Sede præfata deputati, extra Civitatem, vel Diocesim, in quibus deputati fuerint, contra quoscumque procedere, aut alii, vel aliis vires suas committere præsumant, & de duabus dietis in Concilio generali edita, dummodo ultra tres dietas, aliquis auctoritate præsentium ad iudicium non trahatur, ac Lateranensis Concilii novissime celebrati. Ac nostris de unionibus committendis ad partes vocatis quorum interest, & exprimendo valore fructuum, tam uniendorum beneficiorum, quam eorum quibus fit unio. Necnon de non expediendis litteris reservationis alicujus pensionis, nisi de consensu illam solvere tunc habentis, ac quibuscumque aliis Apostolicis, ac in Provincialibus, & Synodalibus Conciliis editis generalibus, vel specialibus, constitutionibus, & ordinationibus, ac dictorum Hospitalium, Militiarum, & Ordinum etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, stabilimentis, usibus, & narratis, ac quibuscumque privilegiis, indultis, ac litteris Apostolicis, etiam Ordinariis, & aliis Militiis præfatis, ac quibuscumque Ecclesiis, Monasteriis, Ordinibus & locis etiam Fabricæ Basilicæ S. Petri de Urbe, ac Cruciatæ sanctæ, eorumque personis sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque clausulis, & decretis etiam ad Imperatorem, Regum, Reginarum, Ducum, & aliorum instantiam, etiam consistorialiter, & Motu simili, & alias quomodolibet, etiam per nos, etiam pluries concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, etiam si de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, individua & expressa, non autem per clausulas generales id importantes mentio, seu quævis alia expressio habenda foret, illorum tenores, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata, inserti forent, præsentibus pro sufficienter expressis, & insertis habentis, illis alias in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse pari Motu derogamus, & sufficienter derogatum esse decernimus, contrariis quibuscumque, ac si aliquibus communiter, vel diversim, ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspensi, vel excommunicati non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§. 177. Et quoniam per præsentis Concilii Tridentini constitutionibus, & decretis in aliquo præjudicare non intendimus, volumus, quod in omnibus, & singulis gratiarum, alisque capitibus præmissis clausula (dummodo Concilio Tridentino non repugnet) apposta, & repetita censeatur.

§. 178. Verum quia difficile foret, præsentis litteras ad varia loca ubi de illis docendum fuerit, circumferre, volumus & dicta auctoritate Apostolica decernimus, quod præsentium transumptis, etiam per impressionem factis, ac prædicti Joannotti, & pro tempore existentis Magni Magistri dicti Hospitalis, & Conventus sigillo munitis, ac ejusdem Joannotti, & pro tempore existentis Magni Magistri, & Conventus Secretarii seu Regentis Cancellariæ dictæ militiæ manu subscriptis: dictisque suis litteris absque eorumdem præsentium, in toto, vel in parte infusione, eam ubique fidem in iudicio, & extra adhiberi, qui ipsi præsentibus adhiberetur, si originaliter exhiberentur.

§. 179. Quodque in litteris, seu gratiis præsentium vigore concedendis, eadem præsentis inferre iidem Joannottus, & pro tempore existens Magnus Magister, & Conventus minime teneantur: ac gratiæ ipsæ quibuscumque personis pro Joannottum

& pro tempore existentem Magnum Magistrum, & Conventum huiusmodi, juxta tenorem eorumdem litterarum pro tempore concessæ valeant, & illi suffragentur, in omnibus, & per omnia, perinde ac si eadem præsentis litteræ de verbo ad verbum in eis insertæ forent.

§. 180. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ absolutionis, approbationis, confirmationis, concessionis, extensionis, ampliationis, decreti, restitutionis, repositionis, reintegrationis, declarationis, revocationis, cassationis, irrotationis, annulationis, erectionis, institutionis, statuti, ordinationis, indulti, impartitionis, dispensationis, liberationis, exemptionis, subjectionis, mandati, deputationis, monitionis, requisitionis, promulgationis, reductionis, elargitionis, intentionis, voluntatis, avocationis, & derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit indignationem Omnipotentis DEI, ac beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursum.

Datum Romæ apud S. Petrum Anno Incarnationis Dominicæ 1565. 4. Non. Maji, Pontificatus nostri Anno 6.

Nuntii Apostolici, & alii ad Principes destinati favores ab eis procurare, aut illis uti nequeant, ad obtinendas dignitates apud Sedem Apostolicam ipsis vel eorum consanguineis, & necessariis conferendas.

PIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad futuram rei
memoriam.

ET si Romanus Pontifex, quem Dominus Omnipotens in persona Principis Apostolorum Ecclesiæ militanti sponsæ suæ præficere dignatus est, in ejus universo corpore à noxiis, quæ passim in illud irrepunt præservando, plurimum decet esse sollicitum, in hoc tamen eum multo magis vigilare necesse est, ne per importunum suorum propriorum Ministrorum qui frequenter ab ejus latere ad diversos Orbis Principes peregre mitti solent, ambitum, dum videlicet eorum nonnulli ordinario cursu ad dignitates qualibet anhelant, & ad hoc Principum favorem demerendo, Pontificiam, & Ecclesiæ pro qua missi fuerunt causam, vel impudenter prode, vel certe remissis agere non verentur, genuinis ille clericalis candor deturpetur, debitus Prælatorum pudor inter laicos requiratur, integritatis antiqua persuasio minuatur & ob illorum fluxam fidem immoderatamque cupiditatem Ecclesiasticus ordo scandalose blasphematur.

§. 1. Sanè considerantes quod annis præteritis aliqui quorundam Pontificum prædecessorum nostrorum, ac etiam nostri, & Apostolicæ Sedis Nuntii ad diversos Principes faculares, etiam pro feriis, gravibusque dictæ Sedis negotiis missi, muneris sui, decorisque nimium obliiti deestandam prælaturarum, aliorumque Ecclesiasticorum, atque adeo Cardinalatus honorum ambitionem collapsi, ad illos alia qualibet quam sanctissima Aaronis via pervenire fatigantes, commendatitias super hoc litteras, & indebitos favores ab ipsis Principibus emendicare non erubuerunt, & quod eis recto tramite gradiendo non dabatur, assiduis, & quibus non obsequi difficile fuisset Principum effragitationibus extorserunt, in summet qui per osium non intrarunt animarum periculum, & pravum aliorum exemplum.

§. 2. Nos itaque resecratur his artibus aditum huiusmodi, ne ceteris iter pateat diligenter occludendum esse censentes, habita etiam cum venerabilibus fratribus nostris Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalibus in Consistorio nostro secreto, matura super hoc deliberatione, ac de illorum consilio, & unanimi assensu hac perpetuo valitura sanctione, universis, & singulis nostris, & quorumvis Romanorum Pontificum successorum nostrorum

Sanctio pœ-
nalis.

Dat. P. An. 6.
die 4. Maji.

XCVI.

Edita An. D.
1565.

Proccemium.

Causa litium
constit.

Inhibetur
Nuntiis, &
aliis, ne à
Princip. ad
quos mittuntur
favores
procurent,
illique utantur
ad obtinendas
dignitates sub
pœnis hic
expressis.

Concilii Tri-
dent. præ-
latio circa
omnia hic
disposita.

Transumptio-
rum fides.

Præsentium
assertione
neque egent
gratiæ M.
Magistri.

Nuntius, aliisque ad quosvis Imperatores, Reges, Reginas, Duces, & alios seculares Principes pro tempore ex quavis causa missis, cujuscumque status, gradus, ordinis, vel praeeminentiae sint, etiam si Episcopali, Archiepiscopali, Patriarchali, vel alia majori praesuleant dignitate, in virtute sanctae obedientiae, & sub majoris excommunicationis latae sententiae, ac privationis omnium, & singulorum, Cathedralium, etiam Metropolitanarum & aliarum Ecclesiarum, ac Monasteriorum, etiam consistorialium, necnon aliarum Dignitatum etiam majorum, & principalium personatum, administrationum, & officiorum, ac Canoniatuum, & praebendarum, ceterorumque beneficiorum Ecclesiasticorum, cum cura, & sine cura, saecularium, & quorumvis Ordinum regularium, etiam ex quibuscumque concessionibus, & dispensationibus Apostolicis, in titulum, commendam, administrationem, & alias quomodolibet, ac etiam Romanae Curiae, & aliorum etiam saecularium cujuscumque qualitatis, etiam quae ex causa onerosa affectui fuerint, officiorum per eos obtentorum, ac inhabilitatis ad illa, & alia similia, vel dissimilia in posterum obtinenda, necnon infamiae perpetuae per contrascentes eo ipso incurrendis poenis, auctoritate Apostolica harum serie districtius inhibemus, ne deinceps similes Imperatorum, Regum, Reginarum, Ducum, aut aliorum Principum saecularium commendationes, preces, aut alios etiam vocales, aut inscriptis favores, ad aliquas Pontificias, aut alias Dignitates, saeculares, vel regulares, aut etiam Cardinal. vel alias honores & officia Eccles. consequendum, aut sibi, vel aliis consanguineis, & necessariis suis quocumque modo per ipsum Romanum Pontificem conferenda, per se, vel alium, seu alios, directe, vel indirecte quomodolibet ambire, seu procurare, seu procurare, neve illis etiam ultro sibi per Principes sponte oblati uti praesumant, vel audeant, eadem auctoritate, & praesentium tenore statuentes, quod omnes, & singuli in praemissis delinquentes, nulla alia monitione praecedente, & absque processu desuper habendo, sententias, & poenas praemissas irremissibiliter eo ipso incurrant.

Litterae Principum, vel eorum Orationum preces Sedi Apostolice sufficiens ad condemnandos praefatos inobed.

Decretum irritans.

Forma, & effectus publ.

Claufulae derogatorias.

Sanctio poenalis.

Dat. P. An. 6. die 18. Maji.

§. 3. Quodque ad illos sententias, & poenas hujusmodi damnabiliter incurrisse legitime probandum, & omnino convincendum solae Principum ipsorum litterae, vel preces etiam per suos apud Sedem praedictam Oratores verborenes porrectae, plenam, indubiam, & sufficientem, in iudicio, & extra fidem faciant, nec ad id alterius probationis adminiculum requiratur.

§. 4. Ac decernentes ita per quoscumque Iudices, & Commissarios, etiam S. R. E. Cardinales, sublata eis quavis aliter iudicandi, & interpretandi facultate, iudicari, & definituri debere. Necnon ex nunc, irritum, & inane, quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit attentari.

§. 5. Ne quis autem inhibitionis, & statuti praedictorum ignorantiam praetendere valeat, volumus praesentes litteras in Basilicæ ejusdem Principis Apostolorum de Urbe, & Cancellariae Apostolicae valvis per aliquem ex Curforibus nostris earum exemplum ibi affigendo, & dimitrendo publicari, publicationemque, & affixionem hujusmodi singulos, & post duos menses immediate sequentes non secus afficere, ligare, & perinde ardeare, & si litterae ipsae personaliter illis intimatae fuissent.

§. 6. Non obstantibus quibuscumque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac quibuscumque etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 7. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrae inhibitionis, statuti, decreti, & voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem Omnipotentis DEI, ac beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursum.

Datum Romae apud sanctum Petrum, Anno in-

carnationis Dominicae 1565. die 15. Kalend. Junii, Pontificatus nostri Anno 6.

Ego Pius Catholicae Ecclesiae Episcopus, Si mei non fuerint dominati tunc immaculatus ero.

Ego Jo. Mi. Card. Saracenus.
Ego Jo. Card. Sancti Vitalis.
Ego Jo. B. Cicada Card. S. Clementis.
Ego Scipio Card. Pisarum.
Ego Jo. Card. Reomanus.
Ego Jo. Antonius Capisuccus.
Ego Fr. M. G. Card. Alexandrinus.
Ego Clemens Card. Araceli.
Ego Jac. Card. Sabellus.
Ego Jo. Ant. Card. S. Georgii.
Ego B. Salvatus.
Ego Lud. Card. Simoneta.
Ego F. Card. Paecus, de Toledo.
Ego Marcus Antonius Card. Amulius.
Ego Jo. F. Card. de Gamba.
Ego M. S. Card. de Altaemps.
Ego Franciscus Card. Mantuanus.
Ego Marcus Ant. Card. Columna.
Ego Prolomæus Card. Comensis.
Ego B. Card. Lomellinus.
Ego Vitellius Card. Vitellius S. R. E. Cam.
Ego Franciscus Card. Alciatus.
Ego Gulielmus Card. Siracus.

Anno à Nativitate Domini nostri Jesu Christi 1565. Indiæ. 8. die vero 5. mensis Octobris, Pontific. auctem Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa IV. Anno 6. retroscripta littera affixa, & publicata fuerunt ad valvas Principis Apostolorum de Urbe, & Cancellaria Apostolicae, ut moris est, per Scipionem de Orlavianis, & Jo. Andream Rogerium Cursores.
Alexander Ascanellus Magister Curs.

Privilegium Abbatum Congregationis Cassinensis alias S. Justinae Monachorum Ordinis S. Benedicti utendi Pontificalibus, benedicendi Populum, & consecrandi lapides pro altarium usu.

Hujus Congregationis antiquissimam originem, & alia notavi sup. in Tomo I. in cons. 1. Julii 11. Super Cathedralum.

Super usu Baldachini, & aliarum ceremoniarum in his Pontificalibus emanavit Decretum à Sacra Rituum Congregatione aut favore Abbatum hujus Congregationis, quod habes relatum, & confirmatum à S. D. N. Urb. VIII. in cons. 101. Exponi. inf. tom. 4. Et idem antea nonnulla statuerat de auctoritate Dietae ejusdem Congregationis in cons. 87. Commissi. di. tom. 4.

PIUS PAPA QUARTUS.

Dilectis filiis Praesidenti, Visitatoribus Congregationis Cassinensis, alias Sanctae Justinae de Padua Salutem, & Apostolicam benedictionem.

Edis Apostolicae circumsperta benignitas devotorum consuevit justis annuere votis, & his, quae divini cultus respiciunt augmentum, animarumque salutem libenter intendere.

§. 1. Exhibita siquidem nobis pro parte vestra petio continetur, quod cum in diversis Monasteriis, necnon locis regularibus vestra Congregationis Cassinensis, alias Sanctae Justinae de Padua, diversa Altaria, Capellae, Capellaniae, & alia pia loca in dies erigantur, & saepe crescente numero presbyterorum Religiosorum ejusdem Congregationis, Altaria benedicta deficiant.

§. 2. Nos volentes commoditati Religiosorum dictae Congregationis, ac eorum devotioni in praemissis opportune consulere, & ipsa Congregationem favoribus, & gratis prosequi, eidem Congregationi, & sin-

Papae subscript.

Cardinalium subscriptiones.

Publicatio.

XCVII.

Edita An. D. 1565.

Exordium.

Causa conceptionis hujus indulti.

Indultum pro Abbatis, utendi baculo, & mitra, & benedictionem dandi, & lapides pro Altaribus consecrandi.

gulis

gulis illius Abbatibus pro tempore existentibus, qui licet quinquennales sint, nihilominus ex privilegio Apostolico eidem Congregationi concessio, Baculo Pastoralis, ac Mitra Pontificali, in Ecclesia Monasteriorum, in quibus Abbates pro tempore deputati existunt, uti, & benedictionem Pontificalem post divina officia Christifidelibus inibi existentibus elargiri consueverunt, quoscumque lapides marmoreos, vel prophytios, vel alios, ad usum altarium portatilium accommodandos, pro usu quorumcumque utriusque sexus dictae Congregationis Monasteriorum, Prioratuum, & Ecclesiarum, & aliorum piorum locorum, super quibus intra claustra eorundem Monasteriorum, & Prioratuum, seu septa Ecclesiarum, & aliorum piorum locorum huiusmodi dumtaxat, Missae celebrari possunt, consecrare, & benedicere, Ordinariorum locorum licentiam desuper minime requisita, libere, & licite valeant, plenam, & liberam licentiam, & facultatem, & auctoritate Apostolica, tenore praesentium, concedimus, & indulgemus.

§. 3. Decernentes concessionem, & indultum huiusmodi, necnon praesentes literas, sub quibusvis, vel dissimulati gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, vel derogationibus; per nos, & quoscumque Romanos Pontifices praedecessores, & successores nostros quomodolibet factis, vel faciendis, nullatenus comprehendas, sed semper exceptas ab illis existere, & quocies illae emanabunt, toties in pristinum, & validissimum statum restitutas, & de novo concessas esse.

§. 4. Non obstantibus quibusvis etiam revocatoriis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, per nos, & per quoscumque Cancellariae regulas, editis, & edendis, ceterisque contrariis quibuscumque. Dat. Romae apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 6. Julii 1565. Pontificatus nostri, Anno 6.

Impetrantes aliqua privilegia, & gratias interesse Rever. Cam. Apof. quomodocumque concernentes, infra tres menses a die impetrationis, in Camera Apof. illa praesentare, & registrari facere debent, alioquin illis, tamquam invalidis uti non possunt.

Concessionem Officiorum, Privilegiorum, Exemptionum, gratiarum, & Indultorum in praedictis Sedis, & Cam. Apostolicae emanatarum revocavit S.D.N. Urb. VIII. const. 28. Superni, inf. tom. 4.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Ingens humeris nostris jugiter incumbens expensarum onus ita nos premit, & excitat, ut nostrorum, & Camerae nostrae Apostolicae rerum, & iurium, sublati quibusvis obstaculis, solertem curam habentes, ejusdem Camerae indemnitati, quantum in nobis est, consulere studeamus.

§. 1. Cum itaque sicut nuper nobis innotuit, complures diversi status, & conditionis personae varia privilegia, facultates, licentias, & indulta, sive concessionem, tam a nobis quam pro tempore existentibus, nostris, & Apostolicae Sedis Legatis, eorum Vicelegatis, ac Gubernatoribus, ac forsan aliis nostris, & dictae Camerae ministris, & personis, nimis forsan, ac rædiosis quibusdam earundem personarum precibus, & instantiis in dies obtineant, seu potius extorqueant, quæ cum a nobis, seu Legatis, aut Vicelegatis, vel Gubernatoribus, ac Ministris, & personis huiusmodi bona quadam fide, reque minus forsan quam par esset, diligenter, & accurate perspecta concedantur, illa nonnumquam, immo sæpius in nostrum, ac Camerae praefatae praedictum gravamen, & detrimentum non leve concessa, esse & manasse conspicimus.

§. 2. Quapropter, ut praemissis (ne aliis prodesse cum velimus, nobis ipsis praedictum inferamus) aliquantisper providere volentes, praesentis nostra

perpetuo validam constitutionem, & ordinationem, quam vim, & naturam legis perpetuae ab omnibus observandæ penitus habere, & obtinere decernimus Apostolica auctoritate, & ex certa nostra scientia, harum serie statuimus, & ordinamus, quod omnes, & singuli cujuscumque status, gradus, ordinis, & conditionis existentes, necnon etiam Ducali, Marchionali, Comitali, aut alia quavis seculari ac Patriarchali, Archiepiscopali, Episcopali, seu etiam alia quacumque Ecclesiastica dignitate, praesentia, & auctoritate, etiam Cardinalatus honore fulgentes, qui aliqua privilegia, gratias, facultates, licentias, & indulta, aut concessionem, quæ aliqua ex parte, quavis ratione, seu causa, directe, vel indirecte, principaliter, secundario, vel accessorie, aut quovis modo, nostrum, aut dictae Camerae qualescumque minimum interesse, vel praedictum, gravamen, seu detrimentum concernere censentur, illa infra tres menses a die eorum impetrationis computandos, in eadem Camera praesentare, ac ibidem registrari facere debeant, & teneantur; alioquin lapsis tribus mensibus eidem, ac privilegiis, facultatibus, licentiis, gratis, ac indultis, vel concessionibus huiusmodi non praesentatis, minuscule registratis, illa, in iudicio, & extra nullatenus fidem facere possint, tamquam non concessa, nulla, & ipso jure invalida, ac nullius roboris, vel momenti fuisse, & esse, & fore, neminique suffragari, vel prodesse posse, seu debere respective habeantur, & censeantur, prout nos illa ex nunc nulla, & invalida, irritata, & inania, ac nullius roboris, vel momenti fuisse, & esse, neminique, ut praefertur, suffragari posse declaramus.

§. 3. Mandantes propterea in virtute sanctae obedientiae dilecto filio nostro Virellorio Sanctae MARIAE in Via lata diacono Cardinali Vitellio nuncupato, moderno, & pro tempore existenti S. R. E. Camerario, quatenus praefatam nostri Motus proprii cedulam, ac in ea contenta quaecumque, ab omnibus, quos illa concernunt, & concernit in futurum, penitus, & omnino, ac inviolabiliter, & inconcusse observari faciat, & procuret.

§. 4. Decernentes, ita ut praefertur, per dictos filios ejusdem Camerae Thesaurarium, Praesidentes, & Clericos, aliosque ministros, & personas, ac ejusdem S. R. E. Cardinales, & alios quoscumque iudices sublata, &c. iudicari, & definiti debere, irritum quoque, &c. attentari.

§. 5. Privilegiis, facultatibus, licentiis, indultis, & concessionibus, necnon constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ceterisque in contrarium facientibus, non obstantibus quibuscumque.

§. 6. Volumus autem quod praesentis Motus proprii cedulae per quaecumque privilegia, gratias, & indulta, etiam absque data & registratura, ut praefertur concedenda, nisi cum illius specifica interfectione derogari nullatenus possit, quodque ejus sola signatura sufficiat, & ubique fidem faciat, in iudicio, & extra quacumque regula, seu constitutione Apostolica contraria non obstante, seu si consultius fore visum fuerit, litteræ etiam ad perpetuam rei memoriam latissime expediri possint.

Placet motu proprio, I.

Datum Romae apud Sanctum Marcum, octavo idus Augusti, Anno sexto.

Die 22. Augusti 1565. admissa est hac cedula Motus proprii ex decreto Camerae, & registrata Notario secundo signaturarum Sanctiss. D. N. Papae apud me Notarium. fol.

Hier. de Tarano.

Anno a Nativitate Domini 1565. indictione 8. die vero 13. mensis Decembris. Pontificatus Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina Providentia Papa IV. Anno ejus 6. retroscripta praesentes litterae affixae, & publicatae fuerunt in aede Campi Florae, & in valvis Cancellariae Apostolicae, divisis ibidem praefatis litteris per aliquod temporis spatium affixis, & deinde amotis, ut moris est, per nos

bent infra tres menses, illa in Camera praesentare, & registrari facere sub poena nullitatis.

Executoriis devotato per observantiam huius bulae.

Decretum irritans.

Clausula delegatoria.

Sola sufficit signatura.

Papae subscript. Dat. P. An. 6. die 6. Aug.

Admissio, & reg. in Camera.

Publicatio.

Clausula preservativa.

Clausula delegatoria.

Dat. P. An. 6. die 6. Julii.

CVIII.

Edita An. D. 1565.

Exordium.

Causa huius constitutionis.

Impetrantes induci concernentia interesse Camerae, de-

Scipionem de Ochavianis, & Bartholomæum Sotocasa præfati Sanctissimi Domini Nostri Papa Curs. Julius Parinus Mag. Curs.

XCVIII. Revocatio omnium licentiarum, & facultatum præterquam ex causa vere onerosa concessarum, extrahendi frumenta, blada, & legumina de locis Sedis Apostolicæ mediate, vel immediate subiectis. Et prohibitio de cetero extrahendi.

Hæc prohibitio extensa est ad quodcumque genus Grascia à Pio V. in const. 108. Romani. & Greg. XIII. const. 50. Volentes. Quinimo idem Greg. ibid. ampliavit ad recollecta etiam ex bonis Ecclesiasticis, & quæcumque indulta quavis ex causa onerosa concessa. Idque approbavit Clem. VIII. in const. 49. Frumentis. & ampliavit Paul. V. in const. 11. Inter.

Quoad huiusmodi extrahiones attende S. D. N. Urban. VIII. editam const. 28. Supremi, §. 16. infra tom. 4. Mitigationem vero, quod in censuras Ecclesiasticas non incurant, qui Annona species extrahunt Ecclesiasticum, certis calibus extrahunt, habes in const. 30. Greg. XV. Rom. dicti tom. 4.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Edita An. D. 1565.

Exordium.

Inter multiplices curas, quibus assidue premimur, eas sollicitudinis partes à Nobis non immerito suscipiendas esse arbitramur, per quas illis, quos supremæ dignitatis nostræ Pontificalis ratione jurisdictionis nostræ temporali subiectos esse cernimus, etiam in his, quæ communem vitæ usum, & sustentationem concernunt, opportune provideatur, ac proinde nonnulla, facultates, licentias, & indulta hæcenus, tam à nobis, quam à prædecessoribus nostris Romanis Pontificibus quibusdam certis nunc suædentibus causis concessa, quæ præmissis obesse contuemur, aliis urgentibus, magisque necessariis supervenientibus causis, pro nostra in cunctis solita providentia interdum revocamus, & annullamus, aliasque desuper disponimus, prout omnium communi utilitati, & communitati percipiimus salubriter expedire.

Causæ huius constitutæ.

§. 1. Sane attendentes, quod licet DEI Omnipotentis gratia, & benignitate in statu nostro Ecclesiastico, ea talis hæcenus fuerit, ac sit in præsentiarum Annona copia, quod ex ea status ejusdem populi, & subditi nostri, facile, commodeque, ac vili pretio, se, suæque familias sustentare possent, nihilominus nimia lucri cupiditate multorum, forsitan prætextu certarum licentiarum, & facultatum eis, ut asserunt, concessarum, ex diversis dicti status partibus, & locis frumenta, & alia blada, ac legumina in multarum etiam pauperum partium earundem personarum præjudicium, & gravamen extrahendum, & alio apportantium, efficitur, ut fere semper populi, ac subditi ipsi nimia Annona huiusmodi charitate, rerumque penuria oppressi, quoad eorum qualemcumque sustentationem, & victum quotidianum non mediocriter, sed plusquam par sit, nostramque deceat providentiam, patiantur.

Revocatio quæ unumque licet titulum, & facultatum, præterquam ex causa onerosa concessarum extrahendi frumenta, blada, & legumina, ex provinciis, civitatibus, & locis ditionis Ecclesiasticæ.

§. 2. Nos igitur, quorum est præ ceteris, per debita provisionis ministerium præmissis obviare, ac populorum, & subditorum præfatorum commoditatibus opportune consulere, & ne licentiarum, & facultatum huiusmodi causa aliis prodesse quidam velint, nostri rerum penuria huiusmodi pergraventur, satagere volentes, auctoritate Apostolica, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine præsentibus perpetuo valituris, eas omnes, & singulas, præterquam ex causa vere onerosa, solutionis videlicet, & exurbationis pecuniarum, extrahendi frumenta, & cuiusvis alterius generis blada, & legumina, ex quibusvis provinciis, civitatibus, terris, & locis, nobis, ditionique nostræ Ecclesiasticæ, mediate, vel immediate subiectis, quibusvis communitatibus, universitatibus, & per-

sonis tam secularibus quam quorumvis Ordinum regularibus, cuiuscumque dignitatis, status, gradus, ordinis, vel conditionis, existentibus, ac etiam Ducali, Marchionali, Comitali aut alia seculari dignitate, & excellentia, necnon Cardinalatus honore fulgentibus, per nos, & prædecessores nostros præfatos, aut alios quoscumque sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibusvis clausulis, & decretis, & irritandis, etiam de necessitate exprimentis, etiam Motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, ac alias quomodolibet concessas, approbatas, & innovatas, illarum singularum veros tenores, ac si de verbo ad verbum præsentibus inferrentur, pro sufficienter expressis habentes revocamus, cassamus, & annullamus, ac viribus vacuumus, illasque revocatas, cassatas, & annullatas, ac invalidas, & viribus vacuas, nemini prodesse, aut suffragari posse, seu debere decernimus, & declaramus.

§. 3. Necnon hæcenus de non extrahendo frumenta, blada, & legumina huiusmodi, in Provinciis, Civitatibus, Terris, & locis præfatis, tam à nobis quam prædecessoribus nostris, constitutiones, & inhibitiones emanatas, ac aliis quibusvis factas inhibitiones, bannimenta prohibitionem, & proclamata innovamus, ac sub penis in illis contentis observari volumus.

§. 4. Districtius inhibentes quibusvis personis etiam, ut præfatur qualificatis, ne in virtute sanctæ obedientiæ, ac sub nostræ indignationis, necnon confiscationis omnium bonorum, & amissionis feudorum penis, licentiarum, seu facultatum, alias tamen quam ut præfatur, ex onerosa videlicet solutionis, exurbationisque causa pecuniarum concessarum, aut alio quovis prætextu, directe vel indirecte, frumenta, & blada, necnon legumina huiusmodi ex Provinciis, Civitatibus, Terris, & locis præfatis quocumque modo extrahere, & alio apportare audeant vel præsumant.

§. 5. Ac mandantes in virtute sanctæ obedientiæ dilecto filio nostro Vitellorio sanctæ Mariæ in Viata diacono Cardinali Vitellio nuncupato, S. R. E. Camerario, quatenus ipse, ultra ordinarium sui Camerariatus officii facultatem, specialem quamdam & præcipuam in præmissis curam habens, præsentem nostri Motus proprii cedulam, ac in ea contenta quæcumque ab eis quos illa quomodolibet concernunt, & concernent in futurum, firmiter, & inconcussè observari, executionique debite demandari, necnon in Provinciis, Civitatibus, Terris & locis huiusmodi, ac alibi, ubi opus fuerit, publicari, & notificari, necnon contraditores quoslibet, & inobedientes, ac præsentibus, & inde pro tempore emanatis proclamantibus, bannimentis, & inhibitionibus quibuscumque non parentes, quæcumque appellatione & subterfugio remotis, auctoritate nostra compescat, ac si ei expediens & opportunum fore videbitur, legitimis super his habendis servatis processibus, aut etiam simpliciter & de plano, necnon manu regia, ac sine strepitu & figura iudicii, sed sola facti veritate inspecta, illas censuras & præfatas, ac alias quascumque in eisdem pro tempore subsecutis bannimentis, inhibitionibus, proclamantibus, & prohibitionibus contentas penas incidisse & incurrisse declare, easque ab illis exigi & recuperari faciat & procuret, sibi in præmissis omnibus & singulis amplam & omnimodam, dantes & concedentes facultatem, potestatem, & auctoritatem.

§. 6. Ac decernentes omnes & singulos frumenta, blada, ac legumina, ut præfatur, extrahentes, & alio apportantes, facultates & licentias ex onerosa, solutionis videlicet exurbationis pecuniarum causa sibi concessas esse allegantes, prætendentes, antequam ipsi illis modo aliquo deinceps ullo unquam tempore uti possint, illas coram eodem Vitellorio Cardinale, & Camerario verificari debere, ac ad id teneri, & obligatos existere, alioquin ipsi non iustificatis, & per eundem Cardinalem Camerarium non approbatis, eisdem facultates & licentias, ac illarum vigore seu prætextu quascumque per

Innovatio prohibitionum emanatarum contra extrahentes.

Prohibitio extrahendi, & penæ contravenientium.

Executio deputatio de facultates.

Licentias habere prætendentes ex causa onerosa verificari coram Camerario alioquin eis uti non possint.

eos frumentorum, bladorum, & leguminum hujusmodi de cetero factas extractions & asportationes, nullas & invalidas, ac de facto & nulliter, ac præter mentem & intentionem nostras factas fuisse & esse, ac personas taliter extrahentes, & asportantes penas præfatas incidisse & incurrisse, ac ad illarum totalem satisfactionem penitus teneri.

§. 7. Non obstantibus præmissis, ac quibuscumque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon statutis, &c. etiam juramento, &c. roboratis: privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, Universitatibus, Communitatibus, ac personis, etiam ut præfertur, qualificatis quomodolibet, etiam motu, scientia, auctoritate, & potestatis plenitudine paribus, etiam consistorialiter, &c. ac alias quomodolibet concessis, &c. quibus omnibus & singulis illorum omnium veros tenores præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 8. Volumus autem, ut deinceps perpetuis futuris temporibus nulli quarumcumque licentiarum, etiam ex causa onerosa, etiam si propria auctoritate extractio illis permilla sit, concessarum & concedendarum vigore extractions granorum, bladorum, & leguminum hujusmodi absque ejusdem Camerarii Cardinalis patentibus desuper concedendis litteris aliquo pacto in toto statu Ecclesiastico facere possint aut valeant. Alioquin contrafactes in præfatas penas incidisse & incurrisse declaramus, & ab eodem Cardinale Camerario declarandos esse decernimus, &c.

§. 9. Quodque sola præsentis Motus proprii signatura sufficiat, & ubique fidem faciat in iudicio & extra, quacumque regula seu constitutione Apostolica contraria non obstante.

Placet Motu proprio. I.

Datum Romæ apud S. Marcum, Idibus Augusti, Anno sexto.

C.

Confirmatio gratiarum, & privilegiorum, & facultatis querendi elemosynas, Abbatibus, Conventibus, & Fratibus Ordinis S. Antonii Viennensis concessarum, quatenus Concilio Tridentino non adversentur.

De hujusmodi gratiis & privilegiis, notavi sup. in Tomo I. in Bonif. VIII. cons. 5. in dispositione ubi videtur etiam cetera de hoc Ordine S. Antonii.

Quo vero ad facultatem colligendi elemosynas, attendenda est forma tradita à Greg. XIII. infra in ejus cons. 73. Romani.

PIUS PAPA QUARTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

EX debito pastoralis officii nobis, meritis licet imparibus divina dispositione commissi, circa monasteriorum & hospitalium infirmorum, aliorumque piorum locorum statum prospere dirigendum, infirmosque in suis necessitatibus sublevandum paternæ pietatis oculis intendentes, ea quæ pro illorum subventionem ab Apostolica Sede emanarunt, quantum (salvis Sanctorum Patrum decretis) nobis ex alto permittitur, approbationis nostræ subsidio libenter stabilimus, & in his alias disponimus, prout habita temporum ratione, cognitaque miserabilium personarum egestate, conspiciamus in Domino salubriter expedire.

§. 1. Sane exhibita nobis nuper pro parte dilectorum filiorum Ludovici de Langiaco Abbatis & Conventus Monasterii ad Romanam Ecclesiam nullo medio pertinentis S. Antonii de S. Antonio, Ordinis S. Augustini Viennensis diocesis petitio continebat. Quod licet in Concilio Tridentino statutum sit, ut quæstiones elemosynarum, eorumque nomen & usus deinceps in quibuscumque Christianæ Religionis locis penitus aboleantur, nec quæstiones ad officium quæstorum hujusmodi exercendum ullatenus

admittantur, ipsum tamen Concilium indulgentias, & alias spirituales gratias, quibus non ideo Christiani fideles privandos esse censuit, in posterum per Ordinarios locorum adhibitis duobus de Capitulo debitis temporibus populo publicandas esse decrevit, dans illi facultatem, etiam elemosynas hujusmodi, atque oblata sibi caritatis subsidia, nulla profus mercede accepta, fideliter colligendi, ut tandem omnes vere intelligant, cælestes hos Ecclesiæ thesauros, non ad quæstum, sed ad pietatem exerceri.

§. 2. Et cum monasterium ipsum, ejusque hospitalia, præceptorie, & aliæ domus per orbem Christianum, longe, lateque dispersa, ad quæ miserabiles illæ personæ horrendo sacri ignis cruciatu correptæ, recursum passim habere, ibique recipi, alii, medicari, & sustentari solent piis fidelium elemosynis, sine quibus apud eorumdem hospitalium plurimi pauperes infirmi nutririi possent, hoc prætextu minime destituenda sint, præsertim cum eorum Religiosi sive ministri plenarias indulgentias, seu confessionalia nusquam circumferant. Idcirco præfati Ludovicus Abbas, & conventus humiliter supplicari fecerunt, quatenus sibi, ut necessariis hospitalium suorum sumptibus sufficere, suosque infirmos alere queant opportune consulentes, privilegia, facultates, & gratias eisdem Hospitalibus concessa, quæ præfato Concilii decreto non adversentur, approbare, ac alias eorum necessitatibus subvenire, de benignitate Apostolica dignemur.

§. 3. Nos igitur qui pauperum præsertim infirmorum, langentiumque curam nequaquam abjiciendam, sed potius toto pie mentis affectu amplectendam esse censuimus; Omnia & singula privilegia, facultates, indulta, & alias gratias, eisdem monasterio & conventui, suisque hospitalibus, præceptoribus, membris, & aliis dependentibus, & Confraternitatibus, ac eorum Abbatibus, Conventibus, Superioribus, Præceptoribus, Confratribus & personis per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac nos & Sedem prædictam hæcenus quomodolibet concessa, litterarumque desuper concessarum tenores, præsentibus pro sufficienter expressis habentes, hujusmodi supplicationibus inclinati eadem privilegia, indulgentias, ac quæstionandi, & alias facultates, ac indulta, aliasque gratias quæ præfato Concilii decreto commodè coaptari poterunt, literasque desuper concessas, ad hoc ut illis omnibus & singulis monasterium, ac ejus hospitalia, præceptorie, Domus, & alia membra dependentiæ atque Confraternitates, ad id per præfatum Ludovicum modernum, & pro tempore existentem Abbatem seu Conventum Monasterii hujusmodi, vel personam seu personas ad id, ab eo vel ab eis deputatas, ad eorum beneplacitum in scriptis designanda & specificanda, juxta ipsius decreti Concilii Tridentini formam & tenorem ubilibet gentium uti, frui, & gaudere, ipsique fideles indulgentias, & alias Apostolicas gratias sibi propterea concessas consequi libere, & licite possint, quoad ea tantum quæ sunt in usu, & decretis dicti Concilii Tridentini non repugnant, Apostolica auctoritate tenore præsentium confirmamus, approbamus, & innovamus.

§. 4. Ac adversus quascumque revocationes, cassationes, suspensiones, & limitationes, etiam per nos hæcenus factas, in pristinum statum restituiamus, reponimus, & plenarie juxta formam dicti Concilii reintegramus, necnon illis perpetuæ firmitatis robur adjicimus, ac illa valida & efficacia, suosque plenarios & integros effectus sortiri, ac monasterio, hospitalibus, præceptoribus, domibus, Confraternitatibus, & aliis locis & personis, sic ut præfertur, designandis & specificandis, ac eorum personas suffragari.

§. 5. Et sic per quoscumque locorum Ordinarios, & alios Judices & Commissarios quavis auctoritate fungentes, sublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate judicari, & definiri debere, ac quicquid

Sed Hospitalia S. Antonii elemosynas de ista remanebant, licet pro eis quærentur absque confessionali, & indulgentia annuacione.

Hic ideo Pont. quæstionum & indultum usum restituit, quatenus Concilio Trid. non contrarietur, & alias etiam gratias confirmet.

Quascumque suspensiones revocat.

Et ita iudicari præcipit.

Claufulæ derogatoriz.

licentia extractandi frumenta à Camerario non approbate non valent.

Sola signatura sufficit.

Papæ subscriptæ.
Dat. P. An. 6 Idie 15. Aug.

Edita A. D. 1565.

Exordium.

Concil. Trid. quæstum prohibuit.

Executores
deputat.

fecus super his à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane decernimus.

§. 6. Quocirca Venerab. Fratribus Archiepiscopo Cæsaraugustanensi & Episcopo Venusino; five eorum in spiritualibus Vicariis, aut Officialibus generalibus, ac dilecto filio Curie causarum Cameræ Apostolicæ generali Auditori per præsentem committimus & mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum, per se vel alium seu alios, præsentem litteras & in eis contenta quæcumque, tibi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Ludovici, & pro tempore existentis Abbatis & conventus prædictorum fuerint requisiti solemniter publicantes, effecque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra illos, confirmatione, innovatione, restitutione, reintegracione & decreto, aliisque præmissis pacifice frui & gaudere. Non permittebant eos, vel eorum aliquem, seu deputatos suos desuper per quoscumque quomodolibet indebite molestari, perturbari, vel impediri. Contradictores quoslibet & rebelles, per sententias, censuras & pœnas Ecclesiasticas, aliaque opportuna juris remedia eadem auctoritate nostra, appellatione postposita compescendo, ac legitimis super his habendis servatis processibus, eisdem censuras & pœnas, etiam iteratis vicibus aggravando; invocato etiam ad hoc si opus sit auxilium brachii secularis.

Contrariis
derogat.

§. 7. Non obstantibus præmissis, ac fel. record. Bonifacii Papæ octavi prædecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, (dummodo quispiam ultra tres dietas præsentium vigore non extrahatur) & quibuscumque aliis Apostolicis, ac in provincialibus, & synodalibus Conciliis editis, generalibus, vel specialibus constitutionibus & ordinationibus, necnon juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, ac omnibus illis quæ in litteris privilegiorum, facultatum, indulgentiarum & aliarum gratiarum huiusmodi non obstat concessum fuit, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdici, suspendi, vel excommunicari non possit per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

Transumptis
credi jubet.

§. 8. Volumus autem quod transumptis præsentium manu alicujus notarii publici subscriptis & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem protus fides adhibeatur, & adhiberi debeat, quæ litteris ipsis originalibus adhiberetur, si exhibita forent vel ostensa.

D. P. An. 6.
die 19. Aug.

Dat. Romæ apud S. Marcum, sub annulo Piscatoris, die 19. Augusti 1565. Pontificatus nostri Anno sexto.

CI.

Brevis Civitatis Piæ, prope Arcem S. Angeli de Urbe, & privilegia in ea ædificantium, ac ad eandem translatio Conventus & Ecclesiæ S. Mariæ Transeptinæ nuncupatæ.

Similem sed archiorem privilegiorum concessionem dedit Six. V. ædificantibus & habitantibus in Burgo Felici, Montis Quirinalis ut inf. in ejus const. 103. Dum ad uberes. Et ante eos Alexander VI. ædificantibus in via Alexandrina, ut sup. in Tomo 8. in ejus const. 8. Et si universis.

Edita An. D.
1565.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Romanum decet Pontificem Almam Urbem in qua iussu DEI per Vicarium suum beatum Petrum Apostolorum Principem Sedes Apostolica ad omnium Christianissimum commoditatem, ac religionis augmentum immobilis constituta, & copioso

tum ejusdem Principis, tum exuberantis illius gloriosi vasis electionis, coapostoli sui, innumerabiliumque CHRISTI martyrum Sanctissimorum sanguine Domino suo consecrata existit, nimirum ut Ecclesiæ caput in ea potissimum Civitate foret, quæ principatum Orbis jam pridem sibi vendicasset, & ad quam, tamquam supremam Orbis Christiani Metropolim, communemque mortalium omnium patriam & altricem, magnus undequaque populi sit concursus; non solum justitia pietateque moderari, sed etiam ejus Pomerio ad populum ibi quotidie, Domino benedicente non mediocriter augescentem recipiendum dilatato, novis subinde vicorum, regionumque additamentis ampliari.

§. 1. Cupientes igitur vestigiis fel. record. Leonis Papæ IV. prædecessoris nostri, qui suburbium quod Burgum S. Petri vocant antea per piæ mem. Nicolæum III. & alios plerisque Romanos Pontifices etiam prædecessores nostros, juxta præfati Principis Apostolorum Basilicam ad Curialium commoditatem institutum, non mediocriter ornavit, & ampliavit, illudque suo de nomine Civitatem Leoniam appellavit, inhærendo, pro ipsius Urbis decore, & ampliatione novam apud idem suburbium Civitatem construere, populumque quo libentius ad eam inhabitandum, novique ædificiis replendam se conferat, & in ea cum omni tranquillitate & commoditate, aerisque salubritate degere possit, paternis favoribus & gratis invitare, post varia quæ in Vaticano, dictaque Leonina Civitate feliciter opera nostra jam pridem confurgere noscuntur ædificia.

§. 2. Motu proprio, & ex certa scientia nostra, ac de Apostolica potestatis plenitudine, Onnipotentis DEI gratia per nos in primis ad hoc supplicibus votis implorata, ad ejus laudem & gloriam, tractum illum inter vetera Leoninæ Civitatis mœnia, & muros, propugnaculæque ab arce S. Angeli ad Palatium Apostolicum per nos nuper excitata interjacentem, quem etiam, ne ejus incolis repentinæ Tyberis inundationes, aerisque intemperies obesse possit, suggesta passim humo in altum elevari, cloacisque ad sordes elevandas aptis locis fulcari mandavimus, in Civitatem Piam similiter de nomine nostro nuncupandam, auctoritate Apostolica renore præsentium perpetuo erigimus & instituiamus.

§. 3. Et quoniam omne principium ab ipso Deo summo rerum opifice, civitatumque omnium præfide acque custode, necnon beata & gloriosa semperque Virgine DEI Genitrice MARIA, par est auspiciari, Conventum ejusdem B. Mariæ Transeptinæ nuncupatæ, Ordinis ipsius S. MARIE de Monte Carmelo, qui in dicta Civitate Leonina olim constructus reperitur, & quem pro fortificatione, fruendisque aggeribus Arcis nostræ S. Angeli, & alias ad publicam utilitatem dirui, & solo æquari expedit cum suis Ecclesiæ, titulo, denominatione, fratribus & personis, capellis, capellanis, altaribus, officiis & beneficiis, necnon cura animarum illi imminente, fonte baptismali, Sanctorumque reliquiis & indulgentiis in ea existentibus, ac fructibus, redditibus, proventibus, juribus, fundationibus, censibus, redditibus, & privilegiis universis, ad eandem Civitatem Piam eidem auctoritate & tenore transferimus.

§. 4. Ita ut dilecti filii Priori & fratres illius in eadem Civitate Piam similem curam animarum, habitatorumque ibi pro tempore degentium, cum omnibus honoribus, & oneribus, parochialibus Ecclesiis debitis, solitis & consuetis, habeant & exerceant, dictique habitatores Ecclesiam Conventus translati huiusmodi pro sua parochiali nanciscantur, & recognoscant, parochianique dictæ Ecclesiæ existant & nuncupentur. Ac iidem Prior & fratres, omnibus & singulis gratis, favoribus, exemptionibus, & libertatibus, privilegiis & indultis quibus alii dictæ Civitatis Piam incolæ, & habitatores utuntur, & quomodo libet gaudebunt, similiter uti, & gaudere possint.

§. 5. Et insuper, ut devotio, non solum dictorum incolarum, sed etiam totius populi Romani ad dictam Ecclesiam visitandam & frequentandam augeatur,

Burgum S. Petri addendum ornavit Leo X. & illud voluit appellari Civitas Leonina.

Hic vero Pont. apud dictum Burgum ædificare cepit aliud Burgum quod Civitatem Piam denominated mandata.

Conventumque & Ecclesiam B. Mariæ Transeptinæ transferat ad Civitatem Piam ex causis hic expressis.

Ejusque Fratribus concedit omnia privilegia habitantibus in Civitate Piam concessa. Quia mox fecus conditor.

Et eandem Ecclesiam visitantibus &c. Indulgentias concedit.

ultra

ultra alias indulgentias & gratias spirituales illi ha-
ctenus concessas, de Omnipotentis DEI misericor-
dia, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum suo-
rum prædictorum auctoritate confisi, universis &
singulis utriusque sexus Christifidelibus vere pœ-
nitentibus & confessis, seu statutis à jure temporibus
confendi propositum habentibus, qui intra
decennium proxime futurum annuatim dictam Ec-
clesiam in singulis Domini nostri JESU CHRISTI,
ac ejusdem gloriosissimæ Virginis Matris festivitati-
bus, ac etiam qui infra triennium proximum sin-
gulis Dominicis diebus antiquam præfatam non-
dum dirutam, seu post ejus demolitionem noviter
construendam, Ecclesiæ prædictas devote visita-
verint, & orationem Dominicam, ac salutationem
Angelicam ibiter recitaverint, quoties id fecerint
toties plenariam omnium peccatorum suorum re-
missionem misericorditer in Domino concedimus,
& elargimur in forma Ecclesiæ consueta.

§. 6. Et insuper pro Conventu, ejusque Ec-
clesia de novo fundandis & construendis, aream,
situmque convenientem arbitrio dilectorum filio-
rum nobilis viri Gabrii Serbelloni, dicti Burgi &
militum nostrorum prætorianorum Præfecti, nostri
secundum carnem fratris consobrii, & Horatii
Nari, ac Hieronymi de Pichis Nobilis Romani
modernorum & pro tempore existentium ipsi Ur-
bis Magistrorum viarum, assignari volumus atque
mandamus. Quibus etiam Priori & Fratribus pro-
sari factione damnorum demolitionis Ecclesiæ bis
mille scuta solvi & numerari jussimus. Antiquum
autem Conventus & Ecclesiæ prætoriarum situm,
cum primum dicta Ecclesia diruta fuerit, ex nunc
prout ex tunc profanamus, & pro area, ac pro-
pugnaculis dictæ arcis ad profanos usus reducimus
& convertimus.

§. 7. Vias autem, ac domos, palatia, cete-
raque ædificia solita dictæ Civitatis, Piz in plani-
tie æquali, quoad primum solare, ac altitudinem
stillicidii grandiarum tecti vulgariter nuncupati, fri-
goris, ætusque descendendi gratia, eodem pariter
arbitrio construere & fabricari, ac ad publicam di-
ctorum incolarum, & habitantium utilitatem & re-
frigerium ex Palatio Apostolico destinatis, vel
aliis commodioribus aquis Fontem in medio dictæ
civitatis excitari: Ludu quoque literarum, seu Scho-
lam publicam pro pueris & adolescentibus gratis
docendos similiter institui & aperiri, Magistroque
& Præceptori, qui literis & bonis moribus eos in-
struat, de honesto salario ex proventibus Gabel-
larum Studii Almar ubi assumendo provideri statuimus
& ordinamus.

§. 8. Et ut promptius & alacrius ad ædifican-
dum omnes ejusmodi gradus & conditionis allician-
tur & invitentur: quibuscumque personis Ecclesia-
sticis, etiam quacumque dignitate fungentibus, ut
pro ea quantitate, qua ibi ædificaverint, de rebus
& bonis suis quibuscumque in Urbe, & alibi ubicum-
que locorum consistentibus, etiam quæ sub nomi-
ne spoliatorum Cameræ Apostolicæ debitorum com-
prehenduntur, ultra ædificia præfata testari, & alias
disponere: Necnon ipsis in infirmitate constitutis,
ac etiam laicis, ut præferatur, ædificantibus, etiam
in Alma Urbe, & Romana Curia præsentibus,
dummodo per viginti dies supervixerint, quæcum-
que venalia dictæ Curie officia, etiam per procu-
ratorem pro concurrenti facturam à se fabricarum
hujusmodi resignare ac cedere, & resignationes hu-
jusmodi omnino admitti debere, & admissas cen-
seri per simplicem consensum desuper præstandum,
ac sum plenarium effectum sortiri. Regularibus
vero, ut domos per ipsos in dicta Civitate constru-
das perso- is etiam incapacibus, etiam juxta privi-
legia montis Fidei de Urbe, & quæ dilectis filiis
illius Portionariis montis illius nuncupati concessa
sunt, similiter concessa sint, & esse intelligantur,
etiam inter vivos & causa mortis donare & relin-
quere, ac alias de illis disponente.

§. 9. Ecclesiis vero & locis piis quibuscumque,

quæ penes quæcumque idoneam personam, aut
ædem sacram, & in quocumque loco pecunias ad
effectum illas in emptionem aliorum bonorum
stabilium, in evidentem utilitatem convertendi de-
positas tenent, vel in futurum tenebunt, illas in
domorum in dicta Civitate Pia ædificationem ex-
ponere, quæ sic expozita in evidentem ipsarum
Ecclesiarum & locorum piorum cessisse & cedere
censeantur.

§. 10. Ac laicis, etiam conjugatis & Clericis
in ipsa Civitate Pia ædificantibus, quod pensiones
super beneficiorum Ecclesiasticorum fructibus,
redditibus, & proventibus sibi assignatas, ad ra-
tam decem scutorum pro quolibet centenario per
eos in fabricando pro tempore expenso recipere,
retinere, & percipere, ac illas in quasvis personas,
etiam in mortis articulo, & prout eorumdem
Sanctorum Petri & Pauli, ac Pii nuncupati milites,
juxta privilegia per nos & prædecessores nostros
sibi concessa, formamque eis traditam, etiam
absque consensu dicta beneficia obtinentium desu-
per habendo, pariformiter transferre. Ita quod
privilegia eadem sic ædificantibus laicis, etiam
clericis, etiam Prælati, & Religiosis concessa,
ei communicata censeantur.

§. 11. Impudice vero, quas Curiales vulgus
appellat, & aliæ inhonestæ mulieres, quæ in di-
cta Civitate Pia ad minus pro scutis quingentis
ædificaverint, tam de suis ædificiis hujusmodi,
quàm aliis earum bonis quomodocumque, etiam
exturpi quæstu acquisitis & acquirendis, similiter
testari & disponere libere, & licite valeant, nec
tales mulieres testatæ, vel ab intestato decedentes,
aliquam partem Monasterio Convertitarum
de Urbe juxta dispositionem Leonis V. ac recol-
mem. Clem. VII. & Pauli III. Romanorum Pon-
tificum etiam prædecessorum nostrorum, & eo-
rum privilegia debitam relinquere teneantur, sed
dicta eorum bona libere & integraliter, tam ex
testamento, quàm ab intestato, ad earum heredes
pervenire debeant.

§. 12. Quodque domos & ædificia quæcum-
que per quovis indicta Civitate Pia pro tempore
construenda, ex quocumque crimine & delicto, præ-
terquam hæresis, & læsæ majestatis confiscari non
possint, ad instar privilegiorum Montis Fidei, sed
eorum dominis & successoribus suis, perinde ac si
delicta non commisissent, perpetuo firma & illæsa
remanere debeant, eisdem auctoritate & tenore,
perpetuo concedimus & indulg. &c.

§. 13. Ceterum ne in ipsa Civitate Pia ædificare
volentes à fundorum dominiis ullo modo retrahan-
tur, etiam perpetuo statuimus & ordinamus, quod
intra annum à data præsentium computandum, in
quovis Civitatis Piz loco ædificare volentibus, do-
mini fundi, si ipsi ædificare noluerint, seu se ædifi-
care velle dicentes, nisi infra trimestre ædificare
coeperint, fundum hujusmodi pro annuo censu per-
petuo ad rationem unius Julii pro qualibet canna,
dare & locare teneantur, & ad id compelli pos-
sint & debeant. Ipsique conductores, sive censua-
rii à solutione primi semestris, omnino liberi &
exempti sint & esse intelligantur. Quodque tam
fundorum domini, quàm conductores & censua-
rii infra sex menses, à data præsentium à die
locationis respectively computandos, fabricas hujus-
modi omnino inchoare, & in fundo centum can-
narum, conductores mille, fundi vero domini
quingentorum scutorum summas in fabricam expo-
nere, & ita proportionabiliter ædificare volentes,
tam domini soli, quàm conductores, pro fitus quan-
titate, & ad ratam hujusmodi fabricare teneantur.

§. 14. Conductores autem præfati, eorumque
heredes & successores, quandoque sibi placuerit,
eosdem fundos, etiam ad Ecclesias, Hospitalia, vel
alia quæcumque loca pia quomodolibet pertinen-
tes, juxta facultates sanctæ mem. Sixti Quarti,
& Alexandri Sexti, & Leonis Decimi, etiam Roma-
norum Pontificum prædecessorum nostrorum, aucta

Aliud privilegi-
um a-
dincantium.Civitas Pia
gaudeat om-
nibus pri-
vilegiis Ci-
vitatũ Leo-
ninæ.Executores
deputati &
facultates.Decretum
irritans.Clausula de-
rogatoria.

decima parte census affrancare & se ab hujusmodi censu liberare, ac totaliter eximere valeant.

§. 15. Præterea qui in Civitate Pia ædificaverint, in venditionibus viridiorum, vinearum, & terrenorum in partibus Transiberim existentium, quoquo modo pro tempore faciendis, aliis qui in dicta Civitate Pia non ædificaverint, etiam si vicini rerum, bonorum venalium hujusmodi existant omnino, arbitrio tamen præfato, præferri possint & debeant, prout & quemadmodum sius congrui, seu promissos ratione vicinitatis, communionis, vel alias quomodocumque haberent, in quibus etiam prius ædificaverit, ceteris præferatur.

§. 16. Porro dictam Civitatem Piam postquam constructa & ædificata fuerit, etiam ex nunc prout ex tunc regimini, administrationi, & gubernio, & jurisdictioni ejusdem moderni & pro tempore existentis Præfati, ad instar ipsius Civitatis Leoninæ, æque principaliter, & sine aliqua differentia subijcimus; eandemque omnibus & singulis privilegiis, honoribus, favoribus, gratiis, & facultatibus, necnon statutis & consuetudinibus, quibus dicta Civitas Leonina utitur, potitur, & gaudet, uti, potiri, & gaudere similiter æque principaliter possit, dictumque Præfectum pro tempore existentem utriusque Civitatis, Leoninæ videlicet, atque Piae, Capitaneum, seu Præfectum principaliter denominari & describi debere volumus.

§. 17. Dilecto filio Vitellio S. Mariæ in Via lata Diacono Card. Vitellio nuncupato, moderno & pro tempore existenti S. R. E. Camerario; nec non ejusdem modernis, & pro tempore existentibus Præfecto, & viarum Magistris, Motu proprio, & ex certa scientia districte præciendo mandantes, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum, per se vel alium, seu alios præsentis litteras, & in eis contenta quæcumque, ubi, & quando opus fuerit, ac quoties pro parte alicujus prædictorum fuerint requisiti, solemniter publicantes, ac conductores, & ædificantibus, eorumque hæredibus & successoribus, ac omnibus & singulis aliis supra nominatis in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant, auctoritate nostra præsentis litteras & omnia in eis contenta, ab omnibus, etiam sub penis eorum arbitrio imponendis & applicandis, firmiter & inviolabiliter observari: illaque debita executioni demandari procurent. Nos enim illis & eorum cuilibet, omnia & singula præmissa, faciendi & exequendi, & quæ in eis dubia inciderint, declarandi & interpretandi, ac tempus & tempora in præmissis prorogandi & moderandi, ceteraque in his, & circa ea necessaria & opportuna gerendi, plenam, liberam, & omnimodam facultatem concedimus per præsentis.

§. 18. Necnon omnia & singula præmissa, valida & efficacia existere, suosque plenarios & integros effectus sortiri, & inviolabiliter observari, ac singulis supradictis suffragari. Sicque in omnibus, & singulis præmissis per Camerarium præfatum, & dilectos filios dictæ Camerae Præsidentes, & Clericos, ac quoscumque Judices & Commissarios, quavis auctoritate fangentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac ipsius S. R. E. Cardinales sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, iudicari & definiri debere, ac quicquid secus super his a quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane decernimus.

§. 19. Non obstantibus præmissis, ac quibuscumque constitutionibus & ordinationibus Apost. ac Camerae Urbis, & Basilicæ prædictorum, & aliarum Ecclesiarum, ac Monasteriorum, & Ordinum quorumcumque; necnon quibuscumque aliis juramento, confirmatione Apost. vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, illis, eorumque Superioribus, Magistratibus, ac etiam dilectis filiis Populo Romano,

sub quibuscumque tenoribus & formis, ac quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, ac irritantibus, & aliis decretis, in genere vel in specie, etiam motu & scientia similibus, ac de Apostolica potestate plenitudine etiam per nos, etiam consistorialiter, & alias quomodolibet concessis, etiam pluries approbatis & innovatis. Quibus omnibus etiam pro sufficienti illorum derogatione, de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, individua & expressa, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum infererentur, præsentibus pro sufficienter insertis, & expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse pari motu derogamus: ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 20. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostre creationis, institutionis, translationis, elargitionis, prophanationis, reductionis, conversionis, ordinationis, concessionis, absolutionis, liberationis, subjectionis, mandati, præcepti, indulti, statuti, decreti, voluntatis, & derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1565. x. Kal. Septembris, Pontificatus nostri Anno sexto.

Anno à Nativitate D. 1565. Indictione 8. die vero 7. Decemb. Pont. Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa IV. anno 6. retroscripta litteræ Apostolica affixa & publicata fuerunt ad valvas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, Palatii Apostolici, Basilicæ Lateranensis, acie Campi Floræ, necnon ad valvas Cancellariæ Apost. dimissis ibidem in omnibus & singulis supra dictis locis respectivo, præsentium retroscriptarum litterarum copiis, ut moris est, affixis, per nos Bernardinum Andreum, & Julium Parinum præbati Sanctiss. D. N. Pape, & sanctæ Apost. Sedis Cursores.

Philiberus Capuis Mag. Curf.

Confirmatio & extensio jurisdictionis S. R. E. Cardinalis Camerarii, & Magistrorum Viarum Almæ Urbis.

Hanc jurisdictionem à Pio V. fere extinctam, restituit Gregor. XIII. in const. 22. Quæ publice, ubi plene notabo. Et inde ista corrigitur bulla, in his quæ ibidem disposita fuerunt.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Inter multiplices curas, quæ mentem nostram undequaque sollicitant, illi summa ope jam pridem incumbendum nobis esse statimus, ut Almam Urbem nostram, perpetuam Vicarii CHRISTI spiritualisque imperii Sedem longe felicioribus, quam priscum illud temporale partum fuerat, auspiciis stabiliam, communemque totius Christiani populi patriam, sicut bonis moribus, omniique virtutum genere perornatam, ita templorum & aliarum, tam sacrarum & publicarum, quam privatarum ædium, platearum, & viarum pulchritudine, necnon muro-

Sanctio po-
nalis.Idat. P. A. 6.
die 23. Aug.

Publicatio.

CII.

Edita An. D.
1565.

Exordium.

rum, praeugnaculorumque firmitate decoratam, ac etiam promeritis suis longe, lateque prolatis, insigniter ampliatam, cum Dominus huius nostrae peregrinationi modum duxerit imponendum, relinquamus: & ut hac votis nostris respondeant, eorum curam, sollicitudinemque; egragiorum Civium prudentia libenter committimus, qui sciant, velint, & valeant, id muneris diligenter amplecti, & fideliter exercere.

§. 1. Dad non siquidem fel. record. Sixtus Papa IV. praedecessor noster, cupiens ipsius Urbis & c.

Omniteur relati. huius bullae. quae a eam habes sup fol. 317. Et si de consuetudinibus.

§. 2. Et succellere pia memoria Leo Papa X. etiam praedecessor & c.

Omniteur etiam hanc relatio quoniam ipsa bulla est sup. Inter curas.

§. 3. Nos autem ejusdem almae Urbis ornatui, ampliationi, decori, & pulchritudini, acrisque salubritati, non minus quam ipsi praedecessores consulerunt, quantum in nobis est, consulere, & quemadmodum illa in Civitate nostram Piam ampliavimus, incrementibusque ac propugnaculis munivimus, eam quoque ut multum, ita etiam ornatam, ac speciosam reddere cupientes: eorumdem praedecessorum vestigiis inherendo, similiter Motu proprio, & ex certa scientia nostra, ac de pari potestatis plenitudine, singulas Sixti & Leonis praedecessorum eorumdem litteras praedictas cum supradictis, ac etiam aliis, omnibus & singulis in eis contentis clausulis, ac inde secuta quaecumque, auctoritate Apostolica tenore praesentium perpetuo confirmamus, approbamus, & innovamus. Decernentes easdem litteras, in omnibus & singulis forsam paribus, etiam hic non expressis, etiam in quibus forsam hactenus hic receptae non sunt, seu non esse dici possent, perpetuis futuris temporibus inviolabiliter: & ad unguem ab omnibus observari debere, ac omnes & singulos ad illarum observationem omnino teneri, & efficaciter obligatos existeret & ceteri. Ac ad id opportunis iuris & facti remediis, etiam per censuras & poenas in eisdem litteris appositas & insertas, cogi posse, & etiam debere.

§. 4. Praeterea cum non sine animi nostri dilectione intellexerimus, ea quae per praefatos praedecessores in praenarratis litteris pro publico Almae Urbis commodo & honore ordinata fuere, contrarium sortiri effectum, quandoquidem licet juxta earum tenorem in praemissis, & forsam certis aliis ibi expressis casibus, Camerariis, & Magistris viarum, qui pro tempore fuerunt, quamplures ad domos suas, vicinis se ibi adificare vellet dicentibus, seque id faciuros, etiam cum obligatione promittentibus, vendendum coegerint, multi tamen emptores hujusmodi obligationibus per eos ad nova aedificia inchoandum, & perficiendum, sua jam constructa ampliandum, pactis, modis & formis, ac sub penis in sententiis Camerarii, & Magistrorum viarum, juxta formam dictarum litterarum promulgatis contentis non obstantibus, postquam dictas domos antiquis dominis ejectis habuerunt, nova aedificia per se promissa facere, seu jam constructa ampliari non curarunt, memoratis praedecessorum praefatorum constitutiones, & antiquos domorum dominos simul eludendo, & poenas praefatas damnabiliter incurrendo, indignationibus hujusmodi, ut par est, providere volentes, eisdem auctoritate & tenore statuimus, volumus, & ordinamus, ut qui infra sex menses a die publicationis praesentium promissiones per eos a viginti annis citra factas, & in futurum faciendas, non adimpleverint, ac propterea poenas juxta formam dictarum litterarum incurrent, manu Regia ad solutionem ponarum hujusmodi per Camerarium, & viarum Magistris praefatos cogatur, quarum poenarum una fabricae, seu munitioni murorum Civitatis nostrae Piae, & altera medietates Camerario, & viarum Magistris praefatis applicentur; & nihilominus ipsi elusores ad dictas domos pro eodemem pretio, quo illas emerunt, primis dominis retrovendendum a Camerario & Magistris praefatis cogi possint.

§. 5. Et quum pluries hactenus sit in litteris Sixti

praedecessoris hujusmodi dubitatum, an domini vendere volentes deberent requirere vicinos super venditionibus domorum, platearum, sediminum, situum, vel casalenorum, ipsis vicinis contiguorum, per eosdem dominos faciendis, ad obviandum licitis, quae ex hac causa deinceps oriri possent, hac nostra perpetuo valitura sanctione statuimus & ordinamus, ut in futurum si vicinus requisierit prius venditorem, seu vendere volentem super venditione domus, plateae, sediminis, situs vel casalenis, siue non requisierit, semper ad hoc ut venditio aliis quam vicinis facta vel facienda, valida sit, suumque sortiarum effectum, venditor siue emptor domus hujusmodi vicinum ipso personaliter reperto, si haberi poterit, per unum, si autem facta diligenti persona aliter reperiri commode non poterit, per duos ex Mandatariis, vel nostris Curforibus domi dimissa copia, in absente vero per edictum publicum requirere, vel requiri facere debeat, & teneatur, an ipse vicinus velit domum venditam, seu venalem hujusmodi pro pretio per dictum emptorem, seu emere volentem, non vicinum, vere & non ficto oblato, soluto, aut promisso, & cum eisdemmet pactis & conventionibus.

§. 6. Qui quidem requisitione, seu intimatione, per venditorem, seu emptorem sic facta, si vicinus, aut vicini, si plures fuerint, intra quindecim dies non acceptaverint, & summam cum emptore, seu emere volente non vicino conventam non promiserint, & de fabricando ad certam summam arbitrio Magistrorum viarum, sub certa poena eisdem Magistris benevisa, se non obliaverint, & deinde intra alios quindecim dies dictam summam realiter & cum effectu, si vere & realiter in primo instrumento, vel contractu fuerit soluta, non solverit; & si nondum fuerit soluta, omnia in eodem primo instrumento, vel contractu, aut obligatione vel conventionem contenta non adimpleverint, tunc venditio aliis quam vicinis facta, vel facienda hujusmodi, firma & valida remaneat. Sin vero praefata intimatio modo quo supra facta non fuerit, tunc venditio juxta praefatarum Sixti praedecessoris litterarum formam, facta pro vicino intelligatur. Et si praedicta intimatio facta non fuerit, volumus quod ad rescissionem primi instrumenti hujusmodi venditionis, unusquisque vicinorum praedictorum, semper & quando-cumque admittatur, nec illi via sit praclusa, nisi post annum a die scientiae venditionis, quam scientiam declaramus sufficere tantum in generali, nempe scire rem fuisse venditam, etiam quod pretium & aliae qualitates fuerint ignoratae.

§. 7. Et concurrentibus in eujusvis, seu quorumvis domorum, platearum, sediminum, situum, & casalenorum emptione, inquilino & vicino, ipse vicinus eidem inquilino, ac alias, servata praefatarum litterarum forma, omnino semper praefaturus, & praefari debeat.

§. 8. Et ad obviandum simulationibus & fictionibus, quae plerumque in similibus instrumentis venditionum, etiam forsam ad eludendum hujusmodi nostras, & nostrorum praedecessorum ordinationes, inter venditores & emptores, praecipue exprimendo majus pretium in instrumento quam vere & realiter sit solum vel conventum, intercedere consueverunt, volumus quod venditiones, in quibus hujusmodi simulationes, praesertim circa pretii quantitatem intervenerint, omnino nulle sint; & nihilominus tam pretium per emptorem solum vel promissum, quam res sic vendita, ad nos & Sedem Apostolicam eo ipso devolvatur, pro una fabricae Civitatis nostrae Piae, seu illius murorum, & pro altera medietatibus Camerario & Magistris praefatis irremissibiliter applicanda, prout ex nunc applicamus.

§. 9. Et insuper pro majori officio dilectorum filiorum Horatii Nari, & Hieronymi Pichi, modernorum & successorum suorum pro tempore existentium Magistrorum viarum dictae Urbis dignitate simul & auctoritate, ac ad obviandum cavillationibus,

Dilecti rationes venditiones & morum, & c. semper incriminandas esse vicinis.

Tu vide Greg. XIII. constit. in rub. §. 8. & seq.

Vicinosque post intimationem, adimplere debere hic expressa.

Tu vide Greg. XIII. §. 9. & seqq.

Vicinos quoque praefatos iniquos iniquis declarant.

Simulataeque venditiones annullat, & contrahentibus poenas imponit.

Confirmat etiam quae cumque Pontificum constitutiones, editas circa officia & facultates Magistrorum viarum, et dubia, in oratione Urbis interpretari decernit.

quæ in dies super eorum officio, & privilegiis, ac facultatibus suis subinde emergere possent, omnia & singula, ac quæcumque privilegia, facultates, gratias, prærogativas, & indulta Magistris Viarum Urbis, eorumque officio huiusmodi per præfatos, & quosvis alios Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac etiam per nos & dictam Sedem hæcenus quomodolibet, & specialiter per unam Motus proprii schedulam à piæ memorie Paulo Papa III. si niliter prædecessore nostro editam, incipientem (Inter alias innumerabiles & graves) concessa, in primis & ante omnia eidem auctoritate & tenore approbantes, similiter perpetuo statuimus, ordinamus, de æternis, & declaramus, quod quælibet pars & clausula, siue constitutio, tam supradictorum per Sixtum & Leonem, ac Paulum, ac quorumvis aliorum per quoscumque alios Romanos Pontifices prædecessores, & etiam respective successores nostros, ac nos & Sedem eandem editarum, & quodcumque edendarum litterarum, & etiam pari motu figuratorum rescriptorum, officium & facultates Magistrorum viarum Urbis huiusmodi quomodolibet contentum, respicientium sibi sensus erit, vel videbitur esse dubius, semper in dictæ Urbis favorem, & ornatum intelligatur, accipitur, & interpretetur, ac intelligi, accipi, & interpretari, & ita à Camerario & Magistris præfatis, in causis coram eis vertentibus, iudicari & definiti debeat, iusque ipsum in litteris & rescriptis præfatis, si opus sit, favorabile non auriem odiosum sit & esse censetur, & etiam ad effectum præfatum casus dicatur comprehensus, potius quam extensus, quacumque interpretatione, sensu, intelligentia, opinione, aut alia rein contrarium quomodolibet faciente non obstantem.

Vicinis etiam fabricare volentibus, decerni alias vicina domos, tam locari solitas, quam non vendere debere ut hic.

Tu vide eandem constit. Greg. XIII. §. 5. & seq.

§. 10. Præterea ne fabricare, siue ædificia ad Urbis ornatum ampliare volentes propter loci defectum, cum interdum domos vicinas locari solitas, quas eis vigore litterarum prædictarum emere liceat, non habeant, sed domus ipsæ vicinæ à propriis illarum dominis sint habitata, & pro proposito abstrahantur, & non possint propter situs carentiam, fabricas, & palatia, siue domos, ut ajunt requadrare, ideo statutum dicti Sixti prædecessoris super domorum locari solitarum dominis ad illarum venditionem vicino seu vicinis fabrica, domusque seu domos suas ampliare volentibus faciendam compellendis, ut præfatur editam, ad quascumque domos, hortos, terrænas, etiam per proprios eorum dominos inhabitari solita, casu quo videlicet vicinus prædictum, aut aliquam magni momenti fabricam, domum, hortum, seu terrenum vicinæ à duobus lateribus ad minus circumdantem, & domus, horti vel terreni viciniorum seu valore quadruplo excedente inchoaverit, seu inchoatum perficere voluerit, etiam si tales domus, horti, & terrænas quorumvis Monasteriorum, Ecclesiarum, vel Hospitalium, vel aliorum piorum locorum extra tamen septa Monasteriorum, Ecclesiarum, aut piorum locorum nihilominus, distique Monasterii, & aliis locis piis minime contigua existant, in quod statutum Sixti huiusmodi non solum locari, sed etiam casu prædicto in proprios eorum dominos habitari solitis domibus, hortis, & terrenis locum omnino habere, & ad unguem observari debeat. Ac domini domorum, hortorum, & terrenorum ipsorum, etiam per eos habitatorum, ad illorum venditionem, vicino seu vicinis huiusmodi fabricam constituere, seu perficere, volenti, seu volentibus, & etiam in domo fabricanda, seu amplianda, non habitantibus, nec habitare solitis per Camerarium & Magistris viarum præfatos pro pretio æstimando, & plus decima illius parte, & alias iuxta litterarum Sixti & Leonis huiusmodi formam & tenorem faciendam arbitrio dictorum Camerarii, & Magistrorum, per eos etiam manu regia, cogi & compelli possint.

Idemque ferri mandari in casalenis.

§. 11. Et insuper Sixti prædecessoris statutum casalense per plures pro indiviso possessa, & in maximum Urbis detrimentum plerumque diruta vel discooperta, ita quod ipsi omnes consortes eorumdem casalenorum possessores ad dicta casalensia restauran-

dum, & cooperiendum, ac inibi Magistrorum præfatorum arbitrio fabricandum, vel si & prout eidem Magistris melius videbitur, uno vel pluribus ipsorum consortum fabricare volenti, seu volentibus, reliqui consortes fabricare nolentes vel differentes, ad suas portiones consorti, vel confortibus fabricare volenti, seu volentibus, pro pretio per peritos æstimando vendendum, & consortes, seu confortes fabricare volens, seu volentes, ad portiones prædictas emendum, aut si nullus ipsorum fabricare voluerit, ipsi omnes ad dicta casalensia, vicino seu vicinis domorum contiguarum pro pretio, ut præfatur, æstimando vendendum, ac idem vicinus seu vicini ad illa emendum per Camerarium & Magistris præfatos eorum arbitrio, etiam manu regia sub pœnis sibi bene visis respective compelli possint: & nihilominus contravenientes caducitatis, & aliis in præfatis appositis penas incurrant, perpetuo extendimus & ampliamus.

§. 12. Et cum multæ viæ in eadem Urbe jampridem de novo inchoatæ imperfectæ remaneant, ac in pluribus earumdem viarum locis, non solum illæ lomas, sed ne parietes quidem, seu muri constructi reperiantur, & variis in locis domus ad invicem divise, distantes, separatæ & revocatæ remaneant, in eisdem Urbis non modicum deformitate, & locorum eorumdem deturpationem, & (quod pejus est) in dictis locis sic desertis, fortes, & immunditiæ passim projiciantur, nos huiusmodi omnium obviare cupientes, volumus & ordinamus, ut in omnibus & singulis huiusmodi locis unusquisque dominus, siue directus siue utilis, in domo à se possessa, vel casalensio sic truncata, vel truncatus, aut in toto, vel solo, aut alio loco suo proprio, saltem muro seu pariete claudere, illamque illud, vel illum infra sex menses à die publicationis præsentium pro tempore faciendæ in domibus vero de novo incidentis, pro viis seu plateis construendis infra sex menses à die integræ facti factionis, à Magistris vel aliis ipsi dominis domorum factæ computandis, muris, seu parietibus, saltem usque ad primum solare claudere debeat, & teneatur sub pœna ad arbitrium eorumdem Magistrorum viarum imponenda per quemlibet contravenientem, eo ipso toties quoties contaverit incurrenda. Et si loca ipsa sint censuaria, siue emphiteutica, & Ecclesiastica, Monasteriis, seu aliis locis, vel personis quibuscumque respondentia, ipsa dictis sex mensibus elapsis, ad suos directos dominos cum eodem opere fabricandi, vel muro claudendi, dummodo si personæ Ecclesiasticæ sint eorum liberationem, siue affrancationem iuxta formam prædictarum litterarum faciendam non impederint, devoluta sint & esse censeantur: etiam si domus, situs, & casalensia prædicta sint Ecclesiastica, Monasteriorum, seu piorum locorum quorumcumque. Et ita per quoscumque iudices iudicari debere mandamus. Possint tamen dicti viarum Magistri eundem terminum sex mensium pro qualitate locorum, & personarum, ubi eis videbitur prorogare.

§. 13. Et nihilominus ex nunc quibuscumque locorum præfatorum inquilinis, seu affluariis ne facta prius ipsis simplici dictorum Magistrorum inhibitione, & locorum eorumdem pensiones vel census dominis suis sub pœna iterandæ solutionis persolvant, sed eas & eos, etiam invidis dominis, in expensis pro præmissis ne essariis convertant, & muros ad dictam altitudinem, si facti erit, perficiant, donec, & quousque in eisdem locis, ut præfatur, fabricatum fuerit, inhibemus pariter & interdiciamus; quodque deinceps domini conductuibus ipsis illas bonas facere censeantur; & in eventum contravenientis, ac soluta per ipsos inquilinos, seu conductores pensione, & dicto pariete ad minus usque ad primum solare non perfectio, eosdem inquilinos seu conductores de suo proprio ad dictam constructionem teneri, & obligatos esse volumus, & etiam declaramus.

§. 14. Et domibus ita incisis, siue de novo incidentis earum domini per nos ita sint gravati ad fabricandum, vel muro claudendum, ut præfatur, ad

Domos quoque, tam dirutas, quam diruendas pro constituendis viis & plateis, reparari debere decernit.

Et inquilinos pensiones & census dominis, illarum domorum solventes in huiusmodi re statum exonerare possent & debere declarari.

Dominoque domorum pro construendis viis inciarum vicin habitantes ad eas sibi vendendas cogi posse decernit, si domus inclae incommoda effecta sint, & a dominis inhabitare. Vide ibid. in v. 6.

vel muro claudendum, ut praefertur, ad minus usque ad primum solare, & multoties ipsi domini inhabitantes ex hac causa maximam recipiant incommoditatem cum ex ipsa incisione domus ipsorum remaneant incommoda, idcirco in casu & casibus praefatis, ubi domus per dominos inhabitatur pro viis, seu plateis construendis incisae fuerint, & sic incommoda effectae & relatae, ibidemque intra sex menses, vel postea fabricatum fuerit, domos contiguas etiam per dominos inhabitatas, qui non fabricaverint praefatis dominis qui fabricaverint sic domos incisas dominos praefatos vicinos, etiam habitantes, ad tendendum pro pretio per duos peritos, & in eventum discordiae, per Magistros praefatos assistendo, & plus decima illius parte, ut praefertur per Camerarium & Magistros eorum arbitrio, etiam a tribus lateribus domos vicinorum non circumdantes, nec duplum nec triplum in valore excedentes, manu Regia compelli posse volumus & etiam mandamus.

§. 15. Cumque tam in de Populo, & de Portugallo, ac Sanctissimae Trinitatis, & Piae nuncupatis, quam aliis dictae Urbis viis, quamplicumque sitis, seu praedia reperiantur muris, domibusque omnino vacui, quo sit ut viae ipsae lateribus sterni, seu pavimentari, & ad ornatum redeant nequeant, pariter sub penis praefatis, volumus, statuiamus & ordinamus, quod situm praedictorum domini infra eisdem sex menses in dictis sibus, vel muros, ut praefertur, adificia construat, seu constructi facere debeant & teneantur. Ita quod lapso sex mensium termino praefati Magistri viarum situs praefatos, in quibus, ut praefertur, fabricatum non fuerit, quibuscumque personis ac pro pretio reperiendi, locare & concedere, seu, si Camerario & Magistris ipsis melius videbitur, situs ipsos quibuscumque personis pro pretio huiusmodi in manibus eorum depositariorum ad effectum illud postmodum dominis dictorum situm consignandi, facta tamen per dominos praefatos ratificatione venditionis praefata per Magistros facta, & datis idoneis cautionibus in forma, juxta formam Statutorum Urbis deponendo vendere & alienare libere & licite, ac valide etiam possint ad effectum praedictum.

Et dominos situm vacuorum fabricare in eis debere aliquem Magistros viarum eos alios locare vel vendere posse, ut ibi fabricetur mandat. Vide ibid. in §. 2.

vulgariter nuncupatas, in viis publicis respondentes, & ab ipsis domibus aquam, & immunditias, in vias & loca publica evoentes quibuscumque personis, ut infra eisdem sex menses sub dicta caducitatis, & aliis penis praefatis, tam cloacas, quam etiam viculos praedictos, necnon quascumque latrinas, seu cantaras, & siccatoria, vulgo sciacquatoria nuncupata, & piscinas in vias publicas, & vicos seu viculos, aut plateas exeuntes, & respondentes obstruere; & si velint cantaras, in eorum cortibus seu cortilibus, & cancis, non autem in vel super viis publicis, seu plateis, fabricari debeant; ita quod iniqui domorum, & locorum huiusmodi praemissa ex peniis eorum pensionis, etiam invititis dominis, & contra eorum voluntatem facere possint: & non facientes ad penam arbitrio praefatorum Magistrorum viarum imponendam teneantur. Et nihilominus omnes pensiones decursas, & praefatis dominis interim contra inhibitionem eis faciendam solutas consignare teneantur depositario dictorum Magistrorum viarum, ad effectum cloacas, aliaque praemissa claudendi, & cantaras, ut praefertur faciendi, inhibemus, praecipimus, atque mandamus.

Et dominos situm vacuorum fabricare in eis debere aliquem Magistros viarum eos alios locare vel vendere posse, ut ibi fabricetur mandat. Vide ibid. in §. 2.

§. 18. Et cum in viarum, quae pro tempore sunt, constructione, ordinatione, & ampliatione, ac in domorum, casalenorum, & situm, five partium eorum applicatione seu venditione, in omnibus casibus supradictis, & aliis quomodolibet ex causis praefatis occurrentibus, interdum sit necesse domorum seu locorum ad usum viarum huiusmodi incisorum, seu divisorum partes remanentes adjudicare, & multoties propter fideicommissa apposta dubitetur ne lites & controversiae oriantur, ad tollendum igitur litium materiam, huiusmodi fideicommissa ad effectum praemissorum (ita tamen, quod ea quae fideicommissis subiecta erunt, sic adjudicentur, quod pretia illorum in tot bonis stabilibus reinvestiantur, quae bona remaneant eidem fideicommissis subiecta eodem modo prout dicta bona sic adjudicata antea subiecta erant) penitus, & omnino tollimus, cassamus, & amovemus, illisque ad hunc effectum sufficienter & expresse harum serie derogamus.

Inter domos ex stentis, appropriari & occupari posse declarant, ab eis qui ibi primo fabricaverint.

Ad hoc vide etiam eandem conf. Greg. XII. in §. 3.

§. 16. Et quoniam in Alma Urbe quamplicurimi adiuncti viculi latitudinis duorum vel trium palmorum, aut circa, in quibus variae sordes & immundities continuo iniiciuntur, & muri circumcirca existentes putrefactione corrupti factorem, cum pestiferi & mali aeris generatione inducunt, adeo ut tempore procedente dicti muri corrumpant, & collabuntur, & collapsi efficiantur, ut deinceps unicus murus pro utroque latere domorum contiguarum inferviat, sub eisdem penis, quod de cetero nemo cuiuscumque dignitatis, status, gradus, ordinis, vel conditionis existens, in, vel super muris huiusmodi trabes, autigna, seu quid aliud apponere, caminos, vel quidpiam aliud construere, vel murum dicti viculi elevare, seu aliquid ibi adificium fulcire, aut alias illis uti vel inuti queat nec debeat. Muratoribus vero quibuscumque, ne de cetero sub exilii a toto Statu Ecclesiastico, & bonorum suorum confiscatione poena in dictis muris pro illarum reparatione, aut de novo extructione, manum & operam apponere, vel quicquam operis ibidem facere, seu fabricare audeant vel praesumant. Et ulterius ad tollendos dictos muros & viculos, volumus quod ille ex vicinis, qui prius voluerit fabricare, possit, (habita tamen a praefatis Magistris licentia, etiam absque alicuius pretii solutione cuiquam faciendi) eosdem viculos sibi assumere, appropriare & vendicare, & super muro sui viciniigna, lapides, coementa, & trabes, aliaque ad fabricam suam necessaria apponere, suamque fabricam desuper adaptare, & ut dicitur appodiare, & alias eodem muro communiter cum vicino per eundem fabricare volentem medietate dicti muri ad estimationem duorum peritorum per partes ipsas eligendorum, & in eventum discordiae per Magistros viarum taxandi.

Inter domos ex stentis, appropriari & occupari posse declarant, ab eis qui ibi primo fabricaverint.

Ad hoc vide etiam eandem conf. Greg. XII. in §. 3.

§. 17. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

fideicommissa quocumque declarat non impedire praemissorum executionem. Quod habes etiam in d. conf. Greg. XIII.

§. 19. Et cum Urbs ipsa adificiis, & viridariis ornata, & splendida esse debeat, intus vero, & extra, ac prope illa adiuncti quamplicurima cannetta deformitatem Urbis generantia, aerisque fenestratam & salubritatem, ac clarum fluminis conspectum impediencia, & etiam male agendi opportunitatem, locumque subministrantia, quod quicunque tam extra per centum & quinquaginta cannarum distantiam prope quam intra menia eiusdem Urbis, necnon etiam in Angelica, & versus flumen in Pontis Milvii viis nuncupatis, ac per viginti cannarum distantiam juxta quascumque alias vias publicas cannetta habent; illa, ac omnia cannetta intus Urbem existentia, praeter ea quae sunt extra vias publicas in locis absconditis seu remotis infra praefatos sex menses sub penis praedictis funditus extripare, evellere atque tollere, ac ad terrenum & cultum vinearum, seu viridariarum reducere debeat.

Inter domos ex stentis, appropriari & occupari posse declarant, ab eis qui ibi primo fabricaverint.

Ad hoc vide etiam eandem conf. Greg. XII. in §. 3.

§. 20. Necnon cum Angelicam, ac Castellam nuncupatas vias, per vineas & prata, ac maximum Civitatis nostrae Piae per nos noviter constructam ornatum, fecerimus, intellexerimusque quod nonnulli prata praedicta ad cannetta, vineas, ac hortos faciendi impudenter claudere cogitant. Ideo quod nullus in posterum, etiam si proprietarius existat, dicta prata ad alium usum praeterquam ad pascua, fenumque colligendum destinare possit. Quodque omnes & quicumque, qui ab eo tempore, quo divina favente clemencia ad summum Apostolatus apicem assumpti fuimus, huiusmodi prata restrinxerunt, ac ibi vineas, cannetta, sive hortos fecerunt, ad illam pristinum statum, nempe ad pratum reducendum, per Camerarium, & viarum Magistros praefatos cogi & compelli possint & debeant, praecipimus & ordinamus.

Inter domos ex stentis, appropriari & occupari posse declarant, ab eis qui ibi primo fabricaverint.

Ad hoc vide etiam eandem conf. Greg. XII. in §. 3.

§. 21. Et similiter quia horti prope Urbem confistentes propter aquarum irrigationem, malum & pestiferum solent generare aerem, & maxime in Burgo

Canneta etiam tolli & ad cultum reduci mandat. Vide ibid. in §. 14.

Prata etiam si prope viam Angelicam, ac cannetta vel hortos ne cui prohibet.

Hortosque ibi factos praeterquam carciofola-

Inter domos ex stentis, appropriari & occupari posse declarant, ab eis qui ibi primo fabricaverint.

Ad hoc vide etiam eandem conf. Greg. XII. in §. 3.

§. 22. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 23. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 24. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 25. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 26. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 27. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 28. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 29. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 30. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 31. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 32. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 33. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 34. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 35. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 36. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 37. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 38. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 39. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 40. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 41. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 42. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 43. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 44. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 45. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 46. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 47. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 48. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 49. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 50. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 51. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 52. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 53. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 54. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 55. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 56. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 57. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 58. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 59. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 60. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 61. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 62. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 63. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 64. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 65. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 66. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 67. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 68. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 69. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 70. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 71. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 72. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 73. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 74. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 75. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 76. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 77. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 78. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 79. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 80. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 81. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 82. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 83. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 84. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 85. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 86. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 87. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 88. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 89. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 90. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 91. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 92. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 93. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 94. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 95. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 96. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 97. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 98. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 99. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

§. 100. Et quia quamplicurima domus eiusdem Urbis quasdam parvas habent Cloacas, Clavichettas

1565.

rum ad praetorium & vinearum usum reduci mandat.

Scalas quoque vias Urbis impediendes de cetero fieri prohibet & factas tolli praecipit.

Et hanc consuetudinem juris congruam ad vineas & casalia intra 12. milia ab Urbe extendit. Ad quod vide eundem consilium Greg. XIII. in §. 15.

nostro, S. Petri, ac dicta Civitate nostra Pia, ad cuius ornamentum, decorem, & aeris salubritatem sumopere intendimus. Desiderantes igitur, ut quemadmodum dictam Civitatem Piam muris & propugnaculis cinximus, & ab hostilibus offensionibus securam reddidimus, ita quoque aeris salubritate non careat, statuimus, quod omnes horti existentes in pratis extra portam Angel. (exceptis dumtaxat cardorum, vulgo carciofolorum hortis, in quibus aquarum irrigatio nullo modo fit) penitus tollantur & aboleantur, ac ad vinearum & pratorum usum reducantur, sub caducitatis, quoad dominos, & quoad inquilinos, seu assiduarios, sub exilii, & bonorum confiscationis, aliisque dictorum Magistrorum viarum arbitrio infligendis poenis.

§. 22. Et quoniam in variis Almae Urbis locis viae publicae diversis modis sunt impeditae, & inter alia à certis scalis, & bastoni, ut vulgariter dicitur, factis, quae multis in locis vias publicas fere per unam cannam, & ultra occupant, in maximum earundem viarum praedjudicium, & obstaculum, adeo ut duo currus concurrentes comode pertransire nequeant. Idcirco sub praemissis & aliis arbitrio Camerarii, & Magistrorum praefatorum imponendis poenis, districte praecipiendo mandamus, ut in posterum nemo quo minus via pro duabus thedis, cochleis vulgariter nuncupatis, concurrentibus, lata, spatiosaque remaneant, dictas scalas audeat ita componere, sed tantummodo duos, vel tres palmos ultra januam excedere: factas vero scalas praemissas, ad dictos duos vel tres palmos infra eisdem sex menses sub similibus poenis reducere & restringere unusquisque debeat. Muratores autem ibi aliter operantes, exilii & bonorum confiscationis poenas incurrere & exolvere volumus.

§. 23. Praeterea cupientes, non solum ipsam Urbem interiorem, sed etiam illius suburbia, & circuitum, ac vineas decorari, cum nobis innotuerit nonnullos, pulchras & deliciosas vineas, ac possessiones, facere & ampliare volentes, à vicinis illis terrenum, aut vineas locari tamen, seu ad medietatem fructuum, vel alias dari & concedi solitas, ad id vendere nolentibus impediri, praefatis Camerario, & viarum magistris, ut quoscumque five saeculares, five Ecclesiasticos, etiam si Monasteria quorumvis, etiam Mendicantium Ordinum, necnon Ecclesias, Hospitalia, aut alia pia loca fuerint terrena, vineas, aut canneti, locari tamen, aut ad medietatem fructuum, vel alias, ut supra dari solita, ab una, non solita vero locari à tribus, seu duabus partibus circumdata, extra tamen septa Monasteriorum eorundem habentes vel habentia, ad illorum, in toto vel in parte, etiam pro vialium directione, & accommodatione faciendam, arbitrio dictorum Camerarii, & Magistrorum venditionem vicinis illa sic circumdantibus, & ampliare volentibus, pro iusto & rationabili pretio per duos peritos per partes eligendos, & in eventum discordiae per praefatos Magistros, habitata dictorum electorum relatione, aestimando faciendam, etiam manu Regia, cogere possint & debeant, etiam si loca ipsa non sint vel fuerint locari solita, & absque ulla difficultate id etiam procedere volumus, in vinea, canneto, vel terreno sic convicino, ubi domus commoda pro domini habitatione non fuerit, concedimus & ordinamus. Necnon huiusmodi nostram ordinationem, non solum ad vineas, sed etiam ad casalia intra duodecim miliaria ab Urbe consentientia, ad dictam Urbem ornatam, & commoditate dominorum casalium extendimus, ac extendi debere praecipimus & mandamus. Cumque intellexerimus multa casalia magnae quantitatibus rubrorum habere incorporata non nulla terrarum portiones, aut petia modicae quantitatibus pediculis vulgariter nominata: volumus etiam & ordinamus, ut quicumque casale habuerit centum rubrorum, aut minus, & hoc maxime ubi aliquid nobile, five commodum aedificium pro habitatione existat, & aliquam pediculam vicinam & contiguum habeat: si ab uno latere tantum rubra centum, decem: & si à duobus, viginti: si à tribus, triginta: & si casale

excedat summam centum, ad dictam ratam, ut supra. Et si aliquid etiam multorum rubrorum casale in alio incorporatum existat, videlicet cum aliqua lingua, quatenus dicta lingua sit incorporata, illam sibi arbitrio dictorum Camerarii, & Magistrorum pro pretio per petitos aestimando, & aucta decima parte pluris vendicare possint.

§. 24. Et insuper eisdem viarum Magistris, ut quoscumque ad scalas quaslibet extra domos, & in viis seu plateis publicis existentes, quarum praesertim in Regionibus Trastiberinis, & Trivii, maxima adest copia, & quae vias publicas non parum impediunt & occupant. Necnon ad mœniana, alias curritoria lignea, mignani vulgo nuncupata, extra muros domorum multum, vel modicum se porrigentia & eminentia, in vias publicas prospectum habentia, infra annum à die publicationis praesentium destruendum & tollendum arbitrio Camerarii, & Magistrorum eorundem cogere & compellere. Necnon domorum inquilinis, ut pensiones per eos pro tempore debitas etiam invititis dominis retineant, & in expensas pro destructione casalarum & curritiorum huiusmodi necessarias absque eo quod ad iteratam dominis suis solutionem teneantur, convertere valeant & debeant. Quinimo inquilini ipsi dictas pensiones, donec scalae & curritoria huiusmodi ablata fuerint, post simplicem inhibitionem eis faciendam suis dominis sub poena solutionis dictis Magistris viarum iterato faciendae nullatenus persolvere possint; quod tamen uniuersique, ferrea, seu lapidea mœniana quae vulgo arengherias, aut balaustos vocant, habere liceat impune permittentes.

§. 25. Quodque quilibet infra annum praedictum suas porticus, seu porticalia, penitus & omnino destruere & demoliri, aut muris claudere habeat; dummodo porticus ipsae non sint modernae & insignes, iudicandae & dignoscendae iudicio eorundem Magistrorum viarum. Illae vero porticus, quae pro viarum dilatione incidentiae erunt, ita manere teneantur quousque per praefatos viarum Magistros excisae fuerint.

§. 26. Et praeterea, quod inter casamœnia, seu in locis eiusdem Urbis habitatis non liceat cuique habere hortos seu viridaria sepius conclusa, sed illorum domini sub poenis praedictis illa muris circumdare teneantur.

§. 27. Omneque pontes lignei per vias publicas transversi cum situm publicum occupent, & dictae Urbis ornatum offendant, infra eisdem anni terminum, exceptis tantum illis, qui non in principalibus, sed transversalibus viis, aut in viculis consistentes, visum & lucem non impediunt, iudicio eorundem Magistrorum dignoscendis.

§. 28. Et ulterius omnes pontelli in quibusvis domibus ruinosis in viis five plateis existentes, infra sex menses à die publicationis praesentium per illorum respective Dominos, seu inquilinos sub poenis praemissis omnino tollantur & auferantur, auferique debeant.

§. 29. Et quoniam ad dictam Urbem decorem, & ornatum non parum cederet, si unaquaque ars ab aliis artibus separata, & in unum collecta ac unita, suis loco & ordine collocaretur; & praecipue illa, quae ad victum sic sparsa non est necessaria, cum artifices ipsius Urbis quasi absque ulla distinctione invicem confusi, absque maxima ordinis perturbatione, ornatuque & decoris publici praedjudicio habitare noscantur, qui, quorumque tabernae & officinae si in fuis quique locis, & vicis segregatis ordinarentur, tam Urbis ornatui, quam etiam illorum commoditatibus non parum consuleretur, ut omnis inter eos confusio amoveatur, & ipsi ab invicem iuxta species suas separati, in quantum poterit, decorem Urbis deferant, simul & commoditatem. Ideo quod quories, & postquam per Camerarium & Magistros viarum huiusmodi Artium divisio & situatio statuta & ordinata fuerit, quicumque artifex quuscumque artis & exercitii in aliquo vico, via, aut platea dictae Urbis, ubi suae artis exercitium magis vigeat, & constitutum fuerit ut praefertur, habitare voluerit, possit quemcum-

Scalas & curritoria vias publicas impediencia tolli mandat.

Porticalia demoliri aut muris claudi iubet.

Hortosque in casamœniis Urbis existentes muris claudi praecipit.

Pontes ligneos transversos in viis publicis amoveri mandat.

Pontellos in domibus ruinosis tolli iubet.

Artium divisionem & situationem in certis viis per Camerarium & Magistros fieri, factam servari praecipit.

Et dubia su-
per præmis-
sorum intel-
ligentia ca-
rum arbitrio
dissolven si.
Vide ibid. in
§. 2.

In quibus
causis ab eis
non appella-
tur.

Causasque
artis murato-
rix eidem
Magistris
audiendas
committit ut
hic.

qua alium cuiuscumque alterius a suo diversi exercitii artificem inibi commorantem, seu commorari volentem, expellere & ejicere, ac expelli & ejici facere, & in illius locationes, dummodo ad longum tempus, seu ad vitam, vel generationem non sint, factas, subintrare pro eodem pretio, data tamen cautione de exercendo dictam suam artem in dicto loco ad minus per annum, & ultra arbitrio Camerarii, & Magistrorum viarum praefatorum, exceptis tamen semper dominis in propriis domibus habitantibus. Et ad evitandas controversias, possint ipsi Camerarius, & viarum Magistri, semper & quocumque arbitrio suo decernere & declarare, quæ ars in uno loco magis vigeat, quam altera, ac etiam artificii inquilino sic pro tempore expellendo, unius mensis, aut longiorem ipsi Magistris benevisum terminum ad evacuandum præfigere. Et insuper fines, limites, & vicos, infra quos unaquæque ars, & illius artifices suo ordine stare & consistere debeant, constituere & declarare, prout & quando eis videbitur & placuerit, perpetuo statuimus, mandamus, & ordinamus.

§. 30. Et quia aeris putrefactio non solum ex malis humoribus & immundities, sed etiam ex malis odoribus & fetoribus generatur, sique ars Candelariorum diffusa per Urbem terrarum putorem reddens, multum noceat Civitati; Idcirco quemadmodum artes vaccinariorum, seu corariorum, necnon artificum chordas musicales ex animalium fibris facientium malum reddentes odorem, ad fluminis ripam separatæ reperiuntur, ita & dictam Candelariorum artem, ut est putor exhalationem habeat, prope flumen ad Sixti, five quatuor capitum; aut Sanctæ Mariæ nuncupatos Pontes, ubi Camerario, & viarum Magistris praefatis magis videbitur expedire, infra mensem à die publicationis praesentium sub confiscationis omnium bonorum ipsorum Candelariorum, & aliis etiam in eorum personam arbitrio Camerarii & Magistrorum praefatorum infligendis poenis re laci, ac in locationes aliis personis ibi factas, prout eidem Magistris videbitur, subintrare debere, volumus & mandamus.

§. 31. Et quoniam Urbs ipsa nimium est humiditati subiecta, sique in certis partibus siliabus strata humidior efficiatur; Propterea omnibus & singulis muratoribus sub exiliis, aliisque pecuniariis, & etiam corporalibus dictorum Magistrorum arbitrio infligendis poenis, dominis vero sub ducentorum ducatorum, ut præferretur, applicandorum poena ne deinceps via siliabus sternere, seu aliquas siliatas ante domos suas facere audeant seu praesumant, inhibemus. Volumus autem, quod omnes viae ipsius Urbis coctilibus sternantur lateribus, una cum suis interlineis, quas guidas vocant, piperino, tiburino, aut sileo lapide, arbitrio dictorum Magistrorum; nec sint aliquo pacto intervistæ, sed in unaquaque via sint omnes guidæ ex piperino, tiburino, aut sileo lapide.

§. 32. Et insuper praefatis Magistris viarum in perpetuum, & pro decore ejusdem Urbis, ac structura viarum principalium, praesertim intus & extra Urbem in via Flaminia, de Populo nuncupata, infra unum milliare dominos vinearum, & aliarum possessionum vis ipsi configurarum, ad muros & alia pro dictarum viarum principalium structura & decore arbitrio Camerarii, & Magistrorum eorumdem necessaria conficiendum, fabricandum & refarciendum, vel ratam expensarum ipsos dominos, & quenlibet ipsorum pro praedictis, & eorum singulis respective quomodolibet tangentem, solvendum, & seu depostitandum, prout ipsi Magistris videbitur. Et si aliquis, vel aliqui dictorum dominiorum muros construere, aut alia, ut præferretur facere, vel dictam ratam solvere recusaverint, praefati viarum Magistri pro celeriori expeditione ipsos dominos sic renitentes & morosos, ad suas vineas, five possessiones, in toto vel parte alteri, seu aliis pro justo & rationabili pretio, ut supra dictum est, astimandum, vendendum, etiam manu Regia cogere & compellere.

§. 33. Ac ad tollendas disputationes iidem Ca-

merarius & Magistri viarum, omnes & singulas, ac quascumque difficultates, & dubia, quæ super praemissis, aliisque omnibus & singulis in praesentibus contentis, & descriptis, ac illorum sensu, intelligentia, vel significatione oriri quocumque contingere interpretari & dissolvere arbitrio suo libere & licite possint & valeant, licentiam, facultatem, potestatem, & auctoritatem omnimodam impartimur.

§. 34. Præterea statuimus, & de novo etiam ordinamus, quod in causa sternendarum viarum hujusmodi, praefati Magistri sint veri iudices & executores; ac ab eorum decretis & mandatis in hac parte, sicuti in causa mercedis, non possit quoquo modo, nisi facto actualiter deposito penes Notarium ipsorum Magistrum in pecunia numerata, cõsignando postea actori, vel restituendo reo, prout deinde per Camerarium, seu Viarum Praesidem, ad quem recursum fuerit, esset, vel erit iudicatum, appellari, vel recursus ad quempiam, etiam pro tempore existentes Camerarium, Clericos, vel praesidentes Camerae Apostolicæ, aut quoslibet alios iudices haberis; sed mandata praefata executioni demandari debeant, non obstantibus quibuscumque significationibus per praedictos, vel quoscumque alios forsitan faciendis.

§. 35. Et ut eorumdem Magistrorum viarum officium in sua auctoritate & dignitate, prout decet, habeatur, illorumque mandata diligentius executioni demandentur, & causæ super arte muratoria pro tempore nascentes sagacius & maturius veluti per expertos, & pro minori partium dispendio decendantur, omnes & quascumque causas, lites, questiones, controversias, & differentias tam inter quoscumque muratores, & fornaciarios, quàm eos & quosvis alios artifices aut alias, tam Ecclesiasticas quàm seculares personas super dicta arte muratoria, & rebus ad illam quomodolibet pertinentibus, ex nunc deinceps perpetuis futuris temporibus, tam active quam passive movendas, cum omnibus & singulis suis incidentibus dependentibus, emergentibus, annexis & connexis, ac toto negotio principali per praefatos Horatium Narum, & Hieronymum Pichum, modernos, & pro tempore existentes Magistros viarum dictæ Almae Urbis qui conjunctim procedere debeant simpliciter & de plano, ac sola facti veritate inspecta, etiam si, & quando eis videbitur, sine strepitu & figura iudicii, nulla tela judiciaria servata, etiam manu Regia procedendo, audiendas, cognoscendas, decidendas, siueq; debito terminandas esse, & fore decernimus, volumus, statuimus, declaramus & ordinamus. Non praedictando tamen, nec derogando praedictarum artium Consulatibus, ita tamen quod à sententiis ipsorum Consulum non possit ad aliquod aliud Tribunal appellari, nec recursus haberi, præterquam ad Magistris viarum praefatos, & dictæ Urbis Conservatores, seu Camerarium nostrum. Cum potestate citandi & inhibendi, quos, quibus, ubi, quando, & quoties opus fuerit, etiam per edictum publicum; constituto summarie, & extrajudicialiter de non tuto accessu, vel absentia, aut latitatione, sub pecuniariis, aliisque ipsorum Magistrorum viarum, & Conservatorum respective arbitrio imponendis & moderandis poenis. Et in eventum nõ partitionis, inobedientes poenas ipsas incorrisse, unica tantum citatione prævia declarandi, & ab eis exigendi: dictasq; causas in quocumque statu reassumendi, omniaq; alia & singula desuper necessaria, seu quomodolibet opportuna faciendi, dicendi, gerendi, exercendi & exequendi. Ita tamen quod neque Gubernator neq; Vicarius dictæ Urbis neq; Curia causarum Camerae Apostolicæ generalis Auditor, neque ejusdem Urbis Senator, nec Praesides Ripæ seu Ripetæ, neq; (præter tamen Camerarium nostrum dumtaxat) quicumque alius, vel alii ejusdem Urbis, vel extra eam ubilibet constituti iudices ordinarii, vel extraordinarii, delegati vel subdelegati aut quævis alia personæ cuiusvis dignitatis, status, gradus, ordinis, vel conditionis existant, etiam si Cardinalatus honore præfulgeant, & etiam habeant privilegia, vel indulta, quod ipsi sint iudices vel protectores aliquarum Societatum vel locorum, etiam

Candelariorum, Corariorum, & Vaccinariorum artes prope flumē exerceri mandat.

Et vis Urbis non amplius siliabus, sed coctilibus lateribus sterni præcipit.

Camerariis, & Magistris dat facultatē cogendi dominos possessionum configurarum vis principibus, ad ibi struendum muros &c.

priorum, aut causarum illorum Auditores, quatenus ipsi viarum Magistri in causarum huiusmodi cognitione prævenerint, causas artis muratorie huiusmodi nullatenus, in toto vel in parte audire, cognoscere, decidere, seu se in illis quomodolibet, & quovis prætextu intromittere possint, neque debeant, & quicquid fecus factum fuerit, irritum sit & inane, ac pro infecto habetur, & per prædictos viarum Magistros si prævenerint, ut præferatur, omnino revocari quandocumque possit (salvo tamen quod Clerici & Præsidentes Camere Apostolicæ se in huiusmodi causis juxta Pauli III. litteras prædictas duntaxat, & non alias intromittere possint) perpetuo committimus, & mandamus, ac eosdem Magistros viarum, causarum, & litium huiusmodi Judices, & executores speciales, & generales, ita quod in eis, ut præferatur, alte, & basse procedere valeant, constituimus, & deputamus. Salvo tamen recurso, si partes voluerint, ad ipsum Camerarium.

§. 36. Mandantes propterea dilectis filiis Vitellio S. Mariæ in Via lata, Diacono Cardinali Vitellio nuncupato, moderno & pro tempore existenti Camerario, & Præsidentibus, & Clericis præfatis, quatenus statim visis præsentibus nullo alio desuper à nobis, vel successoribus nostris, aut dicta Sede, seu aliunde cumque expectato mandato, omni mora, dilatione, & contradictione cessantibus, easdem præsentibus in dicta Camera recipiant, & admittant, ac in illius libris registrari mandent, illasque inviolabiliter, & ad unguem, in omnibus & per omnia perpetuo observent, ac ab omnibus & singulis observari faciant realiter & cum effectu.

§. 37. Ac præsentibus litteris perpetuo durare & valere, perpetuèque roboris firmitate subsistere, neque de subreptionis vel obreptionis, seu nullitatis, aut quod præmissa, & quodlibet præmissorum non fuerint usque recepta, aut alio quocumque vicio, seu etiam intentionis nostre, vel ejusdem Sedis, aut quovis alio defectu notari vel impugnari, neque etiam per nos vel successores nostros, aut dictam Sedem revocari, alterari, suspendi, modificari, aut illis in aliquo derogari umquam possit.

§. 38. Sique in præmissis omnibus & singulis per quoscumque Judices & Commissarios, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, & ipsius Ecclesiæ Romanæ Cardinales, etiam Legatos de latere, sub lata eis quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate, iudicari & definiri debere. Ac quicquid fecus super his à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane decernimus & declaramus.

§. 39. Quocirca Venerabilibus fratribus nostris Officibus & Portuensibus ac Tusulanensibus Episcopis per Apostolica scripta Motu simili mandamus, quatenus ipsi vel duo, aut unus eorum, per se vel alium, seu alios præsentibus litteras, & in eis contenta quacumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte eorumdem Magistrorum viarum fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisq; in præmissis omnibus & singulis efficacia defensionis præsidio assistentes faciant auctoritate nostra eosdem viarum Magistros approbatione, confirmatione, innovatione, singulis statutis, voluntatibus, ordinationibus, extensionibus, ampliacionibus, mādatis, præceptis, inhibitionibus, interdictionibus, concessionibus, indultis, commissionibus, deputacionibus, decretis, declarationibus, revocationibus, aliisque præmissis, juxta præsentium tenorem pacifice frui & gaudere. Non permittentes eos, vel ab eis causâ habentes, per Camerarium, Præsidentes, & Clericos præfatos, aut quovis alios quacumq; auctoritate fungentes, contra præmissa, vel eorum aliquod quomodolibet indebite molestari, inquietari, vel perturbari. Contradictores quoslibet, inobedientes & rebelles per censuras & penas Ecclesiasticas, ac alia juris opportuna remedia, appellatione postposita compescendo; invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 40. Non obstantibus præmissis, ac certa per nos dudum Motu simili edita super penarum per

elutores qui fabricas præmissas non fecerunt, nec faciunt, incursum ampliatione, impressioni librorum de ordine nostro à Civitate Venetiarum ad Urbem traductæ, factæ, sive concessæ, quam tenore præsentium, quoad præmissa, omnino revocamus. Ac etiam nostra de non tollendo jure quæsito, necnon recolendæ memoriæ Pauli Secundi, & Pauli Quarti de rebus Ecclesiasticis non alienandis, ac alienatis recuperandis. Necnon Bonifacii Octavi etiam Romanorum Pontificum prædecessorum nostrorum, de una & duabus dietis, dummodo ultra tres dietas aliquis auctoritate præsentium ad iudicium non trahatur, necnon aliis quibuscumque Apostolicis, ac in generalibus, provincialibus, & synodalibus Conciliis, editis & edendis constitutionibus & ordinationibus, ac Urbis & Curie Romanæ, ac Camere Apostolicæ, ejusdemque Curie Tribunalium, ac quorumvis Ecclesiarum, Monasteriorum, Hospitalium, & aliorum piorum locorum, necnon Ordinum, Consularum, & Societatum, ac Universitatum, etiam juramento, cōfirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, styli, usibus, naturis, decretis, capitulis, & etiā novis reformationibus, legibus Pontificis & Imperialibus, sacris Canonibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, illis, illorumque respectivè Populo, Civibus, incolis, & Superioribus, ac tam supranominatis, quam quibuscumque aliis personis, & etiam iudicibus Ecclesiasticis, & secularibus, sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, irritantibusque & aliis decretis, etiam motu & scientia similibus, vel ad quorumvis instantiam, in genere, & specie, ac etiam consistorialiter, & alias quomodolibet concessis, ac etiam iteratis vicibus approbatis & innovatis. Quibus omnibus & singulis, etiam si pro illorū sufficienti derogatione, de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, individua, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum tenores, formas & decreta in eis apposta, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in eis tradita observata, inserti forent, præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis alias in suo robore permanentibus hac vice duntaxat, motu & scientia similibus, specialiter & expresse derogamus, ac sufficienter derogatum fore & censi, volumus & decernimus. Necnon omnibus illis, quæ Sixtus, Leo, & Paulus III. prædecessores præfati in eisdem suis litteris non obstat voluerunt, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus, committere vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem. Et quia difficile foret præsentibus ad singula quæque loca deferri, volumus, & etiā declaramus, quod illarum transumptis, seu copiis, etiam impressis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & alicujus Prælati sigillo munitis, eadem prorsus fides, etiam in iudicio adhibeatur, quæ præsentibus ubi ubicumque forent exhibita, vel ostensa, adhiberetur.

§. 41. Et ne quisquam ullo umquam tempore præsentium ignorantiâ præterdare possit, volumus, & eadem auctoritate decernimus quod ipsæ præsentibus litteræ in Camere Apostolicæ, & Curie Capitoli valvis, ac in acie Campi Floræ de Urbe, per aliquem ex Curforibus nostris affixæ copia illarum ibi dimissa, universis & singulis, quorum interest, intra mensem à die affixionis huiusmodi computandum, perinde afficiant, ac si illis personaliter intimatæ fuissent.

§. 42. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ confirmationis, approbationis, innovationis, decreti, statuti, ordinationis, applicationis, declarationis, extēssionis, ampliacionis, mādari interdictionis, cassationis, amotionis, revocationis,

Forma & effectus publicandi quam habes in fin.

Sanctio processualis.

Confirmatio
huius Pontifi-
cis ipsarum
constit.

Contrario-
rum derogatio.

Verba Capituli.

1. Declaratio,
quod Regula
S. Francisci
renovat profes-
sionem
Evangelii.
2. Declaratio
super Obedi-
entia.
3. Super Pro-
prietate.

præcepti, intentionis, præmissionis, concessionis, inhibitionis, impartitionis, commissionis, constitutionis, deputationis, derogationis, & voluntatis, infringere, vel etiam temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit indignationem Omnipotentis DEI, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum eius, se noverit incursum.

Dat. Romæ apud S. Marcum Anno Incarnationis Dominicæ 1565, decimo Kal. Septemb. Pontificatus nostri Anno sexto.

Anno à Nativitate Domini 1565. Indictione 8. die vero 5. mensis Decemb. Pontific. Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa IV. anno 6. præsentis litteræ Apostolicæ in quinto foliorum in totum (computato præsentis) triginta duorum publice affixæ, & publicæ fuerunt ad valvas Camera Apost. Curia Capitoli, & acie Campi Floræ, dimissis ibidem in singulis locis præfatis respectivè, præsentium litterarum copiis, ut moris est affixis, per nos Bernardinum Andreetium, & Julium Parinum, prælati S. D. N. Papa & Apostolicæ Sedis Cursores.

Philibertus Capuis Mag. Curs.

Approbatio plurimarum declarationum ad Regulam Fratrum Minorum Conventualium Ordinis Sancti Francisci, in eorum Generali Capitulo editarum, ad ipsius Ordinis reformationem.

Aliæ extant Pontificiæ declarationes dictæ Regule, & nonnullæ dictæ Ordinis reformationes, quas indultus in constit. 5. Honorii III. Solet. sup. fol. 66. in Tomo I. ubi plenè notati.

Alias Constitutiones ediderunt isti Fratres in Capitulo generali celebrato anno 1625, quas S. D. N. Urban. VIII. ceteris Constitutionibus, istis novis repugnationibus abrogatis approbavit, & Urbanas Constitutiones dictas confirmavit in constit. 88. Imitantis. inf. tom. 4.

PIUS PAPA QUARTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Edis Apostolicæ copiosa benignitas piis quamlibet regulari sub castissima Domino militantium personarum votis, libenter annuit, & illis quæ pro earum felici statu & reformatione processisse competit, ut illibata persistant, libenter Apostolici adjuvat muniminis firmitatem.

§. 1. Sane cum nos nuper considerantes quam uberes fructus in Dei Ecclesiæ sacris Fratrum Minorum Ordo ab ejus institutione produxerit, & quantos in dies producturus sit, si ad pristinam majorum suorum normam per novitatem, seu reformationem vitæ restitutus foret, quibuldam ex dilectis filiis nostris S. R. E. Cardinalibus, & præsertim dilectis filiis nostris Carolo tituli S. Prætexti Borromeo Protectori, & Ludovico tituli S. Cyriaci in Thermis Viceprotectori ejusdem Ordinis presbyteris Cardinalibus Simoneta nuncupatis ipsius Ordinis reformationem curandam commiserimus, quibus negotium ipsum tantæ curæ fuit, ut dilectum filium Antonium de Sapientibus de Augusta ejusdem Ordinis Generalem, & Ministros, nonnullosque Fratres ejusdem Ordinis, tunc congregatos in eo Capitulo generali Florentiæ nuper celebrato, in quo idem Antonius in ipsius Ordinis Generale ad triennium electus, & deinde à nobis ad aliud triennium, supplicationibus Ministrorum Provincialium dicti Capituli nobis humiliter porrectis confirmatus fuit, ad nonnulla statuta, & ordinationes negotium hujusmodi concernentia edenda, adduxerint, ac multa priori professioni adjunxerint, ac veterem disciplinam renovaverint, nihilque prætermiserint quod ad exactam suæ professionis completionem visum fuerit opportunum, prout in publicis documentis desuper confectis plenius dicitur contineri.

§. 2. Nos qui ipsum Antonium, petitione, supplicatione, & consensu dicti Capituli Generalis sponte accedentibus ad aliud triennium in ejusdem Ordinis Generalem deputavimus, statutorum, & ordinationum hujusmodi, de quibus certam notitiam habemus, veriores tenores præsentibus pro expressis habentes, cupientesque, ut dictus Ordo, quem in visceribus gerimus caritatis, ad suum pristinum statum, seu vivendi normam reducatur suosque speratos longe uberiores producat fructus, Motu proprio non ad alicujus nobis desuper hoc oblatæ petitionis instantiam, sed de nostra mera deliberatione, ac ex certa scientia, & de Apostolicæ potestatis plenitudine, quacumque statuta, ordinationes, declarationes, electionis hujusmodi modos, validationes, petitiones, supplicationes, concessionis, deputationes, prohibitiones, inhabilitationes, amotiones, dispensationes, omniaque, & singula in dicto Capitulo Generali circa dicti Ordinis reformationem facta & gesta, auctoritate Apostolica tenore præsentium perpetuo approbamus, & confirmamus, illisque perpetuæ, & inviolabilis firmitatis robur adjicimus, ac ea perpetuis futuris temporibus per quoscumque ipsius Ordinis Superiores, & alias personas sub pœnis in illis adjectis inviolabiliter observari mandamus, ac omnes, & singulos tam juris, quàm facti defectus, si qui forsan intervenierint in eisdem supplemus, sique per eisdem Superiores, & quoscumque ejusdem Ordinis Ministros, nunc & pro tempore existentes observari, & judicari debere, necnon quicquid secus super his à quocumque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, irritum, & inane decernimus.

§. 3. Non obstantibus quibuscumque Apostolicis, ac in Provincialibus, & Synodalibus Conciliis editis, generalibus vel specialibus constitutionibus, & ordinationibus, statutisque, & consuetudinibus ipsius Ordinis, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis; privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis dicti Ordini, necnon illius Superioribus, Ministris, Conventibus, & personis sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque clausulis, & decretis quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, individua, & expressa, ac de verbo ad verbum mentio habenda esset, illorum tenores præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanens hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, omniaque contra reformationem hujusmodi hæcenus concessa & edita revocamus, & annullamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romæ apud S. Marcum, sub annulo Piscatoris, die 17. Septemb. 1565. Pontificatus nostri Anno sexto.

Sequuntur ista Constitutiones Reformationis.

C A P. I.

Regula, & vita Fratrum Minorum hæc est, scilicet Domini Nostri JESU CHRISTI Sanctum Evangelium observare, vivendo in obedientia, sine proprio, & in castitate.

Per hæc verba Seraphicus Pater noster voluit nos docere, quod regula, & vita quam profitebatur, non erat res nova, sed proculdubio renovata professio Evangelici instituti.

Vivendo in obedientia. Non solum Dei mandata, sed hominum etiam propter Deum exequendo. Nam & Christus Salvator noster factus est obediens usque ad mortem.

Sine proprio. Quia, ut dictum est in præfatione, Fratres Minores nunquā habuerunt quicquam quod possiderent, vel quo uterentur tamquam proprio; ita dicebat de seipso Christus, vulpes foveas habent, &c. Et de Apostolis scriptum est, multitudinis credentium erat cor unum, & anima una, nec

Dat. P. An. 6.
die 23. Aug.

Publicatio.

CIII.

Edita An. D.
1565.

Proccum.

Deputatio
Cardinalium
pro reformatione
huius Ordinis, &
editio constitutionum
desuper factarum.

4. Super Castitate.

quisquam eorum, quæ possidebat, aliquid suum effe dicebat, sed erant illis omnia communia.

Et in castitate. Quæ beatus Franciscus voluit Fratres suos ceteris præstare, iubens ut nedum mente & corpore casti essent, sed etiam ne haberent cum mulieribus suspecta consortia, & ne ingrederentur Monasteria Monachorum, prout infra dicitur. Duo in hoc capitulo notantur. Primum, ut vota ista obedientiæ, paupertatis, & castitatis inviolabiliter observentur, pro quorum executione ponuntur ordinationes, quæ continentur in sequentibus capitulis. Secundum quod eo modo, quo beatus Franciscus promittit obedientiam Beatissimo Domino Papæ Honorio, & successoribus suis, ita Fratres agnoscant se subditos Romano Pontifici, & post ipsum Superioribus Ordinis, Generalibus, Provincialibus, Custodibus, Guardianis, &c. Hæc autem non ex sua voluntate solum, cum illis visum fuerit, sed maxime ex voto, quo adstricti sunt semper, & ubique.

C A P. II.

Verba Cap. 2.

1. Declaratio super licentia recipiendi Novitios. Tu vide bullâ 71. Six. V. Cum de. ubi notabo.

2. Super eorum educatione, & ætate.

5. Super Cura Professorum non promotorum ad Ordines.

4. Declaratio super subventionem danda à Conventibus nativis.

5. Declaratio super occupationem Fratrum non literatorum.

6. Declaratio super destinationem servientium.

7. Super ætate emittentium professionem & promotionem ad Ordines.

Ad hoc & præcedentia Capit. attende etiam const. 71. Six. V. Cum de. ibi notand.

8. Super numero Fratrum

Si qui voluerint.

In hoc capitulo sunt tres articuli principales. Primus de recipiendis ad Ordinem Fratribus. Secundus de Apostatantibus ab Ordine. Tertius de Fratrum indumentis. Circa primum ponuntur infra scriptæ constitutiones ex decreto Generalis Capituli. Non liceat alicui Conventui, vel loco, pueros ad Ordinem recipere, neque habitum illis dare, sine Generalis, vel Provincialis expressa licentia, quæ non detur, nisi prius de puerorum indole confiterit, & quod de parentibus bonæ famæ ortæ fuerint.

Novitii, qui sument habitum in quocumque Monasterio, ante ætatem completam sexdecim annorum, mittantur statim à suo Superiore in certum Conventum, seu Seminarium, unum vel plura, quæ Novitiatu vocamus. Qui separati sint à locis & habitatione professorum, atque ibi cum suis Præceptoribus, & Receptoribus à Capitulo deputandis morantes educantur, & instruantur in timore Dei, ac bonis disciplinis & moribus. Atque hæc de causa in quacunque Provincia ex custodia, ubi comode fieri poterit, multiplicentur dicti Notariatus, & maneant ibi pueri usque ad ætatem dictam annorum sexdecim.

Professi etiam, qui non fuerint in sacris Ordinibus constituti, quantum fieri poterit, sua loca, & certum præceptorem habeant, qui eandem curam, quæ de Novitiis habetur, de illis gerat. Neque huiusmodi professi per Urbem, vel claustra vagari permittantur.

Teneantur vero nativi puerorum, & professorum Conventus, iis Conventibus qui præfatos nutriunt, succurrere juxta taxam à Superiore imponendam.

Qui autem minus apti ad litteras inventi fuerint, occupentur musica, & in servitute Conventuum, vel etiam in aliqua arte viris religiosis non contraria ut puta in arte pictorum, tonsorum, hortulanorum, & similium.

Et ubi non fuerint huiusmodi professi interferviant Fratres juniores, licet fuerint Sacerdotes, melius tamen esset, ut quolibet Conventu induerentur aliqui laici, & illis provideretur de victu & vestitu juxta concordantiam eorum status, quemadmodum in plerisque locis fieri consuevit.

Pueri non admittantur ad professionem, nisi post decimum sextum annum suæ ætatis expletum, juxta decretum sanctæ Tridentinæ Synodi; juxta quam etiam ad sacros Ordines admittentur, non solum quantum ad ætatem, sed etiam quantum ad sufficientiam, & probitatem: ad Subdiaconatum quidem post annum vigesimum secundum, ad Diaconatum post vigesimum tertium, ad Presbyteratum post vigesimum quintum. Professionem vero in libro ad hoc deputato, adolecentes & alii profliteri volentes sua manu subscribant; quem librum singuli Conventus particulariter habere teneantur. Et qui professionem solemnem non emisierint, non possint promovere ad sacros Ordines.

Is quoque tantum numerus Fratrum in singulis Conventibus, & locis admittatur, qui ex redditu-

bus propriis Monasterii, ac consuetis elemosynis commodè possint sustentari. Nec ab eorum parentibus, propinquis, aut curatoribus aliquid ex eorum bonis, quocumque pretexto ante professionem accipiat, excepto victu, & vestitu pro tempore quo in probatione fuerint.

Fratres vero alterius Ordinis, aut etiam ejusdem Ordinis, qui tamen diversas habeant observantias, seu vivendi modum, non recipiantur, nisi à Generali Capitulo, explorata prius eorum vita, & quod ab archiori Instituto non discedant, fuerint approbati.

Circa secundum, ubi dicitur, & nullo modo licebit eis de ista religione exire &c. Licentia exvendi habitum, aut subitus recepti nulli omnino concedatur, sed nec morari cum habitu extra claustra sui Ordinis cuiquam permittatur, nisi forte apud aliquos Prælatos, aut alios, causa lectionis, aut prædicationis, seu alicujus pii operis, de licentia sui Superioris juxta sess. 25. cap. 4. Et si qui hætenus extra sunt absque licentia fuorum Superiorum revocentur juxta bullam D. N. Pii IV. revocatoriam privilegiorum Datam 13. Calend. Martii 1564. Contumaces vero excommunicentur, & nisi paruerint, subiciantur Ordinario puniendi. Qui vero de Superiorum licentia alicui Prælati, Principi, aut Universitati servant, obedientiam, & correctioni Superiorum subjaceant semper.

Nulli etiam licet exire claustra ejus loci ubi de familia degit, absque licentia sui Guardiani, qui causam cognoscat, & comitem illi pro suo arbitrio eligat: habeatur tamen ratio virorum insignium, & graduatorum. Neque aliquis discedat ex Custodia, sine Custodis licentia, ut constitutiones generales, & Benedictus XII. præcipiunt. De Provincia vero non nisi de Magistri Provincialis licentia, siue ejus Commissarii in scriptis obtenta, neque causa accendi ad Superiorem Prælatum. Qui contrafecerit, ultra penam à sancta Synodo Tridentina statutam, etiam in Ordine pena carceris per mensem, & unius publicæ disciplinæ opprobrio mulctetur, atque secundum Alexandrinæ constitutiones ad Conventum, Custodiam, siue Provinciam suam confusibiliter remittatur. Servetur omnino decretum eorumdem constitutionum, quod ita dicit: Inhibetur insuper Ministris juxta generalia statuta, ut nulli licentiam ad Romanam Curiam tribuant, etiam causa devotionis accedendi (ne detur occasio vagandi) nisi in Capitulo de consensu Definitorum, & nisi fuerit vir probus, & moribus gravis, vel urgeat magna necessitas Provincie. Conventus, vel Monasterii, & si fieri potest, nullus Romanam accedere permittatur, nisi cui fuerit à Generali Ministro concessa licentia specialis. Hætenus decretum. Si quis vero Minister, huiusmodi licentiam aliter quam supradictum est, dederit, officio suo privetur: si autem quis sine licentia Romanam iverit, eum revertentem, etiam si litteras commendaticias habeat, Provincialis in carcerem tradat, & disciplinatum à sua custodia proferbat.

Qui claustris morantur, non permittantur diu manere in suis nativis Conventibus, nisi viri graves & valde senes. Juvenes vero alibi collocentur, & nullus adversus Superiorem per hoc reclamare præsumat, sed humiliter iussa faciat.

Circa tertium, De vestimentis infra scripta statuuntur. Ut in vestimentis sit modus, neque eorum luxus, siue colorum varietas infames apud laicos Fratres reddat, omnes Fratres pannis communibus subnigri coloris induantur, vel saltem iis rasciis, quæ duplices vocantur, & tales ut panni videantur, quæ etiam ad obscuritatem tendant. Ceteri omnes panni, & rasciæ (nisi pro habitibus, qui subitus deferuntur) abiciantur & illis uti non liceat.

Nullus cothurnos albos, siue borzachinos deferat, nullus birretum in Ecclesia, vel per Civitatem gestet, neque etiam Chirothecæ, nisi in itinere. Qui contrafecerit post rerum privationem, etiam à Conventu expellatur; ira fieri de iis, qui aliquid indu-

culque Conventus. Tu vide etiam bullam Pauli V. num. 7.

9. Super receptione Fratrum alterius Ordinis.

10. Super delatione Habituum, &c.

11. Super exitu à claustris, & de Provincia.

Ad hoc ultimum habes etiam Sixt. V. const. 71. Cum de.

12. Super mansione Fratrum in Conventibus nativis.

13. Super colore vestimentorum.

14. Super delatione Chirothecarum, &c.

mentum vanum, & aliquo vano artificio elaboratum gestaverint.

Palla, five mantelli deferantur cum manicis, seu ornati orbiculis, sed sint simplices, & longiores, & singuli Sacerdotes unum habeant.

Vestimenta etiam, quæ subtus deferuntur nonnisi honesta sint, & coloris Ordinis nostri. Et tunica aperta non deferantur. Atque cordæ sint rudes, & communes, non laneæ, aut aliqua curiositate confectæ: super quibus omnibus singuli Provinciales diligenter invigilabunt.

In Cellis, seu Cameris Fratrum, non liceat suppellectilem aliam quam necessariam, & professioni paupertatis congruentem habere.

C A P . I I I .

Clerici faciant divinum officium, &c.

In hoc Capitulo sunt tres Articuli. Primus de divino officio. Secundus de jejunio. Tertius de modo eundi per mundum. Circa primum statuitur, quod omnes & singuli cujuscunque conditionis existant, juxta laudabilem & servatum hæcenus Religionis morem, divinis mysteriis, & choro quotidie horis debitis intersint; nullusque exemptus habeatur, nisi quos Alexandrinæ constitutiones excipiunt, utputa Lectores, & Prædicatores, infirmi, & alii publicæ utilitati tunc expositi, qui tamen alias suo debito satisfaciunt. Divinum vero officium devote, attente, & punctatim persolvatur. Neque aliquis è choro discedat, nisi expleto officio, sine Guardiani licentia.

In qualibet prima Dominica mensium, fiat Processio per claustra, cum Litanis per Ecclesiâ Catholicâ, pro fidei defensione, ac Principum Christianorum concordia. Die vero Lunæ sequenti, ubi fuerit numerus sufficiens Fratrum, cantetur Missa pro Benefactoribus Ordinis, vivis atque defunctis.

Si quis autem convictus fuerit de consueta omissione divini officii, ut neque frequenter chorum, neque videatur, aut audiatur divinis vacare, cujuscunque gradus & conditionis extiterit, sit privatus omni officio, & gradu, & non nisi per Generalem restitui possit.

Cum divina celebrantur, nemo discurret per Ecclesiâ, neque ibi interdum moram trahat, nisi causa orationis, vel saltem ex rationabili causa Guardiani nota: & dum divina celebrantur, Fratres non audiant in confessione absque necessitate, & de Guardiani licentia.

Universi Fratres ad Sacerdotium assumpti, ut in Dei timore, & gratia se contineant, quam crebrius potuerint, & saltem diebus Dominicis, & festis solemnibus, prævia peccatorum confessione Sacerdoti faciendâ, Missas devote celebrent. Qui vero Sacerdotes non sunt, saltem quindodecimo quoque die confiteantur, & communicent, aliter privantur arbitrio Superioris.

Curabunt præterea Guardiani, ut omnia Ecclesiæ & sacrorum suppellectilia munda serventur, Ecclesiæ ipsa, & Conventus sæpe purgetur.

In Conventibus vero, ubi magnus Missarum numerus ex legatis impositus est, elemosyna vero tam tenuis, ut fratres sustentari non possint, servetur caput quartum reformationis generalis sess. 25. Trid. Concilii. Ad cujus executionem ordinat Generale Capitulum, ut in Capitulis Provincialibus cujuscunque Provincia habeatur hæc consideratio, cum obligationis Missarum, tum emolumentum quod inde trahitur, & hæc omnia referantur ad Generale Capitulum, ut ibi quicquid secundum Deum visum fuerit, statuatur.

Circa secundum, jejunia omnia S. R. E. & Regulæ nostræ a cunctis fratribus serventur, provideaturque illis in his diebus, de convenienti cibo; & juxta constitutiones Alexandrinæ, ceremoniæ solite non solum in prandio, fed etiam in refectioe ferotina, quæ hora competenti fiat, & ad quem omnes conveniant, peragantur. Nulli vero à jejunio excusentur, nisi quos constitutiones prædictæ eximunt. Quod si

quis absque legitima causa Guardiani nota non jejunaverit, idque probari possit, si correctus non se emendaverit, pane, & aqua in carceribus puniatur.

Singulis sextis feriis universi fratres disciplinam faciant, & in emendationem peccatorum suorum se percutiant, memores quod Dominus noster JESUS CHRISTUS pro peccatis nostris dira perpassus est. Hec autem disciplina ita fiat. Congregentur in choro, vel sacratio, five alio loco convenienti fratres, & extinctis luminibus, ac clausis januis, & fenestris, Superior, aut alius deputatus, signum manu faciat indicans silentium, quod per aliquod spatium servatur, & interim fratres contemplationi vacant. Deinde idem Superior, vel deputatus incipit versum hunc, & totum dicit, videlicet: Apprehendite disciplinam, ne quando irascatur Dominus, & pereatis de via iusta. Tunc omnes incipiunt se percutere, & dicuntur alternatim ab omnibus devote, & punctatim Psalmi, Miserere mei Deus, & Deus miseretur nostri, &c. cum Gloria Patri, &c. De profundis, cum Requiem æternam, &c. Quibus expletis, dicitur, Christus factus est pro nobis obediens usque ad mortem, mortem autem Crucis, &c. Inde Superior vel deputatus dicit hanc Orationem incipiens absolute. Respice quæsumus Domine super hanc familiam tuam, pro qua Dominus noster Jesus Christus non dubitavit manibus tradi nocentium, & Crucis subire tormentum. Postea dicitur ab omnibus, Salve Regina misericordiæ, &c. Et Superior vel deputatus dicit sequentes Versiculos, & Orationes respondentibus fratribus ad singulos Versiculos, videlicet. ✠. Emitte spiritum tuum, & creabuntur, &c. ✠. Et renovabis faciem terræ. ✠. Ora pro nobis Sancta Dei genitrix. ✠. Ut digni efficiamur promissionibus Christi. ✠. Ora pro nobis Beate Franciscus. ✠. Ut digni, &c. Oremus. Deus qui corda fidelium. Concede misericors Deus fragilitati nostræ prædium, &c. Deus qui Ecclesiâ tuam Beati Francisci meritis, &c. Deus cui proprium est misereri semper, & parcere, &c. Exaudi quæsumus Domine supplicum preces, &c. Deus a quo sancta desideria, recta consilia, & iusta sunt opera, &c. U-e igne sancti Spiritus renes nostros, & cor nostrum, &c. Deus omnium fidelium pastor, &c. Omnipotens sempiternus Deus, miserere famulis tuis Cardinalibus Protectoribus nostris, &c. Actiones nostras, &c. Omnipotens sempiternus Deus edificator, & custos, &c. Omnipotens sempiternus Deus, qui vivorum dominaris simul & mortuorum, &c. Per Dominum nostrum, &c. In fine dicitur, Divinum auxilium maneant semper nobiscum. Amen. Tunc omnes desinunt se percutere, & per aliquam moram sub silentio iterum contemplationi vacant. Demum facto signo à suprascripto Superiore, vel deputato omnes surgunt.

A mensa communi nulli eximantur, tam mane quàm serò: quod si aliqui adu legentes, vel prædicantes, seu graduati, aut infirmi, iudicati fuerint à Superioribus digni hac exemptione, hi tantum cibis à communi deputatis, & ex communi dispensantur. In mensa autem habeatur semper lectio ex Sacra Scriptura, vel ex sanctis Patribus.

Soli Procuratori Conventuum, & Locorum, aut alii Fratri deputato, Fratrum necessaria, præsertim vero esculenta, & poculenta emere liceat.

Circa tertium. Nulli eundi per mundum à Superioribus facultas fiat, nisi ex urgenti necessitate; & tunc Prælatus investiget, quo ituri, quæ negotia, & cum quibus sint acturi Fratres antequam licentiam illis tribuat: & quantum fieri potest non permittat aliquem solum proficisci, sed socium illi assignet.

Fratres itinerantes non sint conviva, neque hospitentur in domibus laicorum, præsertim publicorum hospitum, ubi sunt loca nostra, sed teneantur convenire Præfectum loci, ibique manere, & de ejus consilio se gerere.

Nullus magistratum aliquem, Principem, vel Prælatum ex quacumque causa adire audebit, nisi ea causa à Superiore suo prius cognita fuerit, obtinueritque ab eo facultatem accedendi. Quin potius prohibetur,

9.
Super d'fci-
plina sexa
qualibet Fe-
ria faciendâ.

10.
Super com-
muni mensa,
& cibo.
Ad quod ex-
tat const. 66.
Pii V.

11.
Super de-
stinato ad
emenda escu-
lenta & alia
necessaria.

12.
Super licen-
tia eundi per
mundum.

13.
Super itine-
rarium hospi-
tium.

14.
Super accessu
ad principes,
& alios, vel
ad aliquem
forum.

15.
Super mune-
re Procura-
toris Curie.16.
Super b'no-
rum alpora-
tione.17.
Equitandi
licentia.

Verba Cap.4.

I.
Declaratio
super Pro-
prietate, &
usu pecunie,
& aliorum
bonorum.Tu recordare
quod bulla
quæ hic in fi-
ne hujus Cap.
ciantur sunt
remissive in-
dicatæ hic in
rubr. & con-
cessio Conc.
Trid. hic pa-
riter allegatæ,
quæ legitur
in c.3. l.25.

ne quis in aliquo foro causam ullam, nisi publicam, & de mandato Superiorum, agere possit. Quamobrem decernimus, ut causæ omnes, quæ Romæ agendæ sunt, ad Procuratorem Ordinis in Urbe dirigantur, neque aliis committi possint, nisi de ejus consilio, & assensu.

Procurator autem qui accedentes ad Urbem sine licentia fratres carceribus non mancaverit, & in Romana Curia libere, & impune vagari permiserit, ab officio suo cadat, & non possit restitui, nisi per Generalem, vel generale Capitulum. Hoc autem non solum de Procuratore Cismontano, sed etiam de Ultramontano, si fuerit, intelligatur.

Cumque contigerit de mandato Superiorum ad alium locum transmigrare, teneatur relinquere Cellam, & si qua habet bona suo usui deputata, Superiori loci, unde discedit. Si quis vero asportaverit aliquid extra Conventum (nisi id gestaret pro sua necessitate, & de Superioris licentia) illico bonis privatus sit, & proscriptus à Conventu ad arbitrium Superioris.

Cavebunt etiam Superiores, ne omnibus passim concedant licentiam equitandi, præsertim Fratribus junioribus, qui sunt robustæ complexionis, & in litterarum studiis non se exercent; quamvis intentio Beati Francisci in hac parte potius pompam & fastum respiciat, quam equitandi opportunitatem excludat.

C A P. IV.

Præcipio firmiter Fratribus universis, ut ullo modo denarios, &c.

In hoc capitulo usus pecuniarum omnium, per se vel interpositam personam videtur, omnino Fratribus Minoribus prima fronte interdictus, ita sonare videtur littera: sed statim tamen in quibusdam casibus videtur concessus, ubi dicitur, tamen pro necessitatibus infirmorum, & aliis Fratribus induendis, & quod Fratres possint equitare, si necessitate cogantur, &c. Præterea, ut communiter interpretantur Doctores, & præcipue quatuor magistri, qui in generali Capitulo, parum post obitum Beati Francisci, ejus regulam explicarunt, videlicet, Alexander de Ales, Gaufridus, Joannes de Rupella, & Ricardus de Media Villa, quorum doctrina in Ecclesia recepta est, sciendum est, quod recipere pecuniam per se, est eam auctoritate propria dispensare, & in suos proprios usus convertere; Recipere verò per interpositam personam, est eam in usum alterius auctoritate propria convertere, & dispensare. Quod Fratres Minores regulariter non fecerunt, quippe qui confessi sint, semper omnia jura, dominium, & proprietatem bonorum omnium suo usui deputatorum penes Ecclesiam Romanam extitisse, usu facti simpliciter contenti; unde mos ille inolevit, & servatum hæcenus in Religione semper fuit, ut nulli umquam licuerit etiam in Ordine, heredem sibi nominare, neque aliquid disponere de rebus suo usui applicatis, etiam si ex intestato, aut alio quocumque modo sibi obvenirent, nisi accesserit sui Superioris licentia, quæ non nisi ex rationabili causa dabatur, quæ tamen hodie post decreta Trid. Synodi amplius dari non potest.

Quod vero ad usum pecuniarum attinet, ex Apostolica auctoritate habetur, quod tactus, aut contractio simplex pecuniarum, nullum crimen aut turpitudinem impingit, sed crimen est in animo Fratris, qui pecuniam, vel avare recipit, vel occultat, aut ejus dominium, & proprietatem in se transfert contra regulam, quam professus est; quod explicat Beatus Franciscus in capite sexto, cum dicit, Fratres nihil sibi approprient, &c. Neque putandum est Beatum Franciscum contactum pecuniarum simplicem prohibuisse, cum id Evangelium non prohibeat, Regula vero ejus sit hæc, ut ipse inquit, sanctum Evangelium observare. Et Divus Bonaventura dicit, quod sine consensu non acquiritur possessio; ergo quamdiu manet in Fratribus voluntas non acquirendi, etiam si in eorum manibus pro eorum

necessitatibus pecunia inferatur, non tamen eam recipiunt, secundum quod receptio in eorum regula inhibetur. Unde sequitur, quod Fratres tangentes pecuniam, Regula ipsorum non contradicunt illo simplici tactu; sed neque per hoc vitium proprietatis potest eis adscribi. Verum est tamen, quod prisci illi Patres nostri, etiam à contractu pecuniarum voluntarie abstinabant, tum ne simplicibus ex hoc aliquod scandalum oriretur, & putarent illos accumulandis pecuniis insudare; tum quia experiebantur erga se ferventem adeo populorum devotionem, ut nihil suis necessitatibus defuturum umquam dubitarent. Cum autem deferbuisse caritatem, & frequens Fratrum numerus, ex advenientibus quotidie elemosynis sustentari nequiret, ne studium Sacræ Theologiæ, & aliarum scientiarum, in quibus Ordo noster insignis semper habitus est, inopia pessum iret, placuit summis Pontificibus, & præcipue Martino Quinto, & Sixto IV. nobiscum dispensare, ut ex bonis Romanæ Ecclesiæ nostram inopiam levare, & erecta litterarum Gymnasia conservare possemus. Novissime vero ad conscientias nostras pacandas, ad scrupulosque evellendos, qui in mentibus imbecillium quandoque emergunt, etiam dominium rerum in communi, earumque administratio à sancta œcumenica Tridentina Synodo concessa nobis est. Quæ materia, quoniam communis est cum ea quæ capite sexto tractatur, ad ipsum locum remittitur.

C A P. V.

Fratres illi, quibus dedit Dominus gratiam laborandi, &c.

In hoc capitulo Beatus Franciscus hoc unum contendit, ut Fratres sui otium fugiant, quod omnium malorum radix, & fomentum est. Quamobrem statuitur, ut hi, qui in litteris, vel in musica non se exercent, exercentur in aliquo officio, januas pro clausura observent, hortos colant, infirmis, & in gradu collocatis patribus serviant. Versant domum, accedant ad elemosynam petendam, & similia faciant, quibus otiositati malorum omnium sentina occurrant.

Qui vero laici fuerint, non permittantur deferre coronam in capite, sed serviant publicæ utilitati, & cogantur juxta regulam pro horis canonicis dicere Pater noster, &c. atque nullo tempore attendant ad sacros ordines suscipiendos.

Qui voluerint litteras discere, examinentur prius à Provinciali Magistro, ut si eos idoneos ad graviora studia invenierit, certiorum faciat Generalem Ordinis, qui in aliquo Religionis Gymnasio eos collocet: collocari vero pro Baccalaureis non possint, qui prius in Dialectica non profecerint, conclusionesque in ea professione honorifice non sustinuerint. Qui per multos annos in studiis non profecerint, à Gymnasis amoveantur, & alii studiosi in eorum locum subrogentur.

Baccalaurei, & doctiores studentes exercentur se alternatim lectionibus, disputationibus, & prædicationibus, ut istis tribus simul affuecant, hoc enim modo citius in viros eruditos evadent.

Minora litterarum Gymnasia ita disponantur, ut quedam Logica, quedam Philosophiæ studio applicata sint, ut juvenes qui dedunt se litteris, per gradus ascendant, & non possint in majoribus constitui, qui in minoribus saltem per triennium non steterint. Similiter & Lectores non fiant Regentes in celebrioribus studiis, nisi in minoribus prius eruditionem suam testatam fecerint. In majoribus studiis, ubi sunt Theologiæ professores, ultra ordinarios Lectores scholasticos, habeatur lectio Sacræ Scripturæ, non dimittendo textum Magistri sententiarum, quem omni triennio, in substantia saltem, Regentes teneantur percurrere, & lectiones incipiant singulo anno post festum Nativitatis B. Virginis. Lectores, qui in publicis Universitatibus legunt, teneantur ad arbitrium Generalis, in iis Conventibus ubi morantur,

unam lectionem legere. Curet etiam idem Generalis, ne finat juvenes in propria domo studere, sed mittat eos extra de patria commoda, & affectus eos à studiis abstrahant.

Qui voluerint ad doctoratus insignia promoveri, non admittantur nisi juxta Breve Sanctissimi D. N. Pii Quarti, videlicet in Capitulo Generali præmissio rigorofo examine. Supplicat tamen eidem Sanctissimo Domino Nostro, ut amoveatur numerus certus promovendorum, & promoveri possint ii omnes, qui in eodem Capitulo de consilio aliquorum publicorum Lectorum idonei à Generali iudicati fuerint, nonnisi eodem rigorofo examine præmissio, præmissio promotorum juramento. Est enim in Ordine tanta eruditorum copia, ut ad tam exiguum numerum restringi non possint, quod in proximis Comitibus Generalibus Florentiæ omnes noverunt. At quoniam Fratres extra Italiam constituti (excepta Dalmatia) nonnisi difficile, & magnis sumptibus ad Generale Capitulum accedere possunt, statuitur, ut ii omnes, qui voluerint ad magistralem coronam recipi, examinentur in aliqua publica Universitate illius regionis de qua fuerint, propositis conclusionibus in ea facultate, ad quam promoveri voluerint. Qui quidem, si præmissio rigorofo examine ab illa universitate digni Doctoratus titulo iudicati fuerint, fidemque publicam ab ipsa de eorum sufficientia habuerint, possit eos Generalis per suas litteras in aliqua Universitate, vel à persona auctoritatem habente, ad doctoratus lauream suscipiendam admittente. Nullus vero ad doctoratum, vel ad alium gradum superioritatis de cetero promoveatur, qui prius professionem fidei non fecerit juxta bullam præfati Domini Nostri Pii Quarti.

CAP. VI.

Fratres nihil sibi approprient, &c.

Circa hoc Capitulum repeti possent, quæ supra in præfatione, & in Capite quarto dicta sunt, quod scilicet nos non habemus in particulari aliquid proprium, sed usum simplicem rerum, quamvis sancta Tridentina Synodus concesserit, ut possimus habere proprium in communi. Ad tollendum tamen omne proprietatis vitium juxta decreta ejusdem sacrosancti Tridentini Concilii, prohibemus omnibus Ordinibus nostris Fratribus, & Sanctimonialibus, ne quicquid eorum, bona, imobilia, mobilia cujuscunque qualitatibus fuerint, etiam quovis modo ab eis acquisita, tamquam propria, aut etiam nomine Conventus possideant, vel teneant, sed statim ea Superiori tradantur, Conventuique vel Monasterio incorporantur, prout nos ex nunc ea applicamus, & incorporamus, applicataque, & incorporata pronunciamus.

Nec deinceps liceat Superioribus bona stabilia alicui Ordinibus nostri concedere, etiam ad usum fructum, vel usum, administrationem, aut commendam. Et si aliquæ licentiæ etiam à Generali, aut alio quovis modo ex quacunque causa adversus prædicta hæcenus concessæ reperiantur, eas ex nunc tollimus, & abrogamus. Ad nistratio autem bonorum Monasteriorum, seu Conventuum, ad solos officiales eorumdem ad nutum Superiorum amovibiles perneant.

Mobilium vero usum ita Superiores permittant, ut eorum suppellex statim pauperibus quam profecti sunt, conveniat, nihilque superflui in ea sit; nihil etiam quod sit necessarium, eis denegetur, quorum omnium registram Superiores apud se habeant, & singulo anno revebant, & Fratres ea vendere, alienare, aut donare minime valeant. Quod si quis aliter fecerit, vel quidquam etiam si pecunia sit, teneat deprehensus, aut convictus fuerit, eis biennio activa & passiva voce privatus sit, atque etiam juxta Ordinis nostri constitutiones veluti proprietarius puniatur. Quinimo ad errores istos tollendos præcipit generale Capitulum, ut in singulo Conventu, Monasterio sit ararium publicum, ubi reponantur singulorum Fratrum, & Sanctimonialium

pecuniarum, quæ inde non extrahantur sine necessitate à Superiore cognita. Monemus tamen singulorum Conventuum Superiores, juxta singulorum fratrum meritum, gradum, & necessitates, ex reliquis bonis, & præsertim ab eisdem Fratribus acquisitis, aliqua eis pro studiorum, & laborum subventionem, largius & commodius subministrant.

Habeatur vero diligens senum, & infirmorum cura; provideaturque eis de communibus elemosynis in eorum necessitatibus; & in singulo Conventu præficiatur saltem unus, cui hujusmodi cura committatur.

Et cum quis infirmari coeperit, statim resignet Superiori omnia quæ suo usui fuerint applicata, ut in casu mortis Conventui cedant.

Emolumenta quæ ex Priorum Legatis (vel ut vocant) mansionariis proveniunt in publicam utilitatem convertantur, & nulli particulari tribuantur.

Licentia vero disponendi de bonis suo usui deputatis, aut etiam de cellulis, & cameris ipsis, nulli Fratri, aut sanctimoniali tribuatur, sed hæc sit Generalis, & Provincialium cura, secundum gradum & virtutem, ex quibus videbitur assignare. Et si quis hæcenus à Superioribus Ordinis, aut etiam à Sede Apostolica talem disponendi licentiam obtinuit, nulla censetur.

Quod autem ad Syndicos, vel Procuratores, sanctos, five operarios attinet, singuli Conventus & Monasteria, ubi Superioribus Ordinis visum fuerit opportunum, unum, aut alterum illorum, five plures eligant ad ipsorum Superiorum autem amovibiles, ut sancta Tridentina Synodus decernit; non quidè ut rerum, & bonorum Ordinis Procuratores, & Rectores, quemadmodum hæcenus consuevit, cum nondum Religio haberet proprium in communi, sed ut Conservatores, & Defensores, qui non possint à Principibus, vel Communitatibus institui, sed tantum præsentari. Superior vero, qui ei videbuntur, confirmet; & non permittat eos perseverare ultra triennium nisi Generale Capitulum ex urgenti causa aliter decreverit. Hi vero attingant saltem annum quadragesimum quintum, etiam ubi eis bonorum temporalium fuerit cura commissa, teneantur quotiescumque à Superiore, vel Sanctimonialibus requisiti fuerint, de ipsis bonis rationem reddere; quæ quidem bona, etiam pecunias ipsas non teneant, apud se, sed conserventur in Monasteriis, & non exponantur nisi juxta earumdem Sanctimonialium, vel earum Superiorum voluntatem. In spiritualibus vero ullo modo ipsi Syndici, five operarii non se intromittant, ut infra dicitur. Procuratores ex Ordine, singulo mense coram Fratribus in loco publico suæ administrationis rationem reddere teneantur; aliter priventur bonis omnibus suo usui deputatis etiam ipso Conventu. In quam penam incidat etiam qui mercaturas animalium, societas, vel alias negotiationes exercere compertus fuerit. Siquis vero in sua administratione fraudem aliquam, vel fortum commiserit, priverit officio, & disciplinetur; & si fortum insigne fuerit, etiam à Provincia proscrubatur, & per decennium ad officia inhabilis habeatur.

Claves, sub quibus bona Conventuum, & Monasteriorum reponuntur, non à Superioribus ipsorum Conventuum & Monasteriorum tantum, sed etiam ab aliis discretis personis eorumdem locorum custodiantur, qui omnes diligenter, introitum & exitum ipsorum bonorum in libris describant, & Prælati suo postmodum ostendant.

CAP. VII.

Si quis Fratrum instigante inimico mortaliter peccaverit.

Duo in hoc capitulo docet nos Beatus Franciscus. Alterum, ad quos Fratres peccantes debeant recurrere, Alterum quomodo sunt recipiendi. Circa primum statuitur, & ordinatur ut nullus Fratrum peccata propria, vel proximi sui propalare audeat, nisi Superioribus Ordinis, sub pena carceris per men-

4. Super cura senum & infirmorum.

5. Super resignatione usus bonorum per infirmos fienda.

6. Super dispositione conventuum.

7. Super nullitate licentiarum disponendi de bonis Ordinis.

8. Super Syndicorum, & Procuratorum munere.

9. Super custodia clavium bonorum Conventus.

Verba Cap. 7.

Declaratio super Fratrum confessione.

2.
Super propa-
latione secre-
torum, &
scandalorum
Ordinis.

3.
Super recur-
su a sententia
Provincialis.

4.
Super recur-
su ad brachii
laicale.

5.
Super accusa-
tione fra-
trum.

6.
Super offen-
sione fra-
trum.

7.
Super puni-
tione fra-
trum delin-
quentium.

8.
Super puni-
tione con-
tumeliam in
fratres di-
centium.

9.
Super puni-
tione incorri-
gibilium.

10.
Super corre-
ptione fra-
trum.

Verba Cap. 8.

1.
Declaratio
super modo

sem, & unius publicæ disciplinæ omni sexta feria
ipsum mensis.

Nullus etiam audebit litteras scribere in infami-
am proximi, & Religionis, neque Fratrum scan-
dala, & secreta in Ordine revelare, nisi prædictis Su-
perioribus, sub eadē poena, & excommunicatione lata
sententiæ, à qua per solum Generale absolvi possit.

Nemo subterfugiat iudicium sui Magistrī Provin-
cialis, neque eum recipiat, quousque suam senten-
tiam non protulit. Qui secus fecerit exilio à provin-
cia per triennium puniatur, Provincialis tamen
procedat in causa. Si vero suspicio fuerit, quæ in-
diciis vehementibus appareat quod Provincialis pro-
cedat ex odio & passione, possit accusatus postula-
re à Generali Collegam, qui una cum Provinciali
causam suam expediat. Ipse tamen reus hoc interim
recedere non possit, sub poena convicti criminis.

Qui si pro iniustitia sibi illata, vel quam præ-
tendit sibi illatam esse ad brachium laicale recur-
rerit, & non potius ad Superiores Ordinis, exul-
et statim à provincia, & fiat inhabilis ad omnia
Ordinis officia.

Non accuset frater fratrem de aliquo crimine
coram Superiore, nisi per testes, vel sufficientia
indicia probare possit, quod imponit, aliter accu-
sans ea poena mulctetur, quam accusatus sustinere
debuisset, & sic semper, quando quis imponit ali-
quid quod per testes, vel sufficientia indicia non
probetur, poena talionis puniatur, denunciare
tamen liceat, & denunciantem Superior secretum
teneat.

Quicumque ex quavis causa in fratrem suum ma-
nu violentam injecerit, sanguinemque fuderit,
vel etiam sine sanguine graviter percusserit, ultra
poenas delicto congruentes, etiam ad omnia Ordinis
officia in perpetuum inhabilis habeatur, & à provin-
cia expellatur, neque ad officia, sive provinciam re-
stitui possit, nisi per Generale Capitulum, & per
omnium patrum Definitorum vota. Quas poenas
eos quoque incurrere volumus, & decernimus, qui
convitiis, minis, aliisve modis aliquem ad percussio-
nem irritaverint, & laceraverint. Teneantur vero
Guardiani, & alii locorum nostrorum Rectores, sub
poena privationis suorum officiorum, huiusmodi
reos, etiam si in domo ipsorum non deliquerint, in
carcerem conjicere à Superioribus puniendos.

Qui commiserit aliquod facinus, propter quod
si esset in sæculo, foret juxta leges morte plecten-
dus, vel aliquam infamem infamiam, sive ruinam
Ordini, sive Ordinis Superioribus intenterit, per-
petuis carceribus condemnatur. Et si aliquo tem-
pore condonatum illi fuerit de his poenis, num-
quam tamen ad Conventum suum remittatur, ne-
que habilis ad officia Ordinis habeatur.

Qui verba minus honesta in contumeliam fra-
trum, & Superiorum etiam in claustris dixerit, pro
arbitrio Superiorum jejuniis, & carcere maceretur.

Incorrigibiles, in Capitulis Generalibus, & Pro-
vincialibus publice puniantur. Quod si neque hoc
modo ad mentem revocari poterunt ut bene hone-
steque vivere velint, suspendantur à divinis, & laica-
lem ducat vitam, ac serviant Monasterio tamquam
laici. Et si perseveraverint incorrigibiles esse, per-
petuis carceribus mancipentur.

Circa secundum: Omnibus Superioribus Ordinis
præcipit Generale Capitulum, ut Fratres pec-
cantes ita cum iustitia corrigant, ut misericordia
non obliviscantur, & caveant, ne peccatum fratris
ocultum in propatulo exponant, & qui debent
Ordinis miseria tegere, & occultare, eas sæculi au-
ribus non traducant, & manifestas faciant.

C A P. VIII.

Universi Fratres unum de Fratribus istius Reli-
gionis teneantur semper habere Generalem Mini-
strum, &c.

Circa caput istud de electione Superiorum Ordinis,
et aliorum officialium, explicandus est modus,

quo eligi debeant, ut servetur Canon sextus refor-
mationis regularium editus à Sancta Tridentina Syn-
odo, ubi dicitur: In electione Superiorum quor-
umcumque; &c. (explicetur totus). Pro executione
igitur præsentis Canonis ex decreto Genera-
lis Capituli Florentiæ nuper habiti statutum est, ut
huiusmodi electiones per ea secreta suffragia fiant,
quæ nos balotaciones vulgo dicimus; ut puta, in
quibus ita facile fraudes non admittuntur, ubi sin-
gulorum suffragia calculis lineis, aut laneis colli-
guntur, hoc scilicet modo extrahatur vas ligneum du-
plex, in quod, cum quis manus imposuerit, po-
test calculum suum in quam voluerit partem depo-
nere (una enim pars vota affirmativa, altera negati-
va colligit) & nemo novit ubi calculus ceciderit, ita
ut unusquisque conscientie suæ satisfacere, & ipse
à nullo cogi possit. In electione igitur Generalium,
Provincialium, Procuratoris in Urbe, Custodum,
Guardianorum, & omnium Officialium, quibus
aliquis gradus administrationis, vel Superioritatis
in subditis ex electione accedit, fiat electio per ba-
lotaciones, & non alio modo. Quicquid secus fa-
cta non fuerit irritum sit, & inane. In Provinciis Au-
striae, Bohemiae, Romaniae, Orientis, & Terræ San-
ctæ, & si quæ sunt similes Provincie, quæ eligere
suos Provinciales non consueverunt, designentur à
Generali per triennium Provinciales, qui tamen in
deputandis aliis inferioribus officialibus modo su-
pradiçto utantur. Et ne fraus in calculis oriatu-
r, mandat Generale Capitulum, ut unusquisque acci-
piat suum calculum à Præsidente Capituli, quo ac-
cepto, recta via ad vas balotationis accedat manu
elevata, & digitis extensis, ita ut omnes videant,
quod unusquisque singulorum calculi. Discreti etiam
ad Provinciale Capitulum profecturi, ubi fuerit nu-
merus conveniens fratrum à suis Conventibus, & ipsi
Definitores in Capitulo à suis Custodiis per balota-
ciones eligantur. Qui definitores ad aliud officium
non possit assumi, sed perseverent in illo per annum
usque ad Capitulum Provinciale, & interim consilio,
& auxilio singuli in sua Custodia provinciali, dum
visitat assistant. Quod si Provinciale Capitulum non
celebrabitur, ipsimet cum Provinciali totidem alios
patres per eandem balotaciones faciant, qui sub
nomine Definitorum officiales Provincie eligant,
& per annum similiter perseverent. Et ita fiat sin-
gulis annis, quando Capitulum Provinciale non
habebitur. Caveant tamen fratres omnes, quibus
jus electionis convenit, ne calculum suum alicui
tribuant, neve alterius ipsi recipiant, vel fraudem
aliquam in modo isto electionis committant, sub
poena expulsiōis à Provincia, & inhabilitationis ad
omnia officia Ordinis.

Qui suas elemosynas, & alia bona in manu
Superiorum suorum juxta modum superscriptum
in capite sexto, non resignaverit, Conventuique
non incorporaverit, non possit eligi ad aliquem
gradum, & honorem, sed veluti proprietarius puniatur.

Si quis vero via, & favore Principis, & Prælato: ut
quasi vi quadam intrinsece se in officis Religio-
nis, procuraverint, statim ad ea inhabilis habeatur.

Provinciales peracti sui magistratus triennalis
termino, non procurent reeligere iterum à sua Provin-
cia, nisi ex defectu fratrum vel alia rationabili causa
id Generalis per patentes litteras permittitur, sub
poena excommunicationis latae sententiæ, & priva-
tionis graduum, quas poenas extendi volumus etiam
ad eos, qui eos elegerint.

Commisarii Generales quavis potestate præditi
non audeant electos Provinciales, etiam si eorum
electioni præfuerint, confirmare, cum ad id, tantum
Generalis munus sit, & auctoritas, nisi id in suis pa-
tentibus expresse contineretur. Qui secus fecerint,
ab auctoritate & gradibus cecidisse intelligantur.

Procurator in Urbe maneat apud Sanctum Salva-
torem de Unda, hybernò saltem tempore, secundum
antiquas Ordinis constitutiones, & Summorum Pontifi-
cum decreta. Et ad evitandā discordiā unus tantum

dandi suffi-
gendi in ele-
ctione Offi-
cialium.

2.
Quod pro-
prietarius
non elege-
tur ad gra-
dus.

3.
Et etiam pre-
curantes offi-
cia, ut hic.

4.
Provinciales
quando reeli-
gi possint.

5.
Commisarii
Generales
non confir-
mat Provin-
ciales, sed à
Magistro Ge-
nerali tantū
confirmantur.

6.
Procurator
in Urbe unus
sit, jureque
& habitet apud
S. Salvatorem in
Unda.

7.
Capitula à
Magistris & Ge-
nerali conuo-
cantur.

Procurator, non plures eligantur. Procurator vero electus, sicut & Generalis, iuramentum solum iuxta Alexandrinæ constitutiones præstare teneatur. Capitula Generalia, & Provincialia possint Generalis convocare quando, & ubi illi visum fuerit iuxta tenorem Regulæ, de triennio in triennium, vel ad alium terminum majorem, vel minorem. Et vocales, qui vocati fuerint, congruo tempore adesse curabunt, aliter voce activa, & passiva priventur. Qui vero vocales non sunt, ad Capitula non accedant sub pena unius publicæ disciplinæ.

C A P. I X.

Verba Cap.9.

Fratres non prædicent in Episcopatu alicujus Episcopi, cum, &c. Tria potissima in hoc Capitulo animadvertenda sunt. Primum ne quis fratrum in Episcopatu alicujus Episcopi audeat prædicare cum ab illis fuerit contradicendum, ut sonat littera, & nuper statuit Sancta Tridentina Synodus sessione octava, canone quarto. Secundum, ne quis officium prædicationis sibi arroget, sed à suis Superioribus mittatur. Tertium, quomodo se habere debeant Prædicatores in eo munere obeundo. Circa primum mandat Generale Capitulum omnibus Prædicatoribus Ordinis, ut servant illud punctum Regulæ, & Concilii, ne scilicet populo prædicent contradicente Episcopo. Quinimo fratres omnes, honorem, & reverentiam Episcopis exhibeant.

2.
super obser-
vantia can.
4. scilicet.

Servetur etiam decretum ejusdem Sanctæ Synodi sessione septima, canone decimo quarto. Ne fratres audiant confessiones secularium, nisi prius fuerint à suis Superioribus examinati, & ab Ordinariis admitti. Qui fecerint, ultra alias penas, reddantur inhabiles ad hujusmodi confessiones audiendas.

3.
super Prædi-
cationem qua-
ritibus.

Circa secundum, nullus ad officium prædicationis admittatur à Generalibus, five Provincialibus Magistris, qui non fuerit Sacerdos, vel Diaconus, vita, & moribus comprobatus, præcipue vero Cathol. doctrina instructus, Superiores Ordinis omnem suam curam & studium adhibebunt, ut bene noscant Prædicatores, quos admittunt, eorumque doctrinam explorabunt, nequid contra receptam veritatem, vel contra Sedem Apostolicam, five Christianos Principes prædicetur. Similiter se gerant erga Patres confessorios, quos non admittant ad tam difficile munus, nisi viros bonæ conscientiæ, & qui sciant discernere inter lepram, & lepram. Hi autem per Conventus, & loca juxta necessitatem distribuantur.

4.
super dispo-
sitione co-
muni.

Magistri, & Prædicatores etiam disponantur hoc modo, ut in prædicationibus, & lectionibus, præsertim casuum conscientiæ, se exercent, populoque in fide instruant. Et qui non legunt, vel non prædicant, vel in aliquo officio Religioni non servant (nisi alias in his studiis suas partes gesserint) exemptionibus, & honoribus sui gradus non gaudeant. Fratres vero, qui ad casuum conscientiæ lectionem audiendam non accesserint, non admittantur ad audiendas confessiones, nisi vici alioquin eruditi, & probati. Et id curent Provinciales sub pena privationis officii.

5.
super Prædi-
cationibus, &
confessorio-
rum, non ha-
bitibus li-
tium.

Si quis deprehensus fuerit Prædicatoris, vel Confessoris munus absque Superiorum licentia exercuisse, post carcerem per mensem, exulet à provincia per triennium, & si sapius hoc modo deliquerit, per annum carceribus deputetur.

6.
super his,
Prædicato-
res vitare
debet.

Circa tertium, nullus Fratrum in suis prædicationibus, ne latum quidem unguem discedere audebit à communibus sensibus Sanctæ Romanæ Ecclesiæ, & à Patrum ab ea approbatorum sententiis, neque aliquam novam opinionem intruderet. Argumenta etiam hæreticorum, vel eorum responsiones in medium afferre nemo in suis concionibus audebit, ea præsertim, quæ capiti difficilia sunt rudis plebeculæ, ne hæreticorum dicta, pro conclusionibus veris, & Catholicis reperiantur. Si quis vero posthac convictus fuerit aliquam propofitio-

nem hæreticam, vel schismaticam populi prædicasse, propter quam abjuracionem facere teneatur, nunquam amplius ad prædicatoris munus, neque ad Ordinis officia admittatur. Et si quis à quatuor annis citra fuerit aliqua labe hæresis notatus, & convictus, habeatur inhabilis ad quoscumque gradus, & dignitates per decennium.

Nullus etiam librum aliquem tractantem de fide, aut de quacumque alia materia in lucem edere valeat, sub pena excommunicationis, & carceris, nisi prius à Generali, vel à deputatis ab eo, ille liber fuerit approbatus, & præterea alia observentur, quæ circa hoc in decretis Concilii Tridentini, & Indice librorum cauta sunt.

C A P. X.

7.
Fratres non
edant in lu-
cem libros
non approba-
tos à Superi-
oribus Or-
dinis.

Fratres qui sunt ministri, & servi aliorum fratrum, &c.

Verba Cap. 10.

1.
Declaratio
super mune-
re Provincia-
lium in Visi-
tationibus.

In hoc Capitulo B. Franciscus instituit Superiores Ordinis, & eorum subditos quomodo invicem se gerere debeant. Superiores vocat ministros, & servos aliorum fratrum, & sciant se non esse dominos, neque habere dominium super subditos, ut Domini temporales, sed ideo constitutos esse super alios, ut eorum utilitati, & saluti inservire debeant; præfecturæ enim nostræ sunt potius officia, quam dignitates. Subditos vero docet, ut omnimodam obedientiam suis Superioribus præstent, memores, quod propter Deum abnegaverint proprias voluntates. Quamobrem mandatur omnibus Provincialibus sub pena privationis suorum officiorum, ut singulis annis, dum visitant, examinare debeant fratres suos etiam sub juramento de statu Conventuum locorum, de vita fratrum, de moribus, de conversatione, & de observatione harum constitutionum, atque de omnibus certiores faciant Generalem Magistrum, visitent quoque carceres, explorent si quid habent fratres superflui, quod non conveniat suæ professioni, & ubi non sunt Inquisitores, etiam libros fratrum diligenter examinent.

Mandatur quin etiam prædictis ad meritum obedientiæ salutaris, ut in promovendis fratribus ad aliquem gradum, vel officium, invigilent, ne indigni præferantur dignis, & mali optimis, sed in omnibus publicæ utilitati, & ornatu consultant. Præferantur vero, qui publico commodo Conventuum, & locorum non suæ utilitati incumbunt.

2.
Super eorum-
dem munere
circa Fratrum
promotions.

Caveant quoque Provinciales sub pena privationis officii, ne de cetero cooptent in ceterum Fratrum, qui fuerint minoris ætatis annorum quadraginta, nec ad hoc suffragari possint aliquis gradus, vel officium, præter doctoratus titulum, indecens enim est, ut inter eos, quorum consilio res Conventuum aguntur, omnes passim sine selectu introducantur.

3.
Super co-
rundem mu-
nere circa æ-
tatem reci-
piendorum.

Subditis vero mandatur sub eadem vi obedientiæ, ita humiliter exhibeant se dicto Superiorum, ut nihil sibi magis faciendum, proponant, quam illud, quod ipsorum Superiores juxta suæ professionis præscriptum peragendum jusserint.

4.
Super obedi-
entia Superi-
oribus præ-
standa.

Qui autem minus obediens, vel contumax suis Superioribus fuerit, & admonitus non se emendaverit, veluti regulæ suæ, & voti obedientiæ transgressor puniatur. Et quicumque, in Generali, vel Provinciali Capitulo ad aliquod officium assumptus fuerit, & non paruerit, per quinquennium ad omnia officia Ordinis inhabilis habeatur, activaque voce careat.

C A P. X I.

Verba Cap. 11.

1.
Declaratio
super collo-
quio, & com-
mercio cum
inhonestis
mulieribus.

Præcipio firmiter fratribus universis, ne habeant suspecta consortia.

Duas partes habet hoc Capitulum. Prima prohibet fratribus suspecta consortia mulierum, Secunda ingressum in Monasteria Monacharum.

Circa primam partem, mandat Generale Capitulum districtè Fratribus omnibus, ne conversari, neque loqui audeant cum mulieribus male famæ, & quantum fieri poterit, etiam ab alloquutione mulie-

2. Super poena admittendi mulieres intra claustra.

3. Super Custodia Ostri Conventus.

4. Super Hospitium in Conventu.

Ad hoc scias Pium V. prohibuisse hospitium Milium, ut in ejus constit. 148. Cum fuerit.

5. Super accessu Fratrum ad Monasteria Monialium.

6. Super ingressum eorumdem intra claustra Monialium, adde prohibitionem Pii V. inconst. 20.

7. Super Medici qualitate & admittance intra claustra.

8. Super admittance & eruditione puellarum inter Moniales.

9. Super earundem puellarum examine & approbatione.

10. Super earundem aetate, & susceptione habitus, & emersionem professionis.

rum bonae famae abstineant. Qui comprehensi fuerint habere suspecta consortia mulierum, & correcti non se emendaverint, carceribus per mensem mancipati à Conventu proferbantur.

Et si quis convictus fuerit hujusmodi mulieres duxisse intra claustra Conventus, ultra praefatas penas, etiam flagris omni sexta feria publice cedatur per mensem.

Ut autem hac omnia serventur districte precipitur, ut in omnibus Conventibus diligenter claustra observetur, & unus fratrum januae semper assistat, qui mulieres nullo modo ingredi permittat.

In ipsis vero Conventibus, & locis non recipiantur hospitio personae saeculares, nisi forte aliqui Praetati, & viri admodum insignes ad breve tempus, & de licentia Superioris, ut claustra debite serventur, & laicorum discursu non interrumpatur. Quare obsecrandus est Beatiſſimus Papa, ut jubeat Principibus, & Magistratibus, ne gravent Conventus, & loca equis, militibus, & aliis eorum officialibus.

Circa secundam partem de Sanctimonialibus, mandatur omnibus, & singulis fratribus nostris, ne accedant ad Monasteria Monialium, nisi pro divinis agendis, & ex iussu Superiorum, qui aetatem, & probitatem mittendorum considerent, sub poena per triennium secundum constitutiones Capituli Generalis Mediolanensis proximi. Et qui mitentur, à Sanctimonialium alloquutione abstineant, sub poena exilii per annum.

Circa vero ingressum Monasteriorum servetur Canon quintus reformationis Regularium Tridentinae Synodi, ubi dicitur. Ingredi autem intra septa Monasterii nemini liceat, cuiuscumque generis, aut conditionis, sexus, vel aetatis fuerit, sine Episcopi, vel Superioris licentia in scriptis obtemperata sub excommunicationis poena ipso facto incurrenda. Quapropter mandatur Abbatissis omnibus Monasteriorum nostrorum sub poena eadem & sub poena privationis officii, ne admittant intra claustra Monasteriorum aliquem absque expressa licentia in scriptis suorum Superiorum quicumque is sit, & cuiuscumque conditionis. Licentia autem in casibus tantum necessariis detur, veluti pro Confessore, Medico aut aliis Ministris exigente necessitate.

Unicus etiam sit, & communis Sanctimonialium Medicus, proventus aetatis, ab universitate Monialium eligendus, & per Generalem, seu Provincialem approbandus, qui cum claustra Monasterii ingressus fuerit comitatus à duobus Monialibus ex antiquioribus, si Abbatissa adesse non potuerit, semper incedat, quousque claustra exiverit.

Circa puellas saeculares, quae in quibusdam Monasteriis erudiendae introducuntur, maximam curam adhibeant Superiores, ut non nisi honestas, & pacificas Virginis de Monialium consensu ingredi fiant, & quae ingressae fuerint non sustineantur ultra sedecim annos. Quo tempore vel subiectum regularem suscipiant, vel nubenda domum remittantur. Monasteria vero, quae tales Virgines recipere non consueverunt, nullo modo ad eas recipiendas cogantur.

Puella etiam habitum non suscipiant, nec professionem emittant, absque approbatione Generalis, vel Provincialis aliusque requisitis juxta decreta Concilii Tridentini in sess. 25. Quicquid secus factum fuerit, irritum sit, & inane, ac contraveniens excommunicationem incurant. Superiores autem ipsi teneantur antea diligenter scrutari voluntatem puellarum, an sponte, aut invito Monasterium ingrediantur: ut si sponte ad religionem accedant, eas suscipiant, si invite, eas recipiant, atque domum remittant.

Quae sponte voluerint ad Religionem accedere, habitum non suscipiant ante duodecimum annum, neque admittantur ad professionem ante decimum sextum suae aetatis annum expletum, & nisi per annum saltem antea in probatione steterint. Cujus professionis tempus, ne Episcopus ignoret, teneatur praefata Monasterio eum ante menssem certiorum reddere sub poena à Concilio statuta: & singula Monasteria habeant librum, in quo descri-

bantur nomina profitentium, & tempus.

Ante vero professionem (excepto victu, & vestitu) nihil tribuantur Monasterio ex bonis puellarum à parentibus, propinquis, aut curatoribus quocumque praetextu, ne hac occasione discedere nequeant, quod totam, vel majorem partem substantiae suae Monasterium possideat, nec facile, si discesserit, id recuperare possit. Quin potius praecipit Sancta Synodus sub Anathematis poena dantibus & recipientibus, ne hoc ullo modo fiat; & ut abeuntibus ante professionem omnia restituantur, quae sua erant.

Habeant quoque ipsa Monialium Monasteria sua seminario, sive novitatus praecipuamque puellarum magistrum, quae eas erudiat, & in viam mandatorum Dei dirigat.

In primis vero mandat generale Capitulum Sanctimonialibus omnibus nostri Ordinis, ut divino cultui semper invigilent, Horis Canonicis de noctu vacent, verba otiosa, & vana non admisceant, à choro horarum tempore non discedant, sed juxta earum professionem, abiectionis mundi vanitatis & illecebris, se totas Deo committant, jejuniis, & orationibus insistent: praecipue vero jejunia Romanae Ecclesiae, & suae regulae, ac disciplinam in his diebus non praetermittant. Confessionem peccatorum suorum singulis saltem mensibus faciant, & sacramentum Eucharistiam suscipiant ut eo se salutari praesidio muniant ad omnes oppugnationes demonis fortiter superandas. Quod vero ad Sanctissimum Christi corpus attinet, praecipit Sancta Synodus ne intra chorum, & septa Monasterii, sed in publica Ecclesia conservetur, non obstante quocumque indulto, aut privilegio.

Confessores Sanctimonialium constituantur viri probi, & modesti: & non maneant apud unum Monasterium ex celebrioribus praesertim, nisi per triennium, nisi forte ex aliqua rationabili causa aliter Superiori visum fuerit. Neque in monasteriis nostri Ordinis Confessores ulli admittantur, qui non sint ex ipso Ordine, quippe qui sciunt, quid importet Sanctimonialium professio, & possunt à transgressionem regulae absolvere, quod non possunt ceteri, ut litterae Apostolicae testantur. Sed & praeter ordinarios Confessores, alius extraordinarius, à suis Superioribus, bis aut ter in anno offeratur, qui omnium confessiones audire debeat.

Electio vero Abbatissae ea sit; quae & aliorum Superiorum Ordinis scilicet per balotaciones, nulla ratione consuetudinis, aut antiquitatis habita, sed si in mera eligentium libertate eam Monialem, quam magis idoneam judicaverint in Abbatissam sibi eligere, servata forma Tridentini Concilii sess. 25. cap. 7.

Abbatissa autem electa confirmationem à Superioribus postulet; & nihil quod ad Monasterium, vel ad regimen ipsius pertineat, inconsultis Vicariis, & decretis Monasterii faciat. Quod si fecerit, irritum sit & inane. Et si sapius hoc modo deliquerit, officio suo privetur. Sed neque Abbatissa aliqua perseveret ultra triennium, nisi pro reformatione, aut aliqua maxima monasterii utilitate, sed expleto termino triennali ad novae Abbatissae electionem procedatur, nulla consuetudine in contrarium faciente.

Non promoveantur vero ad aliquod officium, quocumque secreta, & scandala sui Monasterii extra Ordinem, praesertim apud laicos detulerint, quas volumus expresse in excommunicationem latae sententiae incidere, à qua per Generalem tantum praemissa poenitentia absolvere possint. Neque promoveantur, quae de suspecto consorcio convictae fuerint, sed priventur omnino accessu ad crates, & rotulas, quousque signum aliquod manifeste respicientiae ostenderint.

Nulla sanctimonialis accedet ad crates, & rotulas alloquutura sine licentia Abbatissae, & cum praesentibus Auditorum, quae in omni Monasterio ex antiquioribus discretis de morte

habeant.

11. Super eruditione bonis.

12. Super Novitatum Magistra.

13. Super Monialium exercitio in cultu divino.

14. Super Confessoribus Monialium qualitatibus.

15. Super electione Abbatissae Monialium.

16. Quod ejus officium triennio finitur. Hoc idem statuit Greg. XIII. inconst. 48. Expolice.

17. Quae in Abbatissam eligi nequeunt.

18. Quod Moniales absque licentia non accedant ad Crates vel Rotas.

habebant, & hæc licentia raro, & non nisi ex urgente causa, atque pro alloquendis parentibus, & consanguineis tantum concedatur. Quæ vero sine Abbatissæ licentia, vel sine Auditricum præsentia ad crates, aut rotulas inventa fuerit privetur accessu ad eas per menses sex pro qualibet vice.

Nulla etiam sanctimonialis aliqua munuscula dabit, vel recipiet, neque mittet litteras, aut accipiet, nisi prius munuscula visa, & litteræ lectæ ad Abbatissam fuerint, atque ab ea iudicatum fuerit, ut admittantur.

Ex monasterio vero exire nulla ipsarum ex quacumque causa audebit, nisi secundum decreta Sanctæ Tridentinæ Synodi capite quinto reformationis Regularium.

Vestimenta etiam sanctimonialium huiusmodi sint, ut professioni earum respondeant, non preciosa, non colorata, non mollia, sed honesta, simplicia, & communia, manicipie amplius utantur ad earum tunicas exteriores. Et omnes professæ habeant sua pallia, five mantellos, cum quibus ad crates, & coram suo Superiore semper compareant, quæ contraxerint, activa, & passiva voce ad Superioris arbitrium privata intelligatur.

Super cratribus ferreis sint telæ nigre, quæ nunquam auferantur, ne Moniales à quoquam videri possint, nisi forte à progenitoribus, fratribus, & fororibus de licentia Abbatissæ.

Visitatio, cerecchio, habitus in ingressu, & vel in professione collatio, ad solum Superiorem Ordinis, five ejus Commissarium pertineat, non ad aliquem laicum, five presbyterum sæcularem, consuetudine, & abusu aliquo non obstante. Qui secus fecerit excommunicationem illico incurrat, in quam etiam incidant quicumque se intromittere audebunt in iis, quæ pertinent ad spirituale regimen Monialium, etiam in deputandis Confessoribus, aut aliis fratribus, exceptis Superioribus Ordinis, quorum hæc cura tantum sit, & officium.

Cum vero Monasteriorum, & sanctimonialium bona, tam mobilia, quam permanentia, serventur illud quod de bonis Conventuum, & Fratrum supra in sexto capite statutum est hoc adicientes, ut operarii, factores, & alii Monasteriorum ministri non elegantur, neque acceptentur à sanctimonialibus, sine Superiorum approbatione, ad quorum etiam nutum amovibiles sint, ut Sancta Synodus decernit.

In singulis vero Monasteriis juxta statuta Concilii certus, & determinatus numerus Monialium statuatur, qui vel ex redditibus propriis Monasteriis, vel ex confectis elemosynis commode sustentari possit: ad quod invigilabunt Superiores.

S, autem fuerint aliqua Monasteria, quæ reformatione indigeant, possit Superior pro eorum reformatione sumere Moniales ex aliis Monasteriis ejusdem Ordinis, & eas ibi præficere quoscumque dominii, & status fuerint, non obstante contradictione Dominorum temporalium.

Et quoniam supradicta omnia ab ipsis Sanctimonialibus servari omnino volumus, mandamus omnibus, & singulis Monasteriorum nostrorum Confessoribus, ne sanctimoniales, contrafacientes his constitutionibus, nisi præmissa penitentia, absolvant.

C A P . XII.

Quicumque fratrum divina inspiratione voluerint ire inter Saracenos, &c.

In hoc capitulo sunt duo admodum breves articuli. Primus de iis, qui ad partes infidelium proficisci voluerint. Secundus de Protectore, ejusque auctoritate. Circa primum invigilandum valde est, ut fratres ad terram Sanctam, ad quam provincia Regni Cypri pertinet, five ad partes infidelium præcipue ad Peram prope Constantinopolim ubi locum satis amplum habemus, profecturi sint ejus vitæ, morum, & doctrinæ, ut credi possit aliquem fructum Christianæ Fidei ex eorum accessu ad illas partes proventurum.

Examinentur etiam, & probentur, qui ad confinia hæreticorum se conferunt, præsertim ubi Conventus, & Monasteria sunt nostri Ordinis, ut puta in Gallia, Germania, Polonia, Bohemia, Austria, Moravia, Dalmatia, Epiro, & similibus partibus, ut Catholica Ecclesia aliquam utilitatem inde referat. Quapropter sub vi obedientiæ sanctæ omnibus Superioribus Ordinis mandat Generale Capitulum, ne cui ad ea loca, nisi prius de mittendorum probitate sibi confiterit, eundi facultatem aliquando faciant.

Circa secundum Deo optimo Maximo summæ à nobis gratiæ agenda sunt, quod in ea incidimus tempora, in quibus Protectorem secundum Regulam nostram videre, & habere, datum est. Eo enim Gubernatore, quid boni sperare non debemus? Eo Protectore, quid aduersi timere possumus? Eo Correctore quis ab institutis suis regulæ deficit? Gubernator est, promovebit ad bonum. Protector est, defendet à malis. Corrector est, continebit in fide, & obedientia Sanctæ Romanæ Ecclesiæ. In his enim auctoritas ejus est, in his officium suum versatur, ut expresse dicit Beatus Franciscus in hoc capite, & declarat Gregorius IX. alias XI. primus Ordinis Protector, & deinde Sixtus Quartus, & reliqui omnes, qui regulam explicarunt. Te igitur ô Illustrissime, & Reverendissime Carole Borromæ appellamus, tuam fidem, & benignitatem obsecramus, ut nos tuæ curæ, & patrocinio commissos Beatissimo Avunculo tuo, & Sanctissimo Patri nostro Pio Quarto commendatos facias, tu vero religionem nostram tua prudentia, consilio, & auctoritate, protegere ne desistas, ut ab inimicorum insidiis tuta, Beati Patris sui Francisci vestigiis inherendo, sedulum in humilitatis spiritu reddere valeat Domino famulatum. Præterea cupiens Generale Capitulum, ut supradictæ leges, & constitutiones tam extra Italiam, quam in Italia ab universo sodalicio nostro serventur, executioni demandetur, tria hæc præcipua decrevit, ac iussit.

Primum, ne Generalis, & multo minus Provinciales possint dispensare in his, quæ sunt de essentia Regulæ, ut puta, quæ respiciunt tria vota essentialia, obedientiæ, scilicet, paupertatis, & castitatis, sed neque in aliis nisi ex urgente necessitate, vel aliqua valde rationabili causa, quæ tamen decretis Tridentinæ Synodi non aduersetur, super quod ipsum Superiorem conscientias oneratas voluit.

Secundum, quod quilibet Generalis in primo officii sui triennio, cessante legitimo impedimento bellorum, aut pestis, Provincias Hispaniarum, & Portugalliæ in persona propria visitare teneatur. Quod si ex sua negligentia non fecerit, non possit in Generalem reeligere pro secundo triennio, sed alius eligatur, qui huic decreto satisfaciatur.

Ministri vero, qui in executione præsentis reformationis à Generali, vel Visitatoribus minus diligentes inventi fuerint, ab officiis suis cadant & reddantur inhabiles etiam ad minores gradus, & officia Ordinis. Visitatores autem, qui Provincialium partes implebunt, etiam Provincialium magistratu potiantur.

Tertium, quod constitutiones Ordinis nostri quocumque tempore factæ, etiam si Apostolica auctoritate sint confirmatæ, in his, quæ decretis huiusmodi, Tridentini Concilii repugnant, omnino irritæ, & abrogatæ esse intelligantur, atque omnes ad limites, & præscriptiones illarum, & Concilii redactæ censeantur.

Postremo à Beatissimo Domino nostro Pio Quarto supplices petimus, ut jubeat Principibus, & Magistratibus, ne ullam molestiam, vel impedimentum inferant, vel inferri sinant, quo minus suprascriptæ Sanctiones in suis dominiis executioni mandentur, sed potius faveant, & auxilium suum impendant, &c.

Rescripto alienationum, infeudationum, & concessionum Terrarum, & locorum S. R. E. ac Sedis,

Circa Fratres se conferentes ad confinia hæreticorum.

Subsequuntur alia statuta, & primū circa Protectoris auctoritatem.

Tu de ea vide quæ notavi in conf. 4. Greg. XI. Cunctos, ubi alia indicavi.

i. Circa Generales & Provinciales facultatem dispensandi, in his quæ in Regla continentur.

2. Circa accessum Generalis ad visitandum Hispaniam & Portugalliam.

Circa punitionem Ministrorum negligentium exequi hanc reformationem.

3. Circa revocationem constitutionum, huic reformationi, & Conc. Trid. adversantium.

Supplicatio, pro executione reformationis in omnibus locis.

CIV.

& Cam. Apostolicæ, sine competenti recompensa, aut necessitate, vel dictæ Sedis utilitate id non exigente factarum.

Sed immo Pius V. alienationes, & infeudationes furi, & tractari prohibuit, etiam ex causa permutationis prætextu necessitatis, vel evidenti utilitatis Sedis Apost. ut infra in ejus consl. 35. Admonet. ubi plenè notabo de hac materia.

Edita An.D.
1565.

P I U S E P I S C O P U S ,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Hic Pont.
bullam Pauli
IV. editam
contra alienationes bona
ecclesiæ. ad
terminos juris
revertitur
ut supra.

Apostolica servitutis officium fidei & diligentia nostræ divinitus traditum nos jampridem excitat, & impellit, ut ipsam Sedem & Cameram Apostolicam non solum futuris rerum suarum jacturis lætam testam præstare, sed etiam adversus illata sibi detrimenta, semotis omnibus omnium injustis affectibus quoad ejus fieri potest integrare studeamus.

§. 1. Sane licet in Pontificatus nostri principio frequentibus multorum, qui constitutionem per felicis recordationis Paulum Papam IV. prædecessorem nostrum de rebus Ecclesiæ non alienandis, & de alienatis recuperandis editam, tamquam nimis rigorosam, quippe quæ nullam inter alienationes ex causa necessaria, vel utili factas, & alias mere voluntarias Ecclesiis damnosam differentiam faciebat, retractari vehementer instabat, querelis indugit, rem in plena Signatura nostra cognoscere, & multitudinem querelantium sedare volentes, dictam constitutionem ad terminos juris communis sub data videlicet 3. Idus Septembris, Pont. nostri anno primo, reducere quomodo coacti fuimus.

Et modo ipse
annullat
quascumque
alienationes
bonorum Ecclesiæ Rom.
& Sedis, &
Cam. Apost.
sine competi-
tatione vel ne-
cessitate, seu
evidenti uti-
litate factas.

§. 2. Nos tamen quos successus temporis experientia longo rerum usu, & quotidiano pastoralis officii nostri exercitio variis modis edocuit, multas alienationes rerum Ecclesiæ Rom., Sedisque, & Cameræ prædictarum per aliquos importunis precibus, & aliis variis artibus indugitos Rom. Pontifices prædecessores nostros, & forsan (quod dolenter referimus) per nos, nulla rationabili causa suadente in gravissimam ipsius Ecclesiæ læsionem, Dei offensam, populi scandalum, & evidens animarum periculum hæcenus factas, & approbatas extitisse, non solum periculum hujus animarum periculi magnitudine, sed etiam debita erga Deum, & suam cui nos præesse volumus Ecclesiam pietate, tum etiam urgentis conscientia nostræ testimonii religione percussi, rem omnem cum Venerab. fratribus nostris S.R.E. Cardinalibus in Consistorio nostro secreto diligenter duximus perscrutandam; ubi mature considerantes bonum, & fidelem Dei servum, nihil eorum quæ sibi à Domino credita sunt, distrahere, seu negligere, nec aliter quam ex causa vel necessitate, vel evidenti utilitatis alienare, sed cuncta fideliter conservare debere; hinc est quod his aliisque iustis de causis moti quarumcumque venditionum, & infeudationum, concessionum, & aliarum quocumque nomine nuncupatarum alienationum de Civitatibus, Terris, Oppidis, Castris, Feudis, Dominis, & Locis, & aliis stabilibus bonis, ac censibus, & juribus quibuscumque ubilibet constitutis ad Ecclesiam, Sedem, & Cameram præfatas quomodolibet pertinentibus, & quæ pertinuisse, vel pertinere censeantur, cujuscumque qualitatibus, quantitatibus, excellentiis, & quantumvis maximis, vel minimi momenti fuerint, quibusvis personis quavis, Ecclesiastica vel seculari, five mundana, etiam Episcopali, Archiepiscopali, Patriarchali, Cardinalatus honore, seu Marchionali, Ducali, Regali, vel alia quacumque dignitate, seu præminencia præditis, aut etiam Communitatibus, Universitatibus, Collegiis, & aliis per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac per nos dictamque Sedem, ac Cameram ex causa gratiosa, & lucrativa, sine aliqua, vel saltem minime respectiva, nec competenti recompensa, seu necessitate, vel evidenti dictæ Sedis utilitate id non exi-

gente, perpetuo, vel ad recipientium vitam, aut alias ad longum tempus, etiam per viam permutationis, hypothecæ, recompensæ, contractus, etiam juvari, etiam de Fratrum consilio quovis colore, vel ingenio, etiam Motu proprio, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, etiam cum quibuscumque adversus quascumque revocationes, & alias contrarias dispositiones præservativas, & in pristinum statum resitutivas, ac derogatorias derogatorias, aliisque efficacissimis, & insolitis clausulis, ac irritantibus, & aliis decretis, etiam à quocumque quantumlibet longissimo, & immemorabili tempore citra quomodolibet factarum & concessarum, ac etiam iteratis vicibus approbatarum, & innovatarum, contractuumque desuper initorum, & juratorum, necnon quarumcumque Apostolicarum, & aliarum scripturarum, aliorumque hic etiam de necessitate exprimendorum tenores, ac quarumcumque litium, & causarum si quæ desuper ubilibet, & in quavis instantia pendeat, status, & merita præsentibus, ac si de verbo ad verbum infererentur pro sufficienter expressis, & insertis habentes, de Fratrum ipsorum consilio, & assensu unanimi ex certa scientia nostra, ac de eadem Apostolicæ potestatis plenitudine universas, & singulas venditiones, cessiones, infeudationes, locationes, donationes, permutationes, hypothecæ, concessionem, & alias omnimodas alienationes, & contractus præfatos quacumque, quocumque, & qualescumque, ac in quorumvis Principum, ac Cardinalium, Patriarcharum, & aliorum Prælatorum favorem vel eorum contemplatione per Prædecessores nostros, ac nos, & Sedem præfata, necessitate, vel evidenti utilitate Sedis hujusmodi id non exigente, seu sine aliqua, vel saltem minime respectiva neque competenti recompensa, ut præmittitur factos, & concessos, ac confirmatos, & approbatos, etiam si quantumvis longissima tempore præscriptione robur sumpsisse dici possint, auctoritate Apostolica tenore præsentium perpetuo revocamus, rescindimus, cassamus, irritamus, annullamus, ac viribus omnino vacuumus.

§. 3. Declarantes venditiones, cessiones, infeudationes, locationes, donationes, permutationes, hypothecæ, concessionem, & ceteras alienationes præmissas nequaquam tenuisse, nec tenere, nullumque emptoribus, cessionariis, feudatariis, locatariis, donatariis, aliisque rerum ipsarum detentoribus, nec aliquem possidentem titulum per eas quæsum esse, nec eisdem Ecclesiæ, Sedi, & Cameræ præjudicium afferre potuisse.

§. 4. Ac Civitatum, Terrarum, & aliorum locorum eorumdem habitatores vassallos, & subditos, dictis illorum detentoribus nullum vassallagii fidelitatis, vel subjectionis, aut aliud jus vel obedientiam alienationum hujusmodi, vel etiam juramenti per eos illis præstiti, quod etiam eis harum serie relaxamus, prætextu, debere aut illis adstrictos esse.

§. 5. Quinimo detentores ipsos ad eandem Civitates, Terras, Castra, Oppida, & loca Sedi, & Cameræ præfatis realiter, & cum effectu restituenda, & relaxanda, ac eorum detentores ad fructuum inde post obitum concedentis hæcenus perceptorum, & in posterum percipiendorum restitutionem in utroque foro omnino teneri, & ad id etiam sententiis, censuris, & poenis Ecclesiasticis, ac etiam pecuniariis, necnon privationis quorumcumque aliorum feudorum Ecclesiasticorum per eos etiam legitime obventorū, & inhabilitatis ad illa aliaque deinceps obtinenda, ac aliis juris & facti remediis, cogi & compelli posse.

§. 6. Ac decernentes praefatis vim perpetuæ legis habere, neque de pullitatis vitio seu intentionis nostræ vel alio quovis defectu notari seu impugnari posse, sed illas omni exceptione remota, validas & efficaces fore, fuosque plenarios & integros effectus fortiri, & inviolabiliter observari.

§. 7. Sicque per quoscumque iudices & Commissarios quavis auctoritate fungentes, etiam S.R.E. Cardinales in quavis etiā de præfati pendente causa, & instantia, sublata eis & eorum cuilibet quavis

Declarat
etiam hujus-
modi aliena-
tiones
nunquam re-
vovisse.

Vassallosque
nullum jus
vassallagii
debere occu-
patoribus
bonorum Se-
dis Apost.

Occupato-
resque bona
occupata &
fructus resti-
tuere debe-
re.

Clausule
præservati-
væ.

Decretum in-
ritans.

aliter

Clausula de rogatoria.

aliter iudicandi & interpretandi facultate, iudicari, & defini debere. Ac irritum quoque & inane quicquid a quocumque auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 8. Non obstantibus reductione nostra & litempendentiis premissis, ac etiam per nos prestitis iuramentis; & de non tollendo jus quæsitum, aliisque quibuscumque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis; necnon privilegiis, indultis, promissionibus, ratificationibus, obligationibus, submissionibus, renunciationibus, & litteris Apostolicis, de-tenoribus præfatis, & aliis quibuscumque sub quibus-cumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque, etiam derogationum derogationis, aliisque efficacissimis, ac in solitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis, etiam Motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus per nos etiam Consistorialiter, & contra tales revocationes quomodolibet concessis, ac etiam pluries approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, etiam si de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum tenores, ac si de verbo ad verbum infererentur præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat specialiter & expresse paribus, Motu, scientia, & potestatis plenitudine derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 9. Ut autem præsentibus ad eorum quos concernunt notitiâ facilius deducantur, volumus, & mandamus, quod illæ in Basilicâ Principis Apostolorum de Urbe, & Cancellariæ, ac Cameræ Apostolicæ valvis per aliquem ex nostris Curforibus affixæ, copia illarum ibi dimissa, universos & singulos quorum interest, si citra videlicet infra mensem, si vero ultra montes fuerint infra tres menses à die affixionis huiusmodi computandos perinde afficiant, ligent, ardeantque, ac si illis personaliter intimatæ fuissent.

Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1565, 15. Kal. Decembris, Pontificatus nostri Anno sexto.

Ego Pius Catholicæ Ecclesiæ Episcopus.

Si mei non fuerint dominati tunc immaculatus ero.

Ego Jo. Mi. Card. Saracenus.
Ego Jo. Card. Sancti Vitalis.
Ego Jo. B. Cicada Card. S. Clementis.
Ego Scipio Card. Piarum.
Ego Jo. Card. Reomanus.
Ego Jo. Ant. Card. Capisuccus.
Ego Fr. M. G. Card. Alexandrinus.
Ego Clemens Card. Arzceli.
Ego Jac. Card. Sabellus.
Ego Jo. Ant. Card. S. Georgii.
Ego Bern. Card. Salvatus.
Ego Lud. Card. Simoneta.
Ego F. Card. Paceccus de Toledo.
Ego Marcus Antonius Card. Amulius.
Ego Jo. F. Card. de Gambara.
Ego M. S. Card. de Altaemps.
Ego Franciscus Card. Manuanus.
Ego Marcus Ant. Card. Columna.
Ego Ptolomæus Card. Comensis.
Ego B. Card. Lomellinus.
Ego Vitellotius Card. Vitellius S. R. E. Cam.
Ego Franciscus Card. Alciatus.
Ego Guilhelmus Card. Sirtetus.

Anno à Nativitate D. N. Jesu Christi 1565. Indiſt. 8. die vero 5. mensis Octob. Pontificatus autem Sancti Pii in Christo Patris, D. N. D. Pii divina providentia Papa IV. anno sexto, retroscripta littera affixæ, & publicatæ fuerunt ad valvas Principis Apostolorum de Urbe, & Cancellariæ Apostolicæ,

ut moris est, per nos Scipionem de Ostavianis, & Jo. Andream Rogerium Cursores.

Alexander Ascanellus Magister Curſ.

Sequitur facultas Camerarii sup. prædictis.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Decens esse arbitramur & congruum ita nos, &c. ut supra.

§. 1. Nos litteras ipsas, ac in eis contenta quæcumque suos plenarios ac debitos effectus fortiricupientes, Dilecto filio nostro Vitellio S. Mariz in Via lata Diacono Cardinali Vitellio nuncupato, nostro ac ejusdem S. R. E. Camerario, per Apostolica scripta mandamus, quatenus in virtute sanctæ obedienciæ ipse etiam ultra ordinariam sui Camerariatus officii facultatem per se vel alium, seu alios litteras prædictas, ac in eis contenta quæcumque, ubi & quando opus fuerit solemniter publicans, faciat auctoritate nostra executioni debitæ demandari, illaque firmiter & inconvulſe observari. Non permittens Sedem & Cameram præfatas, ac pro eis agentes quoscumque contra litterarum earumdem tenorem indebitè molestari. Contradiçtores quolibet & rebelles, litterisque prædictis contravenientes etiam contra eos manu Regiæ, ac simpliciter, & de plano, ac sine strepitu & figura judicii solaque rei veritate inspecta procedens, per censuras & penas Ecclesiasticas, ac etiam pecuniarias ejus arbitrio infligendas, moderandas & applicandas, omni quacumque appellatione & reclamazione remota compescendo.

§. 2. Non obstantibus de una & duabus non tamen tribus dietis, aliisque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 3. Volumus autem quod præsentis nostri Motus proprii sola signatura, etiam si videbitur absque aliqua illius registratura, sufficiat, & ubique fidem faciat in judicio & extra, quacumque regula seu constitutione Apostolica contraria non obstante.

Placet Motu proprio.

Taxa mercedum Notariorum causarum Civilium, Gubernatoris, Vicarii, Judicis Burgi, & Magistrorum Viarum Urbis, & etiam Capitoli in casibus de quibus per Statuta non est provisum.

Taxam vero Notariorum Crimindium habes in const. seq. Et Notariorum A. C. infra in hoc Tomo, in const. 113. Pii V. Inter illa. Quas omnes reformatas attende in Pauli V. const. 72.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Cum nuper generali Reformationi, circa Romanæ Curie officia, & Tribunalia per nostras desuper editas litteras providerimus, & inter cetera statuerimus, ut quorundam Tribunalium Notarii, pro actis coram eis faciendis, adnotandis, & conscribendis, mercedem juxta taxationem per nos eis ordinandam, & non ultra, exigere valeant: idcirco nos illam ad suprascriptum modum duximus reducendam. Quam per Notarios actuarios in causis Civilibus Curiarum Almæ Urbis nostræ Gubernatoris, & nostri in eadem Urbe Vicarii, necnon Capitanei Burgi Sancti Petri, & Magistrorum viarum, ac in casibus, in quibus per statuta Urbis specialiter non providetur, etiam Senatoris ejusque Collateralium, & Capitanei appellationum, ac Magistrorum Justitiariorum, observari mandamus, sub penis in dietis nostris litteris expressis. Utque tam ipsi Notarii quantum petere valeant, quam paribus litigantibus quantum solvere debeant juxta innotescit jubemus, ut

Exordium.

Derogatio Camerarii executoris dictæ const.

Derogatio contrariarum.

Sola signatura sufficit.

Papæ subscript.

CV.

Notarii prædicti servant hanc taxam & tabellam affixam teneant in loco publico.

Bullarium Romanum. Tom. II.

Q 3

singuli

singuli Notarii prædicti taxationem infrascriptam in vulgari sermone impressam, Tabellæ affixam in suo quisque Officio in loco publico, quo ab omnibus inspicî, legi, & intelligi possit teneant, contrariis non obstantibus quibuscumque.

Placet Motu proprio I.

Pro quocumq; Monitorio, Arresto, seu præcepto litis introductivo, cû clausula, si quis, &c. nihil. **b. 1.**
Pro quacumque petitione, comparitione, protestatione, five allegatione, bol. unum. **b. 1.**
Pro quacumque revocatione inhibitionis de facto factæ, Arresti, Sequestri, seu cujusvis Mandati, bol. duos. **b. 2.**
Pro mādato suspicionis fugæ, cum examine testium usq; ad summam scutorum decem, b. decem. **b. 10.**
Cum productione irritum à decem infra, bol. septem cum dimidio. **b. 7. ÷**
A decem supra, cum examine testium, b. duos. **b. 12.**
Cum productione Jurium à decem supra bol. decem. **b. 10.**
Pro Arresto in carceribus, idem solvatur respective.
Pro mandato de relaxando, cum cautione usque ad summam scutorum decem, ol. quindecim. **b. 15.**
Si vero cum consensu, sine cautione, bol. duodecim. **b. 12.**
Abinde supra si cû cautione, bol. viginti quinque. **b. 25.**
Si vero sine cautione, bol. viginti. **b. 20.**
Pro quocumq; mandato in contumaciâ, b. tres. **b. 3.**
Pro revocatione Mandati in contumaciâ, bol. duos. **b. 2.**
Pro Non. Gravetur, seu mandato de non molestando in forma juris, bol. tres. **b. 3.**
Pro quocumque deposito pro quacumque summa in actis faciendis. nihil.
Pro restitutione depositi pro quolibet scuto in causa mercedum, bol. unum in ceteris. **b. 1.**
Pro rogatu cujuscumque obligationis in officio usque ad summam scutorum decem, bol. septem cum dimidio. **b. 7. ÷**
Abinde supra, bol. decem. **b. 10.**
Extra officium duplum.
Pro cassatione cujuscumque obligationis Judicialis usq; ad summam decem bol. quinque. **b. 5.**
Abinde supra, bol. decem. **b. 10.**
Pro susceptione termini in judicio ad solvendum, bol. duos. **b. 2.**
Pro quacumque susceptione censurarum in judicio, quæ non fiat nisi ultra decem, bol. septem cum dimidio. **b. 7. ÷**
Pro moderatione censurarum, bol. duos. **b. 2.**
Pro quocumq; partito litis decisivo, bol. duos. **b. 2.**
Pro quocumq; juramento extra Officium, susceptione termini, aut actus judicialis usq; ad scutos decem, bol. septem cum dimidio. **b. 7. ÷**
Abinde supra, bol. decem. **b. 10.**
Pro quocumq; mādato vigore termini in judicio suscepti, vel censurarum, vel juramento usq; ad summam scutorum quinque, bol. quinque. **b. 5.**
A scutis quinque usq; ad decem, bol. decem. **b. 10.**
A decem usque ad viginti, bol. viginti. **b. 20.**
A viginti usque ad quamcumque summam, bol. quinquaginta. **b. 50.**
Pro decreto supradicti mandati, bol. duos. **b. 2.**
Pro quocumq; fide de exequendo Mandatum in alia Curia decretum, seu appositionis manus in contumaciâ, vel alias non facto processu, bol. duos. **b. 2.**
Pro quocumque rogatu procuræ in Officio, bol. duos. **b. 2.**
Extra vero officium, bol. octo. **b. 8.**
Pro productione quorumcumque jurium, articulorum & interrogatoriorum, bol. duos. **b. 2.**
Pro quocumq; restitutione juris cû dimissione copiarum decem scutis infra, supra tamen duo in scriptis privatis, bol. septem cum dimidio. **b. 7. ÷**
A decem usque ad viginti, bol. quindecim. **b. 15.**
A viginti supra, bol. viginti. **b. 20.**
Si vero instrumenta publica, vel alia jura, duplum in quolibet casu prædicto.

Pro relatione ad videndum jurare testes, & illorum reductione, specificatione materiæ etiam si infirmul cum inductione testium fiat, bol. duos. **b. 2.**
Pro responsione articulorum five preparatoriorum pro quolibet articulo, seu preparatorio etiam generali five fiat verbo five fiat per productionem cedulæ, bol. unum. **b. 1.**
Pro examine testis in quacumque summa, summarie absque articulis & interrogatoriis bol. septem cum dimidio. **b. 7. ÷**
Pro examine super recognitione texerarum, bol. quatuor. **b. 4.**
Pro recognitione apocarum, bol. tres. **b. 3.**
Pro examine super articulis & interrogatoriis à scutis decem infra, supra tamen duo, bol. decem. **b. 10.**
A decem usque ad viginti, bol. quindecim. **b. 15.**
A viginti usque ad quamcumque summam, bol. vigintiquinque. **b. 25.**
Si vero articuli, & interrogatoria fuerint excessiva, solvatur arbitrio Domini.
Extra vero officium solvatur duplum.
Pro copia testium publicorum, solvatur ad rationem ut supra pro examine.
Pro quacumque informatione judici faciendi cum offensione actorum, jurium, vel testium, à quinque ducatis infra, bol. tres. **b. 3.**
A quinque usque ad decem, bol. sex. **b. 6.**
Abinde supra bol. septem cum dimidio. **b. 7. ÷**
Et unica tantum informatio in omnibus casibus solvatur.
Et si fiat extractus, vel Registrum, nihil solvatur pro informatione.
Pro quocumque decreto definitivo, vel nota sententiæ vim definitivæ habentis usque ad summam scutorum quinque, bol. quinque. **b. 5.**
Usque ad decem, bol. decem. **b. 10.**
Usque ad viginti, bol. triginta. **b. 30.**
Usque ad quamcumque summam, bol. quadragintiquinque. **b. 45.**
Pro quocumque mandato vigore sententiæ servatis servandis, vel causa cognita, usque ad summam scutorum quinque, bol. septem cum dimidio. **b. 7. ÷**
Usque ad decem, bol. decem. **b. 10.**
Usque ad viginti bol. triginta. **b. 30.**
Usque ad quamcumque summam, bol. quinquaginta. **b. 50.**
Pro copia cujuslibet commissionis, bol. decem. **b. 10.**
Pro copia simplicis cujuslibet instrumenti in actis rogati, bol. septem cum dimidio. **b. 7. ÷**
Pro copia subscripta pro fide eorundem, bol. decem. **b. 10.**
Pro copia articulorum si sit magna scriptura, b. decem. **b. 10.**
Pro copia cujuslibet petitionis partici juramenti, allegationis & cujuscumque alterius actus judicialis in actis facti, bol. duos. **b. 2.**
Pro mandato de evacuando domum, bol. vigintiquinque. **b. 25.**
Pro quocumque mandato de consignandis pignoribus, b. tres. **b. 3.**
Pro quocumque decreto confessionis debiti, bol. duos. **b. 2.**
Pro quibuscumque litteris declaratoriis vigore Monitorii vel in illarum loco Mandato in contumaciâ, bol. triginta septem cum dimidio. **b. 37. ÷**
Pro quibuscumque litteris excommunicationis five delegatoriis vigore obligationis in forma Cameræ vel monitorii reintegrati, vel mandato loco illarum usque ad summam vigintiquinque scutorum, bol. triginta septem cum dimidio. **b. 37. ÷**
A vigintiquinque usque ad quamcumque summam, bol. quinquaginta. **b. 50.**
Pro absolutione à censuris, bol. septem cum dimidio. **b. 7. ÷**
Pro instrumento absolutionis à censuris idem solvatur, prout in litteris.

Deposita ultra scuta quinque apud Montem Plebanum fieri decrevit Greg. XIII. infra in ejus constit. 94. Inter multiplices.

Pro quocumque Brachio seculari, solvatur duplum ad rationem summae praedictae.

Pro monitorio extra Urbem in aliis districtu, bol. viginti. b. 20.

Pro rogatu instrumenti possessionis infra mœnia urbis, bol. triginta septem cum dimidio. b. 37. ÷

Extra vero mœnia urbis arbitrio Domini.

Pro inventario de bonis, extra officium, bol. quinquaginta. b. 50.

Pro publicatione instrumentorum, servantur statuta Urbis.

In causis a quaque infra, specificentur materiae in actis & examinentur testes absque articulis & interrogatoriis, & Notarius teneatur super generalibus examinare, & si pars voluerit dare interrogatoria, concordet Notarium.

Et si agatur de bonis, & nō de pecuniarum quantitatibus, sicut arbitrio Domini, qua taxa solvi debeat.

Pro extractibus fendis prout hactenus fieri consueverunt, pro quolibet folio habentibus lineas viginquiduo in qualibet pagina, bol. septem cum dimidio. b. 7. ÷

In causis commissariis, pro comparitione & relationibus nihil recipitur, & in omnibus casibus, solvatur prout in aliis Urbis tribunalibus solvi solitum & consuetum est.

A pauperibus miserabilibus personis solvere impotentibus nihil iuxta formam litterarum nostrarum accipiant.

CVI.

Taxa mercedum Notariorum causarum criminalium Gubernatoris, Auditoris Camerae, Vicarii, & Senatoris Urbis, ac Judicis Burgi.

Horum Notariorum taxa plenius reformatam est à Paulo V. infr. in ejus const. 78. Cum nos.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Cum nuper generali reformationi circa Romae Curiae Officia & Tribunalia per nostras desuper editas litteras providerimus, & inter cetera statuerimus, ut quorundam Tribunalium Notarii pro actis coram eis faciendis, adnotandis, & conscribendis mercedem juxta taxationem per nos eis ordinandam, & non ultra, recipere valeant. Idcirco nos illā ad supradictum modum duximus reducendā, quam per Notarios actuarios, in causis criminalibus Curiarum Almae Urbis nostrae Gubernatoris, Auditoris Camerae, Vicarii, Senatoris, ac Burgi, observari mandamus sub penis in dictis nostris litteris expressis, utque tam ipsi Notarii quantum petere valeant quam partibus litigantibus quantum solvere debent jugiter innoteat, jubemus, ut singuli Notarii praedicti taxationem subscriptam in vulgari sermone impressam, & tabellae affixam, in suo quisque officio in loco publico, quo ab omnibus inspicī, legi, & intelligi possit teneant, contrariis non obstantibus quibuscumque.

Placet Motu proprio. I.

Pro receptione querelae ex officio, vel ad instantiā partis, five in officio, five extra officium. nihil.

Pro examine testium pro informatione Curiae, five in officio five extra officium, similiter ex officio vel ad instantiā partis. nihil.

Pro examine reorum in carceribus. nihil.

Pro quolibet Monitorio, inhibitione, vel sequestro in curia, cum clausula, Si quis. sent. bol. 3.

Pro alia inhibitione, arresto, monitorio, vel sequestro sine dicta clausula. sc. b. 5.

Pro quolibet significatione, cum fidejussione, five obligatione. sc. b. 15.

Pro simili significatione, absque fidejussione, & obligatione. sc. b. 10.

Pro monitorio poenali, citatione, inhibitione, sequestro, arresto, aut alio quovis instrumento five in curia five extra curiam, five auctoritate ordinaria five commissaria pro Fisco. nihil.

Pro simili monitorio in curia in vim commissionis, si adest instigator secretus vel apertus, carlen. quinque. sc. b. 37. ÷ 1

Pro monitorio vel sequestro extra curiam auctoritate ordinaria, si adest instigator ut sup. sc. b. 25.

Pro monitorio vel sequestro extra curiam in vim commissionis, si adest similis instigator secretus vel apertus. sc. b. 7.

Pro inhibitione in curia vigore commissionis, instantiam partis, vel si adest instigator, ut supra carl. quinque. sc. b. 37. ÷

Pro inhibitione simili extra curiam. sc. b. 60.

Pro citatione etiam cum inhibitione vigore commissionis, etiam per edictum extra curiam, ad instantiam partis, vel si adest instigator ut supra sc. 10. ÷

Pro compulsozialibus generalibus vel specialibus extra curiam vigore commissionis. sc. 1. b. 1.

Pro instrumento remissoriae. sc. 1. b. 1.

Pro quolibet palmo rotuli remissoriae carl. 5. sc. b. 37. ÷

Pro litteris missivis pro examinandis testibus extra curiam loco remissorialium. sc. b. 20.

Pro litteris declaratoriis ob non paritionem monitorii extra curiam, carl. 10. sc. b. 75.

Si in causa commissaria. sc. 1. b. 1.

Pro brachio seculari similiter ob non paritionem monitorii extra curiam caus. ordin. sc. 1. b. 50.

Pro brachio seculari vel mandato executivo loco executorialium extra curiam in causa commissaria. sc. 2. b. 50.

Pro mandato de capiendi extra curiam auctoritate ordinaria, ad instantiam partis vel instigatoris secreti, vel aperti. sc. b. 25.

Si in causa commissaria. sc. 1.

Pro edicto tempore vacantiarum. sc. b. 50.

Pro comparitionibus relationibus jurium productionibus vel aliis quibuscumque actis pro Fisco. nihil.

Pro quolibet relatione, comparatione, protestatione, jurium productione, vel alio actu parte instante. sc. b. 2.

Pro actu depositi pecuniarum. nihil.

Pro consignatione depositi pro quolibet. sc. b. 1.

Pro consignatione pignoris vel rei depositatae. sc. b. 7. ÷

Pro examine cujuslibet testis in causa capitali, vel in qua venierit imponenda poena corporis afflictiva, cum articulis & interrogatoriis, vel cum interventu Domini Judicis, vel Fiscī, in officio vel domo ipsius Judicis. sc. b. 50.

Si extra domum & officium, etiam si testis sit egregius vel illustris super eisdem. sc. 1.

Si absque interrogatoriis & interventu Judicis & Fiscī, vel super bona fama, ut super uno vel duobus articulis tantum in officio. sc. b. 25.

Si extra officium, etiam si testis sit illustris, ut supra. sc. b. 4.

Pro examine testis in aliis causis non capitalibus, super articulis & interrogatoriis, vel cum interventu Judicis vel Fiscī in officio. sc. b. 3.

Si extra officium, etiam si testis sit egregius, vel illustris. sc. b. 50.

Si absque interrogatoriis & interventu Judicis, vel Fiscī, in officio. sc. b. 15.

Si extra officium. sc. b. 25.

Si materiae in articulis vel interrogatoriis fuerint excessivae, in quolibet ex casibus praedictis attendatur taxa juxta excessivitatem arbitrio D. Judicis.

Pro examine testis in officio summarie, absque articulis & interrogatoriis. sc. b. 10.

Si extra officium. sc. b. 15.

Pro ostensione depositionis testium publicatorum absque copia, solvatur medietas ejus quod solum fuerit pro examine respective.

Pro copia ipsius depositionis testium pro quolibet fol. continenti lineas 23. sc. b. 7. ÷

Pro quolibet folio copiae indiciorum continenti lineas 23, & pro quolibet linea 12, syllabas si unus tantum reus fuerit. sc. b. 5.

Si duo vel plures rei fuerint, pro quolibet fol. simili carlen. unum. sc. b. 7. ÷

Pro quolibet centenario fol. registri in causis ordinariis, si ad instantiam partis fieri contingat, dummodo pagina fol. contineat lineas 24, & registrum vel

Deposita ultra scuta quing. apud Montem Pietatis fieri decrevit Greg. XIII. infra in ejus const. 94. Inter multiplices.

- extraſtus cur. Capitoli factus fuerit jux. formam Motus proprii S. D. N. D. Pii PP. IV. ſc. 3. b. 1. $\frac{1}{2}$
- In cauſis vero commiſſariis à principio cum rotidem 24. lineis, & juxta formam ejuſdem Motus proprii, quolibet centenatio. ſc. 4.
- Pro quolibet folio extraſtus facti cum lineis, & juxta tenorem dicti Motus proprii. ſc. b. 7 $\frac{1}{2}$
- Pro quolibet centenatio rubricaturæ proceſſus de partibus. ſc. 1. b. 50.
- Pro mandato de relaxando aliquem in cauſa capitali, vel alia in qua veniret imponenda pœna corporis afflictiva, ubi præceſſerint indicia, & reus fuerit examinatus, nec fuerit lata & ſubſcripta ſententia. ſc. b. 50.
- Ubi vero reus præcedentibus indiſciis examinatus, fuerit condemnatus; vel etiam tam ante, quam poſt compoſuerit, aut ſolverit pœna, ſeu ex gratia pœna ei remiſſa fuerit. ſc. 1.
- Pro mandato de relaxando aliquem in alia cauſa, ubi præcedent indicia, & reus componat, vel pœnam ſolvat, aut condemnatus ex gratia liberetur. ſc. b. 30.
- In aliis vero quibuſvis cauſibus pro ſimili mandato de excarcerando. ſc. b. 20.
- Pro rogitu cujuſlibet fidejuſſionis in officio, vel carcere. ſc. b. 10.
- Si extra officium & carcerem. ſc. b. 20.
- Pro mandato de capiendo aliquem pro indiſciis, vel pro curiæ informatione. nihil.
- Pro mandato de capiendo pro cautione de non offendendo. ſc. b. 7 $\frac{1}{2}$
- Pro non gravetur. ſc. b. 5.
- Pro mandato de evacuando ſervatis ſervandis. b. 20.
- Pro inventario in cauſa capitali. ſc. 1.
- Pro ſimili inventario facto de mandato Judicis in quavis alia cauſa criminali. ſc. b. 50.
- plus vel minus arbitrio Judicis.
- Pro ſimili inventario in cauſa civili ſc. b. 20.
- Pro extimatione, ſubhaſtatione, & venditione bonorum mobilium, vel ſe moventium Fiſco incorporatorum, uſque ad valorem ſcut. 10. b. 15.
- A ſcut. 10. uſque ad 20. ſc. b. 30.
- A ſcut. 20. uſque ad 50. ſc. b. 75.
- A ſcut. 50. uſque ad 100. ſc. 1.
- A ſcut. 100. uſque ad 500. ſc. 2.
- A ſcut. 500. uſque ad quancumque ſummam. ſc. 3.
- Pro adptione poſſeſſionis bonorum ſtabilium Fiſco incorporatorum intra mœnia. ſc. 1.
- Si extra ſolvatur juxta importantiam cauſæ, & diſtantiæ loci, arbitrio Domini Judicis.
- Pro ſubhaſtatione, venditione, & deliberatione ſimilium bonorum ſtabilium uſque ad valorem ſcut. 100. ſc. 1. b. 2.
- Abinde ſupra capiatur arbitrio ejuſdem Domini Judicis.
- Pro nota ſententiæ definitivæ, declaratoriz, vel interlocutoriz, in quavis inſtantia pro Fiſco. nihil.
- Pro nota ſententiæ abſolutoriz definitivæ in cauſa capituli in prima inſtantia, pro quolibet reo. ſc. 4.
- Si in ſecunda inſtantia. ſc. 3.
- Si in tertia inſtantia. ſc. 2.
- Pro ſimili nota ſententiæ in alia cauſa in qua veniret imponenda pœna corporis afflictiva, in prima inſtantia. ſc. 3.
- Si in ſecunda. ſc. 2.
- Si in tertia. ſc. 1.
- Pro ſimili nota ſententiæ abſolutoriz definitivæ in cauſa non capitali, & in qua non veniret imponenda pœna corporis afflictiva in prima inſtantia. ſc. 2.
- Si in ſecunda. ſc. 1. b. 50.
- Si in tertia inſtantia. ſc. 1.
- Pro ſimili nota ſententiæ declaratoriz in quavis cauſa & inſtantia. ſc. 1.
- Pro nota ſententiæ definitivæ in cauſa diſcuſſionis, recipiatur juxta importantiam cauſæ arbitrio Domini Judicis.
- Pro nota decreti habentis vim ſententiæ definitivæ in quolibet ex cauſibus prædictis capiatur pro medietate, juxta taxam prædictarum ſententiarum reſpective.
- Pro quolibet folio copiz articulorum, vel jurium produſtorum carl. unum. ſc. b. 7 $\frac{1}{2}$
- Pro reſtitutione jurium. ſc. b. 25.
- Pro quolibet ſalvoconduſto pro homicidio ad quodvis tempus forte dari contingat de mandato S. D. N. ſc. 1.
- Si pro alio minori dilecto. ſc. b. 50.
- Pro decreto ad exequendum mandatum jam decretum revocationis, inhibitionis, vel ſequeſtri de conſignando bona depoſitata, vel ſimilis naturæ, una cum fide vel mandato deſuper opportuno carl. unum. ſc. b. 7 $\frac{1}{2}$
- Pro caſſatione cujuſlibet ſimplicis fidejuſſionis, obligationis, vel querelæ. ſc. b. 10.
- Pro caſſatione ſimilis fidejuſſionis, vel querelæ in quibus ſecutus fuerit proceſſus, vel examen inquisiti, non tamen condemnatio. ſc. b. 20.
- Pro caſſatione ſimilis fidejuſſionis, vel obligationis in cauſa gravi, & pro perſona tertia, attendatur importantia ipſius cauſæ, & perſonæ inquisitæ, & ſtetur judicio Domini Judicis, niſi partes fuerint inter ſe concordæ. ſc. 1.
- Pro caſſatione proceſſus in cauſa capituli, pro quolibet inquisito. ſc. 1.
- Si in cauſa minori, in qua tamen venerit imponenda pœna corporis afflictiva. ſc. b. 75.
- Pro caſſatione proceſſus in alia cauſa non capitali, in qua non veniret imponenda pœna corporis afflictiva. ſc. b. 50.
- Pro caſſatione proceſſus in alia cauſa gravi, & pro perſona tertia attendatur importantia cauſæ perſonæ, & ſtetur judicio Domini Judicis, ut ſupra.
- Pro inſtrumento ſententiæ in cauſa capitali. ſc. 2.
- Pro ſimili inſtrumento in cauſa in qua tamen venerit imponenda pœna corporis afflictiva. ſc. 1. b. 50.
- Pro ſimili inſtrumento in cauſa minori. ſc. 1.
- Pro inſtrumento ſententiæ declarator. abſolutionis, vel decreti habentis vim ſimilis ſententiæ. ſc. b. 50.
- Pro ſuſceptione cenſurarum, vel termini in judicio. ſc. b. 5.
- Pro fide cujuſlibet actus judicialis. ſc. b. 10.
- Pro fide decreti viſitæ extra diem viſitæ. ſc. b. 5.
- Pro rogitu procurat in officio. ſc. b. 5.
- Si extra officium. ſc. b. 10.
- Pro expenſis contumacialibus in cauſa capitali ordinaria, in qua præcedentibus indiſciis reus fuerit monitus, & in contumaciâ condemnatus. ſc. b. 50.
- Si in cauſa non capitali, in qua tamen modo præmiſſo reus fit in pœnam corporis afflictivam condemnatus. ſc. 1.
- Si in alia minori cauſa in qua eodem modo reus fit tantum in pœnam pecuniariam condemnatus. ſc. b. 50.
- Pro ſimilibus expenſis contumacialibus in cauſa commiſſaria in primo capite, ut ſupra. ſc. 2. b. 50.
- Si in ſecundo. ſc. 2.
- Si in tertio capite. ſc. 1. b. 50.
- Si vero hujusmodi expenſæ fuerint in cauſa gravi, vel pro perſona tertia, exigatur juxta importantiam cauſæ, & qualitatem perſonæ arbitrio Domini Judicis.
- Pro quibuſvis aliis inſtrumentis, expeditionibus, & ſcripturis quorum merces in præſenti taxa non exprimitur, & etiam in præſentis in quibus videlicet controverſia inter Notarium & partem oriri contigerit, ſtetur arbitrio Domini Judicis.
- Eadem taxa præſentis ſervetur in quibuſvis officiis criminalibus prædictis, etiam in cauſis mixtis, vel etiam civilibus, criminalibus dependentibus, aut quibus de intereſſe Fiſci agitur.
- In aliis verò merè civilibus in eiſdem officiis pertractandis, etiam in cauſibus prædictis, ſervetur taxa Notariis civilibus noviffime impoſita.
- In omnibus cauſibus prædictis, & aliis quomodolibet contingentibus, pro paupere nihil penitus recipiatur, & de paupertate ſtetur relationi Domini Advocati vel procuratoris pauperum, & ubi opus fuerit, loco copiz indiſciorum vel jurium, offendantur originalia ipſi Domino Advocato vel Procuratori dictorum pauperum gratis.

PIUS V. PONT. CCXXIX.

ANNO DOMINI MDLXVI.

Pius Quintus, Alexandrinus, de Ghisfleuris, frater Michael antea dictus Ordinis S. Dominici, presbyter Cardinalis tituli S. Mariæ supra Minervam. Creatus septimo Idus Januarii, Coronatus 16. Kalen. Febr. 1566. Creavit Cardinales 21. Sedit annos sex, menses tres, dies 23. Obiit Kal. Maij anno 1572. Sepultus fuit in Basilica S. Petri, postea à Sixto Quinto, ad sacram Ædem S. Mariæ Majoris in facellum ad Præsepe constructum translatus fuit. Vacavit sedes dies undecim.

I.
Edita A. D.
1566.

Quod Cardinalibus Congregationis Sanctissimæ Inquisitionis Officiales omnes parent. Et quocumque pro aliis delictis carceratos, & ad dictum Officium Inquisitionis delatos, ad eosdem Cardinales remittant, aliorum criminum cognitione suspensa.

Consonat const. 76. Clem. VIII. Sanctissimus. in Tomo III. & ante illum, Sixtus V. in ejus const. 74. eorundem Cardd. jurisdictionem præfinit, infra in hoc Tomo II.

Omnes officiales obediunt inquiruntibus generalibus.

Sanctissimus D. N. D. Pius divina providentia Papa Quintus, statuit, decrevit & ordinavit, ac mandavit ut negotia fidei omnibus & singulis aliis præferantur, cum fides sit substantia & fundamentum Christianæ Religionis, omnibus & singulis Almæ Urbis, ejusque districtus Gubernatori, Senatori, Vicario, Camere Apostolicæ Auditori, & quibuscumque aliis Legatis, Vicelegatis, Gubernatoribus Provinciarum & terrarum suæ Sanctitati, & S. R. E. mediate & immediate subiectarum, ac eorum Locatentibus, officialibus, barfellis, & aliis ministris, necnon aliis locorum Ordinariis, ceterisque magistratibus & officialibus, ac ejusvis conditionis & status hominibus, in omnibus & singulis terris, oppidis, & civitatibus, ac in tota Republica Christiana existentibus, sub excommunicationis late sententiæ, ac indignationis suæ Sanctitatis, & aliis arbitrio suæ Sanctitatis, & Illustrissimorum & Reverendissimorum Dominorum Cardinalium Inquisitorum generalium imponendis & exequendis penis, ut eisdem Cardinalibus Inquisitoribus, ac eorum præceptis & mandatis in quibuscumque officium S. Inquisitionis concernentibus parent & obediant.

Reges & principes faciunt eisdem.

§. 1. Reges vero, Duces, Comites, Barones, & quovis alios Principes sæculares in Dei nomine rogavit, ut eisdem Cardinalibus Inquisitoribus, eorumque Officialibus faverent, auxiliumque præbent, & à suis magistratibus subditis auxilium præberi faciant in negotiis ad dictum officium spectantibus.

Carcerati aliis causis fide hærent inquirantur ad Inquisitores.

§. 2. Necnon carceratos quocumque pro quibuscumque delictis, & debitis etiam atrocibus apud dictum Inquisitionis officium quomodolibet delatos vel denunciatos, suspensa aliorum criminum inferiorum cognitione, ad eosdem Cardinales, & Inquisitionis carceres, ibidemque ad criminis hæresis totaliter cognitionem & expeditionem retinendos, & postea ad eosdem officiales pro aliorum criminum expeditione remittendos, sine mora transmittant.

II.

Edita An. D. 1566.
Beneficia ecclesiastica

Quod beneficia curata in Alma Urbe, ejusque districtu, prævio examine Cardinalis Vicarii Romani Pontificis conferantur.

PIUS PAPA V. Motu proprio, &c.

§. 1. Cupientes ut beneficia Ecclesiastica curam animarum habentia, maxime in hac Al-

ma Urbe nostra, quæ totius mundi caput existit, & à qua ceteræ exemplum capere debent, personis dignis, & habilibus, quæ in loco residere, ac curam per se ipsos exercere valeant, juxta sacrorum Canonum decreta, examinatis, & ad ea obtinenda idoneis, & habilibus, & per examinatores ad id juxta novissimè Oecumenici Concilii Tridentini decreta deputatos, repertis & approbatis, conferantur.

§. 2. Tenore præsentium statim atque decernimus, quod occurrente vacatione, tam per obitum, quam per resignationem, aut alias quomodolibet beneficiorum Ecclesiasticorum curam, ut præfertur, animarum habentibus, in eadem Urbe nostra, ejusque districtu, nulli de eisdem provideatur, aut illa conferantur, aut ad ea instituantur, eligantur aut alias quovis modo disponatur de eis, per quovis ordinariorum collocatores, etiam S. R. E. Cardinales, ad quos etiam ratione titularum suorum, collatio, institutio, aut quævis alia dispositio spectat & pertinet, nisi is, cui provisio, collatio, institutio, electio, aut qualibet alia dispositio in personam illius facienda sit, per dilectum filium nostrum Jacobum tituli S. Mariæ in Cosmedin. presbyterum Cardinalem, de Sabellis nuncparum, nostrum in dicta Alma Urbe, ejusque districtu, Vicarium generalem, prævio examine, per examinatores ad hoc deputatos, idoneos & habilis repertus & approbatus fuerit.

§. 3. Provisiones, collationes, institutiones, & quævis alias dispositiones aliter factas quibuscumque personis, nullas, invalidas, nulliusque roboris vel momenti, ac nullum titulum, etiam coloratum possidendi eis tribuere, sed beneficia præfata, adhuc ut præfertur, vacare, & per nos, vel alios, ad quos illorum collatio spectat, personis dignis & habilibus conferri, & de eis disponi posse. Non obstantibus provisionibus, collationibus, & institutionibus, electionibus, & aliis dispositionibus factis, sicque per quoscumque Judices &c. sublata &c. judicari debere, irritum quoque &c.

§. 4. Non obstantibus præmissis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, privilegiis quibuscumque, quibuscumque etiam S. R. E. Cardinalibus concessis & innovatis, ac indultis & litteris Apostolicis sub quibuscumque verborum & tenorum formis, latissime extendendis, quibus omnibus &c. illorum tenores &c. habentes, specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque cum clausulis opportunis & consuetis.

Placet Motu proprio M.

Medici, quæ servare debeant, in curatione Infermorum.

Hinc nota quod Medici Hebræi non sunt admittendi ad curandos infirmos Christianos, ut infra in Greg. XIII. constit. 68. Alias pia, ubi hanc constit. servari etiam præcipit. Et insuper recordare quod omnes Medici professionem Fidei facere debent, antequam promoveantur, ut sup. in Pii IV. constit. 88. fol. 136. In sacrosancta.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Supra gregem Dominicum nostræ vigilantie divinitus creditum, vigilis speculatoris, prout nobis desuper conceditur, exercentes officium, ad ea per quæ animarum saluti cum divini nominis gloria consuli valeat, libenter intendimus, ut Christiani fideles post baptismum in peccata lapsi, per sacramentum Pœnitentiæ Deo reconciliantur.

§. 1. Sane cum infirmitas corporalis nonnumquam ex peccato proveniat, dicente Domino sanguis quem sanaverat, Vade noli amplius peccare, ne quid deterius tibi contingat, ac propterea provide fel-

1566.
curata in Urbe & ejus districtu idoneis personis conferantur.

Statuit hic Pont. quod personæ, quibus beneficia curata conferenda sunt, ab ejus Vicario examinentur & approbentur.

Collationesque aliter factæ nullæ sunt.

Quibuscumque non obstantibus.

Papæ subscripte.

III.

Edita An. D. 1566.

Exordium.

Innoc. III. iussit Medicis ut infirmis fuissent quod vocentur Medicos animarum.

record.

ANNO
1566.

PIUS QUINTUS.

ANNO
1566.

Hic Pont in-
novat iustio-
nem.

Et prohi bet
Medicis ultra
tres dies in-
firmos non
conficere,
curare.

Iubet con-
iunctis, do-
mesticis &
Parochis,
confessionem
eis suadere.

Medici con-
travenientes
coercentur.

Iurentque
hac observa-
re quando
doctorantur.

Ordinarii
exigant idem
juramentum
a Medicis
jam promo-
tis vel licen-
tiam meden-
di habenti-
bus, & jura-
re renitentes
coerceant.

Clausula de-
rogatoria.

record. Innocentius Tertius prædecessor noster Me-
dicis præceperit, ut cum eos ad ægrotos vocari
contingerit, ipsos ante omnia moneant, ut ani-
marum Medicos vocent, ne cum eis hoc extrema
ægritudine constitutis suadet, in desperationis
articulum incidant.

§. 2. Nos igitur videntes hoc tam salutare præ-
ceptum nulla temporis præscriptione aboleri, sed
semper observari, constitutionem præfatam aucto-
ritate Apostolica tenore præsentium innovamus.

§. 3. Et hac nostra in perpetuum valitura consti-
tutione, statuimus & decernimus, quod omnes Me-
dici cum ad infirmos in lecto jacentes vocati fuerint,
ipsos ante omnia moneant, ut idoneo confessori
omnia peccata sua juxta ritum S. R. E. confitean-
tur, neque tertio die ulterius eos visitent, nisi
longius tempus infirmo Confessor ob aliquam ra-
tionabilem causam, super quo ejus conscientiam
oneramus, concesserit, & eis per fidem confesso-
ris in scriptis factam constituit, quod infirmi ut
præmittitur peccata sua confessi fuerint.

§. 4. Coniunctos vero, ac omnes familiares &
domesticos infirmi in Domino rogamus & mone-
mus, ut de infirmitate Parochum certiores faciant,
ac tam Parochus quam conjuncti & fami-
liares præfati infirmum ad confessionem peccato-
rum suadeant & inducant.

§. 5. Quod si qui Medicorum præmissa non
observaverint, ultra penas in dicta constitutione
contentas, quas incurrere declaramus, perpetuo
sint infames, & gradu medicinæ quo insigniti
erant; omnino priventur, & à Collegio seu uni-
versitate Medicorum ejiciantur, ac pena etiam
pecuniaria arbitrio Ordinariorum, ubi delique-
rint, mulctentur.

§. 6. Et ut hac omnia inviolabiliter observen-
tur, volumus, & eadem auctoritate præcipimus &
mandamus, ut nullus posthac ubique locorum in
medicina doceatur, aut ei quomodolibet meden-
di facultas à quovis Collegio & Universitate conce-
datur, nisi omnia in præfati nostra constitutione
contenta, medio eorum juramento coram Nota-
rio publico, & testibus observare in eorum mani-
bus, vel Ordinarii juraverint, & de hujusmodi ju-
ramento, in privilegio seu licentia medendi specia-
lis mentio fiat. Quod si Collegia & Universitates
præfata non recepto à promovendis juramento hu-
jusmodi, eisdem ad gradum prædictum promove-
rint, aut eisdem medendi licentiam præstiterint,
penam privationis facultatis alios ulterius docto-
randi incurrant.

§. 7. Mandantes in virtute sanctæ obedientiæ
omnibus & singulis venerabilibus fratribus, Patriar-
chis, Primatibus, Archiepiscopis, & Episcopis,
quatenus in civitatibus & diocesis propriis præ-
sentes nostras litteras publicari faciant, ac jura-
mentum prædictum à medicis jam promotis, seu
licentiam medendi habentibus, omnibus juris re-
mediis exigant, neque aliquos ad medendum in
civitatibus & diocesis prædictis admittant, nisi
eis constituit eisdem juramentum hujusmodi præ-
stitisse, & contumaces, & jurare, ac juramentum
hujusmodi jam præstitum exhibere recusantes, gra-
du Medicinæ, & omnibus privilegiis eisdem Medi-
cis, tam conjunctim quam divisim, eis, & eorum
cuiuslibet concessis per quovis etiam Romanos Pon-
tifices privent, ac ab ingressu Ecclesiæ arceant, do-
nec resipuerint.

§. 8. Non obstantibus præmissis, privilegiis, in-
dultis, litteris Apostolicis, quibusvis personis Col-
legio & Universitati, sub quibusvis verborum for-
mis & tenoribus concessis, quæ omnia, quoad
effectum validitatis constitutionis nostræ tantum,
revocamus, cassamus, & annullamus, & omnes
Principes seculares ac alios Dominos & Magistratus
temporales rogamus, requirimus, & obsecramus
per viscera misericordie JESU Christi eisdem in re-
missionem peccatorum, nihilominus injungentes,
quod in præmissis omnibus eisdem Patriarchis,

Primatibus, Archiepiscopis, & Episcopis assistant,
& suum favorem & auxilium præstent, ac contra-
facientes penas etiam temporalibus afficiant.

§. 9. Volumus autem quod præfentes litteræ in
Cancellaria, in acie Campi Floræ publicentur, &
inter constitutiones extravagantes perpetuo valitu-
ras conscribantur.

§. 10. Et quia difficile foret præfentes ad singu-
la quæque loca deferri, volumus & etiam declara-
mus quod eorum transumptis, etiam impressis,
manu alicujus Notarii subscriptis, ac sigillo alicu-
jus Prælati munitis, eadem prorsus fides ubicum-
que adhibeatur, quæ præfentibus adhiberetur si
forent exhibitæ, vel ostensæ.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo
Piscatoris, die 8. Martii millesimo quingentesimo
sexagesimo sexto, Pontificatus nostri Anno I.

Anno à Nativitate Domini 1566. Indiſt. 6. die vero
11. mensis Martii, Pontificatus Sanctiss. in Christo
Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa
V. Anno primo, retrospectiva littera seu breve
affixa & publicata fuerunt in valvis Cancell. Apo-
stolicæ, & acie Campi Floræ, per me Camillum
Cherubinum Apostol. Curf.

Scipio de Oſavianis Mag. Curf.

Revocatio privilegii quibuscumque concessi, ce-
lebrandi Missas vespertino tempore.

Conſonat Concilium Tridentinum quod disponitur missas
debitis horis celebrari in cap. Quanta seſſ. 22.

Quo vero ad celebrationem missarum ritu Græco &
Latino, habes hic infra in cons. 12. Providentia.

§. 1. Sanctissimus in Christo Pater, & Dominus
noster Dominus Pius divina providentia
Papa Quintus. Ad cuius notitiam pervenit, quod
nonnulli Cathedralium etiam forsam Metropolita-
narum, Collegiarum, & aliarum Ecclesiarum,
necnon Monasteriorum, conventuum, domorum,
& aliorum piorum locorum secularium, & diver-
sorum Ordinum, ac Militiarum regularium Prælati,
Capitula, Clerici, Fratres, alique Superiores &
personæ, antiquum S. R. E. ritum in statutis Missa-
rum celebrandarum temporibus pervertere fata-
gentes, diversas licentias & facultates, Missas, quæ
media nocte, & seu in aurora Nativitatis, ac de
mane Resurrectionis Domini nostri JESU Christi,
& forsam aliarum festivitatum juxta prædictum ri-
tum celebrari conſueverant, de sero etiam forsam
circa Solis occasum vigiliæ festivitatum earumdem
in suis Ecclesiis, & Capellis celebrandi, seu cele-
brari faciendi, ab Apostolica Sede, vel ejus Lega-
tis, ac etiam majori Penitentiario pro tempore
existente variis prætextibus impetraverunt, illisq;
jampridem utuntur. Hoc ab antiquo Catholicæ Ec-
clesiæ instituto, Sanctorumque Patrum decretis
deviare consideras, ac propterea hunc abusum
ab Ecclesia Dei submovere volens, omnes ac sin-
gulas licentias & facultates hujusmodi hæctenus
etiam Motu proprio, vel quorumvis etiam Impe-
ratorum, Regum, & aliorum Principum contem-
platione, & ex quibusvis causis quomodolibet con-
cessas, ac Apostolicas, & alias litteras desuper con-
fectas, illarum omnium tenores pro sufficienter ex-
pressis habens, Apostolica auctoritate, ex certa
licentia revocavit, ac omnino cassavit & annullavit.

§. 2. Hac præfenti perpetuo valitura constitutione
ne quibusvis Prælati, Capitulis, Clericis, Fratribus,
aliisque Superioribus, & personis eorumdem Eccle-
siarum, Monasteriorum, conventuum, domorum, &
aliorum piorum locorum in virtute sanctæ obedi-
entiæ & sub indignationis suæ, ac perpetuæ suspensio-
nis à divinis pena distinctus inhibens, ne deinceps
Missas vespertino tempore, hujusmodi licentiarum &
facultatum, aut alio quovis prætextu celebrari fa-
cere præsumant, ac mandans locorum Ordinariis,

Iustio publi-
candi.

Fides tran-
sumptorum.

Dat. P. An-
die 8. Martii

Publicatio

IV.

Edita An-
1566.

Revocatio
facultatis ce-
lebrandi mis-
sas temporis
vespertino.

Prohibitio
sic de certo
celebrandi.

ut eandem presentem constitutionem sub prædixis & aliis sibi beneficiis penis per quoscumque; Prælatos, Capitula, Clericos, Fratres, Superiores, & personas hujusmodi inviolabiliter observari faciant, contradiatores quoslibet auctoritate Apostolica compescendo.

Derogatio
prioriorum.

§. 2. Non obstantibus præmissis, ac quibuscumque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis necnon Ecclesiis, Monasteriorum, Conventuum, domorum, & aliorum locorum prædictorum, etiam juramento, confirmatione Apostolica vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis eisdem Ecclesiis, Monasteriis, domibus & locis, illorumque Capitulis, Conventibus, Superioribus, & personis, ac Ordinibus sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque derogationum derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decretis, etiam ad Imperatoris, Regum, Reginarum, Ducum, & aliorum Principum instantiam, aut eorum contemplatione, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, ac aliis quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus ipsa Sanctitas sua illorum tenores pro expressis habens, specialiter & expresse derogavit, illaque quoad præmissa, cassavit penitus & annullavit, ceterisque contrariis quibuscumque.

Norma & ef-
fectus publ.

§. 3. Decernentes presentes, earumque copias per aliquem ex suis cursoribus in basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, & Lateranensis ac Cancellariæ Apostolicæ valvis affixas, omnes, cum primum earum notitiam haberint, perinde afficere, ac si illis personaliter intimatæ fuissent.

Placet, & ita mandamus. M.

Papæ sub-
script.
Publicatio
e 10. Martii
ont. An. 1.

Anno à Nativitate D. 1566. indictione 9. die vero 19. mensis Martii, Pontificatus Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papæ V. Anno primo, superscripta littere lectæ, affixæ, & publicatæ fuerunt in locis superscriptis, ut moris est, per me Bernardinum Andrentium Apost. Curs.

Scipio de Orlavianis Mag. Curs.

V.

Ordinationes circa observantiam divini cultus in Ecclesiis, & venerationem Festivitarum. Necnon & contra Simoniacos, Blasphematores, Sodomitas, & Concubinos.

Quoad primam partem hujus const. habes etiam Conc. Trident. sess. 22. in cap. 1. post Canones, & sess. 25. post primum decretum.

Contra verò Simoniacos vide sup. const. 3. Jul. II. Cum tam sup. ubi plene notavi. Contra Blasphematores vide const. 7. Leon. X. Supernæ, & const. 23. Jul. III. In multis. sup. Contra Sodomitas autem vide eandem bullam Leon. X. & aliam hujus Pont. num. 72. Horrendum. Et contra Concubinos attende dictam const. Leon. X. & Concilium Trid. sess. 25. cap. 14. vide in Tomo I.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Ordinam.

Cum primum Apostolatus officium divina nobis dispositione commissum suscepimus, statim omnem curam, & cogitationem nostram in domini gregis fidei nostræ crediti salute defiximus, & Christiani fideles Deo juvante ita dirigere statuimus, ut à vitiosis & peccatis abstinentes, inter, quod ad vitam æternam ducit, insistant.

ante hujus
ultimæ.

§. 1. Cum autem ad omnia, quæ ad divinam majestatem aliquo modo possent offendere movenda mentis nostræ intendimus, ea primum, & sine mora emendare decrevimus, quæ Deo præter cetera displicere, & iram ejus provocare, cum divinæ docent scripturæ, tum gravissima exempla declarant,

neque divini cultus neglectum, simoniae labor, blasphemiam crimen, & libidinis naturæ contrarie vitium execrandum, propter quæ populi & nationes, bellorum, famis, & pestilentie calamitatibus, iusta Dei ultione sæpe plectuntur. Et si autem contra eos qui tam gravia crimina admiserint, multæ à prædecessoribus nostris constitutiones editæ fuerunt, tamen quia parum est leges edere, nisi sint qui eas debitis temporibus exequatur.

§. 2. Idcirco ne qui forsitan ex tolerantia sperare impunitatem audeant, scientes perserosæ poenarum gravitate magis quam Dei timore arceri solere à voluntate peccandi omnes & singulas sententias, censuras, & poenas contra eos, qui talia deliquerint latas confirmamus, & Apostolica auctoritate innovamus, nec de earum rigore quicquam relaxamus, admonemusque eos qui talia perpetrare veriti non fuerint, non solum futuros eas poenas quæ sacris sunt Canonibus constitutæ, sed eas etiam quas leges civiles comminantur, & nostri quoque arbitrii discretio pro personarum qualitate constituit.

§. 3. Mandantes Civitatum, & locorum statum nostri Ecclesiastici pro tempore Ordinarii, & Gubernatoribus, illis quidem sub poena suspensionis à divinis, his vero sub poena excommunicationis latæ sententia, ut quos debitum Deo cultum in Ecclesiis non tribuere, aliisque nefandis criminibus pollutos esse compererint, comprehendi curent penis afficiendos comperientibus. Sciturus etiam ipsi Judicibus, quod si post hanc nostram constitutionem in castigandis hujusmodi delictis negligentes fuerint, primum quidem Dei Omnipotentis iudicio obnoxii erunt, deinde nostram quoque incurraunt indignationem. Ut autem poenarum certitudo cunctis facilius innotescat, nonnullas hic duximus exprimendas, aliis nihilominus contra hujusmodi criminum reos à jure statutis in suo robore manentibus.

§. 4. Ut igitur Deo Optimo Maximo, Gloriosæ Virginis, & Sanctis omnibus debitis honor deferatur, Gregorii X. prædecessoris nostri constitutionem innovantes, ac statuta in Tridentino Concilio observari volentes, statuimus & ordinamus, ut ad Ecclesias sit humilis & devotus ingressus, quietæ conversatio, devotis orationibus insistant, & omnes genibus flexis sanctissimum Sacramentum adorent, ad nomen JESU Christi Domini nostri cum exhibitio- ne reverentiæ caput inclinet, nullus in dictis Ecclesiis seditionem faciat, tumultum excitet, clamores moveat, impetumve committat, cessent vana, fœda, & profana colloquia, risus immoderati, & strepitus omnes judiciorum, & alia quæcumque quæ divinum officium perturbare possunt. Nullus intra Ecclesias deambulare audeat sive præsumat, dum celebrantur sacra Missarum mysteria, & alia divina officia. Qui vero prædicta petulanti animo contempserint, præter divinæ ultionis acrimoniam, nostri quoque arbitrii poenas incurrent, quæ omnia locorum quoque Ordinarii in suis Ecclesiis, dum ibi Sacrificium Missæ, & divina celebrantur officia, aut verbum Dei prædicatur, deambulare, vociferari, aut verso tergo ad sanctissimum Sacramentum irreverenter sedere, aut aliquid quod scandalum generet, aut divina perturbet officia, facere præsumpserit, poenam vigintiquinque ducatorum incurret, præter alias arbitrio nostro imponendas, & moderandas poenas, & qui non habebit in corpore aut exilio multabitur. Qui vero in Ecclesiis cum mulieribus impudicis, sive etiam honestis colloquium scurrile habuerit, aut alios inhonestos actus fecerit, vigintiquinque ducatorum poenâ incurrat, & carceris per mensem. Qui in Ecclesiis, ut supra, obscenis & inhonestis verbis aut signis usus fuerit, aut alia fœda colloquia cum personis quibuscumque habuerit, decem aureorum poenâ multetur, aut alias corporaliter puniatur. Mandamus præterea omnibus & singulis Cathedralium, Collegiarum, & Parochialium Ecclesiarum Capitulis, Rectoribus, Vicariis, Sacristis, Ollariis, & aliis ipsarum custodibus, quatenus præfatos omnes in Ecclesiis delinquentes

Innovatio
antiquarum
poenarum
contra ino-
bedientes
huic const.

Mandatum
exequendi
huic const.

Divini cul-
tus observan-
tia in Eccle-
siis ab omni-
bus teneat-
ur, & con-
travenientes
poenis hic
descriptis af-
ficiantur.
Ad hoc vide
Conc. Trid.
sess. 22. pri-
mum decre-
tum post ca-
nones.

Pauperes in
Ecclesiis e-
leemosynas
petere non
permittan-
tur, dum di-
vina cele-
brantur offi-
cia.

Cadaverum
capite in Ec-
clesiis super
terram exi-
stentes amo-
veantur.

Festaque om-
nes veneren-
tur.
Ad hoc ha-
bes Conc.
Trid. sess. 25.
post. princ.

Simoniaco-
rum poenæ.
Ad hoc vide
conf. cit. in
rubr.

Simonia sa-
cramentalis
severissime
punietur jux-

admoncant, & ut in eis vetita fieri non permittant, vel saltem ipsis Ordinariis, vel Officialibus nostris puniendos deferant, quod si facere neglexerint, poenam duorum aureorum vice qualibet incurrent.

§. 5. Pauperes quoque mendicantes, seu elemosynas petentes per Ecclesias tempore Missarum, prædicationum, aliorumque divinorum officiorum ire non finant, sed eos ad valvas Ecclesiarum stare faciant sub poena duorum aureorum Capitulis infligenda pro qualibet vice, nisi eos ejici curaverint, & parochis dimidii aurei. Religiosis etiam claustralibus, five regularibus præcipimus in virtute sanctæ obedientiæ ut in Ecclesiis sui deputent aliquem, qui tales ejiciat, & si negligentes fuerint, gravissime ab ordinario corripiantur, quod si illi parere recusaverint, gravissimas poenas incurrent, & pro qualitate personarum, etiam corporaliter punientur arbitrio nostro, five superiorum.

§. 6. Et ut in Ecclesiis nihil indecens relinquatur, iidem provideant, ut capite omnes, & deposita, seu alia cadaverum conditoria super terram existentia omnino amoveantur prout alias statutum fuit, & defunctorum corpora in tumbis profundis infra terram collocentur.

§. 7. Cum verò dierum festorum observatio ad Dei cultum maxime pertineat, & in lege divina præcipiatur, cupientes abusus pravorum, qui ex eorum inobservantia invaluerunt, omnino corrigere, & antiquorum Canonum statuta renovantes, mandamus, ut omnes dies Dominicæ, & præcipue in honorem Dei, beatæ MARIE Virginis, Sanctorum Apostolorum ferri cum omni veneratione observentur: & omnes in diebus præfatis Ecclesias frequentent, divinis officiis devote intendant, ab omni illicito & servili opere abstineant, mercatus non fiant, profanæ negotiationes & judiciorum strepitus conquiescant. Qui vero in diebus præfatis opus aliquod illicitum fecisse deprehensus fuerit, præter divinam ultionem & amissionem animalium, quibus ad vecturam utetur, etiam graves poenas incurret arbitrio nostro, seu Vicarii nostri in Urbe, in aliis autem locis arbitrio Ordinarii, vel aliorum Magistratum, ita ut preventioni locus sit. Quibus omnibus districtè præcipimus, ut hæc diligenter observari procurent, illas etiam festivitates, quæ juxta consuetudinem locorum solemniter celebrari consueverint, juxta laudabilem consuetudinem debita cum reverentia observari faciant, sub poenis arbitrio ipsorum imponendis & moderandis.

§. 8. Et ut Simoniacæ praviratis, & labes proflus aboleatur, constitutiones antecessorum nostrorum contra Simonicos editas, & præsertim Pauli II. inviolabiliter observari mandamus, & delinquentes tam in sacrorum ordinum receptione, quam in beneficiorum ascensione, statutis etiam inferius poenis nostra auctoritate affici volumus. Quicumque igitur, detestabile crimen Simoniacæ praviratis commisisse convictus fuerit in consequendis ordinibus, eo ipso sit ab illorum executione per decennium sine spe dispensationis suspensus, & per annum carceribus mancipetur. Qui dignitates Ecclesiasticas Simoniacæ acquisiverit, illis sit ipso jure privatus, & in futurum inhabilis ad eas, & quascumque alias obtinendas. Si quis autem tale crimen pluries commisisse convictus fuerit, præter supradictas poenas, etiam corporaliter puniatur, & ab Ordinibus ecclesiasticis degradatus à fideiium consortio ejiciatur. Qui vero Ordines & beneficia Simoniacæ contulerint, poenis à jure statutis puniantur, ejusdemque gradus, conditionis, & dignitatis, etiam si Episcopi, Archiepiscopi, vel majores fuerint.

§. 9. Caveant præterea quicumque, ne in sacramentorum exhibitione Simoniacum aliquid faciant, alioquin gravissime puniantur per locorum

Ordinarios, qui hujusmodi criminis reos cum maxima severitate coercere procurent, juxta Concilii Tridentini statuta.

§. 10. Ad abolendum vero nefarium, & execrabile blasphemæ scelus, quod in antiqua lege Deus morte puniri mandat, & imperialibus quoque legibus receptum est, nunc autem propter nimiam Judicum in puniendo segnitiam, vel potius de consuetudinem, supra modum invaluit, Leonis X. prædecessoris nostri in novissimo Lateranensi Concilio statuta innovantes, Decernimus, ut quicumque laicus Deum, & Dominum nostrum JESUM Christum, vel Gloriosam virginem MARIAM ejus genitricem expresse blasphemaverit pro prima vice poenam viginti quinque ducatorum incurrat, pro secunda poena duplicabitur, pro tertia autem centum ducatos solvet, & ignominia notatus exilio multabitur. Qui vero plebeius fuerit, nec erit solvendo, pro prima vice manibus post tergum ligatus ante fores Ecclesiæ constituitur per diem integrum, pro secunda fustigabitur per Urbem, pro tertia lingua perforabitur, & mittetur ad triremes. Quicumque clericus in hoc blasphemæ crimen incurrit, pro prima vice fructibus unius anni omnium & quoruncumque beneficiorum suorum, pro secunda beneficiis ipsis privetur, pro tertia omnibus etiam dignitatibus exutus deponatur, & in exilium mittatur. Quod si clericus nullum obtinuerit beneficium, poena pecuniaria vel corporali pro prima vice puniatur, pro secunda carceribus mancipetur, pro tertia verbaliter degradetur, & ad triremes mittatur. Qui reliquos sanctos blasphemaverit, pro qualitate blasphemæ, atque personæ, arbitrio Judicis puniatur.

§. 11. Si quis crimen nefandum contra naturam, propter quod ira Dei venit in filios diffidentiam, perpetraverit, Curia seculari puniendus tradatur, & si clericus fuerit, omnibus ordinibus degradatus simili poenæ supiciatur.

§. 12. Monemus præterea omnes locorum Ordinarios, & in virtute sanctæ obedientiæ eis præcipimus, ut statuta Tridentini Concilii contra concubinos, tam clericos quam laicos edita, districtè faciant observari, reddituri Deo, ac nobis, si id omiserint, rationem.

§. 13. Et ut præmissorum dilectorum simoniæ, blasphemæ, ac stupri nefandi notitia facilius habeatur, volumus quod in singulis casibus, non solum per accusationem, & inquisitionem, sed etiam ad simplicem & secretam denunciationem procedatur per quoscumque Judices, alias tamen de jure competentes, tam ratione delicti quam personarum, ita, quod inter eos locus sit preventioni.

§. 14. Monemus præterea omnes & singulos, ut solum Dei timorem præ oculis habentes, & non alia animi prava affectione ducti, culpabiles tantum deferant, innocentes non vexent. Quod si aliqui ex calumnia aliquos denunciassent comperti fuerint, eos ad poenam talionis teneri volumus & mandamus.

§. 15. Multæ autem pecuniariæ applicabuntur pro duabus partibus locis piis arbitrio nostro in Urbe, extra vero, Ordinariis, pro tertia accusatori qui delinquentes detulerit.

§. 16. Mandamus autem Principibus, Comitibus, & Baronibus omnibus, S. R. E. feudatariis, sub poena privationis feudorum, quæ ab ipsa Ecclesia Romana obtinent. Reliquos vero Principes Christianos, & Terrarum Dominos in Domino, & in virtute sanctæ obedientiæ mandamus, ut pro divini nominis reverentia & honore, præmissa omnia in suis dominiis, ac Terris exactissime servari faciant, uberrimam ab ipso Deo mercedem tam bonis operibus recepturi.

§. 17. Non obstantibus quibuscumque constitutionibus, ordinationibus Apostolicis, ac exemptionibus, privilegiis, indulgentiis, facultatibus, & litteris Apostolicis quibuscumque Capitulis, Conventibus, Militibus, Ordinibus, & personis cujuscumque qualitatis & con-

ditionis

ta Statuta
Conc. Tri-
de quib. in
rub.
Blasphemæ
tium poenæ
Alia vi
supra in
conf. au-
entis in ru-

Sodomita-
rum poenæ
Vide citata
in rubr.

Concubin-
arum po-
næ.

Vide ibi-

Procedat
contra præ-
dictos etiam
per secreta
denunciati-
nem.

Calumniæ
denunciato-
res coarce-
antur.

Poenæ app-
centur ut
hic.

Justo præ-
dicta observa-
di.

Clausura

ditionis existentibus, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decretis in genere vel in specie, etiam Motu proprio alias quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, quibus illorum tenores presentibus pro expressis habentes, specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 18. Volumus autem quod presentium transumptis etiam impressis manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus Prælati munitis, eadem prorsus fides ubique adhibeatur, quæ eisdem presentibus adhiberetur, si forent exhibitæ, vel ostensæ.

§. 19. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ innovationis, relaxationis, admonitionis, confirmationis, mandati, statuti, decreti, ordinationis, præcepti, monitionis, voluntatis, & derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursurum.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo sexagesimo sexto, Calen. Aprilis, Pontificatus nostri anno 1.

Confirmatio constitutionis à Paulo IV. editæ circa Judæorum vivendi modum. Et declaratio signi glauci coloris in Statu Ecclesiastico ab eis deferendi.

Hæc bulla est in successoribus Pontif. confirmata, ut notavi sup. in ipsius Pauli IV. const. 3. Cum nimis, sup. Tom. I. ubi alia indicavi de materia Judæorum.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Romanus Pontifex Christi Vicarius in terris nonnumquam ea quæ pro zelo religionis à ceteris Romanis Pontificibus prædecessoribus suis concessa dicuntur, ut illibata persistant, approbat & confirmat prout in Domino conspiciet salubriter expedire.

§. 1. Dudum fel. rec. Paulus Papa IV. prædecessor noster, zelo fidei Christianæ motus certum modum vivendi & habitandi Judæis præscripsit, prout in quadam ejus constitutione, cujus tenor sequitur, & est talis, videlicet, Paulus Episcopus servus servorum Dei, Ad perpetuam rei memoriam. Cum nimis absurdum &c.

Omittitur tenor istius const. quia habes supra.

§. 2. Nos igitur cupientes, ut constitutio, statuta & ordinationes hujusmodi, perpetuis futuris temporibus observentur, Motu proprio & ex certa nostra scientia, & non ad alicujus alterius nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed ex mera nostra deliberatione, constitutionem, statuta, & ordinationes hujusmodi, & prout illa concernunt, omnia & singula in dicti prædecessoris litteris contenta, & inde secuta quæcumque, auctoritate Apostolica presentium tenore approbamus, innovamus, & confirmamus, & robur perpetuæ firmitatis obtinere decernimus, vidimus, & sub interminatione divini judicii præcipimus & mandamus, & omnia in posterum observari firmiter, non solum in terris & dominiis nobis subjectis, sed etiam ubique locorum.

§. 3. Et ad omnem circa colorem birreti per masculos, & signi per feminas deferendum hujusmodi submovendam hesitationem declaramus dictum colorem esse, qui vulgo giallo dicitur.

§. 4. Mandantes in virtute sanctæ obedientiæ omnia & singulis venerabilibus fratribus, Patriar-

chis, Primatibus, Archiepiscopis & Episcopis, quatenus in civitatibus & diocesis propriis presentibus nostras litteras publicari & observari faciant.

§. 5. Et omnes Principes sæculares, & alios dominos, & magistratus temporales rogamus, requirimus, & obsecramus per viscera misericordie JESU Christi, eisdem in remissionem peccatorum nihilominus injungentes, quod in præmissis omnibus eisdem Patriarchis, Primatibus, Archiepiscopis, & Episcopis assistant, & suum favorem & auxilium præstent, ac contrascentes penes, etiam temporaliibus afficiant.

§. 6. Non obstantibus omnibus quæ idem Pablos prædecessor in prædictis litteris voluit non obstare, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis per recol. mem. Pium Quartum Romanum Pontificem prædecessorem nostrum, & Sedem Apostolicam, etiam forsitan consistorialiter, ac per viam generalis legis & statuti, ac in vim stipulati contractus, ex quavis, etiam urgentissima & onerosa causa, ac Motu proprio, & ex certa scientia, & de Apostolica potestatis plenitudine, etiam cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, irritantibusque & aliis decretis quomodolibet concessis, confirmatis, & innovatis, etiam si in eis disponeretur & caveretur expresse, quoad delationem birreti glauci coloris hujusmodi in itinere, ac quod non ut præmittitur, in loco clauso habitare tenerentur, & quod bona stabilia usque ad certam summam acquirere ac societatem cum Christianis super rebus ad annonam spectantibus inire, ac conversationem cum eisdem Christianis debitis habere, ac pignora aliâ quam præscripto modo distringere, ac plures Synagogas retinere possent indulserit, aut alias quomodolibet eis dictas litteras Pauli prædecessoris in favorem Hebræorum prædictorum limitaverit. Quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quavis alia expressio habenda aut alia exquisita forma servanda foret, & in eis caveatur, quod nullatenus derogari possit, illorum omnium tenores presentibus pro sufficienter expressis, ac de verbo ad verbum insertis habentes, necnon modos & formas ad id servandas pro individuo servatis habentes, harum serie specialiter & expresse derogamus. Et litteras ejusdem Pauli prædecessoris, & omnia in eis contenta observari in omnibus per omnia mandamus, perinde ac si litteræ Pii similiter prædecessoris nostri non emanassent, aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdici, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

§. 7. Volumus autem quod presentes litteræ in Cancellaria, & acie Campi Floræ publicentur, & inter constitutiones extravagantes perpetuo valituras conscribantur.

§. 8. Et quia difficile foret presentes ad singula quæque loca deferri, volumus & etiam declaramus quod earum transumptis, etiam impressis, manu alicujus Notarii subscriptis, ac sigillo alicujus Prælati munitis eadem prorsus fides ubique adhibeatur, quæ presentibus adhiberetur si forent exhibitæ vel ostensæ.

Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo sexagesimo sexto, 13. Calen. Maji, Pontificatus nostri Anno 1.

Anno à Nativitate D. N. Jesu Christi 1566. inditio ne 9. die vero 1. mensis Maji, Pontificatus Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa V. Anno primo, retroscripta littera affixa & publicata fuerunt in locis retroscriptis per nos Scipio-

Observantiam petis à Principibus.

Contrariis derogat.

Forma publicationis.

Fides transumptorum.

Dat. P. An. 1. die 20. April.

Publicatio.

nem de Othavianis & Jo. Andream Panizza, am Apo-
stolicos Cursores.

Camillus Cher. Mag. Curf.

VII.

Contra impediētes, aut non subvenientes Nautis
& aliis naufragia patientibus, in locis S. R. E.
mediate & immediate subiectis. Bonorumque
naufragantium occupatores, Et Communitates
ac Barones & Dominos eos non capientes.

Generalem sanctionem in surripientes bona Christiano-
rum ubique naufragata, habes in bulla quotannis in
die Cene Domini legi solita, de qua vide in Pauli
V. constit. 63. Pastoralis. Speciale vero pro Regno
Britannie, lege sup. in Tomo I. in constit. 1. Hono-
rii II. fol. 33. Carissimus.

Auxiliatoribus autem, quod de bonis recuperatis
debeatur, videre est sup. in Pauli III. constit. 42.
Acceptimus.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Edita An. D.
1566.

Bona naufragantia, frequenter ab incolis & officialibus locorum, in quibus naufragia eveniunt, diripiuntur.

Cum nobis ex parte dilecti filii Martini de Ayala Romæ commemorantis, Consulis protectoris & defensoris, ac generalis procuratoris, in rebus maritimis & mercantilibus, Nationum Hispanorum, Neapolitanorum & Siculorum, Mediolanensium, ceterorumque subditorum carissimi in Christo filii nostri Philippi Hispaniarum, ac utriusque Siciliae &c. Regis Catholici in Alma Urbe nostra, ac Ripis & Portibus, Terrarum & locorum S. R. E. subiectorum expositum fuerit, non sine maxima nostra displicentia, quod retroactis temporibus, cum maximo damno & periculo miserorum nautarum & mercium conductorum naves & navilia diversis mercibus onusta, propter maris infortunium, & in dictis portibus, fugamque ab infidelibus & aliis inimicis arreptam, aliove inopinatos casus ob quos nonnulli naves & navilia deseruerunt, & ab eorumdem inimicorum conatibus evasi fuerunt, eorumque personas, navibus & mercibus in eis conductis omissis, in terra, alique periti in mari, salvas effecerunt, naufragia passi fuerint, in portibus, plagis, & ripis locorum maritimarum prædictæ S. R. E. non sine maximo damno patronorum naviliorum & navium prædictarum, ac mercium conductarum, & detrimento Terrarum & locorum dictæ S. R. E. ad quæ prædictæ naves & navilia cum suis mercibus sæpissime tendebant, ibidem in beneficio & abundantia ipsarum terrarum exponenda erant, & quod occurrentibus ad loca prædicta, nautis & conductoribus mercium præfatarum pro salute eorum, necnon navium & mercium ipsarum nanciscenda, existimantes se securos esse, expectantes inter Christianos & amicos consequi opem, & favorem fratrum amicabilem, prout ratio & æquitas id postulant, & prout in aliis locis in similibus infortunis fit, per dictorum locorum maritimarum incolas & habitatores, ac officiales, non solum penes eos non reperierunt auxilium præfatum, quinimmo majus impedimentum, quia contra omne jus divinum & humanum addendo talibus naufragium patientibus damnum damno, & afflictis afflictionem, cum maxima Dei & nostra, ac proximi offensa, ab eisdem habitatoribus & officialibus terrarum præfatarum damnum & tribulatio illata fuit, etiam cum minis & comminationibus, & illi naufragantes ab eisdem eorum bonis & mercibus, quas domino permittebat tali infortunio liberarunt, & liberabant, animo diabolico, & perverso privati fuerunt, dicta bona & merces, occupando & detinendo, ac si essent infidelium. Barones, dominique temporales, & Ecclesiastici officiales talium locorum sub prætextu naufragii, & specie prætextus, ac directi juris, illa ad se spectare & pertinere asserbant, usurpando dictas naves & navilia, mercesque quas auferunt à propriis patro-

nis in scandalum, perversum, & iniquum exemplum, quod non solum repugnat religioni Christianæ, præsertim in Terris S. R. E. hujusmodi, quæ omnes ad se venientes benigne amplectitur, verum etiam contra omnem humanam & civilem legem, & juris æquitatem, mentemque nostram, quæ est ut omnes Christiani fideles qui in dictis Terris S. R. E. contrahant sint patroni suorum bonorum, de illisque possint libere disponere, finque bene & amice tractari, & non debeant modo aliquo vexari nec molestari.

§. 1. Quapropter nos prædecessorum nostrorum vestigiis inhærendo, volentes præmissis occurrere, dampnisque & scandalis, ne veniant quantum possumus obviare, Motu simili &c. auctoritate Apostolicæ potestatis plenitudine ad perpetuam rei memoriam statuimus & ordinamus, firmiterque & inviolabiliter observari mandamus in virtute sanctæ obedientiæ, & sub excommunicationis, necnon decem millium ducatorum auri largorum Cameræ Apostolicæ applicandorum penis, quatenus in Urbe Roma, suisque portibus & ripis, ac Civitate Anconitana, aliisque omnibus & singulis Civitatibus, Terris, Castro, ripis, portibus, & plagis, tam versus Adriaticum quam Mediterraneum mare dictæ Sanctæ Romanæ Ecclesiæ mediatè vel immediatè subiectis, & etiam Prælatorum, dominorumque temporalium & Baronum dictarum terrarum, in quibus est commercium maritimum, persona aliqua cujuscumque gradus Ecclesiastici vel secularis, communiter vel divisim officialis, aut privatus, & præsertim Offensis & Portuensibus Episcoporum, & quorumcumque aliorum Cardinalatus honore fulgentium desuper non audeat vel præsumat aut permittat præbere impedimentum, aut genus aliquod molestiæ præstare dictis nautis, & mercium conductoribus subditis prædictæ Regi Catholico, & aliis quibuscumque & cujuscumque nationis, qui cum bono & iniquo tempore, infortunium aut naufragium patientur in dictis ripis vel prope Ripas, aut intra mare, seu in aliqua parte illius, aut portibus, seu plagis (quod Deus avertat) aut quovis alio voluntario, necessitato, infortunato, aut pacifico modo eos inibi applicare contingat in quacumque Ripam, portum, aut plagam dictarum Terrarum Sanctæ Romanæ Ecclesiæ hujusmodi, quinimodo illi favore, & ope gratiose recipiantur, & benignè tractentur, restituendo, & restitui faciendo, res & bona eorum in talibus navibus conductæ, si ea per aliquam, vel aliquos detineri, & occupari contingat, & in posterum occupantur, & detinebuntur, libere absque eo quod eos ad solvendum jura aut aliquid aliud cogant & compellant, ad effectum ut stante hujusmodi bona comportatione, eorum querelæ cessent, & illi libentiori animo conducant ad loca præfata se & eorum merces.

§. 2. Et licet alias felices recordationis Paulus Papa III. & Julius etiam Tertius prædecessores nostri per eorum Motus proprios, & litteras in forma brevis, vel alias concesserant dicto Martino Consuli auctoritatem recuperandi, & libere recipiendi navilia, naves, & merces naufragium passas, ac dictis subditis nostris, & illas propriis patronis restituendi, & restitui facendi ab illis personis illa occupantibus, propterea approbando, & confirmando dictum breve, & Motus proprios, omnesque alias patentes, & concessionem, tam Apostolicas quam Regias quomodolibet emanatas & concessas, ac in illis contenta, & inde secuta quæcumque illis in suo robore permanentibus, & qua sub dictis penis inviolabiliter observari mandamus, ipsum Martinum in naufragiis Commissarium generalem deputamus, non obstantibus quacumque concessione, ordinatione, decreto in contrarium forsan emanato, quacumque via & modo, & ad instantiam quorumvis personæ aut personarum cujuscumque status, gradus, & conditionis existentium, quarum tenores pro plene & sufficienter expressis haberi volumus, ac si de verbo aut verbum

Hic idem Pontificis impositi in pedientibus naufragium patientibus & naufragis tractari pceptum.

Commissarium & Consulem deputatum pro recuperatione hujusmodi bonorum.

infecti essent, quibus expresse derogamus, per præfentes concedimus & impartimur facultatem & auctoritatem dicto Martino Consuli, ut ipse tamquam talis Consul & Protector, ac generalis Procurator & defensor nationum præfatarum representando personas interesse habentes in talibus naviliis, navibus & mercibus, & tamquam persona legitima possit per se, suosque ministros in societate, dictorum patronorum præfatis, aut in illis absentibus, etiam ipsi patroni in absentia dicti Martini Consulis, suorumve ministrorum & deputatorum, conjunctim vel divisim possint exigere, recuperare navilia, naves, ac merces præfatas naufragium passas sive derelictas, in mari aut extra mare, aut in aliqua illius parte, portibusque & plagis atque Ripis, alioque quovis loco ubi reperierint.

§. 3. Et quia evenire solet, quod tales naves & navilia, ac merces in eis conductæ non sunt propriæ aut patronorum talia navilia conducentium, seu patronantium, aut ea asscurantes intercessit sunt, volumus etiam quod si patroni & nautæ, seu alie persone salvas effecerint aut recuperaverint dictas merces, vel earum partem seu navilia præfata, non possint modo aliquo de eis disponere absque nutu & voluntate dicti Martini Consulis, qui solerter inquirere debeat mercibus salvis & perditis, usque quo veritatem omnino comperiat, ad hoc ne sub prætextu naufragii aut projectionis mercium in mare, interesse habentes, modo aliquo, damificati aut defraudati, seu suis privati existant. Et insuper quod omnes & singuli quorumcumque navium cujuscumque generis patroni debeant & teneantur cum omni diligentia salvare & custodire bona quæcumque per eos conductæ & naufragantia, neque illa tamquam perditâ dimittere, sed ipsam Consulem pro opportuno remedio certiorare in beneficium, & salvationem ipsorum bonorum naufragantium; ita quod ipsi patroni sive nautis deficientibus in aliquo præmissorum, naufragia hujusmodi, & damna quæcumque, & exinde provenientia ipsorum patronorum culpæ imputentur, & ad interesse ac damna teneantur. Ac si contingat ab aliqua persona seu personis cujuscumque status, gradus, ordinis, & conditionis existentibus & nostram monitionem hujusmodi ignorantibus in toto vel in parte detinere merces, res & bona aliqua in eis conductæ furtive & coacte, vel prætextu prætenfionis naufragii, vel alio quocumque modo, eadem nihilominus dictus Martinus Consul recipere, exigere & recuperare, & ad detinentibus personis illa dictis patronis ad quos ea de jure spectant & pertinent, restitui facere absque aliqua exactione seu detractione prætextu dictæ prætenfionis, aut quæsto colore, seu solutione aliquibus personis Ecclesiasticis vel secularibus, Baronibus, Comitibus, aut trirremium Capitaneis, Castellanis, Gubernatoribus, Commissariis, seu cuicumque alteri cujuscumque conditionis, præminentie, & status sit, faciendâ, cui Consuli compellendi, & restitui, ac castigari faciendi tales usurpatores, & detentores, plenam & liberam facultatem & auctoritatem concedimus.

§. 4. Quibus personis expresse in virtute sanctæ obediencie, & sub penis præfatis mandamus, quatenus dimittant & sinant præfatos patronos navium & naviliorum nationum præfatarum, & quarumcumque aliarum, dictumque eorum Consulem, & Ministrum seu Ministros illa omnia recuperare, & alias de eorum navibus, naviliis, mercibus, & bonis conductis, etiam derelictis, & iis tam per mare vagantibus, quam prope terram, & in Ripa consistentibus libere disponere absque aliqua molestia vel impedimento illis, directe vel indirecte præstando nec debeant se intromittere in dictis naufragatis, nec naufragio præfato, nisi in eo ad quod per dictos patronos, Consulem & Ministrum erunt requisiti & vocati pro eorum ope & favore, nec sub aliquo prætextu, vel colore dicto Martino Consuli, aut ejus Ministris seu deputatis præfatis in

libero exercitio sui officii generalis Consulatus, & Commissariatus hujusmodi, & ad illud spectantium aliisque supradictis aliquod impedimentum, molestiam, aut perturbationem præstare seu præstari permittant, quinimmo ei & eis, omne auxilium & favorem in præmissis, & circa ea necessaria seu quomodolibet opportuna, ad quæ præfati nostri subditi quoviscumque pro parte dictorum Consulis ac Ministrorum, in licitis & honestis erunt requisiti, præstare teneantur, quibus, eis videlicet qui à dicto Martino Consule, & Ministris vocati erunt ad recuperationem adjavaverint, per dictum Consulem expensis rerum liberatarum, in quarum beneficium elaboraverint, in laboris subsidium dabitur quod justum & honestum erit, & eidem Consuli videbitur, quod erit juxta meritum illorum, qui in salvandis hujusmodi rebus & bonis intervernerint, licet fraternitatis charitas in talibus calamitosus eventibus eos ad id obliget atque cogat.

§. 5. Et ut Christifideles ad præmissa alliciantur, aut naufragium hujusmodi patientibus ab eis propiora subsidia præbeantur, omnibus & singulis utriusque sexus Christifidelibus, qui auxilium, consilium, & favorem naufragium patientibus in reparatione & conservatione suorum bonorum præstiterint, decem annos & totidem quadragenas de injunctis eis penitentiis in Domino relaxamus.

§. 6. Mandantes dictis nostris subditis, tam Civitatis Verulæ, & Ostiæ, Porti, & Neptuni, ac Pilotis illarum, ac etiam Anconæ, ac habitatoribus omnium Terrarum, Riparum, Portuum, & Plagiarum, necnon patronis, & nautis navium, naviliorum, trirremium, biremiumque Capitaneis, & barcharum conductoribus, & piscatoribus, ac aliis quibuscumque personis existentibus & habitantibus in aut prope, vel ubi talia naufragia accidere contingat, sub pena solutionis tanti quanti bona naufragata valuerint, & quæ ob defectum adjutorii amitterentur, quatenus illico postquam à patrono Consule, aut deputatis vocati fuerint, occurrant, & festinanter accedant cum eorum barchis ac trireribus, & biremibus, ad adjuvandum & salvandum ea omni cum diligentia, ac si eorum propria essent, solutis tamen eis pro eorum labore expensis mercium conductorum, & rerum salvatarum his quæ Consuli videbitur, prout labor eorum exegerit, & non possint petere, nec petant aliquid aliud, nec quartum, nec partem, nec jus aliquod rerum salvatarum præter supradictâ, concessione, statuto, consuetudine, ordinatione, usu, & quibuscumque aliis minime obstantibus penitus cassamus, & suffragari nolumus.

§. 7. Volumus autem quod in locis, seu territorii ubi naufragium præfatum eveniret, Dominus, vel Domini, aut Communitatis talis loci teneantur consignare in manibus nostræ justitiæ, & Ministrorum illius, latronem seu latrones, usurpatorem seu usurpatores, detentorem seu detentores hujusmodi rerum naufragatarum, alias teneantur solvere totum damnum & expensas in tali naufragio, aut illius dependentibus passas, & seu patiendas, ac passas & seu patiendas.

§. 8. Et si aliquid forsan occurrerit super præmissis, quod dictus Consul non possit accommodare, & concludere, recurratur ad nos, & seu dilectum filium Vitellotium Camerarium nostrum, & S.R.E. quem & nullum alium illud decidere & finire posse volumus, etiam cum facultate & auctoritate amplissime puniendi, & castigandi quoscumque latrones & prædatores, etiam usque ad penam capitalem. Volentes etiam per præfentes præfatum Cardinalem Camerarium, merum & verum judicem & executorem in causis maritimis naufragiorum, & etiam quarumcumque affecurationum, super quibus lis & controversia aliqua inter quoscumque evenire posset, ex causa tamen dictorum naufragiorum, cum opportuna avocatione a quibuscumque

Et auxilium
dantibus in-
dulgencias
concedit.

Omnibusque
commo anti-
bus propriis
causis fragio-
rum jubet ut
vocati auxilium
præstent.

Communitates
etiam &
Dominos lo-
corum secuti
naufragii, la-
trones, & oc-
cupatores
capere debe-
re decernit.

Camerari-
umq; S.R.E.
juvicem illa-
rum causa-
rum deputat.

Savantibus
aut recupe-
rantibus illa,
præcipit ne
disponat in-
ficio dicto
Commissario
& Consule.

Baronibus
que & Gu-
bernatoribus
ac aliis ut in
præmissis ei-
dem Consuli
auxilium
præstent.

Confuli
quæque &
ejus deputa-
tis facultate
tem deferen-
di arma con-
cedit.

Executores
deputat. &
facultates
concedit.

Derogatio
contrario-
rum.

Sola signatu-
ra sufficiat.

Papæ sub-
crip-
Dat. P. An. r.
die 24. Apr.

VIII.

que iudicibus, non tamen Romanæ Curie fore & esse debere.

§. 9. Necnon auctoritate præfata concedendo dicto Confuli, ejusque deputatis prout concedimus eisdem, ut pro ipsorum securitate & defensione cuiuscumque generis arma, tam offensiva quam defensiva, in toto dominio, & per totum dominium ecclesiasticum, scilicet in omnibus terris & locis maritimis, & mari convicinis per quindecim miliaria à terra distantibus, libere & licite portare possint & valeant, in quibuscumque bannis editis seu edendis, & aliis quibuscumque Apostolicis constitutionibus & ordinationibus non obstantibus.

§. 10. Et nihilominus pro observatione præmissorum, motu & scientia nostris præfatis præcipiendo mandamus dilecto filio Vitellozio Vitellio Camerario nostro, necnon Clericis præsentibus Cameræ Apostolicæ, ac prælatis, etiam Cardinalatus honore fulgentibus, necnon universis & singulis, tam Almæ Urbis, quam aliarum quarumcumque S. R. E. mediata vel immediata subiectarum Provinciarum, Terrarum, & locorum, Vicelegatis, Gubernatoribus, Locateneantibus, Potestatibus, Iudicibus, & aliis quovis nomine nuncupatis iudicentibus, & iustitiæ ministris, necnon Illustribus Magnificis viris Dominis Ducibus, Marchionibus, & Baronibus, Domicellis, Nobilibus, Castellanis, tironumque Ducibus & Capitaneis, ac quorumcumque locorum Communitatibus seu universitatibus, omnibusque & singulis aliis particularibus personis, ad quos quomodolibet spectat, seu in futurum spectabit, seu spectare poterit, & S. R. E. prædictæ, mediata vel immediata subiectis, quatenus præmissa omnia & singula inviolabiliter observent, & observari faciant, & sub pœnis & censuris antedictis, necnon rebellionis, & privationis omnium & singulorum bonorum, seu officiorum, ac confiscationis & publicationis quorumcumque bonorum per eos, & ipsorum quemlibet obreptorum, incurrendique in crimine læsæ maiestatis, Contradictores &c. cum amplissima facultate & auctoritate, dictos raptores, grassatores, & deprædatores, & latrones, infraganti crimine, seu delicto reptos puniendi, & castigandi, ad effectum ut huiusmodi iustis querelis cessantibus, dicti mercatores & nautæ eo libentius cum suis navigibus, navibus, & mercibus ad Urbem ipsam, locaque prædicta S. R. E. prædictæ securus, & tutius accedant.

§. 11. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon statutis & consuetudinibus etiam municipalibus quarumcumque terrarum, & locorum contrarium forsan editis, ac privilegiis, indultis, & litteris Apostolicis quibuscumque personis, necnon civitatibus, oppidis, locis, castris, ac portibus maritimis, sub quibuscumque verborum formis, & tenoribus ac cum quibuscumque clausulis & decretis, & contractibus, & Motu proprio &c. ac aliis concessis, quibus omnibus &c. illorum tenores &c. pro expressis habentes, hac vice latissime derogare placeat, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 12. Volumus autem quod præsentis nostri Motus proprii sola signatura sufficiat, & ubique fidem faciat in iudicio & extra, regula contraria non obstante, seu si videbitur litteræ in forma brevis expediri possint.

Placet Motu proprio. M.
Datum Romæ apud Sanctum Petrum, octavo Calen. Maji, Anno primo.

De Clausura & numero Monialium cuiuscumque Ordinis, & pœnis earundem absque licentia Superiorum, ex causa magni incendiis, vel infirmitatis lepræ vel epidimie tantummodo eis concedenda, è Monasteriis egredientium, concomitantiumque & receptantium; ac Superiorum aliter eis licentiam concedentium. Necnon de elemosynis pro ipsarum Monialium subventionem colligendis.

Quoad clausuram, habes etiam infra in hoc Tomo II. Greg. XIII. consil. 28. Ubigratia. & Pauli V. consil. 74. Monialium. Et quoad elemosynas vide aliam ejusdem Greg. bullam 8. Deofacris. Et consil. Bonif. VIII. in Tomo I. hic citatam, videre est in tit. de Stat. Reg. in 6. Decretum, Conc. Trid. in sess. 25. c. 5.

Quoad vero consensum Monialium, sine quo mulieres sæculares licentis Monasteria ingrediendi uti non possent, ut illis uti valeant, declaravit quod de cetero expressè capitulariter, & per secreta suffragia haberi debeat. S. D. N. Urban. VIII. consil. 29. Sacrosanctum. inf. tom. 4.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Circa pastoralis officii nobis, meritis licet impari-
bus, desuper commissi curam quantum nobis ex alto permittitur invigilantes, assidue ad ea per quæ singulis erroribus, & excessibus obviatur, ac personis quibuscumque, præsertim femine sexus virginitatem suam Altissimo voventibus, sub Religiosis iugo CHRISTO Salvatore in castitatis holocausto famulari affectantibus, non semita iustitiæ & honestatis à declinantibus, ne quicquam in eis reperiat incongruum, quod in regulari ponat honestatis gloria maculam, & divinam merito possit offendere maiestatem, opportune succurritur, libenter intendimus, ac in his nostræ vigilantie partes propensius impartimur, prout id in Domino salubriter expedire conspiciamus.

§. 1. Hac igitur perpetuo valitura constitutione, inherentes etiam constitutioni fel. rec. Bonifacii Papæ VIII. prædecessoris nostri, quæ incipit, Periculoso, & decretis Conc. Tridentini super clausura Monialium editis, auctoritate Apostolica tenore præsentium statuimus, atque perpetuo decernimus, universas & singulas moniales, præfatas atque futuras, cuiuscumque Religionis, Ordinis vel Militiarum, etiam Hierosolymitanarum sint, quæ vel jam receptæ sint, vel in posterum in quibuscumque Monasteriis five domibus recipiuntur, & tacite vel expressè religionem professæ, etiam si conversæ, aut quocumque alio nomine appellentur, etiam si ex institutis, vel fundationibus earum regulæ ad clausuram non teneantur, nec unquam in earum monasteriis, seu domibus, etiam ab immemorabili tempore ea servata non fuerit, sub perpetua in suis monasteriis, seu domibus debere de cetero permanere clausura, juxta formam dictæ constitutionis fel. rec. Bonifacii Papæ VIII. prædecessoris nostri, quæ incipit, Periculoso, in sacro Concilio Tridentino approbatam, & innovatam, quam nos auctoritate præfata etiam approbamus & innovamus, in omnibus & per omnia, ac illam districte observari mandamus.

§. 2. Quod si aliquæ Moniales forsan reperiantur, quæ consuetudine etiam immemorabili, aut instituto, vel fundatione regulæ suæ fratræ, animo obstinato huic clausuræ resistent, aut quoquo modo reluctentur, Ordinarii una cum superioribus earum, omnibus iuris & facti remediis compellant easdem tanquam rebelles & incorrigibiles ad præcise subeundum dictam clausuram, & perpetuo observandum.

§. 3. Mulieres quoque quæ Tertiariæ, seu de penitentia dicuntur, cuiuscumque fuerint Ordinis in congregatione viventes, si & ipsæ professæ fuerint, ita ut solemne votum emiserint, ad clausuram præcise, ut præmittitur, & ipsæ teneantur; quod si votum solemne non emiserint, Ordinarii una cum superioribus eorum hortentur, & persuadere studeant, ut illud emittant, & profiteantur, ac post omissionem, & professionem, eidem clausuræ se subiciant; quod si recusaverint, & aliquæ ex eis inventæ fuerint scandalose vivere, severissime puniantur.

Edita A. 1566.
& 1570.

Exordium.

Moniales tacite vel expressè Religionem professæ clausuram servant.

Inobedientes coercentur per Ordinarios.

Tertiariæ si solemne votum emiserint, clausuræ subiciantur, in autem per Ordinarios ad clausuram suadeantur.

1566. Et volentes sine clausura & professione vivere, non recipiantur in aliqua Religione seu Congreg.

Eleemosyna pro Monialib. colligantur per Conventus, aut per Professas habitantes prope monasteria, & ita annuatim 40.

Converse professæ de cetero non recipiantur.

Hoc declarat. Greg. XIII. cit. in rub.

Monialium recipientia numerum regulare iuxta redditus Monasteriorum.

Quod habes in Conc. Trid. sess. 25. c. 3.

Executorem deputatio.

§. 4. Ceteris autem omnibus sic abque emissione professionis, & clausura vivere omnino volentibus interdictionis, & perpetuo prohibemus, ne in futurum ullam aliam prorsus in suum Ordinem, Religionem, Congregationemve recipiant. Quod si contra hujusmodi hanc nostram prohibitionem & decretum aliquas receperint, eas ad sic viventium omnino inhabiles reddimus, ac illarum quaslibet professiones & receptiones irritas facimus & annullamus.

§. 5. Porro ne Moniales, vel Tertiariæ prædictæ propter hanc clausuram, detrimentum aut incommodum aliquod in earum necessitatibus, maxime in pertinentibus ad illarum victum patiantur, sed ut eis opportune consulatur, auctoritate Apostolica præfata statumus, decernimus, præcipimus, atque mandamus Ordinariis & Superioribus earum, ut curent colligi fidelium eleemosynas per conversas quæ non sint professæ, vel si professæ fuerint, sint tamen ætatis annorum quadragesimæ, & in domibus contiguas, extra tamen monasterium, degant, & non ingrediantur clausuram aliarum Monialium, nisi in casibus ex earum constitutionibus præmissis; & de earum domibus exire non possint pro hujusmodi eleemosynis colligendis nisi de licentia Ordinarii, vel earum Superiorum.

§. 6. Et de cetero nullæ aliæ Converse professæ recipi amplius etiam de consensu suorum Superiorum vel Prælatorum possint; quod si adversus hanc nostram prohibitionem receptæ fuerint, illarum receptio nulla, irrita & inanis sit, prout ex nunc nullam, irritam, & inanem facimus & annullamus.

§. 7. Quod si prædicto modo necessitatibus Monialium & mulierum Tertiariarum prædictarum succurri sufficienter non poterit, mandamus ipsis Ordinariis & Superioribus earum, ut ipsi provideant de aliis personis piis, & Deo devotis, quæ fidelium eleemosynas colligant, vel alias eo meliori & commodiori modo quo fieri poterit, etiam ex opere manuum ipsarum Monialium & Mulierum prædictarum, arbitrio Ordinariorum & Superiorum earundem, & prout eis congruentius expedire videbitur, provideant, & succurrant. Et ne propter Monialium numerum excessum clausuræ observatio violeatur, inherentes etiam similiter dispositioni dictæ constitutionis Bonifacii, & Concilii Tridentini decreto, Monialibus prædictis, & illarum Superioribus, & Ordinariis districtè inhibendo præcipimus & mandamus; ne plures in earum Monasteriis recipiant & admittant, sive recipi & admitti permittant, quam ex propriis redditibus ipsorum Monasteriorum, vel consuetis eleemosynis commodè sustentari possint.

§. 8. Mandantes propterea in virtute sanctæ obedientiæ sub obtestatione divini iudicii, & interminatione maledictionis æternæ, universis venerabilibus fratribus Patriarchis, Primatibus, Archiepiscopis & Episcopis, quatenus in Civitatibus, & Diocesis propriis, præsentibus nostras litteras publicari faciant, ac in Monasteriis Monialium sibi ordinario jure subiectis, in iis vero quæ ad Romanam mediâ vel immediatè spectant Ecclesiam Sedis Apostolicæ auctoritate una cum Superioribus eorundem Monasteriorum clausuram, ut præmititur, quamprimum poterint servari procurent. Contradictores atque rebelles per censuram Ecclesiasticam, appellatione postposita compescendo; invocato ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis. Ac ut hoc tam salutare decretum facilius observetur, omnes Principes seculares, & alios Dominos, & Magistratus temporales rogamus, requirimus, & obsecramus per viscera misericordie Domini nostri JESU CHRISTI, eidem in remissionem peccatorum injungentes, quod in præmissis omnibus eisdem Patriarchis, Primatibus, Archiepiscopis, & Episcopis, & aliis Monialium Superioribus assistant, ac suum favorem & auxilium præstent, ac impediētes penis etiam temporalibus afficiant.

§. 9. Præmissis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, à statutis & consuetudinibus, etiam immemorabilibus, etiam per Sedem Apostolicam approbatis & confirmatis; privilegiis quoque, indultis & litteris Apostolicis etiam in fundatione, & institutione eisdem Monasteriis, vel domibus, & Monialibus, sub quibuscumque verborum formis, & clausulis irritantibus, & aliis decretis quibuscumque concessis, confirmatis, ac etiam iteratis vicibus approbatis, & innovatis. Quibus omnibus etiam si pro sufficienti illorum derogatione, de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum infererentur, pro sufficienter expressis habentes, quoad effectum validitatis nostræ constitutionis tantum derogamus contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, aut suspensi non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

§. 10. Per hoc autem in Monasteriis exemptis, Ordinarii locorum quoad alia nullam sibi credant jurisdictionem vel potestatem aliquatenus eis attributam.

§. 11. Volumus autem quod præsentibus litteræ ad valvas Basilicæ Beati Petri Apostolorum Principis, & in Cancellaria nostra, ac acie Campi Floræ publicentur, & inter constitutiones extravagantes perpetuo valituras conscribantur.

§. 12. Et quia difficile foret presentes ad singula quæcumque loca deferri, volumus & etiam declaramus, quod earum transumptis etiam impressis, manu alicujus Notarii subscriptis, ac sigillo alicujus Prælati munitis, eadem prorsus fides ubicumque adhibeatur, quæ præsentibus adhiberetur si fœrent exhibitis vel ostensa.

Nulli ergo &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1566. 4. Kal. Junii, Pontificatus nostri Anno primo.

Sequitur declaratio dictæ bullæ.

PIUS EPISCOPUS, &c.

Decori & honestati omnium Sanctimonialium, quarum JESUS CHRISTUS Dominus noster sponsus est, ut in puritate & castitate super ædificantes, in ipso feliciter inhabitare valeant, consulescentes, ea quæ illarum existimationi detrudere possent, decet nos consulto submovere.

§. 1. Sanè periculo & scandalo plena res est, ac regulari observantiæ vehementer adversatur, Sanctimonialia aliquando parentes, fratres, sorores, aut alios agnatos, vel cognatos, necnon Monasteria, & alia Filiationes nuncupata, etiam eis subiecta visitandi, aut infirmitatis causa, aliove pretextu à Monasteriis exire, & per secularium personarum domos discurrere, & vagari, quo veluti colore eximium quoque honestatis, & pudicitie decus in discrimen committunt.

§. 2. Unde nos malo huic pro nostro Pastoralis officii debito salubriter occurrere volentes, inherentes etiam decreto sacri Concilii Tridentini de clausura Monialium disponenti, ac aliis nostris litteris super hujusmodi clausura editis adjicientes, volumus, sancimus, & ordinamus nulli Abbatisarum, Priorissarum, aliarumve Monialium, etiam Carthusienium, Cisterciensium, S. Benedicti, & Mendicantium, & quorumcumque aliorum Ordinum, etiam Militiarum, ac statuum, graduum, & conditionum, dignitatum, ac præminentiarum existentium, etiam à Regia vel Illustri prosapia ortarum, de cetero etiam infirmitati, seu aliorum Monasterio-

Clausula derogatorie.

Ordinarii in his procedunt etiam in locis exemptis. Iussio publicandi.

Exemplorum fides.

Dat. P. An. 1. die 29. Maji.

Edita An. D. 1570.

Exordium.

Causa hujus constituta.

Monialium à clausura executionum obsequia &c. poena.

rum, etiam eis subsectorum, aut domorum, parentum, aliorumve consanguineorum visitandorum, aliave occasione & pretextu, nisi ex causa magni incendii, vel infirmitatis lepræ, aut epidimiæ, quæ tamen infirmitas, præter alios Ordinum Superiorum, quibus cura Monasteriorum incurreret, etiam per Episcopum, seu alium loci Ordinarium, etiam si prædicta Monasteria ab Episcoporum & Ordinariorum jurisdictione exempta esse reperiatur, cognita & expressè in scriptis approbata sit, à Monasteriis præfatis exire, sed nec in prædictis casibus extra illa, nisi ad necessarium tempus stare licere. Aliter autem quam, ut præfertur, egredientes, seu licentiam exeundi quomodocumque concedentes, necnon comitantes, ac illarum receptatrices personas, siue laicas, aut seculares, vel Ecclesiasticas, consanguineas, vel non, excommunicationis majoris lætæ sententiæ vinculo statim eo ipso absque aliqua declaratione subjacere, à quo præterquam à Romano Pontifice, nisi in mortis articulo absolvi nequeant. Et insuper tam egressas, quam præfidentes, & alios Superiores prædictos eis licentiam hujusmodi concedentes, Dignitatibus, officiis, & administrationibus, per eas & eos, tunc obtentis privamus, & illas & illos ad obtenta, & alia in posterum obtinenda inhabiles.

§. 3. Necnon licentias & facultates, seu indulta & privilegia exeundi à Monasteriis, & extra illa standi, à nobis, seu alio Romano Pontifice prædecessore nostro, ac Sedis Apostolicæ Nunciis, & Legatis, etiam de latere, ac Majore Penitentiario, aut Ordinum prædictorum Superioribus, aliisque personis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque relictis, præservatis, mentis attestatis, etiam novam gratiam, & daram contententibus, aliisque efficacioribus ac insolitis clausulis, irritantibusque & aliis decretis, in genere vel in specie, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, deque Apostolicæ potestatis plenitudine, etiam Imperatoris, Regum, Ducum, & aliorum Principum, necnon S. R. E. Cardinalium intuitu & contemplatione, ac instantia, vel aliis quomodolibet concessa (quæ prorsus abolemus) ac litteras desuper confectas, & in posterum concedendas, & confirmandas, nullas & invalidas, nulliusque roboris ac momenti fore, nec illas habentibus & habituris suffragari posse.

§. 4. Et ita per quoscumque Judices & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, sublata eis & eorum cuilibet alteri iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, iudicari & definiti debere, irritum quoque & inane, quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari decernimus.

§. 5. Mandantes universis & singulis Venerabilibus fratribus nostris Patriarchis, Primatibus, Archiepiscopis, Episcopis, & aliis locorum Ordinariis, in virtute sanctæ obedientiæ, & sub obtestatione divini iudicii, & interminatione maledictionis æternæ, quatenus per se vel alium, seu alios præfatos litteras in Civitatibus & Diocesis propriis quolibet anno publicent, omniaque in illis contenta, necnon præfatum decretum ipsius Concilii, quod incipit Bonifacii VIII. diligenter & inviolabiliter sub censuris Ecclesiasticis, aliisque præfatis penis, & in eodem decreto contentis, observari faciant & procurent. Contradictores quoslibet & rebelles, ac præmissis non parentes, etiam aliis penis auctoritate nostra, appellatione postposita compellendo; necnon legitimis super his habendis servatis processibus penas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando, interdictum Ecclesiasticum apponendo; invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 6. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus & ordinationibus Apostolicis contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus, communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendendi, vel excommunicari non possint per litteras

Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem. Aliis Apostolicis constitutionibus & iuribus, de hujusmodi clausura disponentibus, nihilominus in suo robore duraturis.

§. 7. Ceterum volumus quod præsentium transumptis, etiam impressis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus Prælati munitis, eadem prorsus fides ubique terrarum, tam in iudicio, quam extra adhibeatur, quæ eisdem præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Nulli ergo &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1570. Kalend. Februarii, Pontificatus nostri Anno quinto.

Anno à Nativitate D. 1570. indictione 13. die vero 27. mensis Februarii, Pontif. Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa V. anno ejus 5. retrospectiva litteræ Apostolicæ offiæ & publicatæ fuerunt Romæ ad valvas Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, ut moris est, per nos Joannem Guererum, & Christianum de Monte, prælati S. D. N. Papa Curf.

Antonius Clerici Mag. Curf.

Declarationes circa allegationem novæ causæ, in casu fractæ pacis, vel treguæ. Admissionemque reorum in contumaciam condemnatorum in Statu Ecclesiastico ad faciendas defensiones, infra vel post annum; necnon circa præventionem inter Judicem Ecclesiasticum & laicum in causis mixti fori.

De materia Bannitorum notas dabo inf. ad constit. 6. Six. V. Hoc nostrum.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Cum ob innumeras Rom. Pont. occupationes, ac particularium rerum quarumlibet status ignorantiam, contingat ab eo quandoque litteras emanare, quæ in magnum aliorum præjudicium redundare noscuntur, minime reprehendendum esse videtur, si tandem præjudicio cognito, litteras hujusmodi, etiam si per ejus prædecessorem emanaverint, tamquam per inadvertentiam editas revocet, & limitat, aliasque desuper disponit prout rerum & temporum qualitate pensata conspiciat in Domino salubriter expedire.

§. 1. Datum siquidem fel. record. Pius Papa Quartus prædecessor noster cupiens criminibus & excessibus qui in dies oriebantur providere, per quasdam suas in forma Motus proprii editas litteras inter alia statuit, quod in causis treguarum, & pacis fractarum ipsi fractores vel eorum fideiussores allegare non possent quod offensæ ex nova causa processisset, nec allegata cuiquam suffragaretur.

§. 2. Et etiam quod in causis mixtis inter Judicem Ecclesiasticum & laicum, locus sit præventioni, ita tamen quod Judex Ecclesiasticus in casu præventionis non possit procedere contra laicum, sed illum debeat remittere ad Judicem laicum, & aliis prout in eisdem litteris plenius continetur.

§. 3. Nos considerantes à ratione & jure debito alienum esse eos qui criminis innoxii fuerint, eorumque fideiussores, si treguæ, pax seu fideiussiones de non offendendo postea ex nova emergente occasione fractæ fuerint, earum occasione gravari debere, cum præcipue paces, treguæ, seu fideiussiones hujusmodi de non offendendo non ad offensionem ex futuris causis, sed ex præteritis tantum oriantur, litteras præfatas quoad præmissa revocantes, cassan-

Licentia aliter concedendum &c. poena. Hic ampliat Greg. XIII. cit. in rub.

Decretum irritans.

Deputatio & facultates executorum hujus constit. & Conc. Trid. prædicti.

Clausula derogatoria.

Fides transumptorum.

Dat. P. Anno die & Febr.

Publicatio.

IX.

Edita An. D. 1566. & 1571.

Exordium.

Pius IV. allegationem novæ causæ prohibuit, in casu pacis & treguæ, &c.

Et in causis mixtis iudicium præventionem declaravit supra in constit. 5. §. 12.

Hic Pont. declarat prohibitionem quoad principales tantum procedere, non autem quoad comprehensivos.

tes, & moderantes, effectumque suum fortiri in præmissis non posse decernentes: Motu simili &c. novam causam in pacis, treguarum, seu fidei iustionum huiusmodi fractione principales tantum, videlicet qui fuerunt causa pacis, treguarum, seu fidei iustionum de non offendendo huiusmodi factarum, seu faciendarum, præstitarum seu præstatarum, si ipsi aliquo modo, seu aliquis eorum in dictis fractionibus intervernerint, seu intervernerit, videlicet si aliquis ex dictis principalibus aliquem ex comprehensis in pace, tregua, seu fidei iustione de non offendendo offenderit, vel ipse ab aliquo ex ipsis comprehensis offendatur, non excusare. Si vero supradicti principales, seu aliquis eorum in fractione pacis, treguarum, seu fidei iustionum huiusmodi, ut supra non intervernerint, seu intervernerit, ipsos eorumque consanguineos & fidei iustiores, ceterosque in pace, & tregua, seu fidei iustione de non offendendo comprehensos, & quemlibet eorum novam causam huiusmodi allegare posse, & ea probatè excusari debere, & quoquo modo gravari, perturbari, aut inquietari non posse neque debere; idque tam in causis motis & indecis pendentibus, quam etiam finitis, & in quibus etiam pronunciarum fuit (dummodo sententiæ desuper late totaliter non sint executioni demandatæ) locum sibi vindicare posse & debere declaramus.

Contumaci-
as dat an-
um ad com-
tendum.

§. 4. Cumque etiam sæpe contingat partes ipsas contra quas in contumaciam procedi consuevit, vel ita negotiorum mole gravari, vel ita longe abesse, ut ipsorum contumaciam sex mensium spatio huiusmodi expurgare minime queant, terminum sex mensium huiusmodi ad annum prorogamus, ac contumacibus huiusmodi defensionibus non nisi post anni elapsi terminum denegari debere; ac quascumque aliter quam ut præmititur ferendas sententias, nullas, inanes, nulliusque roboris & momenti, fore & esse, prout nos eas ex nunc tanquam contra iuris debitum, & de facto latas annullamus, cassamus & irritamus.

præventio-
neque ad
is, &
hic. Trid.
minios re-
cis.

§. 5. Quo vero ad præventionem inter Judicem Ecclesiasticum, & laicum, declaramus, illam habere locum in terminis, & statu, prout ante dictum Motum proprium erat, ac ipsum ad terminos iuris in hoc reducimus, & volumus, ut in præventionibus procedatur juxta formam iuris, & sacrorum decretorum Concilii Tridentini, & non aliàs, aliter, nec alio modo.

decretum
trans.

§. 6. Sicque & non aliter per quoscumque Judices, &c. etiam S. R. E. Cardinales, ac causarum Palatii Apostolici Auditores, sublata &c. iudicari debere; irritum quoque &c. auctoritate Apostolica tenore præsentium statuimus & decernimus.

udices &
starii hæc
servent.

§. 7. Et nihilominus pro potiori præmissorum validitate, omnibus & singulis Iudicibus, tam ordinariis, quam delegatis, & subdelegatis, ac eorum Locatenentibus & Notariis, sub excommunicationis majoris, ac indignationis nostræ, officiorumque suorum privationis penis, ne contra præmissa aut illorum aliqua facere, & attentare præsumant, districtius inhibemus.

sanfule
rogatorie.

§. 8. Non obstantibus præmissis, ac quibusvis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac quarumcumque Civitatum, Provinciarum, & locorum, etiam juramento &c. roboratis statutis, & consuetudinibus; privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis Universalibus, Communitatibus, & hominibus Provinciarum, Civitatum, & locorum prædictorum quomodolibet concessis &c. Quibus omnibus &c. etiam si de illis, &c. illorum tenores &c. hac vice latissime derogamus; ceteris, quæ contrariis quibuscumque, cum clausulis opportunitis.

ape sub-
ipt,
usularum
etio.

Fiat Motu proprio. M.

§. 9. Et de revocatione, cassatione. declaratione, reductione, voluntate, prorogatione, annulatione, iri tatione, statuto, & decreto, inhibitione, derogatione, & aliis præmissis, quæ hic pro simul, vel ad partem repetita habentur latissime exten-

dentes. Et quod præmissorum omnium & singulorum & præsertim præsentibus contrariarum pro sufficienter expressis habeantur.

§. 10. Et quoad præsentis Motus proprii etiam absque data & registratura, sola signatura sufficiat, & ubique fidem faciat in iudicio & extra, regula contraria non obstante.

Sola signa-
tura sufficit.

§. 11. Eiusque transumptis manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ ipsis originalibus literis adhiberetur, si forent exhibitæ, vel ostensæ.

Fides exem-
plorum.

§. 12. Quodque Cameræ, & Cancellariæ Apostolicæ Audientiæ causarum Palatii Apostolici valvis, & in acie Campi Floræ dimissis copiis affixis, post mensem affixionis huiusmodi computandum, omnes ita afficiant, & arceant, ac si illis personaliter intimatæ fuissent.

Iussio poe-
nalis.

Fiat M.

Anno à Nativitate Domini 1566. Inditione 9. die vero 20. mensis Junii Pontific. Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa V. Anno I. supradictus Motus proprius affixus, & publicatus fuit ad valvas principis Apostolorum de Urbe, Camera, ac Cancell. Apostolicarum, necnon in Audientia litterarum contradictarum, ac in acie Campi Floræ, dimissis inibi copiis affixis, per me Joannem Guerardi præfati S. D. N. Papæ Cursores.

Publ. P. A. I.
die 10. Junii.

Ant. Clerici Mag. Curs.

Sequitur declaratio dictæ Constitutionis.

PIUS PAPA QUINTUS.

Edita An. D.
1571.

Motu proprio, &c.

Exordium.

Udum postquam fel. rec. Pius Papa IV. prædecessor noster, cupiens subterfugis delinquentium obviare, per quasdam suas in forma Motus proprii editas litteras, sub dat. Romæ apud Sanctum Petrum, 12. Cal. Junii, Anno VI. inter alia statuisse, quod rei in contumaciam condemnati ad suas defensiones faciendas admitti non possint, nisi infra sex menses, quoad faciendas, videlicet à die condemnationis, quo vero ad jam factas condemnationes à die publicationis earundem litterarum computandos, per alias nostras, etiam in forma Motus proprii emanatas litteras, die 20. mensis Junii, Pontificatus nostri anno primo publicatas, terminum sex mensium huiusmodi ad annum prorogavimus, ac contumacibus huiusmodi defensiones non nisi post anni elapsi terminum denegari debere decrevimus.

Dubia exorta
super præ-
dictis.

§. 1. Cumque sicut accepimus, à nonnullis ordinationem, & dispositionem huiusmodi, nostramque, & dicti prædecessoris in illis edendis, intentionem variis calumniis eludere, & super earum sinistris interpretationibus agentes pro Fisco, & Camera Apostolica fatigare, & causas in longum protrahere, & illas intricare, sententiarumque executionem evitare sagagentibus, sæpe in dubium verti contingat (licet ex verborum proprietate res clara sit) an scilicet tam sponte comparentes, de quibus loquitur Motus proprius præfati prædecessoris, quam etiam capti intra dictum tempus, indifinite admitti debeant ad faciendum suas defensiones, maxime stantibus in eodem nostro Motu proprio appositis supra relatis verbis videlicet. Ac contumacibus huiusmodi defensiones non nisi post anni elapsi terminum denegari debere, quæ indefinite prolata sunt, & videntur posse comprehendere, tam sponte comparentes quam captos, nihilominus considerantes, quod verba ipsa nihil aliud disponunt, quam prorogationem termini, si quibus ex forma Motus proprii prædicti prædecessoris denegari non poterat.

§. 2. Nos igitur ad tollendum omne dubium, & absurdum evitandum, quod capti, & sponte com-

Declaratio
quod capta-
liter condem-

ANNO 1571.

PIUS QUINTUS.

ANNO 1571.

nati, capti infra annum, non audiantur absque iussu Papæ, sed sententiæ contra eos in contumaciam latæ legitimis præcedentibus iudiciis executioni demandentur.

parentes paris essent conditionis, necnon calumniis, & aliis inconvenientibus huiusmodi quantum cum Deo possumus obviare, omnemque disputandi materiam tollere, & in his opportune providere volentes, necnon singularium litterarum prædictarum, ac iudiciorum inquisitorum processuum condemnationum, & sententiarum desuper formatarum, & latarum, ac formandarum, & promulgandarum huiusmodi, aliorumque forsan laus ex primendorum tenores, contentias, formas, & compendia, ac reorum delictorum, criminum, & excessuum, ac poenarum huiusmodi, & iudicum nomina, cognomina, gradus, & qualitates, ac quantitates, & loca, pro plenè, & sufficienter expressis habentes, & decernentes, necnon singulas prænaratas litteras confirmantes, & innovantes, Motu simili, &c. quod banniti, & in contumaciam condemnati in poenam capitis, & ultimi supplicii, si capti ad manus Curie devenierint, per Iudices ad novas, sive alias defensiones faciendas, etiam intra dictum tempus non admittantur, nisi habita à nobis, vel signatura nostra desuper gratia speciali, nec litteræ ipsæ, quæ in eorum odium editæ sunt, eis in aliquo suffragentur, aut illis se iuvare, sive defendere possint. Quinimmo, quod Iudices præfati sententiis ipsas condemnatorias, tam in Urbe quam extra eam latas, & ferendas, si tamen legitimis præcedentibus iudiciis ad inquirendum promulgatæ fuerint, executioni realiter, & corporaliter, suis loco & tempore congruis respectuè totaliter & integrè, contra sic captos demandent, & ademandari faciant, hac nostra perpetuo valitura declaratione declaramus, & decernimus, & quatenus opus sit, de novo statuimus, & ordinamus, & ita mentis, & intentionis nostræ fuisse, & esse attestatur.

Officialesque omnino obsequantur.

§. 3. Præterea Almæ Urbis nostræ generali Gubernatori, ceterisque Iudicibus, ordinariis vel delegatis, in Romana Curia vel extra eam residentibus quibuscumque, in virtute sanctæ obedientiæ, & sub indignationis nostræ poena committimus & mandamus, districte præcipiendo per præfatos, quatenus huiusmodi nostram declarationem, seu novam constitutionem, & ordinationem, necnon ipsas præfatas, & in eis contenta, omnia & singula, in causis criminalibus seu mixtis, & aliis Fiscum & Cameram Apostolicam illiusque interesse quomodolibet concernentes, nunc & pro tempore pendentibus quibuscumque, etiam si forsan aliqui capti nunc in carceribus detineantur, perpetuo ininvocabiliter observari mandent, & faciant, & illi observent.

Decretum irritans.

§. 4. Et ita, & non aliter in præmissis omnibus & singulis per quoscumque Iudices, & Commissarios, &c. etiam S. R. E. Cardinales, ac Palatii Apostolici causarum Auditores, sublata, &c. iudicari, interpretari, & definiri debere, irritum quoque, &c. decernimus.

Clausulæ derogatorias.

§. 5. Non obstantibus præmissis, ac quibuscumque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, statutisque, ac consuetudinibus Provinciarum, Civitatum, oppidorum, & locorum quoruncumque etiam iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis alia firmitate roboratis, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, Universalitatibus, Communitatibus, & hominibus Provinciarum, Civitatum, & locorum prædictorum, ac etiam singulis prænominationis, & aliis quibuscumque Iudicibus, &c. per nos, & prædecessores nostros concessis, & etiam iteratis vicibus innovatis, quibus omnibus, &c. illorum tenores, &c. hac vice latissimè derogamus, ac stylo Palatii, ceterisque in contrarium facientibus, non obstantibus quibuscumque.

Sola signatura sufficit.

§. 6. Volumus autem, quod præfatis Motus proprii, etiam absque data, & registratura, sola signatura sufficiat, & ubique fidem faciat, in iudicio & extra, regula contraria non obstantes.

Transumptorum fides.

§. 7. Eiusque transumptis, etiam impressis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ ipsis originalibus litteris adhiberetur si forent exhibitæ, vel ostensæ, seu litteræ desuper per breve nostrum expediri possint, & si videbitur cum omnium, & singulorum prænaratorum, & expressorum, aliorumque necessariorum specificatione, & insertione, & cum aliis clausulis opportunis, & consuecis.

Placet Motu proprio. M.

* Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Idibus Septemb. Anno VI.

Anno à Nativitate Domini Nostri Jesu Christi, millesimo quingentesimo septuagesimo primo, Indictione decimaquarta, die vero decima septima mensis Septembris. Pontificatus autem Sanctissimi in Christo patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papæ V. Anno sexto, retroscriptus Motus proprius affixus, & publicatus fuit in acie Campi Floræ, & ad valvas Cancellariæ Apostolicæ, dimissis copiis affixis, per me Jo. Andream Panizam præfati Sanctissimi Domini Papæ Curf.

Jo. Guerardi Mag. Curf.

Innovatio & ampliatio constitutionum à Pont. prædecessoribus editarum contra Homicidas, brigosos, vindictam transversalem, aut hominum collectam facientes, facinorosos homines, eorumque complices, & fautores, Communitates quoque & alios eorum territoria à prædictis non custodientes in Statu Ecclesiastico.

Has constitutiones indicavi hic in apostillis, & eis addo videndam confis. 65. Greg. XIII. Tauta. & confis. 6. Sixti V. Hoc nostri. ubi plenè notabo infra in hoc Tomo II.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

EX supernæ dispositionis arbitrio gregis Domini curæ præfidentes, inter varias animi sollicitudines quæ ex pastoralis officii ministerio nobis incumbant, illam à nobis potissime amplectendam esse putamus, per quam inter singulos gregis ejusdem fideles, præsertim vero nobis, & Romanæ Ecclesiæ subditos, pax & concordia confoventur, seditiones sedantur, scandalis obviatur, & animarum salus procuratur. Unde ea quæ sedula meditatione hæcenus à diversis Romanis Pontificibus prædecessoribus nostris præmissorum ratione gesta fuisse ac ordinata comperimus, quo sæpius fideles ipsi illa perspicierent innovari, eo ferventius, ac promptius ad illorum observationem excitentur, confirmanda, innovanda, nostræque auctoritatis munimine roboranda esse censuimus, aliisque desuper disponimus prout in Domino conspiciamus expedire.

§. 1. Sanè aliàs postquam fel. rec. Pius Papa II. prædecessor noster, per eum accepto, quod à certis tunc elapsis annis, &c.

Omittitur residuum narrative, quia ipsam bullam S. Pii II. habes sup. fol. 292. Ad retinendas. Tom. I.

§. 2. Cum sæpius contingeret, quod offensionis ignarus, aut ob huiusmodi excessus plurimum condolens, horribili &c.

Omittitur pariter residuum relationis hujus bullæ 4. Pauli II. Viros, nam habes eam supra in Tomo I.

§. 3. Et successive recol. memor. Sixtus Papa IV. similiter prædecessor noster accepto per eum quod contenta in litteris Pii prædecessoris huiusmodi à certis annis tunc elapsis citra non fuerant observata, & ex illorum non observantia subditi præfate Ecclesiæ procliviores erant ad homicidia committenda, ac fere passim quotidie perpetrabantur, & homicidæ præfati ideo ad illa committenda

PP. subscripti

Dot. P. A. 8. die 17. Sept.

Publicatio

X.

Edita An. 1566.

Proemium

Pius II. edidit bullam hic cit.

Paul. II. edidit alteram hic cit.

Sixt. IV. aliam bullam edidit hic latam & à me propterea prætermissam in hoc opere.

da promptiores existerent, quia sperabant latere, & suorum excessuum remissionem consequi facile posse, ac detestabilem, & horrendam scitariorum nequitiam talium ad aliorum cautelam juris remediis prosequi studio cupiens indefesso, habita super iis cum fratribus suis præfata Ecclesiæ Cardinalibus deliberatione matura, de illorum consilio per suas litteras, statuta, decretaque Pii prædecessoris huiusmodi, ac prout illa concernebant omnia & singula in dictis litteris Pii prædecessoris præfati contenta approbaverat, & robur perpetuæ firmitatis obtinere debere decreverat, ac voluerat & de eorumdem fratrum consilio statuerat, & ordinaverat, quod condemnatis eatenus, & quos in posterum condemnari contingeret ubilibet in civitatibus, terris, & locis prædictis pro homicidio, sive ut principales, sive ut auxilium, consilium, vel favorem præstantes, suarum condemnationum remissionem, aut contra illas saluum conductum, & licentiam securè in loco patrati criminis, vel infra quinquaginta miliaria (ut præfatur) propinquo nullatenus obtinere possent ab alio quam à Rom. Pont. qui pro tempore esset, & aliquis alterius etiam Legati de Latere remissio nemini suffragaretur, & si forsitan contingeret eundem Rom. Pont. ad remissiones sive saluum conductum huiusmodi procedere, talis remissio per præoccupationem processisse conferetur, & nemini prodesse posset, nisi in illa vetus litterarum Sixti prædecessoris huiusmodi tenor de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes inferius insertas foret, & determinata causa exprimeretur, quæ eundem Rom. Pont. induceret ad derogandum eisdem litteris Sixti prædecessoris, quæ cum tam matura deliberatione ab eodem Sixto prædecessore emanaverant.

§. 4. Et subsequenter sanctæ mem. Julius Papa II. etiam prædecessor noster habita super iis cum fratribus suis tunc, &c.

Omittitur pariter residuum narrativæ consilii Jul. II. Cum homines, quia est supra. fol. 358.

§. 5. Et insuper per eundem Julium prædecessorem accepto quod cum nonnulli Civitatum, Castrorum, & locorum tam Regni nostri tunc Sicilia citra Pharium, quam aliarum partium dictæ Ecclesiæ subiectarum etiam Urbi prædictæ adjacentium, quam propter homicidia, aliqua nefanda per eos perpetrata excessus, crimina, & delicta, & alias eorum demeritis id exigentibus à Civitatibus, terris, castris, & locis eorum, seu in quibus tunc morabantur exules, rebelles, & banniti, quod in illis propterea securè morari nequirent alii de Civitatibus, Terris, Castris, & locis dictæ Ecclesiæ subiectis ad Regnum, & adjacentibus huiusmodi, alii autem ex Regno, & adjacentibus partibus prædictis, ad Civitates, Terras, Castra, & loca eidem Ecclesiæ subiecta prædicta etiam dictæ Urbi adjacentia se transferrent, nonnulli Barones, Proceres, & Domini, seu Vicarii in temporalibus Civitatibus, Terrarum, Castrorum, & locorum, ac Regni, & partium adjacentium prædictorum, eorumque Officiales, & subditi dictos homicidas, bannitos, criminosos, atque rebelles homines scienter receptare, & quod gravius erat protegere, & defendere non formidabant, se reos tantorum scelerum, per homicidas & alios bannitos prædictos perpetratorum, apud Deum constitutos, & tam ipsis homicidis, & malefactoribus, quam aliis similia vel gravia delicta perpetrandi, & committendi audaciam, & scelerum huiusmodi impunitatem tribuentes in animarum suarum periculum, iustitiæ conculcationem, ac dictæ Sedis auctoritatis contemptum, & scandalum plurimorum. Idem Julius prædecessor Motu proprio omnes, & singulos Barones, Proceres, Milites, ac Dominos, & Vicarios in temporalibus Civitatibus, Terrarum, Castrorum, & locorum eorumdem, necnon nostros, & eorumdem Baronum, Procerum, Militum, & Domi-

norum Vicarios, Officiales, & subditos per suas litteras requisierat, & monuerat, eisque & eorum cuilibet in virtute sanctæ obedientiæ, & sub excommunicationis late sententiæ poena, quam contrafacientes eo ipso incurrerent, districtius inhibuerat, ne homicidas, bannitos, criminosos, rebelles, aliosque infames homines præfatos, qui propter eorum delicta banniti in locis originis suæ, seu aliis regnorum, Civitatum, Terrarum, Castrorum, & aliorum locorum prædictorum propter eorum malam vitam commorari non poterant, ex tunc de cetero nullatenus receptare, aut eis consilium, auxilium, vel favorem quovis quæsito colore præstare præsumerent. Quinimodo tales ad eorum Dominia declinantes, seu in eis commorantes capi, & ad forum seu iustitias, vel Officiales ad quos punitio, & castigatio criminum, & excessuum per eos perpetratorum, ut præfatur, de iure vel consuetudine pertinebant & spectabant, destinare, aut si partibus latis, & offensis utilis foret, illos iuxta criminum, & excessuum per eos perpetratorum qualitatem ad poenas à iure statutis in locis ubi deprehensi forent procedere procurarent.

§. 6. Præterea fel. mem. Leo Papa X. etiam prædecessor noster similiter per eum accepto quod nequissimi scitarii, &c.

Prætereo infestationem bullæ 35. Leon. X. Omnes, quia ipsa est supra

§. 7. Porro ad notitiam similis memoriæ Clementis Papæ VII. pariter prædecessoris nostri pervento plures Urbis, &c.

Non pono hic istam bullam 10. Clem. VII. In sancta, quia habes eam sup.

§. 8. Piæ mem. Pius Papa IV. similiter prædecessor noster singulas Pii II. Pauli, Sixti, Julii, Leonis, & Clementis, &c.

Prætereo hanc bullam 27. Pii IV. Siquidem habes ipsam sup. fol. 41. In eminenti.

§. 9. Cum autem statim ubi nos ad summi Apostolatus apicem divina cooperante providentia assumpti fuimus, ob earumdem litterarum non observationem in eisdem Civitatibus, Terris, & locis, ac etiam in Alma Urbe nostra varias dissensiones, discordias, & odia vigere, latrocinia, & homicidia, aliaque nefandissima crimina perpetrari, ac præfatos Pium II. Paulum, Sixtum, Julium, Leonem, Clementem, ac Pium IV. prædecessores pro felici ac tranquillo statu & commodo personarum tam dictæ Urbis quam aliarum Civitatum, Terrarum, & locorum prædictorum, præmissa statuisset, ordinasset, & peregrisse perpexerimus. Idcirco nos quoque eadem ratione, quietis videlicet ac pacis moti, habita super his cum venerabilibus fratribus nostris ejusdem Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalibus deliberatione matura, ac de illorum unanimi consilio & assensu singulas Pii II. & Pauli, ac Sixti, necnon Julii, & Leonis, & Clementis, & Pii IV. prædecessorum litteras huiusmodi, cum statutorum, ordinationum, extensionum, ampliationum, revocationum, cassationum, irrationum, annulationum, decretorum, confiscationum, incorporationum, applicationum, voluntatum, hortationum, requisitionum, & mandatorum, omnibusque & singulis aliis in eis respectivè contentis clausulis Apostolica auctoritate prædicta tenore præsentium approbamus, confirmamus, & innovamus, illisque perpetuum, & inviolabilis firmitatis robur adjicimus, ac ab omnibus & singulis quos illæ concernunt penitus ac sub prædictis per contrafacientes irremissibiliter incurrendis poenis observari volumus atque decernimus.

§. 10. Eisdemque litteras, ad hoc ut si homicidæ, scitarii, banniti in Civitatibus, Terris, Castris, & locis prædictis cuiquam damna aliqua intulerint, ipsique damnis taliter illatis, à Civitatibus Communitatibus, ac Terrarum, Castrorum & locorum huiusmodi Universitatibus capti, & deprehensi non fuerint, sed taliter delinquentes impune evaserint,

Leo X. aliam edidit hic cit.

Clem. VII. aliter hic cit.

Pius IV. aliam edidit hic indicatam.

Hic modo Pont. Pius V. antedictas const. approbat.

Communitatibusque obligat ad refectionem damnorum & annuam pro poena.

Ad hoc vide-
bull. in Cr. g.
XIII. c. in
sub.

Communita-
tes bannitos
capere stu-
deant.

Executores
hujus conf.
deputat.

Clausulas de-
reg. corias
apposit.

Formam &

Communitates, ac Universitates hujusmodi (præter hoc quod ad damnorum quorumcumque sic illatorum parti læsæ damnaque hujusmodi patienti, eorumque hæredibus plenariam restitutionem, & satisfactionem omnino teneantur) ad tantumdem quantum damna illata hujusmodi extimata fuerint, Camera Apostolicæ realiter cum effectu perfolvendum omnino sint adstricti, auctoritate, & tenore præfatis extendimus, & ampliamus.

§. 11. Mandantes eisdem Communitatibus, & Universitatibus quatenus ipse in virtute sanctæ obedientiæ, & sub majoris excommunicationis, ac aliis nobis, & pro tempore existenti Romano Pontifici benevisis poenis, eisdem ficiarios, & bannitos in eorum Civitatibus, Terris, Castris, & locis commorantes, seu per eas & ea transeuntes capere, & ad populum convocandum & coadunandum campanas pulsare, eosque sic captos ad carceres conducere, aut Curie temporali consignare omnino teneantur.

§. 12. Quocirca dilectis filiis Vitellotio S. Mariæ in via lata Romanæ Ecclesiæ Camerario, & Camera præfate Thesaurario, Præfidentibus, Clericis, ac universis, & singulis Legatis, & Vicelegatis Provinciæ nostrarum, & aliis Rectoribus, ac Officialibus Civitatum, Terrarum, & partium prædictarum nobis, & dictæ Sedi mediare, vel immediate subiectarum districtè præcipiendo mandamus, quatenus præfentes literas, solemniter in singulis Provinciis, Civitatibus, Terris, & locis prædictis publicari, necnon omnia & singula in eis contenta inviolabiliter observari faciant & mandent. Contradictores quolibet & rebelles, cujuscumque status, gradus, & præminentie fuerint, sententias, censuras, & poenas præfatas damnabiliter incurrisse declarent, & declarationem hujusmodi per eos faciendam in libris malefactorum conscribi, & adnotari mandent, & faciant. Necnon capitales præfatas sententias à ministris justitiæ absque aliquo incurfu Irregularitatis exequi procurent, ac realiter & irremissibiliter exigant, invocato etiam ad hoc si opus fuerit auxilio bra. hii secularis. Necnon pro exactione poenarum pecuniarum hujusmodi contra Communitates, & Universitates, ac in eorumdem inobedientiam in temporalibus dominorum vassallos propter eorum hujusmodi inobedientiam repræfalias concedant, necnon & cum effectu exequi faciant. Attentius hortantes, & requirentes in Domino Barones, & Domicellos, ac in temporalibus dominos dicti regni, necnon illius Provinciæ, Civitatum, & locorum Governatores, & Officiales pro tempore existentes, ut præfatos homicidas, & fautores, & complices capiant, & capi procurent, captosque ad Præfides nostrarum Provinciæ, unde ipsi homicidæ, fautores, & complices originem traxerunt, conduci, & eis realiter consignari similiter cum effectu faciant.

§. 13. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apost. ac omnibus illis quæ dicti prædecessores in præfatis eorum litteris voluerunt non obstat, ceterisque contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus, communiter vel divisim ab eadem sic Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de insulto hujusmodi mentionem, & quoncumque aliis privilegiis, indulgentiis, & litteris Apostolicis, generalibus vel specialibus super recipiendis bannis, homicidis, & brigosis, ac aliis prædictis quorumcumque tenorum existant, per quæ præsentibus non expressa vel totaliter non inserta effectus earum impediri valeat quomodolibet vel differri, & de quibus, quorumque totis tenoribus de verbo ad verbum habenda sit in nostris litteris mentio specialis, quæ quoad hoc cuicquam volumus ullatenus suffragari.

§. 14. Volumus autem quod præfentes litteræ

nostræ postquam in valvis Basilicæ Principis Apostolorum, & in Campo Floræ de Urbe affixæ fuerint, omnes & singulos Cives Romanos & alios in Urbe commorantes effluxis quindecim diebus, alias vero Duces, Comites, Marchiones, Domicellos, Barones, & alios temporales Dominos, & Vicarios, Communitates, & Universitates, Civitatum, Terrarum, & locorum Sedi præfate mediatè & immediatè subiectorum hujusmodi decursu mense arceant, & contrafacientes poenas præfatas incurrant in omnibus & per omnia, perinde ac si eis omnibus & singulis contrafacientibus, personaliter & particulariter intimatæ fuissent.

Nulli ergo &c.

Dat. Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo sexagesimo sexto, tertio Nonas Julii, Pont. nostri Anno primo.

Ego Pius Catholicæ Ecclesiæ Episcopus.

Jo. Card. Moronus Episcopus Portuenfis.
Ego Jo. Mi. Cardinalis Saracenus.
Ego Jo. Cardinalis Polarianus.
Ego Jo. B. Cicada Cardinalis S. Clementis.
Ego B. Card. Tranen.
Ego Jo. Cardinalis Capisuccus.
Ego Jac. Card. Sabellus.
Ego Marcus Ant. Card. Columna.
Ego Polomaus Card. Comens.
Ego Aloysius Card. de Pad.
Ego Zacharias Card. Delphinus.
Ego Marcus Antonius Card. Bobba.
Ego Franc. Ab. Card. Conf.
Ego Jo. Ant. Card. S. Georgii.
Ego Aloysius Card. Cornelius.
Ego Lud. Card. Simoneta.
Ego Ant. Card. Granvelanus.
Ego F. Card. Paciecco de Toledo.
Ego Jo. Franciscus Card. de Gambara.
Ego Innicus Avalus Card. Arag.
Ego Guido Card. Vercellen.
Ego Benedictus Lomellinus.
Ego G. Card. Sirlus.
Ego Hier. Card. Simoncellus.
Ego F. Card. Alciatus.

Anno à Nativitate Domini 1566. Indi. 6. die 17. mensis Augusti, Pont. Sanctiss. in Christo Patris, & Domini Pii divina providentia Papa V. Anno primo, suprascriptæ litteræ Apostolicæ lectæ, affixæ, & publicatæ fuerunt ad valvas basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, & in acie Campi Floræ, dimissis illarum copiis affixis per nos Bernardinum Andreutium, & Jo. Andreæ Rogervium Apostolicos Cursos.

Julius Parinius Mag. Curs.

Sequitur ampliatio poenarum contra Fautores Bannitorum.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

¶ Ndefessa pastoralis nostræ providentiæ sollicitudo, ad ea potissimum diligenter intendit, per quæ omnes Christifideles, præsertim subditi, & S. R. E. devoti, & peculiares filii, quietè & pacificè vivere valeant. Unde nos in his nostræ provisionis remedium libenter adhibemus, ac poenas adjuicimus, ut si non pacis cupidine, saltem formidine poenæ, mandata Apostolica ad ipsorum subditorum nostrorum tranquillitatem spectantia, debitè serventur, & alias desuper disponimus, prout in Domino conspiciamus salubriter expedire.

§. 1. Cum itaque (sicut non sine gravi animi nostri molestia nuper accepimus) diversæ status Eccle-

effectus p
bica adjic

D. P. An
die 9. Julii

P. p. p. sub-
script.
Cardinalis
subscript. o-
nes.

p. publicat

Edita An. 1566.

Exordium

Causa huj
constit.

Ampliatio
penarum in
iudicium
anorum
futurum.

haſtici, & domini noſtri temporalis perſonæ, poſt-
habitis & neglectis conſtitutionibus & mandatis,
tam à nobis quam etiam aliis Romanis Pontifici-
bus prædeceſſoribus noſtris emanatis, homicidas,
rebelles, latrones publicos, graſſatores viarum,
ac in penam capitis bannitos, & alios facinoro-
ſos homines, in ſuis locis receptare, ac tenere,
eiſque diverſimode favere, conſiliumque & auxi-
lium præſtare non reformident, in non modicum
Apoſtolicorum mandatorum contemptum pluri-
mamque eorumdem ſubditorum noſtrorum per-
turbationem, & offenſionem.

§. 2. Nos igitur, ad quos pro univerſalis noſtræ
adminiſtrationis munere, præcipue pertinet incon-
venientibus huiusmodi, & ſcandalis, quæ exinde
quotidie proveniunt, omni diligentia noſtra obvia-
re, in præmiſſis, quantum cum Deo poſſumus,
opportune, matureque providere volentes, Motu
proprio, & ex certa ſcientia, matureque delibera-
tione noſtra, ac de Apoſtolicæ poteſtatis plenitudi-
ne præter alias contra talia perpetrantes à nobis jam
factas conſtitutiones, hac noſtra perpetuo valitura
ſanctione, & conſtitutione ſtatimus, ordinamus,
volumus, & decernimus, & declaramus. Quod qui-
cumque ſubditi noſtri, & ipſiſ Romanæ Eccleſiæ,
cuſuſvis ſtatus, gradus, ordinis, conditionis, nobi-
litaris, & præeminentiæ exiſtentes, etiam ſi Ba-
rones, Domcelli, & Feudatarii noſtri fuerint, ali-
quos homicidas, rebelles, publicos latrones, graſ-
ſatores viarum, ac in penam capitis bannitos, &
quoſlibet alios facinoroſos homines, illorumque
adherentes, fautores, & complices, de cetero in
ſuis locis receptaverint aut tenerint, penis con-
ſiſcationis omnium bonorum, ac demolitionis do-
morum ſuarum, & exilii perpetui una cum totis eo-
rum familiis, ultra alias penas tam in noſtris, quam
eorumdem prædeceſſorum noſtrorum deſuper con-
ſectis litteris contentas (quas contrafacientes eo ipſo
incurrere volumus) per dilectos filios Gubernato-
res, Officiales, ac Juſtitia miniſtros Provincia-
rum, Civitatum, terrarum, & locorum nobis, &
diſtæ Romanæ Eccleſiæ ſubjectorum (quibus ut
præſentes noſtras litteras omnino exequantur, ſub
indignationis noſtræ pena, diſtrictè præcipimus)
irremiſſibiliter aſſiciantur, plectantur, & puniantur,
afficiæ, & puniri debeant.

Declaratio
quædam rece-
ptatores præ-
teritos.

§. 3. Qui verò præſatos homicidas, rebelles,
publicos latrones, viarum graſſatores, in penam
capitis bannitos, & facinoroſos homines, hucſque
in locis ſuis receptaverint, aut tenerint, in exilium
una cum ipſorum familiis, ad varia loca per ipſos
Gubernatores, Officiales, ac Juſtitia miniſtros de-
claranda, & ſtatuerenda (data per eos idonea cau-
tione de huiusmodi exilio ſervando) mittantur, &
relegantur. Decernentes præterea, ſuper præmiſſis
procedi poſſe per accuſationem, delationem, in-
quiſitionem, & alio quovis modo.

Clausula ſub-
ſcripta.

§. 4. Sique per quoscumque Judices, & Com-
miſſarios quavis auctoritate fungentes, etiam S.R.
E. Cardinales, in quavis cauſa, & inſtantia (ſublata
eis, & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi, & in-
terpretandi facultate, & auctoritate) iudicari, &
deſiniri debere, necnon irritum, & inane quidquid
ſecus à quoquam quavis auctoritate, ſcienter vel
ignoranter contigerit attentari.

Clausula de-
rogatoria.

§. 5. Non obſtantibus, conſtitutionibus, & ordi-
nationibus Apoſtolicis, & etiam juramento, confir-
matione Apoſtolicâ, vel quavis ſimilitate alia robo-
ratis, ſtatutis, & conſuetudinibus, privilegiis quo-
que, indulgiis, & litteris Apoſtolicis, quibulvis in ge-
nere vel in ſpecie quomodolibet conceſſis, confir-
matis, & ſæpius innovatis (quibus omnibus etiam ſi
de illis, eorumque totis tenoribus, ſpecialis, ſpeci-
fica, expreſſa, & individua mentione habenda eſſet,
eorum tenores, ac ſi de verbo ad verbum inferren-
tur, præſentibus pro ſufficienter expreſſis habentes,
illis aliis in ſuo robore permanſuris, hac vice dum-
taxat, ad effectum præſentium, ſpecialiter, & expreſ-
ſe derogamus) ceterique contrariis quibulſcumque,

§. 6. Ceterum quia difficile foret præſentes lit-
teras ad ſingula quæque loca, in quibus opus fue-
rit, deſerri, volumus etiam ac decernimus, quod
earum tranſumptis etiam impreſſis, manu alicu-
jus Notarii publici ſubſcriptis, & ſigillo perſonæ
in dignitate Eccleſiaſtica conſtitutæ munitis eadem
prorſus fides, in iudicio & extra adhibeatur, quæ
ipſis præſentibus adhiberetur, ſi forent exhibitæ,
vel offenſæ.

Nulli ergo, &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum Anno In-
carnationis Dominicæ milleſimo quingentefimo ſe-
xageſimo ſexto, 18. Calen. Septemb. Pontificatus
noſtri Anno I.

*Sequitur mandatum quotannis dictam Bullam
publicandi.*

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

§. 1. **C**um nos nuper pro noſtri Paſtoralis offi-
cii ſolicitudine, ad pacem & quietem in
univerſo ſtatu noſtro Eccleſiaſtico inducendam &
conſervandam, mala extirpanda, ac Civitates, Ter-
ras, & loca noſtra ſicariis & aliis nefariis homini-
bus expurganda, quædam noſtras ſub plumbæ de-
ſuper conſectas litteras contra homicidas, banni-
tos, & alios facinoroſos, eorumque receptatores,
adherentes, & fautores publicari fecerimus, volen-
tesque litteras huiusmodi ab omnibus, quos ipſæ
concernunt, inviolabiliter obſervari, nec inobe-
dientes ullo modo ſeſe excuſare poſſint, Motu pro-
prio, & ex certa ſcientia, matureque deliberatione
noſtra, auctoritate Apoſtolicâ tenore præſentium
ſtatimus, ordinamus, ac ſub indignationis noſ-
træ, & mille ducatorum Camera Apoſt. applican-
dorum contrafacientes eo ipſo incurrendis penis
diſtrictè præcipimus, & mandamus, Quod quæ-
libet Communitas, Univerſitas, & populus quarum-
cumque Civitatum, Oppidorum, Terrarum, Caſtro-
rum, & locorum nobis & S.R.E. mediate vel im-
mediate ſubjectorum, ſtatim cum diſtæ noſtræ lit-
teræ, ſi earum tranſcriptum impreſſum ad eos per-
venerint, convocato eorum publico conſilio in præ-
ſentia Officialium, ſindicorum, & curam malef-
iciorum habentium, eas ibi alta & intelligibili voce
etiam vulgari ſermone illas declarando, ut melius
& facilius ab omnibus percipi poſſint, legi facere,
& deinde in eorum Archivio publico diligenter cu-
ſtodiri curare omnino debeant. Ac ſucceſſivè ſin-
gulis annis in principio cuiuslibet anni perpetuis
futuris temporibus ſimiliter, ut præfertur, eaſdem
litteras in eorum publico conſilio legendo reitera-
re teneantur.

§. 2. Quod ſi (quod non credimus) ab aliqui-
bus prætermiſſum, vel contraventum fuerit, volu-
mus, & ſub excommunicationis, & aliis arbitrii
noſtri penis etiam mandamus, quod loci Guber-
nator, Reſtor, & quilibet alius Juſtitia miniſter
quocumque nomine nuncupatus, contra ſtatutum,
& ordinationem noſtram huiusmodi non obſervan-
tes, ad executionem penarum prædictarum ſine
more irremiſſibiliter, procedat, ut quos obedi-
entia bonum ad mandatis noſtris parendum non ad-
ducit, penarum ſaltem metus à contraventione
abſtineat. In contrarium facientibus non obſtan-
tibus quibulſcumque.

§. 3. Præterea volumus præſentium litterarum
tranſumptis manu Notarii publici ſubſcriptis, &
ſigillo alicujus perſonæ in dignitate Eccleſiaſtica
conſtitutæ munitis, plenam & indubiam fidem
æque ac originalibus ipſis adhiberi debere.

Datum Romæ apud Sanctum Marcum, ſub an-
nulo Piſcatoris, die quarta Septembris, milleſimo
quingentefimo ſexageſimo ſexto, Pontificatus no-
ſtri anno I.

Tranſum-
ptorum fi-
des.D. P. A. r. die
15. Aug.Edita An. D.
1566.Præceptum
publicandi
hanc bullam
anno quoli-
bet, & aſſer-
vandi in Ar-
chiviis.Contrave-
nientium
pena.Exemplorum
fides.Dat. P. An. r.
die 4. Sept.

XI.

Exemptiones Ordinum Mendicantium, pro eorum bonis & personis, à solutione gabellarum & quarumcumque contributionum, onereque hospitandi Milites.

Aliam exemptionem generalem pro omnibus Monialibus & Sororibus cujuscumque Ordinis, à solutionibus & contributionibus hujusmodi, vide sup. in cons. tit. 5. Pii IV. De Statu, fol. 6. Et ab onere hospitandi Milites: hic iterum concessit, ut infra in cons. 148. Cum sicut.

Edita An. D.
1565.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium,

Dum ad neres, quos sacri Mendicantium Ordines in arce dominico quotidie faciunt fructus attentè respicimus, & attente considerationis indagine perscrutamur ipsorum Religionis sinceritatem, & voluntariæ paupertatis habitum, in quibus sub humilitatis spiritu devotum Altissimo præstant famularum, dignum, quin potius debitum reputamus, ut illis ea libenter concedamus, per quæ semotis quibuslibet gravaminibus promptiores ejusdem Altissimi inhæreant servitiis.

Exemptiones Ordinum Mendicantium à gabellis &c.
Pro eorum personis & bonis & colonis Mercibus & Animalibus.

§. 1. Hinc est quod nos volentes eosdem Mendicantium Ordines, & dilectos filios eorum Fratres, & Monacos, ceterasque personas, ac etiam Moniales quaslibet ejusdem Ordinis sub illorum cura degentes specialibus favoribus, & gratis prosequi, Motu proprio, non ad alicujus nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed ex certa nostra scientia ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, quod ex nunc deinceps perpetuis futuris temporibus omnes & singuli Mendicantium Ordinum hujusmodi Fratres, Monaci, & dilectæ filiæ in Christo Moniales seu Sorores, ac aliæ utriusque sexus personæ regulares ubilibet per totum Christianum Orbem diffusi, & constituti, illorumque Monasteria, cenobia, domus, Conventus, Ecclesiæ, Capellæ, Oratoria, & alia loca etiam unita, ac membra, & dependentia, necnon terræ cultæ, & incultæ, possessiones, prædia, agri, & alia omnia & singula mobilia & immobilia, ac se moventia, & ubilibet, ac in quibuscumque rebus consistentia bona, necnon eorum in dictis bonis laboratores, coloni, arrendatorii, locatarii, & affictuarii, negotiorumque suorum gestores universi quomodolibet nuncupati, nunc & pro tempore existentes in perpetuum, ab omnibus & singulis exactionibus, tam urbanis quam rusticis, necnon datis, gabellis, pedagiis, vectigalibus, collectis, impositionibus, & oneribus, ordinariis & extraordinariis, ac tam realibus quàm personalibus, meris & mixtis, etiam Subsidio triennali, & augmento, ac focularibus, Equorum taxis, Militumque hospitiis, ac alias quibuscumque nominibus nuncupatis quavis auctoritate quomodolibet impositis, & imponendis, & quæ laicis ac aliis quibuscumque quomodolibet imponi consueverunt, & in futurum imponuntur, ac ratione quarumcumque mercium, & rerum cujuscumque generis, vel qualitatis existentium, tam per mare, & aquam dulcem quam per terram undecumque & quomodocumque pro tempore delatarum, necnon animalium quorumcumque mortuorum & vivorum, & quæ aliàs quomodolibet & ex quavis causa, ac super quibuscumque rebus tam in Alma Urbe nostra quam extra eam ubilibet locorum exiguntur, & in futurum exiguntur. Necnon à contributionibus, & solutionibus in illis faciendis, ac tam pro victu & vestitu, quam quocumque alio usu suo tantum, ac tam emendo quam vendendo, & alias quomodolibet negotiando. Necnon etiam à solutione quadrantis pro singulis libris carniæ de animalibus, quæ nunc & pro tempore ex armentis occidi contigerit, necnon etiam quæ in suis ædibus, prædiis & possessionibus privati-

detinent, & nutriunt, ac à contributione sumptuum, & expensarum quæ aliquando pro pontibus, viis, aquaductibus, muris, mœnibus, aliisve machinis fruendis, & reparandis, seu reficiendis, ac Civitatum, Terrarum, & locorum quorumcumque fortificationibus, necnon etiam alias in omnibus, & per omnia, ac tam, in dicta Urbe, quam extra eam ubilibet penitus, & omnino liberi, imunes, & exempti, ac liberæ, & exemptæ, liberaque immunia & exempta sint, & esse censeantur, ac pro talibus teneantur, & reputentur. Quodque Terræ, agri, possessiones, & loca arativa, ut præfertur in illis quæ aliquando pro pascuis animalium ad certum tempus reservantur, nullatenus umquam comprehendantur, nec comprehendendi censeantur.

§. 2. Ac etiam monasteria, cœnobîa, aliaque omnia regularia loca prædicta, pro quorumcumque militum tam equitum quam peditum hospitiis, quemadmodum magno cum nostro dolore hucusque in plerisque locis factum comperimus, nequaquam assignentur, nec assignari debeant.

§. 3. Et insuper quod fructus, redditus, proveniunt, introitus, & alia quæcumque bona Monasteriorum, cœnobiorum, & aliorum locorum regularium prælatorum, ab aliis quam à Syndicis, & Procuratoribus religionis Fratribus, Monachis, & Monialibus, aliisque personis præfatis exigi, illaque dumtaxat in beneficium loci, vel sustentationem ipsorum religiosorum Fratrum, & Monialium expendi, nec per alios quoscumque quovis nomine censeantur, nec in alium quam præmissum usum converti, seu expendi possint neque debeant, nisi de consensu superiorum illius loci, cui data, vel consignata, aut donata fuerint, quem alias spectabunt, nec etiam fidei tutores, ac curatores, seu protectores, & alio nomine Sanctissimi, aut alias nuncupati, de eisdem bonis ullo modo disponere possint. Quodque id ipsam etiam de elemosynis, oblationibus, & quibuscumque aliis donativis intelligi, & observari debeat. Apostolica auctoritate tenore præsentium perpetuo statuimus, ordinamus, volumus, & declaramus.

§. 4. Necnon Fratres, Monachos, Moniales, ac alias regulares personas, eorumque monasteria, cœnobîa, conventus, ecclesiæ, capellæ, oratoria & alia loca, ac terras, possessiones, prædia, agros, & bona, necnon laboratores, colonos, arrendatarios, locatarios, affictuarios, ac gestores, prædicta, ut præfertur libera, immunita, & exempta ejusdem auctoritate, & tenore facimus, ac fore & esse decernimus.

§. 5. Mandantes propterea dilectis filiis moderis, & pro tempore existentibus Cameræ Apostolicæ Camerario, Præsidentibus, & Clericis, ac Commissariis agentibus, & officialibus quibuscumque, ut omnibus & singulis tam virorum, quam mulierum monasteriis Mendicantium Ordinum hujusmodi existentibus sub ditione nostra temporali mediatè vel immediate constitutis, tantum sal quantum pro eorum usu suffecerit singulis annis omnidilatione cessante, & contradictione remota contribuere, & assignare, ac contribui, & assignari facere debeant realiter, & cum effectu.

§. 6. Distinctis etiam in virtute sanctæ obedientiæ, & sub indignationis nostræ, ac excommunicationis majoris late sententiæ, ac duorum millium ducatorum auri de Camera pro una basilicâ S. Petri de Urbe, & pro altera medietatibus singulis Monasteriis, & locis præfatis quæ molestari, seu perturbari contigerit, irremissibiliter applicandum penis eo ipso si & quoties contravictum fuerit incurrendis, inhabentes tam illis quam dilectis filiis Legatis, Vicelegatis, Gubernatoribus, Potestatibus, Dantorum, Gabellarum, onerum, & aliorum præmissorum exactoribus, conductoribus, appaltatoribus, necnon quibuscumque Communitatibus, & Universitatibus, illarumque Officialibus, & personis, illisque quibuscumque ad quos spectat, & quomodolibet spectabit in futurum, quatenus præ-

Exemptio a onere hospitandi Milites.
Adde ut i rubi.

Reditus eorum per hos Mendicantes & eorum procuratores tantum exigi, & pro eorumdem sustentatione expendi possunt.

Repetitio exemptionum.

Sal. Mendicantibus pro eorum usu sicut gratis per Min. Itos R. Cam.

Contravenientium poena.

Decretum
itans.

centorum
putatio &
ultates.

ausula de
torior.

missa omnia & singula inviolabiliter & perpetuo observent, ac ab omnibus observari faciant, neque Fratres, Monachos, Moniales, & alias religiosas personas alioquin super præmissis quomodolibet molestant, & perturbant, neque permittant per quoscumque quomodolibet molestari, seu perturbari. Et si quis contradicere, aut quovis modo contravenire præsumpserit, per mandatum executivum contra ipsum ejusdemque dignitatis, status, ordinis, vel præeminentiæ fuerit, ipso facto procedi.

§. 7. Et sic per quoscumque Judices, & Commissarios quavis auctoritate fungentes, sublati eis, & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi, & interpretandi facultate, iudicari, & definiri debere, ac quicquid fecus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane decernimus.

§. 8. Quocirca venerabilibus fratribus Patriarchis, Archiepiscopis, & Episcopis, sive eorum Vicariis in spiritualibus generalibus, necnon dilectis filiis Curie causarum Camere Apostolicæ generali Auditori, ac Abbatibus, Prioribus, Præpositis, Decanis, Archidiaconis, Canonicis, & Capitulis, ac aliis quorumcumque Ecclesiarum Prælati, & personis, ubilibet, & in quibuscumque Regionibus, Terris, & locis existentibus, & aliis ad quos quomodolibet spectat & spectabit, per præsentis Motu simili mandamus, quatenus ipsi, & eorum quilibet per se, vel alium, seu alios præsentis litteras, & in eis contenta quæcumque ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte fratrum, Monachorum, Monialium, aliarumque Religiosarum personarum præfatarum fuerint requisiti solemniter publicantes, illique in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes faciant auctoritate nostra illos, & eorum singulos statu, ordinatione, voluntate, declaratione, constitutione, deputatione, mandato, inhibitione, decreto, aliisque præmissis pacifice frui, & gaudere, non permittentes eos desuper per Camerarium, Præsidentes, Clericos, & Commissarios Camere hujusmodi, necnon Legatos, Vicelegatos, Gubernatores, Collectores Gabellarum, & Exatores prædictos, aut quoscumque alios ad aliquam solutionem, contributionem, vel præstationem præmissorum occasione quomodolibet faciendam quovis modo cogi, & compelli, aut alias contra præsentium tenorem quomodolibet molestari, perturbari, aut inquietari. Contradiutores quoslibet, & rebelles per prædictas aliasque opportunas censuras, & penas appellatione postposita compellendo, ac legitimis super his habendis servatis processibus, censuras & penas hujusmodi incurrisse declarando, interdictum Ecclesiasticum apponendo, invocato etiam ad hoc si opus sit auxilio brachii secularis.

§. 9. Non obstantibus fel. rec. Bonifacii Papæ VIII. prædecessoris nostri de una, & Concilii Generalis de duabus litteris, dummodo ultra tres dietas aliquis auctoritate præsentium non extrahatur, ac omnibus illis quæ in contrarium per quoscumque Officiales & quosvis alios ac præsertim per Officiales Civitatis nostræ Bononiensis & quosvis alios adducta sunt hæcenus, & adducuntur in posterum, ac adduci, & allegari possent, necnon quibuscumque litteris, & causis, tam in Rom. Cur. quam extra eam ubilibet, ac coram quibuscumque iudicibus etiam Palatii nostri causarum Auditoribus, ac S. R. E. Cardinalibus super præmissis inter quoscumque quomodolibet pendentibus ac etiam instructis, & ad sententiam deductis, vel etiam à sententia terminatis, nisi in favorem Ecclesiæ fuerint; Et præsertim quædam lite inter hujusmodi Regulares, ac Cives, & Communitatem dictæ Civitatis Bonon. in Romana Curia pendente, quas & quam, ac omnes processus, & scripturas productas, & producendas, ac Registra, & sententias ubivis comparentes, & latas, ac ferendas ad nos avocamus, & penitus extinguimus, cassamus, annullamus, & delemus, perpetuumque

desuper silentium imponimus; Necnon quibuscvis Apostolicis, ac in Provincialibus, & Synodalibus Conciliis editis, generalibus vel specialibus Constitutionibus, & Ordinationibus etiam contra exemptos quomodolibet editis, & edendis, ac etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis illis & eorum singulis, sub quibuscvis nunc tenoribus & formis, ac cum quibuscvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, efficacissimis ac insolitis clausulis, irritantibusque & aliis decretis in genere & specie, etiam Motu simili & ex certa scientia etiam consistorialiter, & alias quomodolibet etiam iteratis vicibus in contrarium concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, illorum tenores præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque, aut si aliquibus, communiter vel divisim ab eadem sic Sede indultum, quod interdicti, suspendi vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Dat. Romæ apud Sanctum Marcum, sub annulo Piscatoris, die 29. Julii, millesimo quingentesimo sexagesimo sexto, Pont. nostri anno primo.

Dat. P. An. r.
die 29. Junii.

Revocatio facultatis quomodolibet concessæ Græcis, Latino ritu, & Latinis, Græco more celebrandi Missas & divina officia.

XII.

Ad materiam celebrandi Missas, vide sup. const. 5. Cum primum, fol. 191. Alia autem de Græcis indicavi sup. in Pii IV. const. 74. Romanus, fol. 112.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D.
1566.

Providentia Romani Pontificis plurimum circumspecta, nonnumquam ea quæ certis suadentibus causis per ejus prædecessores gesta sunt, ex aliis non minus rationabilibus causis alterat, & ad pristinum statum reducit, prout æquitas suadet, & in Domino conspicit expedire.

Exordium.

§. 1. Sanè cum ad notitiam nostram pervenerit, quod nonnulli presbyteri tam Græci, quam Latini antiquum S. R. E. ritum tam in celebratione Missarum, quam aliorum divinorum officiorum pervertere satagentes, diversas licentias, & facultates, Missas & alia divina officia Græci Latino more, ac Latini Græco ritu celebrandi ab Apostolica Sede, vel ejus Legatis, ac etiam majore Penitentiario pro tempore existente variis prætextibus impetrarunt, illisque jam pridem utuntur, hoc ab antiquo Catholice Ecclesiæ instituto, Sanctorumque Patrum decretis deviare considerantes, propterea hunc abusum ab Ecclesia Dei extirpare, & subvertere volentes, omnes, & singulas licentias, & facultates hujusmodi hæcenus etiam Motu proprio vel quorumvis etiam Imperatorum, Regum, & aliorum Principum contemplatione, & ex quibuscvis causis quomodolibet concessas, ac Apostolicas & alias litteras desuper concessas, illarum omnium tenores pro sufficienter expressis habentes, Apostolica auctoritate ex certa scientia ac præsentis nostre perpetua valitura constitutione revocamus, cassamus, annullamus, & irritamus, quibuscvis presbyteris tam Græcis, quam Latinis in virtute sanctæ obedientiæ, & sub indignationis nostræ, ac perpetuæ suspensionis à divinis penis districtius inhibentes, ne deinceps presbyteri Græci, præcipue uxorati Latino more, & Latini Græco ritu, hujusmodi licentiarum, & facultatum, aut alio quovis prætextu Missas, & alia divina officia celebrare, vel celebrari facere præsumant.

Revocatio
facultatum
concessarum
Græcis celebrandi ritu
Latino, & Latinis ritu
Græco.

Episcopi, & alii faciant in eorum Dioecel publicari & observari hanc constit.

Clausula derogatoria.

Forma & effectus publicationis.

Dar. P. An. 1. die 20. Aug.

Publicatio.

XIII.

Edita An. D. 1566.

§. 2. Mandantes in virtute sanctæ obedientie omnibus & singulis venerabilibus fratribus nostris Patriarchis, Prælatibus, Archiepiscopis, & Episcopis, quatenus in Civitatibus, & Dioecibus propriis præsentibus nostras litteras publicari, & sub prædictis, & aliis sibi benevisis pœnis per quoscumque Prælatos, Capitula, Clericos, Fratres, Superiores, & personas quaslibet inviolabiliter observari faciant. Contradictores quoslibet auctoritate Apostolica compescendo.

§. 3. Non obstantibus præmissis, ac quibusvis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon Ecclesiarum, Monasteriorum, Conventuum, Domorum, & aliorum locorum quorumcumque etiam juramento, confirmatione Apostolica vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis eisdem Ecclesiis, Monasteriis, Domibus, & locis, illorumque Capitulis, Conventibus, Superioribus, & Personis ac Ordinibus sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decretis, etiam ad Imperatorum, Regum, Reginarum, Ducum, & aliorum Principum instantiam, aut eorum contemplatione, etiam Mores proprio, & ex certa scientia, ac alias quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, illorum tenores pro expressis habentes, specialiter, & expresse derogamus, illaque quoad præmissa cassamus penitus, & annullamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 4. Volumus autem quod præsentibus litteræ ad valvas beati Petri Apostolorum Principis, & Cancellariæ nostræ, ac in acie Campi Floræ publicentur, & inter constitutiones extravagantes perpetuo valituras conserventur. Et quia difficile foret præsentibus ad singula quaque loca deferri, volumus, & etiam declaramus quod earum transumptis etiam impressis manu alicujus Notarii subscriptis, ac sigillo alicujus Prælati munitis eadem prorsus fides ubicumque adhibeatur, quæ præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ, vel ostensæ, &c. Nulli ergo, &c.

Dar. Romæ apud S. Marcum, Anno Incarnationis Dominicæ 1566. 13. Cal. Septemb. Pont. nostri anno primo.

Anno à Nativitate Domini 1566. Indict. 9. die vero Veneris 20. mensis Septembr. Pontif. antem Sanctiss. in Christo patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa V. anno ejus primo, præsentibus retroscriptæ litteræ affixæ & publicatæ fuerunt ad valvas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe ad Cancellariam Apostolicam, & in acie Campi Floræ per nos Bartholomæum Sottocasa, & Jo. Andreæ Rogerium præfati S. D. N. Papæ Curf.

Nicolaus de Martheis Mag. Curf.

Revocatio constitutionis Pii IV. & invocatio alterius constitutionis Greg. XI. & Clem. VI. super exprimendis gradibus propinquioribus, in dispensationibus matrimonialibus impetrandis in diversis gradibus.

De materia dispensationum vide etiam infra in const. 62. Ad Romanum. ubi notabo.

Sanctissimus in Christo Pater, & Dominus noster Dominus Pius divina providentia Papa V. Attendens per quamdam constitutionem dudum per felicem Pium Papam IV. Sanctitatis suæ prædecessorem editam, qua cavetur, quod in dispensationibus matrimonialibus, pro diversis, consanguinitatis seu affinitatis ex eodem stipite provenientibus gradibus conjunctis non remotioris solum, prout olim fieri solebat, sed etiam propinquioris graduum expressa mentio fieri debeat, alioquin dispensationes, ac de super confectæ litteræ nullius sint roboris vel momenti, prout in dicta constitutione plenius continetur, à dispositione juris communis, & laudabili, ac

Enarratio conflictionis Pii IV.

Revocatio & innovatio de qua in rubr.

Clausula subscrita.

PP. subscripti.

Publ. P. An. 1. die 20. Aug.

XIV.

Edita An. D. 1566.

Dubium circa 2. cap. Concilii Tridentini, sess. 24. de reformatione matrimonii, quoad impedimenta cognationis spiritualis.

Dubium circa ejusdem Conc. cap. 4. quoad impedimenta affinitatis ex fornicatione.

antiquo Romæ Curæ stylo nimium recedi, ac favorem matrimonii debitum restringi.

§. 1. Vollenque propterea juri & stylo prædictis, necnon piæ mem. Gregorii XI. & Clementis VI. Rom. Pont. etiam Sanctitatis suæ prædecessorum vestigiis inhaerendo, sacramento & libertati matrimonii, quantum cum Deo potest favere, statuit & ordinavit quod de cetero in quibuscumque dispensationibus quas pro matrimoniis contractis, aut contrahendis inter viros & mulieres, invicem diversis prohibitis consanguinitatis & affinitatis, aut mixtis, ex communi seu ab eodem stipite surgentibus, quicumque illi sint, dummodo primum quocumque non attingant, cum in eo Sanctitas sua nunquam dispensare intendat, gradibus conjunctos, ab eadem Sanctitate sua & pro tempore existente Romano Pontifice, aut Sede Apostolica impetrari, vel alias concedi contigerit, ac litteris commissionibusque desuper etiam locorum Ordinariis faciendis gradus remotior attendatur, trahatur secum propinquiorum, ac ob id sufficiat remotiorum tantum gradum exprimere, obtentis tamen postea super propinquioribus litteris declaratoriis juxta Gregorii & Clementis prædecessorum hujusmodi constitutiones, quas quoad hoc innovavit, & inviolabiliter observari mandavit; dispensationesque seu dispensandi commissiones, ac desuper confectas litteras, & processus habitos per eadem dispensatis, seu his cum quibus dispensari mandatur propter proximioris gradus hujusmodi non expressionem, de subreptionis, vel obreptionis vicio, seu intentionis defectu notari non posse, sed in omnibus, & per omnia suffragari, perinde ac si in litteris seu commissionibus hujusmodi de proximioris, seu utroque gradu, specialis & expressa mentio facta fuisset.

§. 2. Sique per quoscumque Judices & Commissarios, etiam S. R. E. Cardinales, sublati eis, quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, judicari, & definiti debere, ac quicquid fecus super his & quocumque quavis auctoritate scienter vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane decrevit.

Constitutione Pii prædecessoris hujusmodi ceterisque contrariis non obstantibus quibuscumque, Placet, publicetur, & describatur. M.

Lectione & publicata sunt superscripta regula Romæ in Cancellaria Apostolica, Anno Incarnationis Dominicæ 1566. die vero Martis 20. mensis Augusti, Pontific. præfati Sanctiss. D. N. Papæ Anno 1. A. Lomelinus Custos.

Declarationes Concilii Tridentini sess. 24. cap. 2. & 4. circa impedimenta cognationis spiritualis, & affinitatis ex fornicatione, quoad matrimonia post confirmationem Concilii contracta, & de cetero contrahenda.

Hujus Concilii confirmatio habetur in const. 73. Pii IV. Benedictus. fol. 111. ubi dixi de ejus indictione, prosecutione, & quo tempore illud ligare cæperit.

Sanctissimus in Christo Pater, & Dominus D. N. Pius divina providentia Papa V. Ad cujus notitiam pervenit quod cum in decretis Sacri Concilii Tridentini certæ tantum persone enumerentur, inter quas dumtaxat cognatio spiritualis deinceps contrahatur, ab aliquibus revocatur in dubium an qui ultra personas in dictis decretis enumeratas quocumque cognatione spirituali ante confirmationem dicti Concilii, conjuncti erant absque dispensatione Apostolica matrimonium post dictam confirmationem contrahere poverint, ac hodie & de cetero contrahere possint cum ante prædictam confirmationem id facere de jure minime liceret.

§. 1. Et insuper cum in eisdem decretis statuatur affinitatem, quæ ex fornicatione contrahitur, in illis solummodo attendi debere qui primo vel secundo affinitatis gradu conjunguntur, ab aliquibus pariter dubitetur. An matrimonium inter personas,

quæ

quæ ante confirmationem dicti Concilii tertio, vel ulteriori huiusmodi affinitatis gradu conjunctæ erant, post confirmationem dicti Concilii absque dispensatione Apostolica contracta & quæ deinceps contrahi contigerit, dirimi debeant.

§. 2. Sanctitas sua ad tollendum omne dubium, eos qui ante confirmationem prædicti Concilii cognationem spirituales contraxerunt, dummodo non sint ex personis in dictis decretis enumeratis, & inter quas tantum Concilium voluit deinceps contrahi, hanc cognationem spirituales matrimonii vinculo inter se absque dispensatione aliqua, liberè & licitè copulari posse, ac matrimonia etiam post confirmationem huiusmodi, absque dispensatione Sedis Apostolicæ inter eas jam contracta valere, plenamque roboris firmitatem obtinere.

§. 3. Et similiter matrimonia post confirmationem Concilii absque dispensatione Apostolica sequuta, & quæ de cetero sequuntur, inter personas quæ ante dictam confirmationem, affinitatem (infra tamen secundum gradum ex fornicatione provenientem) contraxerant, propter huiusmodi affinitatem dirimi non debere, sed valida, & efficacia existere declaravit.

§. 4. Sicque per quoscumque Judices, & Commissarios, etiam S. R. E. Cardinales, sublata eis quavis aliter iudicandi, & interpretandi facultate, iudicari, & definiri debere, ac quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter attentari contigerit irritum & inane decrevit.

Placet publicetur, & describatur. M.

Leſta, & publicata fuit ſupraſcripta regula Rome in Cancellaria Apoſtolica, Anno Incarnationis Domini 1566. die verò Martis 20. menſis Auguſti, Pontificatus præſati Sanctiſſi. D. N. Pape anno primo.

A Lomellinus Custos.

Sequitur alia declaratio circa impedimenta cognationis spiritualis.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Cum illius vicem licet minimè suffragantibus meritis, geramus in terris, de cuius vultu prodiit iudicium, & videt oculi æquitate, officii nostri debitam prosequimur actionem, sic obsecuros sacrorum Canonum sensus ita aperire studemus, ut piis Christi fidelium mentibus nulla dubitandi occasio relinquatur.

§. 1. Sane licet ex eo quod in Concilio Tridentino decretum fuerit cognationem spirituales inter eos tantum contrahi, qui suscipiunt baptismum de baptismo, ac baptizatum ipsum, & illius patrem & matrem, necnon baptizantem, & baptizatum, baptizatique patrem & matrem, in reliquis personis, quæ per antiquos canones occasione cognationis huiusmodi contrahere prohibeantur, omne impedimentum sublatum esse videatur, adhuc tamen ab aliquibus dubitari accepimus, an saltem impedimentum cognationis spiritualis huiusmodi inter maritum vel uxorem suscipientis, & patrem ac matrem baptizati vigeat, propterea quod prohibitum de uno conjugē, de altero etiam prohibuit esse videatur.

§. 2. Nos piarum mentium quieti, & matrimoniorum favori (quantum ex alto nobis permittitur) consulere volentes, à præcis verbis Concilii minimè discedendum in præmissis esse censuimus. Et propterea nullum amplius impedimentum ratione cognationis huiusmodi subesse decernimus, & declaramus, quominus inter dictos maritum vel uxorem suscipientis, & baptizatum, baptizatique

patrem, & matrem, & quascumque alias personas tam ex parte suscipientis quam baptizantis, & baptizati, in dicto Concilio nominatum non expressas, matrimonium liberè & licitè contrahi possit, & ita ab omnibus iudicari debere mandamus atque statuimus.

§. 3. Decernentes irritum & inane, si quid secus à quoquam quacumque dignitate, auctoritate, & potestate prædicto contigerit iudicari.

§. 4. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, aliisque contrariis quibuscumque.

§. 5. Volumus autem quod præsentis litteræ in Cancellaria nostra Apostolice, & in acie Campi Floræ de more publicentur, & inter Constitutiones perpetuè valituras describantur. Et quia difficile foret præsentibus ad singula quæque loca deferri, volumus quod earum transumptis, etiam impressis, manu alicujus Notarii subscriptis, ac sigillo alicujus Prælati munitis eadem prorsus fides adhibeatur, quæ præsentibus adhiberetur, si forent exhibita vel ostensa.

Nulli ergo, &c.

Dat. Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo sexagesimo sexto, 4. Cal. Decemb. Pont. nostri anno primo.

Vilas de curia Jo. Barengus.

Anno à Nativitate D. 1566. indictione 9. die verò 9. mensis Decembris, Pontif. Sanctiſſi. D. N. Pii divina providentia Pape V. anno ejus 1. retroſcripta littera Apoſtolica affixa, & publicata fuerunt ad valvas Cancellarie Apoſtolice, & acie Campi Floræ, ut moris eſt per nos Antonium Clerici, & Joannem Andreæ-Rogerium præſati S. D. N. Pape Curſores.

Stephanus de Olea Mag. Curf.

Sequitur alia declaratio circa impedimentum affinitatis, & fornicationis.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

AD Romanum Pontificem spectat canonicas sanctiones, quæ expressiorem sensum postulare videntur, re diligenter perspecta ita declarare, & alias providere, ut omnis dubietas de piis Christi Fidelium mentibus evellatur.

§. 1. Sane postquam ex eo quod Tridentina Synodus impedimentum affinitatis ex fornicatione proveniens, per quod non solum matrimonium contrahi prohibetur, sed etiam postea factum dirimitur, ad eos tantum restrinxit, qui primo & secundo gradu conjunguntur, in ulterioribus verò gradibus statuit matrimonium postea factum non dirimi, à pluribus Christi fidelibus, ut accepimus, est dubitatum, an licet in ulterioribus gradibus huiusmodi matrimonium contractum non dirimatur, adhuc tamen juxta antiquos canones contrahi prohibeatur.

§. 2. Et propterea nos omnem ambiguitatem tollere, & animarum tranquillitati, ac matrimonii libertati quantum cum Deo possumus confutellere volentes, Declaramus, & Apostolica auctoritate decernimus, nullum hodie impedimentum remanere quo minus in ulterioribus gradibus huiusmodi liberè & licitè matrimonium contrahi possit.

§. 3. Et ita ab omnibus iudicari debere mandamus atque statuimus, decernentes irritum & inane si quid secus à quoquam quacumque dignitate, auctoritate, & potestate prædicto contigerit iudicari, & non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, aliisque contrariis quibuscumque.

§. 4. Volumus autem quod præsentis litteræ in

Decretum irritans.

Clausulæ derogatoriæ.

Forma publicæ, quæ mox sequitur.

D.P.A.R. die 28. Novemb.

Publicatio.

Edicta An. D. 1566.

Exordium.

Dubium secundum circa dict. c. 5. Conc. Trid.

Declaratio ejusdem dubii.

Decretum irritans.

Forma publ.
quæ mox se-
quitur.

Dat. P. An.
die 28. Nov.

Publicatio.

Edita An. D.
1566.
Causa hujus
confit.

Prohibitio
petendi Rega-
lia à Card-
inalibus vel
eorum hære-
dibus.

Cancellaria nostra Apostolica, & in acie Campi Flo-
ræ de more publicentur, & inter Constitutiones
perpetuo valituras describantur; & quia difficile
foret eas ad singula quæque loca deferri, quod ea-
rum transumptis, etiam impressis, manu alicujus
Notarii subscriptis, ac sigillo alicujus Prælati mun-
itis, eadem prorsus fides adhibeatur quæ præsen-
tibus adhiberetur si forent exhibitæ vel ostensæ.

Nulli ergo, &c.

Dat. Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incar-
nationis Dominicæ 1566. 4. Cal. Dec. Pont. nostri
anno primo.

Anno à Nativitate Domini 1566. indict. 9. die verò
10. mensis Decemb. Pont. S. D. N. D. Pii divina
providentia Papæ V. anno ejus primo, retrospectæ
litteræ Apostolicæ affixæ, & publicatæ fuerunt Ro-
mæ in valvis Cancellaria Ap. St. & in acie Campi
Floræ, ut moris est, per nos Joannem Andream
Rogerium, & Camillum Cherub. Curs.

Stephanus de Olea Mag. Curs.

XV.

Familiares S. R. E. Cardinalium, & aliorum Præ-
latorum Romanæ Curie, regalia, vel stipendia
non conventa, ab eis, vel eorum hæredibus pe-
tere prohibentur. Et ordo in satisfaciendis eor-
undem creditoribus præfinitur.

Hæc stipendia infra annum à die obitus debitorum, &
pro biennio tantum peti posse decrevit Paulus III.
in constit. 47. Cum sicut. sup. in Tomo I.

De configuratione annuli & ornamentorum Capel-
læ, de quibus hic agitur, vide Julii III. constit. 8.
Cum sicut. De prælatione autem miserabili-
um personarum vide inf. in constit. 25. Accepi-
mus. Aromatariarum autem, vide in constit. 47.
Clem. VIII. Laudabilis. Et Pistorum vide constit.
36. Six. V. Cælestis. Quanto autem tempore
duret instantia harum discussionum, videre est
sup. in Clem. VII. constit. 17. Cum ex multo-
rum, ubi notavi in Tomo I.

Sanctiss. in Christo Pater & D. N. D. Pius divi-
na providentia Papa V. Accepto, ut asseruit,
quod nonnulli familiares Reverendiss. DD. S. R.
Eccl. Card. veluti Parafrenarii, Credentarii, Co-
qui, Magistri Stabuli, ita vulgariter nuncupati,
& forsitan alii cujuscumque sint nominis, & mi-
nisterii, defunctis Cardinalibus eorum Dominis,
consuetudinis, privilegii, seu quocumque alio
prætextu, in non modicam memoriarum ipsorum
defunctorum Cardinalium ignominiam, Parafre-
narii videlicet mulas cum instrumentis, & phale-
ris suis, & alii alia ipsorum Cardinalium instru-
menta, & bona, per ipsos familiares respectivè
in eorum ministeriis teneri, & exerceri solita,
etiam invitatis ipsorum defunctorum hæredibus, &
Cardinalibus, sive testamentorum executoribus
ab ipso testatore, sive pro hæredibus ab intesta-
to per Constitutiones Pontificas deputatis, etiam
argentea, & pretiosa sibi arripere, & usurpare,
ac pro illis, plerumque etiam inter se rixari, &
gladiarii consueverunt, cum magno totius Cur-
iæ scandalo, & Cardinalatus dignitatis opprob-
rio, & universi etiam S. R. E. Cardinalium Pa-
rafrenarii, Caudatarii, universitates, & collegia
inter se facientes in novorum Cardinalium crea-
tione, & obitu, & forsitan aliis certis temporibus
ab eisdem novis Cardinalibus, & defunctorum
hæredibus respectivè certas pecuniarum summas,
aut res, alias, magna cum importunitate, &
temeritate exigere, & quodammodo extorquere
sunt soliti.

§. 1. Volens tam scandalosorum abusu occasionem
tollere, omnes, & singulas consuetudines
& usus pro prædictis, & aliis quocumque ipso-
rum Cardinalium familiares, & ministros, tam
singulariter quam communiter, & collegialiter, ut
præfertur, seu alias quomodolibet prætendi, & exin-
de actiones, & juris quocumque remedia allegari,

& exerceri solita, penitus abrogavit, & subulit,
ac de cetero familiaribus ipsis prædictorum occa-
sione nullum jus, nullamque penitus actionem,
aut juris remedium competere, neque eis aliqua
ex bonis, & pecuniis prædictis deberi, sed eos
debere esse contentos suis laicis, si qua eis prom-
issa fuerunt, & eo amplius si defunctorum hæ-
redibus, aut Cardinalibus prædictis respectivè ali-
quid familiaribus ipsis, sive ut singulis sive ut uni-
versis, aut alias ex mera ipsorum hæredum, & Car-
dinalium liberalitate dare placebit, irritumque &c.
decrevit.

§. 2. Non obstantibus præfentis constitutionibus
prædictis, & forsitan per Rom. Pontif. suos præde-
cessores, & per se, & Sedem Apostolicam etiam ite-
ratis vicibus concessis, confirmatis, approbatis, &
innovatis, privilegiis quoque, &c. tenores, &c.
latissime extendens, &c.

Apud S. Marcum in Consistorio habito die Ve-
neris 6. Septembris 1566.

Sequitur alia in prædictis constitutio.

PIUS PAPA QUINTUS

Motu proprio, &c.

Cupientes litium in fractibus, qui post obitum
Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalium, &
aliorum quorumcumque Prælatorum in Rom. Cur.
decedentium inter eorum creditores oriuntur, dum
se unusquisque altero potius contendit, dum
aliqui prætextu mercedis & regalarum, alios cre-
ditores præcedere conantur, quo fit ut sæpe nu-
mero pauperum, qui eorum substantiam bona
fide crediderunt, non tantum debita satisfactione
defraudentur, sed etiam longis, & periculosis li-
bus gravissimo cum eorum impendio defarigantur,
hac perpetuo valitura constitutione sancimus, ut
defunctis in Romana Curia eam Sanctæ Romanæ
Ecclesiæ Cardinalibus, quam Patriarchis, Archie-
piscopis, Episcopis, Cameræ Apostolicæ Cleri-
cis, Sacri Palatii Apostolici Auditoribus, Refe-
rendariis, majoris præfidentibus Abbreviatoribus,
& aliis quibuscumque Prælati, nullus super eorum bo-
nis mercedem petere possit in præjudicium cre-
ditorum, nisi evidenter appareat, quod sub certa
constituta mercede, ad servitium hujusmodi ac-
cessisset.

§. 1. Et ut etiam servetur forma constitutionis
fel. record. Pauli Tertii super hoc concessa, quam
(quatenus opus sit) innovamus.

§. 2. Similiter eorumdem Cardinalium, & Præ-
latorum familiares abstineant à petitione regalia-
rum cujuscumque generis, juxta formam decreti
de Fratrum consilio de mense Septembris proxime
præteriti super hoc editi.

§. 3. Porro in satisfactione creditorum dicto-
rum Cardinalium, & Prælatorum in Rom. Cur. de-
cedentium talis ordo servetur, ut post configurationem
annuli, & ornamentorum Cappellæ dilecti filio
Cameræ Commissario (respectu Cardinalium) in
primis & ante omnia faciendam.

§. 4. Prior causa sit eorum, qui pro usu dicto-
rum Cardinalium, & Prælatorum, eorumque fami-
liarum res cibarias dederint.

§. 5. Secunda eorum, qui res vestiaras, & ad
usum corporis ipsorum, non autem ad ornatum,
vel ad pompam necessarias, subministraverint:
quandoquidem ex causis hujusmodi creditores, ut
plerumque sint pauperes, ut mercatores, qui pro
illis advehendis innumera pericula subeunt, & sine
illis præfati Cardinales & Prælati statum eorum di-
gnitatis, usque ad obitum minime sustentare po-
tissent, & requisiti, utique verisimiliter omnem
honestam obligationem, etiam cum juramento, &
in forma Cameræ contraxissent.

§. 6. Tertia vero causa sit præfatorum mercena-
riorum, quibus certa constituta merces appareat;

Contrario-
rum derega-
tio.

Dat. P. An.
die 6. Sept.

Edita An. D.

Familiares
non petant
mercedem
non conven-
tam.

Servetur bul-
la Paul. III.
cit. in rubr.

Regalia non
petantur ut
in decreto
præced.

Camera pro
annulo &
Capella præ-
feratur om-
nibus.

Creditoribus
postea pro
cibariis.

Succesive
pro vestia-
riis.

Mercenarii
deinde quæ
convenit
de mercede

qui-

quibus satisfactis in ceteris servetur jus commune. Quod non tantum in futuris, sed etiam in pendenti- bus negotiis locum habere decernimus, etiam si ex alia causa creditores instrumenta & obligatio- nes, etiam in forma Camerae habeant.

§. 7. Quo circa dilecto filio Curiae causarum Cam- erae Apostolicae Auditori nunc & pro tempore existenti, tenore presentium committimus, & mandamus, quatenus praemissa omnia & singula per haereditas & testamentorum executores & ceteros ad quos pro tempore spectabit, etiam per cen- suras Ecclesiasticas, & penas etiam pecuniarias, & alia juris & facti remedia opportuna, inviolabi- liter observari faciat.

§. 8. Constitutionibus, & ordinationibus Apo- stolicis, ac quibuscumque privilegiis, obligationibus in forma Camerae concessis, ceterisque contrariis non obstantibus quibuscumque.

Placet Motu proprio. M.

Sequitur declaratio quoad Aromaticos.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

§. 1. **Q**uia sicut accepimus, à nonnullis dubitari contingit, An praemissus Motus proprius in ea parte qua creditores occasione cibiorum ceteris etiam anterioribus, & habentibus hypothe- cam praeruntur extendatur, vel contineat Aroma- tarios, qui occasione suorum aromatum, & alia- rum mercium ad exercitium eorum spectantium creditores existunt.

§. 2. Nos dubitationem huiusmodi tollere cu- pientes, animadvertentes quod illorum merces ad victum quotidianum necessariae non existunt, sed potius pro deliciis servantur, aut pro Medicamen- tis, quorum occasione magnum sibi quantum pa- rant, & nihilominus speciali privilegio sunt muniti, cujus vigore concurrunt, cum obligatione in forma Camerae. Propterea declaramus dispositionem su- pradictam, Aromaticos quoad medicinalia, & expen- sas funerum non comprehendere, nec eos qui fuerunt de eorum credito satisfacti, praestito jura- mento de restitutione prioribus & posterioribus, cum non teneantur illud servare, ex quo non vergit in dispendium salutis aeternae.

Fiat Motu proprio. M.

XVI.

Jurisdictionis Consulum Artis Agriculturae Urbis, cognoscendi causas rerum ad Artem spectan- tium inter quascumque personas, & confirma- tio. Statutorum ejus.

Latius declaratur hac jurisdictione, in cap. 23. seqq. ipsorum Statutorum postea editorum à Greg. XIII. Et ejusmodi Artis nonnulla erant privilegia, de quibus mox inf. in const. 19. Cupientes, cum ibi indicandis.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Pia devotio, & assidua cura, & diligentia, quas dilecti in Christo filii Consules, & Collegium nobilis, antiquae Artis Agriculturae Urbis, erga nos & Sanctam Sedem Apostolicam Almamque Urbem nostram indefinenter exhibent, nos inducunt, ut quae ad dicti Collegii conservationem, & augmen- tum fore dignoscimus liberaliter, & proprio motu concedamus.

§. 1. Cum igitur dilecti filii praedicti nuper antiquissima eorum statuta id usum exigente emenda- verint, & supplerint, multaque etiam de novo, quae ad necessariam dicti Collegii, ac jurisdictionis Consulum, ipsius Collegii conservationem, & aug- mentum necessaria visa fuerunt, statuerint, &

addiderint, quae omnia diligenter inspicere, & emen- dari mandavimus, prout inspecta, & emendata fuerunt.

§. 2. Nos igitur attendentes quod opera, cura, diligentia, & impensa praedictorum dilectorum filiorum, Deo Optimo Maximo favente factum est, ut Civitas nostra, quae retroactis temporibus mari invecit, & undique perquisito frumento indige- bat, nostris felicissimis temporibus non solum fru- mento abundet, sed etiam quod plus est vicinis, & exteris, terra marique jam agri Romani frumen- tum subministrari possit prout sapienter subminis- tratum fuit, & quod non minus est, aer nostrae Almae Urbis ex assidua agrorum cultura, silvarum & nemorum extirpatione palustrumque locorum exsiccatione, factus est tutior, clementior, & fa- lubrior, & considerantes quod qui agrorum cultu- rae incumbunt non debent libis, & per diversa Tribunalia trahi, ne forte à cultura propter lites, dum forum prosequi cupiunt retrahantur, ac etiam attendentes, quod de rebus spectantibus ad artem, nullus magis quam ipsi de arte cognoscere, & ter- minare valent: cupientesque dictum Collegium illiusque Consules, & eorumdem jurisdictionem amplioribus gratis, & favoribus prosequi, eosdem dilectos filios à quibuscumque censuris ad effectum validitatis presentium absolventes, & absolutos fore censentes.

§. 3. Motu proprio, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicae potestatis plenitudine, statuta praedicta sicut praedictum est reformata, emendata, & suppleta tenore presentium approbamus, confir- mamus, & homologamus, eisdemque nostrum, & Sedis Apostolicae robur adjicimus.

§. 4. Eaque auctoritate praedictis inter homines de arte praedicta, deque rebus spectantibus ad artem, juxta eorumdem statutorum declarationem consuevitque status, gradus, & conditionis exis- tant, etiam si Clerici & Curiales Romanae Curiae sequentes aut quocumque alio privilegio muniti existant, servari volumus, & mandamus, eosdem- que dictis Consulibus, eorumque jurisdictioni pro rebus spectantibus ad artem suppetimus, subji- cimus, & submittimus.

§. 5. Et sic per quoscumque Judices tam ordina- rios, quam delegatos judicari, decerni, & definiri volumus, & mandamus, sublata aliter judicandi, & interpretandi facultate, irritum quoque, & inane decernentes quidquid in contrarium conti- gerit attentari. Volumus autem quod de subre- ptione, & obreptione, aut intentionis defectu, pre- sentis nostri Motus proprii quovis modo opponi non possit, attento quod Motu proprio.

§. 6. Non obstantibus praemissis, ac quibuscum- que privilegiis, & indultis etiam quibuscumque perso- nis, ac judicibus ordinariis, sive delegatis, etiam Dohancensis Almae Urbis respectu assiduatorum dam- num dantium in segetibus, & casualibus Urbis per nos, & quoscumque Romanos Pontifices editis, quorum omnium privilegiorum, & indultorum tenores hic pro sufficienter expressis, perinde ac si de verbo ad verbum inserta, & expressa forent, haberi volumus, ceterisque contrariis quibuscum- que.

§. 7. Et quod presentium sola signatura sufficiat, & ubique fidem faciat, attento quod in Urbe.

Fiat Motu proprio. M.

Datum Romae apud Sanctum Marcum, quinto Id. Septembris Anno primo.

Slavi baptizati, ad Conservatores Almae Urbis pro libertate confugientes, libertatem consequun- tur, & Cives Romani efficiuntur.

Hoc prius statuit Paul. III. sed postea revocavit. Ejus ergo constitutiones uti otiosas ponere nolui, stante hac postrema piaque dispositione.

Commenda-
tio nobilis
Artis Agri-
culturae Ur-
bis.

Confirmatio
statutorum.

Jurisdictione
Dominorum
Consulum
ejusdem Ar-
tis.

Decretum
irritans.

Clauseulae de-
rogatoriae.

Sola signa-
tura sufficit.

Dat. P. A. I.
die 9. Sept.

XVII.

Executor
bullae depu-
tatur Audit.
Cam.

Contraria
tolluntur.

PP. subscrip.

Dubitatio
quoad Aro-
maticos.

Declaratio
dictae dubita-
tionis.

Edita An. D.
1566.

Exordium.

Novorum
statutorum
editio.

Edita An. D.
1566.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Dignum, & rationi congruum esse videtur, ut ea quæ & veteri instituto Officium Senatus Cameræ Urbis, & ipsius Conservatores consecuerunt, vel alias illis concessa existunt, munimine Apostolicæ superioritatis in posterum roborentur, & in usum, si adhuc non existant, reducantur.

§. 1. Nos siquidem, qui etiam in minoribus constituti, semper & continuè Populum Romanum paterno dilectionis amore prosecuti sumus, & ipsius privilegia, ea maxime, quæ Christiano Populo necessaria & utilis esse videntur, confirmare desideramus, fel. rec. Pauli Papæ III. prædecessoris nostri, qui per suas in forma brevis litteras, ipsos Conservatores & Populum in facultate privilegio mancipia quæque servos vulgariter nuncupata, qui baptizati, & Christiani prius facti fuerint, ad Senatus Cameræ ipsius Urbis officium, ac illius Conservatores pro eorum libertate confugientia, prout ex veteri consuetudine hæcenus, ut ipse prædecessor narraverat, Conservatores præfati tum ex speciali privilegio Ponticali, tum Imperiali potestate ab aspero servitutis iugo liberandi facultatem habuerant, etiam si lapsu temporis deperdita fuissent, reintegravit, vestigiis inhærendo.

§. 2. Motu simili, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine eosdem Conservatores pro tempore existentes speciali favore prosequentes, ac litteras Apostolicas Pauli prædecessoris, ac si de verbo ad verbum infererentur pro expressis habentes, illasque in totum juxta illarum tenorem confirmantes, ipsos Conservatores, ac Officium Senatus Cameræ Urbis in jurisdictionem, facultatem, & potestatem mancipia quæcumque sub iugo servitutis quomodolibet alligata, ad hujusmodi Senatus Cameræ Urbis Officium pro tempore existentis ac ipsius Urbis Conservatores confugientia, ac libertatem acclamantia, per eosdem Conservatores libertate donari, & Romani Cives, liberi que homines effici possint, prout ipse Paulus prædecessor reintegraverat, reintegramus, ac pro potiori cautela de novo damus, concedimus, & gratiose impartimur. Itaque mancipia seu servos eadem, quæ ab eisdem in posterum liberabuntur, pro liberis hominibus, & Romanis civibus in omnibus, & per omnia ubique haberi, teneri, & reputari debere, Dantes & concedentes eisdem mancipiis, sic ut præfatur ab eisdem Conservatoribus liberatis, facultatem in judiciis contra quascumque personas standi, contrahendi, testandi, & alia faciendi, quæ ceteri cives Romani liberi homines facere consueverunt, & faciunt, & ea in omnibus & per omnia habere, & libera esse decernimus, volumus, & mandamus, ac ex nunc prout ex tunc, & è contra, omni juri cujuslibet statutorum, consuetudinum, & aliorum contrariorum rigore penitus rejectis liberamus.

§. 3. Et sic in præmissis omnibus per quoscumque tam ordinarios quam delegatos etiam quacumque jurisdictione fungentes iudices, & personas, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter judicandi, sententiandi, & definiendi facultate, potestate, & auctoritate, judicari, sententiarum, & definiri debere, ac quicquid fecus, scienter vel ignoranter contra præsentium tenorem fieri & attentari contigerit irritum & inane decernentes.

§. 4. Non obstantibus Motu proprio & seu litteris forsan desuper per viam decreti vel alias per dictum Paulum prædecessorem sub Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Id. Novembris, Anno Pontificatus sui quintodecimo supradictarum suarum litterarum in forma brevis etiam forsan ad instantiam

dicti Populi Romani decretis, derogatoriis, ac quibuscumque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon dictæ Urbis, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, consuetudinibus, reformationibus, & decretis, ac quibuscumque privilegiis, indulgentiis & litteris Apostolicis in genere vel in specie per quoscumque alios Romanos Pontifices prædecessores nostros, tam sub plumbo quam in forma brevis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis, & decretis etiam irritantibus, & aliis in contrarium quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, tenores illorum ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso infererentur præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis alias in suo robore permansuris hac vice dumtaxat, specialiter & expresse derogamus, ac omnibus illis, quæ dictus Prædecessor voluit non obstat, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 5. Volumus autem quod sola signatura præsentium sufficiat, & ubique, in iudicio & extra fidem faciat, regula contraria non obstante, seu si videbitur, litteræ desuper per breve nostrum seu sub plumbo, aut alias prout melius videbitur expediri possint.

§. 6. Et quoad illos servos dumtaxat, qui antea ut præfatur sacro baptismatis lavacro mediante, Christiani facti fuerint, & non de alio.

Datum Romæ apud S. Marcum, 5. Id. Septemb, Anno 1.

Jurisdicção Vicarii Papæ, circa obligationes & contractus initos in forma Cameræ Apost. quoad loca pia, & personas Ecclesiasticas, in Urbe.

De hac jurisdictione adnotationes vide sup. in Tomo I. in consl. 36. Pauli III. Licet.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Considerantes varia dispendia, & incommoda quæ Ecclesiis, Monasteriis, & aliis piis locis illorumque Rectoribus, Abbatibus, Archipresbyteris, Prioribus, Præpositis, & aliis beneficiatis in Alma Urbe consistentibus inferuntur, si ad diversa Tribunalia Urbis evocari, & proprium Vicarii nostri in dicta Urbe Tribunal deferere cogantur, & ob id sæpe jura, & instrumenta, munimenta, & scripturæ bonorum eisdem Ecclesiis, Monasteriis, & locis piis deperdantur in detrimentum eorumdem.

§. 1. Idcirco indemnitati eorum consulere prout tenemur, & occurrere volentes, per facultatem, & potestatem dilecto filio Alexandro Riario causarum Cameræ Apostolicæ Auditori per fel. rec. Pium Papam IV. prædecessorem nostrum sub variis concessionibus concessam, & attributam, quarum omnium tenores hic pro sufficienter expressis etiam cum illarum Dat. haberi seu inferri posse volumus, & decernimus, potestati & jurisdictioni Dilecti filii nostri Jacobi tituli S. Mariæ in Cosmedin presbyteri Card. in Alma Urbe ejusque districtu Vicarii generalis circa personas Ecclesiasticas, loca pia, illorumque bona quæ jurisdictioni præfati Vicarii subsistunt, etiam si inter contractus cum solita obligatione in forma Cam. seu Ripæ & Ripertæ intervenierint, aliquod præjudicium factum non fuisse, sed quod idem Vicarius Cardinalis in omnibus, & per omnia procedere possit quoad personas, & bona præfata prout ante eam ceteri Vicarii pro tempore quondam Franciscus Albericus, & alii ejusdem Cameræ Auditores prædecessores in dicto Auditoratus officio tuncungebantur procedebant, tenore præsentium auctoritate Apostolica declaramus, & sic per quoscumque, &c. sublata, &c. irritum quoque &c.

Paul. III. reintegravit facultatem Conservatorum Urbis, libertate donandi Sclavos ad eos pro libertate confugientes.

Hic Pont. eandem facultatem confirmat.

Et ita judicari mandat.

Clausulæ derogatoriæ.

Sola signatura sufficit.

Declaratio pro Sclavis baptizatis.

Dat. P. An. r. die 9. Sep.

XVIII.

Edita An. D. 1566.

Causa hujus constitutionis.

Jurisdicção Vicarii in obligation. Cameralibus.

ANNO
1566.
Sola signa-
tura sufficit.

PIUS QUINTUS.

211 ANNO
1566.

Clausula de-
rogatoria.

Papae sub-
scrip.
Dat. P. A. 1.
die 12. Sept.

XIX.

§. 2. Solamque praesentis nostri Motus proprii signaturam, in iudicio & extra etiam absque illius registratura fidem facere, regula contraria non obstant decernimus.

§. 3. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, & facultatibus, & indultis eidem Auditori Camerae concessis, ceterisque contrariis nequaquam obstantibus.

Placet Motu proprio M.

Datum Romae apud Sanctum Marcum pridie Id. Septemb. Anno I.

Privilegia pro exercentibus artem Agriculturae in districtu Almae Urbis, & frumenta ac blada afferentibus ad eam. Prohibitoque eos impediendi, vel illa ultra usum necessarium suae familiae emendi.

Horum privilegiorum declarationem & ampliacionem vide inf. in Tomo III. in Clem. VIII. conf. 70. Inter. & Paul. V. conf. 70. Pastoralis. Et signanter privilegium fori, dedit eisdem hic Pius sup. in conf. 16. Pia. fol. 209.

Contra vero impediendes delationem frumentorum ad Urbem, & eementes ultra usum, attende Confit. 50. Greg. XIII. Volentes, cum ibi notandis.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D.
1566.

Exordium.

Causa huius
confut.

Approbatio
prohibitionis
Clem. VII.
cit. in rub.
circ. 2. par-
tem ipsius
rubr.
In aliis au-
tem est im-
mutata ut
ibidem no-
tante in apo-
stolis & rubr.

Cupientes pro commissio nobis Apostolico munere omnibus regimini ac curae nostrae subiectis populis, non modo spiritualia fideliter, ut debemus, dispensare, sed in temporalibus etiam quantum cum Deo possumus salubriter providere, nullam praetermittimus diligentiam pro pauperum, qui sub hoc nostro temporali gubernio vivunt, sublevandis necessitatibus, ac potentiorum oppressionibus propulsandis.

§. 1. Hinc est, quod cum ad rei frumentariae negotium, quod praecipua pro eorumdem pauperum sustentatione & victu cura eget, animum nostrum intendimus, summopere nobis laborandum cognoscimus, ut fraudibus, quae in dies Annoe aditioribus sunt, quo carius eam vendant, omni studio, ac diligentia provideatur. Intelligentes itaque non sine animi nostri molestia, divites ipsos, ac potentes non modo propria ipsorum frumenta bladaque, quae ex praediis suis, propriae agriculturae colligunt, in horreis recondere, ac conclusa suppressere, & donec illorum pretium pro eorum avaritia adactum conspiciant, ab omni prorsus venditione abstinere, verum etiam a laboratoribus, operariisque propriis, ac etiam subditis (si Barones sint) illud vili pretio comparare, donec tantum undique tritici copiam cumulerint, ut pauperes, qui aliunde frumentum venale non reperiunt, necessitate ducti ab eisdem divitibus, & Baronibus eo pretio emergere cogantur, quod venditorum ipsorum avaritia affectaverit. Quinimo eos etiam qui ad Urbem hanc nostram, quo undique ex omnibus mundi partibus Christi fideles conflant, frumenta, bladaque praedicta importare cupiunt, omni via & ratione impedire, ac retardare praesumunt, contra Summorum Pontificum praedecessorum nostrorum decreta ordinationisque & in maximum etiam animarum suarum periculum.

§. 2. Nos praemissis remedium aliquod opportunum adhibere omnino volentes, in primis divites praedictos omnes, ac Barones hortantur in Domino, & monemus, ut Dei largitatem in se ipsos agnoscentes, pauperibus benigniores in posterum se habeant, atque ab huiusmodi detestabili frumentario quaestu prorsus abstinant, memores scriptum esse, quod qui abscondit frumenta maledicetur a populis, benedictio autem super caput

vendendum. Quod si propria frumenta, quae ipsi ultra usum eorum superfluit debitis temporibus, prout certe deberent, vendere detrectant, ac saltem ab alienorum emptione, & illicita negotiatione abstinant, & quam Dei benignitas populis fertilitatem anni concedere dignatur, eam ipsi invidiose perturbare non praesumant. Quod si tam a praedictis emptionibus frumentorum, quam ab impediendo subditos eorum, alioque ad Urbem Romam frumenta, bladaque omnia deferentes in posterum non abstinuerint, sciant se penas in constitutionibus Romanorum Pontificum praedecessorum nostrorum, praecipueque Clem. VII. pro abundantia rei frumentariae, & Agriculturae exercentiae, anno a Nativitate Domini nostri JESU Christi 1523. decimo Cal. Martii, editis incursum, quas quidem Praedecessorum nostrorum dispositiones praesenti nostra perpetuo duratura constitutione in hac parte innovamus.

§. 3. Declarantes insuper omnes cujuscumque generis, qualitatis, & conditionis fuerint, qui frumentum, aliaque blada ultra usum familiae suae, animo, & intentione illa carius vendendi emunt, sine licentia in scriptis ab Ordinario Annoe pro tempore obtenta, quam tamen rationabili de causa tantum, & gratis omnino concedi volumus, non modo penas amissionis ipsius frumenti, & bladorum, & alias pecuniarias ab ipso ordinario pro tempore impositas incursum, sed etiam Dei omnipotentis maiestatem summopere laesuros, graviterque in eo peccaturos. Barones vero, & alios dominos, terrarumque universitates, omnesque alios nobis & Sanctae Sedi Apostolicae, mediate vel immediate subiectos cujuscumque status, aut conditionis extiterint, etiam si Episcopali, Metropolitana, Patriarchali, & Cardinalatus etiam dignitate praesulgeant, qui subditorum suorum frumenta, aliaque blada, ultra usum, & necessitatem suam, & familiae suae emerint, quique accedentes ad Urbem cum frumentis aliisque rebus ad victum necessariis, directe vel indirecte impediunt, vel remorantur, penas in dicta Clem. VII. praedecessoris nostri constitutione expressas incursum, videlicet privationis feudorum, suspensionis, excommunicationis, & interdicti iuxta tenorem, & formam praedictae constitutionis aliorumque in ea expressorum, quas in hac parte per praesentes nostras innovamus, & earum tenores hic pro sufficienter expressis haberi volumus.

§. 4. Ut vero facilius, commodiusque omnes possint ad Urbem hanc nostram frumenta, bladaque libere conveyere, eos ut praefertur dicta de causa ad Urbem accedentes, ab omni pedagio, gabella aut onere quocumque pro dictis frumentis bladorumque transportatione eximimus ac liberamus, immunisque & exemptos esse, ac fore perpetuo declaramus.

§. 5. Mandantes omnibus tam universitatibus terrarum quam Gubernatoribus, Rectoribus, aliisque dominis, nobis ac Sanctae Sedi Apostolicae, mediate vel immediate subiectis quocumque titulo, vel dignitate praesulgeant, etiam si S. R. E. Card. existant, ne praedictorum frumentorum, aliorumque bladorum ad Urbem venientium occasione quicquam solvi ab ipsis vectoribus faciant, aut quocummodo in Civitatibus, Terris, ac Locis regimini eorum subiectis dicta de causa solvi permittant, aut patiantur, sub penis supradictis aliisque arbitrio nostro declarandis.

§. 6. Volumus etiam quod venientes, ea de causa ad Urbem videlicet ad frumenta, bladaque praedicta conveyenda, tuti omnino sint ab omnibus civilibus executionibus, tam pro eorum debitis, quam pro Cameralibus quibuscumque exactio- nibus, & repraesalitiis quacumque de causa, & contra quoscumque decretis, seu decernendis. Irritum, & inane, decernentes quicquid contra, & adversus praedictos, seu eorum animalia, & res quas secum praedicta de causa detulerint, tam in

Declaratio
dictae prohi-
bitionis.

Exemptio
deferentium
blada ad Ur-
bem a solu-
tione gabel-
larum, &
aliorum one-
rum.

Prohibitio
quidquam
ab eis exi-
gendi.

Privilegium
eorumdem
ne molestentur
pro eorum
debitis
etiam Came-
ralibus veni-
endo & redeun-
do ab Urbe.

Privilegium
exercituum
agriculturarum
ne molestentur
pro debitis,
dum colunt,
vel fructu
menta, aut
colligant.

Boves arato-
rios, &c. pro
debitis capi
non debent,
& in facitis
hypothecis
non compre-
henduntur,
& gaudent
privilegiis
bonorum
dotalium.

Executorum
deputatio.

Clausule de-
rogatoria.

Iussio publi-
candi.

Sola signa-
tura sufficit.

PP. subscrip-
Admissio in
Cam. Ap. St.
P. nif An. 1.
die 11. Oct.

Publicatio.

accedendo ad Urbem, ibique commorando per bi-
dium, ad effectum vendendi ea quæ attulerint,
quam etiam in redeundo ad eorum solitam habita-
tionem, executum, vel quoquomodo attentatum
fuerit. Inhibentes omnibus cuiuscumque generis
executoribus, seu curiæ ministris, ne prædictos
dicta de causa ad Urbem accedentes ibique ut præ-
fertur commorantes, seu inde discedentes mole-
stare præsumant sub penis arbitrio præfati Annonæ
pro tempore infligendis.

§. 7. Eos etiam qui agriculturam ipsam pro com-
muni bono laudabiliter intra XL. ab Urbe millia-
rium exercent, dignis favoribus & privilegiis pro-
sequi volentes, tam melius quam feminum tem-
pore, dum scilicet colligendo, vel seminando tri-
tico verisimiliter occupantur, ab omni supradicta
executione, etiam si ex obligatione in forma Ca-
meræ processerit, tutos omnino, ac salvos fore, &
esse declaramus, dummodo aliunde quam ex agri-
culturæ fructibus solvere non possint.

§. 8. Boves vero aratorios, omniaque instru-
menta ad agriculturam necessaria non supradictis
temporibus tantum, sed perpetuo pro quavis civili
obligatione auferri, aut alia ratione impediri pro-
hibemus. Declarantes insuper in tacitis quibus-
cumque hypothecis à quacumque quavis de causa
inductis prædictos boves aliaque instrumenta præ-
dicta minime comprehensa fore. Et in summa præ-
dictis rebus agriculturæ inservientibus, tamquam
commoditatis immo necessitatis publicæ instru-
mentis omnia privilegia concedentes, quæ bonis
dotalibus de jure concessa esse reperiuntur. Sic-
que per quoscumque Iudices, &c. irritum &
inaue, &c.

§. 9. Quæ omnia, quo fidelius ab omnibus ob-
serventur, volumus dilectos filios nostros Ludovi-
cum Simonetam, Marcum Antonium Amulium,
& Vitellotium Vitellium Camerarium S. R. E. Card.
ea quæ ipsorum gravitatem, & virtutem decet dili-
gentia curare, Dantes eis in præmissis plenam &
omnimodam facultatem, & eam quam nos ipsi
habemus potestatem pro præmissorum executione,
observantiaque cum potestate declarandi, & deci-
dendi si quid in præsentis nostra constitutione, de-
claratione, aut definitione egere videbitur.

§. 10. Non obstantibus constitutionibus, & or-
dinationibus Apostolicis, necnon Urbis, Terra-
rum, Oppidorum, & villarum quarumcumque ju-
ramento, confirmatione Apostolica, vel quavis fir-
mitate alia roboratis, statutis, consuetudinibus,
reformationibus & decretis, privilegiis quoque, &
indultis Apostolicis, communitatibus, universitati-
bus, baronibus, ac aliis præfatis, à dicta Sede Apo-
stolica, vel à nobis forsitan concessis, quæ eis quo
ad præmissa nolumus suffragari. Necnon pactis,
& conditionibus, ac omnibus aliis quæ dicti Præ-
decessores voluerunt non obfata contrariis qui-
buscumque.

§. 11. Ceterum ne de præmissis quemquam du-
bitare contingat, volumus quod præsentium litem-
rarum tenor per omnia loca publica dictæ Urbis
solemniter publicari debeat, ipsæque litteræ sic
publicatæ perinde ardeant omnes quos concer-
nunt, ac si singulis eorum personaliter intimatæ
fuissem.

§. 12. Volumus autem quod præsentis nostri Mo-
tus proprii sola signatura sufficiat, & ubique fidem
faciat in iudicio & extra, quacumque regula seu
constitutione Apostolica contraria non obstante.
Placet Motu proprio. M.

Die 11. Octob. 1566. Admissa est hac cedula Motus
proprii ex decreto Camere, & registrata libro se-
cundo signaturarum Sanctiss. D. N. Papæ apud me
Notarium. fol. 113.

Hier. de Tarano.

Anno à Nativitate Domini 1566. indictione 9. die
vero 20. mensis Octob. Pontific. Sanctiss. in Christo
Patris, & D. N. D. Pii Papæ V. Anno 1. infra-

criptæ litteræ Apostolicæ affixæ fuerunt, ac publi-
cate in acie Campi Floræ, ac valvis Cancellariæ
Apostolicæ, ut moris est, per nos Franciscum Sot-
tocasa, & Nicolaum de Mattheis Curf.

Philibertus Chapuis Mag. Curf.

Quod mulieres, etiam prætextu cuiusvis privi-
legii, facultatis, aut licentiæ, ingredi non pos-
sint, (exceptis casibus hic expressis) Monas-
teria & claustra, cuiuscumque Ordinis regu-
laris.

Revocationem autem licentiarum huiusmodi tam in-
grediendi Monasteria Monialium quam virorum,
habes inf. in const. 28. Greg. XIII. Ubi gratia,
in const. 74. Pauli V. Monialium. De claustra
autem Monialium vide hic sup. in const. 8. Circa
fol. 196. ubi notavi.

Mulieres sæculares non possunt uti his licentiis nisi
habito consensu Monialium Monasterii, quod
præstari debet expresse, capitaliter, & per se-
creta suffragia prout statuit S. D. N. Urban. VIII.
const. 29. Sacrosanctum inf. tom. 4.

PIUS PAPA QUINTUS,

Ad perpetuam rei memoriam.

Regularium personarum, quæ relicto sæculo Dei
se obsequio dedicarunt, pro commissio nobis
officio, quieti consilere cupientes, ad ea remo-
venda, quæ religiosum earum propositum impe-
dite possunt, curam nostram libenter intendimus,
ut nulla re, quæ eas à divino cultu avocet præpe-
ditæ, secundum Ordinem suorum regularia insti-
tuta, & decretum Sacri Tridentini Concilii, tran-
quillis mentibus gratum Altissimo impendere pos-
sint famularum.

§. 1. Quia igitur, & Carthusiensium Ordinis, &
aliorum regularium vitam professorum quies non
parum solet, sicut accepimus, perturbari, propte-
rea quod mulieres modestæ matronalis obli-
tæ, ac Monasteria eorum, contra ipsorum insti-
tuta, prætextu confessionum, aut aliarum litte-
rarum Apostolicarum ingredi audeant, ipsi
etiam Abbatibus, Præpositis, Prioribus, & aliis
præsentibus aliquando recusantibus, & resistenti-
bus, non sine magna eorum molestia, nec sine
gravi laicorum nimis offensione ac scandalo, si
quando admitti etiam facile videantur.

§. 2. Huic rei providere volentes, Motu proprio
& ex certa scientia, ac de Apostolicæ potestatis
plenitudine, omnes & singulas facultates ac licen-
tias ingrediendi monasteria, ac domos Carthusien-
sium, & aliorum quorumcumque regularium Or-
dinum, etiam Mediantium, mulieribus, cuius-
cumque status, gradus, ordinis, conditionis, &
quacumque dignitate, ac præminencia præditis,
etiam Comitibus, Marchionibus, Ducibus, sub qui-
buscumque verborum tenoribus & formis, & cum
quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis,
aliisque fortioribus, efficacioribus, & infol-
litis clausulis, necnon irritantibus decretis ab Apo-
stolica Sede quomodocumque concessas, quarum
tenores, perinde ac si de verbo ad verbum præ-
sentibus infereretur, haberi volumus pro ex-
pressis, tenore præsentium revocamus, & cassas,
irritas, & inanes esse decernimus.

§. 3. Districte prohibentes mulieribus quidem
prædictas facultates, & licentias prætentibus,
sub excommunicationis latæ sententiæ poena, post-
quam harum litterarum notitiam habuerint, à qua
non possint nisi à nobis, aut Romano Pontifice,
qui pro tempore fuerit, absolvi, præterquam in
mortis articulo, ne dictas domos & monasteria
ingredi audeant.

§. 4. Ipsi vero Monasteriorum & Conventuum
Abbatibus, Præpositis, Prioribus, & aliis Præsen-

XX.

Edita An. D.
1566. & 1570.

Exordium.

Causa huius
constit.

Revocatio li-
centiarum.

Prohibitio &
poenæ mulie-
rum ingre-
dientium.

Poenæ Reli-
giorum es
admittentiū.

tibus quocumque non nine vocatur, & eorum Monachis, Canonicis, & Fratribus, five mendicantibus, five non mendicantibus, sub privationis officiorum, quæ in præsentia obtinent, & inhabilitatis in posterum, ad illa & alia omnia, & suspensionis à divinis ipso facto, sine alia declaratione, incurrendis poenis, ne eas introducere, admittere præsumant.

Clausulæ derogatoriz.

§. 5. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque.

Iussu poenali publ.

§. 6. Volumus autem & mandamus, ut hæc litteræ ad valvas Basilicæ beati Petri Apostolorum Principis, & in Cancellaria nostra, atque in acie Campi Floræ de more publicentur.

Transumptum fides.

§. 7. Quia vero difficile foret hæc litteras ad omnia loca deferri, volumus & declaramus, ut eorum exemplis & transumptis manuscriptis vel impressis, & magis alicujus Notarii publici subscriptis, ac sigillo alicujus Prælati munitis, par ubique fides habeatur, ac si præsentibus exhibitis essent vel ostensa.

Dat. P. An. 1. die 14. Oct.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris die 24. Octobris millesimo quingentesimo sexagesimo sexto, Pontificatus nostri Anno primo.

Publicatio.

Anno à Nativitate Domini 1566. indict. 9. die 28. mensis Octobris, Pontificatus S. D. N. Pii Papæ V. Anno primo, superscripta littera affixæ, & publicatæ fuerunt in locis superscriptis, per nos Bernardinum Andreutium, & Joannem Andream Rogerium Apost. Cur.

Philibertus Chappuis Mag. Cur.

Sequitur declaratio constitutionis præfæctæ.

Edita An. D. 1570.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

DECEt Romanum Pont. certissimum mentis suæ interpretem, si quando quippiam dubietatis in litteris ab eo emanatis occurrat, suæ declarationis oraculo quamprimum explanare.

Hic Pont. edidit const. præsid.

§. 1. Cum alias à nobis emanaverint quedam litteræ in simili forma brevis sub die 24. Octobris 1566. Pontific. nostri anno primo. In quibus, mulieribus quibuscumque Monasteriorum Regularium ingressus cum derogatoriis clausulis, & irritantibus decretis prohibetur, & alias prout in illis plenius continetur.

Extensio dictæ prohibitionis ad quascumque mulieres.

§. 2. Nos intuitu, ac in favorem Congregationis Montis Virginis aliquas dubitationes, quæ circa dictarum litterarum, & mentis nostræ intelligentiam oriri possent elucidare, & submovere volentes, supplicationibus dictæ Congregationis, nobis super hoc humiliter porrectis inclinati, Apostolica auctoritate tenore præsentium dicimus & declaramus, fuisse & esse mentem & intentionem nostram quod dictæ litteræ non solum comprehenderent, & comprehendant mulieres habentes prætendentes facultatem & indulta ingrediendi Monasteria, sed etiam omnes & quascumque mulieres alias, tam in genere, quam in specie.

Declaratio ejusdem prohibitionis.

§. 3. Significantes nihilominus, prout significamus, quod propter hoc, & prædictas nostras litteras, non intelleximus nec intelligimus, quod mulieribus præcluderetur. nec præcludatur, aditus ad Monasteria & loca Regularia dictæ Congregationis ac eorum claustra, quando in eis Missæ, & alia divina officia celebrantur, ac dum processiones fiunt, & quando Christi fidelium cadavera ibi sepeliuntur, ac etiam pro eis suffragia fiunt, sed liberè perpetuò concedimus eidem omnibus mulieribus facultatem, ut ad illa loca dictæ Congregationis in quibus dicta pia opera exercentur cum aliis Catholicis personis accedere liberè & licitè possint & valeant.

Alia declaratio.

§. 4. Et similiter quod quando divinum verbum in Claustris Monasteriorum, & Regularium loco-

rum Congregationis hujusmodi proponitur, vel per aliam quamcumque causam tantus concursus populi fuerit, quod commode ingredi non possint, & egredi per portam Ecclesiæ, perpetuò concedimus, ut dictæ mulieres, una cum aliis secularibus personis possint ingredi, & egredi per portam Claustris Monasteriorum & locorum Regularium Congregationis hujusmodi, dummodo recto tramite accedant ad portam qua exitur è Monasterio, sicque volumus pariter & indulgemus.

Clausulæ præservativæ.

§. 5. Decernentes præsentibus de subreptionis vel obreptionis, aut nullitatis vitio, seu intentionis nostræ, vel quovis alio defectu notari vel impugnari non posse, sicque in præmissis ab omnibus ceteris, & ita per quoscumque Judices & Commissarios quavis auctoritate fungentes, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari & definiti debere; irritum quoque & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Derogatio contratiatorium.

§. 6. Non obstantibus præmissis, ac dictis nostris litteris, cum inde secutus, & quibuscumque aliis Apostolicis universalibus, provincialibus, & synodalibus, & specialibus & generalibus constitutionibus & ordinationibus, necnon etiam Monasteriorum & locorum prædictorum, ac illorum Ordinum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, & etiam novis reformationibus, privilegiis quoque, indultis, & etiam aliis litteris Apostolicis, in genere vel in specie, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis, etiam Motu proprio, & constitutorialiter, ac aliis quomodolibet concessis, confirmatis, & innovatis, quibus omnibus & singulis, illorum tenores, ac si de verbo ad verbum infererentur, præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanens. hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

D. P. An. 6. die 16. Julii.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris, die decimasexta Julii, millesimo quingentesimo septuagesimo, Pontificatus nostri anno quinto.

De veritate exprimenda à Procuratoribus Penitentiaræ, in dispensationibus matrimonialibus, ceterisque gratiis Apostolicis, sub poena falsi.

XXI.

Alias penas habes infra in const. 83. In omnibus, ubi agitur de Reformatione Penitentiaræ.

De Materia autem hujusmodi dispensationum vide infra in const. 61. Ad Romanum. ubi notabo.

PIUS PAPA QUINTUS.

Edita An. D. 1566.

Motu proprio, &c.

Causa const.

CUM sicut accepimus nonnulli suæ conscientiæ prodigi, ac propriæ salutis immemores, ut facilius à nobis, & Sede Apostolica dispensationes matrimoniales, & alias gratias & concessiones obtineant, gradus consanguinitatis vel affinitatis, aut cognationis spiritualis, ac scientiam illorum aliter quam eis à principio ab ipsis partibus significatum vel narratum fuerit exponunt, & si matrimonia hujusmodi adhuc contracta non fuerint, pro contractis narrant, ac alias diversimode veram facti speciem, tam in ipsis dispensationibus matrimonialibus, quam pro aliis quibuscumque gratiis & concessionibus obtinendis immutent, ac propterea cum non solum in impetrationibus hujusmodi falsitas narretur, verum etiam in partibus plerumque pro verificatione gratiarum hujusmodi veritas immutetur, & falsitas committatur.

Veritas exprimitur sub poena falsi.

§. 1. Nos igitur hujusmodi abusus & erroribus obviare cupientes, Motu proprio &c. omnes

&

Executorum
deputatio.

& singulos Procuratores, tam officii sacre Penitentiariæ, seu Contradictarum, quam alios quoscunque Solicitatores & Scriptores quos Copistas vocat, qui veritatem facti à narratione, quam ab ipsis partibus habuerunt, quoad substantialia, & qualitates necessario exprimendas diversam faciunt, seu quoquo modo intervertunt, aut mutant, depravant, & per subreptionem & obreptionem gratias à nobis extorquent, penam falsi incurere, & ea puniri omnino debere decernimus & declaramus.

§. 2. Mandantes propterea Almæ Urbis Governatori, Cameræ Apostolicæ Auditori & Vicario, quatenus in præmissis reos & culpabiles repositos poena falsi, ut præmittitur, puniant; cum potestate citandi, etiam per edictum constituto summarie de non tuto accessu, aliaque dicendi & faciendi in præmissis necessaria seu quomodolibet opportuna.

Clausulæ de-
rogatoriæ.

§. 3. Non obstantibus præmissis, constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis nequaquam obstantibus, irritum quoque & inane &c. dicique &c. iudicari & definiri debere, sublata &c. decernentibus.

Sola signatu-
ra sufficit.

§. 4. Et quod præsentis Motus proprii, & absque data & registratura sola signatura sufficiat, & ubique fidem faciat, in iudicio & extrâ, regula contraria non obstante.

Transumptio-
rum fides.

§. 5. Ejusque transumptis manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis eadem prorsus fides adhibeatur, quæ præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Forma publi-
cationis.

§. 6. Quodque Cameræ & Cancellariæ Apostolicæ, ac audientie causarum Palatii Apostolici valvis, & in acie Campi Floræ dimissis inibi copiis affixis omnes ita afficiant & ardeant, ac si illis personaliter intimatæ fuissent.

Placet Motu proprio. M.

Pape sub-
scripte.Publ. An. 1.
die 5. Dec.

Die 5. Decemb. 1566. superscripta littera Apostolicæ affixe & publicatæ fuerunt in locis superscriptis, dimissis in eisdem locis copiis affixis, per me Nicolaum de Matthæis Curf.

Jo. Guerardi Mag. Curf.

XXII.

Declaratio quod sententiæ in favorem reorum de hæresi inquisitorum à quibuscumque Judicibus contra stylum vel dispositionem jurisdictionis Officii sanctissimæ Inquisitionis latæ & ferendæ, non transferant nec transeant in rem judicatam. Et jurisdictioni Cardinalium Inquisitorum ipsas causas revidendi. Et confirmatio constitutionis Pauli Quarti editæ contra Hæreticos.

Hæc bulla Paul. IV. est 19. sup. in Tomo I. Cum ex. Et hujus Congregationis Cardd. facultates indicabo in Six. V. const. 74. infra in hoc Tomo II.

Edita An. D.
1566.

PIUS PAPA QUARTUS.

Motu proprio, &c.

Iste Pont. in minoribus existens, Inquisitor fuit, & abusus hic descriptos venire cognovit.

Inter multiplices curas quæ animum nostrum assidue pulsat, illa in primis est, prout esse debet, ut Ecclesiæ Dei nobis ex alto commissæ, purgatæ, immo quantum fieri potest procul exterminatis omnibus hæresibus & pravis erronearum opinionum dogmatibus, tutò militare, & tamquam navis in tranquillo mari, sedatis omnibus tempestatum fluctibus & procellis, secure navigare, & ad optatum salutis portum pervenire possit. Cum itaque nos dum in minoribus constituti sanctissimi Officii Romanæ, & universalis contra hæresim pravitatem Inquisitionis negotia pertractaremus, tandem ex longo usu, atque experientia rerum magistra cognoverimus, quod multi rei delati, & in prædicto sanctissimo officio, seu alibi coram locorum Ordinariis, & hæreticæ pravitatis Inquisitoribus processati, ac de hæretica pravitare in-

quisiti falsos testes ad eorum defensionem examinari faciendo, ac compurgatorum de eorum vita & doctrina minime informatorum opera, & testimonio se juvantibus, ac diversis aliis illicitis modis, excoGITATISQUE dolosis excusationibus, & malitiis prædictum sacrum officium sanctissimæ Inquisitionis, ceterosque Judices, & etiam Romanos Pontifices deludendo, & decipiendo, plures etiam veluti innocentes definitivas à prædictis processibus, & Inquisitionibus absolutorias, & præcedente canonica purgatione eorum assertæ bonæ & catholice fidei vitæ & doctrinæ declaratorias sententias, seu decreta ab eodem sanctissimo officio, aliisque locorum Ordinariis sive delegatis, & Inquisitoribus, ac etiam Roman. Pont. prædecessoribus nostris obtinuerunt, seu extorserunt, quas sententias, & decreta præfati Romani Pont. etiam cum perpetui silentii impositione, ac inhibitione, ne dictum sanctissimum Officium, aut alii Inquisitores ad ulteriora procedere possent seu deberent, necnon etiam cum causarum avocatione ad solum Romanum Pontificem sub cujus protectione submtebantur, aliisque derogatoriis derogatoriis, & efficacissimis clausulis, ac etiam irritantibus, & aliis decretis, etiam in forma gratiosa ampliando, per varios & varios eorum Motus proprios, ac etiam sub plumbo vel annulo Piscatoris expeditas litteras, etiam in consistorio, seu consistorialiter emanatas confirmarunt. Unde eveniebat quod prædicti rei inquisiti, sub velamine & tutamine prædictarum sententiarum declaratoriarum, & litterarum Apostolicarum, & præsertim vigore clausulæ inhibitoriæ contra Inquisitores factæ confidentes, clam, & etiam aliquando palam in antiquis eorum erroribus contra fidem catholicam perseverando, nunquam ad gremium Ecclesiæ vere redibant, immo cum aliis securè, & tamquam Catholici conversando, eorumdem aliorum animos corrumpere, & inficere, ac in suas hæreticas opiniones trahere de facili poterunt, in tutius reipublicæ Christianæ non modicum scandalum, & in præjudicium, prædictorumque delatorum animarum perniciem & iacturam.

§. 1. Nos huic scandalo adeo periculoso & contagioso obviare, dictarumque animarum saluti consulere, & providere, omnemque jurisperitorum dubitatem & alterationem, ac quæcumque impedimenta & obstacula, propter quæ sancta Inquisitio hæreticæ pravitatis, quomodocumque & qualitercumque impediretur, vel retardaretur, tollere volentes, Motu simili & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, in primis omnes & singulas, ac quascumque litteras Apostolicas sub quacumque verborum forma, etiam in prædictis ac quibuscumque aliis causis hæresis, etiam Motu proprio &c. ac etiam consistorialiter &c. & alias quomodolibet emanatas, necnon etiam desuper signatas motuum propriorum & alias cedulas quaslibet ad jus & iustitiam, ac juris terminos reducentes, necnon Fisco prædicti sancti officii Inquisitionis, & aliorum ordinariarum & delegatorum Judicum adversus prædictas litteras inhibitiones, ac etiam derogatoriis derogatorias, aliasque clausulas quaslibet os aperientes, & quatenus jurisdictionis dispositioni vel stylo dicti officii sint contraria, illas penitus, & perpetuo revocantes. hæc nostra perpetua, perpetuoque valitura universalis constitutio, omnes & singulas, & quascumque, etiam ex capite assertæ innocentie absolutorias, vel etiam præcedente canonica purgatione sub quacumque verborum forma declaratorias sententias, etiam definitivas, & decreta in eorumdem reorum inquisitorum & delatorum favorem per prædictum sanctissimum Officium, aliisque Judices ordinarios & delegatos, ac etiam Roman. Pontifices latas & lata, aut in futurum per nos etiam & successores nostros Romanos Pontifices pro tempore existentes, ferendas & ferenda, nunquam fecisse, nec in futurum posse facere transitum in rem judicatam, Apostolica auctoritate declaramus, decernimus, statuimus & ordinamus.

*Et ideo reducit ad terminos juris quascumque litteras Apostolicas in causis hæresis emanatas, & revocat easdem quatenus sint contrarie dispositioni, jurisdictioni ac stylo Inquisitionis, & declarat quod sententiæ in reorum inquisitorum favorem contra dictum stylum & dispositionem latæ & ferendæ nunquam transeant in judicatum.

verfis publicis negotiis, ob eorum experientiam & doctrinam implicatos & occupatos esse, ut dictum Officium concernentes eo celerius expediri possint, quo illi prepositi aliis negotiis fuerint minus implicati, loco ipsorum quibus etiam aliorum quorundam negotiorum ad Sedem Apostolicam spectantium curam dedimus, in eodem sacro officio Inquisitionis hereticæ pravitatis deputavimus Inquisitores dilectos filios nostros Bernardinum Scotum tit. S. Matthæi, Scipionem tit. S. Anastasie Rebibam, Franciscum tit. S. Crucis in Jerusalem Pacichum, Joannem Franciscum de Gambara tit. S. Pudentianæ S. R. E. Cardinales.

§. 2. Ne tamen in posterum, de eorum jurisdictione hesitari contingat, Motu simili, & ex certa nostra scientia deputationem hujusmodi tenore præsentiarum approbamus, & confirmamus, & quatenus opus sit de novo eosdem quatuor Cardinales generales hereticæ pravitatis in eisdem Alma Urbe, Curia Romana, ac tota Reipublica Christiana creamus, confirmamus, & deputamus.

§. 3. Et insuper pro faciliiori earum expeditione statuimus, decernimus, & ordinamus, ut quicquid per majorem partem præsentium, vel aliquibus absentibus, per duos ex prædictis Cardinalibus deputatis, qui in Congregatione pro dicto Officio intervernerint, seu convenerint, dictum gestum, statum, ordinatum, decretum, terminatum, seu sententiarum extiterit, sit validum & firmum, ita & taliter quod nullo modo impugnari possit, perinde ac si omnes & singuli Cardinales prædicti in dicta Congregatione intervenissent, & convenissent, & major pars eorum consensissent; cum plena & omnimoda jurisdictione, auctoritate & potestate dicto Officio, ac omnibus prædictis Cardinalibus, & eorum prædecessoribus, per nos vel alios summos Pontifices alias quomodolibet concessis & attributis; irritum &c. decernentes.

§. 4. Non obstantibus præmissis, ac quibuscumque aliis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac omnibus illis, quæ nos & Prædecessores nostri voluerunt, & volumus non obstat; ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 5. Decernentes solam præsentis nostri Motus proprii signaturam sufficere; & ubique in iudicio & extra fidem facere, regula contraria non obstant.

Placet Motu proprio. M.

XXIV.

Mitigatio constitutionis Pii IV. quoad appellationes condemnatorum, factæ deposito, vel data cautione, & declarato quod confessus non appeller.

Ista Pii IV. const. 52. est supra fol. 71. ubi notavi.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Pius IV. post alios Pont. prohibuit appellationem non factæ deposito in causis criminalibus, ut in const. 52.

§. 1. Cum (sicut accepimus a dilecto filio Alexandro Riario Auditore nostro, & appellationum Judice ordinario) ex diversis litteris in forma Motus proprii per felic. recordat. Pium Quartum, & alios Pontifices prædecessores nostros, & præsertim sub dat. Romæ apud S. Petrum, duodecimo Kal. Junii, Anno sexto (quorum omnium tenores hic volumus pro expressis haberi) emanato, de non admittendis appellationibus, neque decernendis inhibitionibus, monitoriis, & citationibus in causis criminalibus Fiscum nostrum quomodolibet concernentibus, in quibus reos contingerit condemnari, nisi prius factæ actuali deposito penarum, in quibus ex delicto delinquentes ipsi, aut illi qui pro eisdem fideiussissent, vel ex contractu quoquo modo condemnandi venirent, (aut eatenus condemnati fuissent) contingat, quod alii, etiam optimum jus foventes, interdum omnium eorum pauperatatem modum talia deposita faciendi non habentes, & sic secluso eis, ob non factum

depositum, remedio appellationis, eorum bonum jus, quod prætendunt deducere in appellatione, remaneat incognitum, & deperditum, & præsertim quoad illos, qui non sunt confessi crimen.

§. 2. Nos igitur more pii Pastoris, præmissis omnibus obviare volentes, ne appellationis remedium, ejusque prosecutio pauperibus tolli videatur Motu simili, & ex certa nostra scientia, dictas litteras mitigantes, & reformantes, tenore præsentium statuimus, decernimus & ordinamus, ac perpetuo observari mandamus, quod in similibus causis Fiscalibus, & aliis de quibus in litteris, & Motu proprio hujusmodi sit mentio, omnes & singulæ appellationes, ac quæcumque desuper pro tempore præsentatæ, ac præsentandæ commissiones per dictum Alexandrum modernum & pro tempore existentem Curie causarum Cameræ Apostolicæ Auditorem tamquam Judicem talium appellationum, necnon per quemcumque alium Judicem hujusmodi jurisdictionem habentem admittant, ac recipiant, & admitti ac recipi, liberè & licitè possint, valeant, ac debeant, illarumque vigore quascumque inhibitiones, citationes, seu monitoria decernentes, & alia facientes in præmissis necessaria, eisdem Auditori nostro, & Judicibus præfatis, ad id jurisdictionem habentibus, auctoritatem damus, ac licentiam impartimur; præstita tamen prius cautione idonea, per partem seu partes appellantes, non tamen confessos, in forma depositi, pro pena in qua condemnatus extitit, & seu respectivè de se constituendo in carcere, & ibidem remanendo in quacumque parte iudicii, & quatenus pars esset dives factio prius actuali deposito, arbitrio Judicis ad quem.

§. 3. Quo vero ad confessos, liceat Judici à quo, non obstantibus hujusmodi appellationibus & inhibitionibus, & absque aliquarum penarum incurfu, ad ulteriorem executionem pro penæ hujusmodi consecutione procedere; & neque tam ipsi quam partes ad litterarum, seu Motus proprii præfati observantium, quo ad hæc, & illa quoquo modo concernentia, nisi juxta præsentem limitationem & moderationem, ullatenus teneantur.

§. 4. Et ita in præmissis omnibus & singulis, per quoscumque Judices, etiam Cam. Apost. Camerarium, Præsidentem, Clericos, Thesaurarios, ac Procuratores Fiscales, & S. R. E. Cardinales, &c. sublata &c. debere; irritum &c. perpetuo decernimus.

§. 5. Non obstantibus præmissis, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 6. Volumus autem præsentis nostri Motus proprii solam signaturam sufficere, & fidem facere, in iudicio & extrâ, regula contraria non obstante, etiam absque eo quod per Curiores præsentetur.

Placet Motu proprio. M.

Reformatio Collegii Capranicensis, à Cardinali de Capranica, & Collegii Nardini, à Card. Nardino, in Urbe pro Scholaribus institutorum; Et confirmatio jurisdictionis Custodum Hospitalis S. Salvatoris, Gubernatorum utriusque Collegii.

Aliud simile Collegium instituit Cardinalis Matthæus, ut videre est in const. 8. Pauli V. Altirudo, in Tomo III.

Privilegia autem Scholarum generalis Gymnasii Almæ Urbis, vide supra in Bonif. VIII. const. 9. In supremæ. ubi notavi in Tomo I. fol. 180.

PIUS PAPA QUINTUS

Motu proprio &c.

Accipimus quod postquâ pie memorie Dominicus & Angelus Cardinalis de nobili familia Capranicensis, & Stephanus Cardinalis Nardius Col-

Hic autem Pont. conce- dit appella- tionem datæ cautione u- hic, quatenus non nisi dives appellat.

Confessis tam- men appella- tionem deue- gat.

Decretum irritans.

Claufulæ de- rogatoriæ.

Sola signatu- ra sufficit.

Papæ sub- scrip.

XXV.

Card. Capra- nica instituit in Urbe Collegium.

Capranicen-
se, & Card.
Nardinus
Collegium
Nardinum, &
eorum Gu-
bernium de-
derunt Cu-
stodibus S.
Salvatoris.

Sed Schola-
res eorum in-
structionem
evitare tenta-
bant.

Paulus ideo
Hic. dictos
Custodes
competentes
eorum iudice
esse de-
claravit.

Scholaribus
non suffi-
cientibus con-
clusiones iux-
ta statum Col-
legiorum, in-
de expelli
decrevit.

Paulus IV.
prædicta con-
firmavit.

Hic modo
Pont. ista
confirmat.

Armorum
omnium u-
sum & reten-
tionem pro-
hibet, non ta-
men ensis in
Camera.

legia Scholasticorum in Urbe, illud Capranicense, istud Nardinum nuncupata, fundaverunt & erexerunt, & dotaverunt, ac constitutiones pro vita & moribus, habitu, vestitu, & professione inibi studentium Scholasticorum ediderunt, & eorumdem Collegiorum Gubernatores, dilectos filios nobiles viros Custodes pro tempore pii Hospitalis Imaginis S. SALVATORIS ad Sancta Sanctorum de Urbe creaverunt, & esse voluerunt: quibus omnimodam potestatem corrigendi, mulctandi, puniendi, & alias prout in dictis constitutionibus latissime continetur concesserunt, dictique Custodes in præmissorum pacifica & quieta possessione extiterunt.

§. 1. Item Scholares in pravum animum conversi juramenti per eos præstiti immemores, contra prædictarum laudabilium constitutionum formam quærentes se à jurisdictione, protectione, & gubernio dilectorum filiorum Custodum prædictorum eximere & dicto Collegio, & pio loco abjectis, diversas in dies inhibitiones à diversis U. bis Tribunalibus, ac diversas à Signatura Justitiæ commissiones, extorquere tentabant, & extorquebant, per quas dictorum dilectorum filiorum administrationem, gubernium, & correctionem evitare tentabant.

§. 2. Cumque prædicta ad notitiam felicis recordationis Pauli Papæ Tertii prædecessoris nostri pervenissent, item Prædecessor quærens non minus menti & voluntati dilectorum piorum Cardinalium, quam animabus ipsorum Scholasticorum consulere, suo proprio Motu voluit, iussit, & mandavit, quod illucalique omni causa ipso jure ad eosdem Custodes redirent, quos solum in solidum Iudices eorumdem Scholasticorum ordinarios, juxta earundem constitutionum formam esse declaravit, reservata solum eisdem Scholasticis facultate appellandi à diffinitiva, & tunc ad solos dilectos filios Conservatores Urbis; ac de cetero inhibuit, commissiones aut inhibitiones contra prædicta decerni non posse, & insuper voluit & mandavit dictas constitutiones de cetero, ut jacent observari.

§. 3. Et quod qui à Scholaribus secundum statuta Conclusiones infra tempus constitutum sustinere cessarent, ipso facto sine ulla monitione privati existerent, & à Collegiis expellerentur, & alii pro illis substituerentur, & ad restitutionem expensarum quibus se indignos judicaverant, & fecerant Collegii omnino tenerentur.

§. 4. Et successivè sanctæ memoriæ Paulus Papa Quartus prædecessor noster de præmissis certioratus prædicta omnia per suas in forma Motus proprii litteras, confirmavit, & perpetuis futuris temporibus servari mandavit.

§. 5. Nos igitur cupientes non solum quæ piè & sanctè constituta sunt observari, sed etiam prolapsam viam salutis revocari, & quæ ad animarum salutem, & vitæ Christianæ cultum conveniunt, augeri, & in ampliorem formam redigi, Prædecessorum constitutiones, & ordinationes prædictas, ac dicti Collegii constitutiones, auctoritate Apostolica, & de potestatis plenitudine, Motu proprio, & ex certa nostra scientia confirmamus & approbamus.

§. 6. Ac motu simili potestate ad augmentum quietis dicti Collegii, salutem animarum Scholasticorum prædictorum, & cultum Christianæ fidei de novo hac nostra in perpetuum constitutione valitua, statuiimus, decernimus & mandamus, quod de cetero in dicto Collegio nullus Scholasticus, nec etiam ipsum Collegium possit retinere, aut habere, neque publicè neque occultè, aliquod genus armorum, tam defensibilem, quam offensibilem, excepto solo ense, quem ipsi Scholasticus in eorum Cameris retinere permittimus, & quæ erunt in dicto Collegio, tam ipsorum Scholasticorum, quam Collegii arma cuiusvis generis, excepto solo ense, in visitatione per dilectum filium Franciscum Cardinalem Alciatum tit. S. Sufanæ diaconum, & per dictos dilectos filios Custodes, de mandato nostro

nuper facta reperta fuerunt, illa omnia per præfatos Custodes vendi mandamus, & pretium ex eis providendum dominis ipsorum, five sint Scholasticus, five ipsum Collegium assignari mandamus; conscientiam eorumdem dilectorum filiorum Custodum onerantes in hoc, videlicet ut pugiones, & quos appellant pistolefos, necnon & falcatos enses, quos vulgo stortas aut alio simili nomine appellant, vendant magistris qui eos fundant, & ad rudem materiam reducant. Et quia qui bonis litteris operam navare, & in sacris initiari incipiunt, paci & quieti, ac togæ & non armis incumbere debent, volumus & mandamus quod quicumque Scholaris de cetero, de die vel de nocte, & quocumque tempore cum ense, quem his solum retinendum videlicet, ut supra reliquimus, vel alio genere armorum per urbem incedere repertus fuerit, etsi licentiam à quovis ad id potestatem habente, excepta sola nostra licentia, & successoris nostri, legitime se habere afferant, & habeant, illico per quocumque executores, nullo alio expectato mandato carcerentur, & in carceribus per sex continuos menses detineantur, absque eo quod aliquid de mensa dicti Collegii participant, & ulterius illico à loco dicti Collegii priventur. Qui vero de cetero in eorum cameris, aut alio loco dicti Collegii reperti fuerint tenere aliquod genus armorum excepto ense solum, ut præfertur, pro prima vice priventur expensis unius mensis, pro secunda vero vice ejiciantur statim de Collegio.

§. 7. Non minus etiam quia non solum in Scholasticis & viris togatis, quam in omnibus ludum alæ, seu taxillorum & chartarum cuiuscumque generis, tamquam à legibus & sacris canonibus, ac bonis moribus abhorrentem detestamur, præcipimus, mandamus, & inhibemus, ne de cetero aliquis Scholasticus, seu familiaris & ferventium in dicto Collegio aliquod genus chartarum, seu alæ aut taxillorum, publicè vel occultè retinere possit & valeat, quod si alicui chartæ, aut alæ seu taxilli in eorum camera, aut alio loco Collegii reperti fuerint illico pro prima vice à mensa & victu per vinum integrum mensem arceantur, & si iterum in tale crimen inciderint à Collegio arceantur, & tamquam incorrigibiles priventur.

§. 8. Insuper quia ex habitu mens, & animus ut plurimum & cognoscitur, & demonstratur, inhærentes piæ menti testatorum volumus & mandamus quod incipiendo à proximis futuris habendis mensis Novembris, Scholares perpetuo quando eunt extra Collegium, quocumque eant per Urbem incedere debeant in habitu longo & veste longa cum solito capuccio juxta dictarum constitutionum formam. Volentes, & mandantes quod illi qui fuerint reperti extra dictum Collegium sine dicto habitu & capuccio, prima vice per quemcumque executorem etiam absque alio mandato carcerentur, & in carceribus per tres continuos menses detineantur absque eo quod de mensa Collegii aliquod participant, secunda vero vice à dicto Collegio arceantur, & locis ejusdem Collegii priventur.

§. 9. Et quia nonnunquam controversum accepimus circa studia & professiones ipsorum Scholasticorum declaramus dictas constitutiones, ac etiam quando opus sit, supplemus & emendamus, volumus & mandamus, quod de cetero dictorum Collegiorum Scholastici Logicæ, & Philosophiæ operam eo usque dare, quantum, & quousque eis sufficit pro ingressu ad sacram Theologiam; & similiter possint juri civili eo usque operam dare, quantum & quousque eis sufficiet pro ingressu ad jus canonicum. Medicinæ autem eos operam dare omnino prohibemus & inhibemus.

§. 10. Cassantes & irritantes ac annullantes omnem licentiam etiam per felicis recordationis Pium Papam Quartum eisdem concessam, tamquam piæ menti fundatorum contrarium; quibuscumque in ea clausulis existentibus non obstantibus.

§. 11. Et quamvis constitutiones Collegiorum prædictorum arceant Scholasticos ad se promoveri facien-

Indum quo-
que alærum,
& taxillorum
eisdem ven-
tant.

Habitumque
& capucium
eisdem gestare
debere præcipit.

Et Logicæ,
Philosophiæ,
ac juri civili
operam dare
posse declara-
rat.

Licentiaque
à Pio IV.
concessa revo-
catur.

Constitutione-
que Col-
legiorum cir-

ca promotio-
nem ad fa-
cios Ordines
declarat.

dum post triennium à die ingressus Collegii scirent ad
sacram subdiaconatus ordinem, nihilominus respi-
cientes ad decreta sacri Concilii Tridentini, volumus
quod dicti Scholares elapso triennio teneantur dum-
taxat accipere quatuor ordines minores, & tenean-
tur & obligati sint quotidie officium Sacratissimæ
Virginis MARIE recitare, & ulterius se taliter præ-
parare, ut in eventum quod à nobis & successoribus
nostris illis, ut speramus, Ecclesiastica beneficia con-
ferentur, vel probaretur legitime habere eos suffi-
cienter patrimonium, possint apparere habiles &
idonei ad suscipiendos sacros ordines, & tunc vel ad
titulum beneficii quod eis conferetur, vel patrimo-
nii quod habere eos probabitur, teneantur omnino
promoveri ad ordines sacros.

Executores
deputat ipsos
Custodes.

§. 12. Mandantes propterea dilectis filiis Custodi-
bus hospitalis prædicti, ut prædicta diligenter at-
tendant, & totis viribus auctoritate nostra inviolabi-
liter observari faciant, prout inviolabiliter nos Mo-
tu proprio, & de Apostolica potestate plenitudine
observari volumus & mandamus.

Contraria
tollit.

§. 13. Contrariis non obstantibus quibuscum-
que; irritum quoque & inane decernentes quicquid
in contrarium à quoquam super præmissis contige-
rit attentari.

Sign. solâ suf-
ficere jubet.

§. 14. Volumus autem quod præsentis nostri Mo-
tus proprii sola signatura sufficiat, & ubique fidem
faciat in iudicio & extra; & quod registretur per se-
cretarium dicti hospitalis in libro constitutionum
dicti Collegii, ut neque de illis ignorantiam quovis
tempore præterire possit.

Placet Motu proprio M.

Papæ sub-
script.

XXVI.

Applicatio Rev. Cameræ Apost. fructuum benefici-
um Regi Neapolis Sedi Apost. reservatorum seu
affectuum pro tempore aliter quam per obitum
vacantium, à die vacationis, usque ad diem, quo à
Rom. Pontifice provisi, possessionem ceperint de
manu Nuncii Apost. in eodem Regno.

Eandem applicationem fecit Pius IV. die 7. Decemb.
1560. quam ideo prætermisi. Applicationem verò
generalem edixit Pius ibidem IV. fructuum omnium
beneficiorum Italia reservatorum Sedi Apost. in ejus
constit. 14. Cupientes. fol. 24. ubi notavi.

Edita An. D.
1567.

PIUS PAPA QUINTUS,

Ad perpetuam rei memoriam.

Causa appli-
cationis.

Cupientes malitiis nonnullorum, qui fructus
Monasteriorum, & aliorum beneficiorum Ec-
clesiasticorum dispositioni Apostolicæ reservatorum
usurpare non verentur occurrere, & Cam. nostræ
Apostolicæ indemnitati, quantum cum Deo possu-
mus, consulere.

Applicatio
de qua in
rubr.

§. 1. Motu proprio, & ex certa scientia, ac matu-
ra deliberatione nostris, deque Apostolicæ potesta-
tis plenitudine, omnes & singulos fructus, redditus,
& proventus, ac jura, obventiones, & emolumenta
quacumque quomodolibet, & qualitercumque; nun-
cupata, omnium & singulorum beneficiorum Eccle-
siasticorum cura & sine cura, secularium, & quorumvis
Ordinum regularium, & Monasteriorum etiam Con-
sistorialium, nobis & Sedi Apostolicæ, quam Cancel-
larie Apostolicæ regulas, editas & edendas, seu alias
quomodolibet, & ex quavis causa generaliter vel spe-
cialiter reservatorum, seu affectuum in Regno Nea-
polis, & quibuscumque illius Provinciis, Civitatibus, Ter-
ris, Oppidis, & locis consistentium per obitum, &
alias quovis modo, præterquam per cessum illa obtine-
ntium pro tempore vacantium, à die ipsorum be-
neficiorum & Monasteriorum vacationis pro rata
temporis, usque ad diem, quo provisi per nos de eis-
dem beneficiis & Monasteriis vigore litterarum no-
strarum sub plumbo illorum possessionem de manu
dilecti filii Magistri Pauli Odescalchi Notarii, & in
dicto Regno Nuncii, & collectoris nostri, per quem
alias nostras litteras Commissarium ad capiendum
possessionem beneficiorum & Monasteriorum hujus-

modi deputavimus, habuerint, & acceperint, & aliter
capta possessio nullius sit roboris vel momenti, ac
provisis ipsis nullum jus per eam acquiri, neque eis
ullatenus suffragari possit, eidem Cameræ Apostol.
auctoritate Apostolica tenore præsentium applica-
mus, incorporamus, & appropriamus, illaque appli-
cata, incorporata, & appropriata esse, & fore, & ad
illam spectare & pertinere nullumque præter nos &
dictam Cameram, aut ipsum Paulum Nuncium &
Collectorem, aut ab ipso deputatos subcollectores,
ea percipere, exigere, aut alias se in illis intromit-
tere posse, aut debere, statuimus & ordinamus.

§. 2. Et nihilominus ne aliquid impedimentum
huic nostræ ordinationi occurrat, quibus Archie-
piscopis, Episcopis, & aliis locorum Ordinariis in
virtute sanctæ obedientiæ, ac sub suspensionis à divi-
nis, & interdicti ingressus Ecclesiæ, quoad Archiepi-
scopos, & Episcopos, quo verò ad alios inferiores,
etiam sub excommunicationis & aliis arbitrii nostri,
& quo ad omnes, sub privationis facultatis conse-
rendi beneficia in eorum mensibus pro tempore va-
cantia pœnis, districtè præcipimus & inhibemus, ne
beneficia dispositioni Apostolicæ reservata seu affe-
cta prædicta, quovis prætextu, causa, aut quavis
colore cuiquam conferre, seu de illis providere quo-
quomodo audeant vel præsumant.

§. 3. Sicque in præmissis omnibus & singulis per
quoscumque quavis auctoritate fungentes Iudices,
Commissarios, & personas, subtrata eis & eorum cul-
libet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facul-
tate & auctoritate, judicari & definiti debere; irri-
tum quoque & inane, si secus super his à quoquam
quavis auctoritate scienter vel ignoranter contige-
rit attentari decernimus.

§. 4. Mandantes eidem Paulo Nuncio & Collecto-
ri ut nostro & dictæ Cameræ nomine, fructus, redditus,
proventus, jura, obventiones, & emolumenta
hujusmodi exigat, percipiat, & lever, sibi que con-
signari & tradi ab omnibus, ad quorum manus per-
venerint pro rata prædicta, per censuras & pœnas
Ecclesiasticas, ac alia opportuna juris & facti reme-
dia quacumque appellatione postposita faciat, &
curet; invocato etiam si opus fuerit auxilio brachii
secularis. Super quibus omnibus & singulis plenam
& liberam illi per præsentem concedamus facultate
& potestatem.

§. 5. Non obstantibus constitutionibus & ordi-
nationibus Apostolicis, ac Monasteriorum & illo-
rum Ordinum ac beneficiorum prædictorum, etiam
juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis fir-
mitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus,
privilegiis quocumque, indultis, & litteris Apostolicis,
illis & quibuscumque aliis personis sub quibuscumque
tenoribus & formis, ac cum quibuscumque derogato-
riorum derogatoriis, aliisque efficacioribus,
efficacissimis & insolitis clausulis, irritantibusque
aliis decretis, etiam motu & scientia similibus con-
cessis, confirmatis, & innovatis. Quibus omnibus,
etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de il-
lis eorumque totis tenoribus specialis, specifica,
expressa, & individua, ad de verbo ad verbum,
non autem per clausulas generales idem importan-
tes, mentio, seu quævis alia expressio habenda foret,
tenores hujusmodi præsentibus pro sufficien-
ter expressis & insertis habentes, illis alias in suo
robore permanentibus, hac vice dumtaxat, harum se-
rie specialiter & expresse derogamus, illaque ad-
versus præmissa nullatenus suffragari posse sive
debere decernimus; ceterisque contrariis quibuscum-
que.

§. 6. Volumus autem, quod præsentium manu
Notarii publici subscriptis transumptis, & sigillo
personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ, seu
Curie Ecclesiasticæ munitis, eadem prorsus fides
in iudicio & extra adhibeatur, quæ eidem præsen-
tibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo
Piscatoris, die 8. Januarii 1567. Pontif. nostri
Anno 2.

Ordinariis &
alii non se in-
tromittant in
collatione
horum bene-
ficiorum.

Clausula sub
lata.

Facultas The-
saurarii Papæ
ut hos fru-
ctus exigat.

Quibuscum-
que non ob-
stant.

Transumptio-
rum fides.

Dat. P. An. 2.
die 8. Jan.

XXVII. Miserales personæ in causis discussionum, ceteris aliis creditoribus præferuntur, pro eorum creditis, usque ad summam scutorum quinquaginta in Urbe.

Ad materiam discussionum videnda est const. 16. Clem. VII. Cum ex sup. & const. 15. hujus Pont. sup. in Tomo I. Sanctissimus. cum ibi not. An autem isti miserales præferuntur etiam Pistoribus & Aromatariis attende inf. in const. 36. Six. V. Celestis & const. 47. Clem. VIII. Laudabilis. in Tom. 3.

Mox ampliata est ista constitutio à Paulo V. in sua constit. 81. Universi. §. 11. ad finem, Tom. III.

PIUS PAPA QUINTUS.
Motu proprio, &c.

Accepimus multos pauperes, & personas miserales reperiri, qui cum alicujus sint creditores, de eorum credito volentes sibi satisfieri, comparent in causis discussionum bonorum eorum debitoris, jura sua producentes, verum ipsi aut quia non priores, potioresve, aut quia ut priores, nec potiores sunt, propterea evenit quod dum eorum creditum in maximum ipsorum præjudicium consequi non valent, sepius fieri solet, quod eorum pauperumque dedecus mendicare cogantur.

§. 1. Nos itaque hujusmodi personarum miseriis compatientes, eisdemque in præmissis subvenire volentes, Motu simili, & non ad alicujus nobis super hoc oblata petitionis instantiam, sed ex mera voluntate & deliberatione, & ex certa scientia nostra, ac de Apostolica potestatis plenitudine, Apostolica auctoritate volumus, ac perpetuò statuimus & ordinamus, quòd si in causis hujusmodi in Tribunali dilecti filii Alexandri Riarii, nostri & Camere Apostolicæ Auditoris, tam moris, quam moris in futurum, comparuerint creditores usque ad summam scutorum quinquaginta inclusive pro quolibet, qui vere sint miserales personæ, iis de eorum credito, etiam quod non sint priores aut potiores, satisfieri possit & debeat.

§. 2. Mandantes propterea præfato dilecto filio Alexandro Riaro Auditori nostro, quatenus constituto sibi prius etiam summarie, & extrajudicialiter, ac quantum sibi sufficere videbitur, de præmissis paupertate & miseria, dictos pauperes ad satisfactionem eorum crediti admittat, eisque satisfieri mandet, & faciat realiter & cum effectu, plenamque & liberam ac omnimodam sibi in super præmissis eadem Apostolica auctoritate renore præsentium concedimus facultatem. Cum potestate quos, quibus, ubi, quando, & quoties opus fuerit, etiam per edictum publicum, constituto summarie & extrajudicialiter de non tuto accessu, ac etiam sub Ecclesiasticis sententiis, censuris, & etiam pecuniariis poenis, aliisque arbitrio suo imponendis, moderandis, & applicandis, citandi, monendi, & inhibendi, & in eventum non partitionis declarandi, aggravandi, reagravandi, & excommunicandi, interdicendi, auxiliumque brachii secularis, si opus fuerit, invocandi seu adhibendi, necnon perpetuum desuper silentium, omni & quacumque appellatione & recursum remotis, imponendi, omniaque & singula alia faciendi, dicendi, gerendi, mandandi, & exequendi, in præmissis & circa ea necessaria seu quolibet opportuna.

§. 3. Sique etiam in præmissis ab omnibus censi, ac etiam per quoscumque alios iudices & sublata &c. judicari &c. debere; irritumque &c. decernimus & declaramus de gratia speciali.

§. 4. Non obstantibus præmissis, ac dicta nostra de non tollendo jure quæsito, & quibuscumque aliis Apostolicis, universalibus, provincialibusque & synodibus, ac municipalibus constitutionibus & ordina-

tionibus, specialibus & generalibus, necnon etiam Urbis & Curie Romanæ, etiam juramento &c. roboratis, statutis &c. usibus, natoris, stylis, & etiam novis reformationibus, privilegiis, in genere, vel in specie, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, irritantibusque & aliis decretis &c. etiam Motu proprio & constitutorialiter &c. ac aliis in contrarium quomodolibet concessis, &c. in posterumque concedendis, necnon legibus, etiam Pontificiis, & Imperialibus &c. editis & edendis, quibus omnibus, etiam si de eis &c. eorum tenores &c. pro plene & sufficienter expressis habentes, latissime, hac vice derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque, statum &c. & merita causarum hujusmodi, ac præmissorum omnium & aliorum necessariorum, tenores &c. etiam pro plene & sufficienter expressis habentes.

§. 5. Volumus autem præsentem nostrum Motum proprio perpetuis temporibus durare, ac illius solam signaturam sufficere, & ubique in iudicio & extra fidem facere, regula contraria non obstante. Placet Motu proprio. M.

Declaratio, reformatio, & revocatio plurimarum gratiarum, immunitatum, & privilegiorum Militiæ Hospitalis S. Lazari Hierosolymitani hæcenus à Summis Pontif. concessarum.

Hæc Militia, quæ Regulam S. Augustini proficitur, ut habetur sup. in Tomo I. in const. 1. Alex. IV. fol. 106. Cum à nobis, multa privilegia elargitus est Clem. IV. in const. 2. Cum dilecti. sup. fol. 133. & const. 5. Venerabilibus. fol. 140. & plerique alii Pont. necnon Pius IV. alia plurima indulta dederunt, ut in ipsius Pii IV. const. 95. Inter assiduas, fol. 145.

Eandem Militiam Greg. XIII. univit Militiæ S. Mauritii martyris nuper instituta per Emanuele Philibertum Ducem Sabaudiz, ejusque perpetuo regimini subiecit, ut in ipsius Greg. const. 6. Christiani. & const. 7. Pro commissa. Et postremo paucis additis hac approbavit Clem. VIII. in const. 102. Decret. Tom. III.

PIUS EPISCOPUS, &c.

Ad futuram rei memoriam,

Sicuti bonus agricola, qui largiorem ex agro quem colit, proventum colligere cupit, temporum vices sollicitus observat, & positis in eo plantis, non semper irriguos rivos, aut pinguem limum admo- vet, sed collectum quandoque humorem deducit, ac nimiam ramorum lætitiā cohibet; & ne vires frustra effusa evanescant, ferro comprimit. Ita nos agri Dei nostri culturæ, ipso favente, fidelibus studiis incumbentes, Hospitale S. Lazari Hierosolymitani, ejusque Militiam, feracem sanè, uti speramus, inter ceteras hujus agri, plantam, pridem à compluribus Prædecessoribus nostris, ac nobismetipsis indulgentiis excultam, ne forte inuili frondium syl- valuxuriæ, refectis, ac veluti putatis ramis sterilibus, intra ordinem ponere, atque ad meliorem & utiliorem cultum (habita horum temporum ratio- ne) reducere cupimus, ut tandem suis in se colle- ctis viribus & tanquam radicibus solo altius ada- ctis, firmius persistant, suaves atque uberes fructus domino perferat.

§. 1. Dudum etenim, postquam fel. rec. Pius Papa IV. prædecessor noster, institutionem, erectionem, necnon translationem Hospitalis & Militiæ hujusmodi, ac quamplurima privilegia, indulta, facultates, licentias, exemptiones, libertates, indulgentias, gratias, & alia à diversis Romanis Pontificibus præde- cessoribus nostris, tunc suis, dicto Hospitali, ejusque Magno Magistro & Conventui, ac Fratribus etiam per modum communicationis, & extensionis, in

Sola sufficit signat.

Pape sub- script.

XXVIII.

Edita An.D.
1567.

Causa hujus reformationis privilegiorum Militiæ S. Lazari.

Pius IV. multa dictæ Militiæ privilegia approbavit & alia concessit, ut in ejus const. cit. in rubr.

genere & in specie concessa, necnon statuta, usus, & consuetudines in eisdem Hospitali, & Militia edita, & introducta, Apostolica auctoritate, Motu proprio, & ex certa scientia, ac de Apostolicæ auctoritatis plenitudine, confirmaverat & approbaverat, ac etiam innovaverat, & in super alia multa concesserat, eaque omnia ad Hospitale Sancti Lazari, quod in civitate Capuana, etiam tunc consistebat, extendere, ipsamque Hospitale & ejus membra & pertinentias, adversus suppressiones, extinctiones, uniones, & alias dispositiones quascunque, de illis per recolendæ memoriæ Innocentium VIII. & Pium II. ac forsitan alios Romanos Pontifices, etiam consistorialiter factas, in pristinum quo ante illas erant statum restituerat, ac plenarie reintegraverat, decernens inter alia, ea tamquam ex causa onerosa concessa, restituta, & facta, revocari, limitari, vel limitari, ac sub revocationibus, limitationibus, alterationibus, generalibus vel specialibus si forte fierent, comprehendi non posse.

Hic etiam Pont. illa confirmavit in quadam ejus bulla, quam hic velut otiosam non potui.

§. 2. Nos quoque in ipso statim Pontificatus, ad quem divino affante Spiritu vocati sumus, initio, eadem omnia, ipsiusque Pii IV. prædecessoris litteris super eis expeditas, paribus motu, scientia, plenitudine, & auctoritate confirmavimus, approbavimus, & innovavimus, ac similibus clausulis & decretis munivimus, quibusdam tamen limitationibus & restrictionibus adjectis, quas hic quoque pro repositis esse volumus, prout in prædictis litteris, ac quadam cedula, Motu proprio, & manu nostra signata plenius continetur.

Nunc autem iustus de causis illa reformare voleis.

§. 3. Verum postea experti tam multa sic concessa, non tantum ipsis Hospitali & Militiæ incrementum, quantum aliis cupiditatem afferre, illorum vero usum, & dispensationem tum periculo iis ipsis quibus concessa sunt, tum oneri nobis fore. Ac propterea volentes illis modum, & normam, ac certos decem limites statuere, illorumque omnium, necnon prædictarum, & quorumcumque præterea litterarum & cedularum, similibusve scripturarum, quæ inde confectæ sunt, tenores, continentias, & formas, pro plene & sufficienter expressis habentes, Motu proprio, & ex certa scientia nostra, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, ad DEI gloriam, & publicam utilitatem manentibus erectione, institutione, ac translatione, necnon restitutione, & reintegracione dictorum Hospitalis & Militiæ, ac illarum approbatione prædictis, quas prout hæcenus factæ sunt, prout tamen juris fuerit, ratas habemus in præmissis, ut præsertim, concessis, confirmatis, & innovatis, tenore præsentium sic perpetuo statuimus & ordinamus.

Concessionem ante Pii IV. confirmat, quatenus tunc essent in usu & nominis præjudicarent.

§. 4. Omnia & singula dictis Hospitali, Magistro, Conventui, & Militibus, à prædictis & aliis quibuscunque Romanis Pontificibus ante ipsum Pium IV. prædecessorem concessa, eatenus dumtaxat confirmata esse, & censi, quatenus temporibus ejusdem Pii IV. ante factam ab eo illorum confirmationem prædicta observabantur, & in usu erant, atque alienis iuribus, sive ex præscriptione, sive alias quocunque titulo legitime quæsitæ, detrimentum, aut præjudicium non inferant.

Concessionem Pii IV. hic non contentas revocare, & contentas limitare &c. ut hic sequitur.

§. 5. Ex his vero, quæ ab ipso Pio IV. concessa sunt, atque ex statutis ordinatis, & decretis ab eodem, erga illa quibuscunque, non alia ulla, neque aliter omnino valida esse, aut ipsis Hospitali, Magistro, Conventui, & Militiæ licere, quam infra scripta, & cum moderationibus, reductionibus, limitationibus & imitationibus, tam in prædicta cedula, Motu proprio, & manu nostra signata positis, quam infra scriptis. Reliqua autem omnia & singula, necnon illa concernentia, confirmationes, litteras, & alia supradicta, & inde secuta quæcumque revocamus, cassamus, irritamus, & annullamus, ac viribus omnino evacuamus, ac revocata, cassata, irrita & nulla, ac sine viribus semper fore, neque in iudicio aut extra iudicium attendi, vel etiam allegari, neque cuiquam suffragari, neque pro eis, aut secundum ea quicquam statui, ac judicari, neque præfentes de intentionis nostræ, aut alio defectu impugnari, neque earum

revocationem, moderationem, vel reductionem, aut adversus ea restitutionem, aliave iustitiam, aut gratiæ remedia impetrari, aut etiam motu, scientia, & plenitudine similibus, etiam consistorialiter, concedi, aut concessis quemquam uti posse; & ita per quoscunque iudices, etiam ad id specialiter delegatos, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, & S. R. E. Cardinales, sublata eorum cuilibet quavis aliter interpretandi & iudicandi auctoritate, interpretari & iudicari debere, ac quicquid secus quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari, irritum & inane decernimus.

Quibuscumque non obstantibus.

§. 6. Non obstantibus præmissis, ac quibusvis clausulis & decretis, etiam mentes dictorum Prædecessorum attestantibus, & quantumvis validis & firmis in dictis concessionibus, confirmationibus, & litteris, sub quavis exquisita verborum formula apostolicis, necnon de jure quæsito non tollendo, aliisque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, distique Hospitalis etiam juramento simili, confirmatione, aut quavis alia firmitate roboratis, statutis & consuetudinibus, etiam immemorabilibus, naturis, usus, stabilitatis, ceterisque contrariis quibuscunque.

§. 7. Volumus autem quod Magister & Conventus, ac Milites præfati, nobis & successoribus nostris Romanis Pontificibus, & Sedi Apostolicæ, ubi, ac quoties vocati, aut requisiti fuerint, contra quoscunque Romanæ Ecclesiæ hostes, vel rebelles armati inservire, atque opem & auxilium præstare suis impensis teneantur.

Et cum conditione quod hæc Militia obsequiis S. R. E. Imperatori parata esse debet contra ejus hostes.

Ea verò quæ Magistro, Conventui, & Militiæ præfatis licere, ac manere permittimus, sunt quæ sequuntur, videlicet.

Indulta concessa sunt infra scripta.

§. 8. Quod dilecto filio Jannotto Castilioneo moderno & pro tempore existente magno Magistro, cedente, vel etiam apud eandem Sedem decedente, seu magnum Magistratum alias quomodolibet etiam per liberam resignationem in nostris, vel nostrorum successorum pro tempore existentium Romanorum Pontificum manibus, dimittente, vel amittente, & illo quovis modo vacante, Conventus ejusdem Militiæ (si tamen tunc firmam Sedem in aliquo certo loco, ibi auctoritate, & de licentia dictæ Sedis, ante vacationem hujusmodi, consistentiam habuerint, & illic resederint) in simul ibidem congregati, alium magnum Magistrum, juxta ejusdem Religionis, & Militiæ statuta, de consensu sui Protectoris, edita vel edenda, quæ Concilio Trid. minime sint contraria, eligant: ita tamen quod ejusdem electionis confirmationem intra tres menses à die quo facta fuerit, ab eadem Sede petere omnino debeant, alioquin electio ipsa nulla sit, & electio ali-quod jus non tribuat, sed Magistratus ipsius omnimoda dispositio ad dictam Sedem eo ipso devolvatur.

Electio Magni Magistri, spectet ad Relig. sed confirmatio à Sede Apost. obtineatur. In tres menses alias ad eam devoluta sit. Hodie Magnus Magister est perperus Dux Sabaudia, ut in rub. notavi.

§. 9. Quodque idem Magister pro tempore existens, & Conventus principalem ipsius Militiæ Sedem, ad quemcumque locum, etiam maritimum, eis visum, consulta prius Sede Apostolica & ab ea licentia & facultate obenta, transferre, habitumque suum regularem, ac etiam Crucem, etiam si de suis antiquis habitu, cruceque appareat, vel non appareat, in eum meliorem, qui sibi videbitur modum (citra tamen aliarum Militiarum, & Religionum præjudicium) reformare, in toto vel in parte, immutare, vel stabilire, ac innovare, regulamque, statuta, & statuta dictæ Religionis & Militiæ, de consensu sui Protectoris, & aliorum Fratrum, vel Definitorum, instituire & reformare, seu de novo condere, cedere, & illas ac illos corrigere & mutare (dummodo licita & honesta, nec eidem Concilio contraria existent) toties quoties voluerint.

M. Magister & Conventus, de licentia Sedis Apost. principalem locum transferre, ac habitum, regulam & statuta reformare possint. Hodie locus principalis est Civitas Sabaudia, ut in const. Greg. XIII. cit. in rub.

§. 10. Necnon idem Joannottus, & pro tempore existens magnus Magister, quæcumque, quodcumque, & quacumque simplicia dumtaxat beneficia Ecclesiastica de iure patronatus laicorum, ex fundatione & dotatione existentia, & personale servitium in

M. Magister potest instituire oblata quæcumque simplicia beneficia

Cathedralibus & Collegiatis non requirentia (accidente tamen consensu patronorum, de quorum iuribus eis, ut præfertur, ex fundatione & dotatione competentibus, per publica documenta, non autem alia probationum generalia, eorum pro tempore existentibus Vicario nostro in spiritualibus generali, & Auditori Curie causarum Camere Apostolicæ, vocatis quorum interest, legitime conflet, & sine præiudicio ea obtinentur, & ipsis cedentibus vel decedentibus in Præceptorias, Commendas, Cappellas, aut Ecclesiarum Hospitalis, & Militiæ, perpetuo erigere & instituire, dictæque fuz Militiæ perpetuo incorporare, applicare, & appropriare; ac illarum fundatoribus & dotatoribus, jussu patronatus & præsentandi dictis Magistri & Conventui, vel eorum deputato personas idoneas, ac Præceptorias, domos, cappellas, seu Ecclesias, & Hospitalia hujusmodi pro tempore vacantia, perpetuo præservare, seu etiam reservare & concedere, & sic à Patronis præsentatos, juxta stabilita dictæ Religionis, Ordinariorum locorum, & quorumvis aliorum consensu minime requisito, in illis instituire, ac aliàs illa conferre, & de eis providere possint: ita tamen, quod debitus divinus cultus per personas idoneas etiam si dicti Ordinis fuerint, ac Ordinario approbandas in eisdem exerceatur. Quodque confirmatio erectionis & institutionis Præceptoriarum, Commendarum, Cappellarum, aut Ecclesiarum pro tempore sic erectarum, ac illarum incorporationis, applicationis, & appropriationis, necnon juris patronatus ad illas, reservationis, & concessionis hujusmodi, si citra, infra quatuor, si verò ultra montes beneficia hujusmodi consistant, infra sex menses à die quo factæ fuerint, à Sede Apostolica impetrari debeat, aliàs illæ & inde secuta quæcumque, nulla & irrita, nulliusque roboris vel momenti existant; ac beneficia hujusmodi in eorum pristinam naturam restituta esse censeantur, & ab eadem Sede impetrari possint.

§. 12. Necnon quod Hospitalia, Leprosaria, & alia loca quæcumque, tam in Alma Urbe, quam in aliis quibuscumque terris, dominiis, & locis, sub Invocatione S. Lazari leproforum hæcenus fundata, constructa, erecta, & instituta, & quæ in posterum fundari, constitui, erigi, & institui contigerit, etiam si per Magistrum, Conventum, & Fratres hujusmodi recepta, aut possessa non sint, ubi ullo umquam tempore fuerit, sit, vel erit Hospitalitas leproforum seu infirmorum S. Lazari nuncupatorium, de qua legitime coram locorum Ordinariis consistet, etiam si juris patronatus laicorum sint, cum omnibus unionibus, annexionibus, incorporationibus & applicationibus, illis pro tempore factis, Militiæ & Hospitali S. Lazari hujusmodi, subiecta & incorporata, & ad jus & proprietatem, ac omnimodam dispositionem, institutionem, & collationem, moderat & pro tempore existentis magni Magistri & Conventus eorundem, juxta ipsius Militiæ, seu Religionis stabilita (salvo tamen jure patronatus) pertinere censeantur, prout alia etiam dictæ Religionis, seu Militiæ Hospitalia, Capella, Oratoria, beneficia & loca, spectant & pertinent, illaque per dictæ Militiæ Fratres, (non autem per alias Ecclesiasticas aut seculares personas, etiam civitatum, terrarum, oppidorum, & villarum, Communitates vel Universitates) regi & gubernari, & in signum recognitionis superioritatis dicti Hospitalis de aliquo rationabili canone, seu censu per Magistrum & Conventum, & Definitorum generalis Capituli dicti Hospitalis imponendo, singulis annis respondere debeant, sine alicujus præiudicio, & dummodo in illis hospitalitas debita fervetur, & cultus divinus nullatenus diminuat, ac in illorum fundatione vel dotatione fecus non fuerit ordinatum.

§. 13. Salvis tamen legitimis titulis, & præscriptionibus, & salva jurisdictione Ordinariorum, tam ea quæ de jure communi eis competit, quam quæ ex decretis dicti Concilii Tridentini eidem est attributa; præterquam in his casibus, in quibus Concilium prædictum expresse exemuit, & excepuit Religio-

nem S. Joannis Hierosolymitani, in quibus & hæc S. Lazari Religio postquam tamen in aliquo certo loco firmam Sedem Conventualem habere coeperit, & ibi Magister & Conventus præfati referederit, pariter excepta & exempta sit & esse censeatur, excepta taxatione pro Seminariis instituendis.

§. 14. Et insuper Milites, ac Presbyteri & Capellani Hospitalis, & Militiæ S. Lazari hujusmodi, nunc & pro tempore existentes, ac eorum singuli, etiam conjugati, qui cum unica tantum, & virgine matrimonium contraxerint, unam vel plures pensiones annuas usque ad summam quingentorum ducatorum auri de Camera novorum super quorumvis Cathedralium etiam Metropolitanarum & aliarum Ecclesiarum, ac etiam Mensarum, etiam Patriarchalium, Archiepiscopaliarum, & Episcopaliarum, necnon etiam Monasteriorum, etiam Conventualium, Prioratuum, Canonicatum, & præbendarum, dignitatum, personarum, administrationum, & officiorum, aliorumque beneficiorum Ecclesiasticorum, cum cura, & sine cura, secularium, & quorumvis Ordinum regularium, qualitercumque qualificatorum fructibus, redditibus, proventibus, juribus, obventionibus, & emolumentis, ac distributionibus quotidianis, alias canonicè sibi assignatas vel assignandas, vel loco pensionum annuarum, omnes & singulos, ac quoscumque, similes fructus, redditus, & proventus, jura, obventiones, & emolumenta quæcumque, ac etiam distributiones quotidianas, usque dictam summam sibi reservatos & reservandos, etiam si post illarum vel illorum reservationem, uxorem, unicam tamen eamque virginem, ut præfertur duxerint, ad vitam percipere, exigere, ac levare, ac in suos usus & utilitatem convertere, libere & licite valeant; & quo ad hoc, atque etiam pensiones & fructus assignandos & reservandos, una cum Prioratibus, Præceptoris, & aliis beneficiis Hospitalis S. Lazari hujusmodi recipere.

§. 15. Et insuper idem Hospitalis S. Lazari, ac illius Prioratus, Præceptorie, domus, camera, Hospitalia, & loca quæcumque, necnon intra regularia dictorum Hospitalis, & Militiæ loca degentes, Magister, Priores, Præceptores, Milites, & personæ ac eorum subditi, vassalli, coloni, & servitores, nunc & pro tempore existentes, etiam presbyteri curam animarum exercentes (servatis tamen decretis Concilii Tridentini) quamdiu illa exerceverint, & in illorum obsequiis fuerint, ac illorum ratione beneficiorum dicti Hospitalis S. Lazari tantum, non autem patrimonialia, res, animalia, prædia, domus, molendina, & bona quæcumque quæ obtinent & possident, ac in futurum canonicè obtinebunt & possidebunt, sub B. Petri & dictæ Sedis, & nostra protectione, ab omni jurisdictione, correctione, onere, statutis, bannis, dominio, superioritate & potestate, juxta tamen terminos Concilii Tridentini, & salvis ejus decretis, quorumcumque Patriarcharum, Archiepiscoporum, Episcoporum, & Prælatorum, etiam locorum Ordinariorum, cum primum sedem Conventualem propriam habere coeperint, ut præfertur. Necnon ex nunc quorumcumque temporalium dominorum, quavis potestate, etiam Imperiali, Regali, & Ducali fungentium ac Universalitatum, & illarum Regentium, etiam præterquam dicti Hospitalis Ordinariorum temporalium, ubicumque tam citra quam ultra montes, & mare constitutorum quiscumque dignitatis, status, gradus, ordinis, & conditionis existentium, illorumque Vicariorum, & Officialium, Locatenentium & Judicum, nunc & pro tempore existentium quorumlibet, necnon à solutione, & exactione passagii, arreragii, gabelarum, datii, tractæ, collectæ, procurationis, juncundi adventus, jurium, etiam Synodaliarum, censuum, & decimarum, etiam novalium, etiam hortorum, pratorum, piscationum, & molendinorum, atque cujuscumque accessus, nullatenus directè vel indirectè prohiberi possint, & terrarum, quas per seipsos vel alios eorum nominibus, etiam colonos, arrendatarios, & emphyteutas excolunt, & de quibus fructus percipient ratione beneficiorum Hospitalis S. Lazari hujusmodi, & cujusvis alterius oneris personalis, realis,

Hospitalia & alia loca quæcumque ipsi Hospitalis, & Militiæ incorporare, ac de eis personas idoneas, ac Præceptorias, domos, cappellas, seu Ecclesias, & Hospitalia hujusmodi pro tempore vacantia, perpetuo præservare, seu etiam reservare & concedere, & sic à Patronis præsentatos, juxta stabilita dictæ Religionis, Ordinariorum locorum, & quorumvis aliorum consensu minime requisito, in illis instituire, ac aliàs illa conferre, & de eis providere possint: ita tamen, quod debitus divinus cultus per personas idoneas etiam si dicti Ordinis fuerint, ac Ordinario approbandas in eisdem exerceatur. Quodque confirmatio erectionis & institutionis Præceptoriarum, Commendarum, Cappellarum, aut Ecclesiarum pro tempore sic erectarum, ac illarum incorporationis, applicationis, & appropriationis, necnon juris patronatus ad illas, reservationis, & concessionis hujusmodi, si citra, infra quatuor, si verò ultra montes beneficia hujusmodi consistant, infra sex menses à die quo factæ fuerint, à Sede Apostolica impetrari debeat, aliàs illæ & inde secuta quæcumque, nulla & irrita, nulliusque roboris vel momenti existant; ac beneficia hujusmodi in eorum pristinam naturam restituta esse censeantur, & ab eadem Sede impetrari possint.

Præservatio jurisdictionis Ordinariorum, & contributio pro Seminariis.

Facultas percipiendi pensiones annuas usque ad l. 500. duc. cur loco pensionum si niles fructuum referantur, & conjugatis qui cum una tantum, & virgine matrimonium contraxerint, Clem. VIII. hanc summam reduxit ad duc. 400. in sua constit. 202. Decet.

Religio S. Lazari, ac eorum Vassalli, coloni, & servitores, etiam presbyteri curam animarum exercentes, & eorum bona quæcumque præter patrimonialia sub protectione Sanctæ Sedis Apostolicæ, cum exemptione ab omni jurisdictione, correctione, onere, dominio, &c. quæcumque Dominorum, tam spiritualium, quam temporalium, & à solutione cujusvis alterius oneris personalis, realis, ordinarii, extraordinarii, &c.

seu mixti, ordinarii vel extraordinarii, ubicumque & quocumque causa, impositi vel imponendi pro tempore liberi & exempti, ac nobis, & dictæ Sedi immediate subiecti existant. Ita quod Archiepiscopi, Episcopi, Prælati, Ordinarii, Vicarii, Officiales, Locatenentes, & Judices in spiritualibus, etiam ratione delicti (dummodo illud non sit de atrocioribus) vel contractus, seu rei de qua agetur, ubicumque committatur delictum, intractus contractus, aut res ipsa constat, si persone ipsæ intra regularia loca prædicta degent, & ibi aliquis à dictis Magistro & Conventu ad id specialiter cum jurisdictione deputatus fuerit, postquam Conventus Hospitalis hujusmodi dictam Sedem habuerint, temporales vero Judices, & Domini præfati, etiam ex nunc, nullam in eos, vel ea, jurisdictionem, correctionem, seu potestatem (salvis tamen decretis Concilii Tridentini) exercere, aut excommunicationis, aliæ sententias, censuras, & penas promulgare; aut etiam ratione personarum, vel rerum animalium, ac bonorum (non tamen patrimonialium) ad aliquam solutionem pontium, fontium, furnorum, murorum, seu etiam aliarum Ecclesiarum, quam dictæ Religio, etiam si forsan hæcenus per abusum, seu alterius privilegium, aut negligentiam, etiam per longissimum tempus taliter observatum non fuerit. Quæ omnia, etiam præscriptiones, nullo pacto, saltem in posterum obtinent, quo minus exemptionibus, quibus alii Regulares cujuscumque Militiæ Milites utuntur, & eodem modo quo illi uti possint, eos coarctare, aut alii quicumque, cujuscumque Ecclesiasticæ vel mundanæ dignitatis, aut præminentiæ, status vel conditionis existant, etiam in locis & terris S. R. E. etiam immediate subiectis, & ad instantiam cujuscumque Principis, seu Communitatis, sub excommunicationis lata sententiæ seu quædam ipsi, ultra data & expensas, restitutionis penis per contradiendum eo ipso incurrendis, eos in judicio vel extra super præmissis, vel eorum usu seu possessione vel quali, directè vel indirectè quovis quæsitore vel ingenio, molestare, impedire, vexare, aut alias quomodolibet imperere presumant, debeant, seu etiam valeant. Sed Priores, Milites, & alie persone Hospitalis & Militiæ S. Lazari hujusmodi sic degentes, post firmatam dictam Sedem, de iustitia coram solo magistro Magistro, & Conventu, vel eorum deputato (alioquin & interim, donec ipsam sedem habuerint, coram Ordinariis locorum tamquam Sedis Apostolicæ delegatis) respondere debeant. Et quicumque pro rebus contra illos, vel eorum aliquem n. per ipsos locorum Ordinarios, vel eorum Vicarios, alias quam ut præmittitur, seu quovis alios pro tempore facti, & quælibet, etiam excommunicationis vel suspensionis, aliæque sententiæ promulgatæ, nulli & invalidi, nulliusque roboris & momenti sint.

§. 16. In delictis autem atrocioribus, inter magnum Magistrum, seu deputatos ab eo, ac locorum tam in spiritualibus, quam temporalibus Ordinarios ita fervetur, ut qui ex eis prævenierit, ejus sit in delinquentes jurisdictio.

§. 17. Nec aliqui ex Hospitalis, & Militiæ S. Lazari, Fratribus, donatis, servitoribus, vassallis, & colonis in prioratibus, commendis, domibus, hospitalibus, leprosanis, aut aliis quibuscumque beneficiis, prædiis, five grangiis quomodocumque à dicto Hospitali dependentibus, in quibuscumque locis sub quocumque Patriarcharum, Archiepiscoporum, Episcoporum, Universitatum, Hospitalium, Rectorum, Ecclesiarum, hincibus, & jurisdictione constituti, decimas, aut canonicam portionem seu charitativum subsidium, aut quartas nuncupatas, seu alias quasque collectas, seu contributiones, tam ex antiquis Hospitalis S. Lazari, & beneficiorum hujusmodi cultus, quam ex recentior cultus novis, alicui quovis modo solvere teneantur, nisi prout alii regulares cujusvis Militiæ Milites, generalibus vel specialibus circa hoc privilegiis pacifice gaudentibus, solvere tenentur; à quibus omnibus exactionibus, atque etiam novo subsidio, charissimo in Christo filio nos-

tro Philippo Hispaniarum Regi in suis Regnis per quocumque Romanos Pontifices prædecessores nostros concessio, & canonica portio, seu quarta nuncupata in Franciæ Regnis imposita, necnon à quibuscumque aliis facultatibus, Regibus hujusmodi, & aliis Principibus, concessis vel concedendis in futurum, omnia dicti Hospitalis loca, necnon Ecclesiarum quomodocumque à dicto Hospitali dependentium Fabricæ, ad exemplum aliarum regularium Militiarum locorum, sint libera & exempta.

§. 18. Et insuper quod præfati Magister & Conventus, Priores, Præceptores, aut quicumque alii ex dicti Hospitalis Fratribus, per quocumque locorum aut terrarum dominos, tam spirituales quam temporales, etiam si Regali dignitate præfulgeant, etiam in terris S. R. E. ab extractione frumenti, fructus, vini, olei, leguminum, & quorumcumque fructuum, atque etiam pecuniarum, ex Prioratibus, Commendis, membris, domibus, grangiis, aliisve præfati Hospitalis locis provenientium, nullo umquam modo impediri possint quo minus præfata omnia, pro sua possessione voluntate, in quacumque fidelium loca, ab omni pedagio, datio, seu tracta, ut præfertur, libera & exempta valeant asportare.

§. 19. Et bona Magistri, Priorum, Præceptorum, & Fratrum, ac aliarum personarum hujusmodi, tam acquisita quam in posterum acquienda, ex concessione Apostolica vel magistrali, ex die emissionis per eosdem Priores, Præceptores, Fratres & personas professionis, ab omnibus decimis, & aliis oneribus, similiter ad exemplum bonorum aliarum regularium Militiarum libera, immunia, & exempta existant.

§. 20. Et quod quælibet querelæ, questiones, lites, causæ, & controversiæ quas ex nunc inter Fratres & subditos Hospitalis & Militiæ S. Lazari, præfatos & futuros, ex quibuscumque occasionibus oriri, & moveri contigerint, quovis modo cum omnibus suis incidentibus, emergentibus, connexis, & annexis ac omnium cujusvis appellacionum (præterquam in defectus, ante denegatam iustitiam, vel illati perperam contra stabilitatem, & consuetudines dicti Hospitalis gravaminis casibus) remoto obstaculo per pro tempore Magistrum & Conventum dicti Hospitalis, seu illos ex Fratribus, quibus ipse Magister & Conventus id commiserint, etiam usque ad tertiam definitivam sententiam inclusivè audiantur, necnon (juxta laudabiles consuetudines, & stabilita Hospitalis hujusmodi, & alias prout juris fuerint) debito fine decendantur; omnesque & singuli Priores, Præceptores, Milites, & Fratres Hospitalis præfati (postquam de mandato seu auctoritate Magistri, seu Conventus præfatorum, in quibuscumque ex prædictis contra eos intentandis causis, an comparandum coram ipsis, & commissariis per eos, ut præfertur deputatis, in locis quantumcumque ab eodem Hospitali remotis, citati fuerint) coram eisdem Magistro, Conventu, & Commissariis, prout contigerint, legitimè comparere debeant & teneantur, juri, & iustitiæ (secundum stabilita, approbationes, usus, & laudabiles consuetudines præfati Hospitalis) parituri.

§. 21. Quodque illi ex Prioribus, Præceptoribus, Fratribus, & subditis præfatis, qui contra eorum aliquem super quibuscumque querelis, rebus, vel negotiis, præterquam in casibus præfatis coram alio quam præfatis Magistro & Conventu, ac per eos pro tempore datis Commissariis, in causam traxerint, & ad alium quam ad eosdem appellaciones quascumque interposuerint, causam hujusmodi pro se perdant, reque super qua contenderint, privati existant eo ipso.

§. 22. Necnon modernus & pro tempore existens Magister & Conventus Hospitalis hujusmodi (juxta illius stabilita, & laudabiles consuetudines, ac mores) in Prioratibus, & Præceptoribus, domos, Hospitalia, membra, bona, & loca quæcumque, necnon quocumque Priores, Præceptores, Fratres & personas Hospitalis & Religiosis hujusmodi, ac illorum vassallos, subditos, & servitores ubicumque, tam citra quam ultra montes, nunc & pro tempore constitutos,

Si delictum fuerit atrocius, in ejus sit jurisdictio, ad quem primo pervenerit.

Exemptio à decimis, & novis, ac quartis, seu canonica portio, vel à caritativo subsidio, etiam concessio Regi Hispaniarum, ac quartæ in Franciæ Regnis imposita.

Facultas extrahendi frumenti, & quovis fructus, & pecunias ex locis Militiæ & Hospitalis S. Lazari illaque ad quocumque fidelium loca sine ditione & gabela asportandi.

Exemptio etiam pro bonis patrimonialibus post professionem.

Jurisdictio M. Magistri & Conventus, seu eorum delegatorum inter personas Relig. & Militiæ.

Milites & alie persone Relig. prohibentur coram aliis litigare seu comparere pro iustitia quæ oram iudicibus Religiosis.

Potestas & jurisdictio Magistri, & Conventus super personis & rebus.

Procedendi
que contra
rebelles, &
inobedien-
tes, etiam per
edictum pu-
blicum, et ad
ad privatio-
nem benefi-
cium quom-
modolibet
obtentorum.

Exadvocandi
singulas cau-
sas, lites, &
querelas, que
inter ipsos
Frates & Mi-
lites orin-
tur.

Exequendi
sententias,
& rem judi-
catam.

Appellatio-
nes a senten-
tiis delega-
tor. ad M.
Magist. &
Conventum,
et ab eis ad
Capit. gener.
declarantur.

Omnes expe-
ditiones, &
executoriales
lag. liti, &
equent. exe-
cutione ab-
sque alicujus
licentia, nec
quopiam
possint impe-
di.

Facultas pro-
cedendi con-
tra clericos,
seu aios in-
debitu occu-
pantes loca,
& bona Re-
lig. seu non
solventes an-
uales census
& ibitus
responsio-
nes
mortuario-

& commorantes (qui omnes Magistro & subdelegatis ab eo, firmiter, tam personaliter quam realiter, omni exceptione cessante, & quocumque a nobis vel sede predicta obtento, vel obtinendo indulto, non obstant, parere, & obedire teneantur) plenariam & omnimodam, etiam meri & mixti imperii, jurisdictionem & superioritatem.

§. 23. Ipseque Magister contra rebelles, & suis mandatis non obediens, etiam vigore litterarum Apostolicarum, etiam in forma brevis, a nobis & successoribus nostris pro tempore emanatarum, servatis quatuor terminis ad docendum se parvisse & satisfecisse in loco Conventus hospitalis hujusmodi, post legitime executam primam citationem, ad multam, five penam personaliter, juxta mores & stabilimenta predicta, seu etiam ad privationem habitus & beneficiorum, domorum, & prædiorum per eos obtentorum procedendi; vel etiam, si magis expedire videbitur, beneficia, domos, & prædia ipsa ad manus suas, seu receptorum dicti Hospitalis reducendi, & (donec ipsi inobedientes contumaciam purgaverint, & debita onera persolverint) pro suo arbitrio retinendi, illorum fructus, redditus, & proventus, arrendandi & percipiendi.

§. 24. Necnon omnes & singulas causas, lites, & querelas (nondum tamen coram aliis iudicibus moras, & pendentes) super quibuscumque dicti Hospitalis beneficiis, ac bonis, rebus, & pecuniis ararii, Fratrum quorumcumque, in quibus inter se ipsos invicem, realiter, five personaliter convenient, seu conveniunt, atque etiam in quibus ab aliis etiam clericis secularibus vel regularibus, aut laicis similiter convenientur, etiam per deputatos ab eis, in locis in quibus causæ ipse cognoscuntur, audiendi, & decidendi eosque citandi, & quoties opus fuerit inhibendi, etiam sub censuris & penis Ecclesiasticis, tam in curia predicta quam extra eam, facultatem habeant.

§. 25. Necnon illorum sententiarum, & res iudicata per Priorem Ecclesiæ dicti Conventus, etiam sub censuris & penis Ecclesiasticis contra condemnatos, tam realiter quam personaliter executioni mandentur: ita quod alibi quam in dicto Hospitali, aut extra illud ex Magistri & Conventus commissione cognosci & terminari nequeant.

§. 26. Nec a sententiis, per Iudices dicti Hospitalis pro tempore latis, ad alium quam Magistrum & Conventum predictos, seu Iudices ab eis deputatos, in quavis instantia, neque a sententiis per ipsum Magistrum, & Concilium latis, aliò quam ad generale Capitulum, sive per ipsius Hospitalis Fratres, five per ipsos subditos, & vassallos, quocummodo appellari possit: quinimo illi usque ad tertiam sententiam in eodem Conventu procedere teneantur.

§. 27. Et similiter, quod omnes sententiarum per eisdem Magistrum, & Conventum latarum, omnes item commissiones, citationes, collationes, & omnia denique eorumdem scripta, ad omnes sue jurisdictioni subditorum, ac reliquorum etiam quorum intererit, causas, lites, seu querelas coram ipsis pertractandas, directè exequi, & a nonnullis locorum & terrarum dominis, etiam Regali, aut Ducali dignitate fulgentibus, aliqua ratione expectandi consensu, seu alio quovis quæsito colore in eorumdem executione impediri possint, servato tamen in eis exsequendis Datæ ordine, ita quod eorum ultimæ præterferri nequeant.

§. 28. Ac quod contra Clericos, seculares seu laicos, Priores, Præceptorias, domos, cameras magistras nuncupatas, & alia beneficia Hospitalis hujusmodi, eorumque res & bona quocumque titulo, sine tamen consensu, & expressa licentia Magistri & Conventus præfatorum, indebitè occupantes, seu illi, aut ejus communi arario, seu Fratribus, occasione responsonum annuarum & vacantium, mortuorum, annatarum, passagiorum, areragiorum, seu alias quomodolibet, & ex quacumque alia causa debentes, siquidem illi actores

sint, & in quavis instantia ad causam venient, Magister & Conventus præfati, modo & forma quibus contra ipsius Hospitalis Fratres procedi consueverit, pro illorum recuperatione libere procedere, & eos Prioratibus, Præceptoribus, domibus, & aliis beneficiis hujusmodi, servata forma joris, & alias juxta formam privilegiorum prædictorum privare; si vero rei fuerint, coram ipsorum competentibus Iudicibus ad recuperationem, & alia prædicta agere, & omnia juris remedia tentare, ac demum privatione hujusmodi legitime facta, de prioratibus, aliisque beneficiis prædictis, per privationem eandem vacantibus, libere disponere valeant.

§. 29. Necnon personæ in dignitate Ecclesiastica ubilibet constitutæ, & quicumque locorum Ordinarii, ac eorum Vicarii & Officiales, per eosdem Magistrum & Conventum, postquam dictam Sedem habuerint pro tempore eligendam, servata tamen forma Concilii Tridentini, in eorum & quorumcumque Priorum, Præceptorum, & Fratrum Hospitalis hujusmodi, Conservatores, qui quamdiu exerceant dictum officium, à nemine quo minus illud exerceant sub aliquo prætextu impediri vel molestari possint, deputati sint; ita quod ipsi electi, sub excommunicationis pena eisdem Priores, Præceptores, & Fratres, ac eorum singulos, non tamen extra regularia dicti Hospitalis loco degentes, adversus inferentes eis, aut eorum servitoribus & familiaribus injurias, seu gravamina vel damna, in personis, in rebus, & bonis, seu exigentes ab eis contra ac superscriptum est, vectigalia, dacia, pedagia, gabellas, collectas, aut alia onera deferre, & præservare, ac omnem eorum jurisdictionem exercere; necnon ubi executio realis vel personalis adversus reos fieri non poterit, & reorum contumacia id exegerit, prædictis legitime monitionibus, aliisque servandis rite servatis, sententias, censuras, & penas Ecclesiasticas contra rebelles, & inobedientes, cum effectu promulgare, ac privilegia Prioribus, Præceptoribus, & Fratribus præfatis pro tempore concessa, eis observari facere debeant & teneantur; in causis autem Hospitalis & Militiæ hujusmodi, eorumque bonorum & personarum, ubi aliarum probationes non existunt, eorum Magister, Priores, Præceptores, Milites, Fratres, vassalli, subditi, servitores, & alie persone in testes adhiberi & recipi possint.

§. 30. Ac jura mortuorum, & vacantium, necnon areragiorum, passagiorum, & aliorum quorumcumque, ita ut quavis personæ cujuscumque Ecclesiasticæ dignitatis existentes, beneficia Hospitalis hujusmodi pro tempore obtinentes, illaolvere omnino teneantur, & adstricti sint, ac ad id etiam sub sententiis, censuris, & penis Ecclesiasticis, ac aliis juxta eorumdem privilegia; privationis, & apprehensionis bonorum ad manus suas remediis cogi possint, solvantur.

§. 31. Necnon quod Magister, Priores, præceptores, & dicti Hospitalis Fratres Cappellani, ab Ordinariis, intra quorum diocesis fines, eorum Prioratus, Præceptorat, & alia loca, in quibus eos residere oportuerit, existant, vel si ab Ordinariis præfatis legitime impeditis non poterint, ab eis nihilominus examinati, atque idonei secundum canonicas sanctiones reperti & approbati, habitique ab eis dimissorialibus litteris, & a suis superioribus licentia, & servata in omnibus forma Concilii Tridentini, à quocumque catholico Antistite sub Romanæ Sedis obedientia constituto, in propria diocesi residente, aut in aliena pro diocessano Pontificali exercente, diligenti prævio examine, sacros Ordines, etià (si id pro utilitate aut necessitate Hospitalis, Prioratum, Præceptoratum, & aliorum locorum hujusmodi respectu eisdem Ordinariis, & Superioribus videbitur expedire) extra tempora à jure statuta, tribus, nec paucioribus diebus festis suscipere, & in quibusvis tam secularium quam regularium Ecclesiis, cum commendatitiis suis superioris litteris, absque alicujus licentia celebrare possint.

rum, annato-
rum, &c.
communi
arario.

Qualibet
personæ in
dignitate Ec-
clesiasticæ, pos-
sunt eligi in
Conservato-
res cum fa-
cultatibus
necessariis.

Obtinentes
benef. Hospi-
talis teneant
solvere Hospi-
tali jura
mortuario-
rum & va-
cantium, &c.

Facultas su-
mendi ordi-
nes etiam ex-
tra tempora,
& celebrandi
in quibusvis
Ecclesiis
cum condi-
tionibus qui-
buldam.

Magister Cō-
ventus, Prio-
res, & Pae-
ceptores in-
tra limites
suarum juris-
dictionum
veri Ordina-
rii exsunt.
Magister, &
Conventus
quoscunque
delinquentes
ubique cape-
re, & ad lo-
cum conven-
tus, vel alium
ad id destina-
tum trans-
mittere pos-
sunt.

Officiales
omnes tenen-
tur prae-
stare auxilium
pro capiendis &
transmitten-
dis delin-
quentibus.

Cassatio &
annullatio
quarumcum-
que expecta-
tivarum, re-
servatarum,
anistinctu,
concessio-
num, ac alia-
rum gratia-
rum preven-
tivarum su-
per locis Re-
ligiosis ab-
que consensu
Magistri, &
Conventus.

Licentia ap-
prehendiendi
propria auc-
toritate pos-
sessionem bono-
rum & loco-
rum per
alios occu-
patorum, &
ea non resti-
tuentium.
Loca Relig.
non compre-
heniuntur
sub reserva-
tione m. b. Apo-
stolicis, sed
sunt manua-
lia.

§. 32. Et ipsi Magister & Conventus, necnon Prior
Ecclesiarum, alique Priores & Praeceptores, intra limites
suarum jurisdictionum & administrationum, veri
Ordinarii, juxta formam stabilimentorum & privi-
legiorum praedictorum, existant, & esse censeantur.

§. 33. Necnon Magister & Conventus, quoscumque
& singulos Priores & Commendatores, suorum
Prioratum & Commendarum Fratres seu Religio-
sos delinquentes vel inobedientes, cujuscumque
dignitatis, status, gradus, ordinis & praeminentiae
existentes, etiam si quavis, etiam Apostolica exem-
ptione fungantur, in quocumque loco quantumvis
privilegiato, & quavis etiam Imperatoris, Regum,
sen aliorum Principum, etiam Ecclesiasticorum Curia-
rum, praeterquam Romana, per se, aut suos Officia-
les & Ministros, capere & incarcerare; ac captos ad
se vel eorum nomine liberare, & ad Hospitale praefatum
per Magistrum & Conventum praefatos (juxta
eorum constitutiones & stabilimenta) puniendos
sub debita custodia transmittere, & transmitti facere,
libere & licite possint.

§. 34. Ac tam Ecclesiasticis quam saeculares Officia-
les, & locorum Potestates, ad eisdem Magistro
& Conventui, Prioribus, Commendatoribus, aliisque
in praemissis assistendum, ac auxilium, consilium,
favorem, & juvamen praestandum, sub ex-
communicationis, & aliis censuris & poenis Eccle-
siasticis teneantur, & obligati sint.

§. 35. Ac omnia & singula, quae tamen suum non-
dum sortita sunt effectum, speciales & generales,
etiam mentales reservationes, expectativae, manda-
ta de providendo, antianitates, sine consensu
Coadjutoriae, necnon praeventivae quaecumque, gratiae
de & super Prioratibus, Praeceptoribus, Rectoribus,
Domibus, Cameris Magistralibus, locis, & membris,
ac aliis beneficiis Ecclesiasticis dicti Hospitalis
quovis modo nuncupentur, etiam Angliae, Castellae,
Legionis, ac Valentiae Regnis, ac Principatu
Cathaloniae, & Comitatu Flandriae, quodcumque
& qualitercumque, absque Magistro & Conventus
praefatorum consensu, etiam cum quibuscumque fortissi-
mis & insolitis, etiam derogatoriis derogatoriis,
clausulis, irritantibusque & aliis decretis & inhibi-
tionibus, etiam motu & scientia similibus, quibus-
vis etiam aliis quam dicti Hospitalis personis cujuscumque
dignitatis, status, gradus, ordinis vel praeminentiae
fuerint, etiam Cardinalatus honore fun-
gentibus & sancturis, etiam per nos, & Sedem praefatam,
tam in genere quam in specie concessa, & facta,
& quavis etiam praeventivas, & restitutivas,
ac praeservativas, necnon derogatorias juribus dicto-
rum Magistri & Conventus, etiam quoad annum
responsionem illis faciendam, clausulas in se conti-
nentias, eorumque vires & effectus, revocata, cassae,
& nulla, nulliusque roboris vel momenti sint, ac ne-
mini suffragari possint, neque debeant, nec per ea
cuiquam in Prioratibus, Praeceptoribus, dignitatibus,
domibus, locis, & membris, ac aliis beneficiis Hos-
pitalis hujusmodi, jus acquiri possit, neque colo-
ratus titulus possidendi tribui, sed illis effectum
suum, ut praefertur, nondum sortitis, nequaquam
obstantibus Magistro & Conventus praefati, conjunctim
vel divisim, juxta consuetudines & stabilimenta
hujusmodi Hospitalis, de Prioratibus, Praeceptoribus,
domibus, cameris, locis & membris, ac aliis
Hospitalis beneficiis hujusmodi, libere disponere.

§. 36. Et interim (donec de illis disposuerint) per
se, vel procuratores suos possessionem eorumdem
vacantem propria auctoritate libere apprehendere,
ac illorum fructus, redditus, & proventus percipere,
ac in suos & Magistralis & Conventualis mensura-
tus usus & utilitatem convertere & retinere possint,
cujusvis licentia super his minime requisita.

§. 37. Praeterea, quod Prioratus, Praeceptoriae,
& membra, ac beneficia quaecumque dicti Hospitalis,
quae pro tempore qualitercumque vacaverint
extra Romanam Curiam sub quibuscumque generalibus
vel specialibus reservationibus Apostolicis factis &
quas fieri contigerit de beneficiis Ecclesiasticis pro

tempore vacantibus, utpote ad Hospitalitatem &
fidei tuitionem ordinata, nullatenus includantur,
nec reservata vel affecta existant, sed Hospitalium
pauperum, quae sub reservationibus ipsis non inclu-
duntur, quoad id fortiantur naturam.

§. 38. Debeatque de illis per pro tempore exis-
tentem Magistrum & Conventum praedictos dumtaxat,
& non alium, juxta stabilimenta praedicta, Fratres
dicti Hospitalis provideri. Resignationes vero, seu
cessiones de illis ad pro tempore illa obtinentibus,
etiam si obtinentes de dicta militia non sint,
in favorem quorumcumque personarum fieri
nequeant, nisi personae ipsae professionem per
Fratres dicti Hospitalis emitte solitam jam emisserint,
aut illam ex tunc intra duos menses expressim
emittere, & habitum per eosdem gestari solitum susci-
pere & gestare parate existant, alioquin resignationes
& cessiones ipsae, & quas aliter fieri contigerit,
per nos, aut successores nostros Rom. Pont. pro
tempore existentes ad dictam Sedem, vel ejus, aut
alia quacumque auctoritate de Prioratibus, Praeceptoribus,
membris & beneficiis hujusmodi reservationes,
provisiones, collationes, commendae, uniones, &
quaecumque aliae similes vel dissimiles dispositiones.

§. 39. Et exemptiones, Priorum, Praeceptorum,
& Fratrum & Magistri & Conventus praefatorum
obedia & superioritate, aut debitis per eos praefato
arario responsionibus annuis, & aliis juribus, quacumque
ratione vel causa, etiam motu, scientia &
potestatis plenitudine similibus, etiam cum expressa
derogatione posteriorum litterarum quorumcumque,
quae etiam per nos in contrarium fortasse fieri
contigerit, nullius penitus sint roboris vel momenti,
& habeantur prorsus pro infectis, nec censeantur in
hac parte unquam derogatum per quacumque
clausulas etiam derogatoriarum derogatorias, for-
tiores & efficaciore, nisi dum & quoties ipsarum
posteriorum litterarum de verbo ad verbum, verè
& non per clausulas id importantes, inserto tenore
de ipsorum S. B. E. Cardinalium consilio derogari
contingerit, nec etiam tunc nisi ad id Magistri &
Conventus praefatorum expressus accedat assensus,
& non aliter, nec alio modo; & semper in hujusmodi,
quae sic sient de consilio praefato, derogationibus,
censeantur appposita clausula, quod effectum fortiantur
de consensu Magistri & Conventus praefatorum,
& non aliter, nec alio modo.

§. 40. Quodque collationes, provisiones, com-
mende, uniones, reservationes, & aliae dispositiones
quolibet, quas de eisdem Prioratibus, Praeceptoribus
& membris pro tempore, per cessum vel decessum,
seu quavis aliam dimissionem, praeterquam apud
Sedem vacantibus, alias quam in hujusmodi perso-
nis, & modo praedictis fieri contingerit, etiam si per
nos & pro tempore existentem Romanum Pontificem
sient, illis, quibus sic sient, nullum jus, nul-
lumque coloratum titulum tribuant possidendi.

§. 41. Alienationes censuum, reddituum, iurium,
jurisdictionum, & bonorum quorumcumque ad Prio-
ratus, Praeceptorias, domos, Hospitalia, beneficia,
& loca Hospitalis hujusmodi pertinentium, sub ex-
communicationis latae sententiae, & privationis benefi-
ciorum obtentorum poenis, per contrasficientes eo
ipso absque aliqua declaratione incurrendis, de ce-
tero ne fiant; & si fiant, viribus omnino careant.

§. 42. Et insuper, quod iurapatronatus, & prae-
tendi personas idoneas ad Prioratus, Praeceptorias,
Hospitalia, membra, aliaque beneficia & loca Hospi-
talis hujusmodi, ad quadraginta annis citra acquisita,
& in futurum acquirenda, ex quavis causa, praeterquam
ratione fundationis, & juxta dispositionem Con-
cilio Tridentini, nisi praevia diligenti cognitione per
locorum Ordinarios habenda, reperta fuerint ob ma-
ximè evidentem beneficiorum, & locorum hujusmodi
necessitatem constituta esse ab eisdem Ordinariis
in totum revocentur, & restituito patronis eo quod
ab ipsis propter ea datum fuerit, in pristinum liber-
tatem reducantur, & ex tunc (sine tamen damno
illa canonice possidentium) liceat Magistro & Con-

Loca Relig.
per magnum
Magistru &
Conventum
dumtaxat, &
non alios,
conferri de-
bent perso-
nis relig. qui
professionem
jam emis-
serint, & reli-
gionem
seu cessiones
fieri neque-
ant nisi in
personis dic-
ta Religionem
professu habi-
tum solitu
gestantibus.

Exemptiones
concedit
militibus, non
suffragentur
adversus de-
bita per ipsos
communem
arario Hospi-
talis, & obediencia
magistri Magistri,
& Con-
ventus.

Loca Relig.
non nisi in
Religiosis
professu, ac
habitu gestantibus
conferri possint.

Alienationes
non fiant, &
quae factae
viribus omni-
nino careant.

Revocatio
iuripat. &
facultas li-
berandi facta
restitutione.

Prohibitio
relevationis
penſionum
ſuper benefi-
ciis dicti Ho-
ſpitals, niſi
in favorem
Fratrū ejus-
dem Ordinis
& Religionis.

Ad parochia-
les & alias
dicti Ord. Ec-
clesias depu-
tari poſſunt
Frates capel-
lani, non ob-
ſtante quod
per abſolum
ut alias per
quidam
empus preſ-
byteris ſecu-
laribus fue-
rit collata,
ſed conſerri
conſueat.

Frates Mil-
ites quous
enſi conſe-
antur in ti-
tulum ea
quod vixe-
ant retinere
poſſunt
Parochialib.
ſeculis Ec-
cleſ. non ſi-
ſer Capella-
nos Ordinis
nam non
poſſeſſos, in
eleſtium
poſſeſſorum,
eleſt vitor,
ſi preſenta-
ſis ad requi-
ſitionem Ma-
giſtri, &c.
ſi ſiſtatur.
Privilegiis
eligendi
ſiſtatur, qui
ſiſtatur ſu-
ſperint, &c.
ſiſtatur cer-
tum pro-
ſiſtatur.

ventui præſatis, Prioratus, Præceptorias, Hoſpi-
talia, membra & beneficia hujusmodi conferre.

§. 43. Et quod nulla penſio annua ſuper aliquibus
Præceptoris, Commendæ, vel alterius beneficii
Militiæ hujusmodi fructibus, etiam ex reſignatione
in manibus Romani Pontificis, aut alia quavis pro-
babili cauſa, niſi in perſonam dictæ Religionis &
Militiæ, etiam per ipſum Pontificem reſervari, ne-
que Commendæ, & alia beneficia dictæ Religionis
penſionibus hujusmodi, aliam quam ut præſertur
onerari poſſint, & ſi penſiones deſuper aliter aſſi-
gnari contingat, aſſignationes ipſæ nullius ſint ro-
boris vel momenti, nec titulares beneficiorum hu-
juſmodi ad illarum ſolutiones teneantur, neque ad
id cenſus Eccleſiaſticiſ, aliſive pœnis compelli
poſſint.

§. 44. Et quod liceat Magiſtro, ſinguliſque Pri-
oribus, Præceptoribus, Militibus, & Fratribus hoſpi-
talis hujusmodi, Parochialis, ac etiam ſine cura Ec-
clesias vel earum Vicarias, ſeu Capellanas perpetuas,
aut Capellas, vel Altaria, ſeu alia beneficia ſimplicia
ad eorum collationem, proviſionem, præſentationem,
electionem, ſeu quamvis aliam diſpoſitionem
ratione Prioratum, Præceptorium, & Camera-
rum Magiſtratum nuncupatum, domorum, & aliorum
beneficiorum dicti Hoſpitals per eos pro tempore
obtentorum, de jure, ſtatuto, conſuetudine,
fundatione, aut privilegio, ſeu alias quomodolibet
ſpectantia, & pertinentia, & ab ipſis Prioratibus,
Præceptoris, domibus, hoſpitalibus, & aliis benefi-
ciis dependentia, ſeu illis annexa, & quæ dudum
Fratribus ſaltem Capellanis ejusdem Hoſpitals ab
eiſdem Magiſtro, Prioribus, & Præceptoribus, & aliis
præſatis conferrebantur, à longo tamen, & forſan
longiſſimo tempore citra, de cujus initio memoria
hominum forſan non exiſtit, per ipſos Magiſtrum,
Priores, Præceptores, Milites, & Fratres per abu-
ſum, aut ex deſectū Fratrum Capellanorum, vel
aliarum perſonarum ejusdem Hoſpitals ad id ido-
nearum, clericis ſeu preſbyteris ſecularibus collata,
aut conſerri, & per ipſos preſbyteros vel clericos ſe-
culares obtineri ſolita, cum primum per quancum-
que diſmiſſionem illa nunc obſtinentur vacaverint,
ea ſcilicet quibus preſbyteratus ordo annexus eſt,
non aliis quam Fratribus Hoſpitals hujusmodi Ca-
pellanis nuncupatis, qui à Militibus preſbyteris, ſeu
clericis, niſi quo ad geſtationem Crucis, vel habitus
dicti Hoſpitals ad pectus non differunt, dummodo
ſi preſbyteri, aut in ea ætate conſtituti, ut ad or-
dinem preſbyteratus promoveri poſſint, & ad id
aliis etiam juxta diſpoſitionem Concilii Tridentini,
idonei, & habiles ſint: reliqua vero ceteris Fra-
tribus Militibus conferre, ac alias de illis providere,
& diſponere.

§. 45. Ipſique Fratres, quibus Beneficia hujus-
modi contigerit, illa, ſi ſibi canonicè alias conferan-
tur, aut eligantur, præſententur, vel alias aſſuman-
tur ad illa, & inſtituantur in eis, recipere, & in ti-
tulum etiam quoad vixerint retinere.

§. 46. Et quos preſbyteri qui in dicta Religione
profeſſionem non emiſerint, niſi de expreſſa licen-
tia, vel conſenſu Magiſtri, ſeu Priorum, Præcepto-
rum, vel Fratrum, quos id tangeret, ad deſervien-
dum Parochialibus, & aliis Eccleſiis, ac capellis Ho-
ſpitals hujusmodi, Capellani ejusdem Religionis, vel
in deſectum eorum preſbyteri in ea non profeſſi,
dummodo tam hi, quam illi (ut præſertur) idonei
ſint, & juxta decreta Concilii Tridentini hujusmodi,
per locorum Ordinarios ad requiſitionem, ſeu
præſentationem dictorum Priorum, Præceptorum,
& Fratrum, ad quos id pertinere competentem fue-
rit, abſque aliqua exactione & impoſitione, recipi
& admitti debeant.

§. 47. Quodque illi dumtaxat Privilegiis dicto
Hoſpitals conceſſis gaudeant, qui à præſato Magiſtro,
ſeu de juris licentia habitum ſuſceperint, & profeſ-
ſionem emiſerint, ſeu de habitu ſuſcipiendo, & profeſ-
ſione hujusmodi emittenda infra certum tempus
arctati fuerint.

§. 48. Nulluſque Priorum, Præceptorum, & Fra-
trum præſatorum, abſque mandato ſeu licentia
præſati Magiſtri, aut ſaltem fui Prioris, ſeu Pro-
curatoris ipſius Hoſpitals in Romana Curia exi-
ſtentis, privilegiis prædictis in eadem Curia uti
valeat, nec illa abſque hujusmodi licentia vagan-
tibus ſuffragentur.

§. 49. Ac manus violentæ in eos qui ad Eccle-
ſias, ſeu domos ejusdem Religionis pro ſua ſalute
conſugerint, per quempiam injici nequeant, ſub
excommunicationis latæ ſententiæ pœna.

§. 50. Liceat etiam Jannotto, & pro tempore
exiſtenti Magiſtro, & Conventui præſatis, in ſingulis
Prioratibus ipſius Hoſpitals unum Vicarium cum
facultate conferendi Præceptorias & domos Hoſpi-
talis hujusmodi, deputare, ac penſiones, ſeu reſ-
poſſiones, & onera ſuper domibus, Præceptoris,
Leproſariis, & aliis beneficiis Hoſpitals hujusmodi
imponi ſolita à quibuſcumque etiam Clericis ſe-
cularibus illa in Commendam obſtinentibus, eorum-
que Colonis, & Inquilinis, etiam laicis, eo modo
quo à Fratribus dicti Hoſpitals exigentur, exigere.

§. 51. Ac in Romana Curia Procuratorem gene-
ralem cum generali, vel ſpeciali, aut limitata pote-
ſtate, & facultate conſtituere, ſeu deputare; & in
eadem Curia per ſe, ſeu dictum Procuratorem que-
cumque ejusdem Hoſpitals beneficia cujuſcumque
qualitatis exiſtentia quomodolibet, præterquam per
reſignationem in manibus noſtris, & ſucceſſorum
noſtrorum Romanorum Pont. pro tempore, aut per
obitum, ſeu alias quomodocumque apud Sedem
vacantia, juxta ipſius Hoſpitals, & Militiæ ſtabili-
menta, libere conferre, & de illis, de quibus jam diſ-
poſitum fuit de novo, de aliis verò beneficiis hujus-
modi, ſive illa tamquam privata prædia in titulum
perpetui beneficii Eccleſiaſtici, ſeu etiam ad nutum,
aut amovibilibiter uni, vel diverſis perſonis aſſignari
ſolita ſint, juxta ſolitum hujusmodi, pro beneficio-
rum eorundem natura, aut etiam ſi expediverit per
viam perpetuæ unionis, libere diſponere; ita tamen,
quòd beneficia preſbyteris deſtinata, nullatenus Mi-
litibus, ſeu Fratribus cappellanis in preſbyteratus
ordine, aut tali ætate qua ad illum canonicè promo-
verì poſſint, conſtitutis, dumtaxat conferantur.

§. 52. Necnon Antianitates, tam generales, quam
ſpeciales ſuper eiſdem beneficiis Fratribus ejusdem
hoſpitals, quæ eo ipſo Apoſtolica auctoritate con-
firmatæ, & approbatæ cenſeantur, concedere: ac
reſignationes dictorum beneficiorum recipere, &
admittere.

§. 53. Nec Cæmeteria in eorum Parochialibus
Eccleſiis habere, & quoruncumque Chriſtiſidelium
cadavera, etiam ſi interditi forent, (dummodo inter
dicto cauſam non dederint) ſalvo jure, ſi quo
Cathedrali Eccleſiæ, aut alteri Parochiali ratione
Quartæ funeralis debitum fuerit, abſque alio
onere, & ſolutione Epifcopo faciendâ, recipere,
& ſepelire.

§. 54. Legata, & donata, tam inter vivos, quam
qualibet ultima voluntate exigere, & percipere.

§. 55. Necnon Prioribus, Præceptoribus, Mi-
litibus fratribus, & perſonis præſatis intra Regu-
laria dicti Hoſpitals loca degentibus (de ſuorum
Superiorum licentia, aliis verò quo ad confirma-
tionem ſine Dioceſani, quo ad alia verò ſine Pa-
rochialium Eccleſiarum, intra quorum limites eos
degere contigerit, præjudicio, & ſervatis decretis
Concilii Tridentini) liceat quæcumque Eccleſiaſtica
Sacramenta à quocumque maluerint Catholico An-
tiſtite, ſive alio illa licitè adminiſtrante, gratiam,
& communionem dictæ Sedis habente, nihil obſta-
to, vel ſoluto recipere.

§. 56. Et tam ipſis, quam eorum familiaribus
Arma quæcumque & ubicumque locorum pro ſua
deſenſione, & hoſtium dictæ Sedis offenſione ge-
ſtare.

§. 57. Liceat ſimiliter Capellanis ejusdem Hoſpi-
talis, Priorum, Præceptorum, Militum, Fratrum, perſo-
narum, vaſſallorum, ſubditorum, & familiarium præ-

Qui gaude-
nt his privi-
legiis.

Non injice-
tur manus
violenta in
conſugentes
ad Eccleſias
Religionis.
Facultas de-
putandi Vi-
carium, cum
facultate
conferendi
beneficia.

Et Procura-
torem gene-
ralem in
Rom. Cur.
cum poteſtate
conferendi
benef. etiam
reſervata, af-
fecta, vel de-
voluta, etiam
in titul. per-
petui benefi-
cii, vel ad
nutum, aut
amovibilibiter,
etiam per
viam perpetuæ
unionis.

Et concedea-
nt antianita-
tes, ac reſi-
gnationes.

Facultas ſe-
peliendi in
eorum Pa-
rochialis quocumque
interdictis,
dummodo
&c.

Exigendi do-
nata, & le-
gata.
Recipiendi
quæcumque
Eccleſiaſtica
ſacramenta à
quocumque
Catholico
Antiftite.

Deſenſendi
quæcumque
Arma ubique
locorum.

Audiendi
confeſſio-
nes, mini-

1567.

strandi facra-
menta, ac ce-
lebrandi di-
vina pro Bra-
tribus Capel-
lanis etiam
tempore in-
terdicti.

Erigendi præ-
ceptoras, do-
mos, hospita-
lia abque ille-
centis Ordina-
riorum loco-
rum, quæ
gaudent pri-
vilegiis, & in
quibus Ordina-
riorum nulla fit ju-
risdictio.

Facultas te-
randi omni-
bus etiam
ministris
presbyt. &
beneficiatis,
de quibus-
cumque bonis
& ex fructib.
benefic. ac-
quisitis, & si
ter quocum-
que confanguineos
inhabiles
dammodo
quintam par-
tem Hospitali
relinquant.

Tu attende
constit. 73.
huius Pont.
Sacrosancti.

Celebrandi
in habitu
Pontif. &
dandi benedi-
ctionem
dammodo
non sit præ-
sens aliquis
Antistes, &
tunc de illius
licentia.

Militibus, &
alii non in-
currunt pec-
catum mortale
nisi propter
inobedientiam,
& contumaciam
pluries commis-
sam, & rebellionem
a Religione.

Personæ religio-
nis tempore sum-
ptionis habi-
tus & profes-
sionis, atque
in articulo
mortis habent
facultatem eligendi
Confessorem
quo recipiant indul-
gentiam,
&c.

fatorum intra huiusmodi loca degentium, Confessiones audire, & penitentiam salutarem eis iungere, ac Eucharistia, & alia Sacramenta ecclesiastica ministrare, necnon tempore Interdicti, dummodo illi causam non dederint, excommunicatis & interdictis exclusis, clausis januis, & submissa voce, Missas, & alia divina officia celebrare.

§. 58. Quilibet autem Christianus in quibusvis Civitatibus, locis, diocesis, præceptoras, domos, & hospitalia, sub dependentia & subiectione dicti Hospitalis, & Militiæ, per ejus Fratres, & Milites obtinenda, quæ iisdem privilegiis, immunitatibus, indulgentiis, concessionibus & indultis, quibus alia dicti Hospitalis, præceptoras, domus, & hospitalia utuntur, fruuntur & gaudent, utantur, potiantur & gaudeant, assignata illis congrua dote, Ordinariorum locorum, & quorumvis aliorum licentia minimè requisita; & nulla præterea (nisi usquequo Magister, & Conventus Hospitalis huiusmodi propriam Sedem Conventualem in aliquo certo loco habuerint,) in illis Ordinariis ipsis jurisdictione, aut oneris imponendi facultate reservata, construi & erigi faciendi, plenam & liberam facultatem, & auctoritatem habeant.

§. 59. Ac quod pariter liceat omnibus Prioribus, Præceptoribus, ceterisque Militibus, ac Fratribus, & Ministris etiam presbyteris, & beneficiatis ejusdem Religionis, & Militiæ, de quibuscumque, tam stabilibus quam mobilibus bonis, pecuniarum summis, gemmis, & lapidibus pretiosis, aliisque rebus cujuscumque qualitatis & quantitas, ac valoris existant, per eos etiam ratione beneficiorum Ecclesiasticorum dicti Hospitalis dumtaxat per eos obrentorum, ac alias undecumque, & quomodolibet acquisitis, & ad illos quovis modo spectantibus (dummodo quintam illorum partem Conventui præfato relinquant) inter quoscumque confanguineos, filios etiam spurios, & alios illegitimos, aliasque quantumvis incapaces personas testari, ac alias etiam per codicillos, donatione inter vivos, causa mortis, & alia quacumque via, prout sibi videbitur, disponere, ac illa in pias, & non pias, alias tamen licitas causas erogare.

§. 60. Priori autem Ecclesiæ dicti Conventus pro tempore existenti, quoties sibi placuerit, Missam, & alia divina Officia in præfata aliisque dictæ Religionis Ecclesiis, in habitu Pontificali cum mitra & baculo pastoralis celebrare; ac post Missarum solemnia (dummodo non sit præsens aliquis Catholicus Antistes, vel de illius consensu) ibi benedictionem Christi populo impartiri.

§. 61. Et insuper, quod nullus ex Magistro, & Militibus, ac fratribus pro tempore existentibus, aliisque personis dictæ Militiæ, & Religionis, propter ejus Regulam, Capitula, & Statuta, nunc & pro tempore edita, non observata, vel minus rite adimpleta, in peccatum mortale incidat, præterquam propter inobedientiam, & contumaciam pluries commissam, & continuatam, & ab ipsa Religione rebellionem, & excommunicationis penæ sibi impositæ, ac alios casus, peccatum huiusmodi ex divinis præceptis, sacrisque Canonibus generantes.

§. 62. Et quod ipsi Milites, & alia ejusdem Militiæ personæ, qui tempore sumptionis habitus, & Professionis eorum Regularium emissionis, atque in articulo mortis constituti, de peccatis suis corde contriti, & ore confessi fuerint, plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam & remissionem, cum facultate etiam eligendi sibi dicto tempore professionis & mortis, confessorem ab Ordinario tamen approbatum. Ac tam Milites, & personæ præfate quam quivis alii utriusque sexus, qui Ecclesiæ domorum, & aliorum locorum Hospitalis huiusmodi, ubicumque existentes, singulis diebus Festivitatum, quæ in honorem D. N. JESU CHRISTI, & Beatis. MARIE Virginis ejus Matris, annuatim celebrantur, à primis Vespere usque ad occasum solis Festivitatum huiusmodi, devotè visitaverint, & pro pace inter Principes Christianos confovenda ter orationem Dominicam, & totidem Angelicam salutationem recitaverint, septem annorum & totidem quadrage-

narum de injunctis eis penitentis relaxationem consequantur.

§. 63. Necnon quod Notarii, qui rogati fuerint de testamentis, vel ultimis aliis voluntatibus, in quibus aliquid disponi contigerit in favorem & commodum Hospitalis, & Militiæ, sub excommunicationis penæ dispositionem huiusmodi, quanto citius commodè poterunt, Magistro, & Conventui dicti Hospitalis, vel alteri, per quem id poterit ad ipsorum Magistrum, & Conventum notitiam pervenire, intimare curent.

§. 64. Necnon quod Priores, & Præceptores quorumcumque Hospitalium, & domorum à dicto Hospitali S. Lazari dependentium, & illud in caput suum recognitionem, in die festo Dominicæ Palmarum, & per ejus octavam, si in sacerdotio constituti fuerint, per se in suis Hospitalibus, & ad omnes præfatis tantum, confessiones quorumcumque de consensu Ordinariorum locorum audire, & cum huiusmodi contentibus quibuscumque facultatibus & indulgentiis, ac peccatorum remissionem, eis auctoritate Apostolica concessis, uti, ac eisdem illis (de licentia tamen expressa Magistrum pro tempore existentis, & Conventus præfati Hospitalis, singulis annis renovanda) impartiri, iidemque, aut etiam si in presbyteratus ordine constituti non sint, alium, vel alios probos, & idoneos presbyteros, seculares vel cujusvis ordinis Regulares per locorum Ordinarios approbatos, ad id deputare plene & libere possint; aliis verò temporibus sint sicut alii sacerdotes nullam à Sede prædicta facultatem habentes.

§. 65. Possint etiam Nolas, seu Campanas pœcis, seu aliis quibuscumque animalibus, quæ eidem S. Lazaro offerri contigerit, appendere, seu aliqua nota subfigmare.

§. 66. Necnon quod durante quacumque suspensione temporali indulgentiarum, gratiarum concessarum, vel in posterum concedendarum, Indulgentiæ prædictæ, ac omnes facultates, & gratiæ eidem Hospitali, illiusque Magistrum, Conventui, Fratribus, & Membris per Sedem præfata concessæ, non intelligantur suspensæ; sed in suo pristino, & vero valore, & firmitate existant, & permanent.

§. 67. Necnon ut liceat ipsis Fratribus in eorum Ecclesiis Missas, & alia quacumque divina Officia legere, vel etiam alta voce celebrare, vel per alios presbyteros idoneos celebrari facere: ac omnibus, & singulis Christianis fidelibus, & leprosis pauperibus infirmis in dictis Hospitalibus pro tempore degentibus Ecclesiastica sacramenta ministrare, ac eorum, & (sine tamen cujuscumque præjudicio) aliorum quorumcumque fidelium corpora mortuorum id eligentium, & petentium in Cæmeteriis, & Ecclesiis dictorum Fratrum Ecclesiastica tradere sepulture.

§. 68. Ac Verbum Dei debitis & congruis temporibus in Parochialibus quidem, Parochianis & populo, in aliis verò Ecclesiis ipsorum pauperibus ipsis, ac leprosis huiusmodi per ipsos, si suorum Superiorum licentiam habuerint, atque ab ipsis de vita, moribus, & scientia examinati, & approbati fuerint, petita ab Episcopis, intra quorum diocesis fines Ecclesiæ ipsæ constitutæ fuerint, benedictione, proponere: & si legitime impediti fuerint, per alios idoneos, superiorum fuorum, & eorumdem Episcoporum licentiam habentes, & in omnibus iuxta formam Concilii Tridentini, proponi facere.

§. 69. Et insuper, quod modernus, & pro tempore existens Magnus Magister, & Conventus, ac singuli Milites, & alia personæ Hospitalis, & Militiæ huiusmodi postquam præfata Sedem Conventualem firmaverint ut præmissum est, omnibus & singulis Privilegiis, immunitatibus, jurisdictionibus, exemptionibus, etiam per viam exceptionis in ipsa onerum impositione, dispensationibus, indultis, concessionibus, dispositionibus, honoribus, gratiis, libertatibus, favoribus, antelationibus, restitutionibus, reintegrationibus, & aliis quibuscumque gratis hucusque, S. Joannis Hierosolymitanis, S. Jacobi de Spata, S. Stephani Militibus, ac S. Spiritus in Saxia de Urbe, & S. Antonii Vienneis Hospitalibus,

Notarii tenentur sub penæ excommunicationis dare de legatis facti Hospitalis, & Militiæ.

Priores, & Præceptores in Dominicæ Palmarum & per ejus Octavam de consensu Ordinariorum locorum confelli, audire, & cum contentibus Indulgentiis, &c. uti, ac eisdem illis impartiri.

Facultas appendendi campanas, vel subfignandi animalia S. Lazari oblata. Indulgentiæ & gratiæ S. Lazari non intelliguntur suspensæ.

Facultas celebrandi divina Sacramenta ministrandi, ac corpora quorumque fidelium sepeliendi.

Verbum Dei prædicandi.

Concessio quorumcumque aliorum privilegiorum gratiarum, exemptionum, & aliarum facultatum concessarum Hospitalibus & militibus S. Joannis Hierosolymitanis, S. Jacobi de Spata, S. Antonii Vienneis, S. Spiritus de Urbe, ac S. Stephani in Tuscia.

calibus,

talibus, Religionibus, & Ordinibus, eorumque locis, personis, rebus, & bonis, per quoscunque Romanos Pontifices, etiam prædecessores nostros, ac etiam per Nos, & Sedem prædictam, seu Concilia generalia, vel alios quoscunque in genere vel in specie, etiam ad Imperatorum, Regum, ac aliorum Principum instantiam, vel Motu proprio, aut alias quomodolibet hæcenus concessis, quibus Hospitalia; Religiones, & Militiæ huiusmodi, eorum Magni Magistri, Conventus, & Fratres Milites utuntur, potiuntur, & gaudent, ac uti poterunt quomodolibet in futurum, pariformiter, absque ulla penitus differentia (citra Indulgentias quætuarias) uti, potiri, & gaudere in omnibus & per omnia, liberè ac licite valeant, perinde ac si ea omnia & singula prout illis concessa fuerint, eorumque omnium, & quorumcumque litterarum desuper quomodolibet concessarum tenores hic de verbo ad verbum infererentur: ita quod super illis vel eorum occasione per ipsos Ordinarios, aut quovis alios molestari, perturbari, vel inquietari non possint, de modo moderationibus, & limitationibus superscriptis, Concilio Tridentino prædicto non repugnent: & per hoc dictis Hospitalibus, & Militiis, ac iuribus cuiuslibet alterius tertii non præiudicetur, ac (quo ad exemptiones) iurisdictione Ordinariorum, tam ea que de iure communis eis competit, quam ea ex decretis dicti Concilii Tridentini eidem est attributa, semper salva existat. Præterquam in iis casibus, in quibus Concilium prædictum expresse excepit & exemptum Religionem S. Joannis Hierosolymitani, in quibus, & hæc S. Lazari Religio, & Militia (præterquam quo ad Seminarii contributionem) excepta, & exempta pariter intelligitur.

§. 70. Præterea, quod tam præsentium quam aliarum quarumcumque litterarum Apostolicarum, seu earum transumptorum, ac mandatorum Magistrum, & Conventus prædictorum publicatio, & affixio in singulis Prioratibus, Membris, & Beneficiis Religionis huiusmodi facta, perinde ardeat, ac si contra contentos sub eisdem personaliter facta essent, facta tamen in præmissis diligenter de illis personaliter reperendis in dictis locis.

§. 71. Quodque verbis, in ipsum Magistrum, & Conventum litteris, circa singulorum Fratrum Militum dicti Hospitalis professionis emissionem, habitus susceptionem, debitum, & obsequiorum præstationem, plena fides adhibeatur.

§. 72. Et nihilominus, quod si quisquam Priorum, Præceptorum, Militum, & Fratrum dicti Hospitalis, ac quicumque alius qui professionem per Fratres dicti Hospitalis emitti solitam emisit, quandocumque pro servitiis Religionis, aut alias evocatus, seu in solutione jurium communis Aerarii morosus fuerit, & citatus coram dictis Magistro, & Conventu personaliter non comparuerit, ac illis obedientiam, aliaque jura debita non præstiterit, tempore sibi ad id prægendo elapso, canonico impedimento cessante, habita dignitate, administratione, & beneficio, ac quocumque honore, & officio alias juxta formam stabilimentorum, & privilegiorum prædictorum per Magistrum, & Conventum prædictos privari possit.

§. 73. Nec ulla derogatio, aut exemptio, realis vel personalis, seu alia gratia præservativa, etiam Motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus quomodolibet pro tempore facta, seu concessa, contra præmissa valeat, nec Magister, & Conventus prædicti illis parere teneantur: sed illis non obstantibus, de Prioratu, Præceptoratu, Dignitate, Officio, vel Beneficio sic per privationem huiusmodi vacante, juxta stabilimenta, & alia præmissa, libere disponi, aut illa alias per eum, vel eos, ad quem, seu quos antianitatis, vel alio jure pertinet, acceptari possit.

§. 74. Necnon quod præmissis etiam per quasque litteras Apostolicas, etiam quasvis clausulas generales, vel speciales, etiam derogatorias derogatorias, efficacioresque & insolitas, ac etiam irritantia decreta, sub quacumque verborum ex-

pressionem in se continentes, nullatenus derogari possit, nec quoad illa derogatum censeatur, nisi tenor illarum de verbo ad verbum nihil penitus omisso insertus, & huiusmodi derogationes Confistorialiter factæ, & per trinas distinctas litteras eundem tenorem continentes, tribus distinctis similibus vicibus Magno Magistro, & Conventui prædictis intimari, & insinuari fuerint, ac ipsorum Magistrum, & Conventus ad id expressus accedat assensus: & aliter factæ derogationes, nemini suffragentur, ac Magister, & Conventus prædicti ad parendum litteris derogatoriis huiusmodi, & decretis super illis processibus, ac illorum executoribus, & subexecutoribus, eorumque mandatis, & monitionibus minime teneantur: sed litterarum huiusmodi executionem omnino impedire, nec ratione resistentiæ censuris Ecclesiasticis per eosdem executores, vel subexecutores latis innodari possint.

§. 75. Et sic in præmissis, omnibus & singulis per quoscunque Judices, & Commissarios quavis auctoritate fungentes, etiam S.R.E. Cardinales, & causarum Palatii Apostolici Auditores, subfata eis, & cuilibet eorum quavis aliter iudicandi, & interpretandi facultate iudicari, & definiri debeat. Et quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit, irritum, & inane sit.

§. 76. Et quo ad præmissa non obstant ea omnia quæ dictus Pius IV. prædecessor in dictis litteris voluit non obstat.

§. 77. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrorum rationabilium, statutorum, ordinationum, revocationis, cassationis, irritationis, annulationis, evacuationis, & decretorum infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursurum.

Datum Romæ apud S. Petrum Anno Incarnationis Dominicæ 1567. septimo Kalendas Febr. Pontificatus nostri Anno 2.

Reservatio Beneficiorum propter crimen hæresis vacantium, & declaratio quod hæc beneficia non comprehenduntur in impetrationibus, in quibus modus vacationis propter crimen hæresis, non sit expressus, nisi in casibus hic nominatis.

Irritavit easdem Impetrationes Greg. XIII. ut inf. in ejus cons. 66. In Ecclesiis, ubi etiam notabo, in hoc Tomo II.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Cum ex Apostolatus officio nobis (meritis licet imparibus) credito cura Dominici gregis nobis imminet generalis & exinde teneamur, more vigiliis pastoris, vigilare, & attentius providere ut Ecclesiis, Monasteriis, & quibuscvis aliis beneficiis Ecclesiasticis nunc & pro tempore propter crimen hæresis vacantibus, & vacaturis, tales viri eis præfiantur idonei, qui detestandas, ac nefarias hæreses diabolo diffeminante contra veram & orthodoxam fidei puritatem exortas de agro Domini extirpare, & populos hic commisos ad Catholicæ Ecclesiæ veritatem reducere, doctrina, verbo, & boni operis exemplo valeant.

§. 1. Præmissorum itaque consideratione induti, & aliis id suadentibus rationabilibus causis, nonnullis etiam Prædecessorum nostrorum vestigiis inherendo, Motu proprio, non ad alicujus nobis super hoc oblata petitionis instantiam, sed de mera nostra voluntate, & deliberatione, omnia & singula beneficia Ecclesiastica, cum cura & sine cura, secularia & quorumvis Ordinum etiam S. Joannis Hierosolymitani, & aliorum quorumvis Militiarum regularia quæcumque & qualicumque sint etiam si secularia, canonicatus & præbendas, dignitates,

Decretum irritans, & clausula subfata, &c.

Clausula derogatoria.

Sanctio poenalis.

Dat. P. An. 2. die 26. Jan.

XXIX.

Edita An. D. 1567.

Causa hujus constituit.

Reservatio omnium beneficiorum propter crimen hæresis vacantium.

Declaratio
quod in im-
perationi-
bus benefi-
cium non com-
prehenduntur
beneficia pro-
pter hanc
vacantiam, nisi
specificè sit
expressum
&c.

Decretum
irritans.

Forma publ.
Quæ mox fe-
quitur.

Fides Exem-
plorum.

D. P. An. 2.
die 27. Jan.

Publicatio.

XXX.

personatus, administrationes, vel officia in cathedralibus etiam metropolitanis, vel collegiatis, & dignitates ipsæ in cathedralibus etiam metropolitanis post Pontificales majores seu collegiatis Ecclesiis hujusmodi principales, Regularia vero beneficia hujusmodi, Monasteria etiam consistorialia, Prioratus, Præpositura, præpositus, dignitates etiam conventuales, personatus, administrationes, vel officia etiam claustralia, ac hospitalia & præceptoratæ, & alias quomodocumque qualificata fuerint, ordinationi & dispensationi nostræ, & Sedis Apostolicæ hac perpetuo constitutione valitura auctoritate Apost. tenore præsentium reservamus.

§. 2. Declarantes omnes & quascumque imperationes de beneficiis ut præfertur, quomodocumque qualificatis certo modo in futurum faciendas, & obtinendas, beneficia hujusmodi propter hæresim vacantia, & in futurum vacatura non comprehendere, nisi specialiter, & dispositive vacationis modus propter crimen hæresis expressus fuerit, & illud nullo modo sub quibusvis clausulis, & decretis comprehendere quantumcumque generalibus in quibusvis gratis & concessionibus per nos & Romanos Pontifices successores nostros faciendis, et à per fiat signatis & concessis; ac decernentes omnes & quascumque imperationes de quibusvis beneficiis, ut præfertur qualificatis hætenus factas & obtentas, nisi earum vigore in iudicio per imperantes crimen hujusmodi deductum fuerit, & super eo sententiam favorabilem obtinuerint, vel dictorum beneficiorum possessionem assequuti fuerint, ad vacationem hujusmodi propter crimen hæresis se non extendere, & illud neminem comprehendere.

§. 3. Sicque per quoscumque Judices, & Commissarios quavis auctoritate fungentes etiam S.R.E. Cardinales iudicari & interpretari debere, irritum quoque & inane si secus per quoscumque quavis dignitate & auctoritate præditos, iudicatum fuerit, decernimus.

§. 4. Volumus autem quod præsentis litteræ in Cancellaria nostra Apostolica, & in acie Campi Floræ de more publicentur, & inter constitutiones perpetuo valituras describantur.

§. 5. Et quia difficile foret præsentis ad singula quæque loca deferri, volumus & etiam declaramus quod earum transumptis etiam impressis, manu alicujus Notarii subscriptis, ac sigillo alicujus Prælati munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ præsentibus adhiberetur si forent exhibitæ, vel ostensa.

Nulli ergo, &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1567. sexto Kal. Febr. Pontificatus nostri anno 2.

Anno à Nativitat. Domini 1567. Indiæ. 10. Pontificatus Sanctiss. in Christo patris, & D. N. D. Pii Papæ V. anno 2. die verò 17. mensis Febr. retroscriptæ litteræ affixæ, & publicatæ fuerunt ad valvas Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, per nos Antonium Clerici, & Jo. Andream Rogerium prædicti Sanctiss. D. N. Papæ Cursores.

Scipio de Ostavianis Mag. Curf.

Revocatio Indulgentiarum quomodolibet concessarum, continentium facultatem quætuandi, & pro quibus consequendis porrigendæ sunt manus adiutrices, Prohibitioque de cetero quætuandi, & quætores deputandi.

Ad hæc habes etiam hujus Pont. const. 99. Quam plenam. Necnon Concil. Trid. sess. 21. cap. ult. ubi abolito usu quætuandi, datur Ordinariis forma colligendi elemosynas.

PIUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

ET si Dominici gregis salutis semper intenti, singulis cum humilitate poscentibus benigne concedere nos & Prædecessores nostri studuerint, per quæ peccatorum mole deposita salus ipsis succedat, & hostis humani generis servitute ereptas animas lucrificent Altissimo, qui eas nobis sua bonitate commisit; id tamen propensiori studio nos præcavendum esse censuimus, ne cuiusvis Indulgentiæ, remissionis, vel facultatis obtentu, Christiani fideles procliviores ad illicita in posterum committenda reddantur, aut facilitas venie eis peccandi tribuat incentivum, & exinde clavium auctoritas deducatur in contemptum, & Christiani fideles quamplurimum scandalizentur.

§. 1. Sane cum ad auditum nostrum ex diversis mundi partibus quamplurimæ querelæ perlatis fuerint, quod vigore diversarum Indulgentiarum, & facultatum per Prædecessores nostros, ac etiam nos vel auctoritate nostra, tam fabricæ nostræ basilicæ Principis Apostolorum, & Ecclesiæ S. Joannis Lateranensis de Urbe, ipsiusque Ecclesiæ, necnon S. Joannis, & S. Lazari Hierosolimitani ac S. Spiritus in Saxia, & S. Joannis Lateranæ, ac S. Jacobi Incurabiliæ, de eadem Urbe, necnon S. Elmi, & S. Bovis, ac S. Gothardi, & S. Leugazoni, necnon S. Nicolai, & S. Bernardi montis Jovis, necnon S. Leonardi, ac S. Marthæ, necnon Sanctiss. Crucifixi Siracusanus ac S. Mariæ de monte Serrato, Hospitalibus, ac etiam S. Sebastiani prope, & extra muros dictæ urbis, necnon S. Antonii de S. Antonio Viennensis diocesis, & Redemptionis captivorum nuper Neapoli instituti Monasteriis, illorumque, ac diversis aliis Ecclesiis, Monasteriis, Hospitalibus, Militiis, Confraternitatibus, Societatibus, & piis locis concessarum, multi quætores ex eisdem Indulgentiis lucrum temporale tantum quærentes, nominibus fabricæ Ecclesiæ, Hospitalium, Monasteriorum, Militiarum, Confraternitatum, Societatum, & piorum locorum prædictorum in diversis Civitatibus, & Diocesium quæstas facere, Confratres describere, Capellas, & Oratoria erigere, illisque erectis Indulgentias hujusmodi communicare, & in diversis gradibus à jure prohibitis dispensare, ac plura etiam concedere, quam eis vigore facultatum prædictarum licitum sit, ipsique lucro intenti, pecuniæque potiusquam Christiani fidei salutem quærentes, ac eisdem Indulgentiis sic abutentes, quæstum ex illis particularem facere conantur, varioque & diversis Quætores, Commissarios, Procuratores, Receptores, Thesaurarios, Factores, Nuncios, & alios Ministros constituere, qui non solum supradicta, sed etiam plura alia eis nunquam concessa, facere, & concedere, necnon locorum Ordinarios, illorumque in spiritualibus Vicarios generales, & Officiales, ac Ministros, Ecclesiarumque & Ordinum Prælatos, Superiores & personas, quæstas hujusmodi impediunt censuris Ecclesiasticis innodare, & alias in pluribus graviter excedentes in divine majestatis offensam, ac suarum, & Christiani fidei animarum perniciem, ac Ordiniorum perturbationem, & piam mentionem scandalum, præsumunt.

§. 2. Nos qui Deo propitio gregis Dominici meritis licet insufficientibus curâ gerimus, & illum spiritualis Thesauri largitione cupimus ipsi Deo reddere acceptabilem, ex præmissis, & aliis rationabilibus causis animum nostrum moventibus, fel. record. Calixti Quarti, Clementis VII. Pauli III. Julii similiter III. diversorum aliorum Romanorum Pontificum prædecessorum nostrorum vestigiis inhzrentes, Motu proprio non ad alicujus nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed de nostra sponte voluntate, & deliberatione, omnes & singulas Indulgentias etiam perpetuas, & peccatorum remissiones fabricæ & Ecclesiæ hujusmodi, necnon S. Joannis Hierosolymitani, etiam pro constructione, & ædificatione illius

Procenium

Casu revocati-
onis.

Revocati-
rum cont-
nentium
cultarè qu-
stuan-
pro quib-
consequen-
dis sunt mi-
nus adjuti
ccs.

Prohibitio
deputandi
quætores,
aut facienti
quæritus, nisi
de speciali
licentia Pa-
pæ.

Decretum
irritans.

Execratorum
deputatio.

Causæ de-
rogatoria.

novæ Civitatis prædictis, in quibuscumque aliis Hospi-
talibus, Monasteriis, Ecclesiis, Dombus, Militiis, Ordini-
bus etiam Mendicantium, Congregationibus,
Confraternitatibus, & Universitatibus, & piis locis,
illorumque Ordinibus, Capitulis, Conventibus,
Magistris, Superioribus, & tam secularibus, quam
quorumvis etiam Mendicantium Ordinum Regula-
ribus personis, tam singulariter, quam universiter
per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores
nostros ac etiam non, sub quibuscumque tenori-
bus, & formis ac cum quibuscumque clausulis & decretis,
etiam Motu proprio, & ex certa scientia, ac ex quib-
uscumque etiam urgentissimis causis, etiam causa re-
demptionis captivorum, & alias quomodolibet con-
cessis: pro quibus consequendis manus sunt porri-
gendæ adjutrices, & quæ quætuandi facultatem
quomodolibet continent, illarum omnium tenores,
formas, derogationes & decreta præsentibus pro
expressis habentes, auctoritate Apostolica tenore
præsentium perpetuo revocamus, cassamus, irrita-
mus, & annullamus, ac viribus vacuumus.

§. 3. Et insuper perpetuo hac nostra valitura con-
stitutione decernimus, quod ex nunc de cetero sub
indignationis nostræ poenæ, prætextu indulgentia-
rum & facultatum per quoscumque Romanos Pon-
tifices prædecessores nostros, ac nos, & Sedem Apo-
stolicam etiam Motu simili, ac Sedis Apostolicæ Le-
gatos, & alias quomodolibet concessarum, & quas
a nobis & Sede prædicta in posterum verbo, litte-
ris, aut quavis alia scriptura etiam manu nostra sig-
nata, etiam cum clausula quod sola signatura suffi-
ciat, etiam in favorem fidei, aut cruciatæ sanctæ,
vel cuiuscumque alterius piæ causæ etiam privilegia-
tæ concedi quomodolibet contigerit, nullus quavis
etiam Episcopali, Archiepiscopali, & Patriarchali,
aut majori dignitate etiam Cardinalatus honore,
seu etiam regali, vel temporali excellentia præful-
geat, audeat vel presumat quas facere, aut Nun-
cios, Quætores, Commissarios, Thesaurarios, Re-
ceptores, pro illis recipiendis in dictis Hospitalibus,
Ecclesiis, Dombus, Monasteriis, Militiis, & aliis su-
pranominatis, vel pro eis aut illorum nominibus
alibi constituere & deputare, nisi ex speciali licen-
tia, & ex certa scientia nostri & Romani Pontificis
pro tempore existentis, de qua per litteras nostras,
& ejusdem Romani Pontificis pro tempore existen-
tis, locorum Ordinarii, vel eorum in spiritualibus
Vicaris, seu Officialibus derogationem præsentis
nostræ constitutionis illius tenore de verbo ad ver-
bum inserto expressè continent.

§. 4. Nos enim ex nunc irritum decernimus, &
inane quicquid fecus super his à quoquam quavis
auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit ac-
tentari, constare debeat.

§. 5. Mandantes in virtute sanctæ obedientiæ omni-
bus, & singulis Venerabilibus fratribus nostris Pa-
triarchis, Primatibus, Archiepiscopis, & Episcopis,
quatenus in civitatibus, & diocessibus suis, præsen-
tes nostras litteras publicare, & observare debeant,
rogantes omnes, & singulos Principes sæculares
& alios Dominos, & Magistratus temporales, eisque
per viscera misericordiæ Domini nostri JESU
CHRISTI in remissionem peccatorum suorum in-
iungentes, quatenus in præmissis eidem Patriar-
chis, Primatibus, Archiepiscopis, & Episcopis assis-
tant, & suum auxilium & favorem præstent, cum
auxilio brachii secularis.

§. 6. Non obstantibus præmissis, ac quibuscumque
Apostolicis, necnon in Provincialibus, & Synodali-
bus Conciliis editis, generalibus vel specialibus
Constitutionibus, & Ordinationibus, necnon fabri-
cæ Ecclesiæ, Hospitalium, Monasteriorum, Militia-
rum, Confraternitatum, Ordinum, Capitulorum,
Conventuum, aliorumque locorum prædictorum, &
quorumvis illorum membrorum, Ecclesiarum etiam
Cathedral. & Metropolit. etiam juramento, confirma-
tione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis,
statutis & consuetudinibus, statim etiam, usibus & na-
turis, privilegiis quocumque indultis, & litteris Apostoli-

cis, illis, & præsertim S. Joannis, & S. Lazari, ac S. Spi-
ritus in Saxia, Hospitalibus, necnon S. Antonii, & San-
ctorum Nicolai, & Bernardi Montis Jovii Monaste-
riis, ipsorumque Monasteriorum Hospitalibus, singu-
lorumque eorum Conventibus, Superioribus, & per-
sonis præfatis, per quoscumque Rom. Pontifices præ-
decessores, ac nos, & Sedem Apostolicam sub quib-
uscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque
etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque effica-
cioribus, & insolitis clausulis, necnon irritantibus, &
aliis decretis, etiam motu simili, & ex certa scientia,
ac quavis etiam Imperiali, vel Regali consideratio-
ne, vel instantia, & alias quomodolibet concessis,
approbatis, & innovatis, quibus omnibus, etiam si
pro illorum sufficienti derogatione de illis eorum-
que toris tenoribus specialis, specifica, individua, &
expressa, non autem per clausulas generales idem
importantes mentio seu quævis alia expressio habenda,
aut alia exquisita forma ad hoc servanda foret,
tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum nihil
penitus omisso, & forma in illis tradita observata in-
ferti forent præsentibus, pro sufficienter expressis ha-
bentes, motu, scientia, & potestatis plenitudine simi-
libus specialiter & expresse derogamus, & suffi-
cienter derogatum esse volumus, contrariis quibuscum-
que. Aut si aliquibus, communiter vel divisim ab
Apostolica sit Sede indultum quod interdicti, suspendi,
vel excommunicari non possint per litteras Apo-
stolicas non facientes plenam & expressam, ac de ver-
bo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

§. 7. Volumus autem quod præsentis litteræ in
Cancellaria nostra Apostolica, & acie Campi Floræ
de more publicentur, & inter constitutiones perpe-
tuo valituras describantur.

§. 8. Et quia difficile foret easdem præsentis ad
singula quæque loca deferri, volumus, & etiam de-
claramus, quod earum transumptis etiam impressis
manu alicujus Notarii subscriptis, ac sigillo alicujus
Prælati munitis, eadem prorsus fides adhibeatur,
quæ adhiberetur si originaliter forent exhibitæ, vel
ostensæ. Nulli ergo omnino &c.

Datum Romæ, apud S. Petrum, Anno Incarna-
tionis Dominicæ 1567, sexto Idus Febr. Pontifica-
tus nostri Anno 1.

Anno à Nativ. D. 1567. Indiſt. 10. die vero 17. men-
ſis Febr. Pontif. Sanctiff. in Christo Patriſ, & D. N.
D. Pii Papæ V. anno 2. infraſcriptæ litteræ Apoſto-
licæ affixæ, ac publicatæ fuerunt ad valvas Cancel-
lariæ Apoſtolice, & in acie Campi Floræ, per nos
Antonium Clericū, & Jo. Andream Rogerium præ-
ſatī S. D. N. Papæ Curſorem.

Scipio de Oſſavianis Magiſter Curſorum.

Confirmatio gratiarum & indultorum Congrega-
tionis Clericorum Regularium Theatinorum,
cum aliorum Privilegiorum elargitione.

De hujus Congregationis institutione, & aliis ejus gra-
tiis videnda est conf. 11. Clem. VII. Exponi. sup. in
Tom. I. & alia conf. ejusdem 38. Dudum.

PIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

AD immarcescibilem vitæ æternæ coronam, ad
quam fortes Christi athletæ non adversus car-
nem & sanguinem præstantes, sed contra spirituales
antiqui hostis nequitias, & hujus mundi tenebrarum
principatus, assidue fidei clypeo, & scuto bonæ vo-
luntatis armati, lumbique præcinctis colluctantes,
rejectionis vanitatis & illecebris indefesse aspirant,
& quo optatum finem tutius consequantur, Re-
ligionis arcem, unde inimicorum insultibus, dan-
te Domino, securius resistere, & hostilia tela
propulsare queant, animose ascendant, elevantes
oculos mentis nostræ, paterna pietate & benevo-
lencia ex nostri Pastoralis officii debito non abs-
tre jugiter inducimur, ut tranquillo eorum statui,

Justo publi-
cationis.

Transumptio-
rum fides.

Dat. P. An. 2.
die 8. Febr.

Publicatio.

XXXI.

Edita An. D.
1567.

Prooemium.

Clem. VII.
istam Cong.
greg. appro-
bavit in rubr.

Et in alia bul-
la ibid. cit.
privilegia
concedit.

Paulus III.
decrevit
quod major
pars vocalium
Capituli, ubi
que representa-
ret totum
Capit. cum
omnimoda
potestate su-
per Præposi-
tos & alios,
sed ejus bul-
lam non pos-
sui uti hic suf-
ficienter rela-
tam.

Et vocalium
numero pari
existente, ubi
est Capit.
ubi Vocalium
est anti-
quior.

Et dicto Ca-
pit. jus est
supremum,
quibuscumque
necessitatibus
& Superiori
translationibus
&c. provi-
dendi.

Qui Superio-
res anno du-
rant.

Præpositori-
que & eorum
Locaten ead-
em esset au-
toritas, &
tempus admi-
nistrations
non computa-
retur trien-
nio Prælatu-
re.

Et Præposi-
toris vacan-
tib. Capit.
Præpositus
Congregat.
dat. autori-
tatem.

Antiquior;
in voce Jus
cederet ipso
jure Præposi-
tura vacanti
per lapsum
annum.

Laici etiam
venientes ad
Relig. uteren-
tur vestibus
clericis. & ab
que eorum
mutacione
admitteretur
ad professio-

quantum cum Deo possumus prompte consulamus,
& his quæ propterea facta esse dignoscuntur, au-
thoritatibus nostræ adjiciamus firmitatem, aliasque de-
super opportune provideamus prout personarum
& temporum qualitate pensata, conspiciamus in Do-
mino salubriter expedire.

§. 1. Dudum siquidem sel. rec. Clemens Papa
VII. prædecessor noster sibi pro parte, &c.

Omititur quia hæc bulla est quæ citatur in rubr. sup.

§. 2. Et deinde pro eadem parte, eidem Clemen-
ti prædecessori etiam exposito, quod ipsi, &c.

Omititur quia ipsa bulla est citata in rubr. sup.

§. 3. Ac postmodum recol. mem. Paulus Papa III.
similiter prædecessor noster vivæ vocis oraculo ei-
dem Paulo IV. prædecessori qui etiam tunc in mino-
ribus constitutus tit. S. Sixti presbyter Card. erat per
eundem Paulum III. prædecessorem facta eidem
Congregationi Clericorum Regularium inter alia.
Quod major pars habentium vocem in Capitulo, in
quocumque loco commoraretur, repræsenteret totum
Capitulum Congreg. Clericorum Regularium
hujusmodi, & ubicumque vocalium major pars foret,
semper repræsenteret Capit. Generale, & haberet, in
ipsa Congregatione Clericorum Regularium super
Præpositos omnes & Superiores Sacerdotes & alios
professos in spiritualibus & temporalibus post fan-
ctam Sedem Apostolicam cui immediate subjeci-
bantur, supremam jurisdictionem, & potestatem do-
nec Capitulum Generale solemniter celebraretur.

§. 4. Et si vocales in Ecclesiis, & locis eorumdem
Congregationis Regularium pares numero forent,
ibi ex gratia, & privilegio intelligeretur adesse Ca-
pitulum repræsens Generale, ubi foret vocalis,
qui antiquior esset omnibus aliis vocalibus, qui in
locis particularibus pares numero forent.

§. 5. Capitulumque hujusmodi haberent in prædi-
ctis Congregatione Clericorum Regularium jus
supremum, & quocumque in Ecclesiis & locis
prædictis, omnibus casibus & necessitatibus provid-
ere possent; & maxime superveniente causa de Su-
periore cassando, & de novo creando, & de novo crean-
do, quocumque nomine appellaretur, ut in spiri-
tualibus & temporalibus libere administraret.

§. 6. Quodque tempus suæ administrationis non
posset ultra annum prorogari, & omnibus Congrega-
tionis Clericorum Regularium gauderet privile-
giis.

§. 7. Et generaliter quicquid posset Præpositi
per privilegia, posset etiam eorum Locatenentes.
Et si ille, qui ut Superior administrasset, in Præposi-
tum erigeretur, tempus, quo sine titulo Præpositura
administrasset, non impediret quo minus posset
sicut ceteri Præpositi usque ad triennium confirmari.

§. 8. Ac etiam tempore quo contingeret per lap-
sum anni officia Præpositorum vacare, supradictum
Capitulum scribere posset Præpositis sub hac, vel
simili forma. Licet officium Præposituræ tunc tali
die vacaret, tamen ut Superior non desisteret in spiri-
tualibus & temporalibus libere, ut antea admini-
strare, donec aliter fuerit provisum, provisoque
sum fortitatur effectum.

§. 9. Necnon quod antiquior in voce, qui in loco
esset, succederet ipso jure Præposituræ vacanti per
lapsum anni, cessum, vel decessum præpositi, & gaud-
eret omnibus privilegiis Congregationis Clerico-
rum Regularium hujusmodi donec per Capitulum
Generale, vel repræsens Generale de alio Supe-
riori, vel aliter provideretur, & observaretur, ut
dictus antiquior, ut supra administrasset in causa ab-
sentie, vel infirmitatis ipsius Præpositi, nisi ipse Præ-
positus aliter providisset.

§. 10. Quodque laici ad Congregationem venien-
tes, si videretur eos non divino officio mancipan-
dos, uterentur vestibus Clericalibus, quæ tamen se-
cundum conditionem locorum, & personarum ho-
nestè censeretur, eisque tempore probationis sim-
pliciter assignata: ad professionem trium votorum
more eorumdem Congregationis sine tamen vesti-

tum mutatione & benedictione admitti. Ac omni-
bus privilegiis prædictis gaudere possent dicta au-
thoritate concessit, & declaravit.

§. 11. Ac postea pro parte quondam Bonifacii
presbyteri Alexandrini ejusque sociorum Congrega-
tionis Clericorum Regularium hujusmodi, incli-
catæ memoriæ Julio Papa etiam III. prædecessori no-
stro exposito quod ipsi qui in locum Pauli prædecessi,
& Gajetani hujusmodi successerant, ut litteræ præ-
dictæ, firmius permanerent, & inviolabiliter obser-
varentur, cupiebant illas ab eodem Julio prædecessore
approbari & innovari, idem Julius prædecessor
eorum supplicationibus in ea parte inclinatus, con-
cessionibus, & statuta, ac ordinationes, necnon cum
omnibus & singulis in eis contentis clausulis singulas
litteras prædictas, etiam per suas in simili forma bre-
vis sub die 10. Junii Anno Domini 1551. Pontifica-
tus sui Anno 2. expeditas litteras approbavit, & in-
novavit, illisque perpetuæ & validæ firmitatis robur
adjecit, ac illa omnia, & singula observari, & Boni-
facio, & sociis præfatis, & eorum successoribus Cle-
ricis regularibus suffragari, ipsosque illis perpetuis
futuris temporibus uti, frui, potiri, & gaudere pos-
se, necnon si secus super his à quoquam quavis au-
thoritate scienter vel ignoranter contigerit attempta-
ri irritum & inane decrevit.

§. 12. Et deinde prædictus Paulus IV. prædecessor
divina favente clementia ad summum Apostolatus
apicem assumptus, Motu proprio per ejus cedulam
dictas in forma brevis præfati Julii prædecessoris lit-
teras præfatas habentem, sub Dat. videlicet 7.
Idus Octobr. Pontificatus sui Anno primo, quædam
per cedulam ipsam declarata, & Capitula, ac ipsas
litteras & omnia in eis contenta, necnon curam &
administrationem Congregationis de Somasca eisdem
Congregationi Clericorum Regularium per
prædictum Paulum III. prædecessorem commissam,
etiam ad hoc ut illorum, & de Somasca Congrega-
tionis hujusmodi, ac omnes illorum personarum om-
nibus & singulis privilegiis, & prerogativis, ac illis
quibus utebantur, potiebantur & gaudebant, ac uti
& gaudere possent quomodolibet in futurum, ad
invicem & alter alterius, & e converso uti, poti-
ri & gaudere licite possent & valeret, Apostolica
auctoritate approbans, confirmans, & innovans, il-
lisque perpetuæ & validæ firmitatis robur adjiciens
& illa omnia & singula observari, & eis suffragari,
eosque perpetuo frui, & gaudere, & irajudi-
candum fore, sublata quavis alteri iudicandi & in-
terpretandi facultate & auctoritate, ac irritum &
inane eisdem quicquid fecus attemptari contingeret.

§. 13. Decernens Congregationi Clericorum Re-
gularium, ac tunc, & pro tempore existentibus Cle-
ricis Regularibus præfatis, ut ipsi, qui idonei forent
Eucharistiæ Sacramentum, in omnibus & singulis
etiam ad eos non spectantibus Ecclesiis quibus-
cumque utriusque sexus Christifidelibus debite,
etiam non per eos sed alios confessis, & alias, ut
moris est administrare.

§. 14. Ipsisque, ut omnibus, & singulis privilegiis,
indulgentiis, prerogativis, exemptionibus, immu-
nitatibus, gratiis, & indulgentiis dilectis filiis Societati de
JESU Almae Urbis nostræ, tam in spiritualibus, quam
temporalibus, in specie vel in genere, per quoscum-
que Romanos Pontifices prædecessores nostros, &
dictam Sedem quomodolibet concessis, & conceden-
dis, & quibus Societas hujusmodi, tam in vita, quam
mortis articulo, etiam circa peccatorum remissio-
nem, & in iunctam penitentiarum relaxationes, &
ipsius Eucharistiæ administrationem, & alias quomo-
dolibet utebantur, potiebantur, & gaudebant, ac uti,
potiri, & gaudere poterant, similiter ipsi Congrega-
tio, & Clerici Regulares uti, potiri, & gaudere libere
& licite possent, & valeret, ac illorum omnium par-
ticipes esse deberent concessis, & indulgentiis, & aliis
quocumque, indulgentiis, prerogativis, & aliis omnia
eisdem Societati, ut præfatur, etiam excommunicativè
concessa ad Congregationem, & Clericos Regulares
præfatos extendit & ampliavit, ipsisque, ut omnia

nem, omni-
busque privi-
legiis Cong-
reg. gaudere-
rent.

Julius III.
prædicta om-
nia confirmavit,
sed ejus bul-
lam uti
sua p'iter
confirmato-
riam non po-
tuit.

Paul. IV. bull.
Julii III. ap-
probavit, &
privilegia
Congreg. de
Somasca, &
huius Cong-
a Paulo III.
unitarum co-
municavit,
sed hæc bul-
la etiam præ-
termissa, qui-
bus hic re-
lata.
Tu ficias hanc
unionem non
perstiterit, &
de Congreg.
Somasca, vi-
de sup. in
Pauli III.
const. 21. Ex
injuncto.

Facultatem
administran-
dis sacramen-
tis in omni-
bus Ecclesiis
concessit.

Privilegia
Societatis
Jesu de hæ.

Hæc vide sup.
in Pauli III.
const. 25. Re-
gimine, cum
ibi notatis.

trahabitationes Congregationis, & etiam ceteris in causa necessitatis.

Ad processionem non possit cogi decerni.

Indulgentias eidem clarificetur.

Ad hoc attendenda est constit. 16. Pauli V.

& singula tam per eosdem Clementem VII. Paulum III. quam Julium etiam III. predecessores eis concessa, & per eundem Paulum IV. etiam predecessorem & alios ex tunc in posterum concedenda privilegia, gratiae, indulgentiae, prerogativae, exemptiones, & indulta toties reintegrata, confirmata, & innovata, ac in pristinum statum restituta esse censeantur, quoties per eundem Paulum IV. predecessorem & Sedem praedictam alia quaecumque privilegia aliis Congregationibus & quorumvis Ordinum Religiosis, & Monachis concessa, & concedenda reintegrari, confirmari, vel innovari, & in pristinum statum restitui contingeret, etiam concessit & indulgit, cum decreto & clausulis, ac aliis certis modo & forma tunc expressis, &c.

S. 15. Cum autem sicut accepimus &c. Moru proprio, &c. praedicta omnia praesentium tenore confirmamus, approbamus, & innovamus, &c.

S. 16. Et insuper eisdem Congregationi Clericorum Regularium, tam Romae, quam Venetiis, & Neapoli, ac alias ubique locorum degentium, ac illius nunc & pro tempore existentibus Clericis praefatis, ut ipsi, & eorum singuli, qui Praepositi fuerint, quorumcumque; qui Congregationem huiusmodi ingressi iuxta illorum ritum professionem per eosdem Clericos Regulares emitti solitam solemniter emittere voluerint, in eorum & cuiuslibet ipsorum professionis emissionis, seu alio anteriori die quocumque, eorum confessionibus per dictos Praepositos, aut eorum aliquem diligenter auditis, ipsos & eorum singulos ab omnibus & singulis eorum peccatis, criminibus, excessibus, & delictis, ac quacumque per eos carentes quomodolibet contracta irregularitate, & peccatis aliis quantumcumque gravibus, & enormibus, per ipsorum & eorum singulos usque ad dictam diem quomodolibet perpetratis, commissis, & incur-
sis, etiam si talia forent, de quibus hic specialis, & expressa mentio habenda, & propterea dicta Sedes merito consulenda esset. Necnon privationis, excommunicationis, suspensionis, & interdicti, & quibusvis aliis Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis in eos a jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus profutis ipsos tunc quomodolibet innodatos, & ut tales declaratos, & publicatos esse reperiri contingerit, sine tamen aliquo praedictis in quibuscumque; etiam praedictis Sedi Apostolice, reservatis casibus, praeterquam tamen contentis in Bulla de Coena Domini legi consueta, huiusmodi Apostolica auctoritate praedicta alias in superius dicta forma plene abolere, & totaliter liberare, & eis pro commissis poenitentiam salutare injungere, ac cum ipsis, & eorum quolibet super irregularitate per ipsos, & eorum quemlibet inde, ac etiam quia sententiis, censuris, & penis praedictis ligati missas forsan ac alia divina officia, non tamen in contemptum clavium celebraverint, aut alias se in eis immiscuerint per pridem usque; tunc, ac etiam ex quocumque; eorum defectu, & impedimento, non tamen ex homicidio voluntario proveniente, ac alias quomodolibet contracta. Quodque his praemissis, & aliis non obstantibus in suis quos antea susceperunt etiam presbyteratus sacris ordinibus, & quando in illis aut aliquo, vel aliquibus eorum adhuc non fuerint tunc promoti, ad illos omnes etiam sacros, & presbyteratus ordines huiusmodi, alias tamen rite promoveri, & in eis promoti etiam in altaris ministerio in dictis & aliis quibusvis Ecclesiis atque locis ministrare libere & licite valeant dispensare, & ab illis, & eorum quolibet omnem inhabilitatis & infamiae maculam, sive notam ex praemissis circa eos quomodolibet infringentem, & per ipsos contractam penitus abolere. Necnon eos, & quemlibet ipsorum in pristinum, & eum in quo ante praemissa quomodolibet erant statum, & alias juxta supradictam formam restituere.

S. 17. Et tam Praepositi, quam ceteri omnes Clerici, Romae, Venetiis, Neapoli, ac alias ubique locorum degentes, Congregationis huiusmodi, nunc & pro tempore existentes, qui tamen praebiteri fuerint Eucharistia etiam pro viatico, ac

etiam constituti in articulo mortis, ac extrema Unctionis ceteris Clericis, & Fratribus Congregationis huiusmodi, ac etiam mercenariis famulis, operariis, & servis eorumdem Congregationis, ac quibusvis hospitibus etiam secularibus, & extraneis, quos in locis, vel habitationibus Congregationis huiusmodi tunc reperiri contingerit, etiam in mortis articulo, & quoties de illo dubitari contingerit, etiam dicecesan. locorum, & Sacerdotum Curatorum quorumcumque, etiam in quorum Civitatibus, & Dicecesibus, ac Ecclesiarum Parochis respective, Ecclesiae, & loca ipsorum Congregationis nunc & pro tempore fuerint, aut aliorum quorumcumque licentia minime petita, nec obtenta; & in casum quo non daretur spatium petendi talem licentiam propter repentinam necessitatem etiam quibuscumque aliis personis, quae in huiusmodi necessitate intra Ecclesias, Collegia, domos, & habitationes Congregationis praedictorum reperiri contingerit, ac extra illa aliis quibusvis infirmis etiam mortis articulo constitutis, ubique in causa necessitatis supradictae, etiam nulla ad hoc per eos petita, nec eis concessa licentia cuiusvis Sacerdotis Curati, poenitentiae Sacramenta ecclesiastica ministrare possint.

S. 18. Ac etiam eisdem, & aliis Clericis Regularibus Congregationis huiusmodi, Romae, Venetiis, Neapoli, ac alias ubique locorum degentibus, cum ipsi fere totos dies in orationibus, ac Missis, & aliis divinis Officiis dicendis transigant, & frequenter ipsos ab audiendis poenitentium confessionibus esse, & verbum Dei populo praedicare oporteat. Quod de cetero perpetuis futuris temporibus, ipsi sicut alii qui in strictiori clausura perpetuo vivunt ac cum ceteris Urbis nostrae & Neapolit. praedictarum, ac aliarum Civitatum, Terrarum, & locorum in quibus dictae eorum Eccles. domus & loca sunt, & erunt quomodolibet in futurum, personis Ecclesiasticis, tam secularibus, quam praefatorum, & aliorum quorumcumque Ordinum Regularium processionaliter in eorum processionibus, publicis vel privatis etiam solemnibus, aut extra illas de perse incedendum minime teneantur, nec ad id etiam si ceterae personae huiusmodi tam de jure, vel statuto, quam usu, & consuetudine, ac alias quomodolibet astringantur invitati, quavis etiam Apostol. auctoritate cogi, moneri, vel compelli, nec propterea aliquibus Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis innodari, vel ligari possint.

S. 19. Ac etiam singulis ex ipsis, qui tam in eorum propriis Ecclesiis & locis existentibus, quam etiam quoties, ac quamdiu pro quibusvis rebus & causis de suorum Congregat. Regularium huiusmodi Superiorum licentia, iussu, Commessione, vel mandato, propriis Ecclesiis aut domibus abfuerint, & ad quavis alia Civitates, Oppida, Terras & loca declinare, & eos inibi esse, ac etiam permanere contingerit, quadragesimalibus, & quibusvis aliis anni temporibus, atque diebus stationum Basilicarum & Ecclesiarum dictae Urbis, & extra illius muros, atque dictis eorumdem Congregationis, & aliis quibuscumque Ecclesiis, & locis, illaque, & illa visitantibus concessarum indulgentiarum, propriam Ecclesiam, sive Oratorium, aut unam aliam Civitatem, Oppidum, Terrarum, & locorum ad quae ut praemittitur declinaverint, & ubi permanerint, aut in eis quinq; vel quatuor, si tot extent, aut pauciora altaria devotè visitando, & semel Psal. M. ferere, &c. & Orationem Dominicam, & Salutationem Angelicam, & Symbolum Apostol. pro felici statu, & conservatione militantis Ecclesiae, & exaltatione fidei Catholicae, nostra quoque, & successorum nostrorum Rom. Pont. quorumcumque; prosperitate recitando, omnes & singulas indulgentias, & peccatorum remissiones visitantibus Basilicas, & alias praefatae Urbis, & extra illius muros ad id deputatas ac ipsorum Congregationis, & aliorum quorumcumque tam in Urbe, & Neapol. quam aliis Civitatibus, Terris, Oppidis, & locis sitas Ecclesias visitantibus concessas consequantur, quas consequerentur, & consequi possent si singulis temporibus, & diebus supradictis Basilicas & alias Urbis praedictae,

Hic modo Pont. omnia praedicta confirmat. Praepositosque dat facultatem absolventi venientes ad hanc Relig. a quocumque que casibus non reservatis in Bulla Coena Domini.

Ad hoc videnda est etiam constit. 15. Clem. VIII. Quaecumque.

Clericisque auctoritate impartitur administrandi Sacram. omnibus in-

Clausul. præservativas huic bullæ apponit.

Executores deputat.

Contrariis omnibus derogat.

ac extra illius muros necnon in Neapolit., & aliis Civitatibus, Oppidis, Villis, & locis præfatis sitas Ecclesias personaliter visitarent, ac omnia & singula, quæ pro huiusmodi indulgentiis consequendis quomodolibet requiruntur adimplerent, Apostolica auctoritate prædicta concedimus, & indulgemus, ac etiam perpetuò statuimus, & ordinamus.

§. 20. Decernentes præfentes nostras litteras, quæ ad plenam probationem præmissorum omnium & singulorum, ita, ut nulla probatio in contrarium admittatur, sufficiant, nec ad id alterius probationis adminiculum requiri debeat, ac eadem præmissa seu eorum aliqua de subreptionis, vel obreptionis, aut nullitatis vicio, seu intentionis nostræ defectu notari, seu impugnari non posse, sed semper valida, & efficacia existere, ac eisdem Congregationi, & illius Regularibus Clericis, & aliis personis suffragari, & sub nullis, etiam totum earumdem præsentium tenorem in fe continentibus, revocationibus, suspensionibus, derogationibus, aut aliis alterationibus, similibus vel dissimilibus confirmationum, concessionum & gratiarum sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis, etiam motu & scientia similibus, etiam consistorialiter, etiam per nos & successores nostros Romanos Pontifices, pro tempore existentes ex quibuscumque causis etiam iustissimis pro tempore quomodolibet factis, nullatenus comprehendendi, sed semper ab illis excipi, ac quoties illæ emanabunt toties in pristinum statum restituta, & plenaria reintegrata existere, & ceteri, & ita per quoscumque Iudices & Commissarios, ut præfertur, sublati eis & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate iudicari, sententiarum, & definituri debere, necnon irritum & inane quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 21. Quocirca Venerabilibus fratribus nostris Archiepiscopo Neapolitano, Placentino, ac Amerino Episcopis per Apostolica scripta mandamus quatenus ipsi vel duo, aut unus eorum, per se vel alium seu alios præfentes litteras, & in eis contenta quaecumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties super hoc pro parte Congregationis, & illius Clericorum Regularium, ac aliarum personarum prædictarum, vel alicujus eorum fuerint requisiti solemniter publicantes, eisque & cuilibet ipsorum in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciat auctoritate nostra litteras, & in eis contenta huiusmodi firmiter observari, illasque, & quælibet illorum eis pacifice frui & gaudere, non permittentes illos, vel eorum quempiam per quoscumque desuper quomodolibet indebite molestari. Contradiçtores quoslibet & rebelles per censuras & penas Ecclesiasticas, ac alia opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita compescendo, ac legitimis super his habendis servatis processibus, censuras & penas ipsas etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc si opus fuerit auxilio brachii secularis.

§. 22. Non obstantibus præ memorie Bonifacii Papæ VIII, etiam prædecessoris nostri, quæ caverunt, ne quis extra suam Civitatem, vel Diocesim nisi in certis exceptis casibus, & in illis ultra unam diem à fine suæ Diocesis ad iudicium evocetur, seu ne Iudices à Sede Apostolica deputati extra Civitatem, vel Diocesim in quibus deputati fuerint, contra quoscumque procedere, aut alii vel alii vices suas committere quomodolibet præsumant, & de duobus diebus in Concilio Generali edita, dummodo ultra tres dietas aliquis auctoritate præsentium ad iudicium non trahatur. Necnon aut regulis nostris de unionibus, & illarum confirmationibus committendis ad partes vocatis quorum interest, ac de indulgentiis ad iacta non concedendis. Necnon Lateran. Concilii novissimè celebrati si opus sit, ac aliis constitutionibus, & ordinat. Apostol., necnon supradictis, & omnibus aliis, quæ singuli prædecessores prædicti in dictis eorundem litteris & supplicatione voluerunt, non obstat, & quæ revocarunt, quibuscumque derogarunt

cum perpetui desuper silentii impositione, & inhibitione alias prorsus similibus modo & forma supradictis. Quibus etiam omnibus & singulis, etiam si illorum sufficienti derogatione alias de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, individua & expressa, ac de verbo ad verbum non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata inserti forent præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentis hac vice dumtaxat, harum serie specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si alicuius communiter vel divisim à præfata Sede indultum quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§. 23. Volumus autem, quod præsentium transumptis manu alicujus Notarii publici scriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides, tam in Romana Curia quam extra eam ubilibet adhibeatur, & illis stetur etiam in iudicio & extra, quæ eisdem litteris adhiberetur, si in medium exhibitæ forent, vel ostendat.

Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ absolutionis, avocationis, extinctionis, perpetui silentii impositionis, approbationis, confirmationis, innovationis, adjectionis, concessionis, indulti, statuti, ordinationis, decreti, mandati, derogationis, & voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursurum.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo sexagesimo septimo, septimo Idus Februarii Pontificatus nostri anno secundo.

Forma expediendi litteras Apostolicas super gratiis resignationum beneficiorum Ecclesiasticorum.

Formam autem publicandi ejusmodi resignationes, videbis in const. 35. Greg. XIII. Humano. ubi notabo, aliis tamquam minus necessariis, prætermisissis.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Cogit nos necessitas, ut novam futuris aliquot hujus Curie negotiis formam imponere curemus. Quocirca dilectis filiis S. R. E. Vicecancellario, litterarum Apostolicarum Abbreviatoribus, & in illarum expeditione dicto Vicecancellario assistentibus, Summatori, ceterisque omnibus id expeditionis munus in Curia & Camera Apostolica, & ubicumque gerentibus, tenore præsentium auctoritate Apostolica mandamus.

§. 1. Ut deinceps super omnibus gratiis, & concessionibus Apostolicis de quibuscumque beneficiis, cum cura & sine cura, secularibus, & quorumvis Ordinum Regularibus, etiam apud Sedem Apostolicam vacantibus, & dispositioni Apostolicæ reservatis, in quibus addita fuerit clausula. Et in forma dignum, litteras Apostol. expediant in eadem forma quæ aut ad Episcopum diocesenum, aut ad Vicarium Generalem, aut ad Officiales ejusdem Episcopi disjunctivè, ad electionem impetrantis dirigantur, cum limitationibus, & clausulis infra scriptis, videlicet de Parochialibus Ecclesiis, vel earum Parochialibus Ecclesiis dumtaxat, & per resignationem vacantibus in dictis litteris post verbum mandamus, ut si sibi consulerit,

quod

Transi mptio credi jubet.

Dat. P. An. die 13. Febr.

XXXII.

Edita An. D. 1567.

Exordium.

Forma provisionis primæ.

Secunda.

Tertia.

Quarta.

Quinta.

Sexta.

quod dictus N. resignans, si in sacris ordinibus constitutus exsistat, aliunde commodè vivere possit, ac per diligentem examinationem per te adhibitis examinationibus ad hoc à Concilio Tridentino designatis, si isthic sint ubi esse debent in diocesana synodo deputati, sin autem absque illis faciendam dictum I. resignatarum ad hoc idoneum esse repereris, super quo tuam conscientiam oneramus, Ecclesiam prædictam, cujus, &c. & inferius post verba. Cum omnibus iuribus & pertinentiis suis, eidem Joanni, quibuscumque aliis sese ad examen prædictum, etiam per mutuum concursum admitti, & sibi de dicta Ecclesia provideri petentibus, penitus exclusis, infra triginta dies postquam præfatas litteræ tibi præsentatæ fuerint, auctoritate nostra coneras, & assignes, &c.

In ceteris verò litteris de quibuscvis aliis beneficiis per eandem resignationem vacantibus similiter post verbum mandamus, inferatur ut si sibi constiterit, quod si dictus N. quatenus in sacris ordinibus constitutus exsistat, aliunde commodè vivere possit, ac per diligentem examinationem dictum I. idoneum esse repereris, super quo tuam conscientiam oneramus, Canonicatum, & præbendam prædictam, quorum, &c. Et inferius post verbum, pertinentiis suis, eidem I. intra 30. dies postquam præfatas litteræ tibi præsentatæ fuerint, auctoritate nostra coneras, &c.

Propterea in omnibus mandatis provisionum, seu commendis de quibuscumque beneficiis, & Monasteriis per similem resignationem, seu cessum vacantibus ad finem ante clausulam decreti irritantis, addatur hæc clausula, videlicet. Ceterum ne dum prodesse studemus, aliqua forte irrepat iniquitas in exitum animarum, tu attente his circumspicias, an ex prædicta N. & I. prædictorum super dicta resignatione, vel cessione, ut fuerit quam nos nullo hucusque vitio laborare deprehendimus, intercesserit simoniz labe, aut alia illicita pactio, vel etiam corruptela, nos eum, &c.

In reliquis autem provisionibus, & commendis quarumcumque curatorum & simplicium beneficiorum, sacularium, & regularium prædictorum, etiam reservatorum aliter quam per resignationem quovis modo vacantibus, videlicet quoad parochiales Ecclesias, vel earum perpetuas vicarias duntaxat, post verbum mandamus, ut si per diligentem examinationem per te adhibitis examinitoribus ad hoc, ut supra usque oneramus, Ecclesiam prædictam cum omnibus iuribus, & pertinentiis suis eidem Jo. intra triginta dies, &c. coneras.

Et similiter in omnibus aliis eadem forma servetur omnia clausula adhibitis examinitoribus.

Et deinde super omnibus hujusmodi litteris, etiam alias litteræ executoriæ dari debeant, directæ vel ad Metropolitanum, vel uni ex propinquioribus Episcopis, fide eorum Vicario, vel Officiali, disjunctivè aut nomine dignitatis Episcopi expressæ, quando alii executoris super hoc à nobis dati pro tempore adfuerint, videlicet pro parochialibus Ecclesiis per resignationem vacantibus in hunc modum, videlicet, Fratri Archiepiscopo N. salutem, &c. Hodie cum dilectus filius N. nuper parochialis Ecclesie Rector de N. & N. diocesis dictam Ecclesiam quam tunc obtinebat, per certum Procuratorem suum ad id ab eo specialiter constitutum, in manibus nostris sponte, & libere resignasset, nosque resignationem hujusmodi duxissemus admittendam, venerabili fratri nostro Episcopo N. per alias nostras litteras dedimus in mandatis, ut si constaret, quod N. in sacris ordinibus constitutus existeret aliunde commodè vivere posset, ac per diligentem examinationem per eundem Episcopum adhibitis examinitoribus ad id à Concilio Tridentino designatis, si isthic sint, ut esse debent in diocesana synodo deputati, sin autem sine illis faciendam, dilectum filium N. Clericum dictæ diocesis ad id idoneum esse reperiret, clausulam prædictam per resignationem eandem tunc vacantem, & antea dispositioni Apo-

stolicæ reservatam, etiam si illa alios quovismodo, aut ex alterius cujuscumque persone vacaret, cum illis forsan annexis, ac omnibus iuribus, & pertinentiis suis, prædicto Jo. quibuscumque aliis sese ad examen prædictum, & per mutuum concursum admitti, & sibi de dicta Ecclesia provideri petentibus penitus exclusis, intra triginta dies postquam dictæ litteræ præsentatæ fuerint, auctoritate nostra conferret, & assignaret, prout in dictis litteris plenius continetur. Quocirca fraternitati tuæ, &c. mandamus, ut si dictus Episcopus eandem Ecclesiam intra prædictos 30. dies ipsi Jo. non contulerit, & assignaverit, tu illis elapsis postquam tibi constiterit, quod dicto Jo. si in sacris ordinibus constitutus exsistat aliunde commodè vivere possit, ut præfertur, ac solertem examinationem à te, etiam adhibitis tribus vel pluribus aliis probis & peritis viris, quam primum faciendam prædictum N. idoneum esse repereris, super quo tuam conscientiam oneramus, prædictam Ecclesiam cum annexis, ac iuribus, & pertinentiis supradictis eidem N. quibuscumque aliis hujusmodi concurrentibus profus exclusis, dicta auctoritate conferre, & de illa etiam providere procures, inducens per te, vel alium, seu alios ipsum N. vel Procuratorem suum ejus nomine in corporalem possessionem Ecclesie ac annexorum iurium, & pertinentiarum prædictarum, & defendens inducendum amoro exinde quolibet detentore, ac faciens illi de Ecclesie & annexorum eorumdem fructibus, redditibus, proventibus, iuribus, & obventionibus universis integrè responderi, contradictores, &c. Non obstantibus omnibus, quæ in dictis litteris volumus non obstat, aut si pro tempore existent Episcopo N. vel quibus aliis communiter vel divisim, Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspensi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem. Ceterum tu attente istic circumspicias, an ex parte N. & I. prædictorum supradictæ resignationi, ut fieret intercesserit simoniz labe, aut alia illicita pactio, vel alia corruptela. Dat. &c.

In ceteris vero beneficiis prædictis per similem resignationem vacantibus, ut supra. Venerabili Archiepiscopo N. salutem. Hodie cum dilectus filius F. nuper Canonicus B. Canonicatum, & præbendam Ecclesie B. quos tunc obtinebat per certum Procuratorem suum, &c. ut supra duxissemus admittendum, venerabili fratri nostro Episcopo N. per alias nostras litteras dedimus in mandatis, ut si constaret, quod dictus F. in sacris ordinibus constitutus esset, aliunde commodè vivere posset, ac per diligentem examinationem dilectum filium N. Clericum N. diocesis ad id idoneum esse reperiret, Canonicatum, & præbendam præfatos per resignationem eandem tunc vacantes, & antea Apostolicæ dispositioni reservatos, etiâ si illi alio quovis modo, aut ex alterius cujuscumque persone vacaret, cum illis forsan annexis, & plenitudine juris canonici, & omnibus iuribus & pertinentiis suis, prædicto Jo. intra triginta dies postquam dictæ litteræ deputatæ forent, auctoritate nostra conferret, & assignaret, prout in dictis litteris plenius continetur. Quocirca fraternitati tuæ &c. mandamus, ut si dictus Episcopus eodem Canoniciatum, & præbendam intra prædictos triginta dies ipsi Jo. non contulerit, & assignaverit, tu illis elapsis, postquam tibi constiterit quod dictus F. si in sacris ordinibus constitutus sit aliunde commodè vivere possit, ut præfertur, & per similem examinationem quamprimum faciendam præfatum Jo. idoneum esse repereris, super quo tuam conscientiam oneramus, Canonicatum, & præbendam prædictos cum omnibus annexis de plenitudine juris Canonici, ac omnibus iuribus & pertinentiis prædictis, eidem Jo. conferre, & de illis etiam providere dicta auctoritate procures, vel inducens per te vel alium, seu alios ipsum Jo. vel Procuratorem suum ejus nomine in corporalem possessionem Canoniciatus, & præbendæ, ac annexorum, iuriumque & pertinentiarum

prædictarum, & defendens inducitur amoto exinde quolibet detentore ac faciens illum, vel pro procuratorem prædictum ad præbendam huiusmodi in dicta Ecclesia in Canonicum recipi & in fratrem, stallum in Chore & loco in Capitulo dictæ Ecclesiæ cum iuris Canonici plenitudine assignatis, sibi; de Canonicatus, & præbendæ, ac annexorum eorumdem fructibus, redditibus, proventibus, iuribus, & obventionibus univèrsis integre responderi. Contradictores, &c. Non obstantibus omnibus, quæ in dictis litteris volumus non obstat, ceterisque contrariis quibuscumque, aut si pro tempore existente Episcopo, & dilectis filiis Capitulo B. vel quibuscumque, &c. mentionem. Ceterum tu attente isthic circumspicias, &c. Dat. &c.

Septima. Aliis autem provisionibus, seu commendis, huiusmodi beneficiorum alias vacantibus, alia forma executoria concipiatur, quæ litteræ congruat principali.

Octava. Similiter quando Vicario, vel officiali prædicto huiusmodi litteras, tam pro principali, quam pro executoria dirigi contigerit, communis eis formula servatis aliis omnibus supradictis ordinetur.

Nona. Ceterum omnibus mandatis de præbendis, vel commendæ Monasteriorum, etiam reservata, tam virorum, quæ extra Consistorium expediuntur, quam etiam mulierum, vetus forma commissaria sicuti defuisset, restituatur, ac litteræ desuper expediantur cum clausula, quod delegatus de meritis, & idoneitate promovendi se informet, & si eum ad regimen, & administrationem Monasterii reperit idoneum conscientiam illius onerando provideat, vel commendet intra triginta dies, ut supra, & desuper forma executoria, etiam concipiatur, quæ suis provisionibus correspondeant.

Decima. Denique in ipsis commendis post verbum idoneum repereris, interserantur verba, ad Monasterium vel beneficium in commendam obtinendum.

Instituto regi-
strandi. §. 2. Volentes præsentibus tam in dicto Cancellaria libro, quinque nuncupato, quam etiam Camera prædicta registrari, & ab omnibus inviolabiliter custodiri. Ac decernentes irritum, &c.

Claufulæ
delegatorum. §. 3. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, stylo Cancellariæ, & Cam. Apost. quantumcumque temporum servato, ceterisque contrariis quibuscumque.

Papæ sub-
script. Placet, & ita Motu proprio mandamus. M. *Leffus & publ. fuit suprad. Motus proprius Romæ in Cancellaria Apost. Anno Domini 1567. die 13. Martii Pont. S. D. N. Pii divina providentia Papæ V. anno secundo.*

XXXIII.

Edita An. D. 1567.

Damnatio cuiuscumque collationis Ecclesiarum Parochialium, non servata forma Concilii Tridentini, hæcenus factæ, vel de cetero faciendæ.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium. IN conferendis beneficiis Ecclesiasticis, & præsertim Parochialibus Ecclesiis personis dignis & habilibus, quæ in loco residere, & per se ipsos curam exercere valeant, quantum diligentia adhiberi oporteat, Alexandri III. Lateranensis & Gregorii X. Lugdunen. generalibus Conciliis, ac Innocentii similiter III. & aliorum Romanorum Pont. prædecessorum nostrorum editæ constitutiones testantur.

Cone. Trid.
sess. 7. c. 13.
& sess. 24. c. 18. de Reformat. tradidit formam conferendi Parochiales Ecclesias, & inter cetera de Vicario providendi.

§. 1. Quod ut diligentius, ac rectius perficiatur, statuit etiam Synodus Tridentina, ut occurrente vacatione parochialibus Ecclesiis etiam generaliter, vel specialiter, etiam vigore indultus in favorem Sanctæ R. E. Cardinalium, aut alias quomodolibet reservatæ, vel affectæ, debeat Episcopus habita noticia vacationis Ecclesiæ, si opus fuerit, idoneum in ea Vicarium cum congrua ejus arbitrio fructuum portionis assignatione constituere, qui onera ipsius Ecclesiæ sustineat, donec ei de Rectore provideatur. Et deinde Episcopus, & qui iurpatronatus habet, intra decem dies, aut aliud tempus ab Episcopo præ-

scribendum; aliquos clericos ad regendum Ecclesiam idoneos Examinatores juxta formam ejusdem Synodi deputatis, nomen, & nonnisi ab eisdem Examinatoribus per concursum aliorum Examinatorum, etiam tamquam magis idoneo ab Episcopo judicato & electo de Ecclesia provideatur, alias provisiones, seu institutiones omnes præter formam prædictam factæ, surreptitæ censentur.

§. 2. Sed quoniam res humanæ semper in deterius prolabantur nisi sit qui eas retineat, ac debitæ executioni demandet, & verendum sit ne propter constitutionem huiusmodi transgressionem maximi abusus oriantur. Nos, ad quorum noticiam non sine gravi nostra molestia pervenit nonnullos ex venerabilibus fratribus nostris Archiepiscopis, & Episcopis occurrente vacatione Parochialium Ecclesiarum, eas nullo aut minus rite servato examine, præsertim illo quod per concursum fieri debet ex Concilio Tridentino, vel etiam examine rite servato, personis minus dignis, carnalitatibus aut alium humanæ passionis affectum non rationis iudicium sequentes contulisse, & de eis providisse, volentes quantum cum Deo possumus huiusmodi ac etiam futuris periculis occurrere.

§. 3. Eorundem Prædecessorum nostrorum constitutiones præfatas etiam innovando, auctoritate Apostolica tenore præsentium omnes & singulas collationes, provisiones, institutiones, & qualvis dispositiones Parochialium Ecclesiarum ab eisdem Episcopis, & Archiepiscopis, ac quibuscumque aliis collatoribus, tam ordinariis quæ delegatis, etiam S. R. E. Cardinalibus, ac Sedis Apostolicæ Legatis, vel Nunciis, præter & contra formam ab eodem Concilio Tridentino, præsertim in examine per concursum faciendi, præscriptam factas aut in futurum faciendas, nullas, irritas, ac nullius roboris vel momenti fore & esse, nullumque provisum juxta titulum etiam coloratum possidendi præbere, & parochiales Ecclesias huiusmodi, ut prius ante collationes huiusmodi vacabant, ex nunc vacare statuimus, decernimus, & declaramus, easque omnes pro tempore sic vacantes nostræ & Sedis Apostolicæ, seu eorum quibus vis conferendi eas, præterquam Episcopis, & Archiepiscopis, qui curam dicti examinis juxta decretum Concilii habere debent competet, dispositioni reservamus.

§. 4. Insuper ne Parochiales Ecclesiæ diu in suspensione maneant in maximum animarum periculum, quarumcumque Parochialium Ecclesiarum, quarum dum pro tempore vacant, ad Episcopos, Archiepiscopos, Primate, & Patriarchas, & quovis alios Ordinarios collatores, in mensibus ordinariis, collatoribus etiam per nostras regulas assignatis provisio & collatio spectat & pertinet, de quibus idem Episcopi & Ordinarii prædicti intra sex mensium spatium à die vacationis earundem perfectio examine juxta formam Concilii Tridentini præfati non providerint, ac illarum etiam quarum collationes nobis & dictæ Sedi generaliter vel specialiter & ex quavis causa reservatæ, seu affectæ existunt, aut alias ex indulto Sedis Apostolicæ cōpetunt, ad quas occurrente illarum vacatione, Episcopi & Archiepiscopi præfati personas per examen concursu mutuo habito juxta dicti Concilii Tridentini formam approbatas & magis idoneas non elegerint, aut electas nobis vel successoribus nostris, aut iis ad quos collatio spectabit, pro collatione obtinenda intra quatuor mensium spatium à die illius vacationis non significaverint, necnon Parochialium Ecclesiarum similium, quæ Jurispatronatus Ecclesiastici, vel aliorum seu clericorum & laicorum simul fuerint, si præfatus intra tempus eisdem patronis à jure præfixum prævio examine juxta formam dicti Concilii approbatus petatur institui, institutioque ipsa per duos menses à die præfationis dilata fuerit, collationem, provisionem, institutionem, ac omnimodam dispositionem nobis & ipsi Sedi ac personis indulta huiusmodi conferendi, providendi, seu instituendi obtinebuntur respective reservamus; data tamen in Parochialibus Jurispatronatus optione ipsi patronis, ut si institutio ad Ordinarios spectabit, ipsi Ordinarii illam facere negligen-

Quidam vero Episcopi de huiusmodi Ecclesiis provide-runt, non servata dicta forma.

Ideo hic Pont. collationes factas, ac sentas contra formam dicti Conc. annullat, & beneficia vacare decernit, & Sedi Apost. reservat.

Immo collationes Parochialium spectare ad Sedem Apost. si de eis servata forma dicti Conc. Ordinarii non providerint in tempore, & modo hic expressis.

Ternivus
Concilii non
protegetur.

Beneficia sic
reservata Or-
dinari non
conferantur.

Collatio pre-
dictorum fiat
idoneis. &
gravati ap-
pellant.

Appellatio
a rem non
suspendit
ex cui nem
electiois.

Et a iudice
appellationis
ad sedem
Apost. appel-
labitur.

Transumptio-
rum fides.

Forma & ef-
fectus publ.

Dat. P. An. 2.
die 18. Mart.

Publicatio.

XXXIV.

edita An. D.
1567.

Philippus II.
rex Hispan.
auct. Pont.
exposuit.
quod in par-

tibus, & ultra dictos duos menses deferentibus, pos-
sint pro huiusmodi institutione obtinenda habere
recursum ad Metropolitanum, vel viciniorem Ordi-
narium, aut ad Sedem Apostolicam.

§. 5. Prohibentes etiam eisdem Ordinariis ab eodem
decem dierum eisdem Ordinariis & Patronis ab eodem
Concilio Tridentino ad nominandum idoneos cleri-
cos coram deputatis Examinatoribus praefixum, ultra
alios decem dies prorogare audeant, vel praesumant.

§. 6. Districtius inhibentes ne quis praeter Roma-
nos Pontifices, aut alios indulta huiusmodi obtinen-
tes, ut praefertur quacumque sit super hoc auctoritate
munitus, de huiusmodi beneficiis sic reservatis (ut
praefertur) disponere, vel circa illa etiam per viam per-
mutationis, vel alias innovare quocumque modo praesumat.

§. 7. Ut autem non solum dignis, sed magis ido-
neis repertis iuxta ejusdem Concilii decretum Paro-
chiales Ecclesiae conferantur, volumus & eadem aucto-
ritate decernimus, quod si Episcopus minus habi-
lem posthabitis magis idoneis elegerit, possint ii qui
rejectioni fuerint a mala electione huiusmodi ad Metro-
politanum, vel si ipse eligens Metropol. aut exem-
tus fuerit, ad viciniorem Ordin. uti nostrum & Sedis
huiusmodi delegatum, aut alias ad ipsam Sedem Apost.
appellare, ac praefectum ad novum examen coram ipso
appellationis Iudice & ejus Examinat. provocare, &
costitudo de prioris eligentis irrationabili iudicio, eoq;
revocato, Parochialis, magis idoneo per eundem
iudicem appellationis auctoritate nostra (quatenus
collatio ad Episcopum a quo appellatus fuit spectaret)
conferatur; alias eidem magis idoneo per Iudicem
appellationis approbato conferenda remittatur ad
eum ad quem collatio, provisio, vel institutio spectabit.

§. 8. Haec tamen appellatio interposita interim
non impedit aut suspendat quod minus electio per
Ordinarii primo loco facta interim debet demandari
executioni, & provisos ab eadem Eccles. causa
appellationis huiusmodi dependente non amoveatur.

§. 9. Et si quis a sententia per Iudicem appella-
tionis lata duxerit appellandum, is tunc ad Sedem
ipsam Apostolicam appellabit. Si secus in praemissis
omnibus & singulis actum aut attentatum fuerit,
irritum decernimus & inane.

§. 10. Volumus autem quod praesentium tran-
scriptis etiam alicuius Notarii publici subscriptis,
sigillo alicuius personae in dignitate Ecclesiastica
constitutae munitis, eadem prorsus fides in iudicio
& extra adhibeatur, quae praesentibus adhiberetur
si forent exhibita vel offensae.

§. 11. Quodque litterae ipsae Cam. & Cancell. Aposto-
licarum, & Audientiae causarum Palatii Apostolici
valvis, & in acie Campi Florae, dimissis in ibi copiis
publicate & affixae, omnes ita afficiant & arcant, ac
si illis personaliter intimatae fuissent. Nulli ergo, &c.

Dat. Romae apud S. Petrum, Anno Incarnationis
Dominicae 1567. 15. Cal. Apr. Pont. nostri anno 2.

Anno a Nativitate D. 1567. indictione 10. die vero
16. mensis Maji, Pontif. autem Sanctiss. in Christo
patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa V.
anno ejus 11. retroscripta littera affixae, & publi-
catae fuerunt in retroscriptis, ut moris est per nos
Alexandrum Aflancollam & Joannem Gwerardum
praebatos S. D. N. Papae Curf.

Ant. Clerici Mag. Curf.

Quod Religiosi regulares, ob defectum presbyte-
rorum, in partibus novarum Indiarum, officio
Parochorum fungi valeant.

Has novas Indias Alexan. VI. donavit Regi & Eli-
sabeth Reginae, ut sup. in Tomo I. in ejus cons. 2.
Inter cetera.

PIUS PAPA QUINTUS.

Garissime in Christo fili noster, Salutem & Aposto-
licam benedictionem.

§. 1. Exponi nobis nuper fecit tua Majestas Regia,
quod juxta Sacri oecumenici Concilii Tri-
dentini decreta, nulla matrimonia nisi praesente Pa-

rocho, aut de illius licentia, contrahi, Nullisque
Religiis ab Episcopi licentia, verbum Dei
praedicare, ac sacularium personarum confessiones
audire, Episcopi vero novas Parochias in locis ab
invicem longe distantibus constituere possint. Quia
tamen in partibus Indiarum Maris Oceani, Reli-
giosi, propter presbyterorum defectum, haecenus
officio Parochi functi fuerunt, & id quod ad conver-
sionem Indorum attinet, exercuerunt, & exercent,
ex quo non modicos, sed maximos fructus, etiam
verbum Dei eisdem Indis praedicando & explicando,
ac confessiones audiendo, ad fidei Catholicae propa-
gationem fecerunt, dicta Majestas tua nobis humi-
liter supplicari fecit, quatenus ipsis Religiosis, ut illi
ad uberiores fructus in dicta conversione Indorum
reportandum incitentur, in locis eis assignatis, &
assignandis, officium Parochi matrimonii celebran-
do, & sacramenta Ecclesiastica ministrando, prout
haecenus consueverunt, exercendi, & ab eorum Su-
perioribus, in Capitulis Provincialibus obtenta li-
centia, verbum Dei praedicandi, & sacularium con-
fessiones de suorum Superiorum licentia audiendi
facultatem concedere, aliasq; in praemissis oportune
providere de benignitate Apostolica dignaremur.

§. 2. Nos igitur qui singulorum, praesertim Catho-
licorum Regum vois, ad divini cultus argumen-
tum & animarum salutem tendentibus libenter an-
nuimus, huiusmodi supplicationibus inclinati, om-
nibus & singulis Religiosis quorumcumque etiam
Mendicantium Ordinum, in distis Indiarum parti-
bus, & in eorumdem Ordinum Monasteriis, vel de
illorum Superiorum licentia extra illa commoranti-
bus, ut in locis ipsarum partium, eis de simili licen-
tia assignatis & assignandis, officium Parochi, huius-
modi matrimonia celebrando, & Ecclesiastica sacra-
menta ministrando, prout haecenus consueverunt
(dommodo ipsi in reliquis solemnitatibus dicti Con-
cilii formam observent) exercere, & verbum Dei ut
praefertur, quatenus ipsi Religiosi Indorum illarum
partium idioma intelligant, de suorum Superiorum
licentia ut praefertur, in eorum Capitulis Provincia-
libus obtenta, praedicare, ac confessiones audire,
Ordinariorum locorum, & aliorum quorumcumque
licentia minime requisita, liberè valeant, licentiam,
& facultatem auctoritate Apostolica tenore praesen-
tium concedimus, & indulgemus.

§. 3. Et insuper, ne in locis illarum partium, in
quibus sunt Monasteria Religiosorum, qui anima-
rum curam exercent, aliquid per praedictos Episco-
pos innovetur, eadem auctoritate, & tenore statui-
mus & ordinamus.

§. 4. Sicque per quoscumque Iudices & Commis-
sarios, quavis auctoritate fungentes, sublati eis &
eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi, & inter-
pretandi facultate, iudicari, & definiri debere; ac
quicquid fecus super his a quoquam, quavis aucto-
ritate scienter vel ignoranter attentari contigerit,
irritum & inane decernimus.

§. 5. Mandantes nihilominus dilectis filiis Curiae
causarum Camerae Apostolicae generali Auditori, &
B. Mariae de Mercede, ac del Carmen, extra & intra
muros Hispanensium Monasteriorum, per Priores
gubernari solitorum, Prioribus, quatenus ipsi, vel
duo aut unus eorum, per se vel alium seu alios, eisdem
Religiis, in praemissis efficacis defensionis praes-
sidio assistentes, faciant eis & eorum cuilibet, con-
cessione, indulto, statuto, & ordinatione ac aliis
praemissis pacifice frui & gaudere. Non permittentes
eos, per locorum Ordinarios, & alios quoscumque,
contra praesentium tenorem, quomodolibet molestari,
perturbari, aut inquietari. Contradictores
quolibet, & rebelles, per censuras Ecclesiasticas,
ac etiam pecuniarias poenas, eorum arbitrio mode-
randas, & applicandas, appellatione postposita,
compescendo, ac censuras ipsas, etiam iteratis vi-
cibus aggravando, interdictum ponendo, invocato
ad hoc, si opus fuerit auxilio brachii secularis.

§. 6. Non obstantibus praemissis, ac quibuscvis
Apostolicis, ac in Provincialibus & Synodalibus

tibus India-
rum, ob de-
fectum pres-
byterorum
religiosi Pa-
rochiarum
officio functi
sunt, in ma-
ximam Chris-
tiane fidei
propagationem.
Et ideo
supplicat pro
indulto in fu-
turum, habita-
tione per reli-
giosos licen-
tia ab eorum
Superioribus
in Capitulis
provinciali-
bus.

Quare ipse
Pont. conce-
dit dictum
indultum re-
ligiosis idio-
ma Indorum
intelligendi-
bus, & eum
de licentia
superiorum
ac servata
circa matri-
monia Conc.
Trid. forma
in reliquis
solemnitati-
bus abique
alia licentia
Ordinarii-
rum.

Episcopis in-
hibet, ne il-
los mole-
stent.

Clausula
sublati. &c.

Deputatio
executorum.

Clausula de
rogatoria.

Conciliis editis generalibus vel specialibus constitutionibus, & ordinationibus, ac Monasteriorum, & Ordinum prædictorum juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, Monasteriis & Ordinibus prædictis, eorumque Superioribus & personis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis, & decretis, in contrarium quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, & expressa mentio habenda, aut aliqua exquisita forma, ad hoc servanda foret tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, & forma in eis tradita observata inferri forent præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanens hac vice dumtaxat, specialiter & expressè derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadē Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari nō possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Transumptio-
rum fides.

§. 7. Et quia difficile foret, præsentis litteras, ad singula quæque loca, in quibus de eis fides forsitan facienda foret, deferre, etiam volumus, & eadem auctoritate Apostolica decernimus, quod illarum transumptis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, in iudicio & extra, ubi opus fuerit, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ ipsis præsentibus adhiberetur, si forent exhibita, vel ostensa.

Dat. P. An. 2.
die 24. Mart.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris die 24. Mart. anno 1567. Pont. nostri anno 2.

XXXV.

Prohibitio alienandi & infeudandi Civitates & loca S. R. E. vel de eorum alienationibus & infeudationibus tractandi, quovis prætextu, etiam evidentis utilitatis.

Hæc prohibitio ab omnibus Successoribus confirmata fuit, initio Pontificatus, ut in eorum bullis, quas omnes tamquam simpliciter confirmatorias prætermisi. Quintimo extensa est à Greg. XIII. ut notavi in ejus const. 3. Inter. & à Six. V. ut pariter notavi in ejus const. 26. Quanta; ac ab Inno. IX. in const. 1. Quæ, ubi aliarum alienationum materias indicabo. Et iterum ampliata fuit à Clem. VIII. in const. 1. Ad Romanos. Qui Clemens huic bullæ Ducatum Ferrariæ mox ad Sedem Apostolicam devolutum cum suis redditibus subiecit in alia const. 52. Sanctissimus. infra in Tomo 3.

At scias non comprehendi Terras, & loca confiscata ob delicta de quibus in Greg. XIII. constit. 65. Tanta, & Sixt. V. constit. 6. Hoc nostri. Prout neque comprehenduntur ea quæ Camera Apost. emit à Baronibus, juxta constit. Clem. VIII. Justitiæ. Tom. 3.

Attende quæ addidi ad Leon. I. const. 1. sup. tom. 1. fol. 26.

Edita An. D.
1567.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Admonet nos suscepti cura regiminis universalis Ecclesiæ cui auctore Domino præsidemus, ut Civitates, Terræ, Oppida, & Loca, nobis & Sedi Apostolicæ in temporalibus mediè & immediè subiecta perpetuo, in jure, dominio, & proprietate ac possessione dictæ Sedis conserventur.

Causa hujus
constit.

§. 1. Sanè licet nonnulli Romani Pontifices prædecessores nostri per eorum Constitutiones, rerum Ecclesiasticarum alienationes prohibuerint, & jam factas revocarint, & annullaverint, nihilominus cum retroactis temporibus nonnulli nimium ambiciosi, & dominandi cupidi sub variis prætextibus,

coloribus & causis, sæpe etiam falsis (quod non sine maximo animi nostri dolore referimus) aliquibus Romanis Pontificibus, suggestionibus & insinuationibus suis conati sint ostendere, & persuadere magis utile, expediens S. R. E. & Sedi præfatæ fore, si aliquæ Civitates, Terræ, Oppida, Castra, Arces, & Loca, ad jus & proprietatem ejusdem Sedis pertinentia, in feudum, gubernium, vicariatum, ducatum, aut quemvis alium titulum perpetuum, vel ad tertiam generationem, seu ad vitam, aut alias ad longum tempus concederentur vel etià ex eo quod alias in feudum data aut quovis alio titulo hujusmodi alienata fuissent, & propterea tamquam ad Sedem prædictam devoluta, vel devolvenda posse & debere de jure iterum infeudari, & alienari, atque inde nonnullas alienationes, infeudationes, & concessiones à Sede Apostolica emanasse, ex quibus illa non mediocrem diminutionem non solum patrimonii, sed etiam extimationis recepisse dignoscitur.

§. 2. Hinc est quod nos considerantes omnium Civitatum, & locorum prædictorum singularem fidem & promptam devotionem eidem Sedi exhibitam, omni tempore valde utilem & salutarem fuisse, & esse, ac volentes non solum alienationes hujusmodi (quas tempore nostro omnino exulare intendimus) de medio tollere, & quod nobis licere non patimur, nostris successoribus indicamus, quos non immemor fore speramus ante Domini nostri JESU Christi in examine diei magni adventus tribunal, villicationis nostræ rationem reddituros non esse, sed ut omnis alienationum hujusmodi fiendarum occasio penitus aboleatur, quantum cum Deo possumus, per amplius providere, constitutionibus prædecessorum nostrorum hujusmodi etiam inherendo, illasque innovando, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, non ad alicujus super hoc nobis oblatæ petitionis instantiam, sed ex mera animi nostri deliberatione, & de Apostolicæ potestatis plenitudine, habita etiam super his cum venerabilibus fratribus nostris S. R. E. Cardinalibus in Consistorio nostro secreto consultatione matura, de eorum consilio, & unanimi assensu (qui etiam juraverunt præsentī Constitutioni non contravenire, nec Pontificibus alienationes contra tenorem præsentium attentantibus consentire, & absolutiones à juramento hujusmodi non petere, nec acceptare) hac nostra perpetuo vultura Constitutione decernimus & declaramus, Civitates, & loca prædicta etià hæc genus in feudum, aut quemvis alienationis titulum dari solita, vel consueta, ad nos & Sedem præfatam quomodolibet devoluta, & pro tempore devolvenda, absque alia ulteriori declaratione, & illorum possessionis apprehensione eo ipso Sedi, & Camera Apostolicæ incorporata, ac ad jus, & proprietatem, & dominium pristinum, ad possessionem rediisse censi, perinde ac si per quadraginta annos & ultra, Civitates, & Loca præfata, à nobis & Sede præfata immediè possessa, & nunquā in feudum, aut alium titulum concessa fuissent.

§. 3. Statuimusque, & decernimus, quod omnes, & singulæ tam Communitates, & Universitates, quam Cives, & incolæ Civitatum, Terrarum, & Locorum prædictorumque; aliæque quæcumque personæ, tam Ecclesiasticæ quam sæculares, cujuscumque dignitatis & ordinis etiam Episcopalis, vel majores existentes ac S. R. E. Cardinales, tam publicè in consiliis Civitatum, & Locorum præfatorum quam privatim alibi in quibuscumque locis, etiam Civitatum, & Terrarum earundem Gubernatores, aut & Sedis Apostolicæ Legati, vel Prolegati existant, tractantes, consulentes, aut aliis verba facientes de infeudationibus, aut alienationibus de Civitatibus, & locis præfatis immediè ad nos & Sedem præfatam spectantibus, & pertinentibus, etiam devolutis, etiam in feudum commaniter, & pluries dari solitis, etiam ex causa permutationis, vel sub annuo censu, aut canone, aut aliis quomodolibet, etiam contemplatione meritorum erga Sedem præfatam, aut sub prætextu necessitatis, vel evidentis utilitatis faciendis, seu de postulandis à nobis, & Sede præfata

Declaratio
quod Civita-
tes, & loca
S. R. E. tam
alienata, in-
feudata &
devoluta,
quam alie-
nanda, & de-
volvenda
censeantur
ipso jure Se-
di Apost. in-
corporata.

Prohibitio
deest quæ
de causis in-
feudandi &
alienandi,
vel de eis
tractandi.

quibuscumque personis cuiusvis dignitatis, status, gradus etiam nobis, & successoribus nostris secundum carnem conjunctis, etiam S. R. E. Cardinalibus, aut quavis alia, temporalis vel Ecclesiastica dignitate fungentibus, in Duces, Vicarios, Gubernatores, seu quemvis alium titulum, ad vitam vel in perpetuum, vel longum tempus, aut etiam Sedis Apostolicæ beneplacitum, Civitatum & Locorum prefatorum, ac propterea de eligendis Oratoribus ad nos, & Successores nostros s. per prænitis, vel illorum occasione mittendis proponentes, tam ipsi quam Oratores manus hujusmodi recipientes, aut alii quicumque alienationes hujusmodi Romano Pontifici pro tempore existenti, per se vel alium seu alios, infinuantes, vel suadentes, eo ipso sententiam excommunicationis incurrant, à qua nisi ab ipso Pontifice, præterquam in mortis articulo, absolvi nequeant. Et insuper S. R. E. & Sedis Apostolicæ præfate rebelles, etiam in primo capite læsæ majestatis, & proditores Civitatum, & Locorum prefatorum, ac bona eorum fisco, & Camera nostræ Apostolicæ ipso jure devoluta, & incorporata sint, & esse censentur, omnibusque Ecclesiis, Monasteriis, & aliis per eos quomodolibet obtentis beneficiis Ecclesiasticis eo ipso privati existant, neque ad Civitates, & Loca præfata ullo umquam tempore remitti possint. Et si aliquando eos reintegrari contigerit, nihilominus infames remaneant, illisque bonorum & dignitatum portæ perpetuo claudantur.

§. 4. Et quoniam intelleximus aliquos etiam Cardinales, Civitates, Terras, Oppida, Castra, Arces, & Loca ad vitam, seu tertiam, vel aliam generationem, aut alias à dicta Sede, etiam ex causa onerosa, obtinere, habere, & possidere, cum facultate faciendi in illis melioramenta, ita quod ab eis amoveri non possint, nisi restituis sibi prius pecuniis in melioramenta hujusmodi expensis, omnes, & singulas facultates faciendi melioramenta præfata quibuscumque personis etiam Cardinalibus per eosdem Predecessores nostros aut alios ad id facultatem habentes quomodolibet concessas harum serie revocamus, & annullamus, & nemini deinceps suffragari posse, neque debere, ac cuicumque facultatem faciendi melioramenta hujusmodi habenti, illa, etiam pro munitione, & ruitione, nisi ex causa necessaria conservationis Locorum eorumdem facta fuerint, post publicationem præsentium facere omnino interdiciamus, ac prohibemus, & si fecus à quoquam factum, attentaverit fuerit, melioramenta quæcumque per eos contra tenorem præsentium facta locis ipsis cedere, & Camera ad illorum satisfactionem minimè teneri, & obligatum esse volumus, & declaramus.

§. 5. Decernentes præsentem litteras sub quibusvis revocationibus, cassationibus, derogationibus, & aliis contrariis dispositionibus sub quibusvis tenoribus, & formis, ac cum quibusvis clausulis, & decretis pro tempore quomodolibet factis minime comprehendendi, sed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, totiens in pristinum statum restitutas, & de novo concessas esse, & censi debere.

§. 6. Irritum quoque & inane si fecus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 7. Non obstantibus Constitutionibus, & Ordinationibus Apostolicis, ac Civitatum, & Locorum prædictorum juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 8. Sic igitur devotionis, & fidei constantia Civitatum, & Locorum prefatorum erga nos, & successores nostros, & eandem Romanam Ecclesiam perleveret, ut merito integritatis virtus majora beneficia ab eadem Sede consequi mereatur.

§. 9. Volumus autem quod sicut omnes & singuli Cardinales præsentem Constitutionem hujusmodi, quantum in eis erit, observare, illique non contravenire, nec Pontificibus contrafacientibus

consentire, aut absolutionem à juramento præstato non petere, nec oblatam, aut concessam acceptare in Consistorio nostro secreto promiserunt, & jurant, idem per absentes Cardinales à Consistorio, in habitatione eorum, & à Romana Curia ut quodcumque ad eandem Curiam se contulerint, ac per futuros pro tempore Cardinales in assumptione pilei promitti, & jurari debet ac promissionem & juramentum hujusmodi in forma juramenti per eosdem Cardinales præstari soliti adjungi, & inferri debere; ac contrafacientes penam perjurii, & perpetuæ infamiae juris & facti, eo ipso incurrere decernimus. Præterea quod ipsi Cardinales, occurrente Apostolicæ Sedis vacatione, in Conclavi quando de observandis litteris Julii Papæ II. predecessoris nostri super electione Romani Pontificis, & aliis constitutionibus juramentum præstare solent, etiam de inviolabiliter observanda præfata Constitutione nostra per quemlibet eorum, qui in Romanum Pontificem electus fuerit, & post modum idem ad Summi Pontificatus fastigium assumptus, post ejus assumptionem hoc ipsum promittere, ac jurare & deinde post coronationem suam, promissionem & juramentum hujusmodi per litteras suas speciales harum confirmatorias reiterare debeat. Quod si illud à Pontifice (quod credendum non est) recusabitur, aut differetur, tunc dicti Cardinales in primo Consistorio secreto, & præcipue eorum Decanus, & capita Ordinum apud eum cum omni instantia, & instantissimè pro præsentium observatione petere, & rogare, ac obsecrari non cessent, idque ut omnino efficiat, diligentissimè curare studeant, statuimus, & ordinamus.

§. 10. Quodque præsentem litteram in libellum redigantur, & post prædictas Julii litteras, quæ in dicto Conclavi legi solent, inter alias constitutiones nostras adjungantur, & etiam in quintero Cancellariæ Apostolicæ cum aliis extravaganibus nostris describantur, ac ad valvas basilicæ Beati Petri Principis Apostolorum, & in Cancellaria nostra Apostolica, ac acie Campi Floræ publicentur. Et quia difficile foret præsentem ad singula quæque loca deferri, decernimus etiam & declaramus, quod earum transumptis, etiam impressis manu alicujus Notarii subscriptis, & sigillo alicujus Prælati munitis, eadem prorsus fides ubique, in iudicio & extra adhibeatur, quæ præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensæ.

§. 11. Nuli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ declarationis, revocationis, decreti, statuti, & interdicti, prohibitionis, ordinationis, & voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursurum.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo sexagesimo septimo, quarto Cal. Aprilis, Pontificatus nostri anno secundo.

Ego Pius Catholicæ Ecclesiæ Episcopus.

Utinam dirigantur via mea ad custodiendas justifications tuas.

Ego F. Card. Pisanus Episcopus Ostiensis.
Ego Jo. Card. Moronus Episcopus Portuensis.
Ego Christoforus Card. Madrucius Episc. Prænest.
Ego A. Card. Farnesius Episc. Tuscul. Vicoecanc.
Ego Jo. Mi. Card. Saracenus.
Ego Ful. Card. Perus.
Jo. Card. Politianus.
Jo. B. Cicada Card. S. Clementis.
B. Card. Tranen.
Scipio Card. Pisarum.
Jo. Card. Capisuctus.
Ego Clemens Card. Aracelli.
Ego Jo. Card. Sabellus.
Ego Jo. Antonius Card. S. Georgii.
Aloysius Card. Cornelius.

Et etiam à Pont. electo.

Quod omnes bene observent ut dixi in rubr.

Forma publ. hanc constit. Quam habes hic in fine.

Sanctio penalis.

D. P. An. 2. die 19. Mart.

Papæ subscript.

Cardinalium subscriptiones.

Berg. Card. Salviatus.
Ego Phi. Card. à Burdesia,
Ego Lud. Card. Simoneta.
Ego Ant. Card. Granvelanus.
Ego F. Card. Paciccco.
Ego Marcus Antonius Card. Amulius.
Ego Hieronymus Card. de Corrigia.
Ego Jo. Franc. Card. de Gambara.
Ego N. Card. de Sermoneta.
Ego Hipp. Card. Ferrarien.
Ego Innicus Avalos Card. Arag.
Ego Marcus Antonius Card. Columna.
Ego Jo. Franciscus Card. Commendonus.
Ego Marcus Antonius Card. Bobba.
Ego Hugo Boncompagnus Card. S. Sixti.
Ego Alexander Card. Sfortia.
Ego Alexander Card. Cribellus.
Ego Franciscus Abundius Card. Castilion.
Ego Benediclus Card. Lomellinus.
Ego Gulielmus Card. Sirlenus.
Ego F. M. Card. Alexandrinus.
Ego Hieronymus Card. Simoncellus.
Ego Vitellotius Card. Vitellus S. R. E. Cam.
Ego Franciscus Card. Alciatus.

Publicatio. Anno à Nativit. D. N. JESU CHRISTI 1567.
Indic. 10. die verò 23. mensis Maij, Pontificatus
Sanctiss. in Christo patris, & D. N. D. Pii divina
providentia Pape V. anno ejus 2. retroscripta litem-
ra affixa, & publicata fuerunt ad valuos Principis
Apostolorum de Urbe, & Cancellaria Apostolicae,
ac in acie Campi Floræ, per nos Jo. Andream Ro-
gerium, & Nicolaum de Matthæis Sanctiss. D. N.
Pape Cursores,
Antonius Clerici Mag. Curs.

XXXVI. Quod festum S. Thomæ de Aquino, uti festum de
præcepto S. R. E. in Regno Neapolis, alibi verò
uti festum quatuor Catholicæ Ecclesiæ Docto-
rum, de cetero celebretur.

Hunc Sanctum canonizavit, & ejus festum instituit
Jo. XXII. ut in ejus cons. 11. Redemptionem. fol.
202. Tom. 1.

Edita A. D.
1567.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

Exordium.

M Irabilis Deus in Sanctis suis, qui se daturam
illos in laudem & gloriam & honorem pro-
phetæ ore promissit: ut quos sicut Sol in conspectu
suo fulgentes, ob merita sanctitatis coronat de celo,
admirabiliter etiam honoraret in sæculo, & in
eo quod illis tribui jubet laudis & venerationis
officio, debitum quoque majestati suæ honorem &
gloriam agnosceret. Quorum non modo vitam, sed
mortem sepulchra, monumenta, reliquias, & ima-
gines, ad Catholicæ fidei confirmationem, & ad
confusionem hæreticæ pravitatis, ut felicius etiam,
quàm in præfenti vita, doceret vivere mortuos qui
in Domino moriuntur, sapissime dignatus est de-
corare & illustrare miraculis.

Joan. XXII.
canonizavit
S. Thomam,
ut in bull. cit.
in rubrica.

§. 1. Ex quo sanctorum laudabili numero, qui
catholicam veritatem, corde, opere, & ore roboran-
t, Angelici Doctoris S. Thomæ de Aquino Or-
dinis Fratrum Prædicatorum in Cælum assumptio,
multis ante annis, orbi terrarum, & divinis & pro-
priis est comprobata testimoniis. Nam & miracu-
lorum signis, quibus servi sui Thomæ perpetua
veræ pietatis opera nobilitare voluit inexhausta Dei
benignitas, & certissima Christianæ regula doctri-
næ, qua S. Doctor Apostolicam Ecclesiam infinitis
confutatis hæresibus illustravit, adductus, fel. re-
cord. Joannes XXII. prædecessor noster, illo in
Sanctorum numero relato, ejus diem festum Nonis
Martii, quo die nunc etiam colitur, anniversario
honore celebrare jussit.

§. 2. Sed quoniam Omnipotentis Dei provi-
dentia factum est, ut Angelici Doctoris, vi & veri-
tate doctrinæ, ex eo tempore, quo celestibus Ci-
vibus adscriptus fuit, multæ, quæ deinceps exortæ
sunt hæreses, confusæ & convicte dissiparentur,
quod & antea sæpe, & liquido nuper in sacris Tri-
dentini Concilii decretis apparuit; ejusdem memo-
riam, cujus meritis orbi terrarum à pestiferis quo-
tidie erroribus liberatur, majore etiam quam antea
grati & pii animi affectu colendam statuimus. Quod
officium nostrum præter beneficia ex illius saluari
disciplina in diem magis profectum in sacrosanctæ Ec-
clesiæ filios, ad quorum pastorem, paternamque
curam, Dei benignitati humilitatem nostram pla-
cuit evocare, postulat etiam aliqua ex parte ejus-
dem Ordinis Prædicatorum communio, & socie-
tas, unde licet imparibus meritis non etiam, tam-
quam ex fonte profluximus.

§. 3. Itaque primum ut in Civitate & Regno
Neapolitano, quod in eam Provinciam, quæ ad
salutarem omnium gentium institutionem, ex no-
bilissima familia Aquinate, clarissimum hoc edidit
Ecclesiæ Dei lumen, tantum inde laudis, decoris-
que divina bonitas redundare voluerit, de venera-
bilium fratrum S. R. E. Cardinalium consilio at-
que unanimi assensu, ipsa die nonarum Martii,
qua præstantissimus Doctor migravit in cælum,
posthac semper universi utriusque sexus ab omni-
bus vetitis, ac servilibus operibus, laboribusque
abstinentes, festum Divi Thomæ solemniter sub
duplici majori officio sicut ceteras ejus generis so-
lemnes festivitates, quæ de ipsius Ecclesiæ præcepto
servantur; in aliis autem Orbis terræ partibus,
quemadmodum Sanctorum quatuor Ecclesiæ Do-
ctorum festivitates piæ mem. Bonifacii Pape VIII.
etiam prædecessoris nostri præcepto celebrantur,
sic eundem festum diem S. Thomæ in perpetuum
posthac omnes item utriusque sexus Christiani-
celesbrent, & venerentur, & Apostolica auctori-
tate statuimus ac sancimus.

§. 4. Ut vero etiam memoriæ S. Doctoris majori
studio ac pietate cultus & debita veneratio adhibea-
tur, de Omnipotentis Dei, ac beatorum Apostolo-
rum Petri & Pauli auctoritate consili, omnibus
utriusque sexus Christianis vere penitentibus
& confessis, qui in ipso S. Thomæ festivitatis die,
sacellum vel altare in Ecclesia S. Dominici Neapo-
litanorum situm, in quo scriptoris Angelici doctri-
na, Salvatoris Crucifixi ore (sicut pia testatur hi-
storia) mirabiliter probata fuit, à primis ejus diei
vesperis, usque ad occasum Solis devote visitaverint,
septem annos & totidem quadragenas.

§. 5. In ceteris autem orbis terræ partibus, iis
qui eundem festum diem, ut præfertur solemniter
celebraverint, & ad Ecclesiam, quæ apud eos fue-
rit, vel sacellum, aut altare sub ejusdem S. Thomæ
invocatione, pie ac devotè accesserint, quoties id
fecerint, toties centum dies de injuncta ipsis pe-
nitentia per præsentis litteras in perpetuum valitu-
ras, quas sub aliis cujuscumque generis indulgen-
tiarum concessionibus & illarum revocationibus
nullo modo comprehendere volumus, misericorditer
in Domino relaxamus.

§. 6. Et quia difficile esset has ipsas litteras ad
singula orbis terrarum loca pervenire, volumus
& auctoritate Apostolica decernimus, ut earum
exemplis etiam impressis manu Notarii publici sub-
scriptis, & sigillo alicujus Prælati munitis, ubique
locorum & gentium, in judicio & extrâ eadem
prorsus fides adhibeatur.

§. 7. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc
paginam nostræ sanctionis, voluntatis, relaxatio-
nis, statuti, & decreti infringere, vel ei ausu te-
merario contraire. Si quis autem hoc attentare
presumpserit, indignationem Omnipotentis Dei,
ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se
noverit incursum.

Datum Rome apud S. Petrum Anno Incarnatio-
nis Dominicæ, millesimo quingentesimo sexagesi-
mo

Ejus festu
celebrari ju-
bet ut in
rubr.

Indu'g. e
altaria vis-
tantibus.

Festum qu
celebranti-
bus conce-
dit.

Exemplis
bullæ credi-
juber.

Sanctio po-
nalis.

Dat. P. An.
die 11. Apr.

Papae sub-
script.Cardinalium
scriptio-
nes.

Publicatio.

XXVII.

ita An. D.
1567.

cordium.

mo septimo, tertio Idus Aprilis, Pontificatus nostri anno 2.

Ego Pius Catholicae Ecclesiae Episcopus.

Utinam dirigantur viae meae ad custodiendas iustificationes tuas.

Ego F. Card. Pisanus Episc. Ostiensis.
Ego Jo. Card. Moronus Episc. Portuenfis.
Ego Christoph. Card. Madrucius Episc. Prænestinus.
Ego A. Card. Farnesius Episc. Tusculan. Vicecancell.
Ego Jo. Mi. Card. Saracenus.
Jo. Card. Politianus.
Jo. B. Cicada Card. S. Clementis.
B. Card. Tranen.
Scipio Card. Pisarum.
Jo. Card. Capisaccus.
Ego Clemens Card. Aræceli.
Ego Ja. Card. Sabellus.
Ego Jo. Antonius Card. S. Georgii.
Ego Aloysius Card. Cornelius.
Ber. Card. Salviatus.
Ego Phi. Card. a Burdesia.
Ego Lud. Card. Simoneta.
Ego Ant. Card. Granvelanus.
Ego F. Card. Paciecco.
Ego Marcus Antonius Card. Amulius.
Ego Hieronymus Card. de Corrigo.
Ego Jo. Franc. Card. de Gambarat.
Ego Hipp. Card. Ferrarien.
Ego Innicus Analos Card. Arag.
Ego Jo. Franciscus Card. Commendonus.
Ego Marcus Antonius Card. Bobba.
Ego Hugo Boncompagnus Card. S. Sixti.
Ego Alexander Card. Sfortia.
Ego Alexander Card. Cribellus.
Ego Benedictus Card. Lomellinus.
Ego Gulielmus Card. Sirletus.
Ego F. M. Card. Alexandrinus.
Ego Hieronymus Card. Simoncellus.
Ego Vitellotius Card. Vitellius S. R. E. Cam.
Ego Franciscus Card. Alciatus.

Anno à Nativit. D. N. JESU Christi 1567. Indiſt.
10. die vero 10. mensis Junii, Pontificatus Sanctiss. in Christo patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papæ V. anno ejus 2. retroscriptæ litteræ lectæ, publicatæ & affixæ fuerunt in valvis Sancti Petri de Urbe, & S. Jo. Lateranen. Cancellariæ Apostolicæ, per nos Jo. Andream Roggerium, & Christionum de Monte prelati Sanctiss. D. N. Papæ Cursores.

Camillus Cherubinus Mag. Curs.

Moderatio indultorum S. R. E. Cardinalium, super collatione beneficiorum.

Aliam & strictiorem moderationem fecit Greg. XIV. in sua constit. 19. Sanctissimus. Et postremo Paulus V. in constit. 58. Sanctissimus. in Tomo 3.

Quoad indulta Cardinalium circa dispositionem beneficiorum, quod non communicentur Capitulo, & Canonici, cum quibus illa aliis essent communia, vide S. D. N. Urb. VIII. constit. 59. Accepto inf. to. 4. Quod verò Cardinales prætextu indulti etiam cum expressa facultate concedendi, non possint dispendere de beneficiis Ecclesiarum, cujus regimini cesserunt, cum aliquibus exceptionibus habes ejusdem S. D. N. Urb. VIII. constit. 60. Licet, inf. dicto tom. 4.

Sanctissimus in Christo Pater, & Dominus noster Dominus Pius divina providentia Papa V.

Ex tam multis S. R. E. Cardinalium super beneficiorum Ecclesiasticorum dispositione indultis, & multiplicatione aliarum super aliis facultatibus, quæ quotidie litteris dictorum indultorum diffuse infere-

runtur, sæpenumero impeditur, quo minus solitam antehac Sedis hujus benignitatem erga pauperes, & benemeritos liberaliter exercere possit.

§. 1. Idcirco rationem capere volens, ut tanta de hac ejusmodi indultorum, & facultatum largitione præcisa, dictis personis commodius beneficiandi via sibi libera recludatur, omnia & quæcumque indulta, concessionem, facultates, & alia privilegia, concedendi quæcumque beneficia Ecclesiastica, cum cura & sine cura, secularia & quorumvis Ordinum regularia qualitercumque qualificata, ad collationem, provisionem, præsentationem, electionem, & quancumque aliam dispositionem, dictorum Cardinalium, ratione Patriarchalium, Metropolitanarum & aliarum Cathedralium Ecclesiarum necnon Monasteriorum, Prioratum, Dignitatum & aliorum beneficiorum Ecclesiasticorum, quæ quomodolibet obtinent, & in posterum obtinebunt, ac etiam quorum collatio, provisio, & quævis alia dispositio, illis ex causa facta per eos cessionis, regiminis, & administrationis, seu commendæ, aut resignationis, Ecclesiarum, Monasteriorum, & aliorum beneficiorum hujusmodi, Apostolica auctoritate reservata existit, vel in posterum reservabitur, necnon quorumcumque inferiorum collatorum & collatricum, de jure, privilegio, consuetudine, ac alias quomodolibet pertinentia, & etiam illa commendandi, ac alias de eis disponendi, omnibus & singulis Cardinalibus prædictis, etiam de dictorum inferiorum collatorum consensu, per quoscumque Rom. Pont. ac Sanctitatem suam, & dictam Sedem, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, deque Apostolicæ potestatis plenitudine, & etiam ex passis inter dictos Pontifices & Cardinales diversis temporibus factis, firmatis, & juratis, ac quibuscumque onerosis, & aliis causis concessa, & etiam iteratis vicibus innovata atque extensa, quibuscumque concepta formulis, ac etiam reſtitutivis, mentis attestativis, præferativis, derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, efficacissimis & insolitis clausulis, necnon vim contractus inducentibus, & aliis decretis suffulta, quorum omnium tenores Sanctitas sua haberi voluit pro expressis, ac specialiter & expresse revocavit, litterasque Apostolicas desuper concessas, & quoad ea in quibus illa nondum erant sortita effectum, & inde secuta quæcumque, cassavit & annullavit, viresque & effectum de cetero non habere decrevit.

§. 2. Præterea voluit & ordinavit, quod omnes deinceps litteræ Apostolicæ facultatum & indultorum hujusmodi pro singulis Cardinalibus prædictis, præsentibus & futuris ad unam tantum Cathedralium, vel majorem Ecclesiam, seu illius loco, unum vel duo Monasterium seu Monasteria, aut unum aliud vel duo alia, beneficium seu beneficia in dictis litteris exprimendam seu exprimendum vel exprimendam, quam seu quod, vel quæ ipsi Cardinales ultra illas sex Episcopales ac presbyterales, & diaconales Cardinalium Ecclesias tunc temporis obtinebunt, seu cujus vel quorum collatio eis reservata fuerit, ut præfertur; ac etiam sublata omnino altera hujusmodi indultorum parte super consensu ipsorum Cardinalium requiringendo in provisione beneficiorum apud Sedem prædictam pro tempore vacantium, aliis sub dictis indultis comprehensorum, de quibus omnibus Sanctitas sua posthac libere dispendere intendit, & etiam citra facultates commendandi Monasteria, aliæque beneficia Eccl. secularia & regularia, necnon disponendi de Monasteriis, etiam cura & conventu carentibus, & de dignitatibus, conventualibus, & in Metropolitanis aliisque Cathedralibus post Pontificales majores, & in collegiatis Ecclesiis principalibus. Ac etiam disponendi de beneficiis Referendariorum causarum Palatii Apostolici Auditorum, Protonotariorum, & aliorum Officialium dictæ Sedis, necnon familiarium, ceterorumque omnium, qui constitutionibus declaratoriis sel. rec. Pauli Papæ III. ad perpetuam rei memoriam editis continentur. Denique cum moderatione facultatum disponendi de beneficiis familiarium ipsorum Car-

Revocatio indultorum S. R. E. Cardinalium circa beneficiorum collationem.

Declaratio & limitatio circa futuram illarum concessionem.

dinalium, ac concessionum eis per regulas Cancellaria Apostolicæ factarum, de consensu per ipsos in provisionibus Apostolicis præstando ad eos solos familiares continuos commensales eorumdem qui vera & actuali familiaritate continua commensalitate huiusmodi durante extra Romanam Cur. vel Cardinalibus ipsis in dicta Curia existentibus, apud dictam Sedem decesserint, & ad ea sola beneficia quæ ipsi familiares continui commensales viventes, ad collationem dictorum Cardinalium pertinentia obtinebant, seu quæ ex collatione sibi ab eisdem Cardinalibus facta affectui fuerant expendantur. Aliter verò etiam motu, scientia, & potestate similibus, ac etiam cum præsentium, speciali & expressa derogatione expeditæ, nullius sint prorsus roboris vel momenti. Et nihilominus huiusmodi constitutiones, & regulas super beneficiis familiarium Cardinalium editas, etiam quoad Cardinales indulta huiusmodi non habentes ad familiares, & beneficia prædicta dumtaxat restrinxit, & moderatus fuit.

Decretum irritans.

§. 3. Decernens sic in iis, ceterisque omnibus præmissis per quoscumque &c. etiam causarum dicti Palatii Auditores, ac etiam ipsos Cardinales, sublata &c. necnon irritum & inane quicquid secus per quoscumque etiam prætextu indultorum, facultatum, & concessionum huiusmodi, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Clausiderog.

§. 4. Statuto, ordinatione, decreto, & declaratione Sanctitatis in crastinum ejus assumptionis ad summi Apostolatus apicem editis, quod Cardinalis in constitutionibus & regulis per eam post priorum suorum constitutionum & regularum editionem & publicationem in posterum faciendis, non includatur, nisi illæ eorumdem Cardinalium favorem concernant vel ipsæ edendæ constitutiones de illorum, seu majoris partis eorum consilio editæ fuerint, ceterique contrariis non obstantibus quibuscumque.

Pape subscript. Publ. P. A. z. die 30. Apr.

Placet, publicetur, & describatur, M.

Letta & publicata fuit superscripta regula Romæ in Cancellaria Apostolica, Anno Incarnationis Dominice 1567. die vero Mercurii ultima mensis Aprilis Pontificatus præfati S. D. N. Pape Anno 2.

A. Lomellinus Custos.

XXXVIII.

Monasteria quorum fructus reperiuntur taxati in libris Rever. Cam. Apost. & quæcumque beneficia piis locis unita de cetero non vacantia, quindennia & alia jura eidem Rev. Cam. solvere tenentur. Et Capitula, Congregationes, & alia pia loca, indicare debent beneficia quæ possident, & titulum possessionis, & annuos redditus.

Eadem fere jussit Paulus IV. sup. in sua consl. 17. Decens. Et ampliavit Sixtus V. in consl. 33. Camera. ubi de hac materia notabo, infra in hoc Tomo II.

Edita An. D. 1567.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Exordium.

Apostolicæ Sedis poscit auctoritas, ut quæ providè per Roman. Pont. statuta fuerunt, debita executioni demandentur.

Causa huius constituit.

Cum autem, sicut accepimus, ut annatarum communium, & aliorum jurium semel tantum, vel de xv. in xv. annos ab perpetuis beneficiorum Ecclesiasticorum unionibus perfolvendorum, quæ alias fel. rec. Julius Tertius, & Paulus Quartus Rom. Pont. prædecessores nostri per eorum litteras in forma Motus proprii desuper editas, ex præterito dumtaxat Cam. Apost. applicaverunt, eo celerius quo poterit exactio & executio fiat, plurimum interfit, & necessarium existat ut tam Julii Tertii & Pauli Quarti prædecessorum litteræ prædictæ, quam aliæ quæcumque constitutiones, decreta, & declarationes per recolendæ memorie Pium Secundum, Paulum etiam Secundum, Innocentium Octavum, Julium similiter Secundum, ac Julium & Paulum præfatos, aliosque diversos

Rom. Pont. prædecessores nostros contra pro tempore in Camera Apostolica, aut aliâ ratione annatarum communium, & aliorum jurium prædictos semel tantum, aut de xv. in xv. annos solvendum obligatos, aut alios quoscumque beneficia Ecclesiastica, absque eo quod annatas, communia, & quindennia prædicta solvissent pro tempore possidentes, editæ & factæ per nos innoventur, approbentur, & confirmantur.

§. 1. Nos igitur singularum litterarum, & cujuslibet Motus proprii prædictis Romanis Pont. prædecessoribus nostris, ut præfertur, quàm etiam forsân à nobis hæcenus emanati virescentes tenores, ac si de verbo ad verbum hic inserti essent pro plene sufficienti expressis & insertis haberi volentes, illas & illos, necnon omnia & quæcumque per quoscumque iudices, executores, & commissarios in illis deputatos, & ab eis subdelegatos, ac alios ministros in præmissis, & circa eâ, quomodolibet gesta & executæ reperiuntur, ac inde secuta quæcumque, & certa scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, approbamus, & confirmamus, ac rata & grata habemus, necnon illis perpetuæ & irrefragabilis firmitatis robur adjicimus, illaque inconcusse observari debere decernimus & declaramus, omnesque & singulos, tam juris quam facti, & solemnitate forsân omisissimam, & alios quoscumque defectus si qui forsân intervenierint eisdem, & qui necessarij exprimi deberent motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus supplemus illasque & illa, quatenus opus sit, innovamus.

§. 2. Et insuper quoniam sicut etiam nobis innuitur à nonnullis nimium scrupulosi, & plâquam oporteat sapere contententibus hæsitatur, An Monasteria quorum fructus, &c. in libris Camera Apostolicæ taxati reperiuntur, necnon Prioratus quorumvis Ordinum regularia & regulares, ceteraque beneficia Ecclesiastica quocumque titulo nuncupata, quorum fructus, redditus & proventus in distributiones quotidianas convertuntur, sub litteris Pauli Secundi, & aliorum prædecessorum huiusmodi comprehendantur.

§. 3. Nos considerantes, quod annatarum communium & aliorum jurium prædictorum exactio, in recognitionem universalis domini introducta, est antiquissima, quindenniorumque usus & solutio ideo adinventi sunt, ne Camera prædicta ex Monasteriorum, Prioratuum, & aliorum beneficiorum Ecclesiasticorum unionibus, quæ amplius vacare non sperabatur, detrimentum aliquod patereretur; Volentes Camera nostræ Apostolicæ, ac venerabilium fratrum nostrorum Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalium, necnon dilectorum filiorum Romanæ Curie Officialium participantium jura præservare, illorumque indemnati consulere, ad omne dubium, omnemque disputandi & excipiendi occasionem tollendum, Motu simili, &c. omnia & singula Monasteria, tam secularia quam quorumvis Ordinum regularia, dammodo in libris ejusdem Camera taxata reperiuntur, reliqua vero Monasteria, Prioratus, Præposituras, tam Præposituras, tam seculares quam quorumvis Ordinum regulares necnon dignitates, personatus, administrationes, officia, & alia quæcumque beneficia Ecclesiastica, etiam simanalia, & de jure patronatus existant quorum fructus, &c. summam 20. ducatorum auri de Camera se. co. zlt. valorem annum excedunt, à quocumque tempore citra etiam ante felices recordationis Martini Papam Quintum similiter prædecessorem nostrum, & per nos & successores nostros quibuscumque Cathedralibus, etiam Metropolitanis, seu Collegiatis Ecclesiis, aut capitularibus mensis, etiam pro quotidianis distributionibus, aut alias usus, necnon Collegiis, Universitatibus, Congregationibus quorumvis Ordinum Monasteriis, Domibus, Hospitalibus, Fabricis, ac utriusque sexus personarum piis locis quantumvis privilegiatis, & exemptis, sub quibuscumque tenoribus & formis, Apostolica auctoritate unita, seu alias quomodolibet, quovis titulo obtenta & possessa, sub litteris

Constitutio Pont. conf. prædictorum defectus plen.

Et ex hoc expr.

Declarationem quoniam Monasteria quorum fructus in libris Camera. post tax. reperiuntur & quæcumque beneficia per ipsa unita de cetero non vacantia quindennia & alia jura vere tenentur.

Ideo habentes dicta beneficia ut ita ebent le ob-
gare ad so-
lutionem
quindennio-
rum & alio-
rum jurium.

Pauli Secundi, & aliorum prædecessorum hujusmodi comprehendit & includit.

§. 4. Et propterea omnia & singula Cathedralium etiam Metropolitanarum, Ecclesiarumque Collegiarum, Capitula, Congregationes, Universitates, Collegia, Hospitalia, & pia loca, & quivis alii in quorum favorem uniones, annexiones, incorporationes, applicationes, & submissiones hujusmodi factæ reperiuntur, quantumcumque, ut præferatur, exemptæ & privilegiatæ existant, etiam si se superinde in Camera Apostolica non obligaverint, dummodo Monasteria & beneficia ipsa possideant, ad solutionem communium annatarum & aliorum jurium prædictorum eidem Cameræ pro tempore (salvis Collegii & Officialium iuribus quoad futura remanentibus) ratione unionum, annexionum, incorporationum, applicationum, & submissionum prædictorum singulis xv. annis à die qua illæ sunt fortitæ fuerunt effectum, & alias juxta tenorem litterarum in forma Motus proprii à Julio Tertio prædecessore prædicto super applicatione quindenniorum prædictorum eidem Cameræ facta desuper emanatarum faciendam teneri, & obligatos esse, & ad id per sententias, censuras & penas in singulis Pauli Secundi, & aliorum Prædecessorum hujusmodi litteris contentas, cogi & compelli posse.

Infubula sub-
ta.

§. 5. Sicque & non aliter in præmissis omnibus & singulis per quoscumque Judices & Commissarios, quavis Apostolica auctoritate fungentes etiam Palatii nostri Apostolici causarum Auditores, necnon S.R.E. Cardinales, ac venerabilem fratrem nostrum Hieronymum Episcopum Maceratensem præfatæ Cameræ Clericum, cui omnes & singulas causas occasione præmissorum pendentes commissimus in quavis instantia, sublatæ eis & eorum cui libet aliter iudicandi facultate, iudicari & definituri debere, irritumque &c. decernimus & declaramus.

Executores
spuat.

§. 6. Mandantes eidem Hieronymo Episcopo, ut omnes & singulas causas coram eo inter dilectum filium ejusdem Cameræ Colledorem ex una, & quasque Congregationes, Capitula, Collegia, & quasvis alias personas ex altera partibus, super solutione annatarum communium, & aliorum jurium quindenniorum eorumdem vel eorum occasione, nunc & pro tempore pendentes, juxta præsentium tenorem terminet & decadat. Et pro faciliiori investigatione unionum prædictarum, omnia & singula Cathedralium etiam Metropolitanarum & Collegiarum Ecclesiarum Capitula, Collegia, necnon tam virorum quam mulierum seculares, & quovis Ordinum regulares Congregationes, seu Collegia & pia loca, eorumdemque Prælatos & procuratores, ad indicandum & profitendum medio juramento, omnia & singula Monasteria, Prioratus, Præposituras, Præposituras, Parochiales Ecclesias, & alia quæcumque beneficia Ecclesiastica, quæ ipsa Capitula, Congregationes, & alia pia loca prædicta possideant, & quo titulo illa possideant, illorumque annuos valores, sub privationis & aliis in litteris in forma Motus proprii Pauli Quarti prædecessoris hujusmodi contentis sententiis, censuris & penis in Romana Curia & extra eam moneat & requiratur.

Derogatio
ontrariis.

§. 7. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon privilegiis, exemptionibus, indultis, & litteris Apostolicis Congregationibus, Capitulis, & aliis piis locis prædictis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, necnon irritantibus & aliis decretis, etiam motu & scientia similibus, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, aut alias quomodolibet concessis, ac iteratis vicibus approbatis, & innovatis, quibus omnibus etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, aut alia exquisita forma servanda esset, tenores, &c. pro expressis habentes hac

vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, necnon omnibus illis, quæ Prædecessores prædicti in singulis eorum litteris voluerunt non obtinere, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 8. Volentes præsentis Motus proprii solam signaturam sufficere, & ubique in iudicio & extra, regula contraria non obstante, fidem facere.

§. 9. Et nihilominus illius transumpto manu publici Notarii Cameræ Apostolicæ subscripto ubique locorum tam in iudicio quam extra, si dem adhiberi, ac si præsentis exhibitæ forent & ostensæ.

Placet Motu proprio M.

Moderatio dotium, munerum, & ornamentorum quarumcumque mulierum, etiam tempore nuptiarum in Urbe.

Aliam moderationem edidit Six. V. in const. 52. Cum in. ubi tamen dotes auxit ad finta 5500.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Quoniam nos pluries iustis causis moti, cohortati sumus dilectos filios nostros Conservatores Cameræ Almæ Urbis, & populi Romani, ut velent in modum publici Statuti moderari, ac limitare quantitatem, usque ad quam in futurum ascendere possent dotes mulieribus in ipsa Urbe inter Romanos, seu inter eos & externos, aliosque superscriptos constituendæ ac dandæ, ipsiusque propterea in diversis eorum etiam publicis Consiliis negotio tractato prius curam faciendi moderationem & limitationem prædictam, illamque cum penis capitulis & clausulis opportunis in scriptis redigendam, Conservatoribus & aliis superius descriptis demandaverint, & præinserta scriptura sic ut supra exemplata, est in eodem publico Consilio lecta, & maturè discussa fuerit, per ipsum Consilium approbata, & in modum publici statuti publicata.

§. 1. Nos cupientes ut inviolabiliter observetur, Motu simili statutum ipsum subscriptum prout jacet, cum omnibus superscriptis ordinationibus, in omnibus & per omnia, etiam Apostolica nostra auctoritate ex certa nostra scientia perpetuo laudamus & approbamus & confirmamus, omnesque & singulos, tam juris quam facti & solemnitatum etiam verbalium forsan omisissarum defectus si qui in præmissis intervenerunt, eadem auctoritate Apostolica supplemus. Et pro abundantiori cautela, majorque ipsius Statuti, omniumque superscriptorum efficacia, etiam nos per eadem verba, statutum ipsum, ac superscriptas omnes ordinationes de novo facimus, atque inviolabiliter perpetuo observari, & ad executionem per illos ad quos spectat inconcussè demandari volumus & mandamus.

§. 2. Volentes quod hujus nostræ cedulæ solâ signatura sufficiat, & clausula contraria non obstante, in iudicio & extra fidem faciat.

§. 3. Et quod præmissis, ac præinserto statuto, & huic nostræ cedulæ ac dispositioni, per nos & successores nostros nunquam sufficienter derogatum esse censeatur, nisi in publica signatura propofita supplicatione cum hujus nostræ cedulæ insertione, derogatio fuerit concessa.

§. 4. Decernentes irritum & inane si quid in contrarium contingat.

§. 5. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, aliisque dictæ Urbis statutis, reformationibus & consuetudinibus, etiam juramento &c. roboratis, ceterisque in contrarium facientibus quibuscumque.

Placet Motu proprio M.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Nono Calend. Julii, Anno secundo.

Sola signatura
sufficit.

Fides tran-
sumptorum.

Papæ sub-
script.

XXXIX.

Edita An. D.
1567.

Populus Ro-
manus ad co-
hortationem
hujus Pont.
super moder-
atione dotes
condidit sta-
tutum, cuius
tenor ex mox
sequitur.

Confirmat
Pont. dictum
statutum.

Sola signatura
sufficit.

Clausulæ
præservati-
væ.

Decretum
irritans.

Clausulæ de-
rogatoriæ.

D. P. An. 2.
die 24. Maji.

Sequitur tenor istius Statuti.

C A P . I .

Statuti tenor
in quo extat
moderatio
dotis ad scuta
4500. de
carlenis.

Tu scias au-
tem fuisse ad
5500. per
Six. V. cit.
in rub.

§. 1. Statuimo & ordinamo, che nessuna persona Romana di qualunque stato, grado, o preeminenza si sia, etiamdio Chierico, ardisca, ne presuma costituire, promettere, pagare, ricevere, tanto in danari contanti, quanto in argento, oro, gioie, proventioni, o altre cose, etiamdio mobili, e se moventi, ragioni, & attioni, dote & accancio, in una o più volte, che passi o ecceda, & computata etiamdio cassa bianca, bacile, e boccale, la somma è quantità di ducati quattromila e cinquecento di carlini, à ragione di dieci carlini per ducato. Ne sia lecito à questo contravenire per alcun patto o consentimento, etiam giurato, da farsi per li contrascritti & altre terre persone, per causa d'occasione di accrescere somma dotale, costituir pegno, o in qualunque modo far fraude à questo statuto, ad effetto ch'il marito, o la donna, o altri per essi vengano ad haver più della detta somma di ducati quattromila cinquecento, in alcun modo o via, diretta o indiretta, alla pena di mille ducati simili da incorrerli per ciascuno che contrafarà, e da applicarsi per la quarta parte all'accusatore, qual farà tenuto secreto, l'altra quarta all'esecutore, & per lo resto alla fabrica del Palazzo delli Magnifici Signori Conservatori della Camera di quest'Alma Città di Roma. Et nientedimeno volem, che pagata o non pagata la detta pena, tutto quello che oltre la detta somma si desse, ovvero ancora con intervento di terze persone sotto quale color si sia di donazione, parafereno, o altro titolo etiam in persona della donna, qual similmente prohibemo sotto la pena predetta ipso facto sia applicato alla fabrica del Palazzo delli prefati Magnifici Signori Conservatori. Et ancora volem, che colui che costituisce, dà, ovvero promette in alcun modo oltre la somma predetta, o suo herede, o successore, ovvero la donna per la qual fosse dato per verun tempo venendo il caso della restituzione, possa ridimandare il sopra più, & habbi perduta ogn'azione che in ciò & sopra ciò li competesse, e detto sopra più s'applichi ipso jure alla fabrica predetta come di sopra; ordinando che tutti simili contratti, o private scritture, quali sopra ciò si facessero siano quanto alla detta quantità excessi ipso jure nulli & invalidi, e per vigore di essi nulla esecuzione se ne possa fare quanto alla quantità eccedente di ducati quattromila, e cinquecento.

C A P . II .

Notarium
contra hanc
prohibiti-
onem instru-
menta con-
ficientium po-
tuit.

§. 2. Ancora prohibemo à tutti simili Notarii, che non ardischino ne presumino rogarsi d'alcun istrumento, qual sia contra la prohibitione sopra scritta, ne far scrittura che sia incerta, o che si riferisca à quella cedula privata, o qualunque altra scrittura, o arbitrio di huomo, sotto la pena del falso, e di scudi ducento per ciaschedun di loro che contrafarà, e d'applicarsi come di sopra, & detti contratti non invalidi ipso jure, & nullius fidei, & essi Notarii s'intendano nondimeno privati in perpetuo de' loro officii.

C A P . III .

Mediatorum
& aliorum
scripturis
huic prohibi-
tionis con-
trariis inter-
ventionem po-
tuit.

§. 3. Et similmente prohibemo che nessuna persona possain ciò come mezano intravenire, o altrimenti presumere far cedula privata, ovvero esser testimonio incontratto, o cedula che fosse contra la prohibitione predetta, alla detta pena, da incorrerli & applicarsi come di sopra.

C A P . IV .

Hec prohibi-
tio quos co-
prehendat.

§. 4. Vogliamo ancora che nelle sopra scritte prohibitioni & pene siano compresi Baroni, Corti,

giani, o forastieri, etiamdio Chierici che appareranno con Romani, tanto originarii, come fatti cittadini & incolti di Roma, e tanto dando, e promettendo, quanto ricevendo, e stipulando, ovvero come mezano, notario, testimonio, fidejussore, o promissore, o in qualunque altro modo si intrametano, purché uno delli conforti, cioè, o sposa, o marito, o sposo, o moglie, sia Romano originario, ovvero fatto cittadino, o pur incolta in Roma.

C A P . V .

§. 5. Ne sia lecito alla sposa poiche se ne sarà data à marito, o prima, mostrare o far mostrare à pompa, o altrimenti, tanto in publico, come in privato, in presenza di persone, che non siano di casa, le robe che saranno nelle case, e sponzalitico, quali vogliamo non possano eccedere in numero di due, alla pena di ducati cinquecento, da incorrerli & applicarsi come di sopra.

C A P . VI .

§. 6. Non sia medesimamente lecito al sposo donare più di una veste alla sposa, la quale sia conforme alli habiti liciti per le ultime reformationi sopra ciò fatte, alla pena predetta. E non sia lecito al padre o madre, o altra congiunta persona della sposa, donar al sposo, o ad altri per lui, dirette ovvero indirette, nel tempo della subharratione, o prima o poi, alcun vaso, bacile, boccale, coppa, nappo, catena, o altro dono, tanto di oro, come d'argento, denari, gioie, perle, drappi, o altre cose, etiamdio non simili, alla pena predetta di ducati 500. & perdita delle robe, d'applicarsi come di sopra. Non sia lecito alli parenti dello sposo nell'atto della subharratione donare alla sposa alcun dona, eccetto che padre, madre, fratelli, e forelle carnali e consobrini dello sposo, alla detta pena. Non sia lecito alla sposa, e suoi, al tempo della subharratione, dar fazzoletti, o cosa simile ad altre persone, che à coloro che li è permesso di donare, & che donaranno come di sopra, alla pena predetta.

§. 7. Deputati super premissis per Populum Romanum in publico consilio Illustrissimi Domini Conservatores Camere Almaz Urbis D. Antonius Vellius J. U. D. Advocatus Consistorialis, D. Dominicus Cavalierius, D. Vincentius Nobilius, Magnificus D. Angelus Prior Dominorum Capitum Regionum, D. Marcus Antonius Burgesius Advocatus Consistorialis, D. Marius Gabriellus Advocatus Consistorialis, D. Pirrhus Tharus J. U. D. Vincentius Parentius J. U. D. Galeatius Poggius J. U. D. Antonius Massa J. U. D. Dominus Lucas Petus J. U. D. Dominus Marius Frangipanus, D. Cincius Frangipanus, D. Hector Mutinus, D. Horatius Narus, D. Petrus Paulus Fabius, D. Thomas Cavalierius, D. Hieronymus Picus.

Extensio constitutionis Pii IV. de condemnatis & bannitis non audiendis nisi in carceribus constitutis, & defuncti heredes citatis, ut procedat etiam contra condemnatos in contumaciam, & in quacumque instantia, pro quacumque poena corporis afflicta.

Hec bulla Pii IV. est 52. sup. fol. 71. Et si cuncta. Ex plenè de materia bannitorum notabo inf. in const. 6. Six. V. Hoc nostri.

P I U S P A P A Q U I N T U S ,

Motu proprio, &c.

Licet alias fel. rec. Pius Papa IV. prædecessor noster Motu proprio, & ex ejus certa scientia, sua perpetuo valitura constitutione fassiverit, &c.

Omit-

Sponfa n
poteat ad
pompam
tendere pa
phernalia.

Moderat
munerum
ter conjug
& affines.
Ad hac vi
dictam bu
lam Sixti

Nomina d
putatorum

XL.

Edita An. D
1567.

Pius IV. ed
dit const. d
qua hic.

Causa declaratio.

Declaratio & extensio.

Annullatio absolutio-
num aliter
facturum.

Clausula
preservati-
va.

Decretum in-
vitans.

Clausula derog.

Sola signa-
tura sufficit.

Pape sub-
script.

Publ. P. A. 2.
die 22. Julii.

Omititur residuum hujus narrativæ, quia ipsam bullam habes sup. fol. 71. Et si cuncta:

§. 1. Cum tamen à nonnullis in dubium revoce-
tur, an in litteris Pii prædecessoris hujusmodi, com-
prehendantur etiam illi qui ex aliqua criminali cau-
sa pro qua poena corporis afflictiva imponenda foret,
in eorum contumaciam condemnati fuerint, itaut
ad purgandum contumaciam, & condemnationem
hujusmodi admitti, vel audiri non debuerint nec
debeant, nisi prius se in carceribus constituerint.

§. 2. Nos omnem circa præmissa ambiguitatem è
medio tollere, & penitus amputare volentes, necnon
litterarum hujusmodi tenores præsentibus pro ex-
pressis habentes, illisque nihil addentes vel minu-
entes Motu simili ex certa nostra scientia, ac de Apo-
stolicæ potestatis plenitudine decernimus & declara-
mus, eos omnes & singulos qui ex hujusmodi causis,
licet in eorum meram contumaciam hæcenus con-
demnati fuerint, & in futurum condemnabuntur,
sub eisdem litteris omnino comprehensos fuisse &
esse, ac fore, ita ut non aliter ad purgandum dictas
eorum contumaciam & condemnationem admitti
debuerint, vel debeant, nisi sese prius in carceribus
constituerint vel constituant. Decernentes quod in
quacunque instantia, casu, & causa se absolvi pe-
tant, licet forsitan in aliqua se constituerint, nullo
modo audiantur, nisi se prius in carceribus servatis
servandis de novo constituerint, & novæ constitu-
tioni hujusmodi ad plenum satisfecerint.

§. 3. Ac omnes & singulas absolutiones, remis-
siones & quasvis alias gratias contra Præsentium
tenorem quomodolibet pro tempore impetratas,
& à quibuscumque iudicibus cuiuscumque dignita-
tis, status, gradus, ordinis, & conditionis existant,
quovis prætextu vel causa emanatas nullatenus at-
tendi debere, minuse cuiquam prodesse modo
posse, sed tamquam nullas & invalidas, nulliusque
roboris vel momenti rejiciendas esse, licereque
præfatis, & aliis iudicibus quibuscumque, illis non
obstantibus processus hujusmodi reassumere, &
prout juris fuerit terminare.

§. 4. Præsentemque nostrum Motum proprium
nullo umquam tempore, de subreptionis vel ob-
reptionis, aut nullitatis vitio, seu intentionis nos-
træ, vel quopiam alio defectu, notari vel impugnari
nullatenus posse, sed illum semper validum &
efficacem existere, suosque plenarios effectus om-
nimodè fortiri.

§. 5. Sicque in præmissis omnibus, etiam per
S. R. E. Cardinales, ac casuarum Palatii Auditores,
aliosque Iudices &c. sub lata eis &c. iudicari debe-
re, irritum quoque & inane, quicquid fecus super
his à quoquam, quavis auctoritate, scienter vel
ignoranter attentatum forsitan est hæcenus, vel in
futurum contigerit attentari, fuisse, esse, & fore, &
vicio nullitatis penitus subjacere decernimus.

§. 6. Non obstantibus præmissis, ac constitutio-
nibus & ordinationibus Apostolicis, necnon omni-
bus illis quæ idem prædecessor in eisdem litteris vo-
luit non obstat ceterisque contrariis quibuscumq;

§. 7. Volumus autem quod præsentis Motus
proprii sola signatura sufficiat, & ubique fidem faci-
at, in iudicio & extra, regula quacumque con-
traria non obstante, cum decreto, quod Præsen-
tium transumptis manu alicujus Notarii publici
subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate
Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus
fides adhibeatur, quæ ipsis originalibus adhibere-
tur, si forent exhibite, vel offensæ.

Placet Motu proprio. M.

Anno à Nativitate D. 1567. indictione 10. die verò
22. mensis Julii, Pontif. Sanctiss. in Christo patris,
& D. N. D. Pii Pape Quinti anno ejus 11. retro-
scriptæ litteræ affixæ, & publicatæ fuerunt ad valvas
Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, ut
moris est per nos Julium Parinum, & Alexandrum
Aspencollum præfatis S. D. N. Pape Curs.
Canilium Cher. Mag. Curs.

Confirmatio & nova concessio plurimorum indul-
torum pro Ordinibus Fratrum & Monialium
Mendicantium. Et declaratio atque extensio
Concilii Tridentini circa ea. Et communicatio
eorundem indultorum, cum aliis Ordinibus regu-
laribus. Necnon & jurisdictionio Conservatorum.

Hæc bulla ab istomet Pontifice revocata est, quoad exa-
men & approbationem Confessorum per Ordinarios
facienda inf. in const. 133. Romani. Et Greg. XIII.
in const. 9. In tanta omnia hæc privilegia reduxit
ad terminos juris communis. & Concilii Tridentini.
Ita quod ea tantum persistant indulta, quæ ante
hujusmodi bullas habebant Mendicantes, & Con-
cilio Trid. non adversantur.

PIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

ET si Mendicantium Ordines, qui sedulum in vi-
nea Domini quotidie exhibere non cessant famu-
latum, summo semper studio, etiam dum in mi-
noribus essemus, amplexi sumus, ad summi tamen
Apostol. apicem, meritis licet imparibus divina fa-
vente clementia assumti, dum id mente recolimus,
facere non possumus, quin eos propensiori caritate,
& paterno affectu amplectamur, ac exinde pro suis
sanctis studiis, honestique laboribus, proque salute
animarum, ab Apostolica Sede, cujus continè pa-
cem & dignitatem Ordines ipsi fortiter tutati sunt,
tam spiritualia, quam temporalia subsidia orna-
menta que acceperint, & accipiant, quibus & san-
cta sua officia, ac vitam suam, regularem facilius
atque expeditius exequi, & transigere possint, &
ceteræ religiose personæ, Ordinesque alii, exem-
plo ipsorum promptiores, alacrioresque ad sua
officia perfolvenda reddantur.

§. 1. Hinc est quod nos attendentes plerisque
ex venerabilibus fratribus nostris Archiepiscopis &
Episcopis, qui eosdem Ordines præcipuè tamquam
fructiferos in agro Domini palmitis, & colere &
adjuvare deberent, non solum id exequi negligere,
verum etiam Concilii Tridentini decretis in pravi-
um sensum retortis, eos & eorum quolibet variis
afficere incommodis, & perturbationibus, eorum-
que privilegiis non modicum asserere gravamen.

1. Quidam enim Episcopi, ut accepimus, nolunt
admittere quosdam Regulares ad prædicationem,
etiam in suis Ecclesiis faciendam, quamvis de eor-
um habilitate ad hujusmodi opus exercendum,
habeant bonum testimonium à suis Superioribus.
Alii verò volunt, ut nedum semel, sed etiam plu-
ries in anno, coram ipsis, vel eorum Vicariis Præ-
dicatores præsententur, ac pro licentia prædican-
di, quam nonnisi in scriptis dare volunt, aliquid
quandoque exigunt. Alii etiam Episcopi maximam
Regularibus injuriam irrogare videntur, dum
præter ordinem & veterem consuetudinem, absq;
ulla ratione quosdam rejiciunt, & quosdam, pro
eorum libito, admittunt ad prædicationem hu-
jusmodi habendam in locis suæ diocesis.

2. Quorumdam etiam locorum Ordinarii, quos-
dam Religiosos probos viros, & idoneos, etiam
à suis Superioribus approbatos, ad confessiones
audiendas admittere nullo modo volunt. Quidam
ex eis volunt, non solum singulis annis, sed etiam
pluries in anno, in aliquibus partibus eosdem con-
fessores sibi præsentari. In aliquibus vero oppidis,
tam Episcopi seu eorum Vicarii, quam presbyteri
Curati, nolunt ut Fratres mendicantes vocati ad
audiendas confessiones infirmorum, maxime si
infirmitas est gravis, aut etiam sanorum, in pri-
vatis illorum domibus, vel alibi præterquam in
suis Ecclesiis, aut monasteriis possint accedere.

3. Nonnulli etiam audent confessores Monialium,

XLI.

Edita An. D.
1567. &
1571.

Causæ hujus
constitut.

Episcoporum
molestia ec-
clesiastican-
tes hic refe-
runtur.

Hæc prima
molestia de-
claratur inf.
num. 1.

Hæc secunda
declaratur
inf. num. 2.

1567.

Hæc tertia
declaratur
infra num. 3.Hæc quarta
declaratur
infra num. 4.Hæc quinta
declaratur
infra num. 5.Et hæc decla-
ratur num. 6.Et hæc decla-
ratur num. 7.Et ista decla-
ratur num. 8.Et ista decla-
ratur num. 9.Et ista decla-
ratur nu. 10.

Et ista n. 11.

Et ista n. 12.

Et ista n. 13.

Et ista n. 14.

qui pleno jure sub sunt Regularibus, examinare, cum tamen id minimè per Concilium decernatur, sicut & de Fratribus, qui sunt audiiri confessiones aliorum Fratrum.

4. Quidam etiam in aliquibus partibus nituntur asserere seu facere, ne quisquam infra annum possit sacram Eucharistiam in Ecclesiis Mendicantium recipere, neque etiam Moniales tertiarias nuncupatas suorum Ordinum, ut aliqui asserunt, in aliquibus partibus fieri, cum tamen solum in Palchate, quoad seculares dumtaxat, juxta privilegia Summorum Pontificum prædecessorum nostrorum eisdem Ordinibus concessa; id observari debeat.

5. Alii vero Episcopi, seu eorum Vicarii audent ad eorum libitum dare licentiam quibuscumque quæcumque Monasteria Monialium etiam S. Clare ingrediendi, etiam si Regularium curæ subdita sunt.

6. Quidam vero sub prætextu exquirendi voluntates puellarum, ante professionem earum volunt eas extrahere à Monasteriis, & per longum tempus alibi detinere, ipsasque puellas, seu novitias de perisque rebus interrogant, neque necessariis, neque in decreto Concilii Tridentini desuper contentis, ex quibus non modica potest oriri occasio scandalii.

7. Alii verò plerique noluerunt quosdam Regulares aliarum Diocesum sacris Ordinibus initiare, ac etiam à suis Ordinis Prælati approbatos admittere nolunt.

8. Aliqui verò singulis Dominicis diebus in suos Parochianos ad sonum campanæ excommunicationem promulgant ut non possint interesse Missis, Concionibus, & divinis Officiis, nisi in propria Parochia. Alii vero in aliquibus partibus in eorum Ecclesiis Conciones sacræ Scripturæ, & Sermones pro mortuis haberi nolunt, & si aliquid ipsi relictum fuerit, ut ab ipsis Missæ dicantur, vel alia officia pro mortuis celebrentur, ipsi sibi ea usurpant, dicentes quod ipsi ea exequi non possunt, quia ipsi sunt Pastores. Alii vero sub excommunicationis late sententiæ, & exilii per decennium à Diocesi, pena inhibuerunt, ne Missæ in eorum Ecclesiis celebrentur in diebus festivis, antequam Rector Parochialis Ecclesiæ celebraverit. Alii etiam nolunt, ut dum prædicatio in Ecclesia Cathedrali habetur, alibi prædicetur.

9. Ac insuper in quibusdam omnem ordinem & quietem perturbant, dum controversias jamdiu sopitas & extinctas super Præcedentia excitant, & ubi nullæ erant pepererunt, dum pro arbitrio & voluntate eorum hoc illis præferre noluerunt.

10. Quidam etiam Episcopi volunt Regulares à cura animarum excludi, & illam solis presbyteris secularibus committi.

11. Quidam vero quartam funeralium extendere etiam ad Missas, legata, & alia quæcumque, quæ domibus Regularium relinquuntur.

12. Alii autem volunt quartam partem omnium eorum quæ etiam pro ornamento Ecclesiæ palliorum, planetarum, cortinarum, pannorum, & eorum etiam quæ pro victu Fratrum relinquuntur.

13. Aliqui etiam in quibusdam partibus etiam volunt, ut non solum jus sepulturæ solvi consuetum, quod semper solvitur, neque denegatur, sed etiam omne illud, quod Ecclesiis Ordinum ad eorum libitum partes dant quando sepeliuntur ibidem defunctorum corpora, id totum Curatis etiam de novo solvatur, instantè conantur, impediendes ne aliter, corpora defunctorum ad Monasteria Fratrum deferantur, unde in hoc maxime tam partes quam ipsos Fratres gravari contingit.

14. Aliqui verò etiam ex locis Mendicantium, qui curam habent animarum, volunt pro feminario decimas exigere, ac in casu renitentia etiam pignus exigunt. Alii autem præfatos Fratres, ac

Moniales sub eorum cura degentes, subsidium regum perolvere cogunt, cum multæ earumdem Monialium vix habeant pro earum victu & vestitu necessaria vitæ.

15. Alii etiam in quibusdam partibus pauperes Mendicantes, elemosynas petere prohibent pro eorum dumtaxat sustentatione, & si invenerint eos panem vel aliquid aliud simile amore Dei sibi collatum portantes, quandoque ab eis auferre minantur, afficientes gravi injuria & contumelia. Nonnulli verò Episcopi vel Capitula Canonico-rum pauperum Mendicantes, tam Fratres quam Moniales suorum Ordinum, tam de redditibus bonorum si quæ habent, quam de possessionibus, vineis, agris, & aliis suis bonis quibuscumque, non solum largitione fidelium sibi concessis, sed etiam alias iustis de causis ab eis acquisitis, ac pecuniis emptis sibi decimas, ac primitias aliis respectivè solvere cogunt.

16. Alii autem ausi sunt inquirere, & processus facere contra aliquos Regulares, intra claustra delinquentes, vel de quorum delictis aliqua erat suspicio, non expectata suorum Superiorum censura. Alii vero Episcopi Monialium Monasteria ingredi, & illa ingrediendi licentias aliis concedere, & adversus illas processus formare ipsorum Ordinum Superioribus irrequisitis, præsumunt. Aliqui etiam dominium temporale super Moniales habere prætendunt. Nonnulli verò frequentissime Regulares citant, & jurisdictioni suæ subjicere tentant, ac eorum Conventum occupant, ipsos expellendo, ac in ipsos jurisdictionem vel potestatem exercent. Aliqui vero ipsos carceribus, absque causæ cognitione mancipant, ac manibus pedibusque laborant, ut Regulares mendicantes suæ ditioni subjiciant, & usque adeo se intromiserunt in gubernatione Conventuum, & in correctionibus Fratrum ut Provincialibus & Generalibus nullus amplius videatur relictus locus, aut ulla jurisdictionis.

17. Aliqui autem, Conventuum Priores & Guardianos rationes & computa facere cum syndicis Conventuum hujusmodi prohibent.

18. Fratres quoque qui ad Episcopos hujusmodi recursum habent, à Prioribus & Guardianis præfatis castigari & puniri interdunt. Inhibent quoque Superioribus Ordinum, ne faciant processus contra fratres; ac in ipsos imperium, & brachium secularè exercent.

19. Alii verò ipsos extra claustra degentes sub eorum protectione recipiunt, eosque sic permanere permittunt, eosque etiam invitis suis Superioribus detinent.

20. Aliqui vero bonorum ipsorum Fratrum tamquam ad eos, si extra claustra defuncti fuerint, spectantium possessionem occupare præsumunt, & ad habitum Religionis reversis, sua bona consignare nolunt.

21. Ac etiam uniones à Sede prædicta, aut alias rite factas de beneficiis Ecclesiasticis impediunt, & sibi relaxari debere volunt, & contradictores excommunicationis gladio feriunt.

22. Alii vero Regulares campanas diebus festivis pulsare, vel eodem tempore, quo ipsi celebrant, Missas celebrare nolunt.

23. Aliqui etiam pro licentia danda ædificandi quamdam Domum regularem, triginta vel quadraginta ducatos exigere non erubuerunt.

24. Alii verò eos mortuorum corpora associare, alii autem illos cum Parochia familia munera subire non permittunt, nisi major Canonico-rum pars intervernerit.

25. Alii vero mortuorum Officia in Regularium Ecclesiis peragi nolunt, nisi cum ipsorum præsentia, & ipsorum Moniales, vel alias personas, etiam si in earum funere Parochus intervenire non deberet, sepelire prohibent, nisi ipso Parochio prius certum quid solum fuerit, & si aliquem ipsi sciverint in Regularium Ecclesiis sepulturam elegisse,

Et ista n. 15.

Hæc 16. de-
claratur inf.
num. 16.Hæc 17. de-
claratur inf.
num. 17.Hæc 18. de-
claratur inf.
num. 18.

Et ista n. 19.

Et ista n. 20.

Et ista n. 21.

Et ista n. 22.

Et ista n. 23.

Et ista n. 24.

Et ista n. 25.

Et ita nu. 26.

Hic ideo
Pont. dictis
molestis
hunc finem
imponit.Declaratio
primæ mole-
stie, de qua
supra nu. 1.In hoc extrat
alia declara-
tio infra in
alia bulla
hinc subse-
quenter an-
nexa.Declaratio 2.
molestie, de
qua sup. n. 2.Sed hoc pri-
legium hic
idem Pont.
quo ad ap-
probationem
Episcopi tan-
tum revoca-
vit in bulla
133. Romani.Declaratio 3.
molestie, de
qua sup. n. 3.Sed revoca-
tionem mox
indicavi.Declaratio 4.
molestie, de
qua sup. n. 4.

eum, ut dicitur, non ante ad illas deferre sinunt, quam ad Parochi Ecclesiam delatum, inibique Officium peractum fuerit.

26. Postremo verò testamenta sine presbyterorum præsentia fieri prohibent, & si quid ipsis Regularibus relictum fuerit, id asserentes contra Concilii Tridentini canones esse, revocare omnino procurant.

§. 2. Ac propterea volentes præmissis, ac aliis similibus excessibus & gravaminibus, ex nostri Pastoralis officii debito providere, attendentes etiam illos qui onus diei & æstus, tam in prædicationibus quam in ceteris spiritualibus muneribus quotidie sustinent, nisi etiam aliquantisper subleventur, facile fore, ut oppressi, a suis officiis omnino desistant, ne in postremum eis aliquod inferatur gravamen, Concilii Tridentini hujusmodi decreta, quorum falsi, seu minus vera intelligentia præmissa interpretantur, quorumcumque declaratio non nisi ad nos spectat, & modo & forma infra scriptis declaranda censuimus.

1. Nos igitur Motu proprio, non ad alicujus instantiam, sed de nostra deliberatione, & ex certa scientia nostris, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine declaramus Canonem sessionis 24. cap.

4. per quem omnibus Regularibus, etiam in suorum Ordinum Ecclesiis contradicente Episcopo prædicationis officium interdicitur, Mendicantium Ordinum fratres hujusmodi, quando à suis Generalibus, vel eorum Ministris provincialibus ad id deputati fuerint, non comprehendere, neque eos afficere posse; immo volumus, quod in suis Ecclesiis, quando eis placuerit, licet & absque ullo impedimento, vel contradictione, etiam Episcopi, nisi ipse prædicaverit, prædicare possint.

2. Quod vero in sessione 23. cap. 15. circa confessiones à Regularibus non audiendas statuitur, hoc etiam dictorum Ordinum fratres, à præfatis suis Generalibus, vel Ministris Provincialibus ad audiendas confessiones utriusque sexus Christiani fidelium approbatus, ut præmittitur, minime comprehendat, ita ut à confessionibus audiendis, tam intra eorum Ecclesias, domos, quam extra minime prohibeantur super hoc litteras felicis recordationis Pauli Papæ Quarti, etiam prædecessoris nostri, concedentes eisdem Fratribus mendicantibus regularis Observantiæ posse confessiones secularium personarum, etiam infirmarum, etiam extra domos & monasteria sua, & ubilibet audire, approbando, & de novo concedendo. Statuimus etiam quod ille qui semel in una Diocesi admissus per Episcopum fuerit, semper in eadem Diocesi habeatur pro admissi, nec amplius examinari vel præsentari in dicta Diocesi debeat, tam quoad prædicationes faciendas, quàm quoad confessiones audiendas, nec aliquid pro prædictis exigi vel recipi debeat.

3. Confessores verò Monialium, quæ degunt sub cura Regularium vel Ordinario examinari nolumus, quemadmodum neque etiam Fratres si debeant audire confessiones aliorum Fratrum examinari debent. Lectores insuper ex eisdem Fratribus, & in Theologia graduati, qui cum licentia suorum Superiorum ad gradum admissi fuerint, cum de ipsorum doctrina ambigendum non sit, tam confessiones audiri, quàm prædicationis munus subituri, ab Episcopis minime examinentur.

4. Ipsique Christiani fideles Sacramentum Eucharistiæ (Resurrectionis Dominica festivitatem duntaxat excepta) sumere, eisque illud Fratres hujusmodi administrare valeant, nec ad illud faciendum per locorum Ordinarios, aut Ecclesiarum Rectores præfatos, seu alios quoscumque (illorum licentia minime requisita) etiam sub censuris Ecclesiasticis & aliis poenis, cogi vel compelli possint seu debeant, etiam decernimus & declaramus. Et licet in sessione 25. cap. 12. caveatur, quod censura & interdicta Ecclesiastica, etiam à locorum Ordinariis pro-

mulgata mandate Episcopo, à Regularibus in eorum Ecclesiis publicari debeant, tamen si temporis celebrationis alicujus ex festis Sanctorum, Ordinum eorundem, ac aliis Festivitatibus juxta eorundem Ordinum privilegia Apostolica, interdictum hujusmodi emanaverit, illud in præfatis festivitatibus, & earum Octavis suspendimus.

5. Cum inhonestum sit, quemlibet in alienâ messem falcem injicere, cumque Monialium monasteria nostri de Episcopi vel Superioris licentia, & in casibus necessariis, aliquis ingredi præsumat in session. 25. cap. 5. prohibetur, hoc tantum in illis Monasteriis locum habere volumus, quæ Ordinarii ipsis pleno jure subsumt, in quibus, in casibus necessariis ipsi dare licentiam possint, & non in aliis Monasteriis. Ita ut in præfatis monasteriis, quæ Ordinarii ipsis pleno jure non subsumt, ipsi Ordinarii illa ingredi non possint, prout in Regulis earum, seu de jure statuitur, & eis aliquos processus, adversus Moniales ipsas, seu Fratres hujusmodi propterea, seu alias ipsorum Ordinum Superioribus requisitis, quoquomodo formare, aut facere posse omnino prohibemus, ita ut aliquam jurisdictionem, seu aliquod quodcumque dominium in Moniales & Fratres hujusmodi respectivè habere, exercere, aut exequi nullatenus possint aut debeant, immo illas & illos omnes ab eorum Superioritate, dominio, & jurisdictione, & Potestate, eximimus & liberamus, prout eis concessum est per sua privilegia à Sede præfata obtenta. Et ita præfata Moniales, ac Fratres sint exclusi à superioritate & jurisdictione Ordinarii respectivè hujusmodi, ut etiam in illarum vel illorum Syndicis, aut Procuratoribus deputandis vel in disponendis illorum facultatibus, vel alia sibi non competentia faciendâ, ullatenus non se intromittant. Nec etiam Ordinarii ipsos Regulares præfatos citare, & jurisdictioni suæ subicere, ac eorum Conventus occupare, ipsos ab eis expellendo, ac in ipsos jurisdictionem aliquâ & potestatem exercere, ut præmittitur, aut ipsos carceribus mancipare, & contra eos aliud facere possint, ut suæ ditioni subijciantur.

6. Volumus etiam, quod puellarum Deo dicandarum, an scilicet coactæ vel seductæ fuerint, examen faciendum, non nisi infra quindecim dies, postquam juxta Concilium Tridentinum Episcopi, vel eorum Vicarii requisiti fuerint, fieri possint; quibus elapsis amplius in hoc illis se intromittere non liceat, cujus occasione, nec Episcopus nec ejus Vicarius intra septa Monasteriorum ingrediantur, sed stent ante cratem serram, & interrogationes alias, quam eas quæ præfatum Concilium Tridentinum jubet, eis fieri omnino prohibemus, ac similiter volumus, quod puellæ, seu novitiæ ipsæ ad alias interrogationes respondere minime teneantur.

7. Sessione vero 23. cap. 8. neminem nisi à proprio Episcopo ordinari posse statuens, in Regularibus locum non habere omnino declaramus, ita quod Fratres hujusmodi præfatos, etiam sacros ordines à quolibet Antistite, gratiam & communionem Apostolicæ Sedis habente, Ordinarii loci minime requisita licentia, in locis seu domibus Fratrum hujusmodi, aut alibi recipere possint.

8. Et insuper sessione 22. decretum, quod per populum sæpe ad suas Ecclesias, saltem Dominicis, & majoribus Festivis diebus, convenire debere monet in sequendo, volumus quod Fratribus Mendicantibus hujusmodi, non solum prohiberi non possit, ne Missas & alia divina officia faciant in eorum Ecclesiis, verum etiam in quibuscumque aliis ubi celebrari Missas solitum est, etiam ipsi non vocatis, seu ad id requisiti, celebrare valeant: ac etiam quod conciones & lectiones sacræ scripturæ, & sermones pro mortuis, etiam in Ecclesiis facere, ac elemosynas pro celebrandis hujusmodi Missis, & aliis divinis officiis peragendis, si

Declaratio 5.
molestie, de
qua sup. n. 5.Declaratio 6.
molestie, de
qua sup. n. 6.Declaratio 7.
molestie, de
qua sup. n. 7.Declaratio 8.
molestie, de
qua sup. n. 8.

Declaratio
9. molestiar,
de qua sup. n. 9.

Declaratio
10. molestiar,
de qua sup.
n. 10.

Declaratio
11. molestiar,
de qua sup.
n. 11.

Alia declara-
tio est in bul-
la huic an-
nexa sub §. 11.

Declaratio
12. molestiar,
de qua sup.
n. 12.

Declaratio
13. molestiar,
de qua sup.
n. 13.

Alia declara-
tio est in bul-
la huic an-
nexa sub §. 2.

Declaratio
14. molestiar,
de qua sup.
n. 14.

Alia est de-
claratio in
dicta bulla
huic annexa.

eis illas donari, seu relinqui contingat, recipere, necnon Missas & divina Officia huiusmodi, etiam in diebus Dominicis vel Festivis, etiam antequam Rector Parochialis Ecclesie celebraverit, celebrare, & facere, & quando eis videtur, etiam si tunc in Ecclesia Cathedrali predicetur, predicare, ac etiam quicumque utriusque sexus Christiani fideles, totius anni tempore, illas & illa in Ecclesiis Fratrum huiusmodi audire possint. Ipsi Christiani fideles ullatenus desuper molestari, aut impediri per locorum Ordinarios, seu Rectores parochialium Ecclesiarum, aut alios quoscumque ullo pacto, causa vel occasione non valeant seu debeant, sed præfati Christiani fideles audiendo Missas & alia divina Officia in Ecclesia Fratrum huiusmodi diebus Dominicis vel Festivis, præcepto Ecclesie de illis audiendis satisfecisse censeantur.

9. Controversias autem omnes de Præcedentia quæ eadem sessione 25. cap. verò 13. per Episcopum terminari mandantur, non nisi durantes per illum dirimi, finitas autem nullo pacto innovari posse statuimus.

10. Cumque licet cap. 11. sessionis 25. statuat, quod in Domibus virorum, seu mulierum, quibus animarum personarum secularium cura imminet, nulli etiam ad nutum amovibiles, inibi deputentur, nisi de Ordinarii consensu, ac prævio examine huiusmodi præcedente, ad curam huiusmodi admitti posse omnino volumus præfatos Regulares.

11. Quartam autem funeraliam, de qua sessio. 25. cap. 13. nequaquam solvere teneantur Monasteria, quæ à quadraginta annis circa fundata existunt, postquam Concilium ipsum loquitur tantum de Monasteriis ante annos quadraginta fundatis, quæ ipsam quartam solvere consueverunt, & ubi solvi consuevit, id tantum ceræ, & aliorum quæ in aliquibus partibus deferri contigerit, tempore quo defunctorum corpora ad sepulturam deferuntur, non autem de Missis, seu legatis, vel aliis, Fratribus ipsis, seu Monialibus huiusmodi relictis, aut aliis quomodolibet donatis, solvi debet, sique intelligi Concilii decretum, quoad quartam huiusmodi solvendam debere decernimus. Ubi verò non est consuetudo solvendi quartam huiusmodi, de nullo suprascriptorum solvi debere declaramus.

12. Nec ad quartam, seu aliam partem omnium eorum, quæ etiam pro ornamento Ecclesie palliorum, planetarum, cortinarum, pannorum, & aliorum quæ dictis Ecclesiis relinqui vel dari contigerit, etiam si pro victu Fratrum, aut aliis relinquantur, aliquid contribuere teneantur.

13. Ac etiam jus sepulture solvi tantum consuetum Curatis, & non aliquid aliud eis solvi debeat, quamvis partes ad eorum libitum Ecclesiis Ordinum huiusmodi, seu eorum Fratribus, alia quæcumque tribuant, seu elemosynas elargiantur quando sepeliuntur ibidem corpora mortuorum huiusmodi, nec propterea impediri debeant, quin possint defunctorum corpora præfata ad eorum Ecclesias rumulanda deferri facere.

14. Inhonestum quoque esse censentes, Mendicantium Ordines ad aliquorum onerum contributionem teneri, illos, illorumque loca, etiam si curam animarum habeant, ac quæcumque beneficia illis unita, ad contributionem pro seminario, aut decimarum aliquarum solutionem, immo illos & eorum domos, monasteria, beneficia & loca quæcumque. & ab illis quomodolibet dependentia, eorumque possessiones, vineas, agros, & prata, ac alia bona quæcumque, tam ad ipsos, quam ad Moniales præfatos, etiâ largitionem fidelium, seu alias iustis de causis ab eis acquisita, ac pecuniis emptæ, vel aliis quomodolibet pertinentia minime teneri, illosque & illas, à quibuscumque decimis, primitiis, quartis, mediis, & aliis fructuum partibus, necnon subsidiis caritativis, etiâ per nos concessis, ad quorumcumque; etiâ Regum, Principum,

& Dominorum temporalium instantiam, quæcumque etiâ urgentissima, & de necessitate exprimenda causa, ac etiâ aliis quibuscumque; oneribus tam ordinariis, quam extraordinariis, etiam ratione fructuum, olorum, virgultorum, lignorum, beneficiorum, & aliarum quarumcumque rerum, tam pro victu quam vestitu, aut aliis sibi necessariis quomodolibet, etiam auctoritate Apostolica, nunc & pro tempore impoſitis, ita ut penitus & omnino ad aliquis rei contributionem minime teneantur, omnino eximimus & liberamus, illosque & illas, ad illos & illa, etiam si sæculares, & alia personæ quæcumque in eas exigendi possessione fuerint, minime teneri debere volumus: nec sub capite 12. sessionis 25. comprehendi posse vel debere decernimus.

15. Quod vero de usu quæſarum elemosynarum auferendo loquitur sessio. 21. cap. 8. id ad Mendicantium Ordines nullo modo referri posse vel debere etiam decernimus, quin potius cum elemosynis huiusmodi vivere cogantur, eis id facere liberum omnino esse declaramus.

16. Quoniam verò ex nimia Episcoporum sibi irrogata auctoritate, ipsi personas Regulares suæ jurisdictioni subijcere omnino student, ac decreto Concilii præfati, sessionis 25. cap. 14. edito, quo cavetur, quod si Regularis intra claustra existens, & extra ea ita notorie deliquerit, ut populo scandalosus sit, termino ab Episcopo præſigendo, à suo Superiore omnino puniatur, sin minus, ab Ordinario delinquens puniri possit, confisi, quod variis indebitis gravaminibus Regulares afficiunt, Ordinarios præfatos aliquid contra regulares in claustris degentes huiusmodi, quovis prætextu, occasione, vel causa innovare non posse vel debere, nec aliquos processus contra ipsas personas regulares formare aut facere posse volumus; nisi propter manifestum scandalum, & suorum Ordinum Superioribus prius consultis negligentibus, aliorum omnia & singula contra præmissa facta & gesta, ac facienda in futurum pro nullis & infectis habeantur.

17. Neque etiam se intromittant ullo pacto, aut aliqua ratione in gubernatione Conventuum, tam Fratrum, quam Monialium huiusmodi, & illorum correctionibus, sed omnia ista, & alia necessaria ad correctionem & gubernationem, Fratrum aut Monialium huiusmodi, & eorum Generalibus, ac Ministris, seu Provincialibus, vel aliis eorum aut earum respectivè Superioribus, etiam ratione computa faciendi cum Sindicis conventuum huiusmodi, omnino relinquatur, nec ullo modo in prædictis, per se vel alios se intromittant.

18. Fratres quoque si contigerit eos ad huiusmodi Ordinarios recursum habere à præfatis Generalibus Ministris, seu Provincialibus, Prioribus, Guardianis, & aliis Superioribus castigari & puniri posse, & debere, neque ipsos Ordinarios præfatos Superioribus Ordinum huiusmodi, ullatenus inhibere. Quinimo præfatos Superiores processibus contra Fratres suos & Moniales huiusmodi, quando opus fuerit, circa delictorum inquisitionem, vel castigationem facere posse decernimus; invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

19. Inhibemus etiam ipsis Ordinariis, ne Fratres extra claustra degentes, sub eorum protectione recipiant, eosque; invititis suis Superioribus detineant.

20. Prohibemus quoque eisdem Ordinariis, ne aliquomodo se intromittant in bonis dictorum Fratrum extra claustra suorum Monasteriorum pro tempore degentium five decedentium, & quamvis in habitu, five absque habitu moriantur, volumus quod eorum bona mobilia & imobilia, ad Ordinem quem professi sunt, pertineant, disponenda juxta constitutiones seu ordinationes præfatorum Ordinum, neque illa Ordinarii præfati occupare præsumant, immo huiusmodi, & ad habitum Religionis revertentium bona omnia Monasteriis

Declaratio
15. molestiar,
de qua sup.
n. 15.

Declaratio
16. molestiar,
de qua sup.
n. 16.

Tu ad hoc
vide Clem.
111. c. 11.
39. Suiccepti.

Declaratio
17. molestiar,
de qua sup.
n. 17.

Declaratio
18. molestiar,
de qua sup.
n. 18.

Declaratio
19. molestiar,
de qua sup.
n. 19.

Declaratio
20. molestiar,
de qua sup.
n. 20.

Declaratio
21. molestia,
de qua sup.
nu. 21.

ipsis, cum ea quæ acquirat Monachus de iure Monasterio acquiratur, pertinere etiam decernimus.

21. Ac ipsius Ordinarii, ne quascunque uniones, etiam perpetuas, à Sede prædicta, vel alias, ut præfertur hæcenus factas, & pro tempore faciendas, de beneficiis Ecclesiasticis, seu illorum fructibus, quin suum sortiantur effectum impediunt, omnino etiam prohibemus, & censuras Ecclesiasticas & alias penas per eos in contradictores pro tempore latas, nullius esse roboris vel momenti, similiter decernimus & declaramus. Insuper volumus quod præfati Regulares, quibus cura animarum est, possint per se ipsos iuxta suorum Superiorum ordinationem, aut alios Vicarios, seu Capellanos sæculares ipsorum Regularium nutu amovibiles, ab eis deputatos, & ab Ordinario pro idoneis nominatos & approbatos, præfatam curam exercere: neque in eorum deputatione vel amotione, neque alicuius partis fructum configuratione pro præfatis Capellanis seu Vicariis sæcularibus, si per tales curam exerceri contigerit, Episcopi ullo pacto se intromittant.

Declaratio
22. molestia,
de qua sup.
nu. 22.

22. Prohibemus insuper eisdem Ordinariis, ac aliis quibuscunque personis, ne impediunt ipsos Fratres, quando eis placuerit, tam in diebus dominicis seu festis, aut aliis totius anni temporibus, campanas pulsare, & etiam tempore quo ipsi celebraverint, missas celebrare, necnon mortuorum corpora associare, & illa per Fratres ipsos quando in Ecclesiis suis præfatis delata fuerint, absque præsentia rectorum Ecclesiarum huiusmodi sepeliri facere, ac officia mortuorum huiusmodi peragi posse, necessariamque præsentiam rectorum, aut aliorum clericorum, quin infirmi libere sua possint condere testamenta minime esse, ac ipsos Regulares legata, aut quævis alia sibi in testamentis relicta, exigere & obtinere posse, neque aliquid ius in contrarium esse decernimus & declaramus.

Declaratio
23. molestia,
de qua sup.
nu. 23.
In vide bul.
lem. VIII.
Quoniam.

23. Licentias verò pro construendis domibus Regularibus, quæ 4. cap. 25. Sessiois, nisi de Ordinarii licentia construi prohibentur, gratis omnino dari; & nonnisi legitima subsistente causa, Superioribus explicanda illas recusari posse.

Declaratio
24. molestia,
de qua sup.
nu. 24.

24. Necnon Fratres præfatos, etiam solos, mortuorum corpora associare, ac mandatum in die Cænz Domini fieri solum in Ecclesiis seu domibus Fratrum cuiuslibet Ordinis prædictorum, solemniter facere, & prædicta die prædicare hora qua eis videbitur, nec per locorum Ordinarios, aut rectores Ecclesiarum, vel alios quoscunque prohiberi posse etiam decernimus & declaramus.

Declaratio
25. molestia,
de qua sup.
nu. 25.

25. Mandantes etiam universis locorum Ordinariis, ne mortuorum officia agere rectores parochialium in Ecclesiis ipsorum Fratrum, contra illorum voluntatem permittant. Ac Moniales dictis Fratribus subditas, vel personas sepulturas in eorum Ecclesiis eligentes, nulla soluta parochia portione, sepelire, vel si Fratres ad mortuorum corpora associanda vocati fuerint, illa absque Fratrum huiusmodi præsentia sepeliri facere audeant vel præsumant.

Declaratio
26. molestia,
de qua sup.
nu. 26.

26. Cumque maxime debeat liberam esse cuiusvis restantis voluntatem, pravum illum usum, parvo adhuc tempore, ut præfertur, introductum, per quem testamenta absque presbyterorum præsentia fieri interdiceretur, omnino abrogamus.

Declaratio
27. molestia,
de qua sup.
nu. 27.

27. Postremo quod cap. 13. sess. 25. cautum fuit, quod omnes, scilicet tam Clerici quam Regulares quicumque ad publicas processiones vocati, accedere compellantur id quoad Fratres præfatos de illis tantum processiones intelligi volumus, ad quas secundum consuetudinem antiquam locorum soliti sunt accedere, vel que pro bono pacis Ecclesiæ, vel pro victoria contra infideles indicuntur; quod etiam de illis Conventibus, qui Collegia nuncupantur, minime intelligi volumus, in quibus Fratres sub archiori clausura degunt, ita ut nec in

choro cantent nec ad mortuos accedant, sed tantum studiis & lectionibus vacent.

§. 4. Præterea si fortè inter Episcopos, vel Collegia, aut Capitula, vel alias quasvis personas, & præfatos Fratres, seu Moniales, aut eorum aliquos, super præmissis vel aliquo eorum, coram quocunque seu quibuscunque iudicibus, etiam causarum Palatii Apostolici Auditoribus, ac Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalibus, tam in Romana Curia quam extra eam, ubilibet lis, seu lites respectivè pendeat, nos litem seu lites, & causam vel causas huiusmodi ad nos advocamus, ac illam & illas, quarum statum, ac nomina & cognomina iudicum & colligantium, præsentibus haberi volumus pro sufficienter expressis, cassamus & extinguimus, ac partibus ipsis perpetuum silentium desuper imponimus.

§. 5. Ac insuper ut facilius præmissa omnia illibata persistant, omnia & singula privilegia, immunitates, indulgentias, facultates, libertates, indulta, dispensationes, favores & gratias, quæ decretis Concilii Tridentini aliàs quam ut superius est dictum, concessum & declaratum, non contrariantur expresse, eisdem Fratribus, necnon Monialibus quibuscunque & Sororibus Terti ordinis prædictorum Ordinum respectivè, Ordinibus, ac illorum Ecclesiis, domibus & personis, etiam vivæ vocis oraculo, in genere vel in specie, tam per recol. mem. Eugenium IV. Sixtum IV. Leonem X. Paulum III. ac dictum Paulum IV. & Pium etiam IV. quam alios quoscunque Romanos Pontifices etià prædecessores nostros, ac nos & Sedem eandem quomodolibet concessa, confirmata, & innovata, necnon nostras, & Prædecessorum nostrorum, ac alias quasvis desuper confectas litteras, quarum omnium tenores, ac eorumdem Prædecessorum nostrorum nomina, & alia de necessitate exprimenda, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata, inserti forent, etiam præsentibus pro sufficienter expressis haberi volumus, auctoritate Apostolica tenore præsentium perpetuo approbamus & confirmamus, illisque perpetuè & inviolabilis firmitatis robur adjicimus, eaque perpetuis futuris temporibus inviolabiliter observari debere, ac Fratribus, Superioribus, & personis Ordinum huiusmodi, necnon aliis quibuscunque quos illa concernunt, suffragari debere, seu posse volumus. Necnon privilegia, immunitates, facultates, libertates, indulta, dispensationes, exemptiones, favores, & gratias, tam spirituales quam temporales, modo & forma quibus concessa sunt, etiam per viam communicationis & extensionis, activè & passivè, inter se & alios quoscunque Ordines, respectivè, de novo concedimus, illaque omnia & singula, ad domos & loca quæcumque dictorum Mendicantium Ordinum & Monialium quarumcumque; ac Sororum de tertio Ordine nuncupatarum in Congregatione viventium dictorum Ordinum, ut præfertur hæcenus recepta, & in posterum recipienda. Necnon eorum personas & bona, etiam si privilegiorum & aliarum gratiarum præfatorum authentica originalia, propter temporis antiquitatem, vel varias Urbis ruinas deperdita existant, dummodo de eis aliàs legitimè constet, extendimus & ampliamus.

§. 6. Et sic in præmissis omnibus & singulis, per quoscunque Iudices & personas quavis auctoritate fungentes, etiam Cardinales & Auditores præfatos, sublati eis & eorum cuiuslibet quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, iudicari & definiti debere, necnon quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, irritum & inane decrevimus.

§. 7. Quocirca dilectis filiis nostris, Prædicatorum Cardinali Protectori, & S. Hieronymi Generali Ordinum, ac Curie causarum Camera Apostolicæ etiam generali Auditori, nunc & pro tempore existentibus per Apostolica scripta motu simili mandamus, quatenus ipsi vel duo, aut unus eorum, per se vel alium seu alios, præsentibus litteras, & in eis contenta, quæcumque ubi, & quando opus fuerit ac quoties pro parte eorumdem Fratrum, aut Monia-

Extinctio li-
tium desuper
pendentium.

Confirmatio
omnium pri-
vilegiorum
quæ alter
quam supra
concessum
est, Conc.
Trid. non ad-
versantur.

Decretum
irritans.

Executores
deputatio &
facultates.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

EX supernæ dispositionis arbitrio gregi Domini præfidentes, inter curas multiplices, quas ex ministerio nostri Pastoralis officii nobis incumbere censuimus, illam per quam personarum quarumlibet, earum præsertim quas sub suavi Religionis jugo sedulum in dies Altissimo famularum exhibere conspicimus, statui & quieti ritè consulitur, libenter amplectimur, ac ut personæ ipsæ idem exoptantes à nobis, gratias & favores reportasse lætarentur, grato intendimus animo, ac in his nostri Pastoralis officii partes favorabiliter impartimur, prout temporum qualitate pensata, id perspicimus in Domino salubriter expedire.

§. 1. Nuper quidem à nobis emanarunt litteræ tenoris subsequentes. Et si Mendicantium &c.

Omittitur tenor, quia est hic supra insertus.

§. 2. Et deinde pro parte dilectorum filiorum Canonice Regularium Ordinis S. Augustini Congregationum Lateranensis & S. Salvatoris, ac S. Crucis Olimbriensis & Monachorum S. Benedicti Congreg., & Ordinum Cassinensis Montis Olivæ, Vallis Umbrosæ, necnon etiam Congreg. Cisterciensis & Charuffensis necnon S. Hieronymi Hispaniarum, ac Camaldulensis & Fratrum Militiæ JESU CHRISTI Reformatorum nuncupatorum Regni Portugalliæ, nobis nuper exhibita petito continebat, quod ipsi etiam juxta eorum cujuslibet regularia instituta, cum vita eorum exemplari, tum doctrina, ac verbi Dei prædicatione, aliisque summis eorum laboribus & studiis, animarum salutem ac sanctæ Sedis Apostolicæ dignitatis & auctoritatis augmentum hæcenus semper præstaverunt, & in dies circa hoc tam laudabile ministerium magis ac magis versari non cessantes, sibi favente superius Numinis auxilio, suavissimum cunctisque fidelibus gratissimum suæ prohibitionis & diligentis latius diffundunt odorem, pariterque in vinea Domini laborare non desunt; ac proinde eos aliqua ratione indignos censi non posse, quin ipsi quoque gratiarum, facultatum, privilegiorum, & aliorum præfatis Fratibus Mendicantibus concessorum participes fieri, necnon Monasteria, etiam Monialium, & alia loca quæcumque ad gratias, facultates, privilegia, ac alia in eisdem præfatis litteris contenta quæcumque extendi, ac illis gaudere debeant. Quare pro eorumdem Canonicorum, Monachorum, & Fratrum parte nobis fuit humiliter supplicatum, ut eorum statui, & tranquillitati consulentes, eos & eorum singulos, necnon suorum Ordinum, & Congregationum Monasteria, etiam Monialium, ac domos & loca alia quæcumque, ad declarationes, statuta, exemptiones, voluntates, prohibitiones, approbationes, extensiones, & decreta, ac alias gratias, facultates, & privilegia quæque prædictis Fratibus Mendicantibus concessa prædicta, ita ut illis omnibus & singulis, æque & pariformiter absque ulla penitus differentia, frui & gaudere possint & debeant, extendere, & quatenus opus sit illa eis de novo concedere, aliasque sibi desuper opportune providere, de benigntate Apost. dignemur.

§. 3. Nos igitur qui omni qua fieri potest ratione commodiori personarum quarumlibet, præsertim Deo dicatarum animi quiete sinceris exoptamus assensibus, singulos Canonicos, Monachos, & Fratres prædictos à quibuscumque censuris & penis Ecclesiasticis, quavis occasione latis, si quibus inodati existunt, ad effectum præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolvētes, & absolutos fore censentes, hujusmodi supplicationibus inclinati, Canonicos, Monachos, & Fratres prædictos, si professione regularem juxta eorum statuta, & laudabiles consuetudines, ac privilegia & indulta eis concessa emiserint respectivè, illorumque Monasteria, etiam Monialium,

lium, vel alicujus eorum fuerint desuper requisiti, solemniter publicantes, eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra præsentis, & in eis contenta hujusmodi firmiter observari, ac singulos quos litteræ ipsæ concernunt, pacificè frui & gaudere; non permittentes eos vel aliquem eorum desuper contra præsentium tenorem per quoscumque, etiam locorum Ordinarios, quomodolibet indebitè molestari, contradictores quoscumque & rebelles, per censuras & penas Ecclesiasticas, aliaque opportuna juris remedia, appellatione postposita compescendo, legitimisq; super his habendis servatis processibus censuras & penas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando, & interdictionem Ecclesiasticam apponendo; invocato etiā ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 8. Non obstantibus præmissis, & aliis Apostolicis, necnon in provincialibus & synodalibus Conciliis editis, generalibus vel specialibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indultis & litteris Apostolicis, eisdem Episcopis vel quibuscumque aliis personis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque etiam derogationum derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis, in genere vel in specie, etiam Motu simili, ac alias quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressi & individua, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum, nil penitus omisso, & forma in illis tradita observata inserti forent, præsentibus pro sufficienter expressis, & insertis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expressè derogamus; necnon omnibus illis que in litteris confirmationis, & innovationis privilegiorum eorumdem, alias per eisdem Paulum IV. & Pium etiam IV. prædecessores nostros prædictos, Ordini fratrum Minorum hujusmodi concessorum, concessum est non obstat, contrariis quibuscumque; aut si locorum Ordinarios, vel quibuscumque aliis communiter vel divisim, ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspendendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas, non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Et quia difficile foret earumdem præsentium litterarum noticiam ad quascumque personas pervenire, & ubiq; illas præsentare, etiam motu & scientia similibus, volumus & decernimus, quod transumptis earumdem præsentium litterarum etiam per impressionem factis, manu alicujus notarii publici subscriptis, aut sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ sigillatis, quemadmodum adhiberetur præsentibus litteris originalibus si præsentarentur, ubique adhibeatur, tam in judicio quam extra illud, plena & indubitata fides.

§. 9. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ declarationis, prohibitionis, exemptionis, liberationis, inhibitionis, advocacionis, cassationis, extinctionis, impositionis, approbationis, confirmationis, adjunctionis, concessionis, extensionis, ampliationis, voluntatis, & derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare presumpserit, indignationem Omnipotentis Dei ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursurum.

Datum Romæ, apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1567. 17. Kal. Junii, Pontificatus nostri Anno 2.

Sequitur extensio istorum privilegiorum Mendicantium, ad alios Ordines.

Clausule derogatorie

Transumptorum fides.

Sanctio pontificalis.

Dat. P. An. 2. die 16. Maii.

Edita An. D. 1567.

Exordium.

Constitutio PP. eff. prænuntiata.

Causa extensionis privilegiorum.

Extensio privilegiorum.

Hæc extensio fuit restricta à Greg. XII. cit. in rubr.

necon domos, & loca alia quæcumque ad singula, declarationes, statuta & immunitates (à contributione ratione Seminariorum pauperum Clericorum juxta ordinationem dicti Concilii Tridentini erigendorum, necnon subsidiorum Apostolica auctoritate pro tempore impositorum, ac quæstuatione elemosynarum damtaxat exceptis) exemptiones, voluntates, prohibitiones, approbationes, extensiones, decreta, & alia quæcumque, gratias, facultates, & privilegia eisdem Fratribus Mendicantibus, ut præfertur concessa & facta, ac alia in præfatis litteris contenta, & inde secuta quæcumque, dicta auctoritate Apostolica tenore præsentium perpetuò extendimus & ampliamus, illosque declarationibus, statutis, exemptionibus, voluntatibus, prohibitionibus, approbationibus, extensionibus, decretis & aliis gratiis, facultatibus, & privilegiis hujusmodi panformiter, & absq; ulla penitus differentia, prout dicti fratres Mendicantes utuntur, potiuntur & gaudent, ac uti, potiri & gaudere poterunt, liberè & licitè uti, potiri, & gaudere posse, atque debere; illaque omnia & singula sibi, eorumque Monasteriis, domibus, & locis hujusmodi, eorumque Superioribus, & personis, quibuscumque, quas illa concernunt, & pro tempore concernunt, suffragari, necnon modo & forma quibus prædictis fratribus Mendicantibus concessa & facta sunt, concessa factaque esse; necnon ad singula Monasteria, domos, & loca quæcumque dictorum Canonicorum, Monachorum, & Fratrum, necnon Monialium, Congregationum & Ordinum prædictorum in Congregatione viventium, extensa & ampliata censeri.

Decretum
ritans.

§. 4. Sicque in præmissis omnibus & singulis per quoscumque Judices & personas, & S. R. E. Cardinales, ac causarum Palatii Apostolici Audiores, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate judicari & definiti debere, necnon quicquid fecus super his à quocumque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attestari, irritum & inane decernimus.

Executorum
reputatio, &
cultates.

§. 5. Quocirca Venerabilibus fratribus, & dilectis filiis ejusdem S. R. E. Cardinalibus, dictorum Ordinum & Congregationum hujusmodi respectivè, nunc & pro tempore Protectores per Apostol. scripta mandamus, quatenus ipsi vel duo, aut unas eorum, per se vel alium seu alios, presentes litteras, & in eis contenta quæcumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte eorumdem Canonicorum, Monachorum, & Fratrum, aut Monialium hujusmodi, vel alicujus eorum fuerint desuper requisiti, solemniter publicantes eis, in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra præfatas, & in eis contenta hujusmodi firmiter observari, ac singulos quos litteræ ipsæ concernunt, pacificè frui & gaudere, non permittentes eos, vel alicquem eorum desuper, tam contra præsentium litterarum, quam præfatarum tenorem per quoscumque, etiam locorum Ordinarios quomodolibet indebitè molestari. Contradictores quoslibet & rebelles, per censuras & penas Ecclesiasticas, aliaque opportuna juris remedia appellatione postposita compellendo legitimè super his habendis servatis processibus, censuras & penas ipsas etiam iteratis vicibus aggravando, & interdictum Ecclesiasticum appendendo; invocato ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

clausula de
agatoria.

§. 6. Non obstantibus præmissis, & aliis Apostolicis, necnon in provincialibus & synodalibus Conciliis editis, generalibus vel specialibus, constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmè alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis eidem Episcopis, aut quibuscumque aliis personis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & in solitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis, in genere vel in specie, etiam Motu proprio, ac aliis quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis;

quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi, præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanfuris, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si locorum Ordinarios, vel quibuscumque aliis, communiter vel divisim à prædicta sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas, non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Fides exem-
plorum.

§. 7. Et quia difficile foret earumdem præsentium notitiam ad quoscumque personas pervenire, & ubique illas præferre, etiam dicta auctoritate nostra volumus & decernimus, quod transumptis illarum, etiam per impressionem factis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, live sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ sigillatis, prout eisdem præsentibus adhiberetur si præferantur, ubique adhibeatur, tam in iudicio quam extra illud, plena & indubitata fides.

Sanctio pœ-
nalis.

§. 8. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ constitutionis, extensionis, ampliacionis, & decreti infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursurum.

Dar. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1567. 17. Kal. Septemb. Pontificatus nostri Anno secundo.

Dat. P. An. 2.
die 16. Aug.

Sequitur declaratio præfata constitutionis.

PIUS PAPA QUINTUS,

Edita An. D.
1571.

Universis & singulis Venerabilibus Fratribus Patriarchis, Archiepiscopis, & Episcopis, ac dilectis filiis Abbatibus, & aliis personis in dignitate Ecclesiastica constitutis, necnon Metropolitanarum & aliarum Cathedralium Ecclesiarum Canonicis, ac eorumdem Patriarcharum, Archiepiscoporum & Episcoporum Officialibus, seu Vicariis, in spiritualibus, generalibus, ubilibet constitutis, salutem & Apostolicam benedictionem.

AD hoc nos DEUS prætulit in familiam domus suæ, ut singulis opportuna provisionis auxilia fidei servitutis, injuncta providentia, pro tempore dispensantes, Religiosorum quorumlibet, præsertim Fratrum Ordinis Prædicatorum, in humilitatis spiritu, sub Religionis jugo, Deo servientium, necessitatibus intedamus, dispendiis & oppressiōibus, divina cooperante clementia salubriter occurramus.

Exordium.

§. 1. Sanè licet, nos, & quamplures Romani Pontifices prædecessores nostri, propter uberes fructus, quos dictus Ordo Fratrum Prædicatorum, multa præfulgens gloria meritum, & gratia sanctitatis in agro militantis Ecclesiæ, in propagationem fidei Orthodoxæ, eatenus prodixerat, ac in futurum producturum fore, firma sperabatur, & ut Fratres ipsi quietius eorum factis Officiis, vitæque regulari, ac Verbi Dei prædicationibus, libentius & alacrius ad ipsius fidei Christianæ propagationem incumbere valerent, & incumbere cum effectu, quamplura privilegia, indulta, gratias, exemptiones, & immunitates eis concesserint.

Hic Pont. &
alii quam
plures Ord.
Fratrum S.
Dominici
concesserunt.

§. 2. Et inter cetera, per quasdam alias nostras litteras declaraverimus, Canonem sess. 24. cap. 4. Trident. Concilii, per quem omnibus Regularibus, etiam in suorum Ordinum Ecclesiis, contradicente Episcopo, prædicationis officium interdicitur, Fratres hujusmodi, quando à suis Generalibus, vel eorum Ministris Provincialibus, ad id deputati fuerint, non comprehendere, neque eos afficere; immo voluerimus, quod in eorum Ecclesiis, quando eis placeret licitè, etiam absque ullo impedimento, vel

Et signanter
circa prædi-
cationes, ut
sup. nu. 21.

contra-

Et quartam
funeralium,
& sepeliendi
ut sup. nu.
11. 12. & 13.

contradictione, etiam Episcopi, nisi ipse prædicaret, licet in Cathedrali Ecclesia tunc prædicaretur, prædicare possent.

§. 3. Circa autem quartam funeralium, de qua in sessione 25. cap. 13. ejusdem Concilii, Nequaquam domos, seu Conventus, & Monasteria, quæ à quadraginta annis citra tunc fundata existebant, postquàm Concilium ipsum loquitur tantum de Monasteriis, seu domibus ante quadraginta annos fundatis, & quæ ipsam quartam solvere consueverunt, & tantum ceræ & aliorum, quæ tempore quo defunctorum corpora ad sepulturam deferuntur, non autem de Missis, seu Legatis, vel aliis, Fratribus ipsi, seu Monialibus, relictis aut alias quomodolibet donatis solvi debere, sicque decretum Concilii hujusmodi, quoad dictam quartam funeralium solvendam intelligendum esse decreverimus. Ubi vero non est consuetudo solvendi quartam funeralium hujusmodi, de nullo suprascriptorum solvi debere declaraverimus. Nec ad quartam, seu aliam partem eorum, quæ etiam pro ornamento Ecclesiæ palliorum, planetarum, cortinarum, pannorum, & aliorum, quæ dictis Ecclesiis, seu Fratribus, etiam pro eorum victu, aut alias relinquì, vel dari contingeret, aliquid contribuere tenerentur, ac Curatis seu Parochialium Ecclesiarum Rectoribus, juxta tantum sepulture eis solvi consuetum, nec aliquid aliud, quamvis partes ad earum libitum Ecclesiis ipsorum Fratrum, seu eisdem Fratribus, alia quæcumque tribuissent, seu elargiti fuissent, quando in eorum Ecclesiis corpora mortuorum sepeliuntur eis solvere, seu ad aliquorum onerum contributionem eisdem Curatis faciendam teneri, nec propterea impediri posse Fratres ipsos, quin possent defunctorum corpora præfata, ad eorum Ecclesias tumulanda deferri facere.

Exemptio-
nemque à so-
lutione on-
erum, & juris-
dictione Or-
din. ut sup.
nu. 14.

§. 4. Neque dictos Fratres, illorumque loca, etiam si curam animarum haberent, aut quæcumque beneficia eis unita ad aliquam contributionem pro Seminario, aut decimarum aliquarum solutionem pariter teneri, nec cogi posse; immo illos, & eorum domos, monasteria, beneficia, & loca ab illis quomodolibet dependentia, eorumque bona quæcumque, tam ad eos, quam ad Moniales præfatas quomodolibet pertinentia, à quibuscumque decimis, primitiis, quartis, mediis, & aliis fructuum partibus, necnon subsidiiis charitativis, etiam per nos, ex quacumque causa concessis, ac aliis quibuscumque oneribus, tam ordinariis, quam extraordinariis, necnon ab omni jurisdictione & superioritate Ordinariorum locorum, ita ut Ordinarii ipsi aliquam jurisdictionem, five potestatem in eos exercere, five eos eorù jurisdictioni subicere vel aliquid contra eos facere minimè possent, eximerimus & liberaverimus.

Nonnulli ta-
men Episcopi
& alii mole-
stabant Fra-
tres & Mo-
niales super
præmissis ex
causis hic
enunciatis.

§. 5. Nihilominus, sicut accepimus, nonnulli Episcopi, five alii locorum Ordinarii, alique Ecclesiarum Prælati, necnon Canonici, five capitulares personæ, ac Parochialium Ecclesiarum Rectores, & alia tam Ecclesiastica, quam sæculares personæ, qui non cessant dictos Fratres, & Moniales, eorumque personas, five æconomos, & Procuratores, super præmissis diversimode molestare, & ipsos in eorumdem quiete, & spiritualibus muneribus turbare.

Alii enim prætendentes, quod cum Canon Concilii hujusmodi, super quo, ut præfertur, nostra emanavit declaratio, loquatur nisi de una quarta, Cathedrali seu parochiali Ecclesia solvi consueverat, nec dictum Concilium, nec nos cogitaverimus de duabus quartis scilicet ubi consuevit solvi, & Cathedrali, aut parochiali Ecclesiis & ideo dictis in locis cessare dispositionem dictæ declarationis nostræ & Canonis Concilii.

Alii verò etiam prætendentes, quod dictis nostris declarationibus non obstantibus, Fratres prædictos quantumcumque ab eorumdem Superioribus approbatos in eorum Ecclesiis, & locis prædicare non possent nisi primo se coram Ordinariis ipsi, five eorum Vicariis, & licentiam suorum Superiorum muneris dictæ prædicationis præsentaverint, & ab eisdem

Ordinariis, seu dictis eorum Vicariis benedictionem obtinerint.

Alii etiam locorum Ordinarii, necnon Canonici, & Capitulares personæ, tam Metropolitanarum & Cathedralium, quam Collegiarum, necnon parochialium Ecclesiarum Rectores, five alie personæ Ecclesiasticæ etiam prætendentes dictos Fratres alienas Parochias cum eorum Cruce elevata ad levanda cadavera eorum qui in Ecclesiis domorum, & locorum eorumdem Fratrum elegerint sepulturam, intrare, & dicta cadavera ad ipsorum Fratrum Ecclesias pro eis inibi tumulandis, recusante ipso loci Ordinario, five Capitulo, vel Rectore, deferre seu deferri facere non posse.

Alii autem ex consuetudine prætendentes, quod Fratres ipsi cum eorum Cruce non possint levare cadavera defunctorum ex eorumdem domibus, & eorum funus exequi, sed Capitulis, five capitularibus personis, seu Rectoribus ipsi id tantum licere, & primo ad ipsorum Capitulum, five Presbyterorum Ecclesias dicta corpora deferri debere, & in eisdem Ecclesiis funus, five funeris officium peragi, postea vero per ipsos presbyteros retentis funeralibus universis, five solutis sibi certis pecuniis per hæredes defuncti pro finire, & exequiis, five Missis in eorumdem Ecclesiis celebrandis, tunc, & non alias licere Fratribus corpus, five cadaver defuncti ad eorum Ecclesiam deferre.

Alii etiam prætexunt diversarum consuetudinum, & concordatorum, etiam cum dictis Fratribus in totum, prætendentes à dictis Fratribus, & Monialibus velle habere, & sibi exigere licere, quartam, seu aliam portionem, etiam quorumcumque legatorum, & seu aliarum piarum largitionum, ipsi Fratribus, & Monialibus, five eorumdem domibus, Ecclesiis, & locis quoquomodo factarum.

Alii etiam prætendentes jurisdictionem, & superioritatem in dictos Fratres, & Moniales, eorumdemque domos, Conventus, Monasteria, & loca exercere posse, & propterea ipsos Fratres, & Moniales ad solutionem diversorum onerum, & impositionum, dictorumque subsidii, & decimarum cogunt & compellunt.

Aliique in erectione, five institutione, & acquisitione novorum locorum, five domorum, Conventuum, & Ecclesiarum dicti Ordinis, & alias præmissorum occasione eosdem Fratres, & Moniales molestant, & perturbant, contra nostram & dictorum Prædecessorum nostrorum litterarum formam, & tenorem.

§. 6. Nos præmissis, & aliis similibus gravaminibus, perturbationibus & molestiis Fratribus, & Monialibus præfatis illatis, eorumdemque Fratrum & Monialium quieti, & tranquillitati consulere, & ut Fratres ipsi facilius & promptius eorumdem officia, & vitam regularem, ac munus prædicationis eis injunctum, ad summi Dei laudem & fidei Catholice propagationem, exequi, & adimplere, illisque incumbere possint, & ad illa promptiores reddantur, opportunè providere, ac omnem ambiguitatē, etiam nostræ amplioris declarationis ministerio removere volentes; ipsosque Fratres, & Moniales, & eorum singulos à quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & penis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, & ad effectum præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes. Necnon litterarum præfatarum, ac cujusvis lici, & causæ, desuper inter quoscumque, & in quavis instantia pendentes status, & merita, nominaque & cognomina Judicum, & colligantium, eorumque jura, & titulos, ac sententiarum desuper forsan latorum. Necnon transactionum, five conventionum inter eos initarum, ac instrumentorum, aliarumque scripturarum desuper quomodolibet confectorum, & inde secutarum quorumcumque tenores præsentibus pro expressis habentes. Motu proprio, non ad alieuius pro eis nobis super hoc oblatæ

Hic Pont. tollendum
has contro-
versas, eas
omnes ad se
advocat.

petitionis instantiam, sed de mera deliberatione, & ex certa scientia nostra, omnes lites, causas, controversias, & questionum materias, super præmissis, & eorum occasione, inter Fratres, & seu etiam Moniales præfatos ex una; necnon Episcopos, & locorum Ordinarios, ac Canonicos, five capitulares personas, Parochiales Ecclesiarum Rectores, & alias quacumque personas Eccl. & seculares præfatas, partibus ex altera, coram quocumque Iudice, seu quibuscumque Iudicibus Ecclesiasticis, & secularibus, etiam Sedis Apostolica de latere Legatis, ac Vicelegatis, ac etiam ab eadem Sede delegatis, & subdelegatis, ac aliis quibuscumque etiam S.R.E. Card. & Sacri Palatii Apostolici causarum Auditoribus, quomodolibet in prima, seu alia quacumque etiam forsitan ulteriori instantia introductas, & adhuc forsitan pendentes, etiam forsitan si super illis, etiam contra dictos Fratres, & Moniales, per unam, vel plures sententias iudicatum, & inter ipsas partes concordatum, five transactum desuper fuerit, Apostolica auctoritate, tenore præsentium ad nos advocamus, eaque omnia, & singula cassamus, & extinguimus, ac pro cassis, & penitus extinctis haberi volumus, & declaramus, eisdemque Episcopis, locorum Ordinariis, Vicariis, Canonicis, capitularibus personis, necnon parochialium Ecclesiarum Rectores, & ceteris personis Ecclesiasticis, & secularibus, desuper perpetuum silentium imponimus.

§. 7. Necnon omnia & singula privilegia, indulgentia, concessionem, suppressionem, extinctionem, unionem, incorporationem, applicationem, immunitates, exemptionem, libertates, prerogativas, favores, communicationem, indulgentias, & alias quacumque gratias dicto Ordini fratrum Prædicatorum, & eiusdem pro tempore existentibus Magistro Generali, Provincialibus, Superioribus, Fratribus, & Monialibus præfatis, eorumdemque domibus, Conventibus, Monasteriis, Ecclesiis, & locis, ac membris, colonis, servitoribus, procuratoribus, & ceteris, ac aliis personis quibuscumque dicti Ordinis regulam profrentibus, etiam oblati, & tertii habitus Monialibus nuncupatis, per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac nos, & sedem præfatam, ac dictæ Sedis Legatos, Vicelegatos, Episcopos, locorum Ordinarios, & quascumque alias personas, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque derogatoriis derogatoriis, aliis; quibuscumque clausulis, statutis, etiam irritantibus decretis, hæcenus quomodolibet concessa, approbata, & innovata, litterasque desuper tam sub plumbio, quam in forma Brevis, & alias quomodolibet concessas, & expeditas, ac prout ea, omnia & singula per eosdem Prædecessores, ac Nos, & sedem præfatam, aliis; prædictis, concessa, approbata, & innovata fuerunt, quorum omnium & singulorum tenores, formas, & datas, ac si de verbo ad verbum infererentur, præsentibus haberi volumus pro expressis, eisdem auctoritate, & tenore approbamus, confirmamus, & innovamus, illaque omnia & singula, efficacia existere, & perpetuum roboris firmitatem obtinere, ac suos plenarios & integros effectus sortiri. Necnon ab omnibus, & singulis, quavis etiam de latere Legati, Vicelegati, necnon Cardinalatus, Patriarchali, Archiepiscopali, Episcopali, & quavis alia Ecclesiastica, five seculari & temporalis præfulgeant dignitate & præminencia, etiam sub sententis, censuris & penis in eisdem contentis, perpetuo inviolabiliter observari debere decernimus.

§. 8. Et insuper quod Fratres dicti Ordinis (ab eorum Superioribus tamen approbati) in eorum Ecclesiis (non tamen ab Episcopomet) prædicetur, liberè, & licitè absque aliquo impedimento, five etiam ipsius Episcopi contradictione, & absque eo, quod coram dicto Episcopo se non præsentaverint, nec eisdem licentiam muneris prædicationis huiusmodi exhibuerint, & ab eodem Episcopo benedictionem, ut præfertur, non obtinuerint, prædicare, & munus prædicationis huiusmodi exequi.

§. 9. Necnon Fratres ipsi quæcumque corpora defunctorum, qui se in eorum Ecclesiis sepeliri ordinaverint, vel si a defunctorum heredibus five curam fu-

neris habentibus, vocati fuerint, ipsorum Fratrum Cruce elevata, etiam sine dictorum Canonicorum, ac Capitularium personarum, necnon Curatorum, vel aliorum presbyterorum interventu, ex ipsorum defunctorum domibus levare, eaque accipere & associare, ac ad ipsorum Fratrum Ecclesias directe deferri, & in eorum Ecclesiis (non tamen tempore interdicti) sepeliri facere, salvo dumtaxat jure parochiali, Nec Fratres ipsi ad alterius cuiusvis contrariæ consuetudinis, usus, five moris, observationem teneri, vel super præmissis a quoquam quavis auctoritate, molestari, seu perturbari possint, vel debeant.

§. 10. Quartam autem funeralium, quoad domos, five Conventus, & Monasteria ipsius Ordinis, tempore dicti Concilii Tridentini, ante quadraginta annos fundata, & erecta, & ratione illorum ubi consuetudo illam solvendi tantum extitit, ac de ceris & aliis, quæ deferuntur juxta cadaver dum ad sepulturam deferretur, non autem de aliis quibuscumque eisdem Fratribus, seu Monialibus, aut eorum domibus, Conventibus, Monasteriis, Ecclesiis, & locis, etiam pro funeris five Anniversarii, aut Missarum celebratione donatis, legatis, five alias quomodolibet largitis, & ubi duæ quartæ forsitan solvi consueverint, una scilicet Parochiali Ecclesie, alia vero Episcopo, five Cathedrali, aut Collegiata Ecclesie, five Canonicis, & Capitulo eiusdem, una tantum, scilicet Episcopo, ubi verò consuetudo illam solvendi non fuit, five domus, Conventus, & Monasteria dictorum Fratrum, & Monialium, post quadraginta annos erecta five fundata fuerint, nequaquam nec ullo modo solvere, seu tradere, omnem aliam præmissis contrariam consuetudinem, five morem, harum serie cassantes, & extinguentes, ac omnibus & singulis quorum interest desuper perpetuum silentium imponentes.

§. 11. Minusque Fratres, & Moniales ipsi, ad aliquorum onerum, realium vel personalium, etiam ratione eorumdem domorum seu Conventuum, Monasteriorum, Ecclesiarum, & locorum, ac quorumcumque beneficiorum eisdem unitorum, etiam si, ut præfertur curam animarum habeant, contributionem five solutionem etiam pro Seminario, & decimarum quarumcumque aut cuiuscumque subsidii, etiam caritativi, & Triennalis nuncupati, nunc, & pro tempore per nos, & quoscumque Romanos Pontifices, aut Sedem præfatam impositorum, & imponendorum ex quavis causa, quæcumque urgentissima teneantur, vel desuper aliter molestari possint, seu debeant.

§. 12. Quodque Fratres, & Moniales præfati, ubique locorum novas domos, five Conventus, & Monasteria, ac Ecclesias, dictorum Ordinis, cum claustris, cellulis, refectuariis, dormitoriis, aliisque officiis necessariis, Ordinarii loci, five cuiusvis alterius licentia, desuper minime requisita, construere, & edificare, erigere, & instituire, nec pariter super his molestari possint, five debeant, eisdem auctoritate & tenore, etiam perpetuo, statuimus, ordinamus & declaramus, eisque Fratribus, & Monialibus, super præmissis omnibus, & singulis licentiam, & facultatem concedimus, & impartimur.

§. 13. Ac etiam ipsos Fratres, & Moniales, eorumque domos, Monasteria, beneficia, & ab illis quomodolibet dependentia loca, ac bona quæcumque, cuiuscumque qualitatibus & quantitatibus existant, dictorumque bonorum colonos, laboratores, & conductores, ac oblatos, & tertii habitus Moniales, aliasque personas præfatas, a quibuscumque decimis, etiam prædialibus, & primitiis, quartis, mediis, & aliis partibus fructuum, ac subsidii, etiam caritativis præfatis, ac ab omni iurisdictione, & superioritate quorumcumque locorum Ordinariarum, etiam de novo, quatenus opus sit, auctoritate & tenore similibus eximimus, & liberamus, ac exemptos, liberos, & immunes penitus esse volumus. Necnon, quatenus opus sit, illis eorumque singulis, in ius & proprietatem B. Petri, & Sedis Apostolicæ, ac sub eorum speciali & immediata protectione suscipimus, ac eos solum, & dumtaxat immediate Sedi præfate, & nobis, ac pro tempore

Et quantum
funeralium
de qua ibid.
nu. 11. & seqq.

Decimæque
& contribu-
tionem de
quib. ibid.
num. 14.

Et edificati-
onem Mo-
nasteriorum
de qua sup.
num. 23.

Tu vide
Clem. VIII.
const. 99.
Quoniam.

Exemptio-
nemque a ju-
risdictione
Ordinario-
rum.

existenti

Confirmat
omnia privi-
legia eisdem
Fratribus, &
Monialibus,
&c. concessa.

Declarat in-
tultum circa
prædicationem
de quibus in præ-
dicta bulla.
num. 1.

utque sepul-
tura de quo
ibidem n. 23.

Facultatem etiam ejusdem Fratribus & Monialibus concedi, eligendi quascunque personas in Ecclesiastica dignitate constitutas, in eorum Conservatores, & Judices, qui hoc munus reculare non possint.

Declarat etiam eisdem Fratres & alias personas ejusdem Ordinis alibi quam coram eorum Conservatoribus convenire nec conveniri posse.

Conservatorum jurisdictionis & facultates.

existenti Romano Pontifici, subiacere decernimus, & declaramus.

§. 14. Et ut Fratres & Moniales à præmissis molestiis, & perturbationibus sublevati, quietius Altissimo famulari, & uberioribus fructibus quotidie in agro Domini, pro Christianæ Religionis defensione & ampliatione perferre possint, tam vos omnes & singulos supradictos, quam quascunque alias personas in dignitate Ecclesiastica ubilibet, & in quibuscunque Mundi partibus constitutas, & quoscunque locorum Ordinarios, ac eorum Vicarios, & officiales; necnon Canonicos Metropolitanorum, & aliarum Cathedralium Ecclesiarum, per eosdem Fratres, & seu Moniales, ac dicti Ordinis fratrum Prædicatorum Superiores, & domorum Priores, ac eorum singulos pro tempore eligendos, in eorum, & dictorum eorumdem privilegiorum, indultorum, concessionum & gratiarum, & singulorum aliorum præmissorum Conservatores, & Judices unicos, qui, quamdiu dictum officium exercueritis, & ipsi exercuerint à nemine, quominus illud exerceatis, & exerceant, sub aliquo prætextu, ac sub excommunicationis, five suspensionis à divinis latæ sententiæ quam eo ipso incurrere volumus & declaramus respectivè pœna, impediri, vel molestari possitis, & possint dicta auctoritate deputamus. Ita quod vos, seu alii quicumque sic electi, sub excommunicationis, & seu suspensionis latæ sententiæ pœna hujusmodi, quam statim quod munus, five officium Conservatoris hujusmodi acceptare, & debet ac plenariè exequi neglexeritis, & neglexerint, abque alterius declarationis ministerio incurrere volumus, nec ab aliquo quam à nobis, & pro tempore existente Romano Pontifice (præterquam in mortis articulo) absolvi posse, eosdem Priores, Superiores, & Fratres, ac Moniales, etiam tertii habitus oblatos & alios præfatos, ac eorum singulos, adversus inferentes eis, aut eorum Procuratoribus, Agentibus, servitoribus, & familiaribus in præmissis, & eorumdem aliquo, molestias, five perturbationes aliquas, seu injurias, gravamina, vel damna, in personis, rebus & bonis, seu exigendo ab eis vectigalia, datia, pedagia, gabellas, collectas, aut alia onera defendere, præferant, ac omnem eorum jurisdictionem exercere. Necnon sententias, censuras, & pœnas Ecclesiasticas, contra rebelles, & inobedientes cum effectu promulgare, ac omnibus facultatibus Conservatoribus dicti Ordinis fratrum Prædicatorum, illisque Fratribus, & personis per quascunque litteras Apostolicas quomodolibet concessis uti, ac privilegia Superioribus, Prioribus, & Fratribus, ac Monialibus præfatis pro tempore concessa, eis observari facere debeatis, & debeant.

§. 15. Neque Superiores, Priores, Moniales, oblati, & cæteræ personæ Ord. hujusmodi, & ab eis dependentes præfate coram aliis quam vobis, & dictis Conservatoribus, etiam vigore, seu prætextu, quorumcumque constitutionum & ordinationum aliorum Regnorum, etiam quod non habentes Superiorem in illis Regnis, coram secularibus Judicibus respondere debeant, ac teneantur ad iudicium vocari, vel alias molestari, quavis occasione vel causa, possint vel debeant. Quodque ipsi Fratres, & Moniales oblati, & aliæ personæ præfate, five actores five rei existant, coram aliquo alio Iudice ordinario vel delegato, quam prædicto suo Conservatore (coram quo primo unam sententiam definitivam, antequam ipsi ad aliud iudicium evocentur, seu causa committatur, vel transferatur, obtinere debeant, & teneantur) ut præfertur, etiam quavis occasione vel causa molestari, vel in iudicium trahi, five ad iudicium evocari, vel agere minime possint, five debeant, eisdem auctoritate & tenore, etiam statuimus, ordinamus, & decernimus.

§. 16. Et insuper adversus molestatores, inquietatores, & alios injuriatores hujusmodi, volentes ejusdem Ordini, Magistro Generali, Prioribus, Superioribus, Fratribus, Monialibus, oblati, servitoribus, æconomis, Procuratoribus, & aliis eorum personis præfatis illo remedio providere, per quod ipsorum

compescatur temeritas, & aliis aditus, & voluntas committendi similia præcludatur. Discretionis vestræ pro præsentibus mandamus, quatenus vos, vel duo, aut unus vestrum, per vos alium, seu alios, etiam si sint extra loca, in quibus estis deputati Conservatores, & Judices Ordini fratrum Prædicatorum, ac illis pro tempore existentibus Magistro Generali, Prioribus, Fratribus, Monialibus, præsentibus & futuris, quibuscunque aliis personis præfatis efficacis defensionis præsidio assistentes, non permittatis eos super iis, ac eorum privilegiis, immunitatibus, gratiis, concessionibus, facultatibus, exemptionibus, indultis, ac aliis quibuscunque eisdem concessis per quoscunque Patriarchas, Archiepiscopos, Episcopos, aliosque Ecclesiarum Prælatos, necnon eorum Vicarios, Officiales, Capitula, Collegia, & Clericos, ac Ecclesiasticas personas, tam seculares quam S. Benedicti, S. Augustini, Cisterciensis, Cluniacensis, Præmonstratensis & aliorum quorumcumque Ordinum, & Congregationum, ac Hospitalis S. Joannis Hierosolymitani, & S. Jacobi de Spata, ac Jesu Christi, & quarumcumque aliarum Militiarum Religiosos, & Milites, exemptos & non exemptos, necnon Duces, Marchiones, Comites, Barones, Milites, & Laicos, Communitates Civitatum, Universitates Oppidorum, Castrorum, Villarum & aliorum locorum, ac alias singulares personas Civitatum & Diocesum, ac quarumcumque aliarum partium, super præmissis & eorum aliquo, quovis prætextu, & quæsito colore, & contra præmissorum singulorum tenorem, & formam indebitè molestari, aut eis, vel eorum alicui, molestias, gravamina, damna, seu injurias, & jacturas, irrogari, facturi dictis Prioribus, Superioribus, Fratribus, Monialibus, oblati, aliisque personis prædictis, cum ab eis, aut eorum aliquo fueritis requisiti, super dictorum privilegiorum, indultorum, exemptionum, libertatum, facultatum, & aliarum gratiarum præfatarum observatione, necnon super quibuscunque molestiis, damnis, injuriis atque jacturis sibi pro tempore illatis, seu inferri comminatis, in illis videlicet, quæ iudicialiter requirunt indaginem summarie, simpliciter & de plano, sine strepitu & figura iudicii, sola facti veritate inspecta, in aliis vero prout qualitas eorum exegerit, iustitiam complementum, Molestatores, & injuriatores hujusmodi, necnon contraditores quoscunque & rebelles, quoscunque dignitatis, status, gradus, ordinis, & conditionis extiterint, quodcumque & quocienscumque expedierit, auctoritate nostra, per censuram Ecclesiasticam, appellatione postposita compescendo; invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis; & nihilominus legitimis super his, per vos habendis servatis processibus, illos, quos censuras, & pœnas præfatas, ac alias per vos pro tempore latas incurrissè vobis constiterit, eas incurrissè declaratis, ac censuris, & pœnis prædictis, quoties opus fuerit, etiam iteratis vicibus aggravare curetis. Ceterum si per summariam informationem, per vos super iis habendam, etiam vobis constiterit, quod ad loca, in quibus molestatores, & injuriatores hujusmodi, necnon ceteros, quos præfentes litteræ concernunt, pro tempore morari contigerit, pro monitionibus, requisitionibus & inhibitionibus ipsis, ac citationibus de eis faciendis tutus non pateat accessus. Nos vobis, monitiones, requisitiones, & citationes, ac inhibitiones quaslibet, tam contra in iudicio præfentes, quam alios quoscunque sua quomodolibet interesse putantes, & quacunque auctoritate five dignitate præfulgentes, in decreto, five executione dictæ citationis five inhibitionis nominandos, etiam sub eisdem censuris, ac aliis arbitrio vestro imponendis, & applicandis pœnis, etiam pecuniariis, etiam per edita publica locis assignanda publicis, & partibus illis vicinis, de quibus sit verisimilis conjectura quod ad ipsorum monitorum, requisitorum, & citatorum notitiam pervenire valeant, faciendi, & decernendi, eosque citandi, ac eisdem molestatoribus, injuriatoribus, contraditoribus, & rebellibus, ac aliis quibus opus fuerit,

etiam

etiam sub censuris Ecclesiasticis, ac aliis poenis, etiam pecuniariis, sub arbitrio moderandis, inhibendi easque incurrille modo praemisso declarandi, aggravandi, & auxilium brachii secularis invocandi. Necnon causas, & controversias quascumque dictorum, Fratrum Monialium, & dicti Ordinis Superiorum, oblatorum, ac aliarum personarum praefatarum, super quibuscumque rebus, & negotiis, motas & movendas, activè & passivè, cum omnibus & singulis earum incidentibus, dependentibus, & emergentibus, annexis & connexis, modo praemisso, & tam conjunctim quam divisim, arbitrio vestro, audiendi, cognoscendi, decidendi, & in suis statu & terminis realitumendi & sine debito finiendi, & terminandi; & eorumdem, necnon sententias per nos ferendas, postquam transierint in rem judicatam, vel alias de jure executioni locus fuerit, debite exequendi, & executioni demandandi, plenam & liberam earundem tenore praesentium concedimus facultatem, & potestatem. Ac volumus, & eadem Apostolica auctoritate decernimus, quod monitiones, requisitiones, citationes, inhibitiones, si factae hujusmodi, ipsos monitos, requisitos, citatos, & inhibitos arceant, perinde ac si eis factae, infinuatae, & intimatae personaliter extitissent.

§. 17. Si quae in praemissis omnibus & singulis, per quoscumque Judices, & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S.R.E. Cardinales, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate & auctoritate, iudicari & definiri debere. Ac irritum & inane, quicquid secus super his à quocumque quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 18. Non obstantibus felicis retordationis Bonifacii Papae VIII. Praedecessoris nostri, qua cavetur, ne quis extra suam Civitatem, vel Diocesim, nisi in certis exceptis casibus, & in illis ultra unam dietam, à fine suae Diocesis ad iudicium evocetur, seu ne Judices à Sede praedicta deputati extra Civitatem, & Diocesim in quibus deputati fuerint, contra quoscumque procedere, aut alii, vel aliis vices suas committere praesumant; & de duabus dietis in Concilio generali edita, dummodo ultra tres dietas aliquis vigore praesentium ad iudicium non trahatur, seu quod de aliis quam manifestis iniuriis, & violentiis, ac aliis, quae iudicalem non requirunt indaginem, poenis in eos qui secus egerint, & in id procurantes adiectis, Conservatores nullatenus se intromittant, quam aliis quibuscumque constitutionibus à Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris, tam de iudicibus delegatis, quam personis ultra certum numerum ad iudicium non vocandis, aut alias editis, quae vestrae in hac parte possent jurisdictioni, aut potestati, ejusque libero exercitio quomodolibet obviare. Quodque vos filii Canonici Officiales & Vicarii non sitis de personis quae deputari possunt in Conservatores: Privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, ac exemptionibus, facultatibus, & aliis conservatoriis, per nos, ante eosdem Praedecessores nostros Romanos Pontifices, quibuscumque Ecclesiis, Monasteriis, Hospitalibus, & aliis piis locis, necnon Ordinibus, Congregationibus, Militiis, Communitatibus, & aliis Collegiis, ac Universitatibus, etiam Studiorum generalium Civitatis, Castris, Terris, & locis, ac personis tam Ecclesiasticis quam secularibus, cujuscumque dignitatis, etiam Parochiali, Episcopali, Archiepiscopali, & alia majori dignitate, seu auctoritate fungentibus, ac Capitulis, Conventibus, Ducibus, & aliis Dominis temporalibus, etiam per modum statuti perpetui, etiam Motu, & scientia similibus, ac quibuscumque aliis personis, cujuscumque qualitatibus, conditionibus, gradibus, praerogativis, seu dignitatibus, ac Universitatibus, etiam Studiorum generalium, seu Collegiis, etiam exemptis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, etiam de non trahendis, irritantibusque, & aliis decretis, etiam Maremagnum, seu bulla Aurea nuncupatis, aut alias quomodolibet concessis,

confirmatis, & innovatis. Quibus omnibus, & singulis, etiam si pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, expressa & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quavis alia expressis habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata inserti forent, praesentibus pro sufficienter expressis habentes, illis alias in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse pari motu derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus, communiter vel divisim Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspensi vel excommunicati, sed extra, vel ultra certa loca ad iudicium evocari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi, & eorum personis, locis, Ordinibus, & nominibus propriis mentionem, & qualibet alia dictae Sedis indulgentia generali vel speciali, cujuscumque tenoris existat, per quam praesentibus non expressam, vel totaliter non insertam effectus hujusmodi gratiae impediri valeat quomodolibet, vel differri, & de qua ejusque toto tenore habenda sit in nostris litteris mentio specialis.

§. 19. Ceterum etiam volumus, & dicta Apostolica auctoritate decernimus, quod quilibet vestrum prosequi valeat articulum etiam per alium inchoatum quamvis idem inchoans nullo fuerit impedimento Canonico impeditus. Quodque à data praesentium, sit vobis & unicuique vestrum, in praemissis & eorum singulis, ceptis & non ceptis, praesentibus & futuris perpetuata potestas, & jurisdictio attributa, ut eo vigore, & eaque firmitate possitis in praemissis omnibus, ceptis & non ceptis, praesentibus & futuris & pro praedictis procedere, ac si praedicta omnia & singula coram vobis cepta fuissent, & jurisdictio vestra & cujuslibet vestrum, in praedictis omnibus & singulis per citationem, vel modum alium legitimum perpetuata extitisset, constitutione praedicta super Conservatoribus, & alia qualibet in contrarium edita non obstante.

§. 20. Et quia difficile foret praesentes litteras, ad singula, in quibus de eis fides forsan facienda fuerit, loca deferre, etiam volumus, & eadem auctoritate Apostolica decernimus, quod praesentium transumptis manu alicujus Notarii publici subscriptis & sigillo alicujus Praelati, vel personae in dignitate Ecclesiastica constitutae, aut Curiae Ecclesiasticae munitis, in iudicio, & alibi, ubi opus fuerit, eadem prorsus fides adhibeatur, quae ipsis originalibus adhiberetur, si forent exhibita vel ostensa. Praesentibus perpetuis futuris temporibus duraturis.

Datum Romae apud Sanctum Petrum, sub annuo Piscatoris, die 23. Septembris, 1571. Pont. nostri Anno 6.

Spoliorum nomine ad R. Cameram Apost. spectantium, non veniunt ornamenta, & paramenta Ecclesiarum, nec suppellectilia domestica, neque bona Clericorum qui beneficia aut pensiones, non excedentes summam ducatorum triginta, habuerunt.

Qua autem comprehendantur nomine spoliorum, videbis plene apud const. 18. Paul. V. in eminenti in Tomo III.

PIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Romani Pontificis providentia circumspecta ad ea sollicitudinis suae partes potissimum convertit, per quae singulis Ecclesiis debita obsequia, & opportuna subventionis auxilia minimè subtrahantur. Cum itaque sicut accepimus, nonnisi Patriarchae, Archiepiscopi, Episcopi, & Abbates seu Com-

Declaratio
facultatum,
& jurisdictio-
nis dictorum
Conservato-
rum.

Fides Exem-
plorum.

Dar. P. An. 6.
die 23. Sept.

XLII.

Edita An. D.
1567.

Causa hujus
constitut.

mandatarii, ac alia beneficia Ecclesiastica obtinentes, proprii honoris, & salutis immemores, etiam prætextu facultatum testandi eis per Sedem Apostolicam concessarum, in eorum ultimis voluntatibus res sacras ac vasa, ornamenta, & paramenta Ecclesiastica, aliaque cultui divino dicata quandoque ex fructibus Ecclesiasticis per eos acquisita, non Ecclesiis, & Monasteriis, ac beneficiis quibus præfuerunt, seu à quibus proventus Ecclesiasticos, & stipendia acceperunt, prout rationi & honestati consentaneum foret, sed aliis locis, etiam aliquando non piis, ac interdum eorum consanguineis, & affinibus relinquere, ac Camera Apostolicæ Collectores prætextu quod illa sub appellatione spoliolum veniant, tanquam ejusdem Camere spolia exigere, & percipere non erubescant, in maximum Religionis dedecus, ac Ecclesiarum, Monasteriorum, & beneficiorum eorumdem detrimentum, ac Relinquentium animarum periculum, scandalumque plurimorum.

Ornamenta & paramenta, ac res sacre, & alia bona ad usum & cultum divinum spectantia, non veniunt sub nomine spoliolum permissum Cam. Apost. sed spectant ad Ecclesias, & tempore obitus illas obvenientium.

§. 1. Nos abusus, scandalisque hujusmodi providere, ac singularem Ecclesiarum, & Monasteriorum, ac beneficiorum indemnitate, animarumque quorumlibet saluti consulere volentes, Motu proprio & ex certa scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine hac nostra perpetuo valitura constitutione statuimus, ordinamus, decernimus & declaramus, quod de cetero omnia & singula ornamenta, & paramenta, ac vasa, necnon Missalia, & Gradualia, ac Cantus firmi & Musice aliaque quomodolibet nuncupati libri, & alia res sacre, etiam auri, & argenti, ac quæcumque alia bona per quoscumque Patriarchas, Archiepiscopos, Episcopos, Abbates, seu Commendatarios, & alios quoscumque, quæcumque & qualicumque beneficia Ecclesiastica, cum cura & sine cura, secularia, & quorumvis Ordinum regularia, in titulum vel commendam, aut alias quomodolibet obtinentes, quocumque nomine vel titulo censeantur, etiam si de illis, & eorum qualitatibus specialis, & expressa mentio habenda foret, ad usum & cultum divinum, etiam in eorum privatis adibus, & Capellis, vel Oratoriis destinata, tempore eorum obitus ex testamento vel ab intestato relicta, sub quibusvis facultatibus testandi & alias disponendi de bonis per eos ex altari, vel alias quomodolibet acquisitis, per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores, & Successores nostros, ac nos sub quibusvis tenoribus & formis, ac cum quibusvis clausulis, & decretis, etiam Motu proprio, & alias quomodolibet concessis, & concedendis, minimè comprehendantur, nec sub appellatione spoliolum veniant, sed ad singulas Ecclesias, Monasteria, etiam Conventu carentia, & beneficia hujusmodi in quibus resederint, aut quibus præfuerint, seu quæ alias obtinuerint omnino spectent, & pertineant, ac spectare, & pertinere.

Successores in Ecclesiis propria auctoritate illa apprehendere possunt.

§. 2. Illaque post eorum obitum eisdem Ecclesiis, Monasteriis, & beneficiis, etiam si in Romana Curia, & procul ab illis decesserint, vel ad illa nunquam accesserint, etiam si antea Ecclesiarum, & Monasteriorum regimini cesserint, vel beneficia hujusmodi renunciarint, eo ipso applicata, & incorporata sint & esse censeantur. Ita quod liceat illis defunctis, in eisdem Ecclesiis, Monasteriis & beneficiis successoribus, ac Ecclesiis, & Monasteriis hujusmodi Capitulis, & Conventibus respectivè, illa propria auctoritate libere apprehendere ac eorum Ecclesiis & Sacristiis applicare, & incorporare.

Et de illis etiam ad pias causas disponi prohibetur.

§. 3. Ac quæcumque donationes, ac relicta, & legata, testamenta, & codicilli, ac alia ultimæ voluntates seu spolia defuper, contra præsentis constitutionis nostre tenorem quomodolibet pro tempore facta, quoad præmissa, nulla & invalida, nullisque roboris & momenti existant, & personis, etiam Ecclesiasticis, seu locis etiam piis, aut Ecclesiasticis aliis quibuscumque, in quarum seu quorum favorem pro tempore facta fuerint, minimè suffragentur, nec per ea eisdem personis, seu locis vel aliis Ecclesiis hujusmodi aliquod jus in rebus prædictis, vel ad illas acquiri posse.

§. 4. Quinimmo res sacras, ac alia bona prædicta quocumque nomine, vel titulo pro tempore dentur ad illa Ecclesiis, & Monasteriis, ac beneficiis per defunctos quomodolibet acquisitis, ut præfertur, juxta præsentium tenorem realiter & cum effectu restituendum & consignandum, quibusvis dispositionibus de illis in contrarium quomodolibet factis minimè attentis, omnino teneantur, & ad id per censuras & penas, etiam furti, & sacrilegii, ac alia juris & facti remedia opportuna cogi & compelli possint, & debeant.

§. 5. Insuper ne deinceps contingat insolentia spoliolum Camere Apostolicæ Collectorum, vel subcollectorum, aliquas Ecclesias, nec hominum quemquam damno, & injuria affici, nec cuiquam de cetero vertatur in dubium, quæ res habenda sint nomine spoliolum, simili modo statumus, decernimus, & declaramus, quod quæcumque camera, cathedra, arcæ, & etiam lignæ, vel lapideæ, etiam marmoreæ, mensæ, & tabulæ, ac quæcumque dolia, seu vasa vinaria vacua, & alia similia suppellectilia domesticæ per quosvis presbyteros, seu Clericos ab humanis pro tempore decedentes, tempore eorum obitus in Ecclesiis, seu eorum domibus Ecclesiarum earundem, vel alibi obvis locorum relicta, etiam si ex fructibus, & proventus beneficiorum quæ dum viverent obtinebant acquisita fuerint, nec spoliolum appellatione minimè veniant, nec pro spoliis ullo modo reputari possint.

§. 6. Præterea quod nullum spoliolum Camere præfata fieri, nec quicquam à quibusvis spoliolum Camere hujusmodi Collectoribus vel Subcollectoribus exigi possit per obitum illius, qui dum viveret, unum vel plura beneficia Ecclesiastica obtinuerit, cuius vel quorum insimul fructus, redditus, & proventus, triginta ducatorum auri de Camera secundum communem æstimationem, valorem annum non excederint, aut qui pensiones annuas super quibusvis fructibus Ecclesiasticis usque ad dictum valorem annuatim perceperit, dammodo tamen si se ab omni illicita negotiatione, & à sacris canonibus prohibita abstinerit. Ita quod si quis dictorum Collectorum aliquid ex bonis quorumvis defunctorum qui similia beneficia obtinuerint, seu similes pensiones perceperint, prætextu spoliolum ejusdem Camere percipere, aut alias contra præsentis nostras litteras attentare præsumperint, ad totalem bonorum per eum perceptorum restitutionem teneatur, ac ad viam juris, etiam per similes censuras & penas, cogi & compelli possit, & debeat.

§. 7. Distinctus inhiibentes quibusvis Camere præfata spoliolum Collectoribus, nunc & pro tempore existentibus sub indignationis nostre, & privationis eorum officiorum pena, ne in ornamentis, & paramenis ac vasis, & libris præfatos cultui divino dicatis, ac alias in rebus sacris, necnon suppellectilibus præfatis quomodolibet se intromittant, nec in eorum inventariis tanquam spolia redigant seu describant, sed ornamenta, & paramenta necnon vasa, & libros, aliaque divino cultui dicata hujusmodi Ecclesiis, & Monasteriis, Capellis, & aliis beneficiis hujusmodi, eorumque Rectoribus, & aliis præfatis, libere admittant, & consignent, ac consignari faciant cum effectu, ac suppellectilia prædicta in locis ubi constiterint, relinquunt.

§. 8. Ac decernentes sic in præmissis omnibus & singulis per quoscumque Judices & Commissarios quavis auctoritate fungentes, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari & definiri debere, ac irritum & inane, quicquid secus super iis à quocumque quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 9. Quocirca dilectis filiis Curie causarum Camere Apostolicæ generali Auditori, & singulis locorum Ordinariis, ac majorem dignitatem post Pontificalem in universis Ecclesiis Cathedralibus, & Metropolitanis pro tempore obtinentibus per Apostolica scripta Motu simili mandamus, quatenus ipsi

Detentore que illorum bonorum ad restitutionem compelli debeat.

Suppellectilibus Presbyterorum & Clericorum non veniunt sub nomine spoliolum.

Spoliolum non potest præferri per obtinentes beneficia vel pensiones non excedentes 30. ducatos.

Inhibitor contra spoliolum collectores, ne de super se intromittant.

Decretum irritans.

Executorem deputatio & facultates.

vel duo aut unus eorum presentes litteras, & in eis contenta quaecumque ubi & quando opus fuerit, quotiens pro parte quorumcumque in praemissis interesse habentium, ut praefertur, fuerint requisiti solemniter publicantes, eisque in praemissis efficacis defensionis praesidio assistentes, faciant auctoritate nostra praesentes litteras, & in eis contenta quaecumque firmiter observari, ac singulos quos litterae ipsae concernunt, illis pacifice gaudere, non permittere eos desuper quomodolibet indebitè molestari. Contradictores auctoritate nostra appellatione postposita compescendo.

Confirmatio privilegiorum & Statutorum Artis Lanæ Urbis.

§. 10. Non obstantibus Apostolicis, ac in Provincialibus, & Synodali Concilio editis, generalibus vel specialibus constitutionibus & ordinationibus, necnon Ecclesiis, & Monasteriis huiusmodi iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus, facultatibus testandi, aliisque privilegiis, indultis, & litteris Apostolicis, quibuscumque concessis, approbatis, & innovatis, etiam si de illis eorumque rotis tenoribus, specialis & expressa mentio facienda esset, illorum tenores pro sufficienter expressis habentes, illis in reliquis in suo robore permanentibus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Justificatio & facultates Consilium ejusdem Artis cognoscendi causas Artem ipsam concernentes.

§. 11. Volumus autem quod si aliquis ex Patriarchis, Episcopis, Abbatibus, seu Commendariis, & aliis Beneficiariis praefatis pluribus Ecclesiis, seu Monasteriis, pro tempore simul, vel successivè praefuerit, seu plura beneficia obtinuerit, ornamenta, & paramenta, ac res, & bona praedicta ad illa omnia habita ratione fructuum, & temporis quo eadem beneficia possedit, omnino pertineant, & proportionabiliter inter ea dividatur.

Vide quod notavi hic in rubr.

§. 12. Quodque praesentes litterae in Cancellaria nostra Apostolica, & acie Campi Floræ, de more publicentur, & inter constitutiones perpetuè valituras describantur.

§. 13. Et quia difficile foret praesentes ad quæque loca deferri, volumus, & etiam declaramus earum transumptis etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus Praelati, vel alterius personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ sigillatis, eadem prorsus fides in iudicio & extrâ, adhibeatur, quæ eisdem praesentibus adhiberetur si forent exhibitæ vel ostensa.

§. 14. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ ordinationis, statuti, decreti, declarationis, inhibitionis, mandati, & voluntatis, infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursurum.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1567. 3. Kal. Septemb. Pontificatus nostri Anno secundo.

XLIII. Jurisdicatio Consulum Artis Lanæ in Urbe, cognoscendi causas ad Artem ipsam spectantes.

Decretum irritans.

Approbatio est etiam in constit. 61. Urbem, Gregor. XIII. & extensio habetur in constit. 14. Cum alias. Sixt. V. qui ejus Mercatoribus privilegia ibidem concessit, infra in hoc Tomo 2.

Inhibitio contra Judices Urbis, ne Consules, & alios desuper impediunt.

PIUS PAPA QUINTUS,

Motu proprio, &c.

UT ad Artis Lanæ quæ tanquam nobilis Mediolani, Neapoli, Florentiæ, aliisque insignibus Civitatibus, in illarum decus & ornamentum, ac Civium, & populi utilitatem & sustentationem, quam maximè quotidie exercitatur, exercitium etiam in hac Alma Urbe nostra temporum injuria jam pene collapsum restaurandum, & suo pristino splendori restituendum, dilecti filii Collegium, seu Societas Mercatorum Artis Lanæ Urbis nostræ eo efficacius

excitentur, illique alacrius intendant, quo uberiori Sedis Apostolicæ magnificentia noverint se conservari, Collegium, seu Societatem praedictam specialibus favoribus, & gratiis prosequi volentes.

§. 1. Omnia & singula ipsius Collegii, seu Societatis capitula, ordinationes, statuta, privilegia, indulta, immunitates, exemptiones aliasque gratias à quibuscumque Romanis Pontificibus, praedecessoribus nostris quomodolibet concessa, approbata, & innovata: etiam si illa in usu esse desierint, illorum omnium, necnon litterarum & instrumenti, seu instrumentorum desuper confectorum tenores pro expressis & insertis habentes, ac prout illa concernunt in dictis litteris, seu instrumentis, contenta, & inde secuta quaecumque licita, & honesta, ac sacris Canonibus non contraria, Apostolica auctoritate perpetuo confirmamus, approbamus, ac illis perpetuè, & inviolabilis firmitatis robur adjicimus, omnesque, & singulos juris & facti defectus, si qui forsan intervenerint, in eisdem supplemus, quod omnes, & singulas personas dictam Artem exercentes in perpetuum.

§. 2. Necnon quod moderni, & pro tempore existentes ipsius Collegii seu Societatis Consules, de omnibus & singulis causis, tam civilibus quam criminalibus, seu mixtis, etiam ratione praeteritorum (quatenus instructæ non sint) Lanæ Artem concernentibus juxta praefata statuta, & ordinationes in futurum cognoscere, easque decidere, & terminare libere & licite valeant, ita quod causæ praefatæ per modernos, & pro tempore existentes Urbis praefatæ Gubernatorem, & Senatorem, & Conservatores alioque Capitulos Judices, & ceteros etiam majores Magistratus, quovis pretextu vel colore reasumi non possint, ipsos Consules in ordinarios Judices constituendo, & deputando perpetuo statuimus, & ordinamus. Ac confirmationem, approbationem, adjectionem, supplementationem, exemptionem, liberationem, constitutionem, deputationem, statutum, & ordinationem praefata suos plenarios, & integros effectus sortiri, & inviolabiliter observari, ac eisdem exercentibus, & Collegio suffragari, & illos ad omnimodum suorum statutorum observationem teneri, & efficaciter obligatos fore.

§. 3. Ac litteras super praesentibus conficiendas in libris Camerae, & Capitolii si videbitur registrari, & nullo umquam tempore quovis quaesito colore, vel ingenio de subreptionis, vel obreptionis, aut nullitatis vicio, seu intentionis nostræ defectu notari, vel impugnari, nec sub quibuscumque revocationibus, suspensionibus, derogationibus, vel limitationibus similium vel dissimilium gratiarum, à nobis, vel dicta Sede pro tempore emanatarum, comprehendi, sed semper ab illis exemptas, & quoties illæ emanabunt toties in pristinum, & validissimum statum restitutas, & de novo etiam sub data per eisdem Collegium, seu Societatem eligenda, concessas, ac validas, & efficaces esse, & censeri.

§. 4. Et sic per quoscumque Judices &c. etiam S. R. E. Cardinales sublatæ, &c. judicari, & definiri debere, irritum quoque, &c. decernimus.

§. 5. Necnon modernis, & pro tempore existentibus Camerariis, Praesidentibus, & Clericis Camerae Apostolicæ, ac Senatori, Conservatoribus, Gubernatori, aliisque Urbis praedictæ Magistratibus, Dohæneriis, Commissariis, & aliis personis, ne Collegium, seu Societatem illiusque singulas personas praedictas super praemissis in aliquo, molestare, perturbare, vel impedire quovis quaesito colore, vel ingenio audeant, seu praesumant, in virtute sanctæ obediencie, & seu indignationis nostræ, ac mille ducatorum auri de Camera per contrasfacientes eo ipso roties quoties &c. incurrenda, partim Collegio, seu Societati huiusmodi, partim Hospitali S. Jacobi Incurabili de Urbe applicanda, penis diffidius inhibemus. Quinimo Collegio illiusque personis praefatis quoad praemissa eorumque executionem quantum in eis fuerit ac prout ad illos, communiter vel divisim pertinebit,

Clausulae de-
rogatoriae.

faveant & assistant, ac eadem praemissa integrè ob-
servari faciant praecipimus, & mandamus.

§. 6. Non obstantibus quibuscumque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac praescriptione etiam longissimi temporis necnon dictae Urbis, etiam iuramento, &c. roboratis, statutis, consuetudinibus, inhibitionibus, declarationibus & decretis, etiam per nos, & quosvis Rom. Pontifices praedecessores nostros etiam Motu simili, &c. haecenus factis, & in posterum faciendis, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis etiam Populo Romano, Senatori, Conservatoribus, Gubernatori praedictis, ac Clericis, & Gabelariis, Dohaneriis, Commissariis, aliisque deputatis, & personis quocumque nomine nuncupatis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis, in genere vel in specie etiam Motu & scientia similibus concessis, &c. quibus omnibus in litteris latissime extendentes illorum tenores &c. hac vice latissime derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque, cum clausulis opportunis.

Fiat ut petitur M.

Repetitio
clausularum.

§. 7. Et cum ab absolute a Censuris ad effectum &c. & quod instrumenta litterarum, statutorum, privilegiorum, exemptionum, aliorumque praedictorum tenores habeantur pro expressis, seu in toto vel in parte exprimi, aut de verbo ad verbum inferi possint, & cum confirmatione, approbatione, adjectione, supplementatione, exemptione, liberatione, statuto, ordinatione, decreto, inhibitione. praepcepto, mandato, & derogatione praefatis, quae hic pro singulariter repetitis habeantur in forma gratiosa ad perpetuam rei memoriam latissime extendentes, & cum opportuna si videbitur executorum deputatione, qui assistant etiam sub censuris, &c. cum potestate aggravandi, &c. interdictum Ecclesiasticum apponendi, invocato etiam ad hoc si opus sit auxilio brachii secularis, cum derogatione constitutionum de una, & duabus dietis non tamen ultra tres.

§. 8. Et quod sola praesentis Motus proprii sufficiat signatura, & ubique etiam in iudicio fidem faciat, regula contraria non obstante super qua litterae etiam per Breve nostrum, cum majori & veriori praescriptorum expressione expediri possit.

Datum Romae apud S. Petrum, Non. Septemb. anno secundo.

Fiat M.

Sola signa-
tura sufficit.Dat. P. An. 2.
die 5. Mart.

XLIV.

Declaratio quod Ordines tam S. Dominici, & Sancti Francisci, quam Eremitarum Sancti Augustini, & Carmelitarum, ac Servorum B. Mariae, sunt vere & proprii Ordines Religiosi Mendicantes, etiam si in communi bona quamvis mobilia possideant, eorumque gratis omnibus perficiuntur.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D.
1567.

Exordium.

Romanus Pontifex, tam universalis Christianae, quam singularum ejus Religionum praecipuus defensor, omnibus illarum incommodis pro sui Pastoralis officii debito libenter occurrit, & eorum indemnitate salubribus, juxta temporum morumque exigentiam, declarationibus, & aliis remediis consulere solet opportunis.

Causa hujus
declaratio-
nis.

§. 1. Sane licet dilecti filii omnium Mendicantium Ordinum Fratres, à contributione Seminarii Clericorum in qualibet Civitate juxta ejusdem Concilii formam erigendi, per Tridentini Concilii decreta eximantur: Nosque inter alia eisdem Mendicantium Ordinum Fratribus concessa privilegia, eos & eorum quemlibet, tam à Seminarii hujusmodi contributione, quam subsidio, quomodolibet, necnon decimis quibuscumque, & certis aliis oneribus Apostolica auctoritate similibus exemptimus, & liberaverimus, eosque ad illorum omnium contributionem nullo umquam tempore cogi & compelli

posse decreverimus: Cum tamen non sine animi molestia nuper accepimus, nonnulli locorum Ordinarii, & forsan in provincialibus Conciliis, eo forsan sub praetextu, quod Ordinum Mendicantium Fratres hujusmodi bona stabilia ex indulto seu dispensatione Apostolica retinere possunt, & propterea Mendicantes re vera non sint, eos ad Seminarii subsidii decimarum, & aliorum onerum hujusmodi contributionem cogere forsan praesumpserunt, & in dies praesumunt, in grave ipsorum Ordinum gravamen, & praedictum non modicum.

§. 2. Nos animo revolventes, eos ex fructibus bonorum hujusmodi varias Reipublicae Christianae utilitates afferre, cum ex ipsis varios Magistros, & Doctores manuteneant, ex quorum doctrina ipsorum Fratres Novitii eruditi postmodum effecti, gregem Dominicum praedicationibus suis, consiliis, confessionibus, orationibus, aliisque innumeris pietatis operibus juvent, & pascant, eorumque domos non minus, imò magis, quam ea quae per Ordinarios erecta sunt; Seminaria, vocari posse, & propter ea Mendicantium, nomen amittere nullo modo debere. Volentes idcirco omnem dubitandi materiam amputare, omnes & singulos Mendicantium Ordinum Fratres hujusmodi, ac eorum singulos à quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & poenis, à jure vel ab homine quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, necnon quarumcumque litium, & causarum coram quibuscumque Judicibus, & ubicumque quomodolibet pendendum status, & merita, nominaque & cognomina Judicum & colligatorum, necnon quorumcumque privilegiorum, indultorum, exemptionum, & immunitatum eorumdem Ordinum Mendicantium Fratribus haecenus quomodolibet concessorum tenores praesentibus pro expressis habentes, lites quoque, & causas praefatas ut praesertur, pendentes, ad nos harum serie advocantes, illasque penitus extinguentes, & colligatoribus hujusmodi perpetuum super praemissis silentium imponentes, Motu proprio non ad ipsorum Fratrum vel alicujus eorum nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed ex certa nostra scientia, ac de Apostoli. potestatis plenitudine, omnes & singulos Quatuor Mendicantium Ordinum, videlicet, S. Dominici, & S. Francisci, ac Eremitarum S. Augustini, necnon Carmelitarum, & quos etiam recenseri volumus Servorum Beatae Mariae nominibus comprehensos Fratres, eorumque domos, Monasteria, & loca etiam si in communi propria bona, tam mobilia quam immobilia, & stabilia, ac alia quaecumque possederint, Mendicantium vocabulo, & omnibus & singulis Mendicantium privilegiis eis quomodolibet concessis, uti posse, & debere, nec super praemissis ullo umquam tempore molestari posse auctoritate Apostoli. per praesentes statuimus, & declaramus, ac tam Concilii Tridentini, quam omnia & singula alia decreta, statuta, ordinationes, privilegia, & jura de Mendicantibus loquentia, ad omnes & singulos Ordines praefatos, eorumque domos, & loca, etiam propria bona, in communi tamen retinentes, extendimus, & ampliamus, illaque de illis loqui etiam auctoritate praefata per easdem praesentes declaramus.

§. 3. Ac insuper eisdem Ordinariis, & quibuscumque aliis tam Ecclesiasticis quam secularibus, quavis auctoritate fungentibus, in virtute sanctae obedientiae, & aliis arbitrio nostro moderandis poenis similiter per praesentes mandamus, ut si quid per eos tam nostrum quam praedecessorum nostrorum temporibus, tam ratione Seminarii, subsidii, & decimarum, quam aliorum onerum hujusmodi exactum fuit, id totum eisdem Fratribus, omni mora & dilatione postpositis restituat: districtius inhibentes eisdem locorum Ordinariis, ceterisque personis tam Ecclesiasticis quam secularibus, quavis auctoritate fungentibus, & cujuscumque dignitatis, gradus, & conditionis existantibus, ne eosdem Mendicantium Ordinum Fratres praefatos, bona hujusmodi

Declaratio
de qua in
rubrica.Inhibitio
contra Ordina-
rios &
alios deducen-
tes eos mo-
lestent, & si
quid ex-
actum est re-
stituant.

reti-

retinentes quovis prætextu super Seminarii, subsidii & decimarum contributione molestare, inquietare, vel perturbare audeant, vel præsumant.

§. 4. Decernentes quoque præsentis litteras nullo unquam tempore de subreptionis vel obreptionis vicio, aut intentionis nostræ, vel quopiam alio defectu notari vel impugnari nullatenus posse, minufve sub quibuscvis similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, modificationibus, limitationibus, restrictionibus, & aliis contrariis dispositionibus tam per nos quam etiam successores nostros quomodolibet, ac cum quibuscvis etiam derogatoriis, derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, irritantibus, decretis pro tempore factis & faciendis, quorumcumque tenorem existant includi, sed illis non obstantibus, in suis robore & efficacia persistere, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum statum restitutas, repositas & plenariè reintegratas, etiâ sub Data etiâ per ipsos eligenda de novo concessas, esse, & ita incommutabilis voluntatis & intentionis nostræ esse, & ad hoc ut perpetua firmitate subsistant, vim validi & efficacis contractus inter Sedem Apost. & præfatorum Ordinum Mendicantium huiusmodi Fratres habere debere. Sique per quoscumque Judices, & Commissarios quavis auctoritate fungentes, etiam causas Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Card. sub lata eis & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate iudicari debere, irritum quoque & inane quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 5. Quocirca dilectis filiis Curie causarum Cam. Apost. generali Auditori, necnon quorumcumque tam Cathedralium quam Collegiarum Ecclesiarum, Decanis, Præpositis, Archipresbyteris, Archidiaconis, Thesaurariis, & quibuscvis aliis in eisdem Ecclesiis dignitates obtinentibus, ubilibet & in quibuscumque regionibus, Terris, & locis existentibus per præfentes Motu simili mandamus, quatenus ipsi & eorum quilibet per se vel alium seu alios præfentes litteras, & in eis contenta quæcumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte dictorum Fratrum, vel alicujus eorum fuerint requisiti solemniter publicantes, eisque in præmissis omnibus pacificè & frui & gaudere, non permittentes eos, vel eorum quempiam super illis quomodolibet indebite molestari. Contradictores quoscumque & rebelles per sententias, censuras & penas Ecclesiasticas, aliæque opportuna juris & facti remedia appellatione postposita compellendo. Et nihilominus legitimis super his habendis servatis processibus, sententiis, censuras, & penas ipsas etiam aggravando, invocato etiam ad hoc si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 6. Non obstantibus fel. record. Bonifacii Papæ VIII. prædecessoris nostri de una & Concilii generalis de duabus dietis, dummodo ultra tres dietas quis vigore præsentium ad iudicium non trahatur, & aliis Apostolicis, necnon in Provincialibus, & Synodalibus Conciliis editis specialibus vel generalibus constitutionibus & ordinationibus, ac quibuscvis etiâ juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque indultis & litteris Apostolicis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, irritantibus, & aliis decretis in genere vel in specie, etiam motu simili, & ex certa scientia ac Apostolicæ potestatis plenitudine, ac aliis quomodolibet, etiâ consistorialiter concessis, approbatis, confirmatis, & sæpius innovatis. Quibus omnibus, etiam si de illis, illorumque totis tenoribus specialis, specifica & expressa mentio, seu aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret (tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata inserti forent, præfentibus pro expressis habentes illis aliis in suo robore permanentibus) hac vice duxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus cõmuniter vel divisim, ab

eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas, non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§. 7. Volumus autem quod præsentium transumptis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, aut alicujus Prælati, vel in dignitate Ecclesiastica constituti, sigillo munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ eisdem præfentibus adhiberetur si forent exhibitæ vel ostensæ.

§. 8. Quodque eadem præfentes in valvis Cancellariæ Apostolicæ, & basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, necnon in acie Campi Floræ per aliquem ex Curforibus nostris publicentur, & inter extravagantes constitutiones perpetuò valituras conscribantur, ac postquam publicatæ fuerint, plenam & indubiam fidem faciant, necnon omnes & singulos illas concernentes perinde ligent, ac si essent personaliter intimatæ.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 3. Octobris 1567. Pont. nostri anno secundo.

Anno à Nativitate Dominica 1567. die verò 16. mensis Octobris, Pont. Sanctiss. in Christo patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa V. Anno ejus II. retroscripta littera affixæ & publicatæ fuerunt in retroscriptis locis ut moris est, per me Alexandrum Aflancollum præfati S. D. N. Papæ Curf.

Philippus Chappius Mag. Curf.

Prohibitio transfundi ab Ordine Fratrum Minorum Capuccinorum S. Francisci de Assisio, ad Ordinem Minorum Sancti Francisci de Paula, & è contra.

Capuccinis est etiam prohibita receptio Fratrum de Observantia à Six. V. in ejus cons. 20. Pro ea, ubi alia indicabo.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

§. 1. Edis Apostolicæ Solertia, dum ad salutare quorundam remedium extracta, in eorum detrimentum vergere conspiciat, nequod illis profuturum maturitate summa prodissiè compertur, noxium incauto ministerio efficiatur, celeris provisionis opem afferre consuevit. prout in Domino conspiciat salubriter expedire.

§. 2. Sanè accepimus, quod cum aliquando contingat aliquos Fratres Religiosos tã Ordinis S. Francisci Capuccinorum, quam S. Francisci de Paula Minorum nuncupatorum, de uno loco ad alium, etiam forsitan absque suorum Superiorum licentia transferri, exinde perturbationes, & mala exempla inter eosdem Fratres sæpius oriri solent.

§. 3. Nos cupientes perturbationibus, & malis exemplis huiusmodi quantum cum Deo possumus obviare, Motu proprio, non ad alicujus instantiam, sed de mera nostra liberalitate, & ex certa nostra scientia, quod de cetero perpetuis futuris temporibus, nullas ex Fratribus Capuccinis ad dictum Ordinem S. Francisci de Paula, nec è converso, quod nullus Frater ejusdè S. Francisci de Paula ad Ordinem Fratrum Capuccinorum huiusmodi, ullo umquam tempore, & quacumque, etiam & quantumcumque iustissima causa, etiam de licentia suorum Superiorum se transferre posse, Apostolica auctoritate tenore præsentium perpetuo statuimus, & ordinamus.

§. 4. Decernentes statutum & ordinationem huiusmodi per Fratres præfatos, sub indignationis nostræ pena, inviolabiliter observari debere, ac ex nunc irritum & inane quicquid secus super his à quoquâ quavis auctoritate tam ordinaria quam delegata, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 5. Non obstantibus Apostolicis, ac in Provincialibus, & Synodalibus editis generalibus vel specialibus

Transumptorum fides.

Forma & effectus publici.

Dat. P. A. 2. die 3. Octob.

Publicatio.

XLV.

Edita An. D. 1567.

Exordium.

Causa huius prohibitionis.

Prohibitio de qua in rub.

Pœna contravenientium.

Derogatio contrariis.

Fides transampiorum.

Dat. P. A. 2. die 6. Oct.

XLVI.

Edita An. D. 1567.

Exordium.

Causa hujus confit.

Quod spolia Monachorum Ordinis Cisterciensis non ad eorum Commendatarios aut Cam. Apost. sed ad loca in quibus professionem emiserunt spectent.

constitutionibus & ordinationibus, ac statutis & consuetudinibus, ceterisque contrariis quibuscunque.

§. 7. Ceterum quia difficile foret presentes litteras ad singula quaque loca, in quibus de eis fides forsitan facienda foret, deferri, volumus ut ipsarum transumptis manu publici Notarii subscriptis & sigillo alicujus personae in Ecclesiastica dignitate constitutae munitis, in iudicio & extrà, ubi opus fuerit, eadem prorsus fides adhibeatur, quae praesentibus adhiberetur si forent exhibitae vel ostense.

Dat. Romae apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris die 6. Octobris 1567. Pont. nostri anno secundo.

Quod spolia Monachorum Ordinis Cisterciensis spectent ad loca & Monasteria in quibus professionem emiserint. Et Commendatarii, aut Commissarii Rever. Camerae Apostolicae in illis se non intromittant.

De institutione & toto statu ejus Ordinis, notavi plenè in const. 1. Pasch. II. sup. fol. 30. Desiderium, in Tomo I.

PIUS PAPA QUINTUS,

Ad futuram rei memoriam.

DECRET Romanum Pontificem iustitiae supremum assertorem ad ea libenter intendere, per quae gratiae a Sede Apostolica in favorem quarumcumque praesertim Religiosarum personarum pro tempore emanatae sunt, ut par est, consequantur effectum, & ut id facilius subsequi possit, dubiis & difficultatibus, quae superinde pro tempore oriuntur, aliquando per declarationes, quandoque vero per alia remedia providere.

§. 1. Sanè cum sicut dilecto filio Hieronymo de la Souchere Abbate generali, vel pro eo dilecto filio Dionyio Lazeronis Procuratore & Vicario etiam Generali Cisterciensis Ordinis referente accepimus, in statutis & consuetudinibus, etià juramento, confirmatione Apostolica vel alia firmitate roboratis, dicti Ordinis, privilegiis quoque indultis & litteris Apostolicis eidem Ordini concessis, ac per felicis recordationis Pium Papam IV. praedecessorem nostrum & Sedem Apostolicam confirmatis, inter alia disponatur, quod in spoliis, rebus & bonis Monachorum Ordinem ipsum professorum, in quibusvis locis & Monasteriis pro tempore decedentium, eorum Abbates, & Priores Commendatarii pro tempore existentes se intromittere nequeant, sed illa Monasterii seu Prioratus aut loci in quo dictum Ordinem expresse professi fuerint, & seu eos decedere contigerit, conventuali mensae applicari & incorporari debeant, defuncto tamen superioribus diebus in Monasterio de Casamari ejusdem Ordinis Verulanensis Diocesis, quod dilectus filius Fulvius Philonardus Clericus, in Commendam ex concessione seu dispensatione Apostolica obtinet, quondam Antonio Pollutio ipsius Monasterii Priore, praefatus Fulvius & quidam Camerae Apostolicae Procurator, aut Commissarius ipsius Antonii bona, ut ipsa forsitan in proprios usus convertere possint, apprehendere & sibi appropriare contendunt, in gravem ipsius Monasterii Conventualis mensae iacturam, praedictum & gravamen.

§. 2. Nos cupientes, ut ea quae per Praedecessores nostros, & Sedem praefatam roborata dicuntur, firmiter observentur, ac sine huiusmodi contentione, futuris autem quantum cum Deo possumus obviare volentes, eosdemque Hieronymum Abbatem & Dionysium ac singulos Monachos Ordinis huiusmodi à quibusvis excommunicationis, suspensionis & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & poenis, à jure vel ab homine quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum harum serie absolventes & absolutos fore censentes, Motu proprio, non ad ipsorum seu alicujus alterius pro eis nobis super hoc oblatae petitionis instantiam, sed de nostra mera liberalitate, quod de cetero tam praefatus Fulvius, quam qui-

cumque alii Commissarii quorumcumque Monasteriorum & Prioratuum vel aliorum locorum dicti Ordinis, tam circa quam ultra montes, & in quibuscumque Mundi partibus constitutum, & quicumque nostri & Camerae praefatae Commissarii & Procuratores quomodocumque in spoliis, bonis & rebus quaecumque sint, tam praefati Antonii quam aliorum quorumcumque Monachorum dicti Ordinis in ipsorum Commendatariorum Monasteriis, Prioratibus, locis & jurisdictionibus pro tempore decedentium, se intromittere non possint, sed illa ad Monachos Monasteriorum, seu Prioratuum vel locorum huiusmodi & seu eorum Conventuale mensam conjunctam vel divisam pleno jure spectare, & pertinere, ac eorumdem Monachorum, seu mensae fore & esse, eorumque possessionem realem & actualem adipisci & continuare, ipsosque Monachos desuper per quoscumque Commendatarios etiam prae-textu cujusvis indulti seu concessionis sibi desuper facti, aut consuetudinis antiquitus observatae, & seu praefatum Commissarium, seu quovis alios quavis auctoritate fungentes molestari, perturbari, vel inquietari non posse, neque debere auctoritate Apost. per praesentes decernimus & declaramus, illaque quatenus opus sit, eidem Monachis concedimus & assignamus.

§. 3. Necnon tam Fulvio, quam quibusvis aliis Commendatariis, & Commissariis praefatis, ne in spoliis, rebus & bonis pro tempore decedentium Monachorum huiusmodi directè, vel indirectè quovis colore, vel ingenio se de cetero intromittere audeant vel praesumant, sub excommunicationis majoris latae sententiae & aliis Ecclesiasticis sententiis, censuris & poenis, et à peccatis arbitrio infra scriptorum Iudicum infligendis & moderandis districtius inhibemus.

§. 4. Ac tam venerabili fratri Episcopo Soranensi & dilecto filio Curiae causarum Camerae praefatae Auditori generali, quae quibusvis aliis Iudicibus quavis auctoritate fungentibus, per quos in praemissis, ut praefertur, & non alias sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi facultate iudicari debere volumus, per praesentes Motu simili mandamus quatenus ipsi & eorum cuilibet per se vel alium seu alios, praesentes litteras, & in eis contenta quaecumque; ubi & quando opus fuerit ac quoties pro parte Hieronymi & pro tempore existentis ejusdem Ordinis Abbatis, seu Dionysii & Monachorum huiusmodi fuerint requisiti solemniter publicantes, eisque, in praemissis, ac tamen dicti Antonii defuncti, quam quorumcumque aliorum Monachorum dicti Ordinis decedentium spoliis & bonis eorumque (cum Monachi ipsi decesserint) possessione adipiscenda efficacis defensionis praesidio assistentes faciant Abbatem & Monachos ipsos statutis, privilegiis, & indultis quoad dicta spolia, res, & bona, necnon decreto, declaratione, concessione, & assignatione, ac inhibitione praefatis pacifice frui & gaudere, non permittent eos desuper per quoscumque quomodolibet indebitè molestari. Contra dictatores quoslibet & rebelles per sententias, censuras & poenas Ecclesiasticas praefatas, aliisque opportuna juris & facti remedia appellatione postposita compellendo. Et nihilominus legitimis super his habendis servatis processibus, sententiis, censuris & poenis ipsas etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc si opus fuerit auxilio brachii secularis.

§. 5. Non obstantibus pie memoriae Bonifacii Papae VIII. etiam praedecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, dummodo ultra tres quis vigore praesentium ad iudicium non trahatur, & aliis Apostolicis necnon Provincialibus & Synodalibus constitutionibus & ordinationibus, ac quibusvis et à juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque indultis, & litteris Apostolicis tam Ordini & Commendatariis praefatis eorumque Superioribus & personis, quam Camerae praefatae, ac quibusvis illius Commissariis & Procuratoribus sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibusvis clausulis, & decretis in genere vel in specie, etiam Confissorialiter concessis, confirmatis,

Inhibito contra Commendatarios & officiales Cam.

Deputatio executorum hujus confit.

Clausula derogatorie.

approbatis, & innovatis. Quibus omnibus etiam si de illis, eorumque totis tenoribus, specialis, specifica & expressa mentio, seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata inferri forent, presentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus hac vice dumtaxat specialiter & expresse designamus, ceterisque contrariis quibuscumque; aut si aliquibus communiter vel divisim ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 23. Octobris 1566. Pont. nostri anno secundo.

Declaratio portionum assignandarum Vicariis perpetuis Ecclesiarum Parochialium, Monasteriis, beneficiis, Ecclesiis vel locis piis perpetuo unitarum.

Hæc bulla in parte respiciet Vicarias Ecclesiarum Mendicantium, ad juris & Concilii Tridentini terminos redunda est à Greg. XIII. in const. 9. In tanta. Et quæ Vicarias Urbis hic idem Pont. assignationem præfinit hic infra in const. 129. Et si omnibus. De ejusmodi autem unionibus & portionibus loquitur etiam in Conc. Trid. in c. 5. & seqq. sess. 7. & c. 9. sess. 14. & c. 13. sess. 24. & c. 16. sess. 25.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

AD exequendum Pastoralis officii debitum, viglantibus studiis intendentes, ad ea per quæ Cathedralium aliarumve Ecclesiarum, necnon Monasteriorum, beneficiorum, seu Collegiorum, ac aliorum piorum locorum prospero profectui, divinique cultus augmento, & opportune congruæque sustentationi parochialium Ecclesiarum eisdem unitarum statui feliciter dirigenda, & personarum in illis curam animarum exercentium utilitati recta ratione, & provida moderatione consuli, & salubriter providi valeat, libenter interponimus nostre sollicitudinis partes.

§. 1. Hinc est quod nos, ad quorum aures (quod non sine animi nostri molestia referimus) pervenit nonnullis ex venerabilibus fratribus nostris Patriarchis, Archiepiscopis, & Episcopis, in deputandis Vicariis, ac in assignatione portionum Vicariis perpetuis parochialium, dictis Ecclesiis, Monasteriis, beneficiis, Collegiis, vel locis piis perpetuo unitarum ex Concilio Tridentino facienda, ita modum excessisse, ut parum aut nihil ex fructibus, redditibus, & proventibus parochialium Ecclesiarum sic unitarum Ecclesiis, Monasteriis, beneficiis, Collegiis, aliisve locis piis remanerent, ob idque multæ ortæ sint super hoc controversæ circa interpretationes decreti dicti Concilii.

§. 2. Nos ad eas tollendas animam intendentes, considerantesque uniones ipsas ideo à Prædecessoribus nostris factas esse, ut ex redditibus, & emolumentis beneficiorum unitorum, Ecclesiis, Monasteriis, Collegiis, beneficiis, & locis piis, quibus illa uniuntur, facilius onera eisdem incumbenda supportarent, & promptius à ministris Ecclesiasticis, in eisdem divina officia celebrarentur, hospitalitas servetur, aliaque caritatis opera exercentur, ac etiam ut nihilominus cura animarum dictarum parochialium laudabiliter exerceretur, Motu proprio, & ex certa nostra scientia auctoritate Apostolica hac nostra perpetuo valitura constitutione statuimus, & ordinamus, ac declaramus, quemadmodum etiam de ipsius Concilii mente fuisse colligi-

mus, Patriarchas, Archiepiscopos & Episcopos præfatos in assignatione portionis ipsi Vicariis perpetuis ex prædicto Concilio ipsorum Prælatorum arbitrio facienda, ita se continere & arbitrari debere, ut non major centum, nec minor quinquaginta scutorum annuorum summa computatis omnibus etiam incertis emolumentis & aliis obventionibus communiter percipi solitis eis omnino assignetur, nisi Vicariis solum fuisset plus assignari, sive in quantitate, aut quota fructuum, pecunieque numerata, fundo, seu alia restabili portio huiusmodi constituitur, cuiuscumque valoris parochialis Ecclesia unita fuerit, & habita etiam ratione reddituum & onerum loci, cui parochialis ipsa unita fuerit, ita quod portiones ultra, vel infra dictas summas scutorum centum, & scutorum quinquaginta hæcenus assignatæ, vel in posterum forsan assignandæ, quod excessum, & defectum huiusmodi nullius roboris, & momenti existant, & ad summas predictas reducæ & audæ respective censeantur, nisi tamen valor annuus ipsius parochialis unitæ habita ratione, ut præfertur, minor sit quinquaginta scutis: quo casu portio assignata, vel assignanda Vicario perpetuo non debeat excedere summam annuatim valoris dictæ parochialis, sed sufficiat quod omnes fructus ejus dumtaxat attribuantur ipsi Vicario perpetuo.

§. 3. Et quoniam iniquum esset, eos qui communis privantur, eadem onera quæ prius sustinebant debere sufferre, volumus & statimus, quod Ecclesiæ, Monasteria, Collegia, beneficia, & pia loca huiusmodi, in quorum parochialibus Ecclesiis unitis contingat Vicarias prædictas erigi, pro quantitatibus fructuum ipsi Vicariis perpetuis assignatorum, ad solutionem quindenniorum, quam nobis & Cam. Apost. solvunt, ulterius non teneantur, sed eis detractio fiat ad ratam certorum, quæ de fructibus dictarum parochialium percipiuntur. Ita tamen quod Vicarii perpetui, qui pro tempore deputabuntur, teneantur accipere à Sede Apost. novam provisionem suæ deputationis, & solvere annuatim pro portione fructuum, reddituum & proventuum certorum sibi assignata, & expedire litteras Apost. nec aliàs ad possessionem dictarum Vicariarum perpetuarum, & servitium earundem parochialium admitti possint, nisi soluta annata, & expensis literis Apostolicis novæ provisionis, ut præfertur, alioquin integrum quindennium solvere debere, nec Vicarii prædicti antea tuta conscientia fructus percipere possint.

§. 4. Volumus insuper, & ita mandamus, quod dicti Vicarii perpetui non ad liberam Ordinarium electionem, sed ad nominationem illorum, in quorum Ecclesiis unitis ponentur, cum ipsorum Ordinarium, seu eorum Vicariorum prævio examine approbatione deputentur.

§. 5. Et si dictæ parochiales unitæ erunt Monasteriis Regularium Mendicantium, possint à Superioribus dictorum Monasteriorum nominari ex ipsis Mendicantibus: quos si Ordinarii prævio examine, per se aut eorum Vicarios faciendo idoneos ad curam animarum exercendam invenerint, & ita pro idoneis approbaverint, teneantur in Vicarios, ad nutum tamen Superiorum suorum amovibiles, deputare. Idemque etiam servetur in regularibus Monachis tantum, dummodo in ea parochiali, in qua unus ex Monachis fuerit, servata forma prædicta, Vicarius deputatus, habitent cum eo saltem quatuor alii ex dictis Monachis.

§. 6. Sicque per quoscumque Judices quavis auctoritate fungentes, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi potestate iudicari & interpretari debere, necnon irritum & inane decernimus, quicquid secus à quoquam quavis auctoritate attentatum forsan est hæcenus, vel in posterum contigerit attentari.

§. 7. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque.

Et ad quos spectat onus solvendi quindennia pro ipsi portionibus.

Eligendique Vicarios.

Fructus Mendicantium, quoad Vicarias locorum unitas.

Vide cit. in rub.

Decretum irritans.

Clausulæ derogatoriæ.

Iussu publi-
candi.Exemplorum
fides.Dat. P. An. 2.
dic. 1. Nov.

Publicatio.

XLVIII.

Edita An. D.
1567.

Exordium.

Causa prohi-
bilionis.Prohibitio
agitationis
Taurorum &
ferarum bes-
tiarum.Moriens ibi
careat Ecclē-
siastica sepul-
tura.
Clerici spec-
tulis non
interfint ne-
que Milites.

§. 8. Volumus autem quod præsentēs litteræ in Cancellaria nostra Apostolica, & ad valvas Principis Apostolorum de Urbe de more publicentur, & inter constitutiones perpetuò valituras describantur.

§. 9. Et quia difficile foret eas ad singula quæque loca deferri, volumus quod earum transumptis etiam impressis manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus Prælati munitis eadem prorsus fides adhibeatur quæ præsentibus adhibetur, si forent exhibitæ, vel ostensæ. Nulli ergo, &c.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno incarnationis Dominicæ 1567. Cal. Novemb. Pont. nostri anno secundo.

Anno à Nativitate 1567. Indiff. 10. die verò 15. mensis Novemb. Pontificatus Sanctiss. in Christo patris, & D. N. D. Pii divina providentia Pape V. anno ejus 2. retrospectæ litteræ Apost. affixæ & publicatæ fuerunt ad valvas Principis Apostolorum de Urbe, & Cancellaria Apostolica, ibidem dimissis copiis affixis per nos Jo. Andreæ Rogerium, & Ant. Clerici Curs. Apost.

Jo. Guerardi Mag. Curs.

Prohibitio agitationis Taurorum, aliarumque ferarum agitarum, cum annullatione votorum, & juramentorum desuper adhibitorum.

Circa vota & juramenta illicita, generalior est prohibitio Greg. XIII. inf. in ejus const. 93. Inter Apostolicas.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

DE salute gregis Dominici, nostræ curæ divina dispensatione crediti, prout ex debito Pastoralis officii adstringimur, sollicitè cogitantes, fideles cunctos gregis ejusdem ab imminentiis corporum periculis etiam animarum perniciæ perpetuo arcere studemus.

§. 1. Sanè licet detestabilis duellorum usus à diabolo introductus, ut cruenta corporum morte animarum etiam perniciem lucetur, ex decreto Concilii Tridentini prohibitus fuerit, nihilominus adhuc in plerisque Civitatibus, & aliis locis, quamplurimi ad ostentationem virium suarum & audaciæ, in publicis privatique spectaculis, cum Tauris, & aliis feris bestiis congregari non cessant, unde etiam hominum mortes, membrorum mutilationes, animarumque pericula frequenter oriuntur.

§. 2. Nos igitur considerantes hæc spectacula, ubi Tauri, & Feræ in circo vel foro agitantur, à pietate, & caritate Christiana aliena esse, ac volentes hæc cruenta turpiaque, dæmonum & non hominum, spectacula aboleri, & animarum saluti quantum cum Deo possumus providere, omnibus & singulis Principibus Christianis quacumque, tam Ecclesiastica quam mundana, etiam Imperiali, Regia, vel quavis alia dignitate fulgentibus, quovis nomine nuncupentur, vel quibuscumque Communitatibus & Rebuspublicis, hac perpetuò nostra constitutione valitura sub excommunicationis, & anathematis penis ipso facto incurrendis prohibemus & interdicimus, ne in suis Provinciis, Civitatibus, Terris, Oppidis & locis, hujusmodi spectacula, ubi Taurorum aliarumque Ferarum bestiarum agitationes exercentur, fieri permittant, Militibus quoque ceterisque aliis personis, ne cum Tauris & aliis bestiis in præfatis spectaculis, ipsi tam pedestres quam equestres congregari audeant, interdicimus.

§. 3. Quod si quis eorum ibi mortuus fuerit, Ecclesiastica careat sepultura.

§. 4. Clerici quoque tam regularibus quam secularibus beneficiis Ecclesiastica obtinentibus, vel in sacris Ordinibus constitutis, sub excommunicationis pena ne eisdem spectaculis interfint, similiter prohibemus,

§. 5. Omnesque obligationes, juramenta & vota, à quibuscumque personis, Universitate vel Collegio de hujusmodi Taurorum agitatione, etiam ut ipsi falso arbitrantur, in honorem Sanctorum, seu quarumvis Ecclesiasticarum solemnitarum, & festivitatum, quæ divinis laudibus, spiritalibus gaudiis, piisque operibus, non hujusmodi ludis celebrari & honorari debent, hæcenus factas, & factæ, seu in futurum fienda, quæ & quas omnino prohibemus, cassamus, & annullamus, ac pro cassis, nullis & irritis haberi perpetuò decernimus atque declaramus.

§. 6. Mandamus autem omnibus Principibus, Comitibus, & Baronibus S. R. E. feudatariis, sub pena privationis feudorum, quæ ab ipsa Ecclesia Romana obtinent. Reliquos vero Principes Christianos, & Terrarum dominos prædictos hortamur in Domino, & in virtute sanctæ obedientiæ mandamus, ut pro divini nominis reverentia & honore, præmissa omnia in suis dominiis, ac Terris hujusmodi exactissime servari faciant, uberimam ab ipso Deo mercedem tam boni operis recepturi.

§. 7. Ac universis, venerabilibus fratribus Patriarchis, Primatibus, Archiepiscopis, & Episcopis, aliisque locorum Ordinariis, in virtute sanctæ obedientiæ, sub obstellatione divini judicii, & interminatione maledictionis æternæ, quatenus in Civitatibus, & Diocesis propriis præsentēs nostras litteras sufficienter publicari faciant, & præmissa, etiam sub penis & censuris Ecclesiasticis observari procurent.

§. 8. Non obstantibus quibuscumque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac exemptionibus, privilegiis, indultis, facultatibus, & litteris Apostolicis, quibuscumque personis cujuscumque qualitatis, & conditionis existentibus, sub quibuscumque tenoribus & formis ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, necnon irritantibus & aliis decretis, in genere vel in specie, etiam Motu proprio, ac alias quomolibet concessis, approbatis, & innovatis, quibus illorum tenores præsentibus pro expressis habentes specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 9. Volumus autem quod præsentēs litteræ in Cancellaria nostra Apostolica, & acie Campi Floræ de more publicentur, & inter constitutiones perpetuò valituras describantur, & earum transumptis etiam impressis manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus Prælati munitis, eadem prorsus fides ubique adhibeatur, quæ eisdem præsentibus adhibetur, si forent exhibitæ vel ostensæ. Nulli ergo omnino, &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo sexagesimo septimo, Cal. Novembris, Pont. nostri anno secundo.

Anno à Nativitate Domini 1567. indiff. 10. die verò 15. mensis Novembris, Pont. Sanctiss. D. N. D. Pii divina providentia Pape V. Anno ejus 11. retrospectæ litteræ Apostolicæ affixæ & publicatæ fuerunt ad valvas Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, ibidem dimissis copiis affixis per nos Antonium Clerici, & Joannem Andreæ Rogerium præfati S. D. N. Pape Curs.

Joannes Guerardus Mag. Curs.

Declaratio quod Ordo Fratrum Minorum Sancti Francisci de Paula, inter Ordines Mendicantes comprehenditur, eorumque gratiis & privilegiis perfruatur.

Alia de hoc Ordine notata sunt in const. §. Six. IV. Sedes. sup. fol. 390. in Tomo I.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Post Sedis benignitas sicut ex debito Pastoralis officii erga omnes fideles generaliter affectum

C. n. r. d. s. omnes de cujuscumque agitationibus irritantur.

Principes hanc functionem servari faciant.

Prælati sub censuris Ecclesiasticis, si iterum procurent.

Quibuscumque non obstantibus.

Fides transumptorum.

Dat. P. An. dic. 1. Nov.

Publicatio.

XLIX.

Edita An. D. 1567.

Exordium.

Ordo Mini-
orum S.
Francisci de
ula habet
nia privi-
gia mendi-
cium ut
p. in conf.
l. Jul. II.
l. 411.

charitatis extendit, sic eos quos sub regularis obser-
vantie jugo divino cultui emancipatos esse cognos-
cit specialiter teneat patrocinio conservare.

§. 1. Exponi sancti nobis nuper fecerunt dilecti
filii Fratres Ordinis Minorum S. Francisci de Paula
jamdudum Apostolica auctoritate approbati, quod
licet inter alia eis concessa privilegia & indulgentia
& singula quatuor Mendicantium Ordinum pri-
vilegia ad Ordinem Minorum hujusmodi, ac il-
lius professores & domos, eorumque Ecclesias per
Sedem Apostolicam extensa, & ampliata fuerint, &
propter ea Fratres Ordinum hujusmodi etiam sub
Mendicantium nomine comprehendere debeant, nec
super praeiis quoquam molestari possint: cum
tamen (sicut eadem expositio subiungebat) ex eo
quod nos nuper in quadam declaratione per nos
sub Mendicantium Fratrum Ordinis certis tunc
expressis de causis facta, praeter S. Dominici, & S.
Francisci, ac Eremitarum S. Augustini, necnon Car-
melitarum Mendicantium Ordines etiam in illis B.
Mariae Servorum inseri voluerimus, ac propterea
facile a quibusdam dubitari merito posset, quod si
Ordinis Minorum Fratres hujusmodi sub illis
comprehendi voluissimus, nos specialem etiam
de illis mentionem omnino fecissemus. Quare ne
super praeiis umquam dubitari contingat, iidem
Fratres nobis humiliter supplicari fecerunt, ut sibi
in praeiis opportune providere de benignitate
Apostolica dignaremur.

re modo
nt. Item
centi, &
er Ord-
s mendi-
ntes itum
mprehen-
declarat.

§. 2. Nos attendentes, eos (cum actu mendi-
cant) non nisi honesta de causa in Mendicantium Or-
dinem esse adscriptos, ac propterea sua privilegia illa
conservare volentes, eosque & eorum quemlibet
a quibusvis excommunicationis, suspensionis, & in-
terdicti, aliusque Ecclesiasticis sententiis, censuris, &
penis a jure vel ab homine quavis occasione, vel cau-
sa latis, si quibus quomodolibet innodati existant,
ad effectum praesentium dumtaxat consequendum,
harum serie absolventes, & absolutos fore censentes,
necnon quarumcumque litium, & causarum, statum,
ac merita, nomina & cognomina Judicum, coram
quibus illae pendunt, ac colligantium, aliorumque
necnon quorumcumque privilegiorum, indulgentiarum,
exemptionum, & immunitatum eis concessorum
praesentibus pro expressis habentes, causasque hujus-
modi ad nos harum serie advocantes, illasque penitus
& omnino extinguentes, ac litigantibus hujus-
modi perpetuum super praeiis silentium imponen-
tes, hujusmodi supplicationibus inclinati, omnia &
singula privilegia, immunitates, exemptiones, fa-
cultates, gratias, libertates, indulgentias, & alias gratias,
tam per nos nuper quam quoscumque Romanos Pon-
tifices praedecessores nostros, & Sedem eandem
quomodolibet Mendicantibus Ordinibus concessa,
ad praefatum Minorum Ordinem de novo exten-
dimus, & ampliamus, ipsosque vere Mendicantes
esse, & sub Mendicantium ordinibus esse & com-
prehendi debere, necnon omnia & singula Concilii Tri-
dentini decreta pro Mendicantibus Ordinibus de-
clarata, & modificata, etiam pro Ordine Minorum
hujusmodi declaramus, & modificamus.

orumque
privilegia
de vari
incipit.

§. 3. Districtius in virtute sanctae obedientiae, ac
aliis arbitrio nostro infligendis penis inhibentes
quibusvis locorum Ordinariis, ac aliis quibuscum-
que, ne eosdem Fratres Ordinis Minorum contra
eos sic concessa privilegia molestare, inquietare,
vel perturbare audeant, vel praesument.

clausulas
servari-
huic bul-
apponit.

§. 4. Decernentes quoque praesentes litteras nullo
umquam tempore de subreptionis, vel obreptionis
vicio, aut intentionis nostrae vel quopiam alio defe-
ctu notari, vel impugnari nullatenus posse minime
sub quibusvis similibus vel dissimilibus gratiarum re-
vocationibus, modificationibus, limitationibus, res-
tutionibus, & aliis contrariis dispositionibus, tam
per nos quam etiam Successores nostros quomodolibet,
ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogato-
riis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, ir-
ritantibusque decretis, pro tempore factis & facien-
dis quorumcumque tenorem existant, includi, sed

illis non obstantibus in suis robore & efficacia per-
sistere, & quoties illae emanabunt toties in pristinum
statum restitutas, repositas & plenarie reintegratas,
etiam sub data per ipsos Fratres Ordinis Minorum
eligenda, de novo concessas esse, & ita incommuta-
bilis voluntatis & intentionis nostrae esse, & ad hoc
ut perpetua firmitate subsistant, vim validi & effica-
cis contractus inter dictam Sedem, & praefatum
Ordinem Mendicantium Fratres hujusmodi habere.

§. 5. Sique per quoscumque Judices & Com-
missarios quavis auctoritate fungentes, etiam causa-
rum Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Card.
fablata eis, & eorum cuilibet quavis aliter judican-
di & interpretandi facultate, & auctoritate, judicari
& definiri debere, irritum quoque & inane si secus
super his a quoquam quavis auctoritate scienter vel
ignoranter contigerit attentari.

clausulam
sublatam,
&c. addidit.

§. 6. Quocirca venerabilibus fratribus Archie-
piscopo Theatino, & Episcopo Amerino, ac dilecto
filio Curiae causarum Camerae Apostolicae generali
Auditori per praesentes committimus & mandamus,
quatenus ipsi vel duo aut unus eorum per se vel alium
seu alios praesentes litteras & in eis contenta quae-
cumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro
parte eorumdem Fratrum Ordinis Minorum fue-
rint requisiti, solemniter publicantes, eisque in pra-
missis efficacis defensionis praesidio assistentes, faciant
auctoritate nostra ipsos Fratres Ordinis Minorum
hujusmodi voluntate statuto, declaratione, & aliis
praeiis omnibus & singulis pacifice frui, & gau-
dere. Non permittentes eos per quoscumque quo-
modolibet indebitum molestari. Contradictores quos-
libet, & rebelles per sententias, censuras, & penas
Ecclesiasticas aliaque opportuna juris & facti reme-
dia appellatione postposita compescendo. Et nihilominus legitimis super his habendis servatis pro-
cessibus, censuras & penas ipsas etiam iteratis vi-
cibus aggravando, invocato etiam ad hoc si opus
fuerit, auxilio brachii secularis.

Executores
ejus deputat.

§. 7. Non obstantibus praevius, ac felicis re-
cordationis Bonifacii Papae VIII. praedecessoris nostri
de una, & Concilii generalis de duabus dietis, dum-
modo ultra tres dietas quis vigore praesentium ad
iudicium non extrahatur, & aliis, necnon in provincia-
libus, & synodalibus Conciliis editis specialibus vel
generalibus, constitutionibus & ordinationibus, ac
quibusvis etiam juramento, confirmatione Aposto-
licae vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consue-
tudinibus, privilegiis quoque, & indulgentiis & litteris
Apostolicis sub quibuscumque tenoribus, & formis,
ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogato-
riis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, ir-
ritantibus quoque & aliis decretis in genere vel in
specie, & quomodolibet per quoscumque Romanos
Pontifices praedecessores nostros praefatos, ac nos &
Sedem praefatam, etiam Motu proprio, & ex certa
scientia etiam consistorialiter, & de Fratrum nostro-
rum consilio, necnon Apostolica potestate plenitu-
dine concessis, confirmatis & innovatis. Quibus om-
nibus etiam si de illis, eorumque totis tenoribus spe-
cialis, specifica, & expressa mentio, seu aliqua alia
exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hu-
jusmodi, ac si verbo ad verbum inseri forent, praesentibus
pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in
suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specia-
liter & expresse derogamus, contrariis quibuscum-
que, aut si aliquibus communiter vel divisim, ab
eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi,
vel excommunicari non possint per litteras Aposto-
licas, non facientes plenam & expressam, ac de ver-
bo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Contrariis
derogat.

Datum Romae apud S. Petrum, sub annulo Fisca-
toris die 9. Novembris 1567. Pontificatus nostri
anno secundo.

Dat. P. An. 2.
die 9. Nov.

Declaratio quod Congregatio Fratrum S. Hierony-
mi Jesuatorum nuncupata, verè comprehenda-
tur inter Ordines Mendicantium, eorumque
perfruatur gratis & indultis.

L.

Re-

Recordare quod ista Congregatio specialiter gaudet omnibus gratiis & privilegiis concessis & concedendis Ordini Fratrum Eremitarum S. Augustini, cujus Regulam proficetur, ut in 16. conf. Clem. VII. sacra. sup. in Tomo I. Alia autem dicam in conf. 16. Paul. V. Religiosos. Tom. III.

Vide quæ addidi ad conf. 11. Pie. Mart. V. sup. tom. 1. pag. 307.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D. 1567.

Exordium.

Causa hujus conf.

Concessio in dultorum Ordinib. Mendicantium enlargitorum.

Connumeratio inter Ordines Mendicantium.

Romanus Pontifex privilegia religiosis Altissimo famulantibus à Sede Apostolica concessa, illis nedum conservare, sed aliis etiam religiosis concessa ad eos quandoque extendere & ampliare consuevit, prout in Domino conspici salubriter expedire.

§. 1. Sanè sicut accepimus, licet inter alia privilegia dilectis filiis & Congregationi Fratrum S. Hieronymi Jesuatorum nuncupatorum, cujus Fratres illam per tempore ingredientibus professionem per religiosos Ordinis S. Augustini emitti solitam expresse emittere, & in communi vivere soliti sunt, concessa etiam omnia & singula privilegia, exemptiones, immunitates, gratias, & indulta Ordini Eremitarum ejusdem S. Augustini, & illius professoribus, ac forsan aliis Ordinibus Mendicantium concessa, ad ipsam Congregationem, & illius Fratres, eorumque domos, & Ecclesias per Sedem Apostolicam extensa, & ampliata fuissent. Et propterea Congregatio hujusmodi, & illius Fratres dictis privilegiis gaudere, & sub Mendicantium numero comprehendendi debeant, nec super præmissis à quoquam molestari possint. Cumque nos nuper in quadam declaratione per nos super Mendicantium Fratrum Ordinibus, certis tunc expressis, de causis facta, ultra S. Dominici, & S. Francisci, ac Eremitarum S. Augustini, necnon Carmelitarum Mendicantium Ordines, solum in illis Ordinem B. Mariæ Servorum inferi voluerimus. Et propterea facile à quibusdam dubitari merito posset quod si dictam Congregationem, & illius Fratres sub illis comprehendendi voluissimus, non specialem etiam de illis omnino fecissemus mentionem.

§. 2. Nos itaque attendentes, eos cum actu mendicant, non nisi honeste de causa in Mendicantium Ordinibus hujusmodi esse adscriptos, ac propterea sua privilegia hujusmodi illis conservare volentes, ac quarumcumque licum, & causarum status & merita, ac nomina, & cognomina Judicum, coram quibus illæ pendent, & colligantur, aliorumque necnon quorumcumque privilegiorum, indultorum, exemptionum, & immunitatum ipsi Congregationi concessorum, tenores præsentibus pro expressis habentes, Motu proprio non ad ipsius Congregationis, vel illius Fratrum aut alicujus ex eis nobis super hoc oblata petitionis instantiam, sed de nostra mera liberalitate, ac ex certa scientia, & de ejusdem Sedis potestatis plenitudine, omnia & singula privilegia, immunitates, exemptiones, facultates, gratias, libertates, indulta, & alias gratias tam per nos nuper, quam quoscumque Romanos Pontifices prædecessores, & Sedem eandem quomodolibet Mendicantibus Ordinibus concessa, eorum omnium ac desuper, & tam sub plumbo, quam in forma brevis confectarum litterarum tenores, ac si de verbo ad verbum infererentur, præsentibus pro expressis, & insertis habentes, ad ipsam Congregationem Jesuatorum, illiusque Fratres, domos, Ecclesias, & loca quæcumque de novo quoad ea quæ eorum Regulæ & modo vivendi non repugnant tantum, auctoritate Apostolica tenore præsentium extendimus & ampliamus.

§. 3. Ipsosque verè Mendicantes, & sub Mendicantium Ordinibus esse & comprehendendi debere, necnon omnia, & singula Concilii Tridentini decreta pro Mendicantibus hujusmodi declarata, & modificata, etiam pro Congregatione hujusmodi, ejusque Fratribus declaramus, & modificamus. Distinctius inhiabentes quibusvis locorum Ordinariis,

ne dictam Congregationem, illiusque Fratres contra eis sic concessa privilegia molestare, inquietare, vel perturbare audeant, vel præsumant.

§. 4. Decernentes quoque præsentibus litteris ullo umquam tempore de subreptionis vicio, aut intentionis nostræ, vel quopiam alio defectu notari vel impugnari nullatenus posse, minuse sub quibusvis similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, modificationibus, limitationibus, restitutionibus, & aliis contrariis dispositionibus tam per nos, quam etiam Successores nostros, quomodolibet, ac etiam cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, irritantibus decretis pro tempore factis, & faciendis, quorumcumque tenorem existant, includi, sed illis non obstantibus in suis robore, & efficacia persistere, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum statum restitutas, repositas, & plenariè reintegratas, & sub data etiam per ipsos eligenda de novo concessas esse, & ita incommutabilis voluntatis, & intentionis nostræ esse. Et ad hoc, ut perpetua roboris firmitate subsistant, vim validi & efficacis contractus inter Sedem Apostolicam, & præfatos Ordines Mendicantium, & Congregationem hujusmodi illasque Fratres habere debere. Sicque per quoscumque Judices, & Commissarios, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Cardinales sublata eis & eorum cultibus quavis aliter judicandi & interpretandi facultate, & auctoritate judicari debere, irritum quoque & inane si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 5. Quocirca venerabilibus Fratribus Amerino & Maceransenf Episcopis, ac dilecto filio Curie causarum Camere Apostolicæ generali Auditori per præsentibus Motu simili committimus & mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum, per se vel alium, seu alios præsentibus litteras, & in eis contenta quæcumque, dum & quando ac quoties opus fuerit, & pro parte Congregationis vel illius Fratrum hujusmodi aut alicujus eorum fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra eos & eorum quemlibet dictis privilegiis, exemptionibus, facultatibus, gratis, & indultis, dictis Ordinibus Mendicantibus concessis, pacificè frui & gaudere, ac præsentibus litteras observari, non permittentes eos desuper per quoscumque, quomodolibet molestari, perturbari, aut inquietari, Contradictores quoslibet, & rebelles per censuras Ecclesiasticas appellatione postposita compescendo, ipsasque censuras etiam iteratis vicibus aggravando, in vocato etiam ad hoc si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 6. Non obstantibus præmissis, & felicis recordationis Bonif. Papæ VIII. prædecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, dummodo ultra tres dietas aliquis auctoritate præsentium ad iudicium non trahatur, ac quibusvis litispendentiis, quas nos harum serie ad nos advocamus, illasque extinguimus, & litigantibus hujusmodi perpetuum silentium imponimus, ac Apostolicis necnon in provincialibus, & synodalibus Conciliis editis specialibus vel generalibus constitutionibus & ordinationibus, ac quibusvis etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis & litteris Apostolicis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, irritantibusque & aliis decretis ac clausulis, etiam motu proprio etiam consistorialiter, & de Fratrum nostrorum consilio concessis, confirmatis, & pluries innovatis. Quibus omnibus, etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia expressio habenda foret tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum infererentur, præsentibus pro plenè & sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore

Clausula præservata.

Judicium & executionem deputato.

Clausula derogatoria.

permanens, hac vice dumtaxat specialiter & expressè derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque, aut si aliquibus communiter vel divisim, ab eadem sic Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per literas Apostolicas, non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub anno 18. Piscatoris, die 18. Novembris 1567. Pont. nostri anno 2.

Prohibitio signandi & expediendi commissiones causarum, & inhibitiones in causis spoliatorum & illicitæ negotiationis, non citato prius Commissario R. Cam. Apost.

De munere & auctoritate Commissarii, vide plenè in cons. 82. Pii IV. Cum inter. fol. 120. & infra in cons. 44. Six. V. Ad excessum, ubi notabo.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Attendentes quàm frequenter contingat, quod qui bona ad Cameram Apostolicam spectantia & signanter spolia per Clericos cedentes relinquant, variis prætextibus, & calumniis, dilationes & subterfugia querentes, illorum consignationem facere, & debitam satisfactionem impedire recusant, & ut se in huiusmodi injusta detentione confoveant, modò frivolæ appellationes confingunt, modò inhibitiones summa malitia extorquent, quibus causas ad Iudices non informatos, & ubi non est qui causarum huiusmodi expeditioni vacet, trahunt in grave animarum suarum præjudicium, & Cameræ præfatæ lesionem.

§. 1. Et propterea incommotis huiusmodi obviare volentes, dilectis filiis Vitellorio S.R.E. Card. Camerario, ac omnibus Romanæ Curie Iudicibus, tam ordinariis quàm delegatis, in virtute sanctæ obedientiæ, & sub indignationis nostræ pœna precipimus & mandamus, ne in causis spoliatorum, vel illicitarum negotiationum per Clericos factarum, inhibitiones aliquas, tam auctoritate sua ordinaria, quàm etiam vigore rescripti extra Romanam Curiam ad quasvis Mundi partes, & contra quosvis collectores, decernant, & relaxent, nisi prius in ipsa Romana Curia ad illas de. e. ni videndum dilectus filius Cameræ Apostolicæ Commissarius generalis fuerit citatus, & de citatione huiusmodi in actis appareat, & de ea in inhibitione ipsa mentio fiat.

§. 2. Porro Signaturæ nostræ tam gratiæ quàm Iustitiæ Referendarii, ac Cancellariæ Apostolicæ Corrector, & Auditor contradicitarum, similiter commissiones in causis huiusmodi nullo modo, nisi prævia citatione ejusdem Commissarii expediant.

§. 3. Et si quandoque contingat ita sub verborum involucrio, vel alia narrativa commissiones accipi, ut discerni non possit, an de causis spoliatorum, vel illicitarum negotiationum agatur, tunc tam nunci Apostolicis in Provinciis residentes, & de causis huiusmodi cognoscentes, quàm dilectio filio Thesaurario nostro generali spoliatorum collectore, & eisdem nunciis deputati subcollectores, quibus inhibitiones huiusmodi præsentari contingat, illis minime parere teneantur, sed absque aliquo scrupulo, aut penarum incurfu, illis rejectis, ad ulteriora procedere possint & debeant, partibus aliis iustitiam ministrando, & nihilominus irritum & inane decernimus, quicquid contra præsentium tenorem, fuerit decretum vel attentatum.

§. 4. Volumus autem quod præsentis Motus proprii cedula, valvis Cancellariæ & Cameræ Apostolicæ per unum ex Curforibus nostris, ut moris est publicata, ita omnes Romanæ Curie officiales, & Iudices afficiat, ac si personaliter singulis intimata foret.

§. 5. Et quod illius sola signatura, etiam absque data & registratura sufficiat, & ubique fidem faciat, contrariis non obstantibus quibuscumque.

Placet Motu proprio, M.

Die 5. Januarii 1568. retroscripte litteræ affixæ & publicatæ fuerunt in valvis Cancellariæ Apostol. per me Nicolaum de Matthæi Curf.

Franciscus Sottocassa Mag. Curf.

Quod Fratres Ordinis Minorum S. Francisci de Observantia, semper possint extra tempus Quadragesimæ & Adventus, in feria quinta, in qua non occurrit aliquod festum, aut ejus octava, recitare officium Sanctiss. Corporis Christi.

Alia de hoc Ordine indicavi sup. in cons. 23. Leon. X. Itc. in Tom. I.

PIUS PAPA V.

Dilectis filiis Ministro Generali, & universis fratribus Ordinis Minorum de Observantia.

§. 1. **E**xponi nobis nuper fecistis, quod cum vos mente recolentes Dominum nostrum Jesum Christum transitarum de hoc mundo ad Patrem in ultima cœna, qua pascha cum discipulis suis manducavit admirabile Sacramentum pretiosissimi corporis & sanguinis sui instituisse, ut universi Christiani illud tamquam suæ Caritatis, quam in Cruce ostendit, memoriale recolerent, pro ipsius Domini corporis solemniiori & specialiori veneratione, desideratis qualibet quinta feria officium de Christi corpore, prout in Breviario Romano ipsius solemnitate die habetur recitare, si vobis ad id Sedis Apostolicæ suffragaretur auctoritas. Quare nobis humiliter supplicare fecistis, ut vobis in præmissis opportunè providere, de benignitate Apostolica dignaremur.

§. 2. Nos pium hoc vestrum desiderium plurimum in Domino collaudantes, ac huiusmodi supplicationibus inclinati, vobis & vestrum cuilibet ubilibet existentibus, ut qualibet quinta feria, quæ toties Quadragesimæ, & Adventus Domini non fuerit, aut in qua aliquod festum seu octava non incidit, omisso occurrenti officio, illud de corpore Christi, juxta illud quod in præsentis Breviario Romano, in ejus solemnitate die recitandum proponitur, recitare liberè & licitè valeatis, ita tamen quod illud sic recitando, debito ad quod adstricti estis, in omnibus & per omnia perinde satisfacere censeamini, ac si officium pro tempore currens, & vobis à Romana Ecclesia propositum recitaretis; nec propterea illo recitato ad occurrentes huiusmodi, vel alicujus alterius officii recitationem teneamini, nec ad id, à quoquam inviti, cogi aut compelli possitis, minus ut aliquas sententias, censuras, & penas quomodolibet latas incurrentes, auctoritate Apostolica per præsentem indulgemus.

§. 3. Distinctius inhibentes quibuscumque locorum Ordinariis, & quibuscumque aliis, quacumque auctoritate fulgentibus, vel quibuscumque gradus existentibus, ne vos & vestrum quemlibet quovis prætextu super præmissis quomodolibet molestare, perturbare, aut inquietare sub excommunicationis sententia, aliisque arbitrio nostro moderandis & insignendis pœnis audeant vel præsumant.

§. 4. Non obstantibus præmissis, ac quibuscumque Apostolicis, necnon in Provincialibus constitutionibus & ordinationibus generalibus ac synodalibus Conciliis editis, atque Ordinis præfati, & quibuscumque aliis etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate roboratis, statutis, consuetudinibus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 5. Ceterum quia difficile foret præsentis litteras ad singula quæque loca in quibus expediens foret deferre, volumus & similiter Apost. auctoritate prædicta decernimus, quod illorum transumptis

Sola signatura sufficit.

Papæ subscript.
Dat. P. An. 2.
die 5. Jan.

LII

Edita An. D.
1568.

Fratres Minorum de Observantia supplicarunt pro licentia celebrandi qualibet 5. fer. officium corp. Christi.

Hic ergo prædictam licentiam concedi, præterquam in quadragesima & Adventus Domini, & in festo vel octava, occurrente in dicta 5. feria.

Ordinariis & aliis mandatur Frates de. super molestant.

Contrariis derogat.

Transumptis credi jubet.

D. P. An. 12.
die 8. Januarii.

LIII.

Unio Fratrum Amadeorum, & Clarenorum, Ordini Fratrum Minorum S. Francisci de Observantia.

Scias nonnullos de prædictis Fratribus, ad Conventuales Frates transivisse, quos tandem ibi permanere posse concessit Greg. XIII. die 20. Decembris 1581. cujus tamen bullam uti minus necessariam præmittimus. De toto autem Ordine Franciscano plene notavi sup. ad const. 6. Honor. III. Solet. fol. 66. Tom. I.

Edita An. D.
1568.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

S. Franciscus in humanis existens multos fratres sub unica regula collegit.

BEatus Christi Salvatoris Confessor Franciscus dum adhuc mortalis hujus vitæ spatia decurrebat, ardentissimo celestium amore captus, nec sibi tantum illa, sed quamplurimis hominum fieri potest, quaerita cupiens, totusque in idipsum incumbens, quæ Ordinis Minorum initia fuerunt, confluentes ad se veluti ad meliorem frugem undique Fratres suos in unam familiam collegit, collectosque ipsorum omnium vitam & mores, ad unam eandemque regulam dirigens, iis præceptis instituit, ea disciplina formavit, quæ ad conjunctionem, atque adeo unionem inter illos conciliandam ac tuendam maxime pertinerent, humilitatem illis præcipue amplectendam proponens, qua humana hæc omnia & fluxa, quod ejusdem Salvatoris consilium fuerat, aspernati, solidam ac permanentem à Deo felicitatem expectarent. Itaque hac ipsa familia suas operas ad præscriptam rationem graviter conferente, Domini Dei nostri ager egregie cultus uberimos & præstantissimos fructus contiguo protulit, & subinde profert, atque, ut speramus, proferet in dies suaviores & largiores.

Sed dicta regula in pluribus congregationes segregata fuit.

Hic dignosce ex his quæ notavi in constit. Hon. III. cit. in rub.

Ideo hic Pont. interdicat omnes Congregationes discrepantes ab institutis regulæ fratrum Minorum de Observantia.

§. 1. Verum quoniam eadem familia, quæ una ab uno constituta fuerat, in quasdam quasi partes paulatim ita concessit, ut jam non una, ne ipso quidem, quo à parte suo vocata est, nomine consistat, sed variis agnominibus cum de illa, vel illa parte agitur sit distinguendum. Propterea nos ne animorum quidem, aut mentis inter eos, quos exterius ita rebus se junctos cernimus, interiorem conjunctionem sperare tuto valeamus, quin etiam quando in eam de qua supra diximus, spem erecti ab ejusdem Ordinis fratribus optima quæque, & maxima ad Dei gloriam, & militantis Ecclesiæ utilitatem & optamus, & sanè pro ea, quam in hoc præcelso Dignitatis fastigio collocati, nostro muneri debemus diligentia exigimus, non finimus carere cura, ne forte rebus ita neglectis, quod Deus Opt. Max. avertat, magna inde sensim incommoda subeamus.

§. 2. Id igitur quæ possumus ope post petum à Deo auxilium cavere volentes, atque hic potissimum incipientes, Motu proprio atque ex certa scientia & matura deliberatione nostra Apostolica auctoritate, deque Apostolicæ potestatis plenitudine, Amadeorum & Clarenorum, etiam della Becca nuncupatorum S. Petri in Monte Aureo, & S. Hieronymi, sive S. Bartholomæi in Insula de Urbe, aliarumque quarumlibet provinciarum respectivè fratrum Ordinis S. Francisci eorumdem institutiones, congregationes, conventus, denominationes, nomina & vocabula quæcumque, necnon quatenus regularibus institutis fratrum dictis S. Francisci Ordinis familiæ, Minorum de Observantia vocatorum, discrepant, eorum regulas, instituta, constitutiones, statuta, consuetudines, & ritus, modumque & nor-

mam vivendi interdiximus & prohibemus; illaque necnon illorum promissiones, confirmationes & approbationes Apostolica auctoritate factas, & illorum causa privilegia, indulta, gratias, & litteras, etiam à Sede Apostolica, & forsitan occasione concordiarum inter ipsos Fratres interitarum confirmationum, ac motu, scientia, potestatisque plenitudine similibus, vel etiam consideratione, vel ad instantiam Imperatoris, Regum, & aliorum Principum concessa, & quibuscumque concepta formulis, ac suffulta decretis, quorum omnium tenores iis litteris haberi volumus pro expressis, extinguimus, supprimimus, revocamus, cassamus, & in perpetuum, penitus & omnino omnia tollimus.

§. 3. Eos autem omnes & singulos Fratres qui ejusmodi segregationum, & denominationum erant, cum eorum omnibus dominibus, Ecclesiis, Oratoriis, & locis quibuscumque ubicumque consistant, Fratribus Ordinis Minorum familiæ de Observantia vocatis, eorumque Congregationi aggregamus atque unimus. Et sic in posterum ex nunc perpetuò aggregatos & unicos esse dictis de Observantia adherere, & eisdem, quibus illi utuntur, regula, regularibus institutis, professione, moribus, habitu, ac vivendi forma, ac agnominibus & denominationibus uti, ac unam familiam tantum de cetero esse, eisdemque Generalibus seu Provincialibus Ministris, ceterisque Superioribus, aut officialibus, quibus illi subsunt, aut pro tempore suberant, subiectos esse, & in eandem immediatè cum illis obedientiam Deo servire, purè, ordinariè & uniformiter, nullaque, pro fus re, nulloque discrimine se junctos, aut dissimiles habere decernimus.

§. 4. Quinimo ut hæc puriore conscientia, ac tranquilliore animo præstare valeant, debeantque & non aliter, eisdem priorum institutorum, rituumque & aliorum supradictorum, iis scilicet dumtaxat, quibus ab institutis & ritibus Fratrum de Observantia differabant, necnon si quibus quavis ratione, aut modo, jure ut facto iis tenebantur, vel etiam tenerent, aut teneri se opinantur, promissione, professione, juramento, aut voto, quorum observatio scandalum, aut perturbationem iudicio superioris ceteris allatura esset, absolvimus & liberamus, mandantes ipsorum universis & singulis, ut præmissa non impediant, neque eis ulla ex parte ulla ratione, ulloque modo resistent vel adversentur, ac nihil faciant vel experiantur, aut tentent, quo minus plenè aut celeriter, aut facile suos effectus consequantur. Neque ut ea virent, secularium habita lateant, vel tamquam Clerici sæculares ad aliquos Ordines minores vel majores promoveri præsumant. Neque verò ad alias religiones aliove Ordines etiam parvis vel archiepiscopali regulæ, regularisque Observantiæ transeant, sine licentia Sedis Apostolicæ speciali, sed præfatis Fratribus de Observantia, eorumque congregationi & obedientiæ adhereant, & omnibus aliis supradictis quam primum pareant, & obsequantur re ipsa.

§. 5. Quod si eorum quispiam secus fecerit, omnes illas meritis sententias, censuras, & penas eo ipso incurrat, & patiantur, quæ mere Apostolice ipsi, tam juxta canonicas sanctiones, quam dicti Ordinis regularia instituta incurrant & patiantur, ac perinde contra illum, sive ab Ordinariis locorum, sive ab ipsis superioribus Fratrum de Observantia ad quos pertinet, procedatur, & severe animadvertatur, atque contra verè Apostolatam procedatur, & animadvertatur. Et si quando ad obedientiam reverteris in aliorum consortium receptus fuerit, vocis tam activæ quam passivæ, suorumque Ordinum omnium perpetuò careat.

§. 6. Ceterum ut universa Congregatio Fratrum hujusmodi de Observantia hoc additamento quasi colonis aucta, placida simul perpetuæque pace fruatur, & conquiescant, neque uno tantum nomine, sed una etiam mente consistant, nullaque ibi alterandi occasio subrepat, eisdem Motu, scientia, & potestatis plenitudine statuimus & ordinamus, ut nullus ex veteribus Fratribus de Observantia quemquam sic noviter aggregatorum recordatione priorum nominum, aut

Omnesque illas Congregationes sub ordinem dictorum Fratrum de Observantia

Et juramentum, & promissiones, quæ eos impedire possunt

Fratribus promissa implere recusantibus penas hiis descriptas imponimus

Et fratres aggregati alio quam Observantiæ nomine appellari prohibent, & eorum antiqua privilegia regulæ de Observantia non contraria retinere possint

aut vitæ, vel alias quocumque modo irritare, aut Amadæum, vel Clarenm, seu alia, quam de Observantia nuncupatione appellare audeant. Qui contra ausus fuerit, à suo superiore graviter puniatur, ipsi quin etiam sic aggregati Fratres suos gradus, & quæ ratione suorum graduum privatim habent, privilegia, facultates, & auctoritates, institutis tamen regularibus de Observantia expresse non contraria, ut prius retineant.

§. 7. Universi verò eisdem privilegiis, facultatibus, immunitatibus, prærogativis, indultis, & gratiis indistinctè fruantur & potantur, quibus & ipsi veteres; ac quoties provincialia, vel generalia Capitula habebuntur, ita horum quisque pro ea in qua ipse fuerit, provincia, si tamen alias vocem in Capitulo habiturus fuisset, illis intersit, quemadmodum & veterum quilibet intersit vel interesse poterit, & pariter ut illi, tam in eisdem capitulis ipsorum capitulum electione, quam extra capitula, Superiorum, ad quos pro tempore pertinebit, dispositione, ad quoscumque gradus, & quæcumque officia, in quibuscumque Provincialium, sub quibus deget, Conventibus & domibus regularibus, tam antiquis quam noviter unitis de Observantia promoveri & assumi valeat. Denique ita utrique semper inter se agant, ut ceteris pares, sola antiquitate alteri alteris præferantur: ita scilicet, ut inter gerentes pares gradus vel pares ordines, suscepti gradus vel ordinis, inter alios verò emissæ professionis tempora incipiantur, & prout quisque antecedit tempore, sive sit ex veteribus, sive ex noviter aggregatis, loco in Choro, & Capitulo, processibus, ac quibuscumque aliis prærogativis antecedit, servata interim graduum & ordinum majoritate.

§. 8. Præterea nulla omnino Domus, quamvis parva, & exigua, nullusque locus regularis, ubi dicti Fratres hæc tunc aggregationem de ipsis, ut supra factam habitare soliti sunt, ad ipsos quæcumque ratione pertinet, relinquatur absque permissione nostra expressa, sed tot Fratribus unaquæque continuo habitetur, quot ibi commode esse, & alii poterunt, & quæ eisdem Domibus elemosynæ, vel alio nomine pia hominum largitione offeruntur subsidia, pariter si quæ ad restaurationes fulcimenta, vel alium usum fabricarum, necnon ad Ecclesiarum lumina, & ornatum, vasorumque ac ceteræ suppellectilis comparationem tradita, legata, relicta, aut quocumque nomine donata sunt, etiam consideratione prioris institutionis, quæ ibi tunc vigeat, ac contemplatione Congregationum, quarum tunc temporis erant, illarumque nomine expresso, eadem omnia, & alia insuper quæcumque, quavis aliter donantium huiusmodi dispositione absumenda, novis habitatoribus, in supradictos tantum, neque alios ullos convertenda usus, omni prorsus quantum ad unionem præfatam pertinet, caducitate, ejusve prætensione seclusa, integre detineantur.

§. 9. Gubernatio quoque & cura quorumcumque Monasteriorum Monialium, quæ antea Conventibus, aut Superioribus huiusmodi Domorum, & locorum demandata erat, ad illos pertineat, qui ibi erant, in posterum.

§. 10. Proinde possit Generalis Minister in omnibus quarumcumque Provincialium Domibus, sicut supra, unitis, donec Generalem, vel in ipsa Provincia, in qua illæ sitæ fuerint, Provinciale Capitulum celebretur, Officiales & Fratres, sive ex veteribus, sive ex nunc aggregatis, sive etiam ex utrisque, quo & qui sibi visi fuerint arbitrio suo liberè deputare, & ad illarum regimen & directionem mittere; interea vero temporis ipsi Fratres sic noviter aggregati, si Citramontani fuerint, in illius, in qua nati sunt, si vero Ultramontani, in illius, in qua maluerint Provincialium Domibus regularibus sint, & maneat, usquequo aliter constituantur, & ipsos ad aliam domum, altiusve locum mitti, sive Capituli, sive Generalis Ministri huiusmodi ordi-

natione contingat. Porro in Capitulo Provinciali Mediolanensium fratrum de Observantia, quod Mediolani proximè celebrabitur, omnibus Provincie Mediolanensis regularibus Domibus de Observantia, tam antiquis quam nunc unitis, ut præfertur, de Guardianis aliisque Officialibus & Superioribus, ac Fratribus, qui illas regere, & in illis esse debeant, ex utrorumque Fratrum veterum scilicet, & nunc aggregatorum numero indifferenter, alias tamen ex more inter Fratres de Observantia prius observato provideatur; idem deinceps in ceteris, quæ per Provincias subinde celebrabuntur Capitulis quoad ipsarum Provincialium Domos, observetur, ac in Provincialium numero, terminisque & denominationibus ea ratio atque distinctio habeatur, quæ inter Fratres de Observantia ante has ipsas litteras habebatur.

§. 11. Nuper autem aggregata Domus eam Provinciam transeat, & in ea numeretur, intra cuius fines quæque consistit; & cum pro tempore Provinciale Capitulum celebrandum erit, ii tantum ad illud conveniant, quæ ex illa Provincia fuerint, in qua tunc Capitulum celebrabitur. In ipso vero Mediolanensi, quod primum omnium post has litteras propediem celebrandum est, quicumque ex Fratribus aggregatis, qui ante aggregationem à nobis, ut supra factam, ubicumque locorum degentes erant, & Provincia S. Petri in Monte Aureo de Urbe, & alia comprehendebantur, & idcirco vocem in Capitulo habeant, quoniam litterarum ignari illuc forte omnes se conferrent, possint quidem liberè omnes hac vice celebrationi adesse, sed ii tantum ex eis jam nunc ibi vocem habeant, & suffragia ferant, qui sunt ex illis Domibus, quæ juxta aggregationem prædictam intra antiquos limites, & fines Provincie Mediolanensis Fratrum de Observantia sunt sitæ.

§. 12. Has porro litteras, & his litteris contenta, decreta, statuta, ordinationes, & alia omnia usque adeo firma & valida, atque observanda esse volumus, ut nunquam revocari, aut infringi, vel suspendi, namquam de voluntatis, aut mentis nostræ defectu oppugnari possint, nunquam adversus & restitutionem in integrum, reductionem ad terminos juris, aut aliud quodcumque gratiæ vel iustitiæ remedium quisque impetrare, vel etiam ab aliis impetrato, aut motu simili concessio uti valeat ex quavis causa quantumlibet rationabili, & ita de his omnibus & singulis, ac simul quod hæc eadem aliquibus ejusmodi statutorum, & ordinationum revocationibus, suspensionibus, & aliis contrariis dispositionibus, generalibus vel specialibus, ab eadem Sede Apostolica pro tempore factis, non comprehendantur, sed ab aliis semper excepta sit.

§. 13. Sicque à quibuscumque Judicibus ordinariis & delegatis, & causarum Palatii Apostolici Auditoribus, ac S. R. E. Cardinalibus, etiam de latere Legatis, in quavis causa & instantia, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter interpretandi & iudicandi facultate & auctoritate, interpretari & iudicari debeat, necnon quicquid secus à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit attentari, irritum & inane decernimus.

§. 14. Propterea dilectis filiis Carolo tit. S. Prædixi presbytero Card. Borromæo nuncupato, dicti Ordinis Protectori & correctori, necnon pro tempore existenti ejusdem Ordinis generali Ministro mandamus, ut ambo, vel ipsorum alter has litteras, & quicquid in proximè Provinciali Capitulo Mediolanensi utroque vel altero ipsorum præsidere pro superscriptorum omnium executione & observatione ordinabitur, faciant per se vel alium, seu alios, ab omnibus & singulis Fratribus præfatis exactissime observari. Contradictores quoslibet & non parentes, ac rebelles per sententias, censuras, & penas Ecclesiasticas, ac etiam graduum, officiorum, & vocis, tam activæ quam passivæ privationem, ac cetera quæ sibi videbuntur opportuna juris & facti remedia, quacumque prorsus appella-

Loca aggregata sunt ejus provincie intra cujus fines existunt.

Clausula præservativa.

Decretum irritans.

Executores deputatio & facultates.

Clausula de-rogatoriz.

tionem postposita. & etiam rejectis, compescendo, atque eosdem in sententias, censuras & penas prædictas incidisse declarando, easque sæpius aggravando, adhibita etiam, si opus fuerit, manu militari, & invocato auxilio brahii secularis.

§. 15. Non obstantibus præmissis, ac nostra de non tollendo jure quæsito, ac pia mem. Bonifacii Papæ Octavi prædecessoris nostri de una, & in Concilio generali edita de duobus dietis aliisque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon Ordinis & Congregationum hujusmodi jramento, confirmatione Apostolica, & quavis alia firmitate roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, & indultis Apostolicis, illis per quoscumque Romanos Pontifices, ac Sedem Apostolicam, & etiam nos sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis, in genere & in specie concessis, & quociescumque confirmatis & innovatis, & Mare Magnum nuncupatis, ac quibuslibet aliis indulgentiis, & litteris Apostolicis, per quas his litteris, non expressa vel etiam non inserta harum effectus & executio impediri valeret, vel tardari, & de quibus quorumque totis tenoribus habenda esset mentio specialis.

Transumptorum fides.

§. 16. Volumus etiam quod harum litterarum exempla, etiam impressa dicti Caroli Cardinalis & Protectoris, aut Generalis seu alicujus Provincialis Ministri Fratrum sigillo, & ejusdem Caroli Cardinalis Secretarii, vel ipsiusmet Generalis, aut Provincialis Ministri manu obsignata, eandem fidem in judicio & extra judicium ubique locorum faciant, quam hæc littera ipsæ facerent, si ostenderetur vel exhiberetur.

Dat. P. An. 3. die 23. Jan.

Nulli ergo &c.
Datum Romæ, apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1568, 10. Kal. Febr. Pontificatus nostri Anno 3.

LIV.

Jurisdicctio & facultates S.R.E. Cardinalis Protectoris, ac Judicis causarum Monasterii S. Catharinæ de Rosa nuncupatæ & Congregationis in Urbe institutæ ad ibi recipiendas, pieque educandas Virgines miserabiles, in periculo amittendæ pudicitie commorantes.

Ordinationes circa istarum Virginum contractus, ultimæque voluntates, & alimentorum subministratioem edixit Clem. VIII. in const. 93. Apostolice. in Tomo III.

Edita An. D. 1568.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Facultas Protectoris & deputatorum, puellas in periculo amittendæ pudicitie existentes invitæ parentibus capiendi illasque etiam eas occultantes &c. coercendi.

Cupientes ut Monasterium Beatæ Catharinæ de Rosa nuncupatæ de Urbe, jamdudum pro receptandis, & advocandis miserabilibus puellis, quæ in periculo pudicitie subvertendæ, in dicta Urbe reperiuntur erectum, & Confraternitas ibidem pro gubernio dicti Monasterii canonicè instituta, non solum manteneantur, verum etiam indies incrementum suscipiant, Monasteriumque & Confraternitatem hujusmodi specialibus gratiis & favoribus prosequi volentes. Motu simili ex certa nostra scientia, ac de Apostolica potestate plenitudine, dilecto filio nostro Hippolito tit. S. Mariz Novæ presbyt. Card. Ferrariensi nuncupato, nunc & pro tempore Monasterii, & Confraternitatis hujusmodi existentis Protectori, seu Confraternitates prædictæ, illiusque Administratoribus, Gubernatoribus, & deputatis, quod quascumque puellas in periculo pudicitie existentes amittendæ, & si bene visum fuerit propria auctoritate, etiam invitæ parentibus capere, & in dictum Monasterium introducere, illasque tam dum in dicto Monasterio manserint, quæ etiam inde egressæ sive nuptæ, sive viduæ fuerint, necnon occultantes & latere facientes, carcerare, punire, corrigere, & castigare, eorum arbitrio, seu alias juxta eorum statuta & pro-

vidas ordinationes possint & valeant, concedimus, statuimus, decernimus & mandamus.

§. 1. Necnon pro ipsius Monasterii, Confraternitatisque Monialium, & puellarum minori dispendio, ne cogantur per diversa tribunalia litigare, omnes & singulas causas, lites, quæstiones, & controversias civiles, criminales, profanas, spirituales, meras & mixtas inter Confraternitatem, seu ejus Administratores, gubernatores, & deputatos hujusmodi, Moniales, seu puellas in dicto Monasterio degentes, seu quæ inde egressæ, & nuptiæ traditæ sunt ex una & quascumque alias personas cujuscumque dignitatis, gradus, ordinis, conditionis & præminentiæ existentes, Universitates, Societates, Congregationes, & Monasteria, aut alia loca pia, ex altera partibus, etiam si coram S.R.E. Camerario, Clerico, & Præsentibus Cameræ Apostolicæ, & ejusdem Cameræ generali Auditore, necnon Vicario, Gubernatore, & Senatore dictæ Urbis, illorum Locatentibus, Collateralibus, & Judicibus, ac dictæ Urbis causarum Appellationum Capitaneo, & Sacri Palatii Apostolici Auditoribus, & ejusdem S.R.E. Cardinalibus, aliisque Judicibus ordinariis seu delegatis, hujusmodi motas, & pendentes, & desuper statu & bonis, tam Monialium quam puellarum, necnon quibuscumque locationibus, venditionibus, legatis, si leicommis, testamentis, hæreditatibus, atque illorum discessu, bonis, acque quorumcumque jurium, & actionum cessionibus, aliisque inter vivos contractibus, etiam vigore obligationis in forma Cameræ executionibus, revocationibus, bonis, rebus, juribus & actionibus ad Confraternitatem prædictam, ejusque Gubernatores, Administratores, & deputatos, Moniales & puellas prædictas, tam conjunctim quam divisim, ac tam active quam passive spectantibus & pertinentibus, in quacumque instantia, (quarum omnium & singularum statum, & merita, necnon judicium & colligantium nomina & cognomina, ac qualitates, ceteraque de necessitate exprimenda pro expressis habentes) in statu, & terminis in quibus nunc reperiuntur, harum serie ad nos advocantes, illasque omnes & singulas, motas & pendentes, ac quam & quas Confraternitas, gubernatores, administratores, & deputati, necnon Moniales, & puellæ ibi degentes, & illæ quæ exinde egressæ, & nuptiæ traditæ sunt, & pro tempore fuerint habere volent contra easdem personas, Universitates, & Collegia, Congregationes, Confraternitates, Monasteria, & alia hujusmodi pia loca, pro rebus, bonis, hæreditatibus, juribus & actionibus hujusmodi, nunc & pro tempore Monasterii Confraternitatis præfatarum existentis Protectori præfato, una cum illarum emergentibus, dependentibus, incidentibus, annexis, & connexis, summarie, simpliciter, & de plano, & sola facti veritate inspecta, ac sine strepitu & figura judicii, per seipsum, seu alios à se deputandos, in quacumque instantia usque in finem audiendas, cognoscendas & sine debito terminandas, auctoritate Apostolica tenore præsentium committimus & mandamus. Ipsumque Protectorem nunc & pro tempore existentem in dictis causis motis pendentibus, & in futurum movendis, in judicem ordinarium cum facultate eadem causas, in quacumque instantia usque ad finem per seipsum vel alium, seu alios ejus Auditores, illas cognoscendi, decidendi & terminandi & aliis facultatibus prædictis, facimus, constituimus, & deputamus.

§. 2. Necnon cum potestate citandi & inhihendi, quos, quibus, & quoties, in Curia & extra eam, etiam per edictum publicum confitit etiam de non tuto accessu ejusdemque, quam & quibuscumque aliis ejusdem Urbis judicibus & personis, tam Ecclesiasticis quam secularibus, quibus & quoties opus sit, & sub sententiis, censuris, & penis Ecclesiasticis & pecuniariis, quibus sibi, seu ab eo pro tempore deputando Auditori videbitur inhihendi, & in eventum non partitionis contra inobedientes,

Facultas Protectoris & Judicis causas civiles & criminales, Motus S. Catharinæ, ejusque Confraternitatis, Monialium, & puellarum etiam à Monasterio egressarum, & nuptiæ traditarum in quacumque instantia summarie &c. cognoscendi.

Inhihendi quæ in Curia & extra, & inobedientes coercendi. Necnon singularibus diebus horis procedendi.

Notarium
deputandi.

Mandatarii
omnes ci-
tant.

Executores
que exequan-
tur.

Confraterni-
tas, Monia-
les puellæ, &
admirat.
eorum Præ-
torum duma-
taxat conveni-
re & conve-
niri possunt.

Clausulæ
præservati-
væ.

Clausulæ de-
rogatorias.

contumaces, & rebelles ad declarationem incurfus censurarum & poenarum hujusmodi, illarumque ag- gravationes & reagravationes, & alias juxta mo- rem & stylo Curiarum Urbis in similibus servari solitum, & prout sibi videbitur procedendi senten- tiaque suas debite executioni demandandi, five de- mandare faciendi auxiliumque brachii secularis ad hoc si opus fuerit invocandi, omniaque & singula alia in præmissis, & circa ea quomodolibet necessa- ria & opportuna faciendi, gerendi & exercendi, ac in omnibus & singulis eis prædictis ad dictam So- cietatem, Moniales, & puellas, ut præmittitur, spe- ctantes, singulis diebus & horis feriatis & non fe- riatis, præterquam in honorem Dei, etiam tem- pore feriarum ob necessitatem hominum indictam & indicandam procedere.

§. 3. Ac quemcumque Notarium, sibi bene vi- sum in causis hujusmodi deputare possit & valeat.

§. 4. Quodque citationes & inhibitiones, quæ in eis fieri oportuerit, etiam per Curia Capitoli, & quoscumque alios Mandatarios fieri possint.

§. 5. Et quicumque executores Urbis possint & debeant effectualiter executioni demandare, omnes & singulas sententias, decreta, & mandata prædicti Cardinalis Protectoris, five ab eo deputatorum, quæ non obstant regula Cancellariæ sub ejus par- vo sigillo expediri possint.

§. 6. Ac insuper Confraternitatem prædictam, ejusque Administratores, gubernatores, & deputa- tos, necnon Moniales, aut puellas ibidem degentes, & inde egressas nuptas, seu viduas hujusmodi ex- nunc deinceps occasione præmissorum alibi quam coram prædicto Protectore convenire, aut ad alios convenientibus constringi non posse; ac processus, sententias, & decreta, per alium seu alios, tam ordi- narios quam delegatos Judices, in omnibus prædi- ctis quomodolibet pro tempore formatos latas, & factas, cum inde secus quibuscumque nulla, irrita & inania, nulliusque roboris vel momenti fore.

§. 7. Præsentemque cedulam sub quibusvis re- vocationibus, suspensionibus, limitationibus, seu revocationibus, similibus vel dissimilibus concessio- num & gratiarum, etiam per nos & successores nos- tros Romanos Pontifices, & Sedem prædictam, vel ejus Legatos, etiam per Regulas Cancellariæ Apo- stolicæ pro tempore factas, nullatenus comprehen- di, sed semper ab illis penitus & omnino exceptas, & quoties illæ emanabant præsentem cedulam in- pristinum statum restitutam esse, & censi debe- re, nec eidem cedulæ per quascumque litteras, etiam quasvis clausulas, generales vel speciales, etiam derogatorias derogatorias, irritantiaque & alia decreta, sub quacumque verborum expre- ssione continentes, derogari posse, etiam si illi ullo umquam tempore ex aliqua etiam quantumvis ne- cessaria, & urgente causa derogari contingat, nisi tenor ejusdem cedulæ de verbo ad verbum, nihil penitus omisso insertus, & hujusmodi derogatio per trinas distinctas litteras eundem tenorem con- tinentes tribus similibus distinctis vicibus, Admini- stratoribus, Gubernatoribus, deputatis, & Confra- tribus hujusmodi, omnibus & singulis legitimè in- sinuata & intimata fuerit, eorumque expressus ad id accesserit assensus, derogationem hujusmodi nemi- ni suffragare, nullius esse roboris vel valoris, & sic per quoscumque Judices quavis auctoritate fun- gentes etiam prædictæ Ecclesiæ Cardinales, & cau- sarum Palatii Apostolici Auditores, sublata &c. ac ar- ritum &c. judicari & definiri debere.

§. 8. Non obstantibus præmissis, ac fel. rec. Bo- nificii Papæ VIII. prædecessoris nostri, de una, & in Concilio generali edita de duabus dietis, immo- do ultra tres dietas aliquis vigore præsentium ad ju- dicio non trahatur, aliisque constitutionibus & or- dinationibus Apostolicis, necnon Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, ac Hospitalium, Ecclesia- rum, Monasteriorum, & aliorum quorumcumque locorum, & ordinum, juramento &c. roboratis statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, in-

dultis, Conservatoribus, exemptionibus, & litteris Apostolicis eisdem, ac dilectis filiis Populo Roma- no necnon Judicibus, Curis & Tribunalibus, eor- umque personis per quoscumque Romanos Ponti- fices prædecessores nostros, & nos ad dictam Sedem, etiam motu, & scientia similibus concessis, appro- batis, & innovatis, etiam disponentibus, & cau- sæ hujusmodi ad forum, seu Curiam Capitoli reas- sumi debeant, quibus omnibus & singulis, etiam si pro illorum sufficienti derogatione aliàs de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, ex- pressa, & individua, ac de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma illius contenta, observata inserti forent, præsentibus pro sufficientes expressis habentes, illis aliàs in suo robore permanfuris, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque; aut si præfatis, aut qui- busvis aliis communiter vel divisim ab eadem Se- de indultum, quod interdicti, suspendi, aut excom- municari, vel extra, aut ultra certa loca Curias & Tribunalia ad judicium trahi non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum, de indulto hujusmodi men- tionem, & quibuslibet aliis privilegiis, indultis Apostolicis, generalibus vel specialibus quorum- cumque tenorum existentibus per quæ præsentibus non expressa, aut totaliter non inserta iurisdic- tionis ipsius Protectoris explicatio impediri valeat quomodolibet, vel deferri, & de quibus quorum- que totis tenoribus de verbo ad verbum habenda sit in præsentibus mentio specialis.

§. 9. Volumus autem præsentium solam signatu- ram sufficere, & ubique fidem facere in judicio & extra, regula contraria non obstante, & earumdem transumptis manu Notarii publici subscriptis, & sig- illo Protectoris, seu Confraternitatis hujusmodi munitis, eandem prorsus fidem adhiberi, quæ ad- haberetur præsentibus manu nostra subscriptis.

Placet M. Romæ, apud S. Petrum, quarto idus Februarii Anno tertio.

Reservatio beneficiorum omnium vacantium, Se- de Episcopali vacante.

S. Anctissimus in Christo Pater, & Dominus noster Dominus Pius divina providentia Papa V.

§. 1. Cupiens pauperibus Clericis, & aliis bene- ficiis meritis personis, de beneficiis Ecclesiasticis pro- videre, omnia & singula beneficia Ecclesiastica, cum cura & sine cura, secularia, & quorumvis Ordini regularia, qualitercumque qualificata, & ubi- libet existentia, Sede Episcopali, Archiepiscopali, Patriarchali, & Primatiali quorumcumque Ecclesia- rum Cathedralium, etiam Metropolitanarum, Pa- triarchalium, ac Primatialium pro tempore Pasto- ribus destitutarum vacante, quomodolibet vacan- tia & vacatura, tam in prædictis quam aliis Eccle- siis, necnon Civitatibus & Diocesis quibuscum- que, ad eorumdem Episcoporum, Archiepiscopopo- rum, Patriarcharum, & Primatum collationem, provisionem, præsentationem, electionem, seu quamvis aliam dispositionem quomodolibet perti- nentia, dispositioni suæ reservavit.

§. 2. Sicque in præmissis per quoscumque &c. sublata &c. judicari debere, irritum quoque &c. decrevit.

Placet, publicetur, & describatur. M. *Letta & publicata fuit superscripta regula Romæ in Cancellaria Apost. anno Incarnationis Dominicæ 1568. die verò 9. mensis Martii, Pontif. prælibati S. D. N. Papæ anno tertio.*

Pacultas Collegii Fabricæ S. Petri Apostolorum Principis de Urbe, circa legata quæ sunt Eccle- siæ B. MARIE Lauretanæ, si ejus Ministri in illis exigendis, fuerint negligentes.

Hanc bullam Clem. VIII. innovavit die 16. Martii

Sola sufficere
signatura.

Dat. P. An. 3.
die 10. Febr.

IV.

Edita An. D.
1568.

Reservatio
benefic. om-
nium vacan-
tium, Sede
Episcopali
vacante.

Decretum
irritans.

PP. subscrip.

Publ. P. A. 7.
die 9. Martii.

LVI.

1599. sed uti simpliciter confirmativam consulit prætermissi. Et alia de materia Fabricæ videbis hic infra in consil. 96. Decet.

Edicta An. D.
1568.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

AD Romani Pontificis spectat officium opportunis providere remediis, ne Ecclesiæ, & alia pia loca, præsertim Romanæ Ecclesiæ immediate subiecta, & in honorem Gloriosissimæ Dei genitricis dedicata, suis tam spiritualibus quam temporalibus bonis, aliquorum malitia vel negligentia fraudentur.

Causa hujus
consilii.

§. 1. Sanè nuper ad aures nostras non sine dolore pervenit, complures Christiane persone, diversarum Civitatum, & locorum, tam in Italia, quam extra eam, multas variasque pecuniarum summas, & res ac bona Ecclesiæ B. MARIE Virginis de Laureto nuncupatæ, nullius Diocesis, devotionis causa reliquissæ, donasse, aut alias concessisse, de quibus certa noticia propter injuriam & negligentiam Notariorum, qui in dictis Civitatibus, & locis de relictis, donationibus, & concessionibus hujusmodi rogati fuerunt, aut aliarum personarum, quæ de illis scripturas confecerunt, hæcenus haberi non potuit, nec potest in præfenti, unde dicta Ecclesia non modicum sentit detrimentum.

Notarii infra
tempus hic
expressum
notificent
Officialibus
vel deputatis
Ecclesiæ B.
M. de Laureto,
omnia ei
relicta.

§. 2. Nos igitur ne Ecclesiæ præfata, pecuniis, rebus, ac bonis hujusmodi defraudetur, atque immodicis sumptibus per Commissarios pro eorum exactione fieri solitis oneretur, ipsasque pecunias, res, & bona eadem Ecclesiæ facilius consequatur, de aliquo opportuno remedio providere, ipsasque Ecclesiæ indemnitati, quantum cum Deo possumus, prout tenemur, consulere volentes, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolica potestatis plenitudine, omnibus & singulis Civitatum, Terrarum, Castrorum, & aliorum locorum quorumcumque Notarii, aliique personis, ex quorum tam publicis, quam privatis scripturis constare quovis modo potest, aut poterit in futurum de aliquibus pecuniarum summis, rebus, ac bonis cujuscumque quantitatis, qualitatis, generis, ac valoris extiterint, quæ Ecclesiæ præfata, purè vel conditionaliter, aut aliis quomodocumque, saltè à triginta annis citra, in aliqua ultima voluntate relicta, vel inter vivos donata, vel quomodolibet concessa, aut promissa fuerint, aut in posterum relinquantur, donabuntur, concedentur, aut promittentur, in virtute sanctæ obediencie districtè precipiendo, & sub privationis suorum officiorum, ac solutionis dupli pecuniarum, rerum, ac bonorum præfatorum, pro una videlicet ipsi Ecclesiæ, & altera medietatibus solutionis dicti dupli accusatori, & executori æqualiter inter eos dividendis & applicandis penis præcipimus & mandamus, & insuper hac nostra in perpetuum valitura, ordinatione & constitutione sub eisdem penis statuimus & ordinamus, ut de cetero perpetuis futuris temporibus, Notarii & personæ præfate, omnes & singulas dispositiones in favorem dictæ Ecclesiæ à quocumque & quomodocumque faciendas, de quibus, tam per suas proprias, quam per aliorum etiam defunctorum scripturas penes ipsos existentes, quomodocumque constare poterit, in Italia intra trium, extra verò eam infra octo mensium spatium, si eas per viam ultimæ voluntatis fieri contigerit, à die mortis Disponentium, si verò inter vivos à die solutionis faciendæ computandum, dispositiones autem jam factas infra simile spatium, à die tamen intimationis Præsentium, sibi etiam per earundem Præsentium, vel earum transumptorum, ut infra subscribentur ac sigillandorum affixionem ad valvas Cathedralium Ecclesiarum in Civitatibus, & insigniorum Ecclesiarum, in terris, castris, & locis præfatis faciendam computandum Gubernatori pro tempore existenti ipsius Ecclesiæ, seu personis ab eo pro majori commodi-

tate eorumdem Notariorum, & aliarum personarum in certis præcipuis Civitatibus, seu locis ejus arbitrio ad hoc deputandis revelare ac notificare.

§. 3. Præfati vero deputandi, ipsam Gubernatorem notificationem & denunciationem sibi per Notarios factarum hujusmodi singulis quibuscumque mensibus certiorare facere, & eisdem notificationes, ac denunciations in libris suis, etiam ad hoc specialiter confectis vel conficiendis, manu propria adnotare, eisdemque libros ad Gubernatorem præfatum, quoties ab eo super hoc requisiti fuerint, mittere, aut deferre, necnon ut idem Gubernator denunciations, & notificationes, non solum Notariorum, & aliarum personarum, sed etiam deputandorum prædictorum adnotare, seu manu Cancellarii ipsius Ecclesiæ adnotare facere in libro ad hoc etiam specialiter confecto vel conficiendo, dictosque libros in fine sui officii, suo in officio Gubernatoris immediato successori coram Notario ad hoc specialiter vocato & rogato consignare respective teneantur & debeant, & unusquisque eorum teneatur & debeat.

§. 4. Quoniam verò Commissarii Fabricæ Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, vigore nonnullorum privilegiorum à diversis Romanis Pontificibus, eidem Fabricæ super exactione certorum legatorum concessorum quintam partem legatorum ipsi Ecclesiæ de Laureto relictorum exigendi facultatem habere prætendunt, volumus, & eisdem Fabricæ prædictæ Commissariis nunc & pro tempore existentibus, Motu & scientia, ac potestate similibus, etiam districtè precipiendo mandamus, ne in posterum vigore præfatorum, aut quorumcumque aliorum privilegiorum quintam partem præfatum, nisi postquam de Ministrorum ipsius Ecclesiæ in exigendis dictis legatis negligentia confiteritur, exigere possint, audeant aut præsumant. Quodque negligentiam prædicti Ministri non aliter, quam si infra annum in Italia, vel infra biennium extra eam, à die quo denunciations & notificationes Gubernatori, vel deputandis prædictis facta fuerint; vel si denunciations & notificationes prædictæ factæ non fuerint, infra biennium in Italia, & quinquennium extra eam, à die mortis testatorum seu alias disponentium computandum legata hujusmodi non exegerint, aut desuper litem contra hæredes, seu alios eorumdem legatorum debitores non moverint, incurrisse censentur.

§. 5. Non obstantibus præmissis, ac quibuscumque aliis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac privilegiis dictæ Fabricæ concessis, quorum omnium tenores haberi volumus pro sufficienter expressis, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 6. Et quia difficile esset earundem Præsentium notitiam, ad singulos Notarios, aliasque personas Civitatum, Terrarum, Castrorum & locorum hujusmodi pervenire, & ubique illas affigi vel intimari, etiam motu & scientia similibus, volumus & decernimus, quod illarum transumptis, etiam per impressionem factis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo dictæ Ecclesiæ, aut alicujus Prælati, vel personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ sigillatis, ea prorsus fides indubia, in iudicio & extra, ac aliis ubilibet adhibeatur, quæ præsentibus adhiberetur si essent exhibitæ vel ostensæ.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris die decima Martii, millesimo quingentesimo sexagesimo octavo, Pontificatus nostri anno tertio.

Fructus beneficiorum lite pendente deponendi, apud idoneam personam à Judice eligendam, deponi debent, non obstantibus quibuscumque statutis, disponentibus quod Capitula & Canonici eos recipiant.

De sequestris autem à Judicibus decernendis super fructibus beneficiorum lite pendente, vide sup. in Pii IV. consil. 17. Sanctissimus. fol. 29.

Deputati
prædicti no-
tificationes
describunt,
&c.

Fabricæ S.
Petri de Ur-
be, non pos-
sunt qui tam
partem dicto-
rum relictorum
prætere-
dere, nisi pro-
bata negligentia Mi-
nistrorum dic-
tæ Ecclesiæ.

Claustra de-
rogatoria.

Transumptio-
rum fides.

Dat. P. A. 7.
die 10. Mart.

LVII.

Edita An. D.
1568.

PIUS EPISCOPUS,
*Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.*

nones hujusmodi de verbo ad verbum nihil penitus omisso inserti, & forma in illis tradita observata foret, pro sufficienter expressis habentes, specialiter & expresse derogamus; contrariis quibuscumque.

Exordium.

C

Ordinobis est lites minuere, & ad laboribus subditos maxime personas Ecclesiasticas divini cultui deditas, relevare.

Beneficiorum
ligiolorum
fructus lites
pendente
per, pleban-
tur a Capitu-
ly & Cano-
nicis, vig. e
eorum itat. e
lorum, unde
lites effice-
batur im-
mortales.

§. 1. Sanè cum sicut accepimus, in plerisque Cathedralibus & Collegiatis Ecclesiis earum constitutionibus & statutis, etiam in Sede Apostolica approbatis & confirmatis, cautum sit, quod occurrentibus liti- bus, & controversiis inter provisos de dignitatibus, officiis, canonicatibus, & præbendis, portionibus, & præstimonii, ceterisque beneficiis Ecclesiasticis qualitercumque qualificatis, tam ordinaria quam Apostolica auctoritate, tam super illorum provisione seu institutione, aut possessione, quam illorum idoneitate & habilitate, aut ex quavis causa, & eorumdem ad dignitates, canonicatus & præbendas, ceteraque beneficia Ecclesiastica prædicta admissione & receptione, & Capitulum, & Canonicos, ceterasque Capitulares personas ad quos admisso & receptio, tam de jure quam ex consuetudine spectat & pertinet, aut etiam alias personas Ecclesiasticas asserentes beneficia prædicta ad se de jure spectare, ipsi sic provisi interim beneficiorum hujusmodi fructus, ac distributiones non percipiant, sed Capitulum & Canonicos illas, vel in suos usus, & utilitatem convertendas, seu restituendas ei cui de jure restituendæ erunt, recipiant, prout in dictis constitutionibus & statutis, seu consuetudinibus continetur, quo factum est, ut lites hujusmodi immodice efficiantur, nec earum operatus finis videri possit.

Exemplorum
fides.

Forma publ.
quæ mox se-
quitur.

Hic Pont.
modo accer-
ni eos depo-
nes idoneam
personam a
iudice eli-
gendam.

§. 2. Hinc est quod nos hac nostra perpetuò valitura constitutione, auctoritate Apostolica statuimus acque decernimus, quod fructus, redditus, & proventus, ac distributiones, ceteraque emolumenta, quæ vigore constitutionum, consuetudinum, & statutorum prædictorum, & Capitulo & Canonicis recipienda, ut præmittitur, erant, amplius non ab eisdem Capitulo & Canonicis recipiantur, sed penes personam, fide & facultatibus idoneam per iudicem coram quo causæ hujusmodi pendere reperta fuerint, eligendam & nominandam deponantur, restituenda ei cui de jure postea restituenda fuerint.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1568. tertio Kalen. Aprilis, Pontificatus nostri anno 3.

Dat. P. An. 3.
die 30. Mart.

Publicatio.

Decretum
irritans.

§. 3. Sique per quoscumque Iudices & Commissarios quavis auctoritate fungentes, in quavis instantia judicari debere, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate; irritum quoque & inane decernimus, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 4. Non obstantibus præmissis, ac quibuscvis Apostolicis, necnon in provincialibus & synodali- bus Conciliis editis, generalibus vel specialibus, constitutionibus & ordinationibus, & quarumvis Ecclesiarum prædictarum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis alia firmitate roboratis, statutis & consuetudinibus, etiam immemorabilibus; privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, illis eorumque Capitulis, & superioribus per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac nos & Sedem Apostolicam sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, necnon irritantibus & aliis decretis, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, ac quavis etiam Imperiali, vel Regali, consideratione vel instantia, & aliis quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione specialis, specifica, individua, & expressa, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, perinde ac si te-

Anno à Nativitate D. 1568. Indictione 11. die verò 2. mensis Junii, Pontificatus Sanctissimi in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa V. anno 3. retroscripta littera affixa & publicata fuerunt ad valvas Camera & Cancellarie Apostolicarum, & Audientie causarum Palatii Apostolici, ac acie Campi Floræ, dimissis in omnibus locis præfatis earundem retroscriptarum litterarum copiis, per nos Julium Parinum, & Jo. Bornozum prælibati Sanctiss. D. N. PP. Curf.

Jo. Freile Mag. Curforum.

De forma autem ea resignandi, attende infra Gregori XIII. const. 85. Humano. ubi de materia hac notas apponam.

Quæ beneficiorum Ecclesiasticorum resignationes per Episcopos & alios Collatores admitti possint, De forma autem ea resignandi, attende infra Gregori XIII. const. 85. Humano. ubi de materia hac notas apponam.

LVIII.

PIUS EPISCOPUS,
*Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.*

Quanta Ecclesiæ Dei incommoda omni tempore attulerit, & nunc quotidie magis afferat, Ministrorum in eam ingressio vitiosa, jam latè perspiciant, & cum mœrore expendant Præsules omnes & Pastores, quando hæc pernicies ceterarum omnium maxima, tam multas Orbis Ecclesias impie violarit.

Edita An. D.
1568.

Exordium.

§. 1. Quia vero hoc malum cum in ceteris frequens, tum maxime in beneficiorum, & officiorum Ecclesiasticorum dimissione admittitur, nemini molestum esse debet, quod perinde de reprimendis quotidianis fraudibus, quæ hac in re frequentiores internoscuntur, certam aliquam rationem tandem iniriuri officii nostri partes, in prohibenda omnibus interim resignationum hujusmodi acceptione paulo severius interposuerimus, omnesque beneficiorum interim resignandorum dispositiones quæ fierent, in irritum revocaverimus, ac etiam decreverimus nullum per eas in illis jus, neque titulum, vel coloratum, tam in petitorio quam in possessorio ipsis provisis tribuere, quin etiam eos ad illa deinceps obtinenda perpetuò inhabiles fore. Collatores verò aliàs in illorum dispositione, etiam tamquam devolutionis jure sese interponere non possent, sed de eis ut verè vacantibus, sive per Romanos Pontifices, sive alios collatorum eorumdem Superiores uti præventum esset liberè providere.

Pont. iste
alias suspen-
dit facultates
admittendi
resignatio-
nes benef. &
de illis sic
vacantibus
disponendi.

§. 2. Nunc autem intendentes institutum hoc nostrum, quo sanctuarium Domini cupimus illibatum, auctore Domino persequi, ac simul quantum in nobis est cavere, ne resignationes ipsæ dehinc pro cuiusque arbitrio, nullisque vel certè levibus causis passim & temerè admittantur, prohibitionem, & alia prædicta, ac cetera omnia nostris super

Hic modo
Pont. ex cau-
sis hic enun-
ciatis.

Declarat, quæ resignaciones de cetero admitti & recipi possint.

Hæc Innoc. III. const. est in e. 10. de Renunciat.

Et præcipit Episcopis præsentatoribus, & electoribus, quæ cavere debeant.

Prohibetque beneficiis resignanda non conferri confangineis collatorum vel resignantium.

Contravenientibus poenas infligit.

Contrariis derogat.

Publicari hæc constit. præcepit.

his litteris contenta extenus relaxamus, ut posthac.

§. 3. Episcopi & alii facultatem habentes, eorum dumtaxat resignaciones recipere & admittere possint, qui aut senio confecti, aut valetudinarii, aut corpore impediti, vel viciati, aut crimini obnoxii, censurisque Ecclesiasticis irretiti, aut nequeunt, aut non debent Ecclesiæ vel beneficio inservire; seu qui unum aliud, vel plura beneficia obtinuerint, vel quos ad aliud contigerit promoveri; religionem quoque ingressuri, vel matrimonium contrahuri, si statim postea id re ipsa exequantur; denique cum quis ex aliis casibus acciderit, qui constit. fel. record. Innocentii Papæ Tertii de dimittendis Cathedralibus Ecclesiis edita continentur. Qui etiam ob capitales inimicitias nequeunt vel non audent in loco beneficii residere securi. Sed nec horum ullus sacro ordini mancipatus, nisi religionem ingressurus valeat alio modo beneficium vel officium Ecclesiasticum regnare, nisi aliunde ei sit quo in vita possit commodè sustentari. Ad hæc beneficiorum & officiorum permutationes admittere, quæ Canonice functionibus, & Apostolicis constitutionibus permittuntur.

§. 4. Caveant autem Episcopi, & alii prædicti, itemque omnes electores præsentatores, & patroni, tam Ecclesiastici, quam laici quicumque sint, ne verbo quidem, aut nutu, vel signo, futuri in huiusmodi beneficiis & officiis successores, ab ipsis resignantibus, aut aliis eorum significatione, vel hortatu designentur, aut de his assumendis, promissio inter eos, vel etiam intentio qualicumque intercedat.

§. 5. Ceterum præcipimus atque interdiciamus, ne ipsi Episcopi, aut alii collatores, de beneficiis & officiis resignandis prædictis, aut suis, aut admittentium consanguineis, affinibus, vel familiaribus, etiam per fallacem circuitum multiplicatarum in extraneos collationum audeant providere; quod si secus ac etiam quicquid præter, vel contra formam prædictorum fuerit à quocumque temerè attentatum, id totum ex nunc vires & effectum deternimus non habere.

§. 6. Qui vero contrafecerint, ut in eo quo deliquerint puniantur, à beneficiorum & officiorum collatione, necnon electione, presentatione, confirmatione & institutione, prout cuicque competere, tamdiu suspensi remaneant, donec remissionem à Romano Pontifice meruerint obtinere; & qui talia beneficia sua officia receperint, eos prædictis poenis volumus subjacere. Et nihilominus in eos qui sic suspensi conferre, eligere, præsentare, confirmare, vel instituere, ausi fuerint, excommunicationis quo ad personas, quo verò ad Capitula & Conventus, à divinis suspensionis sententias ipso facto promulgamus; quibus etiam nullus alius quam ipse Romanus Pontifex, sive absolutionis, sive relaxationis gratiam (excepto mortis articulo) valeat impertire, prohibitione, & litteris nostris prædictis nihilominus in ceteris omnibus perpetuò valiturus.

§. 7. Non obstantibus quibuscumque privilegiis, indulgentiis, & litteris Apostolicis generalibus & specialibus quibuscumque Episcopis & aliis Superioribus, ac inferioribus Ecclesiarum Prælati, necnon Ecclesiis, Monasteriis, & Capitulis, Conventibus, Collegiis & Universitatibus, eorumque & aliis personis, etiam Regia & Imperiali majestate prædictis, sub quacumque verborum forma & conceptione concessis, per quæ effectus Præsentium impediri posset quomodocumque, vel differri, etiam si de eis, ipsorumque totis tenoribus ad verbum, ac de propriis nominibus eorum, necnon Ecclesiis, Monasteriis, locis, Ordinibus, & dignitatibus, de quibus necnon causis, propter quas illa concessa sunt, specialem & expressam, Præsentibus fieri oporteret mentionem.

§. 8. Ceterum jubemus easdem Præsentibus ad valvas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, & in acie Campi Floræ publicari, & earum exempla affi-

gi. Volumusque eas sic publicatas, omnes & singulos perinde efficere & obligare, ac si illis ipsis fuissent singulariter intimata.

§. 9. Exemplis quoque prædictis, etiam impressis, manque Notarii publici, & sigillo Prælati Ecclesiastici, vel ejus Curia obliquis, eandem prorsus fidem adhiberi, quæ ipsis Præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensæ.

Nulli ergo &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum Anno Incarnationis Dominicæ 1568. Kalen. Aprilis, Pontificatus nostri anno tertio.

Reformatio Fratrum Ordinis Cruciferorum, præcipue citra proprietatem, administrationem, munusque Officialium.

Nonnulla de hoc Ordine scripsi sup. ad constit. 1. Urbani III. Cum antecessor. fol. 47. in Tomo I.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Nihil in Ecclesia Dei, aut præclarius, aut utilius arbitramur, quam optimam disciplinam eorum, qui divini spiritus inflantini obsecuti, sese regularibus institutis devinxerunt. Hinc namque cum genere vitæ, tum doctrina, operibus & exemplis, certum directumque iter, ad celestem beatitudinem consequendam, ceteris omnibus fidelibus in sæculo viventibus ostendunt. Quocirca magnam undique curam & diligentiam adhibere necesse est, ut quicumque huic sacro sunt contubernio mancipati, in sua quisque regule observatione, piæ sanctique nutriendis & confirmantur. Exorbitantes verò, salutaribus remediis ad proprium institutum revocantur.

§. 1. Quam quidem sollicitudinem nos, ex quo fuimus ad regimen universalis Ecclesiæ divina pietate vocati, perpetuam habuimus, pluribusque Ordinibus à vestra disciplina declinantibus, nunc novarum constitutionum editione, necnon antiquarum restitutione vel correctione, ita proficimus, ut jam non mediocres & ex labore nostro fructus latè per Orbem progrediantur.

§. 2. Quare institutum hoc nostrum persequi, annuente Deo, intendentes, inter ceteras Religionis, quæ reformatione indigere noscuntur, Fratrum Cruciferorum Ordo nobis nunc occurrit, cuius pristinos mores ex effusa sentim licentia in multis corruptos, ad suam quantum potest integritatem referamus.

§. 3. Quondam enim hæc regula à fel. rec. Alexandro Papa Tertio, juxta disciplinam B. Cleti instituta, quamdiu in veterum institutorum suorum observatione permansit, ejus professores, cum integritate vitæ, tum salubri Prioratu, Hospitalium, & locorum suorum directione, bonorumque pia & fidei administratione, egregiis apud omnes laudibus, merito floruerunt.

§. 4. Ubi verò primum Prioratum, Hospitalium, & locorum prædictorum cura perpetua, certis quibuscumque id forte per meritis, aut Religionis maxime utilibus, & de benigneque rei providentia Sedis Apost. demandata est, ea tunc demum cupido tam multorum animos incescit, ut illa ferè omnia, aut in titulum, aut in commendam perpetuo, variis prætextis causis, sibi paulatim usurparint; & qui illa sic postea possederunt, minus morigeri atque obediens suis Superioribus effecti, fructus qui prius ad publicam utilitatem, commoditatemque Religionis, & in alevendis pauperibus dispensabantur, proprios sibi fecerunt, profanis etiam usibus applicantes.

§. 5. Unde cum hujus frugiferæ disciplinæ cultus jam perverti, ac labalacere conficeretur, piæ mem. Innocentius Papa VIII. procurante Priore generali,

Exemplis credi jubet.

Dat. P. An. 3. die 1. April.

LIX.

Edita An. D. 1568.

Regulares in obsequia eorum discipline coadiuvandi sunt, & ab ea exorbitantes, ad eandem revocandi.

Huiusmodi regularis discipline restitutioni iuste. Pont. multò studuit.

Et modo iusti Ordinem reformatum intendit.

Cujus Ordo Regula ab Alex. III. juxta B. Cleti disciplinam instituta, dum in illius obsequia iustit, multum profecit.

Ab observantia postea declinans, fere defecit.

Innoc. VIII. ideo perpetuam officiorum, ad triennium reduxit juxta antiquum institutum.

Ego autem
ejus bullam
ut hic plenè
relatam præ-
sentavi.

Verum ta-
men perpetuo
officiorum de-
nuo revixit.

Clem. VII.
propterea
ejus eligendi
officia ex-
dit. Ego autem
ex supradicta
causa, eam
bullam omi-

Prioratus;
et Hospitalia
canonici & Ca-
pituli generali
interfici
sunt.

lem, prædi-
ctus, & Pau-
lus III. multa
in pro dicti
ad restitu-
tionem decre-
vit, quæ
nimis ob-
scure fue-
rit. Et ipsorum
iustit. ex
eadem causa,
invenire non
potebat.

Hic Pont.
ad, prius
et breviter
dicere vo-
lens, bullas
hoc. VIII.
Clem. VII.
Pauli III.
probat, in
quæ huc
transfuerunt.

Provisione
et colla-
tiones bene.

& Definitoribus dicti Ordinis bene ac providenter
statuit, ut ipse Generalis, ac ceteri omnes Priores,
necnon Definidores, Rectores, & Administratores
dicti Ordinis, deinceps non ad vitam, sed ad trien-
nium dumtaxat juxta primævam institutionem afflu-
merentur, & suum quisque Prioratum, vel aliam
administrationem semper in proximo Capitulo ge-
nerali resignare deberet.

§. 6. Quod quidem etsi tam regulari discipline
reintegranda spem optimam in ipso statim princi-
pio præferret, grassante tamen non multo post
magis magisque hujusmodi cupiditate, rursus ex
perpetua Prioratum, & Hospitalium prædicto-
rum, in titulum & commendam concessione, ead-
em illa, & forte deteriora incommoda ipsi Religi-
oni succederent.

§. 7. Quamobrem recol. mem. Clemens Papa
VII. prædecessor noster perpetuò statuit & decrevit,
ut in proximo, & futuris deinceps Capitulis ge-
neralibus dicti Ordinis, tres ipsius Ordinis profes-
sore id est, Priores, & Rectores annales, in spiri-
tualibus & temporalibus, ad singulos Prioratus,
& singula Hospitalia ita eligerentur, ut primo loco
nominatus, primo anno, alter vero secundo, &
tertius tertio regeret; ac secundus primo, tertius
vero secundo, etiam pro reliquo illo anni tempo-
re, quo primus vel secundus aliqua causa regere
nequiret, per seriem suæ cuiusque nominationis
ulque ad sequens Capitulum generale subrogaretur.
Et in celebrato Capitulo generali, interim ulque ad
electionem sequentis Prioratus vel aliud bene-
ficio ejusdem Ordinis, in titulum vel commen-
dam, perpetuam aut temporalem, obtentum,
etiam dispositioni Apostolica ratione Conventuali-
tatis, aut alias specialiter vel generaliter reserva-
tum, quovis modo vacaret, nullus de illo, quam
Prior generalis, seu ejus Vicarius, sed nec ille nisi
ad annum dumtaxat, & sic deinceps ulque ad pro-
ximum generale Capitulum disponere valeret, que-
madmodum fuerat jam ab ipso Innocentio Papa
salubriter ordinatum.

§. 8. Ceterum hujusmodi Prioratus & Hospita-
lia, etiam à Sede Apostolica imperari non possent,
nec de illis cum vacarent, ex quo ulterius vacare
non censerentur, aliter quam per Priorem genera-
lem, & Capitulum generale, modo & forma præ-
dictis disponi posset.

§. 9. Multaque præterea, tam ab ipso Clemente,
quam etiam fel. rec. Paulo Papa Tertio præde-
cessore nostro pro conservatione dictæ Religionis edita
& promulgata fuerunt, quibus antiquus ipse cul-
tus regularis facile restitui in ea poterat, si dicti
Fratres illorum observationi verè & ex animo in-
cubissent; sed hujusmodi ambitio ex multorum cor-
dibus nunquam satis excussa, in tantam prævaluit,
ut plerique ex iis, qui aut sece dimissos Prioratus
assimilaverant, aut intentionem aliquam id facien-
di præstiterant, non modo id postea neglexerint,
sed & aliis exemplo fuerint, eandem viam fiden-
tius insequendi. Hinc toti Ordini tanta quotidie
parantur detrimenta, ut nisi efficac illi remedium
tempestivè quærat, verendum est ne illa sit in
majorem denique perniciem ruitura.

§. 10. Nos hæc mala ex ipsa perpetua rerum ad-
ministrandarum facilitate, vel maxime provenire
arbitrati, illis omni qua potest industria occurre-
re, ac simul dictam Religionem pristino suo can-
dori, quantum in nobis est, restituere volentes,
Motu proprio, & ex certa scientia nostra, deque
Apostolica potestate plenitudine, singulas Inno-
centii, Clementis, & Pauli prædecessorum præ-
dictorum litteras super præmissis concessas, ac
quæcumque in eis contenta, Præsentibus nostris
non contraria, hartum serie innovamus, approba-
mus, & confirmamus, effectumque suum plene-
rium, in omnibus & per omnia, fortiri debere vo-
lumus.

§. 11. Ut vero hæc nostra voluntas, instituti-
onis nostre ratio impedimentis omnibus explicita,

promptos & felices successus habeat, omnes & quæ-
cumque, tam Apostolicas, quam ordinarias colla-
tiones, provisiones, commendas, in administrato-
rem deputationes, & alias dispositiones de Priora-
tibus etiam Conventualibus, Hospitalibus, & aliis
beneficiis, cum cura & sine cura, dicti Ordinis, &
etiam super illorum fructibus quarumcumque pen-
sionum annuarum, aut aliarum rerum, vel etiam
ipsorum fructuum, seu partis eorum reservationes,
Fratribus supradictis, ac etiam ipsum Ordinem pro-
fessuris, perpetuò sive ad certum & quæcumque
tempus, necnon omnia & quæcumque regressus,
accessus, & ingressus, ac regrediendi, accedendi,
& ingrediendi facultates & indulgentia, Coadjutorum
quoque deputationes ad illos & illa, ac etiam reserva-
tiones ædium, & earum partium, camerarum,
cenaculorum, ædificiorum, hortorum, & quarum-
cumque aliarum rerum, tam prædictorum quam
etiam omnium aliorum Prioratum, Hospitalium,
& locorum Conventualium dicti Ordinis, quæ vel
illorum septis continentur, vel ut propinqua illo-
rum Conventibus, vel ad Hospitalitatem exercen-
dam usui sunt, etiam de consensu, ac ex resignatio-
nis seu cessionis juris, ac etiam litis, & causa, aut
concordiæ Apostolica auctoritate confirmatæ, alia-
ve causa quantumcumque onerosa, & considera-
bili, tam eisdem Fratribus, quam quibuscumque
aliis, etiam S. R. E. Cardinalibus, per quoscumque
Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac nos
& Sedem prædictam, etiam motu, scientia & potes-
tatis plenitudine similibus, necnon consideratione,
intuitu, contemplatione, vel ad instantiam Imper-
atoris, Regum, Ducum, aliorumque Principum
facta & concessa, quibuscumque concepta formu-
lis, ac etiam restitutivis, præservativis, derogato-
riarum derogatoriis, aliisque efficacioribus, effica-
cissimis & insolitis clausulis, necnon vim contractus
inducentibus, & aliis decretis suffulta, quorum
omnium tenores Præsentibus haberi volumus pro
expressis, dicta auctoritate Apostolica, tenore Præ-
sentium specialiter & expresse revocamus, & Aposto-
licas, ac quæcumque alias litteras, necnon pro-
cessus habitos per easdem, & inde secuta quæcum-
que cassamus, & annullamus, ac volumus illa om-
nia vires & effectum de cetero non habere.

§. 12. Et nihilominus omnes & singulos Priores,
& ceteros Fratres, illos & illa obtinentes prædictos,
ac eos qui proferri volentes, ut præferret, rece-
perunt, etiam quantumcumque longissimo tem-
pore possessores, eisdem omnibus ex nunc priva-
mus, & ab illorum possessione amovemus, amoto-
que denunciavimus.

§. 13. Jubemus quoque Generalem ac alias Prio-
res, Commendatarios, Administratores & Recto-
res prædictos in universum & singulatim, aut quam-
primum Præsentibus illis intimatæ fuerint, non ex-
pectata alià à nobis iussione, aut mentis declara-
tione, ab omnimoda administratione abstinere,
ac possessionem hujusmodi vacuum, liberam, &
expeditam, realiter dimittant, deque omnibus &
singulis bonis mobilibus, necnon fructibus & rebus
ab eis perceptis, etiam in pecuniis consistentibus,
Priori generali, ac Visitationibus rationem reddant,
reliqua vero locis suis omnino dimittere debeant.
Quod si horum quiskumque secus quoquomodo con-
tenderit, illum talem excommunicationis senten-
tia innodamus, ac dignitatibus, administrationi-
bus, & officiis dicti Ordinis perpetuo indignum de-
cernimus eo ipso.

§. 14. Ipsi tamen sic dimittentes, titulum, no-
men, & insignia omnia Prioris ita retineant, ut quoad
vixerint, & in unitate fidei, atque obedientia, &
observatione Præsentium persisterint, nec quic-
quam quod eos merito reddat indignos admiserint,
vocem, & suffragium activè & passivè, etiam quoad
electionem dicti Prioris generalis habeant; & tam
in proximo, quam in ceteris deinceps Capitulis
generalibus, ad curam & regimen aliorum Prio-
ratuum & Hospitalium commutentur, sed anna-

fic. & loco-
rum Ord. vel
eorum fructu-
um h. c. re-
vocat.

Provisio pos-
sitione pri-
vatos, ac in-
de amotos
declarat.

Non dimitt-
entibus per
nas imponit.

Dimittentib.
autem, titu-
lum, nomen
& insignia
retinere. ele-
ctionique
tam activè
quam passivè
voti n. per-
mittit.

Prioris generis officium triennio finiri, & in Capitulo generali eligi jubet.

les dumtaxat, uti præscriptum est, eligi possint.

§. 15. Ceterum ex his, quæ pro salubri dictæ Religionis statu, & felici directione aliqui instituta hucusque reperiuntur, quæque nec præsentibus contraria sunt, nec illorum effectum impedire possunt, nihil omnino detrachere, sed illa omnino immota custodiri; rursus, ea quæ ad ipsius regulæ conservationem, ædificationem, vel deesse vel obesse possunt, præsentis pagina supplere vel emendare intendunt, ac etiam inherentes prædictis Innocentii, Clementis, & Pauli prædecessorum litteris, quarum singularum tenores præsentibus haberi volumus pro expressis, motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus statuimus & ordinamus, quod futuris temporibus in perpetuum Prior generalis dicti Ordinis triennalis dumtaxat, ac tertio quoque anno, in Capitulo generali singulis trienniis celebrando, per suffragia secreta, juxta Concilii Tridentini dispositionem, & alias secundum litteras Innocentii prædecessoris hujusmodi, & regularia dicti Ordinis instituta, laudabilesque consuetudines eligatur, ita quod excursu prædicti triennii spatii, ipsum officium nequeat illi deinceps prorogari.

Aliorum Priorum eligendi formam & tempus designat.

§. 16. Ut verò uniformis in dicto Ordine ratio habeatur, dehinc tres professores idonei Priores annales ad unum quemquam ceterorum omnium Prioratum prædictorum in dicto Capitulo generali dumtaxat, ita per seriem eligantur, & instituantur, ut primus solum primo anno, secundus secundo, ac tertius tertio, regimen & administrationem ejus Prioratus, ad quem sic electus fuerit, in spiritualibus & temporalibus habeat; & si horum trium quemvis cedere vel decedere, vel inde ex aliqua causa amoveri contingat, ille qui finito eo anno ei immediatè successor erit, etiam pro toto illo tempore, quod cedenti, vel decedenti, aut amoto reliquum esset, succedat. Rursus, si duo ex eisdem qualescumque in Ordine electi, vel primo anno cessant vel decesserint, aut amoveantur, superstes in reliquum omne tempus, modo prædicto, usque ad proximum generale Capitulum administret; omnibus verò tribus eodem intervallo quodcumque deficientibus, ei Prioratus ac etiam alius, in titulum vel commendam, perpetuam vel temporalem obtentis prædictis cum vacabunt, etiam si, uti præfertur, aut alias reservata fuerint, alium vel alios Fratres idoneos annales dumtaxat usque ad proximum generale Capitulum subrogabit, quocumque privilegio Apostolico generali vel speciali, quibusdam Prioratibus & Conventibus dicti Ordinis concessis, & etiam multiplicatis vicibus approbato, aut statuto quacumque firmitate munito, seu consuetudine quantocumque tempore observata, quod ipsi non à Capit. generali electos recipiunt, sed suos sibi Priores alias juxta formam litterarum Clementis hujusmodi eligunt penitus abrogatis & annullatis. Priores autem omnes suo rite defuncti officio annali, rursus poterunt in ipso futuro Capitulo generali titidem, ut antea Priores in aliis Prioratibus & domibus dicti Ordinis, si rursus idonei judicati fuerint, ad alium annum, & sic deinceps deputari. Ad eundem verò Prioratum, unde Priores exierint, nequeant ante exactum omnino triennium remeare.

Administrationem, cuiusque Prioratus munus.

§. 17. Ad hæc nullus omnino Priorum, curam aut administrationem bonorum, & aliarum rerum temporalium, dispensationemque reddituum sui Prioratus, seu domos, etiam nomine sui Conventus habere, five exercere, vel sese in iis interponere possit, sed univerfum id onus tribus Religiosis in unoquoque Capitulo generali ita demandetur, ut primus, rerum & bonorum mense, tam Prior quam Prioratus, inferendorumque in eum reddituum curam habeat. Alter tamquam depositarius pecunias & cetera ab illo importata fideliter asseruet. Reliquus de pecuniis & rebus à Depositario capitis Priori, Fratribus, & domui universæ de necessariis veluti dispensator, cum Prioris auctoritate provideat, officiorum hujusmodi invicem confusione penitus interdicta. Sed & ii tres, tam accepti

quam impensis singulis mensibus Priori suo, adhibitis etiam duobus vel tribus Fratribus ejusdem Prioratus probatoribus, rerumque usu peritis, deinde ipsimet rursus præsentibus ipsis Priore & peritis, Priori Generali vel Visitationibus quotiescumque visitationis officium fecerint. Denique Prior generalis, tam de illis omnibus, quam etiam suæ mensæ proventus, & rebus, semper in proximè sequenti Capitulo generali, & coram tribus Judicibus ab ipso Capitulo deputatis, suæ administrationis rationem reddere teneatur.

§. 18. Omnes verò Priores vitam cum suis Fratribus communem ducant, nec proprium quidquam habeant; omnibus divinis officiis, diurnis & nocturnis, in Ecclesiâ & Choro semper adesse debeant. In Refectorio semper comedant, ubi silentium perpetuum agatur, & lectura sacra ab initio ad finem de more aliorum Religiosorum regularem disciplinam observantium habeatur. Aedes separatas, neque in claustris neque alibi usquam habeant, sed unica cella, aut si necessitas postulerit, duabus dumtaxat, eisdemque cum ceteris aliorum Fratrum conjunctis, contenti esse debeant.

§. 19. Pari quoque ratione ceteri Fratres nil sibi proprii vendicantes, necessarium victum & vestitum à suo quique Conventu, five domo, ac per ejus Ministros, prout cuique opus erit capiant, pecuniæ usu veluti olim ad libitum abutebantur, deinceps omnibus penitus interdicto; eam tamen diligentiam Prior adhibere debebit, ut singulorum, maxime infirmorum & senum necessitatibus juxta cuiuscumque exigentiam consulatur. Quicquid verò fuerit cuique privatum, & intuitu personæ undecumque donatum, illud omne Superiorem, horarum vigintiquatuor intervallo, exhibeatur, ut depositum statim committat, & inde ex eo tantum exhibitori ministrare jubeat, quantum præfens rei convenientis usus & necessitas videbitur postulare. Quod si quisquam donatum hujusmodi non exhibuerit, ut præfertur, in censuras & penas, etiam per constitutiones nostras promulgatas, se noverit incidisse.

§. 20. Vestitus autem omnis omnino conformis, nulla exquisita arte elaboratus, sed purus & honestus in universum habeatur.

§. 21. In omnibus verò locis vetus Hospitalitas, quoad fieri poterit, restituatur; & in Prioratibus Civitatum insignium, ceterisque locis commodis optimarum litterarum studium, atque exercitium omni tempore habeatur.

§. 22. Nullas insuper five Prior, five simplex Religiosus, intra septa domus suæ, neque omnino alibi, mulieres quantumcumque provectas, seu matres, seu forores, seu alias propinquas, etiam infirmitatis tempore, admittat.

§. 23. Postremo ut in Prioratibus prædictis, iustus Ministrorum numerus perpetuo constet, numquam pauciores, quam septem Fratres in singulis educantur. Illi verò in quibus tot commode alii nequiverint, aliis Prioratibus, ejusdem Ordinis per dictum Capitulum generale, seu, si id commode tunc fieri nequiverit, cura Protectoris dicti Ordinis, adhibitis etiam Priori generali & Definitoriis prædictis, perpetuo uniantur, seu de opulentiorum Prioratum, & locorum redditibus, ceteris angustioris proventus Prioratibus & locis, commodis rationibus prospiciatur.

§. 24. Diffiditibus inhiabentes in virtute sanctæ obedientie Generali, ceterisque omnibus & singulis Prioribus & Conventibus supradictis, eorumque personis, ne de Prioratibus, Hospitalibus, ac aliis beneficiis dicti Ordinis sub ipsa revocatione nostra comprehensis prædictis, alter quam in dicto Capitulo generali, & ut illis præscriptum est, disponere quoquo modo possint.

§. 25. Ac decernentes ex nunc quascumque præsentationes, electiones, collationes, provisiones, commendas, & alias dispositiones, etiâ à Sede prædicta, et moraque, scientia & potestatis plenitudine similibus, ac cum Præsentium speciali & expressa

Prioribus vitam communem & alia præcipit.

Proprietatem omnium interdicit.

Vestitus uniformis purum & honestum præfinit.

Hospitalitatem & studium in locis commodis restituendum.

Mulierum admissionem prohibet.

Numerum Fratrum in quolibet Conventu minorem septem prohibet.

Dispositiones de Prioratibus & beneficiis Ordinis fieri & non alter fieri jubet.

Aliiterque expressa annulla

derogatione pro tempore factas, tamquam in læsonem & detrimentum reformatæ Religionis subreptas & exortas, nullius prorsus momenti fore, nec per eas jus aliquod cuiquam acquiri.

§. 26. Nec ullum exiis, quorum collationes, provisiones, & commendæ Prioratum, Hospitalum, & beneficiorum prædictorum, ac pensionum, ceterarumque reservationes, necnon regressus, accessus, & ingressus, & Coadiutorum deputationes ad illa revocata sunt, ut præterit, at quemquam alium, quocumque tempore, quavisque causa quantumlibet rationabili, restitutionem in integrum, reductionem ad terminos juris, aut quodvis aliud gratiæ, vel iustitiæ remedium impetrare, vel etiam ab alio, vel aliis impetrato, aut motu simili concessio uti.

§. 27. Nec præsentis litteras de subreptionis, vel obreptionis, seu nullitatis vitio, aut intentionis nostræ, vel alio quopiam defectu notari nec impugnari, nec sub illis revocationibus, suspensionibus, limitationibus, aut aliis contrariis dispositionibus, similium vel dissimilium ordinationum ab ipsa Sede, quandocumque vel quomodocumque emanandis, comprehendere, sed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum & validum statum restituras, & plenariè reintegratas esse, & censeri.

§. 28. Sique per quoscumque Iudices ordinarios & delegatos, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S.R.E. Card. in quavis causa, & instantia, sub lata eis & eorum cuilibet quavis aliter interpretandi & iudicandi facultate & auctoritate, ubique interpretari, iudicari & definiri debere, necnon irritum & inane, quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 29. Porro Generali, & aliis Prioribus ac Conventibus, Fratribus, & personis, tam conjunctim quam divisim districtius præcipimus, ut præsentis nostras litteras humiliter recipiant, & quæcumque in eis expressa, ac per eas decreta, statuta, & mandata sunt, alia desuper à nobis non expectata iustione, aut mentis nostræ declaratione, firmiter custodiant, & in omnibus studiose obtemperare procurent.

§. 30. Quin etiam dilecto filio nostro Aloysio tit. S. Marci presbytero Card. Cornelio nuncupato, moderno dicti Ordinis Protectori, motu simili mandamus, ut ipse easdem Præsentibus, ac quicquid pro earum executione & observacione in dicto Capite generali, vel etiam extra illud ab ipso adhibitis, si ei videbitur, Generali, & aliquot ex aliis Prioribus, vel Definitoribus prædictis, quos duxerit eligendos, statuatur, ordinabitur, & decernatur in omnibus Prioratibus, Hospitalibus & beneficiis, ac ab omnibus & singulis Prioribus, Fratribus, & personis prædictis inviolatè faciat, per se vel alium, seu alios observari; contraditores quoslibet & rebelles, ac etiam protestantes, & reclamantes, eisque auxilium, consilium vel favorem, publicè vel occultè, directè vel indirectè, quovis quæsito colore vel ingenio præstantes tam Ecclesiasticos quam laicos, cuiuscumque dignitatis, gradus, ordinis, vel conditionis fuerint, per sententias, censuras & penas Ecclesiasticas, ac etiam Prioratum, dignitatum, & administrationum privatorias, ceteraque juris & facti remedia opportuna; appellatione postposita compellendos; quin etiam contendentes prædictos, in censuras & penas supradictas incidisse declarando; invocato etiam ad hoc si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 31. Non obstantibus nostris de non tollendo jure quæsito, & de annali ac triennali possessore, aliisque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon Ordinis prædicti, juramento, confirmatione Apost. vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, exemptionibus, & indultis Apostolicis, illi, ejusque Superioribus & personis, ac eorum singulis per quoscumque Rom. Pontifices prædecessores nostros, ac

nos & Sedem Apostolicam, etiam per modum statuti perpetui, ac iniiti & stipulari contractus, ac alias sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis, in genere & in specie concessis, confirmatis, ac etiam aliis reformationibus, quocumque & quocumque tempore factis & promulgatis, ac quibuscumque aliis indulgentiis, & litteris Apostolicis specialibus & generalibus, quoruncumque tenorum existant, per quæ Præsentibus non expressa, vel totaliter non inserta, effectus earum, seu dictorum Ordinariorum jurisdictionis, seu executionis impediri valeat quomodolibet, vel differri, & de quibus quorumque totis tenoribus habenda sit in nostris litteris mentio specialis, quæ omnia contra earundem Præsentium tenorem nolumus cuiquam in aliquo suffragari.

§. 32. Denique etiam volumus, quod ipsarum Præsentium exempla, etiam impressa, dictique Aloysii Cardinalis, & pro tempore existentis Protectoris, aut Capituli, vel Prioris generalis sigillo, & Secretarii cuiusvis eorum, vel Notarii publici manu obsignata, eandem illam fidem ubique locorum, in iudicio & extra illud faciat, quam ipsæ Præsentibus si forent exhibitæ vel ostensa.

Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud S. Petrum Anno Incarnationis Dominicæ 1568. nono Kal. Maji, Pontificatus nostri anno 3.

Revocatio omnium privilegiorum à Sede Apostolica Officialibus, & aliis quibuscumque concessorum, creandi Doctores, Licentiatos & Magistros. Et declaratio quod ab illis jam promoti, non gaudeant prærogativa quoad beneficia & dignitates.

De hujusmodi prærogativa habes etiam in Conc. Trid. sess. 22. cap. 2. & sess. 24. cap. 12.

Formam vero professionis fidei quam promoti & provisi emitere debent, vide in Pii IV. constit. 88. In sacrosanctæ. fol. 136. & in constit. seq.

PIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Quamvis à Sede Apostolica ad quam negotiorum multitudo undique confluit, curis omnino plena innumeris nonnulla interdum ex iustis causis concedatur, quæ successivis temporibus in publicum detrimentum, & alieni juris præjudicium tendere nescunt, non debet reprehensibile videri, si Romanus Pontifex, ad cujus providentiam pro debito pastoralis officii spectat super iis debetè providere, illa rationabilibus & iuridicis supervenientibus causis deinde cognitis, quandoque revocat & annullat, ac in statum redigit rationis.

§. 1. Sanè cum fide digna plurimorum relatione non sine animi nostri molestia intellexerimus, nonnullos Comites Palatinos, & diversos alios prætextu facultatum sibi à Romanis Pontificibus, & Sede Apostolica concessarum quamplurimos, tam laicos quam clericos, tam jure civili quam canonico, & theologia, nullo, aut non debito examine prævio, indoctos & inhabiles, Doctores, Licentiatos, & Magistros, creasse & promovisse, uti ad dignitates, ceteraque beneficia Ecclesiastica facilius assumerentur, & de eis providerentur in animarum suarum iacturam, & quamplurimorum scandalum.

§. 2. Nos hujusmodi scandalis quantum in nobis est obviare, & aliàs ne de cetero inhabiles ad hujusmodi gradus admittantur providere volentes; Motu proprio non ad alicujus super hoc nobis oblata petitionis instantiam, sed ex mera deliberatione, & ex certa scientia nostris, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine hac nostra perpetuè valitura constitutione, omnia & singula facultates & indulta eidem Comitibus, ac etiam quibuscumque Officialium

Transmissio
credi jubet.

Dat. P. An. 3.
die 23. Apr.

LX.

Edita An. D.
1568.

Exordium.

Causa revo-
cationis.

Revocatio
indultorum
& cand. Do-
ctores.

Doctores
in creati
on gaude-
ant preroga-
tiva.

Clausula
sublata.

Derogatio
contrario-
rum.

Iussio publi-
candi.

Exemplorum
fides.

D. P. An. 3.
die 1. Junii.

Publicatio.

LXI.

Edita An. D.
1568.

Frates Con-
ventuales ni-
hil proprium
habere posse
decernit.

lium Romanæ Curie Collegiis, singulisque aliis per-
sonis cuiuscumque status, gradus, ordinis, & præ-
sidentia existentibus, ad Doctoratus, Licentia-
turæ, & Magisterii gradum promovendi per quocum-
que Romanos Pontifices prædecessores nostros,
& Sedem Apostolicam, ac etiam nos etiam Motu,
scientia, & potestatis plenitudine similibus quomo-
dolibet concessa, confirmata, & innovata, illorum
tenores Præsentibus pro expressis habentes, aucto-
ritate Apostolica tenore Præsentium perpetuo re-
vocamus, cassamus, & annullamus.

§. 3. Ac decretis Concilii Tridentini inhærentes,
decernimus & declaramus, eos qui à Comitibus &
aliis præfatis promoti fuerunt, quo ad dignitates,
ceteraque beneficia Ecclesiastica, nulla gradus præ-
rogativa frui & gaudere posse, vel debere.

§. 4. Et sic in præmissis omnibus & singulis per
quoscumque Iudices, etiam causarum Palatii Apo-
stolici Auditores, sublata eis & eorum cuilibet qua-
vis aliter iudicandi & interpretandi facultate, inter-
pretari, iudicari, & definiri debere, necnon irri-
tum & inane, quicquid fecus super his à quoquam
quavis auctoritate, scienter vel ignoranter conti-
gerit attentari.

§. 5. Non obstantibus constitutionibus & ordina-
tionibus Apostolicis, ac præfatis, & quibuscumque aliis
facultatibus, privilegiis & indultis, & litteris Apo-
stolicis, eisdem Comitibus & Collegiis, necnon
quibuscumque aliis, etiam ex quavis causa, etiam urgen-
tissima, aut in vim contractus inter eos & Sedem
prædictam initii, vel ex causa onerosa etiam Motu
proprio, ac consistorialiter, & aliis quomodolibet
concessis, ac etiam iteratis vicibus approbatis &
innovatis, quibus omnibus illorum omnium te-
nores, ac si de verbo ad verbum infererentur, Præ-
sentibus pro sufficienter expressis habentes, quo ad
hunc effectum specialiter & expresse derogamus,
ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 6. Ut autem præfates litteræ ad omnium no-
ticiam deducantur, volumus quod in Cancellaria
nostra Apostolica, & in acie Campi Floræ de more
publicentur, & inter constitutiones perpetuo va-
lutarum describantur.

§. 7. Et quia difficile foret eas ad singula queque
loca deferri, quod earum transumptis etiam im-
pressis manu alicuius Notarii subscriptis, ac sigillo
alicuius Prælati munitis eadem prorsus fides adhi-
beatur, quæ Præsentibus adhiberetur, si forent
exhibite vel ostensa.

Nulli ergo &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum Anno incarnationis
Dominicæ 1568. Kal. Junii, Pontificatus nostri
anno tertio.

Anno à Nativitate D. 1568. Indictione xi. die vero
28. Junii, Pontificatus Sanctiss. in Christo Patris,
& D. N. D. Pii divina providentia Papæ V. anno
3. retroscriptæ litteræ Apostol. affixæ & publicatæ
fuerunt ad valvas Cancellariæ Apostolicæ, & in
acie Campi Floræ, ut moris est, dimissis ibidem
præsentibus litteris per aliquantulum temporis spa-
rium affixis, & deinde amotis, per nos Julium
Parinum, & Philibertum Chappnu præfati Sanctiss.
D. N. Papæ Cursores.

Reformatio Fratrum Minorum Conventualium
Ord. S. Francisci.

Aliam reformationem iidem Fratres in Capitulo edide-
runt, quamvis Pont. comprobavit inf. in ejus const.
66. illa. Et conveniunt decreta Conc. Trid. sess. 25.
c. 2. & seqq. Et alia multa de Ord. isto notavi sup. in
const. 5. Honor. III. Solet. sup. fol. 66. in Tomo I.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

A Dextirandos cupitæ proprietatis abusus, sum-
mum bonum in frugifera religione fratrum

Minorum Conventualium nuncupatorum perverten-
tes, simulque frangendam pessimam corruptelam,
quæ de administrationibus & officiis hujus Ordinis,
per gratiam & sordes consequendis, perperam ino-
levit: De nobis attributæ potestatis plenitudine,
omnes & singulos Fratres prædictos, etiam si Magi-
stri Generales, Provinciales, Custodes, & alii quicum-
que sint, privato rerum, bonorumque omnium im-
mobiliu, mobiliu, & semoventiu dominio, usu,
usufructu, possessione, & proprietate, quocumque
per eos modo acquisitis, & ad ipsos obventis, perpe-
tuo privamus, à dictaque possessione amovemus, &
amotos nunciamus, illaque omnia & singula in
communes suarum cuiusque domorum, & prædictæ
Religionis usus convertenda concedimus.

§. 2. Ac omnia & quæcumque privilegia, dispen-
sationes, licentias, permissiones, & indulta, eis
& ipsorum singulis super his, ac domibus, cellis,
hortis, pecuniis, aliisque rebus, etiam causa senii,
infirmis, parentum subventionis, congerendæ
fororibus dotis, & cuiuscumque alterius pii officii
intuitu habendis, retinendis, & fruendis, etiam per
quoscumque Rom. Pont. prædecessores nostros,
ac nos & Sedem Apostolicam, etiam Motu proprio,
& ex certa scientia concessa, confirmata, & innova-
ta, quibuscumque concepta formulis, ac clausulis
& decretis fassula (quorum omnium tenores Præ-
sentibus habemus pro expressis) specialiter & ex-
presse revocamus, volumusque illa omnia & singu-
la vires, & effectum de cetero non habere.

§. 3. Et nihilominus mandamus Magistris & Su-
prioribus omnibus, in virtute sanctæ obedientiæ,
ut rerum & bonorum omnium prædictorum posses-
sionem nomine domorum & locorum suorum cap-
pant, ut illa, illorumque fructus in communes om-
nium usus convertantur. Statuentes ut deinceps nul-
lus omnino Fratrum dicti Ordinis, five Cuscos, five
Provinciales, five Generalis Magistri officio fungens,
etiam prætextu huiusmodi privilegiorum, dispen-
sationum, permissionum, & indultorum, seu in-
veteratæ consuetudinis voto repugnantis, aut qua-
cumque alia causa, proprium quicquam, aut pri-
vatum habeat, sed omnia ubique communia & in-
divisa omnibus religiosis esse.

§. 4. Quin etiam Magistri, Custodes, & Guardia-
ni vitam cum Fratribus suis communem ducere de-
beant, in Refectorio semper comedant; nullas aedes
separatas, five in Claustro five alibi habeant, sed
unica cella, eademque cum ceteris aliorum Fra-
trum conjuncta, contenti esse debeant. Pari quoque
ratione ceteri Fratres, nisi sibi proprii vendicantes,
necessarium victum & vestitum à sua quisque domo,
& per ejus Ministros capiant.

§. 5. Pecuniæ vero & quæcumque aliæ res, quæ
cuique privatim, etiam intuitu personæ, unde
cumque donatæ, & relicte fuerint, Superiori ho-
rarum viginti quatuor intervallo exhibeantur, qui
illas statim deposito committat, & inde tantum
exhibitori ministrari jubeat, quantum præfens rei
convenientis necessitas videbitur postulare.

§. 6. Eam præterea diligentiam Superiori adhibere
debebit, ut singulorum maxime infirmorum neces-
sitatibus, juxta cuiusque exigentiam debite consulatur.

§. 7. Ad hæc nullus omnino Magistrorum, Cu-
stodum, & Guardianorum, administrationem præ-
dictorum bonorum, & aliarum rerum temporalium,
dispensationemque pecuniarum, & reddituum suæ
custodiæ, vel domus, etiam nomine Conventus
habere, five exercere, vel sese in eis interponere
possit, sed universum id onus tribus religiosis à Ma-
gistro Generali ita demandetur, ut primus rerum &
bonorum custodiæ, five domus, inferendumque
in eam reddituum curam habeat; alter tamquam
depositarius, pecunias & cetera ab illo importata
fideliter asservet; reliquus de pecuniis, & rebus à
depositario captis, Custodi, Guardiano, & Fratri-
bus, ac domui universæ de necessariis veluti dispen-
sator, cum ipsis Custodis, seu Guardiani auctori-
tate provideat, Officiorum huiusmodi invicem con-

Et dispen-
sationes quali-
cumque de-
super conce-
ssas, revocat
& annullat

Et bona qui-
cumque in
communes
omnium usu
converti
mandat.

Officiales e-
medere jub-
cum aliis Fr-
tribus in ti-
nello.

Quod am-
pliat infr-
in const. 66
illa.

Donata S-
prioribus
consignari.

Infirmitate
curari jube

Bonorum a-
ministratio-
nis, ac dispe-
sationis, & r-
tionis redd-
de formati-
ponit, ut hi

Ad quod v-
de inf. const.
66.

officiorum
ambitus
hibet.Contrave-
nientia
ma.Deceituna
trans.ausule de-
gatoriz.ausuppo-
m fides.P. An. 3.
8. Junii.

publication.

fusione penitus interdicta, Sed & si tres, tam accepti quam impensi singulis mensibus, suo Custodi, vel Guardiano, adhibitis etiam duobus vel tribus Fratribus ejusdem domus probatoribus, rerumque uso petitis; deinde ipsimet, rursus presentibus Custode, Guardiano, & peritis, Magistro Generali, vel Visitatoribus, quotiescumque Visitationis officium fecerint. Denique ipse Magister Generalis, in proximè sequenti Capitulo generali, coram tribus iudicibus ab ipso Capitulo deputatis, illorum omnium & etiam universæ administrationis suæ publicæ & privatæ rationem reddere teneantur.

§. 8. Ceterum præcipimus atque interdicimus, omnibus & singulis, ne pro Magistratibus, & officiis prædictis, quæcumque sint, ulli ambitus fiant, aut pecunie, etiam pro confirmationibus, sigillo vel scriptura, aut quacumque alia re vel causa solvantur, aliæve pactiones, seu promissiones intercedant, seu munera, aut xenia quocumque modo mitantur, neve quisquam etiam in officio existens pecunias, aut aliud quicquam, de domo vel custodia sibi commissa, vel aliunde Generali, seu alicuique conferat vel remittat.

§. 9. Quicumque fecus fecerint, in penam privationis Magistratum & officiorum suorum incendant, & ad futura inhabiles & infames reputentur, & pro culpis, etiam tamquam fures puniantur, prout nos illos privatos, inhabiles & infames declaramus eo ipso.

§. 10. Decernentes irritum & inane, quicquid fecus in præmissis, per quoscumque, scienter vel ignoranter contigerit attentari, Procuratoribus tamen Generali ex universo ordine, ac Provincialibus Magistris ex sua cuique Provincia, & Visitatoribus, ex domibus & locis visitandis debitis & necessariis, nequaquam per Præsentes sublati.

§. 11. Non obstantibus prædictis, & nostra de non tollendo jure quæsito, aliisque constitutionibus & ordinationibus Apost. ac dicti Ordinis juramento, confirmatione Apost. vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, necnon Bulla aurea, & Maremagnum nuncupatis, & quibuslibet aliis privilegiis, indulgentiis, & litteris Apostol. generalibus & specialibus, quorumcumque tenorem existant, per quæ præsentibus non expressa, vel totaliter non inserta, effectus eorum impediri valeat quomodolibet, vel deferri, & de quibus, quorumque totis tenoribus ad verbum habenda sit in nostris litteris mentio specialis, quæ omnia, contra prædicta nolumus cuiquam in aliquo suffragari.

§. 12. Ceterum quia difficile valde esset easdem præsentibus ad singula loca, ubi illis opus erit transferre, volumus ut earum exemplis, etiam impressis, manuque Notarii publici, & sigillo Prælati Ecclesiastici, vel ejus curiæ obsignatis, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ eisdem præsentibus adhibetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Nulli ergo omnino &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1568. 6. Idus Junii, Pontificatus nostri anno 3.

Anno à Nativitate D. 1568. Indictione 11. die vero 10. mensis Junii, Pontificatus Sanctissimi in Christo Patris & D. N. D. Pii divinæ providentia Papæ V. anno 3. retrospectæ litteræ Apostolica & publicatæ fuerunt in generali retrospectorum fratrum Conventualium, videlicet Magistris Generalis, & Provincialium Congregatione habitæ in Conventu SS. Apostolorum de Urbe, per me Robertum Fontanum Clericum Nuntientem Archiviū Romanæ Curie scriptorem. præsentibus ibidem Illustriss. & Reverendiss. D. Alexandro Card. Cribello Viceprotettore, & Reverendiss. P. D. Episcopo S. Agathe testibus &c. In quorum fidem hic me subscripsi.

Robertus Fontanus Archiviū Rom.
Curie scriptor.

Declaratio Concilii Tridentini sess. 24. cap. 3. super impedimento publicæ honestatis, circa sponsalia vel matrimonia.

Ad materiam dispensationum matrimonialium, circa exprimenda in supplicationibus, vide hic sup. in const. 13. Sanctissimus. fol. 206. & const. 21. Cum scus. fol. 213.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

AD Romanum spectat Pontificem sua solitudine diligenter providere, ut sacrorum Conciliorum decreta ita suæ declarationis adminiculo dilucidentur, quod nulla desuper dubitandi occasio cuiquam relinquatur.

§. 1. Sanè ad aures nostras pervenit, multos esse, qui dubitent, an decretum æcumenici Concil. Trid. sess. 24. de reformatione matrimonii cap. 3. quo cavetur, impedimentum publicæ honestatis, ubi sponsalia valida non fuerint, prorsus tolli, ubi verò valida fuerint, non excedere primum gradum, cum in ulterioribus gradibus non possit hujusmodi prohibitio servari, de sponsalibus per verba (ut aiunt) de futuro tantum conceptis intelligatur, vel etiam matrimonia per verba de presenti contracta, non tamen consummata, quæ interdum sponsalia appellantur, comprehendat, ita ut etiam eo casu impedimentum inde proveniens sublatum fuerit.

§. 2. Nos itaque ut omnis difficultas, dubitatioque tollatur, attendentes quod sponsaliorum appellatione, qua dictum Concilium utitur, non nisi improprie matrimonium verbis de presenti conceptis contractum continetur, quodque agitur de correctione juris veteris, quo casu secundum proprietatem verborum dumtaxat procedendum est, præsertim cum longe majorem rationem prohibitionis in matrimonio per verba de presenti contracto, quam in sponsalibus de futuro vigere à nemine dubitetur; idcirco Matu proprio auctoritate Apostolica tenore præsentium, declaramus & definimus, decretum Concilii hujusmodi omnino intelligendum esse, & procedere in sponsalibus de futuro dumtaxat, non autem in matrimonio sic, ut præfertur, contracto, sed in eo durare adhuc impedimentum in omnibus illis casibus & gradibus, quibus de jure veteri ante prædictum decretum Concilii introductum erat. Et ita ab omnibus judicari debere mandamus atque statuimus.

§. 3. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, aliisque contrariis quibuscumque.

§. 4. Volumus autem quod præsentibus litteræ in Cancell. nostra, & in acie campi Floræ de more publicentur, & inter constitutiones perpetuè valituras describantur. Et quia difficile foret præsentibus ad singula quæque loca deferri, volumus & etiam declaramus, quod earum transcriptis etiam impressis, manu alicujus Notarii subscriptis, ac sigillo alicujus Prælati munitis, eadem prorsus fides ubicumque adhibeatur, ac si forent exhibitæ vel ostensæ.

Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1568. Kalend. Julii, Pontificatus nostri anno tertio.

Reformatio Fratrum & Sororum Tertiæ Ordinis de Penitentia S. Francisci, in communione & subtrium substantialium votorum professione viventium.

Istam constitutionem moderatus est in quibusdam Sixtus V. in ejus const. 28. Romani. Institutionem vero hujus Tertiæ Ordinis notavi sup. in Tomo I. in const. 42. Leon. X. Inter cætera. fol. 276.

LXII.

Edita An. D.
1568.

Exordium.

Dubium.

Declaratio
dicti dubii.Derogatio
contrariis.Forma publi-
cationis.Dat. P. An. 3.
die 1. Julii.

LXIII.

PIUS EPISCOPUS,

Sernus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D.
1568.

Exordium.

EA est officii nostri ratio, ut cum de ceteris Ecclesie nobis commissæ Ordinibus, vel in sua integritate continendis, vel ad institutum revocandis, curam perpetuam capiamus, majore tamen sollicitudine eadem illa in Religiosorum sodalitatibus requiramus, quos ideo Altissimus in suum sibi sanctuarium segregavit, ut ceteros fideles viam doceant, qua & ipsi æternæ salutis beatitudinem consequantur.

Causa hujus
reformat.

§. 1. Itaque inter ceteras religiones, Fratrum quoque Tertii Ordinis S. Francisci de Penitentia nuncupati in Congregatione vivant, ac tribus votis substantialibus adstrictorum status nos commoveret, ut ad illud reformatum studia nostra conferamus, quando vel ex tam multis, quæ bonæ mem. Rodolphus Episcopus Osiensis Cardinalis Carpentis nuncupatus, dicti Ordinis Protector, Sedis Apostolicæ auctoritate fretus in reparanda horum disciplina præclare & salubriter edidit, religionem hanc parum admodum profecisse agnovimus.

Extinctio of-
fic. Visitato-
ris Ministri,
& Vicarii ge-
neralis.Hoc revoca-
vit Six. V. cit.
in rubr.

§. 2. Proinde nos hac præcipua morbi causa ex propria Præsentium, & aliorum Ministrorum negligentia, vel inscitia comperta, in communem dicti Ordinis salutem alia ratione intenti, de nobis attributæ potestatis plenitudine officia Ministratus & Visitatoris generalis dicti Ordinis perpetuo extinguimus, & abolemus, ac Ministrum, Visitatorem, & Vicarium generalem ejusdem Ordinis, officio, usu & exercitio omnimode interdicens, edictoquoque prohibemus, ne ullus post hac Minister, Vicarius, ac Visitator generalis de dicto Ordine habeatur.

Subjectio e-
jusdem Ord.
Gen. & Pro-
vincialib. Mi-
nistris fra-
trum Min de
Observantia.Hoc revoca-
vit Six. V. ib.

§. 3. Ceterum ut deinceps Ordo ipse utiliorum Reformationi consilio, & opera dirigatur, nos diversorum etiam Prædecessorum nostrorum ordinationes sequentes, universos & singulos Fratres, Sorores, Professos, & Conversos, necnon domos, monasteria, & loca virorum & mulierum, ac custodias, & Provincias per universum Orbem constitutas, gregemque ipsum universum Tertii Ordinis utriusque sexus Generali, & Provincialibus Ministris Ordinis Fratrum Minorum de Observantia nuncupatorum prout in eorum Provinciis consistunt ita perpetuo supponimus, ut Minister generalis in universo Ordine, Provinciales vero Ordinis Minorum de Observantia in suis quique Provinciis plenum jus, liberamque auctoritatem, ac in spiritualibus & temporalibus jurisdictionem omnimodam habeant, domos omnes, ac monasteria & loca quæcumque, necnon personas utriusque sexus, tam in capite quam in membris visitandi, & corrigendi, vagantes & quoscunque alios puniendi, carcerandi, mutandi, transferendi, ordinibus, officiis, & administrationibus, deponendi, excommunicandi, suspendendi, interdicens, & restituendi, ac super iis & ceteris omnibus Ordinem ipsum illiusque domos & personas utriusque sexus quomodolibet concernentibus, eorum tamen regulæ prædictæ, & sacris canonibus, ac præsentibus litteris non contrariis statuendi, mutandi, innovandi & exequendi, quemadmodum illis est in suo proprio Ordine attributum.

Fratres & So-
rores Tertii
Ordin. recipi-
ant in Su-
periores Fra-
tres de Ob-
serv.Hoc revoca-
vit Six. V. ut
sup.

§. 4. Præcipimus igitur in virtute sanctæ obedientie universis & singulis Fratribus & Sororibus Tertii Ordinis prædicti ubilibet constitutis, ut Generalem & Provinciales Ministris Ordinis Fratrum Minorum de Observantia, tamquam Patres, & Superiores suos, eorumque monita & mandata humiliter & devote recipiant & re ipsa adimplere procurent, alioquin contradictores quoslibet & rebelles, sententiæ, censuræ & pænæ quos quique ipsorum rite tulerint in eisdem ipso facto volumus subjacere.

Protectorem
eiusdem ha-
beat.

§. 5. Pari quoque ratione eis Cardinalem Protectorem Fratrum de Observantia in Protectorem tribui-

mus, qui eam in eisdem omnes curam & auctoritatem obtineat, quam alius quique plenissime hucusque comperitur habuisse.

§. 6. Statuentes præterea quod futuris omnibus Capitulis Provincialibus Fratrum Tertii Ordinis hujusmodi pro Visitatorum Provincialium, & aliorum officiorum electione, Fratrum divisione, & salubri cujusque Provincia directione annis singulis celebrandis, aut Generalis aut ejus Commissarius, aut in cujus Provincia Capitulum illorum habebitur, Provincialis Minister Ord. Minorum de Observantia hujusmodi semper præsideat, aliter verò celebrata, ac omnia in eis decreta pro irritis habeantur.

§. 7. In ipsis autem Capitulis Provincialibus Visitatorum Provincialium electio de idoneis Fratribus Tertii Ordinis hujusmodi per secreta suffragia, & aliis eo modo, quo de Fratrum Minorum de Observantia Provincialibus celebratur, celebrata per Ministrum generalem prædictum ante omnia confirmetur.

§. 8. Hæc verò officia annalia dumtaxat esse, & in singulis Capitulis Provincialibus prædictis resignari debeant, ita ut lapsio primo anno illa vacare censeantur. Poterunt tamen ipsimet Visitatores Provinciales rursus in sequentem annum, & eo finito, etiam in tertium, si idonei reperiuntur, eodem modo eligi & confirmari, sed omnes suis hujusmodi officiis quandocumque perfuncti, de novo ad illa nisi transacto sexennio nequeant revocari.

§. 9. Ceterum omnes & singuli Fratres & Sorores Tertii Ordinis hujusmodi in sua quique Provincia Visitatori suo tamquam Superiori in omnibus quæ suis regularibus institutis non adversantur, obediunt. Omnes vero Visitatores Provinciales hujusmodi sic electi tamquam vices gerentes Ministrorum Provincialium Ordinis Fratrum Minorum de Observantia, & illis subditi prædicandi, & docendi munus in singulis utriusque sexus domibus, Conventibus & locis suæ cujusque Provincie obire, eamque in sibi subditos Fratres & Sorores jurisdictionem, quam ipsimet Ministri Provinciales Ordinis Minorum de Observantia obtinent, in omnibus & per omnia exercere ac quandocumque opus erit confessiones omnium & singulorum Fratrum, & Sororum Tertii Ordinis hujusmodi per se vel alios suæ regulæ sacerdotes idoneos audire, illosque ab omnibus & singulis sententiis, excommunicationis, suspensionis & interdicti, aliisque censuris & pænis Ecclesiasticis, necnon peccatis, criminibus & delictis, dummodo talia non sint propter quæ Sedes Apostolica merito consulenda foret, in foro conscientie dumtaxat absolvere, & pro commissa penitentiam salutarem injungere, ac cum Clericis, & Presbyteris ejus Ordinis super irregularitate si quam sententiis & censuris hujusmodi illaqueati, Missas & alia divina officia, non tamen in contemptum clavium, celebraverint, vel alias se illos immiscendo contraxerint, dispensare libere & licite valeant.

§. 10. Ad hæc nullus omnino Fratrum & Sororum Tertii Ordinis hujusmodi, qui prædicta tria vota substantialia fecerint, etiam prætextu quorumcumque privilegiorum, dispensationum, indultorum, permissionum Apostolicorum, aut etiam inveteratæ consuetudinis voto repugnantis, seu quacumque alia causa proprium quicumque aut privatum liceat obtinere, sed omnia etiam privatum, ac intuitu cujuscumque persone donata, oblata, & concessa, ubique communia & indivisa omnibus Religiosis esse debeant. Quicumque verò pecuniam, aut aliam rem qualemcumque sibi quacumque causa concessam Prelato suo celaverint, furti reus censeatur, & tamquam fur puniatur. Eam tamen diligentiam Superior cujusque domus adhibeat, ut communi ipsius domus singulis juxta exigentiam consulatur.

§. 11. Præterea Sorores dicti Tertii Ordinis in

Six. V. il
confirmat.In eorum
pitul. int
veniant
periores
Obsev.
Six. V.
mutavitElectio
vinctu
fiat per
secreta.
In hoc
Clem. V.
conflic.
3.
Decet.Eorum
cia quan
durent.Visitato
Provinci
lium fac
tates.Tua hor
tende d
iam Six.Fratres, &
rores huj
Tertii Or
professio
privatum
bette poss

ANNO
1568.

Sorores ejus-
dem Ord. in
communis &
sub clausura
vivere de-
beant.

Confessores
& Concionato-
res appropin-
quentur.

Decreta Ro-
mulphi Card.
Profect. ob-
serventur.

Dubia desti-
nata, a Sen-
at. & Provin-
ciali de-
clarentur.
In hoc ac-
tende, bul-
am Six. V.
Clausula
restricitive
opus retor-
nat.

Privilegia
aliorum de
observ. con-
duntur
quic Tertio
ordini.

Observantia
opus rebo-
vitionis in-
ducitur.

PIUS QUINTUS.

277

ANNO
1568.

Executorum
deputatio &
facultates.

Clausula de-
rogatoria.

Declaratio
quod non in-
telligatur
prædictum
Reformationi
Tertii Or-
dinis in Re-
gibus Hispan.

Exemplorum
fides.

D. P. An. 3.
die 3. Julii.

communi in domibus, monasteriis, vel hospitali-
bus, aut alia Congregatione viventes, & dicta tria
vota substantialia Religionis emittentes sub perpe-
tua clausura maneat, nullusque Frater, aut Con-
fessor earum, vel quicumque Prælati ad domos,
monasteria, vel alia loca Sororum hujusmodi, in
communi aut collegialiter viventium, nisi quibus
ex officio incumbit, & in casibus necessariis à jure
permis, & tunc cum uno vel duobus sociis pro-
fectis, & honestis, ingredi audeat; qui secus fe-
cerit carceribus mancipetur, omnibusque admi-
nistrationibus, & officiis deponatur.

§. 12. Ipsarum vero Sororum, & omnes alii
Confessores, & sacri Concionatores, per Genera-
lem vel Provinciale Ministerium approbentur.

§. 13. In ceteris autem omnibus quæ ad religio-
sam vitam pertinent, illa prædicti Fratres & Soro-
res Tertii Ordinis observare teneantur, quæ à præ-
dicto Rodolpho Episcopo, & Protectoris vigesima
octava Aprilis, Anno Domini 1549. fuerunt ordina-
ta, substantiam totius hujusmodi regulæ ma-
ximè continentia, quam fel. rec. Nicolaus Papa
IV. prædecessor noster ad incrementum fidei Ca-
tholicæ approbavit, ita tamen ut præsentibus nul-
latenus adveniantur.

§. 14. Quæcumque verò dubia in eis contingerit
exoriri, illa omnia Generalis, & Provincialis Mi-
nistri Ordinis Minorum hujusmodi debeant decla-
rare, quorum declarationi & determinationi eor-
um regulæ, & præsentibus non contrariæ stari
debeat.

§. 15. Ac decernentes præsentibus litteras de sub-
reptionis, vel obreptionis vitio, seu intentionis
nostræ defectu nullo unquam tempore notari, seu
impugnari posse, aut debere, nec adversus eas, &
in eis contenta quæcumque restitutionem in integ-
rum, aut reductionem ad terminos juris, vel aliud
quodcumque gratiæ seu justitiæ remedium quicquam
impetrare, vel etiam ab aliis impetrato, aut Morti
proprio concessio uti valeat ex quavis causa quan-
tumlibet rationabili, ac omnia & singula præmissa
aliquibus ejusmodi Ordinis statutorum, ac quibus-
vis aliis revocationibus, suspensionibus, limitatio-
nibus, & aliis contrariis dispositionibus, generali-
bus vel specialibus per quoscumque Romanos Pon-
tifices successores nostros pro tempore factis non
comprehendantur, sed semper ab illis excepta sint.
Sicque per quoscumque Judices quavis auctoritate
fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Au-
ditores, ac Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales,
etiam de latere Legatos, in quavis causa & instan-
tia, sublati eis & eorum cultibus quavis aliter judi-
candi & interpretandi facultate & auctoritate, judi-
cari & definituri debeat, necnon irritum & inane
quicquid secus super iis per quoscumque quavis
auctoritate, etiam prætextu privilegiorum, facult-
tatum, dispensationum, & indultorum Apostoli-
corum, quæ quo ad hoc penitus abolemus, aut
quovis alio quæsito colore scienter vel ignoranter
contigerit attentari.

§. 16. Insuper universis & singulis Fratribus &
Sororibus Tertii Ordinis hujusmodi, eorumque
domibus, monasteriis & locis, omnia & singula
privilegia, indulgentias, dispensationes & indulta
Apostolica, Fratribus & Sororibus dicti Ordinis
Minorum de Observantia, etiam quo ad Sacra-
mentorum ecclesiasticorum administrationem &
receptionem, quomodolibet concessa & conceden-
da quæcumque sint & fuerint (Præsentibus tamen
non repugnantis) ita ut illis omnibus & singulis
pariformiter, & æque principaliter uti, potiri,
& gaudere liberè & licitè valeant, concedimus &
indulgemus.

§. 17. Ceterum omnibus & singulis Fratribus,
& Sororibus Tertii Ordinis hujusmodi districtius
injungimus, ut præsentibus nostras litteras humiliter
recipiant; & quæcumque eis expressa, ac per eas
statuta decreta & mandata sunt, alia desuper à no-
bis non expectata jussione, aut mentis nostræ de-

claratione firmiter custodiant, & in omnibus stu-
diose obedire procurent.

§. 18. Quin etiam dilectis filiis nostris Carolo tit.
S. Prædixis presbytero Card. Borromæo nuncu-
pato dicti Ordinis Protectori, & illius Ministro ge-
nerali per Apostolica scripta mandamus, ut ipsi vel
eorum alter easdem præsentibus, ac quicquid pro
earum executione & observatione in dictis futuris
Capitulis Provincialibus, vel etiam extra illa ab
Generalis, & Provincialibus Ministris Ordinis fra-
trum Minorum de Observantia hujusmodi statue-
tur, ordinabitur, & decerneatur in omnibus, do-
mibus, monasteriis & locis virorum, & mulierum,
ac ab omnibus & singulis Fratribus & Sororibus
Tertii Ordinis hujusmodi inviolate faciant per se
vel alium, seu alios observari. Contradictores
quoslibet & rebelles, ac etiam protestantes, &
reclamantes, eisque auxilium, consilium vel favo-
rem, publicè vel occultè, directè vel indirectè quo-
vis quæsito colore vel ingenio præstantes, tam Ec-
clesiasticos quàm laicos, cujuscumque dignitatis,
gradus, ordinis vel conditionis fuerint, per sen-
tentias, censuras & penas Ecclesiasticas, cetera-
que juris & facti remedia opportuna, appellatione
postposita compescendo, legitimè super his
habendis servatis processibus, sententias, censu-
ras & penas prædictas, etiam iteratis vicibus ag-
gravando; invocato etiam ad hoc si opus fuerit
auxilio brachii secularis.

§. 19. Non obstantibus nostræ de non tollendo
jure quæsito, & piz mem. Bonifacii Papæ VIII.
etiam Prædecessoris nostri de una, & in Concilio
generali edita de duabus dietis, aliisque constitu-
tionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon
Tertii Ordinis, illiusque domorum, & etiam mu-
lierum monasteriorum prædictorum juramento,
confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia
roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis
quoque, indultis & litteris Apostolicis, illis, eor-
umque Superioribus & personis, ac eorum sin-
gulis per quoscumque Romanos Pontifices præde-
cessores nostros, ac nos & Sedem Apostolicam,
etiam per modum statuti perpetui, ac initii & sti-
pulari contractus, ac aliis sub quibuscumque teno-
ribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis & de-
cretis, in genere & in specie concessis, confirmatis,
ac etiam aliis reformationibus quotiescumque, ac
quocumque tempore factis & promulgatis, etiam
Mare magum, & bulla Aurea nuncupatis, ac qui-
buslibet aliis indulgentiis, & exemptionibus Apo-
stolicis, specialibus & generalibus, quorumcum-
que tenorum existant, per quæ Præsentibus non
expressa, vel totaliter non inserta, effectus earum
impediri valeat quomodolibet vel differri, & de
quibus quorumque totis tenoribus habenda sit in
nostris litteris mentio. Quæ omnia contra earum-
dem præsentium tenorem nolumus cuicumque in ali-
quo suffragari.

§. 20. Per prædicta tamen non intendimus Re-
formationi Fratrum & Sororum Tertii Ordinis in
Hispaniarum Regnis constitutis, in aliquo præju-
dicare, quominus litteræ nostræ desuper editæ, &
quæcumque illarum vigore pro rerum, locorum,
& personarum qualitate, & exigentia facta sunt
præsentibus non conformia, possint quoquo mo-
do impediri, vel retractari.

§. 21. Denique volumus quod ipsarum præsen-
tium exempla etiam impressa, dictique pro tem-
pore existentis Protectoris, aut Ministri generalis,
vel Provincialis sigillo, & Secretarii cujusvis eor-
um, vel Notarii publici manu obfirmata eandem
illam fidem ubique locorum in judicio & extra il-
lud faciant, quam ipse præsentibus si forent exhibi-
tæ vel offensus.

Nulli ergo &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum Anno incarnationis
Dominicæ 1568. 5. Non. Julii, Pontificatus nostri
anno tertio,

LXIV.

Breviarii Romani, ad psallendum horas Canonicas ex decreto sacri & Oecumenici Concilii Tridentini restituti approbatio, cum prohibitione usus aliorum Breviariorum, præterquam à primæva institutione Ordinis à Sede Apost. vel à consuetudine supra annos ducentos approbatorum,

Hoc idem Breviarium denuò corruptum restituit Clem. VIII. in const. 76. Cum in Ecclesia. Scias etiam usque ad hæc tempora, Ordines Monachorum militantes sub regula S. Benedicti, diverso Breviario usus fuisse, sed Pauli V. auctoritate hoc anno 1613. unanimiter illud reformatum, & eo uno pariformiter omnes utuntur.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D. 1568.

Divini Officii forma à Gelasio I. & Greg. I. instituta & à Greg. VII. reformat sed tamen postea multis modis immutata fuit. Ex hac varietate orandi, mala hic exorta sunt.

Quod à nobis postulat ratio Pastoralis officii, in curam incumbimus, ut omnes, quantum Deo adjutore fieri poterit, sacri Tridentini Concilii decreta exequantur, ac multo id etiam impensius faciendum intelligimus, cum ea quæ in mores inducenda sunt, maxime Dei gloriam, ac debitum Ecclesiasticarum personarum officium complectuntur. Quo in genere existimamus in primis numerandas esse sacras preces, laudes, & gratias Deo perfolvendas, quæ Romano Breviario continentur. Quæ divini officii formula, pie olim, ac sapienter à summis Pontificibus, præsertim Gelasio, ac Gregorio primis constituta, à Gregorio autem Septimo reformat, cum diuturnitate temporis ab antiqua institutione deflexisset, necessaria visa res est, quæ ad pristinam orandi regulam conformata revocaretur. Alii enim præclaram veteris Breviarii constitutionem, multis locis mutilatam, alibi incertis, & advenis quibusdam commutatam deformarunt. Plurimi, specie officii commodius allesti, ad breviteratem novi Breviarii à Francisco Quignonio tit. S. Crucis in Hierusalem Presbytero Card. compositi, confugerunt. Quin etiam in Provincias paulatim irreperat prava illa consuetudo, ut Episcopi in Ecclesiis, quæ ab initio communiter cum ceteris veteri Romano more horas Canonicas dicere ac psallere consueverant, privatum sibi quisque Breviarium conferrent, & illam communionem uni Deo, una & eadem formula, preces & laudes adhibendi dissimillimo inter se, ac penè cusque Episcopatus proprio officio disicerent. Hinc illa tam multis in locis divini cultus perturbatio, hinc summa in clero ignorantia ceremoniarum, ac rituum Ecclesiasticorum, uti innumerabiles Ecclesiarum ministri in suo munere indecore, non sine magna piorum offensione verarentur.

Ideo Paul. IV. id emendare tetur, sed morte præventus non perfecit.

Pius IV. perfectionem hujus operis commisit Patribus Conc. Trid.

Sed Conc. id remisit Pont. ut habet in Conc. pag. pen. Id Pius IV. non perfecit mort præventus.

§. 1. Hanc nimirum orandi varietatem gravissimè ferens fel. rec. Paulus Papa IV. emendare constituit, itaque provisione adhibita, ne ulla in posterum novi Breviarii licentia permitteretur, totam hanc rationem dicendi, ac psallendi horas Canonicas, ad pristinum morem, & institutum redigendam suscepit.

§. 2. Sed eo postea nondum iis quæ egregie inchoaverat, perfectis, de vita decedente, cum à pia memoriæ Pio Papa IV. Tridentinum Concilium, antea varie intermissum revocatum esset, Patres in illa salutari reformatione eodem Concilio constituta, Breviarium ex ipsius Pauli Papæ ratione restituere cogitabant. Itaque quicquid ab eo in sacro opere collectum, elaboratumque fuerat, Concilii Patribus Tridentinum à prædicto Pio Papa missum est.

§. 3. Ubi cum doctis quibusdam, & piis viris à Concilio datum esse negotium, ut ad reliquam cogitationem, Breviarii quoque curam adjungerent, instante jam conclusione Concilii, tora res ad auctoritatem, judiciumque Romani Pontificis ex decreto ejusdem Concilii relata est, qui illis ipsis Patribus ad id munus electis, Romam vocatis, nonnullisque in Urbe idoneis viris ad eum numerum

adjunctis, rem præficiendam voluit. Verum eo etiam in viam universæ carnis ingresso.

§. 4. Nos, ita divina disponente clementia, licet imminenti, ad Apostolatus apicem assumpti, cum sacrum opus adhibitis etiam ad illud aliis peccitis viris, maxime urgemus magna in nos Dei benignitate, (sic enim accepimus) Romanum hoc Breviarium vidimus absolutum. Cujus ratione dispositionis ab illis ipsis, qui negotio præpositi fuerant, non semel cognita, cum intelligeremus, eos in rei confectioe ab antiquis Breviariis nobilium Urbis Ecclesiarum, ac nostræ Vaticanæ bibliothecæ non decessisse, gravesque præterea aliquot eo in genere Scriptores secutos esse, ac denique remotis iis, quæ aliena, & incerta essent, de propria summa veteris divini officii nihil omisisse, opus probavimus, & Romæ imprimi, impressumque divulgari iussimus. Itaque ut divini hujus operis effectus re ipsa consequatur, auctoritate præsentium tollimus in primis, & aboleamus Breviarium novum à Francisco Cardinale prædicto editum, & in quacunque Ecclesia, Monasterio, Conventu, Ordine, militia, & loco, virorum, & mulierum, etiam exempto, tam à primæva institutione, quam aliter ab hac Sede permissum.

§. 5. Ac etiam aboleamus quæcumque alia Breviaria vel antiquiora, vel quovis privilegio munita, vel ab Episcopis in suis Diocæsisbus promulgata, vel ab Episcopis in suis Diocæsisbus promulgata, omneque illorum usum de omnibus Orbis Ecclesiis, monasteriis, conventibus, militibus, ordinibus, & locis virorum, ac mulierum, etiam exemptis, in quibus alias officium divinum Romanæ Ecclesiæ ritu dici consuevit, aut debet; illis tamen exceptis, quæ ab ipsa prima institutione à Sede Apostolica approbata, vel consuetudine, vel quæ ipsa institutio ducentos annos antecedit, aliis certis Breviariis uso fuisse confiteri, quibus, ut inveteratum illud juri dicendi, & psallendi suum officium non adimimus, si eisdem, si forte hoc nostrum, quod modo promulgatum est, magis placeat, dummodo Episcopus, ac universum Capitulum in eo consentiant, ut id in Choro dicere, & psallere possint, permittimus.

§. 6. Omnes vero, & quascunque Apostolicas, & alias permissiones, ac consuetudines, & statuta, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel alia firmitate munita, necnon privilegia, licentias & indulta precandi & psallendi, tam in choro quam extra illud, more & ritu Breviariorum sic suppressorum, prædictis Ecclesiis, monasteriis, conventibus, militibus, ordinibus, & locis, necnon S. R. E. Cardinalibus, Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, Abbatibus, & aliis Ecclesiarum Prelatis, ceterisque omnibus & singulis personis Ecclesiasticis, secularibus, & regularibus utriusque sexus, quacunque causa concessa, approbata, & innovata, quibuscunque concepta formulis, ac decretis, & clausulis roborata, omnino revocamus, volumusque illa omnia vim & effectum de cetero non habere.

§. 7. Omni itaque alio usu, quibuslibet, ut dictum est interdicto, hoc nostrum Breviarium, ac precandi, psallendique formulam in omnibus universi orbis Ecclesiis, Monasteriis, Ordinibus, & locis etiam exemptis, in quibus officium ex more, & ritu dictæ Romanæ Ecclesiæ dici debet, aut consuevit, salva prædicta institutione, vel consuetudine prædictos ducentos annos superante, præcipimus observari. Statuentes Breviarium ipsum nullo unquam tempore, vel in totum, vel ex parte mutandum, vel ei aliquid addendum, vel omnino detrahendum esse, ac quovisquam, qui horas Canonicas ex more & ritu ipsius Romanæ Ecclesiæ, jure vel consuetudine dicere, vel psallere debent, propositis penis per canonicas sanctiones constitutis, in eos qui divinum officium quotidie non dixerint; ad dicendum, & psallendum posthac in perpetuum Horas ipsas diurnas & nocturnas ex hujus Romani Breviarii præscripto & ratione omnino teneri, neminemque ex iis, quibus hoc dicendi, psallendique mu-

Hic vero Pont. perfectio Breviarii & approbavit.

Et modo prohibet aliud Breviarium alias editum à Franc. Card. omnique alia Breviaria non approbata in primæva institutione, vel consuetudine excedente annos ducentos.

Revocat etiam quæcumque statuta, & facta, & jura ejus formant, quorum Breviariorum.

Breviariumque istud novum recte, & juxta ejus formam orari præcipit.

Monet quoque Ecclesiarum Praelatos ut hoc Breviarium introducant.

Indulg. dat dicentib. Psal. Penit. vel Gradual. vel Offic. B. M. & Defunct. dieb. in eis praescriptis.

Forma publ. Quae mox sequitur.

Breviar. Romae tantum. & non alibi sine licentia Pont. imprimi potest.

Ad hoc vide Clem. cit. in rub.

Sanctio poenalis.

Publicatio.

nus necessario impostum est, nisi hac sola formula satisfacere possit.

§. 8. Jubemus igitur omnes, & singulos Patriarchas, Archiepiscopos, Episcopos, Abbates, & ceteros Ecclesiarum Praelatos, ut omnis quae sic suppressimus, & abolevimus, ceteris omnibus etiam privatim per eos constitutis, Breviarium ipsum in suis quisque Ecclesiis, monasteriis, conventibus, ordinibus, militiis, Diocesis, & locis praedictis introducant; & tam ipsi, quam ceteri omnes presbyteri, & clerici, faculares & regulares utriusque sexus, necnon milites, & exempti, quibus officium dicendi, & psallendi quomodocumque sicut praedicatur, injunctum est, ut ex hujus nostri Breviarii formula, tam in choro quam extra illum, dicere & psallere procurent.

§. 9. Quod verò in rubricis nostri hujus officii praescribitur, quibus diebus officium B. MARIE semper Virginis, & Defunctorum, item Septem Psalmos Penitentiales, & Graduales dici, ac psalli oporteat nos propter varia hujus vitae negotia, multorum occupationibus indulgentes, peccati quidem periculum ab ea praescriptione removendum duximus, verum debito providentia pastoralis admoniti, omnes vehementer in Domino cohortamur, ut remissionem nostram, quantum fieri poterit, sua devotione ac diligenter praecurrerent, illis etiam precibus, suffragiis, & laudibus, suae, & aliorum saluti confuturum studeant. Atque ut Fidelium voluntas, ac studium magis etiam ad salutarem hanc consuetudinem incitetur, de omnipotentis Dei misericordia, beatorumque Petri, & Pauli Apostolorum ejus auctoritate confisi, omnibus, qui illis ipsis diebus, in rubricis praescriptis, beatae Mariae, vel Defunctorum officium dixerint, toties centum dies, qui vero Septem Psalmos, vel Graduales, quinquaginta, de injuncta ipsis poenitentia relaxamus.

§. 10. Ceterum ut praesentes litterae omnibus plenius innotescant mandamus illas ad valvas basilicae Principis Apostolorum de Urbe, & Cancellariae Apostolicae, & in acie Campi Florae publicari, earumque exempla de more affigi. Volumusque & Apostolica auctoritate decernimus quod post hujusmodi publicationem, qui in Romana Curia sunt praesentes, statim lapsa mense, reliqui verò, qui intra montes, tribus, & qui ultra ubique locorum degunt sex mensibus excursus, vel cum primum venationem hujus Breviarii voluminum facultatem habuerint, ad precandam, & psallendum juxta illius ritum, tam in Choro, quam extra illum, maneat obligati. Ipsarum autem litterarum exempla manu Norarii publici, & sigillo Praelati Ecclesiastici, aut illius curiae obsignata, vel etiam ipsius voluminibus absque praedicto, vel alio quopiam adminiculo Romae impressa, eandem illam ubique locorum fidem faciant, quam ipsae praesentes, si essent exhibita, vel ostensa.

§. 11. Sed ut Breviarium ipsum ubique inviolatum, & incorruptum habeatur, prohibemus ne alicui usquam, in toto orbe, sine nostra, vel specialis ad id Commissarii Apostolici, in singulis Christiani orbis regnis, & provinciis deputandi, expressa licentia, imprimatur, proponatur, vel recipiatur. Quocumque verò, qui illud secus impresserint, proposuerint, vel receperint, excommunicationis sententia eo ipso innotamus.

§. 12. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrae ablationis, abolitionis, permissionis, revocationis, suspensionis, praecipii, statuti, indulti, mandati, decreti, relaxationis, cohortationis, prohibitionis, innodationis, voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire.

Si quis &c.

Dat. Romae apud S. Petrum, Anno incarnationis Dominicae 1568. septimo Id. Julii, Pontificatus nostri anno 3.

Anno à Nativitate D. 1568. Indiç. xi. die verò 15. mensis Julii, Pontif. Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa V. Anno ter-

tio retroscripta littera Apostolica affixa & publicata fuerunt ad valvas Basilicae Principis Apostolorum de Urbe, Cancellariae Apostolicae, & in acie Campi Florae, dimissis ibidem praesentibus litteris per aliquantulum temporis spatium, ut moris est affixis & deinde amotis, per nos Julium Parinum, & Joannem Bornoium praebatos S. D. N. Papa Cursores.

Dereferentia Rectorum Ecclesiarum Parochialium, quibuscumque indultis etiam Apostolicis non obstantibus.

Ad hac vide etiam Conc. Trid. sess. 23. cap. 1. & sess. 24. cap. 12. de reformat. & supra Pii IV. constit. 10. De salute. fol. 21. & constit. 91. In suprema, fol. 140.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Cupientes pro nostri Pastoralis officii munere Christianissimum animarum salutem quantum cum Deo possumus salubriter consulere, & Parochialibus Ecclesiis ab eorum Parochis prout tenentur, in divinis debite & laudabiliter deserviri, inhaerendo etiam decretis sacri Concilii Tridentini.

§. 1. Motu proprio, & ex mera deliberatione, certa scientia nostra, ac de Apostolica potestate plenitudine hac nostra perpetuo valitura constitutione, omnes & singulos Rectores Parochialium Ecclesiarum quoscumque dignitatis, status, gradus, ordinis, conditionis & praeminentiae fuerint, in quibuscumque Regnis, Provinciis, Civitatibus, Diocesis, ac aliis Christiani Orbis partibus consistentes, qui Parochialem Ecclesiam, ac Canonicatum, aut dignitatem, etiam post Pontificalem majorem, seu principalem in quibusvis Patriarchalibus, aut Metropolitanis vel Cathedralibus, seu Collegiatis Ecclesiis, seu aliud quodcumque beneficium Ecclesiasticum, etiam quarumcumque dispensationem à Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris, seu etiam à nobis hactenus quomodolibet impetratarum, ac litterarum Apostolicarum desuper expeditarum titulo, quas omnes hac praesenti constitutione abolemus & revocamus, seu quocumque alio praetextu obtinent, cum prima & praecipua debeat esse cura animarum, eos ad residendum in Ecclesia Parochiali, & ibi in divinis deservendum, debitoque eorum officio fungendum omnino teneri, & obligatos esse, ac ad id per Episcopos, & aliorum locorum Ordinarios, etiam tamquam Apostolicae Sedis delegatos, sub sententiis & censuris Ecclesiasticis, ac pecuniariis, arbitrio eorum declarandis, ac etiam privationis dictarum Parochialium, & aliorum quorumcumque beneficiorum poenis, quacumque appellatione remota, cogi & compelli posse, & debere auctoritate Apostolica tenore praesentium statuimus, praecipimus & ordinamus. Eos tamen hic residentes in Ecclesiis Parochialibus, omnes & singulos fructus, redditus, & proventus, etiam Canonicatus sui, vel dignitatis, seu alterius quuscumque beneficii, exceptis dumtaxat quotidianis distributionibus, & aliis quae ex justa causa absentes percipere non solent, lucrari volumus.

§. 2. Sicque per quoscumque Judices & Commissarios etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Cardinales, sublaeis eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate, interpretari, judicari, & definiti debere, necnon irritum, & inane quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter attentatum forsan est hactenus, vel in posterum contigerit attentari, decernimus & declaramus.

§. 3. Non obstantibus praemissis, ac quibusvis dispensationibus, & exemptionibus, litterisque Apосто-

LXV.

Edita An D.
1568.

Exordium.

Rectores Parochialium compellantur ad residendum per Ordinarios ut hic.

Decretum irritans.

Clausula derogatoria.

licis desuper confectis, necnon Apostolicis in Provincialibus & Synodalibus Conciliis editis, generalibus vel specialibus constitutionibus & ordinationibus, & etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis quibuscumque personis in genere vel in specie; & aliis quomodolibet concessis, & approbatis; in posteramque concedendis, & approbandis; quibus omnibus, etiam si de illis eorumque totis tenoribus, specialis, specifica & individua, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quavis alia expressio habenda, aut alia exquisita forma ad hoc servanda foret, eorum tenores, ac si de verbo ad verbum infererentur, præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat ad effectum præsentium specialiter & expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque. Volumus autem quod harum litterarum transumptis etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, ac sigillo, alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides tam in iudicio quam extra adhibeatur, quæ præsentibus adhiberetur si forent exhibitæ vel offensæ.

Sanctio penalis.

§. 4. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostre abolitionis, revocationis, statuti, præcepti, ordinationis, decreti, declarationis, derogationis, & voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire.

Dat. P. An. 2. die 13. Julii.

Publicatio.

Si quis autem &c.
Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1568. octavo id. Julii, Pontificatus nostri anno tertio.
Anno à Nativitate D. 1568. Indiſſime 11. die vero 15. mensis Julii, Pontificatus Sanctissimi in Christo Patris & D. N. D. Pii divina providentia Papæ V. anno ejus 3. retroscripta littera Apostolica legitæ, affixæ & publicatæ fuerunt ad valvas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, Cancellar. Apost. & in acie Campi Floræ, dimissis ibidem præsentibus litteris per aliquantulum temporis spatium, ut est moris, affixis & deinde amotis, per nos Joannem Bornorum, & Julianum Parinum præbati Sanctiss. D. N. Papæ Curf.
Jo. Andreas Panizza Mag. Curforum.

LXVI.

Approbatio reformationis Fratrum Minorum Conventualium Ordinis S. Francisci, in Capitulo ejusdem Ordinis per eos præfixita.

Aliam reformationem jam ediderat hic Pont. ut sup. in const. 61. Ad extripandos. fol. 274. Et multa sunt videnda que notavi sup. in Tomo I. ad const. 5. Honor. III. Solet. fol. 66.

Edita An. D. 1568.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Hic Pont. addit reformationem de qua in rubr.

ILLA nos cura inter cetera sollicitat, ut optimæ disciplinae cultus in omnibus Religiosorum Sodalitatibus nutriatur, & confirmetur. Quid quidem nos pridem in amplissimo Ordine Fratrum Minorum Conventualium nuncupatorum magnopere expectantes, rerum omnium proprietatem illis ademimus; multaque præterea de ratione vivendi, & officiis eorumdem edidimus, litterasque nostras super iis confectas in eorum Capitulo generali, apud Basilicam duodecim Apostolorum de Urbe proximè celebrato palam omnibus iussimus promulgari.

Fratres in Capitulo aliam ediderunt.

§. 1. Qui illis ea qua docuit obedientia receptis, ad tollenda, & corrigenda alia præterea intenti, quæ ad hujus religionis statum in sua integritate continendum maximè obesse intelligebamus, nonnulla inter sese statuere cogitarunt. Verum instante jam ipsius Capituli conclusione, cum temporis angus-

tia id minus pareretur, negotium universum ad arbitrium, & auctoritatem Generalis, & Provincialium Magistrorum, necnon Definitorum dicti Ordinis ex voluntate nostra demandatum est, qui diversas alias præsentibus subiectas constitutiones, ab ipso Magistro Generali subscriptas ordinarunt.

§. 2. Quas omnes (salvis aliis litteris nostris prædictis) præsentium auctoritate approbamus, & confirmamus. Suppentes omnes & quoscunque sive solemnitarum omittarum, sive alios juris & facti defectus qui intervenerint in eisdem. Quin etiam illas omnes prout conscriptæ sunt facimus, & ordinamus, jubemusque ipsas æque atque nostras in omnibus Provinciis, custodiis, domibus, & locis, necnon ab omnibus, & singulis Fratribus dicti Ordinis firmiter observari, ac quoscunque qui illis non paruerint censuris, & pœnis omnibus, quæ litteris prædictis continentur, eo ipso volumus subiacere.

Quæ hic idem Pont. observari præcipit.

§. 3. Et nihilominus dilecto filio nostro Carolo tit. S. Præxedis presbytero Cardinali Borromæo nuncupato moderno, & pro tempore existenti Protætori, ac etiam Magistro Generali dicti Ordinis per Apostolica scripta mandamus, ut ipsi, vel eorum alter, per se vel alium seu alios, ubi & quando opus fuerit, tam supradictas quam præsentibus litteras, & eisdem insertas constitutiones omnes, in omnibus & singulis Provinciis, custodiis, domibus, & locis prædictis, ac ab omnibus & singulis Magistris, Guardianis, Fratribus, & personis in eis expressis, juxta singularum litterarum, & constitutionum hujusmodi tenorem, inviolatè observari. Contradictores quoslibet & rebelles per censuras, & pœnas aliis nostris litteris contentas prædictas, ceteraque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita compellendo, censuræque & pœnas ipsas etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

Executores deputat.

§. 4. Non obstantibus præmissis, & fel. record. Bonifacii Papæ Octavi prædecessoris nostri de una, & in Concilio generali edita de duabus dietis, aliisque Apostolicis constitutionibus, ac etiam dicti Ordinis statutis, & consuetudinibus, juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, contrariis quibuscumque. Aut si Magistris, Guardianis, & Fratribus prædictis, vel quibuscumque aliis communiter vel divisim ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem, necnon Mare magnum, & Bulla aurea nuncupatis, ac quibuslibet aliis privilegiis, exemptionibus, indulgentiis, & litteris Apostolicis, generalibus & specialibus, quorumcumque tenorem existant, per quæ præsentibus non expressa, vel totaliter non inserta effectus earum impediri valeat quomodolibet vel differri, & de quibus quorumque totis tenoribus habenda sit in nostris litteris mentio specialis, quæ omnia contra ipsarum præsentium, & constitutionum hujusmodi tenorem & effectum, nolumus cuiquam in aliquo suffragari. Quin etiam ex nunc irritum decernimus & inane, quicquid secus super his per quoscunque quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Contrariis derogat.

Ita igitur Constitutiones prædictæ scriptæ sunt.

Reformationis tenor.

§. 5. Novitii etiam oblatis, ante decimum octavum ætatis suæ annum completum ne recipiantur, neque ante decimum nonum item completum ad professionem admittantur.

Novitiorum recipiendorum ætas.

§. 6. Qui hæcenus recepti etiam oblatis, quintum decimum annum non expleverint, detracto habitu Religionis, domum ad parentes, vel necessarios, etiam invitati remittantur, vel aliis omni-

Et etiam oblatorum.

Laicorum
aetas.Novitiorum
recipiendum
loca.Provinciales
eligendi ex
aliena Pro-
vincia.Guardiana-
tus officium
quantum du-
ret.Paternitatis
titulo qui do-
nantur.Frates fient
per biennium
in uno Con-
ventu.Fratrum nu-
merus in
quolibet
Conventu.Regentes
Studiorum
quor lectio-
nes interpre-
tari debeant.Fratrum exer-
citiū quo-
tidianum.Proprium ni-
hil habeant.In communi
vivant.Infirmi & se-
nes curentur.Bonorum cu-
stodia.

no emittantur, nec postea in aedibus unde exierint, aut in aliis ejusdem Ordinis domibus versari ullo modo possint.

§. 7. Laici qui vigesimum quintum annum non attigerunt, ad serviendum ne recipiantur, & qui receperint etiam nunc ea aetate minores sunt, ejiciantur.

§. 8. Novitii ne recipiantur, aut educantur, nisi in Conventibus insignioribus, in quibus Dormitorium, & Capitulum habeant seorsum ab aliis Fratribus.

§. 9. Nullus deinceps Provinciae praeficiatur, qui ejusdem Provinciae sit, sed Provinciales ex aliena Provincia semper assumantur, qui tamen idonei sint ad officium, & cultores regularis observantiae.

§. 10. Guardianus insignioribus & privilegiati, ut Roman. Assistent. & hujusmodi, triennio, non privilegiati biennio diuturniores ne sint; in quo tamen habenda est ratio Provinciarum externarum. In illis eorum locis haec officia iusta de causa in longius tempus arbitrio Superioris protrahi poterunt.

§. 11. In paternitatibus haecenus concessis, & posthac concedendis, ea moderato adhibeatur, ut nemo paternitatis titulo, vel privilegio fruatur, nisi qui Provincialis officium obtineat, vel obtulerit, vel quadragesimum annum agat, & aliis etiam eo titulo & privilegio dignus existat.

§. 12. Nulli in eodem Conventu plus biennio manere liceat, exceptis sexagenarii majoribus, quibus aliquid ex causa Superioris arbitrio condonari poterit.

§. 13. In Conventu vel domo pauciores ne sint duodecim Fratres. Si qua autem domus hunc familiae numerum alere non possit, vel tota Provincia videtur, & quae praeterea necessaria sunt suppeditet, vel Fratres cum bonis ex ea domo in aliam transferantur, provisione tamen adhibita, ne Ecclesiae deficiantur, sed ad ejus populi commoditatem conferantur. Permittimus tamen ut in Conventibus, qui Fratribus iter facientibus commodi sint, saltem quatuor Fratres, non minores quinquaginta annis, constanti & probata vita maneant, si plures ea domus alere non possit.

§. 14. In majoribus Studiis Regentes duas lectiones Theologicas interpretentur, alteram practicae, veluti de Sacramentis, vel de vite recte sanctaeque instituta, ex Magistro sententiarum, ac S. Bonaventura, alteram speculativam ex Scotto: in minoribus vero Studiis, una lectione ex Theologia practica contenti sint.

§. 15. Curent autem Superiores, ut in singulis Conventibus, Fratres maxime in conscientiae casibus, & reliquis quae ad audiendas confessiones pertinent, ob rei gravitatem, & necessitatem, summo studio ac diligencia exercentur.

§. 16. Fratres etiam si Superiores sint, nihil proprium habere possint, sed omnia in commune conferantur, distribuenda singulis, ut unicuique opus fuerit: ita ut ex communibus cujusque Conventus facultatibus & elemosynis, pro viribus domus, unicuique Fratri quae sunt necessaria praebantur.

§. 17. Fratres omnes & Superiores, & quomodocumque privilegia, aegrotis tantum exceptis, in Refectorio cibum capiant, & communi mensa utentes, communibus epulis vescantur.

§. 18. In primis autem aegrotorum & senum cura habeatur. Quod si propriae facultates domui non suppetant ad subveniendum necessitati aegrotantium, vicini Conventus ditiores suppleant, aut etiam tota Provincia contribuat.

§. 19. In omnibus Conventibus vel domibus, locus communis thesauri, vel capsa sit tribus clavibus clausa, quarum unam habeat Guardianus, alteram Procurator, tertiam Depositarius: quo in loco, vel capsa, aurea, argentea, jocalia, & quaeque pretiosa, pecunia item Conventus, cum inventario eorumdem rerum, condita custodiantur; servata tamen distinctione sacrarum, & profanarum rerum.

§. 20. Nullus ex Fratribus, quamvis Magistratus, & Superioris titulo fungatur, privatas aedes aut in claustro, aut alibi usquam habeat, sed singuli unica Cella, in communi Dormitorio, nullo ornatu, nudis omnino parietibus, ac lectulo, & mensa humillimis contenti sint, quemadmodum pauperes Religiosos decet.

§. 21. Camerae, sive aedulae, quae extra Dormitorium separatim sunt, ad officinas, vel alios usus, toti Conventui communes redigantur, vel si Cellae communis Dormitorii pro Fratrurn numero non sufficiant, & illarum Camerae, vel aedulae, quas diximus, ad formam communis Dormitorii redigi possint, in Dormitorium commune redigantur; immo, destruantur, ac materia, & camenta ad reparandam fabricam Conventus, si opus fuerit, convertantur; vel vendantur, & pretium ad communem usum Conventus conferatur.

§. 22. Nullus ex Fratribus privatum hortum habeat, sed horti sint totius Conventus communes; verumtamen Novitii, & Infirmitaria, hortum, seu viridarium a communi viridario sejunctum, habere poterunt, quo ceteris ingredi nullo modo liceat.

§. 23. Vestes, libri, & reliqua, a Superioribus cuicumque Fratri ad usum & necessitatem concessa quaecumque apud eos mortis tempore reperta fuerint, nulli Fratri privatim assignentur, sed ita distribuantur, ut dimidia pars sit nativi Conventus, altera ejus, ubi mortuus fuerit.

§. 24. Generalis a Provincialibus, Custodibus, & aliis Religionis Ministris quovis illis nomine appellentur, Provinciales item a Guardianis, aliisque Officialibus, ob eorum deputationem vel confirmationem nihil omnino, neque magnum neque parvum exigant, ac ne sponte quidem oblatum accipiant, neque Cancellario, aut scribae, pro sigillo, sive scriptura, quicumque detur, sed omnia gratis fiant ac dentur. Neque Generalis, neque Provincialis minister, neque Custos, neque Guardianus, a quovis Fratre sui Ordinis, aliquid etiam sponte oblatum, sive dono datum acceptet, vel recipiat.

§. 25. Pro communibus autem impensis, quas necessarii ad commodum totius Ordinis, vel aliquos privatae domus, fieri contigerit, Generali, Provinciali, & aliis eo modo consulatur, quo in litteris Sanctissimi Domini Nostri Pii V. proxime editis, cautum esse constat.

§. 26. Quo vero ad promotiones & gradus attinet, id omnino servetur, quod Alexandrinis Constitutionibus sancitum est, ut nihil a promovendo exigatur, aut quovismodo sponte oblatum accipiat. Quod si promotione facta Conventus promotorum, aliquid Religioni donare voluerit, quicquid id sit, Procuratori detur, ut ad levationem onerum, & communium sumptuum Religionis conferatur, ac Procurator omnium acceptorum, & expensarum rationem reddat.

§. 27. Fratres omnes quocumque gradu & honore sint, camisiis lancis, & reliquo vestitu, honesto ac Religioso, omnique suppellectile, & instrumento paupere, atque humili, quemadmodum aliis etiam constitutionibus cautum est, utantur.

§. 28. Reliquum est, ut constitutiones omnes, ad disciplinam regularem restituendam, conservandam, & augendam, (quae tamen iis contrariae non sint) praecipue vero ea quae a Sanctissimo Domino nostro Pio Papa V. ad reformationem hujus Ordinis proxime sunt editae, ab omnibus sanctae inviolateque serventur.

§. 29. Ceterum ut praesentes litterae omnibus plenius innotescant, mandamus illas ad valvas Basilicae Principis Apostolorum de Urbe, & in acie Campi Florae publicari, & earum exempla de more affigi.

§. 30. Volumusque & Apostolica auctoritate decernimus, quod hujusmodi exempla etiam impressa, manuque Notarii publici, & sigillo dicti Magistri Generalis, vel Praelati Ecclesiastici, aut illius

Quisque uni-
ca cella, le-
ctoque & hu-
mili aedula
sic contentus.

Dormitoria
communis
efficiantur.

Horti sint
communes
exceptis hor-
tis Novitio-
rum & Infir-
morum.

Bona Fra-
trum dece-
den. quib.
Mon. danda.

Pro Officia-
lium deputa-
tione vel
confirmatio-
ne nihil reci-
piatur.

Subventio-
nes Praelatis
dantur ut in
alia consti-
tur. in rub.

Alexandrinis
const. serven-
tur ut hic.

Habitu & ve-
stitibus ut hic
utantur.

Constitutio-
nes ad Ordini-
is reformatio-
nem editae
serventur.

Iusto publi-
candi hanc
const.

Transumptio-
rum fides.

ANNO 1568.

PIUS QUINTUS.

ANNO 1568.

Sanctio pœnalis.

Curæ obſignata, eamdem illam ubique locorum fidem faciant, quam ipſæ præſentes, ſi forent exhibitæ vel oſtenſæ.

§. 1. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam noſtræ approbationis, confirmationis, ſuppletionis, ordinationis, juſſionis, mandati, decreti, præcepti, & voluntatis infringere, vel ei auſu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præſumpſerit, indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apoſtolorum ejus ſe noverit incurſurum.

Dat. P. An. 3. die 23. Julii.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ milleſimo quingenteſimo ſexageſimo octavo, decimo Cal. Auguſti, Pont. noſtri anno tertio.

Publicatio.

Anno à Nativitate Domini 1568. indiſione 11. die verò 2. menſis Auguſti, Pontif. Sanctiſſ. in Chriſto Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa Quinti Anno III. retroſcriptæ litteræ Apoſtolica affixæ & publicatæ fuerunt ad valvas baſilicæ Principis Apoſt. de Urbe, & in acie Campi Floræ, dimiſſis ibidem eorundem retroſcriptarum copiis, ut moris eſt affixis, per nos Julium Parinum, & Philibertum Cappium præſebati S. D. N. Papa Curſi.

Camillus Cherubinus Mag. Curſi.

EXVII.

Contra Notarios & alios, reſponſiones eorum, depoſitioneſque teſtium, quomodolibet propalantes, vel eis aut teſtibus, in ſecretis carceribus Urbis detentis, aut aliis pro eis, nuncium deferentes.

Edita An. D. 1568.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Approbatio conſtit. editarum contra Notarios propalantes &c.

Licet contra Notarios qui in cauſis, tam eriminalibus quàm civilibus, dicta teſtium aut reorum reſponſiones abſque Judicis decreto partibus pateſciant, multæ conſtitutiones editæ ſint, eoſque tamquam falſi reos & infames, ac perjurios puniri debere ſtatutum ſit, nihilominus quia magis timetur quod ſæpius cavetur, & ut in futurum timore pœnæ ſi non Dei timore, arceantur, omnes & ſingulas cenſuras, & penas contra eos qui talia deliquerint latas, auctoritate Apoſtolica tenore præſentium approbamus, confirmamus & innovamus, nec de earum rigore, propter illarum forſan inobſervantiam, aut Prædeceſſorum noſtrorum & etiam noſtram, ac officialium, & miniſtrorum eorundem, & noſtrorum tolerantiam quicquam relaxatum, aut remiſſum eſſe, ac eadem in ſuo priſtino robore & vigore permanere decernimus & declaramus.

Impoſitio aliarum pœnarum contra eosdem vel nuncium eis in ſecretis detentis vel aliis pro eis deferentes.

§. 1. Et ut pœnarum certitudo omnibus hic in Alma Urbe noſtra innotefcat, ſtatuiſmus, decernimus & declaramus omnes & ſingulos Notarios, tam principales quàm Subſtitutos, Executores quoque, ac Carcerum Cuſtodes, ceteroſque, quibus tam vigore ſui officii quàm aliàs quomodocumque reos, dum in Carceribus ſecretis detinentur, facultas alloquendi conceditur, qui reorum reſponſiones, ac teſtium in dictis cauſis depoſitiones propalare in totum vel in parte, dicto, aut factò, quibuſvis perſonis cuiuſcumque conditionis, prærogativæ, & dignitatis, tam mundanæ quàm Eccleſiaſticæ exiſtenti, abſque Judicis coram quo cauſa vertitur, & Procuratoris Fiſcalis licentia auſi fuerint, aut eiſdem reſ & teſtibus, donec in ſecretis retinentur, etiam quarumvis perſonarum, ut ſuprà quomodolibet qualificatarum, vel nomine eorundem reorum & teſtium, vel aliis etiam extra carceres exiſtentium nomine eorundem carceratorum nuncium, epistolam, litteras, vel (ut vulgo dicitur) ambasciatas ferre abſque eiſdem Judicis, & Procuratoris Fiſcalis licentia, ultra pœnas eis à jure vel ſtatuto inſiſſimas, pœnam relegationis in perpetuum,

vel ad tempus ad triremes, & ſi qualitas facti id exegerit, & Judici videbitur, etiam ultimi ſupplicii incurſere, & puniri debere precipimus, & mandamus. Siſque per quocumque Judices quavis auctoritate fungentes puniri, & condemnari, & non aliter declaramus. Iſcriptum quoque & inane, &c. ceterum.

§. 2. Non obſtantiſque præmiſſis, conſtitutionibus & ordinationibus Apoſtolicis, ſtylo & conſuetudine, ceteriſque contrariis quibuſcumque,

§. 3. Volumus quod præſentis ſtatuti, decreti & conſtitutionis cedula in acie Campi Floræ, & in Cancellaria noſtra Apoſtolica de more publicetur, & ita omnes quos tangit afficiat, quodque illius noſtra ſignatura ſufficiat, & ubique fidem faciat, regula contraria non obſtante, &c.

Placet Motu proprio. M.

Anno à Nativitate Domini milleſimo quingenteſimo ſexageſimo octavo, indiſione undecima, die verò vigesima tertia menſis Julii, Pontificatus Sanctiſſ. D. N. D. Pii divina providentia Papa V. anno 3. ſupradictæ litteræ publicatæ & affixæ fuerunt in locis ſupradictis, per me Jo. Andream Rogerium præſebati S. D. N. Papa Curſi.

Camillus Cherubinus Mag. Curſi.

Juriſdictio & facultates Viſitatorum Carcerum Alimæ Urbis, in cauſis tam civilibus quàm criminalibus carceratorum.

Statuta ab iſdem Viſitatoribus obſervanda præſcriptis ſuprà in Tomo I. Paulus III. in conſt. 44. Ad omnes. & noviſſime alia edidit Paul. V. inſ. in conſt. 71. Univerſi. §. 24. vide in Tomo III.

Dilationes his carceratis conceſſas, eorum fidejuſſoribus non ſuffragari decrevit Julius III. in conſtitut. 13. Cum nuper. Et de elemoſynis pro eiſdem colligendis habetur hic inſrà in conſtitut. 100. Volumus.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Relaxandi DD. Viſitatores Carcerum poſſint relaxare debitores à carceribus ex cauſis inſcriptis.

§. 1. Et primo concedendo dilationem, data cautione de ſolvendo infra tempus assignatum, & hoc præſertim quando Viſitatores conſiderant retentionem debitoris cedere non ſolum in ipliſus præjudicium, verum etiam creditoris, cum debitor in Carceribus exiſtens efficiatur deterioris conditionis, & in dies minus ſolvendo, ubi extra carceres facilius infra tempus assignatum, modum ſatisfaciendi reperitur ſit, & hoc, dummodo credicores ſint ditiores, & ære alieno non onuſti. Secundo, Relaxare poſſint debitorem, qui licet non habeat pecunias in promptu, habet tamen tot bona, ex quorum venditione poſſet creditoribus ſatiſſieri, & ex tunc ipſe conſentit eorundem bonorum ſubſtationi. Et Viſitatores hoc faciunt data cautione de ſe repræſentando in eiſdem ſtatu, & terminis, in quibus carceratus reperitur, ne contingat creditorem decipi ex aliquo impedimento præſtito venditioni bonorum. Et ſi bona non ſufficiant, deferant bierum viride. Et ſi bona non ſufficiant, nec bonis cedere velit, nec bierum viride deferre, non niſi de omnium creditorum conſenſu quemquam relaxare poſſint. Idemque ſervetur etiam ſi clarum debitores nullum proſus habere modum ſatisfaciendi creditoribus ſuis niſi ex ſudore vultus ſui. Tertio, Relaxare poſſint, quando creditor executionem habet realem, & eſt in bonis captis per executionem ſibi bene cautum.

§. 2. Quarto, in caſu infirmitatis creditores eorum ſumpſibus debitoribus alimenta, & medicamenta miniſtrent in carceribus quibus creditoribus

Derogatio contrariorum.

Forma, & eſſeſus publ.

PP. ſubſcrip.

Publ. P. A. 3.

die 23. Julii.

LXVIII.

Edita An. D.

1568.

Facultas Viſitatorum.

Concedendi dilationes carceratis ad ſolvendum eorum Debita.

Infirmitasque relaxandi.

Paupereque non habentes alimenta à creditoribus.

Muliereque honestas.

Indebite carceratos.

Suspectos de fuga.

Cedentes bona.

Nulliter carceratos.

Arbitrium Visitatorum in prædictis.

Papæ subscript.

Edita An. D. 1568.

Causa hujus constitutionis.

Declaratio facultatum Visitatorum, inter relaxationes carceratorum ex causa criminali.

reculantibus, relaxentur, habita fide à Medicis deputatis, & recepta cautione, si illam habent, sin autem, recepta juratoria cautione.

§. 3. Quinto, Relaxentur debitores, quando cognitæ eorum paupertate, ac pertinacia creditoris, ei mandatum fuit ut carcerato debitori subministraret alimenta, & ipse hoc facere recusat.

§. 4. Sexto, Relaxentur à carceribus mulieres pro debito civili retentæ quando sunt honestæ, etiamsi captæ sint pro debito publico.

§. 5. Septimo, Relaxare possint debitores, qui ex natura debiti non tenentur de jure ultra id quod facere possunt, quia tunc nec carcerari poterant, & propterea contra bona est dirigenda executio.

§. 6. Octavo, Relaxentur debitores capti ut suspecti de fuga, data cautione de se repræsentando sub pena debiti.

§. 7. Nono, Relaxentur debitores, facta cessioe bonorum prout de jure, & servata forma Motus proprii.

§. 8. Decimo, Relaxentur debitores nulliter & indebite capti, de qua nullitate manifestè constat. In quibus omnibus relaxationibus sint præsentes Judices, qui mandata relaxarunt, & uti edocti & instructi, de meritis causæ rationem reddant.

§. 9. Et in præmissis habeatur ratio paupertatis creditoris, & an debitor calumniose litæm diu sustinerit, fatigando creditorem expensis, & laboribus, & an aliam dilationem habuerit, & creditori non satisfecit, non confido de legitimo impedimento. Et in his omnibus DD. Visitatores arbitrio utantur, qui pensatis qualitatibus tam creditoris quam debitoris, ac facultatibus, & natura debiti, decernant ea, quæ juri, & æquitati, & utilitati etiam creditorum conveniant.

Ita est. M.

Sequitur jurisdictio in causis criminalibus.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Cum scitis accepimus Visitatores carcerum Almam Urbis nostræ, homicidii aliorumque capitalium criminum reos carceratos ad illorum absolutionem, & liberationem nimia humanitate proni atque proclives, sæpe à carceribus liberari faciunt sub cautione de se præsentando, aut aliàs sub aliis obligationibus, & conditionibus eis bene visis, & ita processus debilitantur, & causarum expeditiones differuntur, (vel quod molestius ferimus) eos quandoque liberant, aut leviori penam quam Justitia exposcit, afficiunt, ac propterea delicta impunita remanent contra jus & utilitatem publicam.

§. 1. Nos considerantes impunitatem scelerum esse incentivum malorum, nolentesque in futurum reos homicidii, ac aliorum delictorum capitalium, nisi in casibus à jure expressis è carceribus liberari, & extra carceres audiri, aut levius puniri, tenore præsentium eidem Visitatoribus sub pena indignationis nostræ inhibemus, atque interdicimus, ne posthac reos carceratos, ut præmittitur arbitrio suo relaxent, & liberent. In levioribus autem delictis reos confessos aut convictos non relaxent, neque liberent, nisi prius sententiæ, aut condemnationi, quam eis indigendum, & imponendam duxerint, paruerint, & illius executio facta fuerit. Volumus autem quotiescumque viderint æquitatem juris rigori, attenta facti qualitate præferendam esse, cum solum Principem jus decernendi inter jus & æquitatem non scriptam spectet & pertineat, tunc facti qualitas diligenter in visita consideretur, & si quid ab eis de jure relaxandum videbitur, id nobis unus ex Visitatoribus una cum Judice causæ referat, præserte Procuratore Fiscali, vel Advocato Fiscali ejusdem Cameræ, & Fisci, ac etiam paupere-

rum Advocato, ut à nobis quid statuendum, & deliberandum sit, intelligant.

§. 2. Mandantes propterea Judicibus coram quibus causæ criminum hujusmodi pendent, aut in futurum pendere contigerit sub similis pena indignationis nostræ ne vigore ordinationis Visitatorum prædictorum contra aut præter ordinationem & mandatum nostrum, quovis carceratos relaxare, aut mandatum de relaxando decernere, vel subscribere audeant, vel præsumant.

§. 3. Non obstantibus præmissis, indultis, & privilegiis eisdem Visitatoribus quomodolibet concessis, & innovatis latissimè extendendis, quibus omnibus illorum tenores pro sufficienter expressis habentes, specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Placet Motu proprio. M.

Anno à Nativ. 1568. Indiç. 11. die verò 29. mensis Julii, Pontificatus Sanctiss. D.N. Pii Papæ V. anno 3. retr. scripta littera Apost. affixe & publicata fuerunt ad valvas Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, ut moris est, per nos Philibertum Cappium, Jo. Guerardi Cursi.

Revocatio facultatum Camerarii, Clericorum, & aliorum Officialium R. Cameræ Apost. concedendi commissiones in forma, si in evidentem, super alienationibus bonorum Ecclesiasticorum aut locorum Piorum cujuscumque valoris.

Judices autem hujusmodi causarum, quid agere debeant, vide in Pauli II. const. 2. Cum in omnibus. fol. 381. ubi notavi, & in const. 5. ejusdem Papæ fol. 384. ubi notavi de materia ejusmodi alienationum. in Tomo 1.

PIUS PAPA QUINTUS,

Motu proprio, &c.

Volentes indemnitati Ecclesiarum aliorumque piorum locorum quantum cum Deo possumus, consulere, ac providere, ne illorum bona sine nostra aut Successoris nostri scientia & licentia alienentur, aut perpetuò, vel ad longum tempus, aut unam, vel plures illa conducere volentes vitam locentur, aut de his alio titulo disponantur.

§. 1. Omnes, & singulas facultates, & licencias concedendi commissiones alienationum vel permutationum aut affrancationum, aut illarum confirmationum quorumvis bonorum Ecclesiasticorum, aut locorum piorum cujuscumque valoris existentium, etiam summam annuam cujuscumque ducatorum auri de Camera non excedentium, aut alterius minoris valoris in forma quæ dicitur, Si in evidentem, Dilecto filio Vitellotio S. Mariæ in Via lata Diacono Cardinali Vitellio nuncupato S. R. E. Camerario, ejusque antecessoribus, & Clericorum Cameræ Apostolicæ Collegio tam per sel. rec. Gregorium IX. Bonifacium IX. Urbanum VI. Martinum V. Nicolaum V. Sixtum IV. Innocentium VIII. Julium II. Leonem X. Paulum III. & Julium similiter III. ac alios quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, etiam Motu proprio, ex certa scientia, & ex quavis causa etiam urgentissima cum quibuscvis clausulis etiam derogatoriis derogatoriis, ac quibuscvis decretis, etiam irritantibus, & in vim contractus concessas, confirmatas, & innovatas, illorum omnium tenores pro sufficienter expressis habentes, perpetuò revocamus, cassamus, & annullamus. Interdicentes, & expresse prohibentes eidem Camerario, & Clericis, ac aliis ejusdem Cameræ Apostolicæ Officialibus sub pena indignationis nostræ, ne in futurum licencias, & facultates, ac commissiones alienationum hujusmodi sub quovis prætextu concedant. Ac commissiones, & concessiones commissionum hujusmodi contra voluntatem, ordi-

Præceptum quod Judices non obediunt Visitatoribus aliter se gerentibus.

Quibuscumque non obstantibus.

Papæ subscript.

Publ. P. A. 3. die 29. Julii.

LXIX.

Edita An. D. 1568.

Causa hujus constit.

Revocatio facultatis, de qua in rubr.

Locus restitutus.

Decretum-
ritans.

nationem, & decretum nostrum nullas, invalidas, & irritas esse decernimus, & declaramus.

§. 2. Sicque in præmissis omnibus & singulis, per quoscunque Judices, & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, &c. sublata &c. judicari &c. debere, necnon irritum & inane quicquid secus super his à dictis Camerario, Clericis, & aliis Officialibus, & iudicibus præfatis, vel quibuscunque aliis quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Derogatio
contrario-
rum.

§. 3. Non obstantibus præmissis constitutionibus, & ordinationibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis prædictis, & aliis quibuscunque quomodolibet concessis, approbatis & innovatis, quibus omnibus, illorum tenores, &c. pro sufficienter expressis habentes, derogamus, illaque quoad præmissa casuum, revocamus, & annullamus, ceterisque contrariis quibuscunque.

Sola signa-
tura sufficit.

§. 4. Volumus autem quod præsentis nostri Motus proprii etiam absque illius data, & registratura sola signatura sufficiat, & ubique fidem faciat, tam in iudicio quam extra, quacunque regula, seu constitutione Apostolica contraria non obstante.

Iussio po-
nalis publ.

§. 5. Volumus autem quod præfatus noster Motus proprius in Cancellaria nostra Apostolica, & in acie Campi Floræ de more publicetur, & inter constitutiones perpetuas describatur.

Transumptio-
rum fides.

§. 6. Et quia difficile foret præfens ad singula quoque loca deferri, volumus, & etiam declaramus, quod ejus transumptis etiam impressis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, ac sigillo alicujus Prælati munitis eadem prorsus fides adhibeatur, quæ præfenti Motui proprio adhiberetur, si foret exhibitus, vel ostensus.

Papæ sub-
script.Publ. P. A. 3.
die 17. Aug.

Placet Motu proprio. M.

Lectus & publicatus fuit supradictus Motus proprius Romæ in Cancellaria Apostolica, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo sexagesimo octavo, die verò Martis decima septima Augusti, Pont. S. D. N. Pii Papæ V. anno 3.

A Lomellinus Custos.

LXX.

Contra non revelantes, & non resituentes scripturas ad Rev. Cam. Apost. quomodolibet spectantes.

Hec bulla confirmatur à Six. V. in const. 56. Non sine. ubi Commissario dictæ Camera dat facultatem contra eos procedendi. ibi notabo.

Edita An. D.
1568.

PIUS PAPA QUINTUS.

*Motu proprio, &c.*Causa hujus
const.

Cum de litteris, auctoritatibus, & instrumentis omnibus sive custodiendis, & memoriæ demandandis, sive averis requirendis, sedulam pro se quemque curam capere oporteat, hoc impensius multo pro S. R. E. ceterarumque omnium maris & magistra, expedit procurare, ut ipsa non modo suis, ut par est, iuribus protegetur, sed & propriis munimentis subnixæ, etiam nefarios insurgentium quotidie in eam impiorum coactus comprimere, eademque opera reliquo omni ordini Ecclesiastico, quandocumque venerit usus, auxilio atque præsidio promptior esse possit.

Iussio adno-
tandi omnes
scripturas ad
R. Camer.
Apost. spec-
tantes.

§. 1. Itaque ut de scripturis, litteris, instrumentis, registris & munimentis omnibus ad ipsam Romanam Ecclesiam, & hanc sanctam Sedem Cameramque Apostolicam pertinentibus certior deinceps ratio habeatur, & quæ neglecta jacent, in integrum restituantur, ac transportata vel ablata, aut interversa, revocentur, eorum omnium quæ in Palatio, & Vestuario nostro, Bibliotheca item Vaticana, & Arce S. Angeli asservantur, quæque in Archivis, Chartophilaciis, Armariis, Ecclesiis, Monasteriis, Conventibus, & locis publicis & privatis Urbis Romæ, Avinionis, ceterarumque omnium Civitatum, Provinciarum & locorum, nobis & dictæ S. R. E.

immediatè, mediateve subjectorum reconduntur, & habentur, brevium sive compendium cum indice idoneo conficiendum.

§. 2. Dispersa verò vel suppressa ac celata, subtrahita, & evoluta ad præfatum Sedem, & Cameram revocanda & repetenda, pari quoque ratione dicto Breviario adscribenda esse statuimus.

§. 3. Eamque curam venerabili fratri nostro Carolo Episcopo Montis Fiasconensis unum ex officiis Clericatus præfate Cameræ ex indulto Apostolico obinenti, & dilecto filio Honophrio Camajano Clerico Aretino, ipsius Cameræ Præsiden, quorum fidem, rerum usum, diligentiam, & animi integritatem jam pridem perspectam, & exploratam habemus, auctoritate præsentium ducimus delegandam qua in re, ut instituti nostri effectus & executio oculus subsecutur.

§. 4. Monemus in primis, omnia & quæcumque Communia Provinciarum, Civitatum, & locorum præfatorum, necnon Ecclesiarum Prælatos, Capitula, Conventus & Collegia, omnes item alios & singulos ejusdem S. R. E. Card. aut Comites, Duces, & quovis alio potiori titulo Illustres sint, tam dictæ Urbis quam etiam Provinciarum, Civitatum, & locorum immediatè & mediatè subjectorum, publicè & privatim, ut infra terminum per supradictum Carolum Episcopum & Honophrium arbitrandum postquam præsentium litterarum promulgatio in Urbe, & quaque alia Civitate, Provincia, Terra & loco ubi consistunt facta fuerit, omnia & quæcumque exemplaria, libros, protocollos, scripturas, exempla, instrumenta, & munimenta rerum & iurium quorumcumque R. E. ac Sedis & Cameræ prædictarum penes se existentia, sive ad ipsas legitime pertineant, sive commodato, vel deposito, aut alio quocumque jure & titulo illa obtineant, vel etiam subrepta & extorta detineant, præfatis Carolo Episcopo, & Honophrio Præsidenti seu eorum in dictis Civitatibus, Provinciis & locis Commissariis, omnino revelare procurent, ut scilicet eorum omnium & singulorum inventarium conficiatur. Deinde adnotatis Communiazibus, Civitatibus, Ecclesiis, Capitulis, Conventibus, Archivis, locis, & personis ubi constant, ipsa quoque præfata breviario, seu compendio adscribantur, exemplaribus sive exemplis, registris & instrumentis, penes eos ad quos illa jure pertinent, tamquam ipsorum fideicommissis remanentibus, ita ut nunquam sine Sedis Apostolicæ speciali & expressa licentia inde amoveri, transferri, aut aliàs immutari possint. Subrepta vero & extorta, vel incerta ad præfatum Cameram referantur, & in dictum compendium atque Indicem conferantur.

§. 5. Quod si forte aliqui lapsu tempore prædicto non paruerint, eos & ipsorum singulos, libris, iuribus, & scripturis omnibus præfatis, eorumque omnium usu, & commodo privamus. Præterea Ecclesias, Capitula, & Monasteria, Conventus, & Collegia Ecclesiastica, necnon Civitates, Provincias, & loca quæcumque Ecclesiastico interdito subjecimus, singulares verò personas eorumdem, ceterosque præfatos excommunicationis sententia innodamus eo ipso, qua illaqueatos nullus alius quam Rom. Pont. excepto mortis articulo, valeat liberare.

§. 6. Ceterum, ut præfata promptius exequantur, præfatis Carolo Episcopo & Honophrio Præsiden. Motu proprio, & ex certa nostra scientia mandamus ut ipsi ad Arcem, Palatium, Bibliothecam, Vestiarium, Capitulum, Ecclesias, Capitula, Monasteria, Conventus, Archivia, Domos, & loca præfata, tam publica quam privata, itemque particularium personarum, etiam S. R. E. Cardinalium, necnon Ducum, aliorum quorumcumque sedes in dicta Urbe, & ejus districtu positas, & ubicumque illa esse intellexerint, vel conjecerint, adhibita etiam ad ipsos privatos armata familia etiam ante promulgationem præsentium, ac quamprimum se conferant, & omni cunctatione respon-

Subtractas
autem & ce-
latas recupe-
randi.Executores
deputatos ad
prædicta.Hodie hoc
spectat ad
Commis-
sariumCa. eræ
ut in rubrica
dixi.Monitio ad
revelandum,
& resituen-
dum dictas
scripturas.Pœna in
Contrave-
nientes.Jurisdictio
dictorum ju-
dicum in
prædictis
exequen-

dendi vel consulendi præfata, vel appellatione remota, ad præfata omnia è vestigio adhibenda, etiam manu regia, ac per censuras & penas præfatas ac etiam pecuniarias, aliasque graviores arbitrio suo irrogandas, moderandas, & applicandas, ceteraque juris & facti remedia opportuna, appellatione postposita compellant; exhibita, producta, & inventa recognoscant, ac de eis inventarium, ac breviarium & indicem præfatum conficiant; quæque ibi relinquenda, vel deinde ad Cameram præfatum referenda erunt, statuant, & decernant, eademque illa omnia per se vel alium seu alios, probos & peritos cum simili aut limitata potestate substituendos, extra dictam Urbem in Provinciis, Civitatibus, & locis præfatis; efficere præterea Notarios descriptores, & Antigrapharios quorum ad præfata negotia fuerint, cum salariis seu mercede cuique convenientibus, de Cam. præfata redditibus constituendis, & de mandato ipsorum Caroli Episcopi, & Honuphrii Præsidentis utriusque manu subscripto, arbitrio vestro persolvendis, ubique locorum præfatorum constituere & ordinare procurent. Nos enim ipsis omnia & quæcumque alia, in prædictis, & circa ea necessaria & opportuna, etiam si talia forent, quæ mandatum & facultatem exigent magis specialem, tam conjunctim quam divisim, per se vel alium, seu alios faciendi, & exequendi plenam & liberam ipsarum tenore præsentium concedimus facultatem. Decernentes irritum & inane quicquid fecus super his à quoquam, quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 7. Non obstantibus Statutis, & consuetudinibus Urbis, ac Civitatum, Provinciarum, & locorum præfatorum, necnon Ecclesiarum, Monasteriorum, & Ordinum quorumcumque juramento &c. roboratis, ac quancumque tempore observatis, præscriptionibus quoque, & privilegiis, exemptionibus, indulgentiis & litteris Apostolicis, illis & eorum singulis, necnon Pop. Rom. & Card. ac quibuscumque aliis nullis pro suis exceptis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis, & decretis concessis, confirmatis &c. Quæ omnia quatenus prædictis in aliquo obstat, aut effectum præsentium quocummodo impedire possint, illorum omnium tenores &c. pro expressis habentes, Motu & scientia similibus revocamus, tollamus & abrogamus; litterasque omnes & scripturas deluper confectas cum inde secutis omnibus cassamus, annullamus, viribusque & effectu carere volumus eo ipso; quodque aliquibus communiter vel divisim à dicta sit Sede indultum, quod interdicti, &c. non possint per litteras Apostolicas non facientes &c. mentionem, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 8. Ceterum ut præsentis, quorum solam Signaturam sufficere, & ubique tam in iudicio, quam extra illud fidem facere volumus, omnibus plenius innovescant, mandamus illas ad valvas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe & Cam. præfate, necnon Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ publicari, earumque exempla de more affigi: ac etiam volumus & Apostolica auctoritate decernimus quod huiusmodi exempla etiam impressa, manque Notarii publici, ac sigillo Caroli Episcopi seu Honuphrii Præsidentis prædictorum obsignata, eandem illam ubique locorum fidem faciant, quam ipsæmet præfates facerent si essent exhibitæ vel ostensæ; & nihilominus mandamus litteras Apostolicas sive sub plumbio sive in forma brevis tam conjunctim quam divisim, quancumque videbitur expediri.

Placet Motu proprio. M.

Dat. Romæ apud S. Petrum 14. Cal. Septemb. anno 5.

Declaratio quod Fratres Prædicatoris Ordinis S. Dominici ubique præcedant ceteris Fratribus cuiuscumque Ordinis religiosorum Mendicantium.

Hæc declaratio, quæ circa processiones mutata videtur infra ex constit. 84. Greg. XIII. Exposita. fuit postea à Clem. VIII. ampliata in ejus constit. 13. Inter cetera. ubi Fratribus Prædicatoribus præcedentiam ubique concedit, quoad omnes Religiosos tam Mendicantes quam non Mendicantes, post Canonicos, & Clericos seculares, ac antiquos Ordines Monachales. De toto autem Ordine Dominicano plene notavi supra in constit. 2. Honor. III. Religiosum. fol. 64. in Tomo I.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad futuram rei memoriam.

Divina disponente clementia omnium mortaliū Judices in terris constituti, nos id potissimum curare decet, ut unicuique quod suum est, sobriatis quibuscumque iurgiis & litium dispendiis, tribuatur, veritas, iustitia, & pax invicem se amplectentur, honorque & ordo debitus inter omnes, præsertim Religiosos, nobiscum sub uno & eodem vexillo Deo militantes, servetur.

§. 1. Cum itaque nuper acceperimus, quod facer Ordo Fratrum Prædicatorum præ ceteris aliis Fratrum Mendicantium Ordinibus, à Sede Apostolica primo etiam approbatus, & confirmatus fuerit, illiusque professores in processionibus, & aliis actibus, ac ministeriis, publicis & privatis tam coram Romano Pontifice in ejus Capella, generaliumque Conciliorum sessionibus, & congregationibus, quam plerisque aliis Christianissimorum partibus, primum locum inter alios Fratres Mendicantes obtineant, tamen si ad Religionis propagationem in Civitatibus & aliis locis, in quibus aliorum Ordinum Mendicantium Religiosi, Conventus & domos prius habebant, domos, aliave Religiosa loca pro eorum habitatione ædificaverunt, seu construxerunt, aut jam ædificata receperunt, sæpe contingit quod aliorum Ordinum fratres Mendicantes, antiquitatis Ecclesiarum, vel suorum Conventuum & domorum, quas in eisdem locis prius habuerunt, seu aliis prætextibus, dictos Ordinis Prædicatorum fratres in processionibus, & aliis actibus, ac ministeriis prædictis contingenter, præcedere satagunt, præminentiamque & locum debitum eisdem denegant, & impediunt: quo fit, ut non solum inter eos intestina odia & dissensiones, in eorum animarum perniciem, ac ceterorum Christianissimorum scandalum non modicum, sed etiam forsitan lites & controversie iudiciales quandoque subortæ sint, & indecise pendeant.

§. 2. Nos, qui de antiquitate & præminentia cuiuslibet Ordinis Fratrum Mendicantium, plenam & indubitam notitiam habuimus & habemus, eorum honoris, & juris conservationem, ac pacem & quietem inter eos conservare, necnon scandalum inde quomodolibet orta, quæve oriri possent, remove paterno affectu zelantes, Motu proprio, non ad alicujus super hoc nobis oblatæ petitionis instantiam, sed ex certa scientia, ac mera deliberatione nostris, Apostolica auctoritate, tenore præsentium, litem & causam quancumque, seu questionis & controversiæ materiam, si quæ de super ubilibet in Romana Curia, vel extra eam, etiam in nostro causarum Palatii Apost. Auditorio, in quacumque instantia, inter quoscumque quomodolibet pendeant, illarum statum, & merita, & non aliqua sententia, etiam in contradictorio iudicio à quovis Iudice, ordinario vel delegato, quæ in rem transiverit iudicatam, contra ipsos Fratres Prædicatorum super hoc prolata fuerit, ac alia etiam necessariò magis exprimenda, præsentibus pro expressis habentes, ad nos advocamus, & penitus extinguimus, ac Fratribus aliorum quorumcumque Ordinum Mendicantium super his perpetuum silentium imponimus.

§. 3. Et nihilominus Fratres ipsos Ordinis Præ-

Edita A. D.
1568.

Exordium.

Ordo S. Dominici aut re alios Ordines. Mei dicantium à Sede Ap. approbatus, præcedentiam habere debet, & tamen diverse lites desuper exortæ sunt.

Hic ideo Pont. ex-tinguit.

Clausule de rogatoria.

Forma publ. tunc publ. non habes hic, sed in constit. Six. V. tit. in rub.

at. P. An-3. de 16. Aug.

LXXI.

1568.
Ipsique Pra-
tribus dictam
preceden-
tiam conce-
dit.

Et desuper
non molita-
ri jubet.

Clausulas
præservati-
vas apponit.

Decretum
irritans.

Executores
deputat.

dicatorum, primum digniorem & honorabiliorem locum inter ceterorum quorumcumque aliorum Ordinum Mendicantium Religiosos, etiam si tales essent, qui non generali sermone comprehenderentur, sed nota, & expressione speciali indigerent, tam in Sessionibus & Congregationibus quorumcumque Generalium, Provincialium, & Synodali Conciliorum, quam Processionibus, Ministeriis, & aliis actibus publicis vel privatis, in quibuscumque Civitatibus, Oppidis, Terris, Castris, & aliis locis obtinere, & speciali præminencia omnino gaudere perpetuo debere, etiam si illic Ecclesias, Domos, aut Conventus non habuerint, seu habeant, aut aliorum Ordinum Mendicantium Fratres, & Religiosi in eisdem Civitatibus, & locis antiquiores pro tempore, eorumque Ecclesiarum, Capellarum, domus & loca regularia ibi primo instituta, & fundata fuerint, eosdemve Fratres Predicatores adhuc, etiam per centum annorum, aut diuturnius, vel alias quantumvis longè magis immemorabile tempus præcedere consueverint, declaramus, statuimus, & etiam definimus.

§. 4. Districte in virtute sanctæ obedientiæ, & sub excommunicationis majoris, eo ipso incurrenda pena, omnibus & singulis quorumcumque aliorum Mendicantium Ordinum pro tempore Religiosis inhiibentes, ne de cetero præmissorum occasione Ordinem Fratrum Predicatorum huiusmodi, illorumque pro tempore Religiosos quoscumque molestare, inquietare, perturbare, aut quomodolibet impedire audeant vel præsumant, suppletes in hoc citationum, omnesque alios, tam juris quam facti, & quorumcumque aliarum solemnitarum, etiam substantialium & processuum, defectus.

§. 5. Ac decernentes, præsentis nostras litteras de subreptionis vel obreptionis, intentionisve nostræ aut alio quovis vicio seu defectu, nullo unquam tempore impugnari posse, ac constitutionem nostram de non tollendo cuiquam per quamcumque gratiam, seu concessionem, aut declarationem jus quæsitum, adversus eas locum sibi vindicare non posse, nec debere.

§. 6. Sicque in præmissis omnibus & singulis per quoscumque Iudices, & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, etiam S. R. E. Cardinales, & causarum dicti Palatii Apostolici Auditores, in quavis causa, & instantia, etiam per appellationem pendente, iudicari & definiri debere, sublati eis, & eorum cuilibet, quavis aliter interpretandi & iudicandi facultate, ac irritum & inane quicquid secus super his & quocumque quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 7. Ceterum, ut declaratio, statutum, definitio, inhibito, aliaque omnia & singula præmissa inviolabiliter observentur, universis & singulis venerabilibus Fratribus nostris Patriarchis, Episcopis, & dilectis filiis Abbatibus, ac aliis Ecclesiarum Prælatiis, & personis in dignitate Ecclesiastica constitutis, necnon Metropolitanarum & aliarum Cathedralium Ecclesiarum Canonicis, eorumdem Archiepiscoporum, & Episcoporum Officialibus, seu Vicariis in spiritualibus generalibus, ubilibet constitutis per Apostolica scripta in virtute sanctæ obedientiæ committimus, & mandamus, ut has litteras nostras, & in eis contenta quæcumque inviolabiliter observent, ipsique duo, aut unus eorum, per se vel alium seu alios, ubi, quando & quoties opus fuerit, & pro parte dictorum Fratrum Predicatorum, vel aliquorum ex eis fuerint requisiti eis efficaci præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra eos huiusmodi litteris nostris, & in eis contentis quibuscumque pacifice frui & gaudere, non permittentes & Religiosis quorumcumque aliorum Ordinum Mendicantium, vel quibuscumque aliis, quæcumque auctoritate fungentibus, super præminencia, & aliis antedictis contra eorumdem nostrarum tenorem, quomodolibet molestari, inquietari, perturbari, aut impediri, con-

traditores & rebelles quoscumque, status, gradus, ordinis, conditionis & dignitatis cuiusvis existentes, per censuras Ecclesiasticas, & penas etiam pecuniarias arbitrio eorum moderandas & applicandas, quæcumque appellatione postposita compellendo. Et nihilominus eos, qui sententiam excommunicationis antedictam, censuras, & alias penas per eos, aut aliquem eorum pro tempore latas incurrerint, legitimis super his habendis servatis processibus, illas incidisse declarent, nec non aggravare etiam iteratis vicibus curent, invocato ad id, si opus fuerit auxilio brachii secularis.

§. 8. Non obstantibus præmissis, & tam huiusmodi nostra de non tollendo cuiquam jus quæsitum, & aliis Apostolicis, quam in quibuscumque generalibus, Provincialibus vel Synodalibus Conciliis editis, specialibus vel generalibus, constitutionibus & ordinationibus, Domorumque, Ordinum & locorum prædictorum etiam iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, foundationibus, statutis, usibus, naturis & consuetudinibus, privilegiis quoque indultis, & litteris Apostolicis, Fratribus Mendicantibus aliorum Ordinum quorumvis, eorumque Ecclesiis, Capellis, Domibus, & locis & Superioribus, in specie vel in genere, tam per sel. rec. Sixtum Papam IV. quam alios quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, etiam bulla Aurea, Mare Magnum nuncupata, contentis, ac per nos Motu proprio consistorialiter, etiam per modum legis & statuti perpetui, iteratis vicibus, cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus clausulis, ac irritantibus, & aliis decretis, concessa pro tempore, in contrarium forsan revocantibus, etiam si eis expressè caveretur, quod nisi per trinas distinctas litteras cum temporis intervallo competenti ternis distinctis vicibus, illis quos concernunt intimandas, derogatum esse non censeatur, aut alia forma in id servanda sit, concessis, approbatis & innovatis, quibus omnibus & singulis, etiam si de illis, eorumque totis tenoribus, specialis, expressa & individualis mentio habenda esset, illorum, omnium & singulorum, tenores vim & effectum, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, formaque in eis tradita observata infererentur, pro sufficienter expressis habentes, illas aliàs in suo robore permanens, hac vice dumtaxat specialiter & expresse latissime derogamus, & ceteris contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus, communiter vel divisim ab Apostolica sed Sede indultum, quod in terditi, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi, ac eorum personis, locis, Ordinibus, & nominibus mentionem.

§. 9. Et quoniam difficile esset præsentis litteras ad singula quæcumque loca deferri, volumus & eadem Apostolica auctoritate etiam decernimus, quod illarum exemplis, etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis sigilloque alicujus Prælati, vel personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ, seu Curie Ecclesiasticæ munitis, in iudicio & extra ubi opus fuerit, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ adhiberetur eisdem præsentibus originalibus, si exhiberentur, vel ostenderentur.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub anno Pontificatus nostri anno 3.

Contra quoscumque Clericos, tam sæculares quam regulares, nefandi criminis reos.

Ad hoc habes etiam sup. Leon. X. const. 7. Superna. fol. 406. Tom. I. & huius Pont. const. 5. Cùm primum. fol. 191.

Obstantia
tollit.

Transumpti
credi jubet.

Dar. P. An. 3.
die 27. Aug.

LXXII.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Horrendum illud scelus, quo pollutæ fœdæque Civitates a tremendo Dei judicio conflagravit, acerbissimum nobis dolorem inurit, graviterque animum nostrum commovet, ut ad illud quantum potest comprimendum, studia nostra conferamus.

§. 1. Sane Lateranensi Concilio dignoscitur constitutum, ut quicumque Clerici, illa incontinentia quæ contra naturam est, propter quam ira Dei venit in filios diffidentiz, deprehensi fuerint laborare, à Clero deiciantur, vel ad agendam in Monasteriis penitentiam detrahantur.

§. 2. Verùm ne tanti flagitii contagium, impunitatis spe, quæ maxima peccandi illecebra est, silentius invaleat, Clericos hujus nefarii criminis reos, gravius ulciscendis deliberavimus, ut qui animæ interitum non horrescunt, hos certe deterreat civilium legum vindex gladius secularis.

§. 3. Itaque quod nos jam in ipso Pontificatus nostri principio hac de re decrevimus, plenius nunc fortiusque persequi intendentes, omnes & quoscumque presbyteros & alios Clericos sæculares & regulares, cujuscunque gradus, & dignitatis, tam diu nefas exercentes, omni privilegio clericali, omnique officio, dignitate & beneficio Ecclesiastico præsentis canonis auctoritate privamus. Ita quod per Judicem Ecclesiasticum degradati, potestati statim seculari tradantur, qui de eis illud idem capiat supplicium, quod in laicos hoc in exito devolutos, legitimis reperitur sanctionibus constitutum.

Nulli ergo &c.

Dar. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1568. tertio Cal. Septemb. Pont. nostri anno tertio.

Anno à Nativitate Domini millesimo quingentesimo sexagesimo octavo, Indictione undecima, die vero vigesima tertia mensis Septemb. Pontificatus Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii Papæ V. anno 3. retroscripta littera Apostolica affixæ & publicatæ fuerunt ad vobis Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, Canc. Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, per nos Antonium Clerici, & Christianum de Monte. prælibati S. D. N. Papæ Curf.

Jo. Andreas Panizza Mag. Curf.

Moderatio, & revocatio privilegiorum, Officii Romanæ Curie, ac Militiis concessorum, circa pensiones obtinendas, & transferendas, ac expectativas concedendas, unioneque & suppressiones beneficiorum faciendas, ac facultatem de bonis Ecclesiasticis testandi.

De unionibus habes etiam Conc. Tridentini sess. 7. cap. 6. & sess. 14. cap. 9. & sess. 24. cap. 13. & 15. Et de facultatibus testandi, attende etiam aliam hujus Pont. const. 117. Quæ ordini, cum ibi not.

Militiæ varias reintegrationes circa hæc sancita obtinuerunt, quas seriofolum fuisset singulas hic adnotare, ideo eas quære in Indice verb. Militiæ.

Reservationes autem pensionum perpetuarum super Beneficiis Ecclesiasticis ad Collegiorum, & priorum locorum favorem factarum, & indulta imponendi pensiones etiam temporales, revocavit S. D. N. Urban. VIII. const. 69. Sanctissimus. inf. totum. 4.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Sacrofanctum Ecclesiæ Dei statum, integrum & incolumem præstare officii nostri cum sit, quæ-

cumque illi detrimentum asserre noscuntur, nostra nos decet consideratione movere.

§. 1. Sanè tantæ tamque immoderate de rebus dominicis, etiam extra ordinem Ecclesiasticum largitiones, his novissimis temporibus succrevisse perhibentur, ut jam optima quæque alieni sensum exauriant, & quod in fovendis multiplicandisque Ministris Ecclesiasticis, fundandis Seminariis, alendis pauperibus, recreandis infirmis, instaurandis Ecclesiis, fulciendis ædibus vetustate consumptis, educendis viris religione, & doctrina clavis, quibus Ecclesia ipsa tantopere dignoscitur indigere, id ferè universum multitudine præripiat laicorum. Hinc manifesta nos impellit necessitas, ut hac indomita cupiditate repressa, de communi Ecclesiæ salute consulamus. At quia omnia incommoda statim ubique facile subducere non valeamus, ea saltem, quæ nobis proxima sunt, & ante oculos frequentius observantur, in primis tollere curabimus, ut ceteri omnes cum venerit usus, æquiore animo patiantur.

§. 2. Itaque de nobis attributæ potestatis plenitudine revocamus, & abolemus omnia & quæcumque privilegia, facultates, dispensationes, & indulta Militum S. Petri, S. Pauli, Sancti Georgii, Pii, de Laureto, & de Lilio, necnon Secretariorum, Cubiculariorum, Scutiferorum Apostolicorum, ac quibuscumque aliis Romanæ Curie, & Apostolicæ Sedis collegiis, & officiis, tam in dicta Curia quam extra eam constitutis, ipsorumque personis, necnon Conclavistis, de pensionibus fructibus & aliis rebus Ecclesiasticis, etiam ad certam & determinatam summam & quantitatem constitutis, per Clericos conjugatos, Bigamos, & alios Laicos, obtinendis, eisdem per ipsos, ac aliis similibus per alios Clericos in alium, vel alios transferendis, per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac nos, & prædictam Sedem, tam in ipsorum officiorum institutione, quam deinceps quandocumque, & quotiescumque, etiam per modum statuti perpetui, ac initi & stipulati contractus, & aliàs sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque restitutionibus, præservationibus, mentis attestationibus, derogatoriis derogatoriis, aliisque fortioribus, efficacissimis & insolitis clausulis, necnon irritantibus & aliis decretis, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, deque simili potestatis plenitudine, etiam pro defensione fidei Catholicæ aut dictæ Sedis, & quibuslibet aliis causis quantumlibet gravibus, urgentibus, necessariis & onerosis, ac etiam consideratione, intuitu, & contemplatione, vel ad instantiam Imperatoris, Regum, Ducum, aliorumque Principum, necnon S. R. E. Cardinalium, deque illorum consilio, & matura deliberatione prius desuper habita, concessa, confirmata, ac etiam multiplicatis vicibus innovata, extensa & moderata. Ita quod deinceps illorum sic revocatorum prætextu, Laici etiam extra conjugium & in cælibatu viventes, ac Bigami, & Clerici conjugati nullas novas pensiones, aut fructus, aut omnino alias res Ecclesiasticas habere, nec ipsi etiam qui conjugati non sunt, si ad primas, aut alias nuptias transierint, antiquas deinceps percipere, Clerici verò, & alii matrimonium etiam cum unica & virgine contracturi, postquam illud contraxerint, nec antiquas retinere, nec novas assequi possint. Sed nec ulli Laici, nec Clerici privilegio transferendi pensiones, fructus, aut alias res hujusmodi de cetero potiantur. Decernentes omnes transferendi facultates ex nunc, antiquas verò pensiones, & alias reservationes, tam Laicis quam Clericis concessas, & quas ipsos Clericos habere contigerit, per futurum contractum matrimonium hujusmodi extinctas esse.

§. 3. Ac etiam revocamus, & abolemus omnia & quæcumque privilegia, facultates, dispensationes, & indulta obtinendi & transferendi similes pensiones, fructus, & alias res Ecclesiasticas, Mona-

Causa hujus const.

Revocatio indultorum transferendi pensiones Collegiis & Officialibus Rom. Cur. concessorum & per laicos, vel clericos conjugatos eas retinendas.

Revocatio similibus privilegii quorumcumque Militiarum & Hospitalium obtinendis pensionibus.

Conciliis Lateranensibus dispositio est in bulla Leonis etc. in trib.

Exordium.

Conciliis Lateranensibus dispositio est in bulla Leonis etc. in trib.

Causa hujus novæ dispositio

Imperio hujus capitulis.

D. P. An. 3. die 30. Aug.

Publicatio.

LXXIII.

Idem An. D. 1568.

Exordium.

Declaratio
privatæ dis-
pensationis
Militibus
concesse in
prædictis.

teriorum, & aliorum beneficiorum & officiorum Ecclesiasticorum, secularium & regularium S. Jacobi de Spata, de Calatrava, de Alcantara, Jeshu Christi, & Sancti Stephani, ceterisque Militibus, necnon Sancti Lazari Hierosolymitani, ac omnibus & singulis aliis Hospitalibus, eorumque Militibus, Fratribus & personis, tam Clericis quam conjugatis, etiam modo & forma prædictis, & ex eisdem ac quibuscumque aliis fortioribus causis concessa, approbata, & etiam à nobis moderata, & restituta, ita quod ipsi, five conjugati five bigami, five clerici five etiam presbyteri, nullas de cetero recipiant, sed eas solas quas nunc habent sine facultate ipsas transferendi retineant, & ex quoque perfuturum contractum Matrimonii extinctæ censeantur.

§. 4. Omnes verò privatas dispensationes, & gratias habendi, & retinendi pensiones, fructus, & alias res Ecclesiasticas, Militibus & Fratribus quibuscumque Militiarum, & Hospitalium prædictorum, tam à nobis quam à Prædecessoribus, & dicta Sede hucusque singulariter concessas, ita moderamus, & restringimus, ut illarum vigore soli Milites, & Fratres non conjugati, nec bigami, novas deinceps pensiones, aut fructus aliasque res Ecclesiasticas recipiant, & in celibatu viventes, illas & alias jam receptas dumtaxat percipiant. Alii verò, etiam cum unica, & virgine conjugati, si rursus matrimonium contraxerint, eas omnes quas nunc habent, per hujusmodi contractum amittant, nec illæ ipsi ulterius debeantur, simili facultate transferendi tam antiquas quam futuras pensiones, fructus, & res hujusmodi omnibus prædictis, etiam non conjugatis ex nunc penitus interdicta, & suppressa. Sed nec ulli Milites, aut Fratres, etiam simplices clerici, vel presbyteri prætextu hujusmodi dispensationum, vel presbyteri prætextu hujusmodi dispensationum, & gratiarum aliqua simplicia, aut alia beneficia Ecclesiastica secularia, aut aliorum Ordinum regularia, etiam nullum omnino onus, aut servitium habentia, ut præstitionia deinceps recipere, & retinere possint.

Revocatio
facultatum
Militiarum
concedendi
expectati-
vas, & reser-
vationes ad
beneficia, &
vincendi, in-
corporandi,
vel su-
primendi bene-
ficia.

§. 5. Ad hæc quoque revocamus & abolemus omnia & quæcumque privilegia, facultates, licentias & indulta, Magistris, & Conventibus, aliisque personis, & locis Militiarum, & Hospitalium prædictorum, eorumque personis, etiam ut prædictum est concessa, confirmata, extensa, & moderata, concedendi expectativas, reservationes, & alias gratias preventivas ad Prioratus, præceptorias, Hospitalia, & alia beneficia, & officia Militiarum, & Hospitalium prædictorum. Itemque vincendi, & incorporandi perpetuò vel ad tempus, & supprimendi beneficia Ecclesiastica cum cura & sine cura, secularia & quorumvis Ordinum regularia, etiam de jure patronatus Laicorum ex fundatione, & dotatione existentia, ac etiam nullum penitus servitium, aut ordinem annexum, seu aliud onus qualecumque habentia, etiam ruinosa, & deserta, ac etiam sponte à Patronis oblata, vel donata, illorumque fructus, res, & proprietates applicandi, & appropriandi Militibus, & Hospitalibus supradictis, seu beneficia ipsa in Monasteria, Prioratus, præceptorias, beneficia, Hospitalia & alia loca Militiarum & Hospitalium eorumdem erigendi, & instituendi, ac aliis commutandi & reformandi.

Revocatio
expectativa-
rum & unio-
num, & sup-
pressionum,
quæ plena-
rium effec-
tum sortitæ
non sunt.

§. 6. Ac etiam omnes & singulas expectativas, reservationes, & alias gratias preventivas, speciales & generales, necnon uniones, annexiones, & incorporaciones perpetuas & temporales, suppressiones, applicationes, appropriationes, & alias dispositiones hujusmodi beneficiorum & fructuum, per Magistros, Conventus, & alios prædictos hucusque factas, & concessas, ac etiam dicta Apostolica auctoritate, & ex certa scientia confirmatas, quæ plenarium nondum sunt suum sortitæ effectum.

Revocatio
facultatum
testandi, &
disponendi
de bonis Ec-

§. 7. Præterea omnes & quascumque licentias, & facultates testandi, & alias quomodocumque

disponendi, etiam ad certam, & quantumvis modicam summam, & quantitatem, de rebus, fructibus, & bonis immobilibus, mobilibus, & se moventibus ad Magistros, Priores, Præceptores, Milites, Fratres, & personas Militiarum, & Hospitalium prædictorum ratione illorum, necnon Præceptoriarum, Hospitalium, & beneficiorum Ecclesiasticorum, etiam secularium, & aliorum Ordinum regularium, ac pensionum, & fructuum quorumcumque provenientes, necnon facta hucusque, non tamen effectum sortita vigore licentiarum & facultatum prædictarum, testamenta & alias dispositiones hujusmodi, etiam si per easdem licentias & facultates disponatur, quod dimidia, vel alia pars rerum & bonorum prædictorum Militibus, Hospitalibus, Domibus, & locis, unde illa provenierint, aut aliis ipsi locis relinquuntur. Decernentes omnes & singulas reservationes, assignationes, translationes, uniones, annexiones, incorporaciones, suppressiones, applicationes, appropriationes, testamenta, donationes, & alias dispositiones quascumque, quæ prætextu privilegiorum, facultatum, dispensationum, & indultorum prædictorum sic revocatorum, ac contra præsentium tenorem per quoscumque, etiam dicta Apostolica auctoritate fieri, vel factas persequi contigerit, tamquam subreptas & extortas, nullius prorsus roboris & momenti esse, nec per eas jus, titulum etiam coloratum cuiquam acquiri, nec quemquam quocumque tempore quavisque causa restitutionem in integrum, reductionem ad terminos juris, aut quodvis aliud gratiæ remedium impetrare, aut etiam ab alio vel aliis impetratis, aut motu simili concessis uti.

§. 8. Nec præsentis litteras de subreptionis, vel obreptionis, seu nullitatis vitio, aut intentionis nostræ, vel alio quopiam defectu notari, vel impugnari, nec sub illis revocationibus, suspensionibus, limitationibus, aut aliis contrariis dispositionibus similium vel dissimilium revocationum, & ordinationum ab ipsa Sede quandocumque emanandis comprehendere, sed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum, & validum statum restitutas, & plenarie reintegratas esse & censei.

§. 9. Sique in iis ac omnibus & singulis aliis supradictis per quoscumque Judices ordinarios & delegatos, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, & Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, in quavis causa & instantia, sublatæ eis & eorum cuilibet quavis aliter interpretandi & judicandi facultate & auctoritate, ubique interpretari, judicari & definiri debere, necnon irritum & inane quicquid fecus per quoscumque quavis auctoritate scienter vel ignoranter condigerit attentari. Volumus autem similibus privilegiorum, dispensationum, facultatum, & indultorum concessionem nostris explodi temporibus, & quod nobis licere non patimur, nostris Successoribus indicamus.

§. 10. Non obstantibus præmissis, & nostris de non tollendo jure quæsitio, aliisque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac Collegiorum, Officiorum, Militiarum, Hospitalium, Conventuum, necnon S. Benedicti, Cisterciensis, Sancti Augustini, & aliorum Ordinum, & regularium quorum Militia, & Hospitalia prædicta sunt juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, consuetudinibus, statimementis, usibus, & naturis quancumque tempore observatis, necnon fundacionibus eorumdem, aliis quoque privilegiis, indultis, exemptionibus, & litteris Apostolicis illis omnibus ipsarumque Militiarum, & Hospitalium Magistris, Conventibus, Prioribus, Præceptoribus, Militibus, Fratribus, & personis per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac nos, & prædictam Sedem, etiam per modum statuti perpetui, acini & stipulati contractus, seu quasi, necnon motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, ac etiam consideratione, inuito, contemplantatione, vel

clerice, vel
fructibus.
Ac testamen-
torum quæ
hucusque
non habue-
runt effec-
tum.

Tu vide inf
conf. 117.
Quæ Ordi-
ni.

Clausula
præservati-
va.

Decretum
irritans.

Clausula de
rogatoria.

ad instantiam Imperatoris, Regum, Ducum, aliorumque Principum, Sanctæque Romanæ Ecclesiæ Cardinalium, ac de eorum consilio, & assensu etiam consistorialiter habito, tam pro Militarum, Hospitalium, & regularum hujusmodi restitutione, & ampliacione, quam alias quomodocumque, ac sub quibuscumque tenoribus & formis, necnon cum quibuscumque relictivis, præservativis, annullativis, derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, efficacissimis & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decretis quotiescumque concessis, confirmatis & etiam iteratis vicibus extensis, & moderatis, etiam si in eis, ac statutis, stabilimentis, & fundatione prædictis caveatur expresse, quod nunquam prædicta revocata, vel moderata, aut immutata intelligantur, nec illis, in toto vel in parte derogatum censeatur per quascumque litteras, etiam derogatorias derogatorias, ac alias fortiores & efficaciores clausulas in se continentes, nisi dum & quoties de illorum, ac etiam certarum specialium litterarum Apostolicarum inde confectarum vere, non autem per clausulas generales vel speciales idem importantes, inserto tenore, ac de simili Cardinalium consilio, & semper in hujusmodi quæ sic fierent de consilio prædicto derogationes, & alia dispositiones censeretur apposita clausula, quod tunc demum, nec aliter, nec alio modo effectum fortiantur, cum Magistrorum, & Conventuum prædictorum ad id accedat assensus, quodque derogationes, & alia dispositiones hujusmodi aliter effectum non habeant, nisi hujusmodi derogationes, & alia dispositiones consistorialiter factæ, & per trinas distinctas litteras eundem tenorem continentes, tribus distinctis vicibus Magistris, & Conventibus prædictis fuerint intimata, eorumque pariter ad id expressus accedat assensus, aliter vero factæ viribus & effectum omnino careant, ac Magistri, & Conventus prædicti ad parendum illis, & decretis desuper processibus, eorumque executoribus, & subexecutoribus, ac ipsorum mandatis & monitionibus minime teneantur, sed litterarum hujusmodi executionem omnino impedire, nec ratione resistitæ censuris Ecclesiasticis per ipsos executores vel subexecutores latius innodari possint. Quibus omnibus, etiam si alias de eis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum infererentur, præsentibus pro sufficienter expressis & insertis habentes, harum serie specialiter & expresse derogamus. Et quatenus, effectum præsentium quoquomodo impedire vel retardare, vel illis obesse possent, omnino tollimus & abrogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 11. Ut autem præsentis litteræ omnibus plenius innotescant, mandamus illas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, & in Cancellaria Apostolica, necnon in acie Campi Floræ publicari, earumque exempla de more affigi, & in dictæ Cancellariæ libro Quinterno nuncupato describi.

§. 12. Volumusque & decernimus ipsarum præsentium exempla etiam impressa, manuque Notarii publici, & sigillo Prælati Ecclesiastici, aut illius Curie obfignata eandem illam ubique locorum fidem faciant, quam ipsæ præsentēs facerent, si essent exhibitæ vel ostensæ. Nulli ergo omnino &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo sexagesimo octavo, quinto Idus Septembris, Pont. nostri anno tertio.

Anno à Nativitate Domini 1568. die verò 13. mensis Septembris, Indiæ 11. Pont. Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papæ V. anno 3. retrospectæ litteræ Apost. affixæ & publicatæ fuerunt ad valvas Principis Apostol. de Urbe, & Canc. Apost. & in acie Campi Floræ, ibi-

que dimissi capiti affixis per nos Joannem Andream Rogirum, & Joannem Andream Panixam prælibatî S. D. N. Papæ, ac Sanctæ Sedis Apostolica Curs.

Julius Parinus Mag. Curs.

De dignitatibus & præbendis Ecclesiarum Insulæ Sardinie, aliis Ecclesiis unitarum, earumque suppressione, & Parochialium ad primævum statum reductione, ac Vicariorum in Parochialibus quæ sunt annexæ dignitatib. &c. deputacione.

PIUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Quantum animarum cura ceteras omnes superat & excellit, tanto nos impensius providere necesse est, ut id officii genus, omni ubique adhibita industria excolatur. Ex multis enim offensionibus, quæ ad nostram quotidie noticiam perferuntur, illam quoque gravissimam intelligimus, quod Canonici, & alii habentes dignitates, personatus & officia earum Insulæ Sardinie Ecclesiarum, quas partim rerum inopia depressas, partim etiam aeris inclementia desertas, jampridem Apostolica Sedes proximis Metropolitanis, & aliis Cathedralibus Ecclesiis providenter adjunxit, quamquam personali in ipsis obsequio soluti residentiam detrectant atque refugiunt, apud parochiales Ecclesias, quæ sunt, vel in præbendis suorum hujusmodi Canonatuum instituta, vel prædictis dignitatibus, beneficiis & officiis applicatæ, nullum habentes perpetuum Vicarium, vel alium proprium sacerdotem, qui curam exerceat animarum. Rursus multæ parochiales Ecclesiæ, sive pro præbendis habitæ, sive dignitatibus, beneficiis & officiis non unitarum, nec suppressarum Ecclesiarum incorporatæ reperiuntur, quæ sunt hujusmodi Vicariorum solatio destitutæ.

§. 1. Nos adversus periculosam hanc negligentiam, volentes juris prosecutione cavere, de nobis attributæ potestatis plenitudine extinguimus & abolimus omnes dignitates, etiam majores & principales, necnon canonicatus, præbendas, personatus, administrationes, officia, ceteraque beneficia, omnium & singularum dictæ Insulæ Ecclesiarum aliis unitarum, vel etiam suppressarum, quæ parochiales Ecclesias habent uti præbendas, vel alias annexas, ubi non est vicaria perpetua constituta.

§. 2. Ipsas vero parochiales Ecclesias ad primævum statum simplicem & liberum revocamus, ita ut in earum collatione dehinc ab Ordinariis locorum faciendâ, Concilii Tridentini forma, quæ de parochialibus Ecclesiis super hoc præscripta est, omnino debeat observari. Statuentes, ut quicumque dignitates, canonicatus, præbendas, beneficia, & officia prædicta sic extincta, etiam plura, & diversis hujusmodi Ecclesiis ex dispensatione Apostolica, aut alias obtinebant, ex quo jam amplius non sunt, nullum in dictis principalibus Ecclesiis locum habere contendant, sed singulas prædictas parochiales Ecclesias, ut simplices earum rectores retinentes, debeant ibi præsentēs perpetuo residere, ac debita parochialia officia per se ipsos, ut congruit, exercere: nec ulli omnino id effugere, aut consuetudine immemorabili, aliave prætenfa juris cautione defendi possint, etiam si eam curam ad solos Episcopos obijciant pertinere, sed eos qui canonica monitione præmissa in dictis parochialibus Ecclesiis præsentēs residere neglexerint, censuris & penis omnibus contra non residentes, tam à dicto Concilio quam etiam nostris, & aliis canonicis sanctionibus impositis, volumus subjacere. Verum, si de pluribus etiam diversarum Diocesum parochialibus unica duntaxat præbenda constituit, aut unio de illis unitantum dignitati, beneficio, vel officio sic suppresso facta fuerit, singuli professores, etiam qui plura ex suppressis præfatis

LXXIV.

Edita An D.
1568.

Causa hujus
confit.

Extinctio be-
neficiorum
Ecclesiasticorum
Insulæ Sardinie,
aut
unitarum vel
suppressarum,
quæ habent
parochiales
ut præbendas
&c.

Reductio pa-
rochialium ad
primævum
statum
&c.

Forma publ.
hanc confit.

Exemplorum
fides.

Dat. P. An. 3.
die 9. Sept.

Publicatio.

Deputatio
Vicarium
in Parochia-
libus, quæ
sunt annexæ
dignitatibus
&c.

Executorum
deputatio, &
facultates.

Clausula de-
rogatorie.

Iussio publ.

obtenebant, ut præfetur, in una parochiali Ecclesia, dumtaxat perpetuo residentes, quam intra sex menses post publicationem præsentium eligere debeant, si censuras & penas prædictas effugere voluerint, potuerunt, vita eis comite, in ceteris omnibus tolerari, dummodo reliquis Vicarij idonei ab Ordinariis locorum cum debito stipendio assignentur. Illis vero cedentibus & decedentibus, singuli rectores in singulis ordinentur, nisi forte loci propinquitas, rerum angustia, aliave legitima causa connexionem patiatur.

§. 3. Porro Ecclesiis parochialibus, vel in præbendas canonicatum erectis, vel dignitatibus, officiis, & beneficiis non unitarum, nec suppressarum Metropolitanarum, Cathedralium, & aliarum dictæ Insulæ Ecclesiarum perpetuo annexis, in quibus nullæ sunt vicariæ hucusque perpetuæ institutæ, quoniam canonici & alij dignitates, officia & beneficia huiusmodi obtinentes, in ipsi Metropolitanis, Cathedralibus, & aliis Ecclesiis deservire tenentur, prædicti Ordinarii locorum illas quam primum ordinare, vel alias providere debeant, quemadmodum in generalibus, & prædicto Tridentino Conciliis dignoscitur ordinatum, portione fructuum, etiam super certa re assignanda, ac per Vicarios propria auctoritate percipienda, quæ tamen centum annue non transcendat, inferior vero quam quinquaginta scutorum esse possit, quando sine notabili principalis incommodo nequeat esse pluri, & ea sit annonæ vilitas, ut sacerdotes queat ex minori commode sustentari.

§. 4. Præcipuus igitur universis & singulis Archiepiscopis, Episcopis, & aliis locorum Ordinariis per dictam Insulam constitutis in virtute sanctæ obedientiæ, ut prædicta omnia & singula in suis quilibet civitatibus, Diocesis, & locis quamprimum exequantur, & inviolate faciant ab omnibus observari. Contradictores quoslibet & rebelles per prædictas & alias, quas viderint ipsi censuras & penas, ceteraque remedia opportuna appellatione quacumque postposita compescendo, invocato etiam ad hoc si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 5. Non obstantibus prædictis & nostris de non tollendo iure quæsito, ac de Vicariis huiusmodi aliter institutis, aliisque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon Ecclesiarum, in quibus canonicatus & præbendæ, ac dignitates, beneficia & officia prædicta constitunt, juramento, confirmatione Apost., vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus contrariis quibuscumque, seu quod aliquibus communiter vel divisim, a dicta sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari, aut contra huiusmodi statuta & consuetudines, ac privilegia eis concessa, ad residentiam, & alia prædicta compelli non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum, de statutis & consuetudinibus, necnon Ecclesiarum, locorum, & personarum huiusmodi mentionem, & quibuslibet aliis privilegiis, indulgentiis, & litteris Apostolicis, generalibus vel specialibus quorumcumque tenorum existant, per quæ præsentibus non expressa, vel totaliter non inserta effusurum earum impediri valeat quomodolibet vel differri, & de quibus, quorumque totis tenore ad verbum habenda sit in nostris litteris mentio specialis, quæ omnia contra prædicta nolumus cuiquam in aliquo suffragari. Quin etiam ex nunc irritum decernimus & inane, quicquid fecus per quoscumque quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 6. Ceterum mandamus easdem Præfentes ad valvas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, & in acie Campi Floræ publicari, earumque exempla de more applicari, volumus; & Apostolica auctoritate decernimus, quod litteræ ipsæ sic publicatæ, omnes & singulos abientes, & ubique extra dictam Insulam degentes, ac etiam monitiones, citationes, & inhibitiones per quemcumque Ordinarium editæ publicè valvis suæ Cathedralis Ecclesiæ affigendo, vigore præsentium faciendæ, monitos, citatos, & inhibitos perinde ardeant, ac si eis personaliter factæ fuissent.

§. 7. Quia vero difficile, & incommodum valde esset, easdem præfentes ad singula loca, ubi illis opus fuerit, transferre, similiter volumus, ut earum exemplis etiam impressis, manuque Notarii publici, & sigillo Prælati Ecclesiastici, vel ejus curiæ obsignatis, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ eisdem præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ. Nulli ergo omnino hominum &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo sexagesimo octavo, Cal. Octobris, Pont. nostri anno tertio.

Anno à Nativitate D. 1568. Indictione 11. die vero 15. mensis Octobris, Pontificatus Sanctissimi in Christo Patris & D. N. D. Pii divina providentia Papa V. anno 3. retrospectæ litteræ Apostolicæ affixæ & publicatæ fuerunt ad valvas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, & in acie Campi Floræ, dimissis ibidem earundem retrospectorum litterarum copiis affixis per nos Julium Parium, & Joannem Bornotum prælibati S. D. N. Papa Cursi.

Decretum Concilii Tridentini de Clericorum secularium ad sacros ordines promotione, extenditur ad Clericos regulares sive seculares more Religiosorum in communi viventes.

Contra male ad sacros, vel minores ordines, seu clericalem characterem ordinantes, & male ordinatos, extat const. S. D. N. Urb. VIII. 33. Secretis. inf. Tom. 4.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Romanus Pontifex sacrorum Conciliorum auctor & interpres, illa quæ in huiusmodi Conciliis à prudentibus Patribus in Spiritu Sancto legitime congregatis salubriter sancita sunt, pro sui pastoralis officii debito, cum æquitas, honestas, & decus suaderet, sicuti declarare, & moderari, ita etiam ad alios casus extendere consuevit.

§. 1. Sane cum non deceat divino ministerio adscriptis cum Ordinis dedecore mendicare, aut fordium aliquem quæstum exercere, sacro Tridentino Concilio inter alia decretum fuit, ne quis deinceps Clericus secularis, quamvis alias moribus, scientia, & ætate esset idoneus, ad sacros Ordines promoveretur, nisi prius legitime constaret eum beneficium Ecclesiasticum, quod sibi ad victum honeste sufficeret, pacifice possidere, vel alias ordinari non posset, nisi juxta decreti ab ipso Concilio desuper editi formam & tenorem.

§. 2. Cum autem nulla in huiusmodi decreto Religiosorum clericorum mentio facta fuerit, ac propterea nonnulli, uti moleste accepimus, certorum Ordinum religiosi, seu Canonici vel Clerici, intra claustra monasteriorum, seu domorum more Regularium in communi viventes, qui nunquam, seu non nisi ad certum tempus professionem emittunt, & ex claustro exire, vel dimitti, ad sæculum redire libere & licite possunt Religionis prætextu titulo sufficientis beneficii, nec juxta dicti decreti tenorem, ad sacros Ordines se promovendi prætentant, & à nonnullis Episcopis passim promoveantur, atque inde plerumque illud inconveniens eveniat, ut sic promoti, & claustra exeuntes, & per sæculum vagantes, vel mendicare, vel fordium quæstum exercere, non sine ipsorum dedecore, ac Ordinis vilipendio, & quamplurimorum Christianissimorum scandalo cogantur.

§. 3. Nos igitur, qui singularum Dei Ministrorum honorem & decus, quantum in nobis est, sinceris exoptamus affectibus, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, deque Apostolicæ potestatis plenitudine, hac perpetuo valitura sanctione decretum

Dat. P. An. 3.

die 1. Oct.

Publicatio.

LXXV.

Edita An. D.

1568.

Exordium.

Conc. Trid. sess. 21. cap. 2. de refor. statu formam promovendi Clericos seculares ad ordines sacros.

Ex causis modo hic expressis.

Pontifex iste extendit dictum decretum ad Clericos regulares sive seculares more Religiosorum in communi viventes.

prædictum de Clericis secularibus loquens, ad omnes & singulos, etiam cunctumque ordinis Clericos religiosos, five seculares more Religiosorum viventes in communi, non professos, harum serie extendimus & ampliamus, ac Religiosis & aliis prædictis non professis, ut ad sacros ordines promoveri, nec non omnibus & singulis venerabilibus Fratribus nostris Patriarchis, Archiepiscopis & Episcopis, gratiam & communionem Sedis Apostolicæ habentibus, ut ordines ipsos huiusmodi Religiosis personis impendere, nisi observata forma dicti decreti nos virtute sanctæ obedientiæ, & sub indignationis nostræ pœna, interdiciamus & prohibemus, ac contrafacientes per annum à præstatione talium ordinum ipso iure suspendimus.

§. 4. Stantes & decernentes promotiones quarumlibet religionum personarum prædictarum ad ordines huiusmodi contra ipsius decreti Concilii Tridentini formam, etiam cunctis licentiis illis ab Apostolica Sede vel illarum Superioribus cuiuscunque dignitatis, status, gradus, & præminentiae existant, si Pontificali dignitate fungantur, vel Cardinalatus honore præfulgeant concessæ, prætextu factas, executione prædictorum Ordinum omnino carere, nullaque prorsus & irritas existere, sique promotas personas in altaris Ministerio ministrare non posse. Quinimmo ministrantes, privilegiis, exemptionibus, immunitatibus, & aliis gratis Clericis concessis omnino privari, & irregularitatis, aliasque in dicto decreto contentas pœnas eo ipso incurrere, à quibus nisi à Romano Pontifice, vel in mortis articulo minimè absolvi possint.

§. 5. Non obstantibus quibuscvis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis ac quorumvis Monasteriorum, & Ordinum, etiam juramento, & confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indulgitiis, & litteris Apostolicis, illis, illorumque superioribus & personis, sub quibuscunque tenoribus & formis, ac cum quibuscvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, efficacissimis, reitutivis & insolitis clausulis, irritantibusque & aliis decretis, in genere vel in specie, ac alias quomodolibet etiam iteratis vicibus concessis, confirmatis, & innovatis; quibus omnibus, etiam si alias pro illorum sufficienti derogatione, de illis illorumque totis tenoribus specialis, specifica & expressa & individua, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum tenores, formas, datas & decreta in illis imposita, ac in eis verbo ad verbum infererentur, præsentibus pro sufficienter expressis & insertis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscunque.

§. 6. Et ut præsentibus litteræ ad omnium notitiam perveniant, neve quis illarum ignorantia excusari possit, volumus & Apostolica auctoritate decernimus præsentibus litteras ad valvas Principis Apostolorum de Urbe, & Cancellariæ Apostolicæ, ac in acie Campi Floræ publicari, & earum exempla affigi & imprimi, illarumque exemplis etiam impressis, manu alicujus Notarii publici, & sigillo Prælati ecclesiastici, vel ejus Curie obsignatis, eandem prorsus fidem adhiberi, quæ ipsis præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensæ. Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo sexagesimo octavo, pridie idus Octobris, Pont. nostri anno tertio.

Anno à Nativitate Domini millesimo quingentesimo sexagesimo octavo, Indictione undecima, die vero 12. mensis Novemb. Pontif. Sanctiss. in Christo Patris & D.N.D. Pii divini providentia Papa V. anno ejus 3. retroscriptæ litteræ Apost. affixæ & publicatæ fuerunt ad valvas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, Cancell. Apost. & in acie Campi

Floræ, dimissis in superius expressis locis præsentibus litteris per aliquantulum temporis spatium affixis, & deinde, ut moris est, amotis per nos Thomam Gallarum, & Julium Parinum prælibati S. D. N. Pii Papa V. ac Sanctæ Apostolicæ Sedis Curs.

Christianus de Monte Mag. Curs.

De solemnibus trium votorum substantialium professione regulari emittenda, & una ex Regulis approbatis eligenda, ab omnibus qui in diversis Congregationibus & domibus, sub voluntaria obedientia & extra solemne votum Religionis vivunt, & habitum à secularibus Presbyteris distinctum deferunt.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Lubricum vitæ genus eorum veriti, qui Regularium formam præ se ferentes, nec propriis renunciant, nec ullam profitentur ex Regulis approbatis, quando horum plerique proprio instinctui obsequentes, alii odio incensi, alii, dum quod ambiunt minus consequuntur, alii vel dilapidatis vel interversis rebus, & ad sese, vel propinquos translatis, ut ratiocinia effugiant, quidam etiam in suos ipsorum mores inquisitum iri præsentibus, quasi impunitatem adepturi, è fodalitio suo, ut libet, exiliunt, ejectionisque illius insignibus, vestem recipiunt secularem. Hinc graves & periculosæ quotidie offensiones in populos concitantur, dum quos disciplinæ regulari perpetuò mancipatos credunt, rursus eos, etiam ubi consueverint, contempto post tot annos, & relicto, indignis sæpe modis, ejus cui sese dederant vitæ instituto, liberos vident, & solutos in sæculum evagari. Cum igitur conveniat, ut ejus arma induit, eam miles militiam persequatur, hanc de prædictis rationem capere instituiamus, ut vel permanendi, vel abscedendi facultate semel singulis proposita, certus deinceps & immobilis disciplinæ regularis cultus debeat in ipsis fodalitatibus perpetuò observari.

§. 1. Itaque de nobis attributæ potestatis plenitudine, statuimus, ut omnes & singuli Priores, Præpositi, & alii Præsidentes Generales, Provinciales, & Conventuales, necnon Canonici & Fratres Sancti Georgii in Alta Venetiarum, ac Eremitarum Sancti Hieronymi, alias Beati Petri Pifarum & omnium ac quorumcumque aliarum Congregationum, necnon Ecclesiarum, domorum, & conventuum, in communi, & sub obedientia voluntaria, & extra votum solemne Religionis viventes, quorum habitus à secularibus Presbyteris est distinctus, qui religionem amplecti, & professionem regularem solemnem emittere voluerint, id in suis quique Conventibus, & domibus intra viginti quatuor horarum spatium, postquam Delegatus noster præsentibus litteras eis significaverit, palam & sponte deliberent & declarent; inde convocato quamprimum per singulas huiusmodi Congregationes Generali vel alio supremo juxta morem cuiusque Congregationis, Capitulo, ibique electa una sub qua degant ex regulis approbatis, in quam major pars vocum ipsius Capituli consenserit, trium votorum substantialium professionem regularem, intra mensem solemnitè emittant, & in eam, tam ipsi quam illam deinceps ingressuri atque professuri, perpetuum ferant Altissimo famularum. Sicque professi, vel in suis quique Prioratibus, Præposituris, Prædictis, administrationibus & officiis confirmantur, vel ad alia transferantur, prout eique Congregationi & Superioribus suis videbitur utilius expedire.

LXXXVI.

Edita An. D. 1568.

Causa constit.

Viventes sub obedientia voluntaria & extra solemne votum Religionis debet professiones trium votorum emittere, sub una ex Regulis approbatis.

Promotionem ferri vata forma dicti Con. illi factis nullas esse. & Ministrantes puniri decernit.

Clausulas derogatorias apponit.

Publicationis formam tradit.

Dat. P. An. 3. die 14. Oct.

Publicatio.

Contra-
venienter coer-
ceatur.

S. 2. Qui verò excurso tam anni spatio in ipsa Congregatione morati, refugerint intra tempus prædictum profiteri, detracto Religionis habitu, ac reditis etiam in vinculis, si opus sit, receptorum & administratorum omnium rationibus, ejiciantur, nec deinceps patiantur in utilis ejusdem Congregationis domibus seu Conventibus amplius conversari. Quocirca mandamus universis & singulis Prioribus, Præpositis, Generalibus, Provincialibus, & Conventualibus, ac aliis cujuscumque dignitatis & nominis Ministris, necnon Conventibus, Canonicis, Fratribus, & personis Congregationum hujusmodi, ut statum nostrum prædictum, non expectata alia jussione, aut mentis nostræ declaratione, humiliter recipiant, & studiosa observare procurent. Quod si fortè aliqui in eo quo nunc sunt, statu, quem omnino tollimus & abolemus, contra nostrum hoc statum persistere contenderint, singulos omni dignitate, officio, administratione & beneficio privamus, & ad futura perpetuo indignos decernimus, excommunicationis quoque sententia innotamus eo ipso.

Clausulæ de-
rogatoriz.

S. 3. Non obstantibus foundationibus & institutionibus ac statutis & consuetudinibus Congregationum domorum, & conventuum prædictorum, iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, privilegiis quoque, exemptionibus & indultis Apostolicis, illis eorumque Superioribus & personis, ac eorum singulis per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac nos & Sedem Apostolicam, etiam per modum statuti perpetui, ac iniiti & stipulati contractus, ac aliis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis, in genere & in specie, concessis & confirmatis, ac etiam aliis reformationibus, quociescumque & quocumque tempore, factis & promulgatis, & quibuslibet aliis indulgentiis & litteris Apostolicis, specialibus & generalibus, quorumcumque tenorem existant, per quæ præsentibus non expressa vel totaliter non inserta, effectus earum impediri valeat quomodolibet vel differri, & de quibus quorumcumque totis tenoribus habenda sit in nostris litteris mentio specialis quæ omnia tamquam abrogata, contra earundem præsentium tenorem nolumus cuiquam in aliquo suffragari.

Jussu publi-
candi.

S. 4. Ceterum mandamus præsentibus ad valvas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, & Cellariæ Apostolicæ, ac in acie Campi Floræ, & earum exempla de more applicari.

Fides trans-
umptorum.

S. 5. Ac etiam volumus, quod ipsarum præsentium exempla etiam impressa, & Prælati ecclesiastici, vel ejus Curie sigillo, & Notarii publici manu obfignata, eandem illam fidem ubique locorum, in iudicio & extra illud faciant, quam ipsæ præsentēs facerent, si ibi ostenderentur, aut exhiberentur. Nulli ergo omnino hominum &c.

Dat. P. An. 3.
die 17. Nov.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo (sexagesimo octavo, quinto decimo Kal. Decembris, Pont. nostri anno tertio.

Publicatio.

Anno à Nativitate Domini 1568. indit. 11. die verò 4. mensis Decembris, Pont. Sanctiss. in Christo Patris & D. N. D. Pii divina providentia Papa V. Anno III. retroscriptæ litteræ Apost. affixæ & publicatæ fuerunt ad valvas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, & Canc. Apost. & in acie Campi Floræ, dimissi in omnibus supradictis locis earundem retroscriptarum litterarum copiis affixis, ut moris est, per nos Joannem Freyle, & Julium Parinum prælibati S. D. N. Papa Cur.

LXXXVII.

Confirmatio exemptionum Fratrum Militum Hospitalis Sancti Joannis Hierosolymitani, eorumque familiarium &c. à solutione decimarum, & aliorum quorumcumque onerum. Et præservatio jurisdictionis Ordinariorum quoad personas curam animarum exercentes.

Quoad exemptionem hoc idem voluit Greg. XIII. in const. 60. Quo magis. necnon Greg. XIV. ut in ejus const. 5. Quanta. ubi notabo infra in Tomo III. Cetera autem de hac Militia judicavi sup. in const. 2. Anast. IV. fol. 39. Christianæ. in Tomo I.

Quo verò ad dictam jurisdictionem Ordinariorum, attende aliam hujus Pontificis sanctionem infra in hoc Tomo II. in const. 136. Expolcit. & aliam Greg. XIII. in const. 67. Circumpecta.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D.
1568.

Exordium.

ET si cuncta, quæ ex multa Romanorum Pontificum prædecessorum nostrorum providentia in favorem Militiarum quarumlibet fidei Catholicæ defensionem salubriter institutarum processerunt, executioni debetæ demandanda esse censuimus, illa tamen præcipue quæ ad illarum statum prospere dirigendum per eosdem Romanos Pontifices prudenter concessa comperimus, ut illibata firmaque perpetuò subsistant, libenter approbationis nostræ munimine roboramus.

S. 1. Cum itaque sicut accepimus, licet aliàs felicis recordationis Leo Decimus, Clemens Septimus, Paulus Tertius, & Pius Quartus Romani Pontifices prædecessores nostros, inter alia privilegia & indulta dilectis Filiis Magistro & Conventui Hospitalis Sancti Joannis Hierosolymitani à Sede Apostolica concessa, eundem & pro tempore existentem Magistrum, Bajulinos, Castellatum Empostæ, Priores, Præceptores, Milites, aliasque personas Hospitalis hujusmodi necnon eorum subditos, vassallos, colonos, & servitores, ac alios in eorum obsequiis & digiti Hospitalis beneficiis quomodolibet nuncupatis existentes, etiam Presbyteros curam animarum exercentes, quamdiu illam exercerent, & in illorum obsequiis forent, illorumque animalia, prædia, domus, molendaria, & bona quocumque, quæ obtinebant, ac in posterum obtinerent & possiderent, à solutione & exactione decimarum, censuum, iurium etiam synodaliū & canonicarum portionum, seu charitativi subsidii, aut jucundi adventus, seu quartæ, aut aliàs quomodolibet, aut aliorum quorumcumque onerum, sub certis modo & forma exemerent & liberarent, & prout in diversis ipsorum Prædecessorum desuper concessis litteris plenius continetur.

S. 2. Et licet privilegia, exemptiones, libertates, & indulta præfata, si umquam à primæva erectione dicti Hospitalis, nunc præcipue favore & complemento digna sint, cum ipsi pro fide Catholica defendenda non modo facultates & fortunæ, verum etiam eorum vitam & sanguinem perdere non dobitaverint: nihilominus diversi locorum Ordinarii, & parochiales Ecclesiarum Rectores, ac multæ Capitulares persone id sibi omnino, juxta sacri Concilii Tridentini decreta, licere asserentes, eosdem Magistrum, Bajulivos, Castellatum Empostæ, Priores, Præceptores, Milites, & personas, diversis oneribus contra eorum privilegia pergravare, illosque ad decimas, census, subsidia etiam caritativa, congruas portiones, jucundum adventum, pastor bonus, aut aliàs nuncupata onera, etiam jura synodalia cogere præsumant, in grave ipsius Hospitalis detrimentum & gravamen.

S. 3. Nolque attendentes quod nuper inter alia Mendicantium Ordinum Fratrum concessa privilegia, eos & eorum quemlibet, tam à seminariis clericorum in qualibet civitate, juxta ejusdem Concilii Tridentini decreta erecta, seu erigendi, quam decimarum, subsidii, & aliorum onerum contributione totaliter exemisse & liberasse, præfatq; Magistrum, Bajulivos, Priores, Castellatum Empostæ, Præceptores, Milites, Fratres, & personas non minus dignos esse, ut eos paribus favoribus & gratis prosequamur, illosq;

Leo X. & alii concesserunt exemptionem à decimis & aliis oneribus.

Ordinarii tamen Milites desuper molestabant vigore Conc. Trid. sess. 23. c. 18.

Hic ideo Pont. eandem exemptionem approbat, & iterato concedit.

& eorum singulos ac singulares dicti Hospitalis personas à quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & interdicti aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, necnon omnium & singulorum privilegiorum, indultorum, facultatum, exemptionum, immunitatum, libertatum, & gratiarum, per præfatos, & alios quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac Sedem Apostolicam Hospitali, illiusque Magistro, Conventui, & Fratribus Militibus, aliisque quibuscumque personis præfatis hæcenus concessorum, ac litterarum desuper concessarum tenores præsentibus pro expressis habentes, Motu proprio non ad Magistri & Conventus Hospitalis hujusmodi, aut alicujus alterius super hoc pro eis nobis oblatæ petitionis instantiam, sed ex certa scientia, & de mera nostra liberalitate, ac Apostolicæ potestatis plenitudine, omnia & singula privilegia, indulta, facultates, exemptiones, immunitates, libertates, & alias gratias, eisdem Magistro & Conventui quomodolibet concessa, Apostolica auctoritate renore præsentium confirmamus, & approbamus, illisque perpetuæ & inviolabilis firmitatis robur adjicimus, ac omnes & singulos, tam juris quam facti defectus, si qui forsitan intervenierint in eisdem supplemus.

Claus. terc.
apponit.

§. 4. Decernentes præfatas litteras nullo, umquam tempore, de subreptionis vel obreptionis vitiis ad intentionis nostræ vel quopiam alio defectu, etiam ex eo quod locorum Ordinarii vocati non fuerint, notari, impugnari, vel invalidari minime posse, minusque sub quibuscumque similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, limitationibus, restrictionibus, & derogationibus comprehendendi posse, sed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, roties in pristinum statum restitutas, reponas, & plenarie reintegratas esse, sicque ab omnibus censi. Et ita per quoscumque Judices & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Cardinales, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari & definiti debere, ac irritum & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Executores
deputat.

§. 5. Quocirca dilectis Filiis in Regnis Hispaniarum, & Neapolitano nostris & Sedis Apostolicæ pro tempore existentibus, Nunciis, aut Curie earum Cameræ Apostolicæ generali Auditori per præfatos motu simili mandamus, quatenus ipsi vel duo, aut unus eorum per se vel alium seu alios præfatos litteras, & in eis contenta quæcumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte eorumdem Magistrum & Conventus fuerint requisiti, solemniter publicantes, et si in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra eisdem Magistrum & Conventum, confirmatione, approbatione, adjectione, supplementatione, decreto, & aliis præmissis pacifice uti, frui, & gaudere, non permitte eos per Ordinarios præfatos, aut quoscumque alios contra præsentium tenorem quomodolibet molestari, perturbari, aut inquietari, contradictores quolibet & rebelles, per sententias, censuras, & penas Ecclesiasticas, appellatione postposita compescendo, ac legitimis super his habendis servatis processibus, sententiis, censuras, & penas hujusmodi incurrere declarando, illasque etiam iteratis vicibus aggravando, interdictum Ecclesiasticum apponendo, invocato etiam ad hoc si opus fuerit auxilio brachii secularis.

Contrarius
derogat.

§. 6. Non obstante præ memorie Bonifacii Papæ VIII. etiam prædecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus diebus, dumodo ultra tres dietas auctoritate præsentium ad iudicium non extrahatur, ac aliis quibuscumque Apostolicis, necnon in Provincialibus & synodalibus Conciliis editis specialibus vel generalibus, constitutionibus & ordinationibus, necnon juramento, confirmatione Aposto-

lica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque; indultis, & litteris Apostolicis, quibuscumque personis, etiam præfatis locorum Ordinariis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque derogationum derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, irritantibusque; & aliis decretis, etiam Motu & scientia similibus, etiam consistorialibus, & de Fratrum nostrorum consilio, in contrarium quomodolibet concessis, confirmatis, approbatis & innovatis, quibus omnibus, etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa & individua mentio seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia forma ad hoc servanda foret, illorum tenores, ac si de verbo ad verbum inserti forent præsentibus pro sufficienter expressis & insertis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque, aut si aliquibus communiter vel divisim, ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

§. 7. Volumus autem quod præfates litteræ non comprehendant neque Ecclesias, neque personas in his quæ ad curam animarum pertinent, in quibus decreta Concilii Tridentini hujusmodi omnino servari debeant.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 29. Nov. 1568. Pont. nostri anno tertio.

Constitutio Congregationis Clericorum regularium S. Majoli, alias de Somascha, sub regula Sancti Augustini, cum privilegiorum elargitione.

De origine & aliis qua eam concernunt, notavi sup. in const. 21. Paul. III. Ex injuncto. Tom. I.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Injunctum nobis desuper Apostolicæ servitutis officium, digne peragere credimus, si ad ea per quæ Congregationes præsertim Orphanorum causæ institutæ, facilius stabiliri, & firmius conservari valeant, considerationis aciem extendamus.

§. 1. Sanè exponi nobis nuper fecerunt dilecti filii, Sacerdotes Clerici & laici Congregationis loci de Somascha Mediolanensis Diocesis dudum canonicè institutæ, quod aliis fel. rec. Paulus Papa Tertius prædecessor noster Congregationi prædictæ, cuique Hieronymus Emilianus olim patricius Venetus vir eximie pietatis insignis, Spiritu Sancto, ut pie creditur, afflatus, omnibus sæculi curis posthabitis, initium antea dederat, quamque multi illius exemplo adducti amplexi fuerant, & in Januensi, Mediolanensi, Ferrariensi aliisque Italianæ Civitatibus & Urbibus acciti illam dilataverant, caput sibi eligendi, constitutiones condendi facultatem concessit eamque ab Ordinariis superioritate, jurisdictione, & potestate exemit, ac tam ille quam deinde præ memorie Pius Papa Quartus etiam prædecessor noster dictam Congregationem, nonnullis aliis privilegiis & gratiis prosecuti fuerunt.

§. 2. Necnon successivè dilectus filius noster Carolus tituli Sanctæ Prædexis presbyter Cardinalis Borromæus nuncupatus, sufficienti ad id facultate, ut asserbat suffultus, dictæ Congregationi Ecclesiam Sancti Majoli Papiensis olim per Monachos Cluniacensis Ordinis obtineri solitam, certis annuis redditibus illis assignatis donavit. Nosque postmodum donationem prædictam Apostolica auctoritate approbavimus, prout in singulis prædecessorum, & Caroli Cardinalis prædictorum parentibus ac nostris litteris desuper concessis plenius continetur.

Concilium
Tridentin.
præservat.Dat. P. An. 3;
die 29. Nov.

LXXVIII.

Edita An. D.
1568.

Exordium.

Paul. III. huic Congregationi caput libi eligendi, facultatem dedit, & alias ut sup. in ejus const. 21. Ex injuncto. fol. 533. & ipse Paulus ac Pius IV. nonnullas gratias concesserunt, sed fidei consti. non posui, quia in ea contenta, & majora sunt in aliis consti. indicatis in dicta const. Paul. III.

Card. Borromæus Ecclesiam S. Majoli Papiensis eidem Congregationi concessit & hic Pont. dictam concessione confirmavit, ejus tamen bulla non posui.

Ideoque dicta Congregationem caput aliarum constituit.

Orphanos etiam bonis artibus erudire, curamque seu maiorem Clericorum gerere studuit, ideoque non est dubium quod perpetuo duratura est.

Verum tamē ex causis hic expressis, eam melius stabiliri exoptatur.

Hic modo Pontifex normam emittende professionis, & sub clericali habitu regulam S. Augustini profitendi prescribit.

§. 3. Quorum litterarum vigore, prædicti Sacerdotes Clerici & laici Ecclesiam prædictam in domum patrimonialem, & tamquam aliarum Ecclesiarum dictæ Congregationis caput pro futuris Præposito qui inibi resideat, ac una cum aliis deputandis professis, non solum illius, sed etiam aliarum Ecclesiarum ejusdem Congregationis curam, regimen & administrationem habeat, necnon professis, qui dicto Præposito reverentiam & obedientiam præstent, sibi delegerunt.

§. 4. Cum autem sicut eadem expositio subjungebatur, licet iidem Sacerdotes, Clerici & laici religiose admodum vivant, ac præcipuè inter alia pietatis opera, Orphanorum in disciplina Christiana, bonique artibus, & literis secundum ejusque ingenii captum erudiendorum, ac nonnullis in locis Seminariorum Clericorum curam summo cum studio gerunt, ac propterea dubium non sit, quin hæc Congregatio perpetuo duratura sit.

§. 5. Nihilominus quia plerique illorum ob professionem non emissam, existimantes se non verè religiosos, ab illa recedunt; & ad aliquam Religionem convolant, alii pauperes, non habentes titulum beneficii, & patrimonium repugnante Concilio Tridentino, ad Ordines promoveri nequeunt, aut aliis rationibus adducti, aliud vivendi genus eligunt, multi ipsius Congregationis Sacerdotes, Clerici & laici ad firmius stabilendam hujusmodi Congregationem, & ad obviandum hisce & aliis inconvenientibus tria Vota, videlicet Paupertatis, Castitatis, & Obedientiæ emittere summo per desiderio, si ad id nostra Sedique Apostolicæ suffragetur auctoritas. Quare iidem Sacerdotes, Clerici & laici nobis humiliter supplicari fecerunt, quatenus illi vota prædicta in manibus alicujus Prælati Ecclesiastici emittendi licentiam concedere, & alias perpetuæ illius Congregationi, & Orphanorum prædictorum utilitati consulere opportune providere, de benigne Apostolica dignaremur.

§. 6. Nos igitur qui piis, honestisque petentium votis gratum solemus præstare assensum, dictorum Sacerdotum, Clericorum & laicorum, piam vitam, optimumque vivendi modum, & instituti propositum plurimum in Domino collaudantes, ipsosque eorum singulos, à quibusvis excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innotati existunt, ad effectum præsentium damtaxat consequendum absolutos, & absolutos fore censentes, necnon prædictarum litterarum, & inde secutorum quorumcumque tenores præsentibus pro expressis habentes, hujusmodi supplicationibus inclinati, prædictis Sacerdotibus, Clericis & laicis vota prædicta emittere volentibus, illa in manibus alicujus Prælati Ecclesiastici per Congregationem hujusmodi ad id eligendi donec sex ex ipsis fuerint professi, & sibi Præpositum ipsius Congregationis generalem, secundum illorum Constitutiones factas seu faciendas, eligendum & confirmandum elegerint, & deinde dictis sex professis, & electo Præposito, omnibus & singulis aliis Christianis, etiam in Orphanotrophiis educatis & eruditis dicta Religionē ingredi volentibus in ipsius Præpositi, seu illius Vicarii manibus emittendi & profitendi, ac sub Regula S. Augustini, in habita tamen clericali & honesto, ac locis in quibus vixerint conformi incedendo vivendi, necnon Prælati, & Præpositi, Vicarioque prædictis vota hujusmodi in manibus illorum recipiendi, liberè facultatē concedimus; ac quod infra triennium proximè futurum, hi, qui per decennium in dicta Congregatione laudabiliter vixerint, vota prædicta emittere volentes, non expectato anno probationis, triennio vero elapso hujusmodi alii ipsa vota emittere volentes, non nisi elapso anno probationis, & cōpieto anno decimosexto suæ ætatis in Ecclesia prædicta, aut alibi, ubi commodius Præposito seu Vicario visum fuerit, vota prædicta, ita ut non sit locus tæcitæ professioni, emittere & profiteri. Quodque

præfati & pro tempore existentes Præpositus, Sacerdotes, Clerici & laici sub dicta regula, secundum constitutiones per eos factas seu faciendas vivere.

§. 7. Omniaque & singula quæcumque, quorumcumque & qualicumque, bona mobilia seu immobilia, dictæ Congregationi, seu illius locis vel Ecclesiis, ab Universitatibus, Communicatibus, & aliis etiam privatis personis cujuscvis status, gradus, ordinis, qualitatis, & præminentie existant, testamento, vel codicillis, aut alia ultima voluntate, seu donatione, etiam inter vivos, aut alias quomodolibet, necnon sibi relicta, & relinquenda recipere, exigere, & in communi tantum possidere, liberè & licitè possint & valeant.

§. 8. Quodque de cetero Congregatio prædicta, Clericorum Regularium S. Majoli, sive de Somacha appellatur, similiter perpetuo statuimus & ordinamus.

§. 9. Ac insuper quomodocumque relicta Congregationi prædictæ, & non aliter expresso & declarato loco, ex nunc prout ex tunc, & è contra Ecclesiæ S. Majoli, ita quod liceat pro tempore existentibus Præposito, per se vel alium seu alios, dictorum reliquorum fructus & emolumenta, in sibi bene visos, & necessarios usus & utilitatē Ecclesiæ S. Majoli, & Congregationis prædictæ, liberè & licitè convertere, Diocesani loci, vel cujuscvis alterius licentia desuper minime requisita, auctoritate & tenore præmissis etiam perpetuo applicamus & appropiamus.

§. 10. Decernentes præsentibus litteris, de subreptionis vel obreptionis, aut nullitatis, aliòve vitio seu intentionis nostræ defectu, notari, argui & impugnari, ac revocari, limitari, moderari, suspendi, aut illis derogari, & sub quibusvis similibus gratiarum revocatione, derogatione, limitatione, moderatione, suspensione, aut aliis contrariis dispositionibus comprehendi non posse. Et quoties illæ emanabunt, toties in pristinum & validissimum statum, restituta ac de novo concessa, & perpetuo valida & efficacia esse, ac fore, suorum plenarios & integros effectus sortiri.

§. 11. Ac ita per quoscumque Judices & Commissarios quavis auctoritate fungentes, sublata eis ac eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari ac definitur debere, ac ex nunc irritum & inane, quicquid secus super his à quoque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 12. Quocirca Venerab. Fratribus Amerinensi & Papiensi ac Cremonensi Episcopis, per præsentibus mandamus, quatenus ipsi, vel duo aut unus eorum per se vel alium, seu alios, Congregationi, & futuro Præposito hujusmodi, ac illius singulis personis, in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra Congregationem, illiusque Præpositum & singulas personas concessione, indulto, statuto, ordinatione, applicatione, appropriatione, & decreto hujusmodi, pacificè frui & gaudere. Non permittentes eos, desuper per quoscumque contra præsentium tenorē quomodolibet molestari. Contradictores quoslibet & rebelles, ac præmissis non parentes, per censuras & penas Ecclesiasticas, aliæque juris remedia, appellatione postposita compescendo, necnon legitimis super his habendis, servatis processibus, illos censuras & penas ipsas incurrisse declarando, necnon eas etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 13. Non obstantibus præmissis, ac recol. memorie Bonifacii Papæ VIII. prædecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, dummodo quis vigore præsentium ultra tres dietas ad judicium non evocetur, & aliis quibusvis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon ipsius Congregationis, ac quorumvis Monasteriorum & Ordinum, etiam juramento, & confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque; indultis, & litteris Apostolicis, illis, eorumque Superioribus & personis, sub

Bonaque etiam stabili recipiendis & in communi possidendi facultatem elargitur.

Et Congregationem istam, Clericorum regularium S. Majoli, sive de Somacha, designari jubet.

Legatæque simpliciter relicta Ecclesiæ S. Majoli applicari possit, si decernit.

Clausulas hujus constitutionis præservatas apponit.

Clausulam sublatam addit.

Executoresque deputat.

Contraria tollit.

quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, efficacissimis, reiteratis & insolitis clausulis, irritantibus & aliis decretis, in genere vel in specie, & aliis quodolibet iteratis vicibus, concessis, confirmatis & innovatis. Quibus omnibus & singulis, etiam si aliis pro illorum sufficienti derogatione, de illis, illorumque totis tenoribus specialibus, specifica, expressa & individua, non autem per clausulas generales idem importantes mentio seu quavis alia expressio habenda, vel aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret illorum tenores præsentibus pro sufficienter expressis & insertis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque aut sit aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdici, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas, non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 6. Decemb. 1568. Pont. nostri anno 3.

Dat. P. An. 3.
die 6. Dec.

LXXIX.

Reformatio contractuum de annuis censibus creandis, alienandis, & redimendis. Et declaratio quarundam dubitationum desuper exortarum.

Quoad quantitatem quæ ex censibus Communitarum Status Ecclesiastici percipi potest extat const. 6. Clem. VIII. Quæ ad sublevationem. Tom. III.

Edicta An. D.
1559. & 1570.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Cum onus Apostolicæ servitutis obeuntes, cognoverimus innumeros celebratos fuisse, & in dies celebrari censuum contractus, qui nedum non continentur intra limites à nostris Antecessoribus eisdem contractibus statutos, verum etiam quod deterius est, contrariis omnino pactitionibus, propterea ardentem avaritiæ stimulum, legum etiam divinarum manifestum contemptum præferunt, non potuimus animarum, prout tenemus saluti consulentes, ac piam mentionem petitionibus etiam satisfaciennes, tam gravi morbo, læsiferoque veneno salutari antidoto non mederi.

§. 1. Hac igitur nostra constitutione statuimus, censum seu annum redditum creari, constituere nullo modo posse, nisi in re immobili, aut quæ pro immobili habeatur, de sui natura fructifera, & quæ nominatim certis finibus designata sit.

§. 2. Rursum nisi vere in pecunia numerata, præsentibus testibus, ac Notario, & in actu celebrationis instrumenti, non autem prius, recepto integro iustoque pretio.

§. 3. Solutiones quas vulgo anticipatas appellant, fieri, aut in pactum deduci prohibemus.

§. 4. Conventiones directæ aut indirecte obligantes ac casus fortuitos cum, qui alias ex natura contractus non tenetur, nullo modo valere volumus.

§. 5. Quemadmodum nec pactum auferens, aut restringens facultatem alienandi rem censui suppositam, quia volumus rem ipsam semper, & libere, ac sine solutione laudemii, seu quinquagesimæ, aut alterius quantitatæ, vel rei, tam inter vivos, quam in ultima voluntate, alienari.

§. 6. Ubi autem vendenda sit, volumus dominum censum aliis omnibus præferri, eique denunciari conditiones quibus vendenda sit, & per mensem expectari.

§. 7. Pacta continentia morosam censui debitorem teneri ad interesse lucri cessantis, vel ad cambium, seu certas expensas, aut certa salaria, aut ad salaria, seu expensas medio juramento creditoris liquidandas, aut rem censui subjectam, siue ali-

quam ejus partem amittere, aut aliud jus ex eodem contractum, siue aliunde acquisitum perdere, aut in aliquam penam cadere, ex toto irrita sint & nulla.

§. 8. Immo & censum augeri, & novum creari super eadem, vel alia re in favorem ejusdem, aut personæ per eum suppositæ pro censibus temporis vel præteriti vel futuri, omnino prohibemus.

§. 9. Sicuti etiam annullamus pacta continentia solutiones onerum ad eum spectare, ad quem alias de jure, & ex natura contractus non spectarent.

§. 10. Postremò census omnes in futurum creandos, non solum re in totum vel pro parte perempta; aut infructuosa in totum vel pro parte effecta, volumus ad ratam perire, sed etiam posse pro eodem pretio extingui. Non obstante longissimi etiam temporis, ac immemorabili, immò centum & plurium annorum præscriptione; non obstantibus aliquibus pactis directè aut indirectè talem facultatem auferentibus, quibuscumque verbis, aut clausulis concepta sint.

§. 11. Cum verò traditione pretii redditus extinguendus erit, volumus per bimestre ante id denunciari ei, cui pretium dandum erit, & post denunciam intra annum tamen, etiam ab invito pretium repeti posse; & ubi pretium, nec volens intra bimestre solvat, nec ab invito intra annum exigatur, volumus nihilominus quodcumque redditum extingui posse, prævia tamen semper denuncia, de qua supra, & non obstantibus his, de quibus supra, idque observari mandamus etiam quod pluries ac pluries denunciatum fuisset, nec umquam effectus secutus fuisset.

§. 12. Pacta etiam continentia pretium census extra casum prædictum, ab invito, aut ob penam, aut ob aliam causam repeti posse, omnino prohibemus.

§. 13. Contractusque sub alia forma posthac celebrandos fœneratitios judicamus. Et ita illis propterea non obstantibus, quicquid, vel expresse vel tacite contra hæc nostra mandata dari, remitti, aut dimitti contingat, à Filco volumus posse vendicari.

§. 14. Hanc autem salutiferam sanctionem nedum in censu noviter creando, verum etiam in creato quocumque tempore alienando, modo post publicationem constitutionis creatus sit, perpetuò, & in omnibus servari volumus.

§. 15. Declarantes pretium semel censui constitutum numquam posse, ob temporum aut contractuum qualitatem, seu aliud accedens, nec quoad ultimum contrahentes minui vel augeri.

§. 16. Et licet legem ipsam ad contractus jam celebratos non extendamus, illos tamen omnes in quos sub alia forma pervenerunt census, hortamur in Domino, ut singulos censuum censuræ bonorum Religiosorum subijciant, & animarum salutem consulant.

§. 17. Non obstantibus quibuscumque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, statutis & consuetudinibus, necnon privilegiis & litteris, etiam per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac etiam nos sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis etiam derogatoriis derogatoriis, necnon irritantibus decretis, ex quavis causa, etiam per modum legis universalis, aut alias quomodolibet editis, in favorem Universitatum, Communitarum, Collegiorum, Congregationum, Civitatum, & locorum concessis, approbatis & innovatis, quibus omnibus & singulis, illorum tenores præsentibus pro expressis habentes, quatenus directè vel indirectè præsentis nostræ constitutioni, in toto vel in parte contrariantur, specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 18. Volumus autem quod præsentis in Cancellaria & acie Campi Floræ publicentur, & inter constitutiones extravagantes perpetuò valituras conferbantur.

§. 19. Et quia difficile foret præsentis ad singula quæque loca deferri, volumus & etiam declaramus, quod earum transumptis etiam impressis, manu

Census augeri vel creati non possunt de fructibus.

Onera extranea prohibentur.

Census petiti pro rata rei censuata perempta.

Redimi quantum possit.

Repeti ab invito non licet.

Contractus alteri initii fœneratitii judicantur, & poena Fisco solvitur.

Hæc Bulla quos census capiat.

Pretium constitutum non immutandum.

Hortatio ut census alteri fidei subijciantur censuræ Religiosorum.

Derogatio contrariis.

Iussu publicandi. & descripti.

Fides transumptorum.

Sanctio po-
nalis.Dat. P. An. 4.
die 19. Jan.

Publicatio.

Admissio in
Cam. Apolt.Edita An. D.
1570.

Prooemium.

Relatio pre-
cedentis con-
stitutio-
nis.1. Dubium
desuper exor-
tum circa in-
fructuosita-
tem.2. Dubium
circa expen-
sas.

alicujus Notarii publici subscriptis, ac sigillo alicujus Prælati munitis, eadem prorsus fides ubique adhibeatur quæ præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensæ.

§. 20. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ prohibitionis, annulationis, statuti, mandati, hortationis, derogationis, declarationis & voluntatis infringere, vel ei ausi temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo sexagesimo nono, quartodecimo Kal. Februarii, Pont. nostri anno quarto.

Anno à Nativitate Domini millesimo quingentesimo sexagesimo nono, Indictione duodecima, die verò vigesima nona mensis Januarii, Pontificatus Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Pape V. anno ejus quarto, retrospectæ litteræ Apostolicæ affixæ & publicatæ fuerunt Roma in locis retrospectis, videlicet ad vobas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, & in acie Campi Floræ, per nos Camillum Cherubinum & Christianum de Monte, prælibati S. D. N. Papa Curf.

Jo. Guer. Mag. Curf.

Letta & publicatæ fuerunt retrospectæ litteræ Romæ in Cancellaria Apostolica, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo sexagesimo nono, die verò Sabbati vigesima nona mensis Januarii. Pontificat. S. D. N. Pii Papa V. anno 4.

Sequuntur declarationes dubitationum desuper exortarum.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad futuram rei memoriam.

ETSI Apostolica Sedes magna adhibita industria operam dat, omnia perspicue promulgare, vix tamen est, ut umquam satis queat usque quaque cavere; quin scrupulosæ quorundam mentes, novos illi sensus inducant, quorum perplexitate, multi in dubium evocantur.

§. 1. Pridem enim per constitutionem nostram de censuum creatione, inter alia volumus, Censum omnes in futurum creandos, non solum re, in totum vel pro parte perempta, aut infructuosa in totum effecta, ad ratam perire, sed etiam pro eodem pretio extingui posse. Ac pacta continentia morosum censum debitorem, ad interesse lucri cessantis, vel ad cambium, seu salaria, & expensas medio creditoris juramento liquidandas teneri, aut rem censui subjectam, sive aliquam ejus partem amittere, aut aliud jus, sive ex eodem contractu, sive aliunde acquisitum perdere, aut aliquam penam cadere, ex toto nulla atque irrita esse; Censum autem seu annuum redditum, non nisi in re immobili, aut quæ pro immobili habetur, ex sui natura fructifera, atque nominatim certis finibus designata sit; sed nec censum ipsum, nisi verè in pecunia numerata, præsentibus Notario & testibus in actu celebrationis instrumenti, non autem prius, recepto integro, justoque pretio constituere nullo modo posse.

§. 2. Deinde per dilectum filium Octavianum Spinalam Regni Siciliæ Magistrum Portulanum hac de causa ad nos destinatum, accepimus in dicto Regno Siciliæ scrupulum exoriri, an rerum prædictarum infructuositas etiam annalis, aut aliàs temporalis intelligatur.

§. 3. Et an per nullitatem pactorum, & aliorum prædictorum, etiam jus recuperandi, sive rependi impensas, quas litigando contra morosos prædictos, aut executores ad eorum loca transmittendo, aut aliàs ex Judicum mandato subire oportet, auferatur.

§. 4. Præterea an tam pro ipsis expensis, quam etiam pro censu recuperando contra tertium possessorem procedi: Et etiam fidejussoribus dari, aliæ bona pro prædii censu gravati evictione, & ipsius census solutione hypothecari. Denique an census hujusmodi super pluribus rebus inter se divisus constitui possint.

§. 5. Postremo an id quod de pecunia numerata dicitur, prohibeat quominus in dotium assignatione census creari possit.

§. 6. Nos hæc discrimina quantum in nobis est tollere cupientes, tenore Præsentium declaramus, rem infructuosam, quæ tota vel ex parte infructuosa perpetuo redditur, non autem ex usufructu uno, duobus, pluribusve annis, sive tempestate, sive alio casu non proveniunt, salva aliàs juris communis dispositione, intelligi debere.

§. 7. Præterea exactionem illarum expensarum prohiberi, quæ ex pacto vel conventione tantum inter contrahentes initia, & instrumentum census specialiter appositæ refici promittuntur, non autem ea quæ ex dicti juris dispositione repetendæ veniunt, & mandato iudicis adjudicantur.

§. 8. Ceterum fidejussoribus dari, aliæ bona hypothecari pro prædii censu gravati evictione, aut si prædium in alium devenerit, aut aliquis tertius fidejussor intercesserit, tertium possessorem, vel ejus bona obligari minimè prohibemus. Hæc autem omnia pro evictione dumtaxat, non autem solutione penæ adjudicari posse intelligimus.

§. 9. Postremo in dotium assignandarum casu censuum creationem prædictam respectu actualis numerationem coram Notario & testibus faciendæ, locum non habere. Sed in hoc casu censum ipsos etiam pecunia ad manum non habita creari posse declaramus.

§. 10. Denique ut periculis quæ ex transportatione pecuniarum frequenter in dicto Regno eveniant occurratur, permittimus, ut si in creatione census pecuniam ad manum commodè haberi nequeat, illius loco, emptor apocam, sive cedulam bancariam idoneam integri pretii venditori in ipso emptionis actu debeat exhibere.

§. 11. Constitutione nostra prædicta, tam in casu dotium, quam ceteris omnibus in ea contentis, in suo robore permanentibus.

§. 12. Volumus autem ut præsentium exempla etiam impressa, Notarii publici manu, & Prælati Ecclesiastici, ejusque Curie sigillo obsignata, eandem illam prorsus, tam in judicio quam extra illud, fidem faciant, quam ipsam Præsentia facerent, si essent exhibitæ vel offensæ.

Datum Romæ apud S. Petrum sub annulo Piscatoris, die 10. Junii 1570. Pontificatus nostri anno quinto.

Judeorum expulsi ab omnibus locis domini S. R. E. ejusque subditorum, præterquam ab Urbe Roma, & Civitate Ancona.

De materia Judeorum notavi sup. ad consl. 3. Paul. IV. Cum nimis. in Tomo I.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

HEBRÆORUM gens sola quondam à Domino electa, quæ divinis eloquiis infusa celestium mysteriorum particeps esset, quantum ceteris omnibus gratia & dignitate excelluit, tantum postea incredulitatis suæ merito, contempta & neglecta in præceptis meruit deturbari, quod adveniente temporis plenitudine perfrida & ingrata suum Redemptorem indigna morte peremptum impie reprobarit. Amisso namque sacerdotio, legis auctoritate adempta, propriis dejecta sedibus, quas tamquam lac & mel fluentes, clementissimus, &

1570.

3. Dubium
circa caute-
las.4. Dubium
circa census
dotales.Solutio 1.
dub.Solutio 2.
dub.Solutio 3.
dub.Solutio 4.
dub.Propositio &
resolutio al-
terius dubii
circa pecu-
niam præsen-
tem & cedu-
lam banca-
riam.Præservatio
præceden-
tis, in reli-
quis.
Fides tran-
sumptorum.Dat. P. An. 5.
die 10. Junii.

LXXX.

Edita An. D.
1569.Causa hujus
constitit.

beni-

benignissimus Deus jam inde à prima ipsius gentis origine illi præparaverat, terrarum Orbem tot jam sæculis peccerans, invisa, probris contumelisque omnibus objecta, fœdas, & infames quasque artes, quibus famem tolerare possit, haud secus quam vilissima mancipia, cogitur attrahere. Sed Christiana pietas hunc ineluctabilem casum in primis commiserans, illam humanis latius apud se passa est diversari, ut felicitate crebro illius intuitu passionis Domine memoria fidelium oculis frequentius obversetur, simulque ea exemplis, doctrina, monitis, ad conversationem & salutem, quæ reliquis Israel, Prophetæ oraculo futura est, amplius invitetur, à qua, si Christianorum sedibus explosa, ad eas gentes quæ Christum non norunt diverteret, magis magisque aliena redderet. Verum tamen illorum impietatis pessimi omnibus artibus instructa, usque eò processit, ut jam pro communi nostrorum salute expediat, tanti morbi vim celeri remedio prohibere. Nam ut tam multa usurarum genera omittamus, quibus Hebræi egentium Christianorum substantiam usquequaque exinaniverunt, perspicuum satis putamus eos, furum & latronum receptores, atque participes, qui quasque res ab iis subreptas, & interventas, non modo profanas, sed etiam divino cultui servientes ne interdicantur, aut ad tempus supplicare, aut alio transferre, aut omnino transformare conatur: plerique etiam specie tractandæ rei proprio exercitio convenientis, honestarum mulierum domos ambiente, multas turpissimis lenociniis præcipiant: quodque omnium perniciosissimum est, sortilegiis, incantationibus, magicisque superstitionibus & maleficiis dediti, quam plurimos incautos atque infirmos Satana præstigiis inducunt, qui credant eventura prænunciari, furta, thesauros, res abditas revelari, multaque præterea cognosci posse, quorum ne investigandi quidem facultas ulli omnino exploratum est permissa. Postremò cognitum satis, & exploratum habemus, quam indigne Christi nomen hæc perversa progenies ferat, quam infesta omnibus sit, qui hoc nomine censentur, quibus denique dolis illorum vitæ infidetur. His, aliisque gravissimis rebus adducti, & augeſcentium quotidie ad Civitatum nostrarum perneciem scelerum gravitate permoti, cogitantes præterea supradictam gentem præter mediocres ex Oriente commearum nulli Reipublicæ nostræ usui esse, nostris verò populis, qui præsertim à nobis aliquanto remotiores sunt, conducibilis fore illius nomen flagitia, miseria, aliunde ad se relatas audire, quam ullo charitatis stimulo eam in suo deinceps sinu ut antehac confovere.

§. 1. Auctoritate præsentium præcipimus, ut omnes & singuli utriusque sexus Hebræi in omni ditione nostra temporali, & sub ea consistentium Civitatum, Terrarum, & locorum, Domicellorum, Baronum, aliorumque Dominorum temporalium etiam merum & mixtum imperium, ac vitæ necisque potestatem & quamcumque aliam jurisdictionem atque exemptionem habentium, de ipsis omnino finibus intra trium mensium spatium postquam præsentis litteræ hic fuerint publicatæ, omnino excedant.

§. 2. Quibus præteritis quicumque sive in ola, sive peregrini, sive præsentis, sive futuri, in quacumque dictæ ditionis Civitate, Terra, vel loco, etiam Domicellorum, Baronum, Dominorum, & aliorum exemptionum prædictorum quodcumque inventi fuerint, rebus omnibus spoliati, & Fisci iuribus applicentur, mancipia Romanæ Ecclesiæ fiant, & in perpetuum servituti afferantur, dictæque Ecclesiæ illud idem jus in eos quod ceteri Domini in servos, & mancipia, sibi debeat vindicare. Urbe Roma & Ancona dumtaxat exceptis, ubi eos solos Hebræos, qui nunc eas habitant, ad prædictam memoriam amplius excitandam, persequendasque cum Orientalibus negotiationibus, mutuosque commearum, cum eisdem, permittimus tolerandos; cum eo tamen, ut nostras, & Prædecessorum nostrorum, aliasque Canonicas de eis constitutiones studeant observare; in minus, in poenas omnes quæ dictis

constitutionibus continentur, quasque in hoc innovamus, eo ipso incident. Futurum enim speramus, eos qui præsertim nostro, & huius Sedis conspectui proximi sunt, noxæ metu à maleficiis temperaturos, & interdum aliquos, uti antehac nostro quoque hortatu satis multis contigit, lumen veritatis cum gaudio agnituuros. Sed neutri ad alteros, nec in alium dictæ ditionis locum ullo tempore demigrent, nec proficiantur, neque quempiam ex proscriptis ad se recipiant, si servitutis jugum, & supplicia voluerint evitare. Jubemus igitur omnium Provinciarum, Civitatum & locorum dictæ ditionis, Legatos, Gubernatores, Præsidentes, Prætores & Magistratus, ac etiam locorum Ordinarios, necnon Domicellos, Barones, Dominos, & exemptos supradictos, ac quoscumque alios ad quos id pertinet, ut quisque pro se, nulla alia à nobis expectata iussione, aut mentis declaratione, omnia prædicta quamprimum exequantur, & caveant diligenter, ulli posthac Hebræi ad ipsas Provincias, Civitates & loca etiam Domicellorum, Baronum, & aliorum prædictorum ex quacumque causa amplius accedant. Quicumque verò, etiam detis qui Romæ, & Anconæ nunc sunt, excursu trimestri proximo inventi in quacumque dictæ ditionis nostræ parte, etiam quæ domini temporaliter eorundem Domicellorum, Baronum, Dominorum, & exemptorum sit, statim Ecclesiæ prædictæ mancipari in servitutem perpetuam consueverunt; quorum etiam cervicibus graviores poenas impendere significamus, ut ceteri eorum exemplo discant quanti fuerit hanc nostram prohibitionem temere neglexisse.

§. 3. Non obstantibus prædictis, ac constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, legibus communibus & municipalibus, Provinciarum, Civitatum, & locorum prædictorum, necnon Camera Apostolicæ juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, & conventionibus cum Hebræorum prædictorum universitate, etiam sub fide publica, pactis, privilegiis quoque, indultis, exemptionibus, & litteris Apostolicis illis omnibus, ac etiam prædictis Domicellis, Baronibus, & Dominis, ipsorumque Civitatis, terris, locis, & populis, per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac nos & Sedem prædictam etiam Motu proprio, & ex certa scientia, deque Apostolicæ potestatis plenitudine, ac aliis quomodocumque, & sub quibuscumque tenoribus & formis, & ex quibuscumque causis etiam onerosis, ac cum restitutionibus, præservationibus, derogationibus derogatoriis, aliisque fortioribus, efficacissimis & insolitis clausulis, necnon irritantibus & aliis iocretis, in genere & in specie quoviscumque concessis, confirmatis, & sæpius iteratis vicibus innovatis. Quæ omnia & singula, etiam si de eis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales mentio, seu quævis alia expressio habenda foret, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum infererentur, præsentibus pro expressis habentes, quatenus prædicta impedire vel disferre, aut aliâ illis obesse possent, harum serie de similibus potestatis plenitudine, specialiter & expresse revocamus & abolemus, viribusque & effectu prorsus cavere, ac quicquid secus per quoscumque, scienter vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane decernimus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 4. Volumus autem ut præsentium exempla, etiam impressa edantur, eaque Notarii publici manu, & cujuscumque Curie Ecclesiasticæ, aut Prælati sigillo obſignata, eandem illam prorsus fidem ubique locorum faciant, quam ipsæ Præsentes facerent si essent exhibitæ vel ostensæ.

§. 5. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ permissionis, præcepti, innovationis, iussionis, significationis, revocationis, abolitionis, decreti, & voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursurum.

Barones &
Gubernatores & alii
exequantur
hanc const.

Clausula de
rogatoria.

Fides exem-
plorum.

Sanctio poe-
nalis.

Datum

Judei omnes
discedant de
locis domini
S. R. E. Ro-
ma, & Anco-
na exceptis,
infra tres
menses à die
publicationis.

Inobedien-
tium poena.

1569.

Dat. P. An. 4.
die 26. Febr.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1569. quarto Kalend. Martii, Pontificatus nostri anno 4.

Publicatio.

Anno à Nativ. D. 1569. indist. 12. die verò Sabbati 26. mensis Febr. Pontificatus Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa V. anno ejus 4. præsentibus retroscriptæ litteræ Apostolicæ affixæ & publicatæ fuerunt ad valvas Cancellariæ Apost. & in acie Campi Floræ, ut moris est, per nos Bartholomæum Sotocasa, & Joan. Andream Rogerium Apost. Curs.

Christianus de Monte Mag. Curs.

LXXXI.

Quod in singulis Provinciis Fratrum Minorum Ord. S. Francisci de Observantia, duæ saltem domus assignentur Fratribus strictioris Observantiæ, à quibus absque Prælatorum licentia nullatenus ad alia loca se transferre possint.

Assignationem domorum hujusmodi hæcenus præcepit Clem. VII. qui fratres istos Reformatos approbavit, ut sup. in ejus const. 35. In Suprema. ubi plenè de materia dixi Tomo I.

Edita An. D.
1569.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Injunctum nobis desuper Apost. servitutis officium crebro nos admonet & inducit, ut personis quibuslibet Regularibus, vigilantia nostræ partes efficacius exhibentes, eos in institutorum suorum regularium candore salubriter manuteneamus.

Jussio de qua
in rub.

§. 1. Accipimus sanè, nuper, quod in Ordine S. Francisci de Observantia nonnulla sunt domus & loca, recollecta nuncupata, in quibus dicti Ordinis Fratres arctiorem quam in ceteris vitam degunt, & propterea eidem Ordini commodum & opportunum esse censes, ut in singulis dicti Ordinis Provinciis, duæ domus & loca recollecta hujusmodi existant, auctoritate Apostolica tenore præsentium perpetuò decernimus atque statuimus, quod in qualibet Provincia dicti Ordinis duæ ad minus domus & loca recollecta esse debeant. Et præfata monasteria recollecta nullatenus ab hujusmodi recollectione separari possint: & Fratres in illis degentes, etiam si velint (nisi de Ministris generalis ipsius Ordinis, vel Provincialis & Discretorum Conventuum dictorum locorum relectorum pro tempore existentium consilio) ad alia loca non recollecta transferri nequeant, nisi eisdem Superioribus, ut aliter fiat visum fuerit expedire.

Clausula
præservativa.

§. 2. Decernentes præsentibus litteris nullo unquam tempore, de subreptionis vel obreptionis vitio, aut intentionis nostræ, vel quopiam alio defectu notari vel impugnari, aut invalidari nullatenus posse, minisque sub quibusvis similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, aut aliis contrariis dispositionibus comprehendendi nullatenus posse, sicque ab omnibus censeari.

Clausula
sublata.

§. 3. Et ita per quoscumque Judices & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate, judicari debere; irritum quoque & inane, quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Executorum
deputatio.

§. 4. Et nihilominus pro majori præmissorum occasione venerabili fratri Episcopo Conchen. & dilectis filiis causarum Curie Cam. Apost. generali Auditori, ac Officiali Toletano per præsentibus committimus & mandamus, quatenus ipsi vel duo, aut unus eorum, per se vel alium seu alios, præsentibus litteras, & in eis contenta quæcumque solemniter publicantes, faciant illas ab omnibus quos illæ concernunt, inviolabiliter observari, non permittebant aliquid contra præmissa quomodolibet innovari. Contradiatores quoslibet & rebelles per eandem penas, aliaque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita, compescendo.

§. 5. Non obstantibus præmissis quibusvis Apostolicis necnon in provincialibus & synodalibus Conciliis editis, specialibus vel generalibus, constitutionibus & ordinationibus, ac quibusvis etiam juramento & confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus contrariis quibuscumque, aut si aliquibus communiter vel divisim, ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdici, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

§. 6. Ceterum quia difficile foret præsentibus litteras ad singula quæque loca, ubi expediens foret, deferre, volumus quod illarum transumptis manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides in judicio & extra adhibeatur, quæ ipsis originalibus litteris adhiberetur, si essent exhibitæ vel offensæ.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die nona Martii 1569. Pontificatus nostri anno 4.

Contra offendentes statum, res, & personas sanctissimi Officii Inquisitionis hæreticæ pravitatis, eorumque filios, necnon complices, & fautores.

Ad hæc habes etiam sup. const. 11. Julii III. Licet à diversis. Tom. I. fol. 484.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

SI de protegendis ceteris omnibus Ecclesiæ ministris, quos in fidem & clientelam nostram à Domino recepimus, cura nobis quotidiana insidet, quanto majore studio eam nos sollicitudinem capessere necesse est, ut qui in sacro Inquisitionis hæreticæ pravitatis Officio versantur, sub tutela inviolatæ auctoritatis hujus Sedis periculum omnium expertes quæque munera ad exaltationem fidei Catholicæ exequantur?

§. 1. Cum itaque ejus generis impiorum vis quotidie magis invaleseat, qui omnibus malis artibus prædictum Officium subvertere, Ministrorumque functionibus disturbare moliantur, eo jam nos detruere necessitas, ut nefariam & scelestam illorum audaciam acerbiorè castigationis verberè reprimamus.

§. 2. Hac igitur generali constitutione de Fratrum nostrorum consilio facimus, ut quicumque sive privatus, sive cuncta civitas, sive populus, sive Dominus, Comes, Marchio, Dux, vel potiore titulo Illustris, quemvis ex Inquisitoribus, Advocatis, Procuratoribus, Notariis, aliisque Ministris prædicti officii, vel Episcoporum id munus in sua Diocesi aut provincia obeuntium, seu accusatorem, denunciatores, aut testem in causa fidei quomodocumque productum vel evocatum occiderit, verberaverit, dejecerit, seu perterrefecerit.

§. 3. Quivè Ecclesias, ædes, aliæve res, sive publicas, sive privatas, Officii aut Ministrorum expugnaverit, invaserit, incenderit, expilaverit, aut libros, litteras, auctoritates, exemplaria, regesta, protocola, exempla, scripturas, aliæve instrumenta, sive publica sive privata, ubicumque posita commiserit, diripuerit, seu interverterit, seu ex incendio aut direptione, aut alio quocumque modo illa exportaverit, seu qui in conflagratione, expugnatione, aut direptione etiam inermis, sive capiendi, sive comburendi, sive suppimenti causa fuerit, sive res aut personas servari defenditive prohibuerit.

§. 4. Quivè carcerem, aut aliam custodiam, seu publicam seu privatam effugerit, vinculum extraxerit, seu emiseric, capiendū prohibuerit, captivè eripuerit,

1569.

Claus. derog.

Transumptio-
rum fides.Dat. P. An. 4.
die 9. Mart.

LXXXII.

Edita An. D.
1569.Forma pu-
blicandi.Causa hujus
constitut.Offendentes,
seu impedi-
entes perso-
nas inquisi-
torum &c.Bonagae di-
cipientes.Et carceres
frangentes,
&c. penas
hic descriptas incur-
runt.

recepit, occuluerit seu facultatem effugiendi dederit, seu iusserit id fieri, qui ceterum, concursumve fecerit, sive ut aliquid prædictorum fieret manus accommodaverit, sive aliis auxilium, consilium, aut favorem, publicè vel occultè, in quolibet prædictorum scienter præstitit, licet nemo occisus, nemo verberatus, nemo extractus, emissus vel ereptus, nihil expagnatus, nihil effraactus, successum, direptumve, nullum denique damnum re ipsa sit fecutum: nihilominus is sit anathemate præsentis canonis auctoritate ligatus; idem quoque læsæ majestatis reus, dominio, dignitate, honore, feudo, ac quoque alio beneficio temporali & perpetuo eo ipso privatus, secularis Judicis arbitrio relinquatur, qui de eo illas ipsas penas exigit, quæ damnatis primo capite dictæ legis per constitutiones legitimas irrogantur, bonis, rebusque omnibus sibi iuribus applicatis, uti etiam est de damnatis hæreticis per sanctiones canonicas constitutum ejus filii paternæ infamiae subiecti, omnis & cujuscumque hereditatis, successione, donationis, & legati, sive propinquorum sive extraneorum omnino sint expertes, eisdem præterea portæ nunquam pateant dignitatum.

§. 5. Nemo autem expurgationem habere, aut causam ullam proponere vel pretendere possit, qui tantum nefas in contemptum & odium hujus Officii admisit, nisi contrarium per claras probationes docuerit se fecisse. Quod porro de prædictis, eorumque filiis statutum illud idem de omnibus Clericis, & Presbyteris secularibus & quorumvis Ordinum etiam exemptorum Regularibus, & quarumcumque etiam Episcopali, & majori dignitate præditis, ac etiam privilegio quomodocumque suffultis, decernimus exequendum, ita ut ipsi beneficiis & officiis omnibus Ecclesiasticis, præsentium auctoritate privati, per Judicem ecclesiasticum hæreticorum more degradentur, demum potestati seculari traditi, poenis prædictis laicorum instar subiiciantur.

§. 6. Pontificum tamen causis, nobis & Successoribus nostris reservatis, ut requisita, & nobis renunciata, contra eos ad depositionem & alias poenas prædictas procedamus, uti criminis atrocitas videbitur postulare.

§. 7. Quicumque autem pro talibus veniam petere, aut alias intercedere tantaverint, in eadem illas poenas, quæ in hæreticorum fautores à sacris constitutionibus inferuntur, ipso facto se noverint incidisse.

§. 8. Verum si quis etiam hujusmodi criminum conficius vel affinis, sive Religionis studio, sive poenitentia ductus rem adhuc incognitam retexerit, supplicio liberetur.

§. 9. Ceterum eam omnium & quarumcumque absolutionum rationem à prædictis criminibus, necnon habilitationum & restitutionum, etiam ad famam & honores, ita deinceps habendam optamus, ut successores nostri nullas nisi saltem semeltri post cujusque assumptionem ad hujus dignitatis fastigium excursu, ac precibus apud supremum officium Inquisitionis hic institutum verificatis, concedant. Decernentes omnes & quascumque hujusmodi absolutiones, habilitationes, & restitutiones, quæ precibus sic non verificatis de cetero fient, nemini proferri prodesse, sed nec præsentibus nisi toto ipsarum tenore ad verbum inserto, & gratia ex certa Romani Pontificis scientia facta, & propria manu subscripta, ulla in parte derogatum censi debere, & si illis ex quacumque causa aliter derogari contigerit, derogationes hujusmodi nullius proferri fore roboris & momenti.

§. 10. Jubemus igitur universos & singulos Patriarchas, Primates, Archiepiscopos, Episcopos, & ceteros Ecclesiarum Prælatos per universum Orbem constitutos, ut per se vel alium seu alios, præsentis litteras, aut earum exempla in suis quisque Provinciis, Civitatibus, Diocesis, & locis solemniter publicare, & quantum in se est, firmiter observari procurent, contradictores quoscumque, per censuras & poenas ecclesiasticas, appellatione postposita

compscendo, ipsasque censuras & poenas etiam iteratis vicibus aggravando; invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 11. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 12. Volumus autem ut præsentium exempla etiam impressa edantur, eaque Notarii publici manu, & cujuscumque curiæ Ecclesiasticæ, vel Prælati sigillo obligata, eandem illam proferri fidem ubique locorum faciant, quam ipsæ præsentis facerent si essent exhibitæ vel ostensæ.

§. 13. Ceterum omnes orbis terrarum Principes, quibus gladii secularis potestas ad malorum vindictam est permessa, per eam quam se tueri promiserunt fidem, obtestamur, ita suas quisque partes, sive in præstando Ministris auxilio sive in criminum post Ecclesiæ sententiam animadversione, interponere, ut eorum quoque prædiis Ministri ipsi tanti officii munus pro Dei æterni gloria, & religionis incremento feliciter exequantur, amplissimum à Domino præmium recepturi, quod fidei prædictæ assertoribus in æternæ beatitudinis consortio præparavit.

§. 14. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ sanctionis, legationis, statuti, decreti, jussionis, obtestationis, & voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1569. Kal. Aprilis, Pontificatus nostri anno 4.

Ego Pius Catholicæ Ecclesiæ Episcopus.

Utinam dirigantur viæ meæ ad custodiendas justificationes tuas.

F. Cardinalis Pisanus Episcopus Hostien.
Jo. Card. Moronus Episcopus Portuen.
Christophorus Madrucius Episcopus Prænestin.
Otho Card. Truchses Episcopus Albanen.
A. Card. Farnesius Vicecanc. Episcopus Tusculan.
Jo. Bapt. Cicada Episcopus Sab. Card, S. Clem.
Ego Ph. Card. à Burdifera.
Ego Antonius Card. Granvelanus.
Ego Franciscus Card. Paceus.
Ego Hieronymus Card. de Corrigo.
Ego Jo. Franciscus Card. de Gambara.
Ego Nicolaus Card. de Sermoneta.
Ego Ind. de Avalos Card. de Aragona.
Ego M. Antonius Card. Golumna.
Ego Ptolemæus Card. Comensis.
Ego P. Card. de Sancta Cruce.
Ego Z. Card. Delphinus.
Ego Hu. Card. S. Sixti.
Ego Julius Cardinalis Urbinus.
Ego Fulvius Cardinalis Perusinus.
Ego Jo. Riccius Card. Politianus.
Ego Scipio Card. Pisarum.
Ego Jacobus Sabellus.
Ego Aloysius Card. Cornelius.
Ego Alexander Card. Cribellus.
Ego Guido Card. Vercellus.
Ego Guilelmus Card. Sirletus.
Ego F. Michael B. Card. Alex. Camer.
Ego Hieronymus Card. de Claravalle.
Ego Ludovicus Card. Madrucius.
Ego Innocentius Card. de Monte.
Ego Hieronymus Card. Simoncellus.
Ego Ferd. Card. de Medicis.
F. Cardinalis Alciatus.
Jo. Paulus Card. ab Ecclesia.
A. Cardinalis Caraffa.

Anno à Nativitate D. 1569. Indictione 12. die vero 2. mensis Maji, Pontificatus Sanctissimi in Christo

Derogatio
contrariorū.

Transumptorum
fides.

Obtestatio
ad Principes.

Sanctio poenalis.

D. P. An. 4.
die 1. Aprilis

Papæ subscript.

Cardinalium
subscriptio-
nes.

Publicatio.

Patris & D. N. D. Pii divina providentia Papa V. anno 4. retroscripta littera Apostolica lecta, affixe, & publicata fuerunt ad valvas Basilice Principis Apostolorum de Urbe, Cancellarie Apost. & in acie Campi Floræ, ut moris est, dimissis in locis prefatis presentibus litteris per aliquantulum temporis spatium affixis, & deinde amotis, per nos Julium Parinum, & Joannem Bornoium pralibati sanctissimi D. N. Papa Cursores.

Antonius Clerici Mag. Curf.

LXXXIII.

Reformatio Pœnitentiariæ Apostolicæ,
& ejus Officialium.

Alia reformatio habetur sup. in Pii Quarti const. 53. In sublimi in hoc Tomo 2. fol. 75. Auctoritatem vero Summi Pœnitentiarum vide supra in Tomo I. in const. 23. Sixt. IV. Quoniam. fol. 417. ubi notavi. Et de Officialibus agitur in const. subseq. in d. Tomo I.

Edita An. D.
1569.

PIUS EPISCOPUS,

Seruus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Proœmium.

In omnibus rebus humanis nihil tam perfectè institui, nihil ullis legibus, sanctionibusque tam diligenter muniri potest, quin id lubrica, & præceps, malorumque omnium effectrix cupiditas novis quotidie artibus pervertere atque corrumpere molitur. Quocirca omnes ad hujus præcellæ Dignitatis fastigium evecti, perpetua quadam necessitate coguntur, nullquam oculis à commissio sibi grege avertere, sed continenter vigiles circumferre, ut quodcumque usus poscit, novis modo legibus ferendis, modo veteribus corrigendis, vel ad usum revocandis, ea quæ paulatim depravata sunt, in melius reformetur. Quod quidem nos jam inde ab ipso Pontificatus nostri principio, & libenter fecimus, & quantum in nobis est, illud idem statutum urgere, & persequi, annuente Deo conamur; neque quicquam nobis est, vel præclarius vel optabilis, quam ut collapsos à vetere disciplina mores, ad pristinam suam integritatem denuo erectos, & in agro Domini à pravaru consuetudinum sentibus omnia diligenter perpurata videamus.

Causa hujus
reformat.

§. 1. Sed ne dum ea quæ ad communem totius Corporis salutem pertinent, tantoperè procurantur, quisquam nos accuset, quod eam partem, quæ nobis proxima est negligamus, neque illius ulceribus necessarium salutis remedium applicemus, divino auxilio freti, Curie nostræ universæ reformationem jamdudum oculis nostris obversantem aggredi decrevimus; pro qua etiam antehac nonnulli Prædecessores nostri, multa sanctè & salutariter ordinarunt, hominum tamen fragilitate non ita multo post, aut neglecta aut corrupta sunt, aliis atque aliis aliena suo sibi officio usurpantibus, & dictæ Curie expeditiones invicem confundentibus, quarum singulis sagax illa vetustas, proprium & distinctum, pro cuiusque diversitate & materiæ genere officium tanto studio assignavit. Unde nos operæ pretium fore arbitrati illud in primis conari, ut quod cuique ordini, quod cuique officio congruit, ad illud idem revocetur, demum sapienter providere, & providenter statuere per quos viros, quibusque modis Curie prædictæ negotia, pro rerum, temporum, & locorum qualitate deinceps dirigantur. At quia ceteris omnibus illa antepondere necesse est, ex quibus pendere dignoscitur periculum animarum.

Revocatio
facultatum
Pœnitentia-
riæ.

§. 2. Nos hujusce reformationis exordium à Pœnitentiariæ nostræ officio capere instituimus, ejusque rei causa omnem auctoritatem, ordinariam & delegaram, omniaque privilegia, facultates, & indulta ideo duximus revocanda, ut habita de Ministrorum qualitate, numero, functionibus & officiis ratione explicita, novam futuris formam de integro præscribere valeamus, qua ipsum Pœnitentia-

riæ officium certis quibusdam facultatibus, quæ aliis officiis magis conveniunt exoneratum atque expeditum, dehinc ea quæ animarum salutem præcipue concernunt, attentiore studio prosequatur.

§. 3. Primum igitur omnium de hujusmodi officio, ministris & functionibus rationem prodere volentes, de Apostolicæ potestatis plenitudine, omnia & singula loca, seu officia Referendariorum, Correctorum, & Revisoris, necnon functiones & exercitia Scriptorum, qui viginti septem, & Procuratorum, qui viginti quatuor sunt quorumque Procuratorum octo officia ad dispensationem pro tempore existentis majoris Pœnitentiarum pertinere noscuntur, in eodem Pœnitentiariæ officio perpetuò suppressimus & abolemus; eorumque Scriptorum & Procuratorum rationem aliorum habituri, illos omnes jam nunc ab ipso Pœnitentiariæ officio amovemus.

§. 4. Ac dictum officium dehinc majore Pœnitentiario, Regente, Datario, uno Correctore, uno Magistro in Theologia, uno Doctore in decretis, duobus Procuratoribus, duobus Scriptoribus, & uno Sigillatore, quos pro futuris rebus & negotiis illius satis esse duximus, perpetuò constare volumus.

§. 5. Illorumque omnium officiorum in ipso Pœnitentiariæ officio constitutorum venditionem, aut quamvis aliam voluntatem, tacitam vel expressam ea dimittentium dispositionem, expresse prohibemus; sed illa omnia probis & peritis gratis omnino, & sine aliqua dimittentium, aut aliorum quorumcumque acceptione concedantur; quod si secus factum fuerit, quæcumque concessiones de illis pro tempore factæ, nullius sint roboris vel momenti.

§. 6. Præterea statuimus & ordinamus, ut deinceps in perpetuum major Pœnitentiarius officium suum per seipsum exerceat; quare sit Presbyter, magister in Theologia, seu decretorum Doctor; & si causa legitima à Romano Pontifice admissa, absens seu impeditus fuerit, unum alium ex S. R. E. Cardinalibus prædictis qualitatibus insignitum sibi Propœnitentiarium subroget, qui interim hoc munus etiam per se ipsum prosequatur, litterasque non Pœnitentiarii delegantis, sed suo proprio nomine jubeat expediri.

§. 7. Similiter Regens, Darius, Magister in Theologia & Decretorum Doctor, viri eximia doctrina præstantes, casuumque conscientiarum periti.

§. 8. Item Corrector in decretis, stylo, ceterisque Pœnitentiariæ rebus diligenter versatus & instructus.

§. 9. Ac etiam sigillator probatæ vitæ, & uti id munus postulat omnium officii expeditionum peritus. Qui omnes majoris Pœnitentiarii cura & solitudine delecti, & à Romano Pontifice confirmati, ad suum quisque officium admittantur.

§. 10. Procuratores quoque & Scriptores prædicti, vitæ, moribusque integris ornatu ad suum quisque officium exercendum idonei. Ad hæc omnes prædicti officii Ministri, etiam Procuratores & Scriptores sint presbyteri, vel certè in aliquo ex sacris Ordinibus constituti, hujusmodi arcanorum confidentissimi; quorum etiam de juramento de fidelitate præstando adscribatur, quod nec occultos casus hujusmodi, nec personas unquam cuiquam extra officium revelabunt; qui secus fecerint, non levius quam Presbyteri peccatorum confessiones prodere audientes, puniantur.

§. 11. Procuratoriæ autem & Scriptoriæ officia ita demum à majore Pœnitentiario illis concedantur, qui prius à Rege & Correctore, super vitæ, moribus, ætate, scientia, & aliis qualitatibus requisitis, diligenter ac propositis edictis, & mora sex dierum præcedente per concursum examinati, & idonei comprobati fuerint, alioquin omnes confessiones, etiam si à Romano Pontifice ex aliqua causa pro tempore factæ fuerint, pro irritis habeantur.

§. 12. Omnes vero supradicti officia sua per seipsum cum diligenter, tum etiâ fideliter exerceant, folique præstantes & actu exercentes, nisi legitime impediti, fructus & emolumenta percipiant; quorum singulis certum, statutumque aliunde stipendium cuique

Amotio quorundam officiorum ab eadem.

Deputatio aliorum Officialium.

Quorum officia vendibilia esse prohibet.

Pœnitentiarius major qui.

Regensque & Darius qui.

Corrector.

Sigillator.

Procuratores & Scriptores qui.

Et à quo examinandi.

Officiales per seipsum exerceant, suisque stipendiis sint contenti.

conueniens assignare intendimus, quo solo contenti esse debeant, nihilque aliud etiam sponte oblatum, a partibus, aut alias five pro expeditionis celeritate, five pro alio extraordinario labore, tam procurando quam scribendo, aut recognoscendo & examinando, capere possint; quicumque fecus fecerint officio suo huiusmodi privati, excommunicationis quoque sententia innodati eo ipso censentur, cuius absolutio- nis beneficium ab alio quam Romano Pontifice, ex- cepto mortis articulo, nequeat obtinere.

Regentis
Poenitentia-
rie munus.

§. 13. Ut autem negotia uniuersa, qua decet pu- ritate & diligentia dirigantur, prædictus Regens, pe- titiones casusque omnes ad prædictum officium dedu- ctos in primis examinet diligenter; quæque perspi- cua, & secundum communem in eodem officio cur- sum, absque difficultate expediri, consueverunt, ea- dem expediri jubeat, nihilque omnino vel ordina- rium, aut clarum, nisi prius ab ipso recognitum & probatum, Procuratores expedire incipiant. Dubia vero vel obscura, vel difficultate obstruata, Regens ipse ad maiorem Poenitentiarium referat, ut diligen- tibus examinetur, demum in ejus signatura propo- sita, cum maturo omnium judicio decidatur.

Materiæ di-
uidantur.

§. 14. Ceterum materiæ omnes five consiciendæ, five scribendæ, inter Procuratores & Scriptores, cu- ra Sigillatoris æqualiter diuidantur.

Correctoris
officium.

§. 15. Sed ut litteræ prædictæ stylo suo conscrip- tæ, sanæ & incorrupte emittantur, Corrector præ- dictus, antequam illæ scribantur, schedulas five mi- nutas earum à prædictis Procuratoribus consicien- das, cum supplicatione expedita diligenter recog- noscat, examinet, & corrigat, ut inde litteræ ipse munda & integræ, rasurisque prorsus carentes ex- pediantur. Itemque super omnibus materiis, tam ordinariis quam extraordinariis, supplicationes ubi illis opus erit, in totum expediri debeant, prius quam ad expeditionem litterarum super illis quo- quo pacto procedatur.

Sigillatoris
officium.

§. 16. Denique Sigillator prædictus litteras om- nes eatenus recognoscat, ut manus requisitæ illis ap- positæ sint, & eorum data cum libello supplicatio- nis concordet; deinde ipsius sigillo Poenitentiarie obsignatas, & in totum gratis ubique expeditas, tunc demum eas procuratoribus resignet.

Pro expedi-
tione littera-
rum nihil sol-
uatur.

§. 17. Illud autem sanæ & inuoliate apud offi- cium prædictum volumus observari, ut nihil prorsus pro litterarum confectioe & expeditione, nec alias etiam pro charta, atramento, cera, capsula, cordulis, aliisque rebus ad ipsam expeditionem per- tinentibus exsoluantur, rationem aliunde habituri, unde hæc omnia, simulque Ministrorum omnium stipendia debeant comparari.

Sigillator eu-
rodias om-
nes scrip-
tas Poeniten-
tiaræ offi-
cium concen-
tentes.

§. 18. Sed ne quid rerum dictæ Poenitentiarie lapsu temporis pereat, neglectumque jaceat, Sigilla- tor ipse omnia exemplaria, litteras, scripturas, & in- strumenta quorumcumque privilegiorum, facultatu- rum, concessionum, prohibitionum, reformationu- rum, & ceterorum omnium dictum officium Peni- tentiarie in uniuersum & privatim concernentium, fideliter ac cum periculo suo asseruet, deque his om- nibus authenticum inventarium, ac registrum con- ficiat; cui quicquid postea additum, statutum, con- cessum, vel veritum erit, illud totum qualecumque quamprimum ascribat, & sic deinceps hæc om- nia in futurorum Sigillatorum fidem cum eisdem conditionibus & periculis deponantur.

Officialium
instrumenta.

§. 19. Ad retinendam vero in dicto officio pu- ratem & confirmandum singulorum fidem, districte præcipimus, ut iuramenta quæ in admissione Offi- cialium requiruntur, ad præsentem nostram refor- mationem accommodata, quotannis in manibus dicti majoris Poenitentiarum debeant iterari.

Inobedi-
entium poenæ.
Quas habes
etiam in
bull. seq.

§. 20. Monemus insuper omnes & singulos su- prædictos, ut caveant diligenter, ne in officiorum suorum exercitio, fraud vel dolum quoquo pacto ad- mittatur, vel capio inducatur, neve ipsi partibus quidquam dolose & fraudulenter suggerant, quo fa- cilius optata impetrare possint, sed solum petitiones iustas, rationabiles, & honestas, recipiant &

proponant. Quod si dolum vel fraudem fecisse, aut quidquam vel minimum pro labore, aut alias quo- quo modo accepisse convicti fuerint, præter illas censuras & penas, quæ contra talia admittentes quomodocumque propozite sunt, in penam priva- tionis officiorum suorum incurrant, & ad futura in- habiles, infamesque reputentur, prout nos illos privatos, inhables, & infames declaramus eo ipso.

Decretum
irritans.

§. 21. Decernentes ex nunc irritum & inane, quicquid fecus super prædictis, aut eorum aliquo à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Clausulæ de-
regatorie.

§. 22. Non obstantibus nostra de non tollendo jure quæsito, & aliis Apostolicis constitutionibus, ac de certo officiorum prædictorum numero, etiam pluries à Romanis Pontificibus reducto, necnon offi- cii Poenitentiarie huiusmodi iuramento, confir- matione Apostolica, vel quavis firmitate alia robo- ratis, statutis, vetere stylo & consuetudinibus quan- tocumque tempore observatis, ceterisque contra- riis quibuscumque.

Iusto obser-
vantia.

§. 23. Depulsa igitur omnis avaritiæ fœditate, pro se quisque, piam castamque mentem ad impos- sibile sibi munus pro Dei æterni gloria, & Christi fide- lium salute acriter intendat, & pro virili parte co- netur ut cuncta prospera, & hoc tanto Officio digna succedant, Sedeque Apostolica pro bene gestis con- dignæ laudis præconio in singulis Christiani Orbis partibus plenius celebretur. Nulli ergo &c.

D. P. An. 4.
die 18. Maii.

Dat. Romæ apud S. Petrum Anno incarnationis Dominicæ 1569. 15. Kal. Junii, Pontificatus nostri anno quarto.

Publicatio.

Anno à Nativitate D. 1569. Indictione 12. die vero 1. mensis Junii, Pontificatus Sanctiss. in Christo Pa- tris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa V. anno 4. retrospectæ litteræ Apostol. affixæ & publi- cate fuerunt ad valvas Basilicæ Principis Apostolo- rum, & in acie Campi Floræ, ut moris est, per me Jo. Guerardum Curf.

Camillus Cher. Mag. Curf.

Scriptores & Procuratores Poenitentiarie Apostoli- cæ ad Cancellariam Apostolicam transferuntur, & Scriptores & Procuratores litterarum minoris gratiæ instituuntur.

LXXXIV.

De materia Poenitentiarie, vide in const. præced. De materia vero Cancellariæ, vide supr. in Pii IV. const. 54. Universi regis. fol. 77.

PIUS EPISCOPUS,

Edita An. D.
1569.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

In earum rerum commutatione, quam magnis suadentibus causis facere compellimur, hoc quo- que à nobis sedulo curandum est, ut ille Minis- trorum numerus, qui novo ordine composito uno in loco usui esse desit, in alium magis convenientem commodis rationibus elocetur.

§. 1. Cum igitur in generali reformatione officii nostri Poenitentiarie, & quam nuper edidimus, inter- talia multa, duo officia Correctorum, itemque fun- ctiones & exercitia, omnium & singulorum Scrip- torum, qui vigintiseptem, & procuratorum littera- rum dictæ Poenitentiarie, qui vigintiquatuor sunt, in prædicto Poenitentiarie officio, de Apostolica potestatis plenitudine extinxerimus & aboleverimus, ac eorundem Scriptorum & Procuratorum, qui tunc litterarum Poenitentiarie erant, rationem aliorum habituri, eos omnes ab ipso Poenitentiarie officio subduxerimus, quemadmodum litteris no- stris desuper confectis plenius continetur.

In consti-
tuto subdi-
xit hic Pont.
à Poeniten-
tiaræ officio.
Correctoris,
Scriptorum,
& Procurato-
rum exceptis
duobus.

§. 2. Nos dictis officiis Scriptorum & Procura- torum eorumque Collegiis novum statum inducere, & quantum in nobis est, singulorum ea obincentium indemnitate consulere volentes. De simili pote- statis plenitudine, omnia & singula officia & loca

Et hunc offi-
cia S. r. r. r.
& Procurat.
ad Cancell.
riam trans-
fert.

Et locum illis in ea assignat.

Formamque statuere expeditionum litterarum.

Emolumenta Officialibus assignat.

Sigillatoris officium.

Scriptorum & Procuratorum prædictorum, ipsorumque personas & collegia (novo nomine & titulo utriusque indito, ac libera concessione, & omnimoda alia dispositione octo officiorum huiusmodi Procuratorum majori Penitentiario eodem quo antea jure perpetuo remanente) ad Cancellariam Apostolicam transferimus, & cum ea perpetuo coniungimus. Ita ut quondam Scriptores litterarum Penitentiariæ, de hic scriptes litterarum Apostolicarum minoris gratiæ, alteri vero Procuratores litterarum eorundem minoris gratiæ appellentur, & inscribantur.

§. 3. Quibus concedimus & assignamus mensam, seu bancum utriusque commune in eadem Cancellaria post milites sanctorum Petri & Pauli, aut alio ibi loco à dilecto filio nostro S. R. E. Vicecancellario constituendo, ad quod litteræ omnes hoc de hinc officio litterarum minoris gratiæ expediendæ in primis deferantur.

§. 4. Statuentes ut materiæ, quæ in dicto Penitentiariæ officio proximis ante dictam reformationem temporibus communiter habebantur, & ex ordinatione nostra in summam redactæ sunt, deinceps per nostram, ac Romani Pontificis pro tempore existentis, deputatorumve signaturam fiant. Harum omnium libellos supplices, & idem litterarum super eis consiciendarum schedulas sive minutas, soli Procuratores ad dictæ Cancellariæ stylum conscribant. Conscriptas minutas Abbreviatores litterarum Apostolicarum de majori præsentia in primis examinent, & corrigant. Correctas soli Scriptores huiusmodi litterarum minoris gratiæ describant, ut inde litteræ ipsæ ad Cancellariam prædictam, & Defensores, aliosque Præsidentes in banco prædicto deferantur, ibique secundum regulam ad ritum dicti officii Penitentiariæ moderandam taxentur. Mox ab Abbreviatoribus prædictis, insinuat aliarum in eadem Cancellaria recognita, & ad supplicationem collectæ, ad Bullariam mittantur, subiectoq; plumbo protinus à sigillatore prædicti officii Penitentiariæ capiantur; qui taxa ad præscriptum nostrum recepta eas per descriptores ad id assumendos juxta nostras super hoc ordinationes regestari, & regestatas ad exemplum ut in aliis moris est, conferre; deniq; singulis literis prædictis omnem impensam per verbum Expolcit, uti literis officii Penitentiariæ prædictæ moris erat subscribere, idque etiam regesto prædicto adnotare procuret.

§. 5. Percipiendorum autem à quoque fructuum & emolumentorum suorum ea ratio esse debeat, ut finito mense in primis salaria eorum omnium, qui ad mensam prædictam Defensores & alio officii munere ex Scriptoribus & Procuratoribus litterarum minoris gratiæ huiusmodi constituuntur, & solvantur; deinde Procuratores & Scriptores suam quisque portionem vitæ per sua collegia, ut antea distribuendam capiant. Regens vero Cancellariæ, & Abbreviatores prædicti, pro laboribus illud idem de singulis expeditionibus, quod olim prædicti duo Correctores, & stipendium, & emolumentum libere & licite percipient. Cetera item salaria, & emolumenta in plumbo, & utroque regresto, videlicet supplicationum & litterarum prædictarum, & alibi necessaria, juxta ordinationes nostras prædictas capiantur. De taxa vero à dicto Sigillatore capienda, stipendia Regentis, Datarii, Correctoris, Theologi, Doctoris, Procuratorum, Scriptorum, Sigillatoris, ceterorumque Ministrorum officii Penitentiariæ, item impensæ omnes etiam pro charta, atramento, cera, capsula, cordulis, & aliis quomodocumque ad expeditionem litterarum dictæ Penitentiariæ necessaria, quas gratias ubique fieri & concedi jam præcipimus, ante omnia desomantur, & singulis persolvantur; quod vero his omnibus omnino deductis & persolutis, reliquum erit majoris Penitentiarii prædicti esse debeat.

§. 6. Ad hæc quoque prædictus Sigillator curam habeat prædictas supplicationes à manu Datarii recipiendi, & per alios ad id ordinandos describendi, in regrestum ab altero distinctum referendi & utrumque fideliter custodiendi. Ceterum nullæ omnino supplicationes super huiusmodi materiis signandæ inter Ab-

breviatores prædictos distribuantur, neque ipsam relinquantur, neque super iis sumpta, alia exempla ex regestis describantur, etiam postquam litteræ Apostolicæ super illis expeditæ, & partibus eas prosequentibus redditæ fuerint, sed supplicationes ipsæ apud regestum prædictum sub cura dicti Sigillatoris, qui panter ipsi regesto præfectus sit, fideliter custodiantur.

§. 7. Præcipimus igitur atque interdicimus Abbreviatoribus, Scriptoribus, Procuratoribus, ceterisque prædictis tam conjunctim quam divisim, ne quid, vel minimum etiam sponte oblatum à Patribus, sive pro expeditionis maturatione, sive alio extraordinario labore capiant, aut à famulis aliisque personis capere permittant, sed suis quisque taxis, & stipendiis uti constituta sunt, contenti esse debeant. Quicumque secus fecerint, præter illas censuras & penas, quæ in talia perpetratores impostæ sunt, suorum Officiorum privationem incurrant, & ad futura inhabiles, ac etiam infames censentur, uti nos illos privatos, inhabiles, & infames declaramus eo ipso.

§. 8. Et nihilominus mandamus prædictis Vicecancellario & Abbreviatoribus, necnon Rescribendario, & Scriptoribus Apostolicis, ceterisque ad quos pertinet, tam conjunctim, quam divisim, ut Scriptoribus & Procuratoribus prædictis, eorumque singulos sic cum universo Corpore prædicto conjunctos fraternæ charitate prosequatur, & ad huiusmodi officia & ipsorum liberum exercitium, necnon honores, onera & emolumenta omnia recipiant, & admittant, ac faciant prædicta omnia & singula inviolabiliter observari, non permittentes quemquam contra Præsentem tenorem quomodolibet impediri. Rursus eisdem Scriptoribus, & Procuratoribus sic cooptatis, & adscriptis, ut prædicto Vicecancellario tanquam capiti aliorum dictæ Camere collegiorum insinuat, obediunt, & obsequantur.

§. 9. Non obstantibus de cetero Scriptorum litterarum Apostolicarum numero, & aliis eorum ac dictæ Cancellariæ statutis, stylo, institutione, consuetudinibus, stabilimentis, & reformationibus quantumcumque tempore observatis, ac etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, ceterisque contrariis quibuscumque,

Nulli ergo, &c.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1569. 14. Kal. Junii, Pontificatus nostri anno quarto.

Declaratio casuum, ac præsumptionum, in causis confidentiæ beneficiæ, contra quoscumque, etiam S. R. E. Cardinales cum appositione penarum.

Ad hæc vide sup. const. 85. Pii IV. Romanum. fol. 128. ubi cetera de simoniis & confidentiis notavi.

PIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Intolerabiles multorum perversitas, qui sacrosanctas constitutiones novis quotidie fraudibus eludere nituntur, sæpe illarum auctores in necessitatem adducit cautius providendi, quo pertinacium animi ab improbis conatibus graviore sanctione postposita reprimantur.

§. 1. Bene quidem & providenter fel. record. Pius Papa IV. prædecessor noster ad tollendam fiduciariæ mancipationis beneficiorum Ecclesiasticorum corruptelam, statuit & decrevit, &c.

Ut in bulla cit. in rubr.

§. 2. Verumtamen propter improbas multorum cupiditates prædictas, quæ ad purgandam hac pernecie Ecclesiam, & animarum salutem ab ipso Prædecessore edita sunt, in multis deprehendimus viâ aperiisse graves delinquendi. Siquidem cum frequentibus plurimum querelis pridem concitari, quod Iudices in causis huiusmodi confidentiarum expediendis

Inhibitio contra Officiales ne aliquid accipiant pro quocumque extraordinario labore, sub penis hic expressis.

Executores deputati.

Claus. derog.

D. P. An. 4. die 18. Maji.

LXXXV.

Edita An. D. 1569.

Exordium.

Pius IV. in rubr. cit. prohibuit confidentias.

Sed cognovit hic Pont. multas fraudes delapsæ committi, quæ in iudiciis minime probari possunt.

remissio.

remissiores essent, omnes & singulas causas ipsas ubicumque, & inter quoscumque motas ad nos advocavissimus, ac omnimodam hujusmodi causarum, presentium & futurarum, rerumque omnium ex ipsis resultantium cognitionem Nobis & Successoribus nostris reservavissimus, & super quibusdam coram nobis processum fuisset, variis inde, nec levibus conjecturis intelleximus vitium quidem confidentiæ occulte irrepisse, sed peritq; causis præsumptiones, & conjecturas, quæ ad illud probandum deducuntur, minimè sufficere, easque rei causa plurimos qui ante litterarum prædictarum editionem hujusmodi confidentias exercebant, ubi cognoverunt obstruendam veritatem propter difficultates probandi in iudiciis confidentias ipsas, contempta constitutione prædicta, Ecclesias, Monasteria, & beneficia sic recepta, ut prius retinere, alios fructus, pensiones, & alias res accipere, alias eorum exemplo ad familia & graviora fidemur commoveri. Multi enim ipsa beneficia jure retinere nequeunt, alii ne cogantur ad sacros Ordines, ad residendum, ad incedendum in habitu clericali, ut ad bellum proficiscantur, ut inimicos occidant, alieno nomine lites agant, aut defendant, alii propter crimina incapaces, quidam ut purgato delicto vel absolute consecuta, illa repetant, eadem in alios deponunt, & in plerisque fructus ipsorum aut eis ministrantur, aut quibus ipsi statuunt, sæpe laicis, & inhabilibus. Plerique vel senes, vel infirmi, ut beneficia in domibus suis perpetuent, illa renunciant, & renunciant in alios, qui vel profanam familiam cedentem de fructibus Ecclesiasticis alant, vel illa etiamnum infantibus, aut nascituris asserunt, facto interdu circuitu retrocessionis, cum reservatione fructuum, & aliarum rerum, aut accessu, præsertim ab illis qui præstandorum jurium Camera Apostolice sunt immunes; alii aut incapaces, aut alii beneficiis Ecclesiasticis onusti, aut Ecclesiastico ordini sese mancipare refugientes, aut mere laici beneficia Ecclesiastica aliis conferenda procurant, ut de illis postmodum ad libitum suum disponatur, fructus etiam percipientes illorum. Ad hæc plerique Ordinarii, & Collatores, ac etiam patroni laici curam deponenda beneficia, ut fructus, seu pensiones capiant eorumdem, aliisve faciant ministrari. Alia item permulta ejusmodi admittuntur, quibus immaculata rerum divinarum puritas impiè violatur, disciplina Ecclesiastica nervus dirumpitur, & imminens patrat exitium animarum.

§. 3. Quare nos volentes periculosam talium audaciam novi juris subsidio cohibere, presentium auctoritate statuimus.

Ut si quis quacumque auctoritate, Ecclesiam vel Monasterium, aut aliud beneficium Ecclesiale, quocumque ex resignatione, vel cessione quocumque personæ, simpliciter aut cum circuitu retrocessionis, cum regressu vel accessu, etiam sola dimittentis intentione receperit, ut illa vel illud etiam in eventum regressus, vel accessus, eidem dimittenti, vel alteri postea conferatur, aut illius fructus, vel eorum pars alii vel aliis concedantur, vel pensiones solvantur, ex eisdem hæc confidentia censetur.

Item si Ordinarius, vel alius Collator contulerit antehac, aut conferat in futurum, beneficium Ecclesiasticum quovis modo vacans, ea conditione, tacita vel expresse, postea in alterum pro arbitrio Collatoris, seu alterius quocumque; contra juris communis ordinationem disponatur, sive ut de eo provius fructus illius, vel partem ad utilitatem vel libitum conferentis, vel cedentis, aut alterius relinquat, & remittat, seu pensionem illi vel illis, quem vel quos idem Collator, aut cedens, vel alius per se vel alium scripto aut verbo iusserit seu significaverit, persolvat, & pariter si a patrono etiam laico, vel alteri præsentatori, seu electori contigerit, aut contingat id fieri.

Ad hæc si Clericus prædictæ Camera, aut Cardinalis aut alius à solutione jurium ipsius Camera, vel etiam Cancellariæ Apostolicæ, exemptus, post resignationem vel cessionem alicuius extranei, de Ecclesia, Monasterio, vel alio beneficio Ecclesiastico, in se, Aposto-

lica, vel alia auctoritate sacra & admittam, illam, vel illud etiam concessis litteris Apostolicis, & possessione apprehensa, in eundem resignantem vel cedentem, modico spatio interjecto, veluti duorum vel trium mensium retrocesserit, aut retrocedat in futurum, & ex illa retrocessione fructus Ecclesiæ, seu Monasterii, aut beneficii, vel eorum pars, seu pensio, seu quid aliud super his reservatum, aut regressus, seu accessus, & ingressus ad illam vel illud, ipsi Clerico, vel Cardinali, aut alii exempto sit, fueritve concessus.

Postremo si quis crimine aliquo absolutus, aut cum quo super irregularitate dispensatum est, denud receptum quacumque auctoritate Ecclesiam, Monasterium, vel aliud beneficium Ecclesiasticum, quod ante, vel post commissum delictum aut contrariam irregularitatem dimiserit, in quibus horum casuum confidentiæ pravitas sit contracta, casusque hujusmodi litteris prædictis comprehendantur, ac si illis speciatim expressi fuissent, licet ipsum confidentia crimine alterius tantum partis conscientia sit admittam.

§. 4. Ad probandum verò plenè confidentiarum abusum, inter alias etiam hæc præsumptiones, & conjecturæ habeantur legitimæ. Videlicet.

Si quis post cessam ab se Eccl. vel Monasterium, aut beneficium, & publicatam resignationem, seu cessionem, captamque à successore possessionem, sese in illa vel illo, seu rebus illius, per se vel alium seu alios, de facto ingesserit, aut fructus perceperit, aut quicumque successor illi, vel ejus propinquus, ipso aut partem aliquam remiserit eorumdem.

Si recipiens beneficium constituit dimittentem vel ejus parentes aut propinquos, procuratores ad percipiendum, vel locandum fructus beneficii dimissi, & illi vel illis de fructibus perceptis, aut percipiendis donationem fecerit.

Si vel sola procuratoris depositione, vel libris rationalibus mensuriorum ex parte dimittentis, expeditio quæ personæ recipientis concernit, profecuta sit, si mulq; expensæ pro ea necessariæ ab illo factæ fuerint.

§. 5. Denique si quis pro concessione alicui facta quacumque auctoritate de beneficio Ecclesiastico, per se vel alium seu alios intercesserit, vel alias in negotio concessionis sese immiscuerit quoquomodo, deinde aliquid de fructibus talis beneficii de facto, etiam per manus possessoris, ac etiam simplicis donationis titulo perceperit, seu de illo postmodum ad voluntatem intercessoris fuerit dispositum quodcumque.

§. 6. Testes autem de quaque re singulares singulas probare valeant præsumptiones, & conjecturas, pluresque hujusmodi præsumptiones & conjecturæ plenam probationem faciant in prædictis.

§. 7. Ceterum criminosi, & ceteri omnes, qui ad perhibendum in casibus simoniaci testimonium recipi possunt, ad prædicta omnia admittantur.

§. 8. Sed ne quisquam etiam vana fiducia fretus, non intendendi contra se iudicii in crimine perseveret, utque hoc malum gravioris censura stimulo usquequaq; prohibeatur, omnes & singulos qui hucusque Ecclesias, Monasteria, beneficia, fructus, pensiones, aliave res, intercedente hac confidentiæ vitio receperunt, ac retinent, nisi statim ad se reversi, & respicientes celeri dimissione sibi prospexerint, & quid tale admitterent in futurum, etiam omnibus & singulis aliis Ecclesiis, Monasteriis, dignitatibus, administrationibus, officiis, & beneficiis obtentis, quæ pariter sub dicta reservatione comprehendimus volumus, necnon fructibus, pensionibus & aliis rebus Ecclesiasticis, ac etiam Rom. Curia & aliis officiis temporalibus presentium auctoritate privamus, & ad futura inhabiles decernimus, & in juris subsidio excommunicationis sententia innotamus, à qua nullus, nisi in mortis articulo constitutus, ab alio quam à Rom. Pontifice, absolutionis beneficium valeat obtinere. Nos enim advocacy causarum hujusmodi, & reservatione cognitionis illarum, rerumque omnium inde emergentium. Nobis & prædictis Successoribus, ut prædictum est facta, causis illis dumtaxat exceptis, quæ jam coram nobis penderent, censetur, ac etiam iis quas ratione Ecclesiarum, & Monasteriorum, quorum

4.
Et ad probandum confidentiam, certas præsumptiones sufficiere declarat.

Testes singulares quid probent.

Præsumptiones quod, plene probant.

Alii testes rejciendi.

Confidentia poenæ & causarum cognitio ad quos spectat.

Ad quod videtur etiam confit. Six. V. cit. in rubr.

Ideo certis regulis confidentias declarat.

1.

2.

3.

dispositio in Consistorio fieri consuevit, aut debet, itemque contra Ordinarios, Collatores, Episcopos, & alios Superiores Prælatos, etiam Cardinales haberi contigerit, ut jam aliis nostris litteris statutum est audiendis, decidendis, & terminandis, harum serie prorsus relaxata, decernimus, ita deinceps quocumque Judices ordinarios, & delegatos, etiam causarum Palatii Apostol. Auditores, ac prædictæ Rom. Eccl. Cardinales, sublata eis & ipsorum cuiusque, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate, & auctoritate, ubique iudicari, interpretari, & definiri debere, necnon irritum & inane quicquid fecus in prædictis per quoscumque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 9. Quocirca omnibus locorum Ordinariis districtius injungimus, ut in suis quisque Ecclesiis, Civitatibus, Diocesis, & locis etiam exemptis, ad prædicta studiose attendat, & quatenus illis relaxavimus, in delinquentes severe animadvertant, si divina Majestatis iudicium, dictæque Sedis censuram voluerint evitare. In ceteris vero causis, & negotiis (Nobis, & prædictis Successoribus exceptis) eisdem locorum Ordinarios præsentium auctoritate delegamus, ut gratia, & favore postpositis, pro se quisque cum venerit usus, contra prædictos omnes sub ipsa exceptione comprehensos diligenter inquirent, suasque inquisitiones omnes sigillo obnatas ad prædictam Sedem quamprimum transferat, ut Nos, & prædicti Successores in causis huiusmodi procedentes, quod iustum fuerit decernamus. Nos enim singulis Ordinariis ipsis prædictos omnes, & quoscumque alios, etiam exemptos etiam per edictum publicum, consilio prius summariè, & extrajudicialiter de non tuto ad illos accessu, citandi, & monendi, eisque ac iudicibus ordinariis & delegatis, aliisque personis quibuscumque ne prædictorum executionem quoquo modo impediunt, vel alias in illis sese interponant, etiam per simile edictum inhibendi, eisdem ac alios contradiutores, & rebelles quoscumque per censuras, & penas Ecclesiasticas, ac omnia alia juris & facti remedia opportuna compellendi, auxilium brachii secularis quandocumque opus erit invocandi, ceteraque in prædictis, omnibus & singulis necessaria faciendi & exequendi, plenam & liberam tenore præsentium concedimus facultatem.

§. 10. Non obstantibus fel. record. Bonifacii Papæ Octavi prædecessoris nostri de una, & in Consilio generali edita de duabus dietis, aliisque Apostolicis constitutionibus, & ordinationibus, quodque Episcopi, Collatores, & Prælati prædictis, etiam Cardinalibus, vel quibuscumque aliis, communiter vel divisim ad prædicta sit Sede indultum, vel in posterum indulgeri contingat, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari, aut contra indulta huiusmodi ad iudicium trahi non possint per litteras Apostol. non facientes plenam & expressam, & ad verbum de indulto huiusmodi mentionem, & quibuslibet aliis privilegiis indulgentiis, & litteris Apostol. generalibus vel specialibus, quorumcumque tenorem existant, per quæ Præsentibus non expressa, aut in totum non inserta, effectum Præsentium aut attributa prædictis Ordinariis jurisdictionis explicatio, seu exercitium, vel executio impediri valeat quomodocumque; vel differri, & de quibus quorumque totis tenoribus habenda sit in nostris litteris mentio specialis, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 11. Litteris Prædecessoris huiusmodi nihilominus in suo robore duraturis.

§. 12. Volumus autem ut præsentium exempla etiam impressa edantur, eaque Notarii publici manu, & cuiuscumque curie Ecclesiasticæ, vel Prælati sigillo obnata, eandem illam prorsus fidem, in iudicio & extra, ubique locorum faciant, quam ipsæ Præsentis facerent, si essent exhibitæ vel ostensæ.

Nulli ergo &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno incarnationis Dominicæ 1569. Kalendis Junii, Pontificatus nostri anno 4.

Anno à Nativitate D. 1569. Indictione 12. die vero Sabbati 6. Augusti, Pontificatus Sanctiss. in Christo

Patris & D. N. D. Pii divina providentia Papæ V. anno ejus 4. retroscripta littera affixa & publicata fuerunt ad valvas Basilicarum Lateranens. & Principis Apostolorum de Urbe, Cancellariæ Apostol. & in acie Campi Floræ, ut moris est, dimissis in omnibus supradictis locis eandem retroscriptarum litterarum copias affixis, per nos Julium Parinum, & Joannem Andream Panizzam prædicti S.D.N. Pii Papæ Curf.

Christianus de Monte Mag. Curf.

Sequitur extensio ad Cardinales.

PIUS PAPA QUINTUS. &c.

Hodie in Consistorio nostro secreto, ut moris est accepto, quod ad nonnullis pratendebatur S.R. E. Cardinales obtentu privilegiorum sub constitutione nostra de confidentiis beneficalibus, saltem quo ad privationem, censuras, & alias penas in dicta constitutione contentas, propter non factam in clausula impositionis illarum specialem & expressam de dictis Cardinalibus, & privilegiis mentionem, minimè comprehendi licet aliter mentis & intentionis nostræ fuerit, quemadmodum & ex litteris dictæ constitutionis colligi possent.

§. 1. Ad tollendum tam omne dubium atque impedimentum, quo minus constitutio præfata commune bonum, & salutem animarum concernens plenarium effectum sortiatur, declaravimus, omnes S. R. E. Cardinales, in constitutione, & litteris præfatis, ac singulis earum partibus, etiam quoad privationes, omnesque & singulas alias censuras, & penas, in ipsis litteris contentas comprehendendi, ac contrascentes, privationes, censuras & penas ipsas incurrere, prout nos illos omnes includi, & incurrere volumus eo ipso.

§. 2. Decernentes sic per quoscumque &c. etiam Cardinales, in quavis causa & instantia, sublata &c. iudicari, &c. debere; necnon irritum &c. attentari.

§. 3. Ac privilegia præfata, necnon exemptiones, conservatorias, & indulta omnia, per quoscumque Romanos Pontifices &c. etiam Motu proprio, & ex certa nostra scientia, deque Apostolicæ potestatis plenitudine, ac etiam consistorialiter, & ex quibuscumque causis in genere vel in specie concessa, confirmata, extensa, & moderata, & quancumque tempore observata, ad effectum præfatorum revocavimus, & annullavimus, viribusque & effectum quo ad hæc prorsus carere decrevimus. Volumusque & statuimus, tenores privilegiorum &c. qualiacumque sint, præsentibus pro plenè & sufficienter expressis haberi.

§. 4. Solamque hanc schedulam manu nostra firmatam, & in Cancellariæ Apostol. libro ad perpetuam rei memoriam registratam, absque alia litterarum confessione, sufficere, eamque & ejus exempla ubique locorum in iudicio & extra illud fidem facere.

§. 5. Constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac Cancellariæ præfate regulis, editis & edendis, ceterisque contrariis, non obstantibus quibuscumque.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 14. Novembris 1569. Pontificatus nostri anno 4.

Ita est. M.

Quod facultas erigendi Capellas Rosarii, sit solummodo Magistris Generalis Ordinis S. Dominici, & ab eo Deputatorum. Et Confratres Sodalitatum Rosarii ab eis institutarum, oblationes & legata in pios ejus usus convertenda recipere valeant. Indulgentiasque hic enunciatas consequantur.

Hæc eadem facultas instituendi has Confraternitates concessa est etiam Vicario generali d. Ord. à Sixt. V. in const. 21. Dum ineffabilia infra in hoc Tomo II. Et antiquiorè Rosarii approbationem, habes in const. 18. Six. IV. Ea quæ. Tom. I. fol. 418. ubi notavi.

Edita An. D. 1569.

Dubium an præcedens constit. liget Cardd.

Declaratio quod eos comprehendit.

Decretum irritans.

Revocatio privilegiorum ad effectum præsentium.

Sola signatura sufficit.

Derogatio contrariorum.

D. P. An. 4. die 14. Nov.

Papæ subscript.

LXXXVI.

Derogatio contrariorum.

Constit. d. Pii IV. in suo robore remanet. Transumptorum fides.

Dat. P. An. 4. die 1. Jun.

Publicatio.

Quibus adde aliam const. Leonis X. positam in Appendice.

Edita An. D.
1569. **PIUS PAPA QUINTUS,***Ad perpetuam rei memoriam.*

Exordium.

Inter desiderabilia cordis nostri, illud intensis desiderii affectamus, ut singulorum Christianidelium quorum nobis ex commissi Pastoralis officii debito cura imminet, generalis animarum salus proveniat, unde pia & salubria fidelium vota ad hoc tendentia, & alias ex quibus divini cultus provenit augmentum, pii Patriis affectione prosequimur, ac plenius favoribus confavemus, & ut optatum consequatur effectum, Christianos ipsos ad illa, indulgentiis videlicet & peccatorum remissionibus libenter invitamus.

Causa hujus constitutionis.

§. 1. Exhibita sane nobis asper pro parte dilecti filii Magistri Provincialis Ordinis Prædicatorum Provinciae Neapolitanæ petitio continebat, quod cum dilectus filius Fr. Ambrosius Salvius loci de Balneo Nurean, five alterius Dioc. ad erigendum Societates Sanctiss. Rosarii in quibuscumque Ecclesiis, per nos & Sedem Apostolicam specialiter deputatus fuerit, si alias hujusmodi facultas, præterquam ejusdem Ordinis Magistro Generali interdiceretur, ex hoc processu diversis abusibus, qui in illarum erectione intervenire possent, satis consultum foret. Quare nobis pro parte ejusdem Provincialis fuit supplicatum, ut sibi in præmissis opportunè providere de benignitate Apostolica dignaremur.

Facultas erigendi Capellam Rosarii, spectat ad Mag. Gener. Ord. S. Dominici, & ab eo deputatos tantum.

§. 2. Nos qui honestis quorumlibet votis libenter annuimus, eaque favoribus prosequimur opportunis, eundem Provinciam ad quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & poenis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innotatum existit, ad effectum præsentium dumtaxat consequendum harum serie absolventes, & absolutum fore censentes, hujusmodi supplicationibus inclinati, auctoritate Apostolica per præfatos statuimus, quod nulli licitum existat, minusque aliquis Capellam Sanctiss. Rosarii in quavis Ecclesia five loco erigere, præter dictum Generalem, aut ab eo deputatos, ac præfatum Ambrosium.

Nihil ingreditur Societatem solvendi. Confratres process. accedant, & ad sepel. mortuus insignia deferant.

§. 3. Minusque aliquis Confrater, seu vir five mulier, aliquid eidem Societati pro illius ingressu, vel alia quavis de causa proferat.

§. 4. Ac singuli Confratres ad quasvis processiones accedere, & in quibus corpora defunctorum ad sepeliendum deferuntur, cum eorum insigniis, cuiusvis etiam Superioris licentia desuper minimè requisita, etiam absque aliquo conscientie scrupulo, & censurarum Ecclesiasticarum incurfu possint & valeant, seu eorum quilibet possit & valeat.

Prohibitio Confratres in his molestandi.

§. 5. Distinctius inhiabentes quibuscumque, ne eosdem Generalem, seu deputandos, & Ambrosium, super erectione, & institutione Societatum hujusmodi in quibuscumque Civitatibus, terris, & locis factis & faciendis, neque eodem Confratres super exercitio priorum operum, & processu ad processiones, seu ingressu cum signo eorum, aut dicti signi delatione molestare, perturbare, aut inquietare audeant nec debeant, quinimmo Generali, deputatis, & Ambrosio præfatis in præmissis auxilium, consilium, vel favorem præbeant. Nos enim omnes præmissis contravenientes, indulgentiis, & peccatorum remissionibus eis concessis privamus, & privatos esse ac indignos effici, & quicquid secus super his à quocumque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, irritum & inane decernimus.

Confirmatio indulgentiarum.

§. 6. Postremo verò, ut animarum Christianidelium præsertim ex aliqua Societate hujusmodi erectarum, seu per eundem Ambrosium erigendarum existentium, & eandem Societatem ingredi volentium, quieti, & spirituali consolationi salubriter consulatur, & ad illam ubicumque erectam Christiani fideles ipsi accedentes eo ferventiores, & promptiores reddantur, quo se dono cælestis gratia decoratos

enserint, De omnipotentis Dei misericordia, ac Beatorum Petri & Pauli Apostolorum auctoritate confisi Christianidelibus præfatis de dicta Societate, ut præfertur instituta, vel instituenda existentibus, ut omnes & singulas indulgentias, & peccatorum remissiones, tam per nos quam quoscumque alios Romanos Pontifices, & præsertim Leon. Papam X. prædecessores nostros concessas consequantur, & consequi possint, auctoritate & renore prædictis misericorditer in Domino concedimus & indulgemus. Illasque nonnisi in Ecclesiis, in quibus, ut præfertur eadem Societas instituta erit, præterquam in casu summæ necessitatis & infirmitate grandi, seu detentione carcerum, in quibus & alio in loco consequi possint, observando tamen illa omnia, quæ in dictis indulgentiis continentur, consequi posse decernimus. Omnesque & singulas per eundem Ambrosium, five Generalem, aut deputandos præfatos auctoritate nostra, modo tamen prædicto, concessas confirmamus & approbamus.

§. 7. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 18. Junii 1569. Pontificatus nostri anno quarto.

*Sequitur alia constitutio super prædictis.***PIUS PAPA QUINTUS.***Ad perpetuam rei memoriam.*

Consueverunt Romani Pontifices, & alii Sancti Patres prædecessores nostri, cum bellis corporalibus vel spiritualibus premerentur, aut aliis tentationibus vexarentur, quo facilius ab illis evaderent, & tranquillitatem adepti, Deo quietius & ferventius inservirent & vacarent, divinam opem implorare, & Sanctorum suffragia per supplicationes, seu per Litanias deposcere, ac oculos cum Davide in Montes levare, certa spe confidentes, inde illis auxilia affuturum.

§. 1. Quorum exemplo adductus, & Spiritu sancto, ut pie creditur, affatus Beatus Dominicus Ordinis Fratrum Prædicatorum auctor, (cujus institutum, & regulam cum in minoribus effemus expressè professi sumus) simili, qua nunc temporis occasione, quo Albigenium hæresim partes Galliarum, & Italiae miserè vexabantur, & tam multos excæcaverunt sæculares, ut in Domini sacerdotibus & clericis sævissime furerent, levans in cælum oculos, & montem illum Gloriosæ Virginis Mariæ Almæ DEI Genitricis, quæ germine suo tortuosi serpentis caput obtrivit, & cunctas hæreses sola interemit, ac benedicto fructu ejus ventris, Mundum primi parentis lapsu damnatum salvavit, & de quo sine humanis manibus abscessus est lapis ille, qui ligno percussus gratiarum aquas affluentes produxit, respiciens modum facilem, & omnibus pervium, ac admodum pium orandi, & precandi Deum, Rosarium seu Psalterium ejusdem B. Mariæ Virginis nuncupatum, quo eadem Beatissima Virgo Salutatione Angelica centies & quinquagesies ad numerum Davidici Psalterii repetita, & Oratione Dominica ad quamlibet decimam cum certis meditationibus totam ejusdem D. N. JESU CHRISTI vitam demonstrantibus interposita, veneratur, excoGITATUM per S. R. E. Patres propagavit, orandique modo prædicto per affectus B. Domini Fratres, videlicet Ordinis prædicti divulgato, & à nonnullis accepto, ceperunt Christiani fideles iis precibus inflammari in alios viros repente mutari, hæresim tenebre remitti, & lux Catholice fidei aperiri, & ad hanc orandi formam pro locorum diversitate Sodalitates per Fratres ejusdem Ordinis ad hoc à suis Superioribus legitime deputatos institui, & Confratres in eis describi.

§. 2. Nos quoque illorum prædecessorum vestigia sequentes, militantes hanc Ecclesiam divinitus nobis commissam, his temporibus tot hæresibus agita-

Derogatio contrariarum.

Publ. P. A. 4. die 18. Jun.

Edita An. D. 1569.

Oratio ad Deum in vexationibus proficua.

Psalterium instituit B. Dominicus ad deprimendas hæreses.

Hic Pont. ex causis hic indicatis illud servari admonet.

tam, tot bellis, pravisque hominum moribus atrociter vexatam & afflictam, cernentes lachrymabundos, sed spei plenos oculos in montem illum, unde omne auxilium provenit levamus, & singulos Christianifidelibus ad simile faciendum benignè in Domino hortamur, & monemus.

§. 3. Utque facilis modus ille ab omnibus cum ea quæ decet devotione, & mentis Religionisq; Christianæ sinceritate amplectatur, auctoritatis nostræ partes, quantum nobis ex alto conceditur, favorabiliter impartientes, modum orandi & precandi prædictum, omniaq; & singula indulta, indulgentias, peccatorum remissiones, relaxationes, immunitates, privilegia, & alias gratias per quoscumq; Rom. Pontifices Præfessores nostros, & dictæ Sedis, etiam de latere Legatos, ac alios Apostol. ad id auctoritate suffultos, & præcandi modum prædictum orantibus, & Confraternitatibus, seu Sodalitatibus, sub dicto Rosario institutis, & illarum Ecclesiis, seu Altaribus, aut Capellanis, vel Confratribus, aut Sodalibus, tam Motu proprio, & ex certa scientia, five in genere, vel in specie, quam alias quomodolibet, etiam pluries concessa, confirmata & innovata, quorum omnium & singulorum tenores & compendia, præsentibus haberi volumus pro expressis & insertis, eadem auctoritate harum serie perpetuè confirmamus, & approbamus, ac illis perpetuè & invariabilis firmitatis robur adjicimus. Necnon potiori pro cautela, præmissa omnia eisdem modo & forma, quibus concessa reperitur, etiam perpetuè innovamus.

§. 4. Ac omnibus & singulis Christianifidelibus utriusque sexus Confratribus, per dilectos filios nostros & pro tempore existentes Fratres Ordinis prædicti in suis, & tam per eos quam per alios Sacerdotes, etiam in aliis Ecclesiis à dilecto filio, etiam moderno & pro tempore existente ipsius Ordinis Generali Magistro, vel ejus Vicario dumtaxat deputatos, in hujusmodi Sodalitatem, seu Confraternitatem Rosarii receptis & descriptis, Ecclesiis, Altaria, & Capellas hujusmodi visitantibus, necnon Deo preces juxta Rosarii modum prædictum effundentibus, quod omnibus & singulis indultis, indulgentiis, peccatorum remissionibus, relaxationibus, privilegiis, aliis gratiis præfatis frui, uti, potiri & gaudere.

§. 5. Necnon eisdem Confraternitatibus, seu Sodalitatibus, quod illarum ad id deputati Confratres omnia & singula oblationes & legata, seu donationes, aut alias quovismodo, five in testamento five codicillis, aut alia ultima vel inter vivos voluntate illis relicta, & erogata, quæcumque, quocumque, & qualiacumque, etiam si speciali nota digna sint, percipere, exigere, levare, & in Confraternitatem hujusmodi pios usus convertere, etiam Ordinarii loci, aut cujusvis alterius licentia desuper minimè petita, libe & licite possint.

§. 6. Et insuper quoque ad senumero Confratrum præfatorum aggregandum, promptior & alacrior fiat, de Omnipotentis DEI misericordia, ac Beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus auctoritate confisi, omnibus & singulis Confratribus prædictis per deputatos prædictos descriptis verè penitentibus & confessis, qui prima vice qua descripti fuerint, sanctissimum Eucharistiæ Sacramentum in aliqua Ecclesia, aut Capella dictæ Confraternitatis perciperint & unam saltem quinquagenam Rosarii recitaverint, & pro tranquillitate Sanctæ Matris Ecclesiæ oraverint, necnon qui in mortis articulo constituti salutaris penitentia & viatici Sacramento muniri fuerint, plenariam omnium & singulorum peccatorum suorum indulgentiam, & remissionem misericorditer in Domino concedimus & elargimur. Quod verò in Resurrectionis Domini Nostri JESU CHRISTI, & Annunciationis, ac Assumptionis ejusdem beatæ Mariæ præfatum Eucharistiæ Sacramentum sumplerint, & partem Rosarii, ut præfertur, recitaverint, decem annos, & totidem quadagenas, eisdem autem Confratribus, qui in reliquis D. N. JESU CHRISTI, & B. Mariæ Virginis præfatorum festis diebus, in quibus sacra ipsius Rosarii mysteria

recensentur, unam saltem Rosarii quinquagenam recitaverint, necnon aliis omnibus & singulis utriusque sexus Christianifidelibus, etiam non Constitutis, qui in ejusdem Rosarii Processione, quæ mense quolibet fieri consuevit, devotè interfuerint, & paciter Confratribus præfatis qui ipsum Rosarium integrum quolibet hebdomada devotè recitaverint, septem annos, & totidem quadagenas de injunctis sibi penitentis, etiam misericorditer in Domino relaxamus.

§. 7. Decernentes Confratres, & alios præfatos à quocumque desuper molestari, præsentemque litteras de subreptionis, vel obreptionis aut nullitatis, aliove vicio, aut intentionis nostræ defectu notari, argui, vel impugnari, & sub quibuscumque, similibus vel dissimilibus graduum revocationibus, alterationibus, limitationibus, insensationibus, aut aliis contrariis dispositionibus comprehendere non posse, sed quoties illa evanaverint, toties in pristinum & validissimum statum restitutas, de novo, etiam sub posteriore data per ipsos deputatos Confratres eligenda concessas, ac perpetuè valias & efficaces esse, & fore, suosque plenarios, & integros effectus sortiri debere.

§. 8. Et ita per quoscumque Judices & Commissarios, quavis auctoritate surgentes etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, & S. R. E. Cardinales, Archiepiscopos, & eorum cuilibet quavis auctoritate, iudiciandi & interpretandi facultate & auctoritate, iudicari & definituri debere, ac ex nunc irritum & inane si secus super his à quocumque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 9. Nos obstantibus quibuscumque Apostolicis, ac in Provincialibus & Synodalibus Conciliis edictis generalibus vel specialibus constitutionibus & ordinationibus, ac Cancellariæ Apost. regulis edictis & edendis, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 10. Volumus autem quod præsentium transumptis manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus persone in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides tam in iudicio quam extra adhibeatur, quæ præsentibus litteris adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensa.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 17. Septembris 1569. Pontificatus nostri anno 4.

Confirmatio & declaratio privilegiorum & gratiarum Collegii Scriptorum Archivii Curie Romanæ.

Hujus Collegii institutionem, ejusque statum vide supra in cons. 15. Julii 11. Sicur. ubi alia notavi in Tomo 1. fol. 492.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memoriam.

PRidem nos anxio sollicitoque animo cogitantes, &c. Collegii erectionem, & institutionem à fel. rec. Julio Papa II. Kal. Septemb. Pontif. sui anno 4. factam, necnon omnia & quæcumque privilegia, facultates, exemptiones, & derogativas, dispensationes, gratias & indulta ab eadem dicta die, & Idibus Dec. dicti anni, necnon à Leone X. Præd. Non. Octob. Pontif. sui anno primo aut alio veriori tempore, necnon aliorum omnium inde usque Rom. Pont. concessionem eidem Collegio & personis, in genere & in specie, tam conjunctim quam divisim factas, & super his omnibus & singulis concessas litteras, scripturas, & instrumenta, ac inde secuta quæcumque, cum prohibitionibus, clausulis, & decretis in eis contentis quæ omnia & singula quæ atque ad verbum præsentibus in certa expressa & repetita habemus, litterisq; super præsentibus concessis in totum vel in partem exprimi, totosque tenores singulorum inferri posse volumus, etiam si talia, & multa sint, quæ speciali expressione indigeant, Motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus renovamus, approbamus, & con-

Hæcque confirmatio una cum his legatis & indulgentiis.

Et Confratribus Sodalitatibus in partem à Deputatis Ordinibus S. D. O. rici omnes gratias concedit.

Et etiam facultatem percipiendi legata.

Indulgentiæ que hic de sumptis.

Claufulæ præservati-væ.

Decretum irritatis.

Claufulæ derogatoriæ.

Fides exemplorum.

Dat. P. An. 4. die 17. Sept.

LXXXVII.

Edita An. D. 1569.

Confirmatio cons. iustitiae in rub. & a ter. us Leon. X. prætermittit, tanquam nihil relevans continens.

Concessio,
quod scripto-
res Archivii
sint Notarii
causarum co-
muni et ejus-
demque Ju-
dicii Com-
missarii.

firmamus, effectumque plenarium & integrum pro-
fusi fortiri volumus, ac omnes & singulos juris & fa-
cti defectus si qui intervenerint in eisdem supplemus.
Decernentes illa omnia, perpetuum & inviolabile
robore obtinere, ac irritum &c. attentari.

§. 1. Quin etiam in perpetuum ampliamus, &
appropriamus, ac etiam annectimus, unimus & in-
corporamus dicto Collegio scripturas præfatas, ac
omnia & quæcumque jura, fructus & emolumenta
ratione officiorum Notariatum eorum omnium. Ju-
dicum ordinariorum, & Commissariorum Curie &
Urbis in præfata institutione expressorum; quibus
etiam S. R. E. Cardinales adiungimus, & similes etiam
si ordinarij dicantur comprehendimus. Ut vetò
in habendo proborum peritorumque Notariorum
defectum melior deinceps ratio capiat, statuimus ut
posthac, in omnibus & quibuscumque causis coram
præfatis Judicibus etiam Cardinalibus quomodo-
cumque habendis & agendis, Collegium ipsum No-
tarios idoneos qui in ejusmodi causis scribant consti-
tuere debeat. Nullique omnino ipsorum Judicum
etiam Cardinalium alios Notarios, etiam dicti Archi-
vii scriptores in causis hujusmodi pro arbitrio consti-
tuere possint, sed eos dumtaxat assumere teneantur,
quos Collegium præfatum suo ex gremio, in genere
vet in specie daverit eligendis. Decernentes alias
quascumque constitutiones, ordinationes, & assump-
tiones Notariorum, etiam de dicti Collegii Scripto-
ribus, live in genere, live in specie, tam per Judices
etiam Cardinales, quam etiam Sedem Apostolicam
ex quibuscumque causis, etiam motu simili, & po-
testatis plenitudine similibus, ne non processus &
alia quæcumque coram eisdem Judicibus, etiam
Cardinalibus aliter facienda, irrita & inania esse,
vinibulque & effectu care. Notariosque tamquam
falsi reos puniri debere. Ceterum Collegium præ-
fatum rationes, & curas omnes hujusmodi proces-
sum, scripturarum, & instrumentorum, etiam præ-
teritorum omni tempore habeat, omnia & quæ-
cumque emolumenta, ordinaria & extraordinaria
inde quomodocumque provenientia, ad commu-
nem usum percipiat, & delegandis live substituendis
Notariis suis stipendia constituat, vel aliis super hoc
conveniat cum eisdem &c.

Decretum
imitans.

§. 2. Sique in his & aliis præfatis omnibus & sin-
gulis per quoscumque, etiam causarum Palatii Apo-
stolici Auditores, ac S. R. E. Cardinales, ad Cameram
ipsam, in quavis causa & instantia, sub lata &c. judi-
cati &c. debere &c. nec non irritum &c. attentari.

Derogatio
contrario-
rum.

§. 3. Non obstantibus præmissis, & Pauli Secun-
di, Tertii, & Quarti, aliorumque Romanorum
Pontificum, ac nostris de rebus Ecclesie non alienan-
dis, & alienatis revocandis, ac alias constitutio-
nibus & ordinationibus Apostolicis, etiam de gratis
ad instar non concedendis Cancellarie Apostolicæ
regulis editis & edendis, ejusque & dictæ Camere
earumque Collegiorum, & etiam Urbis Romæ jura-
mento &c. roboratis, statutis &c. nec non institutio-
ne & fundatione, ac veteri stylo quancumque tem-
pore observato, privilegiis quoque, indultis, & lit-
teris Apostolicis, illis, eorumque personis omnibus
& singulis, etiam per modum statuti perpetui, ac
initi & stipulati contractus, & aliis quibuscumque
tenoribus & formis, ac cum quibuscumque derogato-
riorum derogationis aliisq; efficacioribus, efficacis-
simis & insolitis clausulis irritantibusque, & aliis de-
cretis per præfatos, & alios quoscumque alios Roma-
nos Pontifices, ac nos & dictam Sedem ex quibus-
cumque causis, etiam Motu, & scientia, & potesta-
tis plenitudine similibus, ac etiam Confissorialiter
concessis, confirmatis, ac etiam iteratis vicibus ap-
probatis, quibus omnibus, etiam si de illis &c. teno-
res &c. in genere & in specie ad effectum sufficientis
derogationis eorum latissimè extendentes Motu,
scientia, & potestatis plenitudine similibus deroga-
mus, necnon omnibus illis, que in singulis litteris
præfatis concessum esse non obstat, ceterisq; contra-
riis quibuscumque, cum clausulis opportunis &c.
Fiat Motu proprio. M.

Papa subscr.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, quinto-
decimo Calen. Augusti, Anno quarto.

Cosmus Medices Reipublicæ Florentinæ Dux, ejus-
que successores Magni Duces Etruriæ creantur.

*Iste Cosmus Militiam S. Stephani, de licentia Pii IV.
instituit; ut sup. in ejusdem Pii constitut. 60. Ha-
que, fol. 91. ubi de ea dixi in hoc Tomo 2.*

PIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuum rei
memoriam.

Romanus Pontifex in excelso militantis Ecclesiæ
Throno disponente Domino super gentes &
Regna constitutus post perustratas sue indefessæ
mentis acie Orbis Christiani Provincias, circumspen-
da sua providentia præclaros, ac principes viros,
qui de Sancta Sede Apostolica, fideque Catholica
benemereri videntur, singulari suæ benignitatis
clementia, quantum sibi ex alto conceditur, au-
gere, eosque insignibus, ornamentis, ac speciosis
honorum titulis decorare, atque illustrare consue-
vit, necnon alias disponit, prout temporum, lo-
corum, & personarum qualitate pensata, conspici-
t in Domino salubriter expedire.

§. 1. Sanè cum nos his nostris lucuosissimæ tempe-
statis diebus, animo nostro diu multumque gravissimo
cum dolore versaremus, quot & quantæ pestiferarum
hæresum sectæ quotidie undique erumperent, diraq;
& exitiosa perditorum hominum à fide Catholica
aberrantium semina passim serperent, & usquequaq;
propagarentur, omnia Italia loca circumspicentes,
Etruria. Provincia nobilitatis decore, & antiquita-
tis nomine à majoribus celebrata, cujus maxima
pars, quæ nobis & ipsi Apostolicæ Sedi subiecta non
est, ab omnibus ferè lateribus ditioni nostræ Eccle-
siæ contermina atque conjuncta existit, nobis
præcipue occurrit, quam divine primum bonitatis
gratia, sollicitudineque ac vigilantia nostra, deinde
præstantissimi ac Religiosissimi ejus Principis virtute,
consilio, diligentia, præ ceteris intactam & incorrup-
tam, ab hujusmodique perniciofa labe & contagio-
ne, sanctam rectam conservatam esse conspiciamus.

§. 2. Huc accedit, quod professè magnopere nos
moveret, Sedem Apostolicam, cum ob regionis vici-
nitatem, tum propter loci opportunitatem gratissi-
ma plerumque obsequia, atque etiam comoda
subministratis ab Etruscis auxiliis à multis jam ante
seculis recepisse, idque complures Romanos Pontifi-
ces prædecessores nostros, & præsertim fel. record.
Innocentium Quartum, Clementem etiam Quar-
tum, Gregorium Decimum, Benedictum Undeci-
mum, Martinum Quintum, & Leonem Decimum
luculenter testatos fuisse, adeo ut tam eandem Pro-
vinciam, quam ejus Rectores & Magistratus ob pec-
uliarem eorum erga Romanam Ecclesiam devotio-
nem & observantiam, propenso paternoque affec-
tu, variis gratiis, honoribus, ac privilegiis jure
cohonestandos, atque ornandos esse duxerint.

§. 3. Quibus rebus debita meditatione maturè cõ-
sideratis, attendentes quoque in primis, quod dilectus
filius vir Cosmus Medices Reipublicæ Dux, majorem
in dies suæ eximie virtutis splendorem, ferventior-
emq; Catholicæ Religionis cultum, & in administran-
da justitia præcellens studium, ex eo tempore quo
imperare cepit, nusquam prætermisum, laudabiliter
præferre non cessat. Quod omnibus in occasio-
nibus, nobis, ac Prædecessoribus nostris, & Apostolicæ
Sedi, prompto ac libenti animo obsequi semper stu-
derit. Quod nos & eandem Sedem ab ipso nostri
Pontificatus initio continuato debite reverentia
honore coluerit, mandatis nostris filiali obedientia
paruerit, honestis nostris petitionibus obsequen-
tissimè morem gesserit. Quod à nobis requisitis,
cepta nostra pecuniis, pediatu, equitatuq; alacriter
juverit, præsertim pro ferendo auxilio Carissimo in
CHRISTO filio nostro Carolo Francorum Regi Chri-
tianissimo, adversus ejus rebelles, & hæreticos, cen-

LXXXVIII.

Edita A. D.
1569.

Exordium.

Etruriæ
Provincia
commendan-
tio.

Maximè ob
ejus obse-
quia Roma-
nis Pont.
præstita.

Qua signan-
ter Cosmus
Medices præ-
stare studuit
& præstitit.

Militiam S.
Stephani in-
stituit.Statum firmo
optimè regit.Præclara
multa opera-
tur.Superiorum-
que in suo
dominio non
recognoscit.Creatio Col-
mi Medices,
& ejus suc-
cessorum in
Magnos Du-
ces Etruriz.Quam intel-
lige, ut hic
in hæc.

tum etiam aureorum millia, ultra alia, illi motuan-
do, hortatu nostro id fecerit. Quod majora, si usus
venerit, ad Catholicæ fidei defensionem, & incre-
mentum se præstaturum ultro pollicetur.

§. 4. Quod pro inclyta ejus in Deum pietate,
superioribus annis, Militiam Sancti Stephani, ad
sanctæ fidei exaltationem ac propagationem insti-
tuerit, bonis ditaverit & ampliaverit.

§. 5. Quod universæ prope provincie Etruscæ
imperferutabili DEI judicio ad summæ dignitatis po-
testatem civium Florentinorum assensu vocatus felici-
ssime præsit ac dominetur. Quod delatum sibi ad-
mirabiliter Principatum admirabilibus regat & mode-
retur, illumque incomparabili prudentia ac sapien-
tia, in pacis ac justitiæ amicitia, ab ineunte ejus
ætatē diligentissimè contineat & conservet.

§. 6. Quod terra marique præpotens existat, Quod
Piratis, facinorosis, ficiariis, quietis & otii turbatori-
bus, necnon nostris & hujus Sanctæ Sedis rebellibus,
& adversariis hostis acerrimis, scelorumque & deli-
ctorum severus vindex sit. Quod numerosa ac fre-
quenti populorum ei subditorum Deo benedicente
multitudine, copiosis grandibusque redditibus, &
amplissimis proventibus gaudeat, & fruatur. Quod
validus pedum & equitum numerus in omnes usus
ei præsto semper esse possit. Quod quamplures floren-
tissimas Urbes, tam Cathedralium quam earum non-
nullas Metropolitanarum Ecclesiarum dignitates insi-
gues, ac Studiorum generalium universitatibus ornatas,
munitissimos portus, validissimas arces, loca tutissi-
ma, trecentum classem paratam, & instructam tam ad
Tyrrheni sui maris, quam etiam ad nostræ oræ mari-
timæ tutelam habeat, Quod rerum omnium copia,
Ditionis amplitudine, locorum ubertate, continua
vitæ felicitate, demumque gentis celebris admodum
& opulente viribus firmissimè subnixus viget. Quod
cuncta hæc ipsa bona per immensam Dei omnipoten-
tiam benigntatem sibi elargita, ad divinum hono-
rem & gloriam paratissima semper fore profiteatur.

§. 7. Quod absoluta potestate ratione liberi & di-
recti domini Florentini nemini sit subiectus ita ut
juxta distinctionem piæ memoriæ Pelagii similiter
Romani Pont. prædecessoris nostri, uti Rex &
Magnus Dux ac Princeps merito existat, & inter
ceteros Magnos Duces, ac Principes re ipsa esse,
censeri & connumerari possit, & debeat.

§. 8. Nos igitur tot ac tantis rationabilibus, di-
gnisque de causis, clarissimis quoque ipsius Cosmi
Ducis erga nos & Sedem eandem meritorum, & offi-
cium monumentis induci firmæque spe freti. quod
is, & ejus Successores, collati nostri in eos beneficii
memores debiamus nobis, futurisque Romanis Pon-
tificibus grato animo fidei ac devotionis sincerita-
tem, perpetuò exhibere, conservareque studebunt.
Attendentes etiam, quod sanè plurimi facimus, di-
ctum Cosmum Ducem, ac dilectum filium nobilem
virum Franciscum ejus filium primogenitum artibus
admodum assinitis, sanguinis & necessitudinis
vinculis cum carissimo in Christo filio nostro Maxi-
miliano in Imperatorem electo, & maximis Chri-
stiani nominis Regibus conjunctos esse, eosque à no-
bilissima stirpe Medicea multis honoribus & titulis
decorata, & ex qua tot illustres proceres, ac tres Ro-
mani Pontifices prodierunt, ortum habere. Propterea
eundem Cosmum Ducem specialibus favoribus,
& gratiis paternè benignèque prosequi volentes, ip-
sumque à quibuscumque excommunicationis, suspensio-
nis & interdicti, aliisque Eccl. sententiis, censuris &
pœnis à jure vel ab homine quavis occasione vel causa
latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad
effectum præsentium dumtaxat consequendum, ha-
re n serie absolventes, & absolutum fore censentes,
Motu proprio non ad ipsius Cosmi Ducis, seu alterius
pro eo nobis super hoc oblata petitionis instantiam,
sed ex certa scientia, maturaque deliberatione &
metu liberalitate nostris, ac de supremæ nostræ Aposto-
licæ sedis plenitudine, tam dictorum Prædecesso-
rum, quam etiam Alex. III. & Innoc. pariter III. ac
Pauli IV. similiter prædecessorum nostrorum, qui

Portugalizæ, & Bulgarorum, ac Blancorum, necnon
Hiberni Reges, & ut tunc Dux Bohemæ, Rex in suis
litteris nominari possit, respectivè creantur, consti-
tuerunt & concesserunt, aliorumque Romanorum
Pontificum erga diversos Principes exempla sequen-
tes, vestigiis inhaerentes, ut potissimum ceteri
Principes hoc exemplo invitati ad bene de sancta hac
Sede promerendum incitentur, eundem Cosmum
Ducem ejusque Successores pro tempore existentes
Duces perpetuis futuris temporibus in Magnos Du-
ces, & Principes Provincie Etruriz sibi pro maxi-
ma illius partē subjectæ, & in ipsa Provincia respec-
tivè auctoritate Apostolica tenore præsentium crea-
mus, constituimus, pronunciamus, declaramus, Mag-
norumque Ducum Etruriz Provincie, ut præfer-
tur, ejus subjectæ, nomine, titulo, & denominatione
extollimus, & amplificamus, necnon eos dictæ Etrur-
iz Provincie eis subjectæ Magnos Duces, & Principes
ad omnibus nominari, appellari, inscribi, dici, ha-
beri, censeri & tractari debere volumus, præcipimus,
ac mandamus, atque Cosmum Magnum Ducem,
ejusque Successores præfatos omnibus & singulis
exemptionibus, immunitatibus, libertatibus, favo-
ribus, præeminentiis, prerogativis, indultis, privi-
legiis, aliisque quibuslibet gratiis, & honoribus quibus
alii verè liberi, & directi Domini, ac Magni Du-
ces, & Principes etiam Ducali, aut alia quavis etiam
majori dignitate præfulgentes, a quacumque libera,
& absoluta potestate fungentes, in genere vel spe-
cie, in quibuscumque locis, pompis, lesionibus, cele-
britatibus, caeremoniis, & adibus publicis vel pri-
vatis, tam de jure quam de consuetudine, etiam in
Aula nostra Vaticana, & ubique Terrarum, etiam si
aliqui alii Magni & similes Duces & Principes præ-
sentes fuerint, quoquo modo utantur, fruuntur, po-
teantur & gaudere in futurum quomodolibet pote-
runt. & soliti sunt, non quidem ad illorum instar,
sed pariformiter, & absque ulla proflus differentia
uti, frui, potiri & gaudere posse ac debere.

§. 9. Et insuper in evidens clarumque propensæ
nostræ voluntatis erga dictum Cosmum Magnum
Ducem testimonium, certamque dilectionis signifi-
cationem, eum amplioris quoque gratiæ, & favoris
prærogativa, maximè dignum censentes, ut juxta
sententiâ Clementis Quarti prædecessoris nostri præ-
dicti, ex majore decore ornatum, majoritæ appa-
reat dignitatis, ipsum Cosmum Magnum Ducem, &
ejus Successores hujusmodi Regali Corona, ut infe-
rius depingi mandavimus, qua super eorum gentili-
bus insignibus, ad illustrius nobilitatis ipsorum decus
& ornamentum, uti, eamque portare, ferre, & gesta-
re, depingere & insculpi facere libere & licite pos-
sint & valeant, motu, scientia, ac potestatis pleni-
tudine similibus decoramus, exornamus, & insigni-
mus, decoratosque exornatos & insignitos fore & esse.

§. 10. Præsentem litteras de subreptionis, vel
obreptionis vicio, aut intentionis nostræ, seu quo-
cumque alio defectu ex quavis etiam quantumlibet
justissima, & urgen- tissima, rationabilique causa nullo
umquam tempore à quoquam notari vel impugnari
posse, sed illas validas & efficaces perpetuò fore &
esse, fuisseque plenarias, totales & omnimodos effe-
ctus sortiri posse ac debere in omnibus & per omnia,
ac si consistorialiter & de Fratrū nostrorum
consilio factæ, & in ipso Consistorio nostro secreto
lectæ fuissent.

§. 11. Sicque per quoscumque Judices etiam Im-
periali, Regali, Ducali, vel quavis alia excellentia, ac
dignitate præditos, & alios Commissarios qualibet
auctoritate fungentes, etiam causarum Sacri Palatii
nostri Auditores, & S. R. E. Cardinales, sublati eis,
& eorum cuilibet quavis alteri judicandi, sententiandi,
definiendi, & interpretandi, facultate & auctori-
tate, judicari, definiri & interpretari debere, ac
quicquid secus super his à quoquam quavis aucto-
ritate scienter, vel ignoranter contigerit attentari,
irritum & inane decernimus & declaramus.

§. 12. Non obstantibus quibuscumque constitutionibus,
ordinationibus Apostolicis, ac Provincialium, Civita-

Corona Re-
galis dona-
tio.Clausula
præservativa.Decretum
imparis.Clausula de-
rogatoria.

tum, & locorum quorumlibet statuta & consuetudinibus, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, illis & quibuscumque aliis personis etiam Ducibus quibus forsitan per Sedem Apostolicam concessum sit, quod privilegiis, præminentiis, favoribus, indultis & gratiis ad instar Magnorum Ducum, perinde ac si ipsi magno Duces realiter & cum effectu essent, uti & gaudere possint, in genere vel in specie, sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, & quantumcumque efficacissimis clausulis, & decretis quomodolibet concessis, confirmatis & innovatis (quibus omnibus etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa & individua, ac de verbo ad verbum mentio seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua exquisita forma ad hoc servanda esset, eorum omnium tenores præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat ad effectum præsentium specialiter & expresse derogamus totaliterque & latissime derogatum esse volumus & decernimus) ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 13. Salva nihilominus in nostris dictæ Provincie, Civitatibus, & locis, nostra & Romanæ Ecclesiæ auctoritate, jurisdictione, & potestate, necnon Imperatoris, & Regum superioritate, jurisdictione, ac quibusvis iuribus respectivè in locis mediatè vel immediatè eis subjectis, ac citra aliquod præjudicium Civitatum, Terrarum, & locorum in eadem Ethruziæ Provincia consistentium, quæ non sunt ditionis dicti Cosmi Ducis, nec ei quomodolibet subjecta sunt, neque aliquo modo obediunt.

§. 14. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrorum abolitionis, creationis, constitutionis, pronuntiationis, declarationum, amplificationis, voluntatum, præcepti, mandati, decorationis, exornationis, insignitionis, & derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare presumpserit indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursum.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo sexagesimo nono, 6. Kal. Septemb. Pontificatus nostri Anno 4.

ipforum Ordinum ritus moreque maledictis insequuntur.

§. 1. Quocirca cum ejusmodi privilegia veniant abroganda, quandocumque insigniter comperiuntur nocere, vel etiam scandalum generare, nos his, aliisque rationabilibus causis adducti, & ut quibuslibet hujusmodi effugia præcludamus, de nobis attributa potestatis plenitudine revocamus & abolemus omnia & quæcumque privilegia, facultates, dispensationes, & indulta præter juris communis dispositionem emanata, recipiendi, vel retinendi Fratres, Monachos, Canonicos & alios etiam laxiorum Ordinum professores, quibuscumque Ordinibus, Monasteriis, Hospitalibus, Militiis & piis locis, etiam Sancti Antonii Viennensis Sancti Spiritus in Saxia de Urbe, S. Joannis Hierosolymitani, JESU CHRISTI, Sancti Jacobi de Sparha, Sancti Lazari Hierosolymitani, eorumque Ecclesiis, membris, Superioribus, & personis, per quoscumque Rom. Pont. prædecessores nostros, ac nos, & Sedem Apostolicam, tam in ipforum Monasteriorum Hospitalium & locorum institutione, quam deinceps quomodocumque, ac quotiescumque, etiam per modum statuti perpetui, ac initii & stipulati contractus & aliis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibusvis restitutionibus, præservationibus, mentis attestationibus, derogatoriis derogatoriis, aliisque fortioribus, efficacioribus, efficacissimis & insolitis clausulis, necnon irritantibus & aliis decretis, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, deque simili potestatis plenitudine, etiam pauperum infirmorum miserabilium, & cunctis ac aliis piis operis intuitu, ac etiam ex quibuscumque aliis causis, quantumvis gravibus, caritativis & necessariis, etiam consideratione, vel ad supplicationem Imperatorum, Regum, aliorumque Principum, necnon Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalium, deque illorum consilio, & matura deliberatione prius habita, concessa, confirmata, ac etiam multiplicatis vicibus innovata, extensa, vel etiam moderata. Cassamus quoque & annullamus, quoad illa, omnes Apostolicas, & alias litteras super iis concessas, ac processus, & alia inde secuta quæcumque.

§. 2. Ac volumus ea omnia, vires & effectum de cetero non habere, ita ut posthac illorum sic revocatorum prætextu, Prælati & Superiores prædicti, aut alii quicumque nullum prorsus alterius, etiam laxioris Ordinis, vel observantiæ regularem, etiam specialem transeundi ad ipsos licentiam (juxta hujusmodi privilegia dumtaxat) ferentem, ad habitum & possessionem regularem in suis quisque Monasteriis, domibus, locis, vel Ordinibus, etiam ut in claustris perpetuo maneat, admittant, nec omnino quemquam recipiant, vel retineant. Eos verò, quos in aliquo ex casibus supradictis (vigore hujusmodi privilegiorum tantum, ac præter juris communis dispositionem) jam habent translatos ad eorum Superiores, & loca ejus Ordinis unde erant profecti, quamprimum remittant.

§. 3. Decernentes admissiones, receptiones, & retentiones hujusmodi nulla firmitate subsistere, neminemque prorsus ulli voto, ullive regulæ, vel observantiæ, etiam juramento, aliave solemnitate promissæ obligare, necnon irritum & inane quicquid fecus per prædictos, aut quoscumque alios quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 4. Quicumque verò aliquem contra hujus nostre revocationis tenorem admisserint, aut receperint, aut illos, aut quos jam habent, modo prædicto, translatos, aut receptos retinuerint, ipsos omnibus & singulis dignitatibus, administrationibus, beneficiis, officiis, fructibus, & pensionibus Eccl. præsentium auctoritate privamus, ad futura inhabiles esse volumus eo ipso.

§. 5. Quocirca omnibus locorum Ordinariis, in quorum Diocesis loca prædicta consistunt, per Apostolica scripta mandamus, ut per se vel alium seu alios

Revocatio privilegiorum recipiendi vel retinendi Regularis alterius Ordinis etiam laxiores.

Prohibitio de cetero eos accipendi.

Annulatio litterarum Apost. defectu per contractum, & processum &c.

Contravenientium poena.

Ordinarii contra prædictos præcedant.

Declaratio quod talis creatio non præjudicat jurisdictioni S. R. E. nec Imperatoris, Regum &c.

Sanctio poenalis.

Dat. P. A. 4. die 27. Aug.

LXXXIX.

Edita An. D. 1569.

Hæc dispositio Concilii Tridentini habetur in sess. 14. c. 1. & sess. 21. c. 19. de Regularibus.

Revocatio indultorum præter juris communis dispositionem concessorum, recipiendi vel retinendi Religiosos alterius Ordinis, etiam laxioris.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Quæcumque sacrum Religionum statum offendere noluntur, nostrum nos incitat officium de medio remove. Quamquam enim de cohibendis Regularibus ad alium Ordinem translatis Sancta Synodus Tridentina salubri consilio decrevit, ut nemo quuscumque Ordinis Prælati, vel Superior vigore cujusvis facultatis, illorum quæpiam ad habitum, & professionem admittere possit, nisi in Ordine ad quem transfertur, sub sui Superioris obedientia in claustris perpetuo maneat, multi tamen Superiores, & Prælati, obtentu privilegiorum, quamplurimos Apostatas & alios diversorum Ordinum ad se ob jurgia, contentiones, levitatem, & malefacta, ut maxime fugientes, eo etiam consilio receptare non desunt, ut illorum opera in curandis infirmis, gerendisque eorum locorum rebus, & negotiis utantur, ex qua re plerique solutionis effecti, & quasi impunitatem affecti, non personas tantum eorum Ordinum, unde animadversionis metu forte exierant, sed &

alios de translatis prædictis auctoritate nostra cognoscentes, in eos quos contra hoc præscriptum nostrum degere invenerint, ac etiam recipientes, vel retinentes, reſcindo quocumque exemptionis privilegio animadvertant, ipſosque præterea translatos, vel retentos, ad Priores Ordines, & disciplinam remittere procurent. Contradiſtores quoſcumque per cenſuras & penas Eccleſiaſticas, ceteraque juris & facti remedia opportuna, quacumque appellatione poſtpoſita compellendo, invocato etiam ad hoc ſi opus fuerit auxilio brachii ſæcularis.

Clauiſulæ de-rogatoriæ.

§. 6. Non obſtantibus conſtitutionibus & ordinationibus Apoſtolicis, ac Monaſteriorum, Hoſpitalium, Militiarum, Ordinum & locorum prædictorum iuramento, confirmatione Apoſtolica, vel quavis firmitate alia roboratis, ſtatutis, conſuetudinibus, ſtabilitatis, uſibus & naturis, quodque Prælatiſ, & Superioribus prædictis, vel quibuſvis aliis communiter vel diſiſim prædicta ſit Sede indultum, quod litteris revocatoriiſ ſub quacumque formula editis nullatenus, vel niſi modis, & formis in huiſmodi indultis contentis parere, & ob non paritionem aliquas cenſuras & penas incurrere, aut alias interdici, ſuſpendi, vel excommunicari non poſſint per litteras Apoſtolicas non facientes plenam & expreſſam, ac de verbo ad verbum de indulto huiſmodi, necnon Monaſteriis, Hoſpitalibus, Militiis, & Ordinibus huiſmodi mentionem, & quibuſlibet aliis privilegiis, exemptionibus, indulgentiis & litteris Apoſtolicis generalibus & ſpecialibus, etiam Moru, ſcientia & poſſeſſatis plenitudine prædictis, conceſſis, cuiuſcumque tenoris exiſtant, per quæ præſentibus non expreſſa vel omnino non infera, effectus earum impediri valeat quomodolibet vel diſſerri, & de quibus quorumque totis tenoribus habenda, ſit in noſtris litteris mentio ſpecialis, quæ omnia nolumus cuiquam contra prædicta in aliquo ſuffragari, ceterique contrariis quibuſcumque.

Fides exem-
plorum.

§. 7. Volumus autem, ut ipſarum præſentium exempla edantur, eademque etiam impreſſa, Notarii publici manu, & Prælati Eccleſiaſtici, ejuſve Curie ſigillo obſignata, eandem illam ubique locorum fidem in iudicio & extra illud faciant, quam ipſæ præſentes facerent, ſi eſſent exhibitæ vel oſenſæ.

Nulli ergo omnino hominum, &c. Si quis autem, &c.

Dat. P. An. 4.
die 14. Oct.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ milleſi no quingentiſimo lexxgeſimo nono, Prid. Id. Octobris Pontificatus noſtri Anno quarto.

Publi.atio.

Anno à Natiuitate Domini 1569. Ind. 12. die verò 1. menſis Decembriæ, Pontificatus Sanctiſſimi in Chriſto Patris, & D. N. D. Pii diuina providentia Papa V. Anno quarto reſcripta litteræ Apoſt. leſſæ affixæ, & publicatæ fuerunt ad valvas Baſilicarum Lateranenſ. Principis Apoſtolorum de Urbe, & Cancellariæ Apoſtolicæ, ac in acie Campi Floræ, diſmiſſis in omnibus ſupradictis locis earumdem reſcriptarum litterarum copiis affixis per nos Julium Parinum, & Joannem Bornotum prædicti S. D. N. Papæ Curſi.

Scipio de Oſſavianis Mag. Curſi.

XC.

Reformatio officii Correſtoris Cancellariæ Apoſtolicæ, & litterarum minoris Juſtitie contradic-tarum nuncupatarum.

Aliam reformationem fecit Pius IV. ut ſupra in ejus conſtit. 54. Univerſi. fol. 77. Et de materia Cancellariæ atende ſup. Mart. V. conſt. 3. In Apoſtolicæ. Tom. I. fol. 298. cum ibi notati.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D
1569.

Caſa huius
reformationis.

Romani Pontificis circumspecta providentia nonnumquam geſta per Romanos Pontifices

Prædeceſſores revocat & moderatur, prout in Domino ſalubriter expedire conſpicit. Hunc eſt, quod ad reformationem litterarum officii Correſtoris minoris Juſtitie contradic-tarum nuncupatarum Cancellariæ Apoſtolicæ atrendentes, licet à felic. rec. Pio Papa IV. prædeceſſore noſtro quamplura ſalubria ſtatuta & ordinata fuerunt, tamen quia experientia compertum eſt propter nimias ſubtilitates adhuc ſæpe ex dicto officio reſcripta contra mentem noſtram in grave partium præjudicium emanare, quibus, prout ex debito officii noſtri tenemur, providè conſulere volentes, hac noſtra conſtitutione perpetua ſtatuiamus, decernimus atque prohibemus.

§. 1. Ne Correſtor & Procuratores Collegii officii litterarum præſatarum ex officio, ut antea, commiſſiones cauſarum ſub quacumque forma & ſubrogationes, & Judicum mutationes concedant, niſiſque Judicibus ordinariis, aut aliis delegatis aliquos illis adjungant, aut quorumvis teſtium, etiam ad perpetuum rei memoriam examen ipſi delegent, neque litteras ad effectum revelationis, aut aliquid reſtituendi, aut deponendi, ſeu teſtimonium veritatis perhibendi contra occultas perſonas in forma ſignificavit, concedi ſolitas, aut litteras, quas juris declaratorias ſuper Religionis validitate, aut quibuſvis aliis quæſtionibus, cauſis & negotiis, & quas conſervatorias appellant, expediant, ſed omnes ad nos & futurum Rom. Pont. referantur per ſignaturam noſtram, aut ejuſdem Rom. futuri Pont. expediendas & decidendas, prout negotiorum & perſonarum qualitas, ac rei gravitas, & neceſſitas poſtulerit. Litteras verò commiſſionum ſecundum ſupplicationes huiſmodi, ſuper negotiis cauſis, & quæſtionibus præſatis ſignandas, Correſtor, & Collegium huiſmodi per illius officium expediat.

§. 2. Poſſit tamen idem Correſtor, ut antea ex officio litteras ſuper confirmatione contradic-tarum ad ſupplicationem partium, & five alterius præjudicio ac ſententiarum, & laudorum de conſenſu partium cum ſolicis clauſulis in forma communi expedire.

§. 3. Regulas Cancellariæ non niſi de conſenſu S. Rom. Eccl. Vicecancellarii, aut illius Regentis concedat.

§. 4. Abſtineat verò Correſtor & Collegium præſatum quibus juſtitia majoris litterarum expeditio commiſſa ſit ab omnibus materiis beneficiis, tam principalibus quàm acceſſoriis, & materiis perpetuis, necnon à conſeſſione abſolutionis à cenſuris, ſeu commiſſionibus illarum.

§. 5. Licentias teſtandi niſi pro ſumma centum ducatorum, juxta formam in quinterno Cancellariæ noſtræ traditam, concedat, & dummodo aliam ſimilem non obtinuerint, & quod in omnibus licentias præſatis hæc clauſula (dummodo ſimilem antea non obtinuerint) apponatur.

§. 6. In confirmationibus ſtatutorum, conſtitutionum, ordinationum, & privilegiorum, ſe non intromittat.

§. 7. Licentias alienandi bona Eccleſiaſtica, ſeu ad loca pia pertinentia, confirmationes alienationum huiſmodi bonorum, cuiuſcumque etiam modicæ quantitatis exiſtant, ipſe non attingat, nec expediat.

§. 8. Litteræ verò per Correſtorem & officium præſatum expediendæ ad Bullariam non mittantur, niſi prævio examine, & cenſura Vicancellarii, aut Regentis & in eadem Cancellaria noſtra de majori præſidentia aſſentium probatæ fuerint, poſt cuius judicium neque Correſtor aut quivis alius manu eas immutando, ſub pena falſi apponat.

§. 9. Abſtineat quoque ab omnibus materiis concernentibus ſtatum & perſonas regulares utriuſque ſexus cuiuſcumque Ordinis.

§. 10. Conſiciant præterea Procuratores præſati Archivium in Palatio noſtro Apoſtolicò, in loco per

Correſtores
& Procura-
tores abſti-
neant à com-
miſſionibus
cauſarum &c.

Correſtor
concedat cõ-
firmationes
contradictum
& ſenten-tia-
rum ut hic.

Regulas aliis
non det.

Beneficiales
materias non
expediat.

Licentias te-
ſtandi quas
concedat.

Statuta &
privilegia
non confir-
met.

Licentias
alienandi
non det.

Litteræ per
Officiales
examinentur.

Materias Re-
gularium
non tangat.

Procuratores
Collegium
faciant.

Contra hanc
Bullam Pii IV.
nil agant.

Decretum
guitans.

Derogatio
contrariis.

Supplicatio-
nes commul-
sionum quo-
modo expe-
dien.

Taxa non
augetur.

Litteræ regi-
strantur &c.

Forma &
effectus pu-
blici.

P. An. 4.
de 11. Oct.

Edita An. D.
1569.

Causa hujus
declaratio-
nis.

hos designando, & litteras omnes extense & integrè registrent, & ad minus singulo quoque trimestri ad dictum Archivum custodiendas deferant.

§. 11. Inhibentes Collegio & Correctori præfati sub pena privationis officiorum ne contra declarationem, ordinationem & decretum præfatum aliquid innovare præsumant. Ceteris omnibus aliis, quæ à Pio præfato, & aliis Romanis Pontificibus prædecessoribus nostris statuta & decreta sunt, firmis manentibus.

§. 12. Sique in præmissis omnibus & singulis per quoscumque Judices & Commissarios, etiam ipsius Ecclesiæ Romanæ Cardinales, sublata eis quavis aliter interpretandi & judicandi facultate, judicari & definiri debere. Et quicquid secus super his à quoquavis auctoritate scienter vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane similiter decernimus.

§. 13. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, privilegiis quoque & indulgentiis eidem Correctori & Procuratoribus, eorumque Collegio sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac forsitan nos concessis, approbatis & innovatis, quibus omnibus etiam si pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque tenoris tenoribus specialis, specifica & expressa, ac individua & de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque.

§. 14. Volumus autem quod liberum sit omnibus supplicationes commissionum causarum in præsentibus nostra, & Romani Pontificis pro tempore existentis signatis, non solum per officium contradicatarum, ut præfatur, sed etiam, ut antea per litteras in forma Brevis expediendas obtinere, dummodo per extensum, & non supplicatione introducta, litteræ præfatæ expendantur.

§. 15. Inhibentes Secretariis, & Scriptoribus dicti Collegii sub penis indignationis nostræ, & privationis officiorum, ne propter extensionem hujusmodi, taxam & impensam, etiam occasione scripturæ aut laboris vel celerioris expeditionis, augeant.

§. 16. Mandantesque Collegio & Scriptoribus, quod litteræ præfatæ per eisdem registrentur, & in Palatio nostro ad Archivum, in loco similiter per nos designando, singulo quoque trimestri ad minus, ut supra deferantur.

§. 17. Ut autem præsentibus litteræ ad omnium notitiam deducantur, & eos quorum interest, vel interesse poterit, omnino afficiant, volumus & mandamus illas in Palatii nostri Apostolici, ac Audientie litterarum contradicatarum valvis, & acie Campi Floræ per aliquos ex Curforibus nostris affigi, & per aliquod temporis spatium relicta ibidem earum copia affixa detineri, ut ii, quos litteræ ipsæ concernunt, seu concernere poterunt quomodolibet in futurum, nullam possint excusationem prætere, vel allegare quod ad ipsorum notitiam non pervenerint: Cùm non sit verisimile apud eos incognitum remanere, quod tam patenter publicatum fuerit. Et quod in quintero Cancellariæ præfatæ describatur.

Nulli ergo, &c. Si quis &c.
Dat. Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo sexagesimo nono, 12. Cal. Novembris, Pont. nostri Anno quarto.

Sequitur declaratio prædictæ Reformationis.

PIUS PAPA V.

Motu proprio, &c.

Nuper certis rationabilibus causis tunc suadentibus circa officium Correctoris litterarum Cancellariæ nostræ contradicatarum nuncupatarum,

statuimus ut nihil omnino eorum quæ tunc expressa sunt, quæ antea ex dicto officio concedi consueverant, & deinceps absque signatura nostra, & in litterarum Apostolicarum expeditione S. R. E. Vicecancellario assistentium recognitione & censura, à prædicto Correctore expediretur.

§. 1. Nos causis prædictis postea plenius cognitis, cupientes præfati eorum expeditioni quæ iustitiæ concernunt, minori; partium dispendio consulere, Motu simili, &c. cetera; scientia volumus, ac dilectis filiis Correct. & Procurator. hujusmodi litterarum contradicatarum concedimus, ut rescripta & commissiones omnium causarum, tam civilium quam criminalium, necnon Judicum subrogationes, mutationes, adiutorum donationes five ordinariis five delegatis faciendas, testum ad futura rei memoriam examinandorum concessionem, & reliquas materias majorem vel minorem nuncupatam iustitiam more concernentes, super quibus omnibus supplicationes nostras seu Romani Pontificis pro tempore existentis, aut signaturæ nostræ iustitiæ Præfati prius signaturæ, & non alias, absque assistentium prædictorum recognitione vel censura valeant expedire. Et simili modo super supplicationibus manu nostra signatis, litteras ad effectum revelandi, aut aliquid restituendi, ac testimonium veritatis perhibendi, contra occultas personas in forma, Significavit, etiam privatè quoad omnes, quibus id (excepto dumtaxat nostro in spiritualibus Vicario Urbis, qui in Urbe ipsa & suburbii tantum illa expedire possit) omnino inhibemus. Et eos ac etiam Notarios qui contrafecerint, emolumentis omnibus suorum officiorum per annum integrum privamus, locis piis applicandis, & præterea quingentorum ducatorum auri de Camera, ac aliis penis arbitrariis afficiendos decernimus. Quæ omnia (donec aliter per nos aut Sedem Apostolicam reformando fuerit constitutum) omnino volumus observari, reliquis omnibus in reformatione nostra super hoc edita contentis salvis remanentibus; ita tamen quod nullus alius quam prædictus Vicecancellarius seu ejus Locumtenens litteras prædictas ad Bullariatram mittere possit.

§. 2. Ceterum volumus solam signaturam Præsentibus sufficere, atque in iudicio & extra fidem facere.

§. 3. Regulis nostris in contrarium editis, & de non tollendo jure quesito, & aliis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, & in reformatione prædicta contentis, etiam specialem & expressam derogationem & mentionem requirentibus, & clausulas derogatarum continentibus, ceterisque contrariis non obstantibus quibuscumque.

Placet Motu proprio. M.

Declaratio
dictæ Reforma-
tionis, &
facultatum
Correctoris.
& Procura-
torum.

Sola Signatu-
ra sufficit.

Clausula de-
rogatoria.

Papæ sub-
script.

XCI.

Indulta, gratiæ & indulgentiæ Confraternitatis nationis Florentinæ sub invocatione S. Joannis Baptistæ Decollati, de Misericordia nuncupatæ, nuper in Urbe institutæ ad caritative confortandum viâ iustitiæ morituros, eisque ecclesiastica Sacramenta subministrandum, & eorumdem corpora sepeliendum.

Confraternitatem istam instituit Innocentius VIII. ut sup. in Tomo I. fol. 44. in ejus const. 16. Inter desiderabilia. ubi notavi. Et quoad communicationem Indulgentiarum cum aliis ejusmodi Confraternitatibus, videte formam traditam à Clemente VIII. in const. 115. Quæcumque. Et quoad Indulgentias ipsorum Confratrum, habetis novam dispositionem. Pauli V. mox publicandam, firmatam die 23. Augusti 1608. Tom. 3.

PIUS PAPA V.

Motu proprio, &c.

Cum sicut accepimus postquam alias fel. rec. Innoc. Papa VIII. prædecessor noster, venerabilem Societatem seu Confraternitatem Misericordiæ nuncupatam nationis Florentinorum de Urbe crexerat & instituerat.

Edita An. D.
1569.

Innocentius
VIII. crexit
Sodalitatem.

Ad co. lortandum via iustitiae ad mortem damnatos ac sepeliendum.

Statuta cond. facultas.

Confratribus eligendi Confessorem dedit.

Indulgentias concessit.

Judicem eorum A. C. deputavit.

Hereditates à condemnatis habere posse concessit.

Indulgentiam eorum Ecclesiam visitantibus dedit.

Leo X. hac omnia approbavit.

Confratres Nationis Florentinae esse iussit.

Aliaque Indulgentias elargitus est.

Clemens VII. praemissa confirmavit &c.

Missas ante diem pro carceratis celebrari permittit.

§. 1. Ac Confratribus ipsius Confraternitatis quemdam locum intra Urbem, in quo unam Ecclesiam aedificare, & construere, in qua unum Capellani presbyterum facularem, qui inibi Missas, & alia divina officia celebrare, & omnes qui via Iustitiae, ultimo supplicio afficiendi essent, confortare, & eorum confessionibus auditis Ecclesiastica Sacramenta eis ministrare, ac eos in sinceritate fidei Catholicae manutene haberet, ad eorum dispositionem deputare & tenere, ac inibi eorumdem ultimo supplicio afficiendorum corpora, Ecclesiastica sepulturae absque aliqua particulari licentia tradere & humare liberè valerent, donaverat.

§. 2. Quodque Confratres Confraternitatis huiusmodi pro tempore existentes, quaecumque statuta & ordinationes secundum misericordiam & charitatem, convenientiam & expedientiam concedere & facere.

§. 3. Atque unum Confessorem idoneum, & facularem, ac cuiusvis Ordinis regularem, qui eos in certis casibus tunc expressis absolvere, & eorum vota etiam, certis casibus tunc expressis, exceptis, in alia pietatis opera commutare.

§. 4. Eisdemque Confratribus verè poenitentibus & confessis plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam semel in vita, & in mortis articulo impendere posset, eligere valeret.

§. 5. Et quod in omnibus causis civilibus, non tamen criminalibus, concernentibus bona ipsius Societatis, non nisi coram Auditore Camera conveniri posset. Et quod casu quo aliquis ultimo supplicio afficiendus vellet dictam Confraternitatem instituere heredem omnium vel partis bonorum suorum, Confratres dictae Confraternitatis pro tempore existentes, posset absque Fisci praedicti, & nomine dictae Confraternitatis exigere & recuperare in iudicio & extra illud, ac ubique locorum bona praedicta sibi relicta ab omnibus illa habentibus, licet juris solemnitates servatae non essent; dummodo per instrumentum, vel relationem duorum aut trium testium, sive alias legitime constaret & appareret, talem fuisse voluntatem, & loquutionem ultimo supplicio afficiendi.

§. 6. Et ultimo omnibus utriusque sexus personis verè poenitentibus & confessis, quae dictam eorum Ecclesiam à primis Vesperis usque ad secundas Vesperas, festivitatis Decollationis Sancti Joannis Baptistae devotè visitarent, & pro subventionem dictae Confraternitatis manus porrexerint adiutrices, viginti unius anni, & totidem quadragenarum indulgentiam & remissionem concesserat, & indulserat.

§. 7. Prae mem. Leo X. etiam praedecessor noster donationem, concessionem, & indultum Innocentii praedicti, ac alia praemissa confirmavit & approbavit.

§. 8. Ac ordinavit quod Confratres praedicti aliquem voluntariè acceptare, nec ab aliquibus ad acceptandum in eadem Confraternitate aliquem nationis Florentinae non esset compelli & cogi non possent.

§. 9. Et ulterius omnibus qui dictam Ecclesiam in dicta festivitate singulis annis, aliorum viginti, & qui omnibus diebus Dominicis eandem Ecclesiam visitarent, ac manus porrigerent adiutrices ut supra, aliorum decem, & qui ultimo supplicio dictos condemnatos associarent, & confortarent aliorum septem annorum, & qui eorumdem ultimo supplicio affectorum corpora ad sepulturae associarent, aliorum septem annorum, & totidem quadragenas, de iunctis eis poenitentibus indulgentiam & remissionem concessit.

§. 10. Quae omnia per recol. mem. Clementem VII. etiam praedecessorem nostrum approbata & confirmata fuerunt, qui etiam eidem Confraternitati, quod illius Capellani in die Paschalis Resurrectionis, sanctissimum Eucharistiae Sacramentum, omnibus utriusque sexus Confraternitatis Confratribus in dicta eorum Ecclesia, absque praedicti Receptorum in quarum Parochiis degerent, ministrare.

§. 11. Atque Missas in praesentia ultimo suppli-

cio condemnatorum etiam ante diem, dummodo circa auroram celebrare possent.

§. 12. Necnon omnibus verè poenitentibus & confessis, aut firmum temporibus debitis confitendi propositum habentibus, qui dictam Ecclesiam in Paschalis Resurrectionis, & Decollationis S. Joannis Baptistae festivitatis & diebus, à primis Vesperis usque ad occasum Solis festivitatum & dierum singulis annis devotè visitarent, & pro manutentione dictae Confraternitatis manus porrigerent adiutrices, quoties id fecerint indulgentiam plenariam, & omnium peccatorum suorum remissionem.

§. 13. Eisdemque Confratribus quod in quocumque legato summam sex ducatorum non excedenti, per quemlibet condemnationem eis verbo vel in scriptis relicto, licet esse in praedictum Fisci, & in ejus damnum, satisfactis prius executori, & Capiteano Carceris de expensis pro victu condemnati factis, liberè succedere & omnia indumenta, & vestimenta dictorum condemnatorum cum quibus carcerati aut ad ultimum supplicium conducti forent, à quorumcumque etiam illa auctoritate Judicis detinentium manibus, propria auctoritate & absque alicujus personae licentia accipere, aut accipi facere, & liberè retinere, & in opera pia, aut alia sublimitationi, & oneri dictae Confraternitatis convertere valerent & possent, similiter concessit.

§. 14. Quodque clare mem. Paulus Papa III. pariter praedecessor noster donationes, concessionem, ampliationes, ordinationes, gratias & indulgentias Praedecessorum confirmando & approbando & renovando Confratribus praedictis, quod etiam cum praedicti Fisci, in legatis sibi, ut supra usque ad summam decem ducatorum pro quolibet legato relicto, executori & capiteano carceris, ut supra satisfactis per manus dictorum Confratrum, de his quae habere deberent, etiam liberè succedere.

§. 15. Atque in die Decollationis S. Joannis Baptistae, unum carceratum ad mortem pro quocumque excessu condemnatum, ad eorundem electionem singulis annis liberare, omnibus; privilegiis, quibus aliae Confraternitates in die S. Mariae de mense Augusti gaudent, perpetuè gaudere possent, pariformiter concessit.

§. 16. Quae omnia per ejusdem clare mem. Julium Tertium etiam praedecessorem nostrum confirmata & approbata fuerunt. Qui etiam voluit, quod dictus carceratus liberandus, ut praefertur, absque aliquibus expensis tam suis quam dictae Confraternitatis sive Societatis tam ratione captivae quam carcerationis, liberari deberet.

§. 17. Et quilibet condemnatus ad mortem, per viam testamenti, sive donationis, aut alio quocumque modo usque ad summam viginti quinque ducatorum, eidem Confraternitati liberè relinquere valeret.

§. 18. Quodque Confratres dictae Confraternitatis, omnia privilegia, gratias & indulgentias sibi concessa & concedenda, omnibus Confratribus & Societatibus Mundi crebris aut erigendis, quod condemnatorum ultimo supplicio morti interveniunt, & in similibus operibus misericordiae exercitantur, ac si pari modo, privilegia, gratiae, & indulgentiae praedictae eidem propriis Confraternitatibus, illorumque Confratribus, concessa fuissent, communicare & concedere possent. Atque quod ad processiones ire seu accedere nisi ad eorum commoditatem, non tenerentur, nec ad id compelli possent, omnibus in contrarium facientibus derogando.

§. 19. Et ultimo beatae memoriae Pius Papa Quartus praedecessor noster, donationes, concessionem, ampliationes, gratias, indulgentias & alia praemissa per praedictos Praedecessores dictae Confraternitatis illiusque Confratribus concessas & concessa approbando & confirmando.

§. 20. Eisdemque Confratribus quod ipsi infirmis existentibus in eorum domibus Missam per Presbyterum facularem, vel regularem ad eorum beneplacitum eligendum, singulis diebus, dum eorum infirmitas duraret, etiam ante diem in casu

neces-

Indulg. visitantibus Ecclesiam concessit.

Legatum & vestes condemnatorum etiam in praedictum Fisci habere indult.

Paulus III. confirmavit, & amplius quoad legata.

Carceratum unum liberari permittit.

Julius III. approbavit.

Legata condemnatorum usque ad sex. ampliat.

Faculatem dedit aggregandi alias Confraternitates. Tu vide quod dixi in rubr.

Pius IV. confirmavit.

Confratribus infirmis domi Missas celebrari concessit.

Capellano
dedit facultatem pro
condemnatione de nocte
celebrare
eisque absol-
vere & eisdem Indulg.
impartiri.

Hic Pontif.
omnia appro-
bat, & defectui supplet.

Contraria
tollit.

Papae sub-
script.
Repetitio
clausularum.

Sola Signatura
sufficit.

necessitatis, & circa diurnam lucem celebrari facere libere possent.

§. 21. Necnon quod si Capellano dictae Confraternitatis constaret, & sibi videretur, dictos condemnandos ad ultimum supplicium esse dispositos ad recipiendum sacrosanctum Eucharistiae Sacramentum, posset in eorum praesentia etiam de nocte in casu necessitatis Missam celebrare, & absolutionem, ac indulgentiam plenariam in forma Jubilaei impendere, & dictum Eucharistiae Sacramentum eis ministrare similiter concessit & indulgit, prout in singulis Praedecessorum supplicationibus desuper signatis, seu litteris desuper forsan expeditis latius & plenius contineri dicitur.

§. 22. Nos igitur qui ea, quae a Praedecessoribus nostris ita pie & caritative concessa & ordinata esse noscuntur, ut firma perpetuo & illibata persistant, Apostolica confirmationis munimine libenter roboramus, eorum vestigiis inhaerentes Motu simili, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolica potestate plenitudine, donationem, concessiones, ampliationes, privilegia, indulta, gratias, indulgentias & peccatorum remissiones, ac alia praemissa Confraternitati Misericordiae illiusque Confratribus praedictis per dictos Praedecessores nostros quomodolibet concessas & concessa, cum omnibus inde secutis, ac omnium & singulorum tam juris quam facti si qui in praemissis intervenerunt defectum, ac solennitatum etiam de jure requisitarum forsan omisarum supplementatione approbamus, confirmamus & innovamus, illisque perpetuae firmitatis robur adjicimus, & ab omnibus quos concernit, & in futurum concernet inviolabiliter observari debere, irritum quoque, &c. decernimus.

§. 23. Non obstantibus quibuscumque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac statutis, &c. etiam juramento, &c. roboratis; privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque; cum clausulis opportunis & confectis.

Fiat Motu proprio M.

§. 24. Et cum absolute a censuris ad effectum, &c. pro omnibus, & quod donationum, concessionum, indultorum, ampliationum, gratiarum, indulgentiarum, & peccatorum remissionum, & aliorum praemissorum; per dictos Praedecessores nostros, & dictae Confraternitati, & illius Confratribus concessorum veriores tenores, &c. habeantur pro expressis, seu in totum vel in partem exprimi possint in litteris. Et de approbatione, confirmatione, invocatione, supplementatione, adjectione, indulto, extensione, prorogatione praedictis, de & pro omnibus & singulis praedictis quae hic pro repetitis ad partem habeantur, Motu proprio, &c. ac perpetuo in forma gratiosa, Et cum opportuna si opus sit Judicium executorum deputatione, qui assistant, &c. cum plena & libera facultate citandi etiam per dictum publicum, confitio summarie, &c. de non tuto accessu, ac inhibendi, & sub sententiis, & censuris Ecclesiasticis, ac etiam pecuniariis eorum arbitrio moderandis & applicandis penis, ac aggravandi, &c. contraditores, &c. per quascumque eis videbitur censuras & penas compellendi invocato, &c. brachii secularis, cum derogatione constitutionum de una, & d'abus, non tamen tribus dietis, si opus fuerit latissimè extendentes.

§. 25. Et quod praesentis Motus proprii sola signatura sufficiat, & ubique fidem faciat in iudicio & extra illud, quacumque regula contraria non obstante, seu si videbitur litterae cum omnium singulorum praemissorum etiam nominum, cognominum, moderatorum Confratrum, dictae Confraternitatis invocationum, situationum, denominationum, qualitarum, & aliorum circa praemissa quomodolibet necessario, majori & veriori specificatione, & expressione simul vel ad partem super quolibet articulo, prout utilis videbitur expediri possint & quo ad indultum celebrandi Missas in domibus, in Oratorio ad id a Vicario Urbis designato, & per presbyterum per dictum Vicarium approbandum tantum.

§. 26. Volumus autem quod dicta Confraternitas dictum condemnatum liberandum, nobis & Rom. Pont. pro tempore esistenti, denominare debeat, & teneatur.

Fiat M.

Confirmatio & innovatio quarumcumque gratiarum & signanter praecedentiae hactenus Congregationi Canonicorum secularium S. Georgii in Alga Venetiarum concessarum. Et concessio omnium privilegiorum, aliis Ordinibus etiam Mendicantium concessorum & concedendorum.

Quoad praecedentiam etiam respectu Canonicorum regularium Lateranen. habes hujusmodi Pont. declarationem infr. in ejus const. 127. Cum alias, ubi notabo.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

EX incumbenti nobis Apostolicae servitutis officio, quorumlibet Ecclesiasticorum praesertim Religiosorum locorum illorumque personarum, in via mandatorum Domini, ad illius honorem & gloriam deambulantium, ac in pio laudabilique illarum proposito permanentium, directioni prosperoque statui assidue intenti, illa propterea providè statuta dignoscuntur quo firmius persistant, libenter Apostolici muniminis praesidio sublati quibusvis obseculis roboramus, personas ipsas paternis confovendo affectibus.

§. 1. Sanè cum sicut accepimus dilecti filii Rector Generalis & Canonici Congregationis S. Georgii in Alga Venetiarum, qui in eorum Capitulo, in Monasterio seu domo Sancti Salvatoris in Lauro de Urbe Congregationis hujusmodi novissimè celebrato tamquam nostri, & Apostolicae Sedis obedientiae filii, praeepto per nos eis aliàs facto super professione regulari, ut eam qui in hujusmodi Congregationem de cetero degere vellent profiterentur obtemperando, illam professionem debita cum reverentia acceptarunt, in eorum Monasteriis five domibus religiose laudabiliter prout hactenus vixerunt de cetero vivere, & gratum Altissimo famularum impendere intendant.

§. 2. Nos Rectoris & Canonicorum ipsorum laudabile propositum plurimum in Domino commendantes, & quo liberius in pace & tranquillitate juxta eorum instituta vivere possint, impedimenta siquae sint de medio tollere, ipsosque Rectorem & Canonicos specialibus favoribus & gratis prosequi volentes ac illos & eorum singulos a quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & penis à jure vel ab homine quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodari existunt, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes & absolutos fore censentes, necnon constitutionum, regularium statutorum, privilegiorum, indultorum & aliorum concessionum ac gratiarum infrascriptorum, omniumque in contrarium aut prajudicium illorum, seu Congregationis hujusmodi, ac litterarum etiam in forma brevis, etiam Motu proprio, vel aliàs quomodolibet desuper concessorum tenores, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso infererentur, praesentibus pro expressis habentes, Motu simili non ad ipsorum Rectoris & Canonicorum, vel alicujus eorum, aut quorumvis aliorum pro eis nobis super hoc oblata petitionis instantiam, sed ex certa scientia, & mera deliberatione nostris, auctoritate Apostolica tenore praesentium perpetuò omnes & singulas constitutiones, ac ritus & mores, aliq; regularia ipsius Congregationis instituta, quoad ea quae sacris canonibus, & decretis Concilii Tridentini contraria non sunt, ita quod Rector & Canonici praedicti in processibus & actibus publicis praecedant, probr

Declaratio
circa liberationem
condemnati.

XCII.

Edita An. D.
1569.

Prooemium.

Congregatio
acceptavit
bullam hujus
Pont. nu. 76.
Lubricum,
quod est supra
fol. 291. &
profecti sunt
regulam S.
Augustini.

Hic modo
Pont. ejus
gratias omnes
& privilegia
Concilii Tridentini
non contraria
confirmat &
privilegia
cuiuscumque
aliaz Religioni
concessa
& concedenda
communitat.

Contrarias
concessionis
irritat.Et ita & non
alter judica-
ri decernit.Executores
hujus consti-
tut. deputat.Contrariis
derogat.

antea soliti erant; necnon concessionis, gratias, privilegia & indulta ipsis Congregationi ac Reſtori, & Canonicis per quoscumq; Romanis Pontifices prædeceſſores noſtros, ac nos & Sedem eandem, principaliter ſive per viam communicationis, aut alias quomodolibet conceſſa, confirmamus, ac illa de novo: necnon etiam omnia alia per ipſos Prædeceſſores, ac nos quibufvis Ordinibus & Religionibus etiam Fratrum Mendicantium hætenus quomodolibet conceſſa, & quæ de cetero concedentur, eiſdem Reſtori & Canonicis, ac Congregationi gratioſe concedimus, ac confirmata & conceſſa eſſe volumus.

§. 3. Necnon omnia etiam per Prædeceſſores prædictos, & nos etiam per quoscumque etiam in forma brevis litteras in contrarium præmiſſorum, ſeu ipſius Congregationis, & privilegiorum eidem conceſſorum præjudicium, quomodolibet etiam hætenus conceſſa, revocamus, irritamus & annullamus, ac irrita & nulla eſſe, necnon quicquid à dicto Reſtore & dilectis filiis Patribus, Capitibus Congregationis huiusmodi nuncupatis, factum ſeu definitum fuerit, obſervari volumus, ac perpetuo ſtatimus & ordinamus.

§. 4. Et ſic in præmiſſis omnibus & ſingulis per quoscumque Judices & Commiſſarios quavis auctoritate fungentes, etiam cauſarum Palatii Apoſtolicæ Auditoris, ac S. R. E. Cardinales, ſublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, iudicari & definiri debere, ac ſi ſecus ſuper hiſ à quoquam quavis auctoritate ſcienter vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane decernimus, ac ita mentis & voluntatis noſtræ incommutabilis eſſe volumus & declaramus.

§. 5. Quocirca venerabili Fratri noſtro Epicoſcopo Amerino, & dilectis filiis S. Georgii Majoris Veneratium, ac S. Juſtitie Paduanæ Monasteriorum Abbatibus per Apoſtolica ſcripta Motu pari mandamus, quatenus ipſi vel duo, aut unus eorum per ſe vel alium ſeu alios, præſentes litteras & in eis contenta quæcumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties per parte Reſtoris & Canonicorum prædictorum, fuerint requiſiti, ſolemniter publicantes, ac illis & illorum ſingulis in præmiſſis efficaciſſimæ deſenſionis præſidio aſſiſtentes, faciant auctoritate noſtra præmiſſa obſervari, ac Reſtorem & Canonicos prædictos confirmatione, conceſſione, voluntatibus, ſtatuto, ordinatione, decreto & declaratione huiusmodi pacificè ſuiſ & gaudere, non permittentes eos, & illorum ſingulos, deſuper per quoscumque contra præſentium tenorem quomodolibet indebite moleſtari, perturbari aut inquietari. Contradiſtores quoslibet & rebelles, ac præmiſſis non parentes, per cenſuras & poenas Eccleſiaſticas, ac etiam pecuniarias ipſorum, vel cujuſlibet ipſorum eorum arbitrio imponendas, moderandas & applicandas aliæque opportuna juris remedia compenſendo; necnon legitimis ad hoc ſervatis habendis proceſſibus, illos cenſuras & poenas ipſas incurriſſe declarando, ac ipſas cenſuras & poenas etiam iteratis vicibus aggravando, & interdium Eccleſiaſticum apponendo, invocato etiam ad hoc ſi opus fuerit auxilio brachii ſæcularis.

§. 6. Non obſtantibus præmiſſis, ac quibufvis Apoſtolicis, necnon in Provincialibus & Synodalibus Conciliis editis generalibus vel ſpecialibus conſtitutionibus & ordinationibus, ac dictæ Congregationis etiam juramento, confirmatione Apoſtolica vel quavis ſimilitate alia roboratis, ſtatutis, conſuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apoſtolicis, quibufvis Ordinibus, & illorum Superioribus, ac aliis perſonis, ſub quibufcumque tenoribus & formis, ac cum quibufvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliſque efficaciſſimis, efficaciſſimis, & inſolitis clauſulis, irritantibusque & aliis decretis, in genere vel in ſpecie, ac alias quomodolibet, etiam per prædeceſſores noſtros prædictos, ac nos & Sedem prædictam, etiam motu & ſcientia ſimilibus, conceſſis, confirmatis, & approbatis, quibus omnibus & ſingulis etiam ſi pro illorum ſufficienti derogatione, de illis ac totis eorum tenoribus ſpecialis, ſpecifica,

expreſſa, & individua, non autem per clauſulas generales idem importantes, mentio habenda, aut alia qua alia exquisita forma ad hoc ſervanda foret, tenores huiusmodi, ac ſi de verbo ad verbum inferrentur, præſentibus pro expreſſis ſufficienter habentes, illis alias in ſuo robore permanſuris, hac vice dumtaxat ſpecialiter & expreſſe derogamus, & illis derogatum eſſe volumus contrariis quibufcumque. Aut ſi aliquibus communiter vel diviſim à dicta Sede ſit indultum, quod interdicti, ſuſpendi, aut excommunicari non poſſint per litteras Apoſtolicas non facientes plenam & expreſſam, ad de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

Nulli ergo omnino &c.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ milleſimo quingenteſimo ſexageſimo nono, tertio idus Decemb. Pontificatus noſtri Anno quarto.

Conſtitutio Bonifacii VIII. contra offendentes S. R. E. Cardinales, extenditur etiam contra ſcientos & non revelantes.

Hoc idem prohibetur eſſe in bullis quas in die Carne Domini Romani Pontifices publicare conſueverunt, de quibus dicam in conſt. 63. Pauli V. Tom. III.

Eadem Bonifacii VIII. diſpoſitio quæ eſt in cap. ſæclicis, de Pen. in 6. ſuit à Leone X. extenſa ad invadentes eorum domos, ut in ejus conſtit. 16. Temerariorum. Tom. I. Alia autem de Cardinalibus indicabo in conſt. 50. Six. V. Poſtquam, vide hic infra.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Inſeliciſſimi ſæculi pericula miſerati, dolore compri-
mire non valemus, quod neſarii homines, juſtorum ſanguinem ſcientes, ad illorum quoque perniciem in feſtione animo incumbant, quos Spiritus Sanctus membra conſtituit præcipua Eccleſiæ Dei, quam ſuo ſibi ſanguine acquiſivit.

§. 1. Magna igitur ratione poſt alios ſel. rec. Bonifacius Papa VIII. de Fratrum ſuorum conſilio perpetua conſtitutione ſancivit, ut ſi quis S. R. E. Cardinalem fuerit hoſtiliter inſecutus, aut percuffiſſet, aut ceperit, aut mandaverit id fieri, ſociuſque fuerit facientiſ, factumve ratum habuerit, ſeu dederit conſilium vel favorem, aut receperit, aut defenderit ſcienter eundem, tanquam læſe maiſtatis reus, perpetuo ſit infamis, & præterea diffidatus, bannitus, & inſtabilis: omnia ejus ædificia ruinæ perpetua ſubjaceant, nullus ei debita reddere, nullus ei in judicio reſpondere teneatur, bonis omnibus ſiſco, vel Reipublicæ applicatis. Idem etiam feudis, beneficiis & officiis, ſpiritualibus & temporalibus, ſi ipſo jure privatus, ſed & ipſe inſectans excommunicationis ſententiam incurrat, quam ſolus Rom. Pontif. excepto mortis articulo, valeat relaxare.

§. 2. Sed ne hæc quidem conſtitutio, propter abdi-
cata conſecratorum conſilia, omnino ſatis eſſe noſcitur ad huiusmodi ſacrilegia amplius prohibenda. Qui enim alicui vim inferre ſibi proponunt, id ſecreto, in occulto ut maxime machinantur, veluti impium illud facinus indicat in perſonam dilecti filii noſtri Caroli tituli ſanctæ Præſedis preſbyteri Cardinalis Borromæi, Eccleſiam Mediolanenſem ſanctiſſimis inſtitutis ſtudiorum informantis proxime attentatum. Quæ res Nos gravius commovet, vehementiſque excitat omnia exquirere, ut nobiliſſimæ corporis noſtri partes undique protegantur. Quibus enim præſidio erimus, quibus ſuppeditas aſſeremus, quos denique tutabimur, ſi templi DEI baſes, ſi clariſſima Eccleſiæ lumina, ſi ſpecialis Filios, qui pro animabus populorum, pro fide, pro juſtitia, pro unitate pervigilant, inul-
ros deferamus.

D. P. An. 4.
die 31. Dec.

XCIII.

Edita An. D.
1569.

Exordium.

Bonifacius VIII.
offendit tri-
bus Cardina-
les, illorum-
que ſtatuta
penas hic
deſcriptas im-
poſuit in C.
ſelicitis &
Poenis in 6.

Sed eam non
conſtitutionem
inquit hic
Pontif.

Propterea
eandem poe-
nas imponit
scientibus &
non revelan-
tibus.

Poenas alias
praesentibus.

Rem defe-
rens libera-
tur.

Ordinarius
Papae signifi-
cat.

Iussio public.
in Urbe, &
extra.

Transumptio-
rum fides.

Sanctio poe-
nalis.

Dat. P. An. 4.
19. Decemb.

Papae fab-
script.

Cardinalium
subscription-
es.

§. 3. Itaque sanctioni praedictae de simili Fratrum nostrorum consilio adjicientes, Statuimus, ut quisquis, etiam a nudo consilio, aut simplici favore, aut omnino a ceteris praedictis alienus, quempiam auditorum, administratorum, vel conficiorum, conjurationis sive conspirationis, aut commissi, committende criminis in personam Cardinalis, illorumve fautorum, receptorum, vel occultatorum, sive ex renunciatione sibi protinus, vel per interpositam personam, aut litteras, facta, cognoverit, sive ex scripturis, ceteris, conatu, concursu, infideli, aliove signis & indicis quaecumque scientiam habuerit, vel etiam conjecerit, quive horum quicumque intellexerit, quantumcumque res alias occulta sit: quamprimum id Rom. Pont. si in Curia fuerit, si autem Ordinario loci, vel si Cardinalis ipse Ordinarius extiterit, propinquiiori Episcopo, & si crimen nondum commissum fuerit, etiam ipsi Cardinali propter revelare, quicumque verò etiam non subditus, & omnino extraneus defecerit, cuiuscumque dignitatis fuerit, praedicto sit excommunicationis laqueo innodatus, pariterque majestatis reus infamiam, & omnes poenas praedictas eo ipso incurrat.

§. 4. Eadem nihilominus constitutione quoad reliquias ejus partes, ac ceteris omnibus sanctionibus canonicis & civilibus, ad talem coercionem editis in suo robore duraturis.

§. 5. Porro si quis ad sanietatem revertens, rem adhuc incognitam retexerit, omni noxa penitus liberetur.

§. 6. Ceterum loci Ordinarius fecerò cum casum ad se delatum, praedicto Pontifici primo quoque tempore nunciare, & interim rem omnem ab stirpe exquirere, & si necessitas tunc postulet, facultate quoque brachium adhibere.

§. 7. Sed ne quisquam horum ignorationem valeat excusare, jubemus praesentes valvis Ecclesiae Sancti Joannis Lateranensis, & Basilicae Principis Apostolorum de Urbe, ubi publicabuntur appendi, eisque detractis earum exempla eo in loco relinquere, & eas pariter ab omnibus locorum Ordinariis, in suis Ecclesiis, locisque insignibus promulgari.

§. 8. Quia verò difficile nimis esset ipsas Praesentes, quocumque illas opus erit perferre, Volumus earum exempla etiam impressa, norarii publici manu, & Praelati ecclesiastici, ejusve Curiae sigillo obfirmata, eandem illam prorsus fidem, in judicio & extra illud ubique gentium facere, quam ipsaemet praesentes facerent, si essent exhibitae vel ostensae.

§. 9. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrae adjunctionis, statuti, jussionis, & voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Datum Romae apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicae millesimo quingentesimo sexagesimo nono, quattodecimo Calend. Januarii, Pontificatus nostri Anno quarto.

Ego Pius Catholicae Ecclesiae Episcopus.

Utinam dirigantur viae meae ad custodiendas iustificationes tuas.

Jo. Card. Moronus Episcopus Portuen.
Christophorus Madrucus Episcopus Praenest.
Ocho Card. Truchfres Episcopus Albanen.
A. Card. Farnesius Vicecan. Episcopus Tusculan.
Jo. Bapt. Cicada Episcopus Sab. Card. S. Clem.
Ego Julius Cardinalis Urbinus.
Ego Jo. Riccius Card. Policianus.
Ego Scipio Cardinalis Pifarum.
Ego Jacobus Cardinalis Sabellus.
Ego Jo. Ant. Card. S. Georgii.
Ego Ph. Card. à Burdifera.
Ego Hugo Boncompag. Card. S. Sixti.
Ego Alexander Card. Sfortia.
Ego Flavius Card. Ursinus.
Ego A. Cardinalis Cribellus.

Ego Guido Card. Vercellen.
Ego B. Card. Lomellinus.
Ego Guilielmus Card. Sirletus.
Ego Antonius Card. Granvelanus.
Ego Franciscus Card. Pacecus.
Ego M. Ant. Card. Amulius.
Ego Hieronymus Card. de Corrigio.
Ego Jo. Franciscus Card. de Gambara.
Ego Hip. Card. Ferrarien.
Ego Ind. de Avalos Card. de Aragona.
Ego P. Card. de Sancta Cruce.
Ego Z. Card. Delphinus.
Ego Jo. Fran. Card. Commendonus.
Ego Marcus Ant. Cardinalis Bobba.
Ego F. Michael B. Card. Alex. Camer.
Ego F. Cardinalis Alciatus.
Ego Hieronymus Card. Simoncellus.
Ego Ferd. Card. de Medicis.
Jo. Paulus Cardinalis ab Ecclesia.
A. Cardinalis Caraffa.

Anno à Nativitate Domini 1570. indictione 13. die quinta Januarii, Pontificatus Sanctissimi in Christo Patris & D. N. D. Pii divina providentia Papae V. retroscripta littera Apost. affixa, & publicata fuerunt ad valvas Ecclesiae S. Jo. Lateranensis, & Basilicae Principis Apostolorum de Urbe, & Cancell. Apostolicae & in acie Campi Florae, ut moris est, per nos Joannem Freile & Joannem Parinum & Joannem Bornotum Sanctissimi Domini nostri Papae Curiores dimissis copiis in omnibus supradictis locis eandem litterarum copis impressis affixis.
Jo. Gerardi Magister Curiorum.

Confirmatio constitutionis Greg. XI. ac sententiae latae in Rota Romana ad favorem sacrosanctae Ecclesiae Lateranen. de Urbe, circa ejus praeminentiam, & superioritatem, & praeogativam, supra omnes Urbis & Orbis Ecclesias, ac Basilicam S. Petri de Urbe.

Aliqua de hac Lateranen. Ecclesia vide supra in constitut. 46. Honor. III. Sedis. fol. 66. Et de ejus praeminentia, vide in constit. 1. Greg. XI. supra fol. 263. in Tomo I.

PIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Infirmam aevi conditio saepe efficit, ut res vel maxime perspicuae & immemorabiles, perplexi erroris caligine sensim obductae, in gravia discrimina prolabantur.

§. 1. Quo genere affecta sacrosancta Ecclesia nostra Lateran. post tot insignes ruinas, quae ei tenebrosis illis saeculis acciderant, quibus plerique omnes Rom. Pontif. aut Religionis studio, aut componendae pacis gratia, aut bellorum periculo, longe ab Urbe, saepe enim in Gallias agebant, de summa quoque juris sui, & honoris praerogativa perperam laboravit. Etenim longo post intervallo, quam fel. rec. Leo Papa Quartus parta de Saracenis spectabili victoria, Urbem sui nominis, praedictum quoque ac Vaticanum statuerat, cum reduces deinceps Pont. in aliis, atque aliis Urbis Ecclesiis uti cuique turum aut commodum erat considerent, praedicta Ecclesia, ex tam multis direptionibus, quasi solitudine facta, Sacerdotes Basilicae Principis Apostolorum cum parilis vetustatis gloria, tum nomine & dignitate illustres & insignes ab ea rerum commutatione, praedictum sibi jus nixi sunt vindicare.

§. 2. Quam rem non ferens Gregorius Papa XI. qui etiam tunc Avinione sedebat, ut omnem dubitationem eximeret, declaravit & definivit, praedictam Ecclesiam Lateranensem praecipuam Sedem suam dictae Basilicae, ac ceterarum omnium Urbis & Orbis Ecclesiarum maximum supra illas omnes locum tenere.

Publicatio.

XCIV.

Edita An. D.
1569.

Exordium.

Causae ob
quas Ecclesia
Lateranensis
praerogativa
in dubium
revocata
fuit.

Gregorius
XI. in rubr.
citatus, eam
supremum
locum tenere
de finivit.

Rota etiam
cui Pius IV.
hunc articu-
lum deciden-
tum commi-
sit, idem pro-
nunciavit.

§. 3. Sed dicti Sacerdotes translati inde prorsus Pontificum domicilio, elatioris quodcumque res tulit audientius infirmitur, donec Pius Papa Quartus antecessor noster merito commotus, quod in Cleri conventu & supplicationibus res turbæ intercederent, molestæque diffensiones fierent, huic tamen controversiæ finem constituere volens, causam universam dilecto filio Magistro Francisco Sermento caufarum Palatii Apostolici Auditori commisit audiendam, & omni appellatione præcisè penitus terminandam. Qui vocatis utrimque Capitulis, in ipsa causa ritè procedens, definitiva sententia ex communi aliorum dicti Palatii Auditorum consilio nuper prolata, declaravit, jux præcedendi & prærogativam honoris, locique nobilioris ac supremi, etiam supra canonicos, beneficiatos, clerum, & personas prædictæ Basilicæ in processionibus solemnibus, & decretis, ceterisque omnibus actibus, publicis & privatis, ad canonicos, beneficiatos, & clerum dictæ Ecclesiæ Lateranensis omnino pertinere. Quin etiam perpetuo silentio his rebus imposito, res judicata in executioni mandata est, ut habitis potestate Cleri Conventibus ac supplicationibus, sacerdotes omnes prædictæ Ecclesiæ Lateranensis supremum ibi locum etiam supra omnem clerum dictæ Basilicæ re ipsa obtinerent.

Hic Pont.
omnia con-
firmat sup-
pleque de-
fecit.

Appellatio-
nem rejicit.

Nihil in con-
trarium cen-
tari mandat.

Sic semper
judicari ju-
bet.

Transumptis
credi præci-
pit.

Sanctionem
penalem ad-
dit.

Dat. P. An. 4.
27. Decemb.

Papæ sub-
script.

§. 4. Quocirca nos tuendi juris studio, hanc sententiam atque declarationem & definitionem, & litteras prædicti Gregorii Papæ, & quæcumque in litteris ipsis continentur, Motu proprio, certaque quam habemus prædictorum omnium scientia, auctoritate Apostolica approbamus & confirmamus, deque Apostolicæ potestatis plenitudine supplementum omnes & quoscumque juris & facti defectus, si qui in processu & actibus reperiantur inesse: & ut ipse Gregorius Papa optimo jure fecit itidem defini- mus, jubemusque Capitulum & Sacerdotes, perso- nasque omnes dictæ Basilicæ ubique semper sententiarum & definitioni parere.

§. 5. Statuentes ut nulla omnino ipsorum provocatio & testificatio, vel reclamatio, sive in judicio producta, sive clam interjecta, præterita & futura noceat, nec prorsus vim habeat, materiamve denuò tribuat litigandi.

§. 6. Præcipimus igitur atque interdiximus eisdem ne posthac quicquam audeant fuscitare: quicumque, sive universi sive singuli, contrafaciant, vel nitentur, eos canonicatui, præbenda, dignitate, beneficio, & officio privamus, privatosque ad futura inhabiles declaramus, eo ipso.

§. 7. Decernentes sic in his, & aliis omnibus supradictis, per eosdem Judices, & quosvis alios, omni & quacumque aliter judicandi & interpretandi facultate penitus adempta ubique judicari debe- re, ac irritum & inane quicquid fecus per quos- cumque scienter vel ignoranter contigerit attemptari, non obstantibus contrariis quibuscumque.

§. 8. Volumus autem, ut Præsentes in Cancellaria Apostolicæ libro, appellato quinterno, describantur, ipsorumque exempla notarii publici manu, & Prælati ecclesiastici, ejusve Curiae sigillo obsignata, eandem illam omnino fidem in judicio & extra illud, ubique locorum faciant, quod ipsæmet præ- sentes facerent, si essent exhibitæ vel ostensæ.

§. 9. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ approbationis, confirmationis, suppletionis, definitionis, jussionis, statuti, præ- cepti, interdicti, decreti, privationis, declaratio- nis, & voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpe- rit, indignationem Omnipotentis Dei, & beato- rum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit in- cursurum.

Datum Romæ apud S. Petrum, 12. Calend. Januarii Anno Domini 1569. Pontificatus nostri anno quarto.

Ego Pius Catholicæ Ecclesiæ Episcopus.

Dux sententiæ definitivæ conformes late pro Fab-rica S. Petri de Urbe, faciunt rem judicatam in ea parte, in qua sunt conformes. Et commissiones ap- pellationum quæ simpliciter concederentur à Si- gnatura, semper intelliguntur, cum clausula, sine præjudicio executionis duarum conformium.

Ceteram quæ Fabricam respiciunt indicavi sup. in To- mo I. ad const. 3. Clem. VII. Admonet, & in tri- bus const. subsequ.

PIUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

ET si omnium litium finem ea quæ possumus cele-ritate procuramus, eas tamen quæ Fabricam no-stra S. Petri pro executione legatorum ad pias causas relictorum rebus operatione, bonorum Ecclesiasticorum male alienatorum, & aliorum jurium suorum agitat, ne in nimis longum cum ipsis Fabricæ detrimeto protrahatur libenter accelerare satagimus, & ad eas operarias manus favorabiliter imparcimur.

§. 1. Accepimus sanè nuper, quod tenores bono- rum, & pecuniarum ad pias causas relictorum, ac bonorum Ecclesiasticorum male alienatorum, & aliorum quorumcumque jurium ad Fabricam ipsam spectantium, in consignationibus hujusmodi bono- rum, & solutionibus faciendis adeo sunt morosi, ut illam quantum possunt superfergere nitantur, Fab-ricam proinde expensis & laboribus frustrando.

§. 2. Nos præmissis opportuna remedia adhibere volentes, ac dilectos filios Deputatos, & Colle-gium Fabricæ hujusmodi, eorumque singulares personas, à quibuscumque excommunicationis, suspen- sionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis senten- tiis, censuris & penis, à jure vel ab homine, qua- vis occasione vel causa latis, si quibus quomodoli- bet innodati existant, ad effectum præsentium dum- taxat consequendum, harum serie absolventes & absolutos fore censentes, Motu proprio, non ad ipsorum Deputatorum & Collegii, vel alicujus eorum, aut pro eis nobis super hoc oblata petitionis instantiam, sed ex mera liberalitate, & ex certa scientia nostra, eisdem Deputatis & Collegio, il- lorumque Ministris, ut in hujusmodi causis, dua- bus pro fe reportatis sententiis conformibus, in ea parte in qua erunt hujusmodi sententiæ conformes, executionem paratam habeant, atque hujusmodi sententiæ executioni debitæ demandentur; partes- que proinde appellantes minimè audiri, nec eorum appellationes admitti, minuscule illarum virtute, commissiones, preces, aut rescripta ullo modo impetrari aut concedi, neque etiam quoquo modo impetratis aut concessis uti, aut se illis juvari ullate- nus possint vel præsumant, & si quæ etiam per nos aut successores nostros Romanos Pontifices, & ma- nu nostra propria, vel Cardinale Signaturæ nostræ Justitiæ Præfectum pro tempore existentem, aut of- ficium Contradictarum, sub quibuscumque verborum formis concepta & signata, etiam si Motu simili con- cedi contigerit, illa semper intelligantur esse cum clausula, sine præjudicio executionis duarum con- formium, decreto irritanti etiam apposito, nec ju- dicialibus ad quos directæ erunt aliquam facultatem tribuant, inhibitionesque & censuras earum vigore emanatas, nullas & nullius esse valoris & momenti, volumus atque decernimus.

§. 3. Decernentes præsentis litteras nullo umquam tēpore, de subreptionis vel obreptionis vitio aut intentionis nostræ, vel quopiam alio defectu notari, im- pugnar, vel invalidari, etiā ex eo capite quod inter- esse habentes vocati non fuerint, aut ad juris terminos reduci, minuscule in jus vel controversiam vocari pos- se, sed semper validas & efficaces existere, suofque ple- narios effectus sortiri, minuscule sub quibuscumque simi- lium vel dissimilium gratiarum revocationibus, sus- pensionibus, limitationibus & derogationibus com- prehendi ullatenus posse, sed sēper ab illis exceptas,

XCV.

Edita An. D.
1569.

Exordium.

Causa hujus
const.

Dux senten-
tiæ pro Fabri-
ca faciunt
rem judica-
tam, & com-
missiones ap-
pellationum
signatæ cen-
sentur cum
clausula, sine
præjudicio
executionis
duarum con-
formium.
Scias tamen
quod à prima
sententia Ju-
dicialis Colle-
gii, appella-
tur, ad ipsum
Collegium
ut sup. in
bulla 3.
Clem. VII.

Clausula
præfervati-
væ.

Decretum
irritans.

& quoties illæ emanabunt, toties in pristinum statum restitutas esse, & censeri.

§. 4. Sicque per quoscunque Judices & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi facultate, judicari debere; irritum quoque & inane si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Clausulæ de-
rogatoriæ.

§. 5. Non obstantibus præmissis, ac quibuscvis Apostolicis, necnon in provincialibus & synodalibus Conciliis editis, specialibus vel generalibus, constitutionibus & ordinationibus, ac quibuscvis, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis alia firmitate roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis quibuscvis personis, in genere vel in specie quomodolibet concessis, confirmatis & approbatis. Quibus omnibus, etiam si de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, individua, & expressa mentio, seu quavis expressio habenda foret, tenores hujusmodi præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Transumptio-
rum fides.

§. 6. Volumus autem quod præsentium transumptis, etiam impressis, manu Secretarii, & sigillo dicte Fabricæ subscriptis & munitis, eadem prorsus in iudicio & extra fides adhibeatur, quæ præsentibus adhiberetur si forent exhibitæ vel offensæ.

Sanctio pec-
nalis.

§. 7. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ absolutionis, voluntatum, decretorum, & derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem omnipotentis DEI, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursurum.

Dat. P. An. d.
die 22. Dec.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo hexagesimo nono, undecimo Calen, Januarii, Pontificatus nostri Anno quarto.

XCVI.

Facultas Collegii Deputatorum Fabricæ Basilicæ S. Petri de Urbe, exequendi omnia pia legata, infra annum à die mortis testatorum realiter non adimpleta, cum retentione quintæ partis pro subventionem dicte Fabricæ.

Istud Collegium instituit Clem. VII. ut sup. in ejus constit. 2. Admonet. ubi plene dixi in Tomo I. Et de ea habes etiam in const. hanc præcedente, & in duabus subseqq.

PIUS EPISCOPUS,

Seruus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

DEET nos qui omnium Ecclesiarum specialem in Domino curam gerimus, Basilicæ nostræ Sancti Petri ita intendere, ut ei omnia quæ possumus auxilia præbeamus.

Causa hujus
concessionis.

§. 1. Sanè sicut accepimus, licet aliàs diversi Romani Pontifices prædecessores nostri, cupientes perfectioni Fabricæ Basilicæ hujusmodi, quæ omnium Ecclesiarum totius Orbis mater est, & magistra, & admodum crescit structura, de necessariis expensarum pecuniis opportune providere, pro tempore existentibus ejusdem Fabricæ Collegio Deputatis, eorumque Ministris, diversas facultates, privilegia, & indulta, per eorum litteras concesserint. quibus, inter cetera, quod omnia & singula legata pia eatenus & pro tempore executioni non demandata exequi facere, & pro hujusmodi executione ipsorum legatorum, & quintam partem pro ipsa Fabrica, sub certis modo & forma retinere possint expresse cavetur. Ipsique Collegium, tam in multis civitatibus jurisdictioni nostræ subiectis, quam dominiis Regni Neapolitani, & sancti filii nobilis viri Cosmi Medices Florentiæ & Senarum Ducis passim hujusmodi pia legata exequi faciant, ex quorum quinta parte maximis expensarum oneribus Fabricæ

præfate in magna parte succurratur, dilectus Filius noster, in Alma Urbe & ejus districtu Vicarius in spiritualibus generalis vigare specialis super hoc à Sede Apostolica licentiæ & facultatis concessæ, in hujusmodi legatis in dicta Urbe executioni demandandis, à ceteris annis se intromiserit in grave ipsius Fabricæ præjudicium.

§. 2. Nos qui intus cordis desideris exoptamus, ut dicta Fabrica quanto citius fieri poterit, ad debitum finem perducatur, ipsaque Fabrica attentè malà temporum qualitate ob pecuniarum defectum, magna parte subsisteret, verendumque sit, ne si in totum desereretur, etiam quod jam factum est corruat, in divinæ Majestatis offensam, & Reipublicæ Christianæ decus, ac propterea omnibus quibus possumus favoribus succurrere cupientes, eisdemque Collegium & Deputatos, eorumque Ministros à quibuscvis excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum Præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, necnon facultatis eidem Vicario concessæ tenores Præsentibus pro expressis habentes, Motu proprio non ad ipsorum Deputatorum & Collegii, & Ministrorum hujusmodi, vel alicujus eorum nobis super hoc oblata petitionis instantiam, sed ex mera liberalitate & certa scientia nostris, eisdem Deputatis & Collegio Fabricæ hujusmodi facultatem eidem Vicario concessam ad hoc ut elapsis quindecim mensibus à die obitus rellatorum, & quomodolibet per ultimam voluntatem disponentium computandis, Collegium & Deputati Fabricæ hujusmodi legata, in quibus ipse Vicarius non præveniret, juxta formam facultatum præfate Vicario, & aliarum ipsi Fabricæ concessarum exequi facere possit, per præsentem concedimus & impartimur, illamque ad eisdem Deputatos extendimus & ampliamus, illosque de super à quoquam impediri minime debere.

§. 3. Necnon præsentem litteras nullo umquam tempore, de subreptionis vel obreptionis, vitio aut intentionis nostræ, vel quopiam alio defectu notari, impugnari, aut invalidari, etià ex eo capite quod interesse habentes vocati non fuerunt, aut adjuris terminos reduci, minuique, in jus vel controverfiam vocari posse, sed semper validas & effraces existere, suosque plenarios effectus sortiri, minuique sub quibuscvis similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, & derogationibus comprehendì ullatenus posse, sed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum statum restitutas esse & censeri.

§. 4. Sicque per quoscunque Judices & Commissarios quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi facultate, judicari debere, ac quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, irritum & inane decernimus.

§. 5. Non obstantibus præmissis ac quibuscvis Apostolicis, necnon in provincialibus & synodalibus Conciliis editis, specialibus vel generalibus, constitutionibus & ordinationibus, ac quibuscvis, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis alia firmitate roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, quibuscvis personis, in genere vel in specie, quomodolibet concessis, confirmatis, approbatis & innovatis. Quibus omnibus, etiam si de illis, illorumque totis tenoribus specialis, specifica, & expressa mentio seu quolibet alia expressio habenda foret, tenores hujusmodi præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 6. Volumus autem quod Præsentium transumptis etià impressis, manu Secretarii, & sigillo Collegii dicte Fabricæ subscriptis & munitis, eadem prorsus

Facultas de
qua in rub.Hoc intelli-
ge etiam le-
gati vel
sent in ex. ca
relinquere
ut sup. in
bulla 11. Pan-
li 3. Dum ad.
fol. 660.Clausulæ
præservati-
væ.Decretum
irritans.Clausulæ de-
rogatoriæ.Fides tran-
scriptorum.

Dat. P. An. 4
die 22. Dec.

XCVII.

sus in iudicio, & extra fides adhibeatur, quæ præfentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ. Nulli ergo &c.

Dat. Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo sexagesimo nono, undecimo Calend. Januarii, Pontificatus nostri Anno quarto.

Facultas Collegii & Deputatorum Fabricæ Basilicæ S. Petri de Urbe, exequendi quæcumque legata pia, infra triennium à die obitus testatorum non impleta, cum retentione medietatis eorum pro dicta Fabrica.

Alia de Fabrica plenè indicata sunt in constit. 3. Clem. VII. sup. in Tomo I. Admonet. Et de ea habes etiam in duobus const. istam præcedentibus.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D.
1569.

Exordium.

Applicatio
de qua in rubric.

Exigit incumbens nobis Apostolicæ servitutis officium, ut Fabricæ nostræ Basilicæ sancti Petri utilitati prospicere satagentes, ea libenter ipsi concedamus, quæ ejus utilitati credimus expedire.

§. 1. Hinc est quod nos qui nuper accepimus, quod tam in Alma Urbe nostra, quam in aliis civitatibus, terris, dominiis, locis & regnis, reperiuntur multa legata à piis testatoribus facta, ad effectum celebrationis Missarum, & citationis divinarum Officiorum; necnon erogationis elemosynarum diversis Ecclesiis, monasteriis, hospitalibus, & aliis piis locis, ipsaque legata heredum avaritia, seu aliis per triennium retroactum executioni debitæ demandata non fuerint, volentesque tam super præmissis ea quæ conveniunt adhibere remedia, quam Fabricæ præfatæ utilitatem aliqua ex parte procurare, ac dilectos filios Deputatos & Collegium Fabricæ hujusmodi, eorumque singulares personas à quibusvis excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & pœnis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innotari existunt, ad effectum præsentium duntaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, Motu proprio, non ad ipsorum Deputatorum & Collegii, vel alicujus eorum, aut pro eis nobis super hoc oblata petitionis instantiam, sed ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, Deputatis & Collegio hujusmodi, si & postquam juxta tenorem privilegiorum, & facultatum sibi concessorum legata hujusmodi executioni debitæ demandari fecerint, unam illorum medietatem, reliquam verò loco cui legata fuerint, applicamus & appropriamus.

Clausulæ
præservati-
væ.

§. 2. Decernentes præsentibus litteris nullo umquam tempore de subreptionis vel obreptionis vitio, aut intentionis nostræ, vel quopiam alio defectu notari, impugnari, an invalidari, etiam ex eo capite quod interesse habentes vocati non fuerint, aut ad juris terminos reduci, minusque in jus vel controversiam vocari posse, sed semper validas & efficaces existere, suosque plenarios effectus fortiri, minusque sub quibusvis similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus & derogationibus comprehendi ullatenus posse, sed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum statum restitutas esse censi.

Decretum in-
ritans.

§. 3. Sicque per quoscumque Judices & Commissarios quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi facultate, iudicari debere, irritum quoque & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Clausulæ de
rogatoriæ.

§. 4. Non obstantibus præmissis, & quibusvis Apostolicis, necnon in provincialibus & synodali-

bis Conciliis editis, specialibus vel generalibus, constitutionibus & ordinationibus, ac quibusvis, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis quibusvis personis, in genere vel in specie, quomodolibet concessis, confirmatis, approbatis & innovatis. Quibus omnibus, etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua mentio habenda foret, tenores hujusmodi præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice duntaxat specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 5. Volumus autem quod Præsentium transumptis etiam impressis, manu Secretarii, & sigillo Collegii præfatæ Fabricæ subscriptis & munitis, eadem proferus in iudicio & extra fides adhibeatur, quæ præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ. Nulli ergo &c. Si quis autem &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo sexagesimo nono, undecimo Calendæ Januarii, Pontificatus nostri Anno quarto.

Fides tran-
scriptorum.Dat. P. An. 4.
die 22. Dec.

Facultas Collegii Deputatorum Fabricæ basilicæ S. Petri de Urbe, revivendi & rescindendi quascumque alienationes bonorum Ecclesiasticorum male alienatorum, & ejusmodi causas cognoscendi, cum applicatione Fabricæ fructuum exinde à deventoribus indebitè perceptorum &c.

XCVIII.

Alia de materia Collegii & Fabricæ, notavi sup. in constit. 3. Clem. VII. Tom. I. Admonet. Et de ea habes etiam in tribus const. istam præcedentibus.

De alienationibus autem bonorum Ecclesiasticorum, dixi sup. ad constit. 5. Pauli II. Ambrosiæ, fol. 384. Tom. I.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D.
1569.

Exordium.

Et si de singulis Pastoralis officii cura nos admonet esse sollicitos, Fabricam tamen sancti Petri, quam speciali quadam cura nobis cognoscimus esse commissam, specialis intentionis favore prosequimur, eamque gratis attollimus opportunis.

§. 1. Accipimus sanè nuper quod diversæ personæ tam Ecclesiasticæ quam seculares, quamplurimæ bonas, possessiones & terras ad Ecclesias etiam Metropolitanas monasteria, beneficia, domos, & alia regularia, ac alia pia loca, necnon Hospitalia, pertinentia & spectantia, præterit diverfarum alienationum eis contra tenorem litterarum felicis record. Symmachi, & Pauli Secundi, ac aliorum Rom. Pontificum prædecessorum nostrorum, aut sine Apostolicæ Sedis licentia, seu illarum forma non servata, aut aliis in evidens dānum & præjudicium Ecclesiarum, monasteriorum, beneficiorum, & piorum locorum hujusmodi factorum occupaverunt, & detinuerunt, ac de præsentibus occupant & detineant.

§. 2. Nos præmissa conveniuntibus oculis pertransire nequeunt, utpote, quæ in divinæ Majestatis offensam, ac Ecclesiarum & Ordinis clericalis detrimentum tendant, utque Fabricæ præfatæ maximis necessitatibus succurramus, dilectos filios Collegium, & Deputatos Fabricæ præfatæ, eorumque pro tempore Auditores & Ministros, ac eorum singulos à quibusvis excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & pœnis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innotari existunt ad effectum præsentium duntaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, Motu proprio, non ad ipsorum Deputatorum & Collegii, ac Auditorum, & ministrorum præfatorum, vel alicujus eo-

Symmachi
const. est in
c. 6. de Reb.
Eccles. non
alien.Pauli Secun-
di bulla est
sup. fol. 399.Facultas Fab-
ricæ rescin-
dendi aliena-
tiones bono-
rum Eccles.
abique licen-
tiæ Sedis
Apostolicæ,
aut non ser-
vatis solemnita-
tibus, aut
in dānum
Ecclesiarum
factas.

rum, aut pro eis nobis super hoc oblata petitionis instantiam, sed ex certa scientia, ac de mera nostra liberalitate & Apostolica potestate plenitudine, eisdem Collegio & deputatis, eorumque pro tempore Auditoribus & Ministris præfatis, ut omnes & singulas alienationes in emphyteusum, seu censum perpetuum, aut tertiam vel aliam generationem, seu hominis vitam, aut aliud tempus ultra triennium, locationes vel concessiones, seu permutationes, aut occupationes, de quibuscumque terris, possessionibus, aut aliis bonis immobilibus, seu rebus & iuribus, tam spiritualibus quam temporalibus Ecclesiarum, Monasteriorum, domorum, beneficiorum, Hospitalium, & aliorum piorum locorum quorumlibet sine Sedis Apostolicæ licentia, aut illius forma non servata, in damnum Ecclesiarum, seu solemnitatibus iure requisitis, aut constitutionibus ipsorum Monasteriorum seu domorum minimè servatis, aut alias nulliter hæcenus factas revidere, & consilio sibi quantum sufficere videbitur de præmissis, illas, & contractus superinde, sub quibuscumque formis & verborum expressionibus habitos & celebratos, etiam si iuramento vallati existant, eorum omnium tenores, ac si de verbo ad verbum præsentibus inferrentur pro expressis habentes, auctoritate Apostolica ad solius præfatæ Fabricæ procuratoris instantiam, etiam parte invita, & contradicente, facta sibi prius intimatione per tres menses, tenore præsentium rescindere, irritare, cassare, & annullare.

§. 2. Ipsosque detentores & occupatores, ad terras, possessiones, & bona, res, & iura præfata, ut præfertur detenta & occupata relaxandum, & de fructibus, tam hæcenus perceptis, & qui percipi poterunt, quam in posterum percipiendis, realiter satisfaciendum, cogere & compellere. Bonorumque & fructuum recuperandum huiusmodi tertiam partem ipsi Fabricæ, reliquis duabus partibus Ecclesiis, monasteriis, beneficiis, domibus, Hospitalibus, & piis locis ad quæ bona ipsa spectabant, cum effectu consignatis, vendicare & applicare possint & valeant, facultatem & auctoritatem, concedimus & impartimur. Ita ut eisdem Collegio, deputatis, eorumque Auditoribus & ministris liceat dictæ tertiæ partis huiusmodi bonorum præfatæ Fabricæ, ut præmittitur, applicatorum corporalem possessionem propria auctoritate liberè apprehendere, illamque in dictæ Fabricæ usus, & utilitatem absque alia Sedis Apostolicæ, & Superiorum Ecclesiarum, monasteriorum, domorum, beneficiorum, Hospitalium, & aliorum piorum locorum, ad quæ bona ipsa, & fructus spectabant licentia, alienare, vendere, & convertere, Diocesani loci, vel cuiusvis alterius licentia desuper minimè requisita.

§. 4. Decernentes præfatas litteras nullo umquam tempore, de subreptionis vel obreptionis, aut intentionis nostræ, vel quopiam alio defectu notari, impugnari, aut invalidari, etiam ex eo capite quod interesse habentes vocati non fuerint, aut ad iuris terminos, reduci, minuscule in controversiam vocari posse, sed semper validas & efficaces existere, suosque plenarios effectus sortiri, minuscule sub quibuscumque similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, & derogationibus comprehendere nullatenus posse, sed ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum statum restitutas esse, & censeri. Sicque per quoscumque Iudices & Commissarios quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, sublati eis & eorum iurisdictioni, quavis aliter iudicandi facultate, iudicari debere, irritum quoque & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 5. Non obstantibus præmissis, ac quibuscumque Apostolicis, necnon in provincialibus & synodalibus Conciliis editis, specialibus vel generalibus, constitutionibus & ordinationibus, ac quibuscumque iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus,

privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis quibuscumque personis, in genere vel in specie quomodolibet concessis, confirmatis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica & expressa mentio habenda, seu aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi Præsentibus pro expressis habentes, illis aliàs in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 6. Volumus autem quod Præsentium transumptis etiā impressis manu Secretarii & sigillo Collegii dictæ Fabricæ subscriptis & munitis, eadem prorsus in iudicio & extra fides adhibeatur, quæ Præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensæ.

Nulli ergo &c. Si quis &c.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo sexagesimo nono, prid. Cal. Januarii, Pontific. nostri Anno 4.

Sequitur extensio dictæ facultatis, etiam quo ad cognitionem causarum dictarum alienationum.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

EXigit incumbens nobis Apostolicæ servitutis officium, ut Fabricam Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, tamquam peculiari, nostræ curæ commissam, specialiori cura amplementis, non modo ea quæ illi concessa reperimus conferverimus, verum etiam novis semper concessionibus decoremus, ut exinde maioribus suffulta præsidii celerius ad finem debitum perducatur.

§. 1. Sanè licet aliàs nos ex certis tunc expressis causis per alias nostras, Motu proprio concessas litteras, dilectis Filiis Collegio & Fabricæ præfatæ deputatis, eorumque pro tempore Auditoribus & ministris ut omnes & singulas alienationes, in emphyteusum seu censum perpetuum, aut ad tertiam vel aliam generationem, seu hominis vitam, vel aliud tempus, ultra triennium locationes vel concessiones, seu permutationes, aut occupationes, de quibuscumque Terris, possessionibus, aut aliis bonis immobilibus, seu rebus & iuribus, tam spiritualibus quam temporalibus, Ecclesiarum, Monasteriorum, & domorum, Hospitalium, & aliorum piorum locorum quorumlibet sine Sedis Apostolicæ licentia, aut illius forma non servata, vel in damnum Ecclesiarum, seu solemnitatibus à iure requisitis, aut constitutionibus ipsorum Monasteriorum seu domorum minimè servatis, aut alias nulliter hæcenus factas revidere, & consilio sibi quantum sufficere videretur de aliquo ex præmissis, illas & contractus superinde, sub quibuscumque formis & verborum expressionibus factos & celebratos, etiam si iuramento, & confirmatione Apostolica vallati existerent, ac aliàs sub certis modo & forma, Apostolica auctoritate, ad solius ipsius Fabricæ procuratoris instantiam, etiam parte invita, & contradicente, facta sibi prius intimatione per tres menses, rescindere, irritare, cassare, & annullare; ipsosque detentores & occupatores ad terras, possessiones, & bona, necnon res & iura præfata, ut præfertur, detenta & occupata, relaxandum & de fructibus tam hæcenus perceptis, & qui percipi potuissent, quam in posterum percipiendis realiter, satisfaciendum, cogere & compellere, bonorumque & fructuum huiusmodi tertiam partem ipsi Fabricæ, reliquis duabus partibus Ecclesiis, monasteriis, beneficiis, domibus, Hospitalibus, & piis locis, ad quæ bona ipsa spectarent, cum effectu consignatis, vendicare & applicare possint & valeant, facultatem & auctoritatem concesserimus, prout in dictis litteris plenius continetur.

§. 2. Nuper tamen, sicut nos accepimus, in prosecutione litterarum huiusmodi in hac Alma Urbe, & multis aliis Civitatibus, & locis Collegium præfatum, & ejus Ministri invenerint nonnullas causas

Fides transumptorum.

Dat. P. An. 5. die 31. Dec.

Edita An. D. 1570.

Exordium.

Hic Pontifex facultatem dedit Collegio Fabricæ S. Petri, revidendi, & rescindendi alienationes bonorum Ecclesiarum, & abque licentia Sedis Apostolicæ aut non servatis solemnitatibus, vel in damnum Ecclesiarum, ut hic & sup. in constitut. præfata.

Quia tamen multe causæ coram diversis iudicibus pendebant super præ-

Et tertiam partem bonorum tractum re. u. perandorum applicandi Fabricæ.

Imò loco tertiæ partis possunt percipi omnes fructus inabitæ percipiunt & cet. ut infra in x. declaratur.

Clauful. præservativæ.

Claufula derogatoria.

missi & non expediebantur, ideo Pont. dat facultatem colligi illas, ad se advocandi, & cognoscendi.

super recuperatione huiusmodi terrarum, possessionum, & aliorum bonorum immobilium, rerum & jurisdictionum diversis iudicibus, etiam causarum Palatii Apost. Auditoribus commissas & delegatas, vel ordinaria auctoritate agitas, in quibus a multo tempore circa Abbatum, Priorum, & Commendatariorum, Rectorum, Administratorum, Canoniorum, Capitulorum, & aliorum beneficiariorum negligentia, seu impotentia, aut alia ex causa aliquis iudiciarius actus relevans servatus non extitit, & interim Monasteria, Ecclesie, domus, Hospitalia, & alia loca prefata detrimentum non modicum sustineant. Nos singularum causarum prefatarum status, & merita, nominaque & cognomina iudicum & colligantium presentibus pro expressis habentes, Motu proprio non ad alicujus nobis super hoc oblata petitionis instantiam, sed ex certa nostra scientia, ac de Apostolica potestatis plenitudine, eisdem deputatis & Collegio, eorumque Commissariis, Auditoribus, & Ministris, ut omnes, & singulas causas huiusmodi, in quibus saltem per biennium aliquis iudiciarius revelans actus ultra fatalium prorogationes servatus non fuerit, in eisdem statu, & terminis in quibus reperiuntur, ad quibuscumque iudicibus, tam ordinariis, quam delegatis, etiam si causas Palatii huiusmodi Auditores fuerint, ad solius prefate Fabricae procuratoris instantiam, etiam Abbatibus, Prioribus, Comendatariis, Administratoribus, Rectoribus, Capellanis, Hospitalariis, & aliis beneficiariis inivitis, reassumere, & advocat. illasque postquam, ut praefertur, reassumptae, & advocatae fuerint, juxta privilegia, & facultates eidem Collegio concessas, & indultas, & prout procedere possunt contra ejusdem Fabricae debitores, & in causis relictorum ad pias causas cognoscere, ac sine debito terminare, facultatem concedimus.

Item, quia Episc. Bononien. & Ravennaten. in causis alienationum huiusmodi in sua diocesi procedebat, & ideo facultates Fabricae impediebantur.

§. 3. Insuper cum sicut etiam accepimus, licet in Civitate nostra Bononiensi venerabilis Prater noster Episcopus Bononiensis vigore Concilii Tridentini, & Ravennatenensis nonnullis ex Clero ad locationes bonorum Ecclesiasticorum, revidendas, & rescindendas deputasset, & ipsi admodum paucas sine debito terminassent, tamen post emanatas dictarum facultatum nostrarum in dicta Fabrica favorem litteras, sub nomine ipsorum Deputatorum certum editum publicatum fuerit, per quod inter cetera omnes & singulae personae Ecclesiasticae, necnon Rectores & Administratores Ecclesiarum, Monasteriorum, & piorum locorum moniti fuerunt, ut pro adimplemento sacrorum canonum, & constitutionum factarum, tam a nobis quam Praedecessoribus nostris omni adhibita diligentia curarent recuperationem bonorum Ecclesiasticorum per triginta annos ante Concilium Tridentinum quocumque titulo male alienatorum, eisdem jubendo, ut omni studio & diligentia in officio prefatorum Deputatorum, & posse eorum Notarii infra certum statutum terminum omnium bonorum a triginta annis, ut praefertur, computandis occupatorum eorumque occupatorum cum ipsorum nominibus, & cognominibus, & ipsorum bonorum descriptionibus, & conscribendis noticiam dare, ac quaecumque instrumenta, & scripturas tales causas concernentia exhibere deberent, ad hoc ut ipsi facilius in huiusmodi causis procedere possent, & successively postquam Commissarius prefatae Fabricae suum editum juxta tenorem prefatarum nostrarum litterarum publicari fecerat, idem Episcopus a nobis quasdam litteras in forma Brevis obtinuerit, per quas eidem & pro tempore existenti Episcopo, praefati seu Administratores, aut ejus, vel illius Vicario in spiritualibus generali, necnon dilectis filiis iudicibus, & Revisoribus, ac Syndicis ad id ab eodem Episcopo in synodo Diocesana, deputatis & pro tempore deputandis concessimus & indulgimus, ut omnes & singulas, ac quascumque alienationes, & concessionem quorumcumque bonorum Ecclesiasticorum, factas & faciendas, Civitatibus & Diocesi Bononien. & aliarum causarum & causarum, reviderent & cognoscerent summarie,

simpliciter, & de plano, ac sola facti veritate inspecta, & in illis quae constitutiones fel. record. Symmachi Secundi, & Pauli etiam Secundi Romanorum Pontificum praedecessorum nostrorum, & in damnum Ecclesiarum, Monasteriorum, & piorum locorum facta fuisse comperissent, praehabita superinde congrua revisione, adhibitisque legitimis probationibus procederent, & prout juris foret deciderent, & alia facerent, prout in edicto & litteris prefatis plenius continetur, quarum litterarum vigore aliud editum super similibus publicatum extitit, quibus ipsae personae Ecclesiasticae, ut decet, obtemperantes dictas denunciations in eorum Officio detulerunt, & ut Commissarium prefatum deluderent, praefati Deputati ab edicto per eundem Commissarium facto appellarunt, & ipsum fere in omnibus causis prefatis praevenerunt.

§. 4. Nos attendentes praemissa, prout in Civitate Bononiensi haecenus occurrerunt, etiam in multis aliis Civitatibus & Diocesis, simili vel alio modo occurrere posse, & si prefata Fabrica sic impediretur, hoc non sine gravi ipsius detrimento succedere posse, volentesque propterea ejusdem Fabricae utilitati consulere, ac edictorum & litterarum nostrarum prefatarum tenores similiter presentibus pro expressis habentes, Motu & scientia similibus Collegio, Deputatis, Auditoribus, Commissariis & Ministris Fabricae praefatae, ut ipsi in omnibus & singulis causis Monasteriorum, Abbatiarum, Prioratum, domorum & aliorum exemptorum, sub jurisdictione ordinaria non comprehensorum, necnon aliis, in quibus processus nondum est instructus, etiam si in eis Ordinarius virtute litterarum nostrarum, vel ipsa ordinaria auctoritate praevenerit, modo & forma, quibus per prefatas litteras, vel alias concessum extitit procedendi, easque cognoscendi, & sine debito terminandi liberam & amplam facultatem concedimus pro praesentibus.

§. 5. Praeterea cum per litteras nostras prefatas eidem Collegio & Deputatis concesserimus facultatem cogendi qualibet personas ad restituendum bona, proprietates, & redditus Monasteriorum, Ecclesiarum, beneficiorum, domorum, & piorum locorum, ut praemitterit alienata, sive decenta & occupata, una cum eorum fructibus per possessores & alios perceptis, & de facili evenire posset, ut plurimae personae, quae per multos annos ipsa bona possederunt, & in eis plurima maiora fecerunt de bonis ipsis priventur, canones, census, redditus, quae pro bonis ipsis solvant, cuperent augere, ita ut cederent in evidentem utilitatem ipsorum Monasteriorum, Ecclesiarum, beneficiorum, domorum, Hospitalium, & locorum piorum. Alique tanta premerentur necessitate, ut ipsis, de fructibus per eos & eorum antecessores, & alias personas perceptis, integre satisfaciendi nulla sufficiat facultas, onerosumque eis omnino videatur, cum ipsi forsitan bonae fidei possessores fuerint, talem summam solvere. Nos super praemissis paterna pietate providere cupientes, Volumus Collegium & Deputatos prefatos, ejusque Commissarios, Auditores, & Ministros, postquam bonorum partem debitam huiusmodi juxta formam litterarum nostrarum Monasteriis, Ecclesiis, domibus, capitulis, capellanis, beneficiariis, & piis locis, ad jus & proprietatem Monasteriorum, Ecclesiarum, domorum, capitulorum, rectorum, capellanorum, beneficiorum, & piorum locorum, quorum antea erant, reducerint, posse & valere eidem possessoribus, ut aliis personis, de consensu eorum quorum intererit, sub honesto canone sive censu, aut aliis prout iustum eis videbitur, in evidentem tamen utilitatem ipsorum Monasteriorum, Ecclesiarum, domorum, capitulorum, parochialium, Ecclesiarum, capellaniarum, & beneficiorum, ac locorum piorum, de novo in emphyteusim seu censum perpetuum, aut ad tertiam vel aliam generationem, seu hominis vitam, aut aliud tempus eorum arbitrio locare & concedere, ac super fructibus male perceptis huiusmodi, si Beneficiorum

Propterea Pontifex declarat Fabricae depuratorum cognoscere possit omnes causas Ecclesiarum & locorum exemptorum a jurisdictione Ordinarii, etiam omnes alias causas Ordinariis non insistentibus.

Facultatemque eidem Collegio concedit bona sic pro locis piis recuperata, de novo in evidentem illorum utilitatem dare in emphyteusim, vel ad certam generationem, aut aliter & super fructibus componere.

eorumdem ad id accesserit assensus componere. Deque tertia parte bonorum & fructuum huiusmodi ipsi Fabricæ, per dictas nostras litteras assignata arbitrio suo, etiam sine pro tempore existentium Abbatum, Priorum, Commendatariorum, Administratorum, Canonorum, Capitulorum, Rectorum, & Beneficiorum eorumdem consensu, & eis etiam invitatis, disponere & componere, ipsosque possessores, & alias personas cum eis contrahentes quietare, & absolvere possit.

Possessores quoque bonorum in utilitatem Ecclesiæ, sed non servatis solemnitatibus alienationum penes pecuniariis Fabricæ applicari, punire, pro tali excessu, & fructibus perceptis, & certum terminum præfigere ad obtinendum confirmationem à Sede Apostolica &c.

Possidentes quoque monasteria, Ecclesiæ, & pia loca, quæ instrumenta alienationum bonorum suorum penes se non retineant, sed solum eis canones, seu census illarum ratione persolvuntur, licetque qui ea possident forsan penes se talia instrumenta habeant, illa tamen ostendere minime volunt, sequentur, quod per multum temporis spatium in bonorum eorumdem solutionem existunt, eidem Collegio, Deputatis, Commissariis & Ministris, ut omnes & singulas personas bona ecclesiastica, ut præfatur, retinentes, possidentes, vel detinentes, nisi legitimam causam habuerint se excusandi, ad exhibendum per documenta & instrumenta publica titulos suos, quorum vigore bona huiusmodi possident, intra terminum eis præfixendum, sub penis & censuris sibi bene visis monere, quod facere recusantibus, aut non curantibus, eidem Collegio, & Deputatis, in iis in quibus dicti possidentes à quadraginta annis citra non ostenderint dicta instrumenta, & ab inde pacifice possedisse & solvisse, ac de canone solito ipsis Beneficiatis respondisse, ad penam & censuram huiusmodi incursum, ac ipsorum bonorum privationem, fructuumque eorumdem solutionem procedere possint, concedimus & indulgemus.

Fructus bonorum pro quibus prima sententia pro Fabrica lata fuerit, deponi faciendis penes idoneum depositarium usque ad finem litis.

Notarios etiam rogatos de scripturis

§. 6. Cumque ut similiter accepimus inveniantur multa bona in evidentem utilitatem Monasteriorum, Ecclesiarum, & piorum locorum huiusmodi, sed consuetis solemnitatibus vel aliis, de iure vel ex forma Ordinum & constitutionum Monasteriorum, capitulorum, Ecclesiarum, domorum, hospitalium, & piorum locorum requisitis non observatis, ac sine licentia vel confirmatione Apostolica alienata, Collegium, & Deputatos, & eorum Commissarios, ac Ministros præfatos, possessores ipsos, pro excessibus & temerario ausu, ac fructibus perceptis indebitè huiusmodi, eorumdem Collegii Deputatorum, Commissariorum, & Ministrorum arbitrio, penes pecuniariis, omni & quacumque appellatione remota, in ipsius Fabricæ utilitatem convertendis punire & multare, eisdemque possessoribus, & detentoribus competentem terminum sub præfatis penis, ad obtinendum debitam confirmationem, à nobis & Sede Apostolica præfigere, quod si neglexerint ipso termino elapso, ad incursum penarum huiusmodi, & ipsorum bonorum privationem, omni appellatione postposita, procedere, etiam posse volumus & declaramus.

§. 7. Utterius quoque cum plurima reperiantur Monasteria, Ecclesiæ, beneficia, Hospitalia, & pia loca, quæ instrumenta alienationum bonorum suorum penes se non retineant, sed solum eis canones, seu census illarum ratione persolvuntur, licetque qui ea possident forsan penes se talia instrumenta habeant, illa tamen ostendere minime volunt, sequentur, quod per multum temporis spatium in bonorum eorumdem solutionem existunt, eidem Collegio, Deputatis, Commissariis & Ministris, ut omnes & singulas personas bona ecclesiastica, ut præfatur, retinentes, possidentes, vel detinentes, nisi legitimam causam habuerint se excusandi, ad exhibendum per documenta & instrumenta publica titulos suos, quorum vigore bona huiusmodi possident, intra terminum eis præfixendum, sub penis & censuris sibi bene visis monere, quod facere recusantibus, aut non curantibus, eidem Collegio, & Deputatis, in iis in quibus dicti possidentes à quadraginta annis citra non ostenderint dicta instrumenta, & ab inde pacifice possedisse & solvisse, ac de canone solito ipsis Beneficiatis respondisse, ad penam & censuram huiusmodi incursum, ac ipsorum bonorum privationem, fructuumque eorumdem solutionem procedere possint, concedimus & indulgemus.

§. 8. Et quoniam indignum videtur, quod Monasteria, Ecclesiæ, & loca pia, ac Fabrica ipsa, dum per litum anfractus circumduci contingit, fructibus bonorum, pro quibus primam sententiam in eorum favorem obtinuerint, priventer, Volumus, quod Collegium & Deputati præfati, necnon eorum Commissarii, Auditores, & Ministri, post primam latam sententiam, si ab ea appellari, & causam prosequi contingit, fructus bonorum super quibus lis verti contigerit, sub arcto sequestro, aut penes idoneum depositarium per ipsum Collegium, & eorum Ministros eligendum, usque ad ejus cognitum in secunda sententia, deducitis tamen his quæ alias ex forma locationum præcedentium Rectoribus, Administratoribus, Monasteriis & piis locis fuerint persolvenda, quæ minime retardari debeant, & sine liti ac iurium Monasteriorum, Ecclesiarum, & piorum locorum ac partium præiudicio ponant, dent, & deponant.

§. 9. At quoniam Ecclesiarum bona, confinia, canones, census, redditus, & proventus, iura, instrumen-

ta, scripturæ à diversis avaritia obsecratis occultantur, adeo quod à multis Abbatibus, Prioribus, Commendatariis, Capitulis, Canonicis, Rectoribus, Cappellanis, Guardianis, & aliis Beneficiatis, beneficiorum suorum bona & illorum confinia, & instrumenta ignorentur, eisdem Collegio & Deputatis, eorumque Commissariis, Auditoribus, ac subdelegatis substitutis, & Ministris, ut sub pecuniariis, & in illarum subsidium Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis, ac aliis iuris & facti remediis opportunis, omnes & singulos utriusque sexus Christiani- deles, de præmissis informatos, ac Notarios, & Tabelliones, ac alios quoscumque de instrumentis & scripturis, ac documentis in præmissis, & circa ea necessariis rogatos, in Ecclesiis dum divina celebrantur, vel aliis, etiam per edictum publicum, vel simplicem citationem, ut ea omnia ipsi Monasteriis, Ecclesiis, Beneficiatis, & piis locis denuncient, propalent, notificent, exhibeant, & consignent, citare & monere, ac contra contumaces, & inobedientes ad incursum penarum, & censurarum huiusmodi declarationem usque ad illam effectivam obedientiam, omnibus, & singulis iuris, & facti remediis opportunis procedere possint, & valeant, concedimus, & indulgemus.

§. 10. Et quoniam iustum esse censuimus, ut causas, quæ per ipsos Collegium, Deputatos, eorumque Auditores, Commissarios & Ministros cognoscuntur, tractantur, & decidentur, celerem, & optatum finem accipiant; Volumus quod Collegium & Deputati, eorumque Auditores, Commissarii, & Ministri, in omnibus causis, quas ipsos & eorum quemlibet pro tempore avocare, agere, cognoscere, decidere, & sine debito terminare contigerit, illas juxta privilegia, & facultates eidem Collegio concessas, & indulgas, ac prout procedere possunt contra ejusdem Fabricæ debitores, & in causis legatorum piorum unâ cum illarum incidentibus, dependentibus, emergentibus, annexis, & connexis, procedere, cognoscere, decidere, & similiter sine debito terminare, necnon partes in illis interesse habentes citare, & si absentes, aut sui copiam non facientes, aut aliâ non reperibiles fuerint, dumodo prima vice personaliter citati fuerint, facta prius diligentia de eos reperiendo per unum ex Curforibus nostris, vel Mandatariis præfatis Fabricæ, domi, ubi aliâs resederint, dimissa copia, vel per edictum in valvis Basilicæ S. Petri huiusmodi, & in acie Campi Floræ assignandum, vel aliâs, prout in obligationibus in forma Camere fieri solet, arbitrio suo simili modo citare, necnon viduis, pupillis, & aliis personis de iure curatore indigentibus, curatores ipsos ex officio deputare, ac quibusvis tam apostolica, quam ordinaria auctoritate deputatis, etiam S. R. E. Cardinalibus, vel causarum Palatii Apostolici Auditoribus, aliisque Iudicibus, necnon quibus & quoties opus fuerit, sub penis pecuniariis arbitrio suo imponendis, ac censuris Ecclesiasticis inhibere, aliaque in præmissis, & circa ea necessaria, & opportuna facere possint & valeant.

§. 11. Districtius inhibentes quibusvis locorum Ordinaris, etiam S. R. E. Cardinalibus, & aliis personis, quavis auctoritate etiam Apostolica fungentibus, etiam cujuscumque dignitatis, status, gradus, ordinis, & conditionis existentibus, in virtute sanctæ obedientiæ, ac sub suspensionis à divinis, & excommunicationis latæ sententiæ, aliisque nostro arbitrio moderandis, inflegendis penis, ne eisdem Collegium, & Deputatos molestare, aut præmissorum executionem quovomodo impedire, vel in eis se direxerit, vel per indirectum ingerere, vel intrinsece possint, seu audeant, vel præsumant. Decernentes quoque præfentes litteras ullo unquam tempore, de subreptionis, vel obreptionis vicio, aut intentionis nostræ, vel quopiam alio defectu, etiam ex eo quod interesse habentes vocati non fuerint, notari, in jus vel controversiam, seu aliâs revocari non posse, nec per subreptionem, vel obreptionem, obtentas præsumi, & ob id viribus carere, minuscule sub quibusvis similibus, vel dissimilibus gratiarum revocationibus, suspensio-

bonorum Ecclesiasticorum & alios informatos cogere ad illas notificationes.

Causasque huiusmodi cognoscere, & terminare, & procedere, sicut in causis debitorum Fabricæ.

Inhibitio contra molestantes Fabricam & ejus deputatos super præmissis aut illorum executionem impediens.

Clausula præservativa

Decretum
irritans.Clauſula de-
rogatoriæ.Dux partes
bonorum re-
cuperando-
rum confi-
gnetur Ec-
clesiis ad quas
ſpectant.
Fides trans.Dat. P. An. 5.
die 11. Sept.Ed'ra An. D.
1570.

Exordium.

nibus, limitationibus, & aliis contrariis dispositionibus quantumvis generalibus, ac fortissimis clausulis, & decretis irritantibus roboratis comprehendendi, sed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties in præſentium, & eum, in quo ante præmiſſa quomodolibet erant ſtatutum, etiam ſub data per Collegium, & Deputatos huiusmodi eligenda plenarie reſtituta eſſe.

§. 12. Sicque ab omnibus cenſeri, & ita per quocumque Iudices & Commiſſarios quavis auctoritate fungentes, etiam Auditores & Cardinales præſatos, ſublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi facultate, iudicari debere, irritum quoque & inane, ſi ſecus ſuper his à quoquam quavis auctoritate, ſciēter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 13. Non obſtantibus præmiſſis, ac noſtra de non tollendo jure quæſito, & quibuſvis Apoſtolicis, etiam per nos, necnon in provincialibus, & ſynodalibus Conciliis editis, ſpecialibus, vel generalibus conſtitutionibus, & ordinationibus, ac quibuſvis etiam Collegii Cardinalium, & Auditorum, eorundem, ac aliorum tribunalium, necnon quorumcumque Monafteriorum, Eccleſiarum, domorum, beneficiorum, ordinum, capitulorum, & priorum locorum, etiam juramento, confirmatione Apoſtolica, vel quavis firmitate alia roboratis, ſtatutis & conſuetudinibus; privilegiis quoque, indulgis, & litteris Apoſtolicis, quibuſvis, etiam iſſis Auditoribus, & aliis Iudicibus, ſub quibuſcumque tenoribus & formis, ac cum quibuſvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliſque efficacioribus, & inſolitis clauſulis, irritantibusque, & aliis decretis, in genere, vel in ſpecie, etiam Motu ſimili, & ex certa ſcientia conceſſis, confirmatis, approbatis, & innovatis; quibus omnibus, etiam ſi de illis, eorumque totis tenoribus ſpecialis, ſpecifica, & expreſſa mentione habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc ſervanda foret, tenores huiusmodi, ac ſi de verbo ad verbum nihil penitus omiſſo, & forma in illis tradita obſervata inferri forent Præſentibus pro expreſſis habentes, illis aliis in ſuo robore permanſuris, hac vice dumtaxat ſpecialiter, & expreſſe derogamus, contrariis quibuſcumque. Aut ſi aliquibus, communiter vel diſiſim, ab eadem ſit Sede indultum, quod interdicti, ſuſpenſi, vel excommunicari non poſſint per litteras Apoſtolicas, non facientes plenam, & expreſſam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§. 14. Volumus autem, quod dicti deputati retenta tertia parte bonorum, per eos pro tempore recuperatorum huiusmodi, reliquis duas partes ſuis quibuſvis Eccleſiis pro rata conſignare debeant, & teneantur.

§. 15. Quodque Præſentium tranſumptis, etiam impreſſis, manu Secretarii Fabricæ huiusmodi ſubſcriptis, & ſigillo eiſdem Fabricæ ſigillatis, eadem proſus fides in iudicio & extra adhibeatur, quæ iſſis originalibus litteris adhiberetur, ſi forent exhibitæ vel oſtenſæ.

Nulli ergo omnino hominum, &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1570. tertio Id. Septembris, Pontific. noſtri Anno quinto.

Sequitur facultas Fabricæ circa applicationem fructuum.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

EX debito Paſtoralis officii, cui diſponente Domino præſidemus, ad ea liberent intendimus, per quæ quarumlibet Eccleſiarum, Fabricæ præſertim Baſilicæ noſtræ Principis Apoſtolorum de Urbe, cuius cura nobis peculiaris eſt attributa, congruum ſuſcipiant ſuſtentionem, utque id facilius ſubſequatur nonnumquam ea quæ per nos ad ipſarum favorem nata ſunt, quæque non ita felicem ſucceſſum habi-

tura credimus, ad aliam formam redocimus, prout locorum, & temporum qualitate penſata conſpicimus in Domino ſalubriter expedire.

§. 1. Sane licet alias, &c. ut ſuprà.

§. 2. Verum quia, ut accepimus, dictæ Fabricæ difficile foret tertiam partem proprietatis bonorum eiſdem Fabricæ, ut præſertur, assignatam vendere, & in uſum dictæ Fabricæ convertere, cum non de facili emptores reperirentur, & plurima bona non ita commodam diſpoſitionem pariantur, ut tertia ab iſſis pars ſine duarum partium detrimento diſſembrari & ſeparari poſſit. Cupientes indemnitate dictæ Fabricæ conſulere, arbitrantur, quod ſi loco dictæ tertiæ partis proprietatis bonorum recuperandorum, ut præſertur dictæ Fabricæ assignata, omnes fructus contra leges & canones, ac conſtitutiones Anteceſſorum noſtrorum per quosvis conductores & ſucceſſores, univerſales vel ſingulares, quomodolibet indebitè ex dictis bonis percepti, & qui percipi poterunt, & non ſine animæ eorum periculo, retineri poſſunt, quatenus exigibiles ſint, & in alienationibus, in quibus pauci, aut nulli fructus indebitè percepti fuerunt, vel ex inopia debitorum, vel ex quavis cauſa, vel occaſione per iſſos Deputatos arbitranda, nullum vel modicum emolumentum reportare poſſent (cum non ſit conveniens, quod ex ejus bono opere detrimentum ſentire) omnes fructus, redditus & proventus integros unius anni ex huiusmodi bonis recuperatis exigendi & percipiendi dictæ Fabricæ assignarentur, & appropriarentur, ceteriorum utilitatem, tam dictæ Fabricæ, quam Eccleſiæ ipſe conſequerentur. Eoſdem itaque Collegium, & Deputatos, ac Auditores & Miſiſtros, eorumque quoslibet à quibuſvis excommunicationis, ſuſpenſionis, & interdicti, aliſque Eccleſiaſticis ſententiis, cenſuris, & penis, à jure vel ab homine quavis occaſione, vel cauſa latis, ſi quibus quomodolibet innodati exiſtunt, ad effectum Præſentium dumtaxat conſequendum, harum ſerie abſolventes, & abſolutos fore cenſentes, necnon litterarum præſatarum tenores Præſentibus pro expreſſis habentes, Motu proprio, non ad alioquin ſuper hoc nobis oblata petitionis inſtantiam, ſed de noſtra mera liberalitate, & ex certa ſcientia, ac de Apoſtolicæ poteſtatis plenitudine, omnes & ſingulos fructus, redditus, proventus, canones, cenſus, aſſiſta, & ſeu alias reſponſiones, quocumque nomine nuncupentur, quomodolibet, tam per conductores bonorum eccleſiaſticorum, quam eorum ſucceſſores quoscumque, univerſales, vel ſingulares, aut particulares, ac alios detentores, occupatores, & debitores, ſub quovis prætextu, & invalido contractu, contra leges, canones, extravagantes, & conſtitutiones Anteceſſorum noſtrorum, aut aliàs indebitè, nulliter, & invalidè perceptos, & ob inſectam radicem primi contractus invalidi, aut aliàs nulliter cum Eccleſia celebrati, vel occupationis, detentionis, & uſurpationis factæ indebitè dictorum bonorum. Si verò, vel quia modici, aut nulli admodum fructus ſint exaſti, vel ex debitorum inopia, vel quavis alia cauſa per iſſos Deputatos arbitranda, fructus prædicti non eſſent exigibiles, tunc fructus, redditus, proventus, cenſus, & canones integros unius anni ex dictis bonis recuperatis percipiendis, loco dictæ tertiæ partis, plenarie, & integrè dictæ Fabricæ assignamus, & applicari mandamus. Ita quod eiſdem Collegio, & pro tempore exiſtentibus Deputatis, Auditoribus, & Miſiſtris prædictis liceat illos propria auctoritate recuperare, exigere, & levare, illoſque locare, vendere, & alienare, ac in uſum & utilitatem dictæ Fabricæ convertere, Sedis Apoſtolicæ vel Superiorum Eccleſiarum, Monafteriorum, & beneficiorum eorundem, vel Ordinarii, ut cuiſvis alterius licentia deſuper minime requiſita.

§. 3. Et ut facilius Eccleſiæ integram proprietatem, & Fabrica fructus, ut præmittitur, ſibi assignatos conſequi poſſit ſine litium curſu, eiſdem Collegio, & Deputatis concedimus, & elargimur ut quoties eis videbitur opportunum, per ſeipſos tantum in cauſis prædictarum alienationum, ſive detentionum bono-

Omniſſitur
relatio con-
ſue. ed.

Modo autem
idem Pont.
ex cauſis hic
expreſſis, loco
dictæ tertiæ
partis bonorum
recuperandorum
applicat Fabricæ
omnes fructus ex
iſſis bonis, &
conductores,
vel ab aliis
occupatoribus,
indebitè perceptos,
ſive fructus unius
anni percipiendos.

Fabricæque
deputatis ſig-
nificatam con-
cedit compo-
nendi, & tra-
gendi in ca-
ſibus dubiis,
ita ut qui ſic
tranſigerint,
ſimpliciter mo-
leſtari ne-
queant.

rum

Inhibito
contra mole-
stantes Fabri-
ce Ministros
super præ-
missis.

Clausula
præservati-
væ.

Decretum
irritans.

Executorum
deputatio. &
familias.

rum ecclesiasticorum, in quibus jus Ecclesiarum, Monasteriorum, domorum, Hospitalium, beneficiorum, & piorum locorum præfatorum non adeo clarum exiit, ut de facili bona, & fructus, pro Ecclesiis, Monasteriis, domibus, beneficiis præfatis, & Fabricæ vendicari possint, jus ipsum debitum secundum dictis deceptoribus, possessoribus, & successoribus, universalibus vel particularibus sub beneplacito Sedis Apostolicæ transigere, & componere de consensu Rectorum eorumdem arbitrio, possint & valeant. Quodque aucta & solata parte, in qua convenierint, seu pro qua compulerint, occupatores, possessores, vel successores prædictos, absolvere & liberare, ita ut de cetero à nemine sub prætextu quarumcumque constitutionum, canonum, legum, extravagantiarum, ac bullarum per Antecessores nostros prædictos, & per Nos super rescissione & recuperatione bonorum, & fructuum ecclesiasticorum editarum quomodolibet molestari, inquietari, vel perturbari possint & valeant, sed facta solutione prædicta, sint & esse intelligantur etiam liberati, tam ab omni periculo, quam ab omnibus poenis & multis, quas occasione dictorum fructuum indebitè perceptorum incurrissent, & contra hæc necessarios conficere, qui postquam celebrati fuerint idem robur obtineant, ac si à Sede Apostolica confirmati fuissent, & super præmissis omnibus & singulis perpetuum silentium impositum sit, & esse censetur.

§.4. Districte inhibentes quibuscumque status, gradus, & conditionis existentibus, & quacumque auctoritate fungentibus, in virtute sanctæ obediencie, & sub excommunicationis, aliisque nostro arbitrio moderandis, & imponendis poenis, ne eisdem Collegium & Deputatos, eorumque Auditores & Ministros præfatos in præmissis molestare, perturbare, vel inquietare audeant vel præsumant.

§.5. Ac decernentes presentes litteras nullo umquam tempore, de subreptionis vel obreptionis vicio, vel intentionis nostræ, aut quopiam alio defectu notari, impugnari, aut invalidari, etiam ex eo capite, quod interesse habentes vocati non fuerint, aut ad juris terminos reducti, minuse in jus vel controversiam vocari quovis modo posse, sed semper validas & efficaces existere, suasque plenarias effectus sortiri, nec sub quibuscumque similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, limitationibus, & derogationibus comprehendì nullatenus posse, sed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum statum, etiam sub quacumque data per ipsos eligenda restitutas esse & censeri.

§.6. Sicque per quoscumque Iudices & Commisarios, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi, & interpretandi facultate & auctoritate, iudicari & definituri debere, irritum quoque & inane, quicquid fecus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§.7. Et nihilominus venerabilibus Fratribus nostris Amerino & Marceratensi ac Aquinateni Episcopis, Motu simili per Apostolicam scriptam mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum, per se vel alium seu alios presentes litteras, & in eis contenta quacumque, ubi, & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Collegii, Deputatorum, Auditorum, & Ministrorum præfatorum fuerint requisiti solemniter publicantes, sibi in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant presentes litteras, & in eis contenta quacumque ab omnibus, quos illa concernunt, inviolabiliter observari, non permittentes eos, vel eorum aliquem desuper quomodolibet indebitè molestari. Contradiutores quoslibet & rebelles, per sententias, censuras, & poenas Ecclesiasticas, aliaque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita compescendo, legitimisque super iis habendis servatis processibus sententias, censuras, & poenas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando; invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§.8. Non obstantibus fel. rec. Bonif. Papæ VIII. prædecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis dummodò ultra tres dietas quis vigore Præsentium ad iudicium non extrahatur, ac aliis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac quatenus opus sit, nostris de non tollendo jure quæsito, ac unionibus committendis ad partes vocatis quorum interest, & exprimendo valore, necnon Lateranensis Concilii novissimè celebrati uniones perpetuas, nisi in casibus à jure permisis fieri prohibentis, & quibuscumque aliis Apostolicis, necnon in provincialibus, & synodalibus Conciliis editis, specialibus vel generalibus, constitutionibus, & ordinationibus, ac quibuscumque, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque etiam derogationum derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis, in genere vel in specie, etiam Motu proprio & scientia similibus, ac aliis quomodolibet etiam iteratis vicibus concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, etiam si de illis, ac totis eorum tenoribus specialis, specifica, individua, & expressa mentio habenda, aut aliqua alia exquisita forma servanda esset, tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum infererentur, Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis in suo robore permanens, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque, seu si aliquibus communiter vel divisim, ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem. Per Præfentes autem litteras derogatum non esse, nec intelligi volumus, in parte vel toto, primis & secundis cedulis, Motu proprio concessis, & in favorem dictæ Fabricæ, super bonis Ecclesiæ alienatis, nisi tantum quoad dictos integros fructus, etiam facultatem percipiendi fructus unius anni, ut præferretur, in omnibus vero aliis & singulis in dictis cedulis, & litteris concessis omnia stent, & esse intelligantur firma & in suo robore valida, ac si Præfentes nobis non essent emanata.

§.9. Insuper quoque statuimus, ut earundem Præsentium transumptis, manu Secretarii, & sigillo dictæ Fabricæ subscriptis, & munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ Præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Nulli ergo, &c.
Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo septuagesimo primo, Calend. Februarii, Pontificatus nostri Anno sexto.

Prohibitio ad quæstum publicandi indulgentias, & confessionalia.

Ad hæc vide etiam hic sup. fol. 228. constit. 30. Et si dominici. cum ibi notatis.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Quam plenum sit periculi noxia populis ingere, nimium his temporibus afflicta Religio testatur, quod malum cum in ceteris ministris, tum præcipue in Ecclesiarum Prælati animadvertendum est, quod ab his temerè profectia longè maxima Ecclesiæ Dei conferant detrimenta. Rem sane indignam audivimus, quod non solum quondam Comiti Tello Giron temporarius administrator Ecclesiæ Toletanæ, sed etiam quidam Hispaniæ Ecclesiarum Præsules officii paterni prætextu, facultates sibi à sacris canonibus concessas excedentes, litteras suas in ipsorum Civitatibus, ac Diocæsesibus ausi sunt publicare, quib. inter cetera periculosa deprehendi-

Clausula derogatoria.

In aliis autem firmam remaneant, const. hinc inde.

D. P. A. 6.
die 1. Febr.

XCIX.

Edict. An. D.
1570.

Quidam Præsules Ecclesiarum Hispaniæ publicabant aliquod solvendum indulgentias, & facultates eligendi confessorum, &c.

tur,

tur, quod cuicumque illas accipienti certâ solutâ pecuniâ licitum sit, quem voluerit sibi sumere Sacerdotem, qui confessione audita ipsum absolvere valeat, non in eis tantum casibus, in quibus simplex sacerdos absolvere potest, sed etiam in iis quæ solis Episcopis reservata reperiuntur, aliquo præterea casu admixto veluti simoniz reatu, qui ad examen hujus sanctæ Sedis esset referendus. Non animadvertentes ipsi Præfules, & Administratores quàm periculosum sit, ea passim in certis personis committere, quæ ad Episcoporum judicium arbitriumque idcirco deferuntur, ut qui melius lepram à lepra discernere norint, causis & circumstantiis subtili indagine exploratis, salutaria cuique morbo remedia valeant adhibere. Ad hæc ipsi in dispensandis celestis gratiæ donis nimium prodigi, iis sic litteras prædictas accipientibus, indulgentias, & penitentiarum injunctarum remissiones, nulla cum re temporali conferendas, profusus & indifcretè largiuntur, quibus, & aliis licentis prædictis non pauci fluctuant & infirmi, veniæ facilitate induciti, ad peccandum procliviores fiunt, quando tot & tantorum delictorum remissionem, certo & vilissimo pretio acquirere posse confidunt. Indicem præterea casuum, & indulgentiarum ædibus sacris appendi jusserunt, quo palam significatur solventibus superscripta concedi, & inter alia absolvendi facultatem ab usu prohibitorum tribui, itemque indulgeri Missæ sacrificium, & sepulturam tempore interdicti, assumptione duorum, plurimæve comparrum ad sacrum Baptisma præter eos, qui synodalibus, ut dicunt, constitutionibus asilicuntur, Reparationem Ecclesiarum, erectionem Confraternitatum, & alias pias causas prætexendo.

Ideo hic Pont. gesta per illos annullat, & publicationes hujusmodi indulgentiarum prohibet.

§. 1. Cum igitur inter cetera scandala, etiam Simoniz pravitatis redeat, ex prædictis Sacri Tridentini Concilii decretis, & aliis sanctionibus Canonicis, nostræ præterea constitutioni & indulgentiis ad quæstum non emittendis, adversetur, clavium auctoritas evilescat, & penitentialis satisfactio enervetur, Nos his malis celeri remedio occurrendum, eademque opera futuris præcavendum fore censentes, De Apostolica potestate plenitudine supradicta omnia, quæ in ipsa Toletana, & quibuscumque aliis Civitatibus, Diocessibus, & locis, tam Hispania, quàm aliarum qualicumque Provinciarum & Regionum quocumque prætextu hucusque emanarunt, perpetuò abolemus, ac nulla & irrita nunciamus; jubemusque litteras, & indices, necnon scripturas, & monumenta quæcumque publica & privata, per ipsos locorum Ordinarios, & alios Ecclesiarum Rectores ubiqueque reperiuntur dilacerari, penitusque deleri. Et ne talia de cetero à quoquam fiant, publicentur vel concedantur, districtius prohibemus.

Contravenientibusque poenas hic descriptas imponit.

§. 2. Quicumque secus egerint, seu attentaverint, Antifites, etiam si Cardinalatus honore præfulgeant, ab ingressu, & perceptione fructuum suarum Ecclesiarum tamdiu suspensi jaceant, donec satisfactio præviâ illis per Sedem prædictam suspensio relaxarunt. Inferiores verò ab Episcopis sententiam excommunicationis incurrant, à qua, nisi in mortis articulo constituti, ab alio quàm Romano Pontifice absolutionis beneficium nequeant obtinere. Decernentes etiam irritum & inane quicquid secus per quoscumque quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Transumptis credi jubet.

§. 3. Volumus autem, ut Præsentium exempla, etiam impressa, Notarii publici manu, & Prælati Ecclesiastici sigillo obsignata, eandem illam prorsus fidem in iudicio, & extra illud ubique locorum faciant, quam ipsæmet Præsentibus facerent, si essent exhibitæ vel offensæ.

Sanctionem poenalem adijcit.

§. 4. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ absolutionis, nunciationis, iustionis, prohibitionis, decreti, & voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem Omnipotentis DEI, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incuturum.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno incarnationis Dominicæ 1570. 4. Non. Januarii, Pontificatus nostri anno 4.

Anno à Nativitate Domini 1570. indictione 13. die vero 23. mensis Jan. Pontificatus Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papæ V. anno 4. retrospectæ litteræ affixæ & publicatæ fuerunt ad valvas Ecclesiæ S. Jo. Lateranen. & Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, dimissis in supradictis locis præsentibus litteris per aliquantulum temporis spatium affixis, & deinde amotis per me Julium Parinum Sanctissimi D. N. Papæ Cursorem.

Jo. Guerardi Mag. Curs.

Eleemosynæ pro Carceratis in Urbe colligendæ, exponantur pro solventis debitis pauperum Carceratorum. Et pro debito meriti civili infra septem aureos, nemo carceretur.

De materia istorum Carceratorum vide sup. in const. 60. Reverendi. fol. 282. ubi notavi.

PIUS PAPA QUINTUS.

Manu proprio, &c.

§. 1. Volumus tunc omnes eleemosynæ Carceratorum, tam quæ per Quæstores colliguntur, quàm quæ in capsis reponuntur, expendantur pro solventis debitis pauperum Carceratorum arbitrio R. D. Cardinalis Moroni, quem confidimus præ oculis habiturum miserabiliores personas, & iustiores causas.

C.

§. 2. Eundem rogamus, ut in Carceribus Turris Nonæ erigi faciat Hospitalia aliquod sumptibus Charitatis, in quo curentur pauperes infirmi, donec adhibeatur diligentia, quam celerem esse volumus, pro illis liberandis, juxta Motum proprium felic. record. Pauli Papæ Tertii, quem servari prorsus volumus.

Ilita An. D. 1570.

Eleemosynæ quomodo expendendæ.

Iussio conservandi Hospitalis.

Hoc urique constructum fuit.

Prohibitio carcerandi pro minori summa septem aureorum, Papæ subscript.

§. 3. Insuper jubemus, ne infra septem aureos carcerari quis possit pro debito, præterquam cum debitum habet annexam criminalem causam. Placet, & ita mandamus. M.

CI.

Damnatio & excommunicatio Elisabeth Reginæ Angliæ, eique adherentium, cum aliarum penarum adjunctione.

Henricus quoque Rex ejus pater itidem damnatus fuit à Paulo III. ut in ejus const. 7. Ejus. in Temo 1.

PIUS EPISCOPIUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam,

Edita An. D. 1570.

Regnans in excelsis, cui data est omnis in Cælo & in terra potestas, unam sanctam Catholicam & Apostolicam Ecclesiam, extra quam nulla est salus, uni soli in terris, videlicet Apostolorum Principi Petro, Petrique successori Romano Pontifici, in potestatis plenitudine tradidit gubernandam. Hunc unum super omnes gentes, & omnia regna Principem constituit, qui evellat, destruat, dissipet, disperdat, plantet, & ædificet, ut fidelem Populum mutua charitatis nexu confectum, in unitate Spiritus contineat, salvumque & incolumem suo exhibeat Salvatori.

Exordium.

§. 1. Quo quidem in munere obeundo, nos ad prædictæ Ecclesiæ gubernacula Dei benignitate vocati, nullum laborem intermitimus, omni opera contentendentes, ut ipsa unitas, & Catholica Religio (quam illius auctor ad probandum suorum fidem, & correctionem nostram, tantis procellis confictari permittit) integra conservetur. Sed impiorum numerus tantum potentia invaluit, ut nullus jam in Orbe locus sit relictus, quem illi pessimis doctrinis corrumpere non tentarint, adnente inter ceteros flagitiorum serva Elisabeth præterita Angliæ regina, ad quam vel.

Henric. VIII. Rex Angliæ heresim introduxit in illo Regno, ut sup. in Pauli III. constit. cit. in rub.

uti ad asylum omnium infelissimi profugium inveniunt. Hæc eadem, regno occupato, supremi Ecclesiæ capitis locum, in omni Anglia, ejusque præcipuam auctoritatem atque jurisdictionem monstruose sibi usurpans, regnum ipsum jam tum ad fidem Catholicam & bonam frugem reductum rursus in miserum exitium revocavit.

Elisabeth Regina hæretica, etiam fuit & est, committendo multos errores, hic expressos.

§. 2. Usu namque veræ Religionis, quam ab illius desertore Henrico Octavo olim everiam, claræ mem. Maria Regina legitima, hujus Sedis præsidio reparaverat, potenti manu inhibito, secutisque & amplexis Hæreticorum erroribus, regium consilium ex Anglica nobilitate confectum diremit, illudque obscuris hominibus hæreticis complevit, Catholicæ fidei cultores oppressit, improbos concionatores, arque impietatum administratos reposuit; Missæ sacrificium, preces, jejunia, ciborum delectum, cælibatum, ritusque Catholicos abolevit; libros manifestam hæresim continentes, toto regno proponi, impia mysteria, & instituta ad Calvin præscriptum à se suscepta, & observata, etiam à subditis servari mandavit; Episcopos, Ecclesiarum Rectores, & alios Sacerdotes Catholicos, suis Ecclesiis, & beneficiis ejicere, ac de illis & aliis rebus Ecclesiasticis, in hæreticos homines disponere, deq; Ecclesiæ causis decernere ausa, Prælati, Clero, & Populo, ne Romanam Ecclesiam agnoscerent, neve ejus præceptis, functionibusq; Canonicis obtemperarent, interdixit; plebrosq; in nefarias leges suas venire, & Romani Pontificis auctoritatem atq; obedientiam abjurare, seq; solum in temporalibus & spiritualibus dominam agnoscere jurejurando coegit, penas & supplicia in eos qui dicto non essent audientes, imposuit, easdemq; ab iis, qui in unitate fidei, & prædicta obedientia perseverarunt, exegit; Catholicos Antistes, & Ecclesiarum Rectores in vincula conjecit, ubi multo diuturno languore & tristitia confecti, extremum vitæ diem miserè finiverunt. Quæ omnia cum apud omnes nationes perspicua & notoria sint, & gravissimo quamplurimorum testimonio ita comprobata, ut nullus omnino locus excusationis, defensionis, aut tergiversationis relinquatur.

Hic ideo Pont. illam ejusque adherentes hæreticos declaravit.

§. 3. Nos multiplicantiis aliis, atque aliis super alias impietatis, & facinoribus, & præterea fidei persecutione, Religionisq; afflictione, impulsu & opera dictæ Elisabeth quotidie magis ingravescente, quoniam illius animus ita obfirmatus atq; induratus intelligimus, ut non modo pias Catholicorum Principum de sanitate & conversione preces, monitionesque contempneret, sed ne hujus traditi Sedis ad ipsam hæc de causa Nuncios in Angliam transire permiserit, ad arma justitiæ contra eam de necessitate conversi, dolorem lenire non possumus, quod adducamur in unam animadvertere, cujus majores de Republica Christiana tantopere meruerit. Illius itaque auctoritate suffulti, qui Nos in hoc supremo justitiæ throno, licet tanto oneri impares, voluit collocare, de Apostolicæ potestatis plenitudine declaramus prædictam Elisabeth hæreticam, & hæreticorum faultricem, ejusque adherentes in prædictis, anathematis sententiam incurrisse, esseque à CHRISTI corporis unitate præcisos.

Regno & Dignitatibus privat.

§. 4. Quin etiam ipsam prætenso regi prædicti jure, necnon omni & quocumque dominio, dignitate, privilegioque privatam.

Vassallos liberat.

§. 5. Et item Proceres, subditos, & populos dictæ Regni, ac ceteros omnes qui illi quomodocumque juraverunt, à juramento hujusmodi, ac omni prorsus domini fidelitatis, & obsequii debito, perpetuo absolutos, prout nos illos Præsentium auctoritate absolvimus, & privamus eandem Elisabeth prætenso jure Regni, aliisque omnibus supradictis. Præcipimusque & interdiciamus universis & singulis Proceribus, subditis populis, & aliis prædictis, ne illi ejusve monitis, mandatis, & legibus audeant obedire. Qui secus egerint, eos simili anathematis sententia innodamus.

Exemplis credi jubet.

§. 6. Quia verò difficile nimis esset, Præsentes quocumque illi opus erit perferre, volumus, ut ea-

rum exempla, Notarii publici manu, & Prælati Ecclesiastici, ejusve Curie sigillis obsignata, eandem illam prorsus fidem in judicio & extra illud, ubique gentium faciant, quam ipsæ Præsentes facerent, si essent exhibitæ vel ostensæ.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1570. die 3. Kal. Maji, Pontificatus nostri anno 5.

Dat. P. A. 5. die 25. Febr.

Reformatio totius Ordinis Cisterciensis, tam quoad statum Monachorum, & divinum cultum, quàm reformationem Monasteriorum, privationemque fructuum mensæ Conventualis in locis commendatis.

CII.

Aliam reformationem jam edidit Pius IV. ut sup. in ejus const. 70. In eminenti. fol. 106. & postea aliam publicavit Greg. XIII. inf. in ejus const. 18. Super. ubi alias tibi indicabo, in hoc Tomo 11.

De institutione & aliis istius Ordinis, notavi sup. in const. 1. Paschal. II. fol. 30. Tom. I. Desiderium.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D. 1570.

EX innumeris curis, quibus sine intermissione vexamur, illa nobis durissima est, quod tot sacrarum Religionum Conventus, suis orbi juribus passim interdicerentur, neque sanè quicquam inexpertum relinquimus, quantum quidem fert difficillima præsentis sæculi conditio, quod ad illorum restitutionem pertinere existimantes. Inter ceteros autem Ordo Cisterciensis longè latèque per orbem propagatus, nobis frequentius observatur, cujus tam multa Canobia viris cum doctrina, tum sanctitate claris olim florentissimis, maligno temporum errore ad nihilum propemodum rediguntur. Quod cum aliunde ex toto orbe plus satis nobis jam pridem innouit, tum maxime ex recenti visitatione, quam Commissarius & Procurator Capitali generalis Cisterciensis in utraque Sicilia id nobis quoque jubentibus confecit, permoletè intelligimus, quamplurima ejus regni monasteria, aut debitis officiis destituta, aut Monachis ob non præstitam alimoniam deserta, aut omnino collapsa, resecta, reclusa, patentia, & ut profana habita, quæ Religionis cultrix illa vetulas tantis impendit exivit.

Hic Pont. per moletè accepit, Canobia Ord. Cisterc. destituit.

§. 1. Sed his incommodis tametià pater Abbas monasterii Cistercii, Cabilonensis Dioc. & prædictum Capitulum generale, etiam per privilegia & indulta illis à fel. rec. Pio II. Sixto IV. Pio etiam IV. & diversis aliis Rom. Pont. concessa & innovata in universum occurrenti, & ipsos Commendatarios, ad habendum & retinendum competentem Monachorum numerum, cum mensa ad victum & vestitum idonea, & etiam alia ad Monasticum cultum pertinentia compellendi facultatem habeant, utile tamen & per commodum illis fore existimavimus, nostras quoque huic rei partes adscribere, & certa quadam prædicto Ordini convenientia, illiusq; moribus & statutis magis coherencia speciatim proponere, quibus illi amplius suffulti possint supradicta Monasteria ad Conventum, disciplinam, & bonam frugem facilius revocare. Neque enim sustinere possumus, quod tam multi, qui hujusmodi Monasteria in Comendam recipiunt, Commendæ conditiones à Conc. Læter. præscriptas, & easdem, ac alias singulis lit. Apost. de hujusmodi Commendis confectis, ad specialem ejusq; significationem appositas in animæ suæ periculum adveniant, quibus de ceteris fructibus Monasterii sibi commendati disponere nemini prius permissum est, quàm debitis & confectis ejusdem, ac ipsius conventus oneribus omnino supportatis, & Quarta ubi mensa Abbatialis separata, ubi verò communis est, ac etiam in Monasterii Conventu & cura orbatis, Tertia parte omnium fructuum eorundem in reformationem fabricæ, aut ornamento-

Volensque propterea huc malo mederi, hanc edit constit. in qua determinat.

Monasteria omnia etiam commendata & unita, & de iurepatronatus laicorum rescisi, & ad debitam clausuram reduci.

Numerum competentem Monachorum in eis restitui Ad divinum & monasticum usum necessaria instrui.

Divina quotidie celebrari.

Mensam Conventualem & elemosynas restitui.

Libros sacros haberi.

Novitatus constitui.

Conventus ædificia &c. ad certam formam reduci. Hoc voluit idem Greg. XIII. ibid.

Mulieribus ingressum denegari.

rum emptionem, aut fulcimentum, seu pauperum alimoniam, ubi major exegerit, suaveritque necessitas quotannis erogata. Quin etiam in ipsis Monasteriis divinus cultus, sollicitusque monachorum, & ministrorum numerus nullatenus minuat, nec aliàs illa in spiritualibus & temporalibus ulla subeant detrimenta.

§. 2. Quare nos ex iis, quæ pro salubri dictæ Religionis statu, & felici directione, à prædictis Prædecessoribus, & aliis quomodocumque instituta hucusque reperiuntur, nec Præsentibus contraria, nec effectum earum impediencia nihil omnino detrahere, sed illa prorsus in tota custodiri volentes, de Apostolica potestatis plenitudine, statuimus & ordinamus, ut omnia Monasteria & loca dicti Ordinis, tã in utraque Sicilia, quàm ceteris omnibus orbis partibus constituta, etiam commendata & unita, ac etiã de iurepatronatus laicorum quocumque modo existentia, quæ convulsa, diruta, & extenuata sunt, reficiantur, & ad debitam clausuram reducantur, statuta pecunia convenienti, quæ quotannis in id opus, donec absolutum fuerit, erogetur.

§. 3. In eisdem & ceteris locis uti pro facultatum ratione idonea erunt, competens Monachorum & ministrorum numerus restituatur.

§. 4. Ipsorum Ecclesiæ, sacristiæ, dormitoria, & officinæ, vasis, vestimentis, libris, sacra & communi suppellectile, ac ceteris omnibus ad divinum cultum & Monasticum usum necessariis, convenienter instruantur.

§. 5. Missæ sacrificium, & alia omnia divina officia, diurna & nocturna quotidie in choro psallendo, juxta ritum dicti Ordinis sine intermissione celebretur.

§. 6. Mensa Conventualis, & ad communem victum & vestitum, necnon elemosynas & visitationes, & alia onera subeunda conficiatur, inter cetera reparetur.

§. 7. Ubi sacra lectio juxta Concilii Tridentini dispositionem haberi non poterit, præter eos libros, qui ad divini officii, & chori usum necessarii sunt, saltem Biblia & Catechismus ad Parochos recens editus, item opera S. Bernardi, & si qui alii ad honestam Monachorum occupationem poterunt, habeantur, nisi de illis in assignatione mensæ Conventualis jam perspectum reperitur. De his omnibus necnon vasis, vestimentis, & cetera suppellectile prædicta semel recepta, Conventus omnes rationem reddere debeant.

§. 8. Et ut Novitii qua decet disciplina informantur, unum aut duo monasteria in quaque provincia uti commodè fieri poterit, ordinentur, in quibus Magistri, etiam ceterorum Monasteriorum novitios divini officii rationem, & regularis observantia instituta doceant; ita ut quodque Monasterium necessaria suis suppeditet, & si nullos habuerit, alii pro eo, ejusque impensis recipiantur & instruantur.

§. 9. Omnia ædificia Conventus quoquo versus claudantur, portæ non necessariae obstruantur, claustrii fenestris ubicumque opus erit insigantur. Tempia, sacristiæ, capitula, dormitoria, refectoria, infirmariæ, & omnino aliæ claustrii partes nihil profani patiantur. Nec Conventus horreum, penam, præsepia, nec prorsus ulla promeritalia Abbatum, Commendatariorum, Conducutorum, aut aliorum recipiant, nec à commendatariis, pensionariis, aliisve de claustrum non existentibus occupentur, sed illis solum proprii Claustrales utantur, prout ad divini officii celebrationem, regularemque observantiam fuerint constituta.

§. 10. Mulieribus omnibus cujuscumque qualitatis, dignitatis, & ætatis, ingressus claustrii, ac aliorum locorum regularium, etiam ædium partis, quæ ab Abbatibus, Commendatariis, Prioribus, aliisve ministris, etiam divinum possident, sit penitus interdictus; quod si secus factum erit, tam ingredientes quàm recipientes excommunicationis sententiam incurrant.

§. 11. Carcer ad coercionem monachorum, ubi non est, constituitur.

§. 12. In omnibus Monasteriis inventarium omnium prædictorum, necnon instrumentorum, fundationum, donationum, auctoritatum, exemplarium, omniumque monumentorum conscribatur, & in formam authenticam redigatur, illudque & cetera omnia prædicta fideliter afferentur. Scicubi verò horum quicquam producendum erit, exemplum ab archetypo desumatur & transmittatur, nisi talis contigerit necessitas, ut ipsum exemplar producendum sit, quod tunc in fidem alicujus probati deponatur, qui idoneè caveat illud ipsum quamprimum reportaturum.

§. 13. Illa monasteria locis patentibus constituta, quæ propter Turcharum, seu prædonum, vel hæreticorum incuriones turè servari non poterunt, factò de ipsorum iuribus, litteris, auctoritatibus, tabulis, monumentis, atque omni prorsus suppellectile, mobilibusque, bonis, localibus, & rebus fidei inventario, & si opus erit earum omnium deposito apud personam fidei & facultatibus idoneam, ita ut nihil omnino inde sine consensu expresso, & speciali mandato Conventus moveri valeat, in civitates, oppidave vicina transferantur.

§. 14. Ceterum ad restituendum Monasticam disciplinam, & restitutum conservandam, Cisterciis, & ceteri patres Abbates in Capitulo generali provideant diligenter, ut omnes visitationes, sollicitè & prudenter, ac cum pietate fiant, salutem animarum, Religionis zelum, perpetuum cultum divinum, clausuram, obedientiam, & cetera omnia quæ ad mores, correctionem, & Religiosorum ædificationem pertinent, procurando.

§. 15. Quibus in rebus ubicumque non sunt mensæ conventuali assignati redditus qui hoc onus ferre possint, Abbates & Commendatarii, ac alii quicumque administrationem spirituum & temporalium visitandorum Monasteriorum habentes, necessaria omnia ministrare, ac contributiones & sumptus pro gerendis aliis communibus negotiis Apostolicæ Sedis auctoritate impositas, ac etiam ad brachii secularis adhibitionem præstare, Visitatores, ac sollicitos & necessarios ipsorum famulos, & jumenta debita hospitalitate recipere, & eisdem in omnibus auxiliari omnino debeant, & ad id etiam censuris & penis Ecclesiasticis per Capitulum, ac etiam per ipsos Visitatores compellantur.

§. 16. Ne porro deferendi monasterii occasio Monachis præbeatur, quod ex vagandi libertate illis à Commendatariis oblata, ut expensis parcant, plempius evenit, præcipimus & interdicens ne ulli omnino Commendatarii quicquam, vel minimum de mensa, & aliis necessariis detrahant, neque ullo modo numerum diminuant, aut quempiam etiam propter delictum ejiciant. Sed quotiescumque Monachi quid admiserint, quod quidem animadversione dignum sit, id quamprimum Priori claustrali, vel, si gravius sit delictum Visitatori significent, qui correctionem juxta Ecclesiæ, & Ordinis prædicti statuta faciat. Quod si ulterius ultra sex menses distulerit, eo ipso sit ab eo officio depositus, & ad illud ceteraque omnia Ordinis ejusdem officia triennio inhabilis censetur, statimque Præsidentes, correctionem hujusmodi alii committere teneantur.

§. 17. Prædicta autè tertia vel quarta pars reddituum omnis Monasterii in Commendam concessi & concedendi, aut ipsamet proprietate, prædictorum Superiorum cura & sollicitudine exigatur, & ex eis prædicta pecunia conficiatur, eaque quoad ædificia omnia refecta erunt, in id opus impendatur. Eo verò perfectò ipsa tertia vel quarta pars juxta Concilii dispositionem, & litterarum prædictarum tenorem, annis singulis eadem cura convertatur.

§. 18. Postremo volumus & mandamus, ut Monasterium Cistercii constituantur, constitutumve restituantur Archivium, in quo index ordine compositus omnium aliorum monasteriorum, prioratum, Ecclesiarum, & beneficiorum dicti Ordinis in omni

Carcerem ad correctionem constitui.

Inventaria bonorum & scripturarum conscribi.

Hoc voluit etiam Greg. XIII. cit. in rub.

Monasteria non tuta, ad Civitates transferri.

Hoc jussit etiam Greg. XIII. cit. in rub.

Visitationes prudenter fieri.

Necessaria ei subministrari.

Hæc statuit etiam Greg. XIII. cit. in rub.

Commendatarios nihil de necessariis Monachis detrahant, aut numerum eorum minuerent, neque eos ejicere possent.

Tertiam vel quartam partem reddituum omnis Monasterii, in ejus refectorem, & deinde juxta Conc. Trid. exponi.

Archivium in Conventu Cistercii constitui, & ibi indicè bonorum cujuscumque Conventus poni.

ANNO
1570.

Hoc statuit
etiam Greg.
XIII. cit. in
rub.

Indulta omnia
quoad proprietatem
littera remanere.

Hoc statuit
etiam Bened.
XII. in cons.
3. Fulgens.
sup. fol. 181.
lib. 1. &
Greg. XIII.
cit. in rub.

Observantiamque
omnium prædictorum
executioni de
mandari.

Derogatio
contrarium.

PIUS QUINTUS.

327

ANNO
1570.

parte orbis constitutorum etiam in Comendam ob-
tentorum vel unitorum habetur, & item distinctum
cujusque inventarium five repertorium bonorum,
proprietas, rerum, jurium & actionum omnium,
necnon exemplum authenticum instrumentorum,
privilegorum, foundationum, donationum, literarum,
auctoritatum & monumentorum quorumcumque
conficiatur, confectumque fideliter aservetur.

§. 19. Quia verò proprietas omnium malorum
radix ubicumque gliscit omne bonum in regula
quamvis bene instituta pervertit, ideo ne hoc quoque
sicubi habetur, ad perfectionem prædictorum ob-
stare possit, revocamus & abolemus omnia & quæ-
cumque privilegia, auctoritates, licentias, dispen-
sationes, & indulta cujusque privati rerum & bo-
norum usus, proprietatis, possessionis & domini,
omnibus cujuscumque gradus & dignitatis Mona-
chis dicti Ord. per quoscumque Rom. Pontifices
prædecessores nostros, ac Nos & Sedem prædictam,
ejusque Legatos ex quibuscumque causis, etiam Motu
proprio, & ex certa scientia concessa, confirmata &
innovata, quibuscumque concepta formulis, ac
clausulis & decretis suffulta, quorum omnium te-
nores Præsentibus habemus pro expressis, ac vo-
lumus illa omnia vires, & effectum de cetero non
habere; quin etiam Visitatores, & ceteros omnes,
qui in hujusmodi proprietatis severe non animad-
verterint, ad hujusmodi officia & alia ipsius Ordinis
ministeria perpetuo inhabiles esse.

§. 20. Quocirca Cisterciensis & ceteris omnibus
Patribus Abbatibus, & Visitoribus dicti Ord. edi-
cimus, ut pro fe quisque omnia prædicta studeant
adimplere. Omnibus aut nostris, & prædictæ Sedis
Legatis & Nunciis ubicumque existentibus, necnon
Ord. prædicti Conservatoribus ab ipsa Sede consti-
tutis & constituendis, ipsorumque singulis per A-
postolica scripta mandamus, ut præsentibus litteras,
ubi, & quando opus fuerit, ac quocumque pro
parte Abbatum, Definitorum, Visitorum, & alio-
rum prædictorum seu alicujus eorum desuper fue-
rint requisiti, solemniter publicantes, ipsique effi-
cacia defensionis præsidio assistentes, prædicta omnia
in omnibus Regnis & Provinciis sedulo exequantur,
& quæcumque alia quæ ad Religionis incrementum
ipsis utilia vel necessaria videbuntur, ubique loco-
rum statuunt. Et præterea Abbates & Commenda-
tarios cujuscumque dignitatis, gradus, & conditio-
nis fuerint, ad prædictorum omnium præstationem
etiam per subtractionem proventuum, ac censuras
& penas præfatas, ceteraque opportuna juris & facti
remedia, omni & quacumque appellatione post-
posita compellat, invocato etiam ad hoc si opus
fuerit auxilio brachii secularis. Ceterum ut vicina
plebs egeat pro Religionis consuetudine & instructo
conferri possit, ac ceteri piam & fidelem rerum
administrationem collaudare possint, prædictis
Commendatariis præcipimus, ut in suis Monasteriis
pauperes elemosynis pro modo facultatum pro-
sequantur. Decernentes prædicta omnia inviolata
& immutabilia perpetuo consistere, necnon irritum
& inane, si secus pro præfatis aut quocumque
alios quavis auctoritate fungentes, scienter vel
ignoranter contigerit attentari.

§. 21. Non obstantibus piz mem. Bonifacii Pa-
pæ VIII. de una, & in Concilio generali edita de
duabus dietis, aliisque constitutionibus & ordinatio-
nibus Apostolicis ac dicti Ordinis juramento, confir-
matione Apostolica, vel quavis firmitate alia robo-
ratis, statutis & consuetudinibus; quodque aliqui-
bus communiter vel divisim ab eadem sit Sede in-
dultum, quod ad præstationem prædictorum mini-
mè teneantur, & ad id compelli, aut quod interdicti,
suspendi, vel excommunicari non possint per litteras
Apostolicas non facientes plenam & expressam,
ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi men-
tionem; & quibuscumque aliis privilegiis, conserva-
toris, exemptionibus, indulgentiis, & litteris Apo-
stolicis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac
quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliis-

que efficacioribus & insolitis clausulis irritantibus
que, & aliis decretis in genere vel in specie, etiam
Motu proprio, aut etiam consistorialiter, ac etiam
iteratis vicibus approbatis & innovatis; necnon
concordiis, conventionibus, pactis & aliis obliga-
tionibus, etiam ut prædictum est roboratis, per
quæ Præsentibus non expressa aut omnino non in-
serta, effectus earum impediri valeat quomodolibet
vel differri, & de quibus quorumque totis te-
noribus ad verbum habenda sit in nostris litteris
mentio specialis, quæ omnia ad effectum omnium
supra scriptorum penitus abrogamus; ceterisque
contrariis quibuscumque.

§. 22. Quia verò difficile nimis esset præsentibus
quocumque opus illis erit perficere, volumus ut il-
larum exempla, etiam impressa, Notarii publici,
vel Secretarii dicti Abbatis Cistercii manu, & ejus-
dem Abbatis, vel Capituli alteriusve Prælati eccle-
siastici, aut ejus Curie sigillo obfignata, eandem
illam prorsus fidem in judicio & extra illud ubique
locorum faciant, quam ipsæ præsentibus facerent si
essent exhibitæ vel ostensæ.

Nulli ergo &c.
Dat. Romæ apud S. Petrum Anno incarnationis
Dominicæ 1570. 8. Idus Martii, Pontificatus nostri
anno quinto.

Reformatio Ordinis Fratrum Servorum B. MARIE
Virginis.

Reformationes, decreta latius sunt definita, atque
plenius præscripta in cons. 60. Clem. VIII. Nul-
lus. Tomo III. ubi omnino videas, quia in apo-
stolis vix potuissent hic indicari.

Alia de hoc Ordine notavi ad cons. 1. Benedicti XI.
Dum levamus. sup. Tom. 1. fol. 182.

PIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

Postquam nos Deo auctore Ordinem Fratrum B.
MARIE Servorum, antehac in duas familias
divisum, antiquato Congregationis nomine quod
altera sibi asciverat, in unum idemque corpus, ac
in unam eandemque familiam, uni dumtaxat Capiti
subiectum sub eadem Regulari disciplina reduxi-
mus; expedit certa quædam incommoda, quæ
bonum omne in Religione pervertunt, excidere,
ut deinceps omnes communibus institutis, & legi-
bus sue possessioni magis convenientibus viventes,
salubrius dirigantur.

§. 1. Quocirca cum omnis Religio privatæ pro-
prietatis usu labefactetur & corrumpatur, nos ad illam
ex dicta familia exterminandam, ac simul emen-
dandos eos qui de officiis, & muneribus ambitiose
obtinendis jampridem inoleverunt, & alios no-
centes ejus mores, novissime inducendos ante om-
nia intenti.

§. 2. De nobis attributæ potestatis plenitudine
revocamus & abolemus omnia & quæcumque privi-
legia, dispensationes, licentias, permissiones, &
indulta habendi & retinendi privatam dominium,
usumfructum, possessionem & proprietatem quo-
rumcumque bonorum immobilium, mobilium, &
semoventium, necnon domorum, cellarum, horto-
rum, pectiniarum & aliarum rerum, Generali, Pro-
vincialibus, Conventualibus, Prioribus, ac aliis
Fratribus, etiam causa senii, infirmitatis, vel cuius-
cumque pii operis prætextu vel intuitu, per quos-
cumque Romanos Pontifices prædecessores nostros,
ac Nos & Sedem Apostolicam, ejusque Legatos, vel
etiam dicti Ordinis Superiores, etiam Motu proprio,
& ex certa scientia concessa, confirmata & innova-
ta, quibuscumque concepta formulis, ac clausulis
& decretis suffulta, quorum omnium tenores habemus
Præsentibus pro expressis; volumusque illa
omnia & singula, vires & effectum de cetero non

Exemplo-
rum fides,

Dat. P. A. n. g.
die 8. Martii.

CIII.

Edita An. D.
1570.

Congregatio
hujus Ord.
fuit iustitata.

Reformatio
ipsius Ord.
subsequatur.

Revocatio
omnium in-
dultorum ali-
quid priva-
tim retinen-
di.

Prohibitio
quicquam
privatum ha-
bendi.

Cameræ re-
diguntur in
commune
Dormito-
rium.

Ambitus re-
cedant &
munera.

Superiores
disponere
valent Prae-
dicatores, &
Lectores, &
Officiales,
et a reli-
tione divi-
tati officii in
communi.

Divina offi-
cia juxta re-
litarum ce-
lebrantur.

habere. Quin etiam Fratres prædicos, quicumque sint, privato & bonorum, & rerum omnium prædicatorum, quomodocumque acquiritorum & ad eos obventorum, dominio, usu, usufructu, proprietate, titulo & possessione privamus, dictaque possessione amovemus, & amotos nunciamus, resque, & bona ipsa omnia in communes suarumque domorum, & prædicti Ordinis usus convertenda concedimus. Mandantes in virtute sanctæ obedientiæ Generali, Provincialibus, & Conventualibus, Prioribus supradictis, ut rerum & bonorum omnium prædicatorum possessionem, nomine domorum & locorum suorum capiant. Et illa illorumque fructus in communes Conventuum usus convertantur.

§. 3. Ceterum præcipimus atque interdiciamus, ne deinceps ullus omnino Fratrum prædicatorum, sive privatus, sive Prioris Conventualis, sive Provincialis, aut Generalis officio fungens, etiam prætextu hujusmodi privilegiorum, dispensationum, permissionum & indultorum, seu inveteratæ consuetudinis, aut quacumque alia causa, proprium quicquam aut privatum, neque ædes, sive in claustris sive alibi, separatas habeat, sed omnia ubique communia sint, & quisque unica cella eademque cum ceteris aliorum Fratrum conjuncta, nudis omnino parietibus, ac lectulo & mensa humilibus, quemadmodum pauperes Religiosos decet, contentos esse debeat.

§. 4. Proinde Cameræ sive ædiculæ, quæ extra Dormitorium separatim sunt, ad officinas, aut alias ad communem usum, & commoditatem cuiusque Conventus redigantur, vel si cellæ communis Dormitorii pro Fratrum numero non sufficiant, & illæ Cameræ, vel ædiculæ, ad formam communis Dormitorii aptari possint, in Dormitorium commune redigantur; si minus destruantur, ac materia & cementa ad fabricam Conventus, si opus fuerit, convertantur, vel vendantur, & pretium ad communem usum Conventus conferatur.

§. 5. Sed nec ulli omnino ambitus fiant, aut pecunie etiam pro confirmationibus, sigillo, vel scriptura, aut quacumque alia re vel causa solvantur, alieque pactiones, seu promissiones intercedant, seu munera, aut xenia quocumque modo mittantur; neve quisquam, etiam in officio existens, pecunias, aut quicquam aliud de Provincia seu domo sibi commissis, vel aliunde Priori Generali, seu alii cuiusque conferat, vel remittat. Quicumque fecus fecerint, in penam privationis Prioratum & officiorum omnium incidant, & ad futura inhabiles habeantur, & pro culpis etiam tanquam fures puniantur, prout nos illos privatos & inhabiles declaramus eo ipso; procuratoribus tamen, Generali ex universo Ordine, ac Provincialibus, Prioribus ex sua cuique Provincia, & Visitatoribus ex domibus & locis visitandis debitum, nequaquam per præsentem sublatum.

§. 6. Ad reformandos autem alios dicti Ordinis mores ulterius progrediendo, ex iis quæ pro salubri hujus Religionis statu, & felici directione aliqui instituta hucusque reperiuntur, quæ nec Præsentibus contraria sunt, nec illorum effectum impedire possunt, nihil omnino detrudere, sed illa impetra custodiri volentes, de simili potestatis plenitudine statuimus & ordinamus, ut Fratres omnes, etiam Superiores, & quicumque privilegiati, nisi tempore Quadragesimæ & Adventus Domini prædicationis munus obierint, omnibus divinis officiis, diurnis & nocturnis intersint, aliis vero temporibus cum ipsis Prædicatoribus, & Lectoribus, iis diebus quibus prædicant & legunt, Superiores pro arbitrio dispensare possint. Ipsi etiam Superioribus, & aliis Officialibus, eo tantum tempore quo actu in negotiis Conventus & Ordinis occupati sunt, aliquid remittantur.

§. 7. Missæ, Matutinum, & aliæ horarum Canonicarum preces, Processiones item, Anniversaria, & Defunctorum memorie, integræ suo debito tem-

pore attentè cum cantu solenni, in diebus quibus convenit, juxta regularia dictorum Fratrum instituta celebrentur; nec satis habeat quæque domus, Missas si.e. fundatione sive statuto, sive consuetudine debitas, vel præscripto Superioris Conventus designatas dumtaxat celebrasse, sed Fratres omnes Sacerdotes, Missa etiam non adstricti frequentissimè celebrent.

§. 8. Clerici & Conversi, semel in Hebdomada peccata sua confiteantur, & singulis saltem mensibus sacram Eucharistiam fument. Jejunia juxta suam regulam, & constitutiones omnino servant.

§. 9. In quaque domo pauciores Fratres non sinit duodecim. Si qua autem domus hunc familiæ numerum alere non potest, Fratres cum bonis ex ea domo in aliam transferantur, provisione adhibita ne Ecclesiæ destruantur, sed ad ejus populi commoditatem conferantur. Permittimus tamen, ut in domibus quæ iter facientibus Fratribus commoda sunt, saltem quatuor Fratres non minores quin quaginta annis, constanti & probata vita maneant, si plures ea domus alere non potest. Nullæ porro domus supra vires onerentur.

§. 10. In singulis domibus omnibus Dominicis, & festis diebus Prædicationes verbi Dei habeantur.

§. 11. In majoribus Studiis Regentes duas lectiones Theologicas interpretentur, alteram præstam veluti de Sacramentis, vel de vita sanctæ recteque instituenda, alteram vel speculativam, ex Catholicis & approbatis Doctoribus, Superioris arbitrio statuendis; in minoribus vero una lectione ex Theologia practica contenti sint.

§. 12. Ceterum curent Superiores, ut in singulis Conventibus Fratres maximè in conscientie cultibus, & reliquis quæ ad audiendas confessiones pertinent, ob regravitatem & necessitatem, summo studio ac diligentia exerceantur.

§. 13. Singulis item diebus festis Romanus Catechismus ad Parochos, in singulis Conventibus legatur.

§. 14. Siqui Regentes & Lectores, aut alii Fratres, libros prohibitos habere sine speciali Sedis Apostolicæ licentia fuerint deprehensi, ultra penas juris communis, & quæ à Sancto Officio Inquisitionis hæreticæ pravitatis talibus imponuntur, perpetuo munere legendi, prædicandi, & confessiones audiendi privati existant, ad omnia item officia inhabiles activa voce careant & passiva.

§. 15. Nullus ad aliquem gradum promoveatur, nisi ætate, vitæ probitate, & literatura præstans, & in eis probatus per examen diligens à Priore Generali, seu ab aliis qui per eum huic muneri ordinabuntur faciendum, deinde in Capitulo generali publice iterandum. Ætas autem & tempus studii, ac cursus exprimitur; & præterea probetur quod promovendus nulla unquam infamia, seu sinistra opinione fuerit maculatus. Ac promovendis ad gradus hujusmodi nihilominus exigatur, nec etiam sponte oblatum accipiat; verumtamen si promotione facta Conventus promotorum, aliquid Religioni donare voluerit, id quicquid sit Procuratori generali Ordinis tribuatur ut ad levationem onerum, & omnium sumptuum Religionis conferatur; eodem Procuratore, acceptorum & expensorum rationem Priori generali, & Definitoribus reddituro. Ceteri non omnes à decem annis promoti, rursus per probos & idoneos viros à Priore generali in quaque Provincia constituendo examinentur; & qui saltem mediocri scientia in Theologia prædicti reperti non fuerint, usu, & exercitio gradus suspendantur, nec debeant privilegio gradus hujusmodi gaudere. Caveant præterea Superiores licentiam ulli Fratri concedere, ut ad aliquos Ordines sacros, sive majores sive minores, promoveri possint, nisi ille in ætate legitima constitutus, & literatura ad eos requisita præditus sit, habeatque omnia quæ à sacris canonibus regularibusque institutis requiruntur.

Confessiones, communes, & jejunia servantur.

Numerus Fratrum cuiusque Domus præstatur.

Prædicationes habentur singulis diebus festis. Lectiones quæ in studiis generalibus, & aliis.

Exercitium circa cultus conscientie.

Catechismus legatur diebus festis.

Libri prohibiti non teneantur.

Formæ promovendi ad gradus, & qualitates promovendorum.

aliter promotus ab suorum Ordinum executione suspendatur, & licentiam concedens officio deponatur, & per sexennium inhabilis ad omnia officia habeatur. Sed & nostra constitutio, qua cavetur, ne quis Regularis ante emissam a se expressam professionem regularem, ad sacros ordines promoveri possit, inviolabiliter observetur.

§. 16. Sacerdotes ad audiendas peccatorum confessiones ordinandi, vita, moribus & litteratura probati, & quo ad mulieres ætatis provectæ habeantur. In omni domo hujusmodi Sacerdotes ex prædicto Ordine constituantur, quibus & non alii Fratres omnes peccata sua debeant confiteri.

§. 17. Priores omnes nunquam ultra biennium durent, sed biennio functo ipsorum officium vacet; nec ad illudmet in eodem Conventu in sequens protinus biennium rursus constitui possint.

§. 18. Nulli item Fratri in eodem Conventu plus biennio manere liceat; exceptis sexagenario majoribus, quibus aliquid ex causa, Superioris arbitrio, poterit condonari.

§. 19. Adhuc nullus omnino Priorum administracionem bonorum, & aliarum rerum, dispensacionemque pecuniarum & reddituum sue domus, etiã nomine Conventus, per seipsum habere five exercere, vel sese in eis interponere possit, sed universum id onus tribus Religiosis à Priori generali ita demandetur, ut primus, rerum & bonorum, inferendumque in eam redditum curam habeat, alter tanquam depositarius, pecunias ac cetera ab illo importata fideliter asservet, reliquos de pecuniis & rebus à Depositario capitis, Priori & Fratribus, ac domui universæ de necessariis veluti dispensator provideat, mandante tamen ipso Priore, qui unicuique non secundum proprium affectum, sed caritatis regulam providendi curabit, officiorum hujusmodi invicem confusione penitus interdicta.

§. 20. Ceterum ii tres tam impensi quàm accepti singulis mensibus suo Priori, adhibitis etiam duobus, vel tribus Fratribus ejusdem domus probatoribus, rerumque usu peritis; deinde ipsemet rursus præsentibus Priori, & peritis prædictis, Priori generali, vel Provinciali, vel Visitatoribus, quotiescumque visitationis officium fecerint. Denique ipse Prior generalis in omni proximo Capitulo generali saltem coram tribus Judicibus ab ipso Capitulo constitutis illorum omnium, & etiam universæ administracionis suæ, tam publice quàm privatè rationem reddere teneatur.

§. 21. Pecuniæ omnes & quæcumque aliæ res cuiusque privatum, etiam intuitu personæ undecumque donatæ, siue relicte fuerint. Superiori, horum viginti quatuor intervallo, exhibeantur, qui illas statim Depositario committat & inde tamen exhibitori ministrari jubeat, quantum rei convenientis præsens necessitas videbitur postulare.

§. 22. Fratres omnes, etiam Superiores, & quomodocumque privilegiati, ægrotis tantum exceptis, in Refectorio cibum capiant, & communi mensa utentes, communibus epulis vescantur. In primis autem senum & ægrotorum, necnon Prædicatorum & locorum cura habeatur, ita ut nihil eorum necessitati & commoditati deficiat. Omnes prædicti, quocumque gradu & honore sint, camillis laneis, & relicto vestitu uniusmodi, eodemque honesto & professioni convenienti, omni præterea fustelle, & instrumento pauperi atque humili utantur. Nullus privatum hortum habeat, sed omnes omnibus domus sint communes, præterquam quoad infirmariam, & novitios, qui hortum five viridarium seipsum habere possint, in quo ceteri nullatenus ingrediantur.

§. 23. Novitii etiam oblati ante decimum octavum ætatis suæ annum completum non recipiantur; neque ante decimum nonum completum ad professionem admittantur. Qui hæcenus recepti, etiam oblati, decimum quintum annum non compleverint, dimisso habitu Religionis, domum ad parentes & necessarios etiam invitati remittantur, vel aliis omni-

no emittantur, nec postea in ædibus unde exierint, aut in aliis ejusdem Ordinis domibus, ullo modo debeant conversari. Laici, qui vigesimum quintum annum non attigerint, ad servendum non accipiantur, & qui recepti, etiam nunc ea ætate minores sunt, rejiciantur. Novitii non admittantur, aut educantur nisi in Conventibus insignioribus, in quibus dormitorium, & capitulum habeant omnino separatim, cujus ingressus aliis Fratribus sit penitus interdictus. In eisdem domibus sit unus Magister ætatis provectioris, moribus & doctrina præditus, qui diligentem habeat prædictorum Novitiorum curam, & illis præsit. Ipsi autem in Grammatica, cantu, cætemoniis, & his quæ ad Christianam disciplinam faciunt, instruantur; nec è loco novitatus, nisi ad Ecclesiam, Refectorium, & ad publicas processiones, & interdiu ad aliquam honestam recreationem, cum fida custodia exire debeant.

§. 24. In quaque domo sit unum vestiariū commune, in quo omnia omnium Fratrum vestimenta conferantur; quæ uniusmodi sint, eademque nulla exquisita arte laborata, sed simplicia & honesta, ita ut nec unum ab altero distinguatur. Cui vestiario Custos præficiatur, qui munditiæ, refectiois & distributionis eorumdem vestimentorum curam gerat.

§. 25. In omni domo, locus tutus cum armariis, seu capsis habeatur, in quibus scripturæ, privilegia, contractus, & omnia jura ad domum pertinentia, itemque res pretiosæ Ecclesiarum, etiam sacræ, cum suo inventario, seu repertorio authentico asserventur, præter eas, quæ quotidiano sunt Ecclesiæ usui necessariae, quæ in Sacristia, & per Sacristiam custodiantur; ita tamen ut res sacræ à profanis distinguantur. Hujus autem loci tres sint claves, quarum unam Prior, alteram Depositarius, tertiam Procurator domus habeat. Simili quoque modo inventarium bonorum mobilium cujusque Ecclesiæ & domus, necnon immobilium, & quoruncumque jurium ad Conventum pertinentium, in forma probanti conscribatur, deque eo exemplum authenticum fiat duplicatum, ut alterum in propria domo remaneat, alterum vero in Archivio insignioris, seu principalis domus ejus Provinciæ reponatur.

§. 26. In omni domo, infirmaria commodò loco constituatur pro Fratribus infirmis, cui infirmarius ordinetur, per quem domus ipsa de illis omnibus, quæ ad animæ & corporis infirmorum salutem, commoda & necessaria sunt, caritatè provideatur.

§. 27. Postremo Prior cujusque domus præcipuam curam gerat, ut Ecclesiæ in suis structuris conserventur, & reparentur; munda præterea & expurgatæ, uti decet, contineantur, atque illis de libris, vasis, ornamentis, & aliis ad Altaris ministerium, & divinum cultum pertinentibus provideatur, quæ pariter munda & vitia conserventur.

§. 28. Res Sacristiæ, cujusvis generis sint, nullo modo alienentur, nec pignori opponantur, nec ullo modo alicui accommodentur, sed solum Ecclesiæ propriæ serviant.

§. 29. Decernentes irritum & inane quicquid secus per quoscumque, scienter vel ignoranter contrigerit attentari.

§. 30. Quocirca Priori generali, ac omnibus Fratribus prædictis per Apostolica scripta mandamus, ut quisque pro se præsentem litteras humiliter recipiant, & quæcumque in eis statuta, decreta, & mandata sunt, alia desuper à nobis non expectata jussione, aut mentis nostræ declaratione, firmiter custodiant, & in omnibus studiosè obedire procurent.

§. 31. Quinetiam eidem Priori generali committimus ut ipse easdem præsentem, in proximo & deinceps futuris generalibus & provincialibus Capitulis, & frequenter in omnibus domibus, publice legere, ac eas, & quicquid pro earum executione & ob-

Ad hoc vide
bullam Six.
V. n. 71. &
alias ibi in-
dicandas.

Vestiariū
quale esse de-
beat, & quæ
eorum ves-
tes.

Forma ser-
vandi scrip-
turas & res
Ecclesiæ.

Infirmaria in
quocumque
Conventu
instituantur.

Prioris offi-
cium circa
Ecclesiæ & ea-
rum orna-
menta.

Res Sacristiæ
non alienen-
tur.

Decretum ir-
ritans.

Fratres om-
es servant
hanc refor-
macionem.

Prior gene-
ralis deputa-
tus executor
hujus const.

Confessorum
qualitates.

Priorum offi-
cium duret
biennio.

Fratres non
senes ultra
biennium
non maneant
in eodem
Conventu.

Forma admi-
nistrandi
Conventus.

Forma red-
dendi admi-
nistracionis
rationes.

Donata & re-
licta Fratres
conferant
Superiori-
bus.

Fratres om-
nes in Refe-
ctorio com-
munibus
epulis ves-
cantur.

Novitii qui,
ubi & quan-
do recipien-
di & quomo-
do instruendi
sint.

Clausulae derogatorix.

Exemplorum fides.

Dat. P. An. 5. die 30. Maji.

Publicatio.

LXIV.

servatione, tam in ipsis Capitulis generalibus, vel etiam extra illa ab ipso adhibitis aliquot ex aliis Prioribus, vel Definitoribus prædictis, quos duxerit eligendos, statueretur, ordinabitur, & decerneretur, in omnibus Prioratibus, ac ab omnibus & singulis Prioribus, Fratribus, & personis prædictis inviolatè faciat, per se vel alium seu alios observari. Contradictores quoscunque & rebelles, ac etiam protestantes, & reclamantes, eisque auxilium, consilium vel favorem, publicè vel occultè, directè vel indirectè, quovis quæsito colore vel ingenio præstantes, tam Ecclesiasticos quàm laicos cujuscunque dignitatis, gradus, ordinis vel conditionis fuerint, per sententias, censuras & pœnas Ecclesiasticas, ac etiam Prioratum, dignitatum, & administrationum privationes, ceteraque juris & facti remedia opportuna, appellatione postposita percipiendo. Quin etiam contententes prædictos, in censuras & pœnas supra scriptas incidisse declarando, invocato etiam ad hoc si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 32. Non obstantibus nostris de non tollendo jure quæsito, & de annali & triennali possessore, aliisque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon Ordinis prædicti juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, exemptionibus & indultis Apostolicis, illis, ejusque Superioribus & personis, eorumque singulos per quoscunque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac Nos & Sedem Apostolicam, etiam per modum statuti perpetui, ac iniiti & stipulati contractus, ac aliàs, sub quibuscunque tenoribus & formis, ac cum quibuscunque clausulis & decretis, in genere & in specie concessis, confirmatis, ac etiam aliis reformationibus, quoviscunque, ac quocumque tempore factis & promulgatis, ac quibuscunque aliis indulgentiis & litteris Apostolicis, specialibus & generalibus quorumcunque tenoribus existant, per quæ Præsentibus non expressa, vel totaliter non inserta, effectus earum, seu dictorum Ordinariorum jurisdictionis seu executio impediri valeat quomodolibet, vel differri, & de quibus quorumque totis tenoribus habenda sit in nostris litteris mentio specialis. Quæ omnia contra earundem Præsentium tenorem aolumus cuicumque in aliquo suffragari.

§. 33. Denique etiam volumus, ut ipsarum Præsentium exempla etiam impressa, Capituli vel Prioris generalis, seu alterius personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ, aut ejus Curie sigillo, & Secretarii cujuscunque eorum, vel Notarii publici manu obligata, eandem illam prorsus fidem ubique locorum, in judicio & extra illud faciant, quam ipsæ præsentēs facerent, si forent exhibitæ vel offensæ.

Nulli ergo, &c. Si quis, &c.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1570. Kal. Junii, Pontificatus nostri anno quinto.

Anno à Nativitate D. 1570. Indictione 13. die verò 20. mensis Sept. Pontificatus Sanctiss. in Christo Patris & D. N. D. Pii divina providentia Papa V. anno 5. retroscripta littera Apostolica affixa, & publicatæ fuerunt ad valvas Principis Apostolorum de Urbe, Cancellarie Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, ut moris est, per me Scipionem de Ostavianis, & Jo. Andream Rogerium præfati S. D. N. Papa Cursores,

Antonius Clerici Mag. Cursum.

Declaratio & ampliatio Concilii Tridentini cap. 14. sess. 24. de prohibitione aliquid exigendi vel petendi, in collatione aliave provisione beneficiorum Ecclesiasticorum, vel ad illorum possessionem admissione.

Ad hoc videri potest etiam Conc. Trid. sess. 21. cap. 1. & sess. 24. cap. 18.

Alia ad materiam simoniæ beneficiæ plenè indicavi in const. 3. Julii II. Cum tam divino. fol. 466. in Tomo 1.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Ururum nimis & incommodum arbitramur, quod Ecclesiarum ministri in iis quæ ad ipsorum sustentationem suppeditant, dispendia patiantur. Quocirca cum hanc ad rem, simulque prohibendam ab Ecclesia Dei avaritiæ pravitatem, editas antehac sanctiones minime satis esse intelligimus, novæ constitutionis subsidio cogimur providere.

§. 1. Cùm itaque alias ex plurium Ecclesiarum Cathedralium & Collegiarum constitutionibus, aut ex prava consuetudine observari intelligeretur, ut in electione, præsentatione, nominatione, institutione, confirmatione, collatione, vel alia provisione, five admissione ad possessionem alicujus Cathedralis Ecclesiæ, vel beneficii, canonicatum, aut præbendam, vel partem proventuum, seu ad distributiones quotidianas certæ conditiones, seu deductiones ex fructibus, solutiones, promissiones, compensationesve illicitæ, aut etiam quæ in aliquibus Ecclesiis dicuntur Turnorum luca interpererentur, licet Sancta Synodus hæc detestata, mandaverit Episcopis, ut quæcumque hujusmodi quæ in usus pios non converterentur, atque ingressus eos qui simoniacæ labis, aut fordide avaritiæ suspicionem haberent, fieri non permitterent, ipsique diligenter de eorum constitutionibus, five consuetudinibus super prædictis cognoscere, & illis tantum quas probarent exceptis, reliquas ut pravas & scandalosas rejicerent, eos verò qui adversus prædicta quavis ratione commississent, pœnis contra simoniacos editis teneri decreverit, multorum tamen indomita cupiditate, tam prædicta quàm alia ad beneficium & commodum ipsorum Ministrorum edita, aut omnino contemnuntur, aut in varios sensus traducta, perperam eluduntur.

§. 2. Quare Nos pro divini cultus exercitio, simulque evocatorum ad illum auxilio plenius evidentiisque consulendum fore rati, revocamus & abolemus omnia & quæcumque privilegia, consuetudines, & statuta quarumcunque Ecclesiarum Cathedralium & Metropolitanarum, ac majorum, necnon Collegiarum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, aut alio quovis præsidio munita, ac etiam supra hominum memoriam, & longissimo, ac quancumque tempore etiam continuo observata, five pro solvendis Ecclesiarum, vel Prælatorum debitis, five pro supportandis illorum oneribus, five aliis etiam majoribus, maximis & urgentissimis causis concessa & approbata, ac etiam multiplicatis vicibus innovata, extensa & moderata, quod vacantibus ipsarum Ecclesiarum dignitatibus, canonicatibus, præbendis, portionibus, beneficiis, & officiis, fructus ac etiam quotidianæ distributiones ex eis primo ab ipsa vacatione anno, aut longiore, vel etiam breviori tempore proventuri, menzæ Episcopali, seu Capitulari, aliove loco, integrè vel partim remaneant, seu applicentur, aut in communes usus cedant, seu inter alios Canonicos, & personas Ecclesiæ, seu Capituli dividantur. Quodque nullus etiam Apostolica auctoritate provius in Canonicum recipi, aut ad dignitatem, seu portionem beneficium, vel officium admitti, vel aliàs in ejus possessionem induci possit, nisi prius de observandis hujusmodi privilegiis, consuetudinibus & statutis juramentum præstiterit, & obtentæ illorum derogationi, ac fructuum, & distributionum perceptioni renunciaverit, seu Capitulo, & personis prædictis cesserit, seu (ut appellant) dulciaria, aut quid aliud præstiterit, quorum omnium tenores, causas & effectus habemus Præsentibus pro expressis, quibuscunque illa concepta sint formulis, necnon irritantibus, & aliis decretis roborata. Volentes ea

Edita An. D. 1570.

Exordium.

Conc. Trid. sess. 24. c. 14. mandavit Episcopis ut pravas consuetudines & statuta, aliquid recipiendi, in provisionibus beneficiorum rejicerent.

Hic Pont. modo revocat consuetudines & const. hujusmodi.

omnia

Poenasque
aliquid reci-
piantibus im-
ponit.

omnia vires & effectum de cetero non habere.

§. 3. Præcipimus igitur & interdiciamus omnibus Episcopis, Capitulis, Collegiis, & personis ad quos id pertinet, ne posthac fructus, aut distributiones huiusmodi, nec prorsus ullam eorum partem retineant, neve ipsorum cessionem, vel renunciationem, aut dulciaria, vel alia quomodocumque petant vel exigant, aut quemquam sive Ordinaria, sive Apostolica auctoritate provissum, ad præstandum huiusmodi iuramentum inducant, aut illi prædicta non facienti possessionem impendant, vel remorentur. Quicumque contrafecerint, si Ecclesiarum Antistites, tamdiu à Pontificalis officii exercitio sint suspensi, donec satisfactione prævia illis per Sedem Apostolicam suspensio relaxetur. Capitula verò & Collegia quæcumque Ecclesiastico subjaceant interdictioni, ac singulares personæ in excommunicationis sententiam incurrant, à qua, nisi in mortis articulo constituti, ab alio quam à Rom. Pont. abolutionis beneficium nequeant obtinere. Decernentes huiusmodi præstita iuramenta non tenere, nec quemquam illis obligari, quinimmo jurantes in huiusmodi censuram incidere, necnon irritum & inane quicquid super his per quoscumque scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 4. Et nihilominus statuimus, ut ubicumque huiusmodi fructus & distributiones Fabricæ, vel Sacristiæ, aut alterius pii loci ubi ultra semestrem tempus reperiuntur concessi, horum dumtaxat dimidia pars ipsi Sacristiæ, vel Fabricæ, aut pio loco deinceps tribuatur, alteram verò beneficiati prædicti integrè percipiat.

§. 5. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque, si aliquibus communiter vel divisim ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdici, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem, decreto prædictæ Synodi, ac etiam constitutione fel. rec. Joannis Papæ XXII. quæ incipit, Suscepti, & aliis iuribus hac de re disponentibus, nihilominus aliis in suo robore duraturis.

§. 6. Ceterum per prædicta non intendimus illis præjudicare Capitulis, Collegiis, mensis, aut personis, fructus & distributiones inter vacationem beneficiorum, & eorum collationem, sive possessionis apprehensionem provenientes ex statuto, consuetudine vel privilegio huiusmodi percipientibus, vel retinentibus, quo minus ipsi illos interim ut antea exigere valeant & habere.

§. 7. Postremò volumus, ut Præsentium exempla etiam impressa, Notarii publici manu, & Prælati Ecclesiastici, ejusve Curie sigillo obsignata eandem illam prorsus fidem ubique locorum in iudicio & extra illud faciant, quam facerent ipsæmet præsentis, si essent exhibitæ vel ostensæ.

§. 8. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ revocationis, abolitionis, præcepti, interdicti, decreti, statuti, intentionis, & voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursum.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1570. Pridie Kal. Junii, Pontificatus nostri anno 5.

Anno à Nativitate Domini 1570. Indictione 13. die verò 13. Julii, Pontificatus Sanctissimi in Christo Patris & D.N.D. Pii divina providentia Papæ V. anno quinto retrospectæ litteræ Apostolicæ affixæ & publicatæ fuerunt ad valvas Principis Apostolorum de Urbe, ad valvas Ecclesiæ S. Jo. Lateranensis, & ad valvas Cancellariæ Apost. & in acie Campi Floræ, per nos Scipionem de Ostavianis, & Antonium Clerici Cursores Apostolicos.

Stephanus de Olea Mag. Curs.

Innovatio Officii Summatoris litterarum Apostolicarum, uni ex S.R.E. Cardinalibus de cetero conferendi, cum indultorum, gratiarum & jurisdictionis in suos Officiales concessione.

Hoc officium perpetuum vacabile esse voluit Alexander VI. in const. 10. In eminenti. sup. fol. 461. in Tomo 1.

PIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Pontifice dignum est, & Romanæ Sedis Majestate, illius officia augere, & locupletare, ut ipsorum nobilitas, & suscipiendorum ad ea Illustrissimorum virorum splendor, Romanæ Ecclesiæ dignitatem faciat amplio.

§. 1. Quod nos in animo cogitantes, unum ex omnibus magni momenti animadvertimus Officium Summatoris litterarum Apostolicarum à fel. rec. Alexandro Papa VI. perpetuum effectum, quod per assumptionem dilecti filii nostri Petri Donati tit. S. Vitalis in S.R.E. Presbyterum Cardinalem Cæsium nuncupatum, vacare proximè decrevimus, unius folius arbitrio moderari, in quo dirigendo, egregii unius viri auctoritas, peritorum auxilio subnixâ magnopere expediret. Quocirca eidem Officio novam formam, eandemque excellentiorem, atque utiliore inducere, simulque ipsum ita promovere, & amplificare instituvimus, ut cum ceteris Officiis & muneribus, quæ supremi Ordinis viris conveniunt merito coæquetur.

§. 2. Cum igitur in prædicta perpetuatione, idem Alexander Papa inter alia statuerit, ut quicumque illud obtineret eo quemadmodum litterarum prædictarum Scriptores, de officio Scriptoriæ disponeret &c. Idem quoque omnibus privilegiis, exemptionibus, prærogativis, immunitatibus, facultatibus, gratiis & indultis, Collegii dictorum Scriptorum omni tempore frueretur.

§. 3. Ad hæc nonnullis, qui dictum officium posita habuerunt inter alia sit concessum, quod officium ipsum, etiam per alium, seu alios regere & exercere singulis Cancellariæ Apostolicæ diebus, & quandocumque sibi videretur expeditionem extraordinariam dictarum litterarum facere possent, eaque de causa Bullator ad Summatorem quotidie veniret, qui captas ab ipso litteras, bullare deberet. Porro nullus alius ad exercitium, regimen, subrevisionem, aut superintendendam dicti Officii, etiam boni publici, aut alia quacumque majori, magisque considerabili causa, à Romano Pontifice directè vel indirectè uspiam constitueretur, neque in eo sese interponere uilo modo posset, nec ullæ omnino litteræ quantumcumque secretæ, nisi prius à Summatore examinatæ expediti deberent. Nullusque Secretarius, sive domesticus, sive de numero participantium, aut alius quisque litteras plumbatas, nisi in Officio prædicto expeditas registrarret, secus faciens crimen falsi incurreret, atque Officiorum suorum emolumenta amitteret, quæ ad Summatorem prædictum pertinerent. Ceterum pro omnibus litteris per dictam Cameram expediendis merces ordinaria in dicto Summatoris officio dari solita, illis dumtaxat exceptis, quæ statum Rom. Ecclesiæ vel Catholicam fidem concernerent, integrè perolveretur. A qua nullus Secretarius Papæ etiam domesticus, aut Scriptor, vel alius etiam majoris conditionis, & quocumque privilegio fretus, exemptus censeretur. Quin etiam Summator ipse quæcumque salaria, recognitiones & jura à quibuscumque Romanæ Curie Officialibus, eorumque Collegiis præstari solita perciperet, exigeret, & levaret. Ac Officiales & Collegia ad ea solvenda, quacumque reformatione facta & facienda non obstante, compellere libere & licite valerent. Postremò idem Summator, vel ab eo in dicto Officio substitutus, mansionem, seu cameram, aliàs solitam in Palatio Apo-

CV,

Edita An. D.
1570.

Proceum.

Officium
Summatoris
ab Alex. VI.
erectum fuit,
in perpe-
tuum & va-
cabile ut in
eius bulla in-
dicata in
rubr.

Et concessit
Summatori
privilegia
Scriptorum
litterarum
Apostolica-
rum.

Aliaque Sum-
matori indul-
ta hic enun-
ciata data
fuerunt.

Declaratio
prædicto-
rum.

Derogatio
contrario-
rum.

Alia decla-
ratio.

Transcripto-
rum fides.

Sanctio poe-
nalis.

Dar. P. An. 5.
die 31. Maji.

Publicatio.

solico, necnon visum pro se & uno famulo in Tivello. Et præterea pro ipso Summatore panem & buccellas, singulis diebus, Prælatorum domesticorum instar, habere deberet. Ipsumque Officium, & quod ad illud dictum Summatorem ab omni onere etiam decimarum Papalium, etiam ratione fidei, & expeditionis contra infideles, aut sternendarum, reficiendarum viarum causa exempta essent, neque ad illorum contributionem compelli possent, quemadmodum diversis litteris Apostolicis desuper concessis plenius continetur.

§. 4. Nos ad dictæ Sedis ornamentum, & salubriorem litterarum prædictarum expeditionem, hujus Officii statum perfectiorem, insignioremque constituturi volentes; Motu proprio, & ex certa scientia nostra, deque Apostolicæ potestatis plenitudine in ipso officio unum Præsidentem, qui Summatoris pro tempore existentis vices gerat, ipsius Summatoris nutu, atque arbitrio sumendum, & removendum.

§. 5. Item quatuor alia perpetua Officia Recognitorum litterarum prædictarum per proximum Summatorem doranda perpetuò erigimus, & instituiamus.

§. 6. Ac Summatoris officio, unum Secretarius Apostolici de numero participantium, quod Marcellus Augustinus, & unum Præsidentis Annona, quod Anastasius Pozzuti, ac aliud simile, quod Hieronymus Lippomanus, & duo portionum Ripæ officia, quæ Marcus Cornelius dum viverent obtinebant, per liberam resignationem dilecti filii Magistri Antimi Marchesani Datarii nostri in manibus nostris sponte factam, & per nos admittam, aut alias quibuscumque modis, & ex quacumque personis vacantia, necnon quæcumque, quotcumque, & qualicumque alia dictæ Curie officia, similia vel dissimilia, & qualitercumque qualificata, ad dispositionem Romani Pontificis pro tempore existentis pertinentia, pretio concedi solita, quæ prædicta omnia, simul valorem septuaginta millium ducatorum auri in auro consistant, ab ipso proximo Summatore conquirenda, & comparanda, ex nunc prout ex tunc, & è contra perpetuò unus & anneximus, & incorporamus. Ita ut quisque Summator, qui pro tempore fuerit, eidem Secretarius Præsident, Portionarius, & omnium aliorum futurorum officiorum hujusmodi titularius existat, illorumque omnium corporalem possessionem per se vel alium, seu alios propria auctoritate liberè apprehendere valeat.

§. 7. Singulis verò quatuor Officiis Recognitorum pro dote ipsorum decem, aut plura loca, seu portiones quæcumque Montis, seu Montium in Urbe, seu ditione temporalis S. R. E. constitutorum non vacabilium, quorum fructus hic solvantur, sumpta ejusdem proximi Summatoris conficienda & exhibenda, perpetuò applicamus, & appropriamus. Declarantes quod si dicto officio Summatoris tot alia, quæ ad valorem prædictum septuaginta millium scutorum, ut prædictum est non ascendant, vel si nulla alia quam prædicta, quæ jam vacarunt uniantur, nihilominus Præsentes valere, & plenarium effectum sortiri debere.

§. 8. Ceterum ex prædictis, & aliis quæ ad dictum Summatoris officium, quocumque modo pertinent, & in eo consueverint & observantur, nihil prorsus detrachere, sed illa ac omnia, & quæcumque privilegia, facultates & auctoritates, exemptiones & indulta ipsi officio, & ejus personis quomodocumque concessa, confirmata, & extenta, quæ ac si de verbo ad verbum infererentur Præsentibus habemus pro expressis, perpetuò stabilia & inviolata esse intendentes, ac futuros omnes Summatore, & dicti officii personas, tam conjunctim quam divisim in illis omnibus potiri; ac etiam omnia & quæcumque jura, salaria, regalia, recognitiones, & emolumenta prædicta, & alias consuetæ, & ab Officialibus, & Collegiis supradictis præstari solita, quemadmodum prædictus Petrus Donatus Cardi-

nalis, & quicumque ante eum Summatore, amplissimè obtinuerunt, eodem modo, jure, & titulo habere & possidere volentes; quin etiam omnia & quæcumque jura, jurisdictiones, facultates, consuetudines, & indulta dicti officii, & illud, necnon expeditionem dictarum litterarum concernentia, à quibuscumque aliis, cuiuscumque qualitatibus, & conditionibus, personis & officiis usurpata, & quantumcumque tempore usitata, ad ipsos, & proprietatem ipsius revocantes, perpetuò statuimus & ordinamus, ut ad dictum Officium unius ex Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalibus assumatur, & dicta quatuor Recognitorum Officia, cum quibuscumque aliis dictæ Curie officiis compatibilia sint, & ad liberam Summatoris pro tempore existentis dispositionem omnino pertineant; qui etiam hac prima vice, & deinceps perpetuum illa, seu per resignationem, seu per obitum, seu quæcumque alium modum vacabunt, concedere, vendere, transferre, & de eis, ac super eis cum quibuscumque convenire, pacisci & decernere liberè & licitè valeat, quemadmodum de aliis ipsius Curie officiis fieri consuevit pro pretio concedantur, viros probos & peritos ad ea admittat, qui per suam quisque, & alias pro materiarum qualitate, & rerum exigentia, vel ejus vel Præsidentis arbitrio expeditioni incumbant.

§. 9. Omnes litteræ, quæ secundum communem in dicto officio cursum, absque difficultate expediti consueverunt, ab illorum cognitore, qui tunc vicem obtinebit, præsentè Summatore, vel Præsidente, diligenter & accurate examinentur, & ipsi referantur, ut illis tunc demum scribat, & ipsas de more jubeat expediti.

§. 10. Ad ea verò dubia dissolvenda, quæ in litteris ipsis occurrere contigerit, Summator certum diem in singulis hebdomadas constituat, quo die coram se, seu Præsidente suo, omnes Recognitores conveniant; & præterea si ipsi Summatori visum fuerit, aliquot alii egregii viri harum rerum usum habentes, ab eodem Summatore adhibeantur, ut dubia omnibus propostis, cum maturo eorum omnium judicio decendantur; gravius tamen, & obstrudioribus dubiis, propter quæ Romanus Pontifex merito consulendus erit, nostræ & Successorum nostrorum declarationi nihilominus reservatis.

§. 11. Ad hæc omnis Summator, sive in dicta Curia præsens, sive ab ea quantumcumque tempore absens, etiam omnia officia prædicta unita, præsentia & futura, quocumque, & qualicumque, ac etiam unius & ejusdem Collegii, per substitutum seu substitutos omnino exercere possit, qui mensuris, ac omnibus aliis Congregationibus intersint, vota, vocem, & suffragia, tam activè quam passivè habeant. Ad officia Refensoriarum, Mensariarum, ceteraque omnia munera, functiones, & negotia, publica & privata, etiam pro singulis ejusdem Collegii officiis, etiam eodem tempore, & veluti Principales admittantur, litteris Apostolicis, & aliis scripturis, & instrumentis subscribant, vestibus & insignibus Officialium cuiuscumque Collegii in Palatio Apostolico, processionibus, pompis, & aliis omnibus actibus, publicis & privatis incedant, & sedant, & pro antiquitate præcedant, & prorsus omnia, ut Principales faciant, & exequantur, pro singulis officiis etiam unius, & ejusdem Collegii quantumcumque in eo fuerint, quorum pluralitas & multitudo, nullum prorsus impedimentum sibi invicem, nullamque incompatibilitatem faciant, singula Congregationum, & munerum omnium emolumenta & salaria ordinaria & extraordinaria percipiant, & alias quemadmodum ipse Summator faceret, facereque possit, si eadem officia, ut non unita possidens, ibi adesset. Eisdem enim ad effectum omnium prædictorum dumtaxat, Secretarios, Scriptores, & alios omnium Collegiorum hujusmodi Officiales, & rituarios creamus & instituiamus.

§. 12. Præterea omnis Summator nullo omnino

Hic modo Pont. insigniorem statum dicti Officii inducit instituyendo Præsidentem unum.

Recognitores quatuor.

Quædam officia hic enunciat, valoris scut. 70. mill. dicto officio Summatoris annexit.

Recognitoribus prædictis dotem constituit.

Indulta, privilegia, jurisdictiones, emolumenta, &c. Summatoribus prædecessoribus, competentia, huic Summatoris officio concedit & approbat.

Formam examinandi litteras Apost. præscribit.

Dubiaque deinceps occurrentia decidendi.

Summatori etiam ab eo officium per substitutos exercendi facultatem concedit, & dictorum Substitutorum auctoritatem designat.

Emolumenta
eidem dari
præcipit.

Statuta pro
Officialib.
condere.

Iurisdic-
tione in
eis corrigendis
declarat.

Exemptio-
nes Camerarij & Cleri-
corum tri-
but.

Præfidentis
& Recognito-
rum litteras
Apost. gratis
exp. diri de-
cernit.

Summatoris
officium resig-
nari posse
concedit.

Clausula
præservativa.

offio admit-
tendi prædi-
ctos Officia-
les.

Derogatio
contratio-
um.

intermisso mensum, dierum, aut alterius tempo-
ris spatio, per consuetudines & statuta, etiam ju-
rata & confirmata, seu privilegia & indulta Secreta-
riorum Apostolicorum, & aliorum
Collegiorum præfinito, sed statim à principio, fru-
ctus, emolumenta, Congregationes, salaria & jura
omnia singulorum Officiorum huiusmodi, præfens
& absens integrè capiat.

§. 13. Ad omnes autem in suo officio conti-
nendos, Summator quæcunque statuta, prospere
officii statum concernentia, condere, condica
corrigere & mutare, aliaque rursus, & quotiescum-
que sibi videbitur edere.

§. 14. Prælatos, & quoscunque alios Officiales,
personas dictæ expeditionis participes, quicumque
fuerint, quo ad ea quæ expeditionem ipsam con-
cernunt castigare, corrigere & punire, ac contra
eos civiliter & criminaliter procedere, viceque
suas tam in his quam supradictis omnibus & singu-
lis, alii vel aliis delegare libere & licite possit.

§. 15. Itemque omnibus & quibuscunque pri-
vilegijs, & exemptionibus, etiam Ripæ & Ripettæ
& Dohanæ Urbis, quibus Camerarius noster, Cleri-
ci, Præfidentes, & alii Camerales habent, eodem
jure libere potiantur & gaudeant.

§. 16. Præfidentis verò & Recognitores omnes
prædicti, litteras Apostolicas etiam Monasteriorum,
& Ecclesiarum Cathedralium pro se gratis ubique
prout litterarum Apostolicarum Scriptores expedi-
diant. Et propterea omnibus & quibuscunque
alijs privilegijs, facultatibus, exemptionibus &
indultis eisdem Scriptoribus, & eorum Collegio
concessis, eodem modo quo illi gaudent, & quic-
que pro se, super his Apostolicas litteras, tam
conjunctim, quam divisim expedire poterunt.

§. 17. Postremo omnis Summator quandocum-
que ei videbitur, officium ipsum Summatoris in
manibus Pontificis pro tempore existentis in fa-
vorem S. R. E. Cardinalis, aut alterius cuiuscum-
que personæ per nos approbandæ, etiam pacto
pretio resignare, & aliàs de eo disponente etiam li-
bere & licite valeat, quemadmodum de ceteris di-
ctæ Curie Officijs pretio receptis, cuique est per-
missum, &c.

§. 18. Decernentes omnia & supradicta, firma
& inviolata perpetuò consistere, vimque validi &
efficacis contractus, inter Nos, & Sedem, & Ca-
meram Apostolicam, necnon omnes deinceps Sum-
matores habere: Ac irritum & inane quicquid se-
cus super his per quoscunque scienter vel igno-
rantez contigerit attentari.

§. 19. Jubemus igitur omnium Collegiorum, &
Officiorum prædictorum defensores, Mensa-
rios, Depositarios, necnon Vestigialium Redempto-
res, & ceteros omnes, ad quos pertinet, ut
quicque pro se, alia & nobis non expectata iustione,
aut mentis nostræ declaratione, prædictum Sum-
matorem, & ab eo Substituendum & Substituen-
dum, necnon Præfidentem, & Recognitores om-
nes, tam conjunctim quam divisim ad prædicta
omnia recipiant & admittant, eisque de ipsis omni-
bus integrè respondeant, & ab alijs faciant respon-
deri. Qui contrafecerint, eos tamdiu ab Officio-
rum exercitio suspendimus, & ab emolumentorum
perceptione privamus, donec satisfactione prævia,
moverint à Romano Pontifice restitutionis bene-
ficium obtinere.

§. 20. Non obstantibus nostræ de non tollendo
jure quæsto, & alijs constitutionibus & ordinationi-
bus Apostolicis, ac Secretariatus, Scriptoriæ,
Archivi, ceterorumque officiorum, & Collegio-
rum, necnon Cameræ Urbis, & vestigialium prædi-
ctorum, iuramento, conscriptione Apostolica, vel
quavis firmitate alia roboratis, statutis, consuetu-
dinibus, usibus & naturis, quancumque tempo-
re observatis, privilegijs quoque, indultis, & lit-
teris Apostolicis, illis eorumque Præfidentibus, Mi-
nistris, & personis per quoscunque Romanos Pon-
tifices prædecessores nostros, ac Nos & Sedem præ-

dictam, etiam per modum statuti perpetui, ac ini-
ti & stipulati contractus, & aliter sub quibuscunque
tenoribus & formis, ac cum quibuscvis reſtitutivis,
præſervativis, derogatoriis derogatoriis, aliis-
que efficacioribus, efficacissimis & insolitis clausu-
lis, necnon irritantibus, & alijs decretis, & mo-
tu, scientia, & potestatis plenitudine similibus,
necnon consistorialiter, ac ex causis quantun-
cumque onerosis, concessis, confirmatis, inno-
vatis, extensis, & moderatis. Quibus omnibus,
etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de eis
eorumque totis tenoribus specialis, specifica, ex-
pressa & individua, ac de verbo ad verbum, non
autem per clausulas generales idem importantes,
mentio seu quævis alia expressio habenda, aut ali-
qua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, te-
nores huiusmodi, ac si ad verbum infererentur,
Præfentibus pro expressis habentes, illis alijs in suo
robre permanſuris, hac vice dumtaxat specialiter
& expresse derogamus. Quodque aliquibus com-
muniter vel divisim, à prædicta sit Sede indultum,
quod interdici, suspendi, vel excommunicari non
possint per litteras Apostolicas non facientes plenam
& expressam, ac de verbo ad verbum de indulto
huiusmodi mentionem, ceterisque contra-
riis quibuscunque.

§. 21. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc
paginam nostræ &c. infringere, vel ei ausu temera-
rio contraire. Si quis autem hoc attentare præ-
sumpserit indignationem Omnipotentis Dei, ac
beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se no-
verit incurſurum.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarna-
tionis Dominicæ millesimo quingentesimo septua-
gesimo, octavo Calend. Julii, Pontificatus nostri
anno quinto.

Missalis Romani, ad ritè Missas celebrandas ex Con-
cilio Tridentini decreto reformati, approbatio,
& aliorum abolitio.

Hoc Missale iteratò restituit Clem. VIII. ut infra in
ejus const. 108. Cum Sanctissimum. Tom. III.

PIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

Quo primum tempore ad Apostolatus apicem as-
sumpti fuimus, ad ea libenter animum, vireſ-
que nostras intendimus, & cogitationes omnes dire-
ximus, quæ ad Ecclesiasticum purum retinendum
cultum pertinerent, eaque parare, & Deo ipso ad-
juvante omni adhibito studio efficere contendimus.

§. 1. Cumque inter alia sacri Tridentini Con-
cilio decreta, nobis statuendum esset de sacris libris,
Catechismo, Missali, & Breviario, edendis atque
emendandis, edito jam, Deo ipso annuente, ad po-
puli eruditionem, Catechismo, & ad debitas Deo
persolvendas laudes Breviario castigato, omnino ut
Breviario Missale responderet, ut congruum est, &
conveniens (cum unum in Ecclesia Dei psallendi
modum, unum Missæ celebrandæ ritum maximè
deceat necesse jam videbatur, ut quod reliquum in
hac parte esset, de ipso nempe Missali edendo,
quàm primum cogitarem).

§. 2. Quare eruditissimis viris onus hoc man-
dandum duximus, qui quidem diligenter collatis
omnibus cum vetustissimis nostræ Vaticanæ biblio-
thecæ, aliisque undique conſcriptis, emendatis,
atque incorruptis codicibus, necnon veterum con-
sultis ac probatorum Auctorum scriptis, qui de sa-
cro eorumdem rituum instituto monumenta nobis
reliquerunt, ad pristinum Missale ipsum San-
ctorum Patrum normam ac ritum restituerunt. Quod
recognitum jam, & castigatum maturè adhibita
consideratione, ut ex hoc instituto, captoque
labore fructus omnes percipiant, Romæ quam-
pri-

Sanctio pœ-
nalis.

Dat. P. An. 8.
die 24. Junii.

CVI.

Editæ An. D.
1570.

Exordium.

Ex decret.
Concil. Trid.
Catechismus
Missale &
Breviarium
emendando
erant, & Bre-
viarium jam
fuit emenda-
tum, & ab
isto Pont.
confirmat.
ut sup. in
const. 64.

Et mox
emendari fe-
cit Missale,
quod nunc
confirmat, ac
recipi juxta
illud ubique
celebrari ju-
be nifi alia
inſtitutio, à
Sede Apoll.
approbat.,
vel consue-
tudo supra
ducentum
annos obser-
vata sit.

Quoad Monachos S. Benedicti hic repeti supra in rubr. const. 64. fol. 100.

primum imprimi, atque impressum edi mandavimus, nempe ut Sacerdotes intelligant, quibus precibus uti, quos ritus, quæque ceremonias in Missarum celebratione retinere posthac debeant. Ut autem à Sacrosancta Romana Ecclesia, ceterarum Ecclesiarum Matre & Magistra, tradita ubique amplectantur omnes, & observent, ne in posterum perennis futuris temporibus in omnibus Christiani Orbis Provinciarum Patriarchalibus, Cathedralibus, Collegiatis, & Parochialibus, secularibus & quorumvis Ordinum Monasteriorum, tam viro- rum quam mulierum, etiam Militiarum regularibus, ac sine cura, Ecclesiis, vel Capellis, in quibus Missa Conventualis alta voce in Choro, aut demissa celebrari juxta Romanæ Ecclesiæ ritum consuevit, vel debet, alias quam juxta Missalis à nobis editi formulam, decantetur aut recitetur, etiam si eadem Ecclesiæ quovis modo exemptæ Apostolicæ Sedis indulto, consuetudine, privilegio, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel aliis quibuscvis facultatibus munitæ sint, nisi ab ipsa prima institutione à Sede Apostolica approbata, vel consuetudine quæ vel ipsa institutio super ducentos annos Missarum celebrandarum in eisdem Ecclesiis assidue observata sit, à quibus, ut præfatam celebrandi constitutionem vel consuetudinem, nequaquam auferimus, sic si Missale hoc, quod nunc in lucem edi curavimus, iisdem magis placeret, de Episcopi vel Prælati, Capituli- que universi consensu, ut quibuscvis non obstantibus, juxta illud Missas celebrare possint permissum, ex aliis verò omnibus Ecclesiis præfatis eorumdem Missalium usum tollendo, illaque penitus & omnino rejiciendo.

Illudque immutari prohibet.

§. 3. Ac huic Missali nostro nuper edito, nihil umquam addendum, detrahendum, aut immutandum esse decernendo, sub indignationis nostræ poena, hac nostra perpetuè valitura constitutione statuimus & ordinamus. Mandantes, ac districte, omnibus & singulis Ecclesiarum prædictarum Patriarchis, Administratoribus, aliisque personis quacumque Ecclesiastica dignitate fulgentibus, etiam si Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, aut cujusvis alterius gradus & præminentie fuerint, illis in virtute sanctæ obediencie præcipientes, ut ceteris omnibus rationibus & ritibus ex aliis Missalibus quantumvis vetustis hæcenus observari consuevit, in posterum penitus omittis, ac planè rejecis, Missam juxta ritum, modum, ac normam, quæ per Missale hoc à nobis nunc traditur, decantent ac legant, neque in Missæ celebratione alias ceremonias vel preces, quam quæ hoc Missali continentur, addere vel recitare præsumant. Atque ut hoc ipsum Missale in Missa decantanda aut recitanda in quibuscvis Ecclesiis absque ullo conscientie scrupulo, aut aliquarum penarum, sententiarum & censurarum incurfu posthac omnino sequantur, eoque liberè & licite uti possint & valeant, auctoritate Apostolica, tenore Præsentium, etiam perpetuò concedimus & indulgemus. Neve Præfules, Administratores, Canonici, Capellani, & alii quocumque nomine nuncupati presbyteri seculares aut cujusvis Ordinis regulares, ad Missam aliter quam à nobis statutum est, celebrandam teneantur, neque ad Missale hoc immutandum à quolibet cogi & compelli.

Clausulæ præservatæ.

§. 4. Præsentive litteræ ullo umquam tempore revocari aut moderari possint, sed firmæ semper & validæ in suo existant robore, similiter statuimus & declaramus.

Clausulæ derogatoriæ.

§. 5. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac in provincialibus & synodalibus Conciliis editis, generalibus vel specialibus, constitutionibus & ordinationibus, necnon Ecclesiarum prædictarum in usu longissima & immemorabili præscriptione, non tamen supra ducentos annos roborata, statutis & consuetudinibus contrariis quibuscumque.

§. 6. Volumus autem, & eadem auctoritate decernimus, ut post hujus nostræ constitutionis, ac Missalis editionem, qui in Romana adsunt Curia presbyteri, post mensem, qui verò intra montes, post tres; & qui ultra montes incolunt, post sex menses, aut cum primum illis Missale hoc venale propositum fuerit, juxta illud Missam decantare vel legere teneantur.

§. 7. Quod ut ubique terrarum incorruptum, ac mendis & erroribus purgatum præservetur, omnibus in nostro & S. R. E. dominio, mediâtè vel immediâtè subiecto commorantibus Impressoribus, sub amissionis librorum ac centum ducatorum auri Camera Apostolicæ ipso facto applicandorum, aliis verò in quacumque orbis parte consistentibus, sub excommunicationis lata sententiæ, & aliis arbitrii nostri penis, ne sive nostra, vel specialis ad id Apostolici Commissarii in eisdem partibus à nobis constituendi, ac nisi per eundem Commissarium eidem impressori Missalis exemplum, ex quo aliorum imprimendorum ab ipso impressore erit accipienda norma, cum Missali in Urbe secundum magnam impressionem impresso collatum fuisse, & concordare, nec in nullo penitus discrepare, prius plena fides facta fuerit, imprimere vel proponere vel recipere ullo modo audeant vel præsumant, auctoritate Apostolica & tenore Præsentium similibus inhibemus.

§. 8. Verum quia difficile esset præsentibus litteras ad quæque Christiani Orbis loca deferri, ac primo quoque tempore in omnium notitiam perferri, illas ad Basilicæ Principis Apostolorum, ac Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, de more publicari & affigi, ac earundem litterarum exemplis, etiam impressis, manu alicujus publici Tabelionis subscriptis, necnon sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eandem prorsus indubitatam fidem ubique gentium & locorum haberi præcipimus, quæ præsentibus haberetur si ostenderentur vel exhiberentur.

Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo septuagesimo, pridie idus Julii, Pont. nostri Anno quinto.

Anno à Nativitate Domini millesimo quingentesimo septuagesimo, indictione 13, die verò 29, mensis Julii, Pontif. Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papæ V. anno ejus 5. retroscripte litteræ publicatæ & affixæ fuerunt ad valvas Basilicæ Principis Apostolorum, ac Cancellariæ Apostolicæ & acie Campi Floræ, ut moris est, per nos Joannem Andream Rogerium, & Philibertum Cappuis Curf.

Scipio de Orlavianis Mag. Curf.

Quod Gubernatori Almæ Urbis, quicquam de mandato Papæ dicere vel facere afferenti, plenè credatur.

Alias Gubernatoris jurisdictiones plenè notavi sup. in Leon. X. const. 8. Et si pro. in Tomo I.

Recordare, quod diversis Tribunalibus, & Judiciis Urbis varia fuerunt concessa Indulta cognoscendi causas criminales super delictis quarumque personarum privativè quoad alios, quæ S. D. N. Urban. VIII. intelligi voluit non privativè quoad Gubernatorem Urbis in ejus const. 93. Decret. inf. Tom. 4.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Cum Apostolica Sedes quasi lucerna super candela- brum sit constituta, ne civitas quæ supra montem posita est, abscondi possit, nos qui ei licet immeriti præsidemus, diligenti debemus cura

Hæc constitutio quando incipiat ligari.

Impressores non imprimant Missale absque licentia.

Iussu publ. & Fides exemplorum.

Dat. P. An. 5. die 12. Julii.

Publicatio.

CVII.

Edita An. D. 1570.

Exordium.

lata-

Causa hujus
concessionis.

fatagere, ut non solum ita luceat lux nostra coram hominibus, ut videntes opera nostra glorificent Patrem luminum à quo bona cuncta procedunt, verum etiam ceteri Christiani cura nostrae divinitus commissi, ubique locorum, sed praecipue in Alma Urbe nostrae existentes, quos Domini timor ad virtutes non allicit, juris rigore perterriti gressus suos in ejusdem Domini mandatorum via dirigendos impellantur.

§. 1. Quod ut magis votivè nobis succedat, cum conditionis humanae defectu omnia per nos ipsos exequi nequeamus, vices nostras aliis committimus, qui sciant, velint & valeant mandata nostra fideliter & prudenter exequi, quod profectò in dilecto filio magistro Monte de Valentibus, Urbis praedictae Gubernatore, notario, & familiari nostro, nos comperisse fateri audeamus. Hac sanè ratione allesti & adducti, facere nullo modo possumus, quin continuè ei gravissima peragenda imponamus negotia, ad quorum executionem ipsi procedenti si prout negotiorum gravitas exigit, pro illorum singulis peculiare, esset assignandum voluntatis nostrae testimonium, facile foret, ut voluntas nostra non ea qua volumus celeritate executioni demandaretur. Volentes itaque praemissis ea adhibere remedia, ne ullo unquam tempore ipsius Montis Gubernatoris auctoritati & jurisdictioni iniquorum calumniis derogari contingat, aut ipse Montes Gubernator voluntati nostrae exequenda anhelans, illius occasione molesteretur, salubriter providere.

Gubernatori
aliquid di-
centi vel fa-
cienti de or-
dine Papae,
plenè creda-
tur.

§. 2. Motu simili &c. & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, volumus & declaramus, omnes & singulas sententias, decreta, bannimenta, proclamationes, aliasque ipsius hactenus gesta, & in posterum gerenda, & tam in scriptis quam aliis, etiam ex sui officii mera auctoritate, in quibus ipse Montes Gubernator ex ordine nostro hactenus processisse attestatus fuerit, vel in posterum procedere attestabitur, eam prorsus vim & efficaciam, idemque robur obtinere, & ab omnibus inviolabiliter observari, omnesque quos illa concernunt, ita & perinde asserere, ac si ea omnia, de speciali & expressa commissione nostra, de qua etiam per cedulam manu nostra, etiam Motu proprio signatam constaret, emanassent, ipsiusque Montis Gubernatoris assertioni absque aliqua per ipsum exhibenda probatione fari, eumque merum mentis & voluntatis nostrae executorem super sic per eum, ut praemittitur gestis, tam in iudicio quam extra, etiam per Nos & Successores nostros Romanos Pontifices, seu de eorum mandato per quoscumque molestari, inquietari, aut perturbari ex quavis causa non posse.

Præceptum
quod desu-
per molestari
non possit.

§. 3. Interdcentes quibuscumque personis cujuscumque dignitatis, status, gradus, & conditionis, ac ordinis existentibus, & quacumque dignitate, facultate, & auctoritate fulgentibus, & in praemissis, tam de nostro quam successorum praedictorum mandato procedentibus eundem Montem Gubernatorem super praemissis, vel eorum aliquo molestandi, inquietandi, aut perturbandi facultatem.

Clausula
præservati-
væ.

§. 4. Decernentes quoque praedictas, & desuper conficiendas litteras nullo unquam tempore, de subreptione vel obreptione vitio, seu intentionis nostrae, aut quopiam alio defectu notari, impugnari, invalidari, ad terminos juris deduci, in jus vel controversiam vocari nullatenus posse, minusque sub quibuscumque similitum vel dissimilium gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, & aliis contrariis dispositionibus comprehendì nullatenus posse, sed ab illis exceptas, & quoties illa emanabunt, toties in pristinum statum restitutas, repositas, & plenariè, etiam sub quacumque data per ipsum Montem eligenda reintegratas esse, vimque validi & efficacis contractus inter Nos & Sedem Apostolicam, ac eundem Montem Gubernatorem initii fortiri.

Clausula sub-
ata &c.

§. 5. Sicque ab omnibus censerì, & ita per quoscumque Iudices &c. etiam causarum Palatii Apol-

tolici Auditores, ac S. R. E. Cardinales, sub lata &c. judicari debere; irritum quoque &c. decernimus.

Clausula de
rogatoria.

§. 6. Non obstantibus quibuscumque Apostolicis, nec non sinodalibus & Provincialibus editis constitutionibus & ordinationibus, ac legibus, etiam municipalibus & imperialibus, etiam in corpore juris clausis, ac dictae Urbis, & quibuscumque aliis etiam juramento vallatis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque &c. quibus omnibus &c. etiam si de illis &c. illorum tenores &c. hac vice latissimè derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque, cum clausulis opportunis & consuetis.

Papæ sub-
script.
Clausularum
repetitio.

Fiat Motu proprio. M.

§. 7. Et cum absolute à censuris ad effectum, &c. & de declaratione, statuto, mandato, decreto, reductione, attestatione, interdicto, & aliis praemissis, quae hic pro repetitis habeantur, & ad partem in forma gratiosa latissimè extendentes & cum opportuna, si videbitur, Iudicum & executorum designatione, qui assistant, & praemissa observari faciant sub censuris, &c. cum potestate citandi, &c. aggravandi, &c. invocato, &c. secularis, &c. & cum derogatione Bonifacianae latissimè extendentes.

Sola signa-
tura sufficit.

§. 8. Et quod praedicti Motus proprii sola signatura sufficiat, & ubique fidem faciat in iudicio & extra, regula quacumque contraria non obstante, seu si videbitur litterae desuper cum majori praemissorum expressione expediri possint.

Fiat M.

Datum Romae apud S. Petrum, 5. Id. Augusti, anno quinto.

Dat. P. An. 5.
die 9. Aug.

Prohibitio à Pio IV. edita contra frumenta de Statu Ecclesiastico extrahentes, extenditur ad extrahentes quodcumque genus Graeciae.

CVIII.

Eandem prohibitionem extendit etiam ad collecta ex bonis Ecclesiasticis Greg. XIII. infra in hoc Tomo II. in cons. 50. Volentes. ubi revocavit licentias etiam ex causa verè onerosa concessas. Et ampliavit Paul V. in cons. 12. Inter. Tom. III.

Edita An. D.
1570.

PIUS PAPA QUINTUS,
Motu proprio, &c.

Exordium.

Romani Pontificis providentia circumspecta Praedecessorum suorum gesta, quae praecipue pro annonae, & ad usum vivendi necessariae facta sunt, pensatis opportunis occasionibus confirmat, innovat, atque extendit prout conspicit in Domino salubriter expedire.

Pius IV. edi-
dit bullam
99. sup. fol.
164.

§. 1. Dudum siquidem à fel. rec. Pio Papa IV. praedecessore nostro emanarunt litterae tenoris subsequenti, videlicet, Pius Papa IV. Motu proprio, &c. Inter multiplices curas, &c.

Hic Pont.
approbat.

Omittitur tenor hujus constitutionis quia habes supra f. 164.
§. 2. Nos praemissa firmiter observari, perpetuaque roboris firmitate subsistere sinceris desiderantes affectibus, revocationem, cassationem, annulationem, decretum, declarationem, innovationem, voluntatem & inhibitionem praefata, ex certa nostra scientia, ac de ejusdem potestatis plenitudine, auctoritate Apostolica tenore praesentium perpetuè confirmamus & approbamus, illisque perpetuè, & inviolabilis firmitatis robur adjicimus, dictamque Motus proprii cedulam innovamus.

Extenditque
omne genus
Graeciae.

§. 3. Ac illam ad licentias & facultates quodcumque genus Graeciae etiam in carnibus, ovibus, agnis, & aliis animalibus, necnon oleo, ac rebus aliis quibuscumque consistentibus quomodocumque, & qualitercumque nuncupatis concernentes, quibuscumque (praeterquam ex causa onerosa à praefata) quomodocumque concessas, ita ut illa similiter revocatae, cassae & irritae sint,

Executorem deputatio.

Quibuscum que non obstantibus.

Prohibitio utendi licentis vel indulgentis abique patentibus Cameralis. Tu vide ampliationem Gregor. XIII. cit. in rubr.

Sola signatura sufficit.

PP. subscript.

CIX.

Edita An. D. 1570.

Exordium.

Causa confit.

Declaratio de qua in rub.

& esse censeantur, auctoritate, potestatis plenitudine, & Motu similibus extendimus & ampliamus.

§. 4. Necnon eidem Vitellotio Cardinali præter ordinariam sui facultatem quoad extensionem, & ampliationem huiusmodi, eandem exequendi, publicandi & notificandi ac declarandi potestatem, facultatem & auctoritatem, quæ illi quoad contenta in præferta Motus proprii cedula ab eodem Prædecessore concessa, data, & attributa extitit, damus, concedimus & impartimur.

§. 5. Non obstantibus omnibus quæ dictus Prædecessor voluit non obitare, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 6. Volumus autem ut deinceps perpetuis futuris temporibus nulli quorumcumque licentiarum etiam ex causa onerosa, etiam si propria auctoritate extractio illis permessa sit, concessarum & concedendarum vigore extractiones granorum, bladorum & leguminum, necnon carniarum, olei, & aliorum ut supra specificatorum, etiam cuiuscumque alterius generis, etiam ut præfertur specificatæ Grasciæ huiusmodi absque ejusdem Camerarii Cardinalis patentibus desuper concedendis litteris, aliquo pacto in toto Statu Ecclesiastico facere possint, aut valeant. Necnon quoscumque contrafacientes in præfatis penas incidisse & incurrisse declaramus, & ab eodem Cardinali Camerario declarandos esse decernimus, &c.

§. 7. Quodque sola præsentis Motus proprii signatura sufficiat, & ubique fidem faciat in iudicio & extra, quacumque regula seu constitutione Apostolica contraria non obstante.

Placet Motu proprio. M.

Moniales Ordinis S. Dominici in articulo mortis constitutæ professionem emittere possunt, ante annum probationis expletum, dummodo sint legitime ætatis.

De Monialibus huius Ordinis absolvendis à Præfatis dicti Ordinis, & à quibus, vide inf. in constitut. 124. Debitum. De toto autem Ordine materiam vide sup. in const. 2. Honor. III. Religiosam. in Tomo I.

PIUS. PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

SUMMI Sacerdotii cura, meritis licet imparibus, Nobis ex alto commissa, requirit ut votis illis, per quæ animarum Christi fidelium, præsertim Sanctimonialium virtutum Domino sub suavi Religiosis iugo virgineæque perpetuæ castitatis laureola famulantium, salutis spiritualique consolationi consilium, libenter annuamus, illaque favoribus prosequamur opportunis.

§. 1. Sanè exhibitæ nobis nuper pro parte dilectarum in Christo filiarum Monialium Novitiarum nuncupatarum, ad Regulam proficendam S. Dominici Fratrum Prædicatorum petitio continebat: Quod quoniam aliquando accidit, ut illæ, durante tempore probationis illarum ad emitendum professionem Regularem, & ante illius emissionem, ab hac vita migrent, & in dicto tempore probationis obstantibus constitutionibus, sive statutis, & ordinationibus dicti Ordinis, non valentes dictam professionem emittere, careant cælesti merito, quo ex dono, benignitate Sedis Apostolicæ ceteræ dicti Ordinis Moniales professæ in dicta professione, & Regula decedentes, gaudent. Quare nobis humiliter supplicari fecerunt, ut sibi in præmissis opportunè providere ex benignitate Apostolica dignaremur.

§. 2. Nos igitur (qui salutem animarum dictarum Monialium Novitiarum, sic ante professionis emissionem, & durante tempore probationis earundem decedentium sincero desideramus affectu (ipsasque Moniales Novitias, & earum singulas, à

quibuscumque excommunicationis, suspensionis & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & penis, à jure vel ab homine quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatæ existunt, ad effectum præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes & absolutas fore censes, huiusmodi supplicationibus inclinati, eisdem Monialibus Novitiis, nunc & pro tempore existentibus, & earum singulis, ut quando & quoties aliqua ex eis nondum professæ de alicujus Medici consilio, ab hoc sæculo transitura conspiciunt, ipsa pro consolatione animæ suæ, professionem prædictam ante tempus requisitum (quatenus tamen ætate legitima constituta sit) ad illam emitendam, in manibus Abbatissæ, seu Priorissæ, vel alterius Superioris Novitiarum ipsius Monasterii, seu Domus, ita tamen, quod ipsæ Moniales Novitiæ sic decedentes, indulgentiam & alias gratias, quas Moniales verè professæ decedentes consequuntur, consequi possint, emittere in articulo mortis libere & licite valeant, Apostolica auctoritate tenore præsentium perpetuo concedimus, & indulgemus. Necnon eisdem Monialibus Novitiis ita tunc professis decedentibus, plenariam peccatorum suorum indulgentiam, & remissionem in forma libellæ misericorditer in Domino eisdem auctoritate & tenore largimur.

§. 3. Ac concessionem, indultum, & elargitionem huiusmodi, ac præfatas litteras sub quibuscumque similibus vel dissimilibus indulgentiarum & gratiarum suspensionibus, revocationibus, & limitationibus etiam in favorem quorumcumque factis & faciendis, nullatenus comprehensas, sed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum & validissimum statum restitutas, repositas & de novo concessas existere, ipsique Monialibus, & professionem emitentibus suffragari posse.

§. 4. Et sic per quoscumque Judices & Commisarios, quavis auctoritate fungentes, etiam S. R. E. Cardinales, & sacri Palatii Apostolici causarum Auditores, sublata eis, & eorum cultibus quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari & definiri debere, ac quicquid fecerit super his, à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane decernimus.

§. 5. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac Monasterii, seu Domus & Ordinis huiusmodi etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis & litteris Apostolicis, illis eorumque Superioribus & personis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis in contrarium quomodolibet concessis, approbatis & innovatis. Quibus omnibus & singulis, illorum renoues, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata, inserti forent Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris, die 23. Augusti, 1570. Pont. nostri anno quinto.

Confirmatio privilegiorum & gratiarum Societatis Crucis Signatorum, pro Sanctæ Inquisitionis contra hæreticos præsidio, antiquitus instituta.

Huiusmodi gratias & indulta, vide supra in const. 17. Innoc. IV. Ut nihil. fol. 103. & const. 19. Malitia. fol. 103. & const. 2. Urb. IV. §. 13. fol. 123. & Clem. VII. const. 27. Cum sicut. vide in Tomo I.

Edita An. D.
1570.

PIUS PAPA QUINTUS.

PIUS PAPA QUINTUS.

Edita An. D.
1570.

Ad perpetuam rei memoriam.

Motu proprio, &c.

Exordium.

S Acrosanctæ Romanæ, & universali Ecclesiæ divina disponente clementia, meritis licet insufficientibus præstantes, omnem Pastoralis officii curam, atque vigilantiam in id potissimum adhibere debemus, ac fides Catholica ubique Terrarum, quantum in nobis est, integra inviolataque conservetur, & impii ac detestandi Hæreticorum conatus, ipsam unam fidem violare satagentium, omnibus rationibus comprimentur. Unde si quæ ad juvandum hujusmodi nostrum propositum, ac debitum, aliàs piè instituta, ac concessa fuisse à Prædecessoribus nostris comperimus, libenter approbamus & aliàs desuper disponimus, prout in Domino conficimus salubriter expedire.

§. 1. Cum itaque inter ceteras, quæ in Ecclesia Dei hætenus instituta sunt Christifidelium Societates, illa satis uberes, Christianæ Religionis fructus afferre videatur, quæ sub Cruce signatorum vocabulo ad alitendum Hæreticæ pravitatis Inquisitoribus, auxiliumque, quando & quoties opus sit, in Cathol. fidei negotiis adversus Hæreticos, etiam vita ipsa præstandum, instituta existit, ut non immerito à diversis Romanis Pontificibus prædecessoribus nostris specialibus gratiis, & privilegiis fuerit decorata.

§. 2. Nos attendentes, quod ea majorem obtinent roboris firmitatem, quæ pluries Apostolicæ confirmationis præsidio sint communita, utque paternum nostrum erga ipsam Societatem charitatis affectum ostendamus, ejusdem Societatis Cruce signatorum creationem & institutio nem, ac privilegia, quæ sunt in usu necnon indulgentias, prærogativas, facultates, gratias & indulgia quæcumque, eidem Societati, & illius utriusque sexus Confratribus Cruce signatis pro tempore existentes, tam per Innocentium IV. Innocentium VIII. Julium II. Leonem X. Clementem VII. quàm quoscumque alios Romanos Pontifices prædecessores nostros sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibusvis clausulis, & decretis hætenus quomodolibet concessa & confirmata, decretis tamen Concilii Tridentini non repugnantia, necnon litteras desuper emanatas, illorum omnium & singulorum tenores Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, auctoritate Apostolica tenore Præsentium confirmamus, approbamus & innovamus, illisque perpetuè & inviolabilis firmitatis robur adicimus, omnesque & singulos juris & facti defectus, si qui forsan intervenerint in eisdem supplementis.

§. 3. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 4. Volumus autem quod Præsentium transumptis, etiam impressis manu Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem ubique fides adhibeatur, quæ ipsis præsentibus adhiberetur si forent exhibitæ vel ostense.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 13. Octobris 1570. Pont. nostri anno quinto.

CXI.

Tonfores monetæ tam aureæ quàm argentæ in Urbe, aliisque locis Sanctæ Romanæ Ecclesiæ mediâtè & immediâtè subiectis, ultimo supplicio plectuntur.

Adversus autem falsificantes monetam Regis Franciæ in ejus Regno & locis circumvicinis, habemus constit. Joann. XXII. in suis extravag. c. 1. de crim. falsi, fol. 191. Tom. I.

Fides exemplorum.

Sola signatura sufficit.

Dat. P. An. 5. die 25. Oct.

Publicatio.

CXII.

Edita An. D. 1570.

Causa hujus constit.

Paul. IV. statuit debitoribus obtinentes alternatim dilaciones, teneri deferre birretum viride.

Multi autem eorum bona, prodigalitate & luxu dilapidabant, & tandem cessione bonorum, etc.

cellariæ Apostolicæ, necnon acie Campi Floræ affigantur, & inibi earum copiarum dimittantur, quodque affixio hujusmodi omnes perinde afficiat, ac si personaliter exhibitis, intimata, & ostensa.

§. 8. Quodque earum transumptis, etiam impressis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus Prælati aut personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ ipsis originalibus litteris adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

§. 9. Et quod præsentis Motus proprii sola signatura sufficiat, & ubique fidem faciat, in iudicio & extra, regula quacunque contraria non obstante, seu litteræ super illis cum majori præmissorum expressione, per Breve expediri possint.

Fiat. M.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, octavo Cal. Novemb. anno quinto.

Anno à Nativitate Domini 1570. indit. 12. die verò 3. mensis Novembrii, Pont. Sanctiss. in Christo patris, & D. N. D. Pii divina providentia Pape V. Anno V. retroscriptus Motus proprius affixus & publicatus fuit ad valvas Principis Apostol. de Urbe, & S. Jo. Lateranensis & Canc. Apost. & in acie Campi Floræ, per nos Joannem Guerardæ, & Jo. Freyle, S. D. N. Papa Curf.

Joannes Bornotus Mag. Curf.

Contrà fraudulentos, & dolosos decoctores, capitali pœna plectendos.

De materia autem Cessionis bonorum & dilationum, vide suprà Pii IV. const. 39. Capientes. fol. 56. ubi notavi, in hoc Tomo.

PIUS PAPA V.

Motu proprio, &c.

Postquam quousque humana processit in temperantia, ut Christifideles qui in sacri baptismatis susceptione, diabolo, ac omnibus vanitatibus ejus, sponte ac solemniter renunciarunt, diabolica fraude seducti, ita mundi hujus illecebras expetant, ut pro illis assequendis, non modo filii prodigi in Evangelio per Dominum demonstrari exempla sequentes, sua luxuriose vivendo profundant, verum etiam illis absumptis, aliena appetant, grande æs alienum à proximis suis, qui id eis, prout mutuam fert hominum commercium, sub variis instrumentorum obligationibus liberaliter mutant, extorquendo, ac deinde dum id eis sub paupertatis specie restituere negligunt, proximos suos una cum tota familia aliquando mendicare cogunt, facere nullo modo possumus, quin à Pastoralis officii nostri debito, cum disponente Domino præsidemus, moniti, & ea qua Christus prior dilexit nos caritate impulsis, clementiæ & misericordiæ rejectis viis, iustitiam & iudicium in tales acriter insurgendo assumamus, jurisque rigorem acriorum reddamus, ut saltem per hoc eos quos timor Domini à malo non retrahit, ultimi supplicii pœna exterrear, sique universas Domini gregis oves ad ovile ad quod, dante Domino, omnes dirigi cupimus, salubre perducamus.

§. 1. Sanè sicut alias fel. recor. Paulus Papa Quartus prædecessor noster inter cetera dilectis filiis Populo Romano concessa privilegia per quasdam suas litteras voluerat, quod dilaciones quacunque nisi juxta dispositionem juris ac formam statutorum Urbis concedi ullatenus possent, & qui illas obtinerent, semper biretum viride portare tenerentur, ac alias prout in dictis litteris plenius continetur.

§. 2. Nihilominus diversi iniquitatis filii, præmissis non contentis, propriaque temeritate confisi, postquam propriis eorum bonis, non adversa fortuna aut fortuitis casibus, sive hostium incurfu, vel ventorum, marisque violentia atque injuria (quod quidem vel cerrè ferendum esset, cum ab iis facile ca-

veri nequeat humana providentia) sed sua ipsorummet incuria, negligentia, prodigalitate, atque luxu in expendis propriis voluptatibus, penitus dilapidatis, proximos suos ad varia eorum bona sibi mutanda sub spe restitutionis compulerunt, illis similiter profusus, creditores suos, cessione bonorum deludentes, ac tam litteras præfatas, quam alia per nos contra hujusmodi decoctores, fallitos nuncupatos, edita statuta deridere audent, in grave Apostolicæ auctoritatis vilipendium, proximorum suorum detrimentum & gravamen, ac animæ suæ periculum non modicum.

§. 3. Nos præmissa conniventibus oculis pertransire nequeunt, & attentè considerantes nulla alia de causa in fures ultimi supplicii pœnam esse impositam, nisi ut talia perpetrandi hominibus via interclusa, liberum esset unicuique sua absque periculo possidere & uti, hos autem adeo furibus & latronibus similes esse, ut ab illis in nihilo differant, nisi ut quod eis nisi cum vitæ suæ periculo agitur, hoc decoctoribus impunè liceat, volentesque propterea, ut par, immo gravis delictum, parem etiam fortiaur pœnam, jurisque rigorem in hos graviores reddere, ac genus hoc hominum tamquam humano generi infestum, è ceterorum cœtu segregandum merito esse judicantes, omnium & singulorum legum & constitutionum, tam Imperialium quam Apostolicarum, etiam in corpore juris descriptarum, tenores & formas, ac si de verbo ad verbum inserti forent, Præsentibus pro expressis habentes, sine illarum aliquo præjudicio, quinimmo illas revalidantes & confirmantes, Motu proprio hac nostra perpetuè valitura constitutione sancimus, statuimus, & declaramus, quod deinceps perpetuis futuris temporibus quacunque persona, tam secularis quam Ecclesiastica, etiam si clericali & Ecclesiastico foro gaudeat, cujuscumque status, gradus, ordinis & conditionis existat, & quacunque dignitate, tam mundana, etiam si Domicellus, Comes, aut aliter Nobilis aliquando fuerit, quam Ecclesiastica, non tamen Episcopali, præfulgeat, qui omnem eorum substantiam non præmissis de casibus fortuitis, sed incuria, negligentia, prodigalitate, & luxu suis, proprias voluptates explendo, & cupiditatibus non mediocri intemperantia servientes subverterint & dilapidaverint, necnon qui se bona sua decoxisse simulant, illa in fraudem creditorum suorum occultant, & eorum pecuniam totam in eorum utilitatem forsan converterint, ut eorum creditores ad secum componendum facilius alliciant, ultimi supplicii, & ea qua fures ipsi, de jure vel consuetudine, aut particulari vel municipali statuto plecti solent, puniri debeat.

§. 4. Mandantes tam Urbis præfatæ gubernatori, & Curie causarum Camera Apostolicæ generali Auditori, quam omnibus & singulis nostris & Sedis Apostolicæ in quibuscumque provinciis Legatis & Vicelegatis, necnon quarumcumque civitatum, terrarum, oppidorum & locorum, nobis & eidem Sedi, tam mediatè quam immediatè subjectarum gubernatoribus, Prætoribus, Capitaneis, Commissariis, & aliis quibuscumque Judicibus, quavis etiam subdelegata potestate fungentibus, ut præsentibus nostris inviolabiliter in eorum iudiciis observent, nec contra tales, nisi illarum forma servata, procedere audeant vel præsumant.

§. 5. Districius quoque inhibentes quibuscumque terrarum, oppidorum, & locorum Dominis in temporalibus in virtute sanctæ obedientiæ, ac sub excommunicationis &c. pœnis, ne sic in præmissis judicantes, eorum seculari auctoritate molestant, inquietare, perturbare, vel impedire, audeant vel præsumant.

§. 6. Decernentes postremò Præsentibus, & desuper conficiendis litteris nullo umquam tempore, de subreptionis vel obreptionis vitio aut intentionis nostræ defectu notari, manūq; sub quibusvis simili vel dissimili gratiarum revocationibus cōprehendi, vel illis derogari nullo modo tacite vel expresse

dicto es dolose deludebant.

Hic igitur Pont. decrevit hujusmodi peroras nedum ad efficiendum bonorum non esse admittendos, sed ultimo supplicio plecti debere.

Executorum deputato.

Inhibicio contra impediētes eos, qui ita super præmissis judicaverint.

Forma, & effectus publ.

posse,

Decretum
irritans.

Clausula de-
rogatoria.

Forma &
effectus pu-
blic.

Sola Signa-
tura sufficit.

Dat. P. An. s.
die 1. Nov.

Publicatio.

CXIII.

posse, nisi de illis, eorumque totis tenoribus; ac eorum Datum de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio & expressio facta fuerit, aliterque factas derogationes, nullus roboris vel momenti fore, & tamquam tales à nemine attendi, nec ulli suffragari posse.

§. 7. Sicque per quoscunque Iudices &c. etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, & S. R. E. Cardinales, eorumque Collegium, sublata &c. irritum quoque &c.

§. 8. Non obstantibus præmissis, ac quibusvis Apostolicis, necnon in Provincialibus & synodalibus Conciliis editis, specialibus vel generalibus, constitutionibus ac legibus, etiam Imperialibus, etiam in corpore juris, ut præferatur clausis, ac quibusvis etiam municipalibus & particularibus, etiam iuramento &c. roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis &c. sub quibuscumque tenoribus &c. etiam Motu simili &c. consistorialiter &c. ac sub quibusvis verborum formis concessis, &c. Quibus omnibus, etiam si de illis &c. illorum tenores &c. illis aliis &c. latissimè, specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque, cum clausulis opportunis & consuevis.

Fiat Motu proprio. M.

§. 9. Et quod quorumcumque statutorum, constitutionum, & legum, &c. tenores habeantur pro expressis, seu in toto vel in parte exprimi, ac de verbo ad verbum inferri possint. Et de sancti bone, statuto, declaratione, decreto, inhibitione, mandato, & aliis præmissis quæ hic pro repetitis habeantur, & ad partem perpetuò in forma gratiosa, & cum opportuna, si videbitur Iudicum deputatione qui assistant &c. invocato &c. secularis & cum opportuno decreto, quod ut Præfentes ad omnium quorum interest notitiam deducantur, nullusque deinceps adversus eas aliquam excoationem prætere, aut ignorantiam allegare queat, quod illæ imprimantur, & in valvis Basilicæ Principis Apostolorum, & S. Joannis Lateranensis, ac Cancellariæ Apostolicæ, necnon in acie Campi Floræ assignantur, & inibi earum copie dimittantur. Quodque affixio hujusmodi omnes perinde afficiat, ac si fuissent personaliter exhibitæ, intimatæ, & ostensæ. Quodque eorum transumptis etiam impressis manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus Prælati, aut personæ dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ ipsis originalibus litteris adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

§. 10. Et quod præfatus Motus proprii sola signatura sufficiat, & ubique fides faciat, in iudicio & extra, regula quacumque contraria non obstante, seu litteræ super illis cum majori præmissorum expressione per Breve expediri possint.

Fiat. M.

Datum Romæ apud S. Petrum, Kalen. Novemb. anno quinto.

Annò à Nativit. Domini 1570. Indiç. 13. die verò 3. mensis Novemb. Pontificatus Sanctiss. in Christo patris & D. N. D. Pii divina providentia Papa V. anno 5. retrospectus Motus proprius affixus & publicatus fuit ad valvas Principis Apostol. de Urbe, S. Joannis Lateranensis, & Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, ut moris est, per nos Jo. Guerdar, & Joannem Freyle prælibati S. D. N. Papæ Cur.

Reformatio Tribunalis Curie causarum Cameræ Apostolicæ Auditoris, una cum taxa expeditionum.

Aliam ejusdem Tribunalis reformationem præfinitis Pius IV. sup. in const. 56. Inter multiplices fol. 81. Et alteram Pauli V. in const. 28. Eximia. ubi de hac jurisdictione plene notabo. Et postremò in alia ejus const. 71. Universi. §. 4. in Tom. III.

PIUS PAPA V. Motu proprio, &c.

Inter illa, quæ in singulis in Urbe Curis, & Officiis emendanda, seu rectius disponenda decrevimus, hæc de Curie causarum Cameræ Apostolicæ generalis Auditoris officio, ac Tribunali seorsum ab universali reformatione, Apostolica auctoritate perpetuò statuimus & ordinamus, quæ & ab Auditore, & ab ejus Locumtenentibus, Curieque ipsius Iudicibus & Notariis exactissimè servari præcipimus.

§. 1. In primis, ne quisquam ex confessione debita procuratore suo ad id in ipsamet obligatione in posterum constituto, in iudicio vel alibi facta, condemnatur, nisi idem etiam procurator ad defendendum in iudicio fuerit constitutus, & ipse cum constitueretur, defendendi onus hujusmodi sponte præfens acceptaverit.

§. 2. Neve quisquam ratione sui consensus in contractu, seu quasi contractu, aut aliàs in iudicio vel extra iudicium, per se vel alium quocumque modo, etiam in susceptione, quam vocant, censurarum, de cetero præstiti, purè, aut sub conditione, aut in diem, censuris Ecclesiasticis innodetur, aut innodatus declaretur.

§. 3. Quinimmo nec procuratoris, ad constituendum debitum, constituto, in ipsa debiti obligatione nisi & ad defendendum una constitutur, & ipse defendendi onus acceptet, ut præferatur, nec censurarum consensus, aut susceptio hujusmodi usquam recipiatur vel admittatur; siue etiam describatur, neque de his quiscumque rogeat etiam in Cameralis formula, siue principaliter, siue incidenter; neque iudicium ullum, aut ulla executio inde fiat, aut decernatur.

§. 4. Excipimus autem ab his, quæ de confessione debiti, & procuratoris ad id constitutione, supra statumimus, obligationes quæ de rebus ac juribus ad Cameram Apostolicam pertinentibus factæ jam sunt, aut in posterum fieri oportuerit, in quibus quoad hujusmodi confessionem & constitutionem, liceat illud idem fieri, quod hæcenus est observatum.

§. 5. Quod si quando aliqui seiplos in Urbe efficiat obligare voluerint, ut in exactionibus laborandum non sit, quas pro commodiori hominum commercio faciles esse expedit, poterit Iudex parti præfenti, & se obliganti præcipere, ut die certa tunc statuenda solvat; monens, quod si ea die sponte non solverit, nulla exinde facta personali citatione, sed prævia tantum unica dilatione, quæ per affixionem locis consuevis intimabitur, ad executionem contra ipsum procedet, & in subsidium, ubi executio realis, personalis & facile fieri non poterit; in ipsum tamquam contumacem, contemptoremque sui præcepti, excommunicationem decernet. Hæc tamen, quoad excommunicationem monitio, ubicumque facilis futura esset executio, non adhibeatur.

§. 6. Cum autem præscripta dies cesserit, ea distinctio servetur, ut si obligatio, vel in Urbe erit contracta, vel in Urbe sit solvenda, sola intimatio affixio prædicta sufficiat.

§. 7. Si verò extra Urbem & obligatio contracta, & solutio destinata fuerit, non aliter ad executionem procedatur, nisi facta legitimè debitori intimatione dilationis hujusmodi. Rursus, ubi in obligatione extra Urbem facta, pariter solutio extra Urbem destinata fuerit, præter dictam dilationem, detur etiam alia pro loci distantia, intra quam docere possit & debeat debitor se solvisse.

§. 8. Quod si parti petenti debitum agnoscenti, danda videbitur aliquando longior aliqua dilatio ad solvendum (intra quam nullum omnino mandatum, aliisque executionis genus relaxari poterit) ea erit dierum triginta, aut saltem viginti, arbitrio Iudicis, qui pro debitoris qualitate, & debiti summa, utrum voluerit de prædictis terminis eliger.

§. 9. Qua in re illud observetur, ut si forte post decretum & relaxatum, atque etiam actori à Notario traditum magdatum executivum, visum fuerit

Edi-
1570.
Procem.

Debitur ex
confessione
procuratoris
non condem-
natur.

Neg: excom-
municetur.

Procuratoris
constitutio
aut censura
rum suscep-
tio, in oblig.
non appona-
tur.

Nisi de re-
bus Cameræ
agatur.

Forma stric-
tioris obliga-
tionis hic
traditur.

Obligati in
Curia quo-
modo citan-
di.

Obligati ex-
tra Curiam
ut citandi.

Contententes
debitum
quam dila-
tionem habe-
re possint.

Dilatione fi-
nita, manda-
tum antea re-
laxatum suffi-
ciat.

Excommuni-
catio quando
fit contra
obligatos.

Causa obli-
gationis Ca-
meralis sint
A. C. tunc
nisi contra
Romanos lai-
cos in Capi-
tolio.

Vel contra
Clericos in
Curia Vica-
rii.

Appellatio-
nes a senten-
tiis extra Cu-
riam laici,
quando &
quomodo re-
cipi debeant.

Litteras A-
postolicas
quando &
quomodo
exequi possit
A. C.

Monitoria
generalia
non dentur.

Episcopi &
alii non im-
pediuntur in
executione
Concilii Tri-
dentini.

Expedicio-
nes non den-
tur in his,
quæ non per-
tinent ad ju-
risdictionem.

Nihil in con-
tumaciam ex-
pediatur in

Judici dilationem hanc concedere, non alio postea
iudicio, aut etiam mandato, opus sit actori, si reus
intra dilationem ipsam non solverit, sed eodem illo
quod antea traditum aut relaxatum fuit decretum
fuerat executionem suam prosequatur.

§. 10. Sed & in omnibus, quæ aliter quam
cum supradictis præcepto & monitione ubicumque
locorum factæ fuerint obligationibus, & alias
semper, illud omnino servetur, ut ad excommuni-
cationem cujusquam non deveniatur, nisi cujus
fuerit erga Judicem contumacia, ipso etiam, nec
tantum procuratore suo, quamvis specialiter con-
stituto, prius legitime citato.

§. 11. Velum sicuti antea, earum quæ in forma
Cameræ erant obligationum, ita & harum quæ
futuræ sunt, pro illis iudicium, sive cognitio &
executio in Urbe ad Auditorem Cameræ solum
spectet in universum, juxta suas facultates. Roma-
nos tamen debitores laicos, licet creditoribus
etiam in Curia Capitolii convenire, juxta privile-
gia Populo Romano concessa.

§. 12. Quo verò ad Clericos, ratione originis,
vel beneficii Romanos, locus sit præventi non inter
ipsum Auditorem, & postum in Urbe Vicarium.

§. 13. Ceterum idem Auditor appellationes non
aliter audiat, sive admitat, quam si exhibita fuerit
Notario in actis ab Appellante fides publica seu
publicum instrumentum sententiæ à qua exitit appel-
latum, eaque sit definitiva, vel vim habeat definiti-
væ, neque aliter eorum ratione inhibeat, quam in-
serto in litteris inhibitionis toto fidei, seu instru-
menti hujusmodi tenore. Quare Judices à quibus
appellari contingit, eorumque Notarii, fidem seu
instrumentum hujusmodi partibus petentibus, &
debitam Notariis mercedem solventibus tradent in
tempore, alioquin Judices officio judicandi, Nota-
rii exercitio notariatus tamdiu suspensi sint, donec
Appellanti omnia damna & interesse propterea pas-
sa, ab ipso Auditore extrajudicialiter estimanda, re-
sarciant. Et nihilominus facta ab Appellante fide de
sua petitione, & Judicis sive Notarii derogatione,
idem Auditor inhibere, & in causa procedere possit.

§. 14. Litteras Apostolicas, quibus certus, qui per
se ipsum procedat, executor præscriptus est, nullo
modo exequatur, sed & omnes præterea, in quarum
executione pars vocanda fuerit, non aliter exequa-
tur, quam servatis, pro rerum contingentia, consti-
tutionibus fel. rec. Bonifacii Papæ VIII. prædeces-
soris nostri de una, & Concilii generalis de duabus
dictis, nisi ipsis constitutionibus derogatum fuerit
expressè in litteris, quæ fuerint exequenda, sed &
tunc, ne quemquam extra Dicem esse ultra tot die-
tas evocet quod in ipsis litteris expressum erit, neve
alii vires suas committat vel subdeleat, quam con-
stitutis in dignitate Ecclesiastica, aut Cathedralium
Ecclesiarum Canonicis: exceptis litteris pensionum
quarum solutio in Romana Curia destinatur, & his
omnibus, quibus ipse nominatim executor præ-
scriptus fuerit; his enim casibus possit ad se unde-
cumque & quocumque partes evocare.

§. 15. Monitoria generalia, vulgò Significavit
appellata, quæ scilicet, ut aliquid reveletur, seu
restituatur vel probetur, cum censuris Eccl. publi-
cari solent, nullo modo decernat sive expediat.

§. 16. Similiter nihil sine speciali nostra commis-
sione decernat, aut faciat, aut mandet, quod Episco-
pos, aut alios locorum Ordinarios impedire possit,
ne ad executionem decretorum sacri Concilii Tri-
dentini, correctionemque morum liberè procedant.

§. 17. Ab omnibus autem & singulis iis, quæ ad ejus
jurisdictionem secundum præmissa pertinere nolumus,
usque adeo abstinere, ut neq; monitoria, neq; citatio-
nes, neq; inhibitiones neq; sequestre, neq; mandata
de manutenendo, neque aliud quicquam quocumque
sub prætextu, super iis aut ipse decernat, aut ab aliis
decreta revocet, & pariter ejus Notarii nihil omnino
expediant, aut etiam scribant, sub pena amissionis officii.

§. 18. In causis verò sui fori civilibus, etiam in quibus
summarie, & ad instar beneficium procedendi

ei concessa est facultas, numquam omnino ad pen-
nas contumaciales deveniat; sed potius receptis
probationibus ad negotium principale spectanti-
bus, datoque competenti termino parti absenti,
denum super his servatis servandis definitivè pro-
nunciet, etiam sine litis contestatione.

§. 19. Mandata de manutenendo, numquam
nisi parte legitime citata, & compendiosa ac sum-
maria causæ cognitione adhibita, decernat.

§. 20. Idem & in sequestris servetur, nisi aliqua
ratione timendum sit; Judicis arbitrio, de suspi-
cione fugæ, vel bonorum dilapidatione.

§. 21. Ne autem contingat, ut absentes, & in
remotissimis ab Urbe partibus degentes, si ob præ-
sentem aliquod crimen moneantur ad personaliter
comparendum, deinde inculpabiles reperti, maxima
tingens incommoda, & dispendia nulla sua culpa
passi sint, neminem posthac extra Italiam existen-
tem ad comparandum personaliter moneat, nisi
facto verbo nobiscum, de quo verbo habito fiat
mentio in litteris monitoriis.

§. 22. Postremò Notarii nihil unquam cujusvis
generis scripturæ ad iudiciū pertinentis, quod extra
Curiam mittendum sit, expediant, & parti tradant, nisi
cum subscriptione Auditoris, vel ejus Locumtenentis.

§. 23. Circa impensas autem, quæ à partibus,
pro scripturis & expeditionibus faciendæ sunt, ultra
ea quæ in universum in omnibus Curis observari
voluimus, infra scripta specialiter in eadem Curia
Auditoris, etiam in causis pendentibus observentur.

§. 24. In causis quæ ordinariè secundum Audi-
toris facultates in ejus Tribunali introducæ fuerint,
vel introduci poterint, sive post ceptam causam
superveniatur commissio, sive ante impetrata sit, sive
in prima, sive in ulteriori instantia, nulla in re au-
geat impensam, sed quoad hoc habeatur semper
causa per ordinariam, ita ut etiam ratione sententiæ,
neque Notarii, neque Judices quicquam prop-
terea accipiant, ultra id quod accipere potuissent,
si commissio non adesset.

Sive igitur adfit commissio, sive non, in causis
ordinariè ad hunc Forum pertinentibus exigatur, ut
infra, & non amplius.

Sit itaque pretium perfectæ expeditionis taxæ, & aliis
omnibus comprehensis.

§. 25. Pro monitorio speciali ad partes, jul.
novem.

Pro monitorio speciali per editum, jul. duodecim.
Pro monitorio in vim bullæ Eugenianæ, jul. duo-
decim.

Pro Eugeniana per editum, jul. quindecim.
Pro monitorio in vim bullæ Cæne Domini, jul.
duodecim.

Pro citatione cum inhibitione, vigore appellationis
extra Curiam, cum insertione instrumenti sen-
tentiæ à qua appellatur, jul. decem.

Pro instrumento remissoriæ, jul. novem.
Pro instrumento litis pendentiæ extra curiam, jul.
novem.

Pro transumpto simplicis bullæ, seu instrumenti,
aut cedulæ, vel etiam plurium similium, vel
aliorum jurium in eodem transumpto descripto-
rum, si fuerint in forma probanti, jul. duodecim.

Si verò in forma Vidimus, jul. novem. habita tamen
ratione excessus scripturarum arbitrio Judicis,
quoad laborem Notarii.

Pro sequestro extra curiam, jul. novem.
Pro litteris supervientie, quæ non taxentur, jul.
quatuor una cum sigillo.

Pro fide legalitatis appendicæ in instrumentis No-
tariarum in totum unâ cum sigillo, jul. duos.

Pro mandato de exequendo, jul. novem.
Pro nota sententiæ, nihil exigatur.

Pro sportulis, etiam nihil.
§. 26. At in causis quæ per commissionem introdu-
cuntur, & ab initio sunt commissariæ, neq; aliàs ad
hujus fori cognitionem spectant solvatur ut sequitur.

Mandata de
manutene-
ndo non den-
tur parte non
citata.
§. 21. Ne autem
contingat, ut
absentes, & in
remotissimis
ab Urbe parti-
bus degentes,
si ob præsen-
tem aliquod cri-
men moneantur
ad comparand-
um personaliter
ad comparand-
um personaliter
Papa.

Expedicio-
nes extra Cu-
riam subscri-
bantur ab
A. C.
Reformatio
circa expen-
sas.

Causæ ordi-
nariæ, non
efficiuntur
commissariæ
per superven-
ientem commis-
sionem.

Taxa expedi-
tionum in
causis civilibus.
Tribunali
A. C.

Taxa expedi-
tionum in
causis civilibus.
Tribunali
A. C.

Taxa expedi-
tionum in
causis civilibus.
Tribunali
A. C.

Taxa expedi-
tionum in
causis civilibus.
Tribunali
A. C.

Taxa expedi-
tionum in
causis civilibus.
Tribunali
A. C.

Taxa expedi-
tionum in
causis civilibus.
Tribunali
A. C.

Taxa expedi-
tionum in
causis civilibus.
Tribunali
A. C.

Taxa expedi-
tionum in
causis civilibus.
Tribunali
A. C.

Taxa expedi-
tionum in
causis civilibus.
Tribunali
A. C.

Taxa expedi-
tionum in
causis civilibus.
Tribunali
A. C.

Taxa expedi-
tionum in
causis civilibus.
Tribunali
A. C.

Taxa expedi-
tionum in
causis civilibus.
Tribunali
A. C.

Pro citatione vigore commissionis absque inhibitione extra Curiam, jul. novem.
 Pro citatione cum inhibitione simplici, jul. undecim.
 Pro citatione cum inhibitione sub censuris, jul. quatuordecim.
 Pro citatione cum inhibitione sub censuris per edictum, etiam pro necessario examine, jul. decem & octo.
 Pro inhibitione simplici extra Curiam, jul. novem.
 Pro inhibitione extra Curiam sub censuris, jul. duodecim.
 Pro inhibitione in Curia, jul. tres cum dimidio.
 Pro monitorio speciali, jul. quindecim.
 Pro notis sententiarum definitivarum, quæ in scriptis proferuntur, in prima instantia, jul. quadraginta, in secunda, jul. triginta, in tertia, jul. viginti.
 Pro nota absolutoria ab observatione iudicii, jul. quindecim.
 Pro nota interlocutoria, jul. quindecim.
 Pro nota declaratoria, jul. octo.
 Pro mandato de exequendo, jul. quindecim.
 Pro sequestro, jul. quindecim.
 Pro sportulis Iudicum, pro sententiis definitivis ex scripto proferendis, non ultra id quod in aliis curiæ Tribunalibus ordinariis à fel. recor. Pio Papa Quarto præscriptum est.
 §. 27. De ceteris verò actis, scripturis, & expeditionibus infra scriptis, siue causæ sint ordinariæ, siue commissariæ, solvatur tantummodo infra scriptum pretium, videlicet.
 Pro compulso rialibus generalibus, siue specialibus, jul. duodecim.
 Pro palmo rotuli remissoriæ, jul. tres. Sit autem palmus linearum triginta, & linea syllabarum decem & octo.
 Pro instrumento remissoriæ, jul. duodecim.
 Pro instrumento litis pendentiæ in Curia, jul. quatuor cum dimid.
 Pro interdicto speciali, jul. quindecim.
 Pro instrumento relaxationis interdicti, jul. quindecim.
 Pro executorialibus, jul. triginta sex.
 Pro mandato de imittendo in possessionem vigore litterarum Apostolicarum, seu in forma Brevis, jul. decem.
 Pro absolutione, siue absolutionis commissione, pro uno, jul. novem.
 Pro duobus litis confortibus, jul. quatuordecim.
 Pro tribus litis confortibus, jul. decem & octo.
 Pro quatuor litis confortibus, jul. viginti tres.
 Ultra quatuor quorumcumque addantur persone litis confortes, nihil augeatur pretium expeditionis.
 Pro Capitulo, Collegio, Confraternitate, aut Universitate, jul. quinquaginta.
 Pro instrumento absolutionis, jul. duodecim.
 Pro decretis à Iudice prolatis non ex scripto, etiam vim definitivæ habentibus, eorumve nota & sportulis, nihil.
 Pro simplici fide etiam plurium actorum, jul. duos.
 Pro examine testium, cum articulis & interrogatoriis in causa, quæ sit æstimationis à quinquaginta scutis supra usque ad quamcumque summam, si articuli non excedant numerum vigintiquinque, interrogatoria numerum triginta quinque, in domo vel officio Notarii, jul. quatuor; extra verò officium non ultra duplum.
 In causa æstimationis à quinquaginta scutis infra solvatur tantum pro dimidia. Quod si articuli excedant numerum vigintiquinque, & interrogatoria triginta quinque, solvatur merces Notarii arbitrio Iudicis.
 Pro instrumento sententiæ, si extrahatur, jul. quindecim.
 Pro instrumento declaratoriæ, non tamen vigore obligationis in forma Camere, jul. duodecim.
 Pro brachio seculari ob non parationem monitorii, aut litterarum Apostolicarum, vel executorialium, jul. triginta.
 Pro mandato suspicionis fugæ, usque ad quamcum-

que summam, etiam in vim obligationis Cameralis decrero, jul. quatuor cum dimidio.
 Pro mandato de consignando vigore sequestri, etiam ubi pro illius verificatione debitor prius fuisset conventus via executiva, vigore obligationis Cameralis, jul. quatuor cum dimidio.
 Pro mandato de consignandis pignoribus subhañtandis, aut deliberandis, jul. quatuor cum dimidio.
 Pro mandato de relaxando pro debito civili, jul. quatuor cum dimidio.
 Pro mandato in causis civilibus loco litterarum, pro parva summa, jul. quatuor cum dimidio.
 Computato in his omnibus mandatis, julio sigilli.
 §. 28. De pretio autem sic præscripto, in omnibus supradictis expeditionibus, siue ordinariis siue commissariis, dentur Auditori & Massæ Notariorum, item (quoad ordinarias) Camerario eadem portiones, quæ, & prout antea pro eisdem expeditionibus dabantur, nulla ex parte diminuta. Reliquum quod iis portionibus detractis supererit, sit Notarii expeditionis, præterquam in expeditione absolutionis, siue commissionis absolvendi, in qua singulis detratur pro rata, ita ut non tantum portio Notarii, sed cuiusque aliorum minuat ad eam rationem, ut tantum unicuique portioni pro ejus modo decreseat, quantum omnibus in universum detraximus.
 §. 29. Pro mandato executivo, siue brachio, ubi invocatione opus fuerit seculari, per omnia expedito, omniaque comprehensis, pretium sit ut infra, videlicet.
 Ab uno scuto, usque ad quindecim, jul. quatuor cum dimidio.
 A scutis quindecim usque ad vigintiquinque, jul. viginti duo.
 A scutis viginti quinque usque ad quingentos, jul. triginta tres.
 A scutis quingentis usque ad mille, jul. sexaginta sex.
 A scutis mille usque ad quamcumque summam, jul. centum & decem.
 §. 30. Hoc autem pretium ita dividatur, ut ex julis viginti duobus, Auditor habeat julios sex, Camerarius pro sigillo habeat julios quatuor cum dimidio, Massa Notariorum habeat jul. quatuor cum dimidio, Reliquam habeat Notarius expeditionis.
 Ex julis triginta tribus, Auditor habeat julios octo & bajochos duos cum dimidio, Sigillum julios quinque cum dimidio, Massa habeat jul. octo, & bajochos duos cum dimidio, Residuum Notarius.
 Ex julis sexaginta sex, Auditor habeat julios sexdecim cum dimidio; Sigillum, julios undecim; Massa, julios sexdecim cum dimidio; Notarius, quod superest.
 Ex julis centum & decem, Auditor habeat julios vigintiquatuor, & bajochos septem cum dimidio; Sigillum, julios sexdecim cum dimidio; Massa, julios viginti duos; Notarius, reliquum.
 Ad constituendas autem supradictas summas, computentur julii undecim pro singulo scuto, quilibet verò julius sit decem bajochorum.
 §. 31. Censurarum Ecclesiasticarum nomine nihil accipiatur, vel in expeditione mandari executivi seu brachii secularis, vel seorsum ab eo, neque usquam aliàs, nisi ubi ad illas rite processum fuerit re ipsa.

Cum verò ad illas procedi contigerit, tunc pro declaratoria, aggravatoria, & reagravatoria simul junctis, & totali earum omnium expeditione, tantumdem exigatur, quantum pro brachio seculari, habita ratione predictæ distinctionis summarii; ita ut omnis impensa utriusque expeditionis, mandati scilicet vel brachii secularis, & censurarum simul collectæ, duplum non excedat ejus pretii, quod mandato seu brachio seculari supra taxatum est, pro qualibet supradictarum summarum. Excepta ultima majori summa, videlicet à mille supra. In ea enim summa etiam si contingat ultra, vel post mandatum executivum seu brachium secularare, cen-

Diviso pretio dicarum expeditionum.

Taxa mandatorum executionum.

Taxa expeditionum censurarum Ecclesiasticarum.

foras quoque relaxari, nihil tamen earum nomine exigatur; sed tantum præter id pretium, quo pro solo mandato seu brachio seculari supra taxatum est, accipi possit iuxta merces pro scriptura.

Nunquam tamen cogantur partes invitæ, unâ cum mandato executivo, seu brachio seculari, censurarum quoque expeditionem accipere, aut earum expeditionis pretium solvere, etiam si ad censuras ipsas in subsidium contra contumacem Judex comminando ritè processerit, & extra loca temporali dominio Sanctæ Romanæ Ecclesiæ subiecta, vel etiam extra Italiam expeditio mittenda foret.

Quod si forte quisquam legitime servatis processibus utramque expeditionem, mandati scilicet seu brachii secularis, & censurarum eodem tempore habere voluerit, tunc apponatur verbis expressis in ipsa expeditione, quoad censuras, ne is pretium, quod illarum ratione expendit, ullo modo repetere possit ab illis contra quos decreta, & prolata fuerunt, nisi adversus eisdem, vigore mandati executivi, seu brachii secularis non satisfaciens, aut aliâs non parentes, censuris ipsis necesse fuerit uti.

§. 32. Ipsius verò expeditionis censurarum pretium prædictum eadem ratione, & eisdem portionibus dividatur quibus pretium mandati executivi, seu brachii secularis, ut supra dictum est.

§. 33. Pro duplicatis etiam post quodcumque tempus expeditis, nihil exigatur præter scripturæ mercedem.

§. 34. Pro sigillo parvo appenso in qualibet expeditione solvatur julius unus tantum, ubi non adest minor taxa.

§. 35. Pro mandatis executivis, vel aliis quibuscumque expeditionibus, Notarii nihil recipiant, nisi illis effectualiter partibus consignatis.

§. 36. Nec partes ipsæ cogantur accipere aliquam expeditionem, nisi tam quam voluerint.

§. 37. Pauperibus item expeditiones in forma pauperum, miserabilibus verò gratis omnino tradantur etiam scripturæ mercedem, distinctio verò istarum personarum Judicis arbitrio remittitur.

§. 38. Pro terminis coram Judice servandis, Judicibus informandis, scripturis ad eos deferendis, seu etiam in officio perquirendis, regestis, seu extractibus transportandis, & aliis hujusmodi, Notarii vel eorum substituti, & in eorum officiis scribæ, & copistæ, etiam nomine regalium, seu bialiorum, nihil prorsus, etiam à sponte dantibus accipiant.

§. 39. In causis criminalibus expeditionumque erunt ejusdem generis, seu nominis, cujus sunt scripturæ, pretium augeri non possit ultra tertiam partem ejus, quod supra in civilibus, præscriptum est, in regestis, extractibus, copiis judiciorum, & alterius quàm supradicti generis seu nominis, expeditionibus criminalibus, servetur taxa ab eodem Pio prædecessore aliis Tribunalibus ordinariis Urbis præscripta.

§. 40. In omnibus expeditionibus ima eorum parte Notarius apponat integram summam ejus, quod verè expostum fuit sub his verbis, videlicet. Expofuit in totum tantum, idemque etiam in libro expeditionum ipsius Notarii describitur.

§. 41. Et ut præmissa omnibus pateant, sciatur quilibet quid, & quantum in præmissis exponere debeat, quilibet Notarius Auditoris teneatur posthac tabulam supradictorum pretiorum expeditionum litteris majusculis, ordinatè & distinctè scripam, in ejus Officio palam loco eminenti, & cognito proponere, & semper retinere.

§. 42. Constitutiones item, quæ tam à nobis quàm ab aliis Romanis Pontificibus prædecessoribus nostris, ad reformationem hujus Curie pertinentes emanarunt, & in futurum emanabunt, modò his contrariæ non sint, omninò in eadem Curia observentur.

§. 43. Distinctius inhibentes Auditori sub indagationis nostræ, & Locumtenentibus, sive Judicibus, ac Notariis prædictis, sub privationis Officiorum suorum hujusmodi, & aliis etiam gravioribus,

nostro, & pro tempore existentis Romani Pontificis arbitrio, infligendis & applicandis penis, ne de expeditionibus, & aliis sibi per Præsentem interdictis, ac contra Præsentis formam & tenorem, etiam quorumvis privilegiorum & indulgiorum, ac litterarum eis quomodolibet concessarum, aut consuetudinis & styli immemorabiliter observari, vel alio quovis prætextu se intromittere quovomodo audeant seu præsumant.

§. 44. Decernentes quæcumque decreta & acta ab eisdem Auditore, Judicibus, Notariis pro tempore contra Præsentis formam & tenorem emanata & facta, nulla & invalida, ac extorta, subreptitia, nulliusque roboris vel momenti fore & censeri, neminique propterea fustragari posse vel debere.

§. 45. Et ita per quoscumque Judices & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, etiam S. R. E. Cardinales, & causarum Palatii Apostolici Auditores in quavis causa & instantia, sublati eis & eorum cunctis quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari & definiri debere; irritum quoque & inane, quicquid fecus super his à quocumque quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 46. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac stylo, consuetudine, ac quocumque temporis cursu, etiam immemorabili roboratis, privilegiis quoque, indultis, eidem Tribunali, ac illius Auditoratus officio, & Auditori etiam in ejusdem officii erectione & institutione, ac Judicibus & Notariis ipsis, illorumque Collegio, etiam simili Motu, etiam consistorialiter &c. sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis, in genere vel in specie, & aliâs quomodolibet, etiam per nos concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, individua, & expressa, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi Præsentis, pro sufficienter expressis habentes, illas alias in suo robore permanens, hac vice dimittat, specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque, & quibuslibet aliis privilegiis, indultis, & litteris Apostolicis generalibus vel specialibus, quorumcumque tenoribus existant, per quæ Præsentis non expressa, vel totaliter non inserta, effectus Præsentis impediri valeat quomodolibet vel differri, & de quibus, quorumque totis tenoribus specifica, & individua, & expressa, ac de verbo ad verbum habenda esset mentio specialis.

§. 47. Ut autem præfatus Motus proprius ad omnium notitiam deducatur, ac omnes quorum interest, vel interesse poterit, afficiat; volumus & mandamus, illius copiam in Palatii nostri Apostolici, ac donus, seu Curie prædicti Auditoris valvis, necnon in acie Campi Floræ affigi, & ibidem relicta ejus copia aliquandiu detineri.

§. 48. Volumus item, quod præfentis nostri Motus proprii sola signatura sufficiat, & ubique fidem faciat, in iudicio & extra, regula contraria non obstante.

§. 49. Quodque ejus transumptis Notarii publici manu subscriptis, & personæ in Ecclesiastica dignitate constituta sigillo signatis, plena & indubia fides, eaque prorsus adhibeatur, si foret exhibitus & ostensus.

Placet, & ita Motu proprio statimus & mandamus. M.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, duodecimo Calend. Decembris, anno quinto.

Anno à Nativitate Domini millesimo quingentesimo septuagesimo, Indiæ. 13. die verò 4. mensis Decembris, Pontificatus Sanctiss. in Christo patris, & D. N. D. Pii divina providentia Pape V. anno ejus

Annulatio in contrariis gestorum.

Decretum irritans.

Clausulæ derogatorie.

Forma publicandi.

Sola signatura sufficit.

Fides exemplorum.

Pape subscript.

Dat. P. An. 5. die 22. Nov.

Publicatio.

CXIV.

s. retroscripta littera affixa, & publicata fuerunt in locis retroscriptis.

Prohibitio disputandi in publicis Prædicationibus de Conceptione Beatæ MARIE Virginis, aut de ea vulgari sermone scribendi vel dictandi.

De Prædicatorum autem officio, & approbatione, vide sup. in Leon. X. const. 21. Superna. ubi notavi. in Tomo 1. De Conceptione B. MARIE habes in Conc. Trid. sess. 5. De peccato originali, in fin.

Paul. V. postea prohibuit, quod in actibus publicis assereretur Beatissimam Virginem MARIAM fuisse conceptam in peccato originali, in const. 105. Sanctissimus, inf. tom. 3. Quam ampliavit, & respectivè declaravit Greg. XV. in const. 29. Sanctissimus in d. Tomo 3.

PIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memoriam.

Super speculam Domini, viribus licet exiguis, constituti, Prophetæ sollicitudinem imitantes, die noctuque ad diversos Ecclesiæ status nostræ mentis aciem intendimus, studiosè providentes ut communi Domino ab omnibus gradibus fideliter serviantur, ac illis maximè, quibus digniora ministeria divini Spiritus favore credita sunt, inter quos divini verbi prædicatores adnumerandos esse nemo dubitare poterit, qui eorum munus ab ipso Domino consecratum, Apostolis præcipuè injunctum fuisse animadverteret, qui si adepto gradu dignè fungerentur, evangelizantes pacem, annunciantes bona, prædicantes salutem, non solum vox eorum dulcis, verum & speciosi pedes viderentur, & fraternæ salutis uberes fructus referentes, multam fiduciam haberent in die Domini. Verùm quod neque sine animi dolore acceptimus, nec referre possumus, quidam diversorum Ordinum Regulares, Clerici quæ seculares, omisso quæ divinæ majestatis gloriam, & Sanctissimæ Dei Genitricis, aliorumque Divorum venerationem, atque fideliū pietatem promovere poterant, quod Apostolus in quibusdam arguit, languent circa quæstiones, & pugnas verborum, ex quibus oriuntur invidia, & contentiones, ceteraque vitiōrum monstra, potissimum verò cum de Gloriosa Virginis MARIE Conceptione sermo incidit, tam pertinaciter pro alterutra parte contendunt, ac si de illis dogmatibus esset, quæ corde credere ad justitiam, ore confiteri ad salutem necessarium est. Quibus illud Prophetæ convenire videtur, dicunt, ait Dominus, cum ego non sim locutus, cum Sancta Romana Ecclesia omnium Ecclesiarum magistra, & doctor discipulæ de ea re hucusque non definierit, nemo absque temeritate, præjudicare, vel alterius partis sententiam damnare potest, & quasi desint præclarissima inventricis gratiæ merita, quæ nec Angelica quidem lingua satis dignè referri possunt, & ex illo uberrimo fonte, puteoque aquarum viventium non possint saluberrimas haurire aquas, quibus fidelis populus, magna cum utilitate atque dulcedine, reficeretur, ad dissipatas cisternas occurrunt, stultas scilicet, & sine disciplina quæstiones, quæ generant lites, quas nec frequens multitudo intelligere, nec viri sapientes, qui capiunt, utiliter percipere valeant, præsertim quoniam, ut experimento didicimus ipsorum Concionatorum, qui ad quæstiones hujusmodi proponendas facilius erumpere solent, major numerus materiæ difficultatem proflus ignorantes, neque intelligentes quæ loquuntur, aut de quibus affirmant, simplicium animos, indiscretæ devotionis obrentu, vel potius loquacitatis, & ostentationis effectū, ad tumultus & simulas concitant, quos, tumultuantes atque dissidentes, componere sedareque potius oportebat. Cumque parvulis in Christo lac

insundere, provideis solidum cibum apponere deberent, dum in hujusmodi controversiis interminaris versantur, omnibus ubera proferunt arentia, quod non absque maledictionis nota legimus in Propheta.

§. 1. Nos igitur qui Prædecessorum nostrorum saluberrima decreta pro viribus salva esse cupimus, potissimum illa, quæ à sacrosancta Synodo Tridentina denuò sunt confirmata, liberam cuique facultatem relinquentes opinandi hujus controversiæ quamlibet partem, prout vel magis pium, vel magis probabile esse judicaverit. Prædictorum igitur concionatorum, aliorumque contentioni, atque temeritati, populorumque scandalis occurrere studentes, Motu proprio, non ad aliorum nobis super hoc petitionis instantiam, sed ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, statutum sel. record. Sixti Quarti prædecessoris nostri, super ea re, quod à præfata synodo innovatum est (illud Præsentibus, ac si de verbo ad verbum esset insertum, pro plenè & sufficienter expresso & inserto habentes) Apostolica auctoritate tenore Præsentium confirmamus & approbamus.

§. 2. Atque ut deinceps efficacius à cunctis observetur perpetuò statuimus & ordinamus, ac per Apostolica scripta mandamus, quatenus nemo cuiuscumque ordinis, gradus, conditionis, vel dignitatis existat, in popularibus concionibus, vel ubicumque promiscua virorum & mulierum multitudo convenire solet, de hujus controversiæ alterutra parte disputare, rationibus vel Doctorum auctoritate asserendo propriam sententiam, & contrariam refellendo aut impugnando, vel de hac ipsa quæstione, cuiusvis pietatis, aut necessitatis prætextu vulgari sermone scribere vel dicere præsumat. Qui contrafecerit suspensionis poenam à divinis absque nova declaratione ipso facto incurrat, si modo fuerit in factis constitutus, & quocumque præterea gradu, sive dignitate, vel administratione fungatur, illis omnibus sit ipso jure privatus, & ad eadem, vel similia munera obtinenda perpetuè inhabilitatis censura ipso etiam facto sit obnoxius, super quibus nisi à Romano Pontifice pro tempore existente dispensari sive absolvi non possit. Et nihilominus aliis poenis, si opus fuerit, à proprio Prælato pro delicti mensura infligendis subiciatur, prout subijcimus.

§. 3. Ceterum quamdiu per Apostolicam Sedem, altera pars definita non fuerit, oppositæque sententia condemnata, liceat viris doctis, in publicis Academiæ disputationibus, sive generalium, aut Provincialium Capitulorum, vel ubi aliis interfunt, qui rem capere possunt, nec scandalum ulla subest occasio, de ulla quæstione differere, & argumentis utramlibet partem, vel asserere, vel impugnare, dum tamen neutra, veluti erronea prædicetur, serventurque illa omnia, quæ à dicto Sixto prædecessore nostro statuta sunt, quorum singula, ut præfertur, etiam quantum ad alias poenas, duximus innovanda, & innovamus per Præsentem.

§. 4. Ut autem hæc nostra constitutio, & præmissa omnia, ad eorum omnium quorum interest, notitiam congruentius pervenire possint, in virtute sanctæ obedientiæ, & sub poena privationis ab ingressu Ecclesiæ, etiam eo ipso incurrenda, si in his quæ mandamus exequendis se negligentes exhibuerint, præcipimus & mandamus omnibus & singulis locorum Ordinariis, ac eorundem Vicariis iustitæ, & Officialibus quibuscumque, & aliis singulis ad quos quomodolibet spectat, & pertinet, quatenus hujusmodi nostram constitutionem singulis suæ Diocesis, vel districtus Prædicatoribus, & aliis quibus expedire judicaverint opportunè infinuent, & publicent, ac insinuari & publicari faciant. Ex ne quis in posterum quoquomodo ignorantiam de præmissis possit prætereundere, aut se contra præmissa, valeat excusare.

§. 5. Volumus, & similiter eadem auctoritate decernimus & mandamus, quod præsentem litteræ per alios

Confirmatio decreti Sixti IV. approbati à Concil. Trid. sess. 5. de peccato orig. in fin.

Prohibitio disputandi in popularibus concionibus de Conceptione B. Mariæ Virginis, aut de ea vulgari sermone scribendi, vel dictandi.

Permissio differendi de Conceptione, disputationibus, cessante occasione scandalis.

Iussio publicandi hanc bullam ubique.

Forma & effectus publicationis in Urbe.

Classificatio de rogatoria.

Transumptorum fides.

Sanctio poenalis.

Dat. P. A. 5. die 30. Nov.

Publicatio.

Edita An. D. 1570.

Prooemium.

Hic Pont. Breviarium edidit. & juxta illud la. cra. celebrari iussit, ut in sua const. 64.

quos ex nostris Curforibus in Basilicarum Sancti Joannis Lateranensis, ac Principis Apostolorum, & Cancellariæ Apost. valvis, ac in acie Campi Floræ de Urbe de more publicentur, & affigantur, & illis inde amotis remaneant in eisdem locis eorumdem exempla affixa: quæ publicatio & affixio, ita omnes ad quos spectat, afficiat, & arceat, ac si illis personaliter intimatæ fuissent.

§. 6. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus, ac quibuscumque indultis & litteris Apostolicis, quibuscumque personis, etiam quantumcumque qualificatis & in quacumque etiam Cardinalatus, Patriarchali, Archiepiscopali, Episcopali, & quavis alia dignitate & honore constitutis, etiam quod interdicti, suspendi, vel excommunicari nequeant quomodolibet concessis, quæ eis contra præmissa in aliquo suffragari non possent decernimus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 7. Volumus insuper & decernimus, quod Præsentis vim perpetuæ & irrefragabilis constitutionis obtineant, & quod illarum transumptis, etiam impressis manu alicujus Notarii subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ præsentibus litteris adhiberetur, si ostensæ vel exhibitæ forent, Regula Cancellariæ nostræ Apostolicæ quacumque in contrarium disponente, non obstante.

§. 8. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ confirmationis, approbationis, statuti, ordinationis, mandati, subjectionis, innovationis, præcepti, voluntatis & decreti infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incurrendum.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo septuagesimo, prid. Kal. Decemb. Pont. nostri anno quinto.

Anno à Nativitate D. N. JESU Christi 1570. indit. 13. die vero 7. mensis Decembris, Pont. Sanctiss. in Christo patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papæ V. Anno V. retroscriptæ litteræ Apostolicæ affixæ & publicatæ fuerunt in Basilicarum S. Joannis Lateranensis, & Principis Apostol. de Urbe, ac Cancell. Apostol. valvis, & in acie Campi Floræ dimissis illarum copiis affixis per nos Joannem Andream Panizxam, & Petrum Aloysium Gattam prelibati S. D. N. Papæ Curf.

Camillus Cher. Mag. Curf.

CXV.

Facultas Canonicorum regularium Congregationis Lateranensis Ordinis S. Augustini, festum illius celebrandi, etiam in die Dominico, si in ea illud vel illius Octava occurrerit, & celebrandi etiam festa nonnullorum Sanctorum sui Ordinis juxta antiquum ritum.

De materia autem hujus Congregationis vide à me dicta sup. in const. 2. Paschal. II. Quanto. fol. 31. Tom. I.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Licet Ecclesiæ Dei sponsa tunc veræ jubilationis suæ fructum reportet, cum Christiani omnes ad precum effundatur exercitium excitentur, eundemque orandi, psallendique ritum & morem omnibus proponit, alienum tamen à ratione minime censendum erit, si aliquos Sanctorum quorundam patrocinio specialius suffultos ad eorumdem particularum venerationem, etiam per crebras illorum commemorationes sese excitare permiserit, ut peculiare ipsorum meritum agnoscens, eorum quoque vestigia sequi quam maxime studeant.

§. 1. Hinc est, quod nos licet aliàs ex certis tunc expressis causis omni alio Breviarii usu interdicto Breviarium, quod imprimi curavimus, ac psallendi, precandique formulam in omnibus universi Orbis Ecclesiis, Monasteriis, Ordinibus, &

locis etiam exemptis, in quibus juxta ritum Romanæ Ecclesiæ dici debet, aut confuevit, sub certis modo & forma servari mandaverimus, statuentes Breviarium ipsum nullo umquam tempore, in toto vel in parte mutandum aut ei aliquid detrahendum, ac alia fecerimus, prout in ipsis litteris, quas in cujushbet Breviarii prædicti principio imprimi volumus, plenius continentur.

§. 2. Attendentes tamen dilectos filios Canonicos Regulares Congregationis Lateranensis Ordinis S. Augustini, eorum Patrem, ac primum Apostolicum illius Ordinis Reformatorem S. Augustinum prædictum, ac præterea insigniores ejusdem Ordinis Sanctos Martyres, ac Confessores, quorum meritis eadem Congregatio per orbem propagata, & illustrata extitit, & in dies ejusdem Congregationis personæ adjuvantur, atque protegentur, debita, ut par est, veneratione cupere, in eorum præfatis diebus, quibus in Domino obdormire eisdem obigit celebrare: Nos propterea pium eorum desiderium plurimum in Domino commendantes, Motu proprio, non ad dictorum Canonicorum, seu alicujus eorum super hoc nobis oblata petitionis instantiam, Congregationi dictorum Canonicorum concedimus primum, quod ultra consuetas Salvatoris Lateranensis, & S. Augustini prædicti eorum Patris, ad Vesperas & Laudes commemorationes, ejusdem S. Augustini festum, die vigesima octava Augusti occurrens, & per totam illius octavam, tam in canonicis horis, quam in Missæ celebratione, prout hæcenus, celebrare possint, videlicet in ipsa quidem die, & octava sub duplici, infra octavas autem sub semiduplici, cum commemoratione festorum simplicium concurrentium. De Decollatione autem S. Joannis Baptistæ fiat suo die cum commemoratione octavæ. De Dominica autem si occurrat infra octavas, fiat de ea cum commemoratione octavæ, si autem in ipsa die, vel octava Dominica occurrerit, fiat de Sancto cum Dominica commemoratione, cum Antiphonis videlicet, Hymnis, Responsoriis, ac reliquis ipsorum Canonicorum propriis ordinatis à Divo Thoma Aquinate, juxta eorum antiquum morem, seu & prout, melius, ac congruentius videbitur, ab ipsis reformandis, dum tamen tres primæ lectiones sint de Scriptura intra octavas quidem de occurrente, in ipso autem die, & octava de Scriptura ab assignata ipsis Canonicis, atque congruentius eidem festo aptata. Mediæ tres, partim de vita ejusdem Patris collectæ à dictis ejusdem, in libris præcipue confessionum, necnon & Possidonii ejus contemporanei, ac socii, qui cum per annos quadraginta cum eo familiarissimè vixisset, vitam etiam ejus veriori & integri modo descripsit, partim de sermonibus ejusdem Patris de communi vita Clericorum. Tres verò postremæ lectiones de Homilia Sancti Joannis Chrylostomi super Evangelium Matthæi: Vos estis sal terræ; pariter & ejus conversionem die quinta Maji cum lectionibus ut supra authenticis ex ipso S. Augustino, & Possidonio, necnon & cum lectionibus in ultimo nocturno Divi Gregorii Papæ, super Evangelio Luca: Erant appropinquantes ad JESUM publicani & peccatores. Primam quoque ejus, quæ undecima Octobris, & secundam, quæ ultima die Februarii occurrat, translationes, necnon & quolibet mense semel ipsius commemorationis festum, die in quo festum alicujus Sancti non occurrerit, sub duplici possint celebrare. Et similiter Sanctorum Aniani Episcopi die Decembris secunda, S. Thomæ Cantuariensis Episcopi & Martyris, vigesima nona Decembris: Aquilini martyris, Januarii vigesima nona. Guarini Episcopi, Februarii sexta die: Theotoni Confessoris, decima octava die Februarii: Albini Episcopi, prima Martii: Herculanii Episcopi, & Martyris, Martii secunda: Patritii Episcopi, Martii decimasexta: Monicæ Viduæ, Maji quarta: Ubaldi Episcopi, Maji decimasexta: Ivois Episcopi, Maji vigesima: Bernardi Confessoris, Junii decimaquinta:

Nunc autem dat licentiam Congregationi Fella de quibus hic celebrandi juxta Ordinis ritum &c.

Inhibitio
contra mo-
lestas Ca-
nonicos su-
per prae-
missis.

Clausula
prae-
servativa
huius con-
cessionis.

Executio
huius bullae
deputatio.

Clausula
obsecrationum
derogatoria.

Joannis, Octobris decima: Frigidiani Episcopi, Novembris decimanona: Gelasii Papae, Novemb. vigesima prima: Prosperi Episcopi, Novemb. vigesima quarta: Omnium quoque aliorum dictae Congregationis & Ordinis Sanctorum festa, etiam sub duplici officio celebrare, atque iis omnibus & singulis, proprias eorum, atque authenticas lectiones, & orationes, servata praedicta Breviarii forma accommodare valeant, officiaque praedicta recitantes, debito suo perinde censeantur satisfecisse, ac si ea quae in Breviario assignantur recitassent, nec ad aliam ulterius recitationem ullo umquam tempore possint compelli: praedictaque eorum particularia officia seorsum & separatim a Breviario, ubicumque illis placuerit, absque alia nostra, vel Commisarii nostri in illis partibus licentia imprimi facere, liberè & licite valeant.

§. 3. Distinctius inhiibentes, tam locorum Ordinarii quam quibusvis librorum impressoribus, ceterisque quavis auctoritate fungentibus, in virtute sanctae obedientiae, ac sub excommunicationis majoris, necnon indignationis nostrae poenis, ne eisdem Canonicos super recitatione horarum, aut impressione officiorum huiusmodi impedire, molestare, vel inquietare, audeant vel praesument.

§. 4. Ac decernentes praesentes litteras nullo umquam tempore de subreptionis vel obreptionis vicio, seu intentionis nostrae, vel quopiam alio defectu notari, impugnari, invalidari nullatenus posse, minusque sub quibusvis similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, & aliis contrariis dispositionibus comprehendí nullatenus posse, sed quoties illae emanabunt, toties in pristinum statum, etiam sub quacumque Data per ipsos eligenda restitutas, repositas, & plenarie reintegratas esse, sicut ab omnibus censi & ita per quoscumque Iudices & Commissarios quavis auctoritate fungentes, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, iudicari & definituri debere, ac irritum & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 5. Quocirca dilectis filiis nostris Flavio Ursino & Paulo ab Ecclesia, S. R. E. presbyteris Cardinalibus, & causarum Curiae Camerae Apostolicae generali Auditori, per praesentes Motu simili mandamus, quatenus ipsi vel duo aut unus eorum, per se, vel alium, seu alios praesentes litteras, & in eis contenta quaecumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte dictorum Canonicorum, seu aliquos eorum fuerint requisiti solemniter publicantes, eisque in praemissis efficacis defensionis praestidio assistentes, faciant auctoritate nostra praesentes litteras, & in eis contenta quaecumque firmiter observari, non permittentes eos, seu eorum aliquem desuper contra earundem praesentium tenorem quomodolibet indebitè molestari, contradictores quoslibet & rebelles, per censuras & poenas Ecclesiasticas, appellatione postposita compescendo. Necnon legitimis super his habendis servatis processibus, censuras & poenas, ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando: invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 6. Non obstantibus fel. record. Bonifacii Papae Octavi praedecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, dummodo quis vigore Praesentium ultra tres dietas ad iudicium non trahatur, ac literis nostris praedictis, quas eisdem Canonicos ligare nullatenus posse volumus, ac quibus aliis Apostolicis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon quibusvis etiam juramento, confirmatione Apostolica vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus: privilegiis quoque, indulgitiis, & litteris Apostolicis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibusvis clausulis & decretis, in genere vel in specie, ac alias in contrarium quomodolibet concessis, confirmatis, & innovatis. Quibus omnibus etiam si de eis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, & expressa mentio, seu quavis alia expressio habenda,

aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata inferti forent, eisdem Praesentibus pro sufficienter expressis habentes, illis alias in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat, specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus, communiter vel divisim, ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas, non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§. 7. Volumus autem, quod Praesentium transumptis, etiam impressis, manu tamen alicujus Notarii publici subscriptis & personae in dignitate Ecclesiastica constitutae sigillo munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quae Praesentibus adhiberetur, si forent exhibitae vel ostensa.

Dat. Romae apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die decimo octavo Decemb. millesimo quingentesimo septuagesimo, Pontificatus nostri anno quinto.

Privilegium praecedentiae Canonicorum Regularium Congregationis Lateranensis, & Ordinis S. Augustini, ante alios quoscumque Regulares, post clerum saecularem.

Hic Pont. postea, ante istos Canonicos, praecedere iussit Canonicos seculares S. Georgii in Alga, ut infra in ejus const. 127. Cum aliis nos.

Alia quae hanc respiciunt Congregationem notavi supra fol. 53. in const. 2. Paschal. II. Quanto. Et de praecedentia cum Monachis S. Benedicti Congregationis Cassinensis extat supra declaratio Pii IV. in ejus const. 75. Sedis fol. 113. in hoc Tomo 2.

PIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Cum ex Ordinum universitate, qui in Dei Ecclesia reperiuntur, illa castrorum aciei comparetur, illius autem gubernium Rom. Pontif. Beati Petri vero successoris sit demandatum, mirum nemini videri debet, si ille, curae sibi divinitus commissae invigilans, cuilibet quod suum est benignè concedendo, & quae clara etiam sui ipsorum natura sunt, ne in recidiva contentionis scrupulum relabatur, opportuna declarationis, ac novae concessionis remedio consolidat; ut quibusvis sublati obstaculis, quilibet pacis amenitate sui liberè possit, ac scandalorum occasio penitus tollatur.

§. 1. Cum itaque sicut accepimus dilecti filii universi Canonici Regulares Ordinis S. Augustini Congregationis Lateranensis, qui ab Apostolicis originem traxerunt, quique ab eodem S. Augustino eorum reformatore, iterum per reformationis viam mundo geniti, meritò praetendere possunt, se, omnes alias personas Ecclesiasticas, tam saeculares quam regulares, in processibus, & aliis actibus publicis praecedere debere.

§. 2. Cum tamen non liceat membra à capite separare, sed tamen eis locum debitum assignare, ipsorumque indemnitati, ut sine populi scandalo in publicum prodire, exemploque potius ceteris Christianis fidelibus esse possint, consulere volentes, ac omnium & singularum litium, quae forsitan super praemissis exortae sint, aut exoriri quoquomodo possint, status & merita, nominaque & cognomina Iudicum & colligantium, Praesentibus pro expressis habentes. Motu proprio, non ad dictorum Canonicorum, vel alicujus alterius pro eis super hoc nobis oblatae petitionis instantiam, sed ex certa scientia nostra, & de Apostolica potestatis plenitudine, omnes &

Transumptorum fides.

Dat. P. An. g. die 18. Dec.

CXVI.

Edita An. D. 1570.

Proccinium.

Canonici regulares ab Apostolis originem traxerunt.

Praecedentia itaque eis datur immediate post clerum saecularem.

Tu adverte quod notavi in rub.

singulos Canonicos prædictos, ubicumque locorum existentes, quos deinceps processionibus, & aliis actibus, publicis vel privatis, interesse contigerit, statim ipsum Clerum sæcularem non exemptum subsequi, dum ipsi subsequendo præcedunt, dum verò præcedendo præcedunt, illum immediate sequi debere, auctoritate Apostolica per Præsentem declaramus. Ac insuper in omnibus locis, in quibus talis viget consuetudo in processionibus, ut dicti Clerici non exempti, præcipue quando Canonici alicujus Ecclesiæ Cathedralis, paramenta ecclesiastica induunt, ut cultus divinus magis vigeat, ac ut Sanctissimum Corpus Christi, seu aliæ reliquiæ, quæ processionaliter deferuntur, decentius & honorificentius afficiantur, aut quando hoc ipse Ordinarii mandato contigit, ipsi Canonici similiter ac illi, Pluvialia, Planetæ, Tunicellas, & alia paramenta super eorum clericalem habitum deferre, necnon pro cruce afficienda quæcumque luminaria deferre, liberè & licitè possint, statuimus & ordinamus.

Inhibicio in
perturbato-
res.

§. 3. Districte inhibentes quibuscumque locorum Ordinariis, etiam si Patriarchali, Provinciali, Archiepiscopali, Episcopali, aut alia dignitate perfusgeant, sub excommunicationis majoris, & indignationis nostræ poena, ne eosdem Canonicos, seu aliquem eorum molestare, aut præmissa quovis modo declarare, vel interpretari audeant.

Clausulæ hu-
jus privilegii
præservan-
tæ.

§. 4. Decernentes præsentis litteras nullo unquam tempore de sobrepitionis vel obreptionis vitio, aut intentionis nostræ, vel quopiam alio defectu, etiam ex eo quod locorum Ordinarii, aut alii forsan interesse habentes, vocati non fuerint, aut nullitate notari, imputari, invalidari, ad terminos juris deduci, in jus vel controversiam vocari, causamque vel causas quare præmissa à nobis emanaverint verificandum nullatenus teneri, nec ob id viribus carere; minusque, sub quibuscumque similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, sublimitationibus, limitationibus aut aliis contrariis dispositionibus comprehendendi; sed semper ab illis exceptis, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum statum restitutas, repositas, ac plenariè reintegratas, etiam sub Data per ipsos Canonicos eligenda esse; sicque ab omnibus censi. Et ita per quoscumque Judices, & Commissarios, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S.R.E. Cardinales, & ipsomet Ordinarios, sublata eis, & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, iudicari & definiti debere, irritum quoque, & inane, si fecus super his à quocumque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Executorum
deputatis.

§. 5. Quocirca dilectis filiis dictæ Congregationis Protectori, seu ejus Vice-protectori, & causarum Curie Cameræ Apostolicæ generali Auditori, ac Vicario Ven. Fratris nostri Episcopi Laudensis in spiritualibus generali, per Apostolicam scriptam motu simili mandamus, quatenus ipsi, vel duo aut unus eorum, per se vel alium seu alios, præsentis litteras, & in eis contenta quæcumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Canonicorum prædictorum, vel alicujus eorum fuerint requisiti, solemniter publicantes, illisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra eosdem Canonicos, illorumque singulos, præmissis omnibus & singulis vi Præsentium, continentia, & tenore pacificè frui & gaudere. Non permittentes eos, seu eorum aliquem desuper per quoscumque indebitè molestari, perturbari, & inquietari, contradicte quoslibet & rebelles, ac præmissis non parentes, per censuras & penas Ecclesiasticas, aliæque opportuna juris remedia, appellatione postposita compellendo, necnon legitimis super his habendis, servatis processibus, illos censuras & penas ipsas incurrisse declarando, necnon eas etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii sæcularis.

Clausulæ de-
rogatoriæ.

§. 6. Non obstantibus fel. rec. Papæ Bonifacii prædecessoris nostri, etiam quæ caveatur, ne quis

extra Civitatem vel Diocesim, nisi in certis exceptis casibus, & illis ultra unam diem à fine suæ Diocesis ad iudicium evocetur, seu ne Judices à Sede Apostolica deputati fuerint, contra quoscumque procedere, aut alii vel aliis vices suas committere præsumant, ac de duabus diebus in Concilio generali edita dummodo ultra tres dietas quis vigore Præsentium ad iudicium non trahatur; ac aliis Apostolicis in provincialibus ac synodalibus Conciliis editis, specialiter vel generaliter, constitutionibus & ordinationibus, ac etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus etiam immemorabilibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, quibuscumque Ecclesiis, Congregationibus, Capitulis, Collegiis, Monasteriis, & aliis locis, eorumque Superioribus & personis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis, etiam derogatoriis derogatoriis, irritantibusque, & aliis decretis, motu, scientia & potestate similibus, etiam consistorialiter concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, & expressa mentio, seu quavis alia expressio habenda, aut alia aliqua exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum nil penitus omisso, ac forma in illis tradita observata inserti forent, eisdem præsentibus pro sufficienti expressis habentis, illis aliis in suo robore permanens, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque, aut si aliquibus communiter vel divisim ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint, per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam de verbo ad verbum, de indulto huiusmodi mentionem. Nulli ergo &c. Si quis autem &c.

Datum Romæ apud S. Petrum Anno Incarnationis Dominicæ 1570. 10. Cal. Januarii, Pontificatus nostri anno 5.

D. P. An. 5.
dic 23. Dec.

Revocatio facultatum testandi, & quovis alio modo disponendi de acquisitis ex bonis Ecclesiasticis, ac de aliis rebus, etiam proprio labore partitis, aut patrimonialibus, ad commodum illegitimorum, etiam legitimorum, non tamen Hospitalibus expositorum, & Orphanorum. Et abrogatio habilitationum eorumdem illegitimorum succedendi in dictis bonis, aut rebus feudilibus, & emphyteuticis à piis locis profectis.

CXVII.

De huiusmodi facultatibus, vide per Curiales indultum Pauli V. in const. 18. In eminenti, ubi plenè notabo in Tomo 3. Et attende etiam reintegrationem Militiarum Hispaniarum in const. 30. Greg. XIII. Rom. Quod autem generaliter bona illegitimi relicta, uti spolia deveniant ad Rev. Cameram Apost. habetur in Six. V. constit. 100. In conferendo, cum ibi indicatis in hoc Tomo II.

De facultate autem legitimandi, vide sup. in Tomo I. in Jul. II. const. 15. Sicur. fol. 492. ac Pii IV. const. 45. Quamvis. in hoc Tomo II. fol. 64. Et etiam vide privilegium Protonotariis Apostolicis concessum à Six. V. in const. 12. Romanus.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei
memoriam.

Edita An. D.
1576 & 1572.

Quæ Ordini ecclesiastico noxia esse, & scandala obijcere perhibentur, necesse est è medio submovere.

Exordium.

§. 1. Quod nos pro nostri muneris officio, inter alia incommoda quæ in oculos nostros incurunt, de Christi peculio, ne ab indignis & reiectis ignominiose consumatur, neve illorum causa, Ecclesiis & pauperibus præripiatur, curam præcipiam habere

Revocatio in-
dultorum tes-
tandi & dis-
ponendi de
acquisitis,
ex bonis
Ecclesiæ-

volens

ficis, ac de
aliis rebus in
favorem illegi-
timorum
etiam legiti-
morum
non tamen
Hospitalibus
expositorum
& Orphanor-
um.

Hæc declara-
tur mox hic
inf.

volentes, de Nobis attributæ potestatis plenitudine, revocamus & abolemus omnia & quæcumque privilegia, licentias, dispensationes, & indulgentia faciendi testamenta, donationes, five inter vivos five causa mortis, legata & quæcumque alias dispositiones, de dominiis, terris, castris, domibus, & quibuscumque aliis bonis & rebus, immobilibus, mobilibus, & fœmoventibus, necnon pecuniis, juribus & actionibus, ex beneficiis, fructibus, pensionibus, & aliis rebus Ecclesiasticis qualibuscumque confectis, acquisitis, & aliis quomodocumque provenientibus, necnon de peculio, & aliis etiam sola industria, labore, muneribus, aut quocumque alio modo partis, cuiuscumque qualitatibus, quantitatibus, speciebus, naturæ, & valoris existentibus, in quocumque illegitimos, five suos, five extraneos, etiam legitimatos, eodemque ex toto vel in parte heredes instituendi, & substituendi, seu quod ipsi in prædictis ab intestato, succedant, ceterasque huiusmodi facultates, & permissiones ac etiam habilitationes, & capacitates succedendi in bonis & rebus feudalibus, & emphyteuticis, ab Ecclesiis, Monasteriis & piis locis profectis, quibuscumque personis sæcularibus, & quoruncumque Ordinum, necnon Militiarum & Hospitalium regularibus, ac Romanæ Curie officialibus, & aliis Curialibus Curiamque ipsam sequentibus, & etiam Urbis Romæ Civibus, ac Palatia, ædes, census, aliaque bona, in ea ejusque districtu habentibus, nostris quoque & aliorum Romanorum Pontificum familiaribus, Ecclesiarum Prelatis, etiam S. R. E. Cardinalibus, & aliis cuiuscumque dignitatis, ordinis, & conditionis existentibus, illorumque & aliis Ecclesiis, Capitulis, Conventibus, Ordinibus, Militiis, Hospitalibus, Collegiis, officiis, & locis, ac prædictæ Urbis, aliisque Civitatibus, Provinciis, & dominiis, eorumque dominiis, populis, civibus, & incolis, tam per felices recordationis Sixtum Quartum, Innocentium Octavum, Alexandrum Sextum, Julium Secundum, Leonem Decimum, Clementem VII. Paulum Tertium, Julium Tertium, Paulum Quartum, Pium Quartum, & qui ante illos fuerunt alios quoscumque Romanos Pontifices, ac Nos & Sedem Apostolicam, ejusque Legatos, etiam de latere, Nuncios, Notarios, Comites, Collegia, officia, & loca, etiam per modum statuti perpetui, generalis legis, initii, & stipulati contractus, seu quasi, & alias sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque rebus, præservativis, mentis atrectativis, derogatoriis, aliisque fortioribus, efficacioribus, & insolitis clausulis, necnon irritantibus & aliis decretis, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, deque simili potestatis plenitudine, ac prædictorum Cardinalium consilio & matura deliberatione in Consistorio habita, necnon consideratione, intuitu, contemplatione, vel ad instantiam Imperatoris, Regum, & aliorum Principum, etiam ob remunerationem laborum, & obsequiorum in nobis & dictæ Sedi impensorum, refectionem damnorum, compensationem jurium cessorum, vel ablatorum, navata Militia contra Hereticos, & infideles, seu pro prædictæ Urbis ornatu, & frequentatione, ac quibuscumque aliis usibus, ac etiam necessariis & piis causis concessa, & multiplicari vicibus confirmata, innovata, extensa, & moderata, & quancumque tempore pacifice observata, quoad eam partem, quæ illegitimos prædictos tangit dumtaxat, etiam si illa contineant, quod omnes Curiales Curiam sequentes, & alii, five Ecclesiastici, etiam Cardinales, five mundani, qui Palatia, domos & prædia, urbana vel rustica, ædificaverint, aut census, aliave bona acquisiverint, aut alias acquisita habuerint in dicta Urbe, & circum eam ad miliaria decem, ex bonis, seu fructibus Ecclesiasticis, hi tales de illis, necnon juribus, & jurisdictionibus omnibus, in favorem illegitimorum, ac quomodolibet inhabilium, & incapacium, five inter vivos five causa mortis disponere, eosque heredes & successores, universales vel particulares instituire, & substituere, & si intestati decesserint,

ipsi illegitimi & incapaces, in illis succedere possint, quodque per quæcumque revocationes, derogationes, aut alias contrarias dispositiones, illis, quorum interest præjudicari nequeat, & ullo umquam tempore præjudicatum, aut derogatum quoquomodo apparuerit, jus quæsitum ablatum, & litteræ revocationum & derogationum huiusmodi, juris quæsitæ ablata censeantur. Sicque per quoscumque Judices judicari debeat, & etiam definiri.

§. 2. Ac pariter tollimus & abrogamus omnes & quæcumque facultates similia concedendi, Legatis, Nunciis, Notariis, Comitibus, Collegiis, Officiis, & aliis supradictis, quorum omnium tenores, ac si ad verbum infererentur, habemus Præsentibus pro expressis. Ita ut privilegiorum, dispensationum, facultatum, habilitationum, capacitarum, indulgentiarum, & aliorum supradictorum sic revocatum, aut etiam litterarum, legitimacionis prætextu, nullus omnino de huiusmodi bonis, rebus, pecuniis, juribus, jurisdictionibus, & actionibus, in commodum & favorem illegitimorum utriusvis sexus, five eorum filiorum, five consanguineorum, affiniumve, five extraneorum etiam in statu sæculari procreatorum, ac legitimati quæcumque auctoritate donatorum, & ad huiusmodi res & bona, ejusque successionem testato vel intestato, idoneorum & capacium effectum, five testamento, five donatione, five legato, five elemosina, five alio quocumque titulo, & pio opere (exceptis in communi, ac omni fraude, conventionem, seu compositionem cessante, Hospitalibus expositorum & Orphanorum) disponere, nec illegitimi ipsi in eis ab intestato, five proterus five per interpositas personas, ac quomodocumque succedere, aut illa alias ad eos, etiam per quemcumque circuitum multiplicatarum in alios capaces successionum, ullo tempore devenire possint.

§. 3. Ac etiam nulla esse, & pro infectis habere volumus, omnia & quæcumque facta hucusque testamenta, legata, donationes, & alia disposita huiusmodi, quæ viventibus adhuc testatoribus, aut aliis locum non habuerunt, ac pariter ab intestato successiones, non tamen illegitimas, quæ plenarium non sunt effectum sortitæ.

§. 4. Dehinc verò districtius prohibemus, ne talia five in prædictis illegitimos utriuslibet sexus, five in illorum conjuges, five ipsorum parentes, filios, descendentes, ascendentes, vel alios cognatos, five viventibus, five defunctis illegitimis, etiam pauperatis, dotis, aut alterius cuiuscumque pii operis intuitu fiant, neve ipsi umquam in rebus, bonis, pecuniis, juribus, jurisdictionibus, & actionibus prædictis, five totis, five in parte succedant, aut illa ad ipsos, quavis dispensatione suffultos, etiam per prædictum circuitum deveniant, neve de eis ulla in alium seu alios concessio, donatio, translatio, aliave dispositio fiat, ut alia bona similia, vel dissimilia, illegitimis aut aliis supradictis concedantur.

§. 5. Quod si prædictorum quisquam fuerit præsentium violator, testamentum, donatio, legatum, & dispositio omnino non teneat, nec etiam quoad alios capaces, & res alias valeat, sicque disponens, privilegio, dispensatione, facultate, & indulto prædicto, ejusque usu & commodo, etiam in ceteris omnibus ipso jure sit privatus. Nemo quantumvis capax illius prætextu, fructus, res, pecunias, aut prorsus alia bona sua faciat, nec illa detinens, præscriptione, aut ullo alio juris præsidio adjuvetur, sed ad integram illorum restitutionem quocumque temporis lapsu non obstante, debeat coerceri.

§. 6. Ita ut omnes in Ecclesiis, Monasteriis, & beneficiis successores, tam conjunctim quam divisim, quisque videlicet pro rata parte sua, illa omni tempore recuperare possint, & qui primus ceteris ab eo monitis, & negligentibus, iudicium intenderit, ei soli res tota merito vindicetur. Nullis verò huiusmodi successoribus, pro prædictis insistentibus, ac etiam de peculio alias pro rebus Ecclesiasticis confectis, locorum Ordinarii, tam concesso, & relictorum illegitimis, eorumve causa, quam quo-

Revocatio facultatum legatorum Nunciorum & aliorum similia concedendi.

Annulatio contrariarum dispositionum, quæ non sunt sortitæ effectum.

Prohibitio disponendi, ut aliquid ipsi illegitimi concedatur.

Annulatio dispositionum aliter fiendarum & pœne dispositionum.

Successores in beneficiis, bona de quibus aliter provium est, recuperare possint, & eis non insistentibus idem faciant Locorum Ordinarii pro Sede Apost.

Bona Ecclesiastica feudalia non existentibus legitimis, ad Ecclesiam devolvuntur. Vide quod notavi in rub. Decretum irritans. Clausula derogatoria.

Transumptorum fides.

Dat. P. An. 6. die 27. Jan.

Publicatio.

Edita An. D. 1572.

Exordium.

rumcumque aliorum bonorum immobilium, mobilium, & se moventium, necnon pecuniarum, fructuum, rerum, & jurium, aliis sub dictis testamentis, donationibus, legatis, & dispositionibus comprehensorum, corporalem possessionem, amoris inde & expulsi quibuscumque detentoribus, five incapibus five capacibus, per se vel alium, seu alios, liberè apprehendant, & apprehensam hujus Sedis nomine custodiant, donec ipsa Sedes de illis, uti tum tulerit piorum operum necessitas, duxerit providendum.

§. 7. Bona verò, res, & jura, feudalia vel emphyteutica (aliis legitimis ad ea forte vocatis non existentibus) eo ipso devoluta, & juri, ac proprietati suarum Ecclesiarum & locorum restituta, & cum reliquis eorum bonis consolidata esse declaramus.

§. 8. Decernentes irritum & inane, quicquid fecus per quoscumque, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 9. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac statutis & consuetudinibus Ecclesiarum, Capitulorum, Conventuum, Ordinum, Militiarum, Hospitalium, Urbium, Provinciarum, Collegiorum, etiam Cardinalium, & Officiorum prædictorum juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia communitis, & in Consistorio prædicto, seu Conclavi habitis, aliisque privilegiis, indultis, & litteris Apostolicis generalibus, & specialibus, illis, eorumque & aliis quibuscumque personis, cum quibusvis clausulis & decretis, etiam supra scriptis fortioribus, ac etiam disponentibus, quod prædicta per quoscumque litteras nunquam, aut sine consensu illorum, quorum interest, revocata, aut sublata intelligantur, & alias quoscumque tenoris existant, per quæ Præsentibus non expressa, aut omnino non inserta, effectus earum impediri valeat quomodolibet, vel differri, & de quibus quorumque totis tenoribus, ad verbum habenda esset nostris litteris mentio specialis: quæ omnia, quatenus prædictis adversentur, illorumve executionem disturbare possint, viribus prorusus, & effectum carere decernimus, ceterisque contrariis quibuscumque. Quia verò difficile nimis esset Præsentibus quocumque istis opus erit perferre,

§. 10. Volumus, ut earum exempla, etiam impressa, Notarii publici manu, & personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ, ejusve Curie sigillo obfignata, eandem illam prorusus fidem in judicio & extra illud, ubique gentium faciant, quam ipsam præsentibus facerent, si essent exhibitæ vel ostensæ. Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo septuagesimo primo, sexto Cal. Februarii, Pont. nostri anno sexto.

Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo septuagesimo primo, Indictione 14. die verò 1. mensis Martii, Pontif. Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa V. anno ejus sexto, retroscripta littera Apostolica affixa & publicata fuerunt ad valvas Basilicarum S. Joannis Lateranen. Principis Apostolorum de Urbe, ac Cancell. Apost. & acie Campi Floræ, dimissæque fuerunt in ejusdem locis per aliquod temporis spatium, per nos Petrum Sprengerium, & Petrum Aloysium Gaitan S. D. N. Papa Curf. Scipio de Octavianis Mag. Curf.

Sequitur extensio dictæ constitutionis, etiam ad bona patrimonialia.

PIUS PAPA QUINTUS,

Ad futuram rei memoriam.

AD Roman. spectat Pontif. sua sollicitudine inde confessa diligenter providere, ut ea quæ ab eo emanata sunt, ita suæ declarationis adminiculo

dilucidentur, quod nulla desuper dubitandi occasio ei relinquatur.

§. 1. Licet etenim &c.

Omittitur hic relatio bullæ Pii IV. quia ipsam totam habes sup. Quamvis.

§. 2. Nos deinde per quasdam nostras sub dat. sexto Calend. Februarii, Pontificatus nostri Anno sexto, confectas in forma Motus proprii litteras, &c.

ut sup. in bulla quæ præcedit.

§. 3. Quia tamen sicut postea accepimus, lite & causa in partibus coram dilecto filio Gubernatore Civitatis nostræ Faventinæ inter dilectum filium Bartholomæum de Lanzonibus laicum Faventinum ex una, & quemdam Sanctum filium spuriumque Barnabæ etiam de Lanzonibus presbyteri, ipsius Bartholomæi proximioris, de & super hæreditate, & bonis dicti Barnabæ presbyteri defuncti, quam & quæ Bartholomæus tamquam proximior, seu aliàs quomodolibet de jure, Sanctus verò præfatus tamquam assertus hæres testamentarius, & prius legitimatus ejusdem Barnabæ, ad se spectare respectivè contendunt, ac dictus Sanctus de eodem Barnabæ tunc presbytero illegitimè natus fuit, & defectum natalium patitur, rebusque aliis in actis causæ, & causarum hujusmodi deducis, & illorum occasione deducendis in Rom. Curia pendentibus, partibus ex altera, contingit dubitari, an contra tales illegitimos dictæ nostræ litteræ editæ loquantur, & intelligantur etiam de bonis patrimonialibus, ipseque Bartholomæus sit pauper, ejus facultates ad sustinendum litem non suppetant, ac propterea dictus Bartholomæus cupiat mentem & intentionem nostram super præmissis expresse declarari.

§. 4. Nos hujusmodi dubium elucidare, & voluntatem nostram patefacere volentes, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, tenore Præsentium declaramus, dictas litteras nostras loqui & intelligi etiam de quibuscumque bonis patrimonialibus, tam mobilibus quam immobilibus, & se moventibus, iuribus & actionibus quibuscumque, siquæ etiam ab initio intentionis & incommutabilis mentis nostræ, fuisse & esse attestamus.

§. 5. Ac ita in præmissis ab omnibus censeri, ac per præfatos, & quoscumque alios Judices, etiam Curie, & Palatii Apost. Auditores, & S. R. E. Card. & de latere Legatos, sublata ipsi & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari & definiti debere, & si secus super iis à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari, irritum & inane decernimus.

§. 6. Non obstantibus præmissis, & quacumque alia litis pendentia, necnon constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac regula nostra de non tollendo jure quæsito in Cancell. Apostol. edita, ac legibus & statutis, juramento, confirmatione Apost. vel quavis firmitate alia roboratis, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apost. in contrarium quomodolibet concessis, necnon omnibus aliis, quæ in dictis litteris nostris volumus non obflare: ceterisque contrariis non obstantibus quibuscumque.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die quinta Martii millesimo quingentesimo septuagesimo secundo, Pont. nostri anno septimo.

Cambiorum illicitorum declaratio & prohibitio.

De panis ejusmodi cambiorum, attende sup. Pii IV. const. 1. Cum sicut. fol. 1. Sed pretextu usurarie pravitatis non retardatur exactio creditorum ad instantiam filii coram A. C. ut in ejusdem Pii IV. const. 56. Inter multiplices. fol. 81. Qui Auditor has Cambiorum causas cognoscit, ut habetur infra in Tomo III. in const. 28. Paul. V. Eximia.

Pius IV. edit. conf. de qua hic.

Hic autem Pont. edit. præsertim hic bullam.

Dubitatum est an constitutio ejusdem quod bona patrimonialia.

Declarat modo idem Pont. eandem constitutionem procedere etiam quoad bona patrimonialia.

Decretum irritans.

Clausula derogatoria.

Dat. P. An. 7. die 5. Mart.

CXVIII.

PIUS EPISCOPUS,

*Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.*

IN eam pro nostro pastoralis officio curam diligen-
ter incumbimus, ut Domini nostri ovibus op-
portuna pro animarum salute remedia adhibere
minimè differamus.

§. 1. Cum itaque ad aures nostras pervenerit, le-
gitimum cambiorum usum, quem necessitas, pu-
blicaque utilitas induxit, sæpenumero ob illiciti
quæstus cupiditatem depravari, ut sub illius præ-
textu usuraria pravitās à nonnullis exerceretur: Nos
petitionibus, quæ super his nobis nuper factæ sunt,
hac perpetuò valitura decretali, respondendum ef-
se duximus, ut neque dolosis sua fraus suffragetur,
neque ignarus perdat inciticia: sic enim Pastoris of-
ficium exequimur, dum gregem nobis commissum
ab æternæ damnationis periculo eripere modis om-
nibus studemus.

§. 2. Primum igitur damnamus ea omnia cam-
bia, quæ sicca nominantur, & ita confinguntur, ut
contrahentes ad certas nundinas, seu ad alia loca
cambia celebrare simulant, ad quæ loca ii qui pecu-
niam recipiunt, litteras quidem suas cambii tradunt,
sed non mittuntur, vel ita mittuntur, ut transacto
tempore unde processerant, inanes referantur, aut
etiam nullis huiusmodi litteris traditis pecunia ibi
denique cum interesse reposititur, ubi contractus
fuerat celebraturus, nā inter dantes & recipientes,
usque à principio ita convenerat, vel certe talis in-
tentio erat, neque quisquam est, qui in nundinis,
aut locis supradictis huiusmodi litteris receptis solu-
tionem faciat. Cui malo simile etiam illud est, cum
pecuniæ, sive depositi, sive alio nomine ficti cam-
bii traduntur, ut postea eodem in loco, vel alibi
cū lucro restituantur. Sed, & in ipsis cambiis, quæ
realia appellantur, interdum, ut ad nos perferretur,
campiores præstitutum solutionis terminum, luero
ex tacita vel expressa conventionē recepto, seu etiā
tantummodo promissio, differunt. Quæ omnia nos
usuraria esse declaramus, & ne fiant districtius pro-
hibemus. Porro ad tollendas quoque in cambiis,
quantum cum Deo possumus, occasiones peccan-
di, fraudeque fœneratorum, statuiamus, ne dein-
ceps quiquam audeat, sive à principio sive aliàs,
certum & determinatum interesse, etiam in casum
non solutionis pacifici, neque realia cambia aliter
quàm pro primis nundinis, ubi illæ celebrantur,
ubi verò non celebrantur, pro primis terminis jux-
ta receptum locorum usum exercere, abusu illo
propterea reiecto, cambia pro secundis, & deinceps
nundinis, sive terminis exercendi.

Curandum autem erit in terminis, ut ratio ha-
beat longinquitatis & vicinitatis locorum, in qui-
bus, solutio destinatur, nedum longiores præsti-
guntur quàm loca destinata solutionis desiderant,
fœnerandi detur occasio.

§. 3. Quicumque contra hanc nostram constitu-
tionem commiserit, penis à sacris Canonibus con-
tra usurarios institutis, se noverit subjacere. Eos
verò, qui conspirationes fecerint, vel congestam
undique pecuniam ita ad se redegerint, ut quasi
monopolium pecuniæ facere videantur, penis quæ
à jure contra exercentes monopolia, constitutæ
sunt, retineri sancimus.

§. 4. Volumus autem quod præsentēs litteræ in
Camera Apostolica, & ad valvas Basilicæ Principis
Apostolorum de Urbe, & Cancellariæ etiam Aposto-
licæ publicentur, & in ipsa Camera describantur.

§. 5. Et quia difficile foret eas ad singula quæque
loca deferri, quod earum transumptis etiam im-
pressis, manu alicujus ejusdem Cameræ, vel alterius
Notarii subscriptis, & sigillo dictæ Cameræ, vel Præ-
lati Ecclesiastici munitis, eadem propterea fides ad-
hibeatur, quæ Præsentibus adhiberetur, si forent
exhibitæ vel ostensæ. Nulli ergo &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis
Dominicæ, millesimo quingentesimo septuagesimo
primo, 5. Kal. Febr. Pont. nostri anno sexto.

Anno à Nativitate Domini 1571. indit. 14. die verò
7. mensis Februarii, Pont. Sanctiss. in Christo pa-
tris, & D. N. D. Pii divina providentia Papæ V.
Anno VI. retroscripta litteræ affixæ & publicatæ
fuerunt ad valvas Cam. Apost. Principis Apostol.
Basilicæ de Urbe, ac Cancell. Apostol. ut moris est,
per nos Bartholomæum Sottocasa, & M. Ant. Bru-
tum, præfati S. D. N. Papæ Curæ.

Scipio de Octavianis Mag. Curæ.

Extinctio Ordinis Fratrum Humiliatorum, cum re-
servatione Sedi Apostolicæ beneficiorum & bo-
norum propterea vacantium.

Alia de exinde secutis vide in const. Subsequenti.

PIUS EPISCOPUS,

*Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.*

Quemadmodum sollicitus Pater quem unice ca-
rum educavit filium, via salutis ingressum re-
vocare cupiens primum hortatur, indulget, præter-
mittit, increpat, alia præterea atque alia tentare non
desinit, dum quod expetit modo aliquo consequa-
tur, omnia denique expertus, cū nihil jam pro-
ficere intelligit, desperata prorsus salute, omnem
de illo parentis animum ejicit, domo expellit, in-
dignum existimans qui parta hereditate fruatur; sic
Romanus Pontifex, quem divina Majestas Patrem,
& Pastorem omnium Ecclesiæ suæ Ordinum consti-
tuit, sic ubi quampiam sacrarum Congregationum
à Regula, & vitæ præscripto aberrare percipit, mo-
do admonendo, modo concedendo, modo corripi-
endo, conmittit, eam vel primis institutis resis-
tuere, vel certè quo pacto emendaram in aliquo sta-
tu illis magis coherenti continere, omnibus tan-
dem ad illius sanitatem conquisitis, ubi salutaria re-
media fastidire, & viam iniquitatis obstinantis pro-
cedere, atque adeò in pravam indurecere animad-
vertit, ut potius confringi, quàm corrigi possit, om-
ni curatione reiecta, de ipsa removenda decernit,
ne inveterati atque indomiti mali vis, in alias insur-
gat, eisque exitio sit futura. Quod (ut nostrum hac
in re studium flagrat) cū in plurimis, tum maxi-
mè in Fratrum Humiliatorum familia enixè curavi-
mus, nihil inexpertum relinquentes, quin illa mul-
tis jampridem modis affecta, etsi non propterea, cer-
tè accommodata rerum moderatione directæ, ad pri-
stinum institutum paulatim regrederetur.

§. 1. Etenim postquam dilectus filius noster CA-
ROLUS Tit. S. Prædixis presbyter Cardinalis Bor-
romæus hujus Ordinis Protector, & Apostolicæ Se-
dis delegatus, animadvertens dictos Fratres in lu-
xum jampridem effusos esse, multa de ratione cultus
divini, de obedientia, & vita, ut antea communi,
deque modo recipiendorum & educandorum Reli-
gioforum, providenter statuerat, cum intelligere-
mus, eos illa ceteraque omnia Regulæ suæ instituta,
omnino aspernari, vitamque omnium voluptatum
varietate confectam ducere, ac Præpositos, & qui ex
eo Ordine rerum administrationem habebant, bo-
nam magnamque fructuum partem veluti propriam
in vanitatibus mundanis, turpitudinibusque flagitiose
profundere, innumeraque scelera committere.

§. 2. Nos vias omnes, quæ illos in aperta huius-
modi pericula atque incommoda conjecerant, ex-
cindere conati, pleraque alia de ipsorum vita, mori-
bus, & proprietate Regulæ inimica, deque modo, &
tempore gubernandæ cusq; Præposituræ, necnon rati-
one administrationis bonorum, & dispensatione
preventuum, aliisque muneribus & officiis, ad prolapsi

Sed tamen
idem fratres
flagitiosam
vitam reti-
nuerunt, &
multos exce-
sus commise-
runt, necnon
Hieronymus
Lignana, &
quidam alii
Fratres nec-
nem Card.
Borromæi
Proteſtoris
procurarunt.

hujus status, & disciplina regularis reparationem maxime conferentibus, edidimus, sperantes illa prosperos tandem successus dicto Ordini allatura.

§. 3. Sed obſtente bonarum rerum perturbatore, plerique omnes (quoniam otio & desidia nimium affueverant) regulæ instituta, & emendationem abhorrentes, etiam statuta & præcepta nostra communi consensu palam acceptarunt, clam tamen quibus illa modis supprimerent comminantes, nefarias protestationes in occulto fecerunt, necessarios suos, & alios potentiores laicos ad intestinas seditiones concitarunt, suasores præterea, & impulsores ad intimos summorum Principum Ministros dimiserunt, qui magnis præmiis & pollicitationibus eos pellicerent, in animos prædictorum Principum inducere, ut nos ad illam rescindendam inclinarent, multaque alia de ea tollenda pravis artibus sunt conati, ut turpem illam & flagitiosam vitam suam retinerent, lætalesque mundi voluptates sequerentur. Inter quos non defuit, qui alius præcipitatus, etiam à Catholica fide ad Hæreticos, & impia illorum dogmata declinarit. Quibus cognitis, omnium gravissimum impenitentiae peccatum in eis animadvertimus, qui toties frustra correpti, in eadem obstinatione perdurare contendunt, non satis habentes talia attentare, nisi, & ii, qui inter ipsos qui posse putant, illis in primis qui saluti eorum sedulo invigilant, exitum machinentur, illius stimulis concitati, qui secleratum Jadam in funestum avaritiæ morbum inieciſſe non contentus, etiam ad prodendum Dominum suum pecunia impulit. Hujus nimirum spiritus nequissimi ductu, quondam Hieronymus Lignana Præpositus præposituræ Sancti Christophori Vercellensis & plures alii concelerati hujus Ordinis, in necem dicti Caroli Cardinalis propitiatoris sui conspirantes, ut pecuniam ad tantum nefas expeditum conficerent, de trucidando in primis dilecto filio Fabio Simoneta fratre dicti Ordinis, proventuum præposituræ Bredæ Mediolanensis depositario, apud quem nummos invenire credebant, secreto conveniunt, inde ad Ecclesiæ dictæ præposituræ, in qua ipsum orantem laqueo suffocare decreverant, profecti, sed inter se de modo aggregendi misericordia Salvatoris nostri, discordes, hoc conatu destiterunt, mutatoque consilio sacra aurea & argentea furati sunt. Quibus clam venditis, seu pigriori datis, prædictus Hieronymus quondam Donatum Farinam comprofessorem suum, apostatam, pacta pecuniâ induxit, ut ipsum Carolum Cardinalem occideret; qui nocte loci & temporis opportunitate, in eum vesperi de more in sacello cum familia precantem, ut transverberaret, sclopium glandibus confertum, igne admoto exoneravit, sed telori parte ad vestes orantis exinanita, aliis utrimque in proximo violentia ictus defixis, innocentem divina pietas, salvum & incolumem conservavit. Quare ambo, & quidam alii hujus nefandi criminis participes, postea capri poenæ debitas persolverunt.

§. 4. Quando igitur familiam prædictam, nulli studio ad Ecclesiæ Dei utilitatem proficenti incumbentem, nulli disciplinæ Ecclesiasticæ deditam, nullum omnino futuræ virtutis specimen ostendentem, tam detestandis facinoribus infectam, tā atroci sacrilegio contaminatam, & præterea impenitentem atque incorrigibilem agnoscerimus, omni de illa spe proorsus exclusa, ipsā tandem tollere constituimus, tamquā malā arborem fructus pessimos proferentem. Habita itaque, cum Fratribus nostris deliberatione matura, de illorum consilio & nobis attributæ potestatis plenitudine, extinguimus & abolemus Ordinem prædictorum Fratrum Humiliatorum, & officium Præpositi Generalis, ac Provincialium, & quæcumque alia ministeria Ordinis sic suppressi, necnon omnia & quæcumque statuta, consuetudines, & decreta ejusdem, etiam juramento, confirmatione Apostolica vel alia quacumque firmitate munita, & pariter privilegia & indulgentia, generalia & specialia, quorum omnium tenores, ac si ad verbum infererentur, Præsentibus habemus pro expressis, quibuscumque illa

concepta sint formulis, necnon irritantibus aliis decretis & vinculis roborata.

§. 5. Privamusque Generalem, ac ceteros omnes Præpositos, & Fratres omnibus Præposituris, dignitatibus, administrationibus, officiis & beneficiis Ecclesiasticis, cum cura & sine cura, necnon domibus, Conventibus, & locis immobilibus, mobilibus & se moventibus, in Italia, & ubicumque gentium constitutis, sacra quoque & communi suppellectile, ac ipsorum omnium usu, usufructu, administratione ac possessione, spiritali & temporalis, ac etiam jure & actione, sive per statuta nostra, sive aliis quomodolibet pertinentem. Ac tollimus eis omnimodam facultatem, usum & auctoritatem, generalia, provincialia, & alia capitula de cetero celebrandi.

§. 6. Volumus tamen, ut omnes Fratres qui nunc sunt, qui professionem regularem emiserunt, deinceps in domibus & locis, quos eis cum victu & aliis necessariis proximè assignandos curabimus, omnino redigantur, ut ibi vitam ducant regularem, suæ professioni conformem, sub cura & visitatione Ordinariorum locorum, aut aliorum, vel aliorum, quos eis duxerimus delegandos, vel juxta juris communis dispositionem transcant, ad pares vel strictiores Ordines approbatos.

§. 7. Novitii verò & alii quicumque non professi, detracta Religionis habitu, ex professorum consortio, & domibus expellantur.

§. 8. Quibus professoribus, nominatim precipimus, neque interdiciamus, ne posthac quemquam expulsum, aut omnino alium, etiam voventem, ad professionem, vel habitum admittant, nec novas domos vel loca, recipiant, vel acquirant; quod si secus fiat, professio sit inanis, neminemque obliget, neque in specie neque in genere, sic professum. Novarum domorum, seu locorum receptiones vel acquisitiones, viribus & effectu careant, & contrafacientes, excommunicationis sint sententiæ eo ipso innodati, à qua nullus, nisi in fortis articulo constitutus absolvi possit, absque Romani Pontificis licentia speciali.

§. 9. Ceterum intendentes, & cultui divino, & Ecclesiæ ministris quamprimum prospicere, omnes præposituras, dignitates, personatus, administrationes, officia, ceteraque beneficia Ecclesiastica, cum cura & sine cura, quæ deinceps secularia sint, per privationem prædictam, apud Sedem Apostolicam vacantia, necnon domos, Conventus, loca, suppellectilem, bona, res, actiones, & jura supradicta, eorumque proprietatem & dominium, nostræ & dictæ Sedis libera dispositioni, specialiter & expresse reservamus. Decernentes irritum & inane, quicquid secus per prædictos, aut quoscumque alios, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 10. Volumus autem ut præsentium exempla, Notarii publici manu, & personarum in dignitate Ecclesiastica constitutarum sigillo obſignata, eandem illam prorsus fidem, in iudicio & extra illud, ubique locorum faciant, quam ipsæmet præsentibus facerent, si essent exhibitæ vel offensus. Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1571. 7. Idus Febr. Pontificatus nostri anno sexto.

Ego Pius Catholicæ Ecclesiæ Episcopus, Utinam dirigantur via mea ad custodiendas justificationes tuas.

Jo. Card. Moronus Episcopus Ostien.
Ego Otho Card. Augustanus Episcopus Prænestin.
Ego A. Card. Farnesius Vicecanc. Episcopus Tufculan.

Ego Jo. Card. Politianus Episcopus Albanen.
Ego Fulvius Cardinalis Perusinus.
Ego Scipio Card. Pisarum.
Ego Jacobus Card. Sabellus.
Ego Jo. Franciscus Card. de Gambara.
Ego Ind. de Avalos Card. de Aragona.
Ego M. Antonius Card. Columna.
Ego P. Card. de Sancta Cruce.

Generalem
& alios om-
nibus officiis
& beneficiis
& Conven-
tibus, & bonis
privat.

Et professi
in locis eis
assignandis
regularem
vitam duce-
re, aut ad pa-
res vel stri-
ctiores Ordi-
nes transire
præcipi.

Novitiosque
& non profes-
sos expelli
mandat.

Aliosque ad
hunc Ordi-
nem recipi
& alia loca
acquiri pro-
hibet.

Reservatque
Sedi Apoſt.
beneficia sa-
cularia ob-
hujusmodi
privationem
vacantia, &
loca, & bona
hujus ord.

Fides exem-
plorum.

Dar. P. An. 6.
die 8. Febr.

Papæ sub-
scripti.

Cardinalium
subscriptio-
nes.

Ideo hic
Pont. Ord.
Fratrum Hu-
miliatorum
extinguit.

Ego Jo. Franc. Card. Comendonus.
Ego M. Ant. Card. Bobba.
Ego Hu. Boncompagnus Card. S. Sixti.
Ego Fla. Card. Urfinus.
Ego Alexander Card. Cribellus.
Ego Benedictus Card. Lomellinus.
Ego Guilelmus Card. Sirletus.
Ego F. Michael B. Card. Alex.
Ego F. Hieronymus Card. de Claravalle.
Ego F. Card. Alciatus.
Jo. Paulus Card. ab Ecclesia.
Ego Jo. Ant. Card. S. Georgii.
Ego Aloysius Card. Camerarius.
Ego Antonius Card. Granvelanus.
Stan. Card. Vuarminen.
Ego F. Card. Paccius.
Ego M. Ant. Card. Anulius.
Ego Hieronymus Card. de Corrigio.
Ego M. Ant. Card. Massæus.
Ego Jul. Ant. Card. S. Severinæ.
Ego C. Card. de Grassis.
Ego C. Card. Rambullietus.
Ego F. A. Card. Theanen.
Ego F. Felix. Card. de Montealto.
Ego P. Card. Placentin.
Ego J. Card. Aldobrandin.
Ego F. Vincentius Card. Justinianus.
Ego Hier. Card. Ruslicuccus.
Ego Jo. Hier. Card. Albanus.
Ego Hieronymus Card. Simoncellus.
Ego Ferd. Card. de Medicis.
Jul. Cardinalis de Aquaviva.

Publicatio. Anno Incarnationis Dominicæ 1571. Indictione 14. die vero 2. mensis Martii, Pontificatus Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. P. Pii divina providentia Papæ V. anno 6. retrospectæ litteræ Apostolicæ affixæ, & publicatæ fuerunt ad valvas Basilicarum S. Jo. Lateranensis, & Principis Apostolorum de Urbe, & Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ dimissæque fuerunt in eisdem locis per aliquod temporis spatium, per nos Marcum, & Antonium Clerici S. D. N. PP. Curf.
Scipio de Octavianis Mag. Curf.

CXX.

Præpositurarum nuper extincti Ordinis Fratrum Humiliatorum distributio & applicatio, ipsorumque Fratrum divisio, cum locorum & alimentorum assignatione. Et cum earumdem dignitatum & beneficiorum secularium dicti Ordinis, reservatione dispositioni Sedis Apostolicæ.

Hanc extinctionem habes, cum simili reservatione, in præced. constit.

PIUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Quoniam per extinctionem Ordinis Fratrum Humiliatorum, & privationem Generalis, ac ceterorum omnium Præpositorum, & Fratrum illius, omnibus, Præposituris, dignitatibus, officiis, & beneficiis ecclesiasticis; cum cura & sine cura nuper à nobis de Fratrum nostrorum consilio, & Apostolice potestatis plenitudine factas, intendentes, & cultui divino, & ministris Ecclesiasticis, quamprimum prospicere, præposituras, dignitates, officia, & beneficia prædicta, quæ deinceps secularia essent, necnon bona, domos, redditus, res, actiones, & iura Ordinis sic suppressi, nostræ & Apostolicæ Sedis dispositioni specialiter & expresse reservavimus. Præterea volumus, ut omnes Fratres, qui professionem emiserant regularem, deinceps in domibus & locis, quæ eis cum vicu, & aliis necessariis assignandos curarem omnino redigerentur, ut ibi vitam docerent regularem suæ professioni conformem, sub cura & visitatione Ordinariorum locorum aut

alterius vel aliorum, quos eis delegarem, vel iuxta juris communis dispositionem transirent ad pares vel archiores Ordines approbatos.

§. 1. Nunc autem ad inducendum novum in dictis præposituris & locis statum cuique quantum potest convenientem, & item subveniendum aliis Ecclesiis, Conventibus, piis locis, officiis, & ministris ad Religionis cultum, & fidei Catholice propagationem, & tutelam utilibus & necessariis, simulque ad prædictorum Fratrum distributionem, & divini officii celebrationem paterna caritate intenti, ut ea quæ facere institimus, omni impedimento soluta plenarium consequantur effectum, De simili potestatis plenitudine, dissolvimus omnes & quascunque uniones, annexiones, & incorporaciones, perpetuas & temporales Præpositurarum S. Mariæ Elibabet de Busto parvo Mediolanensis diocesis, & S. Catharinæ Cremonensis, ac forsan aliarum quæ nominatim Præsentibus exprimuntur, sive ut alias aliis, sive ut invicem, aut alias quacunque causa antehac factas, restituentes eas in liberum & solutum statum quancumque ipsæ tempore ut unitæ pacifice sint possessæ.

§. 2. Rursus, verum annuum valorem fructuum, reddituum, & Proventuum singularum Præpositurarum, necnon Ecclesiarum, Capitulorum, Domorum, Conventuum, Collegiorum, Hospitalium, & aliorum locorum omnium Præsentibus comprehensorum, secundum communem illorum estimationem, & quantumque sint, necnon fructuum reservationes, & pensionum assignationes, quos & quas perpetuo vel ad tempus seorsum facere intendimus, Præsentibus pro expressis habentes, perpetuo unimus, anneximus, & incorporamus Præposituram S. Petri Bergomensis cum omnibus rebus & iuribus suis, & quæ ei competunt actionibus, Præposituræ SS. Simonis & Judæ; Ac simili modo Præposituram S. Mariæ Ticini Novariensis diversis, Præposituræ S. Crucis Novariensis, & Præposituram S. Jacobi Moncalerii, Præposituræ SS. Trinitatis Avilliani Taurinensis diocesis; Et Præposituram S. Joannis Baptistæ de Damasco, Præposituræ S. Ursulæ de Surriago; Et Præposituras S. Michaelis de Paganica, & S. Cornelii Præposituræ S. Mariæ Cigoli; & Præposituram S. Bartholomæi Aquisenensis, mensæ Episcopali Aquisen; Et Præposituram S. Georgii Cantuarii, mensæ Capitulari ecclesiæ S. Vincentii plebis Gallianæ ad Cantuarium; Et Præposituram S. Syri Alexandrinensis cui cura parochianorum imminet animarum, Hospitali pauperum SS. Blasii & Antonii; cura & parochianis omnibus ad viciniorum parochialem Ecclesiam quam Ordinarius loci aptiorem, commodioremque viderit translatis; Et Præposituram S. Bartholomæi Veronensis, officio Inquisitionis hæreticæ pravitatis, Apostolica auctoritate ibi statuto. Ad hæc in singulis domibus, de Canonica, & S. Joannis Evangelistæ, & SS. Trinitatis Mediolanensis, & S. Bartholomæi Bergomensis, & S. Francisci Paduanæ, & S. Marci Terdonæ, & S. Odorici, & omnium Sanctorum Papien. & etiam omnium Sanctorum Modæstæ suppressimus perpetuo & extinguimus nomen, titulum, dignitatem, & essentiam Præposituræ, omniaque insignia veteris instituti dividimus & separamus, omnia harum sic suppressarum Præpositurarum, bona, res, actiones, & iura à sua quaque Ecclesia & domo, necnon hortis, viridariis, & pertinentiis intra clausuram cuiusque domus confiscentibus, in hoc qui sequuntur usus perpetuo assignatis. Siquidem concedimus Ecclesias, aedes, hortos, viridaria, & pertinentias intra prædictam clausuram existentes ipsarum suppressarum præpositurarum, videlicet de canonica S. Joannis Evangelistæ, & Sanctissimæ Trinitatis Mediolanæ, ad usum Seminarii, seu aliorum Collegiorum, Congregationum, & Hospitalium, prout dilecto filio Carolo Cardinali Borromæo Ecclesiæ Mediolanæ præsulî videbitur utilis expedire. Sancti Francisci verò Paduanæ ad eundem usum Seminarii arbitrio Episcopi statuendi; & omnium Sanctorum Papien. Ordini, & Fratribus Can-

Et modo dissolvit uniones Præpositurarum dicti Ordinis.

Quorum aliquas distribuit & applicat.

thufen, necnon S. Odorici Collegio Ghisleriorum, quod in universitate Studii generalis Papien. nuper institutum; & S. Bartholomaei Bergomensis, tam cum hortis, viridariis, & pertinentiis intra suam clausuram existentibus, quam etiam ei contiguis terrenis, pratis, & vineis suis, Fratribus Ordinis Prædicatorum regularis Observantæ, provincie Lombardiæ, juxta morem ejus Ordinis, qui illam ad mores suos reformat; & S. Marci Terdonen. Fratribus domus S. Francisci Ordinis Minorum, qui ad sua domo, & ejus Ecclesia Episcopo, & Capitulo Terdonen. pro illorum futura loco occupare cathedrali relicta in dictam Ecclesiam S. Marci debeant demigrare; ac etiam concedimus Congregationi regularium S. Pauli decollati Barnabitorum nuncupatæ, Ecclesiam & domum præposituræ suppressæ omnium Sanctorum Modotie, cum omnibus bonis, rebus, juribus, & actionibus suis ubicunque constitutis, ut illas habeant & insinquant quemadmodum alias suæ congregationis diriguntur.

§. 3. De Præposituris autem Lugani, Lucarni, S. Laurentii de Canobio, & S. Catharinæ de Pallenza, earumque bonis, rebus, juribus, & actionibus hac vice disponendis prædicto Carolo Cardinali, qui in ipsarum Lugani & Lucarni, erectione & restitutione qualicumque, laboriosam operam præstitit, delegamus vices nostras, ut vel ipsas Societati JESU, vel alteri Congregationi, aut Ordini approbato, vel Seminario ad usum Collegiorum, seu etiam Hospitalium aut aliorum piorum operum tribuat five illas uniat, appropriet, & applicet, vel alias de illis eorumque bonis & proprietatibus prædictis, aliisve modis libere disponat, uti temporis, rerum & temporum qualitate, conditione, & necessitate perfecta noverit commodius convenire.

§. 4. Postremo applicamus & appropriamus perpetuo, omnia & quæcumque alia bona, res, actiones, & jura divisa & separata, prædictarum Præpositurarum suppressarum, videlicet de Canonica S. Joannis Evangelistæ, & Sanctissimæ Trinitatis, Præposituræ Sanctorum Bredæ Mediolanen., & alia S. Bartholomaei Bergomensis, Præposituræ Sanctorum Simonis & Judæ, & alia S. Francisci, domui & Fratribus Beatæ Mariæ Paduan. dicti Ord. Prædicatorum; & alia S. Odorici, & omnium Sanctorum, etiam domui, & Fratribus S. Thomæ Papien. super quibus, videlicet S. Odorici, & omnium Sanctorum, pensionem annuam, omnino liberam & exemptam, centum ducatorum auri in auro de Camera infirmariæ domus à nobis constitutæ Sanctæ Crucis, & omnium Sanctæ ad oppidum Boschi ipsius Ord. annis singulis integrè perfolvendam, seu per Priorem, & Fratres dictæ domus ad Boschum, si & quoties maluerint, super pinguioribus, & liquidioribus proventibus illorum propria auctoritate exigendam, & in prædictæ infirmariæ usum penitus convertendam perpetuo reservamus; & alia S. Marci pro dimidia in dotem unius Archidiaconatus, & unius Cantoriæ dignitatum prædictæ Ecclesiæ Terdonen. & pro alia dimidia parte domui S. Martini Terdonæ, constitutæ ad usum Fratrum dicti Ord. Prædicatorum in ea superioribus annis introductorum. Ita ut liceat tam futuris omnibus principalium Præpositurarum Præpositis, necnon Aqueñi Capitulo Ecclesiæ Cantuarii, Rectoribus hospitalis Sanctorum Blasii & Antonii, ac ministris officii Inquisitionis Veronen. unitarum Præpositurarum, prout cuique tangit, quam etiam aliis omnibus, quibus Ecclesiæ, & domus aliarum suppressarum Præpositurarum conceduntur, quorumque Præpositis, domibus, collegiis & locis, bona, res, & proprietates, actiones, & jura prædicta appropriantur, per se vel alium seu alios, corporalem possessionem illorum, necnon juriurum & pertinentiarum suorum omnium, propria auctoritate libere apprehendere, & perpetuo retinere, ac fructus, redditus & proventus, jura, obventiones, & emolumenta omnia eorumdem in suos, necnon Præpositurarum, domorum, mensarum, collegiorum, hospitalium officii & locorum prædictorum usus & utilitatem convertere diocesanorum lo-

corum aut quorumvis aliorum licentia super his minimè requisita.

§. 5. Hanc autem de distributione, & alimentis Fratrum extincti Ordinis prædicti rationem futuram esse volentes, statumus, ut de iis qui nunc sunt Ecclesiæ Bredæ viginti octo presbyteros, & septem servientes, alii verò sequentes Ecclesiæ, videlicet S. Abundii Cremonensis, sexdecim presbyteros, & quatuor servientes, Beatæ Mariæ de Glarea Veronen. octo presbyteros, & duos servientes; S. Catharinæ Cremonen. tres presbyteros & unum servientem, S. Mariæ de Ronderario cum Ecclesia S. Martini in suburbis Comen. alios tres & unum servientem; Sanctorum Petri & Pauli cum Ecclesia S. Mariæ Caravagii quatuor presbyteros & unum servientem; S. Agathæ de Urbe, duos presbyteros & unum servientem; Sanctorum Simonis & Judæ Bergomen. tres presbyteros; Sanctissimæ Trinitatis Avilianæ alios tres; S. Crucis Novarien. duos; S. Ursulæ de Surigo cum illi unita prædicta, duos; singula Ecclesiæ S. Mariæ Veneris Varesii, Sanctorum Jacobi & Philippi Brixienfis, S. Nicolai Ballani, S. Joannis Evangelistæ Appiani, S. Elisabeth de Busto, S. Pauli Conilliani, S. Pauli Soncini, S. Marini Cremæ, S. Mariæ Cigoli, & S. Thomæ Senen. singulos presbyteros recipiant & retineant ad deservendum ibidem in divinis, quibus, ut ibi plures assignantur, in commune vivant, pro suis alimentis prædictis reservamus, constituimus, & assignamus, pensiones annuas prorsus liberas & exemptas, videlicet trigintaquinque personis Ecclesiæ Bredæ mille & quadringentorum scutorum auri & viginti; S. Abundii octingentorum & decem, S. Mariæ de Glarea, quadringentorum & quinque, Sanctorum Petri & Pauli, ac S. Mariæ Caravagii ducentorum; & ubi quatuor personæ, centum sexaginta, ubi tres, centum viginti, ubi duo, octoginta, & denique ubi singuli destinati sunt, quadraginta scutorum similibus super eorum Præpositurarum, & ipsarum annexorum fructibus, redditibus, & proventibus, etiam si super illis alii pensiones annuæ aliis assignatæ, aut illorum reservationes factæ sint, eorumque dimidiam partem longe excedant, per omnes deinceps Præpositos suos, quos & etiam suarum Præpositurarum fructus, & bona omnia ad id efficaciter obligamus annis singulis pro una, videlicet in B. Joan. Baptiste à proximè futura incipiendo pro rata temporis, & altera medietatibus singularum pensionum hujusmodi in Domini N. JESU CHRISTI Nativitatem festivitatis integrè perfolendas; ita tamen, ut dictis trigintaquinque personis Ecclesiæ Bredæ five singulis five simul pluribus decedentibus, aut ad alios Ordines transeuntibus, pariter rata dictæ pensionis mille & quadringentorum scutorum eo ipso extincta sit, Propositoque accrescat, donec hi omnes ad numerum viginti, & inter eos omnes sexdecim Sacerdotes deveniant; ac tunc demum eis octingenta dumtaxat scuta similia quotannis modo prædicto perfolvantur; quibus ad dictum numerum redactis, postea diminuentibus, ac etiam aliis aliarum Ecclesiarum prædictarum dehinc quandocumque deficientibus, statim alius vel alii, ejusve vel eorum usque ad præscriptum in quaque Ecclesia numerum, ac totidem Sacerdotes five regulares five sæculares subrogentur, donec omnibus de medio sublatis, vel alio translatis, Ecclesiæ ipsæ de aliis ad eundem numerum presbyteris hujusmodi regularibus, vel ibi perpetuis beneficiis sæcularibus idoneis, à suo quoque Præposito libere assumendis & instituendis illico reformatur; qui cum suis ubi statuantur servientibus deinceps loco suæ pensionis annum ejusdem quantitatis redditum de bonis Præposituræ pro mensa communi, ubi quantitas & numerus personarum id postulerit, consciscendum, sin autem in singulis statuendum, futuris deinceps temporibus perpetuis habeant; & ex eo foveantur. Volumus prædicta omnia omni tempore inviolata fore, & ab omnibus firmiter custodiri.

§. 6. Quocirca omnibus locorum Ordinariis, præsertim in quorum Civitatibus & Diocesisbus Præposituræ distributos Fratres prædictos habentes confi-

Fratresque distribuit cum alimentorum & locorum assignatione.

Executorum deputatio.

stunt,

Aliarum distributionem committit Card. Bor. rhomæo.

Aliis ipse Pont. applicat bona dicti Ordinis.

stunt, per Apostolica scripta mandamus, ut quicunque per se vel alium seu alios, ubi, & quodcumque opus fuerit, prædictis omnibus efficacis defensionis præsidio assentes, faciant auctoritate nostra numerum præfinitum presbyterorum, & aliorum prædictorum in singulis Ecclesiis & locis in quibus sic à nobis disponuntur, integrum conservari, omnes pensiones supradictas omnibus illis quibus assignantur integrè perfolvi, res, quibus Ecclesiæ, domus, ædes, bona, res, jura, actiones, & alia prædicta conceduntur, ac prorsus universos & singulos alios quos præsentis litteræ concernunt, illis & earum effectu pacificè frui & gaudere, mensas, & redditus annuos, institui & assignari, ceteraque omnia eisdem, præsentibus contenta, semper & ubique observari, non permittentes quemquam contra ipsarum tenorem per quoscumque molestari, vel alias quomodolibet impediri. Contradictores quolibet, ac prædictis non parentes, per censuras & poenas Ecclesiasticas, ceteraque juris & facti remedia opportuna, appellatione postposita compescendo, censuræque, & poenas ipsas etiam iteratis vicibus aggravando; invocato etiam ad hoc auxilio brachii secularis.

Contrariis derogat.

§. 7. Non obstantibus nostris de unionibus ad partes commitendis, & valore fructuum utrimque exprimendo, ac etiam de fructibus beneficiorum in omnibus gratis etiam Motu proprio factis, secundum verum annuum valorem exprimendis, alioquin gratiæ ipsæ non valeant, & de non tollendo jure quæsito, necnon Lateranensis Concilii novissimè celebrati uniones perpetuas, nisi in casibus à jure præmissis fieri prohibentis, ac etiam de unionibus beneficiorum in diversis Diocesisbus constitutum non faciendis, aliisque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon Ecclesiasticis, Ordinum & locorum prædictorum juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, ac quod causa propter quas prædictas uniones, & applicationes facimus, prius coram locorum Ordinariis examinata & approbata non fuerint, quæ propterea per subreptionem obtenta nunquam intelligantur, & quibuslibet aliis privilegiis, indulgentiis, & litteris Apostolicis, generalibus vel specialibus quoruncumque tenorem existant, per quæ Præsentibus non expressa, vel omnino non inserta effectus earum impediri valeat quomodolibet, vel differri, & de quibus quoruncumque totis tenoribus ad verbum habenda sit in nostris litteris mentio specialis, quæ omnia, & quæcumque alia prædictis impedimentum præstantia, aut præstare valentia omnino tollimus & abrogamus, ac nemini contra ipsas Præsentibus, & earum executionem atque effectum suffragari posse decernimus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Concedit Fabricæ Ecclesiæ Terdonen. jus redimendi non. ulla bona dictarum Præpositurarum vendita usque ad valorem decem millium seu, pro necessitatibus. Sed. Apost.

§. 8. Cum autem alias pro necessitatibus hujus Sedis quedam bona, seu census vel livelli nonnullarum præpositurarum prædictarum usque ad valorem decem millium scutorum aut in auro diversis personis, cū pacto illos reluendi intra certum tempus tunc expressum, & nondum elapsum, auctoritate nostra venditi fuerint, Nos novæ Fabricæ Ecclesiæ prædictæ Terdonen. suadente jampridem illius Civitatis tutela occupata, quantum in nobis est subvenire cupientes, jus reluendi, sive redimeandi, omnia bona seu census, aut livellos prædictos, omneque actionem olim dicto extincto Ordini, & illius Præpositis competentia, pro usu & commoditate dictæ Fabricæ, ipsi potestatem faciemus, & declarabimus, nobis & dictæ Sedi retinemus.

Reservatque Sed. Apost. beneficia d. Ord. vac. n. & vacatura.

§. 9. Demum pio studio induciti, ut sanctæ & salubris hujus novi status ratio per peculiarem sollicitudinem omni tempore capiatur, tã prædictas quam omnes alias Præposituras, ac cetera beneficia Ecclesiastica, cum cura & sine cura suppressi Ordinis prædicti, extra Romanam curiam quibuscumque modis, & ex quoruncumque personis vacantia, & deinceps quodcumque; ac quotiescunque vacatura, nostræ, & successorum nostrorum Romanorum Pontificum, ac dictæ Sedis dumtaxat collationi & dispositioni, specialiter

& expresse in perpetuum reservamus. Decernentes irritum & inane, quicquid fecus super his ac aliis supradictis per quoscumque etiam S.R.E. Cardinales, & de latere Legatos, etiam prætextu facultatum, privilegiorum & indulgentiarum, ac aliis quomodocumque scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 10. Quia verò difficile nimis esset Præsentibus in quinterno Cancellariæ Apostolicæ describendas quocumque illis opus erit perferre, volumus, ut eorum exempla pro singulis quorum interest edantur, eaque Prælato Ecclesiastici, ejusve Curiae sigillo, & Notarii publici manu obsignata, eandem illam prorsus fidem ubique locorum, in judicio & extra illud faciant, quam ipsæmet præsentibus facerent, si essent exhibitæ vel ostensæ.

Exemplorum fides.

Nulli ergo omnino, &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno incarnationis Dominicæ 1571. 6. Idus Februarii, Pontificatus nostri anno sexto.

Dat. P. A. 6. die 8. Febr.

Episcopi regni Siciliae quotannis inventarium actorum criminalium conficere & custodire tenentur.

CXXI.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D. 1571.

Muneris nostri est, aditum prohibere, per quem salubris delictorum animadversio perpetram disturbatur. Nefarium etenim facinus in plerisque Episcopopatibus Regni Siciliae citra & ultra Fatum audivimus exoriri, quod Cathedralibus Ecclesiis Præfule viduatis, Vicarii à Capitulis constituti, gratia, timore, odio, vel fordibus, quas volunt inquisitiones & testimonia rerum & causarum criminalium violant, subripiunt, & lacerant, ne delictorum cognitio vel vindicta uspiam consequatur.

Causæ hujus constitut.

§. 1. Nos ad hoc malum, quæ potest industria, coercendum, pro nostro officio intenti, præcipimus omnibus Archiepiscopis & Episcopis dicti Regni, præsentibus & futuris, ut deinceps inventarium authenticum, omnium & quaruncumque sue Curie querelarum, accusationum, inquisitionum, denunciarum, testificationum, instrumentorum, processuum, ceterorumque actorum, causarum, & negotiorum criminalium, etiam mixtorum, quæ apud Curie sue Notarium fuerint quotannis in perpetuum conficiant, confectum, & dicti Notarii manu subscriptum, penes se custodiant, donec super iis fuerit judicatum. Et si eos de vita decedere interim contigerit, illud universum sigillo suo obsignatum, fides Sacerdotis cui peccata confitentur, morte impendente committant, qui ea secuta protinus ipsum Prælato, ac domui, seu Conventui digniori Regularium illius Civitatis, debeat resignare, ut ab eis tutè & fideliter asservetur, donec futurus advenit Præfule, cui illud itidem clausum & integrum tribuatur; quod ipsimet per se faciant, si quando necesse habuerint peregrè proficisci, ita ut illud ipsum statim cum præsentibus redierint, recipiant ab eisdem.

Præceptum quod Episcopi conficiant inventarium actorum criminalium quolibet anno & confectum custodiant.

§. 2. Quicumque autem testimonium, processum, scripturas, & instrumenta hujusmodi quocumque modo violaverit, corruerit, subtraxerit, combusserit, ac jussit id fieri, seu auxilium, consilium vel favorem præstiterit, omni sit dignitate, officio, & beneficio Præsentium auctoritate privatus, & ad futura inhabilis eo ipso. Idem quoque & pariter Notarius, cui quid prædictorum defuerit, aut alias deliquerit in prædictis, tamquam falsi reus declaratur, poenæque omnes subeat, quæ sunt in hujusmodi rerum falsariis per sanctiones canonicas, & constitutiones legitimas irrogatæ. Nulli ergo omnino &c.

Poenarum impositio contra subtrahentes, aut corruptores ipsa acta, & scripturas.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno incarnationis Dominicæ 1571. Kal. Martii, Pontificatus nostri anno sexto.

Dat. P. A. 6. die 1. Mart.

Anno Incarnationis Dominica 1571. Indizione 14. die verò ultima mensis Martii, Pontificatus Sanctissimi D. N. D. Pii Papae V. anno ejus 6. retrospectiva littera Apostolica affixa, & publicata fuerunt ad valvas Basilicarum Ecclesiarum S. Jo. Lateranensis, & Principis Apostolorum de Urbe, Cancellaria Apostolica, & in acie Campi Florae, ut moris est, dimissis illis in eisdem locis affixis per multum temporis spatium, per nos Scipionem de Ockavianis, & Joannem de Soja Apostolicos Cursores.

Petrus Aloysius Gayla Mag. Curf.

CXXII.

Officii B. MARIE nuper reformati approbatio, cum indulgentiarum elargitione pro illud recitantibus, & aliorum ejus Officiorum abolitione.

Edita An. D. 1571.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

SUPerni Omnipotentis DEI providentiae, ac benignitatis exemplo excitati, qui ut humanum genus ab errorum tenebris vendicaret, & in veritate semitam perduceret, suae gloriæ splendorem & cœlis in terram demittere, lucisque æternæ radiis bonos pariter & malos perfundere dignatus est, meditatio cordis nostri ad id potissimum tendit, ut fides Catholica non solum ubique augeatur, & floreat, sed etiam ne errorum tenebræ, atque superstitionum abusus piis Christianis mentibus inducantur, & si quæ irreperunt protinus evellantur.

§. 2. Cum itaque in executionem decretorum sacri Concilii Tridentini, gratia divina assistente, Catechismo ad populi eruditionem edito, Breviario ad sacras preces, laudes, & gratias Deo Optimo Maximo ab utriusque sexus Ecclesiasticis persolvendas reformato, atque Missali, ut sacerdotes intelligerent, quibus precibus uti, qui ritus, quæque cæremonia in Missarum celebratione observanda sint, ad pristinam Sanctorum Patrum normam restituito, eandem curam & operam adhiberi mandaverimus, in emendando ac corrigendo gloriosissimæ Dei genitricis B. MARIE Virginis Officio: cujus recitatio sicut pusillitas, & rudibus Christianis peculiaris esse dignoscitur, ita multis superfluis non sine legentium etiam scandalum, & quæ ad varias superstitiones facile rudes ipsos inducere possunt, avaritia impressorum, qui ut Christianis ad emendum ejusdem Officii libros à se impressos facile allicerent, multa sub colore pietatis, & animarum spiritualis consolationis, ex eorum capite addiderunt, jamque ad antedicti Breviarii uniformitatem ejusdem Dei genitricis, ut credimus, intercessionem, eruditorum & piorum virorum, quos ad hoc delegimus, studio Officium ipsum, resecatis quæ aliena & incerta erant, correctum fuerit & à nobis probatum, Romæ imprimi, & impressum divulgari jusserimus, ut inde spiritualibus quam operamus Christianis animabus proveniat consolatio.

§. 3. Motu proprio &c. & ex certa scientia nostris, ac de Apostolica potestatis plenitudine, Officia quæcumque, in primis Italico, seu quovis alio vulgari idiomate & sermone quomodolibet composita, atque Officium anno proximè præterito millesimo quingentesimo septuagesimo Venetiis apud Juncatas impressum his verbis, licet falso, inscriptum, Officium B. Mariæ Virginis per Concilium Tridentinum Pio Quinto Pontifice Maximo reformatum, denique omnia & singula alia Officia hujusmodi, etiam Latino sermone sub Hortuli animæ, seu Theatri spiritualis compendii, aut quovis alio titulo & nomine quomodolibet perulgata, omnemque illorum usum approbatione Apostolica, ac consuetudine, & institutione (inveteratis infra dicendis semper falsis) harum nostrarum serie perpetuò, ab omnibus & singulis utriusque sexus Christianis, secularibus vel Ecclesiasticis, etiam quorumvis Or-

dinum regularium, & militiarum Religiosis, qui de jure, consuetudine, usu, statuto, institutione, ac constitutionibus etiam eorumdem Ordinum, militiarum & regulæ, seu alias quomodolibet ad recitationem Officii B. Mariæ tenentur, & obligati sunt, collimus & abolemus.

§. 4. Ipsique in virtute sanctæ obedientiæ interdicimus, ne aliud quam hoc de mandato nostro emendatum B. Mariæ Virginis Officium, & in impressoria officina Populi Romani pro fideliter & incorruptè imprimendis libris sacris in Alma Urbe nostra erecta impressum, quovis prætextu dicere, recitare, legere, seu tenere quoquo modo audeant vel præsumant: omni verò alio usu ipsi (ut uniformiter ab omnibus sic adstrictis & obligatis reciteretur, nec inter eos diversitas illud recitandi ulla unquam tempore oriarur) interdicto, præfatum hoc nostrum Officium, ac precandi, psallendique formulam per universum Orbem in privatis domibus, ac Ecclesiis, Monasteriis, conventibus, Capellis, Oratoriis, Ordinibus, Militiis, & locis etiam exemptis, tam virorum quam mulierum, in quibus Officium ipsum beatæ Mariæ Virginis recitari (ut præmittitur quomodolibet debet, præcipimus legi, dici, & observari: illis tamen officiis exceptis (dummodo vulgari sermone, ut præfertur, non sint composita) quæ ab ipsa prima eorum institutione à Sede Apostolica expressa approbata fuerunt, vel quorum officiorum certum usum consuetudine, aut ipsa institutione, supra tamen ducentos annos, assidue in Ecclesiis, Monasteriis, domibus, & locis utriusque sexus Ecclesiasticorum observatum fuisse constiterit. Quibus sic adstrictis & obligatis, ut inveteratum illud ritum dicendi & psallendi suum officium (dummodo ut præmittitur, vulgari sermone non sit compositum) non adimimus, sic eisdem si forte hoc nostrum, quod modo perulgatum est, magis placeat (dummodo Episcopus, vel Prelatus, & universum capitulum in eo consentiant) ut illud etiam in choro dicere & psallere possint permittimus.

§. 5. Ab eis verò qui ad ejusdem Officii B. Mariæ Virginis recitationem non aliqua obligatione tenentur, omnem eorumdem Officiorum vulgari sermone quomodolibet compositorum, atque similis idiomatis vulgatis orationum, etiam aliis Officiis Latini sermonis insertarum, usum penitus etià auferimus, illos nihilominus, ne vanis involvantur superstitionum erroribus, quibus alia fere omnia hujusmodi Officia etiam Latino sermone resecta esse deprehensum fuit, in Domino hortantes, ut ab aliorum B. Mariæ quàm hujus nostri Officii lectione, ac usu abstineant, firmiterque, credant eisdem aliis Officiis multas sub falsis & confictis Sanctorum nominibus confictas orationes fuisse insertas, de quibus, sicut de indulgentiis, peccatorumque remissionibus, quæ recitantibus plerumque ex orationibus aliis Officiis hujusmodi insertis, prout rubricis ibidem appositis designatur, conceduntur, nullam certam extare apud Ecclesiam rationem: propterea ritui & ordinationi hujus Officii recitatione sic à nobis in universali Ecclesia instituti fere conformantes, aliud ejusdem B. Mariæ quàm hoc nostrum officium non perlegant vel recitent.

§. 6. Ac ut ipsorum Officiorum vulgaris idiomatis & sermonis abusus re ipsa penitus aboleatur, eadem omnia per omnes & singulos seculares vel Ecclesiasticos, etiam ad recitationem antedictam nequaquam adstrictos, Inquisitoribus hæreticæ pravitatis absque spe illorum unquam recuperationis, alia verò Latino sermone, & aliis liberis inserta, ad effectum emendandi, & à maculis fere erroribus expurgandi, sibi postmodum, cum sic per eosdem Inquisitores expurgata fuerint, restituenda, consignari quamprimum jubemus.

§. 7. Statuentes huic nostro Officio nuper edito nihil ullo umquā tempore per quamcumque quavis auctoritate fungentem, quovis prætextu addi, detrahi, vel immutari debere. Ac omnes & singulos, qui ipsi B. Mariæ Officium, ut præfertur, dicere, psallere, & recitare tenentur, ex hujus nostri Romani

Aliaque officia tolli & aboleri nisi in primæ institutione, vel à consuetudine supra 200. annos approbata fuerint & non sint vulgari sermone composita.

Hortatur omnes alios non obligatos recitare officium B. Mariæ ut officio isto reformato uti velint.

Officiaque antiqua Inquisitoribus consignari mandant.

Officium verò reformatum, immutari non potest statui.

Offi-

Conc. Trid. emendari jussit Catechismum, Breviarium & Missale, & emendata fuerunt, ut habes sup. in cœtit. 64. & cons. 106.

Hic Pont. emendari jussit officium B. Mariæ ut hic.

Et modo illud observari præcipit.

Officii præscripto, & ratione ad id omnino obligatos esse, & neminem muneris suo nisi hac formula satisfacere posse.

Indulgentias
illud recitan-
tib. concedit.

§. 8. Ac ut fidelium omnium voluntas & studium magis ad salutarem hujus nostri Officii B. Mariæ Virginis, & orationum in eo reductarum lectionem & suum invitetur, de Omnipotentis DEI misericordia, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus auctoritate confisi, omnibus & singulis, qui ad recitationem hujusmodi non tenentur, quoties istud fit de mandato nostro reformatum quinquaginta dies, qui verò Defunctorum Officium, eodem volumine insertum, alios quinquaginta, qui septem Psalmos, aut Graduales, etiam eodem volumine insertos, alios quinquaginta, & qui aliquam ex orationibus ibidem pariter insertis devotè recitaverint, alios quindecim dies de injunctis sibi penitentis misericorditer in Domino relaxamus: obligatis verò, eas dumtaxat indulgentia concedimus, quæ literis nostris super reformatione novi Breviarii editis designantur, & hujusmodi B. Mariæ Virginis, aut Defunctorum Officium, vel septem Psalmos, aut Graduales recitantibus conceduntur.

Prelatis etiã
illud intro-
ducant.

§. 9. Mandantes omnibus & singulis Venerabilibus Fratribus nostris Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, & dilectis filiis Abbatibus, Prioribus, & ceteris Ecclesiarum Prelatis, ut reliqua omnia B. Mariæ Virginis, etiam per nos privatim constituta, ab omnibus ad recitationem hujusmodi quomodolibet adstrictis, ipsa verò vulgaris idiomatis & sermonis Officia etiam ab his qui nullo pacto ad id adstricti sunt, penitus omitti, rejici, atque vulgari; sic & pariter alia etiam latino sermone composita, etiam aliis libris inserta, Inquisitoribus prædictis ad effectum antedictum tradi & consignari juris opportunitis remediis curent, Officium vero istud nostrum B. Mariæ Virginis in omnibus & singulis suarum Civitatum & diocesium Ecclesiis, Monasteriis, Conventibus, Ordinibus, Militiis, Oratoriis, domibus, & locis etiam laicorum introducant, & tam ipsis quam ceteris omnibus Presbyteris, Clericis, & aliis utriusque sexus secularibus, & regularibus personis Ecclesiasticis, necnon Militibus etiam exemptis, quibus dicendi, recitandi, psallendique officium hujusmodi quomodolibet, ut præfertur, injunctum est, ut ex hujusmodi formula ubique illud recitare, & psallere procurent, prædicta institutione vel consuetudine ducentos annos superante (non tamen quod vulgaris sermonis officia) semper salva.

Concionato-
rib. & Con-
fessoribus
idem præci-
pit.

§. 10. Concionatoribus quoque verbi Dei, atque Confessoribus, ut in eorum predicationibus atque confessionibus omnibus utriusque sexus Christianis prohibitionem & abolitionem dictorum Officiorum vulgari idiomate, & sermone cõpositorum, quodque Inquisitoribus hæreticæ pravitatis quamprimum consignari debeant, insuper alterius quam hujus nostri Officii usum & lectionem periculo suspensionum non carere, ac illud & alia eo inserta, ut præfertur, recitantibus supradictam de injunctis sibi penitentis relaxationem nostram significare, & eos ad conformandum se in hoc prompta devotione, ritui, & ordinationi à nobis institutis excitare, ad usumque & recitationem hujusmodi nostri Officii pietatis zelo hortari studeant. Ceterum hæreticæ pravitatis Inquisitorum, quibus officia hæc & libros, tradi & consignari contingeret, munus & Officium præcipuum erit omnia, suspensiones & errores in fide Catholica redolentia omnino delere.

Illudque Ro-
mæ tantum
imprimi pos-
se declarat.

§. 11. Quod nostrum B. Mariæ Virginis Officium, ut ubique terrarum incorruptum, ac mendis & erroribus purgatum præfervetur, omnibus in nostro & S. R. E. Ecclesiæ domino, mediâtè vel immediâtè subiecto commorantibus, vel ad illud quovis prætextu advenientibus impressoribus, & aliis quibuscumque, sub amissionis librorum, ac quingentorum ducatorum auri de Camera ipso facto quoties contraverint officio Sanctiss. Inquisitionis applicandorum, reliquis verò in quacumque Orbis parte consistentibus sub excommunicationis latæ sententiæ &

aliis arbitrii nostri poenis inhibemus illud infra sex annos proximos separatim, vel aliis libris insertum, sub prædictis Hortuli animæ, Theauri spiritualis, vel compendii, aliis quibuscumque nominibus, & titulis imprimere, aut alibi quàm in Alma Urbe nostra, & antedicta Po. Rom. officina impressum tenere, recipere, donare, aut venundare publicè vel occultè audeant vel præsumant. Dictis vero sex annis elapsis, id etiam aliter non liceat, nisi cum nostra, & Romani Pontificis pro tempore, vel specialis ad id Commissarii Apostolici in singulis Christiani orbis Regnis, & Provinciis deputandi, expressa licentia.

Clausula
præserva-
tiva.

§. 12. Quas quidem nostra perpetua roboris firmitate subsistere, & ullo umquam tempore revocari, alterari, suspendi, limitari, aut moderari posse.

Forma publ.
hanc continet.

§. 13. In valvisque Principis Apostolorum de Urbe, necnon Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ de more publicari & affigi, per hujusmodique publicationem & affixionem, omnes & singulos in eis comprehensos, videlicet qui in Romana Curia adsint lapsò mense, qui verò alia loca intra montes, post tres, qui ultra incolunt, post sex menses, aut cum primum sibi Officium hoc nostrum venale propositum fuerit, ita volumus obligatos esse, & adstrictos, ac si ipsismet illæ coram lætæ, & intimatæ essent; ipsarum quoque exempla manu Notarii publici & sigillo Prelati Eccl. aut illius curiæ obsignata, vel etiam dicti Officii nostri Beate Mariæ Virginis voluminibus absque prædicto vel alio quopiam adminiculo, Romæ tamen, & in Officina antedicta impressa, eandem prorsus ubique fidem facere, quæ Præsentibus adhiberetur, si essent ostense vel exhibitæ.

Decretum
irritans.

§. 14. Et sic in præmissis omnibus & singulis per quoscumque Judices & Commissarios, etiam S. R. E. Cardinales, & causarum Palatii Apostolici Auditores in quavis causa & instantia, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari & interpretandi debere, necnon irritum & inane decernimus, quicquid secus super iis à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Clausula de-
rogatoria.

§. 15. Non obstantibus præmissis, ac in quibuscumque synodalibus, provincialibus, vel generalibus, ac universalibus Conciliis editis, aliisque etiam Apostolicis constitutionibus & ordinationibus, necnon Ecclesiarum, Militiarum, & Ordinum quorumcumque statutis, usibus, naturis, & consuetudinibus, etiam juramento roboratis, quibus omnibus & singulis, etiam si de illis, eorumque tenoribus specialis, expressa, & individua mentio habenda esset, illis alias in suo robore permanentibus, specialiter & expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Sanctio pœ-
nalis.

§. 16. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ abolitionis, interdicti, præcepti, permissionis, ablationis, iustionis, statuti, mandati, voluntatis, decreti, & derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursum.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1571. 5. Idus Martii, Pontificatus nostri anno 6.

Dat. P. An 6.
die 11. Mart.

Anno Incarnationis Dominicæ 1571. indictione 14. die verò 5. mensis Aprilis, Pontificatus Sanctiss. D. N. D. Pii divina providentia Papæ V. anno 6. retroscripta littera affixa & publicata fuerunt, & per aliquod temporis spatium dimissa in valvis seu portis Basilicæ Principis Apostolorum in Urbe, ac Cancellariæ Apostolicæ, necnon acie Campi Floræ, per nos Joannem Freyle & Scipionem de Othavianis, prælati ejusdem Sanctissimæ Domini Nostri Papæ Cursores.

Publicatio.

Petrus Aloysius Gaya Mag. Curf.

CXXIII.

Jurisdictione S. R. E. Cardinalis protectoris & Judicis causarum Archiconfraternitatis Trinitatis nuncupatae ad pauperes Peregrinos, atque Convalescentes recipiendos, pieque alendos in Urbe instituta.

Institutionem habes in const. Pii IV. num. 6. Illius, fol. 7. ubi alia notavi.

Edita An. D. 1571.

PIUS PAPA QUINTUS,

Motu proprio, &c.

Causa hujus const.

Commendatio Confraternitatis.

Facultas Protectoris, & Judicis Archiconfraternitatis cognoscendi quoscunque causas illius interesse concernente, & ab aliis Judicibus reasumendis.

Cum sicut accepimus, Archiconfraternitas, seu Societas sub invocatione Sanctissimae Trinitatis Convalescentium, & Peregrinorum Regionis Arenulae de Urbe, ejusque Custodes, & Confratres, ob lites, quaestiones, controversias civiles, criminales, profanas, spirituales, meras, & annexas, inter Archiconfraternitatem, seu Societatem, ejusque Administratores, Gubernatores, & Deputatos hujusmodi per diversa Urbis Tribunalia litigantes occasione locationum, censuum, donationum, hereditatum, legatorum, domorum, & diversarum aliarum rerum, tam agendo quam defendendo, pro ipsius Archiconfraternitatis, seu Societatis juribus defendendis, & consequendis iugiter implicita exsistat, ex quo sepius quaplorumque damna & interesse patiatur, ac impensa litis valorem rei de qua ex tempore agitur saepenumero exsistat.

§. 1. Nos Archiconfraternitatem, seu Societatem praedictam, in qua plurima charitatis & misericordiae opera, tam pauperes, & alias quasvis personas utriusque sexus Christianissimas, ex quibuscumque mundi partibus ad Urbem peregrinantes ad Hospitale hujusmodi devotionis causa confluentes recipiendo, & eos tribus ac quodcumque pluribus diebus hospitando, & nutriendo, ac charitative tractando, quam pauperes convalescentes, qui dum ab infirmitate liberi, sed debiles, ex aliis Hospitalibus emissi, quo se recipiant non habentes, in eodem suo Hospitali similiter excipiendo, ac eos non solum corporaliter donec robustiores evadant pie alendo, verum etiam rudes & ignaros interim dum ibidem morantur, in mandatis Domini audiendo, in divini nominis obsequium, & S. R. E. exaltationem exercere noscuntur, quantum cum Deo possumus sublevare volentes.

§. 2. Motu simili, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolica potestate plenitudine; Venerabili fratri nostro Othoni S. R. E. Cardinali Augustano nuncupato, nunc, & pro tempore Archiconfraternitatis, seu Societatis hujusmodi existent, & ab eadem Confraternitate eligendo Protectori, omnes, & singulas causas, quae quaestiones, lites, & controversias inter dictam Archiconfraternitatem, seu Societatem, seu ejusdem dilectos filios Custodes, Officiales, & Ministros, & quascunque alias personas, laicas, seu Ecclesiasticas quascunque gradus, ordinis, conditionis, dignitatis, & praeminentiae existentes, etiam Cardinalatus dignitate fulgentes, Universitates, Societates, Congregationes, Monasteria, & alia loca pia hujusmodi, etiam si coram S. R. E. Camerario, Clericis, & Praesidentibus, Camerae Apostolicae, & ejusdem Camerae causarum Auditori generali, necnon Vicario, Gubernatore, ac Senatore Urbis praedictae, eorumque Locumtenentibus, Collateralibus, & Judicibus, ac dictae Urbis causarum appellationum Capiteano, & Sacri Palatii, etiam causarum Auditoribus, & ejusdem S. R. E. Cardinalibus aliisque Judicibus, ordinariis seu delegatis, hucusque moras pendentes, & quomodolibet movendas, de, & super quibuscunque locationibus, venditionibus, legatis, fideicommissis, testamentis, hereditatibus ac illarum distributionibus, ac quoruncunque iurium, & actionum certioribus, aliisque quibuscunque, inter vivos & causa mortis, & quasi contrahentibus, etiam vigore obligationis in forma Camerae execution. revocationibus, bonis, rebusque iuribus & actionibus ad Archiconfraternitatem, seu Societatem praedictam, ejusque Custodes, Gubernatores, Administratores, Officiales, & deputatos Ministros eorumque litis confortes,

tam conjunctim quam divisim, ac tam active quam passive, tam secundario quam principaliter interesse concernentes spectantibus, & pertinentibus ad Archiconfraternitatem, seu Societatem ipsam in quacunque instantia (quorum omnium, & singulorum statum, & merita, necnon Judicium & colligationum, nomina, & cognomina, & qualitates, ceteraque etiam de necessitate exprimenda pro expressis habentes) in statu & terminis in quibus reperiuntur, nunc harum serie ad nos advocantes, illasque omnes & singulas, motas & pendentes ac quam, & quas Archiconfraternitas, seu Societas, Gubernatores, Officiales, Administratores, & Deputati, necnon pauperes ibi degentes, habere velint contra easdem personas, Universitates, Monasteria, & alia hujusmodi pia loca, pro rebus, bonis, hereditatibus, iuribus, actionibus hujusmodi, nunc & pro tempore Archiconfraternitatis, seu Societatis praedictae existenti Protectori, una cum illarum dependentibus, emergentibus, incidentibus annexis.

§. 3. Summarie, simpliciter, & de plano, & sola facti veritate inspecta, ac sine strepitu, & figura iudicii, per seipsum, alios & se deputandos in quacunque instantia, usque ad finem audiendi, cognoscendi, seu committendi, reasumendi auctoritate Apostolica tenore praesentium committimus, & mandamus. Ipsiusque Protectorem nunc & pro tempore existentem in dictis causis motis pendentibus, ac in futurum movendis, in iudicio ordinarium cum facultate easdem causas in quacunque instantia, usque ad finem, & per seipsum, seu alium, vel alios ejus Auditores deciden, & terminan, & aliis facultatibus praedictis, facimus, constituis & deputamus.

§. 4. Necnon cum potestate citandi & inhibendi quos, quibus, & quoties opus fuerit, in Curia & extra eam, etiam per edictum publicum, confiso summarie & extrajudicialiter de non tuto accessu; eidemque ac quibuscumque aliis ejusdem Urbis Judicibus, ac personis, tam Ecclesiasticis quam secularibus, quibus, & quoties opus fuerit, etiam sub sententiis, censuris & poenis Ecclesiasticis, & pecuniariis, quibus sibi, seu ab eo pro tempore deputando Auditori videbitur inhiberi, & in eventum non partitionis contra inobedientes, contumaces & rebelles ad declarationem incursum poenarum & censurarum hujusmodi ex actionem, illarumque aggravationes, & reaggravationes, & alias juxta morem & stylum Curiarum Urbis in similibus servari solitum, & prout sibi videbitur procedendi, sententiasque suas debite executioni demandandi, sive demandari faciendi, auxiliumque brachii secularis ad hoc si opus fuerit invocandi omniaque alia, & singula in praemissis & circa ea quomodolibet necessaria & opportuna, faciendi, gerendi & exequendi.

§. 5. Ac in omnibus & singulis causis praedictis singulis diebus, & locis, feriatis & non feriatis, praeterquam in honorem Dei, etiam tempore feriarum ob necessitatem hominum indictarum, & indicandarum procedendi.

§. 6. Ac quemcumque Notarium qui bene visum in causis hujusmodi deputandi.

§. 7. Volumus etiam, quod citationes, monitiones, & intimationes, quae in dictis causis fieri oportuerit, etiam per Curiae Almae Urbis Vicarii, & quoscunque alios mandatarios fieri possint.

§. 8. Et quicumque executores Urbis, possint & debeant, effectualiter executioni demandare omnes & singulas sententias, decreta & mandata praedicti Cardinalis Protectoris, sive ab eo deputatorum, quique non obstante regula Cancellariae sub ejus parvo sigillo expediri possint.

§. 9. Et insuper Archiconfraternitatem, seu Societatem praedictam ejusque Priores, Administratores, & Gubernatores, ac Deputatos hujusmodi ex nunc deinceps occasione praemissorum, principaliter seu secundario alibi quam coram praedicto Card. Protectore convenit, aut ad alios conveniri constringi non posse; ac processus, sententias, & decreta per alios, seu alios, tam ordinarios quam delegatos Judices in causis

Summarieque &c. procedendi.

In Curia & extra inhibendi.

Et singulis diebus, & locis praeterquam in honorem Dei feriatis procedendi. Notarioque Mandatarii huic iudicio serviant omnes.

Executoresque omnium Curiarum.

Sententiae aliorum iudicum nullae sint.

Clausula
præservativa.

prædictis quomodolibet pro tempore formata, lata, & facta, cum inde secutus quibuscumque, nulla, irrita, & inania, nulliusque roboris vel momenti fore.

§. 10. Præsentemque cedulam sub quibusvis revocationibus, suspensionibus, & exemptionibus, limitationibus, seu renovationibus, similium vel dissimilium concessorum, & gratiarum, etiam per Nos & successores nostros Romanos Pontifices, & Sedem prædictam, vel ejus Legatos, etiam per regulas Cancellariæ Apostolicæ pro tempore factas, nullatenus comprehendere, sed semper ab illis penitus & omnino exceptas, ac quoties illæ emanabunt præsentem cedulam in pristinum robur restitutam esse, & censei debere, nec eidem cedulæ per quascumque litteras, etiam qualvis regulas generales & speciales, etiam derogatorias derogatorias, irritantiaque, & alia decreta, sub quacumque verborum expressione continentes posse, & si illi ullo unquam tempore, ex aliqua etiam quantumvis necessaria & urgente causa derogari contingat, nisi tenor cedule de verbo ad verbum nihil penitus omisso insertus, & hujusmodi derogatio per trinas distinctas litteras eorundem tenorem continentes tribus similibus distinctis vicibus, Administratores, Primicerius, Gubernatores, Deputatis, & Confratribus hujusmodi, omnibus & singulis legitime intimata, & insinuata fuerit, eorumque ad id accesserit assensus, derogationem hujusmodi nemini suffragari, & nullius esse roboris, vel valoris.

Clausula
sublata.

§. 11. Et sic per quoscumque Judices quavis auctoritate fungens, etiam S. R. E. Cardinales, ac causarum Palatii Apostolici Auditores sublata, ac irritum judicari, & definiri debere.

Clausula de
rogatoria.

§. 12. Non obstantibus fel. rec. Bonif. Papæ VIII. prædecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, dummodo non ultra tres dies aliquis vigore Præsentium ad iudicium non trahatur, necnon constitutionibus & ordinibus Apostolicis, necnon Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, ac hospitalium, Ecclesiarum, Monasteriorum, & aliorum quorumcumque piorum locorum, & Ordinum juramento, corroboratis statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis Conservatorique, exemptionibus, & litteris Apostolicis eidem, ac dilectis filiis Populo Romano, eorum Judicibus, Notariis, & Tribunalibus, eorumque personis, per quoscumque etiam Romanos Pontifices prædecessores nostros, & Nos, ac dictam Sedem, etiam motu & scientia similibus concessis, approbatis & innovatis, etiam disponendis quod causæ hujusmodi ad forum, seu Curiam Capitoli reasumendi debeant. Quibus omnibus & singulis etiam si pro illorum sufficienti derogatione, aliis de illis illorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita, observata, inserti forent. Præsentibus pro sufficienter expressis habentes illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat, specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque, etiam in vim contractus concessi & concedendi, vel si prædictis, aut quibusvis aliis communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendendi, vel excommunicari, aut extra, vel ultra certa loca, Curias, & Tribunalia, ad iudicium trahi non possint, per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem; & quibuslibet aliis privilegiis, indultis Apostolicis, generalibus vel specialibus, quorumcumque tenorem existant, proque Præsentibus non expressa aut totaliter non inserta, jurisdictionis ipsius Protectoris, explicatio impediri valeat quomodolibet, vel differri, & de quibus eorundem totis tenoribus, specialis, specifica, & expressa, ac de verbo ad verbum, non autem per regulas generales idem importantes, mentio seu quavis alia expeditio habenda sit, in præsentibus litteris mentio specialis.

Fides exem-
porum.

§. 13. Volumus autem Præsentium solam signaturam sufficere, & ubique fidem facere, in iudicio & extra, regula contraria non obstante, & earundem transumptis, etiam impressis manu Notarii publici

subscriptis, & sigillo Protectoris, seu Archiconfraternitatis, seu Societatis hujusmodi munitis, eandem prorsus fidem adhiberi, quæ adhiberetur Præsentibus manu nostra subscriptis, ac etiam litteras ad partem expediri posse.

Placet Motu proprio. M.

Dat. Romæ apud S. Petrum, 12. Kal. Aprilis, anno sexto.

Facultas Magistri Generalis, & Prælatorum Ordinis Fratrum Prædicatorum S. Dominici creandi, & deputandi Fratres ipsius Ord. in Notarios, pro executione mandatorum Apostolicorum.

De hoc Ordine alia notavi sup. in consil. a. Honor. III. Religiosam. fol. 64.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Debitum pastoralis officii nobis, meritis licet imparibus ex alto commissi, nos admonet & inducit, ut circa Religionum quarumlibet, præsertim Ordinis Fratrum Prædicatorum S. Dominici, ad quem patrio quodam jure peculiarem gerimus paternæ caritatis affectum, statum prospere dirigendum, & rescripta Apost. quacumque publicam, ac alias privatam dicti Ordinis & Fratrum, sive Monialium ejusdem, utilitatem concernentia, per probos & idoneos ejusdem Ord. Religiosos, personis quibus opus fuerit intimanda & insinuanda, ac debite exequenda, studiis invigilemus assiduis, ac aliis omnibus illorum incommodis, & necessitatibus consulamus, prout in Domino conspicimus salubriter expedire.

§. 1. Cum itaque sicut nobis dum in minoribus constituti essemus, satis comprobatum fuit, quod Fratres Religiosi, & Moniales dicti Ord. fratrum Prædicatorum S. Dominici, sive Ordinem ipsum, vel illius Regulam profitentes, quem quidem Ordinem expresse professi fuimus, tam universaliter quam particulariter, quamplura damna, incommoda, & detrimenta patiuntur, & impensas sustinent ex eo, quod Notarii tam clerici quam laici sæculares, etiam Apostolica, Imperiali, Regali, aut alia auctoritate creati & constituti, in plerisque mundi partibus, regionibus, regnis, provinciis, dominiis, & locis existentes, & eis oriundi, sive aliis inibi commorantes, mandata, concessionem, gratias, privilegia & indulta, aliaque rescripta Apost. tam ad publicam, quam privatam utilitatem emanata, sive concessa, & bonum sive commodum, publicum sive privatam concernentia, dominis temporalibus, sive Possessoribus, Regibus, Ducibus, Principibus, Marchionibus, ac aliis Dominis & personis, quibus intimanda, sive insinuanda veniunt, ac intimare & insinuare oportet, intimare, notificare, sive insinuare, variis confictis respectibus reculant, sive non audent contra eorumdem officii liberum & publicum exercitium, debitamque Sedi Apostolicæ obedientiam, ac in non modicum publicæ & private utilitatis & commodi, præjudicium & detrimentum.

§. 2. Nos igitur cupientes, quantum cum Deo possumus in præmissis, Ordini & Fratribus præfatis, ac etiam Monialibus ipsis de opportuno remedio providere, & incommodis, detrimentis, expensis, & damnis eorum obviare, neque mandata, privilegia, gratias, concessionem, indulta, & rescripta Apostolica, in genere vel in specie dicto Ordini, seu ipsius Ordinis Magistro generali Provincialibus, aliisque Superioribus, Prioribus, & Fratribus, & eorum singulis, dictisque Monialibus, sive earundem Abbatissis, Priorissis, & earundem etiam singulis ejusdem Ordinis, sive dictum Ordinem, & illius regulam profitentibus, quomodolibet, in genere vel in specie concessa, aliaque mandata & rescripta Apost. publicam vel privatam ipsius Ordinis utilitatem quomodolibet concernentia, & emanata, ob id debito careant effectu, & vacua remaneant; providere volentes, ipsosque Ordinem, ac illius Magistrum generalem, Vicarium, Procuratorem, & Fratres, ac Abbatissas, Priorissas,

Dat. P. An. 6.
die 22. Mart.

CXXIV.

Edita An. D.
1571.

Proconium.

Causa hujus
consilii.

Privilegium
de quo in
rubri.

Hoc idem
concesserat
Jul. III. die
27. Febr.
1574. sed ejus
bullam, stan-
te hac penio-
ri, consilio
prætermisit.

& Moniales, eorumque singulos specialibus favoribus & gratis prosequentes, & à quibuscumque excommunicationibus, suspensionibus, & interdictis, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & poenis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum Præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & abolutos fore censentes, necnon nomina cognomina Magistrum generalis, Provincialium, Vicariorum, Procuratorum, & aliorum Superiorum, ac dictarum Abbatissarum, Priorissarum, & Monialium, invocationesque denominationes, & dependentias Monasteriorum, Domorum, Conventuum, & aliorum Regularium locorum, tam virorum quam mulierum dicti Ordinis, ac etiam mandatorum, concessionum, indulgendorum, & scriptorum, aliarumque gratiarum tenores, Præsentibus pro expressis habentes, Motu proprio, non ad alicujus nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, modernis, & pro tempore existentibus dicti Ordinis Magistro generali, Vicariis, & Provincialibus, tam citra quam ultra, ac aliis ubilibet constitutis. Quod in unaquaque eorum Provincia, unum, duos, tres, quatuor, vel quinque, aut plures eis bene viros dicti Ordinis Religiosos, seu Fratres probatos, tamen, ac fide & doctrina idoneos, & ab ipsis approbatos, in notarios creare, constituere & deputare Qui sic creati, constituti, & deputati, sine aliquo respectu, & omni cessante re recusatione, liberè quoties requisiti fuerint, omnia & singula mandata, privilegia, concessionem, gratias, & indulta Apostolica, aliaque tam universalis, quam particularia dicti Ordinis, ac quibuscumque aliis, quæ de observantia sunt tantum locis, domibus, Conventibus, Monasteriis, & Ecclesiis, tam virorum quam mulierum, & seu ejusdem Ordinis Magistro generali, Provincialibus, Vicariis, Prioribus, & aliis superioribus Fratribus, ac Abbatissis, Priorissis, Monialibus, & aliis personis sub Regula dictorum Fratrum degentibus, & quæ observantia tantum in genere vel in specie, ut ad universam sive privatam utilitatem concessa & emanata scripta Apostolica eisdem Regibus, Ducibus, Principibus, Marchionibus, Comitibus, Baronibus, & Dominis, aliisque personis Ecclesiasticis, & secularibus quibuscumque, ubi & quoties opus fuerit, ac ad id requisiti fuerint, notificare, & intimare. Ac eisdem juxta mandatorum, concessionum, indulgendorum, privilegiorum, & scriptorum hujusmodi formam, contentum, & tenorem monere, & requirere, aliaque omnia & singula circa ea requisita & opportuna jacerere, agere, exercere & exequi, ac de eisdem omnibus & singulis, publicos, & publica, actus & instrumenta coram testibus ad hoc requisitis conficere, & stipulari, ac in notam redigere, & exinde semel vel pluries, prout ad id requisiti fuerint, unum vel plures, ac plura, publicos & publica, actus, & instrumenta quibus eadem prorsus fides adhibeatur in judicio & extra, ac ubique, ac si per alios quocumque publicos & authenticos rogatos notarios stipulata, confecta & publicata, & authenticata fuissent conficere, & debitis signis & characteribus subscribere, publicare, & authenticare, liberè & licitè possint & valeant Apostolica auctoritate tenore Præsentium licentiam & facultatem impartiri, concedimus & indulgemus; eisdemque actis, notis, instrumentis, & scriptis per dictos Religiosos ut præfertur Notarios deputatos stipulatis, confectis & ut præfertur authenticatis, plenam & indubitam fidem ubique, tam in judicio quam extra adhibere, ac eosdem sic intimatos, monitos, & requisitos eis affici & archari debere volumus, statuimus, & ordinamus.

Iussio quod prædicti notarii non impediantur.

§. 3. Mandantes propterea in virtute sanctæ obedientiæ, & indignationis nostræ, ac suspensionis à divinis, quo ad Archiepiscopos, & Episcopos, quo ad alios vero inferiores sub majoris excommunicationis lære sententiæ poenis, locorum Ordinariis, & aliis quibuscumque personis, cujuscumque status, gradus, ordinis, & conditionis existentibus, & quacumque etiam

dictæ Sedis auctoritate, facultate, seu potestate, etiam Legati de latere, ac Cardinalatus honore fungentibus, ne ipsos Notarios, ut præfertur deputatos & electos, sive eorum aliquem in executione supradictorum omnium quovis modo impediant, seu impedire aut perturbare audeant vel præsumant.

§. 4. Ac decernentes præsentibus litteris nullo umquam tempore de subreptionis vel obreptionis, aut nullitatis, seu intentionis nostræ vicio seu defectu, notari seu impugnari, ac sub quibuscumque revocationibus, derogationibus & aliis contrariis dispositionibus à nobis vel Successoribus nostris emanandis, comprehensas, sed semper ab illis exceptas existere, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum statum, & validissimum, etiam sub data per eosdem Magistrum generale Provinciales, & alios supra nominatos eligenda, concessas, restitutas, & plenarie reintegratas existere. Et sic per quoscumque; Judices, & Commissarios quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S.R.E. Cardinales, sublata eis & eorum censuræ quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate & auctoritate, judicari, & definituri debere, ac irritum & inane, quicquid fecus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 5. Quocirca dilectis filiis Jacobo tit. S. Marie in Cosmedin. presb. Card. de Sabelis nuncupato, nostro in Alma Urbe Vicario, & Curie causarum Cam. Apost. generali Auditori, & Cancellario Apost. Regenti, nunc, & pro tempore existentibus, per Præsentem motu simili mandamus quatenus ipsi, vel duo aut unus eorum, per se vel alium, seu alios præsentibus litteras, & in eis contenta quacumque; ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Magistrum Gener. Procur. Provincialium, & aliorum prædictorum, seu alicujus eorum fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra illos, & eorum singulos, indulto, concessione, voluntate, statuto, ordinatione, mandato, & decreto nostris hujusmodi, juxta eorumdem Præsentium tenorem, pacifice frui, & gaudere: Non permittentes eos desuper per quoscumque; quomodolibet, & rebelles, per sententias, censuras, & poenas Ecclesiasticas alia juris remedia, appellatione postposita compescendo, ac legitimis super his habendis servatis processibus sententiam, censuras, & poenas prædictas, etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 6. Non obstantibus sel. rec. Bonif. PP. VIII. prædecessoris nostri de una, & Concilio generali de duabus dietis, dummodo quis auctoritate Præsentium ultra tres dietas ad iudicium non trahatur, aliisque quibuscumque constitutionibus & ordinationibus Apost. ne non in provincialibus, & synodalibus Conciliis editis, generalibus vel specialibus constitutionibus, & ordinationibus, ac etiam juramento, confirmatione Apost. vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis etiam dictæ Sedis de latere Legatis, Nunciis, locorum Ordinariis & aliis quibuscumque personis in præjudicium præmissorum per quemcumque Rom. Pont. etiam prædecessores nostros, ac Nos & Sedem præfatam tam sub plumbo, quam in forma Brevis, & etiam motu & scientia similibus concessis, approbatis, & innovatis: Quibus omnibus, etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata, inserti forent, Præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim, ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras

Clausulæ præservativa hujus privilegii.

Executoriis deputatio.

Derogatio contrariarum.

Fides tran-
sumptorum.

Dat. P. An. 6.
die 21. Marc.

CCXV.

Edita An. D.
1571.

Exordium.

Confirmatio
omnium gra-
tiarum Ordi-
nis, cum
clausula, qua-
tenus &c.

Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.
§. 7. Volumus autem, quod transumptis Præsentium manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides in iudicio, & extra ubique locorum adhibeatur, & adhibere debeat, quæ litteris ipsi originalibus adhiberetur si exhibitæ forent vel offensa.

Quod Fratres Eremitæ S. Hieronymi Congregationis B. Petri de Pisis, regulam S. Augustini dudum professi, ultra gratias dictæ Congregationis, perscrutantur privilegiis omnibus ab isto Pontifice Mendicantium Ordinibus elargitis.

De his Fratribus notavi sup. in consil. 12. Eugen. IV. fol. 329. Provenit, in Tomo I.

PIUS PAPA QUINTUS.

Dilectis filiis Congregationis Fratrum Eremitarum B. Petri de Pisis Ordinis S. Hieronymi.

Religionis zelus, eximiumque regularis observantiæ desiderium, ac illibatus sinceræ devotionis erga Nos & Sedem Apostolicam affectus, quibus, in Domino flagrare comprobamini, promerentur ut nostram quoque & Sedis prædictæ paternam sententiis benignitatem, & clementiam.

§. 1. Hinc est quod Nos Congregationem vestram Fratrum Eremitarum B. Petri de Pisis Ordinis S. Hieronymi, dictique Fratres, & alias ejusdem Congregationis personas, aliqua nostra, & dictæ Sedis benevolentia amplexi, ac specialibus favoribus & gratis prosequi volentes, Motu proprio, non ad vestram, aut alicujus vestrum, seu alterius pro vobis super hoc nobis oblata petitionis instantiam, sed de mera liberalitate, & ex certa scientia nostra, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, omnia & singula privilegia, facultates, libertates, immunitates, exemptiones, prærogativas, indulta, & alias gratias universales, spirituales, & temporales, vobis, & dictæ vestræ Congregationi, illiusque capitulo, & personis, ac monasteriis, & locis per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, & etiam forsitan Nos ac Sedem prædictam & etiam illius Legatos, necnon etiam locorum Ordinarios quorumlibet hæcenus, & in præsentem usque diem, ac etiam à quantumvis antiquo tempore concessa (quatenus sacri Tridentini Concilii decretis, & regulari observantiæ contraria non sint, & quoad ea quæ decretis Concilii, & regulari observantiæ huiusmodi non contrariantur) necnon desuper concessas litteras, instrumenta, documenta, & scripturas quascumque; & in eis contenta, ac inde secuta, & sequenda quæcumque; illarum, & illorum, ac præmissorum omnium, & aliorum necessariorum tenores, & etiam datas cum inde secutis, ac si de verbo ad verbum infererentur, Præsentibus pro plenè, & sufficienter expressis, & insertis habentes, & haberi decernentes, Apostolica auctoritate tenore Præsentium perpetuò confirmamus, & approbamus, ac innovamus, & etiam de novo perpetuò concedimus, necnon illis plenariæ, inviolabilis, & perpetuæ firmitatis Apostolicæ robur adjicimus, omnesque & singulos, tam juris quam facti, & quoscumque alios defectus, si qui forsitan intervenerint quomodolibet in eisdem supplementis, illaque valida, & efficacia fuisse, esse, & perpetuò fore, ac suos plenarios, & integros effectus sorti, & obtinere, necnon vobis, & Congregationi vestræ prædictæ, illiusque Fratribus, personis, monasteriis, & locis suffragari, ac ab omnibus, & singulis, quos ea quomodolibet concernunt, & pro tempore concernent, inviolabiliter perpetuò observari debere, vosque & Congregationem vestram, ac illius Fratres, personas, Monasteria & loca super præmissis, & infra-

scriptis, per quoscumque quavis auctoritate quomodolibet molestari vel impediri non posse, decernimus, & declaramus.

§. 2. Districte etiam inhibentes omnibus, & singulis personis cujuscumque dignitatis, status, gradus, ordinis vel conditionis ubilibet existentibus, in virtute sanctæ obedientiæ, & sub indignationis nostræ, ac aliis arbitrii nostri poenis, ne vos aut aliquem vestrum super præmissis, per se vel alium seu alios, publicè vel occultè, directè vel indirectè, quovis quæsito colore vel ingenio quomodolibet molestare, inquietare, impedire, vel perturbare audeant seu præsumant.

§. 3. Ac insuper de omnipotentis Dei misericordia, & beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus auctoritate consisti, vobis & dictæ vestræ Congregationi, illiusque Fratribus, & personis, ac vestrum & eorum singulis plenariam omnium peccatorum vestrorum indulgentiam, & remissionem à culpa, & poena in forma Jubilæi amplissima, quarto die Dominico cujuscumque quadragesimæ, in perpetuum rei memoriam professionis trium votorum, quam vos Fratres dictæ Congregationis, præeunte dilecto filio Fratre Joanne Baptista de Monfelice, vestro, & hujus Congregationis generali, prompto, & libenti animo in manibus nostris solemniter sub regula S. Augustini, & sub constitutionibus dictæ Congregationis, Romæ in Ecclesia monasterii sancti Honuphrii die decima octava mensis Martii, Anni Domini millesimi quingentesimi sexagesimi noni emisisti eisdem auctoritate, & tenore misericorditer in Domino perpetuò concedimus, & impartimur.

§. 4. Et præterea vos, & eandem Congregationem vestram, illiusque Fratres, & personas, ac monasteria & loca, bullæ confirmationis, novæque concessionis privilegiorum; omnium Ordinum Mendicantium per nos nuper, seu dudum editæ, illius etiam tenores, & datam cum inde secutis Præsentibus pro plenè & sufficienter expressis & insertis habentes, in omnibus, & per omnia, ac ad instar dictorum Ordinum, & æque principaliter, ex nunc & perpetuò, auctoritate & tenore prædictis aggregamus, ac pro aggregatis haberi, censi, & teneri, in iudicio, & extra iudicium ubilibet, volumus, declaramus, & mandamus.

§. 5. Præsentibus quoque de subreptionis vel obreptionis, seu nullitatis vitio, aut intentionis nostræ, vel quovis alio defectu notari vel impugnari, seu aliis quomodolibet infringi, vel retractari, suspendi, vel revocari, seu eis in aliquo derogari nullatenus unquam posse, sed illas semper validas, & efficaces existere, ac suos plenarios & integros effectus sorti & obtinere, necnon ab omnibus, & singulis, quos ea quomodolibet concernunt, & pro tempore concernent, inviolabiliter ut præsertur, observari, siquidem etiam in præmissis, & supradictis omnibus, & singulis ab omnibus censi.

§. 6. Ac ita per quoscumque Judices, & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, etiam locorum Ordinarios, etiam tamquam à Sede Apostolica delegatos, necnon etiam Rotæ Auditores, seu Locateneres ac S. R. E. Cardinales, etiam de latere Legatos, seu Nuncios, eorumque Vicelegatos, sublati eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate & auctoritate, in quavis causa, & instantia judicari, sententiarum, & definiri debere, necnon quicquid super his à quocumque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter attentari contingerit, irritum & inane decernimus, & declaramus.

§. 7. Quocirca dilectis filiis Curie causarum Camera Apostolicæ generali Auditori, ac Sedis Apostolicæ Legatis etiam de latere & Nunciis ubilibet, nunc & pro tempore existentibus, præsentibus, & futuris, per præsentem committimus, & mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum, si & postquam Præsentibus nostræ litteræ eis præsentatæ fuerint, per se vel alium, seu alios litteras ipsas, & in eis contenta quæcumque, ubi, & quando opus fuerit, ac quoties super hoc pro parte vestra, aut ali-

Inhibito
contra per-
turbatores.

Indulgentia
pro Congre-
gatione.

Tu ad hoc
attende bul-
lam S. D. N.
Pauli V. n. 6.
Romanus.

Communica-
tio omnium
gratiarum ab
isto Pont.
Ordinibus
Mendican-
tium conce-
ssarum.

Tu eas vide
sup. in consil.
41. Et si.

Clausula præservati-
va.

Clausula sub-
lata &c.

Executorum
deputatio.

Clausulæ de-
rogatoriæ.Dat. P. An. 6.
die 30. Mart.

CXXXVI.

Edita An. D.
1571.

Procerum.

cujus vestrum fuerint requisiti, solemniter publicantes, vobisque & cuilibet vestrum in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra præsentem litteras, & in eis contenta hujusmodi, firmiter observari, vosque, & quemlibet vestrum illis pacifice frui, & gaudere: Non permitte-tes vos aut vestrum quempiam per quoscumque contra earumdem Præsentium tenorem desuper quomodolibet indebitè molestari, contradic-tores quoslibet, & rebelles, per censuras, & penas Ecclesiasticas, ac alia opportuna juris remedia, appella-tione postposita compescendo, ac legitimis super his habendis servatis processibus, censuras, & penas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc si opus fuerit auxilio brachii sæcularis.

§. 8. Non obstantibus felicis recordationis Boni-facii Papæ Octavi prædecessoris nostri, qua cavetur, nequis extra suam civitatem vel Diocesim, nisi in certis exceptis casibus, & in illis ultra unam dietam à fine suæ Diocesis ad iudicium evocetur, seu ne Ju-dices à Sede Apostolica deputati, extra civitatem vel Diocesim in quibus deputati fuerint, contra quoscumque procedere, seu alii vel aliis vices suas committere præsumant, ac in Concilio generali edi-ta de duabus dietis, dummodo ultra tres dietas ali-quis auctoritate Præsentium ad iudicium non traha-tur, & quibuscumque aliis Apostolicis, ac universalibus provincialibusq; & synodalibus, specialibus vel gene-ralibus constitutionibus, & ordinationibus, necnon etiam juramento, confirmatione Apost. vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, etiam quibuscumque personis, & locis, in genere vel in specie sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque etiã derogatoriis derogatoriis, aliisq; efficacioribus, & insolitis clausulis, necnon irritan-tibus, & aliis decretis, ac etiam motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, & etiam consilio-raliter, ac aliis quomodolibet, etiam iteratis vici-bus concessis, approbatis, & innovatis, quibus om-nibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, aliàs de illis eorumq; totis tenoribus specialis, spe-cifica, individua, & expressa, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem im-portantes, mentio seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita obser-vata, inserti forent, Præsentibus pro sufficienter ex-pressis habentes, illis aliàs in suo robore perman-suris, hac vice dumtaxat harum serie specialiter, & ex-pressè derogamus. Aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litters Apostolicas, non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi men-tionem.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Pisca-toris, die trigesima Martii, millesimo quingentesi-mo septuagesimo primo, Pont. nostri Anno sexto.

Reductio ad terminos juris communis, constitutio-nem à Sixto IV. Leone X. & Pio IV. ac aliis Pon-tificibus editarum, super Jure congrui, & super novis (exceptis tamen sacris aut publicis) ædifi-ciis construendis, aut ampliandis in Urbe.

Hanc reductionem revocavit Greg. XIII. infra in hoc Tomo II. & amplissimam desuper edidit constitutio-nem nu. 22. Qua publicè ubi videas supradictorum Pont. constitutiones indicatas.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

AD hoc nos Deus militanti Ecclesiæ præficere dignatus est, ut singulorum Prædecessorum

nostrorum gesta (eo inspirante qui dat spiritum bo-num petentibus se) revolventes, ea quæ certis tunc suadentibus rationabilibus causis emanarunt, ex aliis non minus attendendis rationibus ad rationis tramitem reducamus, prout rerum, & temporum qualitate digesta salubriter in Domino conspiciamus expedire.

§. 1. Sanè licet aliàs fel. rec. Sixtus Papa IV. Mo-tu proprio, & ex ejus certa scientia, ac de Aposto-licæ potestatis plenitudine statuerit, & ordinaverit, quod tunc & pro tempore existentes Romanæ Eccle-siæ Camerarius, & Magistri ædificiorum, & stratarum dictæ Urbis, ad requisitionem dominorum quorum-cumq; domorum & aliorum bonorum, tenerentur in certis expressis casibus cõpellere vicinos ad domos, & alia bona expressa vendendum pro pretio per pe-ritos estimando, quodque vicini vendere volentes nonnisi vicinis emere volentibus vendere possent, & aliàs ac latius prout in dicti Prædecessoris litteris continetur sub dat. Romæ apud S. Petrum, Anno In-carnationis Dominicæ millesimo quadringentesimo septuagesimo, prid. Kal. Julii, Pont. sui anno nono.

§. 2. Et successivè Leo Decimus sub dat. Romæ apud S. Petrum Anno Incarnationis prædictæ 1516. quarto nonas Novemb. Pontificat. sui Anno quarto.

§. 3. Ac Pius IV. sub dat. Romæ apud S. Marcum, Anno Incarnationis prædictæ millesimo quingente-simo sexagesimo quinto, decimo Kal. Septemb. Pont. sui anno sexto, & alii Romani Pontifices prædecesso-res nostri litteras prædictas Sixti confirmaverint, in-novaverint, declaraverint, ampliaverint, & extende-rint, & aliàs prout latius in dictis litteris continetur.

§. 4. Cum autem sicut accepimus, occasione littersarum prædictarum diversæ lites, quæstiones, & controversiæ ortæ, ac diversa gravamina, & læsio-nes, perturbationes, & incommoda diversis perso-nis generata, & illata, ac litteræ hujusmodi, quæ correctoriæ juris communis existant, secundum prop-riam significationem stricte interpretari deberent, rigorosæ executioni, etiam in casibus in illis forsan non expressis demandatæ fuerint, & in dies deman-dentur, in earumdem personarum animorum mole-stiam non modicam, ac propterea plurimorum ad nos querelæ delatæ fuerint, & in dies deferantur, conquerentium potissimum de rigore, vel potius in-justitia litterarum prædictarum.

§. 5. Nos attendentes quod ea quæ juri communi, & sacris Canonibus cõtrariantur, & ex certis neces-sitatibus imminentiibus, & ita forsan requirentibus, statuta, & admittuntur, perpetua esse non debent, & quod si legi civili multa rigorosa admittenti gravis visa est injuria quæ inani honestatis colore velatur, ut homines de rebus suis facere, aliquid cogantur inviti, neque suo arbitratu vendenda distrahere pos-sint, & propterea constitutiones cassaverint, quæ li-berum arbitrium distrahendi res proprias impedi-erent, multò gravius nobis esse videtur, qui Sancto-rum Patrum decretis inhaerentes, nitimur ut nonnisi ea quæ ad pietatem, & æquitatem, ac liberam dispo-nendi de rebus suis facultatem, & ad quietem, & tranquillitatem subditorum nostrorum, & querela-rum, ac litium præfatarum amputationem tendunt, admittamus: Litterarum omnium præfatarum ve-riores, necnon processum desuper formatorum te-niores, ac si de verbo ad verbum infererentur, nec-non quarumcumq; litium desuper forsan motarum, & in quacumq; instantia, etiam super justitiæ vel in-justitiæ revisione penden. status, merita, ac nomina, & cognomina Judicum, & colligantium Præsentibus pro expressis habentes illaque ad nos harum serie advocantes, & extinguentes, perpetuumque super præmissis silentium imponentes, Motu pro-prio, & ex certa nostra scientia, non ad alicujus super hoc nobis oblatæ petitionis instantiam, sed ex mera animi nostri deliberatione, & de Aposto-licæ potestatis plenitudine litteras, & constitutio-nes Sixti, Leonis, Pii, & aliorum prædecessorum nostrorum hujusmodi, quoad penden. in quacumq; instantia, rescissas tamen expensis, illis qui sub prætextu

Sixtus IV. citatus in rubr. justit. vicinos domos vendere vicinis ad or-natum Urbis.

Leo etiam X. ut in rubr.

Pius IV. eo-rum consti-tutionem ut in bulla indi-cata in rubr.

Hic modo Pontif. ad tollendum lites desuper ortas.

Eas reduci ad terminos juris commu-nis.

dicta-

dictarum bullarum iustam hucufque habuerunt causam litigandi, & futuras causas ac si nunquam emanassent, ad ius commune, & terminos, & viam juris communis omnino reducimus, revocamusque, cassamus, & annullamus, ac viribus vacuumus. Ita quod in causis huiusmodi secundum juris communis dispositionem, posthabitis litteris prefatis, procedi, sententiarum, & definiri debeat.

§. 6. Excipimus tamen à presenti nostra reductione, & cassatione, quod si pro una vel pluribus aedibus sacris, aedificiis, viis, & plateis publicis construendis, ampliandis, vel dirigendis, alique domus vel alia aedificia, & bona essent in totum vel in parte incorporanda, demolenda, vel restituenda, quod in casibus prefatis, & non in aliis possint vicini, & habentes domos, sedimina, plateolas, & alia quaecumque bona, etiam si aliter venditori non essent, compelli ad ea vendendum. Ita tamen quod compulsi prefati ultra estimationem domus, sediminis, plateolae, & aliorum bonorum praedictorum faciendam per duos peritos communiter eligendos, & in casu discordiae, per Magistrum viarum loco tertii, quartam partem pretii ultra valorem, ut supra estimandum consequantur.

§. 7. Districte inhiibentes quibuscumque &c. ne aliter quam ut praemittitur iudicare, vel contra praemissa sententiarum, aut litteras praedictas prosequi quovis quasto colore, audeant vel praesumant. Decernentes quoque omnes, & singulas aliter quam ut praefertur ferendas sententias nullas, irritas, inanes, nulliusque roboris vel momenti, & tamquam tales nemini suffragari, nec à quoquam exequi quovis praetextu debere.

§. 8. Praesentes verò vim perpetuae constitutionis, & legis habere, & inter extravagantes constitutiones nostras registrari, ac publicari debere, nec ullo umquam tempore de subreptionis, vel obreptionis vitio notari, impugnari, invalidari, ad terminos juris reduci, in ius vel controversiam vocari, quacumque occasione vel causa minimè posse, minufque sub quibuscumque similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, suspensionibus, & limitationibus comprehendi nullatenus posse, sed semper ab illis exceptas, & quoties illae emanabunt, toties in primum, & eum in quo ante praemissa quomodolibet erant statum, restitutas, repositas, & plenarie reintegratas esse. Sicque ab omnibus censi, & ita per quoscumque Iudices quacumque auctoritate fungentes, etiam causarum sacri Palatii Apostolici Auditores, ac Sanctae Romanae Ecclesiae Cardinales, sublati eis aliter iudicandi potestate, iudicari, & definiri debere, irritum quoque & inane, si secus à quoquam quavis auctoritate contigerit attentari.

Mandamusque propterea dilectis filiis &c. Non obstantibus litteris Sixti, Leonis, & Pii praefatis, & aliis Apostolicis, necnon &c.

Datum Romae apud Sanctum Petrum, quarto Idus Aprilis, Anno sexto.

Placet Motu proprio. M.

Sequitur extensio supradictae reductionis, etiam ad inquilinos.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Tanta est praesentis saeculi depravata malitia, ut dum uni inconvenienti &c. ut sup.

§. 1. Cum tamen nuper ad noticiam nostram de venerit, alias in Camera Apostolica inter alia decretum fuisse, quod exinde in posterum nullae venditiones de domibus aliis locatis per earumdem domorum Dominos, sive illi Romani essent, sive cives, etiam si pupilli vel viginti quinque annis iuniores, vel mulieres, laici vel Clerici, seu etiam Religiosi, seu alii quancumque Ecclesiarum Rectores, sive earumdem domorum ju-

re, quorumvis beneficiorum per eos obtentorum ius aut dominium habentes, etiam pro eorum quavis necessitate vel causa, etiam si cum iuramento, & quavis etiam obligatione in ampliori forma Cam. Apostol. seu aliis quibuscumque excoigitari possent cautelis & modis contractae essent, valerent, seu alicujus roboris vel momenti existerent, nisi primus & ante omnia iisdem domorum Domini earumdem inquilinis, per authentica instrumenta, & in praesentia notarii publici, & testium fide dignorum, bis, cum intervallo decem dierum requisitis, si pro iustis conditionibus, & eisdem pretiis, pagis, & conventionibus easdem domos in eadem emptionem habere vellent, alias dictae venditiones exinde nullius essent roboris vel momenti, ac aliis prout in dicto decreto Camerali plenius dicitur contineri. Quod si profectò remaneret, eadem inconvenientia sequerentur, quae ex dictis Praedecessorum nostrorum litteris orta fuerunt.

§. 2. Licetque non immeritò censi posset in dictarum litterarum revocatione, etiam decretum Camerale praefatum saltem ex identitate rationis, ne quis de rebus suis disponere arbitrio suo prohibitus videatur, comprehensum fuisse & esse, ut tamen scrupulosis omnibus, qui varia litium semina subministrare non cessant, cavillandi materiam succidamus, decreti prefati tenorem Praesentibus pro plenè & sufficienter expressio habentes, Motu simili &c. declaramus atque decernimus, decretum praefatum sub eadem cedula nostra comprehensum fuisse, & comprehendi debere quo ad liberas domorum venditiones earumdem, inquilinis irreversibilibus per ea um Dominos factas (dummodo super earum retractatione lis nota per inquilinos, & plenarie hucufque finita non fuerit) & in futurum contrahendas, perinde ac si de dicto decreto specialis, specifica & expressa intentio facta fuisset. Et nihilominus pro praemissorum majori cautela & firmitate, omnia & singula, quae in dicta cedula contra Praedecessorum litteras praefatas, statum & ordinatum & observari volumus, eadem omnia, cum omnibus & singulis clausulis & derogationibus in dicta nostra cedula contentis, ac si de verbo ad verbum hic expressa essent, quo ad huiusmodi decretum & liberam vendendi facultatem inquilinis domorum non requisitis, statuimus & ordinamus, & observari volumus & mandamus.

§. 3. Sicque per quoscumque Iudices & Commisarios quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac Sanctae Romanae Ecclesiae Cardinales, sublati eis &c. iudicari debere, irritum quoque &c. decernimus.

§. 4. Non obstantibus dicto decreto Camerali huiusmodi, etiam pluries confirmato, ac aliis praemissis, ac quatenus opus sit, nostra de non tollendo jure quasto, etiam quibuscumque aliis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon iuramento &c. roboratis, statutis, consuetudinibus, necnon legibus etiam municipalibus, privilegiis quoque &c. sub quibuscumque tenoribus &c. concessis &c. ceterisque contrariis non obstantibus quibuscumque, statum & merita causarum Praesentibus pro plenè & sufficienter expressis habentes.

Placet Motu proprio. M.

Datum Romae apud S. Petrum, Quinto Nonas Julii, Anno sexto.

Declaratio quod Canonici saeculares Congregationis S. Georgii in Alta Venetiarum, praecedant etiam Canonici regularibus Congregationis Lateranensis, Ordinis S. Augustini.

Hoc privilegium praedictum, quo ad alios regulares, concessit hic idem Pont. d. Cong. S. Georgii ut sup. in const. 92. Ex incumbenti.

Extensio d. reductionis etiam ad inquilinos.

Decretum irritans.

Clausula derogatoria.

Papae subscr. Dat. P. An. 6. die 9. Julii.

CXXVII.

Edita An. D.
1571.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Hic Pontif. istis Canonici-
cis seculari-
bus dedit
præceden-
tiam ut supra
in const. 92.
Et deinde
præceden-
tiam etiam
dedit Canoni-
cis regula-
ri. Latera-
nen. ut in
alia ejus con-
stit. 116. Ideo
dubitari pos-
set, an hæc
posterior
bulla præce-
denti deroga-
ret.

Hic modo
Pontif. non
derogare de-
clarat & præ-
cedentiam
Canonico-
rum seculari-
um præter-
vat.

Observan-
tiamque hu-
jus bullæ
præcipit.

Observan-
tiamque hu-
jus bullæ
præcipit.

Institutionem vero hujus Congregationis vide sup.
in constit. 1. Greg. XII. Illis. fol. 283. ubi alia
indiciavi. in Tomo I.

Cum aliis nos postquam dilecti filii Rector ge-
neralis, & Canonici Congregationis S. Georgii
in Alga Venetiarum, mandatis nostris obtem-
perando, professionem regularem emisserant, Nos
que propterea ipsos sub Nostra & Sedis Apostoli-
cæ protectione receperamus, ac inter alia per quam-
dam volueramus, quod deinceps processionibus &
aliis actibus publicis vel privatis interesse conigif-
set, statim ipsum Clericum secularem non exem-
tum subsequi, dum ipsi subsequendo præcedunt,
dum verò præcedendo præcedunt, illud immediatè
sequi debere per illas nostras litteras declaraverim-
us, prout in singulis litteris prædictis plenius con-
tinetur, à nonnullis non immeritò dubitari posset,
an per posteriores litteras prædictas prioribus ita
derogatum sit, ut Canonici regulares prædicti, Ca-
nonici Congregationis S. Georgii prædicti præce-
dere debeant, quod professò, si ita declararetur, non
sine maximo ipsius Rectoris & Canonicorum S.
Georgii præjudicio & gravamine esse posset.

§. 1. Nos præmissa declaratione debita dilacida-
re satagentes, nolentesque litteras nostras, quæ
non sine causæ cognitione prodierunt, in alienum
sensum, ac aliorum præjudicium distrahi,
litterarum nostrarum ultimo datarum id, ac si de
verbo ad verbum inserti forent, Præsentibus pro
expressis habentes, seu exprimi & inseri posse de-
cernentes, motu simili declaramus, & in verbo
Rom. Pont. attestamur, intentionis nostræ nun-
quam fuisse nec esse, quod secundo datas litteras
prioribus ita præjudicare, ut ipsi Canonici Cong-
reg. S. Georgii locum mutare debere censeantur,
aut censeri possint, sed locum ipsis Canonici regu-
laribus assignatum, circa ipsorum Canonicorum
Congregationis S. Georgii præjudicium, concessum
fuisse ac esse intelligatur, ipsique Canonici Cong-
reg. S. Georgii deinceps, & perpetuis tempo-
ribus sub nomine Clerici secularis venire, & ita
ab omnibus censeri, nec super eo à quoquam mo-
lestari posse vel debere.

§. 2. Distinctius inhibentes omnibus & singulis
tam Ecclesiasticis quàm secularibus Judicibus cujuscumque
dignitatis, status, gradus, ordinis, ac con-
ditionis existentibus, & quacumque auctoritate
etiam Apostolica fungentibus & præsertim secundo
dictis litteris deputatis, in virtute sanctæ obedi-
entia, & sub excommunicationis majoris, aliisque
arbitrio nostro moderandis & infligendis pœnis,
ne contra prædicta quovis quæsito colore venire,
aut quominus illa suam plenarium ac integrum
fortiantur effectum, impedire audeant vel præsumant,
quinimò eos & alios quoscumque pœnas in
eis appositas incurrere minimè posse volumus.

§. 3. Decernentes quoque Præsentes, & desuper
consciendas litteras, nullo unquam tempore de
subreptionis vel obreptionis vitio, aut intentionis
nostræ vel quopiam alio defectu, etiam ex eo quod
dicti Canonici Regulares, aut alii forsitan interesse
habentes, vocati non fuerint, notari, impugnari,
invalidari, aut contra illas de nullitate opponi, ad
terminos juris reduci, in jus vel controversiam vo-
cari, causamque vel causas, propter quas à nobis
Præsentes emanaverint verificare nullatenus teneri,
nec ob id viribus carere, minisque sub quibuscumque
simulium vel dissimilium gratiarum, revocationum,
suspensionum, limitationum, aut aliis contrariis

dispositionibus comprehendi, sed semper ab illis
exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties in pri-
stinum statum restitui, repositæ, & plenariè rein-
tegratæ esse, etiam sub quacumque data per ipsos
Canonicos dictæ Congregationis S. Georgii eli-
genda, vimque validi & efficacis contractus, inter
Nos & Sedem Apostolicam ac eosdem Canonicos,
etiam cum juramento initi ac stipulati, fortiri, sic-
que ab omnibus censeri: Et ita per quoscumque
Judices etiam causarum Palatii Apostolici Audito-
res, & S. R. E. Cardinales, sublatæ eis & c. judicari
debere, irritum quoque &c.

§. 4. Non obstantibus litteris nostris præfatis,
quas quo ad hujusmodi effectum, & in ea parte,
quæ Præsentibus contrariantur, revocamus & annul-
lamus, ac quibuscumque litium pendentiis (quas
ad nos harum serie avocamus & extinguimus)
perpetuum super illis silentium imponimus, illa-
rumque status & merita, nominaque & cognomi-
na Judicum, Præsentibus pro expressis habentes,
ac quibuscumque Apostolicis, necnon in provincialibus
& synodalibus Conciliis editis, specialibus vel ge-
neralibus constitutionibus & ordinationibus ac
quibuscumque etiam juramento, confirmatione Apost.
vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & con-
suetudinibus, privilegiis quoque, indulgentiis, & litteris
Apost. dictis Canonici Regularibus & quibuscumque
aliis, sub quibuscumque etiam derogatoriis de-
rogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clau-
sulis, irritum &c. hac vice latissimè derogamus,
ceterisque contrariis quibuscumque cum clausulis
opportunis & consuetis.

Fiat Motu proprio, M.

§. 5. Et cum absolute à censuris &c. & quod
singularum litterarum præfatarum tenores habean-
tur pro expressis, seu in toto vel in parte expri-
mi, ac de verbo ad verbum inseri possint. Et de
declaratione, attestacione, voluntate, delibera-
tione, decreto, & aliis prædictis pro repetitis ha-
beantur, & ad partem perpetuè in forma gratiosa
&c. & cum deputatione Judicum & executorum,
qui assistant, & præmissa observari faciant, etiam
sub censuris &c. cum potestate citandi, inhibendi
&c. aggravandi & reagravandi, ac interdicendi &c.
& cum derogatione &c. de una, & Concilii gene-
ralis de duabus dietis, dummodo non ultra tres, ac
prædictorum & singulorum Præsentibus quomodolibet
contrariorum. Quorum &c. latissimè exten-
den, & quod præmissorum omnium &c. & per bre-
ve litteræ expediri possint.

Dat. Romæ apud S. Petrum, 11. Cal. Junii, Pon-
tif. nostri Anno 6.

De electione & officio Ministri generalis, & alio-
rum Superiorum Ordin. Minorum S. FRAN-
CISCI de Observantia. Et de modo recipien-
di Novitios.

*Hæc reformatio his quo ad primam ejus partem de-
clarata fuit à Greg. XIII. infra in hoc Tomo II. in
ejus const. 13. Consequitur. Et quo ad secundam par-
tem, tam ab ipso Greg. quàm à Six. V. innovata est,
ut inf. in ejus const. 71. Cum de omnibus ubi notabo.*

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Pastoralis officii nobis divinitus injuncti assidua
solicitudine nos admonet, ut omni cura ac vi-
gilantia ad ea semper intendamus, per quæ omnes
personæ Regulares sub suavi Religionis jugo Altissi-
mo famulantes, in regularium ac salutarium instituto-
rum observatione non modò conferventur, sed ad
alia observanda modis, & rationibus congruentibus
admoneantur & impellantur. Considerantes autem
quam uberes fructus Ordo Fratrum Minorum S. Fran-
cischi de Observantia, qui in humilitate & patien-
tia potissimum fundatus existit, hætenus in agro
Domini attulerit, & in dies magis cooperante eo,

à quo

Contrariis
omnib. deroga-
gat.PP. subscrip.
Repetitio
clausular.Dat. P. An. 5.
die 22. Maji.

CXXVIII.

Edita An. D.
1571.

Proemium.

à quo bona cuncta & procedunt, afferre non cesset, nonnulla ordinanda, & à Fratribus prædictis observanda censuimus, per quæ DEO Omnipotente auctore, dictus Ordo per nostræ providentiæ ministerium, felicia in Domino suscipere possit incrementa: Motu igitur proprio non ad alicujus Nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed ex certa scientia, maturaque deliberatione nostra, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine hac nostra perpetuo valitura sanctione statuimus & ordinamus.

§. 1. Quod illi Fratres ejusdem Ordinis posthac in Generale ministerium, & reliquis Superiores solum eligantur, qui regulam ipsius Beati Patris Seraphici bene observare, & qui in choro, vigiliis & vestitu, quantum officii necessitas concesserit, cum aliis se conformare soleant ac debeant, super quo Barchinonenses constitutiones harum serie innovamus, omnesque, tam Superiores quorumcumque, quàm Definitorum, Custodum, & Discretorum electiones, per vota secreta fiant, juxta sacri Concilii Tridentini decreta, aliter electiones factæ pro tempore nullæ, & penitus irritæ sint, & inanes, electique penas in dictis decretis contentas incurrant eo ipso.

§. 2. Quodque Minister generalis, Commissarius, vel Procurator generales & provinciales, in eo Capitulo quo absolvi debent, Definitorum non sint, neque vocem habeant, sed facta successoris electione discedant, ut si quis eos accusare velit, liberè agat.

§. 3. Quod provincialium Ministrorum electio liberè per vota secreta, ut supra fiat, ita ut Commissarius generalis, vel qui electioni præfederit, si formam prædictam transgesserit, seu electores quominus liberè eligant, quovis modo impedire convictus fuerit, officio privatus existat.

§. 4. Qui verò in electionibus omnibus, vel ante eas per sex menses, pro se vel pro alio subornaverit, excommunicationis sententiam ipso facto incurrat, à qua nisi à Romano Pontifice pro tempore existente, præterquam in mortis articulo absolvi non possit, ac voce activa & passiva perpetuò careat, subornatus vel alius, etiam pro quo subornatio fiet, qui subornantem non detulerit, eandem penam incurrrere censeatur.

§. 5. Qui autem ad officium obtinendum quorumvis favorem extra Religionem procuraverint, ultra prædictas penas per mensem carceri mancipentur.

§. 6. Quod officium generalis Ministri octo annos duret, Commissarii & Procuratores generalis ac provinciales quatuor, ipsique semel officio functi, ad idem eligi non possint, nisi post sexdecim annos, nec Minister generalis in Commissarium vel Procuratorem generales, nec Commissarius generalis in Ministrum seu Procuratorem generales, nec Procurator generalis in Ministrum vel Commissarium generales, nisi post dictos sexdecim annos, ut munus sibi injunctum cum majori fructu exercere valeant. Possit tamen Minister provincialis in alia provincia provincialis esse. Et Capitulum quod dicitur intermedium, post quatuor annos ab electione Generalis celebrari debeat.

§. 7. Quod generalis Minister habeat duos discretos secum, unum ex qualibet familia, quorum consilio uti debeat in gravioribus, sintque immediatè subditi Ministro generali, ac in generali & Provincialibus Capitulis habeant vocem, & præcedant omnes alios, tam in loco, quàm in voce, nisi illos dumtaxat qui Ministri Generalis munus obierint: Unaquæque autem familia suum eligat post electionem Ministri generalis & definitorum. Si moriantur aut occupentur à Nobis seu Romano Pontifice pro tempore existente occupatione longa, arbitrio Ministri generalis, vel ab ipso Ministro generali legitimè priventur, alium seu alios eligat Minister generalis præcedente voto

Provincialium ejusdem familiæ, eorumque officium cum ipso Ministro generali expiret, tamen in Capitulis generalibus officio Discretorum hujusmodi functi vocem habere possint.

§. 8. Quod generalis Minister duos Secretarios habeat, alterum videlicet ex altera familia, quo cum negotia cujuslibet familiæ expediat, eisque arbitrio suo uti possit.

§. 9. Quod sacre Theologiæ lector qui quatuor cursus abolverit, activa & passiva voce utatur in provinciali Capitulo.

§. 10. Quod Magister generalis, Commissarius, Provinciales, & alii Visitatores, & domi & foris ita parcè & modeste in expensis se gerant, ut sanctæ paupertatis memores, tam Conventus relevare, quàm proximos edificare procurent. Qui tamen hoc non servavit, si Generalis fuerit, à Definitoribus Capuli generalis, reliqui à Superioribus condignè puniantur.

§. 11. Postremò quod in Novitiis recipiendis fiat inquisitio de moribus & vita eorum juxta regulam ejusdem Beati FRANCISCI, quæ ait, Diligenter examinent eos de fide catholica, & de Ecclesiasticis sacramentis &c. Et fiat inquisitio de progenitorum suorum defectu: volentes quod iis, qui ex Mahumetanorum vel Judæorum genere descendunt, cum post susceptum ab eis sacrum baptismum, Græci & Judæi distinctio esse non debeat, nullatenus defectu generis hujusmodi quo minus in Ordinem prædictum recipiantur, & ad consequendas in dicto Ordine dignitates, gradus, & officia Religionis, vel cuiuspiam alteri nocere possit vel debeat. Et quo ad descendentes ex hæreticis, videlicet conversis, pariter minimè circa præmissa quicquam obstat.

§. 12. Quo ad verò illos qui ex hæreticis damnatis, & non conversis, vel quorum statum combussæ fuerint, originem ducunt, per lineam paternam usque ad secundam generationem, per lineam autem maternam usque ad primam tantum in præmissis obesse decernimus, & idem servetur in Fratribus, qui ad sacros etiam presbyteratus ordines admittuntur.

§. 13. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, & quibuscumque dicti Ordinis, statutis, & consuetudinibus, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, privilegiis quoque, indulgitiis, & litteris Apostolicis Ordini & Superioribus hujusmodi per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac etiam Nos & Sedem Apostolicam, etiam motu, scientia, ac potestatis plenitudine similibus, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque fortioribus & efficacioribus & insolitis clausulis, irritantibusque & aliis decretis, in genere vel in specie quomodolibet concessis, confirmatis, & sæpius innovatis, etiam si de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa & individua, ac de verbo ad verbum mentio habenda foret, eorum tenores præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliàs in suo robore permanens, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romæ apud sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo septuagesimo primo, die 28. Maji, Pontificatus nostri Anno sexto.

Anno Incarnationis Dominicæ 1571. indictione 13, die verò ultima mensis Maji, Pontificatus Sanctissimi in Christo Patris & D. N. D. Pii divini providentia Papa V. Anno sexto, retroscripta littera Apostolica lecta & publicata fuerunt in generali retroscriptorum Fratrum Minorum de Observantia, videlicet Ministrorum generalis & Provincialium, ac vocalium congregatione, habita in Conventu S. Mariæ de Araceli de Urbe, per me Robertum Fontanum Archidiaconi Curie scriptorem Clericum Mutinensem, presentibus Illustriss. & Reveren-

Secretario-
rum officium
& numerus.

Theologiæ
lectores
quando ha-
beant vocem
in Capitulo
provinciali.

Officiales
servent pau-
peratem.

Novitiarum
recipiendorum
forma.
Tu vide Six.
V. & Gregor.
in rubr. cita-
tione.

Qui reci-
piantur def-
cendentes ab
hæreticis.

Clausula de-
rogatoria.

Dat. P. An. 6.
die 28. Maji.

Publicatio
in generali
congrega-
tione.

diff. D. Alexandro Card. Cribello Viceproteſtore, & R. P. D. Hieronymo Albernoz eleeſto Tucumanen. Epifcopo teſtibus &c. In quorum ſidem hic me ſubſcripſi.

Robertus Fontanus Archivii Rom. Curſ. Scriptor.

CXIX.

Facultas Prælatorum Congregationis Caſſinenſis, alias S. Juſtinæ, Monachorum Ordinis S. Benedicti, Monachos à quibuscumque reatibus, cenſuris & pœnis abſolvendi, & cum eiſdem diſpenſandi.

Circa uſum hujus facultatis, advertenda eſt ſanctio 115. Clementis VIII. Quacumque. vide in Tomo III.

Inſtitutionem hujus Congregationis, & alias quæ ad eam ſpectant, notavi ſup. in Julii II. conſtit. 1. Super Cathedram, fol. 464. Tom. I. Et adde quod circa ejus privilegia extat alia conſtit. 41. hujus Pontif. Et ſi Mendicantium. in fin.

Edita An. D. 1571.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Proœmium.

Dum ad Congregationem Caſſinen. in qua dilecti ſui illius profeſſores mortui mundo, ſed CHRISTO, qui eſt vera vita, ſub Regula & Ordine Sancti Benedicti, tranſitoriis & caducis hujus labilis ſæculi illecebris abdicatis, viventes, pro univerſali ſalute fidelium præces ad Dominum incesſanter fundunt, oculos noſtræ pietatis dirigimus, dignum, quin potius debitum reſultans, & illius monaſteriorum pro tempore exiſtentibus Abbatibus & Prælatiſ, ea liberaliter concedamus, quæ pro ejuſdem Congregationis, & aliarum perſonarum illius regularibus inſtitutis ſe conformare volentium, conſcientiarum emundatione & ſecuritate, & irregularitatis, & quacumque aliarum macularum per eaſdem perſonas pro tempore contraxarum abolitione credimus profutura.

Facultas de qua in rub.

Ad quam vide quid requirit Clem. VIII. in ejus conſtit. 115. Quæ ſuæ. in Tomo III.

S. 1. Motu itaque proprio, non ad ipſorum Abbatum & Prælatorum, ſeu alicuius pro eis nobis ſuper hoc oblatæ petitionis inſtantiam, ſed ex certa ſcientia, & de mera liberalitate noſtris, Apoſtoliceque poteſtatis plenitudine, omnibus & ſingulis modernis & pro tempore exiſtentibus Abbatibus & Prælatiſ Congregationis hujusmodi, quoscumque illius pro tempore exiſtentes Monachos, converſos, commiſſos, & oblatos, & tam profeſſos quam novitios, in ea tamen perſeverantes, à quibuiſ criminibus, reatibus, culpiſ, cenſuris & pœniſ, per eos & eorum quemlibet, tam antequam poſt illorum in Congregationem hujusmodi, ac monaſteria ſub illius obedientia exiſtentia ingreſſum, ſeu profeſſionem regularem ibidem per eos emiſſam, ex quavis cauſa, & ob quemvis exceſſum & delictum, publicum vel occultum, cauſa, ſeu data opera quomodolibet ab eis & ſinguliſ, etiam ſi homicidium voluntarium, ſeu membri mutilatio, non tamen poſt ingreſſum hujusmodi, pro tempore ſubſecutum, ſeu ſubſecuta fuerit, incurſiſ, & in futurum incurrendiſ, etiam ſi de caſibus reſervatiſ Sedi Apoſtolice, vel de comprehenſiſ in bulla quæ die Cœnæ Domini ſinguliſ anniſ legi conſuevit, fuerint, plenarie toties quoties opus fuerit, inſuncta ſibi pro modo culpæ poenitentia ſalutari, quo ad reatum homicidii tantum, in foro conſcientie tantum abſolvendi & liberandi, ac in priſtinum & eum, in quo ante præmiſſa quomodolibet erant & fuerant ſtatum reintegrandi, omnemque inhabilitatiſ & infamie maculam ſive notam inde quomodolibet inſurgentem ab eis & eorum quolibet proſuſ abolendi, ſecumque quod præmiſſiſ non obſtantibus non promoti ad omnes etiam

ſacros & preſbyteratus Ordines promoveri, atque monaſteriis ejuſdem Congregationis in Abbatibus, Priores, & Prælatos præfici, necnon ad quacumque alias dictæ Congregationis prælaturas eligi & aſſumi, munuſque benedictionis ſuſcipere, & tam illi, quam qui jam ante vel poſt præmiſſa, ſint vel fuerint promoti, præfeſti vel electi, etiam ſi munuſ benedictionis hujusmodi ſcienter ſuſceperint, irregularitatiſ, inhabilitatiſ, reatibus, cenſuris & pœniſ hujusmodi, vel aliis quibuscumque criminibus irretiſ & innodati, ſcienter miſſas & alia divina officia celebraſſent, ſimulve ſeu aliâ munere benedictionis hujusmodi quomodolibet uſi eſſent, in altariſ Miniſterio miniſtrare, & dicto munere uti, necnon omnes & quacumque Prælaturas, obedientiaſ, adminiſtrationeſ & officia, Ordiniſ & Congregationiſ hujusmodi, retinere, recipere, gerere, & exercere liberè & licitè poſſint & valeant, nulloque de præmiſſiſ in quibuſviſ privilegiis, facultatiſ, diſpenſationibuſ & conceſſionibuſ, etiam gratiam vel juſtitiam, ſeu mixtim conceſſentibuſ, etiam per Sedem Apoſtolicam ſibi pro tempore conceſſiſ, mentionem facere teneantur, miſericorditer in Domino diſpenſandi, licentiam & facultatem liberam, Apoſtolica auctoritate tenore præſentium perpetuò concedimus & elargimur.

S. 2. Statuentes, abſolutioneſ, liberationeſ, reintegrationeſ, diſpenſationeſ, necnon omnia alia & ſingula, quæ harum vigore ſient, & inde perpetuò ſequuntur, valida & efficaci fore, omnibuſque & ſinguliſ, nunc & pro tempore exiſtentibuſ Monachiſ, converſiſ, commiſſiſ, oblatiſ, donatiſ, & aliis perſoniſ Congregationiſ hujusmodi, ita demum ſuffragari, ſi & dummodò donec vixerint in habitu & profeſſione regulari ejuſdem Congregationiſ virtutum Altiffimo famulati fuerint, ſub obedientiaque Prælatorum & Superiorum dictæ Congregationiſ permanſerint.

S. 3. Decernenteſ quoque præſenteſ litteraſ perpetua roboriſ firmitate ſubſiſtere, & nullo unquam tempore ſub quibuſviſ ſimiliuſ vel diſſimiliuſ facultatum vel licentiarum revocationibuſ, ſuſpenſionibuſ, limitationibuſ, prohibitionibuſ, moderationibuſ, aliſve contrariis diſpoſitionibuſ, & in dicta bulla Cœnæ Domini pro tempore contentiſ minimè comprehenſaſ eſſe, aut comprehendi debere, ſed ſemper ab illiſ exceptaſ eſſe & cenſeri, & quotieſ contraria hujusmodi emanabunt, totieſ eaſdem Præſenteſ, & in eiſ contenta in priſtinum & validiſſimum ſtatum reſtituta, & perpetuò reintegrata eſſe. Sicque in præmiſſiſ omnibuſ & ſinguliſ, per quoscumque Judiceſ & Commiſſariuſ, quaviſ auctoritate fungenteſ, ſublata eiſ & eorum cuiſlibet quaviſ aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari & definiri debere, irritum quoque & inane, ſi ſecus ſuper hiſ à quocumque quaviſ auctoritate ſcienter vel ignoranter contigerit attentari.

S. 4. Non obſtantibuſ quibuſviſ Apoſtolicis, ac in provincialibuſ & ſynodalibuſ Conciliis editiſ ſpecialibuſ vel generalibuſ conſtitutionibuſ, & ordinationibuſ, ac Congregationiſ & Ordiniſ prædictorum juramento, confirmatione Apoſtolica, vel quaviſ firmitate alia roboratiſ, ſtatutiſ & conſuetudinibuſ, privilegiis quoque, indultiſ, & litteriſ Apoſtolicis, quibuſviſ perſoniſ, ſub quibuſcumque tenoribuſ & formiſ, ac cum quibuſviſ etiam derogatoriariuſ derogatoriis, aliſque efficacioribuſ & inſolitiſ clauſuliſ, ac irritantiſ, & aliſiſ decretiſ, in genere vel in ſpecie conceſſiſ, approbatiſ, & innovatiſ. Quibuſ omnibuſ etiam ſi de illiſ, eorumque totiſ tenoribuſ ſpecialiſ, ſpecifica, expreſſa & individua mentio, ſeu quaviſ alia expreſſio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc ſervanda foret, tenoreſ hujusmodi, ac ſi de verbo ad verbum nihiſ penitus omiſſo, & forma in illiſ tradita obſervata inſerti fo-

Declaratio dictæ conceſſionis.

Clauſula præſervativa.

Clauſula derogatoria.

Sanctio po-
nalis.

Dat. P. An. 6.
die 13. Junii.

CXXX.

Edita An. D.
1571.

Exordium.

Sodalitas
ista ab Ordine
S. Dominici
proce-
dit.

Hic ideo
Pont. eam in
Ecclesiis Or-
dinis &c. eri-
gi mandat.

Confratres
que aliter ad-
missos Indul-
gentias non
consequi de-
cernit.

Et contraven-
ientes conser-
vatores ejus-
dem Ordinis.

rent, Præsentibus pro sufficienter expressis habentibus illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, cæterisque contrariis quibuscumque.

§. 5. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ &c. infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit indignationem omnipotentis DEI, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursurum.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1571. Idibus Julii Pontificatus nostri Anno sexto.

Quod Confraternitates Sanctissimi Nominis DEI in Ecclesiis Ordinis Fratrum S. Dominici, si extant, fin autem de licentia Prioris ejusdem Ordinis, in aliis Ecclesiis instituantur.

Ad hæc vide etiam sup. constit. 78. Pii IV. fol. 117.

PIUS PAPA QUINTUS,

Ad perpetuam rei memoriam.

DEcet Romanum Pontificem æqui, & boni supremum auctoritatem, ita cuncta provido suo judicio discutere, ut scandalis quibuscumque obvietur, & ea quæ in divinis nominis gloriam sunt stabilita, totum suscipiant incrementum.

§. 1. Accepimus sæpe nuper quod Societas nominis DEI, five Juramentorum, originem & ortum habuerit ab Ordine Prædicatorum, eo quod ab ejusdem Ordinis professoribus fuerit instituta & aucta, necnon interventu dilectorum filiorum Fratrum dicti Ordinis multæ Indulgentiæ, aliæque privilegia, & favores dictæ Societati ab Apostolica Sede fuerint concessa, tamen multi Clerici, & Patroci in suis Ecclesiis dictam Societatem erigere student, ita ut aliquando sint plures in eadem Civitate Societates, seu Confraternitates dictæ invocationis Nominis DEI, seu Juramentorum, in diminutionem observantiæ, & devotionis, quæ ex frequentia conventuum oriri solet, & non sine aliqua confusione, quæ ob præfatam causam in die Circumcisionis Domini, quando festum prædictæ Societatis, seu Confraternitatis celebrari debet, accedere consuevit.

§. 2. Nos in præmissis pro nostri Pastoralis officii debito opportunè providere volentes, Motu proprio, non ad aliquem nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed ex mera deliberatione, & certa scientia nostris, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, Quod in Civitatibus, oppidis, & locis totius orbis Christiani in quibus fuerint Ecclesiæ Ordinis Prædicatorum, ibi tantum, vel in hujusmodi Civitatibus, oppidis, & locis, in dictis Ecclesiis Prædicatorum dumtaxat, dicta Societas, seu Confraternitas hujusmodi instituat in Civitatibus, oppidis, aut locis, in quibus non fuerit dicti Ordinis domus, aut in finitimis Ecclesiis, absque licentia Prioris Provincialis, seu Conventualis dicti Ordinis, in cujus districtu sita fuerit Ecclesia in qua dicta Confraternitas, seu Societas est, vel erit erigenda.

§. 3. Quod si secus factum fuerit, Confratres taliter admissi, dictæ Confraternitatis seu Societatis indulgentias non consequantur, nec favoribus, aut privilegiis gaudeant, quæ Confratribus legitime adscriptis per Sedem præfatam conceduntur, Apostolica auctoritate, tenore præsentium perpetuo statuimus, & ordinamus, ac etiam districtius inhibemus, sique volumus, & præcipimus.

§. 4. Et nihilominus dilectis filiis Conservatoribus dicti Ordinis per Præfentes Motu simili mandamus, ut contradiectores, seu attentantes auctoritate nostra prohibeant, ac etiam per censuras aliasque poenas etiam pecuniarias, ac cetera juris & facti remedia opportuna, appellatione postposita

ta compescant, & reprimant, super quibus illis facultatem, potestatem, & auctoritatem eisdem auctoritate & tenore concedimus, & impartimur.

§. 5. Decernentes præfentes litteras de subreptionis, vel obreptionis vitio, aut intentionis nostræ, vel quopiam alio defectu notari, vel impugnari, seu aliàs quomodolibet infringi, vel retractari nullatenus unquam posse, sed eas semper validas, & efficaces existere, suosque penarios effectus sortiri, & obtinere, necnon ab omnibus quos illæ concernunt inviolabiliter perpetuo observari.

§. 6. Sicque in præmissis ab omnibus censei, & ita per quoscumque Judices, & Commissarios, etiam S. R. E. Cardinales, ac Palatii nostri Apostolici causarum Auditores, sublata eis, & eorum cuiuslibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate, & auctoritate, judicari, & definiti debere, irritum quoque & inane si secus super his à quocumque quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 7. Non obstantibus præmissis, ac felic. recordat. Bonifacii Papæ VIII. prædecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, dummodo non ultra tres ad iudicium vigore Præsentium non trahatur, & Apostolicis constitutionibus, & Ordinationibus, necnon dicti Ordinis etiam iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, etiam mortu, & scientia similibus etiam consistorialiter, ac aliis in contrarium quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus etiam si de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, individua, & expressa mentio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata infererentur, Præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat, specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque, aut si aliquibus communiter vel divisim, à prædicta sic Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

§. 8. Ceterum quia difficile foret præfentes litteras ad singula quæque loca ubi necessarium fuerit deferre, volumus quod illarum transumptis manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides, in iudicio & extra adhibeatur, quæ Præsentibus adhiberetur si forent exhibitæ vel ostensæ.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris, die 21. Junii, Pontificatus nostri Anno Sexto.

Declaratio, quod Religio Clericorum Regularium Societatis JESU, est verè de Ordinibus Mendicantibus, eorumque gratiis & privilegiis tam concessis quàm concedendis perfruatur.

Alia de hac Religione vide sep. in Const. 25. Pauli III. Regimini, ubi plenè notavi in Tomo I.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

DUm indefesse considerationis intuitu perscrutatur, quantam Christianæ Reipublice utilitatem attulerint Dilecti filii Presbyteri Societatis JESU, ac plenè cognoscimus eos verè mundi hujus relicti illecebris, ad eum Sevatorem suo se dedi-

Clausule
præservati-
væ.

Decretum ir-
ritans.

Clausule de-
rogatoriæ.

Exemplorum
fides.

Dat. P. An. 6.
die 21. Junii.

CXX XI

Edita An. D.
1571.

Procemium.

Causa hujus declarationis.

Declaratio quod Societas est de Ordinibus Mendicantibus.

Eorumque omnibus gaudet gratis & privilegiis.

caste, ut conculcatis thesauris, quos erugo & tineae comedit, lumbisque paupertate & humilitate præcinctis, non contenti terrarum finibus, usque ad Orientales, & Occidentales Indias penetraverint, ac eorum aliquos ita Domini amor perstrinxerit, ut etiam proprii sanguinis prodigi, ut verbum Dei inibi efficacius plantarent, martyrio voluntario se suppoferunt, perque eorum spiritualia exercitia, etiam regna ipsa fidem Christi agnoverint, ac tam inibi, quam ubique terrarum caritatis, & misericordiae opera exercere studeant, facere nullo modo possumus, quin eos tamquam veros palmite in Christo per caritatem conjunctos, & benignè amplectamur, & ea sibi specialiter concedamus, quæ & pauperum per eos emissæ voto, & eorum instituto, ac commoditate credimus profutura.

§. 1. Hinc est quod Nos attendentes, quod licet dilecti filii Præpositus generalis, & presbyteri Societatis hujusmodi, tum quia ipsa Societas mendicans existit, quippe quæ ex ejus instituto, & constitutionibus Apostolica auctoritate confirmatis, bona stabilia possidere nequit, sed incertis elemosynis fideliumque largitionibus, & subventionibus vivit; tum quia non minus quam ceteri Mendicantes in excolenda vinea Domini assidue laborant, fructuque ingentes & salutiferos producant, ac propterea eisdem privilegiis, indultis, & gratiis Fratrum Mendicantium hæcenus concessis uti, frui, potiri, & gaudere merito possint ac debeant. Cum tamen illud aliquando in controversiam deduci posset, & ex eo quod dicta Societas Collegia habeat secum adjuncta.

§. 2. Nos ambiguitatem hujusmodi omnino amputare volentes eisdemque Præpositum, & Societatem, eorumque singulos à quibusvis excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & poenis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum Præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes; necnon dictæ Societatis instituti, constitutionum, & dispositionum, tam de jure, quam ab homine provenientium, necnon Privilegiorum, immunitatum, indulgentiarum, & gratiarum Mendicantibus fratribus hujusmodi quomodolibet concessorum, ac litterarum desuper concessarum tenores Præsentibus pro expressis habentes. Motu proprio non ad ipsorum Præpositi Generalis, & Societatis, vel alicujus eorum, aut alterius pro eis Nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed ex mera liberalitate, & certa scientia nostris, illam, & illius Præpositum, ac singulas personas Societatis hujusmodi verè, & non fide Mendicantes fuisse, esse, & fore; & inter aliorum fratrum, & Religiosorum Mendicantium ordines, aliosque fratres, & Religiosos Mendicantes, prout illos nos connumeramus, & connumerari debere; ac omnes & singulas tam juris, quam hominum dispositiones, in favorem Religiosorum, seu fratrum Mendicantium nunc & pro tempore emanatas, etiam in Societate, illiusque Domibus, Collegiis, Præposito, & aliis Religiosis locum habere.

§. 3. Necnon omnia, & singula quæcumque, quotcumque, & qualicumque sint, etiam speciali nota digna Privilegia, immunitates, exemptiones, facultates, concessionis, indulta, indulgentias, peccatorum remissiones, & gratias, tam spirituales, quam temporales, litterasque Apostolicas, etiam iustitiam sive mixtim concernentia, hæcenus per Nos, & quoscumque alios Romanos Pontifices, tam prædecessores, quam successores nostros, & denique Sedem Apostolicam, & illius Legatos de latere, sive Nuncios, & quavis auctoritate fungentes, etiam motu, & scientia similibus, ac de Apostolice potestatis plenitudine, etiam consistorialiter tam in genere, quam in specie, & tam communiter, & conjunctim, quam parti-

culariter, & divisim, etiam per modum extensionis, seu communicationis, & alias quomodolibet, quibusvis Ordinibus fratrum, & fororum Mendicantium quocumque nomine nuncupentur, illorumque Congregationibus, Conventibus, & Capitulis, ac utriusque sexus personis, ac illorum Monasteriis, Domibus, Ecclesiis, Hospitalibus, & aliis piis locis hæcenus concessa, & in posterum concedenda; quorum omnium & singulorum tenores, ac si de verbo ad verbum inferti forent, Præsentibus pro expressis, & insertis haberi volumus, eisdem Præposito, ac Societati, & omnibus illius personis, Domibus ac Collegiis ubique terrarum sitis, ita quod Societas, Domus, Collegia, Præpositus, & personæ hujusmodi omnibus, & singulis prædictis Privilegiis, immunitatibus, exemptionibus, facultatibus, concessionibus, indultis, indulgentiis, remissionibus, gratiis, & litteris, eisdem fratrum, & fororum Mendicantium Ordinibus, Congregationibus, Conventibus, Capitulis, personis, Monasteriis, Domibus, Ecclesiis, Hospitalibus, & aliis piis locis, ut præfatur concessis & concedendis, antea potuerint, & nunc ac in futurum, dummodo instituto Societatis, & Præpositi, seu deputatarum personarum hujusmodi voluntati, & beneplacito non refragentur, possint libere, & licite uti, frui, potiri, & gaudere in omnibus & per omnia, non solum ad illorum instar, sed pariformiter, & æque principaliter, absque ulla profusa differentia, perinde ac si Societati, Præposito, personis, Domibus, & Collegiis prædictis nominatim, & specialiter & generaliter concessa fuissent, Apostolica auctoritate, tenore Præsentium perpetuò sancimus, volumus, & declaramus, ac pariter concedimus, indulgemus, & elargimur.

§. 4. Decernentes præfatas litteras nullo umquam tempore per Nos, aut Sedem prædictam revocari, aut limitari, vel illis derogari posse, neque sub ullis similibus, vel dissimilibus gratiarum revocationibus, alterationibus, limitationibus, derogationibus, aut aliis contrariis dispositionibus, nunc & pro tempore emanatis, comprehendendi, sed semper ab illis excipi, & quoties revocari, alterari, limitari, vel derogari contingat, toties in pristinum, & eum in quo antè præmissa erant, statum restitutas, & de novo, etiam sub posteriori data per pro tempore existentem Societatis hujusmodi Præpositum Generalem eligenda, concessas esse, & fore, ac ita, & non aliter per quoscumque Judices, tam ordinaria, quam delegata, & mixta auctoritate fungentes, etiam S. R. E. Card. etiam Sedis Apostolicæ Legatos de latere, & Nuncios, ac causarum Palatii Apostolici Auditores, sublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi facultate, ubique, & in quavis instantia interpretari, censeri, iudicari, cognosci, & decidi debere. Irritum quoque & inane quicquid secus super his à quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 5. Quocirca venerabilibus fratribus, Patriarchis, Archiepiscopis, ac dilectis filiis eorum Vicariis in spiritualibus, aut Officialibus generalibus, & Curie causarum Cameræ Apostolicæ Generali Auditori, necnon Abbatibus, Prioribus, Præpositis, Decanis, Archidiaconis, Canonis, & Capitulis, ac aliis ad quos id quomodolibet spectat, & spectabit, per Præfatos Motu simili, mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum per se, vel alium, seu alios, præfatas litteras, & in eis contenta quæcumque, ubi, & quando opus fuerit, ac quoties pro parte dictorum Præpositi, & personarum Societatis hujusmodi, vel alicujus eorum fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant eos præmissis omnibus, & singulis pacifice frui, & gaudere, non permittentes eos desuper per quoscumque quomodolibet indebitè molestari: contraditores quolibet, & rebelles per sententias, censuras, & poenas Ecclesiasticas, aliaque oppor-

Clausula præservativa.

Deputatio executorum.

Clausulæ de-
rogatoriz.

tuna, juris, & facti remedia, appellatione postposita, compescendo, legitimis super his habendis servatis processibus, sententias, censuras, & pœnas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 6. Non obstantibus nostra de non expediendis litteris super indulgentiis ad instar, ac felicis recordationis Bonifacii Papæ VIII. Prædecessoris nostri de una, & Concilii Generalis de duabus dietis, dummodò ultra tres dietas quis vigore Præsentium ad iudicium non trahatur, & aliis Apostolicis constitutionibus, ac quibuscvis etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus. Privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, quibuscvis personis per quoscumque Romanos Pontifices Prædecessores nostros, ac Nos, & Sedem Apostolicam, etiam Motu & scientia similibus, ac de Apostolica potestatis plenitudine, & cum quibuscvis irritativis, annullativis, cassativis, revocativis, modificativis, præservativis, exceptivis, declarativis, mentis attestativis, ac derogatoriarum derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, irritantibusque & aliis decretis, in genere vel in specie, ac aliis quomodolibet, etiam pluries concessis, confirmatis, & innovatis; quibus omnibus, & singulis, etiam si in eis caveatur expresse, quod illis nullatenus derogari possit, pro illorum sufficienti derogatione, de illis eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, & expressa mentio habenda, seu aliqua alia forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi Præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus contrariis quibuscumque: aut si aliquibus, communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum quod interdici, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

Fides trans-
umptorum.

§. 7. Volumus autem quod Præsentium transumptis manu alicujus Notarii publici subscriptis, & signo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides in iudicio, & extra adhibeatur, quæ ipsi originalibus litteris adhiberetur, si forent exhibitæ, vel ostensæ.

Dat. P. A. G.
die 7. Julii.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris, die 7. Julii 1571. Pontificatus nostri Anno sexto.

CXXII.

Facultas Prælatorum Ordinis Fratrum Prædicatorum S. Dominici, absolvendi suos Fratres & Moniales, & cum eis dispensandi, sicut Episcopi cum Clericis, interdictio eis usu Cruciatæ vel alterius privilegii ad eligendos confessores, & obtinendas ejusmodi absolutiones, & dispensationes.

Alia de his Fratribus vide sup. in constit. 2. Hon. 3. Religiosam. fol. 64. & de Sororibus vide iidem sup. in Tomo I. in constit. 1. Innoc. VIII. Sedis. fol. 280. Et ad hanc bullam. necessarium puro videndam quoque esse constit. 115. Clem. VIII. Quamque. Tom. III.

PIUS EPISCOPUS,

Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Roman. Pont. circumspecta benignitas, honestis petentium votis, quæ personarum, sub Religionis iugo Altissimo famulantium, statum & salubrem directionem respiciunt, ad exauditionis gratiam libenter admittit, & favoribus prosequitur opportunis.

Petitio Or-
dinis.

§. 1. Exponi nobis nuper fecit dilectus filius Prior Provincialis Provincia Hispaniæ Ordinis Fratrum

Prædicatorum, quod cum in Bulla Cruciatæ Sanctæ & aliis privilegiis, quæ ab Apostolica Sede concedi solent, detur facultas eligendi confessorem idoneum, ab Ordinario approbatum, qui possit Christianifideles absolvere à casibus Ordinario reservatis, & à quibuscumque etiam quæ dictæ Sedi reservata sunt: Religiosi dicti Ordinis, seu eorum nonnulli etiam his facultatibus uti præsumunt, & illarum prætextu eligunt confessorem aliquando, præter eos, qui à suis Prælatibus, pro audiendis eorum confessionibus, deputati sunt, quod aliquando in speciale eorum vergit detrimentum. Quare prædictus Prior nobis humiliter supplicari fecit, quatenus in præmissis opportunè providere de benignitate Apostolica dignaremur.

§. 2. Nos igitur huiusmodi obviare volentes, ac eundem Priorem à quibuscvis excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque sententiis, censuris, & penis à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum Præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutum fore censentes, huiusmodi supplicationibus inclinati talem concessionem Cruciatæ Sanctæ, & aliorum indultorum particularium, quantum ad prædictum articulum eligendi Confessorem, & absolvendi à casibus reservatis, cum Fratribus, & Sororibus Monialibus totius Ordinis prædicti, tam Provincia Hispaniæ huiusmodi, quam extra eam ubilibet locum minime habere nec censi, sed nostræ intentionis existere, quod iidem Fratres, & Moniales, quantum ad Sacramenti Penitentia, seu Confessionis administrationem, dispositioni suorum Prælatorum subiecti sint, Apost. auctoritate tenore Præsentium perpetuò declaramus: eisdem tamen Prælatibus, ut in usu hujus potestatis, se cum subditis benignos & faciles exhibeant præcipientes, & mandantes.

§. 3. Et insuper, quia Sacrum æcumenicum Generale Tridentin. Concil. concessit Episcopis, ut absolvere possint in foro animæ, seu conscientia ab omnibus peccatis, & dispensare in irregularitatibus prout sess. 24. cap. 6. habetur, ne Prior Conventualis, & superiores Prælati dicti totius Ordinis, tam in dicta Provincia, quam extra eam ubilibet, in hac parte deteroris conditionis quam Clerici, aut seculares existant, eisdem Priori Conventuali, & superioribus Prælatibus, ut ipsi per se ipsos idem omnino possint in Fratres, & Moniales dicti Ordinis sibi subditos quod possunt Episcopi in Clericos & laicos sibi subiectos, tam quoad absolvendi, & dispensandi huiusmodi, quam aliis quacumque facultates, eadem auctoritate, & tenore, etiam perpetuò concedimus, & indulgemus, ac etiam declaramus.

§. 4. Decernentes præsentibus litteris perpetuò durare, & valere, & sub quibuscvis illarum consimilium, vel dissimilium concessionum, indulgentiarum, & gratiarum revocationibus, suspensionibus, alterationibus, derogationibus, vel aliis contrariis dispositionibus, etiam per Nos, & successores nostros Romanos Pontifices pro tempore existentes, aut Sedem Apostolicam, etiam ex quavis causa, aut aliis quomodolibet, canonicè vel de facto, nunc, & pro tempore factis & faciendis nullatenus comprehensas, sed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum, & validissimum statum restitutas, & de novo concessas existere, & fore, ac censi, & suffragari debere. Irritum quoque, & inane, si secus super his à quocumque, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 5. Non obstantibus præmissis, & quibuscvis Apostolicis, ac Universalibus, Provincialibus, & Synodalibus Conciliis editis, specialibus vel generalibus, Constitutionibus, & Ordinationibus. Necnon quibuscvis etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, Statutis, & Consuetudinibus, privilegiis quoque,

Declaratio
Papæ quod
isti Fratres
& sorores
non utantur
Cruciata aut
aliis privile-
giis, quoad
electionem
Confessorum
& absolu-
tionem à
casibus refer-
vatis.

Confessio fa-
cultatis Præ-
latibus huius
Ordinis ab-
solvendi Fra-
tres & Soro-
res, & cum
eis dispen-
sandi sicut
Episcopi cum
Clericis.

Clausulæ
præservati-
væ.

Clausulæ de-
rogatoriz.

indultis, & litteris Apostolicis, quibuscvis personis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac alias quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, & singulis, etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, individua, & expressa mentio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenorem suum, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, & forma in eis tradita observata infereretur, Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat, specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque, aut si aliquibus communiter vel divisim, ab eadem sit Sede indultum, quod interdici, suspendi, vel excommunicari non possint, per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

Dat. P. An. 6.
die 21. Julii.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub Anno Piscatoris, die 21. Julii, 1571. Pontificatus nostri Anno Sexto.

CXXVIII.

Regulares cuiuscumque Ordinis, etiam Mendicantes, Lectores, aut in Theologia graduati, non possint secularium confessiones audire, nisi fuerint ab Ordinariis prævio examine approbati.

Hoc idem habetur in Concil. Trid. sess. 23. cap. 15. & infra in hoc Tomo in Greg. XIII. constit. 9. In tanta, & Clem. VIII. constit. 115. Quicumque, in Tomo III.

Privilegia, & indulta omnia, etiam per modum communicationis concessa Militibus, Hospitalibus, Collegiis, Capitulis, Religionibus, Societatibus, Congregationibus, & Ordinibus tam Mendicantibus, quam non Mendicantibus, ceterisque locis piis, & eorum, five earum respectivè personis, secularium personarum Confessiones audiendi absque Ordinarii examine, & approbatione, revocavit S. D. N. Urban. VIII. Constit. 97. Cum. sicut inf. tom. 4.

Edita An. D.
1571.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Romani Pontificis providentia circumspicienda nonnumquam gesta per eum, rationabilibus & honestis suadentibus causis, moderatur & commutat in melius, prout in Domino conspicit salubriter expedire.

Hæ declarationes Concilii habentur supra in constit. 41.

§. 1. Nuper siquidem quasdam declarationes & moderationes circa nonnulla Concil. Tridentini decreta Regulares personas Ordinum Mendicantium eorumque instituta concernentia edidimus & promulgavimus: Et quia uti accepimus illarum vigore sacerdotes Regulares prædictorum Ordinum quandoque minus idonei, & inhabiles confessionibus secularium audiendis ab eorum Superioribus præpositi, absque aliqua Episcoporum, sed sola Magistri Ordinis Generalis, aut Provincialium ministrorum approbatione admittuntur.

Regulares non audiant confessiones secularium nisi ab Ordinariis sine approbati, ut habet etiam Concil. Trident. sess. 23. cap. 15.

§. 2. Nos super his pro debito Pastoralis officii prout tenemur salubriter providere volentes, tenore Præsentium hac nostra constitutione perpetua sancimus, decernimus, & declaramus, decretum Concil. Tridentini de approbatione Regularium audiendis confessionibus secularium præpositum ab Episcopis faciendam, observari debere etiam in omnibus Regularibus, quorumvis Ordinum etiam Mendicantium, etiam sub regulari disciplina viventibus, etiam si sint Lectores, aut in Theologia etiam de Superiorum suorum licentia, graduati, vel promoti, vel à suis Magistris Generalibus, vel Provincialibus Ministris, secularium

confessionibus audiendis expositi. Volumus tamen eos qui semel ab Episcopo in Civitate & Diocesis suis prævio examine approbati fuerint, ab eodem Episcopo iterum non examinari. Ab Episcopo autem succedere pro majori conscientie suæ quiete examinari de novo poterunt.

Inhibitio contra inob-servantes.

§. 3. Inhibentes quibuscumque Regularibus quorumvis Ordinum, etiam Mendicantium, ut præfertur, ne vigore deputationis, & approbationis ab eisdem Magistris, & Ministris provincialibus, etiam quod illarum occasione ab Ordinariis hucusque tolerati fuerint, absque speciali in posterum licentia, & approbatione ab Ordinariis obtinenda, secularium confessiones audire præsumant. Decernentes irritum & inane si secus super his à quocumque quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Derogatio contrariorum.

§. 4. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac nostris litteris prædictis, & aliis postea quibuscumque Regularibus concessis, & forsan extensis, quas quo ad ea quæ Præsentibus adversantur & contrariantur, penitus & omnino revocamus, cassamus, & irritamus, necnon Monasteriorum, & aliorum Regularium locorum, ac Ordinum quorumcumque, etiam jramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, etiam Mari magno, seu bulla aurea, aut aliis nuncupatis, quibuscvis Monasteriis, Regularibus locis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, necnon irritantibus & aliis decretis, etiam Motu proprio & ex certa scientia, ac de Apostolica potestatis plenitudine, aut aliis quomodolibet concessis, ac etiam iteratis vicibus approbatis & innovatis, quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua exquisita forma servanda esset, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso & forma in illis tradita observata inserti forent, Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus contrariis quibuscumque.

Forma publicationis.

§. 5. Ut autem præsentis litteræ ad omnium quorum interest notitiam deducantur, nec aliquis earum ignorantiam prætereundum, aut contra eas se excusare valeat, dicta auctoritate statuimus & decernimus, ut ipsæmet litteræ, vel earum transcriptum in basilica Principis Apostolorum de Urbe, Sancti Joannis Lateranensis, ac Cancellariæ Apostolicæ valvis, ac in acie Campi Floræ per aliquos ex Curforibus nostris publicentur, earum exemplo in singulis valvis & acie prædictis affixo & dimisso.

Fides transcripti.

§. 6. Verum quia difficile foret præsentis litteras ad singula quæque loca in quibus de eis fides faciendi erit, deferri, volumus, & dicta auctoritate decernimus, quod earumdem litterarum transcriptis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus Prælati, seu personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, in iudicio & extra illud, quæ eisdem Præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo septuagesimo primo, octavo Id. Augusti, Pontificatus nostri Anno sexto.

Dat. P. An. 6. die 6. Aug.

Anno à Nativitate D. 1571. indictione 14. die verò 22. mensis Augusti Pontificatus Sanctissimi in Christo patris, & D. N. D. Pii divina providentia

Publicatio.

Papae V. Anno ejus sexto, retroscripta littera affixa & publicata fuerunt in locis retroscriptis, per nos Joannem Guerardum, & Alamanum de Alamanis Cursores.

Philibertus Chapius Mag. Curs.

CXXIV.

Revocatio regressuum, accessuum, & coadjutorum quibuscumque ad beneficia Ecclesiastica concessarum.

Prohibitionem verò de cetero accessus & regressus concedendi, extendendi, aut transferendi, habes in Conc. Trident. sess. 25. cap. 7.

Edita An. D.
1571.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Romani Pontifici, providentia circumspecta nonnumquam gesta per Praedecessores suos rationabilibus & honestis suadentibus causis, moderatur & revocat, prout id Ecclesiarum indemnitati, conspicit in Domino expedire.

Revocatio regressuum, & coadjutorum ad beneficia concessarum, super quibus litterae Apostolice integraliter expeditae non fuerunt.

§. 1. Hinc est quod Nos volentes omnem haereditariam beneficiorum Ecclesiasticorum successiorem de Ecclesia Dei tollere, ac libertati beneficiorum hujusmodi providere, & ut de persona magis utili & idonea, prout requiritur, facilius providere valeat, Omnes & singulos regressus, accessus & ingressus, etiam eventuales, aut penales, ac coadjutorias etiam de consensu, aut aliis quomodolibet sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque efficacissimis, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, ac de Apostolica potestatis plenitudine, clausulis irritantibus, & aliis decretis quomodolibet per quosvis Romanos Pontifices praedecessores nostros ad beneficia Ecclesiastica, cum cura & sine cura, secularia, & quorumvis Ordinum regularia, etiam si secularia, Canoniciatus, & praebendae, dignitates, personatus, administrationes, vel officia in cathedralibus etiam Metropolitans aut Collegiatis Ecclesiis, & dignitates ipsae in Cathedralibus etiam Metropolitans post Pontificales majores, seu Collegiatis Ecclesiis hujusmodi principales, Regularia verò beneficia hujusmodi, Monasteria etiam consistorialia, prioratus, praepositurae, dignitates etiam conventuales, personatus, administrationes, vel officia etiam claustralia & praepositorias etiam Hospitalis Sancti Joannis Hierosolymitani, etiam quarumvis aliarum Militiarum quibuscumque personis cujuscumque status, gradus, ordinis, & conditionis existentibus, etiam Episcopali, Archiepiscopali, Patriarchali dignitate, aut Cardinalatus honore pollentibus concessos, super quibus litterae Apostolicae integraliter haecenus expeditae non fuerunt, etiam si in Plumbaria nostra aut penes Summatorem nostrum reperiantur, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolica potestatis plenitudine, auctoritate Apostolica tenore Praesentium revocamus, cassamus, & abolemus.

Cancellariae & Camerae Apostolicae litteras desuper non expediant.

§. 2. Mandantes dilectis filiis nostris Vicecancellario, & dicto Summatore, ceterisque Officialibus tam Cancellariae Apostolicae, quam Camerae nostrae ad quos spectat in virtute sanctae obedientiae, & sub indignationis nostrae poena, ne in futurum super dictis gratis regressus, accessus, & ingressus, necnon coadjutoriarum litteras expediant aut relaxent.

Decretum irritans.

§. 3. Decernentes ex nunc irritum & inane quicquid illorum pretextu contra praemissa scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Claustrulae derogatoria.

§. 4. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac etiam nostra de non tollendo jure quaesito regula ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 5. Ut autem praesentes litterae ad omnium, quorum interest, notitiam deducantur, nec aliquis earum ignorantiam praetendere, aut contra eas se excusare valeat, dicta auctoritate statuimus & decernimus ut ipsae litterae vel earum transumptum, in Basilicae Principis Apostolorum de Urbe, Sancti Joannis Lateranensis ac Cancellariae Apostolicae valvis, ac acie Campi Florae per aliquem ex Curforibus nostris publicentur, earum exemplo in singulis valvis, & acie praedictis affixo & dimisso.

§. 6. Verum quia difficile foret praesentes litteras, ad singula quaeque loca, in quibus de eis fides facienda erit, deferri, volumus, & dicta auctoritate decernimus quod earumdem litterarum transumptis manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus Praelati, seu personae in dignitate Ecclesiastica constitutae munitis, eadem prorsus fides adhibeatur in judicio & extra illud, quae eisdem Praesentibus adhiberetur, si forent exhibitae vel ostensae.

Nulli ergo &c.

Datum Romae apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicae millesimo quingentesimo septuagesimo primo, prid. Id. Septembris, Pont. nostri Anno sexto.

Forma publ.
hanc constit.

Transumptum
rum fides.

Dar. F. An. 6.
die 12. Sept.

Publicatio.

Anno à Nativitate Domini nostri JESU CHRISTI 1571. indilf. 14. Pontificatus Sanctissimi in Christo patris, & Domini nostri, D. Pii Papae V. Anno Sexto, die verò mercurii 19. mensis Septembris, Retroscripta littera Apostolica affixa & publicata fuerunt ad valvas Basilicae Principis Apostolorum de Urbe, Sancti Joannis Lateranensis, Cancellariae Apostolicae, & in acie Campi Florae, dimissis illarum copiis in supradictis locis affixis per nos Joannem de Soya, & Petrum Sprengerium Sanctiss. Domini Nostri Papae Cursores.

Antonius Clerici pro Domino Magistro Curforum.

Contra habentes beneficium Ecclesiasticum, non recitantes horas Canonicas.

CXXV.

PIUS EPISCOPUS,

Edita An. D.
1571.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Ex proximo Lateranensi Concilio, salubris sanctio emanavit ut quicumque habens beneficium Ecclesiasticum, cum cura, & sine cura, si post sex menses, quam illud obtinuerit, divinum officium, legitimo cessante impedimento non dixerit, beneficiorum suorum fructus, pro rata omissionis officii, & temporis, suos non faciat, sed eos tamquam injuste perceptos, in fabricas ipsorum beneficiorum, vel pauperum eleemosynas erogare teneatur. Verumtamen multorum animi suspensione tenetur, cujusmodi rata praedictae ratio sit habenda.

§. 1. Nos huic rei evidentius atque expressius providere volentes, statuimus, ut qui horas omnes Canonicas uno, vel pluribus diebus intermiserit, omnes beneficii, seu beneficiorum suorum fructus, qui illi, vel illis diebus responderent, si quotidie dividerentur, qui verò Matutinum tantum, dimidiam, qui ceteras omnes horas, aliam dimidiam, qui harum singulas, sextam partem fructuum ejusdem diei amittat, tamen aliquis choro addictus non recitans omnibus horis Canonicis cum aliis praesens adsit, fructusque, & distributiones foris alter assignatas, sola praesentia juxta statuta, consuetudinem, fundationem, vel alias sibi lucrifecisse pretendat etiam praeter fructuum, & distributionum amissionem. Item ille, qui primis sex mensibus officium non dixerit, nisi legitimum impedimentum ipsum exculaverit, grave peccatum, intelligat admisisse. Declarantes praemia, praetrimonialia, portiones, & qualiacumque

Leo X. decrevit non recitantes horas Canonicas, amittere fructus beneficiorum, pro rata, ut sup. in constit. 7. §. 38.

Hic modo Pont. hanc ratam declarat.

alia

Sanctio poe-
nalis.Dat. P. An. 6.
die 10. Sept.

CXXXVI.

Edita An. D.
1571.

Exordium.

Ortae erant
lites inter
Episcopos &
Militiam
istam super
jure visi-
tandi.Hic Pont.
cas extinguit.Jurisdictio
Episcoporum
de qua
in rubr.

alia beneficia, etiam nullum omnino servitium habentia obtinentes, cum praedictis pariter conveniri. At quicumque pensionem, fructus, aut alias res Ecclesiasticas, ut Clericus percipit, cum modo praedictum ad dicendum officium parvum Beatae MARIAE Virginis decernimus obligatum, & pensionum, fructuum, rerumque ipsarum amissioni obnoxium.

§. 2. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrorum statuti, declarationis, & decreti infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare praesumpserit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursurum.

Datum Romae apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicae millesimo quingentesimo septuagesimo primo, duodecimo Calend. Octob. Pontificatus nostri Anno sexto.

Jurisdictio Episcoporum visitandi parochiales Ecclesias Fratrum Militum S. Joannis Hierosolymitani, quoad animarum curam, & administrationem Sacramentorum.

Hac jurisdictio à Pont. successoribus semper praeservata fuit, ut liquet ex lectione constit. 5. Greg. XIV. Quanta, in Tomo III. & aliarum Bullarum quas ibi indicabo. Cetera autem de hac Militia plenè notavi sup. in constit. 2. Anast. IV. Christianae, fol. 39. Tom. I.

De privilegiis exemptorum circa animarum curam & alia vide Greg. XV. Const. 18. Inscrutabili. inf. tom. 4.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad futuram rei memoriam.

Expocit Pastoralis officii debitum, cui disponente Domino praesidemus, ut ad ea sollicitè intendamus, per quae discordiarum & litium, ac controversiarum quarumlibet materia tollatur.

§. 1. Sanè cum nonnulli ex venerabilibus fratribus Episcopis dilectos filios Magistrum, Balivos, Castellanus Empolite, Priores, Donatos, Capellanos, Fratres, Milites, & alias quascumque personas Hospitalis Sancti Joannis Hierosolymitani ratione Ecclesiarum curam animarum habentiam, illarumque Rectores & Ministros ad ipsum Magistrum spectantes & pertinentes juxta Sacri oecumenici Concilii Tridentini visitare, dictus verò Magister, & alii praedicti, ipsos illorumque Ecclesias, capellanos, & Ministros dictis decretis minimè comprehendi, sed ab illis exemptos esse praetenderent, materia quaestiois orta.

§. 2. Nos igitur eorum paci & quieti consulere volentes, omnes lites, & controversias hujusmodi tam in Romana Curia, quam alibi coram quibuscumque Judicibus in quacumque instantia pendentes, illarumque status, & merita pro sufficienter expressis habentes ad Nos avocantes, eas cassamus, extinguimus, & super illis perpetuum silentium imponimus, ac omnes dictae Militiae personas à quibuscumque censuris harum controversiarum occasione, contra eas per quoscumque latis & incuris absolvimus.

§. 3. Et ne in futurum aliqua amplius controversia oriri possit, decernimus, declaramus, statuimus, omnes & singulos locorum Episcopos, & alios Superiores tamquam Apostolicæ Sedis delegatos, omnes & quascumque Parochiales Ecclesias, ceteraque beneficia Ecclesiastica suarum Civitatum & Dioec. quibus animarum cura imminet, ad dictam Religionem, ejusque Milites, Capellanos, Ministros, Rectores quomodolibet pertinentes, etiam

quod in eis Episcopalem, & temporalem jurisdictionem Religio & Milites praedicti haberent, eorumque Ecclesias, Rectores, Vicarios, & Ministros quoscumque (in his tamen dumtaxat, quae animarum curam illiusque exercitium, & Sacramentorum administrationem respiciunt) visitare, omnesque actus visitationem concernentes exercere posse, & debere, ac Rectores, ceterosque hujusmodi Ministros curam animarum exercentes minus idoneos repertos, siquidem ad nutum amovibiles sint, statim amovere, sin verò titulares sint, illico suspendere, ac Superiores eorum monere, ut intra aliquem brevem terminum in locum amotorum subrogent alios idoneos, prius tamen per ipsos Episcopos, & alios Superiores examinatos, & approbatos, titularibus verò suspensis deputent alios idoneos pariter examinatos, & approbatos, ut supra coadjutores, seu Vicarios juxta decretum Concilii, sessione vigesima prima, capite sexto. Interea verò dum hac subrogatio, seu deputatio fiat, ipsi Episcopi, & alii Superiores pro necessitate curae animarum provideant arbitrio suo, quod si Superiores dictorum Rectorum, & Ministrorum intra tempus praefixum non subrogaverint, aut deputaverint, ut supra, tunc dicto termino elapso ipsi Episcopi, & alii Superiores alios praevio examine juxta ejusdem Concilii formam idoneos repertos in locum amotorum subrogent. Titularibus verò suspensis coadjutores deputent juxta dictum capitulum sextum, sessione vigesima prima, qui tamen in dictis parochialibus perinde interviant, ac si subrogati, aut deputati ab ipsis Superioribus Religionis, & Militum praedictorum fuissent.

§. 4. Volumus autem, quod Episcopi, & alii Superiores praedicti visitationem hujusmodi, & praedicta omnia solum tamquam delegati Apostolicæ Sedis, & gratis, & absque ullis dictae Religionis Rectorum, & Ministrorum impensis, & onere faciant.

§. 5. In collatione item ordinum, necnon consecratione Ecclesiarum, & sacrorum vasorum, ac benedictionibus, & aliis actibus spiritualitatem concernentibus, ac institutione praetentorum ab eisdem Militibus ad beneficia, aut approbatione, seu confirmatione, quas ab eisdem fieri harum praesentium vigore contigerit, gratis omnia faciant, & diligenter attendant, ut nullos admittant, qui qualitates à Concilio requisitas non habeant, aut praevio examine juxta ejusdem Concilii decreta idonei non existant.

§. 6. Nolumus autem Episcopos, & alios Superiores locorum supra scripta facultate visitandi uti, qui cum eadem Religione, & Militibus super jurisdictione Episcopali in locis visitandis coram quibuscumque Judicibus litigant, nisi ipsi Episcopi, & alii Superiores in quasi possessione antiqua exercitii jurisdictionis hujusmodi existerent, salvo tunc jure utrique illaeso in petitorio, sed quod Episcopi, & alii Superiores viciniore jus aliquod in jurisdictione hujusmodi non habentes nullumque interesse prorsus praetendentes, facultate praedicta utantur.

§. 7. Nolumus item per Praesentes ullum asserri praedictum juri visitandi dictas parochiales Ecclesias, & alia beneficia curam animarum habentia, quod antea Religionis, & Militibus praedictis competeret.

§. 8. Inhibemusque expresse dictis Episcopis, & aliis Superioribus, ne hac visitandi facultate eis per praesentes concessa alio utantur modo, quam praescripto.

§. 9. Sique per quoscumque Judices, & Commissarios quavis auctoritate fungentes, sublati eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate, judicari, & definiti debere, irritum quoque, & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, decernimus.

§. 10. Non

1. Declaratio
circa dictam
jurisdictionem.

2. Declaratio.

3. Declaratio.

4. Declaratio.

5. Declaratio.

Clausula
sublata. &c.

§. 10. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, in Provincialibusque, & synodalibus Conciliis editis, generalibus vel specialibus, necnon quibusvis statutis, & consuetudinibus, stabilimentis, usibus, & naturis etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis in contrarium forsan quomodolibet concessis, & confirmatis, quibus omnibus, eorum tenores, ac si de verbo ad verbum infererentur, Præsentibus pro sufficienter expressis habentes illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat ad effectum Præsentium specialiter, & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 11. Volumus autem, quod Præsentium transumptis manu Notarii publici subscriptis, & sigillo persone in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis eadem prorsus fides adhibeatur, quæ Præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ, vel ostensæ.

Fides transumptorum.

Dat. P. An. 6.
die 22. Sept.

Dat. Romæ, apud Sanctum Petrum sub Annulo piscatoris, die vigesimo secundo Septembris, millesimo quingentesimo septuagesimo primo, Pontificatus nostri Anno Sexto.

XXXVII.

Iussu instituendi ab Ordinariis locorum Confraternitates Doctrinæ Christianæ, ad pueros alioque divinæ legis expertes, bonis moribus, sanæque doctrinæ instruendum, Et indulgentiarum tam pro Confratribus, quam per eos instruendis elargitio.

Consonat Concilium Tridentinum sess. 24. cap. 4. In cuius, nec non istius bullæ executionem, statim ferè in Urbe Congregatio Doctrinæ Christianæ instituta fuit; Et postea nonnulli ex dictis Confratribus Clerici in communis vivere ceperunt; Ac postremo ex eisdem Clericis, atque aliis, unam Doctrinæ Christianæ in Urbe Congregationem constituentibus Paulus V. eam in Archiconfraternitatem erexit in basilica S. Petri, & suum Vicarium ejus Provinciam deputavit, amplissimæque indulgentias concessit, ut in ejus cons. 36. Ex credito.

Clerici Congregationis Doctrinæ Christianæ de Urbe, elapso Novitiatus anno, emittebant votum cum juramento sponte de manendo in Congregatione, quod Greg. XV. Romano Pontifici reservavit in Cons. 12. Ex incumbenti. inf. tom. III.

data An. D.
1571.

PIUS PAPA QUINTUS,

Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

EX debito Pastoralis officii, Nobis, meritis licet imparibus, ex alto commissis, ad ea libenter intendimus, per quæ divinus cultus, fideliumque devotio ubique suscipiat incrementum, ac ipsos fideles ad id indulgentiis, & remissionibus invitamus, ut Christiani ipsi per temporalia quæ egerint, consequi valeant præmia felicitatis æternæ.

om menda
tendi Do
crinam.

§. 1. Nos igitur attendentes, quod infantes & pueri bonis moribus & exercitiis educari, quasi semper vitam pudicam, honestam, & exemplarem, ac aliquando sanctam agunt, è converso autem qui parentum carentia, seu paupertate, aut incuria, vel ignavia, non sic educati, per sæpe ducuntur in exitium, & quod pejus est, secum ducunt plures in interitum, unde si diligenter educati, & in doctrina Christiana instructi fuerint, à vitiis, & multis aliis erroribus retraherentur. Considerantes etiam, prout ex fide dignis rebus intelleximus, quod nonnulli approbatæ vitæ Christiani fideles, caritate omnium suprema virtute, circa hoc tam pium, tamque Reipublicæ saluberimum opus accersiti, in singulis festivitibus &

Dominicis diebus in diversis Ecclesiis & locis, hoc opus sanctissimum amplexi sunt, & ibi eosdem infantes & pueros, ac alias miserabiles personas Christianæ veritatis ignaras, congregari faciunt, & eos bonis moribus, & sana doctrina instruunt, ac diligenter in via mandatorum Domini dirigunt, ex quo salutiferi fructus hæcenus proveniunt, & in dies magis auxiliante Domino speramus: Et quod si ad hoc opus sanctissimum ubique locorum exercendum, præfatos Christianos paternis favoribus & indulgentiarum muneribus invitaremus, proculdubio non solum eorundem infantum & puorum ac personarum aliarum salutis consuleretur, verum etiam devotio Christianissimum omnium ad præfatum opus amplectendum multò magis augeretur.

§. 2. Capientes igitur tam pio tamque laudabili operi viribus totis favere, & animas lucrificare Creatori, ex certa nostra scientia universos & singulos Patriarchas, Archiepiscopos, Episcopos, ceterosque Ecclesiarum Prælatos, & locorum quorumcumque Ordinarios, ubilibet constitutos præfatos & futuros rogamus & hortamur attentè, eis, ac eorum in spiritualibus & temporalibus Vicariis seu Officialibus generalibus per Apostolica scripta mandantes, quatenus hoc opus sanctissimum toto pectore amplectentes, aliquas Ecclesias in suis Civitatibus, & Diocæsis respectivè, seu loca honesta, in quibus præfati infantes & pueri ad audiendum doctrinam Christianam convenire possint, deputent, & viros ad id idoneos, vita & moribus approbatos, qui diebus saltem Dominicis eosdem infantes & pueros, ac alias personas divinæ legis expertes, in articulis fidei, & præceptis sanctæ matris Ecclesiæ instruant, confirmet, & eligant, atque tot Societates, seu Confraternitates quot ad hoc tam sanctissimum opus exercendum eis opportune videbuntur, inibi auctoritate nostra erigant & instituunt.

§. 3. Nos enim ut promptius & alacrius ad hanc curam subeundam omnes Christiani fideles alliciantur, & eò libentius curam ipsam suscipiant, quo ex hoc dono cælestis gratiæ conspexerint se uberius refectos: De omnipotentis Dei misericordia, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus auctoritate confisi, omnibus & singulis utriusque sexus Christianis fidelibus verè penitentibus & confessis, seu statutis à jure temporibus firmum confitendi propositum habentibus, qui in aliqua dictarum Societatum, seu Confraternitatum ubilibet constitutarum intraverint, & adscripti fuerint, illis videlicet tam qui alios docuerint, quam qui ab aliis in articulis fidei & præceptis Ecclesiæ hujusmodi instructi fuerint, quotiescumque in præfato sanctissimo exercitio se occupaverint, quadraginta dies de injunctis eis penitentiis auctoritate Apostolica tenore Præsentium misericorditer in Domino relaxamus, Præsentibus perpetuis futuris temporibus valituris.

§. 4. Ceterum quia difficile foret præfatos litteras ad singula quæque loca, in quibus de eis fides forsan facienda foret deferri, volumus quod ipsarum transumptis manu publici Notarii subscriptis, & sigillo alicujus persone in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, in judicio & extra, ubi opus fuerit eadem prorsus fides adhibeatur, quæ Præsentibus adhiberetur si forent exhibitæ, vel ostensæ.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris, die 6. Octob. 1571. Pontificatus nostri Anno Sexto.

Appellationum causæ, in quibus rei ad favorem Fisci R. Cameræ Apost. in poenam pecuniariam condemnantur, infra sex menses expediti debent per appellantem, alioquin Juxdæ à quo sententiam exequi tenetur.

De hac materia appellationum plenè notavi in cons. 52. Pii IV. Et si cuncta. sup. fol. 71.

Iussu instituendi Confraternitates doctrinæ Christianæ ab Ordinariis in eorum Diocæsis.

Concessio Indulgentiarum pro Confratribus, & etiam pro instruendis per eos.

Fides transumptorum.

Dat. P. An. 6.
die 6. Octob.

XXXVIII.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Exordium.

Licet juri maximè consentaneum, nobisque præcipuè cordi sit, ut delinquentes condignis poenis afficiantur, tamen re ipsa, experiendoque cognovimus, quamplures subterfugiis & cavillationibus legum disciplinam evitare.

Causa const.

§. 1. Siquidem compertum est, eos qui tam in Alma Urbe nostra, quam in provinciis ditionis Ecclesie in poenis pecuniariis condemnantur, clypeo appellationum suffultos, ab aliis Judicibus inhibitiones obtinere. Cumque tam dicti Judices appellationum, quam qui coram eis jura Fisci & Camera sunt promoturi, de rei & causæ qualitate minus informati existant, ac ipsi appellantes non modo appellationem suam prosequi non curant, quinimmo illius expeditionem totis viribus fatigant retardare, quo fit, ut modò Officialium mutatione, quæ interim contingit, modo alio quovis prætextu, condemnatio oblivioni tradatur, & sic delictum impunitatem, & exinde ditionis nostræ tranquillitas perturbacionem, ac ipsa etiam Camera Apostolica detrimentum non modicum consequatur. Quibus malis providere volentes cùm remedium appellationis contra Judicum injuriam à legibus introductum minimè tollere intendamus, saltem cùm eo homines abuti, & illud in calumniam versum prospiciamus, illius tempus limitandum, & restringendum duximus, ut eo magis hominum malis occurratur, & bene vivere voluntium quieti & securitati consulatur.

Appellatio-
num causæ in
criminalibus
infra sex mē-
ses expediri.

§. 2. Hac igitur perpetuò valitura constitucione decernimus, ut lata in causis criminalibus sententia continente poenam pecuniariam Fisco nostro applicandam, appellantes ab ea (in casibus tamen, quibus aliàs de jure communi permessa est appellatio, & servatis iis quæ ex forma constitutionum Apostolicarum circa depositum faciendum seu cautionem præstandam sunt servanda) teneantur infra sex menses à die ipsius interpositæ appellacionis computandos, ita coram Judice appellacionis causam suam prosequi, ut etiam expeditionem reportent, quibus elapsis & expeditione coram Judice à quo non reproducta, teneatur præfatus Judex à quo, ad quamcumque Fisci instantiam, etiam si acta fuerint transportata, sententiam præfatam debet executioni omni mora postposita demandare, ita ut effectualis incameratio subsequatur.

Judices tradi
faciatur acta
appellanti-
bus.

§. 3. Verùm ne malitia Judicis jus litigatorum efficiatur deterius, in virtute sanctæ obedientiæ, ac sub indignationis nostræ ac privacionis officiorum, etiam si illa ex causa onerosa obtineant, ac refectionis omnium damnorum & interesse, quibuscumque Judicibus totius status nostri Ecclesiastici quacumque dignitate & præminencia fulgentibus, etiam si Legati, Vicelegati, ac provinciarum Gubernatores existant, committimus & mandamus, ut appellantes sine mora acta & processus quoscumque effectualiter tradi curent & faciant.

Judices ad
quos, causas
appellacionis
expediant.

§. 4. Et ipsi Judices ad quos respectivè, bona fide & omni verlutia remota ad causarum legitimam expeditionem procedant, scituri nos acriter vindicatos, si per eorum quempiam in præmissis fuerit appellanti bus ipsi præjudicium generatum.

Clausulæ de-
rogatorie.

§. 5. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac quibuscumque legibus, & statutis ceterisque in contrarium facientibus quibuscumque.

Placet Motu proprio. M.

Pape subscr.
Publicatio
Pont. Ann. 6.
16. Octobr.

Anno à Nativitate Domini Nostri JESU CHRISTI, 1571. indict. 14. die verò 16. mensis Octobris Pontificatus Sanctissimi in Christo patris, & D. N. Domini Pii divina providentia Pape Quinti Anno Sexto, superscriptæ litteræ affixæ fuerunt ad

valvas Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, per me Joannem de Soja Cursorem.
Antonius Clerici Magister Curforum.

Institutio undecim Vicariorum perpetuorum in totidem Basilicis & Ecclesiis Almæ Urbis, cum assignatione portionum & obventionum pro singulis earum.

CXXXIX.

Ad hæc omninò vide aliam hujus Pontificis constit. 47. Ad exequendum. sup. ubi notavi.

PIUS PAPA QUINTUS.

Edita An. D.
1571.*Motu proprio, &c.*

Et si omnibus universi Orbis Ecclesiis divina dispoſitione præsidemus, propius tamen Ecclesiarum Urbis cura nos tangit, ac de illis potissimum, quibus animarum cura imminet solliciti sumus, utque illa in eis congruè exerceatur quantum cum Deo possumus, sedulo providemus.

Exordium.

§. 1. Unde nos attentè considerantes, quod Basilica S. Joannis Lateranensis & Principis Apostolorum de Urbe: Item Sanctæ MARIE in Via lata, & ejusdem S. MARIE Transiberim, & S. Laurentii in Damaso, & S. Marci, & S. Angeli in foro Piscium, necnon S. Quirici in Montibus, & S. Nicolai in Carcere Collegiata, necnon S. Blasii della Pagnotta, & S. Catharinæ della Rota nuncupatæ, quæ ejusdem Basilicæ Principis Apostolorum, ac S. Pantaleonis, quæ Ecclesiæ S. Eustachii mensis Capitularibus perpetuò unitæ sunt, Parochiales Ecclesiæ ejusdem Urbis curam animarum, & satis amplas Parochias habent, quodque animarum cura ab iis ad quos ea communiter spectat, sæpe negligi solet.

Causa hujus
const.

§. 2. Idcirco expediens, imò & necessarium fore duximus, ut singulis Basilicis, & Ecclesiis prædictis singuli Vicarii perpetui, congrua fructuum & proventuum portione, qua honestè sustentarii valeant eis assignata, prout in Sacro Concilio Tridentino, & aliis à nobis per nostras litteras statutum est, ponantur, & deponentur, qui animarum curam hujusmodi eo diligentius, ac vigilantius gerant, quo magis eam propriè ad se pertinere, & sibi incumbere noverint. Quapropter & ejusdem Concilii, & nostris hujusmodi statutis inherentes, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, in singulis ex Basilicis, & Ecclesiis supradictis, singulas Vicarias perpetuas pro singulis Vicariis perpetuis, qui curam animarum Basilicis & Ecclesiis respectivè incumbendum gerere, ac Sacramenta Ecclesiastica ibi ministrare, Missas celebrare, & alia juxta providam ordinationem per tempore existant, in Urbe Vicarii nostri in Spiritualibus Generalis, cuique assignanda onera subire debeant, ad nominationem dictorum filiorum Capituli cujuslibet ex eisdem Basilicis, & Ecclesiis, quæ nominatio sit ex numero approbatorum ab eodem Vicario, prævio illorum examine coram examinatorebus ad id in ipsa Urbe deputatis per dictum Vicarium, seu Vicarii Vicegerentem, instituendos, ponendos & deputandos perpetuo erigimus, & constituimus.

Institutio un-
decim Vica-
riorum de
qua in rub.

§. 3. Singulisque Vicariis hujusmodi singulas portiones, videlicet in qualibet Basilicarum prædictarum centum & viginti, in S. Blasii verò septuaginta, in S. Catharinæ sexaginta, in S. Pantaleonis aliorum sexaginta, in S. MARIE in Via lata, octoginta, in S. MARIE Transiberim aliorum octoginta, in S. Laurentii centum, in S. Angeli sexaginta, in S. Quirici quinquaginta, in S. Nicolai Ecclesiis prædictis similiter quinquaginta fecutorum monetæ annuatim ex fructibus, redditibus, & proventibus earundem Basilicarum, & Ecclesiarum, eisdem Vicariis per Capitula

Assignatio
portionum
pro Vicariis.

Basiliarum, & Ecclesiarum, in quibus Vicariæ hujusmodi consistunt, vel quarum mens Capitularibus Ecclesiæ ipsæ unitæ sunt, ut præfertur, quorum Capitulum ad hæc expressus accedit assensus, pro una in Sancti Joannis Baptiste, & altera medietatibus portionum hujusmodi in Domini Nostri JESU Christi Nativitatum Festivitatibus integrè perfolvendis. Idem omnia & singula emolumenta, & obventiones, quæ ratione exercitii, curæ, & administrationis Sacramentorum hujusmodi, ac officiorum funeralium, quæ ipsa die humationis cadaverum celebrabuntur, non autem ratione anniversariorum, & ad ipsas Ecclesias, & Basilicas in posterum pertinebunt, per ipsos Vicarios propria auctoritate percipiendi, exigendi & levandi, ac in suos usus & utilitatem convertendi, & convertenda loco pensioni annuarum pro congrua ipsorum Vicariorum sustentatione perpetuo assignamus, & applicamus.

§. 4. Mandamus Motu simili tenore Præsentium Dilecto Filio nostro Jacobo tituli Sancti MARLE in Cosmedin. Presbytero Cardinali Sabello nuncupato nostro in Alma Urbe Vicario in Spiritualibus Generali, quatenus per se vel alium seu alios, dictos Vicarios ad nominationem & institutionem hujusmodi, in Vicarium prædictarum possessionem corporalem inducat auctoritate nostra, & defendat inductus, amoris ab illis quibuscumque illicitis detentoribus, ac faciens singulis eisdem Vicariis de portionibus eis debitis prædictis integrè responderi, eosque portionum ipsarum, necnon emolumentorum, & obventionum eis ut supra assignatorum perceptione, & perceptionis pacifica possessione seu quasi pacificè frui, & gaudere. Non permittens eos desuper à quocumque quavis occasione indebitè molestari, præmissaque omnia & singula efficaciter adimpleri; & ab omnibus inviolabiliter observari curet; Contradictores quoscumque & rebelles per censuras, & penas Ecclesiasticas, ac alia opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita compescendo.

§. 5. Nos obstantes nostra, qua statuiamus & ordinavimus, & declaravimus, non majorem centum, nec minorem quinquaginta futurorum annuorum summam computatis omnibus etià incertis emolumentis, & aliis obventionibus communiter percipi solitis, Vicariis perpetuis ex præfato Concilio erigendis omnino assignari; nisi Vicariis temporariis solum fuisse plus assignari, ac aliis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac Basilicarum, & Ecclesiarum præfatarum etiam juramento, &c. privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis Basilicis & Ecclesiis præfatis, earumque Capitulis, Archipresbyteris, Titularibus, Cardinalibus, & personis, ac dilectis filiis Po. Rom. de non conferendis beneficiis dictæ Urbis aliis quam originariis, &c. quibusvis aliis in genere vel in specie, & aliis in contrarium quomodolibet, etiam per Leon X. & alios Roman. Pontifices etiam pluries concessis, &c. Quibus omnibus &c. illorum tenores &c. latissimè derogantes, ceterisque contrariis quibuscumque.

Fiat Motu proprio. M.

§. 6. Et cum abolutione à cens. ad affectum, &c. Et de erectione, constitutione, assignatione, & applicatione, mandato, ac derogatione aliisque præmissis, que hic pro sufficienter repetitis habeantur ad pariem etiam separatim, & in una, nulla facta mentione, ac aliis, & quod sola signatura præsentis nostri Motus proprii sufficiat, & ubique fidem faciat, in iudicio & extra illud, non obstantibus quibuscumque.

Fiat M.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum nonis Novembris Anno sexti.

CXL. Contra ambientes dignitates, & officia jurisdictionis administrationem habentia, eaque pretio, seu promissione procurantes vel assequentes, aut assecuta manutinentes, in Statu Ecclesiastico.

PIUS PAPA V.

Motu proprio, &c.

ET si Romani Pontificis continua indefessaque meditatio circa subditorum suorum commodum, & utilitatem continuè implicatur, ac qua iis, quos ut filios tenere diligit, obesse posse credit, de medio tollit; negotiorum tamen multitudine pressa, singula in dies singulos considerans, illorum executionem, etiam dietis disponit, ut & negotia ipsa salubrius dirigantur, ac ipsi subditi paulatim sui in eos amoris cognoscant indicia.

§. 1. Sanè licet aliàs ne ordo iustitiæ perverteretur, & ex certis aliis inibi expressis per civiles constitutiones salubriter fuerit statutum, ut Iudices, & alii iustitiæ Administratores sine quocumque suffragio fieri debeant, gravissimis etiam injunctis penis, qui præmissa constitutione transgredi aut quocumque modo fuissent, accepimus tamen nuper, non sine animi nostri displicentia, nonnullos pro consequendis officiis, & dignitatibus jurisdictionis exercitium habentibus, pecunias & alias resolvere, & promittere aliis quibus Curialibus, quorum intercessionibus & favoribus talia officia, & dignitates obinent. Licetque pro nostri Pastoralis officii debito præmissa coniventibus oculis pertransire nequeamus omnem adhibuerimus diligentiam, ut tam ambitiosi hujusmodi, quam pecuniarum hujusmodi receptores, & stipulatores, tam publicè quam secretè reperirentur; nihilominus exinde nihil certi explicari hæcenus potuimus.

§. 2. Cupientes igitur præmissis modum aliquem imponere, ac eos, quos civilium pœnarum timor à similibus non coereret, per Canonicas sanctiones auctoritate Apost. omnino deterereri, & avaritiæ hujusmodi genus juri & iustitiæ hujusmodi tam obnoxium de medio tollere, constitutionis civilis, ac pœnarum per illas statutarum tenorem & formam Præsentibus pro expressis habentes, Motu simili, &c. & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, omnes, & singulas leges, constitutiones, statuta, & decreta contra delinquentes hujusmodi, tam à jure civili, quam à sacris Canonibus facta, ac in illis contenta, punitiones, & penas quascumque in tales inflicta, harum serie innovamus, easque idem robur, eandemque vim obtinere volumus atque statuiamus, quod & quam habuissent, & haberent, si hæcenus ad unguem observatæ fuissent, vel à nobis per Præsentes emanarent.

§. 3. Insuper quoque, ut earum usus pœnarum multiplicatione stabilior efficiatur, hac nostra perpetuò valitura constitutione, quamque vim legis, etià inviolabilis habere sancimus, legibus, constitutionibus, statutis, & decretis prædictis præjudicium non inferendo, quinimo illis addendo, decernimus & ordinamus, quod de cetero perpetuis futuris temporibus nemini cuiuscumque dignitatis, status, gradus, ordinis, & conditionis fuerit, liceat mediante pecunia, vel solutione, & traditione, ac promissione aliarum rerum, etiam per interpositas personas, aut alias quovis modo faciendas, aliquas dignitates, & officia, exercitium & administrationem jurisdictionis habentia procurare, assequi, vel obtinere, ac si quis his Præsentibus contravenisse quocumque modo dici, aut censi potuerit, ipsum cõtravenientem eo ipso confiscationis omnium bonorum, degradationis, & amissionis tam privilegii doctoratus, quam quorumcumque per eum obtentorum officiorum, tam secularium quam Ecclesiasticorum, ac demum ultimi supplicii pœnas irremissibiliter incurrere volumus.

§. 4. Ceterum, ut fraudibus, quæ circa præmissa exoriri possent facilius occurratur, pari modo statuiamus, quod ubicumque & quandocumque compertum fuerit per interpositam personam aliquas pecunias, seu alias res traditas seu promissas fuisse alicui Curiali familiari, vel cuicumque alteri personæ pro officiis, & dignitatibus jurisdictionis administrationem habentibus, is qui officium hujusmodi obtinuerit se à præmissis, attentata interpositione personæ hujusmodi

Exordium.

Jure civil cavetur, Iudices, & alios iustitiæ ministris: sine quocumque suffragio eligi debere, ut in auth. ut Iudices, sine &c.

Hic autem Pontif. pœnas omnes in transgressores inflicta, & confirmat.

Quirimo alias pœnas hic expressas imponit procurantibus, vel obtinentibus mediante pecunia, dignitates, & officia.

Et exceptionem igno rantia, non admitti decernit.

nullatenus excusare queat: quinimo nulla admiffa ignorantie excufatione ipfo iure præfatur folutionem, & promiffionem hujusmodi de eorum qui officia & dignitates familia obtinuerint confenfu, & mandato penitus effe facta, iisdemque propterea pœnis fubjacere omnino intelligatur. Poftremo ne ii qui in præteritum talia officia, feu dignitates folutionibus, feu promiffionibus mediantibus impetraverint, credant fe per præfentes abfolutos effe; eisdem Motu, fcientia, & poteftatis plenitudine perpetuo declaramus, eos pœnas in tales à jure communi infligti incurriffe, & contra eos ad pœnarum hujusmodi profecutionem procedi poffe.

§. 5. Eos verò qui fimilibus mediis aliqua officia, & dignitates fimiliter iurifdictionis adminiftratione habentia obtinent, fi in futurum quippiam unquam vigore præcedentium promiffionum in affecutione officii hujusmodi factarum folverint, ipfo jure, & facto pœnas in hac noftra conftitutione contentas incurrere, præfentesque noftras, tam eos qui in futurum officia fimilia, & dignitates folutionibus, & promiffionibus præcedentibus obtinebunt, quàm eos qui jam obtinuerunt, fi in futurum aliquid manutentionis in eis, aut alia caufa folverint ligare volumus.

§. 6. Decernentes contra præmiſſa quodvis pactum, etiam juramento vallatum, ac inftrumenta, & alias forſan deſuper editas ſcripturas minime in caufa effe poſſe quo minus ſolvere habentes, ſi pro præmiſſis folverint pœnas Præſentibus contentas incurant. Nos enim pacta, conventiones, promiſſiones, & ſcripturas, ac alia quæcumque quomodolibet ut præſertur inita exinde caſſamus, irritamus, & annullamus, eoſque à juramentis, & aliis nexibus prædictis abſolvimus.

§. 7. Necnon Præſentes, & deſuper forſan conſciendas litteras perpetuis futuris temporibus durare, ac omnes & ſingulos à data Præſentium irremiſſibiliter ligare volumus, illaſque nullo unquam tempore de ſubreptionis, vel obreptionis vitio, aut intentionis noſtræ, vel quopiam alio defectu notari, aut ſub quibufvis revocationibus, & derogationibus comprehendendi nullatenus poſſe.

§. 8. Sique per quofcumque iudices, &c. & cauſarum Palatii Apoſtolici Auditores, ac Sanctæ Romanæ Eccleſiæ Cardinales, ſublata, &c. iudicari debere, irritum quoque, &c. decernimus.

§. 9. Non obſtantibus præmiſſis, ac quibufvis conſtitutionibus, & ordinationibus Apoſtolicis, ac quibufvis etiam Almæ Urbis, & aliarum Civitatum, Oppidorum, Terrarum, & locorum, etiam juramento, &c. roboratis, ac Provincialibus, municipalibus, & particularibus ſtatutis, ac legibus, etiam Imperialibus, & in corpore juris ſcriptis, privilegiis quoque, &c. hac vice latiffimè derogamus, ceteriſque contrariis quibufcumque.

§. 10. Ut autem Præſentium tenor omnibus innotefcat, nulluſque earum ignorantiam allegare queat, eas in valvis Baſilicæ principis Apoſtolorum, ac Sancti Joannis Lateranenſis, & in acie Campi Floræ de Urbe publicari mandamus, ipſaſque ſic publicatas, omnes & ſingulos quos illæ concernunt ita afficere volumus, ac ſi effent omnibus perſonaliter intimatæ. Decernentes quoque Præſentium earundem ſolam ſignaturam ſufficere, & ubique fidem facere in iudicio & extra, regula quacumque contraria non obſtante.

§. 11. Ac illarum tranſumptis manu alicujus Notarii publici ſubſcriptis, & ſigillo Almæ Urbis Gubernatoris, aut alicujus alterius iudicis munitis, eandem proſus fidem adhiberi, quæ ipſis originalibus litteris adhiberetur, ſi forent exhibitæ, vel oſtenſæ. Placet Motu proprio. M.

Datum Romæ apud S. Petrum, Non. Decembris Anno ſexto.

Anno à Nativitate Domini noſtri JESU-CHRISTI 1571. indiſtione 14. Pontificatus verò Sanctiſſimi in Chriſto Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa V. Anno ſexto, die verò 8. menſis Decembris, ſupradicta littera affixa, & publicata fue-

runt ad valvas Baſilicarum Principis Apoſtolorum de Urbe, Sancti Joannis Lateranen. & in acie Campi Floræ, per nos Scipionem de Offaviani, & Alamanum de Alamanis præbati Sanctiſſimi D. N. Papa Curſores.

Jo. And. Panizza Maſter Curſorum.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad perpetuam rei memoriam.

Cum nuper ne ordo juſtiæ perverteretur, & ex certis aliis cauſis animum noſtrum moventibus fuerint &c. ut ſup.

§. 1. Attendenteſque quod forſe probabiliter dubitari contingat, an dicta noſtra conſtitutio comprehendat recipientes hujusmodi pecunias, ac res, ac promiſſiones ſibi factas ſtipulantes ut officia prædicta exercitum ac iurifdictionis adminiſtrationem habentia conſeri faciant, ac mediatores & interpoſitas perſonas: Propterea Nos motu ſimili & ex certa ſcientia, & de poteſtatis plenitudine hac noſtra perpetuo valitura conſtitutione declaramus, & quatenus opus ſit addendo prædictæ noſtræ conſtitutioni decernimus, quod dicta noſtra conſtitutio, ac omnes & ſingulæ pœnæ in ea expreſſæ, perinde ſi gent & afficiant omnes & quofcumque cujuſvis dignitatis, gradus, conditionis, ac præminentie exiſtant qui pro hujusmodi officiis iurifdictionis adminiſtrationem habentibus conferendis, ac mediatores & interpoſitas perſonas qualcumque pecunias vel alias res ut ſuprà receperint, ac ſi ſupradicti in dicta noſtra conſtitutione comprehenſi eſſent, & de illis in ea expreſſa mentio facta eſſet.

§. 2. Necnon Præſentes, & deſuper conſciendas forſan litteras perpetuis futuris temporibus durare, ac omnes & ſingulos à data Præſentium irremiſſibiliter ligare volumus, illaſque nullo unquam tempore de ſubreptionis, vel obreptionis vitio, aut intentionis noſtræ, vel quopiam alio defectu notari, aut ſub quibufvis revocationibus, & derogationibus comprehendendi nullatenus poſſe.

§. 3. Sique per quofcumque iudices, &c. cauſarum Palatii Apoſtolici Auditores, ac S. R. E. Cardin. ſublata, &c. iudicari debere, irritum quoque, &c. decernimus.

§. 4. Non obſtantibus præmiſſis, ac quibufvis conſtitutionibus & ordinationibus Apoſtolicis, ac quibufvis etiam Almæ Urbis, & aliarum Civitatum, Oppidorum, Terrarum, & locorum etiam juramento, &c. roboratis, ac provincialibus, municipalibus, ac particularibus ſtatutis, ac legibus, etiam Imperialibus, & in corpore juris ſcriptis, privilegiis quoque, &c. etiam motu ſimili, &c. etiam conſiſtorialiter, &c. quibus omnibus illorum tenores, hac vice latiffimè derogamus, ceteriſque contrariis quibufcumque.

§. 5. Ut autem Præſentium tenor omnibus innotefcat, nulluſque earum ignorantiam allegare queat, eas in valvis Baſilicæ Principis Apoſtolorum ac S. Joannis Lateranen. in acie Campi Floræ de Urbe publicari mandamus, ipſaſque ſic publicatas omnes & ſingulos quos illæ concernunt ita afficere volumus, ac ſi effent omnibus perſonaliter intimatæ. Decernentes quoque Præſentium earundem ſolam ſignaturam ſufficere, & ubique fidem facere, in iudicio & extra, regula quacumque contraria non obſtante.

§. 6. Ac illarum tranſumptis manu alicujus Notarii publici ſubſcriptis, & ſigillo Almæ Urbis Gubernatoris, aut alterius alii iudicis ſigillatis, eandem proſus fidem adhiberi, quæ ipſis originalibus litteris adhiberetur, ſi forent exhibitæ, vel oſtenſæ. Placet Motu proprio. M.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum pridie idus Februarii Anno Septimo.

Anno à Nativitate Domini 1572. indiſt. 15. die verò 13. Menſis Februarii, Pontific. S. N. D. Domini Pii Papa V. Anno 7. Retroſcripta littera Apoſtolica affixa, & publicata fuerunt Romæ in locis retroſcriptis

Solventibus que aliquid ex cauſa manutentionis officiorum jam obtentorum, eaſdem pœnas infligat.

Promiſſionemque deſuper factas annullat.

Claufulæ præſervativa.

Decretum irritans.

Claufulæ derogatoria.

Forma publicæ conſtitutionis.

Fides exemplorum.

Dat. P. An. 6. die 8. Dec. Publicationis.

Edita An. D. 1572.

Exordium.

Declaratio, quod dicta conſtitutio ligat, etiam recipientes pecunias, pro impetratura officiorum, ac mediatores.

Claufulæ præſervativa.

Decretum irritans.

Clauf. derog.

Forma publicæ conſtitutionis.

Fides exemplorum.

Dat. P. An. 7. die 21. Febr. Publicationis.

per me P. Paulum de Mattheis prefati Sanctissimi
D. N. Pape Curf.
Philibertus Magister Curforum.

CXLI.

De electione Prioris Generalis, & aliorum Præ-
torum Congregationis Canonicorum Regula-
rium S. Salvatoris, Ordinis S. Augustini, bono-
rumque temporalium administratione.

Hac bulla paucis immutatis confirmata est à Greg.
XIII. in ejus constit. 59. Quæ inter, ac Sixto V
in constit. 98. Ex varietate, ibi videas.

PIUS PAPA QUINTUS.

Ad futuram rei memoriam.

Edita An. D.
1571.

Exordium.

Inter ceteras Pastoralis officii nostri curas, illa
nos præcipue urget, per quam Regularium Con-
gregationum, illarumque personarum commodita-
ti, & felici directioni consulitur, ac Monasteria,
domos, Ecclesiæ, & loca, tam in spiritualibus
quàm temporalibus, prudentia, & vigilantia Pra-
latorum canonicè electorum, incrementum susci-
pere possent arbitramur.

§. 1. Sanè cum Nos nuper per alias nostras in for-
ma Brevis litteras, iustis de causis animum nostrum
moventibus, dilectum filium Stephanum tunc Con-
gregationis S. Salvatoris, Ordinis S. Augustini Cano-
nicorum Regularium Priorem generalem, in Capitu-
lo generali Bononiz proxime celebrato electum,
ab onere sui Generalatus officii abolverimus, & li-
beraverimus, ac in ipsius locum dilectum etiam fi-
lium Ambrosium de Lanis Eugubinum ipsius Con-
gregationis Priorem Generalem substituerimus, &
deputaverimus, prout in dictis litteris plenius con-
tinetur.

§. 2. Et arbitantes pro negotio reformationis
Congregationis prædictæ expedire, quod etiam Vi-
sitatores, & Procurator generalis ejusdem Congre-
gationis à nobis deputentur, idcirco dilectos filios
modernos prædictæ Congregationis Visitatores, &
Procuratorem generalem in prædicto Capitulo Bo-
nonie electos, ab onere suorum officiorum etiam
abolverimus, & liberamus, & in ipsorum locum, quo
ad prædicta officia, in Visitatores videlicet, N. N. N.
in Procuratorem verò generalem N. dilectos filios,
ipsius Congregationis canonicos, cum honoribus,
oneribus, potestatibus, facultatibus, jurisdictioni-
bus, & prærogativis solitis & consuetis substitui-
mus, & subrogamus.

§. 3. Cumque per alias nostras litteras statuerimus
& ordinaverimus, quod nullus ex dicta Congre-
gatione Canonicus in Capitulis, tam generalibus quàm
conventualibus pro tempore celebrandis, vocem
activam, seu passivam in electionibus faciendis obti-
neat, nisi sit in sacris ordinibus constitutus, & post
per eum legitime emissam professionem in eadem
Congregatione, quoad electiones in capitulo gene-
rali, per septennium, quo verò ad alias electiones in
capitulis conventualibus faciendas, per quadriennium
laudabiliter vixerit.

§. 4. Et quoad vocem activam in capitulo actu
præfens fuerit.

§. 5. Eligendique in Priorem generalem, duas
ex tribus partibus.

§. 6. Alii vero suffragiorum majorem partem
obtinuerint.

§. 7. Quodque in Capitulo generali, Prior, &
Procurator Ordinis generales, necnon Visitatores,
eorumque substituti, pro casibus necessitatis dum-
taxat eligantur.

§. 8. Et eligendi in Priorem, & Procuratorem
generales, necnon in Visitatores, scientia, pruden-
tia, vitæ integritate, ac pietate præditi existant.

§. 9. Factaque ipsorum canonica electione juxta
hoc nostrum statutum, & ordinem, ac Congrega-
tionis præfatæ regularia instituta, Prior generalis sic
electus, una cum Definitoribus eligat Priores pro
Monasteriis, in quibus non adsint plures quàm sex
Canonici, ac disponat & ordinet familias solitas &
necessarias pro quolibet Monasterio, ita quòd in
qualibet familia sint aliquæ personæ idoneæ, quæ

possint eligi in Priores, aut Abbates, five Preposi-
ti juxta cujuslibet Monasterii titulum, ipsorumque
Vicarios, & Discretos mittendos ad Capitulum ge-
nerale. Quorum Prælatorum Conventualium, &
Viciorum electiones, non amplius in Capitulo
generali fiant, sed illi, sicut discreti, in Capitu-
lis conventualibus cujuslibet Monasterii, cujus Ca-
nonici excedunt numero sex Canonicorum, modo
infra scripto eligantur, videlicet.

§. 10. Postquam familia omnes in Capitulo ge-
nerali (ut præmittitur) pro quolibet Monasterio
dispositæ & ordinatæ, ad locum sibi destinatum sta-
tuto tempore pervenerint, antiquior Canonicus in
quolibet Monasterio existens, deputet diem & ho-
ram ad celebrandum Capitulum, & ad sonum cam-
panellæ convocari faciat omnes Canonicos habentes
vocem activam & passivam. Illique convocatis &
residentibus, præfatus antiquior Canonicus adventat
an sint omnes præfentes, deinde eos interroget, an
eis placeat dies & hora ad futuram electionem, &
illis annuentibus, præmissa generali confessione à
capitulo recitanda, eos absolvat dicens. Misereatur
vestri &c. Et sit nemini aliquo vinculo excommuni-
cationis &c. Et dispensò vobiscum super irregulari-
tate &c. Postea dicatur Hymnus Veni creator Spiritus
&c. Kyrie eleison, &c. Pater noster &c. Oratio
Deus, qui corda, &c. Quibus peractis in conspectu
omnium cum duobus aliis de capitulo, qui primi-
tus habitum Religionis susceperunt, ipsum concon-
mitantibus, simulque cum eo residentibus ad men-
sam decenter preparatam cum capsula, seu urna,
ubi schedulæ suffragiorum poni debent, & papyro,
& atramento ad scribendum processum electionis,
accedat. Et quoniam vota, seu suffragia juxta de-
creta Concilii Tridentini, debent esse secreta, ita
quod eligentium nomina nunquam publicentur,
singuli electores schedulas accipiant omnino simi-
les, & unusquisque in sua schedula nomen eligendi
inscribat, vel dicat, Eligo N. in Priorem: & anti-
quior Canonicus, & alii duo capitulares prædicti,
postquam ipsi schedulas, ordine antiquitatis inter
eos servato, in urnam seu capsulam demiserint, alio-
rum schedulas accipiant, & in urnam, seu capsulam
præfatam inferant, & inspiciant an schedulæ sint nu-
mero pares cum electoribus ibi præfentibus, & si in-
venerint esse in majori, vel in minori numero, quàm
sint capitulariter ibidem præfentes, illas comburant,
rursusque ad scrutinium modo præmissò procedant
donec invenerint scrutinium esse canonicè factum,
& tunc legant schedulas, & si electio numero suffra-
giorum secuta fuerit, schedulæ etiam comburantur,
factaque electione, antiquior Canonicus, & alii duo
scrutatores prædicti publicent electorum nomina,
exprimendo numerum suffragiorum quæ quisque
habuerit, quod faciendum est, licet aliquis non ha-
buerit vota, vel suffragia ad sufficientiam, ut ad se-
cundum scrutinium (sicut præmittitur) deveniri
possit. Decretum verò electionis ab illo, qui inter
scrutatores primus fuerit, licet electio suum suffra-
gium non contulerit, per hæc verba formetur. Ego
N. vice præfentium capitularium eligo (E. in Prio-
rem, Vicarium, seu) Discretum nostri Monasterii,
quòd si primus scrutator fuerit electus ad aliquod of-
ficium, secundus scrutator ad publicandum scruti-
nium, & formandum decretum succedat, completæque
electione, & decreto (ut præmittitur) formato, scru-
tatores processum electionis compleant, atque sub-
scribant, subjungendo: Invenimus quod N. in Prio-
rem, seu Vicarium, aut Discretum nominatus habuit
tot suffragia, & ego N. decreta electionum formavi:
In quorum fidem manibus nostris subscriptimus, &
sigillo Monasterii præfati roboravimus, die ut su-
pra. His peractis, antiquior Canonicus dicat sine
cantu Psalmum, Laudate Dominum omnes gentes,
cum versu, Salvos fac servos tuos &c. Et Oratione,
Præfende Domine famulis tuis &c. deinde dicat
Adjutorium nostrum &c. & dicto responso ab omni-
bus; Qui fecit cælum &c. terminetur capitulum, &
scrutinium, seu processum, ac decreti electionis mo-

Hoc tamen
non fuit usu
receptum, ut
percipitur ex
bulla Greg.
XIII. cit. in
rubr.

Formam di-
ctæ electio-
nis in Capitu-
lis Con-
ventualibus
præfuit.

Hic Pont. ju-
stis de causis
Priorem ge-
neralem Con-
gregationis
deputavit.

Visitatores
modo & Pro-
curatorem
generalem
deputat.

Canonicis in
sacris consti-
tutis tantum,
vocem acti-
vam, & passivam
habeant.

Absentes
non eligant.
Electio Ge-
neralis requirit
duas partes
votorum.
Aliorum au-
tem fit pro
majore parte
votorum.
Electio Prioris,
Visitatoris
et Procuratoris
fuerat ad
Cap. generale
eorum qualitates
designantur.
Generales in
quibuldam
Monasteriis
Priores eligi-
t. in aliis
vero capitula
conventualia.

Dieta autem quolibet anno.

do præmissio factum transmittitur ad Priorem generalem pro confirmatione obtinenda, qui Prior generalis cum Voto Visitatorum, quarens electio fuerit canonice facta, & personæ electæ nullam patiantur exceptionem, ipsam electionem confirmare, & approbare debeat, alioquin legitima causa subsistente mandet ad aliam electionem (ut præmittitur) deveniri, & idem servetur, quoties officium Prælati conventuales quovis modo vacare contigerit: & hanc formam & ordinem in singulis electionibus. In reliquis verò omnibus, & singulis casibus constitutiones, statuta, & consuetudines ipsius Congregationis inviolabiliter observari volumus, & mandamus, & aliter factæ electiones nullius sint roboris, vel momenti. Et si quis aliàs quàm ut præmittitur quovis modo, aut quæsito colore se intromiserit, excommunicationis sententiam ipso facto incurrere censetur. Et acceperimus, quod nonnulli Priores, Abbates, seu Præpositi conventuales dictæ Congregationis, illorumque Vicarii in Capitulo prædicto præter, vel contra dictarum nostrarum litterarum formam electi fuerunt. Nosque cupimus huiusmodi formam inviolabiliter observari, eosdem Priores, Abbates, seu Præpositos, eorumque Vicarios conventuales in eodè Capitulo electos & deputatos, ab eorundem, & eorumque ipsorum officiis similiter absolvimus, eximimus, & liberamus, volumus tamen quòd singuli ejusdem Congregationis conventus ubi adsunt plures quàm sex Canonici, cum primum sibi per Priorem Generalem, & Visitatores prædictos in iunctum & ordinatum fuerit, ad novam electionem Priorum, Abbatum, vel Præpositorum, necnon Vicariorum in unoquoque Monasterio, Abbacia, seu Præpositura juxta prædictum nostrum statutum deveniant, & devenire debeant: quodque interea Abbates, Priores, seu Præpositi, eorumque Vicarii conventuales per nos (ut præmittitur) ab eorum officiis absolvi, donec novæ electiones & confirmationes Prælatorum conventuum huiusmodi fiant, eorum officia, ut prius, exerceant, ac si ab eis absoluti non fuissent.

Capitulum generale quolibet triennio celebrandum est.

Hoc approbat & amplius non immutari jubet Greg. XIII. & Six. V. citati in rubrica.

§. 11. Et insuper considerantes, quod prædicta Congregatio pro electione Prioris generalis, Visitatorum, Procuratoris etiam generalis, & aliis huiusmodi peragendis negotiis, Capitulum generale singulo quoque anno maximam cum impensa, & non minore Canonico incommode celebrare soleat, ac propterea magna inde evagandi, & sese dissolvendi Canonici ipsi occasio præbeatur: cumque Prioris ipsius Generalis, Visitatorum, Procuratoris etiam Generalis, necnon Prælatorum Conventualium, Vicariorumque prædictorum officia annalia tantum sint, id plerumque usu venire solet, ut Prior ipse generalis, & Visitatores vix omnia ipsius Congregationis Monasteria, & loca, prout eorum officio incumbit, visitare, & operam suam illis pro re nata impendere, Procurator vero generalis similiter officii sui munus agnoscere, negotia, & causas Congregationis pertractandas percipere, usum Curie Romanæ apprehendere, atque alia ad officium suum spectantia providere; Prælati autem conventuales, eorumque Vicarii, & ministri Monasteriorum & locorum, Curie & regimini suo commissorum statum intelligere, res, & bona agnoscere, consuetudines percipere, negotia obire, vix tam brevi temporis spatio possint, quin etiam quando rerum & personarum vel Congregationis, aut Monasteriorum, & locorum aliquam, vel mediocrem notitiam, & cognitionem habere incipiunt, tum maxime temporis exclusi angustia eorum officia dimittere, negotia tam spiritualia quàm temporalia aut intacta aut certe inchoata, atque interrupta novis successibus relinquere cogantur. Volentes igitur desuper opportunum adhibere remedium, ac ut electiones Prælatorum, & Ministrorum ipsius Congregationis canonice, ritè, & rectè fiant, quod de cetero ejusdem Congregationis Capitulum generale quolibet triennio tantum celebretur, ubi Prior generalis, Visitatores, & Procurator generalis eligantur, & cetera ejusdem Congregationis negotia juxta infra scriptum nostrum statutum, & ipsius Congregationis regularia instituta pertractentur & disponantur.

§. 12. Quodque quolibet anno Prior generalis, & Visitatores, una cum tribus aliis ex majoribus Prælati conventuales ipsius Congregationis ejusdem Prioris generalis arbitrio eligendis die ad id statuta in aliquo loco commode ad tractandum negotia Congregationis juxta eorum exigentiam conveniant, significando prius omnibus & singulis Prælati conventuales diem, & locum, ita ut aliquis ipsorum haberet aliquid in huiusmodi Congregatione proponendum, commode vel ipsemet personam ad prædictum locum accedere, vel per nuntium, aut Epistolam ea de re Priorem generalem, & alios prædictos certiores reddere, ipsosque consulere possit.

§. 13. Necnon quòd Prioris generalis, Visitatorum, Procuratoris etiam generalis in postero triennalia, Prælatorum vero conventualium officia biennalia sint, & esse censentur; ita tamen ut hac vice Prior generalis, Visitatores, & Procurator etiam generalis (ut præmittitur) per nos deputati, usque ad Capitulum generale de anno futuro millesimo quingentesimo septuagesimo quarto, Dominica tertia post festum Resurrectionis D. N. JESU CHRISTI, in loco opportuno juxta prædicta regularia instituta celebrandum, Prælati vero conventuales juxta præmissum nostrum statutum jam electi, & postmodum eligendi usque ad novam electionem, & confirmationem in Capitulis conventuales de anno 1573, tempore congruo celebrandas faciendas, eorum officiis fungi possint, & valeant, atque omnino fungantur. Etsi deinceps perpetuis futuris temporibus Capitulum generale de triennio in triennium celebretur, ac Prior generalis, Visitatores, & Procurator etiam generalis per triennium, Prælati vero conventuales ipsius Congregationis per biennium eorum officia, cum honoribus, oneribus, facultatibus, & jurisdictionibus solitis, & consuetis, prout antea cum annalia erant, exerceant, & exercere possint, ac valeant.

§. 14. Quodque si triennio, vel biennio huiusmodi durantiis Prioris generalis, Visitatorum, Procuratoris etiam generalis, aut Prælatorum, seu Vicariorum conventuum prælatorum, vel alicujus eorum officia per privationem, dimissionem, vel obitum, aut alio quovis modo vacarent; Prælati conventuales juxta superscriptum statutum, Prior vero generalis, Visitatores, & Procurator etiam generalis prælati, juxta dictæ Congregationis regularia instituta eligantur, & eligi debeant.

§. 15. Ac ut res, & bona temporalia Congregationis prædictæ, ipsiusque Monasteriorum, & locorum huiusmodi non solum conserventur, verum etiam augeantur, quòd in unoquoque Conventu tres probi Canonici per Prælatum conventualem eligendi constituantur, quorum unus Depositarius, alter Procurator, reliquis Oeconomus existat, ita ut Procurator pecunias omnes Monasterii capiat, easque deinceps Depositario tradat, & asservandas committat. Depositarius verò illas in ærarium, sive arcam, ad hoc destinatam reponat, & Oeconomo, ubi opus fuerit, de expresso Prælati mandato præbeat. Oeconomus autem acceptas, ut præfertur, pecunias pro communibus Monasterii usibus, ac necessitatibus, & prout Prælatus jussit, fideliter erogat, ac expendat. Disque arca duabus sit clavibus munita, quarum altera penes Prælatum, altera verò penes Depositarium custodiat; arca verò ubi tutus apud Depositarium locus non existat, apud Prælatum tutiore in loco statuatur, & quam diligentissimè asservetur; præfatique Procurator, Depositarius, & Oeconomus unoquoque mense collatis invicem rationibus Prælati, assistantibus duobus aliis Monasterii discretis Canonici eligendis ab ipso Prælati, rationem pro quo quique officio accuratè reddere teneantur, sub poena illis Prælati arbitrio imponenda, ipsis verò Prælati privationis officii sui si id facere neglexerint, hac in perpetuum valitura lege statuimus & ordinamus, irritum & inane decernentes quicquid fecus à quoquam quovis modo scienter, vel ignoranter attentari contigerit.

Generalis, Visitatorum, & Procuratoris officia triennio expleantur, aliorum vero biennio.

Confirmat hoc idem Greg. XIII. cit. in rub. ubi etiam omnia officia ad triennium extendit, & etiam Six. V. ibid. cit.

Et si interim vacat, providetur ut hic.

Hoc n. servari circumferatur. Ideo vide conf. Six. V. mox indicatam.

Administratio bonorum temporarium præscribitur.

Id approbat Six. V. mox cit.

Dat. P. An. 6.
die 6. Dec.

CXLII.

Edict. An. D.
1571.

Hic Pontifex cum Rege Hispanie & Republice Venetiae bellum fecit contra Turcas, & Victoriā reportarunt, & ex classe Turcarum captivi multi eff. Cū sunt.

Ipsi modo Pontifex ex causa hic reatus.

Prohibet captivos huiusmodi relaxari durante bello.

§. 16. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac dicta Congregationis iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis eidem Congregationi, illiusque Superioribus, & personis in contrarium quomodolibet concessis, innovatis, & approbatis, quibus omnibus, & singulis, illorum tenores, etiam si de illis specialis, specifica, ac de verbo ad verbum mentio habenda esset, Praesentibus pro expressis habentes, illis alias in suo robore permanens hac vice distaxat, specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque;
Dat. Romae apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 7. Decemb. 1571. Pontificatus nostri anno sexto.

Turcae, qui in bello contra eos peracto, captivi sunt effecti, durante bello non dimittantur, neque distrahantur.

Adjutantibus hoc bellum indulgentias elargitus est hic Pontifex, inf. in cons. 146. Cum nos. Deoque auxiliante, victoriam Christiani reportarunt die 7. Octobris 1571. Ideo sub illa die, quotannis celebratur festum S. Mariae de Victoria, sub invocatione Rosarii, ut videre est infra in cons. 11. Greg. XIII. Monet.

Christianis autem apud Turcas in captivitate re-
pertis, hic Pontifex libertatem concessit infra in cons. 149. Licet omnibus.

PIUS PAPA QUINTUS,
Motu proprio, &c.

Postquam nuper inter nos, & Sedem Apostolicam, ac carissimum in Christo filium nostrum Philippum Hispaniarum Regem Catholicum, necnon dilectum filium nobilem virum Aloysium Moenicum Vener. Ducem, & ejus Reipub. Dominum, inito foedere, & classe communibus viribus comparata, dilecto filio nobili viro Jo. ab Austria, ejus generali Praefecto, & ductori, commissum fuit praelium omni potestate commemorandum, initio illud quidem, quatenus poteramus nobis ab humanis viribus polliceri periculosissimum, ipso autem exitu felicissimum, hostibus maximam partem caesis, fugatis, reliquis captivis factis, causam nostram suam Domino Deo nostro juvante, proque suo Israele pugnante, perlatum fuit ad nos plerisque Christianorum, partim captivos illos sibi ipsi retinuisse, partim vendidisse, alios donasse, nonnullos etiam pacta pecunia in spem redemptionis adduxisse.

§. 1. Quod sane graviter, ut debuimus, accepimus, ab ipsa enim superiorum temporum experientia edocti sumus, quanto semper haec cum Christianorum damno facta fuerint; plerisque enim ipso-
rum captivorum esse navigandi peritissimos, ad classem adornandam, instruendam, ducendam, propter multam Maris tempestatum orarumque peritiam, atque ad bellandum utilissimos, & si umquam alias, certe hoc tempore ceteris suis similibus casis esse hostibus pernecessarios, ex quorum missione, ut magna decessio, cum etiam ab omni ratione, & jure belli alienissimum sit, ut ipso bello durante mitrantur illi qui possint aliquando ipsis mittentibus bellum instaurare, & contra eos venire.

§. 2. Quod quidem malum, tamen si dilectum filium nobilem virum Joannem ab Austria pro ejus singulari prudentia providisse, eique providisse non dubitamus, tamen, ut ad ejus cautionem Apostolicam etiam auctoritatis robur accedat, precipimus & mandamus omnibus, & singulis quocumque sint gradu, conditione, statu, nomine, honore apud quos captivi aliqui ex classe Turcarum, vel nunc sunt, vel in posterum erunt, si ipsi eos receperint, si ve ab aliis emptione, donatione, permutatione, vel alia qua-

cumque ratione acceperint, ne illos hoc foedere, & bello durante, quocumque nomine, ratione, colore, mittere, alienare, liberare, fungere, atque abire permittere audeant, sed eos debeant omni cura, & diligentia custodire, & eorum numerum, nomina, patriam, parentes, aetatem, dignitatem, si ve conditionem, & alias si quae extant magis certae, & particulares demonstrationes, nobis, aut nostris Nunciis si ibi praesentes fuerint, si vero absentes, ipsarum Civitatum, & locorum in quibus dictos captivos habentes reperiuntur, Receptoribus, Gubernatoribus, Judicibus, Locatenentibus, aut alio nomine nuncupatis, in ipsa vero classe existentes, nostris aut nostrorum foederatorum ductoribus, praefectis, judicibus, quam primum a publicatione Praesentium indicare. Illi autem quibus captivi praedicti fuerint indicati, debeant similiter eorum numerum, & ceteras omnes circumstantias supradictas, prout eas acceperint, nobis quanto citius significare.

§. 3. Si quis vero ex praedictis contravenerint, eos excommunicationis majoris latae sententiae, a qua nisi a Nobis, ac Successoribus nostris canonice intrantibus absolvi nequeant, necnon amissionis omnium, & singulorum feudorum, dominiorum, & aliorum quorumcumque bonorum, tam mobilium quam immobilium, quo ad eos qui Ecclesiasticae jurisdictionis fuerint, nobis, & Filio nostro, qui vero aliarum ditionum suarum cujusque ditionis Fisco applicandorum, & laesae etiam Majestatis criminis poenas eo ipso incurrisse declaramus; sperantes etiam quod dicti nostri foederati hujusmodi nostrum praecipuum in suis quisque locis inviolabiliter observari curabunt.

§. 4. Et propterea omnibus, & singulis locorum Ordinariis, illorumque Vicariis in spiritualibus generalibus, ac Gubernatoribus, Judicibus, Locatenentibus, Barfellis, & aliis executoribus quorumcumque Civitatum, Oppidorum, terrarum, & locorum contra praecipui, & mandati nostri hujusmodi transgressores ad executionem poenarum praedictarum irremissibiliter, etiam executivae, & figura judicii, ac absque alio a nobis vel confederatis nostris expectato mandato procedendi, plenam & liberam licentiam, auctoritatem, & facultatem concedimus, & impartimur.

§. 5. Volumus autem ut praesentis nostri Motus proprii sola signatura sufficiat, & ubique fidem faciat, in judicio & extra quacumque regula, seu constitutione Apostolica contraria non obstante.

§. 6. Quodque illius exempla, etiam impressa edantur, eaque Notarii publici manu, & cujuscumque Curiae Ecclesiasticae, aut Praelati sigillo obfirmata, eandem prorsus fidem ubique faciant, quam ipse praesens Motus proprius faceret si esset exhibitus vel ostensus.

§. 7. Non obstantibus quibusvis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, statutis, & consuetudinibus, etiam confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis; ac etiam legibus, etiam Castrensis, privilegiis quoque, indultis & litteris Apostolicis, quibusvis Communitatibus, Universitatibus, aliisque particularibus personis, sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibusvis clausulis, & decretis, etiam Motu proprio, &c. & aliis quomodolibet concessis, quibus omnibus & singulis, illorum tenores Praesentibus pro expressis habentes specialiter, & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Fiat Motu proprio. M.
Datum Romae apud S. Petrum, 12. Kal. Januarii, anno 6.
Anno a Nativitate Domini 1571. Indi. 14. die vero 22. Decemb. Pont. Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa V. anno 6. supradicta littera affixa, & publicata fuerunt in valvis Principis Apostolorum de Urbe, necnon in valvis Cancellariae Apostolicae, & acie Campi Florae ut moris est, per nos Camillum Cherubinum, & Joannem Sprengerium praebatos S. D. N. Papae Cursores.

Et contravenientibus poenas hic delictas imponit.

Executorum deputatio, & facultates.

Sola signatura sufficit.

Exemplorum fides.

Clausulae derogatorie.

Dat. P. An. 6. die 21. Dec. Publicatio.

CXLIII. Approbatio Congregationis Fratrum Joannis Dei nuncupata, ad regimen Hospitalium pro curandis pauperibus infirmis nuper instituta, sub Ordinariorum correctione, & Regula S. Augustini.

Reformavit istam Congregationem Clem. VIII. infra in constit. 44. Romani. Tom. 3. fol. 65. Et quo ad Sacerdotes novam dispositionem edidit Paulus V. in ejus constit. 36. Inter in Tom. 3.

Hanc Congregationem Italiz, Hospitalia Germaniz, Galliz, & Poloniz comprehendentem, in veram Religionem sub tribus Voris substantialibus, & quarto de juvandis infirmis, ac sub Regula S. Augustini, erexit Paul. V. in constit. 100. Romanus, inf. tom. 3. Ejus constitutiones approbavit idem ibidem constit. 103. Ea quæ Jurisdictionemque Ordinariorum in eam præfinivit idem Paul. in constit. 113. Romanus. Privilegia aliorum Ordinum & Clericorum ministrantium infirmis communicavit Sanctiss. D.N. Urban. VIII. constit. 18. Sacrosanctum, inf. tom. 4. Qui etiam declaravit eorum præcedentiam cum Ordinibus Mendicantium in constit. 76. Commissi. Et de fratribus Sacerdotibus, eorumque officiis alia decrevit in constit. 84. Circumspecta dicti tom. 4.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D. 1572.

Proœmium.

Hospitalia quædam in Hispan. constructa sunt sub invocatione Joannis Dei, pro infirmorum pauperum curatione. Et circa elemosynarum collectionem impedimentum præstatur. Fratribus ipsa Hospitalia regentibus.

Licet ex debito summi Pontificatus officii nobis desuper injuncti, circa piorum locorum quorūlibet profectus, nos debeat intentos existere, Hospitalium tamen ac in eis degentium pro tempore miserabilium personarum commodo, utilitati, & subventioni, tanto nos potioribus studiis insistere convenit, quanto ipsorum miserabili conditione pensata, quicquid in Domino salubriter expedire.

§. 1. Exhibita siquidem nobis nuper pro parte dilecti filii Roderici Seguenza moderni Confratris majoris nuncupati, Hospitalis Joannis Dei nuncupati civitatis Granaten, petitio continebat, quod licet in dicto Hospitali ipsius Civitatis, in qua adest Cancellaria Regia, & ad eam maximus extraneorum numerus pro suis negotiis ibidem pertractandis asfluere solet, & unus Major nuncupatus, & alii decem, vel octo Confratres dicto Confratri majori nuncupati, obedientiam præstantes reperiantur, qui in elemosynis pro ipso Hospitali, in quo diversi CHRISTI pauperes, utpote incurabiles, senes, mente capti, & membris impotentes, ad numerum quadringentorum, & ultra ascendentes, continuè suis infirmitatibus curantur, & aluntur, & pro quorum curatione, & alimento, summam sexdecim millium ducatorum & ultra, ex elemosynis à piis Christianidelibus ipsis confratribus erogari solitis provenientem, singulis annis exponitur quaeritandis, ipsique CHRISTI pauperibus gubernandis sua caritate impendant opera, & in eodem Hospitali dictorum CHRISTI pauperum numerus, propter bellum superiori anno in Regno Granaten. contra Mauros gestum, admodum auctus existat, & elemosynæ minus frequenter quàm antea hodie fieri soleant, ipsique Confratres maximo cum labore, & pro eorum cepto opere minime retardentur, sed maximo cum fervore opus ipsum adeo laudabile assidue prosequantur. Nihilominus hominum malitia crescente, nonnulli laici, avaritiâ ducti, Deique timore postposita, habitu Capotto nuncupato panni vulgariter Loyal in illis partibus nuncupati, quo ipsi Confratres indui solent, accepto, sub falso nomine, tam dicti quam civitatis Corduben. necnon de Madrid, Tolezan. ac de Lucerna Oppidorum Corduben. respectivè Diocesibus Hospitalium, ad instar dicti Hospitalis Granaten. fundatorum, & in quibus similia caritatis opera, quæ à Confratribus dicti Hospitalis Granaten. exerceri solent, elemosynas qua-

rare, illasque in pravos & damnabiles eorum usus convertere ausi sunt, in maximum pauperum Christianidelium in eisdem Hospitalibus pro tempore existentium necessariz subventionis detrimentum.

§. 2. Cum autem, sicut eadem petitio subjungebat, dictus Rodericus ad præmissa à medio facilius tollenda, sibi, aliisque tam Granaten. quam Corduben. & de Lucerna Oppidorum hujusmodi Hospitalium, aliorumque ad illorum instar de cetero erigendorum Confratribus, nunc & pro tempore existentibus, scapularium ejusdem panni Loyal nuncupati super veste, seu capotto per eos gestari solito, ad genua usque, ut ipsi ab omnibus Christianidelibus eis elemosynas pro præmissis porrigendas, ab aliis eorum Confratribus non existentibus, & sub falso nomine dictorum Hospitalium, vel alicujus eorum elemosynas dolose & maliciose petentibus, facilius internosci valeant, deferendi, necnon in quolibet eorumdem Hospitalium, & aliorum ad eorum instar erigendorum, inter eos Confratrem unum Sacerdotem similem habitum & scapularium qui missas, aliaque divina officia ibidem celebrare, necnon sacramenta Ecclesiastica, tam ipsis Confratribus, quàm CHRISTI pauperibus eisdem Hospitalibus pro tempore existentibus ministrare, illosque in Dei mandatis pie observandis instruere & confortare debeat, habendi & retinendi, necnon elemosynas pro eorumdem Hospitalium CHRISTI pauperum subventionem, non solum in Civitatibus & Oppidis, in quibus Hospitalia ipsa consistunt, verum, & etiam in toto districtu, diocesi, & provincia earum, de loci Ordinarii licentia, petendi & recipiendi licentiam & facultatem impetrari summopere desideret, nobis humiliter supplicari fecit, quatenus pio desiderio, ac dictorum Hospitalium, & Christi pauperum in eis, nunc & pro tempore existentium statuti consuere, aliasque in præmissis opportune providere, de benignitate Apostolica dignaremur.

§. 3. Nos qui Christi pauperum consolationem & subventionem sinceris desideramus affectibus, volentes Rodericum ac Confratres, in tam pio & laudabili proposito confovere, necnon eundem Rodericum à quibusvis excommunicationis, suspensionis & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & penis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutum fore consentes, hujusmodi supplicationibus inclinat, eidem Roderico, ac omnibus & singulis aliis dictorum Hospitalium, nunc & pro tempore existentibus Confratribus, dummodo sub regula S. Augustini vivant, ut super eorum veste seu capotto per eos gestari solito, scapularium ad genus usque ejusdem panni Loyal nuncupati, continuè deferre, necnon sacerdotem unum in quolibet eorum Hospitalium, qui Confrater existat, similemque habitum ejusdem panni, majorem tamen & latiore, ac dignitate sacerdotali decentiorè, loci Ordinarii arbitrio pro prima vice designandum deferat, habere possit, necnon elemosynas pro præfatis Hospitalibus, eorumque Christi pauperibus, tam in Civitatibus, & Oppidis, in quibus ipsa Hospitalia, ut præfertur consistunt, quàm toties eorum districtibus, diocesibus & provinciis ab omnibus Christianidelibus petere & recipere, illasque in dictorum Hospitalium, & eorum Christi pauperum usus & subventiones, convertere libere & licite possint & valeant, licentiam & facultatem Apostolica auctoritate tenore Præsentium, perpetuò concedimus & elargimur.

§. 4. Necnon tam ipsum Sacerdotem, quàm Majorem nuncupati, & alios Confratres hujusmodi sub loci Ordinarii jurisdictione, correctione, visitatione, & obedientia, etiam perpetuò supponimus & subjicimus, ipsosque Majorem, & alios Confratres de elemosynarum hujusmodi administratione singulis annis in tempore eidem Ordinario bene viso, legale computum eidem Ordinario loci tantum, & nulli alteri reddere debere,

Supplicat propterea huic Pontifici pro opportuna provisione.

Hic ideo Pont. eidem Confratribus (dummodo sub reg. S. Augustini vivant) concecit habitum & facultatē colligendi elemosynas pro Hospitalibus infirmorum.

Ad hæc vide etiam constit. 44. Clem. VIII. Roman.

Ordinariorum jurisdictioni, & correctioni supponit.

Hic habes etiam in dicta constit. Clem. VIII.

ANNO
1572.

Habitu dimittere conhibet.

Declarat Clem VIII. in d. ejus constit.

Ordinarius tantum de Hospitalium regimine rationem reddendam esse precipit.

Causa praeservativa huic constit. apponit.

Executores deputat.

PIUS QUINTUS.

379 ANNO
1572.

§. 5. Necnon quod praedicti moderni & pro tempore existentes eorundem Hospitalium Confratres, postquam habitu praedictum susceperint, illum dimittere, minime eum alicui exhibere, nisi de consensu omnium aliorum Confratrum Hospitalis, in quo habitu ipsum exhiberi contigerit, sub majoris excommunicationis latae sententiae ipso facto incurrenda poena, audeant vel praesumant perpetuò statuimus & ordinamus.

§. 6. Necnon omnibus & singulis personis cuiuscumque status, gradus, ordinis & conditionis existentibus, praeterquam locorum Ordinariis, ne quovis praetextu in regimine, gubernio, aut administratione eorundem Hospitalium, aut aliorum ad ipsum instar erigendorum, sub dicta poena per contravenientes, similiter ipso facto incurrenda, quomodolibet se intrinsece audeant seu praesumant dilucidius inhibemus. Decernentes Majorem nuncupatum, & alios Hospitalium hujusmodi, nunc & pro tempore existentes Confratres super libera administratione, gubernio, & regimine dictorum Hospitalium, à quibusvis personis cuiuscumque status, gradus, ordinis, & conditionis existentibus, etiam sub praetextu illorum in toto vel parte fabricationum, etiam ex quocumque pro legato, vel alias quomodolibet factorum molestari, perturbari, vexari, aut inquietari nullatenus posse.

§. 7. Praesentisque litteras nullo umquam tempore, de subreptionis vel obreptionis vicio, aut intentionis nostrae, vel quopiam alio defectu notari, impugnari, vel invalidari, aut in jus vel controversiam quocumque ratione vel causa vocari, aut ad terminos juris reduci, vel quodvis aliud juris, seu gratiae remedium, contra illa impetrari posse, causamque vel causas propter quas Praesentes ipsae à nobis emanarunt coram loci Ordine, aut quocumque alio Iudice, etiam delegato, ac facultate quacumque fungente, verificare non debere, nec ob id viribus carere, aut per obreptionem obtentas, nec minus dictum Rodericum ad verificandum praemissa teneri, minusque sub quibuscumque similibus vel dissimilibus gratiarum, tam per Nos, quam Romanos Pontifices successores nostros quomodolibet, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacibus & insolitis clausulis, irritantibusque & aliis decretis pro tempore factis quoruncumque tenorum existentia includi, sed illis non obstantibus in suis robore vigere, & efficacia persistere, & quoties illae emanabunt, toties in pristinum & validissimum statum restitutas, & plenarie reintegratas, & sub data per dictum Rodericum, & pro tempore existentem, Majorem nuncupatum Confratrem dicti Hospitalis Granaten. eligenda, de novo concessas esse, & ita incommutabilis voluntatis & intentionis nostrae esse. Sique per quoscumque Iudices & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, sublata eis & eorum cuilibet quavis alia iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, iudicari & definiri debere, ac irritum & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 8. Quocirca Venerabilibus fratribus nostris Archiepiscopo Granaten. ac Amerin. & Corduben. Episcopis, per Apostolica scripta mandamus, quatenus ipsi vel duo, aut unus eorum, per se vel alium, seu alios praesentes litteras, & in eis contenta quaecumque ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte dicti Roderici, seu Majoris nuncupati pro tempore existentis ipsius Hospitalis Granaten. Confratres fuerint requisiti, solemniter publicantes, illis que in praemissis efficacis defensionis praesidio assistentes, faciant auctoritate nostra praedicta, Rodericum & pro tempore existentem Majorem nuncupatum, aliosque Confratres praedictos, praemissis omnibus & singulis, juxta Praesentium continentiam & tenorem pacifice frui & gaudere, non permittentes eos, seu eorum quemlibet, à quoquam quomodolibet indebite molestari, perturbari, aut inquietari. Contradiatores quoslibet & rebelles, ac pra-

missis non parentes, per censuras & poenas Ecclesiasticas, aliaque opportuna juris remedia, appellatione postposita compescendo; ac legitime super his habendis servatis processibus, illos censuras & poenas ipsas incurrisse declarando, necnon eas etiam iteratis vicibus aggravando; invocato etiam ad hoc si opus fuerit, auxilio brachii saecularis.

§. 9. Non obstantibus fel. record. Bonifacii Papae Octavi Praedecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, dummodo quis vigore Praesentium, ultra tres dietas ad iudicium non trahatur, ac aliis quibusvis Apostolicis, necnon in Provincialibus & Sinodalibus Conciliis editis, generalibus vel specialibus, constitutionibus & ordinationibus, ac statutis, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indulgiis, & litteris Apostolicis, quibusvis Ordinibus & locis, illorumque Superioribus ac personis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibusvis clausulis & decretis, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, ac de Apostolica potestatis plenitudine, in contrarium forsan quomodolibet concessis, confirmatis, & innovatis, quibus omnibus, etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica & expressa mentio, seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, eidem Praesentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque; aut si aliquibus communiter vel divisim, ab eadem Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem. Nulli ergo omnino &c.

Datum Romae apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicae 1572. Kalen. Januarii, Pontificatus nostri anno 6.

Jurisdicção & facultates S.R.E. Cardinalis, Protectoris & Iudicis causarum Confraternitatis Annunciationis B. MARIAE Virginis, in Ecclesia supra Minervam de Urbe dudum instituta, ad miserabilibus puellis dotes elargiendas, pupillosque & egenos sublevandos.

Quo ad Confraternitatis indulgentias attende in Pauli V. const. mox edenda, quam jam vidi firmatam sub die 6. Aug. 1608.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Cum sicut accepimus, Confraternitas, seu Societas sub invocatione Annunciationis B. MARIAE Virginis, in Ecclesia domus ejusdem B. Mariae supra Minervam de Urbe, ejusque Priores, Custodes, Officiales & Confratres, ob lites, quaestiones, controversias civiles, criminales, profanas, spirituales, meras & mixtas infra Confraternitatem, seu Societatem, ejusque Priores, Administratores, Gubernatores, ac Deputatos hujusmodi per diversa Urbis Tribunalia litigare, occasione locationum, census, donationum, hereditatum, legatorum, dotium, & diversarum aliarum rerum ejusdem, tam agendo quam defendendo pro ipsis Confraternitatis seu Societatis juribus defendendis, jugiter implicita existat, ex quo saepissime quamplurima damna & interesse patiatur, ac impensabilis valorem rei, de qua ex tempore agitur, saepenumero exuperet.

§. 1. Nos Confraternitatem seu Societatem praedictam, in qua piissima charitatis & misericordiae opera, tam pauperibus & miserabilibus puellis annuatim dotes elargiendo, quam aliis pupillis, viduis, & egenis sublevandis, Missisque & aliis divinis officiis in sua Capella ibi fundata dietim celebrandis, in divini numinis obsequium, Sanctaeque Mariis Ecclesiae exaltationem exercere noscuntur, quantum cum Deo possumus sublevare volentes.

Contrariis omnibus derogat.

Dat. P. A. 6. die 1. Janua.

CXLIV.

Edita An. D. 1572.

Causae hujus constituit.

Confraternitatem plonum operum enarratio.

Jurisdictione
Judicis dictæ
Confraternitatis
cognoscendi omnes
ejus causas,
cum facultate.

§. 2. Motu simili, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolica potestate plenitudine, Venerabili Fratri nostro Alexandro Episcopo Tusculano Cardinali de Farnesio nuncupato, S.R.E. Vicecancellario, nunc & pro tempore Confraternitatis seu Societatis hujusmodi existenti Protectori, omnes & singulas causas, quæstiones, lites, & controversias, inter dictam Confraternitatem seu Societatem, sive ejusdem dilectos filios Priores, Custodes, Officiales, & Ministros, & quascunque alias personas cujuscunque gradus, ordinis, dignitatis, conditionis, & præminentie existentes, etiam Cardinalatus dignitate fulgentes, Universitates, Societates, Congregationes, Monasteria, aut alia loca pia hujusmodi, etiam si coram S.R.E. Camerario, Clericis, & Præsentibus Cameræ Apostolicæ, & ejusdem Cameræ causarum Auditore generali, necnon Vicario, Gubernatore, ac Senatore Urbis prædictæ, illorumque Locatenentibus, Collateralibus, & Judicibus, ac dictæ Urbis causarum appellationum Capitaneo & sacri Palatii etiam causarum Auditoribus, & ejusdem S.R.E. Cardinalibus, aliisque Judicibus Ordinariis seu delegatis hucusque motas, pendentes, & quomodolibet movendas; de & super quibuscunque locationibus, venditionibus, legatis, fideicommissis, testamentis, hereditatibus, ac illarum discussionibus, atque quorumcumque jurium & actionum cessionibus, aliisque inter vivos contractibus, etiam vigore obligationis in forma Cameræ, executionibus, revocationibus, bonis, rebusque, juribus & actionibus ad Confraternitatem seu Societatem præfatam, ejusque Priores, Custodes, Gubernatores, Administratores, Officiales, & deputatos Ministros, eorumque litis consortes, tam conjunctim quam divisim, ac tam passivè quam activè concernentibus, spectantibus, & pertinentibus, ad Confraternitatem, seu Societatem ipsam, in quacunque instantia, quorum omnium & singulorum statum & merita, necnon Judicium & colligantium nomina & cognomina, ac qualitates, ceteraque etiam de necessitate exprimenda, pro expressis habentes, in statu & terminis in quibus nunc reperiuntur, harum ferie ad nos advocantes, illasque omnes & singulas, motas & pendentes, ac quam & quas Confraternitas seu Societas, Priores, Gubernatores, Officiales, Administratores, & Deputati, necnon pauperes puellæ, ac pupilli, & viduæ ibi degentes, ac illæ quæ nuptui traditæ sunt, & pro tempore fuerint, habere volent, contra easdem personas, Universitates, Monasteria, & alia hujusmodi pia loca, pro rebus, bonis, hereditatibus, juribus, actionibus, & dotibus hujusmodi, nunc & pro tempore Confraternitatis seu Societatis prædictorum existentibus Protectori, una cum illarum emergentibus, dependentibus, incidentibus, annexis & connexis, summarie, simpliciter, & de plano, & sola facti veritate inspecta, ac sine strepitu & figura iudicii, per seipsum, seu alios à se deputandos in quacunque instantia, usque ad finem audiendas, cognoscendas & sine debito terminandas auctoritate Apostolica tenore præsentium committimus & mandamus. Ipsumque Protectorem nunc & pro tempore existentem in dictis causis motis pendendis ac in futurum movendis, in Judicem ordinarium, cum facultate easdem causas, in quacunque instantia, usque ad finem, per seipsum, seu alium vel alios ejus Auditores illas cognoscendi & decidendi & terminandi & alijs facultatibus prædictis faciendum, constituimus & deputamus.

In Curia &
extra citandi
& inhibendi.

§. 3. Necnon cum potestate citandi & inhibendi quos, quibus, & quoties opus fuerit, in Curia & extra eam, etiam si per edictum publicum, consilio etiam summarie, de non tuto accessu, eisdemque ac quibuscunque alijs ejusdem Urbis Judicibus, ac personis, tam Ecclesiasticis quam secularibus, quibus & quoties opus fuerit, etiam sub sententiis, censuris & penis Ecclesiasticis & pecuniariis, quibus sibi, seu ab eo pro tempore deputando Auditori, videbitur inhiberi.

§. 4. Et in eventum non partitionis contra inobedientes contumaces & rebelles, ad declarationem incursum censurarum & penarum hujusmodi, illarumque aggravationes, & reagravationes, ac alias juxta morem & stylum Curiarum Urbis in similibus servari solitum, & prout sibi videbitur procedendi.

§. 5. Sententiasque suas debite executioni demandandi, sive demandari faciendi, auxiliumque brachii secularis ad hoc si opus fuerit invocandi, omniaque alia & singula, in præmissis, & circa ea quomodolibet necessaria & opportuna faciendi, gerendi & exequendi.

§. 6. Ac in omnibus & singulis causis prædictis ad dictam Confraternitatem, seu Societatem, ut præmittitur, spectantibus singulis diebus & horis, feriatis, non feriatis, præterquam in honorem Dei, etiam tempore feriatarum, ob necessitatem hominum indictarum seu indicandarum procedere.

§. 7. Ac quencunque Notarium sibi benevolum, in causis deputandi hujusmodi.

§. 8. Volumus etiam, quod citationes, monitiones, & intimationes, quæ in dictis causis fieri oportuerit, etiam per curiæ Capitoli, & quoscunque alios Mandatarios fieri possint. Et quicumque executores Urbis possint & debeant effectualiter executioni demandare omnes & singulas sententias, decreta, & mandata præfati Cardinalis Protectoris, sive ab eo deputatorum, quæ non obstante regula Cancellariæ sub ejus parvo sigillo expediri possint.

§. 9. Ac insuper Confraternitatem seu Societatem prædictam, ejusque Priores, Administratores, Gubernatores, & Deputatos hujusmodi, ex nunc deinceps occasione præmissorum, alibi quam coram præfato Cardinali Protectore convenire, aut ad alios convenire, contrahere non posse, ac processus, sententias, & decreta, per alium seu alios, tam ordinarios quam delegatos Judices, in causis prædictis quomodolibet pro tempore formatos, latis & factas cum inde secutis quibuscunque, nulla, irrita, & inania, nulliusque roboris vel momenti fore.

§. 10. Præsentemque cedulam sub quibuscunque revocationibus, suspensionibus & exemptionibus, limitationibus, seu revocationibus similibus vel dissimilibus concessionem & gratiarum, etiam per Nos & Successores nostros Romanos Pontifices, & Sedem prædictam, vel ejus Legatos, etiam per regulas Cancellariæ Apostolicæ pro tempore factas, nullatenus comprehendere, sed semper ab illis penitus & omnino exceptas, & quoties illæ emanabunt, præsentem cedulam in pristinum robur restitutam esse, & censeri debere, nec eidem cedule, per quascunque litteras, & quasvis clausulas generales vel speciales, etiam derogatorias derogatorias, irritantiaque & alia decreta, sub quacunque verborum expressione continentes, derogari posse, etiam si illi, ullo umquam tempore, ex aliquâ, etiam quantumvis necessaria & urgenti causa derogari contingat, nisi tenor cedulæ de verbo ad verbum, nihil penitus omissis insertus, & hujusmodi derogatio per trinas distinctas litteras eundem tenorem continentes, tribus similibus distinctis vicibus, Administratores, Prioribus, Gubernatoribus, Deputatis & Confratribus hujusmodi, omnibus & singulis legitime intimata & insinuatæ fuerit, eorumque expressus ad id accesserit assensus, derogationem hujusmodi nemini suffragari, & nullus esse roboris vel valoris.

§. 11. Et sic per quencunque Judices, quasvis auctoritate fungentes etiam præfate Ecclesiæ Cardinales, & causarum palatii Apostolici Auditores, sublata &c. ac irritum &c. judicari & definiri debere.

§. 12. Non obstantibus fel. record. Bonifacii Papæ Octavi prædecessoris nostri de una, & in Concilio generali edita de duabus dietis, dummodo ultra tres dietas aliquis vigore præsentium ad iudicium non trahatur aliisque constitutionibus & ordinacionibus Apostolicis, necnon Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, ac Hospitalium, Ecclesiæ, &

Inobedientes
coercendi.

Sententias
suis exequen-
di &c.

Singulis
diebus & ho-
ris proce-
dendi.

Notarium
deputandi.

Per quos-
cumque Man-
datarios &
executores
citandi &
exequendi.

Privativè
quoad alios
Judices.

Clausulæ
præservati-
væ.

Clausulæ
sublatæ.

Clausulæ de-
rogatoriæ.

Monasteriorum, & aliorum quorumcumque piorum locorum & Ordinum iuramento roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indultis, conservatoriis, exemptionibus, & litteris Apostolicis eisdem, ac dilectis filiis Populo Romano, necnon Iudicibus, Curis, & Tribunalibus, eorumque personis per quoscumque etiam Romanos Pontifices Prædecessores nostros, & Nos ac dictam Sedem, etiam motu & scientia similibus, concessis, approbatis, & innovatis, etiam disponentibus quod causæ huiusmodi, ad forum, seu Curiam Capitoli reassumi debeant; quibus omnibus & singulis, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, alias, de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata, inserti forent, Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis alias in suo robore permanens, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque; aut si prædictis, vel quibulvis aliis, communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari, aut extra, vel ultra certa loca, Curias, & Tribunalia, ad iudicium trahi non possint per litteras Apostolicas, non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem, & quibuslibet aliis privilegiis, & indultis Apostolicis, generalibus vel specialibus, quorumcumque tenoribus existant, per quæ Præsentibus non expressa, aut totaliter non inserta jurisdictionis ipsius Protectoris explicatio impediri valeat quomodolibet, vel differri, & de quibus, quorumque totis tenoribus specialis, specifica & expressa, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia expressio habenda sit in præsentibus litteris mentio specialis.

§. 13. Volumus autem Præsentium solam signaturam sufficere, & ubique fidem facere, in iudicio & extra, regula contraria non obstante.

§. 14. Et earundem transumptis etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo Protectoris seu Confraternitatis, seu Societatis huiusmodi munitis, eandem prorsus fidem adhiberi, quæ adhiberetur Præsentibus manu nostra subscriptis, ac etiam litteras ad partem expediri posse.

Placet Motu proprio. M.

Prohibitio deferendi pugiones, cultellos, & aliud genus armorum brevioris mensuræ trium palmorum, in statu Ecclesiastico.

PIUS PAPA QUINTUS,

Motu proprio, &c.

Um vices ejus licet immeriti geramus in terris, qui de celo ad ima descendens, pro salute humani generis seipsum ad crucis patibulum obtulit, omni quo possumus studio invigilare debemus, ut omnis prorsus occasio homicidia tamquam in ejusdem humani generis perniciem tendentia committendi, quantum in nobis est, submoveatur.

§. 1. Et quia experientia cognovimus quamplurimam ex armis brevioribus, quæ occulto deferri possint, & ad necem inferendam aptiora, & ferè inevitabilia esse videntur, in dies committi & perpetrari, inherentes vestigiis fel. mem. Pii Papæ Quarti prædecessoris nostri, qui volens proditorum, & abominabile & detestandum armorum genus huiusmodi penitus & omnino destruere, & ab Alma Urbe, aliisque terris status nostri Ecclesiastici in totum eliminare, Motu suo proprio, & in perpetuum valitura constitutione sancivit, nemini cuiuscumque dignitatis, gradus, ordinis, conditionis, aut præeminentie licere tormenta ignea, archibuffeta vulgariter nuncupata brevioris mensuræ duorum palmorum, modo & forma & sub gravissimis pœnis, etiam quæ pro crimine læsæ Majestatis à jure indictæ sunt, &

prout latius in dicta constitutione edita pridie nonas Martii, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo sexagesimo primo, quam & ejus totum tenorem hic pro inserto haberi volumus, continetur.

§. 2. Nos propterea attendentes, quod eadem ratio militat etiam in aliis armis, veluti pugionibus, & aliis armorum generibus, quæ occulte deferri possunt, cupientes quod metu ejusdem pœnæ à similibus armorum delatione, & eorum usu quilibet abstinere, Motu nostro proprio & ex certa nostra scientia, & potestatis plenitudine, dictæ constitutioni felicis memoriæ Pii Papæ Quarti prædecessoris nostri addentes, hac nostra in perpetuum valitura constitutione sancimus, nemini cuiuscumque dignitatis, gradus, ordinis, conditionis, aut præeminentie existat, licere pugiones, cultellos, nec aliud quodvis genus armorum brevioris mensuræ trium palmorum (exceptis tamen cultellis aptis ad incidendum panem, qui tamen esse non possint majoris longitudinis unius palmi, & sine cuspidē, & ut vulgò dicitur spontati) in Urbe nostra, Civitatibus & locis Status nostri Ecclesiastici, & suburbis quovis modo, aut etiam quovis militiæ, aut executionis justitiæ prætextu deferre. Qui verò contrafecerint, dictumque genus armorum detulerint, pœnas in constitutione prædicta expressas incurrant.

§. 3. Inhibentes prout tenore Præsentium inhibemus omnibus & singulis, etiam de latere nostro Legatis, ne sub indignationis nostræ & quibuscumque Vicelegatis, Gubernatoribus, Receptoribus, Præfidentibus, ac aliis Ministris, & Sedis Apostolicæ, seu civitatum, & terrarum præfatarum Officialibus, ne sub suspensionis à divinis, ac excommunicationis lætæ sententiæ, aliisque arbitrio nostro pœnis cuiquam tale genus armorum sub quovis colore deferendi, licentiam & facultatem ad quodcumque etiam brevissimum tempus concedere audeant vel præsumant.

§. 4. Decernentes nihilominus licentias, ac facultates, sic concedendas, nullas penitus & invalidas existere, ac illis non obstantibus, eos qui sub illarum clypeo dictum genus armorum detulerint, pœnam præfatam omnino incurfuros, illosque irremissibiliter puniendos fore, & contra omnes & singulos huic nostræ constitutioni contravenientes ad Filci nostri instantiam, & etiam ex officio procedi & inquiri posse, ac ad pœnam præfatarum executionem deveniri omnino debere.

§. 5. Ut autem præmissa ad omnium noticiam deducantur, nec aliquis prætextu ignorantie excusari possit, volumus quod præsentibus nostræ per aliquos nostros Curie nostræ Cursores ad Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, & Ecclesiæ Lateranensis, necnon Cancellariæ Apostolicæ valvas, ac in acie Campi Floræ, affigantur & publicentur.

§. 6. Quodque earum transumptis manu Notarii publici, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, certa & indubitata fides adhibeatur, prout ipsis litteris originalibus adhiberetur, si forent exhibite vel ostense. Et transumpta huiusmodi Legati, Vicelegati, Receptores vel Præsidentes, aut Gubernatores, seu alii Superiores Provinciarum, Civitatum, Terrarum, Oppidorum, locorum prædictorum per publicum præconem publicari, & valvis Cathedralis seu matricis Ecclesiæ loci, ac Palatii eorum residentiæ affigi faciant, publicationemque & affixionem præfatas lapsis viginti diebus perinde omnes arcere, ac si personaliter intimatæ forent.

§. 7. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, privilegiis quoque & indultis quibuscumque personis forsan concessis & innovatis. assertis consuetudinibus, quas si quæ forent per præsentibus improbamus, nullasque & invalidas esse declaramus, & quæ omnia, illorum tenores pro sufficienter expressis habentes, revocamus & annullamus, nullaque & irrita esse decernimus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Hic Pont. extendit eandem const. ad pugiones, cultellos, &c. breviores mensuræ trium palmorum, & eandem pœnas imponit.

Inhibetque Officialibus ne desuper licentias concedant.

Licentias suam dandas annullat.

Iussu publicandi.

Fides transumptorum.

Clausulæ derogatoriæ.

ANNO
1572.

382

PIUS QUINTUS.

ANNO
1572.

Papæ subscr.
Dat. P. An. 7.
die 12. Febr.

Nulli ergo omnino hominibus &c.
Placet Motu proprio. M.
Dat. Romæ apud S. Petrum pridie Idus Febr.
anno 7.

Publicatio.

Anno à Nativitate Domini 1571. Indiſiione 15. die
verò 13. menſis Februarii, Pontificatus Sanctiſſ.
D. N. D. Pii Papa V. anno 7. retroſcripta littera
Apoſtolica aſſiſſe, & publicata fuerunt Roma in
locis retroſcriptis, per me Petrum Paulum de Mat-
thæis S. D. N. Papa Curſ.
Philibertus Maſiſter Curſorum.

CXLVI.

Indulgentiæ & gratiæ pro adjuvantibus bellum
contra Turcas.

Similes indulgentiarum & gratiarum conſeſſiones,
adjuvantibus ejuſmodi bellum pro recuperatione
Terræ Sanctæ dederunt Innoc. III. & alii Pont.
à me indicati ſuprà in ipſius Innoc. conſt. 12. Ad
liberandam. fol. 61. Tom. I. Et de hoc bello habes
etiã hic ſup. conſt. 142. & infra conſt. 149.

Edita An. D.
1572.

PIUS PAPA QUINTUS.

Univerſis & ſingulis Chriſtiſidelibus præſentes
litteras inſpecturis, ſalutem & Apo-
ſolicam benediſſionem.

Hic Pont.
fecit con-
ſtituti-
onem cum
Rege Hiſpa-
niarum, &
Venetiſ. contra
Turcas,
& victorias
reporavit.

Cum Nos pro Paſtoraliſ officii divinitus nobis
injunſti, cura ac ſollicitudine divino auxilio
adjuſi pro univerſæ Chriſtiannæ Reipubl. bono, ac
tutela, cum chariſſimo in Chriſto filio noſtro Philip-
po Hiſpaniarum Rege Catholico, ac dilectis filiis
nobili viro Duce & Senatu Venetorum, adverſus
perſidiſſimum, importuniſſimumque Turcarum ty-
rannum efferatæ rabie cuncta Chriſtiannæ ditionis
regna, provincias, & alia loca incendiis, ferro, cæ-
dibus expugnantem, atque vaſtāntem, non minus
ſalutare quā necēſſarium fœdus inſerimus, jam-
que admirabili DEI clementia, & beneficio navalem
glorioſiſſimamque victoriam ſeliſſimè conſecuti fue-
rimus, modoque à nobis Principibus fœderatis co-
piæ, tam maritimæ quā terreſtres ut ceptam con-
tra deterrimum hoſtem expeditionem monſtrante
Deo perſequamur, ſummis viribus, ſummo ſtudio,
ſumma diligētia comparentur atque inſtruantur.

Et modo pro
ſelictiori pro-
ſecutione
hortatur om-
nes, ut hoc
bellum per-
ſonis vel fa-
cultatibus
adjuvent.

§. 1. Atamen conſiderantes immanem Turca-
rum potentiam, infinitamque multitudinem, qua
potiſſimum res Chriſtianorum omni tempore miſe-
ſerabiliſ percuſſe, atque aſſiſſe non ignora-
mus, magnopere idoneum & opportunum eſſe cen-
ſemus, ſi Chriſtiani majori quo fieri poterit mili-
tium numero, bellicoque apparatu contra hoſtilem
ferociam inſurgere conabuntur, ſic enim facilius
ſperandum eſt felicia noſtra cepta, adjuvante Do-
mino fore in dies felicia, atque optatum exitum
gravi cum hoſtium formidine, ac perniciē habitura.
Itaque decrevimus omnes & ſingulos fideles ad
piſſimum juſtiſſimumque bellum, ubi de JESU
CHRISTI Domini & Salvatoris noſtri cauſa, & glo-
ria, Chriſtianiſque nominis ſalute, (ſicut omnes
aperte vident) in primis agitur, monere, requirere,
& enixe hortari, prout monemus, requirimus, &
hortamur per præſentes, ut unuſquiſque ſanctiſſi-
mum hoc bellum, vel perſonis, vel facultatibus
adjuvare velit. Negabit enim ſervus Domini opes
temporales largiter exhibere, cū Dominus ſervum
vivere faciat, & habere, ipſique demum divitiis lar-
giatur æternas? & ſi Deus ſubiit mortem pro ho-
mine, dubitat homo mortem ſubire pro DEO?
Quod ut eo libentius & alacrius cuncti facere ſtu-
deant, quo ex hoc ſpirituſibus muneribus, & tem-
poralibus quoque gratiis à nobis ſe reſectos pariter
& munitos eſſe cognoverint, de Omnipotentis Dei
miſericordia, ac beatorum Apoſtolorum Petri &
Pauli auctoritate conſiſſi, ex illa quam nobis Deus
licet indignis ligandi & ſolvendi contulit, poteſtate,
omnibus qui ad ſubveniendum huic ſacro bello
in perſonis propriis & expenſis ſe ſe conſulerint,

Pleniſſimam
que pec-
catorum in-
dulgentiam eis
concedit &c.

Tu vide in-
dulta C. uce-
ſignatorum
in bulla In-
noc. III. cit.
in rubr.

Necnon eis qui non in perſonis propriis illuc ac-
ceſſerint, ſed ſuis tantum expenſis juxta facultatem
& qualitatē ſuam viros idoneos deſtinaverint,
donec milites noſtri ibi fuerint, commoratorios. Ei-
illis ſimiliter, qui licet alienis expenſis, propriis ca-
men perſonis belli laborem & pericula ſuſtinerint.
Ac demum eis, qui de bonis ſibi à Deo collatis con-
gruam ad id portionem benignè erogaverint, ple-
niſſimam & ampliſſimam omnium peccatorum ſuo-
rum, de quibus corde contriti, & ore conſeſſi fue-
rint, & eandemmet, quam Romani Pontifices præ-
deceſſores noſtri Crucifignatis proſciſcentibus ad
ſubſidium Terræ Sanctæ concedere ſoliti fuerunt,
veniam, remiſſionem, & abſolutionem tenore Præ-
ſentium indulgemus & elargimur. Bona inſuper pro-
ficiſcentium ad bellum hujusmodi, ex quo proſecti
fuerint, ſub beati Petri, & noſtra proteſtatione ſulci-
pimus, necnon ut talia ſub Archiepiſcoporum, &
omnium Prælatorum Eccleſiæ Dei tutela conſiſtant,
& nullam de iis, quæ dum fuerint in dicto bello
quiete poſſident, ſuſtineant quaſtionem, ſed in-
tegra maneat & quæta.

§. 2. Quinimmo in quibuſvis eorum cauſis &
licibus à Judicibus, coram quibus vertuntur om-
nino ſuperſederi debere, donec de eorum obitu
vel reditu certiffimè cognoscatur, ſtatuiſſimus &
mandaviſſimus.

§. 3. Ad uſuras quoque ſi jramento teneantur
aliqui, non cogantur, verū abſoluti maneat &
quieti. Quod ſi quiſquam contra attentare præſump-
ſerit, per cenſuram Eccleſiaſticaſ, appellatione
poſtpoſita compellatur. Si quis autem creditorum
contra tenorem Præſentium ipſos ad ſolutionem
coegerit uſurarium, cum ad illarum reſtutionem
appellatione etiã remota ſimili cenſura compelli
volumus. Judæos verò ad remittendos ipſis, ut
præſertim, uſuras etiã per Principes, & ſecularem
compelli præcipimus poteſtatem, & donec eis remi-
ſerint, tam in mercimoniis quā aliis rebus & com-
merciis, ſub excommunicationis ſententia per Or-
dinarios promulganda, univerſis Chriſtiſidelibus ju-
bemus communionem omnimodam ipſis Hebræis
denegari.

§. 4. Mandantes quibuſcumque locorum Ordina-
riis in virtute ſanctæ obediētiæ, ut ſtatim Præ-
ſentes litteras vel earum tranſumpta per ſuas qui-
ſque diœceſes publi. ari, & etiã per Prædicatores
ad populi notiſſimam abſque ulla quaſtu devenire
quamprimum curent & faciant.

§. 5. Non obſtantibus præmiſſis, ac conſtitutio-
nibus & ordinationibus Apoſtolicis, ceteriſque
contrariis quibuſcumque.

§. 6. Volumus autem quod præſentium tran-
ſumptis, etiã impreſſis, manu Notarii publici
ſubſcriptis, & ſigillo perſonæ in dignitate Eccleſia-
ſtica conſtitutæ munitis, eadem prout ſides adhi-
beat quæ adhibetur originalibus litteris, ſi
eſſent exhibitæ vel oſtenſæ.

Dat. Romæ apud S. Petrum, ſub annulo Piſca-
toris, die 12. Martii 1572. Pontificatus noſtri an-
no ſeptimo.

Contra ſcribentes, diſtantes, retinētes, tranſmit-
tentes, & non lacerantes libellos famoſos, & lit-
teras nuncupatas de Aviſi, continentes aliquos
famæ læſionem, futurorumque ſucceſſum, &
eorum quæ pro regimine Status Eccleſiaſtici ſe-
creto tranſantur revelationem.

Conſonat Gregor. XIII. conſtit. 4. Ea eſt rerum.
Hic infra.

PIUS PAPA QUINTUS,

Ad perpetuam rei memoriam.

Romani Pontificis providentia circumspecta, ad
Rea ſollicitudinis ſue partes potiſſimum convertit,
per quæ inter ſingulos gregis ejuſdem fideles, præſer-
tim vero Nobis & Romanæ Ec. leſiæ ſubditos, pax,
& con-

Superſeſſo-
riamque ali-
am concedit
in eorum
cauſis.

Et ab uſura-
rum ſolutio-
ne liberat.

Juſſio publi-
candi hanc
bullam.

Claufuſe de-
rogatorie.

Exemplorum
fides.

Dat. P. An. 7.
die 12. Mart.

CXLVII.

Edita An. D.
1572.

Exordium.

Imperatores
n. l. i. C. de
libel. fam.
impulerat
poenam Ca-
pitis compo-
nentib. libel-
los famulos,
& sacri Ca-
nones cos-
dem flagel-
lari & ex-
communicari
decreverunt,
ut in causa
7. q. 1. per
de.

Clausula
præserva-
tiva.

Decretum
irritans.

Clausula de
rogatoria.

Forma, & ef-
fectus publ.

PP. subscrip.

Publicatio.

Edita An. D.
1571.

Causa hujus
conf.

& concordia confoventur, seditiones evitantur, scandala obviatur, & animarum salus procuratur. §. 1. Cum itaque iracundia sit perturbatio immanis, affectio dura, violenta potentia, cædium causa, calamitatis focia, iacturam concilians & dedecus, pecuniarum perniciēs, atque perditionis origo, eaq; potissimum ex injuriis, verbo, vel scriptis, vel facto illatis nascatur. Nos qui non sine maxima mentis nostræ perturbatione sepe numero accepimus, quod licet tam per sacras leges quam canonicas sanctiones, sub certis etiam gravissimis poenis prohibuit fuisse, ut quis famulum libellum componere audeat, & repertum sine domi, sive in publico, vel in quocumq; loco, aut corrumpere, vel igne consumere teneatur prius quam alter inveniat, & nulli fateatur inventum, & qui secus fecerit quasi auctor huiusmodi delicti eisdem poenis subiacet. Nihilominus considerantes, quod indies crescente malitia, quamplures iniquitatis filii, perditionis alumni, & poenas prædictas parvipendentes, easque variis fraudibus evitare satagentes, ausu temerario non erubescunt variis modis nonnullos Principes, Prælatos, nobiles, publicas & privatas personas variis injuriis & convitiis afficere, eorumque famæ & honori detrachere, sub quodam ficto colore quatumdam litterarum incerto auctore scriptarum, necdum ab Urbe nostra, sed etiam ex diversis provinciis, in quibus nedum ea quæ in unaquaque regione successerunt, narrantur, sed ea etiam quæ in futurum quodam eorum temerario iudicio fore opinantur, adeo ut plerumque odia, inimicitia, seditiones, rixæ, & homicidia permulta oriuntur, in divinæ Majestatis offensam, animarum periculum, & perniciōis quoque exemplum, & scandalum plurimorum.

& hinc Pont.
eisdem poe-
nas confir-
mat, & ex-
tendit ad
scribentes
ec. litteras
uncupatas
Avisi. Alias
ue poenas
te expressas
imponit.

§. 2. Volentes præmissis quantum possumus obviare, considerantes attentius quod plures poenarum gravitas, quam Dei timor accere solet à voluntate delinquendi, & propterea tanto periculo occurrere volentes, ac tam nefarios præsumptores; & facinorosos homines, atrocibus poenis torpescere, ut metus poenæ metum huiusmodi præsumptionis exstiterit: hujus perpetuæ & irrefragabilis constitutionis edicto, poenas omnes, tam temporales quam Ecclesiasticas in talia præsumptores per sacras leges, & canonicas sanctiones latas, & promulgatas, auctoritate Apostolica approbantes & innovantes, ac ad omnes & singulos prædictos, qui forsitan sub illis comprehensi non essent, extendentes & ampliantes, statuimus & ordinamus, quod deinceps perpetuis futuris temporibus nemo cuiusvis qualitatis, dignitatis, etiam Ecclesiastica, status, gradus, ordinis, & præminentiæ fuerit, audeat nec præsumat libellos famulos, nec litteras monitorum vulgò appellatas, Lettere d'Avisi, continentes convicia, injurias, vel famæ & honoris alicujus læsionem, nec aliquam scripturam in qua de futuris successibus differatur, vel ea quæ coram nobis vel aliis ad universalis Ecclesiæ status regimen deputatis secretò tractantur, revelentur, componere, distare, scribere, exemplari, retinere, nec ad aliquem transmittere, etiam si aliunde ab aliis provinciis, civitatibus, terris & locis, ad eorum manus pervenerint, sed statim quod aliqui similes libelli, litteræ, sive scripturæ, alicui delatæ fuerint, statim quod illos, seu illas habuerit, antequam vim earum manifestaverit, corrumpere, seu igni tradere, vel dilecto filio nostro Cardinali Rusticuccio consignare teneatur, sub poenis prædictis quas hic pro expressis haberi volumus, ac aliis etiam gravioribus, etiam ultimi supplicii, & confiscationis bonorum, secundum qualitatē facti, & personarum, arbitrio nostro irremissibiliter infligendis, quibus poenis etiam eos ligari volumus, qui in huiusmodi libellis, litteris, seu scripturis de aliquo oblorenti fuerint, alicuiusque famæ & honoris, vera etiam exprimendo, detraxerint, ac ea quæ coram nobis vel aliis ut supra, secretò tractantur, revelaverint; ex hoc equidem animus deprehenditur parvus, injuriandi vel nocendi, atque idcō eos eadem poena teneri convenit.

§. 3. Necnon præfentes, & desuper conficiendas forsitan litteras perpetuis futuris temporibus durare, ac omnes & singulos à data Præfentium irremissibiliter ligari volumus, illasque nullo umquam tempore, de subreptionis vel obreptionis vitio, aut intentionis nostræ vel quopiam alio defectu notari, aut sub quibusvis revocationibus, & derogationibus comprehendere nullatenus posse.

§. 4. Sicque per quoscumque Judices &c. etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Cardinales, sublata &c. iudicari debere &c. irritum quoque &c. decernimus.

§. 5. Non obstantibus præmissis, ac quibusvis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac quibusvis etiam Almæ Urbis, & illarum civitatum, oppidorum, terrarum, & locorum, etiā juramento &c. roboratis, ac provincialibus, municipalibus, ac particularibus, statutis, ac legibus, etiam Imperialibus, & in corpore juris scriptis, privilegiis quoque &c. etiam Motu simili &c. etiam consistorialiter &c. quibus illorum tenores &c. hac vice latissimè derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 6. Ut autem Præfentium tenor omnibus innoscescat, nullasq; earum ignorantiam allegare queat, in valvis Principis Apostolorum, ac S. Joannis Lateranensis, & in acie Campi Floræ de Urbe publicari mandamus, ipsasque sic publicatas, omnes & singulos quos illæ concernunt ita afficere volumus, ac si essent omnibus personaliter intimata. Decernentes quoque Præfentium earundem solam signaturam sufficere, & ubique fidem facere, in iudicio & extra, regula quacumque contraria non obstante. Ac illarum transumptis, & sigillo Almæ Urbis gubernatoris, aut alterius alii Judicis sigillatis eandem prorsus fidem adhiberi, quæ ipsis originalibus litteris adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Placet Motu proprio. M.

Datum Romæ apud S. Petrum, 16. Kal. Aprilis, anno 7.

Anno à Nativitate Dom. 1572. Indictione 15. die verò 19. mensis Martii, Pontificatus Sanctissimi in Christo Patris, & D. N. D. Pii divina providentia Papa V. Anno 7. retroscripta litteræ Apost. affixe, & publicata fuerunt ad valvas Basilicarum Principis Apostolorum, ac S. Jo. Lateranensis & in acie Campi Floræ de Urbe, per me Antonium Clerici S. D. N. Papæ Curæ.
Michaelangelus Piraurus Mag. Curæ.

Exemptio Monasteriorum, omniumque locorum priorum ab onere Hospitali Militis.

Hanc exemptionem pro Ordinibus Mendicantium habes etiam sup. in conf. 11. Dum ad uberes. fol. 204. in hoc Tom. II.

PIUS PAPA QUINTUS.

Motu proprio, &c.

Cum sicut non sine gravi dolore nobis innotuit, omnia & singula, seu quamplurima hujus Almæ Urbis, ac etiam Status nostri Ecclesiastici Conventus, & Monasteria, & alia Ecclesiastica, & pia loca, tam secularia quam regularia & à personis religionis quomodolibet inhabitata, eo tempore, quo equites, & milites ejusdem Almæ Urbis, ac Status Ecclesiastici præfati pro defensione ipsius Urbis & status adversus infestissimum Turcarum tyrannum, vel ob alias que pro tempore sese offerunt causas expediri, & ad diversa ejusdem Status loca transmitti contingit, ab eisdem equitibus & militibus perturbentur & molestantur, ipsique Conventus, Monasteria, & alia Ecclesiastica & pia loca in eorumdem equitum, seu militum distributione nonnullos eorumdem equitum & militum intra eorum domos & monasteria hospitio excipere & recipere cogantur, in maximum eorum detrimentum, divini cultus

CXLVIII.

Causa hujus
conf.

perturba-

Impositio
pœnarum
contra affi-
nantes Mil-
ites in mona-
steriis & locis
piis.

perturbationem gravissimum religionis dedecus, Dei optimi offensam, & non solum præter omnem nostram intentionem, verum etiam intolerabilem animi nostri amaritudinem.

§. 1. Quapropter Nos in præmissis, quantum cum Deo possumus de optimo remedio celeri manu providere, ac monasteriorum & aliorum Ecclesiasticorum & piorum locorum huiusmodi personarum Deo Altissimo, dic, nocturne famulantium quieti, integritati, & decori consulere volentes, Motu simili, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, universis & singulis tam dictæ Almæ Urbis, quam totius Status præfati Gubernatoribus, Potestatibus, Ducibus, & Capitaneis, Communitatibusque & Universitatibus, & aliis ad quos spectat & pertinet, ac spectabit & pertinebit quomodolibet in futurum, ne deinceps perpetuis futuris temporibus in eorumdem militum & equorum distributione, tam in transeundo, quam inibi commorando, Communitatibus, & Universitatibus videlicet ne dictos equites, ac milites in eisdem monasteriis, cœnobiis, domibus, & aliis Ecclesiasticis & piis locis, sub duorum millium ducatorum auri Cameræ Apostolicæ ipso facto applicandi, & aliis arbitrii nostri pœnis quovis quæsito colore, causa, ingenio, sive prætextu distribuere sive assignare, vel ad illos recipiendum, & hospitio excipiendum cogere.

Et contra
Capitanos,
& alios dis-
tribuentes
ibi milites.

§. 2. Ipsi verò Capitaneis & Ducibus ne eosdem suos equites & milites, sub indignationis nostræ, ac privationis officiorum suorum, aliisque etiam arbitrii nostri pœnis in dictis monasteriis, cœnobiis, domibus, & aliis Ecclesiasticis & piis locis, etiam Communitates & Universitates ipsæ eadem loca eisdem assignassent, distribuant.

Et Gubernatores loco-
rum, & alios
Officiales
hæc fieri per-
mittentes.

§. 3. Gubernatoribus verò & ipsarum civitatum & locorum Prætoribus, ac aliis Officialibus quibuscumque, quominus præmissa ab ipsis Communitatibus & Universitatibus, ac Capitaneis & Ducibus fiant, sub ejusdem indignationis nostræ, ac etiam privationis officiorum suorum prætorum respectivè pœnis, auctoritate Apostolica, finant vel permittant, inhibemus, præcipimus, committimus & mandamus.

Exemptio de
qua in rub.

§. 4. Et insuper tam illis, quam equitibus & militibus præfatis, ne monasteria, cœnobia, & loca pia huiusmodi in personis, rebus, & bonis, aut aliis desuper quomodolibet molestare, perturbare, impedire & inquietare, seu molestari, perturbari, vel aliis inquietari facere audeant seu præsumant, in virtute sanctæ obedientiæ, & sub jam dictis pœnis eadem auctoritate inhibemus, præcipimus, committimus & mandamus, ipsa monasteria, cœnobia, domus & alia Eccl. & pia loca ex nunc ab eisdem militibus, & equitibus, ab onere illos hospitio excipiendi, Motu & auctoritate similibus eximendo, & totaliter liberando, ac libera & immunia faciendi.

Deputatio
executorum.

§. 5. Necnon dilectis filiis nostris Vitellio Cardinali Vitellio nuncupato, & pro tempore esistenti S. R. E. Camerario, ac Præsidentibus & Clericis Cameræ Apostolicæ, ut eisdem monasteriis & piis locis in præmissis efficacis defensionis, & præsidii assistentes, non permittant, illa seu eorum personas, à prædictis militibus & equitibus, illorumque hospitio gravari contra Præsentium tenorem, sed literas, & exemptiones huiusmodi eis desuper concedant, ac favorabiliter defendant, etiam præcipimus & mandamus. Et sic per quoscumque Judices sublata &c. judicari &c. debere; irritum quoque &c. decernimus.

Claufulæ de-
rogatoriz.

§. 6. Non obstantibus quibuscumque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, statutis, etiam juramento &c. roboratis; privilegiis quoque, indultis & litteris Apostolicis, quibuscumque etiam prædictis, ac aliis quibuscumque personis, sub quibuscumque tenoribus, ac aliis in contrarium quomodolibet concessis & concedendis. Quibus omnibus illorum tenores &c. latissimè derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque, cum claufulis opportinis.

§. 7. Et cum absolutione ad effectum &c. & de commissione, mandato, inhibitione, præcepto, exemptione, liberatione, decreto, derogatione, aliisque præmissis extendendis perpetuò in forma gratiosa; & si videbitur cum opportuna executorum deputazione qui assistant, ac sub censuris & pœnis etiam pecuniariis, &c. cum facultate gravandi, &c. invocato &c. secularis; cum opportuna dictarum derogatione latissimè extendenda, & quod præmissorum omnium & singulorum etiam major & verior specificatio & expressio fieri possit in litteris etiam ad partem pro quomodolibet monasterio & pio loco, si videbitur per Breve nostrum expediendis, seu si videbitur, præsentis nostri Motus proprii sola signatura sufficiat, & ubique fidem faciat, in iudicio extraque, regula contraria non obstant.

Placet Motu proprio, & ita mandamus. M.

* Pape sub-
script.

Quod Christiani apud Turcas sclavi reperti in bello contra eos parato, liberi cum suis bonis dimittantur ab Officialibus classis Christianæ.

CXLIX.

Adjuvantibus hoc bellum, hic Pontifex indulgentias concessit in cons. 142. Postquam, ubi de hoc bello dixi supra.

PIUS PAPA QUINTUS.

Edita An. D.
1572.

Motu proprio, &c.

Licet omnibus notissimum sit, bellum hoc, quod cum impio Turcarum tyranno geritur, non ea tantum de causa geri, ut imminens ab illius viribus nobis periculum dimoveamus, sed ut etiam plurima Christianorum millia, quæ sub dira illius tyrannide, servilem ac miserabilem vitam ducunt, in libertatem, ac ad CHRISTI nomen liberè confitentem, ac excolendum vindicemus: non desuerunt tamen qui Christianæ Confraternitatis oblitii, loca Turcarum hostium nostrorum invadentes, Christianos ibidem repertos in servitute redegerunt, bonis ac fortunis spoliarunt, tiremibus alligarunt, ac taleam imposuerunt; quo fit, ut CHRISTI sanguine redempti, qui cumulatim votis Christianorum adventum, & victoriam exoptaverunt, ea à victoris fratribus suis pariantur, quibus paulo pejora à Turcis expectare possunt.

Causa decla-
rationis.

§. 1. Nos igitur ejus locum, licet immerito, tenentes in terris, qui de Cælo ad liberandum nos venit, ut de manu inimicorum nostrorum liberati deinceps sine timore serviamus illi, verentes ne si injunctæ nobis ab eo erga filios nostros charitatis & dilectionis immemores simus, omnipotentis Dei contra Nos, classemque nostram iram provocemus, malis huiusmodi obviare cupientes, tenore Præsentium decernimus & mandamus, ut nullus deinceps sive sacri fœderis miles, sive alius, Christianos capiat, aut præter eorum voluntatem, etiam data mercede remigare cogat, taleam imponat, aut ejus bona diripiat, quinimmo fraternè & amicaliter, ut Christianam pietatem decet, tractet, ac liberè cum liberis suis, conjugibus & bonis abire permittat.

Declaratio
de qua in
rub.

§. 2. Illos autem omnes & singulos, qui huic constitutioni contraire præsumperint, declaramus ipso facto in pœnam excommunicationis late sententiæ incidisse, à qua non possint nisi à Nobis & Successoribus nostris, præterquam in mortis articulo, absolvi; & ulterius volumus eos à Superioribus suis ad quos spectabit, severè & graviter juxta contraventionis qualiter paniri.

Iussio eam
servandi.

§. 3. Mandantes omnibus & singulis, tam ipsius classis, quam locorum ipsorum Superioribus quibus spectat, & in futurum spectabit, ut pro quanto student divinam gratiam, nostramque benevolentiam promereri, hoc nostrum, immo verò potius Dominicum præceptum & mandatum in locis suæ jurisdictionis sive iis ad quæ Christianorum Principum fœderatorum præfectos, tam generales quam particulares appellare contigerit, ea lingua cujus ejus loci

Iussio eam
publicandi.

habi-

Sola signa-
tura sufficit.Exemplo-
rum fides.

Papæ subscr.

CL.

Edita An.D.
1570.Mandata ex-
communi-
candi den-
tad instan-
tiam quorum
civiliter in-
terest.Res & bona
exprimantur.Mandata præ-
dicta Episco-
pis aut eor-
um Vicariis
committan-
tur, sub for-
ma Conc.
Trid. sess. 25.
cap. 3.
Decretum
irritans.
PP. sub-
script.Publication
An. Pont. 5.
die 27. Jun.

CLI.

Edita An.D.
1572.

Proœmium.

habitatores intelligentes fuerint, & in ipsa etiam classe, publice editæ, affigi, & sub penis sibi benevisis faciant ab omnibus inviolabiliter observari, ut à Deo Opt. Max. præmia eterna, & à nobis de re deligerent getta laudem reportare mereantur.

§. 4. Volumus autem, ut præsentis nostri Motus proprii sola signatura sufficiat, & ubique fidem faciat, in iudicio & extra, quacumque regula seu constitutione Apostolica contraria non obstat.

§. 5. Quodque illius exempla etiam impressa edantur, eaque Notarii publici manu, & cuiuscumque Curie ecclesiasticæ, aut prælati sigillo ob signata, eadem prorsus fidem ubique faciant, quam ipse præsentis Motus proprius faceret, si effect exhibitus vel ostensus; contrariis non obstantibus quibuscumque.

Placet Motu proprio. M.

Forma expediendi litteras Apostolicas monitoriales, de excommunicandis his, qui bona deperdit vel subtrahenda restituere, aut revelare reculant.

Quid autem servare debeant Episcopi, cum ejusmodi litteras monitoriales ipsi decernunt, agunt Conc. Trid. sess. 21. cap. 3.

Sanctissimus in Christo Pater, & Dominus noster D. Pius divina providentia Papa V.

§. 1. Volens super expeditione mandatorum, quæ sunt in forma significavit, pro rerum subtraharum aut deperditarum restitutione, seu illarum & illas subtrahentium revelatione, modum & formam statuere (manente in aliis reformatione officii Correctoris litterarum contradicendum à Sanctitate sua edita) præsentis quod perpetuo observari vult scripto, ordinat, ut mandata pro restitutione seu revelatione huiusmodi, dentur (modo super illis supplicationes in præsentia sue Sanctitatis signata fuerint) ad eorundem instantiam quorum civiliter interest.

§. 2. Quæ supplicationes rem ipsam de qua agitur, reique valorem nominatim & specificè expriment, nisi forte sint pro Ecclesiis, locis piis, Communitatibus, Universitatibus, Collegiis, aut universalibus successoribus, quos verisimile est certam rerum notitiam non habere; tunc etenim hac ipsa personarum qualitate expressa, ita demum fieri poterit quædam in genere designatio rerum, si designatio neque nimis vaga, & incerta, atque adeo inverisimilis sit, & tamen ostendat res ipsas (id quod præcipue in omnibus attendendum est) minime vulgares existere.

§. 3. Committantur autem Episcopo ordinario loci, vel ejus Vicario in spiritualibus generali, sub hac forma verborum; quæ est ex Concilio Tridentino videlicet. Si causa diligenter & magna maturitate per ipsum examinata pro rei, loci, temporis, & personæ qualitatibus, sibi pro sua conscientia videbitur expedire.

§. 4. Decernentes irritum &c.

Placet publicetur, & describatur. M.

Leita & publicata fuit superscripta Regula Rome in Cancell. Apostolica, Anno Incarnationis Domini. 1570. die vero martis 27. mensis Junii, Pontificatus prælati Sanctissimi D. N. D. Pii divina providentia Papa V. anno quinto.

Jo. Lomelinus Custos.

Oppidi Ripæ Tranfonis in Provincia Picena, in Civitate sublimato, ejusque Parochialis Ecclesiæ S. Benigni, in Cathedrali & Episcopalem erectio.

PIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Illius fulciti præsidio, cujus sunt terræ cardines, & cui cogitationes hominum præparantur, ac

cujus providentia ordinationem suscipiunt universa, ut Christifideles Nobis & Sedi Apostolicæ, etiam temporali dominio subditi, ob eorum erga Nos & eandem Sedem fidem & devotionem specialem, consolationem cum divini cultus augmento suscipiant, & in Oppidis insignibus & populosis novæ Sedes Episcopales plantentur, libenter cum à Nobis petitur opem & operas nostras impendimus efficaces.

§. 1. Sanè cum Oppidum Ripæ Tranfonis Firmans diocesis situm in agro Piceno, inter Asculum, & Firmum, in conspectu Adriatici sinus, muro & fossa vallatum, mille & ultra familiis constans, & à quatuor viris Antianis nuncupatis in Palatio Communis cum honesta familia residentibus gubernatur, ac multis & variis mercium apothecis, & officinis refertum, & diversorum ordinum virorum & mulierum Monasteriis, Conventibus, seu domibus, & in quibus multa pia & caritatis opera exercentur, quatuor Confraternitatibus, & uno Hospitali, necnon quatuordecim Parochialibus Ecclesiis, & honorificis incolis decoratum, habens amplum Territorium, ubi familie tercentum, vel circa inhabitant, & decem & octo sine cura ecclesiæ, quarum quælibet suum habet Rectorem, adsint, inter cetera Provincia nostræ Marchiæ Anconitæ oppida admodum insignia existat, noverimusque incolas eidem Sedi semper fidelissimos ac devotissimos extitisse, dignum, quin potius debitum reputamus, ut in ea Sedes Episcopalis collocetur.

§. 2. Cumque præsertim ipsius Oppidi Universitas, quæ pluries Nobis desuper supplicavit propriis impensis ecclesiam S. Benigni ipsius Oppidi, quæ Parochialis existit, si in Cathedrali erigatur, una cum ejus domo pro Episcopi habitatione ampliare & ornare pollicita est, & validis obligationibus spondendit, necnon ipsam Cathedrali erigendam, in scutis annuis sexcentis, & fructibus, & redditibus, seu terrarum, tenementorum ipsi Ecclesiæ erigendorum solemniter consignatorum, unius videlicet septuaginta sex in Contrada dicta di Cocco, & alterius capacitarum centum & triginta salmarum, mensuræ illarum partium, in Contrada Guardie, & territorio dicti Oppidi, ad ipsam Universitatem spectantium & pertinentium, dotavit, & una cum Consiliariis dicti Oppidi, qui ut singuli ad id se obligaverunt, mensæ Episcopali erigendæ Ecclesiæ huiusmodi in proprietatem & in perpetuum assignavit.

§. 3. Nos qui dudum inter alia voluimus, quod petentes beneficia ecclesiastica aliis uniri tenerentur exprimere annuum valorem etiam beneficii cui aliud uniri peteretur, & semper in unionibus commissio fieret ad partes, vocatis quorum interesset, habita super his cum Venerabilibus fratribus nostris S. R. E. Cardinalibus matura deliberatione, de illorum consilio & assensu, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, Oppidum præfatum cum toto illius territorio, Ecclesiis & personis, tam secularibus quam ecclesiasticis, à diocesi Firmans, necnon à jurisdictione, & superioritate Firmans, Aprutini, & Asculani Episcoporum, necnon Abbatis vel Comendatarii, Monasterii Campifellonis Ordinis S. Benedicti nullius diocesis pro tempore existentium, vel alterius Episcopi, Capituli, Abbatis, & Monasterii, quibus in totum vel in parte subesse dignoscitur, perpetuo sequegramus, dismembramus, separamus & eximimus, ipsamque Oppidum in Civitatem Ripæ Tranfonis nuncupandam, cum juribus, honoribus, & præeminentiis, quibus aliæ Civitates, & earum Cives utuntur, potiuntur, & gaudent, ac uti, potiri, & gaudere poterunt quomodolibet in futurum, & Ecclesiæ S. Benigni huiusmodi in Cathedrali Sedi præfatæ immediatè subiectam sub eadem invocatione S. Benigni, & in ea Sedem Episcopalem pro uno Episcopo Ripano nuncupando, qui eidem Ecclesiæ, illiusque Civitati, & diocesi præsit, illamque in perfectam Cathedralis ecclesiæ formam ordinat & redigat, Abbates, Prælatos, & alios ad Synodum convocet, evelet, destituat, ædificet, plantet, ac omnia & singula officia,

Oppidi Ripæ
Tranfon.
qualitates
enuncianturEjusque Uni-
versit. sup-
plicatio, pro ob-
tinentia ere-
ctione in Se-
dem Episco-
palem, cui
dos assigna-
ta fuit.Erectio di-
cti Oppidi in
Civitatem,
& eccles. S.
Benigni in
Sedem Episco-
palem pro
Episcopo
Ripano nuncu-
pando, una
cum
Archidiacono,
Archipresbytero
& duodecim
Canonici-
bus.

& jura Episcopalia habeat, & exercitet, cum suis Capitulo Episcopali & Capitulari mensis, ceterisque omnibus Cathedralibus, & Pontificalibus insignis, necnon juribus, jurisdictionibus, facultatibus, prerogativis, privilegiis, honoribus, gratiis, favoribus, & indultis, realibus, personalibus & mixtis, quibus alie Cathedralis Ecclesie, earumque Praefules, Capitula, & personae quomodolibet utuntur, potiuntur, & gaudent, ac uti, potiri, & gaudere poterunt in futurum, necnon ut ipsa Cathedralis Ecclesia Ripana ex omni parte reddatur perfecta, in illa duas Dignitates, videlicet unum Archipresbyterum, dignitatem inibi post Pontificalem majorem, pro uno Archipresbytero qui curam animarum Parochianorum Ecclesie S. Benigni in Cathedrali Ecclesia hujusmodi exerceat, & unum Archidiaconum pro uno Archidiacono, necnon duodecim Canonicis cum totidem praebendis pro duodecim Canonicis, qui eidem Ecclesie in divinis deserviant, & insimul unum Capitulum constituant, moderni quo ad Ecclesiam S. Benigni praedictam illius Rectoris ad hoc accedente consensu, ad Omnipotentis DEI laudem & gloriam, ac ejus gloriosissime Genitricis Virginis MARIE totiusque Curie celestis honorem, & fidei Catholice exaltationem perpetuo erigimus & instituimus.

Affignatio emolumentorum, & proventuum.

§. 4. Oppidumque praedictum Civitatis, ipsiusque incolae Civium, necnon Ecclesiam S. Benigni praedictam Cathedralis Ecclesie honore, nomine, titulo, & insigniis decoramus, ac dictae Ecclesie Ripanae, & illius mensae Episcopali pro dote dicta, duo petita terrarum, ut praefertur consignatarum, necnon Archipresbyteratui Ecclesie Ripanae, hujusmodi res, bona, fructus, redditus, proventus, jura, obventiones, & emolumenta quaecumque; Ecclesie S. Benigni praefatae perpetuo applicamus & appropriamus. Archidiaconatui vero B. Mariae Annuntiationis de Agello cum suis ruralibus, & uni & unae SS. Nicolai, Rustici, & Eleutherii plebaniae, ac alia, & aliae S. Angeli de Colle, & alio, & aliae S. Mariae de Valle, & alio & aliae SS. Salvatoris, & Antonini & alio & aliae S. Thomae in Cleris, & alio & aliae S. Blasii de Platea, & alio & aliae SS. Hippolyti, & Cassiani, & alio & aliae SS. Gregorii, & Margaritae prioratus, & alio & aliae S. Angeli de Rossano, & alio & aliae S. Rocchi, & Pastoris, & alio & aliae S. Eumerii praepositurae nuncupatae, necnon reliquo & reliquae Canonicatibus & praebendis praedictis, reliquam S. Salvatoris de Agello parochiales Ecclesie in dicta Civitate Ripae Transfonis sitas, & fundatas, vacantes ex nunc, reliquas vero ex nunc prout ex tunc cum primis illas seu ipsarum aliquas per cessum vel decessum, aut privationem illas nunc obtinentium, aut alias quovis modo vacare contigerit, etiam si nunc vacantes per liberam resignationem quorumvis de illis in Romana Curia vel extra eam, etiam coram Notario publico & testibus (ponte factas, aut constitutionibus sel. record. Joannis Papae XXII. praedecessoris nostri, quae incipit: Execrabilis, vel affectionem alterius beneficii Ecclesiastici quavis auctoritate collati vacent, etiam si tanto tempore vacaverint quod earum collatio, juxta Lateranensis statuta Concilii, ad Sedem eandem legitime devoluta, ipsaeque Ecclesie dispositioni Apostolicae specialiter vel generaliter collatae existant, & super eis inter aliquos lites, quarum status praesentibus haberi volumus pro expressis pendent indecise, dummodo earum dispositio ad nos hac vice pertineat, cum omnibus & singulis illarum, & earum cujuslibet annexis, ita quod liceat eidem Archipresbytero, Archidiacono, & Canonicis pro tempore existentibus illarum corporalem possessionem propria auctoritate liberè apprehendere, & perpetuo retinere, illarumque fructus, redditus & proventus, propria auctoritate percipere, exigere & levare, & in suos & cujuslibet ipsorum usus & utilitatem convertere, perpetuo unimus, annectimus, & incorporamus.

Facultas Episcopii & Canonicorum edendi statuta pro felici successu Ca-

§. 5. Ac Episcopo & Canonicis praedictis, ut pro salubri directione & prospero statu, feliciq; successu Cathedralis Ecclesie erectae hujusmodi, & illius personarum praedictarum divinarumque officiorum in ea

celebratione, fructuumque, reddituum, proventuum, jurium, obventionum & emolumentorum, ac distributionum quotidianarum perceptione, & inter eos divisione, & repartitione, ac quibuscumque rebus, & occurrentiis suis quacumque statuta, ordinationes, & capitula (rationabilia tamen & honesta, ac sacris Canonibus non contraria) condere, & condita quoties opportunum fuerit immutare, limitare, corrigere, & interpretari secundum rerum & temporum qualitates & loco illorum, alias ordinationes, capitula, & statuta, quoties eis expedire visum fuerit, de novo edere & facere, quae omnia postquam edita & facta fuerint, ex nunc, prout ex tunc, & contra (si licita, & honesta ac sacris Canonibus non contraria fuerint) eadem auctoritate etiam cum defectuum suppletionem confirmata sint, & esse censeantur, eo ipso concedimus & indulgemus.

§. 6. Cumque Civitas Ripae Transfonis praefata in quatuor regiones divisa existat, ita ut in qualibet regione una tantum Parochialis Ecclesia pro uno Parrocho, qui curam Parochianorum inibi habitantium exercere possit, videlicet in Agelli S. Benigni in Cathedrali Ecclesia, in S. Domini S. Angeli de Rossano, in montis Antiqui SS. Nicolai, Rustici, & Eleutherii; & in Capitis Montis nuncupatis regionibus, SS. Georgii & Margaritae Ecclesiae sufficere videantur, parochianos, & vicinos, omnes & singulos utriusque sexus ab aliis Parochialibus ecclesiis Civitatis Ripae Transfonis, & jura Parochialium Ecclesiarum hujusmodi separamus & dismembramus, & curam animarum in illis perpetuo suppressimus, illosque & illam ac jura praefata quoad Agelli ad S. Benigni in Cathedrali Ecclesia, quoad S. Domini S. Angeli de Rossano; quoad Montis Antiqui, ad SS. Nicolai, Rustici & Eleutherii; quo vero ad Parochianos & vicinos Capitis Montis regionem hujusmodi, ad SS. Gregorii & Margaritae Parochiales Ecclesias praefatas, ita ut qualibet regio propriam habeat Sacerdotem, & pastorem, perpetuo transferimus.

Constitutio quatuor ecclesiarum parochialium in quatuor regionibus dictae Civitatis.

§. 7. Necnon eorundem S. Angeli & SS. Nicolai, Rustici & Eleutherii, ac SS. Gregorii & Margaritae Parochialium Ecclesiarum Rectoribus, dictae Cathedralis ecclesiae Canonicis, ut illis per Vicarios perpetuos ab Ordinario loci approbandos, in divinis deservire facere illorumque parochianorum animarum curam gerere possint indulgemus.

Facultas Rectorum dictarum parochialium habendi in illis Vicarios perpetuos.

§. 8. Necnon Archipresbyteratus, Archidiaconatus, ac duodecim Canonicatus cum praebendis ad primam erectionem hujusmodi vacantes, Ecclesiae videlicet S. Benigni in Cathedrali Ecclesia, quae sit Archipresbyter dictae Ecclesie Ripanae, & in ea post Pontificalem, dignitatem majorem obtineat; & ecclesia S. Mariae Annuntiationis de Agello, qui sit Archidiaconus ejusdem Ecclesie Ripanae, & dignitatem, non tamen post Pontificalem majorem, obtineat; alias vero Parochiales Ecclesias ut praemittitur unitas, quarum cujuslibet fructus, redditus, & proventus, vigintiquatuor ducatorum auri de Camera secundum communem estimationem, valorem annuum non excedant eorundem Rectoribus, qui Canonici ejusdem Ecclesie Ripanae existant conferimus, & de illis etiam cum plenitudine juris Canonici providemus.

Constitutio Archipresbyteratus, Archidiaconatus, & Canonicatus praedictorum.

§. 9. Volumusque quod deinceps perpetuis futuris temporibus, in Choro, Capitulo, processionibus & aliis actibus, publicis seu privatis, Archipresbyter primum, Archidiaconum secundum locum, Canonici vero nuper creati post Archipresbyterum & Archidiaconum praedictos, juxta illorum receptionem & admissionem si ad id consenserit unusquisque illorum loca habeant.

Forumque praecedentia.

§. 10. Cumque fructus, redditus, & proventus, Canonicatum & praebendam dictae Ecclesie Ripanae satis tenues videantur, perpetuum simplex beneficium Ecclesiasticum fidei invocatione S. Angeli Viles magnae intus dictam Civitatem Ripae Transfonis, de consensu illius Rectoris perpetuo suppressimus, & extinguimus, illiusque & illi annexorum fructus, jura, & obventiones quaecumque, necnon decimas fructuum, reddituum, & proventuum quorumcumque ex

Unio beneficii S. Angeli ad dictam ecclesiam Cathedrali.

Multorumq;
locorum, &
personarum
ad alias Dio-
ceses vel ec-
clesias spe-
ctantium, pro
Clero, & Po-
pulo, & Dio-
cesis dictæ ec-
clesiæ Ripa-
næ.

novallibus dictæ universitatis de Fulgaja nuncupatis, de ejusdem Universitatis consensu, singulis annis eidem Capitulo, & illius mensæ Capitulari in distributionibus quotidianis juxta providam Episcopi Ripæ Transonis ordinationem, inter Dignitates obtinentes, & Canonicos præfatos distribuendas, perpetuò applicamus & appropriamus.

§. 11. Necnon pro majori Christianidelium illarum partium commoditate & spiritali consolatione, Columnellæ, Aquævivæ, S. Benedicthi, Marani, S. Andreæ, Grottarum ad Mare, Giffi, Quinzani, Montis Prandoni, Furcarum, Montis Alti, Montis denovem, Rotelle, Porculæ, Cossignani, & Passignani loca, Castra & Oppida Asculanæ, Firmanz, & nullius respectivè Diocesis in Provincia Marchiæ prædictæ & ubivis consensita, & quæ nunc & pro tempore existentibus, Monasteriis Farfensis Abbatibus, seu Commendatariis, Firmanis, & Asculanis Episcopis, ratione Monasterii, & Firmanz, & Asculanæ Ecclesiæ hujusmodi, mediâtè vel immediâtè respectivè subjeclæ reperiuntur, necnon in eis consensita, Collegiatis, Parochialibus, & alias Ecclesiis, Monasteria, Præposituras, Præpositus, Prioratus, & alia quæcumque, quocumque, & qualicumque, cum cura & sine cura, secularia & quorumvis Ordinum regularia beneficia Ecclesiastica, etiam si secularia Canonici & præbendæ, personatus, administrationes, officia, etiam curata & electiva etiam in Collegiatis ecclesiis, regularia verò beneficia hujusmodi, præposituras, præpositus, dignitates, etiam Conventuales, personatus, administrationes & officia etiam claustralia, Capellaniz, Capellæ, Hospitalia, & alia pia loca fuerint, & ad dignitates, Prioratus, Præposituras, & Præpositus hujusmodi confueverit, qui per electionem assumi, ac eorumdem locorum, Castrorum & Oppidorum utriusque sexus personas habitatores & incolas, tam laicos quam clericos, præbyteros, beneficiatos & religiosos quoscumque, cujuscumque status, ordinis & conditionis existant, à jurisdictione, potestate, dominio & quavis alia superiori Firmanz, & Asculanæ ecclesiæ, ac Farfensis Monasterii, & illorum nunc & pro tempore existentium Episcoporum, Abbatum, seu Commendatariorum, quibus nunc loca, Castra, & Oppida hujusmodi earumque Ecclesiæ & personæ præfate subjeclæ dignoscuntur, etiam perpetuò dismembramus, separamus, & eximimus, locaque, castra, & Oppida hujusmodi, illorumque personas tam seculares quam Ecclesiasticas, & quorumvis Ordinum regulares Ecclesiæ, Monasteria, Prioratus, Præposituras, Præpositus, & alia beneficia Ecclesiastica, Hospitalia, & loca pia hujusmodi, cum ipsorum iuribus & pertinentiis universis, ecclesiæ Ripanæ prædictæ, pro diocesi, Clero & Populo, ita quod liceat Episcopo eidem ecclesiæ Ripanæ, tam hac prima vice quam in posterum præficiendo, per se vel alium seu alios ejus nomine, corporalem possessionem, seu quasi administrationis spiritualitatis, & omnimodi juris diocesani, propria auctoritate, Firmani & Asculani Episcoporum, ac ejusdem Monasterii Farfensis Abbatis, seu Commendatarii nunc & pro tempore existentium licentia desuper minime requisa, liberè apprehendere, & apprehensam perpetuò retinere de ejusdem potestatis plenitudine similiter perpetuò concedimus & assignamus, ac ejusdem Ecclesiæ Ripanæ illiusque Præsuli pro tempore existentis, jurisdictioni, dominio, potestati, & superioritati, eisdem modo & forma quibus Firmanis & Asculanis ecclesiis ac Monasterio Farfensi, illorumque Episcopis, Abbatibus vel Commendatariis hujusmodi respectivè suberant, subijcimus & supponimus.

Derogatio
contractionum.

§. 12. Non obstantibus priori voluntate nostra, ac de non tollendo jure quæsito, Concilii Lateranensis novissimè celebrati, uniones perpetuas nisi in casibus à jure permixtis fieri prohibentibus, necnon pia memorie Bonifacii Papæ VIII. etiam prædecessoris nostri, aliisque Apostolicis, ac in provincialibus & synodalibus Conciliis editis, specialibus vel generalibus constitutionibus & ordinationibus, ac Firmanz

& Asculanæ ecclesiæ, & Farfensis Monasterii & ordinis hujusmodi juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, Firmanis, & Asculanis ecclesiis, & Farfensi Monasterio, illorumque Capitulis, Conventibus, Superioribus & personis, sub quibuscumque tenoribus ac quibuscumque derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis irritantibus; & aliis decretis etiam consistorialiter, in genere vel in specie concessis, quibus omnibus & singulis, illorum causas & effectus Præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 13. Volumus autem, quod Firmanz, Aprutinae & Asculanæ ecclesiis, ac Farfensi, & Campi Felsonis Monasteriis, illorumque Præsulibus, Abbatibus, seu Commendatariis, nunc & pro tempore existentibus prædictis, per separationem, dismembrationem, & exemptionem hujusmodi, quoad bona temporalia, si quæ in dictis locis ab eis separatis, dismembratis & exemptis hujusmodi habeant, quoad bona temporalia, si quæ in dictis locis ab eis separatis, dismembratis, & exemptis hujusmodi habeant, & quoad superioritatem qua Farfense, & Campi Felsonis Monasteria, & illorum Abbates seu Commendatarii hujusmodi, in Monasteriis seu Prioratibus regularibus dicti Ordinis, in locis separatis prædictis existentibus habent, nullum præjudicium inferatur, sed Episcopus Ripæ Transonis, in Monasteriis prædictis eam tantum habeat & exerceat jurisdictionem, quam ceteri Episcopi in similibus habere & exercere solent.

Nulli ergo &c. Si quis autem &c.
Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo septuagesimo primo, tertio Cal. Augusti, Pont. nostri anno sexto.

Præservatio
jurium aliarum
ecclesiæ
& Monasteriorum
quoad bona
temporalia
& Monasteria
in locis
dismembratis
existentia.

Dat. P. An. G.
die 30. Jul.

GREGORIUS XIII. PONT. CCXXX.
ANNO DOMINI MDLXXII.

Gregorius Decimus tertius, Italus, ex Civitate Bononiæ, Hugo antea dictus, Christophori de Boncompagnis filius, S. R. E. presbyter Cardinalis tr. S. Sixti, Creatus tertio Idus Maji anno 1572. Coronatus in festivitate Pentecostes. Sedit annos duodecim, menses 10, dies decem & octo. Creavit Cardinales triginta quatuor. Obiit die 10. Aprilis anno Domini 1586. ejus cadaver ad Basilicam S. Petri in facello, quod ipse construxerat, & de suo nomine Gregorianum nuncupaverat, conditum fuit. Vacavit Sedes dies duos.

Facultas Religiosorum Societatis JESU, eligendi Conservatores in ejus causis, ac jurisdictioni ipsorum Conservatorum ex indulto Pii V.

Hanc religionem primo loco approbavit Paulus III. sup. in ejus cons. 25. Regimini, ubi alia de ea tibi indicavi in Tomo I.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

A Equum reputamus, & rationi consonum, ut ea quæ de Romani Pontificis gratia processerunt, licet ejus superveniente obitu litteræ Apostolicæ desuper confectæ non fuerint, suum fortiantur effectum.

§. 1. Dudum siquidem fel. reor. Pio Papæ V. prædecessori nostro pro parte dilectorum Præpositi Generalis, & Religiosorum Societatis JESU exposito, quod cum dicta Societas benediceret Domino, longe lateque esset propagata, ac ad Dei laudem & honorem, militantisque Ecclesiæ profectum in dies augeretur, & propter diversa bona temporalia, quæ Collegia scholarium sub eorum cura instituta possi-

I.

Edita An. D.
1572.

Exordium.

Ad supplicationem
Societatis Jesu.

debant, conservanda, & recuperanda, lites aliaque forensia frequenter subire necessariò cogeretur, exindeque fieret, ut ejus personæ, quæ animarum salutis implicite, litium anfractus, qui ab eorum institutis valde dissonabant, evitare cupiebant, ab eorum ministerio, non sine animi sui dolore, cum animarum hujusmodi dispendio distraherentur, & eisdem Prædecessori pro parte eorundem Præpositi Generalis & Religiosorum asserentium, eorum bona à quorumcumque locorum Ordinariorum jurisdictione libera & exempta, ac sub Romani Pontificis, & Sedis Apostolicæ protectione aliàs recepta fuisset, humiliter supplicato, ut eorum quieti more pii Patris, ac aliàs in præmissis opportunè consulere, de benignitate Apostolica dignaretur.

Pius V. ei concessit, ut in omnibus causis Conservatores & Judices eligere possint.

§. 2. Idem Prædecessor, qui ad gratos Deo, & universæ Reipublicæ Christianæ utiles & necessarios fructus, quos Societatis prædictæ personæ in vinea Domini semper proferebant, debitum respectum habebat, facere nullo modo poterat, quin ipsis ea concederet, per quæ ipsi, eorumque res & bona à noxiis justitiæ ministerio præservarentur, eisdem Præpositum generalem & Religiosos, ac eorum singulos, à quibusvis excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & poenis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existerent, ad effectum infra scriptorum dumtaxat consequendum absolvens, & absolutos fore censens, hujusmodi supplicationibus inclinatis, sub data videlicet octavo Calen. Junii, Pontificatus sui anno tertio, eidem Societati, singulisque illius personis, ac eorum familiaribus clericali charactere tamen insignitis, ut in quibuscumque causis, tam civilibus quàm criminalibus ac mixtis, etiam in eis in quibus actores vel conventi rei forent, ipsis contra quascumque Communitates, & Collegia hujusmodi, omnes & singulos Archiepiscopos, & Episcopos, ac Abbates, necnon alias personas in dignitate Ecclesiastica constitutas, ac Metropolitanarum & aliarum Cathedralium Ecclesiarum Canonicos, ac eorundem Archiepiscoporum & Episcoporum Vicarios in spiritualibus, & Officiales generales ubilibet constitutos, in suos possent assumere Conservatores & Judices ordinarios indulgit.

Ipseque Judices & Conservatores amplam de qua hic jurisdictionem habeant.

§. 3. Ipsi verò sic electis, vel duobus, aut unum, ut per se vel alium seu alios, etiam si sint extra loca, in quibus Conservatores & Judices deputati forent, eidem Societati efficacis defensionis præsidio assistentes, non permitterent Societatem, Collegiaque hujusmodi super terris, locis, domibus, possessionibus, & juribus, necnon fructibus, censibus, redditibus, & proventus, ac quibuscumque aliis bonis mobilibus & immobilibus, spiritualibus & temporalibus, necnon privilegiis & indultis eis & dictæ Societati, tam Apostolica quàm ordinaria & aliàs rite Regia auctoritatibus concessis, & aliis rebus ad dictam Societatem, communiter vel divisim spectantibus, à quibuscumque personis, tam secularibus quàm Ecclesiasticis, ac quacumque auctoritate & superioritate fungentibus, quoquomodo indebitè molestari, vel eis gravamina, damna, aut injurias irrogari, facerentque cum ab eisdem Societate, aut personis, vel Procuratoribus suis, seu aliquo ex eis forent requisiti, super restitutione locorum, terrarum, domorum, possessionum, jurium, & bonorum mobilium & immobilium, reddituum quoque & proventuum, ac aliorum quorumcumque bonorum, necnon privilegiorum & indultorum, eis tunc & pro tempore concessorum observationem, necnon de quibuslibet molestiis, injuriis, damnis, tunc presentibus & futuris, in illis videlicet quæ judicalem requirerent indaginem summarie, simpliciter & de plano, sine strepitu & figura judicii, in aliis verò prout eorum qualitas exegisset, justitiæ complementum, occupatores, seu detentores, præsumptores, & injuriatores hujusmodi, necnon contradictores quoslibet & rebelles, etiam si aliàs quàm ut præsertur qualificati existerent, quandocumque & quoties-

cumque expedisset, auctoritate Apostolica, per sententias, censuras, & penas Ecclesiasticas, aliaque opportuna, juris & facti remedia, appellatione postposita compescendo, legitimisque super his habendis, servatis processibus, eos, quos sententias, censuras, & penas, per eisdem Conservatores seu Judices pro tempore latis incurrisse, eis constitisset, eas incurrisse declararent, & quoties opus fuisset, etiam iteratis vicibus aggravarent, necnon auxilium brachii secularis invocarent, commisit & mandavit. Ac insuper si per summariam informationem, per eos super his habendam, ipsis constitisset quod ad loca, in quibus occupatores, præsumptores, molestatores, & injuriatores hujusmodi, ac alios quos litteræ tunc desuper conficienda concernerent, pro tempore morari contingeret, pro monitionibus & inhibitionibus ipsis, ac citationibus eis faciendis, tutus non pateret accessus, Judicibus & Conservatoribus hujusmodi monitiones & citationes præfatas, ac inhibitiones quaslibet, per edicta publica locis publicis affigenda, de quibus esset verisimilis conjectura, quod ad ipsorum monitorium, citatorum, & inhibitorum notitiam pervenire valeret, faciendi, necnon eisdem occupatoribus, detentoribus, præsumptoribus, molestatoribus, injuriatoribus, contradicторibus, & rebellibus, etiam sub censuris & poenis Ecclesiasticis, ac etiam pecuniariis eorum arbitrio moderandis, inhibendi, ac quibusvis inhibitionibus, eis pro tempore, etiam prætextu quarumcumque litterarum Conservatoriarum, seu privilegiorum Apostolicorum quibuslibet concessorum & concedendorum, pro tempore factis non obstantibus, eorum jurisdictionem libere exercendi, loca ad quæ eos declinare contingeret, & in quibus scilicet stare permitti forent, Ecclesiastico interdicto subiacendi, plenam & liberam facultatem concessit. Ac monitiones, requisitiones, inhibitiones & citationes sic factas, perinde ipsos monitos, requisitos, inhibitos, & citatos arceant, ac si eis personaliter factæ, insinuatæ & intimatæ forent.

§. 4. Ac tunc desuper conficiendis litteris, & in eis contentis dispositionibus, per quascumque derogationes, in quibusvis aliis litteris Apostolicis gratiæ vel justitiæ, & mixti continentibus, per eundem Prædecessorem & Sedem Apostolicam, etiam cum derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, & per quas earundem litterarum tunc desuper conficiendarum tenor, ac si de verbo ad verbum in eis insertus foret, pro expresso haberetur, quibuscumque personis, seu in eorum favorem, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, ac de Apostolica potestatis plenitudine, concessas & factas, ac faciendas & concedendas, nullatenus derogatum censetur, aut derogari posset, nisi tenor earundem tunc desuper conficiendarum litterarum, de verbo ad verbum nihil penitus omisso, foret in illis insertus, & derogatio pro tempore facta hujusmodi per trinas distinctas litteras eundem tenorem continentes, tribus similiter distinctis vicibus, eidem Societati intimata, & insinuatæ foret, & quod aliter earundem litterarum tunc desuper conficiendarum pro tempore factæ derogationes nemini suffragarentur.

§. 5. Quodque quilibet Judicum & Conservatorum præfatorum valeret prosequi articulum etiam per alium inchoatum, quamvis idem inchoans nonnullo foret canonico impedimento prædixit, quodque cuilibet Conservatorio, & Judicum eorundem ab eodem die octavo Cal. Junii esset in præmissis omnibus, ac eorum singulis, ceptis & non ceptis, tunc presentibus & futuris, perpetua potestas & jurisdictione attributa, ut eo vigore, eaque firmitate possent in præmissis omnibus, ceptis & non ceptis, tunc presentibus & futuris, & pro prædictis procedere, ac si prædicta omnia & singula eorum eis cepta fuissent, & eorum ac cujuslibet ipsorum jurisdictione de præmissis omnibus & singulis per citationem, vel modum alium perpetuam legitime extitisset, sicque per quoscumque Judices & Commissarios, & causarum Palatii Apostol. Auditores, ac S. R. E. Cardinales,

Et istam concessionem per quascumque derogationes non ablatam nec diminutam nec censi de crevit.

Unumque ex ipsis Judicibus articulum per alium inchoatum prosequi posse declaravit.

sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, scienter vel ignoranter attentari contingeret, irritum & inane decrevit.

§. 6. Non obstantibus pie mem. Bonifacii Papæ Octavi etiam prædecessoris nostri, qua cavebatur, ne quis extra suam Civitatem vel Diocesim, nisi in certis exceptis casibus, & in illis ultra unam dietam à fine suæ Diocesis ad iudicium evocaretur; seu ne Iudices à Sede prædicta deputati extra Civitatem vel Diocesim, in quibus deputati forent, contra quoscumque procedere præsumerent, & de duabus dietis in Concilio generali edita, dummodò non ultra tres dietas aliquis, vigore earumdem litterarum tunc desuper conficiendarum extraheretur, & quibuscumque aliis Apostolicis, ac provincialibus, & synodalibus Conciliis editis, generalibus vel specialibus, constitutionibus & ordinationibus, ac quibuscumque iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, quibuscumque Regibus, Ducibus, Comitibus, ceterisque cujuscumque dignitatis, qualitatis, & præminentie, ac Ordinis etiam Mendicantium, & conditionis existentibus personis, in genere vel in specie, ac cum quibuscumque derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, irritantibusque & aliis decretis, quomodolibet etiam iteratis vicibus concessis, approbatis & innovatis. Quibus omnibus idem Pius prædecessor, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad id servanda foret, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata, inserti forent, pro sufficienter expressis habentes, illis aliàs in suo robore permanens, ea vice dumtaxat specialiter & expresse derogavit, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 7. Voluit insuper idem Pius prædecessor, quòd litterarum tunc desuper conficiendarum transumptis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, ac sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides adhiberetur, quæ ipsis originalibus litteris adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

§. 8. Ne autem de absolutione, indulto, & aliis præmissis, pro eo quod super illis ipsis Pii prædecessoris, ejus superveniente obitu, litteræ confectæ non fuerunt, valeat quomodolibet hesitari, ipsaque Societas illorum frustretur effectum, volumus & similiter Apostolica auctoritate decernimus, quod indultum & alia præmissa perinde à dicta die octavo Calen. Junii, suum sortiantur effectum, ac si super illis ipsis Pii prædecessoris litteræ confectæ fuissent, prout superius enarratur. Quodque præsentis litteræ ad probandum plenè absolutionem, indultum, & alia præmissa ubique sufficiant, nec ad id probationis alterius administriculum requiratur.

Nulli ergo &c.
Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo septuagesimo secundo, octavo Kalen. Junii, Pont. nostri anno primo.

II. Prohibitio depingendi sive miniandi, aut venales proponendi, Agnus Dei à Romano Pontifice benedictus.

Manus autem Agnus Dei, juxta ritum S. R. E. in cera signandi, & fractos renovandi, Paul. V. demandavit Congregationi Monachorum B. M. A. R. I. E. Fulienfis de Urbe, Ordinis Cisterciensis S. Benedicti, ut inf. in ejus const. 43. Romanum.

GREGORIUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

O mni certè studio, & operâ à nobis procurandum est, ut ea tollantur, quæ non convenient, ac nostrum & aliorum bonorum, piorumque Christianidelum animos offendunt. Itaque providè considerantes certas formas innocentissimi Agoi imagine figuratas, & per Romanos Pontifices statuis temporibus consecrari solitas, sicut agni puri & mundi à summo Pontifice benedicuntur, ita ab omnibus postmodum immaculatas, non autem auro & coloribus ullis depictas, sed in sua albedinis mundicie sanctificatas congruenti cum reverentia teneri & conservari debere.

§. 1. Statuimus & ordinamus ac sub excommunicationis pœna ipso facto incurrenda, prohibemus & interdiciamus, ne quisquam sive vir sive mulier, secularis aut Ecclesiastici, etiam regularis Ordinis ille sit, & quocumque gradu, conditione, statu, nomine, dignitate & honore præcellat, posthac in perpetuum Agnus Dei per Romanum Pontificem pro tempore existentem benedictus, depingere, incidere, minio notare, vel aurum aut colorem aliquem illis imponere, aut quidquam aliud superinducere, neque depingi, aut miniari facere, nec illos venales proponere, seu tenere quovis prætextu, qualibetve de causa audeat. Verùm eos albos & mundos Agnum illum purum, & innocentem representantes, qui occisus pretiosissimo sanguine suo nos redemit, decenter, ac reverenter à cunctis haberi, & custodiri præcipimus, & ita ab omnibus fieri, & censeri debere decernimus.

§. 2. Mandantes omnibus & singulis locorum Ordinariis per universum Christianum Orbem constitutis, eorumque Vicariis in spiritualibus generalibus, ut præsentem nostram constitutionem & prohibitionem in suis quisque civitatibus & Diocesis statim publicare procurent, ita ut ad omnium notitiam quamprimum pervenire possit.

§. 3. Quicumque verò inobedientes fuerint, præter excommunicationis pœnam, quam, ut præfertur, incurrent, etiam aliis pœnis ipsorum Ordinariarum seu Vicariarum plecti & muldari volumus & jubemus.

§. 4. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 5. Volumus etiam, quod præsentium litterarum exemplis, etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus Prælati Ecclesiastici obsignatis, plena eademque prorsus fides ubique adhibeatur, quæ ipsi Præsentibus adhiberetur si forent exhibitæ vel ostensæ.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1572, 8. Cal. Junii, Pontificatus nostri anno 1.

Anno Incarnationis Dominicæ 1572. indict. 1. 5. die vero 11. mensis Junii, Pontif. Sanctiss. in Christo patris, & D. N. D. Gregorii divina providentia Papæ XIII. Anno 1. retroscriptæ litteræ Apostolicæ affixæ, & publicatæ fuerunt ad valvas Basilicæ Principis Apostol. de Urbe, & Cancell. Apostol. ac in acie Campi Floræ, per nos Scipionem de Ostaviensis, & Ant. Clerici Curf.

Camillus Cher. Mag. Curf.

Confirmatio constitutionis Pii V. de non alienandis, & infeudandis Terris & locis S. R. E.

Hanc constit. Pii V. habes sup. fol. 136. num. 35. Admonet. & ibi ejus extensiones indicavi. Quibus addo, quod hic Pontif. die 3. April. 1581. in Consistorio

Edita An. D. 1572.

Censura hujus prædicti.

Prohibitio depingendi, aut miniandi seu venales habendi Agnus Dei à Pont. benedictus.

Ordina ii hanc prohib. publicent.

Contravenientium pœna.

Class. & de. roga. oriz.

Fides transumptorum.

Dat. P. An. t. die 25. Maji.

Publicatio.

III.

ANNO 1572.

GREGORIUS DECIMUS-TERTIUS.

ANNO 1572.

declaravit sub dicta bulla Pii V. comprehendi etiam concessionem guberniorum, quæ ultra triennium, de locis S. R. E. fieri cogeret.

Addidit alia ad Leon I. const. 1. sup. fol. 6. Tom. 1.

Edita An. D. 1572.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Inter cetera, quæ ad Romani Pontificis curam ac sollicitudinem pertineat, illud quoque non mediocri studio providendum est, ut res Ecclesiastica sacra recta usquequaque conservetur; quod cum de aliis omnibus, tum præcipue iis quæ specialis iurisdictionis Romanæ Ecclesiæ sunt, curare debet, ne ulla usquam illorum imminutio fiat.

Pius V. prohibuit alienari, vel infestari loca S. R. E.

§. 1. Cujus rei causa fel. record. Pius Papa V. prædecessor noster, ut talium distractionibus omnem viam, quantum in ipso erat, in perpetuum præcluderet, litteras edidit in hæc verba, Pius Episcopus servus servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam. Ad nos non suscepi.

Hic Pont. modo confirmat illius constitut.

Omnitudo tenor, quia habes sup. in Pii V. const. cit. in rubr. §. 2. Cum autem ex litteræ ad retinendam Sedis Apostolicæ dignitatem valde pertineant, nobis nihil optabilius fuit cum primum ad Summi Apostolatus apicem, divina nos clementia evocavit, quam ut ipsis primo quoque tempore Præsentium nostrorum robur adjungere mus. Quocirca prædictas litteras & omnia in eis contenta auctoritate Apostolica tenore Præsentium comprobamus, confirmamus, & innovamus, volumusque ea perpetuo observari.

Sanctio poenalis.

§. 3. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ comprobationis, confirmationis, innovationis, & voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, in signationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursurum.

Dat. P. An. 1. die 27. Julii.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo septuagesimo secundo, sexto Cal. Augusti, Pont. nostri anno primo.

IV.

Contra Famigeratores nuncupatos Menantes, eorumque scripta recipientes, & famulos libellos scribentes & mittentes.

Consonat const. 147. Pii V. quæ est hic supra.

Edita An. D. 1572.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Procemium.

Est rerum humanarum infelicitas, ut non venter tantum vitia pertinaciter adversus omnem legum latorum solertiam loquantur, & quamvis acerbis compressa suppliciis renascantur, sed nova etiâ indices, & superioribus sæculis ignota succrescant. Quo nos pro injuncto nobis divinitus munere diligentius adjuti, par est, ut & illa coerceamus, & horum quæ se nunc primum offerunt, antequam se corroborent, radices ipsas, si qua ratione possumus, amputemus.

Famigeratorum mala.

§. 1. Cum igitur haud ita pridem in Urbe nostra, secta quadam emergerit hominum improbe curiosum, qui quoscumque de publicis privatique negotiis, vel aliunde rimari possunt, vel ipsi etiâ pro sua libidine cominiscuntur, domi, foris; facta, infecta, vera, falsa nullo discrimine proponunt, recipiunt, & scripstant, ita ut hujus rei jam artem quasi quadam instituerint, ac plerique eorum etiam vili mercede conducti, harum rerum commentarios, ex falsis plerumque vulgi rumoribus incerto auctore collectos, huc illic mittunt, aut etiam tamquam primum

ex Urbe ad diversa loca missos, deinde iidem ex locis in Urbem remissos circumferant ac vendunt, quibus non tantum de præteritis arbitrato suo nugantur, sed etiam quid ex hac aut illa re, eventurum sit, solidè vaticinantur.

§. 2. Nos qui & facile prospicimus, & rerum experientis edocti sumus, quæ quantaq; mala ex eo proveniant, cum & sepius sparguntur falsa pro veris, seu directè, seu obliquè, ac quodam quasi colore quæsto, multorum existimatio & sana violentur, his ac talibus incommodis occurrere cupientes, hujus constitutionis auctoritate prohibemus, ne quis in posterum, tales commentarios conficere, neve, ab aliis confectos recipere, describere, spargere, aut ad alios mittere audeat. Qui horum quid fecerit, ipso facto perpetua ignominia nota affectus, sine ulla spe veniæ ad trirèmes, aut perpetuè aut ad tempus pro admitti qualitate damnetur. Qui verò hujusmodi commentariorum, aut scriptorum quicquam undecumque & à quocumque receperit, id quam primum Urbis nostræ Gubernatori significare, & eidem omnia consignare debeat. Quod si non fecerit, ipsum poenis prædictis decernimus subjacere. Antiqui iuribus contra scribentes aut mittentes libellos famulos editis, nihilominus in suo robore duraturis.

§. 3. Volentes Præsentium exemplis, etiam non impressis, Notarii publici manu, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ obgnatis, eandem illam ubique fidem, in iudicio & extra adhiberi, quæ Præsentibus adhiberetur, si essent exhibitæ vel offensæ.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo septuagesimo secundo, Calend. Septembris, Pont. nostri anno primo.

Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo septuagesimo secundo, Indictione 15. die verò Sabbati sexta mensis Septembris, Pontificatus Sanctissimi in Christo patris, & D. N. D. Gregorii divina providentia Papæ XIII. anno primo, affixa & publicata fuerunt Romæ, ad valvas S. Joannis Lateranen. & S. Petri, ac Cancellaria Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, ut moris est, per nos Joannem della Guardia, & Scipionem de Ostavianis S. D. N. Papæ Curf.

Philibertus Mag. Curf.

Facultas Ordinis tam Fratrum quam Monialium Eremitarum S. Augustini, permittendi & alienandi bona cujuscumque Monasterii in evidentem ejus utilitatem, cum licentia vel approbatione Prioris generalis dicti Ordinis.

Alia extabant Pontificiæ dispositiones circa hanc facultatem, sed eas prætermisi, hac contentus uti pleniore. Cetera autem de hoc Ordine dixi sup. ad const. 6. Alexan. IV. Licet. fol. 110. T. 1.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Dum ad uberes salutaris fructus, quos benediciente Domino sacer dilectorum filiorum Fratrum Eremitarum S. Augustini Ordo in vinea Domini protulit, & in dies proferre non cessat, debitum respectum habemus, ac planè agnoscimus quod ii tamquam hujus Sedis speciales filii, tam verbum Dei per Urbes & Regiones diffeminando, quam ubique varia caritatis opera adimplendo, nos in hujus Pastoralis officii onere coadjuvare non cessant, facere nullo modo possumus, quin eos speciali quadam hujus Sedis benevolentia preloquentes, ea sibi favorabiliter concedamus, per quæ eorum indemitati, Monasteriorumque suorum utilitati potest salubriter provideri.

§. 1. Exponi sanè nobis nuper fecerunt iidem

Prohibitum inv. c. tione poenali.

Confirmatio leum de famosis libellis.

Exemplorum fides.

Dat. P. An. 1. die 1. Sept.

Publicatio.

V.

Edita An. D. 1572.

Exordium.

Causa hujus concessi. mis.

Frates

Frates Eremitæ, quod sæpenumero accidit, ut pro aliqua urgenti necessitate vel utilitate Monasteriorum, domorum, & locorum dicti Ordinis, tam virorum quam mulierum, illorum bona locare, alienare, permutare, vel in emphyteusum seu livellum dare expediret, ac quandoque contingit, ut conditio senel oblata, si præternittatur, maximam affectum jacturam, præterquam quod difficile admodum existit pro singulis minimis commutationibus, & aliis contrahibus ad Sedem præfatam recurrere, ac id non sine ipsius Ordinis in paupertate fundati inquietudine esse potest. Quare iidem Frates Eremitæ nobis humiliter supplicari fecerunt, ut in præmissis opportunè providere de benignitate Apostolica dignaremur.

§. 2. Nos fel. record. Sixti Quarti & Leonis Decimi, ac aliorum Romanorum Pontificum Prædecessorum nostrorum vestigiis inherere volentes, ipsosque Frates Eremitas, & eorum quemlibet à quibusvis excommunicationibus, suspensionibus, & interdictis, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & pœnis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum Præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, hujusmodi supplicationibus inclinati, eisdem Fratribus Eremitis, ut ex nunc de cetero perpetuis futuris temporibus Frates & Moniales dicti totius Ordinis Eremitarum S. Augustini, omnium & quorumcumque monasteriorum, domorum & locorum ejusdem Ordinis, ubilibet nunc & pro tempore constitutum, libere & licite possint & valeant quaecumque bona stabilia & immobilia, seu quasi stabilia quoscumque qualitatibus & quantitatibus, & valoris, & in quocumque loco existentia eorumdem Monasteriorum, domorum & locorum vendere, alienare, & permutare, & etiam in emphyteusum, seu ad livellum, etiam ad longum tempus concedere, & pro pretio, affectu, pasciis, modis, & formis hinc inde conveniendis, licentiam & facultatem Apostolicam auctoritate tenore Præsentium concedimus. Provisio tamen quod fiant pro commoditate vel utilitate ipsorum Monasteriorum, domorum, & locorum, & quod consensus duorum partium ex tribus partibus Fratrum vel Monialium illius Monasterii, domus, vel loci, cujus dicta bona erunt, accedat & interveniat, & quoad concessionem in emphyteusum, dummodo illa non fiat ultra duas generationes vel nominationes, absque alia à Nobis vel Successoribus nostris Romanis Pontificibus pro tempore existentibus, aut Sede Apostolica, vel illius de latere Legatis, seu Nuntiis, aut etiam locorum Ordinariis, petenda vel obtinenda licentia, seu confirmatione; ita tamen quod loco consensus Sedis Apostolicæ, dilectus filius Prior generalis dicti Ordinis, nunc & pro tempore existens, & diligenter examinata, & evidenter utili comprobata habeat, prout sibi ex nunc perpetuo concedimus potestatem ratificandi hujusmodi locationes, concessiones, venditiones, & alienationes, ac contractus. Sic quod ubi talis ordo non fuerit servatus, locatio, concessio, venditio, & alienatio, ac contractus aliter facta, nulla & invalida, nulliusque roboris ac momenti existant; & donec præfatus Prior generalis modo præfatus non ratificaverit, possessio remaneat, & remanere intelligatur penes ipsos Frates seu Moniales dicti Monasterii seu domus, aut loci sic locantis & alienantis, ac ita in præmissis sic perpetuo declaramus & decernimus. Et nihilominus ex nunc prout ex tunc, & è contra, postquam locationes, concessiones, venditiones, & alienationes, ac contractus, servatis supra narratis, pro tempore facti, & per dictum Priorem generalem ratificati fuerint, ut præfatur, seu consensus ejusdem Prioris generalis intervenierint, easdem locationes, concessiones, venditiones, alienationes, ac contractus, ac inde secuta quaecumque, necnon instrumenta & scripturas de super pro tempore confecta, approbamus & confirmamus, ac perpetuè firmitatis robur obtinere de-

bere statuimus, omnesque & singulos tam juris quam facti defectus, si qui forsitan intervenierint in eisdem quomodolibet supplemus. Decernentes quoad utilitatem seu commoditatem Monasteriorum, domorum, & locorum præfatorum, assertioni duorum partium ex tribus partibus Fratrum vel Monialium illius loci cujus bona erunt, postquam ratificatio facta fuerit, illasque & illa, necnon Præsentes, & in eis contenta, validas & efficaces, ac valida & efficacia perpetuò fore, necnon ab omnibus observari debere, ipsosque & cum eis contrahentes præfatos, super præmissis, & inde secutis quibuscumque per quoscumque; quavis auctoritate quomodolibet molestari vel impediri non posse; necnon irritum & inane si secus super his à quocumque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 3. Quocirca Venerabilibus fratribus nostris Joanni Episc. Albanensi Cardinali de Montepolitiano nuncupato, Ordinis Fratrum Eremitarum S. Augustini Protectori, & Alexandro Patriarchæ Alexandrino Curie causarum Cameræ Apostolicæ generali Auditori, ac Bartholomæo Episcopo Amerino Cancellariæ Apostolicæ Regenti, nunc & pro tempore existentibus, per præfatos committimus & mandamus, quatenus ipsi vel duo, aut unus eorum, per se vel alium seu alios, Præsentes litteras, & in eis contenta quaecumque, ubi & quando opus fuerit requisiti, solemniter publicantes, easque & eorum cuilibet in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant easdem Præsentes, & in eis contenta quaecumque ab omnibus quos illa concernunt, integrè & inviolabiliter observari. Non permitteantes eos, aut eorum aliquem contra earundem Præsentium tenorem quomodolibet indebite molestari. Contradictores quoslibet & rebelles, per sententias, & pœnas Ecclesiasticas, aliaque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita compescendo, legitimis super his habendis servatis processibus, sententiis, censuras & pœnas ipsas etiam iteratis vicibus aggravando; invocato etiam ad hoc, si opus fuerit auxilio brachii secularis.

§. 4. Non obstantibus fel. record. Bonifacii Papæ Octavi Prædecessoris nostri de una, & Concilio generali edita de duabus dietis, dummodo ultra tres dietas quis vigore Præsentium ad iudicium non trahatur, & aliis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon quibusvis etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, quibusvis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, ac irritantibus, & aliis decretis, in genere vel in specie, etiam Motu proprio, ac aliis quomodolibet etiam iteratis vicibus concessis, approbatis & innovatis, quibus omnibus, & singulis, etiam si de illis, ac totis eorum tenoribus specialis, specifica, individua, & expressa mentio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda esset, tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum infererentur, Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque; seu si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas, non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die quinta Septemb. millesimo quingentesimo septuagesimo secundo, Pontificatus nostri anno primo.

Institutio Militiæ S. Mauriti Martiris, sub regula Cisterciensium, ac sub regimine Emanuelis Philiberti Sabaudie Ducis, suorumque Successorum, qui dictæ Militiæ Magni Magistrum perpetuò sint.

Depuratio
& facultates
exercituum.

Derogatio
contrario-
rum.

Dat. P. An-
tis 5. Sept.

VI.

Huic Militia hic idem Pontifex univis postea aliam Militiam S. Lazari Hierosolymitani, ut in constit. seq. De qua S. Lazari Militia, vide plene notata sup. in constit. 28. Pii V. Sicuti. fol. 219.

Edita An. D. 1572.

GREGORIUS. EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Christianæ Reipublicæ vexatio.

Christiani populi corpus, sic summa Dei providentia cernitur constitutum, ut quemadmodum Ecclesiasticis personis propria est operatio attributa, ita strenuis & fortibus viris, tanquam Christi Athletis, sua benemerendi occasio sit oblata. Cum ad eum quoque finem Dens sæcularem Principibus potestatem dederit, ut debitum sanctæ Religionis præstent famulatum, atque his inter se coherentibus, & militiæ præsidio Sacerdotum pietas in suo officio protegatur, & militum virtus amore Religionis augeatur, unde illius fides, & gloria sit propaganda; id verò summo conatu pro tempore esse agendum, ut quàm maxima Christianæ & Catholicæ fidei adjumenta comparentur, Reipublicæ Christianæ gravissima vulnera ab hæreticis sathanæ ministris inflicta, & ab eisdem, ac infidelibus in posterum impendentia mala, satis aperte nos admovent: ac inter ceteras Christiani populi partes, his præcipuè malis hæreticorum venenis, dolis, infidiis, atque oppressionibus obnoxie conspiciuntur Sabaudia & finitimæ Regiones, ob vicinitatem adjacentium quorundam locorum, præsertim Genævæ, à qua ipsa hæresum contagio, & pestis circum quaque serpfit, atque manavit.

Duci Sabaudia propositio, de instituenda militia S. Mauricii, & peticio licentiæ.

§. 1. Itaq; cum dilectus filius nobilis vir Emanuel Philibertus Sabaudia Dux, pro sua præstanti pietate, ac prudentia, hæc diligenter considerans in animum induxerit, ad alia quæ ipse consuevit, tuendæ & augendæ Catholicæ Religionis causa, in locis ditioni suæ subiectis adhibere remedia illa, & adjungere, ut ex delectis omnis generis Christiani populi militibus, unam Sanctæ Sedis auctoritate conficiat militiam, Beati Mauricii Martyris nuncupandam, quem idem Emanuel Philibertus Dux, & ejus Antecessores, ut præcipuum suum, ac rerum suarum protectorem, eximio ac perpetuo studio & veneratione sunt prosecuti, idque nobis exponi fecerit, ac simul supplicari, ut hoc ei impartire dignaremur.

Pontificis collatio de dicta propositione, & concessio dictæ licentiæ.

§. 2. Nos optimum illius consilium, ac ipso majoribus; ejus clarissimis & præstantissimis Principibus dignum animum, meritis in Domino laudibus commendantes, ac prospicientes ipsam sic constituendam militiam, maximo sui & præsidio fore non solum ipsis Sabaudia, & Pedemontium Provinciis, sed toti etiam Italiae ad sustinendos & propulsandos quovis hæreticorum, & infidelium impetus, ac opportunissimum ibi propugnaculum, munimentum, & auxilium habituros esse, Nos, Ecclesiamq; Romanam, ac universam Christianam Rempublicam in ipso Militiæ robore, ac talis Ducis maxima virtute, rerumque bellicarum summa, & sæpe cognita peritia, illi super hac re, prompto ac libenti animo annuendum, pioque ejus conatus speciali favore, & gratia duximus prosequendos.

Ipsaque institutio Militiæ S. Mauricii sub regula Cisterciensis, & sub Duce Sabaudia, qui dotem 25. mill. scutorum de propriis bonis tribuere debeat.

§. 3. Quare ipsam Emanuelem Philibertum Ducem à quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum Præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutum fore censentes, ejus supplicationibus inclinati, unâ Militiam, ad laudem & gloriam omnipotentis Dei, qui Dominus est exercituum, & per quem Reges regnant, ac Principes imperant, & Fidei Catholicæ in dictis Sabaudia & Pedemontis Regionibus defensionem, ac universæ Italiae, totiusque Christianæ Reipublicæ salutem & commodum, sub invocatione S. Mauricii Martyris & regula Cisterciensis nuncupandam per universum Christianum orbem, cujus suprema Sedes, & Militum Conventus in loco ab eo-

dem Emanuele Philiberto Duce in Sabaudia statuendo & assignando, perpetuò sit; & in ipsa Militia unum Magistrum Magnum vocandum, supremam ejusdem Militiæ dignitatem pro uno Magistro, qui illius caput existat, cum eo quo sibi expedire videbitur militum & ministrorum numero, Qui Milites cum unica tantum, & virgine conjugati, ad habitum & professionem regularem admitti, seu qui pro tempore admissi fuerint matrimonium, cum simili virgine & unica dumtaxat contrahere possint, alias verò ipsi castitatem conjugalem, & obedientiam expresse profiteantur, cum mensa Magistrali, officiis, juribus, jurisdictionibus, & insignibus consecutis altarum hujusmodi Militiarum instar, ex nunc prout postquam ipse Emanuel Philibertus Dux dotem annui redditus quindecim millium scutorum de propriis & patrimonialibus bonis suis illi constituerit, & contra auctoritate Apostolica tenore Præsentium perpetuò erigimus & instituimus. Ac illi sic erectæ, ejusque mensæ dictam dotem quindecim millium scutorum, etiâ perpetuò applicamus & appropiamus, ita ut liceat eidem Emanueli Philiberto Duci, & pro tempore existentis Magni Magistri, bonorum dictæ dotis corporalem possessionem, seu quasi liberè apprehendere, ac perpetuò retinere, fructusq; & proventus, in suos & dictæ Militiæ usus, & utilitatem convertere, cujusvis licentia minime requisita. Et nihilominus Magistratum prædictum, cujus fructus, redditus, & proventus nulli sunt ab hac ejus primavæ erectione vacantes, cum omnibus juribus & pertinentiis suis, prædicto Emanueli Philiberto Duci, ejusque Successoribus omnibus Sabaudia Ducibus qui pariter Magni Magistri esse debeant, & perpetuum concedimus & assignamus.

§. 4. Ipsique præterea, & ipsorum singulis liberam facultatem tribuimus, ut quotquot illis visi fuerint milites nobiles, aut optima virtute cognitos, vel alias pro eorum arbitrio vel statuto qualificatos, ex omnibus nationibus post factam ab ipsis juxta formam Præsentibus annotatam Catholica fidei professionem, ad habitum, & regularem professionem admittere.

Facultas M. Mag. militis ad habitum recipiendi.

§. 5. Ac & in quibuscumque mundi partibus, Prioratus, Bajpivatus, Præceptorias, & alia beneficia dictæ militiæ erigere.

Beneficia erigendi.

§. 6. Eisque sic erectis Patrimonialia & laicalia bona eorum qui illa relinquere voluerint, dotis nomine assignare.

Bona laicalia pro dote assignandi.

§. 7. Jus patronatus fundarioribus, seu datoribus id petentibus valdè reservare, quod sic reservatum idem robur, eandemque vim & efficaciam obtineat, quod obtineret si per Nos concessum foret.

Jus patronatus fundarioribus reservandi.

§. 8. Necnon Provincias & nationes dividere, ac ex erigendis dictæ militiæ beneficiis quæ Prioratus, quæ Præceptorias, quæ superiora vel inferiora beneficia esse, eaque & eorum singula quos fructus habere, & tam ipsa quàm illa obtinentes, quæ onera supporre ad illa quoque admittendi, quibus qualitatibus suffulti esse, & quibus legibus subiacere debeant, aliisque ad usum militiæ hujus necessaria decernere & declarare.

Provincias, & Nationes separandi.

§. 9. Atque tam de prædictis, quàm aliis quibuscumque rebus & negotiis currentibus, quæcumque statuta condere, facere, & ordinare, illaque postquam condita & ordinata fuerint quotiescumque visum fuerit, pro eorum arbitrio & voluntate interpretari, mutare, alterare, limitare, corrigere, seu in meliorem formam reducere, aut in totum delere, aliisque de novo edere, ac quascumque penas apponere, & ad illorum executionem procedere valeant.

Statuta condendi.

§. 10. Decernentes supradicta, firmiter perpetua consistere, ac irritum & inane, quicquid secus super illis per quoscumque, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Decretum irritans.

§. 11. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque.

Clausula derogatoria.

Forma verò professionis Fidei per singulos Milites præstanda hæc est, videlicet.

S. 12. **E**GO N. firma fide credo, & profiteor omnia & singula quæ continentur in Symbolo fidei, quo Sancta Romana Ecclesia utitur, videlicet. Credo in unum Deum Patrem omnipotentem, factorem Cæli & terræ, visibilibus omnium & invisibilibus. Et in unum Dominum JESUM Christum Filium Dei unigenitum, & ex Patre natum ante omnia sæcula Deum de Deo, lumen de lumine, Deum verum de Deo vero, genitum non factum, consubstantiali Patre, per quem omnia facta sunt. Qui propter nos homines, & propter nostram salutem descendit de Cælis. Et incarnatus est de Spiritu Sancto, ex MARIA Virgine, & Homo factus est. Crucifixus etiam pro nobis sub Pontio Pilato, passus & sepultus est. Et resurrexit tertia die secundum Scripturas. Et ascendit in Cælum, sedet ad dexteram Patris. Et iterum venturus est cum gloria judicare vivos & mortuos, cujus regni non erit finis. Et in Spiritum Sanctum Dominum, & vivificantem, qui ex Patre, Filioque procedit. Qui cum Patre & Filio simul adoratur, & conglorificatur, qui locutus est per Prophetas. Et unam Sanctam Catholicam, & Apostolicam Ecclesiam. Confiteor unum baptismum in remissionem peccatorum. Et expecto resurrectionem mortuorum. Et vitam venturi sæculi. Amen. Apostolicas & Ecclesiasticas traditiones, reliquasque ejusdem Ecclesiæ observationes & constitutiones firmiter admitto, & amplector. Item sacram scripturam juxta eum sensum quem tenuit & tenet Sancta Mater Ecclesia, cujus est judicare de vero sensu & interpretatione sacrarum scripturarum admitto, nec eam unquam, nisi juxta unanimem consensum Patrum accipiam & interpretabor. Profiteor quoque septem esse verè & propriè Sacramenta novæ legis à JESU CHRISTO Domino nostro instituta, atque ad salutem humani generis, licet non omnia singulis necessaria, scilicet, Baptismum, Confirmationem, Eucharistiam, Penitentiam, Extremam unctionem, Ordinem, & Matrimonium, illaque gratiam conferre, & ex his Baptismum, Confirmationem, & Ordinem sine sacrilegio reiterari non posse. Receptos quoque & approbatos Ecclesiæ Catholice ritus in supradictorum omnium sacramentorum solemnem administrationem recipio & admitto. Omnia & singula quæ de peccato originali, & de justificatione in Sacrosancta Triditina Synodo definita & declarata fuerunt, amplector & recipio; profiteor pariter in Missa offerri Deo verè proprium & propitiatorium sacrificium, pro vivis & defunctis, atque in Sanctissimo Eucharistie Sacramento esse verè, realiter, ac substantialiter, corpus & sanguinem, una cum anima & divinitate Domini nostri JESU Christi, fierique conversionem totius substantiæ panis in corpus, & totius substantiæ vini in sanguinem, quam conversionem Catholica Ecclesia transubstantiationem appellat. Fateor etiam sub altera tantum specie totum atque integrum Christum, verumque Sacramentum sumi: constanter teneo Purgatorium esse, animasque ibi detentas fidelium suffragiis juvari, similiter & Sanctos una cum Christo regnantes, venerandos, atque invocandos esse, eosque orationes Deo pro nobis offerre, atque eorum Reliquias esse venerandas. Firmiter assero Imagines Christi, ac Deiparæ semper Virginis, necnon aliorum Sanctorum habendas & retinendas esse, atque eis debitum honorem atque venerationem impertiendam. Indulgentiarum etiam potestatem à Christo in Ecclesia relictam fuisse, illarumque usum Christiano populo maximè salutarem esse affirmo. Sanctam Catholicam & Apostolicam Romanam Ecclesiam omnium Ecclesiarum Matrem & Magistrum agnosco, Romanoque Pontifici Beati Petri Apostolorum Principis successori, ac JESU Christi Vicario, veram obedientiam spondeo ac juro. Cetera item omnia à sacris Canonibus, œcumenicis Conciliis, ac præcipuè à sacrosancta Tridentina Synodo tradita, definita, & declarata, indubitanter

recipio atque profiteor, simulque contraria omnia, atque hæreses quascunque ab Ecclesia damnatas & rejectas, & anathematizatas, ego pariter damno, rejicio, & anathematizo. Hanc veram Catholicam fidem extra quam nemo salvus esse potest, quam in præsentis sponte profiteor, & veraciter teneo, eandem integram & immaculatam usque ad extremum vitæ spiritum constantissimè, Deo adjuvante, retinere & confiteri, atque à meis subditis, seu illis quorum cura ad me in munere meo spectabit, teneri, doceri, & prædicari, quantum in me erit curaturum. Ego idem N. spondeo, voveo, ac juro, sic me Deus adjuvet, & hæc sancta Dei Evangelia.

S. 13. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ absolutionis, erectionis, institutionis, applicationis, appropriationis, concessionis, assignationis, tributionis, & decreti infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Datum Romæ apud S. Marcum, anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo septuagesimo secundo, 16. Kal. Octobr. Pontificatus nostri anno primo.

Sanctio pœ
nalis.Dar. P. An. i.
die 16. Sept.

Unio Militiæ S. Mauricii Martyris, & Militiæ S. Lazari Hierosolymitani, sub denominatione SS. Mauricii & Lazari, & regimine Sabaudie Ducis Magni Magistri perpetui.

VII.

Institutionem Militiæ S. Mauricii nuper erectam, vide in const. præced. Et de Militiæ S. Lazari plene notavi sup. in const. 27. Pii V. Sicuti. fol. 219.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Edita An. D.
1572.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

PRO commissis nobis nullis nostris exigentibus meritis, sed sola Dei benignitate, Ecclesiarum omnium, ac piorum religiosorumque locorum cura & sollicitudine, in eam nos cogitationem assidue incumbere decet, qua potissimum ratione providere possimus, ut ex eis quàm maxima & quàm uberima, ad sanctam Dei religionem, & fidem Catholicam, atque universum populum Christianum commoda proveniant, ordine etiam & consuetudine in illis mutata, sicut rerum usus & eventus, ac ipsa temporum ratio, & qualitas docuerit expedire.

S. 1. Cum autem nos pridem ad Dei omnipotentis laudem, & fidei Catholicæ gloriam in Sabaudia & Pedemontis Regionibus defensionem, totiusque Christianæ Reipublicæ salutem & commodum, militiam S. Mauricii Martyris, sub regula Cisterciensis per universum Christianum Orbem, cujus suprema Sedes, & Militum Conventus in loco à dilecto filio nobili viro Emanuele Philiberto Sabaudie Duce in ipsa Regione Sabaudie assignando & statuendo perpetuo sit, & in eadem Militia unum Magistratum, Magnum vocandum, supremam ejusdem Militiæ dignitatem, pro uno Magistro qui illius caput existat, cum eo qui sibi expedire videbitur, Militum & Ministrorum numero, qui Milites etiam cum unica, & virgine tantum conjugati ad habitum & professionem regularem admitti, seu qui pro tempore admissi fuerint sic dumtaxat contrahere possint, & alias castitatem conjugalem, & obedientiam expressè profiteantur, cum mensa magistrali, officiis, juribus, jurisdictionibus & insignibus consuetis aliarum hujusmodi Militiarum instar ex tunc, prout postquam dictus Emanuel Philiberto Dux, dotem annui redditus quindécim millium scutorum de propriis & patrimonialibus bonis illi constituisset, & e contra, crexerimus & instituerimus, ac illi sic erectæ dictæ dotem perpetuò applicaverimus & appropriaverimus, Magistrisque prædictum à primæva ipsius erectione vacantem

Sollicitudo
pastoralis.Recessit
instructio Mil-
itæ S. Mauri-
cii de qua
sup. in const.
præcedente.

eidem

eidem Emanueli Philiberto Duci, ejusque Successoribus omnibus Sabaudia Ducibus, qui Duces pariter & Magni Magistri essent, concesserimus & assignaverimus. Ac præterea ipsis, ut quos sibi viderentur nobiles, aut optima virtute cognitos, ac alijs pro ipsorum arbitrio vel statuto qualificatos ex omnibus nationibus, ad habitum & regularem professionem admitendi, ac etiam in quibuscumque mundi partibus dictæ Militiæ, Prioratus, Bajulivatus, Præceptorias, & alia beneficia erigendi, Provincias & nationes dividendi, aliaque tunc expressa faciendi, liberam licentiam tribuerimus, sicut litteris nostris super his confectis latius continetur.

§. 2. Nos postea diligenti meditatione considerantes ipsam de novo erectam & consiciendam Militiam, magnos absque dubio fructus, tali præferim duccore, atque Magistro fidei Catholice effeallaturam; sed multo tamen majores si alijs adjumentis & auxilijs fulcita, atque munita fuerit, ac præterea cernentes Militiam Hospitalis S. Lazari Hierosolymitani sub regula S. Angustini jam pridem Magistri regimine destitutam, nobilem illam quidem & antiquam, sed ipsa vetustate, ac temporum injuria valde dejectam & prolapsum esse, optimum nobis visum est, si hanc veterem illi novæ, & nunc nascenti adjungeremus, ut quod hæc in ipso initio per se agere perfectè non posset, id alterius adjuta auxilio, & viribus geminatis fortior sit ad agendam, atque citius & facilius hæc simul junctæ, optatos Ecclesiæ Dei & Christiano populo fructus afferre possint.

§. 3. Id verò facere instituimus, cum eo quod Emanuel Philibertus, & pro tempore existens Dux & Magister prædictus annexionis hujusmodi ratione duas Tirimæ dictis Militibus instructas pro Sedis Apostolicæ defensione contra hæreticos, infideles, piratas, & quoscumque alios ejus hostes continuè de suo manutenere debeat.

§. 4. Quare eundem Emanuele Philibertum Ducem & Magnum Magistrum, à quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & penis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum Præsentium domtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutum fore censentes, Motu proprio non ad ipsius Emanuelis Philiberti Ducis, vel alterius pro eo nobis super hoc oblata petitionis instantiam, sed ex mera liberalitate, & certa scientia nostra, ac de Apostolica potestate plenitudine, Militiam S. Lazari prædictam cum illius Magistratu, ac omnibus & quibuscumque illius Prioratibus, Præceptoris, Hospitalibus, & alijs beneficiis regularibus, eorumque membris, grangijs, castris, villis, domibus, possessionibus, proprietatibus, fructibus & bonis tam mobilibus quàm immobilibus, ac feroventibus, juribus & actionibus univèrsis, necnon Ecclesijs, Capellis, terminis & pertinentiis quibuscumque ad dictam Militiam S. Lazari spectantibus, quæcumque, quotcumque, qualiacumque, & ubicumque sint, non tamen alijs Ecclesijs, pijs locis, & Militiis canonicè unita, quæ ab his quibus unita sunt avocari aut illorum ratione quemquam molestari volumus, ac etiam exceptis iis quæ in Regnis & Dominijs charissimi in Christo filii nostri Philippi Hispaniarum Regis Catholici existunt, eidem Militiæ S. Mauriti, quæ in posterum Militia SS. Mauriti & Lazari nuncupetur, auctoritate Apostolica tenore præsentium ita perpetuò unimus, anneximus, & incorporamus ut posthac in perpetuum prædictus Emanuel Philibertus, & pro tempore existens Sabaudia Dux Militiæ SS. Mauriti & Lazari Magister sit, & appelletur.

§. 5. Ac Prioratus, Præceptoris, & alia beneficia Militiæ S. Lazari, & ea obtinentes, alique Militis, servientes, Capellani, & persone, curæ, gubernationi, & jurisdictioni ipsius Ducis, & Magni Magistri, in omnibus & per omnia subsint, prout suo antea Magistro suberant, eique tamquam membra capiti obediant & obsequantur; liceatque eidem Duci &

Magistro corporalem possessionem militiæ S. Lazari, ejusque Magistratus, & aliorum unionum prædictorum per se vel alium seu alios, propria auctoritate liberè apprehendere, & perpetuò retinere, fructusque redditus, & proventus, in suos & dictæ Militiæ usus & utilitatem convertere, diocesani loci, vel cujusvis alterius licentia minime requisita.

§. 6. Insuper his qui præceptorias S. Lazari, in titulum seu commendam, vel aliter quovis modo obtinent habitum per dictum Ducem, & Magistrum Militibus SS. Mauriti & Lazari, designandum suscipiendi, & eidem Emanueli Philiberto Duci, & Magno Magistro, hisque habitum S. Lazari jam susceperunt & deferunt, novum, dimisso antiquo volentibus tradendi; eos verò qui dictum S. Lazari habitum nondum susceperunt, ad novum habitum, ut præferunt designandum suscipiendum, & deferendum oppositionis remedijs compelliendi, auctoritate & tenore prædictis facultatem concedimus.

§. 7. Volentes, & dicta auctoritate statuentes eundem Emanuele Philibertum, & pro tempore existentem Ducem, & Magnum Magistrum in perpetuum, unionis hujus ratione, ad duas trimæ dictis Militibus instructas, pro nostra & Romani Pontificis pro tempore existentis, ac Sedis Apostolicæ contra prædictos & quoscumque alios defensione continua mantinendas teneri, & ad id efficaciter obligatum existere.

§. 8. Ut autem prædicta omnia certiores consequantur effectum, omnes & quoscumque Reges, Respublicas, Duces, Marchiones, Principes, & quosvis Civitatum & locorum Dominos, hortamur & rogamus attentè, ac eorum subditis, in virtute sanctæ obedientiæ mandamus, ut prædictis quantum in se est favcant, & quo minus illa suum fortiantur effectum, impedire, perturbare, vel molestare quovis quasito colore non audeant.

§. 9. Decernentes irritum & inane, quicquid fecus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 10. Quocirca venerabilibus fratribus nostris Archiepiscopo Taurinensi & Nicensi & Montis Regalis Episcopis, per Apostolica scripta motu simili mandamus, ut ipsi vel duo, aut unus eorum, per se vel alium seu alios presentes litteras, & in eis contenta quæcumque, ubi, & quando opus fuerit, & quoties pro parte Emanuelis Philiberti, & pro tempore existentis Ducis, & Magni Magistri fuerint, solemniter publicantes, eique in prædictis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra litteras ipsas ab omnibus quos illæ concernent, inviolabiliter observari, non permittere eos per quoscumque; quomodolibet indebitè molestari, contradicere quoslibet & rebelles, per censuras & penas Ecclesiasticas, aliaque opportuna remedia, appellatione postposita compescendo, legitimisque super his habendis servatis processibus, censuras & penas ipsas etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc si opus fuerit auxilio brachii secularis.

§. 11. Non obstantibus felicis recordationis Bonifacii Papæ Octavi prædecessoris nostri de una, & in Concilio generali edita de duabus dietis, dummodo ultra tres dietas quis vigore Præsentium ad judicium non trahatur, ac nostra de unionibus committendis, ad partes, & valore exprimendo. Necnon Lateranensis Concilii novissimè celebrati, uniones perpetuas, nisi in casibus à jure permixtis fieri prohibentis, ac alijs constitutionibus & ordinationibus Apostolorum, necnon Hospitalis prædicti S. Lazari juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegijs quoque, indultis, & litteris Apostolicis, quibuscumque Militiæ prædictæ, illiusque Magistri, Conventibus, Militibus, & administratoribus, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque derogatorijs derogatorijs, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, irritantibusque, & alijs decretis, in genere vel in specie, & motu, & scientia similibus, ac alias quomodolibet, & iteratis vicibus, concessis, approbatis, & innovatis;

quibus

Enarrantur
fructus
truci
si di
nova
Militia
S. Mauri
antiquæ
unitur
Militiæ
S. Lazari.

Maximè
quod Dux
Sabaudia
duas trimæ
pro Se
de Apoft.
promittas
tenere
debeat.

Unio itaque
utriusque
Militiæ
firmatur
sub denomi
natione SS.
Mauriti &
Lazari.

Tu quod lo
ca hic excep
ta vide const.
102. Clem.
VIII. Decet.

Militiamque
S. Lazari sub
jicit Duci Sa
baudia Mag.
Magistro in
perpetuum.

Facultas
compellendi
ad habitum
suscipiendum.

Qui duas trimæ
param
tas ut supra
tenere de
beat.

Principes ne
impediant
executionem
hortantur.

Clausulam
sublatam &c.
apposit.

Executores
deputat.

Contrariis
derogat.

Sanctionem
poenalem ad-
dit.

D. P. An. r.
die 12. Nov.

VIII.

Conc. Tri-
dent. decre-
tum istud ha-
bes in sess.
25. c. 5.
Pii V. con-
stit. istam
habes sup.

Exordium.

Conc. Tri-
dent. decre-
tum istud ha-
bes in sess.
25. c. 5.
Pii V. con-
stit. istam
habes sup.

Causa hujus
constit.

quibus omnibus, etiam si de illis, ac totis eorum tenoribus specialis, specifica, expressa & individua mentio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda esset, tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum infererentur Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanfuris, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque; aut si aliquibus communiter vel divisim, ab eadem sic Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari, aut extra vel ultra certa loca ad iudicium trahi non possint per litteras Apostolicas, non facientes plenam & expressam, ac ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§. 12. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostre absolutionis, unionis, annexionis, incorporationis, concessionis, voluntatis, statuti, hortationis, rogationis, decreti, mandatorum, & derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum eius, se noverit incursum.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo septuagesimo secundo, idibus Nov. Pont. nostri anno primo.

Declaratio circa elemosynas Monialibus servandis clausuram præstandas.

Ad hæc vide etiam supra fol. 196. consti. Pii V. Circa num. 8. Et ante eam, Concilii Trid. dispositionem in cap. 5. sess. 25.

GREGORIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Deo sacris virginibus, quæ contemptis illecebriis sæculi divinis se obsequiis menciunt, æquissimum est præcipua quadam à nobis, ac singulari sollicitudine provideri, tum ut ab eis omnia, quæ sanctum ipsarum propositum impedire possent, removeantur, tum etiam ut eis in cultu Dei castè ac religiose permanentibus, quæ ad victum necessaria sunt, subministrantur.

§. 1. Et quidem post sacri Conc. Trident. decretum, quo constitutio fel. recor. Bonif. Papæ VIII. prædecessoris, quæ incipit, Periculoso, renovatur, prohibens ne aut ipsi moniales ex monasteriis suis egredi, aut ulli eorumque; sexus, aut ordinis personæ ad eas ingredi liceat. Et præterea universis Episcopis præcipitur, ut in omnibus monasteriis sibi subiectis, in aliis verò Sedis Apost. auctoritate clausuram Sanctionem ubi violata, diligenter restitui, ubi verò inviolata, conservari maxime procurant, piz mem. Pius Papa V. etiâ prædecessor noster, victui quoque & necessitatibus ipsarum prospicere cupiens, cum superiora illa approbasset atque innovasset, eademque omnia etiam in Monialibus quarumcumque; militiarum etiam Hierosolymitanæ, omnibusque; aliis tacitè vel expresse religionem professis, quocumque; no mine censerentur locum habere decrevisset; ne illæ quicquam detrimenti in necessitatibus suis hac occasione paterentur, etiam præcepit locorum Ordin. & Superioribus earum, ut fidelium elemosynas per Conversas non professas, vel professas quidem, sed etiam saltem quadraginta annorum, & jam pridem Conversas, quæ in domibus contiguas, extra tamen Monasterium degerent, colligendas curarent; ita tamen ut prædictæ Conversæ neque clausuram aliarum Monialium, nisi in casibus permixtis ingrederentur, nec ex illis ipsis habitationibus suis ad tales elemosynas colligendas sine permisso Ordinariorum, aut Superiorum suorum exire possent. Quod si ne hoc quidem sufficere videretur, idem Pius Prædecessor mandavit ipsis Ordinariis & superioribus ut negotium darent aliquibus personis piis tales elemosynas colligendi, aliæque arbitrato suo prospicerent, quæ ad sublevandam Monialium inopiam expedire iudicaret.

§. 2. Cum autem, sicut accepimus, multæ Monia-

les etiam quæ Tertiariæ vocantur, sub solemoni Religionis voto, perpetuæque clausura degentes, aliæque talibus litteris comprehensæ, & in ipsa clausura permanentes, multis præterea ad se sustentandas necessariis egeant, neque usque ad hoc tempus ulla sufficienti remedio earum necessitatibus subventum sit, Quin etiam aliæ Tertiariæ citra ullum solemne huiusque; votum vivant, quæ ad suas suorumve domos neutiquam rediturae essent, sed sub solemoni religionis voto, & clausura prædictis permanerent, si earum congruæ sustentationi provideretur, nos, qui illas necessariis rebus destitui nolumus, certioresque facti sumus in multis Civitatibus, oppidis, villis, aut aliis locis tam in Ecclesiis, & Monasteriis, quam hospitibus, collegiis, confraternitatibus, & aliis locis piis, etiam quæ à privatis hominibus, tum Ecclesiasticis tum laicis multas ac diversas elemosynas Christi pauperibus erogari, considerantes in eiusmodi personas vel in primis exercendam esse caritatem, quæ voluntaria paupertate suscepta ab omni hominum commercio segregatæ Deo serviunt, & assiduis precibus irâ ipsius ob peccata conceptâ, Christiano populo deprecantur; illud quoque cogitantes, si eis ad tales elemosynas petendas ad loca prædicta conferre se liceret, vix fore, ut prædicta Monasteria, Ecclesie, loca, ac personæ eis singulis non tantum saltem tribuerent, quantum singulis aliis pauperibus eodem concurrentibus solent, universo illi Deo devotarum mulierum generi de opportunæ ac sufficientis subventionis auxilio providere cupientes.

§. 3. De nobis attributæ potestatis plenitudine statuimus, & ordinamus, ut omnes, & quicumque; Patriarchæ, Primates, Archiepiscopi, Episcopi, & alii Eccl. Prælati, necnon Abbates, Priores, Præpositi, & alii Ecclesiæ Patriarchales, Primatiales, Metropolitanas, Cathedralis, & alias Ecclesiæ, necnon Monasteria, prioratus, præposituras, canonicos, præbendas, dignitates, personatus, administrationes, officia, cæteraque; beneficia Eccl. cum cura, & sine cura, secularia, & S. Benedicti, S. Augustini, Cisterciensium, Cluniacensium, Præmonstratensium, Cartusien. Camaldulensium, S. Basilii, Cassinensium, alias S. Justini, Montis Oliveti, S. Salvatoris, ac Lateranen. & Cruciferorum, seu fratrum S. Hieronymi necnon Prædicatorum, Minorum, Minorum, & Carmelitarum, Eremitarum ejusdem S. Augustini, Servorum B. MARIE S. CLARE, quorumcumque aliorum tam virorum, quam mulierum etiam Mendicantium Ordinum, & Congregationum, & Militiarum regularia, etiam de jure patronatus laicorum, Regum, Nobilium, Ducum, Regum, & aliorum Principum existentia, in titulum commendam, administrationem, & aliâs quomodocumque obtinentes, necnon Rectores, Gubernatores, Confratres, Administratores, ceterique omnes, qui ratione illorum, necnon Capitulorum, Conventuum, mensarum, Hospitalium etiam laicorum, & per laicos administrari solitorum, Christianissimum confederationem, scholiarum, collegiorum, ac aliorum piorum locorum quocumque nomine nuncupatorum, & in quibusvis mundi partibus consistentium, quæ singulis annis, mensibus, hebdomadis, vel diebus ex Ecclesiis, Monasteriis, prioratibus, officiorum, dignitatum, & beneficiorum, ac congregationum, Hospitalium, confraternitatum, scholiarum, collegiorum, piorum & aliorum locorum prædictorum fructibus, redditibus, & proventibus, pauperibus Christi aliquas elemosynas in pane, frumento, farina, vino, eduliis, pecunia, seu aliis ad victum vel vestitum pertinentibus, etiam ad supplicationem & preces, & per cedulas & bolettina, aut alias distribuere, & largiri ab immemoriabili tempore consueverunt, et alio quocumque; jure tenentur ex dictis fructibus, redditibus, & proventibus, & quoad Hospitalia prædicta ex iis quæ servata in illis actuali hospitalitate persuperant seu supererint, necnon quæcumque personæ particulares etiam laicæ, vel universitates etiam laicorum, quam testamento, ultima voluntate, vel alia dispositione, etiam inter vivos, aliquales tales elemosynas facere tenentur, dimidiam partem om-

Et modo ab
isto Pont. ap-
plicatur Mo-
nialibus clau-
suram ser-
vantibus, &
medietas
elemosyna-
rum, pro
Christi pau-
perum victu
& vestitu de-
stinatarum &
erigenda-
rum.

nium, & quarumcumque elemosynarum, & largitionum huiusmodi, quocumque nomine nuncupatarum, quocumque tempore, & modo distribui solitarum, etiam si speciali nota dignæ, & secundum pias defunctorum, aut aliorum voluntates sub certa forma ab eis in testamento, vel alia quacumque dispositione distribuendæ sint (dummodo non in certas personas, nec ad certos usus pios alios quam victus & alimenta pauperum distribuuntur) quibuslibet prædictarum Monialium etiam Tertiariarum sub solemnem Religionis voto, & perpetua clausura de cetero viventibus, & in terris, & locis quorum pauperibus huiusmodi elemosynæ distribuuntur, consistentibus, verè, realiter, & cum effectu, & absque ulla elemosynarum, & largitionum huiusmodi petitione, exactione, & conquisitione, aut alia desuper à nobis expectata iussione, aut mentis nostræ declaratione, ac quibusvis mora, subterfugio, ac exceptione cessantibus, & ejectionis, dare atque distribuere omnino teneantur, & quâ dimidiam partem nos illis applicamus.

Ordinarii locorum exigant, & applicant, & distribuunt huiusmodi elemosynas.

§. 4. Ut autem præmissa omnia, cum charitate, & pietate procedant, & efficaciter suum effectum sortiantur, universis, & singulis Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, & aliis locorum Ordinariis per Apostolicam scripta mandamus, ut quique per se, vel alium seu alios ad Præsentium executionem in suis Civitatibus, & Diocæsis procedens, ab Ecclesiis, Monasteriis, Hospitalibus, Confraternitatibus, Scholis, Collegiis, & locis, & Ecclesiasticis, ac laicis personis prædictis, etiam quomodolibet exemptis, dimidium elemosynarum huiusmodi exigant, ac proportionem, ut Ordinariis ipsis locorum æquum esse videbitur, singulis pauperum Monialium etiam Tertiariarum Monasteriis huiusmodi suarum Civitatum, & Diocæsum, etiam si aliis Superioribus subiectæ sint, cum effectu distribuunt. Nos enim eisdem locorum Ordinariis etiam tamquâ Apostolicæ Sedis delegatis, ac cuilibet illorum tam per se quam alium, vel alios, præmissa faciendi, ac etiam contradictores quoslibet, & rebelles per poenas pecuniarias eorumdem Ordinariarum, & cujuslibet illorum arbitrio infligendas, & applicandas, ac in subsidium sententias, censuras, & poenas Ecclesiasticas aliaque opportuna iuris, & facti remedia, quacumque appellatione postposita respectu præfatis consanguinitate aliqua sunt conjuncti, aliquid in præmissis subsidium conferant, cum ratio sanguinis, & debitum charitatis, & honestatis id postulet, singulis locorum Ordinariis committimus, ut omni eos officio, & diligentia moneant, eisque persuadere studeant, parentes verò, & fratres ac alios, ad quos illas, si in sæculo permansissent, dotare pertinebat, vel ad quos bona, & successiones devenerunt, & qui si eas nuptui tradidissent, multo amplius, quam ingredientibus Monasterium dedissent, vel qui si eas nunc domi retineant, vel si ad illorum domus redirent, eas alere tenerentur, quibuscumque viis ipsis beneficiis inducant, ut Monialibus etiam Tertiariis prædictis iuxta eorum facultates charitative subveniant, scituri id sibi etiam ad animarum salutem plurimum profuturum.

Consanguinitatemque Monialium, & alios horrentur ut eisdem Monialibus charitative subveniant.

§. 5. Insuper, quia valde rationi consonum est, ut etiam ii, qui ipsis Monialibus etiam Tertiariis indigentibus præfatis consanguinitate aliqua sunt conjuncti, aliquid in præmissis subsidium conferant, cum ratio sanguinis, & debitum charitatis, & honestatis id postulet, singulis locorum Ordinariis committimus, ut omni eos officio, & diligentia moneant, eisque persuadere studeant, parentes verò, & fratres ac alios, ad quos illas, si in sæculo permansissent, dotare pertinebat, vel ad quos bona, & successiones devenerunt, & qui si eas nuptui tradidissent, multo amplius, quam ingredientibus Monasterium dedissent, vel qui si eas nunc domi retineant, vel si ad illorum domus redirent, eas alere tenerentur, quibuscumque viis ipsis beneficiis inducant, ut Monialibus etiam Tertiariis prædictis iuxta eorum facultates charitative subveniant, scituri id sibi etiam ad animarum salutem plurimum profuturum.

Declaratio constitutionis Pii V. de iure circa Conversas professas & non professas. Quam habes sup. cit. in rub.

§. 6. Ceterum quod attinet ad Conversas professas, quæ prædictis Pius prædecessor per prædictas litteras sub certis conditionibus ibi contentis permisit posse manere extra Monasteria pro colligendis elemosynis, eisdem locorum Ordinariis injungimus, ut quibus Monasteriis prædictarum Monialium quotidianis laboribus computatis, supradicta vel alia quolibet ratione de sufficienti subventionem, & sustentationem provivum esse cognoverint, easdem Conversas vel eadem clausura cum aliis Monialibus reducant, neque à suis Monasteriis amplius exire permittant. Conversas verò non professas, & profiteri nolentes,

dimisso habitu domum remittant, neque alias in futurum, nisi professionem suo tempore emissuras, atque sub perpetua clausura mansuras in Monasteria huiusmodi recipi permittant. Quod autem id Pius prædecessor statuit de cetero nullas alias Conversas professas recipi amplius etiam de consensu suorum Superiorum posse, ita esse intelligendum declaramus, præter illas Conversas, quæ extra Monasterium in domibus contiguas degerent. Elemosynarum verò prædictarum contributionem, & applicationem durare, & valere decernimus, ac suos effectus ad plenam fortiri debere, donec numerus Monialium etiam Tertiariarum huiusmodi (quem per ipsos locorum Ordinarios etiam in Monasteriis ab eorum cura, & regimine quomodocumque exemptis, cum illarum Superiorum interventu stabiliri, & ordinari, neque supra illum numerum alias recipi posse, etiam de consensu Superiorum suorum, volumus, & mandamus) ita imminutus fuerit, ut reliquæ Moniales, & Tertiariæ ex propriis redditibus Monasteriorum ipsorum, vel consuetis elemosynis se commodè sustentare queant: super quo eorumdem Ordinariarum conscientiam oneramus, ita tamen, ut decedentibus singulis ex tribus earundem Monialium partibus, tertie quoque earundem elemosynarum partis distributio, & sic successivè in totum extinguatur atque in pristinum statum sub debitis aut solitis oneribus revertatur, & remaneant. Declaramus præterea nullis Monialibus etiam Tertiariis licere habere officium, per quod ex Monasterio introiri possint ipsorum Monialium Ecclesiam exterioriorem, in quam secularibus ad Missas, & divina officia patere solet accessus, sed omnino muro obstruendum, neque itidem licere Monialibus etiam Tertiariis egredi à janua Monasterii, quæ est pro clausura ipsius Monasterii etiam ad claudendum aliam ulteriorem januam, quæ patere solet aditus secularibus venientibus, vel ad totam, vel ad crates, seu loca colloquii destinata, quæ vulgo parlatoria vocantur, vel ad pulsandum ipsam januam clausuræ; quæ loca, cum saltem pro causis prædictis patere soleant secularibus, extra clausuram censerentur, etiam pro tempore clausæ sunt.

§. 7. Insuper quoscumque Dominos, & Magistratus temporales in Domino hortamur, moneamus, & requirimus, ut ad omnem ipsorum Ordinariarum, aut aliquis ipsorum petitionem, vel simplicem requisitionem, illis in præmissis assentes, omnem opportunitatem favorem, & auxilium præstent & exhibeant.

Dominos temporales faciant favere in præmissis Ordinariis.

§. 8. Ipsi denique Patriarchis, Archiepiscopis, & aliis locorum Ordinariis præcipimus, & mandamus, ut has præfatas nostras litteras (quarum transumptis etiam impressis manu aliquis Notarii publici subscriptis & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis eandem ubique fidem, in judicio, & extra adhiberi debere volumus, quæ ipsis originalibus litteris adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensæ) singuli in sua Civitate, & Diocesi publicent ac publicari, easque iuxta eorum continentiam, & tenorem, una cum prædictis ac aliis prædicti Pii V. & aliorum Prædecessorum nostrorum litteris, & constitutionibus, & iussionibus pro integra clausura instauratione, custodia, & firmitate editis, inviolabiliter observent, & observari faciant.

Ordinarii faciant publicari & observari hanc constitutionem.

§. 9. Non obstantibus rectorum & aliorum voluntatibus, ac fundationibus, & Bonifacii prædicti de una, & Concilii generalis de duabus, non tamen tribus diebus, ac quibusvis aliis Apostolicis, necnon in provincialibus, & synodalibus Conciliis editis, specialibus vel generalibus constitutionibus, & ordinationibus, ac quibusvis Ecclesiis, Monasteriis, & illorum Ordinibus, hospitalibus, militariis, Confraternitatibus, Collegiis, & aliorum piorum locorum, prædictorum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, etiam immemorabilibus, privilegiis quoque, indultis, exemptionibus, libertatibus, gratiis, & litteris Apostolicis, Ecclesiis, Monasteriis, & Ordinibus, hospitalibus, Confraternitatibus,

Derogatio contrarium.

collegiis, & piis locis, ac eorum Superioribus, & personis quibuscumque; tenoribus, & formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis, in genere, vel in specie, ac aliis quomodolibet concessis, confirmatis, approbatis, & pluries innovatis, etiam si in eis caveatur expresse quod illis nisi sub certa inibi expressa forma, aut aliis derogari non possit, quibus omnibus, & singulis etiam si de illis eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia expressio habenda foret, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum infereretur Præsentibus pro plenè, & sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, contrariis quibuscumque, aut si supra dictis vel quibusvis aliis ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspensi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

Nulli ergo &c.

Dat. P. An. r.
30. Decemb.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo septuagesimo secundo, 3. Kalen. Jan. Pontificatus nostri Anno 1.

Publicatio.

Anno à Nativitate Domini 1573. indit. 1. die verò 11. mensis Januarii. Pont. Sanctissimi in Christo patris, & D. N. Gregorii divina providentia Pape XIII. Anno 1. retroscripta littera affixa & publicata fuerunt ad valvas Principis Apostolorum de Urbe, sancti Joannis Lateranensis, Cancellaria Apostolica & in acie Campi Floræ, ut moris est, per nos Scipionem de Oñavianis & Alexandrum A. flanculum Cursores Apostolicos.

Petrus Sprengerius Mag. Cursum.

IX.

Reductio ad terminos juris communis, & Concilii Tridentini, trium Constitutionum à Pio V. pro Ordinibus Mendicantium, aliisque editarum.

Edita An. D.
1573.

GREGORIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

In tanta, rerum, & negotiorum mole, qua Rom. Pont. ex omnibus mundi partibus assidue premittitur, vix vitari potest, ne aliqua interdum exilient, quibus postea recognitis necesse est moderationis remedium adhibere.

Pius V. privilegia multa mendicantibus concessit ut sup. intr. lib. const. 41. Et si. fol. 243.

§. 1. Cum itaque aliis fel. rec. Pius Papa V. prædecessor noster, auditis gravaminibus, quæ fratribus Ordinum Mendicantium ab Ordinariis locorum, & parochialium Ecclesiarum Regoribus, multis modis inferri dicebantur, super sacris concionibus, & lectionibus habendis, confessionibus audiendis, poenitentis injungendis, fratribus ad ordines promovendis, celebratione Missarum, cura animarum, sacramentorum administratione, sepulturis, quarta funeralium, legatis, donationibus, elemosynis, collectionibus, aliisque huiusmodi iuribus, necnon decimis, & diversis oneribus, ac etiam super statu & regimine Sanctimonialium ipsius Fratris subjectione, formatione processuum, censurarum publicatione, processibus, precedencia, locorum acquisitione, certisque aliis rebus tunc expressis, multa per qualdam suas litteras pro dictis Fratribus non modo statuerit, sed & quæ jam in Concilio Tridentino decreta fuerant ad hæc pertinentia declaravit, multaque præterea privilegia eidem decimo septimo Calen. Junii, Pontificatus sui anno secundo.

Et illa exen-
dit ad alios
ordines ut
ibid. in fin.

§. 2. Et deinde ea omnia diversis aliis Ordinibus, & Congregationibus regularium non mendicantium, etiam per modum communicationis, concessit.

§. 3. Postea per quandam suam constitutionem de Vicariis perpetuis parochialibus Ecclesiis unicus per Ordinarios locorum institutis, & portione illarum Vicariis assignanda editam, alia super constitutione Fratrum eorumdem ad exercitium curæ animarum in eis parochialibus Ecclesiis, quæ domibus & locis suis unita sunt, decreverit.

§. 4. Demum animadverso quod ea omnia multis dubitationibus involuta, magnisque difficultatibus obstruata, multas magnasque dissensiones, alterationes, & lites inter prædictos locorum Ordinarios, & Fratrum ipsorum Ordines, non sine gravi divini cultus, & animarum detrimento, ac populorum scandalo concitaverant, contra ac ipse sperabat, & præter suam expectationem, ut qui interdum conquereretur multa aliter alioque sensu à se prolata fuisset, quam litteris expressa essent: Cupiens his mederi incommodis, primum illa omnia quæ Regularibus aliorum Ordinum quam Mendicantium communicaverat, & secundum præmissa concesserat, Motu proprio restrinxit: Deinde plenius providere volens, prioribus litteris à se quoad ipsos Mendicantes magna in parte moderatis, omnes, & quasque alias litteras quæ de aliis Ordinibus, & Congregationibus extra Mendicantium ordines de Obsevancia nuncupatos emanaverant, omnino abolverit, causas omnes jam de his etiam in Romana Curia pendentes ad se advocando, lites extinguendo, ac formatos super illis processus lataque sententias annullando, quemadmodum aliis suis litteris in registro proximè compertis, nunquam tamen publicatis, plenius continetur.

§. 5. Postremò circa confessoriorum Regularium etiam Mendicantium approbationem juxta Concilii prædicti decretum faciendam, etiam lectores in Theologia graduatos, & certos alios tunc expressos comprehendere debere declaraverit.

§. 6. Nos hac tanta varietate cognita, quæ etiam multiplici litterarum, & constitutionum editione procedit, præsentibus & futuris discrimini-bus occurrere volentes, de Nobis attributæ potestatis plenitudine statuimus, & ordinamus, de prædictis & aliis omnibus litteris, & constitutionibus, quæ ab eodem Prædecessore eisdem de rebus pro quorumcumque Regularium, etiam Mendicantium Ordinibus, & Congregationibus quomodolibet emanarunt, ac omnibus, & quibuscumque in eis contentis, eam deinceps dispositionem atque decisionem pro subjecta materia futuram esse, quæ si ve ex jure veteri, si ve ex sacris dicti Concilii decretis, si ve aliis legitime ante dictarum litterarum & constitutionum editionem erat, & si ipsæ non emanassent, futura fuisset, ad quam dispositionem & decisionem, suumque pristinum, & integrum statum, ac terminum illa omnia reducimus. Quin etiam tollimus, & abrogamus omnia irritantia, & alia decreta, necnon prohibitiones, declarationes, mandata, & quæcumque alia ipsius litteris, & constitutionibus apposta, & aliis eorum occasione vel causa factis, his nostris statuto, ordinationi, & reductioni adversantia, quibuscumque illa fiat concepta formulis, ac preservationibus, declarationibus, modificationibus, restitutionibus, mentis attestationibus, derogatoriis derogatoriis, aliisque fortissimis, efficacissimis, & inviolabilibus clausulis, etiam motu & potestatis plenitudine similibus & ex certa scientia, etiam pro conservatione status Regularis, & ex quibuscumque aliis urgentissimis causis quotiescumque roborata. Decernentes illa omnia pro nullis & infectis haberi, omnesque supradictos, illarum usu, commodo & effectu carere.

§. 7. Ac omnes lites, & controversias, quæ coram quibusvis Judicibus, si ve Ordinariis si ve Commissariis, etiam causarum Palatii Apostolici Auditoribus, & S. R. E. Cardinalibus, etiam de latere Legatis prædictarum litterarum & constitutionum occasione super præmissis jam motæ sunt, necdum decise aut finite, vel etiam quæ jam decise sunt, si modo

Et alia decre-
vit circa pa-
rochias ut
sup. in bull.
47. Ad exe-
quendum.

Postea alia
statuit.

Deinde circa
confessiones
aliarum edidit
bullam sup.
num. 133.

Hic Pont. om-
nes prædi-
ctas const. Pii
V. reducit ad
terminos juris
& Concilii
Tridentini.

Lites secun-
dam hanc
bullam deci-
di valet.

Dubiorumque futurorum declarationes Sedi Apost. referat.

Decretum irritans.

Præceptum observantiz.

Derogatio contrariorū.

Iussio publ.

Dat. P. An. i. d. i. Martii.

Publicatio.

X.

Edita An. D. 1573.

Exordium.

tractum habeant successum, easque rursus, & inter quoscumque excitari in posterum contingat, secundum prædictā dispositionem nec aliter decidendas.

§. 8. Futura verò dubia & difficultates, quodcumque & ubicumque orientur, ad Nos & Sedem Apostolicam, ubi & cetera quæ ad decreta dicti Concilii pertinent quotidie declarantur, omnino referenda esse.

§. 9. Necnon irritum & inane quicquid secus super his per quoscumque scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 10. Mandamus itaque in virtute sanctæ obedientiæ Præsentes ab omnibus ubique Episcopis, & locorum Ordinariis, necnon Ecclesiarum Prælati, Rectoribus, Fratribusque prædictis ac ceteris ad quos pertinet, semper inviolata observari.

§. 11. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon Ecclesiarum, Monasteriorum, Conventuum, Domorum, locorum & Ordinum quorumcumque iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, etiam Maremagnum, & bulla aurea nuncupatis, dictis Ecclesiis, Ordinibus, & Congregationibus quomodolibet concessis & confirmatis: quibus omnibus, etiam si de illis eorumque totis tenoribus specialis expressa, individua, & ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum infererentur Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanfuris, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 12. Ut autem Præsentes omnibus plenius innotescant, volumus earum exempla fieri, & etiam imprimi, illisque Notarii publici manu, & Curie Ecclesiasticæ, vel Prælati, aut personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ sigillo obsignatis, eandem illam prorsus fidem, in iudicio & extra illud ubique locorum adhiberi, quæ adhiberetur eisdem præsentibus si essent exhibitæ vel offensæ.

Nulli ergo omnino &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo septuagesimo tertio, Cal. Martii, Pont. nostri anno primo.

Anno à Nativitate D. N. JESU Christi 1573. indict. i. die verò 23. mensis Martii, Pontificatus Sanctiss. D. N. D. Gregorii divina providentia Pape XIII. anno 1. retrospectæ litteræ affixæ, & publicatæ fuerunt ad valvas Basilicarum Principis Apostolorum, & S. Joannis Lateranensis, de Urbe, & Cancell. Apostolica & in acie Campi Floræ. per nos Joannem de Soja, & Marcum Antonium Brutum, ejusdem S. D. N. Pap. Curf. Antonius Ludovicus Mag. Curf.®

Quod omnibus liceat, in quacumque die infra octavam Sanctissimi Corporis Christi, processionem solemnitè facere, in honorem suæ festivitatis.

De hujus festivitatis institutione, & aliis eam concernentibus, dixi apud consil. i. Urb. IV. Transitus. fol. 121. Tom. I.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Cum interdum contingat Romanum Pontificem aliquas concessiones & gratias elargiri, quas postmodum experientia rerum magistra, docet in alterius præjudicium resultare, mirum nemini videri debet, si tandem præjudicio cognito

gratia ipsæ sic concessæ in melius reformentur, pro ut & populi devotio exposcit, ac rerum, & temporum qualitate pensata conspicitur in Domino salubriter expedire.

§. 1. Dudum siquidem fel. record. Pio Pape V. prædecessori nostro pro parte dilecti Joannis Gallo Ordinis Prædicatorum, & Theologiæ professoris exposito, quòd licet in omnibus ferè Conventibus provinciæ Hispaniæ Ordinis prædicti, solemnitè fieri consuevisset processio Sanctissimi Sacramenti Corporis Christi die Dominica infra octavam illius festivitatis, idque ab immemorabili consuetudine, propterea quod dicti Ordinis religio, utpote à B. Thoma de Aquino docta peculiarem semper gesserat devotionem erga Sanctissimam Eucharistiam, unde cum magno apparatu, & frequentia populi eadem festività à fratribus Ordinis huiusmodi celebrari solebat. Nihilominus ante aliquot annos aliqui alii partium illarum Religiosi, præsertim in Civitate Salamantina contendebant eisdem die & hora festivitatem seu processionem huiusmodi celebrare, populum ad se trahentes, & ornamenta quæ ipsis fratribus Ordinis huiusmodi concedi solebant conquirentes; unde & populi devotio mindebatur, & aliquando viri timorati videntes Religiosos pro huiusmodi rebus inter se contendere, offendebantur, ejusdem Joannis supplicationibus inclinaturs eidem Ordini Prædicatorum, ut in omnibus, & singulis Civitatibus, terris, oppidis, & locis, tam dictæ provinciæ, quam extræ, & alii ubilibet, in quibus ab immemorabili consuetudine fratres dicti Ordinis processionem huiusmodi dicta die Dominica infra octavam ejusdem Corporis Christi solemnitè celebrari soliti fuerant, eisdem fratribus Ordinis Prædicatorum dumtaxat, eadem die Dominica solemnem processionem ejusdem Corporis Christi celebrare liceret, ita ut nulli super eo, illos impedire, seu eodem tempore vel die eandem processionem facere possent, & deberent, perpetuò concessit, & indulsit; ac aliis prædictis desuper districtius inhibuit, aliaque fecit, prout in dictis litteris plenius continetur.

§. 2. Nos tamen attendentes id non sine divini cultus diminutione esse aliquo modo posse, cum omnes ad unam, & eandem dumtaxat Ecclesiam confluentes, in ea commodè recipi, siquæ processionis huiusmodi interesse nequeant, præter id quod inibi sæpe contingit, ut propter populi frequentiam sic confluentem, varia scandala, & jurgia oriantur, & populus ipse spiritali venerationis Sacramenti huiusmodi multiplici fructu priveretur. Neque propterea diutius discussa honestum esse censes, litteris prædictis modum aliquem præbere, illarum tenorem, ac si de verbo ad verbum Præsentibus insertus foret, pro plenè & sufficienter expresso habentes, Motu proprio, non ad alicujus Nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed ex mera deliberatione, & certa scientia nostris, universis & singulis, clero & clericis, ac personis Ecclesiasticis, tam secularibus quam quorumvis Ordinum, religionum, & Militarum Regularibus, ut litteris Pii prædecessoris huiusmodi non obstantibus, liceat ipsis, tam die ipsa Dominica infra octavas Corporis Christi, quam aliis totius octavæ prædictæ diebus processionem suam celebrare, nec super eo tam ab Ordinis Prædicatorum huiusmodi, quam aliis quibuscumque personis, etiam prædictarum, aut quorumvis aliarum litterarum privilegiorum, vel concessionum prætexu, seu aliis quomodolibet molestari, inquietari, vel perturbari, nec etiam aliquibus censuris vel poenis, etiam Ecclesiasticis innotari, seu illas incurere possint, tenore Præsentium concedimus, & permittimus.

§. 3. Etnihilominus, pro potiori præmissorum cautela, litteras Pii prædecessoris huiusmodi harum serie penitus & omnino, quo ad effectum prohibitionis celebrandi processionem huiusmodi cassam, irritam, & annullamus, viribusque & effectu evacuamus, & tamquam tales minime atten-

Pius V. iussu ordini Fratrum Prædicatorum solemmodo licere, solemnem processionem Corporis Christi facere, in die Dominica infra octavam.

Hic modo Pont. omnibus licere decernit dictam processionem celebrare, in quacumque die inf. octavam dictæ festivitatis.

Ec bullam Pii V. revocat.

Observantiam hujus constit. cuiusque precipit.

Eamque clausulis præservatis ornat.

Decretum irritans appoint.

Executoresque deputat.

Contraria tollit.

di, vel eisdem fratribus Predicatoribus suffragari posse volumus.

§. 4. Districtius inhibentes eisdem Fratribus Ordinis Predicatorum, & quibuscumque aliis personis cuiuscumque dignitatis, status, gradus, ordinis, vel conditionis fuerint, in virtute sanctæ obedientiæ, ac sub excommunicationis majoris latæ sententiæ, necnon suspensionis, & interdicti, aliisque arbitrio nostro moderandis, infligendis, & imponendis penis, ne contra Præsentium litterarum tenorem venire, aut suprascriptos, vel quoscunque alios, quorum interest, intererit, aut interesse poterit quomodolibet in futurum, quo minus præmissa libere fieri possint, per se vel alium, seu alios publicè vel occultè, directè vel indirectè, tacitè vel expressè, quovis quæstio colore vel ingenio, impedire audeant, vel præsumant.

§. 5. Decernentes quoque Præsentes litteras nullo unquam tempore de subreptionis, aut obreptionis vicio, aut intentionis nostræ, vel quopiam alio defectu, etiam ex eo quod interesse habentes vocati non fuerint notari, impugnari, invalidari, ad terminos juris reduci nullatenus posse, minisque sub quibuscumque similibus, vel dissimilibus gratiarum revocationibus comprehendere, fed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum statum restitutas & de novo concessas esse.

§. 6. Siquæ ab omnibus censi, & ita per quoscumque Judices, Commissarios quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolicis Auditores, ac S. R. E. Cardinales, sublata eis, & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi facultate, iudicari debere, irritum quoque & inane si secus super his à quoquam, quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 7. Et nihilominus universis & singulis venerabilibus fratribus nostris Patriarchis, Archiepiscopis, & Episcopis, ac dilectis filiis ceteris locorum Ordinariis, necnon illorum, & eorum Vicariis, seu Officialibus, in spiritualibus, & cuilibet ipsorum infoludum, motu simili per Præsentes committimus, & mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum, per se vel alium, seu alios, præsentes litteras, & in eis contenta quæcumque, ubi, & quando opus fuerit, ac quoties pro parte alicujus, seu aliquorum, & quorumcumque in præmissis interesse habentis, vel habentium fuerint requisiti, solemniter publicari, eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes faciant præmissa omnia, & singula, ab omnibus quos illa concernunt inviolabiliter observari, ac prædictos interesse habentes, illis pacificè frui, & gaudere. Non permittentes eos desuper prædictos fratres Ordinis Predicatorum, vel eorum Conservatores, Judices, defensores, seu protectores, aut quoscumque alios quavis auctoritate, quomodolibet indebitè molestari, contraditores quoslibet & rebelles per sententias, censuras & penas aliæque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita compescendo, legitimisque super his haberi servatis processibus sententias, censuras, & penas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 8. Non obstantibus litteris prædecessoris huiusmodi cum inde secutis & aliis prædictis, necnon piæ memoriæ Bonifacii Papæ Octavi etiam prædecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, dummodo ultra tres dietas quis vigore Præsentium ad iudicium non extrahatur, & aliis Apostolicis, necnon in provincialibus, & Synodalibus Conciliis editis, specialibus vel generalibus constitutionibus, ac quibuscumque etiam disti Ordinis Predicatorum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, Privilegiis quoque, indoleis, & litteris Apostolicis eidem Ordini, illiusque Superioribus, & personis, ac quibuscumque aliis sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque effica-

ciis, & insolitis clausulis, irritantibusque & aliis decretis in genere, vel in specie, ac aliis quomodolibet concessis, confirmatis, approbatis, & innovatis, & Bulla Aurea, ac Maremagnum nuncupatis, quibus omnibus, etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica & expressa mentio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc fervanda foret, tenores huiusmodi Præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentis, hac vice dumtaxat ad effectum prædictum specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque, aut si fratribus Ordinis Predicatorum, eorumque conservatoribus, ceterisque prædictis, & quibuscumque aliis, communiter vel divim, ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspensi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas, non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem; Ceterum quia difficile foret, præsentes litteras ad quæque loca in quibus publicatio huiusmodi faciendi deferri:

§. 9. Volumus & similiter Apostolica auctoritate decernimus quod Præsentium transumptis, etiam impressis, & manu alicujus Notarii publici subscriptis, ac sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ ipsis originalibus litteris adhibetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris, die 11. Martii 1573. Pontificatus nostri Anno primo.

Instituto Festivitatibus sub invocatione Rosarii B. Mariæ Virginis, prima Dominica die mensis Octobris, in Ecclesiis vel Capellis Rosarii duplici majori officio celebrandæ, pro gratiarum actione de Victoria die 7. disti mensis Octobris parta contra Turcas.

Hoc bellum paravit Pius V. & aliqua statuit sup. in Const. 142. 146. & 149. De Solidaritate autem Rosarii dixi sup. ad const. 18. Sixt. IV. Ea quæ. fol. 418. Tom. I.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Monet Apostolus in omnibus gratias agere, monent quoque Sacrarum litterarum historia, insignia DEI beneficia, tum ut ei, à quo accepta sint, merite referantur gratiæ, cum ut fideles, quibus collata sunt, illarum memores ad divinum cultum magis in dies excitentur, solemniibus annuis festivitatibus celebranda esse. Quod cum multoties institutum fuerit, tum verò maxime, cum DEUS patrum nostrorum populum suum à servitute Egyptiaca per manum fortem liberavit.

§. 1. Nos itaque qui non minora beneficia quotidie à DEO optimo Maximo accipimus, inter quæ illud singularissimum superiore anno ab ineffabili ipsius clementia nobis concessum fuit ut Turcarum Classis, & numero longè superior, & præteritis elata victoriis à Christianorum classe in virtute Domini DEI Sabaoth decertante, die 7. Octobris, non longè à Coriathico sinu penitus devicta, & quæ facta fuerit, quæ nempe victoria universum Populum Christianum, ab impiissimi Tiranni faucibus, & divino munere ereptum fuisse inficiari nemo potest. Apostoli præcepto parere, & Sanctorum Patrum exempla sequi volentes, ut huius ingentissimi beneficii anniversaria habeatur memoria instituire omnino decrevimus.

§. 2. Quia verò preces ad DEUM oblatæ, & gratiores ad illius conspectum ascendunt, quo dignioribus intercessoribus, & pio aliquo orandi modo offeruntur, memores Beatum Dominicum Ordinis Predicatorum institutorem, cum & Gallia, &

Transumptis credi jubet.

Dat. P. An. T. die 11. Mart.

XI.

Edita An. D. 1573.

Festivitates celebrantur ad Deo gratias referendas, præsertim pro aliquo populi liberatione.

Ex qua die 7. Octobris anni præteriti, Populus Christianus contra Turcas v. & tria habuit. Ideo hic Pont. anniversariam memoriam ad gratiarum actionem instituitur de crevit.

Memor quod B. Dominicus ad iram Dei placandam, Rosarii orandi modum instituit.

Italia à perniciosis premeretur hæresibus, ad iram DEI placandam, & Beatissimæ Virginis intercessionem implorandam, piissimum illum orandi modum instituisse, quod Rosarium seu Psalterium Beatissimæ Virginis MARIE nuncupatur.

Et quia didici die 7. Confraternitates Rosarii, quæ erat prima mensis Dominica, processiones de more fecerant, quas dicte victorie multum præfuisse, piè credi potest.

§. 3. Animadvertentes quoque eadem die septima, quæ tunc fuit Dies Dominica prima dicti mensis Octobris, Fraternitates omnes sub dicti Rosarii nuncupatione militantes per universum Orbem juxta earum laudabilia instituta & consuetudines, processionaliter incedentes, pias ad DEUM preces effudisse, quas per intercessionem Beatissimæ Virginis ad dictam Victoriam consequendam multum profuisse piè credendum est, operæ pretium nos facturum esse existimavimus, si ad tantæ victoriæ cœlestis proculdubio concessæ memoriam conservandam, & ad gratias Deo, & Beatissimæ Virgini agendas, festum solemne sub nuncupatione Rosarii, primâ Dominicâ mensis Octobris singulis annis celebrandum institueremus.

Hic ideo Pont. Festum sub invocatione Rosarii, qualibet prima Dominica d. mensis Octobris in Ecclesiis ubi fit altare Rosarii celebrari jubet. Hoc festum communiter S. Mariæ de Victoria nuncupatur.

Claufulæ præservativa.

Claufula sublatâ. &c.

Quibuscumque non obstantibus. Exemplorum fides.

Dat. P. An. 1. die 1. April.

XII.

Confirmatio constitutionis Pii Quarti, contra acclamantes, aut habentes Franchitias in Urbe, vel sub illarum prætexto, Justitiarum ministros impediētes, exactæ ab omnibus observandæ.

Hanc bullam auctis penis, innovavit Sixtus V. ut inf. in ejus const. 6. Hoc nostri. Et ante omnes prohibitionem non tamen sit generalem in hoc publicavit Jul. III. sup. in ejus const. 17. Cum civitates, vide in Tomo I.

Edita An. D. 1573.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

ET ipsa ratio, & usus docet, nihil perniciosius in Civitate contingere posse, quam legum, judiciorumque impedimentum.

Jul. III. edit. const. cit. in rubr. &

§. 1. Quod malum satis opportunè prohibere volens fel. rec. Pius Papa IV. prædecessor noster, cui

post alias hac de re præsertim à piæ mem. Julio Papa Tertio promulgatas constitutiones, innotuerat, quamplurimos adhuc esse in Urbe, qui vel ob commissa crimina, vel ob æs alienum contractum, sibi à Ministris, Justitiarumque executoribus timentes, ad ædes Primatum, etiam S. R. E. Cardinalium, ac Oratorum Principum, uti loca tuta, quas franchitias appellabant, confugerent, eaque ratione impuniti evaderent, & creditores eluderent, aliam edidit constitutionem qua etiam sub arbitrariis penis sanxit, ne ullus post id tempus cujuscumque dignitatis, ac præminentie foret, ædes prædictas, aut alia quæcumque loca franchitias appellare audeat: neve Cardinales, Oratores, ac Primates prædicti, etiam si sui, & Romani Pontificis pro tempore existentis nepotes, aut alio consanguinitatis vel affinitatis vinculo conjuncti essent, eorumque familiares, aut in ipsorum domibus commorantes, in eisdem domibus, seu locis circumvicinis maleficos quovis etiam indemnatos, aut ære alieno obstrictos (contra quos tamen mandata executiva instantibus creditoribus jam decreta, & relaxata essent) ut è potestate Curie secularis sic eximerentur, receptare, vel prætexto franchitias securos reddere, aut Justitiæ executores, quo minus liberè officio suo contra eosdem fungi possent, quocumque modo impedire audent: alioquin receptantes hujusmodi, aut securitatem præstantes, seu executores Justitiæ impediētes, vel excitatis clamoribus, Cardinalium, Oratorum, seu Primatum quorumlibet nomen, auxilii causa invocantes, aut quoscumque alios in ipsos Justitiæ Ministros concitantes, velut criminis læsæ Majestatis rei dignis penis afficerentur, contra quos etiam ad alias penas, quibus malefici ipsi puniti fuissent, vel quas promeruisissent, necnon ad satisfactionem creditorum, etiam ex officio, & ad Fiscum, partiumque instantiam inquiri, procedi, & condemnari debere, voluit atque decrevit. Sed cum hæc ipsa Pii prædecessoris constitutio propter nimiam corruptelam, minimè sit eum, quem decuit effectum consecuta.

§. 2. Nos volentes omnino in Alma Urbe nostra, ita Justitiæ debito ab omnibus satisfieri, ut perpetua subditis nostris quies & salus inde patiarur, & ceteris præbeat exemplum, constitutionem prædictam exactè ab omnibus, & omni tempore præcipimus observari.

§. 3. Mandantes Gubernatori, Magistratibus, Judicibus, & executoribus dictæ Urbis, ac ceteris omnibus ad quos spectat, ut gratia & favore postpositis, illam, & contrasacientes, juxta illius tenorem afficiant: & alioquin in prohibendis ulquequaque his incommodis invigilent, si nostram, & Apostolicæ Sedis ultionem voluerint evitare.

Nulli ergo omnino &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1573. Non. Septembris, Pont. nostri anno 2.

Anno à Nativitate Domini, millesimo quingentesimo septuagesimo tertio, Indictione 1. die verò 24. mensis Septembris, Pontificatus Sanctiss. in Christo patris, & D. N. D. Gregorii divina providentia Pape XII. anno 2. retroscriptæ litteræ Apostolicæ affixæ & publicatæ fuerunt ad valvas Basilicarum S. Joannis Lateranen. & Principis Apostolorum de Urbe, & in acie Campi Floræ, ut moris est, per nos Joannem Guerardum, & Joannem de Soja Apost. Cur.

Alexander Ascanellus Mag. Cur.

Declarationes Constitutionis à Pio V. editæ, circa electionem & munus Ministri generalis, aliorumque Prælatorum Ordinis Fratrum Minorum S. Francisci de Observantia, ac formam & qualitatem Novitiorum recipiendorum, &c.

De toto Ordine Franciscano, notavi sup. in Tomo I. in const. 5. Honor. III. Solet. fol. 66. & signatur de

eam: reprobat &c. Pius IV. sup. in const. 47. Inter.

Hic vero Pont. mand. const. Pii IV. ab omnibus observari.

Executores deputati.

Dat. P. An. 2. die 5. Sept.

Publicatio.

XIII.

his Fratribus de Observantia scripsi ad const. 23.
Leon. X. lte. fol. 583. Tom. I.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Consuevit Romanus Pontifex cui universi Christiani fideles curæ sunt, de religioni adscriptis viris, ut in regularis observantia candore idem conseruentur, specialem cogitationem suscipere, quod si aliqua per Prædecessores suos ad eum finem statuta sunt, quæ experientia doceat minimè expedit cognoscit, declarationibus, aliisque rationibus non definit prospicere.

Pii V. ordinatio circa electionem Prælatorum, est sup. in const. 158. Pastoralis ubi notavi.

Hujus Pont. declaratio circa hunc electionem. Tu vide hic inf. aliam declarat.

Pii V. ordinatio de diffectu Prælatorum à Capite.

Hujus Pont. declaratio circa hunc diffectum. Aliam fecit declarationem hic inf. Pii V. ordinatio circa subornantes, & subornatos, pro electionibus.

Hujus Pont. declaratio quoad excommunicationem dictorum subornantium & subornatorum.

Pii V. ordinatio circa tempus quo Prælati durarent in officio, & ad illud reeligendi non possent. Hujus Pont. declaratio circa tempus relectionis. Hodie circa tempus servatur bulla 22. Leon. X. sup. fol. 581. in Tomo I. Hujus Pont. correctio d. bullæ pii V. circa electionem Ministri gea. in Pro-

6 post dictos sexdecim annos eligi possint, dantes, & concedentes eis ad quos spectat facultatem, Commissarium generalem in Ministrum seu Procuratorem generales, & è converso etiam immediatè postquam aliquo ex dictis officiis fundi fuerint, etiam lapsu temporis prædicto non expectato pro tempore eligendi.

§. 10. Præterea ex eisdem litteris quod de duobus Discretis quorum consilio generalis Minister uti deberet, mandatum fuerat, cum expertum sit, dictos Discretos habere, nequaquam Ordini prædicto expedire, quodque de Sacra Theologia lectore, qui quatuor cursus absolvisset, ut activa & passiva voce in Provinciali Capitulo uteretur, in eisdem statuatur, tollimus.

§. 11. Decernentes de novo, quod quo ad illos, qui ex Mahometanorum, Judæorum, vel Hæreticorum damnatorum descendunt origine, servetur quod præ mem. Paulus Papa IV. prædecessor noster per suas in forma Brevis litteras sub Dat. videlicet vigesima quarta Aprilis 1559. Pontificatus sui anno quarto, statuit.

§. 12. Non obstantibus litteris prædictis in partibus per nos alias declaratis & reformatis, quas in reliquis firmas esse volumus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romæ apud S. Marcum, sub annulo Piscatoris, die octava Septemb. millesimo quingentesimo septuagesimo tertio, Pontificatus nostri anno secundo.

Sequitur alia declaratio præinserta constit. Et alterius Pii V. de qua ibidem.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Consuevit Romanus Pontifex, &c.

Omittitur hæc narrativa, quia ipsa bulla est, quæ præcedit.

§. 1. Ad tollendam autem omnem ambiguitatem & difficultatem, quæ super istis nostris, vel Prædecessoris nostri verbis oriri inter Fratres prædictos possent, ita ut sequitur, quid circa prædicta servari velimus, expresse declaramus; Volentes omnes prædictos scilicet generalem Ministrum, Commissarium, & Procuratorem generales, vel Commissarium Curie non debere admitti in Definitorio Capituli generalis, in quo à suis officiis absoluntur, neque in eo loco vocem habere, dum is actus agitur, in quo Syndicatus sui rationem reddere tenentur, sic quod Minister generalis facta officii renunciatione atequam successor eligatur discedat ex Definitorio, ut eo absente liberè agere possint contra eum, si qui ex Provinciis accusare eum velint, & ulla habeant versus eum querelas; quo actu finito, in omnibus aliis actibus, & electionibus, & definitoriis adesse possit, & vocem habere, in quibus secundum generalia Ordinis prædicti statuta adesse, & vocem habere possit. Idem de Commissario generali respectivè servetur; sic quod Commissarii generalis post redditam Syndicatus sui rationem, in aliis actibus, & electionibus, vocem habere possit, in quibus secundum statuta generalia vocè habere Commissarii generales hætenus potuerunt. Provinciales quoque Ministri post redditam Syndicatus sui rationem, possint & debeant in Definitorio admitti, & vocem in reliquis actibus Capituli Provincialis electionibusque habere. Idem de Procuratore generali, Commissarioque Curie observetur, respectu Capituli generalis; quod scilicet sint de Definitorio, vocemque in omnibus actibus, & electionibus Capituli generalis habeant, præterquam dum is actus agitur, in quo Syndicatus sui rationem reddere tenentur. Neque enim æquum censuimus, ut iis qui negotiorum Ordinis habent experientiam & noticiam exclusis, per solos Generalem, & Definidores novos, rerum Religionis non ita

curatorè &c. Ad hoc vide aliam declarationem quæ mox subsequitur.

Et circa Curios & Theologie lectores.

Confirmatio bullæ Pauli IV. circa defecientes ab hæreticis &c.

Claufulæ de rogatoriæ.

Dat. P. An. 2. die 8. Sept.

Edicta An. D. 1579.

Declaratio dictorum ordinationum, circa vocem Prælatorum, & diffectum eorumdem à Definitorio.

Alia declaratio.

Declaratio
conf. Pii V.
circa procur-
rationem fa-
vorum extra
Relig.Clausula de-
rogatoria.

ignaros aut expertos, atque opus esset, de illis pronuntietur, statuatur, & definiatur. Declarantes etiam, non esse mentis nostrae aut voluntatis, generalem Ministerium, aut Commissarium generalem Ordinis, concessa illis per statuta generalia voce privare, aut à Capituli generalis Definitorio excludere, nisi tum, dum de particulari uniuscujusque eorum accusatione & correctione agitur, & deliberatur.

§. 2. Eam autem partem litterarum nostrarum qua dicimus, corrigimus etiam litterarum praedictarum eam partem in qua statuitur, (quod nec Commissarius generalis in Ministerium seu Procuratorem generales, nec Procurator generalis in Ministerium, vel Commissarium generales, nec Minister generalis in Procuratorem vel Commissarium generales, nisi post sexdecim annos eligi possunt, dantes & concedentes eis ad quos spectat facultatem Commissarium generalem in Ministerium seu Procuratorem generales, & è converso, etiam immediate postquam aliquo ex dictis officiis functi fuerint, etiam lapsu temporis praedicto non expectato, pro tempore eligendi) pariter mutandum decrevimus, ut omnino juxta Praedecessoris nostri decretum illi qui Ministri fuerint, Commissarii, aut Procuratores generales vel Curiae Commissarii, non possint nisi post sexdecim à sua ab officiis praedictis absolute, finitos annos in generales Ministros, Commissarios, aut Procuratores, vel Curiae Commissarios eligi aut assumi, quatenus dum in officiis praedictis fuerint, ablata illis omni ambitionis occasione, totos se ad ea, quae suarum partium esse dignoscuntur, sincere diligenterque agenda convertant, & intendant, omni ambitus cogitatione abjecta. Ministri autem Provinciales per duplum temporis officii Ministeriatus, postquam absoluti à tali officio fuerint, in Ministros Provinciales reeligii non possint. In reliquis litteras nostras praedictas firmas esse volumus atque in suo permanere robore.

§. 3. Ad ea autem, quae in praedictis Praedecessoris nostri litteris, contra recurrentes ad saecularium, & aliquarum extra dictum Ordinem personarum favores, ad aliquod officium in Ordine habendum statuta sunt, aliquid addendum censuimus. Nam dum aliquae extra dictum Ordinem personae pro aliquo Fratre officium quoddam, vel per se ipsos, vel per nuncios suos aut per litteras petebant, negare dicti Fratres consueverunt, se nullo modo dictas personas ad praedicta sollicitasse. Idem quoque dictae personae facere solite erant, negantes se à dictis fuisse Fratribus sollicitatas ad tale pro eis faciendum officium, sive ad eorum correctionem, qui contra praedictam Praedecessoris nostri ordinationem faciebant, procedi nullo modo poterat. Unde ut huic malo obviam convenienter eatur remedio, statuimus & decernimus, quod si Frater, pro quo saecularis aliquis, cujuscumque gradus aut conditionis fuerit, & quaecumque alia extra dictum Ordinem persona rogaverit, & petierit, verbo, litterisve, aut nunciis, seu alias quomodocumque per se vel alios, ut aliquod illi officium in Ordine praedicto detur, ipso facto activa, passivaque voce privatus sit, ad omniaque Ordinis officia inhabilis habeatur; nisi legitime consiterit, aliquem ex malicia rogatores hujusmodi subornasse, ut illi pro quo rogarent, aut scriberent, occasione hujusmodi statuti nocerent, & praedicerent, ut pro eo quod amicos suos extra Ordinem Fratres praedicti sollicitare consueverant, ad aliquod in Ordine officium eorum favore assequendum, majori untur de cetero diligentia, ad eos hortandos & rogandos, ne ullum pro ipsis officium petant, aut ad aliquod pro illis habendum officium suum interponant favorem.

§. 4. Non obstantibus praemissis, necnon omnibus illis, quae in litteris praedictis concessum fuerit non ob stare, ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae apud S. Petrum sub angulo Piscatoris, die 19. Aprilis 1579. Pontificatus nostri anno septimo.

Nova institutio Collegii Germanici in Urbe, pro Scholaribus nationis Germanicae, pie ibidem educandis & instruendis, cum assignatione annui redditus, privilegioque exemptionis à decimis & pedagiis.

Huic Collegio hic idem Pontifex, Protectores, ac Judices suarum causarum deputavit, ut infra in const. 10.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Postquam Deo placuit omnipotenti, qui ex summa misericordia, & bonitate sua, vocat ea quae non sunt, tamquam ea quae sunt, humilitatem nostram ad universalem Ecclesiae regimen vocare, ex eo tempore Nos, ejusdem adjuvante gratia, ea cogitare, & urgere non desistimus, quae, sicut officii nostri ratio postulat, ad divinum ubique cultum & Ecclesiasticam disciplinam restaurandam, & augendam, animarumque salutem procurandam maxime cognovimus pertinere. In primis vero animo recolentes amplissimam Germaniae Provinciam, quae perpetuis superioribus saeculis inter ceteras fortissimae ipsius nationis laudes atque virtutes, tanto synceræ fidei, & Christianae Religionis cultu eminere solebat, ut reliquis Christianae Reipublicae partibus non minori exemplo, quam ornamento, atque decori esset, nunc tot tantisque in ea insinatu Satanae excitatis de Religione dissidiis, ita miserandum in modum afflicta & deformata esse, ut nemo vel mediocri pietate praedictis sine lacrymis tam grave animarum iactura recordari, nedum intueri queat, eam praecipue curam suscepimus, ut quibuscumque possimus modis, nullis laboribus, nullisve sumptibus parentes, apta sanandis illius vulneribus remedia adhibeamus.

§. 1. Ac praeter alia, quae, & litteris scribendis, & Nunciis in quasdam Germaniae partes hac ipsa de causa mittendis, agere aggressi sumus, considerantes felic. recordation. Julium Papam III. praedecessorem nostrum, optimo quidem consilio Collegium in Urbe alendorum, & latinis, graecis, hebraicisve litteris, Logica, Physica, aliisque liberalibus disciplinis, & sacra demum Theologia, ac piis & Christiano homine dignis moribus instituendorum Germanicae nationis puerorum causa erexisse, ut ii non per se solum boni doctique evaderent, sed ad patriam remeantes, habendis concionibus, ac disputationibus, refellendis haeresibus, fideique orthodoxae veritati dilucidandae, ac praeterea exercendae animarum curae, aliisque piis, & sanctis operibus apti, & idonei essent, & quam maximum in Ecclesia Dei fructum ex se proferrent; tamen id ejus ceptum atque conatum, tum propter obitum ipsius, tum ob varias quae postea sequutae sunt temporum & rerum difficultates, parum processisse, nullumque incrementum suscepisse, quin potius quasi desitutum, ac praetermissum esse, quoniam nec redditus ullus, nec quicquam ferè certi attributum ei Collegio fuerat, & ob id exiguum admodum puerorum hujusmodi numerum praemagnitudine Provincia, & messis quae in ea est, hoc tempore ali & institui.

§. 2. Nos propterea ad opus hoc eidem nationi adeo utile & salutare, totis viribus promovendum, animam & mentem nostram convertimus. Quocirca ad Dei omnipotentis laudem, sanctaeque ipsius Ecclesiae incrementum, praecipuamque Germanicae nationis salutem & commodum, Motu proprio, & ex certa scientia nostra, auctoritate Apostolica Collegium praedictum Germanicum appellandum renovantes, illud rursus de integro in alma Ur-

XIV.

Edita An. D.
1573. & 1574.

Causa conf.

Jul. III. erectum in Urbe Colleg. Germanicum ad alendum, & instruendum pueros nation. Germanicae, sed quasi destitutum remanent.

Hic igitur Pontifex de novo illud erigit.

be nostra erigimus & instituiamus; Volumusque in eo post hæc non minus quam centum pueros ex uniuersa Germania, Septentrionalibusque illi adjacentibus regionibus colligendos, dictis scientiis ac disciplinis, necnon sacris Canonibus institui atque erudiri.

§. 3. Ad quorum sustentationem redditus annuos decem milium aureorum ipsi Collegii attribuiamus, quos ex Cam. Apost. pecuniis quotannis volumus numerari, distributa in menses singulos pro rata solutione, quoad de totidem reddituum summa in bonis stabilibus eidem Collegio à nobis fuerit prouisum. Ceterum cum Societatis presbyterorum JESU, in hoc educandorum institutorumque puerorum munere diligentia, fides, integritas, & in aliis huiusmodi Collegiis, & in hoc ipso factis cognita sit, atque perspecta, volumus idem Collegium atque scholares sub ipsorum, sicut adhuc fuit, regimine, institutione, doctrina atque obedientia esse.

§. 4. Necnon Collegium ipsum illiusque Rectores, Gubernatores, Magistros, Præceptores, atque Scholares pro tempore in eo existentes, eorumque bona, mobilia & immobilia cuiuscumque qualitatibus & quantitatibus, in dicta Urbe vel extra, ac alias ubique locorum consistentia, ab omni iurisdictione, correctione, visitatione, dominio, superioritate, & potestate pro tempore existentis Senatoris, & Consulum, ac Conservatorum, & Reformatorum dictæ Urbis, necnon Reitoris studii generalis; aliorumque quorumcumque Iudicum & Officialium in ipsa Urbe, vel alias ubilibet constitutorum.

§. 5. Illaque ac in propriis eorum rebus & bonis cum eis contrahentes, à solutione & exactione quorumcumque pedaggi, gabellæ, bollettini, decimarum, & cuiusvis alterius tam ordinarii quam extraordinarii oneris, ex quacumque causa impostorum & imponendorum, eximimus & prorsus liberamus, ac sub beati Petri, & Sedis Apostolicæ, atque nostra protectione suscipimus, Nobisque, & dictæ Sedis immediatè subijcimus, ac liberos, immunes & exemptos declaramus.

§. 6. Atque insuper eidem Collegio, & Scholaribus, Rectoribus, & Gubernatoribus, ut omnibus & quibuscumque privilegiis, exemptionibus, libertatibus, facultatibus & indultis, quibus studium generale Alimæ Urbis, & illius Rector, Doctoresque, & in eo legentes quouis modo utuntur, potiuntur, & gaudent, ac uti, potiri, & gaudere poterunt quomodolibet in futurum, non solum ad eorum instar, sed æqualiter & pariter uti, potiri, & gaudere valeant, in omnibus & per omnia concedimus & indulgemus, illaque eis communicamus.

§. 7. Necnon Senatori, Consulibus, Conservatoribus, Reformatoribus, Rectorique, & aliis Iudicibus, Officialibus, & personis prædictis, ac pro tempore existentis S. R. E. Camerario, Præsidentibusque, & Clericis Camere Apostolicæ, ac quibusvis Commissariis ad exactionem onerum praefatorum pro tempore deputatis, ne quarumcumque litterarum eis sub quibuscumque tenoribus & formis concessarum prætextu, Collegium, Scholares, Rectores, & Gubernatores prædictos, seu eorum aliquem in præmissis quomodolibet molestant, seu molestari permittant, districtius inhibemus.

§. 8. Et præterea Regentibus, ac Superioribus dicti Collegii, cum assentientia tamen Cardinalium Protectorum qui pro tempore constituti fuerint, seu aliquis eorum, vel de ipsorum consilio, & expresso consensu, illos quos in dicto Collegio, & alibi per debitum tempus studuisse, ac scientia, & moribus idoneos esse repererint, in prædictis facultatibus ad Baccalaureatus, Licentiaturs, Doctoratusque, & Magisterii gradus, servata forma Concilii Viennensis juxta Universitatis ejusdem Urbis consuetudinem, seu alias promovendi, & ipsorum gradum solita insignia eis exhibendi, Quodque in fa-

cultatibus supradictis sic promoti, illas legere & interpretari, ac de eis disputare, & quoscumque gradui seu gradibus huiusmodi convenientes actus exercere, ac omnibus & singulis privilegiis, gratiis, favoribus, prærogativis & indultis, quibus alii in prædicta seu aliis Universitatibus, & alibi juxta illius, & aliarum Universitatum huiusmodi constitutiones & mores, ad gradus prædictos promoti, de jure vel consuetudine utuntur, potiuntur, & gaudent, ac uti, potiri, & gaudere poterunt quodolibet in futurum, uti, potiri, & gaudere possint, ac debeant, perinde ac si gradus prædictos in ipsa Universitate, juxta consuetudines & mores prædictos suscepissent, concedendi, & indulgendi, liberam eadem auctoritate damus facultatem & potestatem.

§. 9. Præterea, ut ejusdem Collegii conservationi, bonoque regimini, tam in his quæ ad scholarium institutionem & disciplinam, quam quæ ad victum, vestitum, aliaque huiusmodi necessaria pertinent, opportunus consulatur, & promptum eis paratumque auxilium sit, Venerabiles fratres nostros Joannem Moronum Oslien. & Alexandrum Farnesium Prænestinen. Episcopos, ac dilectos filios Marcum S. Georgii ab Altaemps, Ptolemæum Comen. S. Agathæ, ac Ludovicum Madruccium S. Honuphrii titulum S. R. E. presbyteros Cardinales, ejusdem Collegii Protectores & defensores constituimus, & deputamus, quorum consilio, & ope, tam supradicta, quam quæcumque alia ad eisdem in Collegio admittendos scholares, retinendosque, atque de beneficiis Ecclesiasticis providendos spectantia agantur, statuantur, & ordinentur. Dantes eisdem, & pro tempore existentibus Protectoribus, plenam & liberam facultatem, & auctoritatem pro salubri directione & conservatione dicti Collegii, illiusque bonorum & rerum, ac iurium tam temporalium quam spiritualium, Oeconomos, Advocatos, Procuratores, aliosque Ministros, & Officiales in eo deputandi, amoveadique, & alios eorum loco sufficiens ordinationes præterea, & statuta (æqua tamen, & honesta, sacrisque Canonibus, & Conc. Trident. non repugnantia) faciendi, & edendi, eaque cum opus visum fuerit, revocandi, immutandi, corrigendi, aliaque de novo condendi, quæ postquam facta, edita, revocata, immutata, & correctæ fuerint, perinde haberi volumus, ac si auctoritate Apostolica approbata & confirmata essent, illaque ab omnibus Rectoribus, Magistris, Scholaribus, aliisque personis in Collegio servantibus & ministrantibus inviolabiliter observari, ac juxta eorumdem dispositionem à quibusvis Iudicibus, sublata quavis aliter iudicandi facultate, judicari & definiri debere: & si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, irritum & inane decernimus.

§. 10. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, & dictæ Urbis juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis eisdem Senatori, Consulibus, Conservatoribus, Reformatoribus, Camerario, Universitatibus, ac earum Collegiis, Rectoribus, & personis, aliisque prædictis, necnon prædicti Urbi, & Populo Romano sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibusvis clausulis & decretis, etiam iteratis vicibus concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, illorum tenores præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque,

§. 11. Ut verò etiam temporalibus commodis spiritualia munera addamus, quibus fidelium devotio, & merita crescere magis, & augeri possint, de omnipotentis Dei misericordia, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus auctoritate, nostraque consensu, omnibus & singulis Scholaribus, qui

Deputatque Collegii Protectores pro ejus regimine.

Contrariis derogat.

Indulgentias Scholaribus dicti Collegii largiuntur.

ANNO 404
1573.

GREGORIUS DECIMUS-TERTIUS.

ANNO
1574.

Transumptis
credi jubet.

Dat. P. An. 2.
die 8. Aug.

Edita An. D.
1574.

Exordium.

Amplior
exemptio à
datiis & ga-
bellis.

Inhibitiōe
Collegium
desuper mo-
leſtetur.

in id Collegium recepti fuerint, in ipſo ingreſſu, ac deinde in exitu, ſi quidem deſeſſi & contriti ſa-
cræ communionem devotè perceperint, atque
etiam ſi eodem in Collegio decedere eos ab huma-
nis contigerit, in mortis articulo plenariam om-
nium peccatorum ſuorum Indulgentiam & remiſſio-
nem concedimus & elargimur.

§. 11. Volumus inſuper, ut Præſentium tranſum-
ptis, manu Notarii publici ſubſcriptis, & ſigillo
communi dicti Collegii, aut alicujus Curie Eccle-
ſiaſticae, ſeu perſonæ in dignitate Eccleſiaſtica con-
ſtitutæ munitis, eadem prorsus fides in iudicio &
extra, ac alias ubicumque opus fuerit, habeatur,
quæ haberetur eiſdem Præſentibus, ſi exhibitæ fo-
rent vel oſtenſæ.

Nulli ergo omnino hominum &c.

Datum Romæ apud S. Marcum, anno Incarna-
tionis Dominicæ 1573, octavo Id. Auguſti, Ponti-
ficatus noſtri Anno 2.

Sequitur amplior conceſſio exemptionis à Datiis &c.

GREGORIUS EPISCOPUS,

*Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.*

UT ceteri de Repub. benemeriti immunitate in-
terdum juvandi ſunt, ita maximè eorum ratio
hac in re habenda eſt, quos ad fidei catholicæ in-
crementum in ſinu noſtro confovemus.

§. 1. Quocirca ut Collegium Germanicum pri-
dem à nobis in Urbe noſtra de integro inſtitutum,
in quo non minus quàm centum pueros ex uni-
verſa Germania, ſeptentrionalibuſque illi ad jace-
ntibus regionibus colligendos, liberalibus ſcientiis
ac diſciplinis, necnon ſacris Canonibus & Theolo-
gia inſtitui atque erudiri volumus, & ad illorum
ſuſtentionem redditus annuos decem millium au-
reorum ipſa Collegio perpetuò attribuoimus, ſpe-
ciali privilegio proſequi volentes, Motu proprio
deque noſtra mera liberalitate, Collegium præſa-
tum ejuſque res & bona quæcumque, præſentia &
futura, ac ipſius Collegii Scholares, & alios in eo
degentes ab omnibus & ſingulis Portarum, Molen-
dinorum Fariorum trium pro centenariò, ac quatuor
juliorum pro quolibet vegete vini ſolvi ſolitorum,
aliſque datiis, veſtigialibus, angariis, ac terræ,
marique gabbellis & dohanis, ordinariis & extraor-
dinariis hæcenus quomodolibet impoſitis, & in
poſterum quandocumque; quavis occasione vel cauſa
etiam de neceſſitate exprimenda imponendis, etiam
ad inſtar exemptionis dilectorum filiorum Camere
Apoſtolice Clericorum, etiam ratione Ripæ & Ri-
pettæ dohanæ terræ, ac etiam Graſciæ nuncupatæ
Urbi prædictæ, necnon carniū, vinorum, pan-
norum lini, lanæ, ſerici, & quarumcumque aliarum
rerum ad humanum victum & veſtitum neceſſaria-
rum, ex toto Statu noſtro Eccleſiaſtico & quibuſ-
cumque aliis locis extra dictum Statum conſtitenti-
bus, ad Collegium præſatum, tam per terram quàm
per mare & aquam dulcem, ac alias quomodolibet
conducendorum, ac etiam jam ad dictam Urbem
quomodolibet conductorum, ac in ea exiſtentium,
& pro eodem Collegio in magna ſeu parva quanti-
tate tam in barchis, quàm in magazenis, & alias
ubilibet emendorum, auctoritate Apoſtolica tenore
Præſentium perpetuò eximimus & liberamus, libe-
raque, immunita & exempta eſſe volumus.

§. 2. Diſtrictius inhibentes omnibus & ſingulis
tam Urbis, quàm ſtatus prædictorum gabellarum,
dationum, & veſtigialium eorundem Datariis,
Conducitoribus, ſeu Appellatoribus; ceterisque ad
quos ſpectat & ſpectare poterit quomodolibet in
futurum, ne Collegium præſatum, illiſque Scho-
lares & perſonas, vel pro eis Agentes, & eorum
bona quæcumque, aut eorum quemlibet directè
vel indirectè, quovis quæſito colore vel ingenio

moleſtare, impedire, vel perturbare audeant ſan-
 præſtant. Quinimò eis in præmiſſis efficacis de-
ſenſionis præſidio aſſiſtentes, faciant ipſos, & eo-
rum quemlibet immunitate, exemptione, & aliis
præmiſſis pacificè frui, & gaudere. Ac decernentes
irritum & inane ſi ſecus ſuper hiſ & quoquam qua-
vis auctoritate ſcienter, vel ignorantèr contigerit
attentari.

§. 3. Non obſtantibus præmiſſis, ac conſtitutio-
nibus & ordinationibus Apoſtolicis, necnon dictæ
Urbi & dohanarum prædictarum, ac quorumcum-
que Tribunalium & Curiarum juramento, confir-
matione Apoſtolica, vel quavis firmitate alia ro-
boratis, ſtatutis & conſuetudinibus; privilegiis
quoque, indultis & litteris Apoſtolicis eiſdem Tri-
bunalibus & Curis, illorumque Iudicibus necnon
Appaltatoribus & Dohaneris prædictis, ac quibuſ-
cumque aliis perſonis ſub quibuſcumque tenoribus
& formis, ac cum quibuſvis etiam derogatoria-
rum derogatoriis, aliſque efficacioribus & inſoli-
tis clauſulis, necnon irritantibus, & aliis decretis
in genere vel in ſpecie, etiam Motu & ſcientia ſimi-
libus, ac aliàs quomodolibet etiam iteratis vici-
bus conceſſis, approbatis, & innovatis. Quibus
omnibus etiam ſi pro ſufficienti eorum derogatione
de illis, eorumque totis tenoribus ſpecialis, ſpecifi-
ca & expreſſa, individua, ac de verbo ad verbum
nihil penitus omiſſo, & forma in illis tradita obſer-
vata, inſerti forent, Præſentibus pro ſufficienter
expreſſis habentes, illis aliàs in ſuo robore perman-
ſuris, hæc vice dumtaxat ſpecialiter & expreſſe de-
rogamus; ceteriſque contrariis quibuſcumque.

§. 4. Volumus autem quod Præſentium tranſum-
ptis etiam impreſſis, manu Notarii publici ejuſdem
Collegii Secretarii ſubſcriptis, & ſigillo communi
ejuſdem Collegii munitis, eadem prorsus fides in
iudicio & extra, ac aliàs ubicumque opus fuerit
adhibeatur, quæ adhiberetur eiſdem Præſentibus
ſi forent exhibitæ vel oſtenſæ.

Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud S. Marcum, anno Incarna-
tionis Dominicæ 1574. Idibus Julii, Pontificatus
noſtri anno tertio.

Forma obſervanda in eleſtione Abbatifaſarum Mo-
naſteriorum Monialium Congregationis Caſſi-
nenſis Ord. S. Benedicth.

*De atate & qualitate Abbatifaſarum, habes Conc. Trid.
ſeſſ. 15. cap. 7. de Regularib. Et de iſta Congrega-
tione vide etiam conſt. ſubſeq. cum ibi indicandis.*

Quo verò ad facultates Ordinariorum in eleſtione
Abbatifaſarum Monaſteriorum, quæ Regularibus
ſubjiciuntur, habes Greg. XV. conſt. 18. Inſcru-
tabili. inſ. tom. 3.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

EX noſtri Paſtoralis officii debito ad ea liberè
attendimus, per quæ Monaſteriorum quorum-
libet, præſertim verò Sanctimonialium, quæ relictis
hujus mundi illecebris, ſeſe earum ſponſo JESU
CHRISTO Salvatori, & Domino noſtro perpe-
tuò manciparunt, proſpero ſtatu, & felici direc-
tioni conſulunt; quod poſſimum animi noſtri
voto ſucceſſurum conſpicitur, ſi in Abbatifaſarum
ipſorum Monaſteriorum Monialium dum pro tem-
pore vacant eleſtionibus omnis dilatio, & tergi-
verſatio, quantum fieri poſſit, removeatur, & ad
eleſtionem ipſam quanto citius procedatur, ne
alias Monaſteria ipſa diutina vacationi Abbatifa-
ſarum ſentiant incommoda.

§. 1. Cùm itaque, ſicut accepimus, in eleſtioni-
bus Abbatifaſarum Monaſteriorum Monialium ſub
cura, regimine, & gubernio Congregationis Caſſi-
nenſis,

Derogatio
contrario-
rum.

Fides tran-
ſumptorum.

Dat. P. An. 3.
die 15. Julii.

XV.

Edita An. D.
1574.

Exordium.

Cauſe hujus
conſtitut.

nensis aliàs S. Justine de Padua Ordinis S. Benedicti existentium, dum eorum vacatio pro tempore occurrit, duæ partes ex tribus partibus vocum, seu votorum, vel suffragiorum Monialium ipsorum Monasteriorum requirantur, & ea de causa sæpenter multæ difficultates, & discrepantiæ, ac scandala oriantur, priusquam vota, seu suffragia unita & concordantia usque ad dictum numerum requisitum inveniri, & haberi possint.

§. 2. Nos in præmissis opportunum remedium adhibere volentes, Motu proprio, non ad alicujus nobis super hoc factæ petitionis instantiam, sed ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, quod ex nunc deinceps perpetuis futuris temporibus, dilecti filii, nunc & pro tempore existentes dictæ Congregationis Visitatores, ac Abbates, seu Prelati respectivè, quibus Moniales ipsorum recommendatæ, seu sub quorum regimine, gubernio, & cura, ut præfatur, existunt, toties quoties faciendam electionem Abbatissarum hujusmodi pro tempore casus evenierit, in eventum quod dictæ Moniales prædictorum Monasteriorum in electionibus ipsarum Abbatissarum faciendis per duos scrutinia non convenerint, possint, valeant, & debeant ipsorum Monasteriorum Monialibus proponere duas vel tres ejusdem Monasterii Moniales, quas ad regimen & gubernium aptiores esse judicaverint, graves in hoc eorum conscientiam, & illa ex dictis duabus vel tribus Monialibus sic propositis, quæ plura Monialium vota sive suffragia in sui favorem habuerit, sit, & esse censetur legitime & canonicè electa in Abbatissam ipsius Monasterii, & tamquam talis in Abbatissam Monasterii hujusmodi, per eos ad quos spectat, & spectabit, omnino institui seu confirmari debeat: neque de cetero electiones dictarum Abbatissarum, aliàs quam ut præfatur, & per Præsentes disponitur, fieri possint, nec debeant, Apostolica auctoritate tenore Præsentium perpetuò statuimus & ordinamus.

§. 3. Necnon etiam Visitatoribus, & Abbatibus, seu Prelatis præfatis, ut duas, vel tres Moniales, modo & forma præmissis, ac ad effectum prædictum proponere, necnon Moniales dictorum Monasteriorum ad easdem duas vel tres Moniales sic pro tempore eis propositas acceptandum, & unam ex ipsis duabus vel tribus, ut præfatur eligendum, aliaque præmissa omnia & singula, necnon per Præsentes disposita observandum, etiam sub excommunicationis, suspensionis, & interdicti, antiquæ Ecclesiasticæ sententiis, censuris, & penis etiam sæpius aggravandis, ceterisque juris & facti remediis opportunis, invocato etiam ad hoc si opus fuerit auxilio brachii secularis, etiam quacumque appellatione, recursum, & reclamazione postpositis penitus, & semotis, auctoritate nostra cogere, & compellere, aliaque in præmissis, & infrascriptis, ac circa ea necessaria, seu quomodolibet opportuna facere & exercere liberè & licitè possint, & valeant, auctoritate, & tenore prædictis etiam perpetuò concedimus, & indulgemus, ac plenam, liberam, amplam & omnimodam desuper licentiam, potestatem, facultatem, & auctoritatem impartimur, necnon etiam dictis Monialibus ipsorum Monasteriorum, ut Præsentes nostras, ac Visitatoribus, Abbatibus, & Prelatis prædictis in præmissis omnino pareant, in virtute sanctæ obedientiæ, & sub indagationis nostræ, necnon aliis penis districtè præcipiendo mandamus.

§. 4. Præsentes quoque de subreptionis, vel obreptionis, seu nullitatis vitio, aut intentionis nostræ, vel quovis alio defectu notari, vel impugnari, aut aliàs quomodolibet infringi, vel retractari, nullatenus unquam posse, sed eas semper validas, & efficaces existere, suisque plenariis effectibus sortiri & obtinere, necnon ab omnibus quos præmissa concernunt, & in futurum concernent, perpetuò inviolabiliter & ad unguem observari, sique in præmissis ab omnibus censi, ac ita per

quoscumque Judices & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, sublata eis quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, iudicari & definiri debere, ac quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, irritum & inane decernimus & declaramus.

§. 5. Non obstantibus, fel. rec. Bonifacii Papæ VIII. prædecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, dummodo quis ultra tres dietas vigore Præsentium ad iudicium non trahatur, & quibuscvis aliis Apostolicis, provincialibusque & synodalibus constitutionibus, & ordinationibus, necnon Monasteriorum, & Ordinum prædictorum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus; privilegiis quoque, indulgitiis & litteris Apostolicis, illis, illorumque Superioribus, & personis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & efficacissimis, & insolitis clausulis, & decretis, in genere vel in specie, ac aliàs in contrarium quomodolibet concessis, & innovatis. Quibus omnibus etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, ac expressa, & individua mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum tenores, ac si de verbo ad verbum infererentur, Præsentibus pro expressis habentes, illis aliàs in suo robore permanentis, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus; aut si aliquibus, communiter vel divisim ab Apostolica sit Sede indultum, quòd interdicti, suspensi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris, die 16. Aprilis 1574. Pontificatus nostri anno secundo.

Innovatio constitutionum Eugenii IV. circa potestatem Definitorum, & Visitorum Congregationis Cassinensis, aliàs S. Justine Monachorum Ordinis S. Benedicti; & prohibitio Ambitus, necnon appellationis à Prelatis ejusdem Congregat.

Quæ respiciunt istam Congregationem notavi supra ad consil. 1. Julii II. fol. 464. in Tomo I.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Nihil in unaquaque religiosa Familia, in qua obedientia firmissimè jactis fundamentis, plerique fideles in claustris Altissimo famulari student, æquè arbitramur esse utile, quàm supremam in eisdem auctoritatem gerentibus omni contentione exclusam, ea qua decet reverentia, universos parere, eorumque dictis audientes esse, necnon à regularis observantiæ Professorum pectoribus, bonorum assequendorum nimiam cupiditatem exulare.

§. 1. Utque hac divina assistente gratia, maxime in Congregatione Monachorum de Observantia Congregationis Cassinensis, aliàs S. Justine de Padua Ordinis S. Benedicti, quæ vitæ sanctitate claruit, ex sententia nostra succedant, antiquas constitutiones approbandas, & in illarum transgressores duriores penas proponendas, & aliàs opportune providendum esse censemus, prout in Domino conspiciamus expedire.

§. 2. Accepimus enim, quod licet aliàs fel. rec. Eugenius Papa IV. prædecessor noster, sub Dat. Romæ apud S. Petrum, anno Domini 1432. nono Kalen. Decemb. Pontificatus sui anno 2. inter alia voluerit, in Capitulo generali ejusdem Congreg. singulis annis celebrando novem Definidores ex

Clausula derogatoria omnium contrariorum.

Dat. P. An. 2. die 16. April.

XVI.

Edita An. D. 1574.

In Religione nihil utilius obedientia erga Superiores.

Hæc ut viget in Congreg. Cassinensi hic Pont. exp. tat.

Eugen. IV. decrevit Definitoribus, gerentibus hanc obedientiam præstari, & ad eos eisdem & defici.

Monachis

Forma eligendi Abbatissas Monialium regimini Congreg. Cassinensis subiectarum.

Scias autem vota secretæ esse debere & Conc. Trid. sess. 25. de Regularibus cap. 6.

Prælatorum dictæ Congreg. hujusmodi Abbatissarum electionem.

Clausula præservativa hujus consilii.

tutionem Abbatum spectare, ut sup. in ejus constit. 5. sup. f. l. 322. in Tomo I.

Voluitque servari etiam si Abbatz vacarent apud Sedem Apost. sed ejus constit. non possit.

Hec autem decreta non observantur.

Hic idem Pont. ex decreto decret. nit.

Monachis dictæ Congregationis eligi, qui vocem in Capitulo haberent, sicque electos totum Capitulum præfatum representare, eorumdemque Definitorum statutis, constitutionibus, ordinationibus, definitionibus, & correctionibus, singulos Congregationis ejusdem Monachos, cujuscumque dignitatis, status, gradus, five conditionis existent, in omnibus efficaciter parere, ac hujusmodi Definidores de Monasteriis, & locis, illorumque bonis (prout viderent expedire) disponere. Necnon ex Monachis tunc præsentibus, & futuris, quos ad id idoneos judicassent, in Abbates pro tempore vacantium Monasteriorum, ac Prioratum hujusmodi, alias juxta dictæ Congregationis constitutiones, ordinationes, & statuta eligere, five nominare. Necnon ad eorum beneplacitum taliter electos absque aliqua etiam causæ cognitione, à regimine etiam dictorum Monasteriorum, & Prioratum, quibus tunc præfuerint, & quæ tunc propterea vacare censerentur, absolvere, & amovere posse.

§. 3. Idemque per alias litteras Datas Florentiæ, Pontificatus sui anno quarto, decreverit, dum occurrente vacatione Monasteriorum & Prioratum dictæ Congregationis, etiam apud Sedem Apostolicam vacantium, qua illis ratione providendum esset ordinavit, prout in singulis ejusdem Prædecessoris litteris plenius continetur.

§. 4. Nihilominus nonnullos dictæ Congregationis Monachos, ejus quam Deo voverunt obedientie planè obitos, præfatis Superioribus in electione, & amotione Abbatum, & aliorum ad eorumdem nutum, & beneplacitum Monasteriis & aliis officiis absolvendis, & liberandis, aut ad illa eligendis, & nominandis, adversari, & contradicere, & cum illis ad contentiones devenire, alios verò, ne contra eos veluti inobedientes, vel alia etiam ex causa, aut ex quantumvis gravi crimine & excessu procedi possit, contra ejusdem Congregationis statuta & ordinationes, varias oppositiones, & subterfugia, aut alia impedimenta afferre, vel interponere; necnon absque eorumdem Superiorum licentia, in his quæ ad morum correctionem & regimen, administrationemque Congregationis ejusdem pertinent, Jurisperitos & alios consulere temerè aulos fuisse, & nunc præsumere; quosdam etiam professionis & regulæ quam sub humilitatis habitu professi sunt immemores reperiri, qui sic ambitione dignitatum, & officiorum Ecclesiasticorum, in dicta Congregatione consequendorum, quo facilius de Congregationis rebus, & personis ad eorum libitum disponant, se efferrè patiuntur, vel ad Ecclesiasticorum & sæcularium Principum auxilia, vel occultè vel palam recurrant, & à S.R.E. Cardinalibus, aliisque Prælati commendatitias litteras propterea expectant, & novi aliquid semper, ut optati compotes fiant, in eorum animæ perniciem parando, ac moliendo, ejusdem Congregationem quietem cum animarum illorum periculo non modico perturbant.

§. 5. Nos igitur præmissis occurrere, ac ejusdem Congregat. Monachorum honori & quieti, quos in visceribus gerimus caritatis; necnon ad deterrenda maleficia gravioribus etiam penis propositis, consulere cupientes, ac dictarum Prædecessoris litterarum seriem, ac si de verbo à verbis infererentur, Præsentibus pro expressis habentes. Motu proprio, & ex certa nostra scientia, singulas Prædecessoris præfati litteras, ac in parte qua illæ auctoritatem illorum, qui pro tempore regendæ Congregationi deputati erunt, respiciunt quod ad eorum nutum & beneplacitum, Abbates & alios quovis nomine nuncupatos dictæ Congregationis Prælatos, vel Officiales eligere, & electos similiter absque aliqua causæ cognitione, servatis aliis ipsius Congregationis constitutionibus, ab Officio amovere & absolvere possint, Apostolica auctoritate tenore Præsentium approbamus & confirmamus, & quatenus etiam opus sit, eandem quoad præmissa

dumtaxat innovamus; quodque contra eos, qui in præmissis eisdem Superioribus, in electionibus vel amotionibus hujusmodi contradicere, vel se opponere, aut cum illis contendere præsumperint, per penam privationis Officiorum quæ obtinuerint, ac personæ coercionem & carcerationem animadvertatur, statumimus.

§. 6. Cumque idem Prædecessor districtius inhibuerit, ne cui Prælatorum vel Monachorum dictæ Congregationis, ab institutis, ordinationibus, correctionibus & mandatis Capituli generalis, five Præfidentis, aut Visitatorum vel Rectorem ejusdem Congreg. ad quemcumque, etiam Sedem Apostolicam, nisi de speciali indulto Summi Pontificis liceret appellare, quancumque appellationem, si aliquam quandocumque interponi contingeret, cum inde secutis irritam decernendo. Si autem contra aliquem Prælaturam vel Monachum dictæ Congregationis civiliter aut criminaliter ageretur, secundum statuta & consuetudines Congreg. præfate juris communis apicibus, dilationibus, terminis & litium anfractibus omittis procedi debere mandaverit, ejusdem Prædecessoris exemplo adducti, quod quandocumque contra Monachos iudicium ex quavis causa institui contingerit, summarè, simpliciter, & de plano, ac sola facti veritate inspecta, necnon omni & quacumque appellatione remota agi.

§. 7. Appellantes verò, aut de nullitatibus sententiarum, processuum, & aliorum quorumcumque contra se decretorum vel actuum dicentes, vel aliquid aliud impedimentum interponentes, illis non obstantibus, privatione officiorum, & carceris penis itidem affici, & ad ulteriora in causis, quas pro tempore agitari contingeret, privationisq., carceris, & aliarum penarum propterea inflictarum executionem procedi posse volumus, eandemque ad eos etiam Monachos, qui à Jurisperitis, aut aliis quibuscvis personis extra dictam Congregationem, absq.; eorum Superiorum licentia, in his quæ ad obedientiam, aut correctionem, ejusdemve Congregationis regimen pertinebunt, consilium capient extendimus.

§. 8. Ac omnes & singulos Monachos Congregationis præfate cujuscumque ætatis, gradus, conditionis, præeminentiæ, & literaturæ existent, & quancumque dignitate præfulgentes, qui ad Prælaturas, & alia officia dictæ Congregationis affluenda intenti, ad Principum & Prælatorum de gremio dictæ Congregationis non existentium favores recurrerint, vel etiam passis, pollicitationibus, aliisque viis directè vel indirectè, palam vel occultè, ad Dignitates seu Officia in Congregatione præfata obtinenda aspiraverint, vel aliis minus legitimis & honestis rationibus ea obtinere quaesiverint, illorumque complices & fautores, ad quancumque Prælaturas, Dignitates, & officia spiritualia vel temporalia, & præsertim in ipsa Congregatione, obtenta & obtinenda, perpetuò inhabiles declaramus, ac obtentis Prælatibus, dignitatibus, administrationibus vel officiis, eo ipso privamus, ac privatus voce tum activa tum passiva carere decernimus, & declaramus.

§. 9. Et in virtute sanctæ obedientiæ, ac sub excommunicationis latæ sententiæ omnibus dictæ Congregat. Monachis qui pro tempore regimini dictæ Congregationis deputati erunt, præcipientes, districtèque mandantes, ne aliquos precibus, litteris, vel favoribus Principum vel Prælatorum, aut aliorum extra dictum gremium existentium adducti, ad cujusvis generis Prælaturas, Dignitates, Officia, administrationes & gradus promovere præsumant; immo promovendorum meritis & virtutibus tantum inspectis, quod Dei causam agant memores sint, quo magis puro & sincero corde, nulla privata aut mundana affectione commoti, in electionum negotio procedant. Decernentes electiones & promotiones ad Monasteria, sic litteris, aut aliis favoribus Principum & Prælatorum, vel aliorum extra gremium, ut præfatur, existentium, eorumque precibus aut pollicitationibus, injustè & indebite

Judicia contra Monachos summarè, & appellatione remota egi &c. debere declarat.

Appellantes coerceri mandat, cum eorum Consul-toribus.

Ambientibus & eorum complicibus penas imponit.

Promotiones canonicè fieri jubet.

extortas, nullas, invalidasque esse, & adversus eos qui his minus legitimis rationibus ad regenda Monasteria vel Prioratus, aut alia officia se eligi, aut assumi obtulerint, per eisdem Congregationis Superiores quodcumque procedi, & rei veritate cognita, condignis poenis tamquam publicæ dictæ Congregationis quietis perturbatores affici posse & debere. Et ita per quoscumque Iudices & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Cardinales, sublata eis & eorum cullibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi auctoritate & facultate, iudicari & definiri debere; irritum quoque & inane, si secus super his à quocumque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Contrariis
rogat.

§. 10. Non obstantibus quibuscumque Apostolicis, ac in provincialibus & synodalibus Conciliis editis, generalibus vel specialibus constitutionibus & ordinationibus, ac didicimus Congregari, & Ordinibus, etiam iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis, illis & illorum Superioribus, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis, concessis & confirmatis. Quibus omnibus etiam si pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus specialibus, specificis, expressa & individua, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia expressio, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum tenores, ac si de verbo ad verbum infererentur, Præsentibus pro expressis & insertis habentes, illis aliis in suo robore permanens, hac vice, Motu, & scientia similibus latissime derogamus, ac derogatum esse volumus, contrariis quibuscumque. Aut si præfatis Congregationibus & Monachis, vel quibuscumque aliis communiter vel divisim, ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

transumptis
edi iubet.

§. 11. Ac ut harum litterarum notitia ad omnes dictæ Congreg. Monachos facilius deveniat, volumus illas in generali dictæ Congreg. Capitulo singulo quoque anno publicè legi, illasque in dicto Capitulo lectas fidei arcere, ac si legitime unicusque iustitiam fuissent, illarumque exemplis, vel impressis, manu Scribæ dicti Capituli, vel Notarii publici subscriptis, & sigillo Præsidentis ipsius Congreg. vel alterius in dignitate Ecclesiastica constituti obfignatis, eandem prorsus fidem haberi, quæ Præfentibus haberetur si eadem exhiberentur.

at. P. An.2.
e 17. April.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris, die 17. Aprilis, 1574. Pontificatus nostri anno secundo.

XVII.

Ordinationes circa electionem Præpositi generalis, & aliorum Prælatorum Congreg. Monachorum Eremitarum S. Hieronymi de Observantia, eorumque studia, & accessus ad Urbem.

Ad hac vide quæ immutavit hic idem Pont. in sua cons. 90. Ea quæ ubi notabo.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad futuram rei memoriam.

Exordium.

PRO nostri muneris officio & caritate paterna, qua omnes religiosorum Ordines prosequimur, quocumque ad illorum statum, salutareque tranquillitatem pertinere arbitramur, ea adjuvante Domino instituire nitimur, atque studemus.

Congreg.
Monachorum
S. Hieronymi
& eius insti-
to habet

§. 1. Inter eos autem ad Congregationem Monachorum Eremitarum S. Hieronymi respeximus, quæ paucorum numero continetur, utpote cujus Monachi & Fratres ad centum sexaginta vix ascen-

dunt, & ex antiquis constitutionibus & consuetudinibus Priores habet annales; necnon in eodem Monasterio in quo Prioratus officium aliquem gerere contigerit, vel aliis ejusdem Congregationis Monasteriis, possunt singulis annis usque ad tres annos tantum, in Priores de novo eligi, ita tamen ut triennio elapso quo rursus in Priores eligi valeant, ab huiusmodi officio saltem per annum vacare debeant.

§. 2. Hæc autem assidua mutatio, plurimum desideria ita excitat, ut nonnulli professionis quam in habitu sinceritatis & humilitatis Deo voverunt, immemores, ambiendis illius Dignitatibus & Officiis assidue incumbant, quo magis pro eorum libito de rebus & bonis ad eandem Congregationem pertinentibus dispendere possint; effrenata verò hac cupiditate sic nonnulli efferti patiuntur, ut Principum secularium & aliorum auxilia & favores plerumque occultè, quandoque etiam palam expetant, illosque implorare non vereantur, diversa super his pacta ineundo, seditiones excitando, præfationes quas præfatas vocant exercendo, in maximum Christifidelium scandalum, ac publicam dictæ Congregationis perturbationem, quæ ad labefandum Religiosorum statum apertissime tendunt.

§. 3. Nos igitur in commodis per novas editas ordinationes occurrendum esse censentes, Motu proprio, & ex certa scientia, ac de Apostolica potestatis plenitudine, modernos dictæ Congregationis Priores, ab officiis Prioratum huiusmodi absolvimus & amovemus; necnon dilectos filios Hieronymum Cremasum modernum Præpositum generalem, Martinum, Julium, Constantinum, Deodatum, Urbanum, Aloysium Comensem, Hippolytum, Eusebium, Leandrum, Angelicum Locatum, Felicem & Stephanum, Domitium & Timotheum in Priores Monasteriorum eorumdem loco prædictorum eligimus. Assignmentem autem eorumdem Prioratum unicuique Priori per nos electo, à generali Capitulo faciendam remittimus.

§. 4. Ac ex ipsis Prioribus, Hieronymum, Deodatum, Urbanum, Aloysium, Eusebium, Leandrum, Angelicum Locatum, Felicem & Stephanum pro hac vice dumtaxat in eisdem Congregationis Definitoribus constituimus & deputamus.

§. 5. Priores verò huiusmodi in posterum perpetuo Priores durare decernimus, nisi aliquis sic ejus exigentibus demeritis Priorali dignitate privandus esset; qui privati ad dicta officia in posterum exercenda inhabiles postmodum existant.

§. 6. Ultra autem tres annos Priores in administratione ejusdem Monasterii non permaneant, sed illi aliis Monasteriis administrandis præficiantur, & ad illa transferantur; ac triennium huiusmodi à Capitulo generali proximis temporibus celebrando numeretur.

§. 7. Possit tamen idem generale Capitulum quos judicaverit expedire, de uno ad aliud Monasterium regendum singulis annis transferre.

§. 8. Quod si aliqui ex supranominatis, qui in Priores per Nos, ut præfatur, electi fuerunt, Priores sibi delatos acceptare recusaverint, aut eos vel statim, vel paulo post dimittere voluerint, tunc & eo casu liceat Capitulo generali proximè celebrando hac vice dumtaxat eorum loco alios dictæ Congregationis professores, etiam si de numero Vicariorum, ut infra dicitur non extiterint, in Priores eligere, ac illos subrogare, & ad Prioratus huiusmodi officia exercenda per tempus prædictum deputare.

§. 9. Præterea cum antea liceret quemcumque Monachum in presbyteratus ordinem constitutum, in Præpositum generalem, Visitatorem & Consultorem eligere, & dummodo vocem haberet in generali Capitulo prædicto, etiam in Definitoribus illi omnes assumi valerent, & multitudine vocem & suffragium in electione habentium, & eligendorum ma-

Priores annales, & ii per tres annos in Priores eligi possunt, & postea per annum vacare debent.

Ex qua frequentu mutatione, ambitus occasio præbetur.

Hic ideo Pont. præfates Priores amovet & alios depouat. eique Prioratus à futuro Cap. assignari mandat.

Definiores dicti Capituli aliquos didicimus Priorum constituti.

Priores postea eligendi perperub Priores remanere decernit.

Sed eodem in Monast. triennio tantum permanere, & postea aliis præfieri iubet.

Confirmat hic Clem. VIII. cons. 21.

Capit. tamen singulis annis eos transferre valet.

Hoc approbat infr. in cons. 90.

Capit. proximum loco Priorum ut supra deputatum vacantium alios subrogare poterit.

Præpositum gen. Visitatores, Consultores, & Definiores ex numero Priorum eligendi esse decernit.

Imo ex omnibus subditis eligi possunt Præpositus & Definitor, ut in d. conf. Clem. VIII. num. 21.

Procuratores à Monast. missos ad Capit. gen. voce electiva carere declarat. Hoc corrigi inf. in Clem. VIII. in conf. 21.

Electio Prioris vacantis ad Capit. de feren. est, &c.

Priores ex Vicariis eligendi sunt. Imo etiam ex non Vicariis, ut in d. bulla 21. Clem. VIII.

Vicarium electio ad quos spectet.

Monachis extra Claustra lectiones audire vel profiteri vetat. Et in Monasteriis certo modo permittit.

Accessus ad Urbem, abique Protectoris, vel Præpositi gen. licentia prohibet.

Constit. Procurat. ad negotia vel causas Congreg. vel ejus locorum, omnibus interdict.

Præpositum gen. ex Prioribus, & ad annum eligi mandat.

ximam pareret confusionem, propter varias, illi-
citæque passionis & sollicitationis quæ præmissorum occasione ineunt. Nos hujusmodi malo obviare volentes, quod iidem omnes, Præpositus videlicet generalis, Visitatores, Consultores, & Definitorum, ex numero Priorum, ab ipsismet Prioribus tantum eligantur mandamus, præterquam in S. Alexii de Urbe, & S. Pauli Civitatis Albanensis Monasteriis, in quibus pro evitandis expensis & incommodis duos ex illis Monachis qui ad ibi degendum, aut eorum alter constituentur, pro tempore etiam si Priores non essent, Visitatores deputari posse permittitur. Qui tamen uti eorumdem Monasteriorum Visitatores in generali Præposito vel Definitoribus eligendis, vocem non habeant, quo ad reliqua autem concessa sibi per generale Capitulum auctoritate fungantur.

§. 10. Insuper ex causis prædictis, vitandique ambitus gratia, eos Procuratores qui ab unoquoque Monasterio ad generale Capitulum destinantur, ut de statu Monasteriorum à quo missi fuerint, generale Capitulum prædictum planè edoceant, & ea omnia quæ ad illud pertinent postmodum referant, necnon vocem in electione Præpositi generalis, & Definitorum, tam activam quam passivam habeant, illa in posterum volumus carere.

§. 11. Ad hæc si medio tempore à celebrato Capitulo generali usque ad aliud celebrandum alicujus Monasterii Prioratum, quomodocumque, & ex quavis causa vacare contigerit, novi Prioris electio usque ad Capitulum generale proximè celebrandum, nec ultra differenda erit. Et interim Monasterii Vicarium, vel quemvis alterum per Præpositum generalem, cum voto Consultorum per modum provisionis dumtaxat deputandum.

§. 12. Nec aliquis ad Prioratum assumendus erit, nisi & tempore vacationis, & tempore electionis sit alicujus Monasterii Vicarius.

§. 13. Vicariorum autem electio per Capitulum generale facienda erit, ut est moris. Quod si medio tempore aliqua Vicariatuum officia quomodocumque vacare contigerit, cum voto Consultorum generalis Præpositus poterit Monachos in Vicarios eligere, prout ea in re duxerit expedire.

§. 14. Ad evitandam etiam extra claustra Monasteriorum Monachis præfatis vagandi ac discurrendi occasionem, Monachos ad quodcumque gymnasium vel publicam Academiam quibuscumque amplissimis privilegiis fuisse, ad audiendas cujusvis facultatis lectiones accedere, aut illas publicè vel privatim profiteri prohibemus. In propriis autem Monasteriis dummodo in facultatibus, vel in Theologia Magisterii, vel Licentiatursæ, aut alios gradus suscipere non audeant, ipsi arbitrio Præpositi generalis dumtaxat litterarum studiis à jure permittis, operam dare concedimus.

§. 15. Monachorum prædictorum nullus absque expressa licentia à Venerabili fratre nostro Joanne Episcopo Ostiensi Cardinale Morono nuncupato, nunc dictæ Congregationis, & pro tempore existente apud Nos Sedemque Apostolicam Protectore, aut à Præposito generali in scriptis obtenta, ad Almam Urbem nostram sub quovis prætextu se conferre audebit; si secus fecerit, carceris, à quo per integrum annum ad penam inobedientie lueandam detinebitur, ac vocis tam activæ, quam passivæ privationis, aliisque etiam gravioribus arbitrio pro tempore generalis Præpositi imponendis penis plectendus erit.

§. 16. Sub eisdem penis edicimus, ne aliquis dictæ Congregationis Ordinem expresse professus, in Urbe, vel alibi procuratores, aut negotiorum gestores, aut alio nomine nuncupatos, circa causas & negotia ad dictam Congregationem universam, vel illius Monasteria, aut regularia loco quomodolibet directè vel indirectè spectantia vel pertinentia, constituere audeat.

§. 17. Denum Præpositum generalem ex Prioribus in posterum eligi debere, & Capituli genera-

lis auctoritate electum, ultra annum in Generalatus officio minimè perseverare posse.

§. 18. Sicque & non aliter in præmissis per quoscumque Judices & Commisarios quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Cardinales, sublatæ eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate, judicari, desinirique debere, prædictaque omnia firma & inviolabilia fore & esse, irritum quoque & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, decernimus.

§. 19. Quocirca moderno & pro tempore existenti Præposito generali, ac universis & singulis dictæ Congregationis Monachis per Apostolica scripta, illis etiam in virtute sanctæ obedientie præcipiendo mandamus, ut Præsentes litteras humiliter recipiant, & quæcumque in ipsis continentur, alia desuper à nobis non expectata justione aut mentis nostræ declaratione, firmiter custodiant, & in omnibus illis studiose ac reverenter obedire procurent.

§. 20. Quin etiam ipsi Præposito generali præcipimus, ut eisdem Præsentes in omnibus ejusdem Congregationis Monasteriis, necnon ab omnibus Monachis prædictis inviolabiliter faciat per se vel alium observari, quoscumque contraditores & rebelles, ac etiam reclamantes, eisque auxilium vel favorem, publicè vel occultè, directè vel indirectè, quovis quæsitò colore vel ingenio præstantes, tam Ecclesiasticos quam laicos cujuscumque dignitatis, gradus, ordinis, & conditionis fuerint, per censuras & penas Ecclesiasticas, ceteraque juris & facti remedia opportuna, appellatione postposita compescendo, censurasque & penas etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 21. Non obstantibus fel. record. Bonifacii Papæ Octavi prædecessoris nostri de una, & Concilii generalis edita de duabus dietis, & quibuscumque Apostolicis, ac provincialibus & synodalibus Conciliis editis, generalibus vel specialibus constitutionibus & ordinibus, ac dictorum Congregationis & Ordinis juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis & litteris Apostolicis, illis & illorum Superioribus, super quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, irritantibusque & aliis decretis, in genere vel in specie, etiam Motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, ac consistorialiter, ac aliis quomodolibet concessis, ac etiam pluries confirmatis & innovatis; quibus omnibus, etiam si pro sufficienti illorum derogatione, de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa & individua, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, aut quævis alia expressio, seu aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum tenores, formas datas, ac si de verbo ad verbum infererentur, Præsentes pro expressis habentes & insertis, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice, motu & scientia, ac potestatis plenitudine paribus, tassimè derogamus, ac derogatum esse volumus, contrariis quibuscumque; aut si prædictis Congregationi & Monachis, vel quibuscumque aliis communiter vel divisim ab Apostolica sive Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

§. 22. Per hæc autem antiquis dictæ Congregationis, & laudabilibus consuetudinibus more utentium in dicta Congregatione comprobatis, aut statutis, etiam forsan juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, vel privilegiis, indultis, vel litteris Apostolicis super præmissis forsan emanatis, nisi quo ad casus expressos, in nihilo penitus detrahare, aut litteris præ-

Imo ex omnibus ut inf. in conf. 21. Clem. VIII. Aliar getta irritat.

Omnes prædicta observare præcipit.

Public. hujus conf. & ejus execut. Præposito gen. mandat.

Contrariis derogat.

Conf. Ord. quo ad casus hic non expressos, & deputati- nem Præpositi gen. factam à Pio V. præservat.

Dar. P. An. 3.
26. Maji.

XVIII.

mem. Pii Papæ Quinti circa deputationem moderni Præpositi generalis derogare non intendimus; quinimo tempore deputationis expleto Capitulo generali minimè ademptam esse volumus facultatem, quò minus idem ad officium generalis Præpositi eligi possit.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 26. Maji 1574. Pontificatus nostri anno tertio.

Confirmatio & extensio gratiarum, privilegiorum, & indultorum Ordinis Cisterciensis Monachorum S. Benedicti, novæque ordinationes pro feliciori ejus regimine.

Alias ordinationes ad eundem finem, statuerunt Eugen. III. in const. 2. Sacrosancta. sup. fol. 34. Clem. IV. in const. 3. Parvus. sup. fol. 134. Bened. XII. in constit. 3. Fulgens. fol. 209. Tom. I. Pius IV. const. 70. In eminenti. fol. 106. ac Pius V. in const. 102. Ex innumeris. supra in hoc Tomo II.

De institutione autem hujus Ordinis, ac aliis eum concernentibus, notavi sup. in Paschal. II. const. 1. Desiderium fol. 38. in Tomo I.

GREGORIUS PISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memoriam.

Edita An. D.
1574.

Proceium.

Superna dispositione, cujus inscrutabili providentia ordinationem suscipiunt universa, in supereminenti Apostolicæ dignitatis specula meritis licet imparibus constituti, ad ea, per quæ sacre religionis Cisterciensis Ordinis, Nobis, & Sedi Apostolicæ immediatè subiecti, status feliciter dirigatur, & regularis vitæ institutio jamdiu à Sanctis viris, tam piè & religiose tradita & constituta conservetur, & si quid deperire incæperit, Domino concedente reformationem suscipiat, & in suum pristinum statum resorascat, ac denique persone sub suavi Religionis hujusmodi jugo, Domino secundum regulæ suæ puritatem famulantes, sua in pacis & quietis suavitæ vota reddere, & fructus in Dei Ecclesiæ uberiores proferre valeant, libenter intendimus, & his quæ per Rom. Pontifices prædecessores nostros propterea concessa & ordinata fuisse reperiuntur, etiam nostræ approbationis robur adjicimus, ac alias desuper statumur, ordinamus, moderamur & reformamus, prout in Domino conspicimus salubriter expedire.

S. 1. Dudum siquidem fel. record. Pio Papa Quarto prædecessori nostro, pro parte bonæ mem. Ludovici olim Abbatis Monasterii Cistercii, Cabilonenfis Diocesis exposito, quod licet sacer Cisterciensis Ordo in summa puritatis & devotionis perfectione, permulta retroactorum annorum sæcula, ac tamdiu exemplari Religiosorum suorum vita atque sanctimonia, non solum in Regno Franciæ, ubi supremum ejus caput videlicet Cistercii præfatum, cum aliis quatuor illius præcipuis nempe Firmitatis, Pontigniaci, Clarevallis, & Morimondi, Cabilonenfis prædictæ, & Antifodorenfis ac Lingonenfis respectivè Dioc. Monasteriis, filiiabus Cistercii nuncupatis, sed etiam per alia fere universa Christiani Orbis climata cum bonæ famæ, & virtutum odore, eximioque Religionis decore, ad ædificationem militantis Ecclesiæ quamdiu juxta Sanctorum Patrum institutiones, & regularia illius instituta, præfatis aliisque Monasteriis de Monacorum dicti Ordinis personis provium, ejusque laudabilia instituta, ritus, consuetudines & privilegia firmiter observata fuerant, Domino cooperante floruisse, Nilominus tunc à pluribus annis citra, præsertim postquam pleraque Monasteriorum, ac Prioratuum suorum, aliis quam dicti Ordinis personis commendari, ac ab eorum Superioris obedientia per exemptionum, unionum, aliisque diversas vias tamquam membra à suo corpore divelli, abstrahi, & dif-

membrari cæperant, specioso illo regularis disciplinæ candore paulatim offuscato, universi Ordinis status in miserabilem dispersionem, & dissolutionem prolapsus erat, & in eadem expositione subjuncto, quòd tantis hujus olim Deo, mortalibusque gratiæ Religionis incommodis aliter quàm per antiquorum statutorum, consuetudinum, rituum & privilegiorum prædictorum undique convulsorum, & diversimodè oppressorum restitutionem mederi non posse videbatur, præfatus Prædecessor supplicationibus ipsius Ludovici Abbatis in ea parte tunc inclinatus, antiqua privilegia per quoscumque Rom. Pontifices prædecessores suos eidem Cisterciensi Ordini, & ejus Capitulo generali indulta & concessa, per suas litteras approbavit, confirmavit & innovavit, & alia desuper statuic & ordinavit.

S. 2. Et deinde piæ mem. Pius Papa Quintus etiam prædecessor noster eodem erga præfati Cisterciensis Ordinis bonum statum, & reformationem, zelo & animi propensione affectus, antiqua illa eidem Ordini, ut præfatur, concessa privilegia & indulta, per suas litteras, etiam approbavit & confirmavit, ac litteris Pii Quarti prædecessoris ejusmodi, etiam suæ approbationis robur adjecit. Necnon nonnulla alia opportuna pro temporis conditione præfati Cisterciensis Ordinis reformationem concernentia, de novo eidem Ordini & Capitulo generali concessit & indulsit, prout in singulis litteris præfatis plenius continetur. Cùm autem firmiora sint ea, quibus Sedis prædictæ sæpius intercedit auctoritas.

S. 3. Nos cupientes, ut illa, quæ pro dicti Ordinis, cujus decus & integritatem, ac pristini candoris restitutionem non minori quàm prædicti Prædecessores nostri zelo affectamus, salubri directione, tam piè ac sanctè statuta sunt, inconcussa perpetuò remaneant, omnium & singulorum immunitatum, libertatum, exemptionum, conservatorum, facultatum, ordinationum, statutorum, privilegiorum, indultorum, & aliarum gratiarum, necnon litterarum Pii Quarti & Pii Quinti prædecessorum hujusmodi tenores Præsentibus pro sufficienter expressis & insertis habentes, Motu proprio non ad Abbatis generalis, & Superiorum Ordinis hujusmodi, vel quorumvis aliorum instantiam, sed de nostra mera liberalitate, & ex certa scientia, omnes & singulas ab Abbate Monasterii Cistercii, aliisque Superioribus & Capitulo generali Ordinis hujusmodi, ejusque deputatis, immunitates, libertates, & exemptiones quibuscumque, tam virore, quàm S. Catharinæ Cajetanæ & S. Mariæ de Coelestia nuncupatæ Venetiarum, aliisque Monialium Monasteriis, ac Prioratibus, & aliis regularibus locis dicti Ordinis, ac dilectis filiis Abbatibus, & Prioribus, dilectisque in Christo filiabus, Abbatissis & Priorissis, necnon Conventibus, Capitulis, & Personis eorumdem, tam in Gallia, Italia, Hispania, Portugallia, Germania, Anglia & Scotia, quàm alibi ubilibet consistentibus, ita quod immunitatibus, libertatibus & exemptionibus hujusmodi non obstantibus, pro tempore existentes Abbas generalis nuncupatus, & alii Superiores dicti Ordinis, eorumque Vicarii, juxta ipsius Ordinis instituta, Monasteria, Prioratus, & loca prædicta, ac illorum personas, tam in capitibus quàm in membris visitare liberè & licitè valeant.

S. 4. Ac quæcumque privilegia & indulta Apostolica visitandi Monasteria, tam virore quàm mulierum Ordinis hujusmodi quibuscumque Venerabilibus fratribus nostris Patriarchis, Archiepiscopis & Episcopis, ac dilectis filiis aliis locorum Ordinariis, Abbatibus & aliis, quàm Generali Cisterciensi prædicto, ac aliis quatuor primis nuncupatis quatuor Monasteriorum filiarum Cistercii nuncupatorum præfatorum Abbatibus, ceterisque Superioribus ejusdem Ord. ad id ab ipso generali Capitulo deputatis personis, cujuscumque status, gradus, ordinis & præemia existantibus, per quoscumque

Pius V. etc. in rub. eadem confirmavit, & quadam alia de novo concessit pro reformat. ejusdem Ord.

Hic modò Pont. eorum bullas approbas, & omnes ordinationes & statuta d. Ord. confirmat, volens quod Abbas & Prælati loca, & personas visitent & corripiant.

Indulta A. post. Episcopis, & aliis concessa visitandi eadem loca, limitatur ut Abbas præfatus, Superiores illa etiam visitare possint. Hoc idem statuit Pius IV. ibid.

Pius IV. confirmavit antiquas ordinationes & indulta Ord. & alia statuic ut sup. in ejus const. 70. In eminenti.

Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac Nos & dictam Sedem, etiam ad quorumvis Imperatorum, Regum, Reginarum, Ducum, & aliorum Principum instantiam, vel etiam Motu proprio, & ex certa scientia, etiam consistorialiter, & cum causa cognitione, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque derogatoriis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis, hæcenus quomodolibet concessa, & etiam iteratis vicibus approbata, & Apostolicas, & alias litteras desuper confectas, & inde secuta quæcumque, ad hoc dumtaxat ut Abbati generali & aliis Superioribus Ordinis, eorumque Vicariis, Monasteria huiusmodi, ut præfatur, visitare liceat, Apostolica auctoritate tenore Præsentium moderamur & limitamus.

§. 5. Inhibentes Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, & aliis superioribus Prælati, videlicet sub interdictione ingressus Ecclesie, ac suspensionis à divinis, Abbatibus verò, & aliis inferioribus præfatis, ceterisque quibuscumque personis sub excommunicationis latæ sententiæ penis, ne Abbatem generalem, & alios Superiores Ordinis, eorumque Vicarios præfatos quo minus visitationes, juxta regularia Ordinis instituta huiusmodi, libere facere possint, per se vel per interpositas personas, directè vel indirectè, aut aliàs quoquo modo impedire audeant vel præsumant.

§. 6. Ipsi autem Monasteriorum, & aliorum locorum prædictorum Abbatibus, Abbatissis, Prioribus, Conventibus, Monachis, Monialibus, & personis, ut Generalem, alioque Abbates, Superiores, & Vicarios præfatos, ut præfatur, visitare volentes, benigne recipiant, eisque eorum mandatis, in concernentibus eorum visitandi officium huiusmodi pareant, & humiliter obediant, in virtute sanctæ obedientiæ, & sub similis excommunicationis pœna districtè præcipiendo mandamus.

§. 7. Et insuper universa & singula privilegia, prærogativas, immunitates, exemptiones, libertates, conservatorias, facultates, indulta, & alias gratias Cistercii, & quatuor filiabus nuncupatis Monasteriis, ac Ordini, ejusque Capitulo generali, Definitoribus, & aliis Superioribus præfatis per piæ mem. Paschalem Secundum, Callistum etiam Secundum, Eugenium Tertium, Alexandrum etiam Tertium, Lucium similiter Tertium, Honorium pariter Tertium, Gregorium Nonum, Innocentium Quartum, Sixtum etiam Quartum, præsertim commendas, & Commendatarios Monasteriorum, & aliorum locorum Ordinis huiusmodi concernentia, & quod Commendatarii pro tempore existentes nullam in Monasteria dicti Ordinis sibi commenda- ta, & eorum Monachos jurisdictionem exercent, & quoscumque alios Romanos Pontifices prædecessores nostros, & Sedem huiusmodi hæcenus quomodolibet concessa.

§. 8. Necnon ordinationes & statuta ab exordio foundationis ejusdem Ordinis usque in præsentem diem in dicto Capitulo concorditer edita, etiam si in usu esse desierint, dummodo per lapsum temporis immemorabilis, videlicet centum annorum in desuetudinem non abierint. Ac præterea super contributionibus, per omnia & singula ejusdem Ordinis Monasteria Abbati Cistercii seu Capitulo generali prædictis, faciendis & solvendis, ac prout illa concernunt omnia & singula alia in litteris Apostolicis, aliisque documentis desuper confectis contenta, & inde secuta quæcumque, licita tamen & honesta, ac decretis Concilii Tridentini non adversantia, ejusdem auctoritate & tenore Præsentium ex certa scientia confirmamus & approbamus, ac illis perpetuæ & inviolabilis firmitatis, & nostræ approbationis robor adjicimus, omnesque & singulos, juris & facti defectus, si qui forsitan intervenerint in eisdem supplemus. Necnon potiori pro cautela eadem omnia & singula privilegia, prærogativas, facultates, exemptiones, quatenus sint in usu, conservatorias, indulta, & alias gratias eisdem modo & forma, quibus Ordini, ejusque Abbatibus, Capitulo gene-

rali, & Superioribus prædictis per dictos Prædecessores concessa sunt, illis de novo auctoritate & tenore prædictis concedimus & innovamus.

§. 9. Et præterea quod in Monasteriis dicti Ordinis, quæ diversis personis, etiam si Episcopi, Archiepiscopi, Patriarchæ, & S. R. E. Cardinales existant de præfenti commendata, etiam reperiuntur, & in futurum commendari, seu aliàs quoquo modo aliis quàm Ordinis ipsius personis concedi continget, ubi non fuerit, insinuetur mensa Conventualis, ab Abbatiali mensa distincta & separata, cum annuis fructibus, redditibus & proventibus, juxta Monasteriorum ipsorum facultates competentibus & honestis, pro sufficienti Conventus & Monachorum, aliorumque Religiosorum ejusdem Ordinis numero in unoquoque ex ipsis Monasteriis per ipsos Generalem, & ceteros Ordinis ipsius Superiores, aut eorum Vicarios ordinando, quam quidem mensam quia etiam edificiorum & locorum, ad disciplinæ monasticæ observationem pertinentium, scilicet templorum, ornamentorum, jocalium, librorum ecclesiasticorum, dormitorii, refectorii, aliorumque locorum regularium, necnon Monasteriorum clausuræ necessariis, & ordinariis reparationibus faciendis obligatam & obstrictam esse volumus, ut in ea instituenda expensarum annuarum ad hæc necessariarum ratio habeatur, statuimus, & mandamus, ac ad eandem mensam sic instituendam, congruosque redditus assignandos ipsi Commendatarii omnino teneantur, & ad id etiam per censuras Ecclesiasticas, fructuum, reddituum, & proventuum sequestrationes, & alia opportuna juris remedia cogi possint, & debeant.

§. 10. Et quia sicut accepimus in multis dicti Ordinis tam virorum quàm mulierum Monasteriis quampures mendicantium aliorum Ordinum Religiosi utriusque sexus ab immemorabili tempore circa se intruserunt, & pedesque intrudere præsumunt, quod illi vel inde realiter, & cum effectu ejiciantur, vel saltem habitum infra annum suscipiant, ac professionem regularem ejusdem Cisterciensis Ordinis expresse emittant, debitamque obedientiam, & reverentiam illius Abbati generali, & reliquis Superioribus prædictis præstent, ac divinum officium secundum ipsius Ordinis morem celebrent, & seque regularibus ejus institutis omnino conforment. Quodque Monachi in Monasteriis, & Prioratibus ejusdem Ordinis, aliis piis locis pro tempore unitis, annexis, & incorporatis degentes, sint & remaneant sub obedientia, & correctione Abbatis generalis, aliorumque Superiorum Ordinis Cisterciensis præfatorum, & suorum Vicariorum in omnibus, & per omnia, perinde ac si uniones, annexiones, & incorporationes huiusmodi non emanassent, etiam si in illis aliter caveretur, & usus, non tamen à tempore immemorabili, ut præfatur, contrarium obtineat, quæ contra statuti huiusmodi tenorem nemini suffragentur.

§. 11. Quod nullæ alterius Ordinis Moniales nisi causa legitima subsistente, in Abbatissis Monasteriorum Monialium dicti Ordinis assumi, vel si assumantur in eisdem Monasteriis recipi possint, nisi immediato Patre Superiore præfente, qui habitum illis exhibeat, & ab eis tria substantialia vota, necnon juramenta observandi statuta dicti Ordinis, ac secundum ea vivendi recipiat.

§. 12. Quodque omnia & singula Monasteria Ordinis huiusmodi, tam virorum quàm mulierum ubicumque existentium seu eorum Abbates vel Priores, etiam Commendatarii, Abbatissæque vel Priorissæ in signum obedientiæ & superioritatis solita regalia, videlicet, contributiones solitas Abbati Monasterii Cistercii, & Capitulo generali prædictis, omnibus exceptione, recusatone, præscriptione, & alia excusatione penitus cessantibus annuatim solvere teneantur, & ad id compelli possint sub excommunicationis latæ sententiæ pœna, eadem auctoritate statuimus, & ordinamus.

In Monast. Commenda- tiis aliis per- sonis, quàm ipsius Ord. in- stitui debet mensa Con- vent. distin- cta ab Abba- ti & suffi- ciens pro Monachis.

Religiosi al- terius Ord. intrusi in lo- cis hujus Or- dinis aut in- de ejiciantur, aut ejusdem Ordinis profes- sionem faci- ant.

Moniales al- terius Ordinis quando recipi possint in Abbatissas.

Monasteria omnia teneantur ad contri- butiones sol- vendas Abba- ti & Capitu- lo.

Inhibitio contra Episc. & alios im- pedientes il- los in visita- tionibus.

Hoc idem voluit Pius IV. ibid.

Monachi & Moniales om- nes, admittant Abb. & alios Superiores visi- tantes sub pœnis hic expressis.

Confirmatio omnium gratiarum Ord.

Hoc habetur etiam in di- cta const. Pii IV.

Confirmatio ordinationum, & statutorum dicti Ord. Hoc habetur in d. const. Pii IV.

Monasteria etiam commendata, & de iure patronatus laicorum defuncta restituuntur & reducuntur ad clausuram.

In Ecclesiis provideantur necessaria ad usum Monachorum, & cultum divinum Missarum, & alia officia in eisdem quotidie celebrentur.

Novitii in duobus Monasteriis cuiuscumque Provinciae.

Conventus claudantur, & nullo modo impediuntur à Commendatariis vel aliis.

Mulieribus loci Ordinis non ingrediantur. Hoc strictius vetuit Pius V. supra in hoc Tomo II. in ejus bulla de Regularium fol. 212.

Inventarium fiat in quolibet Monasterio omnium rerum & bonorum.

§. 13. Et insuper ut Monasteria Cisterciensis Ordinis huiusmodi, quorum quamprimum, ut accepimus praefertim in utraque Sicilia consentientia, aut debitis officiis destituta, aut Monachis ob non praestitam alimoniam deserta, aut omnino collapsa, reiecta, reclusa, patentia reperiuntur, & ut prophana habentur, ad Conventum, disciplinam, & bonam frugem revocentur, de Apostolica potestate plenitudine etiam statuimus, & ordinamus ut omnia Monasteria, & loca dicti Ordinis, tam in utraque Sicilia, quam ceteris omnibus Orbis partibus constituta, etiam commendata, ac etiam de iurepatronatus laicorum quocumque modo existent, quae convulsa, diruta, & extenuata existunt, reficiantur, & ad debitam clausuram reducantur. Ac pro faciliiori praemisorum executione conveniens pecunia statuatur, & quotannis in id opus donec absolutum fuerit, erogetur, ac in eisdem, & ceteris locis, quemadmodum eorum facultates ad id fuerint sufficientes, competens Monachorum & Ministrorum numerus restituatur.

§. 14. Ipsorumque quoque Ecclesiarum, sacristiarum, dormitoria, & officinae vasis, vestimentis, libris, sacra & communi suppellectile ac ceteris omnibus ad divinum cultum, & monasticum usum necessariis convenienter instruantur. Missae praeterea sacrificium, & alia divina officia nocturna, & diurna quotidie in choro psallendo iuxta ritum dicti Ordinis sine intermissione celebrentur. Insuper ubi sacra lectio iuxta Concilii Tridentini dispositionem haberi non poterit, praeter eos libros, qui ad divini officii & chori usum necessarii sunt, saltem Biblia & Catechismos ad Parochos ante aliquot annos editus, item opera Sancti Bernardi, & si qui alii ad honestam Monachorum occupationem haberi poterunt habeantur, nisi de illis in assignatione mensae Conventualis jam prospectum reperiatur, ita tamen, ut de his omnibus, necnon vasibus, vestimentis, & cetera suppellectile praefata semel receptis, omnes Conventus rationem reddere debeant.

§. 15. Et ut Novitii ea qua decet disciplina informetur, unum aut duo Monasteria in quacumque Provincia ubi commodè fieri poterit, ordinentur, in quibus Magistri etiam ceterorum Monasteriorum Novitios divini Officii rationem, & regularis observantiae instituta doceant, ita ut quodlibet Monasterium suis necessaria suppediet, & si nullos haberit, alii pro eo ejusque impensis recipiantur, & instruantur.

§. 16. Omnia aedificia Conventus quoquo versus claudantur, portae non necessarias obstruantur, clathi fenestris, ubique opus fuerit insurgantur. Tempia, Sacristiae, Capitula, Dormitoria, Refectoria, Infirmariae, & omnino aliae Clausetri partes nihil prophani patiantur, nec Conventus horreum, penum, praefepia, nec prorsus alia promeritalia Abbatum, Commendatariorum, conductorum aut aliorum recipiant, nec illa à Commendatariis, pensionariis, aliisve de Clausuro non existentibus occupentur, sed illis solum proprii claustrales utantur, prout ad divini officii celebrationem, regularemque observantiam fuerint constituta.

§. 17. Mulieribus omnibus cuiuscumque qualitatis, dignitatis, & aetatis, ingressus claustrum, & aliorum locorum regularium, etiam aedium partis, quae ab Abbatibus, Commendatariis, Prioribus, aliisve ministris, etiam divinum possidentur, sit penitus interdictus, & si secus factum erit, tam ingredientes quam recipientes excommunicationis sententiam incurant, carcer quoque ac correctionem monachorum, ubi non est, constituantur.

§. 18. Et in omnibus Monasteriis inventarium omnium praefatorum, necnon instrumentorum, fundationum, donationum, auctoritatum, exemplarium, omniumque munimentorum conscribatur, & in formam authenticam redigatur, illudque & cetera omnia praefata fideliter asserventur, si cubi veterum locorum quicquam producendum erit, exem-

plum ab Archetypo defumatur & transmittatur, nisi talis contigerit necessitas, ut ipsum exemplar producendum sit, quod tunc in fidem alicujus probati deponatur, qui idoneè caveat illud ipsum quam primum reportandum.

§. 19. Illa quoque Monasteria locis patentibus constituta, quae propter Turcarum, seu Prædonum, vel Haereticorum incuriones tutè servari non poterunt, facto de ipsorum juribus, literis, auctoritatibus, tabulis, monumentis, atque omni prorsus suppellectile, mobilibusque bonis, jo calibus, & rebus fidei inventario, & si opus erit earum omnium depositio fiat apud personam fidei & facultatibus idoneam, ita ut nihil omnino inde sine consensu expresso, & speciali mandato Conventus moveri valeat, in Civitates, oppidave vicina transferantur.

§. 20. Ceterum ad restituendam monasticam disciplinam, & restitutam conservandam, Cistercii, & ceteri patres Abbates, in Capitulo generali provideant diligenter, ut omnes visitationes sollicitè, & prudenter, ac cum pietate fiant, salutem animarum, Religionis zelum, perpetuum cultum divinum, clausuram, obedientiam, & cetera omnia, quae ad mores, correctionem, & Religiosorum aedificationem pertinent, procurando. Quibus in rebus ubicumque non sunt mensae Conventuali assignati redditus, qui hoc onus ferre possint, Abbates, & Commendatarii, ac alii quicumque, administrationem spiritualium, & temporalium visitandorum Monasteriorum habentes; necessaria omnia ministrare, ac contributiones, & sumptus pro gerendis aliis communibus negotiis dicte Sedis auctoritate impositas, ac etiam ad brachii secularis adhibitionem praestare teneantur.

§. 21. Visitatores, ac solitos & necessarios ipsorum famulos, & jumenta debita Hospitalitate recipere, & eisdem in omnibus auxiliari omnino debeant, & ad id etiam censuris & poenis Ecclesiasticis per Capitulum, ac etiam per ipsos Visitatores compellantur.

§. 22. Ne porro deferendi Monasterii occasio Monachis praebeatur, quod ex vagandi libertate illis à Commendatariis oblata, ut expensis parcant, plerumque evenit, praecipimus, & interdiciamus, ne ulli omnino Commendatarii quicquam, vel minimum, de mensa, & aliis necessariis detrahant, neque ullo modo diminuunt, aut quempiam etiam propter delictum ejiciant, sed quocienscumque Monachi quid admiserint, quod quidem animadversione dignum sit, id quamprimum Priori Clausurali, vel si gravior sit delictum Visitatori significant, qui correctionem juxta Ecclesiae & dicti Ordinis statuta faciat, qui si ultra sex menses distulerit, eo ipso sit ab Officio depositus, & ad illud, ceteraque omnia Ordinis ejusdem Officia triennio inhabilis censetur, statimque Praefidentes correctionem huiusmodi aliis committere teneantur.

§. 23. Ad haec volumus, & mandamus, ut apud dictum Monasterium Cistercii constitutur, constitutave restituatur Archivum in quo Index ordine compositus omnium aliorum Monasteriorum, Prioratum, Ecclesiarum, & beneficiorum dicti Ordinis in omni parte Orbis constitutorum, etiam in Commendam obtentorum, vel unitorum habeatur, & item distinctum cuiusque inventarium sive repertorium bonorum, proprietatum, rerum, jurium & actionum omnium, necnon exemplum authenticum instrumentorum, privilegiorum, fundationum, donationum, literarum, auctoritatum & monumentorum quorumcumque conscribatur, confectumque fideliter asservetur.

§. 24. Revocamus quoque, & abolemus omnia & quaecumque privilegia, auctoritates, licentias, dispensationes, & indulta cuiusque privati rerum, & bonorum usus, proprietatis, possessionis, & dominii, omnibus cuiuscumque gradus, & dignitatis Monachis dicti Ordinis per quoscumque Romanos Pontifices praedecessores nostros, ac Nos,

Monasteria existentia in locis non tutis transferantur ad loca vicina.

Visitationes fiant sollicitè & prudenter.

Visitatores hospitari debent à Commendatariis.

Commendatarii nihil detrahant de necessariis Monachorum, & eas ob id de iura non ejiciant, sed ad Superiores deferant.

Archivum fiat Cistercii cum Indice cuiuscumque Monasterii, & beneficiorum ac bonorum & jurium eorum.

Revocatio induitorum & licentiarum habendi aliquid proprium.

& dictam Sedem ejusque Legatos ex quibuscumque causis, etiam Motu proprio, & ex certa scientia concessa, confirmata & innovata, quibuscumque concepta formulis, ac clausulis, & decretis suffulta, quorum omnium tenores Præsentibus haberi volumus pro expressis, ac volumus illa omnia vires, & effectum de cetero non habere; quin etiam Visitatores, & ceteros omnes, qui in hujusmodi proprietariis seve- re non animadverterint ad Officia hujusmodi, & alia ipsius Ordinis ministeria perpetuo inhabiles esse.

§. 25. Ceterum, ut vicina plebs egena, pro Religionis consuetudine, & instituto confoveri, ac ceteri piam, & fidelem rerum administrationem colaudare possint, eisdem Commendatariis præcipimus, ut in suis Monasteriis pauperes elemosynis pro modo facultatum prosequantur.

§. 26. Quia verò nihil aequè dissolutè, & indiscipline vivendi licentiam adfert, quàm impunitatis spes, eamque non ita pridem, tam nonnulla ejusdem Ordinis Monasteria, quàm illorum personæ ex eo nancisci cœperint, quod à sententiis, & decretis pro ipsius Ordinis Generalem, aut ejus Vicarios in Provinciis deputatos, contra se latis, ad Nostros, & dictæ Sedis Legatos, & Nuncios provocando, penas in se constitutas eludere satagunt, in antiquorum statutorum, consuetudinum, rituum, & privilegiorum præfatorum præjudicium, & ipsius Ordinis Superiorum contemptum, ideo ne abusus, & incommoda hujusmodi tractu temporis altius irrepant, providere volentes, Motu, scientia, & potestate similibus, statuimus, & ordinamus, ac districte præcipimus, interdicimus, ne ulli omnino dictæ Sedis Legati, vel Nuncii appellationes à sententiis, & decretis per Abbatem generalem, vel ejus Vicarios, aut Superiores præfatos, latis vel promulgatis, ut præfertur, pro tempore interpositas, ullo modo recipiant, aut admittant, neque de illis cognoscant, seu illarum, vel quocumque alio prætextu, Monasteria, Prioratus, aut alia loca ejusdem Ordinis visitent, sed quotiescumque ad illos aliquid in Monachos, aut personas hujusmodi animadversione dignum deferri contigerit, juxta formam Commendatariorum circa dicta Monachorum, & personarum earumdem per Nos, ut præfertur, præscriptam, Vicarium ipsius Ordinis in illa Provincia institutum monendum curent, qui delinquentes sub pœna superius ad id constituta exemplariter corrigere, & punire teneatur. Decernentes appellationes, provocaciones, aut quascumque alias reclamaciones à Monachis, & personis hujusmodi ad dictos Legatos, seu Nuncios, vel locorum Ordinarios, ut præfertur, pro tempore interpositas, vel interponendas, ac processus desuper habitos, vel habendos, necnon inde secuta, vel sequenda quacumque, nullius fore roboris, vel momenti, ac Generalem Abbatem, & Vicarios, necnon Superiores præfatos, ad correctionem, & punitionem delinquentium Monachorum, & personarum Ordinis hujusmodi, appellationibus, procuracionibus, & reclamacionibus hujusmodi nequaquam obstantibus procedere posse, & debere.

§. 27. Præsentes quoque litteras, de subreptionis, vel obreptionis, aut nullitatis, vitio, seu intentionis nostræ defectu, quovis prætextu, quæsitivo colore, vel ingenio nullatenus notari, argui, vel impugnari posse, neminemque illas quavis de causa etiam iustissima impugnantem in judicio, vel extra audiendum esse, nec illas sub quibuscumque similibus, vel dissimilibus concessionum, gratiarumque revocationibus, suspensionibus, limitationibus, modificationibus, derogationibus, aut aliis contrariis dispositionibus, etiam per Nos, & successores nostros Romanos Pontifices, ac Sedem prædictam, etiam Imperatores, Regum, Reginarum, Ducum, & aliorum Principum intuitu, & contemplatione, aut in eorum, vel etiam nullius favorem sub quibuscumque tenoribus, & formis ac cum quibuscumque clausulis, ac etiam vim contractus, aut legis, seu

statuti perpetui inducentibus decretis, & aliis quomodolibet concessis, & concedendis, ac quibuscumque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis desuper quomodolibet editis, & edendis aliquatenus comprehendere, neque illis aliquo umquam tempore, etiam per Sedem præfata derogari posse, nec derogatum censeri, nisi de toto tenore, & data Præsens expressa mentio habita, & derogatio, suspensio, revocatio, limitatio, modificatio, aliaque præmissa de Cisterciis, aliorumque quatuor primorum nuncupatorum Abbatum prædictorum expresso consensu facta fuerint, & si aliter derogari, revocari, suspendi, limitari, aut emendari contigerit, hujusmodi derogationem, revocationem, suspensionem, limitationem, correctionem, & emendationem nullius esse roboris, vel momenti, & quoties illæ, vel illa emanabunt, toties in pristinum, & validissimum statum restituta, & de novo, etiam sub quacumque data per ipsum Abbatem Monasterii Cistercii pro tempore existentem eligenda concessa esse, & censeri.

§. 28. Sique per quoscumque Judices, & Commissarios quavis auctoritate fungentes etiam Sanctæ R. E. Cardinales, aut causarum Palatii Apostolici Auditores, sublata eis, & eorum culibet quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate judicari, & definiti debere, irritum quoque, & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit attentari.

§. 29. Et nihilominus omnibus nostris, & dictæ Sedis Legatis, & Nunciis, ubicumque existentibus ac locorum Ordinariis, necnon Ordinis præfati Conservatoribus, ipsorumque singulis per Apostolica scripta mandamus, quatenus præfatas litteras, & in eis contenta quacumque ubi, & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Abbatum, Vicariorum, Visitorum, & aliorum præfatorum, seu aliquis eorum desuper fuerint requisiti solemniter publicantes ipseque efficacia defensionis præsidio assistentes faciant auctoritate nostra Abbates, Vicarios, Visitatores, & alios præfatos, confirmatione, approbatione, adjectione, suppletionem, concessionem, statuto, ordinatione, innovatione, præcepto, interdicto, renovatione, abolitione, ac sui generalis voluntatis mandatis, decretis nostris, aliisque præmissis pacifice frui, & gaudere, ac præfatas litteras ab omnibus, quos illæ concernunt, inviolabiliter, & inconcusse observari, non permittentes Abbates, Vicarios, Visitatores, Superiores, ac alios præfatos desuper contra earumdem Præsens tenorem quomodolibet indebitè molestari, contradictores quoslibet, & rebelles per præfatos, ac alias sententias, censuras, & pœnas, aliaque opportuna juris, & facti remedia, appellatione postposita compescendo, ac legitimis super his habendis servatis processibus, sententias, censuras, & pœnas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 30. Non obstantibus præmissis, & sanctæ memorie Bonifacii Papæ Octavi pariter Prædecessoris nostri de una, & in Concilio generali edita de duabus dietis, aliisque Apostolicis, ac in provincialibus, & synodalibus Conciliis editis, generalibus, vel specialibus, constitutionibus, & ordinationibus, necnon quibuslibet etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statuto, & consuetudinibus, declarationibus, inhibitionibus, & decretis, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis Legatis, Nunciis, & Ordinariis præfatis, ac aliis quibuscumque personis sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, irritantibusque & aliis decretis, in genere, vel in specie, etiam Motu simili, etiam consistorialiter, aut aliis quomodolibet concessis ac etiam iteratis vicibus approbatis, & innovatis, quibus omnibus, etiam si pro il-

Elemosynas
pauperib. sub-
ministrant
Commenda-
tarii.

Appellatio
non datur ad
Legatos, vel
Nuncios
Apostolicos
à sententiis
Abbatis, &
aliorum Su-
periorum
hujus Ord.

Clausulæ
præservativæ
hujus conf.

Decretum
irritans.

Deputatio
executorum
& facultates.

Clausulæ de-
rogatoriæ.

lorum

Fides danda
transumptis
huius bullæ.

D. P. An. 3.
die 12. Junii.

XIX.

Edita An. D.
1574.

Exordium.

Rom. Pont.
olet quando-
que præcine-
re, ut possit
fructus
beneficiorum
Sedi Ap. re-
servatorum
nomine ejus-
dem Sedis
apprehen-
dantur, do-
cet litteræ
Apost. expe-
diantur, &
quandoque
etiam man-
data, provisos
ipsos in pos-
sessionem in-
duci &c.

lorum sufficienti derogatione, de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum veriores tenores, formas, Datas, & decreta in eis apposita, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata inferri forent, Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliàs in suo robore permanens, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, & sufficienter derogatum esse decernimus, necnon omnibus illis, quæ in litteris Pii Quarti & Pii Quinti, ac aliorum Prædecessorum præfatorum expressum fuit non obstante, contrariis quibuscumque, et si aliquibus communiter, vel divisim ab eadem sit Sede, indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

§. 31. Ceterum quia difficile foret easdem Præfates ad diversa loca, Provincialique circumferre, volumus, & dicta auctoritate decernimus, quod illarum transumptis, seu exemplis, etiam foris impressis manu alicujus publici Notarii subscriptis, & sigillo Abbatis generalis, aut alicujus ex aliis Superioribus Ordinis hujusmodi munitis, plena, & indubia, ac ea prorsus fides ubique etiam in judicio adhibeatur, quæ ipsis originalibus adhiberetur si forent exhibitæ, vel ostensæ.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 12. Julii, millesimo quingentesimo septuagesimo quarto, Pontificatus nostri anno tertio.

Declaratio super executione Brevium seu litterarum Apostolicarum de capiendi possessione beneficiorum Ecclesiasticorum, cum interpretatione Conc. Trid. sess. 24. cap. 20.

Contra impediens executionem litterarum Apostolicarum, vid. in Tomo I. const. 39. Clem. VII. Romanus. & Pauli V. const. 63. §. 14. cum ibidem notatis infra in Tomo III.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memoriam.

AD Romani Pontificis providentiam circumspectam pertinere dignoscitur, dubia super sacrorum Conciliorum decretis pro tempore insurgentia, sic suæ declarationis oraculo dilucidari, & interpretari, ut exinde litium dispendia inter fideles quoslibet valeant submoventi.

§. 1. Accepimus sanè nuper, quod licet multoties Romanus Pontifex, ut provisiones, & gratiæ per eum de beneficiis pro tempore vacantibus, ac suæ, & Sedis Apostolicæ dispositioni, & ordinationi reservatis, in favorem diversarum personarum sibi gratarum & acceptarum faciæ, executioni debite demandentur, & ne (dum litteræ Apostolicæ sub plumbo desuper expeditur) beneficia ipsa ab aliquibus indebitè occupentur, aut aliqua in spiritualibus, & temporalibus detrimenta sustineant, nonnumquam corporalem possessionem ipsorum beneficiorum, & illis annexorum, juriisque & pertinentiarum quomodocumque Sedis, & Cameræ Apostolicarum nominibus apprehendi, ac omnes, & quoscumque fructus, redditus, & proventus beneficiorum, & annexorum eorumdem percipi, exigi, eosque integros personis prædictis, postquam ipsæ litteras sub plumbo expeditas haberent, una cum dicta possessione assignari, quandoque verò, dum litteræ sub plumbo hujusmodi expeditæ essent, ut jus suum unicuique illorum conservetur, & temerarium audacia debita castigatione com-

pefcatur, ac ipsæ litteræ Apostolicæ facilius debite executioni, ut par est, demandentur, provisos de beneficiis in corporalem, realem, & æqualem possessionem, beneficiorum, & annexorum, juriisque & pertinentiarum prædictorum induci, & inducos in ea manuteneri amotis quibuscumque intrusis detentoribus ab eisdem, aliisque fieri, & exequi per diversas suas in forma Brevis, & sub Annulo Piscatoris confectas litteras mander, & præcipiat, certis inibi modo, & forma tunc præscriptis, dilecto filio causarum Curie Cameræ Apostolicæ generali Auditori, seu aliis executoribus desuper deputatis, quibus omnino parendum esset.

§. 2. Nihilominus nonnulli beneficiis prædictis inhiantes, ac gratias prædictas eludere, eorumque intrusiones, & detentiones improbe tueri satagentes, executionem litterarum in forma Brevis hujusmodi, & facultatem per eas ipsis executoribus, attributam, diversis dubiis, & cavillationibus remorentur, & processus per eosdem Executores desuper habitos, & formatos, ac inde secuta quæcumque nulla, & invalida, nulliusque roboris, vel momenti esse, neque attendi debere contendunt, sub prætextu quod in decreto sacri Concilii Tridentini sessione vigesimaquarta, capitulo vigesimo, dispositum fuerit, quod causæ omnes ad forum Ecclesiasticum quomodolibet pertinentes, etiam si beneficia sint in prima instantia coram Ordinariis locorum dumtaxat cognoscantur, exceptis his, quæ juxta Canonicas sanctiones apud Sedem prædictam sunt tractandæ, vel quas ex urgenti, rationabilique causa judicaverit Summus Pontifex Romanus, per speciale rescriptum Signaturæ suæ ejus manu propria subscribendum committere, aut avocare. Verùm cum decretum hujusmodi Concilii concessionem prædictarum litterarum in forma Brevis, & illarum executionem nihil afficiat, neque per illos causæ, seu instantia introducat, sed merè executivè procedi mandetur, litteræ quoque in forma Brevis Annulo Piscatoris munitæ non minoris sint efficaciz, & auctoritatis quàm rescripta Signaturæ Romani Pont. ejus manu propria subscripta.

§. 3. Nos in his nostræ debite declarationis cautelam adhibentes, ac provisorum prædictorum jus adversus dubia, & cavillationes hujusmodi, æquitate, & justitia suadentibus præservare volentes, necnon prædictarum, & quarumcumque litterarum in forma Brevis super capiendi possessione nomine Cameræ hujusmodi, aut favorem litterarum sub plumbo expeditarum, tam à Prædecessoribus nostris, quàm Nobis, & dicta Sede hæcenus concessarum tenores, ac litis, & causæ si quæ desuper executæ sint statum, & merita, nominatim & cognomina Judicum, executorum, & colligantium Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, Motu proprio non ad ipsorum provisorum, aut aliorum Nobis pro eis super hoc oblatæ petitionis instantiâ, sed ex certa scientia, ac de mera nostra deliberatione decernimus, & declaramus, per concessionem litterarum in forma Brevis, & sub annulo Piscatoris super capiendi possessione quorumcumque beneficiorum dispositioni Apostolicæ reservatorum seu affectorum, Sedis, & Cam. Apostolicarum nominibus apprehendenda, & in ejusdem possessionis in favorem provisorum ab ipsa Sede de eisdè beneficiis, postquam litteras sub plumbo super provisionis hujusmodi habuerint expeditas relaxationes, necnon assentientia ipsis provisos litteras desuper sub plumbo expeditas habentibus præstanda, & aliorum inibi expressorum executione facienda, quæ mandata executiva sunt, & summariam dumtaxat causarum propter quas illæ emanant cognitionem requirunt, decretis Concilii hujusmodi non contraveniunt, nihilque præjudicii illis inferri, vel eorum formam in aliquo violari, neque id dici, aut censeri, vel executionem litterarum earundem propterea in aliquo suspendi sive remorari, aut facultatem litterarum executoribus concessam impediri, sed executores ipsos, & ab eis deputatos subexecutores

Multi tamen
ad impediens
executionem
dictarum litterarum Ap.
dicebant causas omnes in
prima instantia spectare
ad Ordinarios, exceptis
causis a Pont. per speciale
rescriptum committendis.

Ideo hic
Pont. declar.
erat executionem
huiusmodi litterarum
Apostolicarum impedire
non posse ex prædictis.

Clausula
præservati-
va.

Decretum ir-
ritans.

Contra-ve-
nientium
pœnæ.

Executorum
deputatio,
& facultates.

Clausula de-
rogatoria.

Exem-
porum fides.

facultates sibi per eandem litteras, ut præfetur concessas, uti, frui, gaudere, & contra illis non parentes ad declarationem incurfus penarum, & censurarum in eisdem litteris in forma Brevis contentarum, ac innovationem brachii secularis procedere, ac alia omnia, & singula in eisdem litteris contenta (illarum tamen forma servata) facere, & exequi, liberè, & licetè potuisse, & posse, necnon processum desuper habitos, & formatos, habendosq; & formandos, ac inde secuta, & sequenda quæcumq; firma, valida, & efficacia fuisse, & esse, & fore, suosq; integros, & plenarios effectus fortiri debere in omnibus, & per omnia.

§. 4. Præsentis quoque litteras, de subreptionis, vel obreptionis, vitio aut intentionis nostræ, vel quopiam alio defectu notari, impugnari, vel invalidari nullatenus posse.

§. 5. Sicque in præmissis omnibus, & singulis per quoscumque Iudices, & Commissarios quascumque auctoritate fungentes, etiam Palatii Apostolici Auditores, & S. R. E. Cardinales (sublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate) judicari, & definiri debere, necnon irritum, & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit attentari.

§. 6. Distictius inhihentes, in virtute sanctæ obedientiæ omnibus & singulis cujuscumq; status, gradus, ordinis, conditionis, & præminentie existentibus, & quavis etiâ Episcopali, Archiepiscopali, vel alia majori dignitate, & Ecclesiastica, etiâ Cardinalatus honore fulgentibus, & quavis seculari potestate fungentibus, ne decreto, & declarationi nostris prædictis, quovis quasito colore directè, vel indirectè contravenire audeant, vel præsumant.

§. 7. Et nihilominus universis, & singulis nostris, & dictæ Sedis Nunciis, ac locorum Ordinariis, eorumque Officialibus, quatenus ipsi & eorum singuli, per se vel alium, seu alios præsentis litteras, & in eis contenta quæcumque, ubi & quando opus fuerit, & quoties pro parte provisorum, & executorum, & sub executorum prædictorum, seu quorumcumque aliarum personarum in præmissis interesse habentium, vel alicujus ex eis fuerint requisiti solemniter publicantes, eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra prædictos provisos, & executores, & sub-executores, seu alios in præmissis interesse habentes, eorumque singulos, decreto, declaratione, inhibitione, & aliis præmissis pacificè frui, & gaudere, ac præsentis litteras, & in eis contenta hujusmodi ab omnibus quos illa concernunt, & concernent quomodolibet in futurum inviolabiliter observari. Non permittentes aliquem desuper contra illarum tenorem quomodolibet indebitè molestari. Contradiutores quoslibet, & rebelles, per sententias, censuras, & pœnas Ecclesiasticas, aliaque opportuna juris, & facti remedia, appellatione postposita compescendo, ac legitimis super his habendis servatis processibus, sententias, censuras, & pœnas ipsas etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 8. Non obstantibus sel. rec. Bonifacii PP. VIII. prædecessoris nostri de una, & in Concilio generali edita de duabus dietis (dumodo non ultra tres dietas aliquis auctoritate Præsentium ad iudicium non trahatur) aliisque Apostolicis, necnon in provincialibus, & synodalibus Conciliis editis, specialibus, vel generalibus constitutionibus, & ordinationibus contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter, vel divisim ab eadem sit Sede indultum quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

§. 9. Ceterum quia difficile foret præsentis litteras ad singulas loca ubi opus fuerit deferre, volumus, & dicta auctoritate decernimus, quod earum transumptis etiam impressis manu alicujus Notarii

publici subscriptis, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides in iudicio, & extra adhibeatur, quæ ipsis originalibus adhiberetur, si forent exhibitæ, vel ostensa.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub anno Piscatoris die 10. Julii, millesimo quingentesimo septuagesimo quarto, Pontificatus nostri Anno tertio.

Jurisdicção, & facultates S. R. E. Cardd. Protectorum Collegii Germanici in Urbe.

De institutione & privilegiis ejus, attende sup. const. 14. Postquam, in hoc Tomo II.

GREGORIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memoriam.

Pro nostri muneris officio æquum est providere, ut qui in scholis bonarum disciplinarum operam dant, à perturbationibus quantum potest liberentur.

§. 1. Quocirca Collegium Germanicum pridem à Nobis in Urbe nostra institutum, in quo non minus quam centum pueros, ex universa Germaniæ Septentrionalibusq; illi adjacentibus regionibus colligendos, liberalibus scientiis, ac disciplinis, necnon sacris Canonibus, & Theologia instrui, atque erudiri volumus, & ad illorum sustentationem, redditus annuos decem millium aureorum ipsi Collegio perpetuo attribuibimus, speciali privilegio prosequi volentes, Motu proprio Venerabilibus fratribus nostris Jo. Ostien. Morono, & Alexandro Prænestino Episcopis, Farnesio, ac dilectis filiis nostris Marco S. Georgii ab Altaemps, & Prohomæo S. Agathæ Comen. ac Ludovico S. Onuphrii titulorum Madrucio vncupatis, presbyteris Cardd. ejusdem Collegii Protectoribus, & Defensoribus à Nobis constitutis, ac eorum cuilibet, omnes, & singulas causas civiles, criminales, & mixtas dicti Collegii, illiusque Collegialium, Scholarium, Rectorum, Magistrorum, Oeconomorum, Advocatorum, Procuratorum, aliorumque Ministrorum, & Officialium pro tempore existentium, Collegium prædictum, illiusque res, jura, actiones, & bona concernentes dumtaxat, tam activè, quam passivè, per se ipsos, aut quemlibet ipsorum, vel eorum, aut cujuslibet ipsorum Auditorum, seu Auditoris, aut alium, vel alios qui eis videbuntur, etiam summarie, simpliciter, & de plano, ac sine strepitu, & figura judicii, necnon manu regia, nullaq; tela judiciaria servata, sed sola facti veritate inspecta, atque etiam omni, & quacumq; appellatione remota, audiendi, cognoscendi, decidendi, & sine debito terminandi, vel etiam delegandi, & ad hunc effectum quoscumque citandi, ac quibus, & quoties inhihendum fuerit, etiam sub penis pecuniariis, & aliis eorum arbitrio, ac in subsidium juris, censuris Ecclesiasticis, inhihendi, ceteraque omnia in præmissis, & circa ea quomodolibet necessaria & opportuna faciendi, & exequendi, liberam auctoritate Apostolica tenore Præsentium concedimus facultatem.

§. 2. Decernentes irritum, & inane si secus super his à quoquam, quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit attentari.

§. 3. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac stylo Palatii, & Romanæ Curie, necnon quorumcumque tribunalium Urbis prædictæ juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis eisdem Tribunalibus, & Curiis, illorumque Iudicibus etiam ejusdem Palatii Auditoribus, ac quibuscvis aliis personis, sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decre-

Dat. P. An. 3. die 10. Julii.

XX.

Edita An. D. 1574.

Exordium.

Jurisdicção Cardd. Protectoris Collegii Germanici cognoscendi ejus causas summarie &c.

Decretum irritans.

Derogatio contrariis.

tis, in genere, vel in specie, etiam motu, & scientia similibus, aut aliis quomodolibet in genere, vel in specie, ac aliis concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, etiam si pro sufficienti eorum derogatione, de illis eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, & expressa, individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda esset, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata inserti forent, Præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, contrariis quibuscumque, aut si aliquibus communiter vel divisim ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§. 4. Volumus autem quod Præsentium transumptis etiam impressis, manu Notarii publici, dictique Collegii Secretarii subscriptis & sigillo comuni ejusdem Collegii munitis, eadem prorsus fides, in iudicio, & extra illud, ac aliis ubicumque opus fuerit adhibeatur, quæ adhiberetur eisdem Præsentibus si exhibita forent, vel ostensa. Nulli ergo omnino hominum &c. Si quis autem hoc attentare &c.

Datum Romæ apud S. Marcum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo septuagesimo quarto, Idibus Julii, Pontificatus nostri Anno tertio.

XXI.

Jurisdicção Inquisitorum hæreticæ pravitatis, in eos qui ad ordinem Presbyteratus minimè promoti, Missas celebrant, & Penitentia Sacramentum ministrant.

Hoc idem supponunt Paulus IV. Six. V. atque Clemens VIII. dum ab Inquisitoribus ejusmodi reos prævia degradatione, Curia seculari tradendos esse decreverunt, ut videre est in dicta Clem. const. 81. Et si aliis. Tom. III.

Hanc Clem. VIII. const. contra non promotos ad sacrum Presbyteratus Ordinem, Sacramentales confessiones audientes, aut Missas celebrantes, eisque prævia degradatione Curia seculari tradendos, editam, extendit, & ampliavit ad omnes etiam minores viginti quinque annis, dummodo vigesimum ætatis annum compleverint. S. D. N. Urban. VIII. in const. 79. Apostolatus. inf. tom. 4.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Officii nostri partes sedulo præstare tenemur, ut dubia quæ variis Doctorum opinionibus hinc inde diversa sententiarum agitantur, ad jurisdictionem Sanctissimi Officii Inquisitionis hæreticæ pravitatis pertinent, nostræ declarationis oraculo (prout ratio ipsa suadere videtur) dilucidentur, ut nulla cuiquam dubitandi occasio in posterum relinquatur.

§. 1. Ad aures nostras siquidem nuper pervenit, multos esse qui dubitant, an contra eos, qui in sacro Presbyteratus ordine non constituti, Missas celebrare, confessiones, ac absolutionem impartiri, ausi fuerint, per officium Sanctissimæ Inquisitionis hæreticæ pravitatis in Hispaniarum Regnis institutum, & illius Inquisitores procedendum, vel etiam animadvertendum sit, ac hi, qui talia paraverint, per Inquisitores prædictos puniri debeant. Nam eorum multorum sententia affirmetur, prædictum delictum ab Inquisitoribus plecendum esse, hisce præsertim temporibus, quibus hæretici temere

audent proferre, etiam saculare eorum sacramentorum ministris esse posse, non desunt tamen hi, qui contrariæ adhærent opinioni, unde plerumque per eorumdem Regnorum Inquisitores diversa feruntur in huiusmodi causis suffragia.

§. 2. Nos itaque, ut omnis difficultas dubitatione tollatur, animadvertentes, eos qui Presbyteratus ordine non sunt insigniti, & se in administrandis dictis Sacramentis ingerunt, facto catholice veritatem impugnare, quæ solos Presbyteros ministros eorumdem sacramentorum constituendo, illis dumtaxat quibus eadem munera congruere existimavit, committi voluit, eorum qui in Presbyteratus ordine non constituti Missas celebrant, ac confessiones audiunt, ut præfector, cognitionem, & punitionem, etiam ad Inquisitionis officium, & Inquisitores ante dictos pertinere, & quod huiusmodi delicti ratione adversus eos inquirere, procedere, ac culpabiles repetitos punire, Officium, & Inquisitores prædicti valeant, Apostolica auctoritate Præsentium tenore perpetuo declaramus, & definimus.

§. 3. Et ita ab omnibus, & singulis Ordinariis, & delegatis Judicibus, sublata eis, & eorum cuiuslibet quavis aliter iudicandi, & interpretandi facultate, iudicari, & definiri debere, irritum quoque & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit attentari, decernimus.

§. 4. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon juribus municipalibus, legibus Regnorum prædictorum pragmaticisque sanctionibus, ac statutis, & consuetudinibus Civitatum, & locorum quorumcumque dictorum Regnorum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis forsitan per Nos, ac quoscumque alios Romanos Pontifices prædecessores nostros sub quibusvis verborum formis, & insolitis clausulis, irritantibusque & aliis decretis, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, seu de Apostolica potestatis plenitudine, vel ad supplicationem Regum, Ducum, & aliorum Principum concessis, & confirmatis, quibus omnibus illorum tenores Præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romæ apud S. Marcum, sub annulo Piscatoris, die sexto Augusti, millesimo quingentesimo septuagesimo quarto, Anno à Nativitate Domini, Pont. autem nostri Anno 3.

De Aedificiis, & Jure congrui, ac jurisdictione, & facultatibus S. R. E. Camerarii, & Magistrorum Viarum Urbis.

Hoc officium in Urbe antiquissimum reintegravit Martinus V. in const. 9. Et si in consuetum. in Tomo I. fol. 305. Et ejus jurisdictionem ampliavit Six. IV. in const. 20. Et si de. fol. 421. Leo X. in const. 19. Inter. fol. 568. in d. Tom. I. ac hic supra Pius IV. in const. 102. Inter. fol. 168. ac Pius V. omnes eorum dispositiones ad terminos juris reduxit in const. 126. Ad hoc nos. Et idcirco iste Pont. d. officium innovat, & facultates, jurisdictionemque præscribit, ampliat, & declarat.

Ad hæc omnia vide etiam novum Stat. Urbis lib. 3. cap. 39.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Quæ publicè utilia, & decora esse huic Almræ Urbis ratio ipsa atque usus docuit, ea privatis cupiditatibus, ac commodis præferenda censuimus.

Inclarario quod possint.

Et ita, & non alter iudicetur.

Quibuscumque non obstantibus.

Dat. P. An. 3. die 6. Aug.

XXII.

Edita An. D. 1574.

Exordium.

Fides danda transumptis & Sanctio poenalis.

Dat. P. An. 3. die 15. Julii.

Edita An. D. 1574.

Dubium, an qui non sunt in Ordine presbyteratus &c. missas celebrant &c. possint ab Inquisitoribus hæreticæ pravitatis puniri.

1574.
Causa hujus
conflit.

§. 1. Cum itaque felic. mem. Pius Papa V. prædecessor noster nonnullas perfer. record. Sixtum IV. Leonem X. & Pium etiam IV. similiter prædecessores nostros ad ornatum Urbis editas constitutiones, una cum decreto Cameræ Apostolicæ de inquisitionibus in emptionibus domorum præferendis, tamquam juris communis correctorias, & quæ nimis latè à iudicibus interpretatæ causam injuriæ quam plurimis pauperibus inferendæ præberent, duobus editis scriptis, quorum solam signaturam sufficere voluit, Motu proprio abrogasset, & ad viam juris communis reduxisset, Dilecti filii Senatus Populique Romanus abrogationem, & inductionem hujusmodi agrè ferentes, initio Pontificatus nostri, & aliàs per se publico decreto à Nobis enixè postularunt supplices, ut litteras præfatas Pii V. uti decori publico, ac multorum civium commoditati infensas tollere pro nostro erga hanc Almam Urbem paterno amore dignemur. Quam rem dum Nos diutius differimus, plurimorum eandem ob causam querimonias expostulantium substituimus, quin etiam intelleximus publicum ipsius Urbis ornatum deferri, & magnifica ædificia jampridem inchoata, propter nimiam quorundam cupiditatem interrupta pendere, plurimosque ea de causa ædificandi consilium abjecisse. Quibus malis, quod minimo iurium nostrorum, ac Curialium detrimenti fieri possit, mederi cupientes, cum etiam in litteris Sixti, ac Leonis, ac Pii Quarti hujusmodi multa addenda, & minuenda, ac aliàs animadversione digna apparerent, opportunitum arbitrati sumus, omnibus prædictis Sixti, Leonis, & Piorum litteris antiquatis, & abrogatis, quæ ab illis ad publicum U. bis, illiusque districtus ornatum, aeris salubritatem, ac privatorum etiam commoditatem providè tunc ordinata fuerunt, ea magis commoda his temporibus ratione moderata, simulque ea quæ Nos de novo statuenda duximus, una completè omnia, ne publicum bonum, ac decus jacere diutius pateremur.

Abrogatio
constitutionum
Apostolicarum, ita
disposita in
hac conflit.
& facultas
Camerarii &
Magistrorum
cogendi domos
locorum ad ea
vendum pro viis
& locis publicis
dirigendis.

§. 2. Itaque dictas ac quascunque aliàs Prædecessorum litteras, quatenus ad aliquod eorum, quæ his nostris litteris continebuntur, pertinent, deque aliquo eorum statuunt, aut disponunt antiquantes, & abrogantes, atque penitus revocantes, & tollentes, de potestatis Nobis tributæ plenitudine statuimus, quod qui pro tempore fuerint S. R. E. Camerarius, atque ædificiorum, & viarum Urbis Magistrum, quacunque Urbis parte necessarium atque utile fore cognoverint, possint pro viis, areis, plateis, aliisque locis publicis, sive veteribus dirigendis, & ampliandis, sive novis dandis, & constituendis, cogere dominos domorum, & locorum quorumlibet, tam Ecclesiasticos quam sæculares quacunque dignitate præditos, ut vendant Conservatoribus, aut Sindico ejusdem Urbis domos, & loca, quæ Camerarius, & Magistrum prædicti ad id necessaria duxerint, sive illa domini ipsi habitent, sive aliis locis soliti sint, pretio à Magistris prædictis statuendo.

Domosque
dirutas,
areas aliæque
loca vacua
existentia penes vias
publicas claudant.

§. 3. Ubi verò aliquas ruinas esse perceperint, locave aperta viis publicis hærentia, ne laceræ atque inhabitatæ domus, interruptæque spatii interjacentibus viarum sepra, Urbis deformitatem atque incommoditatem afferant, current ipsi Camerarius, & Magistrum eas celeriter sarciri, itaque quoscunque dominos, sive directos, sive utiles domorum dirutarum, vel arearum, aliorumque locorum vacuorum secus vias publicas jacentium gravibus pœnis propositis, brevique ipsorum arbitrio præfinito tempore, cogant domos dirutas, vel areas, aliave loca hujusmodi ab eis possessa, muro saltem claudere, murumque ipsum ad eam altitudinem, quæ proxima ædificia, proximisque muros æquet, vel ad aliam, quam ipsi præscripserint, attollere. Eamque ob causam iidem Camerarius, & Magistrum, si ipsi visum fuerit, interdiciant interim inde dominis exactionem, ac conductoribus, si qui fortè fuerint, solutionem pensionum seu canonum, aut censuum, easque faciant in hujusmodi

opus ipsosmet conductores impendere, quas cum conductores ita impenderint, domini acceptas ferre debeant, cum verò impendere jussi neglexerint, opus quod in tempore juxta hujusmodi præscriptum factum non fuerit, sua ipsi impensa perficiant. Quod si vel nulli sint conductores, vel pensiones interea temporis debitæ satis operi non sint, neque tamen domini possidentes domos dirutas aut areas locave aperta hujusmodi sic clauserint, ex tunc præfinito tempore elapso, si viles tantum domini sint ab utili eorum dominio, omnique jure quod inde eis competeat, cecidisse intelligantur, locaque ipsa ad directos dominos liberè, cum onere tamen illa ita claudendi, devoluta sint eo ipso. Si verò etiam directum dominum, sive per proximè dictam devolutionem sive aliàs habeant, liceat prædictis Camerario & Magistris, postquam sic præfinitum ipsis dominis tempus affuerit, tunc exigendis propositis pœnis, tum aliis crescente contumacia etiam gravioribus, & sæpius incutiendis eos placere, tum verò etiam capitis ex aliis illorum bonis pignoriibus, eisque per substationem de more distractis, pecuniam cogere, unde murus, & præscriptum opus omnino perficiatur. Vel si hac quoque ratione non profecerint, loca eadem, modo domini ipsi illa non incolant, propositis ad hoc semel vel pluries editis, quibuscunque personis illa novis ædificiis instaurare, vel saltem sic claudere volentibus locare, aut in emphyteusim, etiam ad longum tempus, vel ad unius aut plurium personarum, sive successivam, sive nominandam vitas, atque etiam perpetuò concedere, vel etiam vendere, aut aliàs alienare, pro pensione aut canone, aut pretio quod reperiri poterit, ita quidem ut ex pluribus hoc casu, oblatoribus, si quis rei particeps, aut consors fuerit, is præ omnibus obtinet, nisi forsitan, & ipse in claudendo negligens fuerit, præter hunc autem, vicinis ceteris, & inter vicinos qui magis indiget, vel qui vicinus est à pluribus partibus, inter ceteros verò qui plus, quique ad majorem Urbis ornatum ædificare voluerit, præferatur, iudicio eorumdem Camerarii & Magistrorum.

§. 4. Pro privatis autem ædificiis similiter, aut novis construendis, aut veteribus ampliandis, liceat cuicumque quovis muro sibi propinquo liberè uti, eisque tigna, lapides, aliæque materiam ædificii sui, totumque ipsum ædificium injungere & annexere, etiam si murus is ad vicinum suum totum pertineat, perfoluto tamen ejusdem muri dimidio pretio, ad eam æstimationem, quam duo periti, quorum singulæ partes elegerint, vel illis discordibus, ipsi viarum Magistrum declaraverint.

§. 5. Et si inter duas domos viculus fortè sive intercapedo trium circiter, ut solet palmarum interstiti, liceat ei qui primus in altera earumdem domorum ædificare coeperit, habita tamen ab ipsis Magistris licentia, totum sibi viculum nullo perfoluto pretio occupare ac domui suæ adungere, domumque ad vicini murum producere, muroque ut supra dictum est, communiter uti.

§. 6. At si quis domum, fundum, solumve habens, ibi ædificare voluerit, illi Camerarius & Magistrum præfati cogant vendi domos, aliæque loca eidem domui, fundo, solo vicina, quæ eorum domini non incolunt, sed locare solent, quæque iidem Camerarius, & Magistrum hujusmodi ædificio utilia & necessaria putaverint, pretio tamen aucto duodecima ejus parte, ultra æstimationem modo prædicto faciendam. Et nihilominus si ædificium ipsum insigne futurum sit, eisque perficiendo aliqua domus etiam à domino habitata, vel hortus, aliæque locis muris clausis opportuno cohæreat, eo casu (dummodo ædificium jam ceptum sit, idque à duobus saltem lateribus cohæreat domui, horto, vel loco hujusmodi, illiusque æstimationem quadruplo sit excessum) cogant dominum etiam sic habitantem, ut domum, hortum, vel locum vendat aucto tamen dicto pretio ad quintam ejus partem, dataque ipsi domino sex mensium dilatione post factam

Ædificantes
possunt muro
propinquo
uti solito
pretio.

Viculusque
inter medios
eorum domibus
adju-
gere.

Vicinos
etiam cogere
ad eis vendendum loca
vicina aliis
locata, vel
etiam ab eis
in habitata,
aucto pretio
ad 12. vel 5.
partem rel-
pectivè.

venditionem, quo interim ibidem permanens aliam sibi habitationem parare possit.

§. 7. Præterea cum ob duendam five dirigendam viam vel ob aliud opus publicum, aliqua pars aliqui domus quam dominus sine ulla fraude tunc habitaret, mandato dictorum Magistrorum diruta fuerit, unde domus habitationi domini incommoda efficiatur ut familiam non capiat, si juxta illam fuerit alia domus annua pensione vel aliâs locari solita cujus conjunctione hujusmodi incommoditati subveniri possit, ut id fiat cogant eam domino domus dirute, si ibi deinceps habiturus sit, vendi pretio quod supradicto modo æstimatum fuerit. Quod si diversorum domorum domus hujusmodi jacturam passæ locari solebant, non autem habitari, alio ipsorum domorum petente, cogatur alius domum suam si dirutam vel excisam vendere, constituto pretio ad æstimationem prædictam, hac tamen distinctione habitata ut detur optio illi, qui minorem jacturam in sua passus fuerit, an ipse velit aliam emere. Quin etiam, si quis post hujusmodi ruinas, propter publicum aliquod opus factas propriam domum, ea de causa aliqua parte dirutam vel excisam, quam ipse habitare solebat faserit, eique alia domus, similem passâ jacturam contigua sit, quam dominus similiter habitans intra tempus à Magistris præfixum neque faserit neque muro clauserit, sed deformem reliquerit, velique is, qui suam faserit, truncam illam fribi contiguum suæ conjungere & ædificare, ac propterea pretio, ut supra dictum est, æstimando, & amplius addita ejusdem pretii quinta parte emere, cogatur ejus dominus, licet habitans, ita vendere.

§. 8. Sed & cum aliqua domus, five fundus, aut solum volente sua sponte domino vendendum erit, teneatur venditor perquirere à vicinis, quotquot erunt, qui rem aliquam immobilem illi contiguum habuerint (etiam si se empturos nullo modo antea professi sint) an aliquis eorum velit rem vendendam emere, eisque pretium atque omnia pacta & conditiones, quibus cum alio verè, omnique procul fitione contraxit, intimare, perquisitio autem & intimatio fiat per unum ex Curforibus seu mandatariis personaliter quidem si reperti fuerint, sin autem, duorum Curforum, seu mandatariorum diligentia reperiri commodè non poterint, fiant domi dimissa copia, absentibus autem ab Urbe, dicto extrajudicialiter & summarie coram eisdem Camerario & Magistris eos abesse, fiant per publicum edictum locis, quibus in Urbe consecutum est, assignandum. Quibus ita factis jurent tam venditor quam emptor apud acta Notarii dictorum Magistrorum, venditionem de hujusmodi rem factam, & intimatam, esse veram, & in ea ejusque pretio non interfuisse dolum, fraudem, simulationemve aliquam.

§. 9. Post hæc si vicini prædicti se eisdem pretio, ac pactis, & conditionibus empturos non delibaverint, & ibi ædificaturos non promiserint, præsentibus scilicet intra quindecim dies, absentes vero intra triginta, à die præfixorum hujusmodi juramentorum rursus tam præsentibus quam absentes intra alios quindecim dies ab hujusmodi declaratione, & promissione, si fiat, omnia juxta ea quæ in venditione intimata continebuntur, non præstiterint, pretiumque si quod in illa solum fuerat, non perolverint, & de ædificando ibi ad certam summam, certumque tempus, ac sub certa pœna, prout ab eisdem Magistris præscriptum fuerit, se non obligaverint, illis posthabitis, venditio cuicumque alii facta maneat, & rata sit. Qui verò intra utrumque dictorum terminorum prædicta impleverit, ei ceteris exclusis venditio sic fieri debeat. At si perquisitio, & intimatio ita facta, juramentumque ita præstitum non fuerint, quæcumque venditio de ea domo, five solo cuicumque alii facta nullus jure emptori tribuat, & quoad illum pro infecta sit, quamdiu vicini intra annum à die quo illam

recliverint, se opposuerint. Siquidem aliquo ipso intra dictum annum petente, sequæ, ut prædictum est, obligante ad ædificandum, & pretium emptori (si is illud accipere, & emptioni suæ renuntiare, ac ratione illius, prout Camerarius & Magistri mandaverint, cavere voluerit,) restitente, aliquo in pretium ipsum deponente, venditio ei facta censetur, & perinde ex illa in rei possessione inducatur, expulso inde dicto primo emptore, ac si cum eo & ad ejus commodum celebrata esset. Rescivisse autem, quoad hoc attinet, intelligatur quocumque modo perceperint, vel hoc solum, rem scilicet, fuisse venditam, licet neque pretium neque alias condiciones aut qualitates perceperint. Post dictum verò annum maneat prima venditio, neque hæc de causa à quocumque amplius impetatur.

§. 10. Ceterum eo casu quo perquisitio, & intimatio prædicta fient, si in illa venditione aliqua simulatio, præsertim circa pretium augendum, admissa fuerit, tum venditio nulla sit, tum simulator ipsi alter re, alter pretio privati sit, ipsumque pretium ipsaque res Camerari Apostolicæ applicentur eo ipso. Et præterea iidem simulators pœnis falsi, & si juraverint, etiam perjuri puniantur.

§. 11. Eadem omnia & inquilino locum habeant, cum domus volente domino venalis erit, videlicet ut etiam ipsius domus inquilino, si quis erit, perquisitio, & intimatio fiant modo prædicto, ipseque, si emere voluerit, tum intra eosdem terminos, tum deinceps eadem faciat, quæ vicini facere debent, excepta dumtaxat oblatione & obligatione de ædificando. Etenim inter inquilinum, & vicinos ea sit distinctio, ut volentibus ædificare vicinis, inquilino nulla ratio habeatur, sed tantum vicinorum. At illis non promittentibus ædificare, inquilino, etiam si ædificaturus non sit, idem jus in emptionem competeat, quod vicinis, si ædificare vellent, secundum prædicta competere.

§. 12. Verumtamen quando in singulis casibus prædictis, five coactæ five spontaneæ venditionis, duo vicini fuerint, quorum ædificis vendenda res opportuna existat, & propterea illam sibi quisque ex hac constitutione vendi postulet, is obtineat qui magis illa indiguerit, aut si uterque æquè indigeat, inter utrumque dividatur, quatenus utrique commoda portio tribuatur. At si hujusmodi portiones utrique forent inutiles, tota illi detur, cujus ædificio à pluribus partibus, vel aliâs magis adhærerit. Si vero alteri tantum divisio inutilis futura sit, nihil illi, sed tota alteri detur. Quod si nulla fuerit ædificantium indigentia, is præferatur, qui magis fuerit vicinus, vel in vicinitate par, is qui plus, quique ad majorem Urbis ornatum, judicio eorumdem Camerarii & Magistrorum, ædificare voluerit.

§. 13. Præter supradictos autem vicinitatis casus, si quis domum aliumve fundum aut solum in emphiteusim, aliumve titulum, perpetuè vel ad unius aut plurium personarum vitam, pro annuo canone aliave responsione concessum habeat, ibique ædificare velit, liceat eisdem Camerario & Magistris, eo petente, domum, fundum, aut solum hujusmodi ab ejus directi domini, licet nolentis, proprietate, dominio, ac jure, necnon à canonis sue responsionis præstatione eximere & liberare, alia re stabili prius constituta, pretii, commoditatis, redditus, ac bonitatis saltem paris, quæ loco illius liberatæ sit quoad omnia, & ad eundem directum dominium ratione proprietatis, domini, devolutionis & aliâs cujuscumque juris & oneris, eisdem modo & forma pertineat, quibus illa pertinebat, translato quoque ad istam hujusmodi canone five responsione, cum augmento quintæ illius partis, & insuper præstita idonea cautione & etiam facti per illum qui ædificaturus est, obligatione omnium suorum bonorum, tum quod res in quam facta est hujusmodi translatio libera est, tum etiam de evictione in ea forma, qua in Urbe præstari solet.

§. 14. In rusticis quoque prædiis, ut illorum nitore

Simulatoresque hujusmodi venditionum pœnis hic expressis incurrunt.

Inquilinis etiam intimatio præstari debet, & ipsi præstare tenentur contenta in venditione, non autem ædificari: vicini autem eis preferuntur, si ædificare velint.

Vicini quoque pluribus concurrentibus, quis præferri debeat.

Ædificare volentes in re stabili in emphiteusim, &c. concessis obtinebunt à Camerario & Magistris eorum liberationem, prædicta alia re stabili ejusdem pretii & redditus cum oneribus que erunt in re sic liberata.

1574.
V nee aut
canneta intra
milliaria tria
ab Urbe exi-
stentia, &
locari solita
vendenda
sunt vicinis
habentibus ibi
vineas majores & nobiliores.

Prædiola decem rubrorum intra 12. milliaria ab Urbe existentia & majoribus prædiis contigua, vel ea interfectantia vicinis vendenda sunt.

Declaratio quod dispositio circa prædictas venditiones sponte vel coacte fieri, locum habent etiam in bonis ad pia loca spectantibus, aut fideicommissis subiectis.

Facultas Camerarii & Magistrorum & forma procedendi in casibus in quibus recuset quis vendere aliqua bona, juxta formam hujus constitutionis.

ad honestam in illis hominum commoditatem, salutaremque five animi five corporis refectionem, aliqua ratione consulatur, illud observetur, ut qui vineas aut canneta intra tria ab Urbe milliaria, five partiariis colonis aliqua parte fructuum, five aliis pecunia solent locare, cogi possint eadem vendere, pretio æstimando ut supra dictum est, & amplius duodecima ipsius pretii parte, iis qui prope illa vineas possident, quas colant sua impensa, dummodo emptorum vineæ sint non solum majoris pretii & mensuræ, sed magis etiam & cultæ, & ædificiorum structuris conspicuæ, hisque omnibus illa tantopere superent, ut magna inter utraque addit inæqualitas, iudicio eorundem Camerarii, & Magistrorum. Non possint autem cogi ut partem tantummodo earum vendant.

§. 15. It vero qui usque ad duodecim ab Urbe milliaria habent prædiola mensuræ decem dumtaxat, vel pauciorum rubrorum, quas linguas seu pedicas dicunt, contigua majoribus aliorum prædiis, quæ casalia appellantur. Item ii quoque ex quorum casalibus similes linguæ seu pedice ejusdem mensuræ, in aliorum intra idem spatium duodecim miliarium constituta casalia excurrunt, eaque interfectant, ut à duobus, ut minus, lateribus linguæ ipsæ à vicinis casalibus circumdantur, cogi possint, five ipsi colant five aliis locent, illas vendere, constituto pretio ad æstimationem de qua supra dictum est, adjecitque ejusdem pretii quinta parte.

§. 16. Quæcumque autem supra statuta sunt, tum de Urbanis tum de rusticis prædiis, aut sponte aut coactè vendendis, vel etiam à directis dominis liberandis, ea locum habeant omnino, five prædia ipsa sint ecclesiastica, & ad quæcumque Ecclesias, & basilicas etiam dictæ Urbis etiam Patriarchales, aut cujusvis Ordinis monasteria, & etiam Mendicantium domos, atque loca religiosa, necnon hospitalia, etiam nationum, aut regularium, militarium, sodalitatesque aut confraternitates, ceteraque pia loca pertinentia, dummodo neque contigua Ecclesiis, monasteriis, hospitalibus, religiosisque ac piis locis hujusmodi, neque intra illorum septa consistant, five sint privatarum personarum capellæ, & oratoria, vel domus aut loca servandæ hospitalitati destinata, modò hospitalitas inibi jam neque exerceatur actu, neque amplius exerceri debeat, five sint laicalia, & cuicumque fideicommissio, substitutioni, successioni vel dispositioni obnoxia, & tam hæc laicalia, quam illa ecclesiastica, eorum qui illa reliquerunt seu dederunt, ultima vel alia voluntate alienari prohibita, ac quocumque onere gravata.

§. 17. Sed quoties casus evenierit, quo res aliqua hæc constitutione vendi debeat, si is ad quem pertinet eam vendere, bis monitus à Camerario & Magistris, cum assignatione convenientis termini ad vendendum, id recusaverit, vel malitiose distulerit, tunc Camerarius, & Magistri vice ac nomine recusantis, vel differentis rem ipsam vendant, cum promissionibus, obligationibus, renunciationibus, pactis etiam penalibus, & clausulis consuetis, pretiumque quod inde cum ejus augmento proveniet apud ædem sacram, vel personam fidei & facultatibus idoneam deponant. Deinde si res ecclesiastica erat, vel etiam si laicalis, sed quod sciatur, fideicommissio, similive dispositioni subiecta, alienari prohibita, aut onere gravata, antequam emptor ejus possessionem assequatur, pretium ipsum totum in aliquorum bonorum immobilium emptionem utiliter convertatur, cavente de evictione etiam ipso emptore & ad id omnia bona obligante denturque bona inde empti domino rei vendite. Quo facto, venditio rei illius nequaquam rescindi, aut etiam impugnari possit, prætextu quarumvis oblationum dispositionum, five etiam inutilitatis Ecclesiæ, aut loci vel personæ cuiusquam. Et insuper res illa vendita libera sit, & exempta ab omnibus hujusmodi dispositionibus, prohibitionibus, & oneribus, eaque ad bona, in

quæ illius pretium convertum est, sint translata. Et exinde bona ipsa dictæ venditæ rei loco maneant, eisdemque prorsus dispositionibus, prohibitionibus, & oneribus subjaceant, quibus illa subjacebat, sicutque nihilominus de evictione illius emptori obligata eo ipso.

§. 18. Sin autem res vendita neque ecclesiastica erat, atque ejusmodi vinculis obnoxia habeatur, & qui ejus dominus fuerat, venditioni ita factæ consentire velit, ac fidejussores de evictione præstare, pretium illi solvatur. Quod si hujusmodi fidejussores præstare noluerit, vel etiam non potuerit, emanant ex ipso pretio, arbitrio eorundem Camerarii & Magistrorum, vel loca montium non vacabilem, vel alia bona immobilia, de quorum evictione idoneis fidejussoribus sit cautum, eaque dicto domino tradita sint loco similis cautionis pro re vendita, donec aliter emptori idoneè caveatur, & interim vendi, aut aliis alienari nullo modo possint. Verum usquequo pretium, vel ex pretio alia res emptæ, ut præfertur, domino tradatur, pensio quæ ex ipsius rei venditæ locatione percipi solebat, vel percipi verifacilliter potuisset, eidem ab emptore persolvatur.

§. 19. Current autem Camerarius, & Magistri, ut quisque per causam ædificandi hujus constitutionis favore uti voluerit, ei ante omnia, consideratis tum ipsius loci qualitatibus, summam quam ædificando, ut minimum, impendere, ac tempus quo inchoasse, quoque perficere debeat, propositis quas voluerit penis præscribant. Ilque ad præscriptum hujusmodi promittat, & se bonaque sua omnia arctissime obliget, subiturus omnino poenas ipsas nisi promissa præstiterit, omnia purgatione moræ ex quocumque jure, & etiam canonica æquitate competenti penitus sublata. Et nihilominus compellendus ab eisdem Camerario, & Magistris, vel promissa perficere, vel quæ propterea emit, & etiam illis vicina, quorum occasione emit, & in quibus se ædificaturum proposuerat, loca, & domos alias ædificare volentibus, iusto pretio, sicut supra dictum est æstimando, absque ullo augmento vendere.

§. 20. Sed ne aliquorum impunitas, qui ut accepimus, beneficio litterarum Sixti & Leonis, ac Pii Quarti dum illæ vigerent abasi, domos, & loca ex illarum depositione acquisita, infabricata adhuc retinent, aliis admittendi familia audaciam præbeat, iidem Camerarius & Magistri, illos omnes qui à viginti annis citra loca aliqua ex dictarum litterarum dispositione emerunt, seque in illis ædificaturos promiserunt, nec præstiterunt, cogant ea omnia quæ tunc facere debebant, intra spatium sex mensium à die præcepti eis hac de re faciendi implere, alioquin poenas præmissas ab iis exigant omnino. Et præter illas, loca eadem dominis quibus ablata fuerunt, si ipsi velint, eodem pretio quod tunc solum fuit restitui, vel illis volentibus aliis qui ibi ædificaturi sint pretio, ut supra dictum est, æstimando, vendi compellant.

§. 21. Ceterum poenæ omnes quas incurrent, qui adversus constitutionem hanc, seu Camerarii & Magistrorum pro ipsius constitutionis executione mandata vel decreta admissent, piis locis dictæ Urbis ita applicata sint, ut illi ex ipsis locis irrevocabili debantur, pro quo primum poenæ ipsæ post illarum incursum petite fuerint, ad quam petitionem, lapsi ab hujusmodi incurfu triginta diebus, nisi dicti Camerarius, & Magistri illas jam pro eorum debito exegerint, quilibet in dicta Urbe, vel in Romana Curia Judex ad illarum executionem indefinenter procedat, donec eidem loco verè & integrè persoluta fuerint. Nullo apertum dictorum locorum petente, nos in Urbe Vicarius eas de manu dictorum Camerarii & Magistrorum acceptas, vel eis ab ipso interpellatis negligentibus, ab eorum debitoribus exactas, inter dicta loca, juxta eorum indigentiam, arbitrio suo distribuat.

Et procedendi etiam quando quis consentire vellet juxta hanc dispositionem.

Facultas eorundem præscribendi tempus ad ædificandum summam ibi exorandam à volentibus in favore hujus constitutionis ex causa ædificandi.

Qui emerunt bona vigore dictarum litterarum Sixti & Leonis, ac Pii 4. & ædificare promiserunt, debent eas adimplere infra sex menses.

Applicatio locis piis poenarum incurrendarum ob contraventiones.

Facultas Camerae & Magistritum pro executione praedictorum.

§. 22. Nos enim ad supradicta omnia & singula faciendum, & exequendum, inque illis, & pro illis summariè, simpliciter, & de plano, solaque veritate inspecta, ac manu regia, etiam ex officio procedendum, plenam, expeditam, liberamque auctoritatem, & potestatem, Camerario scilicet in ecclesiasticis, eidemque & Magistris viarum praedictis in laicis, ac quoad penas praedictas Vicario ac singulis Urbis, vel Curiae Judicibus hujusmodi, in quacumque personas, de eadem potestatis plenitudine praesentis constitutionis auctoritate tribuimus & demandamus.

Decretum irritans.

§. 23. Decernentes eadem omnia, & singula quae supra statuta sunt, si quando in aliquo casu de eorum sensu controversia contingeret, in eam partem interpretanda esse, quae ad Urbis ornatum magis facere videbitur. Ac semper, & ubique, siue in iudicio five extra iudicium favorabilia censerent. Et ita ab omnibus Judicibus etiam Palatii Apostolici Auditoribus & Cardinalibus sublata quavis aliter interpretandi, & iudicandi potestate, interpretari & iudicari debere. Et si secus fiat, fore irritum & inane.

Clausula derogatorie.

§. 24. Non obstantibus praemissis, ac fel. recor. Symmachi, & Pauli II. de rebus Ecclesiae non alienandis, aliisque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, legibus etiam Imperialibus, dictaeque Urbis, atque Ecclesiarum, Monasteriorum, & locorum religiosorum five piorum, Ordinumque, quorum bona huiusmodi fuerint, statutis & consuetudinibus, necnon testantium voluntatibus, aliisque dispositionibus, etiam iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, privilegiis quoque & litteris Apostolicis eisdem Ecclesiis, Monasteriis & locis, eorumque Superioribus, Capitulis, & Conventibus, seu Populo Romano, aliisque quibuscumque concessis, & quibuscvis aliis Sedis Apostolicae indulgentiis, per quae Praesentium executio, & per eas tributa iurisdictionis explicatio posset quomodolibet impedire vel retardari, quibus omnibus eorum tenores pro plenè & integrè expressis habentes, de potestatis plenitudine praedicta derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Dat. P. An. 3. 1. Octob.

Nulli ergo &c. Si quis autem &c.
Dat. Romae apud Sanctum Marcum, Anno incarnationis Dominicae 1574. Kal. Octobris, Pont. nostri Anno tertio.

XXIII.

Privilegium Doctorum Romanorum, publicè legendi in quacumque facultate, in generali Studio Almae Urbis.

Hujus Studii electionem, & alia quae ipsum concernunt, vide in Tomo I. sup. in cons. 9. Bonif. VIII. In summa. fol. 180. & Leon. X. cons. 4. Dum suavisimos. fol. 540. & inf. in cons. 74. Six. V. Immensa, in Congreg. x. cum aliis quae ad eas notavi infra in hoc Tomo.

Edita An. D. 1574.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Causa conf.

Cupientes universos Almae Urbis nostrae origine Civium filios ad bonarum litterarum cognitionem & doctrinam, pro communi, & publica utilitate, dictaeque Urbis ornamento, & honore, paterna charitate & Sedis Apostolicae munificentia, atque liberalitate allicere, ut ipsi, & etiam ceteris ad virtutem calcem honorificum, & fructuosum ad datur; Motu proprio non ad aliquis super hoc nobis oblatae petitionis instantiam, sed ex certa nostra scientia, ac de mera nostra liberalitate dilectis filiis Senatui, & Populo Romano.

Doctores ex parte & avo Romae natis, admittuntur ad legendum in hoc Studio.

§. 1. Quod ex nunc deinceps, & perpetuis futuris temporibus omnes, & singulos adolescentes & juvenes Doctores ex patre & avo Romae natis Romani, excedentes vigesimum secundum suae aetatis annum, qui in Studio seu Gymnasio publico dictae Urbis in quacumque facultate pro tempore legere voluerint, ad lecturam huiusmodi, facta tamen prius per eos coram dilectis filiis nostris S. R. E. Cardinalibus super eodem Studio, seu Gymnasio deputatis, ac illius Rectore, & Reformatoribus pro tempore existentibus, una lectione, admitti debeant cum salario vigintiquinque scutorum quolibet anno pro unoquoque, qui ut praefertur legere voluerit, Apostolica auctoritate renovere Praesentium perpetuò concedimus, & elargimur. Necnon eisdem Doctoribus, ut praefertur, qui in eodem Gymnasio munus legendi subibunt, dictum salarium annuum vigintiquinque scutorum, ipsis, & eorum cuilibet debitum, & consuetis in eodem Studio seu Gymnasio temporibus, ac de, & ex ejusdem Studii, seu Gymnasii redditibus, proventibus, vectigalibus, & aliis emolumentis universis per eos, ad quos spectat, & pro tempore spectabit, perfolvendum, Motu, & auctoritate similibus constituimus, & assignamus, ipsosque ad lecturam huiusmodi recipi, & admitti, & salariam eis, & eorum singulis perfolvi debere, ut praefertur, decernimus.

Doctores ex parte & avo Romae natis, admittuntur ad legendum in hoc Studio.

§. 2. Mandantes propterea dilectis filiis Conservatoribus Camerae dictae Urbis, ac Rectori, & Reformatoribus dicti Studii seu Gymnasii, praesentibus, & futuris, aliisque omnibus, & singulis, ad quos id quomodolibet spectat, & pro tempore spectabit, quatenus praesentes nostras litteras recipiant, & admittant, ac inviolabiliter observent, & ab omnibus quos ex quomodolibet concernunt & concernent observari mandent, & faciant: necnon Doctoribus legentibus huiusmodi de dicto salario, debitum ut praefertur temporibus annuatim respondeant, & etiam faciant ab aliis responderi realiter & cum effectu. Et si secus super his à quocumque quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari, irritum, & inane decernimus.

Doctores ex parte & avo Romae natis, admittuntur ad legendum in hoc Studio.

§. 3. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac Studii, seu Gymnasii, necnon Urbis huiusmodi iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indulgentiis, & litteris Apostolicis, quibuscvis Superioribus, & personis, in genere vel in specie, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscvis clausulis, & decretis, etiam motu simili, ac consistorialiter, & aliis in contrarium quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, etiam de illis, eorumque totis tenoribus specialis, expressa, & individua, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum tenores Praesentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Pont. Ann. 3. 12. Octob.

Dat. Romae apud Sanctum Marcum, sub annulo Piscatoris die 12. Octobris 1574. Pont. nostri Anno Tertio.

XXIV.

Confirmatio, & extensio constitutionis Bonifacii VIII. editae contra dantes aliquod vel promittentes, vel recipientes, pro obtinenda gratia, vel iustitia apud Sedem Apostolicam.

He bulla à Clem. VIII. approbata & extensa fuerunt, ad quocumque modo aliquod dantes vel recipientes de rebus Communitatum Status Ecclesiastici in cons. 10. Pro commissa. ubi notabo, in Tomo III. fol. 9.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Ab ipso Pontificatus nostri principio quam maxime possumus entimur atque contendimus, ut

Bonif. VIII. excom-
muni-
cavit dātes
vel recipien-
tes ut in ejus
confi. i.

Hic Pont.
eam confir-
mat & ad sub-
rores exten-
dit.

Aliaque pœ-
nas imponit.

Revelantibus
eas condo-
nat.

D. P. An. 3.
9. Novemb.

XXV.

Edita An. D.
1575.

Exordium.

Privilegium
fore pro sub-
collectori-
bus & Com-
missariis
Nuncii Apof-
in Regno
Neapolis.

domus & curia nostra à sordibus expurgetur.

§. 1. Cui salubri consilio incumbens fel. rec. Bonifacius Papa VIII. excommunicavit, & anathematizavit omnes Clericos, religiosos, & laicos utriusque sexus, five familiares Curie, five undecumque alios, qui aliquod pactum facerent, seu quid parvum vel magnum promitterent, &c.

Residuum prætermittitur quia est sup.

§. 2. Sed hoc scelus ita hodie in mores inductum est, ut plerique cupiditate improbi quæstus, potentiorum suffragationibus adnixi, hujusmodi negotiorum expeditiones hac illac conquirentes turpissimè nundinentur. Alii alios, quos gratia præstare arbitrantur, donis pollicitationibus ambiant. Quidam etiam se talium operam atque industriam pretio, & muneribus quæsisse asignant. Quæ cum pessima sint, & Curie prædictæ existimationem gravissimè offendant, in eos qui talia agunt animadvertendum fore arbitrari. Constitutionem prædictam cum suis censuris & pœnis omnibus innovamus, eademque omnes extendimus ad audentes qualescumque horum facinororum quæ adscripsimus, dantesque illis, & aliis supradictis auxilium, consilium, vel favorem.

§. 3. Quin etiam eos omnes, omni beneficio & officio Ecclesiastico, & seculari, five temporali si ve perpetuo ipso jure privamus, ac privatos esse declaramus, & præterea infamæ subiectos perpetuo, ac inhabiles ad illa & alia esse volumus. A quibus etiam, prout quæque res erit, tales pœnæ exigantur, quæ ceteris sint exemplo.

§. 4. Illis tamen qui rem adhuc incognitam, complicesque, fautores, & socios retexerint, impunitas concedatur.

Dat. Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo septuagesimoquarto, Nonis Novembris, Pont. nostri Anno tertio.

Anno à nativitate Domini 1574. indictione 1. die vero 8. mensis Novembris, Pont. Sanctissimi in Christo patris & D. N. D. Gregorii divina providentia Papa XIII. Anno tertio, Retroscripta littera Apostolica affixa, & publicata fuerunt ad valvas Basilicarum Sancti Joannis Lateranensis, & Principis Apostolorum de Urbe, necnon Cancellaria Apostolica, & in acie Campi Floræ, per nos Alexandrum Aflanco lum, & Antonium Clerici S. D. N. Papæ Cursores.

Petrus Aloysius Gayta Mag. Curf.

Quod Subcollectores, & Commissarii Nuntii Apostolici in Regno Neapolitano, ejus dumtaxat jurisdictioni subiaceant, in causis criminalibus contra eos promovendis.

GREGORIUS PAPA XIII.

Dilecto filio Magistro Antonio Saulio utriusque Signatura nostra Referendario, moderno, & pro tempore existenti in Regno Neapolitano Nuncio, & Collectori nostro Generali.

Cupientes pro nostri officii cura indemnitate dilectorum filiorum Cameræ nostræ Apostolicæ Ministrorum, ne illi molestiis, litibus vel incommodis fatigentur, quantum cum Deo possumus opportune providere, Motu proprio & ex certa scientia, maturaque deliberatione nostra, tenore Præsentium statuimus & ordinamus.

§. 1. Quod omnes, & singulæ causæ nunc motæ, & pro tempore movendæ, quorumvis prætorum excessum, criminum, & delictorum per quoscumque Subcollectores, & Commissarios, tam generales quam particulares in quibuslibet provinciis, & Civitatibus, & Diocesis istius Regni Neapolitani, per te, & pro tempore isthic existentem nostrum, & Sedis Apostolicæ Nuncium

& Collectorem generalem deputatos commissorum, à te, & pro tempore existente Nuncio solum, non autem à quibusvis aliis Judicibus, etiam locorum Ordinariis deinceps in futurum non modo durante eorum officio, sed etiam post ipsum dimissum, donec vixerint, audiri, cognosci, & decidi possint, & debeant. Aliisque Judicibus, & locorum Ordinariis, ne in illis sese quovis prætextu, seu quæsto colore intrinittere quoquomodo ullatenus audeant vel præsumant, districtius inhibemus.

§. 2. Sicque per quoscumque Judices, & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, sublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate, judicari, & definiri debere. Necnon irritum, & inane, si secus super his à quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, decernimus.

§. 3. Quocirca tibi & pro tempore existentis Nuncio, contradictores quoslibet & rebelles, etiam si Episcopali, aut Archiepiscopali dignitate fungentes fuerint, sub interdicti ingressus Ecclesiæ, ac suspensionis à divinis quoad Episcopos, ac Archiepiscopos, quo verò ad inferiores, sub pecuniariis arbitrio vestro declarandis, & applicandis pœnis, & demum sub sententiis, & censuris Ecclesiasticis, & per alia juris & facti remedia, appellatione postposita compescendi, brachiumque sæculare ad hoc si opus fuerit invocandi, ceteraque ad id necessaria faciendi, mandandi, & exequendi, plenam & liberam per ealdem Præsentes facultatem concedimus, & potestatem.

§. 4. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac quibusvis, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis in contrarium forsitan concessis, & confirmatis, quibus omnibus, eorum tenores ac si de verbo ad verbum infererentur Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat, ad effectum Præsentium specialiter, & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque, seu si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Datum Romæ, apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris die 4. Januarii 1575. Pont. nostri anno tertio.

Reformatio Curie de Sabellis, Marecalli Almar Urbis.

Marecalli officium antiquissimum est, ejusque cura Conclavis custodia demandata est, ut vidi in quadam constitutione Innoc. VI. sub die 26. Julii 1351. quam sine mendo habere potui. Et de ejus jurisdictione, & reformatione, vide etiam sup. in const. 28. Julii II. Decret. fol. 514. Tom. I. & in const. 58. Pii IV. fol. 85. & infra in Tomo III. in const. 71. Pauli V. Universi, in tit. 8.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Um rectè administrandæ ubique justitiæ rationes omnes bene constitutas, & cupimus, & pro nostro munere veterique studio, quo possumus enitmur, hand postrema esse debet minorum hujus Urbis Tribunalium cura, in quibus quicquid delinquitur, eò deterius contingit, quò pauperiores afficit, quibus in re tenui, & acris ex injuria damnum, & difficilissimum remedium afferri solet.

§. 1. Dum igitur nuper officium Marecallatus Se-

Clausula sub-
lata & decre-
tum irritans.

Facultas
Nuncii in
contrave-
nientes.

Derogatio
contrariis.

Dat. P. An.
4. Jan.

XXVI.

Edita An. 1575.

Exordium.

Causa refe-
mationis.

Judex gratuito deputetur. Hoc idem voluit Pius IV. cit. in rubri.

Et ad annum & ex rationabili causa ad biennium.

Sindicatui consistere caveat.

Commentariensis & Capitanei, ac Executoris officia non venduntur nec locentur.

Notarii sint duo tantum. Hoc idem decrevit idem Pius IV.

Judex non cognoscat causas quibus statuta est poena corporalis.

Neque alius si alibi sit preventum.

Significatio neque non concedat.

Fiscus citetur in causis criminalibus ejusdem Curie.

Poenarum solutiones adnotentur ut hic.

App. detur in Civilibus causis ab A. C.

Tributum non exigatur ab inho-

dis Apostolicæ dilecto filio nobili viro Bernardino de Sabellis Marefcallo dicte Sedis concesserimus, volentes eidem officio non minus de legum præstantia, quam de viri solertia esse prospectum, ut in illius Curia de Sabellis nuncupata, tum judicium, tum cetera ad id munus pertinentia, ad iusti & recti normam directæ, sine forde peragantur, infra scripta hæc, quorum aliqua pridem à Julio II. & à Pio IV. fel. record. Prædecessoribus nostris, licet prudenter constituta, jam in usu non erant, ibi deinceps inviolatè servanda perpetuò statuimus, & ordinamus, atque etiam innovamus.

§. 2. Judex ibi jus dicendus, gratuito à Marefcallo deputetur, adeo, ut neque Judici dare, neque Marefcallo accipere propter hoc quidquam liceat, etiam mutui aliove nomine quavis de causa vel ante, vel post deputationem, etiam auctoritate, five prætextu cuiuscumque consuetudinis, aut etiam indulti à Sede Apostolica concessi illam enim improbamus, hoc autem revocamus expresse.

§. 3. Deputatio vero fiat ad annum dumtaxat, quo finito huiusmodi etiam sit ejus Judicis officium, nisi propter aliquā rationabilem causam prorogandum visum fuerit, sed prorogatio alium annum omnino non excedat, semel tantum fieri possit.

§. 4. Antequam incipiat exercere officium, caveat idoneis fideiussoribus de stando Sindicatui. Finito officio, etiam si nec querelatus, nec requisitus fuerit, offerat se Sindicatui coram Gubernatore Urbis, & Auditore Camera, illi vero quadraginta diebus Sindicatum abolvant, Judicemque, prout iure faciendum erit, vel liberent, vel condemnent, & puniant, quod si intra dictorum dierum numerum non fecerint, Camerarius Sanctæ Romanæ Ecclesiæ, qui tunc erit, duos viros deputet, qui intra alias viginti dies hujusmodi Sindicatum peragant. Lapis autem dictis terminis pro absoluto habeatur.

§. 5. Commentariensis, & Capitanei, necnon Executoris ejusdem Curie munia, per idoneos, & fidos ministros gerantur, & neque vendantur, neque locentur ullo modo, neque quidquam pro illis habendis, aut exercendis quovis nomine, & prætextu solvatur, five respondeatur, qui aliquid solverint, five responderint, officio privati sint, & publicè sublegantur.

§. 6. Notariorum officia ibi duo tantummodo habeantur, quodque soli Notarii sint, neque hic numerus aliquo prætextu augeri unquam possit.

§. 7. Ceterum de causis criminum capitalium, item de illis criminibus pro quibus poena corporis afflictiva, vel jure, vel statutis, vel bannimentis à majoribus Magistratibus promulgata est imposita, neque Marefcallus, neque Judex ab eo deputatus cognoscant.

§. 8. Sed de aliis minoribus delictis, nisi jam in alio Tribunali iudicium de illis finitum, aut prius captum fuerit, cognoscere possint.

§. 9. Numquam tamen saluum conductum, aut significationem, ut vocant, vel in levissimis delictis, & prætextu cuiusvis dependentiæ concedant, nisi forte reus data fideiussione relaxatus esset, aliter concessum, vel concessam ceteri Judices non servant.

§. 10. In quacumque autem causa criminali, quæ in hac Curia cepta fuerit, citetur Procurator Fisci in omnibus illis terminis & actis, in quibus solet in aliis Curis Urbis citari.

§. 11. Præterea in quacumque causa ibi cepta, proferatur omnino sententia, five absolvendo, five condemnando. Et si quæ solutiones poenarum, in eadem Curia recipiantur, scribantur in libro ad hoc ordinato, singulisque solutionibus subscribat ipse met reus, vel si is nesciverit, ipsius Procurator, vel alius in causa defensor.

§. 12. In civilibus vero causis, à gravaminibus in dicta Curia illatis appelletur ad Auditorem.

§. 13. Postremò exactiones illas, quæ mulieribus inhonestis singulis annis singulisque sex mensibus, aut aliis sub nomine tributis fieri solebant, omnino pro-

hibemus, proposita Marefcallo illas attentari poena privationis officii ipso facto incurrenda.

§. 14. Non obstantibus dicte Curie, etiam longissimæ, & immemorabilis temporis observantia, ac confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, consuetudinibus, & stylo, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis illi vel pro tempore esistenti Marefcallo, ex quavis causa concessis, & etiam sæpius confirmatis, quibus omnibus, illorum tenores hic pro integrè expressis habentes, specialiter, & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Nulli ergo omnino, &c.

Dat. Romæ, apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo septuagesimo quinto, sexto Kal. Februarii, Pontificatus Nostri Anno tertio.

Anno à Nativitate Domini 1575. indit. 3. die verò ultima mensis Januar. Pont. Sanctissimi in Christo Patris, & D. N. D. Gregorii divina providentia Papa XII. Anno 3. retroscripta littere Apostolica originaliter affixe & publicate fuerunt in valvis Ecclesiæ sancti Joannis Lateranensis, Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, Cancellariæ Apostolicæ, ac in acie Campi Floræ, ut moris est, per nos Camillum Cberubinum, & Guglielmum Marches Cursores. M. Antonius Brutus Mag. Cursum.

Prohibitio appellandi per Religiosos Ordinis S. Francisci de Observantia, à Prælatis ejusdem Ordinis ad Tribunalia secularia vel mutandi ordinationes Ministri Generalis. Permissioque habendi recursum ad ipsum Ministrum, vel Protectorem, aut Rom. Pont.

Alia de hoc Ordine attende sup. in consuet. 23. Leon. X. fol. 583. in Tomo I.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad futuram rei memoriam.

Quoniam nostro Pastoralis potissimum incumbit officio, ut ea quæ ausu temerario ab Ecclesiasticis, præsertim Regularibus personis plerumque attentantur, quantum nobis ex alto conceditur, opportunis remediis compescamus, & removeamus.

§. 1. Idcirco cum referente dilecto filio fratre Christophoro de Capite fontium, Fratrum Minorum de Observantia ordinis S. Francisci Generali Ministro, non sine animi nostri molestia, nuper intellexerimus nonnumquam quosdam Religiosos, & Religiosas Ordinis hujusmodi, Dei timore postposito & suæ professionis inmemores, ut in eorum malefactis & inobedientia se diutius confoveant, ab iis quæ per Prælatos ejusdem Ordinis, etiam Guardianos, five Provinciales, vel Commissarios ab ipso Generali Ministro pro tempore deputatos acta sunt, & decreta, ad Tribunalia secularia appellare, & ad ea temerè confugere.

§. 2. Auctoritate Apostolica, tenore Præsentium precipimus, & inhibemus sub excommunicationis latæ sententiæ poena, à qua non nisi à Nobis, seu Romano Pontifice pro tempore existente, præterquàm in mortis articulo absolvi possint, necnon privationis perpetuæ officiorum per eos obtentorum, & inhabilitatis ad illa, & alia quæcumque dicti Ordinis officia exercenda, ac vocis, tam activæ quam passivæ eo ipso incurrendis poenis, ne quis Provincialis, aut alius cuiuscumque dignitatis, status, gradus & conditionis Ordinis hujusmodi Religiosus aut Religiosa ad ipsa Tribunalia secularia quovis prætextu, aut quæsto colore, ut præfertur, appellare, vel illa propterea quoquo modo adire audeant vel præsumant, sed si se à Prælatis suis gravari prætentent, ad Generalem Ministrum ipsius Ordinis, seu illius Protectorem, aut Viceprotectorem in Romana Curia, vel ad Nos, five Romanum Pontificem successorem nostrum Supremum in Ecclesiæ DEL. Judicem sicut antiquitus semper consuetum fuit, recursum habeant, unde illis brevi manu iustitia ministrabitur.

nellis mulieribus. Claus. derog.

Dat. P. An. 3. die 27. Jan.

Publicatio.

XXVII.

Edita An. D. 1575.

Exordium.

Causa huius prohibitionis.

Prohibitio appellandi à Prælatis huius Ordinis ad secularia Tribunalia.

Contraveni-
entium eo-
rumque fau-
torumpena:

Prohibitio
resistendi
Commissa-
riis missis
pro visitandis
Provinciis
sub eisdem
penis.

Facultas Mi-
nistri genera-
lis mittendi
Commissa-
rios.

Ministri Pro-
vinciales non
immutent or-
dinem ab ip-
sis Commis-
sariis.

Clauſ. derog.

Dat. P. An. 3.
die 8. April.

XXVIII.

Alia declaratio-
nem circa usum
ejusmodi licen-
tiarum

mulieribus
secularibus
concedendarum.
vide in const.
52. Pauli V. Facultatum. Et postremo
revocatio-
nem generalem
omnium concessarum
edidit idem
Paul. in alia const. 74. Monialium. in Tomo 3.

Edita An. D.
1571. & 1581.

Exordium.

Revocatio li-
centiarum
ingrediendi
Monasteria
Monialium,
& virorum
cujuscumque
ordinis.

§. 3. Declarantes nihilominus non modo eorumdem Religiosos & Religiosas contrafacientes, in dictas penas incidere, verum etiam eorum quomodolibet directe vel indirecte fautores, & consultores, illas quoque incurrrere.

§. 4. Præterea sub penis prædictis prohibemus, ne quis Provincialis, aut Guardianus, vel cujuscumque alterius gradus Religiosus aut Religiosa ejusdem Ordinis ab ipso Ministro generali missis pro visitandis Provinciis, Commissariis, resistere, nec eis se opponere, aut contradicere, seu se rebellem exhibere, ipsos quacumque de causa, vel quæsto colore non recipiendo audeat, neque debeat.

§. 5. Volentes eundem Ministrum generalem quovis tempore sibi expedire videbitur, quos voluerit Commissarios ad quascumque sui Ordinis utriusque familiae Provincias quibuscumque consuetudinibus ac statutis per quolibet personas in contrarium factis, non obstantibus, liberè mittere posse.

§. 6. Insuper, quia, ut etiam accepimus, aliquando nonnulli Ministri ex visitatis Provinciis, per Commissarios ad hoc ab ipso Generali Ministro deputatos, quæ ad dictos Commissarios rectè, & salubriter ordinata, & gesta fuerunt, rescindere, mutare, aut contemnere solent, sub omnibus, & singulis penis supradictis expresse prohibemus, ne quisquā ab eisdem Commissariis facta, & ordinata, mutare, alterare, aut pervertere, sine expressa licentia, & permissione ipsius Ministri generalis, qui solus ea mutare valeat, nullo modo presumant. Decernentes irritum & inane quicquid secus super his à quoquā quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contrigerit attentari.

§. 7. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac quibuscumque etiā juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis in contrarium quomodolibet concessis, & confirmatis, quibus omnibus eorum tenores Præsentibus ac si de verbo ad verbum infererentur pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat ad effectum Præsentium specialiter & expresse derogamus ceterisque contrariis quibuscumque.

Dat. Romæ apud S. Petrum, &c. die octava Aprilis 1575. Pont. nostri Anno tertio.

Revocatio licentiarum & indultorum quibuscumque mulieribus concessorum ingrediendi Monasteria cujuscumque Ordinis Regularium. Prohibitioque utendi ejusmodi licentis, pro casibus necessariis concedendis, præterquam ipsis necessitatibus urgentibus. Et declaratio quod Prælati Monialium, in casibus necessariis, & paucis comitati religiosis & ingredi possint.

Alia declaratio-
nem circa usum
ejusmodi licen-
tiarum
mulieribus
secularibus
concedendarum.
vide in const.
52. Pauli V. Facultatum. Et postremo
revocatio-
nem generalem
omnium concessarum
edidit idem
Paul. in alia const. 74. Monialium. in Tomo 3.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memoriam.

Ubi gratia, & indulta ab hac Sede concessa, successu temporis incommodum asserere noscuntur, expedit illa salubri præsentis consilio submovere.

§. 1. Proinde Sanctimonialium quieti & tranquillitati consulere, ac omnia quæ illas à spiritualium rerum cogitatione & exercitio advocant impedimenta tollere, periculæque, & scandala ab eis remove cupientes, auctoritate Præsentium revocamus, & aboleamus omnes, & quascumque licentias ac facultates ingrediendi Monasteria, Domos, & loca Monialium, ac etiā virorum quorumvis Ordinum, quibuscumque etiam Comitibus, Marchionibus, Ducibus, &

aliis cujuscumque status & conditionis mulieribus, ac etiam omnes & quascumque licentias ingrediendi Monasteria, Domos, & loca ipsarum Sanctimonialium, quibuscumque viris, etiam ejusdem status, & dignitatis tam à Prædecessoribus nostris, quam etiam à Nobis, & Sedis Apostolicæ Legatis, aut aliis ex quibuscumque quantocumque urgentibus causis sub quibuscumque tenoribus, & etiam derogatoriis derogatoriis, revocatorum restitutoris, aliisque efficacioribus clausulis, irritantibusque & aliis decretis, etiam motu proprio, & ex certa scientia, deque Apostolicæ potestatis plenitudine, atque ad Imperatoris, Regum, Reginarum, aliorumve Principum contemplationem, vel supplicationem, concessas, confirmatas, & etiam iteratis vicibus renovatas. Cassamusque & annullamus litteras desuper concessas, & processus habitos per easdem.

§. 2. Inhibentes eisdem qui illas obtinuerunt, sub excommunicationis pena ipso facto incurrenda, super qua à nemine nisi à Romano Pontifice (præterquam in mortis articulo) absolutionis beneficium possit impertiri, ne ipsarum licentiarum prætextu Monasteria hujusmodi quovis modo ingredi audeant.

§. 3. Abbatissis verò, necnon Abbatibus, Conventibus, ac aliis Monasteriorum utriusque sexus Superioribus, & personis quocumque nomine vocentur, districte præcipimus sub eadem excommunicationis pena, necnon privationis dignitatum, beneficiorum, & officiorum suorum, ac inhabilitatis ad illa, & alia in posterum obtinenda, ne in Monasteria, Domos, & loca, quemquam prætextu hujusmodi licentiarum, & facultatum ingredi faciant, vel permittant.

§. 4. Quin etiam sub eisdem penis ipso facto incurrendis prohibemus atque interdiciamus omnibus, & quibuscumque personis Ecclesiasticis, & secularibus, ac etiam Ordinum quorumcumque etiam Mendicantium Regularibus, ne prætextu licentiarum ab Episcopis, vel Superioribus, quibus illas concedendi in consilio necessariis tantum ex decreto Concilii Tridentini tribuitur, ne Monasteria ipsa Monialium pro libito, fed necessitatibus urgentibus dumtaxat ingredi, neve Moniales sub eisdem penis illis aliter admittere presumant.

§. 5. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, Monasteriorumque, & Ordinum prædictorum juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, exemptionibus, & indultis Apostolicis illis eorumque Superioribus prædictis ac aliis quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis, concessis, & confirmatis, ac etiam iteratis vicibus innovatis, quibus omnibus, eorum tenores, perinde ac si de verbo ad verbum infererentur Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 6. Quoniam autem difficile esset præsentibus ad omnia loca perferri, volumus earum exemplis etiā impressis, manu Notarii publici, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eandem fidem in judicio, & extra illud ubique locorum adhiberi, quæ adhiberetur Præsentibus, si essent exhibite vel ostensæ.

Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud S. Petrum Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo septuagesimo quinto, Idibus Junii, Pontificatus nostri Anno quarto.

Anno à Nativitate Domini 1575. indit. 3. die vero 24. mensis Junii Pontificatus auctem Sanctissimi in Christo Patris, & D. N. Domini Gregorii divina providentia Papa XIII. Anno 4. retroscripta littera Apostolica publicata & affixa fuerunt in valvis Ecclesiæ S. Joannis Lateranensis, ac Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, & Cancellariæ Apostolicæ & in acie Campi Floræ, per nos Scipionem

Prohibitio, & pena Monasteria ingrediendi, vigore licentiarum.

Pena Religiosorum admittentium.

Prohibitio utendi licentis in casibus necessariis concedendis nisi ipse necessitates urgeant.

Clauſula derogatoria.

Fides transumptorum.

Dat. P. An. 4. die 13. Junii.

Publicatio.

de Octavianis, & Jo. Andream Panizram Apost.
Cursores.

Joannes Freile Mag. Cursorum.

Sequitur declaratio dictæ Constitutionis quoad Præ-
latos Monialium.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei
memoriam.

Edita An. D.
1581.

Causa const.

Dubiis, quæ emergunt declarationis remedium
expedit adhibere. Cum igitur super eo quod
optima primum ratione Concilium sanxit Tridenti-
num, deinde in constitutione fel. re. Pii Papæ V. præ-
decessoris nostri nonis Julii Pontificatus sui Anno
tertio, atque item nostra idibus Junii Pontificatus no-
stri anno quarto editis, fuit provisum, ne cui in poste-
rum, nisi in casibus necessariis sepra Monasteriorum
Monialium ingredien- si co- cederetur licentia, à non-
nullis dubitatum fuisse sciamus circa personas, qua-
alterius ad id licentia non indigent, sed sui auctori-
tate officii nituntur, an liceat eis pro libito suæ vo-
luntatis hujusmodi sepra ingredi, vel potius servare
debeant ipsi quod regulam à Concilio præscriptam.

Declaratio
quod Prælati
Monasterio-
rum Moni-
alium in cas-
bus etiam ne-
cessariis ex in-
gredi va-
leant.

§. 1. Nos omnem hesitationis materiam tollere,
& viam scandalis præcidere, ac Sanctimonialium
quieti consulere volentes, harum tenore auctoritate
Apostolica declaramus, Prælatos omnes tam sæcu-
lares quam regulares, quibus cura & regimen Mo-
nasteriorum Monialium quovis modo incumbit, fa-
cultate sibi ex officio attributa ingrediendi Mona-
steria prædicta ita demum uti posse, si id faciant in
casibus necessariis, & à paucis illisq; senioribus, ac
Religiosis personis comitati. Quocirca universos &
singulos Episcopali, seu majori, ac etiam Cardinali-
bus dignitate præditos, necnon quorumvis Ordinum
Abbatibus, Prioribus, Ministros, & alios, quoscumque
Superiores regulares ferè monemus, ut facultate
hujusmodi, qui eam habent, præterquam in casibus,
ut præfertur, necessariis neutquam utantur.

Contrave-
nientium
pœna.

§. 2. Quod si contraxerint, eadem auctoritate
Apostolica statuimus, atque decernimus, qui Pontifi-
calis dignitatis fuerint eos pro prima vice, qua con-
traxerint, ingressu Ecclesiæ interdictos, pro secunda
à munere Pontificali, & à divinis suspensos, ac dein-
ceps ipso facto absque alia declaratione excommuni-
catis existere, Regulares vero à omni officio ac mini-
sterio privatos excommunicationi similiter subjacere.

Derogatio
contrario-
rum.

§. 3. Non obstantibus Apostolicis, ac in genera-
libus & Provincialibus conciliis editis, generalibus
vel specialibus constitutionibus & ordinationibus,
privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis
quibuscumque Ecclesiis earumve Prælati, aut Ordini-
bus, in genere vel in specie sub quibuscumque re-
noribus, & formis, ac cum quibuscumque deroga-
toriarum derogatoriis, aliisque fortioribus, effica-
cioribus, & insolitis clausulis, necnon irritantibus
decretis quovis modo concessis, approbatis, & in
novatis, etiam si illis caveretur expressè, quod nemo
interdici, suspendi, vel excommunicari posset per
litteras Apostolicas non facientes plenam & expres-
sam de indulto hujusmodi mentionem, quibus eor-
umque totis tenoribus, perinde ac si de verbo ad ver-
bum infererentur Præsentibus, specialiter & expresse
derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Fides tran-
scriptorum.

§. 4. Quoniam verò difficile esset Præsentibus ad
singula loca perferri, volumus earum exemplis,
etiam impressis, manuque Notarii publici, ac si-
gillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ
munici, eandem fidem adhiberi, quæ haberetur
ipsis Præsentibus, si essent exhibita vel ostensa.

Dat. P. A. 10.
die 23. Dec.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris
die 23. Decembris. 1581. Pont. nostri Anno Decimo.

Publicatio.

Anno à Nativitate Domini 1582. Ind. 11. die verò
Sabbati 30. Mensis Decembris, Pontificatus S.
D. N. Gregorii divina providentia Papa XIII.
Anno Decimo, Retroscripta littera in forma Bre-
vis publicata, & affixæ fuerunt in acie Campi

Bullarium Romanum. Tom. II.

Flora ut moris est, per me Scipionem de Octavianis
Apostolicum Cursorem.

Calistus Brunettus Magister Cursorum.

Ordinationes à Collegio Physicorum, necnon à
Collegio Aromatariorum Urbis, observandæ,
eorumque, in prima, & Auditoris Curie Cau-
sarum Camera Apostolicæ in secunda instantia
jurisdictiones.

XXIX.

Quoad prædictam Physicorum jurisdictionem vide Pau-
li V. reformationem infra in const. 71. Universi,
in ult. tit. & ibi habetur etiam de Collegii Aro-
matariorum reformatione. Vide in Tomo 3.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad futuram rei memoriam.

Edita An. D.
1575.

Exordium.

Cum officio Pastoralis incumbat gregem sibi
commissum secundum juris tramites, ac etiam
juxta facti exigentiam vigili cura gubernare, ac
abusus, & pravas corruptelas introducas, litelque,
& controversias ex quibus maxime resultant dis-
pendia partium, & totius populi damnum, ma-
ximæque iactura non sine vitæ periculo pro viribus
collere, acceperimus autem inter Collegium Aro-
matariorum circa modum visitationis Apotheca-
rum, jurisdictione, penarum applicatione, ac re-
bus aliis diu controversum fuisse, & quotidie hinc
inde querelæ ad aures nostras deferantur.

Prima defi-
nitio si sum
non fortita
effectum.

§. 1. Ac volentes has controversias, & differen-
tias omnino & in perpetuum extinguere, vivæ vocis
oraculo dilecto filio nostro, Francisco Tituli S. MA-
RIÆ in Porticu Alciati, ac bo. me. Joanni Paulo
Tituli Sancti Pancratii Presbyteris Cardinalibus ab
Ecclesia nuncupatis, ut tam Collegium Medicorum,
quam Collegium Aromatariorum, ac separatim & in
contradictorio audirent, jura ipsa viderent, Nobis-
que referrent, & cum pluries hoc fecissent & deinde
re imperfecta ab eadem Urbe dictum Joannem Pau-
lum Cardinalem decedere contigisset, in locum il-
lius similis me. Julium S. Theodori, Diaconum Car-
dinalem de Aquaviva nuncupatum deputavimus, qui
simul cum prædicto Francisco Cardinali differentias
prædictas, & jura Medicorum, & Aromatariorum
audiverunt, & cognoverunt, Nobisque retulerunt,
& relatione facta quadam Capitula ab ipsis con-
cepta, Motu proprio confirmavimus, & observari
mandavimus, prout in schedula dicti Motus pro-
prij manu nostra signata, sub data videlicet Romæ
apud S. Petrum Kalendis Decembris Pontificatus
Nostris Anno secundo, apparet.

Postrema de-
finitio nunc
firmata su-
per.

§. 2. Cumque deinde pro parte Collegii Medico-
rum prædictorum, iterum fuerit supplicatum super
novis rationibus, & juribus audiri, Nos, ut omnis
materia, & occasio conquarandi, & reclamandi in
perpetuum tolleretur, commisimus eidem Francis-
co, & Julio Cardinalibus, ut Medicorum, & Aro-
matariorum Collegia iterum audirent, & cum differen-
tiarum jam ferè sopitæ essent, ab humanis, sicut Altissimo
placuit dictus Julius Cardinalis recessit, unde Nos
cupientes has differentias quantocius terminari,
commisimus dicto Francisco Cardinali informato,
ut iterum (si opus esset) audiret Collegium Medi-
corum, & deinde Nobis referret, qui Franciscus Car-
dinalis iterum de novo Medicorum, & Aromatariorum
Collegiis hujusmodi auditis, nobis retulit Me-
dicos, & Aromatarios hujusmodi ad infra scripta
Capitula convenisse, & concordasse, videlicet.

Aromatario-
rum puni-
tione, si aro-
matarios non
ad probati
exercerent.
Ad hoc vide
const. Pauli
Vindicatam
in rubr.

§. 3. Quod nemini liceat artem Aromatariam Ma-
gistris Institutoris, five apothecæ præpositi, aut quovis
alio nomine, ac titulo exercere, nisi antea à Protome-
dico, ejusque Consiliariis, & ab Aromatariorum
Consulibus examinatus, probatusq; erit, qui secus fe-
cerit, viginti quinq; ducatorum pœna mulsetur, ea-
que de re soli Protomedicus, & Consiliarii ejus in suo solo
Tribunali, vocatis etiam Aromatariorum Consulibus
inquirant, procedant, cognoscant, decident, pu-
niant,

De Patenti-
tione.De Aromatari-
orum
coercitione,
quando ex
simplicibus
composita
medicamenta
conficiunt,
non servata
forma hinc
tradita.
Ad hoc etiam
vide dictam
const. Pauli
V.De visitatio-
ne Aromata-
riorum.
Hoc tempore
visitationis
juramentum
Aromataris
præstari ius-
sit Paul. V. in
dicta ejus
const.De venditi-
one medica-
mentorum.Rerumq; ve-
nenatarum.De libro re-
ceptarum.De rebus re-
tinentis.

niant, sed in singulis actibus cum dictorum Consulum Aromatariorum consilio, quod si à Protomedico, & Consiliariis non probatur, tunc recta via ad pro tempore existentem Causarum Curie Camera Apostolicæ Generalem Auditorem, pro ejus decisione eat, & deciso eo articulo, in quo Protomedicus & Consiliarii non probant Consilium Consulum Aromatariorum, revertatur in reliquis cognitio & deciso ad ipsos solos Protomedicum, & Consiliarios, qui in aliis sequentibus actibus idem observare tenentur.

§. 4. Patentes autem approbationis juxta stylum, & solum fiant.

§. 5. Nullus Aromatarius ex Simplicibus composita medicamenta conficiat, eadem vigintiquinque ducatorum pœna propoſita, nisi prius Simplicia hujusmodi inspecta, & probata sint à Protomedico, & Consiliariis, aut certè ab aliis idoneis personis Protomedici iussu, præſente etiam aliquo ex Collegii Medicis, qui semper interesse debeat, donec omnis inspectio absolvatur, qui contrafecerit in eum Protomedicus, & Consiliarii inquirent, & animadvertant de consilio Consulum Aromatariorum servata forma, & modo expresso in proximo præcedenti Capitulo, & non aliis aliter, nec alio modo. Quod si Protomedicus, & Consiliarii Simplicia inspicere, aut alios ad hanc inspectionem, ut supra deligere rogati prætermittent, mulſcentur arbitrio Collegii Medicorum, quod si iterum lapſo triduo rogati negligant, liceat Aromataris solis sua composita facere.

§. 6. Protomedicus, semel, iterum, ac sæpius in eodem anno, & deinde quoties id expedire judicaverit, per se aut per alios à se eligendos, ut supra dictum est, una cum Consulibus Aromatariorum, omnia simplicia, & composita medicamenta inspiciet, eaque offendere Aromataris sine reſcutione debeant, ut quæ proba, & idonea videbuntur probari possint, quæ verò tamquam mala & vitiosa rejiciantur, ea in Capitulo, legitimo die, quo jus diceretur publicè comburantur, itque apud quos inventa fuerint luan pœnas tentas in Motu proprio fel. re. Pauli PP. IV. prædecessoris nostri, cui nolumus in hac parte derogare. Qui non obtinuerit, à Protomedico, & Consiliariis, de consilio Consulum Aromatariorum, servata semper forma, de qua in primo Capitulo, & non aliis, ut supra, eadem pœna coercentur, ut multis incommodis, & periculis, quæ facile oriri possunt occurratur.

§. 7. Nulli Aromatario liceat rem medicinalem in medicamentum redactam elektivè evacuantem, neque Scamoneatam, aut valde opiatam vendere, donare, aut nullo modo cuicumque viro, vel mulieri capiendū dare, nisi id ei verbo, aut scripto imperarit Medicus Physicus, qui ex aliquis probati Collegii auctoritate Doſtor, aut Licentiatus, aut denique is sit, cui in Urbe medicinam exercere sit permissum. Qui deliquerit à Protomedico, & Consiliariis ejus eadem pœna puniatur.

§. 8. Nemini venena, aut res venenatas dent, nisi eis consistat ad quem usum experiantur. Qui contrafecerit, eadem vigintiquinque ducatorum pœna, Protomedici & Consiliariorum sententia mulſcetur.

§. 9. Librum habeat, in quo diligenter medicinas omnes à Medicis imperatas, quas vulgò receptas vocant, neque usque alibi describant, qui secus fecerit à Protomedico, & Consiliariis quinque ducatorum pœna plectatur.

§. 10. Res omnes, quæ usu quotidiano, & more ad medicinam pertinent, Aromataris in suis apothecis habeant, atque afferant, quænam verò res illæ sint Protomedicus, & Collegium Medicorum, & Consules Aromatariorum declarabunt, easque in Judice notatas, & descriptas singulis Aromataris dabunt. Teneantur autem Aromataris infra mensem à die declarationis hujusmodi, five intra aliud certum tempus, Protomedici, & Consiliariorum suorum arbitrio præſiniendum, res illas sibi, five præ se, five copiose pro cuiusque facultate emere, qui neglexerint, decem ducatorum pœnam subeant, deque eo Protomedicus, & Consiliarii, de consilio

Consulum Aromatariorum, & servata forma, de qua in primo Capitulo. & non aliis, ut supra cognoscant, & puniant, citent, inquirent, procedant, seu cognoscat, puniri, citari, inquirent, & procedi, ac alia faciant, quæ in præmissis, & circa ea necessaria fuerint, seu quomodolibet opportuna.

§. 11. Ne cui det Aromataris rem medicinalem à Medico præscriptam, nisi ad pondus quod quidem in pagella, quam receptam dicunt diserte, expressum sit rem ipsam appendent, delinquenti Protomedicus, & Consiliarii quinque ducatorum pœnam irrogent.

§. 12. Singulis annis Protomedicus, Consiliarii, & Consules Aromatariorum, coram dictæ Camera Præſidentibus, rebus artis Aromatarie certum præmium constituant, ne quis injusto præmio, jure quæri possit, quod si quo minus id fiat per Consules steterit, quivis ex ipsis, & quoties in eo peccarit, ducatos vigintiquinque pendat pœnæ nomine. Cognitio autem constitutionis pretii ad Protomedicum, & Consiliarios, de consilio Consulum Aromatariorum, servata semper forma, de qua in primo Capitulo, & non aliis, aliter, nec alio modo pertineant, animadvertitur autem in Consulibus ad solum Protomedicum, & ejus Consiliarios, à quibus si Consules se gravari putaverint, adeant dictum Auditorem Camera, qui quod juris erit præcipiat, exequatur.

§. 13. Neque Medico, five Physico, five Chirurgo cum Aromataris, neque Aromataris cum Medico, societatem ullo modo inire liceat, qui aliter fecerit vigintiquinque ducatorum pœna à Collegio Medicorum si Medicus fuerit, si vero Aromataris à Consulibus Aromatariorum afficiatur.

§. 14. Si in rebus medicinalibus à taxatione Consulum, eorumque calculis appellatum sit, & Protomedicus, & Revisores, ex forma Constitutionum artis Aromatariorum adeantur, qui si discordes intra se fuerint, de eo dictus Auditor cognoscat, & decidat.

§. 15. Nulli physico, nulli Chirurgo, aut cuivis alteri medicinam, aut rem ad medicamentum pertinentem cuipiam, præterquam ex justa aliqua causa à Protomedico, & ejus Consiliariis in scriptis probanda, vendere liceat, nisi prius ea res in Aromataris sit consignata, & per ipsum Aromatarium subministrata, qui secus fecerit à Collegio Medicorum, si Medicus fuerit, si verò Aromataris, vel extraneus ab Aromatariorum Consulibus vigintiquinque ducatorum pœna plectatur.

§. 16. Protomedicus, per se aut per alium à se electum quo præterea aliquo ex Medicorum Collegio adhibito, ut supra explicatum est, quoties ei libuerit etiam extra ordinationem, apothecas Aromatariorum visitare, inspicere, & perquirere liberè quidem possit, nihil verò absque Consiliariis, & Consulibus Aromatariorum damnare, aut improbare possit, liceat ei tantum arbitrari suo quæ voluerit obſignare, & ne quisquam iis utatur interdiciere, quoad ipsius Protomedici & Consiliariorum iudicio de consilio, ut supra Consulum de tota re designatur, servata forma, de qua in primo Capitulo, & non aliis aliter, nec alio modo.

§. 17. Quod autem ad fraudum occasiones tollendas facit, Aromatariorum libri ultra tres annos fides in iudiciis ne habeatur, nisi aut instrumentum publicum, aut syngrapha exhibeatur, quæ fidem faciat, quæque cum nominibus, & rationibus in eisdem libris descriptis consentiat, aut certè consistet de diligentia ab Aromataris infra dictum tempus adhibita, adversus debitores ob causas in libris notatas, planumque sit per debitores ipsos stetit, quo minus solverent, aut aliter Aromataris caveant, ut postremo nomina, & partitæ, ut appellant, in libris descriptæ à debitoribus recognite, earumdem subscriptione comprobentur, non obstante dispositione dicti Pauli, & aliorum forsitan Prædecessorum contrarium determinante.

§. 18. Quivis etiam Ecclesiasticus quantum ad medicamenta, & cetera ad artem Aromatariam spectantia,

Vendendiſq;

De pretio re-
rum aroma-
tarie artis
præscriben-
do.De Societate
inter Medi-
cos & Aro-
matarios in-
terdicta.De taxatione
pretii.De Medicinis
per Aromata-
rios submini-
strandis.De Protome-
dici visitatio-
ne Aromata-
riorum.De librorum
Aromatariorum
fide.De Consulibus
Aromatariorum
jurisdictione.

Consulibus Aromatariorum subiectus fit, atq; apud illos, & non alibi querela de huiusmodi rebus habeatur, & decidentur, servatis fervandis. Hi verò ex præscripto Statutorum, tam dictæ Urbis quam artis suæ cognoscant, & procedant.

§. 19. Nemo cuiusvis conditionis sit ob res medicinales, & Aromatarias solutionis dilationem, quam moratorium, aut cinquinam vocant impedire possit.

§. 20. Quotiescumq; ad visitandas tabernas Aromatarias, quæ extra Urbem sunt, Medicus ex Urbe mittendus erit, ne is forsan artis Aromatariæ imperitum sibi comitem adjungat, Protomedicus, qui visitatoris designandi jus obtinet, Urbanis Aromatariis id denuntiet, atque ab eis exquirat habeant ne aliquem peritum, & idoneum hominem, qui Medicum illi in huiusmodi visitationis munere comes, & Minister esse velit, quo invento Protomedicus utriusque eam visitandi Provinciæ delegabit, curabitque Aromatario viaticum competentis præstari, quod si Aromatarii negligentes ea in re fuerint, solus Protomedicus hunc etiam eligat. Si autem Protomedicus non adnuntiaverit, in vigintiquingue ducatorum à Syndicis, tempore sindicatus mulctetur.

§. 21. Medicus verò ad visitandum destinatus, singulas apothecas, & officinas Aromatarias, non fidet aut fallaciter, sed verè visitet, atque inspiciat, & debitis penis puniat, idque se fecisse testimonio publico allato doceat, si contrafecerit, Protomedici, & Consiliariorum communi decreto, vigintiquingue ducatorum poenam subeat, quæ poena pro numero apothecarum, quas non inspexit toties ab eo exigatur.

§. 22. Ut autem pecuniæ, quæ ab iis qui hi decretis non obtemperaverint poenæ nomine exiguntur ratio constet, singulis annis à Protomedico & Consulibus unus Depositarius ex Aromatariis conjunctim eligatur, penes quem pecunia omnis ex huiusmodi multatione collecta deponatur, eiq; ex penis exigendis certum stipendium Protomedici & Consuli arbitrio statuat, ita tamen ut antea de reliqua summa restituenda idonea cautionem præbeat. Is autem in fine cuiuslibet anni, de penis exactis Protomedico, & Consuli Aromatariorum rationem reddat. Duo autem libri rationum fiant, quorum alter apud Protomedicum, alter verò apud Consules sit.

§. 23. In partiendis verò penis, & multis, quæ ex delictis, & contraventionibus Urbanorum Aromatariorum, five allas, & ex quacumq; causa, etiam extra visitationem, à quibuscumq; exiguntur, præ mem. Pii Papæ V. etiam prædecessoris nostri, Motus proprius servetur, qui datus est die duodecima Augusti, Pontificatus sui Anno quinto. Ita videlicet, ut quarta pars Medicorum Collegio attribuat, reliquæ Hospitali S. Laurentii in Miranda, non obstante altero posteriore ejusdem Pii V. Motu proprio, quo pecuniæ omnes poenæ nomine colligendæ, domui dicti Hospitalis attribui videbantur.

§. 24. Si ex cuiusvis accusatione, aut denunciatione aliquem ex Aromatariorum, vel Medicorum numero adversus hæc decreta deliquisse constiterit, tunc ex integra summa, qua reus mulctabitur, quarta pars à Protomedico, & Consiliariis, eidem accusatori, aut denunciatori, statim adjudicetur, quod reliquum erit à Depositario conservetur, ut in fine anni inter Collegium Medicorum, & Hospitalē Aromatariorum, ratione paulò ante dicta dividatur.

§. 25. Cognitio, & declaratio an aliquis adversus supradicta decreta deliquerit, & in poenam incidere, necne, ejusq; poenæ exigendæ iusto ad eos solos, & in ea forma pertineat, quibus in ipsis singulis Capitulis Decretorum expressis verbis definitum est, quoties autem hi Decretis Protomedico, & ejus Consiliariis, de consilio Consulum Aromatariorum, ut supra aliquod mandatum est, ita semper intelligatur, ut in inquirendo quàm in procedendo, citando, cognoscendo, declarando, decidendo & puniendo, & in quocumq; alios actus similes faciendo, ipsorum Consulum Aromatariorum consilium petere tenean-

tur, quod si Protomedicus, & Consiliarii minus probaverint, neque cum iis consenserint, tunc eatur recta ad Auditorem prædictum, qui manu regia, omni, & quacumque appellatione remota cognoscatur, & deciderit, & deinceps servetur forma supra in primo Capitulo expressa.

§. 26. Idem Auditor his omnibus decretis exequendis præsit, ac quibus in rebus solis Protomedico, & Consiliariis cognoscendi, & decidendi, puniendi; facultas absq; alio consilio Consulum Aromatariorum data est, liceat Aromatariis; si quando se injustè lædi conquerantur, coram eodem Auditore, de eorum injuriis agere, qui pariter manu regia, omni, & quacumq; appellatione remota eos audiat, & prout juris erit præcipiat, & exequatur, & quos calumniose conqueitos esse repererit, arbitrio suo mulcet, multasque hac ex causa exactas, physicoorum Collegio, & Hospitali prædicto in totum applicet.

§. 27. Consules Aromatariorum ex eorum Decretorum facultate cum Protomedico & Consiliariis de re aliqua in consilium venire debent, Protomedici domum adeant quoties ab eo fuerint vocati, facta prius precedenti die intimatione, quod si venire neglexerint, Protomedicus, & Consiliarii absque consensu omnia agere, & decernere possint.

§. 28. Quare pro parte Medicorum, & Aromatariorum prædictorum Nobis fuit humiliter supplicatum, ut Capitulis prædictis pro illorum subsistentia firmiori robore Apostolicæ confirmationis adiacere, aliasque in præmissis opportune providere, de benignitate Apostolica dignaremur.

§. 29. Nos igitur eisdem Medicos, & Aromatarios, illorumq; singulares personas à quibusvis excommunicationis, suspensionis & interdicti, aliisq; Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, siquibus quomodolibet infodati exsint, ad effectum Præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolutos, & absolutos fore censentes, ac statim, & merita causarum huiusmodi Præsentibus pro expressis habentes, huiusmodi supplicationibus inclinati dicta Statuta, & Decreta, de Medicorum & Aromatariorum prædictorum consensu, Apostolica auctoritate tenore Præsentium approbamus, & confirmamus, ac illa inviolabiliter in perpetuum, & singulis futuris temporibus, per Protomedicum, & Collegium Medicorum, ac Consules, & Collegium Aromatariorum, pro tempore existentem, & alios quoscumque inviolabiliter observari, processusq; & acta quacumque in causis huiusmodi facta cassari, & annullari, ac Medicis & Aromatariis perpetuum silentium imponi, & imposuit esse volumus, prout cassamus, & silentium imponimus.

§. 30. Et ita tam per dictum Auditorem, & ejus in civilibus Locumtenentem pro tempore existentem, quàm etiam per alios quoscumque Judices, etiam Rotæ Auditores, ac S. R. E. Cardinales decerni, & judicari debere, irritumque & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari, decernimus.

§. 31. Et ita perpetuæ sententiæ, & voluntatis incommutabilis nostræ esse dicimus, neq; has nostras litteras de subreptionis, vel obreptionis, vel intentionis nostræ fraudate, vel alio quoquam vicio notari, impugnari, revocari, moderari vel annullari posse, & quoties illas annullari, moderari, revocari, impugnari, vel notari contigerit, toties in pristinum statum repositas, reintegratas, & restitutas esse, & illis nullatenus derogari, nisi Consistorialiter, de trina derogatione separatim intercedente uno anno inter unam & aliam, etiam Consistorialiter, & accedente consensu amborum Collegiorum, & cum infestatione Præsentium, volumus, & mandamus.

§. 32. Non obstantibus rescriptis fel. re. Julii III. & Pauli IV. ac Pii V. & aliorum Prædecessorum nostrorum, ac Capitulis factis per quondam Cæsarem Brancanum, & Cardinalem de Salviatis, dictæque Cameræ decretis, vel confirmationibus, seu declarationibus, Statutis dicti Collegii Medicorum,

De A. C. Iurisdictione.

De Protomedici & Consiliariorum Conventu.

Supplicatio pro approbatione Papæ.

Approbatio Papæ.

Clausula subblata &c.

Clausula præservativa.

Clausula derog.

Dat. P. An. 4.
die 1. Julii.

XXX.

Edita An. D.
1575.

Exordium.

Pius V. facultatem testandi, Militum S. Jacobi de Calatrava & de Alcantara revocavit ut sup. in ejus const. 74. fasciolum.

Philippus Hispaniarum Rex huic P6. exponit hanc revocationem dictis Militibus damnosam esse. & supplicavit pro opportuna provisione.

etiam juramento, & auctoritate Apostolica confirmatis, quorum tenores, & formas, ac si de verbo ad verbum Præsentibus infereretur, haberi volumus pro expressis, consuetudinibus, & usibus quibuscumque, quibus omnibus & singulis, ad effectum Præsentium dumtaxat derogamus, & derogatum esse intendimus, ac præcipimus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub anulo Piscatoris, die prima Julii, millesimo quingentesimo septuagesimo quinto, Pontificatus nostri Anno quarto.

Reintegratio licentiarum, & facultatum, Fratrum, & militum Hospitalium, & Militiarum, scilicet Sancti Jacobi de Spatha, quam de Calatrava, & etiam de Alcantara, testandi, & disponendi de eorum bonis.

Vide de ejusmodi Militiis, quæ tibi indicavi sup. ad constit. 1. Adriani VI. fol. 540. Dum intra. Vide in Tomo 1.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Romani Pontificis providentiæ & benignitatis proprium est, ubi æquitas suadet ac Catholicorum vota exposcunt, quæ generaliter à Prædecessoribus suis statuta sunt, moderari, illaque interdum tollere quæ facultatem testandi & disponendi de bonis quæ sub regulari habitu militiarum degentes personæ possident, adimunt.

§. 1. Licet enim felices recordationis Pius Quintus prædecessor noster, per suam perpetuè valituram constitutionem, inter alia omnes & quascumque licentias, & facultates testandi, & alias quomodolibet disponendi, & ad certâ quantumvis modicam summam, & quantitatem, de rebus, fructibus, & bonis immobilibus, mobilibus, & se moventibus, inter alios, ad Magistros, Priores, Præceptores, milites, fratres, & personas Militiarum, & Hospitalium videlicet Sancti Jacobi de Spatha, de Calatrava, & Alcantara militiarum Hispaniarum, ratione præceptoriarum, Hospitalium & beneficiorum Ecclesiasticorum etiam facultatum, & aliorum Ordinum Regularium, ac pensionum, ac fructuum quorumcumque provenientium, necnon facta usque tunc non tamen effectum sortita licentiarum, & facultatum prædictarum testamenta, & alias dispositiones hujusmodi, etiam si per easdem licentias & facultates disponeretur, quod dimidia, vel alia pars rerum, & bonorum prædictorum militiis, Hospitalibus, domibus, & locis, unde illa proveniunt, vel aliis piis locis relinquerebantur, revocaverit, & aboleverit, decernens testamenta, donationes, & alias dispositiones, quas prætextu privilegiorum, facultatum, dispensationum, & indulgentiarum prædictorum sic revocatorum, ac contra dictarum litterarum tenorem, per quemcumque etiam Apostolica auctoritate fieri, vel factas prosequi contigerit, tamen subreptitiè extortas nullius prorsus roboris vel momenti esse, nec per eas, jus, aut titulum etiam coloratum cuiquam acquiri posse, & alias prout in ejusdem prædecessoris nostri litteris latius explicatur.

§. 2. Nihilominus charissimus in Christo filius noster Philippus Hispaniarum Rex Catholicus, Sancti Jacobi de Spatha, de Calatrava, & de Alcantara militiarum perpetuo administrator Apost. auctoritate deputatus, animadvertens, plerisque ex militibus Militiarum prædictarum pro fide Catholica tuenda, & conservanda, arma induere, & ei rei plerumque perpetuam operam (ut veros Christi athletas decet) navare, alios verò gravibus negotiis pertractandis esse dissentos, & ex earumdem Militiarum stabilitate, ac etiam Apostolicis indultis, liberè uxores ducere posse, & in habitu militari, quâdam Religioforum imaginem referre, nihilque hominibus præsertim militibus prædictis gratius evenire posse intelligens, quam ut libera eis sit de bonis quæ vi-

ventes possident, tam in ultima voluntate (quando amplius velle non possunt,) quam alias disponendi tributa potestas: Propterea Nobis humiliter supplicari fecit, ut ex consueta Sedis Apostolicæ benignitate opportunè circa præmissa providere dignaremur.

§. 3. Nos igitur commodis Militum Militiarum prædictarum quibus idem Philippus Rex præest consulere, ac Philippi Regis voluntati hac in parte satisfacere volentes, constitutionisque prædictæ seriem, ac si de verbo ad verbum infereretur, Præsentibus pro expressa habentes, illam, necnon omnes illius effectus quoad hoc, ut Sancti Jacobi de Spatha, & de Calatrava, & de Alcantara Prioribus, Præceptoribus, & aliis ipsarum Militiarum obtinentibus beneficia, & quovis nomine nuncupatis Militibus, quæcumque licentiæ, & facultates testandi, & alias quomodolibet disponendi de rebus, fructibus, & bonis mobilibus, immobilibus & se moventibus, ut præfertur, suffragentur, eademque licentiæ, & facultates in posterum valeant, ac perpetuam roboris firmitatem obtineant, suosque effectus plenè fortiantur penitus, & omnino Apostolica auctoritate tenore Præsentium tollimus, & abolemus.

§. 4. Necnon testamenta, & alias dispositiones in vim licentiarum, facultatum, & consuetudinum prædictarum jam condita, disposita & ordinata, quæ prædicta edita Constitutione, juxta testatoris, vel disponentis voluntatem, effectum minimè fortiri potuerunt, & quorum causa adhuc integra est, & medio hoc tempore nihil novi acciderit, adversus ejusdem Constitutionis dispositionem, omniaque & singula que in ea continentur, in eam in quem à dicto Pio prædecessore constituto prædicta edita fuisset, quomodolibet erant, statum restituimus, & reponimus, & plenariè reintegramus, suosque plenarios & integros effectus, impediementis omnibus sublatis, quæ ex dicta Constitutione provenerunt, fortiri debere volumus, statuimus, & ordinamus, omnesque, & singulos earumdem trium Militiarum Militibus præsentibus, & futuris testandi, & alias disponendi de bonis prædictis concessas facultates & consuetudines, potiori pro cautela approbamus, & firmamus, illisque perpetuè, & inviolabilis firmitatis robur adjicimus.

§. 5. Sicque in præmissis omnibus & singulis per quoscumque Judices Ordinarios earumdem Militiarum, & delegatos, & quoscumque alios, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, & Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales (sublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate & auctoritate) ubique judicari, & definituri debere, irritumque & inane si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari decernimus.

§. 6. Non obstantibus præmissis, aliisque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, tam per dictum, quam per quoscumque alios Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac Nos, sub quibuscumque tenoribus ac formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis etiam motu proprio, & certa scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine concessis etiam iteratis vicibus approbatis. Quibus omnibus etiam si de eis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, & individua mentio, aut quavis alia expressio habenda esset, illorum tenores Præsentibus pro expressis, & inferis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque.

§. 7. Volumus autem, quod Præsentium transumptis etiam impressis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides habeatur, quæ Præsentibus haberetur exhibitis, vel offensis.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub anulo Piscatoris die 6. Octobris, 1575. Pontificatus nostri anno 4.

Qui Pontifex dat facultatem.

Testamenta que eorum in quorum causa integrum est plenè effectum fortiri debent.

Clausula sublata.

Derogatio contrariis.

Transumptum fides.

Dat. P. An. 4. die 6. Oct.

ANNO
1575.

XXXI.

Edita An. D.
1575.

Exordium.

Causæ hujus
constitut.

Concessio
facultatis de
qua in ru-
brica.

Derogatio
contrario-
rum.

GREGORIUS DECIMUS-TERTIUS.

427

ANNO
1575.

Dat. P. An. 4.
die 7. Octob.

XXXII.

Edita An. D.
1575.

Proœmium.

Militia S. Ja-
cobi de Spa-
tha, & Mil-
itia de Avis.
Regni Portu-
gallie à Se-
de Apost. in-
stitutæ gaud-
ent omni-
bus gratiis,
& privilegiis
Militiarum
S. Jacobi, &
de Calatrava
& de Alcan-
tara in Re-
gnis Castellæ
& Legionis.

Quidam ta-
men Ordina-
rii dubita-
runt an lit-
teræ Pii V.
emanatæ ad
favorem dic-
tarum Mil-
itiarum in Re-
gnis Castellæ
& Legionis
insuffragant
Militiis ante-
dictis Regni
Portugallie.

Quod Prælati Ordinis Fratrum Sanctissimæ Trinitatis redemptionis Captivorum benedicere possint vasa, vestimenta & ornamenta Ecclesiastica,
Hanc facultatem specialiter concessit Paul. V. istis Fratribus se transferentibus ad partes Infidelium pro illorum conversione, inf. in ejus const. 40. Ex omnibus. Alia autem de hoc Ordine notavi sup. ad const. 1. Innoc. III. Operante. fol. 52.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

EXposcit Pastoralis officii cura Nobis ex alto commissa, ut singulorum Christianissimum, præsertim sub suavi Religionis Jugo Altissimo famulantium voris rationi non contradicentibus, favorabiliter annuamus.

§. 1. Sanæ pro parte dilecti filii Fratris Francisci Bochet in Theologia Magistri Parisiensis, Ordinis Sanctissimæ Trinitatis Redemptionis Captivorum, Vicarii Generalis in Romana Curia residentis, Nobis nuper exhibita petitio continebat, quod licet dilecti Provinciales, Vicarii, & Ministri prædicti Ordinis in Hispaniarum Regnis consistentes, qui Triennales dumtaxat existunt, casulas, tunicas, albas, & mappas, & alia vestimenta, & ornamenta, ac etiam vasa Ecclesiastica ad divinum officium peragendum necessaria, ac solita, & consuecta, benedicendi à Sede Apostolica licentiam habeant, nihilominus Provinciales Vicarii, & Ministri Ordinis prædicti in Galliis, Flandria ac Provincia Provincie, aliisque Galliarum Regnis, & Dominis consistentes, qui ad vitam eligi, & deputari consueverunt, eadem licentia hæcenus minime usi sunt, nec in futurum absque speciali indulto nostro uti possunt, cuperet idem Franciscus sibi à Provincialibus, & aliis Vicariis, & Ministris ejusdem Ordinis in Galliis, Flandria, & Provincia Provincie hujusmodi, aliisque Galliarum Regnis, & Dominis consistentes, qui ad vitam eligi, & deputari consueverunt, eadem licentia hæcenus minime usi sunt, nec in futurum absque speciali indulto nostro uti possunt, cuperet idem Franciscus sibi à Provincialibus, & aliis Vicariis, & Ministris ejusdem Ordinis in Galliis, Flandria, & Provincia Provincie hujusmodi, aliisque Galliarum Regnis, & Dominis, nunc & pro tempore existentibus licentiam prædictam per Nos concedi. Quare Nobis humiliter supplicari fecit, ut in præmissis opportune providere de benignitate Apostolica dignaremur.

§. 2. Nos igitur honestis ejusdem Francisci postulatis grato concurrentes affectu, ipsumque à quibusvis excommunicationibus, suspensionibus, & interdictis, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis, à jure vel ab homine quavis occasione vel causa latis, siquibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum Præsentium dumtaxat consequendum, hærum serie absolventes, & absolutum fore censentes, ac licentiam hujusmodi, & litterarum desuper expeditarum tenores Præsentium pro sufficienter expressis habentes, hujusmodi supplicationibus inclinati eidem Francisco, ac aliis Vicariis generalibus, Provincialibus, & Ministris dicti Ordinis in Galliis, Flandria, & Provincia Provincie hujusmodi, aliisque Galliarum Regnis, & Dominis, nunc & pro tempore existentibus, casulas, tunicas, albas, zonas, mappas, coporalia, & alia quæcumque ornamenta, ac vasa Ecclesiastica (illis tamen exceptis, quibus sanctum Christum applicandum est) benedicendi juxta tenorem licentiæ Vicariis, Ministris, & aliis prædictis Regnorum Hispaniarum concessam tantum, licentiam Apostolicam auctoritate tenore Præsentium perpetuo concedimus, & indulgemus, illamque ad eosdem Gallie, Flandrie, Provincieque hujusmodi, ac aliorum Galliarum Dominiorum, & Regnorum Vicarios, Provinciales, & alios predictos, nunc, & pro tempore existentes, etiam perpetuo extendimus, & ampliamus: Ipsosque ut de cetero, illa uti, frui, & gaudere liberè, & licitè valeant, in omnibus, & per omnia, perinde ac si illis principaliter eadem licentia Apostolica auctoritate concessa fuisset, decernimus.

§. 3. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon omnibus illis, quæ in litteris ejusdem licentiæ expressa sunt non obstante, ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris die 7. Octobris, 1575. Pont. nostri anno 4.

Quod omnes gratiæ, & privilegia Militiis S. Jacobi de Spatha, & de Calatrava, ac de Alcantara in Regnis Castellæ & Legionis existentium concessa, & concedenda, sint communia Militiis S. Jacobi de Spatha, & de Avis, Regni Portugallie, & Algarbiorum.

De his Militiis, dixi sup. in Tom. 1. ad const. 1. Adrian. VI. fol. 540. Dum intra, ad ea te remitto.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

EX Apostolicæ Sedis, in qua meritis licet insufficientibus divina disponente clementia constituti sumus, benignitate procedit, ut super eis, quæ personis sub regulari habitu contra Christi nominis æmulos pro orthodoxæ fidei ampliatione, & conservatione continuè militantibus, per ejusdem Sedis clementiam circumspiciam pro tempore concessa reperiuntur, an ad alias ejusdem professionis extendantur personas, ambiguitatis scrupulos pro tempore exercentes, declarationes nostræ ministerio dilucidemus, ac in his officii nostri partes favorabiliter impartiamur.

§. 1. Sanæ charissimus in Christo filius noster Sebastianus Portugallie, & Algarbiorum Rex Illustris, qui Militiarum S. Jacobi de Spatha S. Augustini, & de Avis Cisterciensis Ordinum Regni Portugallie magnus Magister, seu perpetuus administrator per Sedem Apostolicam deputatus existit, tam suo, quam dilectorum filiorum Magistrorum, Conventus, Priorum, Comendatorum, Præceptorum, Fratrum, militum, & aliorum Religiosorum, ac personarum militiarum prædictarum nominibus, nobis nuper exponi fecit, quod licet ex diversis Romanorum Pontificum, & præsertim fel. rec. Nicolai V. & Julii Secundi, & Pauli Terti, prædecessorum nostrorum privilegiis & concessionibus, prædictæ Militiæ in eodem Regno adversus Mauros, aliosque fidei Catholicæ hostes antiquitus per Sedem prædictam institutæ salubriter, illarumque tunc & pro tempore existentis Magistri, seu Administratores, Conventus Priores, Commendatores, Præceptores, fratres, & Milites, eorumque singuli, necnon personæ & loca domus ac Ecclesiæ Militiarum earumdem, perpetuis futuris temporibus omnibus & singulis privilegiis, prærogativis, concessionibus, indultis, libertatibus, conservatoris, indulgentiis, exemptionibus, honoribus, litteris Apostolicis, & aliis gratiis, Magistris, seu Administratoribus Conventibus, Prioribus, Commendatoriis, præceptoribus, fratribus & militibus ejusdem Sancti Jacobi, & de Calatrava ac de Alcantara Militiarum in Castellæ, & Legionis Regnis institutarum, in genere quovis modo ab ipsis Romanis Pontificibus & Sede prædicta concessis, & in posterum concedendis, ac quibus illi utebantur, potiebantur, & gaudebant, ac uti, potiri, & gaudere possent quomodolibet in futurum, uti, potiri, & gaudere ac si eis in genere concessa fuissent, & loco Judicum in litteris Apostolicis Regnorum Castellæ, & Legionis Militiis hujusmodi pro tempore concessis deputatorum alios Judices in dignitate tamen Ecclesiastica similiter constitutos in dicto Regno Portugallie, qui eandem potestatem haberent, quam Judices in eisdem litteris deputati habebant, seu habere possent quomodolibet in futurum, deputare liberè, & licitè possint & valeant.

§. 2. Nihilominus ac nimium forsan scrupulosos locorum Ordinarii ejusdem Regni Portugallie, certis præfensionibus dubitari contingit, an litteræ per piæ memoriæ Pium Papam V. prædecessorem nostrum sub Data videlicet quinto Idus Januarii pontificatus sui anno primo procuratæ Christianissimo filio Philippo Rege Catholico, qui militiarum in Castellæ, & Legionis Regnis institutarum hujusmodi perpetuus Administrator per eandem Sedem deputatus existit concessæ, privilegiorum, indultorum,

Et quia nulla
est fere differ-
rentia inter
predictas
Militias.

Rex Portu-
gallicæ petiit
dictum du-
bium submo-
veri.

Hic ideo
Pontifex om-
nia privile-
gia dictarum
Militiarum
in Regnis Ca-
stellæ & Le-
gionis exis-
tentium con-
cessa, & con-
cedenda, Mi-
litiis antedec-
entis Regni
Portugallicæ
& Algarbiorum,
communicat.

conservatoriarum & aliarum gratiarum, ipsæ Militiis Regnorum Castellæ, & Legionis concessa, un præservatione, innovatione, militis Regni Portugallicæ, & Sebastiani Regi ac pro tempore existentibus magnis Magistris, Conventibus, Prioribus, Commendatoribus, præceptoribus, fratribus, militibus, personis, Ecclesiis, domibus, locis, bonis, possessionibus, iuribus, & jurisdictionibus militiarum Regni Portugallicæ huiusmodi suffragari, & illis gaudere possint vel debeant, & exinde effectus litterarum Pii Prædecessoris huiusmodi, quoad Regni Portugallicæ Militias, illarumque singulas personas prædictas frequenter impeditur, & retardatur, militiarumque Regni Portugallicæ & illarum personarum huiusmodi sæpenuero gravamina, injurias & incommoda sustinent, in earum detrimentum, ac privilegiorum, indultorum & facultatum sibi concessarum læsione.

§. 3. Cum autem sicut eadem petito subiungatur, Magistri, Conventus, Priores, Commendatarii, Præceptores, Fratres, milites & aliæ personæ ejusdem S. Jacobi de Spatha, five in Legionis, Castellæ & Algarbiorum, five in Portugallicæ & Algarbiorum Regnis constituti, five ejusdem professionis existant, & sub eisdem regularibus institutis militent, neque alia inter eos differentia quàm quod in diversis Regnis constituti fore dignoscantur, ac in favorem ipsius militiæ de Spatha, & de Avis in genere concessa appareant, & nequiquā conveniens videatur, ut Militiæ prædictæ etiam si in diversis Regnis institutæ diverso jure fulciri aut inniti debeant; præsertim, quod illæ semper in omnibus & per omnia per alios Romanos Pontifices prædictos acquirata fuerunt.

§. 4. Ac propterea, idem Sebastianus Rex nominibus prædictis Nobis humiliter supplicari fecerit, quatenus ambiguitatis prædictæ scrupulis antequam altius irrepant, ac jurgiorum & litigiorum materiam partiantur, declarationis nostræ ministerio summove, & aliis in præmissis opportunè providere de benignitate Apostolica dignaremur.

§. 5. Nos igitur qui præter commune debitum quo ex Apostolatus officio ceteris fidelibus debitorum existimus, Militias Regni Portugallicæ, illarumque personas huiusmodi, eo specialius paterna dilectione complectimur, quo pro tuitione prædictæ fidei ejusque propagatione atque præsidio, contra immanissimos Christi nominis hostes, Mauros scilicet, & alias barbaras nationes, cum proprii effusione cruoris, & vitæ periculo, continuè decertari, fidei evidentia cognoscimus, eundem Sebastianum Regem à quibuscumque excommunicationis, suspensionis & interdicti aliisque Ecclesiasticis sententiis & censuris à jure vel ab homine quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum Præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutum fore censentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, eorundem Nicolai, Julii & Pauli Prædecessorum prædictorum vestigiis inherentes, omnemque dubitationem in præmissis removere volentes, necnon omnium & singulorum privilegiorum, concessionum, indultorum, conservatoriarum & aliarum gratiarum per quoscumque Romanos Pontifices Prædecessores nostros, & Sedem prædictam eisdem militiis, tam in Legionis, & Castellæ, quàm Portugallicæ Regnis prædictis institutis, illorumque magnis Magistris, seu Administratoribus, Conventibus, Prioribus, Commendatoribus, Præceptoribus, fratribus, Militibus & personis prædictis ac desuper concessarum, & dictarum Pii Prædecessoris litterarum tenores Præsentibus pro expressis habentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, omnia & singula privilegia, prærogativas, immunitates, exemptiones, libertates, facultates, indulgentias, conservatorias, indulta & alias gratias, Militiis Castellæ & Legionis & Regnorum huiusmodi, ac prædicto Philippo Regi, & pro tempore existentibus Administratoribus, Conventibus, Prioribus, Commendatoribus, Præceptoribus, fratribus, Militibus & aliis personis, Ecclesiis, domibus, locis, bonis, possessionibus, iuribus, jurisdictionibus Militiarum Castellæ & Legionis Regnis institutarum huiusmodi,

per quoscumque Romanos Pontifices Prædecessores nostros, ac Nos & Sedem eamdem, hactenus quomodolibet tam in genere quàm in specie concessa, & in posterum concedenda, eisdem modo & forma quibus concessa sunt, & in posterum concedentur ad Militias Regni Portugallicæ, ac Sebastiani Regem, & pro tempore existentes magnos Magistros, seu Administratores, Conventus, Priores, Commendatores, Præceptores, Fratres, Milites, personas, & Ecclesias, domos, loca, bona, possessiones, iura, jurisdictiones militiarum in Regno Portugallicæ institutarum huiusmodi extendi, & illa eis in omnibus & per omnia ac pariformiter & æque principaliter absque ulla prorsus differentia, ac si Militiis Regni Portugallicæ, & Sebastiani Regi, ac pro tempore existentibus magnis Magistris, seu Administratoribus, conventibus, Prioribus, Commendatoribus, præceptoribus, fratribus, militibus, personis & Ecclesiis, domibus, locis, bonis, possessionibus, iuribus, jurisdictionibus, Militiarum Regni Portugallicæ huiusmodi, specificè & expresse concessa fuissent & concederentur, perpetuò suffragari, ac illis uti, potiri, necnon loco Judicum in privilegiis & aliis litteris Apostolicis Regnorum Castellæ & Legionis, Militiis huiusmodi, pro tempore concessis deputatorum, dilectos filios Capellanos majorem prædicti Regis, & successorem Regum Portugallicæ, Archidiaconos Dolcierva Brancheren, & Eleoren, Ecclesiarum nunc & pro tempore existent, in dicto Regno Portugallicæ, qui eandem potestatem habeant, quam Judices in ejusdem litteris & privilegiis deputati habent, seu habere poterunt quomodolibet in futurum, deputatos esse, nec desuper prædictos Ordinarios seu alios cuiuscumque status, gradus, conditionis, ordinis, præminentiæ & qualitatis existentes, etiam Cardinalatus honore fulgentes, molestari, perturbari vel inquietari posse. Ipsaque Militias Regni Portugallicæ illarumque singulares personas, in eodem statu, quo Militia Regnorum Castellæ & Legionis, illarumque personarum huiusmodi, quomodolibet existant & pro tempore reperiantur, & perpetuò conservari debere & ita intentionis Prædecessorum prædictorum fuisse, & eadem nostræ esse, & perpetuò fore Apostolica auctoritate tenore Præsentium decernimus & declaramus. Et nihilominus pro potiori cautela eadem, omnia & singula, privilegia, & prærogativas, exemptiones, facultates, indulgentias, conservatorias, indulta, & alias gratias eisdem modo & forma quibus, Militiis Castellæ ac Legionis Regnorum, earumque Superioribus & personis huiusmodi, ut præteritur concessa sunt, & in posterum concedentur, ad Militias Regni Portugallicæ illarumque Superiores & personas huiusmodi similiter perpetuò extendimus, eisque auctoritate & tenore prædictis, modo tamen & forma in litteris Pii prædecessoris huiusmodi contentis, concedimus & indulgemus.

§. 6. Decernentes præsentis litteras nullo unquam tempore, de subreptionis vel obreptionis vicio, aut intentionis nostræ vel quoquo alio defectu notari vel impugnari posse, nec illas sub quibuscumque similibus dissimilibus gratiarum revocationibus, suspensionibus, modificationibus, limitationibus, derogationibus aut aliis contrariis dispositionibus comprehendendi.

§. 7. Sique per quoscumque Judices, & Commisarios quavis auctoritate fungentes, etiam S. R. E. Card. ac causarum Palatii Apost. Auditores, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari & diffiniri debere, ex nunc irritum & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 8. Quocirca venerabili Fratri Episcopo Amerinensi & dilectis filiis Capellano majori prædicti Sebastiani Regis moderno & pro tempore existentis, ac Archidiacono Elbornensi per Apostolica scripta mandamus, quatenus ipsi, vel duo aut unus eorum per se vel alium, seu alios, præsentis Litterarum, & in eis contenta quæcumque ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte prædicti Regis moderni & pro tempore existentis Magni Magistris seu Administratoris

Clausula
huius bullæ
præservati-
væ.

Clausula
sublata.

Executorum
deputato.

Conventum, Priorum, Commendarum, Præceptorum, fratrum, militum, personarum, Ecclesiarum, domorum, locorum, bonorum, possessionum, iurium, jurisdictionum militiæ Regni Portugalliæ huiusmodi, seu alicujus eorum desuper requisiti fuerint, solemniter publicantes eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra, Litteras huiusmodi, & in eis contenta quæcumque firmiter observari, ac singulos quos eadem Litteræ concernunt illis pacifice gaudere, non permittant eos desuper per quoscumque quomodolibet indebitè molestari: Contradiçtores per censuram Ecclesiasticam appellatione postposita compescendo.

Clausulæ derogatoriæ.

§. 9. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac Militiarum prædictarum juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, statuentibus, usibus, & naturis, necnon quibuscumque declarationibus, inhibitionibus & decretis, privilegiis quoque, indultis & litteris Apostolicis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis aliisque efficacioribus & in iolitis clausulis, necnon irritantibus & aliis decretis, in genere vel in specie & Motu proprio & ex certa scientia ac de Apostolicæ potestatis plenitudine etiam consistorialiter ac aliis quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, etiam si de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica & expressa, individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda esset, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata inserti forent, Præsentibus pro sufficienter expressis ac insertis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Fides transumptorum.

§. 10. Volumus autem quod privilegiorum, indultorum & aliarum gratiarum præfatarum, ac etiam præsentium Litterarum transumptis, manu alicujus notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, plena, & integra, ac eadem fides prorsus adhibeatur, in iudicio & extra, quæ ipsis originalibus adhiberetur, si originaliter forent exhibitæ vel ostensæ.

Dat. P. An. 4. die 8.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum sub annulo Piscatoris die octava Mensis, Milleesimo quingentesimo septuagesimo quinto, Pontificatus Nostri Anno quarto.

XXXIII.

Professio Orthodoxæ fidei à Græcis emittenda.

De materia Græcorum indicavi in constit. 14. Innoc. IV. Sub Catholica. fol. 100. Tom. I.

Forma professionis fidei.

Sanctissimus Dominus Noster Dominus Gregorius &c.

Ego N. firma fide credo, & profiteor omnia & singula, quæ continentur in Symbolo fidei, quo Sancta Romana Ecclesia utitur, videlicet.

Artic. 1.

§. 1. Credo in unum Deum Patrem omnipotentem, factorem cæli, & terræ, visibilibus omnium & invisibilibus. Et in unum Dominum JESUM Christum, Filium DEI unigenitum. Et ex Patre natum ante omnia sæcula; DEUM de DEO, lumen de lumine; DEUM verum de DEO vero. Genitum non factum, consubstantialem Patri, per quem omnia facta sunt. Qui propter nos homines, & propter nostram salutem descendit de cælis. Et incarnatus est de Spiritu S. ex MARIA Virgine; & homo factus est. Crucifixus etiam pro nobis sub Pontio Pilato, passus, & sepultus est. Et resurrexit tertia die secundum Scripturas. Et ascendit in cælum; sedet ad dexteram Patris. Et iterum venturus est cum gloria judicare vivos & mortuos: cujus regni non erit finis. Et in

Spiritum sanctum Dominum, & vivificantem, qui ex Patre, Filioque procedit. Qui cum Patre & Filio simul adoratur, & conglorificatur: qui loquutus est per Prophetas. Et unam S. Catholicam & Apostolicam Ecclesiam. Confiteor unum baptisma in remissionem peccatorum. Et expecto resurrectionem mortuorum. Et vitam venturi sæculi. Amen.

Artic. 2.

§. 2. Credo etiam, suscipio, atque profiteor ea omnia, quæ sacra œcumenica Synodus Florentina super unione Occidentalis, & Orientalis Ecclesiæ definivit & declaravit, videlicet quod Spiritus Sanctus à Patre, & Filio æternaliter est; & essentiam suam, suumque esse subsistens habet ex Patre simul & Filio, & ex utroque æternaliter, tamquam ab uno Principio, & unica Spiratione procedit. Cùm id quod Sancti Doctores, & Patres dicunt, ex patre per Filium procedere Spiritum Sanctum, ad hanc intelligentiam tendat, ut per hoc significetur Filium quoque esse, secundum Græcos quidem, causam, secundum Latinos verò, principium subsistentiæ Spiritus Sancti, sicut & Patrem. Cumque omnia quæ Patris sunt, ipse Pater unigenito Filio suo gignendo dederit, præter esse Patrem; hoc ipsum quod Spiritus Sanctus procedit ex Filio, ipse Filius à Patre æternaliter habet, à quo æternaliter etiam genitus est. Illamque verborum illorum, Filioque explicationem, veritatis declarandæ gratia, & imminente tunc necessitate, licitè ac rationabiliter Symbolo fuisse appositam.

Artic. 3.

§. 3. Item in azymo, sive fermentato panetrisce corpus Christi veraciter confici. Sacerdotemque in altero ipsum Domini corpus conficere debere, unumquemque scilicet juxta suæ Ecclesiæ, sive Occidentalis, sive Orientalis consuetudinem.

Artic. 4.

§. 4. Item si verè poenitentes in DEI charitate decesserint, antequam dignis poenitentia fructibus de commissis satisfecerint, & omnis, eorum animas poenis Purgatorii post mortem purgari, ut & à poenis huiusmodi releventur, prodesse eis fidelium vivorum suffragia, Missarum scilicet sacrificia, orationes, & elemosynas, & alia pietatis officia, quæ à fidelibus pro aliis fidelibus fieri consueverunt secundum Ecclesiæ instituta. Illorumque animas qui post Baptisma susceptum, nullam omnino peccati maculam incurrerunt, illas etiam quæ post contrariam peccati maculam, vel in suis corporibus, vel eisdem exutæ corporibus, prout superius dictum est sunt purgatæ, in cælum mox recipi, & interius ipse DEUM trinum & unum sicut est, meritorum tamen diversitate alio perfectius. Illorum autem animas, qui in actuali mortali peccato, vel solo originali decedunt, mox in infernum descendere, poenis tamen disparibus puniendas.

Artic. 5.

§. 5. Item Sanctam Apostol. Sedem, Romanum Pontificem in universum orbem tenere Primatum, & ipsum Pontificem Romanum Successorem esse beati Petri Principis Apostolorum, & verum Christi Vicarium, totiusque Ecclesiæ caput, & omnium Christianorum patrem ac doctorem existere, & ipsi in Beato Petro pascendi, regendi, & gubernandi universalem Ecclesiam à Domino nostro JESU CHRISTO plenam potestatem traditam esse, quemadmodum etiam in actis œcumenicorum Conciliorum, & in sacris Canonibus continetur.

Artic. 6.

§. 6. Insuper profiteor ac recipio alia omnia, quæ ex decretis sacra œcumenica Generalis Synodi Tridentinæ, sacrosancta Romana, & Apostolica Ecclesia, etiam ultra contenta in supradictis fidei Symbolo, profitenda ac recipienda proposuit atque præscripsit, ut sequitur.

Artic. 7.

§. 7. Apostolicas & Ecclesiasticas traditiones, reliquasque ejusdem Ecclesiæ observationes, & Constitutiones firmissimè admitto & amplector.

Artic. 8.

§. 8. Item sacram scripturam juxta eum sensum, quem tenuit & tenet Sancta Mater Ecclesia, cujus est judicare de vero sensu & interpretatione sacrarum scripturarum, admitto; nec eam unquam nisi juxta unanimem consensum Patrum accipiam, & interpretabor.

1576.
Artic. 9.

§. 9. Profiteor quoque septem esse verè & propriè sacramenta nostræ legis à JESU Christo Domino nostro instituta, atque ad salutem humani generis, licet non omnia singulis necessaria, scilicet Baptismum, Confirmationem, Eucharistiam, Pœnitentiam, Extremam unctionem, Ordinem & Matrimonium: illaque gratiam conferre: & ex his Baptismum, Confirmationem, & Ordinem, sine Sacrilégio reiterari non posse.

Artic. 10.

§. 10. Receptos quoque & approbatos Ecclesiæ Catholicæ ritus, in supradictorum omnium Sacramentorum solemnè administratione, recipio & admitto.

Artic. 11.

§. 11. Omnia & singula, quæ de peccato Originali, & de Justificatione in Sacrosancta Tridentina Synodo definita, & declarata fuerint, amplector, & recipio.

Artic. 12.

§. 12. Profiteor pariter in Missa offerri DEO verum, proprium, & propitiatorium Sacrificium pro vivis, & defunctis, atque in Sanctissimo Eucharistia Sacramento esse verè, realiter, & substantialiter Corpus, & Sanguinem, una cum anima, & divinitate D. N. JESU Christi; serique conversionem totius substantiæ panis in Corpus, & totius substantiæ vini in sanguinem, quam conversionem Catholica Ecclesia Transubstantiationem appellat.

Artic. 13.

§. 13. Fateor etiam sub altera tantum specie, totum atque integrum Christum, verumque Sacramentum sumi.

Artic. 14.

§. 14. Constantè teneo Purgatorium esse, animasque ibi detentas fidelium suffragiis juvari. Similiter, & Sanctos una cum Christo regnantes, venerandos atque invocandos esse, eosque orationes Deo pro nobis offerre, atque eorum reliquias esse venerandas.

Artic. 15.

§. 15. Firmissimè assero Imagines Christi, ac Deiparæ semper Virginis, necnon aliorum Sanctorum habendas, & retinendas esse, atque eis debitum honorem, ac venerationem impartendam.

Artic. 16.

§. 16. Indulgentiarum etiam potestatem, à Christo in Ecclesiâ relictam fuisse, illarumque usum Christiano populo maximè salutarem esse affirmo.

Artic. 17.

§. 17. Sanctam Catholicam, & Apostolicam Romanam Ecclesiam, omnium Ecclesiarum Matrem, & Magistram agnoscere Romanoque Pontifici, Beati Petri Apostolorum Principis successori, ac JESU CHRISTI Vicario veram obedientiam sponte ac juro.

Artic. 18.

§. 18. Cetera item omnia à sacris Canonibus, & Oecumenicis Conciliis, ac præcipuè à Sacrosancta Tridentina Synodo tradita, definita, & declarata, indubitanter recipio atque profiteor, simulque contraria omnia & schismata atque hæreses quacumque ab Ecclesiâ damnatas, & rejectas, & anathematizatas, ego pariter damno, rejicio, anathematizo & abjuro.

Iterata sponsio.

§. 19. Hanc veram Catholicam Fidem, extra quam nemo salvus esse potest, quam in præsentia sponte profiteor, & veraciter teneo, eandem integram, & inviolatam usque ad extremum vitæ spiritum, constantissimè DEO adjuvante, retinere, & confiteri, atque à meis subditis, vel illis, quorum cura ad me in munere meo spectabit, teneri, doceri & prædicari, quantum in me erit, curaturum. Ego idem N. Spondeo.

Juramentum.

§. 20. Voveo, ac juro: Sic me Deus adjuvet; & hæc Sancta DEI Evang.

XXXIV.

Quod liceat Fratribus & Monialibus Ordinis B. MARIE de Monte Carmelo, bona etiam stabilia pro necessitate vel utilitate Monasteriorum alienare.

Alia que hunc Ordinem respiciunt indicavi tibi sup. in const. 8. Hon. III. Ut vivendi. fol. 70. Tom. I.

Edita An. D. 1576.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

EX incumbenti nobis Apostolicæ servitutis officio, ad ea libenter animum nostrum converti-

mus, per quæ religiosam vitam ducentibus personis, quæ assiduos labores pro fide Catholica constanter tuenda & defendenda, suffragant, inter quas familias Fratrum Ordinis gloriosissimæ DEI genitricis semperque Virginis MARIE de Monte Carmelo, jure enumerari potest, commodis, & utilitati opportunè consulatur.

§. 1. Exponi siquidem nobis nuper fecerunt Fratres dicti Ordinis, quod sæpenumero accidit, ut pro aliqua urgenti necessitate, vel utilitate Monasteriorum, domorum, & locorum dicti Ordinis, tam virorum, quam mulierum illorum bona alienare vel permutare expedit, ac quandoque contingit, ut conditio semel oblata, si prætermittatur, maximam offerat injuriam, præterquam quod difficile admodum existit, pro singulis faciendis permutationibus, & aliis contrahibus, ad Sedem Apostolicam recurrere, ac non sine Fratrum ipsius Ordinis molestia fieri potest. Quare iidem Fratres Nobis humiliter supplicare fecerunt, ut in præmissis providere de benignitate Apostolica dignaremur.

§. 2. Nos, ipsos Fratres, & eorum quemlibet à quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa, latis, quibus quomodolibet innotati existunt, ad effectum Præsentium duntaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, hujusmodi supplicationibus inclinati eidem Fratribus, ut ex nunc de cetero, perpetuis futuris temporibus, Fratres, & Moniales dicti totius Ordinis Carmelitarum, omnium & quorumcumque Monasteriorum, Domorum, & locorum ejusdem Ordinis ubilibet nunc & pro tempore consistentium, liberè & licitè possint, & valeant quæcumque bona, stabilia & immobilia, seu quasi stabilia, cujuscumque qualitatibus, & quantitatibus, & valoris, & in quocumque loco existentia eorumdem Monasteriorum, Domorum, & locorum, vendere, alienare, & permutare pro pretio, pacis, modis, & formis, hinc inde conveniendis, licentiam, & facultatem, Apostolica auctoritate, tenore Præsentium concedimus: Proviso tamen quod præmissa omnia fiat pro commoditate, vel utilitate ipsorum Monasteriorum, Domorum, & locorum & quod consensus duarum partium, ex tribus partibus Fratrum, vel Monialium ipsius Monasterii, Domus, vel loci, cuius dicta bona erunt, accedat, & interveniat absque aliis à Nobis, vel Successoribus nostris Romanis Pontificibus, pro tempore existentibus, aut Sede Apost. vel illius de latere Legatis, seu Nunciis, aut etiam locorum Ordinariis petenda vel obtinenda licentia seu confirmatione.

§. 3. Ita tamen, quod loco consensus Sedis Apost. dilectus filius Prior Generalis dicti Ordinis nunc & pro tempore existens, & diligenter examinatus, & re evidentè utili comprobata habeat, prout sibi ex nunc perpetuò concedimus, potestatem ratificandi hujusmodi permutationes, & alienationes, ac contractus, sicque ubi talis ordo non fuit servatus, concessio, venditio, alienatio, ac contractus, desuper aliter facti, nulli, & invalidi, nulliusque roboris, ac momenti existant, & donec prædictus Prior Generalis, modo prædicto non ratificaverint, possessio remaneat & remanere intelligatur penes ipsos Fratres, seu Moniales dicti Monasterii, seu domus, aut loci, seu permutantes, & alienantes, ac ita in præmissis perpetuò declaramus, & decernimus. Et nihilominus ex nunc prout ex tunc, & de contra, postquam permutationes, alienationesque, necnon contractus, servatis enarratis pro tempore facti, & per dictum Priorem Generalem ratificati fuerint, ut præfertur, seu consensus ejusdem Prioris Generalis intervenerit, easdem permutationes, & alienationes, ac contractus, & deinde sequuta quæcumque, necnon instrumenta, & scripturas desuper pro tempore confectæ, approbamus, & confirmamus, ac perpetuæ firmitatis robur obtinere debere statuimus.

§. 4. Decernentes, quod ad utilitatem, seu com-

Ordo Carmelitarum supplicat Papæ pro provisione alienandi sua bona occurrente aliqua necessitate vel utilitate.

Hic ideo Pont. dat Ordini facultatem alienandi bona etiam stabilia absque aliqua Sedis Apost. vel alterius licentia.

Dummodo alienationes fiant pro utilitate vel commoditate Monasteriorum & accedat consensus duorum ex tribus partibus Fratrum vel Monialium loci, & accedat consensus vel ratificatio Generalis. Imo requiritur, quod fiat in vestimentum ut hic infra ad fin.

Utilitas autem & necessitas

modi.

obata fit
lectione di-
arum partium
trum vel
oniam
denantiam.

ad hoc vide
to i hic in-
a sequitur
fin.

Executores
opus
missionis de-
putat.

Clausulas
contrario-
am derogat
appo-
t.

alienationes
non antea
tri permi-
e, quam si
esperum in
estimentum
ordini uti-
us.

transumptis
edi jubet.

moditatem Monasteriorum, Domorum, & locorum prædictorum assertioni duarum partium ex tribus partibus Fratrum, vel Monialium illius loci, cujus bona erunt, postquam ratificatione facta fuit illasque, & illa, necnon Præsentes, & in eis contenta, validas, & efficaces, ac valida & efficacia perpetuo fore, necnon ab omnibus observari debere, ipsique, & cum eis contrahentes prædictos super præmissis, & inde sequentis quibuscumque, per quoscumque quavis auctoritate, quomodolibet molestari, vel impediri non posse, necnon irritum & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 5. Quocirca Vener. Fratri Episcopo Macerateni & dilectis filiis causarum Curiae Camerae Apostolicæ Generali Auditori, & Cancellariæ Apostolicæ Regenti, nunc & pro tempore existentibus, per Præsentes committimus, & mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum per se vel alium, seu alios præsentis litteras & in eis contenta quæcumque, ubi & quando opus fuerit, & quoties pro parte eorumdem Fratrum Carmelitarum, vel Monialium, aut alicujus eorum super his fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisq; & eorum cuilibet in præmissis efficacis defensionis prædicto assistentes, faciant eisdem præsentibus, & in eis contenta quæcumque ab omnibus, quos illa concernunt integrè & inviolabiliter observari. Non permittentes, eos aut eorum aliquem desuper contra earundem Præsentium tenorem, quomodolibet indebitè molestari, contradictores quodlibet, & rebelles, per sententias, censuras, & penas Ecclesiasticas, aliaque opportuna juris & facti remedia appellatione postposita, compellendo, legitimisq; super his habendis, servatis processibus, sententiis, censuras, & penas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 6. Non obstantibus fel. rec. Bonifacii Papæ Octavi de una, & in Concilio Generali edita de duobus diebus, dummodo ultra tres dietas, quis vigore Præsentium ad iudicium non trahatur, & pie mem. Symmachi, ac Pauli Papæ Secundi, Prædecessorum nostrorum, de rebus Ecclesiæ non alienandis, vel alienatis recuperandis, ac aliis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis: Necnon quibuscumque etiam iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, Monasteriorum, Domorum, & Ordinis prædictorum statutis & consuetudinibus, Privilegiis quoque, Indultis, & litteris Apostolicis quibuscumque sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque derogatoriis derogatoriis, aliisq; efficacioribus, & insolitis clausulis & irritantibus, ac aliis decretis, in genere vel in specie, etiam motu proprio, ac alias quomodolibet, etiam iteratis vicibus concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, & singulis, etiam si de illis, ac totis eorum tenoribus, specialis, specifica, individua, & expressa mentio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum Præsentibus inferrentur pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus hac vice dumtaxat, specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque; seu si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint, per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§. 7. Volumus autem, quod si ad alienationem bonorum stabilitum, ex causa maioris utilitatis, aut alia ratione suadente deveniente erit, alienationes bonorum ad Monasteria, & domos ejusdem Ord. spectantium; non antea fiant, quam cum reperta fuerint bona eisdem Monasteriis, & Domibus utiliora, in quibus pretium rerum huiusmodi alienatarum unico contextu realiter & cum effectu investiat, vel convertatur, alias alienatio ipsa sit ipso jure nulla.

§. 8. Volumus autem quod Præsentium transumptis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, &

sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, etiam impressis, eadem proflus fides in Iudicio & extra adhibeatur, quæ ipsis originalibus Litteris adhiberetur si forent exhibitæ vel ostensæ.

Dat. Romæ apud S. Marcum, sub annulo Piscatoris die tertia Februarii, millesimo quingentesimo septuagesimo sexto, Pontificat. nostri Anno quarto.

Jurisdicção & facultates Præsenti Annone Urbis, & totius Status Ecclesiastici.

Pro regimine Annone Congregationem nonnullorum S. R. E. Cardinalium instituit Sixt. V. in constit. 74. Immensa in 4. Congreg. Tom. 2. Et subsidium ducentorum millium scutorum paravit pro ejus subventionem, in alia constit. 78. Abundantes. Et iste Præfatus cognoscit etiam causas Pistorum Urbis, ut in ejusdem Sixt. constit. 36. Celestis. §. 6. Et procedit etiam contra mercantes frumenta, &c. ut in constit. 49. Clem. VIII. Frumenti. Vide in Tomo 3. fol. 71.

GREGORIUS PAPA XIII.

Motu proprio, &c.

Inter ceteras Pastoralis officii nostri curas, quibus assidue premimur, libenti illam fovemus animo, per quam in statu nostro Ecclesiastico Annonas & abundè inveniri, & communi haberi pretio possit, nostrique ex hoc subditi, quoad fieri possit subvenientur.

§. 1. Quare cupientes insignem probitate, & experientia virum, qui prout res exposulat ipsa, nos adire quotidie cuncta ad Annonam hujusmodi pertinentia collaturus commodè possit, de dilectorum tamen filiorum Camerae nostræ Apostolicæ Clericorum Præsidentium numero juxta antiquam hæcenus observatam consuetudinem præficere, ac de fide, probitate, integritate, prudentia, & multiplici rerum gerendarum experientia Dilecti filii Andreae Spinolæ in utraq; signatura nostra Referendarii, dilectiq; Camerae Clerici Præsidentis Nobis assatim perfectis, plurimum in Domino confisi, sperantemq; ea quæ ejus curæ demandaverimus. omni cum laude gesturum, & executurum fore, Motu simili &c. eundem Andream frumentariæ Annone Urbis, & reliqui Status nostri Ecclesiastici generalem Præfectum, ad nostrum & dicte Sedis beneplacitum, cum honoribus, oneribus, facultatibus, & auctoritatibus, jurisdictione, privilegiis, exemptionibus, & prærogativis solitis & consuetis, ac dilecto filio nostro Cæsari Brumano tunc ejusdem Camerae Clerico præsidente & dicte Annone nuper Præfecto & quibuscumque aliis ad hujusmodi Præfecturæ officium Annone hæcenus deputatis quomodolibet in hunc usque diem concessis, Apostolica auctoritate harum serie approbantes & ratificantes, omnia & quæcumque; per eum hæcenus gesta, facta, & ordinata hucusque de novo constituimus, facimus, & deputamus.

§. 2. Dantes illi in præmissis omnibus & singulis plenam facultatem & auctoritatem, tam in præfata Alma Urbe, quam quibuscumque aliis Nobis, & S. R. E. mediâtè vel immediâtè subjectis Provinciis, Civitatibus, oppidis, & locis, frumenta ac legumina cujuscumque generis, seu speciei adnotandi & describendi, seu adnotari & describi faciendi, ac universas & singulas utriusq; sexus personas cujuscumque status, gradus, ordinis, dignitatis & præminentie existentes, eisdem S. R. E. mediâtè vel immediâtè subjectas, tam Ecclesiasticas, quam seculares, etiam si personæ seculares hujusmodi Ducali, Marchionali, & Comitibus, vel alia majori; Ecclesiasticæ verò, Episcopali, Archiepiscopali, Patriarchali, Primitiali, vel alia majori dignitate, seu dignitatibus præfulgeant, ac etiam si Card. fungantur honore, vel etiam majores existant, ad veram frumentorum & leguminum, quæ ipsos tempore desuper publicandorum edictorum seu bannimentorum habere continget quantitatem, etiam in scriptis medio juramento denunciandi, quarum denunciationum notulam etiam ad

Dat. P. An. 4.
die 3. Febr.

XXXV.

Edita An. D.
1576.

Exordium.

Deputatio
Andreae Spi-
nolæ Præs. Cl.
Annone, &
cum facultatibus & privi-
legiis consue-
tis, & maxime infra
scriptis.

Facultas co-
gendi quocumque
ad notifican-
eorum fru-
menta & le-
gumina.

Et prohibendi ne illa asportentur de loco ad locum sine ejus licentia.

Fraudeſque deſuper committentes coercendi.

Frumentaq; & legumina undique cogendi, & emendi pro pretiis ſibi bene viſis.

Miniftror de ſuper deputandi cum ſalariis ab eo declarandiſ.

Ceteraque omnia neceſſaria & opportuna faciendi.

dilectum filium Aloyſium Card. Cornelium necnon pro tempore Camerarium noſtrum deſerri volumus, ſub cenſuris Eccleſiaſticis, ac pecuniariis, necnon manifellae rebellionis laeſaeque Majeſtatis, ac Dominiorum & aliorum bonorum ſuorum conſiſcationis, aliſque ejus arbitrio imponendis & applicandis, ceteriſque penis etiam quibulvis eidem Andrae videbitur, etiam per publicum edictum in locis ſibi beneviſis affigendum, vel aliis publicandum monendi & requirendi.

§. 3. Eiſque ne frumenta & legumina hujusmodi extra dictum Statum Eccleſiaſticum, neque de loco ad locum, etiam loca ejusdem Status ſine ejusdem Andrae licentia aſportare ullo modo audeant, ſub ſimilibus penis inhiſcent, inobedientes, ſeu contravenientes quoſlibet, cenſuras & penas praedictas, incidiffe & incurſiſſe declarandi, aggravandi, & reagrandi, invocato etiam auxilio brachii ſecularis, necnon executiones quoſlibet, tam reales quam perſonales fieri mandandi.

§. 4. Praeterea quocumque in praemiſſis fraudes committentes, vel aliis noxiis, & delinquentes mulctandi, ac quibulvis etiam ultimi ſupplicii, vel aliis corporis aſſiſtiſis penis condemnandi, & ſeu ipſos ac praedictos inobedientes, ſeu non parentes a quibulvis cenſuris & mulctis, ac ut praefertur aſſiſtiſis, etiam ultimi ſupplicii penis abſolvendi & liberandi, deſuperque cum eis concordandi & accordandi, componendi & tranſigendi, ac quaſcumque ſibi beneviſas concordias, compoſitiones, & tranſactiones faciendi.

§. 5. Item quaſcumque frumentorum & leguminum hujusmodi quantitates cogendi, ac emptionis & mutui, vel alio quovis titulo pro pretiis, & modis de quibus ſibi videbitur acquirendi, propterea quae quaſvis pecuniarum ſummas mutuo, vel aliter capiendi, ac ſuper praemiſſis omnibus & ſingulis cum quibulvis Mercatoribus, & aliis perſonis quibulſibet conventiones & partitas quaſcumque etiam cum quorumvis donativo, cum mutuantiſ dan-dorum promiſſione & donatione faciendi, ac deſuper contractus, & inſtrumenta quaſlibet, cum pactis, conditionibus, capitulis & clauſulis ſibi beneviſis celebrandi & ineundi, ac pro illorum obſervatione praefatam Cameram, & omnia illius bona praefentia & futura, in quavis, etiam pleniori ipſius Camerae forma obligandi.

§. 6. Necnon quocumque Commiſſarios, Officiales, & Miniſtros opportunos, aut aliis ſibi beneviſos deputandi, & haecenus quomodolibet deputatos revocandi & removendi, prout nos harum ſerie quoſcumque Commiſſarios, Officiales, & Miniſtros ſuper hujusmodi frumentorum negotio haecenus etiam per Nos quomodolibet deputatos revocamus & removemus, eorumque proviſiones & ſalaria declarandi, eiſque illas & illa, ac aliis, quibus opus fuerit quaſvis pecuniarum ſummas & quantitates ex frumentorum & leguminum hujusmodi venditione conventionibuſque ſeu partitis ineundis, vel aliis hujusmodi rei frumentariae negotio quomodolibet provenientes, ſolvi & exburſari mandandi, omneſque & ſingulos quarumvis Civitatum Annona Praefectorum a Nobis haecenus quomodolibet deputatorum Miniſtros, quovis nomine nuncupatos, quos circa hujusmodi Annona negotium ſe quomodolibet ingeſſiſſe conſtabit, ad ſibi, ſeu a ſe deputandis de a ſe geſtiſ & adminiſtratiſ rationes & computa reddendi & reliqua ſiquae ſint reſtituendi per ſimiles cenſuras & penas, aliaque juris & facti remedia opportuna cogendi & compellendi, cogigine & compelli faciendi.

§. 7. Ac denique cetera omnia & ſingula ad hujusmodi rei frumentariae negotium quomodolibet pertinentia gerendi, exercendi, & exequendi, ac edicendi, ſeu edici & proclamari faciendi, neceſſaria & opportuna, quaeque omnes Clerici praefidentes Camerae hujusmodi, dum ſimul coadunati & congregati ipſam Cameram faciunt & repraeſentant, facere, gerere, exercere, & exequi, ac edicere, ſeu edici & proclamari facere poſſint & valeant. Unum-

que vel plures loco ſui cum ſimili, vel limitata po-teſtate ſubſtituendi & ejus arbitrio removendi.

§. 8. Mandantes propterea dilectis filiis Camerario & Theſaurario generali noſtris, necnon Clericis praefidentibus dictae Camerae, ceteriſque ad quos ſpectat, & in futurum ſpectabit, ut has noſtras in praefata Camera admittant, & in illius libris deſcribi & regiſtrari faciant, deſuperque parentes Literas, & alias ſcripturas opportunas expediant & expediri mandent, auctoritate noſtra & Sedis Apoſtolicae, & Legaris de latere, eorumque Vicelegatis, ac tam dictae Urbis, quam aliarum Provinciarum, Civitatum, & locorum Nobis & S. R. E. mediate vel immediate ſubjedorum quorumcumque; Gubernatoribus, Locatenentibus, Praetoribus, Vicariis, & aliis quovis nomine nuncupatis, Officialibus, & juſtitiae Miniſtris, necnon Communitariis & Uni-verſitatibus, eorumque Magiſtratibus & perſonis publicis & privatis in virtute ſanctae obedientiae, & ſub indignationis noſtrae pena, etiam ſtrictius inhiſcendo, ne eundem Andream, aut ejus pro tempore Miniſtros in praemiſſis, vel aliis ad dictum rei frumentariae negotium pertinentibus ullo modo, vel obtemperum impediant, vel remorentur, aut moleſtant, immo ejus & eorum nomine requiſiti, illi & illis deſuper opportune fa-veant, & aſſiſtant, ejulque & eorum mandata, edicta, ſeu proclamationes, aut alias ordinationes exequi mandent & faciant, realiter & cum effectu.

§. 9. Non obſtantibus praemiſſis, ac quibulvis conſtitutionibus & ordinationibus, etiam Apoſtolicis, necnon ſtatutis & reformationibus, etiam juramento, &c. roboratis, privilegiis quoque, indultis, & literis Apoſtolicis, etiam eiſdem perſonis, & earumdem Urbis Civitatum, Provinciarum, Oppidorum, & locorum populis, Communitatibus, ſeu Uni-verſitatibus, necnon tam Eccleſiaſticis quam ſecularibus, ceteriſque ſupra designatis & aliis quibulvis perſonis, etiam ſuper extractione frumentorum & leguminum, etiam per Sedem Apoſtolicam & Cameram praefatam, in genere vel in ſpecie, tam ex cauſa oneroſa, ac ſub quibulcumque tenoribus & formis, ac aliis quomodolibet conſeſſis, & concedendis; quibus omnibus etiam ſi pro illorum ſufficienti derogatione, de illis &c. eorum tenores, &c. illis aliis in ſuo robore permanſiſſis, hac vice dumtaxat ſpecialiter & expreſſe harum ſerie latiffime derogamus, illaque adverſus praemiſſa nullatenus ſuffragari poſſe ſeu debere decernimus; ceteriſque contrariis quibulcumque.

§. 10. Decernentes Praeſentium noſtram ſolam ſignaturam ſufficere, & ubique in judicio & extra, in Romana Curia & extra, plenam fidem facere, regula contraria non obſtante, ſeu ſi eidem Andrae videbitur deſuper litteras, etiam per Breve noſtrum, etiam cum omnium & ſingulorum praemiſſorum pleniori ſpecificatione & expreſſione, ac quorumcumque ſcripturarum deſuper neceſſariarum ad verbum ſi videbitur inſerzione, aliſque clauſulis & cautelis neceſſariis & opportunis, adeo quod contraria quaecumque proſus tollantur, & non obſtent, ſimul vel ſeparatim expediri poſſe.

§. 11. Ipſarumque Praeſentium, & etiam dictarum litterarum tranſumptis etiam impreſſis, manu Notarii publici ſubſcriptis, & ſigillo alicujus Curiae Eccleſiaſticae, ſeu perſonae in dignitate Eccleſiaſticae conſtitutae munitis, eandem proſus fidem adhiberi, quae eiſdem Praeſentibus adhiberetur ſi forent exhibitae vel oſtenſae.

Placet Motu proprio. V.

Die 7. Maii 1576. admiſſa ſuit in Camera Apoſt. & per R. R. P. P. DD. Clericos regiſtrari mandata, quam ego Not. inſcriptus in lib. diverſ. fol. 39. regiſtravi.

Quod Religioſi & perſona Societatis JESU ad publicas proceſſiones accedere non cogantur.

Alia de hac Societate vide ſup. apud conſtit. 25. Pauli III. Regimini. Tom. I.

Officiales ſtutus, &c. omnes obediunt Praefecto.

Claufule & rogatorii.

Sola ſignatura ſufficit.

Fides tranſumptorum.

PP. Subſcripti Camerae hujusmodi An. 4. die 7. Maii.

XXXVI.

Edita An. D.
1576.

GREGORIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Quicumque sacrarum Religionum instituta offendere, & illarum personarum functiones, & salutaria ministeria retardare noscuntur, nostrum nos incitat officium de medio remove.

Hæc Societas ex ejus initiatu non cogitur ire ad publicas supplicationes.

§. 1. Sane licet sicut accepimus dilecti filii Præpositus Generalis, & alii presbyteri religiosi Societatis JESU, ab illius primava erectione, à Sede hac Apostolica juxta divinæ vocationis directionem emata, & per Nos etiam confirmata, ad divinum officium privatum tantum, & non in communem seu in choro recitandum teneantur, ac propter ipsius Societatis, tam multa Collegia & Seminaria, quæ speciem postulant instituti religiosi modum, necnon ministeriorum illius amplitudinem, ac difficultatem, & in Ecclesia Dei utilitatem, ex antiqua consuetudine jam inde ab hujusmodi erectione recepta observatum; decretoque etiam generalis eorum Congregationis desuper edito, ne ad publicas supplicationes, seu processiones quivis ex illius personis accederet, nisi ubi propter hereticorum vel gentilium conversionem, aut alias expediens esse pro tempore existens Generalis ipsius Societatis Præpositus judicaret, ordinatum fuerit.

Ordinarii tamene coguntur ire ad Concil. Trid. sess. 25. cap. 13.

§. 2. Nihilominus nonnulli locorum Ordinarii, forsitan Concilii Tridentini auctoritate & decreto moti, dictos Presbyteros ad supplicationes prædictas procedere nuper coegerunt, non sine illorum functionum, ac ministeriorum retardatione.

Hic modo Pont. jussu de causis, eam exinit ab hujusmodi publicis supplicationibus.

§. 3. Nos igitur, qui præfatos Presbyteros & Religiosos dictæ Societatis à studiis, lectionibus, prædicationibus, confessionibus audiendis, & aliis verbi Dei ministeriis, ac pietatis operibus, quibus continuè laudabiliter incubuerunt, & incumbere non desistunt, quavis ex causa distrahi nolumus; Considerantes in Ecclesia Dei non deesse alios Ordines religionum qui vel ex instituto, vel absque propriarum functionum impedimento, supplicationibus hujusmodi interesse, aliaque publica divina officia exercere, sanctè, continenterque valeant, in præmissis opportunè providere, ipsosque Præpositum, Presbyteros, & eorum singulos specialibus favoribus & gratiis prosequi volentes, & à quibuscumque excommunicationis, suspensionis & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & penis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum Præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes; Motu proprio, non ad dictorum Præpositi, & Presbyterorum, vel aliorum pro eis Nobis super oblata petitionis instantiam, sed de nostra mera deliberatione, Præpositum, ac omnes & singulos Presbyteros ac Religiosos & personas alias omnes dictæ Societatis, ubique locorum existentes, ab interfectione supplicationum seu precum, aut processionum hujusmodi, Apostolica auctoritate, tenore Præsentium, perpetuo eximimus & liberamus.

Nulli igitur eam desuper molestent.

§. 4. Districte inhibentes quibuscumque locorum Ordinariis, etiam Patriarchali, vel Archiepiscopali dignitate, ac etiam Cardinalatus & Legationis Sedis Apostolicæ honore præfulgentibus, & aliis personis quacumque auctoritate fungentibus, ne modernos, & pro tempore existentes Præpositum & alios Presbyteros & Religiosos Societatis hujusmodi ad processiones præfatis interessendum, quavis occasione, causa, seu quovis prætextu, ingenio vel colore, directè, vel indirectè, mediatè vel immediatè cogere, aut eos desuper præmissis molestare, perturbare, vel inquietare seu molestari, perturbari, aut inquietari facere, audeant vel præsumant ire permittant.

Executorem & defensorum Societatis deputato.

§. 5. Quocirca Venerabilibus fratribus Patriarchis, Archiepiscopis, & Episcopis, ac dilectis filiis

eorum Vicariis in spiritualibus, aut officialibus generalibus, & Curie causarum Cam. Apost. generali Auditori, necnon Abbatibus, Prioribus, Præpositis, Decanis, Archidiaconis, Canonici, & Capitulis, ac aliis ad quos id quomodolibet spectat & spectabit, per eandem præfentes mandamus, quatenus ipsi vel duo, aut unus eorum per se vel alium seu alios, præfentes litteras & in eis contenta quicumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte dictorum Præpositi, Presbyterorum & religiosorum Societatis hujusmodi, vel alicujus eorum fuerint requisiti solemniter publicantes, eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant eos, præmissis omnibus & singulis pacificè frui & gaudere, non permittentibus eos desuper per quoscumque quomodolibet indebitè molestari. Contradictores quoslibet & rebelles, per sententias, censuras & penas Ecclesiasticas, aliaque opportuna iuris & facti remedia, appellatione postposita compescendo, legitimè super his habendis servatis processibus, sententias, censuras & penas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando; invocato etiam ad hoc si opus fuerit, auxilio brachii sæcularis.

Derogatio contrariorū.

§. 6. Non obstantibus felic. record. Bonifacii Papæ Octavi prædecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, dummodo non ultra tres dietas quis vigore Præsentium, ad iudicium trahatur, & aliis Apostolicis, necnon in generalibus, provincialibus & synodalibus Conciliis editis, generalibus vel specialibus constitutionibus & ordinationibus, ceterisque contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim, Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspensi, vel excommunicati non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Transumptio fides.

§. 7. Volumus autem quod eandem Præsentium transumptis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ, seu etiam, Præpositi ipsius Societatis munitis, eadem prorsus fides in iudicio & extra adhibeatur, quæ ipsis originalibus litteris adhiberetur, si fient exhibitæ vel ostensæ.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 16. Julii 1576. Pontificatus nostri Anno 5.

Quod Confessores in vim privilegiorum Cruciatæ sanctæ eligendi, neminem ab incurfu & lapsu in hæresim absolvere possint.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad futuram rei memoriam.

Exordium.

Officii nostri partes sedulo præstare tenemur, ne gratiæ & privilegia à Sede Apostolica ad animarum salutem emanata, in illarum detrimentum interpretentur aut extendantur.

Causa hujus declarationis.

§. 1. Nuper siquidem accepimus, nonnullos curiosa & subtili magis quam vera interpretatione prætereendere in vim privilegiorum Cruciatæ sanctæ ab eadem Sede concessorum eligendi Confessores, qui à nonnullis criminibus & excessibus absolvere possint, à lapsu, & incurfu in hæresim absolvendi facultatem & auctoritatem, saltem in foro conscientie habere.

Declaratio de qua in rubrica.

§. 2. Nos autem omnem dubitandi occasionem in præmissis removendam esse existimantes, ne circa id ullo tempore hæsitari contingat, Motu proprio & ex certa nostra scientia fel. recordat. Pii Papæ V. prædecessoris nostri, ac nostræ intentionis numquam fuisse vel esse, dictis Confessoribus aliquo modo absolviendi ab incurfu & lapsu in hæresim, quod crimen uti ceteris gravissimè speciali nota est dignum, facultatem concedere, nec illa per dictum prædecessorem, & Nos umquam concessam fuisse vel esse censi, aut ipsis Confessoribus dictorum privilegiorum auctoritate electis absolutionem impartiri licuisse, neque in posterum licere, aut absolutiones, quæ jam forsitan eo casu sub datorum privilegiorum præ-

Facules
Commissarii
Cruciatae, il-
lam in vulga-
re idiomate
redigendi
&c.

Fides tran-
sumptorum.

D. P. An. 5.
die 23. Sept.

XXXVIII.

textu per Confessores impensas, nemini suffragari potuisse sive posse, auctoritate Apostolica tenore praesentium decernimus & declaramus.

§. 3. Et ut Christi fides supradictae declarationis commodius notitiam habere possint, licentiam & facultatem concedimus Commissario generali dictae Cruciatæ, illam de latino sermone in vulgari juxta Linguam Provinciae, ubi publicatio ipsius Cruciatæ faciendæ erit redactam, una cum facultatibus dictae Cruciatæ, & per modum exceptionis, in suo loco, sive ad partem imprimi posse facere, in contrarium facientibus quibuscumque non obstantibus.

§. 4. Ceterum quia difficile foret Praesentes Litteras ad singula quæque loca, in quibus de eis fides faciendæ erit, deferri, volumus & dicta auctoritate decernimus, quod illarum transumptis etiam impressis, manu alicujus Notarii Apostolici subscriptis, & sigillo dicti Commissarii, seu alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ ipsis originalibus adhiberetur si forent exhibitæ vel ostensæ.

Datum Romæ apud S. Petrum sub annulo Piscatoris, die 23. Septembris, millesimo quingentesimo septuagesimo sexto, Pontificatus nostri Anno 5.

De Confraternitate Recommendatorum B. MARIE Virginis, Confalonis postea nuncupata, Romæ anno 1264. à nonnullis Patriis Romanis instituta. Ac de modo orandi, sive de Corona à S. Bonaventura ejus Confratribus præscripta, indulgentiarumque largitione.

Hanc sodalitatem, in Archiconfraternitatem hic idem Pont. postea erexit, cum potestate alias sibi Confraternitates aggregandi, cum indulgentiarum communicatione, die 26. Aprilis 1579. sed ejus bullam prætermisit. Exstat etenim de firma aggregandi nova dispositio Clem. VIII. in sua cons. 115. Quamcumque, quam vide in Tomo 1. fol. 812. Et de dicta erectione habetur in omnibus bullis mox cit.

Eidem Archiconfraternitati opus captivos Sedis Apost. subditos ab infidelibus redimendi delegavit hic idem Pontif. infra in cons. 69. Christianæ, ubi etiam privilegium duos incarceratos liberandi concessit. Et pro opere dictæ redemptionis annuus redditus elargitus est Sixtus V. in sua cons. 27. Cum benigna, Jodicemque speciale causam Archiconfraternitatis delegavit in alia cons. 37. Cum sicut. Et circa indulgentias videnda erit nova dispositio Pauli V. firmata sub die 23. Octob. 1606. mox in lucem edenda.

GREGORIUS PAPA XIII.

Universis Christi fidelibus presentes Litteras in-
specturis salutem & Apostolicam bene-
dictionem.

Exordium.

Pastoris æterni, qui non vult mortem, sed conversionem peccatoris, vices licet immeriti gerentes in terris, Christi fideles singulos, præsertim piis Sodalitatibus, ad charitatis & misericordiae opera exercenda sub gloriosissime Virginis MARIE nomine & vexillo institutis adscriptos, ad devotionis sinceritatem erga Salvatorem, & Dominum nostrum JESUM CHRISTUM, cui pro ipsis ab æterna morte redimendis in ara Crucis immolatus, nulla condigna reverentia, nullusque satis congruus honor, ultra ratione posset umquam exhiberi, per amplius augendum, frequentesque & efficaces orationes sibi, tam pro eorum, quam aliorum Christi fidelium etiam defunctorum animarum salute devotè effundendum, eadem spiritualium alimentorum, indulgentiis videlicet, & peccatorum remissionibus libenter in-

vitamus, ut exinde suorum abolita macula delictorum, promissæ redemptionis fructum facilius consequi, & ad sempiternæ gloriæ beatitudinem feliciter pervenire mereantur.

§. 1. Cum itaque sicut accepimus, superioribus temporibus, videlicet de Anno Domini millesimo ducentesimo sexagesimo quarto, in Alma Urbe nostra admodum insignis Societas Regulæ Recommendatorum ejusdem Beatæ MARIE Virginis primò, & deinde Confalonis nuncupata, per nonnullos patricos Romanos, & alios eximios ac egregios viros ex revelatione ipsius MARIE Virginis, ut piè creditor, canonicè instituta, ac insignibus, & præclaris privilegiis, indulgentiis, aliisque peccatorum remissionibus diversos Romanos Pontifices prædecessores nostros decorata.

§. 2. Et inter cetera pro illius felici directione, & animarum dilectorum filiorum ipsius Societatis Confratrum, tunc & pro tempore existentium salute, eorumque devotionis incremento, divini nominis, ac ejusdem beatæ MARIE Virginis honore & gloria per Sanctum BONAVENTURAM, tunc in humanis agentem, & Ordinis Fratrum Minorum de Observantia nuncupatorum professorem, piè statuta & ordinata eisdem Confratribus, certa, facilis, commoda, & omnibus pervia orandi, & Altissimo preces effundendi ratio, & forma, Corona nuncupata, præscripta fuerit, videlicet quod ipsi Confratres loco horarum canonicarum, viginti quinque orationem Dominicam, & toties salutationem Angelicam, cum versu incipiente Gloria Patri, in fine psalmorum recitari solito, necnon septies orationem, salutatio nemque hujusmodi, cum versiculo Defunctorum nuncupato, qui incipit, Requiem æternam, & ejus responso recitare tenerentur.

§. 3. Ipsi autem Confratribus sub hujusmodi forma piè orantibus varias indulgentias, & peccatorum remissiones concessas fuisse, multorum fide dignorum testimonia à suis Majoribus quasi per manus tradita & accepta comprobant. Ceterum propter diuturni temporis hujusmodi lapsum, illiusque varias calamitates ac injurias, de concessionibus indulgentiarum, & remissionum hujusmodi, aliter quam ut præfatur non consistit.

§. 4. Nos cupientes ut ipsa Societas, cujus Confratres prædicti, ut etiam accepimus, in Virginibus pauperibus nuptui singulis annis tradendis, Missis & aliis divinis Officiis in eorum Oratorio celebrandis, aliisque piis operibus, non sine summo Religiosis, & charitatis Christianæ fervore intenti, laudabiles effectus producere non cessant, & ad quam dilectus filius noster Alexander tituli Sanctæ Mariæ in Via presbyter Cardinalis Sfortia nuncupatus, Viceprotektor, & Angelus Capranica, ac Hortensius Francipanis, necnon Joannes Dominicus Guelphus, & Valerius de Valle Patrii Romani moderni Custodes ejusdem Societatis dilecti filii singularem gerunt devotionis affectum, prosperis incrementis jugiter proficiat, & in debita veneratione habeatur, ac non solum illius, sed etiam quarumcumque aliarum ei nunc aggregatarum, & deinceps aggregandarum Societatum Confratres pro tempore existentes, eo ferventius & libentius formam orandi hujusmodi cum devotionis incremento observent, & recitationi Coronæ præfatæ intendant, quo exinde majoribus donis spiritualibus se refectos fore conspexerint, de Omnipotentis DEI misericordia, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus auctoritate confisi.

§. 5. Omnibus & singulis utriusque sexus Christi fidelibus in Confratres, tam Confalonis quam aliarum ei aggregatarum & aggregandarum Societatum hujusmodi pro tempore receptis, qui forma præscripta hujusmodi oraverint, & dictam Coronam devotè recitaverint, Dominicis & aliis festivis viginti, ceteris verò non feriatis diebus decem annos de eis injunctis, vel aliis quomodolibet debitis penitentibus, quo die prædictorum id fecerint, Apostolica auctoritate

Sodalitas
Mariæ Con-
falonis de an-
no 1264. in
Urbe institu-
ta fuit & à
Pontificibus
decorata di-
versis privi-
legiis.

Et quædam
Corona pro
modo oran-
di à S. Bona-
ventura Con-
fratribus da-
ta fuit.

Confratribus
piè orantibus
varie indul-
gentiarum con-
cessæ fue-
runt.

Hic modo
Pontif. ut illi
ferventius di-
ctam for-
mam orandi
observent, &
aliis piis
operibus ar-
dentius stu-
deant.

Indulgentias
hic enuncia-
tas elargitur.
Quod in-
dulgentias
vide quod
hic notavi
in rubr.

tenore Præsentium misericorditer in Domino relaxamus. Dicitis verò Confratribus in Nativitatis & Resurrectionis, ac Pentecostes Domini nostri JESU CHRISTI, ceterisque tam in illius, quam ejusdem B. MARIE Virginis honorem celebrari solitis festivitibus, eandem Coronam etiam recitantibus, quo die festivitatum id fecerint, plenarium omnium peccatorum suorum, de quibus ore confessi, & corde contriti fuerint, indulgentiam & remissionem auctoritate & tenore prædictis concedimus & elargimur. Declarantes eandem indulgentiam assequi etiam illos ex Confratribus prædictis, qui eorum vita durante singulis diebus cessante legitimo impedimento, eandem Coronam similiter recitaverint, & in mortis articulo confessi & contriti decesserint, seu id facere nequeentes contritionis signa exhibuerint & offenderint, vel ad minus ter in hebdomada eandem Coronam recitantes, & in illorum mortis articulo dictam Coronam supra se habentes, sanctissimum nomen JESUS ore, seu saltem corde invocaverint. Et insuper ut animam Christianidelum, tam vivorum quam defunctorum saluti peramplius consulatur, eisdem Confratribus nunc & pro tempore existentibus, ut Coronam prædictam quadragesimalibus, & aliis anni temporibus ac diebus, quibus in Ecclesiis dictæ Urbis & extra illius muros existentibus stationes sunt indicte recitando, omnes & singulas indulgentias, peccatorumque remissiones, tam pro se, quam per modum suffragii pro Confratribus in CHRISTI caritate defunctis, pro quibus illam recitaverint, consequantur, quas consequerentur, si eisdem temporibus & diebus, Ecclesias ipsas pro eisdem stationibus & indulgentiis deputatas personaliter visitarent. Et postremo ut si ipsi Confratres pariter confessi & contriti singulis secundis feriis cujuslibet mensis, ac etiam die Commemorationis defunctorum Coronam ipsam cum versiculo & responso prædictis incipiant. Requiem æternam, genibus flexis, pro cuiuscunque Confratris anima, quæ DEO in caritate conjuncta ab hac luce migraverit, pariter recitaverint, per hujusmodi recitationem animæ ipsa, eorumdem Domini nostri JESU CHRISTI, & beatissimæ Virginis MARIE, ac beatorum Apostolorum Petri & Pauli, aliorumque Sanctorum meritis suffragantibus, à Purgatorii penis liberari valeat, eisdem auctoritate & tenore etiam concedimus & indulgemus.

§. 6. Præsentibus litteris quas sub quibuscvis similibus vel dissimilibus indulgentiarum revocationibus, limitationibus, suspensionibus, ac aliis contrariis dispositionibus comprehendere, quavis etiam dicta auctoritate, etiam per Nos & pro tempore existentes Romanos Pontifices successores nostros, & Sedem Apostolicam, aut aliis ex quacunque quantumvis urgentissima ac necessaria causa, etiam in favorem Basilicæ ejusdem Sancti Petri de dicta Urbe Cruciatæ sanctæ, vel expeditionis contra infideles, ac etiam Motu proprio, & ex certa scientia, in genere vel in specie, & aliàs quomodolibet factis & emanatis nullatenus umquam comprehensas, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum & validissimum statum restitutas, ac de novo, etiam sub quacunque etiam posteriori data per pro tempore existentes ipsius Societatis Confalonis Custodes eligenda, concessas, restitutas, & plenariè reintegratas esse, fore & censeri, ac Confratribus & aliis prædictis suffragari debere decernimus, perpetuis futuris temporibus valitoris, etiam si Societati & illius Confratribus prædictis aliqua alia indulgentia, perpetuò vel ad tempus nondum elapsum duratura per Nos vel Sedem eandem concessa fuerit.

§. 7. Volumus autem quod Præsentium transumptis, etiam impressis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo dictæ Societatis, seu alicujus persone in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ ipsis originalibus litteris adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensæ.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum sub annulo

Piscatoris, die 12. Octobris millesimo quingentesimo septuagesimo sexto, Pontificatus nostri Anno quinto.

Quod pro Religione Clericorum Regularium Societatis JESU, ubique Ecclesiæ & domus ædificari possint, non obstante privilegio aliis Ordinibus concessio & concedendo, quod prope eorum loca nova Monasteria construi nequeant.

Hoc privilegium quod omnibus ferè Mendicantibus ob communicationem privilegiorum prodesse puto, specificè Sedes Apost. dedit Ordinis S. Francisci, & Ordini S. Dominici, ut videre est sup. in Tomo I. in constit. 21. Jul. II. Exponi, ubi notavi. Ac Ordini Eremitarum S. Augustini, ut in constit. 2. Bonifacii VIII. fol. 174. in d. Tom. 1. Alia autem de hac Societate indicabo hic inf. in constit. 89. Ascendente.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad futuram rei memoriam.

Salvatoris Domini nostri JESU CHRISTI qui Caritas est, & Deus Pacis, his in terris vices licet immeriti gerentes, ea quæ pacis sunt, præsertim cum militantis Ecclesiæ firmamentum, omni-que filiæ Sion decor, in animorum conjunctione, pace, & tranquillitate versetur, nosque unum in CHRISTO corpus sumus, pro nostri debiti officio, tamquam ipsius mystici corporis Caput, quærentes, litium quarumvis quæ fraternam dilectionem lacerant, maxime verò quæ inter Religiosas personas ventilantur, occasionibus obviamus, exortasque quantum cum Deo possumus consopimus.

§. 1. Sane, ut accepimus, licet dilecti filii Presbyteri venerabilis Societatis JESU in vinea Domini, tamquam fructiferi palmites, in toto ferè orbe, tam in continendis in via mandatorum Christianidelibus, infirmis in fide consolidandis, agrotisque sanandis, contractis alligandis, & abjectis reducendis, ovisque dispersis, & lupis vespertinis, leonumque famelicis catulis, in devotionem expositis, reclamandis & defendendis, quàm etiam iis, quæ extra ovile CHRISTI, sacrosanctique Imperii nostri tutelam, sub ignorantia jugo in obscuris & tenebrosis lucis, ac desertis, per montuosas ac difficiles vias aberrant, convertendis, & ad nationes Catholica religione imbutas, & ad immanes, barbarasque divini cultus, politice ornatus ignaras gentes, ferino potius quàm humano more viventes, sese extendentes. optimum & uberinum fructum attulerint, & in dies majori cum sollicitudine afferre, zizania extirpare, bonum semen renovare, plantare, terrasque incultas Evangelico sulco, ad Ecclesiasticæ disciplinæ vomere eruderare non cessent.

§. 2. Ac dudum propter ipsius Societatis tam utiles, tamque necessarias functiones, quæ tum in domibus per frequentem Penitentia, & Eucharistiæ sacramentorum administrationem, & ad eorum frequentationem sectandam exhortationem, predicationemque spiritualia exercitia, ac alia verbi Dei ministeria, tum in Collegiis per lectiones, tam bonarum litterarum quàm Philosophiæ etiam & Theologiæ ad juventutem bonis moribus & litteris imbuendam, ex ipsius Societatis primæva instituti erectione, ac divina vocatione, magno Dei beneficio, & Ecclesiæ spirituali emolumento exercet, felicis recordationis Paulus Papa Tertius speciali privilegio, ut quæcumque domos, Ecclesias, & Collegia ædificare, vel concessa recipere & inhabitare posset indulserit.

§. 3. Et deinde pia memoriæ Julius etiam Papa Tertius indultum hujusmodi confirmaverit.

§. 4. Et successivè recolendæ memoriæ Pius Quartus prædecessor noster idem indultum, etiam intra centum quadraginta annos Ordinem Mendicantium, de novo concesserit.

Clauſuræ
præſervativæ.

Fides tranſumptorum.

Dat. P. An. 5.
die 12. Oct.

Bullarium Romanum, Tom. II.

O o 2

§. 5. Neque

XXXIX.

Exordium.

Societatis
Jesu multa
sunt pia opera
& fructus.

Ideoq; Paul.
III. ejus institutum
confirmavit
supra in constit. 25.
Regimini.

Jul. III. etiam
conf. 9. in
Tomo I. Pius
IV. concessit
indultum
cann. 140. ut
hic, sed ejus
bullam non
posui.

1576.

Hic Pont.
confirmavit.Quia tamen
Societas ad-
huc molesta-
tur.Hic propter
ea Pont. ex
iustis causis
hic relatis.Privilegiū
cannarum
quibuscumq;
Ordinib; con-
cessum, rel-
pectu hujus
Societatis re-
vocat, n in
obstante no-
va concessio-
ne per eos
obtinenda.Tu vide no-
vam privile-
gium c. r. m.
litis. Dical-
ceatis clari-
tum à S. D.
N. Paulo V.
in sua con-
stit. 8.
Ad Ecclesiā.

§. 5. Neque postremò cum his & causa, seu con-
troverfia, aut quæstionis materia desuper occasio-
ne certæ domus per ipsos Presbyteros à dilecto filio
Comite de Orgaz Toleti empta, concessionem ejus-
dem Pii prædecessoris confirmantes, emptionem
dictæ domus rectè factam, & in ea Presbyteros ipsos
habitare posse & debere declaraverimus, & alias
prout in singulis litteris Apostolicis desuper conse-
dit plenius continetur.

§. 6. Nihilominus præfati Presbyteri, à diversis
dictorum Ordinum religiosis diversimodè, vigore
seu prætextu privilegiorum hujusmodi cannarum
adhuc, prout de factò, tam in Mexicana quàm in
Guaxicana novæ Hispaniæ civitatibus, non sine ani-
mi nostri displicentia, molestantur, immo & ex-
communicationis sententia interdum feriuntur, in
Christiani populi scandalum non modicum.

§. 7. Nos igitur attendentes dictam Societatem
quæ quamvis Collegia habeat annexa, & hæc red-
ditus pro studentium necessitate habere possint, in-
ter Mendicantium Ordinum religiones, per sanctæ
memoriæ Pium Papam Quintum similiter præde-
cessorem nostrum per quædam suas in forma Brevis
litteras, sub die septima mensis Julii, Pontificatus
sui Anno sexto, expeditas, adscripta & declarata,
ac privilegiorum Ordinum Mendicantium particeps
effecta fuit, ex ejus instituto & constitutionibus,
Apostolica auctoritate confirmatis, bona stabilia
possidere non posse, sed incertis elemosynis, fide-
liumque largitionibus & subventionibus vivere,
nec minus quàm ceteros Mendicantes Ordines, in
excolenda vinea Domini, assidue laborare, immo
nec alios juxta se, domos, & monasteria ædificare
prohibere, neve ullum aut certè quàm minimum
præjudicium aliis Religiosorum monasteriis ex So-
cietatis, Domorum, Collegiorum, & Ecclesiarum
vicinitate provenire, ex eo quod propter diversam
sanctionum & instituti rationem, Societas ipsa nec
chori usum habet, nec ad funerales associationes ac-
cedit, nec defunctorum funera, nisi rara, nulla item
Missarum, vel sepulchralia stipendia, nullas sepul-
chrorum, vel capellaniarum fundaciones, nullam
denique prorsus elemosynam, quæ ad quodvis ip-
sius Societatis ministerium, vel opus dirigi intelliga-
tur admittit. Ac, prout nost. um Nos in viat officium,
inconvenientibus hujusmodi obviare, ac scandala
quæcumque & contentionum, præcipue inter reli-
gias personas, occasiones removere, necnon ta-
n salubris dictæ Societatis ministeriis, quæ pro eorum
dignitate, ac majori fidelium fructu, in locis aptis, ubi
major feget, & frequentior populi consuetudo viget,
exerceri & ministrari debent, viam potius aperire,
quàm impedimenta ulla objici permittere volentes.

§. 8. Motu proprio, ac de Apostolicæ potestatis
plenitudine, non ad alicujus Nobis super hoc obla-
tæ petitionis instantiam, sed de nostra mera deli-
beratione, eosdem presbyteros, eorumque singu-
los à quibusvis excommunicationis, suspensionis,
& interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, cen-
suris, & penis, à jure vel ab homine, quavis oc-
casione vel causa latis, si quibus quomodolibet in-
nodati existunt, ad effectum Præsentium dumtaxat
consequendum, harum serie absolventes, & ab-
solutos fore censentes, ac supradictarum litterarum,
necnon & aliorum Ordinum, privilegiorum, & in
eis contentarum clausularum tenores, ac alia etiam
forsan circa præmissa de necessitate exprimenda,
præsentibus pro expressis habentes, ac privilegia dic-
torum Ordinum super non ædificatione infra dictas
cannas, quo ad dictam Societatem tantum, suspen-
dentes, revocantes ac invalidantes, silentium perpetu-
um quibusvis super præmissis, aut eorum aliquo
vigore cujusvis confirmationis aut ampliacionis,
& de novo concessionis dictarum cannarum à Sede
Apostolica quomodolibet, & pari motu, etiam con-
sistorialiter, ac cum quibusvis Præsentium derogati-
onibus, specificè factis, obtentorum, & in futurum
obtinendorum contra Præsentium tenorem venienti-
bus imponentes.

§. 9. Eisdem Presbyteris & Societati, ut, quæ-
cumque Domos, Collegia, Ecclesias & alia ædificia
erigere, ac per eos ubivis locorum erecta inhabitare,
ac quæcumque loca, Domos, Ecclesias, Oratoria,
& alia cujuscumque structuræ ædificia, sibi quomo-
dolibet relicta vel oblata recipere, acceptare, emere,
possidere & retinere, ac in eis omnia & singula,
functiones, lectiones & ministeria, in aliis ejusdem
Societatis, Domibus, Collegiis, Ecclesiis, & aliis
locis fieri & exerceri solita, habere, facere, &
exercere liberè & licitè possint & valeant, earum-
dem Præsentium tenore de specialis dono gratiæ
concedimus & indulgemus. Eoque à quibusvis cen-
suris & penis, in illos præmissorum occasione for-
san latis, absolvimus.

§. 10. Necnon indulta per Paulum, Julium, &
Pium prædecessores nostros prædictos, & Nos eis,
ut præfatur, concessa & confirmata, cum omnibus
& singulis in eis contentis concessionibus, privile-
giis, facultatibus, prærogativis, & aliis gratis, de-
clarationibus, derogationibus, aliisque, etiam de-
rogationarum derogatoriis, irritantibusque, & aliis
decretis & clausulis, approbamus & confirmamus,
illique perpetuæ & inviolabilis firmitatis robur ad-
dicimus.

§. 11. Necnon oppositionem & contradictionem
quorumcumque quovis titulo, vigore, prætextu,
colore ipsi Presbyteri præjudicium afferre, ac
præsentis litteras de oreptionis seu subreptionis
vicio, aut intentionis nostræ defectu, notari vel im-
pugnari, suspendi, revocari, annullari, invalidari,
aut ad viam juris reduci, vel contra illas attentari
non posse, neque debere, sed illas perpetuò validas
efficaces, & illibatas existere, & ubi aliquid contra
eas extorqueri & obtineri contingerit, illas nihilo-
minus in suo pleno & integro robore, absque eo
quod desuper imperanda sit à Sede prædicta illa-
rum confirmatio, restitutio, revalidatio, vel nova
concessio, permanere; irritumque & inane, si secus
super his à quocumque quavis auctoritate scienter
vel ignoranter in posterum contrigerit attentari de-
cernimus. Ac quavis excommunicationis senten-
tias, vigore talium privilegiorum cannarum, con-
tra dictos Presbyteros vel Societatem latis & feren-
das, eos vel eorum aliquem nullatenus efficere pos-
se declaramus.

§. 12. Quocirca universis & singulis venerabilibus
fratribus Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis,
ac dilectis filiis Abbatibus, Prioribus, & aliis perso-
nis in dignitate Ecclesiastica constitutis, per Præsen-
tes, pari motu, mandamus, quatenus ipsi vel eo-
rum quilibet, per se vel alium seu alios, præsentis
Litteras & in eis contenta quæcumque, tibi & quan-
do opus fuerit, & quoties pro parte dictorum
Presbyterorum, aut alterius eorum fuerint requisi-
ti, solemniter publicantes, eisque in præmissis effi-
catis defensionis præsidio assistentes, faciant aucto-
ritate nostra eos decreto, confirmatione, indulto,
aliisque præmissis pacificè & gaudere ac easdem præsen-
tes Litteras, & in eis contenta quæcumque perpetu-
ò inviolabiliter observari. Non permittentes eos
super eisdem præmissis, vel eorum aliquo, per
quorumcumque Ordinum etiam Mendicantium reli-
giosos seu locorum Ordinarios, aut alios quos-
cumque Judices & personas cujuscumque status,
gradus, ordinis, & conditionis existant, & quæcum-
que etiam Pontificali, regia, vel alia auctoritate fun-
gantar, publicè vel occultè, directè vel indirectè,
tacitè vel expressè, quovis quæsitò colore vel inge-
nio impediri, molestari, perturbari, vel aliàs quo-
modolibet inquietari. Contradictores quoslibet
& rebelles per censuras Ecclesiasticas, & alia op-
portuna juris remedia, appellatione postposita
compescendo, invocato etiam ad hoc, si opus fue-
rit, auxilio brachii secularis.

§. 13. Non obstantibus præmissis, ac pie mem.
Bonif. PP. Octavi etiam prædecessoris nostri de una,
& in Concilio generali de duabus dietis, dummo-
do non ultra tres dietas quis auctoritate Præsentium

1576.

E facultatem
Ecclesias &
domos fabri-
candi conce-
dit.Tu ad hoc
vide constit.
99. Clem. 8.
Quoniam.Privilegia
Societatis
omnia con-
firmat.Clausulas
præfate
apponit.Executores
deputat.Conteritis
derogat.

Transumptio-
rum fides.

D. P. An. 5.
die 30. Oct.

XL.

Edicta An. D.
1576.

Procoemium.

Causa hujus
const.

ad iudicium trahatur, atque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon dictorum Ordinum etiam iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis eisdem Ordinibus, illorumque Superioribus, & personis, etiam super non edificandis Ecclesiis, Domibus, Collegiis, & aliis aedificiis aliarum Religionum intra centum quadraginta annas ab eorum cenobiis & conventibus, vel monasteriis & domibus, ac aliis sub quibuscumque tenoribus & formis, per quoscumque Romanos Pontifices concessis, confirmatis, & innovatis, ac omnibus aliis quae Nos & praedicti Praedecessores nostri in singulis litteris praedictis volumus non obstat. Quibus omnibus, etiam pro illorum sufficienti derogatione de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad verbum, non tamen per clausulas generales idem importantes, mentio seu quavis alia expressa habenda, aut aliqua alia exquisita forma servanda foret, tenores illorum ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata, inserti forent, Praesentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanens, hac vice dumtaxat, motu simili, specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Se- de indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint, per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§. 14. Volumus autem, & eadem auctoritate decernimus, quod ipsarum transumptis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus Praelati vel personae in dignitate Ecclesiastica constitutae, aut Curiae Ecclesiasticae, vel etiam Generalis Praepositi ipsius Societatis munitis in iudicio & alibi ubi opus fuerit, eade proferri fides adhibeatur, quae adhibetur eidem Praesentibus si forent exhibita vel ostensa. Datum Romae apud Sanctum Petrum, sub anno Piscatoris, die 30. Octob. 1576. Pontificatus nostri Anno quinto.

Jurisdictione Protomedici & Collegii Physicorum Almae Urbis, quoscumque Medicos in ea medentes examinandi, & non repertos idoneos, ab exercitio Medicinae expellendi atque coercendi.

Ejusdem Collegii & Protomedici auctoritatem in Urbe doctorandi, & jurisdictionem causis ad Artem spectantibus cognoscendi habes sup. in const. 19. Jul. III. Meritis. in Tomo 1. & latius infra in Clem. VIII. const. 12. fol. 16. Et aliquid circa visitationem Aromatariarum in Paul. V. const. 71. §. 25. Vide in Tomo 3.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

IN Apostolicae dignitatis culmine, meritis licet imparibus, divina dispositione constituti, ad ea nostrae considerationis aciem libenter dirigimus, per quae provisionis nostrae auxilio Artis Medicinae ministerium, recte & fideliter exerceatur, & ne in eo nonnullorum imperitia errores in alterius iacturam fiant, nostri Pastoralis officii partes libenter impartimur, prout temporum qualitate pensata id perspicuum salubriter expedire.

§. 1. Cum itaque sicut accepimus in Urbe nostra a diversis Medicis & Artem Medicinae exercentibus, etiam publice Doctoratis, & privilegium Doctoratus, etiam a publicis & generalibus Studio- rum Universitatibus habentibus, quamplurimi & gravissimi errores medendo, & Artem Medicinae exercendo, etiam in hominum perniciem, & grave damnum committantur, dum neque dicti Medici non admodum experti ea remedia, & praesidia, quae

non conveniunt, quinimmo contraria & diversa utcumque praescribant, adhibeant, & consulant, etiam interdum, vel saepius experientiam & periculum dictae Artis in rebus dubiis, & ipsis incognitis, cum maximo & evidenti hominum vitae discrimine faciendo.

§. 2. Nos pro nostri Pastoralis officii debito, huic gravi malo occurrere, & in praemissis opportune providere volentes, dictorum filiorum Protomedici & Collegii Physicorum dictae Urbis in hac parte supplicationibus inclinati, eisdem Protomedico nunc & pro tempore existentem, ac Collegio Physicorum dictae Urbis, in eadem Urbe, omnes & singulos, ac quoscumque Artem Medicinae exercentes, etiam Medicos publice, & in publicis Gymnasiis, vel Universitatibus quibuscumque doctoratos, & promotos, exceptis tamen illis Medicis, qui longo usu, tam in stationibus Medicorum, five Collegiis habitis, quam aliis in exercitio Medicinae probi & periti communiter existimantur, ad se examini subiiciendum, & per indictionem exercitii medicinae compellere, & per ipsum Protomedicum, & duos alios de eodem Collegio examinare, & illos quos ad Medicinam exercentiam non idoneos, nec sufficientes repererint, exercitio Medicinae huiusmodi in ipsa Urbe prorsus interdicere, seu ab ipso exercitio, ad tempus, & donec & quousque studio mediante ad melius profectum, suspendere, aut eis, ne dictam Artem nisi cum praesentia, vel consilio alterius, vel aliorum Medicorum idoneorum, & a dictis Protomedico, & duobus de Collegio huiusmodi approbatorum ullatenus exercere audeant, nec debeant, prohibere. Ac in contrasfacientes, aut contradicentes quoslibet, quavis poenas ipsi Collegio bene visas, & arbitrio ejusdem Collegii, piis usibus applicandas infligere, illasque ab eis exigere, omniaque, & singula alia in praemissis, & circa ea necessaria, seu quomodolibet opportuna facere & exercere libere & licite valeant, ac etiam debeant, Apostolica auctoritate tenore Praesentium concedimus & mandamus, sicque etiam perpetuo statuimus & ordinamus. Necnon eisdem Protomedico & Collegio, in & super praemissis omnibus & singulis plenam, liberam, amplam, & omnimodam facultatem, licentiam, potestatem, & auctoritatem impartimur.

§. 3. Ac etiam Protomedicum & Collegium huiusmodi, eorumque deputatos & deputandos super praemissis omnibus & singulis, ac illorum executione, per quoscumque quavis auctoritate, & quocumque quaesito colore, ingenio, vel praetextu quomodolibet molestari, vel impediri non posse decernimus. Mandantes praeterea dictis Medicis, qui ut praefertur non idonei, nec sufficientes pro tempore reperti fuerint, ut in virtute sanctae obedientiae, etiam sibi per Collegium praedictum cominantis & infligendis poenis, ejusdem Collegii mandatis pareant & obediant.

§. 4. Necnon dilectis filiis Curiae causarum generali Auditori, Gubernatori, Vicario, & Senatori, ac Conservatoribus Camerae dictae Urbis, ceterisque ius dicentibus Ecclesiasticis & saecularibus, quavis auctoritate fungentibus & functuris, ac iustitiae Ministris dictae Urbis, & quibuscumque aliis personis cuiuscumque dignitatis, status, gradus, ordinis, & conditionis existentibus, quatenus ipsi & eorum quilibet eisdem Protomedico & Collegio in praemissis efficacis defensionis praesidio assistentes Praesentes nostras recipiant & admittant, ac inviolabiliter observent, & ab omnibus ad quos spectat & spectabit, observari mandent & praecipiant, faciantque Protomedicum & Collegium huiusmodi praemissis omnibus pacifice & quiete uti, frui, & gaudere, nec permittant eos, per quemlibet contra eorumdem Praesentium tenorem, quoquomodo molestari aut impediri, contradicere quoslibet & rebelles, per sententias, censuras, & poenas etiam pecuniarias, aliaque opportuna juris & facti remedia, quacumque appellatione remota compescendo, ac censuras ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii saecularis.

Concessio jurisdictionis de qua in rub.

Inhibitio contra omnes impedientes.

Officiales eis faveant, & huius bullae observantiam quarent.

Quibuscumque non obstantibus.

§. 5. Non obstantibus præmissis, ac privilegiis Doctoratus in Medicina dictis Medicis, qui ut præfertur non idonei, nec sufficientes pro tempore reperti fuerint quomodolibet, & etiam per quæcumque Gymnasia, Collegia & Universitates, etiam generales, ac etiam prævio riguroso examine, etiam publicè factò concessis & concedendis, necnon quæcumque præscriptione etiam longissimi temporis, quo ipsi tales Medici, etiam absque aliqua contradictione medicati fuerint, & artem prædictam etiã palam, & publicè nemine contradicente exercuerint, ac regula nostra de non tollendo jure quæsitò, si opus sit, aliisque constitutionibus & ordinationibus, dictaque Urbis & quoruncumque Gymnasiorum, Collegiorum, & Universitatum, Studiorum, etiam generalium, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, legibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, etiam illis eorumque Superioribus, & personis, ac etiam dictis Medicis, qui pro tempore non idonei, nec sufficientes, ut præfertur reperti fuerint, in genere vel in specie, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis, etiã Motu proprio, & consistorialiter, ac aliàs in contrarium quomodolibet concessis, confirmatis, & innovatis, ac in posterum concedendis, confirmandis, & innovandis. Quibus omnibus etiam si de illis, eorumque totis tenoribus, specialis, specifica & expressa mentio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad id servanda esset, illis aliàs in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque, aut si aliquibus communiter vel divisim, ab Apostolica sic Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Exemplorum fides.

§. 6. Volumus insuper quod Præsentium transcriptis etiam impressis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ, aut dicti Collegii munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, in judicio & extra illud, quæ ipsi originalibus adhiberetur si forent exhibitæ vel offensæ.

Dat. P. An. 5. die 1. Nov.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris, die 1. Novembris, millesimo quingentesimo septuagesimo sexto, Pontificatus nostri anno quinto.

XLI.

Declaratio Concordatorum inter Sedem Apostolicam & nationem Germanicam, circa collationes beneficiorum Ecclesiasticorum, in mensibus reservatis.

Ista Concordata firmavit Nicolaus V. in cons. 1. Ad sacram. ubi notavi in Tomo 1. fol. 357.

Edita An. D. 1576.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memoriam.

Exordium.

Quæ in Ecclesiam Dei incommoda inferant, nostra nos expedit animadversione removere.

Nicol. V. statuit Ordinarios posse disponere de beneficiis vacantibus in mensibus. Sedi Apost. reservatis, nisi fuerit à dicta Sede provisorum, ut sup. in ejus constit. cit. in rub.

§. 1. Cum itaque per Litteras sel. record. Nicolai Papæ Quinti nationi Germaniæ pro illius unionis & concordia cum Sede Apostolica inter alia concedatur, ut quoties aliquo vacante beneficio Ecclesiastico, in mensibus Januarii, Martii, Maji, Julii, Septembris, & Novembris, in quibus vacantium Germaniæ beneficiorum Ecclesiasticorum dispositio dictæ Sedi specialiter reservata est, non apparuerit intra tres menses à die notæ vacationis in loco beneficii, quod alicui de illo Apostolica auctoritate provisorum fuerit, ex tunc & non antea, Ordinarius, vel alius ad quem illius dispositio pertinet, de illo disponere possit, & sæpenumero contingat, ut antequam inquisitio, quam plerumque etiam in concursu plurium, sive in partibus sive

apud dictam Sedem, fieri oportet in vitam, mores & doctrinam eorum, quibus de dictis beneficiis per Sedem eandem providendum est, compleri possit, aut etiam de ipsis provisionibus, seu de mandatis, quæ ad inquisitiones & provisiones hujusmodi faciendas ab eadem Sede impetrantur, vel Motu proprio procedunt, litteræ Apostolicæ conficiantur, vel etiam antequam mandata ipsa à Judicibus ad quos directæ sunt recipiantur vel recepta expediantur, interdum quoque litteris Apostolicis expeditis, & gratia purificata, seu mandatis prædictis receptis, & inquisitione completa, antequam omnimoda executio perficiatur, propter diversa impedimenta, quæ frequenter succedunt, tempus trium mensium, ex quo vacatio beneficii in loco ipsius nota est, expiret, ac proinde Ordinarii locorum, aut alii ad quos talium beneficiorum dispositio, cessantibus Apostolicis reservationibus, pertinet, lapsò tempore prædicto licet priusquam illud laberetur, provisionis sive alterius dispositionis de illis à dicta Sede jam gratia facta fuerit (quod ipsum ad tribuendum & querendum jus facis superque esse certa juris interpretatione frequenter declaratum est) illa tamen conferre contendunt. Qua de causa multis Religione & pietate insignibus, quando si post ostensum virtutis & doctrinæ suæ specimen, atque inde emensos labores & sumptus, beneficiis potiri deberent, alii præoccupatores obtentu ordinariæ collationis hujusmodi contra adversantur.

§. 2. Nos indignum rati, quod temporis mora, quam ad perscrutandum accuratius talium probitatem, industriam, & alia requisita intercedere pro utilitate Ecclesiæ necesse est, locum injuriis aperiat, attendenteque verba prædicta, in loco beneficii, cum verbis, notæ vacationis, quæ protinus antecedunt conjungi, & ad illa dumtaxat referri, ac voluntatem concedentis, sensumque concessionis, & Litterarum prædictarum sic esse, ut dispositio beneficii intra tres menses à die notæ vacationis à Sede prædicta fieri, deque gratia facta alicubi apparere debeat, quemadmodum re inter utriusque juris Interpretes jam pridem controversia summa ratione judicatum apparet, vix enim est, ut itineribus non modo infestis, aut prohibitis, quod ferè semper aliquo contingit, sed etiam expeditis, qui ex tam longinquis regionibus ad dictam Sedem profectus, & in ea ad expediendum negotium, vel paulisper moratus, in eadem recipere tanta temporis angustia possit. Quocirca equitate & iustitia suadentibus, Præsentium auctoritate declaramus, concessionem Nicolai Papæ, & litteras prædictas locum omnino non habere, quod Ordinarii, aut alii Collatores prædicti, post lapsum trium mensium ex die notæ vacationis in loco beneficii disponere possint de ullis beneficiis prædictis, aliàs sub concessione & litteris prædictis comprehensis extra Rom. Cur. in mensibus prædictis quoquomodo vacantibus vel vacaturis, de quibus intra dictum tempus trium mensium per Romanum Pontificem, ac dictam Sedem qualiscumque gratia, vel dispositio, aut concessio facta fuerit. Ne tamen cuiquam licitum sit factam à Sede prædicta dispositionem hujusmodi in longum obterege, illi quibus deinceps gratiæ hujusmodi concedatur, etiam concessionum fidem & testimonium, intra tres menses à die notæ vacationis in loco beneficii hujusmodi, vel dictis Collatoribus significare, vel in ipso beneficii loco publicare quoquomodo teneantur.

§. 3. Decernentes omnes & quascumque dispositiones de dictis beneficiis ab eisdem Collatoribus post significationem, seu publicationem hujusmodi pro tempore factas, nullas & invalidas, nulliusque roboris vel momenti fore. Sicque in quibusvis causis pendentibus, & futuris judicari debere; necnon irritum, & inane, quicquid fecus super his ab eisdem Collatoribus, aut quibuscumque aliis scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Hic Pont. modo declaravit dictam constit. Nicol. V.

Decretum irritans.

ANNO
1576.

Collatorum
nobis tenen-
tium poenæ.

Exemplum
fides.

Sanctio poe-
nalis.

Dat. P. An-
tie I. N. v.

Publicatio.

XLII.

edita An. D.
1577.

Procedium.

Græci impe-
rio & scien-
tia erant fir-
miores, sed
præfens in
maxima sunt
calamitate,
& ignorantia,
& à fide
Catholica
deviarunt.

Hic igitur
Pont. volens
eos ad salu-
tiam viam re-
ducere in Urbe
Collegium
Græcorum

GREGORIUS DECIMUS-TERTIUS.

439

ANNO

1577.

ergit, cum
aſſignatione
reducitur.

§. 4. Quod si forte quisquam collatorum prædicatorum fuerit præsentium violator, cum à beneficiorum & officiorum collatione tamdiu suspendimus, donec ipse veniam petens restitutionis gratiam à Sede prædicta meruerit obtinere.

§. 5. Ceterum volumus ut Præsentium transumptis, etiam impressis Notarii publici manu, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ obſignatis, eadem prorsus fides in iudicio & extra illud ubique locorum adhibeatur, quæ adhiberetur ipsis Præsentibus, si essent exhibitæ vel ostensæ.

§. 6. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ declarationis, suspensionis, & voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursum.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo septuagesimo sexto, Calend. Novemb. Pont. nostri anno quinto.

Anno à Nativitate Domini 1576. indit. 4. die verò 29. mensis Novemb. Pontif. Sanctiss. in Christo Patri, & D. N. D. Gregorii divina providentia Papa XIII. Anno V. retroscriptæ litteræ affixæ, lectæ & publicatæ fuerunt, & per aliquod temporis spatium dimissa in valvis S. Jo. Lateranen. & Principis Apostol. de Urbe & in acie Campi Floræ, per nos Joannem Freyle, & Claudium Mongeat ejusdem S. D. N. Papa Curf.

Ant. Ludovicus Mag. Curf.

Institutio Collegii Græcorum in Urbe, pro Scholaribus Nationis Græcæ piè alendis & instruendis, cum annuorum reddituum assignatione, & indultorum concessione.

Ad materiam Græcorum plenè notavi sup in cons. 14. Innoc. IV. Sub Catholica. in Tom. I. fol. 100. ibi videas.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

IN Apostolicæ Sedis specula disponente Domino, meritis licet imparibus constituti, ad universarum gentium, populorumque Christi fidem colentium salutem procurandum, ita nos esse agnovimus debitores, ut non minus longè quam juxta positus, charitatis & vigilantie nostræ studium imparcientis, quod expedit censemus, hucusque pro viribus exequamur.

§. 1. Itaque cum Christiani Orbis partes mentis nostræ oculis perlustramus, inter varias horum temporum ærumnas animum nostrum jubet misericordia Græcæ Nationis, quæ diu olim litterarum, scientiarumque erudit. præstant. & imperii floruit sublimitate, postea Turcarum subiecta tyrannidi, ad extremam fuit redacta calamitatem, & quod miserum est, corporum servitutem secuta est captivitas animorum, quia in tantam scientiarum omnium ignorantiam Græcæ populi devenuerunt, ut vix ullus inter eos reperitur, qui illas proficere, & alios docere possit, atq; adeo omnes, qui Episcoporum, Presbyterorum, alteriusque Ecclesiastici Ordinis gradum inter eos obtinent fœdissimis ignorantie tenebris obvoluti, sacræ Theologiæ rudes, Catholicorum dogmatum ignari, & ad Orthodoxorum religionis fœmâ, & S. R. E. omnium Matris & Magistræ obedientia, recedentes, in varios errores, & schismata prolapsi sunt, & laicos in eandem erroris foveam secum pertraxerunt.

§. 2. Quocirca cupientes antiquam & celeberrimam Nationem ab hujusmodi ignorantia, & eorum caligine ad veritatis lucem, & salutis viam revocare, nullum ad id aptius remedium à Nobis existimavimus posse adhiberi, quàm si in Alma hac Urbe nostræ Collegium erigatur, in quo pueri & adolescentes

Græci ex ipsa Græcia, & aliis Provinciis ac locis, ubi commorantur inquisiti, alantur, & Græcis litteris, liberalibus Disciplinis ac scientiis, sacræ præsertim Theologia, ecclesiasticis præterea ritibus, à viris probatæ fidei & doctrinæ sedulò instruantur, & postquam in Catholicæ fidei firmitate solidati fuerint, & in hujusmodi studiis profecerint, ad eorum Provinciam & loca redeunt alii, qui Monasticam vitam maluerint proficere, ceteros Monachos & Religiosos Catholicè instruere, & ad Monasticam Disciplinam, regularemque observantiam à qua penitus declinare videntur, juxta Sanctorum Patrum instituta revocare studeant. Alii autem qui in Clerum adſcribentur, Nationis suæ populis prodesse, & præesse, animarum curam exercere, verbum Dei sincerè prædicare, Populos ab erroribus & schismate remove, & ad salutarem Orthodoxæ fidei veritatem reducere possint. Reliqui verò qui in laicali vita permanserint, publicè per Civitates aliorum Græcorum filios, ejusdem fidei rudimenta & veritatem, litterasque & artes liberales edocere, ac similiter in Orthodoxæ Religionis cultu continere valeant. Atque ita divina favente gratia sperari possit, ut sana & integra fidei prædicatio & doctrina in ipsa Græcia, & totius præterea Orientis partibus, aliquando restituatur, Præcorumque gentis ejusdem Patrum lumina clarescant. Proinde ad Omnipotentis Dei gloriam, sanctæ fidei Catholicæ exaltationem, animarum eorumdem Græcorum salutem, ac perpetuam ipsorum cum Ecclesia Romana unionem, Motu proprio, certaque scientia, deque Apostolicæ potestatis plenitudine, unum Collegium Græcorum puerorum, & adolescentium in eadem Urbe nostra, loco ad id statuendo auctoritate Apostolica tenore Præsentium erigimus & instituiamus, eique dotis nomine centum scuta auri, ex nostris & Cam. Apost. pecuniis, donec aliter opportune provideatur in singulos menses fluenta assignamus. Præterea cum Cathedralis Ecclesia Chisamen. Insulæ Cretæ certo modo vacaverit, & vacet ad præfens, Nos considerantes Ecclesiam ipsam, Clero populoque Latino, exceptis paucis quibusdam Canonis, qui tamen ab immemorabili tempore, sive ob tenuitatem præbendarum, sive alias ob causas ibi nunquam resederunt, sed Cydoniæ ibi propinque habitare soliti sunt, omnino carere convenire iudicavimus, subsidium aliquod Collegio prædicto in sustentationem Scholarum ex hujus Ecclesiæ fructibus applicare, donec Deo dante talis constitui possit Episcopus, qui etiam Clero & populo Græco sacramenta, & quæ sunt Pontificalis Ordinis valeat ministrare; quare omnes dictæ Chisamen. Ecclesiæ fructus, redditus, & proventus, omniaque jura, obventiones, & emolumenta, exceptis ducentis scutis, annuè administratori seu Vicario, qui à Nobis eidem Ecclesiæ deputabitur persolvendis, & annua pensione centum scutorum auri similium, quam Venerabili fratri nunc Episcopo Milovien. ut commodius sustentari possit, assignari decrevimus, ipsi Græcorum Collegio à Nobis erecto attribuiamus, & assignamus, ita ut ab ipsius Collegii procuratoribus, propria auctoritate ea omnia exigi, percipi, & legari, prædique, domus, & bona quæcumque locari, aliisque ad id opportuna & necessaria fieri possint.

§. 3. Volumus autem idem Collegium, illiusque Rectores, Oeconomos, Magistros, Præceptores atque Scholares pro tempore in eo existentes, & eorum Domesticos, Officiales & Ministros, ipsiusque Collegii bona mobilia & immobilia cujuscumque qualitatis & quantitat, in dicta Urbe extrâ, ac aliis ubique locorum consistentia, exempta esse ab omni jurisdictione, correctione, visitatione, dominio, superioritate & potestate pro tempore existentis Senatoris, Conservatorum, Reformatorumque dictæ Urbis, necnon Reſtoris studii generalis, Vicarii Urbis, & Ordinariorum locorum, aliorumque quorumcumque Judicum & Officialium in ipsa Urbe, vel aliis ubilibet constitutorum. Collegiumque ipsum

Exemptio-
nem à func-
tionariæ Or-
dinariorum
& aliorum
concedit.

Privilegia
Studii Urbis,
ejusque Docto-
rum elargi-
tur.

Quæ vide
sup. in Bonif.
VIII. conf. 9.

Officialibus
observan-
tiam prædic-
torum ad-
mandat.

Facultatem
promovendi
Scholares
Collegii ad
gradus tri-
buit.

Cardinales
Proteçores
Collegii de-
putat.

etiam propriis ejus rebus, & bonis cum ipso, & ejus nomine supradicta contrahentes à solutione & exactione omnis & cujuscumque pedagii, gabellæ, bullæ, letini, decimarum, & cujuscumque alterius, tam ordinarii quàm extraordinarii oneris ex quacumque causa impostorum & imponendorum eximimus, & prorsus liberamus, ac sub beati Petri & Sedis Apostolicæ, atque nostræ protectione suscipimus, Nobisque & dictæ Sedi immediatè subjicimus, ac liberos, immunes, & exemptos declaramus.

§. 4. Eidemque quoque Collegio, & Scholarius, Reçtoribusque & Oeconomis, omnibus & quibuscumque privilegiis, exemptionibus, libertatibus, facultatibus & indultis, quibus studium generale Almæ Urbis, & illius Reçtor, Doctoresque in eo etiam actû legentes, quovis modo utuntur, potiuntur, & gaudent, ac uti, potiri, & gaudere valeant in omnibus & per omnia concedimus & indulgemus, illaque eis communicamus.

§. 5. Necnon Senatori, Conservatoribus, Reformatoribus, Reçtoribus, & aliis Judicibus, Officialibus, & personis prædictis, ac pro tempore existentibus S. R. E. Camerario, Præsidentibusque & Clericis Cameræ Apostolicæ, ac quibuscumque Commissariis ad exactionem decimarum, & aliorum onerum prælatorum pro tempore deputatis, ne quarumcumque Litterarum eis sub quibuscumque tenoribus & formis concessarum prætextu, Collegium, Scholares, Reçtores, Oeconomos, Officiales & Ministros prædictos, seu eorum aliquem in præmissis quovis modo molestant, seu molestari permittant districtius inhibemus.

§. 6. Et præterea Regentibus, ac Superioribus dicti Collegii, cum assensu tamen Cardinalium Proteçtorum, qui pro tempore fuerint, sive alicujus eorum, vel de ipsorum consilio & expresso consensu, illos, quos in dicto Collegio, & alibi per debitum tempus studuisse, ac scientia & moribus idoneos esse repererint, ad Baccalariatus, Licentiatûræ, Doctoratûque Magistrerii gradus, servata forma Concilii Viennensis juxta Universitatibus ejusdem Urbis consuetudinem, seu aliâs promovendi, & ipsorum gradum solita insignia eis exhibendi, quodque sic promoti facultates in quibus studuerint legere & interpretari, & de eis disputare, & quoscumque gradus, seu gradus hujusmodi concernentes actus exercere, ac omnibus & singulis gratiis, favoribus, prærogativis, & indultis, quibus alii in prædicta, seu aliis Universitatibus, & alibi juxta illius, & aliarum Universitatum hujusmodi constitutiones & mores, ad gradus prædictos promoti, de jure vel consuetudine utuntur, potiuntur, & gaudent, ac uti, potiri, & gaudere poterunt quomodolibet in futurum, uti, potiri, & gaudere possint, & debeant, perinde ac si gradus prædictos in ipsa Universitate juxta consuetudinem & mores prædictos suscepissent, cõ-edendi & indulgenti liberam eadem auctoritate tribuimus facultatem.

§. 7. Insuper ut ipsius Collegii conservationi, bonoque regimini, tam in his quæ ad institutionem & disciplinam, quàm quæ ad victum & vestitum, aliisque hujusmodi necessaria pertinent opportunius consulatur, Dilectos filios nostros Jacobum S. Mariæ in Transiberim Sabellum, & Guglielmum S. Laurentii in Panisperna Sileretum, ac Jolium Antonium S. Bartholomæi in Insula Sanctæ Severinæ utulorum Presbyteros, necnon Antonium S. Mariæ in Cosmedin. Diaconum Carasam, nuncupatos Cardinales ejusdem Collegii Proteçores & Defensores constituimus & deputamus, quorum consilio & spe supradicta, & alia quæcumque ad eisdem in Collegio admittendos Scholares, retinendosque, ac admittendos speciantia agant & ordinent. Dantes eisdem & pro tempore existentibus Proteçtoribus, plenam & liberam facultatem & auctoritatem pro salubri directione & conservatione dicti Collegii, illiusque bonorum & rerum, ac jurium tam spiritualium quàm temporalium Oeconomos, Advocatos, Procuratores, aliosque Ministros & Officiales in eo deputandi, amovendique, & alios eorum loco suffiendi, ordinationesque & statuta, licita tamen & honesta,

sacrique Canonibus & Concilio Tridentino non repugnantiâ, faciendi & edendi, eaq; cum visum fuerit revocandi, immutandi, corrigendi, aliisque de novo condendi, quæ postquam facta, edita, revocata, immutata & correctæ fuerint, perinde haberi volumus, ac si auctoritate Apostolica approbata, & confirmata essent, illaque ab omnibus Reçtoribus, Magistris, Scholaribus, aliisque personis in Collegio fervientibus & ministrantibus inviolabiliter observari, ac juxta eorumdem dispositionem, & quibuscumque Judicibus, sublata eis quavis aliter judicandi facultate, judicari ac definiri debere. Et si secus super his à quoquâ quavis auctoritate, scienter vel ignoranter cõtingerit attentari, irritû & inane decernimus.

§. 8. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, & dictæ Urbis juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indultis & litteris Apostolicis eisdem Senatori, Conservatoribus, Reformatoribus, Camerario, Universitatibus, ac earum Collegiis, Reçtoribus, & personis, aliisque prædictis, necnon præfate Urbi & Populo Romano sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis, etiam iteratis vicibus concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus illorum tenores Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliâs in suo robore permanfuris, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Nulli ergo omnino hominum &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, anno incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo septuagesimo septimo, Idibus Jan. Pontificat. nostri anno quinto.

Die 28. Martii 1577. præfentes litteræ Apostolicæ præsentata fuerint in Camera Apost. & ex decreto in ea factò admissæ, & registratæ fuerunt libro signaturarum diversorum Pontificum penes me infra scriptum dictæ Cameræ Notarium existentem.
Tydens de Marchis Notarius.

Declaratio quod spolia Regularium extra claustra vagantium, spectant ad R. Cameram Apostolicam, juxta constitutiones Pauli III. & aliorum Prædecessorum.

De materia Spoliorum notas infra in const. 18. Pauli V. In eminenti.

GREGORIUS PAPA XIII. Ad perpetuam rei memoriam.

Officii nostri partes sedulo præstare tenemur, ut dubia, quæ ab aliquibus falso sub prætextu, vel nimis subtiliter excitata, in Cameræ nostræ Apost. præjudiciu tendunt, declaratione nostra dilucidetur.

§. 1. Nuper accepimus quod etsi fel. rec. Pius Papa IV. prædecessor noster constitutionem, & quæcumque in illa continerentur per pie mem. Paulum Papam IV. etiam prædecessorem nostrum contra Apostatas editam, per quam inter cetera decrevit bona quæcumque mobilia & immobilia ac census, redditus, & provenus, jura, & actiones pro regularem Ordinem professos, extra claustra suorum regularium locorum, etiam de licentia suorum Superiorum degentes, tempore quo extra claustra hujusmodi fuissent acquisita, etiam si acquisitiones hujusmodi ab ipsis professis ex redditibus beneficiorum Ecclesiasticorum, cum cura vel sine cura per eos obtentorum seu detentorum, aut ex propria industria seu artificio, mercatura, vel ex testamento, sive successione ab intestato quorumvis consanguineorum, affinium, vel amicorum suorum, aut quorumcumque aliorum factæ essent, non Fisco, aut Cameræ Apostolicæ, sed Religioni, aut Monasteriis, in quo seu quibus primo professi fuissent, eo ipso applicata esse, & censi debere, ad juris & sacrarum constitutionum formam reduxerit.

§. 2. Necnon præfata bona Regularium extra clau-

Clausulæ de-
rogatoria.

Dat. P. An. 5.
die 13. Jan.

Admissio &
registratio in
Cam. Apost.

XLIII.

Edita An. D.
1577.

Exordium.

Pius IV. in
const. 3. fol.
3. ad termin-
os juris & sacra-
rum const. redu-
xit bullam
14. Paul. IV.
quæ est supra
in qua appli-
caverat bona
Regularium
degentium
extra clau-
stra Monas-
terii in quib-
us illi primo
professi fue-
rant.

Sed ex conf.
19. Pauli III.
que est imp.
ita spolia
spectabant
ad Cam.
At multi con-
trarium di-
cebant.

claustra ut præferretur degentium, five Mendicantium five non Mendicantium, ut Militiarum professorum, etiam si loca, & canonicales portiones, aut dignitates, in cathedralibus vel collegiatis Ecclesiis cuiusvis Ordinis regularibus obtinuerint, ac Episcopali, Archiepiscopali, Patriarchali, Primatiali, vel quavis alia præfulserint dignitate, post eorum obitum ad eandem Cameram Apostolicam, & juxta constitutionem fel. rec. Pauli Papæ III. super spoliis sub Data videlicet, tertio nonas Januarii, Pontificatus sui anno tertio promulgatam, legitime spectent & pertineant, idque per Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac Nos dum Collector generalis ad recuperandum spolia Regularium specificè deputatus fuit, apertè demonstratum extiterit, ac in possessione illa exigendi, & recuperandi eadem Camera merito semper fuerit, nihilominus nonnulli vano sub dictæ constitutionis Pauli IV. prædecessoris præfati prætextu contrarium aliquando asserere non dubitarint.

§. 3. Nos omnem circa prædicta dubitandi occasionem dimovere, simulque æquitate & iustitia suadentibus ejusdem Cameræ indemnitati, ne in dies molestis & incommodis afficiatur, consilere volentes, Præsentium auctoritate, declaramus, res & bona quæcumque per dictos Regulares extra claustra Ecclesiarum, Monasteriorum, domorum, & quorumcumque regularium locorum degentes, quocumque jure & actione, five ex causa testati five intestati acquisita, & in posterum acquirenda, vel ad eos delata in quibusvis provinciis, dominiis, regnis, & locis consistant, nisi iidem ad quos illa spectaverint, sufficienti fuerint testandi, aut de illis disponendi facultate suffulti, & eaque legitime usi fuerint, ad eandem Cameram pleno jure pertinuisse & spectare, ac bona quæcumque eorumdem sub spoliis nomine comprehensa per ipsam Cameram, ejusque nomine à quibuscumque illa quandoque occupantibus & detinentibus recuperari ac vindicari potuisse & posse, ac juxta Pauli Tertii & aliorum Prædecessorum nostrorum Litteras eadem Camera Apostolica in hujusmodi bonis spolia nuncupatis verè universaliter succedente, quod ipsa Camera præ ceteris hereditibus & successoribus ampliori est privilegio munita, cuique merito magis favendum est, dum in eam rerum & bonorum dominium, ac possessio nulla traditione precedente transeat, in quacumque bonorum & spoliis, five ad Regulares dum viverent spectantium successione, quibuscumque in rebus five pecuniis illa consistant, etiam si nominatim, aut alia speciali nota illa designanda essent, quæ ad eandem Cameram jure spoliis pertinuerunt & pertinebunt in posterum, omni prorsus fitione penitus cessante, jus & nomen veri hæredis in eisdem spoliis habere, illiusque naturam sortiri, ac veri hæredis privilegiis & juribus in quibuscumque bonis, pecuniis, juribus & actionibus, uti antehac potuisse & nunc posse, idque eorumdem Prædecessorum ac nostræ etiam intentionis semper fuisse & esse auctoritate Præsentium declaramus.

§. 4. Sicque per quoscumque Judices in quibusvis causis, etiam per appellationem aut aliàs pendentes & futuras, ac in quacumque causa vel instantia, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate, judicari & definiri debere, necnon quicquid fecus super his à quocumque auctoritate scienter vel ignoranter attentatum forsitan est hæcenus, vel in posterum contigerit attentari, irritum & inane decernimus.

§. 5. Mandantes dilecto filio Magistro Ludovico Tabernæ Notario & Thesaurario, necnon spoliis ad dictam Cameram pertinentium in universa Italia Collectori generali nostro, ejusque in dictis officiis successoribus, quatenus præsentem nostram declarationem, & in ea contenta quæcumque inviolabiliter observari curet & faciat, non permittendo eandem Cameram contra illius seriem, quacumque ratione vel causa, aut quovis quæsto colore vel ingenio, directè vel indirectè, molestari aut perturbari, contradictores quoslibet & rebelles, per opportuna

juris & facti remedia, ac demum per sententias, censuras, & pœnas Ecclesiasticas, appellatione postposita compellendo, necnon legitimis super his habendis servatis processibus, sententias, censuras, & pœnas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando; invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 6. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon Ecclesiis, & Ordinibus, vel Militiarum, cujus illæ fuerint, Monasteriorumque vel regularium locorum, etiam jumento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indulgitiis, & litteris Apostolicis eandem Ecclesiarum Præfulibus, Capitulis, ac Monasteriorum, regulariumque locorum Conventibus, illorumque Ordinibus, Superioribus, & personis, necnon Civitatibus, Provinciis, Dominiis, & Regnis, in quibus bona vel pecuniæ collocatæ, aut illarum redditus percipiendi forsitan fuerint, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibusvis clausulis & decretis, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, & ad favorem Religionis concessis, confirmatis, & innovatis, quibus omnibus, etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, & expressa, non autem per clausulas generales idem importantes mentio aut quævis alia expressio habenda esset, illorum tenores Præsentibus pro sufficienter expressis & insertis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat, specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim ab Apostolica fide Sede indultum, quod interdici, suspendi, vel excommunicari non possint, per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem, & quibuslibet aliis privilegiis & indulgentiis, generalibus vel specialibus quorumcumque tenoribus existent, per quæ Præsentibus non expressa, vel totaliter non inserta, effectus Præsentium impediri valeat quomodolibet vel differri, & de quibus quorumque totis tenoribus habenda sit in nostris litteris mentio specialis, quæ quoad hoc volumus eis nullatenus suffragari.

§. 7. Ceterum præcipimus Præsentium exemplis etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, & dicti Thesaurarii, seu alterius persone in dignitate Ecclesiastica constitutæ sigillo munitis, eandem prorsus fidem adhibendam in iudicio & extra, quæ Præsentibus adhiberetur si exhiberentur vel ostenderentur.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris die 21. Januarii 1577.

Confirmatio gratiarum & privilegiorum Archihospitali S. Spiritus in Saxia de Urbe concessorum, quatenus Concilio Tridentino, & sacris canonibus non sint contraria. Illorumque communicatio inter omnia loca Ordinis.

Privilegia vide sup. in confit. 22. Six. IV. Religiosis fol. 426. Tom. 1. ubi notavi. Et cetera quæ Hospitali respiciunt indicavi sup. in conf. 7. Innoc. III. Inter. fol. 58. in d. Tomo 1.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Si inter præcipuas virtutes, quas Theologicas dicimus, charitas principem locum obtinet, iactis fidei & spei fundamentis, ut cujus virtutis effectus, qui insignes Nobis ante oculos obversantur, ac præsertim in Archihospitali nostro S. Spiritus in Saxia de Urbe elucet, dum in cuiusvis generis languentes, vulneratos, infirmosque curando, infantibus expofitis alendis, puellis nubilibus in matrimonium collocandis, summo Christianæ pietatis studio officia exercentur, illa non solum eo in Archihospitali conservari, verum etiam in dies augeri, summa operaturandum Nobis est, eamque ob causam facile induci patimur, ut que à Prædecessoribus nostris Romanis Pontificibus, & ad ejus Archihospitalis, & ab

Clausule
derogatoriz.

Fides tran-
sumptorum.

Dat. P. An. 5.
die 21. Jan.

X LIV.

Edita An. D.
1577.

Exordium.

In hoc III.
erexit in Ur-
be Hospitale
Sancti Spi-
ritus, & Six-
ti. illud am-
plavit, ut
sup. in conf.
cit. in rubr.

Confirmat
hic Pont. in-
dulgentias,
& privilegia
dicti Hospita-
lis cum clau-
sula quate-
nus sint in
usu, & sacris
Canonibus
& Conc.
Trid. non
contrariis.

illo dependentium locorum decus & ornamentum, & pauperum subventionem concessa sunt, Apostolica firmitatis robor, adjicimus, aliasque desuper disponamus, prout in Domino cōspicimus expedire.

§. 1. Dudum siquidem Innocentius Papa Tertius, qui dictum Archihospitale fundavit & instituit, ac deinde successivē plerique Romani Pontifices prædecessores nostri, inter quos Sixtus Papa Quartus idem Archihospitale maximē auxit, cupientes illud, ac ejus bona & jura perpetuō conservari, defendi, & protegi, idem Archihospitale, illiusque Præceptorium, quæ conventualis, aut caput aliarum Præceptoriarum Hospitalis & Ordinis prædictorum existit, & à qua omnes aliæ Præceptorie per fratres ejusdem Archihospitalis teneri solitæ dependent, ac personas, quæ ejus curam gerent ab eodem Archihospitali dependentes prædictas Præceptorias, Prioratas, Oratoria, Ecclesias, Capellas, membra, grangias, ac in eis respectivē institutas & erectas Confraternitates, illarumque Confratres variis indulgentiis etiam plenariis, ac facultatibus, privilegiis, immunitatibus, exemptionibus, libertatibus, & gratiis, tam spiritibus quam temporalibus, etiam per solam signaturam, aut vivæ vocis oraculo, in genere & in specie, tam per viam communicationis, sive extensionis privilegiorum, tam Mendicantium quam non Mendicantium Ordinibus concessorum, ornatum & decoratum, ac locupletatum, illaque antea concessa confirmarunt & approbarunt, ad omnia loca prædicta ab ipso Archihospitali dependentia extenderunt & ampliarunt, & aliis prout in singulis dictorum Prædecessorum litteris desuper concessis plenius continetur.

§. 2. Cum autem ea firmius subsistere, ac majorem vim & robur obtinere noscantur, quo sæpius fuerint Apostolica auctoritate communita. Propterea dilectus filius Theus Aldrovandus modernus ejus Archihospitalis Præceptor nobis humiliter supplicari fecit, ut in præmissis ejusdem Thesei Præceptoris honesto desiderio satisfacere, aliisque in præmissis opportune providere de benignitate Apostolica dignaremur. Nos igitur gravium onerum quæ dicto Archihospitali incumbunt, dum facultas redditusque omnes in pauperum, miserabiliumque subventionem erogantur, rationem haberi esse censeri, & propterea nedum privilegia & facultates, & alia eidem Archihospitali, & ab eo dependentibus locis, illorumque personis, ac quibuscumque intuitu dicti Archihospitalis concessa conservanda, verum etiam quantum cum Deo nobis licet augenda esse existimantes, ac quorumcumque indulgentiarum, privilegiorum, facultatum, exemptionum, immunitatum, indultorum, & cuiusvis generis gratiarum cum quibuscumque clausulis & decretis, tam per dictos quam quoscumque Romanos Pontifices quibuscumque prædictis, ac aliis forsitan rationibus concessarum tenores, & prout illa concernunt omnia & singula in eis contenta Præsentibus pro expressis, ac de verbo ad verbum insertis habentes, omnia & singula privilegia, facultates, gratias, exemptiones, immunitates, libertates, indulgentias, peccatorum remissiones, concessiones, & indulta supradicta, & alia quæcumque, sive dicto Archihospitali, sive ejus Præceptorii, ac ab eodem Archihospitali dependentibus Prioratibus, Præceptoriiis, Oratoriis, Capellanis, membris, grangiis, & locis, necnon illorum respectivē Ministris & Officialibus, ac tam in dicto Archihospitali, quam alibi institutis Confraternitatibus, & Confratribus, quandocumque & qualitercumque concessa, indulta, & approbata, quatenus sint in usu, ac sacris Canonibus, & Concilio Tridentino non contraria, ex certa nostra scientia denuo Apostolica auctoritate tenore Præsentium approbamus & confirmamus ac innovamus, illisque perpetuæ & inviolabilis firmitatis robor adjicimus, ac præsentis scripti patrocinio communimus, omnemque & singulos, tam juris quam facti defectus, si qui forsitan intervenerint in eisdem, supplemus, eademque omnia & singula, quæ per dictos Prædecesso-

res concessa fuerunt, prout per illos concessa, indulta, & elargita extiterunt, quatenus, ut præferunt sint in usu, adversus quæcumque contrarias dispositiones restituiamus, reponimus, & plenariē reintegramus.

§. 3. Illaque omnia & singula dicto Archihospitali, aut in eo institutæ Confraternitati, aut quibuscumque certis & designatis locis dumtaxat forsitan concessa, universis & singulis, quæ ab eodem Archihospitali dependent Prioratibus, Præceptoriiis, Ecclesiis, Capellanis, Hospitalibus, Oratoriis, Eremitoriis, grangiis, membris, & locis, ac Confraternitatibus, illarumque Confratribus, & quæ illis vim privilegiorum prædictorum jam fuerint, & in posterum uniri contigerit, illorumque Ministris ac servientibus communicamus, concedimus, & impartimur, eademque omnia ad illa extendimus & ampliamus.

§. 4. Decernentes præsentis litteras sub quibuscumque similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, suspensionibus, aut derogationibus similibus gratiarum, indulgentiarum, concessionum, & aliorum quorumcumque nullatenus comprehendere, sed semper ab illis exceptas esse, censeri debere, ac de subreptionis vel obreptionis vicio, seu intentionis defectu, notari aut impugnari non posse, sed validas semper & efficaces existere, ac perpetuō suffragari.

§. 5. Sicque & non aliter in præmissis omnibus & singulis per quoscumque Judices ordinarios & delegatos, quavis auctoritate fungentes, sub lata eis & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, ubique iudicari & definiri debere, irritumque & inane si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari, decernimus.

§. 6. Quocirca venerabilibus Fratribus nostris sacri Concilii S. R. E. Cardinalium Decano, ac Cancellariæ Apostolicæ Regenti, & causerum Curie Cameræ Apostolicæ Auditori generali nunc & pro tempore existentibus, per Apostolica scripta committimus & mandamus, quatenus ipsi vel duo aut unus eorum, per se vel alium seu alios præsentis Litteras, & in eis contenta quæcumque, ubi, & quando opus fuerit, & quoties pro parte Thesei, & pro tempore dicti Archihospitalis Præceptoris, aut aliorum in præmissis jus & interesse quomodolibet habendum, vel dependentium fuerint requisiti, solemniter publicantes, illique in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra Thesum, & pro tempore Præceptorem prædictum, & alios quoscumque confirmatione, approbatione, aliisque præmissis juxta Præsentium continentiam & tenorem pacifice frui & gaudere, non permittentes illos desuper per quoscumque quomodolibet indebitè molestari, perturbari, & inquietari. Contradictores quoslibet & rebelles, ac præmissis non parentes, per sententias, censuras & penas, aliaque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita compellendo; necnon legitimis super his habendis servatis processibus, illos sententias, censuras & penas incurrisse declarando, necnon etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 7. Non obstantibus fel. record. Bonifacii Papæ Octavi de una, & Concilii generalis de duabus diebus, dummodo quis vigore Præsentium ultra tres diebus ad iudicium non trahatur, ac pie memoria Pii Papæ V. etiam Prædecessorum nostrorum revocatione dictarum indulgentiarum cum clausula manus adiutrices porrigentibus, quas decepta ea clausula, nec aliis suffragari volumus, in provincialibusque & synodalibus Conciliis editis, generalibus vel specialibus constitutionibus & ordinationibus, necnon aliorum Hospitalium, Monasteriorum, Ecclesiarum, etiam Cathedralium, vel Metropolitanarum, tam Mendicantium quam non Mendicantium Ordinum, Confraternitatum, piorumque locorum quorumcumque, statutis & consuetudinibus, etiam iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, stabilimentis, usibus, & naturis;

Locisque omnibus dicti Ordinis cōmunicat.

Clausula præservativa

Decretum irritans.

Executoriū deputato facultatis.

Clausula derogatoria.

privi-

privilegiis quoque, indaltis, & litteris Apostolicis eisdem vel alicui eorum, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis etiam Motu proprio, ac ex simili scientia, & de Apostolica potestatis plenitudine, etiam forsitan consistorialiter concessis, confirmatis & innovatis; quibus omnibus, etiam si de illis eorumque rotis tenoribus specialis, specifica, individua, & expressa, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret eorum tenores Præsentibus pro expressis habentes, illis alijs in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque; aut si aliquibus communiter vel divisim ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§.8. Ceterum quia difficile foret Præsentibus ad quæcumque loca, ad quæ necesse fuerit deferri, volumus Præsentium transumptis, etiam in premissis, manu Notarii seu Secretarii prædicti Archiepiscopalis subscriptis, ac sigillo dicti & pro tempore Archiepiscopalis prædicti Præceptoris munitis, eandem fidem in iudicio & extra adhiberi, quæ Præsentibus exhibitis vel ostensis ubique gentium & locorum haberetur.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Precatoris, die 15. Martii, millesimo quingentesimo septuagesimo septimo, Pont. nostri Anno 5.

XLV. Jurisdicção S. R. E. Cardinalis Archiepysbyteri & Iudicis, causarum Capituli Canonorum & aliarum personarum, sacrosanctæ Lateranensis Ecclesiæ, *Declarata & extensa suis hac jurisdictione a Paulo V. in ejus consilio. 49. Ad ea.*

Hanc Basilicam Greg. XI. & Pius V. & alii, ceteris Urbis & Orbis Ecclesiis majorem esse declararunt, ut notavi ipsius Greg. XI. consilio. 1. Super. fol. 162. in Tomo 1. & consil. 94. Pii V. Infirma in hoc Tomo 2.

GREGORIUS PAPA XIII.
Ad perpetuam rei memoriam.

Cum sicut accepimus, sæpe contingat dilectos filios Capitulum, Canonicos, Beneficiarios, Clericos, Capellanos, Cantores, Sacristas, Ministros, & alias personas Ecclesiæ Lateranensis pro suis ratione Archiepysbyteratus, & dictæ Ecclesiæ negotiis, rebus, & bonis per diversa Tribunalia distrahi, & exinde variis sumptibus & expensis, & molestiis defatigari.

§. 1. Nos cupientes eorum indemnitatibus hac in parte opportunè providere, ac illorum intuitu personas ipsas & similibus, sumptibus, expensis, & molestiis eximere, ac favore prosequi gratiæ specialis, ad quibuscumque excommunicationibus, suspensionibus, & interdictis, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & poenis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, siquibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum Præsentium dumtaxat consequendum harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, omnes & singulas causas civiles, & beneficiales, spirituales, profanas, meras & mixtas, ac etiam criminales inter ipsosmet Capitulum, Canonicos, Beneficiarios, Clericos, Capellanos, Cantores, Sacristas, Ministros, & personas huiusmodi, earundemque litem consortes, seu quomodolibet ab eis causam habentes in Romana Curia coram quibuscumque iudicibus ordinariis vel delegatis, seu executoribus quavis auctoritate fungentes, etiam Alms Urbis Vicario, Gubernatore, Senatore, & Conservatoribus, ac aliis Iudicibus, necnon Cameræ Apostolicæ Clericis, causarum Curie ejusdem Cameræ, seu

Palatii Apostolici Auditoribus, vel eorum Locatentibus ac Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalibus, super quibuscumque bonis etiam emphyteoticis, censibus, canonibus, responsionibus, fructibus, redditibus, proventibus, juribus, actionibus, creditis, debitis, pecuniarum summis, & aliis rebus Capitulum & Ecclesiam huiusmodi tangentibus, etiam in vim Cameralium, & aliarum quarumcumque obligationum, etiam cum juramento, & quibuscumque renuntiationibus factarum, in prima vel secunda, aut alia ulteriori instantia indecises pendentes, in eisdem statu & terminis in quibus reperiuntur, ab ipsis Iudicibus ad suos harum serie advocamus.

§. 2. Illasque etiam, quatenus de novo inchoandas, & quascumque alias similes vel dissimiles causas civiles, & beneficiales, seu spirituales & profanas, meras & mixtas, ac etiam criminales, citra tamen poenam sanguinis, & corporis afflictivam, quas de cetero perpetuis futuris temporibus, inter Capitulum, Canonicos, & singulos alios prædictos, ac eorum quemlibet litem consortes, & causam habentes prædictos super bonis, censibus, responsionibus, fructibus, redditibus, proventibus, juribus, actionibus, creditis, debitis, pecuniarum summis, obligationibus etiam Cameralibus, ceterisque rebus prædictis, etiam in actis causarum huiusmodi latus deductis & deducendis, cujuscumque qualiratis, quantiratis, & annui valoris, & illorum occasione moveri & exoriri contigerit, cum omnibus & singulis suis incidentibus, dependentibus, emergentibus, annexis, & connexis, Dilecto filio Marco tituli S. Georgii in Velabro presbytero Cardinali Altaemps nuncupato, & aliis pro tempore existentibus Archiepysbyteris dictæ Ecclesiæ, tam conjunctim quam divisim, per se seu Vicarium seu Vicarios ad id ab eis deputatos seu deputandos summariè, simpliciter, & de plano, sine strepitu & figura iudicii, sed sola facti veritate inspecta, & quatenus opus sit executivè, & manu regia absque terminorum substantialium, & alicujus telæ iudiciariæ observatione, sine confessione regeßtri, seu extractus, etiam singulis diebus & horis, ac etiam quarumcumque feriarum, præterquam in honorem Dei indicatarum vel indicendarum temporibus audiendas, cognoscendas, decidendas, & sine debito terminandas committimus & mandamus.

§. 3. Sibi que dictas partes respectivè sua, communitè vel divisim interesse putantes, etià in executione citationis, seu citationu desuper decernendarum nominandos, in dicta Curia vel extra, docto tamen etià extrajudicialiter de non tuto accessu, citandi, ac quibus & quoties oportuerit, sub censuris Eccl. & pecuniariis poenis suo arbitrio moderandis & ampliandis etiam per simile edictum inhibendi, & in eventum non partitionis poenas & censuras prædictas incurrisse declarandi, aggravandi, reagravandi, ac brachii secularis auxilium invocandi, vel loco sententiæ, seu sententiaru per eum ferendarum, mandatū seu mandata executiva, in forma solita & consueta decernendi, illudque & illa, ac quicquid per eum iudicatum fuerit exequendi, expensas quaslibet taxandi & moderandi.

§. 4. Necnon Capitulum, Canonicos, & alias dictæ Ecclesiæ personas ab excommunicationis, aliisque sententiis, censuris, & poenis, simpliciter vel ad cautelam, prout iustum fuerit absolvendi.

§. 5. Necnon adversus lapsum temporis, & fatalium si necesse fuerit restituendi, & quatenus lapsa non sint, eorum arbitrio prorogandi.

§. 6. Attentataque & innovata quacumque, prout juris fuerint revocandi, omniaque alia & singula in premissis necessaria, seu quomodolibet opportuna faciendi, dicendi, exercendi & exequendi.

§. 7. Necnon Iudici seu Iudicibus coram quibus causas huiusmodi per viā appellationum à sententiis dictæ Ecclesiæ latis interpositarū introduci contigerit dictis feriis indicendis, ac modo & forma permissis ad illarum totalem & celèrem expeditionem procedere possint, plenam, liberam, & omnimodam facultatem & potestatem & auctoritatē concedimus & elargimur.

Deputatio Archiepysbyteri ejusdem Ecclesiæ, ad audiendas omnes causas ipsius Ecclesiæ & Capituli summariè &c.

Facultas ejusdem in Curia & extra citandi & inhibendi & inobedientes coercendi.

Canonicosq; & alios ab excommunicatione absolviendi.

Fataliaque prorogandi & adversus lapsum restituendi.

Attentata revocandi &c.

In causis appellationum non obstantibus feriis procedendi.

1577.

Causa ab Archipresbytero advocari non possint nisi à Pontifice illo citato.

Decretum irritans.

Clausula derogatoria.

Dat. P. An. die 13. Junii.

XLVI.

Edita An. D. 1577.

Prooemium.

Matthæus de la Fuente certam religionem vitam degit, & multum se quaerit.

Qui habita notitia const.

§. 8. Decernentes causas hujusmodi à dicto Cardinali & pro tempore Archipresbytero existente, vel ejus Vicario prædicto nullo unquam tempore advocari posse, & quascunque illarum avocationes, nullius roboris vel momenti fore, nisi illa per speciale rescriptum, nostra vel pro tempore existentis Rom. Pontificis manu signatum, etiam cum Præsentium litterarum de verbo ad verbum facienda insertione, Motu simili vocatis & citatis Marco Cardinali, & pro tempore existente Archipresbytero & Capitulo prædictis facta fuerint.

§. 9. Irritum quoque & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 10. Non obstant. feriis, & aliis præmissis, ac Regula Cancellariæ Apostolicæ prohibente mandata executiva aliis quam sub plumbio expediri, necnon aliis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, Stylo Palatii, & aliarum dictæ Urbis Curiarum & Tribunalium, ac Universitatum, Collegiorum, & locorum, statutis, & consuetudinibus, juramento roboratis, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, illis, illorumque Judicibus & personis, sub quibuscunque tenoribus & formis, ac cum quibuscunque derogationum derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decretis, in genere vel in specie, etiam motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, vel alias quomodolibet concessis, approbatis & innovatis. Quibus omnibus etiam de illis specialis, specifica, expressa, & individua, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quavis alia expressio habenda foret, illorum tenores Præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscunque.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub Annulo Piscatoris, die 13. Junii, millesimo quingentesimo septuagesimo septimo, Pontificatus nostri anno sexto.

Ereccio Eremitorii del Tardon, in Monasterium Ordinis S. Basilii, ejusque & aliorum Monasteriorum dicti Ordinis in Regnis Hispaniarum aggregatio eidem Ordini, cum privilegiorum concessione.

In hoc postea Monasterio præfinita est institutio Monachorum Reformatorum, ut habetur infra in Clem. VIII. consil. 103. Altissimi. fol. 169. in Tomo 3. ubi videas alia judicanda.

GREGORIUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Cogit muneris Apostolici ratio de omnium Religiosorum statu nos esse sollicitos, atque eorum curam suscipere diligentem, qui reiectis mundi delitiis & illecebris, antiquorum sanctorum Patrum exemplo in solitudines concesserunt, jejunii, orationibus, & celestium contemplationi assidue insistentes, ut cum talium numerum alicubi autum intelligimus, ipsorum vitam, & mores sub certa aliquando approbata regulæ norma ad Dei gloriam, & eorumdem salutem providè dirigamus.

§. 1. Ad nostram siquidem pervenit notitiam, quod cum viginti abhinc, vel circiter annis quondam Matthæus de la Fuente de Halmiruere Toletan. Diocesis dum soli Deo placere studeret, una cum duobus, vel tribus sociis in Eremum del Tardon Corduben. Diocesis se recepisset, & in ea proprio labore victum parans pauperem vitam duceret, non nulli alii ejus exemplo, & religioso vitæ fama commoti, & cunctis posthabitis eandem vivendi rationem amplexi sunt, & se illis socios adjunxerunt, ipsum præterea Matthæum per loci Ordinarium ad sacros, & Presbyteratus ordines fuisse promotum.

§. 2. Et licet Eremiti cultores inter se distinctas cel-

lulas inhabitarent, eos tamen consuevisse ad eundem Matthæum tanquam eorum Patrem, & superiorem, à quo in via Domini instruerentur recurrere, statutisque horis in quadam Orationario ad præstandum simul convenire, ac sub dicti Matthæi voluntaria obedientia degere, huncque vivendi morem eo usque fuisse servatum, donec ad eorum notitiam felices recordationis Pii Papæ V. Prædecessoris nostri deducta fuit, qua sancitum est, ab iis, qui in Congregationibus sub obedientia voluntatis viverent, quorum habitus à Presbyteris secularibus esset distinctus, prout ipsorum erat, professionem omnino esse emittendam, electa ab ipsis una sub qua degerent, ex Regulis approbatis.

§. 3. Nam postquam idem Matthæus, & socii constitutionis hujus certiores facti fuerunt, Regulam S. Basilii eorum vivendi instituto, ut censuerint magis accommodatam, ad cujus præscriptum Altissimo pium exhiberent in habitu humilitatis obsequium, delegerunt. Et deinde Matthæus professionem juxta dictam Regulam emittere volens, Presbyterum ex suis sociis Eremitis, in cujus manibus profiteretur, suo arbitrio elegit, & in manibus tria vota juxta regulam prædictam quantum in se fuit, professus est. Reliqui verò omnes Eremitæ in dicti Matthæi manibus similem professionem emiserunt, & derelicto cellularum usu in domos apud Eremum del Tardon, ut præfatur & Vallis del Galleguillos Ispalen. dioc. propriis eorum manibus ad Monasterii formam constructas, clausuraque munitas numero quadraginta, & ultra demigrarunt, ubi Religiosorum, & Monachorum more viverent, prout de præfati vivunt, horasque canonicas in Choro, & Missas conventualiter quemadmodum in aliis Monasteriis fieri consuevit, juxta Romanum usum celebrarent, necessariaque ad vitam propriis manuum laboribus juxta eorum institutum parando, nec elemosynas peterunt, nec oblatas acceperunt.

§. 4. Religiosisque in prædictis locis, sic ut præfatur redactis, idem Matthæus in utriusque domibus quasi illa in Monasteria jam erecta essent, nonnullorum qui periti habebant consilium sequutus, Abbatis munere donec vixit sine canonica provisione functus fuit, & post ejus obitum credentes Religiosi prædicti Monasteria veri, & legitimi Abbatis regimine esse destituta alium Religiosum ex eorum numero, videlicet dilectum filium Didacum Vidal in ejusdem Matthæi locum elegerunt.

§. 5. Cum autem iidem Eremitæ prædictam professionem in manibus ejus, qui illam recipiendi facultatem non habebat emisissent, eademque professio nulla & invalida reddatur, ac del Tardon, & Vallis del Galleguillos Domus, & Eremitoria hujusmodi in Monasteria Ordinis Sancti Basilii adhuc canonice erecta non fuisse, nec esse constet.

§. 6. Nos dictorum Eremitarum statui opportune consulendum esse existimantes, ipsosque, & eorum singulos à quibuscunque excommunicationis, suspensionis & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis, à jure vel ab homine quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum Præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, Ad omnipotentis Dei gloriam, & Religionis Christianæ propagationem prædicta del Tardon, & Vallis del Galleguillos Eremitoria, seu Domos in Monasteria dicti Ordinis Sancti Basilii, cum suis Ecclesiis, & Conventibus, necnon Mensis, Sigillis, Arcis, aliisque omnibus insignibus ad id requisitis, & consuetis, ac in singulis dignitate Abbatiali, administrationis, & officii, in aliis Monasteriis ipsius Ordinis haberi solita pro Abbatis, & Monachis ipsum numerum Conventus, monasticum cultum, & regularem disciplinam ibidem observaturi, perpetuò erigimus, & instituiamus. Ac illis sic erectis, eorumque Mensis, bona, census, actiones, & jura omnia suarum consuequendum, ac Eremitiorum in justum numerum Eremitarum perpetuò applicamus, & appropriamus.

1577.

Pii V. 76. quæ est sup. regulam S. Basilii professi sunt.

Et domos in ipso Eremo habitare cœperunt. Monachorum more vivendo, & divina conventualiter recitando, necessariaque ad vitam propriis laboribus parando.

Ipsæque Abbatis munere tantum fuit. Eoque mortuo Didacum Vidal Abbas creatus fuit.

Quia tamen eorum professio nulliter emissæ erat, & dicta Eremitoria canonice non erant erecta in Monasteria Ordinis. Ideo hi. P. in Monasteriis erigitur illi dignitatem Abbatiali & alia officia instituit.

Illique dat
facultatem
in eorū B. Cl.
B. h. r. i. t. i. a. n.
reuerendi &
celebrantii,
iuxta Missale
& B. e. v. i. a.
rium nuper
restituta.

Monasteria
que prædicta
& alia in Re-
gnis Hispaniarum
construenda sub-
iuncti Ordini
S. Basilii, &
sub protec-
tione Sedis
Apost. recipi-
ant, & ab Or-
dinis r. i. t. i. o. n.
iustitiam libe-
rat.

Eadem Mona-
stia constitu-
antur inter se
in eorū provin-
ciam na. co-
pandam His-
paniarum, in
qua provin-
ciale Capitulum
fuit quodlibet trien-
nium.

Habitu nigro
Monachi utan-
tur.

Forma autem
habitus de-
claratur inf.

Privilegia
quoque Or-
dinis S. B. si-
lii, & Con-
greg. Cassi-
nen. conce-
dit.

Monachi cele-
brent quan-
to citius Ca-
pitulum provin-
ciale.

§. 7. Ac ipsorum Monasteriorum sic erectorum, Abbatibus, Conventibus in suis quique Ecclesiis prædictis sanctissimum Eucharistie Sacramentum cum debitis honore & reverentia habendi & retinendi; Missas, & alia divina Officia latina lingua secundum consuetudinem, seu ritum Romanæ Ecclesiæ, & iuxta Breviarium, & Missale Roman. ex decreto Concilii Tridentini novissime restituta, & iuxta prædicti Pii Papæ edita, donec aliud Sedi Apostolicæ expedire videbitur celebrandi, recitandi, & cantandi licentiam tribuimus.

§. 8. Ipsaque sic erecta Monasteria dei Tardon, & de Galleguillos, ac etiam Monasteriorum S. MARIE de Oviedo ejusdem Ordinis S. Basilii Giennen, Dioc. a fel. recordat. Pio Papa IV. erectum, & institutum & Nobis per nostras litteras in forma Brevis Monachis ejusdem Ordinis in Italia existentibus, sub unius Abbatis, seu Præsidentis generalis in toto Ordine eligendi obedientia subiectum, ac perpetuo conjunctum, & quæcumque alia Monasteria ejusdem Ordinis S. Basilii in Hispaniarum Regnis in posterum construenda, & erigenda, dicto Ordini S. Basilii, sub obedientia futuri, & pro tempore existentis Abbatis, seu Vicarii generalis ejusdem Ordinis aggregamus, annectimus, & incorporamus, eademque sic erecta, & erigenda Monasteria, eorumque Abbates, & Monachos sub immediata nostra, & Sedis Apostolicæ protectione recipimus, illaque & illos ab omni Ordinarii jurisdictione, auctoritate, & potestate eximimus penitus, & libe. amus.

§. 9. Ita tamen, ut tam del Tardon, & Galleguillos, quam de Oviedo, & alia in dictis Regnis sub eadem Regula in futurum construenda, & erigenda Monasteria, ut præfatur postquam constructa & erecta fuerint, unam faciant, & inter se constituant Provinciam Hispaniarum nuncupandam, in qua Provinciale Capitulum unoquoque triennio per Abbates, & Monachos, à Conventibus singulorum Monasteriorum suorum deputandos celebretur, & in eo unus Visitator eligatur, qui cum prius electus fuerit, eo ipso Apostolica auctoritate confirmatus censetur, nulla alia requisita confirmatione, nisi eidem Capitulo Abbati, vel Vicario ejusdem Ordinis generali conrigerit præfide, vel esse præsentem, cujus auctoritate eo casu omnino debeat confirmari, dictæque Provincie Monachi secundum Regulam ejusdem S. Basilii quam profiteretur de cetero vivere.

§. 10. Atque ut Monachi prædicti dei Tardon, & Galleguillos in habitu cum reliquis dicti Ordinis Monachis etiam in Italia existentibus convenient, loco habitus Grisei, seu Brunei coloris cujusmodi in præfentiarum gerunt, monasticum habitum nigrum, prout etiam alias Monachis dicti Monasterii de Oviedo per dictas nostras litteras concessimus deferre, & ita in posterum reliqui omnes ejusdem Ordinis, & Provincie Monachi futuri, eodem habitu regulari uti debeant.

§. 11. Præterea eisdem, ac Provincie Hispaniarum Monasteriis quibuscumque, ac aliis membris, & locis ab ea dependentibus, illorumque Abbatibus, Prælatibus, Monachis & personis, omnia privilegia, indulta, immunitates, prærogativas, exemptiones, libertates, gratias, & indulgentias Ordinis S. Basilii prædicti, necnon Congregationi Montis Cassinensis alias Sanctæ Justine de Palua Ordinis S. Benedicti, tam per Nos, quam per alios Roman. Pontifices prædecessores nostros, Sedemque prædictam alias in genere vel in specie quomodolibet concessa (quatenus usu recepta sint, & Concilio Tridentini decreveris, aliisque sacris canonibus, & ipsius Ordinis S. Basilii institutis non adversentur) concedimus & communicamus.

§. 12. Ac insuper ut eade in Monasteria feliciter in via Domini dirigantur, prædictorum omnium Monasteriorum dictæ Provincie Conventibus, & Monachis præcipimus, ut quamprimum provinciale Capitulum ejusdem Monasteriorum Provincie Hispaniarum celebrent, in quo usque ad numerum viginti, eorum Abbates, & Conventum Discreti, seu Procuratores, & Monachi habitu vel professione in

eisdem Monasteriis, tam de Oviedo, quam del Tardon & Galleguillos antiquiores, donec tot Monasteria dicti Ordinis S. Basilii in eadem Provincia erecta fuerint quot illorum Abbates, & Conventum Discreti, seu Procuratores in eodem Capitulo congregandi eandem numerum viginti constituent, conveniant.

§. 13. Atque in eo ex Monachis ejusdem Provincie unum, quem magis ad id habilem & idoneum duxerint eligendum, in eorum Visitatore ad Triennii tempus, & eo completo successive in provinciali Capitulo tertio quoque anno, ut præmittitur, celebrando eligant.

§. 14. Qui omnem in quibuscumque Monasteriis prædictæ Provincie jurisdictionem habeat, & exerceat, ipsorumque Monasteriorum Monachos, tam in capite, quam in membris visitet, corrigat & reformet, salva semper & reservata dicti Abbatis, seu Vicarii ejusdem Ordinis generalis pro tempore existentis etiam in præmissis obedientia, auctoritate, & superioritate, ac Capitalis provincialibus hujusmodi præsit, & electioni Abbatum, quorum munus etiam triennale erit, per Monachos singulorum Monasteriorum faciendæ assistet, vel ad assilendum electioni hujusmodi alium ex dictæ Provincie Monachis specialiter deputet.

§. 15. Prædictus autem Visitator Provincie Hispaniarum hujusmodi, necnon Monasteria, Abbates, Monachi, & personæ dictæ Provincie Hispaniarum prædicto Abbati, seu Vicario generali universi Ordinis S. Basilii in Italia, pro tempore eligendo, constituendo, vel deputando subiecti existant, & ab eo dependant. Ita ut idem Abbas, seu Vicarius generalis pro tempore existentes, tam in dictum ejusdem Provincie Hispaniarum pro tempore Visitorem, quam in prædicta, & alia omnia ejusdem Provincie erecta & erigenda Monasteria, Abbates, Priores, & alios Prælatos, ac Monachos, & personas pro tempore existentes, plenam & omnimodam jurisdictionem, auctoritatem, & superioritatem habeat, dictumque Visitorem, Monasteria, Abbates, Priores, & Prælatos, ac Monachos, & personas, tam in capite, quam in membris visitare, corrigere, & reformare, simul vel ad partem valeat, ipseque Visitator, Abbates, Priores, & Prælati, ac Monachi, & personæ dicto Abbati, seu Vicario generali pro tempore esistenti tanquam membra capiti subiaceant, ejusque monitis, & mandatis in præmissis, & aliis omnibus, omni prorsus appellatione, reclamacione, & recurso postpositis, parere, & obedire, illumque, cum ad eos, vel dicta Monasteria divertere, seu pro visitatione hujusmodi, aut alias accedere conrigerit, honorifice & benigne recipere, & pertractare teneantur.

§. 16. Idemque Visitator Provincie Hispaniarum in ejusdem Abbatis generalis electione pro tempore faciendæ, ac aliis rebus ad universum Ordinem S. Basilii pertinentibus, pro quibus pertractandis aliarum Provinciarum Visitatores, & Superiores evocabuntur, convenire debeat.

§. 17. Ac in electione Abbatis generalis hujusmodi idem Visitator activam, & passivam vocem habeant.

§. 18. Necnon eidem Visitatori, & aliis in Capitulo provinciali congregatis, tam hac prima vice, quam in posterum singulis Trienniis quæcumque statuta, & ordinationes licite & honeste, sacris Canonibus, ac prædicto Concilio Tridentino, dictique Ordinis regularibus institutis, ac generalibus illius ordinationibus, & constitutionibus non contraria condendi, & postquam condita fuerint illa in toto vel in parte, juxta rerum & temporum qualitates mutandi, reformandi, illaque in toto vel in parte tollendi, & abrogandi, aliæque de novo statnendi, quæ tamen ab Abbate, seu Vicario dicti Ordinis generali, & in ejus defectum à Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinale ejusdem Ordinis Protectore, qui tunc erit, approbari debeant, licentiam, & facultatem concedimus.

Visitoremque ad Triennium eligent ex Monachis provincie Hisp.

Visitatores provincie Hispan. facultate.

Visitator, Abbates, & ceteri dictæ provincie Hispan. si sine Abbati seu Vicario generali Ordinis.

Visitator convenire debet in electione Abbatis generalis, &c.

Er habet vocem activam & passivam.

In Capitulo provinciali fieri possunt ordinationes Conc. Trid. & Ordinis constitutionibus, & sacris Canonibus non contrariæ.

ANNO
1577.

446

GREGORIUS DECIMUS-TERTIUS.

ANNO
1577.

Degentes in
dictis Eremiti-
is, si profes-
sionem
Ordinis S.
Basilii emit-
tere voluerint
recipiantur in Mona-
chos.

Et post an-
num profes-
sionem emit-
tant.

Exemptio à
decimis.

Decretum
irritans.

Executorem
deputato &
facultates.

Clausula de-
rogatoria.

§. 19. Ceterum personis Eremitiorum, seu Domorum, & de Galleguillos sic in Monasteria erectorum, & earum statui quamprimum consulendum esse rati, Dilectis filiis prædictis S. MARIE, & Sancti Benedicti Ispalensis Ordinis ejusdem Sancti Benedicti Monasteriorum Abbatibus, per Apostolica scripta mandamus, ut ipsi, vel alter eorum illos singulos in Monachos, & in Fratres suorum quemque Monasteriorum del Tardon, & Galleguillos admittant, & ab eis professionem regularem dicti Ordinis Sancti Basilii, si illam sponte emitte voluerint, recipiant; facientes eos sincera ibi in Domino charitate tractari.

§. 20. Sed & eos qui in prædictis Domibus, seu Eremitoriis del Tardon, & de Galleguillos sub voluntaria obedientia per annum & ultra jam permanerint, statim ubi Præsentium notitiam habuerint, ad profectum, ut præfertur, omnino teneantur, quod ut faciant præcipimus per Præsentes.

§. 21. Postremo animadvertentes eisdem del Tardon, & de Galleguillos post præsentiam professionem in dicti Matthæi manibus sic ut præfertur emissam pro verè professis habitos fuisse, decernimus, & declaramus illos juxta exemptiones, ac privilegia Ordinis S. Basilii vel alias concessa, ad solutionem decimarum frugum, & animalium ac aliarum rerum, quæ ex suorum manuum labore à die professionis præsentis hujusmodi usque ad hæc tempora collegerunt, ac in posterum usque ad novæ professionis tempora colligent, vel administrabunt, minimè teneri, nec obligatos fuisse, aut esse, nec ad id per locorum Ordinarios aut alios quoscumque ad quos decimarum earundem collectio spectat, cogi five compelli posse.

§. 22. Irritumque & inane quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari. Quin etiam eos universos & singulos à solutione prædicta absolvimus, & liberamus.

§. 23. Quocirca venerabili Fratri nostro Patriarchæ Alexandrino, & dilectis filiis Archiepiscopo Ispalensis ac Abbati Sanctæ Fidei in Ecclesia Granatensis per Apostolica scripta mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum, per se vel alium, seu alios, præsentis litterarum, & in eis contenta quæcumque; ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte prædictorum, & aliorum quorum interest, intererit, aut interesse poterit, aut præsentis Litterarum quomodolibet concernent, fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra eisdem litteras, & quæcumque in illis continentur firmiter observari. Non permittentes eos, vel eorum aliquem desuper à quibuscumque indebitè molestari, contradictores quoslibet & rebelles, ac præmissis non parentes, per juris & facti remedia opportuna, ac demum per sententias, censuras, & penas Ecclesiasticas appellatione postposita compescendo. Ac legitimis super his habendis servatis servandis processibus illos sententias, censuras, & penas hujusmodi incurrisse declarando, illasque etiam iteratis vicibus aggravando; invocato etiam ad hoc si opus fuerit auxilio brachii secularis.

§. 24. Non obstantibus præ memorie Bonifacii Papæ VIII. Prædecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, domodo ultra tres dietas aliquis vigore Præsentium ad iudiciū non trahatur, & quibuscumque aliis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac Ordinis prædicti, illiusque Monasteriorum etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis cum quibuscumque clausulis & decretis, in genere vel in specie, ac cum quibuscumque derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis in contrarium quomodolibet concessis, confirmatis, & innovatis: quibus omnibus, etiam si de illis, eorumque; totis tenoribus habenda esset mentio specialis, perinde ac si de

verbo ad verbum infererentur Præsentibus pro expressis & inferis habentes, illis aliis in suo robore permanentis, hac vice dumtaxat, specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus, communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

§. 25. Volumus autem, Præsentium exemplis manu Notarii publici subscriptis, ac sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eandem prorsus fidem in iudicio & extra haberi, quæ eisdem Præsentibus haberetur exhibitis, vel ostensis. Nulli ergo omnino &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1577. octavo Cal. Junii, Pontificatus nostri anno 6.

Confirmatio gratiarum, exemptionum atque Indulgentiarum Congreg. Fratrum Jesuatorum S. Hieronymi.

De hac Congregatione plenè notabo infra Paul. V. const. 16. Religiosos. fol. 223. Et quoad Indulgentias attende ejusdem Sanctiss. const. 21. Romanus. fol. 229. Tom. 3.

GREGORIUS PAPA XIII.
Dilecti filii salutem, & Apostolicam benedictionem.

Peccatus, qui in castitatis, paupertatis & obedientiæ præceptis, diligenter & exactè custodiendis, in vobis elucet, religionis zelus, qui duce celestis beatitudinis assidua contemplatione, five corporis afflictione, five orationis sanctæ studio, contra humani generis adversarium vos communitis, Nos inducunt, ut his, quæ à Prædecessoribus nostris ad vestræ Congregationis decus, commodum, & ornamentum, ac animarum salutem concessa sunt, Apostolicæ firmitatis robur adjiciamus, aliasque desuper disponamus, prout in Domino conspiciamus expedire.

§. 1. Dudum siquidem fel. rec. Martinus Papa Quintus prædecessor noster vestræ Congregationis, qui tunc esset, & in posterum forent personas, oratoria, domos, atque loca constructa, & construenda ubicumque forent constituta, cum personis, juribus, & pertinentiis, necnon possessionibus, rebus, & bonis fidei Sedis Apostolicæ protectione suscepit.

§. 2. Ac deinde præ memorie Eugenius Papa Quartus, Nicolaus Quintus, Pius Secundus, Sixtus Quartus, Innocentius Octavus, Alexander Sextus, Julius Secundus, Leo Decimus, Adrianus etiam Sextus, Clemens Septimus, Paulus Tertius, & Julius etiam Tertius, ac Paulus Quartus, & Pius Quartus, & forsan alii Romani Pontifices prædecessores nostri, Congregationis ejusdem utriusque sexus personas, variis indulgentiis etiam plenariis, ac peccatorum remissionibus, & facultatibus, privilegiis, immunitatibus, exemptionibus, libertatibus, & gratiis, tam spiritualibus quam temporalibus, etiam per solam signaturam, ac vivæ vocis oraculo, ac aliis per Litteras sub plumbo, & sub annulo Piscatoris concessas in genere, vel in specie, tam principaliter eidem Congregationi, quam per viam communicationis, five extensionis privilegiorum, tam in Mari magno nuncupatis, quam aliis Litteris quibuscumque; tam Mendicantium Ordinibus concessorum contentis ornarunt, & decorarunt, ac locupletarunt, illaque antea concessa confirmarunt, & approbarunt, ac perpetua roboris firmitate consistere voluerunt.

§. 3. Necnon ultimo loco recol. mem. Pius Papa Quintus etiam Prædecessor noster, omnia & singula privilegia, facultates, immunitates, exemptiones, gratias, libertates, indulta, tunc per ipsum, quam quoscumque alios Roman. Pontif. prædecessores nostros, & Sedem Apostolicam, quomodolibet Mendican-

Exemplorum
fides.

Dar. P. An. 6.
die 24. Jun.

XLVII.

Edita An. D.
1577.

Causa hujus
constit.

Martin. V. ap-
probavit hanc
Congrega-
tionem sup. in
eius constit.
11. Pie.
tom. 1.

Alii Pont. a-
lias gratias el-
dederunt, sed
hic habes so-
lum bull. 9.
Alex. VI.
(sup. tom.
& Clem.
VII. const.
36. Sacre.
ibid.

Pius V. Ord-
inum Mend-
icantium pri-
vilegia com-
municavit
sup. in const.
10. Roma-
nus, tom. 2.

tibus

ribus Ordinibus concessa, ad vos, vestramque Congregationem Fratres, domos, ecclesias, & loca quaecumque, quoad ea quae vestrae regulae, & modo vivendi non repugnarent, extendit & ampliavit, vosque verè Mendicantes, & sub Mendicantium Ordinibus esse, & comprehendere debere; necnon omnia & singula Conc. Trid. decreta pro Mendicantibus huiusmodi declarata & modificata, etiam pro vestra Congregatione huiusmodi declaravit & modificatus fuit, & alias prout in singulis praedictorum Praedecess. Litteris desuper confectis plenius continetur.

§. 4. Cum autem ea maiorem vim & robur obtinere noscantur, quae saepius fuerint auctoritate nostra communita, ac pro parte vestra, qui praedicta auctoritate nostra communiri, & approbari mirum in modum desideratis, Nobis fuit humiliter supplicatum, ut in praemissis petitiones ad exactionis nostrae gratiam admittere, vobisque satisfacere de benignitate Apostolica dignaremur. Nos igitur vos specialibus favoribus & gratis prosequi volentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, privilegiorum, facultatum, exemptionum, immunitatum, indultorum, & cuiusvis generis gratiarum per dictos, & quoscumque alios Romanos Pontifices, quibusvis etiam specialibus rationibus concessorum tenores, Praesentibus pro expressis habentes, omnia & singula privilegia, facultates, gratias, exemptiones, immunitates, libertates, indulgentias, ac peccatorum remissiones (citra tamen clausulam porrigendi manus adiurices) & concessiones, etiam per vos sufficienti ad id facultate suffultos, ad vestrae Congregationis aggregatos, infraternatos, nuncupatos, extensas, ac indulta supradicta quomodocumque, & qualitercumque concessa & approbata (quatenus sint in usu ac sacris Canonibus, & Conc. Trid. non contraria) ex certa nostra scientia denuò in perpetuum Apostolica auctoritate tenore praesentium approbamus & confirmamus: illisque perpetuae & inviolabilis firmitatis robur adjicimus, Praesentisque Scripti patrocinio communimus: omnesque & singulos, tam juris quam facti defectus, si qui forsitan intervenierint in eisdem supplemus.

§. 5. Decernentes praesentes Litteras sub quibusvis similibus, vel dissimilibus gratiarum revocationibus, suspensionibus, aut derogationibus, indulgentiarum, concessionum, & aliorum quorumcumque nullatenus comprehendere; sed semper ab illis exceptas esse, &c. Sicque, & non aliter &c.

§. 6. Quocirca Venerabilibus fratribus Patriarchae Venetiarum, Archiepiscopo Mediolanensi ac Episcopo Bononiensi, sive eorum in spiritualibus Vicariis generalibus per Praesentes mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum per se, vel alium, seu alios praesentes Litteras, & in eis contenta quaecumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte vestra, aut aliquis ex vobis, & pro tempore dictae Congregationis Fratribus, nunc, & in futurum fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in praemissis efficacis defensionis praesidio assistentes, faciant auctoritate nostra vos, & pro tempore dictae Congregationis Fratres, & alios quoscumque confirmatione, approbatione, supplementatione, decreto, aliisque praemissis juxta Praesentium continentiam & tenorem pacifice frui & gaudere: Non permitteentes vos & vestrae Congregationis pro tempore Fratres per quoscumque indebitè molestari, perturbari, aut inquietari: Contradiatores quoslibet, ac rebelles, & in his, quae praemissa concernunt, non parentes per opportuna iuris & facti remedia, ac demum per sententias, censuras, & poenas Ecclesiasticas, appellatione postposita, compescendo: Necnon legitimis super his habendis, servatis processibus, sententias, censuras, & poenas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 7. Non obstantibus praemissis, ac similibus mon. Bonifacii Papae Octavi praedecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, dummodo quis vigore Praesentium ultra tres dietas ad iudicium non

trahatur, ac quibusvis aliis Apostolicis, necnon in provincialibus & synodalibus Conciliis editis generalibus vel specialibus constitutionibus, & ordinationibus, necnon dictae Congregationis, & Ordinis S. Hieronymi, ac Regulae S. Augustini, sub qua militatis, necnon aliorum, tam Mendicantium, quam non Mendicantium Ordinum, etiam iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus; privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis eisdem, vel alicui eorum sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibusvis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis etiam Motu proprio, & ex simili scientia, ac de Apostolica potestatis plenitudine concessis, confirmatis, & innovatis. Quibus omnibus, etiam si de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, & expressa, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quaevis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, eorum tenores Praesentibus pro expressis habentes illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter, & expressè derogamus, necnon omnibus illis quae dicti Praedecessores in eorum Litteris voluerunt non obstat, contrariis quibuscumque.

§. 8. Ceterum quia difficile foret praesentes Litteras, &c.

Dat. Romae apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris die prima Februarii, millesimo quingentesimo septuagesimo septimo, Pontificatus nostri anno sexto.

Quod Clerici Regulares Congregationis S. Pauli Decollati, absque licentia eius Praepositi generalis, ad alium quemcumque Ordinem, praeter Carthusianum, transire nequeant.

Huius Congregationis institutionem, & alia eam tangentia notavi sup. apud Clemen. VII. const. 37. Voc. Tom. 1. Quibus adde, quod postmodum Paul. V. huius Congregationi indulsit, quod nova Monasteria de sola Ordinarii licentia fundare valeat, inf. in sua constit. 64. Ecclesia. Et in recipiendis Novitiis formam praescripsit in alia const. 84. In supereminenti.

GREGORIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

IN specula supremæ dignitatis dispositione divina meritis licet insufficientibus constituit, inter multiplices curas quibus rerum negotiorumque varietatibus obruimur, ad ea ex debito Pastoralis officii Nobis commissi sollicitè nos intendere decet, per quae personae religiosae in regularis vitae ac Ecclesiasticae disciplinae norma coadjuvante Domino salubriter conservari valeant, & quae his contraria esse noscuntur, per nostrae providentiae studium penitus evellantur.

§. 1. Exhibita siquidem nobis nuper pro parte dilectorum filiorum Praepositi generalis, & Clericorum Regularium Congregationis S. Pauli Decollati Barnabinarum nuncupatorum petitio continebat; quod licet ipsi ad animas pretiosissimo Domini IESU Christi sanguine redemptas eidem Domino lucrificandas semper dictae Congregationis Religiosis, ab eorum adolescentia bonis moribus, ac litteris imbueri, omni ratione studuerint, & eam re nullis umquam sumptibus, neque laboribus pepercissent, nihilominus nonnulli ex dictis Religiosis ob scientiam per eos Congregationis praedictae auspiciis acquisitam, tumidiore effecti, immemoresque officii sui ac beneficiorum ab ipsa Congregatione acceptorum, cum primum in litteris ita versati, & eruditi reperiuntur, ut & proximorum salutem, & dictae Congregationi adminiculo esse possent, libertatem appetentes, tamquam ingrati filii Congregationem ipsam ad effugiendam obedientiam, &

Transumptis credi jubet.

Dat. P. An. 6. die 1. Feb.

XLVIII.

Edicta An. D. 1577.

Exordium.

Causa huius constituit.

Quae omnia hic Pont. confirmat.

Clausulae praeservativae & decretum irritans.

Executores deputat.

Clausulae derogatorias adiungit.

observantiam, quæ in ea artissimè custodiuntur, sub arctioris vitæ prætextu deferunt, ac quod gravius est, etiam ipsius Congregationis personas, ritus, & mores maledictis insequentes, alios quoque variis multique laxioris vitæ pollicitationibus subvertere non cessant. Quare pro parte Præpositi, & Clericorum prædictorum Nobis fuit humiliter supplicatum, quatenus incommodis hujusmodi occurrere, aliasque in præmissis opportunè providere de benignitate Apostolica dignaremur.

Prohibitio
transcendi ad
alios Ordines,
excepto
Carthusiano,
&c.

§. 2. Nos igitur qui religiosos quoslibet in suis regularibus institutis laudabiliter continere omni studio affectamus, Præpositum & Clericos prædictos, à quibuscumque communicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & pœnis, à jure vel ab homine quavis occasione, vel causa latis, quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum Præsentium duntaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, hujusmodi supplicationibus inclinati, Apostolica auctoritate tenore Præsentium perpetuò statuimus, & ordinamus, ac sub excommunicationis sententia per contrafacientes, eisque consilium, auxilium, vel favorem præstantes ipso facto incurrenda, & à qua præterquam in mortis articulo constituti ab alio quam Romano Pontif. vel ipsius Congregationis Præposito generali pro tempore existente absolvi non possint, districte præcipiendo interdicimus, quod de cetero nullus dictæ Congregationis Religiosus cujuscumque conditionis, sive clericus sive laicus fuerit, ipsam Congregationem post vota per eum secundum illius institutiones emissa, prætextu cujusvis indulti ab eodem Romano Pont. pro tempore existente seu illius Majori Penitentiario, aut aliquo Sedis Apostolicæ Nuncio, vel Legato, etiam de latere, impetrati vel impetrandi, absque speciali & expressa pro tempore existentis Præpositi prædicti licentia desuper obtemperare, exire, aut ab ea recedere, etiam ob frugem melioris vitæ, aut strictioris observantiæ, aut alio quæsito colore, ad quemvis alium, etiam Minorum, vel aliorum Fratrum Mendicantium, aut Cisterciensium vel Sancti Benedicti, aut aliorum Monachorum Ordinum transire, vel etiam per Superiores Ordinum, & Monasteriorum hujusmodi (Carthusiensi Ordine duntaxat excepto) recipi seu admitti possit, seu præsumat.

Formaque
transcendi
præscribitur.

§. 3. Quodque is qui pro tempore ab ipsa Congregatione ad Carthusiensem vel de licentia prædicta ad alium Ordinem hujusmodi transire voluerit, ad Carthusiensem, videlicet infra tres menses, à die quo ab ipsa Congregatione recesserit, ad alium verò Ordinem hujusmodi infra tempus, & à pro tempore existente Præposito prædicto præfigendum, accedere, ac illorum Monasteria, seu domos, & loca actu ingredi. Et si in eis permanere noluerit, aut non possit, absque ulla mora ad dictam Congregationem redire teneatur.

Pœne contra
venientes
infiguntur.

§. 4. Et nihilominus si quis ex Clericis dictæ Congregationis animo indurato contrarium tenere præsumperint, vel à dicta Congregatione post emissionem votorum hujusmodi absque licentia prædicta exire, & in sæculo, vel alio etiam seculari loco degere præsumperint, liceat præfato Generali, seu aliis dictæ Congregationis Præpositis, & Superioribus, eosdem transgressores & exeuntes tanquam apostatas, etiam invocato si opus fuerit auxilio brachii secularis, summarie, simpliciter, & de plano, ac sine strepitu & figura judicii, sola facti veritate inspecta, ad dictam Congregationem revocare, eosque capere, & carcerare ac debitis penitentis subijcere. Decernentes ex nunc irritum & inane si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Executorum
hujus consti.
deputatio, &
facultates.

§. 5. Quocirca Venerabilibus fratribus nostris Patriarchæ Alexandrino, & Archiepiscopo Mediolanensi, ac Archiepiscopo Ecclesiæ Mediolanensis per Apostolica scripta mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum, per se vel alium seu

alios, Præsentibus Litteras & in eis contenta quæcumque, ubi, & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Præpositi, & Clericorum prædictorum fuerint requisiti, solemniter publicantes, in illis præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra, præsentibus Litteras, & in eis contenta hujusmodi ab omnibus ad quos spectat inviolabiliter observari; ac Præpositum, & Clericos præfatos illis omnibus pacifice frui & gaudere. Non permittentes eos desuper per quoscumque quomodolibet indebitè molestari: Contradiatores quoslibet, ac rebelles, & præmissis non parentes, per prædictas, ac alias sententias, censuras & pœnas Ecclesiasticas, ceteraque opportuna juris & facti remedia appellatione postposita compescendo, ac legitimis super his habendis servatis processibus, sententiis, censuras, ac pœnas ipsas etiam iteratis vicibus aggravando. Invocato etiam ad hoc si opus fuerit auxilio brachii secularis.

§. 6. Non obstantibus fel. record. Bonifacii Papæ Octavi prædecessoris nostri, qua caveretur ne quis extra suam Civitatem vel Dioecesim, nisi in certis exceptis casibus, & in illis ultra unam diem à fine suæ Dioecesis ad iudicium evocetur, seu ne Judices qui à dicta Sede deputati fuerint contra quoscumque procedere, vel alii seu alius vices suas committere præsumant; & de duabus dietis in Concilio generali edita, dummodo ultra tres dietas aliquis auctoritate Præsentium ad iudicium non trahatur, aliisque Apostolicis, & in provincialibus, & synodaliibus Conciliis editis constitutionibus, & ordinationibus, necnon quorumcumque Monasteriorum, Hospitalium, Militiarum, & Ordinum juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis ac exemptionibus sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque restitutionibus, præsentationibus, ac mentis attestativis, ac derogatoriis derogatoriis, aliis fortioribus, efficacioribus, & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decretis, etiam intuitu, consideratione & ad supplicationem Imperatoris, Regum, Ducum, aliorumque Principum, necnon S. R. E. Cardinalium & de illorum consilio, ac matura deliberatione prius habita, seu etiam Motu proprio, & ex certa scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine concessis, confirmatis, ac etiam multiplicatis vicibus innovatis, quorumcumque tenoribus existant, contrariis quibuscumque; aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per Litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

§. 7. Ceterum quia difficile foret præsentibus Litteras ad singula quæque loca ubi necesse fuerit, deferre volumus & dicta auctoritate decernimus, quod præsentium Litterarum exemplis seu transcriptis, etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis & sigillo alicujus Prælati Ecclesiastici Romanæ Curie munitis, eadem fides tam in iudicio quam extra illud ubilibet adhibeatur, quæ ipsis originalibus litteris adhiberetur si forent exhibitæ vel ostensæ.

Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo septuagesimo septimo, Idibus Septembris, Pont. nostri Anno sexto.

Prohibitio Sal' exterum mercandi, in locis Sedi Apostolicæ mediata vel immediate subiectis.

Hæc prohibitio prodit à Calixt. III. sub die 1. Maji 1455. sed hæc sante consulo à me fuit illa prætermissa. Extenditur autem à Clemente VIII. inf. in const. 49. Frumentii. fol. 71. Tom. 3.

Contrariis
omnibus de-
ratur.

Exemplis
fides datur.

Dat. P. An. 6.
die 13. Sept.

XLIX.

Edita An. D.
1577. & 1582.

GREGORIUS PAPA XIII.

GREGORIUS PAPA XIII.

Edita An. D.
1582.

Ad perpetuam rei memoriam.

Ad futuram rei memoriam.

Exordium.

EX incumbenti Nobis Apostolicæ fervitutis officio, ad ea libenter intendimus, per quæ Subditorum nostrorum commoditati, & Cameræ Apostolicæ indemnitati opportunè consulatur.

Refertur confit. præcedens.

Causa huius constituit.

§. 1. Cùm itaque, sicut accepimus, quantitas falis, quod in salinis Civitatis nostræ Cerviæ ob necessariam dilectorum filiorum illius Civium, & incolarum sustentationem quotannis conficitur, & à Camera Apostolica certo convento pretio emi consuevit, adeo aucta sit, ut nonnisi congrui temporis spacio distrahi possit, & ex hoc nisi remedium opportunum adhibeatur, vel ipsos Cives, & incolas ab ulteriori ejusdem falis fabrica non sine gravi eorum dispendio cessare, vel ipsam Cameram pecuniarum recuperatione, quas pro dicto pretio erogat, frustrari oporteat.

Declaratio & extensio dictæ prohibitionis.

Prohibitio mercandi sal exterum in locis S. R. E.

§. 2. Nos cupientes, ut per nos, non solum eorumdem Civium & incolarum, quos paterna benevolentia prosequimur, verum etiam indemnitati ejusdem Cameræ opportunè prospicere, ac fel. rec. Julii Papæ III. prædecessoris nostri vestigiis inherentes, Motu proprio, & ex certa scientia nostra, quod de cetero in Civitatibus, Terris, & locis Sanctæ Sedi Apostolicæ immediatè subjectis, nulli prorsus locorum Universitati, Collegio, Communitati, vel privatis personis quavis dignitate etiam Archiepiscopali, Cardinalatus, vel majori Ecclesiastica vel laicali dignitate fulgentibus, sal exterum, & illud præferum, quod ab oris Dalmatiæ, seu Orientalibus vel Meridionalibus, & aliis mundi regionibus advehitur, in publicos, vel privatos usus mercari liceat, & sub excommunicationis latæ sententiæ, & quoad Communitates aut Universitates mille, & quoad reliquas privatas personas, & collegia personarum Ecclesiasticarum, centum ducatorum auri de Camera, & amissionis falis exteri hujusmodi, Cameræ præfate applicandorum ipso facto per quemlibet contravenientem, & pro qualibet contraventione incurrendis poenis, auctoritate Apostolica tenore Præsentium statuimus, & decernimus.

Clausula derogatoria.

Executurum deputatio, & facultates.

§. 3. Mandantes dilectis filiis Legatis, Præfidentibus, & Gubernatoribus Provinciarum, & illorum Locatentibus, ac locorum Gubernatoribus, & aliis Officialibus ad quos pertinebit, in virtute sanctæ obedienciæ, ut statutum, & decretum nostra hujusmodi inviolabiliter observari faciant; contemptores & inobedientes, per opportuna facti & juris remedia compescendo.

Fides transumptorum.

Clausula derogatoria.

§. 4. Non obstantibus præmissis, ac fel. rec. Bonifacii Papæ VIII. prædecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, aliisque constitutionibus, & ordinationibus tam Apostolicis generalibus, quam provincialibus, necnon etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscvis clausulis & decretis, quomodolibet concessis; ceterisque contrariis quibuscumque.

Dat. P. A. I. r. die 3. Dec.

Transumptorum fides.

§. 5. Volumus autem atque decernimus, quod Præsentium transumptis manu alicujus Cameræ Apostolicæ Notarii subscriptis, & sigillo dilecti filii nostri & S. R. E. Camerarii munitis, ea prorsus fides adhibeatur, quæ eisdem Præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Edita An. D. 1577. & 1578.

Dat. P. An. 6. die 17. Dec.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 17. Decembris, millesimo quingentesimo septuagesimo septimo, Pontificatus nostri anno sexto.

Exordium.

Sequitur extensio præcedentis Confirmationis.

præsentium inhihemus, ne quovis prætextu directè vel indirectè cuiusvis generis frumenta, blada, & legumina, atque animalia quæcumque, extra statum Ecclesiasticum extrahere & asportare audeant, seu præsumant. Eos verò, qui contra inhibitionem nostram huiusmodi commiserint, ultra prædictas, etiam amissionis frumentorum, bladorum, leguminum, & animalium præfactorum, necnon quinquæ scutorum pro qualibet palma frumenti, bladorum, & leguminum huiusmodi, & duorum scutorum pro quolibet capite animalis, pœnas Fisco & Camera nostræ Apostolicæ applicandas, ipso facto incurere volumus ac decernimus.

Executorem deputatio & facultates.

§. 2. Mandantes dilectis filiis Aloyfio tituli S. Marci presbytero Cardinali Cornelio nuncupato, nostro & Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Camerario, necnon Magistro Andree Spinolæ dictæ Camera Clerico, & Annone Præfecto, quatenus ipsi præcipuam in præmissis curam habentes, præsentibus nostras Litteras, & in eis contenta quæcumque ab omnibus, quos illa concernunt, firmiter observari, executioni debite demandari; necnon in Provinciis, Civitatibus, Terris, & locis Status Ecclesiastici præfati, ubi opus fuerit publicari, & notificari curent, ac ad exactionem pœnarum prædictarum, quacumque appellatione remota, quibusvis opportunis, juris & facti remediis procedant, & procedi faciant. Contradiçtores ac præmissorum executionem quomodolibet impediētes per prædictas alias pecuniarias, ac sibi visas pœnas, etiam omni appellatione cessante, compescant. Super quibus omnibus, aliisque circa ea necessariis & opportunis plenam, & liberam per easdem Præsentibus ipsis concedimus facultatem.

Clausula derogatoria.

§. 3. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon statutis & consuetudinibus, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis; privilegiis quoque, indultis & litteris Apostolicis Communitatibus, Universitatibus, ac personis quibuscumque, etiam ut præfertur qualificatis, etiam Motu simili, vel aliis quomodocumque & quatercumque concessis, confirmatis & innovatis, quibus omnibus, eorum tenores ac si ad verbum infererentur Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, ad effectum Præsentium specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque; aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quòd interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per Litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

Exemplorum fides.

§. 4. Volumus autem præsentium transumptis etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eandem prorsus fidem adhiberi, quæ Præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris die decima octava Decembris, millesimo quingentesimo septuagesimo septimo, Pontificatus nostri anno sexto.

Dat. P. An. 6. die 18. Dec.

Sequitur latior Prohibitio extrahendi frumenta, &c. extra Statum Ecclesiasticum, & impediendi afferentes illa ad Urbem, & emendi ultra usum unius anni, & revocatio Indultorum.

Edita An. D. 1578.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad futuram rei memoriam.

Exordium.

I Nter multiplices Nobis ex alto commissi pastoralis officii curas, ad eam libenter intendimus, per quam in Statu nostro Ecclesiastico annonæ abundantia habetur, & Subditii nostri in rerum humano victui necessariarum copiosa affluentia latè vivant, neque illarum penuria opprimantur. Quod ut fiat experientia rerum magistra docente, id maxime necessarium esse cognovimus, ut ne ipsa an-

nona è Statu nostro prædicto extrahatur, utque ad Almam Urbem nostram undique liberè afferatur, neque afferentibus ullum impedimentum præstetur, neque aliqui proprii commodis studentes, contra publicam utilitatem de his rebus monopolia facere valeant, omni studio provideamus.

Prohibitio extrahendi ut in rubr.

§. 1. Idcirco Nos pro nostri officii debito in præmissis opportunè providere volentes, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, ac matura deliberatione, quòd nulli Nobis & S. R. E. mediatè vel immediatè subiecti, cuiuscumque status, gradus, ordinis, & conditionis existant, etiam si Barones, Domicelli, Comites, Marchiones, vel Duces, & Domini temporales, aut Episcopi, Archiepiscopi, Patriarchæ, vel etiam S. R. E. Cardinales existerint, sub excommunicationis majoris, ac lætæ Majestatis criminis, dominiorum, & bonorum suorum confiscationis, feudorum amissionis, & quorumvis privilegiorum suspensionis, & aliis etiam pecuniariis arbitrio nostro imponendis, & applicandis, ac etiam in publicis editis, & proclamationibus per Præfectos Annonæ pro tempore tam hæcenus editis & emissis, quàm in futurum edendis & emittendis, quæ Nos ex nunc prout ex tunc Apostolica auctoritate approbamus & confirmamus, contentis censuris, & pœnis, triticum, ordeum, legumina, ac omnis generis frumenta, & fruges etiam ex bonis Ecclesiasticis collecta, à terris, & locis dicti Status nostri Ecclesiastici, absque expressa nostra, & à Nobis obtenta in scriptis, & manu signata licentia, extrahere, vel extrahi facere.

Prohibitio impediendi ut in rubr.

§. 2. Nollique ex prædictis eorum subditos & vassallos, aut alias quascumque personas quo minus triticum, ordeum, legumina, frumenta, & fruges præfata, à quibusvis locis eis subiectis, quovis prætextu, etiam molitura, aut cuiusvis alterius oneris solutionis ad Almam Urbem nostram afferant, prohibere, aut per se vel alium seu alios, directè vel indirectè impedire audeant, quin potius illis sic afferentibus omnem opem, & favorem præstent.

Prohibitio emendi ultra usum unius anni.

§. 3. Ac insuper nullis aliquam tritici, ordeï, leguminum, omnisque generis frumentorum & frugum quantitates, nisi pro suo, suarumque familiarium unius anni dumtaxat usu emere valeant, & contrascentes, pœnas prædictas incurrisse declarantur & aggraventur ipso facto, statuimus atque decernimus.

Deputatio, & facultates executorem.

§. 4. Mandantes dilecto filio Aloyfio tituli Sancti Marci presbytero Cardinali Cornelio nuncupato, nostro & Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Camerario, ac dictæ Annonæ Præfectis, ut contra eos, qui statuto, & decreto nostro huiusmodi in aliquo contravenierint, manu regia, & tela iudicialia servata procedant, ac eos pœnas prædictas incurrisse declarent, aggravent, reaggravent, interdicant, & brachium sæculare in eos adhibeant.

Licentia etiam ex causa onerosa revocantur.

§. 5. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac quibusvis statutis & consuetudinibus, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, privilegiis quoque, indultis, & litteris, ac gratiis Apostolicis, eidem personis, ac Civitatibus, terris, & locis, ac quibusvis aliis per Cameram, aut per Nos, & Prædecessores nostros in genere vel in specie, etiam ex causa onerosa, ac sub quibuscumque tenoribus & formis forsitan concessis, confirmatis & sæpius innovatis, quibus omnibus etiam si de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum tenores Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanfuris, hac vice dumtaxat latissime derogamus, & ad effectum prædictum ad beneplacitum nostrum suspensa esse volumus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Declarat & ampliat Paul. V. cit. in rubr.

ANNO
1578.
Forma & ef-
fectus publ.

GREGORIUS DECIMUS-TERTIUS.

451 ANNO
1578.

§. 6. Et ut præmissa omnia ad noticiam omnium deducantur, ne aliquis de eis ignorantiam prætere-
dere possit, volumus quod præsentis Litteræ per
aliquos Curie nostræ Cursores ad Basilicæ Principis
Apostolorum de Urbe & Cancellariæ Apostolicæ
valvas, & in acie Campi Floræ affigantur, & cum
inde amovebuntur, earum exempla in eisdem locis
affixa remaneant. Mandantes quoque Legatis, Vi-
celegatis, Gubernatoribus & aliis dictorum loco-
rum Officialibus, quatenus Præsentes publicent,
& publicari faciant. Et quod earum transumptis,
etiam impressis manu Notarii publici subscriptis,
& sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica
constitutæ munitis, eadem fides adhibeatur quæ
adhiberetur eisdem Præsentibus, si forent exhibitæ
vel offensæ.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Pis-
catoris, die 1. Maji 1578. Pontificatus nostri
Anno sexto,

Die 12. Maii 1578. præsentis litteræ Apostolicæ
exhibita, & præsentata in plena Camera Apo-
stolica, instante magnifico D. Rodolpho Bonifacio,
illius Commissario generali, & ex decreto in ead-
dem Camera factæ admittæ, & registratæ fuerunt
libro tertio Signaturarum S. D. N. apud me infra-
scriptum dictæ Camera Notarium.

Anno à Nativitate Domini 1578. Indiæ. 6. die verò
7. mensis Maii, Pontif. Sanctiss. in Christo Pa-
tris, & D. N. D. Gregorii divina providentia
Pape XIII. anno ejus 6. affixa, & publicatæ fue-
runt ad valvas Basilicæ Principis Apostolorum de
Urbe, & Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi
Floræ, dimissis ibidem copiis affixis eorum, per
me Petrum Aloysium Gaytam ejusdem S. D. N.
Pape Cursorem.

Claudius Mongeat Mag. Curs.

II. Exemptio Religionis Clericorum Regularium So-
cietatis JESU à solutione & præstatione deci-
marum, & aliorum onerum quorumcumque.

Idam exemptionem jam concesserat Paul. III. sup.
in ejus Const. 48. Licet. in Tomo I. & etiam
Pius IV. hic relatus. Sed iste Pontifex cam de-
clarat & ampliat. Cetera autem de hac Societate
notata sunt sup. in ejusdem Pauli III. const. 25.
Regimini.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad futuram rei memoriam.

Pastoralis officii cura Nobis meritis licet impa-
ribus ex alto commissa, Nos admonet, ut nos-
træ provisionis efficiatur ministerio, quod ea quæ
Religiosis quibuscumque, præsertim sub Sacratissimi
Nominis JESU, totius humani generis Redemptoris
vexillo, ad illius honorem & gloriam, proximo-
rumque spiritualium profectum, ac orthodoxæ fidei
defensionem, & propagationem in terris militanti-
bus, ab Apostolica Sede providè concessa reperiun-
tur, sublati quibuscumque impedimentis, suos ut par
est, debitos effectus perpetuis futuris temporibus
fortiantur.

§. 1. Exponi siquidem Nobis nuper fecit dilectus
filius Everardus Mercurianus, &c.

Omittitur hæc narratio, quia ipsa bulla est in loco cit. in rub.

§. 2. Et successivè pie memorie Pius Papa Quar-
tus etiam prædecessor noster, exemptionem, ac
cum omnibus, & singulis in eis contentis clausulis
Litteras ipsius Pauli prædecessoris desuper confec-
tas, necnon inde secuta quæcumque, per suas Litteras
ex certa scientia confirmaverit, approbaverit, &
etiam plenariè innovaverit. Ac pro potiori cau-
tela universam Societatem prædictam, omni quæ

& singula ejus Domos, etiam probationis, & Colle-
gia ubilibet consentientia, præsentia & futura, eo-
rumque personas, fructus, redditus, & proventus,
etiam bonorum Ecclesiasticorum, secularium & regu-
larium quorumcumque, illis pro tempore uni-
torum, aliasque res, & bona quæcumque à quibus-
vis decimis, etiam Papalibus, prædialibus, perso-
nalibus, quartis, medietatibus, & aliis fructuum
partibus, subdiis, etiam caritativis & aliis ordina-
riis oneribus etiam pro expeditione contra infide-
les, defensione patriæ, ac aliis quomodolibet,
etiam ad Imperatorum, Regum, Ducum, & alio-
rum Principum instantiam, pro tempore impositis:
etiam si in illorum impositione caveretur, quod
nulla prorsus exemptio cuiquam, adversus illa sus-
fragaretur: Ita quod Societas, ejusque Domus,
etiam probationis, Collegia, fructus, res, & bona
præfata semper ab illis absque declaratione desuper
facienda, excepta essent, & esse censerentur, perpe-
tuò liberaverit, & exemerit, prout in singulis litem-
ris Prædecessorum hujusmodi plenius continetur.

§. 3. Nihilominus quia in illis nulla de consti-
tutione recol. memor. Innocentii Papæ Tertii,
similiter prædecessoris nostri, in Concilio generali
super decimis edita, quæ incipit, Nuper, expressa,
& specifica mentio facta, nec ei specialiter & ex-
presse derogatum fuit, idem Præpositus dubitat,
singulas Litteras prædictas de subreptionis, seu nul-
litate vitio notari, ac Societati, illiusque Domi-
bus, Collegiis & personis prædictis minus utiles
reddi, aut illa super exemptione hujusmodi mole-
stari, vel perturbari posse tempore procedente.

§. 4. Nos igitur, qui votivum ipsius Societatis
profectum sincero paternæ caritatis affectu libenter
amplectimur, eisdem Societati, illiusque Domi-
bus, etiam probationis, Collegiis, & personis, ne
propterea dictarum Litterarum frustreretur effectus
opportune providere volentes, ipsamque Præposi-
tum, & singulares personas Societatis hujusmodi à
quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & in-
terdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris,
& poenis, à jure vel ab homine, quavis occasione
vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati
exsint, ad effectum Præsentium dumtaxat conse-
quendum harum serie absolventes, & absolutos fore
censentes; necnon singularem Litterarum prædicta-
rum veriores tenores, ac quorumcumque litem, &
causarum super præmissis jam forsan motarum,
statum, & merita, nominaque, & cognomina Judi-
cum, & colligantium, ac titulos, & jura eorum,
præsentibus pro sufficienter expressis habentes, ip-
sius Præpositi supplicationibus in hac parte incli-
nati, volumus, ac Societati, illiusque Domibus,
etiam probationum, Collegiis, & personis prædic-
tis eadem auctoritate concedimus, quod singulæ
Litteræ prædictæ cum exemptionis ceterisque, om-
nibus & singulis in eis contentis clausulis, & decre-
tis, processusque habiti per eandem, ac inde secuta
quæcumque valeant, plenamque roboris firmita-
tem obtineant, & eis quibus concessæ exsint,
perpetuò suffragentur in omnibus & per omnia,
perinde ac si in illis de Constitutione Innocentii
prædecessoris, & seu Concilii generalis hujusmodi
specificæ & expressæ mentio facta, eique specialiter,
& expresse derogatum fuisset, prout Nos eidem
Constitutioni ad effectum præmissum specialiter, &
expresse harum serie derogamus. Decernentes ita
in quibuscumque causis, pendentibus & futuris, per
quoscumque Judices & Commissarios, quavis au-
toritate fungentes, judicari, & definiri debere,
irritum quoque & inane quicquid fecus super his à
quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoran-
ter contigerit attentari.

§. 5. Non obstantibus litis pendentibus, si quæ
sint, & aliis præmissis, ac Innocentii prædecessoris,
& seu generalis Concilii hujusmodi, aliisque Apo-
stolicis, necnon provincialibus, & Synodalibus
Conciliis editis, generalibus vel specialibus, Con-
stitutionibus & ordinationibus, ac omnibus illis,

Sed dubium
faciebat
quod non
erat déroga-
tum cap. nu-
per de deci-
m.

Hic ideo
Pont. eam-
dem exem-
ptionem ite-
rato concedit
& ampliat.

Obstantia
tollit.

Dar. P. An. 6.
die 1. Maii.

Admissio in
Cam. Apost.

Publicatio.

Edita An. D.
1578.

Exordium.

Paul. III. de
lit exemptione
em à deci-
mis.

Pius IV. eam
amplavit,
sed ejus bul-
lam non po-
tuit ut hic
sufficienter
elatum.

Fides transumptis tribuit.

Dat. P. An. die 8. Jan.

LII.

Edita An. D. 1578.

Proemium.

Causæ concessio.

Deputatio Cardinalium Protectorum Domus Piae cum facultatibus infra scriptis. & primo cognoscendi causas ad Domum Piam ejusque Congregationem Moniales, Mulieresque ibi degentes vel inde ingressas peccantes summarieque procedendi.

quæ in singulis Litteris prædictis expressum fuit non obstat ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 6. Volumus autem quod eandem Præsentium transumptis etiam impressis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ, seu etiam pro tempore existentis Præpositi Generalis dicte Societatis, munitis, eadem prorsus fides, in iudicio & extra ubicumque adhibeatur, quæ ipsi originalibus Litteris adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris die 1. Januarii, millesimo quingentesimo septuagesimo octavo, Pontificatus nostri Anno 6.

Jurisdicção S. R. E. Cardinalium Protectorum & Judicum causarum Domus Piae, ad recipiendas, & pie alendas mulieres peccatrices penitentes, in Urbe instituta.

Erecta fuit hac Domus Pia tempore Pii IV. & ejus regimen spectabat ad Sodalitatem duodecim SS. Apostolorum nuncupatam, ut in ejus constit. 90. In Apostolica, sup. fol. 139. Hodie autem gubernatur & regitur à Card. pro tempore Protectoribus, & à Congregatione desuper instituta quamplurium pium hominum, inter quos ego Laetius spatio multorum annorum licet minimus, non modicum insudavi.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Cupientes, Domum Piam nuncupatam in Urbe nostra per fel. recor. Pium Papam IV. prædecessorem nostrum pro mulieribus peccatricibus & conversis ac penitentibus institutam, in qua eadem cognoscentes se à via salutis aberrare se recipere possent, ibidemque deliberare valerent, an vellent nubere, seu Moniales effici, ac pro ejusdem Domus regimine & gubernio etiam Confraternitatem illarumque personas, specialibus gratiis & favoribus prosequi, & juxta debitum Pastoralis officii eorum occurrere dispensis, quærimus & ut in via Domini molestiis quibuscumque quam primum sublati, proficiant, salubriter intendimus.

§. 1. Nos igitur cum Domus & Confraternitatis hujusmodi personas gravibus incommodis & dispendiis affici contingat, dum per diversa Urbis nostre Tribunalia, pro variis causis rebus & negotiis litigare cogerentur.

§. 2. Motu proprio, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, omnes & singulas causas, lites, quæstiones, & controversias, civiles, criminales, spirituales, meras, & mistas nomine dicte Domus vel in ea degentium personarum ac Confraternitatis, seu ejus administratorum, Gubernatorum, & Deputatorum, ac Monialium, seu mulierum in eadem domo degentium, seu quæ inde egressæ & nuptui traditæ vel Monasticam vitam amplexæ fuerint, contra alias quascumque personas cujuscumque gradus, dignitatis, ordinis, conditionis, & præminentie existentes, Universitates, Societates, Congregationes, Monasteria aut alia loca pia in quibus Domus five personæ prædictæ Rei vel Agoris partes subintuerint, etiam si coram S. R. E. Camerario, Clericis, & Præsentibus Camera Apostolicæ, ac Curie Causarum dicte Camera Generali Auditore, necnon Vicario, Gubernatore, & Senatore dicte Urbis, illorumque Locatenentibus, Colateralibus, Judicibus, ac dicte Urbis Causarum Appellationum Capitano, & Causarum Palatii Apostolici Auditoribus, & ejusdem S. R. E. Cardinalibus aliisque Judicibus ordinariis seu delegatis, hucusque motas & pendentes, de & super statu ac degentium, necnon quibuscumque locationibus, venditionibus, legatis, fideicommissis, testamen-

tis, hereditatibus, ac illarum discussionibus, necnon quorumcumque jurium & actionum cessionibus, aliisque inter vivos contractibus, etiam vigore obligationis in forma Camera, executionibus, revocationibus, bonis, rebus, juribus & actionibus ad dictam Domum, five ejus nomine Confraternitatem, ejusque Gubernatores, Administratores & Deputatos, Moniales, ac mulieres hujusmodi, tam conjunctim quam divisim, ac tam activè quam passivè, spectantibus & pertinentibus in quacumque instantia, quorum omnium & singulorum statum & merita, necnon Judicium & colligantium nomina & cognomina, ac qualitates, ceteraque etiam de necessitate exprimenda, Præsentibus pro expressis habentes, in statu & terminis in quibus nunc reperiuntur quatenus introductæ non sint, harum serie ad Nos advocantes, illasque omnes & singulas, motas & pendentes, ac quam & quas Domus & Confraternitas ac Gubernatores, Administratores, & Deputati, necnon Moniales & Mulieres ibidem degentes, penitus & omnino contra easdem personas, Universitates, Collegia, Congregationes, Confraternitates, Monasteria, & alia hujusmodi pia loca, pro rebus, bonis, hereditatibus, juribus, & actionibus hujusmodi, dilectis filiis nostris Marco Sitico S. Georgii in Velabro de Altaemps, & Prolomæo S. Agathæ Titulorum Comen. nuncupati Cardinalibus Presbyteris, ejusdem Domus, ac Confraternitatis apud Nos Sedemque Apostol. Protectoribus una cum illarum emergentibus, dependentibus, incidentibus, annexis, & connexis, summarie, simpliciter & de plano, ac sola facti veritate inspecta, ac sine strepitu & figura iudicii, per se ipsos aut alios ab eis deputandos, in quacumque instantia, usque ad finem audiendas, cognoscendas, & sine debito terminandas, committimus, & mandamus.

§. 3. Ipsosque Marcum & Prolomæum Cardinales, ac nunc & pro tempore existentes Protectores Domus & Confraternitatis prædictarum, in dictis causis motis & movendis, pendentesque, & in futurum movendis, in Judices ordinarios, cum facultate easdem causas in quacumque instantia usque ad finem, per se ipsos vel alios eorum Auditores, illas cognoscendi, decidenti & terminandi, facimus, constituimus & deputamus.

§. 4. Ac cum potestate citandi & inhibendi quos & quibus, ac quoties opus fuerit, in Curia & extra eam, etiam per Edictum publicum, confilio etiam summarie de non tuto accessu, eisdemque ac quibuscvis aliis ejusdem Urbis Judicibus ac personis, tam Ecclesiasticis quam secularibus, etiam sub sententiis, censuris & penis Eccles. ac pecuniariis, inhibendi, & in eventum non partitionis contra inobedientes, contumaces & rebelles, ad declarationem incursum poenarum & censurarum hujusmodi, illarumque aggravationes & teaggravationes, & alias juxta morem & stylum Curiarum dicte Urbis in similibus servari solitum, & prout eis videbitur procedendi, sententiasque suas debite executioni demandandi five demandari faciendi, auxiliumque brachii secularis ad hoc si opus fuerit invocandi, omniaque & singula alia in præmissis & circa ea quomodolibet necessaria & opportuna faciendi, gerendi, & exequendi.

§. 5. Ac in omnibus & singulis causis prædictis, ad Domum, Confraternitatem, Moniales, & Mulieres hujusmodi, ut præsertim spectantes, singulis diebus, & horis, feriatis & non feriatis, præterquam in honorem Dei, etiam tempore feriarum ob necessitatem hominum indicandarum & indicendarum, procedere.

§. 6. Ac quemcumque Notarium eis benevolum in causis hujusmodi deputare possint.

§. 7. Quodque citationes, monitiones, & intimationes, quæ in dictis causis fieri oportuerint, etiâ per Curia Capitoline & quoscumque alios Mandatarios fieri possint. Et quicumque Executores Urbis possint & debeant effectualiter executioni demandare omnes & singulas sententias, decreta & mandata dictorum Marci & Prolomæi Cardinalium prædictorum

Judices deputandi.

Citandi & inhibendi in Curia & extra.

Diebus etiam feriatis procedendi.

Notarium deputandi.

Mandatarii & executores omnes eis servant.

Alii Judices
in his causis
non proce-
dant.Clausula
reservativa.secretum
trans.clausula de-
rogatoria.

& pro tempore existentium Protectorum, sive ab eis Deputatorum; quæ non obstante Regula Cancellariæ, sub eorum parvis sigillis expediri possint.

§. 8. Et insuper Domum, ac Confraternitatem prædictas, ejusque Administratores, Gubernatores & Deputatos, necnon Moniales & Mulieres hujusmodi, in eadem Domo degentes, & inde egressas, nuptas, seu viduas, ex nunc deinceps occasione præmissorum alibi quam coram dictis Protectoribus conveniri, aut ad alios conveniendum constringi non posse, ac processus, sententias & decreta per alios tam ordinarios quam delegatos Judices in causis prædictis quomodolibet pro tempore formatos, latas, & factas, cum inde secutis quibuscumque nulla irrita, & inania, nulliusque roboris vel momenti fore.

§. 9. Præsentis litteras sub quibusvis revocationibus, suspensionibus, limitationibus, seu revocationibus similium vel dissimilium gratiarum, etiam per Nos & successores nostros Romanos Pontifices, vel Sedem Apostolicam, aut ejus Legatos, etiam Cancellariæ Apostolicæ regulas, pro tempore factas, nullatenus comprehendere, sed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, roties in pristinum statum restitutas esse & censei debere, necnon per quascumque Litteras etiam quasvis clausulas generales vel speciales etiam derogatorias derogatorias, irritantiaque, & alia decreta, sub quacumque verborum expressione continentes, derogari posse, & si illis ullo umquam tempore ex aliqua etiam quantumvis necessaria & urgenti causa derogari contingat, nisi tenor earundem Præsentium de verbo ad verbum nihil penitus omisso inferius & hujusmodi derogatio per trinas distinctas Litteras, eundem tenorem continentes, tribus similibus distinctis vicibus, Administratoribus, Gubernatoribus, Deputatis, & Confratribus hujusmodi omnibus & singulis legitimè insinuata & intimata fuerint, eorumque expressus ad id accesserit assensus, derogationem hujusmodi nemini suffragari, & nullius esse roboris vel momenti.

§. 10. Sicque per quoscumque Judices quavis auctoritate fungentes, etiam Auditores, & Cardinales prædictos, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari & definiti debere, ac irritum & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari decernimus.

§. 11. Non obstantibus quibusvis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, ac Ecclesiarum, Monasteriorum, Hospitalium, & aliorum Piorum locorum & Ordinum juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, dilectis filiis Populo Romano, necnon Judicibus, Curias & Tribunalibus, earumque personis per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac Nos, & dictam Sedem, etiam motu & scientia similibus concessis, approbatis & innovatis, etiam disponentibus, quod causæ hujusmodi ad forum seu Curiam Capitolinam reassumi debeant. Quibus omnibus & singulis, etiam si pro illorum suscipiendi derogatione, aliàs de illis illorumque totis tenoribus specialis mentio habenda esset, illis aliàs in suo robore permanentibus hac vice dumtaxat, specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque, seu si prædictis vel quibusvis, aliis, communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari, aut extra, vel ultra certa loca, Curias, & Tribunalia, ad iudicium trahi non possint, per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem, & quibuslibet aliis privilegiis, & indultis Apostolicis, generalibus vel specialibus, quorumcumque tenorem existant, per que Præsentibus non expressa aut totaliter non inserta jurisdictiones dictorum Protectorum impediri valeant quomodolibet vel

differri, & de quibus quorumque totis tenoribus de verbo ad verbum habenda sit in præsentibus mentio specialis.

§. 12. Volumus autem, quod Præsentium transumptis manu Notarii publici subscriptis, & sigillo Protectorum; seu alterius eorum, seu Confraternitatis hujusmodi munitis, eandem prorsus fidem adhiberi, quæ adhiberetur Præsentibus exhibitis vel ostensis.

Dar. Romæ apud S. Petram, sub annulo Piscatoris, die duodecima Februarii, millesimo quingentesimo septuagesimo octavo, Pontific. nostri Anno 6.

Instituto Collegii Anglici in Urbe, pro Scholaribus Nationis Anglicæ ibi educandis, & instruendis, Cam annuorum reddituum assignatione, Exemptionumque & Indulgentiarum concessione, & S. R. E. Cardinalis Protectoris, & Judicis, in cognoscendis eorum causis jurisdictione.

Multa de Regni Angliæ calamitate & hæresiarum labe, videri possunt supra in Pauli III. Constitutione 7. Ejus qui, Tom. 1. & Pii V. constitutione 101. Regnans, & infra Sixti V. constit. 39. Afflicta. in hoc Tomo 2.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Quoniam Divinæ bonitati visum est, humilitatem nostram turbulentissimis Christianæ Reipubl. temporibus, ad excessum universalis Ecclesiæ culmen sublevaré, hæreditariisque, quam pretioso sanguine suo quasivit, administrationem curæ nostræ commendare, ea nostrum perpetua sollicitudo exacuit animum ad piè meditandum, quo pacto, & DEI misericordiæ à qua tantum accepimus Nos gratos exhibeamus, & nostram Ecclesiæ suæ operam, quantum divina benignitate adjuti possumus, non inutilem faciamus.

§. 1. Quare cum quoidie, non sine gravi animi nostri dolore, Sanctam Domini Nostri JESU Christi Sponsam diversorum ejus hostium conspiratione, & violento ex multis partibus incursum oppugnari cernamus, antiquisque hostibus Infidelibus Turcis, Judæis, novisque Hæreticis, & Schismaticis accessisse, qui omni impietate & scelere imbuti, ac veluti adversarii nostri furis exagitati, in pie Matris exitium feruntur, quod officii nostri ratio à nobis expostulat ad hominum impetus, quo maxime opus esse videmus vires Nobis à Domino traditas opponimus, populosque imbecillitati nostræ à divina benignitate concreditos præsidii contra hostium oppugnationes paratis communimus. Cumque nullum firmius præsidium, aut remedium certius inveniri possit, quam ut Regionum ab hac peste oppressarum Juventus, cujus tenores animos facile est ad virtutem flectere, Catholica Religione imbuatur, ab initio usque nostri Pont. operam dedimus, ut diversarum nationum Collegia, veluti Catholicæ Religionis & sinceræ ad eam institutionis seminaria, nostris sumptibus in Urbe erigerentur.

§. 2. Quæ interea dum sedulo agimus, ad Angliæ Regnum magnis quondam opibus, & Catholicæ fidei Studio florentissimum, nunc verò à terribissima Hæresis labe, quæ omnes fere ejus partes comprehendit, devastatum, pietatis oculis dirigentes, ejusque calamitatem, ut sæpe alios, miseranter reperimus Anglorum nationem ad CHRISTI fidem à Beato Gregorio Pontifice conversam, ex eo tempore singularem fidem reverentiam, atque obedientiam contra Romanos Pontifices, Sanctamque Sedem Apostolicam præstitisse, quæ etiam in tanta nostrorum temporum caligine, in aliquibus, infidelibus illis quidem & Illustribus viris resulsere, qui pro hujus Sedis dignitate, & Orthodoxæ fidei veritate, vitas suas cum sanguine ponere non dubitarunt, versanturque quotidie ante oculos nostros, Juvenes, ex

Fides adhi-
benda tran-
sumptis.Dat. P. An. 6.
die 12. Febr.

LIII.

Edita An. D.
1579.

Proœmium.

Causa hujus
erectionis.Greg. I. in-
duxit Anglo-
rum natio-
nem ad fidem
Catholicam.
Angli verò
qui tunc erga
Rom. Pont.
obedientes
& Cath fue-
runt, in hære-
sim polita
prolapsi sunt.

Hic igitur Pont. ad imitationem dñi Greg. I. pro Anglorum ab heresi revocationem Collegium Anglicum in Urbe erigent.

Annus redditus eis assignat.

Locum pro Collegio concedit, &c.

illo miserrimo Regno huc profugientes, qui divino Spiritu ducti, patria, parentibus, & bonis relictis, sese Nobis ad Catholicæ Religionis, in qua nati sunt institutionem suscipiendam miserabiliter offerunt, eo animo ut salutem sibi primum comparent, deinde verò, ut post adeptam divinarum rerum scientiam in Angliam ad alios, qui à via veritatis declinarunt erudiendi revertantur.

§. 3. Nos igitur Gregorii ejus nominis Primi pia in Anglos officia, ejusque erga illos bonitatem imitari cupientes, ut quemadmodum ipsi concessionis, sic, & Nobis ab errore revocationis beneficium accepisse in Domino latentur, ac propensam eorum erga Sedem prædictam devotionem Adolescentium, item Catholicæ doctrinæ adipiscendæ studium amplectentes, Motu proprio, & ex certa scientia nostra, deque Apostolicæ potestatis plenitudine ad Omnipotentis Dei laudem, & fidei Catholicæ incrementum, dilectæque nobis Nationis Anglicanæ commodum & salutem, in ædibus Hospitalis Anglorum de Urbe, unum Collegium Anglicanum nuncupandum perpetuò erigimus & instituimus, in quo non minus, quam quinquaginta Scholastici, ex omni natione, & lingvæ idiomate Regni Angliæ cum suo Rectore, & ministris necessariis slantur, qui inibi, in Philosophia, ac Theologia se exerceant, Græcis item Hebraicisque litteris pro capto, cuiusque operam dent, in eisque tantum proficere studeant, quantum fatis esse videatur.

§. 4. His porro omnes ii studii operam navant, ad quæ, à Superioribus diriguntur, seque præterea in pietate, & devotione, Cantibus Ecclesiasticis Cæremoniis, & sacris officiis, ut melius ipsis Superioribus visum fuerit exercebunt. Ad eorum autem omnium sustentationem nos annuos redditus trium millium scutorum auri in auro ex Apostoli Cameræ Datariatus rationibus singulis mensibus pro rata, donec eis aliunde à Nobis, aut Successoribus nostris de simili annuo reddito, prospectum fuerit, liberè, & integrè præstando constituimus.

§. 5. Et præterea eis perpetuò concedimus, & assignamus pro eorum habitatione & usu, ædes prædictas, in quibus Capellani Angli habitabant, nunc verò dicti Scholastici jussu nostro habitant, cum duabus domibus dicto Hospitali contiguas ad sinistram partem versus Ecclesiam S. Brigidæ Sueciorum, & quæcumque illis circumcedunt. Ac pro divini cultus exercitio Ecclesiam Sanctissimæ Trinitatis, & S. Thomæ martyris Anglorum, necnon pro dote dicti Collegii ac Rectoris, Scholasticorum, & ministrorum prædictorum sustentatione, omnes & quascunque alias Domos, tabernas, sive apothecas, stabula, hospitia, hortos, areas, proprietates, census, fructus, ceteraque omnia bona mobilia, immobilia, & semoventia, necnon res, actiones, & jura dicti Hospitalis, tam in Urbe, quam extra eam ubicumque existentia, cuiuscumque qualitatibus, speciei, naturæ, pretii, quantitatis, ac etiam annui valoris existentia, quæ omnia, eorumque situationes, nuncupationes, consuetudines, & latera, ac si nominatim, & in specie deberentur, Præsentibus pro expressis haberi, & ædes, ac cetera quæ signari possunt, ut à ceteris internocentur, quamprimum armis, & signis dicti Collegii forisfiscus notari volumus, & eaque omnia à dicto Hospitali omnino separamus, & ad ipsam Collegium transferimus, ita ut Protector, & Scholastici prædicti corporalem illorum omnium possessionem per se vel alium, seu alios, propria auctoritate liberè apprehendere, & perpetuò retinere, illorumque fructus, redditus, & proventus, jura, obventiones, ac emolumenta omnia percipere, exigere, & levare, ac suos dicti Collegii communes usus & utilitatem convertere liberè & licite valeant, Vicario Urbis aut cuiusvis alterius licentia desuper minime requisita. Oeconomus verò, & alii Ministri, ac servientes dicti Collegii, ipsius Rectori subint, & ad ejus præscriptum & mandatum omnino obsequantur, nisi quæ contra illius voluntatem faciant, vel attentent; ipsique Oeconomus, Protectori dicti

Collegii pro tempore existenti, vel etiam ipsi Protectori volenti & requirenti, aut ab eorum quolibet deputatis, bis in anno, vel quotiescumque; ei vel eis visum fuerint, rationem reddere teneantur. Cum eo tamen, quod si aliquo tempore prædictum Collegium, ex quacumque causa dissolvi contingat, ædes, Ecclesia, domus, census, ceteraque omnia prædicta perinde prædicti Hospitalis sint, ac si erectio Collegii, & alia præscripta, nunquam emanassent, prout nos ex nunc in eum eventum Hospitali ipsum, quoad illa omnia in integrum restitutum.

§. 6. Eo ipso districtius inhibentes Capellanis prædictis, necnon dicti Hospitalis Gubernatoribus, & Administratoribus cuiuscumque nominis, & dignitatis, ac deinceps in ædibus, Ecclesia, domibus, apothecis, censibus, fructibus, aliisque rebus, juriis, & actionibus prædictis, directè vel indirectè quovis quasito colore sese interponere, aut Collegium, Rectorem, Scholasticos, & Ministros præfatos & futuros molestare audeant, vel perturbare. Ac decernentes ex nunc irritum & inane quicquid contra præmissa, & etiam Præsentibus contenta per eosdem, aut quovis alios, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 7. Præterea Collegium, ejusque Rectorem, Scholasticos, & ministros in perpetuum, ac prædicta, ceteraque omnia eorum bona, mobilia, & immobilia, cuiuscumque qualitatibus & quantitatibus, in dicta Urbe, & extra, & alios ubique locorum consistentia, sub nostra, beati Petri, & hujus Sedis protectione suscipientes, ac Nobis, & eidem Sedi prorsus subijcientes, illa omnia in universum & singulatim ab omni jurisdictione, correctione, visitatione, dominio, superioritate, & potestate pro tempore existentis Vicarii, Gubernatoris, Senatoris, Consulum, Conservatorum, & Reformatorum dictæ Urbis; causarum Curie Cameræ Apostolicæ generalis Auditoris, necnon Rectoris Studii generalis & aliorum quorumcumque Tribunalium, & Judicium, & Officialium, necnon Ordinariorum locorum Rectorem, Parochialium ecclesiarum, & quorumcumque aliorum in dicta Urbe, vel alibi constitutorum.

§. 8. Illoque, ac etiam in propriis eorum rebus, & bonis, cum eis contrahentes, à solutione, & exactione quorumcumque pedaggi, gabellæ, bolletini, etiam ratione vini Ripæ, & Ripetæ, necnon grani, olei, pannorum cuiuscumque generis, & quorumcumque aliarum rerum, necnon decimarum, & cuiusvis, tam Ordinarii quam extraordinarii oneris ex quacumque causa impostorum, & imponendorum perpetuò eximimus, & prorsus liberamus.

§. 9. Insuper eidem Collegio, & Scholasticis, Rectoribus, & Gubernatoribus, ut omnibus, & quibuscumque privilegiis, exemptionibus, libertatibus, facultatibus, & indultis, quibus Studium generale dictæ Urbis, & illius Rectores, Doctoresque in eo exegerint quomodocumque utuntur, potintur, & gaudent, aut uti, potiri & gaudere poterunt quomodolibet in futurum, non solum ad eorum instar, sed pariformiter, & æque principaliter, uti, potiri, & gaudere valeant, in omnibus & per omnia concedimus, illa omnia eis communicamus.

§. 10. Præcipimusque, & interdicimus Vicario, Gubernatori, Auditori, Senatori, Consulis, Conservatoribus, Reformatoribus, Rectori, Judiciis, Officialibus, & aliis prædictis, necnon S. R. E. Camerario Præsentibusque & Clericis Cameræ Apostolicæ, ac quibuscumque Camerariis ad exactionem vigalium portorium, decimarum, & aliorum onerum prædictorum pro tempore deputatis, universis & singulatim, ne quorumcumque facultatum, privilegiorum, & litterarum eis lub quibuscumque tenoribus & formis concessarum occasione vel pretextu, Collegium, Scholasticos, Rectorem, Ministros, & Gubernatores prædictos, seu eorum aliquem, etiam super usu, & perceptione prædictorum, & aliis præmissis impediunt, vel molestent, nec impediunt, vel molestari permittant.

§. 11. Ad hæc, Superioribus dicti Collegii cum consensu tamen Protectoris prædicti illos, quos in dicta

Ministris dicti Hospitalis molestent Collegium & ejus personas super prædictis precipit.

Collegium à jurisd. Ordinariarum, & quorumcumque iudicium eximit.

Et à solutione pedaggi, gabellæ, bolletinarum.

Indulta Studii Urbis concedit. Tu ea videas in conf. 9. Bonif. VIII.

Inhibitio contra omnes Officiales Collegium, & ejus personas super præmissis molestent.

Facult. Superiorum Collegii promovo.

endi cum
onsensu Pro
ectoris scho
lars ad gra
us, &c.

Collegio, & alibi per debitum tempus studuisse, ac scientia & moribus, idoneos esse repererint, in prædictis facultatibus artium, & Theologiae Baccalaratus, licentiatursæ, doctoratusque & Magisterii gradus, servata forma Concilii Viennensis & alias juxta universitatis Studii ejusdem Urbis consuetudinem promovendi, & ipsorum graduum solita insignia eis exhibendi, utque in facultatibus prædictis sic promoti illas publicè & privatim, etiam in omnibus Universitatibus Studiorum generalium interpretari, & alios docere, ac de eis disputare, gradui seu gradibus hujusmodi convenientes actus exercere, ac omnibus privilegiis, gratiis, favoribus, prærogativis, & indulgentiis, quibus alii in prædicta, seu aliis Universitatibus, & alibi juxta illius, & aliarum Universitatum hujusmodi constitutiones, & mores ad gradus prædictos promoti de jure, vel consuetudine utuntur, potiuntur, & gaudent, ac uti, potiri, & gaudere poterunt, quomodolibet in futurum, uti, potiri, & gaudere possint, & debeant, perinde ac si gradus prædictos in ipsa Universitate juxta statuta, consuetudines, & mores prædictos suscepissent, concedendi licentiam tribuimus.

cholares, &
umni ejus
Collegii pro
mo
eri possint
tra tempo
& abique
ordinatio
um litteris
imissis
fine titulo,
non ob
ante defe
tinalium.

§. 13. Postremò cum eosdem Scholares hujus Collegii alumnos post longos studiorum, vel cæporum, vel consummatorum labores, sacerdotali Militiæ pro temporis, vel loci necessitate adscribere conducatur, ut ministeriis, & pensionibus sacris assuescant, dicte Ecclesiæ Sanctissimæ Trinitatis officia præstent, seu, ut operarii mittantur, ejusdem Alumnis ut de licentia Protektoris, ac dicti Collegii Rectoris consensu, & examine præcedente etiam extra tempora à jure statuta, interstitiisque temporum à Concil. Trid. præstitutis non expectatis, etiam absque suorum Ordinariorum litteris dimissorialibus, ac sine aliquo beneficii, vel patrimonii titulo, & non obstantè quovis natalium defectu, super quo cum talibus per eandem Præsentem dispensamus, ad omnes, etiam sacros & presbyteratus ordines promoveri, postquam promoti fuerint, in illis etiam in altaris ministeriis ministri esse, ac etiam tam ipsi, quam ceteri omnes in dicto Collegio degentes, ut Penitentibus, ac Eucharistia, etiam die Paschatis, & Extremæ unctionis sacramenta à Confessario, aut alio sacerdote ipsius Collegii à Rectore, vel illius constituendo, suscipere liberè & licetè valeant indulgemus.

Protektoris
reputatio,
cultates.

§. 14. Ut verò ejusdem Collegii conservationi, bonoq; regimini, tam iis, quam ad alumnorum ipsorum institutionem, & disciplinam, quam ad viduum & vestitum aliaq; hujusmodi necessaria pertinent opportunijs consulatur, utq; promptum, paratumq; sit eis auxilium, venerabilem fratrem nostrum Joannem Episc. Offensem Card. Moronum nuncupatum, ejusdem Collegii Protektorem, & defensorem constitutum & deputatum, cujus consilio & operâ, tam prædicta, quam quaecumque alia ad Scholasticos in eodem Collegio admittendos, & retinendos, & ab eo admittentes spectantia agantur, statuatur, & ordinentur; dantes eidem, & pro tempore Protektori existenti prædicti Collegii pro salubri illius conservatione, & directione Scholasticorum, bonorum & rerum, ac jurium temporalium & spiritualium ejusdem plenam & liberam facultatem, & auctoritatem, Oeconomos, Advocatos, & Procuratores in eo deputandos, & amovendos, & alios eorum loco sufficiens, differentias, lites, & controversitas inter quoscumq; personas, tam alumnorum, quam ministrantium clericorum, & laicorum, non tamen presbyterorum ipsius Societatis exortas, summarie, simpliciter, & de plano, sine figura aut strepitu iudicii, appellatione quacumq; remota decidendi, definiendi, terminandi, & exequendi statutaq; ordinationes, sacrifiq; Canonibus, & Concil. Trid. prædicto non contraria faciendi, & accedendi, eaque cum opus fuerit revocandi, immutandi, & corrigendi, aliaq; de novo condendi, quæ postquam facta, edita, revocata, immutata, & correctæ fuerint, perinde habeantur, & observentur, ac si auctoritate Apost. approbata & confirmata essent, prout eos illa ab omnibus

dicti Collegii alumnis, ita haberi, & inviolabiliter observari mandamus.

§. 15. Quod autem ad dictorum alumnorum admissionis modum, & formam deinceps habendam attinet, statuimus, & ordinamus, eos qui admittendi erunt, prius ab examinătoribus per dictum Protektorem in Gallia, etiam Belgia, aut alibi, prout illi convenientius videbitur designatis & designandis, juxta formam ab ipso Protektore præscribendam examinare, & præhabito hujusmodi examine, si constiterit ipsi Protektori prædictorum Examinatorum significatione sibi verbo vel scripto faciendâ, eos ingenio aptos, & moribus probatos, & tales, qui recipi debeant, illos admittant.

§. 16. Postquam verò in Collegio recepti fuerint, non statim Collegii alumni censeantur, sed per quatuor, & sex menses, plus vel minus, prout Superioribus, & Collegii moderatoribus visum fuerit eorum conversatio probetur, deinde si Collegio digni videbuntur, juramentum præstetur se vitâ ecclesiasticam perducituros, seque omni tempore ad jussu Superiorum in patriam revertendum, & ad animas quantum in Domino poterit adjuvandas paratos fore.

§. 17. Ceterum Rectori presbytero dicti Collegii pro tempore existente, ut per se vel Confessarium idoneum, quem duxerit eligendum, singulos alumnos prædictos à quibuscumque excommunicationis, suspensionis, interdicti, aliisque sententiis, censuris, & penis ecclesiasticis, quavis occasione vel causa latis, quas ipsi pro tempore quomodolibet incurrerint, & à quibuscumque peccatis, excessibus, & delictis, quantumcumq; gravibus & enormibus, etiam in casibus in litteris die Cenzæ Domini legi solitis, contentis, conspirationis in personam, vel statum Rom. Pont. falsitatis scripturarum, & litterarum Apost. delationis armorum, vel aliorum prohibitorum ad partes infidelium, injectionis manuum violentarum in Prælatos dumtaxat exceptis, dispensare, liberè, & licetè valeat, liberam tribuimus facultatem.

§. 18. Decernentes prædicta omnia perpetuò subsistere, siq; in illis universis & singulis per quoscumque Judices Ordinarios, & delegatos etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S.R.E. Cardin. in quavis causa, & instantia, sub lata eis, & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, ubique judicari, & definiri debere, necnon irritum & inane quicquid fecus super his, per quoscumque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 19. Non obstantibus nostris de non tollendo jure quæsto, & de vero valore fructuum exprimendo, ac de commissione in hujusmodi unionibus faciendâ, & vocandis quorum interest, necnon Lateran. Conc. novissimè celebrati, uniones perpetuas, nisi in casibus à jure permissis fieri prohibentis, aliisque Apost. constitut. ac Hospitalis Urbis, & Cameræ prædictorum juramento, confirmatione Apost. vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, consuetudinibus, privilegiis quoque, & litteris Apostolicis illis, & ejusdem Senatori, Consul, Reform. Cam. Universitatibus, ac eorum Collegiis, Rectoribus, & personis, aliisque prædictis, necnon Pop. Rom. vespigalibus, Redemptoribus, & aliis sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque clausulis, & decretis, etiam iteratis vicibus, aut etiam in favorem Hospitalium concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus illorum tenores Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis alias in suo robore permanens, hac vice dumtaxat, specialiter & expresse derogamus; ceterisq; contrariis quibuscumque.

§. 20. Ut verò temporalibus commodis spiritualia quoque munera conjungamus, quibus fidelium devotio eis munita crescere magis, & augeri possit, de Omnipotentis Dei misericordia, & ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum auctoritate confisi, omnibus Scholasticis, Rectoribus, & Ministris, qui in hoc Collegio recepti fuerint in ipso ingressu, ac etiam quos in eodem Collegio decedere ab huma-

Forma recipiendi alumnos Collegii

Forma probationis hujusmodi ab ipsis antequam admittantur, & forma juramenti præstandi post admissionem Rectori Collegii.

Facultas absolvendi ipsos alumnos à quibuscumque excessibus, etiam reservatis in bulla Cenzæ D. ut hic.

Clausula præservativa.

Clausula derogatoria.

Indulgentiarum concessio pro Scholasticis, Rectoribus, & Ministris Collegii.

Dat. P. An. 7.
die 23. April.Admissio, &
publ. in
Cam. Apost.

LIV.

Edita An. D.
1578.

Prodemum.

Petitio Card.
Moroni Pro-
rectoris, cir-
ca mutatio-
nem Capituli
Gen. & ele-
ctionem Præ-
latorum.

nis contigerit, si penitentes & confessi verè ipsi fue-
rint, in mortis articulo plenissimam omnium pec-
ccatorum suorum Indulgentiam, & remissionem in
perpetuum concedimus. Nulli ergo, &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, anno Incarnationis
Dominicæ 1579. nono Kal. Maji, Pontificatus no-
stri anno septimo.

*Die 9. Januarii 1580. presentes littere Apostolica
presentata fuerunt in Cam. Apost. & ex decreto in
eadem facto admisse, & illius libris resignata in li-
bro quarto signaturarum divers. Pont. fol. 44. penes
me infra scriptum dictæ Camere Notarium.
Tydeus de Marchis Not.*

De munere & electione Prælatorum Congregat. S.
Bernardi in Italia Monachorum Ord. Cisterciensis
Regularis observantia.

*Constitutionem istam quo ad viros ad Prælativas eli-
gendos revocavit & in ceteris approbavit Sixt. V.
in consi. 10. Nuper.*

Congregationem istam erexit Alex. VI. ut sup. in ejus
const. 7. Plantatus. fol. 457. Tom. 1. ubi plenè
notavi.

GREGORIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memoriam.

Romanus Pontifex ex commissio sibi desuper Apo-
stolica servitutis officio, circa felicis Statu Eccle-
siarum, & Monasteriorum, ac piorum locorum omnium
ex viceribus caritatis intendens, ea per quæ Eccle-
sia, Monasteria, & loca cum Dei honore, in spirituali-
bus & temporalibus, salubribus proficiant incremen-
tis, ac subtilis disensionum discordiarumque fomen-
tis, & aliis contrariis quibuslibet in eis regularis ob-
servantia, divinusque cultus inviolabiliter observetur,
personarumque religiosarum sub suavi religionis iugo in pace,
& quietis mansuetudine Altissimo vota reddere, &
fructus in Dei Ecclesia proferre valeant ampliores, ac
Christifidelium animarum saluti consulatur, & sta-
luit & ordinat, & jam desuper statuta, & ordinata
approbat, & confirmat, aliaque facit & disponit,
prout pensatis circumstantiis universis id conspici-
t in Domino salubriter expediri.

S. 1. Sanè venerabilis frater noster Joannes Episco-
pus Olien. Card. Moronus nuncupatus, Nobis nu-
per exposuit quod licet olim salubri ut nunc speraba-
tur consilio, de Capitulis per Abbates, Prælatos, &
Conventus Monasteriorum Cisterciens. Ordinis Con-
gregationis S. Bernardi in Italia, Tuscia, & Lombar-
diæ Provinciæ in simul unitarum regularis obser-
vantia, statuto ad id loco & tempore, quotannis ce-
lebrandis, lata decreta etiam Apostolica auctoritate
per fel. record. Alexandrum VI. & Julium II. Roma-
nos Pontifices prædecessores nostros confirmata fue-
rint, longè tamen aliter evenire, & cum ubique pauci
vix reperiantur ad dignitates, & officia, ac illis in-
gruentia munera ritè obeunda sufficientes & idonei,
nihilominus plerumque nullius meriti, & inhabiles Mo-
nacos, inter frequentes Capitulorum hujusmodi cele-
brationes, & crebras inde provenientes dignitatum,
& officiorum ac munerum attributiones, & transla-
tiones, illas hac opportunitate dumtaxat sibi patefa-
ctas ambire, & ad illas administrandas, non mediocri
totius Universitatis & Congregationis hujusmodi dis-
crimine, & dedecore pervenire, immensis præterea
sumptibus qui pro continenter consigralium in hac
Capitula annua delectarum personarum viatico sup-
pediantur, rem familiarem Monasteriorum prædi-
ctorum exhauriri, multiplice hæcenus documento
comptum est; & sicut ipsius Congregationis decre-
ta & statuta, quæ perpetuè illius Universitatis utilita-
tè continènt immutata manere, & omni peraque
tempore observari, similiter illa quæ aut usus coar-
guat, aut status ipsius Ordinis inutilitatem, vel offen-
dit, pro rerum & temporum conditione, meliorem
accipere formam, & prout conducit illa accommodari
convenit. Ac propterea dictus Joannes Episcopus, &
Cardinalis qui totius Cisterciens. Ordinis Protector

existit, re maturè respecta ac ex novissimis in Monas-
teriorum, & locorum ejusdem Congregationis de
mandato nostro facta visitatione, de illorum, & per-
sonarum in eis residentium statu debite informatus,
tam Capitulorum hujusmodi celebrationem differri,
quàm de nonnullis aliis ipsius Congregationis or-
dinationibus convenienter, & ex utilitate commu-
ni statui summopere desiderat. Quare idem Joan-
nes Episcopus, & Cardinalis Nobis humiliter sup-
plicavit, quatenus in præmissis opportune providere
de benignitate Apostolica dignemur.

S. 2. Nos igitur qui cunctarum præsertim Religio-
sarum personarum pacem, quietem, ac salubrem
directionem sinceris exoptamus affectibus, hujus-
modi supplicationibus inclinati, ut deinceps Capitu-
lulum prædictum singulo quoque triennio tantum,
in loco ubi singulis annis celebrari antea consueve-
rat celebrari.

S. 3. Et ne dilatio temporis hujusmodi efficiat,
quod assumpti ad novas dignitates, arbitrio suo, non
servatis constitutionibus, res & negotia dictæ Con-
gregationis, illiusque Monasteriorum administrent,
singulis annis loco Capituli annuatim celebrari an-
tea solici Visitatores destinari.

S. 4. Ac quod loci Prælati, Discreti nuncupati,
unus videlicet isque sacerdos pro quolibet Monas-
terio per fortes sine fraude, ac servatis solemnitatibus
in novis desuper conficiendis, & renovandis con-
stitutionibus eligi, & ex consuetudine per buras Mo-
nasteriorum ad arbitrium Patrum Regiminis distri-
bui. Ad fraudes autem in sortibus ponendis, illis-
que distribuendis contingentes evitandas, Superio-
res utriusque Provincie prædictarum & anno in quo
Capitulum celebrandum fuerit, omnes Monachos
vocales in eodem Monasterio in quo eligendi sunt
Discreti infra totam Dominicam Septuagesimæ di-
stribuere, dictasque distributiones ad singula mona-
stera ad hoc ut à Prælati illorum Monasteriorum
pro extrahendis postea in una ex tribus proximis
feriis Paschalis Sanctissimæ Resurrectionis, ex eis
Discretis, qui sacerdotes vocales existant, ad Capitu-
li celebrationem mittendis imbuerunt mittere;
sin autem aliquo Monasterio quatuor sacerdotes vo-
cales ut supra reperi non fuerint, unus vel plures
prout opus fuerit ad supplendum talem numerum
ex alio viciniore Monasterio, in quo ultra quatuor
extiterint assumpti, & imbuturi in ipso Monasterio,
præsentibus & intervenientibus pro veritatis testi-
monio ceteris aliis in illo Monasterio commoranti-
bus inter saltem quatuor sacerdotibus interveniant ex
alio Monasterio vocandi, si in eo haberi non pote-
runt fieri, sicque electi Discreti ad Capitulum ac-
cessuri, Litteras testimoniales fidem facientes, de
legitima eorum electione, ab omnibus sacerdotibus,
seu saltem à quatuor eorum qui intervenerint elec-
tioni, omni invidia, & malevolentia cessantibus,
sub utriusque vocis per sexennium privatione om-
nino, nisi aliqua iusta de causa Patribus Capitulari-
bus notificanda, & ab eis iudicanda recusarent, sub-
scribendas, & coram Prælato statim secuta electione
subscriptas, aliter sine litteris hujusmodi ad Capitu-
lum non admittendi, secum deferre, & habere, ac
comitia deinde Capitularia tertiâ Dominicâ post
Pascha Resurrectionis hujusmodi celebrari. Ad di-
ctum autem Capitulum Visitatores, & singuli Præ-
lati Monasteriorum seu locorum cum suo Discreto,
ut præsertur electo accedere.

S. 5. Præsidens autem ætate non minor annis tri-
gintaquinque; qui per decennium sacerdotis officio fun-
ctus fuerit, & non minus sexennio in Prælatibus ho-
norificè se gesserit, qui etiam per Definitorum Prælatum
alicujus monasterii Provincie in qua Regimen comor-
natur, videlicet pro Provincia Tuscia in partibus Flo-
rentiæ, & pro Provincia Lombardiæ in partibus Me-
diolani, auctoritate tamen in spiritualibus, quàm in tem-
poralibus in omnibus Monasteriis dictæ Congrega-
tionis, & tam in Capitulis, quàm in membris habitus-
super hujusmodi Congregatione similiter eligatur
eligi, & dictus Præsidens omnes Prælatos dictæ

Pontificis
iustio di-
ctum Capitu-
lum cele-
brandi quolibet trien-
nio.

Visitatoresque
singulis an-
nis destinandi.

Discretos ut
hic eligendi.

Præsidem
etiam totius
Congrega-
tionis caput
constituendi.

Equo infra
triennium
decedente,
lium ejus
oco, utque
ad Capitulum
sufficiendi.

Scrutatores
uos cum fa-
ultate hic
nunciata
eputandi.

Definitores
septem pro
vincia eli-
endi.

Defini-
tores Prae-
fidentem Ca-
pituli ex se
surgunt.

in primo
Capitulum
Provin-

Congregationis pro emergentibus causis intra annum triennium convocare, & omnia utilia universae Congregationi de consensu majoris partis, assistentibus etiam Visitatoribus decernere debeat, ac in Regimine utriusque Provinciae quoties & ubicumque ipse Praefidens interfuerit si quid agendum erit ipse idem, licet ex ea Provincia non existat, nihilominus assistat, & vocem habeat, & tanquam caput universae Congregat. Monachos de loco ad locum mutare, & ex Provincia ad Provinciam legitimis interventibus causis auctoritate etiam propria mittere possit; illosque sic mutatos, & mittendos Superiores locorum perinde recipere, ac si a Definitoribus factum foret teneantur. Ipsique soli Praefidenti ad Romanam Curiam, etiam non habita à Regimine licentia, sed tantum notificatio prius suo recessu accedendi sit auctoritas; & singulis annis cum Visitatoribus ad visitationem se conferre, etiam causas terminare, ac decidere, necnon congregatis omnibus Capitularibus aequaliter vocem & suffragium habentibus, ordinem consecretum omnes Officiales; & se ipsum absolvendi servare debeat.

§. 6. Et si praedictum Praefidentem intra suum triennium decedere contingat, alius Praefidens, in illius locum cum simili potestate ad proximè futurum usque Capitulum tunc duraturus per duodecim Patres Regimini utriusque Provinciae infimul congregatos, & de consensu illorum omnium seu saltem octo ex illis eligi.

§. 7. Præterea duo Scrutatores qui vota scripta in schedulis singulorum vocalium de Definitoribus eligendis aperiant, & super illis scrutinium faciant, praestito prius coram omnibus juramento de veritate referenda & servanda fidelitate pro qualibet Provincia juxta solitum ab omnibus Capitulum. eligi, qui casu quo sefellerint ipso facto excommunicentur, & a qua non nisi in mortis articulo à Praefidente, vel ab eo cui ipse Praefidens suam auctoritatem subdelegaverit absolvi possint in foro conscientiae, incurrant. Et si fraus manifesta erit & probata, fiat etiam privati in perpetuum voce activa & passiva, & inhabiles ad quaecumque officia exercenda, nisi ex dispensatione Apostolica, & de consensu Definitorum aliter fuerit decretum. Ipsique Scrutatores utriusque Provinciae infimul schedulas ipsas ut legitime adnotentur Definitoribus videre debeant; & si ipsi Scrutatores in aliquam fraudem invicem consenserint, eandem poenam incurrant.

§. 8. Præterea septem Definitorum per schedulas pro qualibet Provincia, ac unoquoque vocale, ut moris est, sigillatas prius sigillo Praefidentis, & subscriptas a duobus Senioribus majoribus qui assistant, ut recognoscantur in quibus schedulis nomina omnium vocalium habeantur, ex quibus nomina illorum qui in illo Capitulo Praefati accesserint signata sint in margine paginae signo Crucis, & ex ipsis signatis eligi, & reliqui in dictis schedulis ad minus quinque, & reliqui duo numerum septenarium conficiantur pro Definitoribus cuiusque Provinciae arbitrio, & secundum conscientiam eligentium eligi; & si aliqua ex illis schedulis à Scrutatoribus reperta fuerit non habens septem nomina relicta pro Definitoribus, & non fuerint in ea quinque signati dicto signo Crucis, schedula illa pro nulla habeatur, & ut invalida rejiciatur, ita etiam quod nullus in suis favorum votum dare, aut se ipsum eligere possit.

§. 9. Utque electiones faciendae à Definitoribus maturè & consideratè, & non casualiter fiant. In primis praedicti Definitorum unum ex ipsis Praefidentem Capituli, qui tamen non sit illius Provinciae in qua Capitulum tunc celebratur, ætatis & qualitatibus in Praefidente triennali supra dicto requiritur eligere, ut si contingat postea illum eligi in Praefidentem triennalem, nulla in electione occurrat alia inquisitio.

§. 10. Et deinde in isto primo Capitulo pro qualibet Provincia tot Sacerdotes, quot sunt Praelaturæ

in Provincia, & ultra alios Sacerdotes quatuor habiles ad Praelaturam exercendam approbare debeant; qui etiam ad Visitatoris majoris officium similiter approbati intelligantur; quodque ii tantum ad Praelaturam, & ad Visitatoris majoris officium approbentur, qui officia minora dignè gradatim saltem biennio in quolibet officio fideliter exercuerint; semel autem approbati semper habiles intelligantur.

§. 11. In futuris verò Capitulis numero approbatorum, per obitum aut ratione perpetrati per aliquem delicti privationem deficiente, & non aliter, alii in illorum locum approbentur. Ita quod semper numerus quatuor tantum extra Praelaturas à quolibet Capitulo habeatur.

§. 12. Et si intra triennium aliquem Praelatorum decedere vel à Visitatoribus, vel à Capitulo ob aliquam demerita privati contigerit, alius extra numerum approbatorum assumi minime possit, aliterque facta irrita sit & nulla, & à Capitulo non recipiatur electio, necnon talem Praelaturam acceptans se non probatum, nec in electione sua fuisse servatam formam electionis supra traditam sciens, ipso iure utraque voce per decennium privatus censeatur, sua electione hujusmodi propterea nulla & invalida remanente.

§. 13. Ex illis autem approbatis, & prius publicatis Definitoribus Provinciarum Praelatos & Visitatores majores per schedulas, ut moris est, eligere.

§. 14. Praefidens verò triennalis à Definitoribus utriusque Provinciae, seu saltem à decem ex ipsis per suffragia fabrum eligi, & nullus Praelatus eodem tempore & anno, præterquam in isto primo Capitulo approbati & eligi. Itemque praefati Definitorum omnimodam auctoritatem super tota Congregatione.

§. 15. Ita quod ab eorum sententia nemini appellare liceat, quinimò eorum decretis & terminationibus quorum acta per Scribam deputatum in libro perpetuo servando à praedicto Praefidente pro tempore existente adnotentur, omnes acquiescere teneantur, habere; ipsorum tamen officio ultra decem dies minime, nec minus quinque duratur.

§. 16. Ac iidem in isto primo Capitulo taxam viatici pro Praefidente ordinare.

§. 17. Necnon duos ex quolibet Provincia Praelatos, qui infra sex menses constitutiones & reformationes ipsius Congregationis quæ necessaræ fuerint ex antiquis & novis colligere, illasque ad praedictum Joannem Episcopum & Card. Apost. auctoritate postea confirmandas vel rejiciendas mittere, & postquam confirmatae fuerint, typis cum Praefentibus Litteris excludi, & ab omnibus & singulis praedictæ Congregationis personis inviolabiliter observari, nec in posterum quidquam desuper maxime in his quæ statum publicum ipsius Congregat. concernunt, immutari debeant, eligere.

§. 18. In faciendis autem electionibus Capitularium, Scrutatorum, Definitorum, Visitatorum, Praelatorum, & Praefidentis, quoniam difficillimum est, & quasi impossibile foret votum aliquando non communicari, liceat unicuique pro exoneratione suæ conscientiae ante votum suum ferendum, aliquem magis instructum consulere, & per modum informationis, & consilii vocem suam si ita videbitur accommodare, absque alicujus censuræ, aut poenarum incurfu.

§. 19. Quatuor autem Visitatores, duo ex una Provincia, & duo ex altera eligi, ac majores professiones tantum ex ipsis Visitatoribus vocem capitularem habere, qui majores quolibet non autem illo quo Capitulum generale celebratum fuerit anno, de mense Maii assumpto Praefidente, & pro Scriba Visitatore minore illius Provinciae cuius fuerit Praefidens sese ad visitandum Monasteria dictæ Congregat. cum eadem quam habet Abbas Cisterciensis, & aliis quatuor primi Abbates dicti Ordinis auctoritate confer-

cia tot approbent Sacerdotes quot sunt Praelaturæ, & alios quatuor

Deficienteq; approbatorum numero, alii in futuris Capit. sufficientur.

Praefato infra triennium decedente vel privato, alius numero approbatorum eligatur.

Ex eisdem Definitoribus & Visitatoribus eligantur.

Praefidensq; à Definitoribus eligatur.

Definitores auctoritatem habeat super tota Congr. durante eorum officio.

Taxam Praefidentis praefiniant. Praelatos ad firmandas & ovas constitut. deputent

Vota in eligendis Praelatis, alteri per modum consilii communicare liceat.

Visitatores quatuor eligantur, quorum majores professiones visitent ut hic.

Acta Visitationis ad Cap. referantur.

Prelato aliquo privato Vicarius deputetur usquequo &c.

Electioes minores permittuntur Visitatoribus. Visitatioesque Monasteriorum, & deputatio Conventuum.

Hoc revocavit idem Pont. in sua consuetudine omitti nihil aliud continente.

Prelati quando possint à Visitatoribus vel Definitoribus deponi.

Et ultra triennium confirmari.

Ex à Prælatu postea vacare.

Regimen utriusque Provinciae in quibus Prælati de Cap. ad Cap. constitut.

re, ac illorum visitatio singulis vicibus per totum mensem Junii absolvi.

§. 20. Acta autem Visitationis quæ facta fuerint in duobus annis præcedentibus singula ad Capitulum generale celebrandum, ut etiam ipsi Visitatores rationem illorum visitationis reddere possint, deferri debeant.

§. 21. Et si contigerit Prælatus aliquem privati suo officio, unus Vicarius tantum à Visitatoribus usquequo à Patribus regiminis illius Provinciae alter ex probatis Prælati in illius locum eligatur, eligi.

§. 22. Electiones autem minores, videlicet aliquorum Officialium Prælati exceptis, in capsa privationis huiusmodi ab ipsis Visitatoribus fieri.

§. 23. Moniales à Visitatoribus illius Provinciae cuius ei sunt, visitari, & in illarum Monasteriis confessorum, prout opus fuerit, per triennium deputari, dictoque triennio elapso in aliud triennium prorogari, ita tamen quod quamdiu confessorum extiterint, neque Prælatum exercere, neque inter Patres regiminis adnumerari possint, eligi.

§. 24. Prælati autem neque ab ipsis Visitatoribus, neque à Definitoribus, nisi ob notoria demerita, & seu ob incursum alicujus ex infra scriptis erroribus videlicet: In divinarum officiorum & Missarum celebratione notabili negligentia, & Ecclesie sibi commissæ, ita quod ejus culpa horæ canonicæ & alia divina officia non recitentur, semel saltem à Visitatoribus desuper admonitus neglectu, aut de hæresis incursum vel suspitione vehementi, necnon pro falsi testimonii, aut calumnie, detractionis crimine convicto, aut iudicium & Principum sæcularium, vel non habentium jurisdictionem super Congregat. & Ordinem ad impediendum Ordinis observationes, & tuenda sua crimina imploratione, & refugio petito, vel contagione carnis, ordine juris prius servato, verificata, aut enormium suorum subditorum criminum notabili post præcedentem monitionem dissimulatione, vel blasphemiam, & percussione consuetudine, vel bonorum Monasterii notabili dissipatione, & contemptu, seu libelli infamatorii editione vel scriptura, necnon mercaturarum propriarum exercitio, ac notabili absentia, aut non residentia in Monasterio cum commissis sibi greges sine Superiorum permissione, monitione etiam præcedente. Ex quibus omnibus casibus Privatus, amplius nisi à Capitulo, & tunc viva ejus humiliorum approbatio debeat, nec præter hos casus privari vel amoveri, nisi cum ad majorem dignitatem ob supervenientem alicujus mortem assumendi causa non possit.

§. 25. Ac non modo triennium eidem Monasterio integrum præesse, sed si administratio ejus laudabilis in eo triennio reperta fuerit, & utilis suo Monasterio à Capitulo in eodem Monasterio per aliud triennium confirmari possit; quod quidem iustitiam, initium à proximè futuro Capitulo, nulla adhibita temporis præteriti, neque Prælaturarum antea obtenturarum consideratione, sumere.

§. 26. Talis autem per sexennium Monasterio præfectus, tempore sex annorum à Prælatu illius Monasterii per triennium tantum vacare, & postea de novo eidem Monasterio præfici valeat.

§. 27. Regimen verò utriusque Provinciae prædictarum de uno Capitulo ad aliud spectet, prout in nostris reformatione, & divisione per quam Capitula dictæ Congregat. licentiam & facultatem concessimus, ut duo regimina singulis annis constituantur quorum unum Lombardiam, alterum verò Tusciæ Provinciam præsit, & quorum quodlibet sex Monachis constet; in hunc videlicet modum, ut quando Præsidentem qui eligitur erit ex Provincia Lombardie, tunc regimen ipsius Provinciae Lombardie consistat ex dicto Præsidente, & duobus visitatoribus Lombardie, necnon tribus Abbatibus etiam Lombardie à Capitulo nominandis, Regimen verò Tusciæ eo anno sit penes Abbatem Monasterii Sep-

timi dicti Ordinis, Florentinæ Diocesis, ac duos visitatores Tuscos, necnon tres Abbates etiam Tuscos à Capitulo pariter nominandos. Cum verò contigerit Præsidentem eligi unum ex Provincia Tusciæ, tunc regimen illius Provinciae sit penes ipsum Præsidentem, ac duos Visitatores Tuscos, necnon tres alios Abbates etiam Tuscos à Capitulo, ut supra constitutos, Regimen verò provincie Lombardie eo anno habeant Abbas Clarevallensis, Mediolanensis & duo Visitatores Lombardi, necnon tres alii Prælati etiam Lombardi à Capitulo, ut præfatur eligendi. In quorum omnium electione forma in eligendis dictæ Congregat. Prælati observari solita omnino observetur, & Superiores electi ultra triennium non durent; & si contingeret unum ex Superioribus electis suo durante officio decedere, & alium in ejus locum subrogatum in proximo sequenti Capitulo confirmari, seu de novo eligi, declaravimus, tempus triennii ad obtinendas Prælaturas concessi, non à die subrogationis, sed à die confirmationis, seu electionis in Capitulo generali factæ incipere debere.

§. 28. Et ad omnia dictorum Patrum regiminis, fideliter à Scriba notata, ad Capitulum in libro deputato deferantur.

§. 29. Et si contigerit aliquem Commendatarium Monasteriorum Ordinis prædicti, Monasterium sibi commendatum reformare, & mensas peculiares & separatas in bonis assignare per litteras Apost. juxta consuetudinem Congregat. talia Monasteria sub regulari observantia esse per totam Italianam prædictæ Congregat. & annexa Provincie viciniori censentur, prout in litteris Alexandri, & Julii prædecessorum prædictorum desuper sanctis continetur.

§. 30. Ac quod Prælati Cistelli & Bonifolati ad Capitulum cum Discreto accedere, ut moris est. Et quamquam sint Monasteria subiecta Abbati dicti Monasterii Septimi, nihilominus etiam ipsi Abbates cum jurisdictione solita & consueta ceteris Abbatibus vocari, & illis per Definitorum in primo celebrando Capitulo per Monachorum in eis existentium faciliiori sustentatione; & ne divinus cultus in eis negligatur bona aliqua ex dicto Monasterio Septimi per ipsos Cistelli & Bonifolati Prælatos ad instar aliorum Prælatorum ejusdem Congregat. regenda & gubernanda assignare debeant; Ac eidem Monasteriis Cistelli & Bonifolati, idem pro tempore existens Abbas dicti Monasterii Septimi in spiritualibus tantum præesse, & in Septimi huiusmodi Monasterio residere teneatur.

§. 31. Liceatque Priori nunc & pro tempore existentis Monasterii Morimundi ejusdem Congregat. cuius titulus Abbatialis per bonorum illius mensæ Abbatialis per piæ mem. Pium PP. IV. etiam prædecessorem nostrum hospitali majori Mediolanensi suppresso dicto titulo Abbatiali applicatæ separationem à mensa Monachis assignata factam vacat, & in quo studium existit, ac in eo Novitii ab Abbate benedicensi ad professionem admittuntur titulo Abbatis Monachorum sui Monasterii & suæ mensæ uti Apost. auctoritate tenore Præsentium statuimus & ordinamus.

§. 32. Ad hæc Litteris piæ mem. Alex. VI. & Leonis, ac Julii II. per quas inter alia voluerunt quod Monachus professus unius Monasterii, intelligatur professus aliorum Monasteriorum dictæ Congregat. & professus unius Provinciae non possit ad aliam Provinciam nisi ob demerita, vel ex gratia transmitti. Et Procuratores in Curia ad Capitulum tamquam Prælati accedere, ibique vocem activam & passivam, quatenus per Patres Definitorum decerneret ita fore habere possint, ac privilegia & indulta in suo robore remanere, & omnibus Monasteriis communia esse, æqualitate in negotiis Provinciarum administrandis servari debeat.

§. 33. Necnon recol. mem. Leonis Decimi simi.

Eorum acta ad Cap. deferantur.

Monasteria reformanda viciniori Provincie annexa censentur.

Prælati Cistelli & Bonifolati sint proprie Abbates cum jurisdictione solita.

Prior Morimundi titulo Abbatis utatur.

Constitut. Alex. VI. & Jul. II. confirmantur.

liter prædecessoris nostri, per quas quod nullis dictæ Congreg. personis sub excommunicationis latæ sententiæ, ac inhabilitatis ad vocem activam & passivam, necnon ea quam fugitivi ex dicta Congreg. juxta illius instituta, & Sedis Apostolicæ ordinationem incurunt penas ipso facto si contravenirent incurrentibus, districtè præcipiendo mandavit, ne de cetero quispiam eorum, per se vel alium seu alios, directè vel indirectè, quovis quæstio colore, quodvis ex his quæ circa dictæ Congregat. & illius locorum regimen, & bene vivendi normam, sive per dictam Sedem, sive per generale Capitulum Congregationis ejusdem providè essent disposita, & disponerentur in posterum impugnare quoquo modo præsumerent; & si quæ controversiæ inter eos dum Capitulum generale hujusmodi celebraretur pro tempore suscitarentur, per illius Capituli Definidores, si verò extra Capitulum orirentur, per Præsidentem & Visitatores dictæ Congregationis, qui pro tempore forent, componi eas & terminari libere permitterent, & dictorum Definitorum ac Præsidentis, ac Visitorum decreta & ordinationes desuper faciendâ inviolabiliter observarent.

§ 34. Postremò sanctæ mem. Pauli III. eidem prædecessoris nostri per quas statuit, quod de cetero omnes & singuli Prælati & Superiores, ac etiam dictæ Congregat. Monachi cujuscumque gradus existentes, qui bona seu fructus Monasteriorum Congreg. hujusmodi sibi sub quocumque prætextu sine ipsius generalis Capituli expressa, vel omnium Definitorum hujusmodi Congregat. licentia usurpare præsumerent, ultra penas & censuras in tales per regularia instituta Ordinis & Congregat. hujusmodi latas, regimine & administratione omnium Prælatorum & officiorum Ordinis & Congreg. prædictorum, ac voce activa & passiva eo ipso privari, & ad illa & alia quæcumque, Prælatas & officia in posterum habenda & exercenda perpetuò inhabiles censentur. Quodque ipsi Prælati & Superiores eorum Monachis de victu & vestitu, ac aliis necessariis juxta eadem instituta providere, ipsosque Monachos & alios eorum subditos errantes corrigere, ac singulis eorum de gestis & administratis per eos Visitoribus dictæ Congreg. seu Deputatis ab eis rationem reddere tenerentur; necnon monasteria Monialium nisi illarum Confessorum per ipsos Congreg. Definidores pro tempore existentes deputati forent ingredi, ac cum ipsis Monialibus conversari nequirent, ac electiones Prælatorum, & Superiorum eorumdem, rite & sine ambitione ac corruptela celebrarentur, nec in hujusmodi electionibus libertas quoquo modo directè vel indirectè impediretur, sed unicuique animi sui sententiam exprimere liceret robur Apostolicæ confirmationis adjicimus.

§ 35. Postremò dictis Definitoribus creandi tres titulos Abbatiales ex unaquaque Provincia illius distribuentis inter senes effectus & inhabiles ob mataram eorum ætatem nominandos quorundam locorum annexorum aliis monasteriis majoribus dictæ Congregationis. Et Abbates titulares hujusmodi, privilegiis aliorum Abbatum gaudeant, sed vocem Capitularem non habeant, & locum suum teneant post Prælaturam illius loci in quo resederint, & servitus, ac honor debitus illis exhibeatur. De quibus titulis Abbatialibus unus servetur, & detur illi, qui fuerit electus Visitor major dictarum Provinciarum, qui Visitoris, non tituli Abbatialis, sed Visitoris causa & respectu ad Capitulum accedat sicut antea, absque tamen socio discreto, sed tantum retineat hujusmodi dignitatem majoris honoris causa, & ad conservandum dicti Ordinis decus, licentiam & facultatem concedimus ac impartimur.

§ 36. Decernentes quod causarum seu questionum & differentiarum quæ non fuerint motæ in novissima visitatione, de mandato prælati Joannis Episcopi & Card. Apostolicæ, tamen auctoritate per Præsiden-

tem dictæ Congreg. facta, & in proximo futuro Capitulo non detegantur, & iustificata non fuerint, nulla in posterum actio habeatur, sed de eis ac rebus elapsis annis præteritis censi impositum perpetuum silentium ad effectum post celebrationem Capituli proximè futuri nemini liceat impropere alicui defectus præteritis verbo vel in scriptis, sub pena excommunicationis latæ sententiæ, à qua non nisi per Sedem prædictam, & præterquam in mortis articulo absolvi possit, & privationis utriusque vocis per decennium; quæ verò cognita fuerint, & punita in dicta visitatione, & quæ forsitan cognoscantur & puniuntur, in proximo Capitulo observentur, sed nulli liceat eas alteri impropere sub eisdem penis, teneanturque Prælati intimare Monachis suis, ut si quis aliquam adversus quempiam habeat querelam, notificet Capitulo proximè celebrando, alioquin amplius non audiantur, & silentium imponatur, sub eisdem penis, finito Capitulo ordinario.

§ 37. Quocirca dilectis filiis Curie causarum Camere Apostolicæ generali Auditori, & Venerab. Fratr. nostrorum Mediolanensis ac Florentini Archiepiscopi, in spiritualibus Vicariis generalibus, per Apostolicæ scripta mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum, per se, vel alium, seu alios, Præsentes Litteras, & in eis contenta quæcumque, ubi & quando expedierit, solemniter publicantes, faciant easdem Præsentes Litteras, & in eis contenta quæcumque inviolabiliter observari, contradictores per censuram Ecclesiasticam appellatione postposita compescendo.

§ 38. Non obstantibus similis mem. Bonifacii Papæ VIII. pariter prædecessoris nostri, illa præsertim qua inter alia cavetur, ne quis extra suas Civitatem & Dioecesim, nisi in certis exceptis casibus, & in illis ultra dictam à fine suæ Dioecesis ad iudicium evocetur, seu ne Iudices à Sede prædicta deputati extra Civitatem & Dioecesim in quibus deputati fuerint contra quoscumque procedere, aut alii vel aliis vires suas committere audeant vel præsumant, & de duabus dietis in Concilio generali edita, dummodo ultra duas dietas aliquis auctoritate Præsentiali ad iudicium non trahatur, ac aliis constitutionibus & ordinationibus Apostolicæ necnon Ordinis, & Monasteriorum, ac locorum hujusmodi, juramento, confirmatione Apostolicæ, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indultis & litteris Apostolicæ Ordini & Monasteriis, ac locis prædictis, illorumque Abbatibus, Prioribus, Prælatibus, ac aliis Superioribus & personis quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & efficacissimis ac insolitis clausulis, necnon irritantibus & aliis decretis, in genere vel in specie, ac aliis in contrarium quomodolibet concessis, ac etiam iteratis vicibus approbatis & innovatis; quibus omnibus etiam si de illis eorumque; totis tenoribus specialibus, specificis, expressis & individuis, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque, aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Sede in ultimum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicæ, non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem, & qualibet alia dictæ Sedis indulgentia, generali vel speciali cujuscumque tenoris existat, per quam Præsentialibus non expressam, vel totaliter non insertam, effectus hujusmodi gratiæ impediri valeat quomodolibet vel differri, & de qua cujuscumque toto tenore habenda sit in nostris Litteris mentio specialis.

Nulli ergo omnino &c.

Dat. Romæ apud S. Marcum, anno Incarnatio-

ANNO 460
1579.

GREGORIUS DECIMUS-TERTIUS.

ANNO
1579.

LV.

nis Dominicæ 1578. 10. Kal. Junii, Pontific. no-
stri anno 7.

Ordinationes pro bono regimine Fratr. Minorum
S. Francisci strictioris Observantiae.

*Congregationem istorum Fratrum tempore Clem. VII.
institutam, approbavit ipse, & nonnulla pro ejus gu-
bernio statuit, ut supra in ejus constit. 35. In su-
prema. fol. 502. ubi plenè notavi de his Fratribus,
& remissive de toto Ordine S. Francisci.*

Hanc autem constitutionem declaravit Clem. VIII.
inf. in ejus constit. 45. Pro injuncti. fol. 67. Tom.
III. Ultra quam, vide etiam constit. 31. Pauli V.
Postulat. in d. Tomo III.

Edita A.D.
1579.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Um illius vicem, meritis licet minimè suffra-
gantibus, geramus in terris, qui pacem in terras
intulit, charitatemque ad invicem præ ceteris omni-
bus ejus fidelibus præcipit, officii nostri debitum pro-
sequimur actionem, si Regularium personarum, quæ
relictæ sæculo, sub suavi voluntariæ paupertatis ju-
go, Dei obsequio se dedicarunt, pro commisso No-
bis officio, concordia, ac quieti consulere cupien-
tes, pacem & charitatem inter ipsos inducere, induc-
tamque conservare, & quæ iis contraria sunt, sæpe vigi-
lantia Pastoralis ad radicem posita, prout rerum &
temporum qualitas requirit, quantum Nobis ex al-
to conceditur, totis viribus curamus.

Clem. VII.
approbavit
itam Cong.
Reformato-
rum & non-
nullas edidit
ordinationes
in constit. de
qua in rubr.

§. 1. Sanè licet aliàs per fel. record. Clem. VII.
prædecessorem nostrum multa ad quietum & tran-
quillum statum pertinentia dilectorum filiorum pro-
fessorum Ord. Frat. Minorum S. Francisci de strictiori
Observantia Reformatorum nuncupatorum (ut qui
Regulam ipsam B. Francisci purè & plenè juxta il-
lius litteram, & declarationes Nicolai III. ac Clem.
V. Rom. Pont. prædecessorum nostrorum, ut veri B.
Francisci filii & alumni observare contendant) edita
& statuta fuerint, ut in litteris Clem. VII. sub datum
Romæ apud S. Petrum 16. Kal. Decembris, Pontific.
sui anno 9. latius continetur.

Frates de
Observantia
illos desuper
molestabant.

§. 2. Nihilominus quidam ex Reformatis supra di-
ctis Nobis detulerunt, quod ipsis Reformatis, quam-
plures perturbationes, damnaque non mediocria à
dilectis filiis Frat. Minoribus de Observantia nuncu-
patis, sub quibusdam prætextibus, etiam contra dic-
tarum litterarum Clem. VII. formam, inferebantur.

Hic ideo
Pont. aliqua
addit circa

§. 3. Nos igitur eorumdem Frat. Reformat. nuncu-
patorum quieti & indemnitati, ejusdemque Ordinis
prosperitati ac propagationi consulere volentes,
Venerab. Frat. nostris S. R. E. Card. super causis
Episcoporum & Regularium deputatis, atque etiam
ejusdem Ordinis prædicti Protectori, causam hujus-
modi audiendam & cognoscendam commisimus.
Qui re maturè discussa, necnon quorum interest, aut
intererat partibus auditis, Litterisque Clem. VII.
prædictis plenè consideratis, Nobis retulerunt, quæ
reformationem hujusmodi magis prosperè dirigere
visa sunt. Quare de eorumdem Cardinalium consilio,
Litteris Clem. VII. prædictis addenda quædam
decrevimus.

Novitiorum
professionem

§. 4. Itaque volumus, & Apost. auctoritate statuimus
& ordinamus, ut Novitii Reformatorum
præcætes & futuri annum continuum inter dictos
Reformatos agant, ad deliberandum, an inter Re-
formatos prædictos permanere velint à die ingressus
in Custodias, seu loca Reformatorum. Si verò
in familia Frat. de Observantia professionem emis-
erint, & ad Reform. de strictiori Observantia transie-

rint, vel in futurum transire voluerint, habeant ite-
dem annum continuum à die ingressus ad delibe-
randum, an remanere in hac strictiori Observantia
voluerint.

§. 5. Post præsentium autem nostrarum publica-
tionem, & dictum annum completum, declaramus
prædictos professos extra Reformatos, haberi ut
professos inter custodias Reformatorum, nec ipsos,
sicut nec alios inter eadem custodias professos, ab
iis, sine speciali Apost. Sedis licentia, recedere pos-
se, sine Apostolicæ rota. Quo etiam anno peracto,
tam Novitios in Custodiis expresse professos, quam
professos in Familia, & in Custodiis annum continuum
agentes, volumus ad puram & plenam Regulæ S.
Francisci Observantiam, juxta ipsius litteram, ac Nico-
lai III. & Clem. V. Rom. Pont. declarationes, &
Clem. VII. Litteras prædictas teneri, nec ab ea Re-
formatorumque ipsorum obedientia recedere, mi-
nusque à Reformatis ipsis expelli valeant, nisi incor-
rigibiles, juxta antiqua eorum instituta hæcenus ob-
servata, & nisi qui ad Capucinos transiendi licen-
tiam in scriptis, juxta Pauli III. & Julii III. litteras,
à proprio Custode obtinuerint.

De eorum re-
cessu post
professio-
nem.

§. 6. Liberum verò sit eidem Custodi, etiam nullo
Ministri Provincialis, vel aliorum suorum Præla-
torum habito vel requisito consensu, vel licentiâ, nul-
loque cum iisdem verbo facto, per se vel alium juxta
Tridentini Concilii formam, atque Ordinis con-
suetudinem, Novitios, necnon & Frat. Ordinis præ-
dicti de Observantia, tam propriæ quam alienæ Pro-
vinciæ reformandos, ad Ordinem ac professionem &
reformationem pro sua Custodia, abique ullo peni-
tus impedimento, de consilio tamen & consensu
Frat. illius loci, pro quo recipiuntur admittere.

Custodis
munus in re-
cipiendis
Novitiis &
Fratibus de
Observantia

§. 7. Teneantur autem Ministri Provinciales, vel
illo absente Præsides Capituli, vel Congregat. &
Definitores in Capitulis & Congregationibus Pro-
vincialibus, quando familiæ mutari solent, ad peti-
tionem dictorum Reformatorum, alia etiam Provin-
ciæ loca five Monasteria, aliis Reformatorum locis,
quantum fieri poterit contigua vel commoda, juxta
ejusdem Clem. VII. litteras, dare & assignare, &
Prioribus eorum locis addere; nec Frat. Reformato-
rum paucitatem, (dummodo ad decem Frat. re-
cipiendos sint idonea, vel brevi tempore in ea
illos introduci posse sperandum sit) nec aliam quam-
piam exultationem quo minus id faciant, objicere
possint.

Loca Refor-
matis assi-
gnanda. Ad
hoc extat o-
rdinatio constit.
Clem. VII.
cit. in rubr.

§. 8. Generalis Minister dictorum Fratrum de
Observantia tantum, minimè autem Provincialis,
sive alii dictorum Fratrum de Observantia Præla-
ti aut Commissarii, in dictos Frates Reformatos,
sive illorum Custodias jurisdictionem, visitandi-
que & corrigendi facultatem, sive per seipsum, si-
ve per ejusdem Ordinis, etiam alienæ Custodiæ
Reformatos ipsos habeat; minimè tamen possit ali-
quem ad Prælationem vel officia, etiam in Custodia
promovere, aut corrigendis, vel quovis præ-
textu, statutis, censuris, casibus, reservationibus
propriis vel Ordinis, Reformatos subjugare, aut
Custodias, Custodis, vel Frat. Reformatorum respec-
tive potestatem, facultatem, immunitatem, con-
cessionem, gratias, statuta, & pacem, quovis prætex-
tu, modo, & quævis colore, directè vel indirectè
annulare, suspendere, arctare, alterare, immutare,
impedire, contra facere, aut inquietare, nec
etiam de propria eorum Custodia, domibusque &
locis, nisi pro aliarum Custodiarum dicta visitatio-
ne, dictos Reformatos, vel eorum aliquem amo-
vere, extrahere, mittere, vel transferre, nec illos ad
quascunque alias partes, Provincias vel Custodias
& alia propriæ ipsorummet Custodiæ loca, etiam
sub specie prædicationis, mittere, collocare, vel
retinere, nisi prout in singularum Custodiarum Ca-
pitulis, vel ab ipso Custode fuerit ordinatum, loca-
que hujusmodi eisdem Reformatis fuerint assignata;

Minister Ge-
neralis Frat.
de Observ.
& non alii,
facultatem
habet visi-
tandi & cor-
rigendi Re-
formatos ut
hic.

Tu vide
const. 21.
Pauli V. Po-
stulat.

& multo minus ad Reformatorem vel Custodiarum loca non Reformatos, etiam Novitios, vel Monialium confessores, aut alios quoscunque etiam reformatos ad Reformatis non receptos mittere, aut in eisdem collocare vel retinere.

§. 9. Nec etiam Reformati ipsi aliquem prædictorum non reformatum recipere, vel ad convivendum, sive de familia in eorum locis retinere ullo modo possint, exceptis Lectoribus à Prælati ipsorum licentiat, propriæ Custodiæ necessariis. Qui tamen in Custodia vocem activam vel passivam habere non possint, sed illa ad Reformatos tantum in Custodia pertineat; exceptis quoque opportunis Prædicatoribus similiter licentiat, vel impetratis, & hæc pro tempore tantum necessitatis, sed sine consensu Custodis in scriptis, non possint quicquam; dicti Ordinis Prælati, fratres non Reformatos in auditoriis ad ipsorum locorum confines, juxta morem Ordin. pertinentibus ad prædicandum, nec eisdem confinisbus quoscunque Fratres ad elemosinas colligendas deservare,

§. 10. Pro necessariis autem negotiis & aliis piis causis, possint Custodes ad quoscunque Ordin. & aliorum loca, etiam extra Reformatorum Custodias, maxime ad Sedem Ap. officiam, & ad totius Ordin. Protectorem, & pro prædicatione ire, ac Frat. suos mittere, sed causa manendi de familia in locis Ordinis extra Reformatos, pro studio vel alia causa, nullo modo Custodes vel Custodiæ mittere, vel licentiam dare, nec Frat. ire vel manere, nec Prælati Ordinis eos recipere vel retinere possint.

§. 11. Capitula Custodialia singulis annis in propriis Custodiæ locis distinctè, & non extra Custodiam per Reformatos, quando, & ubi per proprium Custodem, vel Custodiam fuerit constitutum, fiant, eant tamen & ipsi Reformati ad Capitula etiam Provincialia, ut in dictis Litteris Clem. VII. statuitur, & in illis vocem non activam tantum, sed passivam posthac habeant. Hujusmodi autem Custodiarum Capitulis, solum Custos qui erit pro tempore, vel eo decedente Commissarius Custodiæ, vel ipse Generalis Minister, si personaliter tantum interesse voluerit, præsidere posthac valeat.

§. 12. In iis autem Capitulis unaquæque Reformatum Custodiæ plenam & absolutam habeat potestatem quæcumque statuta & ordinationes, dummodo contra Deum, animam, ac Regulam, & decreta Concilii Tridentini non sint, juxta litteras Clem. VII. prædictas, concedendi & statuendi, nec in eo per Ministros generales vel Provinciales, vel eorum Commissarios, aut alios dicti Ordinis Prælatos quomodolibet impediri valeat. Electione Custodum per Reformatos ad triennium facta, Custodes per se, vel per litteras in signum humilitatis confirmationem tantum infra mensem petere teneantur à Ministro Provinciali, quandocunque statim facto exhibendam. Possint autem Custodes, etiam dum expectatur, & antequam petatur confirmatio prædicta, cum plena auctoritate liberè officio suo fungi, quod si confirmationem hujusmodi intra tres dies non obtineant, à Sede Apostol. ipso facto tenore Præsentium confirmati censentur. Guardiani verò in Capitulis electi, vel à Custodibus instituti, à Ministro, vel alio quopiam confirmari deinceps non egeant, sed eorum institutio, in Capitulis vel extra ab ipsis Custodibus facta sufficiat. Custos pro tempore electus vel eligendus in suo officio à prima electione continuet ad triennium, videlicet usque ad Capitulum Custodiale, sive citra, sive ultra triennium fiat, absque eo, quod singulis annis rursus eligatur. Custodis autem successoris electio à Custodibus prædecessore, Guardianis, & Discretis locorum Custodiæ fiat, si tamen etiam intra triennium in singula annalibus Capitulis universitatis electorum videretur custodem minime idoneum esse, & universitati Reformatorum non utilem, alium sibi Custodem ex regulæ ipsius præscri-

pto eligere possint & teneantur.

§. 13. Ipso autem Custode decedente, alius Custos extra Capitulum posthac non eligatur, sed aliquis erit Custodiæ Commissarius, usque ad proximum Capitulum Custodiale, prout Reformati in suis Capitulis ordinarunt.

§. 14. Potestatem verò eandem habeant singuli Custodes in suas Custodias, & Fratres, quam Ministri Provinciales in suas Provincias, & Fratres habent, tam ex vigore Regulæ, quam ex Rom. Pont. concessis gratis, dummodo hujusmodi strictiori Observantiæ Reformatorum non sint contrariæ. Præsertim verò Custodes possint loca ipsa juxta eorum exigentiam refarcire & augere locis quæ Guardianum habere non solent, ipsum Guardianum in Capitulis Custodialibus constituere, & in eisdem Capitulis, sive prout in illis fuerit ordinatum, Prædicatores & Confessarios sæcularium, servatâ formâ Concilii Tridentini examinare & approbare, & illis Officium prædicationis, & Confessionum audiendarum concedere, & ad illa promovere, atque à casibus & censuris, Prælati Ordinis reservatis & reservandis, per se absolvere, vel per alium absolvi curare, eos quoque, qui idonei sunt, pro suo arbitrio ad sacros Ordines recipiendos approbare & mittere.

§. 15. Volumus tamen, quod si in Capitulis generalibus constitutiones aliquæ vel decreta, præsentibus litteris & huic Observantiæ strictiori non contraria, sed quæ magis ei favere videantur, ordinata fuerint, Reformati ea observare omnino teneantur.

§. 16. Quo verò ad vestitum, induantur prædicti Reformati vilioribus indumentis, & despecto colore, & possint ea repetiari secundum B. Francisci regulam.

§. 17. Litteras verò prædictas Clem. VII. quatenus supra dictis non adferuntur, auctoritate Apost. tenore Præsentium confirmamus, illisque perpetuæ firmitatis robur adjicimus.

§. 18. Decernentes præsentibus Litt. nullo unquam tempore, de subreptionis vel obreptionis vitiis, seu intentionis nostræ defectu, etiam ex eo quod omnes interesse habentes, vel Fratres de Observantia prædicti, aut quicunque alii vocati non fuerint, notari, argui, seu impugnari, aut sub quibusvis revocationibus, suspensionibus, limitationibus, aut aliis contrariis dispositionibus, etiam ab eadem Sede Apostol. emanatis, & in posterum emanandis comprehendi posse, sed illas pro omnibus & singulis prædictorum Reformatorum Custodiis, Custodibus & fratribus Reformatis, præsentibus & futuris, semper validas & efficaces existerè, suosque plenarios, & integros effectus fortiri debere.

§. 19. Sicque per quoscunque Judices & Commissarios quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Card. sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, ubique judicari ac definiti debere, necnon irritum & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari. Distinctis inbibentes Generali & Provincialibus Ministris dictorum Fratrum de Observantia nuncupatorum, & eorum Commissariis nunc & in perpetuum pro tempore existentibus, & illorum Generalibus & Provincialibus Capitulis, personisq; quibuscunque in illis congregandis, ac omnibus & quibuscunque quos præmissa concernunt, aut in posterum quomodolibet concernent, & quibusvis aliis cujuscunque dignitatis, status, gradus, ordinis, & conditionis fuerint, ne sub indignationis nostræ, & excommunicationis latæ sententiæ eo ipso, si contrafecerint, incurrendæ pœnis, Reformatos prædictos, illorumque Custodias, Custodes, Discretos, Officiales, & Fratres, aut alios quoscunque, quos præmissa quomodolibet concernunt, aut in posterum concernent, quominus prædictis omnibus &

Custode decedente, eligatur Commissarius usque ad Capitulum Custodiale. Custodum facultates.

Constit. nec contrariæ huic Reformat. serventur.

Vestes non desinantur.

Constit. Clem. 7. in ceteris approbatur.

Clausula præservati va.

Clausula sublata.

Executorum
deputatio
& facultates.

linguis pacificè fruatur, seu prædicta omnia, & singula suum debitum sortiantur effectum impedire, retardare, aut perturbare audeant, vel præsumant.

§. 20. Quocirca Venerabilibus fratribus Archiepiscopo Mediolanensi, & Episcopo Laudensi, ac dilecto filio Curiae causarum Camerae Apost. generali Auditori, necnon universis & singulis Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, & Ecclesiarum Praelatis, ac quibuscumque in dignitate Ecclesiastica constitutis per Praesentes mandamus, quatenus ipsi, vel duo aut unus eorum, per se vel alium, seu alios praesentes literas, & in eis contenta quaecumque, ubi quando opus fuerit, ac quoties pro parte fratrum Reformatorum praedictorum desuper fuerint requisiti solemniter publicantes, illisque in praemissis omnibus & singulis, juxta Praesentium continentiam & tenorem, pacificè frui & gaudere. Nos permittentes eos desuper per Ministrum generalem, aliosque praedictos quomodolibet indebitè molestari. Contradictores quoslibet ac rebelles, & praemissis non parentes, per sententias, censuras & poenas Ecclesiasticas, aliasque opportuna juris & facti remedia, omni appellatione postposita compefcendo; necnon legitimis super his habendis servatis processibus, illos sententias, censuras & poenas praedictas incurrisse declarando, illaque etiam iteratis vicibus aggravando; invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

Clausula de
rogatoria.

§. 21. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostol. praesertim fel. record. Leonis X. praedecessoris nostri super unione omnium Fratrum Minorum de Observantia, & nuncupatione eorumdem, & aliis in dictis litteris Clem. VII. contentis, & quae eidem Clementi placuit non obstat, necnon dicti Clem. VII. litteris praedictis pro Reformatis, & Bonifacii VIII. de una, & Concilii generalis de duabus dietis dummodo quis vigore Praesentium ad iudicium ultra tres dietas non trahatur, Bulla aurea, Mari magno, aliique constitutionibus & ordinationibus Apost. quibuscumque, dictique Ordinis, statutis, consuetudinibus; privilegiis indultis, & litteris Apost. etiam juramento, confirmatione Apostol. vel quavis firmitate etiam roboratis, etiam in forma Brevis, vel quibuscumque verborum formis, solemnitatibus, clausulis, etiam insolitis, & quantumcumque fortissimis dicto Ordini, vel quibuscumque Praelatis ejusdem in contrarium concessis, approbatis, & innovandis, tiam si talia forent, quod pro illorum sufficiens derogatione, de illis, eorumque totis tenoribus specialis & expressa, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales mentio habenda foret Quibus omnibus eorum tenores, ac fide verbo ad verbum Praesentibus inferrentur, pro plenè & sufficienter expressis habentes, illis alias in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apost. non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Transum-
ptorum si-
des.

§. 22. Ceterum quia difficile foret praesentes Litteras nostras, & Litteras Clem. VII. praedecessoris nostri, dictis Reformatis, ut praefertur, concessas, ad singula quaeque loca, ubi necesse fuerit, deferri, volumus & auctoritate Apost. decernimus, quod transumptis praesentium Litterarum, & transumptis dictarum Litterarum Clem. VII. etiam impressis, sigillo alicujus in dignitate Ecclesiastica constituti munitis, & manu Notarii publici subscriptis, eadem fides tam in iudicio quam extra illud ubilibet adhibeatur, quae ipsis originalibus Litteris adhiberetur, si forent exhibitae vel offensae.

Dat. Romae apud S. Petrum sub annulo Piscatoris, die 3. Junii, 1579. Pontificatus nostri anno 8.

Institutio Archiconfratern. Pietatis Carceratorum in Alma Urbe, ad eos visitandos, consolandos, & adjuvandos. Cum Indulgentiarum concessione.

LVI.

Alias indulgentias concessit hic idem Pontif. sed ejus Bullas praetermissi, quia Paulus V. novam desuper dispositionem fecit mox publicandam, quam formatam vidi sub die 10. Martii 1608. Et circa facultatem alias Confraternitates aggregandi, formam novam tradidit Clem. VIII. in const. 115. Quaecumque. fol. 182. Tom. III.

Eidem Archiconfraternitati, nonnulla privilegia, quo ad Carcerum Urbis visitationem, & condemnatorum ad Trirames provisionem, & unius carcerati singulis annis liberationem, concessit Sixtus V. in const. 97. Ex debito. Et postmodò annum subsidium ad liberandos pauperes pro debito civili carceratos, eidem commisit die 30. Julii 1590. in altera ejus constit. quam hic indicasse sufficiat.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Edita A. D.
1579.

Servus Servorum Dei, Ad perpetuam rei memoriam.

Procemium.

Pli Patris Altissimi, qui antequam ineffabili pietatis & charitatis fide exuberantia, pro peccatorum nostrorum expiatione, acerbissimum Crucis tormentum subiret, opera pietatis & charitatis hujusmodi fidelibus suis instanter commendavit, vices licet immeriti, gerentes in terris, ad ea, per quae opera ipsa ubique, praesertim in Alma Urbe nostra, quae ceteris illustre exemplar praestare debet, ad pauperum Carceris incommodis, ac miseris afflictiorum subventionem, & spirituales consolationem valeant propagari, libenter intendimus, & ad id fideles quoslibet spiritualibus muneribus, indulgentiis videlicet, & peccatorum remissionibus invitamus, ac alias desuper officii nostri partes interponimus, prout rerum & personarum qualitatibus debite penatis, conspiciamus in Domino salubriter expedire.

Quidam Christi fideles, Societas. Pietatis Carceratorum in Urbe ad pia cum eis opera exercenda institueret propositum fuerint Papa accedente licentia.

§. 1. Sanè exhibita Nobis nuper, pro parte plurimorum piorum dictae Urbis Christi fidelium petitio continebat. Quod ipsi pia atque sincera devotione ducti, ac de proximis sui salute juvamineque recogitantes, ac re ipsa compertientes, diversos in dies in dicta Urbe varias ob causas carceratos, tempore eorum carcerationis, tamquam ab amicis, propriisque consanguineis derelictos, vel illis in eadem Urbe earentes, & praecipue extraneos diversarum Orbis Christiani Nationum, quorum maxima in eadem Urbe, tam pro locis sanctis dictae Urbis visitandis, quam etiam variis negotiis apud Nos, Sanctamque Sedem Apost. & alias peragendis commorari solet copia, qui illis in suis necessitatibus tam spiritualibus quam temporalibus subveniant, eorumque causas, & liberationem praecurrent in variis miserrimis incidere casus. Unde, ut his casibus, infortunis, & calamitatibus in futurum remedium aliquod salubre adhiberi possit, praefati Christi fideles unam utriusque sexus Christi fidelium, sub denominatione Pietatis Carceratorum, Archiconfratern. in eadem Urbe, ac quodam ad id congruo & decenti loco, sub nostro & dictae Sedis beneplacito instituendam proposuerunt, eujus Confratr. pro tempore existentium praecipuum sit institutum, pauperes in quovis Carcere dictae Urbis, tam pro civili quam pro criminali causis, pro tempore detentos, quibus cum colloqui permillum sit, omni cum humanitate & charitate, ac spirituali consolatione per ipsos ordinatim visitare, & ad patientiam in suis adversitatibus fortiter & animose pro

CHRIS.

CHRISTO habendam, necnon confessionem sacramentalem eorum peccatorum faciendam exhortari & consolari elemosynisque pauperibus subvenire, & qui ex eisdem Confratribus Sacerdotes, & ad confessiones audiendas approbati fuerint, eorumdem carceratorum confessiones audire, ipsique carceratis diversos spirituales libros, in quibus legendis, & legere ignorantes alios legentes audiendis occupentur, elargiri, ac ut eisdem carceratis, Dominici, & aliis diebus Festivis de præcepto Ecclesiæ servari solitis, verbi Dei coactiones, & exhortationes fiant, & his præcipue diebus, ipsi carcerati ab illicitis ludis, blasphemis, aliisque Christiana pietate indignis abstineant, ad Dei laudem, ipsorumque carceratorum spiritualem consolationem procurare, pacemque & concordiam inter ipsos carceratos, & eorum inimicos inire & componere, alique pietatis opera circa eosdem carceratos in dies occurrentia pro viribus exercere. Quare pro parte eorumdem piorum Christi fidelium Nobis fuit humiliter supplicatum, quatenus præmissis annuere, ac alias desuper opportune providere, de benignitate Apostolica dignemur.

§. 2. Nos igitur, qui honestis petentium votis, per quæ opera pietatis & charitatis huiusmodi in dies, nostris potissimum temporibus incrementum suscipiant, & ad ceteras nationes huiusmodi dilatentur, libenter annuimus, eaq; favoribus prosequimur, opportunitis, pium, rectumque eorumdem Christi fidelium animum & voluntatem in tam laudabili proposito, quantum cum Deo possumus, conservare & adjuvare voleantes, huiusmodi supplicationibus inclinati, in dicta Urbe Archiconfrat. Pietatis Carceratorum huiusmodi ad munera prædicta & alia charitatis & misericordiae officia erga dictos carceratos exercenda, Apost. auctoritate tenore Præsentium sine alicujus præiudicio, erigimus & instituiamus, eamque Archiconfrat. Pietatis Carceratorum denominari volumus. Ac illi sic erectæ & institutæ quæcumque bona mobilia & immobilia, legata, relicta, & alia iura eidem Archiconfrat. tam per ipsius Confratres pro tempore existentes, quam alias quascumque personas cuiuscumque status, gradus, ordinis, & conditionis existentes pro tempore quomodolibet largienda, donanda, & relinquenda auctoritate & tenore prædictis perpetuo applicamus & appropiamus.

§. 3. Necnon eisdem Confratribus pro tempore existentibus quæcumque statuta, & ordinationes, felix regimen & prosperum statum, Archiconfrat. ac pia opera huiusmodi, circa eosdem carceratos, ut præfertur, exercenda, concernentia (sacris tamen Canonibus, Decretisque Concilii Tridentini minime contraria, nec jurisdictionem, officium, & executionem Judicum, aliorumve Ministrorum dictæ Urbis, circa ipsos carceratos impedienda, & per dictæ Urbis Vicarium dicta auctoritate approbanda) condendi & faciendi, ac condita toties quoties opus fuerit corrigendi, mutandi, alterandi, & alia de novo faciendi.

§. 4. Necnon quemlibet dictæ Urbis carcerem, non tamen eis loca, quæ Secreta dicuntur, nisi permissu Judicum, toties quoties eis & eorum cuilibet visum fuerit ad effectum præmissum ingrediendi, & in eo ad tempus benevolum præmissa opera exercendo commorandi, licentiam eidem auctoritate & tenore etiam perpetuo concedimus. Distinctis præcipientes, & mandantes cuiusvis dictæ Urbis carceris custodi, & quibuscumque aliis personis, cuiuscumque status, gradus, conditionis, & præminentiae existentibus, ut eisdem Confratribus, & ab eis constitutis quemvis dictæ Urbis, & illius Burgi carcerem non tamen Secretum, toties quoties fuerit requisitus, ingredi permittant.

§. 5. Ex insuper cupientes ut Christi fideles, eò libentius dictam Archiconfrat. ingrediantur, & piis operibus huiusmodi intendant, quò ex hoc dono coelestis gratiæ fe uberius refoctos esse cognoverint, de omnipotentis DEI misericordia, ac Beat. Petri, &

Pauli Apostol. ejus auctoritate confisi, omnibus, & singulis utriusque sexus Christi fidelibus, qui dictam Archiconfrat. pro tempore ingredientur, die eorum ingressus, si tunc verè poenitentes & confessi S. Eucharistiæ Sacramentum sumpserint, ac in cuiuslibet eorum mortis articulo, si etiam verè poenitentes & confessi, Sanctissimum nomen JESU ore vel corde invocaverint, necnon eisdem Confratribus similiter verè poenitentibus, & confessi, qui prima quaque die Dominica mensis S. Eucharistiæ Sacramentum huiusmodi sumpserint, plenariam omnium peccatorum suorum Indulgentiam, & remissionem, auctoritate & tenore prædictis, misericorditer in Domino concedimus. Præterea eisdem Confratribus, quoties se invicem aggregaverint, elemosynam elargiti fuerint, ipsos carceratos visitaverint, & circa eos aliqua alia pia opera exercuerint, centum dies de eis junctis, seu alias quomodolibet debitis poenitentis, auctoritate, & tenore prædictis etiam misericorditer in Domino relaxamus.

§. 6. Postremò ipsi Confratribus, ut quascumque alias similes Confraternitates, ubique locorum pro similibus piis operibus exercendis, sub eadem denominatione Pietatis carceratorum erigendas dictæ Archiconfrat. tamquam membra capiti aggregare, ac in eorum numerum, seu dependentiam recipere, illisque & earum Confratribus, indulgentias, aliaque privilegia, & indulta eidem Archiconfraternitati per Præsentes concessa, prædicta communicare, eosque de illis participes facere, liberè & licite valeant, eidem auctoritate, & tenore pariter perpetuo indulgemus.

§. 7. Decernentes præsentes Litteras sub quibuscumque revocationibus, suspensionibus, & modificationibus, similium indulgentiarum, etiam per Nos, & successores nostros Rom. Pont. pro tempore existentes factis, ac Cancellariæ Apost. regulis pro tempore editis, etiam in favorem Fabricæ Basilicæ Principis Apostol. de eadem Urbe, ac Cruciatæ sanctæ, nullo unquam tempore comprehendendi, sed ab illis omnino exceptas esse, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinam ac validissimum statum restitutas, & de novo, etiam sub data per eosdem Confratres eligenda, concessas fore & censeferi, ac perpetuis futuris temporibus durare.

§. 8. Sique per quoscumque Judices & Commissarios quavis auctoritate fungentes, sublatæ eis, & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate judicari, & definituri debere, irritum quoque, & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 9. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 10. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ erectionis, institutionis, voluntatis, applicationis, appropriationis, concessionis, præcepti, mandati, relaxationis, indulti, & decreti infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem omnipotentis Dei, ac B. Petri & Pauli Apostol. ejus, se noverit incursurum.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dom. 1579. 4. Kal. Julii Pontificatus nostri anno 8.

Ufus altaris portatilis Religiosis Soc. JESU restituitur, non obstante Concilii Tridentini dispositione, ut in eo inter Missiones quæ à Superioribus de ipsis sunt ubique in loco ruto Missam celebrare, & Eucharistiam ministrare possint.

Alias Confrat. aggregandi & Indulgentias communicandi, auctoritatem tribuit. Tu vide reformatorium Clem. VIII. cit. in rubr.

Clausula præservativa.

Clausula sublata.

Clausula derogatoria.

Sanctio poenalis.

D. P. A. 6. die 28. Junii.

LVII.

Hic itaque Pont. dictam Archiconfr. erigit.

Statutaque condendi facultatem concedit.

Carceres non carceratos in- trandi, & cum carceratis tractandi, auctoritatem impartitur.

Indulgentias Confratribus largitur. Quoad hoc vide Bullam S. D. N. Pauli v. cit. in rub.

ANNO
1579.

GREGORIUS DECIMUS-TERTIUS.

ANNO
1579.

*Alia de hac Societate notavi sup. in Tom. I. ad consp.
25. Pauli III. Regimini.*

GREGORIUS PAPA XIII.

*Dilectis filiis, Præposito generali & Presbyteris Sac.
JESU.*

Refitutio
de qua in
subr.

Derogatio
contratio-
rum.

Dat. P. A. R.
die 1. Octobr.

LVIII.

Reductio Monachorum Ordinis S. Basilii in unam
Congregationem, & sub regimine unius Abba-
tis, cum privilegiorum, & gratiarum elargitione,
pro dicti Ordinis reformatione.

*Hanc reductionem approbavit etiam Clem. VIII. inf.
in Tomo III. in consp. 103. fol. 169. Altissimi. Et
Abbas auctoritatem etiam quoad Monachos refor-
matus consistere voluit ipse Clem. ibid. ubi alia in-
dicabo.*

Edita A. D.
1579.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

S. Basilii
Magnus Mo-
nachus Or-
dinem crexit

Benedictus Domin. Deus noster, à quo Sancti sui
intelligentiæ spiritu repleti, tamquam imbres fa-
pientie suæ eloquia emisit, cumque in oratione
concessi sunt. Quo gratiæ munere B. Basilii cogno-
mento Magnus, à divina benignitate locupletatus,
mnis bonitatis, tanteque in se beneficentiæ audo-
ri, quod recepit fertilissimi agri more, cum centesi-
mo reddidit incremento. Nam præter ea quæ effudit
Theologica scientiæ, eloquentiæque flumina, quæq;
edidit continentiz, abstinentiæ, & susceptorum pro
CHRISTO laborum tolerantiz documenta, ado-
ptatos sibi novæ sobolis sætus, in Cornubiæque pro-
cul à cõmuni vivendi ratione segregatos in compo-
situm Ordinem redegit, & salutaribus præceptis in-
stituit, ut perpetua futurorum temporum successione
verbo, & opere à se instructi, Deum consisterentur,
Catholicaque Ecclesiæ ornamento essent, atque in
dubis rebus adjumento.

Cujus Ordi-
nis Monachi
in sanctitate,
& doctrina
olim florue-
runt, nunc
autem quasi
defecerant.

§. 1. Qui vitæ sanctitate, & doctrina insignes toto
terrarum Orbe, maxime verò in Asia, Palestine,
Thracia, Græcia, & Italia multis sæculis floruerunt.
Postea verò, (quod non sine maximo animi nostri
mœrore recensemus) temporum injuria, totiusque
Orientis à dira Turcarum Tyrannide oppressi calami-
tate, crebrisque ita hominum exigentibus culpis,
exorientium schismatum dissensionibus, Ordo ille
alibi penitus corruit, alibi ita fuit imminutus, ut di-
ciple regulari laxatâ, charitas illa pristina deferbu-

erit, Monachique alii aliò dispersi sine capite sicuti
oves sine pastore erraverint, in aliquibus autem, ne
vestigium quidem Monastici remaneret instituti,
Monasteria eversa & bona fuerint dissipata.

§. 2. Cui incommodo, quod à Nobis nostri Aposto-
licæ expositit, providere, ipsumque Ordinem pristinæ
dignitati, regularique observantiæ, quantum Do-
mino adjuvante possumus, restituere volentes, ut
quampimum in agro Domini uberes fructus majore-
rum suorum, & præcipuè tanti Patris, & Magistri ex-
emplo edere valeant, maxime expedire duximus à
Monasteriis, quæ in Italia, & in utriusque Siciliae Re-
gnis consistunt, quorum plagas propius inspicimus,
hujusmodi Ordinis instaurationem inchoare, ipsaque
Monasteria in unam Congreg. juxta constitutionem
felicis recordationis Innocent. Pape III. prædeces-
soris nostri in Concilio generali editam quæ incipit,
In singulis; ad Concilii Tridentini decreta redire.
Et ut hæc facilius optatum consequi possent effe-
ctum primum Generale Capitulum dicti Ordinis ce-
lebrari mandavimus, in quo Abbas generalis, qui in
singula prædicta & alia ejus Ord. Monasteria, Con-
ventus, & regularia loca ubicumque sub obedi-
entia nostra, & S. R. E. illa fuerint, illorumque personas
absoluta sit auctoritate præditus. Ac præterea Visi-
tatores, Procurator generales & alii Officiales, quo-
rum electio in Capitulo generali facienda esset, in
Monasterio S. Philareti ejusdem Ordinis, Militen-
sis Diocesis, in festo Pentecostes proxime præterito eli-
gerentur, illo prius de more indicto per dilectum fi-
lium nostrum Gulielmum tit. S. Laurentii in Panis-
perna Presbyt. Card. Siretium nuncupatum, dicti a-
pud Nos Sedemque Apostol. Ordinis, Protectorem,
dilectum filio Paulo Abbate Monasterii Castri Villari-
is Ordinis S. Benedicti Cassinensis Diocesis Con-
greg. Cassinensis, eidem Capitulo ejusdem Gulielmi
Card. nomine præsentem, ac in ejus manibus, ante-
quam ad electionis negotium procederetur, per Pri-
ores & alios Monachos Monasteriorum dicti Ordinis
S. Basilii præsentem, vocemque in Capitulo generali
habere debentes, professione regulari quæ per Mo-
nachos ejusdem Ordinis S. Basilii emitti debet, ex-
presse emissâ.

§. 3. Et tandem cum pro electionibus, ut præfer-
tur, celebrandis jam in unum convenissent, vocatis
omnibus, qui voluerunt, potuerunt, & debuerunt ele-
ctionibus hujusmodi commodè interesse, die ad eli-
gendum præstituta, ut mos est, dilectum filium Nico-
laum Anton. Abbatem Monasterii S. Nicolai de Bu-
tramo dicti Ordinis S. Basilii, Hieracen-
sis Diocesis in Abbatem generalem, ac duos Visitatores, & unum
Procuratorem generalem, aliosque Officiales per
secreta suffragia elegerunt.

§. 4. Nos autem reductionem eorumdem Monaste-
riorum, Priorum, & Monachorum in Congreg. & Ca-
pitulum disticte Capitoli indictionem & præsen-
tiam ac electiones hujusmodi ratas & gratas habentes,
Motu proprio & ex certa scientia nostra, deque
Apost. potestatis plenitudine, eisdem tenore Præsen-
tium approbamus & confirmamus, omnesque tam
juris quàm facti, ac omniarum solemnitate, etiâ sub-
stantialium, vel ex Ord. prædicti S. Basilii statuti re-
quisitarum defectus, si qui intervenerint in eisdem,
supplemus.

§. 5. Et nihilominus prædictum Nicol. Ant. Abbatem
eidem Congreg. universæ in Abbatem genera-
lem præficimus, curam illius universam, & in spiritu-
alibus & temporalibus plenissimè committendo, ita
ut ipse, & Abbas generalis pro tempore electus, æ-
quæ ut alii aliorum Ordinis in Congreg. reductorum
Abbatem generales, & Præsidentes, in suisque Capitu-
lis, Congreg. & ordinationibus, de jure, & privilegio,
& consuetudine habent & exercent, habereque & ex-
ercere possunt, plenam & omnimodam superiorita-
tem, jurisdictionem & auctoritatem habeat & exer-
ceat, tam in ea omnia quæ in Italia & Regnis prædi-

Ideo hic
Font. pro re-
formatione
dicti Ordi-
nis, præcipit
fieri Capitu-
lum eligique
Abbatem
generalem
& alios Offi-
ciales inha-
rendo con-
stitutioni In-
noc. 3. quæ
est in cap. 7.
de Stat. Mo-
nac.

In quo Cap.
Abbas, Visi-
tatores & alii
Officiales
electi fue-
runt.

Et modo hic
Pont. dicto
Capit. cele-
brationem,
& dictorum
Officialium
electiones
confirmat.

Abbatemque
gen. in elec-
tum de novo
ipse Pont.
eligit illique
curam & ad-
ministratio-
nem conce-
dit, omnium
Monacho-
rum & Mo-
nasteriorum
Ord. S. Basilii
Hanc reduc-
tionem pro-
bat Clem.
VIII. in
cons. 14.

dis sunt, quam etiam in S. Mariæ de Oviedo Guenensis, & del Tardon Cordubensis, ac Vallis del Galleguillos Ipalensis Diocesis, ejusdem Ordin. S. Basilii Provincie Hispaniæ, dudum à Nobis in Regnis Hispaniarum institutæ, & prorsus in alia quæcumque Monasteria, domos & loca in eadem Provincia sub regula S. Basilii hæctenus erecta, & in posterum erigenda, eorumque Abbates, Conventus, Monachos & personas, quæ nos pridem cum Monachis ejusdem Ord. S. Basilii in Italia existentibus, & eorum Congreg. prædictæ sub obedientia inde futuri Abbatis seu Vicarii generalis ejusdem Congreg. perpetuò conjunximus: eaque, necnon Visitatorem ejusdem Provincie Hispaniæ Abbatem seu Vicarium generalem Congregat. hujusmodi in Italia pro tempore eligendo subjecimus, & ab eo dependere decrevimus inter alia, quemadmodum nostris diversis Litteris prioribus, videlicet Kalen. Maii. 2. posterioribus verò 8. Kal. Julii, 6. Pont. nostri annis datis plenius continetur.

§. 6. Jubeamus itaque universos & singulos ejusdem Congreg. S. Basilii Abbates, Priores, & Prælatos, necnon Monachos, & alias quascunque personas, ipsi Abbati generali, tanquam membra capiti, & eorum legitimo Superiori, in omnibus quæ ad officium Abbatis generalis pertinent, eorumque animæ salutem, regularique observantiæ rationem concernunt, promptè & humiliter obedire.

§. 7. Et ut habitus qui exterius geritur, religiosis mentis affectibus pariter respondeat, statuiamus, ut omnes Congreg. ejusdem professores eundem habitum à Novitiis distinctum ex panno nigri coloris cum Capitulo sive cuculla Monachali omnino deferant, veluti ex antiquo ejusdem Ordinis instituto præfati Patres & Monachi gestare solebant.

§. 8. Utque omnes ejusdem Ordinis S. Basilii Monachi & Religiosi, qui in dicto Ordine jam admitti sunt, ad professionem regularem ejusdem Ordinis in manibus Abbatis, si ibi fuerit, vel Prioris Monasterii in quo reperientur, expresse emittant. Deinceps verò nemo in dicto Ordine, illiusque Monasterii ad ejusdem Ordinis professionem regularem, sive tacitam sive expressam admittatur, nisi in etate legitima constitutus, anno demum integro in probatione juxta ejusdem Concilii Tridentini decreta perfluerit.

§. 9. Generale autem Capitulum in quo de Ordinis prædicti reformatione, & regulari observantia agendum erit, tertio quoque anno celebretur.

§. 10. Eorundem, sive Abbatis generalis; sive Visitatorum, sive Procuratorum item generalis muneris, sive officia triennialia sint; licebit tamen in eodem Capitulo generali, ubi manifeste cognitum fuerit expedire, eosdem omnes aut eorum aliquos ad aliud triennium in eodem quod gesserint officio, nec ultra confirmare; qui tandem ab eisdem muneribus absoluti, saltem per aliud simile triennii spatium officio vacent.

§. 11. Ceterum si dicto Gulielmo Cardin. & pro tempore dicti Ordinis Protectori videbitur opportunum, ac quousque ille expedire censuerit, consilium, & auxilium alicujus Abbatis Congreg. Cassinensis, in hujusmodi Capitulis celebrandis, ex longa consuetudine & experientia plenius instructi, ad ipsum Capitulum generale poterit adhiberi, qui ejusdem Protectoris auctoritate etiam eidem Capitulo præsidet generali.

§. 12. In singulis verò Capitulis generalibus locus, in quo proximè futurum Capitulum generale celebrandum sit, designetur.

§. 13. Electiones autem per suffragia secreta fiant, prout Concilii Tridentini prædicti decretis est statutum.

§. 14. Ad hæc, ut ipsi Monachi degentes in Monasteriis in quibus mensa Conventualis non est ab Abbatiali separata, quæque Clericis secularibus, &

aliis cujuscumque gradus & dignitatis, etiam si Card. honore præfulgeant commendata sunt, obsequiis Altissimi liberius vacare possint, mensam Conventualem à mensa Abbatiali distinguimus, & ab eisdem Monasteriis quousque illa commendata fuerint, eam bonorum stabilium, proprietatum, juriumque partem, quæ tamen inter immobilia censentur, perpetuò dismembramus, atque dividimus, quæ ad alendum solitum Monachorum & Ministrorum numerum, ac victum & vestitum, aliæque ad eorum sustentationem necessaria comparanda sufficiant, eosdemque Commendatarios ad assignandum totidem bona, proprietates, & jura prædicta intra tempus per eundem Gulielmum Cardin. protectorem præfigendum omnino teneri volumus. Hæc autem bona stabilia, proprietates & jura sic per Nos dismembrata, necnon omnia alia mobilia & immobilia, quæ ex piorum fidelium testamentis, legatis, legationibus, aut aliis quomodocumque ipsis Conventibus & Monachis in posterum donata, concessa, & relicta fuerint, pro quorum consecratione Monachi Conventuum eorundem nomine, etiam in iudicio agere, & experiri, ac illo intervenire valeant, sed & oblationes atque elemosynas in eorumdem Monasteriorum Ecclesiis erogandas pro constituenda mensa Conventuali in singulis Monasteriis prædictis, ac pro augmento earundem mensarum Conventualium etiam perpetuò applicamus & appropiamus.

§. 15. Nihilominus tamen Commendatariis incumbat prout tenentur, in eisdem Monasteriis quæ Conventum habent, Monasteriorum & Ecclesiarum eorundem reparationi, ac aliis divinum cultum necessariis providere; quorum Monasteriorum claustra & ædificia pro usu Monachorum constituta, ad quæ Monachos prædictos in eis permanere contigerit, eorum liberi atque absoluti juris esse decernimus.

§. 16. Liceat porro Abbatibus, Prioribus, ceterisque dicti Ordinis Monachis & Religiosis, corporalem possessionem bonorum sic dismembratorum & applicatorum, ac ut præfertur assignandorum, cum primum illa per Commendatarios assignata fuerint, & claustrorum ac ædificiorum Monasteriorum prædictorum Conventum habentium, per se vel alium seu alios, propria auctoritate absque alicujus Judicis ministerio liberè apprehendere & apprehensam retinere, ac eorundem bonorum, sive proprietatum & jurium fructus in communes eorundem Monachorum & Ministrorum usus & utilitatem convertere, ipsorumque claustrorum & ædificiorum libero usu pacificè frui & gaudere, quorumvis licentia super his minime requisita.

§. 17. Ut autem prædicta Monasteria Ordinis S. Basilii sic in unam Congreg. redacta, eliminatis omnibus abusibus, in via Domini quotidie magis proficiant, Conventus omnium Monasteriorum virorum Conventum habentium dicti Ordinis S. Basilii, quæ tam in Italia & prædictis Regnis erecta sunt, quæcumque, quocumque, & qualicumque sint, & per quoscumque; etiam S. R. E. Card. in titulum, commendam, vel administrationem, aut alias obtineantur, dignitatibus Abbatialibus eorundem semper salvis, ita ut de eis quotiescumque vacabunt per Rom. Pont. & Sedem prædictam omni tempore disponi liberè debeat, & sine præjudicio jurium ejusdem Sedis, quæ inviolata permanere volumus, & ac etiam de Oviedo, & del Tardon, ac Vallis del Galleguillos prædictorum, necnon omnium & quorumcumque aliorum, quæ deinceps à Congreg. & Monachis prædictis, Deo adjuvante, erigentur & construantur in eisdem Italia & Regnis, ac Provincia Hispaniæ, ipsi Congregationi in perpetuum aggregamus.

§. 18. Ac Monasteriis, Conventibus, Prioribus & Monachis prædictis, necnon Conventibus & Oblatis, aliisque etiam dictorum Monasteriorum S. Basilii Religiosis & personis, ut de cetero omnibus &

Conventualis sit definita ab Abbatiali, & Commendatariis assignant bona quæ pro Monachorum subventionem sufficiant.

Commendatarii Monasteria reparationi necessaria ad cultum divinum assignent.

Et Monachi possessionem capiant.

Monasteria etiam commendata huic Congreg. aggregata censentur, salvis remanentibus dignitatibus Abbatialibus de quibus Sedes Apostolica liberè disponere possit.

Hic Ordo privilegiis Congreg. Cassinensis gaudet.

Exemptio à
iurisdictione
Ordinar. &
Commend.
qui regulam
S. Basilii pro
fessi non sint

Abbas & Vi-
sitar. visitent
& reforment
Monachos
& inobedi-
entes corri-
gant &c.

Decretum
irritans.

Gulielmus
Sirletus Card.
Protektor,
deputatur e-
xecutor hu-
jus constit.
cum faculta-
tibus hic ex-
pressis.

quibuscumque privilegiis, prerogativis, immunitatibus, exemptionibus libertatibus, indulgentiis, favoribus, gratiis, & indultis, tam spiritualibus quam temporalibus, Congregationi praedictae Cassinensi, illiusque personis & locis per quoscumque Romanos Pont. praedecessores nostros, ac Nos & dictam Sedem, in genere & in specie concessis, confirmatis, & innovatis, ac etiam per viam communicationis ad eandem Congregat. Cassinensem extensis, quibus illi utantur, potiuntur, & gaudent, & uti, potiri, gaudere poterunt quomodolibet in futurum (quae tamen usu recepta sint, & sacris Canonibus, ac dicti Concilii Tridentini decretis, ipsiusque Ordinis S. Basilii non adversentur) uti, potiri, & gaudere liberè & licite valeant, concedimus & indulgemus.

§. 19. Parnidemque Congreg. S. Basilii, illiusque, ab omni Ordinariorum locorum, ac etiam eorum, qui Monasteria dicti Ordinis etiam Archimandritatus appellata, in commendam vel alias quomodolibet obtinerint, eundemque Ordinem S. Basilii expresse professi non fuerint iurisdictione, auctoritate & potestate penitus eximimus, & liberamus, ac sub nostra & B. Petri protectione immediate suscipimus. Ita tamen ut omnes sub dicta exemptione comprehensi, Abbatis generalis, Visitariorum, Abbatum, Priorum & aliorum Officialium, tam in dicto generali Capitulo quam extra illud canonicè electorum, & aliorum, qui pro tempore eliguntur, iurisdictioni, visitationi, morumque correctioni iuxta eandem regulam S. Basilii, ac ejus Ordinis instituta omnino, prout eorum incumbit muneri, sint subiecti.

§. 20. Insuper Abbati generali & Visitarioribus in Capitulo generali deputatis, ut Monasteria, Prioratus, & alia loca, ac Abbates, Priores, Conventus, & personas Congreg. praedictae, juxta dicti Concilii decreta, & regularia instituta praedicta visitare, & tam in capite quam in membris reformare, delinquentes, inobedientes, & rebelles corrigere, punire, & castigare, regularia dicti Ordinis S. Basilii instituta in illis exactè custodienda introducere, ac in dicto Capitulo generali pro tempore congregatis ejusdem Congreg. Monachis, quaecumque statuta & ordinationes ad salutem ipsius Congreg. regimen, & ad regularem observantiam pertinentia (licita tamen & honesta, ac sacris Canonibus, & Concilii Tridentini decretis, necnon regulæ S. Basilii praedictis minime contraria) ab ipso tamen Gulielmo Card. & pro tempore existente dictae Congreg. Protektore antequam promulgentur examinanda & approbanda, condere valeant, licentiam tribuimus.

§. 21. Decernentes supra dicta omnia perpetuò inviolata fore, sicque per quoscumque Judices, ordinarios & delegatos, etiam causarum Palatii Apostolici, Auditores, ac S. R. E. Card., in quavis causa & instantia, sublata cuicunque aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate ubique iudicari debere, necnon irritum & inane quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 22. Sed ne praesentium Litter. effectus in longum protrahatur, Gulielmo Card. praedicto precipimus, ut per se, vel alium, seu alios ipsas praesentes Litteras, & quicquid in eis continetur, ab universis & singulis Ordinis & Congreg. S. Basilii praedicti Abbatibus, Prioribus, & Monachis, aliisque praedictis, & dictorum Monasteriorum & Archimandritatum praedictorum Commendatariis, etiam ut praesertur qualificatis inviolatè faciat observari, & ad assequendum, & cum effectu tradendum pro Monachorum & ministrorum numero alendo, ac mensa Conventuali in his Monasteriis, quibus eorum Conventus existunt, partem bonorum, & proprietatum, ac jurium, claustraque & aedificia praedicta liberè consignandum intra duos menses à die publicationis earumdem Litterarum, hic de more constitutionum & litterarum Apostolorum, faciendæ numerandos, etiam per

privationem Monasteriorum & aliorum beneficiorum Ecclesiasticorum ab eis obtentorum, ceteraque omnia juris & facti remedia opportuna compellat. Nos enim illi & pro tempore existentis Protektori, per se, vel alium, seu alios, contra Commendatarios omnes Monasteriorum & locorum Conventuum praedictorum sic in Congregat. reductorum, qui congruam assignationem bonorum, proprietatum, ac jurium dismembratorum praedictorum praestituto tempore facere distulerint, reculaverint, ne gaverint, vel etiam quovis modo impederint, ceteroque omnes sua in praemissis quomodolibet interesse putantes, etiam per edictum locis publicis assignandum citandi & monendi, ac contra eos, & prorsus contra quoscumque alios contraditores & rebelles, eisque auxilium, consilium & favorem, publicè vel occultè praestantes, etiam summarie, simpliciter & de plano, ac sine strepitu & figura iudicii, sed sola facti veritate inspecta, omni & quacumque appellatione remota, procedendi; & ad hunc aliorumque praemissorum omnium executionem & effectum, tam eisdem quam etiam quibuscumque Judicibus & personis, etiam sub censuris & poenis Ecclesiasticis, ac etiam per simile edictum inhibendi, censuras & poenas etiam saepius aggravandi, interdictum Ecclesiasticum apponendi, auxiliumque brachii secularis ubicumque opus fuerit invocandi, necnon partem proprietatum & possessionum mensarum Abbatium praedictarum, quae ad reditum annuum pro victu & aliis ad usum soliti Monachorum & ministrorum numeri satis fuit arbitrio ejusdem Gulielmi Card. & pro tempore Protektoris, vel eorum quibuscumque deputabuntur, eligendorum, pro mensa Conventuali, etiam per subtractionem & alias, prout ei visum erit, perpetuò constituendi & assignandi, ceteraque in praemissis & circa ea necessaria & opportuna faciendi & exequendi, etiam si talia fuerint, quae mandatum requirant magis speciale quam praesentibus est expressum, plenam & liberam tenore Praesentium concedimus facultatem.

§. 23. Non obstantibus praemissis, ac nostris de unionibus committendis ad partes, ac valore fructuum exprimendo, necnon de non tollendo jure quaesito, ac generalis, & uniones perpetuas nisi in casibus à jure permixtis fieri prohibentis novissime celebrati Lateranensis Conciliorum, ac piez mem. Innocentii IV. quae incipit: Volentes, & Bonifacii VIII. Rom. Pont. de una, & in eodem Concilio Generali edita de duabus dietis, aliisque Apostolorum constitutionibus, necnon Monasteriorum & Ordinum praedictorum juramento, confirmatione Apostolice vel quavis firmitate alia roboratis, & statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolorum, eisdem Monasteriis, & Ordinibus eorumque Superioribus & personis, etiam Monasteria Archimandritatus ejusdem Ordinis in Commendam obtinentibus, per quoscumque Rom. Pont. praedecessores nostros, ac Nos & eandem Sedem, etiam per modum statuti perpetui, ac in initio & stipulatis contractus, ac alias, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis, in genere & specie, etiam ab immemorabili tempore quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, ac etiam usu receptis, ac quocumque tempore factis & promulgatis, & quibuscumque aliis indulgentiis & litteris Apostolicis, specialibus vel generalibus quoruncumque tenorum existant, per quae Praesentibus non expressa aut omnino non inserta, effectus earum impediri valeant quomodolibet vel differri, & de quibus quoruncumque totis tenoribus habenda sit in nostris Litteris mentio specialis, quae omnia contra earundem Praesentium tenorem nolumus cuiquam in aliquo suffragari, contrariis quibuscumque; aut si Commendatariis & personis praedictis,

Clausaule de
rogatorie.

vel quibufvis aliis communiter vel divifim, ab eadem fit Sede indultum, quod interdicti, fufpendi, vel excommunicari non poffint per litteras Apoft. non facientes plenam & expreflam, & ad verbum de indulto hujufmodi mentionem.

§. 24. Poftremo volumus ut lapfis ftatim duobus menfibus à publicatione prædictæ Litteræ prædictæ ita unumquemque fuprà dictorum ardeant, ac fi fingulatim intimatæ fuiffent; earum quoque exempla etiam impreffa, Notarii publici manu, & Prælati Ecclefiæ fignillo obfignata, eandem illam profeffam fidem ubique locorum, in iudicio & extra illud faciant, quam ipfamet Præfentes facerent, exhibitæ vel offenfæ.

Nulli ergo omnino &c.

Dat. Romæ apud S. Marcum, anno Incarnat. Dom. 1579. Kal. Novemb. Pontificatus noſtri anno 8.

ANNO à NATIV. DOM. 1580. indiſt. 8. die verò 8. menſis Jan. Pont. Sancti D. N. D. Greg. divina providentia PP. XIII. anno 8. præſentes Litt. Apoſt. affixæ & publicatæ fuerunt in vultis Principis Apoſolor. de Urbe, & acie Campi Floræ, & Gancell. Apoſt. & per aliquod temporis ſpatium dimiſſe per me, Jo. Freile S. D. N. Papæ Curſorem.

Jo. Andreas Panizza Mag. Curſ.

§. 2. Nihilominus quia nuper Nobis eſt inſinuatum, nonnullos veſtra Congreg. hujufcemodi ordinationi ac ſtatuto à Prædeceſſore noſtro, provida ac matura deliberatione invento, à Nobis confirmato, & in veſtro generali Capitulo acceptato, & jam in uſu recepto, non ſolum acquieſcere velle, ſed colore quodam de hujufmodi Litter. noſtrarum validitate dubitandi, re autem vera temeritatis, & ambitioniſtimulis agitatoſ de illa immutanda, infirmanda, vel etiam revocanda, verba facere auſoſ fuiſſe.

§. 3. Nos ad tollendum omne dubium, & hujufmodi audaciam compeſcendam, & pacem tranquillitatem; in dicta Congreg. veſtra perpetuò conſervandam, & retinendam, Apoſt. auctoritate tenore Præſentium hæc noſtra declaratione, determinatione, ac definitione, ſuprà dictam de triennali electione & adminiſtratione, ordinationem, conſtitutionem, & decretum, iterum & de novo, quatenus opus fit, approbamus, confirmamus, eique perpetuæ & inviolabilis firmitatis robur adjicimus, ac ſuper eo ſpecialiter & expreſſe perpetuum ſilentium imponimus.

§. 4. Mandantes propterea vobis omnibus & ſingulis in virtute ſanctæ obedienciæ, ac ſub privationis perpetuæ tam officiorum, dignitatum, & adminiſtrationum quarumcumque, quam vocis activæ & paſſivæ, aliſq; Eccleſiaſt. cenſuris arbitrio noſtro moderandis & inſigendis poenis diſcretè præcipientes & inhibentes, ne quis veſtrum publicè vel privatim, ſecreto vel palam, in Capit. generalibus vel conventualibus, intra Monaſterior. ſepta vel extra, ac tandem uſque vel umquam de ſuprà dicto triennio corrigendo vel mutando amplius loqui, ſeu tractare præſumant.

§. 5. Contrariis quibuſcumque non obſtantibus.

§. 6. Volumus autem ad hujus declarationis & prohibitionis noſtræ facilitorem notificationem, Præſentium exemplis etiam impreſſis, manu Notarii publici ſubſcriptis, & ſigillo alicujus perſonæ in dignitate Eccleſiaſtica conſtitutæ, vel etiam Prioris generalis pro tempore exiſtentis veſtræ Congregat. munitis, eandem proſus fidem adhiberi, quæ Præſentibus haberetur, ſi forent exhibitæ vel offenſæ.

De electione quolibet triennio in Capitulo generali fienda, Prioris Generalis, & aliorum Prælatorum Congreg. Canonice Regularium S. Salvatoris, Ordinis S. Auguſtini, ejuſque bonorum temporalium adminiſtratione.

Omnia hic diſpoſita, approbat Six. V. inf. in ejuſ conſt. 98. Ex varietate. ubi videas quæ indicabo.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Dilectis filiis Priori Generali, Viſitatoribus, Abbatibus, Præpoſitis, Prioribus, Vicariis, Prælatiſ, Procuratoribus, ac Officialibus quibuſcumque, nunc & pro tempore exiſtentibus, quocumque titulo nuncupatis, necnon Canoniciſ, Novitiis, Converſiſ, commiſſiſ, ac quibuſcuſvis aliis perſoniſ in Congreg. Canonice Regularium S. Salvatoris, Ordinis S. Auguſtini degentibus, ſalutem & Apoſtol. benediſtione.

Dat. Romæ apud S. Petrum, ſub annulo Piſcatoris die 16. Decemb. 1579. Pont. noſtri anno 8.

Declaratio quorundam ſtatutorum & privilegiorum Militiæ & Religionis S. Joan. Hieroſolymitani, circa profeſſionem emittendam, habitumque ſuſcipiendum. Et confirmatio exemptioniſ à ſolutione decimarum, & aliorum onerum quorumcumque.

Quo ad primam partem videri poteſt conſt. 9. Pii IV. Circumſpecta. ſup. fol. 10. Et quo ad ſecundam partem, atende conſt. 77. Pii V. Eriſ cuncta. fol. 292. ubi etiam cetera de hæc Militia indicavi.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Uo magis ac firmius Hoſpitaliſ S. Joannis Hieroſolymitani, Ordini, ſanctæ Sedis Apoſtolice, & Nobis acceptiſſimi, ac de Chriſtiano nomine, fideique Catholice deſenſione optime merito, illiſque Magno Magiſtro, Præceptoribus, & Commendatariis hætenus per Sedem Apoſtolicam conceſſa privilegia præſerventur, quo eundem Ordinem completimur, æquum eſſe providere.

§. 1. Dudum ſiquidem ſcl. record. Pius Papa IV. prædeceſſor noſter, dum favore ejuſdem Hoſpita-

Cen. VII.
statui. bene-
ficia & pen-
sion. habent-
es, habitum
suis pere de-
bers, & pro-
fesse. emittere
infra sex
menses, ut in
Pii IV. consil.
9. folio.

Paul. III. sta-
tuit Capella-
nos provide-
ri posse de
Ecclef. hujus
Ord. ut habe-
tur in d.
consil. Pii IV

Pius IV. sta-
tuit Clericos
seculares
non posse
cedere bene-
ficiis, nisi certo
modo de in ipsa
Pii consil. 9.

lis & Religionis, privilegia eidem antea concessa confirmavit atque approbavit, vel etiam ampliavit, animadvertens piam mem. Clem. Papam VII. etiam prædecessorem nostrum statuisse, quod omnes & singuli Bajulivatum, Prioratum, Præceptoriarum, domorum, & beneficiorum in vim collationum eis factarum possessores, seculares aut alterius Ordinis regulares, seu pensiones super illorum fructibus, redditibus, & proventibus hujusmodi, catenus etiam per Sedem eandem reservatas, percipientes, illas & illa infra sex menses à die intimationis dictarum Litterarum in manibus Magistri & Conventus prædictorum juxta formam stabilimentorum dictæ Religionis dimittere & transferre, seu illarum cassationi consentire teneantur, alioquin beneficia & pensiones hujusmodi nisi illa possidentes, & illas percipientes infra dictum tempus habitum susceperint, & professionem Regularem ipsius Religionis emitterent, lapsis mensibus ipsis vacarent, ac cassæ & extinctæ essent, & esse censereantur eo ipso.

§. 2. Ac deinde recol. mem. Paul. Papam III. etiam prædecessorem nostrum, ut Magister, & singuli Priores Bajulivi, Præceptores Milites & Frat. Hospitalis hujusmodi pro eorum libito parochiales, ac etiam sine cura Ecclesias, seu earum Vicarias, seu Capellanas perpetuas, aut Capellas vel Altaria, seu alia beneficia simplicia ad eorum collationem, præsentationem, electionem, seu quamvis aliam dispositionem ratione Prioratum, Bajulivatum, Præceptoriarum, etiam Camerarum magistratum nuncupatarum, Hospitalium, domorum, & aliorum beneficiorum dicti Hospitalis per eos pro tempore obtentorum de jure statuto, consuetudine, fundatione, aut privilegio, vel aliis quomodolibet spectantia & pertinentia, ab ipsis Bajulivis, Præceptoribus, domibus, Hospitalibus, & aliis beneficiis dependentibus seu illis annexa, quæ dudum forsan Frat. saltem Capellanis ejusdem hospitalis, & ab eisdem Magistro, Prioribus, Bajulivis, ac Præceptoribus, & aliis prædictis conferebantur, à longo tamen & forsan longissimo tempore citra, de cujus initio memoria hominum forsan non existeret per ipsos Magistram, Priores, Bajulivos, Præceptores, Milites, & Fratres, per abulum aut ex defectu hujusmodi Capellanorum, vel aliarum personarum ejusdem hospitalis ad id idonearum, Clericis seu Presbyteris secularibus collata, aut conferri, & per ipsos Presbyteros vel Clericos seculares obtineri solita, etiam Frat. hujusmodi, præsertim Capellanis nuncupatis, qui, ut asseritur, à Presbyteris seu Clericis, nisi quoad gestationem Crucis vel habitus dicti hospitalis ad pectus non differebant, imò privilegiis Clericorum secularium, juxta forsan eorum privilegia & consuetudines gaudere solebant, si ad id aliis idoneis & habiles reperirentur, conferre ac aliis de illis providere, & disponere, ipsique Fratres, quibus beneficia hujusmodi conferri contingeret, illa si sibi aliis canonicè conferrentur, aut ipsi eligerentur, præsentarentur, vel aliis assumerentur ad illa, & instituerentur in eis recipere, & in titulum, etiam quo ad viverent retinere, respectu liberè & licitè valeret, statuta & ordinationes extendisse & ampliavisse, eisque desuper indulgisse.

§. 3. Idem Pius IV. concessiones & privilegia dictorum Prædecessorum confirmans, ipsos Magistrum & Conventum, necnon Priorum Ecclesiæ, aliosque Priores & Præceptores intra limites suarum jurisdictionum & administrationis, veros ordinarios, juxta formam suorum stabilimentorum & privilegiorum existere, & esse censeri decrevit, ac beneficia Ecclesiastica ad præsentationem seu collationem Bajulivorum, Priorum, & Præceptor. Hospitalis hujusmodi suffragari debere, ita quod Presb. seculares illa tunc temporis Commendæ seu aliis quomodolibet obtinentes Commendæ hujusmodi cedere, aut illa aliis dimittere non possent, nisi de consensu eorum ad quos præsentatio, seu collatio spectaret & in favorem dicti

hospitalis, seu personarum, quæ habitum per frat. & pullanos ejusdem hospitalis de ceteri se licitum su ciperent, & professionem per eos emitti solitam emitterent, nec illa deinceps ipsi nisi infra sex menses à die intimationis habitum ipsius Religionis susceperint, & regularem professionem infra alios sex menses emisissent, possidere possent, & si fecus fieret, aut cessionem seu resignationem hujusmodi, aut de dicti Ordinis beneficiis, etiam in manibus suis in futurum fieri contingeret, hujusmodi cessiones, resignationes, & provisiones nullius essent roboris vel momenti, nisi in illis expresse diceretur, & de consensu Magni Magistri, & de illis juxta formam privilegiorum dictæ Religionis provideretur.

§. 4. Inter statuta etiam ejusdem Religionis per similis mem. Paul. Papam III. similiter prædecessorem nostrum, approbata & confirmata, ita cautum reperitur. Priores in suis Cameris, Prioratibus, Bajulivi & Commendat. in suis Commendis habeant provisionem, vel præsentationem beneficiorum Ecclesiasticorum cum cura animarum vel sine, à suis Commendis dependentium nisi id privilegio vel consuetudine ad alios pertineat. Item frat. Claudius de la Sengle Magister statuit, ut omnia beneficia Ecclesiastica ejusdem Ord. quorum collatio ad præsentationem ad dictum Ord. pertinet, nullis conferrentur, aut nulli ad ea præsentarentur, nisi essent Frat. ipsum Ordinem expresse professi, & aliis prout in ejusdem Pii IV. prædecessoris præfati Litteris, ac statutis & stabilimentis, vel privilegiis dicti hospitalis plenius continetur. Quæ omnia cum dispositione juris communis maxime congruant, tum auctoritate sacrosancti Conc. Tridentini nituntur.

§. 5. Verum cum, sicut accepimus, Clerici seculares possessores, cum cura & sine cura beneficiorum eorumdem collationem, provisionem, præsentationem, electionem, seu quamvis aliam dispositionem Priorum, Bajulivorum, Commendat. & possessorum aliorum dictæ Religionis bonorum, jure eorumdem Prioratum, Bajulivatum, Commendarum, & aliorum bonorum ejusdem Religionis habitum susceperent, & professionem regularem, prout in eadem Religione consuevit emittere negligant ac reculent, in statutorum ejusdem Religionis contemptum, ac juris communis dispositioni, & Concilii præfati decretis, privilegiis quæ ab hac sancta Sede Apost. ut præmittitur, concessis, contraveniendo, ac præterdant ejusdem Pii IV. prædecessoris nostri, mentis & intentionis non fuisse ad habitus susceptionem, & professionis emissionem eos teneri qui post ab eodem prædecessore obtentam privilegiorum confirmationem & ampliationem, de eisdem sive similibus beneficiis concessiones fieri quomodocumque obtinuerunt, cum de illis qui tunc temporis in Commendam seu aliis obtinerent, eundem Pium IV. prædecessorem sub isto verbo ad præfens statuisse dumtaxat præterdant. Allegantes quod Commendæ, provisiones, sive aliis quomodocumque concessiones de similibus beneficiis eisdem factæ post datam ejusdem Pii IV. prædecessoris Litterarum, sive mentio fiat, sive retineatur beneficia esse dictæ Religionis, sunt loco absolutionis, ac derogationis tacite, statutorum & privilegiorum ejusdem Ordinis, ita ut ad suscipiendum illius habitum, ac professionem emittendam minime teneantur, cum susceptio habitus, & professio ab eis emittenda ex ipsarum Litterarum serie expresse injunctæ fuisse non appareant; ex quibus eidem Ordini, illiusque Magistro, Prioribus, Bajulivis, & Commendatariis, maxima in dies exoritur incommoda, atque perturbationes, præsertim dum eorumdem beneficiorum status ponitur in incerto.

§. 6. Quare Nos, ut par est, debito Pastoralis officii omnium Christi fidelium, præsertim verò ejusdem Ord. præfatarum Regularium personarum pro JESU CHRISTI nomine, ac Catholicæ fidei tuitione ad interitum usque jugiter laborantium,

Paul. III. con-
firmavit
quendam
Statuta Re-
lig. circa pro-
visiones be-
neficiorum.

Hinc que-
riones ali-
que ortæ
sunt,

Hic modo
Pont. inha-
rendo Conc.
Trid. supra
dictorum
Pont. gratias
confirmat.

com-

commodis & indemnitatē, quantum in Nobis est, prospicere cupientes, simulque de communi ejusdem Ordinis ac Religionis bono vehementer solliciti, ne quid ei indebitē detraxatur, sacrorum Canonum ac decretorum dicti Concilii, eorumque statutorum & privilegiorum auctoritati, & tenoribus inhiere, eademque privilegia, statuta & ordinationes, ac dictorum Prædecessorum nostrorum Litterarum tenores Præsentibus pro expressis habentes, illaque omnia approbantes & confirmantes, præsentisque nostri Scripti patrocinio communientes, ac rata & grata habentes, ac quatenus opus sit, innovantes & de novo concedentes.

§. 7. Motu proprio, & ex certa nostra scientia, auctoritate Præsentium declaramus, numquam intentionis Prædecessorum nostrorum, vel nostræ, fuisse, in provisionibus, sive commendis, aut quibuscumque concessionibus beneficiorum Ordinis & Religionis hujusmodi, sive illa curata sive sine cura sint, per eosdem Prædecessores nostros, vel per Nos & eandem Sedem forsan etiam cum simplici derogatione privilegiorum & stabilimentorum religionis prædictæ, non tamen speciali, de non suscipiendo habitum, & non emittendo professionem mentione, seu per Magistrum, Conventum, Priores, Bajulivos, ac Commendatarios, vel alios quibuscumque personas cujuscumque status & dignitatis, factis & concessis, tacite illos absolvendi quo minus juxta ejusdem Ordinis statuta & privilegia intra tempus præfixum habitum suscipere, & professi, semper per Fratres ejusdem Ordinis emitti solent, emittere debeant regularem, etiam si hoc expresse in eorumdem Prædecessorum, aut nostris litteris adjunctum, vel junctum his ad quorum favorem hujusmodi beneficia concessa extiterint, nequaquam fuerit.

§. 8. Ac quo nostra hæc intentio singulis apertius innoscat, statuimus, ut omnes & singuli, qui vel per Sedem præfatam, vel per Nos aut Romanos Pontifices Prædecessores nostros, etiam cum simplici derogatione privilegiorum, seu per Priores, Bajulivos, & Commendatarios fuerint de beneficiis hujusmodi provisioni, sive hi, quibus eadem commendata, aut quomodolibet concessa extiterint, etiam si super his in Curia vel extra illas pendeat, ac de eisdem in posterum perpetuis futuris temporibus providebunt, aut demum quibus eadem commendabuntur, vel concedentur, etiam per Sedem Apostolicam si post sex menses, à die quo id eis legitime indictum atque denunciatum fuerit, illico numerandos, professionem non emiserint, & habitum non susceperint Ordinis prædicti, absque alia desuper facienda declaratione & citatione, omni & quocumque jure in dictis beneficiis vel ad illa competente, careant eo ipso, ipsique tanquam illiciti detentores & occupatores, & intrusi ab eisdem amoveantur, deque illis tanquam de jure atque de facto vacantibus, Magistrum, ac Conventum, Priores, Bajulivos, & Commendatarios, & alios ad quos spectat, liberè providere, ac de illis juxta Magistri & Religionis præfatæ stabilimenta & consuetudines exequi posse, eorumdemque possessores ab eorumdem beneficiorum possessione, vel potius detentione & occupatione amovendos esse, prout Nos in dictum casum & eventum amovimus, ac regulis de annali & triennali possessore, & aliis privilegiis, remediisque quibuscumque, etiam in corpore juris clausis, quibus divini beneficiorum possessores utuntur, ponuntur, & gaudent, uti, potiri, & gaudere non posse, quavis etiam longissimi temporis præscriptione minime obstante, verum eosdem pro amotis & expulsi habendos esse, & censeri, & amotisque & expulsi actionem spoli, nec unde vi vel aliud quodvis remedium possessionum sive petitorium competere, seu desuper propterea agere non valere.

§. 9. Et quo factus sit qui ad præsens reperiuntur quomodolibet provisioni de beneficiis à Prioribus, Bajulivis, & Commendis hujusmodi dependentibus, seu ad illorum collationem, provisionem, præsentationem, seu quavis aliam dispositionem spectantibus, etiam habitum dictæ Religionis non susceperint,

ad habitum ipsius susceptionem, & professionis emissionem inducantur, eisdem Prioribus, Bajulivis, & Commendatariis, licentiam & facultatem concedimus, ipsis condonandi & relaxandi eorum spolia, quæ ad dictos Priores, Bajulivos, & Commendatarios spectant, ita ut de illis disponere possint, tam in vitam quam in mortis articulo, condonationemque ac relaxationem hujusmodi ejusdem roboris ac momenti esse, ac si ab eadem Sede emanassent.

§. 10. Neenon fel. record. Pii Papæ Quinti etiam prædecessoris nostri Litteris inherentes, illasque approbantes & confirmantes, omnes & singulas personas in dicti Ordinis beneficiis quomodolibet exultantes à seminariis Clericorum in qualibet civitate, juxta dicti Concilii decreta erecti, seu erigendi, ac decimarum, subsidii, & aliorum onerum contributione totaliter eximimus & liberamus, ac liberos & exemptos esse volumus. Sicque in præmissis omnibus & singulis per quoscumque Judices, orlinarios & delegatos, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac dicti Ordinis apud Nos distantque Sedem, Protectores & alios S. R. E. Cardinales, sublati eis & eorum cultibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, ubique judicari & desini debent, irritum quoque & inane, si locus super his à quocumque quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari, decernimus.

§. 11. Quocirca dilectis filiis in Regnis Hispaniarum, & Neapolitani, nostris & Sedis Apostolicæ pro tempore existentibus Nunciis, aut Curie causarum Camere Apostolicæ generali Auditori, & quibuscumque Conservatoribus, per eosdem Magistrum, Bajulivos, Priores, & Commendatarios juxta formam privilegiorum Ordinis prædicti in dignitate Ecclesiastica constitutis, electis & eligendis, per Præsentem Motu simili mandamus, quatenus ipsi, vel duo aut unus eorum, per se vel alium seu alios præsentis Litteras, & in eis contenta quæcumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Magistri & Conventus, sive Priorum, Bajulivorum, Præceptorum, & Commendatariorum prælatorum, & aliarum personarum, & possessorum prælatorum fuerint requisiti, solemniter publicantes, illique in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra eos præmissis omnibus & singulis, juxta Præsentium continentiam & tenorem, pacifice frui & gaudere, non permittentes eos desuper à quocumque quomodolibet indebitè molestari. Contradictores quolibet ac rebelle, & præmissis non parentes per opportuna iura & facti remedia, ac demum per sententias, censuras, & penas Ecclesiasticas, appellatione postposita compescendo; invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 12. Non obstantibus Commendis & provisionibus, aliisque dispositionibus, vel concessionibus, quibuscumque verborum formulis illa concessa fuerint, ac fel. record. Bonifacii Papæ Octavi prædecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dictis, dummodo non ultra tres aliquis auctoritate Præsentium ad judicium non trahatur, aliisque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis contrariis quibuscumque; aut si aliquibus communiter vel divisim ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum deindulto hujusmodi mentionem.

§. 13. Decernentes Præsentibus, & in eis contentis omnibus per quasvis Litterarum concessionibus, provisionibus, & aliis quaslibet dispositiones, aliter quam ut præmittitur, per nos vel eandem Sedem factas, vel forte quomodolibet faciendas aut concedendas, etiam Motu proprio & ex certa scientia derogari non posse, nec derogatum censeri, cujuscumque tenoris & formæ emanaverint, & cum quibuscumque decretis & clausulis, etiam derogatoriis derogatoriis fortioribus & insolitis, etiam si causas quasque legitimas & favorabiles contingerent, quinimmo præsentibus illis omnibus expresse derogamus, eorum tenores pro sufficienter expressis habentes, Præsentibus sem-

Confirmat.
Pii V. exen.
protem a
decimis &
aliis oneribus.

Hanc const.
Pii V. indicavi in rubri.

Deputat
executores
hujus Bullæ.

Contrariis
derogat.

Clausulas
præservati-
vas apponit.

Et non susceperint habitum ipsius Religionis non susceperint.

Sufficientes autem spolia consequi possunt.

Transump-
torum fides.D.P. Am. S.
die 23. Mart.

LXI.

Edita An. D.
1580.

Exordium.

Pop. Rom.
instituit
reformare
antiqua
& nova con-
dere statu-
ta.Lucas Pætus
a Pop. unâ
cum aliis
deputatus,
in tres li-
bros Statuta
redig. &
huc Pont.
exhibuit.

per in suo robore permanfuris, nisi harum tenor de verbo ad verbum in illis esset insertas, & Magistris & Conventus consensus accederet.

§. 14. Volens autem quod Præsentium transumptis manu alicuius Notarii publici subscriptis, & sigillo alicuius personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, cartæ præfatus fides adhibeatur, quæ Præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensæ.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 23. Martii 1580. Pontificatus nostri anno octavo.

Statutorum Almæ Urbis confirmatio, cum declaratione quod Statuta ordinatoria in Curia Capitolina observentur, deciforia verò in omnibus Tribunalibus Urbis, ejusque districtibus, ubi non extent particularia statuta, de eisdem casibus disponentia.

Sciatis autem in causis criminalibus, Senatorem hac Statuta quò ad processum non servare, sed juxta facultates Gubernatoris Urbis procedere posse, ut consuevit à Summis Pontificibus explicari in Breui, quod pro Senatore expeditur in ejus electione. Et quò ad Universitates Artium ponitur, hic reintegratio hujusmodi Pontificis quò ad eorum jurisdictionem.

GREGORIUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memoriam.

URbem Romanam, ex qua; veluti à capite; juris civilis prudentia defluxit, atque inde in alias nationes, longè latèque est diffusa legibus semper atque optimis abundare oportet institutis, ut quæ tot donis prærogativisque excellit, seipsum in primis optimè regat; aliisque deinde Urbibus, exemplo Reipublicæ recta ratione administrandæ antecedit. Quod cum Nobis, pro eo quo illam Principis Apostolorum, ejus successorum, nostrique & Christianæ Religionis Sedem, prosequimur, veræ dilectionis affectu debito, quæ nostræ servitutis officium maximè semper curæ fuerit; plurimum in Donis lætati sumus; dilectos filios Populum Romanum, justitiæ colendæ studio; sollicitudini huic nostræ respondisse. Illi enim; cum Urbis mores, consuetudines & pleraque omnia negotia, ita viderent esse confusa, ut jus sibi cùm ab antiquis tum à junioribus traditum, & denique ipsamet Canonice sanctiones, in controversiis, quæ quotidie in judicium vocantur, dirimendis, aliisque rebus explicandis, prout tempus morisque postularet, non ita convenient, ne quid ab eis in concessa sibi facultate, desiderari contingeret; privatas leges sive statuta præsentibus temporibus ac negotiis congruentia, sibi condere, nostris auctoritate & præsidio freti, instituerunt.

§. 1. Id verò, dum serid agunt, noviterque in juris hujusmodi compositionem; Nobis annuentibus incumbunt, Statuta Urbis, quæ sibi à majoribus suis relicta habebant, satis perplexa & confusa invenerunt, in quorum libris, ob temporum vetustatem, Magistratuum fortasse negligentiam, multiplicesque superiorum ætatum editas reformationes sæpe, quæ adhuc vigeant, constitutiones, unâ cum abrogatis & obsoletis, aliisque aliis contrariæ promiscuè continebantur.

§. 2. Cupientes itaque idem Populus, ut jus proprium in certam formam; & quasi non dissentientium inter se Statutorum consonantiam redigeretur, ad præsentiumque temporum mores & negotia accommodaretur, provinciam hanc dilecto filio Lucæ Pæto utriusque juris Doctori, nonnullisque aliis Civibus Romanis demandandam curarunt; eorum verò aliquibus vita sanctis, aliis diversorum negotiorum occupatione districtis, idem Luc. stat. prædicta in

quinque libros prius distributa, supervacaneis amputatis, necnon invicem pugnantibus, & iis quæ vel desuetudine antiquata, vel contraria lege abrogata erant sublatis, additisque nonnullis reformationibus; ad dilectorum filiorum Conservatorum; Populique Romani Officialium regimen & directionem spectantibus, qui Nobis Populi ejusdem nomine obtulerant, in tres breves à modum libros, certo distinctioneque Ordine redegit; Nobisque superioribus annis exhibit.

§. 3. Qui intelligentes multa in populum Romanum prædictum commoda; ex nova hujusmodi Statutorum compilatione esse profectura, Dilecto filio nostro Julio Antonio tituli Sancti Bartholomæi in Insula Presbytero Cardinali, Sanctæ Severinæ nuncupato, mandavimus, ut convocatis dilectis filiis Conservatoribus Camere Urbis, & Prioribus Capitum Regionum, qui pro tempore fuissent, necnon Hortentio Frangipano Urbis Cancellario, Antonio Vellio, Fabricio Lazaro, & qui ejusdem Populi Romani Advocatus est, Horatio Burghesio, & Vincentio Parentio Aule nostræ Consistorii, necnon Bernardino Bischia, & Horatio de Arrigonibus in Romana Curia Advocatis, Stephano Crecentino, Marcello Alberino, Petro Paulo Fabio, Hieronymo Alterino, Augustino Palonio, Valerio de Valle, Prospero Cafarello, & Riccardo Mazzatosta, Romanis Civibus, à dicto Populo in suis Consiliis ad hanc rem, diversis & successivis temporibus, unâ cum prædicto Luca dilectis, congregatis quoque dilectis filiis nostris Alexandro tituli S. MARIE in Araceli presbytero Cardinali Riaro nuncupato, tunc Cameræ Apostolicæ generali Auditore, deinde magistro Hieronymo Mathæio, in ejusdem Alexandri Cardinalis locum ad munus Auditoris suffecti, necnon venerabili Fratre Hieronymo Episcopo Maceratesi, locum unius ex officis Ceticatus Cameræ Apostolicæ indulto Apostolico obtinente, ac dilectis item filiis, Magistris Alexandro Frumento, & Pyrrho Tharo; Notariis nostris in utraque Signatura nostra Referendis, ac etiam Mario Gabrielio ejusdem Aule nostræ Consistorii Advocato, à Nobis ad hoc specialiter deputatis, Statuta hujusmodi, per dictum Lucam compilata, diligenter excurrerent, atque examinerent, & quæ eis viderentur supplerent, corrigerent, deleterent, & emendarent. Qui frequentissimè per plures annos in unum congregati, eisdemque Statutis diligenter visis, & sigillatim examinatis, matureque discussis, alia emendaverunt, alia explanaverunt, nonnulla addiderunt, nonnulla quoque etiam sustulerunt. Denique Julius Antonius & Alexander, Cardinales, ac Hieronymus Episcopus, necnon Marius Gabrielus, & Lucas Pætus prædicti, eorundem Statutorum relectione & recognitione, omni studio & diligentia ab ipsis, de mandato nostro facta postremam illis manum adhibuerunt.

§. 4. Nos volentes eas, quæ tanto labore & maturitate ad publicam utilitatem digestæ sunt, inviolabiliter observari, Motu proprio, & ex certa scientia nostra deque Apostolicæ potestatis plenitudine, omnia & quæcumque antiqua Urbis Statuta, etiam reformatæ & innovata, & quibusvis approbationibus & confirmationibus Apostolicis roborata, Præsentium auctoritate abrogamus, tollimus, & penitus aboleamus, neminemque ad illa deinceps obligari volumus.

§. 5. Novissimè verò compilata Statuta prædicta, etiam tertis in eis expressis casibus, juramenti validitatem restringentia, sicuti prædictis tribus libris digesta sunt, approbamus, & confirmamus.

§. 6. Et ut approbatum hujusmodi amplius innotescat, has Præsentis in principio omnium librorum eorundem voluminum, quæ vel manu scribentur vel imprimuntur, omnino describi volentes, statui-mus, & Apostolica auctoritate decernimus, ut de cetero, post triginta dies à publicatione Præsentium nulla alia Statuta, quam hæc nova ad futuram causam dissolutionem, ad negotiorum expeditionem allegari possint, nec quicquam illa allegans, audiri debeat, sed tantum, secundum prædicta nova; à Nobis confirmata, in Curia Capitolina, & apud eam in futuris,

Pontif. autem depuravit Cardinalem S. Severinæ, & alios hic nominatos ad illa examinandum, & corrigendum, prout emendarent & correctur.

Antiqua scilicet Statuta abrogat hic Pont.

Novaque confirmat.

Observari etiam præcipit in Curia Capitolina generaliter, & in aliis Curis Urbis, & districtis quoad deciforia tantum.

omnibus causis, in ipsa Curia Capitolina v. d. elect. etiam quoad causarum processum, & quoad alia ubique in ipsa Urbe, illiusque districtu, tibi particulari Statuta, de eisdem causis & eorum casibus disponenda, non habentur, quavis alia iustitiam, dolo, vel capitiola interpretatione subverta; in quacumque instantia, inviolata, ac perpetuo observentur, ac juxta illa lites & controversie omnes in futurum iudicari, decideri & definiti debeant.

§. 7. Nec illis nisi per Signatorem nostram & pro tempore existentis Romani Pontificis manu factam, nequeat derogari. Sitque irritum & inane quicquid fecus super his à quocumque, quavis auctoritate, seu tunc vel ignoranter contigerit attentari.

§. 8. Non obstantibus praemissis, ac constitutionibus & ordinationibus, necnon privilegiis & indultis Apostolicis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis, irritantibusque & aliis decretis concessis, confirmatis & innovatis, quorumcumque tenoribus existant, per quae Praesentibus non expressa, aut omnino non inserta, effectus earum impeditur valeat, quomodolibet vel differri, & de quibus, quorumque totis tenoribus, ad verbum habenda sit in nostris Litteris mentio specialis, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 9. Volumus autem ut Praesentium exemplis etiam impressis, Notarii publici manu, & personae in dignitate Ecclesiastica constitutae sigillo obgnatis, ac etiam praedictis voluminibus descriptis, eandem prorsus fidem ubique in iudicio & extrailud adhiberi, quae eisdem Praesentibus adhiberetur, si exhibitae essent vel ostensa. Nulli ergo &c.

Datum Romae apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicae millesimo quingentesimo octogesimo septimo, octavo Cal. Junii. Pont. nostri anno nono.

Sequitur reintegratio jurisdictionis & indultorum Universitatum Artium Urbis praeservata superioritate Gubernatoris, & aliorum Judicum.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Almam Urbem nostram, dilectisque filios illius civis & incolae, eos praefertim quorum laboribus & industria, bona & merces ad usum quotidianum necessariae & utiles ad Urbem ipsam, ex diversis mundi partibus convehuntur & conservantur, ac onera ipsi Urbi incumbunt, cura & labore assiduo sustinent, paterno affectu prosequentes, in ea libenter intendimus, per quae privilegia & gratiae illis à Praedecessoribus nostris, Nobisque ipsis concessae, & consuetudine confirmatae & approbatae fuerunt, Apostolica auctoritate roborantur, & haestitationes circa ea subortae elucidantur, & de medio tolluntur.

§. 1. Cum itaque dilecti filii Mercatores, Mercarii, Aromatarii & quamplurimii alii diversi generis Artifices, quorum omnium & singulorum artes, exercitia, denominationes, ac alia hic forsitan latius, vel de necessitate exprimenda, ac speciali nota digna, per expressis, ac de verbo ad verbum pro insertis haberi volumus, perinde ac si specialiter ac feriatim exprimerentur, ad Urbem ipsam confluentes, illius necessitati & utilitati ac decori & ornameto, Altissimo cooperante maxime prospexerint. Et propterea fel. recordationis Martinus V. Paulus III. Julius c. III. Pius IV. & nonnulli alii Romani Pontifices praedecessores nostri, ac etiam Nos ipsi, considerantes Artes huiusmodi, illarumque Artifices ipsi Urbi admodum necessariae & utiles existere, singulosque ipsos Artifices sine Receptoribus & Ducibus, ac sine ceteris Iudicibus degentes, ipsi Urbi parum utiles, sibi quae ipsi non admodum proficuos futuros, dum pro suorum creditorum consecutione, ad diversa Tribunalia, &

quod pejus est, ad Iudices de artificio, & minus pretio ipsarum artium omnino in expertos & ignaros distracti, propria eorum negotia, & artes ipsas deserere cogentur, A. t. de huiusmodi Collegia habere, & Consules, Officiales, ac Iudices ex ipsorum corpore creare, & de mercedibus & mercedibus, aliisque rebus, causis, & negotiis cuiusque artis, & ad artem quomodolibet respectivè spectantibus usque ad certas, in singulis Litteris & privilegiis huiusmodi comprehensas & expressas summas, agnoscere & iudicare concesserunt & indulserunt.

§. 2. Ac insuper ex antiqua consuetudine, quae vim legis habere dignoscitur, ut etiam Collegia specialibus privilegiis non munita causas easdem de rebus ad Artes ipsas spectantibus, etiam inter homines extra ipsa Collegia constitutos cognoscere & decidere consueverint, inductum & observatum fuerit, eademque privilegia, indulta & consuetudo usu ipso approbata, in ipsius Urbis, Artificumque praedictorum utilitatem non parvam cedere comperta sunt. Quo factum est, ut Urbis ipsa civibus & incolis, omnique generis artis excellentium virorum copia redundaverit, & redundet de praesent.

§. 3. Cum autem elapsis mensibus antiqua statuta ipsius Urbis de mandato nostro reformata & innovata, & inter cetera eorumdem Statutorum lib. 3. cap. 12. statutum & decretum fuerit, ut Consules Artium huiusmodi causas tantummodo inter ipsos homines de arte, & de rebus spectantibus ad artem ipsam cognoscere & iudicare possent; ea propter à nonnullis nimium scrupulosis, privilegiis, indultis, & consuetudine cuiuslibet artis & Collegii, circa cognitionem & decisionem causarum & negotiorum, quae licet de rebus ad artes ipsas spectantibus, contra homines extra artes & Collegia degentes pro tempore oriuntur & agitantur, maxima ex parte derogatur & praedictatum extitisse haestitatum fuerit, & haestitatur adhuc. Unde aliqua ex ipsis Collegiis penè dissoluta & dilapsa reperiuntur, Consulum jurisdictione penè, praeter & contra mentem & intentionem nostram subverta, Quapropter dilecti filii Angelus Clavarius, Franciscus Calvius, & Curtius Sergardius Cameracae dicte Urbis Conservatores, necnon Baltasar Cincius Prior Capituli regionum, Nobis ex dubitate & haestitatione huiusmodi maxime ipsi Urbi, illiusque incolis & praecipue jurisdictioni ipsius Curiae Capitolinae provenisse, ac in futurum provenire posse damnum & incommodum, non sine animi nostri displicentia fugerunt.

§. 4. Malis igitur & incommotis huiusmodi quantum citius occurrere, quantum cum Deo possumus litigantes, Motu proprio, non ad ipsorum Conservatorum, & Prioris, nec Consulum aut Artificum praedictorum, seu alicuius eorum, vel pro eis, aut eorum aliquo, Nobis oblatae petitionis instantiam, sed ex nostra mera & deliberata voluntate, ac de Apostolica potestate plenitudine, haestitationem & dubitationem praedictam de medio tollentes, intentionis & voluntatis nostrae minime fuisse nec esse, privilegiis, indultis, statutis, & consuetudinibus singularum artium, earumque Collegiorum, Consulum & Iudicum quorumcumque, circa cognitionem & decisionem omnium & singularum causarum, de rebus & bonis ad artes singulas respectivè spectantibus, etiam inter & contra homines, qui de ipsis Artificibus & Collegiis non sunt, nec pro tempore erant, verentes & quae futuris perpetuis temporibus verticet, teneat, in aliquo derogare, aut derogatum fuisse declaramus & attestamus, decernimus & definimus Praesentium per tenorem.

§. 5. Et nihilominus pro potiori eorumdem Corporum & Collegiorum, omnium & singulorum, ipsorumque & cuiuslibet eorum privilegiorum, indultorum, statutorum & consuetudinum circa cognitionem & decisionem causarum similium, denuo quatenus opus sit, privilegia, indulta, & consuetudines, Apostolica auctoritate eorumdem tenore Praesentium confirmamus & approbamus, illisque omnibus & singulis nec-

Consuendo etiam Artib. tribuitur eandem jurisdictionem.

Sed Statuta Urbis noviter edita lib. 3. c. 42. 12. iussu Consulum jurisdictionem in homines de Artes.

Hic modo Pont. declarat haec statuta eandem jurisdictionem non praedictare.

Jurisdictione eorumdem reintegrat. Hic idem factu dicit. V. in cons. 36. Coelestis, & Clem. VIII. in cons. 17. Laudabilis.

Appellari- que ab eorum fementis permittit ut hic. Sed hoc mox infra est immutatum.

Clausulae prae-
servati-
vz.

Clausulae de-
rogatoriæ.

D. P. An. 9.
die 1. Maii.

Publicatio
in Urbe.

Admissio a-
pud Con-
servatores.

Edita An. D.
1581.

Constitutio
præinfecta

petuæ firmitatis robur adjicimus. Decernentes omnes & singulos Consules, & alios quoscunque Officiales & Judices omnium & singularum artium & Collegiorum hujusmodi, de negotiis & causis ad singulas quasque Artes respective spectantibus, etiam inter & contra homines qui de Corporibus & Collegiis Artium ipsarum pro tempore non sint, cognoscere & judicare potuisse & debuisse, postque & debere, prout & quemadmodum ipsi omnes & singuli Consules & Judices singularum Artium ante dictorum statutorum publicationem & confirmationem per Nos, ut præfertur, editam & promulgatam, & juxta cujusque ipsorum privilegia, indulta, & consuetudines cognoscere, decidere, & judicare poterant & consueverant, de rebus tamen ad singulas artes ipsas respective spectantibus, cognoscere & judicare in prima instantia dummodo in articulis juris, Consultorem, seu Assessorem adhibeant, auctoritate & tenore præmissis concedimus & indulgemus.

§. 6. Declarantes a seutentis, declarationibus & decretis Consulum & Judicum prædictorum infra terminum octo dierum à die latæ sententiæ, seu facti decreti, ad Conservatores, & non alios quoscunque Judices appellari & recurri posse & debere, & aliter, seu ab aliis factæ inhibitiones & significationes prætex-
tibus appellationum & recursuum, nemini suffragari.

§. 7. Præsentemque litteras de subreptionis & obreptionis vicio, mentisque aut intentionis nostræ defectu, notari aut impugnari nullatenus posse, sique per quoscunque Judices, etiam S. R. E. Cardinales judicari & definiti debere; irritum quoque & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 8. Non obstantibus præmissis statutis ipsius Urbis, ut præfertur, per Nos editis, promulgatis & confirmatis, ac constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, & Cancellariæ nostræ regulis, etiam de non tollendo jure quæstio; privilegiis etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, per Nos & Prædecessores nostros quibuscumque dictæ Urbis Judicibus & Tribunalibus quomodolibet concessis & innovatis, illorum tenores Præsentibus pro expressis habentes; ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris die prima Maii; millesimo quingentesimo octogesimo primo.

Anno à Nativitate Domini 1581. Indiæ. 9. die vero 12. mensis Maii, tempore Pontif. Sanctiss. in Christo Patri & D. N. D. Gregorii divina providentia Pape XIII. anno ejus 9. retroscripte littera Apostolica in forma Brevium affixa, & publicata fuerunt in acie Campi Floræ, Cancellariæ Apostolicæ, & Curie Capitolii valvis, cum dimissione copie illarum, ut moris est, per me Alamanum de Alemanis Sanctiss. D. N. Pape Cursorem.

Jo. Andreas Panizza Mag. Curs.

Die 23. ejusdem mensis Maii 1581. Illustrissimi D. Conservatores Camera Alme Urbis, existentes in Camera nova eorum Palatii, dictum Breve admissum & mandaverunt registrari mihi scriptoribus infra scripto, prout registratum apparet libro rubeo fol. 226. presentibus &c. dd. Jacobo de Orlandis, & Nicolao Pirotto testibus &c.
Petrus Paulus Mutianus scriptor Illustrissimorum DD. Conservatorum rogatus &c.

Sequitur declaratio, quod constitutio præinfecta non præjudicat facultatibus Gubernatoris Urbis, Capitanei Appellationum, & aliorum Judicum.

GREGORIUS PAPA XIII.

Motu proprio, &c.

§. 1. NE per præinfectas Litteras in forma Brevis nostri aliquod præjudicium bono &

pacifico regimini Alme Urbis nostræ, & illius Gubernatori, ac aliis Judicibus ordinariis ipsius Urbis inferatur. Dicimus & declaramus intentionis nostræ minime fuisse nec esse, quod per præinfectas Litteras in aliquo jurisdictionibus, & facultatibus, ac superintendentiæ ejusdem moderni ac pro tempore existentis ejusdem Urbis nostræ Gubernatoris, ac aliorum Judicum ordinariorum dictæ Urbis, circa causarum cognitiones in præinfectis Litteris expressas, perinde ac si præinfectæ Litteræ à Nobis emanatæ non fuissent; minime præjudicetur. Nec ullo unquam tempore eisdem Gubernatori & Judicibus ac eorum Locatentibus, & eorum cuilibet, præjudicatum esse intelligatur, prout præjudicare nolumus, sed quod eorumdem Gubernatoris, & Judicum, & Capitanei Appellationum jurisdictionibus & facultatibus, quas per prius habebant, salvæ & illæ circa præmissa perpetuo maneant, & illis præinfectas eis non obstat volumus, appellationesque & provocaciones omnes ad eos, ceteroque Urbis, & Curie ordinariorum, & eorum tribunalium, sicut prius, videlicet ante dicta statuta, sine ullo impedimento deferantur.

§. 2. Decernentes &c. & sic per quoscunque etiam S. R. E. Cardinales ac alios Judices &c. judicari &c. debere; sublata &c. irritum quoque &c. scienter contigerit attentari &c. ac solam Præsentium signaturam, in judicio & extra sufficere, & plenam fidem facere, regula contraria non obstat.

Fiat Motu proprio V.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Non. Julii anno 10.

Quod Fratres Prædicatores Ordinis S. Dominici, ad instantiam cujuscumque persone extra ipsum Ordinem, aliquam gratiam facere, aut penam remittere non possint, neque conquisitis favoribus & suffragiis officia procurare.

Quoad secundam partem Clem. VIII. declaravit hanc prohibitionem & ampliat, ut infra in ejus constit. 7. Religiosos. Quo vero ad primam partem confirmavit, ut ibidem. Alia autem de his Fratribus, & eorum Ordine, plenè scripti sup. apud const. 2. Honor. III. Religiosos. fol. 79.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Cum nihil magis religiosorum statum perturbet, quam favorum & suffragiorum secularium aucupatio, & conquisitio, quibus Superiorum æqua mens, quæ pro meritis suorum unicuique subditorum, tribui debet, pervertatur.

§. 1. Nos malum hoc ab Ordine Fratrum Prædicatorum, cujus prosperum regimen & incrementum ad Ecclesiæ Sanctæ utilitatem, sinceris exoptamus affectibus, pro nostra Pastoralis sollicitudine propellere summo opere cupientes, Dilectis filiis Magistro Generali, ac Provincialibus, & reliquis ejusdem Ordinis Prælatiis nunc & pro tempore existentibus, per Apostolica scripta, & in virtute sanctæ obedientiæ præcipimus & mandamus, ne ad instantiam, & requisitionem quarumcumque personarum, tam laicarum quam Ecclesiasticarum, extra supra dictum Ordinem constitutarum, etiam Cardinalatus honore, ac quacumque seculari dignitate, & excellentia, etiam Ducali & Regali, & Imperiali fulgentium, cujus dii Ordinis religiosi ullam gratiam concedere, vel penas aliquas remittere audeant seu præsumant.

§. 2. Quinimo quoscunque ejusdem Ordinis Fratres & Religiosos, qui contra decreta suarum constitutionum hac via, & iis mediis per mendicatos favores & suffragia, aliquid sibi procuraverint, ad alia & similia, & etiam majora in eodem Ordine consequenda, Apostolica auctoritate, tenore Præsentium inhabilitamus, ac inhabiles perpetuo fore & esse,

on præjudicat facultatibus. Gubernatoris & Capitanei Appellationum Urbis.

Decretum irritans.

Papa subscrip. D. P. A. 10. die 7. Julii.

LXII.

Edita An. D. 1580.

Exordium.

Prohibitio faciendi gratiam aut remittendi penam ad instantiam persone extra Ordinem.

Et conquisitis favoribus suffragiis officia procurandi.

neque per quoscumque, nisi per Sedem Apostolicam rehabilitari, aut cum ipsis desuper dispensari posse.

§. 3. Sicque per quoscumque Iudices ordinarios & delegatos etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Cardinales, sublati eis & eorum quilibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, iudicari & definiti debere, irritum quoque & inane quicquid contra præmissa aliquibus concessum fuerit, aut super iis à quoquam contigerit attentari, auctoritate & tenore prædictis decernimus & declaramus.

§. 4. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac dicti Ordinis, etiam juramento, & confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis quomodolibet concessis, confirmatis, & innovatis; quibus omnibus tenores, ac si de verbo ad verbum inferrentur, Præfentibus pro sufficienter expressis habentes, ad earumdem Præfentium effectum specialiter & expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 5. Volumus autem quod Præfentium transumptis, etiam non impressis manu alicujus publici Notarii subscriptis, & sigillo dicti Magistri Generalis obfignatis, eadem ubique fieri adhibeatur, quæ ipsis originalibus Litteris adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensæ.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris die primo Junii, millesimo quingentesimo octogesimo, Pontificatus nostri anno nono.

Contra non solventes in Festo SS. Petri & Pauli census, canones, & alia jura Rev. Cameræ Apostolicæ debita.

Contra non solventes hos census primam sanctionem edixit Innoc. VIII. supra in ejus consl. 3. Apostolicæ, fol. 434. Et deinde latorem constitutionem firmavit Paul. IV. sup. in consl. 11. Incumbentia ubi etiam notari in Tomo 1.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

AD Romani Pontificis spectat officium, boni patris familias exemplo, curare sedulo ac providere, ne Sedes & Cameræ Apostolicæ dominia, proprietates, & jura deperant, neve contra jus fasque ab aliis occupentur, ac si quæ ex eis vel temporum injuriâ, vel hominum malitiâ & cupiditate; vel aliquo alio casu detineri, & usurpanti contingat, illorum recuperationi decenter inflare, quo & ipsius Sedis, & aliorum Christianorum Principum; atque adeo universæ Christianæ Reipublicæ necessitatibus & opportunitatibus valeat subvenire.

§. 1. Hoc sanè consilio; & animo complures Romani Pontifices prædecessores nostri, & in his pie mem. Innocentius VIII. sextio. Maii, octavo; Alexander VI. quintodecimo Kal. Januarii, sexto; & Paulus IV. octavo Kal. Novembris, secundo Pontificatum suorum annis editis Constitutionibus, & litteris, adversus omnes, & quoscumque S. R. E. & Cameræ Apostolicæ feudatarios, vicarios, gubernatores, censuarios, emphyteutas, & alios Cameræ Apostolicæ debitores, eisdem Sedis, & Cameræ debitas solutiones, tertis die, & loco statuti se ipsa non facientes, pactaque, & conventiones in eorum investituris, & aliis concessionibus, necnon modis, & formis; aliisque omnia in eisdem Prædecessorum litteris contenta non adimplentes; sententias, censuras, & penas; tam Ecclesiasticas quam privationis, & caducitatis feudorum, vicariatuum, guberniorum, locationum, censuum, administrationum bonorum, jurium, & aliorum in eorum concessionibus quomodolibet contentorum, sæpe sæpiusque citati, & interpellati fuerunt.

§. 2. Quorum deinde Constitutionum, & Litterarum vigore, ac etiam juxta antiquam & laudabilem consuetudinem, singulis annis in vigilia, & festo beatorum Apostolorum Petri & Pauli hætenus in Camera Apost. servatam coram ejusdem S. R. E. Camerario, & Cam. prædictæ Presidentibus, Clericis, & aliis Cameram prædictam facientibus, & representantibus, pro recipiendis censibus, & aliis prædictis ibidem congregatis, ejusdem Cameræ & Fisci Procurator pro tempore existens, acceptando prius omnes & quascumque dictarum concessionum, & investiturarum caducitates, devolutiones, & privationes, necnon contractuum, & instrumentorum resolutiones, extinctionesque & alias penas, legales seu conventionales, ac aliter per eos incurfas, eosdem non solventes, seu non adimplentes promissa, ac dictis investituris, & concessionibus contenta, seu alias per eos quomodolibet debita, ab eorum feudis, vicariis, guberniis, locationibus, administrationibus; censibus, & bonis, ac concessionibus, & investituris cecidisse, & illis privatos fuisse, nec per quamcumque receptionem, in totum seu in parte de eisdem censib. postea tam in eadem Camera quam extra eam, & tam per ipsum quam alios quoscumque factam, juribus ejusdem Cameræ præjudicari, sed quod semper ad bonum computum, ac eosdem sicut præfatur non solventes, & non adimplentes morosos declarari per Cameram prædictam singulis annis petitis, & inflicti, ac morosos, & contumaces, vel alias decerni & declarari obtinuit.

§. 3. Itaque idem Paulus prædecessor protestationes, declarationes, sententias, & decreta prædicta per eandem suas Litteras confirmans, & approbans perpetuo statuit, omnes occupatores, & detentores feudorum, & aliorum prædictorum, ad illa eisdem Cameræ relaxandum, & restituendum infra certum terminum quod jam pridem præterit, quacumque prescriptione; etiam centum annorum & forsan ultra non obstante obligatos esse, cogique posse, & debere; & alias prout in constitutionibus & litteris, necnon protestationibus, interpellationibus, declarationibus, sententiis, & decretis prædictis latius continetur.

§. 4. Postea verò tam Pauli prædecessoris quam prædictarum, & aliarum Prædecessorum nostrorum constitutionum, & litterarum hujusmodi vigore feudatarii, & alii prædicti ad ejusdem Cameræ Fiscique procuratoris instantiam solemniter singulis annis; in vigilia & festivitate prædictis, ut moris est, ad legitime in eadem Camera comparendum; ac dictos census, recognitiones, seu responsiones, aliæque per eos promissa, conventa; & quomodolibet debita cum effectu adimplendum, sub sententiis, censuris, & penis, tam in ejusdem Pauli quam dictorum, & aliorum Prædecessorum nostrorum litteris contentis, necnon privationis, & caducitatis feudorum, vicariatuum, guberniorum, locationum, censuum, administrationum bonorum, jurium, & aliorum in eorum concessionibus quomodolibet contentorum, sæpe sæpiusque citati, & interpellati fuerunt.

§. 5. Qui tamen præmissis, ac etiam Litteris quotannis die Coenæ Domini legi solitis, quibus detinentes loca, & bona ejusdem Sanctæ Romanæ Ecclesiæ, & illa non restituentes, censuris quoque, & penis Ecclesiasticis innodantur minime attentis, non modo census, & alia per eos ut præfatur debita solvere, & adimplere cessarunt, & cessant, sed etiam loca & bona, ac alia prædicta temere, atque indebitè & de facto occupata detinuerunt & detinent, sententias, censuras, & penas ipsas, ac etiam privationis, & amissionis dictorum feudorum & aliorum, & alias in eisdem litteris contentas damnabiliter incurrendo. Cum autem de mandato nostro, & ad instantiam dilecti filii Rodulphi Bosfoli dictæ Cameræ Commissarii, eorum omnes, & singulos morosos occupatores, & detentores hujusmodi, non solum generatim in vigilia, & festo prædictis proximè præteritis, sed postea nominatim contra multos ex eis in eadem Camera, & torâ diversis illius Presidentibus, & Clericis legitime, & cum protestatione, ad devolutiones caducitatesque,

Fiscus quolibet anno in vigilia & festo SS. Petri & Pauli acceptavit caducitates, & devolutiones & non solventes morosos & contumaces declarari à Cameralibus obtinuit.

Paulus IV. comprobavit dictas Fisci protestationes & Cameralium sententias, & decreta, ut habes in dictis ejus consl. xi. cit. in rubr.

Postea quodlibet anno Feudatarii, & alii Cameræ debitores; in vigilia, & festo SS. Petri & Pauli citati, ut illa solverent, & non solventes, censuris, & penis de quibus hic innodati fuerunt.

Multa tamen à hic Terras & bona Sedis Apost. detinent, & in penas prædictas non incurrisse prætestantur ex causis hic narratis.

Sublata aliter iudicandi potestate.

Quibuscumque non obstantibus.

Transumptum fides.

D. P. An. 2 die 1. Junii.

LXIII.

Edita An. D. 1580.

Exordium.

Nèquie Pontif. penas imposuerunt non solventibus annatas Cameræ Apost.

& privationes, necnon sententiarum, censurarum, & poenarum prædictarum incurfus agi ceptum fuerit, & in dies agatur, & sicut accepimus nonnulli eorum ad se in occupatione, detentione, & intrusione Civitatum, Terrarum, Oppidorum, Castrorum, locorum, tenutarum, arcium, fortalitiorum, & aliorum bonorum, & jurium hujusmodi, sic ut præfertur, ac aliàs ad Sedem, & Cameram prædictas devolutorum conservandum, sub prætextu, quod tam Pauli prædicti quam aliorum Prædecessorum constitutiones, & litteræ prædictæ non fuerint nec sint perpetuæ, sed ad tempus, nec vim legis five constitutionis perpetuæ habuerint aut habeant, sed feudatarios, vicarios, & alios prædictos, tunc scilicet tempore emanatarum earundem constitutionum ac Litterarum existentes tantummodo comprehenderint, ac quod numquam in usu fuerint, seu esse definierint, & quod ipsi de illis scientiam etiã ex defectu nullitatis & publicationis earundem, seu alias non habuerint, quodque ad concessionem & investituram ex causa onerosa, etiam in vim contractus, seu alias quomodolibet factas, pro quibus certa annua solutio parvi pretii, nempe in cera vel alia minima re, non commodum seu utilitatem, sed potius recognitionem Superioritatis, Sedis, & Camere hujusmodi concernente, fiat seu fieri debeat, se non extenderint seu extendant, & quod in eorum concessionibus seu investituris prædictis, conventiones & pacta aliqua expressa inita fuerint per quæ cautum fuerit, & sit quod non factam censum, & aliorum prædictorum debito tempore solutionem, seu ob pacta non servata, vel nisi sub certa qualitate, & nisi infra certum tempus, vel alias nisi in certis casibus devolutionem seu caducitatem vel privationem, & prædictas aliasque poenas non incurrant, vel saltem quod eis quaecumque moram ob præmissa vel aliàs quomodolibet incursum & tunc incurrendam purgare, ac sese ab eisdem devolutione, caducitate, privatione, vel incursum, & aliis penis à dictis constitutionibus, & Litteris, ac jure communi traditis, ex variis, & diversis per eos allegatis prætextibus licenti & liceat exulari, & sic istis, aliisque subterfugiis, & cavillationibus, lites, & causas desuper in eadem Camera, ut præfertur, motas seu movendas in longum protrahere, & quotidie nova impedimenta objicere conantur, in maximum Sedis & Camere prædictarum præjudicium, ac eorumdem animarum periculum.

§. 6. Nos cupientes, quantum cum Deo possumus, pro munere Nobis ex alto commissio, Sedis & Camere prædictarum indemnitate providere, ac oppositionibus & aliis præmissis opportunum remedium adhibere, de Apostolicæ potestatis plenitudine, certaque scientia nostra etiam Prædecessorum nostrorum prædictorum vestigiis inherendo, easdem Innocentii, Alexandri, & Pauli, ac omnium aliorum Romanorum Pontificum constitutiones super præmissis, & illorum occasione vel causa quomodolibet editas, & emanatas, ac earum singulas, & desuper confectas Litteras, ac in eis contenta quaecumque, necnon protestationes & interpellationes, sententias, & decreta in vigilia & festo prædictis, præsertim a quo præterito in eadem Camera factas, illarum singularum tenores, ac si de verbo ad verbum infererentur, Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, cum omnibus & singulis in eis contentis clausulis, & decretis, tenore Præsentium perpetuo confirmamus, approbamus, & quatenus opus est, innovamus, ac ab omnibus, & quibuscumque feudatariis, aliisque prædictis inviolabiliter observari debere volumus, & mandamus.

§. 7. Declarantes illa omnia perpetuo fuisse, esse, & fore, vimque, & robur perpetuarum legum obtinuisse, & obtinere, & sic omnes, & singulos, præteritos, præsentis, & futuros Feudatarios, Vicarios, Gubernatores, Administratores, & alios censuum, recognitionum, ac jurium debitorum, etiam antiquos & antiquissimos diu, ante vel post dictas constitutiones, seu tempore illarum creatos, seu deputatos, ac futuros delincentes temporibus in perpetuum quomodolibet creandos, & deputandos, quoscumque dignitatis, status, gradus, ordinis & præminentie, Ecclesiasticæ

vel laicalis, fuerint & sint, etiam si Cardinalatus honore, seu Regiâ, Ducali, vel alia etiã majori dignitate, & auctoritate præfulserint, & præfulgeant, singulis dicti Innocentii, Alexandri, & Pauli Prædecessorum nostrorum constitutionibus, & Litteris comprehensis fuisse & esse, illasque ipsos omnes, & singulos affectis, & efficere, & propterea singulas Litteras, clausulas, & conditiones, ac alia præmissa, tamquam talia habenda & conservanda esse, itemque acceptiones, declarationes, protestationes, interpellationes per dictum Fiscum procuratorem, ut præfertur, factas, ac sententias, & decreta per dictam Cameram singulis annis in vigilia, & festo prædictis, ut præfertur, latas, & factas, ac in futurum ferendas, & faciendas, omnes & singulos Feudatarios, Vicarios, Gubernatores, Censuarios, & alios prædictos, tam præteritos quam præsentis & futuros, & in ipsis generaliter & aliàs specialiter, ac quomodolibet nominatos perinde affectis, & efficere, ac si in contradictorio iudicio causa cognita, & servatis de jure servandis, facta & lata fuissent & essent, ac transgressores, & morosos caducitatis, devolutionis, & privationis quorumcumque Feudorum, Vicariatuum, Guberniorum, & aliorum prædictorum eo ipso, absque aliqua Judicis declaratione, incurrisse, & incurere, dictosque Camerarium, & Præsidentes, ac Clericos & alios ad quos spectat, ad realem incorporationem Civitatum, Terrarum, Castrorum, locorum, bonorum, jurium, & aliorum prædictorum pro Sede, & Camera prædictis omnibus præmissis, necnon omni, & quacumque appellatione, reclamazione, seu recussu positus remotis, devenire debuisset & potuisset, ac teneri, & obligatos fuisse, & esse.

§. 8. Et nihilominus omne dubium removere volentes, de potestate, & scientia prædictis, statumus, & ordinamus, ut omnes, & quicumque Feudatarii, Vicarii, Gubernatores, & alii prædicti superius, & etiam in eisdem Prædecessorum Litteris comprehensis, qui vel quorum auctores, sub quibuscumque rectoribus, & formis etiam quacumque de causa, gratiosa, onerosa, vel mixta, etiam in vim cuiuscumque contractus, Regni, Ducatus, Civitatis, Castra, oppida, terras, arces, fortalitia, villas, agros, possessiones, cultas, & incultas, casalia, lacus, sylvas, proprietates, bona, & jura quaecumque, ac cuiuscumque generis, & conditionis fuerint, & sint, in verum, proprium vel improprium feudum Regale, Ducale, vel aliàs quomodolibet nobile & gentile, seu ignobile, antiquum, seu novum, vel in vicariatum, gubernium, censum vel emphyteusim ad quaecumque agnationem & nominationem, & in perpetuum vel ad tempus, aut aliàs quomodocumque, & qualitercumque à Sede & Camera prædictis, sub conventionione vel provisione jurata vel non jurata, ac sub præstatione census, canonis, pensionis, regali, & aliari quorumcumque responsonum & recognitionum, cuiuscumque qualitat, & quantitat, etiam parvi vel minimi valoris, superioritatem, præminentiam, recognitionem domini, commodum pecuniarum, aut aliam quencumque eff. & si, & respectum denotantium receperint, & habuerint, ac habent de præsentis, & hujusmodi census, canones & responsones, per se ipsos vel eorum legitimos Procuratores, juxta formam dictarum Litterarum, in vigilia & festivitate prædictis singulis, quibusvis successivis, non autem intermissis annis in ipsa Camera ubicumque eam adesse contigerit, & non alibi, nec alio die, quibuscumque conventionibus, in contrarium quomodolibet factis & usu receptis, ac consuetudinibus etiam immemorabilibus quomodolibet introductis, & aliis quibuscumque possessionibus ipsi, vel eorum auctoribus factis non obstantibus, non solvant, & integrè non satisfecerint, ac pacta, & conventiones & ad quæ tam ex forma dictarum concessionum, quam interpellationum, & requisitionum, aliàs de jure, usu, & consuetudine tenentur, non adimpleverint, & adimpleverisse ibidem docuerint & ostenderint, eo ipso absque alia monitione, requisitione, vel quavis alia Jud. declaratione desuper facienda, feudis, vicariis, guberniis, & aliis præfatis omnibus, & singulis privati, ipsaq. feuda,

fol. ad realem locum incorporationem parvissime de e.

Feudatariosque, & alios decernit anno quolibet in Camera Apostolica ubi eam adesse contigerit in vigilia & festivitate SS. Petri, & Pauli, debita jura Camera Apostolica solvere debere.

Ideo hic Pont. innovat & confirmat Prædecessorum constitutiones & Fisci protestationes, & sententias, & decreta prædicta.

Et declarat quoscumque feudatarios &c. comprehensos fuisse in dispositionibus dictarum constitutionum ejus Prædecessorum. Et Cam. Apo.

vicariatus, gubernia, & alia ad Sedem & Camera prædictas devoluta, utique domini cum directo consensu, etiam abique illorum possessionis apprehensione ad jus proprietatem, dominium, & omnimodam possessionem ejusdem Camera: eo ipso rediisse censentur, & sint, etiam si feuda, vicariatus, gubernia, & alia hujusmodi antiqua, & hæreditaria, formalia vel informalia, ac descendebus, vel collateralibus, aut quibuscumque aliis hominis vel legis providentia eis jus aliquod ad illa competere vel competat, seu alias acquisitum foret, & esset, ac omni quantumvis longo tempore, & quacumque immemorabili præscriptione, etiam centum annorum & non ultra, non obstantibus sine spoli, aut attentatorum, vel alio quocumque vitio illorum possessionem actualem apprehendi, & ad illorum realem incorporationem per Sedem, & Camera prædictas deveniri possit, & solutiones aliter, ac libi, quam die, & loco præfatis deinceps faciende, & recipiende, nullæ nulliusque roboris & momenti fiant, & perinde habeantur, ac si factæ, & receptæ non fuissent, & quod mora etiam modici temporis non admittatur.

§. 9. Quodque solutiones omnes, quæ in eadem plena Camera, in vigilia seu festivitate prædictis factæ, & receptæ fuerint, & in futurum perpetuis futuris temporibus fiant, ac recipiantur, semper cum clausula sine præjudicio jurium ipsius Camera receptæ intelligantur, & sint, etiam quod clausula ista in aliquibus specialiter apposta, in aliis vero omiſſa fuerit.

§. 10. Ac præterea quod solutiones, quæ ex aliquo legitimo impedimento in plena Camera, post vigiliam seu festivitatem prædictas oblatae fuerint, etiam cum eadem clausula, & citato eodem procuratore Fisci, seu Camerae Commissario, & non aliter, nec alio modo recipi debeant, alias eo ipso nullæ, ac nullius efficacie, & effectus habeantur.

§. 11. Volentes omnia in dictis & aliis Prædecessorum nostrorum Litteris per Nos, ut præmittitur, confirmatis, approbatis, & innovatis, contenta, & narrata Præsentibus non contraria perpetuis futuris temporibus, & prædictis, & aliis quos præmissa, aut eorum aliqua quomodolibet concernunt, seu concernere poterunt quomodolibet in futurum omnino servari.

§. 12. Ac decernentes ita per quoscumque Judices, ordinarios, & delegatos, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales in quavis causa, & instantia, sublatâ eis quavis aliter judicandâ, & interpretandi facultate, & auctoritate, ubique judicari, & definiri debere, necnon irritum & inane quicquid fecus ab eisdem, & quibuscumque aliis sciant vel ignorantem contigerit attentari.

§. 13. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon statutis & consuetudinibus etiam immemorabilibus, juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, ac quacumque præscriptione etiam immemorabili, contractibus quoque, involuturis, concessionibus, pactis & conventionibus, necnon privilegiis, indulgentiis, litteris Apostolicis eisdem Vicariis, Feudatariis, Gubernatoribus, & aliis prædictis omnibus per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac Nos & Sedem prædictam sub quibusvis verborum formis, ac etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque fortioribus, efficacioribus, & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decretis, quomodocumque ac quocumqueque concessis, confirmatis, & innovatis, ac concedendis, confirmandis & innovandis, etiam in eis caveretur expresse, quod vicariatus, feudis, guberniis, & concessionibus, administrationibus, ac aliis præfatis ob non solutionem vel pacta non servata vel alia quocumque de causa, seu ut nisi sit, certum tamen, ut privati non possint, quibus omnibus ac singulis, usu, & aliis præmissis, etiam si pro eorum fundam. derogatione, de eis eorumque totis tenoribus specialibus, specificis, expressis & individua, ac de verbo ad verum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia ex quaſi forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi, ac si ad verbum, & summa in illis tradita

observata infererentur, Præsentibus pro plenè & sufficienter expressis habentes, de simili potestatis plenitudine specialiter, & expresse derogamus, necnon omnibus aliis quæ idem Prædecessores nostri in dictis eorum Litteris voluerunt non obſtare, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 14. Quæ omnia volumus cuiquam adversus præmissa in aliquo suffragari, quoad causas tamen tunc in Camera prædicta pendentes nulli per Præfentes in eundem præjudicium generari.

§. 15. Sed ne quisquam Præsentium ignorantiam excusare possit, jubemus illas per unum vel duos Cursores velis Ecclesiæ Sancti Joannis Lateranensis, & Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, ac Cancellariæ Apostolicæ ac Camerae prædictæ, & in acie Campi Floræ, ubi publicabuntur de more, appendi, eisque detractis, ipsarum exempla etiam impressa eis in locis relinquere, & præterea in ipsa Camera dum die statuto illius Præfentes, & Ministri convenient, alta & intelligibili voce perlegi, & in libris ipsius Camerae ad perpetuam rei memoriam describi.

§. 16. Volentes etiam ut illæ Præfentes hinc Urbe statim, extra verò eam ubiqueque locorum prædictorum mediata vel immediata subjectionum ditionis prædictæ post decem dies, quam in dicta Camera lectæ, & publicatæ fuerint, quencumque Feudatariorum, Vicariorum, Gubernatorum, Administrationum, & aliorum censuum, recognitionum & jurium debitorum prædictorum, perinde ardeant atque afficiant, ac si eis singulis præsentibus, ac in propriis eorum personis, & locis intimatæ fuissent.

§. 17. Utque ipsarum Præsentium exempla etiam impressa edantur, Notarii publici manu, & Camerae prædictæ, vel alterius in dignitate Ecclesiæ constituti sigillo obligata, eam in præfatis locis ubique locorum in iudiciis, & extra illa, & alia, quam ipsæmet Præfentes facerent, si existerent, vel ostenderentur.

§. 18. Nulli ergo omnino hominum liceat hæc paginam nostræ confirmationis, approbationis, innovationis, mandati, declarationis, statuti, ordinationis, voluntatum, decreti, derogationis, & iussus infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Dat. Roma: apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo octogesimo, Kalendis Junii; Pont. nostri Anno nono.

Die decima Junii 1580. presentes littere Apostolicæ præsentate fuerunt in Camera Apostolica, & ex decreto in eadem plena Camera facto, adjuſſe, & in illius libris registratæ s. lib. 111. signaturarum diversorum Pontificum fol. 20. penes me infra scriptum dictæ Camerae Notarium, mandatum fuit illas servari.

Tydeus de Marchis.

Anno à Nativitate D. 1580. indiſ. 8. die verò 9. Junii, Pont. Sanctiss. in Christo Patri & D. N. D. Gregorii divina providentia Papæ XIII. Anno nono, retroscriptæ littere Apost. officis, & publicatæ fuerunt ad valvas Ecclesiæ S. Joannis Lateranensis, & Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, Camerae & Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, & illi ibidem copii impressi affixi. Necnon die 10. ejusdem dum Reverendissimi D. dictæ Camerae Clerici præfentes ad jura reddendum, & causas audiendum congregati erant, alta clarâ, & intelligibili voce pluribus personis Curialibus assistentibus & audientibus personis Curialibus & jura earundem tenorem lectæ & publicatæ fuerunt per nos Iulium Fontanum, & Petrum Aloysium Graviam Cursores Apostolicos.

Petrus Guerra Mag. Curs.

Approbatio Congregationis Fratrum & Monialium Ordinis B. MARIE de Monte Carmelo in Regnis Hispan. sub denominatione Difcalceato-

Sine præjudicio causarum pendens.

Forma hanc Bullam publicandi, & eam legendi in Camera &c.

Dies quæ hæc Bulla ligare incipit.

Transumptum in fides.

Sanctis præ-

D. P. An. 9. die 1. Junii.

Regist. & admisso in Camera Apost.

Publicatio in Urbe.

rum instituta, cum declaratione muneris Provincialis eorum Prioris, ac Superioritatis Prioris generalis totius Ordinis, gratiarumque ejusdem Ordinis communicatione.

Ipsam Congregationem totaliter postea separavit ab omni superioritate Fratrum Mitigatorum Ordinis, Clemens VIII. in ejus const. 25. Pastoralis. Altera autem eorumdem Discalceatorum Congregatio erecta est in Italia, cui Sixtus V. quadam indulta, circa celebrationem festorum, & recitationem officiorum concessit in sua const. 96. Eximium. Et eam à Congregatione illa Hispanica separavit Clem. VIII. ut in ejus const. 71. In Apostolica. fol. 112. Tom. 3. Eique facultatem erigendi nova Monasteria de sola licentia Paul. V. in const. 10. Ad Ecclesiæ fol. 213. Et Seminarium ad propagationem fidei postea instituit in Urbe in const. 50. Romani, in dicto Tomo 3.

Utraque Congregatio proficitur dictam Regulam declaratam & firmatam ab Innocentio IV. sup. in ejus const. 6. *Qua honorem*, fol. 96. Ceteri autem Carmelitæ observant eandem Regulam Mitigatam ab Eugenio IV. & aliis, ut sup. in ejus const. 3. Romani. fol. 257. ubi notatum fuit.

Hujus Ordinis Discalceatorum fundatrix extitit Teresa Hispana, quam Sanctarum Virginum catalogo inseripit Greg. XV. const. 20. *Omnipotentis* infir.

Edita An. D. 1580.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Pla consideratione Romanum decet Pontificem, circa statum Religiosum ita attendere, ut ipsi Religiosi regulam quam ab initio professi sunt observare niteant, ab omni molestia vindicentur.

§. 1. Exponi siquidem Nobis nuper fecerunt charissimus in Christo filius noster Philippus Hispaniarum Rex Catholicus, & dilecti filii Religiosi Discalceati nuncupati Ord. MARIÆ de Monte Carmelo in Regnis Hispaniarum existentes, quod cum aliis felic. rec. Innocentius Papa IV. prædecessor noster sup. publicationibus Prioris & Fratrum Eremitarum B. MARIÆ de Monte Carmelo, ea in parte inclinatus, declarationem & correctionem Regulæ eorum Ordinis à bonæ memoriæ Alberto Patriarcha Hierosolymitano ipsi tradidit, per bonæ etiam memoriæ Hugonem tituli S. Sabinae Presbyterum Cardinalem, & Guilielmum Episcopum Anteradensem de ejusdem Innocentii Papæ mandato factam & per eosdem Fratres firmiter observandam confirmasset.

§. 2. Ac postmodum piæ memoriæ Eugenius Papa IV. etiam prædecessor noster, per eum accepto quod in quibusdam capitulis dictæ Regulæ inter alia cavebatur, quod Fratres prædicti Ordinis ab usu carnis se abstinere, nisi pro infirmitatis, vel debilitatis remedio. Eisdem etiam quod singulis diebus, Dominicis dumtaxat exceptis, à festo Exaltationis S. Crucis usque ad festivitatem Resurrectionis D. N. JESU Christi jejunare tenerentur. Quodque singuli eorum manere deberent in cellis suis, die ac noctu in lege Domini meditantes, ac in orationibus vigilantes præcipiebatur, rigorem hujusmodi mitigans, ac Regulam ipsam moderans, statuit, ordinasset, & concessisset, quod dicti Ordinis professores, tunc & pro tempore existentes, tribus singularum hebdomadarum, etiam quibus, ut præfertur, jejunare, juxta eandem Regulam essent adstricti, præterquam in Adventu, & in Quadragesima, & aliis generalibus prohibitis diebus carnisbus vesci, achoris congruis in eorum Ecclesiis manere, & per claustra ac eorum ambitus deambulare, libere & licite valerent. Decernens eosdē Fratres, & eos singulos circa præmissa adstrictiorē observantiam, quam supra, præmittitur occasione professionis in dicto Ord. emisit, vel in posterum emittendæ minimè tenerentur. Et aliis prout in eorumdem Innoc.

centii & Eugenii litteris desuper confectis plenius continetur.

§. 3. Demum de Anno Domini, millesimo quingentesimo sexagesimo quinto, seu alio veriori tempore nonnulli dicti Ordinis professores, divina inspirante gratia, primum dictæ regulæ institutum imitari cupientes, postpositis quibuscumque corporis commodis, dummodo Christum luculacrent, cum licentia sui Prioris generalis tunc in Hispaniarum partibus existentis, ibi aliquot Fratrum & Monialium Monasteria, in quibus primitiva Regula prædicta cum omni observantia & rigore retinebatur, sub obedientia tamen Provincialis fundare & ædificare ceperunt. Quam quidem Regulam & observantiam Fundatores prædicti, ac etiam qui pro tempore admittebantur, ex mitigatis, renunciando mitigationi & relaxationi dicti Eugenii prædecessoris, transacto probationis anno, denud, ac etiam alii de sæculo venientes profitebantur, & successivè benedictæ Domino numerus Religiosorum primitivam Regulam hujusmodi profitentium & observantium adeo hoc tempore excrevit, ut de præfenti viginti duæ domus Fratrum & Monialium hujusmodi, in quibus ferè trecenti Fratres, & ducentæ Moniales existunt, devotum Altissimo famulatum exhibentes in prædictis Regnis Hispaniarum reperiantur.

§. 4. Religionem autem hujusmodi ultra contentam in Regula prædicta de licentia dicti Generalis & cujusdam Vicarii ab eodem Generali in Provincia Castellæ deputati, ac cum approbatione Visitatorum Apostolicorum, qui fuerunt dictæ Religionis, quædam instituta ad carnis mortificationem, & populi ædificationem ab initio suæ institutionis observare inceperunt, veluti Discalceatos incedere, unde Discalceatorum nomen sortiti sunt, indui sacco, dormire super tabulis, ad sublevandam suam inopiam manibus propriis operari, multum in oratione se exercere, atque divinum officium sine cantu, seu modulatione recitare.

§. 5. Cum autem sicut eadem expostio subiungebat ipsis Religiosis Discalceatis, quam plures molestiæ & impedimenta, eorum pium institutum turbantia per Fratres mitigatam ab eodem Eugenio prædecessore Regulam, ut præfertur, profitentes, mitigatos nuncupatos super præmissis illatæ fuerint. Ipsique Discalceati Prælatum ordinariæ ex suis Discalceatis, ut par esset, non habebant, sed ad præfens per dilectum filium Angelum de Salazar ex Fratribus mitigatis Vicarium generalem à Venerabili Fratre Philippo Episcopo Placentino, in dictis Regnis, nostro Apostolicæ Sedis Nuncio, donec de idoneo Superiore ejusdem professionis Discalceatorum provideatur, deputatum, regantur, ac summo opere cupiant ad eorum quietem & tranquillitatem conservandam, ac pro Religiosis, & strictæ eorum observantia, atque instituti progressu & augmento, ut de omnibus Monasteriis, quæ in dictis Regnis nunc sunt, & pro tempore erunt vel erigentur, ipsorum Discalceatorum, tam virorum quam mulierum dictam primitivam Regulam profitentium, una Provincia fiat separata à Provinciis Fratrum mitigatorum hujusmodi, quæ subitè immediate Priori generali dicti Ordinis, & gubernetur per Priorem provincialem, ex ipsismet Fratribus Discalceatis in Capitulo dictæ Provinciæ canonicè eligendum, prout alii Priores provinciales ejusdem Ordinis in similibus Capitulis provincialibus eliguntur & deputantur. Propterea tam dicti Religiosi Discalceati, quam dictus Philippus Rex, qui professum Religiosorum hujusmodi maxime exoptat, Nobis humiliter supplicare fecerunt, ut honestis petitionibus hujusmodi annuere, & aliis in præmissis opportuna providere, de benignitate Apostolica dignaremur.

§. 6. Nos igitur æquum, & rationi consonum ducentes, ut qui arctioris Regulæ observantiam sectantur, Superioribus eorum, qui in laxiori non degunt, subiacent, sed quilibet ejusdemmet professionis Superioribus habeant, & ab illis juxta eorum instituta regularia prosperè & feliciter gubernentur, prædictorum Fratrum & Monialium Discalceatorum tranquillitati,

& in-

Sed postea de anno 1565, multi ex eis, primitivam regulam Innoc. IV. observare ceperunt.

Immo etiam alia instituta hic enunciatæ & Discalceati dicti sunt.

Ipsi autem Discalceati, à Fratribus profitentibus Regulam, ut supra Mitigatam ab Eugenio IV. diversimode molestabantur, ideo supplicarunt pro separatione.

Hic inquit Port. dictos Discalceatos in Regnis Hispan. ab ipsis Mitigatoribus sejungit.

Innoc. IV. confirmavit Regulam mitigatam Ordinis Carmelitarum in const. cit. in rubr.

Eug. IV. regulam antiquavit in const. cit. in rubr.

Immo Clemens VIII. separavit omnes Discalceatos ut inf. in ejus consil. 25. Pastoralis.

& indemnitati, eorumque instituti propagationi, & profectui consulere cupientes, eosdem Fratres & Moniales, eorumque singulos à quibusvis excommunicationis, suspensionis & interdicti, absque Ecclesiasticis sententiis, censuris & poenis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa laus, si quibus quomodolibet innodati existant, ad effectum Præsentium dumtaxat consequendum harum serie absolventes, & absolutos fore censentes hujusmodi supplicationibus inclinati, de Venerabili Fratum nostrorum Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalium super visitatione Apostolica & consultatione Episcoporum, & regularium Reformatione deputatorum, quibus hoc negotium examinandum mandavimus consilio, institutum hujusmodi, quod juxta primitivam Regulam prædictam dicti Fratres Discalceati profitentur, laudantes & approbantes, dictos Fratres & Moniales primitivam Regulam hujusmodi in Regnis Hispaniarum observantes, Discalceatos nuncupatos, eorumque domos, Conventus, Monasteria & loca, nunc & pro tempore existentia, à Provinciis Fratrum & Monialium ejusdem Ordinis B. MARIE de Monte Carmelo regulam per prædictum Eugenium prædecessorem nostram, nunc & pro tempore observantiam mitigatorum nuncupatorum, penitus & omnino in perpetuum, Apostolica auctoritate tenere Præsentium sejungimus, separamus, & dissolvimus, ipsosque Discalceatos ab omni & quacumque jurisdictione, visitatione, correctione, & superioritate Prioribus, Provincialibus, & aliis Prelatis & Superioribus mitigatis in ipsos Discalceatos competente, perpetuo eximimus & liberamus.

§. 7. Necnon eorumdem Fratrum & Monialium Discalceatorum prædictorum Domus, Monasteria, & loca quæcumque hæcenus erecta & instituta, ac in posterum erigenda & instituenda, in unam Provinciam de per se Discalceatorum nuncupandam, per unum Priorem provincialem in Capitulo dictæ Provincie, ex eisdem Discalceatis, ut præfertur eligendum, regendam, & gubernandam in perpetuum erigimus & instituimus. Ad dictam Provinciam Fratrum & Monialium Discalceatorum, sub obedientia & superioritate Prioris generalis totius Ordinis prædicti, sicut alias Provincie ejusdem Ordinis subsunt, & subjacent, perpetuo subesse, atque subjectam remanere & subjacere volumus.

§. 8. Qui per se ipsum tantum, vel per alium virum idoneum ex ipsiis Fratribus Discalceatis, & juxta eorum primitivam Regulam, & instituta regularia ab ipsiis Fratribus Discalceatis observari solita, eos visitare, reformare, corrigere, & punire possit, in monasteriis tamen, domibus, & locis eorumdem fratrum Discalceatorum, extra quam nullatenus ipsi Fratres Discalceati, vel aliquis eorum ab eodem Priore generali, quovis prætextu vel occasione amoveri, assignari, mutari, extrahi, aut transferri, aut ad alias Provincias mitti aut retineri, nisi aliter in eorum Capitulo provinciali fuerit ordinatum. Ipsi verò dictæ Provincie Discalceatorum Fratres in præmissis perpetuo eidem Priori generali parere & obedire; & cum ipsum ad eorum Monasteria, domos & loca divertere, aut pro visitatione hujusmodi, aut aliis accedere contingerit, cum omni humilitate & reverentia benigne recipere, & pertractare, prout decet, teneantur & debeant. Necnon Priori provinciali ejusdem Provincie Fratrum Discalceatorum ipsos Fratres & Moniales Discalceatos, illorumque domos, monasteria, & loca quæcumque, regendi, gubernandi, visitandi, reformandi, corrigendi, puniendi, & castigandi, ad Capitulum provinciale, suis loco & tempore indicendi, convocandi, congregandi, & celebrandi, & quocumque Officiales necessarios, unâ cum capitularibus eligendi, ac quæcumque statuta & ordinationes bonum regimen dictæ Provincie ad Dei servitium concernentia in eodem Capitulo condendi, mutandi, alterandi, & in totum si videbitur abrogandi, & de novo edendi, dummodo sacris Canonibus & decretis sacri generalis Concilii Tridentini, & con-

stitutionibus Apostolicis, ac eorum primitivæ Regulæ, & instituto prædictis non adverteatur. Et abusus quoscumque tollendi, & emendandi, Monasteria item, domos & Conventus, tam virorum quam mulierum ejusdem Provincie in quibuscumque locis, cujusvis licentia desuper minime requisita, de consensu dicti eorum Capituli, & aliis servata forma ejusdem Concilii, construere & ædificari faciendi, ipsique Priori provinciali, ut postquam electus fuerit, officium suum exercere absque alia confirmatione, quam tamen à Priore totius Ordinis mox petere teneatur, plenam & liberam facultatem concedimus & impartimur.

§. 9. Et insuper omnibus & singulis dictæ Provincie personis utriusque sexus, nunc & pro tempore existentibus, quod omnibus & singulis privilegiis, gratis & indulgentiis, exemptionibus, immunitatibus, prærogativis, favoribus, & indulis, tam spiritualibus quam temporalibus quibus Fratres seu Moniales, vel Sorores dicti Ordinis, de jure vel consuetudine, aut aliis quomodolibet utuntur, potiuntur, & gaudent, ac uti, potiri, & gaudere poterunt quomodolibet in futurum, decretis ejusdem Concilii, constitutionibus Apostolicis, ac primitivæ Regulæ, & instituto prædictis, & Præsentibus Litteris non contrariis, uti, potiri, & gaudere, libere & licite valeant indulgere.

§. 10. Ne autem instituta dictæ Provincie relaxentur, Fratribus & Monialibus Discalceatis prædictis secundum dictam primitivam Regulam processis, ne ad suum Fratrum Mitigatorum, vel alium Ordinem, præterquam Carthusianorum sine apostasia nota transire possint absque Sedis Apostolicæ licentia perpetuo prohibemus.

§. 11. Inhibentes dicto Angelo de Salazar, & Priori generali, ac Provincialibus & Commissariis, aliisque dictorum Fratrum Mitigatorum Prelatis, Ministris & Officialibus, ne eosdem Fratres Discalceatos, seu Moniales, aut Sorores hujusmodi super præmissis quoquo modo molestare, perturbare, vexare, seu inquietare audeant vel præsumant. Quod si fecerint, eos, & eorum singulos, excommunicationis sententia innodamus. Dicti verò Fratres Discalceati nullo modo parere, aut deferre teneantur. Salvâ tamen in reliquis obedientiâ dicti Prioris generalis totius Ordinis, cui eos perpetuo subiectos esse, & subjacere volumus, ut præfertur.

§. 12. Liceatque tam Priori provinciali dictæ Provincie Fratrum Discalceatorum, quam aliis ejusdem Provincie Fratribus, de licentia tamen ipsius Prioris provincialis, ad Sedem Apostolicam, & totius Ordinis protectorem liberum habere recursum.

§. 13. Et si alicui, vel aliquibus ex dictis Fratribus Mitigatis sit concessa facultas visitandi aut gubernandi, seu puniendi dictos Fratres five Moniales Discalceatos, etiam à Nobis, aut nostro & dictæ Sedis in partibus illis commoranti Nuncio, aut quocumque alio facultatem hujusmodi ex nunc cassamus, revocamus, & annullamus.

§. 14. Decernentes præfentes litteras ullo unquam tempore, de subreptionis vel obreptionis vitio aut intentionis nostræ defectu, etiam ex eo quod omnes interesse habentes forsitan vocati non fuerint, notari, argui, seu impugnari, aut sub quibusvis revocationibus, suspensionibus, limitationibus, aut aliis contrariis dispositionibus, etiam ab eadem Sede emanatis, & in posterum emanandis comprehendendi posse, sed illas semper validas & efficaces existere, suosque plenarios & integros effectus sortiri debere.

§. 15. Sicque per quoscumque Judices & Commissarios quavis auctoritate fontes, sublati eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, ubique judicari & definiri debere. Necnon irritum & inane, si locus super his à quocumque quavis auctoritate scienter vel ignoranter contingerit attentari.

§. 16. Quocirca Venerabilibus Fratribus Toletano & Hispalensi Archiepiscopis, & Episcopo Palen-

Privilegia
Ordinis eis
communi-
cat.

Ad Cartu-
sanos transire
concedit.

Officiales
Mitigato-
rum, non
molestant
ipsos Discal-
ceatos, sed
præmittunt.

Discalceati
possunt ha-
bere recur-
sum ad Se-
dem Aposto-
licam, vel
Ordinis
Protecto-
rem.

Facultates
Mitigatis
concessæ vi-
sitan-
di &
gubernandi
Discalceatos
revocantur.
Clausula
præservati-
væ.

Idcirco
irritans:

Executores
deputatio, &
facultates.

Monasteria-
que eorum,
in unam
provinciam
reducit, re-
gendam à
Priore provin-
ciali Discal-
cearum, sub
obedientia
Prioris ge-
neralis Or-
dinis.

Immo Clem.
VIII. in to-
tum separa-
vit ut ibid.
Prioris provin-
cialis Discal-
cearum, immo
describit.

Sed Clem.
VIII. ampliavit ut
ibid.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Tanta, tæque horrenda quotidie succrescunt sanguinariorum, & sceleratorum hominum maleficia, ut Nos, qui Subditos nostros charitatis potius vinculo, quam severitate ponarum in officio contineri semper optavimus, tandem necesse sit ad ipsos procul à societate humana submovendos, nova remedia adhibere, ac simul cogitare quomodo illos confoveni facultas tolli ab eis possit, sine quorum auxilio impurissimi illi pleraque omnia delicta neque perficere, neque poenas effugere possent.

§. 1. Quæ fel. record. Pius Secundus, Paulus item Secundus, Sixtus Quartus, Julius Secundus, Leo Decimus, Clemens Septimus, Pius Quartus, Pius Quintus, & diversifalii Romani Pontifices prædecessores nostri suo quisque tempore, prout necessitas tulit, bene & providenter respicientes, Constitutiones suas in exitiale hoc genus, pro temporis & criminum ratione ediderunt, quas Nos cum suis censuris, & poenis omnibus, ac si ad verbum infereretur Præsentibus, haberi volumus pro expressis, ex certa scientia nostra innovantes, ita ut illæ omnes Præsentibus, & vicissim Præsentibus illis universis & singulis ad omnes earum omnium casus & partes subsidio sint.

§. 2. Hoc edito perpetuo de Fratrum nostrorum concilio statuimus, ut quicumque etiam Ecclesiastica, & quacumque dignitate præditus, sive Dux, aut Comes, Marchio, Vicarius, Feudatarius, Gubernator, sive alius cujusvis conditionis, & ordinis, hujus Status & conditionis nostre temporalis S. R. E. in eisdem temporalibus mediata vel immediata subiectus, etiam dominia, jurisdictiones & loca extra Statum prædictum obtinens, ac etiam quicumque extraneus bona in eodem Statu habens, homicidas, latrones, grassatores, & alios quocumque crimine capitali bannitos, vel diffamatos, & in suis quisque dominis, locis, seu domibus tam in ipso Statu quam extra eum constitutibus receptaverit, seu quod in hujusmodi locis receptentur permiserit quoquo modo.

§. 3. Ac etiam quicumque, ne ei capiantur, impediverit, captosque eripuerit, vel occultaverit, potestatemve evadendi fecerit, vel carcerem, aut aliam quacumque custodiam frigerit, conatusve fuerit, sive ad hoc homines, arma, aliave ministraverit, seu alias auxilium, consilium, vel favorem palam vel in occulto aut quocumque modo præstiterit.

§. 4. Præterea quicumque Judices, ministros, vel executores justitiæ, in perquisitione, captura, seu abductione, ac omnino illi liberae officii executione impediverit, verberaverit, infecutus fuerit, concusserit, perturbaverit, armaverit, conclamaverit, aliove concitaverit seu mandaverit.

§. 5. Cum Præsentium auctoritate excommunicationis majoris sententia innodamus, à qua solus Romanus Pontifex absolvere possit, nisi in mortis articulo & satisfactione debita præcedente.

§. 6. Ac præterea ipsum læsæ majestatis reum, & S. R. E. Rebelle pronunciamus.

§. 7. Necon Ducatu, Comitatu, Marchionatu, terris, oppidis, castris, dominiis, vicariatibus, guberniis, feudis, & aliis, quæ à Romana, & quibuscumque aliis Ecclesiis obtinet ac obtinebit in futurum, ceterisque omnibus bonis, immobilibus, mobilibus, & se moventibus, rebus & juribus suis, necnon omni & quacumque etiam Ecclesiastica dignitate, gratia, exemptione, reali & personali, honore, privilegio, & beneficio, Ecclesiastico & temporali privamus eo ipso.

§. 8. Ac ipsum & ejus filios indignos decernimus ad illa & alia postmodum obtinenda, & ad quoscumque alios legitimos exercendos, quibus etiam portæ nunquam pateant ullus dignitatis Ecclesiasticæ vel

Causa hujus consilii.

Innovatio Bullarum editarum contra Bannitos.

Subditi Papæ aut ejus Status bona possidentes, Bannitos vel extra, in locis suis receptatores.

Faventique.

Justitiæque ministros in eis perquirendis impedientes.

Excommunicatur. Hanc excommunicationem Sixtus. V. in rub. cit. Criminalique læsæ majestatis rei sunt. Bonis omnibus privantur.

Ad dignitates cum filiis inhabilitantur.

no, ac dilecto filio causarum Cur. Cam. Apost. generali Auditori necnon universis & singulis Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, & aliis Ecclesiarum Prælatibus, ac quibuscumque in d. guitate Ecclesiastica constitutis per Præsentibus mandamus, quatenus ipsi vel duo, aut unus eorum, perse vel alium seu alios, præsentibus Litteras & in eis contenta quæcumque, ubi & quando opus fuerit, aut quoties pro parte Fratrum Disceatatorum prædictorum defuerint fuerint requisiti, solemniter publicantes, illis in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra eos præmissis omnibus & singulis, juxta Præsentium continentiam & tenorem, pacifice frui & gaudere. Non permittentes eos desuper per Priorum generalem, aliosque prædictos quomodolibet indebitè molestari. Contradiatores quoslibet ac rebelles, & præmissis non parentes, per sententias, censuras, & poenas Ecclesiasticas, aliisque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita, compescendo. Necnon legitimis super his habendis servatis processibus, illos sententias, censuras, & poenas prædictas incurrisse declarando, illasque etiam iteratis vicibus aggravando; invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

Clausula derogatoria.

§. 17. Non obstantibus præmissis, ac aliis Apostolicis, necnon in provincialibus & synodalibus Conciliis editis generalibus vel specialibus constitutionibus & ordinationibus, ac etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indulgiis, & litteris Apostolicis, sive in quibusvis aliis personis, sub quibusvisque tenoribus & formis, ac cum quibusvis etiam derogationum derogationibus, & diversis efficacioribus & insolitis clausulis, irritantibus; & aliis decretis, in genere, vel in specie editis Motu proprio, ac aliis quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus etiam prædictorum sufficienti derogatione, de illis eorumque totis tenoribus specialibus, specificis, expressis, & individuis, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, eorum tenores Præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque; aut si aliquibus communiter vel divisim, ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspensi, & alii, vel excommunicari non possint per Litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Transumptorum fines.

§. 18. Ceterum quia difficile foret earumdem præsentium Litterarum notitiam ad quascumque personas pervenire, & ubique illas præsentare, eadem auctoritate volumus & decernimus, quod transumptis earumdem præsentium Litterarum manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ sigillatis, eadem fides ubique, tam in judicio quam extra illud adhibeatur, quæ Præsentibus adhiberetur, si forent exhibite vel ostensæ.

D. P. An. o. die 12. Jun.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub Annulo Piscatoris, die 22. Junii, millesimo quingentesimo octogesimo, Pontificatus nostri anno nono.

L. X. V.

Innovatio constitutionum à Prædecessoribus editarum, contra homicidas & alios capitaliter bannitos. Et majora poenarum inflicto in eorum receptatores, & auxiliantes, Communitatesque eos non persequentes & capientes.

Aliam contra eosdem receptatores, & Communitates, & ceteros severiorem edidit consil. 6. Sixtus V. Hoc nostri. ubi alia de materia indicabo infra in hoc Tomo 2.

Vasalli li
berantur.
Et edifici
destruantur
vel Camere
applicentur.
Domina
Camere
prædicta ac
quirantur.

Privilegia
in recipien
dis bannitis
revocantur.

Bona con
fiscata sub
const. 35.
Pii V. non
comprehend
untur.

Communi
tates non ca
pientes ban
nos iidem
pœnis in
ganur.

Executo
rii deputa
tio & facul
tates.

Claufulæ
derogato
riæ.

Formæ &
fl. etus
publi.

Exemplo
rum alies.

Dat. P. A. 9.
die 9. Julii.

§. 9. Sinique vasalli, custodes, & populi à fidelitatis
juramento, & quocumque alio jure absoluiti.

§. 10. Omnia ejus ædificia disjiciantur, aut aliis
Camere Apostolicæ juribus adscribantur.

§. 11. Ducatus verò ac Domina, vicariatus, guber
nia, feuda, ceteraque bona & jura prædicta, eorumque
fructus, & emolumenta, aliis Fisci nostri juribus per
petuò applicamus. Et ita Cam. Apost. coipso absque
declaratione super incurfu pœnæ privationis hujus
modi, aut citatione ejus, vel eorum, qui pœnam
hujusmodi incurrerint faciendâ, aut Judicis sententia,
vel decreto, vel alia juris & facti solemnitate habenda,
perpetuò applicata, appropriata, & incorporata,
& ad nostram, Romanique Pontificis pro tempore
existentis liberam dispositionem pertinere volumus,
ac si per lapsum temporis concessionis eorum, aut finit
tam lineam ad ipsam revertissent.

§. 12. Nec quisquam exemptionis, vel vetusti pri
vilegii, de recipiendis, & non consignandis hujusmo
di facinorosis, & bannitis, aut alio quocumque præ
textu juvari possit.

§. 13. Declarantes, Ducatus, domina, vicariatus,
gubernia, feuda aliaque prædicta, sub constitutione
dicti Pii V. prædecessoris super hujusmodi dominiis
& jurisdictionibus in feudum, aut alias non conced
endis edita, minimè comprehendit.

§. 14. Communitates necnon Universitatès omnium
Civitatum, terrarum, & locorum Status prædicti, cum
primùm de accessu, statione, vel transitu bannitorum,
& aliorum prædictorum notitiam habuerint, si statim
populos suos armatos pulsi campanarum, & aliis sig
nis non convocaverint, illosque non ceperint, & tutè
custodierint, vel si illos capere non potuerint, finit
imas quasque Communitates & Universitates, aut do
minos non commonefecerint, vel ipsi, aut eorum ali
qui illos recepti verint, vel toleraverint, vel cibis, com
meatu, auxilio, consilio, vel favore, aut quocumque
alio modo etiam ut evadant, per se vel alios juerint,
censuris & pœnis omnibus supra dictis supponimus,
earumque etiam res & bona omnia, necnon fructus &
emolumenta Fisco prædicto, modo & forma præ
missis applicamus eo ipso.

§. 15. Et nihilominus dilecto filio Cameraario nostro,
ceterisque omnibus singulorum Litterarum prædictarum
executoribus, & præterea Gubernatori Urbis, ac
causari Curia: Camere prædictæ generali Auditori
per Apostolica scripta mandamus, ut quique pro se ad
omnimodum illarum, & Præsentium nostrarum, ac
censurarum & pœnarum omnium in eis contentarum
executionem omnino procedentes, faciant illas om
nes, & in eis contenta quaecumque, semper & ubique
per omnia loca prædicta, & ab omnibus sub illis com
prehensis, juxta singularum Litterarum earundem
continentiam & tenorem, inviolabiliter observari.

§. 16. Non obstantibus præmissis, ac omnibus, quæ
singulis Lit. prædictis concessum est non ob stare,
ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 17. Ut autem præsentis Litteræ omnibus am
plus innotescant, & ne quisquam illarum ignoratio
nem excusare possit, jubemus illas valvis Ecclesiæ S.
Jo. Lateranen. & basilicæ Principis Apostolorum de
Urbe, ac acie Campi Floræ, de more appendi, eisque
detractis, ipsarum exempla etiam impressa eisdem
in locis affixa relinqui: factaque hujusmodi publicatio
ne, volumus ipsas Præsentibus hic in Urbe publicatis
die sequenti, extra verò eam post decem dies, quo
cumque perinde ardeat, atque afficere, & contrafa
cientes, pœnas & alia supra dicta omnino incurtere,
ac si eis singulis præsentibus in propriis totum perso
nis & locis intimitate fuissent.

§. 18. Insuper earundem Præsentium exempla,
etiam impressa, Not. publici manu, & Cameraarii præ
dicti, vel alterius persone in dignitate Ecclesiæ: con
finitæ sigillo obligata, eandem prorsus fidè ubique
locorum in iudiciis & extra alia facere, quæ ipsæmet
Præsentibus facerent, si exhiberentur vel ostenderentur.
Nulli &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, anno Incarn. Domini
cæ 1580. quinto idus Julii. Pontificatus nostri an. 9.

Ego Gregorius Catholicæ Ecclesiæ Episc.
subscr.

Confrirma hoc Deus quod operatus est in nobis.

Jo. Card. Moronus Episcopus Ostien.
Ego Jac. Card. Sabell. Episc. Tusc.
Ego Jo. Antonius Card. S. Georgii Episc. Prænestin.
Ego Aloysius Card. Cornetius.
M. S. Card. de Althemp.
A. Card. Gesualdus.
Ego In. Card. de Aragon.
Ego Ptol. Cardinalis Comensis.
Ego P. Card. Sanctacrucius.
Zachar. Card. Delphinus.
Jo. Er. Card. Commiendensis.
A. Card. Sforza.
Fla. Card. Urbinus.
Gul. Sir. Card.
Fr. Michael B. Card. Alex.
Lud. Card. Madrucci.
Marcus Ant. Card. Massæus.
N. Cardinalis de Pelleve.
Julius Ant. Sanctiorius Card. Sanctæ Severinæ.
C. Card. Rambovilectus.
F. Felix Card. de Montalto.
F. Vincentius Cardin. Justinianus.
Hieron. Card. Rusticucci.
Jo. Hieron. Card. Albanus.
Ego Ph. Boncompagnus Cardinalis S. Sixti.
Petrus Card. de Beza.
Ego Fer. Card. de Medicis.
Ego Ant. Card. Carafa.
Ego Phil. Card. Vastavillanus.

Papæ sub
script.

Cardina
lium sub
scriptiones.

Publicatio.

Anno à Nativ. D. 1580. indit. 8. die verò 17. mensis
Julii, Pont. Sanctiss. in Christo Patris & D. N. D.
Gregorii divina providentia Papæ XIII. anno 9.
retroscripte Lit. Apost. publicata & affixa fuerunt
ad valvas Ecclesiæ S. Jo. Later. & Basilicæ Prin
cipis Apostolorum de Urbe, ac in acie Campi Flo
ræ, dimissis ibidem earum exemplis impressis per
nos Petrum Aloysium Gaytam, & Nicolaum Tag
lietium Cursores Apost.

Julius Fontana Mag. Curs.

Annulatio dispositionum beneficiorum, quæ contra
Canonicas Sanctiones, Statuta, vel Apost. privile
gia sunt personis prohibitis propter genus, aut hæ
resim, & à fide apostasiam. Cum declaratione,
quod ad novam Rom. Pont. dispositionem per
tineant.

Similem const. nu. 29. editi Pius V. ut sup. fol.
227. Cum ex Apostol.

De aliis pœnis Hæreticorum vide supra in Pauli IV.
const. 19. Cum ex, & cum ibi notatis. Tom. 1.

GREGORIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memo
riam.

IN Ecclesiis præsertim insignibus, hoc magnopere
curandum est, ut Sacerdotes & personæ salubribus
etiam institutis convenientes ordinentur, quod quan
tum in Nobis est enitumur, atque eos ab illis repellen
dos in primis contendimus, qui propter genus aut hæ
resim, & à fide apostasiam, sive proprio, sive stirpis,
sive cognatorum vitio contaminati, per Canonicas
sanctiones, aut statuta ab hac Sede firmata, aut A
post. privilegia, prædictis Ecclesiis prohibentur. Sed
Nobis negotiorum magnitudine distentis, hujus ge
neris nonnulli ad illarum sacerdotia frequenter obre
punt, inter quos quidam excommunicationis suæ prodigi
etiam se ab illis expulsum iri sciunt, spe tamen inconcessa
presumunt, se inde vel permutatione, vel aliquo pacto
beneficium, pensionem, aut quid aliud exachuros.

§. 1. Nos malum hoc, quod dicte Ecclesiæ sæpius

LXXI.

Edita A. D.
1580.

Causa hujus
const.

dive.

Annullatio
beneficio-
rum pro
personis hic
enunciatis.

Reservatio
beneficio-
rum eisdem
et huiusmodi
impetrandi.

D. P. An. 9.
die 13. Nov.

LXVII.

Edita An. D.
1580.

Exordium.

Ca. huius
sonit.

divexantur, penitus evellere volentes, Præsentium auctoritate decernimus, omnes & quascunque Apostolicas, necnon Legatorum dicte Sedis, & aliorum omnium ab ea facultatem disponendi habentium, ac etiam ordinarias dispositiones dignitatum, præbendarum, beneficiorum, & officiorum ejusmodi Ecclesiarum in quascunque personas sic infectas, & per huiusmodi functiones, seu statuta vel privilegia, ut præferantur inhabiles, vires & effectum non habere, personasque huiusmodi, illarum prorsus usu & commodo carere, beneficiaque ipsa ut prius vacante, & quæ ex illis tempore dispositionis Apostolicæ prædictis personis, illi reservata fuerint vel affecta, sub eadem reservatione vel affectione manere.

§. 2. Et tam illa, quam etiam omnia alia non reservata neque affecta, de quibus ab ipsa Sede, ac Legatis & aliis facultatem habentibus prædictis, in huiusmodi personas quomodocumque dispositum fuerit, ad novam Rom. Pont. dispositionem dumtaxat pertinere, eaque ab aliis idoneis ab ipsa Sede dumtaxat, liberè impetrari posse. Impetrationes tamen, ac etiam Motu proprio concessiones, nisi modus vacationis, necnon casus ac decretum huiusmodi, non conditionaliter, aut per æquipollens, sed definitè, nominatim, ac dispositivè in illis exprimantur, omnino non valere. Ab Ordinariis verò cessantibus reservationibus vel affectionibus Apostolicis, per tempore collata, devolutionis, juxta Lateranen. statuta Conc. subjacere, necnon irritum & inane, quicquid fecus per quoscunque scienter vel ignoranter contigerit attentari. Reservationibus Apostolicis fructuum, pensionum, & aliarum rerum huiusmodi beneficiorum, in personas idoneas, etiam de huiusmodi contaminatorum consensu factis, eisdemque ab illis interim præstitis vel solutis, nihilominus valituri. Nemo autem ignoracionem pretextens valeat excusari, eam prædictæ prohibitionis satis manifestæ sint, & quisque ante petitionem vel acceptacionem beneficiorum huiusmodi, num illorum capax sit, debeat se probare. Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnacionis Dominicæ 1580. Idibus Novemb. Pontificatus nostri Anno 9.

Jurisdicção Ordinarium, in puniendis vicariis, familiaribus, colonis, & Ministris fratrum Militum Hospitalis S. Jo. Hierosolymitani, juxta dispositionem Conc. Trid. sess. 24. cap. 11.

Hæc jurisdicção à Pont. successoribus semper præservata fuit, ut videre est inf. in const. 5. Greg. xiv. Quanta, & aliis const. ibi indicatis. Cetera de hac Militia notavi sup. in const. 2. Anast. iv. Christianæ sol. 39. in Tomo 1.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Circumspectam in omnibus actibus suis Rom. Pont. providentia, interdu ea quæ certis etiam rationalibus tunc suadentibus causis à Sede Apost. emanata reperiuntur, alia superveniente ratione, qua præsertim populorum offensionem occurrat, & Episcoporum jurisdictioni ritè consulitur, reducere, ac suam declarationem interponere consuevit, & aliàs desuper disponit, prout temporum, rerum, & personarum qualitate pensata, perspicit in Domino salubriter expedire.

§. 1. Cum itaque contempertum sit, quamplurimos Clericos seculares, necnon laicos grati & privilegii, quibus Sedes Apost. dilectos filios Magistrum, Conventum, & Milites Hospit. S. Jo. Hierosol. de Repub. Christiana optimè semper meritos, ac eorum Eccles. & loca liberaliter profectura est, abutentes, unde sibi religiosius vivendi legem imponere deberent, inde laioris vitæ occasione arripere, dum varios, sæpe etiam vanos exemptionis, libertatisque titulos prætexunt, ali quidem quod pro Vicariis, Capellanis, ministris, & merventibus Eccles. d. Hospital. quomodolibet adscripti sint, alii verò quod coloni, proci-
tores & familiares ipsorum Militum existant. quamvis in propriis domibus licenter degant, nihilominus ex prædictorum Militum privilegii, illorumque confirmatione, etiam post Concil. Trident. à fel. rec. Pio Papa V. prædecessore nostro obtenta, prætendant se ab omni jurisdictione Ordinarium exemptos esse, nec ab illis inquiri, visitari, puniri, aut corrigi posse, eoque ipso delictorum suorum sibi immunitate promissa, gravem in populo offensionem præbere, & in Episcoporum jurisdictione perturbationem in dies majorem excitare dignoscantur.

§. 2. Idcirco Nos huic malo, quod à prædicto Concilio nullo ante prævisum fuerat, salubriter providere volentes, Motu proprio non ad alicujus Nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed ex nostra nostra voluntate ac deliberatione, & certa scientia, deque Apostolicæ potestatis plenitudine, omnia & singula privilegia, exemptiones, gratias & indulgentias, Conventui, Militibus, & Militiæ dicti Hospitalis per quoscunque Rom. Pont. prædecessores nostros, & Sedem prædictam in genere vel in specie quomodolibet concessa & confirmata, necnon d. Pi. V. Litteras super eorumdem confirmatione emanatas sub dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 29. Novemb. 1568. Pontif. sui anno tertio, ad prædicti Concilii decretorum terminos tenore Præsentium reducimus, ac reducta esse, nihilque ex ipsis privilegiis, exemptionibus, & indulgentiis, Ordinarii locorum detractum esse, quo minus ipsorum Militum Vicarii, Capellani, Ministri, servientes, adscripti, coloni, Procuratores, & familiares Militum huiusmodi, quibus eam jam concessa sunt, & in posterum concedi contigerit, ab ipsis Ordinariis tanquam Apostolicæ Sedis delegatis, de eorum excessibus, criminibus, & delictis, etiam extra visitacionem, quando & quoties opus fuerit, inquiri, visitari, puniri, & corrigi possint, ipsorumque Ordinarium jurisdictioni plenè in prædictis subiecti existant, (exceptis tamen iis, qui Ecclesiis, aliisque locis dd. Militum actu servant, & intra eorum septa & domos resident, ac sub eorum obedientia vivunt, quæ omnia debere simul concurrere intelligantur, siue iis, qui legitime & secundum regulam prædictæ Religionis professionem fecerint, de qua loci Ordinario constare debeat.) Et ita in præmissis omnibus & singulis per quoscunque Judices, ordinariorum & delegatos, quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Cardinales, sublati eis & eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, in quavis causa & instantia judicari & definiri debere.

§. 3. Præsentemque Litteras de subreptionis vel obreptionis vitio, seu intentionis nostræ defectu, notari vel impugnari non posse, sed illas semper validas & efficaces esse, nec per Magistrum, Conventum, & Milites prædictos quorumcumque privilegiorum, statutorum, consuetudine & styli prætextu ullatenus infringi, vel contra illas, & in eis contenta veniri posse, neque debere; irritumque quoque & inane, quicquid fecus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari, decernimus & declaramus.

§. 4. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac dicti Hospitalis etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, stabilimentis, iuribus, & naturis, necnon declarationibus, sententiis, juramentis, concordis; privilegiis quoque, indulgentiis & litteris Apostolicis Magistro & Conventui, ac Militibus prædictis, & eorum Vicariis, Capellanis, colonis, familiaribus, procuratoribus, & aliis quibilibet, ipsorum Militum intuitu vel contemplatione, per quoscunque Romanos Pont. & Sedem prædictam quomodolibet concessis, confirmatis, & innovatis. Quibus omnibus & singulis, etiam si pro sufficienti eorum derogatione, de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, non autem per clausulas generales idem importantes mentio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum tenores

Reductio
privilegio-
rum, & exemptionum
Militiæ ad
terminos
Concilii
Trident. ut
in rub.

Clausula
præservati-
va.

Clausula
derogato-
ria.

ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso & forma in illis tradita observata inserti forent, Præsentibus pro sufficienter expressis & insertis habentes, ad effectum Præsentium dumtaxat specialiter & expresse, motu simili derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 5. Eisdem Pii Papæ Quinti Litteris memoratis, quo ad alia, & in eo maxime quod voluit prædictorum Militum privilegia, illorumque confirmationem non comprehendere neque Ecclesias neque personas, in his quæ ad curam animarum pertinent, sed in his dicti Conc. Trid. decreta omnino servari debere, in suo robore permanentibus.

§. 6. Volumus autem quod Præsentium transumptis etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem ubique fides, tam in iudicio quam extra adhibeatur, quæ eisdem Præsentibus adhibetur, si forent exhibitæ vel offensæ.

Datum Romæ apud S. Petrum sub annulo Piscatoris, die 25. Novemb. 1580. Pontificatus nostri anno 9.

decessorum nostrum constitutiones, auctoritate Apostolica tenore Præsentium approbamus, confirmamus & innovamus, ac inviolabiliter observari mandamus; atque hac nostra in perpetuum valitura constitutione, eisdem constitutionibus & præceptis, pro firmiori illorum observatione addentes, universis utriusque sexus Christi fidelibus districte inhibemus, & interdicimus, ne posthac Judæos vel alios infideles ad ipsorum Christianorum agrotationem & infirmorum curam, vocent seu admittant, aut vocari admittive faciant, concedant, vel permittant.

§. 4. Mandantes propterea omnibus & singulis venerab. Fratribus nostris Patriarchis, Præmibus, Archiepiscopis & Episcopis, necnon dilectis filiis aliis locorum Ordinariis, & quibuscvis Parochis, aliisve animarum curam habentibus & exercentibus sub indignationis nostræ, ac aliis arbitrio nostro infligendis penis, ut præsentibus nostras Litteras in suis Ecclesiis, quæ in illis civitatibus vel diocesi constitutæ sunt, in quibus Hebræi, vel alii infideles moram trahunt, quamprimum ad eos perlatæ fuerint, & deinde, singulis annis initio quadragesimalis jejunii publicent aut publicari faciant.

§. 5. Et quod si quis post earam publicationem, etiam quomodolibet exemptus, ac cuiuscumque status, gradus, ordinis, conditionis & præeminentiæ existens adversus illa facere ausus fuerit, sacramenta ei Ecclesiastica nullatenus ministrentur, nec etiam à Regularibus exemptis, & sic decedens, Ecclesiastica careat sepultura; quæ quidem omnia parochi agrotationibus significare apto tempore non omittant, præsertim cum Judæum, vel infidelem Medicum ab eis admissum esse cognoverint; & aliis ipsi locorum Ordinarii contra hujus mandati transgressores debita animadversione procedant, Judæosque ipsos nihilominus juxta Pauli & Pii Pont. prædictorum Litteras contra illos editas pro eorum transgressione puniant.

§. 6. Non obstantibus consuet. & ordinationibus Apost. ac omnibus illis, quæ eidem Paulus & Pius in suis litteris prædictis voluerunt non obtinere; privilegiis quoque, indultis & litteris Apost. quibuscvis personis etiam Regularibus, privilegiatis & exemptis, eorumve Ordinibus & congregationibus, sub quibuscumque tenoribus & formis etiam Mari magno, seu Bulla aurea nuncupata, ac cum quibuscvis clausulis & decretis, in genere vel in specie, ac alias in contrarium quomodolibet concessis, approbatis & innovatis; quibus omnibus etiam si de illis eorumque totis tenoribus & formis, specialis, specifica, expressa, & individua mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum tenores, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata, inserti forent, Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis alias in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque. Seu si aliquibus communiter vel divisim, ab Apostolica si Sede indultum quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per Litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

§. 7. Et quia difficile foret easdem Præsentibus ad singula quæque loca deferri, volumus & declaramus, quod earum transumptis etiam impressis, & manu alicujus Notarii publici subscriptis, ac sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides ubicumque habeatur, quæ Præsentibus haberetur, si forent exhibitæ vel offensæ.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 30. Martii 1581. Pontificatus nostri Anno 9.

Anno à Nativit. D. 1581. indit. 9. die verò 5. mens. Aprilis, Pont. Sanctiss. in Christo Patris & D. N. D. Gregorii divina providentia Papæ XIII. ann. 9. retroscriptæ litteræ Apostol. affixæ & publicatæ fuerunt ad valvas Canc. Apost. & in acie

Publicetur hæc con. l. singulis annis initio Quadrages.

Contravenientium pena.

Clausula derogatoria.

Transumptis fides.

D. P. Am. 9. die 30. Mart.

Publicatio.

Confirmatio dictæ con. l. Pii V.

Fides transumptorum.

D. P. An. 9. die 25. Nov.

LXVIII.

Medici Hebræi, vel infideles, ad curandos Christianos infirmos non admittantur. Et Medici omnes servant consuet. Pii V. in monendis infirmis ad confessionem peccatorum.

Hoc idem quod ad Medicos Hebræos, Nativit. Pauli IV. sup. in ejus consuet. 3. Cum nimis, Tom. I. ubi alia de Hebr. adnotavit.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Lias piæ mem. Paulus Papa Quartus prædecessor noster, edita perpetua constitutione inter alia fancivit, ne Medici Judæi etiam vocati & rogati ad Christianorum agrotationem curam accedere, aut illi interesse possent.

§. 1. Quan consuet. postea Pius Papa Vi. etiam prædecessor noster per suas Litteras approbavit, innovavit, & confirmavit, & robur perpetuæ firmitatis obtinere decrevit, ac voluit, & sub intimatione divini iudicii præcepit & mandavit, omnia in eadem consuet. contenta in posterum firmiter observari, non solum in terris & dominiis S. R. E. subjectis, sed etiam ubique locorum.

§. 2. Quia tamen Nobis non sine magna animi nostri molestia innotuit; ea minime observari, sed multos adhuc ex Christianis hominibus esse, qui dum suos corporum languores illicitis mediis, & præcipue Judæorum ac aliorum infidelium opera sanari cupiunt, veræ salutis animarum suarum, & corporum simul inmemores fiunt, & quod valde dolendum est, in damnationis æternæ maximum sæpe discrimen incidunt, Medici Judæis, & infidelibus hujusmodi ad ipsorum curationem vocatis & adhibitis; unde fit, ut & Judæis, ac aliis infidelibus magna detur delinquendi occasio, & simul salutare præceptum negligatur, ab Innoc. Papa III. similiter prædecessore nostro in Concilio generali quondam emissum, & deinde à prædicto Pio V. innovatum; quod omnes Medici, tam ad infirmos in lecto jacentes vocati essent, ipsos ante omnia moneant, ut idoneo Confessori omnia peccata sua juxta ritum S. R. E. confitentur, neque tertio die ulterius visitarent nisi longius tempus infirmo Confessor ab aliquam rationabilem causam, super quo jus concessisset, & eis per fidem Confessori in scriptis factam constaret, quod infirmi peccata sua confessi fuissent.

§. 3. Idcirco Nos tam Judæos, qui adversus mandata hujusmodi Apost. committere audeant, quam Christianos qui illos ad se accersant, vel medicandi licentiam concedunt, & viam ad delinquendum eisdem aperiant, coercere volentes, supra dictas Præ-

Paul. IV. prohibuit Medicos curare posse Christianos. Pius V. approbavit.

Innoc. III. & Pius V. sup. in consuet. 3. iusserunt Medicos non posse ad infirmos non confessos accedere.

Pont. iide approbat, & innovat dictas consuet. Pauli IV. & Pii V.

*Campi Floræ, per me Petrum Aloysium Gaytam,
eiusdem S. D. N. Papæ Cursi.*

Petrus Stob. Mag. Cursi.

LXIX.

De auctoritate Archiconfraternitatis B. MARIE
Virg. Consalonis de Urbe, quoscumque Christi fi-
deles S.R.E. ditioni subiectos, piorum elemosynis
perquisitis, ab infidelium captivitate liberandi.
Duosque carceratos, in festo eiusdem B. MARIE,
& in ejus honorem, anno quolibet liberandi.

*Alia de hac sollicitate dixi supra ad hujus Pont.
const. 38. Pastoris.*

GREGORIUS EPISCOPUS.

*Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei me-
moriæ.*

*Idem An. D.
1581. &
1583.*

Ch. iustitia-
rum apud
infideles
Captivorum
malis hic
Pont. deplo-
rati.

Christiane nobiscum Religionis consortes, gravi
captivitatis & servitutis iugo à Christiani nomi-
nis hostibus oppressos, durisque quotidie ve-
xatos immensa S. Matris Ecclesiæ clementia piè mise-
ratur, eorumque afflictiones, suis ad misericordiarum
Patrem & totius consolationis Deum devotis pre-
cibus adjuvare, atque illorum Christianorum memo-
riam, in mysticis maxime, & ad purificandas fidelium
mentes sanctis institutis diebus, revocare non inter-
mittit. Quod clemens piæ Matris officium Nos quo-
que admonet, ut miserorum Captivorum ærumnis
succurramus, fratrumque charitatem ad idem, quan-
tum in nobis est, excitemus; ne languescere paulatim
extremis malis conficiatæ carnis infirmitate, & hoste
diabolo, se infirmis & verbi Dei prædicatione, sacrifi-
cium & sacramentorum solatio destitutis eorum
mentibus insinuante, desperationi succumbentes, ad
susceptæ in baptismo fidei desertionem inducantur,
tandemque cum nullâ, si quam habebant, subsidii spes
apparet, ad æternam redemptionum pretioso Domini
nostri JESU Christi sanguine animarum, perditionem
miserè perduntur.

Et ad eorum
liberationem
& redemp-
tionem, qui
inor de statu
ecclesiastico.

§. 1. Quare ne hujusmodi, quæ toto animo horre-
scimus, accidant, neve in qua re sacris rebus, & pre-
tiosis vasis non pariter, in qua à Deo acriter interro-
gamur, cur tot captivi in captivitatem ducti sunt, nec
redempti, negligentes diutius fuisset, aut quicquid
pretiosius, quam animas ipsas habuisse arguamur, quando
nostra & Sedis Apost. auctoritate redimendorum Cap-
tivorum opus in alia jamdiu loca est diffusum, illud
quoque in Alma Urbe nostra constituere decrevimus,
ad quod etiam ingemiscunt captivorum matrum,
aliorumque propinquorum lamentis & lacrymis quo-
tidie urgemur, eorum maxime qui nostræ & dictæ Sed-
is temporali ditioni subiecti, ut ipsi tutelam primum,
& in mari nostro Tyrreno & Adriatico securitatem
sic post vincula liberationem quoque à Nobis jure suo
exposcere videntur. Quibus omnibus valde ad hoc op-
us solliciti, cum adjumenta Nobis ad illud require-
reimus, in dilectos filios Custodes & Confratres Ar-
chiconfraternitatis Gloriosiss. Virg. MARIE Con-
salonis nuncupatæ de dicta Urbe, quos huic operi
præficeremus, mentem nostram intendimus; de quo-
rum insigni Christianæ pietatis affectu confisi, qui
Nobis, cum ob præstitam in Ecclesiæ Archicon-
fraternitati prædictæ unitarum divino cultu & con-
servando & augendo, inopibusque dotandis, & lo-
candis puellis, necnon pauperibus, aliisque variis cas-
ibus afflictis, multis annos in Urbe operam, tum etiam
dilecti filii nostri Julii Antonii S. Bartholomæi in In-
sula Presbyt. Card. S. Severinæ nuncupati, testimo-
nio Nobis satis innotescit.

Archicon-
fraternita-
tem Con-
salonis depu-
tat.

§. 2. Motu igitur proprio, & extera scientia, necnon
matura deliberatione nostra, deque Apostolicæ
potestatis plenitudine, onus hoc universum, quod ma-
gnum esse intelligimus, curæ & sollicitudini Archi-
confraternitatis prædictæ in perpetuum imponimus,
ad hoc ut ipsa Archiconfraternitas illiusq; Custodes &

Confratres pro tēpore existentes, quoscumque Chri-
sti fideles dictæ Urbis, ac Provinciarum, Civitatum,
Terrarum, & locorum nostræ & dictæ Sedis temporali
ditioni mediata & immediate subiectorum, ubicum-
que captos conquirant, ex infidelium servitute redi-
mant, eaque de causa omni loco dictæ ditioni nostræ,
ut præsertim, subiecto, elemosynas & oblata quæ-
cumque quarant & accipiant, Collectores probos &
ad charitatis officium exercendum propensos, ad alias
ad id ab Ordinariis locorum approbatos, quotquot
necessarii fuerint, servatâ formâ Conc. Trident. con-
stituant; qui elemosynas, oblationes, legata & quæ-
cumque alia subsidia, tam in dicta Urbe, quam in qui-
busvis Provinciis, Civitatibus, oppidis, castris & locis
ipsi ditioni, ut supra, subiectis, pro hujusmodi redem-
ptione, & causis ad eam pertinentibus perquirant, pec-
cuniasque inde congregandas, penes publicum Mercatorem
fidei & facultatibus idoneum deponant, donec
illa in redemptionem captivorum hujusmodi arbitrio
ipsorum Custodum & Confratrum erogentur; ita
tamen ut de aliis ipsius Archiconfraternitatis reditu-
bus ad alios pios usus, juxta illius laudabilia instituta
destinatus, nihil omnino detratur.

§. 3. Itaque Custodes & Confratres prædictos, necnon
omnes utriusque sexus Christi fideles per redem-
ptionem nostræ Sacramentum omni cordis affectu ob-
testamur, ut ejus membris laborantibus & oppressis
compati non negligant, qui pro omnibus pati ipse
dignatus est. Custodes siquidem & Confratres, ut cum
nostræ benedictionis gratia redemptionis captivorum
causam prompto animo suscipiant, seque ad salutem
animarum in Infidelium potestate periclitantium fer-
venter exerceant, ac tam ipsi quam alii Christi fideles
nascenti huic operi semper & ubique faveant, piosque
largitionibus prosequantur, centuplum in æternis
coeli tabernaculis feliciter recepturi.

§. 4. Insuper universis, singulis Archiepiscopis,
Episcopis, & aliis Ecclesiæ Prælati, necnon Re-
ctoribus Parochialium, & aliarum Ecclesiarum, co-
rumque Vicariis, ac ceteris ordinis Ecclesiastici per-
sonis secularibus, & etiam Mendicantium regulari-
bus in quacumque dignitate Ecclesiastica constitutis
ditionis prædictæ injungimus, ut quotiescumque
pro parte Custodum, & Confratrum prædictorum,
seu, aliquis eorum fuerit requisitus, laudabile hoc
opus per se, vel alium, seu alios, etiam adhibitis ver-
bi Dei Concionatoribus, in suis quicunque Ecclesiis,
plateis & locis, & ubicumque opus erit, omnibus
Christi fidelibus publicent atque denuncient, ipsos-
que ad illud omni studio & charitate ad elemosynas,
oblationes, & legata prædicta certatim conferendo,
omni studio & charitate accendant, ut miseris & afflic-
tis captivis, quorum animarum periculum imminet,
copiosius succurratur.

§. 5. Ceterum ut pium hoc opus salubribus institu-
tis directum, felicia in dies suscipiat incrementa, Cu-
stodibus & Confratribus prædictis licentiam tribui-
mus ut ad faustum & incolumem statum ipsius operis
rite atque ordine constituendum, quæcumque statu-
ta, ordinationes, & decreta licita & honesta, sacrisque
canonibus, Concilii Tridentini decretis non contra-
ria, & à nostro in Urbe in spiritualibus Vicario
approbata concedere, ac condita, quoscumque
opus erit, mutare & corrigere, & etiam omnino vel
in parte abrogare, alique ut præsertim approbanda
de novo edere, ac cetera gerere, exequi, & exercere
quæ in præmissis necessaria fuerint quomodocum-
que, & opportuna.

§. 6. Decernentes Præsentem, ac omnia in eis con-
tenta perpetuò inviolata consistere, Sique per quos-
cumque Judices ordinarios & delegatos etiam causa-
rum Palatii Apostolici Auditores, ac Sanctæ Eccle-
siæ Cardinales, sublati eis quavis aliter judicandi &
interpretandi facultate, ubique judicari & defini-
deberi, necnon irritum & inane quicquid contra
illas per quoscumque scienter vel ignoranter con-
tulerit attentari.

§. 7. Quocirca Venerabilibus fratribus nostris Ho-
sienis, & Bononiensis, ac Perusini, Episcopis per

Hort. tu
Confr. atq;
ut ad exp-
tionem eorum
suscipiant.

Ordinari
& alii si-
veant Con-
fraternitati.

Facili-
as
Societatis
condendi
statuta &c.

Clausula
præservati-
væ, & de-
cretum ir-
ritans.

Executo-
rum depu-
tatio.

Clausula
derogato-
ria.

Fides tran-
scriptorum.

D. P. A. ro.
die 28. Maii.

Edita A. D.
1583.

Jul. III. ann.
1. sui Pont.
indultum
dedic libe-

Apostolica scripta Motu simili mandamus, ut ipsi vel duo aut unus eorum, per se, vel alium, seu alios, praesentes Litteras & in eis contenta quaecumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Custodum ac Confratrum praetatorum, seu alicujus eorum fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in praemissis efficacis defensionis praesidio assistentes, faciant auctoritate nostra ipsas Litteras, & in eis contenta quaecumque, ab omnibus semper & ubique firmiter observari, ac Custodes, Confratres, Collectores praedictos, ceterosque omnes, quos Litterae ipsae concernunt illis pacifice frui & gaudere; non permittens quemquam ipsorum desuper quomodolibet molestari, Contradictores quolibet & rebelles per censuras & penas Ecclesiasticas, aliasque opportuna juris & facti remedia appellatione postposita compescendo, legitimisque super his habendis servatis processibus, censuras & penas ipsas etiam saepius aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 8. Non obstantibus sel. rec. Bonif. Papae VIII. praedecessoris nostri de iustis, & in Concilio generali edita de duabus dietis, dummodo ultra tres dietas alicuius auctoritate Praesentium ad iudicium non trahatur, aliisque Apostolicis constitutionibus, Conciliis quoque universalibus, etiam facultatum quaevis revocatorum, necnon prohibitionibus desuper factis, ac Eccl. Monasteriorum, Hospitalium, piorum locorum, Collegiorum, & aliarum Confraternitatum, necnon Sanctae Trinitatis Redemptionis captivorum & B. MARIAE de Mercede, aliorumque Ordinum quorumcumque juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque indultis, & Litteris Apostolicis, illis eorumque Superioribus & personis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque derogatorium derogatoris, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decretis in genere vel in specie, etiam ad Imperatores, Regum, Reginarum, aliorumque Principum instantiam, aut etiam motu, scientia & potestate plenitudine similibus, ac etiam consistorialiter, & aliis quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis specificae, expressae, individuae, & ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes mentio seu quaevis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi Praesentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque, aut si aliquibus communitur vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per Litteras Apostolicas non facientes plenam, expressam & ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§. 9. Volumus autem, ut earundem Praesentium transumptis etiam impressis, & sigillo personae in dignitate Ecclesiastica constitutae, vel dictae Archiconfraternitatis munitis, manaque ejusdem Archiconfraternitatis, vel alterius Notarii publici subscriptis, eadem prorsus fides ubique in iudicio & extra illud adhibeatur, quae ipsis Praesentibus adhiberetur, si essent exhibitae vel offensae.

Nulli ergo &c.
Dat. Romae apud S. Petrum, anni Incarn. Domini-
nicae 1581. 5. Cal. Jun.

Sequitur Indultum liberandi carceratos, de quo
in rubr.

GREGORIUS PAPA XIII.
Ad perpetuum rei memoriam.

§. 10. CUn alias se, re. Julius Papa III. praedecessor noster dilectis filiis Custodibus & Confratribus Archiconfraternitatis Confalonis de Urbe, ut ad laudem & honorem B. MARIAE semper

Virg. in eius Assumptionis festo unum carceribus detentum etiam si talis ultimo supplicio plectendus veniret, ad illorum electionem annis singulis extrahere, & liberare valerent, indulserit.

§. 11. Et deinde pie me. Pius Papa IV. etiam praedecessor noster, ut huiusmodi indultum majorem obtineret roboris firmitatem, illud, ac in eo contenta quaecumque approbaverit, & confirmaverit, ac perpetuae firmitatis robor adjecerit, necnon quatenus opus esset Custodibus & Confratribus praedictis ea omnia de novo concesserit, prout in supplicationibus motu proprio eorumdem Praedecessorum signatis, quorum solam signaturam ipsi Julius & Pius praedecessores sufficere respectivè voluerunt, plenius continetur.

§. 12. Cum autem, sicut exhibita Nobis nuper pro parte Custodum & Confratrum praedictorum petitio continebat, licet ipsi in possessione excarcerandi, & liberandi huiusmodi abinde circa fuerint & sint, ac elemosynam, quam liberandis huiusmodi ipsi Archiconfraternitati offerre & dare vellet, in ejusdem Archiconfraternitatis usus convertere possint, jamen quia nuper Nos per quasdam nostras sub plumbo expeditas Litteras onus universum, quod magnum esse intelleximus, redimendi captivos curae & sollicitudini dictae Archiconfraternitatis in perpetuum motu proprio imposuimus, &c. ut sup.

§. 13. Volentes ipsi Custodes & Confratres, totoque cordis affectu exoptantes, onus huiusmodi eis per Nos impositum, quod libenter acceptarunt, juxta nostram voluntatem & dictas Litteras exequi, & totali executioni nunc & in omnibus redimendi dictos captivos occurrentibus necessitatibus demandare; sed cum ad id faciendum quamplurimum Christi fidelium elemosynae sint necessariae, & ipsi sperent, ex nunc in carceribus dictae Urbis detentis, pro tempore detinendis aliquam elemosynam habere, & illam in redimendos captivos praefatos converterere parati sint, si in eis non solum unum, sed duos carceratos, & pro quocumque crimine, (praeter quam laesae Majestatis, & assassinii, ac propinacii veneni, necnon falsificationis litterarum, supplicationum, commissionum & aliarum gratiarum Apostolicarum, vel monetarum) in dictis carceribus existentes, & ad tiremes, ac etiam ultimo supplicio condemnatos liberandi quolibet anno in perpetuum eis, ac dictae eorum Archiconfraternitati licentia & auctoritas per Nos concedatur.

§. 14. Nos Custodes & Confratres huiusmodi, in praemissis tam sanctis de laudabilibus operibus confovere ac eos, & ipsam Archiconfraternitatem amplioribus favoribus & gratiis prosequi volentes, motu simili, & ex certa scientia nostra, ac de Apostolica potestatis plenitudine, praemissa in dictis supplicationibus motu proprio contenta, Apostolica auctoritate tenore Praesentium perpetuo confirmamus, & approbamus, illisque nostrum, & dictae Sedis firmitatis perpetuae rebus adjicimus, ac ea omnia, & singula, ad hoc ut ipsi Custodes, & Confratres, quolibet anno perpetuis futuris temporibus non solum unum, sed duos carceratos, & pro quocumque crimine, & delicto quantumcumque gravi & enormi, (supra dictis exceptis) in dictis carceribus detentos, & detinendos, & ad tiremes, & etiam ultimo supplicio condemnatos, & condemnandos, in vigilia dicti festi excarcerare, liberare, & absolvere, liberè & licitè valeant, qui eo ipso absoluti sint, & esse censentur à quibuscumque aliis criminibus (praeterquam praedictis exceptis,) auctoritate, & tenore praedictis etiam perpetuo harum serie extendimus, & ampliamus, ac eis, & dictae Archiconfraternitati similiter perpetuo concedimus, plenamque & liberam semper licentiam & facultatem impartimur.

§. 15. Mandantes dilectis filiis, dictae Urbis Gubernatori, Senatori, Curiae causarum Camerae Apostolicae generali Auditori, & Vicario, aliisque Judicibus, & Carcerum Custodibus, nunc & pro tempore existentibus, ac eorum cuilibet, quatenus visis Praesentibus, omni mora & dilacione & excusatione postposita,

randi unum
carceratum.

Pius IV. anno etiam sui Pont. r. illud confirmavit. Sed has Bullas consilio praetermissi.

Hic Pont. dedit auctoritatem redimendi captivos ut in praemissa continetur.

Modò hic silem Pont. pro hujus operis subventione.

Indultum liberandi duos carceratos, recepta ab eis aliqua elemosyna, concedit.

Officiales omnes illud observent.

ANNO
1581.

484

GREGORIUS DECIMUS-TERTIUS.

ANNO
1581.

Quibus-
cumque non
obstantibus.

D. P. A. 12.
die 26. Julii.

L X X.

Edita An. D.
1581.

Judei qui
pro eorum
conversione
in venio S.
R. E. reci-
piuntur, su-
dent in Re-
ligione
Christianam
multa de-
fenda com-
mittite.

Hic ideo
Pont. decet
nec de-
dere in eos.

Quod Ju-
deus & infi-
delis, negans
que com-
muni ha-
bet circa fi-
dem cum
Christianis,
Dæmones
invocans, &
illis immo-
lans.

Christianos
nefaria illa
docens.

Blasphemiae
que circa
Christum
& ejus Ma-
triem pro-
ferens.

Christianos
à fide de-
vians.

tis. eisdem Praesentibus pareant, & obediant, ac illas
observent, & observari fiant realiter & cum effectu.
§. 16. Non obstantibus praemissis, ac omnibus il-
lis, quae dicti Praedecessores nostri in eisdem motu
proprio, & supplicationibus motu proprio, voluerunt
non obstat, ceterisque contrariis quibuscumque.

Dat. Romae apud S. Marcum, sub annulo Piscatoris,
die 26. Julii, 1583. Pontificatus nostri anno 12.

De Judeorum, aut Infidelium flagitiis, in quae haereticarum
pravitatis Inquisitores animadvertere possunt.

Ad hoc facit const. 1. Nicol. IV. sup. fol. 159. Tur-
bato. Et de materia Judeorum notavi sup. in
Paul. IV. const. 3. Cum nimis in Tomo 1.

Inquisitorum verò generalium auctoritatem, vide inf.
in Six. V. const. 74. Immensa. in prima Congreg.
cum ibi indicatis.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memo-
riam.

Antiqua Judaeorum improbitas, quae divina boni-
tati semper resistit, tanto execrator consistit
in filiis, quanto ipsi ad cumulandam patrum fuo-
rum mensuram in Dei filio repudiando, ejusque in
mortem nefarie conspirando, gravius deliquerunt:
qui propterea suis effecti majoribus nequiores, pro-
prios sedibus expulsi, atque in omnes dispersi orbis
terrarum regiones, servitutisque perpetuae mancipati,
non majorem in ejusque ditione clementiam, quam in
Christianorum Provinciis, maxime verò in Apo-
stolicae pietatis gremio invenerunt; quae pro eorum
conversione laborans, eos misericorditer excepit, at-
que in cohabitatione unà cum filiis suis sustinuit, ad
veritatisque lumen allicere pio semper studio conata
est, rebusque ad vitam necessariis juxta iuris & con-
tumelias prohibuit, multis denique beneficentiae suae
privilegiis circumdavit; illi verò nullis beneficiis
mansueti, nihilque de suo pristino scelere remitte-
ntes, Dominum nostrum JESUM Christum in
caelo triumphantem adhuc in synagogis suis, & ubi-
que persequuntur. Christi quoque membris infen-
sissimi non desunt in Religionem Christianam hor-
renda facinora quotidie magis audere.

§. 1. Quibus Nos, ne pietatis nostrae puritas pol-
luatur, aut à sedis mancipiis Christo, Christiano-
rumque nomini impune illudatur, obviare volentes,
statuimus, ac etiam declaramus, Inquisitores haereticarum
pravitatis liberè procedere posse in omnibus
causis, & casibus, qui sequuntur.

§. 2. Si quis Judaeus, aut infidelis, in iis quae circa
fidem cum illis Nobis sunt communia, veluti Deum
unum, & aeternum, omnipotentem, creatorem om-
nium, visibilem & invisibilem, & similia, non esse
asserunt, praedicaverit, vel privatim alicui insin-
naverit.

§. 3. Si dæmones invocaverit, consuleritque, aut
eorum responsa acceperit, ad illosve sacrificia, aut
preces ob divinationem, aliamve causam direxerit,
aut quid eis immolaverit, vel turis alteriusve rei fu-
migationes obtulerit, aut alia quaevis impietatis ob-
sequia praestiterit.

§. 4. Si Christianos verbo, facto, vel exemplo,
aut alio quovis modo nefaria hujusmodi docuerit,
vel ad ea perpetranda perduxerit, aut perducere at-
tentaverit.

§. 5. Si Salvatorei, & Dominum nostrum JE-
SUM Christum, purum hominem, vel etiam peccato-
rem fuisse, Matremve Dei non esse Virginem, &
alias hujusmodi blasphemias, quae per se haereticarum
dici solent, in Christianae fidei ignominiam, con-
temptum, aut corruptionem, impie protulerit.

§. 6. Si quovis eorum opera, auxilio, consilio, vel
favore aliquis Christianus à fide desciverit, quamque se-
mel susceperat abnegaverit, vel ad Judeorum seu alio-

rum infidelium ritus, caeremonias, superstitiones vel
impias sectas transire, vel redierit, seu in haeresim
aliquam incidit, aut qui, ut Christi fidem abneget,
seu in haeresim incidat, opem, consilium, auxilium, vel
favorem quomodocumque praestiterit.

§. 7. Si quis Catechumenum vel quemcumque ex
Judaeis, aut infidelibus Deo inspirante ad fidem Chri-
stianam venire volentem, post declaratam nutu, ver-
bo, facto, aut quocumque alio modo ejus voluntatem,
à fide, vel fidei instructione, aut à sacri baptismi sus-
ceptione retrahere, avertere, vel dehortari, aut ne ad
fidem veniat, neve regenerationis lavacro ablatur,
quovis modo impediverit.

§. 8. Si quis apostatas, haereticosve scienter domi-
suae acceptaverit, aluerit, comenatu juverit, seu quo-
vis modo eis cibaria ubicumque praebuerit, aut dona,
vel munera dederit, vel misent, aut de loco ad lo-
cum deduxerit, seu associaverit, vel deducens seu
associandus curaverit, aut sumptus ministraverit, du-
ces, comitesve illis adjunxerit, vel ne ab eis perpetra-
ta deprehendi, aut investigari queant, fecerit. Qui-
que dictos apostatas, aut haereticos scienter aliquo
modo receptaverit, occultaverit, defenderit, aut eis
opem, consilium, auxilium, vel favorem quomodolibet
praestiterit.

§. 9. Si libros haereticos, vel thaludicos, aut alios
Judaicos quomodolibet damnatos, aut alias prohibi-
tos tenuerit, custodierit, vel divulgaverit, vel in quem-
cumque loco detulerit, aut ad eam rem operam suam
accommodaverit.

§. 10. Si Christianos deriserit, redemptionisque
nostrae hostiam salutarem in ara crucis immolatam,
Christum Dominum ludibrio & despectui habens,
quandocumque maxime verò in sacro Parasceves die
agnum, sive ovem, aut quid aliud cruci affixerit, aut
appenderit, in carne confecerit, seu quodcumque
contra ipsam fecerit.

§. 11. Si nutrices Christianas contra sacrorum Can-
onum statuta, diversorumque Romanorum Pontifi-
cum praedecessorum nostrorum functiones adhuc reti-
nuerit; aut eas retinens die, qua sanctissimum Eu-
charistiae Sacramentum fumerint, lac, uno, vel
pluribus diebus in latrinis, cloacas, vel alia loca effun-
dere coegerit.

§. 12. In quibus casibus, universis & singulis omnes
praedictae pravitatis Inquisitores omnium Reg-
norum, Provinciarum, Civitatum, Dominiorum,
& locorum universi orbis Christiani Iudices in suis
quemque locis perpetuo delegamus, ut super his con-
tra Judeos, atque infideles quoscumque, simul vel
separatim, prout in causis fidei iuxta sacrorum cano-
num formam, necnon officii Inquisitionis hujusmo-
di constitutiones, diligenter inquirent, & procedant,
& quos in aliquo vel aliquibus horum flagitiorum ex-
cessibus culpabiles reperierint, in eos pro culpa mo-
do, ac etiam pro criminum numero, vel multiplicati-
one, aut consuetudine delinquendi, flagra, remigia,
etiam perpetua, rerum quoque publicationes, exilia,
aliaque atrociora decernant, & alias de eis exempla
edant, quae sceleratos illos deterreant ab hujusmodi
flagitiis in posterum admittendis.

§. 13. Nos enim venerabilibus fratribus nostris S.
R.E. Cardinalibus Inquisitoribus generalibus, necnon
Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, & aliis loco-
rum Praelatis, ac etiam aliis praedictis Inquisitoribus
in virtute sanctae obedientiae districtè precipimus, &
mandamus, ut praesentes nostras Litteras in Civitati-
bus, & locis cuique subjectis publicare, & juxta illarum
tenorem procedere, ipsasque debitae executioni
mandare procurent.

§. 14. Decernentes irritum, & inane quicquid se-
cus per quoscumque, scienter vel ignoranter conti-
gerit attentari.

§. 15. Non obstantibus constitutionibus & ordi-
nationibus Apostolicis, necnon exemptionibus, pri-
vilegiis, immunitatibus, comenatibus, in fidem
publicam receptionibus, & tolerantis, praedi-
ctis Judaeis, & aliis infidelibus, Maranis, & Apo-
statis, tam in Dominis, Terris, & locis nostris, &

Infideles aut
fidem Chri-
sti transire
impedians.

Haereticos
scienter re-
ceptans, vel
auxilians.

Libros pro-
hibitos re-
tinentes.

Hostiam
Altaris deli-
cians, aut
Crucem
deridens,
&c.

Nutrices
Christianas
habens five
eas cogens
lac in latrin-
as effunde-
re.

Consonat
Innoc. IV.
const. 2.
fol. 93.

Ab Inquisi-
torib. cor-
rectur, ut
hic.

Præceptum
publicandi
nunc const.

Decretum
irritans.

Clausula
derogato-
ria.

Sedi

Sedi Apostolicæ, mediâte vel immediatè subiectis, quàm alibi ubicumque Regnorum, Provinciârum, & Dominiorum, gentium, & locorum commorantibus, vel in ea ex quibuscvis Regnis & partibus, tam fidelium quam infidelium consuetibus, eorumque Judicibus, Advocatis, & defensoribus quacumque auctoritate, potestate, & dignitate fungantur, etiam ad instantiam Imperatoris, Regum, Ducum, & quorumvis aliorum Principum tam per felices recordationis Paulum III. Decimo Cal. Martij, & Julium etiam III. Non. Decembris, Tertio anno sui cuiusque Pontificatus, quàm etiam quoscumque alios anteriores & posteriores Romanos Pontifices, ac Nos, & Sedem Apostolicam, ejusque Legatos, ac etiam Cameram Apostolicam, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscvis clausulis & decretis, etiam Motu proprio, & alias quomodocumque hætenus concessis, confirmatis, & innovatis, atque in posterum concedendis, confirmandis, & innovandis, quæ omnia, etiam si de illis, illorumque totis tenoribus, specialis, specifica, expressa, & individua mentio, aut aliqua alia forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi, ac si ad verbum inderentur Præsentibus pro plenè expressis habentes, harum serie specialiter & expresse revocamus, abrogamus, & omnino abolemus; ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 16. Volumus autem Præsentibus in locis Urbis consuetis de more publicari, & earum exemplis impressis, manu Notarii publici, & sigillo Sanctæ Romanæ, & universalis Inquisitionis, vel personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eandem prorsus fidem ubique tam in iudicio, quàm extra illud adhiberi, quæ adhiberetur eisdem Præsentibus si essent exhibitæ vel ostensæ. Nulli ergo omnino &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Domini millesimo quingentesimo octogesimo primo, Calend. Junij, Pontificatus nostri anno 10.

Anno à Nativitate Domini 1581. Indiâ. 9. die vero 10. mensis Junij, Pontif. Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Gregorii divina providentia Papæ XIII. anno 10. retroscriptæ litteræ Apostolicæ affixæ, & publicatæ fuerunt ad valvas Ecclesiæ S. Joannis Lateranen. Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, ac etiam ad valvas septi Hebraeorum, per nos Petrum Aloysium Gaytam, & Nicolæum Taglietum Apostolicos Cursores, Antonius Ludovicus. Mag. Curf.

GREGORIUS PAPA XIII

Ad perpetuam rei memoriam.

Cum sicut accepimus, dilecti filii Pistores Almiæ Urbis nostræ, ut plurimum, paucis & furfur in eorum apothecis pro tempore existentia, diversis personis dictæ Urbis incolis ad creditum ut vocant, dare soliti sint, & pro illorum pecuniis inde recuperandis, tam ab ipsis personis quàm etiam defunctarum personarum hujusmodi hæredibus hites suscipere, & iudicia movere, non sine maximis eorum impensis & laboribus cogantur; ac etiam sæpe contingat, ut ipsis personis decoctis, sive defunctis, eorum bonorum & hæreditum discussione facta, bona, seu

hæreditates ipsæ ad omnia eorum debita satisfacienda minime sufficiunt; ipsique Pistores, quavis eorum panes inter res cibarias ferè præcipuum, & magis necessarium locum obtineant, & juxta constitutionem fel. rec. Pii Papæ V. prædecessoris nostri super ordine in satisfactione creditorum Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalium, & aliorum Romanæ Curia Prælatorum servando editam, in priori causa connumerari videantur; tamen sæpè tamquam vigore dictæ constitutionis in prima causa hujusmodi minime comprehendi, sed ut posteriores eorumdem bonorum, seu hæreditum creditores eorum creditis frustrati remaneant, in maximum eorum qui granum à Camera Apostolica per eos pro tempore acceptum, viâ executiva, & manu Regia solvere coguntur, damnum & præjudicium. Unde quamplures ex ipsis Pistoribus eorum creditis frustrati, & aliena fide decepti, & deterioris conditionis effecti, eorum Pistoris attem deferere, ac etiam aliquando ab eadem Urbe, ne pro debitis suis exolvendis in carcerem detrudantur, & in eo marcescant, recedere coguntur.

§. 1. Nos igitur pro nostri Pastoralis officii debito in præmissis oportune providere volentes, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, modernis, & pro tempore existentibus dictæ Urbis Pistoribus, ut de cetero perpetuis futuris temporibus, in omnibus & singulis bonorum, & hæreditum quarumvis personarum, etiam cuiuscumque dignitatis, gradus & conditionis, existentium, coram quibuscvis Judicibus dictæ Urbis, tam ordinariis quàm delegatis & subdelegatis, pro tempore faciendis discussionibus, etiam eorumdem personarum potiores, & priores creditores non fuerint, in priori & potiori loco, sive gradu, primaque causa in eadem constitutione contenta, nempe pro pane tantum haberi, & teneri debeant, ceterisque aliis personis ratione tantum pecuniarum occasione panis debitum in similibus causis discussionis præferri possint, & debeant, Apostolica auctoritate tenore Præsentium concedimus & indulgemus.

§. 2. Et insuper pro minori eorumdem Pistorum dispendio, in omnibus & singulis eorum causis, litibus, controversiis, & differentiis, occasione panis hujusmodi de cetero movendis, illarum omnium Judices quoscumque dictæ Urbis, prout etiam in Litteris piæ mem. Julij Papæ III. etiam prædecessoris nostri confirmationis statutorum, ac ampliationis jurisdictionum & privilegiorum ejusdem artis, quas, quatenus opus sit, innovamus & confirmamus, cum facultate illas, omnes & singulas summarie simpliciter & de plano, ac sine strepitu & figura iudicii, manuumque Regia, ac sola facti veritate inspecta, & prout exactiōne pecuniarum pretij grani eisdem Pistoribus ab Officialibus ejusdem Camera Apostolicæ pro tempore dati, contra eosdem Pistores procedi solet, audiendi, recognoscendi, decidendi, sineque debito terminandi, necnon citandi, & in forma inhibendi, omnibusque aliis facultatibus necessariis & opportunis, similiter perpetuò constituimus, & deputamus.

§. 3. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon dictæ Urbis statutis & consuetudinibus, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis; privilegiis quoque indultis, & litteris Apostolicis; quibuscvis dictæ Urbis Judicibus, ordinariis & extraordinariis, ac delegatis, & quibuscvis aliis personis, & locis etiam piis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscvis etiam derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, irritantibus & aliis decretis, in genere vel in specie, etiam motu simili, & consistorialiter, ac aliis in contrarium quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, etiam si de illis specialis mentio habenda foret, illorum tenores Præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus hac vice dumtaxat, specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 4. Volumus autem, quod Præsentium tran-

Præsentibus Urbis in causis discussionum ceteris creditoribus præferri debent.

Omnesque Judices Urbis in eorum causis manu Regia procehere possunt.

Clauſula derogatoria.

Fides transumptis.

D. P. An. ro.
die 13. Nov.

sumptis, sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, & manu alicujus Notarii publici subscriptis, eadem prorsus fides adhibetur, quæ adhiberetur, si præsentis Litteræ ostentæ forent.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris die decimo tertio Novembris, millesimo quingentesimo octogesimo primo; Pontificatus nostri anno decimo.

LXXII.

Hortatio ad Christi fideles, ad subveniendum pauperibus Collegii Anglicani Rhemis, & ceteris Anglicis pro Fide Catholica dispersis.

Hoc idem Pontifex tam in Urbe instituit Collegium, pro Catholicis Anglicis, ac introitus & reditus annuos perpetuos assignavit, & privilegia concessit, ut sup. in ejus consil. 53. Quoniam. Et similem adhortationem fecit etiam Sixt. V. ut inf. in ejus consil. 39. Afflictae.

Edita An. D.
1582.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Universis Christi fidelibus præsentibus Litteras inspecturis; Salutem, & Apostolicam benedictionem.

Exordium.

Omnipotens Deus, qui immensæ misericordiæ suæ effectus sine ullo adjutore explere potest, plerumque miserrorum laboribus per homines subvenit, omniumque Dominus servis pietatis officia præstantibus, ampliora præmia pollicetur. Quæ tanta cœlestis Patris benignitas infirmitatis nostræ studia maxime accendere debet ad bene de calamitosi merendum, ut & nos de tali dignatione, quam possumus ei gratiam referamus, & oppressorum subleventur angustias, eorum præsertim qui propter Christum tribulationes patiuntur.

Collegii Anglicani cœrso.

§. 1. Cùm igitur ad Collegium Anglicanum, quod Rhemis est, ex Anglia, & aliis finitimis regionibus, hæreticorum furore ejecti, & veluti è sævientis tempestatis turbine naufragi, à dirisque teterrimæ mortis erepti cruciatibus, ad propiorem, & tutiorem quasi portum quotidie plures, (aliis per Gallicæ, atque Italicæ, & alias Christiani orbis partes dispersis) se recipiant, cùmque crescente, ob grassantem in dies magis pestem, exilum numero vitæ præsidium, quod Collegio prædicto à Nobis comparatum est, quodque ei pro Anglorum prædictorum necessitatibus quotidie suppeditamus, minimè satis sit ad tantam multitudinem sustentandam: Nolque, quibus multis, & diversis hujusmodi piis locis subveniendum est, & ad quos pauperes undique confugiunt, integros illi sumptus (ut expediret, & certè esset in optatis) subministrare nequeamus, intimo tangimur dolore cordis, nationemque illam, tanta quondam pietatis insignem, Sedi Apostol. gratissimam, ex prima pietatis tranquillitate in tam turbulentam seditionem incidisse, cruentæque impiorum sævitie esse objectam vehementer excruciamur. Quam quanto fortius in fidei fundamento, & Dei gratia nitentes perferunt, militiamque Christi, cui se obligant, tot periculis propositis præsentiori tolerant animo, tanto magis paternum & misericordem nostræ in se provocant sollicitudinis affectum.

Hortatio ad Christi fideles ad illis subveniendum.

§. 2. Quare Deum in primis humiliter precati, ut illis ad calamitates tot & tantas perferendas, atque etiam superandas auxilio esse dignetur; omnes Christi fideles, quantum possumus, in Domino hortamur, & per viscera misericordiæ Dei obsecramus, ut promissam à Domino nostro JESU CHRISTO misericordibus benedictionem, quæ ipsa est misericordia, memoria repetentes, afflictorumque Anglorum miseria sibi ante oculos ponentes, ministri Dei in pietatis opere effecti, eos, vel deputatos ab eisdem, præsentis Litteræ, vel earum autentica exempla ostensuros largis, ut quisque poterit, hac sævientem persequutione adjuvent elemosynis, Christumque

in afflictis, & rerum omnium inopia confectis pro Christo fratris suscipiant. Mandantes universis & singulis Ecclesiarum Prælati, eorumque Vicariis, necnon Rectoribus, & verbi Dei Prædicatoribus, ceterisque omnibus personis Ecclesiasticis, ut eas in suis quique locis & Ecclesiis, etiam in ipsis concionibus, populo promulgari (frande & lucro cessantibus) faciant, & permittant; unamque vel plures probatæ fidei personas, non tamen quæsiiores, pro quaerendis, recipiendis, & ipsis Anglicis, seu Deputatis integre consignandis elemosynis hujusmodi statuant.

§. 3. Quin etiam charissimos in Christo filios Imperatorem, ceterosque orbis Christiani Reges, & Principes rogamus, ut pro sua in Deum pietate, & propensa in pauperes egenos, præsertim pro fide Catholica laborantes, benignitate, facultate illis à Deo miseris subveniendi largitâ, pietatis studia exerceant, eorumque in quibus tanta, adjuvante Domino, elucet Christianæ Religionis perseverantia, tantum viget veræ pietatis exemplum, egestatem sublevent, & quibuscumque potuerint favoribus prosequantur. Scituri quicunque illis misericordiam fecerint, se è Redemptore nostro JESU Christo, cujus certa sunt promissa, retributionis præmium in æterna Cœlestis regni beatitudine percepturos.

§. 4. Quia verò præsentibus ad omnia loca, quibus illis opus esset, deferri nequeunt, decernimus ut illarum transumptis, etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides habeatur, quæ eisdem originalibus Litteris adhiberetur, si forent exhibitæ, vel ostentæ.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo octogesimo secundo, duodecimo Cal. Februarii, Pontificatus nostri anno decimo.

Quomodo permittatur Ordini Fratrum S. Antonii Viennensis pro eorum Hospitalibus elemosynas colligere.

Alia hortatio ad Principes.

Transumptorum fides.

D. P. A. ro.
die 21. Jan.

LXXIII.

Consonat Concilium Trident. sess. 21. cap. 9. & consil. Pii IV. num. 100. Ex debito. sup. fol. 165. Et ipsa constitutio confirmata fuit à Clem. VIII. die 15. Octobris sui Pontificatus ann. 6. quam ut simpliciter confirmatorium prætermisi, unâ cum hujus Greg. consil. edita die 19. Augusti Pont. sui ann. 6. quia hac plenior est, illamque superfluum redidit.

Cetera de hoc Ordine dixi sup. in consil. 5. Bonif. VIII. in dispositione fol. 174. Tom. 1.

GREGORIUS PAPA XIII.

Edita An. D.
1582.

Ad perpetuam rei memoriam.

Romani Pontificis providentia circumspicienda, dum in singulis Monasteriis & aliis Regularibus locis cogitare impellitur, ad illa vel in primis mentis suæ aciem dirigit, quæ ex eorum infirmo languidiorum, & aliarum miserabilium personarum hospitalitati obnoxia congruè subventionis auxilio indigere dignoscuntur.

§. 1. Sanè licet Sacrum Concilium Tridentinum propter prævos elemosynarum questionum abusus, eorum nomen atque usum penitus aboleverit, neque ipsos ad officium hujusmodi exercendum, ullo modo admitti voluerit, attamen noluit ut elemosynarum hospitalibus in quibus hospitalitatis actu exercetur, ad eorum sustentationem à devotis Christi fidelibus erogari solitarum perquisito cum collectio ab honestis personis honestoque modo facta probuberetur.

§. 2. Quocirca ne hoc prætextu Monasterium à Romanam Ecclesiam nullo medio pertinens S. Antonii de Sæcto Antonio Ordinis Sæcti Augustini Viennensis Dioc. illiusque hospitalia & domus per orbem

Conc. Trid. questus prohibuit, sed non elemosynas colligi vetuit in cap. 9. sess. 21.

Hic ideo Pont. declarat licere Ord. S. Antonii elemosynas certo modo colligere.

Chri-

Christianum longè lateque dispersa, ad quæ (sicut dilecti filii Abbas & Conventus dicti Monasterii Nobis nuper exponi fecerunt) miserabiles illæ personæ horrendo sacri ignis cruciatu correptæ, recursum habere, ibique recipi atque curari & sustentari solent, & in quibus Hospitalitas servatur, piis Christi fideles elemosynis sine quibus hospitalitas huiusmodi exerceri, & alia onera illis incumbenda supportari nequeunt destituta remaneant, paternâ charitate providere, eorumque indemnitati consulere volentes, ipsorum Abbatis & Conventus supplicationibus in hac parte inclinati, eisdem Abbati & Conventui, necnon dilectis filiis Præceptoribus, Administratoribus, & aliis Religiosis Hospitalium dicti Monasterii in quibus hospitalitas actu exercetur, ut petita & obtenta in primis ab Ordinariis locorum annis singulis inscriptis licentia, quam ipsi Ordinarii omnino gratis dare debeant, elemosynas, & quæcumque alia charitatis subsidia per personas honestæ vitæ ad id ab ipso Abbate seu aliis dictæ Religionis Superioribus pro tempore deputatas, pro usu ejus Hospitalis S. Antonii, in quo Hospitalitas actu exercetur, simulque existit intra fines illius Civitatis vel Diocesis in qua elemosynæ perquirantur, aut ejusmodi est in quo curari soleant pauperes omnes eo morbo laborantes, qui ex tota illa Diocesi adducuntur perquirere & colligere, illaque recipere & levare liberè & licitè valeant, dummodo huiusmodi elemosynæ convertantur dumtaxat in usus pauperum infirmorum & minorum deservientium hospitalibus quæ in illa Diocesi sunt aut in quibus curari solent pauperes illius Diocesis in qua elemosynæ colliguntur, Apostolica auctoritate tenore Præsentium perpetuò concedimus & indulgemus, ipsosque per dictos Ordinarios seu eorum Vicarios in spiritualibus Generales aut Officiales, necnon faciliæ Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, Cruciatæ Sanctæ, ac Neapolitanæ & aliarum Redemptionis captivorum societatum deputatos, vel quoscunque alios nullatenus perturbari, impediri vel inquietari, minuscque sub nomine Religionis S. Antonii huiusmodi ab aliis quàm personis, ut præfertur deputatis elemosynas ipsas perquiri & colligi, vel ejusdem Religionis insignia circumferri quocumque prætextu posse.

ordinariis
que publica
onem & e-
rectionem
jus Bullæ
committit.

§. 3. Et nihilominus universis & singulis Venerabilibus Fratribus Archiepiscopis & Episcopis, ac dilectis filiis eorum in spiritualibus Vicariis Generalibus atque Officialibus, necnon Abbatibus, Prioribus & aliis Ecclesiarum Prælati in virtute sanctæ obedientiæ per Præsentes committimus & mandamus, quatenus ipsi omnes & singuli per se vel alium, seu alios, præsentes Litteras & in eis contenta quæcumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Abbatis & Conventus necnon Præceptorum, Administrato- rum, Religiosorum & personarum ut præfertur deputatarum huiusmodi seu alienius eorum fuerint requisiti solemniter publicantes, easque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra præsentes Litteras, & in eis contenta huiusmodi ab omnibus ad quos spectat aut spectabit quomodolibet in futurum inviolabiliter observari, ipsosque Abbatem, Conventum, Præceptores, Administratores, Religiosos & personas ut præfertur deputatas illis pacificè frui & gaudere. Non permit- tentes eos vel aliquem ipsorum desuper per quoscumque quomodolibet indebitè molestari, perturbari, inquietari vel impediri. Contradiçtores quoslibet ac rebelles, per penas etiam pecuniarias eorum arbitrio infligendas & applicandas, ac denique per sententias censuras & penas Ecclesiasticas aliaque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita compe- scendo, legitimis super his habendis, servatis processibus, sententias, censuras & penas ipsas etiam iteratis vicibus aggravando; & invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

contrariis
erogari.

§. 4. Non obstantibus præmissis, ac scilicet. Bonifacii Papæ Octavi prædecessoris nostri de una, ac in Concilio generali editæ de duabus dictis, dummodo

ultra tres dietas aliquis auctoritate Præsentium ad iudicium non trahatur, aliisque Apostolicis, in Provincialibus & synodalibus Conciliis editis, specialibus vel generalibus constitutionibus & ordinationibus contrariis quibuscumque, aut si aliquibus communiter vel divisiim ab eadem sit Sede indultum, quod inter- dici, suspendi, vel excommunicari non possint per Litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§. 5. Volumus autem quod personæ ut præfertur deputatæ, quæstorum nomen nullo modo gerant, sed simpliciter elemosynarum collectores nuncupentur, & propter hanc operam, elemosynarum huiusmodi participes non sint, atque hoc munere citra ullum dolum & cum omni modestia fungantur, quodque ad stabula pro benedictionibus super animalia faciendis accedere easque sigillare, & aliqua sigilla & præter Præsentes seu eorum Transumpta alia privilegia necnon instrumenta quædam quæstorum insignia, reliquias, chartas, imagines, acus & alia his similia ad excitandas personas, circumferre, indulgentias publicare, aut per se vel alium predicare, fideles ad elemosynas sibi erogandas minis aut imprecationibus inducere, aut tamquam debitas, vel solitas, seu aliqua arte etiam prætextu dicendi orationem S. Antonii extorquere, vel super locis ullam quovis nomine conventionem etiam in utilitatem Monasterii, Præceptoriarum, Hospitalium & domorum huiusmodi facere nullo modo præsumant, seu simpliciter, piè & modestè unice dumtaxat campanellâ pulsatâ (cujus usus soli religioni prædictæ à Sede Apostolica concessus fuisse perhibetur) elemosynas pro subventionem Hospitalium & domorum huiusmodi petendo accipiant tantum quod sibi offeratur.

Elemosynas
colligendi
formam
præscribit.

§. 6. Ceterum prædicti Ordinarii diligenter animadvertant, ut hæc omnia præcisè observentur, atque non solum ad delationem aliorum, sed ex suo mero officio inquirent, si quæ fraus præsertim adversus leges eis præscriptas huiusmodi committatur ab ipsis Collectoribus; quos si verè reos compererint pro modo culpæ arbitrio suo puniant, eosque statim à collectione amoveant, atque alios, qui boni & idonei sint, ab eisdem Superioribus suffici curent. Et quia difficile foret præsentes Litteras ad singula quæque loca in quibus de illis fides facienda erit transmittere.

Eam non ob-
servantes pu-
niri jubet.

§. 7. Volumus & similiter dicta auctoritate decernimus, quod earundem Præsentium transumptis, etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, & alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ sigillo munitis, ea prorsus ubique, etiam in iudicio fides adhibeatur, quæ ipsis originalibus adhiberetur si forent exhibitæ vel offensæ.

Transumptis
credi man-
dat

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris die 1. Februarii 1582. Pontificatus nostri anno decimo.

D. P. An. 1582.
die 1. Febr.

Calendarii nuper restituti pro Festivitatibus S. R. E. suo tempore celebrandis, divinisque itidem officiis recitandis approbatio, & veteris Calendarii abolitio.

LXXIV.

Addenda sunt Calendario, alia Festivitates à successores Pontificibus adscriptæ, quæ infra suo loco ponentur, & in indice materiarum requirantur.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memo-
riam.

Edita An. D.
1582.

Inter gravissimas Pastoralis officii nostri curas, ea postrema non est, ut quæ à sacro Tridentino Concilio Sedi Apostolicæ reservata sunt, illa ad suum optatum, Deo adjutore, perducantur.

Exordium.

Conc. Trid. remissit Pont. curam restituendi Breviarium in festi 55. prope si.

Duo igitur hic expressa exequenda erant.

Primis executus est P. S. V. ut lora in ejus coroll. 64.

Secundum non fuit ut que modo executum.

Hic igitur Pont. peritissimos viros prap. fuit emendationi Calendarii.

Cognoviq. r. hic ex. pe. ita ne. cessaria fo. re.

Primo igitur loco reponit Ver. num æquinoctium in

§. 1. Sanè ejusdem Concilii Patres, cum ad reliquam cogitationem, Breviarii quoque curam adjungentem, tempore tamen exclusi, rem totam ex ipsius Concilii decreto ad auctoritatem & judicium Romani Pontificis retulerunt.

§. 2. Duo autem Breviario præcipue continentur, quorum unum, præter laudesque divinas, festis profectisque diebus persolvendas complectitur, alterum pertinet ad annuos Paschæ, festorumque ex eo pendunt recursum, Solis & Lunæ motu metiendos.

§. 3. Atque illud quidem fel. record. Pius V. prædecessor noster absolvendum curavit, atque edidit.

§. 4. Hoc verò, quod nimirum exigit legitimam Calendarii restitutionem, iamdiu à Romanis Pontificibus prædecessoribus nostris, & sæpius tentatum est, verum absolvi, & ad exitum perducere ad hoc usque tempus non potuit, quod rationes emendandi Calendarii, quæ à celestium motuum peritis proponebantur, propter magnas, & ferè inextricabiles difficultates, quas hujusmodi emendatio semper habuit, neque perennes erant, neque antiquos Ecclesiasticos ritus incolumes (quod in primis hac in re curandum erat) servabant.

§. 5. Dum itaque Nos quoque, credita Nobis, licet indignis, à Deo dispensatione freti, in hac cogitatione curaque versaremur, allatus est Nobis liber à dilecto filio Antonio Lilio artium & medicinæ Doctore, quem quondam Aloysius ejus germanus frater conscripserat, in quo per novum quendam Epactarum Cyclum ab eo excoctatum, & ad certam ipsius Aurei numeri normam directum, atque ad quamcumque anni Solaris magnitudinem accommodatum, omnia que in Calendario collapsa sunt, constanti ratione, & sæculis omnibus duratura, sic restitui posse ostendit, ut Calendarium ipsum nuli umquam mutationi in posterum expositum esse videatur. Novam hanc restituendi Calendarii rationem exiguo volumine comprehendens ad Christianos Principes, celeberrimæque Universitates paucos ante annos misimus, ut res quæ omnium communis est, communi etiam omnium consilio præficeretur, illi tamen, quæ maxime optabamus, concordetis respondissent, eorum Nos omnium consensione adducti, viros ad Calendarii emendationem adhibuimus in Alma Urbe harum rerum peritissimos, quos longè ante ex primariis Christiani orbis nationibus delegeramus. Ii cum multum temporis & diligentie ad eam lucubrationem adhibuissent, & Cyclostam veterum quàm recentiorum undique conquisitos, ac diligentissimè perpenso inter se contulissent, suo, & doctorum hominum, qui de ea re scripserunt iudicio, hunc præ ceteris elegerunt Epactarum Cyclum, cui nonnulla etiam adjecerunt, quæ, ex accurata circumspectione visæ sunt ad Calendarii perfectionem maxime pertinere.

§. 6. Considerantes igitur Nos, ad rectam Paschalis festi celebrationem juxta sanctorum Patrum, ac veterum Romanorum Pontificum, præsertim Pii & Victoris primorum, necnon magni illius œcumenici Concilii Nicæni, & aliorum sanctiones, tria necessaria conjungenda, & statuenda esse, Primum certam Verni æquinoctii sedem, & Deinde rectam positionem XIV. Lunæ primi mensis, quæ vel in ipsi æquinoctii diem incidit, vel ei proximè succedit; Postremò primum quemque diem Dominicum, qui eadem XIV. Lunam sequitur; curavimus non solum æquinoctium Verum in pristinam sedem, à qua jam à Concilio Nicæno decem circiter diebus recessit, restituendum, & XIV. Paschalem suum in loco, à quo quatuor & eo amplius dies hoc tempore distat, reponendam, sed unam quoque tradendam rationem, qua caveret, ut in posterum æquinoctium, & XIV. Luna à propriis sedibus numquam dimoveantur.

§. 7. Quo igitur Verum æquinoctium quod à patribus Concilii Nicæni ad XII. Calend. Aprilis fuit constitutum, ad eandem sedem restituitur, præcipimus, & mandamus, ut de mense Octobris anni 1582.

decem dies inclusivè à tertia Nonarum usque ad primie Idus eximantur, & dies, qui festum S. Francisci IIII. Nonas celebrari solitum sequitur, dicatur Idus Octobris, atque in eo celebretur festum SS. Dionysii, Rustici, & Eleutherii, martyrum, cum commemoratione S. Marci Papæ & confessoris, & SS. Sergii, Bacchi, Marcelli, & Apulei martyrum. Septimo decimo verò Cal. Novembris, qui dies proximè sequitur, celebretur festum S. Callisti Papæ & martyris. Deinde XVI. Calen. Novem. fiat officium & Missa de Dominica XVIII. post Pentecosten, mutata littera Dominicali, G. in C. Quinto decimo denique Cal. Novemb. dies festus agatur S. Lucæ Evangelistæ, à quo reliqui deinceps agantur festi dies, prout sunt in Calendario descripti.

§. 8. Ne verò ex hac nostra decem dierum subtractione, alicui quod ad annuum vel mensuram præstationes pertinet, præjudicium fiat, partes Judicium erunt in controversiis, quæ super hoc exortæ fuerint, dictæ subtractionis rationem habere, addendo alios X. dies in fine cujuslibet præstationis.

§. 9. Deinde ne in posterum à 12. Cal. April. æquinoctium recedat, statuimus Bisextum quarto quoque anno (uti mos est) continuari debere, præterquam in centesimis annis: qui quamvis Bisextiles antea semper fuerint, qualem etiam esse volumus annum 1600. post eum tamen, qui deinceps consequentur centesimi, non omnes Bisextiles sint, sed in quadringentis quibusque annis primi quique tres centesimi sine Bisexto transigantur, quartus verò quique centesimus Bisextilis sit, ita ut annus 1700. 1800. 1900. Bisextiles non sint. Anno verò 2000. more consueto dies Bisextus intercaletur, Februarii dies 29. continente, idemque ordo intermittendi, intercalandique Bisextum.

§. 10. Quò item XIII. Paschalis rectè invenitur, itemque dies Lunæ juxta antiquum Ecclesiæ morem ex Martyrologio singulis diebus ediscendi fidei populo verè proponantur, statuiimus, ut amoto aureo numero de Calendario, in ejus locum substituaturs Cyclos Epactarum; qui ad certam (uti diximus) aurei numeri normam directus efficit, ut Novilunium, & XIV. Paschalis vera loca semper retineant. Idque manifestè apparet ex nostri explicatione Calendarii, in quo descriptæ sunt etiam tabulæ Paschales secundum priscum Ecclesiæ ritum, quo certius & facilius sacrosanctum Pascha inveniri possit.

§. 11. Postremò quoniam partim ob decem dies de mense Octobris anni 1582. (qui correctionis annus rectè dici debet) exemptos, partim ob ternos etiam dies quolibet quadringentorum annorum spatio minimè intercalandos interrumpatur, necesse est Cyclos litterarum Dominicarum 28. annorum ad hanc usque diem usitatos in Ecclesia Romana; Volumus in ejus locum substitui eundem Cyclum 26. annorum ab eodem Lilio tum ad diem intercalandi Bisexti in centesimis annis rationem, tum ad quamcumque anni solaris magnitudinem accommodatum; ex quo littera Dominicali beneficio Cycli solaris æquè facile ac prius, ut in proprio canone explicatur, repetiri potest in perpetuum.

§. 12. Nos igitur ut quod proprium Pont. Max. esse solet, exequamur, Calendarium immensè Dærga Ecclesiam suam benigne jam correctum atque absolutum hoc nostro decreto probamus, & Romæ unà cum Martyrologio imprimi, impressumque divulgari iussimus.

§. 13. Ut verò utrumque ubique terrarum incorruptum, ac mendis & erroribus purgatum servetur, omnibus in nostro & S. R. E. dominio mediate vel immediate subiecto commorantibus Impressoribus sub amissionis librorum, ac centum ducatorum auri Cameræ Apostolicæ ipso facto applicandorum; aliis verò in quacumque orbis parte consistentibus sub excommunicationis late sententiæ arbitrii nostri poenis, ne sine nostra licentia Calendarium aut Martyrologium, simul vel separatim imprimere, vel proponere, aut recipere ullo modo audeant vel præsumant, prohibemus.

fede sua ad diem ar. Martii.

Judices subtractionis dierum rationem habeant.

Et ne inde æquinoctium recedat, o. hic non hic restitutum proponit.

Cychnique Epactarum substituit in Cal. end. loco aurei numeri.

Et Cyclum solarium antiquum ad novam & quancumque intercalandi rationem accommodatum.

Calendarii sic restitutum approbat.

Illudque imprimi prohibet sine licentia Pont. Hæc prohibitio fuit postea revocata.

Eodem quo-
que omnes
uti præcipit
post diem
10. Octobr.
1582. & re-
spectivè

§. 14. Tollimus autem & abolemus omnino vetus
Calendarium, volumusque, ut omnes Patriarchæ, Pri-
mates, Archiepiscopi, Episcopi, Abbates, & ceteri
Ecclesiarum Præsides, novum Calendarium (ad quod
etiam accommodata est ratio Martyrologii) pro di-
vinis officiis recitandis, & festis celebrandis in suas
quique Ecclesias, Monasteria, Conventus, Ordines,
Militias, & Dioceses introducant, & eo solo utantur,
tam ipsi quam ceteri omnes Presbyteri & Clerici, sa-
culares & regulares utriusque sexus; necnon milites,
& omnes Christi fideles; cuius usus incipiet, post de-
cem illos dies ex mense Octobris anni 1582. exemp-
tos, iis verò, qui adeo longinquis incolunt regiones,
ut ante præscriptum à Nobis tempus harum Litterarum
notitiam habere non possint, liceat, eodem tamen
Octobris mense in sequenti anni 1583. vel aliter,
cum primum scilicet ad eos hæc nostræ Litteræ per-
venerint, modo à Nobis paulo ante tradito ejusmodi
mutationem facere, ut copiosius in nostro Calend. ani-
mi correctionis explicabitur.

Hortatur-
que Impera-
torem &
Principes ut
Calenda-
rium sic e-
mendatum
recipiant &
servari fa-
ciant.

§. 15. Pro data autem Nobis à Domino auctoritate
hortamur & rogamus charissimum in Christo filium
nostrum Rodolphum Romanorum Regem Illustrum
in Imperatorem electum, ceterosque Reges, Principes,
ac Respublicas, isdemque mandamus, ut quo
studio illi à Nobis contulerunt, ut hoc tam præclarum
opus periceremus, eodem, immo etiam majore,
ad conservandam in celebrandis Festivitatibus inter
Christianas nationes concordiam, nostrum hoc Calen-
darium & ipsi suscipiant, & à cunctis sibi subjec-
tis populis religiose suscipiendum, inviolatèque ob-
servandum curent.

Forma publi-
cæ const.

§. 16. Verum quia difficile foret, præsentem Litte-
ras ad universa Christiani orbis loca deferri, illas ad
Basilicæ Principis Apostolorum, & Cancellariæ Apo-
stolicæ valvas, & in acie Campi Floræ publicari & af-
figi, & earundem Litterarum exemplis, etiam im-
pressis, & voluminibus Calendarii, & Martyrologii
insertis & præpositis, sive manu tabellionis publici
subscriptis, necnon sigillo personæ in dignitate Ec-
clesiastica constitutæ obligatis, eandem prorsus in-
dubitam fidem ubique gentium & locorum haberi
præcipimus, quæ originalibus Litteris exhibitis om-
nino haberetur.

Sanctio
pœnalis.

§. 17. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc
paginam nostrorum præceptorum, mandatorum, statu-
torum, voluntatis, probationis, prohibitionis, subla-
tionis, abolitionis, hortationis, & rogationis infringere,
vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem
hoc attentare præsumpserit, indignationem Omnipotentis
Dei, ac Beatorum Petri & Pauli Apostolorum
ejus se noverit incursum.

D. P. A. 10.
die 28. Febr.

Publicatio.

Datum Tusculi, anno Incarnationis Dominicæ
1582. sexto Kal. Martii, Pontificatus nostri anno 10.
*Anno à Nativitate D. N. Jesu Christi 1582. Indiil.
10. die verò Jovis 3. mensis Martii, Pont. Sanctiss.
in Christo Patris & D. N. D. Gregorii divina pro-
videntia PP. XIII. anno ejus 10. retrospectæ Litte-
ræ Apost. publicatæ & affixæ fuerunt in valvis
Principis Apostolorum de Urbe, & Can. ell. Apost.
ac in acie Campi Floræ, ut moris est, per me Sci-
pionem de Octavianis Apostolicum Cursorem.
Franciscus Barbon. Mag. Curs.*

Sequitur Declaratio sup. observat. Calendarii nuper
editi, pro illis qui de mense Octobr. 1582.
illud servare non ceperunt.

Edita An. D.
1582.

GREGORIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memo-
riam.

Causa hujus
declaratio-
nis.

Cupientes pro Pastoralis officii Nobis divinitus in-
juncti sollicitudine, Calendarium nuper, cura &
iussu nostro correctum atque editum, ubique loco-
rum ab omnibus, qui illud propter diversâ impedi-
menta, statuto die mensis Octobris proximè præteri-
ti, observare non ceperunt, quamprimum in usum
recipi, & prout maxime expediens est, diligenter &

exacè servari. Idcirco ne subsequens mensis Octo-
bris, quod quidem nimis longum esset, expectetur:
volentes vigilantie nostræ providentiâ, opportuna
remedia hinc difficultatibus celeriter adhibere.

§. 1. Motu proprio, & ex certa scientia, matura-
que deliberatione nostra, ac de Apostolicæ potestatis
plenitudine, hæc nostra perpetuò valitura sanctione
statuimus, præcipimus & mandamus, ut quicumque
in quibuscvis Regnis, Provinciis, Civitatibus, & locis
constituti, Calendarium emendatum prædictum hæ-
ctenus nondum observare ceperunt, illud modo &
formula infra scriptis, semotis cunctis excusationibus,
& impedimentis, omnino servent, videlicet: Cum
perventum fuerit ad diem 10. Februarii anni mille-
simi quingentesimi octogesimali tertii, in quem cadit
Dominica Quinquagesimæ secundum antiquum Calen-
darium, transitus statim fiat ad diem 21. ejusdem
mensis Februarii, omisiss decem diebus inter diem
decimum, & diem 21. Februarii hujusmodi interpo-
situs, quæ erit feria secunda post Dominicam Quin-
quagesimæ (mutata littera Dominicali F, in B,) in
qua dicatur officium, & Missa de S. Valentino Pres-
bytero & martyre, cum commemoratione SS. Fau-
stini & Jovite martyrum, & S. Simeonis Episcopi
& martyris, & feria tertia de Cathedra, proxima au-
tem feria quarta erit dies Cinerum, atque hoc pacto
nulla amplius erit discrepantia in Festorum, tam mo-
bilium quam fixorum celebratione.

§. 2. Verum quia difficile foret præsentem Litte-
ras ad universa Christiani orbis loca deferri, volumus
quod illarum transumptis etiam impressis manu No-
tarii publici subscriptis, & sigillo personæ in digni-
tate Ecclesiastica constitutæ obligatis, eadem prorsus
indubitata fides ubivis gentium & locorum habe-
atur, quæ originalibus Litteris adhibereque, si fo-
rent exhibitæ vel ostensæ.

Datum Romæ apud S. Petrum sub annulo Pisca-
toris, die 7. Novemb. 1582. Pontificatus nostri au-
no 11.

Declaratio
super obser-
vatione Calen-
darii pro his
quid. mense
Octobr. 1582.
observare
non cepe-
runt.

Transump-
torum fides.

D. P. A. 11.
die 7. Nov.

Qui Presbyteri Religionis & Societatis JESU, Litte-
ras Sacræ Pœnitentiariæ Apostolicæ aperire
possint.

Plura de hac Societate notavi sup. ad const. 25.
Pauli III. Regimini. Vide in Tomo 1.

GREGORIUS PAPA XIII.

Dilecto filio Claudio Aquaviva Præposito Generali
Societatis JESU.

LXXXV.

Edita An. D.
1582.

Exponi Nobis nuper fecisti, quod aliis quondam
Alexander Frumentus, tunc officii Sacræ Pœ-
nitentiariæ Regens dilectis filiis presbyteris Societatis
JESU. cui præesse dignosceris, etiam nullo Magis-
terii in sacra Theologia, & Doctoratus in jure cano-
nico gradibus insigniti essent, alias tamen idoneis, &
approbatis ipsius Societatis confessoribus, ut quicum-
que obligatis, etiam Magistris in Theologia, vel
jure Canonico Doctoribus directas, in foro conscientie
ejusdem Sacræ Pœnitentiariæ litteras aperire, &
absolutionis beneficium juxta illarum dispositionem
impendere possent & valerent, verbottenus concessit,
eaque facultate ipsi presbyteri hæctenus usi sunt. Cum
itaque ipsius Societatis Religiosi ad hujusmodi gra-
dus, nisi pro necessitate scholarum suarum promoveri
non soleant: penitentes etiam ad ipsos Presbyteros
cum suis litteris absolutionis in dies recurrant, &
importunè obsecrent, opportunè etiam eos juvari
convenit.

Causa hujus
concessio-
nis.

§. 1. Nos idcirco tuis in hac parte supplicationi-
bus inclinati, Presbyteri Societatis hujusmodi per-
te, vel tibi subordinatos illius Superiores de tua licen-
tia designandis, & ab ordinariis locorum approbatis,
vel approbandis, etiam si Magisterii vel Doctoratus,
aut aliis gradibus insigniti non sint. Litteras hujus-
modi aperiendi, confessionibusque fidelium ad ipsos
recurrantium auditis, & imposita salutaris in illis

Concessio
quod aliqui
Presbyteri
Societatis
aperiant litte-
ras Sacræ
Pœnitentiariæ.

expres-

Contrario-
rum de-
rogatio.Transum-
ptorum fides.D. P. A. 16.
die 3. April.

LXXVI.

Edicta An. D.
1582.

Exordium.

Omnis fa-
cultas cele-
brandi con-
tractus reser-
vat in Præ-
posito gen-
ex constitu-
tionibus So-
cietatis.Ac etiam
ex constitu-
tionib. A-
post.Et hic Pont.
idem conce-
dit in alia
Bulla quam
hic non po-
tuit, conten-
tus ista ple-
nior.Idem modo
Port. ex

expressa, vel de jure infligenda poenitentia, absolven-
di, ac in foro conscientie: quascunque sibi verbo vel
scriptis committas absolutiones, dispensationes, &
penitentiarum injunctiones excipiendi, & exequen-
di, licentiam & facultatem tenore Præsentium concedi-
mus & impartimur.

§. 2. Non obstantibus constitutionibus, & ordi-
nationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscum-
que.

§. 3. Volumus autem quod Præsentium transum-
ptis manu alicujus Notarii publici subscriptis, & si-
gillo tuo, seu personæ in dignitate Ecclesiastica con-
stitutæ munitis, eadem ubique fides adhibeatur, quæ
ipsis Præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ
vel ostensæ.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscato-
ris, die 3. Aprilis 1582. Pontificatus nostri an-
no 10.

De auctoritate Præpositi Generalis Clericorum Reg-
ularium Societatis JESU, circa contractus cen-
suum, alienationumque & aliorum.

Cetera de hac Societate notata habes ad const. 25.
Pauli III. Regimini. sup. in Tomo 1.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Apostolicæ Sedis circumspecta benignitas, in qua-
rumvis Religionum, præsertim earum qua-
regi Dominico invigilant, ac prædicationibus & le-
ctionibus, cum humanis tum sacris insistant, commo-
dis & utilitatibus consequendis, providentiæ suæ
auctoritatem interponit, & quanto potest favore pro-
sequitur.

§. 1. Sanè dilectus filius Everardus Mercurianus
Præpositus Generalis Societatis JESU Nobis nuper
exponi fecit, quod cum litteris, tam scilicet record. Pau-
li Tertii, quam pie mem. Julii etiam Tertii Roma-
norum Pontificum prædecessorum nostrorum, in fa-
vorem dictæ Societatis emanatis, & per dictorum
Pontificum Successores, & Nos respectivè confirma-
tis, ac ejusdem Societatis constitutionibus, omnimoda
Collegiorum illius, ac etiam temporalium bono-
rum, ad ipsa Collegia spectantium gubernatio, ad
tempore existentem Præpositum Generalem, vel
ipsam Societatem, ita tamen quod in ipsius Præpositi,
aut professæ Societatis vel alios, quam ipsorum Col-
legiorum usus, bona hujusmodi expendi, aut distrahi
non possint, sed in studentium utilitatem sic converti,
ut illi dictis bonis abuti non valeant, spectare & perti-
nere dignoscatur: indeque fiat, ut Collegia ipsa ca-
pitulariter nullo modo congregentur, sed omnis fa-
cultas celebrandi contractus, prout per eandem con-
stitutiones, ac etiam primam ipsius Societatis genera-
liter habitam Congregationem stabilitum & declara-
tum fuit, penes eundem Præpositum pro tempore
existentem resideat.

§. 2. Cumque etiam dicta Societas, quæ Ordo
Mendicans existit, aliorum Ordinum Mendicantium
super contractibus in eundis, à Sede Apostolica con-
cessis privilegium gaudeat.

§. 3. Nosque eisdem Everardo Præposito, & So-
cietati ut intervenientibus illis dumtaxat, qui mo-
re Societatis prædictæ, & secundum ejus constitu-
tiones & statuta, regimen & administrationem domo-
rum & Collegiorum juvare & promovere solent, &
servato in ejusmodi Congregationibus peculiari ac
proprio dictæ Societatis proce lendi modo, privile-
gium illis utendi, necnon contractus in eundis licen-
tiam & facultatem concesserimus, prout in singulis
Litteris Apostolicis, desuper confectis, plenius conti-
nuitur.

§. 4. Tamen quia nec modus ille quis sit, nec om-
nes per quos Præpositus Generalis facultatem hujus-

modi alioqui exercere potest, in dictis nostris Litteris
satis expressi fuere: ac etiam quia eidem Societati
privilegiis & litteris Apostolicis hujusmodi, tum quod
varis Litteris, & munimentis concessa sunt, uti, & il-
la ad singulos contractus in eundis afferre dispendio-
sum molestumque existit, tum quod in nonnullis re-
gionibus emphyteusis ad tres vitas concedi solent, nec
particulares homines illas ad brevius tempus accipere
facile adducuntur. Et propterea, ac etiam ex eo quod
nonnumquam pro Collegiorum ipsorum, necnon
domorum probationis, vel aliorum locorum ejusdem
Societatis necessitate, bona hujusmodi locare, aliena-
re, permutare, vel in emphyteusim seu livellum dare
expedit: ac quandoque contingit, ut conditio semel
oblata, si prætermittatur, non parvam afferat jactu-
ram, pro parte dicti Everardi Præpositi Nobis fuit
humiliter supplicatum, ut præmissa omnia plenius
declarare, & alias in eisdem opportunè providere, de
benignitate Apostolica dignaremur.

§. 5. Nos igitur qui operarios in vinea Domini
præsertim pondus diei & æstus sustinentes, sincero
prosequimur affectu; nostrarum, ac eorumdem Præ-
decessorum nostrorum Litterarum, necnon Societa-
tis prædictæ constitutionum, aliorumque præmissio-
rum tenores, Præsentibus pro expressis habentes, &
eundem Præpositum, ac dictæ Societatis singulares
personas à quibuscumque excommunicationis, suspensio-
nis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, cen-
suris, & poenis, à jure vel ab homine, quavis occasio-
ne vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati ex-
istunt, ad effectum Præsentium dumtaxat consequen-
dum, harum serie absolventes, & absolutos fore cen-
sentes, hujusmodi supplicationibus inclinati eisdem
Societati, ac Generali Præposito moderno, & pro tem-
pore existentium, ut ex nunc de cetero, perpetuis futuris
temporibus, informatione de contractibus in eundis
per Litteras vel alias pro ut ipse Generalis statuerit, à
subordinatis localibus Præpositis, vel Rectoribus aut
præfectis, seu eorum Vicegerentibus, vel à Provin-
cialibus seu Visitatoribus, aut Commissariis, vel ab
aliis sibi bene visis, auditis juxta eorum institutum
Consultoribus, accepta, quæcumque Domorum, tum
professarum tum probationis, Collegiorum, & alio-
rum locorum ejusdem Societatis ubilibet consensum,
bona stabilia & immobilia, seu quasi stabilia,
necnon, & pretiosa mobilia, cujuscumque qualitas, &
quantitatis ac valoris, & in quocumque loco posita,
pro pretio, & sub pactis, conditionibus, modis, & for-
mis hinc inde conveniendis, in evidentem tamen Do-
morum, & Collegiorum hujusmodi utilitatem, per
se, vel alium, seu alios vendere, alienare, permutare
ac etiam in Emphyteusim seu livellum ad tres gene-
rationes vel nominationes tantum, seu aliud longum
tempus, pro affectu sibi bene viso concedere, absque
alia à Nobis vel Successoribus nostris Romanis Pontifi-
cibus pro tempore existentibus, aut Sede prædicta,
vel illius de latere Legatis, seu Nunciis, aut etiam lo-
corum Ordinariis petenda vel obtinenda licentia, seu
confirmatione, liberè & licitè possit & valeat, conce-
dimus & indulgemus. Ita tamen quod si ex ejusdem
Generalis Præpositi facultate, pro rerum exigentia,
opus sit, in Europæ videlicet Provinciis, ante datam
eidem Præposito informationem, contractus aliena-
tionum fieri, dominium nihilominus, & possessio bono-
rum quorumvis, super quibus contractus hujus-
modi initi fuerint, penes Domos, Collegia, ac loca
prædicta, donec ipse Generalis rem confirmaverit,
aut suum consensum desuper præstiterit, remaneat,
ac remanere intelligatur. In Indis verò & aliis extra
Europam regionibus, contractuum hujusmodi confir-
matio ipsis Provincialibus, aut Vice provincialibus,
Visitatoribus seu Commissariis, simili per eos infor-
matione accepta, committi possit ab ipso Generali
Præposito. Alias & in eventum in quem ordo supra
scriptus non fuerit observatus, venditio, alienatio,
permutatio, locatio, & concessio, ac contractus, nec-
non inde sequuta quæcumque, nulla, & invalida, nul-
lusque roboris vel momenti existant. Ac ita in præ-
missis sic perpetuò declaramus, & decernimus.

Facultatem
alienandi, &
aliis modis
contrahendi
dicto Præ-
posito con-
cedit.

Contractus
ab eo serva-
tis hic ex-
pressis ini-
tos, & iheu-
dos, appro-
bat.

§. 6. Et nihilominus ex nunc prout ex tunc, & de contra postquam venditiones, alienationes, permuta-
tiones, locationes, concessionis ac contractus pro
tempore, ut præmittitur, facti & per dictum Præpo-
situm Generalem approbati & ratificati fuerint, seu
consensus ejusdem Præpositi Generalis intervenierit,
eisdem venditiones, alienationes, permutaciones, lo-
cationes, concessionis, & contractus, & inde sequuta
quæcumque, necnon instrumenta, & scripturas desu-
per pro tempore confecta, Apostolica auctoritate ap-
probamus, & confirmamus, ac perpetuæ firmitatis
robur obtinere debere statuimus, omnesque & singu-
los tam juris quàm facti defectus, si qui forsitan interve-
nerint quomodolibet in eisdem supplementis, decernentes
ea omnia, absque alio desuper ordinaria vel Apo-
stolica aut alia auctoritate, seu de Sedis Apostolicæ
commissione faciendo examine, ac Præsentes, & in eis
contenta validas & efficaces, validaque & efficacia per-
petuò fore, necnon ab omnibus observari debere, ip-
sosque contrahentes ad contractum & stipulatarum
conventionum observationem omnino teneri, ac su-
per præmissis & inde sequitis quibuscumque per
quoscumque quavis auctoritate quomodolibet mole-
stari vel impediri non posse. Necnon irritum, &
inane, si secus super his à quoquam, quavis auctori-
tate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Executores
designat.

§. 7. Quocirca Venerabilibus fratribus Patriarchis,
 Archiepiscopis, & Episcopis, ac dilectis Filiis, eorum
in spiritualibus Vicariis, aut Officialibus generalibus,
 Curiae causarum Camere Apostolicæ generali Audi-
tori, necnon Abbatibus, Prioribus, Præpositis, Deca-
nis, Archidiaconis, Canonicis, & Capitulis, ac aliis,
ad quos id quomodolibet spectat, & in futurum spec-
tabit, per eisdem Præsentes committimus, & manda-
mus, quatenus ipsi, vel duo aut unus eorum, per
se, vel alium, seu alios, præsentes Litteras, & in eis
contenta quæcumque, ubi & quando opus fuerit,
ac quod per parte Generalis Præpositi vel aliarum
personarum ejusdem Societatis, aut alicujus eorum,
super his fuerint requisiti, solemnitè publicantes,
eisque, & eorum cuiuslibet in præmissis efficacis defen-
sionis præsidio assistentes, faciant eisdem Præsentes,
& in eis contenta quæcumque, ab omnibus quos il-
la concernunt integrè & inviolabiliter observari.
Non permittentes eos aut eorum aliquem desuper
contra earundem Præsentium tenorem, quomodoli-
bet indebitè molestari. Contradictores quoslibet &
rebelles, per sententias, censuras, & poenas Eccle-
sias, alique opportuna juris, & facti remedia,
appellatione postposita, compescendo, legitimisque
super his habendis servatis processibus, sententias,
censuras & poenas ipsas, etiam iteratis vicibus aggra-
vando invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio
brachii secularis.

Contractus
derogat.

§. 8. Non obstantibus felicis recordationis Boni-
facii VIII. de una, & in Concilio generali edita, de
duabus dietis, dummodo ultra tres dietas quis vigo-
re Præsentium ad iudicium non trahatur, & pie me-
morie Symmachii ac Pauli II. prædecessorum no-
strorum de rebus Ecclesiæ non alienandis, vel aliena-
tis recuperandis, aliisque constitutionibus, & ordi-
nationibus Apostolicis, necnon quibusvis etiam iu-
ramento, confirmatione Apostolica, vel quavis fir-
mitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus,
privilegiis, quoque indultis, & Litteris Apostolicis
quibusvis, etiam derogatoriis derogatoriis, aliis-
que efficacioribus, & insolitis clausulis ac irritanti-
bus, & aliis decretis, in genere vel in specie, etiam
Motu proprio, ac aliis quomodolibet, etiam iteratis
vicibus concessis, approbatis, & innovatis. Qui-
bus omnibus, & singularibus, etiam si de illis, ac totis
eorum tenoribus, specialis, specifica, individua &
expressa mentio habenda, aut aliqua alia exquisita
forma ad hoc servanda esset, tenores huiusmodi, ac
si de verbo ad verbum inferrentur, Præsentibus
pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in
suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat spe-
cialiter & expresse derogamus, ceterisque contra-
riis quibuscumque. Seu si aliquibus communiter,

vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod inter-
dicti, suspensi, vel excommunicari non possint per
litteras Apostolicas, non facientes plenam, & expres-
sam ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi
mentionem.

§. 9. Volumus autem quod earundem Præsenti-
um transumptis manu alicujus Notarii publici sub-
scriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Eccle-
sias constitutæ, seu etiam ipsius Præpositi Socie-
tatis, munitis, eadem prorsus fides in iudicio, & ex-
tra adhibeatur, quæ ipsis originalibus Litteris adhi-
beretur, si forent exhibitæ, vel ostensæ.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub an-
nullo Piscatoris, die 18. Decembris millesimo quin-
gentesimo septuagesimo septimo, Pont. nostri Anno
quinto.

Sequitur ampliatio dictæ auctoritatis alienandi.

GREGORIUS EPISCOPUS;

*Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.*

EX debito Pastoralis officii ad ea libenter intendi-
mus, per quæ religionum locorum ac personarum
in eis degentium utilitates, & commoda valeant
procurari.

§. 1. Exhibita siquidem Nobis nuper pro parte
dilecti filii Claudii Aquavivæ Præpositi Generalis
Societatis JESU petitio continebat, Quod postquam
aliis per diversas litteras Apostolicas diversorum Ro-
manorum Pontificum Prædecessorum nostrorum, &
dictæ Societatis Constitutiones, & decreta, illius
Præpositi Generali pro tempore existentis, vel ipsi
Societati omnimodam Collegiorum, & Domorum
probationum, bonorumque ad illa spectantium guber-
natio, absque alia personarum in eis degentium capi-
tulari congregatione faciendi: etiam cum facultate
quovis contractus emptionum, venditionum, alia-
rumque venditionum, alienationum, necnon obliga-
tionum, & cessionum quarumlibet ærum tempora-
rium, mobilium & immobilium, etiam in beneficiis
ac spiritualibus aliisque quibuscumque etiam
præjudicialibus, necnon Instrumenta quæcumque
tam per se quàm per alios celebrandi, ac insuper
Mendicantium, necnon per nostras Litteras aliorum
Ordinum, & piorum locorum privilegiis omnibus
utendi, & aliis sub certis modo & forma in his expres-
sis concessa fuisset.

§. 2. Denique cum usus privilegiorum huiusmodi
dictæ Societatis parum prodesset, eo quod contra-
hentes renuerent, neque adducerentur ad contrahen-
dum solo privilegio communicationis, essetque fre-
quentissimum, & maxime necessarium ipsi Societati
in his suis quasi primordiis, pro Collegiorum & do-
morum illius foundationibus, & ampliationibus, do-
mos, agros, & bona aliò commutare, & vendere, ac
super his census imponere. His aliisque de causis.

§. 3. Nos eidem Societati, illiusque Præposito Ge-
nerali pro tempore existentis, quod informatione de
contractibus ineundis, per Litteras vel aliis, prout ip-
se Præpositus generalis statueret, à subordinariis lo-
calibus Præpositis vel Rectoribus, aut Præfectis, seu
eorum Vicegerentibus vel à Provincialibus, seu Visi-
tatoribus, aut Commissariis vel ab aliis sibi benevisis,
auditis juxta eorum institutum Consultoribus, accepta
quæcumque Domorum, tum professarum, tum pro-
bationis, Collegiorum, & aliorum locorum ejusdem
Societatis ubilibet consistentium bona stabilia, nec-
non etiam pretiosa mobilia, cujuscumque qualitatibus
& quantitatibus, ac valoribus, & in quovis loco posita pro
pretio, & sub pactis, conditionibus, modis, & formis
hincinde conveniendis, in evidentem tamen Domo-
rum, & Collegiorum huiusmodi utilitatem per se, vel
alium, seu alios vendere, alienare, permittare, in em-
phyteusim, seu livellum ad tres generationes, vel ne-
minationes tantum, pro affectu sibi beneficio dare, licet
valere, etiam absque alia Sedis Apostolicæ vel locorum

Transump-
tis credi
mandari.

D. P. An. 5.
die 18. Dec.

Edita An. D.
1582.

Exordium.

Auctoritas
Præpositi in
celebrandis
contractibus
referred.

Dubia desu-
per ostra li-
dem recen-
sentur.

Contententia
Bolle hic
præinserta
referred.

Ord-

Ordinationum licentia, seu confirmatione desuper obtinenda, ita quod v. additiones, alienationes, permutationes, locationes, concessionem, contractus, instrumenta, & inde sequuta quaecumque, postquam ab ipso Praeposito Generali ratificata fuissent, seu illius consensus intervenisset, co ipso Apostolica auctoritate, nullo alio desuper habendo examine, vel commissione, approbata, & confirmata essent, indulgit, prout in singulis Litteris Apostolicis desuper concessis plenius continetur.

Alia dubia
sunt post ea
exorta.

§. 4. Cum autem sicut eadem subijungebat petitione, ea quae de novo emergunt, novo indigeant auxilio, ipsique contrahentes praesertim in Curia varias quotidie requirant cautelas, sine quibus existimant sibi non fore satis cautum, inter quas ea potissima est, quod in indulto hujusmodi non fuerit expressum, quod etiam census redimibiles super eisdem bonis possent vendi, quae tamen species est, eaque minima, venditionis, & idcirco ab aliquot jam annis frequens fuit census redimibiles alias juxta formam privilegii hujusmodi venderentur & imponerentur. Quare pro parte dicti Claudii Nobis fuit humiliter supplicatum quatenus sibi, dictaeque Societati in praemissis consulere de benignitate Apostolica dignareretur.

Datur itaque
dicto
Praeposito
amplior facultas.

§. 5. Nos igitur eundem Claudium, & singulares ipsius Societatis personas a quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & poenis, a jure vel ab homine quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum Praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore consentes, ac praedictarum litterarum, & constitutionum tenores Praesentibus pro expressis habentes, hujusmodi supplicationibus inclinati, eidem Claudio, & pro tempore existenti Praeposito Generali dictae Societatis, vel ipsi Societati, dum ea scilicet erit generaliter congregata, ex nunc de cetero perpetuis futuris temporibus, per se vel alios, ut informatione, sicut praemittitur, vel si utiliter visum erit, extrajudicialiter ac summarie, & simpliciter accepta, vel etiam ea omnino omitta, bona Domorum, Collegiorum & locorum hujusmodi stabilia, & etiam mobilia pretiosa, praesentia, & futura, pro illorum utilitate, seu necessitate, quibuscumque personis, tam Ecclesiasticis, quam secularibus cujuscumque gradus, ordinis, & dignitatis existentibus, etiam Collegiis, Communitatibus, & Universitatibus, ad eam rationem quae facilius inveniri poterit, & pro pretio reperibili vendere, alienare, permutare, in emphyteusim, seu livellum ad tres generationes, vel in aliud longum tempus dare, locare, etiam cum donationis, seu investiturae refectione, ac representatione pecunia, sine tamen soliti illorum redditus diminutione, necnon generaliter & specialiter obligari, & hypothecare, super illis census quoscumque redimibiles imponere, & vendere, necnon de bonis eisdem compromittere, & quomodolibet super illis transigere, illisque simpliciter, vel liti desuper habite, ac actioni, etiam in non possessorum cedere, & reum citare, utriusqueque venditionum & aliorum hujusmodi, vel etiam necessitatem, aut aliam causam, propter quam fiat simpliciter, & absque figura iudicii cognoscere, iudicare, definire, & penitus terminare, liberè & licite valeat, & alias juxta dictarum Litterarum tenorem, harum serie, Apostolica auctoritate concedimus. Et ad hoc, si opus sit, licentias, & facultates omnes praedictas extendimus, & ampliamus. Ipsosque contrahentes, habita sola Praepositi Generalis vel congregatae Societatis per Litteras patentes more ipsius Societatis vel alias confirmatione, aut consensu, solo contractu securos existere, nec ad venditionum, communicationum, & aliarum hujusmodi alienationum, utilitatem, seu necessitatem, aut in re quivalentia, vel meliora bona pretii conversionis vel aliam demonstrationem teneri. Necnon contractus quoscumque super his habentis intos perpetuo valere, partesque ipsas ad illorum observationem omnino obligari, & tam ipsos habentis intos contractus, quam in futurum

incutendos, quibus ipsius Generis Praepositi, huius, & pro tempore existentis, vel etiam congregatae Societatis consensus seu confirmatio accesserit, alia Sedis Apostolicae confirmatione, & approbatione non indigere.

Clausula
subiata &c.

§. 6. Sique per quoscumque Iudices, ordinarios, & delegatos, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac Sanctae Romanae Ecclesiae Cardinales, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate, & auctoritate iudicari, & desini debere, necnon quicquid secus super his a quocumque auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari, irritum & inane decernimus.

Deputatio
executio-
rum

§. 7. Quocirca venerabilibus Fratribus nostris, Toletano, & Treverensi & Rigeni Archiepiscopis per Praesentes committimus, & mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum per se, vel alium seu alios eisdem Praesentes, & in eis contenta quaecumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Claudii vel pro tempore existentis Praepositi generalis, aut Societatis hujusmodi vel alicujus eorum fuerint desuper requisiti, solemniter publicantes, eisque in praemissis efficacis defensionis praesidio assistentes, faciant, auctoritate nostra Praesente, & in eis contenta hujusmodi firmiter observari, ac singulos, quos Litterae ipsae concernunt, pacifice frui, & gaudere. Non permittentes eos vel aliquem eorum desuper contra Praesentem motorem per quocumque quomodolibet indebitè molestari. Contradictores quoslibet, & rebelles per censuras, & poenas Ecclesiasticas, aliaque opportuna juris, & facti remedia, appellatone postposita, compescendo, legitimisque super his habendis servatis processibus, censuras, & poenas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

Derogatio
contrario-
rum.

§. 8. Non obstantibus felix record, Symmachi & Pauli, aliorumque Romanorum Pontificum, etiam praedecessorum nostrorum, de rebus Ecclesiae non alienandis, sed alienatis recuperandis, aliisque Apostolicis constitutionibus, & ordinationibus, necnon quibuscumque, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis quibuscumque sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, etiam Motu proprio, & Consistorialiter ac de Apostolica potestate plenitudine concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, etiam si de illis eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, individua, & expressa mentio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata inserti forent, Praesentibus pro expressis habentes, illis alias in suo robore permanentibus, ac dictis Litteris, si in aliquo obstitit, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque.

Fides tran-
sumptorum.

§. 9. Ceterum quia difficile foret easdem Praesentes ad singula quaeque loca, ubi necessarium fuerit, deferre volumus, quod illarum transumptis manu alicujus Notarii publici subscriptis & sigillo alicujus personae in dignitate Ecclesiastica constitutae, seu etiam ipsius Societatis Praepositi Generalis munitis eadem prorsus fides adhibetur in iudicio, & extra, quae ipsis originalibus Litteris adhiberetur, si forent exhibitae vel ostendae.

Nulli ergo, &c.

Dat. Romae apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicae millesimo quingentesimo octogesimo secundo, Nonis Augusti, Pont. nostri Anno 11.

D. P. An. 11,
die 3. Aug.

Quod personae societatis JESU, a quocumque Antistite etiam extra tempora, de licentia suorum Praelatorum ad sacros ordines transire possint, habita licentia Praepositi generalis.

LXXVII.

Quamplura de hac Societate indicavi supra in const.

1582.

25. Pauli III. qui illam primo approbavit, & in alia ejusdem constit. 38. in Tomo I.

1582.

Edicta A. D. 1582.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad futuram rei memoriam.

Edita A. D. 1582.

Exordium.

P

Paul. III. concessit sociis istis, ut cum Præpositi licentia à quolibet Antistite promoverentur ad Sacros Ord.

Paul. III. concessit sociis istis, ut cum Præpositi licentia à quolibet Antistite promoverentur ad Sacros Ord.

§. 1. Quocirca cum dictæ Societatis ac disciplinæ alumni nulli ecclesiæ, nullo loco certo mancipantur, ut ibi permanent, sed veluti viatores omni tempore parati, expectantesque diem & horam qua, vel ad extremas orbis regiones, cum veniri usum, emittantur ubi quisque pro capto suo, & juxta datam sibi à Domino sapientiam, sese in vinea Domini excolenda exerceat, ejusque rei causa fel. rec. Paulus Papa III. Præposito ejusdem Societatis concesserit, ut idoneos, & comprobatos ab ipsa Societate quibuscumque mallet catholicis Antistitibus, & gratiam, & communionem Sedis Apostolicæ habentibus, præsentare possent, qui illos sic præsentatos, absque ulla promissione vel obligatione, ad ordines hujusmodi promoverent.

Nonnulli tamen Ordini observantiam Concilii Trid. seff. 23. c. p. 8. requirent.

§. 2. Nonnulli tamen Antistites, post Concilii Tridentini decreta, eos sic præsentatos, prius in cuiusque tam minorum quam sacrorum Ordinum hujusmodi præscripto munere exercitatos, temporumque determinatorum post susceptos præscriptum finem, antequam ad superiores Ordines ascendant, omnino expectandum, eosque in eorumdem Ordinum functionibus, chorique officiis plenè instructos, & denique super eorumdem vita, moribus, ætate, & natalibus ad Parochi inquisitionem, aut alias testimonium, & certa alia requisita habenda esse contendunt, quamvis nonnisi ad eosdem Ordines suscipiendos muneris aliqui omnibus idonei dimittantur.

Hic ideo Pont. dictam facultatem in reintegr. & ampliat.

§. 3. Nos his incommodis, quantum in Nobis est, occurrere volentes omnibus Episcopis, & aliis Antistitibus, præsentibus, & futuris, in perpetuum præcipimus, atque interdiciamus, ne ab hujusmodi promovendis, qui licentiam à Præposito Generali dictæ Societatis pro tempore existente, vel ab eo delegatis habuerint, quidquam prædictorum requirant, vel exigant, sed ipsos etiam absque ulla functione in Ordinibus ipsis, inferiorumque ad illos suscipiendos observatione, aut inquisitione de cantu, officiis, & ceremoniis Ecclesiasticis, idoneitate, proprii Ordinarii licentia, & aliis in aliis requisitis ad minores, ac etiam extra tempora à jure statuta, tribusque Dominicis, vel aliis festis diebus etiam continuis ad sacros etiam Presbyteratus Ordines promoveant, acsi illi omnibus requisitis prædicti essent. Nos enim illis Ordines omnes prædictos sic suscipiendi, ac prædictis Antistitibus eos ipsis conferendi facultatem tribuimus.

Onibusque eorum non obstantibus.

§. 4. Non obstantibus præmissis ac constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque. Præsentis autem gratiæ communicationem omnibus aliis, etiam qui sua privilegia cum ipsa Societate copiose participant, participareque poterunt quomodolibet in futurum, fieri omnino prohibemus. Ceterum quia difficile esset Præsentem quocumque illis opus erit, deferre,

Transumptio fides.

§. 5. Volumus ut earundem Præsentium transumptis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ seu etiam dicti Præpositi munitis, eadem prorsus fides, in iudicio, & extra illud adhibeatur, quæ ipsis Præsentibus adhiberetur si essent exhibitæ, vel offensæ.

D. P. An. 11. die 12. Sept.

Datum Tusculi, sub annulo Piscatoris, die 21. Septembris, millesimo quingentesimo octuagesimo secundo, Pontificatus nostri Anno undecimo.

Sequitur facultas transendi ad alios Ordines Regulares.

Hic Pont.
prohibito
nem an-
pliat.

parnas prædictas hoc modo eludere posse arbitran-
tur.

§. 1. Nos ad hæc coercenda plenius evidentiufque
providendum esse rati, considerantefque Duellum
privatum non minus cruentum, & animæ, & cor-
pori noxium esse, quàm quod publicè perpetratur,
auctoritate Apostolica statumus, omnes illos, qui ex
condicto statuto tempore, & in loco convento Mo-
nomachiam commiserint, etiam si nulli Patrini, socii-
ve ad id vocati fuerint, nec loci securitas habita,
nullæve provocatorie litteræ, aut denunciationis
chartulæ præferant, censuris, & poenis omnibus à
dicto Concilio propofitis teneri, perinde ac si publi-
co, & confueto abusu singulare certamen inivissent.
Volentes etiam locorum Dominos, si certamen ex
condicto hujusmodi permiserint, aut quantum in le
fuerit, non prohibuerint, omneque illud fieri man-
dantes, insignantes, auxilium, consilium, vel favo-
rem dantes, equos, arma, pecuniam, com meatum,
& alia subsidia scienter subministrantes, aut ex com-
posito spectatores, vel socios quovis modo sese præ-
bentes, eisdem censuris, & poenis subjacere, etiam si il-
li qui ad locum destinatum pugnaturi accesserint,
impediri pugnam non commiserint, si per se ipsos
non feterint, quo minus illa committatur.

§. 2. Non obstantibus privilegiis, immunitatibus,
& exemptionibus, ceterisq; contrariis quibuscumq;.

§. 3. Constitutionibus tamen, & aliis sanctionibus
Apostolicis hac de re disponentibus in suo robore
duraturis.

Datum Romæ, apud S. Petrum, Anno Incarnatio-
nis Dominicæ 1582. Non. Decembris, Pontif. nos-
tri Anno undecimo.

Contrariis
derogat.

Aliæ consti-
firmæ re-
maneat.

Dat. P. A. At-
die 5. Dec.

Publicatio.

*Anno à Nativitate Domini 1582. indit. 10. die vero
Veneris mensis Decemb. Pont. Sanctissimi in Christo
patris, & D. N. D. Gregorii divina providentia
Papæ XIII. Anno 10. retrospectiva inter Aposto-
licæ affixæ, & publicatæ fuerunt in valvis Ecclesiæ
sancti Joannis Lateranensis, Basilicæ Principis A-
postolorum de Urbe, Cancellariæ Apostolicæ & in
acie Campi Flati, per nos Petrum Aloysium Gaytam,
& Nicolaum Taglietum Apostolicos Cus. res.
Petrus Delbequez Magister Curatorum.*

LXXIX.

Erectio Ecclesiæ Episcopalis Civitatis Bononiæ, in
provincia Lombardiæ, in Ecclesiam Archiepisco-
palem.

*Hanc erectionem approbavit, sed limites & Ecclesias
subjectas immutavit Clem. VIII. in constit. 166.
Romanus fol. 184. Tom. 2.*

Similem erectionem de Ecclesia Senensi statuit Pius
II. in constit. 3. Triumphans. Et de Ecclesia
Firmanæ Sixtus V. in constit. 95. Universi.

Edita A.D.
1582.

GREGORIUS EPISCOPUS,

*Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.*

Proemio.

Universi Orbis Ecclesiis, eo disponente qui cun-
ctis imperat, & cui omnia obediunt, meritis licet
imparibus præfidentes, in omnes agri Domini par-
tes oculos nostræ mentis, vigiliis more Pastoris inten-
dimus, inspicientes, quid Ecclesiarum ipsarum, præ-
ferum Cathedralium insignium, statui & decori ma-
ximè conveniat: atque hoc quidem tantò liberalius
promptiusque curandum censuimus, quantò magis Ci-
vitatum celebritas, accivium, & populorum suorum
vota id expolcent, ac divino fulsi præsidio, illius qui
cuncta ex sua benignitate ad fidelis populi sui salu-
tem disponit, ad ea quæ ad dignitatem, & statum Ec-
clesiarum hujusmodi augendum pertinent, officii
nostri partes libenter convertimus, prout cognoscimus
in Domino salubriter expedire.

Ecclesiæ
Bononiensis
com-
mendatio.

§. 1. Cum itaque Ecclesia Bononiensis Sedi Aposto-
licæ immediatè subjecta, cui dilectus filius noster Ga-
briel Tit. S. Martini in Montibus Presbyter Cardina-

lis Paleottus nuncupatus, ex dispensatione A; ostoli-
ca præest, & quæ in primis S. Petronii Episcopi, &
Protecloris Bononiæ intercessionibus, & meritis,
omni quidem tempore divinæ pietatis abundantia
magnis multisq; ornamentis exulta, non modo Dico-
cesis magnitudine satis in omnem partem patens, sed
Cleri, populiq; pietate, dignitate, & amplitudine
florens, Episcoporum quoque ordine succedentium,
quos item multos ab initio ferè nascentis Religionis,
favientibus adhuc infidelium persecutionibus, fidei
defensores, & in Sanctorum consortio adscriptos ha-
ber, numero affluens, sacrarum præterea reliquiarum
copia abundans, religiosissimis quoque templis, Basi-
licis, Monasteriis, locis piis, & aliis quæ ad omnem
ejusdem Cleri, populiq; Bononiensis laudem in-
signia sunt, pietatis Christianæ monumentis ornata,
valde per se ipsa elucet.

§. 2. Cumque Civitas ipsa jam inde usque à Theo-
doso Imper. amplissimis illustrata privilegiis, & à
diversis Romanis Pontificibus prædecessoribus nos-
tris ad eum congressus Imperatoris coronationem,
Concilii Oecumenici translationem, aliaque maxi-
mas res gerendas delecta, ejusdemque Apostolicæ
Sedis primogenita, & studiorum Mater ab omnibus
merito nuncupata, nobilissimo Gymnasio, Doctorum-
que & Scholarum ex omnibus orbis Christiani parti-
bus illuc confluentium frequentia, clarissimo Quadra-
ginta virum Senatu, & Magistratibus decorata: alio-
rum item illustrium virorum, apud quos & veræ Re-
ligionis cultus, & summa in Rom. Pont. ipsamque Sedem
observantia, & studium semper enituit, copia
quidem insignis: quippe quæ in omnibus schismati-
bus partes veri Pontificis perpetuò sustinuerit, & viros
dignitatis Ecclesiasticæ claros, Episcopos, Cardi-
nales, Pontificesque de Ecclesia Dei optimè meritos
sapennumero tulit: ædificiorum item magnificen-
tia, opibus, fertilitate, populi magnitudine, egregiè
erga exteros hospitalitate, ac præcipuè erga omnes
benevolentia, & caritate, omnique alia virtute illu-
stris, & sit & habeatur.

§. 3. Nos aliorum Romanorum Pontificum præ-
decessorum nostrorum, qui eodem honore patriam
suam condecorant, morem exemplumque secuti,
& ejusdem etiam Cardinalis Episcopique Bonon-
cujus non ignota est cura, & sollicitudo, in gloria Dei
saluteque animarum procuranda pio studio adducti,
& patriæ ipsius nostræ Bononiensis, quam unice in
Christo diligimus, singularibus erga hanc Sedem me-
ritis commoti, paternè quædè desiderio, & ea spe qua tene-
mur, id fore, ut patria ipsa Bononiensis hoc singula-
ri beneficio nostro excitata, sese in dies ad bene agen-
dum magis magisque conformet accensu, nec non Ec-
clesiæ ipsius, quam totis in Christo visceribus com-
plectimur, meritis permoti, ad illam meritis honori-
bus augendam & promovendam adducti, piis quo-
que supplicationibus directorum filiorum ejusdem Civita-
tis Quadraginta virum, aliorumque Magistratum ex-
citati, post habitam cum venerabilibus nostris S. R. E.
Cardinalibus maturam deliberationem, de illorum
consilio, atque Apostolicæ potestatis plenitudine, ad
laudem, gloriam & honorem Omnipotentis Dei, ac
Beatæ Mariæ semper Virginis, & Sanctorum Apo-
stolorum Petri & Pauli, ejusdemque S. Petronii Episco-
pi, & Patroni Bononiensis, necnon ad universals
Ecclesiæ exaltationem, Ecclesiam ipsam Bononi-
ensem in Metropolitanam Ecclesiam, & Sedem Episco-
palem Bononiensem in Archiepiscopalem, Archiepi-
scopalisque, & Metropolitanæ Prædictis Sedem, & Pro-
vinciæ caput pro illius Archiepiscopo pro tempore
existenti, qui pallii, & crucis usum aliorum Archiepi-
scoporum more habeat, omnibusque aliis insignibus
Archiepiscopalis, necnon privilegiis, honoribus,
& prærogativis aliis Archiepiscopis debitis, & con-
cellis, gaudeat, tenore Præsentium perpetuò erigi-
mus, & infirmamus, ac nomine, titulo, & honore Ar-
chiepiscopali, & Metropolitanò decoramus.

§. 4. Necnon Placentinæ, Parmenem, Regensem,
Mutinæ, Imolen, Cervinæ, & Cremen, Ecclesiæ eor-
umq; omnium, & singularum Civitates, & Dioeceses

Civitas
Bonon
commen-
datio.

Ecclesiæ
Bonon. ere-
ctio, in Ec-
clesiam Me-
tropolitanam & Ar-
chiepiscop.
alem.
cum privi-
legiis om-
nibus Ar-
chiepisco-
palibus.

Ecclesiæ
rum Pla-
centinæ,
Regienfis
& Cremen-
fis.

1582.

1582.

subiectio
Archiepisc.
Bononiensis
et hoc vi-
deat. Nam
et leu.
VII. indi-
catam in
rubr.

cum omnibus, & sanguis eorum Terronius, & ter-
minis, ac dilectos filios Clerum, & Populum uni-
uersum cum suis Collegiis, Parochialibus, & aliis
Ecclesiis, necnon Monasteriis utriusque sexus cete-
rique beneficiis, & officiis Ecclesiasticis, cum cura,
& sine cura, secularibus, & quorumvis ordinum Re-
gularibus, necnon Hospital. domibus, collegis, & lo-
cis religiosis quibuscumque ab ejusdem Sedis Apostoli-
ce immediatè five alterius cuiuscumque etiam Metro-
politani subiectione etiam perpetuò dividimus, & se-
paramus: illaque & eorum Dioeceses, ac Civitates,
posthac in Provincia Bononiensi esse, & consistere,
neque in alia Provincia censendas, & numerandas esse
decernimus, & declaramus: & quatenus alteri Pro-
vinciæ Archiepiscopo etiam Mediolanensi, & Ra-
vennatensi, tam antiquo jure, consuetudine, privile-
gio, vel alterius Metropolis erectionis five institutio-
ne, quam jure electionis ex Sac. Conc. Trid. decreto
factæ, vel alia quavis ratione, & causa antea adjunctæ
subiectæque, in toto aut in parte, essent vel censerentur,
five in illius possessione vel quasi, fesse præten-
derent, ab omni illius five alterius Provinciæ, vel Ar-
chiepiscopi, etiam Mediolanensis, & Ravennatensis,
aut illorum Capitulorum jure Metropolitico correc-
tionis, visitationis, subiectionis, & omni quacumque alia
jurisdictione, obedientia, & superioritate, si qua forsan
quavis occasione illis competeret, five competat, si-
militer perpetuò eximimus, & liberamus.

Episcoporum
suffraganeorum et
Archiepiscopi
subiectio.
Vide d.
bullam Cle-
ment. VIII.

§. 5. Necnon dictæ Bononiensi Ecclesiæ prædic-
tas Placentin. Parmensem, Regiensem, Mutinensem,
Imolensem, Cervientem & Cremensem Civitates, &
Dioeceses pro sua Metropolitana Provinciâ, ac Placen-
tin. Parmen. Regien. Mutinen. Imolen. Cervien. &
Cremen. Ecclesiis præfatas, modernò, ut, & pro tempore
existentis illarum singularum Archiepiscopos præfatos
pro suis & pro tempore existentis Archiepiscopi
Bononiensis suffraganeis, qui tamen earum singularum
Capitula etiam, quocumque privilegio suffulta tam-
quam membra cæti eidem Archiepiscopo Bononiensi
jure Metropolitico subint, sibi quæque obedientiam,
& reverentiam tamquam proprio Metropolita-
no prius exhibeant, pariter perpetuò subijcimus
eidemque Archiepiscopo Bononiensi prædictos suos
suffraganeos consecrandi, ac provinciales Synodos
evocandi, ac cum eis etiam Ecclesiastica negotia ter-
minandi, eorum Ecclesias disponendi, ad causas qua-
rumcumque appellationum, five querelas alias juxta
sacrorum Canonum statuta cognoscendi omniaque alia
& singula, quæ de jure vel consuetudine, aut alias
quomodolibet ab Archiepiscopos, & Archiepiscopale
munus spectare, & pertinere solent, & debent, ge-
rendi & exercendi plenam, & omnimodam concedi-
mus facultatem, Provinciæ quoque Bononiensi Cle-
rum, & populum universum pro eorundem Eccle-
siæ, & Archiepiscopi Bononiensis provincialibus si-
militer perpetuò concedimus, & assignamus.

Decretum
irritans.

§. 6. Decernentes ex nunc irritum, & inane, si
secus super his quoquam quavis auctoritate, scien-
ter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 7. Non obstantibus regulâ nostrâ de jure quasi
non tollendo, ac quibuscumque aliis constitutionibus, &
ordinationibus Apostolicis, necnon Placentinæ, Parmen.
Mutinen. Regien. Cervien. Imolen. &
Cremen. ac Ravennaten. & Mediolanensis Eccle-
siarum prædictarum juramento, confirmatione Apo-
stolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis
& consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, &
litteris Apostolicis eidem Ecclesiis, illarumque Præ-
sulibus, & Administratoribus, ac Capitulis, & per-
sonis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac
cum quibuscumque etiam derogationum derogatoriis,
aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, necnon
irritantibus, & aliis decretis, etiam Motu proprio, &
ex certa scientia, ac de simili Apostolicæ potestatis
plenitudine, & aliis quomodolibet etiam pluries concessis, confirmatis
& innovatis. Quibus omnibus, & singulis, etiam si pro
illorum sufficiens derogatione, de illis eorundem totis
tenoribus specialis, specitica expressa, & individua, nõ

autem per clausulas generales idem importantes, men-
tio seu quævis alia expressio habenda foret, tenores
hujusmodi, ac si de verbo ad verbum nihil penitus
omisso, exprimerentur, & infererentur, Præsentibus
pro sufficienter expressis habentes, illis alias in suo ro-
bore permanentibus, hac vice dumtaxat harum serie, de
consilio, & potestatis plenitudine similibus, specia-
liter, & expressè derogamus, ceterisque contrariis
quibuscumque.

§. 8. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc pa-
ginam nostræ erectionis, institutionis, derogationis,
divisionis, separationis, declarationis, exemptionis,
liberationis, subiectionis, concessionis, assignatio-
nis, decretorum, & derogationis infringere, vel ei
ausu temerario contraire. Si quis autem hoc atten-
tare præsumpserit, indignationem Omnipotentis Dei,
ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se no-
verit incuturum.

D. P. An. r.
de 10. Dec.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnatio-
nis Dominicæ 1582. 4. Idus Decemb. Pontificatus
nostri Anno undecimo.

Abbatissæ & aliæ Præfectæ Monasteriorum Monia-
lium in Italia ad triennium tantummodo eligantur.

Quoad modum eligendi, habes Concil. Trident. in sess.
25. cap. 7.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei me-
moriâ.

Exordium.

E Xpofcit debitum Pastoralis officii, quod dispo-
nente Domino gerimus, ut ad ea sollicitè inten-
damus, per quæ Monasteria & alia Religiosa loca,
præsertim Deo dicatarum Sanctimonialium, se-
cundum regularis disciplinæ normam regantur, &
gubernetur.

§. 1. Perpendentes igitur, varia, & multiplicia dan-
na, in quibus plerumque afficiuntur Monasteria Mo-
nialium, quæ per Abbatissas, vel alias præfectas per-
petuas reguntur, e contra verò Abbatissas, & alias
Præfectas triennes, scientes fesse lapso triennio suæ ad-
ministrationis rationem esse reddituras, ac sperantes
de bene gestis laudem promereri, penam verò si male
gesserint, merentes, majori studio, ac diligencia, re-
gimen & administrationem Monasteriorum sibi com-
missorum gerere.

§. 2. His & aliis rationabilibus causis adductis, hac
nostra perpetuò valitura constitutione statuitur, &
ordinamus, quod de cetero perpetuis futuris temporibus,
in omnibus & singulis Monasteriis Monialium
S. Benedicti, Cisterciensium, Carthusiensium, & alio-
rum quorumcumque Ordinum in universa Italia, &
præsertim in utriusque Sicilia Regnis consistentibus,
quæ nunc per Abbatissas, vel alias præfectas perpetuas
reguntur, & gubernantur, cum primum Abbatissæ,
aut aliæ Præfectæ hujusmodi regimini, & administra-
tioni ipsorum Monasteriorum cesserint, etiam apud
Sedem Apostolicam, vel decesserint, eorum Abbatissas,
seu Præfecturas vacare contigerit, Abbatissæ,
aut aliæ Præfectæ non amplius perpetuæ, seu ad vi-
tam, quarum nomen, ac titulum ex nunc, prout ex
tunc, Apostolica auctoritate ex certa nostra scientia,
deque Apostolicæ potestatis plenitudine, tenore præ-
sentium perpetuò exringimus, & abolemus, led tri-
ennalis tantum ad Conventu uniuscujusque Monaste-
rii, & aliis juxta decreta Sac. Conc. Trid. & regularia
suorum Ordinum instituta eligantur, & præficiantur,
quæ postmodum elapso triennio, suis officiis persun-
ctæ, præfesse desinant, omnique prorsus careant aucto-
ritate, ac à regimine, & administratione Monasterii
per triennium à die finitæ administrationis inchoan-
dum abtineant, quo elapso, servatâ eidem forma
Concilii Tridentini iterum & pluries eligi pos-
sint.

§. 3. Districius inhibentes omnibus, & singulis

Abbatissæ
Monialium
ad triennium
tantummodo
eligantur, &
juxta suo-
rum Ordini
instituta, & Conc.
Trid.

Prohibito
ulterius eli-
gendi.

1582.

1582.

LXXX.

Edita A. D.
1583.

ANNO 496
1583.

GREGORIUS DECIUS-TERTIUS.

ANNO
1583.

Decretum
litans.

Claus. de-
rog.

Transump-
torum si-
des.

Dat. P. An
II. die 1.
Jan.

Publicatio.

LXXXI.

Edita A. D.
1583.

Excommu-
nicantur
infra script.

Hæretici,
eorumque
futores &
libros pro-
hibitos le-
gentes & ab
obedientia
Rom. Pon-
ti rece-
dentes.

dictorum Monasteriorum Conventibus, Superioribus, & personis, aliquam Abbatissam, aut aliam Præfectam perpetuam, seu ad vitam, sed triennalem tantum eligere, & præficere ullo modo audeant, vel præsumant.

§. 4. Quod si secus à quoquam quavis auctoritate fuerit attentatum, electionem, & præfectionem huiusmodi, ac omnia & singula, quæ inde sequuntur, irrita, nulla & inania, nulliusque roboris vel momenti fore. Sicque per quoscumque Iudices ordinarios, & delegatos quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi, & interpretandi facultate & auctoritate, in quavis causa, & instantia iudicari, & definiri debere decernimus.

§. 5. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac dictorum Monasteriorum, & Ordinum juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis eisdem Monasteriis, eorumque Superioribus, & personis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis, in genere vel in specie, ac aliis in contrarium quomodolibet concessis, confirmatis & innovatis. Quibus omnibus & singulis, eorum tenores, ac si ad verbum infererentur, Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 6. Ceterum quia difficile foret Præsentibus nostras ad singula quæque loca, ubi necessarium fuerit, deferre, volumus quod illarum transumptis manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides in iudicio & extra adhibeatur, quæ Præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 1. Januarii, millesimo quingentesimo octuagesimo tertio, Pontificatus nostri anno undecimo.

Anno à nativitate Domini 1583, indictione 11. die vero 4. mensis Januarii, Pontificatus S. D. N. D. Gregorii divina providentia Papæ XIII. Anno 11. retroscriptæ Literæ affixæ & publicatæ fuerunt in acie Campi Floræ, dimissæ earum copia auscultatæ & collationatæ cum dictis Literis in valvis ejusdem acie affixæ per me Joannem Freyle Curf. S. D. N. Papæ.

Petrus Delbequez Mag. Curf.

Excommunicatio & anathematizatio quorumcumque hæreticorum, necnon aliorum omnium, qui contentis in hac bulla Cœnæ Domini contraveniunt.

Alias habes ejusmodi bullas, quas tibi indicabo in consui. 63. Pauli V. Pastoralis, apud quam posui notas, quæ etiam huic bullæ congruæ videntur.

GREGORIUS EPICOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Consueverunt Romani Pontifices prædecessores nostri ad retinendam puritatem Religionis Christianæ, & ipsius unitatem, quæ in conjunctione membrorum ad unum caput, Christum videlicet, ejusque Vicarium principaliter consistit, & Sanctam Fidelium Societatem ab offensione servandam, arma justitiæ per Ministerium Apostolatus in præsentem celebratæ exercere.

§. 1. Nos igitur verussum, & solemnem hunc morem sequentes excommunicamus & anathematizamus ex parte DEI Omnipot. Patris, & Filii, & Spiritus Sancti, auctoritate quoque Beatorum Apost. Petri, & Pauli, ac nostra quoscumque Ussitas, Vicevitæ, Lutheranos, ZWinglianos, Calvinistas, Ugonottos, Anabaptistas, Trinitarios, ac omnes, & singulos Hære-

ticos quocumque nomine nuncupentur, & quoscumque sectæ existant, & eorum credentes, ipsorumque receptatores & fautores, & generaliter quoslibet defensores, ac eorumdem libros hæresim continentes, vel de legitime tractantes, sine auctoritate nostra, & Sedis Apostolicæ scienter legentes, aut tenentes, imprimentes, seu quomodolibet defensores ex quavis causa pulsic vel occulte, quovis ingenio vel colore, necnon subfiniticos, & eos, qui sic à nostra, & Romani Pontificis pro tempore existentis obedientia pertinaciter sultrahunt vel recedunt.

§. 2. Item excommunicamus, & anathematizamus omnes, & singulos quoscumque status, gradus, seu conditionis fuerint, & interdiciamus Universitates, Collega, & Capita quocumque nomine nuncupentur, & ordinationibus, sententiis seu mandatis nostris ac Romanorum Pontificum pro tempore existentium, ad universale futurum Concilium appellantes, necnon eos, quorum auxilio vel favore appellatum fuerit.

§. 3. Item excommunicamus, & anathematizamus omnes Piratas, Latrunculos maritimos, & illos præcipue qui mare nostrum, à Monte argentario, usque ad Terracinam discurrunt, eos, qui in illo navigant, deprædantur, mutilant, interficiunt, rebuſque bonis suis spoliant, omnesque receptatores eorumdem, & eis auxilium scienter dantes vel favorem.

§. 4. Item excommunicamus, & anathematizamus omnes, & singulos, qui Christianorum quorumcumque navibus, tempestate in transversum, ut dici solet, iactatis, naufragium passis, aut etiam submersis, five in ipsis navibus, five dis delapsi, & in mari, vel litore inventa, quoscumque generis bonastam in nostri Tyrreni, & Adriatici, quam in quibuscumque aliis quoscumque maris regionibus, & litoribus rapuerint, aut scienter ipsi sibi acceperint, aut ab aliis rapta, seu accepta scienter receperint, ita ut nec etiam ob quodcumque privilegium, consuetudinem, aut longissimi etiam immemorabilis temporis possessionem, seu alium quæcumque prætextum excusari possint.

§. 5. Item excommunicamus, & anathematizamus omnes qui in Terris suis nova pedagia, seu gabellas ad id potestatem non habentes imponunt, vel augent, aut imponi, vel augeri prohibita exigunt.

§. 6. Item excommunicamus, & anathematizamus omnes falsarios Litterarum Apostolicarum, & in forma Brevis, ac supplicationum gratiam vel justitiam concernentium, per Romanum Pontificem, vel Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Vicecancellarium, seu Gerentes vices eorum aut de mandato ejusdem Romani Pontif. signatarum, aut sub nomine ejusdem Romani Pontif. seu Vicecancellarii, aut gerentium vices prædictorum, signantes supplicationes easdem, ac etiam falso fabricantes litteras Apostolicas, & in forma Brevis, ac supplicationes huiusmodi. Extendentes constitutionem felicis recordationis Innocentii Papæ Terti, quæ incipit, Ad falsariarum, cum omnibus penis in ea contentis, ad eosdem fabricantes, & etiam ad falsificantes seu mutantes supplicationes per Nos, seu de mandato nostro signatas, & datas sine nostra aut Datarum nostri licentia.

§. 7. Item excommunicamus & anathematizamus omnes illos, qui equos, arma, ferrum, filum ferri, stannum, & chalybem, omniaque alia metallorum genera, atque bellica instrumenta, signamina, canapem, funes, tam ex ipso canape, quam ex quacumque alia materia, & ipsam materiam, aliisque huiusmodi, quibus Christiani impugnant, deferunt Saracenis, Turcis, & aliis CHRISTI nominis inimicis. Necnon illos qui per se, vel alium, seu alios, de rebus Christianæ Republicæ statum concernentibus, in Christianorum perniciem, & damnum, ipsos Turcas & Christianæ Religionis inimicos certiores faciunt, illisque ad id auxilium, consilium, vel favorem quomodolibet præstant. Non obstantibus quibuscumque privilegiis, & concessionibus quibuscumque Principibus & Domin. five privatis personis, per Nos & Sedem prædictam hæcenus concessis, quæ illis nolumus in aliquo suffragari.

§. 8. Item excommunicamus, & anathematiza-

Appellantes
terâ Papa
ad futurum
Concilium,
& eorum
fautores.

Piratas, &
eorum au-
xilantes.

Naufragio-
rum bona
scienter au-
pientes, aut
ab aliis rap-
ta acci-
pientes.

Pedagia
nova, ibi
que potest
tate impo-
nere.
Falsificantes
litteras.
Apostol.
vel falsâ
fabricantes.

Arma &
alia quibus
Christiani
impugnau-
tur ad in-
deles defe-
rentes aut
concerentia
statum
Reipubl.
Christianæ
eisdem nunc-
ciantes.

& pro-

1583.
& quarum
unquam Ec-
clesiarum
iurid. &
fructus, ve-
eas seque
firantes.
Imponen-
tes decimas
& alia onera
personis
ecclesiasticis,
aut Ec-
clesiis, &
eorum fru-
ctibus ab-
que licen-
tia Pontifi-
cis.

& proventus, ad Nos & Sedem Apostolicam, & quicumque Ecclesiasticas personas ratione Ecclesiarum, Monasteriorum, & aliorum beneficiorum Ecclesiasticorum pertinentes usurpant, vel etiam quavis occasione vel causa, sine Romanorum Pontificis vel eorum ad quos iure pertinent, expressa licentia sequestrant.

§. 18. Quive collectas, decimas, tales, praestantias, & alia onera Clericis, Praelatis, & aliis personis Ecclesiasticis, ac eorum, & Ecclesiarum, Monasteriorum, & aliorum beneficiorum Ecclesiasticorum bonis illorumque fructibus, redditibus, & proventibus huiusmodi absque simili Rom. Pont. speciali, & expressa licentia imponunt, & diversis etiam exquisitis modis exigunt, aut sic imposita, etiam a sponte dantibus, & concedentibus recipiunt. Necnon qui per se, vel alium, seu alios, directè vel indirectè praedicta facere, exequi vel procurare, aut in eisdem auxilium, consilium, vel favorem, aut votum seu suffragium, palam vel occultè praestare non verentur, cuiuscumque; sint praeminentiae, dignitatis, ordinis, conditionis, aut status, etiam si Imperiali, aut Regali praefuleant dignitate, seu Principes, Duces, Comites, Barones, Respublicae, & alii Potentatus quicumque, etiam Regnis, Provinciis, Civitatibus, Terris quoquo modo praesidentes, aut quavis etiam Pontificali dignitate insigniti. Innovantes decreta super his per sacros Canones, tam in Lateranen. novissime celebrata, quam aliis Conciliis generalibus edita, etiam cum censuris & penis in eis contentis.

§. 19. Item excommunicamus, & anathematizamus omnes, & quoscumque Magistratus, Senatores, Praesidentes, Auditores, & alios Iudices quocumque nomine vocentur, ac Cancellarios, Vicecancellarios, Notarios, Scribas, ac executores, & subexecutores, & alios quocumque modo se interponentes in causis capitalibus seu criminalibus contra personas Ecclesiasticas, illas banniendo, capiendo, processando, seu sententias contra illas proferendo, vel exequendo etiam praetextu quorumcumque privilegiorum a Sede Apostolica ex quibuscumque causis, ac sub quibuscumque tenoribus & formis, in genere, & specie concessorum quibuscumque Regibus, Ducibus, Principibus, Rebus publicis, Monarchis, Civitatibus, & aliis quibuscumque Potentatibus, quocumque nomine censeantur, quae nolumus illis in aliquo suffragari, illa omnia ex nunc in irritum revocando.

Occupantes
Terras, &
loca S.R.E.
aut in illis
iurisdic-
tionem usur-
pantes, eo-
rumque
factores.

§. 20. Item excommunicamus, & anathematizamus illos, qui per se vel alium, seu alios, directè vel indirectè, sub quocumque titulo vel colore, de facto occupant vel detinent, vel hostiliter destruunt vel invadunt, occupare, detinere, vel destruere, aut invadere hostiliter praesumpserint, in totum vel in partem, Almam Urbem, Regnum Siciliae, Insulas Sardiniae, & Corsicae, Terras circa Pharium, Patrimonium Beati Petri in Tuscia, Ducatum Spoletanum, Comitatum Venasium, Sabinensem, Marchiam Anconitanam, Massam Trebariam, Romandiolam, Campaniam, & Maritimam Provincias, illarumque Terras, & loca, ac Terras specialis commissionis Arnulphorum, Civitatesque nostras Bononiam, Caesenam, Ariminum, Beneventum, Perusium, Avinionem, Civitatem Castellum, Tuderum, & alias Civitates, Terras, & loca, vel iura ad ipsam Romanam Ecclesiam pertinentia, dictaque Romanae Ecclesiae mediata vel immediate subiecta, quive supremam iurisdictionem in illis Nobis, & eidem Romanae Ecclesiae competentem, de facto usurpare, perturbare, retinere, & vexare, variis modis praesumunt. Necnon adherentes, factores, & defensores eorum, seu illis auxilium, consilium, vel favorem quomodolibet praestantes.

Raptores
bonorum
Cam. Apost.
tempore
infirmis
Patriar-
chis, aut vacan-
tis Sedis
Apost.
Hac consti-
tutio durat

§. 21. Necnon omnes, & singulos suppellectilium, librorum, scripturarum, & bonorum Camerae, & Palatii Apostolici ex eodem Palatio, infirmitatis Rom. Pont. ac Sedis Apostolicae vacationis tempore, ablatores, raptores, & illorum detentores, ac quoscumque alios ad quorum manus bona praedicta quocumque titulo, & ex quavis causa scienter pervenerint.

§. 22. Volentes Praesentes nostros processus, ac o-

mnia & quaecumque his literis contenta, quoutque alii huiusmodi processus, a Nobis aut Romano Pontifice pro tempore existens, fiant, aut publicentur, durare, suosque effectus omnino fortiri.

§. 23. Ceterum à praedictis sententiis nullum per alium, quam per Romanum Pontificem, nisi in mortis articulo constitutus, nec etiam tunc, nisi de stando Ecclesiae mandatis, & satisfaciendo cautione praestita, absolvi possit, etiam praetextu quarumvis facultatum, & indultorum, quibuscumque personis Ecclesiasticis, saecularibus, & quorumvis Ordinum, etiam Mendicantium, & Militiarum regularibus, etiam Episcopali vel alia maiori dignitate praedictis, ipsisque Ordinibus & eorum Monasteriis, Conventibus, & Domibus, ac Capitulis, Collegiis, Confraternitatibus, Congregationibus, Hospitalibus, & locis piis, necnon laicis etiam Imperiali, Regali, & alia mundana excellentia fulgentibus; per Nos, & dictam Sedem, ac cuiusvis Concilii decreta, verbo, litteris, aut alia quacumque scriptura, in genere & in specie, concessorum, & in novatorum, ac concedendorum, & innovandorum.

§. 24. Quod si forte aliqui contra tenorem Praesentibus excommuni. & anathem. laqueatis, vel eorum alicui absolutionis beneficium impendere de facto praesumpserint, eos excommunicationis sententia innodamus, gravius contra eos spiritualiter, & temporaliter prout expedire noverimus processuri.

§. 25. Declaramus ac protestantes quancumque absolutionem etiam solemniter per Nos faciendam, praedictos excommunicatos sub praesentibus comprehensos, nisi prius à praemissis, cum vero proposito ulterius similia non committendi, destiterint, ac quoad eos, qui contra libertatem ut praemittitur, statuta fecerint, nisi prius statuta, ordinationes, constitutiones, pragmatice, & decreta huiusmodi publicè revocaverint, & ex Archivis seu Capitalibus locis, aut libris, in quibus adnotata repeririunt, deleri, & cassari, ac Nos de revocatione huiusmodi certiores fecerint, eos non comprehendere nec eis aliter suffragari. Quin etiam per huiusmodi absolutionem, aut quoscumque alios actus contrarios, tacitos vel expressos, ac etiam per patientiam, & tolerantiam nostram, vel Successorum nostrorum quantumcumque tempore continuata, in praemissis omnibus & singulis, ac quibuscumque iuribus Sedis Apostolicae, ac Sanctae Romanae Ecclesiae undecumque, & quomodocumque quaesitis vel querendis nullatenus praedjudicari posse seu debere.

§. 26. Non obstantibus privilegiis, indulgentiis, & literis Apostolicis generalibus vel specialibus, praedictis, vel eorum alicui, seu aliquibus, & aliis cuiuscumque Ordinis, status, vel conditionis, dignitatis, & praeminentiae fuerint, etiam si ut praemittitur Pontificali, Imperiali, Regali, seu quavis Ecclesiastica & mundana praefuleant dignitate, vel eorum Regnis, Provinciis, Civitatibus seu locis, à praedicta Sede ex quavis causa, etiam per viam contractus aut remunerationis, & sub quavis alia forma, & tenore, ac cum quibuscumque clausulis etiam derogatoriis derogationis concessis, etiam continentibus quod excommunicari, anathematizari, vel interdicti non possint per literas Apostolicas non facientes plenam, & expressam ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi, ac de Ordinibus, locis, nominibus propriis, cognominibus & dignitatibus eorum nominationem. Necnon consuetudinibus etiam immemorabilibus, ac praescriptionibus quantumcumque longissimis, & aliis quibuscumque observantiis, scriptis, vel non scriptis, per quae contra hos nostros processus ac sententias, quominus includantur in eis, levi jure valeant, vel tueri, quae omnia quoad hoc, earum omnium tenores, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso intererent, praesentibus pro expressis habentes, penitus tollimus, & omnino revocamus ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 27. Ut verò praesentes nostri processus ad communem omnium notitiam facilius deducantur, chartas seu membranas processus ipsos continentes valvis Ecclesiae Sancti Joannis Lateranensis, & Basilicae Principis Apostolorum de Urbe appendi faciemus.

quae

1583.
utque ad
publicatio-
nem alterius
similis
consti. Reservatio
absolutio

Absolventes
alios cano-
nibus hic re-
servatis ex-
communicantur.

Absolutio
Pontificis
quos com-
prehendat.

Clausula
derogat.

Forma &
effectus pu-
blici hanc consti-
tutionem in Urbe.

Ordinarii
locorum
debet quot-
annis hanc
continua-
nem in eo-
rum Eccle-
siis frequen-
ti populo
publicare.

Confessarii
habent
transump-
tum huius
continua-
nis.

Transump-
tus publi-
cis deur
des.

Sanctio po-
nalis.

D. PAN. 11.
die 4. April.

LXXXII.

Edicta An. D.
1583.

Controvér-
siaz super
vacatione
de qua in-
rubr.

Decilio di-
ctis contro-
versiaz ema-
nata ab
And. Cam.

Approbatio
Pontificis.

D. PAN. 11.
die 29. April.

LXXXIII.

Edicta An. D.
1583.

Exordium.

Causa huius
conf.

Præscriptio
numeri, &
qualitatum
Magistro-
rum in
Theologia
eligendorū.
Ac tempus
promoven-
di, & locus.

quæ processus ipsos quasi sonoro præconio, & patulo iudicio publicabunt, ut ii quos processus huiusmodi contingunt, quod ad ipsos non pervenerint, aut quod ipsos ignoraverint nullam possint excusationem prætere, aut ignorantiam allegare, cum non sit verisimile id remanere incognitum, quod tam patenter omnibus publicatur.

§. 28. Insuper, ut processus ipsi, ac præsentis Litteræ, ac omnia, & singula in eis contenta eo fiant notiora, quo in plerisque civitatibus & locis fuerint publicata, universis & singulis Patriarchis, Primatibus, Archiep. Episcopis, & locorum Ordinariis, Prælatibus, & Rectoribus ubilibet constitutis per hæc scripta committimus & virtute sanctæ obediencie districtè præcipiendo mandamus, ut perse, vel alium, seu alios præsentis Litteras, postquam eas receperint, seu earum habuerint notitiam, semel in anno, aut si expedire viderint, etiam pluries in Ecclesiis suis, dum in eis maior populi multitudo ad divina convenit, solemni-ter publient, & ad Christianifidelium mentes reducant, nuncient, & declarent.

§. 29. Ceterum hortamur eosdem universos, & singulos Patriarchas, Archiepiscopos, Episcopos, aliosque locorum Ordinarios, & Ecclesiarum Prælatos, necnon Rectores, ceterosque curam animarum exercentes, ac presbyteros, fœculares, & quorumvis Ordinum regulares ad audiendum concessiones quasvis auctoritate deputatos, ut transumptum harum Litterarum penes se habere, legere, & diligenter examinare procurent.

§. 30. Volentes earumdem Præsentium transumptis, etiam impressis, notarii publici manu subscriptis, & sigillo Iudicis ordinarii Romanæ Curie, vel alterius personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eandem prout fides, in iudicio, & extra illud ubique locorum adhibendam fore quæ ipsis Præsentibus adhiberetur, si essent exhibitæ vel offensa.

§. 31. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ excommunicationis, anathematizationis, interdicti, declarationis, protestationis, sublationis, revocationis, commissionis, innodationis, mandati, hortationis, & voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum eius, se noverit incursum.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1583. pridie Nonas Aprilis, Pont. nostri Anno xi.

Quod præceptorie Militiæ, & Ordinis S. Joannis Hierosolymitani vacent per promotionem ad Episcopatum.

De hac Militia latè notavi supra ad const. 2. Anast. IV. Christiana. fol. 39. Tom. 1.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memoriam.

Controversia inter Venerabilem fratrem nostrum Thomam Episcopum Meleitanum, & dilectum Michaellem Palentin proxime fuscitatu, occasione Præceptorie de Malden, Prioratus Cathalonie Hostiralis S. Joannis Hierosolymitani, de qua pridem vacante per susceptionem muneris consecrationis ejusdem Episcopi, dicto Michaeli canonicè provifum fuerat, ipse verò Episcopus, illam, non ut beneficium vacationi obnoxium, sed ut prædium possidere posse contendebat.

§. 1. Nos causam huiusmodi, causarum Curie Cameræ Apostolicæ Generali Auditori audiendam committimus, & sine debito terminandam, omni, & quacumque appellatione remotâ, qui voto Auditorum causarum Palatii Apostolici de mandato nostro adhibito, provisionem prædictam Canonice declaravit,

perpetuum Episcopo silentium imponendo, ac præsentiam ejus appellationem rejiciendo.

§. 2. Quare nos attendentes, Episcopum dictam præceptoriam sive prædium, sive beneficium, sive quodvis aliud, cum sua Ecclesia sine dispensatione Apostolica retinere non posse, ideoque justæ Michaelis postulationi assentientes, prædictam declarationem & quicquid ab ipso Auditore in hac decretum est, Præsentium auctoritate confirmamus, appellatione huiusmodi, & quacumque provocatione, vel protestatione ex parte Episcopi interjecta non obstant.

Nulli ergo &c.
Dat. Romæ apud Sanctum Petrum, Anno incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo octuagesimo tertio, tertio kal. Maij Pont. nostri Anno xi.

De Electione, numero & qualitatibus Magistrorum sacre Theologiæ, de cetero in Provinciis Italiæ eligendorum ex Ordine Fratrum Eremitarum S. Augustini.

Alia de hoc Ordine scripti apud Alexand. IV. constitut. 6. Licet. sup. fol. 110. in Tomo 1.

Quoad promovendos hujus Ordinis Fratres ad Doctoratus, & Magisteria in sacra Theologia in Provinciis Hispaniarum, & Indiarum attende constitut. S. D. N. Urbani VIII. 40. Romanus. inf. tom 4. ubi alias Constit. de hoc Ordine tractantes indicatas reperies.

GREGORIUS PAPA XIII.

Dilectis filiis Priori generali, & Fratribus Ordinis Eremitarum S. Augustini Provinciarum Italiæ.

Dominicum gregem sollicitudini nostræ commissum, internis oculis perspicacius intropiciens, Religiosorum, & eorum, qui mundanis abjectis illecebris, Altissimo in humilitatis spiritu famulantur, præcipuam curam gerere, & ea, quæ professioni illorum adversari, seu quomodolibet illorum quietem, & felicem statum perturbare posse videntur, de medio tollere, quantum ex alto Nobis conceditur, satagentes, mentis nostræ aciem ad ordinem vestrum ab ipso Sancto Aurelio Augustino institutum præcipua cura convertimus.

§. 1. Cumque inter vos summa cum totius agri Dominici fertilitate, quamplurimi sacris litteris operam navantes, ad Lectoris, Baccalaurei, & postmodum Magistri, seu Doctoris in sacra Theologia gradum promoveri, & promoti certis privilegiis, immunitatibus, exemptionibus, præeminentiis, & superioritatibus, juxta Ordinis & regulæ vestræ statutorum, & institutionum formam, & continentiam frui, & gaudere cõsueverint. Et propterea multi propriis potius quam communibus commodis servientes, se ipsos publicis officiis, oneribus, & laboribus subtrahere satagentes, ad Magisteriū, seu Magistri sive Doctoris gradum properanter anhelant illum modis omnibus ambientes adeo, ut nisi malo huiusmodi celeriter occurratur, brevi tempore dubitandum sit, ne plures Magistri, quam discipuli in vestro Ordine præsertim in Provinciis Italiæ, reperiantur, & cum omnes privilegio magisterii, seu magistri, vel doctoris suffulti fuerint, nemo qui necessaria singulorum Monasteriorum, seu domorum vestrarum munia exercere velit, reliquis futurus sit. Unde factum est, ut fratres Eremitæ Ordinis vestri Provinciarum extralithaliæ constitutarum, Magistros seu Doctores, nisi magna cum cautela, & parvo numero à certis annis citra non admiserint, nec admittant de præsentibus.

§. 2. Nos igitur malis huiusmodi occurrere, & communi utilitati vestrum omnium cõsultare, & ut posthac non nisi idonei, & in numero decenti ad Magisterium, sive Magistri aut Doctoris gradum promoveantur, providere volentes, Prædecessorum nostrorum, & præsertim felicitis recordationis Bonifacii Papa

1583.

1583.

Octavi, qua alias peritus Literas sub Datum Romae apud Sanctum Petrum, quinto Kal. Maij, Pontificatus sui Anno decimotertio, Ordinis Fratrum Praedictorum Magistros hujusmodi creandi modum & normam praescripsit, inherentes. Motu proprio, non ad vestram, seu alicujus vestrum super hoc Nobis oblata petitionis instantiam, sed ex nostra certa scientia, & spontanea voluntate, ac de Apost. potestatis plenitudine, decernimus, ordinamus, volumus, mandamus, vetamus, & prohibemus, ne posthac Prior Gener. Ordinis vestri pro tempore existens, neque etiam ipsum Capitulum generale capitulariter congregatum, aut quodcumque Capitulum, sive Congregatio Provincialis, cujuscunque Provinciae intra Italiam constituta, sive alii quicumque, quacumque Ecclesiastica sive mundana praefulgeant dignitate, & potestate, etiam Sanctae Romanae Ecclesiae Cardinales, praeterea quicumque confederationis etiam immemorabilis, sive privilegii aut indulgentiae Apostolice ex quacumque causa quomodolibet pro tempore, etiam Motu proprio per quoscumque Praedecessores nostros, aut Nos forsan concessi, & innovari, quoscumque quantumcumque idoneos, & habiles ad Magistrum, sive Magistri, aut in sacra theologia Doctoris gradum, & dignitatem quomodolibet efferre aut promovere, seu efferré, & promoveri permittere possit aut valeat, audeat seu praesumat, nisi singulis sex annis in singulis Capitulis Generalibus, coram Definitoribus, & in ipso Definitorio, & non ultra duos ex singulis Italiae Provinciae, seu Congregationibus, ac alias modis, formis, locis, temporibus, & a personis infra scriptis examinandos, & approbandos, videlicet, ut in Capitulis Provincialibus, a vobis, & singulis vestris Italiae Provinciae seu Congregationibus, statutis temporibus celebrari solitis ex vobis ipsis, & ex singulis quibuscumque respective Provinciae seu Congregationibus, si fieri possint, sin autem ex vicinioribus, viri Magistri in sacra Theol. moribus, & doctrina idonei duo, qui ad Magistrum gradum, modo, & forma infra scriptis promovendos examinare, & in eorum, & cujuslibet eorum vitam, & mores inquirere, illorumque concursus audire, ut de eo sive eis recte judicare possint, & valeant, eligantur, jurentque Electi ipsi, se solo Religionis zelo, omni humano affectu postposito, illos sese electuros, quos vita, moribus, & doctrina idoneos, seu idoneiores ex sua cujusque conscientiae judicio judicabunt.

§. 3. Omnes vero, & singuli de singulis quibuscumque Italiae Provinciae, seu Congregationibus respective, qui se ad Magistrum seu Magisterii vel Doctoratus hujusmodi gradum, & dignitatem ascendere possent confident, ex ipsis quibuscumque respective Provinciae seu Congregationibus, (si aderunt) sin autem etiam ex aliis dummodo proveniendi ipsi ad aliquod Monasterium illius Provinciae, in qua promovendi fuerint, transferantur, & ab eo in filios legitime suscipiantur, summa cum diligentia, & maturitate ab Electis hujusmodi examinentur, & in eorum omnium, & singulorum scientia, & doctrina periculum fiat, & experientia, & centum formatis schedulis distinctiones, & punctos ex quatuor Magistri sententiarum libris, viginti quinque; scilicet ex libro quolibet exceptos continentibus, illisque in urnam coniectis, singulae forte extrahantur, quae singulis promovendis incontinenti assignentur, & super schedulis ipsis sive punctis sibi assignatis, qui forte obvenierint, singuli promovendi, viginti quatuor horarum spatio in praesentia duorum, sicut praemittitur, Electorum, & aliorum doctorum, virorum, ac Patrum vocalium ipsius Capituli Provincialis, lectionem, ut vocant, scholasticam legere, & ex ea conclusiones suo arbitrio disputandas proponere, & contra ipsos omnes & singulos, sicut praefertur, electi seu alias praesentes, saltem tres Magistri arguere & contradicere teneantur. Et insuper inter promovendos ipsos fiat concursus, ut quis eorum alio seu aliis magis idoneus repertus fuerit, aliis posthabitis, praefertur. Examinibus vero, & concursibus singulis in suis quibuscumque Provincialibus Capitulis modo, & forma praemissis, perfectis, omnibus, & singulis, qui examiniibus, & concursibus ipsis,

Experimentum & examen eorumdem.

sicut praefertur, electi praefuerint, praevio eorum, & cujuslibet ipsorum juramento, singulis pro suis conscientiis solum Deum, & Religionis Christianae profectum praeculis habentes, omni, & quocumque alio affectu postposito, quos idoneos, seu magis idoneos reputaverint, in schedula eorum, & cujuslibet eorum propria manu scripta seu subscripta adnotare, & Priori Generali in generali Capitulo quolibet sexennio celebrari solito coram Definitoribus, seu majori illorum parte, & in ipso Definitorio, & non alibi, sub poena excommunicationis praesentare curabunt.

§. 4. Ex ipsis autem modo, & forma praemissis, & singulis Provinciae, seu Congregationibus electis examinatis, & pro idoneis, seu magis idoneis approbatis, & receptis Prior generalis pro tempore existens, in loco ipso Definitorio, & non alibi, & coram ipsis Definitoribus, seu majori illorum parte, duos, & non plures singulis sex annis, & in generali Capitulo ex singulis Italiae Provinciae seu Congregationibus eligere, illosque in sacra Theologia Ministros, sive Doctores, creare, & facere, auctoritate nostra possit, & valeat, sicque per ipsum Priorem Generalem assumpti, & promoti, in ipsa sacra Theologia Magistri vere, & realiter ubique, tam tota Italia quam extra in quacumque Provincia vel Congregatione censentur, & existant. Omnibusque & singulis gratis, privilegiis, exemptionibus, praerogativis, & superioritatibus, tam a jure communi quam statutis, & consuetudinibus Ordinis vestri in sacra Theologia Magistris, & Doctoribus concessis, & indulgentiis, & quibus alii quicumque in sacra Theologia Magistri, seu Doctores in publicis quibuscumque Gymnasiis, aut Universitatibus ad Magistrum, seu Magistri vel Doctoris gradum promoti, & assumpti, uti, frui, potiri, & gaudere soliti sunt, & consueverunt, utunturque, ponuntur, & gaudent, uti, frui, potiri, & gaudere possint, utanturque, fruunturque, utanturque, gaudeant, libere, & licite, ad pacificam, & quietem. Nos enim tibi dilecto filio Priori generali moderno, & pro tempore existenti, modo & forma praemissis a Provincialibus Capitulis electos, & pro tempore eligendos, etiam absque alicujus loci Ordinarii, sive Collegii, aut Universitatis, sive Studii, aut Gymnasii generalis, sive illius Rectoris, aut cujuscumque Administratoris quocumque nomine nuncupati, & quacumque Ecclesiastica seu mundana auctoritate, & potestate fungentis, etiam Sanctae Romanae Ecclesiae Cardinales licentia, ad Magistrum, sive Magistri, seu Doctoris in sacra Theologia hujusmodi gradum, praerogativam, dignitatem, auctoritatem, & facultatem promovere, illisque omnibus, & singulis Magistri seu Doctoris in sacra Theologia insignia, auctoritates, facultates, & potestates singulis Magistris, & Doctoribus in ipsa sacra Theologia, per Nos aut quoscumque locorum Ordinarios sive Universitates, Collegia, Studia, Gymnasia, illorumque Rectores, sive Administratores quoscumque, aut alias quascumque personas, quacumque auctoritate, & potestate sussultas, & Sanctae Romanae Ecclesiae Cardinales, & de latere nostro Legatos, vel etiam quacumque loca concedi solita, ipsis, sicut praefertur, electis, examinatis, & approbatis, quos ex singulis Provinciae, modo, & forma praemissis praevia de more professione fidei elegeris, & in Magistros seu Doctores assumptis, dare, indulgere, concedere, & attribuire, etiam si Capitulum Generale hujusmodi in Alma Urbe nostra, aut alibi, ubi Nos, & curiam nostram Romanam tunc temporis commorari contigerit, aut in aliis quibuscumque Civitatibus in quibus Gymnasia & Studia generalia vigere dignoscuntur, aut in futurum quomodolibet eriguntur, fieri, & celebrari contigerit, plenarie concedimus & indulgemus, Praesentium per tenorem.

§. 5. Decernentes & districtè precipiendo mandantes ne quicquam vestrum qui posthac quiscumque privilegii, etiam a Nobis, & Successoribus nostris, etiam Motu proprio concessi, aut alias, quomodolibet impertrati praetextu, ad quiscumque Doctores, aut Magisterii gradus, etiam a quibuscumque locorum Ordinariis, etiam Sanctae Romanae Ecclesiae Cardinalibus,

Facultas Prioris generalis eorum promovendi.

Revocatio privilegii quibuscumque concessi.

aut

aut de latere Legatis. five in quibuscumque Gymnasii aut Universitatibus in potuerit promoti fuerint, Magistri aut in sacra Theologia Doctores titulum, nomen, insignia, aut præeminentiam, seu privilegia, & exemptiones quascumque usurpet, ut usurpare, five alias, aut aliter quam modo, & forma præmissis, concessis uti quomodolibet publicè vel occulte audeat seu præsumat sub pœna privationis ceterorum graduum, & inhabilitatis ad Magistrum, etiam si aliquibus per Nos aut Successores nostros, ac Sedem Apostolicam, ut in sacra Theologia vere, & realiter Magistri seu Doctores sint, & existant, & omnibus gratis, privilegiis, exemptionibus, & indulgentiis, quibus ceteri Magistri & Doctores potiri, & gaudere consueverint, potantur, & gaudeant, quomodolibet concessum extiterit. Interdicientes etiam, prout earum tem Præsentium tenore interdiximus omnibus, & singulis Italice Provinciis prædictis, & quibuscumque Congregationibus vestris, ne quemquam ad Magistrum, five Doctorem, approbare aut proponere aliter, alibi, aut alias, quàm præscriptis modis, formis, personis, & locis, ac temporibus, possint aut valeant, quovis quæsiro colore vel ingenio.

Quæc
erogatio.

§. 6. Quocirca Venerabilibus fratribus nostris Jacobo Episcopo Portuensi, moderno ac pro tempore existenti Ordinis vestri Protectori, necnon Mediolenensi Archiepiscopo, ac dilecto filio Curie causarum Cameræ nostræ Apostolicæ generali Auditori, per Præsentem Motu simili mandamus, quatenus ipsi vel duo, aut unus eorum, per se, vel alium, seu alios præsentem nostras Literas, & in eis contenta quæcumque, ubi, & quando opus fuerit, ac quosvis pro parte vestra, aut alicujus vestrum fuerint requisiti, seu eorum alter fuerit requisitus, solemnitè publicè nuntii, illicque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes; faciant auctoritate nostra, præmissa omnia, & singula, ab omnibus, & singulis, quos tangunt, seu tangere; oterunt quomodolibet in futurum, inviolabiliter observari. Contradictores quoscumque percellas, & pœnas Ecclesiasticas, aliaque opportuna juris, & facti remedia, appellatione postposita compescendo, necnon legitimis super his habendis servatis processibus, censuras, & pœnas, per eos seu eorum alterum inflictas, & comminatas, sæpius aggravando, & reaggravando, etiam invocato ac hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

Clausula
erogatio.

§. 7. Non obstantibus felicis recordationis, Gregorii Decimi, ac Bonifacii Octavi prædecessorum nostrorum de una, & Concilii generalis de duabus dietis, dummodo qui vigore Præsentium ad iudicium ultra tres dietas non trahatur, ac aliis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, privilegiis quoque, & indulgentiis, etiam Maremagnum appellatis, ex quacumque, etiam onerosa, & necessaria exprimens causa, tam vobis & Ordini vestro, quam singulis vestris Provinciis, Congregationibus, & domibus, seu Monasteriis, aut particularibus personis, quàm quibuscumque locorum Ordinariis, etiam Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalibus aut de latere Legatis, vel etiam Gymnasiis, & Studiis, seu Universitatibus quibuscumque, etiam Magistros, ipsos in sacra Theologia creandi, & promovendi modum, formam, & normam præscribent, etiam cum quibuscumque etiam insolitis, & efficacioribus, ac derogatoriis derogatoriis clausulis, & decretis, etiam Motu proprio concessis, & innovatis, ceterisque contrariis quibuscumque Quibus omnibus etiam si illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa & individua, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda foret, tenores huiusmodi Præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sed Sede indultum, quod interdici, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

Datum Romæ apud Sanctum Marcum sub anno Picatoris, die 25. Junii, millesimo quingentesimo octogesimo tertio, Pontificatus nostri Anno 12.

1583.
D. K. An.
a. die 25.
an.

Declaratio præcedentiæ inter Orfines Mendicantium, & inter Confraternitates Laicorum, in processibus.

LXXXIV.

Adverte quod Pius V. generaliter dedit Præcedentiam Fratribus Predicatoribus Ordinis S. Dominici ante alios Mendicantes, ut sup. in ejus const. 71. Divina. Et Clem. VIII. eisdem eam concessit ante omnes Regulares, exceptis canonicis, & clericis secularibus, ac antiquis Ordinibus Monachorum inf. in sua const. 13. Inter cetera. Tom. 2.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Edicta A. D.
1583.

Exordium.

Exposcit Pastoralis officii munus, cui disponente Domino prævidemus, ut ad ea sollicitè intendamus, per quæ discordiarum & litium, ac controuersiarum quarumlibet, præsertim inter personas Ecclesiasticas materia tollatur.

Causa
onst.

§. 1. Sanè Nobis nuper innotuit, quòd in multis civitatibus, & Diocesis diversarum mundi partium nonnullæ lites, causæ, & controuersie inter fratres Mendicantes, alia etiam similes lites, & controuersie inter confratres Confraternitatum Christianissimum, super præcedentiæ vel jure præcedendi ortæ jam sint, & oriri facile possint.

Extinctio
atum.

§. 2. Nos considerantes lites, causas, & controuersias huiusmodi in Ecclesia, præsertim inter religiosas personas, quæ relictis mundi vanitatibus famulatum & votum suum in humilitatis spiritu Domino, & Deo nostro, qui se pro nobis uique adeo humiliavit ut formam servi acciperet, exhibere, & persolvere proficiuntur, non modicam illi præclare, Deoque præcipue dilectæ virtuti, quæ est humilitas, labem infundere, populoque scandalum generare, ac propterea illas omni ratione submovendas, publicèque; religionis tranquillitati, ac ministrorum Ecclesiasticorum reconciliatio, & mutua dilectionis quamprimum consulendum esse rati, ac supremam huic negotio manum apponere volentes, necnon causas, lites, seu controuersias huiusmodi ubilibet, & coram quibuscumque Iudicibus motas, & in quibuscumque instantis indicibus, & edentes ab eisdem Iudicibus harum serie ad Nos advocantes, illique penitus extinguentes, eisdemque Fratribus Mendicantibus, & Confratribus super præmissis perpetuum silentium imponentes.

Definitio
differentiæ
ca præcedentiam.

§. 3. De Nobis attributæ potestatis plenitudine volumus & Apostolica auctoritate decernimus, quod quicumque ex dictis fratribus Mendicantibus inter se de præcedentiæ huiusmodi contendentes, aut Confratribus Confraternitatum prædictarum, inter quos lites & causæ præmissorum occasione ortæ jam sint, seu oriri contigerit in futurum, cui in quasi possessione præcedentiæ ac juris præcedendi sunt, ii (quibuscumque reclamationibus, protestationibus, appellationibus, & aliis subterfugis prorsus remotis, & cessantibus, & postpositis) in processibus tam publicis quam privatis præcedere debeant. Quando verò non probetur, aut non constet de quasi possessione præcedentiæ huiusmodi, inter fratres quidem Mendicantes, ii, qui antiquiores in loco controuersie, inter Confratres, verò inter se litigantes, ii, qui prius factis usi sunt, in processibus tam publicis quam privatis præcedere debeant, ita ut si contigerit nova Monasteria aut domus alicujus Ordinis Mendicantium, in loco, in quo alterius Ordinis ex dictis Mendicantibus Monasteria aut domus prius erecta, & instituta sint, ille Ordo, qui prius Monasterium seu domum in loco habuerit, præcedat.

§. 4. Præterea quia inter prædictos Ordines plerumque alia in processibus, & alia in Conciliis generalibus,

Declaratio
determinationis.

libus, & aliis actibus, publicis siue privatis, ratio circa modum præcedendi servatur, nolumus per præsentis prærogativæ dictorum Ordinum, quoad præcedentias huiusmodi quæ propriis Ordinibus, præterquam in processionibus prædictis debentur, aut Fratribus Capuccinis nuncupatis, qui in processionibus publicis sub Conventualium Sancti Francisci, aut Minorum de Observantia Fratrum nuncupatorum, Cruce, ut solent, incedere possint, ali-quod præjudicium generari.

§. 5. Sicque per quoscumque Judices, & Commis-sarios, etiam Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, sublati eis & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, iudicari, & definiri debere, ac quicquid secus super his à quoquā quavis auctoritate scienter vel ignoranter contige-rit attentari, irritum, & inane decernimus.

§. 6. Non obstantibus constitutionibus, & ordina-tionibus Apostolicis, Ecclesiarum, Monasteriorum, Ordinum, Congregationum, domorum, ac Con-fraternitatum quorumcumque, etiam iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, illis eorum-que Superioribus, & personis, sub quibuscumque te-noribus, & formis, ac cum quibuscumque derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clau-sulis, irritantibusque & aliis decretis, in genere vel in specie, etiam Motu proprio, aut aliis quomodolibet concessis, ac etiam iteratis vicibus approbatis, & in-novatis. Quibus omnibus, illorum tenores Præsen-tibus pro sufficienter expressis habentes, illis alias in suo robore permanentis, hac vice dumtaxat speciali-ter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 7. Volumus autem ut Præsentium transumptis manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitu-tæ munitis, eadem prorsus fides, tam in iudicio quam extra adhibeatur, quæ Præsentibus Litteris adhibe-retur si forent exhibitæ vel ostensæ.

Datum Romæ apud Sanctum Marcum sub annu-lo Piscatoris die 15. Julii, millesimo quingentesimo octuagesimo tertio, Pontificatus nostri anno duode-cimo.

Anno à Nativitate D. 1583. Indict. 12. die vero Do-minico 17. mensis Junii, Pontificatus vero Sanctis-simi in Christo Patris, & D. N. Gregorii divi-ni providentiæ Papæ XIII. Anno duodecimo, retro-scriptæ Litteræ Apostolicæ in forma Brevis expedi-tæ, & affixæ fuerunt in acie Campi Floræ ut moris est, per nos Petrum Guerram, & Melchiorum Ric-cium ejusdem Sanctissimi Domini nostri Papæ Cur-sores.

Jo. Baptista Bagni Magister Cursorum.

Clauſula
ſubſcribta.

Clauſula
derogata.

Transump-torum fides.

D. P. An.
12. die 15.
Julii.

Publicatio.

LXXXV.

Edita A. D.
1584.

Causa
conf.

Forma publicandi resignationes beneficiorum Ec-clesiasticorum, in Curia, & extra.

Quæ autem resignationes ab Episcopis admitti possint, definitur Pius V. sup. in ejus constitut. 58. Quanta-Formamque desuper litteras Apostolicas expedien-di præfinitur in constit. 32. Cogit fol. 232.

De consensu autem resignationum receptione, & extensione, & aliis vide Clemen. VIII. constitut. 17. Sanctissimus, ubi notavi, fol. 75. Tom. 3.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Humano vix iudicio ita bene quicquam, & pro-videnter sanciri potest, quin usus sæpe aperiat, doceatque, id quod salubre fore credebatur, minus experiendo prodesse, quod in illis constitutionibus,

quas ad prohibendas simulatas occultasve beneficio-rum Ecclesiasticorum resignationes diversi Romani Pontifices multifariam ediderunt, & sæl recordat. Pius Papa Quintus prædecessor noster novissime pro-mulgavit, cognoscimus accidisse.

§. 1. Nos hoc malum, prout occasio necessitas-que postulat, coercere volentes, statumimus, ut post-hac omnes & quæcumque resignationes, etiam causa permutationis ac commendarum, & etiam Litteris Apostolicis non confectis, & possessione non habita, necnon litis, & iurium quorumcumque concessiones ac retrocessiones, quæ deinceps de quibuscumque beneficiis Ecclesiasticis, in nostris seu Romani Pontifi-cis pro tempore existentis manibus, ac etiam coram Notario publico, & testibus fient, & à Nobis vel illo, seu nostro vel illius mandato admittentur, & super eis provisiones, & quæcumque aliæ dispositiones, siue temporales, siue perpetuæ, aut ad hoc mandata Apo-stolica sub quacumque forma, & quibuscumque etiam S. R. E. Cardinalibus, ac piis locis quocumque pri-veligio suffulsi, facta publicari debeant cum Litteris Apostolicis desuper confectis, intra sex menses, si be-neficia intra montes fuerint, ultra verò intra novem à data concessionis gratiæ, non autem à die præstiti super ea consensu numerandos, etiam si postea con-cessio gratiæ huiusmodi ex quavis causa, diversisque subsequenter datis, & ac quoriscumque & quovis modo reformata, & valida reddita fuerit pluresque & quotquot in alium vel alios cessiones, ac etiam in ip-summet primum resignantem vel cedentem, retro-cessionibus termino prædicto nondum elapso interces-serint, ita ut unicuique dumtaxat terminis omnibus his successivis cessionibus ac retrocessionibus decurras, ut qui postremum gratiam habuerit, publicationem huiusmodi facere, ceteraque omnia hic præscripta intra eundem terminum præstare teneatur.

§. 2. Ipsa autem publicatio in Cathedrali, & in be-neficii Ecclesiæ, vel Ecclesiæ, si in pluribus illud sit, fiat ubique, dum frequens populus ad Missarum solemniam convenit palam omnibus litteræ Apostolicæ prædi-ctæ, earumve transumptum authenticum exhibeatur claraque & intelligibili voce resignatio, seu cessio hu-jusmodi, ac beneficii qualitas, & invocatio, nomina-que & cognomina resignantis, seu cedentis, ac illius in-cujus favorem gratiæ huiusmodi facta est, pronuncietur, ita ut hæc omnia possint ad notitiam omnium ibi existentium veritatem pervenire, scriptoque de his omnibus exemplo collato valvis dictarum Ecclesiarum affixum relinquatur. Si verò Ecclesiæ beneficii ruralis, sit, aut populo, conventuque careat, eo casu in Paro-chiali, intra cujus Parochiæ limites beneficium ipsum consistit, & in Cathedrali Ecclesiæ, vel si locus bello, seu peste, aliisve manifestis periculis subiaceat, tunc in proxima parochiali, ac etiam in Cathedrali Ecclesiæ, vel si aditus ad illas, aut utramvis minime sit securus, in alia cathedrali vel parochiali viciniore periculo-rum immuni publicatio huiusmodi peragatur.

§. 3. Is quoque in quem dispoſiti, vel mandari de beneficio etiam litigioso, vel accedente non possesso, sub quacumque forma contigerit possessionem beneficii intra dictum tempus vigore Litterarum Apostolica-rum desuper confectarum, nec alias apprehendere debeat, & si propter litem aut aliud legitimum impe-dimentum nequiverit, saltem litteras Apostolicas cum earum publicatione si tunc facta erit, iudici seu execu-toriarum vel aliis ad quos pertinet, per se vel procuratorem suum legitimum, intra idem tempus præsentare, & apud illum vel illos pro ipsarum Lit-terarum executione instare, & possessionem huius-modi instanter petere teneatur.

§. 4. Ceterum modus, & forma hic tradita, semper & ubique debeat observari, nec alia vel æquipollens ullo modo admitti in omnibus huiusmodi resignatio-nibus, cessionibus, & retrocessionibus, de quibuscum-que Ecclesiis, Monasteriis, Prioratibus, tam virorum quam mulierum dignitatibus, officiis, & beneficiis Ecclesiasticis, secularibus & quorumvis Ordinum, etiam Militaribus regularibus, etiam electivis, & manualibus, ac etiam de jure patronatus laicorum

Omnes re-signationes & iurium concessio-nes publicari debent intra sex menses si beneficia sint intra montes, si verò ultra intra novem

Forma pu-blicandi re-signationes & cessiones.

Declaratio circa apprehensionem beneficiorum &c.

Forma prædicta servanda debet in omnibus beneficiis specie cunctis & non per æquipollens.

illu-

annulatio
signatio-
um & ces-
sionum non
obstantis
prædictis.

illustrium, & alias quomodocumque existentibus, si-
ve pacificis siue in petitione, siue in possessio-
ne litigiosis, etiam de quibus in Consistorio nostro dispo-
nuntur, seu debet, quæ posthac ex quacumque
causa fuerint, & per nos ac prædictos Successores, extra
tamen dictum Consistorium, administrationis, pos-
sessionis, fructuum, etiam omnium, ac rerum, & ju-
rium quorumcumque. Ad prædictorum tamen ob-
servationem eum, in quem juris sit cessio beneficii,
quod tempore cessionis hujusmodi, & ante illam vi-
gore litterarum Apostolicarum, ut supra si ad id tene-
batur, publicatarum realiter possidebat, nolumus
obligari.

§. 5. Quod si quicquam prædictorum omnium o-
missum fuerit, dictis terminis, ut cuique præscripti sunt,
elapsis, omnes dispositiones & gratiæ resignatorum, &
cessorum beneficiorum, aut jurium hujusmodi cum o-
mnibus inde securis, siue pacificis, siue de litigiosis,
sint irritæ, & inanes, nullaque alia gratia super hujus-
modi beneficio, siue jure cesso, iis quibus concessa
fuerit, suffragetur, sed ipsi tales inhabiles, & incapaces
sint ad hujusmodi beneficia sic resignata, & cessa, quan-
documque obinenda, illaque siue jura ab ipsa statim
prima resignatione seu cessione, etiam si illæ alias nullæ,
& invalidæ essent, vacavisse, & vacare censentur eo ip-
so, nec resignantibus, seu cedentibus, si postea in sua
possessione remanent, constitutiones de anni, &
triennali possessione, nec præsumptæ, aut tacitæ retro-
cessionis, etiam propter diuturnam continuam pos-
sessionis hujusmodi tolerantiam, nec omnino aliud jus
vel beneficium ullo tempore suffragetur, sed ipsa be-
neficia, siue jura sic à principio vacantia, à Sede Apo-
stolica prædicta dumtaxat impetrari valeat, ac conce-
di. Illorum vero impetrationes, vel etiam Motu pro-
prio concessiones, quibuscumque derogationibus sus-
sultæ, nunquam sub clausulis generalibus, aut vacatio-
num modis conditionalibus, vel implicitis compre-
hendatur, sed specialiter, & expressè ob non servatam
præsentis constitutionis formam, ac declarationem
notumum, & cognominum resignantis, seu cedentis,
& gratiam habentis dispositivæ, & non conditionaliter
fieri omnino debeant, quicunque sic impetrant, aut
gratiam, etiam Motu simili habet præstitum cuique
casui tempus prædictum à data concessionis gratiæ si-
bi factæ hujusmodi, ea omnia quæ cadens à jure præ-
dicto debebat, præstare teneatur, & si pluribus gra-
tiam hujusmodi fieri contigerit, is præ omnibus ob-
tineat, qui primus publicationem suæ impetrationis
fecerit, & possessionem adeptus fuerit, aut penerit, o-
mnique requisita prædicta adimpleverit, quamvis in
data sit postremus, & possessio ab alio in publicando
negligentiori prius apprehensa fuerit vel petita. Re-
servationibus omnibus nominis, administrationis fru-
ctuum etiam omnium, ac pensionum, & aliarum rerum
quorumcumque, necnon facultatibus, indultis,
& aliis concessionibus, tam ipsi resignantibus, seu
cedentibus, qui tamen possessionem ab initio re ipsa
dimiserint, quam aliis, ex hujusmodi resignationibus
cessionibus à Sede Apostolica factis nihilominus vali-
dis, plenumque effectum sortituris.

declaratio
ad pro-
di possit,
etiam liti-
giosi contra
cedentem
nec suc-
cessoribus
ad cau-
sam.

§. 6. Sed ne in beneficiis super possessione vel pro-
prietate litigiosis liti prosecutionibus barivaleat, vel dif-
ferri, in causis hujusmodi contra cedentem ad ulterio-
ra, etiam ad sententiam definitivam, & rem judicatam
ac illius executionem quousque ille qui gratiam ex re-
signatione seu cessione, aut ex omnia forma publica-
tionis hujusmodi obtinuit, ad causam, per se, vel Pro-
curatorem legitimum accesserit, licetque hujusmodi
suscepit, eodem modo, & ordine procedi possit,
quo potuisset legitime si cessio hujusmodi facta non
fuisse, ac quicquid interim sic procedendo decretum,
& expeditum fuerit, siue cum cedente, siue contra
eum, etiam postquam ipse vel quisvis alius incumben-
tia sibi secundum prædicta præstitit, nō solum cir-
ca fructum, sed etiam circa possessionem, & ipsum jus,
quod cessum est, valeat omnino & vim obtineat, il-
lumque ipsum, cui gratia facta est, non minus afficiat,
quam si ipso legitime citato contra eum decretum &
expeditum fuisset, nec ipse adversus hæc, prætextu no-ā-

ceptatæ gratiæ, vel etiam illius ignoratæ, aut citationis,
vel intimationis executioni contra ipsum minime de-
mandatæ, aliave ratione valeat excusari. Possit tamen
ipse, etiam si in lite, & causa hujusmodi subrogatus non
sit quodcumque ad illius prosecutionem, & termi-
nationem venire, & à Judices coram quo causam ip-
sam etiam ex delegatione pendere contigerit, in illis
ipsis statu, & terminis, in quibus tunc eam esse repe-
rerit, etiam absque rescripto speciali admitti.

§. 7. De beneficiis autem quæ deinceps in manibus
Ordinariorum collatorum, etiam Cardinalium, etiam
indulta, & facultates ad hoc ab Apostolica Sede ha-
bentium, ac Legatorum etiam de latere, & delegato-
rum etiam specialium ejusdem Sedis extra Romanam
curiam resignari, etiam ex causa permutationis contig-
erit, ipsi intra mensem negotium universum admissio-
nis, vel rejectionis resignationis hujusmodi, & si
per eos facienda erit, provisionis resignati beneficii,
juxta Apostolicas, & alias canonicas sanctiones om-
nino absolvant. Et qui sic provisus fuerit, intra tres
menses à die sibi factæ provisionis illam publicet, &
possessionem beneficii capiat modo & forma super præ-
dictis, alioquin illis elapsis nulla sit ejus provisio, &
beneficium vacare censetur eo ipso.

Forma ad-
mittendi
& publican-
di resigna-
tiones, quæ
sunt coram
Ordinaris
vel Legatis.

§. 8. Ordinarii, & alii prædicti qui hæc, uti eis
præscribuntur, non perfecerint, eo casu potestate
disponendi de ipsis beneficiis sint ea vice privati, eor-
umque dispositio eo ipso ad Sedem Apostolicam de-
voluta existat, aut aliis idoneis ab ipsa Sede dumtaxat
modo, & forma prædictis concedantur. Decernen-
tes sic per quoscumque judicari debere, necnon irritum,
& inane, quicquid secus super his per quoscum-
que scienter vel ignoranter, contrigit attentari.

Penz ino-
bedientiam.

§. 9. Non obstantibus prædicti Pii Quinti, & aliis
omnibus aliorum Prædecessorum nostrorum constitu-
tionibus de publicandis resignationibus hujusmodi
hactenus editis, & rescriptis, quas omnes omnino
abrogamus. Ita tamen quod in publicandis illis resi-
gnationibus, & cessionibus, quæ, in manibus nostris
hucusque factæ, & à Nobis admittæ sunt, & tempus
ad eas publicandas, juxta dicti Pii Prædecessoris con-
stitutionem nondum effluxit, constitutio ipsa, quod
ad eas dumtaxat, integrè obvietur. Necnon resi-
gnantium siue cedentium voluntatibus, conditioni-
bus, protestationibus, & clausulis, in ipsismet resi-
gnationibus, & cessionibus, seu procuratorum con-
stitutionibus, & mandatis, ac alias etiam ad præser-
vationem suorum jurium & significationem quod
non aliter nec alio modo resignant seu cedunt, appo-
sitæ, & quacumque verborum vi formula, & multi-
plicatione expressis, necnon indultis, privilegiis, &
gratiis Apostolicis, etiam prædictis Cardinalibus, ac
eorum & nostris familiaribus continuis commensali-
bus, necnon Litterarum Apostolicarum Scriptoris
Abbreviatoribus, ceterisque Romanæ Curie officia-
libus, & ex quibuscumque causis quomodocumque con-
cessis & confirmatis, quæ omnia etiam tollimus, &
annullamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Clausula
derogato-
ria.
Hæc bulla
Pii quinti
est indicata
in rubra.

§. 10. Ut autem Præsentis amplius innotescant,
volumus, ut earum exemplis etiam impressis, Nota-
rii publici manu subscriptis, & sigillo personæ in di-
gnitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem pro-
fus fides ubique, in judicio, & extra illud adhibeatur,
quæ adhiberetur eidem præsentibus si forent exhibi-
tæ vel offensæ. Mandamusque illas in librum quin-
tenuum appellatum, Cancellariæ Apostolicæ ad per-
petuam rei memoriam de more referri.

Exemplo-
rum hdes.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo octuagesimo quarto, Nonæ Januarii, Pontificatus nostri anno duodecimo.

D. P. An. 122
die 5. Jan.

Anno à Nativitate Domini 1584. indict. 12. die vero
19. mensis Januarii, Pontificatus Sanctiss. in Chri-
sto Paris. & D. N. D. Gregorii divini providen-
tiæ Papæ XIII. Anno 12. retrospectæ litteræ Apo-
stolicæ affixæ & publicatæ fuerunt in valvis seu por-
tis Ecclesiarum S. Joannis Lateranensis, & Princi-
pis Apostolorum de Urbe, necnon in valvis Cameræ.

Publicatio.

1584.

*Apostol. & in acie Campi Floræ per nos Jo. Freile,
& Nicolaum Taglietum Cursi.
Clausius Mongeat Mag. Cursi.*

LXXXVI

Major sacri Eremi Camaldulensis, potest quando sibi expedire videtur, conferre Eremitis sibi in Eremo subiectis, quatuor Ordines minores. Et Cardinales Episcopi ad dictum Eremum accedentes, possunt, etiam extra tempora, & non servatis interdictis, sacros Ordines eisdem conferre, si ipsi Majori idonei videntur.

Cuncta quæ concernunt Ordinem Camaldulensem indicuntur sup. in Alex. II. const. 1. Nulli. fol. 26. in Tomo 1.

Edita An. D.
1584.

GREGORIUS PAPA XIII.

Dilecti filii salutem, & Apostolicam benedictionem.

Causa hujus
indulci.

Um interna quies Fratrum Eremitarum Eremi Camaldulensis ad quam consequendam ipsi Fratres Eremitæ, deserti loca petierunt, non parum soleat perturbari, quando ad Ordines sacros suscipiendos foras exeunt.

Indulgentiam
de quo in
rubr.

§. 1. Nos huic incommodo providere volentes, Tibi ut quando expedire videbitur, quatuor minores, necnon S. R. E. Cardinalibus qui ad dictum Eremum pro tempore accesserint, si Episcopi fuerint, ut omnes sacros etiam Presbyteratus Ordines, etiam extra tempora à jure statuta, & non servatis interdictis, Fratribus Eremitis prædictis, dummodò ad id iudicio tuo idonei existant, super quo conscientiam tuam oneramus, conferre, ipsique fratribus Eremitis illos recipere, libere, & licite valeatis, Apostolica auctoritate tenore Præsentium facultatem concedimus.

Claus. de
reg.

§. 2. Non obstantibus Synodalis, Provincialis, & Generalis Conciliorum, ac quibuscumque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis ceterisque contrariis quibuscumque,

D. P. An. 12.
die 7. Jan.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris die 7. Januarii millesimo quingentesimo octuagesimo quarto, Pontificatus nostri Anno Duodecimo.

LXXXVII.

Instituto Festivitatæ S. ANNÆ matris B. MARIE Virginis, pro die 26. mensis Julii duplici officio celebrandæ.

Hoc festum de præcepto ubique observari iussit Greg. XV. in sua Const. 24. Honor laudis. inf. tom. 4. ubi vide notata de S. Joachimo sponso S. Annæ, & de S. Joseph sponso Beatissimæ Virginis Mariæ, cujus ista mater extitit.

Edita A. D.
1584.

GREGORIUS EPICOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

B. Anna peperit Mariam
Virginem,
ex qua natus est nobis
Salvator
Mundi.

Sacra mater Ecclesia, quæ salutaribus nos semper instruit documentis, annuas fidei filii venerandas proponit Sanctorum celebritates, qui in terris non solum exempla ad salutem reliquerunt, sed in cælo beati fidelium patrocinium suscipere, eorumque orationes, & vota suis precibus adjuvare non cessant. Quam Nobis opem apud misericordem DEUM credimus Beatam ANNAM assidue impedire, quæ tanta in humanum genus præstitit beneficia, ex ea enim nata est Beata MARIA semper Virgo, digna à DEO effecta, quæ Nobis JESUM CHRISTUM pareret SALVATOREM. Et licet ejus nomini sanctis obsequiis honorando humana præse non queat infirmitas, ne tamen quod potest omittatur.

Hic ideo
Pont. S. Annæ
festum
celebrari
jubet.

§. 1. Nos ad ejus merita pro cultu decoranda, universalemque Ecclesiam jucundissima illius recordatione lætificandam, necnon ætquam in illa devotionem, quam ulque ab exordio nascentis Ecclesiæ, insignia quoque templæ, & religiola loca in ejus honorem toto Orbe constructa testantur, in Christia-

norum cordibus excitandam præcipimus, ut perpetuis futuris temporibus, ANNÆ dies festus septimo Kal. Augusti per totius Orbis Ecclesias duplici Officio, de Sancta, videlicet, nec Virgine nec Martire, quod est in communi, quotannis recolatur, dieque prædictus imprimendis Romanis, & aliarum Ecclesiarum kalendis addatur, & duplex ei adscribatur. Sicubi verò festus B. ANNÆ dies prædictus ex fidelium devotione seu consuetudine, præcepto aut indulto Apostolico majore aliqua celebrari consuevit observantia, ea omnino ibidem retineatur.

§. 2. Mandantes omnibus Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, & ceteris Ecclesiarum Prælatibus per universum Orbem constitutis, ut faciant præsentem Litteras in suis quilibet Ecclesiis, Provinciis, Civitatibus, & Diocesis solemnitè publicari, & ab omnibus Ecclesiasticis personis tam secularibus quam quorumvis Ordinum regularibus inviolatè observari, etiam si in recentibus Breviariis, & Missalis reformationibus prædicta solemnitas fuerit prætermissa.

§. 3. Volumus autem ut Præsentium exemplis etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, & sigilli personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis eadem protus fides ubique gentium, & locorum adhibeatur quæ ipsis Præsentibus adhiberetur, si essent exhibitæ vel offensæ.

Dat. Romæ, apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo octuagesimo quarto, Kal. Maii, Pont. nostri anno duodecimo.

Anno à Nativitate D. 1584. Indictione 12. die verò Mercurii, mensis Maii, Pontificatus Sanctissimi in Christo patris, & D. N. D. Gregorii divina providentia Papæ XIII. anno duodecimo, retroscriptæ litteræ Apostolicæ affixæ, & publicatæ fuerunt ad valvas Ecclesiæ S. Joannis Lateranensis. & Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ per nos Alexandrum Parabiacum, & Nicolaum Taglietum Apostolicos Cursi.

Franciscus Beron Mag. Cursi.

Declaratio, & extensio constitutionis Pauli III. de privilegio Mercatorum Ripæ Urbis, quod eorum libri concordantes cum libris Proxenatarum plenè probent, & executionem paratam habeant sicut obligationes Camerales, contra quascumque personas, & etiam mulieres conjugatas.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

Um alias fel. rec. Paulus Papa Tertius prædecessor noster quadam sua perpetuè valitura constitutione, etiam rec. mem. Pium Quartum, & Pium Quintum Romanos Pontifices etiam prædecessores nostros confirmata, inter alia statuerit, & ordinaverit, quod ad probandum credita dilectorum filiorum Mercatorum Ripæ Almæ Urbis nostræ, sufficerent libri eorum dem Mercatorum, cum libris dilectorum filiorum Proxenatarum concordantes, qui haberent eandem executionem, ac si essent obligationes in forma Cameræ Apostolicæ, contra omnes personas, etiam S. R. E. Card. cum decreto etiam irritanti, ac sublata quavis aliter judicandi facultate, & aliis prout in dicta constitutione plenius continetur.

§. 1. Cumque tractu temporis plures difficultates ortæ fuerint, an dicta constitutio etiam contra mulieres in eisdem libris descriptas, tam cum earum viris, quam viduas locum habeat, unde datur ansa debitoribus altercandi, & sic solutiones effugiendi, vel in longum protrahendi, in grave ipsorum mercatorum damnum, & præjudicium. Nos pro pastoralis officii nostri debito, omnes hujusmodi litium, & controversiarum occasiones & ambages de medio tollere, omnemque in posterum

1584.

Et hanc
situr one
publi-
cari
ubique
&
observari
præcipit.

Fide m
transump
adhiberi
mandat.

Dat. P. A.
die 1. M.

Publicati

LXXXV

Edita An.
1584.

Paulus 3.
crevit le
bros mer
toium R
probare
executio
habere p
ram ut
obligatio
(ancie
ut in ep
const. 4
in Loui

Hic mo
ontif di
culum p
edere o
larat co
ra quali
unque
personar
etiam m
jeres, &
conjugat
in dñis l
bros deici
tas.

super

ANNO 1584.	GREGORIUS DECIMUS-TERTIUS.	505 ANNO 1584.
<p>luper præmissis hâbitandi vel dubitandi materiam fuccidere, aliaque super præmissis opportune pro videre volentes, Motu proprio, & ex certa scien- tia nostra, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, omnes & singulas, ac quascunque lites, & causas, seu controversias, tam judiciales, quàm extrajudi- ciales inter prædictos Mercatores dictæ Ripæ, & quemcumque, vel quoscunque ipsorum ex una, & quascunque mulieres, & conjugatas, ac etiam absque vel cum eorum viris agentes, ac etiam eoi- dem viros, necnon etiam viduas, & quascunque alias personas ex altera partibus, super præmissis hæ- ctenus quomodolibet ortas, ac etiam coram qui- buscunque Judicibus, & Tribunalibus, ordinariis, & extraordinariis, delegatis & subdelegatis, ac aliis quomodolibet, & ubilibet, indecißas pendentes, in fiatu & terminis in quibus reperiuntur, illarum fla- tum, seu status & merita, nominaque & cognomi- na & gradus, & qualitates Judicium, & colliganti- um, juraque & titulos illorum, Præsentibus pro plene, & sufficienter expressis habentes, ad Nos ha- rum serie avocamus, illaque sic advocatas, perpe- tuò extinguimus, cassamus & abolemus. Dictam- que constitutionem ipsius Pauli prædecessoris, etiam contra quascunque mulieres, tam liberas, quàm conjugatas, & etiam tam per se, quàm cum eorum viris, aut absque illis in dictis libris debitoribus desci- ptas, etiam viduas, & quascunque alias personas, etiam perinde, ac si ita expresse in eadem constitu- tione cautum, specificatum, & dictum fuisset, omnino comprehendimus, & locum habere, Apostoli- ca auctoritate tenore Præsentium declaramus, sicque tam in præteritis, quàm in præsentibus & futuris perpe- tuò statuimus & ordinamus.</p> <p>§. 2. Ac ita per prædictos, & quoscunque alios Judices, & Commissarios, etiam nostri Sacri Pa- latii causarum Auditores, & S. R. E. Cardinales, latam de latere Legatos, sublati eis, & eorum ulibet quavis aliter judicandi, & interpretandi fa- cultate, & auctoritate judicari & definiri debere, i. ritum quoque & manere, si secus super his à quo- quam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, decernimus. Ac etiam ipsis partibus colligantibus, & quibuscvis aliis personis perpetuum, in, & super præmissis silentium im- ponimus; necnon tam illis, quàm ipsis Judici- bus, Commissariis, Auditoribus, Cardinalibus, & Legatis ne contra Præsentium tenorem quicquam facere, & attentare audeant, districtius, & expresse inhibemus.</p> <p>§. 3. Non obstantibus quibuscvis litis pendentiis, & aliis præmissis, & aliorum Prædecessorum, & nostra de non tollendo jure quaesito, si opus sit, necnon etiam quadam ejusdem Pii IV. prædecesso- ris, de similibus vel dissimilibus gratis in Ca- mera Apost. intra tres menses præsentandis, & re- gistrandis, si opus sit, aliisque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon etiam Almæ Urbis, & Curie Romanæ, ac etiam ipsius Ripæ & quorumcumque aliorum Tribunalium, etiam Ca- meræ Apostolicæ, necnon Gubernatoris, ac Vica- rii & Auditoris dictæ Cameræ, ac etiam Senatoris, & Curie Capitoli, etiam juramento, & confirma- tione Apostolica, vel quavis firmitate alia roborat- is, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, etiam illis & illo- rum, ac prædictis, necnon quibuscvis aliis Judici- bus, & personis, in genere, vel in specie, sub qui- buscunque tenoribus & formis, etiam Motu, scien- tia, & potestatis plenitudine similibus, & etiam con- sistorialiter, ac alias in contrarium quomodolibet concessis, & confirmatis, quibus omnibus, etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis, speci- fica, individua, & expressa mentio habenda esset, eorum tenores Præsentibus pro expressis habentes, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, necnon omnibus illis aliis quæ Paulus III. ac Pius IV. & Pius V. prædecessores prædicti in con- stitutionibus, & illius confirmationibus hujusmo-</p>	<p>di voluerunt non obitare, ceterisque contrariis qui- buscunque.</p> <p>Datum Romæ apud S. Petrum sub annulo Piscæ toris die 3. Maji 1584. Pontificatus nostri Anno duodecimo.</p> <p>Die 26. Novembris 1584. præsentis supradictæ litte- ræ Apostolicæ in plena Camera Apostolica præsentan- te, & die 3. Decembris subsequenti per eandem Cameram referente Reverendiss. D. Ludovico de Torres dictæ Cameræ Decano, & Judice, ex ejusdem Cameræ decreto, dicta die 26. Novembris facto specialiter deputato, citato Magnifico D. An- tonio Bonifacio dictæ Cameræ generali Commissario, vigore specialis Chirographi manu suæ Sanctissimis signati, & eidem Cameræ transmissi, & admissi, & successivè in ejusdem Cameræ libris, scilicet lib. 5. Signaturarum, prælibati S. D. N. fol. 9. penes me infra scriptum ejusdem Cameræ Notarium, re- gistrata fuerunt.</p> <p style="text-align: right;">Tydeus de Marchis Not.</p> <p>Approbatio tertia, instituti & constitutionum Reli- gionis, Clericorum Regularium Societatis Jesu cum aliquorum dubiorum totali remotione, & privilegiorum confirmatione.</p> <p>Similem ob alias excitatas difficultates sanctionem edidit Gregor. XIV. ut infim. ejus constit. 10. Eccle- siæ, & altam Paulus V. quam adhuc habere non potuit. Et cetera de hac Religione inspicie sup. in const. 25. Pauli III. Regimini, ubi notavi in Tomo I.</p> <p style="text-align: center;">GREGORIUS EPISCOPUS.</p> <p>Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.</p> <p>Ascendente Domino, & Salvatore nostro in marî, ipse autem à Discipulis rogatus ventis impe- ravît, & facta est tranquillitas, quam Nos in Petri navicula collocati, turbinibus excitatis ab eod- em Domino assiduis precibus postulantes, nostram interea operam, & laborem in frangendis procello- sis fluctibus impendere non desistimus, cumque tan- ti laboris socios, & validos remiges divina Nobis providentia præparaverit, eorum opera in superan- dis lævientiis pelagi tempestatibus Nos maxime sub- levat, qui pro communi fluctuantium animarum sa- lute propria commoda nihil pendunt, seque ad omnia discrimina exponunt.</p> <p>§. 1. In quo cum aliarum Religionum studia, tum Societatis Jesu assiduis pro Christo labor, necnon uique ad finem perseverantia promptam se osten- dit; cumque prolem catholicæ Religionis valde pro- ficuam, & ad omnia pericula pro universalî Eccle- siæ subeunda paratam procreaverit, aliam atque aliam à prima non degenerem præstanie gratia Dei quotidie substituit, ut Nobis eorum alumni per multiplices probationum gradus alius provecti, semper præsto sint, quos in rebus arduis suscipien- dis fructuosos operarios asciscamus; eos autem ut firmiorem Nobis opem ad prædicta navare possint, ab omni non modo injuria, sed etiam calumnia frū- demus intactos conservare. Quod ut à Nobis effi- ciatur, ipsius instituta tamquam fundamenta ejus prætidii, quod catholicæ Religionis impendunt, im- mota atque inconcussa, aliorum etiam Romano- rum Pontificum exemplo, debemus Apostolica au- thoritate tueri.</p> <p>§. 2. Quorum fel. rec. Paulus III. & Julius etiam Tertius constitutiones, & laudabile dictæ Societa- tis institutum confirmanunt.</p> <p>§. 3. Paulusque idem eam ipsam ab omni quorum- cumque Ordinariorum jurisdictione exemît,</p> <p>§. 4. Quo instituto per Paulum Quartum exami- nato, & à synodo Tridentina commendato, Pius Quintus idem prædecessor noster Societatem ip-</p>	<p>Admissio & regulatio in Cam. Apost.</p> <p>LXXXIX.</p> <p>Edita A. D. 1584.</p> <p>Procuramus</p> <p>Religionum omnium & signanter Societatis Jesu minist- terium Christi fi- delium val- de prodest.</p> <p>Cujus re- gul. Paulus & Julius & II. appro- bant. Paulus IV. à jurid. Or- din. exemît, Pius V. inter Meridianos res commu- meravit.</p>
	<p>Alter ita- cer pro- bet t parub erpe. uum leniam mpont.</p> <p>Contrariis erogat.</p>	<p>Bullarium Romanum, Tom. II.</p> <p style="text-align: center;">V u</p> <p style="text-align: right;">fiam</p>

1584.
Huus re-
ligionis ad
Christi fi-
delium ani-
mationem fa-
ltem infi-
tuta consti-
tutionibus
cavetur, quod

lum Ordinem esse mendicantem declaravit.

§. 5. Quia omnia non immerito ab eis sunt concessa ob egregias virtutes, & bona Societati antedictæ divinitus elargita, cujus præcipuus finis catholica est Religionis defensio, ac propagatio, animarumque in Christiana vita, & doctrina profectus; gratia quoque ejus vocationis est proprium diversæ Orbis terrarum loca ex Romani Pontificis, seu Præpositi Generalis ejusdem Societatis directione peragere, vitamque in quavis mundi parte agere, ubi salvandarum sua opera animarum copiosior proventus ad Dei gloriam speretur. Ad quem finem Spiritus sanctus, bonæ me. Ignatii Loyolæ Societatis ipsius Institutoris, ejusque sociorum excitator, media quoque prædicationum, ac cultumque ministerii verbi Dei, & doctrinæ Christianæ, & spiritualium exercitiorum, aliorum item charitatis operum, & sacramentorum administrationis, ac præcipue Penitentia, & Eucharistia, horumque frequentioris usus accommodavit. Ad quæ sufficienter & pro dignitate præstanda, difficultates superandas, periculaque adeunda, quibus dictæ Societatis Religiosi in hujusmodi discurfionibus, & ministeriis exponuntur, necesse est, ut ipsi talia obtinuerint, magno virtutis, & devotionis præsidio muniantur, quod illis gratia in primis Omnipotentis Dei, simulque educatio ipsa, longa item in Societate probatio, necnon regularium, & constitutionum observantia præstare noverunt.

Novitii
biennio
proben-
tur, & deinde
aut vi substit-
stant alia
simplicia
admittun-
tur.

§. 6. Quibus constitutionibus, ut tantæ ponant rudimenta virtutis ad quam aluntur, statutum est, ut Novitii in Societate biennio probentur, quo expleto si ipsi perseverare voluerint, & Societati fuerint ab eis satisfactum (quoniam Societas ipsa non solis Novitiis & professis, ut reliqui regulares Ordines constat) tria substantialia vota simplicia, nisi quis interdu ad professionem, vel gradum Coadjutorum formatorum admittendus videretur, Paupertatis, Castitatis, & Obedientia in eadem Societate ex Apostolico indulto, ac juxta votendi formulam in eisdem constitutionibus expressam emittunt, ac secundum illas promittunt se eandem Societatem ingressuros, hoc est ulterius aliquam illius gradum, prout Præposito videbitur Generali.

Postea ve-
l in schola-
res, vel in
Coadjutores
temporales coop-
tantur.

§. 7. Quibus votis emissis Novitii esse desinunt, & in Societatis corpus, quod litteris operam dederint, vel datur sunt, ut Scholares approbati, alii vero ut Coadjutores temporales nondum formati, cooptantur, ac quantum est ex parte ipsorum perpetuum, ex parte vero Societatis, juxta Apostolica indulta, & constitutiones prædictas, tamdiu obligati sunt, quamdiu Præpositus Generalis eos in Societate retinendos esse censuerit. Quod ad Societatis conservationem maximè est necessarium, idque ab illius exordio provistum, & post experimento comprobatum est, idque initio ingressus illis explicitè manifestatur, atque ipsi conditionem hanc amplectuntur, quæ eis, si quos dimittere oporteat, multo est commodior, ut liberi potius quam votis obligati dimittantur, aliisque iustis, & rationabilibus de causis.

Coadjutores
residuali
res, vel in
Coadjutores
temporales coop-
tantur.

§. 8. Coadjutores temporales non formati, qui non ad studia litterarum, sed ad domestica munia curanda destinantur, post aliquos annos, quibus Generali Præposito, & Societati satisfecerint, per tria vota Paupertatis, Castitatis, & Obedientia vota licet publica, & in manibus Superioris emissis, non tamen solemnia, sed tum ex constitutionum præscripto, tum ex votentis, & admitteris intentione simplicia existunt, in Coadjutorum temporalium formatorum gradum admittuntur.

Scholares
prædicti
alio proba-
tionis anno
reintegrantur.

§. 9. Scholares vero studiis in Societate absolutis, antequam professi, vel Adjutores spirituales formati fiant, non solum tertium adhuc ulterius probationis annum, in devotionis, & humilitatis exercitiis impendunt, ut, si qua foras in re harum virtutum fervor per Litterarum occupationem inreperit, per earundem virtutum frequentiores

excitationem, ardentioremque divini auxilii invocationem recalcet, sed etiam in verbi Dei sacrum, & scholasticarum lectionum, Penitentia, & Eucharistia sacramentorum Societatis ministerii tamdiu probantur, quamdiu Præposito Generali videtur, nec antequam ipsi Præposito sint planè perfecti, eique in omnibus satisfecerint, ad hujusmodi gradus promoveantur.

§. 10. Qui enim ad professionem quatuor votorum admittendi sunt, eos juxta constitutiones eadem, & Apostolica decreta, & indulta, viros omnino humiles ac prudentes in CHRISTO, & in vita puritate, ac litteris conspicuos, diuturnique ac diligentissimis experimentis probatos, atque Sacerdotes, & in ministeriis hujusmodi prius diu multumque versatos vocatio hæc requirit, utpote quos ardua maneant ministeria. Quo fit ut non omnes ad eandem professionem idonei esse, nec tales sine longa exercitatione atque experimento fieri, aut etiam cognosci possint. Quapropter Societatis corpus in sua membra, & gradus idem Ignatius divino instinctu ita duxit disponendum, ut præter eos, quæ Præpositus Generalis ad professionem quatuor votorum idoneos esse censuerit, & nonnullos, quos interdum ad professionem trum admittere potest, reliqui etiam Sacerdos est, quorum vita, & doctrina in Societate diu probata esset, ac præposito Generali perspecta, & de ipsius licentia in Coadjutorum spiritualium formatorum gradum, per tria illa vota similiter publica, sed simplicia in superioris manibus emissis admittentur.

Ex his, quod
deinde ad
professionem
quatuor vo-
torum admi-
tendi sunt.

§. 11. Quibus emissis tam hi qui spirituales, quam qui temporales Coadjutores formati fuerint, certum in Societate gradum habent, nuntque omnis hære litariæ successus incapaces, nihilque omnino proprii juxta constitutiones eadem habere possunt. Nec propter emissam hujusmodi vota publica, aut per mortem ab intestato in illorum, sicut nec in professorum bonis domus ulla, aut Ecclesia, vel Collegium dictæ Societatis succedere potest.

Admissi au-
tem sunt in
c. p. c. h. b.
reductum
lucul.

§. 12. Qui verò quatuor votorum professi futuri sunt, ii tribus illis toleminibus substantialibus votis quartum similiter solemne addunt, specialis Summo Pontifici obedientia circa Missiones præstanda, ob certorem Spiritus sancti in Missionibus ipsius directionem ac majorem ipsorum mittendorum sedj Apostolicæ obedientiam, majoremque devotionem, humilitatem, mortificationem, ac voluntatem abnegationem.

Et votum
obedientia
erga S. pa-
pam, sicut
emittunt.

§. 13. Post emissam verò professionem sive quatuor sive trium votorum, professi ad Paupertatis, quæ regularis instituti murus est & propugnaculum, perfectionem tuendam, omnemque ambitionis occasionem excludendam, nonnulla alia simplicia vota emittunt, quibus promittunt se nunquam quacumque ratione acturos vel consensuros, ut quæ in constitutionibus Societatis circa paupertatem ordinata sunt immutentur, nisi quando ex iusta rerum exigentia causa paupertas magis restringenda, videretur, neque prætenfuros, ne indirectè quidem, ut quam prælationem vel dignitatem, intra vel extra Societatem, eligantur, nec extra Societatem in sui electionem quantum in eis fuerit, consensuros, nisi coacti obedientia ejus qui id ipsis pollicetur pœna peccati præcipere. Item Societati, vel ejus Præposito manifestaturos, si quem sciant aliquid hujusmodi moliri.

Aliaque
simplicia
vota.

§. 14. Porro non solum professi, & Coadjutores formati, sed ex aliis, quicumque absolutio probationis biennio prædicta tria substantialia vota etiam simplicia emisissent, si absque expressa licentia à Societate discedant, etiam si prætextu melioris frugis, & transitus ad alium quemcumque Ordinem (Cartusienum dumtaxat excepto) id faciant, apostasiam, & excommunicationis ex Apostolicæ Sedis decreto pœnas incurrunt, à quibus non nisi a Summo Pontifice, vel à Generali Præposito absolvi possunt. Iniquè enim cum Societati

Disceden-
tes postea
sine licen-
tia apostati
cententur.

Omnes post
novitium in
communi
vivunt.

Pauperem
tamen
licet
dominium
bonorum
reputent.

Verè Reli-
giosi sunt, &
Ordinis pri-
vilegiis
gaudent.

et quia de-
super non-
nulla dubi-
tata.

ipsa ageretur si viris multo labore ad ardua ministeria eruditus, cum religionis Catholicæ, & hujus Sedis detrimentum privaretur, præteritum cum Societatis constitutiones, & privilegia quæ supradicta continent, in separata, antequam ad Novitiorum convictum admittantur, habitatione eis maturius consideranda tradantur.

§. 16. Biennio Novitatus completo, & emissis votis simplicibus, una est omnibus omnino vivendi, & obediendi ratio, debent enim omnes in omnibus obedire, & in communi vivere non secus alii, atque ipsi professi, & Coadjutores formati, idque in domibus quidem probationum, & Collegii ex redditibus, in domibus verò professorum, quæ nullo omnino reddito habere possunt, ex elemosynis tantum.

§. 16. Et licet, qui ad gradus professorum, & Coadjutorum formatorum nondum pervenerunt, bonorum suorum jus atque dominium, tum alias ob julas causas, tum etiam ut majorem Societas habeat libertatem, illos, si opus fuerit, cum minori offensione dimittere, ad tempus Generalis Præpositi judicio præscribendum valeant retinere, ut in pauperes tandem seu alios pios usus pro ipsorum devotione distribuant, juxta Evangelicum consilium ac promissionem, quam initio Novitiorum faciunt, interim tamen, quantum ad illorum ulum religiosam paupertatem servant, ne ulla re tamquam propria, & sine Superioris facultate uti possunt.

§. 17. Et quamvis ii omnes, qui post biennium Novitatus dicta tria vota simplicia, ut præfatur, emisissent, ac in corpus Societatis cooptati, illiusque meritum, & privilegium, non secus atque ipsi professi participes effecti, quique quantum in eis est, & professionem emittere parati, si ut Præpositus Generalis id prædictæ Societatis instituto congruere judicaverit, & in perpetuum Dei servitio votis simplicibus consecrati, ac sua sorte, prout laudabile Societatis institutum exigit, contenti, verè & propriè Religiosi existant, & si à Societate deficiant, excommunicationis, & aliis apostatarum poenis sint subjecti.

§. 18. Tamen cum non ita pridem intellexissemus nonnullorum animos, qui pii aliqui, & utiles operarii existerent, sollicitari interdum, & affligi, quasi non essent Religiosi, eo quod non essent professi; nec etiam deesse qui Religionis prætextu transigente in angelum lucis Satanâ, non solum ea occasione inquieti existerent, sed etiam aliorum pacem, & vocationem disturbare, eoque in fraudem, & defectionem deducere conarentur, unde fructuosa hæc Religio gravissima potuisset accipere detrimenta. Idcirco cum divina providentia pro temporum necessitate, varia & salutaria Ordinum instituta in Ecclesia sua produxerit, novisque subinde in ea nascentibus morbis, nova remedia, novisque emergentibus hostium impugnationibus, nova regularium Ordinum auxilia excitavit, & cuique illorum, juxta cujuslibet peculiaris gratiæ vocationem, peculiare quoddam notas, propria insignia, ac opportuna ad finem quem intendit, media suggererit, & nunc maxime (ut felicissimi toto Orbe successus testantur) mirificos in agro Dominico fructus prædictæ Societatis JESU instituto proferat, quæ Societas (quemadmodum, & alia nascentium regularium Ordinum exordia) à spiritu contradictionis impugnatur, cumque ipsi Ordines Romanorum Pontificum propterea constitutionibus circummuniri consueverint, cujus rei Sanctorum Dominici, & Francisci præclarissimi Ordines exempla abunde suppeditarunt, ita Nos, licet alius institutum prædictum, privilegia, & constitutiones ipsius Societatis confirmaverimus, & declaraverimus, Motu proprio stantes, eos qui biennio Novitatus peracto, tria vota, tamen simplicia emisissent, esse verè & propriè Religiosos, cum præcepto, ne quis hæc in Jubium revocare audeat, ac cum irritate, & aliis decretis, prout in nostris super hoc confectis Litteris ple-

nius continetur. Quia tamen non desunt temeraria quorundam audacia, qui post declarationem, decretum, præceptum, & interdictum nostrum hujusmodi, non solum multa ex prædictis, & fortasse, alia ad Societatis institutum ac vivendi formam spectantia, labefactare, sed, & ipsa Apostolica decreta ac præcepta, publicè, & ex cathedra, ausu temerario impugnare, mentemque nostram perverse interpretari non erubescunt, disputantes, & prædicta in dubium revocantes, omniaque ex aliorum regularium Ordinum communibus rationibus, formis ac statutis metientes Societatis institutum, peculiare constitutiones, ac vim votorum simplicium illius, à Sede Apostolica in eadem Societatis Religione probata admissorum penitus ignorantes, ac nonnulla jure antiquo, quæ post illud successu temporum hujus Sedis auctoritate, approbatione, & confirmatione, ac peculiaribus privilegiis sancita, & roborata esse dignoscuntur, perperam interpretantes, convellere nituntur, quin etiam Nos supradicta, Motu simili, & ex certa scientia, de Apostolica potestate plenitudine decernentes, ac præcipientes privato sensu loquutos fuisse, ac tamquam privatos Doctores errare potuisse, immo verè, & de facto ob falsam supradictorum informationem errasse, ideoque præceptum nostrum nullam ad obligandum vim habere. Neminem præterea eorum, qui solemnem professionem in dicta Societate non emisissent, de illius corpore Religionum esse posse, sed eos merè seculares, ac Ordinariarum jurisdictioni subditos existere, nec Societatem ipsam, aut illius Superiores, immo nec non jus in eos ullum ex vi votorum hujusmodi, habere vel acquirere, aut Superioribus ipsis conferre posse, non considerantes voti solemnitate sola Ecclesiæ constitutione inventam esse, triaque hujusmodi Societatis vota tamen simplicia, ut substantia Religiosis vota ab hac Sede fuisse admittenda, illaque emittentes, in statu Religionis verè constitui, quippe qui per ea ipsa se Societati dedicant, atque actu tradunt, sequæ divino servitio in ea mancipant. In quibus votis nullus præter Romanum Pontificem potest manum apponere, aliisque atque aliis modis Societatem ipsam impetunt universali Ecclesiæ periculum, quæ diversis functionibus, & personarum gradibus distributa, à Romanis Pontificibus Prefbyterorum, à Tridentina Synodo Clericorum Religio appellata, habitu, nomine, plerisque personarum gradibus, votorumque differentis ab aliis regularibus Ordinibus distinguitur. Quibus etiam adjungunt licere ipsam non professi, etiam invitatis dictæ Societatis Superioribus, ad quosvis alios regulares Ordines se transferre. Transgressoresque horum votorum, ac inobedientes, eo sunt progressi, ut etiam vi facultatum, quæ Litteris indulgentiarum Cruciatæ sanctæ nuncupatarum continentur, omnes transfugas, & ab ipsa Societate deficientes non professos quoties ab ea defecerint, ab excommunicationis latæ sententiæ poena à quocumque confessario absolvi posse, nullamque ipsi Societati suis operariis privatis injuriis fieri, aut præjudicium generari existimant, sed & votorum substantialium Religionis prædictæ, ac decretorum contra eosdem Apostatas Sedis hujus auctoritate edictorum vim, quantum in eis est, enervare contendat. Insuper asserunt non posse vota in sæculo emissâ in tria hæc substantia Societatis commutari (cum tamen hæc vota sint statuta, ut præfatur Religiosi alio utilis, & prædicti, ut illa in hæc possint, hæc verò in aliorum Ordinum etiam solemnia vota commutari, sit ab hac Sede jure de-

1584.

Ideo hic
Ponitur
his non obstan-
tibus dic-
tū institū-
tū, & privi-
legia & con-
stitutiones
approbat.

Disique
tria vota
etiam sim-
plicia verē
tamen sub-
stantialia ei-
us declarat.

Eaque emi-
tentes ve-
ros esse Re-
ligiosos
decernit.

Dilcedentes
ideo à dicta
religiosis
decla-
rat.

Et supradic-
tus dubis re-
probat.

Impugnari
dictum insti-
tutum pro-
hibet.

causis interdictum.) Nec etiam de sunt alia quae in animarum suarum praedictum, Societatis perturbationem, & scandalum plurimorum comminiscantur.

§. 19. Nos universalis Ecclesiae utilitati, quam ex inviolato, & inconcusso dictae Societatis instituto, & religiosae sobolis educatione sentimus, & majorem in dies speramus, prospicientes, & praeterea ejusdem Societatis indemnitati, paci, quieti, & incremento consulere volentes, Motu simili, & ex certa scientia nostra, deque Apostolica potestatis plenitudine, laudabile ipsius societatis institutum, & quae illud concernunt, praemissa omnia, & singula, praedictaque illius, ac quaecumque alia privilegia, facultates, exemptiones, immunitates, gratias, & indulgentias praedictis Praedecessoribus nostris & à Nobis etiam per communicationem concessa, constitutiones quoque, ac statuta, & decreta qualiacumque, ac si ad verbum Praesentibus inferrentur, pro expressis habentes, tenore Praesentium approbamus, & confirmamus, suppletes omnes juris, & facti defectus siqui intervenerint in praedictis Constitutionibus, & statutis.

§. 20. Ad haec dictam Societatem firmo Sedis hujus praesidio communire volentes, hac nostra perpetua Constitutione, motu, scientia & potestatis plenitudine similibus, statuimus atque decernimus tria vota hujusmodi esse simplicia, ex hujus Sedis institutione, ac nostra etiam declaratione, & confirmatione, esse verē substantialia Religionis vota, ac in dicta Societate tamquam in religione approbata per Sedem eandem admissa fuisse, & esse, ac per Nos admitti, nec illis à quoquam, praeter Nos, & Sedem hujusmodi dispensari, nec ea ullo alio modo quam per legitimam dimissionem à Societate cessare posse.

§. 21. Et non modò eos, qui in Coadjutorum formatorum, sive spiritualium sive temporalium gradus, & ministeria, ut praesertim, admittuntur, sed & Scholares ipsos, ac supradictos alios omnes, & quoscumque, qui in ipsam Societatem admissi, biennio probationis à quolibet eorum peracto, tria vota substantialia praedicta tamen simplicia emiserint, aut emittent in futurum, verē & propriè Religiosos fuisse, & esse, ac fore, & ubique semper, & ab omnibus censeri & nominari debere, non secus atque ipsos tum Societatis, tum quorumvis aliorum Regularium Ordinum Professos, suisque Praepositos, in omnibus, & per omnia obedire, & huic Sedi immediate subiectos, & à quorumvis Ordinariorum & Delegatorum, seu aliorum Judicum jurisdictione omnino exemptos, prout Nos etiam vigore Praesentium eximimus.

§. 22. Denique ut omnium Societatis privilegiorum juxta Generalis Praepositi dispositionem sunt participes, ita quoque excommunicationis majoris latae sententiae, & aliis Apostatarum poenis si qui à Societate deficiant, subiacere, ac tamquam veros Apostatas puniri posse, nec à quoquam, nisi per Nos, & sedem praedictam, aut Generalem Praepositum ab eisdem poenis absolvi, nec ante hujusmodi abolitionem, & à Societate dimissionem matrimonium contrahere, quinimò eos omnes ad contrahendum inhabiles, ac contractus hujusmodi nullos, & irritos esse, prout irritos facimus & annullamus.

§. 23. Et ut contradicentium audacia coerceatur, praemissa omnes, & quasvis alias illis similes assertiones contra dictae Societatis institutum, vel quomodolibet in illius praedictum pronuntiatas, aut scriptas, falsas omnino, & temerarias esse, & censeri debere.

§. 24. Praecipimus igitur in virtute Sanctae Obedientiae ac sub poenis excommunicationis latae sententiae, necnon inhabilitatis ad quaevis officia, & beneficia, secularia, & quorumvis Ordinum regularia, eo ipso absque alia declaratione incurrendis, quorum abolitionem Nobis, & Successoribus nostris reservamus, ne quis cuiuscumque status, gradus, & praeminentiae existat, dictae Societatis

institutum, Constitutiones, vel etiam Praesentes, aut quovis earum, vel supradictorum omnium articulum, vel aliud quid supradicta concernens, quovis disputandi vel etiam veritatis indagandae quaesito colore, directè vel indirectè impugnare, vel eis contradicere audeat, diffiditibus inhibentes, ne quis, five extra five intra dictam Societatem, nisi de illius Generalis aut inferiorum Praepositorum licentia, notationes, declarationes, glossas, vel scholia ulla super praemissis facere, vel ea, nisi quantum verba ipsa sonant, interpretari, aut de eis disceptare, seu scrupulum quicumque injicere, vel in controversiam aut dubium revocare audeat quomodolibet, nec glossas, aut interpretationes, five impressas, seu scriptas, ad id pertinentes legere, docere, aliisque tradere, vendere, vel apud se retinere praesumat.

§. 25. Si quid verò dubii de eisdem oriri contigerit, ad Sedem praedictam vel ad Generalem Praepositum dictae Societatis, aut ad eos quibus id ipse commiserit, referatur.

§. 26. Sicque in praemissis, omnibus, & singulis, per quoscumque Judices, & Commissarios etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S.R.E. Cardinales in quavis causa, & instantia, sublatà eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, judicari, & definiti debere, necnon irritum, & inane quicquid fecus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 27. Mandantes universis, & singulis Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, & ceteris Ecclesiasticis & locorum etiam Regularium Praelatis per universum orbem constitutis, ut praesentes Litteras in suis quibusque Ecclesiis, Provinciis, Civitatibus, Diocesis, & jurisdictionibus ab omnibus inviolatè observari: quin etiam Praepositum ac personas Societatis hujusmodi deendant, eosque praemissis omnibus, & singulis pacifice frui faciant, & gaudent, non permittentes ipsos per quoscumque quomodolibet molestari. Contradictores per centuras Ecclesiasticas, & alia Juris, & facti remedia opportuna, appellatione postposita, compescendo. In vocato etiam ad hoc si opus fuerit auxilio brachii secularis.

§. 28. Non obstantibus recol. mem. Bonifacii Papae VIII. quae incipit. Quod votum, & aliis Apostolicis constitutionibus, ac etiam aliorum Ordinum, juramento, confirmatione Apostolica, ve quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indulgiis, & litteris Apostolicis quibuscumque hujusmodi Ordinibus, Universalitatibus, locis, vel personis per quoscumque Romanos Pontifices praedecessores nostros, ac Nos, & sedem praedictam, etiam motu proprio & ex certa scientia, ac de Apostolica potestatis plenitudine, & cum quibuscumque irritativis, cassativis, revocativis, modificativis, praeservativis, exceptivis, declarativis, mentis artellativis, ac derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & in solis clausulis, irritantibusque & aliis decretis, in genere, vel in specie, ac alias quomodolibet etiam pluries concessis, confirmatis, & innovatis. Quibus omnibus & singulis, etiam in eis caveatur expresse, quod illis nullatenus, aut nonnisi sub certis modo, & forma in illis, expressis, derogari possit, pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus si scialis specifica, & expressa mentio habenda, seu aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi Praesentibus pro sufficienter expressis habentes, illis alias in tuo robore permanentis, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, contrariis quibuscumque, aut si aliquibus communiter vel divim ab eadem fir Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

§. 29. Praesentis autem Constitutionis, & gratiae

Dubiorum
de latio-
nem tra-
positio re-
servat.
Et ita ubi
que iudicari
mandat.

Observan-
tiam hujus
be praesentis
sign.

Contrariis
derogat.

1584. Communicationem huiusmodi gratiarum alius derogat. Translatus credit mandatur.

communicationem omnibus aliis, qui sua privilegia cum ipsa Societate copiose participant, participare poterunt, quomodolibet in futurum fieri omnino prohibemus.

§. 3. Ceterum volumus, ut Præsentium transumptis etiam impressis manu Secretarii dictæ Societatis vel Notarii publici subscriptis, & sigillo Præpositi Generalis ejusdem Societatis, vel alterius personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem omnino fides adhibeatur, in iudicio & extra illud, quæ litteris ipsis originalibus haberetur, si essent exhibitæ vel ostensæ.

D. P. A. 12. 25. Maji.

Nulli ergo &c.

Dar. Romæ apud S. Petrum Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo octuagesimo quarto, octavo Kal. Junij, Pont. nostri Anno duodecimo,

Publication.

Anno a natiuitate Domini 1584. indictione 12. die vero Luna 14. mensis Junij, Pontificatus Sanctiss. in Christo patris, & D. N. D. Gregorii diuina providentia Papæ XIII. Anno Decimo-tertio, reuocata littera Apostolica affixæ, lectæ & publicatæ fuerunt & per aliquod temporis spatium dimisse in valuis Basilicarum Principis Apostolorum de Urbe, & S. Joannis Lateranen. necnon Cancellaria Apostolicæ & in acie Campi Floræ per me Joannem Freil, & Nicolaum Taglietum Sanctiss. Domini Nostri Papæ Curs.

X C.

De electione Præpositi generalis, & aliorum Prælatorum Congregationis Monachorum Eremitarum S. Hieronymi de Observantia celebrationeque Capituli generalis, & retentione regularis obliuiantur.

Ad hæc vide conf. 21. Clem. VIII. Qua ad. ubi habes etiam Ordinis reformationem. fol. 29. Tom. I.

Edra A. D. 1584.

GREGORIUS PAPA XIII.

Dilectis filiis Præposito Generali, & Consultoribus Congregationis Monachorum Eremitarum S. Hieronymi de Observantia, salutem, & Apost. bened.

Exordium.

E A quæ ad prosperos Religionis vestræ successus ordinata fuerunt, nonnumquam pro eorum varietate, & temporum ratione expedit immutare.

§. 1. Alias siquidem, rebus vestræ Congregationis emendatione indigentibus, pleraque ad preces vestras decreuimus, & præsertim de temporis celebrationis Capituli vestri generalis, & deque modo electionis Præpositi generalis, Consiliorum, Visitationum, Definitorum, necnon Priorum, Vicariorum, & aliorum ad munia dictæ Congregationis defumendorum, eorumque qualitatibus, muneribus, & officiis, aliisque regimen & salubrem directionem ejusdem Congregationis concernentibus, ut diuersis aliis nostris litteris plenius continetur, sed ut probavit eventus, eorum nonnullis, siue mutandis siue corrigendis, noua est opera adjungenda.

§. 2. Quare illis omnibus, quæ, & quatenus Præsentibus obfunt, subductis, & rescissis, ceteris verò in suo robore permanentibus, auctoritate Præsentium statuimus & ordinamus, ut posthac in perpetuum, Capitulum vestrum generale tertio quoque anno celebretur. Interim verò singulis annis Præpositus generalis, & Consultores qui tempore erunt, pro novorum si eis expedire videbitur Vicariorum & Oeconomorum dictæ Congregationis electione congregentur.

§. 3. Et si contingat eundem Præpositum intra hoc triennium decedere, vel officio amoveri, Consultores Congregationis hujusmodi, suos Priores illico ad se auocent, qui intra vigesimum diem ad locum celebrationis futuræ electionis novi Præpositi generalis præsto adfint.

§. 4. Interim verò Consultor professione antiquissimus, vices auctoritatemque Præpositi generalis in omnibus gerat.

§. 5. Ipsi autem Priores, cum Procuratoribus singulorum Monasteriorum, & aliorum regularium locorum dictæ Congregationis, juxta antiquas illius constitutiones, ad Capitulum generale accedent, & electioni Præpositi generalis ac Definitorum hujusmodi interfint.

§. 6. Præpositus verò, & Definitores hujusmodi de Priorum eorumdem corpore eligantur.

§. 7. Ceterum constitutionibus prædictis inherendo, si contingat aliquem dictorum Priorum, intra triennium quo Capitulum ipsum generale celebrandum erit decedere, vel à Prioratu suo regulariter amoveri, eo casu Præpositus generalis, & Consultores prædicti statim aliquem ex Vicariis monasteriorum, aut aliorum regularium locorum Congregationis hujusmodi, in locum defuncti vel amouibituant, ne hoc negotium ad subleuens Capitulum generale deferant.

§. 8. Adhæc, Præpositus ipse generalis electus, quem obtinebat Prioratum non amittat, sed etiam Præpositus triennialis hujusmodi illum cum hoc retineat. Triennioque ipso peracto, ipse Prior sui Prioratus, ut antea remaneat, & nihilominus ipse dicto durante triennio sui Præpositus, etiam Prior Monasterii Sancti Alexii de Urbe ejusdem Congregationis non autem alterius sit.

§. 9. Persuncto verò Præposituræ triennalis hujusmodi officio, nullus ad sequens triennium, aut aliud tempus Præpositus generalis confirmetur, nec quicumque ante sex completos à fine hujus officii rursus in Præpositum generalem eligatur.

§. 10. Nulli præterea Monachorum Congregationis hujusmodi, cujuscumque dignitatis vel conditionis, liceat litteras etiam commendatitias, seu favorem, auxilium vel gratiam, aut quicumque aliud à Principibus sæcularibus, Dominis, vel Nuntius, per se aut interpositas personas ex quavis causa, aut quouis prætextu querere vel impetrare, quod in detrimentum, præjudicium, vel derogationem dictæ Congregationis, aut illius personarum, seu constitutionum, ordinationum, vel statutorum directè vel indirectè cedat, qui secus fecerit per annum in carcere conclusus penitentiam agat, sique præterea ad dignitates & officia dictæ Congregationis perpetuò inhabilis.

§. 11. Præpositus insuper generalis, & Consultores pro tempore existeres prædicti, per se, vel alium, seu alios nullam pecuniarum summam ad Congregationem ipsam spectantem, alicui Monasterio vel regulari loco, pro ejus fabrica, sine nostra, aut Protectoris vestri licentia erogent, qui contrafecerint, excommunicationis sententiam eo ipso incurant, sique suis dignitatibus & officiis eo ipso privati, ac pariter inhabiles ad futura.

§. 12. Postremo, Capitulum ipsum generale, seu Congregatio alibi quam Romæ aut Bononiæ, seu Mediolani, vel in Monasterio Hospitalis nullo modo celebretur.

§. 13. Regulæ verò observantia saltem in Hospitalis prædicti, necnon Castellani & S. Hieronymi Mantuanen. ac Sancti Sigismundi Cremonen. & S. Savini Placentinen ac S. Barbariani Bononien. Monasteriis, numerulque saltem centum sexaginta Monachorum inter Sacerdotes & Clericos, ultra Conuersos & Seruientes, perpetuò conservetur. Decernentes irritum & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 14. Quo circa vobis & pro tempore existentibus Præposito generali ac Consultoribus, necnon universis & singulis Prioribus, Monachis & personis dictæ Congregationis, per Apostolica scripta mandamus, ut præsentibus litteris humiliter susceptis, & quæcumque in eis continentur, alia desuper à Nobis non expectata jussione, aut tenentis nostræ declaratione, inviolatè custodiant.

1584. Priores, cum Procuratoribus electioni Præpositi & Definitorum interfint. Ad hoc vide bullam Clem. VIII. nu. 21. Illi autem ex Prioribus eligantur. Judex omnibus, ut in bulla Clem. VIII. nunc cit. Prioratu aliquo vacante, Præpositus, & Consultores alium ex Vicariis substituant. Imo etiam ex non Vicariis, ut in ead. bull. Præpositus durante triennio & postea Prioratum quem habebat, retinet & est etiam Prior S. Alexii de Urbe. Post triennium vacare debet per sex annos ab officio. Ambius prohibetur. Lætor pro habito est in bulla Clement. VIII. nu. 1 om. III. fol. 29. Pecunia Congregationis in Monasterio non applicetur. Capitulum generale ubi celebrandum. Regularis observantia in quibus locis retinenda. Hujus constitutionis observantia præcipitur.

1584.

Ejusque pu-
blicas
Hospitio
committi-
tur.

§. 15. Ibi verò præpositæ, ut ipsas Præfentes in omnibus dictæ Congregationis Monasteriis & locis solemniter publicare, & ut illis omnino ab omnibus pareatur efficere procures. Contradictores quolibet & rebelles, eisque auxilium vel favorem, publicè vel occultè, directè vel indirectè, quovis quæsito colore præstantes, tam Ecclesiasticos, quàm sæculares, cuiuscumque dignitatis, status, gradus, ordinis vel conditionis fuerint, per censuras & penas Ecclesiasticas, aliæque juris & facti remedia opportuna, appellatione postposita compefcendo, censuræque & penas ipsas etiam sæpius aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii sæcularis.

Contrariis
derogat.

§. 16. Non obstantibus præmissis, ac fel. rec. Bonifacii VIII. prædecessoris huiusmodi de una, & in Concilio generali edita de duabus dietis, & aliis Apostolicis constitutionibus: necnon Congregationis, ac Ordinis prædictorum juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis, illis eorumque Superioribus & personis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibulvis, etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis, in genere vel in specie, etiam consistorialiter, ac aliis quomodolibet concessis, & etiam pluries confirmatis, & innovatis. Quibus omnibus etiam pro illorum sufficienti derogatione, de illis eorumque tenoribus, si etialis, specifica, expressa & individua, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, aut quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum tenores, ac si ad verbum inferrentur, Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanens, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si Congregationi, Prioribus & Monachis prædictis, vel quibulvis aliis communiter vel divisim ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas, non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum deindulto huiusmodi mentionem.

Dat. P. A.
1584. Maii

Datum Romæ apud Sanctum Petrum sub anulo Piscatoris, die 25. Maji, millesimo quingentesimo octuagesimo quarto, Pontificatus nostri Anno 13.

XCI.

Institutio Collegii, ad scholares nationis Maronitarum, piè & catholice, bonis artibus, Christianisque moribus, & doctrina instruendos in Urbe. Ex deputatio Cardinalis pro ejus regimine annuorumque reddituum assignatio pro eorumdem sustentatione.

Majores postea redditus assignavit Sixtus. V. die 2. Augusti anno 1585. Et die 7. Februarii 1586. ut in ejus bullis, quas hic indicare satis esse putavi.

Edita An. D.
1584.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Humana sic ferunt quandoque consilia, ut quæ vel provida deliberatione ab initio constituuntur, operæ pretium sit spe melioris futuræ frugis postea immutare.

Hic Pontifex instituit
in Urbe
Hospitale
pro natione
Maronitarum. ad eorum
fidei
causam
servandam
& augmen-
dam.

§. 1. Nuper enim ut Nationi Maronitarum, qui in Libani montibus degentes, à multis sæculis sub S. R. E. obedientia & devotione fidem Catholicam inter tot circumstantes Infidelium, & Schismaticorum sectas retinent, ac certis annorum spatiis ad Apostolorum limina visitanda, Sedemque Apostolicam amplectendam, & recognoscendam, aliquos destinare soliti sunt, de peculiari loco ad usum Hospitalitatis erga ejusdem Nationis Indigenas

ad Urbem confluentes exercendæ, nostra ope pro vitum esset, ipsiusque Nationis erga Sedem ipsa devotio continuum susciperet incrementum, n tanto labore conservata fidei semina arcescerent, per quasdam unionem, annexionem & incorporationem olim de parochiali Ecclesia S. Joannis de Ficocia Regionis Trivii de Urbe, parochiali Ecclesiæ Sancti Andree ejusdem Regionis Apostolica auctoritate factas perpetuò dissolvimus, & apud ipsam Ecclesiam S. Joannis, nomine, denominatione, & essentia parochialis Ecclesiæ in ea etiam perpetuo suppressis & extinctis, ac cura animarum illius parochianorum una cum eidem parochianis, iuribusque parochialibus ad dictam Ecclesiam Sancti Andree translati, unum Hospitale in quo pauperes peregrini dictæ Nationis recipi & confrui deberent, similiter perpetuo ereximus & instituimus, illique sic erecto & instituto eandem Ecclesiam S. Joannis sine cura effectam cum suis domibus, ædificiis, hortis, membris, & pertinentiis illi contiguis, eorumque situ & ambitu pariter perpetuò concessimus.

§. 2. Per alias verò nostras Litteras eidem Hospitali, ut onera ei incumbentia commodius perirent, pensionem annuam certis modo & forma tunc expressis liberam, immunem & exemptam, ac ad quindecim annos tunc proximos dumtaxat durationem ducutorum ducatorum monetæ illarum partium, super mensæ Episcopalis S. Agathæ fructibus, redditibus & proventus ac Rectori vel Administratori pro tempore existentis dicti Hospitalis seu illius Procuratori legitimo, durantibus dictis quindecim annis tantum, per Venerabilem fratrem nostrum Felicianum Episcopum Sanctæ Agathæ, & Successores suos Ecclesiæ S. Agathæ Præfules seu Administratores pro tempore existentes, etsi ipsi mille ducati, annuatim ex fructibus, redditibus & proventus prædictis non remanerent, annis singulis in certis loco & terminis, ac sub sententiis, censuris & penis, etiam tunc expressis, integreque solvendum reservavimus, & constituimus & assignavimus, prout in singulis litteris prædictis plenius continetur.

§. 3. Nunc verò erectionis Hospitalis huiusmodi negotio maturius perpenso, etsi illud insignie pietatis opus, dictæque Nationi gratum & commodum sit, meliora tamen æmulanda charismata majorem Dei laudem, utilioreque eidem Nationi operam fore censuimus, si loco dicti Hospitalis, quod in suis primordiis adhuc recens est, unum Collegium pro recipiendis & instruendis illius Nationis pueris ad bonas litteras capessendas aptis, erigeretur & in situeretur. Cum enim in partibus illis, sub gravi Turcarum jugo & tyrannide constitutis, vix facultas detur bonarum litterarum studia excolendi, & exinde multos à fide catholica aversos æternis tenebris detineri, simplicisque & rudes à susceptæ veritatis cultu abduci facile contingat, futurum omnino speramus ut successu temporis ipsius Collegii alumni, pietatis & veræ Religionis odore, à Montibus Sion cypressis & Sanctæ Ecclesiæ Romanæ, quæ sola caput est aliarum documentis largius imbuti, illum in cedros Libani nationemque suam refundant, ac collabentem & perturbatam in suis Regionibus fidem Dei beneficio sustineant, atque resuscitent; & ita prædictum corporale opus, quod paucis in hac Urbe tantum profuturum erat, in magis spirituale ad totius Nationis utilitatem salutem convertatur.

§. 4. Quo circa motu simili, & ex certa nostra scientia, deque Apostolicæ potestatis plenitudine, in dicto Hospitali nomen, de nominationem & essentiam Hospitalis, ac cuodcumque onus hospitalitatis ibidem exercendæ, salvis tamen & illis remanentibus dissolutione, concessione, pensione & aliis supradictis, Apostolica auctoritate renovere Præsentium, perpetuò suppressimus & extinguimus, illudque in Collegium Maronitarum nuncupandum, ad alendam, bonisque moribus ornandam,

1584.

Deinde an-
nos reddi-
tus, domo-
rum &c. al-
signavit.Hic modo
Pontifex
dictum Hos-
pitale sup-
primi, ad
magis spiri-
tuale dic-
tæ Nationis
utilitatem.Collegium
Maronita-
rum erecti-
ad d. Nano-
rum bene-
ficiis
moribus fa-
naque doc-
trina int-
tendum.

ac vera pietate sanaque doctrina, & reliquis Christiano homine dignis virtutibus instruendam ipsius Nationis juventutem, auctoritate & tenore prædictis etiam perpetuò erigimus, & instituiamus. Iplumque Collegium sic erectum & institutum in locum dicti Hospitalis, quo ad Ecclesiam S. Joannis, ac illius domos, ædificia, hortos, membra, & pertinentia, eorumque situm & ambitum, necnon pensionem ducentorum ducatorum hujusmodi, ejusdemque pensionis terminos decurlos & non solutos, si cui sint, in omnibus & per omnia perinde, ac si pro ipso Collegio non autem Hospitali specialiter & expresse, ab initio emanassent, illique concessa & reservata fuissent, subrogamus.

§. 5. Et nihilominus eidem Collegio Ecclesiam Sancti Joannis, cum domibus, ædificiis, hortis, membris & pertinentiis, eorumque situm & ambitum hujusmodi, ita quod liceat Protectori seu Rectori dicti Collegii, pro tempore existentis illorum omnium corporalem possessionem per se, vel alium, seu alios, nomine ejusdem Collegii propria auctoritate liberè apprehendere, & perpetuò tenere, fructusque, redditus, proventus, jura, obventiones & emolumenta, quæcumque inde proveniant, in Collegii & Ecclesiæ Sancti Joannis hujusmodi usus & utilitatem, ac necessitates convertere. Necnon eidem Ecclesiæ S. Joannis per unum, vel plures, etiam dictæ Nationis Sacerdotes seculares vel regulares, ad nutum pro tempore existentis Protectoris Collegii hujusmodi penendos & amovendos deferri, missalique & alia divina officia etiam Arabico, vel Chaldaico idioma celebrari facere, cujusvis licentia desuper minimè requisita eidem Apostolica auctoritate & tenore, similiter perpetuò concedimus. Pensionemque annuam ducentorum ducatorum hujusmodi, super prædictæ mensæ fructibus, redditibus & proventibus eidem Collegio, seu illius pro tempore existentis Protectori, vel Rectori, aut ejus Procuratori, vel Oeconomo ad id, ab ipso Protectore seu Rectore speciale mandatum habenti, durantibus dictis quindecim annis dumtaxat, per Felicianum Episcopum, & Successores, prædictis annis singulis, in loco & terminis, ac sub sententiis, censuris & poenis; Necnon cum omnibus & singulis exemptionibus, immunitatibus, libertatibus, decretis, & clausulis, ac alias modo & forma, quibus dicto Hospitali reservata erat, & solvi debebat, integrè persolvendam, Apostolica auctoritate & tenore similibus reservamus, constituimus, & assignamus.

§. 6. Insuper Collegium prædictum, illiusque Rectorem, Oeconomos, Magistros, Præceptores, atque Scholares pro tempore in eo existentes, eorumque domesticos, Officiales, & Ministros, necnon ipsius Collegii dona mobilia & immobilia, præsentia & futura, quibuscumque qualitatibus & quantitatibus existentia, ac tam in dicta Urbe, quam extra eam, & alias ubicumque locorum consistentia, ab omni jurisdictione, dominio, superioritate, & potestate pro tempore existentium Vicarii, Senatoris, Conservatorum, & Reformatorum dictæ Urbis, necnon Rectoris Studii generalis ejusdem Urbis, ac Ordinariorum locorum, aliorumque Judicum & Officialium quorumcumque in ipsa Urbe, vel alias ubilibet constitutorum.

§. 7. Necnon idem Collegium in propriis ejus bonis & rebus, ac dicti Collegii ratione, Scholares personales in eo degentes, ac alios cum ipso contrahentes, ab omnibus & singulis portarum, Molendinorum, Farinæ, trium pro centenariis, ac quatuor Juliorum pro quolibet vegete vini solvi solutorum, aliisque datis, pedagiis, vespigaliis, angariis, ac terræ marisque gabellis, Dohanis, Bulleis, & quibuscumque aliis oneribus ordinariis & extraordinariis, hæctenus quomodolibet impostis, & in posterum quodcumque quavis occasione vel causa, etiam de necessitate exprimentæ imponendis, etiam ad instar exemptionis dilectorum filiorum Clericorum Cameræ Apostolicæ, etiam

ratione Ripæ, Ripertiæ, Dohanæ Terræ, etiam Græciæ nuncupatæ Urbis prædictæ, necnon carnum, vini, granorum, pannorum, lini, lanæ, lericæ, librorum, cartarum, & quarumcumque aliarum rerum ad humanum victum & vestitum necessarium, ex toto nostro Statu Ecclesiastico, & quibuscumque aliis locis extra dictum Statum consistentibus ad dictum Collegium, tam per terram quam per mare, & aquam dulcem, & alias quomodolibet conducendorum, & etiam jam ad Urbem ipsam conducendorum, & in ea existentium, ac pro eodem Collegio in magna seu parva quantitate tam in Barthis, quam in Magazinis, & aliis ubilibet emendorum, Apostolica auctoritate, & tenore prædictis eximimus & liberamus, ac sub Beati Petri, & dictæ Sedis, atque nostræ protectione fulcimus, Nobisque & eidem Sedi immèdiatè subjicimus.

§. 8. Ipsi quoque Collegio, Rectori, Scholares, Præceptoribus, Magistris, Oeconomis, Officialibus, Ministris & personis, ut quibuscumque privilegiis, exemptionibus, libertatibus, facultatibus, gratiis & indultis, quibus Studium generale dictæ Urbis, necnon alia Germanicæ, Anglicæ & Græcæ Nationum Collegia, in ipsa Urbe à Nobis instituta illorumque Rectores, Scholares, Præceptores, Magistri, Oeconomi, Officiales, Ministri & personæ, quovis modo utuntur, potiuntur & gaudent, ac uti potiri & gaudere possunt, & poterunt quomodolibet in futurum, non solum ad eorum instar, sed æque principaliter & pariformiter in omnibus, & per omnia uti, potiri & gaudere valeant, eidem Apostolica auctoritate & tenore pariter perpetuò concedimus & indulgemus.

§. 9. Districtus inhabentes Vicario, Senatori, Conservatoribus, & Reformatibus Urbis, ac Rectori Studii, aliisque Judicibus & Officialibus hujusmodi, necnon pro tempore existentis S. R. E. Camerario, Præfidentibus, ac prædictis Clericis, ac quibuscumque Commissariis ad exactiorem decimarum, & aliorum onerum prædictorum pro tempore deputatis, ne quarumvis litterarum, eis sub quibuscumque tenoribus & formis concessarum prætextu, Collegium Maronitarum, illiusque Rectorem, Scholares, Præceptores, Magistros, Oeconomos, Officiales, & Ministros prædictos, seu eorum aliquem in præmissis quovis modo molestant, aut molestari permittant.

§. 10. Ut autem ipsius Collegii Maronitici conservationi, bonoque regimini tam in his quæ ad instructionem & disciplinam, quam quæ ad victum, vestitum, aliaque hujusmodi necessaria pertinent, opportunè consulatur, dilectum suum nostrum Antonium tit. S. Eusebii Presbyterum Cardinalem Caraffam nuncupatum, ejusdem Collegii Maronitici Protectorem & defensorem, cujus consilio & ope, omnia supradicta, & alia quæcumque ad eosdem in ipsum Collegium Maronitarum admittendos retinendosque Scholares spectantia, ac alias quomodolibet necessaria agantur, statuantur, & ordinentur, constituimus & deputamus. Necnon Antonio Cardinali & pro tempore existentis Protectori prædicto pro ejusdem Collegii Maronitici, illiusque personarum, bonorum, rerum & jurium, tam spiritualium quam temporalium salubri directione & conservatione, Rectores, Præceptores, Magistros, Oeconomos, Advocatos, Procuratores, ceterosque Ministros & Officiales in eo deputandi & amovendi, & loco amovendorum alios suffiendi, necnon statuta, ordinationes, & decreta quæcumque, licita tamen & honesta, ac Sacris Canonibus & decretis Concilii Tridentini non contraria, faciendi & edendi, ac illa quoties pro eorum & temporum qualitate, seu alias expediens videtur immutandi, corrigendi, moderandi, reformandi, interpretandi, & etiam alia ex integro condendi, quæ postquam edita, immutata, correctæ, moderata, reformata, & condita fuerint, eo ipso dicta Apostolica auctoritate confirmata & appro-

Indulta & privilegia Studii generalis Almæ Urbis, & similitum Collegiorum in Urbe militum Collegio concedit. Hac ut videas requirere in U. Studium, & in U. Collegium quia onerosum nimirum esset hic indicare. Officiales Curæ Romanæ & alios præfatos, ne in præmissis Collegium perturbent.

Cardinalem ejus Protectorem & gubernatorem deputat.

Clausulas
præfati
vas huic
bullæ ap-
ponit.

Decretum
irritans ad
fictis.

Clausulas
derogato-
rias subjicit.

Dat. P. A.
13. 27. Junii.

bata sint & esse censeantur, ac ab omnibus ad quos pro tempore spectabit, etiam sub penis in contravenientes statuendis observari debeant plenam liberamque facultatem tribuimus.

§. 11. Decernentes præmissa omnia & singula, ac præsentis Litteras, nullo umquam tempore, five pro eo quod causæ propter quas hæc omnia facta sunt, coram dicto Vicario, vel quocumque alio examinata, verificata & approbata, ac quicumque interesse habentes ad id vocati non fuerint, nec eisdem præmissis consenserint, five alias ex quibuscumque causis, de subreptionis vel obreptionis, nullitatis vitio, seu intentionis nostræ, vel quocumque alio defectu, notari, impugnari, retractari, seu etiam revocari, suspendi, restringi, limitari, aut in jus vel controverfiam vocari, seu ad terminos juris reduci posse, nec quemquam ad easdem præsentis Litteras in Camera prædicta, juxta Constitutionem Pii Papæ Quarti prædecessoris nostri desuper editam, aut alias quodcumque præsentandum, insinuandum & registrari faciendum teneri, neque propterea illas irritas esse, sed omnimodo valere, ac si constitutio prædicta, & alia contraria minime emanassent.

§. 12. Sicque per quoscumque Judices ordinarios & delegatos, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac ejusdem S. R. E. Cardinales, sublatæ eis & eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari & definiti debere; irritum quoque & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 13. Non obstantibus præmissis & Lateranen. Concilii ultimo celebrati uniones perpetuas nisi in casibus à jure permisis fieri, & pensiones annuas super fructibus mensurarum Episcopatum, nisi exactionis aut alia probabili causa reservari prohibentis, ac quatenus opus sit nostris de unionibus committendis ad partes vocatis interesse habentibus, exprimendoque valore etiam beneficii cui aliud petatur uniri, necnon de præstando consensu in pensionibus, aliisque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac Urbis locorum, & Cameræ prædictorum etiam juramento, confirmatione Apostolica vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis & litteris Apostolicis, illis ac Vicario, Senatori, Conservatoribus, Reformatoribus, Ordinariis aliisque Judicibus, & Officialibus, necnon Camerario, Præfidentibus & Clericis prædictis, ac quibuscumque Dohanariis, Commissariis, & aliis personis, ad exactionem pedagiorum & aliorum onerum hujusmodi pro tempore deputatis, necnon dilectis filiis Populo Romano, ac quorumcumque locorum Communitatibus, Universitatibus, & Hominibus, sub quibuscumque tenoribus & formis, & cum quibuscumque etiam derogatoriarum derogatoriis aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decretis, in genere vel in specie, etiam motu, scientia & potestate plenitudine similibus, ac alias quomodolibet etiam iteratis vicibus concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, etiam si de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda esset, tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata inserti forent, illis alias in suo robore permanfuris, hac vice dumtaxat, specialiter & expresse derogamus, necnon omnibus illis quæ in singulis Litteris prædictis volumus non obstat, ceterisque contrariis quibuscumque.

Nulli ergo, &c. Si quis autem &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo octuagesimo quarto, quinto Cal Julii. Pont. nostri anno 13.

De prædicatione verbi DEI, semel in Hebdomada facienda Hebræis, pro eorum ad Christi fidem conversione in Terris, & locis, in quibus extant eorum Synagogæ.

De materia Judæorum notavi supra in Pauli IV. const. 3. Cùm nimis. Tom. I.

GREGORIUS EPICOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuum rei memoriam.

Sancta mater Ecclesia, cujus Christus caput est, ingentem suam charitatem ad omnes latè diffundens, antiquæ Israeliticæ gentis populi que DEI peculiare reliquias; pio nunquam desinit affectu miserari, graviterque contristatur Judæorum quondam nationem, præcipuis auctam muneribus & gratis, cujus erat adoptio filiorum, gloria, testamentum, legislatio, obsequium, & promissa, unde etiam Christus Salvator noster secundum carnem nati dignatus est, per diversas Orbis partes tot jam sæcula dispersam, ac contagiosi gregis morte per invia, & inaquola misere vagantem, verbi DEI fame, & aquæ refectionis sitim perire, longeque non à terrena tantum, super quam Dominus fievit, sed, quod gravius est, à coelesti quoque Hierusalem, nisi Christum quem negavit contineatur, exturbari, quæ miseratione, & merore Nos quoque non leviter commoti, in dies semper aliquid excogitamus, unde eorum conversioni, & saluti opportunus provideatur, ipsi, ut ad intellegendam viam, quam sibi præcluserunt, valeant DEO propitio pervenire.

§. 1. Quares sollicito hæc animo meditantem, ac felicitæ recordationis Nicolai Papæ III. nonnullorumque Romanorum Pontificum prædecessorum nostrorum vestigiis inherentes, præsentis constitutione generali præcipimus, omnibus Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, & aliis Ecclesiarum Prælatibus, etiam Cardinalatus honore præditis, ut in suis quique Civitatibus, Terris, & locis, in quibus competens aliquis numerus Judæorum, qui Synagogam constituunt, commorantur, currentes Sabbati, vel alio quocumque hebdomadis statuto die, ad Judæos ipsos in locum prædictum, non tamen sacrum, nec ubi sacra confici solent, convocatos, per aliquem magistrum in Theologia, aliumve idoneum virum ab eis eligendum cum mercede congrua illi ex ipsorum Hebræorum cellatione, aut alias, prout commodius eis videbitur, Hebræicæ (si fieri poterit) linguæ pretium sermones, vel lectiones haberi, in quibus illis exponatur scripturæ veteris Testamenti, Moysis scilicet, & Prophetarum, præsertim verò, quæ eo Sabbato leguntur, seu lectæ in eorum sunt Synagogis, juxta Sanctorum tamen Patrum interpretationes, & verum Catholicæ Ecclesiæ sensum, ac in eis differatur de veritate Christianæ fidei, de certo Adventu, & Incarnatione Filii DEI, illiusque Nativitate, vita, miraculis, passionem, morte, sepultura, descensu ad Inferos, Resurrectione, in Cælum ascensione, de ejus Evangelio in toto Terrarum Orbe per Apostolos ejus, & alios Sanctos prædicato, innumeris atque clarissimis virtutibus, & illustrium miraculorum gloria confirmato, ac de ejus spirituali, & vero Regno, & de impio idolorum cultu sublatum, & gentium vocatione, de perpetua tum Hierusalem, & Terræ eorumdem Judæorum desolatione, tum ipsorum ubique Terrarum dispersione, & captivitate, & de aliis similibus argumentis dogmatibus, & articulis ex lege, & Prophetis, de divina præterea, & irrita Judæorum Adventus Messie & carnalis illius Regni expectatione, de vana eorum, quæ sæpe quinimo quotidie eos frustrata est spe reditus in terram promissionis, & restaurationis tertii templi, & demum de multiplicibus, & variis erroribus, & hæresibus eorum, in quas miserime se demerferunt postquam Christum Dominum in carne venientem agnoscere noluerunt, & de falso per eo-

Causa const.

Episcopi, & alii currentes quælibet hebdomada prædicari Judæis in Terris ubi sancti synagoga & Prædicatores de hic expressis differant.

FUM

GREGORIUS EPISCOPUS,

Sereus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

1584.
Eidua An. D.
1584.

rum Rabbinos tradita sacrarum scripturarum interpretatione, quarum litterarum, & sensum fabulis, mendaciis, & variis dolis, & modis detorquentes corruerunt, & depravarunt, & hactenus corrumpere, & depravare non desinunt, de quibus omnibus aliis, quæ eos possint ad agnitionem fidei, ad errorum suorum correctionem, ad Orthodoxamque fidem convertere, pro loci, temporis, sumptusque argumenti ratione prudenter agant, veris, & ex sacra scriptura depromptis demonstrationibus, nulla cum obreclatione, aut iracundia, sed magna cum charitate, & modestia, veritatis lumen illis aperire conentur.

Judei maiores annis 12. utriusque sexus prædicationibus inter-
fuit.

§. 2. Ad quos sermones & lectiones volumus, universos, & singulos utriusque sexus Judæos à duodecim annis supra, infirmos, aut alia legitima causa, de qua Ordinarios docere debeant non impeditos, in Civitate, & locis, ut præsertim habitantes, vel aliunde advenientes, etiam si inibi domicilium non habeant, ita per circuitum convenire, ut tertia saltem eorum pars, nec unquam minor semper adsit. Quod si facere neglexerint, interdictum cum fidelibus commercii, & aliis penis arbitrio Ordinarii pro contumacia modo imponendis, donec satisfecerint contemperent, ad ipsos sermones audientes compellantur.

Christiani autem Judæos ab hujusmodi prædicatione seducen-
tes, puni-
tur.

§. 3. Si quis verò de numero fidelium sit fuerit salutis, aut sui, aut proximi fui, de quo unicuique mandatum est immemor, qui eos à salutaribus hujusmodi sermonibus, seu lectionibus, directè abduerit, aut impeditur, seu contenderit quoquomodo, excommunicationis sententia sit eo ipso ligatus, & contra eum ad alias penas Ordinarii arbitrio omnino procedatur.

Principes faveant Ordinarii in præmissis.

§. 4. Ceterum Imperatorem, Regesque, & Principes omnes, necnon Respublicas, Magistratus, & Dominos temporales sæculares rogamus, & obtestamur in Domino, ut Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, & aliis Ordinariis prædictis, eorumque Vicariis, & Ministris suum in præmissis auxilium præstent, amplissimum ab omnipotenti Deo premium in supremis gloriæ æternæ tabernaculis habituri.

Fides transsumptis, adhibeatur.

§. 5. Et quoniam difficile nimis esset Præsentem ad omnia loca, quibus illis opus erit, perferri, volumus, ut eorum exemplis etiam impressis, manu publici Notarii subscriptis, & sigillo Prælati, aut personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem omnino fides ubique adhibeatur quæ adhiberetur eidem Præsentibus, si essent exhibitæ vel ostensæ.

Dat. P. A.
13. 1. Sept.

Dat. Romæ apud S. Marcum Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo octuagesimo quarto, Kal. Septembris, Pont. nostri Anno tertio decimo.

Publicatio.

Anno à nativitate Domini 1584. indictione 12. die verò 24. mensis Septembris, Pontificatus Sanctissimi D.N. Gregorii divina providentia Papæ XIII. anno 13. retroscriptæ litteræ Apostolica affixæ, & publicatæ fuerunt, in vobis S. Joannis Lateranensis Principis Apostolorum de Urbe, necnon Cancellariæ Apostol. & acie Campi Floræ, & ibi per aliquod temporis spatium dimissæ per nos Calixtum Brunetum, & Nicolaum Talietum ejusdem Sanctissimi Domini Nostri Papæ Curs.

Joannes Freile Magister Cursorum.

XCHL

Innovatio constitutionis Nicolai III. & aliarum sanctionum, contra jurantes, & jurare facientes, illicita, impossibilia, damnosa, & Ecclesiasticæ libertati, ac decretis Concilii Tridentini adversantia.

Hæc Nicolai constituit. est. in capitulo primo de Jurjur. in 6.

Inter Apostolicas, & alias canonicas sanctiones, quæ de iurjurandi Religione variis temporibus prodierunt, sel. recor. Nicolaus Papa Tertius intelligens in nonnullis Ecclesiis de earum consuetudine observari, ut cum earum Prælati ad Ecclesias ipsas primo accedunt, vel cum de recipiendis ibidem novis canonicis agitur, nec Prælatos admitti, nec canonicos aliter recipi in dictis Ecclesiis nisi iurato ab eis, statuta, & consuetudines ipsarum Ecclesiarum, scriptæ, & non scriptæ inviolabiliter observare, inter laicos etiam multarum Civitatum, Castrorum, & Terrarum eum consuetudinis morbum in assumendis Potestatibus, Rectoribus, vel Officialibus suis irrepsisse, ut ipsi Potestates, Rectores, & Officiales ad hujusmodi potestarias, rectorias, & officia, nullo modo admittantur, nisi prius se statuta ipsorum locorum clausa juraverint servaturos.

Consuetudo erat, quod Prælati & Canonici, in eorum Ecclesiis non admittentur, & Civitatum officia non recipiuntur, nisi prius iuramento observandi statuta illarum.

§. 1. Et quia in statutis, consuetudinibusque supradictis interdum aliqua reperiebantur illicita, seu impossibilia, vel obviantia Ecclesiasticæ libertati, idcirco ne sub tali generalitate jurandi, sic jurantibus peccandi occasio præberetur, cum juramentum non fuerit institutum ut vinculum esset iniquitatis, prædictus Nicolaus Papa animarum periculum obvisare cupiens, frugifera & salubri constitutione præcepit quibuscumque scientibus contineri in prædictis consuetudinibus, & statutis illicita, impossibilia, vel libertati Ecclesiasticæ obviantia, hujusmodi juramenta ab eis nullo modo præstari, & juramenta ea intentione faciendi, vel facta ut etiam illicita, vel impossibilia, seu libertati Ecclesiasticæ obviantia observentur, cum etiam sub tali intentione præstari non possent abique divinæ Majestatis offensa, decrevit in hujusmodi illicitis, impossibilitibus, seu libertati Ecclesiasticæ obviantibus non servanda, quin potius pro animarum salute, si sub forma prædicta vel simili aliquos ignorantes prædicta illicita seu impossibilia, vel libertati Ecclesiasticæ obviantia jurare contingeret, ad observanda dumtaxat licita, possibilia, & libertati Ecclesiasticæ non obviantia juramentorum intentio referri deberet, declarans juramenta sub hujusmodi generalitate qualitercumque, & sub quacumque verborum forma præstita vel præstanda, ad licita, possibilia, ac Ecclesiasticæ libertati non obviantia dumtaxat extendi, ipsosque jurantes ad alia per præstationem juramenti hujusmodi non teneri. Verumtamen multi infirmi, cupidique sensus sese in hujusmodi juramenta cum animarum suarum periculo præcipiant.

Nicolaus III. declaravit, talia juramenta non ligare observandum illicita, & impossibilia, ac libertati Ecclesiasticæ contraria, ut in cap. de iurjur. ino.

§. 2. Nos quoniam hæc sanctorum quoque Patrum instituta, & salubri rerum Ecclesiasticarum directioni adveniant, & tamquam de radice ambitionis procedentia omne bonum in Ecclesiis Rebusque publicis, pervertunt, ea novæ provisionis subsidio prohibere volentes, Præsentium auctoritate innovamus prædictam constitutionem Nicolai Papæ, itidemque alias omnes Canonicas sanctiones de abusu, & reprobatione hujusmodi juramentorum promulgatas, volumusque eas ubique ab omnibus etiam quoad præsertim inviolabiliter observari.

Hic modo Pont. innovat Nic. III. & alias canonicas constitutiones, dictas contra reprobationem hujusmodi juramentorum.

§. 3. Ac etiam præcipimus, & interdicimus Prælati, Canonici, & aliis supradictis, necnon Ecclesiarum Capitulis, & Monasteriorum, ceterisque Conventibus, Civitatum quoque, Castrorum, & Terrarum, Communitatibus, & personis quacumque dignitate præditis, ne ulla omnino juramenta illicita, impossibilia, damnosa, vel libertati Ecclesiasticæ, ac decretis Concilii Tridentini obviantia, five ante, five post electiones, confirmationes, provisiones, receptiones, admissiones, aut alios actus, ubicumque, ac quocumque tempore, etiam prætextu cujuscumque consue-

Et exigentibus de cetero juramenta illicita præsentibus hic expressè imponit.

di.

1584.

1584.

Iusta iu-
ris consili.

dimis quantocumque tempore observata, quæ potius corruptela est censenda, siue in genere, siue in specie præstare, reddere, vel exigere, ne super præstitis, redditis, vel exactis huiusque quemquam, in iudicio vel extra inquietare audeant quoquo modo, vel turbare; illos enim qui iuramenta illicita, impossibilia, damnosa, vel Ecclesiastica libertati, aut decretis dicti Concilii obstantia, exigere contenderint, Episcopos videlicet, & alios quoscunque Pontificis dignitate præditos suspendimus à divinis, Capitula verò, & Conventus, eorumque Ecclesias & loca omnia interdicto ecclesiastico suspendimus, ac singulares personas excommunicationis sententia inmodamus, inhabilesque facimus ad obtenta, & alia obtinenda eo ipso, Nobisque & Romano Pontifici pro tempore existentis relaxationem suspensionis, & interdicti, necnon absolutionem ab excommunicationis sententia huiusmodi perpetuo reservamus.

§. 4. Decernentes eos, qui talia iuramenta scienter præstiterint, usui, & commodo rei, & gratiæ cuius causa iuraverint, eo ipso privatos esse: alios vero ignorantes ad præstitorum iuramentorum huiusmodi observationem minime teneri. Necnon irritum, & inane quicquid secus per quoscunque, scienter vel ignoranter attentatum est hactenus, & deinceps contingit attentari.

§. 5. Non obstantibus præmissis, seu quod Prælati, Capituli, Conventus, & personis prædictis, vel quibuscvis aliis, communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, vel in posterum indulgeri contingat, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, & ad verbum de indulto huiusmodi mentionem, ceterisque contrariis quibuscunque.

§. 6. Et quoniam difficile nimis esset, Præfentes ad omnia loca, quibus illis opus erit, perferri, volumus ut eorum exemplis etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo Prælati, aut personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides ubique adhibeatur, quæ adhibetur eisdem Præfentibus, si forent exhibitæ vel offensæ.

Dat. Romæ apud S. Marcum, anno Incarnationis Dominicæ 1584. Nonis Septemb. Pontificatus nostri anno 13.

Anno à Nativitate Domini 1584. indict. 12. die vero 14. mensis Septemb. Pontif. Sanctiss. D. N. D. Gregorius divina providentia PP. XLII, anno 13. retroscripta littera Apostolica affixæ & publicata fuerunt in valvis, seu portis Ecclesiarum S. Joannis Lateranensis, ac Principis Apostolorum de Urbe, necnon Cancell. Apost. ac in acie Campi Floræ ibidemque per aliquod temporis spatium dimissæ, per nos Galixum Brunetum, & Nicolaum Taglietum ejusdem S. D. N. Papæ Curæ.

Joannes Freile Mag. Curæ.

XCIV.

Deposita pecuniarum actualia supra summam scutorum quinque occasione litium in Alma Urbe tendæ, apud Montem Pietatis de cetero fiant.

Amplius in hoc dispositionem fecit Clem. VIII. inf. in ejus cons. 88. Quæ ad Pietatis fol. 150. Tom. III. ubi etiam illius Protectorem deputavit in iudicem, ad ejus lites dijudicandas.

Edita A. D. 1584.

GREGORIUS EPICOPUS,

Servus servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Inter multiplices animi nostri curas, quæ pro Pastoralis officio Nobis incumbunt, illa præcipue pectus nostrum pulsar, ut quilibet sibi legitime debitorum facile consequatur, & ut pietatis opera, quæ in Urbe nostra exercentur, continuum suscipiant incrementum.

§. 1. Sane rerum experientia edocti compertimus, sæpissime in causis, quæ in universis Romanæ Curie Tribunalibus, atque etiam in ipso Roræ Auditorio ventilantur, fieri actualia deposita pecuniarum penes Notarios actuarios, quorum consignationis cum tandem dies advenit, novum ipsis creditoribus inchoandum esse iudicium pro ipsius depositi consignatione, cum vel ex morte Notarii, vel alia quavis occasione difficultates innumerae oriantur. Conspectimus etiam liquido quandoque debitores cum aliâ viâ solutionem ulterius effugere non valeant, curare, ut in eorum manibus pecuniæ sequestrantur, ut creditor quandoque non ita subito cavere valeat, aut controversiam patiens diutius jure suo frustretur, & nova lis exoritur, cuius periculo id sit cessurum, ac etiam cavillationibus impediunt, quo minus sibi debitam pecuniam consequantur. Sæpe etiam pecuniæ difficultatum occasione otiosa jacent, quas in pauperum utilitatem interim mutare longè præstaret. Conspectimus quoque magnum commodum quod ex Monte Pietatis omnibus Urbis incolis refultat, cum sub minima mercede, & ea necessaria quidem in sumptus operi incumbendis omnibus succurratur. Verum propter ipsius Montis tenues facultates non posse ea largitate omnibus subveniri, quæ in tam magna Civitate, & pauperum multitudine expedire, & considerantes quam tutè in eo Monte pecuniæ collocentur, cum ibidem non nisi pignoris creduntur, optimum fore censuimus, si eodem tempore, & abutius ac difficultates, quæ circa ipsa deposita, & illarum consignationes exoriuntur tolleremus, & ut pecuniæ abundantiores in eodem Monte confluerent, quo largius & amplius necessitatibus patientibus succurratur, & usurarum occasio arceatur, consulere.

§. 2. Itaque his, & aliis, animus nostrum dignè moventibus, rationalibus causis, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, omnibus & singulis Romanæ Curie Judicibus, tam Ecclesiasticis quam secularibus, etiam iacri Palatii Apostolici Auditoribus, ac etiam S. R. E. Cardinalibus, in virtute sanctæ obedientiæ præcipimus & mandamus, ut in quibusvis causis etiam criminalibus coram eis pendentibus in quavis instantia, & quas in futurum perpetuo pendere contingeret, ubi actualis pecuniarum depositum supra summam scutorum quinque, alias locus sit, juxta decreta per ipsos Judices faciendi, illud non amplius penes Notarios, ut hactenus, sed sine ipsorum Notariorum præjudicio, penes ipsum Montem Pietatis, seu illius pro tempore Depositarii, qui fide & facultatibus insignis sit, fieri & deponi mandent.

§. 3. Cujus depositi consignatio fiat per mandatum Judicis absque alia expensâ quàm ea quæ regulariter, juxta stylum cuiusque Tribunalis pro illius consignatione hactenus penes Notarium fieri consueverat, eidem Notario tantum solvenda.

§. 4. Sane, ulum & consuetudinem cedularum bancariorum, & cautionum, ac pignorum, dum res est dubia, & super ea lis pendet, nequaquam tollimus.

§. 5. Porro ubi super pecuniis sequestratis, vel pensionibus domorum, casalis, aut aliarum quancunque rerum litigiorum, tam profanarum quam ecclesiasticarum, lis inter alios pendet, verus debitor interim penes ipsum Montem pecunias deponere, nedum ad cuiusvis partis instantiam, sed etiam ex officio compellatur.

§. 6. Insuper ad evitandum moram, & omnem poenam exinde juridicè provenientem, liceat unicuique debitori, qui creditoris sui copiam non habuerit, pecunias in eodem Monte actualiter deponere, quæ creditor venienti possint liberè consignari; quod si etiam ipse debitor velit moræ litem effugere, & præterdare non esse locum consignationi, & desuper audiri, ad ipsum facto prius in ipso Monte pecuniario depositum, tam in futurum quàm in pendentibus negotiis, & præcipue in quibuscunque difficultatibus

pro

Judices
Alma Ur-
bis summas
pecunias
deponenda
deponi fa-
ciunt penes
Montem
Pietatis.

Depositum
obligatio
nulla
iusticia ex-
pena.

Usus cedu-
larum ac
pignorum
non tolli-
tur.
Lites ven-
ientes inter
aliquos de-
bitor depo-
nit penes
Montem.

Debitor
omnes lites
penes Mon-
tem depo-
nit.

ANNO	GREGORIUS DECIMUS TERTIUS.	515 ANNO
1584.	pro loco tuto ipsum Montem eorum arbitrio eligere possint.	Dei publice predicare, & qui ex vobis Presb. ter fuerint quorumcumque utriusque sexus Christi fide- lium confessiones audire possint, ex illo concessio- ni huiusmodi tempore, etiam Scholares & alii Re- ligiosi vestri sacris Ordinib. nondum initiati, aliis ta- men idonei ad predicandum verbum Dei passi, & ubique mittuntur. Verum quia nonnullis dubitatio curiosius incescit, an dictum privilegium predicandi, etiam eos comprehendat qui ad Ordines ipsos nondum ascenderunt.
Judicum contrave- nientium pena.	§. 7. Judices verò quacumque præsuleant di- gnitate aliter decemtes indignationis nostræ po- enam incurrant.	§. 1. Nos quoscumque hoc scrupulo eximere vo- lentes, Præsentium auctoritate declaramus, ac etiam decernimus, vestrum unicuique etiam ad sacros Or- dines prædictos non promoti, prædicationis munus in vim privilegii huiusmodi exercere potuisse & pos- se. Vobis insuper concedentes, ut etiam Clerici ve- stri primam tantum tonsuram insigniti, prout hucusque fecerunt, valeant deinceps ipsum Dei verbum ubi- que populo predicare.
Ministri Montis sint diligentes.	§. 8. Partes verò aliter deponentes periculo om- ni subiaceant, nec à creditoribus se propterea li- beratum iri intelligant.	§. 2. Distinctius inhibentes universis & singulis locorum Ordinariis, & quibuscvis aliis quacum- que dignitate & auctoritate fungentibus, ne quem- quam vestrum quovis prætextu præmissorum oc- casione impedire, vel molestare audéant quoquo modo.
Deponen- tium affectu- ratio.	§. 9. Ac ipsius Montis Provisores & Ministri, ita sint in conservatione fideles, & consignatione cele- res, ut ceteri etiam non ligantes ad deponendum penes eos alliciantur.	§. 3. Non obstantibus Apostolicis, ac in genera- libus, & provincialibus Conciliis editis, generali- bus vel specialibus, constitutionibus & ordinatio- nibus, ceterisque contrariis quibuscumque.
Decretum Montis.	§. 10. Utque magis sic deponentibus sit consul- tum, volumus non solum ipsius Montis, sed & De- positarii ab eo pro tempore eligendi bona, fore & in- telligi pro dictorum depositorum restitutione effica- citer obligata, perinde ac si cum unoquoque à sa- lis obligatio intercessisset, eaque in eventum discul- sionis, tamquam publicatio Camerali instrumento munita, ceteris præferri.	§. 4. Volumus autem ut Præsentium transumptis, etiam impressis, manu Notarii publici, seu Secre- tarii Societ. subscriptis, & sigillo persone in digni- tate Ecclesiast. constitutæ, seu etiam dictæ Societ. Præpositi generalis magis, eadem prorsus fides ad- hibeatur, quæ ipsis Præsentibus adhiberetur si essent exhibitæ vel offensæ.
Notario- rum & Judi- cium decretum pena.	§. 11. Sicque per quoscumque Judices ordinarios & delegatos, etiam causarum Palatii Apostolici Au- ditores, sublatâ eis & eorum cuiuslibet quavis aliter ju- dicandi & interpretandi facultate & auctoritate, ubi- que judicari & definiri debere, irritum quoque & inane, si secus super his à quoquam quavis auctori- tate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, decernimus.	Datum Romæ apud Sanctum Marcum, sub annu- lo Piscatoris die 20. Novemb. 1584. Pontifica- tus nostri anno, 13.
Executio- nem huius const. depu- tatio.	§. 12. Et quod Notarii & Judices contra præmis- sa venientes, Notarii videlicet omnibus emolumen- tis suorum officiorum unius anni dicto Monti appli- candis, prima vice, deinde ipsis officiis privati sint, & præterea excommunicationis sententiam prima vice prædictâ incurrant eo ipso. Idemque etiam si Archiepiscopi, Episcopi, seu alii Prælati fuerint, pena quingentorum ducatorum auri de Camera eidem Monti pariter applicandorum sine remissionis spe mulctentur, earundem Præsentium auctoritate statuimus.	De forma, qua Clerici R. C. Apost. expeditiones Camerales signare debent, sub nomine & sigil- lo S. R. E. Card. Camerarii.
Camerarii facultas de clarandi, dubia.	§. 13. Quocirca dilecto filio nostro Philippo S. An- geli in foro piscium Diacono Card. Vastavillano nun- cupato S. R. E. Camerario, præsentî ac pro tempore existenti dicti Montis protectori, tenore Præsentium præcipimus & mandamus, ut Monti præfato, ac il- lius Revisoribus & Ministris, in præmissis efficacis defensionis auxilio assilens, faciat omnia & singula præmissa, etiam sub censuris Ecclesiasticis, & pecu- nariis ejus arbitrio moderandis penis, per eos ad quos spectat inviolabiliter observari.	Hæc bulla confirmata & innovata fuit prævia ejus in fessione a Six. V. die 1. Aprilis 1587. sed à me uti simpliciter confirmatoria hic solummodo indicatur.
Claufulæ derogatio.	§. 14. Et ubi super præmissis tempore procedente dubium aliquod emeruerit, illud auctoritate nostra declaret, & interpretetur, & in casibus dubiis sem- per depositum in ipso Monte faciendum esse de- cernat.	Reformationes Camerae & alia de materia, vide sup. in Pii IV. constit. 55. Romanus. fol. 79. ubi plenè notavi. Et jurisdictiones Camerarii attende infra in constit. 65. Clem. VIII. In con- ferendis, ubi fusius omnia indicabo, in Tomo III. fol. 100.
D. P. A. 13. 1. Octob.	§. 15. Præmissis constitutionibus, & ordinatio- nibus Apostolicis, stylo palatii, ceterisque contra- riis non obstantibus quibuscumque.	GREGORIUS EPISCOPUS, Servus servorum Dei. Ad perpetuam rei me- moriæ.
XCIV.	Datum Romæ apud Sanctum Marcum sub annu- lo Piscatoris, die 1. Octob. 1584. Pontificatus nostri anno 13.	Quæ à Rom. Pontificibus optima ratione sunt decreta, ac roborata, ea ne sensim labefa- scentur & pereant, nostrum in primis est officium providere.
Edita A. D. 1584.	Quod Religiosi Societatis Clericorum Regular. Jesu, etiam sacris Ordinibus non initiati, verbum Dei predicare possint.	§. 1. Olim igitur fel. rec. Paulus Papa III. præde- cessor noster, propositis penis gravissimis officio- rum, & beneficiorum privativis, atque excommuni- cationis lætæ sententiæ ijs factis incurrendis per- petua constit. prohibuit Decano, & Clericis Cam. Apost. qui omnia quæ in eadem Camera agunt, S. R. E. Ca- merarii nomine agunt, ne res Camerales inficij, so- Camerario cui rerum & jurium Camerae cura est spe- cialiter commissa, qui quæ vivæ vocis oraculum ha- bet, & in suo officio personam Pontificis representat, ullo modo expedirent, neve ullas expeditiones Came- rales gratiam vel iustitiam concernentes, si mixtas, aut ab illis dependentes, aliter quam sub nomine Ca- merarii, & sub sigillis penes ipsum existentibus, fa- cere aut expedire possent.
Causa hu- jus declara- tionis.	Alia de hac religione indicavi tibi sup. in constit. 25. Pauli III. qui eam primo confirmavit. Regi- mini. Tom. I.	§. 2. Postea verò piez mem. Julius Papa III. di- ctam
	GREGORIUS PAPA XIII. Dilectis filiis Præposito & Religiosis Societa- tis JESU, salutem & Apostolicam bene- dictionem.	

1584.
Jul. 11 I.
eant refer
& approbat
in cons. 3.
To. I.

Sed tamen
Clerici
abique no-
mine, & si-
gillo Came-
rari expen-
siones novis
cum clau-
luc expressis-
debant.

Ideo hic
Pont. innovat
& confirmat dd.
constit.
Paul. III. &
Julii III. &
invalide
prædictas
exped. a
Clericis
faciendas.

Præcepit
que eidem
Clericis, ut
omnes

clau Pauli prædecessoris constitutionem cum omni-
bus suis clausulis approbavit & innovavit, decrevit-
que, quod Camerarius solus posset officii sui sigil-
lum tenere, Clerici verò & Decanus dictæ Camere
sigillum nullum habere possent.

§. 3. Et quamvis decreta huiusmodi, & propter
suam ipsorum æquitatem, & propter Romanorum
Pontificis auctoritatem, & propter penarum in eis pro-
positarum gravitatem, debuissent diligentissime ser-
vari quemadmodum antea fuerant servata; tamen
accepimus nonnullis abhinc annis violari coepta esse,
ac multas recentes Camerales expeditiones, tam gra-
tiam quam iustitiam, aliaque negotia concernentes,
sine debito ac usitato nomine Camerarii, & ejus si-
gillo, sine solita subscriptione, Visa, &c. privatim
autem, & singulariter sub ipsorum Clericorum,
etiam prætextu rescriptorum, & commissionum ipsis
singulis, seu etiam ipsis omnibus Clericis directarum
nominibus & sigillis factas, totidemque in Camera
sigilla, quot in ea sunt Clerici irrepsisse, novumque
expediendi genus, tam in Curia quam extra introdu-
ctum esse, sub prætextu tit. Præfecturæ Annonæ,
Præfidentiarum viarum, Dohanarum, Græciæ, Zec-
chiæ, Riparum, Carcerum, superintendentiæ Collis
Scipionis, aliaque noviter repertis Salariis, & Gabellæ
carnis, privatis etiam singulorum Secretariis quando-
que ad huiusmodi expeditiones adhibitis; sicque tam
vigore commissionum & rescriptorum, in causis Ca-
meralibus, & aliis infra scriptis, quam etiam auctoritate
ordinaria, ac ex decreto Camere, monitoria, de-
creta, citationes, mandata executiva, brachia sæcula-
ria, aliaque expeditiones, Annonam, Vias, Ripas,
Dohanas, Græciam, Carceres, Zeccam, superintenden-
tiam Collis Scipionis, Salariam, Gabellam car-
nium, Annatam, Quindennia, Spolia, ac Commissa-
riorum deputaciones, omnis plerumque fidei ius-
sionibus & juramentis, præstari consuevis, expedita
esse novis cum clausulis, Camerario tantum, & non
supradictis Clericis permixtis ac convenientibus, dum
alii ita scribunt: Expositum fuit nobis in Cam. Apo-
stolica; alii, Auctoritate qua fungimur in hac par-
te; alii, Juxta mandatum Sanctissimi nobis ore-
tus factum; alii, Dat. Romæ in Cam. Apostolica;
alii, Dat. Romæ in palatio nostro; & hæc non-
numquam sola cum subscriptione Auditorum, aut
Secretariorum dictorum Clericorum, talibus etiam
expeditionibus in Cam. quandoque minimè registra-
tis, magna cum summi Camerarii Tribunalis in-
dignitate, & rerum tum privatarum, tum publica-
rum incommodo & jactura, etiam aliquando Cleri-
cos causas à Camerario ad se advocasse, Camerario-
que inhibuisse.

§. 4. His igitur omnibus intellectis, perspectaque
inanitate causarum hujus tantæ rerum perturbationis
à dictis Clericis ad excusationem propositarum, in-
dignum judicantes, iusta, ac legitima Rom. Pontificis
decreta perfringi privatâ licentiâ, neque suum Ca-
merario jus atque honorem, ab his præsertim quo-
rum ipse est caput, relinquere, & conservari, istum-
que Clericorum expediendi modum contra antiquas
expeditiones, & constit. Apostolicas esse intelligentes, Mo-
tu proprio, & ex certa scientia nostra, & deque Apo-
stolicæ potestatis plenitudine, hac nostra perpetua
constitutione, supradictas Rom. Pontificis prædecesso-
rum nostrorum constitutiones, declarationes, &
decreta omnia auctoritate Apostolica tenore Præsen-
tium approbamus & confirmamus, & quatenus opus,
eadem omnia de novo decernimus dictasque Clerico-
rum expeditiones omnes, necnon battina, edicta,
causarum à Camerario avocationes, & inhibitiones
de cetero faciendas, nullas, irritas, & invalidas ex nunc
esse declaramus, omnesque à dictis Clericis ita ut di-
ctum est, ad quævis officia, exercitia, curationes,
administrationes deputatos revocamus, neve se in
eis amplius ingerere possint sub pœnis nostro &
Rom. Pontificis pro tempore existentis arbitrio sta-
tuendis, prohibemus.

§. 5. Eidem quoque Decano, & Clericis universis
& singulis, nunc & pro tempore existentibus, sub

omnibus pœnis quæ per supradictas constit. irrogan-
tur, ipso facto incurrendis, præcipimus & manda-
mus, ne ullo umquam tempore, siue universè siue
privatim & singulariter, quicquam etiam vigore
quorumcumque Officiorum, præfidentiarum, &
præfecturarum, seu rescriptorum, & commissionum,
etiam manu nostra vel Successorum nostrorum signa-
tarum, ipsis Clericis & cuicumque eorum directarum
expedire possint, nec quascumque patentes Lit. ac
supradictas, aliaque ejusmodi expeditiones, aliter
quam sub nomine, & sigillo Camerarii facere, aut
subscribere audeant, neque alia subscriptione uti,
quam, Visa, &c. neque expeditiones abbi quam in
Camera registrarî patiantur. Hæcque in omnibus ex-
peditiombus per Clericos supradictos faciendis dili-
genter servari volumus & mandamus, exceptis dum-
taxat & reservatis Guberniis Civitatis Veteris, Tul-
phæ, Cæsarum & Terrarum Arnulphorum, in qui-
bus de more expedire possint.

§. 6. Sub eidem quoque pœnis omnibus ejusdem
Camere Notariis inhibemus, ne in posterum præ-
dictas, nec ullas alias expeditiones quocumque no-
mine appellatas, gratiam vel iustitiam concernen-
tes, aut mixtas, tam in Rom. Curia quam extra eam
alter quam sub nomine & sigillis pro tempore exi-
stentis Camerarii scribere, subscribere, aut expedi-
re audeant.

§. 7. Itidem quoque & sub eidem pœnis, simili
modo incurrendis inhibemus dictorum Clericorum
Secretariis, & Auditoribus, & aliis quibuscum-
que extra Cameram existentibus, ne ullas omnino
expeditiones ex supradictis, nec alias quascumque
super rebus ad dictam Cameram pertinentibus, vel
ab eis dependentibus facere, aut subscribere, seu
in eis le ingerere quocumque prætextu seu colore
audeant.

§. 8. Omnes autem supradictas, & alias Camera-
les expeditiones, necnon tractas tritici, & aliarum
segetum, etiam extra Statum ecclesiasticum, earum-
que expeditiones ad Camerarium solum, & non ad
alium spectare, & pertinere decernimus.

§. 9. Et quas contra formam hujus nostræ constit.
in totum vel in partem in futurum fieri contigerit,
omnino nullas atque irritas esse declaramus. Sic
que per quoscumque Judices ordinarios & delega-
tos, etiam causarum Palatii Apost. Auditores, &
S. R. E. Card. sublatâ eis & eorum cuilibet quavis al-
ter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate,
judicari & decidi debere mandamus. Decernentes
irritum & inane, si secus super his à quoquam quavis
auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit at-
tineri.

§. 10. Ac mandantes dilecto filio nostro Philippo
S. Angeli in foro piscium Diac. Card. Vastavillano mo-
derno, ac pro tempore existentis, nostro & S. R. E. Ca-
merario, ut pro præmissorum observacione, execu-
tione & implemento, omnibus & singulis præfatis,
quibus opus fuerit præcipiat, mandet, & inhibeat, il-
loque citet, cogat, & compellat, & aliis, prout sibi
videbitur, contra eos procedat, ceteraque alia faciat
& exequatur, quæ in præmissis, & circa ea necessaria
fuerint, & sibi videbuntur quomodolibet opportuna.
Nos enim motu, & potestatis plenitudine similibus
eidem Philippo Card. & Camerario, ultra ejus po-
testatem & auctoritatem, in præmissis plenissimam
licentiam & facultatem concedimus.

§. 11. Non obstantibus præmissis, & nostra de non
toliendo jure quæstro, ac aliis Apostolicis constitu-
tionibus, dictaque Camere juramento, confirma-
tione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis,
statutis & consuetudinibus, necnon privilegiis, in-
dultis, & litteris Apostolicis illi, ac prædictis Præ-
fidentibus, & Clericis quocumque concessis, confir-
matis, & innovatis, quibus omnibus illorum tenores,
perinde ac si ad verbum infererentur Præsentibus pro
sufficienter expressis habentes, harum serie ad effe-
ctum omnium præmissorum, specialiter & expresse
derogamus, contrariis quibuscumque, aut si Decano,
Clericis, ceterisque prædictis, ac quibuscvis aliis,

1584.
exped. sub
nomine &
sigillo Ca-
merarii fa-
ciendæ, &
cum sola
subscrip-
tione, &c.
exceptis
causis pu-
bliciorum
eis dato-
rum.

Inhibet
Notariis ne
expeditiones
alias alter
scribant.

Juber etiam
Clericorum
Auditoribus
&c. ne ex-
pediant super
rebus ad
Cameram
pertinentibus
subscribant.

Camere
expedit, &
tractas tru-
mentorum
pertinentes
ad Came-
rium.
Decretum
irritans.

Camerarii
facultates
contra ino-
bedientes.

Claufulæ
erogato-
riz.

Dat. P. A.
3. 5. Dec.

Admissio
registratio
in Cam.

XCIV.

Edita An D.
1584.

Exordium.

Fili adole-
scentes Stu-
dii Colleg.
Societ. Jesu
de Urbe
incumben-
tes ad pia
opera hic
enunciata
exercen-
dum se con-
focuerunt.

Postea in
diversis
mundi par-
tibus, ubi
fuerunt
Societ. Col-
legia, exter-
ni schola-
res, eadem
imitari
ceperunt.

communiter vel divitum ab Apostolica Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1584. Nonis Decem, Pontificatus nostri anno 13.

Die 17. Decemb. 1584. Ex decreto Cam. Apostolicæ, admisse & registratæ fuerunt præscriptæ litteræ Apostolicæ, & collationatæ concordant.
A Martini.

Institutio Confraternitatis seu Congregationis Externorum Scholarium, studiis Collegii Societatis JESU de Urbe institutum, sub invocatione Annunciationis B. MARIÆ, ad pia opera exercendum. Et facultas alias aggregandi Congregationes, cum Indulgentiarum communicatione.

Extendit istam Congregationem etiam ad Scholares, Sixtus V. in consp. 53. Superna, ubi alia notabo, quæ advertenda sunt.

GREGORIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Omnipotens Dei Salvatoris Nostri, qui ex pietatis suæ superabundantia, fidelium mentibus celestis inspirationis gratiam, & devotionis ardorem, ad divinæ Majestatis obsequia, & piorum operum exercitia salubriter peragenda, continuo infundit, exemplo adducti, in eam Pastoralis officii curam cogitationemque sedulo incumbimus, per quam ipsorum fidelium fructuosus hujusmodi operibus & exercitiis vacantium, religio, & devotio continuum suscipiat incrementum, elique votiva salus proveniat animarum.

§. 1. Alias siquidem per nos accepto quod plerique probi & pii adolescentes, bonorum litterarum studiis in Collegio nostro Societatis JESU de Urbe insistentes, singulari erga Beatissimum MARIAM Virginem Dei Genitricem affectu ducti, ac etiam Lectorum, & Magistrorum suorum spiritualibus cohortationibus ad id accensis, Ecclesiam Annunciationis ejusdem B. Mariæ in corpore ædificiorum dicti Collegii consistentem, certis statutis diebus & horis frequentare, & cum eximia devotionis sinceritate, cordisque contritione, conscientiam suam per Confessionis, & sanctissimæ Eucharistiæ ministerium expurgare, ac divinis officiis, colloquiis, & exhortationibus spiritualibus, aliisque piis & salutaribus operibus vacare soliti erant, factoque inde ad illorum exemplum majore aliorum concursu, mutuis studiis se invicem confociaverant. Nos ut pium hoc institutum per amplius coalesceret, eisdem, & aliis Christianis hujusmodi spiritualibus operibus & exercitiis pro tempore addictis, nonnullas Indulgentias, & peccatorum suorum remissiones concessimus, prout in nostris inde confectis Litteris plenius continetur.

§. 2. Cum autem sicut exhibita Nobis nuper pro parte dilecti filii Præpositi Generalis dictæ Societatis petitio continebat, in diversis mundi partibus, & præsertim insignioribus Europæ civitatibus, ejusdem Societatis Collegia ad juventutem bonis moribus & virtutibus orandam, ac vera pietate, sacraque doctrina imbuendam, propagare, illorumque externi Scholares ibidem studiorum causa confluentes, optima devotionis, & piorum operum hujusmodi exercitia ferventi studio imitari, & exinde multiplices fructus ad Dei gloriam ipsiusque divini Numinis cultum, ac B. Mariæ Virginis honorem necnon publicam salutem, & spirituales consolationem provenire cœperint.

§. 3. Et operæ pretium sit, ut quemadmodum piarum, & fructuosarum exercitationum hujusmodi institutum à Scholaribus dicti Collegii de Urbe, quod nostris auspiciis & impensis, magnifico ædificiorum & structurarum opere a fundamentis innovatur & exstruitur, primordium suum in dicta Ecclesia Annunciationis B. Mariæ habuit, ita quoque inibi eorumdem Scholarium primaria Congregatio, seu primarium Sodalitium, sub titulo ejusdem Annunciationis B. Mariæ ad laudabile eorum in piis operibus & officiis hujusmodi studium nostris beneficiis & Indulgentiarum præmiis conservandum ac augendum, stabilietur & instituat, pro parte ipsius Præpositi Nobis fuit humiliter supplicatum, ut præmissis annuere, & de super opportune providere de benigntate Apostolica dignaremur.

§. 4. Nos igitur religiosum ipsorum Scholarium, & in his spiritualibus exercitiis studium, piæ voluntatis affectu prosequi volentes, ipsi quoque Præpositum à quibuscumque excommunicationis, suspensionis & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & pœnis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existat, ad effectum Præsentium dumtaxat consequendum harum serie absolventes, & absolutum fore censentes; Necnon Litterarum prædictarum tenores Præsentibus pro expressis habentes, hujusmodi supplicationibus inclinati, in eadem ecclesia, unam seu unum, externorum Scholarium dicti Collegii nostri, ac etiam aliorum Christianissimæ Societatis prædictæ devotorum primariam Congregationem, seu primarium Sodalitium, sub titulo Annunciationis B. Mariæ hujusmodi, quæ, seu quod per prædictum, & pro tempore existentem Præpositum Generalem dictæ Societatis, seu illo defuncto, donec alius ad officium Præpositi Generalis hujusmodi canonice assumatur, per Vicarium etiam Generalem ejusdem Societatis dirigi debeat, Apostolica auctoritate tenore Præsentium perpetuo, sine tamen ipsius Societatis præjudicio, erigimus, & institui.

§. 5. Ut autem primaria Congregatio, seu primarium Sodalitium hujusmodi, per gratiarum & munerum celestium largitionem, devotionis ac pietatis jugiter proficiat incrementis, de omnipotentis Dei misericordia, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus auctoritate confisi, omnibus & singulis Christianis verè poenitentibus, & confessis, qui deinceps in Sodales ejusdem primariæ Congregationis, seu primarii Sodalitii recipiantur; tam die receptionis eorum, si sanctissimum Eucharistiæ Sacramentum in prædicta ecclesia, aut ubicumque poterint eo die sumperint, quam in mortis articulo.

§. 6. Necnon ipsis, ac omnibus & singulis aliis utriusque sexus Christianis etiam verè poenitentibus & confessis, sacraque communione refectis, qui ecclesiam prædictam die festivitatis ejusdem Annunciationis B. Mariæ à primis vespere usque ad occasum solis ipsius festivitatis devotè visitaverint, & inibi pro Reip. Christianæ conservatione & augmento, hæreticæ extirpatione, Principumque Christianorum mutua & universali pace, ac nostra & pro tempore existentis Rom. Pont. prosperitate, vel alias preces, prout unicuique suggeret devotio, ad Deum devote effuderint.

§. 7. Insuper eisdem Sodalibus similiter verè poenitentibus & confessis, qui in Nativitatis & Ascensionis D. N. Jesu Christi, ac Annunciationis, Assumptionis, & Conceptionis, necnon Nativitatis B. Mariæ Virginis festis diebus, prædictum Sanctissimum Sacramentum, ibidem vel alibi acceperint, plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam & remissionem, Apostolica auctoritate, & tenore Præsentium misericorditer in Domino concedimus & elargimur.

§. 8. Ipsique Sodalibus, qui de eorum numero existentium, vel aliorum Christianissimum defunctorum corpora ad sepulturam ecclesiasticam affiliaverint.

1584.
Unde oportu-
m videtur, ut
stabilietur
in dicta ec-
clesia de Ur-
be, primaria
Congregatio
qua alia
eorum
habuerunt.

Hic idem
Pont. emi-
bitur per
sub regimi-
ne Præposi-
ti gen.
Societ. Jesu.

Sodalibus,
Indulg.
plen in in-
gressu, &
transito
moris
largiunt.

Visitati-
busque ejus
ecclesie de
Annuncia-
tionis B.
Mariæ.

Sodalibus
confessis
& diebus
hic expres-
sis, indul-
gentiis
concedit.

Annui-
aurem de
poeniten-
tiis relaxat
Sodalibus af-
filiatis, cor-
pora de
funct.

Aut si im-
pediti sint,
pro defun-
ctis vel in-
firmis oran-
tib.

Interessen-
tibusque
Congrega-
tionis &c.

Conficien-
tiam exami-
nantib.

Infirmos
vel carcer-
atos visita-
tibus.
Inimicos
que recon-
ciliantib.

Revocatio
aliorum
indulg.

Sodales
abientes
& dicta ope-
ra exerce-
re gaudeat
eisdem indulg.

Et tam
praesentes
in Urbe,
quam
abientes,
Statione
Urbis con-
sequantur
visitando
eccles. ut
hic.

Facultas
Praepositi
gen. aggreg-
andi alias
Congreg.

Hoc am-
plius Six.
V. & decla-
ravit Clem.
VIII. cit.
in rub.

Et sique
granas & in-
dulg. com-
municandi.

§. 9. Aut infirmi vel impediti, audito signo campanae, genuflexi, si per infirmitatem licebit, orationem Dominicam, & salutationem Angelicam, pro salute animae defuncti, vel corporis infirmi recitaverint.

§. 10. Necnon qui Congregationibus, tam publicis quam privatis, ac divinis officiis, spiritualibusque colloquiis exhortationibus & aliis piis officiis, etiam in Sodalibus, seu aliorum Christi fidelium defunctorum suffragium per primariam Congregationem, seu primarium Sodalitium ordinandis, & ab ipso Praeposito, seu Vicario Generali approbandis, quique diebus feriatis Missae sacrificio interfuerint.

§. 11. Aut Vespertino tempore antequam cubent, conscientiam suam diligenter examinaverint.

§. 12. Seu pauperes infirmos, tam Sodales quam alios in hospitalibus vel privatis domibus, necnon carceratos visitaverint.

§. 13. Aut pacem inter inimicos conciliaverint, quoties horum quodvis fecerint, unum annum de eis injunctis, vel alias quomodolibet debitis poenitentibus Apostolica auctoritate, & tenore similibus etiam misericorditer in Domino relaxamus.

§. 14. Quaecumque alias Praesentibus non expressas indulgentias, & peccatorum remissiones, etiam plenarias, & relaxationes, Scholaribus & aliis praedictis, ratione dicti eorum instituti, vel alias in communis per Nos & Sedem Apostolicam quomodolibet concessas, revocando & abrogando.

§. 15. Insuper ne praefati Sodales, si aliquando eos ab ipsa Urbe abesse vel alibi commorari contingat, hujusmodi indulgentiarum & aliarum gratiarum spiritualium effectus & fructus frustrari remaneant, eisdem Sodalibus extra Urbem ubique locorum pro tempore commorantibus, ut in locis ubi eos pro tempore residere, seu morari contigerit, opera praedicta, quae ipsi Sodales in Urbe praesentes pro singularum indulgentiarum, remissionum, & relaxationum hujusmodi consequutione observare deberent, apud ecclesias eorumdem locorum aut alibi prout poterunt observando, & exequendo, omnes easdem indulgentias, remissiones, & relaxationes habeant, & illae eis pariter suffragentur.

§. 16. Necnon tam in Urbe praesentes quam alibi ubique locorum commorantes, Sodales primariae Congregationis, seu primarii Sodalitii hujusmodi, qui singulis quadragesimalibus & aliis anni temporibus, ac diebus Stationum ecclesiarum dictae Urbis, & extra illius muros, quae a Christifidelibus pro consequendis indulgentiis & remissionibus visitari solent, dictae Societatis, si ibi fuerit, alioquin aliam ecclesiam, seu cappellam in locis ubi eos pro tempore residere seu morari contigerit, ut praefatur, devotè visitaverint, & ibi septies orationem Dominicam, & septies salutationem Angelicam recitaverint, tot, & easdem indulgentias consequantur, quas consequerentur, si iisdem temporibus & diebus singulas ecclesias dictae Urbis, & extra illius muros hujusmodi pro iisdem Stationibus & Indulgentiis consequendis deputatas personaliter visitarent, ac omnia & singula, quae pro hujusmodi gratiarum consequutione quomodolibet requiruntur plenè adimplerent.

§. 17. Preterea eidem Praeposito, seu Vicario Generali pro tempore existenti, ut in quibuscumque aliis dictae Societatis Collegiis extra Urbem praedictam per universum Orbem nunc & pro tempore erectis, seu universis ecclesiis pro eorumdem piorum operum incremento, quaecumque alias, seu quaecumque alia Scholarium ibidem litterarum studiis insistentium, & aliorum Christifidelium ipsi Societati devotorum Congregationes, seu Sodalitium sub eo titulo Annunciationis B. Mariae, quae ab ipsa primaria Congregatione, seu primario Sodalitio tamquam membra à capite dependant, auctoritate nostra, sine tamen Societatis, aut Collegiorum, & ecclesiarum hujusmodi praedicti, erigere & instituere.

§. 18. Illaque, seu illa eidem primariae Congregationi, seu primario Sodalitio aggregare, ac eis sic

rectis, institutis, & aggregatis eorumque Sodalibus, praedictas ac omnes, & quaecumque alias Indulgentias, peccatorum remissiones, relaxationes, gratias, & facultates, tam spirituales quam temporales, à Nobis dictaque Sede primariae Congregationi, seu primario Sodalitio de cetero concedendas, ita ut Sodales aliarum Congregationum, seu aliorum Sodalitiorum hujusmodi, observantes & exequentes ea, quae ipsius primariae Congregationis, seu primarii Sodalitii Sodales pro indulgentiis, remissionibus, & relaxationibus hujusmodi consequendis, observare & exequi debent, easdem indulgentias, peccatorum remissiones, & relaxationes pariter consequantur, facultate aggregandi, & gratias hujusmodi aliis concedendi dumtaxat excepta, communicare.

§. 19. Necnon tam Primariam, seu Primarium, quam omnes & singulas ei aggregandas Congregationes, seu omnia & singula ei aggreganda Sodalitium hujusmodi, per se, vel alium, seu alios ejusdem Societatis presbyteros idoneos ad id ab eo deputandos visitare, & pro eorum felici statu, regimine, & directione, quaecumque statuta, constitutiones & decreta, licita tamen & honesta, sacrisque Canonibus, & Concilii Tridentini decretis non contraria, necnon ab ipso Praeposito, seu Vicario, si per alium, vel alios deputandos hujusmodi fiant, examinanda & approbanda edere, ac postquam edita fuerint, quoties pro eorum & temporum qualitate, aut alias expediens ei videbitur immutare, corrigere, moderari, & reformare, aut alia ex integro condere, liberè & licite valeat, eisdem auctoritate Apostolica & tenore, perpetuò concedimus & indulgemus. Decernentes statuta, constitutiones, & decreta hujusmodi, postquam edita, immutata, correctata, moderata, reformata & condita fuerint, ab omnibus Sodalibus praedictis inviolabiliter observari debere.

§. 20. Ac praesentes Litteras sub quibuscumque similibus vel dissimilibus indulgentiarum, & aliarum gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, derogationibus, & aliis contrariis dispositionibus, etiam in favorem Basilicae Principis Apostolorum de Urbe, seu Cruciatæ Sanctae, aut alias per Nos, vel alios Romanos Pontifices successores nostros, aut dictam Sedem, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, Apostolica potestatis plenitudine, seu ad quorumvis etiam Imperatorum, Regum, Reginarum, Ducum, & aliorum Principum instantiam pro tempore quomodolibet factis, minime comprehendi, sed semper ab illis exceptas, & quoties illae emanantur, toties in pristinum statum restitutas, repositas, & plenarie reintegratas, ac de novo concessas esse, & censeri. Necnon omnibus, quos illae concernunt suffragari debere, irritum quoque & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 21. Non obstantibus praemissis, & nostra de Indulgentiis ad instar non concedendis, ac aliis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque, Praesentibus perpetuis futuris temporibus duraturi.

§. 22. Volumus autem ut eorumdem Praesentium transumptis etiam impressis, Secretariis ipsius Societatis, vel Notariis publici manu, & personae alicuius in dignitate Ecclesiastica constitutae, vel pro tempore existentis Praepositi, aut Vicarii generalis ejusdem Societatis sigillo munitis, eadem prout fides ubique locorum in iudicio & extra adhibeatur, quae adhiberetur eisdem Praesentibus si essent exhibitae vel ostensa.

Nulli ergo omnino &c.

Datum Romae apud S. Petrum, anno Incarnationis Dominicae 1584. Nonis Decemb. Pontificatus nostri anno 13.

Contra Exules & alios in Italia commorantes, qui

Tu vide
bullam
Clem.
VIII. mox
curatum.

Congreg.
visita. di.
statu. con-
tend. pro
statum
regimine.

Claufula
praeservati-
va.

Claufula
derogato-
ria.

Transump-
torum &
des.

Dar. P. A.
13. 5. Dec.

XCVIII.

an-

animalia & alia bona in Statu ecclesiastico diripiunt, abducunt, recipiunt, vel permittunt. Ad materiam Exulium & Bannitorum, vide hic infra Six. V. const. 6. Hoc nostrum.

GREGORIUS PAPA XIII.

Universis & singulis presentes Litteras inspecturis, salutem & Apostolicam benedictionem.

Causa huiusmodi consilii.

Non sine gravi animi nostri molestia nuper accepimus, quod licet Nos jam pridem per nostras constitutiones, & Ministri nostri per proclamationes, & ordinationes, ac etiam cohortibus armatis, exulium, ac perduellum, flagitiosorumque hominum audaciam in Statu nostro ecclesiastico reprimere, latrociniaque, & delicta prohibere, ac delinquentes ad aliorum terrorem graviter punire omnibus modis conati fuerimus, nihilominus complures exules & latrones huiusmodi adhuc superiunt, qui propriæ salutis immemores, penalesque impositas parvascentes, assidua furta & latrocinia in animalibus, & jumentis, in statu & ditione nostra existentibus committere non verentur; nec desunt alii, tam nobis quam temporalibus dominis circumvicinis subditi, qui animalia & jumenta illa ita subrepta, sine timore ab ipsismet latronibus emere, & quoquo versum abigere, & distrahare non dubitant, quo fit, ut illis major præbeatur occasio, & materia delinquendi, & assidua Camera Apostolica, ipsique Dohanerii dohanæ nostræ Patrimonii, ac alii pecudarii, & aratores animalia huiusmodi habentes maximum inde patiantur detrimentum.

Excommuni-
cantur
diripientes
animi sua
& alia bona
in Statu Ec-
clesiæ illa
emittentes &c.

§. 1. Quare Nos huic malo obviam ire, & quieti, ac indemnitati publicæ, quantum in Nobis est, prospicere volentes, ac, ut quos legum, poenæque corporalis timor non retinet, saltem gladii spiritualis fulgor à malo deterreat, præsertim cum non solum pium, & meritorium, sed etiam justum ac necessarium sit, tales continuos ac notorie criminosos, ac ab eis ementes res furtivas utroque gladio, severitate opportuna, corrigi, atque puniri, perpetuo hoc edicto statutum, omnes & quoscunque tam huiusmodi animalia & jumenta, aliaque res & bona cuiuscunque generis & speciei in statu nostro temporali deripientes, abducunt, & furto subtrahentes, quam ementes, permittentes seu ab eis illa quovis modo recipientes, & cum eisdem contrahentes, seu quovis titulo, colore, causa, vel prætextu penes se habentes & retinentes, cuiuscunque status, gradus, conditionis, sexus, qualitatibus, dignitatis aut præeminentiæ fuerint, tam laici quam clerici, & presbyteri, etiam regulares & seculares, & non solum in dicto Statu nostro ecclesiastico, sed etiam in quovis Regno, Statu, Dominio, Territorio, Civitatibus, Terris, & locis universæ Italiæ commorantes, ultra alias poenas juris, constitutionum, & proclamatum prædictorum, excommunicationis majoris latæ sententiæ poenam ipso facto incurrere, à qua nullus ab alio quam à Romano Pontifice, aut de ejus speciali mandato, præterquam in mortis articulo constitutus, factaque, aut mandata restitutione, vel satisfactione dictorum animalium, jumentorum, rerum & bonorum huiusmodi dictis assiduis, Dohanerii, & aliis, ut præmittitur, pro tempore subreptorum, abolitionis beneficium valeat obtinere, ipsamque excommunicationis poenam ex nunc, prout ex tunc, & è contra adversus inobedientes, & rebelles quoscunque, & ipsorum quem liber promulgamus per Præsentes.

Episcopi
& c. Status
Ecclesiæ & Re-
gni Neap.
ac Ducat.
Herr. reg.
Ferrariæ, &
Urbini. f.
ciant publi-
cari hanc
const. quæ
est publicata
omnes affi-
ciat.

§. 2. Ac mandamus universis & singulis Archiepiscopis, Episcopis, & aliis Ecclesiarum Prælatibus, eorumque Vicariis in spiritualibus generalibus totius nostri Status prædicti, ac etiam in Regno Neapolitano, ac Statu Magnæ Herrariæ, ac Ferrariæ, & Urbini Ducum in virtute sanctæ obediendiæ, ut cum harum exemplaria, etiam impressa manu Nota-

rii publici subscripta, sigilloque personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munita, exhibita eis fuerint, in omnibus Civitatibus, terris, oppidis, locis, castris, ac Diocesis, præsertim Statu nostro prædicto circumvicinis ad valvas Ecclesiæ matricis Civitatum, terrarum, oppidorum, castrorum & locorum suæ Diocesis quamprimum affigi & publicari faciant. Quæ quidem exemplaria, seu transumpta, sic affixa & publicata, ubique, in iudicio & extra illud fidem faciant, omnesque supradictos, ac alios præsentibus Litteris nominatos, vel quomodolibet comprehensos taliter ligent, arcent, afficiant, & obligent, ac si unicuique personaliter intimata fuissent.

§. 3. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon privilegiis, indulgentiis, exemptionibus, & litteris Apostolicis quibuscunque personis quacunque dignitate Ecclesiastica vel temporali prædictis, conjunctim vel separatim concessis, etiam quibus caveatur expresse, quod excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, & ad verbum & indulto huiusmodi mentionem, ceterisque contrariis quibuscunque.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 7. Decemb. 1584. Pontificatus nostri anno 13.

Die 10. Decemb. 1584. Suprascriptæ litteræ in forma Brevis, ex decreto in plena Camera Apostolica facto, admisse & registratæ fuerunt in actis meis, & in libro adversorum fol. 99.

Scio Penellus Cam. Apost. Not.

Quod Eremitæ Congregationis Camaldulensis Ordinis S. Benedicti, Religiosos alterius Ordinis recipere possint. Ipsi verò ad alium etiam Eremitarum S. Romualdi Montis Coronæ transire nequeant.

Quæ spectant ad ipsam Congregationem Camaldulensem, vide sup. in const. 1. Alex. II. in Tom. I. fol. 26. Nulli ubi plenè dixi. Quæ verò Congregationem Eremitarum S. Romualdi respiciunt attende sup. in Clem. VII. const. 23. Vestrum ubi dixi in Tomo I.

GREGORIUS PAPA XIII.

Dilecto filio Priori Generali Monachorum Ordinis Camaldulensis nunc & pro tempore existentis.

Est Eremitæ Camaldulensis Aretinensis Diocesis antiquitas, & Monachorum in aspera illa solitudine Deo assidue famulantium religio, ac morum, vitæque innocentia & sanctitas, quæ omnia non solum ab aliis sæpe audivimus, sed etiam nostris oculis aliquando vidimus, & admirati sumus, ut merito sacrum illum locum, & Ordinem dignum semper qui præcipue privilegiis fulciatur iudicemus.

§. 1. Itaque omnes gratias, indulta, & privilegia eidem Ordini, & Eremitæ à Rom. Pontificibus prædecessoribus, sub recipiendis quibuscunque quarumvis Religionum, & Ordinum mendicantium Fratribus religiosis, ad ipsos transire volentibus concessa, rata & firma esse volentes, & quatenus opus sit auctoritate Apostolica tenore Præsentium innovantes, Tibi qui ex illis unus es, ac omnibus tecum in eodem Eremita Altissimo famulantibus, districtè præcipimus & inhibemus, ne ad alium Ordinem, & Religionem, nec etiam ad aliam quæ Montis Coronæ vocatur ejusdem Ordinis Camaldulensis, sine expresso consensu & licentia Superioris ipsius Eremitæ, qui Major appellatur, in scriptis obrenta, transire audeant.

§. 2. Et si qui contrafecerint, excommunicationis, Apostasie, & aliis congruis & arbitrio suo, Successorumque suorum infligendis, & declarandis poenis, subiacere decernimus, ita ut contrafacientes capi,

Clausula
derogato-
ria.

Dat. P. A. 13
7 Decemb.

Admissio, &
reg. in Cam.
Apost.

XCIX.

Edita A. D.
1585.

Eremitæ Cam-
aldulensis
commenda-
tio.

Confirma-
tio privile-
giorum.

Contra-
ventibus
poenæ in-
figuntur.

1585.

Contraria
submoven-
tur.Dat. P. A. 33.
4. Jan.

C.

Edita An. D.
1572.

procedimus.

Carolus
Card. de
Lotharingia
& Carolus Dux
Lotharingie
& Barro-
nis de-
creverunt
accipere
tamam Sedem
Apost. au-
toritate in
Oppido
Pontis Mon-
fionii dioc.
Metens. u-
num er-
ge-
re studium
diversarum
scientiarum
generale, &
unum pres-
byterorum
regular.
Soc. Jesu
Collegium
hu. Jovenus
illorum pro-
filiis ubi ha-
resis malum
diffusum est
fana doctri-
na bonique
moris &
arib. insti-
tuanur.

puniri, & ad redeundum cogi possint, ad quae omnia facienda, decernenda & exequenda, & ubi opus sit brachium seculare invocandum, plenam & liberam tibi & Successoribus tuis eadem auctoritate damus & concedimus facultatem.

§. 3. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon indultis, privilegiis, exemptionibus, aliis Religionibus quocumque modo concessis, approbatis & innovatis, ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae apud S. Petrum sub annulo Piscatoris, die 4. Januarii 1585. Pontificatus nostri anno 13.

Institutio Collegii presbyterorum regularium Societatis Jesu, universitatisque Studii generalis diversarum scientiarum, bonarumque artium, in Oppido Pontis Monfionii Metensis Diocesis in Lotharingia, cum redditum assignatione, privilegiorumque assignatione.

Ultra ea quae de hac Societate Jesu notata habes ad Pauli III. const. 15. Regimini. sup. tom. 1. vide etiam inf. tom. 3. ad Pauli V. const. 119. In sede. ubi alias posteriores Constitutiones habes.

GREGORIUS PAPA XIII.

Ad perpetuam rei memoriam.

IN Supereminenti Apostolicae Sedis specula, meritis licet impasibus disponente Domino constituti. & intramentis nostrae arcae revolventes quantum ex literarum studiis Catholica fides, tenebrosa ignorantiae caligine, ac haereticum peste expulsa, augeatur, divini numinis cultus protendatur, veritas agnoscatur, iustitia colatur, reliquae virtutes illustrentur, ac bene, beateque viviendi via pateat, ad ea per quae studia ipsa ubilibet excitentur, & studiosae personae ad excellentem doctrinae fastigium aspirantes, opportuna subventionis auxilia suscipiant, libenter intendimus, & in his nostrae sollicitudinis partes propensius impartimur prout pia personarum praesertim S. R. E. Cardinalium, ac nobilium virorum Ducum vota exposcunt, Nosque locorum & temporum qualitate pensata in Domino conspiciamus salubriter expedire.

§. 1. Exhibita si quidem nuper pro parte dilectorum filiorum nostri Caroli, tit. S. Apollinaris presbyter. Card. de Lotharingia nuncupati, & nobilis viri Caroli Lotharingae, & Barrodis Ducis petitio continebat, quod alias cum Carolus Cardinalis, qui noster, & Sedis Apost. in Lotharingae & Barrodis Ducibus de latere Legatus, ac ratione Ecclesiae Rhemenfis, cui ex dispensatione Apostolica praefisse dignoscitur Dux Rhemenfis, & primus Par Franciae esset, quique Ecclesiae Metensis perpetuus administrator in spiritualibus & temporalibus per dictam Sedem deputatus esset, necnon etiam Carolus Dux praedicti pia meditatione cogitasset, quod longe, lateque diffusum undique esset haereticum malum, quantia quae incommoda & damna universo Orbati ulsisset, illic tutius & fortius remedium afferri nequaquam posse, nisi ubique terrarum doctorum virorum Collegia erigerentur, qui sanam imbuit doctrinam Populos ipsi propinquos Catholicam docerent disciplinam, qua & sibi prodesse & ceteros haereticis expulsi in vera fide valeret confirmare, tanta in Deum religionis permoti, necnon ferventi in proximum caritate adducti decreverunt in Oppido Pontis Monfionii Metensis Diocesis, sub dominio praedicti Caroli Ducis existerent; unum diversarum scientiarum & artium Studium generale, in quo Theologiae, utriusque Juris, ac Medicinae & Philosophiae sectione continue haberentur, ac etiam inibi ut illud Studium majoribus proficiat incrementis, etiam unum presbyterorum regularium Societatis Jesu Collegium erigere & instituire, ad effectum ut illarum partium Jovenus non solum doctrina, quae ad bene beataeque vendum via praecipua est, sed etiam bonis instituat

moribus & exemplis, ita id nostra & sedis praedictae interveniret auctoritas.

§. 2. Quare pro parte eorumdem Caroli Card. & Legati ac Caroli Ducis Nobis fuit humiliter supplicatum, quatenus Praeceptoris & hospitalis S. Antonii Ord. S. Augustini dicti Oppidi domum, & illorum ambitum, ab eisdem Praeceptoris & hospitalis, illorumque Ordine & superioritate, ac mille scut. auri in auro annuum redditum ex monasterio S. Gorgonii Cozien. Ordinis S. Benedicti, dictae Diocesis, seu illius mentis Conventuali, & ipsius monasterii officii claustralibus, ac ab illo dependentibus, & illi unitis Prioratibus, etiam perpetuum discernere & separare, illaque sic discernere & separata hujusmodi, eidem Societati Jesu ad effectum ut ipsi Presbyteri in dictis domo & ambitu discernere, unum Collegium juxta illorum statuta erigere, recipere, regere, visitare & corrigere valeant, pro illius Collegii dote & personarum ipsius Societatis, quae Humaniores literas, Grammaticam & philosophiam ac Theologiam edocubunt sustentatione concedere, applicare & appropriare, necnon ipsi Collegio pensionem annuam aliorum mille & quingentorum scutorum similium, quingentorum videlicet super mensae Episcopalis Metensis & reliquorum mille super universis & singulis quorumcumque Monasteriorum & Prioratuum cujusvis Ordinis existentium, in Metensi, Tullensi & Viridunensi Diocesis consistentium, seu illorum mensarum Abbatium vel Conventuum fructibus, redditibus & proventus etiam perpetuo, donec Episcopus Metensis & Abbates, Priores seu Commandatarii dictorum Monasteriorum & Prioratuum aliqua simplicia beneficia ecclesiastica, ad illorum collationem aut aliam dispositionem spectantia, quorum annuus valor dictam summam mille scut. insimul constituat dicto Collegio pro pensionis hujusmodi extinctione uniri procuraverint pro rata facultatum cujusque & juxta partitionem per ipsum Carolum Cardinalem ac Venerabiles fratres nostros Viridunensem & Tullensem Episcopos faciendam persolvendam, reservare, constituere & assignare, ac in dicto Oppido universitatem Studii generalis erigere & instituire aliasque in praemissis opportune providere & statuere de benignitate Apostolica dignemur.

§. 3. Nos igitur qui dudum inter alia volumus quod petentes beneficia ecclesiastica aliis uniri, tenerentur exprimere verum annuum valorem, secundum estimationem praedictam, etiam beneficii cui aliud uniri peteretur, alioquin unio non valeret, & semper in unionibus commissio fieret ad partes, vocatis quorum interesset, quique hodie praedictum Monasterium S. Gorgonii ex certis tunc expressis causis, regularitate omnique statu & observantia regulari in eo penitus & omnino suppressis, ad facultatem per alias nostras Literas reduximus, prout in illis plenius continetur, attendentes quod ex literarum studio animarum saluti consultum, ac alias spiritualis & temporalis bona mundo proveniunt, primum & laudabile Caroli Card. Legati, ac Caroli Ducis praedictorum decretum plurimum in Domino commendantes, ipsumque Carolum Ducem a cuilibet excommunicationis, suspensionis & interdicti, aliusque Ecclesiasticis sententis, censuris ac poenis, a jure vel ab homine quavis occasione vel causa latis, siquibus quomodolibet innodatus exisset ad effectum Praesentium dumtaxat contineendum harum serie absolventes, & absolutum fore censentes, necnon dicti Monasterii suppressionis tenorem Praesentibus pro expressis habentes, hujusmodi supplicationibus inclinati, Apostolica auctoritate tenore Praesentium perpetuo Praeceptoris & hospitalis hujusmodi domum & illorum ambitum, una cum horro, hortaliis, aliis grebus circumcirca adjacentibus, ad Praeceptoriam & hospitali hujusmodi legitime spectantibus, & pertinentibus, dummodo ad hoc dilecti filii moderni ipsius domus Praeceptoris accedat assensus, ab eisdem Praeceptoris & hospitali illorumque Ordine & superioritate, ex Monasterio vero S. Gorgonii seu illius mentis Conventuali

1572.
Pentru
don am
qu niam
scilicet d
Antonii
annuos red
dus prop
terea per
hunc cen
ali gnan
pro d Col
leg. & pra
didum
studium
gen. instituit

Qui Pon
concedit
petitis, &
Collegium
praedictum
instituit

tuali & illius officii regularibus, & ab illo dependentibus & illi unitis Prioratibus præfatis, mille & quingentorum scut. prædictorum annuum redditum dismembramus & separamus, illaque sic dimembra ta & separata dicto Collegio Societatis JESU ad effectum ut presbyteri Societatis hujusmodi, inibi unum Collegium juxta eorum consuetudines & instituta, ac cum omnibus & singulis solitis privilegiis erigere, illudque per seipsos regere & gubernare, ac visitare & corrigere possint & valeant, ac Carolus Card. & Legatus, necnon Carolus Dux locum & habitationem idoneam & commodam præstare, suppellectilem quoque necessariam & solitam secundum Collegiorum usum instruere teneantur pro illius Collegii dote, necnon personarum ipsius Societatis quæ Humaniores litteras, Grammaticam & Philosophiam, ac Theologiam edocubet sustentatione, concedimus, applicamus & appropriamus. Præterea ut dictum Collegium majores in Vine Domini proferat fructus, quo majoribus sussultum præsidit, eidem Collegio pensionem annuam immunitem & exemptam mille & quingentorum scut. similium, quingentorum videlicet super dictæ Mensæ Episcopalis Metensis & reliquorum mille super universis & singulis quorumcumque Monasteriorum & Prioratum cujusvis Ordinis existentium & in Meriti, Tullenis & Viridunensi Diocesi, præfatis consensum seu illorum menarum Abbatium vel Conventuum fructibus, redditibus & proventus, etiam si super illis aliæ pensiones annuæ aliis assignatæ existant per ipsum Carolum Card. & Legatum, ac pro tempore existentem Episcopum Metensem & dictos filios singulos Monasteriorum & Prioratum eorumdem Abbates & Priores seu Commendatores, & illorum Conventus annis singulis in loco & terminis per ipsum Carolum Card. & Legatum per se, vel alium, statueret ipsi Collegio ac illius personis, vel illarum Procuratori ad id ab eis speciale mandatum habenti perpetuò, donec tamen Episcopus Metensis & Abbates, Priores seu Commendatarii præfati aliqua perpetua simplicia beneficia ecclesiastica ad eorum collationem, provisionem, & aliam quamcumque dispositionem spectantia & pertinentia, quorum annuus valor dictam summam mille scut. infimul constituat, dicto Collegio sufficiat & cum effectu pro pensionis hujusmodi extinctione uniri procuraverint, præ rara facultatem cujusque & juxta partitionem seu commodam divisionem per Carolum Card. & Legatum, ac Viridunensem & Tullenensem Episcopos præfatos faciendam, integrè quotannis persolvendam, dummodo ad id Caroli Cardinalis ac Legati, ac omnium & singulorum Monasteria & Prioratus hujusmodi obtinentium accedat assensus, reservamus, constituimus & assignamus.

§ 4. Et insuper quod in dicto Collegio presbyteri præfati plenissimum, & eum qui juxta dictæ Societatis statuta & formam in singulis eorum Collegiis etiam quam amplissimis, & quibus Universitates famosæ annexæ sunt saltem septuaginta personarum ejusdem Societatis numerum compleant; in eo quoque adsint quatuor Theologiæ professores, quorum unus Sacras litteras, alii duo Scholasticam Theologiam, quartus verò Conscientiæ casus, singuli una lectione quotidiana exponant, ac tres Philosophiæ Regentes, quorum quisque duas quotidie legat lectiones; ordine tamen hujusmodi servato, ut quolibet triennio Philosophiæ cursus integer absolvatur, & quolibet anno unus incipiat, alter vero definat, ita quod duæ lectiones Rhetoricæ ordinariæ singulis diebus, una quoque Humaniorum litterarum, necnon tres aliæ Grammaticæ Classes instituantur; duæ insuper lectiones Græcæ, una in alicujus Auctoris interpretatione, altera verò in Grammaticæ institutione habeatur; una item litterarum Hebraicarum, & altera Mathematicarum lectiones quotidie inibi legantur. Statuimus in ipso quoque Oppido Universalitatem Studii generalis sub invocatione per Carolum Cardinalem & Legatum ac Carolum Duce præfatos eligenda, in quinque faculta-

tibus præfatis quarum duæ Theologiæ scilicet & Philosophiæ presbyteres dictæ Societatis juxta eorum statuta, reliquæ tres earum Decanis, Doctores, & Professoribus dirigendæ ad instar Bononiensis & Parisiensis Universitatum, juxta illarum consuetudines & statuta erigimus & instituimus.

§ 5. Illique sic erectæ & institutæ, ac ejus pro tempore existentibus Rectori, Magistris, Doctoribus, Lectoribus, Præceptoribus, Scholaribus, Bidellis, Nunciis & aliis Officialibus & personis, necnò membris & subditis, quod omnibus & singulis privilegiis, indulgentiis, libertatibus, immunitatibus, exemptionibus, favoribus, gratiis, prærogativis, honoribus ac præminentis Bononiensis & Parisiensis Universitatis præfatis, illorumque pro tempore existentibus Rectoribus, Magistris, Doctoribus, Lectoribus, Præceptoribus, Scholaribus, Procuratoribus, Bidellis, Nunciis & aliis Officialibus ac personis, necnon membris & subditis in genere, tam dicta Apostolica quam aliàs ritè Imperiali & Regia auctoritatibus, ut aliàs quomodolibet concessis seu legitime præscriptis, aut in posterum concedendis & præscribendis, ac quibus illi & illæ utuntur, potiuntur, & gaudent, ac uti, potiri, & gaudere poterunt quomodolibet in futurum, uti, potiri, & gaudere.

§ 6. Necnon iis qui in quavis Universitate disciplinis & facultatibus præfatis studere incæperint, studium suum in ea continuare, & qui in dicta sic erecta aut quavis alia Universitate pro tempore debitum studuisse, ac scientia & moribus idonei comperti fuerint, in Artibus & Medicina, & Philosophia ac Theologia, necnon juribus, aliisque facultatibus prædictis, Baccalaureatus etiam formalis, Licentiatuæ ac Laureæ, necnon Doctores & Magistri, & quovis alios solitos gradus ad ipsius Universitatis Rectore, seu scientiarum in quibus promovendi pro tempore studuerint, Lectoribus aut aliis personis per dictum Carolum Cardinalem & Legatum in & ad tempus in perpetuum deputandis & constituendis, aliisque modo & forma per ipsum statuendis, recipere & ipsorum gradum solita insignia sibi exhiberi facere, & postquam hujusmodi gradus & illorum insignia suscepint, facultates in quibus promoti fuerint, legere & interpretari, ac in eis disputare, necnon quoscumque actus, gradus, seu gradibus per eos receptis convenientes exercere, aliisque omnibus & singulis privilegiis, gratiis, favoribus, prærogativis & indulgentiis, quibus alii in Bononiensi & Parisiensis Universitatibus præfatis juxta illarum constitutiones & mores ad gradus ipsos promoti de jure vel consuetudine, aut aliàs utuntur, potiuntur & gaudent, ac uti, potiri & gaudere poterunt, ut præfertur, quomodolibet in futurum, uti, potiri & gaudere in omnibus & per omnia, perinde ac si gradus hujusmodi in Bononiensi & Parisiensis præfatis & aliis quibuscvis Universitatibus juxta illarum constitutiones & consuetudines hujusmodi suscepissent.

§ 7. Necnon eidem Carolo Cardinali & Legato, & per se, vel alium, seu alios quos ad id duxerit deputandos, & si ei videbitur vocatis Metensi, Viridunensi & Tullenensi Episcopis, pro salubri dictæ sic erectæ Universitatis directione & conservatione, ac Rectorum, Magistrorum, Doctorum, Lectorum, Præceptorum, Procuratorum, Bidellorum, Nunciorum & aliorum Officialium hujusmodi institutione & electione, & quavis alia provisione ac Scholari manutentione, ipsius tamen Collegii quo ad Theologiam & Philosophiam cum Humanioribus litteris, necnon promotionum in dictis facultatibus & Scholasticorum inibi pro tempore degentium vitæ & studiorum disciplina & Scholasticorum correctione, admissione & dimissione, necnon regimine seu administratione & politia litterariæ forma, juxta Societatis præfate statuta & instituta pro tempore existentis ejusdem Collegii Rectori, & ipsius Societatis Superioribus præservata, ac in præmissis & infra scriptis omnibus & per omnia salva & integra permanente personarum, bonorum & exercitio-

Personis dicti Collegii privilegia personarum Studii Bononiensis & Parisiensis concedit.

Doctoresque & gradui insignia conferendi, & recipiendi facultatem tribuit promissisque indulta promotionum in illis Studiis generalibus elargitur.

Carolo Cardinali facultatem eandem statuendi statuta pro hujus studii regimine concedit.

1572.

rum hujusmodi Societatis exemptione, ac regulari obſervantia, quæcumque ſtatuta & ordinationes licita & honeſta, ac ſacris Canonibus non contraria facere, edere, ac pro rerum, temporum, & perſonarum qualitate & varietate corrigere & reformare, ſeu illa caſſare, & alia de novo condere, ac ſuper illorum obſervatione quaſcumque poenas imponere, ac juxta diſpoſitionem judicari debere: ac quicquid ſecus ſuper his æquoquam quavis auctoritate, ſcienter vel ignoranter contigerit attentari, irritum & inane decernere.

§. 8. Necnon in omnes & ſingulos dictæ Uni-verſitatis Rectorem, & Magiſtros, Doctores, Lectores, Præceptores, & Scholares ac Procuratores, Bidellos, Nuncios & Officiales perſonas & ſuppoſitas, tam ſæculares quam quorumvis Ordinum regulares cuſcumque ſtatus, gradus, ordinis, dignitatis & præminentiæ extiterint, etiamſi exemptæ & Sedi Apoſtolice immediate aut alteri Præ-lato ſubjecti, ſeu alterius Diœceſis fuerint, præterquam ipſius Societatis perſonas, omnimodam tam civilem quam criminalem & mixtam juſtictionem, Apoſtolica auctoritate prædicta exercere, viſitare, reformare & corrigere, ac errantes punire & caſtigare.

§. 9. Necnon ipſius Uni-verſitatis Rectores, Magiſtros, Lectores, Præceptores & Scholares, ac Procuratores, Bidellos & alios Officiales hujusmodi eligere, ſeu eorum electiones aliis committere, eaſque poſquam factæ fuerint per ſe, vel alium, ſeu alios, ad id per ipſum Carolum Cardinalem & Legatum deputandos confirmare & approbare libere & licite valeant, concedimus & deſuper indulgemus.

§. 10. Decernentes præſentes Litteras ſub quibuſvis revocationibus, alterationibus, ſuſpenſionibus, limitationibus, etiamſi de Præſentibus, eorumque toto tenore ac data, ſpecialis, ſpecifica mentio fiat, minime includi, ſed illis ac quibuſvis aliis contrariis non obſtantibus in ſuo robore, vigore & efficacia perſiſtere, & quoties illæ emanabunt, toties in priſtinum ſtatum reſtitutas, reſpoſitas, & plenarie reintegratas, ac de novo ſub quacumque data per dictos Carolum Cardinalem & Legatum, ad Carolum Ducem eligenda conceſſas eſſe, ſicque incommutabilis voluntatis & intentionis noſtræ eſſe & fore, eademque præſentes Litteras nullo unquam tempore de ſubreptionis vel obreptionis vitio, aut intentionis noſtræ, vel alio quopiam defectu notari, aut in jus vel controverſiam quacumque ratione, vel cauſa etiam rationabili deduci, cauſamque ſeu cauſas propter quas præmiſſa facta fuerunt coram quibuſcumque locorum Ordinariis, etiam tamquam à Sede prædicta Delegatis minime verificari, nec propterea ſeu pro eo intereſſe prætendentes vocati non fuerint, per ſubreptionem obtentas præſumi viribuſque propterea carere.

§. 11. Ecce in præmiſſis omnibus & ſingulis per quocumque Judices & Commiſſarios quavis auctoritate fungentes, etiam cauſarum Palatii Apoſtolici Auditores, ac ejuſdem S.R.E. Cardinales, ſublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari debere, ac irritum & inane quicquid ſecus ſuper his à quocumque quavis auctoritate, ſcienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 12. Necnon præſatum Carolum Cardinalem & Legatum, ac pro tempore exiſtentes Metenſem Episcopum, ſeu perpetuum Adminiſtratorem, necnon Monaſterii & Prioratuum Abbates, Priores ſeu Commendatarios ac Conventus hujusmodi, ad integram ſolutionem penſionis præſatæ eidem Collegio faciendam juxta reſervationis conſtitutionis & aſſignationis præſatæ tenorem efficaciter obligatos fore, ac volentes & eadem auctoritate ſtatuentes, quod qui ex Carolo Cardinale & Legato, ac Episcopum ſeu Adminiſtratorem Metenſem necnon Abbatibus & Prioribus ſeu Commendatariis ac Conventibus præſatis in dictis terminis vel ſaltem intra triginta dies illorum ſingulos immediate ſequen-

tes, penſionem præſatam per eos tunc debitam non perſolverint cum effectu, lapſis diebus eiſdem Carolo Cardinali & Legato, ſeu Episcopum vel Adminiſtratori Metenſi, & ſi Cardinalis aut Antiſtes ſit Abbatia Priori ſeu Commendatario hujusmodi ingreſſus eccleſiæ interdictus exiſtat. Si vero Abbas & Prior, ſeu Commendatarius inferiore Cardinali & Antiſte ſint aut Conventus fuerint, ſententiam excommunicationis incurrant, cujus interdicti relaxationem hiſce interdictus, excommunicatus vero ab excommunicationis ſententia hujusmodi abolitionis beneficium donec Collegio vel Procuratori præſato de penſione præſata tunc debita integrè ſatisfactum, aut alias cum Collegio ſeu Procuratore hujusmodi amabiliter concordatum fuerit, præterquam in mortis articulo conſtitutus, nequeat obtinere. Si vero per ſex meſes dictos triginta dies immediate ſequentes interdictus ſub interdicto permanſerit, excommunicatus vero præſate excommunicationis ſententiam ejuſmodi ſuſtineat, animo quod abſiſtendurum, ex tunc effluſis menſibus ipſis interdictus à regimine & adminiſtratione Eccleſiæ ac Monaſterii & Prioratus hujusmodi ſuſpenſus, excommunicatus vero præſati ipſo Monaſterio & Prioratu perpetuo privatus exiſtat, illiſque commoda ceſſare, & ea ceſſante Monaſterium & Prioratus hujusmodi vacare cenſeantur eo ipſo.

§. 13. Quocirca dilectis filiis Virdunenſi & Tulenſi & Metenſi mandamus quatenus ipſi, vel duo, aut unus eorum, per ſe, vel alium, ſeu alios, præſentes Litteras & in eis contenta quæcumque ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Caroli Cardinalis & Legati, ac Caroli Ducis, necnon Collegii illiſque perſonarum præſatorum, aut alicujus eorum fuerint requiſiti, ſolemniter publicantes, eique & illorum ſingulis in præmiſſis efficaciſſimam deſenſionis præſidio aſſiſtentes, faciant auctoritate noſtra præſentes Litteras & in eis contenta hujusmodi inviolabiliter obſervari, & illos quos dictæ Litteræ concernunt omnibus & ſingulis præmiſſis pacifice frui & gaudere, ac penſionem præſatam Collegio aut Procuratori præſato juxta præſervationis, conſtitutionis, aſſignationis & decreti præſatorum continentiam & tenorem integrè perſolveri, non permit- tentes eos aut eorum quemiſſis per quocumque quomodolibet indebitè moleſtari, perturbari vel inquietari. Et nihilominus quemiſſis ex Carolo Cardinali & Legato ac Episcopum ſeu Adminiſtratorem Metenſi ac Abbatibus & Prioribus ſeu Commendatariis & Conventibus præſatis, quem interdicti & ſuſpenſionis aut excommunicationis ſententias & privationis poenam hujusmodi incurſiſſe eis conſiſterit, quoties ſuper hoc pro parte Collegii præſati fuerint requiſiti, tandiu Dominicis & aliis feſtiviſſis diebus in Eccleſiis dum major inibi Populi multitudo ad divina convenerit, interdictum & ſuſpenſum, vel excommunicatum & privatum reſpectivè publice nunciare, & faciant ab aliis nunciari, excommunicatumque ab omnibus actibus evitare, donec Collegio vel Procuratori præſato de dicta penſione tunc debita fuerit integrè ſatisfactum, ipſeque interdictus & ſuſpenſus relaxationem interdicti & ſuſpenſionis, aut excommunicatus ab excommunicationis præſatæ hujusmodi abolitionis beneficium meruerit obtinere. Contra- dictores quolibet & rebelles ac præmiſſis non parentes, ſi Cardinales aut Antiſtes auctoritate noſtra, ſi vero inferiores Cardinales aut Antiſtes ſint per ſententias & cenſuras & poenas Eccleſiaſticas, aliaque opportuna juris remedia, appellatione poſtpoſita compeſcendo, ac legitimis ſuper his habendis ſervatis proceſſibus, illos in ſententias, cenſuras & poenas præſatas incurſiſſe declarando, ac etiam eas iteratis vicibus aggravando, ac invocato etiam ad hoc ſi opus fuerit auxilio brachii ſæcularis.

§. 14. Non obſtante priori voluntate noſtra præſata & Lateranenſis Concilii noviffimè celebrati uniones perpetuas niſi in caſibus a jure permiſſis fieri prohiben. ac ſel. rec. Bonifacii Papæ Octavi prædeceſſoris noſtri, etiam illa qua caveatur ne juſ

1572.

Executio-
res hujus
conſi. de-
putat.

Contrariis
omnibus
derogat.

Juriſdictio-
nemque in
omnes illas
perſonas,
(non tamen
ipſius So-
cietatis)
Carolo
Card. cri-
buit.

Juſque ea-
dem perſo-
nas & eige-
di, conſi-
tuit.

Huic inſti-
tutioni
clauſulas
præſervati-
vas apponit.

Exdecernit
irritans.

Recanſanti-
bus ſolvere
Colleg. an-
nuos reddi-
tus ſupra-
dictas poenas
indicit.

Paul. V. in sua const. 91. Sacrosanctae. inf. tom. 3.

extra tuam civitatem vel Dioecēsim nisi in certis exceptis casibus, & in illis ultra unam dietam a tunc sua Dioecēsis ad iudicium evocetur, seu ne Judices à Sede praefata d. putari extra civitatem vel Dioecēsim in quibus d. putari fuerint contra quoscunque procedere, aut alii vel alius vices suas committere praesumant, ac de duabus dietis in Concilio generali edita, dummodo ultra tres dietas aliquis auctoritate Praesentium ad iudicium non trahatur, ac aliis Apostolicis, necnon in provincialibus & synodalibus Conciliis editis generalibus vel specialibus constitutionibus & ordinationibus Ecclesiae Metensis & Monasteriorum, Prioratum & Ordinum ac Universitatum praefatorum juramento, confirmatione Apostolica vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indulgentiis, exemptionibus & immunitatibus ac litteris Apostolicis, illis illorumque Superioribus, Conventibus & personis, sub quibuscunque tenoribus & formis, ac cum quibuscunque derogatoriis derogatoriis a litiis, & alius decretis in genere vel in specie etiam consistorialiter quomodolibet concessis, ac etiam iteratis vicibus approbatis & innovatis. Quibus omnibus etiam pro illorum sufficienti derogatione alias de illis eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, expressa & individua, ac de verbo ad verbum non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso & forma in illis tractata observata inserti forent, Praesentibus pro sufficienter expressis habentes, illis alias in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus; contrariis quibuscunque. Aut si Carolo Cardinali & Legato ac Episcopo seu Administratori Metensi & Abbati, Prioribus seu Commendatariis & Conventibus praefatis, vel quibuscunque aliis communiter vel divisim ab eadem sit Sedes indultum, quod interdicti, suspensi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem, & quibuscunque aliis privilegiis, indulgentiis, & litteris Apostolicis generalibus vel specialibus quoruncunque tenoribus existant, per quae Praesentibus non expressa vel totaliter non inserta, effectus earum impediri valeat quomodolibet vel differri, & de quibus quoruncunque totis tenoribus habenda sit in nostris Litteris mentio specialis.

§. 15. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrae abolitionis, dismembrationis, separationis, concessionis, applicationis, appropriationis, reservationis, constitutionis, assignationis, statuti, electionis, institutionis, indulgentiae, decreti, voluntatis, mandati & derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire.

Si quis autem &c.

Dat. Romae apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicae 1572. Nonis Decemb. Pontificatus nostri anno 1.

C. I. Institutio Congregationis Clericorum sine aliarum de Oratorio nuncupata, in Ecclesia S. Mariae de Vallicella de Urbe.

Hujus Congregationis presbyteri, ex indulto Sixti V. sub die 5. Septembris 1586. (quod volens praetermissis) per dimidium hora ante auroram, & post meridiem Missas celebrare, & a Vicario Papae ad confessiones audiendo, praevio examine in Urbe approbati, extra eam absque alio examine illas audire valent. Ordinationis autem & instituta dictae Congregationis approbavit, & nonnulla indulta eidem largitus est Paul. V. in sua const. 92. Christi fidelium, inf. tom. 3.

Aliam sed diversam Congregationem, Oratorii Jesu Christi nuncupandam, instituit idem

Hujus Congregationis fundator extitit Philippus Nerius Florentinus, quem Sanctae Corfessorum numero adscripsit Greg. XV. qui morte praeventus Bullam desuper expectare non potuit, sed cum expedivit Sanctiss. D. N. Urban. VIII. ut in const. 2. Rationi, inf. tom. 4. Gregor. tamen concesserat huic Congregationi Ecclesiam S. Caeciliae in monte Jordano pro Sacrificae & Oratorii edificatione, ac domus dilatazione, suppressa prius animarum cura eidem incumbenti, & aliò translata, ut videre est in ejusdem Gregor. const. 11. Cum ad uberes. d. tom. 4.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Copiosus in misericordia Dominus, & in cunctis gloriosus operibus, à quo omnia dona desunt, ad hoc Nobis licet immeritis suae sponsae universalis Ecclesiae regimen committere, & nostrae debilitati jugum Apostolicae servitutis imponere voluit, ut inter alias multiplices curas, operarios quos ipse Dominus in nossem suam, multitudinem utique magnam populorum ad fructum divinae gratiae dispositam ne pereat, quotidie pro sua misericordia dignatur emittere, conducere non differamus, eoque ad suscipiendam ipsius Domini misericordiam in medio templi sui, ejusque vias Christifidelibus demonstrandum, eorumque corda divinorum sermonum declaratione illuminandum, novas etiam interduum piorum virorum Congregationes propterea constituendo nostrae sollicitudinis ope, Apostolicisque favoribus propensius excitemus.

§. 1. Dudum siquidem omnia beneficia Ecclesiastica cum cura & sine cura apud Sedem Apostolicam tunc vacantia, & inane vacatura, collationi & dispositioni nostrae reservavimus; decernentes ex tunc irritum & inane si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari. Cum itaque postmodum parochialis Ecclesia B. Mariae Vallicellae nuncupata, Regionis pontis seu parionis de Urbe, per liberam religionem dilecti filii Antonini de Adjuto, nuper ipsius ecclesiae Rectoris, de illa quam tunc obtinebat in manibus nostris sponte factam & per Nos admittam, apud Sedem eandem vacaverit & vacet ad praesens, nulliusque de illa praeter Nos hac vice disponere poterit sine possit, reservatione & decreto obstitentibus supradictis. Et sicut dilectus filius Philippus Nerius presbyter Florentinus, ac Praepositor nonnullorum presbyterorum & Clericorum saecularium, tam suo quam aliorum presbyterorum & Clericorum praefatorum nominibus Nobis nuper exposuit quod hi in ipsa Ecclesia introduci cupiant, ac ita illis gratia assistente divina circa Missarum & aliorum divinorum officiorum in eadem Ecclesia celebrationem, & verbi Dei populo inibi interessenti praedicationem, aliaque salubria monita ad salutem animarum Christi fidelium procurandam, & quam plurima pietatis opera exercenda intendere sperent, ut ex eorumdem presbyterorum & Clericorum laudabili vita & doctrina dilecti filii ipsius Ecclesiae parochiani non parvam consolationem spirituales incepturi sint, si in eadem Ecclesia una Congregatio presbyterorum & Clericorum de Oratorio nuncupanda, perpetuo erigeretur & institueretur, ipsaque Ecclesia cum onere curae animarum ipsius parochianorum praefatorum eidem Congregationi concederetur, ex hoc profecto divinus cultus ac ministrorum Ecclesiasticorum numerus, in ea ad Dei laudem & eorumdem Christi fidelium animarum salutem maximum suscipere incrementum. Quare dictus Philippus asserens dictae Ecclesiae, & illi forsan annexorum, fructus, redditus, & proventus, super quibus pensio annua quadraginta scut. monetæ certae personae Ecclesiasticae illam annuam percipien-

Edita A. D. 1575.

Procurat.

Philippus Nerius sup. p. cae Papae, pro ere. gione Congregationis Clericorum, ut aliarum de Oratorio nuncupanda in Urbe

Sanctio-
enque
enalem
habet.

at. P. A. 1.
Decemb.

C. I.

plenti, Apostolica auctoritate, ut dictus Philippus etiam asserit reservata existit, centum & triginta ducatorum auri de Camera secundum communem estimationem valorem annum non excedere, eisdem nominibus Nobis humiliter supplicavit, quatenus praeiis annuere de benignitate Apostolica dignemur.

Qui illum erigit.

§. 2. Nos igitur qui dudum inter alia volumus quod semper in unionibus commissio fieret ad partes, vocatis quorum interesset, quique divini cultus augmentum & Christianorum animarum salutem sinceris desideramus affectibus, pium & laudabile Philippi Praepositi, ac presbyterorum & Clericorum praefatorum desiderium summopere commendantes, ipsosque Philippum Praepositum, ac presbyteros & Clericos a quibusvis excommunicationis, suspensionis & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & poenis à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum Praesentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes & absolutos fore censentes, hujusmodi supplicationibus inclinati, in dicta Ecclesia unam Congregationem presbyterorum & Clericorum secularium de Oratorio nuncupandam, sine alicujus praedictio, auctoritate Apostolica tenore Praesentium perpetuo erigimus & instituimus.

Eique Praepositum in Urbe ecclesiae S. Mariae in Vallicella cum omnibus suis bonis, introitus, & iuribus concedit.

§. 3. Illique sic erecta & instituta Ecclesiam praefatam sive praemissa sive alio quovis modo aut ex alterius cujuscunque persona seu per suum legatum resignationem dicti Antonini, vel cujusvis alterius de illa in Rom. Curia vel extra eam etiam coram Notario publico & testibus sponte factam, aut constitutionem fel. rec. Joannis Papae XXII. praedecessoris nostri, quae incipit, Execrabilis, vel affectionem alterius beneficii Ecclesiastici quavis auctoritate collati vacet, etiam si tanto tempore vacaverit quod ejus collatio juxta Lateranensem statuta Concilii ad Sedem praefatam legitime devoluta, ipsaque Ecclesia dispositioni Apostolicae specialiter, vel alias generaliter reservata existat, & super ea inter aliquos lis, cujus statum Praesentibus haberi volumus pro expreso, pendeat indecisa, dummodo ejus dispositio ad Nos hac vice pertineat, cum onere curae animarum illius Parochianorum praefatorum, aliisque omnibus & singulis oneribus & honoribus ac annexis, necnon omnibus bonis, censibus, jurisdictionibus, fructibus, redditibus & proventus, aliisque iuribus & pertinentiis suis eidem Congregationi, auctoritate Apostolica & tenore praefatis etiam perpetuo concedimus & assignamus; ita quod liceat ipsi Congregationi, illiusque Rectori, Presbyteris, Clericis & Procuratoribus seu Agentibus, vel deputatis per se, vel alium, seu alios, eorum & dictae Congregationis nomine, Ecclesiae & annexorum ac bonorum iurumque & pertinentiarum praefatorum, corporalem & realem & actualem possessionem propria auctoritate libere apprehendere, & etiam perpetuo retinere, curaque animarum eidem Ecclesiae imminentem per se ipsos Presbyteros, seu unum, vel plures ex eis, sive per alium, vel alios Presbyteros, illis tamen prius a dilecto filio nostro, & Romani Pontificis pro tempore existentis in dicta Urbe & ejus districtu, Vicario in spiritualibus generali seu Sede praefata approbatus, exercere vel exerceri, eidemque Ecclesiae in divinis deservire seu deserviri facere, illiusque fructus, redditus & proventus, jura, obventiones & emolumenta quaecunque percipere, exigere & levare, ac in suos & Congregationis ac Ecclesiae praefatorum usum & utilitatem convertere.

Facultatemque Ordinationes pro fabricis statu suo condendi & immutandi tribuit.

§. 4. Necnon eidem Congregationi, illiusque Rectori, ac Presbyteris & Clericis pro tempore existentibus, ut pro salubri statu & directione Ecclesiae & Congregationis hujusmodi illiusque personarum quaecunque statuta & ordinationes rationabiles, honestas, ac sacris Canonibus & Concilio Tridentino non contraria edere, & edita reformare, limitare, & mutare, ac alia de novo condere prout & quodvis eis secundum rerum & temporum qualita-

tes videbitur expedire, quae quidem statuta & ordinationes postquam edita, reformatas, limitatas & mutatas, ac de novo condita fuerint, à Sede praefata approbati, & per singulares personas de gremio dictae Congregationis existentes inviolabiliter observari debeant, libere & licite possint & valeant, auctoritate Apostolica & tenore praefatis indulgemus, liberamque desuper facultatem concedimus & largimur.

§. 5. Decernentes praesentes Litteras de subreptionis, vel obreptionis aut nullitatis vitio, & ex eo quod interesse praetendentes vocati non fuerint notari, impugnari, aut in jus vel controversiam vocari nullatenus posse neque debere, minime sub quibusvis revocationibus, suspensionibus, annulationibus, limitationibus, derogationibus, & aliis contrariis dispositionibus à Sede praefata etiam in favorem quorumvis quomodolibet emanatis & emanandis nullatenus comprehendendi posse aut debere, necnon quoad concessionem & assignationem prout est, & attentatum forsan est hactenus, ac tam quoad illas quam omnia alia supradicta ex tunc irritum & inane si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 6. Quocirca venerabilibus fratribus nostris Patriarchae Alexandrino ac Amerino & Aquinensi Episcopis per Apostolica scripta mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum, per se, vel alium, seu alios, praesentes Litteras & in eis contenta quaecunque ubi & quando opus fuerit, & quoties pro parte Philippi Praepositi ac Congregationis praefatorum, & singulorum illius personarum nunc & pro tempore existentium, seu alicujus eorum desuper fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in praemissis efficacis defensionis praesidio assistentes, faciant auctoritate nostra praesentes Litteras & in eis contenta quaecunque firmiter observari, ac singulos quos ipsae litterae concernunt illis pacifice frui & gaudere, non permittenes eos desuper per quoscunque contra Praesentium tenorem quomodolibet indebitè molestari. Contradictores auctoritate nostra appellatione postposita compescendo.

§. 7. Non obstantibus priori voluntate nostra praefata, ac Lateranensis Concilii novissime celebrati uniones perpetuas, nisi in casibus à jure permixtis fieri prohibentis, ac pia mem. Bonifacii Papae VIII. etiam praedecessoris nostri, & aliis Apostolicis constitutionibus & ordinationibus, privilegiis quoque, indultis & litteris Apostolicis venerabili fratri nostro Alexandro Episcopo Tufculano. Cardinali Farnesio nuncupato, ad quem ratione Ecclesiae S. Laurentii in Damaso etiam de Urbe, aut alias dictae Ecclesiae S. Mariae Vallicellae dum vacat, collatio, provisio, praesentatio, & omnimoda alia dispositio pertinet, ac dilectis filiis Populo Romano sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, ac irritantibus & aliis decretis, etiam Motu proprio, & ex certa scientia deque Apostolica potestate plenitudine, ac Fratrum nostrorum consilio, etiam iteratis vicibus etiam per recol. mem. Leonem Papam X. aliosque Romanos Pontifices similiter praedecessores nostros, ac forsan etiam Nos & Sedem praefatam concessis, approbatis & innovatis; illis praesertim quibus inter alia caveri dicitur expresse, quod de quibuscumque beneficiis Ecclesiasticis dictae Urbis vacatione illorum pro tempore occurrente, aliam quam Civibus Romanis & originariis Civium Romanorum filiis, & forsan alias certo modo qualificatis provideri, vel alias disponi non possit, & aliter de illis etiam per Sedem praefatam pro tempore factae collationes, concessionis, uniones & aliae dispositiones nullius sint roboris vel momenti; quodque eidem privilegiis & indultis nullatenus aut non nisi modo & forma in illis expressis derogari aut derogatum censeri possit, & si illis aliter derogari coningat, derogationes hujusmodi nemini suffragentur. Quibus omnibus & singulis, etiam pro illorum sufficienti de-

Clasulata praeservati vas apponit.

Executores deputati.

Contraria omnia revocant.

1575.

rogatione aliis de illis eorumque totis tenoribus, speciebus, specificis, expressis & individua, ac de verbo ad verbum non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu alia quævis expressio habenda, aut etiam aliqua etiam exquisita forma ad hoc servanda foret, illis aliis in suo robore permanfuris, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus. Quodque de gremio dictæ Congregationis diversæ personæ ex dicta Urbe oriundæ vel alias juxta dicta statuta qualificata non existant, contrariis quibuscunque. Aut aliqui super provisionibus sibi faciendis de hujusmodi vel aliis beneficiis Ecclesiasticis in ipsa Urbe speciales vel generales dictæ Sedis vel Legatorum ejus Litteras impetrarint; etiam per eas ad inhibitionem, reservationem & decretum vel alias quomodolibet sit processum. Quas quidem Litteras & processus habitos per eandem & inde sequuta quæcumque ad dictam Ecclesiam B. MARIE volumus non extendi, sed nullum per hoc eis, quoad affectionem beneficiorum aliorum præjudicium generari. Et quibuslibet aliis privilegiis, indulgentiis & litteris Apostolicis generalibus vel specialibus quorumcumque tenoribus existant, per quas Præsentibus non expressa vel totaliter non inserta effectus eorum impediri valeat quomodolibet vel differti, & de quibus quorumque totis tenoribus habenda sit in nostris Litteris mentio specialis; provisio, quod ipsa Ecclesia S. MARIE debitis propterea non fraudetur obsequiis, & animarum cura in ea nullatenus negligatur, sed illius congruè supportentur onera consueta.

Nulli ergo omnino, &c. Si quis autem, &c.

Dat. P. A. 4.
ty. Julii.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo septuage simo quinto, Idibus Julii, Pontificatus nostri anno 4.

C II.

Institutio Universitatis Studii generalis, diversarum scientiarum, bonarumque artium, in Collegio Presbyterorum regularium Societatis JESU, in Civitate Vilnensi, in Regno Poloniæ per Valerianum illum Episcopum fundato, cum privilegiorum elongatione.

Edita A. D.
1579.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Proemii.

Dum attenta considerationis indagine perscrutatur quàm pretiosum sapientiæ & scientiæ donum, per quod ignorantia & vitiatorum tenebræ profligantur, errorisque tolluntur, solliciti reddimur & solertes ut litterarum & pietatis studiosi debitis virtutum insigniantur honoribus, ac indefessis laboribus ad Dei gloriam suscepi præmium tandem reportent.

Valerianus Episcopus Civitatis Vilnensis. crexit in ea Collegium Presbyterorum Societatis JESU inde non modicus bonorum scientiarumque profectus habuit est majorque speratur, si ibidem Universitas Studii generalis à Papa instituitur.

¶ 1. Sanè pro parte venerabilis fratris nostri Valeriani Episcopi Vilnensis Nobis nuper exhibita petitio continebat, quod cum idem Valerianus Episcopus à decem annis vel circa, ad patriæ & Diocesis sue quæ multiplici sectarum labe ac schismaticis erroribus, itemque Mahometanorum infidelitate obsidebatur tutelam, unum Collegium presbyterorum Societatis JESU in Civitate Vilnensi canonice erigi & institui, illudque nonnullis redditibus & proveniuntibus annuis dotari curaverit, ac à dicto tempore ex ipso Collegio in morum & disciplinarum exercitio non tenuis profectus exortus spectetur, & numerus Scholarum mirum in modum accreverit, & singulis diebus benedicente Domino augeretur, in optima Theologia ac Philosophia, necnon Liberalium, Moralium, Græcarumque lectionum studia cumulatissime versans, si in ipsa Civitate quæ inter ceteras magni Lituaniæ Ducatus Civitates precelebris fertur, ac ampla Diocesi decoratur, una generaliam tam divinarum quàm Humaniorum studiorum Universitas erigeretur & in-

stitueretur, ac in dicto Collegio, Theologia, Philosophia & Artes liberales publicæ, & ea quæ in Studiorum generalium Universitatibus Poloniæ & aliorum Christianæ fidei Regnorum leguntur ac explicantur, & auctoritate comprobantur, ad fidei orthodoxæ propugnaculum, Civitatis prædictæ ornamentum, felicissimum totiusque Provinciæ decus, per ipsos Presbyteros interpretarentur & perlegerentur, necnon qui in ipso generali Studio & Universitate, & alibi per tempus debitum studuisse, ac scientia profecisse, ab eisdem Presbyteris prævio rigoroso examine in privato, seu adhibitis questionibus & argumentis, quæ proberum ac Doctorum virorum præsentia confirmari solent, publico congressu comperti fuerint, in Theologia, Artibus & Philosophia, Baccalaureatus, Licentia, Doctoratus & Magisterii, pro studiorum ratione, ac juxta decreta sacri Concilii Tridentini, & ipsius Societatis constitutiones, ac morem in illius Universitatibus receptum, & ad instar aliarum Universitatum hujusmodi gradus consequerentur, ipsique Scholares per tot studiorum labores præmii honorificentia, & litterarum ludicri favore donarentur, profecto profecti ardentiores ferebant, plurimique hujus vitæ studium spreto illecebris ad sempiterna, indagine mentis contemplanda se transferrent, idque carissimo filio nostro Stephano Poloniæ Regi illustri, cujus expressus ad hoc accedat assensus gratum foret. Quare pro parte ejusdem Valeriani Episcopi Nobis fuit humiliter supplicatum ut fidei præsidio ac Civitatis hujusmodi decori, necnon publicæ utilitati consulere de benignitate Apostolica dignemur.

¶ 2. Nos igitur attendentes quod ex litterarum studio animarum salus maximè procuratur, eundem Valerianum Episcopum à quibusvis excommunicationis, suspensionis & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris ac poenis, à jure vel ab homine quavis occasione vel causa lais, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum Præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolutentes & absolutum fore censentes, hujusmodi suspensionibus inclinari, in dicto Collegio Studium generale Theologiæ, & pro illius cognitione necessaria artium liberalium & Philosophiæ, ac in illo Universitatem Studii generalis quod ibidem perpetuo futuris temporibus vigeat ad instar aliarum Universitatum hujusmodi, ac juxta illarum statuta & consuetudines, aliisque ipsius Societatis constitutiones per Presbyteros Societatis hujusmodi in omnibus ac per omnia moderandam & gubernandam, auctoritate Apostolica tenore Præsentium erigimus & institui.

¶ 3. Illique sic erectæ & institutæ ac ejus pro tempore existentibus Rectori, Cancellario, Magistris, Doctoribus, Lectoribus, Præceptoribus, Scholaribus, Bidellis, Nunciis & aliis Officialibus & personis, tam in ipso Collegio residentibus quam Universitatis hujusmodi studia frequentantibus, quod omnibus & singulis privilegiis, indulciis, libertatibus, immunitatibus, exemptionibus, favoribus, gratiis, prærogativis, honoribus & præeminentiis Universitatibus præfatis illarumque pro tempore existentibus Rectoribus, singulis personis & Officialibus, necnon membris & subditis in genere vel specie, tam dicta Apostolica quàm alias ritè Imperiali & Regia auctoritatibus aut aliis quomodocumque concessis, seu legitime præscriptis, ac in posterum quovis modo etiam motu proprio & consistorialiter concedendis, & præscribendis, ac quibus illi & illæ utuntur, potiuntur & gaudent, ac uti, potiri & gaudere poterunt quomodolibet in futurum pariformiter & æquè principaliter uti, potiri & gaudere valeant. Quod illi qui in quavis aliarum Universitatum disciplinis, facultatibus & artibus præfatis studere inceperunt, studium suum in ea continuare, & tam ipsi quàm in dicta vel alia Universitate per tempus debitum studuisse, ac scientia & moribus idonei comperti fuerint, in Artibus, Philosophia, ac Theologia,

1579.

Hic ideo Pont. Universitatem Studii generalis ibi instituit.

Illique privilegia aliorum Studiorum generalium concedit.

nec

1579.

necon iacultatibus præfatis Baccalaureatus etiam formalis, Licentiatuæ ac Laureæ, necnon Doctōratus ac Magisterii ac quoscumque alios solitos gradus ab ipsius Universitatis Rectore seu Cancellario aut Doctōribus, Lectoribus, vel aliis personis per dictæ Societatis Præpositum generalem, aut de ejus licentia per illius Provinciæ Præpositum Provincialem deputandis, prævio rigoroſo examine, vel diſputationibus peragatis, iuxta Concilii præfati decreta, ipſiusque Societatis & aliarum Universitatum conſtitutiones, conſuetudines & ſtatuta, necnon alias, ut præfertur, recipere, ac graduum hujusmodi ſolita inſignia ſibi adhiberi facere, & poſtquam in ipſis facultatibus promoti fuerint illas perlegere & interpretari, ac in eis diſputare, necnon quocumque actus gradui ſeu gradibus per eos receptis convenientes exercere, & alias omnibus & ſingulis privilegiis, gratiis, favoribus, prærogativis & indulgiis, quibus alii in ceteris Universitatibus juxta illarum ritus & mores ad gradus ipſos promoti de jure vel conſuetudine aut alias utuntur, potiuntur & gaudent, ac uti, potiri & gaudere poterunt quomodolibet in futurum, æque principaliter uti, potiri & gaudere liberè & licite poſſint & valeant in omnibus & per omnia, perinde ac ſi gradus hujusmodi in aliqua ex præfatis Universitatibus ſuſcepſſent.

Et auctoritatem ſtatutam condendi pro bono ipſius regimine.

§. 4. Quodque pro felici Universitatis hujusmodi directione, regimine, ac literariæ politiæ forma, liceat pro tempore exiſtenti ejuſdem Societatis Præpoſito generali, ſalvo ſemper manente ipſius Societatis jure, per ſe, vel alium, ſeu alios, quæcumque ſtatuta & ordinationes, licita tamen & honeſta, ac ſacris Canonibus & Concilii Tridentini decretis non adverſantia, facere & edere, illaque pro rerum, temporum & perſonarum qualitate alterare, immutare & abrogare, & alia toties quoties opus fuerit de novo, etiam cum impoſitione poenarum condere, ac contumaces & rebelles etiam quantumvis exemptos debite corrigere, auctoritate Apoſtolica concedimus.

Moleſtiam eidem inferri omnibus prohibere.

§. 5. Ac quibuſcumque aliarum Universitatum ludi moderatioribus & Præſidentibus, Rectōribus, Cancellariis, Præceptoribus & Magiſtris, ac quibuſcumque aliis etiam Civitatum & aliorum locorum in ſpiritualibus vel temporalibus aut mixtim Gubernatoribus, ne Rectorem aut Universitatis hujusmodi perſonas & Scholares in aliquo præmiſſorum quovis prætextu perſe, vel alium, moleſtare vel inquietare audeant, ſeu præſument, inhibemus. Nullumque loci Ordinarium vel Metroplitanum quovis quaſito, etiam conſervationis ac ſuperioritatis, colore vel ingenio ſeu titulo præmiſſis ſe ingerere aut contravenire poſſe nec debere, irritum quoque & inane quicquid ſecus ſuper his à quoquam quavis auctoritate, ſcienter vel ignoranter contigerit attentari decernimus.

Conſentariis quibuſcumque derogat.

§. 6. Non obſtantibus quibuſvis conſtitutionibus & ordinationibus Apoſtolicis, ac dictarum Universitatum juramento, confirmatione Apoſtolica vel quavis firmitate alia roboratis, ſtatutis & conſuetudinibus, privilegiis quoque, indulgiis & litteris Apoſtolicis, eiſdem Universitatibus, ac quibuſvis perſonis vel locis aliis ſub quibuſcumque tenoribus & formis, ac cum quibuſvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliſque efficacioribus & inſolitius clauſulis, irritantibusque & aliis decretis in contrarium quomodolibet conceſſis, confirmatis & innovatis. Quibus omnibus, etiam ſi in illis caveatur expreſſe quod illis nullatenus, aut non niſi ſub certis modo & forma in illis expreſſis derogari poſſit, illorum tenores ac ſi de verbo ad verbum inſererentur, Præſentibus pro ſufficienter expreſſis & inſeritis habentes, illis alias in ſuo robore permanſuris, hac vice dumtaxat ſpecialiter & expreſſe derogamus; ceteriſque contrariis quibuſcumque.

Sanctionem poenalem apponit.

§. 7. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam noſtræ abſolutionis, erectionis, inſtitutionis, inhibitionis, decreti & derogationis infringere, vel ei auſu temerario contraire. Si quis au-

tem hoc attentare præſumpſerit, indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apoſtolorum ejus, ſe noverit incurſurum.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1579. 3. Kal. Novemb. Pon. noſtri anno octavo.

SIXTUS V. PONT. CCXXXI.

ANNO DOMINI MDLXXXV.

Sixtus Quintus, de Monte Alto, Ordinis S. Franciſci Conventualium, Picens, Frater Felix Perettus antea dictus, Presbyter Cardinalis tituli S. Hieronymi Illyricorum. Creatus die duodecima Aprilis, anno Domini 1585. Coronatus Kalendis Maij, eodem anno. Sedit annos quinque, meſes quatuor, dies tres. Creavit Cardinales 33. Obiit ſexto Kalendas Auguſti, anno Domini 1590. Cadaver ejus in Vaticanum transportatum, & die tertia ibidem in monumento Lateritio ſepultum fuit. Vacavit ſedes dies decem & novem.

Jubilæi indiſſio, ad implorandum Dei auxilium pro bono regimine Reipub. Chriſtianæ.

Similem indiſſionem omnes ſeræ Pontifices promulgare ſolent, eas tamen præteriti, hac dumtaxat pro exemplo retenti, & alia adſuta Pauli V. num. 1. Quod in omni. Tom. III. fol. 195.

Alias indiſſiones pro eadem cauſa reperies initio Pontificatum Greg. XV. inf. tom. 3. conſ. 2. Spiritus & S. D. N. Urban. VIII. ſed ſub forma orationis quadrageſima Horarum, ut in ejus conſ. 7. æternus, inf. d. Tom. IV.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Universis Chriſtiffidelibus præſentes Litteras inſpecturis, Salutem & Apoſtolicam benediſſionem.



VIRIUM noſtrarum infirmitati Paſtoralis officii moleſtiam nuper impoſitam conſiderantes, non poſſumus ſiſceptum tantæ adminiſtrationis munus non maxime formidare. De illius tamen benignitate deſperantes, qui operari dignatur in Nobis, non deſinimus ejus auxilium implorare, eique mentis noſtræ ſenſus, ne altius extollantur, humiliter ſubjicere; illud agnolcentes, & verè conſcientes, unius Dei clementiam, nullis præcedentibus meritis, noſtri in imbecillitate noſtra memorem magna in Nobis ſeciſſe mirabilia, quos tot, & tantis gratiarum donis cumularos honoris Principis Apoſtolorum admirabili dignatione voluit eſſe conſortes. Quam tamen dignitatem & poteſtatem, cum multæ graves curæ conſequantur, valde ſollicitamur, tam quod de collatis in Nos maximis beneficiis, quæ Dei benignitatis referimus accepta, nullam dignam gratiam, quam ejus clementiæ perſolvamus, noſtra poteſtate inſtantia reperire; tum etiam quod ſub tanto pondere exiguis vires initio contremiſcere, ac pene jam corruere ſentimus, non tamen animo deſicientes ad ſummam Dei bonitatem conſugimus. fideliumque, & Deum timentium, quorum ipſe (ut ſperamus) voluntatem facit, orationes expetimus, quibus omnipotenti Deo ſemper benedicendo, gratiſque miſericordiæ ejus agendis adjuvemur, viribuſque à cœleſti Rege ſubmiſſis, ſuſſuta noſtra infirmitas commiſſas Nobis curarum, & ſalutarium Reipublicæ Chriſtiannæ officiū partes, orantis ſimul populi inſtantia promerente, valeat ſuſſinere, opemque agitatæ, & ubique ſerè depreſſæ Catholice Religionis ſuppeditare, ne cum in altitudinem

I.

Edita A. D. 1585.

Exordium.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

naris venerimus, tempestate demergamur, sed potius horribiles tot peccatorum flatus, & excitatas toto mari procellas discutientes, cum credito Nobis grege optatum cursum, & æternæ salutis portum teneamus.

§. 1. Omnes igitur, & singulos utriusque sexus Christifideles ubicunque existentes mœnemus, ac in Domino requirimus, ut qui in hac Alma Urbe sint, proximè sequenti hebdomadâ, aut alterâ protinus post eam item sequenti; qui verò extra Urbem degunt cum primum harum notitiam habuerint, primâ, aut secundâ itidem immediate sequenti hebdomadâ, conscientia suâ diligenti prius examinatione discursâ, peccata sua omnia humili & contrito corde confiteantur, & ante Festum Pentecostes ejusdem hebdomadæ quartâ, & sextâ feriâ, & Sabbatho (cum hoc tempore jejunia non indicantur (elemosynas erogent, piæque earum largitione, quantum pro sua cuique facultate visum fuerit, Christi pauperum egestatem, & inopiam sublevent, orationibusque à Deo impetrare studeant, ut Nobis lumen suum ostendat, pares tanto oneri vires præbeat, omnelque actiones nostras dirigat, ac hostium Ecclesiæ suæ conatus infringat. Die verò Dominica, quæ dictas elemosynas, atque orationes proximè sequetur, Sacrosanctam Eucharistiam devotè accipiant. Ita, ut qui post Festum Pentecostes voluerint infra dicendam Indulgentiæ beneficio frui, dictis tribus diebus præter orationes, & elemosynas, etiam jejunare teneantur. Et nihilominus, ut Deum magis propitium Nobis & populo Christiano reddere, ipsique quantum nostræ tenuitati conceditur, gratias agere valeamus, & ad tantum onus sustinendum vires impetremus, Nos ipsi supplicatione, processioneque una cum Venerabilibus Fratribus nostris S. R. E. Cardinalibus omnibusque Prælati, & Romanæ Curie magistratibus, die Lunæ qui erit 27. dies, præsentis mensis Maji ab Ecclesiâ S. Mariæ in Araceli, usque ad Basilicam S. Mariæ Majoris habere, atque accedere, statuimus. Ceterum ut infidelis ipsi adhuc omnia peragenda magis idonei efficiantur, de tradita Nobis à Domino potestatis plenitudine Ecclesiæ thesauros, quorum divina favente clementia dispensatores effecti sumus, copiose, ac benignè aperientes, omnibus Christifidelibus supradictis, ut hac vice tantum confessores idoneos Presbyteros, sæculares vel cuiusvis Ordinis regulares, ac Ordinariis tamen approbatos eligere, qui eorum confessionibus diligenter auditis, eos à quibuscvis peccatis, criminibus, excessibus, & delictis quantumcumque gravibus, & enormibus, etiam in casibus Sedi Apostolicæ reservatis, ac in Litteris die Cœnæ Domini quotannis legi solitis contentis, in foro conscientiæ dumtaxat, ac etiam à sententiis, censuris, & poenis Ecclesiasticis per eos quomodolibet incurfis, injunctâ inde eis pro culpæ modo poenitentia salutari absolvere, ac quæcumque per eos emissa vota (præterquam Castitatis, & Religionis) in alia pietatis opera commutare valeant, per Præsentes concedimus.

1585.
ubique d.
Jubilum.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

§. 2. Nos enim omnibus, qui præmissa devotè adimpleverint, de ejusdem omnipotentis Dei misericordia, ad beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus auctoritate confisi, plenissimam omnium peccatorum remissionem, ad eandem, quæ Christifidelibus anno Jubilæi hujus Alme Urbis Ecclesiæ, & extra eam deputatas statutus diebus devotè visitantibus concessa est, misericorditer in Domino largimur, eos quoque, qui morbo, vel aliquo alio impedimento detenti præmissa adimplere nequeverint, si alia pia opera fecerint, in quæ arbitrio suorum confessorum (quibus super hoc facultatem impartimur) commutata fuerint, ac etiam illos qui in itinere fuerint, si cum primum iter perfecerint, præmissa exequi studuerint, ipsius Indulgentiæ, & doni, ac aliorum prædictorum participes fieri volumus.

§. 3. Præcipientes universis, & singulis Patriar-

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

chis, Archiepiscopis, Episcopis, & quibuscvis aliis Ecclesiarum Prælati, & locorum Ordinariis, ut statim cum præsentis Litteras, seu earum transumptum authenticum, etiam impressum ad eos deferri contigerit, solemnes Processiones tribus diebus, scilicet quartâ & sextâ feriis, ac Sabbatho prædictis, juxta locorum opportunitatem ad effectum præmissorum indicent, & celebrent, ac easdem Præsentes, seu earum transumptum per suas quilibet Provincias, Civitates, & Dioeceses sine ulla fraude, aut lucro publicent, & per Ecclesiarum Rectores publicari faciant.

§. 4. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscunque.

§. 5. Quia verò Præsentes ad omnia loca, quibus illis opus esset, per erri nequeunt, decernimus, ut illarum transumptis, etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem priorius fides adhibeatur, quæ eisdem originalibus Litteris adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo octuagesimo quinto, octavo Calend. Junii, Pontificatus nostri anno primo.

Anno a Nativitate Domini 1585. indictione 13. die verò 25. mensis Maji, Pontif. Sanctiss. D. N. D. Sixti divina providentia Papæ V. anno 1. retroscriptæ Litteræ Apostolicæ affixæ, lectæ & publicatæ fuerunt, & per aliquod temporis spatium dimissæ in valvis, seu portis Basilicarum S. Joannis Lateranen. & Principis Apostolorum de Urbe, & necnon Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, per nos Joannem Freyle, & Nicolaum Taglietum Sanctiss. D. N. Papæ Curs.

Jo. Bapt. Bagni Mag. Curs.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Revocatio exemptionum omnium, ab onerum Cameralium solutione, quibuscunque personis, quomodolibet concessarum.

Similem, sed amplio rem dispositionem, in hoc statuto Paul. V. infra in ejus cons. 11. In maximis ubi hæc bulla, sub generali confirmatione comprehenditur. & alias ad hoc tibi ibidem indicaverò, folio 214. Tom. III.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Inter varias curas quæ ex Pastoralis officii ministerio Nobis incumbunt, illa potissimum animi nostrum pulsât atque perturbat, ut Nobis & Romanæ Ecclesiæ subditi, præsertim pauperes, prætextu exemptionum aliarumque similium gratiarum à Sede Apostolica concessarum, nullatenus graventur, neque id totum quod à potentioribus, & majores facultates habentibus eximitur, in pauperiorum caput eorumque damnum & præjudicium crescat.

§. 1. Unde ex his & aliis rationabilibus causis adducti ac nonnullorum Roman. Pontificum prædecessorum nostrorum vestigiis inherentes, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, omnes & singulas exemptiones, concessionem, gratias, & immunitates à solutione omnium & singulorum datorum, pedagiorum, gabellarum, collectarum, impositionum, & quorumbet aliorum onerum, personalium, mixtorum, ordinariorum, & extraordinariorum, solitorum, insolitorum, aliarumque exactionum etiam Cameralium quibuscvis Communitatibus, Universitatibus, Civitatibus, Terris, Oppidis, & locis Status nostri Ecclesiastici, ac etiam quibuscunque feudatariis, censuariis, dominis locorum, Baronibus, Comitibus, seu quocumque nomine nuncu-

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

I I.

Edita An. D. 1585.

Causæ hujus revocationis.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Revocatio exemptionum quoruncunque exemptionum à solutione onerum Cameralium excepti hic enunciat.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Revocatio exemptionum quoruncunque exemptionum à solutione onerum Cameralium excepti hic enunciat.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Revocatio exemptionum quoruncunque exemptionum à solutione onerum Cameralium excepti hic enunciat.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Revocatio exemptionum quoruncunque exemptionum à solutione onerum Cameralium excepti hic enunciat.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Revocatio exemptionum quoruncunque exemptionum à solutione onerum Cameralium excepti hic enunciat.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Revocatio exemptionum quoruncunque exemptionum à solutione onerum Cameralium excepti hic enunciat.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Revocatio exemptionum quoruncunque exemptionum à solutione onerum Cameralium excepti hic enunciat.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Revocatio exemptionum quoruncunque exemptionum à solutione onerum Cameralium excepti hic enunciat.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Revocatio exemptionum quoruncunque exemptionum à solutione onerum Cameralium excepti hic enunciat.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Revocatio exemptionum quoruncunque exemptionum à solutione onerum Cameralium excepti hic enunciat.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Revocatio exemptionum quoruncunque exemptionum à solutione onerum Cameralium excepti hic enunciat.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

Revocatio exemptionum quoruncunque exemptionum à solutione onerum Cameralium excepti hic enunciat.

Forma con-
sequendi.
Jubilum.

patris, & quacumque etiam Ducali, vel alia dignitate, & auctoritate, seu etiam Cardinalatus honore fulgentibus, qui Castra & Jurisdictiones infra limites dictionis Ecclesiasticae possident, etiam qui nihil ratione Castrorum, & Jurisdictionis hujusmodi Sedi Apostolicae annuatim, seu alias persolvunt, & tam incolis quam extraneis atque forensibus bona stabilia, seu mobilia, vel se moventia, habentibus & tenentibus, seu possidentibus, omniumque supradictorum Colonis, & laboratoribus, per Praedecessores nostros & Sedem Apostolicam, ejusque etiam de latere Legatos, seu Vicelegatos, & Cameram Apostolicam ejusque Praesidentes, ac alias quomodocumque sub quibuscumque formis & verborum expressio nibus, etiam Motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus (praeterquam ob suspensionem liberorum juxta juris dispositionem, & ob causam vere effectualis, & congrue exurbationis pecuniarum, seu ex aliis causis per Nos cognoscendis & approbandis) perpetuò, seu ad certum tempus concessas, ac etiam pluries confirmatas, eorum omnium tenores acti de verbo ad verbum infererentur Praesentibus pro expressis habentes, Apostolica auctoritate tenore praesentium perpetuò cassamus, revocamus, & annullamus, ac viribus omnino evacuamus, illasque pro cassis, nullis, irritis, & revocatis, ac penitus infectis haberi volumus.

§. 2. Necnon exemptiones, concessiones, gratias, & immunitates praedictas, nulli penitus, nec in petitorio, nec in possessorio suffragari posse, sed praedictos omnes exemptos ad omnium, & singulorum praedictorum onerum impositionem, ac gellarum solutionem, & contributionem, perinde ac si exemptiones praedictae eis concessae non fuissent pro rata ipso tangente a data Praesentium decurrenda, realiter & cum effectu contribuere, eorum ubi bona accatastari, alibrari, describi, seu annotari facere quamprimum debeant & teneantur, etiam i perpetuò statuimus, & declaramus.

§. 3. Ac omnes & quascumque, tam per felices recordationis Pium V. quam alios Romanos Pontifices praedecessores nostros, super praemissorum revocatione quomodolibet editas, constitutiones similiter perpetuò confirmamus, approbamus, & innovamus.

§. 4. Et insuper quascumque lites, & causas super praemissis, & eorum occasione ubilibet motas atque pendentes, illarum status & merita nomina, & cognomina Judicum & colligantium etiam Praesentibus pro plenè & sufficienter expressis habentes, ad Nos harum serie advocamus, itaque hujusmodi penitus extinguimus & annullamus, ac pro extinctis & annullatis haberi volumus.

§. 5. Sicque per quoscumque Judices etiam Commissarios, quavis auctoritate fungentes, etiam dictae Camerae Clericos & causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Cardinales, sublati eis eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate, judicari & definiri debere, irritum quoque & inane quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit atque dari decernimus.

§. 6. Quocirca dilecto filio nostro Philippo S. Angeli in Foro piscium, Diacono Cardinali Vastavillano nuncupato, moderno & pro tempore existenti, nostro & ipsius Romanae Ecclesiae Camerario, per Apostolica scripta mandamus, quatenus per se, vel alium, seu alios ejus nomine, praeter Ordinariam sui Camerariatus officii Jurisdictionem, omnes & quoscumque supradictos exemptos per censuras Ecclesiasticas ac etiam privationis feudorum & inhabilitatis ad illa, aliasque etiam pecuniarias poenas, ad realem & actualem cuiusvis summae, tam haecenus debita quam debenda, solutionem juxta taxas haecenus impositas cogat & compellat; ac pro faciliori exactione, & satisfactione consequenda eidem Philippo Cardinali, & pro tempore existenti Camerario quoscumque quatenus opus fuerit citandi & etiam ad personaliter comparandum

monendi, etiam per edictum publicum, confuto summarie & extrajudicialiter de non tuo accessu, necnon quoscumque inobedientes & rebelles, censuras, & poenas comminatas incidisse, & incurrisse, servata forma Concilii Tridentini, declarandi, aggravandi, reaggravandi, & interpretandi, auxiliumque brachii saecularis invocandi, & relaxandi, aliaque omnia & singula faciendi, quae in praemissis & circa ea necessaria fuerint, seu alias quomodolibet opportuna, plenam tenore Praesentium concedimus facultatem.

§. 7. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac praeter mem. Bonifacii Papae VIII. etiam praedecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, necnon quibuscumque immunitatibus, exemptionibus, aliisque praemissis, ac aliqua possessione, vel forsitan usurpatione de non solvendo, & contribuendo, necnon nostra de non tollendo Jure quaesito aliisque Cancellariae Apostolicae regulis; privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, quibuscumque personis, in genere vel in specie, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque derogatoriis derogatoriis, aliisque clausulis, & decretis, sub quibuscumque verborum formis & tenoribus etiam Motu simili, ac alias in contrarium praemissorum quomodolibet concessis, confirmatis & innovatis. Quibus omnibus, etiam si de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales, idem importantes, mentio, seu quavis alia expressio habenda esset, illorum tenores Praesentibus pro sufficienter expressis habentes, Motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus specialiter & expresse harum serie derogamus. Aut si ali quibus, communiter vel divisim à praedicta Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum, de indulto hujusmodi mentionem.

Nulli ergo omnino hominum, &c.

Datum Romae apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicae millesimo quingentesimo octavo, quinto, 3. Calen. Julii, Pontificatus nostri anno 1.

Anno a Nativitate Domini 1585. indictione 13. die vero 9. mensis Julii, Pontificatus Sanctiss. in Christo patris & D. N. D. Sixti divina providentia Papae V. anno 1. scripta Litterae Apostolicae affixae & publicatae fuerunt in vasis seu portis Ecclesiarum S. Joannis Lateranen. & Principum Apostolorum de Urbe, necnon in vasis Cancell. Apostolicae & in acie Campi Florae, ut moris est, per nos Caertherium Menandri, & Nicolaum Taglietum S. D. N. Papae Cus.

Pompeus Guerra Mag. Cus.

Prohibitio alienandi per subditos Status Ecclesiastici, in non subditos & forenses, bona in eo existentia, aut sortalia & castra, absque Sedis Apostolicae licentia.

Hanc constit. approbavit, declaravit, & ampliorit Clem. VIII. in sua const. 78. Romanum, in Tom. III. fol. 135. ubi de similibus materiis etiam notabo in rubrica.

Ampliorit novissime, & declaravit has Sixti, & Clem. const. & extendit tam in forenses, quam in subditos, absque Sedis Apostolicae expressa licentia in scriptis obtinenda, Paul. V. const. 108. Pastorale, inf. tom. 2. Quas omnes approbavit, & respective extendit etiam ad Castra diruta, Tenutas, & Praedia, etiam non jurisdictionalia in confinibus loci jurisdictionalis, & bona in dicto Statu in confinibus Principum exterorum sita, illorumque locationes, & censuum annuorum super praemissis impositiones, & impolitorum vendiciones S. D. N. Urban. VIII. const. 65. Licens. inf. dicto tom. 4. Quae tam partibus praefixit

Declaratio quod a Data Praesentium revocatio afficiat.

Confirmatio bullae Pii V. & aliorum Pont.

Lites quascumque de super ortas extinguat.

Sic & non aliter judicari mandat.

Executores deputat.

Clausula derogatorias apponit.

D. P. An. 1. 19. Junii.

publicatio.

III.

terminum ad revocandum acta contra nos Constitutiones in sua conit. 72. Sedes d. tom. 4. Et ne de cetero fierent hujusmodi alienationes exiit Congregationem super hujusmodi confinis cum facultatibus quas videre poteris ad ejusdem S. D. N. Urb. VIII. const. 73. Debitum.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Causa hujus confinis.

Confirmatio statutorum prohibitionum alienationis bonorum in non subditos.

Prohibitio alienandi bona in statu Ecclesiastico existentia aliis quam vasillis abique Sedis Apostolicæ licentia.

Prohibitio alienandi castella & fortalicia in statu Ecclesiastico existentia aliis quam vasillis abique Sedis Apostolicæ licentia.

Præceptum, quod non revertitur ad statum Ecclesiasticum illa vendenda intra biennium.

Solicitude, paternæque affectus, quo Sedis Apostolicæ subditos prosequimur, Nos inducunt, ut ea diligenti cura prospiciamus, quæ ad illorum conservationem, statumque Ecclesiæ utilitatem & commodum pertinent.

§. 1. Accepimus siquidem, quod in diversis Civitatibus, terris, oppidis, & castris, Nobis & dictæ Sedis temporalis ditioni subiectis exant statuta prohibentia, res ac bona stabilia in forenses & non subditos alienari. Nihilominus nonnulli cives & incolæ Civitatum, terrarum, castrorum & locorum hujusmodi bona stabilia, aliis personis extraneis vendere & alienare præsumunt in maximum & præjudicium & damnum civium & incolarum prædictorum.

§. 2. Quocirca Nos considerantes quantum statuta prædicta utilia & favorabilia sint, quantumque Reipublicæ intersit dicta bona in illius cives, & habitatores conservari, Motu proprio, nō ad alicujus Nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed de nostra mera deliberatione, & ex certa scientia, statuta hujusmodi, etiam si non sint in usu, Apostolica auctoritate tenore Præsentium de cetero observari mandamus.

§. 3. Et nihilominus, quod perpetuis futuris temporibus, Universitates, Civitates, Collegia, feudata, quicumque, ac persone cujusvis status, gradus, ordinis, qualitatis, & conditionis existant, etiam si Imperiali, Regali, Ducali, vel alia quavis auctoritate & dignitate, etiam Ecclesiastica, quæ specialem & individuum mentionem requirerit, prædicti sint, nullatenus sine nostra & Sedis prædictæ licentia, audeant seu præsumant Civit. oppida, castra, feuda, jurisdictiones, ac bona quæcumque stabilia vel immobilia in dicto Statu Ecclesiastico existentia cujuscumque qualitatis, quantitatibus, & valoris per eos, nunc & pro tempore possesse vendere, permutare, ultra triennium locare, in emphyteusim, feudum, livellum, pignus seu precarium concedere, in aliquam Communitatem, Universitatem, Collegium vel personam extraneam seu forensem, quæ Nobis & dictæ Sedi rationem temporalis jurisdictionis, Status nostri subdita, & supposita non sit, vel quæ domicilium legitime non contraxerit in dicto nostro Statu, cujuscumque dignitatis, status, gradus, conditionis, & qualitatis existat, etiam si, ut præfertur, Imperiali, Regali, Ducali, vel alia quavis auctoritate & dignitate, etiam Ecclesiastica, quæ specialem & individuum mentionem requirit, prædictus sit.

§. 4. Insuper quia decens & conveniens existit, quod si vendantur vel permutabletur seu etiam donentur Civitates, castra, & oppida, multo magis fortalicia, id ad notitiam Principis deducatur, & præsertim si feuda & jurisdictiones feudales, ea omnia, nec in exteros, nec in alios quoscumque nisi de expressa præcedente, nostra & pro tempore existentis Romani Pontificis eadem supradicta licentia, vendi, permulari, vel donari valeant.

§. 5. Neque etiam extraneus aut subditus originarius, bona hujusmodi in dicto Statu habens, & in eo habitans, si ab illo discedat amplius ad ipsum non revertitur illa retinere possit, sed intra biennium, ex quo ipse demigraverit, ex vendere, seu pro aliis extra dictum Statum existentibus permulare, aut alias transferre in alium immediate subiectum teneatur, auctoritate & tenore Præsentium, de venerabilium fra-

trum nostrorum S. R. E. Cardinalium consilio, perpetuo statuimus & ordinamus.

§. 6. Licitum tamen erit omni dicti Status habitatori, five extraneo five subdito, de bonis suis in eodem Statu possitis, vel in consanguineos, vel in alios de dicto Statu non existentes, quocumque alio quam venditionis seu permutationis, vel donationis titulo disponere, ac suis, etiam ab intestato hæredibus pariter licebit in illis succedere, qui tamen intra triennium, vel in eundem Statum habitatum veniant, vel bona ipsa, in alium seu alios habitatores & subditos, ut præfertur, transferant. Quod etiam illis extraneis, ad quos bona hujusmodi ex quibuscumque aliis quam venditionis, seu permutationis, aut donationis hujusmodi causis pervenerint, illave acquisiverint, censeatur permittum.

§. 7. Bonorum autem præfactorum appellatione, neque census, neque portiones, seu loca Montium, nec mulierum dotes, sed neque Urbem nostram, quæ communis patria est, cum ejus decem passuum millia circuitu, volumus comprehendere; filii tamen & hæredes dictarum mulierum soluto matrimonio, si extranei fuerint, aut in eodem Statu ad habitandum aut vendendum seu permulare, ut dictum est, sint adstricti.

§. 8. Decernentes, Communitates, Universitates, Collegia, vel personas extraneas, seu forenses hujusmodi ad dictorum bonorum, pro tempore contra earundem Præsentium tenorem alienationum acquisitiones omnino inhabiles; necnon quoscumque contractus, venditiones, & alienationes contra hujusmodi prohibitionem quocumque modo vel causa pro tempore faciendas, nullas & invalidas existere, nullumque jus per eas emptoribus attributum esse, seu tribui posse. Necnon omnes scripturas desuper conficiendas, ac inde secuta quæcumque nullius roboris vel momenti esse, nec ex illis audiri, agi, & excipi posse, in iudicio vel extra; ipsaque bona alienata ad eos, ad quos de jure pervenire debent, spectare & pertinere.

§. 9. Sicque per S. R. E. Card. etiam Legatos ac Vicelegatos, necnon sacri Palatii Apostolici Auditores, Gubernatores, seu illorum Locatentes, aliosve Judices & Commisarios, quavis auctoritate fungentes, sublati eis, & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, iudicari, & definiri debere, necnon irritum & inane, quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 10. Mandantes eisdem Legatis, Vicelegatis, Gubernatoribus, ac Judicibus, nunc & pro tempore in toto statu prædicto existentibus, & eorum cuilibet, ut statutum & ordinationem, & alia præmissa perpetuo ab omnibus ad quos spectat, & pro tempore spectabit, per censuras ecclesiasticas, & alia eis bene visa remedia observari faciant & mandent.

§. 11. Non obstantibus nostris de non tollendo jure quæsito, aliisque Apostolicis constitutionibus, necnon civitatum, oppidorum, terrarum & locorum prædictorum statutis & consuetudinibus, etiam iuramento, confirmatione Apostolica, vel quacumque alia firmitate munitis, ac etiam immemorabili, & quantocumque tempore pacifice observatis, necnon civitatibus, civitatibusque iuribus, privilegiis, exemptionibus & indultis Apostolicis, illis eorumque Dominis prædictis, ac quibuscumque aliis per quoscumque Rom. Pont. ac nos & dictam Sedem quomodocumque & quotiescumque concessis, confirmatis, & innovatis, quæ omnia, illorum tenore præsentibus pro plene & sufficienter expressis habentes, omnino tollimus & abrogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 12. Volumus autem easdem præsentibus, quoniam in Consistorio nostro, & de consilio prædicto promulgatae sunt, a die date ipsarum quocumque, tam præsentibus quam abstantibus, & ubicumque etiam extra dictum statum existentes perinde obligare, ac si cuique singulatim intimatae fuissent. Ex nihilo.

Declaratio circa supra dictas prohibitiones.

Declaratio bonorum, ut supra alienari prohibetur.

Clausula sublati, & Decretum irritum.

Præceptum, ut ubi voluntas hujusmodi.

Clausula derogat.

Forma & fides publicum, hanc const. quom publicum habet hanc in fin.

1585.

minus, ut illæ amplius innotescant, mandamus eas valvis Ecclesiæ Sancti Joannis Lateranensis, & Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, aliisque locis consuetis appendi, & in libris dictæ Cameræ describi. Ac etiam volumus, ut ipsarum exempla, etiam impressa edantur, eaque Notarii publici mano, & sigillo cuiuscunque Curie, Ecclesiæ, aut personæ in dignitate ecclesiastica constitutæ obligatæ, eam ipsam prorsus fidem ubique locorum, in iudicio & extra illud faciant, quam ipsæ præsentēs facerent, si essent exhibitæ vel offensa.

Sanctio
penalis.

§. 13. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrorum mandatorum, statuti, ordinationis, decreti, sublationis, abrogationis & voluntatis infringere vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem omnipotentis Dei ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursurum.

D. P. An. 1.
die 1. Julii.

Dat. Romæ apud S. Marcum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo octuagesimo quinto, Kal. Julii, Pont. nostri anno primo.

Papæ subscript.

Ego Sixtus Catholicæ Ecclesiæ Episcopus.

Cardinalium
subscriptio.

Ego Jo. Anton. Episc. Tusc. Card. S. Georgii.
M. Sicic. Card. ab Altaemps.
Ego In. Ava. Card. de Arag.
Ego P. Card. Sancti Crucis.
Ego Gulielm. Silerus Card.
F. Mic. Bo. Card. Alex.
Ego Lud. Card. Madrucius.
Ego N. Card. Senonensis.
Jul. Ant. Sanctioris Card. S. Severinæ.
P. Card. Casius.
Ego Hier. Card. Rusticus.
Jo. Hier. Card. Albanus.
P. Card. Deza.
Ego Ant. Card. Carafa.
Jo. Ant. Car. SS. Quatuor.
Ego Jo. Bap. Card. S. Marcelli.
Ego Aug. Card. de Verona.
Ego Vin. Card. Montis Regalis.
Ego M. Card. S. Stehani.
Scipio Card. Lancelottus.
Ego Aloyisius Card. Essen.
Ego Fer. Card. de Medicis.
Phil. Vass. Card. Cam.
Ego Vincen. Card. Gonzaga.
Alex. Card. de Montealto.

Publicatio.

Anno à Nativitate Domini nostri JESU Christi 1585.
Indictione 13. die vero Mercurii 25. mensis Septembris, Pontificatus Sanctissimi in Christo patris, & D. N. D. Sixti divina providentia Papæ V. anno primo, retrospectiva litteræ Apostolicæ affixæ, & publicata fuerunt ad valvas Ecclesiarum Sancti Joannis Lateranensis, Principis Apostolorum de Urbe, necnon Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, ut moris est, per nos Joann. Barlaam, & Franciscum Baron, præbuiti S. D. N. Papæ Apost. Curf.

Jo. Andreas Panizza Mag. Curf.

IV.

Exemptiones & gratiæ Clericorum Regularium Congregationis S. Majoli alias de Somaicha à Gregorio XIII. elargitæ.

Ad hæc vide per me notata sup. in consit. 21. Paul. III. Ex injuncto, lom. 1.

Edita A. D.
1585.

SIXTUS EPISCORUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Æquum reputavimus, ac rationi consonum, ut ea, quæ de Romani Pontificis providentia

præterit in personarum ecclesiasticarum commodum processerint, licet ejus superveniente obitu, litteræ Apostolicæ deluper confectæ, non fuerint suum fortitæ effectum.

§. 1. Dudum liquidemfel. record. Gregorio PP. XIII. prædecessori nostro pro parte dilectorum filiorum Præpositi & Clericorum, aliarumque personarum Regularium Congregationis S. Majoli alias Somaichæ, sub Regula S. Augustini canonice institutæ, & Apostolica auctoritate confirmatæ supplicato, quatenus eos specialibus favoribus & gratiis prosequi, de benignitate Apostolica dignaretur, præfatos prædecessor, qui circa statum personarum quarumlibet divino cultui emancipatarum salubriter dirigendum paternæ sollicitudine libenter prospiciebat, ac earum operationes & gravamina relevabat, ut quibuslibet perturbationibus fœmoris, facilius valerent Altissimo suum exhibere famularum, eisdem Præpositum, Clericos, & personas regulares specialis gratiæ favore prosequi volens & à quibusvis excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris & pœnis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet inmodati existerent, ad effectum infrascriptorum dumtaxat consequent. harum serie absolventes, & absolutos fore cientes, hujusmodi supplicationibus inclinatus sub dat. 3. idus Martii, Pontificatus sui anno 13. omnes & singulas dictæ Congregationis, Præpositum generalem, Superiores, Officiales, Presbyteros, Clericos, ceteraque personas professas & non professas, necnon familiares & ministros, cum omnibus & singulis Ecclesiis, Oratoriis, Cæmeteriis, Capellis, Domibus, Conventibus, mobilibus & immobilibus, præsentibus & futuris, bonis, ac juribus & jurisdictionibus quibuscunque, ac rebus, tam sacris & religiosis quam profanis ad ipsam Congregationem spectantibus & pertinentibus, ac ubicunque existentibus, quæ de præfatis legitime possident, & in posterum, Deo juvante, canonice per eos acquiri contigerit, ab omni jurisdictione, dominio, potestate, su, erroritate, subjectione, visitatione, correctione quorumcumque Ordinariorum, quacunque dignitate, præeminentia & auctoritate fungentium, & aliorum Judicum ecclesiasticorum & secularium, Apostolica auctoritate in perpetuum exemit & liberavit, & sub sua & sedis Apostolicæ ac Beati Petri, rotatione immediate recepit. Ipsius Præpositi Generalis, clericis & personis, ut idem Ordinarii & officiales, aut alii, cumque Judices, etiam ratione criminis, delicti, contractus, nullam in Præpositum, personas Congregationis, ac res & bona præfata, jurisdictionem, potestatem, superiorem tatem & dominium exercere possent.

§. 2. Necnon quod omnes & singuli ipsius Congregationis presbyteri regulares, a sub superioribus ad id specialiter approbati, eorumque licentia vel consensu deluper requisito & obtento, possent in Ecclesiis propriis ipsius Congregationis, vel in aliis etiam quibuscunque, de licentia illorum Superiorum, missas celebrare, confessiones quorumcumque Christianorum etiam alienarum Parochiarum subditorum audire, & sanctum Eucharistiæ Sacramentum ministrare, quibuscunque festis ac non festis, ac Dominicis diebus, & omnibus temporibus, Paicharis dumtaxat ex eptis, neque sub prætextu antiquæ consuetudinis, & ex eo quod Ecclesiæ in quibus sacramenta hujusmodi ministrarent, & munera prædicta obirent, aut alio modo is delirerent, subditæ essent alieni Ecclesiæ tanquam matri, aut cathedrali, seu titulari, vel alias, idcirco in aliquibus to'eminentibus, aut temporibus juxta primum morem clericorum delerventium in talibus Ecclesiis subditis, ipsi præbent & clerici regulares dictæ Congregationis majores hujusmodi Ecclesiis, vel locorum Ordinarii, & Episcopali vel Archiepiscopali, aut majori dignitate fungentibus, etiam S. R. E. Cardinalibus, quocumque privilegio & facultate suffultis, assistere, seu intervenire, sive utrum personale servitium præstare, aut aliquo modo ministrare, neque ad funera delinctorum,

Greg. XIII. Congreg. exten puenem à jurisdictione & superioritate ac visitatione Ordinariorum, ali. nun. que judicium concessit.

Licentiamque divini sacramenta omnibus Christianis fidelibus, etiam alienarum parochiarum, subditis omni præter quam Pastoralis tempore ministrandi. Et exemit etiam servitium ministrorum ministerium, & funerarium.

nisi

ANNO
1585.

Transfrum
ad alium
etiam ar-
diorem Or-
dinem præ-
terquam
Capuccino-
rum & Car-
tusanorum
absque Su-
perioris hu-
jus Congre-
gationis li-
centia in-
terdixi.

Emitteni-
busque
professio-
nem con-
cessit, ut ea
die consec-
tionem elu-
gentes, qui
ipsos absol-
veret, &
cum ea dis-
pensaret
fecit.
In hoc at-
tendenda
est consti-
t. 115. Clem.
VIII. Quo-
cumque
fol. 181. To-
mas 1. ubi
nulla
generaliter
corrigit.

Quibus-
cumque
non cessat
ib.

Hic modo
Pontific. Li-
tera: præ-
dicti Greg.
XIII. ob
eius mor-
tem non ex-
peditas to-
taliter val-
dat.

Sar Gio-
nemo ex
per alen
apponit.

SIXTUS QUINTUS.

331 ANNO

nisi eorum quos in Ecclesiis ipsius Congregationis se-
pelire contigerit, etiam vocati accedere tenerentur,
neque ad id cogi aut compelli ullo modo possent, de
eadem auctoritate concessit & indulgit.

§. 3. Præterea universis & singulis qui in ipsa Con-
gregatione professionem emiserant, vel emitterent,
ne in posterum ad quemcumque alium Ordinem
vel Congregationem, etiam arctius in eo vigeret Re-
gularis Observantia, (Fratrum Minorum Capucci-
norum nuncupatorum, & Cartusianorum dumtaxat
Ordinibus exceptis) nisi obtenta prius à Superiore
dictæ Congregationis licentia, transire valerent, &
in singulo transientes apostasie poenam, quam ipsos
& illorum receptatores, etiam cujuscumque privile-
gii Apostolici prætextu, cuius hunc effectum, idem
Prædecessor specialiter & expresse derogavit, excom-
municationis sententiam à qua non nisi per Rom.
Pontificem pro tempore existentem absolvi possint,
promulgavit.

§. 4. Postremò omnibus & quibuscumque per-
sonis professionem regularem in dicta Congregatio-
ne emisissent, in ipso professionis emissionis die, ut
aliquem dictæ Congregationis presbyterum possent
sibi eligere confessorum qui ipsos, confessione eor-
um audita, à quibuscumque excommunicationis, aliis-
que Ecclesiasticis sententiis, censuris & poenis, à
jure vel ab homine, & in quibus inlorderent, &
declarati, ac publicati forent, etiam in casibus Sedi
Apostolicæ relictis, & in Bulla die Cœnæ Domini
legi solita contentis, facta prius debita satisfactione,
& sine alicujus præjudicii, semel tantum injun-
cta salutari poenitentia, absolvere possent facul-
tatem concessit & indulgit, ac cum eisdem super qua-
cumque irregularitate ex quacumque causa (præ-
terquam ex homicidio voluntario, ac bigamia)
quomodolibet contracta, sine censuris præfatis liga-
ti, missas & alia divina officia, non tamen in con-
tempnum clavium, celebrarent, vel aliis divinis se
immiscerent, ita ut ea non obstant, nondum pro-
moti, omnes & sacros etiam presbyteratus Ordines
suscipere, & promoti in susceptis per eos Ordi-
nibus hujusmodi, etiam in altaris ministerio mini-
strare libere & licite valerent, eo ipso quod pro-
fessionem emitterent auctoritate præfata dispen-
savit.

§. 5. Non obstantibus quibuscumque constitutioni-
bus & ordinationibus Apostolicis, ac in provin-
cialibus & synodaliibus Conciliis editis, generalibus
vel specialibus, necnon quibuscumque decretis, etiam
juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis
firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus;
ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 6. Ne autem de absolutione, extensione, libe-
ratione, receptione, singulis concessionibus, in-
dultis, & dispensatione Gregorii prædecessoris hu-
jusmodi, pro eo quod super illis, ejus superven-
iente obitu Literæ consecræ non fuerint, valeat
quomodolibet excitari, ipsique Præpositus Genera-
lis, Clerici, & alie personæ Congregationis hujus-
modi illorum frustrarentur effectu, volumus & simi-
liter Apostolica auctoritate decernimus, quod absolu-
tione, exemptio, liberatio, receptio, singula con-
cessionis, indulta, & dispensatio Gregorii prædeces-
soris hujusmodi, perinde à dicta die Id. Martii suum
sortiantur effectum, ac si super illis præfati Gregorii
prædecessoris Literæ, sub ejusdem diei data conse-
cræ fuissent, prout superius enarratur. Quodque
præfentes Literæ ad probandum plenè absolu-
tionem, extensionem, liberationem, receptionem, sin-
gulas concessionis, indulta, & dispensationem Gre-
gorii prædecessoris hujusmodi ubique sufficiant, nec
ad probationis alterius administrandum requiratur.

§. 7. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc
paginam nostræ voluntatis & decreti infringere, vel
ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc atten-
tare præsumpserit indignationem omnipotentis Dei,
ac Beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se
noverit incursurum.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarna-
tionis Dominicæ, millesimo quingentesimo octua-
gesimo quinto, Calen. Maji, Pontificatus nostri
anno primo.

Quod Clerici regulares Congregationis S. Pauli De-
collati, ad processiones & actus publicos accedere
non cogantur, ex indulto Greg. XIII.

Hujus Congregationis institutionem, & cetera quæ eam
concernunt, indicavi sup. Clem. VII. const. 37. Vo-
ta. fol. 691. Tom. I.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

Rationi congruit, & convenit honestati, ut ea
quæ de Romani Pontificis gratia processerunt,
licet ejus superveniente obitu, literæ Apostolicæ
desuper consecræ non fuerint, suum sortiantur ef-
fectum.

§. 1. Dudum siquidem per fel. record. Gregorium
Papam XIII. prædecessorem nostrum accepto, quod
licet dilecti filii, Clerici, Presbyteri, Superiores, &
personæ Congregationis Clericorū Regularium San-
cti Pauli Decollati, à quinquaginta annis vel circa,
auctoritate Apostolica instituta, à principio institutio-
nis Congregationis hujusmodi, ut juxta pium eorum
institutum, à quibuscumque occupationibus expedi-
tis, animarum salutem libere consulerent & invigilarēt,
ad publicas processiones quæ in Civitatibus & locis,
in quibus ipsa Congregatio propagata erat fiebant &
celebrabantur, ac ab Ordinariis locorum indicaban-
tur, convenire non consueverint, atamen bonæ
mem. Carolus tit. S. Prædixis presbyter Cardinalis
Borromæus nuncupatus, Ecclesiæ Mediolanensis ex
dispensatione Apostolica Præfatus, S. Barnabæ Medio-
lanensis & Beate MARIE Virginis Corobioli nun-
cupati Oppidi Mediolanensis Diocesis do-
morum dictæ Congregationis Clericos, Presbyteros,
Superiores, & personas ad processiones hujusmodi
comitandum induxerat, cui ipsi Clerici, Præpositi,
Superiores, & personæ ob singularem observantiam,
qua eum prosequerentur obtemperant, quibus
quoque idem Carolus Cardinalis locum in hujusmodi
processionibus post omnes quorumcumque Ordinum
regulares constituerat, quod Canonici regulares se
agrè molestique ferre cum plurimis protestationibus
significarent, prout tunc temporis prædicto Carolo
Cardinali, sicut Domino placuerat vita functo, id pati
nullatenus se velle proficiebantur. Idcirco cume-
orundem Clericorum, Presbyterorum, Superiorum, &
personarum institutioni non inveniret, ad similes pro-
cessionibus accedere, & quæ propria erant eorum in-
stituti prætermittere cogentur, idem Prædecessor ex
incumbenti sibi Apostolicæ sollicitudinis studio, cir-
ca statum personarum Ecclesiarum quarumlibet di-
vino cultui emancipatarū salubriter dirigendum, li-
benter prospiciens, & intendens, ac earum quas suavi
Religionis jugo noverat esse suppositas, ut quibuslibet
perturbationibus semotis, facilius valerent suum Al-
tissimo exhibere famulatum, oppressiones & gravami-
na revelare, necnon quæcumque scandala, quæ præ-
ceditæ causa inter Clericos, Presbyteros, Superiores,
ac personas, necnon Canonicos Regulares hujusmo-
di, ac forsitan alios, intercedere possent, tollere volens,
ac Congregationem, illiusque Clericos, Presbyteros,
Superiores, & personas hujusmodi eorumque singu-
los, à quibuscumque excommunicationis, suspensionis &
interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris,
& poenis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel
causa latis, si quibus quomodolibet innodati exis-
tiant, ad effectum dumtaxat infra scriptorum conse-
quendum absolvens, & absolutos fore censens, sub
datis videlicet Idibus Martii, Pontificatus sui anno

V.

Edita A. D.
1585.

Exordium.

Greg. XIII.
ex causis
hic expressis
concessit
hinc Con-
gregationi;
ne ejus
Clerici ad
processio-
nes, & ejus-
modi actus
publicos in-
viti accede-
re cogan-
tur.

1585.

1585.

tertio decimo, Motu proprio non ad Congregationis, illiusque Clericorum, Presbyterorum, Superiorum, & personarum prædictorum, vel aliorum; ro eis ipsi Prædecessori super eo oblatæ petitionis instantiam, sed de sua mera liberalitate, Congregationi, necnon Clericis, Presbyteris, Superioribus & personis prædictis, quod ex tunc de cetero perpetuis futuris temporibus, quibuscumque processionibus & aliis qui bustibet actibus publicis quocumque tempore, de more vel consuetudine, aut aliis pro tempore fieri deis & celebrandis, ac ab Ordinariis prædictis indicendis, interesse minimè tenerentur, nec ad id ubique locorum per quoscumque Ordinarios, aliasque personas inviti, cogi, aut compelli possent, Apostolica auctoritate prædicta perpetuo concessit & indulgit, ac quicquid secus super his à quo iam quavis auctoritate scienter vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane decrevit.

Obstantibusque derogavit.

§. 2. Non obstantibus piæ memorie Bonifacii Papæ VIII. etiam Prædecessoris nostri, qua caverur, ne quis extra suam Civitatem vel Dioecesim, nisi in certis inibi expressis casibus, & in illis ultra unam diem ad iudicium extrahatur, seu ne Iudices à Sede Apostolica deputati extra Civitatem vel Dioecesim in quibus deputati fuerint, contra quoscumque procedere, aut alii vel aliis vices suas committere præsumant, & de duabus diebus in Concilio generali editum, dummodo ultra tres dies aliquis auctoritate Præsentium ad iudicium non trahatur, necnon quibuscumque Apostolicis, ac in Provincialibus & synodalibus Conciliis editis, specialibus & generalibus constitutionibus & ordinationibus, contrariis quibuscumque; aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem efferi Sede indultum, quod interdici, suspendi velexcommunicari non possint per Literas Apostolicas, non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

Hic Pontificatus litteras Greg. XII. ejus superveniente obitu non expeditas, validas & servari mandat.

§. 3. Ne autè de absolutione, concessione, indulto, & decreto prædictis, pro eo quod super illis ipsius Gregorii Prædecessoris, ejus superveniente obitu, Litteræ confectæ non fuerant, valeat quomodolibet hæsitari, ac Congregatio, necnon etiam Clerici, Presbyteri, & Superiores, & personæ huiusmodi illarum frustrentur effectu, volumus & similiter Apostolica auctoritate decernimus, quod absolutio, concessio, indultum, & decretum Gregorii Prædecessoris huiusmodi, perinde à dicta die Id. Martii suum sortiantur effectum, ac si super illis ipsius Gregorii Prædecessoris Litteræ, sub ejusdem diei data confectæ fuissent, prout superius enarratur. Quod, ut Præfentes Litteræ ad probandum plenè absolutionem, concessionem, indultum, & decretum huiusmodi, ubique sufficiant, nec ad id probationis alterius adminiculum requiratur.

Executoresque deputat.

§. 4. Quocirca dilectis filiis Archiepiscopo Feclesie Mediolanensis & Vicariis venerabilium Fratrum nostrorum Patrum, ac Leudens. Episcoporum in spiritualibus generalibus, per Apostolica scripta mandamus motu simili, quatenus ipsi vel duo aut unus eorum, per se, vel alium, seu alios eandem Præfentes Litteras, & in eis contenta quæcumque, ubi, & quando opus fuerit, & quoties pro parte Congregationis & Clericorum, Presbyterorum, Superiorum, & personarum prædictarum, aut pro eis agentium, fuerint requisiti, solemniter publicantes, illisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra, Congregationem ac Clericos, Presbyteros, Superiores, & personas, necnon pro eis agentes, prædictis concessione, indulto & decreto, aliisque præmissis juxta earundem Præsentium continentiam & tenorem, pacifice frui & gaudere, non permittebant eos aut eorum aliquem defu, er per quoscumque quomodolibet indebitè molestari, perturbari aut impediri. Contradictores, quoscumque & rebelles, per sententias, censuras, & pœnas Ecclesiasticas, aliæque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita conspescendo; ac legitimis super his habendis servatis processibus, illos sententias, censuras, & pœna huiusmodi incurrisse de

clarando; ac eis in centuras & pœnas, etiam iteratis vicibus aggravando, & interdictum Ecclesiasticum apponendo, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit auxilio brachii secularis, non obstantibus omnibus supradictis.

§. 5. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam &c. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo octuagesimo quinto, Kalen. Maji, Pontificatus nostri anno 1.

Innovatio omnium constitutionum à Romanis Pontificibus hæcenus editarum, contra exules, bannitos, aliosque facinorosos homines, eorumque receptatores & fautores, & multarum impositio pœnarum in eisdem, necnon contra Communitates & alios, sua territoria ejusmodi celestis hominibus expurgata, non custodientes.

Quoad primam partem, extat in hoc opere constit. 8. Pii II. Ad reinvidendas Tom. I. fol. 373. constit. 4. Pauli II. Viros, fol. 382. constit. 14. Innoc. VIII. Licet ea. fol. 446. constit. 6. Julii II. Cum homines constit. 36. Leonis X. Omnes fol. 599. constit. 10. Clem. VII. In sancta, fol. 656. constit. 17. Julii III. Cum civitates, & constit. 25. Clem. VIII. in dicto Tomo I. Et extat etiam supra in hoc Tomo 2. Pii IV. constit. 27. In eminenti, fol. 41. Pii V. constit. 10. Ex superna, fol. 200. & Greg. XIII. constit. 65. In tanta. lib. 2. quo verò ad secundam partem, contra non custodientes eorum territoria, habes supra in Tomo 1. fol. 465. constit. 2. Julii II. Quia & constit. 28. Leon. X. Romani, fol. 593. nec non constit. 27. Pii IV. In eminenti, fol. 41. & constit. 10. Pii V. jam citatas in hoc Tomo 2. supra fol. 200.

Præterea adversus ejusmodi perfidos homines, omnesque vindictam transverale iumentes, Paulus II. edidit d. constit. 4. Viros, Tom. 1. fol. 382. ubi notavi. Prout contra minantes pro habenda pace, aliam edidit constit. jam citatam Innocentii VIII. fol. 447. ubi dixi lib. 1. Necnon contra Franchitias in Urbe tenentes vel acclamantes, habes sup. constit. 17. Jul. III. Cum Civitate; cum aliis ibi indicatis Et contra facientes cavatam, habes infra constit. 7. Dum pro, ubi alias notabo. Prout circa appellationes istorum in contumacia condemnatorum rotavi supra in hoc Tomo 2. m. constit. 52. Pii IV. Et si unctia, fol. 71. & in Pii V. constit. 138. Licet juri. Et tandem de prohibita eorum remissione, attende constit. 154. Clem. VIII. infra fol. 21. Tom. 3.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei, Ad perpetuam rei memoriam.

Hoc nostri Pontificatus initio, inter multa Reipublicæ damna & incommoda, quæ menti nostræ observantur, Nobis longè fuit gravissimum quod Populus Sanctæ Romanæ Ecclesiæ ditioni temporalis subiectos, non modò ad rerum substantiarumque suarum perturbationem & jacturam, sed etiam vitæ periculum redactos invenimus, exulibus, bannitis, ceterisque id genus facinorosis hominibus, ita undique ingruentibus & grassantibus, ut vix quicquam ab hac hominum peste, tutus alicubi consistere posse videntur. Quare cum ad hæc sananda mala, ex officio, nostri debito, & præcipua erga nostros, ac ejusdem Romanæ Ecclesiæ tubditos charitate assidue extimulemur, nihil non agere & tentare decernimus quod Populo optata quies, alus, securitas & tranquillitas per Nos restitatur. Quod ita demum, Deo auxiliante, speramus Nos esse consecuturos, si cautè & provideatur, ne ullum, domi forisque, intra extrave fines nostros, criminosis hominibus huiusmodi pateat dis-fugium, aut receptaculum, sed omnino Legum &

Sanctio po-nalis.

D. P. An. 1. die 1. Maii.

VI.

Edita A. D. 1585.

Causa hu-mani consti-tut.

Magi-

Confirmatio
conf. Prædeces-
forum cum
eorum po-
nens præter-
quam ex-
communi-
cationis.
Tu adverte
quod omnes
iste Bullæ
sunt à me
indicatæ hic
in rub. præ-
ter unum
Sext. IV.
quæ est re-
lata in præ-
dic. conf.
re. Pii V.
§. 3. & 5.

Barones &
Communita-
tes eorum
territoria à
banis &c.
libera custo-
diant.
Vide ad hoc
Bullam Pii
V. & alio-
rum cit. in
2. part. 2.
rubr. & et-
iam hic in-
fra.

Nosque ca-
pian & offi-
cialibus Pon-
tificis confi-
gent, & ca-
pere non
valentes
persequen-
tur, convo-
catis Dom-
ini & Com-
munitatibus
convincimus.

Se ad cavil-
losa pro-
ponenda
exculatio-
nes non ad-
mittantur.

Magistratum securitatem, justitiamque gladium subire, ac debitas penas lere cogantur.

§. 1. Itaque de Fratrum nostrorum consilio, omnes & singulas constitutiones à sel. record. Pio Secundo, & Paulo etiam Secundo, Sixto Quarto, Julio similitur H. Leone Decimo, Clemente Septimo, Julio Tertio, Pio etiam Quarto, Pio Quinto, Gregorio Decimotertio, & quibusvis aliis Roman. Pont. prædecessoribus nostris, suo cujusque tempore, in detestabile prædictorum & aliorum infrascriptorum hominum genus, pro temporis, & criminum ratione editas, cum omnibus & singulis in eis contentis, quoad ea quæ Præsentibus non contrariantur, & excepta excommunicacione sententiâ, per eandem constitutiones in illis contravenientes promulgatâ, quam ne animarum perniciem potius quam salutem adferat, consulto tollendam & submovendam duximus, ex certa scientia nostra approbantes & innovantes, illarumque omnium tenores, ac si verbo ad verbum infererentur, Præsentibus pro expressis & insertis haberi volentes.

§. 2. Universis & singulis Ducibus, Principibus, Marchionibus, Comitibus, Baronibus, & Domicellis, etiam quacumque Ecclesiastica dignitate fulgentibus, necnon Vicariis, Feudatariis, Armorum ductoribus, Capitaneis, Magistratibus, Communitatibus, Universitatibus, & Officialibus civitatum, terrarum, castrorum, oppidorum, & aliorum quorumcumque locorum prædictæ Romanæ Ecclesiæ mediâ vel immediatè subiectorum, in virtute sanctæ obedientiæ, ac sub indignationis nostræ, necnon duorum millium per Communitates, & mille per Universitates, ac quincque millium ducatum auri Cameræ Apostolicæ irremissibiliter ipso facto applicandorum per Dominos temporales, & alios prædictos absque alia declaratione incurridis penis (ultra alias in eorumdem Prædecessorum nostrorum Litteris contentas) districtè præcipiendum mandamus, quatenus adhibita exactissima diligentia, de qua per publica documenta & alias probationes fidem faciant, eorum Civitates, terras, oppida, castra, villas, dominia, loca, & territoria omnia à perduellionibus, homicidiis, latronibus, viarum grassatoribus, raptoribus, incendiariis, sicariis, exititiis, publicæ quietis perturbatoribus, armatis facientibus, Statum Ecclesiasticum hostiliter peragrantiibus, pro quocumque crimine capitali, etiam in contumaciam bannitis, aliisque similibus notoriis delinquentibus, & facinorosis hominibus, etiam nondum condemnatis, eorumque fautoribus & complicitibus, quos omnes, nostros dictaque R. E. rebelles, ac publicos hostes esse decernimus, securâ, liberâ, & expurgatâ, custodire, tenere & præservare.

§. 3. Necnon si quos ex ipsis eo accedere, vel commorari, seu ad prædicta loca declinare, vel illa pertransire contigerit, statim illos capere & apprehendere, ac ad carceres conducere, captosque nostris & pro tempore existentium Romanorum Pontificum Magistratibus & Officialibus fideliter tradere & consignare, populisque suos pulsu campanarum, & aliis signis ad arma convocare & coadunare teneantur. Quod si illos capere & apprehendere per seipsos nequiverint, finitimas quaque Communitates & Universitates, necnon Dominos temporales commonefaciant, & in auxilium convocent, iunctisque simul viribus eosdem perduelliones, homicidas, latrones & alios prædictos forti manu, & incessanter quocumque se verterint, etiam extra proprium territorium, & jurisdictionem ipso prosecutionis actu, usque ad ultimam eorum profugationem persequantur, ac ut capiantur & apprehendantur, seu proficiscantur omnem operam adhibeant.

§. 4. Cumque verisimile non sit huiusmodi hominum genus in occulto versari, & eos qui ad custodiam teneantur, si diligenter invigilent, illorum notitiam non habere, neque tantam multitudinem esse posse, quin à Dominis temporalibus, ac Communitatibus & Universitatibus prædictis vinci & opprimi queat, juncto præteritum finitimorum auxilio,

cavillose exculpationes sibi in posterum nullo modo suffragentur.

§. 5. Particulares verò personæ cujuscumque status, gradus, & conditionis existentes, sub quingentorum ducatum similiter eidem Cameræ ipso facto applicandorum, aliisque corporalibus, etiam ultimi supplicii inclusive, Gubernatorum & Officialium prædictorum arbitrio, juxta cujuscumque personæ & culpæ qualitatem, extendendis penis, cum primum campanæ sonitus, aliave signa, populum adversus dictos facinorosos homines convocantia audierint, vel alias de illis quomodolibet notitiam habuerint, arma capere, & ad locum necessarium currere, ac una cum aliis, & per seipsos omnem conatum in persequendis, capiendis & profigandis bannitis, aliisque nefariis hominibus prædictis adhibere teneantur.

§. 6. Præterea sub eisdem penis, omnes & singuli prædicti, tam in Urbe quam extra eam, ad quacumque Curiam, seu ministrorum & executorum justitiarum, vel cujusque eorum simplicem requisitionem, ac etiam nulla requisitione prævia, si aliquos ipsos resistere, vel sese opponere seu aliquid impedimentum adferre, eoque ad aliquam executionem faciendam auxilio egere quocummodo cognoverint, eidem Curiarum ministris & executoribus, opem & favorem, armata etiam manu conferre & subvenire, ac præsto esse, & denique obedire, eoque si opus fuerit in perquisitione, executione, persequitione, transitu & aliis præmissis comitari debeant.

§. 7. Insuper statuimus & ordinamus, ut si qui ex perduellionibus, homicidiis, latronibus, furibus, & aliis facinorosis hominibus prædictis, in Civitatibus, terris, oppidis, castris, villis, dominiis, locis, & territoriis huiusmodi damna aliqua intulerint, seu furtum aut latrocinium commiserint, nec capti & deprehensi fuerint, sed impune evaserint, Domini temporales, seu Communitates, Universitates, Nobis & Sedi Apostolicæ mittere ac immediatè subiecti, in quorum locis, territoriis & jurisdictionibus respectivè similia perpetrata fuerint, præter hoc quod ad damnum quorumcumque sic illatorum parti lætæ damnaque huiusmodi patienti, ac eorum hæredibus plenariam restitutionem & satisfactionem omnino teneantur, ad tantumdem etiâ quantum damna illata extimata fuerint, Cameræ prædictæ realiter & cum effectu perfolvendum eo ipso sint adstricti, ac alias prout latius continetur in aliis Litteris dicti Pii V. prædecessoris, contra Dominos, ac Communitates, & Universitates, eorum territoria non custodientes editis, quas firmis tamen remanentibus aliis supra, & infrascriptis penis, tenore Præsentium etiam innovamus.

§. 8. Duces quoque, Principes, Marchiones, Comites, Barones, Domicellos, Vicarios, Feudatarios, Gubernatores, Magistratus, Duces, Capitaneos, & Officiales prædictos, necnon quoscumque alios cujuscumque etiam Ecclesiasticæ dignitatis, conditionis, status, gradus, ordinis, excellentiæ,exus & ætatis dummodo decimum quartum illius annum excedant, huius Status & jurisdictionis nostræ temporales, ac prædictæ Romanæ Ecclesiæ in eisdem temporalibus mediâ vel immediatè subiectos etiam dominia, jurisdictiones & loca extra Statum prædictum obtinentes, qui perduelliones, homicidas, latrones, & alios nefarios homines prædictos in suis quique dominiis, terris, oppidis, castris, fortalitiis, villis, locis, territoriis, seu domibus, tam in ipso Statu quam extra eum consentibus receperint seu consoverint, aut quod in illis recipiatur, vel consoverint quocummodo permiserint, seu ne si capiantur impediverint, vel captos eriperint seu occultaverint, aut illis potestatem seu commoditatem evadendi fecerint, vel carcerem, aut aliam quancumque custodiam effregerint, invaserint, aut quocummodo violare tenaverint, live ad hoc homines, vel arma, aliave ministraverint, live alius auxilium, consilium vel favorem, palmam vel in occulto, per se, vel alium, seu alios quocummodo, etiam

Particula-
res personæ
contra ban-
nitos, &c.
arma capi-
ant, & ac-
currant.

Executori-
busque non se
opponant
vel resistant,
sed armata
manu subve-
niant.

Barones &
Communita-
tes facinoro-
sus non ca-
pientes, ul-
tra alias pe-
nas, ad dama-
na reficienda
adstringun-
tur.
Tu ad hoc
vide Bullas
supra cit. in
2. part. 1.
rubr.

Barone &
alii majores
an. 14 & S.
R. E. media-
re & imme-
diatè in tem-
poralib. sub-
iecti in statu
& extra au-
diantes, &
aut eosdem
bannitos re-
ceptantes
vel eorum
persecutio-
nem impe-
dientes pe-
nas hic de-
scriptas in-
currant.

1585.

Hæc bulla
Greg. XIII.
est sup. nu.
12. b. p. p. a.
r. a. d. lib. 2.

Hæc const.
Pa. V. est
sup.

Communi-
tates eos
tolerantes.

extra territoria, jurisdictiones & domos proprias præsterint, seu præstare permiserint, vel etiam quocumque Judices, ministros, aut executores iustitiæ in perquisitione captura vel abductione, ac omnino in eorum officii libera executione, sive in Urbe, sive extra ubique locorum impediverint, seu verberaverint, vel insecuti fuerint, aut conculserint, seu minis vel aliis perterrefecerint, aut ad arma conclamaverint, aliove cōcitaverint, seu ferialia mādaverint, facientibus adhæserint & faverint, seu alicujus Magnatis nomen auxilii causa adversus Curiam, executores & ministros prædictos invocarint, seu franchisas appellaverint (contra quas aliam constitutionem dicti Gregorii prædecessoris desuper editam similiter innovamus acrioribus etiam remediis in dies usuri pro hujusmodi Aysilis, præsertim in dicta Urbe tollendis, & omnino extirpandis) læsæ Majestatis reatum ac nulla juris aut hominis fictione confectum crimen incurrisse, & ejusdem Romanæ Ecclesiæ rebelles, omnibusque & singulis privilegiis, gratiis, libertatibus, indultis, exemptionibus, immunitatibus, realibus & personalibus, necnon Ducatibus, Principatibus, Marchionatibus, Comitibus, Civitatibus, terris, oppidis, castris, dominiis, vicariatibus, guberniis, locis, jurisdictionibus, dignitatibus etiam Ecclesiasticis, honoribus, juribus, officiis, pensionibus, beneficiis, & fructibus Ecclesiasticis, ac etiam quibuscumque feudis & concessionibus, quæ à Rom. prædicta, & quibuscumque aliis Ecclesiis obtinent, & in futurum obtinebunt, ceterisque etiam immobilibus, mobilibus, & se moventibus bonis, juribus & actionibus, eo ipso privatos, ipsosque & illorum filios ad illa, & qualibet alia in posterum obtinenda, ac quocumque actus legitimos exercendos inhabiles & indignos fore, atque esse; Necnon à toto Statu Ecclesiastico, una cum eorum familiis perpetui xilii pœna damnari, domosque, & iusticia, arces, & fortalicia eorumdem demoliri, & solo æquari, seu alius lictæ Cam. juribus adicribi debere, nec illis portam ullius dignitatis, Ecclesiasticæ vel mundanæ unquam patere decernimus & declaramus. Vassallos verò, Custodes, Capitaneos, Officiales, Populos & subditos eorumdem, à fidelitatis juramento, ac homagii, & quocumque alio jure, quo ipsi quomodolibet adstricti fuerint, ex nunc penitus abolvimus & liberamus. Ducatus autem, dominia, vicariatus, gubernia, feuda, civitates, terras, oppida, castra, ceteraque bona prædicta, necnon jura & actiones, cum fructibus & emolumentis eorumdem, Fisco nostro & Camere prædictæ ipso facto absque alia declaratione, citatione, Judicis sententia, seu decreto, vel alia juris & facti solemnitate habenda, etiam in præjudicium filiorum descendendum, & aliorum quorumcumque agnatorum in investituris, concessionibus, seu aliis dispositionibus comprehensorum, in omnibus, & per omnia, perinde ac si per lapsum temporis illorum concessionis, & finitam lineam ad ipsam Cameram redissent, seu devoluta essent, confiscamus, applicamus & incorporamus, illaque sic Nobis, & pro tempore existentibus Romanis Pontificibus & Camere prædictæ aperta, devoluta, confiscata, applicata & incorporata sub constitutione ejusdem Pi. V. prædecessoris de hujusmodi dominiis & jurisdictionibus in feudum, aut alias non concedendis minimè comprehendi etiam declaramus. Necnon quæcumque fideicommissa, substitutiones, & alias dispositiones sub quacumque verborum forma, etiam cum expressa alienationis prohibitione, aliisque strictissimis clausulis & cautelis conceptas, ad hoc ut fructus bonorum hujusmodi fideicommissis subsectorum durante via naturali delinquentis, etiam in contumaciam in prædictis causis condemnati, Fisco applicentur, & in dictæ Camere usum convertantur, proprietatesque dictorum bonorum quamdiu ipse delinquens naturaliter vixerit per Fiscum & Cameram hujusmodi possideantur & detineantur, tollantur & abrogantur.

§. 9. Ad hæc, Communitates & Universitates hujusmodi, si homines facinorosos prædictos receptave-

rint, toleraverint cibis, comæatu, auxilio, consilio, vel favore, aut quocumque alio modo, etiam ut evadant, per se, vel alios, i-verint, omnibus penis supradictis supponimus, eorumque res, & bona omnia, necnon fructus & emolumenta eidem Fisco, modo & forma præmissis applicamus & appropriamus.

§. 10. Particularibus autem hominibus, qui ad facinorosos prædictos capiendos & apprehendendos, iustitiæque ministris tradendos sufficientibus viribus fuerint defuncti, nisi eisdem illico, pro, alave rint, Officialesque populos, & finimicos, ita ut nullo modo evadant, convocaverint.

§. 11. Ac demum iis, qui aliquem in præmissis culpabilem sciverint, nec Nobis vel Successoribus nostris, seu alicui per quem ad Nos vel dictos Successores fideliter deferatur, intra trium dierum spatium revelaverint, penam arbitrio Judicis pro modo culpæ, etiam usque ad mortem inclusive infligendam statuimus.

§. 12. Decernentes super omnibus & singulis præmissis per accusationem, delationem, inquisitionem, & quovis alio modo procedi posse.

§. 13. Ac quæcumque vetula privilegia sive exemptiones, etiam immemorabiles, vel alias quascumque præteritiones, de recipiendis, & non conignandis hujusmodi bannitis, & aliis facinorosis hominibus, nemini contra Præsentium tenorem suffragari, etiam si de eis specialis & individua mentio faciendæ esset.

§. 14. Neque receptatores, fautores, auxiliares, consultores, & alios quocumque, præsentibus nostris ac Prædecessorum nostrorum litteris, ut præstetur, approbatis & innovatis quomodolibet contravenientes quocumque prætextu, etiam agnationis, & consanguinitatis, etiam in primo gradu, aut unico, & non dolose & penitus inculpate, nec ad malum finem receptionis ulatenus exculari, cum beneficium publicum sit privata necessitudine præferendum, nec dolus absit ab eo, qui ipsi nefarius hominibus, & publicis inimicis quocummodo se amicum præstat, genusque hominum hujusmodi facile cognoscatur. Eum quoque qui se se vi & metu, ad manifestum & instantis viæ periculum evitandum, de quo tamen per legitimas probationes docere teneatur, eis receptum dedisse, sive victum, & alia præstitisse asseruerit, nequaquam excusari, nisi quam primum se subiigere, vel alios transire potuerit, nulla interposita mora, de transitu vel statione dictorum facinororum hominum vicinorum locum, illiisque Magistratus & officiales certioraverit.

§. 15. Sique per quocumque Judices ordinarios & delegatos, quavis auctoritate fungentes, sublati eis & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, ubique iudicari & definiri debere, necnon irritum & inane, ut quicquid secus super his à quocumque quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 16. Et nihilominus, ut præmissa suum debitum (prout ex intimo cordis affectu exoptamus) consequantur effectum, Dilectis filiis ejusdem S. R. E. Camerario, Urbis Gubernatori, causarum Curia Camere prædictæ generali Auditori, necnon Provincialium nostrarum Legatis, de quibus plurimum confidimus, ac Vicelegatis & Præsidibus, Civitatumque & aliorum locorum prædictorum Recloribus & Officialibus, ac ceteris omnibus singularum consuevitum & Litterarum prædictarum executoribus similiter in virtute sanctæ obedientiæ, ac sub indignationis nostræ pœna per Apostolicam scriptam mandamus, ut quisque pro se ad omnimodam præsentium, ac aliarum Litterarum & constitutionum prædictarum, necnon penarum omnium in eis contentarum executionem omnino procedentes, illas omnes, & in eis contenta quæcumque semper & ubique per omnia loca prædicta, ac ab omnibus sub illis comprehensis inviolabiliter observari, Capitalesque sententias prædictas à iustitiis ministris absque alicujus irregularitatis incurso exceptui mandent & faciant, ac pro executione penarum pecuniarum contra Communitates, Universitates,

1585.
-len
-m
-runt.

Particulari
res autem
eos - pte
non valen
tes ille
pialere
& convicti
conve
care debent
- cientes
in præmissa
aliquem esse
culpabilem
revelare
teneant.

Privilegia
de non
consignan
- libatibus
- evocantur.

Receptatores
non exculantur
per textum
- gnationis
- vel consanguinitatis
- non datur
- receptationis.

Claus. derog.

Executores
deput. ror
facultates.

Claule
terogato
112.

Domino temporales et alios praeiudicio propter co
rum inobedientiam repressas concedant, realiter
& irremissibiliter dictas poenas pecuniarias exi
gant.

§. 17. Non obstantibus fideicommissis, investi
turis, concessionibus, substitutionibus, testamentis,
& aliis dispositionibus, necnon privilegiis, exem
ptionibus, ac aliis praemissis, quorum omnium te
nores, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omis
so, & forma in illis tradita observata, inserti forent,
praesentibus haberi volumus pro expressis insertis,
necnon omnibus quae in singulis litteris praedictis
concessum est non obviare, ceterisque contrariis qui
buscunque.

§. 18. Rogamus quoque & hortamur attentè in
Domino, omnes & singulos quacunque iurisdictione
nem temporalem extra Statum ecclesiasticum prae
dictum exercentes, etiam Regia, Ducali, vel alia qua
cumque mundana vel Ecclesiastica auctoritate, supe
rioritate & excellentia fulgentes, velint pro sua, in
Nos & hanc sanctam Sedem Apostolicam, devotione & ob
servantia, reique ipsius aequitate providere, ne post
hac in provinciis, dominiis, & locis suis perduellio
nes, homicidia, & alii facinorosi praedicti ullo modo
recipiantur, affluantur, vel tui reddantur; quin
imo si ipsos ad illa declinare, aut ibidem reperiri
conspigerit, per suos iustitiae ministros & executores
capi & apprehendi, ac ad Praefides & Gubernatores
Provinciarum & locorum nostrorum, unde ipsi origi
nem traxerint, vel delictum commiserint, liberè con
duci & remittere, eisque consignari mandent & procu
rent. Ac quoscunque salvos conductus, & alias af
fectionibus revocent & annullent, prout Nos vice
versa id ipsum contra huiusmodi facinorosos homines
a dictis eorum provinciis & dominiis bannitos, fieri
& observari curabimus; sperantes hac optima ratio
ne omnino futurum, ut ejusdem R. E. & cuiusque
eorum ditionis, Status, annuente Domino, expurge
tur, Populi que Nobis & illis subditi, pacis & tran
quillitatem dulcedine fruuntur.

§. 19. Ut autem praesentes Litterae omnibus inno
tescant, & ne quisquam illarum inagationem allegare
possit, iubemus illas valvis Ecclesiae S. Joannis Late
ranensis & Basilicae Principis Apostolorum de Urbe,
ac in acie Campi Florae appendi, eisque detractis illa
rum exempla etiam impressa in eisdem locis affixa re
linqui, factaque huiusmodi publicatione volumus ip
sas praesentes hic in Urbe publicatas die sequenti, ex
tra eam verò post decem dies quoscunque perinde
ac clare atque efficere, ac contrafacientes, poenas &
alia supradicta omnino incurere, ac si eis singulis
praesentibus in propriis eorum personis & locis inti
matae fuissent.

§. 20. Insuper earundem Praesentium exempla,
etiam impressa, Notarij publici manu, & Camerarii
praedicti, aut alterius personae in dignitate Ecclesiasti
ca constitutae sigillo obsignata, eandem prorsus fi
dem ubique locorum in iudiciis, & extra illa facere,
quae ipsi praesentes facerent, si forent exhibita
vel ostensa.

§. 21. Necnon quod quaelibet Communitas, Uni
versitas & Populus quaecunque Civitatum, Op
pidorum, Castrorum & locorum praedictorum, sub
indignationis nostrae, ac mille ducatorum dictae Ca
merae applicandorum poenis per contrafacientes eo
ipso incurrendis, statim cum praesentibus Litteris nostrae
huiusmodi, siue earum transumptum etiam impres
sum ad eorum notitiam pervenerit, convocato pub
lico consilio, in praesentia Officialium, syndicorum,
& curam malefactorum habentium, eas una cum a
liis Praedecessorum nostrorum constitutionibus, si
cut praefertur, confirmatis & innovatis, ibi alta & in
telligibili voce, etiam vulgari sermone illas declaran
do, ut melius & facilius ab omnibus percipi, & intel
ligi possint, legi facere, & deinde in eorum Archi
vio publico diligenter custodiri curare omnino de
beant, ac singulis annis successivè in principio cu
juslibet anni perpetuis futuris temporibus similiter
eadem Litteras praesentes, & alias innovatas in eo

cern publico consilio legendo reiterare teneantur.

Alioquin loci Gu bernator & Rector, & quilibet al
ius iustitiae minister quocumque nomine nuncupa
tus, contra eos ad executionem poenarum huiusmo
di sine mora irremissibiliter procedat.

Dat. Romae apud S. Marcum, Anno Incarnati
onis Dominicae, millesimo quingentesimo octuagesimo
quinto, Kal. Julij, Pont. nostri anno primo.

Ego Sixtus Catholicae Ecclesiae Episcopus.

Ego Alexan. Farnesius Episcopus Ostien.
Ego Jo. Anton. Episc. Tusc. Card. S. Georgii.
M. Card. ab Altaemps.
Ego In. Ava. Card. de Arag.
Ego P. Card. Sanctacrucius.
Ego Guilielm. Sirletus Card.
F. Mic. Card. Alex.
Ego Lud. Card. Madrutius.
Ego N. de Pelleve Card. S. Praxedis.
Jul. Ant. Sanctiorius Card. S. Severinae.
P. Card. Caesius.
Ego Carolus Card. Rambouilletus.
Ego Hier. Card. Rusticuccius.
Jo. Hier. Card. Albanus.
Ego Phil. Boncom. Card. S. Sixti M. P.
Ego Hier. Card. Simoncellus.
P. Card. Deza.
Ego Ant. Card. Carafa.
Jo. Ant. Car. SS. Quatuor.
Ego Jo. Bap. Card. S. Marcelli.
Ego Aug. Card. de Verona.
Ego Vin. Card. Montis Regalis.
Ego M. Presb. Card. S. Stephani in Monte Caesio.
Scipio Card. Lancelottus.
Ego Aloysius Card. Esten.
Ego Fer. Card. de Medicis.
Phil. Vast. Card. Cam.
Ego Carol. à Lotharingia Card. Vademontanus.
Ego Vincen. Card. Gonzaga.
Ego Franciscus Card. Sfortia S. Georgii.
Alex. Card. de Monte alto.

Anno à Nativitate Domini 1585. Indictione 13. die
verò quinto mensis Julij, Pontificatus Sanctissimi in
Christo patris, & D. N. D. S. xii divina providen
tia Papae V. anno primo, retrospectae litterae Aposto
licae affixae, & publicatae fuerunt in valvis seu por
tis Ecclesiarum Sancti Joannis Lateranensis, &
Principis Apostolorum de Urbe, necnon valvis
Cancellariae Apostolicae, & in acie Campi Florae, ut
moris est, per nos Joan. Gauce, & Nicolaum Tag
lietium S. D. N. Papae Apost. Curs.
Jo. Freyle Mag. Curs.

Quod Festum Praesentationis B. MARIE Virginis
die vigesima septima mensis Novembris duplici of
ficio celebretur,

SIXTUS EPICOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

INtemeratæ Matris Dei MARIE, ex cuius puris
simis visceribus, salva per Spiritus Sancti virtu
tum integritate virginitatis, auctor vitae naici digna
tus est, salutariter fecunditatem humiliter veneramus,
& quaecumque ultimis Orientis adhuc Ecclesiae, &
aliisque temporibus à Sanctis Patribus in ejus hono
rem instituta fuerunt, nostrae imbecillitatis ope tue
ri, atque augere, & si quid fuerit praetermissum,
ipsa adjuvante quae supra Choros sedet Angelo
rum, renovare studemus, ut spiritualium gaudiorum
celebritate devota nobiscum plebs laetetur, &
cujus splendorem Angelici caeterus admiranur in Cae
lis, ejus in terris per sacras festivitates recolendae,

Papae fabrice.
Cardina
lium sub
scriptio
nes.

Publicatio

VII.

Edite A. D
1585.

B. Virg
nem quam
A. geli
admirantur
in Caelis,
hic Pontif.
in ter re
ve etiam
studet.

laudan

Hortatio
ad rincipes
extra ditiu
Ecclesiasti
cum, tem
poralem
iurisdictione
nem habent
es, ut
bannitos nō
affluant,
sed capiant,
& exemitant.

Forma &
effectus
publ. hanc
const.

Fides exem
plorum.

Communi
tates publi
cent hinc
const. in
eorum pu
blici cons
siliis, in
Archivis
custodiant.
& quolibet
anno eam
cum aliis
hic nomina
tis in publi
co consilio
recitent.
Quod vo
lunt enim
Pius V. sup
in eius
const. c. etc.
in rub.

1585.

laudanda, atque invocanda pia memoria non præmittatur. Aliis igitur celebratibus perpetuæ Virginis, quæ ab æterno præparata, & Prophetis testimoniis prænuntiata, nondum tamen Mater Dei Angelo nunciante fuerat effecta, à Catholica Ecclesia consecrata, ejusdem quoque quæ Templum Dei futura erat, & Sacramentum Spiritus Sancti, in templum Præsentationem ab antiquissimis usque temporibus summa ubique gentium cum veneratione observatam adscribi volumus, & sic ubi intermissa est, restitui, ac juxta custodiri.

§. 1. Quare hac perpetua constitutione mandamus, ut Præsentationis B. Mariæ semper Virginis festus dies undecimo Cal. Decembris, per omnes totius Orbis Ecclesias duplici officio, prout in Nativitatis die, sumpto Præsentationis vocabulo peragatur, idemque in Calendario cum duplici adjectione inseratur.

§. 2. Præcipientes omnibus Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, ceterisque Ecclesiarum Prælati in universi Orbis ambitu constituti, ut in suis quisque Ecclesiis, Provinciis, Civitatibus & Diocesis Præsentem nostras solemniter publicari faciant, ab omnibusque Ecclesiasticis personis, secularibus & quorumvis Ordinum regularibus omnino observari, licet adnotatio hujus celebratis in postremis Breviarii & Missalis reformationibus fuerit prætermissa.

§. 3. Volumus quoque, ut Præsentium exemplis etiam impressis, manus Notarii publici subscriptis, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus ubique fides adhibeatur, quæ ipsi Præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostentæ.

Datum Romæ apud S. Marcum, Anno Incarnationis Dominicæ 1585. Cal Septemb. Pontif. nostri anno primo.

VIII.

Quod Festum S. Francisci de Paula, Ordinis Fratrum Minorum, institutoris, singulis annis die secunda mensis Aprilis duplici officio celebretur.

Canonizationem hujus Sancti, habes sup. in Leonis X. constit. 38. Excelis fol. 581. Et de dicto ejus Ordine attende const. 5. Sixti IV. Sedes. fol. 390.

Edita An. D. 1585.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

B. Franciscus de Paula, multis virtutibus & miraculis clarus.

IN cæli throno qui sedet rex Omnipotens, terramque scabellum pedum suorum calcatur, supremo è folio pusillorum servorum respicit humilitatem, eosque in quibus illa elucet ad excelsa sublimium honorum, & gaudiorum culmina extollit. Quod in Sanctis suis omni tempore demonstravit, recenti verò Patrum nostrorum memoria in B. Francisci de Paula, ample testificari dignatus est. Is enim ab ineunte ætate cœlestium rerum amore incensus est minimo, qualem se in Dei hominumque conspectu fecerat, magnus evasit: interque alia, quibus claruit virtutum ornamenta, unam mirificè amplexus est Regi regum semper acceptam humilitatem, quam sicuti noverat primum ingressum fuisse Christi Salvatoris nostri in mundum, ita in angusto ad pietatem & sanctitatem introitu, patefaciendo primam sibi, & ducem, & sociam ascrivit. Hac atque aliis divinæ gratiæ prædiis Beatus Confessor munitus apud magnos Principes & Reges, cum adhuc in mundo quasi hospes, peregrinaretur; in patria verò cœlestes inter choros post absolutam peregrinationem a Deo, cui fideliter servierat, seque in primis humiliaverat, est exaltatus; magnæque virtutes, ut etiam in vita cum summa omnium qui viderunt vel audierunt admiratione, meruit operari.

§. 1. Quibus virtutibus Fratrum Minorum congruente suæ humilitatis denominatione, Ordinem, quem vivens instituerat, mirum in modum auxit, ita ut ex sancti viri imitatione, devotissime Fratrum ipsorum studiis, multis jam in Italia, quæ de ejus nativitate, atque in Gallia quæ de sancta obdormitione in Domino gloriantur, totiusque Christiani orbis regionibus ædificatis templis, cœnobii, ue constructis, ejus memoria in die magis propagetur.

§. 2. Ipse autem à fel. rec. Leone Papa X. prædecessore nostro, sanctorum, quos catholica veneratur Ecclesia, catalogo solemniter ritu adscriptus, in cœlo pro ipsa semper Ecclesia assiduè Pastoralis servitutis, & sollicitudinis nostræ laboribus apud Deum, una cum omnibus Sanctis, & tibi cognomine, atque æternæ felicitatis consorte Beato Francisco, Ordinis Fratrum Minorum fundatore, intercedit.

§. 3. Quare nos ejus nomen & sanctitatem, dignis, quantum nostra patitur infirmitas, honoribus decorare volentes, hac præsentem constitutione mandamus, ut ejusdem Beati Francisci de Paula confessoris gloriosi dies festus, qui Quarto Non. Aprilis peragitur, duplici posthac & proprio, & ubi propria non erunt, de Comuni Confessorum non Pontificum officio, per cunctas totius Christiani orbis Ecclesias, quotannis celebretur, & in Calendario cum duplici festi adjectione inscribatur.

§. 4. Præcipientes omnibus Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, ceterisque Ecclesiarum Prælati in universo terrarum orbe constituti, ut faciant in suis quisque Ecclesiis, Provinciis, Civitatibus & Diocesis, Præsentem nostras solemniter promulgari, & ab omnibus Ecclesiasticis personis secularibus, & quorumcumque Ordinum regularibus omnino observari.

§. 5. Volumus quoque, ut Præsentium exemplis, etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus ubique fides adhibeatur, quæ ipsi Præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ, vel ostentæ.

Datum Romæ apud S. Marcum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo octuagesimo quinto, Pontificatus nostri anno primo.

Renovatio Studii generalis in Civitate Firmi Status Ecclesiastici, olim à Bonifacio VIII. instituti, cum privilegiis & indulgentiis aliorum Studiorum generalium.

Quod Lectores & Scholares Studiorum ejusmodi, vide etiam Concil. Trident. cap. 1. sess. 5. & const. 8. Pii IV. In sacrosancta sup. fol. 137.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Muneris nostri debito incumbit, ut ad ea propensiori cura intendamus, per quæ literarum studia propagentur, Studiorumque generalium Collegia & Universitates, unde scientia, & præsentis juris utriusque prudentia, sine qua Republica rite administrari nequit, & per quam iustitia undique colitur, & omnis prosperitas humanæ eruditionis augetur, instituantur, & his quæ propterea à Romanis Pontificibus prædecessoribus nostris, civitatibus, illarumque Civibus & personis, præsertim Nobis & Sedis Apostolicæ temporali ditioni subiectis, providè processerunt, ut firma, perpetua, & illibata persistant, implementum auctoritatis nostræ libenter impertiamur, illaque nostrumquam innovemus, aliasque desuper disponamus, prout Civitatum & hominum prædictorum, singularis erga dictam Sedem devotio, & merita exposcunt atque requirunt.

1585. Ordinem F. F. Minorum instituit, ut habetur in bulla cit. in rub.

Leo X. illum canonizavit, ut in bulla cit. in rub.

Hic modo Pontif. ex ejus festum duplici officio celebrari jubet.

Observari, quæ mandata & promulgari,

Exemplis bullæ creditur præcipi.

Dat. P. An. 1585.

IX.

Edita An. D. 1585.

Proœmium.

Bonif. 8.
in Civitate
Firmans
Ecclesiasti-
ci studium
generale
erexit ad
instar studii
Bononiensis
ut sup. in
eius cōst. 8.
In supre-
mæ fol. 179.
Tomo I.
prædicta
confirmandi
die 26. Junii
1455. sed
eius bullam
volens præ-
termitti.
Communi-
tas Firmans
pro huius
studii reno-
vatione Pa-
pæ suppli-
cavit, cum
omnis ad hac
impla con-
fuerit
edificia, &
universi redi-
tum assu-
mavit.

Hic modo
sunt dispo-
sitiones Bo-
nicæ. 8. &
Callisti III
approbat.

runt, & Nos conspicimus in Domino salubriter ex-
pedire.

§. 1. Sanè cum sicut accepimus, alias postquam
fel. rec. Bonifacius Papa VIII. prædecessor noster,
certis tunc expressis causis adductus, ac supplica-
tionibus dilectorum filiorum existentium Communi-
tatis & hominum nostræ tunc suæ Firmans, inclina-
tus, per quasdam statuerat & ordinaverat. &c.

Residui omittitur, quia tota bulla est sup. fol. cit. hic in margini.

§. 2. Pæ memoria Callisti Papa Tertius etiam
prædecessor noster, per alias suas Litteras inter alia
statutum & ordinationem Bonifacii prædecessoris huius-
modi, ita ut ipsi Communitas & homines Firmans,
Studium generale in Civitate prædicta retinere
valerent, approbaverit & confirmaverit, prout in
singulis Litteris prædictis plenius continetur.

§. 3. Et licet studium generale huiusmodi in dicta
Civitate Firmans, vigore dictarum Litterarum eate-
nus introductum fuisse credatur, tamen temporum
injuriam, vel ex quavis causa, illud intermissum seu
extinctum esse reperitur ad præsens. Unde Commu-
nitas & homines prædicti per dilectos filios Sigis-
mundum Tostum, & Cæsarem Octinellum, Cives
Firmans, Utriusque Juris DD. ad Nos ab eis ad effectum
inscriptum destinatos Oratores, quos libenter
vidimus, & benigne audivimus, Nobis exponi cura-
runt, quod ipsi dictum generale Studium in prædicta
Civitate restitui, seu institui & stabiliri cupientes,
sumptuosa quadam ædificia publica valde ampla &
capacia, ac apprime ad hoc commoda, in platea dicte
Civitatis consentientia, animo & intentione Theo-
logiam, & utriusque juris Prudentiam, ac Medicinam,
Philosophiam, aliasque Artes liberales, & quasvis li-
citas facultates, per viros eruditos ibidem legi, doceri
& interpretari faciendi, destinaverint & assigna-
verint. Et pro manutentione pro tempore existentium
Rectoris & Rectorum Universitatis Studii gene-
ralis huiusmodi alioque exinde incumbendum onera-
rum supportatione, annum redditum duorum milium
scutorum ex propriis provenientibus & juribus ad
eosdem Communitatem & homines legitime spectan-
tibus, applicaverint & appropriaverint.

§. 4. Nos qui eidem Ecclesie Firmans, dum Car-
dinalatus honore fungemur, ex dispensatione Apo-
stolica præsumimus, dignum, & rationi consentaneum
censentes, ut postquam divina Majestas Nos ad summi
Sacerdotii fastigium evehit, nostri in eosdem No-
bis benemeritis grati, benevoli animi affectus, quos
postulamus, non libenter modo sed etiam liberaliter
addamus, ita quod in dicta Civitate, quam singu-
laris benevolentie affectu complectimur, & in qua
unum insigne Collegium utriusque juris Doctorum
ab immemorabili tempore institutum existit, unam
Universitatem Studii generalis institui, Collegium
quædam prædictum structuris, atque ædificiis capaci-
oribus pro Congregationibus, sessionibus, deambula-
tionibus, aliisque officiis necessarie construi & am-
pliari, ipsosque Communitatem & homines, speciali-
bus favoribus & gratiis prosequi volentes, ac Com-
munitatis & hominum huiusmodi singulares personas,
quibusvis excommunicationis, suspensionis & inter-
dicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris &
pœnis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel
causa latis, si quibus quomodolibet innodati exis-
tunt, ad effectum Præsentium dumtaxat consequen-
dum, harum serie absolventes, & absolutos fore
censentes, necnon Litterarum Bonifacii & Callisti
prædecessorum huiusmodi, tenores etiam veriores,
ac dat. Præsentium pro expressis habentes, eorum-
dem prædecessorum nostrorum vestigiis inhærendo,
Motu proprio, non ad ipsorum Communitatis &
hominum, vel alterius pro eis super hoc oblate pe-
titionis instantiam, sed de nostra mera liberalitate,
& ex certa scientia, deque Apostolicæ potestatis plen-
titudine, omnes & singulas Bonifacii & Callisti præ-
decessorum huiusmodi Litteras, omniaque & singula
in illis & earum singulis contenta, quoad ea quæ
inscriptis, ac decretis Concilii Tridentini non

repugnent, Apostolica auctoritate, tenore Præsen-
tium approbamus & confirmamus, ac etiam illa
innovamus, omnesque & singulos, tam juris quam
facti, ac solemnitate etiam substantialem, & quocumque
alios defectus, si qui intervenerint in eis-
dem, supplemus.

§. 5. Et insuper in ipsa civitate Firmans, unam
Universitatem Studii generalis, in qua aliqui Ma-
gistri & Doctores, seu alii docti & eruditi Professores,
Theologiam, jus canonicum & civile, Medicinam
& Artes liberales, necnon alias quascumque licitas fa-
cultates, publicè legant, doceant, & interpretentur,
& quicumque scholares, sive laici, sive Clerici, sc-
culares vel quorumvis etiam Mendicantium Ordini-
um regulares ubicumque oriundi, & undecumque
advenientes, in eisdem facultatibus studeant; nec-
non illis qui catholici, & ad id idonei reperti fue-
rint, Baccalariatus, Licentiaturs, Doctoratus &
Magisterii, ac alii cujuscumque licite facultatis, gradus,
& insignia conferantur & concedantur; cum arca,
figillo, & aliis insignibus Studii generalis, ad instar
Bononiensis, Paduensis, Perusinis, Senensis
& Maceratenis, ac aliarum quarumcumque Univer-
sitatum Studiorum generalium, tam in Italia quam
extra eam consistentium auctoritate & tenore præ-
fatis, perpetuò erigimus & instituiamus.

§. 6. Illique sic erecto & instituto, ac ejus
pro tempore existentibus, Rectori, Magistris, Docto-
ribus, Professoribus, Lectoribus, Præceptoribus,
Scholaribus, Bidellis, nunciis, ac aliis Officialibus,
Ministris & personis, necnon ibidem ad quoscumque
gradus promotis, quod omnibus & singulis, ac qui-
buscumque privilegiis, facultatibus, liberatibus, im-
munitatibus, exemptionibus, prærogativis, antela-
tionibus, præeminentiis, favoribus, honoribus, dig-
nitatibus, concessionibus, indultis & aliis univer-
saliis gratis, spiritualibus & temporalibus, quibus Bo-
nonienses, Paduenses, Perusini, Senenses, &
Maceratenis ac quæcumque alie Universitates, tam
in Italia quam extra eam consistentes prædicte, illarumque
pro tempore existentes, Rectores, Magistri,
Doctores, Professores, Lectores, Præceptores,
Scholares, Bidelli, Nuncii, ac alii Officiales, Mini-
stri & personæ, necnon ibidem ad quoscumque gra-
dus promoti, de jure vel consuetudine, aut ex privile-
giis & concessionibus Apostolicis & Imperialibus,
necnon Conciliis generalibus seu universalibus, provin-
cialibus & synodalibus, ac alias quomodolibet
utuntur, potiuntur, & gaudent, ac uti, potiri
& gaudere possint, & poterunt quomodolibet in futu-
rum, pariformiter & æque principaliter absque ulla
prioris differentia, uti, potiri, & gaudere, perinde
ac si eis specialiter, nominatim & expresse conce-
ssa fuissent.

§. 7. Præterea illis, qui in ipsa Universitate Stu-
dii generalis Firmans, vel alibi studuerint in Theo-
logia, ac utroque, vel altero jure, & Medicina, nec-
non Artibus liberalibus, aliisque facultatibus prædi-
ctis, Baccalariatus, Licentiaturs, Doctoratus &
Magisterii, ceterosque omnes solitos gradus, si per
Magistros vel Doctores illius facultatis in qua volue-
rint promoveri, ad hoc præsentari, & debito prævio
examine, assistentibus ibidem aliquibus Doctoribus
seu Magistris in eadem facultate ibi legentibus, vel
de gremio prædicti Collegii Doctorum ipsius Civi-
tatis Firmans existentibus, deluper faciendis ac alias
servatis servandis idonei reperti fuerint, à pro tem-
pore Episcopo Firmans, seu ejus Vicario in spiri-
tualibus generali, aut quocumque alio, quem ad hoc
ipse Episcopus duxerit deputandum, dicta verò Ec-
clesia Firmans pro tempore Pastore carente, ab eo
qui per Capitulum Ecclesie Firmans huiusmodi de-
putatus fuerit, emissis prius per promovendos huius-
modi in ejus manibus fidei Catholicæ professione
juxta articulos pridem à Sede Apostolica ad hoc pro-
positos, ac formam, quam sub bulla nostra mittimus
introducimus, ipsorum graduum solita insignia reci-
pere, illaque sibi exhiberi facere.

§. 8. Necnon postquam huiusmodi gradus, &
illorum

Studiumque
prædictum
innovat.

Illique sic
innovat,
ejusque per-
sonis ac ibi
promotis,
privilegia
omnia alio-
rum studio-
rum genera-
lium con-
cedit.
De Studio
Urbis, vide
sup. in bulla
Bonif. 8.
fol. 179. To-
mo I. & de
Studio Pe-
rusino est
sup. fol. 187.
constit. 1.
Clem. V. &
De Macera-
ten. est su-
pra fol. 736.
const. 22.
Paul. III. in
4. Tom. I.

Doctoran-
dique for-
mam præ-
scribit.

1585.
Promotis
in eo, fa-
cultatem
ut que le-
gendi &c.
elargitur.

Reſtori ſta-
tuta con-
dendi pro
dici ſtudi
regimine,
aucto ite
tribuit.

Claufula
hinc ſubſi-
praſervat-
ur.

Claufula
ſublata.

Derogatio
contrario-
rum.

illorum magna ſuſceperint facultates, in quibus pro-
moti fuerint, ubicumque abſque alio examine vel ap-
robatione, legere & interpretari, ac in eis diſputare,
necnon quocumque alios gradus per eos receptos,
& convenientes exercere libere & licite valeant, au-
toritate & tenore praedictis, de ſpeciali gratia indul-
gemus, ſicque etiam ſtatuiſmus & ordinamus.

§. 9. Necnon Univerſitati Studii generalis Fir-
mani, ac illius Reſtori pro tempore exiſtenti, pro ſa-
lubri & felici ejuſdem Univerſitatis Firmanae, ac illius
perſonarum, rerum, bonorum, & iurium regimine,
directione & conſervatione, reiſque litterariae progrel-
ſu, quaecumque ſtatuta & ordinationes, licita tamen
& honeſta, ac ſacris canonibus, & dicti Concilii de
cretis non contraria, eis beneſita, à moderno & pro
tempore exiſtente Epifcopo Firmano examinanda &
approbanda, condendi, illaque poſtquam condita
fuerint, prout temporum, locorum, perſonarum,
vel rerum, aut aliae qualitates exegerint, mutandi,
corrigendi, & reformandi, ac etiam declarandi &
interpretandi, illiſque addendi & minuendi, ſeu
etiam ea in totum abrogandi, ac alia illorum loco
de novo edendi & faciendi, quae omnia poſtquam
pro tempore condita, mutata, correcta, reformata,
declarata, interpretata, aucta, vel diminuta, & de
novo edita fuerint, ab Ordinario loci, vel pro tem-
pore exiſtente Romano Pontifice approbari debeant,
plenam & liberam facultatem & auctoritatem conce-
dimus & impartimur.

§. 10. Decernentes praſentes Litteras, etiam ex
eo quod Paduanenſis, Peruſinenſis, Senenſis & Ma-
ceratenſis, & aliarum Univerſitatum praedictarum Re-
ctores, Officiales, Doctores, Profeſſores, ſeu Lecto-
res, Procuratores, Defenſores, Protectores, vel
Agentes, aut alias quomodolibet intereſſe habentes,
vel putantes, ad hoc vocati fuerint, aut ex quavis, vel
quibuiſvis alijs cauſis, occaſionibus, vel praetextibus,
de ſubreptionis vel obreptionis, aut nullitatis vitio,
ſeu intentionis noſtrae, vel quovis alio defectu notari
vel impugnari, aut alias infringi vel quomodolibet re-
tractari, ſeu etiam per Nos ac Suſceſſores noſtros Ro-
manos Pontifices pro tempore exiſtentes, aut Sedem
praefaram, vel illius Legatos etiam de Latere, aut
quocumque, alios quavis auctoritate revocari, ſuſpen-
di, reſtringi, imitari, vel eis in aliquo derogari nulla
tenus umquam poſſe, ſed illas ſemper & perpetuo va-
lidas & efficaces, exiſtere & fore, ſuoſque plenarios
effectus fortiri & obtinere, ab ab omnibus ad quos
ſpectat & ſpectabit quomodolibet in futurum, perpe-
tuo & inſolubiliter obſervari debere; necnon Uni-
verſitatis Studii generalis Firmani huiusmodi, illuſi;
Reſtorem, Officiales, Doctores, Lectores, Pro-
feſſores, Scholares, Miniſtros, ceterosque praedictos
ſuper praemiſſis omnibus & ſingulis, vel illorum oc-
caſione, etiam per alias Univerſitates praedictas, vel
quocumque alios quavis auctoritate, quomodolibet
moleſtari, perturbari, inquietari, vel impediti, ne-
quaquam poſſe, ac etiam Communitatem & homi-
nes praefatos, aut quocumque alios ad probationem
ſeu verificationem Litterarum Bonif. cii & Calliſti
praedecelſorum huiusmodi, ac in eis & etiam eiſdem
praſentibus Litteris narratorum nullatenus umquam
teneri, nec ad id in iudicio vel extra, cogi ſeu com-
pelli poſſe; & nihilominus eaſdem Litteras & in eis
contenta huiusmodi ſemper valere, ac eiſdem Uni-
verſitati & hominibus ſuffragari, ſicque in praemiſ-
ſis ab omnibus cenſeri.

§. 11. Ac ita per quocumque Iudices & Com-
miſſarios, quavis auctoritate fungentes, etiam cau-
ſarum Palatii Apoſtolici Auditores, eorumque Lo-
cumentes, ac Sanctae Romanae Eccleſiae Cardi-
nales, etiam de Latere Legatos, ſublata eis & eo-
rum cuilibet, quavis aliter iudicandi & interpretan-
di facultate & auctoritate, iudicari & deſiniri de-
bere, ac irritum & inane, ſi ſecus ſuper his à quo-
cumque quavis auctoritate ſcienter vel ignoranter
contigerit attentari.

§. 12. Non obſtantibus praemiſſis, & quatenus
opus ſit, noſtra de iure quaesito non tollendo, ac alijs

Apoſtolicis, & etiam in Univerſalibus, Provincia-
libus, & ſynodalibus Concilijs, editis & edendis,
ſpecialibus, vel generalibus, conſtitutionibus & or-
dinationibus, necnon Firmanae, Bononiensis, Pa-
duanae, Peruſinae, Senenſis & Maceratenſis praedi-
ctarum, ac quarumvis aliarum Univerſitarum &
Gymnaſiorum etiam publicorum, Provinciaeque no-
ſtrae Marchiae Anconitanae, & totius ſtatus Eccleſia-
ſtici, etiam iuramento, confirmatione Apoſtolica,
vel quavis firmitate alia roboratis, ſtatutis & con-
ſuetudinibus, decretis & etiam novis reformationi-
bus, legibus, tam Pontificijs quam Imperialibus,
Regijs, Ducalibus, & municipalibus; privilegijs
quoque, indulgijs, & litteris Apoſtolicis, illis &
eorum Superioribus & perſonis cuiuſcumque ſtatus,
gradus, ordinis & conditionis exiſtentibus, in ge-
nere vel in ſpecie, ſub quibuiſcumque tenoribus &
formis, ac cum quibuiſvis etiam derogatoriis de-
rogatorijs, aliisque efficacioribus, efficacioribus &
inſolitis clauſulis, irritantibusque, & alijs decre-
tis, etiam in vim contractus inibi ſiſpulari & iura-
ti, ac etiam ſtatuti perpetui, & perpetuae legis in-
ducentibus motu, ſcientia, & poteſtatis plenitudi-
ne ſimilibus, & etiam conſiſtorialiter, ac alias quo-
modolibet, etiam pluries & iteratis vicibus conceſ-
ſis, confirmatis & innovatis, ac etiam in poſſe-
rum condendis, confirmandis & innovandis, qui-
bus omnibus & ſingulis, etiamſi pro illorum ſuffi-
cienti derogatione, de illis eorumque toris teno-
ribus, ſpecialis, ſpecifica, expreſſa & individua,
ac de verbo ad verbum, non autem per clauſu-
las generales idem importantes, mentio, ſeu qua-
vis expreſſio habenda, aut aliqua alia exquisita for-
ma ad hoc ſervanda foret, illis alias in ſuo robore
permanſuris, hac vice dumtaxat harum ſerie ſpe-
cialiter & expreſſe, motu ſimili derogamus; cete-
riſque contrariis quibuiſcumque.

§. 13. Ceterum volumus, quod earumdem Prae-
ſentium Litterarum tranſumptis, etiam impreſſis,
manu alicujus Notarii publici ſubſcriptis, & ſigillo
Communitatis ſeu Studii generalis Univerſitatis Fir-
manae huiusmodi, aut alicujus Eccleſiaſticae vel ſa-
cularis curiae, ſeu perſonae in dignitate Eccleſiaſtica
conſtitutae munitis, eadem proſus fides in iudicio
& extra adhibeatur, quae ipſis originalibus Litteris
adhiberetur, ſi exhibitae forent vel oſtenſae.

Nulli ergo &c.

Datum Romae apud S. Marcum, Anno Incarna-
tionis Dominicae, milieſimo quingentefimo octuage-
ſimo quinto. Idibus Septembris, Pontificatus no-
ſtri Anno primo.

De electione Praelatorum Congregationis S. Bernardi
in Italia Monachorum Ordinis Cisterciensis regu-
laris obſervantiae, de cetero ſiendae ex univerſo nu-
mero Sacerdotum dictae Congregationis, qui mi-
nora officia laudabiliter biennio exercuerint.

Aliter in hoc diſpoſuerat Gregor. XII. in ſua con-
ſtit. 54. Romanus. ubi videas quae notavi ſupra in
hoc loco.

SIXTUS PAPA V.

Ad futuram rei memoriam.

Nuper pro parte dilectorum filiorum Abbatis Ci-
ſtercii, Cabilonenſis Dioceſis, generalis Or-
dinis Cisterciensis, necnon Abbatum, Praelatorum,
& Conventuum, Monasteriorum dicti Ordinis fuiſſe
Nobis expoſitum, quod alias regimen ipſius Congre-
gationis medio tempore, inter unum & alterum Capitu-
lum ſolebat de univerſo Sacerdotum numero Pro-
vinciae, auctoritate Apoſtolica illos eligere ad Prae-
laturas vacantes, in quos magis idoneos magisque di-
gnos quicquidabat; in qua quaſi poſſeſſione ſic eligen-
di per longum tempus perſeveraverit, donec de

1585.

Fides tran-
ſumpti.Dat. P. A. 10
die 13. Sept.

X.

Edita An. D.
1585.Congrega-
tio conſue-
vit ad Prae-
laturas eli-
gere viros
magis ido-
neos ex
univerſo
numero ſa-
cerdotum.

anno 1579. fel. recordat. Gregorius Papa Decimus tertius prædecessor noster, inter alia statuta ad reformationem Monachorum dicti Ordinis pertinentia decrevit & mandavit, ut de cetero Capituli dictæ Congregationis fieret de triennio in triennium, & in primo futuro Capitulo pro qualibet Provincia, tot Sacerdotes quot essent in ea Prælaturas, & insuper alii quatuor Sacerdotes habiles ad Prælaturas exercendas, in quaque Provincia approbarentur; qui etiam ad Visitatoris majoris officii similiter approbati esse intelligerentur; quodque si tantum ad Prælaturas & Visitatoris majoris officium hujusmodi approbati deberent, qui officia minora, nempe Cellerarius & Prioratus dignè gradatim, scilicet per biennium in quolibet officio fideliter exercuissent, atque ut semel approbati, semper habiles fore censerentur. Præterea ut deficientibus approbatorum hujusmodi numero, siue per obitum illorum, siue per privationem ob commissam delictam in proximis futuris Capitulis & non aliter, alii in illorum locum sufficerentur; itaque semper numero quatuor tantum, extra Prælaturas à quolibet Capitulo haberetur. Et si intra triennium aliquem Prælatorum decedere, aut à Visitatoribus vel à Capitulo ob aliqua demerita privari contingeret, alius extra numerum approbatorum prædictorum, minimè alium possent, ac alias prout in prædictis Prædecessoris nostri Litteris latius fuit expressum.

§. 1. Sed quia sicut eadem expositio subiungebat, ab eo tempore, usque & experientia compertum est, hujusmodi ad quatuor tantum simul nominatos restrictioni Universitatis dictæ Congregationis nequaquam expedire, tum quia dicti quatuor electi postquam secuti sunt se omnino futuros Prælatos, ab obedientia, & disciplina regulari non parum recedunt, & quasi immunes & exempti à communibus religionis oneribus esse prætendunt; tum quia alii multi Sacerdotes ejusdem Congregationis, qui habiles & inclinati ad laudabilia religionis opera essent, videntes ob aliorum jam factam electionem se exclusos, nec posse ad gradus majores aspirare, animum despondunt, nec curant ulterius progredi; quod haud dubie in magnum totius Congregationis damnum redundare dignoscitur, præsertim cum contingere possit, ut durante electione quatuor approbatorum hujusmodi secundum casum & temporum varietatem, vel omnes, vel pars eorum, vita decedant, seu etiam aliqui interim, minus idonei, alii verò magis capaces & utiles Congregationi detegantur; unde fieret, ut deficientibus quomodo approbati, in eorum locum subrogandi nulla superesset facultas.

§. 2. Quare cum his & aliis iustis & gravibus causis & rationibus adductis, idem Abbas Cistercii generalis, qui pridem dictas provincias visitavit, necnon Prælati & Monachi dictæ Congregationis utriusque Provinciæ Lombardiæ & Tuliæ, Nobis humiliter supplicaverint, ac etiam dilectus filius Aloysius S. M. A. R. I. E. in Via lara diaconus Cardinalis Essenensis nuncupatus, illorum Protector, pro eis apud Nos vehementer intercesserit, petieritque ut ad majorem ipsius Congregationis profectum & incrementum, bonorumque incitamentum, de opportuno remedio providere ex benignitate Apostolica dignaremur.

§. 3. Nos tota re, maturè diligenterque cognita & discussa, ut obviam incommotis & malis inde imminentibus eamus, supplicationibusque hujusmodi inclinati, prædictum numerum quatuor sacerdotum in singulis Provinciis, ad Prælaturas, & ad Visitatoris majoris officium eligendorum, auctoritate Apostolica tenore Præsentium suppressimus & abolemus, perinde ac si Litteræ Gregorii prædecessoris nostri hujusmodi super eo, non emanassent; quæ tamen in reliquis ad reformationem prædictam spectantibus suum robur obtineant.

§. 4. Statuimusque & ordinamus, posthac de toto numero Sacerdotum prædictæ provinciæ per regimen ejusdem Provinciæ Sacerdotis magis digni & magis idonei ad quamlibet Prælaturam, & Visitatoris majoris officium de tempore vacationis ipsius officii vel Prælaturæ, arbitrio ipsius regimini eligantur ex illis

qui officia minora Cellerariatus, & Prioratus dignè gradatim, ut præmittitur, scilicet per biennium in quolibet officio hujusmodi fideliter exercuerint. Utque etiam tempus, quo quilibet sacerdos officium Visitatoris minoris exercuerit, computetur, perinde ac si idem Sacerdos per totidem tempus Cellerarius vel Prioratus officium exercuisset. Quare eisdem Generali, Congregationi, & regiminibus, Abbatibusque & Monachis dicti Ordinis, universis & singulis, in virtute sanctæ obedientiæ, ut in Domino obervent, eadem auctoritate præcipimus atque jubemus.

§. 5. Præsentemque Litteras, & in eis contenta quæcumque nullo umquam tempore, de subreptionis vel obreptionis, seu intentionis nostræ, aut alio quovis vitio seu defectu notari, argui, vel impugnari possit, sed illas semper validas & efficaces existere, ac suos integros effectus sortiri.

§. 6. Sicque per quoscumque Judices, ordinarios & delegatos etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, & S. R. E. Cardinales, sublati eis & eorum cultibus, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari & definiri debere, irritumque & inane, siquid secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, decernimus.

§. 7. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon Ordinibus, Congregationibus, Monasteriorum, regulariumque locorum hujusmodi statutis, ulibus, naturis, & consuetudinibus, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis; privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis in contrarium quomodolibet, etiam Motu proprio, ac iteratis vicibus, & sub quibuscumque tenoribus & formis, per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac etiam Nos & Sedem Apostolicam concessis, approbatis & innovatis, quibus omnibus & singulis, etiam de illis, eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, expressa, & individua mentio habenda, aut alia aliqua exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum infererentur, Præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 8. Volumus autem ut harum exemplis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo Præsidentis vel Protectoris, nunc & pro tempore existentium dictæ Congregationis obsignatis, eandem prorsus fidem adhiberi, quæ adhiberetur eidem Præsentibus, si essent exhibitæ vel ostensæ.

Datum Romæ apud S. Marcum, sub annulo Piscatoris, die 25. Septembris 1585. Pontificatus nostri anno 1.

De regimine Studii generalis Valentiniensis ab Alexandro VI. instituti, & applicatione beneficiorum Ecclesiasticorum &c.

Quo ad admissionem alienigenarum & illegitimorum, ad beneficia in Regno Valentia, vide infra in constit. 64. In sacrosancto. & const. 84. Cum caelestis.

SIXTUS EPISCOPUS,

Ad perpetuam rei memoriam.

C Opiosus in misericordia Dominus, & in cunctis suis operibus gloriosus, à quo omnia bona defluunt, ad hoc Nobis licet immeritis, suæ sponfæ universalis Ecclesiæ regimen committere, & nostræ debilitati jugum Apostolicæ servitutis imponere voluit, ut tamquam de summo vertice montis ad hujus mundi infima reflectentes intuitum, quid pro hujusmodi illustranda Ecclesia ad fidei orthodoxæ, divini cultus, & beneficiorum propagationem conferat, quid vel

1585.
cia per biennium exercuerint eligi mandata.

Clausula
hujus
bullæ præ-
servatæ.

Clausula
sublata.

Clausula
de
rog.

Transumptum
fidei.

Dat. P. A. I.
die 25. Sept.

XI.

Edita A. D.
1585.

Exordium.

1585. *lata & protecta, animarumque salutem fidelium quorumlibet conveniat, attentius prospiciamus, fidelesque ipsos ad querenda Litterarum studia, per quae militantis Ecclesiae respublica geritur, divini nominis, ac ejusdem fidei cultus promittitur, omnibusque profectis humanae conditionis augeatur, nostrae sollicitudinis ope excitemus, ac in id pro nostri Pastoralis officii debito propensius incumbamus, ut singulae Studiorum generalium Universitates, praesertim in locis Maurorum, & aliorum infidelium, non ita pridem ad Christi fidem converforum progenie repletae constitutae, Lectores fide & eruditione probatos, ad aliorum instructionem, & sanae doctrinae conservationem nanciscantur, ac eisdem Lectoribus pro suis necessitatibus, fluctuosisque eorum instituti prosecutione & exercitio congruae subventionis auxilio favorabiliter subministrantur.*

Præpositura
Ecclesiae
Valentin.
vacat.

§. 1. Dudum siquidem omnia officia, ceteraque beneficia Ecclesiastica apud Sedem Apostolicam tunc vacantia, & inante vacatura, collationi & dispositioni nostrae reservavimus, decernentes ex tunc irritum & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contingeret attentari. Cum itaque postmodum Præpositura mensis Februarii in Ecclesia Valentin. per liberam resignationem dilecti filii Thomae de Borja Canonici Ecclesiae Tolentanae & nuper Prae, officii mensis Febr. in d. Eccl. Valentin. de illa quam tunc obtinebat in manibus nostris sponte factam & per nos admittam, apud Sedem praefatam vacaverit & vacet ad praesens, nulliusque de illa praeter Nos, hac vice disponere poterit, siue possit reservatione & decreto obstituentibus supradictis. Et sicut exhibita Nobis nuper pro parte dilectorum filiorum Consulum juratorum, Rationalis & Syndici civitatis Valentin. petitio continebat, ex duodecim singulorum mensium Præposituris, olim in dicta Ecclesia Valentin. pro totidem Praepositis, qui annuatim fructus, redditus & proventus ejusdem Ecclesiae Valentin. mensis Capitulae recolligerent, ac inter illius Canonicos pro tempore residentes, iuxta certam taxam ad id praescriptum singulis mensibus distribuere institutis, dicta Præpositura mensis Februarii sola ibidem remanente, omnes aliae aliorum mensium Præpositurae hujusmodi, pridem Apostolica auctoritate, perpetuo suppressae & extinctae illarumque fructus, redditus, & proventus, praedictae mensis Capitulae dicta auctoritate etiam perpetuo applicati, & appropriati fuerint, ac ex fructuum reddituum, & proventuum ventis hujusmodi augmento ipsius Ecclesiae Valentin. Canonici decentem eorum gradum commodè sustinere possint.

Alex. VI.
gen. lit.
cum insti-
tuit, sed
propter te-
nuitatem
redditorum
Lect. rom.
salaris sol-
vere non
valeat unde
mala hic
descripta
oriuntur.

§. 2. Universitas vero Studii generalis Valentin. à fel. rec. Alexan. PP. VI. praecedente nostro ad quarumcumque personarum, tam Ecclesiasticarum quam secularium, in Theologia, utriusque juris prudentia, Medicina, & Artibus liberalibus, ac quibuscumque aliis licitis facultatibus instructionem & protectionem instituta, propter illius reddituum & proventuum quingentorum ducat, auri de Cam. secundum communem expensam, valore annuum non excedentium tenuitatem, tantis necessitatibus & angustiis prematur, ut neque competentem mercedem singularum facultatum hujusmodi Lectoribus praestare, nec multorum aliorum onerum illi jugiter incumbens gravitate sustinere possit, & exinde utriusque juris prudentiae lectiones ibidem saltem ex professo, haecenus haberi commodè non poterint, illiusque Regni indigentiae, harum usu & commodo destituti, desideratos in hujusmodi facultatibus studiis progressus, quos nequeant, vel pro illis capessendis ad alias longinquas & remotas Studiorum generalium Universitates, non sine magno personarum ac rerum suarum incommodo & dispendio se transferre cogantur, quin etiam in universo Regno Valentiniae, quod praeter ceteris Hispaniarum Regnis, Maurorum noviter ad fidem converforum multitudine repleta, ac spectatae fidei & doctrinae virorum coram, pro ipsis Mauris & infidelibus ad Religionis & fidei Catholicae cultum convertendis, ac conversis in eadem religione & fide instruendis & confirmandis, maxime indigere dignoscitur, nullum

Seminarium a locorum Ordinariis, iuxta formam Concilii Tridentini, hucusque institutum existat, si dicta Praepositura mensis Febr. quae nullum amplius ibidem servitium, aut obsequium requirit, perpetuo suppressa, aut exstingueretur, ac ex illius fructu suppressae & extinctae fructibus, redditibus, & proventus decem & octo aliae Praepositurae, in eadem Ecclesia Valentin. pro totidem Praepositis Cathedralicis nuncupandis, qui apud eandem Ecclesiam Valentin. residerent, ac in illius Choro Missarum solemnibus & aliis divinis officiis assisterent, quocumque sex Theologiam & alius sex Canonica, reliqua autem sex civilia iura, inibi in totidem publicis dicta Universitatis Cathedralis, eis ad id assignandis pro una videlicet matutinis, altera vero partibus Praepositorum hujusmodi pomeridianis horis, legere & interpretari teneantur, ex hoc profecto nedum ipsi Ecclesiae Valentin. dignitati & decori, ac divini cultus, ministeriumque & beneficiorum Ecclesiasticorum in ea augmento consulere, verum etiam in ipsa Universitate litterarum studia, per amplius propagarentur, ac doctissimorum, & in hujusmodi facultatibus exercitissimorum virorum concursus, pro ipsis lectionibus habendis, in dies major fieret, eorumque opera, eruditio, & doctrina, tam dicti Regni indigentiae in patrio solo, abique longo peregrinationis labore, quam undecumque advenientes, ibidem tamquam uberrimo sacrarum, ac aliarum optimarum scientiarum Seminario, in Theologiae, & utriusque juris prudentiae facultatibus hujusmodi, instrui & edoceri, se, ut in illis exercere, ac tandem emeritis gradus & honores conequi, necnon Reipub. decori & ornamento, sibi, & aliis utiles esse possent.

§. 3. Quare pro parte Consulum juratorum, Rationalis & Syndici praefatorum assentientium, Universitati praedictae, eorum cura & gubernio maxime dungi, ac illius Professorum, Lectorum, Praepositorum, Bidelorum, aliorumque Officialium & Ministerium electionem & deputationem, necnon publicarum Cathedralium hujusmodi, ac salariorum & mercedum assignationem, atque distributionem, ad se & nonnullos alios de ipsorum consilio existentes pertinere, ac dicta Praepositura mensis Febr. fructus, redditus, & proventus, qui omnes pro una videlicet, Petro Ludovico Calceran. oetiam de Borja, Magistro militiae S. Mariae de Montesa, & S. Georgii Cisterciensis Ordinis dicto Regno Valentiniae instituta, pro altera vero illorum medietatibus Joan. similiter de Borja, Praepositori praefectorum majoris dictae Militiae ipsius Petri Ludovici nato, ex dispensatione Apostolica, necnon suum per eisdem pensio annua ducentorum ducat, auri de Camera, Petros Ferrar. pariter de Borja (lerico, dilectus filius, illos & illam annuatim percipientibus dicta auctoritate reservari existunt, quatuor millium & quadringentorum ducatorum auri similium secundum extinctionem praedictam val. annui non excedere, nobis fuit humiliter supplicatum, quatenus praemissis ac aliis infra scriptis annuere, & desuper opportune providere, de benignitate Apostolica dignemur.

§. 4. Nos igitur, qui dudum inter alia volumus, quod petentes beneficia Ecclesiastica aliis uniti, teneantur ex rimere verum annuum valorem secundum extinctionem praefatam etiam beneficii, cui aliud uniti pereretur, alioquin unito non valerent, & semper in unionibus commissio fieret ad partes, vocatis quorum interesset, quique hodie reservationem medietatis fructuum, reddituum, & proventuum Petro Ludovico factam hujusmodi, quo ad summam quingentarum librarum monetae Valentin. dumtaxat eadem reservatione, quo ad reliquam partem medietatis fructuum hujusmodi, ipsi Petro Ludovico, salva & illa remanente, ejusdem Petri Ludovici ad hoc expresse accedente consensu, cassari & extingui, cassamque & extinctam fore & esse decerni, ac praedicto Thomae partem fructuum, reddituum, & proventuum suppressae Praepositurae mensis Febr. hujusmodi cassatae fuisse, quae ad valorem annuum dictarum 500. librarum ascenderet, ex tunc tamen quod omnes & quaecumque aliae assignationes sibi per d. Petrum

Civitas ex-
go Valen-
tin. suppli-
cat pro con-
cessione di-
ctae Praepo-
surae pro
Lectorib.
dicti Studii
etc.

Hic modo
ponit peti-
ta concedit

Ludo-

Ludovicum ex hujusmodi fructibus, redditibus, & proventibus, hæcenus quomodolibet factæ, etiam cassæ & extinctæ essent, & esse censerentur, nec dictus Thomas quævis ultra quingen tas libras hujusmodi à Petro Ludovico & Jo. prædictis, ex fructibus, redditibus, & proventibus eis reservatis hujusmodi, quovis etiam alimentorum vel congruæ sustentationis prætextu prætere, ac hujusmodi partem, quæ ad summam quingentarum librarum similibus dumtaxat ascenderet, simul vel successivè, in toto vel in parte, in dicta Curia vel extra eam, etiam in mortis articulo, vel aliis quancumq; sibi placeret, etiam absq; aliqua litterarum Apostolicarum desuper conficiendarum, ac Præsentium insinuatione vel præsentatione, in unam vel plures personas Ecclesiasticas, etiam quæcumq; quotcumq; & quacumq; beneficia Ecclesiastica obtinentes & expectantes, per eundem Thomam nominandas absq; Præpositorum Cathedralicorum prædictorum vel quorumvis aliorum desuper præstando vel requirendo consensu, transferre valeret; reservari, concedi & assignari, necnon Consulibus, Juratis, Rationali, & Syndico prædictis, omnes & singulas expensas in supplicationis per Nos super præsentibus gratis signatas, ac desuper conficiendarum, & præsentium Litterarum expeditione pro tempore factas cujuscumq; summæ & quantitatis ferent, absq; eo quod quicquam à Thoma & Petro Ludovico, ac Jo. & Petro Ferræ prædictis repetere possent, solvendi & præstandi licentiam largiri concessimus. Consules Juratos, Rationalem & Syndicum prædictos, eorumq; singulos à quibuscumq; excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisq; Ecclesiasticis sententiis, censuris & poenis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum Præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censes, hujusmodi supplicationibus inclinari, prædictam Præposituram mensis Febr. quæ inibi beneficium, seu officium simplex, aut personatus vel administratio existit, & personalem residentiam non requirit, sive præmissio sive alio quovis modo, aut ex alterius cujuscumq; persona, seu per similem resignationem dicti Thomæ, vel cujusvis alterius de illa in Rom. Curia vel extra eam, etiam coram Notario publico & testibus sponte factam, aut assignationem alterius beneficii Ecclesiastici, quavis auctoritate collati, vacet, etiam si tanto tempore vacaverit, quod ejus collatio juxta Lateranensis Statuta Concilii ad Sedem Apost. legitimè devoluta, ipsaq; Præpositura mensis Febr. dispositioni Apostolicæ specialiter, vel aliis generaliter reservata existat, & super ea inter aliquos lib. ejus statum Præsentibus haberi volumus pro expresso, pendeat indecisus, dummodo ejus dispositio ad Nos hac vice pertineat, dicta Apostolica auctoritate tenore Præsentium perpetuò suppressimus & extinguimus, ac illius & aliarum suppressarum Præpositurarum prædictarum loco, in dicta Ecclesia Valentina decem & octo alias Præposituras, quæ ibidem simplicia officia, seu beneficia existant, ac etiam per Canonicos dictæ Ecclesie, seu Dignitates, aut Capellanas, vel alia simplicia beneficia Ecclesiastica ibidem obtinentes; etiam unam cum ipsius Ecclesie Valentine Canonicatibus & præbendis, seu Dignitatibus vel Capellanis, aut aliis beneficiis hujusmodi absq; dispensatione Apostolica obtinere possint, pro totidem Præpositis, sex videlicet primariis, & sex secundariis, ac reliquis sextertiis Cathedralicis nuncupandis, qui habitum & insignia per olim Præpositos mensium hujusmodi deferri solita gestare & deferre ac ad illorum instar stallum in Choro, necnon locum in processionibus ceterisq; actibus publicis & privatis, omnibus & quibuscumq; non tamen capitularibus dictæ Ecclesie Valentine immediate postillius Canonicos, juxta ordinem ad id eis præferendum habere, necnon apud dictam Ecclesiam Valentinam

residendo, & divinis officiis interessendo, omnibus & singulis distributionibus quotidianis, tam diurnis quam nocturnis, aliisq; juribus, obventionibus, & emolumentis, in quibuscumq; rebus consistentibus, & quocumq; nomine nuncupatis (non tamen ex fructibus, redditibus, & proventibus, aliarum undecim Præpositurarum hujusmodi prædictæ mensis Capitulari applicatis, & appropriatis proventibus) necnon Privilegiis, indultis, facultatibus, honoribus, præminentis, prærogativis, exemptionibus, immunitatibus, libertatibus, ceterisq; gratis, tam spiritibus quam temporalibus, quibus Præpositi mensium hujusmodi, qui pro tempore fuerint, ratione dictarum Præpositurarum suppressarum, apud ipsam Ecclesiam Valentinam residendo, & divinis officiis interessendo, frui, potiri, & gaudere poterant & debebant, pariformiter, & absq; ulla prolixâ differentia uti, potiri, & gaudere possint & debeant. Et quorum sex in primis, & alii sex in secundis, ac reliqui sex in tertiis singularum Facultatum Theologie, & utriusq; juris Prædictæ hujusmodi Cathedralis eis ad id assignandis eadem facultates pro una videlicet matutinis, altera vero mediæ diebus decem & octo Præpositorum hujusmodi pomeridianis horis, publicè legere & interpretari teneantur auctoritate & tenore præfatis, etiam perpetuò erigimus & instituiamus. Illisq; sic erectis, & institutis, pro earum dote, ac illas pro tempore obtinentium sustentatione, omnia, & singula fructus, redditus, proventus, jura, obventiones & emolumenta suppressæ Præposituræ mensis Febr. hujusmodi per dilectos filios Capitulum dictæ Ecclesie Valentine inter Præpositos Cathedralicos præfatos tantum, modo, & forma infra scriptis distribuenda & repartienda, eisdem auctoritate & tenore, similiter perpetuò applicamus & appropriamus. Quodq; omnia & singula, fructus, redditus, proventus, jura, obventiones & emolumenta suppressæ Præposituræ mensis Febr. hujusmodi, deductis prius illius oneribus quibuscumq; & salvis omnibus supra dictis, in duodecim æquales, partes, ac ex eis quinque inter primarios, & alias quatuor inter secundarios, ac reliquæ tres partes hujusmodi inter tertiarios Præpositos Cathedralicos præfatos proportionabiliter à prædictis Capitulo singulo quoq; quadrimestri, ut præfatur, dividi & repartiri debeant. Ita tamen quod eorum singuli pro cujusq; lectionis sibi incumbendis omissione legitimo impedimento cessante, ratam partem portionis, quæ illius ratione facta juxta calculo, alias ad ipsos pertineret, omnino amittant, illaq; per Censorem seu Pundatorem ad id pro tempore deputatum retineri, ac pro una Rectori Universitatis, & alia ipsi Censori (seu Pundatori, reliqua verò partibus Cōfraternitatis pauperum Scholarum dictæ Universitatis irremissibiliter applicari debeat. Si verò Rector, aut Censor, seu Pundator præfati ratam partem eos tangentem acceptare recusaverint, eadem dictæ Cōfraternitati cedat.

§. 5. Et quia singulis triennii unus ex Lectoribus Cathedralicis dictæ Universitatis in illius Rectorem per Consules Juratos, Rationalem, & Syndicum, ac nonnullos alios de eorum consilio existentes præfatos, hæcenus eligi consuevit, & ex longo rerum usu compertum sit non expedire, ut dictus Rector, à gremio Lectorum Cathedralicorum hujusmodi assumatur; quod ex nunc de cetero perpetuò futuris temporibus pro tempore existentes Consules Jurati, Rationalis, & Syndicus præfati, & alii ad quos electio hujusmodi pertinet, unum ex Canonicis dictæ Ecclesie Valentine seu aliquam illius Dignitatum obtinentibus, non tamen de gremio Præpositorum Cathedralicorum præfatorum existentibus, in Rectorem ejusdem Universitatis de triennio in triennium, cum omnibus & singulis honoribus, favoribus, gratis, prærogativis, præminentis, facultatibus, jurisdictionibus, libertatibus, privilegiis, exemptionibus, immunitatibus, gratis, oneribus, & emolumentis pro tempore existenti Rectori dictæ Universitatis de jure vel con-

Reactoris Studii Censeri formam præscribit.

Collationis
etiam in fu-
turum scienda
modum præ-
finit.

suetudine aut ex privilegio tam Apostolice, quam Imperialis, & Regia auctoritate concessio, aut aliis competentibus & competituris, eligere debeant; ipsique electus triennio sui Rectoratus elapso, in eo continuari seu confirmari, aut ad aliud triennium immediate subsequens iterum eligi nullatenus possit.

§. 6. Quodque omnes, & singula Præpositura præfata tam hac prima vice à primæva erectione huiusmodi, quam deinceps, quoties illas & earum quamlibet per cessum etiam ex causa permutationis vel decelsum, seu quamvis aliam dimissionem, vel amissionem, aut privationem pro tempore existentium Præpositorum Cathedralium, præfatorum, vel alias quovis modo etiam apud Sedem præfata, ac etiam in aliquo ex mensibus in quibus vacantium officiorum, & beneficiorum Ecclesiasticorum collatio, & quævis alia dispositio Nobis, & dictæ Sedi etiam per constitutiones Apostolicas, seu Cancellariæ Apostolicæ, regulas reservata existit, seu pro tempore fuerit, aut etiam Ord. collatoribus per eisdem constitutiones seu regulas, vel Litt. alternativarum, aut alia privilegia & indulta concessis hætenus, & in posterum concedendis, simul vel successivè vacare contigerit, sex primarum, & sex secundarum, ac sex tertiæ Cathedralium Theologiæ, & utriusque Jurisprudentiæ, huiusmodi Lectoribus per Consules Juratos, ac Rationalem, & Syndicum, necnon alios ad quos electio & deputatio eorumdem pertinet, prævio diligenti & rigoroso examine, ac alias juxta ipsius Universitatis instituta, & laudabiles consuetudines eligendis & deputandis, perpetuò affectæ sint, & esse censentur: ac illis nominationem, & electionem Consulum Juratorum, Rationalis, & Syndici, ac aliorum intervenire debentium, & solitorum præfatorum sine aliquo obstaculo, ac omni impedimento & tergiversatione cessante (postquam in ejus manibus Catholice fidei professionem, juxta articulos pridem à Sede præfata propostos expressè emiserint) conferantur, & assignentur, ac conferri, & assignari debeant. Quodque singula Præpositura huiusmodi sub nullis, specialibus vel generalibus, etiam mentalibus, reservationibus, affectionibus etiam in corpore Juris clausis, necnon expectativis, coadjutoriis, mandatis, facultatibus, indultis de providendo, commendando aut aliis disponendo, vel aliis gratis præventivis, per Nos aut Prædecessores nostros Rom. Pont. pro tempore existentes, & dictam Sedem, vel ejus Legatos etiam consideratione, & intuitu, ac contemplatione, seu ad instantiam Imperatoris, Regum, Reginarum, ac etiam S. R. E. Card. vel aliorum Principum, & ex quacumque causa quantumlibet urgenti pro tempore factis, comprehendantur, nec etiam tamquam vacantes apud Sedem præfata, aut ulla alia ratione, generaliter vel specialiter reservari, nec illorum vacatione per resignationem etiam ex causa permutationis, etiam apud Sedem eandem pro tempore occurrente, per Nos aut pro tempore existentem Roman. Pontif. vel Sedem huiusmodi de illis provideri, aut aliis quoquo modo disponi possit, & quæcunque collationes, provisiones, commendæ, & aliæ dispositiones, quas ex nunc de cetero de Præposituris præfatis quibuscumque personis aliis quam per dictum Rectorem, ad nominationem & electionem Consulum Juratorum, Rationalis, Syndici, ac aliorum juxta nominandi & eligendi huiusmodi habentium, quovis modo etiam per Sedem præfata fieri contigerit, nullæ, & invalidæ, nulliusque roboris & momenti sint, & esse censentur, ac pro nullis, & infectis habeantur; nec cuiquam jus seu etiam coloratum possidendi titulum tribuant. Ad hæc nullus omnino Præpositorum præfatorum, Præposituram per eum pro tempore obtentam in alterius quam dicti Rectoris manibus, & id quidem liberè, resignare aut dimittere, seu juri sibi in eis vel ad illas competenti cedere, nec reservationi fructuum, reddituum, proventuum, jurium, obventionum, & emolumentorum, aut quotidianarum distributionum ejusdem Præ-

posituræ, seu alicujus partis eorum, aut pensionis annuæ, super eisdem consentire possit. Et quicumque ex ipsis Præpositis, per tres menses continuos à legendi munere sibi pro tempore incumbente, legitimo cessante impedimento, per Rectorem, Consules Juratos, Rationalem, & Syndicum prædictos approbando cessaverit; ex tunc dictis tribus mensibus elapsis, Cathedra sibi assignata, & illi affecta Præpositura pro ipso jure & facto, absque alia declaratione perpetuò privatus sit; & esse censetur: indeque sine spoliis, & attentatorum vitio amoveri, ac Consules Jurati, Rationalis, & Syndicum cum ceteris in electione intervenire solitis, alium in illius sic privati & amoti locum, ad Cathedram huiusmodi prævio examine, ac aliis modo & forma præmissis eligere & deputare; Rector verò prædictus, sic electio & deputato Præposituram eidem Cathedræ affectam, tamquam per privationem & amotionem huiusmodi vacantem, nullo alio facto examine, omniumque exceptione & tergiversatione cessante, conferre & de illa etiam providere, ipsumque in corporalem possessionem Cathedræ, & illi affectæ Præposituræ huiusmodi, juriumque & pertinentiarum suorum quorcumque, inducere debeat. Quodque singuli Præpositi prædicti intra sex menses à die habitæ per eos possessionis suæ cuiusque Præposituræ, duodecim ad minus conclusiones, earum facultatum quas lecturi sunt, coram loci Ordinario, tamquam ejusdem Universitatis Cancellario à Sede prædicta deputato, ac prædicti Capitulo tueri teneantur; alioquin eisdem sex mensibus elapsis, omnibus insignibus, ipsis rationem suarum Præpositurarum huiusmodi competentibus, donec & quousque eisdem conclusiones, ut præfatur, sustinuerint desituti remaneant.

§. 7. Ceterum ut virtutis æmulatione majores fructus & progressus ibidem proveniant, ac cognitæ & spectatæ cuiusque doctrinæ convenientiæ præmia conferantur, quilibet Præpositorum prædictorum de inferiori ad superiorem Cathedram, per mutuum concursum, singulo quoque triennio admitti, & si rigoroso examine prævio, magis idoneus repertus fuerit, ad superiorem Cathedram huiusmodi ascendere, & eo casu Præposituram eidem superiori Cathedræ affectam, tamquam ipso jure & facto vacantem consequi, alter verò evictus, ad aliam sibi adjudicandam Cathedram & illi affectam Præposituram transire debeat. Singuli quoque Præpositi Cathedralium præfatis, examini eorum qui ad Baccalaureatus, Licentiaturæ, Doctoratus, & Magisterii gradus, in sua cuiusque facultate pro tempore promovebuntur, intervenire possint, ac eandem portionem, ex emolumentis inde provenientibus, quam singuli alii examinatores percipere debeant.

§. 8. Et tam ipsi Præpositi quam dictus Rector, omnibus illis horis, & temporibus, quibus suis officiis, & functionibus vacabunt, aut Scholiarum disputationibus, examinibus, promotionibus, aliisque actibus publicis suæ cuiusque facultatis, & professionis assistent & intervenient, ad residendum in dicta Eccles. Valentina & illius Choro, ac interessendum divinis officiis, minimè teneantur & nihilominus distributiones quotidianas percipiant & lucentur cum ea integritate qua illas perciperent, & lucrarentur, si statuti horis & temporibus huiusmodi in ipsa Eccles. Valentina & illius Choro residerent, & divinis officiis interessent.

§. 9. Qui verò Præposituras primarum Cathedralium huiusmodi pro tempore obtinerint, quando & quoties à præfatis Capitulo requisiti fuerint, in omnibus, & singulis litibus, causis, & negotiis Ecclesiæ Valentinae illiusque Capituli huiusmodi, tam conjunctim quam divisim, (non tamen contra Universitatem Studii generalis, ac Communitatem, & Rempublicam Civitatis Valentinae huiusmodi) advocare, & patrocinari, ac consilium, & operam fideliter præstare; Theologi verò, verbum Dei in ipsa Ecclesia Valentina prædicare, & concionari gratis, & absque ulla prosus mercede debeant, & teneantur, auctoritate & te-

Lectorem
ad missionis
normam po-
nit.

Lectoribus
distributiones
quotidianas
pro tempore
quo legunt,
concedit.

Lectoris mu-
nus circa li-
tes, & præ-
dicationes.

Archiep. &
his dat fa-
cultatem
concedendi
curata, circa
rectorum
servitia, &c

nore similibus pariter perpetuo statuimus, & ordinamus.

§ 10. Necnon pro tempore existentibus Archiep. Valentino tamquam Cancellario seu ejus Vicario, ac Rectori Universit. necnon Juratis Consilibus, Rationali, & Synd. Civitatis Valentinae ceterisque; jus eligendi hujusmodi habentibus, ut vocatis, & adhibitis secum aliquibus dictae Ecclesiae Valentinae Canonic. litter. scientia ac rerum usu praeditis, quos ad hoc duxerint eligendos, ac alias juxta facultatem eis a praefato Alex. praedecessore concessam, quaecumque; alia statuta, ordinationes, & decreta, ad electionem, deputationem, qualitates, onera & servitia Lectorum Cathedralis hujusmodi pertinentia, ac alias in praemissis & circa ea necessaria & opportuna, licita tamen & honesta, ac sacris Canonibus, & Concilii Trid. decretis non contraria, condere, eaq; postquam condita fuerint, quoties pro illorum, ac rerum, & temporum qualitate, vel alias expediens videbitur mutare, corrigere, reformare, alterare, moderari, interpretari, ac in toto vel parte revocare, atque alia de novo edere, liberè & licite valeant, auctoritate & tenore praefatis de speciali gratia indulgemus.

§ 11. Decernentes praemissa omnia, necnon praesentes Litteras, nullo unquam tempore, etiam ex eo quod causae propter quas emanarunt, coram Ordin. loci, etiam tamquam Sedis praefatae delegato, vel alibi examinatae, verificatae, & approbatae, ac ad id interesse habentes vocati non fuerint, neque ipsi illis consenserint, aut alio quocumque praetextu, de subreptionis vel obreptionis, aut nullitatis vitio, seu intentionis nostrae, vel alioquoque defectu notari, impugnari, invalidari, ad terminos juris reduci, in jus vel controverfiam revocari, aut adversus illas quodcumque juris, facti, vel gratiae remedium impetrari posse; nec sub quibuscvis unionum, annexionum, incorporationum, supplicationum, extinctionum, separationum, dismembrationum, applicationum, appropriationum, etiam effectum non sortitarum, aliarumque; similium vel dissimilium, gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, modificationibus, aut aliis contrariis dispositionibus, per Nos seu alios Rom. Pont., successores nostros, aut Sedem hujusmodi etiam cum quibuscvis derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decretis pro tempore factis, etiam si de eisdem praesentibus ac earum toto tenore & data, specialis, specifica, expressa, & individua mentio fiat, comprehendi; sed tamquam in fidei Catholicae, & divini cultus favorem, ac publicam utilitatem & salutem concessa, semper valida & efficacia fore, ac quoties illae emanabunt, toties in pristinum, & cum in quo antea erant statum, restituta, reposita, & plenarie reintegrata, ac de novo, etiam sub data per Consules Juratos, Rationalem, & Syndicum praefatos, eorumque; Successores, ac alios, quos ipsae Praesentes Litterae concernunt, & concernent in futurum eligenda, concessa esse.

§ 12. Sicque per quoscumque; Judices Ordinarios, vel delegatos, quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apost. Auditores, ac S. R. E. Card., sublati eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, in quavis causa & instantia, judicari ac definiti debere, irritum quoque & inane, si secus super his a quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§ 13. Quocirca Venerabilibus fratribus nostris, Archiep. Valentino & Episcopo Oriolensi ac dilecto filio Archid. Ecclesiae Valentinae per Apost. scripta mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum, per se, vel alium, seu alios, praesentes Litteras, & in eis contenta quaecumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte, pro tempore existentium Consulum Juratorum, Rationalis, & Syndici, ac Praepositorum praedictorum, seu alicujus eorum

fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in praemissis efficacis defensionis praesidio assilentes, laiciant auctoritate nostra, easdem praesentes, & in eis contenta hujusmodi ab omnibus ab omnes spectat, & pro tempore spectabit, inviolabiliter observari, ipsosque Consules Juratos, Rationalem, & Syndicum, ac Praepositos pro tempore existentes, ceterosque; omnes, quos eadem Praesentes quomodolibet concernunt, & concernent in futurum, illis, omnibus & singulis pacifice frui, & gaudere, non permittentes eos, vel quempiam ex ipsis, desuper per quoscumque; quomodolibet indebitè molestari, perturbari, vel inquietari. Contradictores quoslibet, & rebelles, per sententias, censuras, & poenas Ecclesiasticas, aliasque; opportuna juris, & facti remedia, appellatione postposita compescendo, ac legitimis super his habendis servatis processibus, sententias, censuras, & poenas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando; invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§ 14. Non obstantibus priori voluntate nostra & aliis praemissis, ac Lateran. Conc. novissimè celebrati, uniones perpetuas, nisi in casibus a jure permixtis, fieri prohibentibus; necnon pia mem. Bonif. Papae VIII etiam praedecessoris nostri, etiam illa qua cavetur, ne quis extra suam Civitatem vel Dioecesim nisi in certis expressis casibus, & in illis ultra unam dietam a fine suae Dioecesis, ad iudicium evocetur; seu ne Judices a Sede praefata deputati extra Civitatem; vel Dioecesim, in quibus deputati fuerint, contra quoscumque procedere, aut alii, vel alius vires suas committere audeant, seu praesumant; & in Concilio generali edita, de duabus dietis, dummodò ultra tres dietas, aliquis auctoritate praef. ad iudicium non trahatur; aliisque Apost. ac in Provinc. & Synod. Conc. editis, specialibus vel generalibus constitutionibus & ordinationibus, necnon Ecclesiae Valentinae & Universit. hujusmodi, juramento, confirmatione Apost. vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque; indultis, & Litt. Apost. illis, ac ipsius Ecclesiae Valentinae Praesuli pro tempore extitenti, necnon Capitulo, Rectoribus, Consilibus Juratis, Rationali & Syndico praedictis, ac quibuscvis aliis personis, sub quibuscvisque; tenoribus & formis, ac cum quibuscvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decretis, etiam ad Imperatoris, Regum, Reginarum, Ducum, vel aliorum Principum instantiam, seu etiam Motu proprio, & ex certa scientia, ac de Apost. potestatis plenitudine, etiam consistorialiter, in genere vel in specie, ac alias quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis; quibus omnibus etiam de illis, eorumque; totis tenoribus specialis, specifica, expressa & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio, seu quaevis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda esset, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat, specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si aliqui super provisionibus sibi faciendis de officiis dictae Ecclesiae Valentinae speciales, vel alius beneficiis Ecclesiasticis in illis partibus gen. d. Sedis, vel Legatorum ejus Litteras impetrarint, etiam si per eas ad inhibitionem, reservationem, & decretum, vel alias quomodolibet sit processum, quas quidem Litt. & processus habitos per eandem, ac inde secuta quaecumque, ad dictam Praeposituram mensis Febr. volumus non extendi; sed nullum per hoc eis quo ad affectuacionem officiorum vel beneficiorum aliorum praedictorum generari; & quibuslibet aliis privilegiis, indulgentiis, & Litt. Apost. quoruncumque tenorum existant, per quae Praesentibus non expressa vel totaliter non inserta, effectus earum impediti valeat quomodolibet, vel differi, & de quibus quorumque; totis tenoribus habenda sit de verbo ad verbum in nostris Litt. mentio specialis, aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit de indul-

Clausulas
contrarii
derogatorias
subicit.

Clausulam
sublata &c.
ddn.

Executorum
nostris consti-
tuto.

	<p>tum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.</p> <p>Nulli ergo omnino &c.</p> <p>Dat. Romae apud S. Petrum, anno Incarnationis Domin. 1585. 3. Kal. Nov. Pontific. nostri Anno 1.</p>	<p>sum Collegium: & septem illius Notarii quovis modo, conjunctim vel separatim, potiebantur, utebantur, & gaudebant; necnon redditus, proventus, emolumenta, & omnia alia singula tam ex communi massa, quam alibi quocumque tempore debita, & debenda, ordinaria & extraordinaria, aequaliter percipiant, ac munera, functiones & officia, tam publica quam privata, semper sortiantur, & obtineant, exerceant & assequantur, prout prius ante aucionem ad duodecimum numerum hujusmodi Collegium ipsum & illius septem Notarii habebant, percipiebant, & obtinebant, perinde ac si à principio Collegium praedictum sic auctum, ac cum antiquo consulum, unitum, & incorporatum, & illius officia pro duodecim Notariis instituta fuissent. Statuentes quod perpetuis futuris temporibus dictum Collegium habeat duodecim Notariatum officia inter se promiscua, & confusa; ita quod quinqué Notarii eidem Collegio adscribendi cum aliis septem nunc existentibus omnino pares & aequales existant, & nullum inter eos discernimen, neque differentia prioritatis, potioritatis, & antiquitatis addit quo posteriores à prioribus, vel alter ab altero discernantur. Ita quod adveniente vacatione sive antiquorum, sive augmentatorum semper in supplicatione exprimat quod unum ex duodecim ex officiis Notariatum, alioquin Notarii nequaquam admittere teneantur.</p> <p>§. 4. Et insuper ut duodecim Notarii praedicti onera sibi incumbenda supportare, & iuxta ipsorum qualitatem & dignitatem decentius se sustentare valeant, providere volentes, redditum annum mille nongentorum & octoginta scut. monetae ex fructibus, redditibus, & proventibus Dohanæ & Thesaurariae nostri patrimonii per pro tempore existentem Dohanerium & Thesaurarium ejusdem patrimonii singulis mensibus pro rata massa communis dicti Collegii perfolvendum. Ita quod liceat eidem Collegio & duodecim illius Notariis posthac, una cum aliis ipsius Collegii redditibus, proventibus, juribus, obventionibus, & emolumentis sibi huculque assignatis seu in futurum assignandis, aut quovis modo proveniendis, illum percipere, exigere, & levare, ac inter eos æquis portionibus distribuire & dividere, motu & auctoritate similibus perpetuo applicamus, illumque cum omnibus aliis redditibus & emolumentis confundimus. In recompensam vero dicti anni redditus Dohanæ & Thesaurariae praedicti, assitum seu redditum annum terræ nostræ Biadae Viterbiensis Diocesis, qui est scutor. mille centum & octoginta, & alia octingenta scuta similia ex residuo gabelle civitatis nostræ Spolitanæ dictam summam scutor. mille nongentorum & octoginta constituentia, etiam pro majori ipsius Dohanerii & Thesaurarii cautela perpetuo concedimus & assignamus, Decernentes praedicta omnia & singula ab omnibus ad quos spectat prorsus observari, & adimpleri debere, & praesentes Litteras validi & efficaciae contractus inter Sedem & Cameram Apostolicam Nosmetipsos, & successores nostros Rom. Pont. ex una, & Collegium, ac singulos duodecim Notarios hujusmodi, illorumque successores vel causam ab eis habentes, ex altera partibus solemniter & legitime stipulari perpetuo obtinere, & dictamque Cam. ad eosdem Notarios omnes & singulos in iuribus praedictis tuendis, & ab omni incommodo, lesione, lite, causa, & controversia immunes, indemnes, & exemptos conservandos teneri, & obligatam esse.</p> <p>§. 5. Et sic per quoscumque Judices etiam causarum Palatii Apost. Audit. & S. R. E. Card. sublati eis & eorum cuilibet, quavis aliter judic. & interpret. facultate & auctoritate, judicari & definiri debere. Irritum quoque & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.</p> <p>§. 6. Et pro praedictis omnibus & singulis firmiter observandis & adimplendis, ac pro potiori Collegii duodecim Notariatum praedicti, tam pro pecuniis quas pro Cam. & Sedis praedictarum occurrentibus</p>
Dat. P. A. 1. die 30. Oct.		
Publicatio.	<p>Anno Incarnationis Dom. 1585. die 31. Octob. Retroscripti Thomas, per Illustriss. & Reverend. D. Petrum Card. de Deza nuncupatum, resignationis, ad effectum suppressionis erectionum, & applicationis retroscriptarum, & Consules Jurati. Rationalis, & Syndicus Civitatis Valentiae, per Jo. Bapt. Vives, eorum respective Procuratores, ac liti. expeditioni consenserunt, &c.</p> <p>Pro Paride Doria. Jo. Bapt. Zianus.</p>	
XII.	<p>Ampliatio Collegii septem Notariorum Sedis Apostolicæ antiquitus instituti, ad numerum duodecim, cum gratiarum & privilegiorum extensione, pro ipsis septem Notariis.</p> <p>Hi Notarii, Protonotarii nuncupantur, ut sap. in consp. 3. Pii II. Cum servare. fol. 369. Tom. I. ubi de ipsorum & Episcoporum precedencia definitio habetur.</p> <p>Praedictis septem Notariis hic idem Pontifex exemptionem à gabella pro sex dolis vini clargitus est, in alio speciali diplomate sub die 22. Febr. 1586. expedito; quod hic inferere consulo praetermissi.</p>	
Edita A.D. 1585.	<p>SIXTUS EPISCOPUS, Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.</p>	
Prooemium.	<p>Romanus Pontifex, Christi Vicarius. uti prudens paterfamilias providè animadvertens in agro Dominico multum melle esse, & ut opus Domini rectè & sine confusione adimpleatur, singulis curas parit, & officia distribuit, & ea nonnumquam pro felici ipsius agricultura & directione adauget, prout in Domino conspiciat salubriter expedire.</p> <p>§. 1. Hinc est quod Nos volentes Collegium Notariorum Sedis Apostol. de numero participantium, quod olim per fel. record. Clem. I. Antherum etiam I. & Julium similiter I. praedecessores nostros, ad res Martyrum, & quaecumque ad Ecclesiam pertinerent fideliter describenda, & descripta Scriniis Ecclesiae recondenda institutum, ordinatum & destinatum fuit, ad Romanæ Ecclesiae decorem, & ornamentum (ut par est) augere dictis, & aliis rationabilibus de causis animorum nostrorum moventibus.</p> <p>§. 2. Ultra septem Notariorum de numero participantium officia ad praesens in dicto Collegio existentia, quinque alia similia officia, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, Apostolica auctoritate, tenore Praesentium perpetuo erigimus & instituiamus pro duodecim Notariis. Ita quod deinceps quinque alii viri per Nos, & pro tempore existentem Rom. Pont. eidem Collegio Notariorum adscribendi, & deputandi, una cum ex nunc existentibus Notariis unum corpus & Collegium integrum, & indistinctum constituent, & efficiant, & duodecim officia pro duodecim Notariis, omni prorsus inter eos sublati differentia, omnino similia & aequalia, in omnibus & per omnia, ejusdemque juris, potestatis, jurisdictionis & auctoritatis existant.</p> <p>§. 3. Ipsumque Collegium sicutum & institutum, & in unum corpus prorsus redactum, & duodecim Notarii praedicti pro tempore existentes, eidem privilegiis, exemptionibus, facultatibus, prerogativis, & gratis quibuscumque, ubique indifferenti potiantur, utantur, & gaudeant, quibus antea ip-</p>	
Collegium 7. Protonotari- orum institutum fuit ad gesta Ec- clesiae descri- benda.		
Quod hic Pont. modo extendit ad 12.		
Omnemque istidem gra- tis & privi- legiis pari- formiter exornat.		

Annum re-
ditum eis af-
signat.Clausula de
rogatoria.Asscuratio
dictae affi-
nationis.

necessitatibus jam solverunt, & in posterum solvent, quam pro fructibus, redditibus, & proventibus sibi assignatis, quæ namquam in sortem principalem computari volumus, ac damnis, expensis & interesse passis, faciendis, & faciendis, omnia & singula dicte Camere bona mobilia, & immobilia, jura, actiones, & emolumenta, ac redditus, proventus, presentia & futura, ita quod liceat propria ipsius Collegii auctoritate nullo alio à Nobis seu pro tempore existente Rom. Pont. de super expectato mandato, licentia seu decreto, dictorum bonorum, reddituum seu proventuum pro dictis pecuniis, damnis, expensis, & interesse, possessionem capere & retinere Motu & auctoritate similibus obligamus & hypothecamus.

§. 7. Quocirca Venerabili fratri nostro Alexandro Episcopo Officium Card. Farnesio nuncupato, ejusdem S. R. E. Vicecanc. per Apostolica scripta mandamus, quatenus ipse per se, vel alium, seu alios, faciat quinque Notarios prædictos sic audios, si & postquam per Nos aut pro tempore existentem Roman. Pontif. deputati fuerint ad quinque officia hujusmodi ad instar aliorum septem Notariorum ab eis; aliqua prorsus differentia, eorumque liberum exercitium, necnon honores, onera, salaria & emolumenta, juxta Præsentium tenore & continentiam admitti, eisq; de emolumentis prædictis integrè responderi, ac eandem præsentem Litteras ab omnibus ad quos spectat & spectabit in futurum, inviolabiliter observari. Non permit- tens Collegium & duodecim Notarios prædictos seu eorum aliquem, à quoquā de super molestari. Contra- dictores quoslibet, & rebelles, per censuras & alias de quibus ei videbitur penas compescendo; adhibito etiam ad hoc si opus fuerit auxilio brachii secularis.

§. 8. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac nostræ Cancellariæ regula de non tollendo jure quæsito, necnon Camere & Collegii prædictorum juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, necnon privilegiis, indultis, & litteris Apostolicis, Camere, Collegio, & Notariis prædictis, sub quibuscumque tenoribus & formis quomodolibet concessis. Quibus omnibus etiam si pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquilita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi Præsentibus pro sufficienter expressis & totaliter insertis habentes, illis alias in suo robore permanens, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud S. Petrum, anno incarnationis Dominicæ 1585. 16. Kal. Decemb. Pontificatus nostri anno 1.

Die 15. Januarii 1580. Ex decreto in Cam. Apost. facto admisse & registratæ fuerunt præsentia litteræ Apostolicæ.

Andreas Martini.

Sequuntur privilegia pro supra dictis septem Notariis antiquioribus.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Laudabilis Sedis Apostolicæ restitudo, quæ in suis adibus provida circumspectio dirigitur, non immerito eos gratia & favore prosequitur, quos sibi operosa eorum diligentia studium continuo impendere cognoscit; ac ea quæ illis per prædictam Sedem concessa fuisse dicuntur, ut firmiora persistant Roman. Pont. in eadem Sede constitutus libenter approbat, & confirmat, aliasque de super disponit, prout

conspicit in Domino salubriter expedire.

§. 1. Sanè cum sicut accepimus Collegium septem Notariorum de numero participantium nuncupatorum, olim per felic. record. Clem. I. Antherum etiam I. & Julium similiter I. Rom. Pont. prædecessores nostros, ad martyrum gesta, & quæcumque ad Romanam Ecclesiam pertinerent fideliter describenda, & descripta recondenda, ordinatum & institutum fuerit, ipsique in septem Urbis regionibus divis. tam à prædictis, quam aliis Romanis Pontificibus, etiam prædecessoribus nostris, ut creditur quamplurima privilegia, honores, gratiæ, præeminentiæ, & prærogativæ concessa fuerint, ipsiq; Notarii abinde citra, omnibus Romanis Pontificibus præfatis, tam in eorum Capella, quam in aliis publicis locis ubi iidem Pontifices interfuerint, uti illorum Prælati domesticis inservierint, & ad diversas legationes, & officia missi, illa laudabiliter exercuerint.

§. 2. Propterea non solum prædictum Collegium in sua antiquitate & nobilitate, ut par est, conservare, sed etiam majoribus favoribus & gratiis prosequi volentes, Motu proprio non ad dictorum Notariorum, seu alicujus eorum, vel etiam alterius pro eis Nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed de nostra liberalitate Collegio hujusmodi, eisdemque septem Notariis nunc & pro tempore existentibus, & eorum cuilibet omnia & singula privilegia, gratias, exemptiones, libertates, immunitates, favores, facultates, præeminentiæ, decreta, declarationes & indulta quæcumque per quoscumque Rom. Pontifices prædecessores nostros in si Collegio, & illius Notariis concessa quatenus sint in usu, & Concilii Tridentini decretis minime contraria, nec sub ullis revocationibus comprehensa, necnon omnia & singula redditus, jura, & emolumenta quæcumque dicti Collegii per ipsos septem Notarios hucusq; habita & percipi solita, sicut ea jure & pacifice possident, Apostolica auctoritate tenore Præsentium confirmamus, illaque eis de novo concedimus & innovamus.

§. 3. Ac nunc & tempore existentibus Notariis de dicto numero & eorum cuilibet, quoscumque qui in Jure canonico, & civili, seu altero eorum per diligentem examinationem per se adhibitam, & assumptis secum duobus aut tribus illius & facultatis Doctoribus, scientia & moribus idonei & sufficientes fuerint, in utroque seu altero jurium hujusmodi quos verò in Theologia non tamen alicujus Ordinis regulares, seu artibus vel Medicina, aut alia licita facultate studuisse, ac per similem examinationem duorum aut trium, & per eos eligendorum Doctorum, seu Magistrorum facultatis in qua studuerunt, coram eis vel aliquo eorum habendam, ad Magistrorum, seu Doctorum eorumdem attestationem eis faciendam petitos, ac scientia & moribus præfatis, ad hoc idoneos & sufficientes esse repperint, de eorumdem Doctorum seu Magistrorum, quo ad præmissa omnia consilio & assensu in Theologia, seu Artibus, vel Medicina, aut alia licita facultate hujusmodi ad Baccalaureatus, licentiaturs, Doctor. & Magisterii gradus promovendi, & illis in eis legendi & alios actus ad personas in hujusmodi gradibus constitutas quomodolibet pertinentes, faciendi, auctoritatem concedendi, & ipsorum graduum solita insignia eis, qui eisdem auctoritatibus, facultatibus & privilegiis ac si hujusmodi gradus in aliqua etiam famosa Universitate suscepissent, præterquam quo ad habilitatem ad Cathedralis Ecclesias utantur & gaudeant conferendi.

§. 4. Notariosque & Tabelliones publicos creandi, ac creatos de Tabellionatus, & Notariatus officiis hujusmodi per pennam & calamæ, ut moris est, recepto prius ab eis solito juramento investendi.

§. 5. Cum spuris, bastardis, manseribus, incestuosos & aliis ex quovis illicito & damnato coitu procreatis, ut in parentum & aliorum bonis, tam ex testamento quam ab intestato, sine tamen præjudicio venientium

Collegium. Notariorum Sedis Apost. aliis institutum fuit.

Cui hic Pont. confirmat emolumenta & privilegia alias concessa

Doctorandi que facultatem concedit.

Notarios etiam creandi

Spurios legitimandi ad successionem bonorum etiam Eccles.

Statuta pro Collegio condendi.

Familiares Papæ & ejus Prælati domesticis declarantur.

Panem, Vestes, & locum in Cavalcatu habeant.

Litteræ Apostolicæ gratis pro his expendantur.

Emolumenta hic assignata nunc quam eis diminuantur.

ab intestato, aut ex fideicommissis, vel alia de jure valida dispositione, & citra bona emphyteutica & feudalia Ecclesiastica, aut ex fructibus, aliisq; rebus Ecclesiasticis consecrata, vel per Ecclesiam acquisita, necnon derogationem constitutionis fel. record. Pii Papæ V. similiter prædecessoris nostri in illegitimos emanata, succedere & quoscunque actus legitimos exercere, & ad quosvis honores, dignitates, & officia, publicæ vel privata assumi, illaque gerere & exercere in omnibus, ac si de legitimo matrimonio procreati essent, liberè & licitè valeant dispensandi.

§. 6. Necnon statuta & ordinationes dicti Collegii prosperum statum concernentia condendi, & pro tempore condita restringendi, ampliandi, & quoties expedire videbitur in totum vel partem delendi, & alia de novo ordinandi, eaque sub pecuniariis eidem Collegio applicandis & aliis etiam suspensionis à perceptione emolumentorum distribuendorum arbitrio dicti Collegii penitus, per deputandos per ipsum Collegium exigendis, observari faciendi auctoritate & tenore Præsentis tribuimus facultatem & potestatem.

§. 7. Eisdemque Notariis de numero hujusmodi veros & indubitatos familiares, continuos commensales, ac Prælatos domesticos nostros & pro tempore existentes Rom. Pont. existere, eisdemque privilegiis & gratiis, quibus veri & intimi familiares, utuntur, potiuntur & gaudent, necnon ad eorum instar, sed pariformiter & æquè principaliter sine ulla differentia uti, potiri, & gaudere posse.

§. 8. Ac illis panem honoris, ejusdem bonitatis & qualitatis, prout eidem intimis familiaribus & dilectis filiis Cam. Apost. Clericis dari consuevit, dandum, ac ipsis & eorum cuilibet, obitus & coronationis Rom. Pontif. temporibus vestes lugubres ratione obitus, & violaceas ratione Coronationis hujusmodi assignandas esse; & in cavalcatu Pontificibus duos ex ipsis Notariis equitare cum mantelloibus immediatè post Prælatos assistentes si voluerint, liberè posse decernimus.

§. 9. Eisdemque Notariis pro tempore existentibus, ut singulis pro eorum quolibet litteræ Apostolicæ, etiam sub plumbis, super omnibus & singulis quorumcumque cum cura & sine cura, secularium vel quorumvis Ordinum regularium, beneficiorum Ecclesiasticorum, etiam si Canonicatus, & præbendæ, dignitates, personatus, administrationes vel officia & dignitates ipsæ in Cathedralibus etiam Metropolitanis post Potestates majores, vel Collegiatis, aut aliis Ecclesiis principales fuerint, & ad dignitates, personatus, administrationes vel officia hujusmodi consecuerint, qui per electionem assumi, eisque cura imminuat animarum, ac etiam ipsarum Cathedralium, vel Metropolitanarum aut Patriarchalium Ecclesiarum provisionibus, commendis, ac fructuum, reddituum & proventuum Ecclesiasticorum, necnon pensionum annuarum super eisdem fructibus, redditibus, & proventibus, reservationibus, & aliis gratiis, etiam per Cameram vel Cancellariam Apostolicam gratias expeditæ possint, de speciali gratia indulgemus.

§. 10. Et insuper, quod pro singulis quorumcumque Cathedralium, Metropolitanarum & Patriarchalium Ecclesiarum, necnon Monasteriorum, ceterorumque beneficiorum pro tempore faciendis expeditionibus, quarum ratione taxa dicto Collegio solvi solet, semper eidem Collegio jura prædicta omnino solvi debeant: ita quod in quibuscumque gratiis, & mandatis à Nobis & pro tempore existente Rom. Pont. emanandis, etiam si per ea expeditiones hujusmodi, sive per Cameram, sive per Cancellariam, aut viam secretam gratis ubique fieri concessum sit, nihilominus jus semper integrum & illatum prædicto Collegio reservatum esse censetur, nec expeditio fieri possit nisi prius solutis juribus præfatis Coll. quodq; nullo modo, nullog; tempore præmissis quamquam per Nos & Successores prædictos specialiter & expresse, & quavis causa illis

derogatum fuerit, derogatum esse prætendi valeat, quinimo jura ipsa dicto Collegio integrè, ut præteritur, solvi non debeant auctoritate & tenore præmissis, etiam perpetuè statuisimus & ordinamus.

§. 11. Præterea eorumdem septem Notariorum & cujuslibet eorum consanguineis, affinis, & familiaribus continuis commensalibus actu intervenientibus, quod quilibet arma, non tamen brevioris mensuræ alias prohibita, tam per Urbem, quam totum Statum Ecclesiasticum hujusmodi absque aliqua speciali licentia deferre possint, quibusvis prohibitionibus & bannimentis nequaquam obstantibus, à quibus semper exempti & excepti sint & esse censentur; ipsorumque lissis desuper dandis ministri justitiæ Urbis & locorum Status hujusmodi credere, & acquiescere debeant.

§. 12. Eisdemque Notariis, & eorum cuilibet, ut de quibuscumque eorum bonis, mobilibus & immobilibus per eos tam ex Ecclesiis, aut aliis beneficiis Ecclesiasticis, & Hospitalibus, vel aliis piis locis cujusvis etiam privilegiati Ordinis, seu Militiæ existentibus per eos obtentis, ac obtinentis, aut alias quomodolibet, licitè tamen acqutis, & acquirendis etiam si juxta præ mem. Six. IV. Jul. II. Leonis X. & aliorum Romanorum Pontificum, etiam Prædecessorum nostrorum desuper expeditas Litteras immobilia bona non possederint, etiam in dicta Romana Curia, & extra eam testari, & de eis inter quascumque personas utriusque sexus, non tamen illegitimas, aut alias incapaces, gratis & absque alicujus compositionis solutione disponere, testari, codicillari, & ea etiam inter vivos erogare, concedere, & donare, ac testamenta, dispositiones, & concessiones hujusmodi, etiam dimisso Notariatus officio usque ad summam duorum milium ducatorum auri de Camera, quoad bona Ecclesiastica, & aliis beneficiis prædictis acquisita, facere liberè & licitè valeant plenam & liberam auctoritate & tenore prædictis concedimus licentiam & facultatem.

§. 13. Eisdemque Notariis à quorumcumq; Ordinariorum locorum, & illorum omnium Judicum jurisdictione, potestate, superioritate & dominio, ita ut Ordinarii & alii prædicti, eorumque Officiales, & Vicarii, ac quicumque alii Judices nullam in eos, etiam ratione delicti contracti, aut rei de qua agi contingerit, superioritatem, potestatem, jurisdictionem, vel dominium valeant exercere, ac excommunicationis, vel alias sententias, censuras, & penas proferre, nisi de nostro, seu pro tempore Rom. Pontificis mandato, ipsique in flagranti aliquo delicto deprehendantur penitus eximimus & totaliter liberamus, ac nostræ & Sedis Apostolicæ jurisdictioni, & potestati dumtaxat immediatè subicimus. Inhibentes locorum Ordinariis, & aliis cujuscumq; qualitatis & dignitatis Judicibus, ne prædictos Notarios aliquo colore vel causa, nisi de nostro vel pro tempore existentis Romani Pontificis mandato vel in flagranti delicto, ut præteritur, reperto, aliquo modo molestare, inquietare, capi facere, processare audeant vel præsumant, irritum & inane decernentes, quicquid, si secus ipsi, aut eorum quispiam præsumpserit attentare.

§. 14. Quodque dicti septem Notarii Collegialiter congregati, unum Notarium quolibet anno sine Notariorum prædictorum participatione præjudicio, & absque exemptionibus & privilegiis ipsis septem Notariis concessis ita quod illis non gaudeant, creare.

§. 15. Necnon, qui ex dictis septem Notariis utriusque juris Doctores fuerint, utriusque Signaturæ Referendariorum numero adscribantur, & unus ex eis antiquior in Signatura gratiæ semper assistere possit.

§. 16. Ac in quibuscumque actibus in Consistorio publico pro tempore faciendis, unus sit accersendus Notarius, qui & alii ibi presentes Notarii si rogentur instrumentum ad perpetuum rei memoriam conficiant; cum omnibus aliis instrumentis, & scrip-

Licentia deferendi arma pro ipsis & eorum familiaribus.

Facultas testandi etiam de acquisitione ex bonis Ecclesiasticis pro ducatis duobus milibus.

Exemptio à jurisdictione Ordinariorum. Hanc de dit etiam Leo X. in rubr. cit.

Facultas creandi unum Notarium.

Locorum in Signaturis.

Et in actibus publ. Consistorii.

pturis quibuscumque acta publica, quibus interveni-
rent concorrentibus, unus ex eisdem Notariis manu-
scriptis, ac suo sigillo munitis, absque testibus,
plenaria fides in iudicio & extra ubique locorum
omnino adhiberi debeat.

§. 17. Et cum Notariatus officia huiusmodi ad
res Martyrum describendas antiquitas, ut præfertur,
instituta sint, quod unus eorumdem Notariorum in
Canonizatione Sanctorum, ac etiam in fabricando
desuper processu conjunctim una cum uno ex can-
sarum Palatii Apostolici Auditoribus intervenire,
& procedere.

§. 18. Illisque omnibus, & eorum singulis Con-
fistoria publica, & Capellæ à Curforibus intimari, ac
eis in Capella, & omnibus adibus Candelas, Agnus-
dei, & palmas ejusdem qualitatibus & quantitatibus, prout
Episcopis assistentibus de more fieri solet.

§. 19. Necnon aureas, argentæsq; monetas in die
Coronationis, cujuslibet Rom. Pontificis dictæ Ca-
meræ Clerici dari solitas, eisdem septem Notariis &
eorum singulis in signum honoris distribui & dari.

§. 20. Duoque ex illis si Princeps & eorum Ora-
tores & Patriarchæ, necnon Archiepiscopi, & Epif-
copi assistentes desint, à Magistris ceremoniarum ad
nostram & pro tempore existentis Romani Pontificis
caudam deferendam ceteris Prælatibus in illis adibus
in quibus ad ipsos spectat, & Baronibus postpositis
assum.

§. 21. Et qui ex eis in Presbyteratus ordine con-
stituti fuerint, in Missis solemnibus mitra, & quibus-
cumque aliis Pontificalibus insignibus, etiam in Cath-
edralibus Ecclesiis, de illorum tamen Præfultum, si præ-
sentes sint, si vero absentes absque illorum consensu,
etiam illis irrequiritis extra dictam Curiam uti.

§. 22. Necnon quilibet eorum septem Notariorum
nunc & pro tempore existentium, ut sibi habere li-
ceat Altare portatile cum debita reverentia & hono-
re, super quo in locis ad hoc convenientibus & hono-
restis, etiam non sacris ac etiam non ordinaria, vel
Apostolica, seu utraque auctoritate, ex quavis causa
interdictis, seu etiam tempore cessationis à divinis,
dummodo causam interdicti huiusmodi non dederit,
etiam ante diluculum, & etiam circa meridiem in illius
& domesticorum & familiarium suorum præsentia
Missam per se, vel quemcumque seculari, vel cu-
jusvis Ordinis regularem Sacerdotem idoneum, ab
Ordinario approbandum, celebrari facere, illique
interesse, & eam audire libere & licite valeat.

§. 23. Quodque iidem nunc & pro tempore exis-
tentes septem Notarii & eorum singuli, qui jam per
decennium officium Notariatus huiusmodi obtine-
rint, quique in futurum saltem per prædictum tem-
pus à die quo in Collegium eorumdem Notariorum
admissi fuerint computandum illud obtinuerint, si
forte illud resignaverint, nihilominus Notarii sint, &
vocentur, eisdemque honoribus, præminentibus,
antelationibus, privilegiis, immunitatibus & exem-
ptionibus, aliisque omnibus præmissis ad quinquen-
nium tantum utantur, perinde ac si in dicto Collegio
adhuc essent; qui tamen Rochettum, præterquam
extra Urbem non deferant, nec locum in Capella ha-
beant, alios tamen Prælatos immediate post Nota-
rios incedendo, præterquam causarum dicti Palatii
Auditores, & Cameræ Apostolicæ Clericos, proce-
dant, auctoritate, & tenore præmissis concedimus
pariter & indulgemus.

§. 24. Mandantes dilectis filiis Vicecancellario,
Camerario, Summatore, & dictæ Cameræ generali
Auditori, Clericis, Thesaurario, ac ejusdem Urbis
Gubernatori, Senatori, necnon Legatis, Vicelega-
tis, Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, Abbati-
bus, Prioribus, & Gubernatoribus quarumcumque
Civitatum, Castrorum & locorum dicti Status Ec-
clesiæ, per Collegium didictorum septem Notariorum pro
tempore existentium, & eorum singulos eligendis, &
eorum singuli, per se, vel alium, seu alios, auctori-

tate nostra dictis septem nunc, & pro tempore exis-
tentibus Notariis in præmissis omnibus & singulis
efficacis defensionis præsidio assistant, faciantque eos
& eorum singulos quoties pro ipsorum parte super
hoc fuerint requisiti, omnibus & singulis præstatis
pacifice frui & gaudere, non permittentes eos &
eorum aliquem, per quoscumque desuper quomo-
dolibet indebitè molestari, inquietari, aut impediri.
Contradictores quoslibet & rebelles cujuscumque
status, gradus, ordinis, dignitatis, vel præminentie
fuerint, per censuras Ecclesiasticas & pecuniarias
poenas, aliæque opportuna juris & facti remedia ap-
pellatione postposita compescendo, Decernentes
præmissa omnia & singula perpetuò valida & effica-
cia existere, ac suos plenarios & integros effectus
fortiri, ac ab omnibus observari, & sic non aliter per
eosdem Cardinales, & Auditores, aliosque Judices
& Commissarios, sublata eis & cuilibet, quavis alie-
ter judicandi & interpretandi facultate & auctori-
tate, judicari & definiri debere, Irritum quoque &
inane si secus super his à quoquam quavis auctori-
tate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 25. Non obstantibus Sanctæ memoriæ Sym-
machi & Innocentii IV. Pauli II. & aliorum Roma-
norum Pontificum, etiam Prædecessorum nostro-
rum contra exemptos editis & prædictis, aliisque A-
postolicis, ac in generalibus & provincialibus & syn-
nodalibus, & præsertim Tridentino non tamen quo-
ad exemptionem ab eo sublatam, Concilii editis ge-
neralibus constitutionibus & ordinationibus, legi-
bus, statutis nostris & aliorum Roman. Pontificum
prædecessorum nostrorum, vel aliis Extravagantibus,
quibuscumque editis generalibus constitutionibus,
privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis,
quibuscumque Romanæ Curie Officialibus, Collegiis,
eorumque personis per quoscumque Prædecessores
nostros, etiam motu simili & ex certa scientia, ac de
Apostolicæ potestatis plenitudine, ac cum quibus-
vis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque for-
tioribus, efficacioribus & insolitis clausulis, irritan-
tibusque aliis declarationibus, & decretis, etiam ta-
libus quod illis nullatenus, vel nisi de eorum quorum
interesse expresso consensu, & Fratrum nostrorum
consilio etiam consistorialiter habito, aliisque modis &
formis tibi traditis ulquequaque servatis derogari
possit; etiam si inter alia caveatur expresse, quòd si eis
derogari contingat, derogatio huiusmodi non valeat,
nisi talis intentio derogandi aliquibus personis nunc
expressis per diversas in forma Brevis litteras cum
intervallo unius mensis, seu alterius temporis eis præ-
sentata prius & intimata, ac insinuata fuerit, ac aliis
quomodolibet concessis & concedendis. Quibus, il-
lorum tenore ac si de verbo ad verbum inferrentur
Præsentibus pro sufficienter expressis & insertis
habentes illis alias in suo robore permanentis, hac
vice dumtaxat, & ad effectum præmissorum omnium
harum serie specialiter & expresse, motu pari dero-
gamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 26. Volumus autem, quòd Præsentium tran-
sumptis, etiam impressis, manu pro tempore existentis
Decani, ac antiquioris ex dictis septem Notariis sub-
scriptis, & præfati Collegii sigillo munitis, eadem
fides in iudicio & extra adhibeatur, quæ Præsentibus
adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ. Nulli ergo
omnino hominum &c.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnat-
ionis Dominicæ, millesimo quingentesimo octoge-
simo sexto, Nonis Februarii, Pontificatus nostri an-
no primo.

*Die 14. Aprilis 1586, presentes litteræ Apostolicæ
præsentata fuerunt in plena Camera Apostolica, & die
decima-octava ejusdem, Camera ipsa referente Reve-
rendissimo Domino Alexandro Glorioso dictæ Camera
Clerico, & Judice ad id dicta die decima-quarta*

Claustris
contrario-
rum dero-
gatoria.

Fides tran-
sumptorum.

Dicitur P. A. T.
die 5. Febr.

Admissio &
reg. in Cam.
Apost.

quinto, 13. Kal. Decembris, Pont. nostri anno 1.
Sequitur extenso dictæ constitutionis.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Divine charitatis altitudo, eminentissima & summi amoris Seraphici inexhausta bonitas, &c.
Omittitur relatio ejusdem Bullæ.

§. 1. Ne autem de præmissorum validitate ullo umquâ tempore dubitari contingat: nostram denuo in præmissis auctoritatem interponere, ipsiusque Archiconfrat. auctoritatem extendere, ac pium dictorum Confrat. Chordigerorum propositum amplius promoveri, eosque spiritualibus muneribus, Indulgentiis videlicet, & peccatorum remissionibus, prosequi cupientes; supplicationibus dicti Clemen. hac in parte inclinati, Institut. hujusmodi, Apost. auctoritate præfata, tenore præsentium perpetuò approbamus & confirmamus, suppleantes omnes, & singulos, tam juris quam facti defectus, si qui intervenerint in eisdem; Ipsam Archiconfr. in caput omnium Confrat. Chordigerorum hujusmodi, ubilibet institutarum, & instituendarum, etiam perpetuò, auctoritate & tenore præmissis erigimus, & instituiamus.

§. 2. Omnesque & singulas Indulgentias, & peccatorum remissiones & relaxationes, Religioni & Ordini Frat. Minor. hujusmodi per quoscumque Rom. Pont. prædecessores nostros, ac Nos concessas, quoad eas dumtaxat, quæ hæcenus non sunt revocate, nec sunt ullis revocationibus comprehensæ, eisdem auctoritate & tenore similiter perpetuò approbamus & confirmamus, ac illis perpetuæ & inviolabilis firmitatis robur adjicimus.

§. 3. Illaque Archiconfr. & Confr. Chordigerorum hujusmodi, sub ejusdem modo & forma, quibus illæ Religioni & Fratr. præfatis concessæ fuerint, dummodo (ut præfertur) non fuerint revocate, etiam perpetuò concedimus, elargimur, & communicamus. Necnon de omnipotentis Dei misericordia, ac B. Petri & Pauli Apost. ejus auctoritate consisti, utriusque sexus Confr. Chordigerorum hujusmodi, præter Indulgent. Religioni præfate concessas, in mortis articulo, necnon quoties processionibus Archiconfr. Chordigerorum hujusmodi, singulis mensibus fieri solitis interfuerint, eisdem quidem Confrat. plenariam omnium peccatorum suorum Indulgentiam & remissionem perpetuò concedimus.

§. 4. Aliis verò non Confrat. qui processionibus hujusmodi interfuerint, centum annos de injunctis eis, vel aliis quomodolibet debitis penitentis misericorditer in Domino relaxamus. Ac præfatis Confrat. qui aliis dictæ Archiconfr. processionibus, aut dum B. MARIE, vel quodvis aliud divinum officium per ipsos Confrat. Chordigeros recitabitur, interfuerint, ac quoties S. Christi corpus, dum infirmis deferitur, vel defunctum ad sepulturam affociaverint, aut alicui miserabili personæ subvenerint, vel pacem inter inimicos composuerint, seu aliquod horum fecerint, toties centum dies, de eis injunctis, seu aliis, quomodolibet debitis penitentis etiam misericorditer in Domino relaxamus. Eisdemque Confrat. Chordigeris, ut Indulgentias & peccatorum remissiones præfatas, per modum suffragii pro fidelibus qui in gratia Dei decesserint, consequi, & impartiri valeant.

§. 5. Necnon quascumque Confrat. utriusque sexus Christi fidelium Chordigerorum hujusmodi, in quibuscumque Ecclesiis domorum, tam Minorum Conventualium, quam de Observantia, & Capucchinorum nuncupatorum Frat. præfatorum, in quibuscumque mundi partibus, & locis pro tempore erigendas & instituendas, postquam crectæ & institutæ fuerint Archiconfr. illorum aggregandi. Illisque omnes, & singulas eorum Indulgentias, & peccatorum

remissiones, & relaxationes communicandi, & concedendi, plenam, liberamque facultatem præfata, ac pro tempore existenti Generali dicti Ord. Min. Conventual. auctoritate & tenore præfatis concedimus. §. 6. Non obstantibus præmissis, ac nostra de Indulgentiis ad instar non concedendis, & quibusvis aliis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscumque Præsentibus perpetuis futuris temporibus valituris.

§. 7. Volumus autem quod Præsentium transumptis, manu alicujus Notarii subscriptis, & sigillo pro tempore existents Ministri, vel Procuratoris Generalis Ord. Frat. Minor. Conventualium hujusmodi, vel cujusvis personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ, aut Canonici alicujus Cathedr. Ecclesiæ munitis, eadem prorsus fides adhibeatur ubique locorum & gentium, in judicio & extra, quæ ipsi originalibus adhiberetur, si forent exhibitæ, vel offensæ.

Nolli ergo &c.
Dat. Romæ apud S. Petrum, anno Incarnat. Dom. 1586. Nonas Maii, Pontificatus nostri anno 2.

Jurisdicção Consulum Artis Lanæ in Urbe, & privilegia Mercatorum ejusdem Artus.

Hanc jurisdictionem primò concessit Pius V. in sua const. 43. Ut ad Artis. fol. 255. ubi notavi.

SIXTUS PAPA V.

Ad futuram rei memoriam.

Cum aliis considerantes artem Lanæ, quam in multis Italie civitatibus insignibus, in æcus & ornamentum illarum, publicamque utilitatem exerceri acceperimus, ejus esse industria, ut facile omnes. omnis generis personæ ex ea, & ejus exercitio vivere & se manentem possent. Cupientesque exercitium hujusmodi in hanc nostram Urbem introducere, seu jam aliis introductum hodie tamen penè extinctum renovare, ut sic pauperes & miserabiles personæ, etiam vagabundæ utriusque sexus, hujus nostre Urbis haberent in quo se exercerent, & exercendo victum sibi compararent, Dilectum filium nostrum Prosperum tituli S. Clementis Presbyterum Cardinalem, de Sancta Cruce nuncupatum, desuper deputaverimus.

§. 1. Et dilecti filii Alexander Capocelalus, & Fenizius Albanus, Mercatores lanæ, sese eidem obtulerint, & paratos esse dixerint, id onus, & hanc curam artis lanæ, & illius exercitium in dictam Urbem introducendi, & ut pauci cujuscumque generis conficiantur curandi suscipere, & sub his conditionibus, capitulis, & statutis, nimirum.

§. 2. Quod per Cameram nostram Apost. duodecim millia scuta eis mutuò, & in contanti (idoneè per eos cauto de illis infra decem annos proximè venturos restituendis) darentur.

§. 3. Et præterea alia mille scuta ex pecuniis ejusdem Cam. satisfactionem & seu commoditatem eorumdem Alex., & Fenizii pro ædificio purgament. vulgo dicti il Purgò, quod dudum tempore Pont. fel. recor. Pii PP. V. prædecessoris nostri, prope fontem Trivii de Urbe captam fuit, & tincturæ, ac instrumentis ad dictam artem necessariis statim exponerentur, nec ipsi Alex. & Fenizius ad horum mille, nec aliorum mille scutorum, quæ tempore prædicto pro eodem ædificio à dicta Camera data fuere, aliter retinere tenerentur: sed ipsa bis mille scuta commodo, & beneficio dictæ artis omnino cederent.

§. 4. Et statuta Collegii, sive Societatis Mercatorum artis lanæ hujusmodi, necnon statuta & alia præmissa ipsis confirmarentur.

§. 5. Nec qui de dicta Arte essent, tenerentur pro eorum creditis concernentibus materiam & exercitium lanæ, atque tincturæ, ejusque membra de cunctis

Clausule derogatorie

Fides transumptorum.

Dat. P. A. 2. die 7. Maii.

XIV.

Edita An. D. 1586.

Hic Pont. ad renovandam Artem Lanæ in Urbe Cardin. S. Crucis deputavit.

Qui cum hominibus dictæ Artis convenit quod.

Camera mutet Ari scut. decem millia.

Alia bis mille Arti donet

Statuta Artis confirmet.

Præferantur Mercatore. Artis, in Lo.

debi.

Edic. An. D. 1586.

Hic Pont. edidit const. præced.

Et modo omnia in ea contenta approbat, & dictam Archiconfrat. caput aliarum ubique institutarum constituit.

Indulgentias frat. Minor. concedit.

At revocavit Paul. V. cit. in rubr.

Alias hic expressas elargitur.

Quæ sunt revocate ut notavi in rubr.

Et non Confrat. ibi indicavit.

Revocationem tibi indicavit rubr.

Alias Confr. aggregandi facultatem concedit.

Tu quod hoc vide Bull. tñ. Clem. VIII. Quamcumque Tom. 3. fol. 182.

ANNO
1585.

550

SIXTUS QUINTUS.

ANNO
1585

ris debito-
rum sicut
mercatores
Ripæ.
Consules hu-
jus temporis
ad triennium
confirmen-
tur.

Pecunia pe-
nes eos exi-
stat.

Consules u-
tantur voto
Assessoris in
pœnis afflic-
tibus.

Consules
dent lanam
omni huic
exercitio va-
cantibus.

Certam pan-
norum qua-
litate fin-
gulis annis
conficere de-
beant.

Et modo idē
Pont.ordina-
tiones præ-
dictas, & ci-
am statuta
Concil. Tri-
den. contra-
ria confir-
mat.

debitoribus eum aliis creditoribus discurrere; sed
semper præferantur, prout & quemadmodum Mer-
catores Ripæ præferuntur.

§. 6. Distingue Alexander, & Fenizius, ac pro tem-
pore existentes Consules dictæ Artis lanæ ad tres
annos proximos, & continuos confirmarentur, ut sic
melius & commodius ipsi formam, & modum intro-
ducendi artem, & exercitium lanæ, atque tincturæ
eum suis annexis, & dependentiis tradere, ac statuta
Collegii, sive Societatis prædictæ ad usum & obser-
vantiam reducere.

§. 7. Nec prædicta duodecim millia, & alia mille se-
nta ipsis Alexandro, & Fenizio, per succedentes eis
Consules, aut alios quoscunque dictæ artis auferri
possent.

§. 8. Quodq; Consules hujusmodi pro tempore exi-
stentes quemcumque in ulla afflictiva pœna etiam in
causa criminali, vel mixta abq; voto assessoris ipso-
rum ex omnibus qui de dicta arte extiterint ad tem-
pus eis benevolum eligendi condemnare nequirent.

§. 9. E contra verò, dicti Alexander, & Fenizius
obligati essent dare lanam omnibus iis, qui voluerint
tali exercitio vacare, & observare statuta, ac præstita
cautione de restituendo valore lanæ in termino ab
ipsis Consulibus statuendo, ut sic capitale, & corpus
perpetuò eidem Camere conservaretur.

§. 10. Insuper tenerentur prædicti Alexander, &
Fenizius statim habitis dictis pecuniis, incipere, face-
re, & conficere, ac fieri, & confici facere hic in Urbe
pannos cujuscumq; generis & in specie conficere, &
fabricare singulis annis, excepto primo anno dicto-
rum decem quolibet reliquorum novem annorum,
centum petias pannorum, ut dicunt, mixtorum,
& quinquaginta pannorum exquisitorum, alias finorum,
& viginti-quinq; flammeiatorum nigrorum guadi
de septuaginta in octoginta, ut vocant. Pannorum
verò monachinorum etiam viginti-quinq; petias, &
totidem rasciæ, ac petias quinquaginta faicette. Non
possent autem ullo modo pro pannis flammeiatis,
monachinis, rasciæ, & faicetis hujusmodi, lanam ex
pellibus pecorum evulsam, quam alias appellant
pellatam, adhibere, sub pœna amissionis ipsorummet
pannorum, & quinquaginta fectorum pro qualibet
petia, & in fine cujuscumq; anni docerent in Came-
ra Apostolica se hujusmodi pannos confecisse sub
restitutione illico faciendæ earum pecuniarum, quas
repperint, & aliis pœnis ad beneplacitum dictæ Ca-
meræ, seu Præsidium ipsius infligendis. Et casu
quo monachini, & rasciæ non ita expedire venderentur,
possent de licentia tamen eorundem Præsiden-
tium Camere Apostolicæ tales pannos, seu confec-
tionem ipsorum intermittere, & alios conficere, ita
ut pecunie non remanerent inutiles, & pauperes ha-
berent in quo se ad vitam sustentandam exerce-
rent. Cum hoc tamen quod dicti Alexander, & Feni-
zius teneantur continuò habere in eorum fundaco
monachinos, rasciam, & alios pannos exquisitos, Ro-
mæ confectos, & elaboratos, & alias, ut in ipsis capi-
tulis, conditionibus, & seu statutis plenius dicitur
contineri. Quæ omnia per dictum Prosperum Card.
ut supra à nobis deputatum, approbata, & confir-
mata fuerant.

§. 11. Propterea Nos exercitium hoc magis, ac
magis promovendi peroptantes, ac dilectos filios Col-
legium, seu Societatem Mercatorum artis lanæ dictæ
Urbs ad id excitare, eisdemque specialibus favori-
bus & gratiis prosequi volentes, ac capitula, condi-
tiones, & statuta hujusmodi rata habentes, illorumq;
omnium tenores, & qualitates pro expressis habentes,
& Alex. & Fenizium, ac Mercatores prædictos
& eorum singulos à quibuscvis excommunicationis,
suspensionis, & interdicti, alijsq; Ecclesiast. sententiis,
censuris, & pœnis à jure vel ab homine, quavis oc-
cassione vel causa latis, si quibus quomodolibet in-
notati existunt ad effectum Præsentium dumtaxat
consequendum, harum serie absolventes, & absolu-

tos fore censentes, capitula, & conditiones, ac nova
hujusmodi, necnon vetera Collegii prædicti statuta
& ordinationes, felix regimen & gubernium ipsius
Collegii, seu societatis concernentia, ac alias licita
& honesta, nec sacris Canonibus, aut Concilio Tri-
dentino contraria, quæ descripta sunt in quodam e-
jusdem Collegii libro in membrana manuscripto, &
coperturis ligneis corio rubro tectis compaeto, cum
quatuor non cartulatis, sic incipientibus. (Cum hoc
sit, quod ex forma cujusdam statuti;) ac finientibus
in hunc modum, & onera sustinendo accipiant, &
honores; & aliis 150. chartis, seu foliis cartulatis, ut
præfertur, scriptis, & sic pro rubrica incipientibus.
Incipiunt statuta Mercatorum artis lanæ, & deinde
hæc verba subjunguntur. In nomine Dei Patris, &
Filii, & Spiritus Sancti, ad honorem, &c. Quæ quid-
em verba nigro colore five atramento sunt scripta,
in fine autem ejusdem libri, videlicet ultimo fol. sub-
sequens Notarii recognitio finem facit. Die 21. Jan.
1574. D. Horatius Fuscus Notarius medio juramento
tactis, &c. recognovit prædicta statuta esse universi-
tatis lanæ Urbis in forma auctoritate Apostol. per
Præsentes perpetuò approbamus, & confirmamus,
supplentes singulos, tam juris quam facti defectus,
si qui desuper intervenierint.

§. 12. Ac insuper, nunc & pro tempore existi-
entibus dicti Collegii Consulibus, ut in eorum Congre-
gatione, statuta & ordinationes prædictæ, toties quo-
ties pro rerum, & temporum qualitate expediens fu-
erit reformare, corrigere, & in toto vel in parte muta-
re, & de novo condere; ac de omnibus & singulis
causis tam civilibus quam criminalibus, seu mixtis,
etiam ratione præteritorum lanæ artem concernen-
tibus, juxta prædicta statuta, & ordinationes in fu-
tutum recognoscere, easque decidere, & terminare,
ac etiam pœnas per dicta statuta contra non obser-
vantes, illa, aut alias impositas augere, seu immutare
liberè & licitè valeant. Ita quod causæ prædictæ per
modernos, & pro tempore existentes dictæ Urbis
Gubernatorem, Senatorem, & Conservatores, alio-
que Capitulos Judices, & ceteros etiam majores
Magistratus quovis prætextu vel colore reassumi
non possint. Quodque dum ipsi Consules in unum
convenierint, aut totum Collegium prædictum con-
gregabunt, pro negotiis dictæ artis lanæ licentiam à
dilectis filiis dictæ Urbis Conservatoribus petere mi-
nimè teneantur, licentiam concedimus, & facultatem,
eisdemque ad hunc effectum in Judices ordinarios,
idoneos & competentes, eorum quibus solis, qui
dictam artem lanæ exercuerint, etiam pro creditis
eorum ab Hebræis consequendis, non autem eorum
Urbis prædictæ Vicario, aut ejus Vicegerente, nunc
& pro tempore existente, vel quoquam alio conveni-
ri, & ipsos Hebræos convenire debeant, perpetuò
constituimus, ac deputamus.

§. 13. Decernentes præfentes Litteras semper, & in
perpetuum ab omnibus ubique inviolabiliter obser-
vari, ac sub quibuscvis similibus vel dissimilibus gratia-
rum à Nobis, & successoribus nostris Rom. Pont. Se-
deque Apost. pro tempore emanatis revocationibus,
suspensionibus, limitationibus, derogationibus,
aut aliis contrariis dispositionibus, sub quibuscumq;
tenoribus, & formis, & ad quorumvis instantiam, & et-
iam Motu proprio concessis comprehendendi: sed sem-
per ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties
in pristinum & validissimum statum restitutas, &
de novo etiam sub data per eisdem Collegium, seu
Societatem eligenda concessas, ac validas & effica-
ces effecturæ.

§. 14. Et sic per quoscunque Judices, ordinarios &
delegatos, etiam S. R. E. Card., sub lata eis, & eorum
cuiuslibet quavis aliter judicandi & interpretandi fa-
cultate & auctoritate judiciari & definiri debere, ac
irritum & inane quicquid secus super his à quoquam
quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, conti-
gerit attentari.

Consulibus
concedit
cultatem
ita statuta
mutandi
cognoscent
causas con-
cernentes
tem lanæ,
tiam quoa
Hebræos.

Clausula
præservati-
væ.

Decretum
irritans.

ANNO
1585.
Claufule
derogat.

SIXTUS QUINTUS.

551 ANNO
1585.

Dat. P. A. I.
die 18. Dec.

XV.

§. 15. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon tam dictæ Urbis, quam aliarum quarumcumque Civitatum, & locorum dicti Status nostri mediatè vel immediate subjeutorum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis, quoque indultis, & litteris Apostolicis quibuscumque personis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac clausulis in contrarium forsan quomodolibet concessis. Quibus omnibus, etiam si de illis specialis, specifica, & ad verbum expressa mentio habenda esset, illis aliis in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat specialiter & expressè derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Dat. Rom. apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris die 18. Dec. 1585. Pontificatus nostri anno 1.

De Visitandis certis hic statutis temporibus, S. Petri & Pauli de Urbe liminibus &c. ab Episcopis, Patriarchis, & aliis Ecclesiarum Primatibus.

Isti Prælati Romano Pont. aut Congregationi Cardinalium sup. Interpretatione & executione Concilii Tridentini instituta, de Statu ipsarum Ecclesiarum rationem reddunt, ut infra in const. 74. Immenfa in §. Congr. 8.

SIXTUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Proœmium.

Romanus Pontifex, Beatissimi Petri Apostolorum Principis Successor, in altissima militantis Ecclesie specula, divina dispositione collocatus, ex credito sibi Apostolice servitutis officio omnium Ecclesiarum sollicitudinem habere, totiusque Domini Gregis, qui unius sanctæ Catholicæ & Apostol. Ecclesie per universum Orbem terrarum diffusa, sacro ovili concluditur, curam gerere tenetur. Hujus verò tam gravis & ingentis oneris, angelicis plene humeris formidandi, magnitudinem, ut facilius ferre posset, venerabiles fratres suos Catholicos Episcopos in partem suæ sollicitudinis advocavit; qui tamquam Seniores in populo Dei, pleni sapientiæ spiritu, in sua quisque pastoralis vigilia exebantes, illius supremi in terris Pastoris immensos labores sublevarent, in quo uno, Deo auctore, plenitudo residet potestatis. Nimirum, ut Episcoporum opere, & adjumento, ubique locorum gregis sibi commissi vultum agnosceret, & spiritualium ovium morbos intelligeret, curationeque adhiberet, atque ex sui muneris officio, perditam requireret, abjectam reduceret, cõfracta alligaret, infirma consolidaret, pinguis, & fortia custodiret: denique assiduis Pastorum vocibus admonitus, de toto Ecclesiarum singularum statu certior redderetur, ne quicquam omnino illum lateret earum rerum quas ad Dei gloriam augendam, ad Christianam religionem propagandam, ad animarum salutem procurandam necessariò eundem scire, atque intelligere oportet, ut omnibus cognitis & examinatis, pro ea quæ sibi à Christo Domino tributa est, summa potestate, alia in vinea Domini Sabaoth evellat, alia plantet, alia ædificet, destruat, quemadmodum ex rerum & temporum conditione salubrius in Domino viderit expedire.

Episcopis &c.
antiquo
titulo cer-
tempori-
s limina A-
solorum
itare cura-
ut.

§. 1. Ob quas sane causas jure optimo, & Spiritus Sancti instinctu, à sanctissimis Pontificibus prædecessoribus nostris tam ab antiquissimis temporibus institutum est, & per multas ætates magno Ecclesie Dei commodo observatum, ut singuli Episcopi, Archiepiscopi, Primates, & Patriarchæ, certis præscriptis temporibus, per se ipsos, vel per certum eorum Nuncium, omni occasione seposita, Beatissimorum

Apostol. Petri & Pauli, qui hanc Almam Urbem suo sanguine consecrarunt, limina, tamquam fidei petra, & totius Sacerdotalis unitatis fontem jurejurando se visitaturos pollicerentur, atque ita S. R. E. Matris suæ complexu recreati, & paterno Summi Pontificis colloquio roborati, ad Ecclesias suas regendas, alacriores & instructiores redirent.

§. 2. Ceterum hæc tam salutaris, atque necessaria constitutio, partim hominum negligentia, partim antiqui humani generis hostis astutia, variis etiam insurgentibus temporum calamitatibus, valde refriguit, aliis alia atque alia impedimenta prætexentibus, in grave animarum suarum periculum, & quibus præfunt Ecclesiarum detrimentum. Nec verò dubitandum est, quod sine maximo animi morore commemorare non possumus, perniciosissimas hæreses, quibus multis jam annis, hominum peccatis ita promerentibus, Ecclesia vexatur, & Christi Domini vestis dilaceratur, ex ejusmodi saluberrimæ visitationis intermissione partim ortas esse, partim latenti progressionem magnum incrementum accepisse. Nam hic celeriter in ipso nascens mali initio, ab ipsis Episcopis pro rei gravitate ad Rom. Pontificem relatum esset, sanè illius providentia & auctoritate, statim venenatæ stirpes ex agro Domini evulsæ essent, atque restinctæ, in tot flammæ & luctuosa incendia non erupisset.

§. 3. Hæc, atque alia gravissima incommoda, cum primum ad summi Apostolatus apicem, meritis licet imparibus, Deo ita volente, vocati sumus, attentiùs considerantes, non solum ex intimis animi sensibus indoluimus, sed statim adhibendo remedio, divina gratia adjunctrice, cogitare cœpimus. Urget enim Nos Dei timor, & acres animo nostro stimulos, dies noctesque subijcit, quemadmodum in tremendo illius judicio, administrationis nostræ rationem reddamus. Nam si huic tanto malo, quod magis quotidie ingravescit, non occurramus, non possumus Nobis ipsis non valde timere, cum crebro in mentem veniant, & quasi aures nostras personent sacræ illæ voces, comminationis, & terroris plenæ: Fili hominis, speculatorem dedite domui Israel, & sanguinem ejus de manibus tuis requiram. Et quod Petro à Domino dictum est: Confirma fratres tuos. Et illud Apost. Pauli, quod tanto magis ad nos pertinet quanto majorem præter ceteros, Pastoralis officii curam fortiti sumus; Attendite vobis & universo gregi, in quo vos Spiritus Sanct. præfecit Episcopos regere Ecclesiam Dei, quam acquisivit sanguine suo. Quocirca eorum Prædecessor. nostrorum vestigiis inhaerentes, simulque modum & temporum spatia Ecclesiarum earumdem præfibus, pro cuiusque intervallo, & locorum distantia moderantes, hac perpetua constitutione sancimus, decernimus & mandamus, ut omnes Patriarchæ, Primates, Archiep. Episcopi, per universum terrarum Orbem constituti à Nobis deinceps ordinandi, etiam si Cardinalatus honore præfulgeant antequam munus consecrationis suscipiant, seu eis consecratis pallium de B. Petri corpore sumptum tradatur, aut si ad aliam Eccles. transferatur, antequam illius regimini & administrationi se immisceant, siquidem præsentem in Curia fuerint, in manibus S. R. E. Diaconi Card. ordine prioris, si verò absentes in manibus Antistitis, qui ad impendendum munus prædictum, aut ad tradendum pallium hujusmodi à Sede Apost. delegabitur, jurent juxta formulam in libro Cancellariæ Apost. quinterno appellato, nuper descriptam, se B. Apost. Petri & Pauli limina, statutis in hac nostra constitutione temporibus, personaliter, ac per se ipsos visitaturos, ac nobis Successoribus nostris pro tempore existentibus Rom. Pontificibus rationem reddituros de toto eorum Pastoralis officio, de quibus omnibus ad ipsarum quibus præfunt Eccles. statum ad Cleri & Pop. disciplinam; animarum denique illorum fidei creditæ sunt salutē quovis modo pertinentibus,

Sed variis ex
causis hoc
institutum
refriguit.

Hic ideo
Pont. præci-
pit omnibus
Prælati ad
Ecclesiam
promoven-
dis aut trans-
ferendis,
quod limina
Apost. statu-
tis his tem-
poribus, visita-
rent jurent, &c
mandata A-
postolica di-
ligentissime
exequi.

Et legitime
impediti, per
certum Nunc-
cium hac ad-
implebunt.

Idem Pont.
hortatur, ut
operâ ispo-
rum Episco-
porum aut a-
liorum, a Se-
de Apost. au-
xilia & sub-
sidia petant
Principes.

Tempus prae-
finitur omni-
bus Prae-
latis ad explen-
dum hoc visita-
tionis offi-
cium.

Obedien-
tiam Prae-
latis
indicit.

Inobedien-
tiae poenas
imponit.

& vicissim mandata Apostolica recepturos, & quam diligentissime executores.

§. 4. Quod si legitimo impedimento detenti fuerint, jurent se praedicta omnia adimpleturos per certum nuncium ad id speciale mandatum habentem, de grege suorum capitulorum, aut alium in dignitate Ecclesiastica constitutum, seu alias personatum habentem, aut si hujusmodi hominem Ecclesiastica dignitate, & personatu praedictum non habeant, per Dilectum sacerdotem, & si Clero careant, omnino per aliquem alium Presbyterum, saecularem vel regularem spectatae probitatis, & religionis, de supra dictis omnibus plenè instructum. De hujusmodi autem impedimento docere debeant per legitimas probationes, ad dictum primum Diaconum Cardinalem, per supra dictum Nuncium transmittendas.

§. 5. Quin etiam Principes temporales, si quid pro eorum pietate, & erga hanc Apostolicam Sedem observantia Rom. Pontifici voluerint significare, eodem, five Episcopos, five alios qui ab eis mittentur, fidos habebunt nuncios ac relatores, quorum opera, ab eadem Sede pro illorum dominis, ditionibus, & rebus firmandis, ac stabilendis, & cum Dei & sanctae Religionis causa, sine qua tutò consistere haud possunt, conjungendis, opportuna sinceræ charitatis officia, consilia, atque subsidia expectare certò poterunt.

§. 6. Ad hoc autem debitum visitationis officium commodè explendum supra dicti omnes Patriarchae, Primates, Archiepiscopi & Episcopi, Itali videlicet, vel ex Italicis Insulis, unde in Italiam commodius trajici potest, veluti Siculi, Sardi, Corfi, & alia adiacentium Provinciarum Italiae, ac etiam Dalmatiae & Graeciarum, quæ regione ipsis Italiae & Siciliae oris sunt, tertio anno; Germani verò, Galli, Hispani, Belgae, Bohemi, Ungari, Angli, Scoti, Iberni, & ceteri omnes, qui in Europa sunt citra mare Germanicum, & Balticum, ac omnium Insularum maris mediterranei, quarto anno, & qui intra Europæ fines sunt, his Provincis remotiores, ac etiam Africanis littoribus nostris adversi, ac insularum maris Oceani Septentrionalis & Occidentalis Europæ & Africae citra continentem novi Orbis, tam qui nunc sunt, quam qui ad Catholicam fidem per misericordiam Dei aliquando redierint, quinto anno, Asiatici verò, & qui extra Asiam, & in aliis novis terris Orientalibus, Meridionalibus, Occidentalibus, & Septentrionalibus, tam in Insulis quam in continentibus, & denique in quibuscumque mundi partibus decimo anno iter suscipiant, & Deo concedente perficiant. Idemque institutum tertio quoque, quarto, quinto, & decimo anno repetant & observent. Hac autem annorum spatia tempore suscepti muneris consecrationis, vel pallii traditionis, aut translationis, ut praefertur, incipiant. Quæ ne longius differantur, volumus quod tempus quaecumque excursum alicui ex supra dictis Praefulibus, qui five morte praeventus, five alia quacumque de causa ob non finitum tempus ei praescriptum, dicta limina non visitaverit, ita illius Successori effluxisse, & excursisse intelligatur, ut termino ipso juxta Praedecessoris sui iurjurandum completo debitam tunc visitationem quamprimum conficere teneatur.

§. 7. Hi verò ex supra dictis Antistitibus, qui hactenus ab hac sancta Sede ordinati sunt, aut dictum pallium ab ea susceperunt, aut ad aliam Ecclesiam translati sunt, prout cuique distantiae locorum, & temporum intervalla praescripta sunt, ad supra dicta omnia observanda à die publicationis praesentis Constitutionis omnino teneantur. Jubemus igitur in virtute sanctae obedientiae supra dictis omnibus Antistitibus, praesentibus, & futuris, ut visitationem praedictam; si bi quique Ecclesiis adeò utilem ac necessariam, juxta praescriptam formulam omnino conficiant.

§. 8. Si verò, quod absit, non egerint, eos ab ingressu Ecclesiae, ac etiam ab administratione, tam spiritualium quam temporalium, necnon à perceptione fructuum suarum Ecclesiarum à Capitulis eorum om-

ni exceptione, & mora cessante, interim liberè exigendorum, & in opus fabricae, seu ornamentorum Ecclesiae emptionem, prout major exegerit necessitas, infundendorum, ipso facto tam diu suspensos esse volumus, donec à contumacia resipiscentes relaxationem suspensionis hujusmodi à Sede praedicta meruerint obtinere.

§. 9. Non obstantibus privilegiis, absolutionibus, indulgentiis & aliis concessionibus de non visitandis liminibus ejusmodi quibuscumque Ecclesiarum Praelatis, & per quoscumque Rom. Pont. ac etiam Nos & dictam Sedem ex quibuscumque causis, perpetuò vel ad tempus, concessis, extensis & innovatis, quæ omnia contra praemissa quicquam nolumus suffragari, aliisque contrariis quibuscumque; Ceterum Nos saluti & conscientiae securitati eorum Praesulum, qui ad hujusmodi visitationem obligati, eam contra iurjurandum hucusque disfulerunt, consulere volentes, eos singulos à perjurii reatu, & à Canonice, Apostolicæque omnibus sententiis, quas propterea incurserunt, auctoritate Praesentium absolvimus, quos tamen pro excessu hujusmodi elemosynam, quantam & cui, vel quibus eorum Confessarius statuerit applicandam, volumus erogare.

§. 10. Quia verò difficile nimis esset praesentes Litteras quocumque illis opus perferri, volumus quoque ut earum exemplis etiam impressis, manu Not. publici, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ obligatis, eadem prorsus adhibeat fides, quæ eisdem Praesentibus, etiam in dicto quintero describendis haberetur, si essent exhibitæ vel offensa.

Nulli ergo &c.

Dat. Rom. apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicae 1585. 13. Cal. Jan. Pontificatus nostri anno 1.

Anno à Nativitate Domini 1585. indictione 13. die vero 20. mensis Dec. Pontif. S. D. N. D. Sixti divina providentia Papa V. anno 1. retroscripta littera affixa, & publicata fuerunt, in valvis, seu portis S. Joannis Lateran. & S. Petri Principis Apostolorum de Urbe, & necnon Cancellaria Apostolica, & in acie Campi Floræ, & per aliquod temporis spatium dimisse per nos Joannem Freyle, & Nicolaum Taglietum S. D. N. Papa Curf.

Alex. Parabiacus Mag. Curf.

Innovatio festivitatis S. Nicolai de Tolentino, Ordinis Fratrum Eremitarum S. Augustini, duplici officio die 10. mensis Sept. celebrandæ.

Canonizationem hujus Sancti, & sua festivitatis primavem institutionem fecit Eug. IV. ut sup. in ejus const. 27. Licet. fol. 353. Tom. 1.

SIXTUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Sancta Romana universalis Ecclesia, quos Omnipotens Deus sicut Sol in conspectu suo fulgentes in Caelo coronat, pio cultu & admirabili honore, per anni circuitum, die ut plurimum, quæ eos ad cœlestia regna migrare contingit in terris voluit venerari, ut eorum Christi fideles gloriosa memoria incensæ, & exemplis inflammati per exercitium bonorum operum, piis etiam suffragiis adjuti, divinæ Majestatis gloriam in Sanctis suis agnosceret, & ipsius beneficia promereri facilius valeant.

§. 1. Ad hunc itaque laudabilem Sanctorum numerum B. Nicolaus Tolentinus, de cuius vita, conversatione, & facta obdormitione in Domino Tolentinates gloriantur, regularia S. Augustini Eremitarum instituta amplexus, cum tanta vitæ puritate, & integritate contendit, ut ipsius viri sanctitas longè lateque

illorum

Clausulas
contrario-
rum derog-
atorias app-
nit.

Exemplis
credi jubet

D. P. An.
die 20. De

Publicatio

XVI.

Edita A.
1585.

Exordium

S. Nicolai
virtutibus
miraculis
clarus fuit

per diversas mundi regiones ad Indos usque Occidentales, propagata diffusaque sit.

§ 2. Hunc itaque miraculorum signis, in quo inexhausta Dei benignitas, in vita ac post mortem operari voluit, adducti, fel. rec. Joan. XXII. & Innoc. VI. primò in numerum Sanctorum referre concurrerunt, & deinde pia mem. Eugenius IV. Rom. Pont. prædecessores nostri eorumdem S. Catalogo solemniori ritu adscripsit.

§ 3. Post cuius relationem inter numerum Sanctorum celeberrimum maximumque illud miraculum extitit, quod Ecclesia Romana jam per annos amplius quinquaginta schismatum interdictis graviter afflicta, huius Beati viri meritis & intercessione sublatis erroribus pacem, præter spem, summam consecuta est.

§ 4. Quare Nos qui Ecclesie Firmant, in cuius Diocesis oppidum S. Angeli, ubi Sanctus ipse Nicolaus est ortus, consistit in minoribus constituti præsumimus, nomen & sanctitatem ipsius B. Nicolai dignis, quantum nostra patitur infirmitas honoribus decorare volentes, hac præsentis litteras constitutione mandamus, ut ejusdem B. Nicolai Confessoris gloriosi dies festus quarto idus Septembris agatur, duplicique posthac, & proprio, & ubi propria non erunt, de Comuni Confessorum non Pont. officio per cunctas totius Christiani Orbis Ecclesias singulis annis perpetuis futuris temporibus celebretur, & in Calendario Romano cum duplici festi adjectione inferbatur. Sicuti vero festus B. Nicolai dies supra dictus, ex fidelium devotione seu consuetudine, præcepto aut indulto Apostolico, majori aliqua celebrari consueverit observantia, eo omnino ibidem retineatur.

§ 5. Mandantes omnibus Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, ceterisque Ecclesiarum Prælati in toto Orbe terrarum constituti, ut faciant in suis quisque Ecclesiis, Provinciis, Civitatibus, & Diocesium, præsentibus litteris solemniter publicari, & ab Ecclesiasticis personis secularibus, & quorumvis Ordinum regularibus, omnino observari, quamvis in ultimis Breviarij & Missalis reformationibus adnotatio huius solemnitatis posita non fuerit.

§ 6. Volumus quoque, ut Præsentium exemplis etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides ubique locorum & gentium adhibeatur, quæ ipsi Præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensus.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1585. 10. Kal. Januarii, Pont. nostri anno 1.

Alex. Parabiacus Mag. Curs.

S.D.N. Urb. VIII. quam habes 4. tom. num. 113. *Infrutabilis*, Qui postea prohibuit omnes libros de materia tractantes, vel aliter prohibitos, licentiaque illos habendi & legendi revocavit in cons. seq. 114. *Apostolatus*.

SIXTUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Cœli & Terræ Creator Deus, quem unum Omnipotentem corde credimus ad iustitiam, & ore confitemur ad salutem, etsi homini, quem ad imaginem & similitudinem suam creavit, mentem dederit, quæ non solum divino fidei lumine illustrata mysteria illa cognosceret, quæ humanam intelligentiam superant, sed etiam naturæ suæ vi, magno licet cum labore, præclara multa investigaret, atque intelligeret, tamen ut superbum animal homo non altum saperet, sed timeret, & immensam Conditoris sui Majestatem humi stratus veneraretur sibi soli eorum quæ eventura sunt, scientiam & futurarum rerum cognitionem reservavit. Solus enim ipse cuius oculis omnia nuda & aperta sunt, & ad intimas hominum cogitationes penetrat, & consequentes eorum actiones intuetur, solus ipse, qui vocat ea quæ non sunt, tamquam ea quæ sunt, omnia præsentia, & ante oculos posita habet, solus denique omnia & singula quæcumque totius temporis decursa, & sæculorum ætatis futura sunt, ab omni æternitate novit, & admirabili providentia disposuit, quæ non modò humane mentis imbecillitas ignorat, sed nec dæmones ipsi præsentire possunt. Quare idolorum in futuris annunciandis falsitatem & imbecillitatem, & eorum, qui eis cultum adhibebant, vanitatem irridet S. Spiritus apud Isaiam illis verbis: Annunciate quæ ventura sunt in futurum, & sciemus, quia Dii estis vos, & in Novo Testamento Dom. discipulorum suorum de futuris eventibus paulo curiosius inquisitionem, interrogationem gravi illa responsione retudit, quæ etiam omnium fidelium suorum curiositatem coercuit. Non est vestrum scire tempora vel momenta, quæ Pater posuit in sua potestate. Nec verò ad futuro eventus & fortuitos casus prænoscentes (futuris eventibus ex naturalibus causis necessario vel frequenter provenientibus, quæ ad divinationem non pertinent, dumtaxat exceptis) ullæ sunt veræ artes aut discipline, sed fallaces & vanæ improborum hominum astutiae, & dæmonum fraudibus introductæ, ex quorum operatione, consilio vel auxilio omnis divinatio dimanat, sive quod expresse, ad futura manifestanda invocentur, sive quod ipsi pravitate sua, & odio in genus humanum, occultè, etiam præter hominis intentionem se ingerant & intrudent vanis inquisitionibus futurorum, ut mentes hominum perniciosos vanitatibus, & fallaci contingentium prænuuntiatione implicentur, & omni impietatis genere depraventur. Quæ quidem ipsis cognita sunt, non divinitate aliqua, nec veræ futurarum rerum scientia, sed naturæ subtilioris acuminis, & aliis quibuscumque modis, quos hominum obtusior intelligentia ignorat. Quamobrem dubitandum non est, in huiusmodi futurorum, contingentium & fortuitorum eventuum inquisitione & præcognitione, diaboli operationem se fallaciter immiscere, ut sua fraude ac dolis, miseros homines à via salutis, & laqueo damnationis involvat. Quæ cum ita sint, nonnulli hæc fideliter & religiose, ut debent, non attendentes, sed curiosa sectantes, graviter Deum offendunt, errantes ipsi & alios in errorem mittentes; tales in primis sunt Astrologi olim Mathematici, Genethiaci, & Planetarii vocati, qui vanam falsamque syderum & astrorum scientiam profitentes, divinæ dispositionis ordinationem, suo tempore revolvendam prævenire audacissime satagentes, hominum nativitates seu genituras, ex motu syderum, & astrorum cursu metiuntur, ac judicant futura, sive etiam præsentia &

Edit. An. D.
1585.

Multa mala
proveniunt
ex arte Astro-
logie judici-
ariae Magicae,
Negromantia
& summi-
um.

Joan. XXII.
& Innoc. VI.
illius canoniza-
tionem
coeperunt, &
Eugen. IV.
perfecit.

Postea omne
schisma ces-
savit.

Hic Pont. il-
lius festum
duplici offi-
cio agi jubet.

Prælati in-
jungit, ut ob-
servari faci-
ant.

Transum-
ptis credi ju-
bes.

Dat. P.A.R.
die 23. Dec.

Publicatio.

XVII.

Contra exercentes artem Astrologiæ judicariæ, & alia quæcumque divinationum genera, librosque legentes vel tenentes.

De ejusmodi divinationum ac sortilegiorum materia extant plures Prædecessorum constitutiones indicatae superius in cons. 1. Imoc. VIII. Summis. fol. 429.

Contra Astrologos Judicarios de statu Reipublicæ Christianæ vel Sedis Apostolicæ, seu Vita Romani Pontificis, aut ejus consanguineorum judicia facientes, vel ipsos Astrologos desuper consulentes cum innovazione huius sanctionis, cons. edidit

præterita occulta, atque ex puerorum ortu & natali die, five quavis alia temporum & momentorum vanissima observatione & notatione, de uniuscujusque hominis statu, conditione, vitæ cursu, honoribus, divitiis, sobole, salute, morte, itineribus, certaminibus, inimicitiiis, carceribus, cædibus, variis discriminiis, aliisque prosperis, & adversis casibus & eventibus præcognoscere, judicare, & affirmare temerè præsumunt, non sine magno periculo erroris & infidelitatis; cum S. Aug. præcipuum Ecclesiæ lumen, eum, qui hæc observat, qui attendit, qui in domum recipit, qui in terrogat, Christianam fidem & baptismum prævaricasse affirmet, ut illos merito Apostolus arguat atque increpet illis verbis: Dies observatis, & menses, & tempora, & annos, timeo vos ne forte sine causa laboraverim in vobis. Hicigitur levissimi & temerarii homines in miserandam animarum suarum ruinam, grave fidelium scandalum & Christianæ fidei detrimentum, futurorum eventus, & quæcumque prosperè vel adverse obventura sunt, ac actus humanos, ea denique quæ ex libera hominum voluntate proficiuntur, astris syderibusque ascribunt, eisque eam facultatem, vim, seu virtutem & efficaciam tribuunt significandi futura; & ad præcognita ita inclinandi, ut sic omnino nec aliter eventura sint, atque ob eam causam de iis rebus omnibus judicia facere, prognostica prædictiones, & præcognitiones sibi assumere, & palam venditare non dubitant; quibus pauci rudes & Imperiti, aliique nimis creduli & imprudentes tantam fidem præstant, ut ex hujusmodi judiciorum, & prædictionum præscripto, aliquid certò esse credant aut sperent; quorum sanè & mendacium magistrorum temeritas, & infelicium discipulorum credulitas magno opere deploranda est, qui vel divinis litteris admoniti non intelligunt hominis præstantiam, cui Cœli & Stellæ, & clarissima Cœli sydera, Sol & Luna, Deo ita disponente, non imperant, sed inserviunt, sic enim Moyses populum Dei, ut hunc errorem caveret, præmonebat: Ne forte elevatis oculis ad Cœlum, videas Solem & Lunam, & omnia astra Cœli, & errore deceptus adores ea, & colas, quæ creavit Dominus. Deus tuus in ministerium cunctis gentibus, quæ sub Cœlo sunt. Sed quid sydera mirandum est homini servire? nonne nobilissimæ intelligentiæ Angeli ipsi, omnes sunt administratorii spiritus, in ministerium missi propter eos, qui hæreditatem capiunt salutis? nam rationales Oves, ita diligenter Deus, ut non solum Episcopos, quemadmodum à S. Ambrosio scriptum est, ad tuendum gregem ordinaverit, sed etiam Angelos destinaverit. Præclarè etiam S. Hieronymus: Magna dignitas animarum, ut unaquæque habeat ab ortu nativitatis in custodiam sui Angelum delegatum. Quod si Angeli homines custodiunt, quid adversus Angelos, custodiam & tutelam astris moliri, aut efficere poterunt, quæ cum ipsis Angelis nullo modo sint comparanda? Nec sane hoc loco prætereunda est eximii Ecclesiæ Doctoris, & Beati Pont. Magni Gregorii sententia, qui Priscilianistas hæreticos unumquemque hominem sub constitutionibus stellarum nasci putantes, magno rerum & verborum pondere confutat: Absit, inquit, à fidelium cordibus, ut aliquid esse Fatum dicant, vitam quippe hominum solus hanc conditor, qui creavit administrat, neque enim propter Stellas homo, sed stellæ propter homines factæ sunt, etsi stella fatum hominis esse dicitur, ipsis suis ministeriis subesse homo perhibetur. Utinam infanti homines hæc paterent & intelligerent, ac Dei monitis obtemperarent in Levitico dicentis: Non declinetis ad Magos, nec ab Ariolis aliquid sciscitemini, ut pollucamini per eos. Neque enim quæ Christiana & vera pietas, repellit ac damnat, tanto studio investigarent, iisdemque miserè se decipi, atque irretiri paterentur. Sunt etiam inanes quidam homines & curiosi vel impii & irreligiosi, qui futurarum & occultarum aliarum rerum notitiam adeo anxie habere student ut ob eadem prænoscentia & investiganda in divinæ legis offensionem multipliciter in-

currant. Alii enim Geomantia, Hydromantia, Aeromantia, Pyromantia, Onomantia, Chiromantia, Necromantia, aliisque sortilegiis & superstitionibus, non sine Daemonum saltem occultâ societate aut tacita pactione, operam dare, seu illis, ac fortibus illicitis taxillorum, granorum triticeorum, vel fabarum jactu uti non verentur. Alii verò aliquas pristinae & antiquatæ, ac per Crucis victoriam prostratæ Idololatriæ reliquias retinentes, quibusdam auguriis, auspiciis, similibusve signis, & vanis observationibus ad futurorum divinationem intendunt. Alii autem sunt, qui cum Morte sædus ineunt, & pactum faciunt cum Inferno, qui similiter ad occultorum divinationem, ad inveniendos thesauros, vel ad alia facinora perpetranda, etiam expressa cum Diabolo pactione facta, in manifestam suarum perniciem animarum, nefarias magicæ artis incantationes, instrumenta & veneficia adhibent, circulos & diabolicos caractères describunt, Dæmones invocant, aut consulunt, ab eis responsa petunt, aut accipiunt, eis preces & thuris, aut aliarum rerum sustinenta, seu fumigationes, aliave sacrificia offerunt, candelas accendunt, aut rebus facris, vel Sacramentis, aut Sacramentalibus sacrilegè abutuntur, adorationes, genuflexiones, aut quævis alia impietatis obsequia præstant, cultum venerationemve tribuunt; aut annulum vel speculum, aut parvas phylas sibi fabricant, aut fabricari curant ad Dæmones in eis alligandos, seu includendos, ut putat, ad responsa ab ipsis inde petenda, aut habenda. Alii præterea etiam in corporibus obfessis, vel sympathicis, & phantasticis mulieribus Dæmon, de futuris, vel occultis rebus, aut factis exquirunt, ut merito ab eis, quos Dominus in Evangelio tacere imperavit, vanas mendacesque referant responsores. Alii quoque præstigiatores, frequentius verò mulierculæ quædam superstitionibus deditæ, in phyalis seu vasculis vitreis aqua plenissimis, vel in speculo accensis candelis, etiam benedictis sub nomine Angeli Sancti & Albi, Diabolum omnium malorum satorem supplices adorantes, vel in unguibus, aut palma manus, quandoque etiam oleo peransis eundem omnium fallaciarum Architectum orant, ut similiter futura vel occulta quævis per spectra, & apparentes imagines, seu phantasticas visiones sibi ostendat, aut ab eodem patre mendacii Diabolo aliis incantationibus, aut variis superstitionibus observationibus, futurorum, & occultorum hujusmodi veritatem querant & hominibus prædicere contendunt. Quorum omnium, quos supra enumeravimus consimilis impietas parum exitum habet, nimirum, quod Dæmonis præstigiis ac dolis, tum qui divinat, tum qui divinationem expetunt illusi ac delusi miserè reperiantur. Itaque cum futuros eventus in se ipsis considerant, antequam fiant, sit Dei proprium illud necessariò consequitur, ut Astrologi & alii prædicti qui hujusmodi futura prænunciare, aut prænoscere quocumque modo, nisi Deo revelante audent, in justè atque impudenter, quod Dei est sibi assumant, & usurpent. Sic fit, ut dum ab eis, quod solus est Creatoris perperam creaturis tribuitur, divina majestas graviter lædatur, fidei integritas violetur, & animabus pretioso Christi sanguine redemptis, pestis atque exitium importetur.

§. 2. Et licet jam pridem regulis Indicis librorum prohibitorum ex decreto sacri generalis Trid. Conc. confecti, illud inter cetera constitutum fuerit, ut Episcopi diligenter providerent ne hujusmodi Astrologiæ judicariæ libri, tractatus & indices legerentur, vel haberentur, qui de futuris contingentibus successibus, fortuitive casibus, aut iis actionibus, quæ ab humana voluntate pendunt certò aliquid eventuum affirmare audent, permixtis tamen judiciis, & naturalibus observationibus, quæ navigationis, agriculturæ, five medicæ artis juvande gratia conscripta fuissent. Libros verò omnes & scripta Geomantia, Hydromantia, Chiromantia, Necromantia, five in quibus continentur sortilegia, veneficia, auguria, auspicia, in-

Ordinariis ideo jussum fuit ut ejusmodi artes & libros extirparent, sed extirpatio perfectâ non fuit.

cantationes artis magicæ, prorsus rejici & aboleri curarent. Non tamen errorum, corruptelarum, delictorum & abusuum prædictorum extirpationi usque adeo provifum est, quin etiam adhuc in nonnullis locis, & apud plurimos curiosius vigeant, cum valde frequenter, detectis diaboli infidiis, divinationum, sortilegiorum, & variarum superstitionum omnia plena esse in dies detegantur.

§.3. Nos igitur, qui pro nostro Pastoralis officii munere fidei integritatem inviolatam conservare debemus, & animarum saluti prospicere, quantum divina gratia adjutrice possumus ex paternæ charitatis visceribus optamus, quæ diabolo auctore ad fidei hominum deceptionem prædictis curiosis, vel perditis hominibus fieri solent. Cupientes præterea sanctam illam Christianæ Religionis simplicitatem, præsertim ubi agitur de summa Creatoris Dei potestate, sapientia, & providentia, ab omni erroris labe, integram atque incorruptam, ut per eam, retineri. Volentes quoque prædictæ falsæ crudelitatis, ac hujusmodi illicitarum divinationum & superstitionum, detestabili studio, & execrandis flagitiis, atque impunitatibus occurrere, ut de Christiano populo merito dici possit, quod de antiquo Dei populo scriptum est. Non est augurium in Jacob, neque divinatio in Israël. Hac perpetuò valitura constitutione, Apost. auctoritate statuimus & mandamus, ut tam contra Astrologos, Mathematicos, & alios quoscunque dictæ judicariæ Astrologiæ artem, præterquam circa agriculturam, navigationem, & rem magicam in posterum exercentes, aut facientes judicia, & nativitates hominum quibus de futuris contingentibus successibus fortuitisq; casibus aut actionibus ex humana voluntate pendentibus aliquod eventurum affirmare audent, etiam si fide se non certo affirmare afferant, aut protulerint, quam contra alios utriusq; sexus, qui supra dictas damnatas, vanas, fallaces, & perniciosas divinandi artes, siue scientias exercent, proferant & docent aut discunt, quive hujusmodi illicitas divinationes, sortilegia, superstitiones, veneficia, incantationes, ac præmissa detestanda scelera & delicta, ut præsertim, faciant, aut in eis se quomodolibet intromittunt, cuiuscumque dignitatis, gradus, & conditionis existant, tam Episcopi & Prælati, Superiores, ac alii Ordinarii locorum, quam Inquisitores hereticæ pravitatis ubiq; gentium deputati, etiam si in plerisque ex his casibus antea non procedebant aut procedere non valebant, diligentibus inquirent & procedant, atque in eos severius Canonis penis & aliis eorum arbitrio animadvertant.

§.4. Prohibentes omnes & singulos libros, opera, & tractatus hujusmodi judicariæ Astrologiæ, Geomantia, Hydromantia, Pyromantia, Onomantia, Chiromantia, Necromantia, Artis Magicæ, aut in quibus sortilegia, veneficia, auguria, auspicia, execrabiles incantationes, ac superstitiones continentur, ac ut supra in memorato Indice interdictos sub censuris & penis in eo contentis à quibuscumq; Christi fidelibus legi, aut quomodolibet retineri, sed illos Episcopis & Ordinariis locorum, vel Inquisitoribus prædictis præsentari & consignari debere. Et nihilominus eadem auctoritate statuimus & mandamus, ut contra scienter legentes, aut retinentes libros & scripta hujusmodi, seu in quibus talia continentur, similiter idem Inquisitores libere & licite procedant, ac procedere & penis condignis punire & coercere possint.

§.5. Non obstantibus constitutionibus & ordinacionibus Apostolicis; ceterisq; contrariis quibuscumq;.

§.6. Ut autem præsentis nostræ Litteræ ad communem omnium notitiam facilius deducantur, jubemus illas in valvis basilicarum S. Jo. Lateranen. & Principis Apost. de Urbe, ac in acie Campi Floræ affigi seu appendi, eisque detractis ipsarum exempla etiam impressa eisdem in locis affixa relinquere.

§.7. Et insuper universis & singulis venerabilibus fratribus nostris Patriarchis, Primatibus, Archiepis-

copis, Episcopis, locorum Ordinariis & Prælati, necnon Inquisitoribus hereticæ pravitatis ubilibet constitutis, per hæc committimus & in virtute sanctæ obedientiæ districte præcipiendo mandamus, ut per se, vel alium, seu alios eisdem præsentibus Litteras, postquam eas receperint seu earum notitiam habuerint in suis & singulis Parochialibus Ecclesiis, dum in eis populi multitudo ad divina convenit, deinde de verò semel in anno, & quoties eis expedire videbitur, vulgari sermone publicent, aut publicari faciant.

§.8. Quia verò difficile foret præsentibus Litteras ad singula quæque loca, in quibus de eis fides facienda erit deferri, volumus ut earum transumptis etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, ac parvo sigillo S. Romanæ & universalis Inquisitionis, aut aliquis Prælati, vel Curie Ecclesiasticæ munitis, eadem prorsus fides in judicio & extra ubique locorum adhibeatur, quæ eisdem originalibus litteris adhiberetur, si essent exhibitæ vel ostensæ.

Nulli ergo &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, anno Incarnat. Dom. 1585, Nonis Januarii, Pont. nostri anno 1.

Anno à Nativit. Dom. 1585. indit. 14. die verò mensis Janu. Pont. S. D. N. D. Sixti divina providentia Papa V. anno 2. retroscripta litteræ Apost. affixa, lecta, & publicata fuerunt in valvis seu portis S. Joan. Lateranen. & S. Petri Principis Apost. de Urbe, necnon Cancellariæ Apost. & acie Campi Floræ, & per aliquod temporis spatium dimissa per nos Jo. Freyle & Nicolaum Taglietum S. D. N. Papa Curf. Alex. Parabiacus Mag. Curf.

Quod festum S. Antonii Lusitani, de Padua nuncupati, sub die 13. mensis Junii duplici officio de cetero celebretur.

Hunc Scanonizavit Greg. IX. c. 1. q. 1. festivitatem instituit ut supra ejus const. 4. Cum dicat. fol. 73.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Immensa divine sapientiæ altitudo, cujus inscrutabilia sunt judicia, dignata est olim per Propheetam revelare, Deum in Sanctis suis laudari velle. Quod Nos ad eorundem Sanctorum memoriam debita solemnitate celebrandam eo magis invitat, quia dum eorum merita recensentur, virtutum quoque exempla fidelibus imitanda proponantur, ut per ea fideles ipsi gradientes, ad cælestem beatitudinem eorumdem Sanctorum suffragiis adjuti facilius valeant pervenire.

§.1. Quapropter Nos considerantes quod inter multos sanctitate & doctrina præclaros viros, qui S. Francisci vestigia secuti fuerint, Beatus Antonius Ulyssiponenfis, Patavinus nuncupatus, eximie sanctitatis vir fuit, qui ab ineunte ætate mundum, ejusque illecebras veluti venenum aspidum fugiens, Deo se dicavit, ipsiusque Seraphici Francisci institutum, magna cum spe, desiderioque martyrii religiose est complexus, in suscepta vitæ disciplina progrediens, cooperante Domino, mundi, carnis & diaboli, humani generis hostium, egregiis dimicationibus triumphum reportavit, divina præterea imbutus sapientia, multique, variiq; Provincialis peregratis, maximam hominum ab eo, qui lux, via, veritas, & vita est, aberrantium, copiam præclaris Christianorum virtutum exemplis illustravit; ac verbi Dei; quod velut imber de cælo descendens, terramque inebrians facit eam germinare, pia secundaque prædicatione mentes hominum salutaribus præceptis fecundavit, multoque ad catholicæ doctrinæ lucem & verbum, & consequentibus signis perduxit, ac demum diversis in vita, & post obitum miraculis clarus, ad permanentem illam,

Fides exen-
piorum.

D. P. A. i.
die 5. Jan.

Publicatio.

XVIII.

Edita An. D.
1585.

Exordium.

S. Antonii de
Padua merita & laudes
recensentur.

Hic itaque
Pont. Astro-
logos judi-
ciarios Ma-
thematicos,
Divinatores
&c. ab Ord-
nariis, & ab
Inquisitorib.
severè coer-
ceri manda-

Librosque
harum reti-
neri vetat.

Claustr. derog.

Justo publ.
in Urbe.

Et extra.

Canonizatio
ejusdem re-
fertur.Institutio
duplicis offi-
cii.Iussio eam
observandi.Transump-
torum fides.D.P. An. r.
die 14. Jan.

XIX.

Edita An. D.
1586.

Proemium.

nullique mutationi obnoxiam patriam, recto atque incitato cursu evolavit, ubi in æternis ecclesiis regni mansionibus Beatus perfruitur.

§. 2. Ipse autem à fel. record. Gregor. Papa IX. prædecessore nostro, Sanctorum quos catholica venerat Ecclesia, catalogo solemniter ritu adscriptus in ca. lo pro ipsa semper Ecclesia apud Deum, una cum omnibus Sanctis ejusdem gloriæ confortibus assidue, & pro peccatoribus intercedit.

§. 3. Quare ut ejusdem Beati viri qui Ordinis ipsius S. Francisci professor fuit, memoria à fidelibus crebrius recolatur, celebrique totius Ecclesiæ veneratione celebretur, Nos & divinis illius meritis adducti, & præcipue erga illum nostræ devotionis studio excitati, hac præsentis constitutione præcipimus & mandamus, ut ejusdem Beati Antonii de Padua nuncupati Confessoris gloriosi dies festus Idibus Junii, quo die ex hoc collachrymabili sæculo ad ecclesiem patriam abiit, solemniter peragatur, ac sub duplici minori, & proprio officio, atque ubi propria non erunt, de Communi Confessorum non Pont. posthac perpetuis futuris temporibus in omnibus universis Orbis Ecclesiis ritè celebretur, & in Calendario cum duplicis festi adjectione inscribatur; scilicet verò dies supra dictus ex fidelium devotione, seu consuetudine aut præcepto vel indulto Apostolico majori observantia, etiam si duplici majoris in die festi, & duplici minoris per octavam, ut apud Fratres ejusdem Ordinis S. Francisci celebrari consueverit, id omnino ibidem retineatur.

§. 4. Præcipientes omnibus & singulis Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, ceterisque Ecclesiasticarum Prælati, ac quorumcumque Regularium locorum, & Ordinum Superioribus, quatenus in suis quique Ecclesiis, provinciis, civitatibus & Diocesis, ac regulatibus locis præsentis Litteras solemniter publicari, & ab omnibus Ecclesiasticis personis, tam sæcularibus quam quorumvis Ordinum regularium secundum ritum S. R. E. officium perfolventibus, omnino observari faciant, si in Breviarii & Missalis reformationibus nuper editis præfata solemnitas apposta non fuerit.

§. 5. Quoniam autem difficile esset easdem Præsentis ad singula Orbis loca pervenire, volumus, & Apost. auctoritate decernimus, ut earum transumptis & exemplis etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides ubique gentium & locorum adhibeatur, quæ ipsis Præsentis litteris adhiberetur, si essent exhibitæ vel offensæ.

Dat. Romæ apud S. Petrum, anno Incarnat. Dom. 1586. 19. Kal. Februarii, Pont. nostri anno 1.

Innovatio indulti Capituli sacrosanctæ Lateranensis Ecclesiæ de Urbe concessi, dandi licentiam in ejus locis, erigendi loca pia, accedente licentia Ordinariorum, quibus subiecta remaneant.

Hæc Lateranensis Ecclesia, supremum locum obtinet, super omnes Urbis & Orbis Ecclesias. & centenaria gaudet præscriptione, ut videre est sup. in Greg. XI. const. 1. Super. fol. 262. ubi aliorum Pontificum Bullas indicavi.

SIXTUS PAPA V.

Dilecti filii, salutem, & Apostolicam benedictionem.

SI cunctas per Orbem terrarum diffusas Ecclesias in eorum juribus & privilegiis libenter conservare studemus, multo magis & ampliori sollicitudine erga sacrosanctam Basilicam nostram Lateranensem de Urbe, quam Summi Rom. Pont. illorum Pa-

triarium esse voluerunt, id faceretur, ac proinde quæ ab eisdem pro decore & commodo illius, necnon divinis obsequiis ibidem insistentium emanarunt, si quandoque revocata fuisse constet, quantum cum Deo possumus, adhibito moderationis remedio innovare congruum censuimus.

§. 1. Sane cum dudum fel. recordat. Bonifac. Papa IX. prædecessor noster, qui singularem devotionis affectum ad eandem gerebat Basilicam, cujus Archiep. dum minori officio fungebatur ex concessione Apostolica obtinuerat, considerans ex quorundam Rom. Pont. declaratione ipsam omnibus aliis Urbis & Orbis Ecclesiis antefieri, volens propterea specialis alicujus prærogativæ privilegio eam decorare, tunc Archiep. & Capitulo, singularibusque personis & Ministris illius ac aliis quibuscumque personis utriusque sexus, ut in quibusvis fundis, terris, possessionibus & locis ad eorundem Archiep. & Capituli mensam Capitularem spectantibus, Diocesis loci, aut alterius licentia minime requisita, Ecclesias, Monasteria, Oratoria, Prioratus, Dignitates, Personatus, officia, & alia beneficia Ecclesiastica, cum cura & sine cura, necnon Conventus, Hospitalia, & pia loca quæcumque fundare, construere, instaurare, erigere, edificare & toties quoties placeret valeret, (jure tamen Parochialis Ecclesiæ, & aliis cujuslibet in omnibus semper salvo) auctoritate Apost. indulget, statuens & ordinans, quod postquam prædicta fundata, constructa, erecta, edificata, & dotata essent, permanerent, ac essent & esse deberent, censerenturque immediate subesse sub ipsorum Archiep. & Capituli dominio, protectione, jurisdictione, defensione, auctoritate & potestate, ac eorum plenum jus, dominium, merumque & mixtum imperium, necnon institutio, destitutio, collatio, provisorio, præsentatio, & quævis alia dispositio, ad ipsos solum & in solidum pertinerent in perpetuum atque spectarent, prout ejusdem Prædecessoris Litteris, quarum tenores, ac si de verbo ad verbum infererentur, pro plenè & sufficienter expressis haberi volumus, plenius continetur.

§. 2. Et sicut nuper exposuimus, Capitulum & Canonici ipsius Basilicæ, qui postmodum fuerunt litteris patentibus à se sub hoc eorum titulo & nomine tantum expeditis, licentias & facultates, Ecclesias, Monasteria, ceteraque prænarata fundandi, instaurandi, erigendi & faciendi diversis, etiam sub præsentatione & solutione census perpetuè in recognitionem directi domini annuatim sibi faciendæ concesserint, atque concedere continuaverint, donec recol. mem. Pius Papa IV. itidem Prædecessor noster motu suo proprio, omnia & singula privilegia, facultates, & indulta, per eum & Sedem Apost. live Rom. Pont. prædecessores, erigendi & instituendi Ecclesias, Capellas, Capellanias, Oratoria, Altaria, Societates, & Confrat. illaq; in grancias vel membra recipiendi, nobis & certis aliis tunc expressis in specie vel genere quomodolibet concessa, cassaverit, irritaverit, penitus, & aboleverit, illaq; statuerit & ordinaverit, prout Litteris suis hæc de re promulgatis, quarum pariter tenores, ac si de verbo ad verbum infererentur, pro plenè & sufficienter expressis haberi volumus plenius continetur, humiliterque supplicaveritis, ut adversus hujusmodi cassationem & abolitionem vos restituere dignaremur.

§. 3. Nos moti tam prænarata Bonifacii Papæ prædecessoris consideratione, quam præclara memoria Imperatoris Constantini, cujus morbum suscepto hic olim baptismo divina gratia sanavit, vestris hujusmodi supplicationibus benigne annuentes, prænaratasque Bonifacii Papæ litteras, cum omnibus & singulis decretis, clausulis & aliis in eis contentis, Apostolica auctoritate (modificationibus infra scriptis semper salvo) harum nostrarum serie revalidantes & innovantes, vosque ad illarum pristinum usum adversus supra dictas Pii IV. litteras revocatorias

Bonifac. IX. statuit quod quilibet in locis ad Ecclesiam Lateranensem, sp. dantibus, licet ca pia erige re possit illa que sub me ro & mixto imperio, & dispositione Capituli & Archiep. presbyt. ex taret. fed Bonifacii Bullam hic non habet.

Pius IV. indulta revocavit, ut sup. in ejus const. 57. Reg. mini fol. 59.

Hic modo Pont. innov. dictum indultum à Bonifac. IX. concessum, addita modificatione quod accedat licentia Ordinariorum & loca erigenda cum personis sub hisdem Ordinatis.

Paul. III. & Jul. III. transi-
tum Fra-
trum de Ob-
servantia ad
Capuccinos
vetant in
eorum Bul-
lis, ut minus
necessarii
omittis.

Hic Pont.
idem probi-
bet.

Contraveni-
entium pœ-
na.

Clausulæ præservati-
væ.

Clausula
suolata &c.

Deputatio
executorum.

restituentes, & plenariè reintegrantes, ex speciali gratia indulgemus, quod perpetuis futuris temporibus, Litteris vestris patentibus, sub solitis titulo & nomine supra dictis, etiam absque Præsentium nostrarum insertione expediendis, licentiam & facultatem liberam quibuslibet bene visis, in fundis, terris, & locis mensæ vestræ Capitularis, ac aliis juxta eorundem Bonifacii Papæ Prædecessoris Litterarum formam, quæcumque Monasteria, Prioratus, Conventus, Ecclesias dignitates, personatus, officia & alia beneficia Ecclesiastica cum cura vel sine cura, necnon Hospitalia, & alia pia loca, fundandi, erigendi, ædificandi, dotandi, ac alia quomodolibet in illis contenta faciendi, quæ quidem domino protectioni, jurisdictioni, defensionis ac potestati vestris immediatè subsint, necnon earundem plenum jus, dominium, merumque & mixtum imperium, institutio, insuper, destitutio, collatio, provisorio, præsentatio, & quævis alia dispositio ad vos solum & in solidum perpetuò spectet, dummodo Episcoporum in quorum Civitatibus seu Diocæbus illa fuerint, licentia expressa ad hoc accedat: Ecclesiæque & alia ut præfertur fundanda, erigenda, ædificanda, & dotanda, atque illa pro tempore obtinentes, libertatis, immunitatis & exemptionis, privilegium aliquod à jurisdictione & superioritate ipsorum Episcoporum, aliterve contra formam decretorum & ordinationum sacri Concilii Tridentini propterea non acquirant, licentiam & facultatem, liberam ut prius in omnibus & per omnia, perinde ac si Litteræ hujusmodi revocatorie nullatenus emanassent, concedere valeatis.

§ 4. Non obstantibus dicti Pii IV Litteris revocatoris, ac constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, statutis quoque, & consuetudinibus, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, in contrarium quomodolibet, etiam iteratis vicibus, sub quibuscumque, verborum formis & tenoribus concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus & singulis, etiam si de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica & expressa & individua mentio habenda esset, tenores illorum, ac si de verbo ad verbum infererentur, pro plenè & sufficienter expressis habentes, latissimè derogamus, cæterisque contrariis quibuscumque.

§ 5. Volentes quod harum nostrarum exemplis à Notario publico subscriptis, & sigillo Capitalati ob signatis, eadem prorsus fides ubique, in judicio & extra adhibeatur, quam originalibus Litterarum ipsarum facerent, si exhiberentur.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub Annulo Piscatoris die 15. Januarii, 1586. Pontificatus nostri anno 1.

Prohibitio transeundi ab Ord. Fr. Minorum S. Francisci de Observantia, ad Fr. Capuccinos.

Transiitum hujusmodi inter Capuccinos & Fr. Minimos S. Francisci de Paula interdictis, etiam Pius V. ut sup. in ejus consil. 45. Sedis. fol. 257.

Alia de Capuccinis, & eorum Regula notavi sup. in consil. 21. Clem. VIII. Religionis. fol. 673. Et de toto Ordine notavi ad consil. 5. Honor. III. Soler. fol. 66. Tom. I.

SIXTUS PAPA V.

Ad perpetuam rei memoriam.

Pro ea, quam præcipuam gerimus erga S. Franciscum devotione, illius familiam universam paterno amore complectentes, ea studemus de medio tollere, quæ dissidii inter ipsos Religiosos, ejus regulam sectantes occasionem præbent, aut iis qui levitate animi, minus constantes persistunt in obedientia cui se ipsos dicaverunt, ab ea se subtrahendi viam aperiant.

§ 1. Sanè jam pridem felices recordationis Paulus Papa III. & Julius etiam III. Romani Pont. prædecessores nostri iustus de causis adducti prohibuerunt, ne ullo modo Fr. de Observantia, sine suorum Generalium vel Provincialium licentia in scriptis habita, ad Congreg. Capuccinorum se transferre, five ab ipsis Capuccinis recipi, aut in illorum domibus retineri possent vel deberent, certis etiam gravioribus pœnis adjunctis, prout in illorum Litteris plenius continetur.

§ 2. Quare Nos quoque eorumdem Prædecessorum exempla secuti, toto negotio cum quibusdam ex venerabilibus Fratr. nostris S. R. E. Card. communicato, ac diligenter considerato, Litterarum hujusmodi tenores præsentibus pro expressis habentes, de eorumdem Card. consilio, etiam de novo auctoritate Apost. per præfatos districtius interdicens, tam ipsis Capuccinis, ne quemquam eorumdem Fratr. de Observantia, post emissam professionem regularem juxta instituta ejusdem Ordinis de Observantia, ad eos quovis habitu, & quacumque de causa transirentem, sine nostra aut Rom. Pont. pro tempore existentis licentia speciali per Litteras Apost. expressam, & in specie, non autem per clausulas generales idem importantes, præfatis prohibitionis rationem & derogationem continentes, aut eorumdem Generalis, vel Provincialium ministrorum Fratr. de Observantia licentia in scriptis, ut præfertur, obtenta admittere, recipere, & retinere, quàm Fratr. de Observantia prædictis, ne quisquam eorum ad Congreg. Capuccinorum sine hujusmodi licentia se transferre in futurum præsumant.

§ 3. In singulos verò Capuccinorum Superiores, Provinciales, Min. domorum, Guardianos, Vicarios, seu Præsides, necnon ipsos Fratr. de Observantia, qui in præmissis quoquo modo contraverint, excommunicationis sententiam ferimus, eoque omnibus & quibuscumque dignitatibus, administrationibus & officiis per eos pro tempore obtentis obviare posse. Decernentes receptiones, admissiones, & retentiones quasque de illis ex quavis causa sine dicta licentia faciendas, nulla omnino firmitate subsistere, neminemque penitus ulli voto, aut promissioni, etiam juramento, aliave solemnitate roboratis obligare posse.

§ 4. Præfateque Litteras, de subreptionis vel obreptionis vitio, seu intentionis nostre, vel quovis alio defectu notari seu impugnari, aut sub prætextu quod contra alias Apostolicas, ac canonicas sanctiones jam pridem usu receptas (quod scilicet unicuique regulari ad æctiorem regulam & religionem transeundi, petita dumtaxat, ac etiam non obtenta Superiorum licentia, transitus liberè & licitè permittatur) aut alias quovis prætextu, seu quovis colore, in jus & controverfiam, revocari aut invalidari, ac ad terminos reduci non posse, sed semper validas & efficaces existere.

§ 5. Sicque in præmissis universis & singulis per quoscumque Judices & Commissarios, ordinarios & delegatos, ac S. R. E. Cardinales, ac causarum Palatii Apostolici Auditores, sublati eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari & definiri debere, necnon irritum & inane, si secus super his à quocumque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§ 6. Mandantes universis & singulis locorum Ordinariis, ut quando, ubi, & quoties opus fuerit, ac pro parte alicujus ex Fratr. de Observantia hujusmodi fuerint requisiti, præfatas litteras solemniter publicantes, eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, non permittant quemquam ex prædictis, siqui forsan in posterum se de facto transcribere præsumperint, contra earundem Præsentium continentiam & tenorem in aliqua domo seu loco ipsorum

Clausulæ derogatorie.

Fides transumptorum.

Dat. P. An. die 15. Jan.

XX.

Edita An. D. 1586.

Causa hujus prohibitionis.

ANNO 558
1586.

SIXTUS QUINTUS.

ANNO
1586.

Edit. An. D.
1586.

SIXTUS PAPA V.

Ad perpetuam rei memoriam.

Dum ineffabilia meritorum insignia, quibus Dei Genitrix Beata Virgo Maria Regina cælorum gloriosa, sedibus prælata sydereis, tamquam stella matutina præerulit, devotæ considerationis indagine perferutur, & inter arcana pectoris revolvimus quod ipsa utpote Mater misericordiae, Mater gratiæ & pietatis, humani generis amica & consolatrix, pro salute fidelium, qui delictorum culpa prægravantur, sedula exoratrix, & pervigil ad Regem, quem genuit, & maternis lacrimis uberibus intercedit, dignum, quin potius debitum arbitramur, ut Ecclesiis, & Capellis, ac Confrat. in ejus honorem erectas & institutas, gratiosis remissionem prosequamur impendimus ac indulgentiarum muneribus decoramus, ac per Romanos Pont. prædecessores nostros, eidem Confratribus concessas indulgentias, & privilegia, nostræ approbationis munimine roboramus eaque innovemus, prout salubriter cognoscimus expedire.

§. 1. Attendentes itaque quam Religioni nostræ fructuosum fuerit S. Pflsterii, Rosarii nuncupati, gloriose semperque Virg. Mariæ, Almæ Dei genitricis institutum, per Beatum Dominicum Ordinis Frat. Prædicatorem auctorem, Spiritu sancto, ut creditur, efflatum, excogitatum, quantaque exinde mundo provenierint, & in dies proveniant bona, & quod propterea utriusque sexus Christi fidelium Confrat. sub invocatione Rosarii ejusdem Beatæ Mariæ Virginis in diversis Orbis Ecclesiis, ac Capellis & Altaribus canonicè instituta.

§. 2. Earumque Confratres ac Sorores, à quamplurimis, & præsertim fel. record. Urbano IV. & Joanne XXII. ac Sixto etiam IV. necnon Innocent. VIII. & Alexandro VI. ac Julio II. & Leone X. ac Adriano VI. Clem. VII. & Paulo III. ac Julio etiam III. ac Paulo IV. & Pio etiam IV. ac Pio V. & postremo Greg. XIII. Rom. Pont. prædecessoribus nostris, ac nonnullis Sedis Apostolicæ, cum potestate Legati de latere, Nuncios, nedom confirmationem & augmentum earundem Confraternitatum, sed etiam indulgentias, ac privilegia & indulta meritò obtinere meruerint.

§. 3. Nos dictorum prædecessorum vestigiis inhærendo, ac eodem quo ipsi Prædecessores nostri, devotionis affectu divinitus excitati, necnon dilecti filii nostri Michaelis tituli Beat. Mariæ super Minervam Presbyt. Card. Alexandrini nuncupati supplicationibus inclinati, singularum Litterarum prædictarum tenores & formas Præsentibus pro sufficienter expressis & insertis habentes, omnia & singula privilegia, immunitates, & exemptiones, concessiones, indulta, indulgentias, etiam plenarias, & peccatorum remissiones, ac relaxationes, omnibus & singulis Confratern. dicti Rosarii ubicumque terrarum canonicè institutis, earumque Confrat. & Sororibus, tam per dictos Prædecessores nostros & Sedem prædictam, seu illius Nuncios, cum potestate Legati de latere concessas, elargitas, & confirmatas, ac cum omnibus & singulis in eis contentis clausulis desuper concessas Litteras prædictas, & vivæ vocis oraculo, aut alias quomodolibet emanatas, auctoritate Apostolica, tenore Præsentium, perpetuò confirmamus & approbamus, illaque omnia & singula prout per ipsos Prædecessores nostros, & alios prædictos concessa fuerunt, perpetuæ firmitatis robur obtinere, ac inviolabiliter observari debere decernimus, omnesque & singulos tam juris quam facti defectus, si qui forsan intervenerint in eisdem, supplemus.

§. 4. Et potiori pro cautela, omnes & singulas indulgentias etiam plenarias, & peccatorum remissiones ac relaxationes, exemptiones, facultates, concessiones, aliaque privilegia & indulta prædicta, omnibus & singulis Confraternitatib. dicti Rosarii,

Capuccinorum admitti, recipi, & retineri. Contradi-
tores quoslibet & rebelles, eisque auxilium vel favo-
rem, directè, vel indirectè quomodolibet præstan-
tes, per censuras & pœnas Ecclesiasticas, aliaque op-
portuna juris & facti remedia, appellatione postpo-
sita compefcendo, legitimisque super his habendis
servatis processibus, sententias & censuras ipsas, eti-
am iteratis vicibus aggravando; invocato etiam ad
hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

Clausula
derogatoria.

§. 7. Non obstantibus constitutionibus & ordina-
tionibus Apostolicis, ac in Conciliis etiam generali-
bus editis, ac Ordinibus & Congreg. Capuccinorum
prædictorum juramento, confirmatione Apostolica,
vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consue-
tudinibus; necnon facultatibus, dispensationibus, &
indultis, ipsi Congreg. Capuccinorum, eorumque Su-
perioribus & personis, aut domibus quibuscumque
recipiendi, vel retinendi fratres de Observantia, eti-
am suorum Superiorum licentia petita dumtaxat, &
non obtenta, aut non petita transeuntes, tam expre-
se & principaliter quam per communicationem ad
infra aliorum Ordinum & Congreg. quorum gratia-
rum & indultorum ipsi forsan Capuccini participes
effecti sunt; etiam si pariformiter, & æque principa-
liter ipsa communicatio & extensio facta fuerit per
quoscumque Rom. Pont. prædecessores aut successores
nostros, etiam Motu proprio, ac de Apost. pote-
statibus plenitudine, ac de eorumdem Card. consilio pro
tempore concessis, approbatis & innovatis; quæ om-
nia, ac desuper concessas Litteras, processusque ha-
bitos per eandem, quatenus præmissis in aliquo ad-
versantur, abrogamus, cassamus & annullamus. Aut
si ipsis Capuccinis, eorumque Prælatibus & Superiori-
bus, vel quibuscumque aliis communiter vel divisim, ab
Apostolica fide Sede indultum, quod Litteris revo-
catoriis, sub quacumque formula editis nullatenus,
vel nisi modis & formis in hujusmodi indultis con-
tendis parere, & ob non paritionem aliquas senten-
tias, censuras & pœnas incurrere, aut alias interdicti,
suspendi, vel excommunicari non possint per litteras
Apost. non facientes plenam & expressam, ac de verbo
ad verbum de indulto hujusmodi mentionem; etiam
quibuslibet aliis privilegiis, indulgentiis, exemptioni-
bus & litteris Apost. generalibus, vel speciali-
bus, etiam motu, scientia & potestatis plenitudine si-
milibus concessis, quorumcumque tenorem existant,
per quæ Præsentibus non expressa, vel totaliter non
inserta effectus earum impediri valeat quomodolibet
vel differri; & de quibus quorumque totis te-
noribus habenda sit in nostris mentio specialis. Quæ
omnia volumus nemini contra prædicta in aliquo
suffragari, ceterisque contrariis quibuscumque.

Fides tran-
sumptorum.

§. 8. Volumus autem, ut Præsentium exemplis eti-
am impressis, manu alicujus Notarii publici subscri-
ptis, & alicujus Prælati Ecclesiastici, ejusve Curia
figillo obligatis, eadem fides ubique, in judicio &
extra illud habeatur, quæ eisdem Præsentibus adhi-
beretur, si essent exhibitæ vel offensa.

Dar. P. A. r.
die 28. Jan.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscato-
ris die 28. Januarii 1586. Pont. nostri anno 1.

XXI.

Confirmatio & ampliatio indultorum ac indulgentiarum Rosarii B. Mariæ Virginis; Et facultatis Magistri Generalis & Vicarii Ordinis S. Domini-
nici, in erigendis Capellis & instituendis Confraternitatibus Rosarii, pro quibus alia etiam gratiæ & indulgentiæ conceduntur.

*Indulgentia hujus Confraternitatis præservata fue-
runt à Paulo V. & comprobata in ejus constit. data
die 20. Septembris 1608. mox publicanda. De Ro-
sario autem (sive Pflsterio notavi sup. in const. 18.
Six. IV. Ea quæ. fol. 418. Tom. I.*

Beat. Mariæ
Virginis me-
rita & lau-
des.

Pflsterium
seu Rosarium
B. Virg. à
Dominico
institutum.

Hoc idem
habetur in
const. 86. P.
V. Inter fol.
305. hoc To-
mo.

Sodalitas
Rosarii gra-
tias & in-
dulta à mul-
tis Pont. ob-
tinuit.

Hic Pont.
omnes gra-
tias, indul-
gentias & in-
dulta confir-
mat, & in-
novat.

Confirmav-
etiam Paul.
V. ut dixi
in rub.

Et innovat.

in quibusvis Ecclesiis, & Capellis, ac Altaribus ubicunque terrarum canonicè erectis, earumque Confratribus & Sororibus, necnon Officialibus & ministris eisdem modo & forma, quibus per eisdem Prædecessores nostros, & dictæ Sedis Nuncios concessa fuerunt, dicta auctoritate Apostolica de novo concedimus & innovamus, ac omnibus & singulis Confrat. Rosarii hujusmodi Confratribus & Sororibus nunc & pro tempore existentibus suffragari debere, eosque illis perpetuò uti, potiri, & gaudere posse, decernimus & declaramus.

§. 5. Et insuper ut omnibus & singulis dicti Ordinis Fratribus, per Magistrum & Vicarium generales dicti Ordinis Prædicatorum, & eorum quemlibet pro tempore deputandis, in quibusvis Civitatibus, Oppidis, Terris, & locis ubicunque existentibus, ut in eorumdem Prædicatorum vel aliorum Ordinum, Monasteriorum, seu domorum Ecclesiis, Capellis, & Oratoriis, & etiam in secularibus Ecclesiis, in quibus nullæ Confraternitates ejusdem S. Rosarii, ad Dei & ejusdem B. Virginis laudem & gloriam, erigere & instituire liberè & licitè possint & valeant, plenam & liberam licentiam & facultatem, dicta Apostolica auctoritate tenore Præsentium concedimus.

§. 6. Ac postquam erectæ fuerint, ut omnibus & singulis privilegiis, indultis, facultatibus, exemptionibus, immunitatibus, concessionibus, indulgentiis etiam plenariis, & peccatorum remissionibus, ac relaxationibus, & gratiis quibuscumque ejusdem Rosarii Confratern. earumque Confratribus ac Sororibus, per prædictos & quoscunque alios Romanos Pont. etiam prædecessores nostros, ac etiam Nos & Sedem prædictam ejusque Nuncios, & etiam de latere Legatos, hætenus quomodolibet concessis ac concedendis, & quibus Confraternitates hujusmodi, earumque Confratres, & Sorores quomodolibet utantur, potiuntur, & gaudent, ac uti, potiri, & gaudere poterunt quomodolibet in futurum pariformiter, & æque principaliter, in omnibus & per omnia, ac perinde, ac si illis specialiter & expresse, ac nominatim concessa fuissent, uti, potiri, & gaudere, liberè & licitè possint, pariter concedimus & indulgemus; ac privilegia, indulta, facultates, exemptiones, immunitates, concessionibus, indulgentias etiam plenarias, ut præfertur, concessas & concessa, ad ipsas Confrat. erigendas, illarumque Confrat. & Sorores pro tempore existentes perpetuò extendimus & ampliamus.

§. 7. Ut autem animarum Christi fidelium Confraternitatum, tam erectarum quam per Fratres deputandos hujusmodi erigendarum, easdem Confratern. ingredi volentium spiritali consolationi per amplius consulatur, de Omnipotentis Dei misericordia, ac Beat. Petri & Pauli Apostolorum ejus auctoritate consisti, omnibus & singulis utriusque sexus Confratribus singularum Confratern. Rosarii hujusmodi, tam hætenus erectarum quam in posterum erigendarum, ut præfertur ubicunque nunc & pro tempore existentibus, & in dictis Confratern. pro tempore descriptis & describendis, itinerantibus vel navigantibus, ac servientibus totum Rosarium, infirmis verò, aut alias legitime impeditis, tertiam ejus partem, devotè recitantis, necnon temporibus debitis, & ab Ecclesiis statutis, confitendi & communicandi firmum propositum habentibus, qui Capellam B. Mariæ Rosarii, in Ecclesia ipsius B. Mariæ supra Mineram de Urbe ejusdem Ordinis Prædicatorum institutam, vel alias Ecclesias, seu Capellas ubicunque dicta Confraternitas canonicè fundata fuerit, iis diebus, quibus festa mysteriorum ejusdem Rosarii celebrantur visitare, & processioni, que prima Dominica cujuslibet mensis fieri solet, interesse non poterint, plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam & remissionem, auctoritate & tenore prædictis concedimus & elargimur; illique omnes & singulas indulgentias & peccatorum remissiones, etiam ple-

narias aliis Confratribus & Sororibus, Capellas seu Ecclesias Rosarii hujusmodi dictis diebus visitantibus, ac dictæ processioni interessentibus, specialiter vel generaliter concessas, & in futurum concedendas, in omnibus & per omnia, perinde ac si dictas Capellas seu Ecclesias dictis diebus personaliter visitarent, & processionibus hujusmodi interessent, auctoritate & tenore prædictis communicamus, ac communicatas esse, specialiter vel generaliter, decernimus & declaramus.

§. 8. Quia verò difficile foret præsentem Litteras ad singula quæcumque loca, in quibus expediens foret deferri, volumus, & etiam Apostolica auctoritate prædicta decernimus, quod earum transumptis etiam impressis, & manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ, seu Curie Ecclesiasticæ munitis, eadem prorsus fides adhibeatur in iudicio & extra, quæ ipsis Præsentibus adhibetur, si forent exhibitæ vel offensæ.

§. 9. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis quibuscunque.

Datum Romæ apud S. Petrum sub annulo Piscatoris, die 30. Januarii 1586. Pontificatus nostri anno 1.

Innovatio Festivitatis S. Januarii Episcopi & martyris, & sociorum ejus, die 19. Septemb. simplicio officio celebrandæ.

SIXTUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam

Pia S. Patrum providentia institutum est in Ecclesia Dei, & posteristraditum, ut complurium martyrum insignium memoria statis diebus, solemnibusque ceremoniis, atque anniversariis sacris in cunctis Ecclesiis recolatur. Ita enim & illis honor debitus tribuitur, & fideles ad eorum imitanda exempla pro suo quisque modulo invitantur.

§. 1. Proinde Nos operæ pretium duximus efficere, ut sanctorum martyrum Januarii Episcopi & sociorum ejus, qui post vincula & carceres gloriosa martyrii corona propter Christi nominis confessionem sunt donati, jucundam recordationem diu intermissam renovando, plebem Dei hilarem; cujus quidem B. Januarii sanctitatem, Deus omnipotens multis, iisque clarissimis editis miraculis ad nostram usque ætatem in Neapolitana potissimum civitate, in qua ejus corpus sepultum religiose asservatur, celeberrimè apud omnes gentes testatam esse voluit; adeo ut non immerito, tum in divinis officiis, tum in ipso sacrificio ab universo fidelium cœtu eorum commemoratio fieri debeat, prout ante novam reformationem Romani Missalis & Breviarii fieri consueverat.

§. 2. Hac igitur nostra perpetuò valitura constitutione præcipimus, ut eorumdem sanctorum Januarii & sociorum ejus dies festus, 13. Kal. Octobris, in totius Orbis terrarum Ecclesiis simplicio officio de communi plurimorum martyrum celebretur; ac decernimus, ut in novo etiam quo nunc utimur, sicut antea in veteri Calendario ad eum diem sanctorum eorumdem nomina, & Simplicis nota adscribatur.

§. 3. Mandantes omnibus Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, ceterisque Ecclesiis Prælati in universo Orbe constituti, ut in suis quique Ecclesiis, Provinciis, Civitatibus, & Dioecesium, Præfentes nostras, solemniter publicari faciant, ab omnibusque Ecclesiasticis personis, secularibus & quorvis Ordin. regularibus omnino observari, licet adno-

Transumptis hujus Bullæ credi jubet.

Quibuscumque non obstat.

Dar. P. A. T. die 30. Jan.

XXII.

Edita An. D. 1586.

Exordium.

S. Januarii & sociorum ejus, die 19. Sept. festum, merita & laudes recensentur.

Eorum die festum die 19. Sept. singulis annis celebrari præcipitur.

Justio publicandi hanc Bullam.

Facultatem instituendi Confratern. Rosarii concedit. Magistro & Vicario gen. Ord. S. Dominici, & deputatis per eos.

Et quæ sic erectis, omnes gratias & indulta aliis Rosarii Confratern. nre. data e. largitur.

Confratribusque alias indulg. hic enunciatas concedit.

Files exemplorum.

D. P. An. r. die 1. Febr.

Publicatio.

XXIII.

Edita An. D. 1586.

Stationum consuetudinem antiquissimam esse.

Romæ hanc stationum consuetudinem retinet, & observat antiquas Basilicas, & Ecclesias devote certis temporibus visitant.

Septem præfatum Basilicas in Urbe admodum celeberrimas

tatio hujus celebritatis in postremis Breviarii & Missalis reformationibus fuerit prætermissa.

§. 4. Volumus autem ut Præsentium exemplis etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides ubique adhibeatur, quæ ipsis Præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Dat. Romæ apud S. Marcum, anno Incarnat. Dom. 1586. Kal. Februarii, Pontificatus nostri anno 1.

Anno à Nativitat. Dom. 1586, indit. 14. die verò 10. mensis Februarii Pont. S. D. N. D. Sixti Divina providentia Pape V. anno 1. retroscripta litteræ Apost. affixæ, lectæ & publicatæ fuerint, & per aliquod tempus spatium dimissæ in valvis seu portis SS. Joann. Lateranensis, & S. Petri Principis Apost. de Urbe, necnon Cancell. Apost. & in acie Campi Floræ, per nos Joann. Freile, & Nicolaum Taglietum S. D. N. Pape Curs.

Alex. Parabiacus Mag. Curs.

Renovatio Pontificalium Capellarum, in Basilicis, ceterisque Almæ Urbis Ecclesiis, Dominicis Quadragesimæ, & Adventus, aliisque statis solemnibus diebus, celebrandarum.

SIXTUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Egregia Populi Romani pietas, magnis S. Patrum laudibus celebrata, posteaquam terrarum Principis civitas Beatif. Apostolis Evangelii lucem annunciantibus, suave Christi jugum accepit, & per Beati Petri Sedem verè caput Orbis terræ effecta, latius cepit præsidere potestate divina, quàm dominatione terrena, præclara adhuc, singulari Dei benignitate, religioz antiquitatis monumenta conservat. Inter quæ vetus admodum est, ab Apost. usque ducta temporibus, sacrarum Stationum consuetudo; in quibus fidelium multitudo ad Apost. sepulchra, & torfissimorum Martyrum memorias conveniens, hymnis & canticis spiritualibus Deum in sanctis suis mirabilem laudabat, & salutaribus immaculatæ Hostiæ sacrificiis placabat, & adversus multiplices antiqui hostis oppugnationes, tamquam in castris Dei, Statione tutissima consistebat.

§. 1. Quem morem à majoribus acceptum, nunc etiam Roma antiquissimis Urbis Basilicis, & Martyrum Ecclesiis visitandis, statis Dominicis, aliisque solemnibus diebus, in primis verò sacro Adventus Domini, Quadragesimæ tempore, magna populi frequentia anniversaria celebritate devote observat. Nos autem, quibus pro nostra Pastoralis sollicitudine, nihil optabilius est quàm animas Christo lucrari, tam pium ac salutare institutum, non solum retinere cupimus, sed etiam ornare, ac omni Religionis officio propagare summo opere studemus, his præsertim lucuosius Christianæ Reipub. temporibus, quæ ad placandam Dei iram, ad detestabiles hæreses extirpandas, ad pacem & tranquillitatem Ecclesiæ obtinendam, ad vitia & peccata hominum corrigenda, crebriora penitentia & pietatis opera, ac multiplicata Sanctorum cum Christo regnantium preces & intercessionem maxime requirunt, sed potissimum Sanctorum omnium Reginae, Dei nostri Genitricis, semperque Virginis Mariæ Christiani populi Advocatæ, Cælestæ patrocinium desiderant.

§. 2. Et verò cum multis antiquis & religiosissimis Ecclesiis, quas majorem pietas magnifice extruxit, hæc Alma Urbs ornatissima sit, tum illæ potissimum intra atque extra moenia positæ, septem Basilicæ, quas veteri instituto fideles, pia ac salutaris peregrina-

natione obire solent, magnam jure optimo, non solum apud Cives sed apud externos populos venerationem habent; sunt enim antiquitate, Religione, S. Martyrum venerandis Reliquiis, sacris indulgentiis, & denique mystica septenarii numeri ratione celeberrimæ; nam quemadmodum Joan. Apostolus admirabilem illam Apocalypsim septem Asiæ Ecclesiis scribens universam Ecclesiam adumbravit, quam Deus cœlestibus Spiritus sancti donis perficit, & in qua una habitat & requiescit, ita Romæ septem Ecclesiæ magno ejusdem numeri mysterio sunt institutæ, ut totius Ecclesiæ unio, & perfectio, in ipso capite unde omnium Ecclesiarum unitas dimanat, illustris appareret.

§. 3. Quod cum ita sit, sanè non possumus non dolere, numquam ferè nostris quidem temporibus, apud eas, una Vaticana excepta, Pont. Capellas celebrari, cum tamen primarias illas Urbis Basilicas toto terrarum Orbe illustres à Summo Rom. Pont. & sacro Card. Collegio ita interdum adiri debere, ut ibi quod divina Missarum officia solemniter fiant, & ipsarum Ecclesiarum majestas, in quibus divinæ gratiæ redundant, & Pont. officii ratio, & majorum nostrorum exempla id à Nobis omnino requirere, videantur. Notum est enim ex Ecclesiasticæ antiquitatis monumentis, veteres illos S. Pont. prædecessores nostros, in his Basilicis frequenter admodum divina officia, cum Clero & Populo obivisse; quod duorum præsertim Beat. Pontificum quos ob sanctitatem & rerum gestarum gloriam merito magnos appellamus, Leonis & Gregorii sermones complures, divina quadam Spiritus eloquentia pleni, inter ipsa Missarum solemnia ad populum habiti, aperte declarant.

§. 4. Quare cum septem sint, Paschali connumerata, Quadragesimæ Dominicæ & rursus quatuor illæ Adventus, cum Natali, Circumcisione, & Epiphania Domini, septenarii item numerum conficiant, in quibus omnibus celebritatibus Capellæ in Apost. Palatio, aut in Basilica Vaticana, de more fieri solent, decrevimus de consilio Venerabilium fratrum nostrorum, verbo cum eis ea dere in Consistorio nostro secreto maturè facta, ad Dei & Sanctorum gloriam, & Ecclesiarum ipsarum venerationem, ac fidelis populi devotionem augendam, cunctati nostræ nequaquam parentes, sed Pastoralis officii munus exequentes, tametsi gravissimis pro universæ Ecclesiæ curâ, occupationibus distineamur, in eisdem Basilicis solemnes Missarum Capellas facere, uno ex S. R. E. Cardin. Missam celebrante, idque quotiescumque in eisdem Basilicis Capella Pont. fiet, ritu perpetuo observabitur. Sermo item temporis accommodatus ad divinas Sanctorumque laudes prædicandas, & audientium pietatem inflammandam, de more, semper habebitur, ut duplicatio septenarii numeri, sacrosancta sacrificia, & septem capitulum peccatorum veniam, & septiformem S. Spiritus gratiâ Christiano populo à Deo impetrent.

§. 5. Ad quas quidem venerandas Basilicas, ut commodius & decentius adiri possit atque ut in eis frequentius celebrandis populi religio augeatur, jam vias latas & directas patefecimus.

§. 6. Ceterum cum Ecclesia S. Sebastiani Mart. vetustissima illa quidem, & religiosissima, cum propter loci distantiam, tum etiam angustiam, aliæque incommoda, minus idonea sit ad Pont. Missarum celebrationem: decrevimus in ejus locum Ecclesiam S. Mariæ, quæ de Populo dicitur, substituere, non solum amplitudine & loci commoditate opportunam, sed magna etiam Religione venerabilem, sepe enim & pluribus locis ad sanctissimam illam gratiarum Matrem, & misericordiam parentem recurendum est, ut ubi multa illius clementia extant monumenta, precibus nostris invocata, pro populo oret, pro clero interveniat, & pro devoto femineo sexu intercedat. Nec verò Ecclesia S. Sebastiani sua privilegia & indulgentias adimimus, quæ etiam in altera novam Ecclesiam visitatione, quas pia multorum fide-

In quibus antiqui Pontifices divini celebrare solebant.

Hic itaque Pont. ad ipsarum Basilicarum venerationem, & populi devotionem augendam in eisdem Basilicis solemnes Missarum Capellas Pontificales, in futurum celebrari decernimus, uno ex Card. Missam cantante.

Et ideo ad dictas Basilicas vias aperuit, ut dictur etiam inf. in cons. 66. Decret. Et modo in locum Ecclesiæ S. Sebastiani ad hujusmodi celebrationes commodè Ecclesiam S. Mariæ de Populo subrogat.

lium devotio lustrare solet, suo loco atque ordine permanebit. At verò Ecclesiæ S. Mariæ de Populo, eadem ita indulgentias concedimus, quemadmodum nec ulla stationum translatione aut mutatione, in Quadragesima five in Adventu, ceterisque diebus quicquam detrahimus, sed gratias gratis cumulamus, ut apud plures Ecclesias, majore pietatis zelo, Deo, & sanctis ejus honor & cultus tribuatur. Ipsas verò Pontificales Capellas hoc ordine distribui volumus.

§. 7. In Quadragesima, Dominica prima ad S. Mariam de Populo, secunda ad S. Paulum, tertia ad S. Laurentium extra muros, quarta ad S. Crucem in Hierusalem, quinta ad S. Mariam majorem, sexta in Palmis ad S. Petrum, Dominica Paschæ ad S. Joan. in Laterano, ubi populo solemniter benedicimus. In Adventu verò, Dominica prima ad S. Laurentium, secunda ad S. Joannem, tertia ad S. Crucem in Hierusalem, quarta ad S. Paulum, in Natali Domini ad S. Mariam majorem, ad præsepe Domini more antiquissimo, in Circumcisione Domini ad S. Mariam de Populo, in Epiphania ad S. Petrum.

§. 8. Præterea cum festi anniversarii dies adventum, sanctorum illorum, quorum nomine Basilicæ ipsæ Deo dicatæ sunt, apud eas pariter Pont. Capellas faciemus; nimirum in Assumptione B. Virginis ad S. Mariam majorem, de more; in ejus Nativitate ad S. Mariam de Populo, in Inventione S. Crucis ad S. Crucem in Hierusalem, in Natali S. Petri in Basilica ejus Vaticana, in Conversione S. Pauli in ejus Basilica, in Natali S. Jo. Baptiste in Basilica Lateranensi, in die festo S. Laurentii martyris in ejus Basilica extra mœnia. Missam item Annunciationis Beat. semper Virgin. Mariæ, Pont. Capellam faciemus apud Ecclesiam S. Mariæ supra Minervam, dotescque de more pro maritandis puellis distribuimus; in tribus verò celebratibus, hoc est, in die Ascensionis Domini, quo etiam die Rom. Pont. populo solemniter benedicunt, item Pentecostes, & omnium Sanctorum, Pont. Capellæ sicut in Basilica S. Petri; in die verò festo Sacratissimi Corporis Christi post Missam solemnem, quæ de more in Capella Palatini habebitur, erit Pont. processio, & sacrosanctæ Eucharistiæ depositio in eadem Basilica Vaticana; ceteris Festis solemnibusque diebus, Missæ in Capella Palatii Apostolici, de more celebrabuntur.

§. 9. Ut igitur huic sacrum, solemnemque ritum Pont. Capellas apud nobilissimas Basilicas celebrandi, sanctissimorum Pont. prædecessorum nostrorum vestigiis insistentes, & venerandæ vetustatis memoriam renovantes, felicius ac religiosius inchoemus, quarta proxima feria in capite jejunii Ecclesiam S. Sabinae mart. non modò de more superiorum Pont. adibimus, sed Card. Majore Pœnitentiarum, ut mos est Missæ sacrum faciente unâ cum Vener. fratribus nostris S. R. E. Card. in eadem Ecclesia consistemus, sacrosque cineres à Nobis, solemni more, benedictos, supra capita ad pœnitentiæ reificationem spargemus; ac deinde sequentibus Dominicis diebus, ad Basilicas & Ecclesias supra notatas, Missarumque celebrationem cum sacro Card. Collegio, & aliorum Prælatorum præsentia convenimus; idemque suo tempore in Adventu ceterisque festis diebus, Deo auctore præstabilimus. Quem ritum statum atque solemnem, & Nos quamvis disponente Domino vixerimus, perpetuò annis singulis observare statuimus, & à Successoribus nostris servari optamus, ac sanè etiam pro eorum pietate, & rei condecencia speramus.

§. 10. Quod igitur ab omnibus Christi fidelibus acceptabili Quadragesimæ tempore, quod jam adventum, ubique terrarum faciendum est, ut in toto corde suo, in jejuniis, & lacrymis convertantur ad Dominum, id quidem Romæ ubi Religionis est domicilium, ubi sacrarum indulgentiarum thesauri uberius dispensantur, ubi innumerabilem Martyrum, quo-

rum sacra corpora apud Nos magno Dei munere requiescunt, peculiari patrocinio sublevamur, multo certe impensius & devotius faciendum est, atque, ut re ipsa fiat, pro nostra erga hanc Almam Urbem paternæ & præcipuæ charitate, omnes in Domino, etiam atque etiam hortamur, zelo incensum domus Dei, quam decet sanctitudo, Satanæ astutias non ignorantes.

§. 11. Illud quoque vehementius admonemus, ut omnes & singuli stationales Ecclesias, cum omni timore & tremore, ut verè penitentes, castè & piè adeant, nemini dantes ullam offensionem; ne illis in locis, illisque diebus, quibus aliorum temporum culpa, piis operibus & castis jejuniis redimendæ sunt, inter ipsa martyrum sepulchra Deus ad iracundiam magis provocet, sed contra potius hujus Civitatis pœnitentiæ, elemosynis, orationibus, sanctorumque intercessionibus placatus Pater misericordiarum Deus, Nobis & cunctis populis curæ nostræ commendatis (omnes enim unum sunt in Christo) propitius & placabilis efficiatur, & quorum fides Apostolico ore laudata est in universo mundo annuntiatur, eorum etiam modestia & disciplina ad pietatis & sanctitatis exemplum omnibus nationibus proponatur.

Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud S. Petrum, anno Incarnationis Dominicæ 1586. 6. Idus Febr. Pontific. nostri anno 1.

Ego Sixtus Catholicæ Ecclesiæ Episcopus.

Ego Jac. Card. Sabellus Episc. Portuensis
Ego Jo. Anton. Episc. Tuscan. Card. S. Georgii.
Ego Jo. Franc. Card. de Gambara, Prænestin.
Ego M. S. Card. ab Altamps.
Ego Inn. A. valus Card. de Arag.
Ego M. Antonius Card. Columna.
Fr. Michaël Bonellus Card. Alex.
Nic. Card. de Sens.
Jul. Ant. Card. S. Severinæ.
F. Card. Cæsius.
Ego Hier. Card. Rusticucci.
Ego Jo. Hier. Card. Albanus.
Ego Hier. Card. Simoncellus.
P. Card. Deza.
Ego Jo. Ant. Card. SS. Quatuor.
Ego Jo. Bapt. Card. S. Marcelli.
Ego Aug. Card. de Verona.
Ego Vin. Card. Montis Regalis.
Ego Scipio Card. Lancelottus.
Ego Vincen. Card. Gonzaga.
Ego Jo. Bapt. Card. Castrucci.
Ego Fed. Card. Cornelius.
Ego Hippolytus Card. Papien.
Ego Dominicus Card. Pinellus.
Ego Decius Card. Azzolinus.
Ego Hip. Card. Aldobrandinus.
Phil. Vass. Card. Cam.
Alex. Card. Montaltus.

Anno à Nativitate D. N. Jesu Christi 1585. ind. 14. die verò 15. mensis Febr. Pontif. Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Sixti divina providentia Papa V. anno 1. retrospectæ litteræ affixæ, lectæ, & publicatæ fuerunt ad volvas S. Jo. Lateran. & S. Petri Principis Apostolorum de Urbe, neenon Cancellaria Apostolica, & acie Campi Flora, per nos Calistum Brunettum, & Jo. Freile ejusdem S. D. N. Papæ Curæ.

Lauretani Oppidi Provincia Picenæ, in Civitatem sublimatio, ejusque Collegiatæ Ecclesiæ, in Cathedrali & Episcopalem erectio.

Stationalesque Ecclesiæ verò penitentes, & castè, pieque visitent.

D. P. A. 1. die 13. Feb.

Papa subscri.

Cardin. subscriptiones.

Publicatio.

XXIV.

ANNO
1586.
Edita A. D.
1586.

562

SIXTUS QUINTUS.

ANNO
1586.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Summi Pont.
auctoritas E.
piscopales
Eccl. institu-
endi & cau-
sa hujus in
stitutionis.

Laurentan
Eccl. Lau-
des.

Laurentani
Oppidi in
Civitate
sublimatio,
eiusque Ec-
clesia in Ca-
thedralem
& Episc.
erectio.

Pro excellenti praeminentia Sedis Apost. in qua post Beatum Petrum Apost. Principem quamvis propriis meritis, pari tamen auctoritate, constituti sumus, in exiguae militantis Ecclesiae agro, novas Episc. Sedes, Ecclesiasque plantare dignum arbitramur, ut per hujusmodi novam plantam, em, popularis augeatur devotio, divinus cultus effloreat, & animarum salus subsequatur, ac huiusmodi loca dignioribus titulis, & condignis favoribus illustrentur, necnon propagatione novae Sedis, horumque Praefulsi assiduitate & regimine, cum Apostolica potestas in plenitudine, & orthodoxae fidei profectus & exaltatione, Populi ipsi, propositum cis aeternae felicitatis praemium facilius valeant adipisci.

§. 1. Considerantes itaque Oppidum Laurentanum in Provincia Piceni situm nullius Diecefis, Sedi Apostolicae immediatè subiectum, in toto Orbe celeberrimum, & in eo unam insignem collegiatam Ecclesiam sub invocatione B. Mariae Virginis Dei Matris fundatam excellere, in cuius medio inest illud sacrum cubiculum divinis mysteriis consecratum, in quo Virgo Maria nata fuit, & ibidem ipsa ab Angelo salutata, Salvatorem mundi de Spiritu Sancto concepit, ministerio Angelorum illuc translatus, & ad dictam Ecclesiam ob miracula quae in dies Omnipotens Dominus, intercessione & meritis ejusdem B. Mariae Virginis in eodem cubiculo operari dignatur, Christi fideles ex omnibus mundi regionibus, devotionis peregrinationis causa confluerent.

§. 2. Et propterea cupientes, Oppidum & Ecclesiam hujusmodi dignioribus titulis & nominibus decorare, habita super hoc cum Fratribus nostris deliberatione matura, de eorum consilio & assensu, ac de Apostolica potestatis plenitudine, ad ejusdem Omnipotentis Dei laudem & gloriam, & ipsius B. Mariae Virginis honorem, necnon Christi fidelium devotionis augmentum, Oppidum in Civitatem Laurentanam nuncupandam, Ecclesiam verò in Cathedrali, sub eadem invocatione, pro uno Episcopo Laurentano nuncupando, qui jurisdictionem Episcopalem habeat & exerceat in spiritualibus, cum mensa Episcopali, arca, sigillo, aliisque insignibus & honoribus & privilegiis, quibus alii Episcopi, de jure vel consuetudine, aut alias quomodolibet in eisdem spiritualibus utantur, potiuntur, & gaudent, ac uti, potiri & gaudere quomodolibet possunt, Apostolica auctoritate tenore Praesentium, perpetuò erigimus & instituiamus, illaque sic erectas, necnon Episcopum Laurentanum pro tempore existentem, ac ipsius Ecclesiae Capitulum, dictae Sedi immediatè perpetuò etiam subijcimus, & sub protectione Beatorum Petri & Pauli Apostolorum suscipimus. Necnon cum nuperimè unionem olim de Ecclesia Recanateni & Ecclesia Macerateni eadem auctoritate perpetuò factam, de consilio & potestatis plenitudine similibus dissolverimus, & Venerabilem fratrem nostrum Gaudentium Episcopum Maceratensem a vinculo quo dictae Ecclesiae Recanateni cui tunc ratione unionis hujusmodi praerat, tenebatur, absolverimus ac in dicta Ecclesia Recanateni nomen & titulum Cathedralis, necnon Sedem, dignitatem, & mensam Episcopales suppresserimus, ipsamque Ecclesiam Recanatenam in Collegiatam reduxerimus, Civitatem tamen Recanatenam titulum & denominationem civitatis propterea non amisisse, ita ut illius inhabitatores, cives denominari, & privilegiis civium uti possent, decernendo Castrum Ficardi ab Aneonitana, & S. Mariae in Casiano ab Auximana, & Montis Luponi oppida, à Firmana Diecefibus, quibus in spiritualibus subiecta sunt, auctoritate & tenore praemissis, similiter perpetuò dismembramus, dividimus & separamus, illaque sic dismembrata & sepa-

rata, ac eorum incolae & habitatores, ab omni jurisdictione & potestate & subiectione Aneonitan. & Auximan. ac Firman. Episcoporum pro tempore existentium, necnon solutione decimarum eisdem Episcopis per eos debitum, ex tunc de cetero facienda, itidem perpetuò eximimus & liberamus.

§. 3. Necnon ipsa, ac civitatem Recanatenam praedictam, illiusque & Castrum Ficardi, ac oppidorum praedictorum territoria, pro Diecefi dicti Episcopi Laurentani, illos verò, necnon Civitatis Laurentanae Ecclesiasticas personas pro clero, & habitatores pro populo, auctoritate & tenore praemissis, similiter perpetuò concedimus & assignamus.

§. 4. Ac pro Episcopi Laurentani pro tempore existentis, dote, quam summam duorum millium scutorum dictae Provinciae constituere debere declaramus, omnia & singula fructus, redditus, & proventus, iura, obventiones, & emolumenta, in quibuscumque rebus & actionibus, & ubique locorum consistentia & provenientia, & ad quamvis summam ascendenda dictae mensae Episcopalis Recanatae nisi sic suppressae & extinctae, & quae ad illam quomodolibet spectant & pertinent, ac ante illius suppressionem & extinctionem hujusmodi quovis jure spectabant & pertinebant, spectareque & pertinere poterant, necnon Castrum Ficardi, & oppidorum territoriorum hujusmodi decimas Aneonitan. Auximan. & Firman. Episcopis solvi solitas, residuum verò dictorum duorum millium scutorum pro dote dictae Ecclesiae Laurentanae constitutorum hujusmodi, ex tot praediis & possessionibus dictae domus Laurentanae per dilectum filium nostrum Philippum S. Angeli in foro piscium Diac. Card. Vastavillanum nuncupatum, dictae domus Protectionem ejus arbitrio declarandis & assignandis, etiam perpetuò concedimus & assignamus.

§. 5. Necnon in dicta Ecclesia Laurentana, in qua unus Archiepiscopatus, qui ante erectionem hujusmodi inibi principalis existerat, pro uno Archiepiscopo, ac una Praepositura, pro uno Praeposito, ac unus Decanatus dignitates, pro uno Decano necnon duodecim Canonicis, & totidem praebendis pro duodecim Canonicis, ac etiam duodecim Beneficiis, & totidem clericis, nuncupata perpetua similia beneficia, pro totidem personis eisdem Ecclesiae Laurentanae deservientibus, erecta & fundata existunt, unum Archidiaconatum, qui inibi dignitas major post Pontificalem Ecclesiam pro uno Archidiacono, qui in choro & Capitulo ipsius Ecclesiae Laurentanae, ac processionibus aliisque actibus capitularibus primum locum, ac primam vocem, ante obtinentes alias dignitates praedictas habeat, auctoritate & tenore praemissis, etiam perpetuò erigimus & instituiamus. Ac Praeposituram in Primicerium pro uno Primicerio, Decanatus verò dignitatem hujusmodi denominationes, in Thesaurariam, pro uno Thesauro commutamus; necnon Archiepiscopum, secundum pro uno Archiepiscopo, qui secundum, & Primicerium tertium pro uno Primicerio qui tertium ac Thesaurariam quartam inibi dignitates uno Thesauro, qui quartum locum in choro, Capitulo, processionibus & actibus praedictis aut Canonicis praedictis habeant, necnon Canonicatus & praebendas, ceteraque beneficia praedicta, alias juxta collationes & provisiones de illis eorum possessoribus factas, pro Capitulo ejusdem Ecclesiae Laurentanae remanere declaramus.

§. 6. Ac insuper Motu proprio non ad alicujus desuper nobis oblata petitionis instantiam, sed de nostra mera liberalitate Familiae nostrae de Peretis de Monte alto juspatronatus, & praesentandi personam idoneam ad Archiepiscop. praedictum, quoties illum, per obitum aut resignationem, vel alias quovismodo, etiam apud Sedem praedictam vacare contingerit, Episcopo Laurentano pro tempore existentis, per eum ad praesentationem hujusmodi instituendam, auctoritate & tenore praedictis pariter perpetuò reservamus, concedimus & assignamus.

Diecefis de
signatio.

Dotis duo-
rum mill.
scut. pro
Laurentano
Episcopo a
signatio.

Dignitatem
ejusdem Ec-
clesiae distin-
ctio.

Juspatrona-
tus ad praesentandum
Archiepiscop.
reservatio
pro hujus
Pont.

ANNO
1586.
Clausula de-
rogatoria.

SIXTUS QUINTUS.

563 ANNO
1586.

§. 7. Non obstantibus nostra de non tollendo jure questio, ac quibuscumque aliis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon Laurent. Recanaten. Maceraten. Auximan. Anconitan. & Firman. Ecclesiarum praedictarum, juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia, roboratis statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque indultis, & litteris Apostolicis, illis earumque Praefulibus, Capitulis & personis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, necnon irritantibus & aliis decretis, etiam motu simili & consistorialiter, ac alias in contrarium quomodolibet concessis, approbatis & innovatis, quibus omnibus, etiam si pro sufficienti illorum derogatione, de illis, eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, expressa & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi, ac si ad verbum infereretur, Praesentibus pro expressis habentes, illis alias in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresso, ceterisque quibuscumque motu simili derogamus.

Nulli ergo &c.

Dat. Romae apud S. Petrum, anno Incarnationis Domin. 1586. 16. Kal. Aprilis, Pontificatus nostri Anno 1.

D. P. A. 1.
die 17. Mart.

XXV.

Approbatio Congreg. Cleric. Regularium Ministrantium infirmis, in Hospitalibus & extra degentibus. Romae nuper instituta, cum habitus assignatione.

Ista Congreg. sibi Regulam constituit, quam confirmavit, & privilegia concessit Greg. XIV. inf. in ejus cons. 17. Illius. Et eam postea declaravit, & reformavit Clem. VIII. inf. in sua cons. 75. Superna fol. 119. Tom. 3.

Quod Clerici professi in hac Congreg. ad Sacerdotium destinati, possint in Domibus novitiatum, vel aliis distinctis Domibus habitare, & donec Presbyteri ordinentur, ac illarum perpetuis redditibus vivere, indulsit Sanct. D. N. Urbanus VIII. ut in cons. 10. *Sacrosancta.* inf. in tom. 4. Et de electione Praefecti Generalis, Consultorum, & Arbitri horum Clericorum statuit in alia cons. 75. *Romanus.* d. tom. 4.

SIXTUS PAPA V.

Ad perpetuam rei memoriam.

EX omnibus Christianae charitatis officiis, quibus aeterna salus per gratiam Dei comparatur, illa Redemptori nostro J. C. vel maxime placere credimus, per quae pauperes Christi infirmi, & Hospitalibus existentes, in necessitatibus suis spiritualibus & corporalibus adjuvantur. Quod genus officii dilectus filius Camillus de Lellis Presbyter Theatinae Diocesis & alii ejus socii, quam Deo gratum, & salutis animarum necessarium esse intelligentes, hinc diebus erga pauperes Christi, in Hospitalibus Urbis nostrae existentes, non minori affectu, quam mater erga quem unice educavit filium demonstrant, quotidie hoc modo cum omni qua decet mansuetudine & charitate ad patientiam, alios ad sacramentorum Ecclesiarum susceptionem sacramento, alios in articulo mortis confutatos consolando, & denique ad bene moriendum die noctuque hortando demonstrant non cessant. Idemque praestare intendunt, tempore etiam, quod absit, pessimientie.

§. 1. Hi itaque Camillus & socii, infirmis & in comuni sub paupertate, castitate & obedientia, ita tamen, ut voto adstricti non sint vivere, & Altissimo ac ejus pauperibus famulari, proponentes, unam inter se Societatem seu Congregationem, sub vocabulo seu nomine Ministrantium infirmis, cujus principale

institutum est, speciali quodam charitatis fervore, infirmis praedictis inservire, sub nostro & Sedis Apostolicae beneplacito inierunt, sperantes ex hoc multis incommodis & periculis, in quae saepenumero dicti infirmi ob defectum talium ministrorum inciderunt, obviam iri, ac salutem animae & corporis multaque Christi fidelibus commoda parari.

§. 2. Nos eorum supplicationibus inclinati, ac de hujusmodi pio proposito, & vivendi modo, quo ipsi intendunt uti, plene, etiam ex relatione dilectorum filiorum nostrorum S. R. E. Card. super consultatione & causis Episcoporum ac regularium, ac visitatione Apost. deputatorum informati, ex certa nostra scientia, Congreg. sub vocabulo seu nomine Soc. Ministr. infirmis, per unum majorem Ministr. seu Superiorem (qui Presbyter esse, ac per eandem Congreg. de triennio in triennium per majorem partem suffragiorum eligi debeat) regendam & gubernandam, Apost. auctoritate tenore praesentium perpetuo approbamus & confirmamus, suppleantes omnes & singulos, tam juris quam facti defectus, si qui intervenerint in eisdem.

§. 3. Et quia dicta Congreg. proprietate rerum temporalium carere instituit, Nos pariter Camillo & praetatis, ac pro tempore existentibus ipsius Congreg. sociis, & alijs ab eis deputatis & deputandis, quod elemosinas ubicumque, praeterquam intra Ecclesias, Monasteria & pia loca, colligere, ac in dicta Congreg. communes usus convertere, Vicarii Urbis, seu cujusvis alterius licentia desuper minime requirita. Dictaque pietatis opera erga quoscumque infirmos, in quibuscumque Hospitalibus, seu aliis dictae Urbis locis à dictorum Hospitalium, seu locorum praefectis, vel administratoribus vocati, seu de eorum licentia vel consensu exercere, ipsique Superior vel major Minister, qui ut praefertur, Presbyter esse debet, & alii ejusdem Congreg. Presbyteri, dummodo alias sint idonei, & ab Urbis Vicario approbati, infirmorum & agrotantium, in dictis hospitalibus & locis existentium confessiones audire (sine praedictio eorundem Hospital. aut locorum, vel eorum Officialium, seu administratorum) liberè & licitè valeant, tenore praesentium facultatem concedimus & indulgemus. Ita tamen, ut tam Superior quam alii dictae Congregat. socii, ipsius Congregat. instituta, & ordinationes jam factas & pro tempore faciendas, (dummodo illa, quamdiu ab Apostolica Sede approbata non fuerint per ipsius Congregat. Protectorem revisa & approbata sint) in communi, ex dictis piorum elemosynis vivant.

§. 4. Non obstantibus quibuscumque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis; ceterisque contrariis quibuscumque.

Dat. Romae apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 18. Martii 1586. Pontificatus nostri anno 1.

Sequitur assignatio Habituum.

SIXTUS PAPA V.

Ad perpetuam rei memoriam.

Cum nos nuper &c. ut supra. Ipsique Camillus & socii pro feliciore dictae Societatis, seu Congregationis directione pie desiderant, sicuti eorum institutum ab aliis distinctum est, ita eorum habitum ab aliis distingui.

§. 1. Nos tenores dictarum Litterarum Praesentibus pro-expressis habentes, de consilio dilectorum filiorum nostrorum S. R. E. Card. super statu Regularium dicta auctoritate deputatorum, Camillo & aliis praedictis, ac pro tempore existentibus Superiori, & personis dictae Congregationis, Crucem ex crassiori panno fulvi coloris, (qui vulgo Tane appellatur) super eorum vestibus à latere dextero perpetuo deferendi licentiam & facultatem,

Confirmatio dictae institutionis.

Licentia elemosynas colligendi in Urbe, ministrandique infirmis & audiendi eorum confessiones &c.

Clausula derogatoria.

D. P. An. 1.
die 18. Mart.

Edita A. D.
1586.

Peritio Habituum.

Habitus concessio.

Ad hoc vid. Bullas in rubricis.

auto-

editio con-
tationis à
aps.

instituto So-
cietatis Mini-
strantium
infirmis.

Derogatio
contratio-
rum.Dat. P. A. I.
die 26. Juni.

XXVI.

Edita An. D.
1586.Causa hujus
confirmatio-
nis Bullæ
Pii V.Confirmatio
ejusdem Bul-
læ editæ à
Greg. XIII.Confirmatio
dictæ consti-
tut. Pii V. nunc
editur ab if-
to Pont.D. P. An. I.
die 18. Mart.

Publicatio.

XXVII.

auctoritate Apostolica tenore Præsentium concedi-
mus.§. 2. Non obstantibus quibuscumque constitutionibus
& ordinationibus Apostolicis, ceterisque contrariis
quibuscumque.Dat. Romæ apud S. Petrum, sub Annulo Piscato-
ris, die 26. Junii 1586. Pontific. nostri anno 2.Confirmatio constitutionis Pii V. de non infeudan-
dis & alienandis Castris & locis S. R. E.*Hanc const. Pii V. habes sup. Admonet. ubi ejus exten-
siones & declarationes tibi indicavi. Et hic Pont. die
16. Jan. 1589. ex decreto in Consistorio habito, (quod
hic ponere non curavi) declaravit sub d. Bulla Pii
V. comprehendit etiam gubernia locorum Sedis Apost.
ultra triennium, affirmans idem statuisse Greg. XIII.*

Vide addita ad const. I. Leon. I. sup. tom. I. pag. 6.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Quanta Apostolicæ Sedis dignitati detrimenta,
& ejus subditis incommoda ex Civitatum, Ter-
rarum, & locorum Status Ecclesiastici districtione
obvenerint, assidua mentis nostræ cogitatione revol-
ventes, Pastoralis sollicitudinis Nobis divinitus com-
missæ zelo urgeamur illorum conservationi solertio-
ris diligentia studio incumbere, & quæ propterea à
Prædecessoribus nostris maturo consilio, ac optima
ratione sunt facta, approbationis nostræ robore
communire. Aliàs siquidem à fel. rec. Pio Papa V.
prædecessore nostro, emanarunt litteræ tenoris sub-
sequentis. Hius Episcopus &c.

Omittitur tenor hujus constit. quia habetur supra fol. 166.

§. 1. Et deinde pie memoriæ Gregor. Papa XIII.
etiam prædecessor noster, litteras prædictas, Aposto-
licæ auctoritate approbavit & confirmavit, prout in
ipsius Gregorii prædecessoris litteris desuper con-
fectis plenius continetur.§. 2. Quocirca ne Litteræ Pii prædecessoris hu-
jusmodi labentis temporis cursu valeant labefactari,
sed eo validius subsistant, quo multiplici firmitatis
vinculo sæpius fuerint stabilitæ, vestigiis ipsorum
prædecessorum inherendo easdem litteras Pii V.
prædecessoris, & in eis contenta quæcumque ex cer-
ta scientia nostra auctoritate prædicta tenore Præ-
sentium approbamus & confirmamus, ac etiam inno-
uamus, eisque inviolabilis firmitatis robur obtinere,
ac perpetuo observari debere volumus & mandamus.
Nulli ergo &c.Dat. Romæ apud S. Petrum. Anno Incarnationis
Dom. 1586, 15. Kal. Aprilis, Pont. nostri anno 1.*Anno à nativitate D. 1586. indict. 14. die verò 1.
mensis Aprilis, Pont. Sanctiss. in Christo patris, &
D. N. D. Sixti divina providentia Papa V. anno primo
retroscriptæ litteræ affixæ, lectæ, & publicatæ
fuerunt, & per aliquod temporis spatium dimisse in
vallis seu portis Basilicarum S. Joan. Lateranensis,
& S. Petri Principis Apostolorum de Urbe, necnon
Cancellariæ Apostolicæ per nos Cathedralium Menan-
di, & Nicolaum Taglietum S. D. N. Papæ Curf.*

Alex. Parabiæ. Mag. Curf.

XXVII. Annuorum redituum concessio Archiepiscopatus
Beate MARIE Virginis Confalonis de Ur-
be, nuncupatæ, cum facultate ubique elemo-
synas colligendi, ad Christianorum redemptionem
ab infidelium captivitate.*Hoc piissimum redemptionis opus huic Archiepiscopatus
nati delegavit Greg. XIII. ut in sua const. 69. Chri-
stianæ. Et alia quæ eandem concernunt Archiepiscopatus
fraternitatem, attende sup. in ejusdem Greg. const.
38. Pastoris.*

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Um benigna mater Ecclesia filios suos, qui in
teterima infidelium captivitate constituti, non
solum corporum, sed etiam animarum discrimen pa-
tiuntur, adeo intimis misericordiae suæ in visceribus
complectatur, ut pro illis in libertatem reducendis,
facultates suas libenter exponat, sacrificque rebus &
præciosius vasis materna liberalitate non pareat. Nos
qui ipsius Ecclesiæ administrationem curæ nostræ di-
vina dispositione commissam gerimus, magnopere
adstrictos esse cognoscimus, ut eorumdem Capti-
vorum, qui in baptismatis fonte Christum induerunt,
templumque, Dei facti sunt, miserandis ca-
lamitatibus & tormentis, quibus in odium Christi-
anæ nominis sævissimè excruciantur condolentes, il-
lorum libertatem dilectione ac religione ipsa pro-
curamus, & quæ propterea pie facta fuisse compe-
rimus, ut firmiora perdurent, confirmanda & inno-
vanda fore censeamus; ac ne tam pium opus quod
ceteris corporalibus misericordiae operibus antecel-
lit, & in quo non ferè omnia quasi per compendium
simul exercentur, necessariis subsidii defecerit opera-
rias manus interponendas, Christi quæ fidelibus a-
gros uberes, in quibus charitatis semina mittant,
messim in regno colorum amplissimam expectatu-
ri, toto cordis affectu offerendos esse judicavimus,
illos spiritualibus muneribus, indulgentiis videlicet,
& peccatorum remissionibus invitantes, ut ad
tantæ & tam salutaris operationis exercitum vehe-
mentibus excitentur, promptioresque reddantur, &
piis eorum elemosynis redempti, gratiarum Deo
referant actiones.

§. 1. Dudum siquidem fel. rec. Gregorius Papa
XIII. prædecessor noster, qui miserorum Captivo-
rum, & præsertim eorum, qui suæ & Sedis Apostoli-
cæ temporali ditioni subiecti erant oppressionibus, ac
languescere carnis infirmitate, ac verbi Dei prædi-
catione, & sacramentorum solatio destituti, despera-
tionis succumbentes, ad suscepi in baptismi fidei
desertionem (uti non raro, proh dolor, solet contin-
gere) inducerentur, succurrere volens, redimendo-
rum Captivorum opus jam diu in alia Orbis loca dis-
fusus, etiam in Alma Urbe salubriter instituit, illius-
que onus universum, quod magnum esse intelligebat,
curæ & sollicitudini venerabilis Archiepiscopatus Con-
falonis Gloriosissimæ Virg. MARIE, antiquitate &
nobilitate virorum copia admodum insignis, Motu
proprio imposuit, ad hoc ut ipsa Archiepiscopatus
Custodes & Confratres, pro tempore existentes, quo-
cumque Christi fideles dictæ Urbis, ac Provinciarum,
Civitatum, Terrarum & locorum dictæ ditioni me-
diatè & immediatè subiectorum, in dira infidelium ser-
vitate detentos redimerent, elemosynas & oblata
quæcumque, in omni loco eidem ditioni ut præfatur
subiecto, quærerent & acciperent, prout in ejusdem
Prædecessoris litteris desuper confectis plenius continetur.§. 2. Cùm autem, sicut accepimus dilecti filii
Magister Hieronymus Avila Juris utriusque Doc-
tor, litterarum Apostolicarum Corrector & Ab-
breviator, ac in utraque Signatura nostra Referen-
darius & Præfatus noster domesticus, Paulus Mat-
thæus, Carolus de Maximis, & Ulysses Lancerinus
Patritii Romani, moderni ipsius Archiepiscopatus
Custodes, & alii Confratres maximo pietatis zelo
ducti in hujusmodi tam pio opere se pro viribus ex-
ercere intendentes, ac eorumdem Captivorum ne-
dum liberationem, sed etiam spiritalem consolationem.Edita A.
1586. & c.

Proemium

Greg. XIII.
Redimen-
dorum cap-
tivorum sta-
tus Eccl. Ie-
ti i opus in
Urbe insti-
ruit. & Ar-
chiepiscopatus
nati Confalonis
com-
mittit, ut in
Bulla chi
in rub.Que sedulo
tam pio o-
peri funder
copit.

nem & animarum salutem querentes, Redemptores inter quos duos Ordinis Fratrum Minorum Capucinarum nuncupatorum professores, qui non solum Captivos redimerent, sed illos spiritualiter eorum confessiones audiendo, & sacramenta Ecclesiastica illis ministrando juvare, afflictis solatium præbere, debiles in fide consolidare, dubios & vacillantes confirmare, & eos qui doctrina indigerent erudire, ac denique ubi majus periculum immineret, ibi sese diligentiores Christi ministros exhibere possent & deberent, Aligerum de ipsius prædecessoris licentia miserunt. Illi autem profecti, ac de eorumdem Captivorum libertate, & animarum salute solliciti, verbo & exemplo eos illuminantes, multa, ad proximorum utilitatem & edificationem, ac fidei Catholicae exaltationem, Domino cooperante, in medio nationis prave & perversæ fecerunt, qui demum pestis contagione affecti cum maximo Captivorum gemitu & dolore ac lacrymis, obdormiverunt in pace.

§.3. Nos igitur, illius qui sui preciosissimi sanguinis effusione genus humanum de manibus adversarii querentis quem devoret, eripere dignatus est, exemplo edocti, ac de Statu filiorum, more pii patris cogitantes, cupientesque ut hujusmodi Redemptionis opus, etiam in Urbe, & toto Statu Ecclesiastico hujusmodi fide feliciter inciperet, ab eisdem Custodibus & Confratribus in Domino provehatur, ipsique Custodes & Confratres, Redemptores ac alios Religiosos ad eandem infidelium partes proficisci faciant, ne filii Status Ecclesiastici in servitute degentes, qui alios conceptivos de tenebris & umbræ mortis educi quotidie vident, se solos ibi perpetuæ oblivioni traditos & derelictos existant, Custodes & Confratres prædictos, eorumque singulos à quibusvis excommunicationis, suspensionis & interdicti, aliique Ecclesiastici sententis, censuris & penis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet ingodati existant ad effectum præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, ac litterarum Gregorii prædecessoris, hujusmodi tenores etiam veriores, Præsentibus pro expressis habentes. Motu proprio, non ad Custodum & Confratrum prædictorum, seu alicujus eorum, aut alterius pro eis Nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed ex mera liberalitate, ac scientia nostris, deque Apostolica potestate plenitudine, Institutionem & erectionem Redemptionis Captivorum hujusmodi per eundem Prædecessorem, ut præfatur factas, Apostolica auctoritate, tenore Præsentium approbamus & confirmamus illisque perpetuæ firmitatis robur adjuicimus, ac omnes & singulos, tam juris quam facti defectus, si qui intervenerint in eisdem, supplemus, Et nihilominus hujusmodi opus Redemptionis Captivorum, in dicta Urbe, totoque Statu Ecclesiastico, ut præfatur, mediât & immediât subiecto, quod Redemptio Captivorum Sedis Apostolicæ, & Status Ecclesiastici, mediât & immediât subiecti Archiconfraternitatis Confraternitatis nuncupetur, de novo auctoritate & tenore prædictis perpetuò erigimus & instituiamus.

§.4. Illudque sic erectum & institutum solerti curæ & sollicitudini ejusdem Archiconfraternitatis, quam singulari dilectione prosequimur, & ejus Confratres laudabiles charitatis effectus continuo producere non cessant, committimus & demandamus. Ita quod ipsius Archiconfraternitatis, nunc & pro tempore existentes, Custodes & Confratres, ac ab eis deputati, quocumque Christi fideles ejusdem Status, in infidelium servitute detentos redimere, & propterea in dicta Urbe ac omni, & quocumque alio loco dictæ ditioni mediât, & immediât subiecto, elemosynas, & oblata quæcumque quærere, & accipere.

§.5. Ac ad id Quæstores probos quot eis videbitur deputare, qui elemosynas, oblationes, legata, & quæcumque alia subsidia hujusmodi in toto Statu prædicto, ut præfatur, subiecto, pro hujusmodi Re-

demptione, & causis ad eam pertinentibus perquirant, pecuniaque inde congerendas penes publicum mercatorem, fide, & facultatibus idoneum, deponant, donec illæ in redemptionem Captivorum hujusmodi arbitrio ipsorum Custodum, & Confratrum erogentur, liberè & licitè possint & valeant.

§.6. Volentes, & ita decernentes, quod tam in dicta Urbe, quàm in quibusvis Provinciis, Civitatibus, Oppidis, castris, & locis ipsi ditioni, ut præfatur subiectis, nulli etiam Sanctissimæ TRINITATIS, ac beatæ MARIE de Mercede Redemptionis Captivorum, seu aliorum quorumvis Ordinum professores, seu quicumque alii etiam prætextu quorumcumque privilegiorum, & indultorum Apostolicorum, ac quorumvis aliarum concessionum, gratiarum, eisdem seu quibusvis aliis Ordinibus vel personis quomodolibet concessorum, & pro tempore concedendorum, tam pro Redemptione generali quàm particularium personarum, elemosynas seu etiam sponte oblata, aut alias quærere quomodolibet & accipere ullo modo possint, neque debeant, præfati tamen Sanctissimæ TRINITATIS professores, in Urbe ac toto Statu Ecclesiastico, ut præfatur, subiecto hujusmodi, in illis locis in quibus eorum Ordinis regulares domos habent, & pro tempore habebunt, ad eorum victum necessaria tantum nullâ tamen Redemptionis Captivorum factâ mentione, in aliis verò civitatibus & locis extra dictum Statum, ut præfatur, mediât & immediât subiectum, etiam elemosynas pro Captivis redimendis petere, & accipere valeant privilegiorum suorum vigore, quibus ac aliis iuribus, & actionibus & præsertim ratione Monasterii, & Hospitalis Sancti Thomæ in Formis in monte Celio, ac Ecclesiæ, & domus sancti Stephani in Trullo de dicta Urbe eidem Ordini competentibus, quoad hoc nullo modo præjudicare intendimus, auctoritate & tenore prædictis etiam perpetuò statuimus & ordinamus. Districte inhiibentes prædictorum ac quorumvis aliorum Ordinum professoribus & aliis quibusvis personis, etiam quantumvis privilegiatis, ne elemosynas, & oblata, sive legata pro redemptione Captivorum, in Urbe ac toto Statu Ecclesiastico, ut præfatur, subiecto hujusmodi Redemptionis opere quomodolibet se intrinicare audeant seu præsumant.

§.7. Insuper pro majori ipsius Redemptionis subventionem, ex omnibus, & quibusvis facultatibus seu licentiis testandi de bonis Ecclesiasticis, quibusvis personis per Nos, & Sedem prædictam quomodolibet concedendis (non tamen S.R.E. Cardinalibus, nec aliis quibus similes facultates, gratias, & abbasque alicujus compositionis solutione de mandato nostro, & pro tempore existentis Rom. Pontificis concedentur) ducatum unum auri in auro pro quolibet centenario. Si verò hujusmodi facultates fuerint usque ad quæcumque summam, solvatur similiter ducatus unus pro quolibet centenario, habita ratione compositionis Datario pro tempore esistenti perfolvendæ. Ac pro singulis absolutionibus ab homicidii reatu, tam in Dataria nostra, seu per Breve expedientis, quàm toto Statu Ecclesiastico immediât subiecto, à quibusvis Legatis, Vicelegatis, vel Gubernatoribus, quibusvis personis quomodolibet concedendis, etiam gratis concedantur, ducatos duos similes, Necnon pro singulis concessionibus, seu licentiis, alienandi vel permutandi bona Ecclesiastica, seu illarum confirmationibus, quibusvis personis quomodolibet concedendis, quorum honorum annuus redditus valorem quinque ducatorum similium non excedat, ducatum unum, si verò eundem valorem excederint ducatos duos, Ulterius pro singulis plumbis omnium, & quorumcumque Litterarum Apostolicarum sub plumbo, tam per Cancellarium, vel Cancellarium, aut viam secretam, quàm per minoris gratiæ, & contradictarum officia quomodolibet, etiam gratis expediendarum, julium unum monetæ currentis eidem Archiconfraternitati, ita ut illius Custodes &

fieri, ad colligendum elemosynas pro dicta Redemptione indulget.

Fratribus Sanctissimæ Trinitatis, & aliis ne elemosynas hujusmodi Statu Ecclesiastico quærere vel recipient prohibet.

Reditus expeditionum hic descriptarum eidem Archiconfraternitati assignat.

ab eis deputati pro tempore existentes, taxas. ac julium hujusmodi à quibuscumque personis, illas, & illum, nunc, & pro tempore habentibus, seu solvere debentibus, propria auctoritate exigere, ac de exactis quietare, & in Captivorum Sedis, & Status prædictorum Redemptionem convertere, liberè & licitè valeant etiam perpetuò auctoritate, & tenore prædictis, gratiosè concedimus, & elargimur. Necnon taxas & julium hujusmodi ex nunc eidem Archiconfraternitati similiter perpetuò applicamus, & approbamus, ac applicatas, & applicatum, necnon appropriatas, & appropriatum fore, & esse volumus atque decernimus. Diligentiè præcipientes modernis, & pro tempore existentibus Datario, Secretariis, plumbatoribus, ac etiam tam in Dataria quam Secretaria, & plumbo nostris Officialibus, expeditoribus, Legatis, Vicelegatis, vel Gubernatoribus prædictis, illisque in virtute sanctæ obedientiæ mandantes, ne supplicationes, Motus proprios, Brevia, seu alias patentes litteras super facultatibus testandi, absolutionibus, licentiis alienandi, seu illarum confirmationibus, aut alias quascumque litteras Apostolicas hujusmodi expendant, seu partibus relaxent, nisi prius integrè eidem Archiconfraternitati de illis secundum præmissa satisfactum fuerit. Aliàs gratiæ ipsæ nullius sint roboris, & nihilominus ipsi Officiales, expeditores, plumbatores, seu ministri, taxas, & julium hujusmodi eidem Archiconfraternitati, ut præferatur, debitas, & debitum de eorum proprio solvere teneantur & obligati existant.

Bonorum etiam emphyteuticæ dispositiones ad favorem Archiconfraternitatis pro hac Redemptione fieri possit declarat.

§. 8. Necnon ut quæcumque, & quacumque bona etiam emphyteutica eidem Archiconfraternitati pro Redemptione Captivorum, prædictorum tam inter vivos quam mortis causa, seu testamento, vel codicillis dari, concedi, seu relinquere liberè possint, dummodo ipsa Archiconfraternitas ad eadem onera, ad quæ donator, seu testator hujusmodi occasione bonorum eorumdem tenebatur, & quæcumque alia quæ ipse donator seu testator etiam imposuerit omnino teneatur. Et si ad ceterum numerum generationum aut nominationum eadem bona concessa fuerant ipsa Archiconfraternitas, non perpetuò, sed per viginti annos pro qualibet generatione seu nominatione hujusmodi bona prædicta tenere, illaque locare, & dislocare, ac illorum redditus in Redemptionem Captivorum hujusmodi convertere posse, quæ finitis ipsis annis ad eorum directos dominos devolvantur, etiam perpetuò statuimus & ordinamus.

Legata in Statu Ecclesiasticis (non tam pro alia qua certa persona, seu regulari loco) pro Redemptione captivorum prædicta applicat.

§. 9. Declarantes, quod quæcumque legata, & alia dispositiones pro redemptione Captivorum à quibuscumque personis, tam in Urbe quam in toto Statu Ecclesiastico mediatè & immediatè subiecto, non tamen in favorem certæ personæ, seu alicujus regularis loci, vel S. TRINITATIS, aut beate MARIE de Mercede Redemptionis Captivorum Ordinum hæcenus facta, & non soluta, & pro tempore quomodolibet faciendi, censeantur, & intelligantur, facta fuisse, & esse ad favorem Redemptionis Captivorum Sedis, & Status prædictorum illaque ab eis ad quos spectat, & pro tempore quomodolibet spectabit Custodibus, seu ab eis deputatis prædictis ad effectum præmissorum realiter & absque alia exceptione solvi omnino debeant.

Ecclesiasticis personis (tertiam partem Archiconfraternitati soluta) usque ad summa trecentorum ducatorum sin illam in ejusdem Archiconfraternitatis pro ipsa redemptione, seu in aliarum quarumcumque, etiam extranearum (non tamen incapacum, & de jure prohibita) personarum favorem disponere, ipsaque bona usque ad istam summam, tam ex testamento quam donatione inter vivos, aut alia quavis dispositione Archiconfraternitati, seu personis prædictis reliquere, dum-

modo si in aliorum, ut præferatur, quam in ipsius Archiconfraternitatis favorem disponent, tertiam partem dictorum bonorum ad eandem Archiconfraternitatem deveniat, alias dispositiones hujusmodi nullæ sint eo ipso, licentiam, & facultatem impartimur.

§. 11. Præterea eidem Archiconfraternitati, illiusque Custodibus, seu ab eis deputatis, quod in quibuscumque Cathedralibus, etiam Metropolitans, Collegiatis, Parochialibus, & aliis quibuscumque secularibus, & quorumvis Ordinum Regularibus Ecclesiis, ac in quibuscumque Maritimis, & aliis Portibus, tam dictæ Urbis, quam Provinciarum, Civitatum, oppidorum, Castrorum, & locorum quorumlibet totus Status Ecclesiasticus, mediatè & immediatè subiectis, capsa pro colligendis fidelium elemosynis pro ipsa Redemptione tenere, & manutene. ac à dilecto filio moderno, & pro tempore existente nostro Vicario in spiritualibus generali in dicta Urbis illiusque districtus, ac ab aliis locorum Ordinariis, illorumque Vicariis, & Officialibus, in eorum Civitatibus, & Diocesium Ecclesiis, secularibus, & quorumvis Ordinum Regularibus, etiam quantumcumque, privilegiatis, & exemptis, necnon à Gubernatoribus, & aliis Officialibus, & ministris, in dictis portibus, ac aliis bene visis locis, contradictione seu reclamacione quibuscumque, postpositis, perpetuò manuteneri facere liberè valeant, ipsique locorum Ordinarii, ac nos, & eorum Vicarii, & Officiales, Gubernatores, & ministri omnino debeant, & teneantur, nec super præmissis dicta Archiconfraternitas, illiusque Custodes, & Deputati prædicti ab aliquo quovis prætextu impediri possint, etiam perpetuò coarctentur, & indulgentur.

§. 12. Hortamur denique, & per Redemptionis humani generis sacramentum obtestamur universos, & singulos Archiepiscopos, Episcopos, Abbates, Priores, & alios Ecclesiarum Prælatos, necnon Rectores Parochialium Ecclesiarum, ac rostrum in dicta Urbe, illiusque districtu eorumque Vicarios & Officiales, ac ceteras Ecclesiasticas, & seculares, & quorumvis Ordinum regulares personas, nunc, & pro tempore existentes, quatenus huic operi favent, illudque per seipsos, vel alium, seu alios, etiam adhibitis verbis Dei concionatoribus in suis quicunque Ecclesiis, plateis, & locis, ac ubicumque populus fuerit, etiam sæpe, & sæpius, ac quoties pro parte Custodum prædictorum, seu ab eis deputatorum, aut alicujus eorum requisiti fuerint, omnibus Christi fidelibus perscrutentur, & atque denuncient, illisque ad conferendum elemosynas, oblationes, & legata prædicta, omni studio, & charitate accendant, & efficacibus hortationibus inducant.

§. 13. Et insuper supra dictos omnes locorum Ordinarios, ac alios jurisdictionem exercentes, vehementer suademus, quod aliquam portionem pecuniarum delinquentibus imponendarum tam pio operi applicant, ut miseris & afflictiis Captivis, quorum animarum periculum imminet copiosius succurratur. Ceterum ut plium hoc opus salubribus institutis dirigatur, Custodibus & Gubernatoribus prædictis quæcumque statuta, ordinationes & decreta, licita & honesta, ac sacris Canonibus & Concilii Tridentini decretis non contraria, ac ab eodem nostro Vicario approbata ad faustum & incolumem statum ipsius operis ritè & rectè instituendum condere ac condita quoties opus fuerit mutare & alterare alique de novo etiam ab eodem nostro Vicario approbata edoce, ceteraque in præmissis quomodolibet necularia & opportuna facere, exequi & exercere, licentiâ tribuimus & facultatem.

§. 14. Ut autem tam ipsius Archiconfraternitatis, illique aggregatarum & pro tempore aggregandarum Confraternitatum utriusque sexus Confratres, nunc & pro tempore existentes, quam alii Christi fideles in hujusmodi instituto alacris persistant, quo ex hoc dono celestis gratiæ contingerint se esse resectos, de Omnipotentis Dei misericordia, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus auctoritate consili, omnibus & singulis Archiconfraternitatibus, & aliis ei aggregatis Confraternitatibus ceterisque personis respectivo concedit.

Causas colligendum elemosynarum in Saru Ecclesiis deputandi facultatem d. Archiconfrat. concedit.

Quirimo etiam extra Statum ut hic inf. sequitur.

Ordinarios & alios hortatur, ut huic operi favent.

Penasq. delinquentes in aliqua parte huic operi applicant.

Statuta concedi licentia tribuit.

Indulgentias huiusmodi expressis Archiconfraternitatibus & aliis ei aggregatis Confraternitatibus ceterisque personis respectivo concedit.

Quoad indulgentias vide quod notavi in rub. conit. 38. Greg. xiii. Fallotis.

Clausula præservati-
va.

ternitatis, & Confraternitatum prædictarum Confratribus, ac aliis utriusque sexus Christi fidelibus, qui Orationi quadraginta horarum quandoque ab eadem Archiconfraternitate & singulis Confraternitatibus prædictis haberi contigerit, vere poenitentes & confessi, ac sacra communione rectè devotè interfuerint, & ibi pro S. Matris Ecclesie exaltatione, Captivorum in fide Catholica constantia, ac huius instituti progressu & augmento, pias ad Deum preces effuderint, bis in anno quolibet, plenariam omnium & singulorum peccatorum suorum indulgentiam, & remissionem misericorditer in Domino concedimus & largimur. In aliis verò vicibus, quibus huiusmodi oratio habebitur, centum annos. Ac tam Archiconfraternitatis, quam singularum Confraternitatum prædictarum Confratribus, & aliis utriusque sexus Christi fidelibus, qui captivis prædictis, dum ad Urbem veniunt processionaliter obviam invierint, vel illos ad visitandum limina Apostolorum, aut aliam dictæ Urbis Ecclesiam pro gratiarum actione eorum liberationis processionaliter comitati fuerint, vel ipsas processiones, seu earum alteram allociaverint, & ut præfertur oraverint, pro qualibet processione huiusmodi, decem annos & totidem quadragenas. Necnon, tam Confratribus quam aliis Christi fidelibus prædictis, qui in hoc negotio operam suam quoque modo posuerint, quocumque die quo id fecerint, etiam decem annos, & decem quadragenas. Illis verò, qui eosdè captivos, tam in itinere post eorum liberationem, dum omnes simul ad Urbem veniunt, quam in ipsa Urbe hospitio exceperint, ac fraterna in Domino charitate tractaverint & adjuverint, illisq; inservierint, quoties id fecerint, similiter decem annos & totidem quadragenas de iunctis his, aut aliis quomodolibet debitis poenitentis, etiam misericorditer in Domino relaxamus.

§. 15. Præsentibus, quas sub quibuscumque similibus vel dissimilibus gratiarum, concessionum & indulgentiarum revocationibus, limitationibus, suspensionibus, derogationibus, ac aliis contrariis dispositionibus, quavis auctoritate, etiam per Nos & pro tempore existentes Romanos Pontifices successores nostros, ac Sedem eandem, aut alias ex quacumque quantumvis urgentissima aut necessaria causa, etiam in favorem Fabricæ Basilicæ Principis Apostolorum de dicta Urbe, Cruciatæ Sanctæ, vel expeditionis contra infideles, ac etiam Motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, in genere vel in specie, & aliis quomodolibet factis & emanatis nullatenus unquam comprehensas, sed semper illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum & validissimum statum restitutas, & plenarie reintegratas, ac de novo etiam sub posteriori data per pro tempore existentes ipsius Archiconfraternitatis Custodes eligenda, concessas fore & esse ac censeri. Ipsisque Custodibus & Confratribus, ac aliis supra dictis suffragari debere decernimus perpetuis futuris temporibus duraturis, etiam ipsi Archiconfraternitatis, & singulis Confraternitatibus, ac aliis fidelibus prædictis pro præmissis peragendis, aut alias aliqua alia indulgentia, perpetuò vel ad tempus nondum elapsum duratura, per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac Nos & Sedem eandem concessa fuerint. Et ne præsentibus Litteræ sub revocationibus, limitationibus, suspensionibus, derogationibus, ac aliis dispositionibus prædictis comprehendantur, ipsique Custodes & Confratres, ac ab eis Deputati super præmissis, aut eorum aliquo, à quoquam molestentur seu perturbentur, easdem Præsentibus nullumquam tempore, etiam ad quorumvis instantiam ex quacumque causa revocari, suspendi, alterari, limitari, aut ad iuris terminos reduci, vel illos contra eas in iuribus restitui, neque easdem Litteras, de subreptionis vel obreptionis aut nullitatis vitio, seu intentionis nostræ, vel quovis alio defectu notari posse, nec causam seu causas, propter quam, seu quas illæ emanarunt, eorum locorum Ordinarios, etiam tamquam à dicta Sede delegatis, vel

aliis quibuscumque Iudicibus verificari debere, neque propterea, aut ex eo quod interesse habentes, seu prætendentes ad hoc vocati non fuerint per subreptionem obtentas præsumi, & viribus carere.

§. 16. Sicque per quoscumque Iudices ordinarios & delegatos, quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Cardinales, sublati eis & eorum cunctis quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, ubiq; iudicari & definiri debere, irritum quoque & inane, quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari decernimus.

§. 17. Et nihilominus venerabilibus fratribus nostris Ravennateni & Bononiensi Archiepiscopis, ac dilecto filio Curie causarum Camera Apostolica generali Auditori, Motu simili per Apostolica scripta mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum per se, vel alium, seu alios præfentes Litteras, & in eis contenta quæcumque, ubi, & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Custodum, vel Confratrum, seu ab eis deputatorum prædictorum, aut aliquis eorum fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra easdem Præfentes Litteras, & in eis contenta quæcumque, ab omnibus, semper & ubique, firmiter & inviolabiliter observari, suosque plenarios & integros effectus in omnibus & per omnia sortiri, ac debitæ executioni demandari. Necnon Custodes, Confratres & deputatos, ac illarum Quæstiones prædictas, ceterosque omnes, quos Litteræ ipsæ concernunt, & concernent quomodolibet in futurum illis pacificè frui, & gaudere. Non permittentes quemquam ipsorum per quoscumque super præmissis quomodolibet molestari, perturbari, vel inquietari. Contradiçtores, molestatores, & perturbatores quoscumque, ac præmissis non parentes, per sententias, censuras Ecclesiasticas, ac etiam pecuniarias, eorum & cuiuslibet ipsorum arbitrio imponendas, ac eidem Redemptionis operi applicandas penas, aliasque opportuna juris & facti remedia, quæcumque appellatione postposita compellendo. Nos enim illis, & eorum cuilibet, omnes & singulos sua in præmissis quomodolibet interesse purantes, etiam per Edictum publicum confitto summarie & extrajudicialiter de non tuto accessu citandi, eidemque, ac quibus, & quoties opus fuerit, sub similibus vel dissimilibus sententiis, censuris, & poenis inhiibendi, ac legitimis super habendis servatis processibus, ipsos sententias, censuras, & penas prædictas incurrisse declarandi, illasque etiam sepius aggravandi, & interdictionem Ecclesiasticam apponendi, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis, plenam & liberam auctoritatem, & tenore præmissis concedimus facultatem. Ac ut tam salutare opus in dies augeatur, universos & singulos Reges, Duces, Marchiones, Comites, & Principes seculares, & alios Dominos, ac Magistratos temporales Civitatum, Terrarum, Oppidorum, Castrorum, & locorum quorumlibet, illorumque Communitates, Universitates, & homines rogamus, requirimus, & per viscera misericordie Dei nostri obsecramus; eisdem in remissionem peccatorum injungentes, quòd in præmissis, Custodibus, Confratribus, Quæstoribus, & Deputatis prædictis, ac cuilibet ipsorum assistant, suumque favorem, & auxilium præstent, ac illos, & eorum quemlibet à malignorum incurfu defendant, nullisque molestiis, datis, gabellis, & exactionibus quibuscumque affligi, seu prægravari aliquo modo sinant, atque permittant impediendes etiam temporalibus poenis afficiant.

§. 18. Non obstantibus quatenus opus sit, una de jure quæsto non tollendo, & altera Cancellariæ nostræ regulis, per quam volumus, quòd in Litteris indulgentiarum apponatur clausula, quod si Ecclesiæ, aut Ecclesiis, vel personis, quibus indulgentias

Decretum irritans.

Executorum huius constitutionis duraturis & facultates.

Clausula decreti.

tia cōceduntur aliqua alia indulgentia foret cōcessa, de qua inibi specialis mētio facta non esset, huiusmodi litteræ essent nullæ; ac pie mem. Bonifacii Papæ VIII. etiam prædecessoris nostri, quæ cavetur ne quis extra suam Civitatē vel Diocēsim ad iudiciū evocetur, seu ne Iudices à Sede prædicta deputati extra Civitates vel Diocēsim in quibus deputati fuerint contra quoscūq; procedere, aut alii, vel aliis vices suas committere audeant, vel præsumant, & in Concilio generali edita de duabus di. tis, dummodo ultra tres dietas aliquis auctoritate Præsentium ad iudiciū non trahatur; aliisq; constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, Conciliis quoque universalibus, etiam facultatum quæstionibus revocatoris, necnon prohibitionibus desuper factis, ac Ecclesiæ, Monasteriorum, Hospitalium, piorum locorum, Collegiorum, & aliarum Confraternitatum, necnon Sanctæ Trinitatis, & B. MARIE de Mercede Redemptionis Captivorum, aliorumq; Ordinum quorumcūq; etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque indultis, & litteris Apostolicis, illis eorumq; Superioribus, & personis, ac Legatis, Vicelegatis, Gubernatoribus, Potestatibus, & aliis Officialibus, & ministris, necnon fabricæ Basilicæ Principis Apostolorum de dicta Urbe, sub quibuscūq; tenoribus & formis, ac cum quibuscūq; etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, necnon irritantibus & aliis decretis, in genere vel in specie, etiam ad quorumvis instantiam, aut etiam Motu, scientia, & potestatis plenitudine paribus, ac etiam consistorialiter, & aliis quomodolibet concessis, confirmatis, & innovatis. Quibus omnibus, & singulis etiam si de illis, eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, expressa & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio, seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum omnium & singulorum tenores, ac si de verbo ad verbum & nihil penitus omisso, & forma in illis tradita, observata, exprimerentur & infererentur, Præsentibus pro plenè & sufficienter expressis & insertis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat, harum serie specialiter & expresse, ad effectum omnium præmissorum, Motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus derogamus, & ad plenam derogatam esse volumus, contrariis quibuscūq; aut si aliquibus communiter vel divisim, ab eadem Sede indultum, quod interdici, suspendi vel excommunicari non possint per Litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum, de indulto huiusmodi mentionem.

§. 19. Volumus autem, quod Præsentium transumptis, etiam impressis, & sigillo ejusdem Archiconfraternitatis munitis, illiusque Secretarii manu subscriptis, eadem prorsus fides, in iudicio & extra illud adhibeatur, quæ eisdem Præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensæ. Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo octogesimo sexto, Calendis Aprilis, Pont. nostri anno 1.

Sequitur extensio dictæ facultatis colligendi elemosynas pro ejusmodi Redemptione.

SIXTUS EPISCOPUS,

Ad perpetuam rei memoriam.

Cum adeo pium Redemptionis captivorum opus ceteris misericordie operibus antecellat, ut captivum redimendo omnia quasi per compendium adimpleri videantur, quodq; omnium maximum est, ad periculum abnegandæ fidei Christi fidelium animæ liberentur, ac propterea tantæ pietatis operi ita favent omnia iura, ut non qualiacumq; profana sive temporalia bona, sed argentum, aurum, & sacra templi

vasa pro redimendis captivis distrahi venundariq; decernant. Quis enim est alius durus & humane conditionis prorsus oblitus, ut sine maximo gemitu & lacrymis considerare possit, quot ærumnas, quot infirmitates, quot vincula, & tormentorum genera Christi fideles in dira infidelium captivitate detenti, fame & siti, frigore & nuditate penè cōsūpti cōtinuò patiantur.

§. 20. Nos hæc omnia cogitantes, & dolenter examinares tanti doloris cōtēplatione accensi, redimendorum captivorum opus aliàs per se, rec. Gregor. Pap. XIII. prædecessorem nostrum in Alma Urbe, ac toto Statu Ecclesiastico mediātē & immediātē subiecto erectum, & institutum, ac curæ, & sollicitudini venerabilis Archiconfraternitatis Confalonis Gloriosissimæ Virginis MARIE impositum & demandatum, confirmavimus & approbavimus, ac etiam de novo creximus, diversæque tam spirituales quàm temporales gratias, facultates, & indulta pro ipsius operis incremento & subventionē, eidem Archiconfraternitati concessimus, prout in nostris inde concessis Litteris plenius continetur.

§. 21. Unde tunc existentes ipsius Archiconfraternitatis Custodes, & alii Confratres, cupientes in agnis suberibus dicti operis charitatis semina mittere, magis amplissimam in Regno celorum expectanturi, ex Algerii, & aliis Africæ partibus ducentos & ultra pauperes captivos, non sine maximis laboribus ac nummularia quantitate singulari ac præcipua pietate & charitate redemerunt; illisque postquam ad Urbem venerunt, ad venerandam ipsius Gloriosissimæ Virginis Confalonis imaginem in Basilica B. MARIE Majoris existentem, dum in Capella Pontificali ejusdem Basilicæ coram Nobis, & Sacro Cardinalium Collegio, ac multis Prælati divina peragebantur, processionaliter ad agendum gratias humani generis Redemptori cum maxima Populi frequentia, & Christi fidelium ingenti lætitia affociarunt; quibus ad pedes nostros in eadem Capella provolutis Deibenedictione lætantes benediximus.

§. 22. Quia Nos eorumdem Custodum, & Confratrum singularem pietatem plurimum in Domino commendantes, ac pro his gratias agentes Deo, volentesq; ut tam pium opus fidelium elemosynis subveniat, ac latius diffundatur & propagetur; & ne dum ipsius Archiconfraternitatis Confratres, verum etiam omnes, & singuli quorumcūq; Confraternitatum eidem Archiconfraternitati hæcenus aggregatarum, & pro tempore aggregandarum Confratres, alique utriusq; sexus Christi fideles in huiusmodi pio opere se exercere, illudque elemosynis, ac ope & operibus augere contendant, atque procurent; Motu proprio & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, eidem Archiconfraternitati, illiusque nunc & pro tempore existentibus Custodibus, & Confratribus, ut nedum in dicta Urbe, ac toto Statu Ecclesiastico, ut præsertim subiecto huiusmodi, sed etiam extra dictum Statum elemosynas, & oblata quæcumque pro redemptione captivorum quærere, & accipere, ac ad id Confraternitates, eidem Archiconfraternitati hæcenus aggregatas, & pro tempore aggregandas, illarumque Confratres, ac alios quæsores, quot eis videbitur deputare, qui elemosynas, oblationes, legata & quæcumque alia subsidia pro huiusmodi redemptione, & causis ad eam pertinentibus, perquirere libere & licite possint & valeant, Apostolica auctoritate tenore Præsentium licentiam, & facultatem, ac omnimodam potestatem perpetuò concedimus & impartimur, eisq; desuper de speciali gratia indulgemus.

§. 23. Mandantes in virtute sanctæ obedientiæ universis, & singulis venerabilibus fratribus nostris Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, ceterisque locorum Ordinariis, & Ecclesiæ Prælati, ac dilectis filiis illarum Officialibus, & Vicariis, necnon Abbatibus, Prioribus, Capitulis, Conventibus Parochialiumque Ecclesiæ Rectores,

Greg. XIII. huic Sodali-
tati delega-
vit, & hic
Romæ ap-
probavit &
extendit ut
sup.

Sodalitas i-
deo multos
captivos re-
demt.

Hic propter-
ea Pontifex
eidem dat fa-
cultatem et-
iam extra
Statum Ec-
clesiastic. pro
dicto opere
colligendi e-
lemosynas.

Episcopisq;
& aliis man-
dat ut eidem
favcant.

Transumptum fides.

D. P. A. 1.
die 21. Mart.

Edit. A. D.
1586.

Redemptio-
nis captivo-
rum opus
piissimum.

& illorum Vicariis, ac quorumcumque; Ordinem etiam Mendicantium Generalibus, Provincialibus, & aliis Superioribus, ac verbi Dei concionatoribus, & quibuscumque aliis, tam exemptis quam non exemptis Ecclesiasticis personis, tam in Urbe, & toto Statu Ecclesiastico huiusmodi quam per universam orbem Christianum constitutis, quatenus omnes & singulos utriusque sexus Christi fideles ad conferendam elemosynas, oblationes, & legata omni studio, & charitate accendant, & efficacibus hortationibus indicant, suasque Litteras ad id favorabiles & hortatorias absque alicujus præmiis, vel mercedis exactiōe tradant.

§. 24. Præsentibus, quas sub quibuscumque similibus vel dissimilibus gratiarum, & facultatum revocationibus, limitationibus, suspensionibus, derogationibus, & aliis contrariis dispositionibus, etiam per Nos & pro tempore existentes Romanos Pontifices successores nostros, ac Sedem eandem, etiam motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, in genere vel in specie, ac aliis quomodolibet pro tempore factis & emanatis, nullatenus unquam comprehendendi, sed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum & validissimum statum restitutas, repositas, & plenarie reintegratas, ac de novo etiam post posteriori data per pro tempore existentes Custodes & Confratres prædictos eligenda, concessas fore, & esse, ac censeri, ipsique Custodibus, Officialibus, & Confratribus, ac aliis prædictis suffragari debere decernimus perpetuis futuris temporibus duraturas.

§. 25. Non obstantibus quibuscumque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, Mendicantium & non Mendicantium Ordinibus, Archiepiscopalis, Hospitalibus, ac locis piis, necnon fabricæ Basilicæ Principis Apostolorum de dicta Urbe, Cruciatæ Sanctæ, & aliis quibuscumque contra præmissa, aut alias quomodolibet concessis, confirmatis, & innovatis. Quibus omnibus, & si de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, non autem per clausulas generales idem importantes mentio seu quævis alia expressio habenda esset, illorum omnium & singulorum tenores Præsentibus pro sufficienter expressis & insertis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat harum serie specialiter & expresse Motu, scientia & potestatis plenitudine paribus derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 26. Volumus autem quod Præsentium transumptis etiam impressis, ac ipsius Archiconfraternitatis pro tempore existentium Custodum, & Secretarii manibus subscriptis, ejusdemque Archiconfraternitatis sigillo munitis, eadem prorsus fides, in iudicio & extra illud adhibeatur, quæ eisdem Præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 23. Aprilis, 1588. Pontificatus nostri anno 3.

buscumque Ecclesiæ Ordinibus vel in sua integritate continendis, vel ad institutum revocandis, statuta & ordinata fuerunt, ex aliis non minus iustis causis moderatur & revocat, prout id conspicit in Domino salubriter expedire.

§. 1. Alias siquidem fel. recor. Pius Papa V. prædecessor noster, officia Ministratus, & Visitatoris generalis Terti Ordinis S. Francisci de Poenitentia nuncupati perpetuo extinxit, abolevit, ac Ministrum, Visitatorem, & Vicarium generalem ejusdem Ordinis officio usu, & exercitio quomodo interdixit, Edicto quoque prohibuit, ne ullus Minister, Vicarius & Visitator generalis de dicto Ordine haberetur.

§. 2. Insuper universos & singulos Fratres, Sorores, professos, & conversos, necnon Domos, Monasteria, & loca virorum & mulierum, ac custodias, & Provincias per universum orbem constitutas, gregemque ipsum universum Terti Ordinis utriusque sexus, Generali & Provincialibus Ministris Ordinis Fratrum Minorum de Observantia nuncupatorum, prout in eorum Provinciis consistebant, ita perpetuo supposuit, ut Minister Generalis in universo Ordine, Provincialis verò Ordinis Minorum de Observantia in suis quisque Provinciis plenum jus, liberamque auctoritatem, in spiritualibus, & temporalibus, jurisdictionem omnimodam haberet, Domos omnes, ac Monasteria, & loca quæcumque necnon personas utriusque sexus, tam in capite quam in membris visitandi, & corrigendi, vagantes, & quoscumque alios puniendi; carcérandi, mutandi, transferendi, Ordinibus, officiis & administrationibus deponendi, excommunicandi, suspendendi, interdicens, & restituendi, ac etiam super iis, & ceteris omnibus Ordinem ipsum, illiusque Domos, & personas utriusque sexus quomodolibet concernentibus, eorum tamen regulæ, & sacris Canonibus, & Litteris tunc desuper concessis non contrariis, statuendi, mutandi, innovandi, & exequendi quemadmodum illis erat in suo proprio Ordine attributum, ac alia statuit, & ordinavit, prout in ipsius Prædecessoris litteris, sub Data videlicet quinto Nonas Julii Pontificatus sui anno tertio desuper concessis, quarum tenorem Præsentibus haberi volumus pro expresso, plenius continetur.

§. 3. Nos itaque, quibus nuper innouit, quod Fratres Terti Ordinis huiusmodi sub obedientia Magistris generalis, & Provincialium Fratrum de Observantia prædictorum manentes, nihil in Vine Domini profecerunt, imò in eodem Terto Ordine varii abusus tam circa Regulæ observationem, quam etiam Fratrum dictæ Regulæ transgressorum, & aliis delinquentium castigationem irrepserunt. Ac considerantes, quod si Fratres ipsi Terti Ordinis eorum Visitatorem Generalem juxta sua regularia instituta, ante Litteras dicti Prædecessoris faciebant, eligere possent, & sic electo tanquam eorum Superiori obedirent, præmissis, & aliis malis, quæ occurrere possent, plurimum consultum foret. Propterea ex his, & aliis causis animum nostrum moventibus, de Nobis attributæ potestatis plenitudine ipsos Fratres Terti Ordinis adversus Litteras dicti prædecessoris (illis quo ad Protectoris deputationem in suo robore permanentibus) in pristinum, & eum, in quo antequam ipsæ Litteræ emanassent, erant, statum restituentes & plenarie reintegrantes, eisdem Fratribus Terti Ordinis per universam Italiam existentibus, quod perpetuis futuris temporibus juxta eorum regularia instituta singulo Triennio Capitulum generale dicti Terti Ordinis convocare, & celebrare, ac in eo Visitatorem generalem, & alios Ministros, & Officiales (non tamen Commissarium generalem) eisdem modo, & forma, quibus antequam Litteræ prædictæ emanassent, consueverant, eligere, eundemque Visitatorem generalem peracto Triennio huiusmodi in alio Capitulo Generali postea faciendo confirmare liberè & li-

Pius V. edidit reformationem huius Ordinis sup. in const. 63. Ea est.

Eumque supposuit Ordini de Observantia

Hic Pont. etiam moderatur & innovat, quoad Fratres Italici circa electionem Visitatoris generalis &c.

XXVIII. Moderatio constitutionis editæ à Pio V. quoad electionem Visitatoris generalis, & exemptionem Fratrum Terti Ordinis de Poenitentia S. Francisci, à superioritate Ministrorum Provincialium Fratrum Minorum de Observantia in Italia.

De hoc Ordine dixi sup. ad const. 42. Leon. X. Inter. ibi videas in Tomo I. fol. 616.

SIXTUS PAPA V.

Ad futuram rei memoriam.

Romani Pontificis providentia circumspicienda, nunquam ea, quæ per Prædecessores suos rationabilibus & honestis laudentibus causis, pro qui-

ANNO
1586.

SIXTUS QUINTUS.

ANNO
1586.

Hæc moderatio est for
tasse extensa
etiam ad
Provinciam
Dalmatiam &
Iustinianam.
a Clm.
VHL. in epu.
conf. 91 eam
videas Tom.
1. fol. 155.

Clausule de
rogatorie.

Fides tran
sumptorum.

D. P. A. r.
die 29. Mart.

XXIX.

Edita A. D.
1586.

Exordium.

Innoc. VIII.
Collegium
Secretario
rum Apoft.
exercit. eorum
præfinitur.

cui valeant perpetuo Apostolica auctoritate concedimus, & indulgemus.

§. 4. Decernentes Visitatorem sic electum omnimodam potestatem, auctoritatem, jurisdictionem & superioritatem in omnes & singulos dicti Terti Ordinis Fratres, & Ministros, & Officiales per universam Italiam consistentes, eorumque domos & loca, ac res & bona habere, necnon Fratres & Ministros, ac Officiales Terti Ordinis huiusmodi ei sic electo tamquam vero Superiori morem gerere, ejusque mandatis salubribus obedire tenere, ipsosque per Ministrum Generalem, ac alios Fratres de Observantia, quo minus ad electionem prædictam, prout ante dictas Litteras faciebant procedere valeant nequaquam impediri, aut molestari posse. Et ita per quoscumque Judices ordinarios & delegatos; quavis auctoritate fungentes sublatâ eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi, & interpretandi, facultate & auctoritate judicari & definiti debere; irritum quoque & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§. 5. Non obstantibus Litteris prædictis, quibus, ac omnibus aliis, quæ præmissis obesse possent, specialiter & expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque. Volumus autem, quod dictus Visitator eligendus, infra duos menses à die suæ electionis computandos confirmationem electionis huiusmodi à Ministro Generali de Observantia petere omnino teneatur; quæ petitâ, & non obtentâ, idem Visitator Terti Ordinis Apostolica auctoritate confirmatus censeatur, quodque dictus Minister de Observantia per seipsum dumtaxat, unâ cum duobus aliis sui Ordinis professoribus, possit singulo quadriennio post Visitationem à Visitatore Terti Ordinis huiusmodi factam, & non ante, Tertium Ordinem, ac Fratres, Domos, loca, res, & bona prædicta, visitare, eaque tam in capite, quam in membris prout opportunum fuerit, juxta regularia instituta dicti Terti Ordinis corrigere, & moderari.

§. 6. Ac quod Præsentium transumptis, etiam impensis, dictique Protectoris, aut Visitatoris Terti Ordinis huiusmodi sigillo munitis, aut manu alicujus Notarii publici subscriptis, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ eisdem Præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensæ.

Dat. Romæ apud S. Petrum sub annulo Piscatoris, die 29. Martii 1586. Pontificatus nostri anno 1.

Reformatio Officii & emolumentorum Secretarii Domestici, Summi Romani Pontificis; Cum indulgentium Collegii Secretariorum concessione & ampliacione.

De Institutione, & extensione dicti Collegii, & de Officio hujus Secretarii, & emolumentorum largitione, vide sup. in Bull. 12. Innoc. VIII. Non debet. fol. 441. Tom. I.

SIXTUS PAPA V.

Ad perpetuam rei memoriam.

Romani Pontificis providentia circumspecta, ea nonnumquam alterat & immutat, quæ rerum, temporum, ac personarum qualitate pensata, vel evidens suadet utilitas, vel cogit necessitas reformari. Industrios quoque & doctrina probatos viros, honoribus & favoribus prosequitur opportunis, prout conspicit in Domino salubriter expedire.

§. 1. Sanè licet aliis fel. rec. Innocentius Papa Octavus prædecessor noster, Collegium discipulorum filiorum Secretariorum Apostolicorum instituerit, & certo tunc expresse probatorum virorum numero, qui & Romanæ Curie decori atque ornameto esset, ac expeditioni Brevium, & aliarum litterarum

Apostolicarum, quæ per Secretarios Apostolicos expediri consueverant, accuratius & diligentius attenderent, consilare voluerit: eidemque Collegio, & Secretariis diversos annuos redditus, & emolumenta, inter singulos Secretarios pro tempore existentes, æquis portionibus dividenda & distribuenda assignaverit, & in quinquennio ejus manu subscripto adnotari mandaverit. Ita tamen, quod liceret ipsi Innocentio, & pro tempore existenti Romano Pontifici ultra numerum ab eo tunc præscriptum, unum Secretarium, Domesticum nuncupandum, habere, qui sua, & Romanæ Ecclesiæ negotia secreta, aut Orthodoxæ fidei statum concernentia dumtaxat expedire posset, & deberet, quique duabus integris portionibus didorum emolumentorum ultra numerum Collegiarum faciendis contentus, ab omnibus & singulis aliis emolumentis, & expeditionibus Officium Secretariorum quomodolibet concernentibus penitus abstineret.

§. 2. Et recol. me. Pius Papa V. etiam prædecessor noster, post diversos alios Rom. Pont. etiam Prædecessores nostros, tunc suos, Litteras Innocenti prædecessoris præfati approbaverit, & confirmaverit, ac etiam innovaverit, aliisque etiam de novo concessit, voluerit, & ordinaverit, prout in ipsorum Pii, & Innocentii prædecessorum præfatorum Litteris plenius continetur.

§. 3. Nihilominus temporis successu, multiplicato Secretariorum domesticorum numero pro Romano Pont. arbitrio, ipsi Secretarii domestici præter dictas duas portiones, diversa alia emolumenta seorsum à Collegio percipere consueverunt, necnon Collegii in Curia, seu foras per desuetudinem effectum fuit, ut nonnulla alia ex emolumentis Innoc. notata reperiantur, à debitoribus non exigantur.

§. 4. Cum autem Nos circa Officium Secretariatus domesticum, quod dilectus filius Joan. Bapt. Canobius Clericus Bononiensis pro nutu & voluntate nostra nunc exercet, novam rationem inire constituivimus, Collegium præfatum, in quo virtutibus, experientia, ac usu rerum, & negotiorum ad Romanam Curiam confluentium, & ad dictum Officium pertinentium, insignes viri connumerantur, se Nobis obtulit ipsius Officii, cujus ratione plerumque ad ipsum Collegium spectantia emolumenta exigi consueverunt, ac eorum quæ in eo geruntur, curam omnem, cogitationemque suscipere, idque munus, quæ decet fidem, & integritatem, per idoneos & peritos, ab ipso Collegio electos, & per Nos approbatos viros, obire &c. Nos igitur, &c. ipsumque, Collegium, & Secretarios gratiose affectu prosequi volentes, singularem Innocentii, & Pii, aliorumque; prædecessorum præfatorum Litterarum tenores, ac si de verbo ad verbum infererentur Præsentibus pro expressis habentes, Motu proprio, non ad dicti Collegii, aut alicujus pro eis Nobis desuper oblata petitionis instantiam, sed ex mera liberalitate, & scientia nostris, deq; Apostolicæ potestatis plenitudine, Officium Secret. domesticum, quod dictus Joan. Baptista, ut præfatur exercebat, penitus, & omnino perpetuò suppressimus, & extinguimus, ita quod nullo umquam tempore per Nos, aut Rom. Pont. pro tempore existentem, & Sedem Apostolicam in statum pristinum restitui, aut reintegrari valeat.

§. 5. Curam autem, & exercitium dicti suppressi Officii, ac custodiam Registorum Brevium & litterarum Apostolicarum, via quæ secreta appellatur, expeditarum, & pro tempore expediendarum, in mansionibus Palatii Apostolici in Vaticano quas dictus Joan. Baptista, siquæ famuli, & Scriptores habitant, asservandorum, deinceps per unum, ex numero dicti Collegii Secretarium, aut aliam æque idoneam personam, à Nobis, & Rom. Pont. pro tempore existente, approbandum, seu approbandam, ad ipsius Collegii nutum, & liberum arbitrium nominandum, & deputandum, ac removendum,

ceterosque annuos redditus assignavit facultatemque si bi reservandi unum Secretarium domesticum, ut sup. in ejus conf. 12. fol. 443. Tom. I.

Pius V. prædicta confirmavit supra in hoc Tom.

Sed evenit, quod talis Secretarius domesticus seorsum à Collegio quadam emolumenta percipiebat &c.

Hic igitur Pontif. dictum officium Secretariatus domesticum nunc suppressit, ejusque curam Collegio concedit.

Facultatem dictum Secretarium domesticum à Pont. approbandum, deputandi, &c. Manifestumque in Palatio Apost. assignavit.

Unam ex
duabus por-
tionibus ab In-
noc. VIII. re-
servatis pro
Secretario
domestico,
prædicto
Collegio
concedit.

Medietatem
quoque emolu-
mentorum
quæ Secreta-
rius domesti-
cus scilicet
Collegio
percipere
consequitur
idem Collegio
tribuit.

Licentiam
quoque dat
Collegio
possessionem
prædictorum
propria auc-
toritate ca-
piendi.

A Collegio
deputandus
computa Se-
cretariis o-
lender.

Secretarii
domestici ne
se ultra hic
contenta in-
gerat.

juxta ipsius Collegii præscriptum, haberi, teneri, & administrari, ipsasque mansiones, in octo cubicula partim infra, partim supra distributas, quibus per duas portas patet ingressus, & ab uno Dataria Apostolica, ab altero mansiones Substituti ipsius Datarii coherent, cum cella vinaria, sub Officio Registri supplicationum, & aliis suis pertinentiis, per Secretarium, aut personas à Collegio præfato deputandas, inhabitari volumus, & mandamus: curamque, & exercitium hujusmodi, & Registorum custodiam, mansionumque præfatarum, & habitationem, Collegio, & personæ ab eo deputandæ hujusmodi, ex nunc perpetuo concedimus, & assignamus.

§. 6. Et insuper unam integram ex duabus portionibus emolumentorum dicti Collegii, extra numerum, ut præfatur facienda, & Secretario domestico olim ab Innocentio prædecessore præfato assignatis, ab ipso Officio Secretariatus domestici, etiam perpetuo dismembramus, & separamus, illamque, necnon quatuor alias partes cibarium, pro victu, & alimento quotidiano Secretarii, aut personæ, ut præfatur, ad curam, & exercitium hujusmodi deputandæ, ac trium famulorum, & unius equi, eisdem modo, & forma, quibus præfato Joanni Baptistæ dari hæcenus consueverunt, Collegio præfato, pro Secretario, vel persona deputanda hujusmodi, perpetuo concedimus, & assignamus, & per eos, ad quos spectat, & pro tempore spectabit, dari, præstari, & assignari volumus, & mandamus.

§. 7. Necnon medietatem omnium, & singulorum aliorum emolumentorum, quæ hæcenus præfatus Joannes Baptista Canobius pro se, & aliis duobus Secretariis domesticis, percipere, exigere, & levare consuevit, ita ut alia medietas emolumentorum hujusmodi, unà cum altera ex dictis portionibus prædictis, salva remaneat, five illa ratione taxarum litterarum Apostolicarum, via, quæ secreta appellatur, expediendarum, five cedularum propositionum Ecclesiarum, aut Monasteriorum, vel sententiarum à Rom. Pont. pro tempore latarum, aut investiturarum ab eo quomodolibet factarum, percipiantur, seu quovis alio nomine nuncupentur, Collegio præfato pariter concedimus, & assignamus.

§. 8. Ita quod liceat ipsi Collegio, per se, vel alium, seu alios ejus nomine præfate curæ atque exercitii, & integre portionis hujusmodi, necnon mansionum, registorum, portionum, cibarium, & aliorum emolumentorum præfatorum, possessionem propria auctoritate vigore Præsentium, apprehendere, seu forsan interim apprehensam perpetuo retinere, nec desuper, à Secretario domestico uno, vel pluribus (pro quo, seu quibus altera dumtaxat integra portio emolumentorum ex duabus illi, ab Innocentio prædecessore præfato assignatis, ac reliqua medietas aliorum emolumentorum supra dictorum salvæ remaneant) quomodolibet molestari possit.

§. 9. Ita tamen quod Collegium Secretariorum, seu ad exercitium hujusmodi Deputatus, ipsis Secretariis domesticis rationes, & computa ostendere, & reddere teneatur.

§. 10. Ipsi Secretariis domesticis pro tempore existentibus, five unus fuerit, five plures, sub mille ducatorum auri, & aliis arbitrio nostro, pœnis, eo ipso, pro qualibet vice, quæ contravenierint, incurrendis, districtius inhibentes, ne aliquas Litteras in forma Brevis, aut etiam sub plumbo expedire audeant, vel præsumant, præter illas, quæ Rom. Pont. pro tempore existentis, & Romanæ Ecclesiæ negotia secreta, aut orthodoxæ fidei statum concernent, & emolumentis sibi, ut supra, remanentibus contenti, nihil aliud, etiam occasione eorum hujusmodi Officii, à quoquam percipere possint, sed quicquid lucri ex supra dictis taxis Bullarum per viam secretarum expediendarum, &

quibusvis aliis regulis prædictis percipitur, ad Cusiodem Brevis, seu emolumentorum, ab eodem Collegio deputandum destinant, ac omnino transmittant, quæ quidem omnia, & singula, ut inviolabiliter observentur, sub eisdem pœnis præcipimus, & mandamus.

§. 11. Præterea eidem Collegio liberam tribuimus facultatem & auctoritatem nominandi, eligendi, & deputandi tres idoneas personas, pro scribendis Litteris in forma Brevis per dictum Deputatum expediendis, & tam illis, quam litteris Apostolicis, via, quæ appellatur secreta, expeditis, registrandis, dictasque personas, ad ipsius Collegii nutum removendi, & alias remotarum, recedentium vel decedentium in locum subrogandi, & deputandi, quibus sic electis, & deputatis personis, singulas portiones cibarium, ex Palatio Apostolico, prout illas hæcenus habuerunt, & percipere consueverunt, iisdem auctoritate, & tenore, perpetuo concedimus, & assignamus, ac ab iis, ad quos spectat dari, concedi, & præstari volumus, & mandamus: pari auctoritate, & facultate præfato Collegio attributis hujusmodi loca personis ab eo electis perpetuo vel ad tempus, ex nunc prima vice, & deinde quotiescumque loca ipsa pro tempore vacare contigerint, pro pretio inter ipsum Collegium, & personas hujusmodi convento vendendi, seu pignorandi, vel alias de locis ipsis disponendi, ac pretium hujusmodi in dicti Collegii usus, & utilitatem convertendi.

§. 12. Insuper omnes, & singulas taxas Officiorum Rom. Curie, & quorumvis aliarum Terrarum, Provinciarum, Communitatum, & locorum totius Status Ecclesiastici in quaternio Innocentii prædecessoris præfati annotatas, & designatas, & Collegio præfato applicatas, & assignatas, etiam si de præfatis non solvantur, pro quibus Collegium ipsum debitam recompensam, in genere vel specie non consiliterit recepisse, ipsi Collegio, eisdem modo, & forma, quibus per dictum Innocentium assignata, & applicata fuerunt, de novo applicamus, & assignamus, & per Officiales, & Ministros Urbis, & Provinciarum, ac Communitatum, Terrarum, locorum, ac præsertim per Almæ Urbis, & Civitatis nostræ Bononiensis (post tamen Præfentes, qui pro tempore extiterint Gubernatores, & eorum Locatentes) necnon tam præfentes, quam pro tempore existentes Provincie nostræ Marchie Thesaurarium, etiam ratione propriæ ejus taxæ, etiam de præterito, non obstantes decreto ad Motum proprium pie memorie Gregorii Papæ XIII. etiam prædecessoris nostri, super præfata concordia inter Collegium præfatum, & dilectum filium Franciscum Sangalietum, ad ejus commodum pro pecuniis ab ipso etiam solutis hujusmodi concessio cedit, ac Cameram Apostolicam adjecto, & quovis aliis, integrè, & absque ulla diminutione, juxta formam quinterni, & litterarum Innocentii prædecessoris hujusmodi, singulis sex mensibus in principio, sub pœnis in Litteris dicti Innocentii contentis, incipiendo à prima Julii post datam Præsentium, & successivè singulis sex mensibus in principio, persolveri volumus, & mandamus, sine tamen præjudicio quorumcumque jurium dicto Collegio pro præteritis taxis competentium, præsertim respectu litium huc usque motarum.

§. 13. Insuper quoque eidem Collegio liberam tribuimus facultatem, & auctoritatem, singula quæque Officia quorumvis Provinciarum, Terrarum, Communitatum, & locorum Romanæ Ecclesiæ, post publicationem quaterni ab Innocentio prædecessore confecti, quomodolibet incorporatorum, & in posterum incorporandorum, juxta facultatem ab eodem Innocentio prædecessore Collegio prædicto attributam, & cum consilio dilecti filii Benedicti Justiniani moderni, & pro tempore existentis Thesaurarii Generalis, taxandi, taxasque impositas hujusmodi, ab illis exigendi, & reci-

Collegii facultas deputandi, & removendi tres personas ad scribendum Brevis, & registrandum Bullas secretas & cibaria dictis scriptoribus assignantur.

Taxasque ab Innoc. VIII. dicto Collegio assignatas hic Pont. de novo assignat, casque singulis sex mensibus incipiendo à die 1. Julii 1586. solvi præcipit.

Taxasque aliorum locorum post publicationem quinterni Innoc. VIII. Sed. Apost. incorporatorum concedit.

ANNO
1586.

572

SIXTUS QUINTUS.

ANNO
1586.

Secretarios
Doctores
post annum
25. in habi-
tu Præla-
torum in ce-
dentes, utri-
usque Signat.
Referendari-
os esse de-
cernit.

Secretarium
ex dictis Re-
ferendariis
antiquio-
rem, singulis
Papæ Signa-
turis inter-
venire posse,
concedit.

Habitu eis
designat, &
in Capella
locum assi-
gnat.

Pii V. con-
cessionem, &
confirmatio-
nem, supplē-
tionem dete-
ctum.

Clausulas
huius Bullæ
præservati-
vas apponit

piendi, modo, & forma ab ipso Innocentio præde-
cessore, quoad alios præscriptis, quas quidem ta-
xas de novo imponendas, ipsi Collegio perpetuo
etiam applicamus, concedimus, & assignamus.

§. 14. Ut autem Collegium ipsum præcipua ali-
qua honoris, dignitatis prærogativa à Nobis etiam
decoret, & qui pro tempore fuerint Secretarii A-
postolici de numero participantium, per amplius ho-
norentur, singulos Secretarios de numero præfato,
præfentes & futuros, qui in utroque jure, aut in de-
cretis ad Doctoratus gradum in aliqua publica Uni-
versitate fuerint promoti & vigesimo quintam suæ
ætatis annum exceperint, si habitu Prælatorum, juxta
Innocent. prædecessoris præscriptum, incedere vo-
luerint, ex nunc, prout ex tunc & contra postquam
habitu Prælatorum susceperint eo ipso, absque alia
approbatione, & admissione, Referendarios perpetuo
utriusque Signaturæ nostræ, & Rom. Pont. pro
tempore existentis, creamus, constituimus, & deputa-
mus, ac creatos, constitutos, & deputatos fuisse, & ef-
fecte declaramus, & nunciamus, eisque, & eorum cuilibet
de omnibus, & singulis privilegiis, emolumentis,
immunitatibus, præeminentiis, facultatibus, gratiis, &
indultis, aliisque utriusque Signaturæ Referendariis,
quomodolibet concessis, & quibus ipsi utuntur, po-
tuntur, & gaudent, ac uti, potiri, & gaudere pote-
runt, quomodolibet in futurum, pariformiter uti, po-
tiri, & gaudere, liberè, & libere valeant, concedi-
mus, & indulgemus.

§. 15. Illi verò Secretariorum eorumdem, qui an-
tiquior, Doctor, & Referendarius fuerit, ut singulis
nostris, & Rom. Pont. pro tempore existentis Signa-
turis, nomine Collegii Secretariorum, eo ipso inter-
venire valeat, pariter indulgemus. Quod si ab Urbe
absens, vel aliis impeditus fuerit, vel antiquior Secreta-
rius alia ratione, vel causa dictæ Signat. intervenire
habuerit, qui post illum erit antiquior Secretarius, &
Referendarius indulto hujusmodi eo ipso potitur.

§. 16. Cumque Secretarii ipsi, qui Clerici erunt,
nostris, & Rom. Pont. pro tempore existentis sint Præ-
lati domesticis, & familiares, ac continui commensales;
teneanturque juxta præscriptum Innoc. præde-
cessoris præfati, nisi in majori fuerint dignitate con-
stituti, Notariatus habitum suscipere, & deferre, ne
quod pro ornamento, & decore Rom. Curie provi-
deretur, si eis placuerit, etiam violaceis, prout Cubi-
cularii Apostolici de honore nuncupati. Habeant
etiam qui Notarii fuerint Sedis Apostolicæ, locum
in Capella, & aliis actibus publicis, in quibus eam
cappis, & rochetis interfuerint, eorum dignitati
congruentem, quem ipsis assignari curabimus.

§. 17. Et nihilominus Litteras Pii prædecessoris
præfati, ut supra, eidem Collegio super confirmatio-
ne, & approbatione Litter. Innoc., & aliorum Pont.
prædecessorum nostrorum, tunc fuorum, rebusque aliis
in eis contentis concessis, auctoritate, tenore, scientia,
& Apostolicæ potestatis plenitudine similibus,
approbamus, & confirmamus, illique perpetuæ, &
inviolabilis firmitatis robur adjicimus, omnesque, &
singulos tam juris, quam facti defectus supplēmus.

§. 18. Præfentesque, & in eis contenta quæcum-
que, de subreptionis, vel obreptionis, aut nullitatis
vicio, seu intentionis nostræ, vel quopiam alio defe-
ctu notari, vel impugnari, aut per Nos, vel Rom.
Pont. pro tempore existentem suspendi, revocari,
limitari, moderari, seu ad juris terminos reduci non
posse, neque debere, sed validas, & efficaces per-

petuò existere, ac dicto Collegio, & Secret. pro tem-
pore existentibus, in omnibus & per omnia, etiam
perpetuò suffragari, ac vim validi, initi, & stipulati
contractus inter Nos, & Sedem, ac Cameram Apo-
stolicam ex una, & Collegium præfatum ex altera par-
tibus, habere, debere ipsumque Collegium ad verifica-
tionem, seu justificationem præmissorum, vel partis
eorum, aut ad registrationem, vel adnotationem Præ-
sentium in Camera, juxta constitutionem piæ mem.
Pii Papæ IV. etiam prædecessoris nostri faciendam,
minimè teneri, nec ob non registrationem hujusmodi,
Præfentes nullitatis, aut invaliditatis vitio subiacere,
sed valere, & ipsi Collegio, & Secretariis suffragari
debere, perinde ac si in ipsa Camera registrata fuif-
sent, constitutione præfata non obstant.

§. 19. Et sic in præmissis omnibus & singulis per
quoscumque Judices & Commissarios, sublatà eis &
eorum cuilibet quavis aliter judicandi, definiendi, &
interpretandi facultate, judicari, definiri, & interpre-
tari debere, & quicquid secus super his à quoquam
quavis auctoritate scienter vel ignoranter attentari
contigerit, irritum & inane decernimus &c.

§. 20. Non obstantibus præmissis, ac Pauli II. &
Pii etiam II. & quibuscumque aliis constitutionibus, & or-
dinationibus Apostolicis, de bonis Ecclesiasticis, non alienan-
dis, quatenus ad nos, & nostra de non tollendo jure
quæsitio in Cancellaria Apostolica, publicata, necnon sta-
tutis, quavis firmitate roboratis, & consuetudinibus,
exemptionibus, immunitatibus; privilegiis quoque,
indultis, & litteris Apostolicis, Provinciis, Commu-
nitatibus, Terris, & locis præfatis, illarumque incolis, &
personis quomodolibet concessis, & quibus forsitan
potuerint, & gaudent, quomodolibet contrariis. Qui-
bus omnibus & singulis, etiam si de illis specialis, spe-
cifica, & expressa mentio habenda foret, illorum veno-
res, ac si de verbo ad verbum inferrentur Præfenti-
bus, pro expressis haberi volentes, illis aliis in suo ro-
bore permansuris, hac vice dumtaxat, specialiter & ex-
presse derogamus; ceterisque, contrariis quibuscumque.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris,
die 1. Aprilis 1586. Pontificatus nostri Anno 1.

Quod Festum S. Petri Martyris, duplici officio de
cetero celebretur.

Hunc Sanctum canonizavit, ejusque festum pro die 29
mensis Aprilis instituit Innoc. IV. sup. in ejus cons.
11. Magnis fol. 94.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Invictorum Christi militum numerus ingens pro-
pria vitam contempsit, præ studio tuenda, propa-
gandaque Christianæ fidei, ideoque immarcesci-
bili gloriæ coronâ donatus in cælo, jure, & pia vene-
ratione colitur, & celebratur in terris, sed non minus
ad ejusdem fidei firmitatem profuit, Beati Petri
Martyris virtus, qui pro Catholica Religione stren-
uè militans eam conservavit, ac defendit adver-
sus dolos atque insidias inimicorum, occulto vene-
no longè plus nocentium quam sit hostium infesta
oppugnatio, qui aperto impetu nefarius Eccle-
siæ Dei bellum indicunt.

§. 1. Quare ex promissione Omnipotentis Dei no-
mine facta fortiter pugnantibus, cum eorum laudes
cantet Ecclesia, est etiam invicti hujus martyris ce-
lebranda plenissima memoria. Is enim præclarus
Ordinis Prædicatorum alumnus, inexcipibilem ex-
tirpandæ hereticæ perfidie cupiditatem, jam inde à
puero tota penitus mente combibit: qua in re mi-
rari debemus singulare erga illum Dei beneficium,
cùm credibile non sit, sine divina ope potuisse eum,
hereticorum parentum domesticæ exempla, tam san-
ctè detestari.

§. 2. Imò verò imitatione accensus Beati Petri,

Decretum
irritans.

Clausulas
derogatorias
subdit.

D. P. A. I.
die 1. Apr.

XXX.

Edita A.D.
1586.

Exordium.

S. Petrus
Martyr Or-
dinis Prædi-
catorum profectus
fuit.

ANNO
1586.

Inquisitoris
que officio
huncus, &
haereticos mi-
rabili ter per-
secutus.

Martyrii quo-
que coronam
suscepit fan-
guinem pro
fide Christi
effundendo.

Iussio ejus
testum duplici
officio ce-
lebrandi.

Et hanc Bul-
lam publican-
di & obser-
vandi.

Fides tran-
sumptorum.

Dat. P. A. i.
die 17. Apr.

XXXI.

Edita A. D.
1586.

Plurimis de
causis necef-

SIXTUS QUINTUS.

573 ANNO
1586.

se est. Sedem
Apostol. ali-
quem Thefa-
rum habere.

Domini, ut ille perpetuis, & concionibus, & dis-
putationum congressibus, officioque Inquisitionis,
quod ei primum praecedentes nostri Innocent. III.
& Honorius III. commiserant, contra haereticos mi-
rabili ter se gessit, ita ipse cum nullum iis perditionis
filiis monendis locum in omni sermone unquam re-
liquisset, tum in obeundo Inquisitoris munere sibi
Litteris Apostolicis commissio, mira quadam diligen-
tia illos infectari, atque urgere non destitit.

§. 3. Demum vero in se odii concitatis arripuit
summa constantia, atque animi magnitudine obla-
tam sibi divino permisso martyrii occasionem, cu-
jus quidem martyrii antea piis precibus ac votis
a Deo expetiti, praecipuo desiderio exarserat.
Quamobrem post Beatissimae Dominicum non im-
merito Princeps appellari debet sacrosancti offi-
cii Inquisitionis, cum ipse primus illud suo san-
guine consecraverit; quo factum est, ut etiam
nostris potissimum, huiusque sanctae Sedis ministris,
qui in hac turbulenta & calamitosa tempora incide-
runt, seu potius sunt divina providentia reservati,
quasi faciem praetulerit, ac viam commonstravit, quam
ejus exemplo ingressi audeant quaecumque pericu-
la pro munere commissio, fortiter subire, ac sangui-
nem ipsum, si ita res ferat, vitamque pro Catholica
fide gloriose profunderent.

§. 4. Dignam itaque Pontificio munere cogita-
tionem susceperit videmus, si sancti hujus viri me-
moriam majori veneratione recolamus; ita enim fiet
ut ei de Ecclesia Dei optimè merito honor debitus
tribuatur. Deinde, ut ejus in officio Inquisitionis
Successores ad prosequenda fortissimi Ducis vestigia
incitentur. Praecipue verò deest, ut ad concilian-
dam Nobis caelestem gratiam imploremus illius o-
pem, quem propter intam ante acta vitae sanctita-
tem, castimoniam, innocentiam martyrio consum-
matam, apud Deum maximè gloriosum intelli-
gimus; & satis compertum est ejusdem Ecclesiae aman-
tissimum esse, pro qua gravissimos labores; dies
noctesque perpelsum est. Quare hac nostra perpetua
constitutione mandamus, ut ipsius sancti viri dies
festus, tertio Cal. Maii, per omnes totius Orbis ter-
rarum Ecclesias duplici officio de Communi Unius
Martyris, ubi proprium deest, celebretur; ac de-
cernimus ut in Calendario ad eum diem S. Petri
Martyris nomen, cum specificatione Ordinis Prae-
dicatorum, ac duplici nota adscribatur.

§. 5. Praecipientes omnibus Patriarchis, Archie-
piscopis, Episcopis, ceterisque Ecclesiarum Praelatis
in universo terrarum Orbe constitutis, ut faciant in
suis quibusque Ecclesiis, Provinciis, Civitatibus, & Dice-
cesibus, Praesentibus nostras solemni ter publicari, & ab
omnibus Ecclesiasticis personis, secularibus & quo-
rumcumque Ordinum regularibus, omnino observari.

§. 6. Volumus quoque, ut Praesentium exemplis,
etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, &
figillo personae in dignitate Ecclesiastica consti-
tuta munitis, eadem prorsus ubique fides adhibeatur,
quae ipsis Praesentibus adhiberetur si forent exhibitae
vel ostensae.

Datum Romae apud S. Petrum, Anno Incarnatio-
nis Domini, millesimo quingentesimo octogesimo
sexto, Id. Aprilis, Pontificatus nostri anno primo.

De decies centenis millibus nummum aureorum, in
Arce Sancti Angeli sepositis, & nullo umquam
tempore, nisi in praescriptis casibus detrahendis.

Alia centena millia idem Pont. in secundo anno sui
Pont. & alia in tertio simili modo reposuit, ut in-
fra in ejus constit. 69. & 80. Eiusque Bullas, quae
Pontifex initio sui Pontificatus confirmavit.

SIXTUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

A Declavum Apostolicae servitutis in puppi Mili-
tantis Ecclesiae, non meritis nostris, sed divina

voluntatis dispositione, difficillimis his temporibus
constituti, non solum praesentes fluctus, quibus B. Pe-
tri navicula saepius jactatur, mente pervigili circums-
piciamus, sed procul etiam atque a longe impenden-
tes tempestates, non sine magna animi sollicitudine
prospiciamus, easque consilio & vigilantia, quantum
cum Domino possumus, praecavere, ac vitare stude-
mus. Circumstant nos undique multorum generum
pericula, mala intestina quotidie magis ingravescent,
bello ardent Provinciae, Haeretici implacabili odio
inflammati in Nos rapiuntur, hostis teterrimus & po-
tentissimus Turca, alter Assur virga furoris Domini
cervicibus nostris semper imminet, quique commu-
nes sunt Catholicae Religionis, & Christiani nominis
inimici, iidem Romanam in primis Ecclesiam, & Apo-
stolicam hanc Sedem fidei petram, & fidelium omnium
Matrem acerbissime odierunt, ejusque auctoritatem,
amplitudinem, statum convellere, quod Deus aver-
tat, ac labefactare, vehementer atque avidè concu-
piscunt. Et Nos quidem dubios rerum eventus, &
occulta discrimina, quae non sine causa timere cogi-
mur, saepenumero expendentes, non in Nobis ipsis
spem collocamus, neque carnem ponimus brachium
nostrum, sed oculos in caelum sustollimus, ad custo-
dem Israel, eumque ipsum qui nunquam dormit, neque
dormitat, saepe cum lacrymis excitamus, ut aliquando
de somno exurgens mari & ventis imperet, &
tranquillitatem faciat; sed tamen ab eodem, in quo
spes omnes nostrae resident, edocti sumus noctu vi-
gilandum esse patrifamilias, ne fures domum perfo-
diant, servumque supra ejus familiam constitutum, non
solum fidelem esse debere, sed prudentem; nec teme-
rè tentandum Dominum, ut in illis quae consiliis no-
stris & ratione gubernari possunt, non tam arduam
opem, quae semper expetenda est, quam miracula re-
quirere videamur. Quare ad humanæ prudentiae sub-
sidia ita confugimus, ut in Deo potissimum speremus,
ad cuius gloriam, atque ad S. R. E. utilitatem, popu-
lorumque nostrorum quietem & defensionem omnia
dirigimus. Nam cum illius vicem in terris, licet im-
meriti geramus, qui Rex pacificus & Sacerdos est in
aeternum, utraque potestate Sacerdotali & Regali eo-
rum praecipue commodis & incolumitati consulere
debemus, qui sub peculiari tutela, & ditione hujus
sanctae Sedis sunt constituti; in quo quidem Pastoris
etiam officium exercemus, ut praclare nos admonet
Beatissimus Pont. Greg. à quo Pastores objurgantur,
qui de externa gregis utilitate non sunt solliciti. Pa-
stores, inquit, sic erga interiora studia subditorum
suorum ferveant, quatenus in eis exterioris quoque
vitae providentiam non relinquunt.

§. i. Quod igitur à Nobis Pastoralis providentiae
debitum requirit providere cupientes, ne aliquando
repentina aliqua & improvisa vi, quod Superiorum
temporum luctuosam onerant exempla. Nos Successores
nostri, & populi Nobis subiecti opprimantur,
neve ad dubios casus à pecunia omnino imparati si-
mus, quae in ipso motu & trepidatione difficulter ad-
modum, non sine magno Civitatum & Provinciarum
incommodo conficitur, quibus parere cupimus, &
quod gravior est jam sera & inopportuna diligentia
saepius frustra & inutiliter conficitur, quaeque si in
tempora curata & preparata sit, ad copias aliaque
praesidia comparanda, magno usui & adjumento esse
potest; ob eas causas decrevimus certam pecuniae
summam, benedictio Domini, nullo nostrorum ex-
traordinario onere congestam, sed praeter alias rectè
colligendae pecuniae vias, nostra etiam parsimonia,
frugalitateque Pontificia comparatam, hoc est, ad
decies centena millia aureorum nummum sponere,
tamquam factum Ecclesiae Romanae peculium, &
praecipuum aëriam, quod honorum immobilium
insistat sit, atque ad certos casus hac nostra ordina-
tione praescriptos erogandum, fideliter, integreque
reservatum, ac praclare paratum, ipsa Sedes A-
postolica, Ecclesiaeque Romana habeat. Etenim in-

Hic idem
Pont. decies
centena mil-
lia aureorum
nummum in
primo anno
sui Pontifi-
cat. hinc inde
licitè, & abs-
que aliquibus
onibus impos-
sitione colli-
git.

ter omnia præfidia ac firmamenta, quæ ad Reipublicæ defensionem & conservationem necessaria, la-
pientum iudicio putantur; magnam sapientissimus
Salomon, vim & facultatem pecunie tribuit verbis
illis: Utilior est sapientia cum divitiis, & magis
prodest, sicut enim protegit sapientia sic protegit pec-
unia. Quod sane divino consilio à Veteris Testamen-
ti patribus factum esse animadvertimus, cum in Dei
etiam templo, magnam auri argentique copiam, in-
gentemque thesaurum ad necessitates reservatum es-
se, sacris libris, & Regum, & Maccabæorum testa-
tum sit. Hæuit etiam Christus Dominus loculos, &
quæ à fidelibus oblata erant, reservavit, ut Ecclesiæ
necessitatibus subveniret, sicque formam instituit Ec-
clesiasticæ pecunie servandæ, inquit Sanctus Au-
gustinus; Habet etiam Ecclesiæ aurum, ait Beatus
Ambrosius, ut cum necesse esset, illud tunc non servet
sed reservatum erogat; & ex eo tempore, quo prima
Christianæ Religionis jacta fuerunt fundamenta;
Sanctus Sixtus prædecessor noster & Martyr, Le-
vite Laurentio, qui martyrio insignis fuit, Ecclesiæ
thesauros tradiderat aservandos, quos idem Chri-
sti athleta fortissimus, ex manibus Tyranni, qui præ-
ter Christianorum innocentem sanguinem, & aurum
Ecclesiæ fricabat, in pauperes celeriter distribuen-
do eripuit.

Et modo in
Arce S. An-
geli pro Sedis
Apost. præfi-
dio reponit.
Deoque &
ejus Virgini
Mariæ,
Ne deest
Petro & Pau-
lo di. at, in-
deque promi-
(præterquam
in casibus hic
exceptis) hic
prohibet.
Hi casus ad
alios etiam
ad majorem
rationem ha-
bentes exten-
di nequeunt,
ut mox hic
infra decla-
ratur.
Tu autem
vide Bullas
in rubr. in-
dicatas.

§. 2. His itaque rationibus & causis, aliisque ad
Dei gloriam, atque Ecclesiæ utilitatem spectantibus
Nos adducti, Motu proprio, & ex certa nostra scien-
tia, habita super hoc cum venerabilibus fratribus
nostris S. R. E. Cardinalibus in Consistorio nostro
secreto matura consultatione, de eorum consilio, &
unanimitate assensu, hac nostra perpetuò valitura con-
stitutione, atque ordinatione, supra dictam à Nobis
simul concessam pecunie summam, in Pontificia S.
Angeli arce, certo sanctiori ærarii loco, quem eo
nomine constituimus, in quibusdam certis designa-
tis ferreis collocamus, reponimus, aservamus at-
que assignamus, eamque ita collocatam & aserva-
tam, Christo Domino, cujus in terris vices gerimus,
Beatissimæ Virgini Dei genitrici MARIÆ, ac San-
ctis Apostolis Petro & Paulo, ea lege offerimus
atque dicamus, ut inde, ne Nobis quidem eam, ne-
que totam nec verò partem aliquam etiam minimam
umquam liceat, præterquam si pro recuperatione
Terræ sanctæ, & generali contra Turcas expeditione
nec bellum aliquando suscipiendum erit; tuncque
etiam postquam Christianus exercitus comparatus
erit, ac mare ad ipsorum Turcarum fines trajecerit.
Si præterea tanta Annonæ, & rei frumentariæ inop-
ia sit, ut fames populo interitum allatura videatur,
aut si pestilentia lues grassetur. Si manifestum pericu-
lum immincat, ne aliqua ex Christianis Provin-
ciis ab infidelibus, & Catholicæ Ecclesiæ hostibus
occupetur, tuncquam subsidii tantum ferendi cau-
sam, Si bellum contra Statum Sanctæ Romanæ Ec-
clesiæ in Italia inferretur, tuncquam dumtaxat cum
justis atque integer exercitus in ipsos etiam Ec-
clesiasticæ ditionis fines pervaserit, vel prope jam
sit, ut qui loca finitima invaserunt, ad occupandum
Civitates & loca ditionis Ecclesiasticæ irrumpant.
Si belli sumptus faciendus erit pro Civitatis, quæ
temporali ditioni Sanctæ Romanæ Ecclesiæ subjec-
ta, ab ipsis obedientia, (quod Deus avertat) dasece-
rit recuperatione & conservatione, aut pro Civita-
te, ac ditione, quæ ad Sedem Apostolicam devolve-
retur, recuperanda & conservanda. Si quando quis
in eam se intruderet seu occuparet, aut occupatio-
nis & intrusionis periculum inflaret atque urgeret.
In his autem omnibus casibus præscriptis ac permis-
sis, in quibus aliqua pecunie portio, semel aut sæpius
sumilicabit, id semper moderatè fiat, atque cautio re-
tineatur & libeatur, ut omnino saltem integra medie-
tas, constitutæ hujus ærarii pecunie remaneat. Præ-
terea consensum duarum saltem ex tribus partibus
Cardinalium, qui Consistorio interfuerint, præstari,

decretumque ipsum eorumdem Cardinalium con-
sentientium subscriptione roborari volumus.

§. 3. Extra hos autem præscriptos casus, omnem
hujus pecunie, Deo ut supra dicata, vel omnino
vel aliqua ex parte amovendæ aut erogandæ potesta-
tem à Nobis prorsus abdicamus, abdicatamque planè
esse volumus. Statuentes quemadmodum supra di-
ctum est, ut instar bonorum immobilium Ecclesiæ
sit & habeatur; eandemque sic aservatam & reposi-
tam, ac Deo dicatam, Nos integram conservatu-
ros esse, ac perinde omnino atque res & bona Eccle-
siæ immobilia Nos habituros esse promittimus, jura-
mus & vovemus. Cujus rei servandæ vinculo, sicut
Nos adstringimus, ita successores etiam nostri se co-
dem devinctos esse norint. Tum boni publici causâ,
quod summo studio procurare debent, tum Pontifi-
calis muneris religione, qua obstrictos non modò
non rescindere, sed inviolatè observare oportet,
quæ à Prædecessoribus utiliter sanctæque constituta
esse vident. Tum denique divinæ justitiæ lege; ex
qua intelligant se, prout divinæ Litteræ, exemplaq;
significant, ac Patrum doctrina declarant gravissi-
mas poenas datoros esse, si rem Deo dicatam, aliter
ac præscriptum est, dispendant.

§. 4. Cujus rei non minus insigne, quàm tremen-
dum exemplum in Maccabæorum historia memoriæ
traditum est, de impio atque audaci Heliodoro, qui
cum pecuniâ à sacro templi Dei ærario auferre
moliretur, armato quodam equite, aspectu terribili
subito divinitus apparente, equi calcibus impetu-
tus à duobus quoque juvenibus, Dei etiam jussu appa-
rentibus flagellis verberatus, ac plagis gravissimis
affectus est. At verò Nos religiosâ eorum conscientia,
Pontificiæ charitate confisi, non modo non
dubitamus, sed planè speramus fore, ut ærarium
hoc nostrum, quod nostra Pontificali sollicitudine
partum, ac Deo dicatum ad necessarios præscrip-
tos casus reservavimus, ita diligentissimè reservent,
ut Nos maximè facturos esse professi sumus, ac pro-
fitemur.

§. 5. Si verò alii casus aliquando inciderint, qui
etiam majorem ex ærario promendæ pecunie ratio-
nem haberent, nolumus tamen quod de his certis ca-
sibus, constitutis & præscriptis, ullo umquam
tempore, nec etiam dum Sedes Apostolica per o-
bitum Romani Pontificis vacaverit, ad illos qui ma-
joris rationis vim habere viderentur, extensionem
ferri, aut ullo modo de illis interpretari licere. Sed
nostram hanc ordinationem, constitutionemve ad
litteram intelligi debere decernimus. Nam Succes-
soribus nostris æque ac Nobis etiam, si qui alii casus
inciderint in quibus magnæ etiam impensæ infumen-
dæ aliquando erunt pecuniæ, opes aliunde non de-
erunt, quibus conservata hac in hoc à Nobis confi-
tuto & sancto ærario summa, occurrere necessitatibus
incidentibus poterit. Etenim si à Nobis, qui in hoc
ipso Pontificatus nostri ingressu multis difficultati-
bus oppressi, ad sublevandam Annonæ inopiam ad
exules facinorosos homines publicæ quietis per-
turbatores coercendos, atque ob Basilicas religiosissi-
mas, & toto terrarum Orbe celeberrimas reficien-
das, atque instaurandas, cultumque divinum in hac
Alma Urbe, quæ Christianæ religionis Sedes est
& domicilium, novis etiam sacris ædificiis, atque ad
loca Urbis acclivia, quæ illa maximè indigent ope-
rosam deductionem, aliasque gravissimas ob causas,
multiplices & maximas impensas subire coacti su-
mus, ærarii hujus pecunia, nostra sedulitate & dili-
gentia reposta, & ad certos præscriptos casus re-
servata non esset, sed in varios alios usus à Nobis
pro iusto arbitratu nostro erogaretur, nullus quidem
locus justæ adversus Nos querelæ successoribus no-
stris relinqueretur, & nihilominus pro necessitatibus
etiam quæ de repente inciderent, sumptus subire
& eis providere cogerentur. Propterea iis du-
rum videri nullo modo debet, si conservata ærarii

Idque se ser-
vaturum ju-
rando voveret
& ejus Suc-
cessores dic-
tum juramen-
tum ligare
declarat.

Exemplum
quoque eif-
dem propo-
uit impii He-
liodori qui
pecuniam ab
ærario Tem-
pli Dei aufer-
re moliens,
Dei jussu a-
crius percus-
sus & verbe-
ratus fuit.

Casus hic
præscriptos,
ad alios etiã
majoris ratio-
nis vim habentes,
non extendi,
sed ad litem
intelligi
debere de-
cernit, ex
causis hic
expressis.

ecuniam
icibus
ceptam,
namprimū
poni jubet.

claves sex
d. custo-
iam dictæ
ecunie in-
tutatis sex
utatis hic
ominatis
signatis, præ-
rento jura-
mentis
servandis
remittitis
pæ pœna
ecomuni-
cationis.

refectus
Castri S.
Angeli præ
missa servari
jubeat.

Contrarium
autantes
cenas hic
actas incur-
ant.

Cardinales
omnes in
assumptione
vel accessu
ad Curiam
observatio-
nem hujus
Bullæ curent.

In Conclavi
dem ipsi

prædicti summa, quæ faciliorem ad alios nummos sibi comparandos viam munit, aliunde pecuniam sumere debeant, quam in sumptus, pro temporum varietate necessarios erogent

§. 6. Immo verò illud rationi valde consentaneum est, ut quam inde pecunie partem in præscriptis illis casibus sumplerint, eam integram cum primū sumptus in his faciendi occasio cessaverit, planè in ipsum ararium unde acceperunt, restituant ac reponant.

§. 7. Et verò, ut ob causas tantum supra planè præscriptas, ex eodem arario pecunia justè legitimeque sumatur, ad illius custodiam sex claves adhiberi jubemus, quarum tres Cardinalibus item tribus, qui Ordinum capita dicuntur, quique in Romana Curia præsentibus adsint, illis verò absentibus, tribus aliis, qui in eisdem Ordinibus eis proximè erunt, eorumque locum eo tempore gesserint, sigillatim assignentur, quarta S. R. E. Camerario, quinta Decano Clericorum Camera Apostolicæ, à quo illam aliàs tradi non liceat, nisi præsentibus & consentientibus ejusdem Camerae Clericis duobus, sexta denique Thesaurario generali. Claves verò duæ portarum ararii hujusmodi à Nobis constituti, altera Collegii Card. Decano, eoque absente antiquiori in ordine Card. in Urbe existent, altera nostro & pro tempore existentis Romani Pontificis Thesaurario secreto asservandæ tradantur, qui omnes jurabit, se neq. claves daturus, neq. extractioni præfatæ pecunie consenturus, nisi in casibus supra scriptis. & tunc nisi consensu duarum partium Cardin. ut supra interveniente.

§. 8. Volumus insuper ejusdem Castri S. Angeli, nunc & pro tempore Prædicti juramentum deferri, atque ad illud præstandum in manibus S. Rom. Ecclesiæ Camerarii teneri, se non permittitur, quavis justificatione, & quibuscvis clausulis munita non obstante, ex arario per Nos constituto aliquam pecuniarum quantitatem auferri, nisi forma per Nos tradita observata. Si verò contra hoc juramentum fecerint, pecuniamque ex arario partem aliquam vel minimam contra hujus ordinationis, constitutionisque nostræ præscriptum sumi, promi, detrahique permiserint, anathematis poenam ipso facto subeant.

§. 9. Id quoque statuimus & sancimus, ut omnes & singuli, tam seculares quavis dignitate, etiam Ducali, aut Regia fulgentes, quam Ecclesiastici, cujusvis ordinis & dignitatis, etiam Episcopi vel Archiep. vel Card. qui de pecuniis ex eodem arario, præter casus & formam supra præscriptos, sumendis, aut venditis tractant, consuluerint, suaserint, aut suadere tentarint, eo ipso sententiam excommunicationis incurrant, à qua nisi ab ipso Pontifice, præterquam in mortis articulo absolvi nequeant, ac præterea S. Rom. Ecclesiæ, Sedi quæ Apostolicæ iidem rebelles, læsæque majestatis rei esse censentur, omnibusque Ecclesiis, Monasteriis, & aliis per eos quomodolibet obtentis Ecclesiasticis beneficiis eo ipso privati, cum ad illa, tñ ad alia in posterū obtinenda inhabiles existant. Quod si aliquando eos reintegrari contigerit, nihilominus infames etiam remaneant, nec verò umquam iis ad honores, gradus, dignitatesque in posterū aditus pateat.

§. 10. Volumus autem quod sicut omnes & singuli Card. præfates constitutionem hujusmodi quantum in eis erit observare, & illique non contravenire, nec Pontificibus contrafacientibus consentire, aut absolutionem à juramento præstito non petere, nec oblationem apt concessam acceptare in Consistorio nostro secreto promiserunt & jurarunt, idem per absentes Card. à Consistorio in habitatione eorum & à Roma Curia, ut quodcumque ad eamdem Curiam se contulerint, ac per futuros pro tempore Card. in assumptione pilei promitti & jurari debeant, ac promissionem & juramentum hujusmodi in formula juramenti per eisdem Card. prælati soliti, adjungi & inscribi debere, & contrafacientes poenam perjuri & perpetuæ infamiae, juris & facti eo ipso incurere decernimus.

§. 11. Præterea quod ipsi Card. occurrente Apo-

stolicæ Sedis vacatione, in Conclavi quando de observando felicis recordat. prædecessorum nostrorum Julii Secundi litteris super electione Romani Pontificis, & Pii Quinti, ne Civitates & loca S. R. E. infeudentur, & aliis constitutionibus juramentum præflare solent, etiam de inviolabiliter præfenti constitutione nostra, per quemlibet eorum qui in Romanum Pontificem electus fuerit, & postmodum idem ad Summi Pontificatus fastigium assumptus post ejus assumptionem hoc ipsum promittere ac jurare, & deinde post coronationem suam promissionem & juramentum hujusmodi per Litteras suas speciales harum confirmatorias reiterari debeat. Quod si illud à Pontifice, quod credendum non est recusabitur, aut differetur, tunc dicti Cardin. in primo Consistorio secreto, & præcipue eorum Decanus, & Capita Ordinum apud eum omni cum instantia, & instantissime pro Pontificum observatione petere & rogare, ac obtestari non cessent. Quod si semel atque iterum enixè rogatus ejusmodi juramentum pællare diutius etiam distulerit, tunc demum omnes singulosque Card. ea lege adstringimus, ut in singulos annos quinquies, in die scilicet Natalis Domini, in Pascha Resurrectionis, in festo solenni S. Petri, die præterea Anniversario Creationis & Coronationis ipsum Pontificem instant, instantius, atque instantissime rogent, orent, obsecrent, atque obtestentur, ut de sancto hoc arario, quod Deo obtulimus & dicavimus, id præscriptum custodiendo servandoque sanctè juret, idque ut omnino efficiat tandiu quoad plenè effecerit diligenter curare studeant, statuimus & ordinamus.

§. 12. Has verò nostras Litteras in libellum redigi, & post prædictas Julii Secundi & Pii Quinti litteras, quæ in ipso Conclavi legi solent, aliisque constitutionibus Apostolicis adjungi, & in quinqueno etiam Cancellariæ Apostolicæ una cum aliis constitutionibus nostris describi, & in valvis Basilicæ B. Petri Principis Apostolorum, & in Cancellaria nostra Apostolica, ac in acie Campi Floræ publicari.

§. 13. Earumque transumptis & exemplis etiam impressis manu Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus Prælati seu personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eandem fidem ubique haberi, in judicio & extra, quæ Præsentibus haberetur, volumus & jubemus.

§. 14. Si quis autem fortasse nostrorum Successorum, id quod minimè credimus, huic nostræ constitutioni omnino aut aliqua ex parte derogare, aut contra statuere voluerit, aut depromptam pecuniam, ut supra sancitum est, in idem ararium non restituerit admonemus post derogantis, ac contra statuentis, contraque facientis obitum liberum esse Successoribus ea derogatione, & quibuscvis aliis, quæ contra statuta sunt non obstantibus, pro pecunia contra hujus constitutionis præscriptum sumpta ac deprompta recuperanda adversus Pontificis derogantis, & contrafacientis, & Card. idem consentientium posteror, seu conjunctos omnes, quibus sub ipso Pontifice aut Card. bona quovis titulo, vel quavis ratione obvennerint agere, & possessionem bonorum, quæ ad ipsos posteror pervenerint, adipisci, retinerique, donec quicquid pecunie depromptum est, id omne in ararium referatur & restituatur, eaque ipsa bona, si quo modo, ut supra dictum est, à forma per Nos constituta recedi contigerit, hujusmodi obligationi atque oneri, obnoxia & addicta esse volumus, singulis quæ in nostris Litteris adversari possent, vel quoquomodo obesse penitus remotis, ac non obstantibus.

§. 15. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ constitutionis, collocationis, epositionis, affervationis, assignationis, oblationis, dicationis, abdicationis, promissionis, juramenti, voti, professionis, sanctionis, adstrictionum, decretorum, statutorum ordinationis, iussionum, admonitionis, & voluntatum infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, i. li-

Car. & etiam Pont. post coronationem juramento promittant.

Hæc Bulla in Conclavi legatur, & in quinqueno Cancellariæ describatur.

Transumptis credatur.

Si Successores contraveniant agi poterit contra eorum, A. Card. consensum conjunctos.

In hoc aliquid est mutatum in Bullis cit. in rub.

Sancita poenalis.

gationem

ANNO
1586.

576

SIXTUS QUINTUS.

ANN
1586

D. P. A. 1.
die 12. April.

Papae subsc.

Card. subsc.

Pub. licatio.

gnationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.
Dat. Romae apud S. Petrum, Anno incarnationis Dom. 1586. 1. Kal. Maii, Pont. nostri anno 1.

Ego Sixtus Catholicæ Ecclesiæ Episcopus promitto, voveo, & juro.

De ventre matris mea tu es Deus protector meus.

Ego A. Cardinalis Farnesius Episcopus Ostien. Vicecancellarius, promitto, voveo, & juro.

Ego Jac. Card. Sabelius Episcopus Portuen. promitto, voveo, & juro.

Ego Jo. Ant. Card. S. Georgii, Episcopus Tusculanus, promitto, voveo, & juro.

Ego Jo. Franciscus Card. de Gambara Episc. Prænestin. promitto, voveo, & juro.

Ego M. S. Car. ab Altaemps, promitto, voveo, & juro.

Ego Innicus Avalus Card. de Aragonia, promitto, voveo, & juro.

Ego Marc. Ant. Card. Columna, promitto, voveo & juro.

Ego P. Card. Sanctacrucius, promitto, voveo, & juro.

Fr. Michael Bonellus Card. Alexandrinus, promitto, voveo, & juro.

Ego Lud. Mudrucius, promitto, voveo, & juro.

Ego N. Card. Senonensis, promitto, voveo, & juro.

Jol. Antonius Card. Sanctæ Severinæ, promitto, voveo, & juro.

P. Card. Cæsius, promitto, voveo, & juro.

Ego Hieronymus Card. Rusticucius, promitto, voveo, & juro.

Ego Jo. Hieronymus Card. Albanus, promitto, voveo, & juro.

Ego Philippus Boncompagnus Card. Sancti Sixti, promitto, voveo, & juro.

Ego Hieronymus Card. Simoncellus, promitto, voveo, & juro.

Ego P. Card. Deza, promitto, voveo, & juro.

Ego Ant. Card. Caraffa, promitto, voveo, & juro.

Ego Jo. Ant. Card. Sanctorum Quatuor, promitto, voveo, & juro.

Ego Jo. Bapt. Card. S. Marcelli, promitto, voveo, & juro.

Ego Vinc. Card. Montis Regalis, promitto, voveo, & juro.

Ego Scipio Card. Lancellotus, promitto, voveo, & juro.

Ego Vinc. Card. Gonzaga, promitto, voveo, & juro.

Ego Henr. Card. Cajetanus, promitto, voveo, & juro.

Ego Jo. Baptista Card. Castriucius, promitto, voveo, & juro.

Ego Federicus Card. Cornelius, promitto, voveo, & juro.

Ego Dominicus Card. Pinellus, promitto, voveo, & juro.

Ego Decius Card. Azzolinus, promitto, voveo, & juro.

Ego Hippolytus Card. Aldobrandinus, promitto, voveo, & juro.

Ego Ferdinandus Card. de Medicis, promitto, voveo, & juro.

Ego Philippus Vastavillanus, promitto, voveo, & juro.

Ego Franciscus Card. Sfortia, promitto, juro, & voveo.

Ego Alexander Card. Montaltus, promitto, juro, & voveo.

teranen. & S. Petri Principis Apostolorum de Urbe, necnon Cancellaria Apostolica & acie Campi Floræ, & per aliquod temporis spatium dimissa per nos Claudium Mongeat, & Nicolaum Taglietuum S. D. N. Papæ Curæ.

Alex. Patabiacus Mag. Curæ.

Confirmatio Congregationis B. MARIE Folienfis strictioris observantiæ Monachorum Ordinis Cisterciensis S. Benedicti, cum gratiarum elargitione. Hujusmodi gratias amplavit, atque concessit privilegia hic idem Tomo 3. fol. 21. in sua const. 12. Pastoralis, & latius extendit Paul. V. in ejus const. 23. Divina fol. 231. Insuperque prædictus Clemens præcedentiam respectu Fratrum Mendicantium, his Monachis dedit in const. 56. Regis. Et eisdem ad alium Ordinem transientes, ad istam Congregationem redire vetuit in alia sua const. 107. Pro nostro, Ac postremo idem Paul. V. operi conficiendi Agnus Dei hos Monachos præfexit, in sua const. 43. Romanum. Vide in d. Tomo 3.

SIXTUS PAPA V.

Ad perpetuam rei memoriam.

Religiosos viros, qui divino spiritu afflati, arctiorem quam ab initio professi fuerint, ac præfatis Sanctorum Patrum moribus magis similem vitæ rationem sibi ipsis suapte sponte præscribant, in suo laudabili proposito consovere, & ita alios ad eorum imitanda vestigia incitare, pro Pastoralis officio divinitus commissio, plurimum semper intendimus.

§. 1. Sane cum ad Nos nuper perlatus fuerit, in vestro Monasterio, sublati quibuscumque pravis abusibus, institutionem & disciplinam monasticam in longè meliorem formam restitutam & reintegratam, Vosque Religionis & pietatis amore ita incensos existere, ut non solum ab esu carniū quibuscumque temporibus, etiam ab Ecclesiæ permissis, & à potu vini abstinentis, sed etiam in laboribus, jejuniis, orationibus, carnis maceratione & mortificatione aliisque poenitentiae operibus exercendis, strictiorem & severiorem quàm reliqui Monac. S. Benedicti Cisterciensis Ordinis regulam observare studeatis.

§. 2. Nos vestram hanc piam & salutarem intentionem plurimum in Domino commendantes, quo magis pacato & tranquillo animo in humilitatis (piritu divinis obsequiis insilere, piumque institutum prosequi absque impedimento possitis, vestris supplicationibus inclinati, ritus, mores, vitæ normam, & reformationem ad arctiorem regularis disciplinæ observantiam in istud Monasterium nuper introductam, dummodo sacris Canonibus & Concilii Tridentini decretis, ac supra dictæ S. Benedicti regulæ jampridem auctoritate Apostolica approbatæ, consona sint, auctoritate Præsentium approbamus & confirmamus, illaque præsentium Litterarum patrocinio communimus, vobisque ac illis qui perpetuis futuris temporibus in isto Monasterio regularem professionem emiserint, ut ea observare licite possitis licentiam concedimus.

§. 3. Interdicimus etiam dilectis filiis Abbati Monasterii Cistercii, Cabilonenfis Diocesis, ceterisque Superioribus pro tempore existentibus ejusdem Ordinis, ne vos, aut eos qui posthac erunt in isto Monasterio recepti, & ad professionem admissi, ad relaxandum & remittendum aliqua ex parte rigorem illius observantiæ, utendumque indultis & dispensationibus Apostolicis, quibus versutam vestri Ordinis, & primæ institutionem, illiusque austeritatem diversis nostri prædecessores, mansuetudine quadam temperarunt, & laxiorem, honestam tamen, vivendi

normam

XXXII

Edita A.
1586.

Exordium

In Monasterio S. Mariæ Folienfis, arctior observantia monasticae discipline monachis introducta fuit.

Hic Pontificis approbatio.

Quinimo quibusque canonicis jubentur in Bulla 7

Superioribus d. Ordinis interdictis, ne dicta vive d. normalis Monachos retrahant. Quinimo Clemens VIII. in sua const. 12. istam Congregationem ab omni superioritate illorum exemptam, & latius Paulus V. hic in rubr.

Hæ Bullas
irrevocabiles
hic in rubr.

normam permiserunt, & benigne indulerunt, quovis prætextu aut quasito colore, invitos cogere vel compellere, aut vos in præmissis moleſtare, aut impedire eudeant vel præſumant. Quod ſi quid tale attentaverint, aut vobis injungere, præcipere, & mandare præſumpſerint, Vos ac pro tempore futuros illius Monasterii Abbatem & Monachos ad obediendum talibus illorum præceptis & juſſis minime teneri decernimus. Ita ut nihilominus, etiam illis contradicentibus, abſque alicujus pœnæ vel cenſuræ Eccleſiaſtica inſcru in hoc veſtro inſtituto perſeverare, liberè & licitè valeatis.

§.4. Ceterum volumus, ut in reliquis, quæ præmiſſis veſtris artioribus inſtitutis, & diſciplinæ regulari non erunt contraria, eorum viſitationi, correctioni, omnimodæ juſriſdictioni, & ſuperioritati, ſicuti hæcenus fuiſtis, & in poſterum vos, veſtriſque ſucceſſores ſubjecti ſitis, & ab illorum obedientia nequaquam tali occasione recedatis.

§.5. Quod ſi umquam controverſia, dubitatio, ſeu diſcordia exorta erit ſuper præmiſſis, utrum ſcilicet veſtri mores, veſtrumque vivendi genus prædictæ S. Benedicti regulæ adverſentur, talis controverſiæ cognitionem, definitionem, & decionem, Nobis dumtaxat & Romano Pontifici pro tempore exiſtenti reſervamus.

§.6. Non obſtantibus conſtitutionibus & ordinationibus Apoſtolicis, ac in Conciliis etiam generalibus editis, & prædictorum, ac aliorum quorumvis Ordinum & Monasteriorum juramento, confirmatione Apoſt. vel quavis firmitate alia roboratis, ſtatutis & conſuetudinibus privilegiis quocunque indultis, & litteris Apoſtolicis, illorum Superioribus & Generalibus, ceteriſque perſonis quomodolibet conceſſis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus illorum tenores pro expreſſis habentes, ad effectum præſentium dumtaxat, ſpecialiter & expreſſe derogamus; ceteriſque contrariis quibuscumque.

Datum Romæ apud S. Petrum ſub annulo Piſcatoris, die 5. Maii, 1586. Pontificatus noſtri anno 2.

Approbatio, declaratio, & extenſio conſtitutionum editarum à Pont. prædeceſſoribus, circa ſolutionem Annatarum, Communium, & Quindenſiorum, de beneficiis Eccleſiaſticis R. Cam. Apoſt. debitorum.

De hac materia, ultra ea qua ſunt in extravagantibus, extant in hoc opere Paul. II. conſt. 6. Decet. fol. 384. Innocent. VIII. conſt. 3. Apoſtolicæ. fol. 434. Jul. II. conſt. 4. Romani. fol. 468. Clem. VII. conſt. 33. Cum ſicut. Jul. III. conſt. 20. in Tomo I. Cupientes. Paul. IV. conſt. 11. Incumbentia, & conſt. 17. Decens. necnon Pii V. conſt. 38. Apoſtolicæ. fol. 240. ſuprà in hoc Tomo.

SIXTUS PAPA V.

Ad futuram rei memoriam.

Cameræ noſtræ Apoſtolicæ, & Collegii Fratrum noſtrorum S.R.E. Cardin. & Officialium Romanæ Curie, de annatis & quindenſiis participationum indemnitati, prout tenemus, conſulere, & eorum jura illæ præſervare volentes, ea qua propterea à Prædeceſſoribus noſtris providè ſtatuta fuerunt & ordinata, ut inviolatè obſerventur confirmationis noſtræ munimine roboramus & innovamus, & aliàs deſuper diſponimus, prout rationi conſentaneum eſſe, & in Domino conſpicimus expedire.

§.1. Itaque Motu proprio & ex certa ſcientia noſtra, quaſcumque, tam ſub plumbò quàm in forma Brevis, & Motus proprii Litteras ſel. rec. Pauli Se-

cundi, & ejuſdem nominis Tertii, Pauli IV. ac Pii V. necnon quorumcumque aliorum Romanorum Pontificum prædeceſſorum noſtrorum ſuper ſolutione annatarum, communium, quindenſiorum, & aliorum jurium, ratione provisionum, & ſeu unionum perpetuarum, quorumcumque beneficiorum Eccleſiaſticorum, per Sedem Apoſtolicam ſacrarum & faciendarum, editas, confirmatas, & innovatas, cum omnibus clauſulis, decretis, derogationibus, ac cenſuris & penis in illis contentis, necnon omnia & ſingula per quoscumque Judices, executores, & Commiſſarios, in præmiſſis & circa ea quomodolibet geſta & executi, ac inde ſecuta quæcumque, auctoritate Apoſtolica tenore præſentium approbamus & confirmamus, necnon illis perpetuè & irrefragabilis firmitatis robur adjicimus, omneſque & ſingulos juris & facti, ac ſolemnitatum, & alios defectus, ſi qui forſan intervenerint in eiſdem ſupplemus, atque illas & illa, quatenus opus ſit, innovamus.

§.2. Præterea quoniam quindenſiorum uſus, & ſolutio ratione beneficiorum unionum conſtituta ſunt, quia illorum vacatio amplius non ſperatur, & ut propterea damnum ex hoc Cameræ Apoſt. & Collegio Card. & Romanæ Curie Officialibus prædictis emergens ſarciatur; Nos attendentes, quod tantumdem detrimenti Cameræ, Collegio, & Officialibus præſatis, ex unionibus quæ ab Ordinariis locorum, & aliis ſunt, provenit, ac propterea æquum eſſe cenſentes, ut quod in unionibus per Sedem Apoſtolicam factis obtinet, illud idem & fortius in unionibus per ipſos Ordinarios factis & faciendis obſervetur; licetque in conſtitutionibus & litteris Prædeceſſorum præſatorum comprehendì videatur, tamen, ut cuius dubitandi occaſio præcidatur, Motu & ſcientia ſimilibus, ac de Apoſtolicæ poteſtatis plenitudine, tenore præſentium ſtatimus, decernimus & declaramus, quod uniones, annexiones, incorporationes, applicationes, & ſubmiſſiones, de quibuscumque beneficiis Eccleſiaſticis, tam ſecularibus quàm regularibus, etiamſi Monasteria Monialium, & Hoſpitalia fuerint, que tamen tempore ipſarum unionum cura Conventu & Hoſpitalitate caruerint, & quorum ſingulorum, vel ſi plura beneficia unicis Litteris comprehenſa ſint, quorum quodlibet annuus valor viginti-quatuor ducatos auri de Cameræ, ſecundum communem extimationem non excedat, dummodò tamen omnium inſimul illum tranſcendant, cuiusque Eccleſiæ, Monasterio, Collegio, domui, Societati, Congregationi, Ordini, Militiæ, Hoſpitali, Seminario, aut alii loco pio, tam per quoscumque Romanos Pontifices prædeceſſores noſtros, ac Nos, necnon Sedis præſatæ Legatos, Nuncios, & alios quoscumque ſubdelegatos, & aliàs quomodolibet auctoritate Apoſtolica, quàm per quemcumque loci Ordinarium, in quolibet mundi parte, hæcenus factæ & faciendæ, etiamſi manualia, & de jure patronatus laicorum, etiam Imperatoris, Regum, Ducum, Marchionum, Baronum, Comitum, & aliorum nobilium & illuſtrium illa beneficia fuerint, ſub dictorum Prædeceſſorum conſtitutionibus ac declarationibus omnino comprehendantur & includantur, ac ab omnibus comprehenſæ & incluſæ cenſeantur. Et propterea omnia & ſingula Cathedralium, etiam Metropolitanarum, Collegiarumque Eccleſiarum, Capitula, Congregationes, Societates, Univerſitates, Collegia, Seminaria, Hoſpitalia, Monasteria, & pia loca huiusmodi, & quivis alii, in quorum favorem uniones, annexiones, incorporationes, applicationes & ſubmiſſiones huiusmodi factæ reperirentur, aut poſſibiles ſient, quantumcumque exemptæ & privilegiatæ exiſtant, etiamſi he ſuperinde in Cameræ Apoſtolicæ non obligaverint, dummodò beneficia ipſa poſſideant, ad ſolutionem quindenſiorum præſatorum eidem Cameræ, ac Collegio & Officialibus, ratione unionum, annexionum, incorporationum,

Extenſio ad
quaſcumque
uniones be-
neciorum
hic non ex-
ceptorumDar. F. A. a.
die 5. Maii.

XXXIII.

Edita An. D.
1586.Caſa hujus
ontit.Conſtitutio
Bullarum
Paul. II. &
IV. & Pii V.
& aliorum
Pontificum.

Decretum
litterarum.

Judicis de-
putatio &
facultates, in
causis & exi-
gentiis anna-
tarum &c.

Clausula de-
rogatoria.

applicationum, & submissionum, præfatarum singulis quindecim annis, à die quo illa suum fortitæ fuerint effectum, juxta tenorem Litterarum Prædecessorum præfatarum super hoc editarum faciendam teneri, & obligatos esse, & ad id per sententias, censuras & poenâs in ipsis Litteris contenta cogi & compelli posse.

§. 3. Sique per quoscumque Judices ordinarios & delegatos, quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Card. sublati eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, ubique judicari & definiri debere, irritumque & inane quicquid fecus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, decernimus.

§. 4. Mandantes dilecto filio Magistro Alexandro Gionerio, Clerico dicte Camere, quem super cognitione & decisione causarum, tam occasione præmissorum quam annatarum beneficiorum pro tempore vacantium, per illorum provisos dictis Camere Collegio & Officialibus, debitorum & debendarum, & pendentes & movendas Judicem deputavimus, ac aliis in ejus locum, per Nos vel Successores nostros subrogandi Judicibus, ut pro faciliiori indagatione unionum præfatarum, omnia & singula Cathedralium, etiam Metropolitanarum & Collegiarum Ecclesiarum, Capitula & Collegia, necnon tã virorum quam mulierum, secularium & quorumvis Ordinum regularium, Congregationes, seu Collegia, Seminaris, & pia loca, eorumdemque Prælatos & Procuratores, ad judicandum & profitendum medio juramento, omnia & singula Monasteria, Prioratus, Præposituras, Præpositus, Parochiales, Ecclesias, & alia quæcumque beneficia Ecclesiastica, etiam manualia, & de jure patronatus, ut præfertur, fuerint, quæ ipsa Collegia, Seminaris, Congregationes, & alia pia loca præfata possideant, illorumque annuos veros valores, sub privationis & aliis in Litteris in forma Motus proprii Pauli IV. & Pii V. prædecessorum hujusmodi contentis sententiis, censuris & poenis, in Romana Curia & extra eam, moneant & requirant. Dantes eis plenam & liberam facultatem pro eorumdem quinquenniorum & jurium exactione, omnes & singulos illorum debitores sub singulis præfatis, & præsentibus nostris Litteris comprehensos, etiam per edictum publicum; consilio summarie de non tuto accessu, tam in dicta Curia quam extra eam, citandi, monendi, & requirendi, ac eis & aliis, quibus & quoties opus fuerit, etiam sub censuris & poenis Ecclesiasticis, ac etiam pecuniariis, Alexandri & subrogandorum præfatorum arbitrio ferendis, statuendis, moderandis & applicandis, ac etiam privationis beneficiorum unionum, etiam simili edicto inhibendi, ipsosque debitores ad indicandum beneficia unita, & solvendum quinquennia decurra, etiam si ad id in Camera Apostolica non se obligaverint, consilio tamen de sortito effectu unionum per similes sententias, censuras, & poenas, etiam interditi, tam localis quam personalis appositionem, per Alexandrum, & subrogandos præfatos, quoties opus fuerit, ferendas & promulgandas, necnon fructuum, reddituum, & proventuum beneficiorum Ecclesiasticorum, quæ ipsi debitores possidebant pro quantitate eorum debiti sequestrationem, & alia opportuna juris & facti remedia, etiam cum invocatione auxilii brachii secularis, cogendi & compellendi, ac in præmissis omnibus & singulis, etiam summarie, simpliciter, & de plano, sine strepitu & figura judicii, sola facti veritate inspecta, ac aliis more Camerali procedendi, ac eos qui sententias, censuras & poenas præfatas, ut præmittitur incurrerit, ab eisdem censuris & poenis, prævia satisfactione absolviendi & liberandi, aliisque faciendi, gerendi & exercendi, quæ in præmissis necessaria fuerint, seu quomodolibet opportuna.

§. 5. Non obstantibus quacumque centenaria, etiam completa, & etiam majori à jure statuta præferi-

ptione, ac quibuscumque constitutionibus & ordinationibus, necnon privilegiis, exemptionibus, indultis, & litteris Apostolicis, Capitulis, Congregationibus, Collegiis, Seminaris, Hospitalibus & aliis piis locis præfatis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque derogatoriis, derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, necnon irritantibus & aliis decretis, etiam motu & scientia similibus, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, etiam consistorialiter, & ex causa iniri contractus, aut aliâs quomodolibet concessis, aciteratis vicibus approbatis & innovatis. Quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa & individua, ac de verbo aut verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma servanda esset, tenores hujusmodi, ac si de verbo aut verbum infererentur, Præsentibus pro plenè & sufficienter expressis habentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, necnon omnibus illis, quæ prædecessores præfati, in singulis eorum Litteris voluerunt non obflare; ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 6. Volumus autem ut Præsentium transumptis, etiam impressis, massa Notarii publici subsciptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prout fides in judicio & extra adhibeatur, quæ Præsentibus adhiberetur, si essent exhibitæ, vel offensæ.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 14. Maii, 1586. Pontificatus nostri anno 2.

Confirmatio & nova concessio gratiarum & privilegiorum Ordini Cisterciensi, ejusque Abbatibus, Monachis, & Monasteriis a Greg. IX. Innoc. IV. Six. IV. Innoc. VIII. Pio IV. Pio V. Greg. XIII. & aliis Summis Pont. concessorum.

Institutionem hujus Ordinis, & omnia ipsum concernentia inspicie sup. in Palschal. II. consil. 1. Desiderium. fol. 30.

Similes autem Statutorum Ordinis, & privilegiorum confirmationes habes sup. in Pii IV. consil. 70. In eminenti. fol. 106. & in Greg. XIII. consil. 18. Superna.

SIXTUS PAPA V.

Ad futuram rei memoriam.

Pontifex Romanus primarius Christi Dei & Domini nostri interris gerens vices, sicut totius Domini gregis pascendi curam & onus sustinere dignoscitur, ita in eos, quos gravius laborare, & suo præcipuo auxilio indigere perpexerit, propensius & favorabilius incumbere debet. Cum primis verò Religiosorum Monachorum, qui mundanis abjectis illecebris in spiritu humilitatis Altissimo famulantur, paternam curam gerere, nutantemque illorum statum quantum ex alto conceditur, celeri ac salubri munimine fulcire.

§. 1. Sanè sicut pro parte dilecti filii Edmundi à Cruce Abbatis Monasterii Cistercii Cabilonenensis Dicecesis totius Ordinis Cisterciensis Generalis, necnon dicti Ord. Capituli generalis Nobis fuit expositum, quod Cisterciensium Monachorum Ordo à Divo Ruberto institutus, & à Divo Bernardo illustratus, ceterisque eorum successores propagatus, multorum virorum sanctimoniam præcellens, tam à Prædecessoribus nostris Romanis Pontificibus, quam etiam ab Imperatoribus, Regibus, Ducibus, & aliis Principibus, tot & tantis privilegiis, gratiis, & favoribus meruit decorari, ut nullo quovis temerario ausu, nullaque temporis diuturnitate, privilegia, exemptiones, & gratias hujusmodi, à

Transumptorum fides

D. P. An. die 14. Maii

XXXIV.

Edita A. I. 1586.

Exordium.

Flures Summi Pont. Ordini Cisterciensis diversæ gratias & privilegia concesserunt.

quoquam violari, aut modo aliquo infringi posse viderentur. Sed tamen ea est quorundam hominum improbitas, talisque eorum humanarum conditio, ut nisi sæpius eadem iterentur, & legum poenis fulciantur, huiusmodi hominum audacia, & temporis injuria, optimæ leges & privilegia concalcentur. Quo factum est, ut quemadmodum eadem expositio subijungebat, multi pia mem. Prædecessores nostri, præcipuè verò Pæchalii Secundus, Callistus etiam Secundus, Eugenius Tertius, Alexander Tertius, Lucius similiter Tertius, Honorius etiam Tertius, Gregorius Nonus, Innocentius Quartus, Alexander etiam Quartus, Urbanus Quartus, Clemens etiam Quartus, Gregorius Decimus, Nicolaus Quartus, Bonifacius Octavus, Clemens Quintus, Joannes Vigelmus-secundus, Benedictus Duodecimus, Clemens Sextus, Urbanus Quintus, Jo. Vigelmus-tertius, Martinus Quintus, Eng. Quartus, Nicol. Quintus, Callistus Tertius, Pius Secundus, Sixtus Quartus, Innoc. Octavus, Leo Decimus, Pius Quartus, Pius Quintus, Greg. Decimus-tertius Romani Pontifices privilegia, prærogativas, immunitates, exemptiones, libertates, indulgentias, conservatorias, facultates, & alias gratias Cistercii, necnon Firmitatis Pontiniaci, Clarevalis & Morimondi, Cabilonenfis, Antisiodorensis & Lingonenfis respectivè Diocesium quatuor ipsius Monasterii Cistercii filiabus appellatis, totique Ordini Cisterciæ. Capitulo generali ejusdem concesserint & indulserint.

§. 2. Inter cetera verò Gregorius Nonus ne ullus Episcopus, aut qualibet alia persona cujuscumque dignitatis & præeminentiæ existat, regularem electionem Abbatum ipsius Ordinis impedire, aut in ea se quomodolibet ingerere.

§. 3. Innocentius Quartus eisdem Episcopis, ne Monachos & Abbates Religionis ejusdem, etiam ratione cujuscumque delicti, causa fidei dumtaxat excepta, ad sua judicia & tribunalia trahere.

§. 4. Sixtus Quartus Commendatariis Monachorum numeri taxationem, & novitiarum receptionem & benedictionem in Monasteriis commendatis prohibuit, atque ejus rei curam penes Abbates, aliosque Ordinis Superiores remanere voluit.

§. 5. Innocentius Octavus, ne quisquam ex Abbatibus & Monachis ipsius Ordinis, in habitu & vivendi ritu longo usu passim recepto, se ab aliis difformare præsumeret.

§. 6. Pius Quartus, Pius Quintus, & Gregorius Decimus-tertius, Commendatariis eisdem, eorumque ministris, ceterisque personis secularibus quovis titulo ipsius Ord. Monasteriorum fructus, atque proventus percipientibus, ne templa & alia loca regularia, & ad Monachorum usum destinata, Abbatis rum huiusmodi, & Monasteriorum quomodolibet occuparent, aut profanarent, neve in illis mulieres, cujuscumque conditionis introducerent, nec sese in bonis per Monachos pro tempore decedentes relictis, illorumve spoliis quomodolibet introritterent, aut bona ipsa sibi appropriarent, respectivè statuerunt, mandarunt, & districtius præcipiendo vetarunt.

§. 7. Ac etiam alii Romani Pontifices prædecessores nostri alias & aliter in favorem Ordinis ejusdem statuerunt, ordinarunt, concesserunt, indulserunt, prohibuerunt, & inhibuerunt, prout in singulis, tam prædictorum quam aliorum quorumcumque Prædecessorum nostrorum Litteris, sub quacumque forma & data respectivè (quarum tenores Præsentibus haberi volumus pro expressis) expeditis & emanatis latius dicitur contineri.

§. 8. Quare ipsius Ordinis Cisterciæ. afflictio statui paterno affectu, & ex Pastoralis officii nobis ex alto injuncti munere providere volentes, Motu proprio, non ad Abbatis Cistercii ipsius Ord. generalis, nec alterius cujusque, pro eo, fide toto Ordine ipso Nobis oblatæ petitionis instantiam, sed ex nostra

mera & spontanea voluntate, & certa scientia, ac de Apostolica potestatis plenitudine, prædicta omnia & singula privilegia, prærogativas, immunitates, exemptiones, libertates, indulgentias, conservatorias, facultates, indulta & alias gratias Cistercii, & quatuor filiarum nuncupatarum præceptis Monasteriis & Ordini universo, ejusque Capitulo generali, Definitoribus & aliis Superioribus quibuscumque per supra dictos, & alios quoscumque Rom. Pont. prædecessores nostros concessa & innovata, concessa & innovatas, præsertim verò ipsas litteras, Gregorii Noni, Sixti Quarti, Innocentii Octavi, Pii Quarti, Pii Quinti & Gregorii Decimi-terti, per quarum ausu temerario contemptam à multis observationem ejusdem Ordinis convellitur immunitas, regularis status periclitatur, uniformitas decoloratur, confirmamus, roboramus & approbamus, illique omissis & singulis perpetuè & inviolabilis firmitatis robur adjicimus, & quatenus opus sit concedimus & indulgemus, vetamus, prohibemus, & inhibemus, ac etiam solemnitate, etiam substantialium, & quoscumque alios defectus, si qui in singulis privilegiis, indultis, & litteris Apostolicis prædictis, vel aliis quibuscumque quomodolibet intervenierint, motu & scientia similibus eodem Præsentium tenore supplemus. Decernimus omnia & singula in ipsis privilegiis & indultis, ac Præsentibus nostris contenta & comprehensa, quatenus sint in usu, & sacris canonibus, præcipuè verò Concilii Tridentini decretis non adversentur, perpetuè valida, & efficacia, ac firma & stabilia fore & esse, suoque plenariis effectibus sortiri, & obtinere, ac omnibus & singulis, quos tangunt, seu tangere poterunt quomodolibet in futurum inviolabiliter observari debere.

§. 9. Ac Præsentibus nostras, etiam ex quavis causa de subreptionis, vel obreptionis, seu nullitatis vitiis, aut intentionis nostræ, vel quovis alio defectu notari, seu impugnari, & alias quomodolibet infringi, vel retractari nullatenus umquam posse, sed eas semper & perpetuè valere, & tenere, ac viribus subsistere, necnon eis, quos, vel quorum favorem concernunt & concernent, omnino suffragari.

§. 10. Sicque per quoscumque Judices, etiam causarum sacri nostri Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Cardinales, etiam Legatos de Latere, & quacumque potestate & dignitate fulgentes, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, ubique judicari & definiri debere, irritumque & inane si secus super his à quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, decernimus.

§. 11. Quocirca omnibus nostris, & dictæ Sedis Legatis, ac Nunciis, ubicumque existentibus ac quorumcumque locorum Ordinariis, necnon Ordinis præfati Conservatoribus, ac dilecto filio moderno, & pro tempore existenti Curie causarum Camera Apostolicæ generali Auditori, ipsorumque singulis per Apostolica scripta mandamus, quatenus præsentibus Litteras, & in eis contenta quacumque ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Patris Generalis, Abbatum, Procuratoris Generalis, Vicariorum, Visitatorum, & aliorum præfatorum, seu aliqujus eorum desuper fuerint requisiti solemniter publicantes, ipsique efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra Patrem Generalem, Abbates, Procuratorem Generalem, Vicarios, Visitatores, & alios prædictos confirmatione, approbatione, adjectione, suppletionem, concessionem, statuto, ordinatione, invocatione, præcepto, interdicto, revocatione, abolitione, ac sui Generalis voluntatis, mandatis, decretis nostris, aliisque præmissis pacifice frui, & gaudere, ac præsentibus Litteras ab omnibus, quos illæ concernunt inviolabiliter & inconcussè observari, non permittentes P. Generalem, Abbates, Procuratorem Generalem, Vicarios, Visitatores, Superiores, ac alios prædictos desuper contra

Claus. præservativas apponit.

Clausulam sublatâ &c. addit.

Executores deputat.

Greg. IX. signanter Abbatibus electionem à nemine impediri iussit.

Inn. IV. Ordinem à jurisdictione Episcop. eremit.

Sixt. IV. Commendatariis nonnulla prohibuit.

Innoc. VIII. difformita tam habitus venit.

Pius IV. Pius V. & Greg. XIII. alia Commendatariis prohibuerunt, ut notavi in Greg. conf. 18. Superna.

Nonnulli alii Pont. quadam alia Ordini concesserunt.

Hic modo Pont. omnia confirmat, & quatenus sint in usu, & Concilio riden. non contraria innovat.

ANNO 1586. 580

SIXTUS QUINTUS.

ANNO 1586.

Contrariis derogat.

Litterarum earundem, Præsentiumque tenorem quomodolibet indebite molestari. Contradictores quoslibet, & rebelles per prædictas, ac alias sententias, censuras, & poenas aliæque opportuna juris, & facti remedia, appellatione postposita compescendo, ac legitimis super his habendis servatis processibus, sententiis, censuras, & poenas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 12. Non obstantibus præmissis, ac sanctæ memoriæ Bonifacii Papæ VIII. pariter prædecessoris nostri de una, & in Concilio generali edita de duabus dietis, aliisque Apostolicis, ac in Provincialibus, & Synodalibus Conciliis editis generalibus, vel specialibus constitutionibus, necnon quibuslibet, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, inhibitionibus, & decretis, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, Legatis, Nunciis, & Ordinariis prædictis, ac aliis quibuscumque personis sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibusvis, etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis, in genere, vel in specie, etiam motu simili, etiam consistorialiter, aut aliis quomodolibet concessis, etiam iteratis vicibus approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, & singulis, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, ne illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum veriores tenores, formas, datas, & decreta in eis apposita, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata, inserti forent, Præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, & sufficienter derogatum esse decernimus, necnon omnibus illis, quæ in Litteris Pii IV. Pii V. & Greg. XIII. ac aliorum prædecessorum expressum fuit non obflare, ceterisque contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter, vel divisim ab eadem sit Sede indultum quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Fidem exemplis dari jubet.

§. 13. Ceterum quia difficile foret easdem Præsentibus ad diversa loca Provinciasque circumferre, volumus, & dicta auctoritate decernimus, quod illarum transumptis, seu exemplis, etiam impressis, manu alicujus publici Notarii subscriptis, & sigillo Abbatis Generalis, aut alicujus ex aliis Superioribus Ordinis hujusmodi munitis, plena, & indubia, ac ea prorsus fides ubique, etiam in judicio adhibeatur quæ ipsi originalibus adhiberetur si forent exhibitæ vel ostensæ. Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris die 17. Maii 1586. Pontificatus nostri Anno secundo.

D. P. An. 2. die 17. Maii.

XXXV.

Quod Eremitæ S. Romualdi Montis Coronæ, Ordinis Camaldulensis sub Regula S. Benedicti, alterius Ordinis Religiosos recipere possint. Ipsi verò ad alium etiam Eremiti Camaldulensis transire nequeant. Ad hoc vide notata sup. in Clem. VII. cons. 22. Vestrum fol. 675. Tom. I.

Edit. An. D. 1586.

SIXTUS PAPA V.

Ad perpetuam rei memoriam.

Congregationis Eremitarum S. Ro-

EA est Congregationis Eremitarum sancti Romualdi Ordinis Camaldulensis Montis Coronæ aucto-

ritas, & observantia, ut quemadmodum non solum relatu aliorum, sed propriis etiam interdum oculis vidimus, & percepimus, merito, & verè eam sub strictiori regula custodiri, quàm omnes alias, quæ in tota Italia reperiuntur, dici, & censi possit.

§. 1. Quo etiam fit, ut nonnulli parum cauti, & constantes, ac minus fortes ad resistendum pravis tentationibus, ab ipsa Congregatione ad alios Ordines se transferre non verentur, cum magno plurimum scandalo, & animarum suarum periculo.

§. 2. Hinc est quod Nos his malis occurrere, eademque Congregationem specialibus favoribus, & gratiis prosequi volentes, omnes gratias, indulta, & privilegia eidem Congregationi, & illius Eremitis à Romanis Pontificibus prædecessoribus nostris, super recipiendis quibuscumque, quarumvis Religionis, & Ordinum Mendicantium, & non Mendicantium Religiosis ad ipsos transire volentibus concessa, rata, & firma esse volentes, & quatenus opus sit auctoritate Apostolica tenore Præsentium innovantes, omnibus & singulis Eremitis prædictæ Congregationis nunc, & pro tempore existentibus, & cuilibet eorum in virtute sanctæ obedientiæ, ac sub excommunicationis majoris eo ipso incurrendæ, à qua nullus præter Romanum Pontificem pro tempore existentem, præterquam in mortis articulo, absolutionis beneficium impendere possit, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & poenis, necnon apostasie reatus, suspensionis à divinis, aliisque arbitrio Majoris ejusdem Congregationis pro tempore existentis moderandis, infligendis, & declarandis poenis, ne ad alios quoscumque Ordines, nec etiam ad sacrum Eremum ejusdem Camaldulensis Ordinis Aretini Diocesis, sine expresso consensu, & licentia ab eodem Majori pro tempore existente supra dictæ Congregationis in scriptis petita, & obtenta, transire, & transmeare audeant, vel audeat, eisdem auctoritate, & tenore interdiciamus, & prohibemus.

§. 3. Volumus etiam quod ultra supra dictas poenas, qui contrafecerint personaliter capi, & apprehendi, nec non incarcerationi, puniri, & etiam ad redeundum cogi, libero prædicti Majoris pro tempore existentis arbitrio possint, & valcant.

§. 4. Eidemque Majori pro tempore existentis prædicta omnia, & singula, per se, vel alium, seu alios sibi bene viros faciendi, exercendi, & effectualiter, ac omnino exequendi, & brachii secularis auxilium, si opus fuerit, invocandi omnimodam, plenam, amplam, & absolutam auctoritate Apostolica prædicta tenore Præsentium licentiam, auctoritatem, & facultatem concedimus, & impartimur.

§. 5. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon indultis, privilegiis, & exemptionibus aliis Religionibus, Congregationibus, & Ordinibus, Eremitis, & Eremitis quibuscumque, quocumque modo, & sub quibusvis verbis, & clausulis concessis, & iteratis etiam vicibus approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, & singulis etiam si illis, eorumque totis tenoribus specialibus, specifica, & expressa, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum omnium tenores ac si de verbo ad verbum infererentur Præsentibus pro expressis habentes auctoritate prædicta earundem tenore Præsentium quas perpetuis futuris temporibus valere decernimus, specialiter, & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romæ apud S. Petrum sub annulo Piscatoris die 9. Julii 1586. Pontificatus nostri anno 2.

Dar. P. A. 2. die 9. Julii.

Confirmatio, & extensio Jurisdictionis Consulum Artis Pistorum, & Prædicti Annonæ Almæ Urbis, in rebus ipsam Artem tangentibus, ac privi-

XXXVI.

legiorum, & gratiarum eorundem Pistorum.

Hac Bulla non præjudicat facultatibus Gubernatoris Urbis, quo ad recursum & sententias dictorum Consulium, ut hic Pontifex (ne Gubernatoris Locumtenente tunc instante) declaravit die 9. Octob. anni 1586. quam non pono, quia est similis Bulla 61. Greg. XIII. quam habes supra & registrata etiam est apud acta Notariorum Civilium d. Gubernatoris.

SIXTUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Coelestis Pater ad hoc Nos universalis Ecclesie Rectorem constituit, & à Nobis oves suas pascendas commisit, ut omnibus personis præcipue Romanam Curiam sequentibus, ne indebitis molestiis afficiantur, sed pro eorum qualitate iustitia ministraretur, quantum cum Deo possumus salubriter providemus, & ea, quæ pro ipsarum personarum facili regimine, & gubernatione à nostris Prædecessoribus provida consideratione emanarunt, ut eo firmitus illibata persisterent, quo frequentius Apostolico fuerint stabilita præsidio, nostræ approbationis munimine, dum à Nobis petitur, roboremus.

§. 1. Sanè pro parte dilectorum filiorum Universitatis Pistorum Urbis nostræ, Nobis nuper exhibita petitio continebat, quod aliàs postquam sel. rec. Leo Papa Decimus prædecessor noster, &c.

§. 2. Et deinde per recol. mem. Julium Papam III.

Omittitur relatio Bullæ 18. Jul. III. quia ipsam habes supra in Tomo I. & quia ibi relata Bulla Leonidea hic omittitur ejusdem relationis repetitio.

* §. 3. Cum postmodum antiqua Statuta ipsius Urbis, de mandato sanctæ mem. Gregorii Papæ XIII. &c.

Omittitur etiam relatio Bullæ Greg. XIII. quia est sup. Almam.

§. 4. Cum autem eadem petitio subjungebat, plenèque dubitent, aliqua artis Pistorum hujusmodi statuta, & præsertim illud quo dispositum est, quoscumque artem prædictam exercere, & clibanum habere volentes, priusquam ad hoc admitti possint, ad solutionem trium futorum pro una Consulibus artis hujusmodi, & reliquis duabus partibus Hospitali Beatæ Mariæ de Laureto de dicta Urbe applicandorum teneri, per prædictas Litteras Gregorii prædecessoris hujusmodi declarationis, & reintegrationsis jurisdictionum artium, earumque Collegiorum, & Consulum hujusmodi nullatenus reintegrata fuisse. Quare pro parte Universitatis Pistorum hujusmodi Nobis humiliter fuit supplicatum, ut Litteris Prædecessorum hujusmodi robur nostræ approbationis adjicere, aliasque in præmissis opportune providere, de benignitate Apostolica dignaremur.

§. 5. Nos igitur Universitatem Pistorum hujusmodi, illiusque singulares personas, quarum quietem, & commodum, non minori quam prædecessores nostri prædicti paternæ dilectionis affectu prosequimur, à quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis censuris, & pœnis, à jure, vel ab homine, quavis occasione, vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existant, ad effectum Præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, necnon singularem Litterarum prædictarum tenores virescentes Præsentibus pro expressis habentes, hujusmodi supplicationibus inclinati, statuta, & ordinationes dictæ Universitatis, ac singulas etiam reintegrationsis jurisdictionum Litteras Prædecessorum hujusmodi, ac in eis contenta quæcumque, prædicta auctoritate, & tenore Præsentium perpetuo approbamus, & confirmamus.

§. 6. Ac insuper eisdem nunc, & pro tempore Pistoribus, ut facilius, & minori cum dispendio jura sua consequi possint, in omnibus, & singulis eorum causis, litibus, controversiis, & differentis, ratione panis per eos crediti, & rerum ad artem hujusmodi spectantium, de cetero movendis, videlicet, quæ triginta ducatos auri de Camera non excederint, Consules pro tempore existentes dictæ artis, contra quoscumque ejusdem Urbis Cives, opifices, habitatores, ac alias quascumque personas seculares; in aliis verò ulque ad quancumque summam, Præfectum pro tempore existentem Annone Judices, contra quoscumque S. R. E. Card., Episcopos, Prælatos, Oratores, proceres, & alios Ecclesiasticos, vel temporali dignitate fungentes, dictæ Urbis originarios, vel externos, auctoritate, & tenore prædictis perpetuo constitutus, & deputatus, eisdemque nunc, & pro tempore existentibus Pistoribus, facultatem omnes, qui eis occasione crediti panis, ac aliarum rerum artem ipsam concernentium debitores fuerint, pro consequenda satisfactione, ad iudicium, coram Consulibus, & Annone Præfecto iudicibus hujusmodi evocandi, dictis verò Consulibus, & Annone Præfecto pro tempore existentibus, singulas causas hujusmodi summarè, simpliciter, & de plano, ac sine strepitu, & figura iudicii, manuque Regia, ac sola facti veritate inspecta, & prout in exactiōne pecuniarum pretii grani, eisdem Pistoribus ab Officialibus ejusdem Camere Apostolicæ pro tempore dati, contra eosdem Pistofores procedi solet, audiendi, cognoscendi, decidendi, sineque debito terminandi, necnon citandi, & in forma inhibendi, omnibusque aliis facultatibus necessariis, & opportunis, auctoritate, & tenore similibus, etiam perpetuo tribuimus.

§. 7. Quodque debita cum ipsis Pistoribus ratione panis crediti, & aliarum rerum hujusmodi contracta, ad bonorum, & hereditatum quarumvis personarum, etiam ejusdemque dignitatis, status, gradus, & conditionis existentium, coram quibuscumque iudicibus dictæ Urbis, tam Ordinariis, quam delegatis, & subdelegatis, pro tempore faciendis discussiones nullo pacto trahi possint. Quinimò ipsi Pistofores, pro consequenda debitorum hujusmodi satisfactione, in omnibus eorum litibus, & causis, etiam si priores, & potiores creditores non sint, primum, & potiorum locum obligationibus etiam in forma Camere Apostolicæ, etiam juramento vallatis, ac privilegiis, ceterisque in contrarium facientibus, non obstantibus quibuscumque, habere, & ostendere omnino debeant, eisdem auctoritate, & tenore similiter perpetuo statuimus, & ordinamus, necnon sententiarum, mandatorum executionum, & decretorum per Consules, & Annone Præfectum, Judices præfectos pro tempore latorum, & relaxatorum executionem, & quovis prætextu, etiam quancumque appellationum, recursuum, inhibitionum, & significationum etiam dotatum nullo modo impediri posse, sed easdem significationes, & inhibitiones, per Gubernatorem, & alios dictæ Urbis Judices, ad quos ipsi appellantes, & recurrentes recursum habuerint, denegandas esse, easque concessas, illico revocatas, & ipsis recurrentibus minimè suffragari volumus.

§. 8. Decernentes à sententiis, declarationibus, & decretis eorundem Consulum, ad Conservatores, & non alios quovis Judices appellari posse, eisdem appellationes non nisi in causis, & litibus super majori quam decem scutorum summa vententibus, admitendas esse, nec à decem infra recursum ad aliquos Judices haberi, minulque concedi posse.

§. 9. Ac præsentis Litteras de subreptionis, vel obreptionis vitio, mentitiquæ, aut intentionis nostræ defectu notari, aut impugnari nullatenus possint. Irritum quoque, & inane, si secus super his à quocumque quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit attentari.

§. 10. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon dictæ Urbis, statutis, legibus, & consuetudinibus, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel qua-

30. & in hac supra Præfecto Annone contra quoscumque concedit.

Pistorum crediti occasio panis in dispositionibus non venit, sed ceteris creditoribus etiam habentibus obligationes Camerales anteriores esse decernit.

Hoc ultimum concessit etiam Greg. XIII. in cuius consensu supra cit.

Appellationem à scutis 10. supra ad Conservatores permittit.

Tu vide quod dixi in rubr. Decretum irritans apponit.

Contrarius derogat.

Edita A. D.
1586.

Proemium.

Leo X. & Jul.
III. decreverunt
quæ leguntur in
Bulla Jul. III.
hic cit.

Greg. XIII.
aliam edidit
consist. hic in
dicatam.

Arts modo
supplicat Pa.
pa pro ube
riori provi
sione.

Hic ideo
Pont. omnes
prædecesso
rum consil.
ad favorem P
istorum Urbis
confirmat.

Jurisdictione
nemque
Consulibus
in causis us
que ad duc.

vis firmitate alia roboratis, privilegiis quoque, indulgentiis, & litteris Apostolicis eidem Auditori Cameræ, seu obligationibus Cameralibus, ac quibuscumque dictæ Urbis Judicibus, ordinariis, & extraordinariis, ac delegatis, illorumque tribunalibus, & quibuscumque aliis personis, etiam locis piis, sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis, in genere, vel in specie, etiam motu simili, etiam consistorialiter, ac alias in contrarium quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de illis, eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, expressa, & individua, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma, ad hoc servanda foret, illis aliis in suo robore permanens, hac vice, & dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Nulli ergo, &c.

Dat. F. A. 2.
die 19. Aug.

Dat. Romæ apud S. Marcum, Anno Incarnationis
Dominicæ 1586. 14. Kal. Sept., Pontific. nostri
Anno 2.

XXXVII.

Jurisdictione S. R. E. Card. & Judicis causarum Archiconfraternitatis B. Mariæ Virginis de Urbe Consalonis nuncupatæ, ad Redemptionem Captivorum ab infidelium servitute, aliaque pia opera exercenda, dudum instituta.

*Alia quæ hanc Sodalitatem concernunt, notavi supra
ad cons. 38. Greg. XIII. Pastoris.*

Edit. An. D.
1586.

SIXTUS PAPA V.

Motu proprio, &c.

Causæ con-
cessionis.

Cum sicut accepimus venerabilis Archiconfraternitas Confraternitas Gloriosissimæ Virg. MARIÆ, ejusque pro tempore existentes Custodes, Camerarius, Officiales, & Ministri, ob lites, quæstiones, & controversias civiles, profanas, spirituales, & mixtas, per diversa Urbis Tribunalia, occasione locationum, censuum, donationum, hereditatum legatorum, dotium, & diversarum aliarum rerum ejusdem, tam agendo pro ipsa Archiconfraternitate, quam eam defendendo, vel aliis jugiter implicati existant, ex quo sæpius quam plura damna & interese patiuntur, ac impensa liti valorem rei, de qua ex tempore agitur, sæpenumero superet.

§. 1. Nos Archiconfraternitatem præfatam, quam singulari dilectione prosequimur, & in qua diversa pietatis, charitatis, & misericordie opera, etiam elemosinas pauperibus erogando, ac miserabilibus Puellis dotes largiendo, necnon Captivos à durissima infidelium servitute maxima cum charitate redimendo, continuo impendi spectantur, necnon dilectos filios Magistrum Hieronymum de Avila U. I. D. litterarum Apostolicarum Correctorem, & Abbreuiatorem, ac in utraque Signatura nostra Referendarium, Prælatum nostrum domesticum, Paulum de Mattheis, Carolum de Maximis, ac Ulissem Lancernium patritios Romanos, necnon Franciscum Covarucium ipsius Confraternitatis modernos, & pro tempore existentes Custodes, & Camerarium ab hujusmodi dispendiis, quantum cum Deo possumus sublevare volentes, Motu simili, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, Quod de cetero perpetuis futuris temporibus, moderni, & pro tempore existentes dictæ Archiconfraternitatis Custodes quatuor ex Referendariis Utriusque Signaturæ nostræ, & pro tempore existentis

Romani Pontificis, moderno, & pro tempore existentis ipsius Archiconfraternitatis Profectori nominare, & proponere possint, & valeant, ad effectum ut ex illis quatuor, unus per eundem modernum, & pro tempore existentem Protectorem eligi, seu deputari debeat, Apostolica auctoritate tenore Præsentium perpetuo statuimus, & ordinamus. Ac eidem Referendario sic pro tempore electo, & deputato, ex nunc prout ex tunc, & è contra, post electionem, & deputationem hujusmodi omnes, & singulas causas, lites, quæstiones, & controversias inter dictam Archiconfraternitatem, five illius Custodes, Camerarium, Officiales, & Ministros nunc, & pro tempore existentes, ac quascumque alias, tam laicas, quam Ecclesiasticas personas, quascumque gradus, ordinis, dignitatis, conditionis, vel præminentie existentes, etiam Cardinalatus honore præfulgentes, Universitates, Societates, Congregationes, Collegia, ac tam Virorum, quam Mulierum Monasteria, Hospitalia, aut alia loca pia, etiam si coram nunc, & pro tempore existentibus S. R. E. Camerario, Clericis, & Præfidentibus Cameræ Apostolicæ, & ejusdem Cameræ causarum Auditore generali, necnon Vicario, Gubernatore, & Senatore dictæ Urbis, illorumque Locatenentibus, Collateralibus Judicibus, ac Appellationum causarum Curie Capitoli ejusdem Urbis Capitaneo, necnon causarum Palatii Apostolici Auditoribus, ac ejusdem S. R. E. Card., & aliis quibuscumque Judicibus ordinariis, ac à Nobis, & Successoribus nostris Romanis Pontificibus specialiter quomodocumque Commissariis deputatis, & delegatis, ac deputandis, & delegandis, nunc & pro tempore motas, & pendentes, ac quomodolibet movenda, & pendenda, de & super quibuscumque locationibus, venditionibus, donationibus, legatis, fideicommissis, testamentis, hereditatibus, & illarum discussionibus, ac quibuscumque aliis dispositionibus, ad favorem, tam ejusdem Archiconfraternitatis, quam Redemptionis Captivorum dictæ Archiconfraternitati, per Sedem Apostolicam injunctæ factis, ac dotibus, & quoruncumque jurium, & actionum cessionibus, aliisque quibuscumque inter vivos, ac causa mortis, & quasi contractibus, etiam vigore obligationis in forma Cameræ, executionibus, revocationibus, bonis, rebus, juribus, & actionibus ipsius Archiconfraternitatis ejusque Custodes, Camerarium, Officiales, & Ministros præfatos, eorumque liti consortes, tam conjunctim quam divisim, & tam activè quam passivè, tam secundario quam principaliter interesse concernentes, & ad ipsam Archiconfraternitatem, etiam per viam necessarii defensionis, & aliis quomodolibet spectantes, & pertinentes, in quacumque instantia, quorum omnium status, & merita, ac Judicium, & colligationum nomina, & cognomina, & qualitates, ceteraque etiam de necessitate exprimentia, Præsentibus pro expressis habentes, in statu, & terminis, in quibus ad præfens reperiuntur, & quomodocumque reperiuntur, harum serie, ad Nos, & Sedem Apostolicam advocantes, illaque omnes, & singulas alias, similes, vel dissimiles causas quomodolibet nunc, & pro tempore motas, & pendentes, ac quas dicta Archiconfraternitas, illius Custodes, Camerarius, Officiales, & Ministri habere, & movere volent contra easdem personas, Universitates, Societates, Congregationes, Collegia, Monasteria, Hospitalia, aut alia aequæ, vel magis pia loca, etiam quomodolibet, & qualitercumque privilegiata, & exempta, pro ipsius Archiconfraternitatis rebus, bonis, hereditatibus, legatis, juribus, & actionibus hujusmodi, tam agendo pro ipsa Archiconfraternitate, & quacumque persona ab ea causam habente, quam etiam si contra ipsam Archiconfraternitatem, ad instantiam quarumcumque personarum, qualitercumque qualificatarum, & privilegiatarum quomodolibet agatur, eidem Referendario, ut præfetur electo & deputato, unà cum omnibus & singulis earum

Hic Pontifex Archiconfraternitatem Confraternitatis ab expensis liti sublevata, tam ejus Custodibus quatuor Prælato normandi, Card. Profectori, qui ex eis unum eligat Judicem causarum dictæ Archiconfraternitatis cum potestate eas summarie cognoscendi.

incidentibus, dependentibus, emergentibus, annexis, & connextis, summarie, simpliciter, & de plano, & sola facti veritate inspecta, ac sine strepitu & figura iudicii, & absque rela iudiciaria, ac aliquorum terminorum substantialium observatione, aut alicujus Registri vel extractus confessione, per se ipsum, vel in ejus à dicta Urbe absentia, aut alias ex quavis causa, per alium ab eisdem Custodibus, accedente, ut supra, dicti Protectoris approbatione, durante absentia, seu alias quomodolibet eligendum, usque ad finalem sententiarum executionem inclusive, audiendas, cognoscendas, sineque debito terminandas, ac etiam alibi introducendas, seu committendas, reasumendas, &c. auctoritate & tenore præfatis, etiam perpetuo committimus & mandamus.

§.2. Ipsumque Referendarium, ut præfatur, electum & deputatum in dictis causis, tam pro ipsa Archiconfraternitate quam contra illam motis & pendentibus, & in futurum movendis, in Judicem ordinarium, & Apostolicam auctoritatem deputatum, cum facultate eisdem causis usque ad finem, & absque tamen alicujus propinæ receptione, cognoscendi, decidendi, atque terminandi, ac etiam cum potestate citandi, & inhibendi quos, quibus ac quoties opus fuerit, etiam per se, vel alium, seu alios quoscumque, tam in Romana Curia, quam extra eam, etiam per edictum publicum, constituto sibi etiam summarie de non tuto accessu, eisdemque & prædictis, ac quibuscumque aliis ejusdem Urbis Curiarum seu Tribunalium Judicibus & personis, tam Ecclesiasticis quam secularibus cujuscumque dignitatis, gradus, ordinis, vel conditionis fuerint, quibus ac quoties opus fuerit, etiam sub sententiis, censuris Ecclesiasticis, ac etiam pecuniariis pœnis, prout sibi videbitur, inhibendi, & in eventum non paritionis contra inobedientes, contumaces, & rebelles, ad declarationem incursum censurarum & poenarum hujusmodi, illarumque aggravationes, & reaggravationes, ac alias prout sibi melius expedire videbitur, seu placuerit, servata forma Concilii Tridentini procedendi, sententiaque, seu mandata, per eum pro tempore lata seu relaxata, debite executioni demandandi, sive demandari faciendi.

§.3. Contradictores quoslibet & rebelles, ac præmissis quovis prætextu non parentes, per censuras Ecclesiasticas, ac etiam pecuniarias poenas, aliasque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita compescendi, auxilium brachii secularis ad hoc si opus fuerit invocandi, aliasque omnia & singula in præmissis, & circa ea quomodolibet necessaria & opportuna faciendi, gerendi, & exequendi, ac cum aliis facultatibus ad id quomodolibet necessariis, auctoritate & tenore prædictis similiter perpetuo facimus, constituimus & deputamus, sibi que plenam, liberam & amplam super præmissis licentiam & facultatem atque auctoritatem etiam concedimus, & impartimur.

§.4. Decernentes quod à pro tempore existentis Referendarii, ut præfatur electi & deputati, sententiis, mandatis, ordinationibus & decretis, nullatenus suspensivè appellari, reclamari, de nullitate dici, sive quomodolibet adversus illas effectum impediendi executionem aliquod remedium attentari possit. Devolutivè autem semel tantum liceat appellare, & alia remedia intentare coram alio Judice prædicto pro tempore existentis Protectori, ut præfatur nominando, & ab eo approbando. Secundo autem, vel ulterius, sublata sit omnis & quæcumque appellatio, sed prædictæ duæ sententiæ plenariam executionem obtineant, ac firmæ & illibatæ permanent, ac si essent res conformes, ac nullitas aliqua, exceptis tribus substantialibus opponi nullo modo possit.

§.5. Et licet ad instantiam quoruncumque hæredum sive quorunlibet aliorum committatur in futurum, vel etiam modo pendeat commissi causa dis-

cussionis alterius hæreditatis, & dictæ Archiconfraternitati, seu illius Custodibus, Camerario, Officialibus, & Ministris, etiam virtute commissionis fuerit inhibuit, tamen ne exactio creditorum in præjudicium ipsius Archiconfraternitatis protrahatur, data idonea cautione per dictos Custodes, Camerarium, & Ministros, seu Ministros, de restituendo summam debitam in eventum succumbentia prioribus & potioribus creditoribus, pro tempore existentis Referendarii prædictus, eisdem hæredes sive alios quoscumque, debitores, seu ipsorum quemlibet, ex quacumque causa cellionarios, vel ab eis quomodolibet & ex quocumque titulo causam habentes, ad satisfaciendum integraliter dictæ Archiconfraternitati de ejus credito, juris & facti remediis cogat, & compellat.

§.6. Ac in omnibus & singulis causis prædictis ad dictam Archiconfraternitatem, ut præfatur, quomodolibet spectantibus, singulis diebus & horis, feriatis & non feriatis præterquam in honorem Dei, procedat.

§.7. Et Notarium actuarium per eosdem Custodes eligendum, ac ab eis & eorum arbitrio, ac ad eorum natum ponendum & amovendum quem eis placuerit, habeat; qui teneatur dare idoneam cautionem eisdem Custodibus in ejus deputatione, de restituendo abique aliqua pecuniarum solutione & fraude, ac omni morâ & dilatione, atque exceptione seu executione postpositis, quoties ab eisdem Custodibus, ab hujusmodi Notariatus officio amotus fuerit, omnes & singulas scripturas ad dictam Archiconfraternitatem, ut præfatur, quomodolibet spectantes, per eosdem Custodes facto de illis Inventario, Notario successoris, ab eisdem Custodibus deputato consignandas.

§.8. Quodque citationes in causis prædictis etiam per Curia Capitoli, seu alios quoscumque etiam dictæ Archiconfraternitatis Mandatarios, fieri possint.

§.9. Ac quod quicumque Executores Curiarum, seu Tribunalium dictæ Urbis, possint & debeant exequi, & effectualiter executioni demandare omnes & singulas sententias, decreta, & mandata pro tempore existentis Referendarii hujusmodi sive in ejus absentia, aut alias ipso impedito, ab eisdem Custodibus eligendi, ac ut supra, nominandi, ac à Protettore approbandi; que non obstant Regula Cancellarie sub ejus parvo sigillo expediri possint.

§.10. Ac insuper Archiconfraternitatem prædictam, ejusque Custodes, Camerarium, Officiales, & Ministros, ex nunc deinceps occasione præmissorum principaliter, seu secundario alibi quam coram pro tempore existente Referendario, ut præfatur, electo & deputato conveniri, aut ad alios conveniendum construngi non posse, & processus, sententias, mandata, & decreta per alium sive alios, tam ordinarios quam etiam specialiter deputatos, & delegatos Judices, quavis auctoritate fungentes, in causis prædictis quomodolibet pro tempore formatos, in quacumque instantia latas & factas, cum inde sequatis quibuscumque nulla irrita & inania nulliusque roboris, & momenti fore.

§.11. Præsentem quoque Motus proprii cedulam, sub quibuscumque similibus vel dissimilibus gratiarum, aut concessionum, revocationibus, suspensionibus, moderationibus, seu limitationibus, etiam per Nos & Successores nostros Romanos Pontifices, ac Sedem prædictam, vel ejus etiam de late- re Legatos, & per Cancellariæ Apostolicæ Regulas pro tempore factas, etiam in favorem Fabricæ Basilicæ Principis Apostolorum de dicta Urbe nullatenus comprehensam, sed semper ab illis penitus & omnino exceptam, ac quoties illæ emanabunt, toties præsentem cedulam in primum robur restitutam esse, & censeri debere, necnon eadem cedula per quascumque clausulas generales vel speciales, etiam derogatorias derogatorias efficaciores & insolitas, ac etiam irritantia decreta, sub quacumque verborum expressione in se continentes, derogari posse, & nulliullo umquam tempore ex aliqua etiam

Singulisque diebus & horis procedendi.

Notarium deputandi.

Citationes fieri possint per quoscumque Mandatarios.

Executores omnes exequi debeant mandata prædicti iudicis.

Alii Judices hæc causas non cognoscant.

Clausula præservati- va.

Citandique, & inhibendi tam in Curia quam extra, & quibuscumque iudicibus.

Contradictores etiam coercendi.

Appellatio ab ejus sententiis semel tantum, & non suspensivè, ad alium Judicem à Protettore deputata, admittatur, & præfatur nominando, & ab eo approbando. Secundo autem, vel ulterius, sublata sit omnis & quæcumque appellatio, sed prædictæ duæ sententiæ plenariam executionem obtineant, ac firmæ & illibatæ permanent, ac si essent res conformes, ac nullitas aliqua, exceptis tribus substantialibus opponi nullo modo possit.

Judicis facultas in causis iustissimum.

Decretum
irritans.

Declaratio
quod sub co-
dum Judice
sunt omnes
Redempti,
& puella ab
Archiconfrat-
ternitate do-
tata.

Prefectus Si-
gnaturæ Jus-
titie Re-
gentis &
Referendarii,
non si-
gnent com-
missiones,
contra for-
mam pre-
sentium, &
Judices qui
bus essent
commis-
sionem
procedant.

Judex præ-
fatus cogere
possit, Nota-
rios omnes,
ad sibi confi-
gnata instru-
menta con-
cernentia a-
liquo inter-
esse Archi-
confraterni-
tatis Redem-
ptionis Cap-
tivorum.

quantumvis necessaria & urgenti causa derogari con-
tingat, nisi tenor eculæ hujusmodi de verbo ad ver-
bum nihil penitus omisso insertus, & hujusmodi de-
rogatio consistorialiter facta, & per trinas distinctas
litteras eundem tenorem continentes tribus simili-
bus distinctis vicibus, Custodibus, Camerario, & aliis
Officialibus Archiconfraternitatis hujusmodi legiti-
mè indinuat & intimata fuerit, eorumque ad id ex-
pressus accedat assensus, derogationes hujusmodi ne-
mini suffragari debere, & si ac quoties illa aliquo alio
modo revocari, aut alias illi derogari contigerit, to-
ties in pristinum statum restitutam, & de novo etiam
sub posteriori data, per prædictos Custodes, Camerarium,
& Officialia eligenda, concessam & stabilitam esse.

§. 12. Et sic per quoscumque Judices etiam cau-
salarum Palatii Apostolici Auditores, ac S.R.E. Card.
sublati eis & eorum cuilibet quavis aliter judicandi
& interpretandi facultate & auctoritate, ubique judi-
cari & definituri debere. Irritum quoque & c. attentari.

§. 13. Volumus etiam & mandamus quod omnia
& singula præmissa, habeant locum ad favorem
quarumcumque pauperum Puellarum quæ à prædi-
cta Archiconfraternitate dotem habuerint, pro dicta-
rum dotium consecutione, ac quorumcumque ab
eadem Archiconfraternitate redemptorum; ita quod
sint & esse intelligantur sub dicta jurisdictione in om-
nibus & per omnia, & si principaliter cum illis &
quolibet illorum agendo, seu defendendo de inter-
esse prædictæ Archiconfraternitatis ageretur.

§. 14. Inhibentes expresse moderno, & pro tem-
pore existentis Signaturæ Justitiæ Præfecto, aut alias
pro tempore Justitiæ Signaturam habenti, necnon
Regenti Cancellariæ qui pro tempore erit, omnibus
que & singulis Referendariis, ne de cetero, ad instan-
tiam & requisitionem cujuscumque, supplicationem
aliquam recipere, referendariare seu proponere Præ-
fecto Signaturæ Justitiæ audeant vel præsumant, &
similiter Signaturam facienti non signet, sive avoca-
toriam, sive simplicis Justitiæ, sive appellatorem &
similem, neque in initio neque in medio liti; & sig-
natæ nullus sint roboris & momenti, nullamque tri-
buant jurisdictionem, neque ipse Judex, cui fuerint
commisæ, audeat illarum virtute citare, inhibere, vel
quomodolibet procedere; irritum & inane quicquid
scienter vel ignoranter fecus factum fuerit, ipso jure
decernimus, salva semper nostra manu propria signa-
ta, sine qua omne scriptum censetur & sit invali-
dum, & à nostra voluntate alienum. Et nihilominus
Referendarius sicut præmittitur, deputatus à prædi-
cta Archiconfraternitate, absque vitio attentatorum
procedere possit & valeat.

§. 15. Et insuper ne propter difficultatem haben-
di seu recuperandi Instrumenta publica super testa-
mentis, seu aliis quibuscumque dispositionibus pio-
rum Christi fidelium, per Notarios & Tabelliones
confecta & stipulata, in quibus per ipsos Christi fide-
les in ejusdem Archiconfraternitatis, seu Redem-
ptionis Captivorum favorem diversa legata facta, il-
lisque bona relicta & erogata fuerint, & de quibus
illius Custodes, Camerarius, Officialia, & Ministri
prædicti notitiam habere non possunt, ipsa Archi-
confraternitas varia in temporalibus damna, & de-
trimenta sustineat, & patiatur, eidem Referendario,
ut præsertur, electo, & deputato, omnes, & singulos
etiam quorumcumque Tribunalium ac Curiarum di-
ctæ Urbis, & in Archivio Romanæ Curie, & Capito-
lii descriptos Notarios, & Tabelliones publicos,
etiam quantumcumque privilegiatos & exemptos,
qui deinceps perpetuis futuris temporibus quacum-
que Instrumenta publica super testamentis, codicil-
lis, & quibuscumque tam inter vivos quam causa mortis
dispositionibus præ quibuscumque utriusque sexus
Christi fidelibus, conficiant aut stipulabunt, vel de
quibus ipsi Notarii, & Tabelliones pro tempore ro-
gati fuerint, in quibus pia legata etiam jure donatio-

nis perpetuæ vel fideicommissi, seu cujusvis alterius
dispositionis, aut quocumque alio titulo eidem Archi-
confraternitati, sive Redemptioni Captivorum
per Christi fideles de eorum bonis in toto vel in parte
hactenus quomodolibet facta fuerint, & in futu-
rum fient, seu quæ utilitatem vel commodum aut
augmentum bonorum, jurium, & emolumentorum
Archiconfraternitatis seu Redemptionis Captivo-
rum hujusmodi; tam conjunctim quam divisim, &
tam activè quam passivè, ac tam secundario quam
principaliter concernunt, & concernent quomodo-
libet in futurum, aut in Archiconfraternitatis seu
Redemptionis Captivorum hujusmodi utilitatem
cesserint vel cedant ad dictorum Instrumentorum,
seu illorum particulam interesse dictæ Archiconfrat-
ternitatis seu Redemptionis, ut præsertur, concer-
nentem, copiam autenticam, & fide dignam, in for-
ma juris valida, & probanti, seu instrumentum pub-
licum, postquam ad id per ipsam Archiconfraterni-
tatem, illiusque Custodes, Camerarium, Officialia, &
Ministros eorum eodem Referendario requisiti fue-
rint, & posttestatorum obitum, sub pena falsi, ac ex-
communicationis, aliisque sententiis, & censuris Ec-
clesiasticis, ac etiam pecuniariis poenis, per contra-
facientes eo ipso incurrendis, ac arbitrio ejusdem
Referendarii infligendis & exequendis, eidem Archi-
confraternitati, sive illius Custodibus, Camerario,
Officialibus seu Ministris, soluta per eisdem Custodes,
Camerarium, Officialia seu Ministros ipsi Notariis,
& Tabellionibus mercede, pro scriptura ipsius
copiæ autentice, seu instrumenti publici tantum,
omni mora, & dilazione aut subterfugio cessantibus
ac quacumque appellatione, seu recurru postpositis,
realiter & cum effectu, ac sine aliqua fraude dandum,
tradendum & consignandum, auctoritate nostra mo-
neat, omnibusque sibi visis remediis opportunis, usque
ad omnimodam partitionem cogat ac compellat.

§. 16. Non obstantibus præmissis, ac fel. rec.
Bonifacii Papæ VIII. prædecessoris nostri de una,
& Concilii generalis de duabus dietis, dummodò
ultra tres dietas aliquis auctoritate Præsentium ad ju-
dicium non trahatur, aliisque constitutionibus, & or-
dinationibus Apostolicis, necnon Fabricæ prædictæ,
ac personarum, Universitatum, Societatum, Congrega-
tionum, Collegiorum, Monasteriorum, & Hospi-
talium hujusmodi, aliorumque quorumcumque pio-
rum locorum, & Ordinum, etiam exemptorum, ac
qualitercumque privilegiatorum, etiam juramento,
& c. roboratis statutis, & consuetudinibus, privile-
giis quoque indultis, conservatoriis, exemptioni-
bus, & litteris Apostolicis, illis ac dilectis filiis Po-
pulo Romano, necnon Judicibus, Notariis, Tabel-
lionibus, Curis seu Tribunalibus, eorumque perso-
nis, & Collegiis quibuscumque, & Romanæ Curie
Officialibus, per quoscumque Romanos Pontifices præ-
decessores nostros, ac Nos & dictam Sedem etiam
motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, ac
alias sub quibuscumque tenoribus, & formis ac cum
quibuscumque clausulis, & decretis in contrarium, etiam
in vim contractus, aut alias quomodolibet concessis,
confirmatis, & innovatis, necnon Reformationibus
noviter factis, & paribus motu, & scientia approba-
tis, etiam si in eis caveatur expresse, quod causa hu-
jusmodi ad forum seu Curiam Capitoli, & seu Audi-
toris dictæ Camere, vel Vicarii, aut aliorum ejusdem
Urbis Tribunalium reallumi debeant, ac alias in con-
trarium præmissorum quomodolibet disponentibus.
Quibus omnibus etiam si pro illorum sufficienti de-
rogatione, de illis, eorumque totis tenoribus, specia-
lis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad
verbum, & nihil penitus omisso, nec per clausulas
generales idem importantes, mentio seu quævis alia
expressio habenda aut aliqua alia exquisita forma ad
hoc servanda foret, illorum omnium tenores, ac si de
verbo ad verbum expressi, & forma in illis tradita
observata inserti forent, Præsentibus pro sufficien-

Clausula de
rogatorie.

per expressis, & infertis habentes illis aliis in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat, harum serie specialiter, & expresse eisdem motu, scientia, & potestatis plenitudine derogamus, & sufficienter derogatum esse decernimus, contrariis quibuscumque. Aut si personis, Universitatibus, Societatibus, Congregationibus, Collegiis, Monasteriis, Hospitalibus, aliisque piis locis prædictis, eorumque Administratores, Officialibus, seu Ministris, vel quibuscumque aliis communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspensi, vel excommunicari, aut extra vel ultra certa loca, Curias, & Tribunalia, ad iudicium trahi non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem, & quibuscumque aliis privilegiis, indultis, ac litteris Apostolicis generalibus vel specialibus, quorumcumque tenorem existant, per quæ Præsentibus non expressa vel totaliter non inferta, jurisdictionis ipsius pro tempore existentis Referendarii, ut præfertur, deputati explicatio, sive exequutio impediri valeat quomodolibet vel differri. Et de quibus quorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & de verbo ad verbum habenda sit in nostris Litteris mentio specialis.

§. 17. Volumus solam præsentis Motus proprii signaturam sufficere, & ubique fidem facere in iudicio, & extra.

§. 18. Quodque eadem Motus proprii exempla etiam impressa, Notarii publici, sive ejusdem Archiconfraternitatis Secretarii manu subscripta, & sigillo dictæ Archiconfraternitatis vel illius Protectoris sive Referendarii pro tempore ut præfertur, electi, & deputati obnata, eandem prorsus, in iudicio, & extra illud fidem ubique faciant, quam ipse Motus proprius faceret si foret exhibitus vel ostensus, re gula contraria quacumque non obstante.

Fiat Motu proprio F.

Dat. Romæ apud S. Marcum, die 19. Aug. Anno 2.

Jurisdicção S. R. E. Cardinalis Protectoris, & Judicis causarum Collegii Cantorum Capellanorum Romani Pontificis, cum privilegiorum, & gratiarum concessione.

SIXTUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

In suprema militantis Ecclesiæ cathedra, nullis nostris meritis, sed sola Redemptoris nostri benignitate constituti, ad universa per orbem terrarum diffusa loca cultui dicata divino, provisionis nostræ remedia tenemur extendere; præcipue verò circa Capellæ nostræ Pontificiæ, cujus cura strictiori jure Nobis incumbit, prosperum statum, & feliciem di rectionem, Nos convenit intendere, & providentiæ nostræ studium propensius adhibere, ut in ea Missarum solemnia, & alia divina officia continuè decantentur, illiusque Cantores, ad eum numerum, qui ejusdem Capellæ decori, & servitio satis sit reduci, congruis facultatibus pro eorum vitæ subsidio, valeant communiri.

§. 1. Quocirca huic rei sedulo incumbere volentes, Motu proprio, & ex certa scientia nostra, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, numerum Cantorum Capellanorum prædictorum qui ad præsens viginti quatuor existunt, ad numerum viginti unius dumtaxat, quorum nomina, & cognomina in calce Præsentium describuntur, Apostolica auctoritate, tenore earundem Præsentium reducimus, & retrahimus, reliquos verò tres Cantores Capellanos ibidem non descriptos illos rationem aliorum habituri, ab ipsius Capellæ servitio, & canendi onere, Cantorumque Capellanorum huiusmodi numero, &

consortio absolvimus, & amovemus.

§. 2. Necnon in eadem Capella, unum Collegium viginti, & unius Cantorum Capellanorum, ut præfertur descriptorum, loco quorum pro tempore decedentium vel recedentium, alii artis Musicæ peritia, & vocis suavitare pellentes, ab aliis de gremio Collegii huiusmodi existentibus, prævio diligenti examine, ac aliis juxta laudabilem consuetudinem hæcenus observatam eligi debeant, sic tamen quod dictum numerus viginti & unius nunquam excedant, & quorum unus dictæ Capellæ Magister existat.

§. 3. Et tam ipse quàm alii pro tempore existentes Cantores Capellani, de gremio Collegii huiusmodi existentes, sint & esse censeantur, prout hæcenus semper fuerunt, nostri & pro tempore existentis Romani Pontificis, veri & indubitati Familiares, continui commeniales, ac ex Palatio Apostolico solitam portionem panis, & vini percipere, & habere debeant, cum massa communi ex Monasterio S. Mariæ de Crispiano Ordinis S. Benedicti Tarentinensis Civitatis seu Diocesis, eidem Capellæ per Nos nuper ad usum & sustentationem ipsorum Cantorum Capellanorum dumtaxat dicta auctoritate uniti, ac aliis eisdem massis usque ad valorem annuum trium millium scutorum monetæ assignandis, fructibus, redditibus, proventibus, rebus, & bonis, ac etiam quoad de totidem reddituum annuorum summa, illi à Nobis, vel Successoribus nostris Romanis Pontificibus provisum fuerit, ex Cameræ Apostolicæ pecuniis eisdem Cantoribus Capellanis, loco salarii, per menses singulos, deducta rata parte fructuum Collegii, & illius massæ communis huiusmodi præstandis consicienda, ac inter ipsos viginti & unum Cantores Capellanos proportionabiliter, prout desuper ab ipsius Collegii Protectore pro tempore existente ordinatum fuerit dividenda, ex qua tamen Diacono, & Subdiacono, qui olim substituti nuncupatis in dicta Capella quotidie non tamen in præsentia nostra ministrantibus, ac Scriptori, & custodi Librorum ejusdem Capellæ congruam portionem loco salarii arbitrio ipsius Protectoris assignare. Nec de cetero quicquam à S. R. E. Cardinalibus Missam in eadem Capella pro tempore celebrantibus, etiam prætextu cujuscumque consuetudinis, quantumlibet inveteratæ, petere, & exigere, aut etiam sponte oblatum recipere debeant, auctoritate, & tenore prædictis perpetuò erigimus, & instituiamus.

§. 4. Illique sic erecto, & instituto, arcam, sigillum, aliaque collegialia jura, & insignia, necnon facultatem, & auctoritatem Magistrum dictæ Capellæ de ipsius collegii gremio existentem, qui per quindecim annos, eidem Capellæ deservierit, vel saltem ex antiquioribus personis dicti Collegii existat, & quem duæ ex tribus partibus illius Cantorum Capellanorum huiusmodi ad hoc idoneum judicaverint, ceterosque Officiales, & Ministros necessarios ad tempus desuper statuendum eligendi.

§. 5. Necnon pro felici statu, regimine & gubernio dicti Collegii, illiusque personarum, rerum, & bonorum, tam spiritualium quàm temporalium, ac super electionibus, qualitatibus, oneribus, servitiis, & ministeriis Magistri Capellæ, aliorumque Officialium, & Ministrorum ejusdem Collegii, quæcumque statuta, ordinationes, & decreta sacris canonibus, & Concilii Tridentini decretis non contraria, condendi, & condita quoties pro illorum, ac rerum, & temporum qualitate, vel alias expediens videbitur, mutandi, corrigendi, reformandi, alterandi, moderandi, in toto vel in parte revocandi, ac alia de novo edendi, eaque omnia, dummodo Apostolica, vel saltem ipsius Protectoris pro tempore existentis auctoritate approbata fuerint, ab omnibus ad quos spectat, & pro tempore spectabit, sub penis pecuniariis arbitrio ejusdem Collegii infligendis, & illi applicandis, observari faciendi, concedimus, & elargimur.

Erectio Collegii viginti unius Cantorum Capellanorum, & descriptio qualitarum eorumdem.

Concessio privilegiorum, & re. dituum.

Concessio in signum Collegii, ac facultatis eligendi eorum gremio Magistrum Capellæ, & alios ministros.

Statutaque pro bono Collegii regimine cõdendi.

Elargitio e-
xceptionis
ab omni fu-
perioritate
Ordinario-
rum, & Judi-
um in Urbe
& extra.

Confirmatio
& innovatio
quorumcum-
que privile-
giorum hac-
tenus con-
cessorum.

Privilegium
quod Cantores
de collegio non amo-
veantur nisi
data eis prius
aequalitanti
recompensa,
si 25. annorum
spatio defuerint
vel legitime
impediti fue-
rint.

Quodque pri-
vilegia Can-
torum etiam
amotorum
perpetua
sint.

Deputatio
Protektoris
dicti Colle-
gii cum fa-
cultate pne-
dicta omnia
ordinandi &
gubernandi.

Jurisdictione
que causas
omnes dicti
Collegii, ejus-
que persona-
rum cognos-
cendi sum-
marie appella-
tionisque
remota &c.

§. 6. Insuper Collegium prædictum, illiusque pro-
tempore existentes personarum, Officialium,
& Ministrorum, ac eorum res, & bona quaecumque, mo-
bilia, & immobilia, præsentia, & futura, cujuscum-
que qualitatibus & quantitatibus existentia, & tam in di-
cta Urbe, quam extra eam ubicumque locorum con-
sistentia, ab omni jurisdictione, dominio, superiori-
tate, & potestate pro tempore existentis Vicarii,
Senatoris, Conservatorum, & Reformatorum Urbis,
ac Auditoris causarum Curiae dictae Camerae, nec-
non Ordinariorum locorum, aliorumque Judicum,
& Officialium quorumcumque, in ipsa Urbe vel ex-
tra eam ubicumque constitutorum, etiam perpetuo exi-
mimus, & liberamus, ac sub B. Petri, & nostrae,
Sedisque Apostolicae protectione suscipimus, ac
Nobis, & eidem Sedi immediate subijcimus.

§. 7. Omniaque, & singula privilegia, exemptiones,
libertates, prærogativas, facultates, gratias, tam
spirituales quam temporales, & indulta eidem
Magistro, & Cantoribus Capellanis, in genere vel in
specie, per quoscumque Romanos Pontifices præde-
cessores nostros, ac etiam Nos, & dictam Sedem ha-
ctenus quomodolibet concessa, approbata, & inno-
vata, quoad ea videlicet decretis prædicti Concilii
contraria, & sub ulla revocationibus comprehensa
non sunt, approbamus, confirmamus, & innovamus.

§. 8. Præterea statuimus, & ordinamus, ut illi ex
Cantoribus Capellanis prædictis, qui spatio vigin-
tiquemque annorum Capellæ prædictæ defuerint,
ex tunc de cetero ab omni illius onere, & servitio
sint, & esse censentur excusati, exempti, & liberati,
neque ipsi nec alii quicumque eorumdem Cantorum
Capellanorum, quos deinceps gravi aegritudine, aut
corporis seu vocis imbecillitate, vel alio legitimo
impedimento detineri contigerit, ab ipso Collegio,
illiusque Cantorum Capellanorum numero, & con-
sortio amoveri, neque alii in eorum locum subro-
gari ullatenus possint, nisi eis prius de æquivalenti
recompensa fuerit omnino provisum.

§. 9. Quodque tam per Nos, ut præfertur, amoti,
quam deinceps propter huiusmodi aut similia impe-
dimenta amovendi, omnibus, & singulis privilegiis,
exemptionibus, immunitatibus, prærogativis, fa-
cultatibus, gratiis, & indultis, quibus alii Cantores
Capellani de gremio, & consortio Collegii huius-
modi existentes utuntur, potiuntur, & gaudent, ac
uti, potiri, & gaudere possunt quomodolibet infu-
turum, non solum ad eorum instar sed æque princi-
paliter, & pariformiter, in omnibus, & per omnia
uti, potiri, & gaudere libere, & licite valeant.

§. 10. Ut autem ipsius Collegii conservationi, &
bono regimini consulatur, ipsique Cantores Capel-
lani ab indebitis molestiis præserventur, dilectum
filium nostrum Decium tituli Sancti Matthæi in Me-
rula Presbyterum Cardinalem Azzolinum nuncupa-
tum, ejusdem Collegii, & illius particularium perso-
narum, rerumque, & bonorum quorumcumque Pro-
tectorem, defensorem, conservatorem, & Judicem
ordinarium cujus consilio & ope, omnia supra dicta,
& alia quaecumque, ad electionem Magistri Capel-
lae aliorumque Officialium, & Ministrorum, necnon
receptionem, & admissionem Cantorum Capellano-
rum prædictorum spectantia, & alia quomodolibet
necessaria agantur, statuuntur, & ordinentur.

§. 11. Cum plena, & omnimoda potestate, & au-
thoritate, omnes, & singulos dicti Collegii, ejusque
personarum, Officialium, & Ministrorum pro tem-
pore existentium causas, etiam beneficiales, pro-
fanas, meras, & mixtas, tam activè quam passivè mo-
tas, & movendas, per se ipsum, vel ejus Audito-
rem, aut alium, seu alios ei bene viros, exclusivè
quoad omnes alios Judices, tam ordinarios quam
delegatos, etiam summarie, simpliciter, & de pla-
no, ac sine strepitu, & figura judicii, manuque Re-
gia, & nulla tela judiciaria servata, sed sola facti
veritate inspecta, ac etiam omni, & quacumque ap-

pellatione remota, audiendi, cognoscendi, deciden-
di, & sine debito terminandi, ac quibus, & quoties
opus fuerit in forma, etiam sub pecuniariis, & aliis
ejus arbitrio infligendis poenis, & in subsidium juris
censuris Ecclesiasticis inhibendi, quaecumque man-
data etiam executiva decernendi, & relaxandi,
censuras, & poenas prædictas etiam iteratis vicibus
aggravandi, auxiliumque brachii secularis innovan-
di, ac alia omnia, & singula in præmissis, & circa ea,
ac alias quomodolibet necessaria, & opportuna faci-
endi, dicendi, gerendi, & exercendi, ceterisque
facultatibus ad id requisitis, quæ etiam ad ipsius De-
cii Cardinalis in officio Protektoris huiusmodi Suc-
cessores perpetuo se extendere, auctoritate, & te-
nore similibus, constituimus, & deputamus.

§. 12. Decernentes præmissa omnia, & singula,
ac præsentis Litterarum, nullo unquam tempore, ex
quavis causa quantumvis legitima, & urgenti, de
subreptionis, vel obreptionis vitio seu intentionis
nostræ, vel alio quocumque defectu notari impugna-
ri, retractari, seu etiam revocari, suspendi, restringi,
limitari, aut in jus vel controversiam revocari, seu
ad terminos juris reduci posse, sed semper valida, &
efficacia existere, suosque plenarios, & integros ef-
fectus sortiri, & inviolabiliter observari, & Cantori-
bus Capellanis, & aliis supra dictis perpetuo suffra-
gari.

§. 13. Sicque per quoscumque Judices, ordina-
rios, & delegatos etiam causarum Palatii Apostolici
Auditores, ac Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales,
sublata eis, & eorum cuilibet, quavis aliter judican-
di, & interpretandi facultate, & auctoritate, ubique
& in quavis instantia judicari, atque definiti debere,
necnon irritum, & inane si secus super his à quo-
cumque quavis auctoritate scienter vel ignoranter
contingerit attentari.

§. 14. Non obstantibus præmissis, ac constitutio-
nibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon stylo
Palatii, ac Urbis, Camerae, & locorum prædictorum
etiam juramento, & confirmatione Apostolica, vel
quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consue-
tudinibus, ac etiam novis reformationibus, privile-
giis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, illis ac
Vicario, Auditori, Senatori, Conservatoribus, Re-
formatoribus, Ordinariis, aliisque Judicibus, & Of-
ficialibus prædictis, & quibuscumque aliis personis, sub
quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibus-
vis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque effi-
caciis, & in solitis clausulis, irritantibus, & aliis
decretis in genere vel in specie, etiam motu, scientia,
& potestatis plenitudine similibus, ac aliis quo-
modolibet etiam iteratis vicibus concessis, appro-
batis, & innovatis, quibus omnibus, etiam si de illis,
eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, ex-
pressa, & individua, ac de verbo ad verbum, non
autem per clausulas generales idem importantes,
mentio seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua
alia exquisita forma, ad hoc servanda esset, tenores
huiusmodi Præsentibus pro sufficienter expressis ha-
bentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vi-
ce dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, ceteris-
que contrariis quibuscumque.

Nulli ergo omnino hominum liceat &c. Si quis &c.

Dat. Romæ apud Sanctum Marcum, Anno in-
carnationis Dominicæ millesimo quingentesimo o-
ctogesimo sexto, Kalendis Septembris, Pont. nostri
anno 2.

Hortatio ad omnes Christi fideles, ut Rhemensi Col-
legio pro Catholicis Anglis à Sede Apostolica
instituto, pie, & liberaliter subveniant, & ad Im-
peratorem, Reges, & Principes Christianos, ut
Anglos propter Justitiam persecutionem patien-
tes, juvent, & foveant.

Clausula
preservati-
va.

Decretum
irritans.

Derogatio
contrario-
rum.

Dat. P.A. 2.
1. Sept.

XXXIX.

Similem hortationem fecit Gregorius XIII. ut sup. in ejus const. 72. Omnipotens. Qui jam in Urbe Collegium pro Catholicis Anglis instituit, ut in alia ejus Bulla 53. Quoniam.

SIXTUS EPISCOPUS.

Servus servorum Dei. Universis Christi fidelibus presentes Litteras inspecturis, salutem, & Apost. bened.

Edita A.D.
1586.

Anglorum
hæreticorum
immanitatis
execratio.

Afflicte, & crudeliter vexatæ Anglorum reliquæ, communi piorum mœre ac luctu, animos cunctorum mortalium in sui misericordiam, & admirationem convertunt. Quocirca Nos, qui Pontificii muneris nostri esse putamus, cunctarum Ecclesiarum, etiam quæ Dei beneficio pace fruuntur, curam gerere, multo etiam magis solliciti sumus de omnibus perditis quaerendis, & afflictis populis, & personis pro viribus sublevandis, sævit enim in dies acrius dira hæreticorum immanitas, in eos præcipue Ecclesiastici Ordinis viros, qui de ipsa orthodoxa fide vocem paulo liberio remittere aut hiscere audent, ita ut plerique novis, & ante hanc diem inauditis tormentorum generibus dilacerati, atque membratim discepti, exquisitis suppliciis trucidantur. At quibus divina benignitas annuit & eruentis impiorum manibus elabi, si verò quasi faneſſi tantæ cladis nuntii, ad augendam nostri doloris acerbietatem mihi, vix aliquod ærumnarum suarum solatium reperiunt, nam extores patris finibus, bonis, ac fortunis suis spoliati, summa rerum omnium egestate miserè premantur, ac dispersi incertis sedibus vagantes, externarum, atque ignotarum Gentium, sed fide ac communione Catholicæ sociorum opem implorant. Et cum divitias, & ampla atque opulenta patrimonialia possiderent, quibus in patria secundam carnem abunde alluentes frui poterant, si à vera pietate declinasset, maluerunt divino spiritu ducti ea prædæ ac direptioni facilligorum domi relinquere, quam fidem regere.

Anglorum
Catholicorum
præclara
laudatio.

§. 1. Numquam ergo satis Anglorum Catholicorum laudari potest constantia, dum præ studio Religionis, illi acerbissimos cruciatus, & necem, hi verò exilium, mendicitatem, quæque ultima censentur in malis data optione cunctis hujus sæculi deliciis, & commodis anteponunt. Neque sane est, quod mihi exules à suis necessariis, & amicis in patria relicti opem aliquam expectent, ipsi namque nefariis edictis deterri, aut paribus depreſſi angustii, suas nequeunt miseris tolerare, necdum aliis adjuumento esse.

Collegii Rhe-
manensis pro
Catholicis
Anglis à Se-
de Apost. in-
stituti, bono-
rumque fru-
ctuum inde
provenien-
tium enarra-
tio, & com-
mendatio.

§. 2. Quare horum calamitatis miserata Sedes Apostolica, per omnes Christiani Orbis partes dispersis Angliæ populis, iis præsertim qui in Collegium Rhemenſe hac ipsa de causâ auctoritate Apostolica institutum se receperant, superioribus annis ceperat aliquid auxilii suppeditare, quod pium institutum Nos quoque perſolvendo ex ærario nostro, in singulos menses certum subsidium prosequi non cessamus, nec sine magno fructu, siquidem ex sancto illo Anglorum, illuc pietatis & Catholicæ disciplinæ capeſſendæ causa profugientium Seminario, multis ferè quotidie prodire audimus, qui Deo juvante in Angliam ad confirmandos Catholicorum animos redeunt, gloriosis, & apud posteros quoque illustribus futuris martyriis, suam erga Catholicam fidem, & hanc Sanctam Sedem devotionem uque ad sanguinis, & spiritus effusionem testentur. Horum autem eximia virtus, & infracti animi robur sævissimis hæreticis urit, ipseque eis eripit quam de Catholicorum nomine ad interfectionem deleando, aut certe penitus proſigando, animo conceperunt. Sed cum hæc desiderant propterea pios omnes vexare creſcente in dies exulum numero, idem Collegium Rhemenſe in maximas difficultates est adductum, ac ne ipſius quidem, ærarii Apostolici ingentibus oneribus gravati tenuiter sufficere potest tot necessitati-

bus sublevandis, cum præsertim Nos turbulentissimis temporibus ad Ecclesiæ gubernacula vocati, imminetibus undique periculis circumſeſſi, ex toto terrarum Orbe ad Nos confluentium fidelium pauperum necessitatibus succurrere, pro communi Christianæ Reipublicæ bono, ingentes sumptus facere, & gravissima onera sustinere assidue cogamur.

§. 3. Primum igitur confugimus ad divinam opem implorandam, ut Deus omnipotens cohibeat aliquando effrenatæ tyrannidis in cede ac frage piorum debacchantis furorem, & nobilissimam nationem veræ Religionis studio quondam florentem ac beatam, & adhuc pro sua ab hæreticorum intolerabili jugo liberatione, usque ad sanguinem gloriosissime concertantem, tali peste ac pernicië liberet, ac in pristinam quietem, & tranquillitatem vindictæ.

§. 4. Mox imitati felicitis recordationis Gregorium Papam XIII. nostrum prædecessorem, ejus exemplo ut plus ponderis habeat duplicata Romanorum Pontificum commendatio, Nos quoque denuo per presentes universos Christi fideles enixe obtestamur, & obsecramus in Domino, cujus causa nunc maxime agitur, ut sublevant Anglorum fidelium, præsertim dicti Collegii Rhemenſis supplicum manus tendentium, inopiam pia, & liberali pro suarum quique facultatum modo elemosynarum largitione, nec denegent eis, vel à dilecto filio Guglielmo Alano Rectore ejusdem Collegii moderno, ac pro tempore existente deputatis, promptum auxilium, ne quos divina misericordia incolumes defendit ab efferata crudelissimæ tyrannidis sævitia, eos nunc in media Christianorum Republica cneſtos fame, nudos, macie, & squalore confectos, tabefcere, ac perire summa cum ignominia patiantur.

§. 5. Mandamus præterea universis, & singulis Ecclesiarum Prælatiſ, & Rectoribus, ceterisque personis Ecclesiasticis quibuscumque, ut eurent presentes Litteras, earumve authenticæ exempla in suis quique Ecclesiis, & locis, ac etiam concionibus publicari, spectatæque integritatis viros, non autem Quæſtores deligant, qui elemosynas, & oblata charitatis subsidia colligant, ac sine lucro, & fraude, dicto Rectori vel ab eo deputatis fideliter tradant, ex quibus idem Rector modernus, & pro tempore futurus, ubi ejusdem Collegii necessitatibus satis esse proviſum noverit, ceteris Angliæ exulibus dispersis Presbyteris opportune subveniat.

§. 6. Demum charissimos in Christo filios Imperatorem, cunctosque Reges ac reliquos Principes Christianos, etiam atque etiam rogamus, & moneamus, ut eisdem Anglos exules, qui persequutionem patiuntur propter justitiam, Christianorum quidem Principum patrocinio dignissimos, juvent pro viribus, & foveant, vel in eis potius ipsi summet Christum, cujus nutu omnia regna, & dominia sibi ab eo tradita regi meminerint.

§. 7. Et quia presentes nostræ Litteræ ad singula loca ubi illis opus est deferri nequeunt, decernimus, ut earum exemplis, etiam impressis, Notarii publici manu subscriptis, & sigillo Prælati Ecclesiastici munitis, eadem ubique fides habeatur, quæ eisdem originalibus haberetur, si essent exhibitæ vel ostensæ.

Dat. Romæ apud S. Marcum Anno Incarnationis Dominicæ 1586. 3. Nonas Septembris Pontificatus nostri Anno 2.

Quod Fratres Minores Ordinis S. Francisci de Observantia licitè retineant loca quæ etiam sine titulo possident, dummodo Ordinariorum consensu accedat, quoad ea quæ possident à decem annis citrà.

Pontificis ad
Deum oratio
pro Angliæ libera-
tione.

Ejusdem pro
dicti Collegii subven-
tione ad
Christi fideles exhorta-
tio.

Ecclesiasti-
corum cura
presentes
litteras publi-
candi, &
elemosynas
colligendi.

Hortatio ad
Principes
Christianos,
ut Anglos e-
xules reci-
piant, & fove-
ant.

Transum-
porum fi-
des.

D. P. A. 2.
die 3. Sept.

XL.

Alia de his Fratribus videri possunt supra in cons. 23. Leon. X. lre. sup. fol. 433.

SIXTUS PAPA V.

Edict. An. D.
1586.

Dilecti filii, salutem, & Apostolicam benedictionem.

Generalis
Minister ex-
ponit Pont.
quod multa
loca, & Ec-
clesias ipsi
possident
licet de legi-
timo titulo,
seu concessi-
one, ex cau-
sis hic ex-
pressis docere
nequeant.

Cum sicut Nobis nuper exposuisti, tu annis proximè lapsis pro iuncto tibi Ministeriatu tui generalis Ordinis Fratrum Minorum de Observantia onere, omnes, & singulas præfati Ordinis Provincias, tam in Italia quàm extra eam existentes visitaveris, multasque domos, Ecclesias, & loca Ordinis præfati, ab eorum Ministris, Custodibus, seu Guardianis, & Fratribus retineri repereris absque eo quod ipsi Ministri, seu Guardiani, & Fratres de aliquo Ecclesiæ, seu domorum ac locorum huiusmodi titulo, seu concessione à Sede Apostolica, vel aliâ legitime habita, & facta docere valeant, cum dictæ concessiones aut non obtenta, vel non expeditæ, seu dictarum domorum Ministrorum, Guardianorum, seu Custodum incuria, sive etiam ob bella, aut depopulationes, vel alios casus sinistros, aut aliâ deperditæ sint, quâvis domus, & Ecclesiæ, ac loca prædicta, ab eorum Ministris sive Guardianis, & Fratribus bona fide, ac pacifice, & quietè possideantur. Tuque Nobis humiliter supplicasti, ut potiori pro dictorum Ministrorum, Custodum, sive Guardianorum, & Fratrum conscientiarum securitate, & cautela, tibi, dictisque Ministris, Custodibus, sive Guardianis, & Fratribus in præmissis de aliquo opportuno nostro, & Sedis Apostolicæ remedio providere de benignitate Apostolica dignaremur.

Hic itaque
Pont. eisdem
concedit, ut
ea libere, &
licite retine-
re valeant
dummodo
habeant con-
sensum Or-
dinariorum
quoad loca
quæ habent
à decem an-
nis citra.

§. 1. Nos igitur pro nostri Pastoralis officii munere, tuique supplicationibus in hac parte inclinati, in præmissis opportunè dictarumque domorum, & Ecclesiæ, ac locorum qualitates, & quantitates, aliæque necessaria exprimenda hic pro plenè, & sufficienter expressis habere volentes, teque ac dictos Ministros, Guardianos, seu Custodes, & Fratres à quibusvis excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & pœnis à iure vel ab homine quavis occasione vel causa latis si quibus quomodolibet innodati existitis, ad effectum Præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, tibi, & ceteris Ministris Custodibus, seu Guardianis, & Fratribus dicti Ordinis, nunc, & pro tempore existentibus, ut quæcumque loca, domos, & Ecclesiæ, quæ vos in hanc usque diem, in quibuscumque; Mundi partibus, ac etiam Insulis, & Regnis novis Indiæ Occidentium, & Orientalium, quomodolibet, ea videlicet quæ à decem annis supra, quæ verò à decem annis citra de consensu Ordinariorum possidetis, libere, & licite ac absque aliquo conscientiarum vestrarum scrupulo, aut censurarum, & pœnarum incurfu, etiam si de illorum concessione à Sede Apostolica vel aliâ quomodolibet factis, ac fieri necessariis nulli, ut præmittitur, appareat, perpetuò retinere, & possidere, ac in eorum quietà, & pacifica possessione remanere, illamque in omnibus, & per omnia, perinde ac si antequam loca, domos, & Ecclesiæ huiusmodi, & eorum singula recepta fuissent, de illis recipiendis competens, & sufficiens facultas à Sede Apostolica, & locorum Ordinaris, in quorum Civitatibus, & Diocesis constitunt, obtenta fuissent, continuare valeatis, Apostolica auctoritate, Præsentium tenore concedimus.

Indulgentias
que, & pri-
vilegia eisdem
concedit, quæ
concessa fuerunt
locis & Ec-
clesiis à prin-
cipio licite
receptis, &
edificatis.

§. 2. Necnon Ecclesiis, domibus, & locis prædictis, illorumque Ministris, & Guardianis, seu Custodibus, & Fratribus nunc & pro tempore existentibus, ut omnibus, & singulis privilegiis, libertatibus, immunitatibus, exemptionibus, prerogativis, antelationibus, præeminentiis, indultis, favoribus, gratiis, concessionibus, indulgentiis, & peccatorum remissionibus, & relaxationibus, quibus aliæ dicti Ordinis

Ecclesiæ, domus, & loca, quæ à principio de ejusdem Sedis Apostolicæ, & Ordinariorum locorum licentia recepta, & edificata fuerunt, eorumque Ministris, Guardianis, seu Custodes, & Fratres, ac aliæ personæ, tam de iure, usu, consuetudine, privilegio, & concessione, quàm aliâs quomodolibet in genere vel in specie utuntur, potiantur, & gaudent, ac uti, potiri, & gaudere possunt, & poterunt quomodolibet in futurum, ipsi similiter ac pariformiter, & sine ulla penitus differentia uti, potiri, & gaudere libere, & licite valeant, indulgemus.

§. 3. Decernentes insuper te, ac Ministros, Custodes seu Guardianos, & Fratres Ecclesiæ, domorum, & locorum prædictorum de cetero, ad docendum de facultate sive licentia recipiendi Ecclesiæ, domos, & loca prædicta ab eadem Sede, & locorum Ordinaris obtenta, aliâs quàm per Præsentium ostensionem, quàm ubique, tam in iudicio quàm extra, præter quàm quod ad docendum de dicto consensu Ordinariorum, in his quæ possidetis à decem annis, citrà, sufficere volumus pro sufficienti, & plena probatione omnium, & quorumcumque necessariò probandorum, ad effectum consequendi præmissa, hisque omnibus plenariè fruendi, minimè teneri nec obligatos existere.

§. 4. Sicque per quoscumque Iudices, & Commissarios ordinarios, & delegatos, etiam Palatii Apostolici causarum Auditores, & S. R. E. Card. sublati, & eorum cullibet, quavis aliter iudicandi, desinendi, & interpretandi facultate, iudicari, desiniri, & interpretari debere, ac quicquid fecerit super his à quocumque quavis auctoritate scienter, vel ignoranter attentari contigerit, irritum, & inane decernimus.

§. 5. Non obstant, præmissis, ac fel. rec. Bonifacii Papæ VIII. prædecessoris nostri, de novis locis per Mendicantes, absque dictæ Sedis licentia non recipiendis, & quibusvis aliis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis; ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 6. Volumus autem quod præsentium transumptis seu copiis, in opere novo, de omnibus domibus, Ecclesiis, & locis prædicti Ordinis, eaq; concernentibus prope diem, te audore in Typographia Romana dilecti filii Dominici Basse dudendo, aut etiam separatim imprimendis, & à te, seu pro tempore existente Ministro, seu Commissario generali Ordinis præfati separatim imprimendis, subscriptis & sigillo officii Generalatus, seu Commissariatus huiusmodi munitis, eadem prout ubique fides tam in iudicio quàm extra dictis in dicto opere, ac separatim imprimendis adhibeatur, quæ eisdem præsentibus adhibetur, si originaliter exhibita vel ostensa forent.

Dat. Romæ apud S. Marcum, sub annulo Piscatoris, die 3. Septemb. 1586. Pontificatus nostri anno 2.

Præfinitio numeri, & qualitatum Prælatorum Referendariorum Utriusque Signaturæ Romani Pontificis, cum privilegiorum concessione.

Ampliare concessu indulta Paul. III. sup. in Tomo I. in ejus cons. 23. Debit. fol. 737. ubi in apostillis notari eorum statum.

De officio autem Referendariorum, vide sup. in Pii IV. cons. 90. Cum nuper. sup. fol. ubi etiam notavi de materia Signaturæ Justitiæ, & Gratiæ.

SIXTUS PAPA V.

Ad perpetuam rei memoriam.

Quemadmodum providus agriculator, ad uberem ejus futuram frugem, temporum vices sollicite observat, arbores ordine disponit, & ne illarum vires latius diffusæ evanescent, nimiam frondum, ramorumque frequentiam comprimit & resecat, ac ibidem inordinatâ & indispolitâ, si quæ sint,

Ampliatio
supra dicti
indulti.

Decretum
irritans.

Fides tran-
sumptorum.

D. P. A. 2.
die 3. Sept.

XII.

Edict. An. D.
1586.

Iste Pont. ex
causis hic ex-
pressis.

ad meliorem formam reducere fatagit; ita nos agri Domini curæ, superna dispositione præpositi, efficacem & fructuosam operam in illius cultura impendere credimus, cum ad ea vigilantia nostræ studium sedulo convertimus, per quæ huius Sedis Apostolicæ dignitates & officia, præsertim nostram Gratiæ, & Iustitiæ Signaturam concernentia, tamquam feraces plantæ in ipso agro Domini conflatæ, utili & commoda rerum dispositione salubriter dirigantur, & ex eorum administratione sperati fructus ad Dei gloriam, & illius gregis utilitatem, dictæque Sedis decorem majori in dies cum senore proveniant; abusus verò, qui in illis passim, absque personarum defectu conferendis irrepserunt, resectis & veluti amputatis ramis sterilibus, de medio submoventur. In quam curam cogitationemque pro officii nostri debito incumbentes, opportunum, imò necessarium esse censuimus, ut ad ejusdem Signaturæ tam Gratiæ quam Iustitiæ ministeria, non nisi cognita & spectata virtutis viri assumantur, & proinde illius Referendariorum cætes nimia præteritorum temporum indulgentia, & quorundam instantia supra modum, non sine pristinae sue dignitatis diminutione adausus, refecata illorum multitudine, ad certum & determinatum numerum, inque compositum ordinem redigatur, ne multitudo ipsa rebus gerendis confusionem & impedimentum afferat, & spes uberioris fructus, quæ in eorum muneribus ritè & fideliter obeundis posita esse debet, nos atque ipsos frustretur.

Referendariorum numerum ad centum præfinit.

Hic numerus augeatur arbitrio Patris.

Admittendorum ad Signaturam Iustitiæ qualitates præscribit.

Admissionemque formam.

§. 1. Itaque opportuna circa hæc remedia adhibere volentes, Motu proprio &c. & ex certa scientia nostra, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, hac nostra perpetuò valitura constitutione, statuimus & ordinamus, quòd nullus deinceps in Referendarij alterutrius Signaturæ prædictæ, etiam cedentibus vel decedentibus, aut alias deficiantibus, qui nunc sunt Referendariis præfatis, omnino admittatur, donec & quousque omnium Referendariorum hujusmodi numerus imminutus, & ad centum, dumtaxat reductus fuerit. Illo autem sic reducto & imminuto, præscriptus centenarius numerus Referendariorum hujusmodi, nullo umquam tempore augeatur. Sed neque inter hos omnes ultra septuaginta Signaturæ Referendarii esse possint.

§. 2. Nec ullus numero & consortio Referendariorum Iustitiæ de cætero adscribitur, nisi fit ex legitimo matrimonio, honestique parentibus procreatus, & clericali charactere insignitus, ac utriusque vel alterius Jurum Doctor, in aliqua Studii generalis Universitate promotus, & in Romana Curia habitu & tonsura clericalibus incedendo, per biennium versatus, vitæque integritate, ac morum probitate commendatus, & saltem in vigintiquinque etatis suæ annis constitutus, habeatque in bonis temporalibus, vel beneficiis Ecclesiasticis, unde in ipsa Curia dignitatis suæ gradum valeat decenter sustinere.

§. 3. Porro antequàm ad ipsius admissionem procedatur, per ejusdem Signaturæ Iustitiæ Præfectum, vocatis, & congregatis, ad id sex antiquioribus Referendariis, secretò examinari, & ad hunc effectum saltem binas supplicationes, seu commissiones, sibi ab ipso Præfecto ex tempore præscriptas proponere debeat; quòd si collectis Præfecti & sex antiquiorum Referendariorum, præfatorum suffragiis, super quibus eorum conscientiam oneramus, taliter in hujusmodi propositione se habuerit, ut relatione super hoc, per dictum Præfectum Nobis, aut pro tempore existentis Romano Pontifici facta, meruerit commendari & approbari, tunc & non aliàs in Referendarij ejusdem Signaturæ Iustitiæ admittatur; præfatis prius per eum in manibus ejusdem Præfecti solito juramento.

§. 4. Ad Signaturam verò Gratiæ nemini pateat accessus, nisi saltem triennio in Signatura Iustitiæ fuerit laudabiliter versatus, exceptis dumtaxat causarum Palatii Apostolici Auditoribus, & Cameræ Apostolicæ Clericis, quorum quisque ad utramque Signaturam quovis tempore adscisci valeat.

§. 5. Insuper, quòd eidem Signaturæ Gratiæ semper decem & octo Referendarii in Curia præsentent, nec legitimo impedimento detenti, duodecim videlicet antiquiores, penes quos sententiæ dicendæ in ipsa Signatura Gratiæ, suo quisque loco, & ordine facultas existit, & alii tres, quibus onus libellos supplices proponendi incumbit, reliqui verò tres successivè proposturi, necnon Thesaurarius generalis, & etiam generalis Auditor causarum Curiae dictæ Cameræ, ac unus ex Palatii Apostolici Auditoribus, & unus ex ejusdem Cameræ Clericis, alternatis vicibus, item nostri in Urbe Vicarii, & causarum Curie præfate Auditoris Locatenentes, necnon Secretarius Apostolicus, ac in eadem Signatura Gratiæ proponendi munus à Referendariorum Decano ad cæteros omnes per turnum, juxta suæ cuiusque receptionis & admissionis ordinem, deducatur.

§. 6. In Signatura verò Iustitiæ quæ rationem proponendi ibidem servari solitam, nihil ducimus innovandum.

§. 7. Ne autem, quo quisque tempore in Signatura tam Iustitiæ quam Gratiæ sit admissus, hesitari contingat, singuli Referendarii nunc existentes, quibus suum cuique locum & ordinem saluum & illæsum esse volumus, intra tres menses à data præsentium computandos, alii verò in futurum admittendi, ante cuiusque eorum admissionem, literas Apostolicas, sub plumbo super concessione sui Officii Referendariatus hujusmodi expedire teneantur, quæ nostri & pro tempore existentis Romani Pontificis Datarii manu subscriptæ, eandem prorsus roboris firmitatem obtineant, quam obtinerent, si juxta stylum Cancellariæ Apostolicæ, seu dictæ Cameræ per omnes & singulos Officiales, & alios, ad quos literarum Apostolicarum expeditio pertinet, ritè & legitime forent expeditæ.

§. 8. Cæterùm, ut Referendarii præfati, ad suscipiendos pro dicta Sede labores eò promptiores reddantur, quo exinde spiritualibus & temporalibus gratiis se cognoverint uberius esse referentes, omnes & singulos nunc & pro tempore existentes Referendarios, utriusque vel alterius Signaturæ hujusmodi, in nostros & pro tempore existentis Romani Pontificis familiares, continuos commensales, gratiosè, recipimus, & ab omni jurisdictione Ordinariorum locorum quorumcumque eximimus, & totaliter liberamus, ac nobis & dictæ Sedi immediatè subjicimus, Nobilitatisque titulo decoramus, ac veros & indubitatos familiares, continuos commensales nostros, & pro tempore existentis Rom. Pontif. ut præfertur, liberos, exemptos, & Nobiles esse, sèque tales in quibuscumque Apostolicis, & aliis literis, scriptis & actibus, tam publicis quam privatis inscribere & nominare, ac ab aliis inscribi & nominari debere decernimus & declaramus; eisdemque Referendariis nunc & pro tempore existentibus, in signum honoris & veræ Nobilitatis, insignia nostra gentilia, una cum suis armis, & insigniis gestare, ac omnibus & singulis privilegiis, præminentijs, indultis, immunitatibus, honoribus & gratiis, quibus alii veri & indubitati Nobiles ex nobilibus, etiam Illustrum genere, ex utroque parente procreati, tam in iudicio, quam extrà ubicumque locorum de jure vel consuetudine, ac aliàs quomodo-cumque utuntur, potiuntur, & gaudent, ac uti,

Triennium, à Signatu. Et in ea veris per triennium, ad Signaturam Gratiæ admitti posse declarat.

Afflictentium Signat. Gratiæ numerum & ordinem poni.

Rationem proponendi non mutat.

Referendarios super concessione Referendariatus infra tres menses literas Apostolicas expedire præcipit.

Familiaritatis, & veræ Nobilitatis privilegia ac insignia sua gentilitia eidem concedit à jurisdictione Ordinariorum eximit.

Familiarium privilegia vide supra in Paul. III. consil. 3. in Tomo 1. fol. 703.

potiri & gaudere possunt, & poterunt quomodolibet in futurum in omnibus & per omnia perinde ac si de Nobilium etiam Illustrium genere, verè & non fidei procreati & geniti forent, uti & potiri, & gaudere.

Et in suis
Monasteriis
Mitra &c.
utendi, &
populo benedicendi
facultatem
elargitur.

§. 9. Necnon in Monasteriis pereos in Commendam pro tempore obtentis, quorum præteriti Abbates Mitra, & aliis Pontificalibus insigniis, ex privilegio Apostolico, aut aliis uti consueverunt, etiam Mitra, annulo, & baculo, cæterisque Pontificalibus insigniis & ornamentis perinde ac si eisdem Monasteriis, tamquam Abbates præessent, etiam uti, necnon post Missarum, & aliorum divinorum officiorum solemnia, populo tunc interessenti solemniter more, dummodò inibi præsens non sit aliquis Antistes, seu dictæ Sedis Legatus, aut si præsens fuerit, ad id ejus accedat assensus, benedicere liberè & licitè valeant.

Confessorum
remque ab
Ordinario
approbatum
eligendi, qui
semel in vita
& in articulo
mortis plenariam
eis concedat
indulgentiam.

§. 10. Necnon aliquem idoneum Presbyterum, Secularem vel cuiusvis Ordinis Regularem ab Ordinario approbatum, in suum possint eligere Confessorem, qui omnium peccatorum de quibus corde contriti, & ore confessi fuerint, semel in vita, & in mortis articulo plenariam remissionem & indulgentiam, eis sacra communione refectis, & in Catholicæ fidei sinceritate, Romanæque Ecclesiæ unitate, ac Romani Pontificis canonicè iurantibus obedientia perseverantibus, dicta auctoritate concedere possint.

Celebrandi
que ac celebrari
faciendi circa
aurosum, &
etiam in locis
interdicto Ecclesiastico
suppositis.

§. 11. Liceatque eisdem Referendariis, ubi negotiorum & temporum ratio exoptulabit, Missas antequàm elucescat dies, circa tamen Aurora, necnon si forsan ad loca Ecclesiastico interdicto, tam ordinaria quàm Apostolica auctoritate supposita, eos declinare contigerit, in illis submissa voce, clausis januis, & non pulsatis campanis, ac excommunicatis, & interdictis exclusis, in sua familiariumque suorum domesticorum, & trium aliarum personarum eorum arbitrio eligendarum præsentia, dummodò ipsi, & qui præsentis fuerint causam non dederint interdicto, neque eis specialiter interdictum fuerit, similiter Missas, & alia divina officia per se ipsos, si Presbyteri fuerint, vel per proprium, aut alium idoneum Sacerdotem ab Ordinario approbatum, celebrare, & celebrari facere, illaque audire, & eis interesse, necnon tempore interdicti huiusmodi, sacram Eucharistiam, & cætera Sacramenta recipere, ipsique dicto tempore decedentibus eorum corpora Ecclesiasticæ sepulture, etiam cum funebri pompa, Christiano ritu tradi possint.

Stationes
Urbis dictis
Referendariis
visitantibus
Ecclesiasticas
ab eis
eligendas
concedit.

§. 12. Necnon Quadragesimali, & aliis temporibus ac diebus Stationum Basilicarum, & Ecclesiarum dictæ Urbis, & extrà ejus muros, si in iis locis in quibus eos etiam Romæ esse contigerit, duas Ecclesias aut unius vel diversarum Ecclesiarum eorum arbitrio eligendas, visitaverint, ac ibidem Orationem Dominicam, & Salutationem Angelicam saltem ter devotè recitaverint, omnes, & singulas indulgentias, & peccatorum remissiones consequantur, quas consequerentur si eisdem temporibus & diebus Stationum, Basilicas, ac Ecclesias Urbis, & extrà ejus muros huiusmodi, ad id deputatas, personaliter visitassent.

Carnibus
quando vesci
cui possint.

§. 13. Eidem quoque Quadragesimali, & aliis temporibus, quibus elus carnium, ovorum, & lacticiniorum usus de jure vel consuetudine est prohibitus, eisdem carnibus, ovis, & lacticinii de consilio utriusque Medici, ac secretò, & sine scandalo uti, & vesci, liberè, & licitè valeant dicta auctoritate tenore præsentium concedimus, & indulgemus.

Dignitate
gaudent, de

§. 14. Præterea constitutionem foel. recordatio-

nis Bonifacii Papæ Octavi, Prædecessoris nostri quæ incipit, Statutum. Ad eisdem Referendarios, nunc, pro tempore existentes extendimus, ita ut ipsi omnes sint, & esse censentur Ecclesiastica dignitate præditi, & juxta dispositionem constitutionis huiusmodi qualificati, etiam ad hoc ut in eorum tamquam personarum in dignitate Ecclesiastica constitutarum manibus, pensiones ab iis qui sufficienti ad hæc facultate suffulti fuerint, transferri valeant, ac translationes pensionum ab ipsis faciendæ huiusmodi validæ, & efficaces existant, subisque effectus sortiri debeant.

§. 15. Decernentes præsentis literas nullo umquam tempore de subreptionis, vel obreptionis vicio, aut intentionis nostræ vel alio quovis defectu notari, impugnari, invalidari, aut in jus vel controversiam revocari, nec sub quibuscumque similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, aut aliis dispositionibus comprehendere, sed semper ab illis exceptas, validasque & efficaces esse, & fore, subisque plenarios, & integros effectus sortiri, ac ab omnibus ad quos spectat, & pro tempore spectabit observari, sicut per quoscumque Judices ordinarios vel delegatos, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Cardinales, sublati eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, judicari, & definiri debere, irritum quoque, & inane, si secus super his à quoquam, quavis auctoritate scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§. 16. Quocirca universis, & singulis Venerabilibus Fratribus nostris Patriarchis, Archiepiscopis, & Episcopis, necnon dilectis filiis Abbatibus, Prioribus, & quibuscumque aliis personis in dignitate Ecclesiastica, & ubicumque locorum constitutis, per præsentis committimus, & mandamus, quatenus ipsi, vel duo, aut unus eorum per se vel alium fidei alios præsentis literas, & in eis contenta quæcumque, ubi, & quando opus fuerit, aut quoties pro parte Referendariorum prædictorum, vel alicujus eorum fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra præsentis literas, & in eis contenta huiusmodi ab omnibus, ad quos spectat, & pro tempore spectabit, inviolabiliter observari, ipsosque Referendarios, ac eorum singulos illis pacifice frui, & gaudere, non permittentes eos desuper, per quoscumque quomodolibet indebitè molestari. Contradictores quoscumque, & rebelles per sententias, censuras, & penas Ecclesiasticas, aliisque opportuna juris, & facti remedia, appellatione postposita, compescendo, necnon legitimis super his habendis servatis processibus, sententias, censuras, & penas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit auxilio brachii secularis.

§. 17. Non obstantibus præmissis, hac præfati Bonifacii Prædecessoris de una, & in Concilio generali edita de duabus diebus, dummodò ultra tres dietas aliquis auctoritate præsentium ad iudicium non trahatur, necnon Lateranensis etiam novissimè celebrati, & præfati Generalis, & aliorum Conciliorum, ac piæ memoriæ Innocentii IV. Sixti etiam IV. Innocentii VIII. Pauli II. & quorumcumque aliorum Romanorum Pontificum Prædecessorum nostrorum, contra exemptos editis, necnon Pii IV. similiter prædecessoris nostri, de gratis interesse dictæ Cameræ concernentibus, in eadem Camera registrandis, aliisque Apostolicis, ac in Provincialibus, & Synodalis Conciliis editis, generalibus vel specialibus constitutionibus, & ordinationibus, necnon Cameræ præfate, ac Ecclesiarum, Monasteriorum, & locorum quorumcumque, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis

qua in cap.
Statutum de
Rescript. in
6.

Clausulas
præservativas
appont.

Executores
huius constitutionis
deputari, &
facultates
concedit.

Clausulas
derogatorias
addit.

firmi-

firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque indultis, & literis Apostolicis, illis eorumque Præfulibus, Capitulis, Abbatibus, Conventibus & Personis, necnon præfatis locorum Ordinariis per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac nos, & dictam Sedem sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque derogationum derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decretis in genere vel in specie, etiam motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, etiam consistorialiter, ac alias quomodolibet, etiam iteratis, & multiplicatis vicibus concessis, confirmatis, & innovatis. Quibus omnibus, & singulis, etiam de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & in dividua, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc ferenda esset, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, & formâ in illis traditâ observatâ, inserti forent, præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliâ in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat, & ad effectum præmissorum omnium, harum serie specialiter, & expressè derogamus, aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspensi, vel excommunicari non possint, per literas Apostolicas non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

Transumptis
credi iubet.

§. 18. Verum, quia difficile foret præsentibus literas ad singula loca, in quibus de eis fides forsan facienda foret, deferre volumus, & eadem auctoritate decernimus, quod ipsarum transumptis, etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo alicuius Curie Ecclesiasticæ, seu personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides in iudicio, & alibi, ubi opus fuerit adhibeatur, quæ adhiberetur eisdem præsentibus, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Nulli &c.

Dat. P. A. 2.
die 22. Sept.

Datum Romæ, 10. Kalendas Octobris, Anno secundo.

Publicatio.

Anno à Nativitate Domini 1586. indict. 14. die verò 16. mensis Octobris, Pontificatus Sanctiss. D. N. D. Sixti divina providentia Papa V. Anno 2. retrospectiva litera lecta, & publicata fuerunt, & per aliquod temporis spatium dimisse in Portis seu valvis Basilicarum S. Joannis Lateranensis, & S. Petri Principis Apostolorum de Urbe, necnon Cancellariæ Apostolicæ & acie Campi Floræ, per nos Joannem Freile, & Octavianum Taglietrum S. D. N. Papa Curf.

Alex. Parabiachus Mag. Curf.

XLII.

Communicantes Status Ecclesiastici pro aliis obligatæ, infra annum ab earum obligationibus liberentur. Et de cætero pro aliis se obligare, & eorum bona alienare, ac præterquam ratione locationis obligare, vel Oratores sumptibus publicis ad Pontificem mittere, nequeant.

Confirmatur, & ampliatur Bulla ista à Clem. VIII. infra in ejus cons. 10. Pro commissa. Ubi alia de Civitatibus notabo, in Tomo 3. fol. 9.

Consonat Constitutio 18. Pii IV. hic supra fol. 30. in qua decrevit, Vassallorum obligationes pro eorum Dominis esse nullas, Dominosque teneri Vassallos ab obligationibus pro eis factis relevare, & pecunias solutas restituere.

Bullarium Romanum. Tom. II.

SIXTUS PAPA V.

Ad perpetuam rei memoriam.

Inter varias, ac multiplices sollicitudines quas pro communi utilitate universæ Christianæ Reipublicæ, nostræ curæ (divinâ Providentiâ) commissæ, dies noctesque suscipimus, id potissimum nobis cordi est, ut subditorum Sanctæ Romanæ Ecclesiæ commodis paterna charitate, & præcipua quadam ac singulari vigilantia consulamus, quod illos quasi nostros peculiaries eximique caros, & acceptos, ac præ cæteris dilectos filios, in nostram clientelam, ac fidem receptos, speciali quadam & propria paterni amoris prærogativa complecti, æquum censemus.

§. 1. Quare cum eos ab omni injuria, & violentia tutos & illæsos defendere, & custodire pro viribus studeamus sicuti ad id vel ab initio nostri Pontificatus opportuna remedia, quæcumque potuimus, non sine magno fructu, Deo annuente, comparavimus, ita etiam nunc eodem erga illos pietatis affectu permoti, duximus omni studio occurrendum dolis callidorum hominum, qui privatis suis lucris intenti, plerumque commune bonum, ac publicam nostrarum Civitatum, & oppidorum utilitatem, non mediocriter lædunt. Quoniam verò in tota ferè ditione, & Statu temporali hujus Sanctæ Sedis parvus inolevit abusus, ut plerumque ex levissimis, minime necessariis, neque utilibus, ac forsan etiam magnopere damnois causis, dilecti filii Communitates, sive Universitates, & homines eorumdem Civitatum, & Oppidorum, respectivè, ad instantiam, & suasu quorundam, qui privatam suæ rei familiaris ac domesticæ, etiam cum communi aliorum dispendio locum querere non erubescunt, universi, ac publico nomine se, suaque bona obligare, & hypothecare, aut pro aliis fidejuben-do, sed principaliter pro suo interesse consueverint & contractus celebrare, magno olim eisdem Universitatibus, & Communitatibus detrimento, & damno futuros, sive etiam expensas minime necessarias, interdum verò prorsus supervacaneas facere, sicuti jam in multis Communitatibus, & Universitatibus, ingenti ære alieno gravatis, ærarisque earum planè exhaustis, res ipsa & experientia docuit.

§. 2. Nos propterea indemnitate illorum, & huic malo, antequàm latius serpat, & graviora afferat damna & incommoda, quamprimum providere cupientes, de attributâ nobis Apostolicæ potestatis plenitudine, tenore præsentium præcipimus, & mandamus universis & singulis personis, quavis dignitate & auctoritate fulgentibus, pro quarum utilitate, commodo & interesse, directo vel indirecto, aliqua Universitas, seu Communitas cujuscumque Civitatis, Terræ, Oppidi, Castri, Villæ, aut alterius loci nostræ, & dictæ Romanæ Ecclesiæ ditioni mediâtè vel immediâtè in temporalibus subiecti vel subiectæ, universi insimul ex quacumque causa, & quocumque modo fidejussisse, vel aliâs etiam uti principales obligati hæcenus fuisse reperientur, ut ipsi, & eorum unusquisque debeant ac teneantur intra annum à die denunciationis, vel intimationis, in vim præsentium literarum eorum cuilibet faciendæ, etiam si ipsi ex eadem Civitate & loco, vel aliunde oriundi sint, atque inibi vel alibi domicilium habeant, bonaque stabilia, cujuscumque valoris etiam maximi possideant, eaque minime dissipent, ab huiusmodi fidejussione, & aliâ quacumque obligatione, reali & personali vel hypothecæ, generali aut speciali etiam à modico tempore citrà contractis, easdemque Communitatem, seu Universitatem, earumque res & bona

Edita An. D.
1586.

Exordium.

Causa hujus
constitutionis.Communi-
tates pro
quibuscum-
que personis
obligatæ, in-
tra annum à
die denun-
tiationis li-
berentur.

penitus exemisse & liberasse, curentque vel satisfactis penitis, & extinctis ipsis obligationibus & instrumentis desuper confectis, aut dato alio expromissore in locum ipsius Communitatis, vel Universitatis, aut aliis quoquomodo re ipsa efficere, ut ii in quorum favorem ipsæ Communitates aut Universitates se obligaverint, illarum liberationi sponte & expresse consentiant.

Est obligatio-
nes sint
ejus naturæ
ut ipsi Creditores
ad eas
extinguen-
das cogi ne-
queant, tunc
eisdem
Communi-
tatis idonei
referatores
dentur.

§. 3. Cujusmodi consensum, si nec ipsi in quorum favorem Communitates vel universitates prædictæ se suæque bona obligaverint, præstare illo modo voluerint, & ea fuerit contractus vel obligationis natura, ut neque etiam facta aliqua oblatione, aut solutione ad consentiendum, ipsi inviti cogi, seu alias obligationes ipsæ cassari & annullari possint, tunc dictæ personæ à quibus eadem Communitates & Universitates, occasione talium obligationum indemnes relevandæ sunt, alios fidejussores & expromissores arbitrio pro tempore existentis Gubernatoris, seu Legati, cui ipsa Universitas, vel Communitas mediata seu immediate suberit, de conservando eadem Communitates vel Universitates indemnes, præstare teneantur.

Communi-
tates & parti-
culares
personæ ad
præmissa
agere va-
leant, judi-
cesque unica
citatione
præcedente,
mandatum
executi-
vum, post
annum à die
denuntiati-
onis, exe-
quendum
relaxent.

§. 4. Liceatque ipsarum Communitatum seu Universitatum Magistratibus, Procuratoribus, Agentibus, seu etiam particularibus personis ad præmissa, contra quoscunque vigore præsentium literarum coram quocunque Judice agere & judicio experiri, ac ipsi Judici unica citatione præcedente, mandatum executivum in rem & personam contra eum, pro quo est facta fidejussio vel obligatio, statim elapso prædicto anno, exequendum relaxare, perinde ac si eadem personæ ad id expressè in specie atque efficaciter se obligassent, etiamsi hoc ipsum naturæ & substantiæ contractuum, quorum occasione obligationes hujusmodi initæ fuerint, omnino repugnet & adversetur, aut aliis ne quis ad extinguendum, & redimendum census super bonis suis stabilibus venditis, creatos & impositos, cogi aut compelli queat, Apostolicis constitutionibus expresse cautum fuerit.

Communi-
tates in fu-
turo abs-
que licentia
bona aliena-
re, vel præ-
terquam rati-
one locati-
onis, &
non ultra
decennium
obligare ne-
queant.

§. 5. Caterum hac nostra in perpetuum valitura Constitutione prohibemus, ne in posterum sine nostra, aut Romani Pontificis pro tempore existentis, vel Cameræ Apostolicæ licentia speciali, ulla Communitas, aut Universitas ex quacunque causa etiam iustissima, urgentissima, & omnino necessaria, & in evidentem utilitatem, aut necessitatem, bona sua immobilia, seu jura percipiendi quoscunque fructus, redditus, proventus, ac introitus annuos, distrahat, vendat, quovis modo alienet, hypothecet, aut super illis census annuos creet, imponat, seu vendat, vel illa aliis quam ratione locationis, nec ultra decennium alicui obligationi vel hypothecæ subiciat, aut supponat, neque etiam mutui, depositi vel aliis quocunque titulo, in rem, nec in personam, immediate vel per interpositam personam se obliget, aut quoquomodo ære alieno se obstringat.

Nec pro aliis
fidejubeant.

§. 6. Pro alio verò quocunque incola, seu originario, vel forensi, aut vicissim Universitas seu Communitas una pro altera, nequaquam quavis occasione, vel causa unquam fidejubeat, aut tamquam principalis alienæ obligationi quoquomodo accedat.

Obligatio-
nes, aliena-
tiones, &c.
contra hanc
const. de ca-
tero à Com-
munitatibus
quovis mo-
do, etiam in
earum utili-
tatem ten-

§. 7. Decerneptes nihilominus, omnes & singulas districtiones, alienationes, hypothecas, fidejussiones, accessiones, etiam cum clausula, principaliter insolidum, necnon uti principales, & tam personales quam reales, & alias quascunque obligationes, & promissiones, ac renuntiationes, & pacta de non petendo liberationem & exemptionem hujusmodi, in vim supradicti nostri mandati & præcepti, per dictas Universita-

tes, seu Communitates, earumque procuratores, aut Magistratus, etiam speciale ad id mandatum habentes, etiam in ampliori forma Cameræ Apostolicæ, cum juramento censurarum, ac mandati executivi, etiam susceptione, & quavis submissione, cautela, & promissione etiam jurata, ac de non utendo remedio præsentium nostrarum literarum ultrà & sponte, seu ad preces & instantiam, ad commodum vel utilitatem aliorum quocunque modo posthac faciendas, sub quibuscunque verborum formulis, & clausulis etiam efficacissimis & insolitis concipiendas, & instrumenta desuper conficienda, etiam gaurentiata, jurata, vel aliis sub dicta forma Cameræ Apostolicæ celebranda, nulla, irrita & invalida, nulliusque roboris vel momenti esse, aut fore, nullam fidem facere, neque ullam actionem aut exceptionem, vel officium Judicis, neque obligationem, civilem seu naturalem parere, vel ullum omnino effectum aut vires habere posse, sed neque ipsas Communitates & Universitates, etiamsi id omne quod gestum est in eorum utilitatem versum esse constiterit, ullo modo aut obligationis, vel iuramenti vinculo teneri. Et ita per quoscunque judicari & definiri debere, irritum quoque & inane quicquid secus super his à quocunque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

he, nullæ &
avalidæ
erunt.

§. 8. Ac ne easdem Communitates, seu Universitates sumptibus minimè necessariis nimium gravari contingat, districtius interdiciamus, ne qua Communitas, aut Universitas ex prædictis, Legatos five Oratores ad nos, & Sedem Apostolicam, ex quacunque etiam urgenti, & similiter necessaria, ac utili occasione vel causa sumptibus publicis mittat, neque quis hujusmodi munus obeat, vel suscipiat, nisi prius simili licentia à nobis, vel pro tempore existente Romano Pontifice vel dicta Camera ut præferat, obtenta, revocantes omnes qui ad præsens deputati reperiuntur.

Communi-
tates Orato-
res ad Pont.
sumptibus
publicis sine
licentia mit-
tere ne-
queant.

Ampliat
Clem. VIII.
ibid.

§. 9. Quòd si quis Magistratus dictarum Communitatum vel Universitatum fuerit negligens, quoad utendum remedio præsentium literarum, & petendum suas Communitates vel Universitates ab ipsa fidejussione vel obligatione eximi & liberari, aut aliis contra dictam prohibitionem eadem Communitates, & Universitates, illarumque bona obligare attentaverit, aut Legatos, vel Oratores mittere, seu aliquis munus hujusmodi suscipere sine dicta licentia præsumpserit, eos singulos, qui in culpa fuerint, penam nostro & Romani Pontificis, aut Gubernatorum vel Legatorum seu Præfidentium prædictorum arbitrio infligendam, eo ipso incurrere volumus.

Contrave-
nientes pu-
niantur, ut
hic.

§. 10. Literis felicis recordationis Pii Papæ IV. quoad Communitates aut Universitates, quæ pro suis Dominis temporalibus fidejusserint, aut se obligaverint (quibus nequaquam derogando hæc omnia supradicta addimus) & Statutis novissimis Urbis Romæ, per quæ certa forma obligationibus & contractibus per dilectos filios nostros Senatuum Populorumque Romanum celebrandis præscribitur, nihilominus in suo robore permanfuris.

Pii IV. const.
ita est
suprà in hoc
Tomo, to-
tum titulus est
in lib. 3. c. 31.

§. 11. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac quarumcumque Provincialium, Civitatum, Terrarum, Oppidorum, Castorum, Villarum, & locorum, juramento, constitutione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis, illis earumque Communitatibus, Universitatibus, Magistratibus, quocunque nomine nuncupatis, & aliis personis, Motu proprio & ex certa scientia, ac de similis potestatis plenitudine, aut consistorialiter, vel per modum statuti perpetui, vel inter illos ex una & nos

Clausula de-
rogatorie.

Fides tran-
scriptis ad-
hibetur.

Sedemque prædictam ex altera partibus, initi & stipulati contraſtus, vel alijs quomodolibet conceſſis, approbatis & innovatis, generalibus vel ſpecialibus, quorumcumque tenoribus exiſtentibus, quæ omnia, eorum tenores præſentibus pro expreſſis habentes, quatenus præmiſſis in aliquo ad- verſentur, omnino tollimus & annullamus, ac no- lumus cuiquam ullatenus ſuffragari; cæteriſque contrariis quibuſcumque.

Cum itaque
caveretur
ſtatutis &
privilegiis
hujus Ord-
inis, quol-
cumque
ſeu in a ſede
Apoſtolica
conſiſſos,
certa jura
communi
arario ſol-
vere, certa
que onera
ſubire de-
beret.

Hæc Conſti-
tutio in vul-
garem ſer-
monem ver-
ſa, in Con-
ſiliis publi-
cetur, &
inviolabili-
ter obſerve-
tur.

§. 12. Ut autem præſentes literæ ampliùs inno- teſcant, volumus, ut earum exemplis, etiam im- preſſis, Notarii publici manu ſubſcriptis, ac ſigillo perſonæ in dignitate Ecceſiaſtica conſtitutæ muni- tis, eadem proſus fides in iudicio & extrâ illud habeatur, quæ eiſdem præſentibus haberetur ſi eſſent exhibitæ vel offenſæ.

Dat. P. An. 2.
die 30. Sept.

§. 13. Mandamùſque univerſis & ſingulis Lega- tis, Vicelegatis, Gubernatoribus, eorùmq; Lo- catenentibus, ac etiam Ducibus, Marchionibus, aut alijs Baronibus & Domicelliſ, ac Dominis temporalibus, Nobis & eidem Sedi in temporalibus, mediâtè vel immediâtè ſubjectis, ut in Civi- tatibus, Terris, Caſtris, Villis, & locis eorum cui- que ſubjectis, & conſiliis vel congregationibus ge- neralibus earundem Communitatum & Univerſita- tum, præſentium literarum exempla in vulgarem ſermonem verſa, quamprimum publicari, ac deinceps inviolatè obſervari omnino curent.

Dat. P. An. 2.
die 30. Sept.

Datum Romæ; apud S. Marcum, pridie Calen- das Octobris Anno ſecundo.

Publicatio.

Anno à Nativitate Domini 1586. Indiſſione 14. die verò 16. menſis Octobris, Pontificatus Sanctiſſimi D. N. D. Sixti divini Providentiæ PP. V. anno ſe- cundo, reſcripta literæ Apoſtolice lætæ, & publica- tæ fuerunt, & per aliquod temporis ſpatium dimiſſa in valvis ſeu portis Baſilicarum S. Joannis Lateranenſis, & S. Petri Principis Apoſolorum de Urbe, per nos Joannem Freyle, & Octavium Taglietrum S. D. N. Papæ Curſ. necnon Cancellaria Apoſtolice, & in acie Campi Floræ, per eoſdem Curſores.

Alexander Parabiacus Mag. Curſ.

XLIII.

Quòd omnes etiam S. R. E. Cardinales, beneficia & penſiones Militiæ S. Joannis Hieroſolymitani, etiam ex Sedis Apoſtolice proviſione obtinen- tes, ad ſolutionem juriſm communis ararii om- ninò teneantur, Receptorſque propria aucto- ritate exigere valeant, ex indulto Pii V.

Multa quæ de hæc Militia in hoc opere habentur,
indicata ſunt ſuprà in Conſtitut. 2. Anaſtaſii IV.
Chriſtiani. fol. 39. Tom. 1.

Edita A. D.
1585.
&
1586.

SIXTUS PAPA V.

Ad perpetuam rei memoriam.

Pius Quintus cenſuit
privilegia
Militiæ ap-
probare &
extendere.

A Equum arbitramur, & congruum, ut ea quæ de Romani Pontificis gratia proceſſerunt, li- cèt ejus ſuperveniente obitu literæ deſuper con- ſectæ non fuerint, ſuum debitum conſequantur ef- fecum. Dudum ſiquidem ſæl. record. Pius Papa V. Prædeceſſor noſter ſolicita conſiderationis inda- gine perſcrutans, quantis periculis quantiſque bel- lorum turbinationibus tunc agitata fuerit Inſula Mele- vitanæ menteque recolens, quàm indeſeſſe & viriliter dilecti filii, Hoſpitalis S. Joannis Hieroſolymitani Milites, in illa à Chriſtianæ fidei hoſtibus defen- denda fe præſtiterant, dignum, quin potiùs debi- tum reputavit, ut ea quæ à Romanis Pontificibus illis, liberaliter conceſſa fuerant, non ſolùm confir- mationis ſuz munimine roborarentur, verùm

Et nonnulli
à Sede Apoſ-
tolice pro-
viſi cetera-
torem ex-
torquerent.

Pius prædi-
ctus conſide-
rans quòd
hac vi debi-
larentur vi-
res ipſius
Ordinis,

Quandam
ejus provi-
ſionem dic-
tis ſtatutis
& indulgen-
tiis non præ-
judicaffe
declaravit.

§. 1. Accepto igitur per eundem Prædeceſſo- rem, quòd licet alijs, ſtabilitatis, uſibus, & naturis Hoſpitalis S. Joannis Hieroſolymitani hu- juſmodi, ſeu privilegiis, indultis, & literis Apoſ- tolicis eidem Hoſpitali, & dilectis filiis illius Ma- giſtro & Conventui conceſſis, expreſſe cautum fue- rat, quòd etiam Apoſtolica auctoritate, etiam per reſignationem in manibus pro tempore exiſtentis Romani Pontificis factam proviſi ac proviſiones, Commendas, ſeu alias diſpoſitiones, etiam Apoſto- licas, de Præceptoris, ſeu alijs beneficiis dicti Hoſpitalis, ſibi pro tempore factas, proſequentes, certa jura vacantia, ſeu mortuaria, aut alias nun- cupata, forſan duplicata, communi Hoſpitalis præ- dicti Theſauro, ſeu alias perſolvere, ac quædam alia tunc expreſſa onera ſubire tenerentur. Quòd- que de redditibus & proventibus hujusmodi Præ- ceptoriarum, primo & ſecundo, ac forſan alijs an- nis proventibus diſponere, ſeu illos percipere minimè poſſent, ſed illo dicto Theſauro, ac alias in uſum & utilitatem Hoſpitalis, & illius Militum ſeu menſe applicari, & pro illius neceſſitatibus ſu- blevandis, ac tuitione fidei adverſus Turcas, Chriſ- tiani nominis Hoſtes, diſtribui deberent. Ac inſuper Prioratus, Bajulivatus, Caſtellaniam Empoſiæ, Præceptorias, & alia illius beneficia quæcumque pro tempore qualitercumque obtinentes, certas reſponſiones, ac ordinarias, & extraordinarias im- poſitiones eidem communi Theſauro annis ſingulis ſolvere tenerentur. Ipſique Prioratibus, Bajuli- vatus, Caſtellaniis, Præceptoris, & Beneficiis, per obitum ſeu reſignationem, etiam in manibus prædicti Romani Pontificis, aut alijs quomodolibet pro tempore vacantibus, illoꝝ fructus, reddit- us, & proventus, ſi per reſignationem, juxta ve- rò novam reformationem, ulque ad feſtum SS. Jacobi & Philippi, de menſe Maji, ex tunc imme- diatè ſequentis pro mortuario, & vacantibus ab eodem feſto, ulque ad aliud proximum ejusdem S. Joannis Baptiſtæ, ſeu ut præteritur, SS. Jacobi & Philippi de dicto menſe reſpectivè, eidem Theſau- ro cederent.

§. 2. Cum tamen ſapè contingeret, nonnullor- um petentium ambitionem ità ſe extendere, ut Sedis Apoſtolice liberalitate non contenti, etiam ea, quæ in magnum dictæ Religionis præjudicium tendere conſpicebant, à Sede prædicta extorquer- re, Romanumque Pontificem ob ejus innumeras occupationes, ad aliquas gratias ſibi concedendas impellere non erubeſcerent, quas ſi plene cogno- viſſet, eas proſectò illis non conceſſiſſet.

§. 3. Attendens itaque dictus Prædeceſſor, quanta & quàm gravia discrimina dicta Inſula paſſa fuerat, & quàm graves Magiſter & Conventus præ- dicti, tam in illa defendenda, quàm in Civitate no- va per eos conſtructa, munienda & reparanda, ſu- bierant expenſas & incommoda, quòd ſi ipſi, qui pro expenſis hujusmodi ſupportandis, certa jura, quæ ſuper quibuſcumque dicti Ordinis Prioratibus, Bajulivatus, Caſtellaniis, Præceptoris, & alijs beneficiis prædictis exigere conſueverant, ab illo- rum exactione deſiſſent, illorum vires non parùm debilitarentur, conſideranſque

§. 4. Quòd poſtquàm pie mem. Pius Papa Quar- tus etiam Prædeceſſor noſter, tunc ſuas, unam S. Jacobi in Placæ Nurſiæ Spoletanæ, & alteram San- ctiſſimæ Trinitatis Tuderinæ reſpectivè Diœceſis dicti Hoſpitalis Præceptorias, tunc certo modo va- cantes, tunc dilecto filio Simoni Brombillæ Clerico Bergomenſi, ſub certis modo & forma commen- daverat, & ſeu de illis per ſuas literas providerat,

dictisque Simon, sub eorumdem seu aliarum literarum prætextu, per quas stabilimentis, usibus, naturis, privilegiis & indultis prædictis per eundem Pium Quartum prædecessorem derogatum esse prætendebat, fructus eorumdem Præceptoriarum, & jura illarum ratione dicto communi Thesauro, ut præfertur, debita solvere & relaxare recusaverat & recusabat, eundem Pium Quartum prædecessorem, Motu proprio, non ad Magni Magistri, aut Conventus, seu Hospitalis Fratrum prædictorum sibi pro eis desuper oblata petitionis instantiam, sed ex suis certa scientia, & Apostolica potestatis plenitudine, per suas in simili forma Brevis desuper confectas literas, declarasse, per derogationem hujusmodi aliquod, vel minimum Thesauro hujusmodi præjudicium afferri noluisset, & alia fecisset, prout in ipsius Pii Quarti Prædecessoris literis plenius continetur.

Et quocumque etiam S. R. E. Cardinales beneficia, & pensiones obtinentes dicti Ordinis, quamvis à Sede Apostolica provisos, ad dictam solutionem teneri definit.

§. 5. Idem Pius Quintus Prædecessor, tam Pii Quarti Prædecessoris hujusmodi vestigiis inherens, quam præmissis de causis motis, omnia & singula in ejusdem Pii IV. Prædecessoris literis contenta approbans & confirmans, illique perpetuæ & invariabilis firmitatis robur adiciens, omnèsque & singulos, tam juris quam facti defectus, siqui forsan intervenissent, in eisdem supplens, necnon quorumcumque litium, inter Venerabiles Fratres nostros, tunc suos, Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, & Religionem prædictam, pendendum, status & merita, & in qua pendebant instantia, pro expressis haberi volens, Motu & scientia similibus, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, sub dato videlicet duodecimo Calendæ Aprilis, Pontificatus sui anno secundo, decrevit, & declaravit, omnes & singulos Prioratus, Bajulivatus, Castellanas, Præceptorias, & alia Beneficia hujusmodi, seu illorum membra, & ab illis dependentia obtinentes, & ab illis regressus, accessus, Coadjutorias, & alias gratias, tam à Sede Apostolica quam quavis auctoritate concessas habentes, necnon illorum fructus & proventus, aut alia jura loco pensionis annuæ, seu pensiones ipsas, super eorumdem fructibus, redditibus & proventibus, quavis de causa impositas & imponendas percipientes, pro rata fructuum & pensionum eorumdem, de omnibus & singulis Annatis, Vacationibus, Mortuariis, & aliis quibuscumque juribus per eos dicto communi Thesauro quomodolibet debitis satisfacere, nec quascumque literas statutorum, stabilimentorum, usum, ac privilegiorum, indultorum, etiam quod Præceptoriarum fructus, redditus & proventus, & aliorum dicti Hospitalis Beneficiorum, pro primo & secundo annis, vel aliis, communi Thesauro dicti Hospitalis, pro mortuariis, seu aliis causis applicari essent, & esse conferentur, seu applicari deberent.

Ordinemque ipsum auctoritate propria percipere, & de illis disponere possit, de decrevit.

§. 6. Dictique Hospitalis Præceptores seu Receptores, aut alii pro eis Agentes, illos propria auctoritate exigere & percipere, ac interim possessionem Præceptoriarum, & Beneficiorum prædictorum, nomine dicti Hospitalis apprehendere & retinere, ac hujusmodi fructus de facto exigere, & alias de illis, certis modo & forma tunc expressis disponere possent, disponendi, vel aliis illorum totali infertione, vel cum decreto quod pensiones ipse à quocumque onere mortuario & passagio, vel aliis quomodolibet nuncupato, quavis etiam Apostolica, seu Magni Magistri dicti Hospitalis pro tempore existentis auctoritate exempti essent, vel titulares beneficiorum, ratam partem pensionis hujusmodi sibi retinere valerent, pro solutione pensionis hujusmodi minimè tenerentur, ac alias hujusmodi titulares renunciasent, onusque illam solvendi in se suscepissent, in quibuscumque gratis, Commendis, provisionibus, regressibus, accessibus, ingressibus, Coadjutoris,

cæterisque dispositionibus de Prioratibus, Bajulivatus, Castellanis, Præceptoris, & aliis Beneficiis hujusmodi quovis modo, etiam apud eandem Sedem vacantibus, necnon fructuum & pensionum hujusmodi reservationibus, per eum, etiam Motu simili, & quorumvis etiam Imperatoris, vel Regum intuitu, ac etiam quibuscvis eatenus factis & in posterum faciendis, quibuscvis personis cujuscumque dignitatis, status, gradus, ordinis, conditionis, nobilitatis & præminentiæ existentibus, etiam forsan Cardinalatus honore & officio fungentibus, per eum quomodolibet eatenus concessis, & in posterum concedendis derogatorias, ac desuper confectas, & pro tempore conficiendas literas Apostolicas, etiam quascumque generales vel speciales, etiam derogatorias derogatorias, & effectorias & insolitas clausulas, necnon irritantia decreta, sub quacumque verborum expressione in se continentia, personas, quibus Prioratus, Bajulivatus, Castellania, Præceptorie, seu ab illis dependentia beneficia prædicta, aut illorum membra collata, seu ad vitam commendata fuerant, seu fructus, redditus & proventus, aut pensiones annuæ reservata & assignata fuerant, aut in quorum favorem de illis dispositum extiterat, vel illa commendarentur, seu conferrentur, aut fructus vel pensiones reservarentur & assignarentur, vel alias disponeretur, à solutione & præstatione fructuum, censuum, passagiorum, annatarum, vacationum, & mortuorum, aut aliorum quorumcumque jurium, seu responsonum, aut ordinariorum vel extraordinariorum impositionum, vigore dictorum stabilimentorum & privilegiorum debitorum, in toto vel in parte, eximere, vel liberare, aut alias communi Thesauro Hospitalis hujusmodi, seu illius juribus in aliquo præjudicasse, nec per illas præjudicatum, seu præjudicium aliquod generatum fuisse vel esse, vel in posterum fore, sed derogatorias ipsas, ad effectum validitatis collationum, Commendarum, & aliarum dispositionum hujusmodi duntaxat, processisse & suffragari debuisse, illasque, in quantum communi Thesauro, & illius juribus in aliquo præjudicassent aut præjudicarent, à se & Sede Apostolica, per occupationem & circumventionem, præter & contra voluntatem suam extortas, ac nullius roboris vel momenti fuisse & esse, & in posterum fore, illisque non obstantibus, omnes & singulas hujusmodi derogationes, tunc & pro tempore habentes & prosequentes, etiam si à jurisdictione Magni Magistri & Conventus prædictorum, & aliorum quorumcumque Judicium Apostolica auctoritate prædicta exempti, ac ei & Apostolicæ Sedi immediate subiecti essent, ad exhibitionem & relaxationem fructuum, ac pensionum hujusmodi, ut præfertur, eidem communi Thesauro faciendam teneri, & adstrictos fore, in omnibus & per omnia, perinde ac si provisiones Commendarum, & regressus, accessus, Coadjutorie, & alia dispositiones, nec non fructuum & pensionum reservationes non à Sede Apostolica, sed à Magistro & Conventu prædictis emanassent, & ad id etiam per censuras & penas Ecclesiasticas, aliisque opportuna juris & facti remedia, cogi & compelli posse.

§. 7. Literaque tunc desuper conscribendas, & in eis contenta quacumque, nullo umquam tempore, de subreptionis vel obreptionis vicio, aut intentionis suæ defectu, notari vel impugnari, minuisse sub quibuscvis revocationibus, suspensionibus & limitationibus similibus vel dissimilibus gratiarum comprehendi ullatenus posse, sed quoties illæ emanarent, toties in pristinum & validissimum, ac eum, in quo antequàm illa emanarent, statum restitutas, & plenariè reintegratas, ac de novo etiam sub quacumque data per Magistrum & Conventum benè visa, toties quoties opus esset, concessas esse censerentur.

Clausulas dictæ constitutionis præservativas appoint.

Sicque in præmissis omnibus & singulis per quoscunque Judices & Commissarios, etiam Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, ac causarum sacri Palatii Apostolici Auditores, sublata eis & eorum cuilibet aliter judicandi, definiendi, & interpretandi facultate, judicari, definiri, & interpretari debere, & quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, attentari contingeret, irritum & inane decrevit. Et nihilominus pro potiori cautela, supradictas & alias derogatorias clausulas in quibuscumque literis appositas, in quantum, communi Thesaurò hujusmodi, quoad præmissa præjudicare videbantur, revocavit, cassavit, irritavit, & annullavit, ac toties quoties concessa essent, quoad jura vacantia, & mortuaria, ratione gratiarum, per eum & quoscumque Romanos Pontifices Prædecessores nostros, tunc suos, concessa, quoad ea quæ suum tempus nondum effluerant tantum, toties pro nullis & infectis haberi, nullamque prorsus in judicio vel extrâ, fidem facere, vel effectum sortiri debere, & constitutionem suam de non tollendo jure quæsitò adversus tunc conscribendas literas prædictas, locum sibi vendicare non posse, ac illis minime suffragari voluit.

§. 8. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac ipsorum Prioratum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis, & decretis in contrarium forsan quomodolibet concessis. Quibus omnibus, etiam si de illis specialis, specifica, & expressa mentio habenda foret, illis aliis in suo robore permanens, ea vice dumtaxat, specialiter & expresse derogamus, cæterisque contrariis quibuscumque.

§. 9. Ne autem de decretis declaratione, revocatione, cassatione, irritatione, annulatione, voluntate, & derogatione dicti Pii Prædecessoris, pro eo quod super illis, ipsius prædecessoris ejus superveniente obitu, literæ consecræ non fuerint, valeat quomodolibet hæsitari, ac Magnus Magister, Conventus, & Fratres, seu Milites Hospitalis prædicti illarum fructuum effectum, volumus, & Apostolica auctoritate decernimus, quod decretum, declaratio, revocatio, cassatio, irritatio, annulatio, voluntas, & derogatio dicti Pii Quinti Prædecessoris, à dicta die duodecima Calendas Aprilis suum sortiantur effectum, perinde ac si super illis, ipsius Prædecessoris literæ sub ejusdem diei data, consecræ fuissent, prout superius enarratur. Quodque præsentis literæ ad probandum plenè decretum, declarationem, revocationem, cassationem, irritationem, annulationem, & derogationem dicti Pii Quinti Prædecessoris ubique sufficiant, nec ad id probationis alterius adminiculum requiratur.

§. 10. Quocirca Venerabilibus Fratribus Archiepiscopo Toletano, & Episcopo Parisiensi, sive eorum Officialibus, ac dilecto filio Curie causarum Cameræ Apostolicæ generali Auditori per præsentem committimus, & mandamus, quatenus ipsi, vel duo aut unus eorum, per se vel alium seu alios, præsentis literas & in eis contenta quæcumque valere decernerent, ac pro tempore existentis Magno Magistro, Conventui, & Fratribus prædictis in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra, præmissa omnia, ab omnibus quos illa concernunt, integrè & inviolabiliter observari, illisque eis pacificè & quietè uti, frui, & gaudere. Non permitteas eos aut eorum aliquem, contrâ earumdem præsentium tenorem quomodolibet indebitè molestari. Contradictores quoslibet & re-

belles, per sententias, censuras, & penas Ecclesiasticas, aliæque opportuna juris remedia, appellatione postposita, compescendo, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis. Non obstantibus omnibus supradictis.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 1. Maji, millesimo quingentesimo octuagesimo quinto, Pontificatus Nostri Anno primo.

Sequitur alia constitutio, quæ præcedentem ampliat.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Universis & singulis nostris & Apostolica Sedis in quibusvis nobis & Romana Ecclesiæ immediate subiectis Provinciis, Civitatibus, Terris, & locis, etiam de latere Legatis, ac singularum Provinciarum, Civitatum, Terrarum, & locorum hujusmodi Gubernatoribus, aliisque in eis jus dicentibus, & iustitiæ Ministris, necnon quorumcumque Regum, Ducum, Marchionum, & aliorum Christianorum Principum, Magistratibus & Officialibus, ac eorum cuilibet, Salutem & Apostolicam benedictionem.

§. 1. Cum sicut accepimus sæpius contingat, ut Receptores Hospitalis S. Joannis Hierosolymitani, in singulis illius Prioratibus pro tempore deputati, Prioratus, Bajulivatus, & Præceptorias dicti Hospitalis, ac alia Beneficia per Fratres ejusdem Hospitalis obtineri solita, tam per ipsos Fratres, quàm ex concessione seu dispensatione Apostolica per Clericos Seculares, in titulum aut Commendam, aut aliàs pro tempore obtenta, ob non solutionem passagiorum, spoliolum, responsonum, vacationum, & mortuorum, ac aliorum jurium per eos communi Thesaurò prædicti Hospitalis pro tempore debitorum, ad manus suas, juxta formam stabilimentorum & laudabilium consuetudinum dicti Hospitalis, ac privilegiorum & indultorum Apostolicorum eis desuper concessorum recipere, & usque ad integram passagiorum, spoliolum, responsonum, vacationum & mortuorum, ac aliorum jurium prædictorum satisfactionem, pro dicto Hospitali, seu communi Thesaurò, retinere, ac ad hujusmodi effectum, possessionem Prioratum, Bajulivatum, Præceptoriarum, & aliorum Beneficiorum præfatorum capere & apprehendere, eorumque fructus, redditus, proventus percipere, colligere & levare, seu Prioratus, Bajulivatus, Præceptorias & beneficia hujusmodi, eorumque fructus, redditus & proventus, aliis locare & arrendare habeant.

§. 2. Nos cupientes, quod Præceptores prædicti, officium suum contrâ Fratres, & alios non solventes prædictos, libere exercere, & satulatis eis per Sedem Apostolicam contrâ eosdem non solventes concessis, sine aliqua difficultate uti possint, Vos & vestrum quemlibet per præsentem requirimus, vobis videlicet, nobis, & Sanctæ Romanæ Ecclesiæ subditis, in virtute sanctæ obedientiæ, & sub indignationis nostræ pena districtè percipientes & mandantes, Vos verò, qui nobis subiecti non estis, in Domino hortantes, quatenus vos & vestrum singuli, quoties pro parte Præceptorum præfatorum, seu alicujus eorum, aut Procuratorum suorum, vel pro eis Agentium desuper requisiti fueritis, per vos vel alium seu alios, brachium vestrum faculare eisdem Receptoribus seu Procuratoribus vel Agentibus, ad hoc ut Prioratus, Bajulivatus, Præceptorias &

Dat. P. A. 1.
die 1. Maji.

Edita An. D.
1586.

Receptores
hujus Mili-
tæ pro con-
secratione
jurium com-
munis Ara-
rii, posses-
sionem bene-
ficiorum,
&c. capere
solent.

Hic idem
Pontifex man-
dat ut Offi-
ciales om-
nes & Prin-
cipes eis
favere &
assistent.

beneficia prædicta, juxta stabilitatem & consuetudines, ac privilegia & indulta hujusmodi, quoties illis locus fuerit, ad manus suas recipere, & utque ad integram passagiorum, ipsorum, responsionum, vacantium, & mortuorum, ac aliorum jurium prædictorum satisfactionem, pro Hospitali seu Thesaurio prædicto retinere, ac ad hujusmodi effectum, possessionem Prioratum, Bajulivatum, Præceptoriarum, & aliorum Beneficiorum hujusmodi capere & apprehendere, eorumque fructus, redditus, & proventus percipere, colligere & levare, vel Prioratus, Bajulivatus, Præceptorias, Beneficia, ac eorum fructus, redditus, & proventus hujusmodi plus offerentibus, locare & arrendare, necnon census seu affixus annuos locationum & arrendationum hujusmodi exigere pro rata debiti, possint statim & incontinenti, omni dilatione seu exemptione remota, præstetis & exhibeat, præstarique & exhiberi faciatis.

Contrariis derogat.

§. 3. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac quibuscumque provisionibus seu commendis, aut aliis dispositionibus per nos & Sedem Apostolicam & eisdem Prioratibus, Bajulivatus, Præceptorias, & Beneficiis, quibuscumque personis & dicti Hospitalis, cujuscumque dignitatis, status, gradus, ordinis vel conditionis existentibus pro tempore factis, necnon omnibus illis, quæ privilegiis & indultis prædictis concessum fuit non obstat, quæ præsentibus pro specialiter & expresse repetitis haberi volumus, cæterisque contrariis quibuscumque.

Transumptis credi jubet.

§. 4. Volumus autem, quod præsentium transumptis, etiam impressis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in legitime Ecclesiastica constituta munitis, ea prorsus fides in iudicio & extra adhibeatur, quæ præsentibus adhiberetur, si forent exhibite vel ostensæ.

D. P. An. 2. 3. Octobris.

Datum Romæ apud S. Marcum, sub Annulo Piscatoris, die 3. Octobris 1586. Pontificatus nostri Anno secundo.

XLIV.

Erectio Officii Commissariatus Reverend. Cameræ Apostolicæ in officium perpetuum vacabile, cum jurisdictionis, emolumentorumque & indultorum concessione.

Hodie hoc Officium non est perpetuum, sed ad nutum Pontificis Commissarius deputatur. Et de ejus munere, & auctoritate, vide supra in Pii IV. Constitut. 55. Romanus. fol. 79. Et Pii V. Constitut. 70. Cùm de literis. fol. 284. Et in alia Constitut. 51. Attendentes. fol. 263. Et infra in hujus Pontif. Constitut. 56. Non sine.

Et in specie quod in causis cambiorum illicitorum in Urbe contrahendorum, ad ejus instantiam procedatur, vid. supra in Pii IV. Const. 1. Cùm sicut. fol. 1. in hoc Tomo 2.

Edita A. D. 1586.

SIXTUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Proœmium.

AD excelsum universalis Ecclesiæ culmen, nullis nostris meritis, sed sola Dei benignitate sublevati, in eam curam cogitationisque ex pastoralis Officii nostri debito propensius incumbere nos convenit, ut Camera Apostolica à rerum suarum jacturisarta testaque præservetur, & quæ pro faciliiori illius jurium tuitione, negotiorumque prosecutione, ac officiorum ad id institutorum decore & stabilimento sunt maxime profutura, nostris auspiciis ordinentur, ipsaque officia egregiorum virorum prudentie & industrie commissa personis votivis jugiter proficiant incrementis.

§. 1. Cùm itaque pro tempore existenti dictæ Cameræ Commissario generali graviorum ipsius Cameræ negotiorum cura incumbat, & ex frequenti illius mutatione eadem Camera, in rebus & juribus ad eam spectantibus, plurimum damni & incommodi patiatur, expediensque sit, ut pro negotiorum, rerum, & jurium, eorumdem votiva directione, prosecutione, & defensione officium Commissariatus hujusmodi, quod dilectus filius Joannes Bernardinus Pifeina, ad id à nobis ad beneplacitum nostrum deputatus, ab initio nostri Pontificatus usque huc obtinuit, seu exercuit, aliquo certo & firmo statu constituatur, illudque pro tempore obriens non amovibilis, ut hactenus, sed donec officium ipsum per ejus cessum vel decessum, aut aliis vacet, perpetuus existat, ac speciali honoris & dignitatis prerogativa fruatur. Nos qui nuper dictum Joannem Bernardinum in Civitatibus nostræ Nurfæ, pro nobis & Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Gubernatorem in temporalibus constituimus, præmissorum consideratione, & certis aliis causis induci, ejusdem Cameræ indemnitati & utilitati, ac Officii Commissariatus hujusmodi stabilitati & incremento, pro sollicitudinis nostre partes requirunt, consilium, & quæ ad illud pertinent quibuscumque facultatibus & gratiarum numeris potiri debeat, plenius explicare volentes, necnon beneplacitum nostrum præfatum harum serie revocantes, illudque cessare & expirare decernentes.

§. 2. Motu proprio, non ad alicujus nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed ex certa scientia nostra, ac de Apostolica potestate plenitudine, Officium Commissariatus hujusmodi in officium perpetuum, ad instar Clericatum dictæ Cameræ, & aliorum Officiorum Romanæ Curie vacabile, pro uno Clerico vitæ ac morum probitate prædico, & utriusque, vel alterius juris Doctoris, non conjugato futuro, ejusdem Cameræ Commissario generali, Apostolica auctoritate tenore præsentium perpetuo erigimus & instituiamus.

§. 3. Ac ipsi Commissario generali pro tempore existenti, omnes ad ejus officium hujusmodi pertinentes, & illi per quoscumque Romanos Pontifices Prædecessores nostros, ac nos, dictamque Sedem, cæteris omnibus & singulis aliis Commissariis concessas facultates, jurisdictiones & prerogativas.

§. 4. Ac etiam eas facultates, præcipuamque curam & administrationem Archivi scripturarum dictæ Cameræ, ita ut sine expressa ejusdem Commissarii licentia aliquæ scripturæ ad Cameram præfatum spectantes ex ipso Archivio extrahi, ac eorum exempla intra eandem Cameram, aliisque illius Cameralibus dari & consignari non possint, ipsiusque Archivi Archivista, & Ministri, nunc & pro tempore existentes, illi de dicto Archivio, ac omnibus ejus scripturis rationem reddere, & ejus ordinationes ac mandata, necnon statuta & decreta, quæ per eum pro bono gubernio & regimine dicti Archivi pro tempore fieri contigerit, observare omnino teneantur.

§. 5. Necnon plenam & liberam facultatem, omnes & singulas alias scripturas ad Cameram præfatum spectantes, & extrà Archivium hujusmodi, in quocumque loco, vel penes quoscumque existentes, recuperandi, ac contra quoscumque eisdem scripturas indebitè detinentes, ac scientes & non revelantes, eos à quibus detinentur pro illarum recuperatione, tam in Urbe quam in omnibus Terris & locis Sedi Apostolicæ mediâtè vel immediatè subiectis. Civitate nostra Bononiensi etiam comprehensis, summarie, manu regia & via executiva, telaque judicaria omnia, etiam per censuras & penas Ecclesiasticas, ac etiam juxta constitutiones sæcl. record. Julii Secundi & Julii Terti, ac quorumcumque aliorum Romanorum Pontificum Prædecessorum nostrorum contra dictas scripturas indebitè detinentes

& occul-

Commissarius officium, quod Bernardinus Pifeina ad beneplacitum nostrum deputatus, ab initio nostri Pontificatus usque huc obtinuit, seu exercuit, aliquo certo & firmo statu constituatur, illudque pro tempore obriens non amovibilis, ut hactenus, sed donec officium ipsum per ejus cessum vel decessum, aut aliis vacet, perpetuus existat, ac speciali honoris & dignitatis prerogativa fruatur. Nos qui nuper dictum Joannem Bernardinum in Civitatibus nostræ Nurfæ, pro nobis & Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Gubernatorem in temporalibus constituimus, præmissorum consideratione, & certis aliis causis induci, ejusdem Cameræ indemnitati & utilitati, ac Officii Commissariatus hujusmodi stabilitati & incremento, pro sollicitudinis nostre partes requirunt, consilium, & quæ ad illud pertinent quibuscumque facultatibus & gratiarum numeris potiri debeat, plenius explicare volentes, necnon beneplacitum nostrum præfatum harum serie revocantes, illudque cessare & expirare decernentes.

Illud itaque idem Pontificatum in Officium perpetuum & vacabile ad instar aliorum Romanæ Curie Officiorum erigit.

Facultates solitas ei concedit.

Archivii scripturas ad Cameram præfatum spectantes ex ipso Archivio extrahi, ac eorum exempla intra eandem Cameram, aliisque illius Cameralibus dari & consignari non possint, ipsiusque Archivi Archivista, & Ministri, nunc & pro tempore existentes, illi de dicto Archivio, ac omnibus ejus scripturis rationem reddere, & ejus ordinationes ac mandata, necnon statuta & decreta, quæ per eum pro bono gubernio & regimine dicti Archivi pro tempore fieri contigerit, observare omnino teneantur.

Detinentes scripturas ad Cameram præfatum spectantes, & extrà Archivium hujusmodi, in quocumque loco, vel penes quoscumque existentes, recuperandi, ac contra quoscumque eisdem scripturas indebitè detinentes, ac scientes & non revelantes, eos à quibus detinentur pro illarum recuperatione, tam in Urbe quam in omnibus Terris & locis Sedi Apostolicæ mediâtè vel immediatè subiectis.

Hanc Bullam Pii V. Constitut. citavi in rub.

& occultantes, aut scientes & non revelantes, non tamen privative quoad alios, quibus per dictas constitutiones fuerit huiusmodi facultas tributa procedendi. Præterea super præmissis illas facultates, quas pia mem. Pius Papa V. etiam Prædecessor noster olim pro recuperatione scripturarum, Camera & Sedis præfatarum bon. mem. Carolo de Grassis Episcopo Montis Flascensis, & quas Honophrio Camarano dictæ Camere Præsidenti, dum in humanis agerent, per cedulam Motus proprii sub Datum videlicet 14. Calendas Septembris Pontificatus sui anno tercio, concesserat.

§. 6. Ac etiam facultatem contra Prælatos & Clericos, possessionem Ecclesiarum, Monasteriorum, & aliorum Beneficiorum quorumcumque, cum cura & sine cura, Secularium, & quorumvis Ordinum Regularium, absque literarum Apostolicarum super provisionibus, Commendis, concessionibus, & aliis dispositionibus, sibi de illis dicta Apostolica auctoritate factis, expeditione, præterquam vigore Brevis de eorumdem possessione, nomine dictæ Camere capiendi, apprehendentes, & in illis de quomodolibet immittentes, similiter summarie, etiam via executiva, ac per censuras & penas Ecclesiasticas, in Julii Secundi & Julii Terti Prædecessorum, & aliorum Romanorum Pontificum similiter Prædecessorum nostrorum Constitutionibus desuper editis contentas, & alias, juxta huiusmodi Constitutionum tenorem, sine tamen præiudicio facultatum ejusdem Camere generali Thesaurario, super fructibus male perceptis concessarum, & competentium, etiam procedendi, auctoritate & tenore præfatis concedimus.

§. 7. Necnon eidem Commissariatus Officio, ut præfertur erecto, pro ejus dote, & illud pro tempore obtinentis subventionatione, portionem panis, vini, esculentorum, & aliarum rerum per ipsius Camere Commissarium generalem pro tempore existentem, dietim ex Palatio Apostolico, percipi, & ei præstari solitam, cum ea integritate, qua ipse illam percipiebat, & percipere poterat, necnon omnia & singula jura, regalia, salaria, redditus, proventus, exemptiones, immunitates, & emolumenta quæcumque, ordinaria & extraordinaria quomodolibet nuncupata, quæ dictus Commissarius pro tempore existens, quocumque titulo vel causa, ac undecumque & quomodocumque habere, consequi, lucrari, frui, potiri, & percipere consuevit, seu etiam potuit & debuit, cujuscumque qualitatis, quantitat, & annui valoris sint vel fuerint, eisdem auctoritate & tenore, etiam perpetuo applicamus & appropriamus.

§. 8. Ipsiusque Commissarium pro tempore existentem in nostrum & Roman. Pontif. pro tempore existentis, verum, indubitatum, & non fictum familiarem, & continuum Commensalem domesticum, ac utriusque Signaturæ nostræ Referendarium, auctoritate & tenore similibus creamus & constituimus, ac deputamus, aliorumque nostrorum & pro tempore existentis Roman. Pontif. familiarium, continuorum commensalium, ac Prælatorum domesticorum & utriusque Signaturæ præfate Referendariorum numero & consorcio favorabiliter aggregamus, ac pro vero, indubitato, & non ficto, nostro & pro tempore existentis Roman. Pontif. familiari, continuo Commensali & Præfato domestico, ac utriusque Signaturæ huiusmodi Referendario, haberi, & reputari volumus & mandamus, sibi in quibuscumque impetrationibus, concessionibus, & literis, tam gratiam quam iusticiam concernent, fe nostrum & pro tempore existentis Roman. Pontif. familiarem, continuum Commensalem & Prælatum domesticum, ac utriusque Signaturæ huiusmodi Referendarium, nominare & inscribere, ac ab aliis nominari & inscribi facere, habitumque & insignia Referendario-

rum utriusque Signaturæ huiusmodi gestare & deferre, ac in utraque Signatura continuo intervenire & assistere, necnon omnibus & quibuscumque, præfatis ac prorsus similibus privilegiis, præmiis, indultis, immunitatibus, libertatibus, exemptionibus, honoribus, antelationibus, prærogativis, favoribus, concessionibus, & gratiis, tam spiritualibus quam temporalibus, quibus ceteri familiares, continui Commensales, ac Prælati & Referendarii præfati, necnon dictæ Camere Clerici Præsidentes, & alii Camerales, de jure, statuto, consuetudine, vel aliquo speciali privilegio, seu aliis quomodolibet utuntur, potiuntur, & gaudent, ac uti, potiri, & gaudere possunt & poterunt quomodolibet in futurum, tam in iudicio quam extra ubicumque locorum, absque ulla prorsus differentia, non ad illorum instar, sed pariformiter & æquè principaliter, in omnibus & per omnia, ac si illa Officio Commissariatus huiusmodi, illudque pro tempore obtinenti, specialiter & expresse per præfentes concessa fuissent, uti, potiri, & gaudere.

§. 9. Necnon ut quicumque loci Ordinarius, seu utriusque, vel alterius Signaturæ huiusmodi Referendarius, aut Metropolitani, vel alterius Cathedralis Ecclesiæ Canonicus, seu persona in dignitate Ecclesiastica constituta ad id per ipsum Commissarium pro tempore existentem, eligendus seu eligenda, quascumque pensiones annuas, super quarumvis mensurarum Episcopatum, necnon Monasteriorum, Prioratum, Dignitatum, aliorumque Beneficiorum Ecclesiasticorum, cum cura & sine cura, Secularium & quorumvis Ordinum Regularium fructibus, redditibus, proventibus, juribus, obventionibus, emolumentis, ac etiam distributionibus quotidianis, seu illarum loco fructus, redditus, proventus, jura, obventiones, emolumenta, & distributiones huiusmodi, eidem Commissario pro tempore existenti, Apostolica auctoritate reservatas & reservata, usque ad summam quingentorum ducatorum auri de Camera, in dicta Curia vel extra eam, etiam in mortis articulo de ipsius Commissarii pro tempore existentis expresso consensu, cassare & extinguere, ac postquam cassata, seu cassata fuerint, alias similes pensiones annuas super eisdem fructibus, redditibus, proventibus, juribus, obventionibus, emolumentis, & distributionibus, seu fructus, redditus, proventus, jura, obventiones & emolumenta huiusmodi, usque ad summam præfatarum, uni vel pluribus personis ad id per eum nominandis, & quæcumque, quocumque, & qualiacumque Beneficia Ecclesiastica obtinentibus, eisdem modo & forma, ac cum clausulis, decretis, & ordinationibus, quibus ipsi Commissario pro tempore existenti reservata, seu reservata fuerint, etiam absque consensu solvere habentium pensiones, seu obtinentium Ecclesias, Monasteria, Prioratus, Dignitates, & alia Beneficia huiusmodi, dicta auctoritate reservare, constituere, concedere & assignare, ac etiam transferre liberè & licite valeat, reservationisque & translationes pensionum, seu fructuum, reddituum, proventuum, jurium, obventionum, & emolumentorum huiusmodi, vigore præsentium faciendi valeant, plenamque roborem firmitatem obtineant in omnibus & per omnia, perinde ac si per Nos, seu pro tempore existentem Roman. Pontif. de consensu solvere habentium pensiones, seu obtinentium Ecclesias, Monasteria, Prioratus, Præposituras, Dignitates, & alia Beneficia huiusmodi factæ fuissent, auctoritate & tenore præfatis, concedimus & indulgemus.

§. 10. Insuper statuimus & ordinamus, quod Officium Commissariatus huiusmodi pro tempore obtinens, in Camera præfata, aliisque actibus Cameralibus, & carcerum visitationibus, habitum per Clericos, Præsidentem, & alios Prælatos Camerales deferri solitum gestare, & in Camera

Indultum
circa pensiones
tribuit.

Habitum &
locum in
Camera, &
actibus ca-
meralibus
visitationibus
carcerum, &
præfata

Capellæ, & Consistoriis, & aliis actibus publicis assignat. Hodie non intervenit Visitacionibus carcerum.

Resignandi facultatem concedit.

Expeditiones pro Commissario gratias fieri jubet.

Joffredo Lomellini

præfata immediatè post ipsam Præsidentem, a. in carcerum visitacionibus, post Clericam carcerum Præsidentem, in Capella autem Pontificia, & Consistoriis publicis, necnon processio- nibus, equitationibus, aliisque actibus, tam publicis, quàm privatis, in loco Palatii Apostolici Auditoribus, ac dictæ Cameræ Clericis assignato, immediatè post illos sedere & incedere debeat.

§. 11. Diciturque Officium Commissariatus in favorem cujuscumque personæ, ut præfertur, qualificatæ, quodcumque sibi placuerit resignare, ac resignationis hujusmodi recepto, vel admisso per Romanum Pontificem ex quavis causa denegari, vel differri, neque pro signatura concessione ejusdem, per hujusmodi resignationem vacantis, quicquam ultra summam centum florenorum auri de Camera ab eo, cui de illo, sic vacante, providebitur, sic exigi possit; quodque literæ Apostolicæ super supplicatione concessione dicti officii Commissariatus conficiendæ, etiam si in ea de Officio Referendariatus hujusmodi nulla esset facta mentio, nihilominus expediantur, tam in Cancellaria præfata, quàm per Cameram secretam, cum expressione concessione dicti officii Referendariatus; neque possit, aut debeat, per nostrum, & pro tempore existentis Romani Pontificis Datarium, seu quicumque alium pro signatura hujusmodi supplicationis, licet vim concessione duorum officiorum, Commissariatus videlicet, & Referendariatus hujusmodi habeat, aliquid ultra id, quod superius est expressum, omnino exigi, sed sicut per concessionem Commissariatus venit pariter concessio Referendariatus officiorum hujusmodi, sic per unicam solutionem signaturæ suprascriptam sit integrè satisfactum, quasi de unica concessione.

§. 12. Uterius, quod omnes & singulæ literæ Apostolicæ sub plumbo, ac etiam in forma Brevis, tam super præsentibus, quàm aliis quibuscumque gratis, indultis, facultatibus, & concessionebus, tam gratiam, quàm iustitiam concernentibus, per præfatum Commissarium pro tempore existentem, à nobis & Successoribus nostris, ac Sede præfata pro tempore impetratis, seu etiam Motu simili concessis, omnibus & singulis Cancellariæ, Cameræ, & Curæ præfatarum Officiis, necnon plumbis & registro, ac ubilibet gratis, & absque annatarum communium, jocalium, & aliorum quorumcumque jurium & taxarum solutione, admittat Clericorum ejusdem Cameræ expediri, & Rescribendarius ad taxandas literas Apostolicas, cum subscriptione gratis pro persona Commissarii generalis Cameræ Apostolicæ subscribere, & tam ipse, quàm alii Scriptores, Abbreviatores, & Solicitatores literarum Apostolicarum, necnon Cubicularii, Scutiferi, & quicumque alii dictæ Curæ Officiales, expeditioni pro tempore Præsidentes, Ministri, etiam in annatis, communibus jocalibus, & aliis juribus Cameræ hujusmodi participantes, eandem literas personam dicti Commissarii concernentes, sub excommunicationis latorum sententiæ, ac privationis & suspensionis suorum Officiorum, necnon perceptionis emolumentorum eorumdem penis, per eos, ad quos pertinuerit, & qui eas gratis subscribere, vel concedere noluerint, eo ipso incurrendis, absque alio nostro, aut Successorum nostrorum, & Sedis præfate ulteriori mandato, omnino gratis, & absque aliqua annatarum, jocalium, vel aliorum jurium prædictorum solutione & exactione, in omnibus, & per omnia, usque ad plumbum, & alia necessaria inclusive, omni contradictione cessante, expediri, ac subscribi, & expediri facere & permittere debeant, & teneantur.

§. 13. Ut autem Officium Commissariatus hujusmodi viro idoneo, qui rebus ad illud pertinen-

tibus jugiter incumbat, cujusque virtus & industria nobis præcipue sit cognita, quanto citius concedatur, de dilecti filii Magistri Joffredi Lomellini Clerici Januensis, U. J. D. & in utraque Signatura nostra Referendarii, ac Prælati nostri domestici, summa fide, integritate, probitate, & doctrina plurimum in Domino confidentes, ipsamque Joffredum à quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis, à jure, vel ab homine, quavis occasione, vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum præsentium duntaxat consequendum, harum serie absolventis, & absolutum fore censentes, necnon erectionis, & institutionis Commissariatus generalis, ac quorumcumque aliorum Officiorum prædictorum, necnon privilegiorum, indultorum, facultatum, exemptionum, immunitatum, & aliarum gratiarum, illis, ac eorum singulis concessorum, & inde secutorum quorumcumque tenores, Juriumque Regalium, salariorum, taxarum, emolumentorum, portionum panis & vini, esculentorum, & aliarum rerum per, pro tempore existentes, Commissarios generales dictæ Cameræ percipi solum, & eis debitorum qualitates, quantitates, denominationes, & veros etiam annuos valores, præsentibus pro expressis habentes, Motu simili eidem Joffredo Officium Commissariatus hujusmodi à primava ejus erectione sic vacans, per eum, quoad vixerit, ad instar aliorum Officiorum Sedis, & Curæ prædictarum tenendum, regendum, & gubernandum, cum portione panis & vini, esculentorum, & aliarum rerum ex dicto Palatio, ut præmittitur, percipi solita, ac aliis illi annexis, necnon omnibus, & singulis juribus, jocalibus, regalibus, sportulis, taxis, proventibus, obventionibus, honoribus, emolumentis, privilegiis, exemptionibus, immunitatibus, præminentis, antelationibus, prerogativis, jurisdictionibus, favoribus, gratis, indultis, & facultatibus suprascriptis, & quibuscumque aliis Commissarii Generalibus dictæ Cameræ Apostolicæ hucusque concessis & assignatis, auctoritate & tenore prædictis, concedimus, & assignamus, ipsamque Joffredum ad Officium Commissariatus hujusmodi, ejusque liberum exercitium, ac omnia & singula suprascripta, ex nunc recipimus, & admittimus, ac per eos, ad quos spectat, & pro tempore spectabit, recipi & admitti, receptum & admissum, in eis, quoad vixerit, manuteneri, sibi que de eisdem integrè responderi debere volumus & mandamus.

§. 14. Decernentes præsentem literas nullo unquam tempore, de subreptionis, seu nullitatis vitio, aut intentionis nostre, vel alio quovis defectu, etiam ex eo, quod interesse forsan habentes, ad id vocati non fuerint, vel ex quavis alia causa, quantumvis legitima, urgenti & juridica, etiam necessario exprimentia, notari, impugnari, invalidari, ad terminos Juris reduci, in Jus, vel controversiam revocari, aut adversus illas quodcumque juris, facti, vel gratiæ remedium impetrari posse, minuscule sub similibus, vel dissimilibus gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, aut aliis contrariis dispositionibus comprehendere, sed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum, & cum, in quo antea quomodolibet erant, statum restitutas, repositas, & plenarie, etiam sub quacumque data per Joffredum, ejusque hæredes ac successores prædictos eligenda, reintegratas, ac de novo concessas, validasque & efficaces fore & esse, vimque validi & efficaci contractus, inter nos & ipsam Cameram ex una, ac Joffredum, ejusque hæredes & successores prædictos ex altera partibus, ritè & rectè ini-

ti &

atri que signat. r. Referendariis, officiis Commissariatus, jurisdictio- bus & emolumentis prædictis & ejus vitam concedit.

Hodie conceditur ad nuntium Papæ non autem ad vitam.

Claufulæ præservatæ.

ti & stipulati, ac etiam utrinque iurati habere, & perpetuò obtinere, dictamque Cameram ac Joffredum, ejusque hæredes & succedentes prædictos in juribus hujusmodi tuendis, & ab omni incommodo, damno, læsione, lite, causa, & controversia immunes, indemnes, & exemptos conservandos teneri, ac obligatam esse & fore.

Deccerum
ritans.

§. 15. Sicque, & non aliter, per quoscunque Judices, & ordinarios vel delegatos, etiam causarum Palatii Auditores, ac Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, sublata eis, & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, judicari, & definiri debere, necnon irritum & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contingerit attentari.

recutorum
Defensio-
nem deputa-
tis, & fa-
cultates.

§. 16. Quocirca Venerabilibus Fratribus Amerinensi & Materanensi Episcopis, ac dilecto filio causarum Curie Cameræ Apostolicæ generali Auditori, Motu simili per Apostolica scripta mandamus, quatenus ipsi vel duo, aut unus eorum, per se, vel alium, seu alios præsentem literas, & in eis contenta quæcunque, ubi, & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Joffredi, ejusque successorum prædictorum, vel aliorum eorum fuerint requisiti, solemniter publicantes, easque in prædictis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra præsentem literas, & in eis contenta hujusmodi ab omnibus, ad quos spectat, & pro tempore spectabit, inviolabiliter observari, ac Joffredum, ejusque hæredes & succedentes prædictos illis pacifice frui, & gaudere, non permittentes ipsos vel eorum quempiam per quoscunque desuper quomodolibet indebitè molestari. Contradictores quoslibet & rebelles, per sententias, censuras & penas Ecclesiasticas, aliæque opportuna juri & facti remedia, appellatione postposita, compescendo, necnon legitimis super his habendis servatis processibus, sententias, censuras, & penas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

insule de-
gatoria.

§. 17. Non obstantibus præmissis, ac de præstando consensu in pensionibus, & jure quæsito non tollendo &c. & gratis ad instar non concedendis, aliisque Cancellariæ Apostolicæ regulis editis, ac etiam in crastinum assumptionis cuiusque Romani Pontificis ad summum Apostolatus apicem edendis, necnon felicis recordationis Bonifacii Papæ VIII. Prædecessoris nostri, quæ cavetur, ne quis extrâ Civitatem vel Diocesim, nisi in certis exceptis casibus, & in illis ultra unam dietam à fine suæ Diocesis, ad iudicium evocetur, seu ne Judices à Sede prædicta deputati, extrâ Civitatem, vel Diocesim, in quibus deputati fuerint, contrâ quoscunque procedere, aut alii, vel aliis vices suas committere præsumant, & in Concilio generali edita de duabus dietis, dummodò ultra tres dietas aliquis auctoritate præsentium ad iudicium non trahatur, necnon, quatenus opus sit, recolendæ memoriæ Symmachii & Innocentii III. ac Pauli II. & quorumcumque aliorum Romanorum Pontificum, Prædecessorum nostrorum, ac etiam in nostris, de rebus Ecclesiæ, seu Cameræ & Sedis prædictarum non alienandis, necnon super reformatione, numero, & qualitatibus dictionum Referendariorum, aliisque constitutionibus & ordinationibus, tam Apostolicis, quam in Provincialibus, Synodalibus & generalibus Conciliis, specialiter vel generaliter, contrâ præmissa, vel eorum aliqua quomodolibet editis & edendis, necnon Ecclesiarum, & Monasteriorum, in quibus beneficia hujusmodi forsitan fuerint, ac Ordinum, Militiarum, & Hospitalium, etiam quorum illa extiterint, necnon Ca-

meræ Urbis, officiorum, & Collegiorum prædictorum, juramento, confirmatione Apostolicâ, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, consuetudinibus, usibus, rescriptis, stabilitis, & etiam novis reformationibus, privilegiis quoque indultis, exemptionibus, immunitatibus, & literis Apostolicis illis, eorumque Præfulis, Capitulis, Conventibus, Officialibus, Appellatoribus, & quibuscumque aliis personis, etiam per modum statuti, ac initii & stipulati contractus, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque derogatoriis derogatoris, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decretis, in genere, vel in specie, per quoscumque Romanos Pontifices, Prædecessores nostros, ac nos & Sedem Apostolicam, etiam motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, etiam consistorialiter, ac aliis quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, ac quantocumque tempore innovatis. Quibus omnibus, etiam si pro eorum sufficienti derogatione, aliis de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales, idem importantes, mentio, seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda esset, tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, & forma in illis tradita, inserti forent, præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanens, hac vice duntaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quòd interdicti, suspensi, vel excommunicari non possint per literas Apostolicas, non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

§. 18. Nulli ergò omnino hominum liceat hanc paginam nostrorum erectionis, institutionis, concessionum, applicationis, appropriationis, creationis, constitutionis, deputationis, aggregationis, voluntatis, mandatorum, indulti, statuti, ordinationis, absolutionis, receptionis, admissionis, declarationis, donationis, remissionum, obligationis, hypothecationis, condonationis, decreti, & derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem Omnipotentis Dei, ac Beatorum Petri & Pauli, Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Sanctio pos-
talis.

Datum Romæ apud Sanctum Marcum, Anno Incarnationis Dominicæ 1586. quarto Idus Octobris, Pontificatus nostri anno 2.

Dat. P. An. 2.
1a. Octob.

Die 7. Januarii 1587. Suprà scripta litera Apostolica presentata fuerunt in plena Camera Apostolica, & successivè admittæ, & registratæ, libro primo Signaturarum S. D. N. penes me infrâ scriptum dictæ Cameræ Notarium, Tydeus de Marchis.

Admissio &
registratio in
Camera Apo-
stolica.

Damnatio Contractuum Societatis, securitatem capitalis, aut certam repositionem, aut aliter usurariam pravitatem continentium.

XLV.

SIXTUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

Edita A. D.
1586.

Detestabilis avaritiæ ingluviæ, & insatiabilis lucrandi cupiditas malorum omnium radix, usque adeò excæcat mortalium mentes, ut multi nimis avidè lucro inhiantes, in laqueos & insidias Diaboli miserè incidunt; Irreperit enim versutè & callidè antiquus humani Generis hostis per varios dolos & fallacias, & incautos homines quæstus dul-

Compen-
dium pactio-
rum illicito-
rum, quæ in
contractibus
Societatum
apponi con-
tingit.

cedine

cedine captos, ac delinitos opprimit, atque eo perducit, ut se ipsos in usurarum voraginem, Deo hominibusque odiosam, sacris Canonibus damnatam, & Christianæ charitati contrariam sedē immergant, & dum vanas & terrenas divitias quaerunt, veras, ac Celestes amittant, sicuti nuper cum magno dolore audivimus, hoc malum in quacunque Provincias pervasisse; Nam multi speciosum & honestum Societatis nomen, suis fœderatitius contractibus prætexendo, hoc quasi colore & fūco, Mercatoribus, Opificibus, Negotorioribus, & aliis personis, super eorum mercibus, officinis, tabernis pannariis, aliisque rebus ac bonis, pecunias suas, aut alias res Societatis nomine conferunt; vel greges, armenta, aut certa animalia agricolis, seu terrarum cultoribus, pastoribus, aliisque rusticis, seu quibusvis personis dant in Societatem, sive ad Soccidam, ut vocant, ea conditione, ut fors ipsa, seu caput, quod vulgō dicitur capitale, tam pecuniarum quam animalium & rerum, saluum semper & integrum existat pro eo, qui non industriam, aut operas, sed pecunias, animalia, aut res hujusmodi in Societatem confert, utque omne periculum, & damnum ab altero socio recipiente substineatur, contra æquitatem, & Societatis iustitiam diversimodè paciscuntur, eisdemque socios, cum quibus contrahunt, plerumque pauperes & egenos, suoque labore & industria viciantes, ad sortem, seu capitale restituendum, quicumque tandem casus, & rerum eventus consequatur, pacto & obligatione obstringunt, simulque etiam certam lucri quantitatem & summam, veluti tot pro quolibet centenario, in singulos annos, aut menses per alterum socium, durante societate, solvendam, præcipiunt, ac præscribunt; eamque summam & quantitatem, non subductis rationibus, accepti & expensi, quod in codices, seu tabulas Societatis referri solet, neque facto calculo, vel computo, pro ipsius lucri vel damni lucro variabilem, sed laborem & curam computandi & calculandi se invicem remittere & renuntiare asserentes, quovis tempore certam constituunt.

Damnatio
illicitarum
pactionum
in Societati-
bus apponenda.

§. 1. Proinde nos, qui hoc potissimum munus, nostræque pastoralis sollicitudinis maxime proprium arbitramur, ut Gregem Dominicum, fidei nostræ creditum, ab omni offensione, & æternæ vitæ discrimine tutum, in viam salutis, Celesti Gratia adiutrice, dirigere nitamur, hujusmodi morbi contagionem, antequam in communem fidelium perniciem latius serpat, quantum, Deo favente, possumus, tollere cupientes, de attributæ nobis Apostolicæ potestatis plenitudine hac nostra perpetuè valitura constitutione damnamus, & reprobamus omnes & quoscunque contractus, conventiones & pactiones posthac ineundas, seu ineundas, per quos, seu quas cavebitur personis, pecunias, animalia, aut quilibet alias res, Societatis nomine tradentibus, ut, etiam si fortuito casu quamlibet jacturam, damnum, aut amissionem sequi contingat, fors ipsa, seu capitale semper saluum sit, & integrum à socio recipiente restituatur, sive ut de certa quantitate vel summa in singulos annos aut menses, durante Societate respondeatur; statuimusque hujusmodi contractus, conventiones, & pactiones, usurarios & illicitos posthac censi debere; atque in posterum non licere iis, qui pecunias, vel animalia, aut alias res in Societatem tradent, de certo lucro, ut præfertur, percipiendi, inter se pacisci, & concordare; neque etiam, sive ad certum, sive ad incertum lucrum convenerint, socios, qui ea recipiant, ad sortem, seu capitale saluum, & integrum, ubi illud casu fortuito perierit, vel amissum erit, reddendum, quovis pacto, aut promissione sibi obligare; Ac ne de cætero Societates ineantur sub hujusmodi pactis & conditionibus, quæ usurariam pravitatem sapiant, districte interdiximus & prohibemus.

§. 2. Sed potius cuncti noverint Societates hujusmodi, cum in posterum unus pecuniam, animalia, aut alias res & bona, alter verò operam, vel industriam confert, purè, sincerè, & bona fide, sicut decet, iustis & æquis conditionibus, & pactis, secundum juris dispositionem, ac sine ulla prorsus fraude, palliatione, aut usurarie pravitatis labe, aut suspitione, ineundas, seu contrahendas esse; ita, ut non ad certam summam, aut quantitatem, ab omni periculo & damno, ut præfertur, immunem, lucri nomine persolvendam, neque ad capitale, si casu fortuito perierit, restituendum Socius accipiens teneatur; si verò finita Societate ipsum capitale extat, ei, qui illud in Societatem contulerit, restituatur, nisi Socio recipienti fuerit communicatum, aut alter inter ipsos contrahentes, super eo legitime conventum sit; Ac præterea iidem contrahentes, fructus, expensas & damna in commune conferant, & prout æquum & iustum fuerit, sibi communicant, atque dividant.

§. 3. Decernentes, si qui contractus, conventiones, & pactiones in futurum contra nostram hujusmodi prohibitionem de facto initii fuerint, nullam ex eis, tanquam per hanc eandem constitutionem nostram, damnatis & reprobatis, etiam si jramento, aut in forma Camera Apostolicæ, vel aliis quomodolibet roborati fuerint, obligationem civilem, aut naturalem oriri, nullamque actionem realem aut personalem, aut iudicis officium, neque aliud quodcunque jus cuiquam competere, neque quoad sortem, seu capitale integrum recuperandum, quod casu fortuito perierit, aut amissum erit, neque quoad certas summas & quantitates in singulos annos, aut menses, lucris Socialis nomine promissas.

§. 4. Si qui verò in posterum sub prædictis conditionibus & pactis contrahere temerè præsumperint, aut prætextu similium contractuum, conventionum, & pactionum Societatis nomine initorum, qui hucusque durant, ad exactionem dictæ sortis, seu capitalis, sive illius pretii & valoris, postquam illud in toto, vel in parte casu fortuito perierit, aut amissum sit, aut certæ summae vel quantitates annuæ, aut mensurae sibi promissæ in futurum, procedere ausi fuerint, eos universos & singulos in penas, contra manifestos usurarios & fœneratores à sacris Canonibus, & Conciliis generalibus latis, & promulgatas, eo ipso incurrere, & contra illos, uti manifestos usurarios & fœneratores, via juris, aliisque opportunis remediis procedi posse & debere.

§. 5. Sicque ab omnibus censi, & ita quoad præmissa universa & singula per quoscunque Iudices & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, sublata eis, & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, ubique iudicari, & definiri debere, necnon irritum & inane, si secus super his per quoscunque, quavis auctoritate, scienter, vel ignoranter, contigerit attentari.

§. 6. Mandamus verò universis & singulis locorum Ordinariis, per quascunque Provincias, & Regna Christiani Orbis constitutis, & quibusvis nostris, & Sedis Apostolicæ, etiam de Larere Legatis, ac Vicelegatis, cæterisque Officialibus, præsertim Provincialium & Locorum Status nostri Ecclesiastici, ut in suis quisque Civitatibus, Diocesis, Provinciis, & locis præsentem nostram Constitutionem publicari, & inviolatè observari curent, & contra personas, quæ in futurum, præter, & contra prohibitionem hanc nostram paci-

Forma
cetero co-
tranenda-
rum.

Contrav-
nientium
pœna.

Decretum
irritans.

Deputati
& facultati
Executori
hujus Con-

1586.

Claufulae de
rogatoriz.

Iuffio publi-
candi hanc
Bulliam.

Fides tran-
fumptorum.

Dat. P. An. 2.
die 11. Oct.

Publicatio.

XLVI.

Edita An. D.
1586.

Procemium.

fci, aut exigere aufe fuerint, tamquam publicos
ufurarios, & feneratores per viam accufationis,
vel denuntiationis, aut inquisitionis, & ex me-
ro officio, prout eis videbitur, procedant, reof-
que culpabiles repertos, condignis poenis, ut
fuprà dictum eft, afficiant, invocato etiam, fi
opus fuerit, auxilio brachii fecularis.

§. 7. Non obftantibus quarumcumque Civi-
tatum, Provinciarum & locorum, iuramento,
confirmatione Apoftolica, vel quavis firmitate
alia roboratis statutis, & confuetudinibus, pri-
vilegiis quoque, indultis, & lictis Apoftolicis,
quorumcumque tenoribus exiftant, five per mo-
dum constitutionis, & legis perpetuæ quomodo-
libet concessis, etiam fapius approbatis & in-
novatis, quæ omnia nolumus cuiquam de cate-
ro fuffragari.

§. 8. Ut autem præfentes literæ ad omnium
noticiam deducantur, nevé aliquis earum igno-
rantiam prætereunda valeat, volumus, ut illæ in
Valvis Bafilicarum Principis Apoftolorum de Ur-
be, & S. Joannis Lateranenſis, & Cancellariæ
Apoſtolice, atque in acie Campi Floræ, per ali-
quem ex noſtris Curforibus de more publicetur,
dimiſſis & affixis earum exemplis in acie, & Valvis
prædictis.

§. 9. Earumque tranſumptis, etiam impreſſis,
Notarii publici manu ſubſcriptis, & ſigillo perſonæ
in dignitate Eccleſiaſtica conſtitutæ munitis,
eadem prorsus fides in iudicio, & extrâ illud,
ubique Gentium & Locorum habeatur, quæ eif-
dem originalibus haberetur, ſi eſſent exhibitæ
vel oſtenſæ. Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud Sanctum Marcum, Anno
Incarnationis Domini milleſimo quingentefimo
octuageſimo ſexto, 12. Kalend. Novembris, Pon-
tificatus noſtri anno ſecundo.

Anno à Nativitate Domini 1586. indiſtione 14.
die verò 25. menſis Octobris, Pontificatus Sanctiſſimi
in Chriſto Patris, & Domini Noſtri Domini Sixti,
Divina Providentia Pape V. anno ejus ſecundo re-
troſcripta literæ Apoſtolice lectæ & publicatæ fue-
runt, & per aliquod temporis ſpatium dimiſſæ,
in portis, ſeu Valvis Bafilicarum Sancti Joannis
Lateranenſis, & Sancti Petri Principis Apoſtolo-
rum de Urbe, necnon Cancellariæ Apoſtolice, & in
acie Campi Floræ, per nos Claudium Mongeat, &
Nicolaum Taglietum Sanctiſſimi Domini Noſtri
Pape Curſorem.

Alexander Parabiacus Mag. Curſ.

De temeraria Tori ſeparatione, ac publicis Adul-
teriis, Stupris, & Lenociniis, in quibuſdam ca-
ſibus ſeverius in Alma Urbe puniendis.

Quoad Lenocinia, & Stupra in Urbe contingentia
vide etiam in Pauli IV. Conſtitut. 18. ſuprà in
Tomo 1. Sanctiſſimus. fol. 840.

Quo verò ad Inceſtus, qui in Statu Eccleſiaſtico
evenirent, habes inſtrâ in Conſt. 54. Volen-
tes. fol. 610.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

Ad compendendam, quantum in nobis eſt, car-
nis in laſciviam prolabantis petulantiam, præ-
cipue verò continendos in officio Sanctiſſimis pu-
dicitæ & honeſtatis Legibus ſubditos noſtros,
libenter omnem curam & ſolicitudinem adhibe-
mus. Nam & hoc ipſum arbitramur paternæ
charitatis & providentiæ proprium, maximè
que congruum munus, exquiſita quadam dili-
gentia nova quotidie remedia & ſubſidia com-

parare, quibus à Chriſtiſidelibus peccati & ſcan-
dali occaſionem, Domino adjuvante, ſubmo-
veamus; Et occurrendum eſt vehementiori ſtudio,
ut nequaquam inoleſcant in publicæ honeſtatis de-
decus, pudoris, & Chriſtiana diſciplinæ detri-
mentum, ac animarum perniciem, graviorum quo-
rundam flagitiorum corruptelæ, quale eſt adulte-
rium, Divinis, humaniſque legibus damnatum,
præſertim, ſi publico ſcandalo impudenter com-
mittatur, per quod ſanctum matrimonii fœdus,
Deo auctore, junctum ſacrilege violatur, cùm ta-
men illud oporteat caſtè & religioſè cuſtodiri, di-
cente Apoſtolo: Honorabile connubium in omni-
bus, & Torus immaculatus ac conjuges mutua
ſe debeant charitate diligere, eodem Apoſtolo
monente: Viri, diligite uxores veſtras, ſicut &
Chriſtus dilexit Eccleſiam, & ſe ipſum tradidit
pro ea. Ecce iterum: Mulieres ſubdite eſtote viris,
ſicut oportet in Domino: Viri, diligite uxores
veſtras, & nolite amari eſſe ad illas.

§. 1. Invigilandum quoque nobis eſt, ut aver-
tamus à Chriſtiſidelibus Divinæ Majeſtatis iram,
indignationem, atque flagella, quæ propter hu-
juſmodi fœda carnis peccata & ſcelera, in filios
diſſidentie, præſertim verò in violatores alieni
Tori graviſſima divinitus immitti ſolent, quem-
admodum Sacrarum teſtimonio Scripturarum,
tùm variis ſucceſſibus, permulſiſque exemplis
comprobatur, tum vel maxime ex iis, quæ Pha-
raoni Egypti Regi, & Abimelech Regi Geraræ,
quoddam Saram Abrahæ uxorem abduxerunt, ſignis
clarioribus evenerunt, præter eternæ damnatio-
nis poenam, quam iidem miſerabiliter incurrunt.
Nam ſicut idem pronunciat Apoſtolus: Adul-
teros & Fornicatores judicabit Deus. Et ſi ulla un-
quam tempora fuerunt, quæ iudiciorum, & le-
gum ſeveritatem requirerent, certè hæc ipſa tem-
porum conditio, qua nos Deus ad Eccleſiæ ſuæ
gubernacula vocavit, hoc vel maxime expoſcit.
Nam, ut eſt fragilis, & fluxa mortalium natura, &
ad malum prona, niſi Divina Bonitas adjuvet, &
eorum, qui præſunt, frenum cohibeat: Ita plu-
rimis abhinc annis propter nimiam ipſorum ma-
licitiam, depravatamque peccandi conſuetudinem,
& eſtrenatam audaciam, vitiòſumque licentiam,
improbi homines tantùm ſibi ſumpeſerunt, ut ſpe-
rent, quicquid eis libitum eſſet, id ſe impune
perpetrare poſſe. Igitur poſt reſpreſſam ſclerato-
rum audaciam, qui cœdibus & latrociniiſ Diti-
onem Eccleſiaſticam, atque adeò ſuburbana loca
vexabant, nunc etiam in Urbè, ut quod æquè
neceſſarium eſt, inde ſumamus initium, corrobo-
randa fides connubialis, comprimendæ publicæ,
præſertim mœchantium, libidines, & alienis con-
jugiis inſidiantium impudens nequitia coërcenda,
legitimæ ſobolis honeſtæ propagationi conſulen-
dum, & ſiqua diſſoluta aut dilapſa fluxerunt, ſeve-
ris legibus vincienda ſunt; præcipueque curan-
dum, ne qui Cives, aut incolæ Sanctæ huius, &
Sacerdotalis Civitatis flagitiorum turpitudine, per
varias machinationes & fraudes Diaboli aſtu
adinventas polluantur, ſed ab eorum commercio
pravi abuſus, & publicæ ignominie labeſ, noſtris
potiſſimum temporibus exterminentur, & perpe-
tuò exulent, ac potiùs hæc Alma Urbs noſtra
omni virtutum genere florens, pura, & immacu-
lata luceat ſplendore & munditia honeſtatis ſuæ,
omnéſque externas gentes ad ſui imitationem
convertat. Id enim poſtulat ipſius Urbis Sancti-
tas & Religio, quæ Sanctorum Apoſtolorum & in-
numerabilium Martyrum ſanguine conſecrata, at-
que adeò perſuſa eſt, ut quoquo pedem quis po-
nat, credere poſſit, ſe venerandos eorum Cineres
calcare. Id præterea requirit dignitas ipſius Civi-
tatis, quæ noſtra propria Sedes, Caput Orbis, &
Religionis effecta, benignè excipit gremio ſuo,
quaſi communis patria omnes undique Nationes ex
remotiſſimis Regionibus, & ultimis terris ad eam

Adulterio-
rum execra-
tio.

confluentes. Id denique exigit communis utilitas universi populi Christiani, ut obstruendo ore impiorum, advenae petentes hinc disciplinam, mores, regulam, normamque vivendi, spiritualis aedificii non minus quam materialium operum structuram admirentur, urbanisque exemplis meliores effecti, ad suos revertantur. Proinde ad servandam invicem inter conjuges perpetua fide & concordia societatem, & ad publicam honestatis pudorem illibatè tuendum, super infra scriptis capitibus praesenti nostra, in eadem Urbe duntaxat perpetuò valitura constitutione duximus providendum.

Conjuges tenerè se à communi cohabitatione, & conjugali Thoro separantes arbitrio Judicis puniantur.

§. 2. Primum igitur, cum matrimonium individuum vitae consuetudinem continere debeat, idque non solum naturali jure, sed etiam Divino manifestum comprobetur, dum dicitur: Relinquet homo patrem suum, & matrem, & adhærebit uxori suæ, & erunt duo in carne una; & Christus Dominus noster in Evangelio subjungat: Itaque jam non sunt duo, sed una caro; quod ergo Deus conjunxit, homo non separet. Ac denique testetur Apostolus: Sacramentum hoc magnum esse in Christo, & in Ecclesia. Et propterea nefas sit, Conjuges fideles se propria voluntate, aut arbitrio à conjugali Thoro separare, nisi ex causa à Sacris Canonibus præmissa, & auctoritate, ac judicio Ecclesiae cognita & probata. Idcirco, ne quis in posterum hujusmodi facinus impune committat, vel attentare audeat, Apostolica auctoritate statuimus & ordinamus, ut Conjuges, qui, quæve indissolubile matrimonii nexum Divina Lege copulatum contemnentes, sine Ecclesiae judicio, seu Ecclesiastici Judicis sententia, propria temeritate à communi cohabitatione discesserint, aut se à conjugali Thoro separare præsumperint, arbitrio Judicum pro excessum gravitate puniantur.

Maritus Judicis auctoritate tori separationem obtinens, & deinde impudicam vitam ducens, ita ut appareat, quod separationem affectavit, ut luxuriosè viveret poena ultimi supplicii plectatur.

§. 3. Sed et si per sententiam Judicis Ecclesiastici separatio facta fuerit, ne ipsi Conjuges Sacrorum Canonum, & publica Judicum auctoritate abutentes, delinquendi, & adulteria committendi occasionem sumant, statuimus & decernimus, maritum, qui dolo aut fraude, sive aliâ quavis occasione vel causa, etiam secundum Juris Canonici dispositionem, separationem tori ab uxore sua affectaverit, procuraverit, & obtinuerit, sequè à cohabitatione uxoris cum effectu separaverit, ac post à se abjectam vel amoram uxorem, pellicem, vel concubinam palam induxerit & retinuerit, aut cum foris & meretricibus, & aliis mulieribus impuram vitam duxerit, adeoque impudenter se volutaverit in ceno luxuriæ, & adulteriis, ut vel ex eo satis constet, ipsum ad exercendam liberius libidinem suam se ab honestissimo matrimonii jugo exsolvendi causam de industria quævisse, poena ultimi supplicii plectendum esse.

Uxor, quæ separationem obtinuerit, impudicè postea viveat, & complura adulteria commiserit, aut palam quæstum fecerit, eandem poenam incurrat.

§. 4. Similiter uxorem, quæ instigante antiquo pacis & pudicitiae hoste, sub prætextu morum, sævitie, furoris, vel insanie, impotentiae coeundi, maleficii, aut alterius Canonici impedimenti, vel alicujus delicti marito suo objecti, aut aliâs quoquo modo fuscitatis contra maritum discordiis ac dissidiis, etiam ad id via Juris procedendo, subterfugium obedientiae maritalis improbe exquisierit, & frenum ac jugum viri sui excutere, sequè ab illo eximere procuraverit, aut certè culpa sua marito petendæ separationis causam præbuerit, & postea, quàm à connubiali toro judicio Ecclesiae separata extiterit, quasi auctoritate legum & judiciorum suæ luxuriæ explendæ occasionem nacla, se scandalosæ & impudicæ vitæ dederit, & complura, ac cum diversis personis adulteria perpetraverit, aut se in prædam adulterorum turpiter commaculandum publicè exposuerit, sive palam quæstum fecerit, eadem poena ultimi supplicii puniri volumus.

§. 5. Quod si pendentibus hujusmodi litibus & controversiis super separatione vel divortio, aut subsecuta, ut premititur, tori separatione, uxor ipsa arbitrio Judicis, ad quem spectaverit, in Monasterio aliquo Monialium, aut certè in aliquo tuto & honesto loco, sive apud aliquas probas, honestas, & non suspectas personas deposita & collocata fuerit (super quo etiam, ut id magna adhibita cautione, & sine aliquo periculo aut suspitione circumspicere fiat, Judicis ipsius conscientiam oneramus) statuimus, ut ipsa uxor sit deposita & collocata, si è Monasterio sine licentia sui Judicis violatè clausura exiverit, sive à custodia & cura, vel alio honesto loco, sibi per Judicem assignato, temerario ausu auferat, & vitam impudicam & inhonestam duxerit, eadem etiam poena plectatur.

§. 6. Præterea eum, qui, ut virginem aliquam aut alienam uxorem, stupro, sive adulterio corrumperet, aut polluat, ejus patrem aut matrem, fratrem sive sororem, aut maritum, aliâve personam, sub cuius cura, tutela, custodia, vel potestate illa existit, prætextu cujusvis causæ civilis, criminalis, aut mixtæ, etiam ad Procuratoris Fisci instantiam in carcerem detruat, directè vel indirectè procuraverit, & ea occasione deinde virginem illam, sive uxorem alienam stupraverit, aut adulteraverit, cum & is quoque suæ pravæ concupiscentiæ explenda causa, publica legum & Magistratuum potestate impudenter abutatur, & sub colore iudicii, innocentes atque incautos opprimat, dicta quoque poena statuimus puniendum.

§. 7. Ac postremò etiam in patrem, matrem, aut virom, qui, quæve suæ filie virginis pudorem, aut propriam uxorem in prædam alienæ libidinis tradiderit, & re ipsa prostituerit, aut induxerit, ut contra jus & fas, stupra & adulteria, quæstus aut aliâ quavis causa palam exerceat, poena eadem volumus animadverti.

§. 8. Antiquis tamen iuribus contra ceteros adulteros & adulteras, lenones & lenas, ac stupra & hujusmodi facinorosa perpetrantes promulgatis, aliis in suo robore permanentis.

§. 9. Cæterum, quemadmodum hac nostra constitutione id nobis propositum est, ut si quos homines in posterum, honestatis, ac Divinæ Legis interdum obliquo coeperit, eos saltim supplicii meritos, à flagitiis, sceleribusque deterreat; ita hodie tales nullo esse vehementer optamus, quod, si quæ forte sint conjugatae, quæ palam impudicè ac turpiter vivant, iis novem duntaxat dierum spatium, post hujus constitutionis publicationem ad respiciendum damus, intra quod tempus, si velint redire ad cor, Venerabilem Fratrem nostrum Jacobum Episcopum Portuensem Cardinalem Sabellum, nostrum in prædicta Urbe Vicarium, vel ejus Vicegerentem adire debeant, eisque polliceri se deinceps pudicam vitam acturas, & aut cum suis viris cohabitaturas, aut honesto in loco, ubi ab ipsis Judicibus, ut supra dictum est, collocatae sue depositæ fuerint, permanuras. Quo termino elapso; contra sic, ut supra delinquentes, ad poenas prædictas omnino procedi mandamus.

§. 10. Decernentes sic per quoscumque iudicari debere, irritumque & inane, si fecis super his à quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§. 11. Et nihilominus mandamus universis, & singulis dictæ Urbis Judicibus ordinariis pro tempore existentibus, quibus contra reos talium criminum, aut quoad causas hujusmodi jurisdictionis competit, vel in futurum competet, ut curent præmissa omnia juxta præsentium litterarum continentiam & tenorem firmiter & inviolatè, perpe-

Uxor, quæ ex aliquo loco, per Judicem sibi assignato auferatur, & impudicè xerit, eadem poena ca piti puniatur.

Ad hoc vide Bullam Pauli III. supra fol. 72. in Tom. I.

Qui, ut virginem vel conjugatam cognoverit, aut patrem, aut matrem, vel autorem & carcerari fecerit, illique stupraverit, vel adulteraverit, eandem poena plectatur.

Parentes aut mariti suas filias, vel uxores ad palam luxuriosè vivendum, inducentes, eadem poena puniuntur.

Contra alios Adulteros, Lenones, &c. antiqua jura servantur.

Conjugatae palam impudicè viventes respiciant, aliqui poenas prædictas incurrent.

Decretum irritans.

Judicum facultates procedendi contra delinquentes.

tuis futuris temporibus observari, & contrā criminosos, ac delinquentes prædictos utriusque sexus inquirant & procedant, ac in eos jaxtā præmissa culpabiles repertos, prædictis pœnis, ut supra dispositum est, animadvertant, contumaces, rebelles, & inobedientes, eisque auxilium, consilium, vel favorem quomodolibet præstantes, per opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita, compescendo; invocato etiam ac adhibito, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 12. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, dictæ Urbis statutis, reformationibus & consuetudinibus, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, privilegiis quoque, indultis, & consistorialiter, seu aliis quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, & quibuscumque aliis indultis, generalibus vel specialibus, quorumcumque tenorum existant, per quæ præsentibus non expressa, vel totaliter non inserta, effectus earum impediri valeat quomodolibet vel differri, & de quibus quorumque totis tenoribus, habenda esset in eisdem nostris literis mentio specialis. Quæ omnia nemini volumus adversus præmissa, in aliquo suffragari, atque illis ad effectum earundem præsentium duntaxat specialiter & expresse derogamus, cæterisque contrariis quibuscumque. Volumus autem, ut ipsarum præsentium transumptis, etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides in iudicio, & extra illud habeatur, quæ eisdem originalibus haberetur, si forent exhibite vel ostensa.

§. 13. Quodque eadem præsentēs ad valvas Lateran. & Principis Apostolorum de Urbe Basilicarum, ac in acie Campi Floræ de more publicentur, affixis & dimissis inibi earum exemplis, quodque post decem dies, ab hujusmodi publicatione numerandos, statim incipiant, unumquemque arcare, perinde ac si personaliter omnibus intimatæ forent, cum non sit verisimile à quoquam id ignorari, quod tam patenter cunctis fuerit intimatum.

§. 14. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrorum statutorum, ordinationis, onerationis, decretorum, mandati, derogationis, & voluntatum infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, Indignationem Omnipotentis Dei, ac Beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursum.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo octuagesimo sexto, tercio Kalendas Novembris, Pontificatus nostri Anno 2.

Anno à Nativitate Domini 1586. indictione 14. die verò 3. mensis Novembris, Pontificatus Sanctissimi in Christo Patris & D. N. D. Sixti Divina Providentia Papæ V. Anno 2. retrospectivè literæ Apostolicæ, lectæ, affixæ & publicatæ fuerunt, & per aliquod temporis spatium dimissa in Valvis, seu Portis Basilicarum S. Joannis Lateranensis, & S. Petri Principis Apostolorum de Urbe, ac Cancell. Apostol. per nos Joannem Burluvault, & Othavium Talietum S. D. N. Papæ Cursores, necnon in acie Campi Floræ, per eodem Cursores.

Alexander Parabiacus Mag. Curs.

XLVII. Jurisdicção Judicis causarum, beneficialis confidentiæ, & simoniz, & cum eis connexitatem habentium, in Romana Curia movendarum, aut per appellationem à Judicibus extra Curiam introducendarum.

De ejusmodi materiis attende extravag. 2. Cum detestabile Pauli II. de Simon. Et Constitut. 85. Pii IV. Romanum. supra fol. 128. atque Pii V. Constitut. 85. Intolerabilis. fol. 302. in hoc Tomo 2. cum ibi notatis. Et etiam hic infra Constitut. 61. Pastoralis. fol. 640. Ubi Constitutiones dictorum Pii IV. & Pii V. extenduntur ad Regnum Gallie.

SIXTVS EPISCOPUS, Servus Servarum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Divina DEI Providentia, quæ cunctorum fidelium cæcum per diversa Tribunalia statuit in rectitudine gubernandum, in supremo Justitiæ throno, meritis licet imparibus constituti, nunc in muneribus & officiis ad ipsius Justitiæ cultum instituentis, nunc pro personis idoneis ad illa assumendis, & condignis titulis decorandis, aciem nostræ mentis sedulo convertimus, & quæ ad officiorum & personarum hujusmodi stabiliendam jurisdictionem, salubremque directionem pertinere noscuntur, ne propter varios diversorum Judicum & Tribunalium concursus, & varias procedendi formas desuper dubitari contingat, ex Pastoralis nostri Officii debito constitutum, ac in his ejusdem Officii nostri partes favorabiliter impartimur, prout rerum & causarum circumstantiis debite pensatis, conspicimus in Domino salubriter expedire.

§. 1. Cum itaque aliis felic. record. Pius Papa V. Prædecessor noster, omnium causarum confidentialium pro tempore movendarum cognitionem & decisionem, ac literarum Apostolicarum à piæ memoriæ Pio Papa IV. etiam Prædecessore nostro super hujusmodi confidentiis emanatarum, executionem sibi, & Successoribus suis reservaverit, & postmodum ob varias & continuas pro tempore existens. Rom. Pont. in gravissimis & arduissimis totius Reipublicæ Christianæ negotiis occupationes, causæ ipsæ in Romana Curia pro tempore motæ & introductæ per particularem Judicem, ex delegatione Apostolica, audiri, decidi, & cognosci consueverint, ipse autem Judex, nedum solo Romani Pontificis nutu amovibilis, sed etiam sibi contrā ordinarios Collatores Episcopos, & alios Superiores Prelatos hac confidentiali labe plerumque infectos, procedendi facultas præclusa existat, qui etiam in hujusmodi causarum prosecutione, ut plurimum delegantur, diversæ Simoniacæ pravitates, & aliæ illicitæ pactiones, quæ, licet ex istis confidentiis resultant, seu illis mixtæ & conjunctæ sint, tamen à nonnullis prætenduntur, eas sub facultatibus præfato Judici concessis, minime comprehendi, nec in illis ab ipso sine speciali Sedis Apostolicæ rescripto posse procedi. Unde fit, ut modò ipsius Judicis mutatione, quæ interdum contingit, nunc facultatum suarum angustia, ac etiam delinquentium cavillationibus & subterfugiis, ejusdem Judicis auctoritas sæpius illudatur, ac ea, quæ ad purgandam hac contagione DEI Ecclesiam à dictis Prædecessoribus sapientissime sunt sancita, ut plurimum debito effectu careant, in animarum perniciem, & scandalum plurimorum.

§. 2. Nos hujusmodi incommodis, pro nostri Pastoralis Officii debito obviare cupientes, operapretium fore duximus, præfati Judicis personam, speciali titulo & denominatione decorare, illiusque jurisdictionem ampliari, ut in Tribunali suo, tum judicia, tum cætera ad id munus pertinentia perpetuò stabiliantur, ac ad certum debitumque finem ordinentur, necnon literarum & constitutionum Pii IV. & Pii V. Prædecessorum hujusmodi, ac præfatorum, aliorumque privilegiorum, indui-

Edita An. D.
1586.

Proccinium.

Pii IV. Pii V.
Constitutiones istæ, sunt
indicatæ hic
in rubr.

Erectio officii
Auditoris
causarum
confidentialium.

torum, gratiarum, & facultatum, pro tempore existentium iudici causarum confidentialium huiusmodi concessarum, ac sententiarum desuper forsan latorum, & inde secutorum quorumcumque tenores, necnon litium & causarum huiusmodi status & merita, nomina & cognomina colligantium, presentibus pro expressis habentes, Motu proprio non ad alicujus nobis super hoc oblate petitionis instantiam, sed ex mera deliberatione, & certa scientia nostra, ac de Apostolica potestatis plenitudine, unum Officium Auditoratus generalis quarumcumque Confidentialium, etiam Simoniacam pravitatem, & quamcumque aliam illicitam passionem inducentium, seu connexitatem aliquam cum Confidentialia habentium, rerumque omnium inde resultantium, pro uno generali illarum Auditore, qui omnium & singularum causarum huiusmodi ordinarius Iudex existat, & officium ipsum ad ejus vitam obtinere, illudque in nostris, & pro tempore existentis Romani Pontificis manibus quandocumque resignare, licite possit, ad instar aliorum Romanæ Curie, & dicte Sedis Officiorum vocabulum & resignabilem, Apostolica auctoritate, renore presentium, perpetuo erigimus & instituiamus.

Emolumentorum & reddituum assignatio.

§. 3. Ibi que sic erecto & instituto pro illius dote, decimam partem omnium & singulorum fructuum, reddituum, proventuum, iurium, obventionum, ac etiam distributionum quotidianarum, etiam solis presentibus & Divinis Officiis intercurrentibus dari, & per eos percipi solitarum, & aliorum quorumcumque emolumentorum, ac etiam pensionum annuarum, cum interventu Confidentialitatis, vel alias Simoniacæ, aut alia illicita passione interveniente, seu quæ commissis confidentis aliquam dependentiam vel connexitatem habeat, indebitè perceptorum, ad quorum restitutionem quoscumque per ipsius Auditoris sententiam condemnari, etiam postmodum per alios Iudices causam fortasse revideri, & dictam sententiam confirmari seu reformari, ac etiam super quibus, post litem desuper in Officio huiusmodi intentatam, quomodolibet componi, vel aliis concordari congerit. Necnon omnia & singula alia Jura, Salaria, Regalia, & Emolumenta quæcumque, ordinaria & extraordinaria, undecumque & quomodocumque provenientia, etiam sportulas, vel alia quocumque nomine nuncupata, quæ Iudices Causarum confidentialium huiusmodi in dicta Curia pro tempore deputati, quomodolibet, & quocumque titulo vel causa habere, consequi, lucrari, & percipere consueverunt, seu etiam potuerint, ac debuerint, cuiuscumque qualitatibus, quantitatibus & valoribus fuerint, auctoritate & tenore presentis, etiam perpetuo applicamus, & appropriamus.

Privilegiarum omnium, quæ veri familiares Pontificis continuique Commensales, & Prælati domesticæ, Sedisque Apostolicæ Notarii habent, concessit.

§. 4. Necnon quod de cetero pro tempore existens Auditor prædictus, statim à die concessionis sibi de huiusmodi Auditoratus Officio, dicta auctoritate factæ, sit & esse censeatur, noster & pro tempore existentis Romani Pontificis verus, indubitatus, & non fictus Familiaris, continuus Commensalis, & Prælatum domesticus, ac dicte Sedis Notarius, aliorumque Familiarum continuorum Commensalium, nobis & dicto Romano Pontifici in Palatio Apostolico servantium, ac Prælatorum domesticorum, & ejusdem Sedis Notariorum numero & consortio favorabili aggregatus, ac pro vero, indubitatus, & non fictus noster, & pro tempore existentis Romani Pontificis Familiari, continuus Commensali, & Prælatum domesticus, Sedisque huiusmodi Notario haberi, & reputari debeat, habitumque & insigniis dictorum Prælatorum, & Notariorum, per quamcumque personam in dignitate Ecclesiastica constitutam, quam

ad hoc duxerit eligendam sibi, recepto prius ab eo fidelitatis & obedientiæ solito juramento, exhibendis & conferendis, omnibusque & singulis, ac prorsus similibus privilegiis, præeminentiis, induitis, immunitatibus, libertatibus, exemptionibus, facultatibus, honoribus, antelationibus, prærogativis, favoribus, indultis, concessionibus & gratiis, tam specialibus, quam temporalibus, quibus ceteri nostri, & pro tempore existentis Romani Pontificis, veri, indubitati, & non ficti Familiares, continui Commensales, ac Prælati domesticæ, dicteque Sedis Notarii, etiam de numero participantium existentes, etiam si habitum & Ruchetum Notariorum Sedis huiusmodi non deferat, de jure, statuto, usu, consuetudine, vel aliquo etiam speciali privilegio, aut aliis quomodolibet utantur, potiuntur, & gaudent, ac uti, potiri, & gaudere possint, & poterunt quomodolibet in futurum, in iudicio & extrâ, ac ubique locorum absque aliqua prorsus differentia, non solum ad illorum instar, sed pariformiter, & æque principaliter, in omnibus, & per omnia, perinde ac si eidem Auditori pro tempore existentis specialiter & expressè per presentes concessa fuissent, sine tamen ipsorum Prælatorum domesticorum & Notariorum de numero participantium præjudicio, uti, potiri, & gaudere liberè & licite possit & valeat.

§. 4. Ipsæque Auditor pro tempore existens, omnes & singulas dictarum Confidentialium & Simoniacam pravitatem, vel quamvis aliam illicitam passionem inducentium, seu aliquam dependentiam vel connexitatem habentium, rerumque omnium inde resultantium causas huiusmodi in eadem Curia quomodocumque, & qualitercumque, ac alias quascumque personas, etiam Cardinalatus honore, ac Patriarchali, Archiepiscopali, vel Episcopali dignitatibus fungentes, etiam per viam inquisitionis, aut ex Officio, seu Apostolica delegatione, vel aliis quomodolibet moras & movendas, ac etiam quæ per viam appellationis à sententiis definitivis, vel interlocutoriis vim definitivæ habentibus, per quoscumque Iudices ordinarios vel delegatos, ac etiam dicte Sedis Legatos, vel Nuncios pro tempore latis & promulgatis, ad Sedem præfatam pro tempore interpositæ, seu reclamationis iudicialis, aut nullitatis, ad Sedem eandem hætenus devolutæ sunt, vel in posterum devolventur, ita ut causæ appellationum huiusmodi per eum solum cognosci, nec alteri, nisi per commissionem in Signatura Gratiæ, vocato ipso Auditore, propositam, & manu nostra signatam, committi possit, summarè, simpliciter, & de plano, sine strepitu, & figura iudicii, sola veritate inspecta, etiam manu Regia, ac terminis substantialibus, qui de stylo seu ordinatione Palatii Apostolici observari consueverunt, penitis omittis, ac etiam quibuscumque appellationibus, nullitatibus, & aliis diffugiis prorsus semotis procedendo, unâ cum omnibus & singulis earum incidentibus, dependentibus, emergentibus, annexis, & connexis, ac etiam toto negotio principali, audiendi, cognoscendi, decidendi, sineque debito terminandi, etiam singulis diebus & horis, præterquam in honorem Dei feriatibus; necnon super omnibus & singulis Confidentialibus, etiam aliquam dependentiam, vel connexitatem cum Simoniacæ, vel alia illicita passione habentibus, seu mixtis huiusmodi, rebusque omnibus inde resultantibus, tam ad Procuratoris Fiscalis denunciationem, & promotionem, quam etiam partium accusationem, seu ex mero Officio inquirendi, omnemque & singulas huiusmodi Confidentialium & Simoniacam pravitatem, vel quamvis aliam illicitam passionem inducentium, seu aliquam dependentiam, vel connexitatem habentium, rerumque inde resultantium

Jurisdictionis cognoscendi quascumque causas confidentiales, &c. concessio.

causam, coram quibuscumque Judicibus etiam Palatii Apostolici causarum Auditoribus, inter quascumque personas motas & movendas, ad se & suum tribunal advocandi; ac omnes & singulos dictarum confidenciarum auctores, machinatores, confesios, complices, & alios quos opus fuerit, ac sua quomodolibet interesse putantes, etiam per edictum publicum, si ad eos tutus non pateat accessus, citandi, & confiso sibi quantum sufficere videbitur de iudiciis, ad personaliter vel alias legitime comparendum, sub excommunicationis, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & poenis, ac privationis omnium & singulorum Beneficiorum & Officiorum per eos obtentorum, ac inhabilitatis ad illa & alia quaecumque in posterum obtinenda, necnon pecuniariis, aliisque ejus arbitrio, etiam juxta demeritorum exigentiam corporis afflictivis poenis, monendi; eisque ac quibuscumque Judicibus, tam ordinariis quam commissariis, etiam quacumque auctoritate fungentibus & functionis, sub similibus sententiis, censuris, & poenis tam in dicta Curia quam extra, eam ubilibet inhibendi, decedentes quoscumque libros, scripturas, computa, instrumenta, & alia documenta publica vel privata dictarum confidenciarum, causas etiam ut praefertur mixtas quomodolibet concernentia, ad illa exhibenda, necnon quoslibet testes ad se examini subijciendum, ac veritatis testimonium perhibendum, etiam ex officio, vel alias prout sibi videbitur, per similes censuras & poenas cogendi & compellendi, eosque necnon contradictores quoslibet & rebelles, sententias, censuras, & poenas, etiam privationis hujusmodi incidisse, servata forma Concilii Tridentini declarandi, auxiliumque brachii secularis invocandi; necnon unum Locumtenentem in hujusmodi causis, cum simili vel limitata potestate, quoties sibi videbitur constituendi & deputandi, eumque revocandi, ac alium ejus loco subrogandi; necnon literas seu constitutiones Pii Quarti & Pii Quinti Praedecessorum hujusmodi super dictis confidenciarum editas, ac omnes & singulas sententias in dictis causis confidenciarum, tam hactenus per illarum Iudices qui pro tempore fuerint latas, quam in posterum per futurum Auditorem hujusmodi, ejusque Successores ac Locumtenentes ferendas, via executiva, nulla tela judiciaria servata, & quacumque appellatione remota, ac alias juxta literarum seu constitutionum praefatarum, ac etiam facultatum dictis Judicibus, per Nos & Praedecessores nostros quomodolibet concessarum formam, continentiam & tenorem, plenarie & totaliter exequendi, & executioni demandandi; mandataque executiva & alia quomodolibet necessaria & opportuna decernendi & relaxandi; ac generaliter omnia & singula alia, quae in praemissis omnibus & singulis quomodolibet necessaria & opportuna fuerint, facien. dicen. geren. exercen. mandan. decernen. statuen. ordinan. & exequendi, plenam, liberam & omnimodam facultatem, potestatem & auctoritatem habeat & habere debeat.

§. 5. Et quodd Officium Notariatus eandem causarum de caetero perpetuis futuris temporibus, ad meram & liberam pro tempore existentis Auditoris praedicti dispositionem spectet & pertineat; ipsique pro tempore existens Auditor Officium Notariatus hujusmodi, quod dilectus filius Prosper Vacca ad hoc a nobis deputatus ad praesens exercet, cum primum per cessum vel decessum, aut privationem vel amotionem dicti Prosperi, aut cujusvis alterius qui illud pro tempore quomodolibet obtinebit, aut alias quovis modo vacaverit, quibuscumque personis, de quibus sibi videbitur per suas parentes literas, sigillo Officii sui Auditoratus, gratis vel pro pretio reperiibilis concedere & assignare, ac soluta sibi solita

compositione resignationis de dicto Officio Notariatus pro tempore facien. necnon personam cui Officium ipsum Notariatus pro tempore concesserit & assignaverit, ad illud illiusque liberum exercitium, absque alia nostra & pro tempore existentis Romani Pontificis concessione & assignatione, recipere & admittere, ac per eos ad quos spectat & pro tempore spectabit, recipi & admitti, ac illi de solitis & consuetis iuribus & emolumentis responderi facere, liberè & licite valeat, eisdem auctoritate & tenore similiter perpetuo statuimus & ordinamus.

§. 6. Insuper de dilecti filii magistri Alexandri Catelani Clerici Romani, J. U. D. ac literarum Apostolicarum majoris Praesidentie Abreviatoris, & in utraque Signatura nostra Referendarii, fide, integritate, probitate & doctrina, nobis praecipue in Iudiciis earundem causarum munere jam dudum exercendo & obeundo, cognita atque perspecta, specialem in Domino fiduciam obtinentes, ipsumque Alexandrum ad quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & poenis, à jure vel ab homine quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum praesentium dumtaxat consequendum harum serie absolventes, & absolutum fore censentes, eidem Alexandro Officium Auditoratus generalis causarum confidenciarum, vel alias ut praefertur mixtarum, à primæva ejus electione vacans hujusmodi, per eum quoad vixerit ad instar aliorum Officiorum Curiae & Sedis praedictarum tenendum, regendum, & gubernandum, cum decima parte fructuum, reddituum, proventuum, iurium, obventionum, distributionum, & aliorum emolumentorum, ac pensionum indebitè perceptorum & percipiendorum hujusmodi, & aliis illi annexis, necnon omnibus & singulis iuribus, regalibus, vocalibus, sportulis, taxis, proventibus, obventionibus, honoribus, emolumentis, privilegiis, exemptionibus, immunitatibus, praeminentiis, antelationibus, prerogativis, jurisdictionibus, favoribus, gratiis, indultis, ac de dicto Officio Notariatus disponendi, & illius resignationes admittendi, ceterisque facultatibus supradictis, auctoritate & tenore similibus, concedimus & assignamus, ipsumque Alexandrum ad Officium Auditoratus causarum confidenciarum hujusmodi, illiusque liberum exercitium, necnon decimam fructuum, reddituum, proventuum, iurium, obventionum, distributionum, emolumentorum & pensionum hujusmodi partem, ac jura, regalia, sportulas, taxas, proventus, obventiones, honores, privilegia, facultates, ceteraque omnia & singula supradicta, ex nunc recipimus & admittimus, ac per eos ad quos spectat, & pro tempore spectabit, recipi & admitti, receptumque & admissum in eis quoad vixerit manuteneri, sibi que de eisdem integrè responderi debere volumus & mandamus &c.

§. 7. Ac easdem praesentes literas nullo unquam tempore, de subreptionis vel obreptionis vicio, aut intentionis nostrae, vel quovis alio defectu etiam ex eo quod interesse forsan habentes ad id vocati non fuerint, vel ex quavis alia causa quantumvis legitima & juridica, etiam necessariò expremenda notari, impugnari, invalidari ad terminos juris reduci, in jus vel controversiam revocari, aut adversus illas quodcumque juris, facti, vel gratiae remedium impetrari posse, minisque sub quibuscumque illarum aut similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, & aliis contrariis dispositionibus comprehendendi, sed semper ab illis exceptas, & quoties illae emanabunt, toties in pristinum & eum in

Auditoratus Officii, in personam Alexandri Catelani Roman. utriusque Signaturae Referendarii, cum praedictis jurisdictionibus, emolumentis & privilegiis collatio.

Clausula praeservativa.

Notariatus officii, ad Auditoratus officium praedictum applicatio & concessio.

quo antea quomodolibet erant statum restitutas, repositas, & plenarie, etiam sub quacumque data, per Alexandrum ejusque Successores prefatos eligenda, reintegratas & de novo concessas, validasque & efficaces fore & esse, vimque validi & efficacis contractus, inter nos & Cameram ex una, & Alexandrum ejusque Successores prefatos ex altera partibus, rite & recte initi & stipulati, ac etiam utrumque jurati habere, & perpetuo obtinere, distamque Cameram ad Alexandrum & ejus Successores prefatos, in iuribus & aliis prefatis tenendos, & ab omni incommodo, damno, latione, lite, causa, & controversia immunes, indemnes, & exemptos conservandos teneri & obligatos esse ac fore.

Decretum irritans.

§. 8. Sicque & non aliter per quoscumque Judices ordinarios vel delegatos, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac ejusdem Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari & definiri debere, necnon irritum & inane, si secus super his à quocumque quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentare.

Executorum & Defensorum deputatio & facultates.

§. 9. Quocirca Venerabilibus Fratribus nostris Amerin. & Marturanen. Episcopis, ac dilecto filio causarum Curie Cameræ Apostolicæ generali Auditori, Motu simili per Apostolica scripta mandamus, quatenus ipsi vel duo aut unus eorum, per se vel alium seu alios, presentes literas & in eis contenta quacumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte dicti Alexandri & ejus in Officio Auditoratus hujusmodi Successorum fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in premissis efficacis defensionis prasidio assistentes, faciant auctoritate nostra presentes literas & in eis contenta hujusmodi, ab omnibus ad quos spectat, & pro tempore spectabit inviolabiliter observari, ac Alexandrum & Successores prefatos illis pacifice frui & gaudere, non permittentes ipsos seu eorum quempiam, per quoscumque quavis auctoritate fungentes, desuper quomodolibet molestari, perturbari, vel inquietari, contradictores quoslibet & rebelles, per sententias, censuras, & penas Ecclesiasticas, aliaque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita compescendo, ac legitimis super his habendis servatis processibus, sententias, censuras & penas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando; invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

Clausula derogatoria.

§. 10. Non obstantibus premissis, & de certo nominatorum predictorum numero, necnon quatenus opus sit, recolenda memorie Symmachi & Innocentii Tertii, ac Pauli Secundi, & quorumcumque aliorum Romanorum Pontificum etiam Predecessorum nostrorum, de rebus Ecclesiæ seu Cameræ & Sedis predictarum non alienandis aliisque Apostolicis, ac in Provincialibus, Synodalibus, & Generalibus Conciliis editis, specialibus vel generalibus constitutionibus & ordinationibus, dictaque Cancellariæ regulis editis & edendis, etiam de gratis ad instar non concedendis, ejusque & dictæ Cameræ, ac eorum Officiorum & Collegiorum, necnon Urbis Romæ, illiusque Tribunalium & Curiarum etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, consuetudinibus, styli, usibus, naturis, stabilimentis, & etiam novis reformationibus, privilegiis quoque, indultis, exemptionibus, immunitatibus, & literis Apostolicis, illis necnon ordinariis Judicibus & personis supradictis, & quibuscumque aliis, etiam per modum statuti perpetui, initi & stipulati contractus, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque de-

rogatoriarum derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, necnon irritantibus & aliis decretis, in genere vel specie, per quoscumque Romanos Pontifices Predecessores nostros, ac Nos & Sedem predictam, etiam motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, ac aliis quomodolibet, etiam iteratis vicibus concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus etiam si de illis eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, expressa & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda esset, tenores hujusmodi acti de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, & formâ in illis traditâ observatâ, inserti forent, presentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque; aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sed Sede indultum, quod interdici, suspendi, vel excommunicari non possint per literas Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

§. 11. Volumus autem quod presentium transcriptis etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo pro tempore existentis Auditoris causarum confidencialium hujusmodi, vel alterius personæ in dignitate Ecclesiastica constituta munitis, in iudicio & extrâ, ubique plena & indubia, eademque prorsus fides adhibeatur, quæ ipsis presentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensæ. Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo octuagesimo sexto, Calen. Novembris Pontificatus nostri Anno secundo.

Die 7. mensis Januarii 1587. presentes literæ in Camera Apostolica presentate, & per Reverendissimum Faventinum dictæ Camera Clericum, & Judicem ex decreto ipsius Cameræ specialiter deputatum, citate prius R. P. D. Geoffredo Lomellino ejusdem Cameræ Commissario generali admissa, & in libris Cameræ registrata fuerunt.

Montis Alti Oppidi in Provincia Marchiæ, in Civitatem Sublimati. Ejusque Collegiati Ecclesiæ in Cathedrali & Episcopali erectio.

Pro hujus Civitatis, aliorumque locorum dictæ Provincia Scholaribus, Collegium in Civitate Bononiæ instituit idem Pont. ut infra in ejus const. 89. Inter.

SIXTUS PAPA V.

Ad perpetuam rei memoriam.

Super universas Orbis Ecclesias, eo disponente qui cunctis imperat, & cui omnia obediunt, meritis licet insufficientibus constituti, levamus in circuitu agri Dominici oculos nostræ mentis, more pervigilis pastoris inspecturi, quid Ecclesiarum ipsarum præsertim Cathedralium statui & decori congruat, & quid operis circa illas eorumque statum prosperum & felicem impendi debeat, & divino fulti prasidio quo cuncta & æqua benignitate pro populorum suorum fidelium salute disponantur, ad ea quæ statui Ecclesiarum hujusmodi congruant, nostri officii partes, salubriter & utiliter intendere curamus, prout in Domino conspiciamus expedire.

§. 1. Sanè cupientes Terram Montis Alti, Ripariæ diocesis, quæ felicem nostris dedit ortum natalibus, ut in celeberrimo & eminenti loco sita, & muris undique cincta est, & in qua sæcu-

Fides transcriptorum & sanctio poenalis.

Dat. P. An. 2. 1. Novemb.



Admissio & registratio in Camera Apostolica.

XLVIII.

Edita An. D. 1586.

Causa hujus Ereccionis.

Montis Alti Oppidi, in multis commendatio, & separatio Montis Alti

laris,

Sec. à Diece-
si Asculana,
Firman. &
Ripana.

laris, & Collegiata Ecclesia Sanctæ MARIE ad Col-
lem eleganter constructa, & duas dignitates, &
decem Canonicatus & totidem Præbendas, ac Sa-
cramentum aliâque ad cultum divinum necessaria ha-
bens, & duæ aliæ Ecclesiæ, unâ scilicet Sancti
Georgii & Sancti Petri, & alia Oratorium nun-
cupata Sancti Nicolai, in qua Confraternitas sub
invocatione Sanctissimi Sacramenti canonicè insti-
tuta reperitur, necnon domus circiter trecentæ
nobiliter ædificatæ, ac plateæ lateribus strætæ exi-
stunt, ac singula quaque quarta Feria cujusslibet
Hebdomadæ emporium, ad quod ex omnibus
locis circumvicinis fit magnus concursus, celebra-
tur, & ex qua denique viri, & in Theologia,
ac Jure, & Medicina aliisque scientiis excellentes
prodierunt, ac Secularem ac Collegiatam Ecclesiam
hujusmodi dignioribus titulis & nominibus deco-
rare, habita super his cum Fratribus nostris ma-
tura deliberatione, & de illorum consilio, ad
Omnipotentis Dei laudem & gloriam, ac ejusdem
Beatæ MARIE honorem, ac Christianissimum de-
votionis augmentum, prædictam Montis Alti &
Portulæ, ac Patrigonius, necnon Montis de No-
ven. & Rotellæ ac Furiæ à dicta Ripan. necnon
Montis Elpari, Communitatæ, ac Montis Mo-
nachii à Firmana, & denique Castagnoni Terras,
seu loca aut Cæstra eorundem omnium Territoria
as Asculana Diececisi, quibus in spiritualibus
subiectæ sunt, Apostolica auctoritate, tenore præ-
sentium perpetuò separamus, & dismembramus,
illâque & eorum incolas, & habitatores, Ecclesia-
rum Rectores, Beneficiatos, Priores, & alia inibi
Beneficia Ecclesiastica obtinentes, ac Monasteria
& domos Fratrum, aliâque pia loca ab omni jurisdic-
tione, potestate, & subiectione Venerabilium
Fratrum nostrorum Ripan. Firman. & Asculan.
Episcoporum, nunc & pro tempore existentium,
necnon solutione decimarum eisdem Episcopis
per eas debitum, ac de cætero facien. perpetuò
eximimus & liberamus.

Erectio in
Civitatem &
Epif. opa-
tum.

§. 2. Necnon Terram Montis Alti in Civita-
tem, & Secularem Collegiatam Ecclesiam hujus-
modi, in Cathedralē sub invocatione eadem
ejusdem Beatæ MARIE Virginis pro uno Epi-
scopo Montis Alti nuncupando, qui jurisdictionem
Episcopalem habeat, & exerceat in spiri-
tualibus, cum mensa Episcopali, arca, sigillo,
aliisque insignibus, honoribus, & privilegiis,
quibus alii Episcopi de jure vel consuetudine,
aut aliâ quomodolibet in eisdem spiritualibus,
utuntur, potiuntur & gaudent, ac uti, potiri,
& gaudere quomodolibet poterunt in futurum,
de simili consilio, auctoritate & tenore præmissis
erigimus, & instituimus. Ac Civitatem & Ca-
thedralem Ecclesiam, sic erectas, & institutas,
necnon Episcopum Montis Alti pro tempore exi-
stentem, ac ipsius Ecclesiæ Montis Alti Capitulum,
Sedi Apostolicæ immediatè subijcimus, & sub pro-
tectione Beatorum Petri, & Pauli Apostolorum
subijcimus.

Dote pro
Episcopo as-
signatio.

§. 3. Eidemque Ecclesiæ sic in Cathedralē in-
stitutæ pro sua, seu mensæ suæ Episcopalis do-
tente, Monasterium Beatæ MARIE de Monte San-
cto Ordinis Sancti Benedicti dictæ Asculan. Diece-
cisi, certo quomodo haberi volumus pro expresse mo-
do vacan. similiter perpetuò unum, anneximus,
& incorporamus, ac Silvam seu Tenutam Bonetti-
ni concedimus, necnon Terras, & Territoria
pro Diececisi Montis Alti, illorum verò, necnon
dictæ Civitatis Montis Alti Ecclesiæ, personas pro
Clero, & habitatores pro populo, etiam perpetuò
assignamus, ut eos quoad superioritatem & jura
Episcopalia Montis Alti subesse, & tamquam mem-
bra capiti obsequentes de juribus Episcopalibus
respondere volumus.

Decretum
irritans.

§. 4. Decernentes ex nunc irritum & inane si

secus super his à quoquam quavis auctoritate
scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 5. Non obstantibus nostris de unione com-
mittendis ad partes, vocatis quorum interest, &
exprimen. vero valore, & de non tollen. jure qua-
sito, ac Lateranen. Concilii novissimè celebrati
unionis perpetuas, nisi in casibus à jure permis-
sis fieri prohibentis, ac aliis constitutionibus &
ordinationibus Apostolicis, necnon Ripan. Fir-
man. & Asculan. Ecclesiarum, juramento, &
confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate
alia roboratis, statutis & consuetudinibus; pri-
vilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis,
illarumque Præfultibus, Capitulis, & personis,
sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum
quibuscumque clausulis & decretis, etiam Motu pro-
prio, & consistorialiter, ac aliâ quomodolibet
in contrarium concessis, approbatis, & innova-
tis, quibus omnibus etiam de illis, eorundemque
tenoribus specialis, specifica, expressa &
individua, non autem per clausulas generales
idem importantes, mentio seu quavis aliâ ex-
pressio habenda foret, illarum tenores præsen-
tibus pro expressis habentes, illis aliâ in suo ro-
bore permanens, hac vice dumtaxat specialiter
& expresse derogamus, cæterisque contrariis qui-
buscunque. Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno
Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo
octuagesimo sexto, 8. Calen. Decemb. Pontifi-
catus nostri Anno 2.

S. Severini Oppidi in Provincia Piceni in Civita-
tem Sublimatio, ejusque Collegiatæ Ecclesiæ in
Cathedralem & Episcopalem Erectio.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

Superna dispositione, cujus inscrutabili Provi-
dentia incrementum suscipiunt universa, pro
Sedis Apostolicæ excellenti præminencia, dignum
arbitramur in irriguo militantis Ecclesiæ agro no-
vas Episcopales Sedes, & Ecclesias plantare, ut
per hujusmodi novam plantationem, singulorum
Christianissimum augeatur devotio, divinus cultus
effloreat, & animarum salus subsequatur, humi-
liâque loca dignioribus & eminentioribus titulis,
ac condignis favoribus illustretur, ut propaga-
tione novæ Sedis, honoratque Præfultis assistentia
& regimine, cum Apostolicæ potestatis ampli-
tudine, ac orthodoxæ fidei profectû & exaltatio-
ne, ipsi Christianissimos æternæ felicitatis præmium,
nostri Redemptoris inæstimabili charitate media
valeant adipisci.

§. 1. Sanè cum Oppidum Sancti Severini in
Agro Piceno Camerinenfis Diececisi inter cætera
partium illarum Oppida satis insignis ac percelebre,
necnon benedicente Domino habitatorum, ac inco-
larum multitudinem referunt existat, ac dilecti filii
illius Universitas & homines, pro eorum ac Op-
pidi hujusmodi, necnon ejus Cleri singulorumque
habitatorum, & incolarum prædictorum decore,
& amplitudine, ac divini cultus incremento & ani-
marum salute, Oppidum ipsum Civitatis nomine,
& Cathedralis Ecclesiæ honore decorari summope-
rè desiderent, iidemque Universitas & homines,
pro Secularis & Collegiatæ Ecclesiæ dicti Oppidi,
in qua una Dignitas, quæ inibi Principalis digni-
tas existit, Prioratus nuncupata, ac sex Canonici-
carus, & totidem Præbendæ fore noscuntur, si in
Cathedralem Ecclesiam erigeretur, mensæ Episco-
palis dote, redditum annuum seu censum mille scu-
torum monetæ illarum partium, decem filijs pro

Clausulæ de-
rogatorie
& fa. c. tio
pœnalis.

Dat. P. An. 2.
dic 24. Nov.

XLIX.

Edita An. D.
1586.

Causa hujus
Erectionis.

Oppidi S. Se-
verini com-
mendatio.

quolibet scuto huiusmodi computatis, super Molendiis eiusdem Oppidi, ad ipsos Universitatem & Homines legitimè spectantibus, assignare parati sint.

Separatio d.
Oppidi à
dioc. Came-
rinen.

§. 2. Nos pium & salutare Universitatis & hominum propositum & desiderium huiusmodi volentes amplecti, illique favere, ac cultum divinum augere, & spirituali animarum profectui huiusmodi, quem exinde speramus provenire, salubriter promovere intendentes, ipsosque Universitatem & Homines, ac eorum singulos à quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum presentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, matura super his cum Fratribus nostris deliberatione præhabita, necnon Universitate & Hominibus præfatis, nobis super hoc humiliter supplicantibus, de eorumdem Fratrum consilio, & Apostolica potestatis plenitudine, ad Omnipotentis Dei laudem & gloriam, ac Gloriosissimæ ejus Genitricis Virginis MARIE, totiusque Curie celestis honorem, ac fidei Catholice exaltationem, & habitatorum ac incolarum prædictorum animarum salutem, Oppidum præfatum cum illius Comitatu & Territorio, necnon omnibus & singulis Castris, Villis, locis, terminis, districtibus ac Clero, Personis, Ecclesiis, Monasteriis, Prioratibus, Præposituris, Præpositatibus, & aliis piis locis, ac Beneficiis Ecclesiasticis, cum cura & sine cura, Sæcularibus & Ordinum quorumcumque Regularibus, à Diocesi Camerinenſi prædicta Apostolica auctoritate perpetuò separamus & dismembramus, ac ab omni jurisdictione, superioritate, correctione, visitatione, dominio & potestate Venerabilis Fratris nostri moderni & pro tempore existentis Camerinenſis Episcopi, ac dilectorum filiorum Capituli Ecclesiæ Camerinenſis eorumque Vicariorum & Officialium, ac quorumcumque aliorum; necnon à solutione quorumvis jurium, Episcopo & Capitulo huiusmodi per Oppidi, ac singulorum Castrorum, Villarum, locorum huiusmodi habitatores, & incolas, ac Clerum, Personas, Ecclesias, Monasteria, & alia Beneficia huiusmodi, ratione jurisdictionis, & superioritatis prædictarum respective debitorum, dicta auctoritate, ac de simili Consilio, etiam perpetuò penitus eximimus, & totaliter liberamus.

Oppidi S. Severini in Civitatem sublimatio ejusque Collegiæ Ecclesiæ in Episcopalem erectio.

§. 3. Necnon Oppidum Sancti Severini præfatum in Civitatem Sancti Severini nuncupandam, ac in ea Cathedrali Ecclesiæ pro uno Episcopo Sancti Severini etiam nuncupando, qui ipsi Ecclesiæ Sancti Severini præsideat, ac in illa & Civitate prædicta, ipsique Ecclesiæ, Sancti Severini assignanda Diocesi omnia & singula, quæ Ordinis & Jurisdictionis, ac cujuscumque alterius muneris Episcopalis sunt exerceat, cum sede & mensa, aliisque insigniis, ac jurisdictionibus Episcopalibus, necnon privilegiis, immunitatibus & gratiis, quibus aliæ Cathedrales Ecclesiæ, & earum Præfules, de jure vel consuetudine, aut aliis quomodolibet utuntur, potiuntur, & gaudent, ac uti, potiri & gaudere poterunt, quomodolibet in futurum, de pari consilio, eadem auctoritate similiter perpetuò erigimus & instituiamus.

Diocesis designatio.

§. 4. Ac Oppidum Civitatis, & Ecclesiæ Cathedralis, necnon Comitatum Sancti Severini huiusmodi ac illius Territorium universum Diocesis; incolas verò & habitatores præfatos, civium nomine & honore decoramus; eidemque sic erectæ Ecclesiæ Sancti Severini Oppidum præfatum, ut præfertur in Civitatem erectum, pro Civitate & universum Comitatum, ac illius Territorium huius-

modi, cum omnibus illius Castris, Villis, locis & districtibus per eisdem Universitates & homines specificandis & statuendis, pro Diocesi ipsarum Civitatis, & Diocesis Sancti Severini, Ecclesias, & habitatores pro Clero & populo concedimus & assignamus.

§. 5. Necnon dictæ Ecclesiæ Sancti Severini mensæ Episcopali, pro illius dote redditum annuum, seu censum mille scutorum huiusmodi, per ipsos Universitatem & Homines, ut præfertur assignandum, ex nunc prout ex tunc, & è contrà, postquam assignatus fuerit, pariter perpetuò applicamus & appropriamus, ac Sancti Severini, aliisque ejusdem Comitatus, Oppidi & Comitatum ipsium, singulaque illius Castra, Villas, Loca, Territorium, Clerum & Populum huiusmodi eidem Episcopo Sancti Severini, qui pro tempore fuerit, quoad omnem ordinariam jurisdictionem & superioritatem perpetuò subicimus.

Dotis seu annui redditus scutorum mille pro Episcopo assignatio.

§. 6. Et insuper Capitulo, Clero, Civitati, & Diocesi Sancti Severini huiusmodi, ipsarumque Civitatis & Diocesis incolis & habitatoribus, ac eorum singulis, ut omnibus & etiam singulis privilegiis, exemptionibus, libertatibus, immunitatibus, gratiis, favoribus & indultis, quibus aliarum Ecclesiarum Cathedralium Capitula, aliæque Civitates & Dioceses, ac eorum Clerus, incolæ, & habitatores utuntur, & potiuntur & gaudent, ac uti, potiri & gaudere quomodolibet poterunt in futurum, uti, potiri & gaudere libere & licite valeant, auctoritate prædicta indulgemus.

Privilegium concessio.

§. 7. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, cæterisque contrariis quibuscumque.

Clausula de rogatoria.

Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo octuagesimo sexto, sexto Calendis Decembris Pontificatus nostris Anno secundo.

Dat. P. An. 2 die 26. Nov.

De Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalium creatorum præstantia, numero, ordine, ætate, & qualitatibus, & de optione sex Cathedralium Ecclesiarum, quæ Cardinalibus conferuntur.

L.

Quoad Ordinem prædictum vide etiam supra const. 1. Eug. IV. fol. 319. Tom. 1. Et quoad qualitates eorumdem inspicere const. 7. Leon. X. fol. 543. necnon Conc. Trid. sess. 25, c. 1. & hic infra const. 55. Religiosa. Circa dignitatem eorum Decani extat Bulla 5. Pauli IV. Tom. 1. fol. 822. Prout circa dignitatis Cardinalitæ præstantiam extat Bulla 15. Eug. IV. fol. 332. De prohibitione promovendi duos fratres, habemus sanctionem 22. Jul. III. fol. 812. De Cardinalium libris habemus const. 8. Paul. IV. fol. 824. in dicto Tomo I. Prout de eorum indultis, videnda est infra const. 58. Paul. V. Sanctissimus. & alia ibi indicanda, in Tomo 3. Ac contra eos offendentes, edixit Pius V. constit. 93. Infelices. fol. 314. Et pariter contra excommunicatos facientes super personis promovendis ad Cardinalatum, edixit Greg. XIV. const. 4. Cogit. Et insuper hic Pont. declaravit quæ beneficia & Ecclesiæ vacent per promotionem ad Cardinalatum hic infra in constit. 79. Sanctissimi. Ac postmodò Greg. XIV. infra in const. 9. Sanctissimus. Usus Bireti rubri concessit Cardinalibus ex Ordinibus Regularium assumptis.

SIXTUS EPISCOPUS, Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D. 1586.

Postquam verus ille atque æternus Pastor & Episcopus animarum Christus Dominus ad gubernandam universalem Ecclesiam, quam suo pretioso

Pontifex ejus verus Christi Vicarius, & Cardinales

sanguine

1586.
postolo-
rum per-
repre-
sant, &
Pontifi-
s Consi-
lii & Co-
ordi-
nato-
re. Et
o exal-
tatione
Catho-
licae Reli-
gionis
sangui-
nem & spi-
ritum effu-
sionem de-
bent.

Consonat
pontif. 15.
genit. IV.
l. 33a.
om. 1.

sanguine acquisivit, Apostolorum Principi Beato Petro, Cœlestis simul ac terrene tradidit plenitudinem potestatis, eique suas in Terris vices commisit, sicut in Cathedra ipsius Petri Successor, & vtrius Christi Vicarius Romanus Pontifex Divina Præordinatione, ejusdem supremæ Apostolicæ Dignitatis fastigium, & locum in Terris tenet, ita etiam Sacrosanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales representantes Personas Sanctorum Apostolorum, dum Christo Salvatori, Regnum Dei prædicanti, atque Humanæ Saluti mysterium operanti ministrarent, eidem Pontifici, in executione Sacerdotalis Officii, & in dirigenda ipsa Ecclesia Catholica, cui præest, Consilium & Coadjutores assistunt, quasi oculi & aures, ac Nobilissimæ Sacri Capituli partes, & præcipua illius membra à Spiritu Sancto constituta, qui in hac ipsa Ecclesiastica Hierarchia Divina Dispositione, instar illius Cœlestis, cui ex altera parte respondet, ordinata, ad altissimum Gradum, cum ipso Romano Pontifice, communi Patre ac Pastore, ad quem ex omnibus undique Gentibus ac Nationibus, in gravissimis, maximèque arduis rebus fideles omnium Generum, omnium Ordinum, summi, infimi quotidie confluent, tanti ponderis molem, atque onus populorum sustineant, & pro animarum Salute, pro Fide, pro Justitia, pro Unitate assidue invigilent, ac laborent, qui circa ipsum universali Ecclesiæ serviendo, singularum Ecclesiarum commoditatibus se impendant, quorum consilio idem Pontifex agenda disponat, quorum opera & necessaria, & plurimum fructuosa universæ Reipublicæ Christianæ in secundis rebus ornamento & commodo, in dubiis præsidio & adiumento esse possit. Qui denique pro exaltatione Catholice Religionis, pro pace & quiete Christiani populi, pro augmento & honore Sanctæ Sedis Apostolicæ sanguinem, si ita res ferat, & Spiritum constanter effundant.

ontifex igi-
viro op-
nos & le-
simos
rdinales
are debet.

ogad Car-
nalium
altates,
le que no-
hic in
on.

§. 1. Cum itaque ipsi veri cardines sint, & clarissima Ecclesiæ lumina, Templi DEI bases, firmamenta & columnæ Christianæ Reipublicæ singulari quadam pietate ac doctrina, nec vulgari, aut mediocri, sed insigni atque eximia virtute abundare debent, ut quam gerunt personam, dignè, & honorificè valeant sustinere. Ac quemadmodum præcipue sunt partes summi Romani Præsulis in iis asciscendis exquisitam adhibere diligentiam, & accurata circumspicione providere, ut Viri optimi ac lectissimi assumantur, & vel in hoc potissimum necessitati atque utilitati totius Ecclesiæ sibi commissæ consulatur, ita etiam Prælati, cæteræque Personæ Ecclesiasticæ ad tantæ dignitatis sublimitatem promovendi, anteaquæ vitæ laude, atque excellenti quadam, & rara meritum commendatione præ cæteris fulgeant, necesse est, ut hoc amplissimo honore digni habeantur; siquidem eorum vita ac mores cæteris exemplo esse debent, verba & responsa pro oraculis, monita ac præcepta ab universis Christianis regulæ & norma rectè vivendi, rectèque sentiendi existantur, ab iis, quasi sapientissimis Magistris Ecclesiasticæ disciplinæ forma suscipitur, quæ ad mores, vitæque cætorum fidelium componendos longè latèque diffusa propagetur. Ipse denique verè sunt sal terræ, ac lucernæ positi super candelabrum, ut inter sanguinem & sanguinem, causam & causam, lepram & lepram discernant, ac doctrinæ opportunitate & veritate, infirma confirmant, disrupta consolidant, depravata convertant, luceant omnibus, qui in Domo Domini habitant, ac primæ huic Sedi assistentes cunctos Pastores, dum in gravioribus negotiis eandem Sedem consulunt, ejusve opem implorant, suo judicio, consilio & auctoritate instruere, dirigere, ac docere non cessent. Cæterum, cum non solum ad eos spectet plurima & maxima momenti negotia & causas, quæ eis

in dies committuntur, præclara fide & prudentia cognoscere, ac Legationibus in Provinciis gubernandis, & in gravioribus rebus, sæpius ad Reges & Imperatores perfungi.

§. 2. Sed, quod omnium caput & summa est, ex eorum corpore, numero, & collegio, ille ipse, qui cunctis Pastoribus est præficiendus, ac totius Dominici Gregis curam habiturus, Summus Pontifex deligatur, iidemque illum suis suffragiis creent, qui tunc demum publico bono Christiani populi, optimus sine ulla dubitatione existeret, si è numero & suffragiis bonorum deligetur, in hac sacra electione consensu sunt veri interpretes, atque internuntii voluntatis Dei, cujus Spiritu sicut universum Ecclesiæ corpus sanctificatur & regitur, ita maximè hoc totum hujusmodi electionis opus ejusdem afflatu & instinctu absolvi certissimum est, atque omnibus exploratum, ut vel ex hoc ipso perspicui possit, quanta in eis requiratur puritas & sinceritas, ab omni carnis affectu, privatorum commodorum cura, & factionum studiis aliena, quorum peccata & voces, templa & organa futura sint Spiritui Sancti, & ex quibus quasi seminibus is sit proditorus, in quem totius Apostolicæ potestatis plenitudo, Deo annuente, meritò conferatur.

§. 3. Quapropter, ut tanti muneris amplitudo ea qua decet obervantia & admiratione apud cunctos mortales honoretur, & in quos obcellitudinem gradus, omnium oculi, omnium ora convertuntur, in eis summæ dignitati præclaritas & splendor luceat, atque in eis glorificetur Deus, honorificetur Sacerdotale Ministerium, & Animæ Fidelium lætificentur, certè sacris amplissimis hujus honoris insignibus id demum decorandi videntur, qui eximia eruditione, innocentia ac sanctitate, & omni virtutum genere à vero solidorum bonorum largitore Deo supra cæteros fuerint illustrati. Proinde nos, postquam placuit Divinæ Bonitati imbecillitatem nostram ad summi Apostolatus apicem vocare, inter cæteras, quas pro bono universalis Ecclesiæ, his maximè turbulentis temporibus, dies, noctesque suscipimus curas & cogitationes, hanc ipsam Pontificia nostra sollicitudine dignissimam judicavimus, ut ad communem salutem, & profectum Christiani Populi, nostræ curæ crediti, ac ad ipsius Sanctæ Romanæ Ecclesiæ decus & ornamentum, circa Cardinalium electionem atque assumptionem, tam à Prædecessoribus nostris, quam à nobis hæcenus editas sanctiones & decreta expendere; in quibus licet pleræque salubriter ac prudenter disposita & ordinata fuerint, quia tamen res humanæ facili in deterius prolabantur, nisi sit, qui eas assidue renovet, atque conservet, easdem illas sanctiones & Decreta partim innovando, partim declarando, partim pro rerum & temporum exigentia suppleto, & in melius reformando, habita super his cum Venerabilibus Fratribus nostris, ejusdem Sacræ Romanæ Ecclesiæ Cardinalibus deliberatione matura, de eorumdem Fratrum consilio & unanimi consensu, hanc nostram perpetuè validam Constitutionem duximus promulgandam, qua & nosmetipsos in re tam gravi nostri munus admonemus, & quam nobis legem imponimus, eandem nostris Successoribus indicamus, quos & sui Officii non immemores fore confidimus, & se aliquando in districto ac tremendo DEI Judicio suæ villicationis rationem esse reddituros, Apostolo dicente: Omnes stabimus ante Tribunal Christi, & unusquisque nostrum pro se rationem reddet Deo.

§. 4. Primum igitur, cum ita exposcente rerum ac temporum qualitate & occasione recep-

Præsertim
quia ex Col-
legio Car-
dinalium
creandus
est summus
Pontifex.

Ideo hanc
desuper edi-
dit Constitutio-
nem vide-
licet.

Cardinales
non sint plu-
res quam

septuaginta
& electio
promoven-
dorum ultra
hunc nume-
rum nulla sit.

si fuerit à veteri illo more admodum paucos vi-
ros in sacrum Collegium adscribendi, jamque plu-
res nostra ætate Cardinales quam antiquis in
ipsum Collegium cooptari consueverint, tùm ut
juxta generalis Concilii Tridentini decretum om-
nium Christianitatis Nationum ratio habeatur,
tùm quia in eodem Collegio multi, quæ est hu-
mani corporis infirmitas, senectute vel morbis
frequenter gravati, haud commodè tantò oneri
assidue sustinendo sufficere queunt, ut in hoc
moderatio congrua adhibeatur, & certi limites
præcipientur, ne vel ad veterem illam paucita-
tem eos redigamus, vel rursus eorum honor ni-
mia ac superflua numerositate vilescat, quod inter-
dum & nos ipsi dùm in minoribus essemus, vidi-
mùs & experti sumus. Ac ut veteris Synagagæ fi-
gura sanctæ & Apostolicæ Ecclesiæ veritati respon-
deat, sequi cupientes mandatum Domini factum
ad Moysen, de congregandis septuaginta viris de
Senibus Israel, quos nosset Senes populi esse
& Magistros, ut secum onus populi sustenta-
rent, & non ipse solus gravaretur, super quos ad
ostium tabernaculi ductos, loquente Domino,
Spiritus, requievit, de pia dîctorum Fratrum no-
strorum consilio, perpetuò statuimus & ordina-
mus, ut in posterum connumeratis omnibus cu-
jusque ordinis Episcopis, Presbyteris & Diaconis
Cardinalibus, qui nunc sunt, quique in futurum
creabuntur, cuncti simul numerum septuaginta
nullo umquam tempore excedant, ac talis nume-
rus quovis prætextu, occasione, vel causa etiam
urgentissima, minimè augeatur. Quòd si unum vel
plures à nobis vel pro tempore existente Romano
Pontifice in futurum ultra dictum numerum eligi
in Cardinalem, aut creati aut pronuntiari conti-
gerit, decernimus hujusmodi electionem, crea-
tionem & pronuntiationem nullam, irritam & in-
ane fore, & censendam esse, nullumque jus seu
titulum re aut nomine sic electi seu electis acquiri,
neque eorum quemquam pro Cardinali haberi aut
reputari posse aut debere, neque dictam electio-
nem, creationem, pronuntiationem ab initio in-
validam & ultra numerum factam si postea ad præ-
scriptum numerum moriente uno vel pluribus Car-
dinalibus ipsum Collegium redigatur, propterea
ex post facto convalescere, sed ut à principio sic
deinceps in perpetuum nullius fore roboris vel
momenti.

Siquæ ex
eis Episco-
pi sex, Pres-
byteri 30. &
Diaconi 14.

§. 5. Quoniam verò jam inde ab antiquissimis
etiam Apostolorum temporibus Diaconorum ordo
ad inserviendum & ministrandum in Ecclesia Dei
ex magna providentia dignoscitur institutus, &
pro temporum varietate modò major, modò
minor numerus esse consuevit, ita ut aliquando
septem, interdum quatuordecim, quandoque ve-
rò decem & octo Diaconi fuerint, & tamen hoc
tempore tùm propter eorum parvum numerum,
tùm propter aliquorum absentiam à Romana Cu-
ria, adeò pauci reperiuntur, ut eorum officio
satisfacere nequeant, immò sæpius Presbyteri Car-
dinales loco Diaconorum, contrà Patrum insti-
tuta Pontifici assistere & ministrare cogantur. Id-
circo statuimus, ut ex prædicto numero Car-
dinalium, Diaconi quatuordecim, reliqui omnes
præter sex Episcopos, Presbyteri sint & esse de-
beant.

Diaconi Car-
dinales non
sint minores
anno 22. &
infra annum
ad Ordinem
Diaconatus
promoveri
debent, aliis
voce careant
activa & pas-
siva.

§. 6. Neque posthac quispiam in Diaconum
Cardinalem assumi possit, nisi saltem in vigesimo
secundo suæ ætatis anno fuerit constitutus, ità ut
omniò intra annum ad sacrum Diaconatus ordi-
nem valeat & debeat promoveri, alioquin si anno
elapso ad ipsum Diaconatus ordinem promotus
non fuerit, eo ipso tam in consistorialibus, &
omnibus aliis actibus, & negotiis Cardinalitatis,
quam etiam juxta constitutionem felicis recorda-
tionis Pii Papæ Quarti Prædecessoris nostri su-
per reformatione Conclavis editam, in electione

Romani Pontificis voce activà & passivà omnino
careat, ac privatus existat.

§. 7. Diaconorum autem numerus sic præfinitus
perpetuò retineatur, ac Diaconi in eodem Or-
dine semper remaneant, & si qui eorum ex devotio-
nis fervore ad Presbyteratus ordinem promoti fue-
rint, semper tamen in eodem Diaconatus ordine &
officio ministrent, & suum locum inter Diaconos
Cardinales teneant, donec ex Cardinalibus de novo
creandis five eligendis, alii Diaconi prædictum nu-
merum suppleant, & in eorum locum subrogentur
ac substituantur. Quo casu antiquiores Diaconi ad
Presbyteratus ordinem promoti, ad Presbyteros
Cardinales transire atque inter eos sedere valeant
& connumerari.

§. 8. Ut verò Diaconos Cardinales, qui in sua
vocatione permanerint, & in Ministerio ordinis sui
perseveraverint, majoribus honoribus prosequa-
mur, volumus ut cum aliquam ex sex Cathedralibus
Ecclesiis, quibus Episcopi Cardinales præfunt, pri-
mo, secundo, & tertio per obitum vel translatio-
nem, aut aliàs pro tempore vacare contigerit, an-
tior quidem Presbyter Cardinalis præfens, salvo
cuique Episcopo Cardinali jure transeundi ad eam,
dimissa priore cui præerat, ut moris est, promovea-
tur, sed ubi post tres vacationes, tres itidem ex ip-
sis Presbyteris Cardinalibus in Episcopos præfecti
fuerint, tunc si quarta aliquis horum Ecclesiarum
vacatio contigerit, excluso, ea tantum vice, anti-
quiore Presbytero, prior Diaconorum Cardina-
lium qui præfens fuerit, & in ætate legitima consti-
tutus, vel si ille noluerit, aut nequiverit assumi, se-
quens Diaconus eisdem qualitatibus præditus, ad
eam promoveatur, & ità deinceps in hujusmodi va-
cationibus sex Ecclesiarum prædictarum perpetuò
observetur, ut post tres Presbyterorum ad dictas
Ecclesias promotiones, quarta occurrente vaca-
tione, prior Diaconorum aut sequens, ut præ-
fertur, in Episcopum præficiatur.

§. 9. Inter hos septuaginta Cardinales, præ-
ter egregios utriusque Juris aut Decretorum Do-
ctores, non desint aliquot insignes viri in sa-
cra Theologia Magistri præsertim ex Regulari-
bus, & Mendicantium Ordinibus assumendi, sal-
tem quatuor, non tamen pauciores.

§. 10. Antiquum verò Clementis, Anacle-
ti, Evaristi, Alexandri & aliorum Sanctorum
Pontificum Prædecessorum nostrorum morem,
per sexcentos & amplius annos continuata se-
rie observatum sequi volentes, ac decretum aliàs
per nos in nostro Consistorio edium innovan-
tes, perpetuò sancimus tempus creandorum Car-
dinalium, seu promotionis ad Cardinalatus ho-
norem faciendæ, mensè Decembris duntaxat in
ipsis temporibus seu diebus jejuniarum, & non
aliis esse debere.

§. 11. Ut autem ipsi Cardinales in regimi-
ne universalis Ecclesiæ nobis, & pro tempore
existenti Romano Pontifici utiliter assistere va-
leant, ac de omnibus Christianorum Regnorum
Provinciarumque moribus, rebus & negotiis
promptè & fideliter certa ab eis notitia, pro re-
rum emergentium opportunitate habeatur, præ-
dicti Concilii Tridentini decreto in hærentes, sta-
tuimus, ut ex omnibus Christianitatis nationi-
bus, quantum commodè fieri poterit, idonei
assumantur.

§. 12. Præterea, qui Cardinales creandi erunt,
legitimis, & honestis sint exorti natalibus, ne-
que ulla prorsus labe, ac illegitimarum nata-
lium suspitione quovis modo laborent, sed om-
ni macula, & impuritate careant, alioquin ad
tam eminentem dignitatis gradum, penitus inhabi-
les, & illius incapaces sint, & esse censentur.

Diaconi ex
fervore de-
votionis ad
Presbyter-
atus ordi-
nem promo-
ti remaneant
inter Diaconos,
quousque ex
Cardenub
dis supple-
tur numerus
14. Diacono-
rum.

Diaconorum
prior aut se-
quentis sit,
legitimè eta-
tis, in quatuor
vacatione seu
Ecclesiarum
Episcopatu-
m, pro
moveatur ac
Ecclesiam
vacantem,
& in aliis tri-
bus vacan-
tibus vacan-
tior Pres-
byter pro-
moveatur.

Hoc declaratur hic in fine.

Inter LXX
Cardinales
præfatos as-
sumantur
saltem qua-
tuor Magis-
tri in Theo-
logia.

Creari possunt
Card. in die-
bus jejuniarum
mensis
Decembris
duntaxat.
Hoc arbitrio
Papæ serva-
tur.

Promoveantur
tuncque idonei
ex omni-
bus Nationibus
Christianitatis
quantum
commodè
fieri poterit.

Illegitimi
& per sub-
sequas ma-
trimonium
legitimati
aut super
facto nata-
lium aucto-
ritate Apo-

Dispensatio-
nem conse-
nti, ad Car-
dinalatum in-
habiles sint.

1586.

veri reque-
unt ad Car-
din.

Quocirca considerantes, quod licet tanta sit vis, & efficacia Sacramenti Matrimonii, quod Apostolo teste, Magnum est in Christo, & in Ecclesia; ut qui antea geniti erant, ex soluto, & soluta, inter quos ritè Matrimonium constare poterat, post illud contractum legitimi habeantur, in nonnullis tamen Provinciis, & Dominiis, nobilitatis privilegiis non gaudent, nec ad secularia officia, honores & dignitates, neque ad nobilium feudorum, & statuum successiones admittantur, quodque multò magis indecorum videretur, & ab Apostolica Sedis dignitate alienum, si huiusmodi illegitimi persequens Matrimonium, ut præsertim, legitimati, in Cardinales affluerentur, ac Cardinalatus celsitudo, & splendor, qui dignitati Regiæ comparatur, facile deprimi, commaculari, aut quodammodo inobscurari posset. Ideò ut puriori dignitati puriores nates respondeant quoscumque illegitimè natos, quorumvis, etiam Magnorum Principum, etiam Ducali, aut maiori, etiam Regia, & Imperiali auctoritate fulgentium filios quocumque gradu, dignitate, & præminencia præditos, etiam genitos ex soluto, & soluta, inter quos tunc Matrimonium constare poterat, ac postea per subsequens Matrimonium, etiam ritè, & solemniter in facie Ecclesiæ contractum, vel alias legitimatos, & quomodolibet habilitatos, & natalibus restitutos, ac quorumvis bonorum capaces effectos, etiam cum eis, ut hanc ipsam dignitatem obtinere valeant, super defectu natalium fuerit expressè, & in specie auctoritate Apostolica quomodolibet dispensatum, nihilominus prædictæ Cardinalatus dignitatis prorsus incapaces & ad eam obtinendam perpetuò inhabiles decernimus, ac declaramus.

Et nec illi
quoad sacros
Ordines pro-
moveri non
possunt.

§. 13. Sed & insuper prohibemus, ne ii, quos propter defectus vitæ, aut impedimenta quæcumque ad sacros Ordines secundum canonicas sanctiones promoveri fas non est, etiam cum ipsis dicta auctoritate Apostolica fuerit dispensatum, nevé alicuius criminis, aut infamiae nota respergi, in Cardinales ullo unquam tempore assumantur.

Promovendi
ad Card. do-
ctrina, vitæ
probate, &
aliis qua-
libet a ne-
cessariis re-
quisitis præ-
stare debeant.

§. 14. Cæterum, ut non solum honore, sed etiam re ipsa cardines sint, super quibus omnia universalis Ecclesiæ tutò nitantur, divinæque & humana ministeria sibi commissa utilis exequi possint, statuimus, ut lectissimi, & præcellentes viri in ipsum Collegium adscribantur, & quorum vitæ probitas, morum candor, præstans doctrina, & eruditio, eximia pietas, & erga salutem animarum ardens studium, & zelus, in dandis consiliis sincera fides & integritas, in rebus gerendis singularis prudentia, constantia, & auctoritas, & aliæ qualitates à jure requisitæ, tam ipsi Pontifici, quam universo Collegio cognitæ, & probatæ sint.

Clericali
tam chara-
cterem insigni-
& in qua-
tuor minoribus
Ordinibus consti-
tuitur, per an-
num saltem
in præsentem
Ordinem, ha-
bitum, &
consuetum
testare te-
neantur.

§. 15. Ac proinde ne homines sacrarum rerum planè imperiti, & rudes atque Ecclesiasticarum functionum ignari, quasi in Ecclesia Dei hospites, & peregrini statim huiusmodi præfati intur, juxta decretum jam pridem à nobis in prædicto Consistorio nostro sanctum, quod pariter harum serie innovamus, districtè interdiciamus, ne quis ullatenus ad Cardinalatus honorem assumi queat, nisi qui antea clericali charactere insignitus, & in quatuor minoribus Ordinibus constitutus, per annum saltem habitum, & consuetum gestaverit clericalem.

Filius
tribuslibet
exus, etiam
& legitimo
Matrimonio,
et ex eo ne-
potes habentes,
promove-

§. 16. Cum autem ad honorem adeò sublimem promovendi omni, virtutum, & præsertim castimonie laude supra cæteros plurimum eminere debeant, qui verò filios, etiam legitimos, ex uxore sua aliis dignoscitur suscepisse, certum nequeat sue testimonium continentie exhibere, & pater erga

proprius filios naturali affectu nimia quadam propensione feratur, verendumque sit ne propter variis propriæ domus negotiis, ac multiplici libero cura distractus, Ecclesiæ negotia sibi credita, aut negligenter tractet, aut minus sollicitè, & fideliter quam par est, ejusdem Ecclesiæ jura teneat, prohibemus, ne aliquis, qui utriuslibet sexus filium, seu filios, etiam ex legitimo matrimonio susceptos, vel nepotem, seu nepotes ex eis habeat, ullatenus in Cardinalem assumi, aut promoveri possit.

§. 17. Insuper, ut factionum fomitem & tumultum ansum, ex sacro hoc cœtu quantum cum Domino possumus amputemus, decretum pie memorie Julii Papæ III. Prædecessoris nostri in sacro olim Consistorio editum approbantes, & declarantes, similiter perpetuò interdiciamus, ne ullo unquam tempore assumatur, aliquis posthac in ejusdem Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalem, qui Frater ex utroque vel alterutro parente germanus existat alterius Cardinalis viventis, ita ut eodem tempore duo Fratres germani in eodem Collegio nullatenus esse possint. Quinimodè idem decretum extendentes & ampliantes, prohibemus quoque ne patruele vel amitino aut consobirino Cardinale vivente, alter ejus patrueis vel amitinus aut consobrinus ad Cardinalatum valeat promoveri.

§. 18. Sed, & pari ratione sancimus, ne Patruo aut Avunculo Cardinali vivente, ejus ex fratre vel sorore nepos, nec rursus nepote, ex fratre vel sorore Cardinali existente, illius Patruus aut Avunculus, nec ullus denique alius, qui primò aut secundo tantum consanguinitatis gradu alicui Cardinali viventi conjunctus sit, quamdiù is vixerit in Cardinalem assumi possit. Ità ut omnes, & singuli prædicti tam pater filios aut nepotes habens, quam fratres germani, patrueles, amitini, consobirini, Patruus, Avunculus, nepos ex fratre vel sorore, & quivis ut supra primo aut secundo gradu conjunctus alter altero Cardinali vivente, ad Cardinalatum inhabiles, & illius incapaces sint, & censeantur, neque eorum aliquis Cardinalis creari valeat, neque adversus hanc prohibitionem ex quacumque etiam urgentissima causa eum eis liceat dispensari. Et nihilominus electio, creatio, ac pronuntiatio Cardinalium huiusmodi contra præsentem prohibitionem, aut interdictum facta, & attentata, nulla, irrita, & inanis sit eo ipso, ac cum omnibus inde secutis nullius sit roboris vel momenti.

§. 19. Postremò attendentes proprium esse eorumdem Cardinalium munus assistere, ut præmittitur, CHRISTI in Terris Vicario, eique in regenda Ecclesia Catholica consilium & operam assidue præstare, atque cum eo Ecclesiæ necessitatibus providere, ipsosque tum ad id ex ipsius officii debito, tum ex sanctorum Patrum decretis teneri, ac propterea absurdum esse Cardinales procul ab ipso Pontifice vitam agere, & locum mansionemque suam in Ecclesia Dei adeò præcellam contra huiusmodi Officii debitum, & in suarum perniciem animarum negligere ac deferere, inhærentes decreto similiter à nobis in Consistorio nostro dudum desuper promulgato de eorumdem Fratrum consilio statuimus & ordinamus, ne quis in posterum à Romana Curia absens Cardinalis creetur, aut pronuncietur, nisi hac adjecta conditione, ut intra annum in Romanam Curiam venire, & Apostolorum limina visitare teneatur, necnon, antequam Biretum rubrum, quod à Romano Pontifice de more benedici, ac per certum Nuncium mitti solet, ei tradatur, illiusve capiti imponatur, juret in manibus personæ alicujus in dignitate Ecclesiastica constitutæ, cui id negotii datum fuerit, se intra annum à die præfati jurenti numerandum omni mora postposita, & impedimento remoto, ad Urbem, vel aliò, ubi Ro-

Frater, etiam
ex uno pa-
rente germa-
nus, vel pa-
truelis con-
sobrinus, aut
amitinus ali-
cujus Cardina-
lis viventis, Car-
din. esse non
possit.

Ta vide
etiam Jul. III.
const. 22.
Sanctissimus
suprà fol.
812.

Patruus aut
Avunculus
nepotis ex
fratre vel so-
rore Cardin.
vivente pro-
hibetur assu-
mi ad Card.
& de conver-
so patri &
Avunculi.

Absentes à
Curia ad
Cardinala-
tum promo-
vendi, crea-
ri debent ad-
jecta condi-
tione, ut in-
frà annum
Apostolo-
rum limina
visitare te-
neantur, &
ante confir-
mationem Bi-
reti rubri eis
à Pont. trans-
mittendi, id
facere jurent,
& observent,
alias Cardina-
latus hono-
re privati
censeantur.

mana Curia eo tempore fuerit, personaliter ad-
venturum, ut sistat se nobis, aut pro tempore
existenti Romano Pontifici, & Sanctæ Sedi Apo-
stolicæ cuius obsequiis erit ascriptus, & quan-
diu ipsi Pontifici visum fuerit, muneri suo in-
cumbat: aque ita de legibus, moribus, consue-
tudinibus, ac toto statu ejusdem Sedis plenè in-
struatur, atque ad Ecclesiæ seu Provinciæ, cui
foras prærit, necessitates sublevandas, abusus
rollendos, mores reformandos, Ecclesiasticam
disciplinam, siqua ex parte labefacta fuerit,
restituendam opportuna, & salutaria consilia ab
ipsius Pontificis paterna charitate, sapientia, &
vigilantia recipiat, & pro viribus exequatur.
Cujus quidem juramenti postquam per eum præ-
stitum fuerit, publicum inde instrumentum confi-
ciatur, & in forma authentica ad nos, vel nos-
tri pro tempore Successorem nulla interposita
mora transmittatur. Quod si forte id jurare re-
cuserit, volumus ut Biretum rubrum ei omni-
nò denegetur, ac nequaquam tradatur, sed ipso
facto, absque alia declaratione, vel decreto Car-
dinalatus honore privatus existat, atque habeat-
ur, in omnibus & per omnia acti nunquam in
Cardinalem assumptus, vel promotus fuisset.
Inhabilis quoque ad eandem dignitatem postea
obtinendam, & illius incapax efficiatur. Sin au-
tem juret, ac Biretum rubrum accipiat, sed ta-
men postea ad Urbem, & Romanam Curiam,
ut præfertur, intra annum à die præstiti jura-
menti non comparuerit, tunc pariter absque alia
declaratione Cardinalatus dignitate, officio, ti-
tulo, denominatione, atque omnibus, & quibus-
cumque illius insignibus, facultatibus, privile-
giis aut auctoritatibus careat eo ipso, & perpe-
tuò privatus sit, & esse censeatur, perinde ac
si nunquam inter Cardinales cooptatus fuisset,
nec Biretum rubrum accepisset. Quòd quidem
biretum post id tempus confectum deponere omni-
nò teneatur.

Decretum
irritans.

§. 20. Decernentes sic in præmissis omnibus,
& singulis per quoscumque Judices, & Commissa-
rios, etiam causarum Palatii Apostolici Audito-
res, & ipsos Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales,
in quavis causa & instantia, sublata eis, & eo-
rum cuique quavis aliter judicandi, & interpre-
tandi facultate, & auctoritate, judicari, & de-
finiri debere, necnon irritum, & inane quic-
quid secus super his à quoquam quavis aucto-
ritate, scienter vel ignoranter, contigerit at-
tentari.

Clausulæ de-
rogatoriz.

§. 21. Non obstantibus Apostolicis, ac in ge-
neralibus Conciliis editis constitutionibus, & or-
dinationibus, etiam certum alium eorumdem
Cardinalium numerum præscribentibus, aut aliàs
super præmissis disponentibus, quas omnes quan-
tenus præsentì constitutioni in aliquo adversan-
tur, illarum tenores pro plenè ac sufficienter ex-
pressis habentes, etiam si de illis specialis, speci-
fica, expressa, ac individua de verbo ad verbum,
non autem per clausulas generales idem impor-
tantes, mentio facienda esset, omninò abroga-
mus, abolemus, & annullamus, ceterisque con-
trariis quibuscumque.

Forma publ.

§. 22. Ceterum, ut præsentès literæ omnibus
innoscant, mandamus illas ad valvas Lateranen-
sis, & Principis Apostolorum de Urbe Basilica-
rum, atque Cancellariæ Apostolicæ, & in acie
campi Floræ more solito publicari, & inibi affi-
gi, & per aliquod temporis spatium dimitti, eis-
que detectis earum exempla eo in loco relinquì.
Ac volumus, ut illarum transumptis manu alicu-
jus Notarii publici subscriptis, & sigillo Prælati,
vel personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ
munitis, in judicio, & extra illud, ubi opus fue-
rit, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ ipsis ori-
ginalibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel
ostensæ.

Sanctio po-
nalis.

§. 23. Nulli ergo omninò hominum liceat hanc

paginam, &c. Si quis autem hoc attentare præ-
sumperit, indignationem Omnipotentis Dei, ac
beatorum &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno In-
carnationis Dominicæ millesimo quingentesimo
octuagesimo sexto, tertio nonas Decembris, Pon-
tificatus nostri Anno secundo.

Ego Sixtus Catholicæ Ecclesiæ
Episcopus.

*De ventre matris mee tu es Deus protector
meus.*

Ego A. Cardinalis Farnesius Vicecancellarius, Epi-
scopus Ostiensis.
Ego Jacobus Cardin. Sabellus, Episcopus Portuensis.
Ego Joannes Antonius Cardinalis S. Georgii, Epi-
scopus Tuscul.
Ego Joannes Franciscus Card. de Gambara, Epi-
scopus Praenestinus.
Ego Inn. Avalus Cardinalis de Aragonia, Epi-
scopus Sabinensis.
Ego Marcus Sitticus Cardinalis ab Altaemps.
Ego Marcus Antonius Cardinalis Columna.
Ego P. Cardinalis Sanctacrucius.
Ego Gabriel Cardinalis Paleottus.
Ego Frater Michael Bonel Cardinalis Alex.
Ego Ludovicus Cardinalis Madrutius.
Ego Nicolaus Cardinalis Senonensis tituli S. Pra-
xedis.
Ego Julius A. Sanctiorius Cardinalis Sanctæ Seve-
rinæ.
Ego Hieronymus Cardinalis Rusticutus.
Ego Joannes Hieronymus Cardinalis Albanus.
Ego Hieronymus Cardinalis Simontellus.
Ego P. Cardinalis Deza.
Ego Joannes Antonius Cardinalis Caraffa.
Ego Joannes Antonius Cardinalis Sanctorum Qua-
tuor.
Ego Joannes Baptista Cardinalis S. Marcelli.
Ego Julius Cardinalis Cananias.
Ego Antonius Cardinalis Salvatius.
Ego Augustinus Cardinalis Verona.
Ego Vincentius Cardinalis Montis regalis.
Ego Philippus Cardinalis Spinula.
Ego Georgius Card. Ravil.
Ego Scipio Card. Lancellottus.
Ego Vincentius Card. Gonzaga.
Ego Joannes Baptista Card. Castrucius Signaturæ
Justitiæ Præfect.
Ego Federicus Cardinalis Cornelius.
Ego Hippolitus de Rubeis Card. Paviæ.
Ego Decius Card. Azzolinus.
Ego Hippolitus Cardinalis Aldobrandinus, Major
Poenitentiaris.
Ego Ferdinandus Card. Medicis.
Ego Philippus Vast. Card. Camerarius.
Ego Andreas Card. Battorius.
A. Card. Montaltus.

Anno à Nativitate Domini 1586. Indictione 14.
die verò 13. mensis Dec. Pontificatus Sanctiss. D. N. D.
Sixti divina Providentia P. P. V. Anno secundo, retro-
scripta litera lecta, & publicata fuerunt, & per ali-
quod temporis spatium dimissa in portis seu valvis Ba-
siliarum S. Joannis Lateranensis, & S. Petri Prin-
cipis Apostolorum de Urbe, necnon Cancellariæ Apo-
stolicæ & acie Campi Floræ, per nos Jo. Freyle, &
Octavianum Taglietum S. D. N. Papa Curs.
Alex. Parabianus Mag. Curs.

Sequitur declaratio dictæ constitutionis.

§. 24. Sanctissimus D. N. dixit, quòd cum in
constitutione, seu Bulla Sanctitatis suæ
aliàs super creatione S. R. E. Cardinalium, edita, vo-
lens Diaconos Cardinales, qui in sua vocatione per-
māserint, & in ministerio sui ordinis perseveraverint,

majoribus

Dat. P. An.
die 3. Dec.

Papæ sub-

Cardina-
lium sub-
scriptions

Publicatio

Edita An. D.
1589.
Enarratio
dictæ Bullæ
in parte hi
declaranda.

majoribus honoribus prosequi, inter alia statuerit, ut post tres vacationes sex Ecclesiarum Cathedralium, quibus Episcopi Cardinales præsunt, quarta vacatione aliquis ex eis occurrere, prior Diaconorum Cardinalium, qui præsens fuerit, & in etate legitima constitutus, vel si ille noluisse, aut nequissimè assumi, sequens Diaconus eisdem qualitatibus præditus, ad Ecclesiam huiusmodi Cathedrali, ut præfetur vacantem promoveretur, & ita deinceps servaretur, prout in eadem constitutione plenius continetur.

§. 25. Agnoscentque idem Sanctissimus Dominus Noster mentis suæ in ea constitutione fuisse, non ut novus, vel forte paucos ante annos creatus Diaconus Cardinalis, ad aliquem ex dictis Episcopis, seu Ecclesiis quibus seniores Presbyteri Cardinales præfati solent promoveretur, sed qui diu in suo ordine, & vocatione (ut verba ejusdem constitutionis, aperte demonstrant) permanisset, & in ministerio sui ordinis perseveraverit, is tali Ecclesie præficiatur, ac providere cupiens, ne forte in futuro dubitari contingat, de quanti temporis cursu perseverantia illa in Diaconatus ordine, & in ministerio intelligatur.

§. 26. Eadem Sanctitas Sua, in eodem Constituto suo secreto habito prædicta die, de Venerabilium Fratrum suorum Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalium unanimi consilio, & assensu, sua Apostolica auctoritate declaravit, & decrevit, ut prior Diaconorum Cardinalium, seu alius, siue immediatè, seu successivè sequens Diaconus Cardinalis, quarta occurrente vacatione, ut præmittitur ad dictam Ecclesiam seu Episcopatum ex sex prædictis vacantem assumi, seu promoveri possit, exigi, & requiri debere, ut integros annos saltem decem, & non pauciores in suo Diaconatus ordine permanisset, & in illius ministerio perseveraverit, etiam si numerus 14. Diaconorum Cardinalium non sit expletus, dummodò ad minus decem Diaconi tunc existant, prout declarat, & decrevit.

§. 27. Ac sic in præmissis &c. per quoscunque &c. etiam ipsos Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales &c. sublata eis &c. aliter iudicandi & interpretandi facultate, & auctoritate, iudicari, & definiti debere, necnon irritum, & inane quicquid secus &c. contingerit attentari similiter decrevit.

Actum Romæ apud Sanctum Petrum, die Mercurii 15. Novembris millesimo quingentesimo octuagesimo sexto. In Constituto secreto.

Tolentini Oppidi in Provincia Picena, in Civitatem sublimatio, ejusque Collegiatæ Ecclesiæ in Episcopalem Erectio.

Ex hac Civitate prodijt Sanctus Nicolaus Tolentinus nuncupatus, de cujus canonizatione, & festivitate videre est in Eugenii IV. constitutione 27. Licet militans. fol. 353.

SIXTUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Super universas Orbis Ecclesias, eo disponente qui cunctis imperat, & cui omnia obediunt, quamquam sine nostris meritis constituti, levamus in circuitu agri Domini oculos nostræ mentis, more pervigili pastoris inspecturi, quid provinciarum, & locorum quorumlibet statui congruat, ac desuper disponi debeat; Undè divino fultis præsidio, dignum, quin potius debitum arbitramur, in irriguo militantis Ecclesiæ agro, novas Episcopales sedes, & Ecclesias plantare, ut per huiusmodi novas plantationes popularis augeatur devotio, divinus cultus floreat, & animarum salus subsequatur.

tur, loca insignia, præsertim quorum incolæ benedicente Domino multiplicari noscuntur, dignioribus titulis & condignis favoribus illustrentur, ipsique incolæ honoratorum Præsulum adfidentia regimine, & doctrina suffulti, in via Domini magis magisque in dies proficiant.

§. 1. Sanè attendentes Oppidum Tolentinum, Camerinenfis Diocesis in agro Piceno, & teritorio fructifero, ac loco satis ameno, & pervio situm, admodum celebre, ac muris firmiter cinctum, plurimum ædificiorum ornatu decorum, copioso incolarum numero habitatum, ac mille ad minus ultra Castra Colmutani sibi suppositi focularia live domus continere, ac in eo unam Sanctæ MARIE cum Campanili campanis, organo, choro, Sacristia, Plebano, ac Canonicis, & aliis ad Cathedrali Ecclesiam requisitis, ac alteram Ecclesiam Collegiatam Sancti Jacobi, cum Priore, & Canonicis, præterea Sancti Caterii Sancti Augustini Canonico regularium, in qua ejusdem Sancti Caterii, & Sanctæ Septimie, ac Sancti Casti corpora reperiuntur, necnon Sancti Nicolai de Tolentino nuncupati, Fratrum Eremitarum ejusdem Sancti Augustini, in qua existit unum brachium Innocentium, & corpus ejusdem Sancti Nicolai, qui ob vitæ sanctimoniam, in vita, & post ejus obitum miraculorum coruscans numero Sanctorum meruit addribi, cujus etiam festum nuperimè in toto Statu Ecclesiastico celebrari, & custodiri mandavimus. Ad hæc Sancti Francisci Fratrum minorum conventualium, & Sanctæ MARIE Cisoloni Fratrum Minorum de Observantia, ac Sancti Petri Fratrum Minorum Capucinorum nuncupatorum, necnon Sancti Hieronymi Fratrum ejusdem Sancti Hieronymi, ac Sancti Agnetis Monialium Sanctæ Clare Ordinum Monasteria, & regulares domos, ac quamplures alias Ecclesias, ac duo Hospitalia pro pauperibus, & infirmis recipiendis satis commode extructa adest, & ex eo Cardinales, Episcopi, Referendarios, & strenuos milites, Capiteanos, & Duces Generales Status Ecclesiastici, aliosque illustres, & egregios, ac religione, & doctrina præclaros viros produisse.

§. 2. Nos cupientes Oppidum Tolentinum præstatum cujus dum Cardinalatus honore fingeremur protectores, & Fautores fuimus cujusque dilectos filios communitatem & homines singulare dilectione prosequi nati, necnon Collegiatam Ecclesiam Sanctæ MARIE huiusmodi dignioribus titulis, ac nominibus decorari, habita super his cum Fratribus nostris deliberatione maturâ, de illorum consilio, & assensu, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine ad Omnipotentis Dei laudem, & gloriam, ac ejusdem Beatæ MARIE Virginis honorem, & Christianifidelium devotionis augmentum, Oppidum, & castrum huiusmodi, ac Villas Comitatus Tolentini, eorumque territoria à dicta diocesi cui in spiritualibus subiecta sunt, Apostolica auctoritate tenore præsentium perpetuò separamus, & dismembramus, illaque separata, & dismembrata, ac illarum incolæ, habitatores, Ecclesiarum Rectores, Beneficiarios, Priores, & alios inibi beneficia Ecclesiastica obtinentes, Monasteria, domos regulares, aliæque pia loca omnia jurisdictione Episcopi Camerinenfis necnon solutione decimarum eidem Episcopo per eos debituram de cætero faciendi, auctoritate, & tenore prædictis etiam perpetuò eximimus, & liberamus.

§. 3. Insuper Oppidum Tolentinum in Civitatem Tolentinam, & Collegiatam Ecclesiam Sanctæ MARIE huiusmodi in Cathedrali sub invocatione ejusdem Sanctæ MARIE, ac in ea dignitatem, Sedem, & mensam Episcopalem pro uno Episcopo Tolentino nuncupando, qui eidem Ecclesiæ Tolentinæ præsit, ac jurisdictionem Episcopalem habeat, & exerceat, cum omnibus privilegiis, honoribus, juribus, & insignibus debitis, & consuetis, a

Oppidi Tolentini in multis commendatio.

Oppidi Tolentini, ab incolis & beneficiis Diocesis Camerinenfis separatio.

Erectio ejusdem Oppidi in Civitatem, & ejus Ecclesiæ Sanctæ MARIE in Cathedrali, & concessio privilegiorum.

quibus alii Episcopi, de jure vel consuetudine, aut alias quomodolibet in spiritualibus utuntur, potuntur, & gaudent, ac uti, potiri, & gaudere quomodolibet poterunt in futurum, necnon plebaniam illius in Archidiaconatum, qui inibi dignitas major post Pontificalem existat, eisdem auctoritate, & tenore similiter perpetuo erigimus, & institui-
mus, ipsamque Ecclesiam sic in Cathedrali erec-
tam Sedi Apostolica immediate subijcimus, ac sub
protectione Beatorum Petri, & Pauli Apostolorum
fascipimus.

§. 4. Præterea Canonici ejusdem Ecclesie sic in
Cathedrali erectæ, ut Almutias per Canonicos
aliarum Cathedralium Ecclesiarum deferri solitas,
deferre liberè, & licitè valeant, auctoritate, & tenore
prædictis, pariter perpetuo indulgemus.

§. 5. Ipsamque Ecclesiam sic in Cathedrali
erectam cum Ecclesia Macerateni unimus, ita ut
pro tempore existens Episcopus Maceratenis,
sit ambarum Ecclesiarum unitarum hujusmodi
Episcopus, & licet vocetur Episcopus Maceraten-
sis tamen in literis, & expeditionibus perti-
nentibus ad Civitatem, & Diocesim Tolentinam
ordinariè se subscribere debeat Episcopus Maceraten-
sis & Tolentinus.

§. 6. Teneaturque retinere unum Vicarium in
dicta Civitate Tolentini, qui non recognoscat Su-
periores, nec ab eo habeatur recursus ad Vica-
rium dictæ civitatis Maceratenis, sed tantum ad
ipsum Episcopum.

§. 7. Eidemque Ecclesie Tolentini, sic in Cathedra-
lem erectæ pro illius mensæ Episcopalis dote,
redditu annuum quadringentorum scutorum
monetæ Marchie per Episcopum Tolentinum
propria auctoritate percipiendum de semestri in se-
mestre, & in fine cujuslibet semestris, vel in fine
cujuslibet mensis pro rata, arbitrio ipsius Episco-
pi, quem præfata Communitas Tolentina eidem
Ecclesie sic in Cathedrali erectæ super redditibus
Molendini ipsius Communitatis, quousque tor-
prædia ipsa Communitas emat, & eidem Ecclesie
sic in Cathedrali erectæ assignet, quorum fru-
ctus ad dictam summam quadringentorum scu-
torum ascendant, constituit, & assignavit, ac
domum contiguam dictæ Ecclesie Tolentinæ,
pro usu, & habitatione ipsius Episcopi Tolentini
applicamus.

§. 8. Ac ipsi Ecclesie sic in Cathedrali erectæ
Civitatem Tolentinam, ejusque incolas, & habitato-
res pro civitate, & Civibus, necnon terras, villas,
& castrum Colmurani præfata, eorumque territoria
pro ejus Diocesi, ac etiam Clerum, & populum
Civitatis & Diocesis Tolentinæ pro Clero, & Po-
pulo, auctoritate, & tenore prædictis etiam perpe-
tuo assignamus.

§. 9. Decernentes ex nunc irritum, & inane,
si secus super his à quoquam quavis auctoritate
sciant vel ignoranter, contigerit attentari.

§. 10. Non obstantibus Lateranensis Concilii
novissime celebrati, uniones perpetuas nisi in ca-
sibus à jure permisis fieri prohibentis, aliisque
constitutionibus & ordinationibus Apostolicis,
necnon dictæ MARIE & Camerinenis Ecclesia-
rum prædictarum juramento, confirmatione Apo-
stolica vel quavis firmitate alia roboratis, statu-
tis & consuetudinibus, privilegiis quoque, in-
dultis, ac literis Apostolicis, illis earumque præsu-
bitis, capitulis, & personis, sub quibuscumque te-
noriis, & formis, etiam Motu proprio, ac consi-
stentialiter, & alias in contrarium quomodolibet
concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus
eorum tenores præsentibus pro expressis habentes,
illis alias in suo robore permanentibus, hac vice
dumtaxat specialiter & expresse derogamus, cæ-
terisque contrariis quibuscumque.

Nulli ergo omnino hominum liceat hanc pa-
ginam nostre &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno In-

carnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo
octuagesimo sexto, quarto Idus Decembris, Pon-
tificatus nostri Anno secundo.

Reformatio circa immoderatos sumptus, qui in
Alma Urbe fieri consueverunt, circa vestes, do-
tes, ornamenta, indumenta, & convivia.

Similem reformationem vide supra in Pii V. constitut.
39. Quoniam. fol. 241.

SIXTUS PAPA V.

Motu proprio, &c.

Cum in unaquaque benè, & rectè instituta Re-
publica, & Civitate, soleat sumptibus civi-
um, & privatorum hominum moderatio aliqua
adhiberi, idque non solum redundet in utilitatem
singularum personarum, & familiarum, ne hac de
causa imminuto patrimonio sive re familiari as-
sumpta, ad pauperetatem redigantur, & plurima
exinde damna, & pericula proveniant, sed etiam ad
universam Rempubicam pertineat, cujus interest
cives habere locupletes, & ne privati rebus suis
malè utantur, præcipue hoc ipsum observandum
est in hac Alma Urbe nostra, ex qua tamquam
ex communi omnium patriæ, frugalitatis, mode-
stie, ac bonorum morum exempla ad ceteros ma-
nare convenit, ut quæ tot donis ac prærogativis ex-
cellit, eadem optimis institutis, legibus, & con-
suetudinibus sit temperata, sicuti jam inde à pris-
cis etiam florentis Reipublicæ sæculis, mox Impe-
ratorum, ac deinde posterioribus Romanorum Pon-
tificum, præsertim felicis recordationis Clemen-
tis Septimi, Pii Quarti, & Pii Quinti Prædecesso-
rum nostrorum temporibus, in eadem Urbe Ro-
ma complures leges ac statuta de sumptibus im-
moderatis coercendis, salubriter edita fuerunt.
Quæ cum successu temporum minime fuerint ob-
servata, & hac etiam tempestate, tum in constitu-
endis dotibus puellarum quæ in matrimonium col-
locantur, tum in supervacaneis plerumque, & mi-
nimè decentibus ornamentis, tam circa mundum
muliebrem, quam circa indumenta etiam virorum,
tum in conviviis, & aliis hujusmodi rebus, super-
flui ac pro modo facultatum excessivi sumptus
siant. Idcirco pro eo quem gerimus erga eam-
dem nostram civitatem, illiusque populum pater-
næ dilectionis affectu, in primis nobis cordi fuit,
hujusmodi abusus, antequam latius serperent de
medio tollere, exemplo nostrorum hujusmodi Præ-
decessorum, similibus remediis uti. Ideoque di-
lectis filiis Camera ejusdem Urbis, ac Populi Romani
Conservatoribus & Magistratui commissimus, &
mandavimus, ut ad moderandos sumptus hujusmodi
opportunas conficerent reformationes.

§. 1. Qui mandato nostro parentes, unâ cum
civibus aliquot ex unaquaque dictæ Urbis Regione
ad id deputatis, eas præsentium temporum condi-
tioni, & moribus accommodatas composuerunt,
ac postea tam à Magistratu quam à deputatis prædi-
ctis subscriptas, nobis præsentarunt.

§. 2. Nos verò cupientes rem ipsam accuratè,
& debita circumspectione absolvi, dilectis filiis
nostris Julio Antonio Sancti Bartholomæi in
Insula Sanctæ Severinæ, necnon Scipioni Sancti
Simeonis Lancellotto, ac Henrico Sancti Puden-
tiane Cæstano, mox illis duobus ultimè di-
ctis absentibus, Hippolyto Sancti Pancratii Ad-
dbrandino, ac novissimè Antonio Mariæ Salvato-
ris S. Mariæ in Aquiro, titularum Presbyteris
Cardinalibus nuncupatis, dedimus in mandatis, ut
easdem reformationes diligenter reviderent, &
examinarent, qui postmodum convocatis dicto
Magistrato, quatuor Prelatis utriusque Signa-
turæ nostre Referendariis Romanis, & septem

Concessio
Almutiarum
pro Canonicis
dictæ Cathedra-
lis.

Unio dicti
Episcopi cum
piscopatu Ma-
cerateni.

Vicarius ex-
stet in Civita-
te Tolentina,
qui suam
Episcopum
in superio-
rem recog-
noscat.

Assignatio
dotis.

Diocesis
prædictæ &
Cleri assigna-
tio.

Decretum
irritans.

Chusule
derogatorie
& Sanctis
poenalis.

D. P. An. 1.
die 2. Dec.

LII.

Edita An. D.
1586.

Pont. iste e-
paterno erga
Almam Ur-
bem affectu
& ex causa
hic expressè
jussit Con-
servatoribus
Pop. Roma-
ni, ut refor-
mationes
facerent, ci-
cà immoder-
atos sum-
ptus.

illi hanc Re-
formatio-
nem statu-
erunt, &
summo Pon-
tifici dede-
runt.

Et Cardine-
les & alii a
eodem Pon-
tifici depu-
tati eam abso-
lverunt, &
perfecterunt.

ex dictis per singulas Regiones deputatis, sapius infimul hac de causa respectivè congregati, eidem reformationibus diligenter excussis, ac seglitalim examinatis alia emendarunt, alia explanaverunt, nonnulla addiderunt, easque in meliorem ordinem redactas nobis exhibuerunt. Ac demum, cum hujusmodi reformationes, in privato publicoque consilio ejusdem Populi propositæ nuper, & perlectæ fuerint.

§. 3. Nos cupientes illas inviolatè observari, Motu &c. simili, & ex certa nostra scientia, reformationes ipsas, prout inferius descriptæ sunt, cum omnibus, & quibuscumque in eis contentis, auctoritate Apostolica perpetuè approbamus, & confirmamus, illisque perpetuæ, & inviolabilis firmitatis robur adjicimus, easque præsentis scripti patrocinio communimus, omnesque & singulos juris, facti, & solemnitatum etiam substantialium in eis forsitan omislarum defectus, si qui intervenierint, supplemus, & pro illarum subsistentia firmiori, quæcumque in prædictis reformationibus continentur, de novo eadem auctoritate perpetuè statui-mus, & ordinamus, ac omnes & quascunque personas utriusque Sexus, cuiusvis status, gradus, conditionis, & præminentie fuerint, in eadem Urbe habitantes, etiam advenas, & curiales, ad earundem reformationum observacionem teneri, & illis omninò obligari decernimus & declaramus.

Executores
reformatio-
is deputatis
jurisdic-
tionea
idem con-
dicio

§. 4. Necnon dilectis filiis ejusdem Urbis Gubernatori, & Senatori, ac Conservatoribus prædictis, nunc, & pro tempore existentibus, in solidum districte præcipiendo mandamus, ut tam Gubernator, & Senator prædicti, & eorum quilibet, quam etiam ipsi Conservatores curent & faciant reformationes hujusmodi perpetuè, & inviolabiliter observari, & ad illarum executionem, etiam quoad poenas sine ulla spe remissionis, procedi. Volentes nihilominus, ut cujusvis Curie, aut Tribunalis dictæ Urbis Executores, quascunque utriusque Sexus personas, quas hujusmodi Reformationibus contravenire deprehenderint, notare, ac dictis Judicibus deferre, & denuntiare.

Claufulas
servati-
s apponit.

§. 5. Necnon decernimus, quòd hujusmodi nostri Motus proprii sola Signatura sufficiat, isque etiam non registratus, in iudicio, & extrà illud plenam fidem faciat, regula contraria non obstante. Et quod inferius descriptis Reformationibus, ac præsentis nostro Motu proprio, ac dispositioni, etiam per nos, & Successores nostros nunquam sufficenter derogarum censeatur, nisi prius accedente expresse consensu eorundem Conservatorum pro tempore existentium, & ipsius Populi in Consilio publico congregati, ac deinde publica Signatura nostra proposita per aliquem Referendarium supplicatione hujusmodi nostri Motus proprii insertione, per supplicationem, aut alium Motum proprium, nostra, seu Romani Pontificis, pro tempore existentis manu signatur, derogatio fuerit concessa, & quòd idem Motus proprius, unà cum dictis Reformationibus, manu scriptis, sive impressis, reponatur, & perpetuè retineatur post libros Statutorum Urbis, inter alias ejusdem Urbis, & Cameræ Populi Romani Reformationes, privilegia, & indulta, quæ in eorum proprio volumine continentur.

transumptis
servati-
s jubet.

§. 6. Quòdque ejusdem Motus proprii, & Reformationum transumptis, etiam impressis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo Gubernatoris, aut Senatoris, vel Conservatorum prædictorum, vel alicujus persone in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem fides adhibeatur, in iudicio, & extrà, quæ ipsis originalibus hujusmodi adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensæ.

ma & ef-
tus publi-
onis hu-

§. 7. Ac quòd in Palatii Capitolini, Conservatorum eorundem, ac Audientie causarum Palatii Apostolici Valvis, & in acie Campi Floræ,

dimissis inibi Copiis, affixæ omnes, & singulas ita afficiant, & arctent, ac si illis personaliter intimatæ fuissent.

§. 8. Sicque in præmissis, & infra scriptis omnibus & singulis, per quoscunque Judices & Commissarios, & causarum Palatii Apostolici Auditores, & Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, sublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, julicari, & desiniri debere, irritumque & inane, si secus super his à quoquam, quavis auctoritate scienter, vel ignoranter, contigerit attentari.

§. 9. Non obstantibus Constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, aliisque dictæ Urbis Reformationibus, statutis, consuetudinibus, etiam novissimè editis, juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis ejusdem Conservatoribus, & aliis Magistratibus, Populo, Civibus, & Incolis, aut cæteris personis, in genere, vel in specie, quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus illis aliis in suo robore permanens, hac vice duntaxat specialiter, & expresse derogamus, cæterisque contrariis quibuscunque.

Fiat Motu proprio, F.

Datum Romæ apud Sanctum Marcum, decimo Kalendas Januarii Anno secundo.

Sequitur Tenor dictæ Reformationis.

Riforma del vestire, delle doti, & d'altre spese, da osservarsi in quest' Alma Città di Roma, da ciascuna persona di qualsivoglia stato, grado, condizione, ò preminenza si sia, fatta per ordine di N. S. dalla Congregazione de Deputati da Sua Santità.

Modi da osservarsi nel vestir degl'huomini.

Inprimis, non sia lecito di portar nelle berrette, ò capelli medaglie ne gioie, ne perle, ne vere, ne false, ne puntali, ne rosette, ne altro ornamento d'oro ò d'argento, ne buono, ne falso, ne piume, ne pennacchi, ne ricami, ne smalti, eccetto un cordon di velo ò di seta intorno.

Moderatio
circa vestes
Virozum.

Item, non sia lecito di portar collane al collo, se non à Cavalieri di alcun'Ordine Militare, ò altri fatti da Principi, per portare attaccato la croce ò medaglia.

Item, non sia lecito di portar camiscie lavorate d'oro, ò d'argento.

Item, non sia lecito di portar giubbone con altra guarnitione, eccetto che con imbottitura di seta semplice, distesa per traverso, ò per lungo senz'altro lavoro, & si possa trinciare con taffetà sotto.

Item, non sia lecito in saio, casacca, colletto, ò simile sorte di vestimenti di panno, ò di drappo, mettere altra guarnitione, che una banda intorno alli busti, maniche, & falde di drappo non proibito, larga al più un terzo di palmo per di fuori ò dentro, ovvero un rivetto ò frangetta, ò trina di seta mezo dito larga intorno all'estremità, la qual banda non possa haver più di sei imbottiture, & si possa compartire in tre liste ò rivetti al più con due imbottiture per ciascuno, con le mostre di ormesino, ò taffetà, ne sia lecito di portar bottoni ne puntali d'oro, ne d'argento, ne di gioie, ne di perle vere, ne false, ne si possa foderare d'altro drappo che di taffetà schietto, & non si possa mettere drappo sopra drappo, eccetto che taffetà, ò ormesino nell'estremità.

Dichiarando che li drappi prohibiti s'intendono tutti quelli, ne quali entri oro, ò argento, buono, ò falso, & tanto resluti quanto non resluti.

Item, non sia lecito di portar nella cappa altra guarnitione che una banda intorno, di dentro ò di fuori, di drappo non proibito, largo mezzo pal-

mo al più, nella quale non si possono fare più di sei imbottiture, con un passamano, ò frangetta, ò trina intorno alla estremità, la qual banda possa compartirsi in due ò tre liste, ò rivetti, con due imbottiture per ciascheduna, & la cappa, cappotto, tabarro, ò feraioolo, non possono esser foderati d'altro che di roverso, ò taffetà, ò di pelli non proibite, lequali pelli prohibite s'intendano zebellini, lupi, cervieri, armellini, & martore eccettuate la cappa, la quale possa esser foderata di velluto, senz'altra guarnitione.

Item, non sia lecito usare calzoni ò cosciali di drappi prohibiti, ne in quelli oro ò argento, buono ò falso, ne ricamo, ò intaglio di forte alcuna, ne disegno di ricamo, ma possano usarsi li cosciali, con trinci di drappo non prohibito, schietti senza sorte di alcun' altro ornamento, che della fodera di tutto il cosciale di raso, dobletto, teletto, ormesino, ò taffetà, & così li cosciali di drappo non prohibito, purché non sia seta sopra seta.

Item, nelle calzette di seta ò ligacci non possa portare oro ò argento, vero ne falso.

Item, non sia lecito nelle scarpe di velluto portare trapuntatura di seta di altro colore che quello delle scarpe, ne farvi altra sorte di ornamento.

Item, le cinte delle spade non si possano portare se non di corame, ò di velluto, senza ricamo, & senza oro ò argento, vero ò falso, ne smaltato, ma possano ben le fibie esser indorate, ò inargentate, & similmente le guarnitioni delle spade.

Item, perché non solo nel vestir delle proprie persone, ma ancora nelle livree dei Servitori, & ornamenti de cavalli si eccede in molte spese, per questo si prohibisce il vestir Servitori, staffieri ò paggi di casacca, faio, colletto, giubbone, cappotto, cosciali, calzoni di qualsivoglia drappo di seta, ma se li possa permettere una banda di drappo, ovvero al più due bande di drappo, che non eccedano un terzo di palmo intorno alla cappa, cappotto, casacca, faio, colletto, ò calzoni, con una trina ò passamano schietto senz'altro ornamento. Et si prohibisce inoltre, che non possano vestire di livrea più di quattro persone tra Servitori e paggi.

Item, non sia lecito di portare gualdrappa ò coperta di velluto, ne di panno, che sia guarnita di velluto, eccetto che d'una frangia ò trina di seta nell'estremità.

Item, nelle selle di velluto non si possa portare guarnimento d'oro ò d'argento, vero ò falso, ne ricamo, eccetto, frange, trina, ò passamenti di seta del medesimo colore.

Item, non possano portare finimenti di cavalli se non di corame senza fiocco di forte alcuna, ne manco miniati d'oro ò d'argento, non prohibendo che le fibbie, borchie, briglie, sproni, ò stasse possano esser indorate ò inargentate.

Modi da osservarsi nel vestir delle donne, & prima dell' habito delle Spose.

Moderatio
circa vestes
Sponiarum.

NON sia lecito alle Spose di portare in testa, ne giusti, ne fiori, veri ne artificiosi, nerici finti, ne piume, ne pennacchi, ne magnoselle, ne altra simile portatura alta, ma debbano portar la tela ò panno listato che arrivi alla fronte al principio de i capelli ancorché vadino in cocchio.

Item, non possano portare altri ornamenti in testa che perle ad oncia, & una fronzetta di gioie, & perle, che non ecceda il valor di ottanta scudi.

Item, non possano portare pendenti da orecchia con gioie, eccetto che con perle, ò d'oro smaltato.

Item, non possano portare camiscie, colletti, ne altre cose lavorate d'oro ò d'argento, eccetto li fazzoletti.

Item, non possano portar guanti profumati, ma solamente lavati d'acque odorifere.

Item, non possano portare più d'uno ovvero due

anella nelle dita che ambidue non passino il valor di cento cinquanta scudi.

Item, non possano portar maniglie alle braccia di perle, camei, ò qualsivoglia altra sorte di gioie.

Item, non possano portare canacche ne corone di profumo ne d'altra sorte al collo, ne traverso le spalle, ne alcuna sorte di banda, eccetto che al collo un vezzo di perle, di un filo solo, il cui prezzo non passi scudi trecento, ò catena d'oro senza gioie, che non ecceda il valore di settanta scudi.

Item, non possano portare cintura con gioie ò con perle, ne che la fattura ecceda trenta scudi.

Item, nelle veste ò zimarre di drappo non possano portare altra guarnitione d'oro ò d'argento, vero ò falso, largo più d'un dito tanto nelli busti quanto nell'estremità, ne possano esser veste ne zimarre trinciate ne ricamate, & similmente non possano portar pianelle con passamano d'oro ò d'argento, vero ò falso.

Item, non possano farsi ne portare più d'una veste d'oro ò d'argento semplice, schietto, non trinciata ne ricamata, & senza guarnitione, eccetto che di una pistagna distesa, ò trina, larga, mezzo dito al più nell'estremità.

Item, non possano portare la veste con frascino che passi un palmo.

Item, non possano portare sortane d'oro, ò d'argento, ne dove sia in qualsivoglia modo oro, argento, vero ò falso, ò forte alcuna di guarnitione, eccetto una ò due liste, ò una trina di seta, larga al più mezzo dito, al busto, maniche, & estremità.

Item, nelle veste non possano portare rosette, bottoni, ò puntali d'oro, ne d'argento, ne gioie, ne perle, vere ò false, ò smaltate.

Item, non possano portar veste, zimarre, traverse, panni da testa, ò qualsivoglia altra sorte di rete, eccetto cuffie, colletti, & panni di spalle.

Item, non possano portare berretta, ma solamente il capello, con un passamano, ò trina d'oro, ò d'argento intorno, senza piume ò ricamo, senza puntali, rosette, medaglie, ò gioie, vere ò false.

Item, non possano portar veli, ò buratti trasparenti senz'altra veste di sotto.

Item, non possano andare in maniche di camiscie per Roma, ne à piedi, ne in cocchio.

Dichiarando che l'esser Sposa s'intenda per due anni dal giorno che sarà andata à marito, & non più, per tutto il qual tempo possa portare li sopradetti ornamenti, il qual passato sia obligata di metterli in panni.

Item, che tutto quello che è prohibito alle spose, s'intenda ancora esser prohibito alle zitelle di qualsivoglia età, alle quali in oltre si prohibiscono ancora le gioie vere ò false, le veste d'oro ò d'argento vero ò falso, ricami, & intagli.

Dell' habito delle maritate messe in panni.

SI ordina, & dichiara, che tutto quel che è prohibito, come di sopra, alle Spose, s'intenda espressamente prohibito ancora alle maritate messe in panni.

Item, à nessuna donna maritata, & messa in panni, sia lecito di portare alcuna veste ò sortana, ò zimarra di drappo, ne trincio, ne ricamo, ne intaglio, ne guarnitione d'oro, ne d'argento vero ò falso, eccetto crespone, ò buratto doppio, ne trasparente.

Item, non possano portare alcuna sorte di pendenti all'orecchie, ne cannacca, ne catena di gioie ò d'oro, ne cintura d'oro, ò di gioie, ò di smaltato, ne corone di profumo, ne al collo, ne alla cintura, ne in mano, eccetto che quando anderanno à nozze ò à feste un vezzo di perle, di un filo solo del prezzo come di sopra.

Moderatio
circa vestes
mulierum
conjugatarum.

Item non possano portare fazzoletti ò colletti lavorati d'oro ò d'argento, vero ò falso, ò di seta di colore.

Item nelle veste di sopra ò zimarre non possano mettere altra guarnitione che una pistagna, trina, ò passamano negro ò pavonazzo, che non sia largo più di mezzo dito, & solamente intorno alli busti, maniche, & à il' estremità.

Item non possano portar pianello con alcuna forte di ornamento, ma semplici, & con un passamano di seta.

Item non possano andar fuori di casa, ne à piè nè in cocchio, senza portar soprajetto ò panno listato, steso, & senza pizzo.

Item andando à nozze, & à feste, possano portar le camiscie lavorate di seta di un color solo, & una veste di drappo semplice.

Del vestire & habito delle Vedove.

Non sia lecito alle Vedove di portare altri panni che roggi, ò tinti di colore, che non sia più oscuro che roggio, & il panno listato non avanzi fuori della fronte più che uno ò due dita, & le lor veste vedovili siano senza busti, & le sono aperte al petto, habbino la pezzetta roggia sotto con il panno di spalla di sopra, & con la cinta solita tela bianca; & le lor veste siano semplici, senza ornamento ò guarnitione di forte alcuna, & le maniche delle vesti siano di maniera, che non si possano vedere le maniche delle sottane, eccetto se le dette maniche fossero nere.

Moderatione delle doti.

Se bene altre volte fu fatto particular-statuto sopra la moderatione delle doti, & quello confirmato per Motu proprio dalla santa mem. di Papa Pio Quinto, nondimeno non essendo nella debita osservanza, massime per domandarne continuamente derogatione, & tuttavia aumentandosi le dette doti, per provvedere con nuova moderatione, conveniente à questi tempi, à tal' eccesso che è causa di molti disordini, & inconvenienti, ha molto bisogno di reductione.

Si ordina, che nessuna persona di qualunque stato, grado, ò preminenza si fia, ardisca ne presuma costituire, promettere, pagare, ricevere, ancorchè la donna fosse herede, tanto in danari contanti, quanto in argento, oro, gioje, provisione, ò altre cose etiam di mobili, & le moventi, ragioni, & azioni, dote, & acconcio, in una ò più volte, che passi ò ecceda, & computata etiam di cassa bianca, bacile, & boccale, la somma di scudi cinque mila, & cinquecento di moneta, à ragioni di dieci giulii, per scudo, nè sia lecito à questo contravenire per alcun patto ò consentimento, etiam giurato, da far si per li contrahenti, & altre persone terze per causa, & occasione di accrescer somma dotale, costituendo pegno, ò in qualunque modo far fraude à questa ordinatione, ad effetto che il marito ò la donna ò altri per essi, vengano ad haver più della detta somma di scudi cinque mila, & cinquecento in alcun modo, ò via diretta ò indiretta, alla pena di mille scudi simili, da incorrerli per ciascuno che contrarà, & di applicarli per la quarta parte all'accusatore, qual sarà tenuto secreto, l'altra parte all'esecutore, & per il resto alla fabrica del Palazzo de' Conservatori della Camera di quest'Alma Città di Roma, & nientedimeno pagata ò non pagata la detta pena, tutto quello che oltre la detta somma si desse, ovvero ancora con intervento di terze persone, sotto qual color si fia, di donatione, parafreno, ò altro titolo, etiam in persona della donna, che similmente si proibisce sotto la pena predetta, ipso facto sia applicato alla fabrica del Palazzo de' Conservatori. Et ancora si ordina, che colui che costituisce, da, ovvero promette in alcun modo oltre

la somma predetta, ò suo herede ò successore, ovvero la donna, per la quale fusse data per verum tempo, venendo in caso della restitutione, non possa ridomandare il sopra più, & habbi perdata ogni actione, che in ciò & sopra ciò li competesse, & il detto sopra più s'applichi ipso iure alla fabrica predetta, come di sopra, & che tutti simili contratti ò private scritture, quali sopra ciò si facessero, siano quanto alla detta quantità eccessiva, ipso iure nulli & invalidi, & per vigore di essi non se ne possa fare alcuna executione, quanto alla quantità eccedente li scudi cinque mila, & cinquecento. Ancora si proibisce à tutti & singoli Notarii, che non ardiscono ne presumano rogarli d'alcun instrumento, qual sia contra la prohibitione sopra scritta, ne far scrittura che sia incerta, ò che si riferisca à quella cedula privata, ò qualunque altra scrittura ò arbitrio d'uomo, sotto pena del falso, & di scudi ducento per ciaschedun di loro che contrarà, d'applicarsi come di sopra, & detti contratti siano nulli, & invalidi ipso iure, & nullius fidei, & essi Notarii s'intendano nondimeno privati in perpetuo de' lor' officii, & similmente si proibisce, che nessuna persona possa in ciò, come mezano, intravenire, ò altrimenti presuma far cedula privata, ovvero esser testimonio in contratto ò cedula che fusse contra la prohibitione predetta, alla detta pena da incorrerli, & applicarsi come di sopra. Si ordina ancora, che nelle sopra scritte prohibitioni, & pene siano compresi Baroni, Cortigiani, ò forastieri che apparentaranno con Romani, tanto originarii, come fatti Cittadini, & incolti di Romani ancorchè siano Chierici, tanto dando & promettendo, quanto ricevendo, & stipulando, ovvero come mezano, notaro, testimonio, fidejussore, & promissore, ò in qualunque altro modo s'intromettano, purché uno delli consorti, cioè, ò sposa ò marito, ò sposa ò moglie sia Romano originario, ovvero fatto Cittadino, ò pure incolto di Roma.

Moderatione del donare nelle nozze.

Non sia lecito à padre ò madre ò altra congiunta persona della sposa, donare allo sposo, ò ad altri per lui, direttamente ò indirettamente, nel tempo della subarratione, ò prima ò poi alcun vaso, bacile, ò boccale, coppa, nappo, carena, ò altro dono, tanto d'oro come d'argento, denari, gioje, perle, drappi, ò altra cosa, etiam di non simile alla pena di scudi cinquecento, & perdita delle robe, d'applicarsi come di sopra.

Item à nessuna persona senza ecceptione di parente alcuno, sia lecito nel giorno, & atto dell'atraglia, ò publicatione del contratto del matrimonio per verba de presenti, ne inanzi, donare cosa alcuna di qualsivoglia sorte alla sposa, ma passato il detto giorno sia lecito solamente alli parenti fino al secondo grado di consanguinità, & affinità, computato secondo il ius canonicò inclusive.

Item non sia lecito allo sposo mandare alla sposa in Natale alcun presente in robe che ecceda il valor di scudi venti.

Item non sia lecito allo sposo donar alla sposa più di due vesti, lequali però non siano di drappo prohibito.

Moderatione de banchetti, & conviti.

Volendo anco limitar le foverchie spese, che sono introdotte nel far nozze, & banchetti.

Si ordina, che non sia lecito ad alcuno che farà nozze ò banchetto, dove siano più di dieci persone, dare altro che l'infra scritte vivande, cioè un' anticipato di cose fredde, & una portata in tavola di cucina d'arrosto & d'alesto insieme, nella quale non si possano dar pavoni ne lavori di pasta, ne più di tre sorte di carne, & di tre sorte di uccellami, & dandoli polli d'India non si polli dar fagiani, & essen-

Moderatio
circa vestes
& habitum
viduarum.

Moderatio
ocium.
requiritur
ut dantur
maiores do-
tes, previa
applicatio-
e & gratia
papa.

Nota quod
nec. IX.
prohibuit
ut talia gra-
tia, qua quam-
vis ut infra
in eius Con-
stitut. 2.
ad Roma-
num.

Moderatio
donatio-um
in nuptiis.

In hoc habes
etiam Con-
stitut. Pij V.
circa in
rubr.

Moderatio
circa con-
vivia.

do fagiani non si possi dar polli d'India, & si possa dare un altro servizio di credenza, una sorte di confezione, con frutti, cialloni, & ciambellette, torte, & cose simili, ne si possa mettere oro, argento, ne muschio in altro che cotognate, o fiori.

Et si proibisce ancora per occasione di battesimo, far colationi che eccedano dieci scudi di spesa.

Moderatione de letti nuziali.

Moderatio circa lectos nuptiales.

Non sia lecito ad alcuna persona per occasione di nozze, o di donne di parto, comprare o far di nuovo letto, che ecceda il valore di scudi duecento, si permette però che chi al presente li ha in casa, possa adoprarli.

Prohibitione nel donare, nel farsi i compari & le comari.

Prohibitio donandi in-ger compar-tes, & com-matres.

Non sia lecito al compare o comare di fare alcuna sorte di presenti, ne al compare ne alla comare, ne al putto, così nel Battesimo come nella Cresima, sotto pena della perdita del dono a chi lo riceve, & della valuta di esso a chi lo dona.

Moderatione de cocchi.

Moderatio circa curus.

Non sia lecito ad alcuna persona, alli cocchi o carrozze che farà di nuovo far coperte, matrazzi, cuscini, spalliere, & copertine de cavalli, se non di panno o feltro o corame semplice, con frangia sola nell'estremità, senz'alcuna sorte di drappo per fodera di dentro, & li finimenti de cavalli non possano coprire di cosa alcuna, & il cocchio non possa avere indoratura manco ne pomi.

Et perche farebbe di molta spesa, a chi si trova il cocchio o carrozza già fatti, l'havere a rifarli subito di nuovo, conforme alla presente riforma, se li concede, che possa servirne, finche siano consumati, non ostante detta riforma, ne sia lecito di farli di nuovo dopo la publicatione della presente riforma, se non nel modo sudetto.

Moderatione de funerali.

Moderatio circa funera-lia.

Non sia lecito all'essequie di accompagnare il morto alla Chiesa con più di tre servitori vestiti semplicemente di lutto.

Non sia lecito ad alcuna donna nel giorno dell'essequie di star nella medesima stanza, nella quale starà il corpo del defonto, & si esorta ciascuna di portar quell'habito modesto che si conviene & richiede in tal atto di condoglienza.

Delle pene de i trasgressori della presente Riforma.

Contraven-tium Poena.

Si notifica a ciascuno, che le pene della trasgressori della presente Riforma saranno per ciascuna volta che si contravverrà, la perdita delle robe, delle quali sarà contravenuto, & inoltre di cento scudi, d'applicarsi la quarta parte all'accusatore, qual farà tenuto secreto, & li tre quarti alla Camera del Popolo.

Dichiarando che nel transgredire che si farà da alcuna gentildonna maritata contra la presente riforma, l'esecuzione si farà contra i lor mariti, la qual pena si eseguirà irremissibilmente, & anderà a diminutione della lor dote.

Et accioche la sopradetta riforma si osservi inviolabilmente da ogn'uno, & si toglia ogni occasione che potesse farli impedimento, si comanda espressamente a tutti gli orefici, farti, banderari, setaroli, ricamatore, & ad ogni altro artista, che dalla publicatione della presente riforma nessuno ardisca far lavoro diverso della sopradetta riforma, ne manco trovare o mettere in uso alcuna maniera d'invenzione o lavoro nuovo, di seta o di bottoni, o di cucitura, quali infino adesso non siano stati usati, sotto pena di tre tratti di corda, & scudi venticinque, & la

perdita del loro lavoro per ciascheduna volta che contravverrà, laqual pena s'applicarà come di sopra, & si eseguirà irremissibilmente.

Dichiarando, che le sopradette riforme solamente sopra li vestimenti già fatti, si habbino da osservare passati sei mesi dopo la publicatione della presente riforma, & nel resto dopo il giorno della publicatione sopradetta.

Et che le vesti, sottane, & zimarre di donne, & altri habiti prohibiti che si trovano già fatti, si possano fare acconciare per li figliuoli, & figliuole fin all'età di dieci anni.

Et per dar tempo a forastieri che possano accomodare, & pigliare recapito de gl'habiti, & vestimenti che si trovano già fatti, si dichiara, che passati li sei mesi sopradetti alli forastieri che verranno per divotione, o per altri negotii, si concede tempo di un altro mese di poter accomodare li suoi habiti, secondo la presente riforma.

Et per osservanza della presente riforma, si ordina al Senatore, & Conservatori in solidum pro tempore esistenti, i quali habbino cura che si metta in esecuzione quanto in essa si contiene, & se gli da sopra di questo in ogni caso degli sopradetti, piena autorità di procedere & far eseguire le pene sopradette contra li trasgressori.

Marcellus Niger Deputatus.

Sebastianus Varns Deputatus.

Ego Hieronymus Alerius Deputatus.

Mutius Matthejus Deputatus.

Andreas Velius Deputatus.

Stephanus Paparonius Deputatus.

Hieronymus Picus Deputatus.

Joannes Dominicus Ninus Conservator.

Livius Attracinus Conservator.

Mercurius Amadeus Conservator.

Petrus Benzonus Prior.

Anno a Nativitate Domini 1587. Indit. 15. die verò 8. mensis Januarii, tempore prefati Sanctissimi in Christo Patris, & D. N. D. Sixti divini Providentia Papa V. Anno ejus 2. suprascripta litera affixa, & publicata fuerunt, ad valvas Curia Capitoli, & Audientia causarum Palatii Apostolici, & in acie Campi Florae, dimissis copiis per nos Alamannum de Alamannis & Joannem Baptistam Bagni S. D. N. Papae Curf.

Alex. Parabiacus Mag. Curf.

Ampliatio Congregationis sub invocatione Annunciationis Beatae MARIE Virginis, aliàs in Urbe instituta, pro Scholaribus insistentibus Studiis Collegii Societatis JESU instituta, ad quoscunque alios etiam non studentes, & facultas alias Congregationes aggregandi easque indulgentias communicandi.

Tu omnino vide normam aggregandi alias Congregationes cum indulgentiarum communicatione, in Const. 115. Clementis VIII. fol. 182. Tom. 3.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Superna dispositione, cujus inscrutabili providentia ordinationem suscipiunt universa, in supereminenti Apostolica dignitate specula, meritis licet imparibus constituti, & pia & salubria Christi fidelium vota, quæ ad Confraternitatum, seu Socialitatum præsertim in hac Urbe nostra rite institutarum laudem, & gloriam, cum animarum salute tendere dignoscuntur, libenter exaudimus, ipsasque

Publicatio.

LIII.

Edita An. D. 1587.

Proccium.

Confra.

Confraternitates seu Sodalitates condignis titulis extollimus, ac aliàs desuper disponimus, prout in Domino conspiciamus eisdem Christi fidelibus salubriter expedire.

§. 1. Aliàs siquidem pro parte dilecti filii Claudii Aquavivæ Præpositi generalis Societatis JESU scilicet recordationis Gregorio Papa XIII. Prædecessori nostro exposito, externos Scholares ad Collegia ejusdem Societatis &c.

Omittitur narratio hujus Constituti. quia est hic supra fol. 517. Omnipotens.

§. 2. Cum autem, sicut exhibita nobis nuper pro parte dicti Claudii Præpositi petitio continebat, ex Congregationibus seu Sodalitatibus hujusmodi, novi indices, atque eò majores quò plures sunt Sodales, fructus provenire noscantur, & in multis Collegiis pro Sodalium frequentia ac disparitate, opus fuerit non unam tantum, sed plures in eodem Collegio Congregationes hujusmodi instituire, quin etiam in eisdem Collegiis, ac etiam in domibus dictæ Societatis, alia non studioforum Scholarium, sed aliorum piorum Christi fidelium Sodalitia seu Congregationes passim instituantur.

§. 3. Urigitur tam Scholares quam ceteri Christi fideles eo promptiores ad hujusmodi Congregationes vel Sodalitia ingredienda reddantur, & ad piorum operum exercitia magis excitentur, ac excitati manteneantur, quò amplioribus celestibus gratiis donis, se ac eorum Congregationes seu Sodalitia decoratis ac refectionibus, ac decorata, & refectione esse conspexerint, pro parte dicti Claudii Præpositi nobis fuit humiliter supplicatum, quatenus sibi ac pro tempore existenti prædictæ Societatis Præposito seu Vicario generali, ut in quibuscvis dictæ Societatis Ecclesiis, seu Domibus ac Collegiis, tam in Urbe quam extra eam per univèrsam Orbem, nunc, & pro tempore erectionis seu erigendis, quavis alias, sive Scholarium tantum, sive aliorum Christi fidelium, sive utrorumque simul, tam sub eodem Beatæ MARIE Annunciatæ, quam alio quovis titulo, & invocatione Congregationes seu Sodalitia dicta auctoritate perpetuò erigendi, & instituendi facultatem, & licentiam concedere, aliàsque in præmissis opportune providere, de benignitate Apostolicæ dignaremur.

§. 4. Nos igitur, qui dudum inter alia volumus, quòd literæ super indulgentiis non expedirentur ad instar nisi specificarentur, ac animarum salutem nostris potissimum temporibus, sinceris desiderantes affectibus, Claudium Præpositum, seu Vicarium prædictum, ac eorum quemlibet à quibuscvis excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & pœnis, à jure vel ab homine quavis occasione vel causa latis, siquibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum, præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolverent, & absolutum fore censentes, posterioribus supplicationibus hac in parte nobis porrectis inclinati, eidem Claudio, & pro tempore existenti dictæ Societatis Præposito seu Vicario generali, ut in quibuscvis ejusdem Societatis Ecclesiis seu domibus ac Collegiis, tam in dicta Urbe, quam extra eam, per univèrsam Orbem, nunc, & pro tempore erectionis seu erigendis, & instituendis, quavis alias, sive Scholarium tantum, sive aliorum Christi fidelium tantum, sive utrorumque simul, tam sub eodem Beatæ MARIE Annunciatæ, quam alio quovis titulo & invocatione, Congregationes seu Sodalitia, unum scilicet vel plura, in singulis locis vel Ecclesiis, pro personarum frequentia seu qualitate, auctoritate nostra sine alicujus præjudicio, perpetuò erigere & instituere.

§. 5. Necnon Congregationes seu Sodalitia hujusmodi jam nunc, & pro tempore erecta, & instituta eidem Primariæ Congregationi seu Primario Sodalitio, auctoritate Apostolica & vigore præsentium literarum, etiam perpetuò aggregare, eisque sic erectionis, institutionis, & aggregatis respectivè, eorumque Sodalibus, Scholaribus & non Scholaribus, omnes, & singulas, tam plenarias quam alias indulgentias, & peccatorum remissiones ac relaxationes, necnon exemptiones, immunitates ceterasque gratias, facultates, indulta, & privilegia, spiritualia, & temporalia, tam dictæ Primariæ quam singulis aliis in quibuscvis dictæ Societatis Collegiis vel domibus, aggregatis vel aggregandis, Scholarium & aliorum Congregationibus seu Sodalitiis hæcenus, tam per dictam quam alios quoscunque Romanos Pontifices Prædecessores nostros, Nosque & Sedem Apostolicam ac etiam Regia, & Imperiali auctoritate, ac tam per viam extensionis quam aliàs quomodolibet & quodcumque concessas, & concessas hæcenus, ac in posterum concedenda, quibuscunque aliis sive Scholarium dumtaxat, sive aliorum Christi fidelium tantum, sive utrorum simul ac mixtim, Congregationibus seu Sodalitiis, in quibuscvis Collegiis aut domibus dictæ Societatis hucusque institutis, ac in posterum instituendis, eorumque Sodalibus, Scholaribus & non Scholaribus, auctoritate Apostolica & vigore præsentium hujusmodi, etiam perpetuò communicare, illasque & illa ad easdem omnes Congregationes seu Sodalitia, eorumque Sodales etiam non Scholares, indifferenter, & æquè principaliter extendere, ac etiam illis concedere, & clargiri, liberè & licitè valeat, ita quòd nunc & quodcumque in futurum ipsi Sodales, Scholares & non Scholares quicumque sint, faciendo & observando ea, quæ Sodales Primariæ & aliarum Congregationum seu Sodalitiorum prædictorum, pro indulgentiis, peccatorum remissionibus, relaxationibus, & aliis gratis prædictis consequendis facere & exequi tenentur, ipsas indulgentias etiam plenarias, & alias hujusmodi gratias, plenariè, & integrè consequantur, ac illis fruantur, & potiantur, ac si illæ eis specialiter, & ab initio concessæ fuissent, auctoritate Apostolica tenore præsentium perpetuò indulgemus, dictique Gregorii Prædecessoris literas & immunitates, exemptiones, facultates, privilegia, & indulta, necnon in eis contenta quæcumque tam respectu dictarum Congregationum seu Sodalitiorum hujusmodi, quam dicti & pro tempore existenti Præpositi seu Vicarii generalis dictæ Societatis ad prædictas Congregationes seu Sodalitia, Scholarium & non Scholarium, etiam Christi fidelium quorumcumque tam erectionis quam in posterum, ut præfertur, erigendas, instituendas ac aggregandas, pariter perpetuò extendimus, ita ut omnia in illis contenta, & præsentibus literis hujusmodi concessa, indulta, & clargita, ac si specialiter de verbo ad verbum eidem præsentibus inserta, eorumque toti tenores expressi forent, concessa esse intelligantur.

§. 6. Decernentes, easdem præsentibus literas sub quibuscunque similibus vel dissimilibus indulgentiarum, vel aliarum gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, derogationibus, & aliis contrariis dispositionibus, etiam in favorem Basilicæ Principis Apostolorum de dicta Urbe, seu Cruciatæ sanctæ, aut etiam per Nos, seu alios Romanos Pontifices Prædecessores nostros, ac dictam Sedem, etiam Motu proprio, etiam potestatis plenitudine, seu ad quorumvis Imperatorum & Regum instantiam, pro tempore quomodolibet factis, minime comprehendere, sed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum statum restitutas, repositas, & plenariè reintegratas ac de novo concessas esse, & censeri debere, irritumque

Facultatem eidem tribuit alias Congregationes hujus Primariæ Congregationis de Urbe aggregare, & eas gratias & indulgentias communicandi.
Tu ad hoc vide Bullam Clem. VIII. cit. in rubr.

Claustula præservativa.

Clausula de-
rogatoria.

& inane, si secus super his à quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§. 7. Non obstantibus præmissis, ac voluntate nostra prædicta, necnon constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, cæterisque contrariis quibuscumque. Volumus autem, quòd si dicte Congregationes aut Sodalitæ, vel eorum quæcumque aliquo modo eidem Societati vel Domibus seu Collegiis, aliquod impedimentum seu præjudicium pro tempore attulerint, idem Præpositus seu Vicarius, illas vel illa, aut eorum singulas vel singula dissolvere possit.

Fides danda
transumptis.

§. 8. Quòdque præsentium transumptis, etiam impressis, manu Secretarii ipsius Societatis aut Notarii publici subscriptis, & personæ alicujus in dignitate Ecclesiastica constitutæ, seu ipsius Præpositi aut Vicarii generalis pro tempore existentis, ejusdem Societatis sigillo munitis, eadem prorsus fides ubique locorum in iudicio & extra illud adhibeatur, quæ adhiberetur eidem præsentibus, si forent exhibitæ vel ostensæ. Nulli ergo &c.

D. P. An. 2.
5. Januarii.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum Anno Incarnationis Dominicæ, 1587. Nonis Januarii, Pontificatus nostri Anno secundo.

L.IV.

De Incestis in quibusdam casibus ultimo supplicio in statu Ecclesiastico puniendis.

Edita An. D.
1587.

SIXTUS PAPA V.

Motu proprio, &c.

Causa hujus
concessionis.

Volentes, quantum in nobis est, comprimere effrenatas, & flagitiosas hominum libidines, ex quibus præter gravem Divinæ Majestatis offensam, multa, & magna in dies scandala, cum ingenti animi nostri dolore exoriri videmus, ac subditi potissimum nostros, quorum salutis præcipuam & peculiarem gerimus sollicitudinem, peccandæ licentia remota, ad pudicitie & castimonie studia salubribus edictis incitare. Ac attendentes, gravis quedam incestus crimina, tum naturali lege daminari, sicuti legitimus Ruben, quia violavit torum patris sui, primogenituram, & illius benedictionem perdidisse, tum & ab ipso Domino in lege prohiberi inter alias incestas cum affinibus vel consanguineis conjunctiones, ne quis uxoris patris sui, neve nurus suæ, neque uxoris fratris sui turpitudinem discooperiret, neque sororem uxoris suæ in pelliculam acciperet, ea adhuc vivente, penas quod gravesimas in eadem lege inflatas fuisse, cum dicit, Eos, qui cum noverca sua, vel cum nuru sua dormierint, vel supra uxorem filiam duxerint matrem ejus, omnes morte mori debere. Insuper Apostolum, acriter reprehendisse Corinthios ob hujusmodi causam illis verbis: Omnino auditur inter vos fornicatio, qualis inter gentes, ut uxorem patris sui aliquis habeat. Legibus etiam Seculi inter affines, veluti inter socerum, & nurum, socerum & generum, vitricum, & privignam, novercam, & privignum, levitrum & uxorem Fratris, atque alias hujusmodi incestas conjunctiones, variis penis veritas fuisse, sed & incestum cum his personis fornicariè committentes, graviiori animadversione coerceri. Præterea visum esse eam mulierem non rectè facere, quæ in patris concubinato fuit, deinde in filii vel nepotis esse cepit, vel contra quod, pro nefaria sit talis conjunctio, & ideo hujusmodi factus prohibendum sit. Itidemque sub pena supri interdictum esse, ne liberi concubinas parentum suorum uxores ducerent: Ac demum secundum sacros Ca-

Toc. tit. Cod.
& Auth. de
Incest. nup.
& Institut.
tit. de Nupr.
& l. 14. cum
seq. Dig. de
Rit. Nupt.

nones affinitatis, non modò si ex legitimo matrimonio, verum etiam si ex fornicario & illicito coitu proveniat, rationem habendam esse, eodem Apostolo dicente, An nescitis, quoniam qui adhæret meretrici, unum corpus efficitur? Erunt enim, inquit, duo in carne una; adeò ut inter personas hujusmodi affinitate conjunctas, usque ad certos gradus matrimonium constare non possint, & præterea nequaquam tolerabile videri, ut homines cum quibuscumque personis, sine ullo earum delectu & distinctione, nulla etiam ratione habita reverentia, erga eas præcipue personas, quibuscum hujusmodi arcto affinitatis vinculo conjuncti sunt, nedum divino, sed & naturali quodam jure debeat, more belluarum impunè ac temerè miscantur. Et ne eorum impunitatis exemplo, alii deinceps in abominandam hanc libidinem prolabantur, sed potius, ut qui Dei benignitate, eos ad penitentiam expectante, non corriguntur, condigna punitione coercantur.

§. 1. Motu simili, & ex certa scientia, &c. auctoritate Apostolica, perpetuò statuimus & ordinamus, ut in posterum in Alma Urbe nostra, vel in quacumque alia Civitate, Oppido, vel loco, nostræ & Romanæ Ecclesiæ ditioni in temporalibus subiectis, quicumque ausu nefario, scienter matrem & filiam, five duas sorores germanas carnaliter cognoverit, etiam si eæ, earumve altera publice meretrices fuerint, five clam five palam, aut figura matrimonii tale crimen admiserint, five etiam cum altera earum legitimo matrimonio conjunctus extiterit, penà ultimi supplicii plectatur.

§. 2. Quà itidem penà mulier puniatur, quæ sciens, matrem aut filiam vel sororem suam cum aliquo viro rem habuisse, eidem viro ipsa quoque sui corporis copiam fecerit.

§. 3. Similiter volumus unamquamque mulierem, etiam si instigante humani generis hoste, eò devenit impudentia, ut corpore publicè quæstum faciat, quæ cum patre, & filio, five cum duobus germanis Fratribus, scienter se carnaliter commiscuerit, five à prædictis sciens se carnaliter cognosci permiserit, etiam si eorum alteri legitimo toro copulata fuerit, penà ultimi supplicii puniri.

§. 4. Idque etiam in eum virum volumus observari, qui sciens, Patrem aut Filium vel Fratrem suum cum muliere aliqua rem habuisse, ipse etiam eandem mulierem carnaliter cognoscere non erubescit.

§. 5. Decernentes, sic in præmissis universis & singulis per quoscumque Judices, & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, in quavis causa & instantia judicari, & definiri debere, necnon irritum & inane, si secus super his à quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§. 6. Et nihilominus mandamus universis & singulis dicte Urbis, ac totius Status nostri Ecclesiastici Judicibus ordinariis, quavis dignitate & auctoritate fungent, modernis & pro tempore existentibus quibus contra reos talium criminum jurisdictioni competit, vel in futurum competet, ut de cætero perpetuis futuris temporibus, in eos, qui juxta præmissa criminosi, & delinquentes fuerint, ut supra dispositum est, animadvertant, contumaces, rebelles, & inobedientes, eisque auxilium, consilium vel favorem præstantes, per opportuna juris, & facti remedia, appellatione postposita, compellendo, invocato etiam vel adhibito ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

c. 6. & e.
pen. De eo
quod cog.
colan. & ibi
DD.Vir, scienter
matrem &
filiam, five
duas germanas cognoscens.

Mulier peccans cum eo cum quo scit matrem aut filiam, aut sororem suam rem habuisse. Mulier cum Patre & Filiis, vel duobus Fratribus, scienter peccans.

Vir sciens ejus Patrem vel Filium aut Fratrem cum muliere peccasse, si cum ea ipse peccaverit, & ultimi supplicii penam incurrant. Decretum irritans.

Judicium auctoritas procedendi contra in prædictos delinquentes eorumque fautores, juxta formam hujus Constit.

§. 10. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, dictaque Urbis, ac aliarum ejusdem Status Provinciarum, Civitatum, Oppidorum & locorum statutis, novis reformationibus, consuetudinibus, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, privilegiis quoque, indultis & literis Apostolicis, illarum Civibus, Incolis, Populis, & Magistratibus, aut aliis personis quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, illorum tenores pro plenè & sufficienter expressis, & ad verbum insertis habentes, specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque; Volumus autem, ut præsentis Motus proprii sola signatura sufficiat, & ubique tam in judicio quam extrà illud, & tam in Romana Curia quam extrà eam, plenam & indubitam fidem faciat, regula contraria non obstante.

§. 8. Utque in valvis Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, & in acie Campi Floræ, more solito affigatur, & eo detractio illius exempla etiam impressa, inibi affixa relinquantur, factaque hujusmodi publicatione, hic in Urbe post quindecim, extrà verò eam, post triginta dies, quoscumque perinde ardeat, & afficiat, ac si eorum unicuique personaliter intimatus fuisset.

§. 9. Sed & quò facilius possit ad singulorum notitiam pervenire, mandamus omnibus & singulis Legatis, Vicelegatis, Præfidentibus & Gubernatoribus Provinciarum & Civitatum quarumcumque dictæ nostræ ditionis Ecclesiasticæ, ut in sua quisque residentia, & in aliis Terris, & Oppidis eis benè visis, curent eundem Motum proprium illiusve transumpta, in locis consuetis, de more publicari.

§. 10. Ac decernimus, ipsis transumptis, etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, in judicio & extrà illud ubique eandem fidem adhibendam esse, quæ eidem signaturæ præfentis Motus proprii adhiberetur, si effectus exhibita vel offensâ.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Non. Aprilis, Anno secundo.

Fiat Motu proprio F.

Anno à Nativitate Domini 1587. Indiæ. 15. die verò 8. mensis Maji, Pontificatus Sanctissimi in Christo Patris, & D. N. D. Sixti divinâ Providentiâ Papæ V. Anno ejus tertio retroscriptæ literæ affixæ & publicatæ fuerunt, ad valvas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, & in acie Campi Floræ, per me Joan. Baptistam Bagni & Octavianum Taglietum Curf.

Alex. Parabiacus Mag. Curf.

Præfinitio Titulorum, & Diaconorum pro S. R. E. Presbyteris, & Diaconis Cardinalibus.

Cardinalium numerum, ordinem, statum, officium & qualitates, edixit hic idem Pontif. supra in Constitut. 50. Ubi cætera de Card. notavi in hoc Tomo 2.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Religiosa sanctorum Pontificum Prædecessorum nostrorum providentiâ institutum olim fuit, jam inde à vetustissimis temporibus, & posteris traditum, ut Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Presbyteris, ceteris in Urbe Roma Ecclesiæ, Tituli appellatæ,

quasi quædam cujusque propriæ Diocèses, Diaconis verò, Urbis regiones ad Christianæ Religionis propagationem & conservationem assignarentur. Quæ quidem sancta institutio plurimum sæculorum continuata serie, ac pro temporum varietate susceptis incrementis, ad nostram usque ætatem servata, ita viget, ut præter sex Episcopos Cardinales, qui certis Cathedralibus Ecclesiis Urbis finitimis præfunt, singulis Presbyteris & Diaconis Cardinalibus propriæ in Urbe Ecclesiæ Tituli videlicet & Diaconia cum suis Clero & Populo, ac quasi Episcopali jurisdictione in spiritualibus & temporalibus regendæ & administrandæ committantur.

§. 1. Proinde nos, postquam per nostram nuper editam Constitutionem, creandorum Cardinalium numerum, computatis sex Episcopis prædictis, quatuordecim Diaconis, reliquis verò Presbyteris Cardinalibus, ad septuaginta præscripsimus, nunc quoque ad Dei honorem, atque ad ipsius Sanctæ Romanæ Ecclesiæ decus & ornamentum, ac Romani Cleri & Populi bonum regimen, salubremque directionem, eisdem Presbyteris, & Diaconis Cardinalibus totidem Titulos & Diaconias, ipsorum amplitudini & dignitati maximè congruentes, duximus assignandos. Ac licet pleræque ex antiquis Ecclesiis in Titulos & Diaconias concedi solitis, aut à Prædecessoribus nostris successu temporum additis, adhuc integræ, & illasæ permancant, tamen quia nonnullæ, tum diuturnitate & injuriâ temporum, tum diversis quæ olim contigerunt ejusdem Urbis direptionibus, incendiis, & ruinis collapsæ sunt, Nos antiquæ pietatis, & Religionis Christianæ monumenta conservare cupientes, sicuti Sacrosanctas Basilicas, & augustiora templa antiquitate ipsa veneranda, nedum facta tecta custodiri, sed & ingenti nostro sumptu resciri, instaurari, & ornari indies magis curamus, ita etiam primo quidem loco veteres, & nobiles Ecclesias, præcis temporibus in titulos Presbyterorum Cardinalium, ut præfetur, institutas, delegimus, easque omnes quæ adhuc extant, volumus omnino in Titulos pro modernis, & futuris Presbyteris Cardinalibus retinere. Deinde ex iis, quæ recentî memoria in Titulos erectæ fuerunt, prætermisiss quibusdam, propter loci incommo-

1587.
signari Car-
dinalibus
Episcopis, &
aliæ Urbis
Ecclesiæ aliis
Card. Pres-
byteris, aliz-
que Card.
Diaconis.

Pontif. iste
Ecclesiæ
Titulos &
Diaconias
pro eis de-
terminat.

Pauli doctrinæ & martyrio consecrata, & Caput Christiani Orbis & Religionis effecta est certa Sedes, mansionem & locum unicuique proprium assignet, cuius quidem loci concessione, idem Cardinales & sui officii admoneantur, & residentie, quam assistendo ipsi Romano Pontifici servare debent, & vel ex hoc magis tamquam in unum corpus compacta membra, sacro capiti connexa esse, & ab illo dependere clarius dignoscantur.

Titulorumque hic descriptos pro quinquaginta Presbyteris Cardinalibus ordinat, & eis assignat.

§. 2. Habita igitur cum Venerabilibus Fratribus nostris ejusdem S. R. E. Cardinalibus deliberatione matura, de eorum consilio & assensu, statuimus & ordinamus in posterum perpetuis futuris temporibus, Presbyteris Cardinalibus, has tantum, quæ infra descriptæ sunt, Ecclesias, neque alias in titulis assignari debere, videlicet, ex antiquis Sanctæ Crucis in Hierusalem, Sanctorum Marcellini & Petri, Sanctorum Quatuor Coronatorum, Sanctorum Joannis & Pauli, Sanctæ Anastasiæ, Sanctæ Sabinæ, Sancti Stephani in Coelio monte, Sancti Clementis, Sanctorum Nerei & Achillei, Sanctæ Susepne, Sanctæ Pudencianæ, Sancti Sixti, Sancti Petri ad Vincula, Sancti Martini in Montibus, Sancti Eusebii, Sanctæ Priscæ, Sancti Vitalis, Sancti Marci, Sancti Marcelli, Sancti Laurentii in Lucina, Basilicæ duodecim Apostolorum, Sancti Laurentii in Damaso, quæ Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Vicecancellario pro tempore existenti perpetuo concessa & assignata est, Sanctæ Balbinæ, Sanctæ Cecilie, & Chrysogoni, Sanctæ Praxedis, Sanctæ Mariæ Transiberim. Ex posterioribus verò Sanctorum Quirici & Julite, Sancti Joannis ante Portam Latinam, Sanctæ Agnetis in Agone, Sancti Laurentii in Palisperna, Sancti Thomæ in Parione, Sancti Silvestri in Campo Martino, Sancti Pancratii, Sancti Bartholomæi in Insula, Sancti Matthæi in Merulana, Sanctæ Mariæ de Araceli, Sanctæ Mariæ in Via, Sanctæ Mariæ supra Minervam, Sanctæ Mariæ Angelorum in Thermis, Sancti Hieronymi Illiricorum, necnon quas supradictis antiquis, & posterius institutis addimus, & ex nunc in Titulos Presbyterorum Cardinalium, cum honoribus, insignibus, privilegiis, auctoritatibus, & præminentibus debitis, & consuetis, instar aliarum Ecclesiarum, quæ in similes Titulos per nostros Prædecessores antiquitus erectæ & institutæ fuerunt, sine alicujus præjudicio, perpetuo erigimus & instituimus, ac Titulorum nomine & dignitate insignimus, & decoramus, Sancti Eusebii in Janiculo, murato illius statu ex Diaconia quæ hæcenus fuit, in Titulum Presbyteralem, Sancti Augustini, Sanctæ Mariæ de Populo, Sancti Alexii in Aventino, Sancti Blasii de Annulo, Sanctæ Mariæ de Pace, Sancti Salvatoris de Lauro, Sancti Petri in Monte Aureo, Sanctissimæ TRINITATIS in Monte Pincio, Sanctæ Mariæ Transpontinæ.

Diaconias quoque hic enarrat, & pro 14. Diaconis Cardinalibus ordinat, & eis assignat.

§. 3. Ex Diaconiis verò antiquis statuimus retinenda esse tantummodo quatuordecim infra scriptas, videlicet Sanctæ Mariæ in Aquiro, Sanctæ Mariæ in Cosmedin, Sanctorum Cosmæ & Damiani, Sanctæ Mariæ Novæ, Sancti Hadriani, Sanctæ Mariæ in Via lata, Sanctæ Mariæ in Porticu, Sancti Angeli in foro Piscario, Sancti Nicolai in Carcere Tulliano, Sanctæ Mariæ in Dominica, Sancti Eustachii, Sancti Viti in Macello, Sanctæ Agathæ, ac Sancti Georgii ad Velabrum Ecclesias, quæ insigniores existunt, & præscriptum à nobis Diaconorum Cardinalium numerum exquant.

Episcopatum pro sex Episcopis Cardinalibus delegat.

§. 4. Ità ut computatis Ecclesiis Cathedralibus, videlicet Ostiensi & Veliterna invicem unitis, Portuensi & Sanctæ Rufinæ itidem unitis, Albanensi, Sabinesi, Tusculana, & Prænestina, quibus sex Episcopi Cardinales præfunt, & titulis

Presbyterorum superius designatis, numerum perpetuaginta Ecclesiarum constituent.

§. 5. Ei aliter præterea Titulus supra numerum additus sit, ut si quando contingat Diaconum vel Episcopum Cardinalem Vicecancellarium esse, & ideò eundem dictæ Ecclesiæ Sancti Laurentii in Damaso, quæ Vicecancellario pro tempore existenti per literas felicis recordationis Clementis Papæ VII. Prædecessoris nostri perpetuo, ut præfertur, concessa, & assignata fuit, præesse, alicui Presbytero Cardinali proprius titulus non defuit.

§. 6. Omnes verò alias Ecclesias, quæ per præsentem nostram constitutionem Presbyteris Cardinalibus, etiam forsitan ex dispensatione Apostolica, pro Diaconia obtinentur, itidem omnes & quascumque ex quatuordecim superius enumeratis Diaconiis, quæ Presbyteris Cardinalibus in Titulos forsitan, etiam ex simili dispensatione concessæ aliàs fuerint, & ab iis obtinentur, demum omnes & quascumque Ecclesias superius non expressas, ipsis Presbyteris aut Diaconis, Cardinalibus, in titulos aut Diaconias commissas & assignatas, ac per ipsos obtentas volumus & decernimus per præsentem, ex nunc eo ipso vacare, & quascumque illarum assignationes, concessionem, necnon dispensationes desuper etiam Motu proprio & consistorialiter, ac de simili Fratrum Consilio expeditas, quæ à Prædecessoribus nostris, quæque à nobismet ipsis emanarunt, literatæ Apostolicas desuper confectas, processusque habitos per eandem, & inde secuta quæcumque cassamus, irritamus, & annullamus, irritæque & nullæ, ac nullius roboris vel momenti esse nuntiamus, max assignaturis eisdem Cardinalibus, ex quorum personis Ecclesiæ in Titulos aut Diaconias per eos hæcenus obtentæ, vigore hujus nostri decreti vacant, & eorum cuilibet, alios Titulos aut Diaconias ex supradicto numero, proprio cuiusque ordini congruentes.

§. 7. In aliis verò, præterquam supra nominatis Ecclesiis, etiam si earum aliquæ in Titulos Presbyterorum, aut denominationes Diaconorum Cardinalium concedi solite sunt, & Cardinales iis præfati consueverunt (quarum singularum situationes & invocationes præsentibus haberi volumus pro expressis) nomina, insignia, denominationes, & statum hujusmodi Titulorum aut Diaconiarum perpetuo suppressimus & extinguimus, ac districtè etiam interdiximus, ne de cætero unquam, perpetuis futuris temporibus, alia quam ex suprascripto numero Ecclesiæ, in Titulum aut denominationem Cardinalatus, cuiuspiam Presbytero aut Diacono Cardinali, concedatur aut assignetur, neque aliis quam supra nominatis Titulis aut Diaconiis, Presbyteri vel Diaconi Cardinales præficiantur, neve unquam aliqua ex supradictis Diaconiis, Presbytero, neque contra, ullus ex dictis Titulis Diacono Cardinali quomodolibet concedatur vel assignetur, neque cum iis, aut eorum aliquo, ex quavis causa, desuper dispensetur.

§. 8. Sed & decreta aliàs in Consistorio super hoc edita, innovantes & ampliantes, pari ratione, etiam perpetuo prohibemus, ne in posterum alicui Presbytero aut Diacono Cardinali, qui alterum Titulum aut Diaconiam quomodolibet affectus fuerit, quive ex ordine Diaconorum ad ordinem Presbyterorum, vel ad Episcopalem dignitatem transierit, aut ex ordine Presbyteratus in Episcopum pariter promotus fuerit, licentia & facultas retinendi Priorem Ecclesiam sui Tituli vel Diaconie in administrationem aut in titulum, neve Canoniatum, & Præbendam, Dignitatem, Officiorum aut Beneficiorum dimissi Tituli vel Diaconie collatio, neque Palatii, domus, vineæ, hortorum, aut fructuum, reddituum, & proventus, aut iurium quorumcumque ad hujusmodi Titulos seu Diaconias perti-

Alium Titulum pro Vicecancellario, statum, iuxta Consuetudinem, Clementis VII. quæ alibi, sup. fol. 688. Tom.

Ecclesias quæ aliter quam ut supra, & etiam aliæ quam supra expressæ sunt, à Cardinalibus obtinentur, ex nunc vacare decernit.

Ecclesiæque prædictas tantum, & non alias, in Titulum & Diaconiam Cardinalibus, modo & forma prædictis in futurum assignari præcipit.

Licentias retinendi Ecclesiam Priorem Tituli vel Diaconie Cardinalibus concedi prohibet.

Cardinalis
in sub-
ben. liti-
Apostoli-
nomen
kuli aut
aconiz
Episco-
pus sui ex-
imere de-
nt.

cretrum
itans.

Claufula
rogatoria.

Cardinales
ca istarum
Ecclesiarum
regimen &
ministra-
nem ge-
re se iuxta
offit. 7.
m. X. sup.
offit. 7.
offit. 7.
m. X. sup.
offit. 7.

uffio de-
bendi
ne Confi-
t. in Quo-
mo Can-
ll. Apof.

mentium, ad tempus seu ad vitam retentio, aut ulla alia reservatio, quovis pretextu, occasione, vel causa, etiam melioramentorum & sumptuum in illarum reparationem, necessitatem, five utilitatem factorum, concedantur, sed volumus ut ipsi Tituli & Diaconie, cum illis annexis, iuribusque & pertinentiis suis universis, liberè dimittantur.

§. 9. Insuper precipimus & perpetuo ordinamus, ut de cetero in quibuscumque literis Apostolicis, in quibus Cardinalium subscriptio manu propria facienda erit, iidem Cardinales, etiam Tituli, seu Diaconie, vel Episcopatus sui Cardinalatus nomine expresse vel subcribant.

§. 10. Decernentes per huiusmodi erectionem & instructionem, decem predictas per nos in titulos erectas Ecclesias tantummodo, novis privilegiis & dignitate auctas, decoratas & insignitas, nihil autem omnino præiudicii cuiquam illarum, nihil alieni juris detractum, aut immutatum, censeri posse aut debere; siquæ per quoscumque Iudices ordinarios & delegatos, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, & Cardinales predictos, subla- ta eis & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate, & in quavis causa & instantia, iudicari & definiti debere; necnon irritum & inane, si secus super præmissis, eorumve aliquo à quoquam, quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 11. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac Ecclesiarum supradictarum, & aliarum quarumcumque, necnon Ordinum iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis, illis, ac quibuscumque personis quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, illorum tenores præsentibus pro expressis habentibus, specialiter & expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 12. Sic igitur ipsi Cardinales, quibus huiusmodi Ecclesiarum regimen, cura, & administratio pro tempore commissa erunt, eas in spiritualibus & temporalibus sollicitè, fideliter & prudenter, regant & gubernent, ac iuxta constitutionem præ memorie Leonis Papæ Decimi Prædecessoris nostri, in Concilio Lateranensi novissime celebrato, editam, frequenter visitent, circa cultum divinum invigilent, mores ac vitam Cleri & Populi eis subiecti diligenter explorent, eosque ad rectè & honestè vivendum paternò moneant affectu, bonorum ac temporalium reddituum curam gerant, sic ad Dei gloriam & fidelis populi ædificationem, piâ & magnificè structurâ & fabricâ, suas quique Ecclesias instaurare studeant & exornare; & tam in vita quam in mortis articulo, pro divini cultus augmento, & salute animarum suarum, ac congruè sustentandum aliquem Presbyterum, qui inibi in divinis deserviat, five alias erga ipsas Ecclesias, si reparatione indigeant, vel alia subventionem, de bonis sibi à Deo collatis, prout cuique pro modo facultatum conscientia dictaverit, munificos se exhibeant & liberales, ut earumdem Ecclesiarum decora & ornamenta, tantorum Præfulum respondeant dignitati, ac ipsæ Ecclesie tam sublimibus personis gaudeant se commissas, & earum amplitudine illustratas; iidemque Cardinales evindè ipsius Sanctæ Romanæ Ecclesiæ, cuius nobilissima membra sunt, maiestatem, sua pietate, sollicitudine, & prudentia in dies magis extollant, & reverentiam omnium gentium erga illam exemplis bonorum operum insigniter augeant, ac denique præter æternæ retributionis præmia, digna quoque laudum præconia, à nobis & Apostolica Sede valeant promereri.

§. 13. Mandamus verò, ut præsentis literæ in Quinterno Cancellariæ Apostolicæ de more describantur.

§. 14. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam, nostrorum statutorum, ordinationum, erectionis, institutionis, insignitionis, decorationis, voluntatum, decretorum, cassationis, irritationis, annulationis, nuntiationis, suppressionis, extinctionis, interdicti, innovationis, ampliacionis, prohibitionis, præcepti, derogationis, & mandati infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri, & Pauli Apostolorum eius, se noverit incursum.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo octuagesimo septimo, Idus Aprilis, Pontificatus nostri Anno 1.

Ego Sixtus Catholicæ Ecclesiæ
Episcopus.

Ego A. Cardinalis Farnesinus Vicecancellarius Episcopus Ostiensis.

Ego Jacobus Cardin. Sabelus Episcopus Portuensis.

Ego Joannes Antonius Cardinalis S. Georgii Episcopus Tuscul.

Ego Innocentius Avalus Cardinalis de Aragonia Episcopus Sabinensis.

Ego Marcus Sixtus Cardinalis ab Altacamps et. S. Mariæ Transiberin.

Ego Marcus Antonius Cardinalis Columna tit. Sancti Laurentii in Lucina.

Ego Gabriel Cardinalis Paleotus tit. Sancti Martini in Montibus.

Ego Frater Michael Bonel. Cardinalis Alexandrinus tituli Sanctæ Mariæ super Minervam.

Ego Ludovicus Cardinalis Madrutius tituli Sanctæ Anastasiæ.

Ego Nicolaus Cardinalis Sancti Prædix Sancti-
rius.

Ego Julius Antonius tituli Sancti Bartholomæi in Insula Presbyter Cardinalis Sanctæ Severinæ.

Ego Hieronymus Cardinalis Rusticatus tituli Sanctæ Sufannæ.

Ego Joannes Hieronymus Cardinalis Albanus Sancti Joannis ante portam Latinam.

Ego P. Cardinalis Deza.

Ego Antonius Cardinalis tituli Sanctorum Joannis & Pauli.

Ego Joannes Antonius Cardinalis Sanctorum Quatuor.

Ego Joannes Baptista Cardinalis S. Marcelli.

Ego Julius Cardinalis Cananus tituli Sancti Eusebii.

Ego Antonius Maria Cardinalis Salvatus.

Ego Augustinus Cardinalis Veronæ tituli S. Marci.

Ego Vincentius tituli Sanctæ Mariæ in Via Cardinalis Montis regalis.

Ego Philippus tit. Sanctæ Sabinæ Cardinalis Spinola.

Ego Scipio Card. Lancellottus.

Ego Vincentius Card. Gonzaga.

Ego Federicus Cardinalis Cornelius tituli S. Stephani.

Ego Hyppolitus Card. Papien. tituli Sanctæ Mariæ in Porticu.

Ego Decius Card. Azzolinus tit. Sancti Matthæi in Merulana.

Ego Hippolytus Cardinalis Aldobrandinus et. S. Pancratii Major Penitentiarius.

Ego Hieronymus Cardinalis de Ruvere tituli Sancti Petri ad Vincula.

Ego Frater Constantius Cardinalis Sarnatus.

Ego Ferdinandus S. Mariæ in Via lata Diaconus Card. de Medicis.

Ego Philippus Sancti Eustachii Diaconus Card. Vastavillan. Camerarius.

Ego A. Card. Montaltus.

Ego Hier. S. Hadr. Diac. Card. Matthæius.

Ego Benedictus S. Georgii Diac. Card. Justinianus.

Ego Afcianus SS. Viti & Modesti & Crescentiæ Diacon. Card. Columna.

Sanctio po-
nalis. 1

D. P. An. 1.
die 13. Apr

Papæ subscr.

Card. sub-
scriptio.

ANNO
1587.
Publicatio.

624

SIXTUS QUINTUS.

ANNO
1587.

Anno à Nativitate Domini 1587. Indiſſione 15. die
verò 13. menſis Maji, Pontificatus Sanctiſſi, in Chriſto
Patris, & D. N. D. Sixti divini Providentiâ Papa
V. Anno ſecundo, retroſcripta litera affixe, & publi-
cata fuerunt ad valvas Baſilicarum Principis Apoſto-
lorum ſancti Joannis Lateranenſis de Urbe, & Cancel-
larie ac Camere Apoſtolice & acie Campi Floræ, per
me Johan. Baptiſtam Bagni ejusdem S. D. N. Pa-
pæ Curſi.

Alex. Parabiacus Mag. Curſi.

LVI.

Contrà non reſtituentes aut revelantes Scripturas
ad Rev. Cameram Apoſtolicam quomodolibet
facientes à Commiſſario ejusdem Cameræ coer-
cendos.

Similem edidit Conſtit. Sixt. V. de qua & de officio Com-
miſſarii vide hic ſup. in conſt. 44. Ad exceſſum fol.
596. ubi plenè notavi.

De regiſtrandis in Camera Apoſtolica Gratiis illius
interreſſe concernentibus habes S. D. N. Urb.
VIII. Conſtit. 107. Cùm ſicut. inf. tom. 4.

SIXTUS PAPA V.

Motu proprio, &c.

Edita An. D.
1587.

Cauſa hujus
conſtitu

Scripturas
Camer. Ap.
detinentes,
& intra ſex
dies non re-
ſtituentes
ſeu ſcientes,
& non reve-
lantes poe-
nas hic de-
ſcriptas in-
currunt.

Non ſine maxima animi moleſtia accepimus, à
quampluribus annis citrà plures libros Cam.
noſtræ Ap. & illius Miniſtrorum, ac diverſas ſcrip-
turas, instrumentaſque publica & privata, ad eam-
dem Cameram ſpectantia, ab aliquibus perſonis,
tàm ex Archivio dictæ Cameræ quàm ex officiis
Notariorum illius, & aliis locis clàm ſubrepta & oc-
cultata fuiſſe, ac etiam aliàs diverſimodè amiſſa ſeu
deperdita, ad variarum perſonarum manus deve-
niſſe, & per eaſdem perſonas temerè & indebitè de-
tineri, in animarum ſuarum periculum, dictæque
Cameræ & diverſarum perſonarum interreſſe haben-
tium damnum ac jacturam non modicam.

§. 1. Motu igitur ſimili, & ex certa noſtra ſcien-
tia, ac de Apoſtolice poteſtatis plenitudine, om-
nes & ſingulas perſonas, tàm Eccleſiaſticas quàm
Seculares, & cujuſcumque ſtatus, gradus, ordinis
vel conditionis fuerint, etiam quavis ampliſſima di-
gnitate fungentes, quæ aliquos libros vel ſcripturas
ſeu instrumenta quæcumque publica vel privata, ad
præſentam Cameram quomodolibet ſpectantia &
pertinentia, undecumque ſubriperunt, vel ab aliis
ſubrepta ſeu deperdita, vel aliàs quomodolibet ad
manus ſuas habuerint, & penè ſe detinuerint vel
detineant de præſenti, aut illorum detentores ſcive-
rint, vel ſciant, in Domino monemus, eiſque ni-
hilominùs in virtute ſanctæ obedienciæ, ac ſub ex-
communicationis majoris late ſententiæ, poena, à
qua non niſi à Nobis vel Succeſſoribus noſtris Rom.
Pont. præterquam in mortis articulo conſtituti,
abſolvi poſſint, privationiſque omnium & ſingulo-
rum Officiorum & Beneficiorum ſuorum, ſiquæ ob-
tinent, inhabilitatiſque ad illa & alia in poſterum
obtinendi, injungimus & mandamus, ut intra ſex
dierum proxime futurorum terminum, quorum
duos pro primo, duos pro ſecundo, & reliquos
duos dies pro tertio & peremptorio termino aſſi-
gnamus, libros, ſcripturas, & instrumenta præſata,
qui illos & illa habent, Dilecto filio Joſſredo Lo-
mellino Notario & familiari noſtro ac dictæ Ca-
meræ generali Commiſſario, cui, ſui officii ratione,
huiſmodi ſcripturarum cura, & pro illis proceden-
di facultas, per alias noſtras literas præcipuè de-
mandata eſt, reſtituant. Alii vero ſcientes penè
quos illa fuerint vel ſint, eidem revelent & ſigni-
ficent cum effectu. Nos enim qui libros, qui ſcrip-
turas, ſeu instrumenta præſata retinuerint aut oc-
cultaverint, ſeu illa retinentes non revelaverint,
dicto termino elapſo ipſo facto & abſque aliqua
citatione & declaratione poenas præſatas incurriſſe,
& ad illarum executionem deveniri poſſe & debe-

re decernimus & declaramus, ac volumus & man-
damus.

§. 2. Mandantes propterea eidem Joſſredo Com-
miſſario, ut elapſo dictorum ſex dierum termino,
contrà habentes ſeu detinentes libros, ſcripturas,
& instrumenta huiſmodi, ac illa & illas in dicto
termino non reſtituentes, vel ubi, ſeu penè
quem, ſeu quos illa ſint, ſcientes, & non reve-
lantes, tamquàm contrà fures, etiam juxta ejus
ordinarias facultates, etiam ex officio, & per in-
quiſitionem, ad illorum carcerationem & exami-
na, pro reperienda veritate, ac prout juris fue-
rit, ad eorum condemnationem, illiſque &
præſatarum poenarum executionem, etiam om-
nibus aliis, juris & facti, viis & remediis oppor-
tunè procedat.

§. 3. Ut autem hæc omnibus innotefcant, tàm
præſentes, quarum ſolam ſignaturam ſufficere vo-
lumus, quàm Motum proprium facultatum, quas
piæ memoriæ Pius Papa Quintus Prædeceſſor no-
ſter olim, pro recuperatione ſcripturarum Cameræ,
& Sedis Apoſtolice bonæ memoriæ Carolo de Graſ-
ſis Epilcopo Montifaſconenſi atque Honuphrio
Camajano, dictæ Cameræ Præſidenti, dùm in
humanis agerent, ſub Dat. videlicet 14. Calend.
Septembris Pontificatus ſui anno tertio, conceſſe-
rat, de quarum publicatione non conſtat, quæ-
ſque facultates nos nuper in perſonam dicti Joſſe-
di Commiſſarii, per eaſdem noſtras innovavimus,
in valvis Baſilicæ S. Petri de Urbe, & Camere Apo-
ſtolice, necnon Cancellariæ noſtræ Apoſtolice, &
in acie Campi Floræ per unum ex noſtris Curſo-
ribus publicari, earumque exempla, etiam impreſ-
ſa, de more aſſigi mandamus, publicationemque
huiſmodi, eos quos præmiſſa concernunt, affe-
re, perinde ac ſi unicuique eorum perſonaliter in-
timatæ fuiſſent, decernimus, cùm eorum quæ tàm
publicè notiſcantur, nulli valeant probabilem
ignorantiam allegare.

§. 4. Ac etiam volumus & mandamus, quòd
præſentium exempla etiam ut præmittitur impreſſa,
manque dicti Joſſedi Commiſſarii ſubſcripta, &
ejus ſigillo ſigillata, eandem ubique locorum ſi-
dem faciant, quam præſentes facerent, ſi in me-
dium exhibitæ eſſent vel offenſæ. Et nihilominùs
etiam mandamus literas Apoſolicas, ſive ſub
Plumbo ſive in forma Brevis, quandocumque ex-
pediri poſſe.

Placet Motu proprio F.

Regiſtrata in Cam. Apoſt. lib. 1. Signaturarum S.
D. N. fol. 178. penè me inſcriptum dictæ Camere
Notarium & Cuſtodem.

Tydeus de Manchi.

Die 27. Aprilis 1587. ſuoraſcripta Motus proprii
cedula, affixa & publicata fuit, una cum alia ſu-
perius narrata alterius Motus proprii cedula in locis ſu-
praſcriptis, ut moris eſt, per me Jo. Andream Paniz-
zam, S. D. A. Papæ Curſorem.

Alex. Parabiacus Mag. Curſi.

Inſtitutio Hoſpitalis Pauperum Mendicorum in Ur-
be, ad eos piè alendùm, eorumque animæ &
corpori ſalubriter conſulendum, cum annuo
redditu, & privilegiorum aſſignatione.

Lites hujus Hoſpitalis à Judice per ejus Adminiſtra-
tores nominando dijudicari voluit hic idem Pont.
in conſt. 86. Poſulat. ubi etiam habentur alia de
iſto Hoſpitali.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

Quamvis infirma & varia mortalium conditio,
ita divina Providentiæ inſcrutabili diſpen-
ſatione ordinata, & quaſi in quosdam gradus

Commiffarius Cam.
Ap. poſt ſex
dies, contrà
prædictos
tamquàm
contra fures
procedat.

Hoc habet
eti. m ſup. in
Conſt. 4.
Ad exceſſum

Forma publi-
candi
hanc Bul-
lam, & alia
Pii V. hinc
confirma-
tam.

Fides tra-
ſumptorum

PP. ſubſc.
Regiſtrati
in Camera

Public. A.
27. Apr.

LVII.

Edita An.
1587.
& 1588.

Pauperum
ſubventio
pietas & i-
ſtericordia
commend.

distincta sit, ut secundum propriam vocationem, aliqui in hoc modo temporalibus copiis abundant, aliqui mediocrem aut tenuem vitam degant, quidam autem pauperes & miserabiles sint, qui aliena divitum ope ad sui sustentationem indigeant, quod & ita semper fore Moyses populum Israël præmonuit, dicens. Non deerunt pauperes in terra habitationis tuæ: idcirco ego præcipio tibi, ut aperias manum fratri tuo egeno & pauperi, qui tecum versatur in terra: Et Dominus discipulis suis confirmavit illis verbis: Semper pauperes habebitis vobiscum. Ipse tamen rerum divinarum atque humanarum Rector ac moderator Deus, qui vitæ subsidia & opes sic inæqualiter hominibus distribuens ac dividens, non ideo injustus aut iniquus, quod adfit, dici potest, nec sine causa efficit, ut alii affluant & abundant, aliis verò hæc ipsa defint, & illis egeant, sed ut hac via divites quidem suæ benignitatis ac fidelis administrationis præmia accipiant, pauperes verò per virtutem patientiæ coronati, digna mercede honorentur, voluit pro sua immensa in universum genus humanum charitate ac beneficentia, potissimum erga pauperes & egenos, eam specialem ac perpetuam curam diligenter adhiberi, ut neque indigerent, neque mendicare cogerentur, quemadmodum & prædicto Populo Israël per eundem Moysen expressè mandavit: Omnino indigens & mendicus non erit inter vos, ut benedicat tibi Dominus Deus tuus in terra, quam traditurus est tibi in possessionem. Et inter Christifideles, in ipso nascentis Ecclesiæ initio, sub Sanctis Apostolis plenè servatum esse, eorumdem Apostolorum acta testantur. Neque enim iniquum quicquam egens erat inter illos, Quare idem Dominus noster JESUS Christus volens mundo universo, ac præcipuè fidelibus suis apertè demonstrare quanti faceret humilitatis eximiam virtutem, & quam sibi chara & dilecta esset paupertas, ac pariter docere ne à divitibus & opulentis hominibus pauperes despicerentur, eorumque cura negligere, primum quidem ipsemet, quando juxta præclara vaticinia Prophetarum è celo in terras, humana carne assumptâ, descendit, non regium diadema, aut sublime aliquod decus, quod mundo ostentaret, & hominum oculis obiceret, secum detulit, sed semet ipsum exinanivit formam servi accipiens, ac pauper in stabulo natus, locum in diversorio non habere, pauperis præsepis angustias contineri, pauperem demum, vitam, quam pro nobis suscepit, eligere, ac usque in finem retinere dignatus est, ut non immerito dixerit: Vulpes foveas habent, & volucres cæli nidos, Filius autem hominis non habet ubi caput reclinet. Et per os David Prophetæ: Ego autem mendicus sum & pauper: Et Apostolus scripserit: Scitis enim gratiam Domini nostri JESU Christi, quoniam propter vos egenus factus est, cum esset dives, ut illius inopiâ vos divites essetis. Deinde etiam pauperum & miserabilium personarum dum in mundo conversatus est, singularem quandam sollicitudinem gessit, eosque divinis gratiis & beneficiis multipliciter adjuvit, quod passim Evangelica testatur historia, dum pauperes sibi discipulos delegit, dumque cæcis visum, surdis auditum, mutis loquelam, claudis gressum, aridis & paralyticis corporis & membrorum integritatem reddidit, leprosos mundavit, demoniacos liberavit, aliisque variis languoribus & infirmitatibus laborantes & oppressos curavit, pauperum quoque frequentium turbas cœlesti verbo sæpius pavit & instruxit, & eas quandoque esurientes etiam corporalibus mirabiliter satiavit alimentis, & confirmat Apostolus Jacobus, dicens: Nonne Deus elegit pauperes in hoc mundo, divites in fide, & hæredes regni, quod promissit Deus diligentibus se? Ac præterea misericordiam & eleemo-

synas, quæ pauperibus sunt, tamquam sibi factas recipit, & acceptas refert. Unde & à Sanctis & piis viris pro pauperibus peregrinis, & mendicis, non Angelos modò, sed Angelorum Dominum sæpius hospitio susceptos fuisse legimus; quod & Apostolus ad Hebræos memorat dicens: Hospitalitatem nolite oblivisci, per hanc enim placuerunt quidam Angelis hospitio receptis. Ac denique fideles cunctos, ad sublevandas pauperum necessitates monitis & præceptis, & maximis etiam propositis præmiis, in Scripturis sacris vehementer inflammat; Ait enim per Isaiam; Frange esurienti panem tuum, & egenos, vagosque induc in domum tuam, cum videris nudum, operi eum, & quæ sequuntur. Ac rursus paulò infra: Cum effuderis esurienti animam tuam, & animam afflictam repleveris, orietur in tenebris lux tua, & tenebræ tuæ erunt sicut merides, & requiem tibi dabit Dominus Deus tuus semper, & implebit splendoribus animam tuam, & ossa tua liberabit, & erit quasi hortus irriguus, & sicut fons aquarum cujus non deficient aquæ. Atque in Evangelio per seipsum Veritas dicit: Cum facies convivium, voca pauperes, debiles, claudos, & cæcos, & beatus eris, quia non habent retribuere tibi, retribuetur enim tibi in resurrectione iustorum. Et tunc demum testatur se in novissimo die æternæ beatitudinis præmia paravisse, qui misericordie opera in pauperes, & egenos exercuerunt, ipsis namque dicturus est, Venite benedicti Patri mei, possidete paratum vobis regnum & constitutione mundi: Esurivi enim, & dedistis mihi manducare, sitivi, & delistis mihi bibere, hospes eram, & collegistis me, nudus & operuistis me, infirmus & visitastis me, in carcere eram, & venistis ad me, & rursus, Amen dico vobis, quando fecistis uni de his fratribus meis minimis, mihi fecistis.

§. I. Quæ quidem nos attentius considerantes, ac recolentes in quadam aliquando Synodo pie constitutum fuisse, ut una quæque Civitas pauperes, & egenos incolas suos alimentis congruentibus pasceret, secundum vires, ut tam vicini Presbyteri quam cives omnes suum pauperem pasceret, quo fieret, ne pauperes ipsi per alienas Civitates vagarentur, atque olim hujusmodi Hospitalia, in quibus pauperes, & mendici alerentur, in multis Civitatibus exstis, & in aliquibus etiam in Italia adhuc vigere, simulque egenorum calamitates, quorum ingens quotidie numerus nobis antè oculos versatur, paternæ charitate miserati, tum Christianæ pietatis, tum etiam nostro pastoralis officio consentaneum esse duximus, in hac Alma Urbe pietatis & charitatis altrice, ad quam ex omnibus totius Orbis terrarum regionibus, quasi communem patriam, & tutissimum refugium, in finem, & gremium Sanctæ Romanæ Ecclesiæ plurimi pauperes fame, frigore, nuditate, rerumque omnium inopiâ confecti, ac variis morbis & incommodis confecti se recipiunt, Domum hospitem instituire, in quam omnes benignè excipiantur, alantur, vestiantur, paratos habeant lectos, cibos, potum, aliisque ad imbecilla corpora conservanda & recreanda opportuna, hac demum ratione provideatur, ne ulterius mendici per vias, & plateas tota Urbe dispersi ac vagantes, victum queritando desatigentur, ne, non modò publica loca, aut privatarum adium vestibula, sed ipsa quoque templa genitibus, & ejulationibus compleant, ne suis clamoribus obstreant fidelibus dum divinis officiis, aut Missæ sacrificio intenti sunt, ne in Ecclesiis, in quibus debet esse quæta conservatio, quarimonis, lamentis, ac vociferationibus tumultus excitent, ne ipsa divina officia, & circumad-

Iste Pontifex
ob causas hic
expetitas.

stantium devotionem importunis ac molestis vocibus perturbent, ne, quod præcipue nobis cordi est, dum incertis sedibus Urbem peragranti, proprium Parochum non agnoscentes, absque alicujus divini præcepti, aut bonorum morum notitia, tamquam bruta animalia rationis expertia, cibo tantum quærendo & ventri pascendo intenti, aberrant, ita ut nemo illis Sacramenta Ecclesiastica ministrandi, nemo eorum salutis spiritualis curam specialem gerat. Postremo, ut eadem operâ, cunctis quos in publicum quantum incerta mendicitas vocaverit, inspectis, exploretur, in singulis integritas corporum, & robur annorum, atque incertes quidam & sine ulla debilitate internoscantur, eorumque ignavia & nequitia via præcludatur, qui simulata infirmitate, seu prætextu fidei, aut per socordiam & otium affectatæ paupertatis, alimoniam verè infirmis ac pauperibus præparant, ac simulandi morbi infamem quandam, dolosam, & fraudulentam artem faciunt, mox benè valentes, robusta, & valida totius corporis firmitate, ludis, comestationibus, aut illicitis aliis rebus vacant, cum salutis suæ dispendio, multorumque scandalo & offensione.

Hospitale Mendicorum in Urbe erigit & Ministros, quatuor ad ejus regimen singulis annis eligi mandat.

§. 2. Ut igitur eorumdem mendicorum animæ & corporis saluti consulatur, hocque tam salutare & necessarium opus, aliàs à nonnullis Prædecessoribus nostris inchoatum, semper tamen, ex eo quod certos redditus pro alimentis inopum non assignarunt, inefficaci conatu relicto & dimisso, nunc demum nostra auctoritate nostraque ingenti, piâ tamen impensâ, ut prosperiores successus, optatumque effectum fortituri, & perpetuo subsistat, scandalisque & incommodis prædictis occurratur, ac Sedis Apostolicæ, quæ omnes afflictos materno sinu semper complectitur, pietas & benignitas indes magis eluceat, habita super hoc cum Venerabilibus Fratribus nostris Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalibus, deliberatione maturâ, de eorum consilio, & assensu, ad DEI Omnipotentis gloriam, pauperum Mendicorum commodum & salutem, ac piorum operum incrementum in eadem Alma Urbe, in ædibus propè Pontem Sixtum ad Tyberis ripam sitis, quas ad hoc nostris pecuniis, magno pretio emimus, & ad usum eorumdem pauperum, instauratione, & fabricâ opportunâ accommodari curavimus; unum Hospitalium pauperum Mendicorum utriusque sexus in quo tamen seorsum viri à mulieribus manere, & commorari debeant, pro ipsorum perpetuis receptione, habitatione, & sustentatione cum suis Oratorio, Sacristia, Cœmeterio, humili Campanili & Campanis, ac distinctis & separatis, pro eisdem utriusque sexus personis, refectoriis, dormitoriis, hortis, areis, cellis, & officinis, congrua suppellectilibus, utensilibus, aliisque rebus necessariis, non mediocri nostro sumptu comparatis, sufficienter instructum, per quatuor Viros, Clericos, aut Laicos, idoneos, & probatos, quorum duo à Populo Romano in publico Consilio, & duo reliqui à dilectis filiis Confratribus Archiconfraternitatis Sanctissimæ TRINITATIS Convalescentium & Peregrinorum, cujus Oratorium ibi proxima via intermedia constitutum existit, ex suo corpore annis singulis eligantur, & deputentur, regendum, administrandum & gubernandum, ex certa nostra scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, tenore præsentium erigimus & instituimus.

Redditusque & annuos proveniunt assignat. Hos augere ut mox interius. Alias postea assignavit anno sequenti.

§. 3. Ac ipsi Hospitali pauperum Mendicorum sic erecto, & instituto, dotis nomine, & ad sustentandos pauperes redditum annuum novem millium scutatorum monetæ Romanæ, julis decem pro quolibet scutato hujusmodi computatis, ita constituimus & assignamus, &c.

§. 4. Volumus autem Hospitale Pauperum Mendicorum prædictum, ac illius pro tempore existentes Administratores, Officiales, Ministros, & alios fervientes, ratione ipsius Hospitalis pauperum Mendicorum bona mobilia & immobilia, cujuscumque qualitatibus, & quantitatibus, in dicta Urbe, & extrâ, ac aliis ubique locorum consistentia exempta esse ab omni jurisdictione, correctione, visitatione, dominio, superioritate, & potestate pro tempore existentium dictæ Urbis Gubernatoris, Senatoris, Conservatorum, Reformatorumque ac nostri & Romani Pontificis pro tempore existentis in dicta Urbe in spiritualibus Vicariis, necnon causarum curiæ Cameræ Apostolicæ generalis Auditoris, & cujusvis Ordinarii locorum, aliorumve quorumcumque Judicum & Officialium in ipsa Urbe, vel aliis ubilibet constitutorum.

§. 5. Ipsamque Hospitale pauperum Mendicorum, & quoscumque in propriis eorum rebus & bonis cum eo contrahentes à solutione & exactione quorumcumque ut vocant, pedaggi, gabellæ, bolletini, decimarum, & cujusvis alterius, tam ordinarii quam extraordinarii oneris, ex quacumque causâ impostorum, & imponendorum, eximimus, & prorsus liberamus, ac sub beati Petri, & Sedis Apostolicæ, atque nostra protectione suscipimus & collocamus, nobisque & dictæ Sedi immediate subijcimus, ac liberos, immunes, & exemptos declaramus. Necnon Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Camerario, Vicecamerario, Præsidentibusque & Clericis Cameræ Apostolicæ, Senatori, Conservatoribus, Reformatoribus, aliisque Officialibus, Judicibus, & personis prædictis, & quibuscumque ad exactionem decimarum & aliorum onerum prædictorum pro tempore deputatis, ne quorumcumque literarum, eis sub quibuscumque tenoribus, & formis concessarum prætextu, Hospitale pauperum Mendicorum Administratores, Officiales, Ministros, & Servientes prædictos personæque in eo degentes super præmissis, quovis modo molestant, seu molestari permittant, districtius inhibemus.

§. 6. Præterea pauperibus mendicis in eodem Hospitali pro tempore degentibus, quorum infirmitas, vel nimis imbecilla valetudo, aut corporis habitudo, jejuniis, seu carnium & lacticiuorum abstinentia ferre non poterit, ut de utriusque Medici consilio, quibuscumque quadragesimalibus, & quatuor anni temporibus ac vigiliis, & aliis diebus, in quibus jejuniis ab Ecclesia indictum, aut carnium, ovorum, & lacticiuorum usus, de jure vel consuetudine, seu aliis prohibitus existit, vel fuerit, carnibus, ovis, butyro, lacticiis, & aliis cibis prohibitis hujusmodi uti, & vesci.

§. 7. Singuli quoque Presbyteri, Seculares, & cujusvis ordinis Regulares, qui ad hoc à Gubernatoribus & Administratores, seu Deputatis pro tempore existentibus Hospitalis Mendicorum hujusmodi electi, & à prædicto in Urbe Vicario approbati fuerint, singulos pauperes, ministros & servientes ejusdem Hospitalis Mendicorum, à quibuscumque excommunicationis etiam majoris, suspensionis & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, quibus innodati fuerint, necnon quibuscumque eorum peccatis, criminibus, excessibus, & delictis quantumcumque gravibus & enormibus, etiam talibus, de quibus dicta Sedes merito consulenda foret, videlicet in casibus, tam Ordinarii locorum quam etiam Sedi Apostolicæ quomodolibet reservatis, non tamen in iudicio deductis, neque contentis in litteris die Ccenæ Domini legi solitis, semel in in-

Hospitale & ejus Officiales pauperes qui in eo degentes & eorum bona jurisdictione & superioritate Judicum & Officialium Urbis eximit.

Exemptio nemque à quacumque gabellâ & decima, d. Hospitali, & cum eo contrahentibus concedit.

Mendicos Hospitalis circa jejunia, scilicet carnium, habito utriusque Medici consilio dispensat.

Presbyteris in dicto Hosp. deputandis circa administrationem Sacramentorum, pro Mendicis, Ministris, & servientibus Hospitalis, facultates hic expressas concedit.

Peregrinos
in eodem
Hosp. ben-
igne etiam
recipi man-
da.

gressu Hospitalis, & iterum ab omnibus supradictis, nullò prorsus excepto, in mortis articulo, confessione eorum diligenter audita, in foro tantum conscientia absolvere, injuncta indè eis pro modo culpæ, suo arbitrio, poenitentia salutari. Quòdque pauperibus, ministris, & servientibus Hospitalis Mendicorum hujusmodi, Sacramenta Ecclesiastica administrare, & defunctorum corpora in proprio Cæmeterio sepelire, libere, & licite valeant, eisdem auctoritate & tenore similiter perpetuò concedimus & indulgemus.

Peregrinos
in eodem
Hosp. ben-
igne etiam
recipi man-
da.

§. 8. Cæterum volumus, ut in Hospitali prædicto, sic per nos erecto Pauperes & Mendici advenæ per Urbem transeuntes, si eò divertere voluerint, benigne recipiantur, ac eis tres refectio- nes subministrantur, & indè cum Dei benedictione ad iter suum prosequendum dimittantur.

Rationes
computo-
um ab Offi-
cialibus sin-
gulis men-
sibus exigi
præcipit.

§. 9. Præcipimus verò quatuor Administrato- ribus seu Deputatis prædictis, ut ipsi singulis men- sibus ab Oeconomis, Procuratoribus, Officialibus, Ministris & quibuscumque personis dicti Hospitalis pau- perum Mendicorum, rationes accepti, & expensi ejusdem Hospitalis diligenter exigant & inspiciant, eosque ad hujusmodi rationes reddendas cogant omnino, & compellant, prout eorum unumquem- que ad id teneri volumus & decernimus.

Thesaurarium
& Commis-
sarium
generales
ejusdem
Hospitalis
Gubernato-
res deputat.

§. 10. Ac insuper ut ipsius Hospitalis paupe- rum Mendicorum conservationi, bonoque regimi- ni eorumdemque pauperum indigentis opportuni- tatis consulatur, dilectos filios nostros, & Cameræ Apostolicæ Thesaurarium, & Commissarium gene- rales, nunc, & pro tempore existentes, ejusdem Hospitalis pauperum Mendicorum Gubernatores, & Superintendentes constituimus, & deputamus, quorum consilio, & ope quatuor Administratores seu Deputati, prædicti curam, & gubernium eo- rundem Mendicorum, ac dicti Hospitalis, illius- que reddituum, proventuum, jurum, actionum, & bonorum mobilium & immobilium oblatio- numque & elemosinarum administrationem ge- rant. Denique cætera omnia ad pietatem, & cha- ritatem exercendam pertinentia, peragant, ordi- nent, ac decernant. Mandantes eisdem Thesau- rio & Commissario, modernis & pro tempore exis- tentibus, ut una cum ipsi quatuor Administrato- ribus, seu Deputatis, tam iterum prædictas, quam alias quascumque rationes, & computa dicti Hos- pitalis, illiusque debitorum, saltem tertio quoque mense, & præterea quoties opus fuerit, exigant, accuratè videant, examinent, & solvant. Dantes etiam illis & concedentes plenam & liberam facul- tatem & auctoritatem, prædictos Oeconomos, Procuratores, Officiales, Ministros, servientes, debitores, & alios quoscumque, quorum intererit ad reddendas hujusmodi rationes, opportunis ju- ris, & facti remediis, cogendi, & compellendi, & eos qui satisfecerunt quietandi, absolvendi, & liberandi, ac similiter cum interventu eorumdem quatuor Administratorum seu Deputatorum, pro salubri directione, & conservatione dicti Hospi- talis pauperum Mendicorum, illiusque bonorum & jurium temporalium & spiritualium, quoscumque Officiales, Procuratores, Ministros, & Servientes, in eo deputandi & amovendi, aliosque eorum lo- co suffiendi, Ordinationes & statuta, licita ta- men & honesta, sacræque Canonibus, & genera- lis Concilii Tridentini decretis non contraria faciendi & edendi, eaque cum visum fuerit, revo- candi, immutandi, corrigendi, aliisque de novo condendi. Quæ quidem statuta sic facta, edita, revocata, immutata & correctæ, postquam per nos aut Romanum Pontificem pro tempore existen- tem approbata fuerint, ab omnibus supradictis Gubernatoribus, Administrato-ribus, seu Depu- tatis, Oeconomis, Procuratoribus, Officialibus, Ministris, Servientibus, & aliis quibuscumque ini- bi pro tempore receptis, inviolabiliter observari volumus, ac juxta eorumdem dispositionem à quibuscumque Judicibus, subflata eis quavis aliter ju-

dicandi facultate, judicari debere, & si fecus super his à quoquam, quavis auctoritate scienter vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane decernimus.

§. 11. Non obstantibus Constitutionibus, & Ordinationibus Apostolicis, ac dictæ Urbis jura- mento; confirmatione Apostolica vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & literis Apo- stolicis, eisdem Urbis Gubernatori, Senatori, Conservatoribus, Reformatoribus, Vicario, Audi- tori causarum Curie dictæ Cameræ, aliisque superius nominatis, necnon prædictæ Urbi, & Populo Romano, sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque clausulis, & decretis, etiam iteratis vicibus concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus illorum tenores præ- sentibus, pro sufficienter expressis habentes, illis alias in suo robore permanfuris, hac vice dimit- tat specialiter, & expresse derogamus, cæterisque contrariis quibuscumque.

§. 12. Ut autem hoc pium & salutare opus, feliciora in dies, Deo favente, suscipiat incremen- ta, eisdem Gubernatores, Administratores, seu Deputatores, Oeconomos, Procuratores, Offi- ciales, & Ministros dicti Hospitalis enixe hortamur, & monemus, ut coram ipsius Hospitalis, pauperumque Mendicorum, qui in eo recipiunt, ita alacriter, & promptè suscipiant, pauperes ipsos Mendicos sincera in Domino charitate tractent, bona temporalia ejusdem Hospitalis fideliter, & prudenter dispen- sent & administrent, ac demum in piis hujusmodi operibus, ad Dei gloriam, pau- perumque utilitatem, & salutem se ferventer exer- ceant, ut exindè, præter cælestis regni præmia, etiam nostram, & Sedis Apostolicæ benedictionem & gratiam consequi mereantur.

§. 13. Et quia difficile foret præsentem literas ad singula loca ubi eis opus fuerit, deferre, vo- lumus ut earum transcriptis, etiam impressis, manu publici Notarii subscriptis, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, ead- em prorsus fides in judicio & extrà illud ubique adhibeatur quæ adhiberetur ipsi originalibus, si essent exhibitæ vel ostensæ.

Nulli ergo omnino hominum &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnatio- nis Dominicæ 1587. quinto Idus Maii, Pontifi- catûs nostri Anno 3.

Ego Sixtus Episcopus Catholicæ Ecclesiæ fl.

Ego A. Cardinalis Farnesius Episcopus Ostiensis, Vicecancellarius.

Ego Jacobus Cardinalis Sabellus Episcopus Portuensis.

Ego Joannes Antonius Episcopus Tuscul. Cardi- nalis S. Georgii.

Ego A. Cardinalis Gesualdus, Episcopus Alba- nensis.

Ego Innocentius Avalus Cardinalis de Aragonia, Episcopus Sabinenfis.

Ego Marcus Antonius Cardinalis Columna Episcopus Prænestinus.

Ego M. S. Cardinalis ab Altaemps tt. S. Mariæ Transtiberim.

Ego P. Card. Sanctæ crucis tit. S. Clementis.

Ego Gabriel tit. Sancti Laurentii in Lucina Pres- byter Cardinalis.

Ego Frater Michaël Bonel. Cardinalis Alexandri- nus tituli Sanctæ Mariæ super Minervam.

Ego Ludovicus Madrutius tituli Sanctæ Anastasiæ. Nicolaus Cardinalis Senonensis tit. Sancti Pra- xedis.

Julius Antonius tituli Sancti Bartholomæi in Insula, Presbyter Cardinalis Sanctæ Severinæ.

Ego Hieronymus Cardinalis Rusticucci tituli Sanctæ Sissinnæ.

Clausula derogatoria.

Hortatio ad Ministros Hospitalis, ut bene ministrent.

Fides exemplorum.

Dat. P. An. 3. die 11. Maii.

Pape subscr.

Cardd. sub- scriptiones.

Ego Hieronymus Cardinalis Albanus tit. Sancti Joannis ante portam Latinam.
Ego P. Cardinalis Deza tit. S. Hier. Illyricorum.
Ego Antonius tituli Sanctorum Joannis & Pauli Presbyter Cardinalis.
Ego Joannes Antonius Cardinalis Sanctorum Quatuor.
Ego Joannes Baptista Cardinalis tituli S. Marcelli.
Ego Julius Cardinalis Cananus tituli S. Eusebii.
Ego Antonius Maria Cardinalis Salvatoris S. Mariæ de Pace.
Ego Augustinus Cardinalis tituli S. Marci.
Ego Vincentius tituli Sanctæ Mariæ in Via Cardinalis Montis regalis.
Ego Philippus Cardinalis Spinola tit. S. Sabinae.
Scipio Card. Lancelottus tit. S. Salvatoris in Lauro.
Vincentius Card. Gonzaga tit. S. Alexii.
Ego Julius Cardinalis Cananus tituli S. Eusebii.
Ego Federicus Cardinalis Cornelius tituli S. Stephanii in Monte Celio.
Ego Hyppolitus Card. Papien. tituli Sancti Blasii de Annulo.
Ego Decius Card. Azzolinus tit. Sancti Matthæi in Merulana.
Ego Hippolytus Cardinalis Aldobrandinus tit. S. Pancratii Major Pœnitentiarius.
Ego Hieronymus Cardinalis de Ruvere tit. Sancti Petri ad Vincula.
Ego Frater Hier. Cardinalis Afcu. tit. S. Thomæ in Pariione.
Ego A. Mar. Card. Perus. tit. S. Agnetis in Agone.
Ego Frater Constantinus Car. Sarnanus tit. S. Petri M. Aur.
Ego Ferdinand. Medices Card. S. Mariæ in Vialata.
Ego Philippus Card. Vastavillan. Sancti Eustachii.
Ego A. Card. Montaltus S. Mariæ in Cosmedin.
Ego Hier. S. Agathæ Diac. Card. Matthæjus.
Ego Benedictus S. Georgii Diac. Cardin. Justinianus.
Ego Afcantius SS. Viti & Modesti, & Crescentiæ S. R. E. Diac. Card. Columna.

Publicatio.

Anno à Nativitate Domini 1587. Indictione 15. die verò 1. mensis Julii, Pontificatus Sanctiss. D. N. D. Sixti divina Providentiâ Papæ V. Anno 3. retroscriptæ literæ Apostolica affixæ, lectæ & publicatæ fuerunt, & per aliquod temporis spatium dimissæ in valvis, seu portis Basilicarum sancti Joannis Lateranensis & S. Petri Principis Apostolorum de Urbe, necnon Cancellariæ Apostolicæ, & in Acie Campi Floræ, per nos Claudium Mongeat, & Catherinum Menanui Apostolicos Curf.

Alex. Parabiacus Mag. Curf.

LVIII.

Erectio Capellæ ad Præsepe JESU CHRISTI in Basilica S. Mariæ Majoris de Urbe, cum Præpositi, Sacrificæ, Capellanorum & Beneficiatorum institutione, atque Cardinalis Protectoris, & Judicis causarum ad eos spectantium jurisdictione.

Edita An. D.
1587.

SIXTUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Pont. iſte ab infantia B. Virginem ſibi Advocatam delegit, ejusque patrocinio multa pericula evaſit.

GLorioſæ & ſemper Virginis DEI Genitricis MARIÆ ſalutiferam ſæcunditatem humiliter venerantes, intrâ cujus caſtiſſima viſcera, virtute Altiffimi mirabiliter obumbrante, divina Sapientia ſibi domum ædificavit, ſummas illius laudes, & præclara in univerſum genus humanum, ſed in nos potiſſimum merita, & verbis & factis quantum pro humana imbecillitate poſſumus, libentiſſimè prædicamus. Hanc enim beatiffimam Virginem gratiæ, & miſericordiæ Parentem, ab ipſa pene infantia nobis Advocatam delegimus, cujus patrocinio & interceſſione, multis periculis erepti fuimus, multa beneficia à bonorum omnium largitore Deo accepimus.

§. 1. Itaque cum aliàs ejusdem Sanctiffimæ Virginis nomine, & miraculorum ſplendore illuſtras Eccleſias ſemper in honore habuimus, tum in primis erga celeberrimam ejus in Alma Urbe Baſilicam ad Præſepẽ Domini, quæ S. MARIÆ Majoris appellatur, præcipua quadam & pia devotione affecti ſumus.

§. 2. Cùmque conſideraremus Sancti Dominici Præſepis Sacellum in eadem Baſilica ſitum, ob ſacras illius Præſepis reliquias in quo Rex gloriæ nati non abhorruit, & infans jacuit, magna in veneratione merito habitum minùs decenter pro loci dignitate & ſanctitate ornatum, & extructum eſſe. Nos cupientes tam eximium, & religioſum monumentum debito cultu, decentique ornatu augere, ac nobili ædificio circumſcriptum communire, opus ſanè viribus noſtris, & facultatum noſtrarum illo quidem tempore tenuitate majus, freti ope ejusdem Deiparæ ſemper Virginis, & animo ſuſcepimus, re & ipſa aggreſſi ſumus. Nam jampridem cùm Sanctæ Romanæ Eccleſiæ Cardinalatus honore fungeremur, loco à Dilectis filiis Capitulo ejusdem Baſilicæ, interveniente etiam auctoritate ſecl. record. Gregorii Papæ Decimiertii Prædeceſſoris noſtri nobis conceſſo, inſignem Capellam & ſpatii amplitudine, & ſubſtructionis magnificentia, templi inſtar, copioſius à fundamentis ædificare.

§. 3. Cùmque ædificatio feliciter procederet, ecce divina ſic diſponente Clementia, nullis noſtris meritis, ſed ipſius Beatiffimæ Virginis precibus, in Apoſtolice Sedis faſtigio locati ſumus. Quare inchoatum opus tantò impenſius urgentes, nullique quamvis maximis ſumptibus parcentes, Capellam ipſam teſtitudine ſublimi plumbi laminis extrinſecus teſtæ, & pretioſis cruſtis, & tegmentis marmorum, atque opere teſtorio marmoratur, egregieſque picturis & ſacris imaginibus, & loco ipſo congruen. exornatam, ita demùm benedictente Domino perfecimus, atque omni ex parte abſolvimus, ut ipſa antiqua venerandi Præſepis ædificula, multis catenationibus, colligationibus, & ſuſtibus circum adhibitis, ne parietes diſſolvi, neve opus ulla ex parte labefactari poſſet, magna ægrotatum, & tractoriarum machinarum vi, ingenti labore, atque artificio tota ſimul ſolida, ac proſuſa integra, quod factu difficillimum videbatur, veteri Sede convulſa, & in altum ſublata, in medium ipſius novæ Capellæ gremium, ſub ejus pavimento in locum ſubterraneum translata atque aſportata fuerit, ubi & ſpecus circumcirca humili fornice concameratus, per quem circuiti poſſit, extractus eſt gradibus ad commodum deſcenſum in eandem ſacri Præſepis ædificulam, & dictum ſpecum hinc inde antè poſitis, ut Chriſtiffideles viri tantùm, laudes & preces Deo offerre, & Preſbytero in Altari ibidem ſito Miſſas devotè celebrare valeant.

§. 4. Altare item ſuprà ipſius ædificulæ fornitem conſtituto, ad miſſas Pontificias celebrandas.

§. 5. Duo præterea minora, ſed tamen inſignia Altaria ſive Sacella, noſtra itidem impenſa ædificata eodem modo picturis & ornamentis magnificè exculpta ad ipſius Capellæ limina ab utraque parte adjoinximus.

§. 6. Unum videlicet ſub S. Lucie Virginis & Martyris invocatione dicatum, cujus feſtus dies, idem Natalis noſter eſt, & quam ab ineunte ætate, omni ſtudio venerati, ut pro nobis apud Deum intercederet, magna cum fiducia affiduè precati ſumus; ſub cujus etiam Altari in Arca marmorea duo ſacra Beatorum Innocentium corporcula, à Baſilica S. Pauli extra portam Officinem noſtro juſſu translata, ritè recondi curavimus, ut ad Chriſti infantis cubula, iidem Sancti Innocentes, (flores ac primitivæ Martyrum, Deoque gratiffimæ victimæ) quodammodo excubare videantur.

§. 7. Alterum verò in honorem & memoriam S. Hieronymi præſtantiffimi Eccleſiæ Doctõris, cuius titulus in Eccleſia Illyricorum, fuit nobis in

Præſepis itaque Sacellum in d. Baſilica minùs decenter extructum videntis, dùm Cardinalis erat. B. Virginis ope fretus inſignem ibi Capellam ædificavit.

Interim ejusdem B. Virg. precibus, ſunt Pontifex creatus, diſtinctamque Capellam egregiè exornavit, & perfecit. Ad quam, præſepis ædificulæ mortuis fuit tranſportatus.

Et Altari majus ad Miſſas Pont. celebrandas conſtituit. Alia duo Altaria ad limina d. Capellæ adjoinxit. Unum S. Lucie ubi duo SS. Innocentium corporcula recondi voluit.

Alterum vero S. Hieronymi.

noſtra

nostra assumptione ad Cardinalatus honorem assignatus, & perpetuo retentus; quique Præsepe Domini ita vivens coluit, ut ex hoc mundo decedens per illud tamquam vitæ januam ad cœlestem patriam commigrarit.

§. 8. Cùm igitur, Deo favente, pium hujusmodi opus jam absolutum, & ad tectum perduci foret, compertum est tandem, relatione ac testimonio fide dignorum virorum, qui ex peregrinatione Terræ Sanctæ nuper in Urbem advenierunt, Nobis nihil tale umquam cogitantibus, non humano consilio, sed planè divino iustinctu ita contigisse, ut hæc nostra Capella veteri Capellæ, ad Præsepe Domini positæ in Ecclesia Bethleemita, quæ est in Palestina, ædificio, substructione, ac præcipuis suis partibus admodum similibus evaserit; nam & à sinistra parte Ecclesiæ uti hæc nostra sita est, & habet ædiculam Præsepi Domipicæ subterraneam, nostræ consimilem, tectam testudine, opere vermiculato ornatam, sicuti & hæc est, ad quam, & per gradus descendus patet; habet quoque illa Capella marmoreum, uti & hæc nostra, pavementum. Altaria etiam proxima in memoriam Sanctorum Innocentium, Sanctæ Catharinæ Virginis & Martyris, & Sancti Hieronymi extructa, quemadmodum & nostra unum in Sanctæ Lucie, cum reliquis Sanctorum Innocentium, & alterum in ejusdem Sancti Hieronymi memoriam, pariter erecta, ita ut ipsa gloriosa Virgo, quæ olim primis Sanctæ hujus Basilicæ fundatoribus, certos fines, & locum civibus, quarum memoria in hodiernum usque diem religiosè colitur, mirabiliter præscripsit, ac designavit, nunc etiam in nostra Capella quasi dictæ Basilicæ appendice extruenda, divinitus mentem nostram inspiraverit, simulque suæ ac divinæ voluntatis & providentiæ, admirabilem, minimèque obscuram dederit significationem.

§. 9. Demùm verò Nos ad Dei Omnipotentis, & Intemeratæ Virginis partus gloriam, fidelesque populi ergà Cælorum Reginam devotionem augendam, eandem Capellam solemniter consecrari & dedicari curavimus, atque in ea duo sepulchra exquisitissimis columnis, & lapidum varietate, opere sumptuoso ac magnifico, extruximus, quorum alterum Sanctæ memoriæ Pio Papæ Quinto nostro etiam Prædecessori, de Christiana Republica, deque nobis optimè merito, à dextris ejusdem Capellæ posuimus, ut perpetuum nostri ergà eum grati & pii animi apud posteros monumentum extet. Alterum à sinistris ad nostram sepulchrum reservavimus. Tertium verò separatim in vestibulo dictæ Capellæ, & in ipsa Navi Basilicæ, illi contigua, pro nostris dumtaxat consanguineis sepeliendis assignavimus.

§. 10. Ut autem in eadem Capella nostra ad ipsum Sanctum Præsepe, ubi Angelorum Chori, Deo gloriam, & hominibus pacem annunciant, & ubi nos anno præterito, cum Venerabilibus Fratribus nostris Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalibus, ac aliis Episcopis & Prælati, in Natalis Domini nocte, Missarum solemniter celebravimus, assidue incrementum salutis hostiæ sacrificium, pro nostra & totius populi Christiani salute offeratur, & divinæ laudes, atque officia perfolvantur; Ob eam causam certos Presbyteros & Clericos, qui in Capella, duobusque ei conjunctis Sacellis, seu Altaribus prædictis Deo inserviant, constituere decrevimus. Cùm itaque, sicut accepimus, Sancti Joannis de Pyro Policastrensis & Sancti Leonardi Salernitanæ Civitatum, vel Diocesis Monasteria, Ordinum Sancti Basilii, & Sancti Benedicti, quæ bonæ memoriæ Petrus Episcopus Cætanus, & quondam Ludovicus Blanchettes Clericus, ex dispensatione & concessione Aposto-

lica, in Commendam dùm viverent respective obtinebant, utraq; Commenda hujusmodi, per obitum Petri Episcopi & Ludovici prædictorum, qui apud Sedem prædictam diem clausuram extremam, cessante adhuc eo, quo antè Commendam ipsam vacabant, modo vacaverint & vacent ad præsens, & dilectus filius noster Philippus tituli Sanctæ Sabinae presbyter Cardinalis Spinola nuncupatus, qui Monasterium Sancti Nicolai de Butramo dicti Ordinis Sancti Basilii Hieracenensis Diocesis, ex simili concessione & dispensatione in Commendam ad ejus vitam obtinuerat, posteriori Commendæ hujusmodi, ac omni & cuiusque juri sibi in dicto Monasterio Sancti Nicolai, illiusque regimine & administratione, vel ad illa quomodolibet competenti, hodiè in manibus nostris spontè & libere cesserit. Nos cessionem hujusmodi admittentes, ac Capellam nostram prædictam ad ejusdem Redemptoris nostri laudem & honorem, & gloriosissimæ illius Genitricis, dictique Sancti Præsepi memoriam & venerationem, ac divini cultus incrementum, competenti beneficiorum & Ministrorum Ecclesiasticorum numero stabilire, annuisque redditibus pro congrua eorum sustentatione & sustentatione, onerumque illis, ac dictæ nostræ Capellæ, necnon illius fabricæ, & Sacrificii pro tempore incumbendum sustentatione necessariis dotare volentes, verumque & ultimum dictorum Monasteriorum vacationis modum, etiam si illo quævis generalis reservatio, etiam in corpore juris, clausa resulter præsentibus pro expressis habentes. Motu proprio non ad alicujus nobis super hoc oblata petitionis instantiam, sed ex mera deliberatione, & certa scientia nostra, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine in Capella nostra prædicta unam Præposituram, quæ in ipsa Basilica secundæ dignitas existat, hoc est prima post Archiepiscopalem, pro uno Præposito, utriusque vel alterius juris Doctore, seu in Theologia Magistro, & in presbyteratus ordine constituto, ac unam Sacrificiam pro uno Sacrifica, & quatuor perpetuas sine cura Capellanas, pro quatuor perpetuis Capellanis presbyteris, & quatuor alia Clericis nuncupanda perpetua simplicia beneficia Ecclesiastica pro totidem aliis Clericis nuncupandis perpetuis beneficiis, quorum siquidem Sacrificæ, Capellanorum, & Beneficiatorum, qui Clerici nuncupantur, dictus Præpositus caput existat, ac in rebus, negotiis, & actibus, per eos tractandis, & faciendis, primum & digniorem locum habeat, ibidemque præsit; ac tam ipse quam prædicti Sacrifica, Capellani, & Beneficiarii dictæ Capellæ, prout inferius descriptum erit deserviant, Apostolica auctoritate tenore præsentium, perpetuo erigimus & instituiamus.

§. 11. Ac eidem Capellæ nostræ, illiusque fabricæ & Sacrificæ, necnon communi massæ ipsorum Præpositi, Sacrificæ, Capellanorum, & Beneficiatorum, pro eorum sustentatione & sustentatione, ac onerum illis incumbendum sustentatione, singula Monasteria prædicta, quæ conventu carent, ac quorum fructus, redditus, & proventus Sancti Joannis ad quadraginta, Sancti Leonardi verò ad quinquaginta florenos auri, in libris Cameræ Apostolicæ taxati reperiuntur, Sancti Nicolai autem, ac illi perpetuò annexorum, Sanctæ MARLÆ de Pigniano, & ejusdem Sanctæ MARLÆ de Canicis quingentorum & quinquaginta ducatorum auri de Camera secundum communem estimationem valorem annuum, ut etiam accepimus non excedunt quibusvis modis, & ex quorumcumque personis, seu per liberas quorumvis cessiones, de illorum regiminiibus & administrationibus in Romana Curia vel extrà eam, etiam coràm Notario publico, & testibus spontè factas vacant, etiam si tanto tempore vacaverint, quod eorum provisio

Pro illorumque sustentatione redditus beneficiatorum hic descriptorum, eis assignat.

juxta Lateranensis statuta Concilii, aut canonicas sanctiones ad Sedem prædictam legitimè devoluta existat, & illa ex quavis causa ad Sedem eandem, specialiter vel generaliter pertineat, & de illis consistorialiter disponi consueverit seu debeat, ac super regiminibus & administrationibus Monasteriorum hujusmodi inter aliquos lis, vel eorum possessorio molestia, cujus litis statum etiam præsentibus haberi volumus pro expresso, pendeat indecisa, cum prædictis, & forsitan aliis illis annexis, eorumque membris, grangiis, prædiis, possessionibus, decimis, primitiis, vineis, terris, agris, censibus, fructibus, redditibus, proventibus, juribus, obventionibus, emolumentis, pertinentiis, rebus, & actionibus universis, cæterisque bonis mobilibus & immobilibus, ac se moventibus, cujuscumque qualitatis, pretii & valoris annui existentibus, ac ubique locorum consistentibus eorumque proprietate & dominio. Ità quòd liceat Collegio Præposito, Sacristæ, Capellanorum, & Beneficiorum hujusmodi, per se vel alium seu alios, eorum & dictæ nostræ Capellæ, illiusque Fabricæ & Sacristiæ, suæque mensæ, seu massæ communis nominibus corporalem, realem, & actualem possessionem Monasteriorum, annexorum, membrorum, grangiarum, prædiorum, possessionum, decimarum, primitiarum, vinearum, terrarum, agrorum, censuum, jurium, pertinentiarum, rerum, & actionum, & bonorum hujusmodi, propria auctoritate absque spoliis, & attentatorum vitio, ac cujuscumque Judicis, decreto vel ministerio liberè apprehendere, & perpetuò retinere, illaque regere & administrare, necnon fructus, redditus, proventus, jura, obventiones, & emolumenta eorumdem percipere, exigere & levare, illaque in suos, secundum ordinationem inferius per nos descriptam, & dictæ Capellæ nostræ, illiusque Fabricæ & Sacristiæ usus, utilitatem & necessitates omnino convertere, Diocesani loci, vel cujusvis alterius licentiæ desuper minimè requisitâ, auctoritate & tenore prædictis, etiam perpetuò unimus, annectimus, & incorporamus, ac in eisdem Monasteriis sic unitis, eorumque Ecclesiis, annexis, membris, & grangiis, dignitates Abbatiales, illarumque titulos, nomina, & denominationes, eisdem auctoritate & tenore similiter perpetuò supprimimus & extinguimus.

§. 12. Statuentes & ordinantes, ut Præpositus & Capellani prædicti, singulis diebus Dominicis & festivis, Missas quatuor, aliis verò diebus tres Missas, alternis vicibus seu hebdomadatim, juxta providam dispositionem & ordinationem desuper ab eis faciendam celebrare, & quotannis tria Anniversaria Officia mortuorum, unum videlicet pro dicti Pii Prædecessoris, & aliud pro Nostra, postquam viam universæ carnis ingressi fuerimus, reliquum autem, pro parentum & propinquorum nostrorum, ac inscriptorum patronorum animabus; quæ tamen non intrâ dictam Capellam nostram, sed extrâ eam in illius vestibulo, quod est in ejusdem Basilicæ navi eidem Capellæ continua peragantur, ne ubi vitæ auctor, & mortis victor ac triumphator est ortus, ibi Castra doloris Cenotaphia palleæ, feretralia, & alia mortuorum, ac funeralium officiorum insignia conspiciantur.

§. 13. Sacrista verò curam celebrationis Anniversariorum Officiorum, & Missarum hujusmodi, necnon custodiam sacræ suppellectilis, ac ornamentorum & paramentorum ad dictæ Capellæ nostræ usum pro tempore pertinentium habere.

§. 14. Alii autem Beneficiati prædicti, eisdem Præposito, Sacristæ, & Capellanis in præmissis assistere, eisque in divinis inservire, ac alia ob-

sequia, & onera sibi pro tempore imposita præstare debeant, & teneantur. Ac omnes simul unum Collegium inter se cum arca, massa, & sigillo communibus, aliisque Collegialibus insignibus, ad instar aliorum similium Collegiorum, tam in prædicta, quam aliis quibuscvis dictæ Urbis Basilicis & Ecclesiis institutorum, constituentur.

§. 15. Necnon annis singulis ex dictis fructibus, redditibus, proventibus, juribus, obventionibus & emolumentis, ipsius nostræ Capellæ Præpositus quadringenta, Sacrista centum & quinquaginta, singuli Capellani etiam centum & quinquaginta, singuli verò alii beneficiati Clerici inibi pro tempore existentes, quinquaginta scuta monetæ Romanæ percipere, ipsique insimul similiter annis singulis unum Thesaurarium seu Camerarium, qui de eorum gremio existat, & ad quem peculiaris cura recuperationis, exactio, distributionis, & repartitionis, omnium & singulorum fructuum, reddituum, proventuum, jurium, obventionum, & emolumentorum ad dictam Capellam nostram, illiusque Fabricam & Sacristiam, atque ad communem massam Collegii hujusmodi, nunc & pro tempore spectantes pertineat eligere & deputare; necnon ut soluta Præposito, Sacristæ, ac singulis Capellanis ac beneficiatis prædictis rata parte, seu portione eos, ut præfertur tangente, & deductis omnibus impensis ad usum Capellæ nostræ, illiusque Fabricæ & Sacristiæ hujusmodi necessariis, totum id quod supererit, in emptionem tot locorum Montium non vacabilium, aut aliorum bonorum stabiliū erogare, illorumque necnon inde provenientes fructus postquam ad summam centum scutorum similium ascenderint, pro una inter se proportionabiliter dividere & repartiri: altera verò mediætatibus, eorumdem superexcrecentium fructus, in usum, necessitates, & ornamenta Capellæ nostræ, illiusque Fabricæ & Sacristiæ hujusmodi convertere debeant; ità tamen ut Thesaurarius, aut Camerarius pro tempore existens, de receptis & administratis per eum, rationem & computa eidem Collegio in fine cujuslibet anni reddere omnino teneatur.

§. 16. Ac insuper ubi, quoties, & quando-cumque eis placebit, liberè eorum arbitrio, sine ullo tamen onere, aut obligatione, & sine ullo impedimento, stallum & locum in dicta Basilica, & illius choro habere, omnibusque & singulis horis Canonicis, ac aliis divinis officiis, necnon processionibus, cæterisque publicis actibus, non tamen Capitularibus, dictæ Basilicæ interesse, ità ut neque ad interessendum præmissis umquam cogi vel compelli, nec si spontè accedere voluerint, impediri quovis prætextu possint. Et ibidem Præpositus, videlicet cappam, aut cottam cum rochetto, prout temporis qualitas exegerit, ad instar Canonicorum ejusdem Basilicæ, Sacrista autem & Capellani, ac alii beneficiati Clerici nuncupati prædicti, habitum per alios Beneficiatos & Clericos ipsius Basilicæ gestari solitum, respectu deferre, necnon attenta antiquitate, nobilitate, & præstantia ejusdem Sancti Præsepis Domini, à quo tamquam præcipua & primaria parte, tota Basilica etiam ad Præsepe Domini olim dicta fuit, & cum hæc ipsa per nos erecta dignitas Sacristiæ, Capellanæ, & Beneficia pro divino cultu & servicio ejusdem Præsepis fuerint instituta, Præpositus immediatè, post Vicarium Archipresbyteri dictæ Basilicæ, & antè omnes illius Canonicos supradictos; Sacrista verò & deinde Capellani post ipsos Canonicos, & antè omnes Beneficiatos Basilicæ, alii autem ejusdem Capellæ nostræ Beneficiati Clerici appellati, post Beneficiatos, & antè Clericos Basilicæ hujusmodi immediatè sedere & incedere, liberè & licitè possint.

Præposito, & capellani prædicti, quodam missas, & Anniversaria celebrandi curam injungit.

Sacristæ, celebrationis Officiorum, & Capellæ suppellectilis, & ornamentorum curam assignat.

Beneficiatis que opus in præmissis assistendi, &

divinis inservendi inponit.

Eisque omnibus certis redditus & proventus concedit.

Et in choro locum eisdem quando-cumque adesse voluerint assignat.

1587.

Et ne prop-
terea ali-
quod emolu-
mentum per-
cipiant, in-
terdicit.

§. 17. Per hoc tamen ejusdem Basilicæ & Capitulo, Canonicis, Beneficiatis & Clericis, quoad distributiones & alia emolumenta per eosdum horis Canonicis, divinis officiis, ac processionibus & aliis actibus hujusmodi interfunt, percipi, & lucrari solita, aliqua ex parte præjudicare, nequaquam intendimus; quinimò dictis nostræ Capellæ Præposito, Collegio, Sacristæ, Capellanis, & Beneficiatis, Clericis nuncupatis, & eorum cuilibet auctoritate & tenore prædictis inhibemus, ne ipsi eorumve aliquis, five propter eorum præsentiam, interestem, & assistentiam in choro horis Canonicis, diurnis & nocturnis, Missis etiam solemnibus, & aliis divinis officiis, etiam in festivitibus majoribus, & quocumque anni tempore, aut processionibus vel anniversariis mortuorum, five propter aliam quamcumque causam vel occasionem quippiam, parvum aut magnum, etiam pro eorum rata, aut pro virili de ipsius Basilicæ Capituli Beneficiatorum & Clericorum prædictorum mensa, massa, distributionibus, aut emolumentis, ordinariis vel extraordinariis, etiam incertis, & ut præfertur personaliter interessentibus tantum dari solitis, ullo modo, aut quæsito colore vel ingenio percipere, aut quomodolibet prætereundaudeant vel præsumant.

In dicta Ca-
pella aliud
sepulchrum,
in tumulum
persona fieri
prohibet.

§. 18. Deindè ne ipsa Capella nostra, illiusque situ, seu ambitu, solo, aut pavimento, muris, structuris, & ædificiis præter supradicta monumenta aliud sepulchrum aut sepulture locus, seu tumulus, alteri personæ cuiuscumque status, gradus, qualitatibus, & conditionis fuerit, five per viam depositi, five aliàs quomodolibet concedi vel assignari possit aut debeat, districtè interdicitur, & omninò in perpetuum prohibemus.

Capellam
ipsam & ejus
Sacristiam,
Præpositum
Sacristam,
Capellanos,
& Clericos
eorumque
bona, ab al-
iorum juris-
dictione exi-
mit.

§. 19. Præterea eandem Capellam nostram, illiusque fabricam & Sacristiam, necnon Præpositum, Sacristam, Capellanos & Beneficiatos, Clericos nuncupatos, pro tempore existentes, ipsiusque Collegium, ac prædicta ceteraque omnia, & quæcumque illius, & eorum bona mobilia & immobilia cuiuscumque qualitatibus & quantitatibus in dictis Urbe & locis, & extrà, ac aliàs ubique locorum consistant, ab omni jurisdictione, correctione, visitatione, dominio, superioritate & potestate, nunc & pro tempore existentis Urbis Vicarii, ac Archipresbyteri dictæ Basilicæ, ejusque Vicarii & Capituli, & cuiusvis Ordinarii loci, aliorumve quorumcumque Judicum & Officialium, in ipsa Urbe vel aliàs ubilibet constitutorum, perpetuò eximimus & liberamus, ac sub Beati Petri, & Sedis Apostolicæ, atque nostra protectione suscipimus, nobisque & dictæ Sedi immediatè subijcimus.

Privilegi-
que aliis in
Ecclesiis Ur-
bis dignita-
tes hujusmo-
di habenti-
bus concess-
as, prædictis
etiam conce-
dit.

§. 20. Ad hæc, Præposito, Sacristæ, Capellanis, & Beneficiatis Clericis nuncupatis prædictis, illorumque Collegio, ut omnibus & singulis privilegiis, immunitatibus, exemptionibus, libertatibus, præeminentiis, prærogativis, favoribus, facultatibus, indultis & aliis gratis, tam spiritualibus quam temporalibus, quibus alii Dignitates, Capellani, & alia beneficia in dictæ Sanctæ MARIÆ Majoris, & aliis ejusdem Urbis Basilicis, & Ecclesiis, pro tempore obtinentes eorumque Collegia, de jure vel consuetudine, aut ex privilegio, vel aliàs quomodolibet utuntur, potiuntur & gaudent, ac uti, potiri, & gaudere possunt & poterunt quomodolibet in futurum, non solum ad eorum instar, sed æquè principaliter & pariformiter, in omnibus & per omnia, uti, potiri & gaudere, liberè & licite valeant, auctoritate & tenore prædictis indulgemus.

Officialibus
omnibus, ne

§. 21. Necnon tàm prædictis in Urbe Vicario,

Archipresbytero, ejusque Vicario & Capitulo, locorumque Ordinariis, quam aliis quibuscumque personis, quavis auctoritate & dignitate fungentibus, ne quarumcumque facultatum, privilegiorum, aut literarum eis, sub quibuscumque tenoribus & formis concessorum prætextu, Præpositum, Sacristam, Capellanos, aut Beneficiatos, qui Clerici appellantur prædictos, five eorum aliquem in præmissis quoquomodo molestant, aut molestari permittant, districtiùs inhibemus.

§. 22. Ut verò Capellæ nostræ, illiusque fabricæ & Sacristiæ, ac Collegii hujusmodi, felici & prospero regimini, gubernio, & conservationi opportunè consulatur, utque promptum & paratum sit eis auxilium, Dilectum filium Alexandrum Sanctæ MARIÆ in Cosmedina, Diaconum Cardinalem de Montealto nuncupatum, ex sorore germana, secundum carnem, pronepotem nostrum, & eo vita functo, antiquiorem Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalem, ex nostra familia & parentela, vel in ejus defectum ex provincia Marchiæ Anconitanæ oriundum, seu si nullus eorum fuerit, primum presbyterum Cardinalem pro tempore existentem ejusdem Capellæ nostræ, illiusque personarum, rerum, bonorum, & jurium protectorem ac defensorem, cujus consilio & ope omnia supradicta, & quæcumque alia in his, & circa ea quomodolibet necessaria agantur, statuuntur, & ordinentur, constituimus & deputamus. Ac volumus & declaramus, quòd licet nullo existente nostri sanguinis Cardinale, alius ad id, ut præfertur vocatus Cardinalis munus Protectoris hujusmodi, subire & exercere inciperit, nihilominus si postmodum contingat, aliquem nostræ familiæ & parentelæ, ad Cardinalatus honorem assumi, iis in ejusdem muneris functione præferri debeat, & constitutio ac deputatio de cuiusvis alterius persona in protectorem hujusmodi factæ eo ipso cessare & expirare censentur.

§. 23. Dantes & concedentes eidem Alexandro Cardinali, moderno & pro tempore existentijusdem nostræ Capellæ Protectori, plenam & liberam facultatem, & auctoritatem, differentias, lites, controversias inter quascumque personas, tam Præpositi quam Sacristæ Capellanorum & Beneficiatorum Clericorum nuncupatorum dictæ Capellæ, eorumdemque litium consortes, seu ab eis causam habentes pro tempore exortas summarè, simpliciter, & de plano, sine strepitu & figura iudicii, appellatione remota decidendi, definiendi, terminandi & exequendi; ac denique eandem prorsus jurisdictionem, superioritatem, & potestatem in Capella nostra, illiusque Altaribus, atque universis & singulis personis prædictis liberè exercendi, in omnibus & per omnia, quam pro tempore existens Archipresbyter dictæ Basilicæ, ejusque Vicarius in ipsa Basilica, illiusque Altaribus, Capitulo, Canonicis, Beneficiatis, & Clericis vel Ministris, de jure, consuetudine, aut ex privilegio, aut aliàs quomodolibet exercere potest & debet, five in futurum poterit & debebit, etiam quoad ea universa & singula, quæ expressione & concessionem requirunt magis specialem, quæ sub generali hujusmodi concessione non comprehenduntur.

§. 24. Insuper ius patronatus & præsentandi personas idoneas etiam alienigenas ad Præposituram videlicet, Protectori; ad Sacristiam verò, ac quatuor Capellanias, & alia beneficia Clericis nuncupata hujusmodi Præposito pro tempore existentibus prædictis, tam hac prima vice, ab eorum primæva erectione & institutione hujusmodi, apud Sedem prædictam vacantia, quam quoties ex nunc de cetero illa quibuscumque modis, & ex

1587.
eos molest-
ent, præci-
pit.

Protecto-
remque &
eorumden
Defensorem
Alexandrum
Peretum
Cardinalem
de Monte Al-
to, ejus prone-
potem, &
eo defuncto,
alios hic de-
signatos de-
putat.

Jurisdic-
tionem circa
præpositum,
Sacristam,
Capellanos,
& Clericos
& eorum lites
eidem
tribuit.

Ius patrona-
tus & præ-
sentandi per-
sonas ordi-
nas, Michæ-
li Pereto e-
jus pronepo-
ti, illiusque
descendenti-
bus concedit.

quarumcumque personis, etiam nostri aut Romani Pontificis pro tempore existentis, seu cuiusvis Cardinalis etiam tunc viventis familiaribus, continuis commensalibus, seu Romana Curia Officialibus, aut aliis quomodolibet reservationem inducentibus, semper liberis, vel ex causa permutationis resignationes de illis, in dicta Curia etiam in manibus nostris, vel Romani Pontificis pro tempore existentis, vel extra eam quomodolibet factas & admissas, aut affectationem alterius beneficii Ecclesiastici, quavis auctoritate collati, seu illa pro tempore obtinentium decessum, vel quavis aliam diminutionem, amissionem, privationem, religionis ingressum, matrimonii contractum, aut alias quomodocumque & qualitercumque, etiam apud Sedem praedictam, simul vel successive vacare contigerit, per Protectorem & Prapositum praedictos ad praesentationem huiusmodi in forma solita instituendos, Dilecto filio Michaeli Peretto Burgi Sancti Petri, & Militum custodiarum nostrarum moderno Praefecto, similiter nostro, secundum carnem, ex sorore dicta Pronepoti, ejusque masculis, ex masculis descendentibus legitimis & naturalibus, ac ex legitimo matrimonio natis & procreatis, ita tamen quod praesentatio fieri debeat solum a primogenito, & ipsius primogeniti primogenito usque in infinitum hoc modo videlicet. Si dictus Michael plures filios masculos habuerit, praesentatio pertineat ad natum majorem tantum, qui si etiam plures susceperit filios masculos, natum majorem eorum tantum praesentet, & sic ius praesentandi huiusmodi semper transeat de primogenito in primogenitum usque in infinitum, & deficiente linea masculorum totaliter, linea masculorum ex masculis descendentibus a dicto primogenito praesentatio modo & forma praemissis ad secundum genitum, si superstes fuerit, sin minus ad majorem natum masculum ex masculis descendentibus ab eodem, & sic de primogenito masculo, ad primum genitum masculum similiter usque in infinitum, & deficiente linea masculorum, ex masculis descendentibus a secundo genito, ius praesentandi huiusmodi transeat ad tertium genitum, praedicto ordine servato, & sic successive de una linea ad aliam, ad omnes descendentes a dicto Michaeli.

Eis autem deficientibus Juspatronatus ad Flaviam Perettam, dictae Michaelis sororem germanam, illiusque deficientes & ultimo eis deficientibus ad ipsius Pontificis sanguine proximiorum, deveniunt decernit.

§. 25. Et deficientibus omnibus masculis deficientibus masculis a dicto Michaeli, succedat filia primogenita dicti Michaelis, si fuerit superstes, vel si ea non exstabit, ab ea descendentes masculi, donec extabunt, transeundo de primogenito in primogenitum, modo & forma praemissis, & deficientibus omnibus masculis, ex masculis descendentibus ab omnibus filiabus dicti Michaelis succedant masculi descendentes ex nepotibus ejusdem Michaelis. Deficientibus autem omnibus masculis & feminis a dicto Michaeli deficientibus, Juspatronatus, & praesentandi huiusmodi transeat ad dilectam in Christo filiam Flaviam etiam Perettam, dicti Michaelis sororem germanam, si exstabit, & post eam, vel si ipsa non exstabit, ad filios masculos ipsius, & ab eis masculos descendentes usque in infinitum, & cessantibus masculis ad feminas a dictis masculis deficientes. Et cessantibus omnibus tam masculis quam feminis descendentibus a dicta Flavia, succedat dilecta in Christo filia Ursula similiter Peretta, ejusdem Michaelis etiam soror germana, & post eam, vel si ipsa tunc non exstabit, ejus filii masculi, & ex masculis descendentes usque in infinitum, & deficientibus masculis, ex masculis deficientibus, succedant feminae ab eis deficientes. Deficientibus autem omnibus & singulis masculis & feminis deficientibus a dictis Michaeli, Flavia, & Ursula, tunc succedat in dicto Jure Patronatus, qui nobis fuerit sanguine proximior, servato semper in omnibus casibus praedictis ordine Primogeniturae, transeundo scilicet de primogenito in primogenitum, & praefendo li-

neam primogeniti linea secundum geniti, & masculos ex masculis descendentes natis ex feminis, ac masculos ex masculis ex feminis ipsi feminis, ac alias in omnibus ac per omnia, prout in linea filiorum & descendendum a dicto Michaeli ordinatum est, ita quod ius praesentandi huiusmodi ad unum solum Successorem insolitum, & post illum ad alium semper deveniat, absque eo quod inter plures Successores dividi possit, motu & scientia similibus, auctoritate & tenore praedictis pariter perpetuo reservamus, concedimus & assignamus.

§. 26. Decernentes Juspatronatus, & praesentandi huiusmodi, Laicorum Nobilium, & Illustrium existere, ac Michaeli & aliis futuris Patronis praedictis, non ex privilegio, sed ex veris, primae, reali, actuali, plena, integra, ac omnimoda fundatione, & perpetua dotatione competere, & ad illos pertinere, illudque vim, effectum, naturam, substantiam, essentiam, qualitatem, validitatem, & roboris firmitatem obtinere, ac Michaeli & aliis futuris Patronis praedictis, & eorum cunctis perpetuo suffragari debere, in omnibus & per omnia, absque ulla prorsus differentia, perinde ac si illis & eorum cunctis ratione verae, realis, actualis, plenae & integre fundationis ac perpetuae dotationis per eos de eorum propriis, & merè patrimonialibus & laicalibus bonis dumtaxat competere, & concessum esset.

§. 27. Ac ut tale sub quacumque derogatione, etiam cum quibuscvis praegnantissimis & efficacissimis verbis, clausulis, ac decretis, etiam cum clausula Quorum tenores, in quacumque dispositione, etiam per viam constitutionis, legis, Regulae, Cancellariae Apostolicae, aut alias quomodocumque facta nullatenus comprehendit, nec illi nullo umquam tempore, etiam ratione cuiusvis litis pendente, vel vocationis Praepositurae, Capellaniarum, Sacristiae, & aliorum Beneficiorum huiusmodi apud Sedem praedictam, etiam ex causa permutationis vel devolutionis, seu alio quocumque praetextu, & ex quacumque causa, quantumvis urgente & legitima, per nos seu quoscumque alios Romanos Pontifices pro tempore existentes, vel Sedem praedictam, aut illius Legatos, etiam de latere, etiam motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, seu cuiusvis intuitu, & contemplatione per quascumque literas Apostolicas, etiam in forma Brevis, & quavis etiam derogatoria, derogatorias, ac fortiores & insolitas clausulas, necnon irritantia, & alia contraria decreta quacumque derogari, aut derogatum censei posse, neque debere, nisi in illis de toto tenore, ac data praesentium, necnon Patroni pro tempore existentis, nomine, cognomine, & qualitate, specialis, specifica, & indiyduna mentio facta fuerit, ac ejusdem Patroni pro tempore existentis ad hoc expressus accesserit assensus, & aliter factas derogationes, necnon quascumque collationes, provisiones, commendas, praesentationes, institutiones, vel alias dispositiones, de Praepositura, Sacristia, Capellanis, & aliis Beneficiis praedictis, ut praefertur, vel aliis quovis modo, etiam apud Sedem eandem pro tempore vacantibus quibuscvis personis aliis, quam ad praesentationem Michaelis, & aliorum Patronorum praedictorum, seu de eorum expresso consensu, etiam cum speciali & expressa derogatione Juspatronatus huiusmodi pro tempore facta, processibus de super habitos, ac inde pro tempore secuta quacumque, nulla, & invalida, nulliusque roboris vel momenti, fore & esse, ac pro nullis, & infectis haberi & censei, nec ius aut coloratum titulum possidendi cuique tribuere, vel per illa acquiri posse, sed praesentationes per Michaeli & alios futuros Patronos praedictos

Jus istud Patronatus, Laicorum nobilium & Illustrium esse, & dictis Patronis non ex privilegio, sed ex vera fundatione, & dotatione competere declarat.

Clausulas praeservativas apponit.

pro tempore factas, & subsecutas institutiones, validas & efficaces fore, suoque effectus sortiri, ipsique præsentatis & institutis, tale jus in re, & ad rem acquiri debere, quale acquiritur præsentatis, & institutis ad beneficia de verò & reali jure Patronatus laicorum, nobilium, & illustrium, ratione primæ integræ foundationis, ac perpetuæ dotationis ex bonis merè laicalibus, & patrimonialibus dumtaxat existentia, necnon Præposituram, Sacristiam, Capellanas, aliæque Beneficia, Clericatus nuncupata hujusmodi, sub quibusvis specialibus vel generalibus reservationibus, unionibus, annexionibus, incorporationibus, suppressionibus, extinctionibus, etiam perpetuis vel temporalibus expectativis, & aliis etiam præventivis gratis, ac uniendi, annexendi, & incorporandi, necnon conferendi, providendi, & aliis facultatibus, concessionibus, literis, mandatis etiam de providendo, & indultis quibuscumque, illorumque, & illarum revalidationibus quibusvis personis, etiam prædictæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalibus, etiam motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, ac cum quibusvis suspensivis, restitutivis, ac etiam derogatoriis derogatoriis clausulis, irritantibusque & aliis, etiam vim contractus inducentibus, decretis atque aliis quomodolibet nunc & pro tempore concessis, necnon quibusvis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac dictæ Cancellariæ regulis quomodolibet, & cum quibusvis clausulis & decretis quantumvis amplissimis, ac prægnantissimis, etiam cum clausula Quorum tenores, editis & edendis, nullatenus comprehensa esse, aut fore, minimèque comprehendi posse aut debere, ac omnia & singula præmissa necnon præsentis literas nullo umquam tempore, de subreptionis vel obreptionis, seu nullitatis vitio, aut intentionis nostræ, vel alio quovis defectu, etiam ex eo, quod causa propter quas eadem præmissa facta sunt, coram locorum Ordinariis, etiam tamquam Sedis prædictæ Delegatis examinatz, verificatz, & ab eis approbatæ, ac interesse forsan habentes ad id vocari non fuerint, nec desuper suum consensum præstiterint, seu ex quavis alia causa, vel quocumque prætextu, quæsito colore vel ingenio notari, impugnari, invalidari, retractari ad terminos juris reduci, seu in jus vel controversiam vocari; aut adversus illa quodcumque juris, facti, vel gratiæ remedium impetrari posse, nec sub ullis similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, limitationibus, aut aliis contrariis dispositionibus comprehendi, sed semper ab illis exceptas, & quories illæ emanabunt, toties in pristinum, & cum in quo antea erant statum restituta, reposita, & plenariè reintegrata, ac de novo etiam sub Datum per Michaëlem, & futuros patronos prædictos quandocumque eligenda, concessa, valida & efficacia fore, suoque plenarios & integros effectus sortiri, ac perpetuò suffragari.

§. 28. Sicque in præmissis universis & singulis, per quoscumque Judices ordinarios & delegatos, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac ejusdem Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi ac interpretandi facultate & auctoritate, in quavis causa & instantia, iudicari & definiri debere, irritum quoque & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 29. Quocirca Venerabilibus Fratribus nostris Offensibus, Sabiniensibus, & Tusculano Episcopis, Motu simili mandamus, quatenus ipsi vel duo, aut unus eorum per se vel alium seu alios præsentis literas, & in eis contenta quæcumque ubi & quando opus fuerit, ac quories pro parte pro tempore existentium Protectoris & Patroni,

necnon Præpositi, Sacristæ, Capellanorum, & aliorum Beneficiatorum prædictorum, seu aliquis eorum, fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra præsentis literas, & in eis contenta hujusmodi ab omnibus ad quos spectat, & pro tempore spectabit, inviolabiliter observari, necnon Protectorem, Patronum, Præpositum, Sacristam, Capellanos & Beneficiatos pro tempore existentes prædictos, eorumque singulos illis pacificè frui & gaudere; Non permittentes, ipsos vel quempiam ex eis, per quoscumque desuper quomodolibet molestari, perturbari, vel inquietari. Contradictores quoslibet & rebelles, per sententias, censuras & penas Ecclesiasticas, aliæque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita, compellendo, ac legitimis super his habendis servatis processibus, sententiis, censuras, & penas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando. Invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 30. Non obstantibus præmissis, ac piæ memoriz Bonifacii Papæ Octavi similiter Prædecessoris nostri, etiam qua caveatur, ne quis extræ suam Civitatem vel Diocesim nisi in tertis exceptis casibus, & in illis ultrà unam diem à fine suæ Diocesis ad iudicium evocetur, seu ne Judices à Sede prædicta deputati extræ Civitatem vel Diocesim, in quibus deputati fuerint, contrà quoscumque procedere, aut alii vel alii vices suas committere audeant seu presumant, & in Concilio generali edita de duabus dietis, necnon quatenus opus sit nostris de non tollendo jure quæsito, & unionem committendo ad partes vocatis, quorum interest, ac exprimendo verò anno valore tam Beneficii uniti quam illius cui sit unio, Lateranensisque ultimò celebrati, & quorumcumque aliorum Generalium Conciliorum uniones perpetuas, nisi in casibus à jure præmissis fieri, ac etiam Beneficia unius Diocesis uniri prohibentis aliisque Apostolicis, ac in Provincialibus & Synodalibus Conciliis, editis & edendis, specialibus vel generalibus constitutionibus & ordinationibus, necnon Basilicæ Sanctæ Mariæ Majoris, ac Monasteriorum & Ordinum prædictorum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate aliâ roboratis statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis, illis ac Archi-Presbytero & Capitulo prædictis, necnon Abbatibus, Superioribus, Conventibus, & Religiosis Ordinum hujusmodi, illorumque ac quibusvis aliis personis, etiam prædictis Cardinalibus, ac etiam dilectis filiis Populo Romano, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, irritativis, annullativis, cassativis, revocativis, modificativis, reservativis, exceptivis, declarativis, mentis attestativis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, necnon irritantibus & aliis decretis per quoscumque Romanos Pontifices Prædecessores nostros, ac nos & dictam Sedem, etiam Motu, scientia, & potestatis plenitudine paribus, seu etiam ad Imperatoris, Regum, Ducum, & quorumvis Principum instantiam, seu eorum intuitu, ac etiam juramento vallatis, & aliis quomodolibet etiam iteratis vicibus concessis, approbatis, & innovatis, etiam si in eis caveatur expressè, quod Dignitates, Capellaniæ, & alia Beneficia Ecclesiastica dictæ Urbis nonnisi Civibus Romanis, ac Civium Romanorum filiis originariis, & aliis certo tunc expresso modo qualificatis conferri possint, & aliis de illis etiam per Sedem prædictam pro tempore sacre Collationes & Provisiones, ac quævis aliæ dispositiones, nullius sint roboris vel momenti, quodque eisdem statutis,

Clausulas contrariorum derogatoriis apponit.

Decretum irritans addit.

Executores deputati.

privilegiis, indultis, & literis, ullatenus, aut non nisi sub certis modo & forma in eis expressis derogari possit, & si illis aliter derogari contingat, derogationes hujusmodi nemini suffragentur. Quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, aliàs de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda esset, tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & formâ in illis traditâ observata inserti forent, præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliàs in suo robore permanentis, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque, aut si aliquibus prædictorum, vel quibuscvis aliis, communiter vel divisim, ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per literas Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem. Volumus autem quod propter unionem, annexionem, & incorporationem prædictas, Monasteria hujusmodi, in spiritualibus non lædantur, & in temporalibus detrimenta non substineant, sed eorum congruè supportentur onera consueta. Nulli ergo &c.

Dat. P. A. 3.

die 9. Junii

Datum Romæ apud Sanctum Marcum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo octuagesimo septimo, v. Idus Junii Pontif. nostri Anno 3.

Publicatio.

Anno à Nativitate Domini 1587, die verò 28. mensis Augusti, Illustrissimus & Reverendissimus Dominus Philippus retroscriptus per ejus cedulam &c. Commendæ Monasterii Sancti Nicolai, &c. Cessionis &c. Retroscriptis, literarumque expeditioni consensu &c.

Tydens Notarius.

LIX.

Damnatio conjugiorum per Eunuchos & Spadones contractorum & contrahendorum.

Edita A. D. 1586.

SIXTUS PAPA V.

Venerabili Fratri Episcopo Novariensi nostro & Sedis Apostolica in Regnis Hispaniarum Nuncio.

Dubium exortum super validitate conjugiorum, quæ contrahunt Eunuchi.

Cum frequenter in istis regionibus Eunuchi quidam & Spadones, qui utroque teste carent, & ideo certum ac manifestum est, eos verum semen emittere non posse, quia impura carnis tectigine, atque immundis complexibus cum mulieribus se commiscant, & humorem forsan quemdam similem semini, licet ad generationem, & ad matrimonii causam minimè aptum effundunt, matrimonia cum mulieribus, præsertim hunc ipsum eorum defectum scientibus contrahere præsumant, idque sibi licere pertinaciter contendunt, & super hoc diversæ lites & controversiæ, ad tuum & Ecclesiasticum forum deducantur, requisivit à nobis Fraternitas tua, quid de hujusmodi connubiis sit statuendum.

Declaratio quod ea nulla sint in futurum.

§. 1. Nos igitur attendentes, quod secundum canonicas sanctiones & naturæ rationem, qui frigide naturæ sunt, & imponentes, iidem minimè apti ad contrahenda matrimonia reputantur, quodque prædicti Eunuchi, aut Spadones, quas tamquam uxores habere non possunt, easdem habere ut sorores nolunt, quia experientia docet, tam ipsos dum se potentes

ad coeundum jactitant, quam mulieres, quæ eis nubunt, non ut castè vivant, sed ut carnaliter invicem conjugatur prava & libidinosa intentione, sub prætextu & in figura matrimonii turpes hujusmodi commixtiones affectare, quæ cum peccati & scandalii occasionem præbeant, & in animarum damnationem tendant, sunt ab Ecclesiâ Dei prorsus exterminandæ. Et insuper considerantes, quod ex Spadonum hujusmodi, & Eunuchorum conjugis nulla utilitas provenit, sed potius tentationum illecebræ, & incentiva libidinis oriuntur, eidem Fraternitati per præsentem committimus & mandamus, ut conjugia per dictos & alios quoscumque Eunuchos & Spadones, utroque teste carentes, cum quibuscvis mulieribus, defectum prædictum sive ignorantibus, sive etiam scientibus, contrahi prohibeas, eosque ad matrimonia quomodocumque contrahenda inhabiles auctoritate nostra declares, & tam locorum Ordinariis, ne hujusmodi conjunctiones de cætero fieri quoquomodo permittant, interdicas, quam eos etiam, qui sic de facto matrimonium contraxerint, separari cures, & matrimonia ipsa sic de facto contracta, nulla, irrita, & invalida esse decernas.

§. 2. Eos etiam qui sic jam contraxerunt, si appareat, illos non ut castè simul vivant contraxisse, sed actibus carnalibus & libidinosis operam dare, simulve in uno & eodem lecto cum prædictis mulieribus dormire convincantur, omnino similiter separari cures.

§. 3. Nos enim ita in præmissis, & non aliter, per quoscumque Judices & Commissarios, quacumque auctoritate & dignitate fungentes, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate, in quacumque causa & instantia judicari & definiri debere, & si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter attentatum, forsan est hæcenus, vel attentari in posterum contigerit, irritum & inane decernimus.

§. 4. Non obstantibus cujusvis Civitatis, Provinciæ, aut Regni statutis, legibus municipalibus, aut consuetudinibus, quæ abusus potius & corruptelæ censende sunt, etiam si ab immemorabili tempore observatæ dicuntur, ceterisque contrariis quibuscque.

Datum Romæ apud Sanctum Marcum, sub annulo Piscatoris, Anno Incarnat. Dominicæ, millesimo quingentesimo octuagesimo septimo, 27. Junii, Pontificatus nostri Anno tertio.

Instinctio Collegii honestarum Viduarum, & Pœllarum, sub regimine Confratrum Congregationis Sancti Bernardi religiosè educandarum, cum Indultorum concessione, præsertim quoad pia eis relicta. Et jurisdicção Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalis Protektoris & Judicis causarum ad eas spectantium.

SIXTUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Acrosanctæ militantis Ecclesiæ gubernacula ex summis Sacerdotii Cathedra nobis, licet meritis imparibus demandata, tenentes, ad ea libenter intendimus, per quæ Cœnobita, & alia religiosa loca, in quibus prudentes virgines accensis lampadibus se præparent obviam, ituræ Sponso JESU, in quarum Societate aliæ quo-

Declaratio quod conjugia jam contracta.

Clausula sub lata.

Clausula derogatoria.

Dat. P. An. 3. 27. Junii.

LX.

Edita An. D. 1587.

Proœmium.

ante huius
sectionis.

que mulieres, spretis Mundi vanitatibus, gratum & debitum Deo exhibeant famulatum ubique Gentium, sed præsertim in hac Alma Urbe nostra, in qua, sicut in universi Orbis Magistrâ, veræ Fidei & Religionis documenta relucet, ita universa Divinæ Majestati accepta opera exerceri summo perè desideramus, construuntur & eriguntur; idque ut facilius succedat, ac persone ad id opportuna auxilia exhibentes, à nobis gratias & favores reportasse latentur, opem & operam impendimus efficaces, ac in his Officii nostri partes libenter impartimur, prout conspicimus in Dominio salubriter expedire.

§. 1. Sanè cum, sicut accepimus, aliàs postquam nos Ecclesiam Sanctorum Viti, Modesti, & Crescentiæ Martyrum, Regionis Montium de Urbe, Confraternitati Sacerdotum, & aliorum utriusque Sexus Christifidelium Sancti Bernardi dictæ Urbe Canonice instituta, cum facultate & licentia pro eisdem Confratribus ibidem erigendi Monasterium Monialium, sub Regula Sancti Benedicti, Congregationis Sancti Bernardi Cisterciensis Ordinis, pro pauperibus Puellis, quæ, spretis Mundi illecebris, Christo earum Sponsio perpetuum famulatum exhibere optarent, concesserimus, prout in nostris desuper confectis literis plenius continetur; Dilecti filii Prior & Custodes, ac Confratres ejusdem Confraternitatis ibidem Monasterium, cum Choro, Dormitorio, Hortis, Hortaliis, & aliis necessariis, construere & edificari procuraverint, illudque adeo commodum reddiderint, ut infra Octavam Conceptionis B. MARIE Virginis proximè præteritæ nonnullæ Puellæ Deo dicatæ, per deputatos ejusdem Confraternitatis approbatæ, in Moniales ipsius Monasterii, juxta laudabilem illius normam receptæ, admittantur, & introductæ extiterint. Tamen, quia sicut etiam accepimus, ultra trecentas per ipsos deputatos jam visitatas in eadem Urbe, aliis ingens ac ferè infinitus numerus pauperum Puellarum minorum sexdecim annis, quæ ob eorum minorem ætatem infra annum probationis, juxta Concilii Tridentini decreta, expressam professionem emittere, ac in Moniales recipi nequeant reperitur, & pleraque adfunt, quæ, si ætatem decem annorum excedant, vel utroque parente orbata, seu Neophytæ, aut legitime genitæ non sint, aut si habeant parentes & consanguineos honestæ conditionis & famæ, ab Archiepiscopalis Sancti Spiritus in Saxia, Sanctorum Quatuor Coronatorum, Sanctæ Catharinæ de Rosa, aliàs Miserabilium, & Sancti Blasii Neophytarum respectivè nuncupatarum prædictæ Urbis Monasteriis, juxta eorundem Monasteriorum statuta, privilegia, & indulta eis desuper concessa, penitus excluduntur, Puellæque hujusmodi, ac etiam nonnullæ honestæ Viduæ, quæ à maritali vinculo solutæ in cælibatu sub Claustro pudoris & continentie vitam cælibem sibi libenter statuerent, si in aliquo Monasterio, Collegio, aut loco recipi possent, quo fit, ut locum receptionis non inveniunt, non sine maximo earum Virginitatis, Honoris, & Pudoris periculo in sæculo remanere cogantur: Quibus (sicut pariter accepimus) dicti Confratres permoti, habita inter eos pluries matura deliberatione, cogitarunt, quod si Collegium unum, in quo pauperes Puellæ & Viduæ honestæ hujusmodi, quæ in aliis prædictis Monasteriis recipi non possunt, reciperentur, & admitterentur, ac cum timore DEI unâ cum aliis Puellis dicto Collegio minime onerosis, quæ ibidem, sicut in pluribus aliis Monasteriis & locis piis consuevit, recipi & admitti possent, educaretur, erigeretur, & institueretur, ac constiteretur, & una duorum millium ex testamento quondam Marci Antonii Mureti Junioris Clerici Lemovicensis Diocesis, sub die vigesima nona Septembris Proxi-

mè præteriti condito pauperibus Puellis, vitam Regularem profiteri cupientibus legata, & arbitrio dilectorum filiorum Ludovici Rivaldi, Presbyteri dictæ Diocesis, & Marci Antonii Lanfranci Veronenfis dicti Marci Antonii Hæredum & Executorum, ac altera mille, pauperibus Puellis, Orphanis, nuptui tradendis arbitrio eorundem Ludovici, & Marci Antonii Lanfranci, juxta tractatum, seu conventionem, inter Priorem, Custodes, & Confratres, necnon Ludovicum & Marcum Antonium Lanfrancum hujusmodi desuper initum, seu initam, & factam seu factam, necnon reliqua summæ trium millium respectivè scutatorum de Julius decem pro quolibet scuto, Collegio sic erigendo hujusmodi per dilectam in Christo filiam Magdalenam Stroziam Angullariam, sub certis modo & forma in instrumento donationis desuper confecto donatæ, necnon quæcunque res & bona per quoscunque Christifideles, etiam de causa testamenti, codicillorum, donationis, aut aliàs ipsis viventibus donatæ, & concessa, seu donanda & concedenda eidem Collegio erigendo applicarentur, & appropriarentur, profectò non solum publicæ utilitati consuleretur, sed exinde plures ex dictis Puellis Domino famulatum perpetuum exhiberent, reliquæ verò facilius nuptui traderentur, elemosynæque, & alia pietatis opera, tam ab ipsis Confratribus, quam aliis utriusque Sexus Christifidelibus verisimiliter in dies ibidem erogarentur, exercerentur & augerentur.

§. 2. Nos igitur, qui nostris potissimum temporibus, quantum cum Deo possumus, quæcunque Virgines, & honestas Viduas in numero prudentem adscribi, ac dictæ Confraternitatis incremento consulere, sinceris desideramus affectibus, Priorem, Custodes, & Confratres prædictos, ac eorum singulos à quibusvis excommunicationis, suspensionis & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis, à jure, vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum præsentium duntaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, necnon testamentorum, codicillorum, ac inter Priorem, Custodes & Confratres, ac Ludovicum, & Marcum Antonium Lanfrancum, ac etiam per Magdalenam prædictam, ut præfertur, initorum & transactorum, aliorumque quorumcumque instrumentorum & donationum factorum tenores & veriores, præsentibus pro expressis habentes, Motu proprio non ad Prioris, Custodum, & Confratrum prædictorum, vel alicujus eorum pro eis super hoc nobis oblata petitionis instantiam, sed de nostra mera deliberatione in dicto Monasterio Sancti Bernardi, ut præfertur, constructo, seu propè illud, aut alibi, ubi pro tempore forsan transferri contigerit unum Collegium pauperum Puellarum, Virginum, & honestarum Viduarum bonæ & honestæ conditionis & famæ, in quo Puellæ & Viduæ ipsæ, ne paupertate oppressæ, Dæmonis arte, in vitiis fordes prolabantur, recipi, ac separatim à commercio Monialium pietatis & charitative regi & educari, ac sub Domini timore, virtutumque exercitiis, ac Christianis moribus & institutis instrui, necnon inibi quousque juxta cujuslibet earum inclinationem, voluntatem ac devotionem, sive alia honesta ratione, per dictæ Confraternitatis Confratres provisi fuerint, habitum pro Moniales dicti Monasterii gestari solitum susceperint, & professionem per eandem emitti solitam expressè emittere proposuerint, aut aliàs nupserint, permanere possint, ita tamen, quod quoties aliquam ex dictis Puellis & Virginibus, ac Viduis è dicto Collegio, vel Voti Religionis, vel Matrimonii con-

Erectio Collegii pauperum Virginum, & honestarum Viduarum, apud Monasterium Sancti Bernardi.

trahendi, causa egredi contigerit, liceat Priori & Visitatoribus, ac Confratribus ejusdem Confraternitatis nunc, & pro tempore existentibus, aliam Puellam & Virginem, seu Viduam modo præmissis qualificatam, loco egressæ, aut alias juxta facultates dictæ Confraternitatis, ipsorumque Prioris, Visitatorum, & Deputatorum arbitrio ibidem collocare, subrogare, & substituere pro earundem Puellarum, ac Viduarum, perpetuis usu & habitatione, unâ cum Ecclesia præfata Sanctorum Viti, Modesti, & Crescentiæ Martyrum, vel alia, ubi pro tempore, ut præfertur, dictum Collegium & Monasterium transferri contigerit, ad eorundem Monasterii & Collegii usum, in qua Missa celebrari, ac Sacramenta Ecclesiastica ministrari, Calavera, tam ipsarum, quam etiam ejusdem Monasterii Moniales Ecclesiasticæ sepulture tradi, & Verbum DEI prædicare valeant, cum campanis & campanis, necnon refectorio, dormitorio, hortis, & hortaliis, aliisque necessariis ad ejusdem Collegii usum jam constructis & construendis. Itâ, quod in dicto Collegio sic erigendo nonnullæ alie Puellæ, Virgines, & honestæ Viduæ eidem Collegio minimè onerosæ, sed potius utiles, atque etiam per pro tempore Visitatores ejusdem Collegii approbandæ, pro salubri earundem educatione, ad instar aliorum Monasteriorum similes Puellas recipientium & admittentium, recipi & admitti valeant sine alterius præjudicio, Apostolica auctoritate, tenore præsentium, perpetuò erigimus & institui-
mus.

Applicatio
bonorum e-
ligentium
& clargien-
dorum à
Christifide-
libus.

§. 3. Ac eidem Collegio sic erecto, omnes & singulas pecuniarum summas per Marcum Antonium Muretum juniorem, juxta sui testamenti dispositionem, ac etiam instrumentorum & conventionum, inter dictos Priorem & Confratres, ac Ludovicum & Marcum Antonium Lanfrancum præfatos, quam etiam Legati donationis dictæ Magdalene, ut præfertur, factorum, necnon quæcunque res & bona quoscunque Christifideles eidem Collegio relinquenda & eroganda, itâ, quod dictæ confraternitatis Prior, Visitatores, & Confratres, nunc & pro tempore existentes, seu ab eis deputati, vel deputandi illorum omnium corporalem, realem, & actualem possessionem liberè apprehendere, & perpetuò retinere, illaque omnia ad Monasterii usum, necnon personarum inibi pro tempore existentium, & degentium manutentionem converterte valeant, cujusvis licentia minimè requisita, auctoritate & tenore præfatis, etiam perpetuò applicamus, appropriamus, concedimus, & assignamus.

Concessio
auctoritatis
Officialibus
dictorum
Monasterii
& Collegii
pro ejus to-
tali regimi-
ne.

§. 4. Eisdemque Priori, Officialibus, Visitatoribus, & Confratribus, ut Sacerdotes ex approbatis ab Examinatoribus pro tempore existentibus dictæ Urbis Vicarii provectæ ætatis, doctrinæ, vitæ munditiæ, & morum honestate, Religionisque zelo præditos, & à Protectore dictorum Collegii & Monasterii pro tempore existente approbandos, qui personarum omnium in dictis Monasterio, & Collegio erecto hujusmodi, ut præfertur, degentium, confessiones audiant, Ecclesiastica Sacramenta administrent, quique & de idoneis Verbi DEI Concionatoribus, qui illas in Spiritualibus Præceptis & documentis, ac sanctis Consiliis ad viam Domini intrinsece possint, omnino providere, quique unâ cum eisdem Confraternitatis Priore, Custodibus, Visitatoribus, & aliis Officialibus pro tempore existentibus, & ad id forsan deputatis, & deputandis, de qualitatibus Puellarum & Viduarum inibi etiam pro educatione recipiendarum & admittendarum cujuscumque status, gradus, ordinis, conditionis, vel nationis fuerint, accuratè & diligenter, quoties id à præfata Confrater-

nitare, sive illius Officialibus, Visitatoribus, & Confratribus præfatis requisiti fuerint, inquirere, ac denique circa examen & approbationem earum, quæ nedum educationis hujusmodi causa, verum quoque pauperum Puellarum, & honestarum Viduarum hujusmodi, quas ibidem pro tempore educari, ac ad susceptionem habitus Regularis, & Professionem admitti, necnon matrimonio collocari contigerit, consulere debeant; Ac pro feliciori dictorum Monasterii & Collegii gubernio, & statu, ac ut Puellæ pauperes, & honestæ Viduæ hujusmodi facilius instruantur, & educantur, de consensu & consilio tamen dilecti filii nostri, Michaelis tituli Sanctæ Mariæ suprà Minervam Cardinalis Alexandrini nuncupati, moderni, ac pro tempore existentis dictæ Confraternitatis Protectoris, & Visitatorum hujusmodi unam ex eis in Abbatissam, quæ Caput omnium existat, post tamen dilectæ in Christo filiæ Mauræ Perfectæ Machabæ, alias de mandato nostro ex Monasterio Monialium Sanctæ Cæcilie, Regionis Transyberim de eadem Urbe Ordinis Sancti Benedicti, in quo triginta octo annos laudabiliter vixerat, pro eisdem Puellis, & Mulieribus in sic noviter erecto & instituto Monasterio, receptis, & pro tempore recipiendis in vita, & Institutis Regularibus dicti Ordinis instruendis, necnon ipsius Monasterii cura & administratione gerendis & suscipiendis translatæ; Et nuper in illius Abbatissæ benedictæ & consecratæ obitum; Quam ex nunc ob ejus virtutum merita, bonosque mores, & exemplarem vitam, ac attento, quod elapso primo & subsequenti triennio nulla Monialis in præfato noviter constructo Monasterio, juxta dispositionem Concilii Tridentini, pro illo, ut convenit, regendo forsan qualificata reperiretur, nec aliqua alia Regularem disciplinam in eo cum bono odore, & Spirituali consolatione personarum in illo existentium introductam manuteneret melius, quam eadem Mauræ poterit eidem noviter erecto Monasterio in Abbatissam ad ejus vitam dictæ auctoritate præficimus, sibi que illius curam, regimen, & administrationem in Spiritualibus & Temporalibus plenariè committimus, unâ cum congruo aliarum Officialium, & Ministrarum numero, ad certum tempus eis benevisum eligendi, ac etiam, quoties opus & expediens erit, concurrente majori, vel faviori parte Monialium pro tempore existentium ejusdem Monasterii juxta formam dicti Concilii confirmandi, & etiam confirmationem reiterandi, vel tempore hujusmodi finito, illas omnino amovendi, & postmodum alias amatorum hujusmodi loco subrogandi & deputandi; Itâ tamen, quod Electio hujusmodi, tam juxta formam & tenorem Regulæ Ordinis Sancti Benedicti, quam constitutiones & ordinationes, ac decreta jam forsan per Confratres dictæ Confraternitatis, & seu Visitatores deputatos ejusdem desuper edita & edenda; Et quoad gubernium, constitutionem, & educationem Monialium & Puellarum, ac Viduarum hujusmodi, ac exercitia, tam spiritualia quam temporalia inibi jam forsan præscripta, & à dicto Michaeli Cardinale Protectore approbata, seu præscribenda & approbanda, necnon pro felici regimine, gubernio, & administratione Confratrum Confraternitatis, Monasterii & Collegii præfatorum, aliarumque personarum omnium rerum & bonorum Confraternitatis Monasterii & Collegii hujusmodi Priori, Officialibus, & aliis ad id eadem Confraternitate deputatis, & pro tempore deputandis, quæcumque statuta, licita tamen & honesta, ac sacris Canonibus, præsertim decretis ipsius Concilii non contraria toties, quoties, & quando expediens videbitur edendi, condendi, & faciendi, illaque edita, condita, & facta, prout ratio vel utilitas exegerit, aut suaserit necessitas pro tempore mutant, alterandi, & in melius reformandi, aliæque

etiam

etiam de novo faciendi licentiam & facultatem, eidem auctoritate & tenore similiter perpetuò concedimus & largimur. Quæ, postquam condita, alterata & mutata, ac edita & reformata, ac à præfato nunc & pro tempore existente Protectore, approbata & confirmata fuerint, eo ipsa dicta Apostolica auctoritate confirmata sint, & esse censeantur.

Februarii, Pontificatus sui Anno septimo, quomodolibet obtentorum & concessorum, quoad ea, quæ hæcenus revocata non fuerunt, nec sub ullis revocationibus sunt comprehensa, ac quibus dictæ Ecclesiæ Confraternitas, & loca pacificè hucusque usi sunt, ac utuntur & gaudent, & quæ eidem Concilio non sunt contraria, similiter perpetuò recipimus & admittimus, ac illa eis communicamus, & ad eos ea & eas extendimus, ac etiam de novo, quatenus opus sit, concedimus, in omnibus & per omnia, perinde ac si dictis Ecclesiis & Capellis Sancti Bernardi, ac Sanctorum Viti, Modesti, & Crescentiæ Martyrium, necnon Confraternitati, Monasterio noviter erecto, & Collegio prædictis, ac eorum Protectori, Priori, Custodibus, Officialibus, Confratribus, Abbatissæ, Monialibus, Confessoribus, & aliis Pueris & Puellis, ac personis, necnon Christifidelibus supra dictas Ecclesias Sancti Bernardi, ac Sanctorum Viti, Modesti, & Crescentiæ, ac alias Ecclesias, ut supra, visitantibus, ac Missis in eis vel earum aliqua, celebrantibus, vel celebrari facientibus, concessæ forent.

§. 7. Præterea, ne Confraternitas, Monasterium & Collegium huiusmodi, diversis Urbis Tribunalibus vexentur, dictum Michaëlem Cardinalem, & pro tempore existentem dictorum Confraternitatis, Monasterii, & Collegii Protectorem, ac Prioris, Custodem, ac aliorum Officialium, Confratrum, ac Ministrorum, necnon Abbatissæ, Monialium, & Puellarum, aliarumque personarum eorundem, pro tempore, quo in dictis Monasterio & Collegio steterint, quoad omnes & singulas lites, causas, quæstiones, controversias, differentias, & molestias, civiles & criminales, ac mixtas, tam activè quàm passivè hæcenus moras, & in futurum quomodocunque movendas, super bonis, rebus, iuribus, & actionibus quibuscunque ad Confraternitatem, Monasterium, Collegium, & Ecclesias Sanctorum Bernardi, Viti, Modesti, & Crescentiæ, ac alias Ecclesias prædictas, ac ad Moniales, Puellas, & alias personas supra dictas, nunc & pro tempore quomodolibet spectantia, in Iudicem ordinarium, cum eisdem facultatibus, indultis, privilegiis, antelationibus, & potestati- bus, quibus Protectores Confraternitatum Orphanorum, Catechumenorum Sanctæ Catharinæ de la Rosa, ac Sanctissimi Crucifixi, ac Deputati fabricæ Principis Apostolorum de dicta Urbe nuntur, potuerunt, & gaudent, ac uti, potiri, & gaudere poterant quomodolibet in futurum. Itæ eriam, quòd in causis discussionum, & aliis, quando de restituendo res & bona quæcunque de cætero eisdem Monasterio & Collegio relicta & donata, seu vigore præsentium, aut alias quomodolibet acquisita, prioribus & potioribus Creditoribus agi censebitur, Confratres ipsi nisi coram dicto Michaële Cardinale, & pro tempore dictæ Confraternitatis Protectore ad iudicium trahi non debeant, sed facta obligatione per Priorem, Custodes, & Camerarium dictæ Confraternitatis, in eventum, quòd alia bona utilibet sita, & quovis modo possessa non reperiantur, Michael Cardina- lis, & pro tempore existens Protector huiusmodi illa eisdem Confratribus, & respectivè Creditoribus, etiam de facto, & sine strepitu vel figura iudicii, neque expectata sententia, aut sine litis tradi & consignari mandet, & procuret, etiam perpetuò constituimus & deputamus.

§. 8. Et ne etiam Monasterium & Collegium huiusmodi, dum cura in temporalibus dictæ Confraternitati, ejusque Confratribus & Officialibus commissa est, in Spiritualibus aliquod detrimentum sentiant, eisdem Confratribus pro triennio, seu

Jurisdic-
tio
Cardinalis
Protectoris.
& iudicis
omnium
dicti Monas-
terii & Col-
legii, eo-
rumque per-
sonarum &c.

Facultas Vi-
sitorum
Monasterii
& Collegii
prædicto-
rum.

H h h

alio

Bullarium Romanum Tom. II.

Exemptio à
jurisdictione
& Superiori-
tate &c. Vi-
carii Urbis &
aliorum om-
nium.

§. 5. Ac spem jam conceptam habentes, quan- tum Urbis nostræ præfate, & universæ Christi- anæ Reipublice utilitatis asserent, Monasterium & Collegium sic per nos erecta, & instituta, illa ac eorum personas, res & bona, ipsamque Confra- ternitatem, & Confratres Sancti Bernardi, sub nostra & pro tempore existentis Romani Pontifi- cis, & Sedis Apostolicæ præfate, in Spiritualibus & temporalibus protectione, pariter perpetuò recipimus & admittimus, ac ab omni jurisdictione, superioritate, visitatione, correctione, dominio, & potestate Venerabilis Fratris nostri Jacobi Portuensis Cardinalis de Sabellis nuncupati, moderni, ac etiam pro tempore existentis in eadem Urbe Vi- carii generalis, & illius vicæ gerentis, ac Loca- tentium & Officialium quorumcunque, necnon Abbatum, Visitorum, & Superiorum totius Or- dinis Sancti Bernardi dicti Ordinis, ac pro tempore existentis Rectoris Parochialis Ecclesiæ, in qua Monasterium & Collegium huiusmodi nunc sita sunt, & pro tempore erunt, etiam circa Sacra- mentorum administrationem penitus & omnino ac perpetuò eximimus & liberamus, ac Monasterium & Collegium huiusmodi prorsus exempta & libera à Vicarii nostri, ac Abbatum, Visitorum, & Superiorum præfatorum, ac Parochiali jurisdic- tione, & superioritate, esse & fore, statuimus & decernimus.

§. 6. Et insuper, ut Monasterium & Colle- gium huiusmodi non solum manuteneantur, ve- rum etiam indices incrementum suscipiant, tam Ec- clesias Sancti Bernardi propè Columnam Traja- ni, & Sanctorum Viti, Modesti, & Crescentiæ præfatas, ac alias Ecclesias pro tempore dictorum Confraternitatis, Monasterii, & Collegii existen- tes, necnon tam Confraternitatem, Monasterium, & noviter erectum Collegium, quàm illorum Pro- tectorem, Priorem, Custodes, Visitatores, aliò- que Officiales, & Confratres, necnon Abbatiss- sam, Moniales, aliisque ipsius Collegii noviter erecti personas, & nunc, & pro tempore existen- tes, universosque alios utriusque Sexus Christifi- deles, Sancti Bernardi, & Sanctorum Viti, Mode- sti, & Crescentiæ Ecclesias prædictas, ut supra, devotè visitantes, necnon Missas in eis, vel ea- rum aliquibus celebrantes, seu celebrari facientes, quovis modo, & quocunque totius anni die in perpetuum, ad communicationem, & participatio- nem, etiam per extensionem omnium & singulo- rum privilegiorum, facultatum, immunitatum, exemptionum, præminentiarum, antelationum, indulgentiarum, indulgentiarum, etiam plenarum, & peccatorum remissionem, ac quorumcunque alio- rum favorum & gratiarum, tam Spiritualium, quàm temporalium, tam dictæ Confraternitati Ca- techumenorum, quàm quibuscunque Cisterciensium, & Sancti Benedicti respectivè Ordinibus, eorundem Monasterii & Conventibus, Domibus, Abbati- bus, Monachis, Fratribus, Protectoribus, Pue- ris, Puellis, Confessoribus, & Monialibus, ac eorum & earum Ecclesiis, Capellis, aliisque Mi- nistris & Officialibus, necnon etiam Christifide- libus dictas Ecclesias seu Capellas visitantibus & vi- sitaturis, per Nos & quoscunque Romanos Pon- tifices, & præcipuè felicis recordationis Paulum Tertium, sub Datum Romæ decimo tertio Idus

Elargitio In-
dulgencia-
rum pro vi-
sitan-ibus Ec-
clesiam, vel
ibi celebra-
ntibus, aut ce-
lebrari fa-
cientibus.

alio eis bene viso tempore tres Sacerdotes auctoritate & rerum gerendarum experientia, pietateque graves, qui Visitatores nuncupentur, & nostras, ac dicti Vicarii, Vicesgerentis, Locatenentium, & illius Officialium huiusmodi vices gerant, dictisq; Monasterio & Collegio, illius Abbatissæ, Monialibus, Puellis, personis, rebus, & bonis præfatis in spiritualibus præsent salva tamen in omnibus supra dictis iurisdictione Urbis Vicarii in casibus, in quibus Episcopi, tanquam Sedis Apostolicæ Delegati, auctoritate dicti Concilii in Monasteria, quantumvis exempta, & præcipue circa eorum clausuram, iurisdictionem exercent, & ad eos specialis & particularis approbatio Sacerdotum & Confessorum electorum, spectet & pertineat eligendi & deputandi, ac postquam electi fuerint, electionis & deputationis huiusmodi confirmatio, ad nos, & Successores nostros, vel dictum Michaellem Cardinalem, & pro tempore existentem dictæ Confraternitatis Protectorem pertineat, quotiesque sibi videbitur finito triennio, seu alio tempore deputationis huiusmodi illos, prout tempus & necessitas exposulaverit, confirmandi, ac etiam amovendi, & illorum loco alios collocandi & deputandi facultatem impartimur. Nosque hac prima vice pro proximo triennio, ab hodie incipiendo, & ut sequitur finiendo de Michaelis assensu, idem munus dilectis filiis Petro Fulvio Presbytero Romano, utriqueque Juris Doctori, moderno Priori, Joanni Daddeo Canonico Basilicæ Sanctæ MARIE Majoris, & Annibali Summario, Sacræ Theologiæ Professori dictæ Confraternitatis Confratribus commitimus, ipsosque in eorundem Collegii & Monasterii Visitatores, Corretores, & Moderatores creamus, constituimus, & deputamus, dantes eis auctoritatem omnia & singula faciendi, mandandi, corrigendi, puniendi, reformandi, & exequendi, quæ ad Spirituale regimen personarum in dictis Monasterio & Collegio degentium, illorumque fœlis incrementum & gubernium expedire, atque opportunum esse censuerint, ita ut personæ in dictis Monasterio & Collegio vitam degentes, in piæ & religiosæ vitæ sinceritate & puritate, per sollicitam eorum operam foveantur & conserventur, temporalia verò bona ex circumscripta dictæ Confraternitatis cura bene, atque utiliter administrantur.

§. 9. Poterit ipsas Puellas, quas paupertate oppressas in huiusmodi Collegio collocari contigerit, speciali privilegio insignire intendentes, quod, ubi pauperes Puellæ huiusmodi aliena expetere auxilia coactæ fuerint, quibus adveniente ætate legitima, qua vel Monasteria ingredi, vel matrimonio collocari censuerint, quæcunque dotes & auxilia pia, tam ab Annuntiationis Beatæ MARIE supra Minervam, Conceptionis, Consononis, & aliis Archiconfraternitatibus & Confraternitatibus, necnon Ecclesiis, Oratoriis, & piis Locis, quam quibuscunque utriusque Sexus personis, usque ad summam honestam & eisdem Priori & Visitoribus bene visam petere, impetrare, obtinere, sequæ ad hunc effectum in rotulis & lisis Archiconfraternitatum, Confraternitatum, Ecclesiarum, Oratoriorum, Locorum piorum necnon personarum huiusmodi adscribi facere, & procurare, & deinde, postquam dictæ Puellæ, seu earum aliquæ, dotes, & auxilia huiusmodi obtinuerint, seu ad id adscriptæ fuerint, quod tam illæ, quæ dictum Monasterium ingredi, & jam ingressæ sunt, quam etiam, quæ matrimonio collocari voluerint, dotes & auxilia huiusmodi eis quomodolibet procurata, promissa, & acquisita omnino lucrari, percipere, & exigere debeant, illaque omnia una cum præmissis dotibus & legatis, factis & faciendis, eisdem Monasterio & Collegio perpetuo concedimus, pauperisque huiusmodi Puellis, dotium auxiliorum

piorum, ac legatorum & donationum prælatorum factorum, & faciendorum quibuscunque, etiam Motu pari emanatis prohibitionibus, vel statutis, etiam iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, non obstantibus, capaces omnino facimus, reddimus, & declaramus, mandantes omnibus & singulis Custodibus, Camerariis, & quibuscunque Officialibus dictarum Archiconfraternitatum, quæ dotes & auxilia pia huiusmodi pauperibus Puellis dare & assignare consueverunt, quod ex nunc dotes promissas Puellis jam dictum Monasterium ingressis, & profiteri cupientibus, statim, postquam professæ fuerint Priori, Custodi, & Camerario pro tempore existentibus dictæ Confraternitatis Sancti Bernardi, ac si ipsæ dictum Monasterium ingressæ, seu Matrimonio collocatæ, de consensu & licentia Archiconfraternitatum & Locorum piorum huiusmodi extitissent, dare, & cum effectu perolvere, ac deinceps pauperes ipsas Puellas in dicto Collegio pro tempore degentes, ad subventionem dotium & auxiliorum huiusmodi admittant, & admitti procurent, & deinde tam Puellis profiteri cupientibus, quam Matrimonio collocandis, dotes eis promissas, & deinceps promittendas Priori & Officialibus huiusmodi dare, & cum effectuolvere debeant, nec ad id, & sub prætextu decretorum, privilegiorum, aut aliorum quorumcunque statutorum Archiconfraternitatum, Confraternitatum, Ecclesiarum, Oratoriorum, & piorum Locorum huiusmodi quomodolibet concessorum, contradicere audeant seu præsumant, etiam licentia earundem Confraternitatum, & Locorum piorum huiusmodi minime obtenta, neque petita. Ne autem super præmissis, & illorum aliquo, in futurum quomodocunque, vel quavis de causa pro validitate dubitari contingat.

§. 10. Volumus, ac etiam mandamus, quod quæcunque ordinationes, instrumenta, donationes, tam inter vivos, quam causa mortis, testamenta, codicilli, & quæcunque alia documenta, scripturæ & folia facta & facienda, per, & inter quæcunque utriusque Sexus personas, etiam si mulieres nuptæ, ac minores viginti annis fuerint, ac testatæ vel intestatæ decesserint, etiam de bonis suis disponere prohibita, nisi adhibita certa forma & solemnitate requisita, à jure vel ab hæmine, seu statuti, novisque reformationibus Urbis, seu obtenta à Romano Pontifice desuper licentia, de quibuscunque eorum bonis quomodocunque acquisitis, & acquirendis, de quibus in favorem Confraternitatis, Monasterii, & Collegii huiusmodi testari, legari, codicillari, vel inter vivos, aut causa mortis, aut alias quomodolibet disponi contigerit; Quodque tam Marci Antonii junioris scutorum trium millium, ac Magdalene Strozziæ de Anguillaria, aliæque, ut præsertur, facta & legata, quam quæcunque alie donationes, testamenta, codicilli, voluntates, instrumenta, scripturæ & documenta ad favorem Monasterii, Collegii, & Confraternitatis huiusmodi jam facta & facienda, perinde valeant, ac suum fortiantur effectum, ac si coram Notario publico, & legitimo testium numero, adhibitisque omnibus de jure requisitis qualitatibus & solemnitatibus facta fuerint, nec Monasterium, Collegium & Confraternitas huiusmodi de eisdem bonis in testamentis, legatis, codicillis, donationibus, & aliis voluntatibus, ac dispositionibus, instrumentis, documentis & scripturis eisdem Monasterio, Collegio, & Confraternitati pro tempore relictis, donatis, datis, cessis, & applicatis, aliquam partem Cameræ Apostolicæ, vel Monasterio Converteriarum in eadem Urbe, etiam juxta dispositionem indultorum felicis recordationis Leonis Decimi, Clementis,

Septimi,

Privilegium
pauperum
Puellarum
quod admittantur
ad subsidia
dotium, quæ
per diversas
Confraternitates & Loca
pia dari solent.

Indultum
circa relicta
Monasterio
& Collegio
prædictis, &
eorum validitatem.

Septimi, & Pauli Tertii, aliorumque Romanorum Pontificum Prædecessorum nostrorum, seu Fabricæ dictæ Basilicæ Principis Apostolorum, aut quibuscvis aliis personis & Ecclesiis dare minime teneantur, bona ipsa, ut supra, pro tempore relicta vel donata Confratres ipsi libere & integrè recipere, ac eorum possessionem apprehendere, & perpetuò retinere, ac in eorundem Monasterii & Collegii, & Confraternitatis usus & utilitatem convertere libere & licite valeant, etiam cuiuscvis licentiæ minime requisita.

§. 11. Decernentes ordinationes, constitutiones, & statuta hucusque à præfata Confraternitate facta, necnon instrumenta, donationes, testamenta, codicillos, scripturas, ac etiam, prout illa concernunt, omnia & singula in dictis ordinationibus, constitutionibus, statutis, capitulis & instrumentis, donationibus, testamentis, codicillis, tam factis quam faciendis, & aliis scripturis contenta, & inde secuta quæcunque, licita tamen & honesta, maxime ea circa licentiam edendi carnes, & alios cibos in refectorio quolibet die Dominico, tertia & quinta feriis, & aliis diebus arbitrio supra dictorum Visitatorum, & circa usum omnium pannorum, lini, & etiam cubilis, videlicet cum subacula tantum, & linteaminibus, ac etiam sine scapulari, ac etiam ultra Breviarium Romani cum proprio Congregationis Sancti Bernardi dicti Cisterciensis Ordinis, ita quod ad recitationem Officii Beatæ Virginis Mariæ non teneantur; Quo verò ad præscriptionem Horarum ad Divinam Officia, tam diurna quam nocturna recitanda, & quæcunque alia exercitia, Spiritualia & Temporalia anno singulo faciendi, juxta Visitatorum, & Abbatissæ hujusmodi dispositionem & ordinationem, ac ea, quæ jam forsan decreta & descripta in libro constitutionum & statutorum ipsius Confraternitatis in Pergameno, etiam quod sint contrarie Regule Sancti Benedicti, hujusmodique præsentium tenore approbamus, & confirmamus, ac illis perpetuæ firmitatis robur adijcimus, fieri & observari debere.

§. 12. Ac suppletes omnes & singulos juris etiam communis, & municipalis, & facti etiam quæcumque solemnitate in eis forsan ex dispositione Juris, vel statutorum, sive novarum reformationum Urbis circa validitatem donationum, in genere etiam respectu consensuum propinquorum parentum infirmationis & testium, ac donationum in subscriptionibus, & in specie contractuum mulierum, & omnia alia forsan requisiti, omisiss & omittendis, præsertim quoad dicti Marci Antonii junioris, & desuper inter Confratres & Officiales Confraternitatis Sancti Bernardi, ac Ludovicum & Marcum Antonium Lanfrancum præfatos, necnon donationis per dictam Magdalenam, aliaque omnia & singula legata, donationes, instrumenta, testamenta, codicillos, scripturas, documenta, & alia quæcunque quomodolibet facta & faciendi, alioque defectus, si qui in præmissis omnibus & singulis, seu eorum aliquo intervenireint, aut intervenire possint quomodolibet in futurum. Inhibentes nunc & pro tempore existentibus Præsidenti & Deputatis Fabricæ dictæ Basilicæ Principis Apostolorum, ac quibuscvis aliis Officialibus, Ministris, & personis cuiuscvis status, & gradus, & conditionis existant, etiam Cardinalatibus honore præfalgant, ne Priorem, Officiales, & Confratres nunc & pro tempore existentes, in omnibus & singulis præmissis, & præsertim super dictis pecuniis per dictum Marcum Antonium Muretum legatis, & per Magdalenam Stroziam donatis, omnibusque & singulis aliis legatis, donationibus, testamentis, & codicillis pro tempore per quæcunque personas quomodolibet, & ex quacunque causa factis & faciendis,

in rebus vel bonis dictæ Confraternitatis quovis quæsito colore vel ingenio, directè vel indirectè molestare, perturbare, aut inquietare audeant vel præsumant: Et etiam decernentes omnia & singula præmissa, ac inde secuta, & inde sequenda quæcunque, valida & efficacia fore, ac suos plenarios & integros effectus sortiri, & inviolabiliter ab omnibus observari debere.

§. 13. Et sic per quoscunque Judices & Commissarios, etiam Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, ac causarum Palatii Auditores, sublata eis, & eorum cuilibet quavis literæ judicandi, & interpretandi facultate & auctoritate judicari & definiti debere. Necnon irritum declarantes quidquid secus super his à quocunque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§. 14. Quo circa Venerabilibus Fratribus nostris Patriarchæ Alexandrino, ac Marturanensi & Venerabilibus Episcopis per Apostolicam scriptam Motu simili mandamus, quatenus ipsi vel duo, aut unus eorum, per se vel alium, seu alios præfatos literas, & in eis contenta quæcunque, ubi, & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Prioris, Custodum, ac Confratrum præfatorum, seu aliquis eorum fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra Priorem, Custodes, & Confratres præfatos, ac eorum singulos eisdem præfatis, & in eis contentis quibuscunque, pacifice frui & gaudere ac præfatis literis, & in eis contenta hujusmodi ab omnibus, quos illa concernunt, & quomodolibet concernent in futurum inviolabiliter observari, non permitten-tes eos vel eorum aliquem desuper per quoscunque quomodolibet indebitè molestari. Contradictores quoscunque & rebelles per sententias & censuras Ecclesiasticas, ac etiam pecuniarias penas, eorum arbitrio imponendas & moderandas, aliaque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita, compescendo, ac legitimis super his habendis servatis processibus sententias, censuras & penas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 15. Non obstantibus de noti tollendo jure quæsito, ac de non concedendo indulgentias & privilegia adinstar, necnon quibuscvis aliis, etiam Pauli Secundi, & Pauli Quarti, ac Pii Quinti de rebus Ecclesiasticis non alienandis, & male alienatis recuperandis, ac quibuscvis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, Cancellariæque Apostolicæ Regulis, ac Monasterii, Collegii Cisterciensis, & Sancti Benedicti Ordinum hujusmodi statutis & juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis tam Monasterio, ac Cisterciensi, & Sancti Benedicti, quam quibuscvis aliis, etiam præfatis dictæ Urbis Monasteriis, & illorum Ordinibus, Superioribus, Conventibus, & personis, necnon Præsidenti & Deputatis dictæ fabricæ, aliisque omnibus & singulis Collegiis, Fabricis, Monasteriis, Locis piis, sub quibuscunque tenoribus, & formis, ac cum quibuscvis etiam derogatoriis derogatoriis aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, irritantibusque decretis, in genere, vel in specie quomodolibet concessis, etiam si in eis expressè caveatur, quod illis derogari nequeat, nisi derogationes hujusmodi, & causa in eis forsan expressè & specialiter infererentur, ac de consensu Superiorum, Monasteriorum, Ordinum, Collegiorum, Fabricarum, & aliorum piorum Locorum hujusmodi fierent, & alias factæ derogationes hujusmodi nemini suffragentur. Quibus omnibus & singulis etiam:

Clausula sub-
blata:

Executores
huius Bullæ
deputati &
auctoritas:

Clausula de-
rogatoria:

Approbatio
Ordinatio-
num facta-
rum & fa-
ciendarum à
Confraterni-
tate.

Validatio
dispositio-
num favora-
bilium eiu-
dem Monas-
terio & Col-
legio.

si pro illorum sufficienti derogatione, de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica; expressa & individua, non autem per clausulas generales idem importantes mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illis aliis in suo robore permanens, hac vice duntaxat harum serie pari Motu specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscunque. Aut si aliquibus communiter vel divisim ab Apostolica sit Sedes indultum, quoddam interdictum, suspensum vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas, non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

Transumptio-
rum fides.

Dat. P. An
31. 13. Julij

§. 16. Volumus autem, quod eorundem presentium transumptis etiam impressis, ac manu Prioris, seu Visitatorum, aut Custodum, ac Secretarii dicte Confraternitatis subscriptis, ac præfati Michaelis Cardinis nunc & pro tempore existentis dicte Confraternitatis Protectoris, vel ipsius Confraternitatis sigillo munitis eadem prorsus fides in iudicio, & extra illud adhibeatur, quæ eisdem presentibus adhibetur, si fuerint exhibitæ vel ostensæ. Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud Sanctum Marcum. Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo octogesimo septimo, Idus Julij, Pontificatus nostri Anno tertio.

LXI.

De Constitutionibus Pii IV. & Pii V. circa Confidentias beneficiales editis, in Regno Gallie exequendis, cum moderatione poenarum.

Hanc Bullam Pii IV. num. 85. habes supra fol. 128. Romanum. Et Pii V. num. 85. habes supra fol. 302. Intolerabilis. Et de materia Confidentiarum & Simoniarum beneficiorum notavi hic supra in Constitut. 47. Divina fol. 603.

Edita An. D.
1587.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Proemium.

Pastoralis Officii sollicitudo nos admonet, ut quæ ad DEI laudem, animarumque salutem à Prædecessoribus nostris providè statuta fuisse noscuntur, debite executioni demandari curemus, & si quando opus sit, illi etiam moderemur, prout personarum & locorum qualitate pensata, id in Domino conspiciamus subsolvere expedire.

Pii IV. Bulla est citata in rubric

§. 1. Sanè felicitis recordationis Pius Papa IV. Prædecessor noster, ad tollendam fiduciarie mancipationis beneficiorum Ecclesiasticorum corruptelam, statuit & decrevit &c.

Omittitur residuum hujus narrativæ, quia ipsam Bullam habes supra.

Pii V. Bulla est citata in rubric.

§. 2. Et deinde recolendæ memoriæ Pius Papa V. etiam Prædecessor noster, ad tam nefarium crimen facilius detegendum, & profligandum, similiter statuit & decrevit &c.

Omittitur residuum hujus narrativæ, quia ipsam Bullam totam habes supra.

Hic modò Pontifex mandat in Regno Franciæ dictas Bullas executioni mandari ab Ordinariis &c.

§. 3. Cùm autem, sicut accepimus, litteræ prædictæ in Regno Gallie ob temporum injuriam, aliæque varias subortas difficultates, diversæque impedimenta, adhuc debite executioni non fuerint demandatæ, ac propterea tam perniciosum Confidentiarum vitium, quod celeriter extirpari & eradicari oportuerat, in dies magis serpere, ac propagari noscatur, in maximum animarum periculum, ac scandalum plurimorum. Nos ad hanc corruptelam à Regno illo, quod non ita dudum omni Christianarum Virtutum genere flo-

rebat, & adjuvante Domino etiam in posterum florere, tollendam, ac prorsus eliminandam, animarumque salutis impensis consulere volentes, omnibus & singulis dicti Regni Archiepiscopis & Episcopis, eorumque Officialibus, & ad quos de jure & consuetudine pertinet, per presentes mandamus, ac sub interminatione Divini Iudicii districtius injungimus, ut in suis quisque Ecclesiis, Civitatibus, Diocesis, & Locis etiam exemptis, ad prædicta studiosè attendant, & in eos, quos in Confidentiarum crimine, præsertim verò in aliquo ex casibus superius expressis, etiam per præsumptiones & conjecturas prædictas deliquisse constiterit, severè animadvertant. Qui si in præmissis exequendis negligentes fuerint, eorum negligentiam suppleri volumus à Capitulis Ecclesiarum Metropolitanarum, & Cathedralium, & etiam Collegatarum, ubi de beneficiis Collegiatarum Ecclesiarum agitur, ac etiam ab Abbatibus, seu Prioribus, Claustralibus & Conventibus Monasteriorum, aliorumque Regularium Locorum, ubi de eorundem Monasteriorum, seu Locorum Officiis, & beneficiis questio extiterit.

§. 4. Et nihilominus appellationes à sententiis, quas contra delinquentes huiusmodi fieri contigerit, ad proximos Superiores, juxta Caneonicas Sancti noster, devolvi, executionem tamen sententiarum prædictarum minime impedire, aut retardare.

§. 5. Beneficia verò occasione Confidentiarum huiusmodi ad præsens vacantia, & in posterum vacatura, à ipsorum beneficiorum ordinariis Collatoribus, perinde ac si dispositioni dicte Sedis Apostolicæ minime reservata fuissent, liberè conferri, & de illis provideri posse & debere decernimus, dum tamen talium criminum participes aut consentientes non fuerint; Quo casu, ac etiam, ubi lidem ordinariis Collatoribus per sex menses à die detectæ & comprobatae, seu convictæ Confidentiarum beneficia ipsa, ut præfertur, vacantia, Canonice conferre, & de illis providere neglexerint, beneficiorum eorundem Collegio, & provisto ad proximos Superiores devolvatur. Quæ verò beneficia de Jurepatronatus Laicorum fuerint, ad eorundem Patronorum presentationem, dummodo in crimine huiusmodi non fuerint participes, conferri. De Ecclesiis verò ac Monasteriis, aliisque beneficiis Ecclesiasticis, ac charissimis in CHRISTO filiis nostri Henrici III. Francorum Regis Christi-nissimi nominationem spectantibus, novam ipsius Regis nominationem juxta concordatam, seu indulta à Sede Apostolica ei concessa volumus expectari.

§. 6. Fructus verò ex Ecclesiis, Monasteriis, & aliis beneficiis prædictis male & indebitè perceptos, in usum ac reparationem Ecclesiarum, Monasteriorum, & beneficiorum prædictorum, super quibus Confidentia huiusmodi contracta & commissa fuerint, per Archiepiscopos, Episcopos, seu Officiales, aliosque prædictos converti & applicari posse volumus, ac decernimus.

§. 7. Magnopere hortantes, & enixe in Domino requirentes eundem Regem Christianissimum, ut omne studium, operam, & auctoritatem ad prædicta peragenda, & exequenda præstare, & impertiri velit.

§. 8. Absolutionem autem à censuris & poenis, ac irregularitatibus propter crimen Confidentiarum huiusmodi quomodolibet inquisitis pro tempore existentibus nostris, & Sedis Apostolicæ apud Regem prædictum Nuntio, & quoad Provincias sub Legatione Avinionensi comprehensas eidem Avinionensi Legato, cum facultate etiam alios subdelegandi, de quorum pietate & prudentia magis confidant, per præfatos committimus & demandamus.

§. 9. Non obstantibus Pii IV. & Pii V. Prædecessorum prædictorum litteris, quas, quoad dictum Regnum in superius expressis, duximus relaxandas & moderandas, illis nihilominus quoad alia Regna, & loca in suo robore duraturis, aliisque Apostolicis Constitutionibus, privilegiis quo-

Appellationem non suspensam concedit.

Beneficia ex hoc crimine vacantia per Ordinarios dicti Regni conservari indulget Alii contra-rium est servandum ex Bulla Pii V. cit. in rubric.

Fructus eorum, usui Ecclesiarum applicari jubet. Sed alibi dicuntur reservari Cameræ ex dicta Bulla Pii V.

Hortatur Regem ad exequendum.

Absolutionem à censuris Nuntio reservat.

Derogatio contrarium. Fides exemplorum.

que &

Sanctio po-
nalis.

Dat. P. A. 3.
13. Augusti.

LXII.

Edicta A. D.
1587.

Procinium.

Revocatio
concessio-
num regimi-
nis Studii
cuiusque
com. effis.

que & indultis, generalibus vel specialibus quoruncumque tenorum existant, per quæ præsentibus non expressa, aut in totum non inserta præsentium effectus & executio impediri valeat quomodolibet, vel differri, & de quibus, eorumque totis tenoribus habenda sit in nostris literis mentio specialis, cæterisque contrariis quibuscunque.

§. 10. Volumus autem, ut præsentium exempla etiam inpressa edantur, eaque Notarii publici manu, & cuiuscunque Curie Ecclesiasticæ, ejusve Prælati sigillo obligata, eandem illam prorsus fidem in iudicio, & extra ubique locorum faciant, quam ipsæ præsentibus facerent, si essent exhibitæ, vel offensæ.

§. 11. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrorum mandati, injunctionis, decretorum, hortationis, requisitionis, commissionis, demandationis, & voluntatum infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare presumpserit, indignationem Omnipotentis DEI, ac Beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Datum Romæ apud Sanctum Marcum, Anno Incarnationis Dominicæ 1587. Idus Augusti, Pontificatus nostri Anno 3.

Studii Generalis Almæ Urbis Regimen Collegio Advocatorum Consistorialium confertur, cum antiquiorum Privilegiorum confirmatione, & Præcedentiæ concessione.

De hujus Studii erectione, & indultis vide supra in Bonifacii VIII. Constit. 9. in suprema. fol. 180. Tomo l. ubi cætera adnotavi. Et de ejus Protectionibus vide infra in Constit. 74. Immen. in X. Congreg.

De Advocatis autem Consistorialibus vide supra in tertia Bulla Martini V. in Apostolicæ fol. 295. Tom. 1. Erit in hoc studio novissimè Cathedralis eloquentiæ, seu Rhetoricæ cum emolumentorum assignatione, eamque concessit Augustino Mascardo S. D. N. Urban. VIII. in Constit. 83. Militantis infra Tom. 4.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

SAcri Apostolatus Ministerio, meritis licet insufficientibus, Supernâ Dispositione præsidentes, inter cæteras curas, quæ animam nostrum delectant, illam libenter suscipimus, per quam nostræ provisionis auspiciis, officia singula, præsertim in hac Urbe nostra consistentia, illorumque regimina, Viris committantur idoneis, quorum opere & auxilio adolescentes, Studii bona, ut artium causa, ex diversis Mundi partibus ad ipsam Urbem confluentes, eorum animos virtutibus, & bonis moribus facilius excolere valeant, ac desuper Officii nostri partes interponimus, prout in Domino conspicimus salubriter expedire.

§. 1. Sanè licet aliàs Officium Rectoratus Gymnasii Almæ Urbis, uni ex Prælati Romanæ Curie ad ejus vitam concedi & assignari solitum fuerit, &c. Nihilominus attendentes, quod si dictum Officium Collegio dilectorum filiorum Sacræ Aule nostræ Consistorialis Advocatorum perpetuò uniretur, annexeretur, & incorporaretur, idem Officium facilius gubernaretur, ac utilitati publicæ, & ipsius Gymnasii plenius consuleretur, cum in dicto Collegio semper adsint Viri literarum scientia, rerum experientia, ac usu & prudentia præstantes. Idcirco quasi libet concessiones, assignationes, ac alias dispositiones de dicto Officio per Nos, ac prædictum, ac quosvis alios Prædecessores nostros, dictis & aliis quibuscvis personis hæcenus factas præ-

missis, & certis aliis rationabilibus causis adductis, harum serie specialiter & expressè revocantes, cassantes, irritantes, & annullantes, illaque proors & omnino revocatas, cassas, irritas, & annullatas esse, & ceteri debere declarantes, easdemque personas à prædicto Officio penitus amoventes, ac utilitati publicæ prospicere, ipsūque Collegium ac illius singulares personas, à quibuscvis excommunicationis, suspensionis & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententis, censuris & penis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existant, ad effectum præsentium duntaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, ac dictarum literarum tenores præsentibus pro sufficienter expressis habentes.

§. 2. Motu proprio non ad Collegii prædictorum, vel aliorum pro ipsis nobis super hoc oblata petitionis instantiam, sed de nostra mera liberalitate, & ex certa scientia nostra, deque Apostolicæ potestatis plenitudine, Officium Rectoratus Gymnasii Urbis hujusmodi, per ipsos Collegium regendum, & gubernandum, juxta providam dispositionem, & ordinationem, per eos, vel eorum majorem partem faciendam, & toties, quoties eis, vel eorum majori parti expedire videbitur, mutandam, cum omnibus & singulis illius fructibus, redditibus, proventibus, juribus, obventionibus, & emolumentis universis, & quibuscunque tam ordinariis quam extraordinariis, & quæ alii, qui pro tempore fuerint Rectores dicti Gymnasii quovis modo habuerint, seu habere poterint, ac quibuscvis causis & rationibus, necnon cum quibuscvis honoribus, oneribus, præminentis, antelationibus, prærogativis, jurisdictionibus, auctoritatibus, facultatibus, libertatibus, immunitatibus, & exemptionibus, privilegiis, & indultis, solitis ac consuetis, & quibuscvis aliis concessionibus & gratiis, quibus tam ultimus, quam alii Rectores dicti Gymnasii, quavis ratione vel causa, usi, gavis, & potiti fuerint, ac uti, gaudere, & potiri poterint, Collegio Advocatorum hujusmodi, ita, quod liceat ipsis Collegio, per se vel alium, seu alios eorum & Collegii hujusmodi nominibus, corporalem, realem, & actualem possessionem dicti Officii apprehendere, ac perpetuò retinere illiusque fructus, redditus, proventus, jura, obventiones, & emolumenta percipere, exigere, & levare, & in suos, ac Collegii & Officii hujusmodi usus, & utilitatem convertere, ipsūque Officium per se, & quemlibet eorum exercere, regere & gubernare, ac omnia & singula, quæ ad hujusmodi Officium, ejusque liberum exercitium spectant, & pertinent, gerere & facere, cuiuscvis licentia desuper minime requisita, auctoritate Apostolica tenore præsentium, perpetuò unimus, annectimus, & incorporamus &c.

§. 3. Ac, ut Collegium & Advocati hujusmodi, qui majoribus occupationibus detinentur, majoris etiam dignitatis titulo decorentur, omnibus, & singulis prædictæ Aule Consistorialis Advocatis, ut ipsi universos & quoscunque Advocatos, Procuratores, Doctores, etiam antiquiores & quoscunque alios, tam in Romana Curia, quam extra eam, præcedant.

§. 4. Omnique & quæcunque privilegia eisdem Collegio, & Advocatis, per quoscunque Romanos Pontifices, Prædecessores nostros, & præcipue pie memoriæ Julium Papam III. etiam Prædecessorem nostrum, super facultate Doctores creandi, etiam privative quoad alios, quæ privilegia & literas Apostolicas desuper concessas, eorum tenorem præsentibus etiam pro expressis habentes, auctoritate & tenore prædictis confirmamus, & innovamus, & quatenus opus sit, de novo concedimus, Motu, scientia, ac potestatis plenitudine prædictis, ac universis & singulis cuiuscunque conditionis, status, gradus,

Concessio dicti regim-
inis cum suis
oneribus,
honoribus,
& emolu-
mentis Col-
legio Advoca-
torum Con-
sistoria-
lium.

Præcedentia
antè alios
Advocatos
& Doctores
etiam anti-
quiores eis-
dem datur.

Doctores di-
facultas, &
alia quæcun-
que privile-
gia confir-
mantur. Tu
habes Ju-
lii III. Bul-
lam hæc cita-
tam supra.

Clausula
præservati-
væ.

dignitatis & honoris, ne sub indignationis nostræ, aliisque arbitrio nostro imponendis penis, eisdem Collegium Advocatorum, in præmissis vel circa ea, aut in eorum aliquo quomodolibet impedire, molestare, perturbare, seu inquietare, contra præsentium continentiam & tenorem, ullatenus audeant vel præsumant, districtius inhibemus, necnon omnibus & singulis ad quos spectat & spectabit quomodolibet in futurum, ut hæc omnia plene observent, & observari faciant, præcipimus.

§. 5. Decernentes unionem, annexionem, incorporationem, applicationes, indulgentiam, inhibitionem, ac præceptum prædicta, præsentisque litteras nullo unquam tempore, etiam ad prædictorum, & aliorum quorumvis instantiam, etiam ex quacumque & inexcogitata causa, etiam sub prætextu quod in forma juris facta non fuerint, revocari, alterari, limitari, modificari, aut ad terminos juris communis reduci, vel quæpiam adversus illa in integrum restitui, seu de subreptionis vel obreptionis, aut nullitatis vitiis seu intentionis nostræ, aut alio quovis defectu, notari vel impugnari posse, dictisque Collegium ad causam, seu causas, propter quas illa emanarint, eorum quocumque verificandum non teneri, nec propterea, aut ex eo quod interest prætendentes vocati non fuerint, per subreptionem vel obreptionem obtenta præsumi, aut alias viribus carere, ac illorum quasvis revocationes, suspensiones, derogationes vel limitationes, pro tempore factas & emanatas, pro nova illorum concessione haberi, ac quoties illæ emanabunt, toties renovata, & de novo concessa, etiam sub datum per eisdem Collegium eligenda cense, ac Collegium huiusmodi eorumdem locorum emptores, & quoscumque alios in præmissis interesse quomodolibet prætendentes, ad probandum seu verificandum præmissa, & in quos usus prædicta summa conversa fuerit, nullo unquam tempore teneri nec locorum huiusmodi proventus, in fortem principalem computari.

Decretum
irritans.

§. 6. Sique per quoscumque Iudices & Commissarios, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores huiusmodi, ac Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, etiam de latere Legatos, ac alios quoscumque, sublata eis eorum cultibus, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, in quavis instantia iudicari & definiri debere, & irritum &c.

Deputatio
Executioris.

§. 7. Quocirca dilecto filio Magistro Evangelistæ Pallotto, Datario & Prælo domestico nostro, Motu simili per Apostolica scripta mandamus, quatenus ipse, per se vel alium seu alios faciat auctoritate nostra, Collegium, ac illius Advocatos prædictos unionem, annexionem, incorporationem, permissionem, concessione, impartitionem, confirmationem, innovationem, inhibitionem, & decreto, aliisque præmissis pacifice frui & gaudere. Non permitteat eos & eorum quolibet desuper contra præsentium tenorem quomodolibet, per quoscumque indebitè molestari. Contradictores per censuras & penas Ecclesiasticas, aliisque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita compescendo.

Derogatio
contrario-
rum.

§. 8. Non obstantibus præmissis, ac nostra de non tollendo iure quaesito, & aliis Cancellariæ Apostolicæ, ac quatenus opus sit Lateranensis Concilii novissime celebrati uniones perpetuas, nisi in casibus a iure permissis fieri prohiben. & aliis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon Urbis & Advocatorum, ac Gymnasii etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis & litteris Apostolicis eisdem Urbi, Collegiisque & Tribunalibus, ac Gymnasiis illius, ipsorumque Superioribus & personis, ac dilectis filiis Populo Romano, sub quibuscumque etiam derogatorium derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis, per quoscumque Prædecessores nostros, etiam

iteratis vicibus, aut alias quomodolibet in contrarium concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus & singulis, etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, & expressa, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua exquisita forma ad hoc servanda foret, illis aliis in suo robore permanentis, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque. Volumus, autem &c. Nulli ergo &c.

Dat. Romæ apud S. Marcum, Anno Incarnationis Dominicæ 1587. decimo Calend. Septembris, Pont. nostri Anno tertio.

Dat. P. An. 3.
23. Augusti.

Declaratio circa proprietatem, olim Congregationi Canoniorum Secularium S. Georgii in Alga Venetiarum, absolute interdictam.

LXIII.

Alia de institutione & statu huius Congregationis videntur in const. 1. Greg. XII. Illis. sup. in Tomo 1. fol. 283. ubi scripsi.

SIXTUS PAPA. V.

Ad futuram rei memoriam.

Edita An. D.
1589.

Proemium.

Circumspecta Romani Pontificis benignitas, fideli quorundamlibet sub regulari observantia pie vitæ studio vacantium, necessitatibus & commoditatibus intendens, nonnumquam ab eo providè statuta moderatur, ac que sacrarum Religionum & sanctorum decreta generaliter interdiciunt, fidelibus ipsis ex Apost. potestatis plenitudine sibi tradita relaxat, & specialiter permittit, prout illorum statui, & consentiæ purificationi, conspicit salubriter expedire.

§. 1. Sanè licet aliàs Nos, ut abusus habendi proprium, & retinendæ proprietatis pecuniarum ac bonorum, etiam plerumque male acquiritorum, qui inter plures Canonicos, seu Fratres Congregationis S. Georgii in Alga Venetiarum Ordinis S. Augustini, contra expressum paupertatis votum ab eis emissum irreperat extirparet, ac que sacrarum Religionum alieni, quo universa Congregatio huiusmodi gravata erat ac aliis necessitatibus provideretur, universos & singulos ejusdem Congregationis Fratres, seu Canonicos, ac Priores etiam Generales, privato & proprio rerum bonorumque omnium, mobilium, & se moventium dominio, usu, usufructu, possessione, proprietate, & etiam pecuniis à quocumque peculio quomodolibet acquisitis, vel obtentis, per alias nostras litteras perpetuò privaverimus, ac omnia & quæcumque privilegia, dispensationes, & indulta unicuique eorum tam Apostolica, quam suorum Superiorum, etiam Generalis, Prioris, vel Capituli dictæ Congregationis auctoritate desuper concessa, confirmata, & innovata, revocaverimus & annullaverimus, ac omnino prohibuerimus ne quis Frater, vel Canonicus ejusdem Congregationis, quocumque Officio vel dignitate, etiam Prioris Generalis fungens, proprium quicquam aut peculiare haberet, & à cæteris separatim sibi vendicaret, aut possideret, nec similes licentias, seu permissiones per quoscumque dictæ Congregationis Superiores, aut etiam Capitulum Generale alicui unquam desuper concederentur, insuper præceperimus & mandaverimus, ut res, pecunie, debitorum nomina, redditus taxæ ac alia omnia, & quæcumque bona supradicta, per singulos Fratres, seu Canonicos, qui aliquid tale privatim possiderent, in uno loco communiter à Priore & Fratribus quicquidque domus designando acta & re ipsa intrà certum tunc expressum tempus deponerentur, & quoad dominium possessionem & usum in commune conferrentur, hiisque perfectis, statim unicuique Prior

Hic Pontifex Canonicis & Fratribus Congregationis proprietatem strictè interdixerat, solumque vitium, & venustum eis subministrari jussuerat.

cujuslibet.

cujuslibet domus Generalem Priorem de his omnibus diligenter certiorum faceret, transmissis ad eum inventario, in quo præmissa omnia antea privatum retenta, deinde verò in commune collata descripta essent. Demum ipse Prior Generalis, victum & vestitum. ac quantum rei convenientis præsens necessitas videretur postulare, cuicque Canonico, seu Fratri congruè suppeditari curaret, id autem omne quod reliquum esset, in extinctionem aeris alieni, quo singula Domus vel tota Congregatio communiter obstricta erat, converteretur, aut ipsis Domibus, vel universæ Congregationi ad communes usus, & necessitates sublevandas perpetuò applicaretur.

§. 2. Quicumque autem literis nostris prædictis continend non obtemperant, vel ante illarum publicationem, pecunias, & alia prædicta occultarent, si vè intra vel extra domus prædictas deponerent, aut etiam in pias causas converterent, aut aliqui pio loco assignarent, quique alios Canonicos, seu Fratres inobedientes, non statim Superioribus, ut præfatur, denunciarent, in penam privationis dignitatum & officiorum suorum incidere, & ad ea in posterum obtinenda inhabiles conferentur, ac pro crimine etiam tamquam fures, severe puniuntur, & excommunicationis sententiam incurrerent eo ipso, à qua non nisi in mortis articulo constituti, ab alio quam Romano Pontifice, absolutionis beneficium valeret obtinere, prout in literis prædictis plenius continetur.

§. 3. Nihilominus cum sicut accepimus litteræ ipsæ fuerint debitæ executioni, quantum commode fieri potuit demandatæ, etiam ære aliquo hujusmodi propemodum dissolutio, operæ pretium fore censuimus, circa prohibitionem nostram prædictam in omnes paulo severius interpositam, moderationis remedium adhibere, ac in futurum prospicere, ne stante prohibitione hujusmodi multorum animæ censuris prædictis in salutis suæ perniciem illaqueatæ remaneant, & non solum Fratres, seu Canonici prædicti à rebus, pecuniis, & bonis ad vitæ remedium, suis industria & labore acquirendis, sed etiam eorum parentes & consanguinei, ab elemosynis, donationibus, legatis, relictis, & aliis subventionibus eis privatim faciendis retrahantur, & exinde Congregatio ipsa, rerum, bonorum, dominationum, legatorum, relictorum, & subsidiorum, & hujusmodi successione destituatur, ac graviora dispendia & expensarum onera subire cogatur in sublevandis necessitatibus eorumdem Fratrum, seu Canonico- rum, qui aliàs sine suæ cuiusque Domus incommodo & dispendio se possent commode sustentare. Quocirca de nobis attributæ potestatis plenitudine, omnes & singulas censuras & pœnas in proprietarios, & alios prædictos, dictarum litterarum series promulgatas, ad eas dumtaxat quæ decretis sacro- rum Canonum Concilii Tridentini, ac Ordinis & Congregationis prædictorum regulis & constitutionibus contra tales statuta sunt, Apostolica auctoritate, tenore presentium reducimus & moderamus, ac prohibitione & alia prædicta, necnon omnia & singula in eisdem nostris litteris contenta, ad hoc ut deinceps Prior Generalis pro tempore existens, necnon ii ex dictis Fratribus, seu Canonicis, quibus id ab ipso Priori Generali, aut aliis eorum Superioribus specialiter permisso aut indultum fuerit, ex pecuniis, rebusque & bonis unicuique eorum sigillatim intuitu personæ suæ donatis, vel relictis ac in posterum donandis vel relinquendis, aut suis labore & industria, vel aliàs undecumque, licite tamen & legitime, acquisitis ac acquirendis, exceptis pecuniis per eoldem Fratres & Canonicos vigore dictarum litterarum ubicumque depositatis quas in Monasteriorum, & Congregationis hujusmodi utilitatem omnino cedere volumus eam partem & portionem, quæ pro eorum moderato victu & ve-

stitui, ac occurrentibus necessitatibus, secundum cuiusque gradum & qualitatem necessariæ videbuntur, privatim percipere, habere, retinere, ac in suos usus & necessitates hujusmodi convertere libere & licite, sine alicujus pœnæ vel censuræ incurfu, possint & valeant Apostolica auctoritate & tenore præsentis relaxamus, eisque desuper indulgemus.

§. 4. Necnon Priori Generali & aliis Superioribus Congregationis hujusmodi, ut quoscumque illius Fratres, seu Canonicos, qui hæcenus præmissorum occasione excommunicationis vinculis, & aliis censuris prædictis irretiiti, ad ipsos humiliter recurrerint, & absolutionem petierint, prævia debita restitutione seu satisfactione, si quæ fuerit facienda, ab excommunicationis, & aliis censuris propterea incurfis, absolvendi, & totaliter liberandi, dictasque pœnas eis remittendi & condonandi omnemque inhabilitatis, & infamæ maculam, siue notam contra eos præmissorum occasione quomodolibet insurgentem, ab eis abtergendi, ipsosque & eorum singulos in pristinum, & eum in quo antea quomodolibet erant statum, restituendi, reponendi & plenarie reintegrandi, plenam & liberam eisdem auctoritate & tenore concedimus facultatem.

§. 5. Non obstantibus prohibitione, aliisque præmissis, & Apostolicis, ac in Provinciis, Synodalibus, & Universalibus Conciliis editis, specialibus vel Synodalibus constitutionibus & ordinationibus, necnon Congregationis, Ordinis, & Domorum hujusmodi, etiam juramento, confirmatione Apostolica vel quavis firmitate alia roboratis statutis & consuetudinibus cæterisque contrariis quibuscumque.

§. 6. Volumus autem, quod earundem præsentium transumptis etiam impressis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo ipsius Congregationis & Personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fide adhibeatur, quæ præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensus.

Datum Romæ apud S. Marcum, sub annulo Piscatoris die 5. Septembris 1589. Pontificatus nostri Anno tertio.

Prohibitio admittendi ad beneficia Regni Valentie, alienigenas Regnorum Hispanie, in quibus ipsi Valentini ad similia non admittuntur.

Aliam prohibitionem postea edixit hic idem Pontifex de nonadmittendis illegitimis ad Dignitates Ecclesiæ Valentine infra in const. 84. Cum celestis.

Dispositum etiam de Regimine Studii Generalis Valentini iste Pont. sup. in Const. 11. Copiosius, fol. 379.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

IN sacrosancto beati Petri Principis Apostolorum folio, nullis nostris meritis, sed sola Redemptoris nostri benignitate constituti, in universis Orbis Regionibus & Provinciis, præsertim Infidelibus & Barbaris nationibus adjacentes, aciem nostræ meditationis more vigilis Pastoris Dominici gregis passim reflectimus, & ut ibidem divini nominis, ac Catholicæ Religionis cultus feliciter conservetur, & effloreat, illarumque indigenæ in fidei & devotionis erga hanc sanctam Sedem sinceritate Apostolicis favoribus, ac spiritualibus & temporalibus adjumentis jugiter consoventur, opem & operam libenter intendimus, ac in his Pastoralis Officii nostri partes favorabiliter interponimus, prout Regionum & Provinciarum hujusmodi publice uti-

Superiori-
busque Or-
dinis facul-
tatem con-
cedite remi-
tendi pœnas
incurfas.

Claus. derog.

Fides exem-
plorum.

Dat. P. An. 3.
5. Septemb.

LXIV.

Edita An. D.
1587.

Proœmium.

Contrave-
nientibus
pœnas impo-
nerat, ut in
ejus Bulla
quam ut hic
sufficienter
enunciatam
ponere no-
lui.

Nunc idem
Pont. ex
causis hic ex-
pressis, d.
ejus prohibi-
tionem
moderatur,
& recurrit
ad terminos
Concilii Tri-
dentini, &
constitutio-
num ipsius
Congrega-
tionis.

Causa hujus
Constitut.

litati & felici statui, ipsorumque indigenarum ad Ecclesiasticam ministeria, & literarum studia directioni & commoditati cognoscimus in Domino salubriter expedire.

§. 1. Cum itaque, sicut accepimus, Regnum Valentie in citeriori Hispania consistens angustissimos fines habeat, & nihilominus populi multitudine refertum, & in illius Metropoli Universitas Studii Generalis celeberrima à secl. rec. Alexandro Papa VI. Præf. efflore nostro inde oriundo ad ipsius Regni indigenarum, & quorumcumque aliorum ibi confluentium, necnon Theologiæ, ac utriusque juris, & aliis optimis scientiis vacare affectantium instructionem atque profectum instituta, & ab eo, ac etiam nuper à Nobis variis amplissimisque privilegiis & gratis ornata existat, & alienigenæ, præsertim ex aliis Hispaniarum Regnis, Provinciis, & dominis, & illis adjacentibus Insulis oriundi, Dignitates, Canonatus, Præbendas, & alia Beneficia Ecclesiastica in dicto regno Valentie constituta ambientes sibi de illis provideri, ac fructus eorundem, & seu pensiones desuper reservari prourent, & passim absque ullo obstaculo ad beneficia, fructus, & pensiones hujusmodi recipiantur, & admittantur. Ipsius verò Regni Valentie indigenæ in aliis Regnis, Provinciis, dominis, & insulis prædictis quorundam privilegiorum & Indultorum Apostolicorum, seu constitutionum, aut sanctionum pragmaticarum nuncupatorum, vel consuetudinum ibidem vigentium ab affectatione quorumcumque beneficiorum, & perceptione fructuum & pensionum omnino excludantur ac repellantur, & exinde plerique eorum, qui assiduis laboribus & vigiliis, maximisque impensis in dicta Universitate tamquam ingeniarum artium, ac sacrarum, & aliarum, scientiarum uberrimo seminario, virtutis & doctrinæ semina susceperunt, & in agro Dominico, si ad illius culturam vocarentur, salutaria germina, quæ Altissimo lectissimos fructus suo tempore redderent, procurrere, sibi quæ ipsi & aliis ad salutem ac Catholicæ Religionis, fideique propagationem, & conservationem prodesse possent, neque cupientes Beneficia Ecclesiastica aut fructus vel pensiones pro eorum decenti sustentatione, neque in patriæ solo, propter exterorum illa occupantium frequentiam minime extrahere illi assequi, ex dicta iam ætate, & facultatibus suis consumptis, veluti inertes ærumnosam & miserabilem vitam ducere, ac paupertatem in senectute quod durissimum est) tolerare cogantur; li verò illorum conditione perterriti, & spe affectationis beneficiorum hujusmodi destituti, se clericali militie adscribi, ac in disciplinis & ministeriis Ecclesiasticis, sacrarumque literarum studiis, se exercere non curent. Et denique Proceres, Nobiles, & alii incolæ ejusdem Regni Valentie à Beneficiorum fundatione, ac jurium eorundem libertatibus Ecclesiasticæ defensione & tuitione quodammodo retrahantur.

§. 2. Nos statui indigenarum Regni Valentie hujusmodi paternæ charitate compatiens ac æquum & rationi consonum esse censentes, ut ipsi in beneficiorum ejusdem Regni affectatione exteris præferantur, aut saltem ad Beneficia aliorum Regnorum, Provinciarum, Dominorum & Insularum hujusmodi, ad instar incolarum eorundem æquo jure admittantur, ac eandem conditionem experiantur, ac propterea pastoralis officii nostri munere, præmissis incommodis occurrere, & desuper opportunè providere volentes, ipsosque Indigenas ac eorum singulos à quibusvis excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & poenis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet inmodis existunt, ad effectum præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, necnon Beneficiorum

in dicto Regno Valentie consistentium, qualitates, quantitates, invocationes, nuncupationes, denominationes, situationes, & illorum fructuum veros annuos valores præsentibus pro expressis habentes, Motu proprio, non ad Indigenarum prædictorum, vel alicujus ipsorum, aut alterius seu aliorum pro eis Nobis super hoc oblata petitionis instantiam, sed ex mera deliberatione, & certa scientia nostra, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, hac nostra in perpetuum valitura Constitutione statuimus & ordinamus, quod ex nunc deinceps perpetuis futuris temporibus, omnia & singula Beneficia Ecclesiastica in universo Regno Valentie hujusmodi, nunc & pro tempore consistentia, etiam si Canonatus & Præbendæ, Dignitates etiam majores post Pontificales & principales Personatus, Administrationes, & Officia, etiam curata & electiva, in Metropolitana, & aliis Cathedralibus ac Collegiatis Ecclesiis, necnon Parochialibus Ecclesiis, seu earum perpetuæ Vicariæ, ac in Romana Curia vel extrâ eam litigiosa, & de Jure patronatus, etiam Regum, Ducum, vel aliorum laicorum, etiam nobilium & illustrium, seu eorum & Clericorum mixtum, etiam ex fundatione vel donatione aut indulto Apostolico, seu aliis quomodolibet qualificata sint vel fuerint, quoties illa per cessum, etiam ex causa permutationis, vel decessum, seu quamvis aliam dimissionem vel amissionem aut privationem ea pro tempore obtinentium, seu jus in illis vel ad illa habentium, aut aliis quovis modo etiam apud Sedem prædictam, ac etiam in aliquo ex mensibus, in quibus vacantium Beneficiorum Ecclesiasticorum dispositio Nobis & Sedi prædictæ etiam per constitutiones Apostolicas, seu Cancellariæ Apostolicæ regulas, est vel pro tempore fuerit reservata, vel etiam Ordinariis Collatoribus per easdem constitutiones seu regulas vel litteras alternativarum, aut alia privilegia & indulgentia concessis hæcenus, & in post. rursus concedendis, simul vel successivè vacare contigerit, etiam si actu nunc, vel præfetur, ut aliis quibusvis modis, & ex quorumcumque personis vacent, ac ex eo quoddam Beneficia ipsa obtinentes, seu in illis vel ad illa jus habentes, nostri & quorumcumque aliorum Romanorum Pontificum Prædecessorum seu Successorum nostrorum, aut Sanctæ R. E. Cardinalium, etiam viventium, & in dicta Curia præsentium familiares, continui commensales, seu dictæ Sedis Notarii, Subdiaconi, Acolythi, Capellani, litterarum Apostolicarum Abbreviatores, Scriptores, Cubicularii, Secretarii, proventus & jurium Cameræ Apostolicæ Collectores & Subcollectores, seu quicumque alii Curie & Sedis prædictarum Officiales, etiam suo diversis constitutionibus secl. rec. Pauli Papæ IV. Prædecessoris nostri, suorum & pro tempore existentium Romanorum Pontificum familiarium, continuorum in Commensalium, declaratoris comprehendunt, præfentes & futuri quocumque nomine nuncupati, seu ex quavis alia causa dispositioni Apostolicæ specialiter, vel aliis generaliter reservata, aut ex generali reservatione Apostolica affecta, seu ad Sedem eandem devoluta existant, vel fuerint, solis Indigenis dicti Regni, verè, realiter, & non fictè in eo natis & nascituris, affecta & debita, prædictique alienigenæ ad hujusmodi Beneficia, in Titulum, Commendam, administrationem, vel aliis quomodolibet obtinendum, aut illorum fructus, redditus, proventus, jura, obventiones, distributiones, & emolumenta quacumque seu super eis pensiones annuis percipiendum, omnino inhabiles ac incapaces, & si ullo unquam tempore eadem Beneficia etiam ad illorum Patronorum præsentationem sibi conferre, aut de illis provideri, seu fructus, redditus, proventus, & pensiones hujusmodi reservari obvenirent, aut collationibus, provisionibus, præsentationibus institutionibus reservationibus & aliis dispositionibus ipsis

desuper

Ad Beneficia
Regni Valen-
tie quovis
modo vacan-
cia, indigenæ
ejusdem Regni
in eo verè
nati, & non
alienigenæ
aliorum Re-
gnorum His-
paniæ ad-
mittantur.Hoc intelli-
ge ut mox
infra habe-
bitur.Item intelli-
ge de Valen-
tiis legiti-
mis quibus
causis

desuper factis, seu etiam motu simili concessis, uti, seu eas ratas & gratas habere præsumperint, omni & quocumque Beneficio & Officio Ecclesiastico per eos, etiam extra dictum Regnum ubicumque obtento, eo ipso absque aliqua declaratione desuper faciendâ privati existant.

§. 3. Necnon quicumque Ordinarii & alij inferiores Collatores, ac etiam Patroni, qui contra præmissa quicumque attentare præsumperint, à quorumcumque Beneficiorum collatione, provisione, electione, præsentatione, institutione, & quacumque alia dispositione, prout cuique competierit, tamdiu suspensi remaneant, donec remissionem à Romano Pontifice pro tempore existente meruerint obtinere. Et nihilominus si sic suspensi conferre, providere, eligere, præsentare, instituere, aut alias quomodolibet disponere ausi fuerint, excommunicationis latæ sententiæ penam eo ipso incurrant, nec ullus alius quam Romanus Pontifex pro tempore existens, sive absolutio, sive relaxationis beneficium, excepto mortis articulo, valeat eis impartiri.

§. 4. Notarii verò & Tabelliones, etiam Apostolica vel Imperiali aut Regia seu alia quacumque auctoritate creati, qui super adipiscenda possessione quicunque Beneficii in dicto Regno Valentia pro tempore rogabuntur, nisi prius ei fide dignorum testimoniis, aut alias legitime confiterentur, eum cui possessio ipsa fuerit tradenda, verè, realiter, & non fide in eodem Regno Valentia natum fuisse, ullum omnino super actu possessionis huiusmodi instrumentum publicum, aut quacumque aliam etiam privatam scripturam conficere, seu in protocollo redigere minime valeant, & si fecerint, crimen falsi eo ipso etiam incurrant, necnon ad huiusmodi, ac quacumque alia munera & officia, publicæque functiones similiter inhabiles existant.

§. 5. Et quicumque Judices Ordinarii vel Delegati, coram quibus licet contra quicumque alienigenam in quovis Beneficio contra præsentium tenorem intrusum, tam in dicta Curia quam extrâ eam moveri contigerit, cum primùm sibi legitime constiterit, Beneficium ipsum ab alienigena detineri possessionem, ac fructus, redditus, & proventus ejusdem Beneficii, donec iis ad quos de jure spectabunt, adjudicentur, sequestrare, ac sub archæ & firmo sequestro ponere debeant & teneantur. Ita tamen, ut si in fundationibus Beneficiorum de Jure patronatus laicorum, seu illorum & Clericorum mixtum, ut præfertur existentium, caveatur expresse, quòd non nisi per Clericos, seu Presbyteros de ipsorum fundatorum genere & familia oriundos obtineri possint, eo casu etiam alienigenæ, de genere seu familia fundatorum huiusmodi ad illa præferantur, ac in eis institui libere possint, nec sub præsentis statuto quoad ascensionem talium Beneficiorum comprehendantur.

§. 6. Et quatenus ullo unquam tempore licuerit, & permixtum fuerit prædictis indigenis, beneficia, fructus, & pensiones in aliquo ex aliis Regnis, Provinciis, Dominis, & Insulis prædictis, libere & indifferenter absque aliquo obstaculo, perinde ac si ibidem nati essent, obtinere & percipere, ipsi quoque alienigenæ ex tali Regno seu Provincia, vel Dominio, aut Insula orti ad similia Beneficia, ac fructus & pensiones in dicto Regno Valentia vicissim admitti debeant, & ad illa habiles & capaces censeantur.

§. 7. Decernentes omnes & singulas collationes, provisiones, commendas, electiones, acceptationes, præsentationes, institutiones, & quasvis alias dispositiones de quibuscumque Beneficiis dicti Regni Valentia, ut præfertur, vel alias quomodolibet qualificatis, ac reservationes illorum fructuum, reddituum,

proventuum & pensionum super eisdem in favorem dictorum alienigenarum, contra præsentis statuti formam, & tenorem, etiam per nos & quoscumque alios Romanos Pontifices, Successores nostros, dictamque Sedem, ac illius Legatos etiam de Latere, & Nuncios, omnesque & singulos alios jus & facultatem conferendi, providendi, commendandi, eligendi, præsentandi, instituendi & alias quomodolibet de huiusmodi Beneficiis disponendi, illorumque fructus, redditus, proventus, & super eis pensiones reservandi ab ipsa Sede habentes, necnon Ordinarios & alios inferiores Collatores, etiam ad Patronorum præsentationem, seu de illorum consensu pro tempore factas, ipso jure nullas & invalidas, nulliusque roboris vel momenti fore & esse, ac pro nullis & infectis haberi, nec per eas cuiquam jus, vel etiam coloratum possidendi titulum tribui posse, ipsosque alienigenas illarum prorsus usu & commodo carere, necnon Cancellariæ Apostolicæ regulas seu constitutiones de annali & triennali possessoribus etiam propter quantumvis diuturnam continuatæ possessionis tolerantiam, aut quodcumque aliud jus vel beneficium ullo tempore illis suffragari, sed Beneficia huiusmodi, ut prius vacare, & quæ illis tempore dispositionis Apostolicæ dictis alienigenis factæ eidem dispositioni reservata seu affecta fuerint, sub eadem reservatione seu affectione remanere, & tam illa quam etiam omnia alia non reservata neque affecta, de quibus à dicta Sede vel illius Legatis seu Nunciis, aut aliis jus & facultatem conferendi à dicta Sede, ut præfertur, habentibus in huiusmodi alienigenas quodcumque dispositum fuerit, ad novam Romani Pontificis pro tempore existentis dispositionem dumtaxat pertinere, ab Ordinariis verò & aliis inferioribus Collatoribus, cessantibus reservationibus seu affectionibus Apostolicis, eisdem alienigenis pro tempore collata, ac etiam ea quæ de Jure patronatus huiusmodi fuerint, si contingat ad illa quemquam contra præsentis statuti formam præferantur devolutioni ad Sedem prædictam immediate eo ipso subiacere, illaque omnia ab indigenis dicti Regni, & à Sede prædicta dumtaxat impetrari posse, nec jus ullum ad resignantes seu cedentes, etiam si in possessione, etiam diutina remanserint, & resignaciones seu cessiones huiusmodi publicatæ non fuerint, redire vel penes eos remanere.

§. 8. Impetrantes verò, ac Motu proprio concessiones, quæ de eisdem Beneficiis pro tempore fient, quibuscumque derogationibus fuerint suffultæ, numquam sub clausulis generalibus, aut vacionum modis conditionalibus vel implicitis comprehendendi, sed specialiter & expresse ob non servatam præsentis statuti formam, cum declaratione nominum & cognominum ipsorum alienigenarum, dispositivè & non conditionaliter, nec per æquipollens omnino fieri debere, eisdemque præsentibus literis per quascumque alias literas Apostolicas, etiam quasvis generales vel speciales, etiam derogatorias derogatorias, aliasque efficaciores & insolitas clausulas, & irritantia & alia decreta sub quibuscumque verborum formis concepta in se continentes, nullatenus derogari posse, nec derogatum censi, nisi eandem præsentium tenor de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, insertus, ac urgens & sufficiens causa expressa, ac per trinas distinctas in forma Brevis litteras earundem præsentium tenorem continentes, tribus distinctis vicibus, cum unius mensis intervallo, Ordinibus trium Statuum ejusdem Regni Valentia prius legitime intimata & insinuata, ac derogationes ipsæ Motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, Consistorialiter, & de Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalium pro tempore existentium consilio factæ fuerint, & Ordinum trium Statuum Regni Valentia huiusmodi ad hoc expressus accesserit assensus, appareatque Romanum Pontificem illis expresse derogare voluisse, & aliter factas derogationes nemini suffragari, & clausulam implicitæ derogationis,

Etiam si clausula derogatoria &c. in eorum impetrationibus adesset &c.

Collatoresque in præmissis convenientes hinc expressis assistantur.

Notarii quocumque dispendia possessione Beneficii, dicti Regni Valentia, pro aliis quam Nativis dicti Regni caput, in aliquam concientes potest hic descriptis pleantur.

Alienigenæ que super prædictis admittantur ad Beneficia Juris patronatus si in fundationibus, caveatur per quosdam de genere fundatorum umtaxat illa obtineri posse.

Etiam alienigenæ alijs Regni Hispanie in quo ipsi Valentini ad Beneficia admittentur.

Collatores & provisiones quocumque ad favorem alienigenarum contra dictam formam, nulle erint.

tionis, videlicet quòd eorum vel earum seu præsentium tenores latissime extendi, & eadem præsentis, ac desuper conficienda litteræ, earumque tenores habeantur pro expressis, seu in toto vel parte exprimi possint in quibusvis supplicationibus, concessionibus, gratiis, & litteris, à nobis & Successoribus nostris, pro tempore emanatis, appositam, nihil penitus operari, nec in litteris Apostolicis desuper conficiendis quicquam, ultra quod in supplicationibus, concessionibus & gratiis huiusmodi specificè fuerit expressum, narrari posse, nec quinquam ad parendum litteris derogatoriis huiusmodi, & decretis super illis processibus, ac eorum executoribus & subexecutoribus, illorumque mandatis & monitionibus minimè teneri, sed illis firmiter resistere, & litterarum earumdem executionem omnino impedire, nec ratione resistentie huiusmodi aliquibus censuris vel pœnis, Ecclesiasticis seu pecuniariis, per eosdem executores & subexecutores innodari. Necnon easdem præsentis litteras, etiam ex eo quòd causæ, propter quas emanarunt, coràm locorum Ordinariis, etiam tamquam à Sede prædicta Delegatis, vel aliis quomodolibet examinatis, iustificatis, verificatis, purificatis, & approbatis, ipsique Ordinarii & alii inferiores Collatores ac Patroni & Alienigenæ, necnon quicumque interesse habentes, ad id legitime vocati non fuerint, neque præmissis consenserint, seu etiam enormis & enormissimæ lesionis, vel alio quocumque pretexto, aut ex quavis alia causa, quantumvis legitima, urgenti, & iuridica de subreptionis & obreptionis, aut nullitatis vitio, seu intentionis nostræ, vel quocumque alio defectu notari, impugnari invalidari, retractari in ius vel controversiam revocari, ad terminos juris reduci, seu adversus eas quodcumque juris, facti, vel gratiæ remedium impetrari posse, nec sub quibusvis similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, aut aliis contrariis dispositionibus, à nobis vel quibuscumque aliis Romanis Pontificibus, ac dicta Sede etiam Motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus pro tempore emanatis comprehendit, sed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum, & eum in quo antea quomodolibet erant statum, restitutas, repositas, & plenarie reintegratas, ac de novo etiam sub Data posteriori per Ordines trium Statuum Regni Valentie huiusmodi eligenda, concessas, validasque & efficaces fore & esse, ac vim validi & efficacis contractus inter nos & dictam Sedem ex una, ac Ordines trium Statuum Regni Valentie huiusmodi ex altera partibus ritè, & rectè initi, stipulati, ac etiam utrimque jurati habere, & perpetuò obtinere, suisque plenariis & integros effectus fortiri, ac ab omnibus inviolabiliter observari.

Decretum
irritans.

§. 8. Sicque per quoscumque Iudices ordinarios & delegatos, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac ejusdem S. R. E. Cardinales, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, in quavis causa & instantia iudicari ac desiniri debere, irritum quoque & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari. Quocirca dilectis filiis causarum Curie Cameræ Apostolicæ generali Auditori, & Archidiacono Ecclesiæ Valentiniæ, ac Abbati Monasterii Beate MARIE Valisidignæ, Cisterciensis Ordinis, Valentiniæ Diocesis per Apostolica scripta Motu simili mandamus, quatenus ipsi, vel duo aut unus eorum, per se vel alium seu alios, præsentis litteras, & in eis contenta quæcumque ubi, & quando opus fuerit, ac quoties pro parte indignerum prædictorum, seu alicujus eorum fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra præsentis litteras, & in eis contenta huiusmodi, ab omnibus ad quos spectat, vel

& pro tempore spectabit, inviolabiliter observari, ipsosque indigenas illis pacifice frui & gaudere, non permittentes eos vel quempiam ex illis desuper quomodolibet indebitè molestari Contradictores quoslibet & rebelles, per sententias, censuras, & pœnas Ecclesiasticas, aliæque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita compellendo, necnon legitimis super his habendis servatis processibus, sententias, censuras, & pœnas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 9. Non obstantibus præmissis, ac piæ memorie Bonif. Papæ Octavi, etiam Prædecessoris nostri, quæ cavetur, ne quis extrâ suam Civitatem vel Diocesim, nisi in certis exceptis casibus, & in illis ultra unam dietam à fine suæ Diocesis ad iudicium evocetur, seu ne Iudices à Sede prædicta deputati, extrâ Civitatem & Diocesim in quibus Deputati non fuerint, contrâ quoscumque procedere, aut alii vel alii vires suas committere audeant, seu præsumant, & in Concilio generali edita de dabus dietis, dummodò ultra tres dietas aliquis auctoritate præsentium ad iudicium non trahatur, necnon quatenus opus sit, nostra de non tollendo iure quesito, aliisque Apostolicis, ac in Provincialibus, synodalibus, & Universali Conciliis editis, specialibus vel generalibus constitutionibus & ordinationibus, necnon Ecclesiarum in quibus beneficia huiusmodi fuerint, ac Regnorum, Provinciarum, Dominiorum, & Insularum huiusmodi, juramento, confirmatione Apostolica vel quavis firmitate alia roboratis statutis & consuetudinibus, etiam quantumvis longissimo tempore observatis, ac legibus etiam municipalibus & pragmaticis, aliisque sanctionibus, privilegiis quoque, indultis, & litteris Apostolicis, etiam super facultate Beneficia prædicta ipsis alienigenis conferendi, seu de illis providendi, & aliis quomodolibet disponendi, ipsosque alienigenas ad beneficia, fructus, & pensiones huiusmodi recipiendi & admittendi, eisdem Ecclesiis, illarumque Præsulibus & Capitulis, necnon Regnis, Provinciis, Dominiis & Insulis prædictis, eorumque Communitatibus, Universitatibus, hominibus, incolis, & personis, sub quibuscumque tenoribus & formis ac eum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decretis, etiam vim validi & efficacis contractus, seu statuti perpetui vel legis habentibus & inducentibus, per quoscumque Romanos Pontifices Prædecessores nostros, ac Nos & dictam Sedem, etiam motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, etiam consistorialiter seu etiam ad Imperatoris, Regum, Reginarum, seu aliorum Principum instantiam, vel eorum contemplatione & intuitu, in genere vel in specie, aut aliis quomodolibet, etiam iteratis vicibus concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda esset, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quòd interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§. 10. Ceterum, ut statutum, ordinario, & alia præmissa, ac eadem præsentis litteræ ad eorum quorum interest notitiam deducantur, nullusque possit aliquam illorum ignorantiam prætereundere, vel excusa-

Clausula de
rogatoria.Forma & ef-
fectus Publi-
cationis hu-
jus Const.

excusa-

excusationem allegare, sed illa perpetuò firmæ & illibata permanent. Volumus ut eadem præsentis litteræ in Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, ac Cancellariæ Apostolicæ valvis, & acie Campi Floræ per aliquem ex Curforibus nostris affixæ, copiâ illarum ibidem dimissa, ab eadem die omnes & singulos perinde efficiant & atque, ac si illis ipsis fuissent personaliter intimatæ.

S. 11. Quodque earum exemplis, etiam impressis, manu Notarii publici, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica, constitutæ munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, in iudicio & extrâ, quæ ipsis præsentibus originalibus adhiberetur, si forent exhibitz vel ostenz.

S. 12. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ abolitionis, statuti, ordinationis, decreti, mandati, derogationis, & voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incuturum.

Datum Romæ apud Sanctum Marcum, Anno incarnationis Domini 1587. Non. Septembris Pontificatus nostri Anno 3.

Anno à Nativitate Domini 1587. Indictione 5 die verò 16. mensis Decembris Pontificatus Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Si. tri divini Providentiâ P. p. anno 3. retrò & inscripta littera affixæ, & publicatæ fuerunt ad valvas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, ac Cancellariæ Apostolicæ ne non in acie Campi Floræ, ut moris est, per me Franciscum Baron ejusd. S. D. N. Papæ Curforum.

Alex. Parabiacus Mag. Curf.

Quod Franciscus Medicus Magnus Dux Hetruriæ, & Magnus Magister Militiæ Ordinis S. Stephani, erigere valent in Commendas d. Militiæ, Hospitalia per Locos regi solita, ad hospitalitatem instituta, in Hetruria existentia, de quibus Sedes Apost. disponere non consuevit.

Instituta sunt hac Militiâ à Cosmo Francisci patre, ut videtur est suprà in Pii IV. Conf. 60. His qua. fol. 91. Ubi alia tibi indicavi de hac Militiâ.

SIXTUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Dilecto Filio Nobili viro Francisco Medices, Magno Hetruriam Duci. Dilecte Fili, Nobilis vir, Salutem & Apostolicam benedictionem.

Præclara devotione sinceritas, & eximia fidei constantia, quæ tibi divinitus concessa, ex tuorum progenitorum quasi hereditare videntur acceptæ quibusque in nostro & Apostolicæ Sedis conspectu, de qua continud, ut obedientius benè mereri non cessas fulgere dignosceris, nos supràmodum invitant, suavitèrque allicit, ut votis tuis, quæ ut Christianum Principem decet, Religionis propagationi, ac fidei Catholice defensionis aspirare conspiciamus gaudent annuamus, eaque favoribus opportunis libentissimè prosequamur.

S. 1. Sanè ex parte tua Nobis nuper expositum fuit, quod cum in diversis tuæ ditionis subiectis Civitatibus Teris, Oppidis, & locis, quamplurima Hospitalia per Locos regni gubernari, & administrari solita, quæ de jure Patronatus tuo, & seu Magistratum, Communitatum, Universitatum, & Hominum, Civitatum, Terrarum, oppidorum, & locorum prædictorum, seu etiam Laicorum, ex fundatione vel dotatione, aut aliis existunt, in

quibus tam ob locorum distantiam seu incommoditatem, tam etiam illorum fructuum tenuitatem, parum aut nihil hospitalitatis servatur, illorumque fructus in prophanos & illicitos usus converti solent, diverſaque interdum in illis patiuntur scelera; Unde si in dictis Hospitalibus & eorum Ecclesiis, de dictorum Laicorum Patronorum consensu unum vel duo, aut plura ex eis infimul perpetuò uniendo & incorporando, seu etiam supprimendo, tot quod volueris, Præceptoris Militiæ St. Stephani, cujus tu Magnus Magister existis, ad instar aliarum dictæ Militiæ Præceptoriarum erigerentur & instituerentur, eorundemque Hospitalium fructus, redditus, & proventus, servata hospitalitate, & aliis supportatis oneribus, remanens dictis Præceptoris sic erigendis & instituendis, etiam perpetuò applicarentur, ex hoc processu eidem Militibus de congrua subventione provideretur, ipsaque Hospitalia melius ac decentius gubernarentur. Quare nobis humiliter supplicare fecisti, quatenus tibi Hospitalia prædicta infimul, ut præteritur, uniendo & incorporandi, seu etiam supprimendi, & in illis vel eorum Ecclesiis, tot quod volueris Præceptoris dictæ Militiæ, ut præteritur eligenti, & instituendi, eorundemque Hospitalium fructus, eidem Præceptoris applicandi, licentiam & facultatem concedere, ac alias in præmissis opportune providere, de benignitate Apostolicæ dignaremur.

S. 2. Nos ipsius Militiæ, quæ à claræ memorie Cosmo Medices, dum vixit, Magno Etruriæ Duce Progenitore tuo, ad Maris Mediterranei incursibus infidelium infestati custodiendæ defensionem instituta fuit, incrementum paternis exoptantes affectibus, ac attendentes quod illius Milites, tamquam indefessi JESU Christi athletæ pro fide Catholica, etiam vitæ ac salutis incolumitati non parentes, dictæ Militiæ trirēibus per maria undique discurrunt ac publicæ quieti invigilantes, Piratarum, five maritumorum latruncularum insidiis & fraudibus occurrere, ac Christi fidelium, tam bona tum corpora & animas ab illis turati atque defendere non cessant: Hujusmodi supplicationibus inclinati, tibi, ut omnia & singula prædicta Hospitalia, & eorum Ecclesias ad hospitalitatem servandam, non autem pro infirmis recipiendis instituta, & de quibus per Sedem Apostolicam disponi non consuevit, quæ de Jure patronatus tuo, & seu dictorum Magistratum, Communitatum, Universitatum, & Hominum, seu etiam aliorum Laicorum præfatorum, ut præteritur sunt, de illorum Patronorum Laicorum consensu, si verò de Jure Patronatus dictorum Magistratum, Communitatum, vel Universitatum, & hominum prædictorum fuerint, etiam absque illorum consensu, ac etiam Ordinarii loci, vel cujuscunque alicuius licentia minime requisita, perpetuò unire, annectere, & incorporare, seu aliqua ex eis supprimere, ac in eisdem Hospitalibus, & eorum Ecclesiis, ut præteritur unitis, annexis, & incorporatis tot quot volueris, & prout tibi melius videbitur, & placuerit, Præceptoris Militiæ hujusmodi, ad instar aliarum dictæ Militiæ Præceptoriarum per illius Milites obtineri solitarum, quæ per te & pro tempore existentem dictæ Militiæ Magnum Magistrum, ac præsentationem illorum Patronorum, vel de illorum consensu concedi & assignari debeant, etiam perpetuò erigere & instituere, eorundemque Hospitalium fructus, redditus, & proventus (servata hospitalitate, & aliis illorum oneribus supportatis) remanentes, dictis Præceptoris sic erigendis, & instituendis, etiam perpetuò applicare & appropriare libere & licite possis & valeas, plenam & liberam, ac omnimodam Apostolicam auctoritate tenore præsentium facultatem, potestatem, & auctoritatem concedimus & impartimur, tibi que desuper de speciali gratia indulgemus.

Ipsæ igitur Pontif. ob caus. hic expressas, d. & ampliatam concedit.

1587.
Clauſulæ dic-
te conceſ-
ſionis præ-
ſeruativæ.

§. 3. Decementes in eiſdem præmiſſis, & cica ea per te faciendæ & terminandæ, ſemper & perpetuò valere, ac ab illis ullo nunquam tempore, quovis prætextu reſiliri non poſſe, & quacumque conceſſiones in contrarium faciendæ, nullius roboris vel momenti exiſtere. Declarantes præſentes litteras de ſubreptionis vel obreptionis, aut nullitatis vitio, ſeu intentionis noſtræ, vel quopiam alio defectu notari vel impugnari nullatenus poſſe, ſed incommutabilis voluntatis & intentionis noſtræ fuiſſe & eſſe. Sicque & non aliter, per quoscumque Iudices & Commiſſarios, quavis auctoritate fungentes, etiam Sanctæ Romanæ Eccleſiæ Cardinales, ac cauſarum Palatii Apoſtolicæ Auditores, ſublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate iudicari & deſignari debere, irritum quoque & inane, quicquid ſecus ſuper his à quoquam quavis auctoritate, ſcienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Clauſulæ
contrario-
rum derog.

§. 4. Non obſtantibus quibuſvis Apoſtolicis, ac in Provincialibus & Synodalibus Conciliis editis, generalibus vel ſpecialibus conſtitutionibus & ordinationibus, ac dictorum Hoſpitalium, etiam iuramento, confirmatione Apoſtolica, vel quavis firmitate alia roboratis, ſtatutis & conſuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, exemptionibus, Conſervatoriis, & aliis literis Apoſtolicis, ſub quibuſcumque tenoribus & formis, ac cum quibuſvis clauſulis & decretis, in genere vel in ſpecie eiſdem Hoſpitalibus, vel illorum Rectoribus, etiam pluries conceſſis, confirmatis, & innovatis. Quibus omnibus etiamſi de illis, eorumque totis tenoribus, ſpecialis, ſpecifica, & expreſſa, & individua, non autem per clauſulas generales idem importantes, mentio, ſeu quævis alia expreſſio habenda, aut aliqua alia exiſtiſſima forma ad hoc ſervanda foret, illorum omnium & ſingularum tenores, præſentibus pro ſufficienter expreſſis & inferſis habentes, harum ſerie ſpecialiter & expreſſe derogamus, & ad plenius derogatum eſſe volumus, cæteriſque contrariis quibuſcumque.

D. P. An. 3.
die 11. Sept.

Datum Romæ apud S. Marcum, ſub annulo Piſcatoris die 11. Septembris 1587. Pont. noſtri Anno 3.

XLVI.

Privilegia & Immunitates pro ædificantiſibus vel habitantiſibus in Viâ Felici, & in Viâ Pia Almæ Urbis.

Hæc eadem privilegia hic Pont. conceſſit fabricantiſibus & habitantiſibus in Burgo Felici poſtea erecto apud hanc viam Felicem infra in conſt. 103. Dùm ab ubereſ. Et ſimilem ſed latiore conceſſionem dedit ædificantiſibus in Burgo Sancti Petri Pius IV. ſuprà in conſt. 101. Romanus. fol. 166.

Edita A. D.
1587.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Hic Pont.
pro commo-
diori aditu,
ad veneran-
das Urbis
Bafilicas,
plures vias
latas aperuit
& ſtravit, &
antiquum
ritum de Ca-
pelliſ in eiſ-
dem Baſili-
cis celebran-
dis renova-
vit ut ſuprà.

DEcet Romanum Pontificem poſt multas & graves Paſtoralis ſui officii curas, hanc, quoque non negligere, ut Alma Urbs Roma, in qua non ſine Dei voluntate à Vicario ſuo Beato Petro Apoſtolorum Principe, Sancta Sedes Apoſtolica, ad omnium Chriſtifiſſelium commoditatem, Religioſiſque incrementum conſtituta exiſtit, & ad quam olim Orbis nunc etiam Chriſtiane Religionis Caput, magnus ſit concurſus, non modò ſalutaribus legibus, boniſque moribus in meliorem ſtatum reformetur, ſed novis etiam viarum, vicorum, regionum, atque ædificiorum incrementis, ad Populi indies, benedicente Domino, excreſcentis, & conſuentium advenarum commodum aſſidue dilatetur. Quòd dum ab initio noſtri Pontificatus ſedulo meditemur, ſimul etiam, ut ad venerandas ejusdem Urbis Bafilicas, toto Orbe terrarum celebres com-

modiſ & decentiſ adiri poſſet atque in eis frequentius viſitandis Populi devotio augetur, præſertim veteri more ſanctorum Pontificum noſtrorum Prædeceſſorum, in Stationibus & Pontificalibus Capelliſ, noſtra præſentia celebrandiſ per nos renovato, vias complures latas & directas ad eandem Bafilicas patefecimus.

§. 1. Necnon uberrimum & copioſiſſimum nidiſ & ſaluberrimæ aquæ fontem, quæ Felix nuncupatur, noſtra ſollicitudine, & ingenti impenſa, diſſicili & laborioſo opere, magnæque induſtria ad ſuperiores partes Collum ipſius Urbis, cum maximis totius populi gaudiſ & applauſu, ad publicam utilitatem, Deo favente, perducì curavimus, ut cives & incolæ ejusdem Urbis, viarum & fontium commoditate, ſimul etiam aëris ſalubritate, atque ipſius loci eminentioriſ & patentiſ amentitiæ perſui poſſint, conſtruendiſque ædibus ad commodiſ rem habitationem, ſpatia habeant latiora, ac nobiliſſima pars Urbis non modò ſumptuoſis veterum ſubſtructionum veſtigiiſ, ſed Religioſis etiam Chriſtiane antiquitatis monumentis inſignis, novis ædificiis, & incolarum frequentia, in priſtinum decus & celebratiſ, noſtris poſſiſſimum temporibus reſtituatur.

§. 2. Cupientes igitur eorundem incolarum, & civium, necnon Curialium, & quoruncumque peregrinorum ed concurrentium commodis plenius conſulere, & eſque ad huiſmodi partem Urbis cum omni quiete & tranquillitate inhabitandam, novis que domibus replendam, Apoſt. benigneſ favo-ribus, & gratis invitare, Motu proprio, & ex certa noſtra ſcientia auctoritate Apoſtolica, tenore præſentium, perpetuò ſtatuiſ & ordinaviſ, quòd quæcumque domus & ædificia quæ per quaviſ perſonas cuſcuſcumque ſtatus, gradus, ordinis, vel conditionis exiſtentes, in via nova, Felici nuncupata, ab Eccleſia Sanctæ Mariæ Majoris uſque ad Eccleſiam Sanctiſſimæ Trinitatis in Monte Pincio, per noſ ſtrata ac directæ, necnon in via Pia per noſ etiam æquata à Palatio noſtro in Monte Quirinali, uſque ad Eccleſiam S. Suſanne, & in vicis propè dictas vias dirigendis pro tempore conſtituentur, ex quocumque delicto quantavis gravi (criminibus tamen divine & humanæ Majeltatis læſe tantum exceptis) conſicari non poſſint, ſed eorum Dominis, vel in eis ſuis habitantibus, & ſucceſſoribus ſuis, perinde ac ſi delicta non commiſiſſent, firma & illæſa remanere debeant.

§. 3. Ac propterea, quòd ii qui per biennium continuum dictas domos, ſeu ædificia in viis prædictis conſiſtentia inhabitaverint, iſdem immunitatibus & exemptionibus, quibus veri & originarii cives Romani, de jure vel conſuetudine, vel ex privilegio, aut aliis quomodolibet utuntur, potiuntur, & gaudent, veluti, poti, & gaudere poterunt quomodolibet in futurum, non ſolùm eorum inſtar, ſed pariſormiter & æquè principaliter, ac abſque ulla prorsus differentia uti, poti, & gaudere, liberè & licitè valeant.

§. 4. Quòque ii, qui domos ſeu ædificia in dictis viis conſtituta pro tempore habitabunt, ratione æris alieni, aut cuſcuſvis contractus, obligationis, inſtrumenti etiam jurati, etiam ſub Camera Apoſtolicæ, vel alia quavis forma, & conceptione verborum, extrà tamen loca ditioniſ noſtræ Eccleſiaſticæ in temporalibus ſubjecta, initi & celebrati, ſeu contracti, quamdiam ædificia, vel domos huiſmodi inhabitabunt, vigore mandati cuſcuſcumque Judicis, Curie, vel Tribunalis, in perſonam vel in rem, moleſtari minime poſſint nec debeant.

§. 5. Ac inſuper privilegio fori Capitolini civibus Romanis competenti, perinde ac ſi veri originarii, & indubitari cives Romani forent, in omnibus & per omnia gaudeant, atque inſtar civium Romanorum, cauſas ſuas coràm quocumque Judice,

Fontemque
aque Feliciſ
ad ſuperio-
res Colles
Urbis perdu-
ci fiat

Et modò
ædificanti-
bus, in Viâ
Felici, &
Viâ Pia con-
cedit, quòd
ædificia con-
ſtruenda, ex
quocumque
præterquam
læſe Moſeſ-
tatis delicto
conſicari
nequeant.

Inhabitan-
tibusque per
biennium
ædificia præ-
dicta quæ-
cumque Ro-
manorum
Civium pri-
vilegia con-
cedit.

Habitantes
ibidem præ-
dictis extrà
ſtatum non
moleſtentur.

Privilegio
fori capito-
lini gau-
deant.

Tribunali, aut Curia pro tempore motas, juxta formam statutorum ejusdem Urbis novissimè editorum, ac literarum Apostolicarum de super confectarum, ad Curiam Capitolinam trahere, ac reassumi facere valeant, motu, scientia, auctoritate, & tenore prædictis, perpetuò concedimus & indulgemus.

§. 6. Demum universos & singulos artifices, seu opifices, cujuscunque artis, domos, seu ædificia hujusmodi in viis prædictis pro tempore incolentes, ab omni & quocunque onere, seu collecta, aut gravamine per Consules ejusdem artis ratione ipsius Consularis pro tempore impositis, similiter perpetuò eximimus & liberamus, eisque pariter indulgemus, quòd nec in præmissis contribuere, nec quidquam, vel minimum tali de causa perolvere teneantur. Ac tempore pestis aut belli (quod Deus avertat) aut cujuscunque alterius sinistri & inexcogitati casus fortuiti, ad custodias seu excubias faciendas nequaquam sint obligati, neque ad præmissorum quidpiam cogi vel compelli possint aut debeant, liberique, immunes & exempti ab omnibus supra dictis sint & esse censentur.

§. 7. Decernentes, omnia & singula præmissa valida perpetuò, & efficacia fore, suisque plenarios effectus sortiri debere, ac in singulis, quos illa concernunt, suffragari. Sicque per quoscunque Judices & Commissarios, Ordinarios, & Delegatos, etiam causarum Palatii Auditores, ac Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, sublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate judicari & definiri debere, irritum quoque & inane, si secus super his, & quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§. 8. Quocirca dilecto filio nostro Henrico, tituli Sanctæ Pudenticæ Presbytero Cardinali Cajetano nuncupato, moderno, ac pro tempore existenti prædictæ Romanæ Ecclesiæ Camerario, & Cameræ Apostolicæ Præfidentibus Clericis, per præfentes committimus, & mandamus, quatenus ipsi per se, vel alium, seu alios, præfentes literas, & in eis contenta quæcunque, ubi, & quando opus fuerit, ac quoties pro parte alicujus prædictorum fuerint requisiti, solemniter publicantes, ac domorum seu ædificiorum hujusmodi conductoribus, habitatoribus, incolis, dominis, eorumque hæredibus & successoribus, artificibus, & quibusvis aliis supra dictis, in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra, præfentes literas, & in eis contenta quæcunque, per eos, ad quos spectat, & spectabit in futurum, perpetuò, firmiter & inviolabiliter observari, illaque debite executioni demandari procurent. Contradiçtores per censuras Ecclesiasticas, aliisque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita, compellendo, invocato ac hoc, vel adhibito, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 9. Non obstantibus Constitutionibus & Ordinationibus Apostolicis, ac dictæ Urbis, juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis & consuetudinibus, etiam novissimè reformatis, privilegiis, indultis, & literis Apostolicis eidem Populo Romano, ejusque Magistratibus, ac Consularibus Artium, aut illarum Consularibus pro tempore existentibus, vel quibuscunque aliis personis, Civibus, Provinciis, Terris, & Locis, sub quibuscunque tenoribus & formis, etiam motu & scientia similibus, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de illis, eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, & expressa mentio, seu quævis alia expressio ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi, ac si de verbo ad verbum infererentur, præfentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliàs in suo robore permansuris, hac

vice duntaxat, specialiter & expresse derogamus, cæterisque contrariis quibuscunque.

§. 10. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrorum statutorum, ordinationis, concessionis, indultorum, exemptionis, liberationis, decreti, commissionis, mandati, & derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Datum Romæ apud Sanctum Marcum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo octuagesimo septimo, Idibus Septembris, Pontificatus nostri Anno tertio.

Anno à Nativitate Domini 1587. Indiçione 15, die verò 9. mensis Octobris, tempore Pontificatus Sanctissimi in Christo Patris, & D. N. D. Sixti, Divinâ Providentiâ Papæ V. Anno ejus 3. retroscripta litera Apostolica, & omnia & singula in eis contenta, affixa & publicata fuerunt ad Valvas Ecclesiarum Basilicarum S. Joannis Lateranensis, S. Petri de Urbe ac Cancellaria Apostolica, & in acie Campi Floræ, ut moris est, per nos Alemannum ab Alemannis, & Octavianum Taglietum S. D. N. Papæ Curæ.

Alex. Parabiacus Mag. Curæ.

Prohibitio extrahendi, aut quoquo modo amovendi libros, & alia existentia in Bibliothecis Fratrum Minorum de Observantia Ordinis S. Francisci: Et Ordinationes, quibus eadem conservari debeant.

Alia de hoc Ordine inscripta supra in Constit. 23. Leonis X. Itæ, fol. 583. Tom. 1.

SIXTUS PAPA V.

Ad perpetuam rei memoriam.

Cum, sicut accepimus, nonnulli parùm arduos procedere viam, quæ ducit ad Salutem, sub variis respectibus ausi fuerint, & in dies audent, contra formam litterarum felicioris recordationis Pii Papæ V. Prædecessoris nostri in forma Brevis, sub Datum Romæ quarta Novembris, millesimo quingentesimo sexagesimo octavo, Pontificatus sui Anno quarto, alportare libros, quinquena, folia, & res existentes in Bibliothecis Monasteriorum, seu Domorum Fratrum Sancti Francisci de Observantia.

§. 1. Idecirco volentes plenius providere prædictis, tenore præsentium, Motu proprio, ac ex certa scientia nostra, & de Apostolicæ potestatis plenitudine, in virtute sanctæ obediencie, ac sub excommunicationis lætæ sententie pena ipso facto sine alia declaratione per contravenientem in singulis casibus infra scriptis incurrenda, & qua nisi à Romano Pontifice, præterquam in mortis articulo possit absolvi, & nisi in primis satisfactio omni damno dictarum Bibliothecarum, mandamus omnibus, Ministro ac Commissario Generalibus, Ministris Provincialibus, Commissariis, Guardianis, cæterisque Fratribus quocunque nomine nuncupatis dicti Ordinis aliisque omnibus & singulis Personis Ecclesiasticis, secularibus & regularibus, cujuscunque status, ordinis, conditionis, etiam si Pontificali dignitate præfulgeant, vel aliàs hic specificè nominandi fuissent, præfentibus & futuris, ne sub quovis prætextu, causâ & ratione, etiam quibus dici posset, si nobis expressè fuissent, vel de his cogitavissimus, non sic ordinavissimus, audeant seu præsumant, neque aliquis eorum audeat seu præsumat, per se vel alium, seu alios, nec pro minimo quidem temporis spatio dictos libros quinquena, folia, nec res aliquas in dictis Bibliothecis nunc, & quandocunque existentes de dictis Bibliothecis

Sanctio poenalis.

Dat. P. An. 3. 13. Septembris.

Publicatio.

LXVII.

Edita An. D. 1587.

Causa hujus Constituit.

Prohibetur omnibus librorum ex Bibliothecis Ordinibus.

amovere, asportare, tollere, seu amoveri, asportari, aut tolli facere, vel consulere, neque verbo, vel facto in aliquo ex prædictis alicui auxilium aut opem præstare. Quinimò quilibet ex prædictis teneatur, quidquid in prædictis audiverit, aut sciverit factum, vel fieri tentatum in præjudicium dictorum Fratrum, eorumque Bibliothecarum notificare Guardiani, & in ejus absentia Vicario Domus, seu Monasterii, in cujus Bibliotheca aliquid ex prædictis contigerit, Qui Guardianus & Vicarius teneantur, juxta omne eorum, suorumque Superiorum, & aliorum quorumcumque posse, quorum auxilio indigerint, quod per quoscunque præstari eis mandamus, curare cum effectu omnia restitui in pristinum, & satisfieri omni damno successo in dicta Bibliotheca per culpabiles in prædictis.

Traditur
forma libros
conservandi.

§. 2. Et nihilominus pro potiori cautela & securitate prædictorum mandamus sub eisdem penis, necnon privationis vocis activæ & passivæ, inhabilitatisque perpetuæ ad quælibet Officia dictæ Religionis unquam obtinenda & exercenda omnibus & singulis dictorum Monasteriorum Guardianis quandoque electis, ne sub quovis prætextu, causa, & ratione hic aliàs necessariò exprimendis, audeant assumere Officia Guardianatus, neque in eo verbo, seu facto se ingerere, nisi prius in præsentia Discretorum loci, seu Monasterii, in quo fuerit aliqua Bibliotheca, cum fuerit plenum & perfectum inventarium, omnium & singulorum librorum, quinternorum, & foliorum, anni & loci impressionis, coperturæque prædictorum, ac alterius cujusvis certioris, & magis specialis specificationis dictorum librorum, quinternorum, foliorum, & rerum, quod inventarium completum debeat subscribi à dicto Guardiani & Discretis, dictique inventarii exemplar ad verbum cum similibus subscriptionibus transcribi in uno libro ad hunc solum effectum parando, & perpetuò conservando in capula, vel loco, in quo solent deponi sub clavibus Elemosynæ pro tempore dictis Domui, Monasterio, ac Fratribus factæ. Qui libri, quinterni, folia, resque quælibet prædictæ debeant per simile inventarium, & inventaria, ut supra, scribenda & subscribenda à dictis Guardiani & Discretis, & in dicto actu consignationis cum veteribus proximè præcedentibus, & aliis, quibus opus erit, ratiocinata, & collata per Guardianum jam Officium completum, seu à dicto Officio Guardianatus, seu Commissariatus discedentem consignari ejus in Officio Successori, & ab eodem Successore in præsentia supra dictorum subscribi, sicque perpetuò ab omni Guardiani, seu ejus Vices gerente antequàm assumat munus dicti Guardianatus, vel in eo verbo seu facto se intro mittat, quæ inventaria sunt, formis & modis supra dictis renoventur à Guardianis existentibus in Officio tempore Dati præsentium. Quod inventarium quilibet Minister Provincialis, & dictæ Provinciæ Commissarius teneatur singulis annis sui Officii in præsentia dicti Guardiani, & Discretorum ejus, Domus & Monasterii revidere, & quod additum non fuerit, aut ex dictis Bibliothecis asportatum fuerit, facere addere dictis inventariis, ac in dictas Bibliothecas reportare, dictisque additionibus, & inventariis unà cum prædictis Guardiani & Discretis se subscribere.

Puniantur
contra-
ven-
tiones
et
compl. es.

§. 3. Quod si singula prædicta, ut supra, ordinata, facta non fuerint, volumus & decernimus, ultra prædictas penas dictum Guardianum, Ministrum, & Commissarium statim sine aliqua declaratione intelligi privatos, prout privamus ex nunc prout ex tunc semper Officio Guardianatus, Ministratus, aut Commissariatus, quod tunc gerit, neminemque de cætero ei obedire volumus, & eundem sic, ut supra, in omnibus non obediendum declaramus inhabilem ad quævis Officia dicti Ordinis per ipsum unquam gerenda. Et nihilominus quilibet ex prædictis Ministris, Commissariis, Guardianis, & Fratribus nunc & pro tempore ex-

istentibus dicti Ordinis Minorum, asportans aliquid, aut asportari faciens, vel asportari consulens, aut opem, aut auxilium antè vel post, vel in ipso actu asportandi, verbo seu facto præstans extra dictas Bibliothecas contra formam præsentium debeat ab ejus immediatè Superiori incurfuro sine alia declaratione statim dictas omnes penas, si hæc omnia debita executioni non mandaverit in carcerari, & in carceribus detineri per sex menses continuos, neque elapsis dictis sex mensibus possit de dictis carceribus liberari, nisi in resecis omnibus damnis dictæ Bibliothecæ, & omnibus restitutis in pristinum; Decernimusque præsentem quemlibet eorum concernentes arcare ad earum observationem in Italia post quatuor menses, extrà verò Italiam post octo menses, in partibus verò Indiarum, ac locorum de novo repertorum post biennium à Data præsentium.

§. 4. Nec de subreptionis aut obreptionis, nec etiam intentionis nostræ, vel quolibet alio defectu, aut vicio, cogitato vel incogitato redargui posse, nec contra hæc aliquid dici, nec ignorantiam, aut illorum inobservantiam posse allegare, sed plenissimè ad literam observare, sublata aliter declarandi, interpretandi, & judicandi cullibet, etiam Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinali, & causarum Palatii Apostolici Auditori, facultate & auctoritate, irritum & inane decernentes, quidquid in contrarium factum fuerit.

§. 5. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac Monasteriorum, Domorum, Ecclesiarum & Ordinum prædictorum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, privilegiis, & consuetudinibus, quævisque contrariis quibuscumque, etiam de quibus hic specialis mentio faciendi esset.

§. 6. Et quia difficile foret præsentem originales ubique, ubi opus esset, ostendi volumus, etiam transumptis ab aliquo Notario, seu dicti Ministri generalis Secretario, & per eundem Ministrum generalem subscriptis, & sigillo officii alterius eorum sigillatis, eandem prorsus fidem in judicio & extrà adhiberi, ac si præsentem literæ originales fuissent exhibitæ vel ostensæ.

Datum Romæ apud Sanctum Marcum sub annulo Piscatoris, die tertia Octobris, millesimo quingentesimo octuagesimo septimo, Pontificatus nostri Anno tercio.

Approbatio Congregationis Fratrum Minorum Conventualium Reformatorum Sti. Francisci, cum habitus designatione, & privilegiorum communicatione.

Hi Fratres non possunt recipere Capuccinos, nec deferre habitum consimilem, ut infra in Gregorii XIV, Constitut. 11. Beati. His etiam Reformatis subje- cit quosdam Fratres Disalceatos hic Pontifex, ut infra in Constitut. 99. Cum sancti. De toto autem Ordine Franciscano, plenè notavi supra in Constitut. 5. Honorii III. Solet. fol. 66. Tom. 1.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Apostolici Muneris sollicitudo, Divinæ dispositione nobis, licet immerentibus, delegata, indefinenter requirit, ut circa statum Religiosarum Personarum quarumlibet, illarum præsertim, quæ ex singulari devotionis fervore sub stri- ctiori Religionis iugo gratum Deo famulatum præstare affectant, & continuò insistant, assidua mentis cogitatione invigilantes, ad ea, per quæ Regularis vitæ institutum in melius dirigetur, ipsa- que Personæ religiose in hujusmodi earum lauda-

Subreptio
allegari pro-
hibetur.

Derogatur
contrariis.

Fides tran-
sumptorum.

D. P. An. 3.
3. Octobris.

LXVIII.

Edita An. D.
1587.

Exordium.

1587.

Reformati.
sub obediē-
tia Protec-
toris generalis
Procurato-
risque &
Provincia-
lium exi-
stant.

Custodis
Provinciae
residentia.

Reformati
in Capitulis
Conventua-
lium inter-
sint, siatque
Congregatio
Vocalium
Reformato-
rum, cui Ca-
pituli Præsi-
dentes assint,
Custodem-
que ex Re-
formatis eli-
gat. Custodis
Officium &
auctoritas.

Privilegiis,
gratiis & in-
dultis Con-
ventualium
ipſi Refor-
mati potiun-
tur.

Syndicum
pro ſeculari-
bus negotiis
agendis Re-
formati de-
putare po-
ſſunt, & Ha-
bitum hic
designatum
deferant.

bili Instituto, semoto quocunque perturbationis
& molestiæ obstaculo, quiete & tranquillitatis am-
nitate perseverare valeant, propensius intendamus,
ac in his Officii nostri partes libenter interponamus,
prout undique debite pensatis circumstantiis, con-
spicimus in Domino salubriter expedire.

§. 3. Et nihilominus eisdem Fratribus Reformatis, quod nunc ad deinceps in perpetuum, ipsi ac eorum Congregatio, tam in predictis quam quibuscvis aliis Regnis, & Mundi partibus, Fratres Minores Conventuales Reformati nuncupari, & pro talibus haberi & reputari, necnon seiplos ita ubilibet, & in quibuscvis actibus publicis & privatis, vocare & inscribere, & secundum veram Beati Francisci Regulam, Apostolico more in communi, sub dilectorum filiorum nunc & pro tempore existentium dicti Ordinis Fratrum Minorum Conventualium Protectorum, & Magistrorum, Procuratorum Generalium, & Ministrorum Provincialium vivere, exceptis duntaxat Domibus, & Conventibus Urbis, & Civitatis Neapolitane, quae sub obedientia Ministri, & in ejus absentia, Procuratoris Generalis Ordinis, ut par est, degere, & subesse tantum intelligatur.

§. 4. Custodēque Provincia in eis residere de-
beant, et aliqui Eremiticam aliqui sub ob-
dientia Fratrum Minorum de Observantia nuncu-
patorum, alij vero tantum Tertiarij, aut alias
aliam vitam duxerint, sequi voto vite Quadrage-
simalis obligaverint, ac etiam postea aboliti fue-
rint, à quibus omnibus votis & professionibus,
quatenus opus fit, eos, & eorum singulos plene
libolvimus, & libera-mus, ac habilitamus, ple-
narieque absolutos & habilitatos esse decernimus.

§. 5. Ac quòd quicunque ipsorum Fratrum Reformatorem vocati, in quacunque Provincia, Capitulo, seu Congregatione Provinciali dicti Ordinis Fratrum Conventualium intersint, in quo particularis fiat Congregatio diversorum Vocalium Reformatum, & in ea Præfens ipsius Capituli existat, ac præseat, ibidemque Custodem Reformatum inter ipsos eligat.

§. 6. Cujus Officium per annum tantum daret, quos visitandi, corrigendi, incarcerationandi, puniendi, privati, collocandi, & deponendi, live discolorandi, necnon reformandi, ac primas causas cognoscendi, sicut cognoscit Provincialis, dummodo ab ipso Provinciali non praevenitur, & ab ipso, ejusque decretis ac sententiis ad ipsum Provinciale Conventuale relinquatur recursus & appellatio, qui, vel quæ nunquam impediri queat, quoties opportunum fuerit, sed tantum in eos possit Provincialis prædictus, quantum in Conventuales de jure, more, laudabilique consuetudine potest & debet.

§. 7. Et insuper eorundem Fratrum Reformatorum quilibet, necnon quæcunque Domus, Ecclesie, & Loca ipsorum, omnibus & singulis privilegiis, immunitatibus, exemptionibus, prærogativis, concessionibus, facultatibus, indultis, indulgentiis, stationibus, cæterisque gratiis, tam temporalibus quàm spiritualibus, quibus Domus, & Ecclesie didorum Fratrum Conventualium, eorundemque Guardiani & Fratres, de iure, usu, consuetudine vel privilegio, aut aliis quomodolibet utuntur, fruuntur, potiuntur, & gaudent, ac uti, frui, potiri, & gaudere possunt & poterunt quomodolibet in futurum pariter, & sine differentia, dummodo contra puritatem Regulæ ejusdem Beati Francisci non sint, nec in aliquo derogent, fed conservationem & augmentum dicte Reformationis concernant, uti, frui, potiri & gaudere possint in quolibet actu.

§. 8. Concedit itidem, ut in quolibet eorum Conventu, seu Domo, Syndicum, juxta ordinationem felicis recordationis Nicolai Papæ III. Predecessoris nostri, super hoc factam, cui per Provinciales, Custodem, ac Guardianum Loci, cum aliis Fratribus, negotia secularia, Domus seu Conventus, ac computa rationum revidenda, expensæ faciendæ, provisiones necessariæ pro alimentis & vestimentis, & constructiones, reparaciones Con-

S. r. Sanè exhibita nobis nuper pro parte dilectorum filiorum Fratrum Minorum Conventualium Reformatorum Sancti Francisci petitio continebat, quod annis jam pluribus retroactis, nonnulli Ordinem Fratrum Minorum Sancti Francisci jam tunc expressè profecti, Irregularis Religionis jugum subire, ac ipsius Sancti Francisci Regulam, Institutumque pium ac sanctum exactius sequi atque imitari, sub illis magis gratum Deo famulatum exhibere peroptantes, ceperunt seipsum, juxta eandem Regulam paulatim reformare, nonnullasque Domos, Conventus, et Loca in Provincia Marchie Anconitanæ, in Hetruria, ac Neapolitana, et Sicilia Regnis, in quibus ipsam Regulam servare, et secundum illam vivere possent, acquisiverunt, et acceptarunt. Licet autem in Domibus et Locis hujusmodi, sub obedientia Protectoris et Superiorum Ordinis Fratrum Minorum Conventualium hujusmodi vivant, necesse ab aliquo potiusset, nec possit, vel debuissent, aut debeant, super sic reformato vivendi Modo, per quemquam molestari, vel impediri, nihilominus in quibusdam Locis, et potissimum in prædicto Sicilia Regno, aliqui Locorum Ordinarii fui pretextu, quòd hæc Fratrum Reformatorum Congregatio nova, ac nequaquam ab Apollinea Sede approbata existeret; permiserant quidem ipsos Fratres Reformatos Ecclesiæ et Loca fabricari facere, et acquirere, sed postea eos illis de factò spoliari, alii verò in aliis Locis eisdem super Habitu ipsorum, et seu aliis, ac super aliis molestari et inquietari. Cum autem tunc sicut eadem petitio subiungebat, dicti Fratres Reformati providè, et ne ipsos, eorumque Congregationem super præmissis contingat ulterius inquietari, utque præsens Reformatio magis stabilita, non solum maneat, sed et incrementum accipiat, speciali nostro, et Sedis prædictæ privilegio, ut infra, dilectis filiis Protectori et Magistro Generali dicti Ordinis, in hoc item consentientibus, præfatucri desiderant, ac pro parte eorundem Fratrum Reformatorum nobis fuit humiliter supplicatum, quatenus in præmissis opportune providere, ac eos in hujusmodi pio et laudabili proposito confovere, de benigneque Apollinea dignaremur.

§. 2. Nos igitur, qui personas devotas, præfitemur verò eas, quæ, relicto mundo, Christum fecerunt, specialibus libenter prosequimur favoribus, eodem Frates Reformatos, ac illorum singulos, à quibusvis communicationis, suspensionsis & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & penis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latas, quibus quomodolibet notati existunt, ad effectum præsentium duntaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, hujusmodi supplicationibus inclinati, Reformationem prædictam ubicunque Locorum ceptam & introductam, ac in dies introducendam, ac pro ea, & illius felici & prospera directione facta, statuta, & ordinationes cum inde secutis quibuscunque, sicuti piè, ac sanctè sancita, & ordinata sunt, auctoritate Apostolica, tenore præsentium, perpetuò confirmamus, & approbamus, illaque omnia per quoscunque Locorum Ordinarios, & alios, ad quos quomodolibet spectat, & spectabit in futurum, inviolabiliter observari debere decernimus, omnèsq; & singulos tam juris quàm facti, ac solemnitarum, etiam substantialium defectus, si qui forsitan quomodolibet intervenierint, in eisdem, eorum aliquo, de plenitudine Apostolicæ potestatis supplemus.

ventum, ne commutent habitum, etiam quantumvis rudem vilium pannorum, sive novum, sive veterem ac de faccis, etiam repetitum & refarcitum, non enim habitus exquisitus, in qualitate vel quantitate decet Fratrem Reformatum. Coloris terrei, seu cineritii, ac Caputium seu Scapularium in capite rotundum, & à Tunica divisim gestare, ac ubilibet deferre, nudisque pedibus, aut suppositis solis (sive vocant) sandaliis, incedere libere & licite valeant, ac etiam debeant.

Super Conventibus receptis & recipiendis, di-
ctique Habitus delatione, aliisque
præmissis molestari
nequeant.

§. 9. Necnon quod ab Ordinariis locorum quorumcunque Regnorum, & Mundi partium, in quibus pro tempore Domus seu Conventus, & loca habuerint, ac introducti fuerint, aut etiam quibuscunque aliis Personis, Superioribus, & Prælatiis cuiuscunque status, gradus, ordinis, & conditionis existentibus, in hac super tam jam fabricatis, ac receptis, quam deinceps quodcunque & ubicunque (de Ordinariis locorum licentia) fabricandis, recipiendis, & acceptandis, per eos, ac eis oblati & donati Domibus, Conventibus, Ecclesiis, ac Locis, illorumque usu, habitatione, ac retentione liberis, quietis, & pacificis (dummodo tamen de licentia expressa Ministri generalis pro tempore existentis dictorum Fratrum Conventualium, ac Capitulo Provinciali sic determinante) Domos, & Loca huiusmodi receperint, & acceptaverint, Habitibusque delatione, & aliis præmissis, quovis modo, aut quavis colore, publicè vel occultè, directè vel indirectè, ullatenus unquam molestari, perturbari, vel inquietari.

Frates Conventuales de eorum Generali licentia alia verò nequaquam recipiant juxta Constitutionem Pii V.

§. 10. Neque item ipsi Fratres Reformati aliquos alios Fratres alterius cuiuscunque Ordinis S. Francisci de Observantia, ac Capucinatorum, aut aliorum Ordinum, juxta literas sanctis recordationis Pii Papæ V. etiam Prædecessoris nostri, in forma Brevis, sub die prima Decembris, millesimi quingentesimi sexagesimi noni, Pontificatus sui Anno quarto emanatas, sed tantum Conventuales, & cum expressa ad hoc habita Ministri Generalis ipsorum Conventualium licentia recipere, minùsve sic inter Reformatos ex Conventualibus recepti, professionem alio tempore, vel anticipato, vel non completo anno, vel antè annum sextum decimum, vel datis, vel intimatis terminis professionis faciendæ, & hoc etiam in publica Ecclesia, Capitulo, vel Refectorio, prout ipsi Conventuales emittunt, ac nonnisi juxta veram & puram Regulam Beati Francisci prædictam emittere, neque postquam ad Reformatos ex Conventualibus sic transiverint, ad dictos Conventuales inde reverti, quin etiam prædicti Fratres Reformati ex Secularibus nullos, nisi qui bonæ vitæ & famæ, priusquam in ipsa Congregatione recipiantur, probati fuerint, ac habitum prius à Provinciali dictorum Fratrum Conventualium licentiâ, quam nec Guardiani, Custodes vel Commissarii quicumque dare possint, in Fratres Reformatos recipere queant.

Cum Conventualibus ad processiones, ab illis que se nunquam separare, nec alios Protectores, vel Provinciales quàm Conventualium habere possint.

§. 11. Demum, quod ipsi Fratres Reformati, & eorum Congregationi, dictis Fratribus Conventualibus, ac cum illis ita uniti sint, & esse censentur, ut nullo unquam tempore liceat illis alios Protectores Generales vel Provinciales, quàm dictorum Conventualium habere, nec in Processionibus, & aliis actibus aliam, quàm Conventualium Crucem sequi vel deferre, nisi fortè ipsi Fratres Reformati in aliquo loco fuerint, in quo non adsunt Conventuales, quo casu iidem Reformati per seipsos ire, ac incedere, sub excommunicationis pena seque in Conventualibus unquam separare, aut segregare ullo modo, ullòve tempore valeant.

Hæc Constitutio Refor-

§. 12. Præsentis quoque, & desuper conficiendæ literæ, toti & soli Congregationi Reformato-

rum sub obedientia Conventualium, in omnibus Provinciis viventium suffragentur, ac concessæ intelligantur, illaque per quoscunque uniformiter, etiam si aliqui hæc in quacunque Provincia privilegium aliquod, aut facultatem particularem, à Nobis & aliis Romanis Pontificibus Prædecessoribus nostris, quomodolibet impetrarint, observari debeant, auctoritate & tenore prædictis, etiam perpetuò concedimus & indulgemus.

§. 13. Ac statuimus & ordinamus easdem præsentis literas nullo unquam tempore, de subreptionis vel obreptionis, seu nullitatis vitio, aut intentionis, vel quovis alio defectu notari vel impugnari, aut aliis quomodolibet infringi vel retractari nullatenus unquam posse, sed illas semper & perpetuò validas & efficaces existere, suosque effectus forriti debere, neque sub quibusvis similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, suspensionibus, derogationibus, aut aliis contrariis dispositionibus, per quoscunque literas vel constitutiones Apostolicas, seu Cancellariæ Apostolicæ regulas, etiam per nos & Successores nostros prædictos, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, ac de prædictæ potestatis plenitudine, ac consistorialiter, necnon sub quibuscunque tenoribus & formis, ac cum quibusvis clausulis pro tempore factis, comprehendendi, sed semper ab illis exceptas, necnon quoties illas revocari vel limitari, aut suspendi, seu eis derogari contigerit, toties in pristinum statum, etiam sub data Priori rescriptis, & plenariè reintegratas, & de novo concessas esse & censeri.

§. 14. Sicque etiam per quoscunque Judices, Commissarios, & Delegatos, ac causarum Palatii Apostolici Auditores, & Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, necnon quovis alios Ecclesiarum Prælatos, ac Judices, tam Ecclesiasticos quàm Seculares, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate iudicari & definiti debere, si fecis super his à quovis quavis auctoritate, scienter vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane decernimus & declaramus.

§. 15. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon statutis, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, privilegiis quoque, indulgentiis & literis Apostolicis, sub quibuscunque tenoribus & formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decretis, etiam Motu simili, ac aliis quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, etiam si de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, individua, & expressa, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, ad hoc servanda foret, illorum tenores, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, & formâ in eis traditâ, observata inserti forent, præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice duntaxat specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscunque. Volumus autem, quod præsentium copii, sive transumptis etiam impressis, & manu alicuius Superioris dictorum Fratrum Reformatorum subscriptis, plenariè ubique fides adhibeatur in iudicio & extra, ac si originaliter exhiberentur.

§. 16. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ &c. Siquis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem Omnipotentis DEI, ac Beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Clausula præservativa.

Decretum irritans.

Clausula derogatorie.

Sanctio poenalis.

ANNO
1587.
Dat. P. An. 3.
15. Octobr.

SIXTUS QUINTUS.

653 ANNO
1587.

Datum Romæ apud Sanctum Marcum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo octuagesimo septimo, Id. Octobris, Pontificatus nostri, Anno tertio.

Terræ Sanctæ, & generali expeditione contrâ Turcas dictum fuit, idem etiam locum obtineat, quoad utramque Deo dicatam pecuniæ summam, in recuperatione Regnorum à quibuscumque Catholicæ Romanæ Ecclesiæ hostibus occupatorum, & in expeditione, quam contrâ eosdem decerni, ac fieri contigerit.

iusmodi pecunia depromi potest nunc declarat comprehendendi causam.

LXIX.

De decies alteris centenis millibus nummum aureorum, in Arce S. Angeli sepósitos, nullo umquam tempore, nisi in præscriptis casibus, certaque desuper servatâ formâ depromendis.

Alia centena millia hic idem Pontif. pro S. R. E. præsidio, in primo anno sui Pontif. collegit, & in eadem Arce reposuit, indeque promi vexit, ut supra in ejus Constitut. 31. Et alia intertio Anno ibidem postea reposuit, ut infra in Constitut. 80. Et si. Hasceque Bullas Pontifices omnes confirmarunt.

Edita An. D.
1587.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

ANno superiore decies centena millia nummum aureorum in Pontificia Sancti Angeli Arce, & certo sanctiori Erario reposuimus & collocavimus, ac de illis asserendis, ac nunquam, nisi certis præscriptis casibus, promendis & erogandis, Constitutionem perpetuò valitaram edidimus, cuius tenor infra descriptus est.

Omittitur tenor quia habetur supra.

§. 1. Verum cum ob culpas, peccatâque nostra multiplicia, quibus divinam Majestatem in dies magis ad Iracundiam provocamus, usque eò necessitates superius enarratæ multiplicentur, periculâque gregi Dominico impendientia adaugeantur, ut illis, nec dum prioris pecuniæ collectione, satis proviam esse videatur. Nos quamvis in omnibus difficultatibus, curisque nostris, in DEI Omnipotentis auxilio spem nostram fixa habeamus, ad illius opem, (qui nisi custodierit Civitatem, frustra vigilat, qui custodit eam) ex intimo cordis affectu confugiamus, tamen ab eo ipso Pastorum Principe CHRISTO, frequenter admoniti, ut pro omnibus nostræ fidei creditis, earumque salute & utilitate, modis omnibus vigilemus, facere non possumus, pro nostro Pastoralis munere in hac quoque parte obeundo, quin humanis etiam Consiliis, ac viribus (pro eo ac nobis ab eodem clementissimo Domino elargito est) ad tot mala, periculâque propulsanda, nova quotidie præsidia conaremur. Quamobrem alia decies centena millia aureorum nummum, non ad nostra, aut cuiusque nostrorum privata commoda, sed ad publicum bonum, ad S. R. E. cui Deo auctore præsidemus defensionem, ad fidei Catholicæ conservationem, ac propagationem nostrâ sedulitate ac frugalitate collegimus, quæ eadem in Arce, ut priora altera decies centena millia reponi, asservari, nec inde amoveri, erogativè, nisi in supradictis expressis necessitatibus, eodem planè modo volumus. Motu proprio igitur, & ex certa nostra scientia, ac habita super hoc eam Venerabilibus Fratribus nostris S. R. E. Cardinalibus in Consistorio nostro secreto maturâ deliberatione, de eorum Consilio, & unanimi consensu, hac præsentis nostra perpetuò valitura constitutione, dicta alia decies centena millia aureorum nummum in eadem Arce nostra Pontificia Sancti Angeli, & sanctiori Erario nunc recondimus, reponimus, & collocamus, ac CHRISTO Domino Nostrò, Beatæ MARIE semper Virgini, & Sanctis Apostolis Petro & Paulo offerimus & dicamus, iidem omnino legibus & conditionibus, quæ in nostra superius descripta Constitutione proscriptæ & præfinitæ sunt.

§. 2. Declarantes nostræ voluntatis, mentisque esse, ut quod in ipsâ Constitutione, de recuperatione

§. 3. Ubi verò in præscriptis casibus, pecuniarum aliquid sumi necessitas postulaverit, volumus ut de tota summa, tam superiori anno quàm etiam nunc reposita, hoc prorsus, & non alio modo pecuniæ fumantur & erogentur, himirum, ut in Consistorio secreto præscriptarum necessitatum qualitate, ac rerum & temporum ratione diligenter perpenda, atque ita cogente, non duarum, ex tribus partibus Cardinalium, sicuti in priori Constitutione nostra sanctum erat, sed trium saltem ex quatuor partibus Cardinalium, qui Consistorio interfuerint, consensu, decreto, & subscriptione adhibitis, ex binis decies centenis millibus aureorum nummum à nobis repositis, non ultrâ quartam partem, id est, non ultrâ quingenta millia nummum promi liceat, & ea quidem quingentorum millium summa, non tota simul, sed paulatim moderatè & successivè depromatur, per certas portiones, quæ in eodem Consistorio, in quo de tota re deliberabitur, à tribus partibus Cardinalium, ut dictum est, omnibus diligenter examinatis, decretæ & præfinitæ fuerint. Quod si ipsis quingentis millibus erogatis & consumptis, præscripti casus & necessitates novam impensam requisiverint, tunc iterum proposita & adhibita in Consistorio consultatione, si consensus, decretum, & subscriptio trium ex quatuor partibus Cardinalium, ut supra dictum est, acceperint, aliam summam, non tamen quingenta millia aureorum excedentem, illamque pariter non statim totam, sed moderatione ea servata, eoque quem diximus modo limitatam, & præfinitam sumi posse permitimus.

§. 4. Caterum statuimus, prout alia nostra constitutione ordinatum est, ut partes & portiones pecuniæ supradictæ, quæ in aliquo ex præmissis casibus sumptæ fuerint; cum ejus impensæ faciendæ ratio cessaverit, omnino in ararium unde depromptæ fuerunt, integrè restitui, ac reponi primo quoque tempore debeant.

§. 5. Has autem Deo dicatas pecunias, nullo unquam tempore, nisi aliqua ex iis quas diximus necessitas urgeat & requiratur, neque in totum, neque ex aliqua parte amoveri, erogativè quovis modo à nobis posse volumus, eamque amovendi & erogandi potestatem & facultatem à nobis ipsis abdicamus. Idque Successores nostros Romanos Pontifices, proposito sibi tremendo iudicio, in quo summo patri familias de administrata villicatione exquisita reddetur ratio, eodem planè modo facturos esse confidimus & speramus. Tandemque Deo per præsentem oblatam pecuniam, una cum illa priori, nos integram, ut dictum est, conservaturos esse, ac perinde omnino, ac res & bona Ecclesiæ immobilia nos habituros promittimus, juramus, & vovemus, & sicuti omnes Cardinales præsentis, & infra scripti voverunt, promiserunt, ac jurarunt, ita per alios Cardinales nunc & pro tempore existentes, ac per Successores nostros, quando & quories superius ordinatum fuit, & juxta formam nunc traditam jurari, promitti, ac voveri debere decernimus.

§. 6. Denique cætera omnia & singula in eadem constitutione supra scripta, quomodolibet expressa, constituta, & decreta, etiam in hac pecunia à nobis, ut præsertim nunc collocata & recondita, & quoad præsentis nostras literas, in omnibus & per omnia, penitus, omnino, & inviolabiliter observari, & locum habere volumus, præcipimus & mandamus.

Recuperationis Regno- rum occupa- torum, & ex- peditionis contra S. R. E. hos- tes. For- mântque pecu- nias in di- ctis casibus deponendi & descriptis & servari præ- cipis.

Et quam pri- mum reponi jubet.

Prædictæque reservaturum voveret, & si- cut infra- scripti Cardi- nales præsen- tes idem pro- mitterent, ita ab aliis Car- dinalibus pro tempore pro- mittere de- cernit.

Cætera om- nia in dictis contenta de novo præci- pit.

Hic Pontif. anno primo reposuit in Arce S. Angeli centena millia, ut in Constitut. hic indicata.

Et deinde alia centena millia colle- git, & modo in eadem Arce simili- ter reponit, cum eisdem prohibitionibus, & conditionibus in dicti Constitut. contentis.

Et inter cer- tos casus, in quibus hu-

Successori
bus in alio
que contra
venientibus
indictis, post
eorum oim
successori
bus agere
contra Pon
tificis con
travenientis
posteros, &
Cardinales
consentien
tes & eorum
heredes, ut
hic, & in
licta Con
stitut. 31. in
fin. Adver
te quod hic
est aliquid
immutatum
a prima
Constitut.

Sanctio pec
nalis.

Dat. P. An. 3.
6. Novembr.

PP. Subscrip.

Card. subscr.

§. 7. Si quis autem fortasse nostrorum Successorum, id quod minimè credimus, huic nostræ constitutioni omnino, aut aliqua ex parte derogare, aut contra statuere voluerit, aut depromptam pecuniam, ut supra sancitum est, in idem ærarium non restituerit, admonemus post derogantis, aut contra statuentis, contraque facientis obitum, liberum esse Successoribus ea derogatione, & quibuscvis aliis quæ contra statuta sunt non obstantibus, pro pecunia contra hujus Constitutionis præscriptum sumpta ac deprompta, recuperanda, tam adversus Pontificis derogantis & contra facientis, posteros seu conjunctos omnes, quam adversus Cardinales idem consentientes, aut quoscunque eorum Heredes, quibus ab ipso Pontifice, aut Cardinalibus bona quovis titulo vel quavis ratione obvenierint, agere, & possessionem bonorum quæ ad ipsos posteros pervenerint adipisci, retinereque donec quicquid pecuniæ depromptum est, id omne in ærarium referatur & restituantur, eaque ipsa bona, si quo modo, ut supra dictum est, à forma per nos constituta recedi contigerit, huiusmodi obligationi, acque oneri obnoxia & addicta esse volumus, singulis quæ in nostris literis adversari possent, vel quoquo modo obesse penitus remotis, ac non obstantibus.

§. 8. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ reconditionis, repositionis, collationis, oblationis, dicationis, declarationis, permissionis, statuti, voluntatum, abdicacionis, promissionis, juramenti, voti, decreti, præcepti, mandati, & admonitionis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo octuagesimo septimo, octavo Idus Novembris, Pontificatus nostri Anno tertio.

Ego Sixtus Catholicæ Ecclesiæ
Episcopus.

Ego A. Card. Farnesius Vicecancellarius Episcopus Offitien.

Ego Jac. Card. Sabellus Episc. Portuen.

Ego Jo. Anto. Episcopus Tuscul. Card. S. Georgii.

Ego Alph. Card. Gesualdus Episc. Albanen.

Ego Inn. Avalus Card. de Arag. Episc. Sabinen.

Ego Marcus Ant. Card. Columna Episc. Prænestin.

Marcus Sitticus Card. ab Altaemps tit. S. Mariæ Transtiberim.

Ego Ptolemaus Cardinalis Comensis tituli Sanctæ Mariæ de Populo.

Ego Prosper Card. Sanctacrucius tit. S. Clementis.

Ego Gabr. Cardinalis Paleottus tit. S. Laurentii in Lucina.

Ego Frater Michael Bonellus Cardinalis Alexandrinus tit. S. Mariæ super Minervam.

Ego Ludovicus Card. tit. S. Anastasie Madrutius.

Ego Nic. de Sens tit. S. Prædixis.

Jul. Anton. Card. S. Severinæ tituli S. Bartholomæi in Insula.

Ego Hieronymus Card. Rusticucius tit. S. Susannæ.

Ego Jo. Hieron. Card. Alban. tit. S. Joannis ante portam Latinam.

Ego P. Card. Deza tit. S. Hier. Illyricorum.

Ego Ant. tit. SS. Joannis & Pauli Card. Caraffa.

Ego Jo. Antonius Card. SS. Quatuor.

Ego Jo. Baptista Card. tit. S. Marcelli.

Ego Franciscus Card. de Joyeuse tit. S. Silvestri.

Ego Ant. Maria Card. Salvatus tit. S. Mariæ de Pace.

Ego Aug. Card. de Verona tit. S. Marci.

Ego Vincentius tit. S. Mariæ in Via Card. Montis regalis.

Ego Philippus Card. Spinula tit. S. Sabinae.
Ego Scipio Card. Lancellottus, tit. Sancti Salvatoris in Lauro.
Ego Vincentius Card. Gonzaga tit. S. Alexii.
Ego Henricus tituli S. Pudenzianæ Cardinalis Cæstantus, Camerarius.
Ego Jo. Baptista Card. Castrucci, tituli S. Mariæ in Araceli.
Ego Federicus Card. Cornelius tituli S. Stephani in Monte Calio.
Ego Dominicus tit. S. Laurentii Card. Pinellus.
Ego Hippolytus Card. Aldobrandinus tit. S. Pancratii, Major Penitentiarius.
Ego Hier. tit. S. Petri ad Vincula Card. de Ruvere.
Ego Fr. Hier. Card. Ascul. tit. S. Thomæ in Parione.
Ego Fr. Constantinus Card. Sarnanus tit. S. Petri in Monte Aureo.
Ego Guglielmus Alanus tituli S. Martini in Montibus, Cardinalis Ang.
Ego Alexander Cardinalis Montaltus, Diaconus Sancti Eustachii.
Ego Hieronymus Mathæjus, Diaconus S. Mariæ in Colmedin.
Ego Benedictus S. Agathæ Diaconus Cardinalis Justinianus.
Ego Afcanius SS. Vidi & Modesti, & Crescentiæ, Diaconus Card. Columna.

Anno à Nativitate Domini 1587. Indi. 15. die verò Veneris 27. mensis Novembris, Pontificatus Sanctissimi in Christo Patris, & D. N. D. Sixti Divinæ Providentiæ Pape V. Anno ejus 3. retrospectæ litteræ Apostolicæ, affixæ, lectæ, & publicatæ fuerunt in valvis seu portis S. Joannis Lateranensis, & S. Petri Principis Apostolorum de Urbe, necnon Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, & per aliquod temporis spatium dimisse, per nos Jo. Baptistam Bagni & Ottavium Taglietum S. D. N. Pape Cursores.

Parabiacus Mag. Curf.

Indulta & Gratæ Congregationis Monachorum Beatæ MARIE Fulienfis, Ordinis Cisterciensis Sancti Benedicti strictioris Observantiæ.

Hic idem Pontifex istam Congregationem primò approbavit ut supra in Constitut. 32. Religios.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam
rei memoriam.

Super specula militantis Ecclesiæ, Domino disponente, qui cunctis imperat, cuique omnia obediunt, quamquam sine nostris meritis, constituti, salutis operibus intenti, de his continua sollicitudine excogitamus, per quæ nostræ propitiationis auxilio, iis, qui Monasticam vitam susceperunt, eamque reformant, salus proveniat. Et ut ad diversa loca eorum institutio, & regularis disciplinæ observantia propagetur, alia loca erigi, & institui concedimus, prout Regum & Principum Christianorum vota exposcunt, & Nos conspicimus in Domino salubriter expedire.

§. 1. Sanè pro parte dilectorum filiorum Abbatis & Conventus Monasterii Beatæ MARIE de Fulliens, Cisterciensis Ordinis, Riveniensis Diocesis, nobis nuper exhibita petito continebat, quod aliter quam accepissemus, in dicto Monasterio institutionem & disciplinam Monasticam in longè meliorem formam restituerant, ipsique in laboribus, jejuniis, orationibus, carnis maceratione, & mortificatione, aliisque penitentialibus operibus strictiorem aliis Monachis dicti Ordinis, Regulam Sancti Benedicti observabant. Necnon ritus, mores, vitæ normam, & Reformationem ad arcitiorem regularis disciplinæ

Publicatio.

LXX.

Edita An. D.
1587.

Exordium.

Hic Pontif. confirmavit strictiorem monasticæ vitæ normam in Monasterio S. Mariæ Fulienfis institutam, ut in Constitut. 2. supra.

obfer-

Ordinis Cisterciensis huius Congregationi communicat atque concedit.

Et desuper quoque modo molestari prohibet.

Contraria removet.

observantiam in dicto Monasterio introductam, re-
dlexerant, Nos ritus, mores, vite normam, &
reformationem huiusmodi, dummodò sacris Cano-
nicis, & Concilii Tridentini decretis, & Sancti Be-
nedicti Regule, auctoritate Apostolica approbate,
contraria non essent, dicta auctoritate confirmavi-
mus, prout in nostris desuper concessis litteris
plenius continetur.

§. 2. Cum autem divino inspirante numine, jam
centum & quadraginta Monachi ipsam reformatam
regulam professi, multi verò in eodem Monasterio
Novitii exstant; Charissimisque in Christo filius
noster Henricus Francorum Rex Christianissimus,
ac dilectus filius nobilissimus Henricus Dux de Retz,
alique pii ac probi viri gratum huius vite odorem
sentientes hoc vetustum vivendi genus, & laudabi-
lem regularis disciplinæ observantiam per univer-
sum Gallie Regnum, illiusque loca & terras, spar-
gi atque effundi fummopere peroptent. Quia tamen
(sicut eadem petitiò subiungebat) istius arctioris Re-
gulæ approbatio citrà præfatum Monasterium ne-
quaquam extenditur, prædicti Abbas & Conventus,
piis prædictorum Regis & Ducis, ac proborum vi-
rorum votis hac in parte satisfacere non possunt, nisi
nostra & Sedis Apostolicæ licentia eis desuper suf-
fragetur. Quare pro parte Abbatis & Conventus
prædictorum nobis fuit humiliter supplicatum,
quatenus prædictæ Religionis reformatæ propaga-
tioni, ac aliis in præmissis opportunè providere, de
benignitate Apostolica dignaremur.

§. 3. Nos igitur eundem Abbatem & Conven-
tus huiusmodi singulares personas à quibuscvis ex-
communicationis, suspensionis & interdicti, aliisque
Ecclesiasticis sententiis, censuris, & pœnis, à jure vel
ab homine, quavis occasione vel causa latis, siquibus
quomodolibet innodati existunt, ad effectum præsen-
tium duntaxat consequendum, harum serie ab-
solventes, & absolutos fore censentes, huiusmodi
supplicationibus inclinati, Abbati & Conventui
prædictis, ut quoscunque ex Monachis ipsam stri-
ctiorem Regulam professis, quos duxerint eligen-
dos & deputandos, tam ad hoc per totum Gallie
prædictam, quam alia Regna & Republicas, Mun-
dique partes universas, prout eis visum fuerit, mittere.
Ipsique sic missi in Regnis, Rebuspublicis, &
Dominis prædictis, ac quibuscunque eorum Civita-
tibus, Terris, atque locis, aliisque Mundi partibus,
quæcumque, tam virorum quam mulierum, Mona-
steria, Prioratus, Præposituras & Decanatus, ac alia
nuncupanda loca Congregationis Fulienfis etiam
nuncupanda, ejusdem Cisterciensis Ordinis, pro
totidem Abbatibus, Abbatissis, Prioribus, Præpo-
sitis, Decanis, Conventibus, & aliis Superioribus
& personis ejusdem Congregationis, qui inibi divi-
nis laudibus & obsequiis insisterent, ac juxta Regula-
ria Congregationis sic reformatæ instituta vivere de-
beant, fundare, erigere, & instituere, ac etiam per
alios ejusdem, vel alterius cujuscumque Ordinis
fundata & erecta, ex eorum ad quos spectat & spe-
ctabit, concessione, Dicecesanorum, locorum, vel
quorumvis aliorum licentiâ desuper minimè requi-
sitâ nec expectatâ.

§. 4. Novitiisque in eis recipere, & receptos, ac
ipsa Monasteria ingressos, probationis tempore
completo, ad professionem solitam, per dictos Mo-
nachos emitti solitam, admittere Regularem, ac il-
lud vite genus, Regulariæque instituta, quæ in pri-
mo dicto Monasterio vigent, & in futurum vigeant,
inibi introducere libere & licite possint & valeant
licentiam, & omnimodam facultatem atque aucto-
ritatem, dicta auctoritate, tenore præsentium con-
cedimus & impartimur.

§. 5. Necnon prædicto de Fulienfis, & quibuscvis
aliis dictæ Congregationis pro tempore erigendis, &

seu jam erectis Monasteriis, Prioratibus, Præpositu-
ris, Decanatibus, & aliis nuncupandis locis, tam
virorum quam mulierum, illorumque Superioribus,
Abbatibus, Abbatissis, Prioribus, Præpositis, De-
canis, Monachis, Monialibus, Novitiis, & Con-
versis, aliisque quibuscunque personis utriusque
sexus, in eis pro tempore existentibus, ut omnibus
& singulis privilegiis, immunitatibus, exemptioni-
bus, libertatibus, prærogativis, concessionibus,
facultatibus, indultis, indulgentiis, etiam plenariis
& peccatorum remissionibus, relaxationibus, cæte-
risque gratis, tam spiritualibus quam temporali-
bus, prædicto Ordini, ac Congregationibus sub
illo institutis, eorumque Monasteriis, & locis pa-
riter utriusque sexus per univerfum Mundum con-
stitutis & erectis, ac constituendis & erigendis, in
genere vel in specie, etiam per solam signaturam, &
vivæ vocis oraculo, ac per modum communicatio-
nis & extensionis, etiam Motu proprio, & ex certa
scientia, & Apostolicæ potestatis plenitudine, vel
aliâs quomodolibet, tam per nos quam quoscun-
que alios Romanos Pontifices, etiam Prædecessores
nostris, ac Sedem Apostolicam, sub quacunque
forma & expressione verborum concessis ac conced-
endis quomodolibet in futurum, etiam si talia sint
& forent, quæ specialem ipsorum requirerent men-
tionem, uri, potiri, & gaudere, libere & licite,
tam conjunctim quam divisim valeant, non solum
ad instar, sed equè principaliter & pariformiter in
omnibus & per omnia, perinde ac si filii & eorum
cuiuslibet ab initio specialiter & expresse concessa ex-
stitissent, auctoritate & tenore præmissis perpetuò
indulgemus, ipsaque privilegia, indulgentias, &
gratias quibuscvis aliis Superioribus, Abbatibus,
Prioribus, Monasteriis, Ecclesiis & locis piis, ac ce-
lebrandis Capitulis, & festivitatibus ejusdem Ord-
inis, & singularum illius Congregationum, ac Mo-
nasterium & Congregationem de Fulienfis huiusmo-
di, illorumque Abbates, Priores, Monachos, Ab-
batissas, Moniales, & alios Superiores, & personas,
necnon Ecclesias, Monasteria, Capitula celebranda,
Sanctorum festivitates, & loca, quæcumque & qua-
liacunque, ac ex Superioribus & personis, ad Su-
periores & personas perpetuò extendimus, illisque
communicamus, ac de novo concedimus, & eis
desuper indulgemus.

§. 6. Decernentes Abbatem & Conventus hu-
iusmodi singulares personas super præmissis à quo-
cumque quavis auctoritate fungente, & dignitate præ-
fulgente molestari, impediri, vel inquietari nullate-
nus posse, irritum quoque & inane, quicquid secus
super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel
ignoranter contigerit attentari.

§. 7. Non obstantibus præmissis, ac quatenus
opus sit, de indulgentiis ad instar non concedendis,
& quibuscvis aliis constitutionibus & ordinationibus,
necnon Monasteriorum, & Ordinis prædictorum
juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis
firmitate alia roboratis statutis & consuetudinibus,
privilegiis quoque, indultis, & licetis Apostolicis
eisdem Monasteriis, & Ordini, illorumque Superio-
ribus, & quibuscvis aliis personis, sub quibuscunque
tenoribus & formis, ac cum quibuscvis etiam derogato-
riorum derogatoriis, irritantibus, & aliis decretis,
in genere vel in specie, etiam Motu proprio & con-
sistorialiter, & aliâs in contrarium quomodolibet
concessis, confirmatis, & innovatis, quibus omni-
bus, etiam si de illis, eorumque totis tenoribus spe-
cialis, specifica, expressa, & individua, non autem
per clausulas generales idem importantes, mentio,
seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia
exquisita forma ad hoc servanda foret, illis aliâs
in suo robore permanens, hac vice duntaxat, ha-
rum serie specialiter & expresse derogamus, cæte-
risque contrariis quibuscunque.

Quam idem Pontifex nunc conce-
dit, cum
facultate no-
va edificandi
monasteria
etiam abque
licentiâ Ord-
inariorum
ubique lo-
corum.
Hoc licen-
tia est revo-
caturum à
Clem. 8. in
Clem. 9.
Quoniam,
et. 162.
tom. 3.

Novitiisque
recipiendi.
ad hoc vide
consil. sub-
19.

Privilegia
exemptionis
& Gratias

1587.

&

1588.

Sanctionem
poenalem
addit.D. P. An. 32
13. Novemb.

LXXI.

Edita An. D.

1587.

&

1588.

Proœcium.

Causæ hujus
Constitut.

§. 8. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ abolitionis, impartitionis, indulgentiarum, concessionum, decreti & derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursurum.

Datum Romæ apud S. Marcum, Anno Incarnationis Dominicæ 1587. Id. Novembris Pontificatus nostri Anno tertio.

Prohibitio recipiendi ad habitum vel professionem, cujuscumque Ordinis regularis, homines illegitimos, criminosos, aut ari alieno, reddendis rationibus obnoxios, Et præscriptio Formæ Novitio recipiendi.

Hanc Bullam moderavit quoad illegitimos Gregorius XIV. in ejus Constitut. 3. Circumspecta. Et quoad nullitatem Professionis moderavit Clemens VIII Constitut. 83. In suprema. fol. 144. Tom. 3. Ubi multa reperies constituta pro receptione & educatione Novitiorum.

S I X T U S E P I S C O P U S ,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Cùm de omnibus Ecclesiasticis Ordinibus, in ea qua convenit puritate, & dignitate conservandis, præcipuum geramus sollicitudinem, tum verò illud præter cætera nobis cordi est, ut à Regularium Personarum Congregationibus, quas tamquam DEO dicatas, maxime candor, sanctitatisque decet, cujuscumque criminis aut turpitudinis labe, & scandalii occasio quàm longissimè arceantur. Si quidem res ipsa nos admonet, quàm indecorum sit, & ab ea, quæ divinæ Majestati, eique consecratis personis debetur, reverentia alienum, si ejusmodi homines, qui propter sua scelera penas graves sibi in sæculo propositas timent, quive propter immunditiam & peccata, ex quibus orti sunt, notati perpetuè ignominia, ab omni mundano honore, & à paterna hereditate repellantur, idem Omnipotenti DEO, tamquam Hostiæ offerantur, atque ad habitandum in domo, quam decet honor & sanctitudo, inter ministros Domini, cui servire regnare est, ad sacras functiones, quacumque prophana præeminentia multò nobiliores sine ullo defectu admittantur. Cùm etiam secundum legem Moysi, immundi ab ingressu Sanctuarii excluderentur, ac Sacerdos habens maculam panes Deo suo offerre non posset, nec accedere ad ministerium ejus, & quod in holocaustum Domini aut victimam pacificorum offerebatur, id immaculatum esse deberet, ut acceptabile foret, nec ulla macula esset in eo, quòd si maculam habuisset, neque offerendum, neque acceptabile futurum esset.

§. 1. Ne igitur contingat illegitimè genitos, qui ut plurimum parentum vitia & incontinentiam imitari solent, nec pietatis studio, sed temporalium commodorum intuitu, (quia hereditates majorum, aut dignitates aliquas consequi non possunt) ad Religionem confugiunt, vitam, quam animo à Religione alieno susceperunt, ac institutis Religiosis alienam, plerumque cum dedecore, & propriæ salutis dispendio ducere, suisque corruptis moribus & malis exemplis quietem & statum cæterorum Deo famulantium perturbare, aut hac quasi face & colluvie, ipsarum Religionum honorem & existimationem ladi, ut denique homines, qui hac spe ad filios spurios in peccato gignendos essent propensiores, eò magis abstineant ab hujusmodi carnis flagitiis, quòd suæ proli hoc quoque refugium præclusum viderint.

§. 2. Hac nostra in perpetuum valitura Constitutione distictè interdiximus & prohibemus, ne illegitimi procreati ex incestu, aut ex sacrilegio (quorum scilicet parentes consanguinitate vel affinitate intratertium gradum invicem conjuncti fuerint, vel quorum alteruter parens castitatem Deo voverit, etiam Apostolica, Imperiali vel Regia, aut quavis alia auctoritate legitimati, aut natalibus restituti, ad aliquam quorumcumque Ordinum, etiam Mendicantium & non Mendicantium, Fratrum, Monachorum, Eremitarum, vel Canonicorum, aut Clericorum regularium, Congregationum, aut Hospitalium Religionem, neque ad habitum nec professionem regulares, recipi vel admitti quoquo modo possint. Quòd si eorum quispiam habitum post publicationem præsentis constitutionis in futurum receperit, vel professionem posthac emisserit, decernimus habitus susceptionem, & professionem, ex nunc prout ex tunc, irritam, nullam & invalidam, nulliusque roboris vel momenti fore, ac nullum exinde, aut ex hujusmodi voto penitus annullato, obligationis vinculum oriri posse, quinimò illos Habitum regularem, ad quem reassumendum perpetuò inhabiles sint, quamprimum exui, & ab ipsa Religione ejici exterminarique debere. Et nihilominus quicumque Superiores, tam Monasteriorum, Prioratuum, Præpositurarum, Domorum, Collegiorum, & locorum regularium, quàm etiam præfatorum Ordinum, Congregationum, Hospitalium, & quarumcumque Religionum Provinciales, vel Generales, quovis nomine nuncupati, qui ex prædictis incestu vel sacrilegio genitos post dictam publicationem, ad habitum receperint, vel ad professionem admiserint, excommunicationis sententiam eo ipso incurrant, à qua eorum nemo, nisi in mortis articulo constitutus, ab alio quam Romano Pontifice abolitionis beneficium valeat obtinere. Sed ne iis, qui in humilitatis spiritu, Deo & Religioni servire, & penitentiam agere intrà Monasteria vel domos regulares cupiunt, ad sanctum hujusmodi propositum via penitus præcludatur, permittimus, ut præfati illegitimi, ex dictis incestu aut sacrilegio geniti, ad habitum converforum seu famulorum, in Monasteriis vel domibus regularibus servientium recipiantur, & in ipsis Monasteriis seu domibus regularibus, ad servilia ministeria, viliora obsequia, humiles functiones, atque abjecta servitia admitti possint, ea tamen conditione, ut ad habitum religiosorum, vel ad professionem, quam Religiosi emittere solent, emittendam, necnon ad omnes non modò sacros, sed etiam minores Ordines, vel ad clericalem characterem, denique ad cuncta Ecclesiastica officia, & functiones, & ad ascendendum ad altiores gradus, sint eis portæ perpetuò clausæ & obsestæ.

§. 3. Quoad reliquos verò non ex incestu præfato, nec sacrilegio sed ex quovis alio minus legitimo toto natos spurios, vel naturales, etiam ut præfertur, vel aliàs legitimatos, qui ob meliorem vitæ frugem, Religionem ingredi cupiunt, statuiamus & ordinamus, eos ad Religionem admitti non posse, aut debere, nisi prius illorum vitæ & moribus diligenter cognitis, & circumstantiis universis, quæ circa idoneitatem personæ attendendæ erunt, consideratis, ac de Religionis zelo, pietate, integritate, & doctrina fide dignis testimoniis adeò commendati fuerint, adeoque bonam indolem, & specimen virtutis præ se ferant, ac tot merita eis suffragentur, ut defectum natalium suppleant, eorumque receptio universæ Religionis commodò & utilitati profutura videatur. Et super hoc ipso in Generali vel Provinciali Capitulo matura deliberatione habita, Generalis vel Provincialis Superioris, ac Definitorum unanimi consensu approbati, & ad Habitum regularem admitti extiterint. Et tamen hi si recepti ad gradus, honores,

1587.

&

1588.

Illegitimi ad
Religionem
non recipi-
antur.Tu vide de
clarationes
hic infra. &
etiam Greg.
XIV. citatas
in rubric.

Alii autem
illegitimi
etiam legiti-
mati, serva-
tâ formâ hic
traditâ, reci-
pi possint, &
sic recepti in-
habiles ad
quocumque
gradus &
dignitates
sui Ordinis
obtinendas
remaneant,
donec fuerit
auctoritate
Apost. desin-
per cum eis
specialiter dis-
pensatum.

& digni-

Hic etiam re-
duxit Greg.
XIV. præci-
p. ad terminos
iuris.

& dignitates sui Ordinis obtinendas perpetuò inhabi-
biles, & illorum incapaces remaneant, nisi super hoc
cum eis fuerit auctoritate Apostolica specialiter dif-
pensatum. Si quis autem eorum alias, quàm ut
præferatur, recipiatur, professio similiter nulla sit,
atque ipsi Habitu privari, & à Religione ejici de-
beant, eorumque receptores, excommunicatione,
ut supra; innodati ipso facto existant.

Criminosi
vel suspecti,
aut ari alie-
no, vel re-
lendis ratio-
nibus obno-
ti ad Reli-
gionem ne
admittantur.

§. 4. Cæterum, quoniam sæpe se vitia inge-
runt, & se esse virtutes mentiuntur, ac multi de-
coctores post dilapidatam rem familiarem, & con-
tractam ingentem vim ari alieni, aut interver-
sam alienam pecuniam eorum fidei creditam, ut
ratiocinia effugiant, alii post furta, latrocinia, rap-
inas, homicidia, aliæ facinorosa patrata, etiam
banniti aut damnati, seu qui meritis pro suis de-
lictis penas metunt, non pia intentione, sed ad
evitandam legum & judiciorum severitatem, qua
tuto in sæculo vivere non possunt, tunc demum
querunt à Religione auxilium, quando aliunde il-
lud non sperant, unde sub Habitu & nomine Re-
ligiosorum, animum Religionis inimicum, & in-
veterata vitia retinent, neque alios, qui sancta Vo-
catione vocati sunt, patiuntur tranquille divinis
Obsequiis insilire, in gravem Dei offensam, Re-
ligionis opprobrium & scandalum plurimorum,
ut his quoque superflugi & impunitatis spes om-
nis tollatur, auctoritate Apostolica & tenore præ-
sentium, etiam perpetuò statumur & ordinamus,
juvenes, aut viros adultos, majores sexdecim an-
nis, non aliter in aliquam Religionem recipi pos-
se, nec debere, nisi prius de eorum parentibus,
patriâ, deque antea vita & moribus diligenter
inquiratur, & ex accurata informatione, & fide
digna relatione, compertum & exploratum sit, eos
neque aliquorum criminum, qualia sunt homici-
dia, furta, latrocinia, vel alia similia, aut gra-
viora, reos vel suspectos existere, ut propterea
damnati sint, aut ne damnetur, formident, neque
ingente ari alieno supra vires facultatum suarum
gravatos, vel reddendis ratiociniis ita obnoxios,
ut ex hujusmodi causa, sit, vel molestia eis jam
illata, vel timendum fir, ne inferatur. Nisi de-
nique constet, ipsos non humana aliqua ratione,
sed tantum devotionis & pietatis fervore vitam Re-
ligiosam sponte; & ex animo elegisse; deque his
omnibus, in Generali, vel Provinciali Capitulo,
plena & indubitata fide facta, tam Superioris Ge-
neralis, seu Provincialis, quàm Definitorum consensu
approbati, & ad Habitu Regularem admissi fue-
rint. Omnes autem, & quoscunque, ut di-
ctum est, criminosos, vel suspectos, aut ari alie-
no, ut etiam diximus, vel rationibus reddendis
obligatos, ad Religionem perpetuò inhabiles
declaramus.

Receptio
inter facta
annatur.
Hoc declara-
tur mox in-
a.

§. 5. Et si qui eorum contra præsentem nostram
Constitutionem temerè admittentur, tam susceptio-
nem Habitus, quàm Professionem, & inde secu-
ta, ex nunc prout ex tunc pari modo irritamus,
& annullamus, viribusque & effectu carere decer-
nimus ac jubemus eos, qui sic de de facto recepti
erunt, Habitu spoliari, & à Religione expelli; &
nihilominus si expulsi non fuerint, volumus, & pa-
riter declaramus, habitus suspensionem, & pro-
fessionem penitus nullam esse & censi, & pro-
pterea attemptata nullitate habitus & professionis, li-
cere quibuscunque Judicibus & Curis etiam sa-
cularibus, ad quos seu quas spectat, contra eos,
ut prius juris & facti remediis opportunis, ex of-
ficio, vel ad cuiusculque instantiam, vel quere-
lam civiliter, criminaliter, aut mixtum procede-
re. Quare volumus, ut cuiusque juvenis, aut
viri majoris sexdecim annis, à sæculo ad Religi-
onem transientes, approbatio, admissio, & re-
ceptio, in Generali vel Provinciali Capitulo, ut
supra ordinatum est, pro tempore fiant, necnon

Religiosi sic recepti nomen & cognomen, quibus
in Seculo utebantur, & patria, in actis ipsius Cap-
ituli describantur & notentur.

§. 6. Et insuper quoscunque Religiosos, eor-
umque Superiores, qui aliquas personas, ut di-
ctum est, inhabiles post hanc Constitutionem pu-
blicatam receperint, voce activa & passiva, necnon
officiis, gradibus, honoribus, & dignitatibus
quibuscunque per eos obtentis, eo ipso in perpé-
tuum privamus, & tam illis privatos, quàm ad
illa quæcunque in posterum obtinenda perpetuò in-
habiles, eorumque incapaces decernimus & de-
claramus.

Recipien-
bus penas
imponuntur.

§. 7. Sed & quia interdum Satanas in Ange-
lum lucis se callide transfiguratur, ac perdit quidam
& facinorosi homines, quod sæpe vidimus & ex-
perti sumus, instigante antiquo pacis & Religionis
Hoste, non veriti sunt temerario ausu Habitu
Religiosorum assumere, eâ mente, ut veluti sub
ovina pelle, lupi rapaces, per dolum & insidias
Christifideles incautos, & nihil mali à Religiosis
suspicientes, opprimerent, sive, ut post scelera
perpetrata, viam faciliorem ad fugam haberent,
live, ut banniti Curie secularis, quæ eos prope-
modum interceptos persequebatur, manus effuge-
rent, & contingit aliquando ipsos Sicarios Religio-
sis vestibus indutos, à veris Religiosis hac fraude
deceptis, intrâ Domos Regulares hospitio receptos
fuisse. Prohibemus eodem modo atque interdici-
mus, ne quis Regularis ex una Provincia ad aliam
Provinciam sui Ordinis transiendo, etiam in iti-
nere, intrâ aliquod Monasterium, vel locum alte-
rius Provincie ad habitandum, vel tanquàm hos-
pes recipi, aut ad modicum tempus divertere pos-
sit, nisi à Superiore ejus loci, ubi residet, ex-
pressam licentiam discedendi in scriptis obtentam,
seu literas obedientiæ vel commendatitias secum
deferret, atque exhibeat, vel nisi ita cognitus sit
illis, ad quos diverterit, ut de ejus persona, nul-
lus omnino dubitationi aut suspicioni locus relin-
quatur. Ideoque præcipimus universis & singulis
Locorum Ordinariis, eorumque Vicariis in Spiri-
tualibus Generalibus, ut per suos Officiales, Mi-
nistros, vel Executores curent, ab omnibus per-
sonis Regulari habitu indutis, quas suas Civitates,
vel Dioeceses iter facere, vel transire, & ad que-
cunque Hospitia, vel diversoria se recipere conti-
gerit, diligenter perquiri, num hujusmodi literas
obedientiæ, seu commendatitias secum deferant.
Quod si eos dictas literas non habere, vel igno-
tos esse deprehenderint, possint contra ipsos, etiam
tanquàm dictorum criminum suspectos procedere,
& tandiù illos sub custodia detinere, donec certa
de eisdem notitia habeatur. Et tamén volumus,
ut ii, qui etiam pietatis vel hospitalitatis prætex-
tu Regulares alterius Provincie ignotos, aut sine
licentia, vel literis, ut supra, receperint, dictas
penas privationis vocis activæ & passivæ, necnon
officiorum, graduum, honorum & dignitatum
obtentorum, atque inhabilitatis perpetuè pariter
incurrant.

Regulares
de una Pro-
vincia ad
aliam sui
Ordinis
transientes
Superiorum
licentiam se-
cum deferre
debeant alio-
quin hospiti-
um recipi
nequeant, &
à locorum
ordinariis
carcerentur.
Hoc mox in-
fra declara-
tur.

§. 8. Decernentes sic in præmissis omnibus per
quoscunque judicari debere, necnon irritum & ina-
ne, si secus à quoquam quavis auctoritate, scien-
ter vel ignoranter, contigerit attentari.

Decretum
irritans.

§. 9. Quocirca Venerabilibus Fratribus nostris,
Sacre Romanæ Ecclesie Cardinalibus dictorum Or-
dinum, Congregationum, Hospitalium, & Lo-
corum Regularium apud nos, & Sedem Apostoli-
cam Protectores nunc & pro tempore existentibus,
ac locorum Ordinariis præfatis, per Apostoli-
ca scripta mandamus, ut eorum uniuscuique per
se vel alium, seu alios, Cardinales quidem in suæ
Protectionis, Ordinarii verò in suarum Civitatum,

Executorum
deputatio.

Derogatio
contrario-
rum.Iussio publi-
candi, & fi-
des trans-
umptorum.Sanctio poe-
nalis.Dat. P. An. 3.
die 26. No-
vemb.

Publicatio.

Edita An. D.
1588.

Exordium.

diocesum, & districtum regularibus locis, cu-
rent presentes literas publicari, easque perpetuo
firmiter & inviolate observari; inobedientes, cen-
suras & penas predictas incurrisse declarando, il-
lasque etiam iteratis vicibus aggravando; in voca-
to etiam si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 10. Non obstantibus constitutionibus & or-
dinationibus Apostolicis, necnon quorumcumque
Ordinum, Congregationum, Hospitalium & Re-
ligionum, juramento, confirmatione Apostolica
vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & con-
suetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & li-
teris Apostolicis quorumcumque tenorem existant
per quos presentibus non expressa, vel totaliter
non inserta, effectus presentis constitutionis im-
pediri valeat quomodolibet, vel differri, & de
quibus quorumque totis tenoribus habenda sit in
his literis mentio specialis. Quae omnia quatenus
eidem constitutioni in aliquo adversentur, illorum
tenores pro expressis habentes, perpetuo tollimus,
annullamus & abrogamus, ac nolumus cuiquam
suffragari; aut si Superioribus & Personis dicto-
rum Ordinum, Congregationum, Hospitalium, com-
muniter vel divisim ab Apostolica sit Sede indul-
tum, quod interdicti, suspendi, vel excommuni-
cari non possint per literas Apostolicas non facien-
tes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum
de indulto huiusmodi mentionem.

§. 11. Mandamus verò eisdem presentes ad
valvas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe,
& Cancellariæ Apostolicæ, de more publicari, &
affigi, illarumque exemplis etiam impressis, Prae-
lati Ecclesiastici sigillo, & Notarii publici subscri-
ptione munitis, eandem fidem in iudicio & ex-
tra illud haberi quae eisdem originalibus haberetur,
si essent exhibitæ vel ostensæ.

§. 12. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc
paginam nostrorum interdictorum, prohibitionum,
statutorum, ordinationum, declarationum, decre-
torum, voluntatum, permissionum, iritationum,
annullationis, iussionis, privationis, præcepti,
sublationis, abrogationis, & mandatorum infringere,
vel ei ausu temerario contraire. Si quis au-
tem hoc attentare præsumpserit, indignationem
Omnipotentis Dei ac beatorum Petri & Pauli Apo-
stolorum ejus, se noverit incursum.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incar-
nationis Dominicæ, millesimo quingentesimo
octuagesimo septimo, sexto Calendis Decemb. Pon-
tificatus nostri Anno tertio.

Anno à Nativitate Domini 1587. Indiſtione 15. die
verò Veneris 27. Novembris, Pontificatus Sanctissimi
in Christo Patris, & D. N. D. Sixti, divina Pro-
videntiâ Papæ V. Anno ejus tertio, retroſcriptæ literæ
Apoſtolice, affixæ, lectæ, & publicatæ fuerunt in valvis
ſeu portis Sancti Joannis Lateranenſis, & Sancti Petri
Principis Apoſtolorum de Urbe, necnon Cancellariæ Apo-
ſtolice, & aciei Campi Floræ, & per aliquod temporis
ſpatium dimiſſe, per nos Joannem Baptiſtam Bagni, &
Octavianum Taglietum Sanctiſſ. D. Noſtri Papæ Curſ.

Alex. Parabiacus Mag. Curſ.

Sequuntur declarationes d. Constitutionis.

SIXTUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

AD Romanum spectat Pontificem sacrorum Ca-
nonum conditorem, quæ per eum sancita sunt
ita suæ declarationis arbitrio dilucida reddere, ut
indè nemini possit dubitationis scrupulus exoriri,
praesertim verò salubriter consulere, ut cum de

Regularibus agitur, qui se omnino Dei Omnipotentis obsequio manciparunt, tollantur ea omnia, quæ eorum sanctum Christo piè inserviendi institutum quoquomodo valeant perturbare.

§. 1. Sanè post editam nostram Constitutionem, quæ incipit: Cum de omnibus Ecclesiasticis Ordinibus &c. Super modo & forma recipiendi & admittendi eos, qui sub Religionis jugo, Altissimo famulari desiderant, cum variae sint exorta dubitationes & quaestiones, eaque postea ad Audientiam nostram perlatæ.

§. 2. Nos ad tollendam omnem ambiguitatis occasionem, habita cum Venerabilibus Fratribus nostris Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalibus Congregationis super Regularium negotiis & consulta-
tionibus per nos institutæ, matura deliberatione de illorum consilio & assensu præsentem nostram perpetuò valituram declarationis constitutionem duximus promulgandam.

§. 3. Cum itaque inter alia dubitetur, nùm primo dicta nostra Constitutio, ubi de illegitimè genitis loquitur, comprehendat etiam eos qui postea per subsequens matrimonium fuerint legiti-
mati. Nos inhærentes sacrorum Canonum disposi-
tioni, auctoritate Apostolica tenore præsentium de-
claramus illegitimè natos ex iis parentibus, inter quos tempore quo ipsi geniti sunt, matrimonium ritè consiliter poterat, secuto postea matrimonio legitimis effectos, sub dicta constitutione minime comprehendì, sed eos tam quoad emittendam Professionem, quam quoad consequendos gradus, honores, & dignitates sui Ordinis, æquo jure cum illis, qui ex matrimonio legitimo & constanti nati sunt, censendos esse.

§. 4. Illegitimos verò etiam ex soluto & fo-
luta, qui antequam nostra Constitutio emanaret, professi, vigore seu prætextu privilegiorum, aut indultorum Apostolicorum cuius Ordini, Reli-
gioni, Monasterio, aut Congregationi, eorumve Superioribus, in genere vel in specie concessorum, eo ipso per ingressum Religionis, vel per eisdem Superiores, sive alios quolibet etiam Sedis Apo-
stolicæ de latere Legatos, aut alios Officiales vel Ministros quavis præeminentia vel auctoritate etiam Apostolica fungentes, aut facultate suffultos legiti-
mati, aut ad gradus, honores, & dignitates habilitati seu reintegrati, & illis aliis perfuncti sunt, volumus posthac non obstantibus quibuscum-
que, tam antiquis privilegiis, aut literis Aposto-
licis, quam aliis indultis seu declarationibus, etiam si illa per nos post dictam Constitutionem novissimè edita fuisset asserantur, honores, gradus, aut di-
gnitates huiusmodi obtinere non posse, ac dispensa-
tiones & legitimaciones quasque eis nullatenus suffragari, nisi specialiter & nominatim cum eorum singulis fuerit super natalium defectu, ad honores, gradus, & dignitates obtinendas, antè vel post ingressum Religionis post Romanum Pon-
tificem immediatè, vel de ejus speciali mandato dispensatum, deque dispensatione seu mandato per literas Apostolicas, seu in forma Brevis, vel saltem per parentes literas Cardinalis Protectoris de ipsius Rom. Pont. voluntate fidem facientes, legiti-
mè consiliterit.

§. 5. Eos pariter, qui tempore publicationis nostræ constitutionis in suis Religionibus sine huiusmodi speciali Romani Pont. dispensatione, officia, honores, & dignitates habebant ad vitam, eo ipso ab illis amotos & absolutos harum serie declaramus. Ad tempus autem illa obtinentes per-
mittimus in sua administratione usque ad finem sui temporis conservari; ita tamen ut in posterum nec tempus ordinarium eis prorogari, aut extendi, neque ipsi ad alias non modo similes, verum etiam neque ad inferiores, aut altiores &

Dubia exor-
ta sunt super
d. Conf.

Ideb hic
Pont. subse-
quentes pro-
mit declara-
tiones.

Prima decla-
ratio quoad
illegitimè
natos ex pa-
rentibus, in-
ter quos
tunc matri-
monium
consiliter
poterat, &
postea sub-
secutum sit.

Secundo de-
claratio quo-
ad illegiti-
mè natos ex
soluto & fo-
luta, qui
antè editam
Constitutio-
nem prædi-
ctam quavis
auctoritate
legitimari,
aut ad digni-
tates habili-
tati, & illis
perfuncti
sunt.

Ad hoc vide
Greg. XIV.
Bollam cit.
in rub.

Tertia de-
claratio
quoad non
dispensatos,
tempore
editæ con-
stitutionis
prædictæ.

maiores dignitates, honores, gradus, ascendere possint, perinde ac si id ipsum in præfata nostra constitutione ab initio expressum fuisset. Ne tamen huiusmodi Religiosi in liberalium artium, ac præsertim sacre Theologiæ studiis, & religiosis profectibus segniores fiant, atque eorumdem pia studia refrigescant, eos nosse volumus quod si ipsorum quilibet eximiâ doctrinâ, vitæque & morum sanctitate excellere reperietur, deque eorum probitate, & præclaris meritis Ordinum Protectores eam apud nos fidem fecerint, ut non immerito separari queat, eorum doctrinam & operam ipsi Ordini & sanctæ Dei Ecclesiæ usui & commodo futuram, tunc demum indulgentiam & benigritatem nostram facili experientur.

§. 6. Quoniam verò à multis quæsitum est sub nomine honorum, graduum, & dignitatum, à quibus illegitimi penitus excluduntur, quid potissimum sit intelligendum: Declaramus hac in re, de qua nunc agitur, appellatione dignitatum, honorum, graduum, debere intelligi Præpositus, Abbatias, Prioratus, Guardianatus, Custodiat, Provincialium, ac Generalium Superiorum officia, & alia his similia, cum honore & superioritate conjuncta. Ab officiis autem oneris, veluti Lectoris, Confessarii, studiorum, & sacre Theologiæ Magistri, Regentis, Predicatoris verbi Dei, & cæteris huiusmodi, imò etiam à voce activa, à sacris Ordinibus suscipiendis, ipso ùmque ministerio, ipsos illegitimos, dummodò ex sacrilegio vel incestu geniti non sint, nequaquam arcemus.

§. 7. Cùm verò in quibusdam Religionibus Capitula Provincialia, aut numquam, aut non quotannis, sed rarius celebrentur, quedam etiam Monasteria, aut domus huiusmodi in remotissimis regionibus, Hæreticorum aut Infidelium tyrannidi finitimis sita sint, ne ii, quos extrâ Capitula, ad habitum vel professionem regulares admitti prohibemus, tempus celebrandis Capitulis præfixum nimis diu expectare, aut ad ea cum maximo incommodo accedere cogantur, concedimus & indulgemus, ut in quolibet Provincia saltem duo, vel si commodè fieri poterit, tria aut plura monasteria seu domus regulares deputentur, quarum seu quorum Superiores infra annum saltem ad inquisitionem super novitiis faciendam, & ad ipsos Religiosos, juxta formam præfatæ constitutionis recipiendos, & ad alia quæ in ipsa constitutione continentur peragenda, insimul congregentur.

§. 8. Quod si paucitas, aut nimia distantia monasteriorum ne id quidem patiatur, saltem tribus ex antiquioribus Patribus unius Monasterii, aut domus ejus Provincie huiusmodi facultas & auctoritas per Capitulum generale, scilicet Monachorum, vel Provinciale Mendicantium, & reliquorum Regularium ejus Ordinis demandetur.

§. 9. Verùm in iis Monasteriis, domibus, & locis regularibus, quæ aut nondum in Congregationes redacta, aut aliàs nulli Provincie subiecta sunt, statutum ut trina Capitula Conventualia tribus distinctis cum intervallo saltem decem dierum vicibus celebrata, eandem de recipiendis Novitiis per trinas huiusmodi distinctas vices approbatis, habeant auctoritatem, quæ per nostram constitutionem Capitulis provincialibus est attributa.

§. 10. Neque verò si in generalibus vel provincialibus Capitulis aliqui vocales desint, nec si à definitorum consensu aliquis discrepaverit, idcirco recepto religioso retardari, impediri, aut impugnari debeat: sed satis esse volumus si vocalium & suffragiorum numerus legitimus, à jure, vel per consensumque Ordinis statuta præsentia intenerint.

§. 11. Et quod de Capitulo provinciali aut

generali dictum est, idem juris statuimus, siquæ Religiones, non Capitulorum, sed Congregationum, aut dietarum, vel alio quovis nomine uti reperiantur.

§. 12. Quod autem pertinet ad professionem, tam illegitimorum quàm eorum qui post sexdecim ætatis annum expletum regularem habitum susceperunt, quia tunc demum verè & propriè religiosi effici dicuntur, cùm professionem emittunt; Declaramus, eos qui antè prædictam nostram editam constitutionem habitum susceperint, & post ipsius promulgationem cupiunt profiteri, non alias ad professionem admittendos esse, quàm factâ inquisitione, & servatâ formâ in ipsa constitutione præscriptâ; & eorum, qui post dictam promulgationem etiam ignoranter non habitâ dictâ inquisitione, & non servatâ formâ ad professionem admitti fuerint, professionem nullius esse roboris & momenti. In oblati autem & conversis professionem emittentibus, satis erit si quoad mores, & statum personarum ipsa inquisitione fiat.

§. 13. Sed cùm eadem ratio vigeat in tacita professione emittenda, quæ militat in expressa, statuimus, quòd in quibuscvis Ordinibus & Religionibus, neque etiam tacita professio quorumcumque Religiosorum induci possit, nec inducta intelligatur, nisi in receptione constitutionis formâ servatâ fuerit.

§. 14. Si quis verò antè editam nostram constitutionem jam tacitè professus, expressè cupiat profiteri, vel si quis apostata ad suam Religionem redire voluerit, inquisitio & forma præscripta non erit necessaria, nisi vel de moribus, statu & qualitate personæ, vel de validitate ipsius tacitæ professionis dubitatio aliqua oriatur.

§. 15. In iis autem qui in locis à sua patria longissimè remotis degentes, vel quorum patria ab Hæreticis vel Infidelibus miserè oppressa detinetur, voluerint se divinis obsequiis sub regulari habitu dicare, ut in hoc quoque Sedis Apostolicæ benignitas elucescat, quæ cunctos mortales, præsertim verò externos ex longinquis regionibus ad eam assidue confluentes materno sinu libenter amplectitur, sancimus externos huiusmodi, & advenas, quamvis non liquidò constet de iis omnibus, quæ in constitutione nostra requiruntur, tamen si diligentia adhibita nihil appareat quod eos impediât, habiles reputandos esse.

§. 16. Quòd si quis antè vel post constitutionem ipsam professus ad sacros ordines, vel ad honores, gradus, & dignitates promotus existat, & postmodum in eo natalium defectum, aut criminum in dicta constitutione nostra expressorum, notam, quæ prius ignorabantur detegi contigerit, decernimus eum statim post huiusmodi defectus noticiam habitam, non aliàs quàm juxta formam ipsius constitutionis, ad honores, gradus, & dignitates, aut ad executionem sacrorum Ordinum admitti debere.

§. 17. Contrâ criminosos verò, quorum professio eadem constitutione nostra irrita declaratur, ac propterea iudicibus & curiis secularibus procedendi facultas conceditur, tunc demum id locum habere volumus, & non aliter, cùm actis publicis constiterit ipsos Judices & Curiam seculari antè susceptionem habitus de ipso crimine adversus eos accusationem suscepisse, vel inquisitionem instituisse.

§. 18. Cæterùm, quæ à nobis circa Religiosos viros in præfata constitutione sancita sunt, ea nequaquam volumus ad Moniales nunc extendi.

§. 19. Postremò dùm interdiximus, ne quis regularis alterius Provincie intrâ aliquod Monasterium, domum, vel locum alienæ Provincie, etiam tamquam hospes, & ad modicum tempus recipi

bum capituli.

1. Declaratio circa admittendos ad professionem. Tu vide Bullam Clementis VIII. c. p. in rubr.

2. Declaratio circa nullitatem tacitæ professionis.

3. Declaratio circa validitatem expressæ professionis, & Apostatarum reductus ad religionem.

Declaratio circa advenas sub regulari habitu recipiendi, qui commorantur in regionibus à sua patria remotis, aut ab infidelibus oppressis.

Declaratio circa eos quos post promotionem ad gradus natalium defectum aut criminum notam pati constiterit.

Declaratio quomodo d. constitutio quoad criminosos procedat.

1. Declaratio circa receptionem hospitum alterius vel ejusdem Provincie.

2. Declaratio circa eisdem.

3. Declaratio circa receptionem precepti octava & advenum religiosorum in Urbe.

Confirmatio aliorum in dicta constitutione contentorum.

Revocatio quarumcumque constitutionum, de recipi. Novis extra Capitula.

Vide Bullas cit. in rub.

Decretum irritans.

Clausula derogatoria.

onit, nisi à Superiore loci, ubi residebat, & à quo discessit licentiam expressam in scriptis exhibuerit, vel nisi satis cognitus sit, id observari volumus, non solum in religiosis itinerantibus de una in aliam Provinciam, sed in iis quoque qui proficiuntur de uno in aliud ejusdem Provincie Monasterium, tam sui quam alterius Ordinis.

§. 10. Quod si dicerent se ad Apostolicam Sedem confugere ob gravamina à suis Superioribus sibi illata, & ideo ab ipsis Superioribus licentiam, & literas obtinere non potuisse, non propterea, ullo modo recipi valeant, nisi fide dignorum testimonio de petita ab eis licentia, & per suos Superiores denegata constiterit.

§. 21. In Alma verò Urbe nostra Religiosi advenæ & peregrini de gravaminibus sibi illatis conquirentes nullibi sine hujusmodi literis, aut licentia recipiendi erunt, nisi prius ad Congregationem dictorum Cardinalium super negotiis Regularium à nobis deputatorum, vel ad suos Protectores remittantur, ubi ipsis auditis pro rerum & personarum qualitate quid agendum sit statuatur.

§. 22. Reliqua autem in priori nostra constitutione contenta, quæ in præsentibus literis non declarantur, volumus perpetuo firma & valida & in suo robore permanere, ac ab omnibus ad quos spectat invariabiliter observari.

§. 23. Et si quid à nobis alicui Ordini ac Religioni præter aut contra præfatam constitutionis formam, post illius editionem circa recipiendos extra capitula Novitios, aut alias indultum aut concessum fuit, id omne ac desuper concessas literas prorsus revocamus & annullamus, ac ad terminos præsentis constitutionis reducimus, & aliis nemini volumus suffragari.

§. 24. Decernentes sic in præmissis universis & singulis per quoscumque Judices ordinarios & delegatos, etiam causarum sacri Palatii Apostolici Auditores, ac Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate, in quavis causa & instantia ubique judicari & definiri debere; necnon irritum & inane si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§. 25. Non obstantibus præfata, & aliis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon quorumcumque Ordinum, tam Mendicantium quam non Mendicantium Religionum ac Monasteriorum, etiam eorum, quæ ordinum capita dicuntur, Prioratum, domorum & quorumvis Regularium locorum, juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, consuetudinibus, stabilimentis, usibus, & naturis quancumque tempore observatis, necnon foundationibus eorumdem; aliis quoque privilegiis, indultis, exemptionibus, & literis Apostolicis illis omnibus ipsorumque Superioribus generalibus vel Provincialibus, Conventibus, Capitulis, Fratribus & personis per quoscumque Romanos Pontifices Prædecessores nostros, ac nosmetipsos etiam post primò dictæ nostræ constitutionis publicationem & præfatam Sedem, etiam per modum statuti perpetui, ac in initio & stipulati contractus, seu quasi, necnon motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, ac etiam consideratione, intuitu, contemplatione, vel ad instantiam Imperatoris, Regum, Ducum, aliorumque Principum, Sanctæque Romanæ Ecclesiæ Cardinalium, ac de eorum consilio & assensu, etiam consistorialiter habito quomodocumque ac sub quibuscumque tenoribus & formis, necnon cum quibuscumque restrictivis, restitutivis, præservativis, annullativis, derogatoriis derogatoriis, aliisque efficaciori-

bus, efficacissimis & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decretis quomodocumque concessis, confirmatis, & etiam iteratis vicibus extensis & moderatis, etiam si in eis, ac statutis, stabilimentis, & foundationibus præfatis caveatur expresse, quod numquam eorum privilegia & indulta, revocata vel moderata aut immutata intelligantur, nec illis in toto vel in parte derogatum censetur per quascumque literas etiam derogatarum derogatorias, ac alias fortiores & efficaciores clausulas in se continentes, nisi illorum ac etiam certarum specialium literarum Apostolicarum inde concessarum verè, non autem per clausulas generales vel speciales idem importantes inserto tenere, ac de simili Cardinalium consilio, quodque semper in hujusmodi derogationibus & aliis dispositionibus censetur apposita clausula, quod tunc demum nec aliter, nec alio modo effectum fortiantur, cum Superiorum, Capitulorum, & Conventuum præfatorum ad id accedat assensus, quodque derogationes & aliæ dispositiones hujusmodi aliter effectum non habeant, nisi consistorialiter factæ, & per trias distinctas literas eundem tenorem continentes tribus distinctis vicibus Superioribus, Capitulis & conventibus præfatis fuerint intimatæ, eorumque pariter ad id expressus accedat assensus, aliter verò factæ viribus, & effectum omnino careant, ac Superiores, Capitula, Conventus & aliæ personæ præfate ad parendum illis & decretis desuper processibus, eorumque executoribus & subexecutoribus, ac ipsorum mandatis & monitionibus minime teneantur, sed literarum hujusmodi executionem omnino impedire, nec ratione resistentiæ censuris Ecclesiasticis, etiam per ipsos executores vel subexecutores latis innodari possint. Quibus omnibus etiam si aliis de eis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa & individua, ac de verbo ad verbum non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi, ac de verbo ad verbum inferrentur, præsentibus pro sufficienter expressis & insertis habentes, harum serie specialiter & expresse derogamus, & quatenus effectum præsentium quoquo modo impedire vel retardare, vel illis obesse possent, ea omnino tollimus & abrogamus; cæterisque contrariis quibuscumque,

§. 26. Ut autem præfates literæ omnibus plenius innotescant, mandamus illas ad valvas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, & in Cancellaria Apostolica, necnon acie Campi Floræ publicari, earumque exempla de more affigi; Volumusque & decernimus ut ipsarum præsentium exempla etiam expressa, manique Notarii publici & sigillo Prælati Ecclesiastici, aut illius curiæ obsignata, eandem ubique locorum fidem faciant, quam ipsæ præfates facerent si essent exhibitæ vel ostensæ.

§. 27. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam, nostrorum &c. Si quis autem hoc attentare præsumperit indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Datum Romæ in Monte Quirinali, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo octuagesimo octavo, duodecimo Calendas Novembris, Pontificatus nostri Anno quarto.

Anno à Nativitate Domini 1588. Indictione 15. die verò 7. mensis Nov., tempore Pontif. Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. D. Sixti divini Providentiæ Papa V. An. 4. retroscriptæ literæ Apostolicæ affixæ & publicatæ fuerunt in valvis Basilicarum S. Joannis Lateranensis, & Sancti Petri Principis Apostolorum de Urbe, necnon Cancellariæ Apostolicæ, & acie Campi

Forma publicæ hujus constitutionis.

Sanctio penalis.

D. P. An. 4. 21. Octob.

Publicatio.

*Flora, ut moris est, per nos Joannem Baptistam Ba-
gni, & Ottavium Taglietum S. D. N. Papæ Curs.*

Alex. Parabiacus Mag. Curs.

LXXII.

Reformatio Curie Almæ Urbis Gubernatoris quo-
ad causas civiles.

*Jurisdictionem & facultates hujus Gubernatoris, vi-
de supra in const. 8. Leon. X. Etsi pro. fol. 548.
ubi eas plenè tibi indicavi. Et attende etiam Re-
formationem Pauli V. infra in sua const. 71. Uni-
versi. §. 3. in Tomo 3.*

Quòd autem Indulta concessa diversis Judicibus
cognoscendi causas criminales privatè quoad
altos, non intelligantur privatè quoad Guber-
natorem Urbis, sed cumulative cum eo, voluit
Sanctiss. D. N. Urban. VIII. constituit. 93. Decet.
infra in Tomo 4.

SIXTUS PAPA V.

Motu proprio, &c.

Edicta An. D.
1587.

Exordium.

IN sublimi Beati Petri Sede, meritis licet im-
paribus, superna dispositione constituti, agri-
que Dominici curæ præpositi, id inter alia no-
stri muneris esse cognoscimus, ut singula circà
omnes gradus & hominum conditiones, deor-
mata ac depravata, providentiæ nostræ ministre-
rio corrigamus & reformemus, præsertim in
Tribunalibus Almæ Urbis nostræ, in quibus om-
nis juris ratio exigit, ut Judices primùm stu-
diosâ vigilantia, manuum munditia, & ordinata
juris scientia; sint aliis præstantiores, Notarii
quoque ad conscribend. acta deputati, Mandat-
tariique & alii Ministri, vitæ honestate, ope-
ra sufficientia, moderata mercedis exactione,
compassivâque erga pauperes benignitate, sint
admodum ornati. Litigantèque demùm, & eo-
rum Procuratores, ultimum Omnipotentis Dei
judicium præcogitantes, à perniciosis subtilitati-
bus, subterfugiis, inquisitionibus, & extor-
sionibus se abstinant, ut deformibus omnibus
sublatis, honesta sint omnia, & prava transeant
in directâ, ac justâ & iustitiâ salubriter, & æqua
lance, ac minoribus quàm fieri potest dispen-
dis, unicuique ministrare.

§. 1. Nos tamen, quia humanarum virium fi-
nes excedere non valemus, tantâque est Apostoli-
ci Officii negotiorum moles, ut circà singula,
per nos ipsos, ejusdem Officii debitum exsolvere
non possimus, plurimum in Domino latati sum-
mus, quòd Venerabilis Frater noster Marianus
P. Benedictus Episcopus Marturanensis & dicte
Urbis nostræ, ejusque districti generalis Gu-
bernator & Vicecamerarius à nobis deputatus,
huic nostræ sollicitudini respondens, Deique ti-
more, & virtutis ac iustitiæ zelo ductus, di-
versos abusus, quos in suo Tribunali irrepressi-
le cognovit, tollere, & aliis quæ indè irreperire
potuissent, occurrere cupiens, sequentem suæ
Curie Reformationem, circà causas civiles edi-
dit, nobisque porrexit.

§. 2. Et ideo cupientes Reformationem hujus-
modi accuratè, & debita circumspeditione ab-
solvî, dilecto filio nostro Hieronymo Sanctæ MA-
RIÆ in Cosmedin. Diacono Cardinali Matthæo
nuncupato, viro vitæ integritate, literarum scien-
tia, longæque rerum, & Romanæ Curie expe-
rientia insigni, dedimus in mandatis, ut eandem
Reformationem diligenter examinaret, suppleret,
& corrigeret; & ille maturè omnibus visis, sigilla-
timque examinatis, nonnulla explanavit, nonnul-
lâque etiam emendavit & addidit, extremamque
dicte Reformationi manum adhibuit, nobisque ex-
hibuit, ejusque tenor talis est, videlicet.

Sequitur Reformatio de qua in Rubrica.

§. 3. **D**ictus Locumtenens civilis Gubernato-
ris Almæ Urbis pro tempore existen-
tis, unus dumtaxat in futurum sit, legum scien-
tia, vitæque probitate, & Romanæ Curie expe-
rientia insignis, & ex loco qui ab Urbe ditet
per quadraginta milliaria oriundus. Qui omnes
causas civiles, tam commissarias juxta formam
commissionum, quàm ordinarias, vel alias in
ipso Tribunali introducendas, juxta suas facul-
tates cognoscat, terminet & deciderat.

§. 4. Audientiam terminorum, pro quibus li-
tigantes pro certa hora citati non sint, in Sala
Palatii Gubernatoris, circà horam vicesimam,
pro Tribunali sedendo, teneat.

§. 5. Jus reddat singulis diebus, exceptis fe-
stivis de præcepto, aut consuetudine Almæ Ur-
bis, necnon diebus Coronati Pontificis viven-
tis, ingressus Gubernatoris, Jovis, Lunæ, &
Martis immediatè antè cineres, ac ipsius diei
Cinerum, totius hebdomadæ sanctæ, Comme-
morationisque Defunctorum, & vigiliæ Nativita-
tis Domini.

§. 6. Significationes per viam recursus con-
cedendas, semper concedat cum clausula, Non
tamen in contumaciam.

§. 7. In causis ordinariis, vel via ordinaria
introducendis, etiam si ad probationem produ-
cantur cedulæ, jura & instrumenta obligatio-
num Cameralium, non relaxet mandata execu-
tiva (si respectu summæ, vel valoris rei de qua
agitur dicte causæ sint appellabiles) nisi elapsis
decem diebus datis ad appellandum, & servatis
solitis terminis ad docendum de legitima appel-
latione, & ejus legitima prosecutione, & con-
finito sibi de re judicata.

§. 8. Suspectus post litem contestatam, vel
pro contestata habitam, allegari non possit, ni-
si à principalibusmet vel eorum procuratoribus
ad id speciale mandatum habentibus, & ex cer-
ta causa per eos in actis specificata & jurata, à
Gubernatore pro legitima approbatur.

§. 9. Ab ejus sententiis definitivis appelletur
ad Sanctissimum in causis appellabilibus; in aliis
verò non appellabilibus, & in quibus de jure re-
curfus datur, recurratur ad Gubernatorem qui
causas hujusmodi recursus per seipsum, vel alium
ab eo deputandum juxta suas facultates expedit.

§. 10. Qui deputandus tam in ipsis causis re-
curfus, quàm in illis in quibus in locum D. Lo-
cumententis, uti suspecti recusati, à Guberna-
tore deputabitur; & in causis quoque commiss-
sariis, in quibus ex rescripto Signaturæ à Gu-
bernatore similiter deputabitur, ea dumtaxat
emolumenta recipiat, quæ, ut mox dicetur,
D. Locumtenens recipere poterit, & nihil peni-
tùs ultrà, sub pœnis ei indicis, Recursus ut su-
prà ad Gubernatorem à Locumtenentis decre-
tis, & sententiis petendi, infra decem dies
dumtaxat peti debeant; & tunc executionem
non retardent, usquequo Gubernator hujusmo-
di recursus non admiserit.

§. 11. Sportulas D. Locumtenens non reci-
piat, nisi in illis causis commissariis tantùm,
quæ auctoritate ordinaria, à principio ab eo
cognosci non potuissent; in quibus circà quan-
tatem fervet taxam felcitis recordaris Pii Papæ
Quarti. In cæteris verò causis quibuscumque
sportulas nullo modo accipiat, etiam spontè
dantibus, sed earum loco ultrà commodam ha-
bitationem, quàm in dicto Palatio, pro se suis-
que servientibus habere debeat, & ultra sancta
auri in autro quinque, à quolibet ex duobus
Notariis causarum civilium hujus Curie, ipsi tan-
tùm D. Locumtenenti quolibet mense, in ejus pro-
prio solvenda, percipere possit julium unum pro
singulis infra scriptis expeditionibus, videlicet. Pro

Reformatio
super. Lo-
cumenten-
tis causa-
rum civilium
qualitatibus.

Audientie
hora, & loco.

Diebus fe-
riatis.

Significatio-
nibus vigore
recursus.

Causis ordi-
nariis.

Suspectis de
fuga.

Appellatione
& recursu.

Judice depu-
tato à Guber-
natore.

Sportulis ha-
bitatione, sa-
lario, & emo-
lumentis.

Marianus P.
Benedictus
Urbis Guber-
nator hanc
suæ Curie
Reformatio-
nem edidit.

Card. Mat-
thæus cum
de mandato
Papæ exami-
navit & ab-
solvit.

	<p>quolibet mandato executivo, non tamen in contumaciam. Pro quolibet arresto in carceribus, Mandato de excarcerando, Significatione dotali, aut vigore termini, aut in vim litis pendencie, aut litis finitæ, aut stante deposito, vel negatione, aut data cautione de stando juri & judicatum solvendo concessa. Et etiam pro qualibet citatione vel inhibitione, vigore commissionis, aut extrâ Curiam decreta. Dummodò in quolibet ipsorum casuum agatur de re vel summa scutatorum auri septem, qui constituunt julios septuaginta septem.</p> <p>§. 12. Alioquin prædictus D. Judex penas in Pii Papæ Quarti constitutione, de reformatione Tribunalium contentas, incurrat.</p> <p>§. 13. Notarii teneant intus, vel juxta dictum Palatium, eorum officia separata, & in locis ita distantibus, ut colligantium tumultus nullum afferre possit impedimentum.</p> <p>§. 14. In causis tribunalis, neque officio Procuratoris, vel Sollicitatoris, fungantur, neque alio quovis modo se intromittant.</p> <p>§. 15. In eorum mercedibus recipiendis servent omnino taxam Pii Papæ Quarti, quia in ea omisus est casus examinis testium super articulis abique interrogatoriis, ideò tali casu Notarii recipiant pro hujusmodi examine cujuslibet testis, Bononensis octo usque ad scutata viginti, & Bononensis quindecim usque ad quancumque summam, & non ultra.</p> <p>§. 16. Citationes, & alias Mandatariorum & Cursum relationes, nullatenus in actis apponant, nisi Cursores & Mandatarii eas in cartulis octavæ partis foliis prius subscriperint, & supra subscriptiones nomen Notarii causæ appositum fuerit.</p> <p>Citationes & alios actus pro aliquo, vel contrâ aliquem non recipiant, nisi tam actoris quam rei nomen cum cognomine, aut exercitii, habitationisque designatione specificè in eis exprimatur.</p> <p>Citationes ad videndum mandari consignari pignora, non recipiant, nisi appositum sit, etiam ad videndum mandari subhaftari.</p> <p>§. 17. Manualia citationum, & manualia protestationum, separatim & distinctè teneant.</p> <p>§. 18. Expeditionum libros duos habeant, in quorum uno distinctè & ordinatim adnotare debeant omnes Significationes per viam recursus concedendas, cum expressione nominis colligantium & Curiarum, à quibus Dominus Locumtenens recursus, juxta suas facultates conceder, ac etiam summæ vel valoris rei de qua agitur; necnon & omnia sequestra & monitoria, ex quavis causa decernenda. In altero autem adnotare debeant omnia mandata executiva, non tamen in contumaciam; Et omnia arresta, Mandata de excarcerando, Significationes dotales, Aut vigore termini, Aut in vim litis pendencie, Aut litis finitæ, Aut stante deposito, Vel negatione, Aut data cautione de stando juri, & judicatum solvendo concessas, Et omnes citationes, vel inhibitiones vigore commissionis, Aut extrâ Curiam decretas; dummodò in quolibet ipsorum casuum agatur de re, vel summa scutatorum auri septem.</p> <p>§. 19. Listas expensarum non conficiant, neque propterea mercedem aliquam, etiam à sponte dantibus recipiant, nisi prævio D. Locumtenentis decreto & ejusdem Subscriptione in calce citationum, ad videndum taxari expensas, apponenda.</p> <p>§. 20. Examen testium scribere possint duo tantum Notarii pro quolibet officio, quos Gubernator pro tempore approbaverit, & non alii.</p> <p>§. 21. Decreta aliqua ex seipsis Notarii non conficiant, sed citationes omnes D. Locumtenenti, in Audientia publicè legant, ab eoque decreta sumant, & deinde in actis apponant.</p>	
Locumtenentis contravenientis poenis.	<p>§. 22. Mandata suspicionis fugæ scribere nequeant, nisi prius D. Locumtenenti jura producta, vel probata ostenderint, illæque postea mandata decreverit.</p> <p>§. 23. Juramenta suspicionis fugæ, ab aliis quam principalibusmet, vel personis ad id speciale mandatum habentibus, non recipiant.</p> <p>§. 24. Sequestra non scribant, etiam in causis mercedum, nisi in executionem mandatorum servatis servandis relaxatorum, vel nisi docto de credito, etiam extrajudicialiter arbitrio D. Locumtenentis, juratòque de dilapidatione aut fugæ suspicione.</p> <p>§. 25. Advocatos, Procuratores, & Sollicitatores, pro fidejussoribus occasione litium dandis, nullo modo recipiant.</p> <p>§. 26. Significationes per viam recursus concedendas non scribant, nisi cum clausula, Non tamen in contumaciam. Alias verò Significationes non scribant nisi vigore termini, Aut nisi productis juribus vel probationibus super solutione, Aut nisi stante pendencia litis, Sive lite finita, Vel nisi data cautione de stando juri, & judicatum solvendo, quando essent relaxata mandata suspicionis fugæ, pro assecuratione judicii, Aut nisi stante negatione contrâ mandata in contumaciam relaxata.</p> <p>§. 27. Responsores ad articulos & juramenta super partitis decisivis, coram D. Locumtenente tantum recipere possint & debeant, nisi ipse aliter decreverit, ex causa infirmitatis, aut alterius legitimi impedimenti colligantium.</p> <p>§. 28. Quicumque ex Notariis sive actuariis in eorum officiis scribentibus, in aliquo præmissio contraverit, pro quolibet vice poenam scut. 25. aliasque penas pecuniarias, & corporis afflictivas, pro modo excessus à Gubernatore arbitrandas incurrat, damnaque & interesse partibus recidere cogatur.</p> <p>§. 29. Mandatarii hujus Curie, citationes & alias relationes in scriptis dumtaxat referre debeant, exprimendo an personaliter, vel domi copia dimissa & affixa, & an ad statim vel ad hodiè per totam, seu ad primam, vel aliam diem fecerint.</p> <p>Citationes, intimationes &c. personaliter, aut domi dimissa copia, non exequantur, post secundam horam noctis; per affixionem autem, nonnisi de die, & tunc in relationibus exprimant scisse de die, dimissa copia affixa in tali loco.</p> <p>In citationibus tam actoris quam rei nomen, cum cognomine, vel cum exercitii, habitationisque designatione exprimant.</p> <p>In citationibus ad videndum mandari consignari pignora, apponant etiam, & videndum mandari subhaftari.</p> <p>§. 30. In eorum mercedibus recipiendis, servent eorum taxas; ultra quas, etiam à sponte dantibus, nihil omnino accipiant.</p> <p>§. 31. Pignora omnia ab executoribus quibuscumque eis consignanda, ordinatim singulariter adnotare debeant in eorum libris, exprimendo rerum qualitates & quantitates, & nomen executoris & colligantium. Pignora subhaftanda, publicè in loco commode ad id per Gubernatorem deputando, tenere debeant, à die quo receperint mandata de subhaftando, usquequò receperint mandata de deliberando. Oblationes recipiendas adnotare debeant in eorum libris, cum appositione anni, mensis, & diei, ac expressione nominis, cognominis, exercitii & habitationis offerentium. Non recipiant oblationes cujuscumque Officialis hujus Curie, nec eis servientur, neque Mandatarii affinium vel consanguineorum, usque ad tertium gradum.</p> <p>§. 32. Quicumque in aliquo præmissorum contraverit, poenam scutatorum decem pro quolibet vice, aliasque penas pecuniarias, & corporis afflictivas, privationisque officii, pro modo excessus</p>	<p>Mandatis suspicionis fugæ.</p> <p>Juramentis suspicionis.</p> <p>Sequestris.</p> <p>Fidejussoribus.</p> <p>Significationibus.</p> <p>Responsores ad articulos.</p> <p>Notariorum contravenientium poenis.</p> <p>Mandatariorumque circa citationes.</p> <p>Taxe observantia.</p> <p>Pignoribus.</p> <p>Eorumdem contravenientium poenis.</p>
Notariorum locis.		
Procuratoris, & notarii, & interdicta.		
Taxe observantia.		
Citationibus.		
Manualibus.		
Expeditionum libris.		
Expensarum taxatione.		
Examine testium.		
Decretis.		

à Gubernatore arbitrandas incurrat, damnâque & interesse partibus reficere compellatur.

§. 33. Procuratores non possint actualiter exigere nomine suorum Principalium, etiam ab Urbe absentium, & vigore mandatorum ad exigendum, aliqua bona, res, & pecunias, à quavis persona, in causis & negotiis ipsius Tribunalis; nisi prævio Gubernatoris decreto, gratis desuper interponendo. Et qui contraverit, officio Procuratoris omnino privetur, penamque pecuniariam Gubernatoris arbitrio solvat.

§. 34. Executores cujuscumque Curie mandata hujus Tribunalis exequentes, nihil ultra eorum taxam, etiam à sponte dantibus recipiant, & nisi post factam executionem sive capturam.

§. 35. Mandata civilia non exequantur de nocte, neque de die festivo, nisi sint suspicioni fugæ.

Cautiones in executione mandatorum nullatenus recipiant, sed executiones realiter vel personaliter, prout in mandatis continetur, exequantur; pignoraque Baroncello hujus Curie, infra biduum consignent, describique faciant in libro, quem præfatus Baruncellus ad id specialiter tenere, in eoque adnotare debeat qualitates & quantitates rerum sibi consignatarum, & nomen executoris consignantis.

§. 36. Restituit quilibet executorum prædictorum executiones, sive bona in executione capta gratis, quotiescumque D. Locumtenens mandaverit.

§. 37. Quicumque in præmissis contraverit, officio suo privetur, & pro modo excessus corporalibus penis Gubernatoris arbitrio plectatur, damnâque & interesse partibus reficere cogatur. Pro quibus damnis & interesse, quilibet Baruncellus cujuscumque Curie pro suis executoribus, & birrariis obligatus sit.

§. 38. Nos itaque volentes Reformationem hujusmodi, tam maximo labore, & tam matura discussione, ad publicam maxime colligantium utilitatem, Tribunalisque dictæ Urbis Gubernatoris directionem, ut præfetur digestam, perpetuo, inviolabiliterque observari; Motu proprio, & ex certa nostra scientia, deque Apostolicæ potestatis plenitudine, prædictam Reformationem, omniâque & singula in ea contenta, tenore præsentium, auctoritate Apostolica confirmamus & approbamus. Quinimo eandem Reformationem in eaque contenta quæcumque, Motu & auctoritate prædictis, nos de novo statuimus, decernimus & ordinamus, & per præfatum nostrum & pro tempore existentem Urbis Gubernatorem, ejusque in civilibus Locumtenentem, ac Procuratores, Notarios, Mandatarios, Litigantes, Executoresque sive Birrarios, & alios quoscumque, exactissimè perpetuòque, servari præcipimus & mandamus; penamque in dicta Reformatione appositam, de novo contravenientibus quibuscumque, & pro quolibet vice apponimus & insignimus.

§. 39. Decernentes omnia quæ contrà dictæ Reformationis formam & tenorem, decreta, acta & gesta fuerint, nulla, invalida, & extorta, & subrepticia, nulliusque roboris & momenti, fore & censi, neminique propterea suffragari posse vel debere. Et ita per quoscumque Judices & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, etiam S. R. E. Cardinales, & causarum Palatii Apostolici Auditores, in quavis causa & instantia, sublata eis & eorum culibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari & definituri debere; irritum quoque & inane, quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 40. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac stylo, consuetudine, ac quocumque temporis cursu, etiam immemorabili roboratis privilegiis, & indultis,

tam ipsi Tribunali Urbis Gubernatoris, vel ipsis Gubernatoribus & Locumtenentibus, quam Notariis, Mandatariis, eorumque Collegio & Collegiis, aliisque quibuscumque personis, quacumque generali vel speciali nota & expressione dignis, & quomodocumque, & qualitercumque privilegiatis; etiam motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, etiam consistorialiter, sub quibuscumque tenoribus & formis, & cum quibuscumque derogationibus derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis, in genere vel in specie, & alias quomodolibet, etiam per nos concessis, approbatis, & innovatis; quibus omnibus etiam pro illorum sufficienti derogatione, de illis eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, individua, & expressa, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi præfenti pro sufficienter expressis habentes, illis alias in suo robore permanentis, hac vice duntaxat specialiter & expresse derogamus; & quibuscumque aliis privilegiis, indultis, & literis Apostolicis, generalibus vel specialibus, quorumcumque tenoribus existant, per quæ præfenti non expressa, vel totaliter non inserta, effectus illius impediri valeat quomodolibet vel differri, & de quibus, quorumque totis tenoribus specifica, individua, & expressa, ac de verbo ad verbum habenda esset mentio specialis, ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 41. Ut autem præfatus Motus proprius ad omnium notitiam deducatur, ac omnes quorum interest, ac interesse poterit, afficiat, volumus & mandamus, illius copiam in Cancellariæ Apostolicæ, seu & Curie Reverendissimi Urbis Gubernatoris valvis, ac in acie Campi Floræ affigi, & ibi relicta ejus copia, aliquandiu detineri.

§. 42. Volumus item, quòd præfentis Motus proprii sola signatura sufficiat, & ubique fidem faciat, in judicio & extrà, regula quacumque contraria non obstante.

§. 43. Quòdque ejus transumptis, Notarii publici manu subscriptis, & alicujus persone in Ecclesiastica dignitate constitutæ sigillo signatis, plena & indubitata fides, eaque proflus adhibeatur, in judicio & extrà, quæ præfenti adhiberetur; si foret exhibitus vel ostensus.

Fiat Motu proprio F.

Et cum absolutione à censuris, ad effectum &c. & de confirmatione, approbatione, statuto, ordinatione, præcepto, mandato, infictione, decretis, derogatione, voluntate aliisque præmissis, quæ hic pro sufficienter repetitis ad partem habeantur in forma gratiosa latissimè extensa & cum opportuna, si videbitur Judicium executorum deputatione, qui assistant &c. cum potestate citan. &c. inhibendi, aggravandi, &c. invocato &c. secularis, ac derogatione dietarum, non tamen trium, etiam latissimè exten. Et si videbitur literas desuper etiam per Breve S. V. &c. in præmissorum omnium & singulorum, etiam qualiter invocant. denominat. nuncupat. annexis, aliorumque necessariorum majori & veriori specificatione & expressione expediri possit, &c. simul vel ad partem, etiam in una, non facta mentione de alia, vel aliis expedien. &c.

Fiat F.

Anno à Nativitate Domini 1587. Indictione 15, die verò 1. mensis Decembris, Pontificatus Sanctissimi in Christo Patris, & D. N. D. Sixti Divina Providentia Papæ V. Anno ejus tertio, supradictæ litteræ in valvis Cancellariæ Apostolicæ & Curie Reverendiss. D. Urbis Gubernatoris, & in acie Campi Floræ affixæ, lectæ, & publicatæ fuerunt, juxta formam illarum.

Alex. Parabiachus Mag. Curs.

Justio publicandi.

Sola signatura sufficit.

Fides transumptorum.

Papæ subscriptæ Clausularum repetitio.

Publ. Pont. An. 3. die 1. Decembris.

ANNO
1587.

LXXIII.

Edita A. D.
1587.

Prooemium.

In restaura-
tione Basilicæ
Lateranensis,
numismata
quampura
Imperialia
reperita
quorum
nomina, &
præclara ge-
sta hic refe-
runtur, vi-
delicet.

664.

Indulgentiarum elargitio, pro quorundam Chri-
stianorum Imperatorum numismata gestanti-
bus, aut Ecclesiis ubi ea asservantur visitanti-
bus, & pia opera hic expressa exercentibus.

SIXTUS EPISCOPUS,

*Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei me-
moriæ.*

LAudemus viros gloriosos, Christianos præ-
ferti Imperatores, in iis quæ pro Christia-
na religione tuenda & propaganda, piæ, ac præ-
clare gesserunt, dum pietatis zelo, virtutis ma-
gnitudine, & Imperii maiestate verè Augusti,
eiusdem religionis, quam omnibus gentibus,
omnibusque nationibus, Deus voluit Apostoli-
cis vocibus prædicari, cultum totis in Christo
visceribus amplexi, usque adeo suis quisque
temporibus de hac sacrosancta Sede, cui, au-
ctore Domino, licet immeriti præsidemus, egre-
giè promereri studuerunt, ut vera & orthodoxa
fides; ex Apostolico hoc fonte dimanans, tunc
eorum ope & patrocinio munita, propulsatis ho-
stium oppugnationibus, toto terrarum orbe dif-
fusa floret, omnique lingua confiteretur, quo-
nam Dominus JESUS Christus in gloria est Dei
Patris; eorum sanè ipsorum, quos constituit
Dominus Propugnatores & Defensores Ecclesiæ
sue, illustrata, piæ, rectæque factorum exempla,
ad omnem gloriam insignia, imitationisque stu-
dio dignissima, ac merita præclara, cum semper
pro grati in eos animi testatione & officio com-
memorare debemus; tunc hoc potissimum tempo-
re, quo nobis eorum memoriæ renovandæ mi-
rifica divinitus oblata est occasio, id impensius
faciendum arbitramur.

§. 1. Nam cum ab ipso nostri Pontificatus
initio, ad exornandum novis ædificiis Lateranen-
sem præcipuè Basilicam, nullis parcentes impen-
sis, animum adiecissimus, effectum est, non ob-
cura divine voluntatis significatione, ut demo-
liendis quibusdam Aula Lateranensis pervetustis,
ac penè collabentibus parietibus; complura an-
tiqua diversis in locis recondita numismata, ex
auro purissimo obryzo confecta invenirentur, in
quibus ex una parte salutiferæ Crucis signum,
aut imago aliqua eadem Cruce insignita cernit-
ur, ex altera verò vultus effigiesque expressæ
sunt diversorum veterum, qui ante annos circi-
ter mille floruerunt, Augustorum Imperatorum,
nimirum Theodosii senioris, duorum filiorum
ejus Arcadii & Honorii, necnon Theodosii ju-
nioris, Valentiniani Tertii, Marciani, Leonis,
Iustini, Justiniani, Tyberii, Mauricii, Phocæ, &
Heraclii, qui etsi longo locorum intervallo dis-
iuncti, Urbem Romam, ne fortasse quidem
omnes unquam viderint, Magni tamen Con-
stantini piissimi Imperatoris exemplo, & muni-
ficientia excitati, ad declarandum pietatis suæ
studium erga gloriosos Apostolorum Principes,
& fortissimos CHRISTI Martyres, quorum in-
numerabilis multitudo in hac sancta Civitate re-
quiescit, & quorum præsentis ope, & auxilio
domi forisque votis susceptis sæpenumerò Rem-
publicam fortiter & feliciter administraverant,
& clarissimas de hostibus victorias reportaverant,
huius Alma Urbis sacras Basilicas, atque hanc
inprimis sacrosanctam Lateranensem donariis &
oblationibus quamplurimis, Augustali pietate &
magnificientia dignis, cumularunt, diversisque au-
torum ædificiorum extructionibus, aut vete-
rum insurrectionibus, pro temporum varietate
ornarunt. Quod cum alia multa antiquitatis
monumenta, cum vel hæc ipsa nuper reperta au-
rea tot inculptorum Imperatorum numismata te-
stantur, religioso planè consilio & occulto quo-

SIXTUS QUINTUS.

dam Dei instinctu in his ædificiis reposita, ut
post multa sæcula, aliquando tandem patefacta,
in lucem prolata, eorumdem Imperatorum
singularem religionem, & perpetuam erga San-
ctam Romanam Ecclesiam devotionem, insigni
apud posteros testimonio comprobarent. Qua
in re divinam Providentiam agnoscimus, suspi-
cimus, atque admiramur, quod calamitoso hoc
tempore, cum tam multi Crucis CHRISTI Do-
mini hostes Catholicæ fidei veritatem impiissi-
mè oppugnant, prædictorum Imperatorum effi-
gies in ipsa Lateranensi Basilica, ubi primus idem
Magnus Constantinus Augustus sacri baptismi la-
vacro emundatus est, simul reperiri voluerit,
quæ summam eorum erga invidiosissimam Crucem,
pietatem, & eximiam religionem apertè palam-
que profiterentur.

§. 2. Theodosii igitur senioris Imperatoris reli-
giosissimi memoria in benedictione sit, qui se Ni-
cenæ fidei defensores acerrimum præstitit, qui
lege edita, eam se tantum fidem sequi, quam
à beatissimo Apostolo Petro Romanis traditam
Damascus Pontifex docebat, apud cunctos popu-
los publicè testificatus est, qui in Ecclesiæ cultu
ac veneratione, disciplinam imitatione dignam,
non solum legibus edicisque professus est, sed
etiam mirifice coluit, qui denique ob gravem
Thessalonicensem eadem à Sancto Ambrosio Ep-
iscopo publicè correptus, & ab ingressu Eccle-
siæ repulsus, insigni Christiana humilitatis exem-
plo reverenter abstinuit, & impositam ab eo-
dem Ambrosio penitentiam humiliter suscepit,
libentique animo adimplevit, quo obedientiæ
& penitentia exemplo, is, qui claustra Imperii
CHRISTI Domini sic validis præsidii ante mu-
nicerat non solum Reipublicæ hostes submovit,
verum etiam Christiani nominis gloriam feliciter
auxavit.

§. 3. Sed & duorum filiorum ejus Arcadii &
Honorii nomen cum benedictione meminisse li-
bet, qui pietatis ac disciplinæ præceptis, insti-
tutisque à S. Arsenio Romana Ecclesiæ Diacono
instructi, ut Christianam religionem propaga-
rent, ubique terrarum simulacra idolorum confringi,
eorumque templa dirui, legibus sanxe-
runt, Catholica porro fidei integritatem con-
stantissimè retinentes, hæreticos omnes Imperii
viribus coercuerunt, quod communes ab eis
promulgatæ leges adhuc ostendunt.

Illud autem proprium Honorii Occidentale
Imperium regentis, quod Basilicam sancti Pa-
tri à Valentiniano juniore amplificari ceptam,
omnibus partibus absolvi, atque exornari cura-
vit, quodque beato Augustino firmissimæ Eccle-
siæ columnæ, in comprimendis, & propulsan-
dis Africanis hæreticis, magno adjumento fuit.

Id quoque laudi potissimum Arcadio tribuitur,
quod cum ejus militibus contra Persas benè pu-
gnantibus, Cruces aere in vestibus apparuis-
sent, ut victoriæ divinitus partæ monumentum
ubique extaret, is auream monetam cum eo-
dem Crucis signo fieri voluit.

§. 4. Atque Theodosio quidem juniore, Ar-
cadii filio, in Oriente, & Valentiniano Tertio,
eorumdem Arcadii & Honorii fororis filio, in
Occidente Imperii gubernacula tenentibus, san-
cta tertia universalis Ephesina Synodus contra
impium Nestorium, ex beatissimi Cælestini Ro-
mani Pontificis auctoritate, indicta, & celebra-
ta, quo tempore amborum Imperatorum pias-
tas, in fovenda, tuendaque eadem Synodo, &
Ecclesiæ pace per factorum Patrum definitio-
nem procuranda, magnopere eluxit.

Valentinianus autem beate mem. Sixti Tertii
Pontificis hortatu, ipsius Basilicæ Lateranensis fa-
stidium argenteum à barbaris ereptum, magnâ
in id opus erogatâ pecuniâ, refecit, ac sancti
Leonis Pontificis cultor eximius, uberrimum suæ

ANNO
1587.

Theodosii
senioris.

Arcadii &
Honorii fi-
liorum ejus.

Theodosii
filii Arcadii,
& Valenti-
niani nepotis
Arcadii &
Honorii.

pietatis

pietatis fructum tulit, cum ejus etiam precibus, idem Beatissimus Pontifex, immanissimum Attulam, Flagellum Dei vocatum, divina sua eloquentia atque auctoritate placavit ac deteruit, horribilemque tempestatem jam imminentem ab ipsa Roma atque à tota Italia avertit.

§. 5. Marcianus verò, simul atque ad Imperium evectus est ad eundem Sanctissimum Pontificem Leonem literas dedit pietatis, & ergà Apostolicam Sedem observantiae plenas. Quare Apostolica auctoritate, & Catholici Imperatoris adjumento, magnum illud sexcentorum triginta Episcoporum Chalcedonense Concilium adversus Eutychem & Dioicorum coactum est, in quo Marcianus ipse insigni elogio novus Constantinus est appellatus.

§. 6. At Leo Cæsar, Dei Spiritu, & crebris sancti Leonis Papæ epistolis roboratus, nullis se hæreticorum machinis passus est à Catholicæ fidei constantia, & Chalcedonensis Synodi propagatione dimoveri.

§. 7. Nec verò praterendum nobis est verè pius & Catholicus Imperator senior Justinus, qui sanctum Germanum Capuanum Episcopum, sanctissimi Hormisdæ Papæ Legatum, tamquam Angelum Domini, summo cum honore excepit, cujus Imperatoris pietas hoc quoque promeruit, ut Beatum Joannem Summum Pontificem, Constantinopolim ad se venientem videret, admirabili sanctitate virum & postea martyrii gloriâ illustrem, ad cujus ille pedes, CHRISTUM in eo agnoscens, procubuit, Deo clarissimum illum congressum insigni miraculo comprobante, cum in ipso aditu portæ aureæ, cæco supplicanti ab eodem Summo Pontifice lumen est restitutum.

§. 8. Magnis etiam laudibus efferendus est Justinianus ille, qui tot rebus fortiter, sapienterque gestis, Magnus meritis est appellatus, sed profectò sui ipsius victoriâ, & ergà Apostolicam Sedem obedientiâ multò major, nam cum zelo Catholicæ Religionis, confessionem veræ ac Orthodoxæ fidei; quæ in Sancta Dei Ecclesia prædicatur, & simul hæresium damnationem, de Catholicorum Episcoporum consensu, fecisset omnibus manifestam, ac deinde per suas literas & Legatos, reddens Apostolicæ Sedi & Sancto Joanni Papæ Secundo debitum honorem & reverentiam, pro singulari studio quod gerebat de unitate omnium, præsertim Orientalis tractus Ecclesiarum, illarumque Sacerdotum, cum ipso ac ejus Sede; tamquam earum capite, servanda atque custodienda, etiam suæ fidei confessionem; ac illud ipsum edictum transmississet, humiliterque postulasset, suis illa literis, & Apostolicæ Sedis judicio comprobari, atque ipsis quoque diebus Beato Petro Principi Apostolorum pretiosa munera obtulisset, idem Sanctus Pontifex, & dignis eum laudem præconis extulit, & quæ in ipso edicto continebantur, veluti Apostolicæ doctrinæ consentanea suo judicio atque auctoritate confirmavit, Cùmque postmodum ipse Justinianus Imperator à Theodora conjuge depravatus, à Beato Agapote Pontifice vehementius contenderet, ut Ancyrum hæreticum Patriarcham ad communionem admitteret, ejusque electionem confirmaret, eoque constantissimè recusante minas precibus admisceret, Sanctus Pontifex zelo fidei incensus, exclamavit: Ego ad Justinianum Imperatorem Christianissimum venire desideravi, sed Diocletianum inveni; qua invitè animi constantia permotus Imperator, ac tandem erroris caligine deterfa, ad veritatis lucem emergens, seipsum totum ad parentis in CHRISTO optimi voluntatem conformavit, hominemque hæreticum loco dejici, & Catholicum Episcopum Mennam ab eodem sancto Pontifice consecrari, non solum patienter, sed etiam libenter tu-

lit, præclaro Christianis Principibus exemplo relicto, ut paternas CHRISTI Vicarii admonitiones & oburgationes, æquissimo animo ferrent, memores verbi Domini: Qui vos audit me audit, qui vos spernit me spernit.

§. 9. Jam verò Tiberii Constantiniani nomen cum laude commemorandum est, quem Urbis Romæ Conservatorem appellare licet, quod eam à Longobardis gravissimâ obsidione oppressam, magnæque rei frumentariæ angustia laborantem, largâ frumenti copiâ ex Ægypto transmissâ, à famis simul & obsidionis calamitate, paternis sanctæ memoriæ Benedicti Primæ Summi Pontificis cohortationibus liberavit. Hic cum Sanctum Gregorium Magnum adhuc Diaconum disputantem audisset, Eutychie Patriarchæ, veram tractabilisquæ corporum resurrectionem negantis, librum statim comburendum in ignem inject. Idem sanctæ Crucis signum ita coluit, ut aliquando, cum humi eam in lapide sculptam vidisset, statim tolli, & decenti loco collocari jussit, ut jam minus mirandum sit, quod magnus Crucis cultor, Crucis imaginem in aureis nummis, eleganter ut videmus, curaverit exprimendam.

§. 10. Commemorandus est etiam jure optimo Mauritius vir fortissimus, cujus filium idem Gregorius, cum adhuc Diaconus Constantinopoli Apostolicum Legatum ageret, ex sacro baptismi fonte levavit, postea verò Pontifex factus, eidem Mauritio locupletissimum pietatis testimonium præbet, dum illum in suis Epistolis hominem multarum lacrymarum, orationum, jejuniorum, & elemosinarum fuisse commemorat, certè de Apostolica Sede, & universa Italia egregiè est meritis, quod exercitu comparato, Ducibus in Italiam missis, Francorum auxilio advocatis, omni denique diligentia adhibita, Longobardorum furorem non mediocriter represserit.

§. 11. Nec minori dignus est præconio Phocas Imperator, qui cum de more conaretur se Catholicæ religionis defensorem perpetuum futurum, sanctissimo jurejurando obtinuit, & summam ab ipso CHRISTO Domino Romanæ Ecclesiæ traditam auctoritatem & potestatem præclare intelligens, publicè edixit, ut eandem Sanctam Romanam Ecclesiam, tamquam omnium Ecclesiarum primam, atque Caput omnes & agnoscerent, & profiterentur.

§. 12. Hunc autem clarissimum cætum meritò claudit Heraclius Augustus, novissimus eorum quos supra enumeravimus qui sanctam Crucem illam ipsam, in qua vita Auctor pependerit, & mortem moriendo superaverat: decimo quarto anno postquam venerat in potestatem Persarum, felicissimè recipit, eamque suis humeris, abjecto Imperatori amictu, calcitrèque detractis, in ipsum Calvariz Montem, in Passionis CHRISTI memoriam, magna cum humilitate reportavit.

§. 13. Nos igitur aliquam angustissimæ eorumdem Imperatorum memoriæ gratiam non immerito referre cupientes, Charissimis, in CHRISTO Filiis nostris Romanorum Imperatori electo ac Regibus, & dilectis Filiis nobilibus viris Principibus, quos in visceribus CHRISTI gerimus quædam ex supradictis aureis numismatibus, singulâ paterni nostri amoris ergà ipsos pignus misimus, ut ad similem virtutis, & Religionis laudem excitentur, & se Ecclesiæ Romanæ filios, Catholicorum Principum successores, & Crucis Christi defensores esse crebrius reminiscantur, veteres in hoc quidem Sanctos Pontifices Prædecessores nostros, præsertim eundem beatum Gregorium Papam imitati, qui Regibus, & Principibus, ac primariis viris, aureas Cruces, & claves

Tiberii Constantiniani.

Mauritii.

Phocæ.

Heraclii Augusti.

Hic Pontifex hac numismata transmissit ad Imperatorem, Reges & Principes, atque Cardinales aliosque præstantissimos viros.

Et eodem
modo indul-
gentiis de-
corat, eas
concedendo.

Gestantibus
illa, & fa-
cientibus hic
descripta.

parvulas, quæ claves beati Petri dicebantur, mittere confueverat, quæque collo appensæ, & religiosè gestatæ miraculis coruscabant, quædam verò alia ex eisdem numismatibus dedimus Venerabilibus Fratribus nostris Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalibus, reliqua verò eodem modo piis & præstantibus viris jam distribuimus.

§. 14. Ut autem ab omnibus & singulis Christi fidelibus, quibus à nobis tradita jam sunt, devotius ac religiosius, & cum spirituali animarum fructu gestentur, decrevimus ad sanctissimæ Crucis honorem, & gloriosam memoriam Imperatorum, eadem numismata præcipuis gratis & indulgentiis amplissimis, ex nostra Apostolica benignitate insignire.

§. 15. Quamobrem de Omnipotentis Dei misericordia, ac beatorum Apostolorum ejus Petri, & Pauli auctoritate consili universis & singulis Christi fidelibus utriusque sexus, quodcumque ex his numismatibus penes se gestantibus, quoties eorum aliquis antè salutiferæ Crucis signum, aut sacram aliquam imaginem petransiens, aperto capite venerationem tribuerit, aut genu flexerit, orationem Dominicam, vel salutationem Angelicam pronuntiando, toties ei centum annos & totidem quadragenas.

Singulis autem diebus, si ter orationem Dominicam, salutationemque Angelicam, aut semel Psalmum, Miserere mei Deus, seu, De profundis clamavi, devotè recitaverit, annos ducentos, ac totidem quadragenas.

Item, quoties ad Deum mentem eleverit, illiusque divinam opem imploraverit, etiam ducentos annos & totidem quadragenas.

Si verò quocumque Dominico, aut festo die, coram beatissimæ semper Virginis Dei genitricis Mariæ, etiam pia devotione recitaverit, annos trecentos & totidem quadragenas.

Ac si conscientiam suam manè aut Vesper, cum emendationis proposito examinaverit, ac de malè antea facta vita veniam supplicet à Deo misericordiarum patre postulaverit, similiter trecentos annos, & totidem quadragenas de sibi iniunctis, vel alias quomodolibet per eum debitis penitentis, misericorditer in Domino relaxamus.

Atque ut eosdem fideles ad pietatis opera exercenda, eò etiam magis invitemus, eorum cunctis, quoties pro Hæreticorum reductione, Infidelium conversione, Christianæ atque Orthodoxæ fidei propagatione, & sanctæ matris Ecclesiæ tranquillitate, & exaltatione, ac inter Principes Christianos pace & concordia, Deum precando, orationem Dominicam, & salutationem Angelicam quinque devotè dixerint, eadem illas indulgentias ac peccatorum remissiones, quæ unam è septem præcipuis Urbis Basilicis visitantibus concessæ sunt, concedimus & impartimur.

Quod si quis peccatorum à via perditionis, veluti ab hæresi, blasphemia, aliisve ejusmodi sceleribus, & peccatis, ad viam salutis se converterit, aut si certè in eo laboraverit, aut si inter discordantes pacem conciliaverit, aut quantum in se est, procuraverit, concedimus, ut sanctorum sacrificiorum, jejuniorum, orationum, ac quorumvis aliorum piorum operum, quæ in omnibus Ordinibus & Congregationibus Regularibus sanctæ Catholice Ecclesiæ sunt, non secus ac si unusquisque earum proprium membrum foret, eo ipso particeps efficiatur.

Præterea, unicuique verè penitenti, qui peccata sua alicui ex Sacerdotibus idoneis, & ad id approbatis confessus fuerit, & sacram sumpserit Eucharistiam, aut missam si Sacerdos fue-

rit, celebraverit, quoties id fecerit, toties ei plenariam :

Aut si in mortis articulo constitutus, numisma collo appensum, aut quovis modo secum haberit, pronuntiato nomine JESU, corde saltem, si ore nequiverit, etiam plenariam :

Atque itidem militibus, aut aliis, qui aliquod hujusmodi numisma secum habentes contra Infideles vel Hæreticos, aut alios Sanctæ R. E. hostes pugnaverint, præsertimque si ibi eos mori contigerit, JESU nomine ut suprà invocato, pariter plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam & remissionem, auctoritate prædicta, tenore præsentium, etiam misericorditer in Domino concedimus & elargimur.

Utque defectus & negligentia, animique distractiones, quæ ex humana fragilitate in divini Officii recitatione, Missarumque celebratione, vel auditione Sacerdotibus, aut Clericis vel Laicis contingere solent, et horum etiam ob justum impedimentum prætermisso, ex devota, hujus numismatis gestatione, Coronâ tamen Beatæ Mariæ Virginis piè recitatâ, aut saltem pronuntiato Psalmo, Miserere mei Deus, suppleri, & compensari possint, eadem auctoritate concedimus & indulgemus.

§. 16. Quicumque autem aliquod hujusmodi numisma habuerit, ipsum pro suo arbitrio in testamento, aut alia ultima voluntate, cui voluerit Ecclesiæ, nec verò cuiquam alii, absque specialia nostra aut nostrorum successorum concessione, relinquere aut donare possit.

§. 17. Quam quidem Ecclesiæ, in qua fuerit dictum numisma repositum, festis diebus Inventionis & Exaltationis sanctæ Crucis, universis & singulis Christi fidelibus utriusque sexus verè penitentibus, & peccata sua confessis, devotè visitantibus, similiter plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam & remissionem damus, concedimus, & elargimur.

§. 18. Quod si quis numisma habens ab intestato decesserit, volumus, ut illud ad propinquorem ejus domicilium Ecclesiæ cum eisdem gratis, facultatibus, & indulgentiis pertineat.

§. 19. Cuiuscumque nihilominus in articulo mortis constituto de Consilio ejus Confessarii ipsum numisma liceat commodare, qui itidem omnes supradictas indulgentias & peccatorum remissiones valeat obtinere.

§. 20. Postremò ut animabus quoque Christi fidelium in Purgatorio existentibus, quæ per charitatem Domino Nostro JESU CHRISTO unitæ ex hac vita migraverint, quæque antequam decederent aliorum Christi fidelium suffragiis juvari meruerint, de celestibus Ecclesiæ Thesauris, quorum dispensatores à Domino ad animarum salutem constituti sumus, paterne subventionis, divina miseratione consili, concedimus, ut quoties quilibet aliquod ex hujusmodi numismatibus secum habens, pro dictarum animarum salute, præmissa, eorumve aliqua adimpleverit, vel quicumque alius Ecclesiæ, in quibus eadem numismata reponi contigerit, dictis festis diebus Inventionis & Exaltationis sanctæ Crucis visitaverit, ipsæ animæ, pro quibus id fecerit, efficacissimis JESU CHRISTI Domini Nostri meritis, ac ejusdem Beatæ Mariæ semper Virginis, Sanctorum Angelorum, Apostolorum, Martyrum, Confessorum, Virginum, omniumque Sanctorum & Sanctarum precibus & intercessionibus suffragantibus, eadem indulgentias, & peccatorum remissiones consequantur.

§. 21. Præsentibus verò literis, sub quibusvis similibus vel dissimilibus indulgentiarum, & gratiarum revocationibus, suspensionibus, abrogationibus, aut aliis contrariis dispositionibus, per nos vel Successores nostros Romanos Pontifices, etiam

Numismata
Ecclesiis tan-
tum relinqui
possunt.

Quas Eccle-
sias visitantes
indulgentias
consequan-
tur.

Numisma ab
intestato de-
cedentis ad
propinquio-
rem Eccle-
siæ spectat.
In articulo
mortis
constitutus
accommodari
potest.

Animabus
que Purga-
torii profit,
impletis hic
enarratis.

Clausula
hujus largi-
tionis præ-
servativa.

Motu proprio & ex certa scientia, ac in favorem Cruciatæ Sanctæ, vel aliàs quomodolibet faciendis minimè comprehendi, sed quoties illæ emanabunt, toties easdem præsentibus ab illis exceptas, & nisi de eis expressa, & individua mentio fiat, adversus illas in pristinum & validissimum statum relictas, ac de novo concessas esse, & censeri, & perpetuò validas & efficaces fore, ac supradictis personis & Ecclesiis, perpetuis futuris temporibus suffragari debere decernimus, & declaramus.

§. 12. Non obstantibus nostris de non concedendis Indulgentiis ad instar, ac aliis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, cæterisque contrariis quibuscumque.

§. 13. Volumus autem, ut præsentium literarum exemplis etiam impressis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ sigillo obsignatis, eadem prorsus fides ubique gentium & locorum adhibeatur, quæ ipsas originalibus adhiberetur, si essent exhibitæ vel ostensæ.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo octuagesimo septimo, Kal. Decembris, Pont. nostri Anno tertio.

XXIV. Institutio quindecim Congregationum Sanctæ R. E. Cardinalium, cum jurisdictionum & facultatum partita concessione, ad faciliorem universæ Reipublicæ Christianæ, Statuque Ecclesiastici, & Romanæ Curie negotiorum, & causarum expeditionem.

Ad hæc videnda sunt, quæ sigillatim ad unamquamque rubricam Congregationis adnotabo.

Aliæ à Clem. VIII. superadditæ sunt Congregationes Cardinalium, quarum altera est super Bono regimine Communitatum Status Ecclesiastici, in sua Constitut. 10. Pro commissis. fol. 10. Tom. 3. Aliæ verò est super Baronibus dicti Status, in Constit. 41. Justitiæ. fol. 61. Altera autem super Bannitis in Constit. 15. In regendis. in dicto Tom. 3. fol. 20.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Incensum æterni Dei omnium opifex sapientia à sine usque ad finem fortiter attingens, sic cuncta inter se admirabili concordia nexu copulavit, suavitèrque disposuit, ut vicissim ad suorum se numerum functiones exercendas mutuis auxiliis sublevarent. Ipsa in cælesti Hierusalem varios beatorum spirituum ordines distinguit, quorum superiores de divinæ providentiæ rebus inferiores illuminarent. Ipsa militantis Ecclesiæ, quæ triumphantis illius imago est, corpus variis membris discrevit, quæ capiti suo glutine charitatis compacta, & connexa, mutuo se adjuvant, ex quo totius corporis salus & conservatio existeret.

§. 1. Quare jure optimo Romanus Pontifex, quem CHRISTUS Dominus corporis sui, quod est Ecclesiæ, visibile caput constituit, omniumque Ecclesiarum sollicitudinem gerere voluit, multos sibi tam immensi oneris adiutores advocat, atque adsciscit, cum Venerabiles Episcopos Fratres suos, quos toto terrarum orbe ad singulos greges pascendos mittit, cum amplissimum ordinem Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalium, qui tanquam nobilissima membra capiti propius coherentia, eidem Summo Pontifici, sicut CHRISTO Domino Apostoli semper assistunt, quique primi laborum & consiliorum socii sunt & participes, ut partita inter

eos, aliisque Romanæ Curie Magistratus, ingenti curarum negotiorumque mole, ipse tantæ potestatis clavum tenens, divina gratia adjunctrice, non succumbat.

§. 2. Nos igitur magni illius Moysis exemplo adducti, qui cum DEO loquens fecerit sui Jethro Consilium de variis Judicibus constituendis non repudiavit, quique DEI iussu insignem Senatuum septuaginta Seniorum conscripsit, qui cum eo onus populi sustinerent, ne solus ipse gravaretur, Pontificium hoc onus Angelicis planè humeris formidandum, inter Senatores Orbis terræ Fratres nostros Cardinales apta quadam distributione pro temporum conditione, negotiorum multitudine, & varietate, ipsaque utilitatis ratione salubriter parti decrevimus; Ea in primis cogitatione permoti, ut qui ex omnibus nationibus ad hanc matrem, magistrum, peragiumque fidelium Apostolicam Sedem, devotionis, salutis studio, juris persequendi, gratiæ impetrandæ, aliisque multiplices ob causas frequentissimi confluent, ii quidem, & tutò & commodè (quantum in Provinciis nostris præstare possumus) Romanæ perveniant, & ut facilius celerisque expediantur, distinctos Cardinalium Conventus, & Congregationes ad certas rerum, negotiorumque tractationes paratas habeant, Cardinalique ipsi distributi muneri partem levius ferant, diligentius administrent, commodius nos consulant, & denique viri primarii publicis in rebus exercitati, nullo unquam tempore desint. Itaque Motu proprio, & ex certa scientia, ac de eorumdem Fratrum nostrorum Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalium consilio, & assensu, ex eodem sacro Collegio, quod per DEI gratiam viris pietate, Doctrina, rerumque usu præstantibus ex omni natione abundat, Congregationes quindecim constitutimus, singulisque certa negotia assignavimus, ita ut graviores, difficilioreque consultationes ad nos referant, ac unicuique earum suas facultates, & auctoritatem in eum modum, qui infra descriptus est, dedimus atque attribuimus.

Congregatio prima, pro Sanctæ Inquisitione.

Ista Congregatio jam diù instituta fuit, eique amplam auctoritatem dedit Paulus III. ut supra in Tomo 1. in eius Constitut. 34. Licet ab. fol. 762. ac Pius IV. Constitut. 79. Cum nos. fol. 118. ac Pius V. Constitut. 1. Sanctissimus. fol. 189. & Constit. 22. Inter. fol. 214. & Constitut. seq. Cum felicis. fol. 215. in hoc Tomo 2. Et insuper videnda est infra Constitut. 76. Clem. VIII. Sanctissimus. fol. 126. Tom. 3.

§. 1. In primis igitur, quoniam fides, sine qua impossibile est placere DEO, totius spiritualis ædificationis fundamentum est, cupientes hoc pretiosum depositum, quod nobis potissimum à CHRISTO Domino in Beato Petro Apostolo est creditum, adversus omnes inferorum portas integrum inviolatumque custodire; Congregationem sanctæ Inquisitionis hæreticæ pravitatis magna Prædecessorum providentiæ, tamquam firmissimum Catholicæ fidei propugnaculum in Urbe institutum, cui ob summam rei gravitatem, Romanus Pontifex præsidere solet, nos quoque confirmamus & corroboramus, illiusque omnia instituta, omnesque & singulas facultates à Romanis Pontificibus Prædecessoribus nostris Cardinalibus ad eam Congregationem pro tempore delegatis concessas, omnemque auctoritatem & potestatem eis communicatam, scilicet inquirendi, citandi, procedendi, sentiendi, & definiendi in omnibus causis, tam hæresim manifestam, quam schismata, Apostasiam à fide, magiam, sortilegia, divinationes, sacramentorum abusus, & quæcumque alia, quæ etiam præsumptam hæresim sapere videntur, concernentibus, non solum in Urbe, &

Instituto quindecim Congregationum, de qua in rubr.

Confirmatio hujus Congregationis jam institutæ.

Statu temporali, nobis & huic sanctæ Sedi subiecto, sed etiam in universo terrarum Orbe, ubi christiana viget Religio, super omnes Patriarchas, Primates, Archiepiscopos, & alios inferiores, ac Inquisitores, quocumque privilegio illi suffulti sint, quorum, ac aliorum prædictorum series his nostris literis ad verbum expressa censeatur, confirmamus.

Ejusque facultatem.

§. 2. Ea denique omnia, veluti per eosdem Prædecessores circa eandem Congregationem, illiusque jurisdictionem, & auctoritatem decreta fuerunt, nos itidem statuimus atque decernimus.

Et indulgentiarum hujus officii Ministrorum.

§. 3. Exemptiones quoque, immunitates, privilegia, atque indulta etiam ejusdem officii ministris, vel in hunc usque diem concessa, usque recepta, pariter approbamus.

Hortatio ad Principes, & alios, ut ei favcant, &c.

§. 4. Obnixè in Domino hortantes, & per viscera misericordiz JESU CHRISTI, & per ejus tremendam Judicium obstantes charissimos in Christo Filios nostros Imperatorem electum, omnique Reges, ac dilectos Filios Nobiles viros Rerumpublicarum, aliisque Duces, illisque regendis, & administrandis præpositos, ac singulos Orbis Terrarum Principes, & Magistratus, quibus gladii secularis potestas ad malorum vindictam à Deo est tradita, per eam ipsam quam se tueri promiserunt Catholicam fidem, ut sic suas quique partes, sive in præstando nostris prædictis auxilio, sive in criminum post Ecclesiæ sententiam animadversione interponat, quod eos pro eorum pietate libenter facturos confidimus, ut eorum quoque præsidio Ministri ipsi tantum munus, tamque salutiferum, pro Regis æterni Gloria, ac Religionis incremento feliciter exequantur, cujus pii, Christianique obsequii Principes ipsi & Magistratus amplissimum à Domino præmium recepturi sunt in æternæ beatitudinis consorcio Catholicæ fidei assertoribus, & defensoribus præparatum.

Sed ex hoc nihil innovetur de officio Inquisitionis Hispaniæ.

§. 5. In his autem omnibus nostra est intentio, ne in officio sanctæ Inquisitionis, in Regnis & Dominis Hispaniarum, Sedis Apostolicæ auctoritate superioribus temporibus instituto, ex quo uberes in agro Domini fructus indies prodire conspiciamus, Nobis, aut Successoribus nostris inconsultis aliquid innovetur.

Omittuntur hic nomina Cardinalium nunc deputatorum huic Congregationi, & aliorum sequentium, quoniam ob eorum obitum alii subrogati sunt, & frequenter ejusmodi mutatio contingit.

Congregatio secunda, pro Signatura Gratiæ.

Ad Signaturam Gratiæ, videri potest supra in hoc Tomo Constitut. Pii IV. num. 59. Cum nuper, fol. 90. & Constitut. 63. In eligendis, fol. 97. & novissime editam Reformationem Pauli V. in Constitut. 71. §. 1. Tom. 3. fol. 296.

Causa hujus instit.

ET quoniam ad eam, quæ Signatura Gratiæ appellatur, & in qua nos etiam Prædecessorum nostrorum Romanorum Pontificum more præsidemus, ex diversis Orbis terrarum partibus, ob multiplices gratias obtinendas, magni concursus sunt, supplicesque libelli referuntur, ut quæ ex Judicium ordinaria facultate expediri nequeunt, potestate principis, qui viva est lex, iustis de causis explicetur, & concedantur, sanè pro loci dignitate, & rerum ratione, magna circumspexio adhibenda est, ut, & honeste supplicationes, quantum cum Domino licet, exaudiantur, & multorum petentium importunitas coercetur.

Instituto Congregationis, & ex

§. 1. Quamobrem Cardinales infra scriptos Signaturæ nostræ gratiæ adscribimus, ad hoc, ut

omnes Signaturam nostram quavis de causa adeuntes, benignè audiant porrectasque oblatarum petitionum informationes recipient, nobis verò, aut Successoribus nostris, dum supplices libelli referuntur, assistant, opportunumque Consilium afferant, omnique deposito humano affectu, sincerè suam quicque sententiam, etiam non rogatus ex conscientia dicat.

§. 2. Declaramus autem in dictam Congregationem semper eos Cardinales adscriptos esse, qui infra scriptis muneribus & officiis præfecti erunt, videlicet, Major Penitentiarius, Præfectus Signaturæ Gratiæ, Præfectus Signaturæ Brevium, Præfectus Signaturæ Justitiæ, & qui Datarii munere fungentur, si Cardinalis fuerit, qui simul atque eas præfecturas, & officia adepti erunt, statim in ipsam Signaturam adnumerati censeantur.

Congregatio tertia, pro Ereptione Ecclesiarum & provisionibus Consistorialibus.

Ad hæc vide etiam infra in Const. 10. Gregorii XIV. Onus. Ubi etiam norabo in rubrica.

ILLA præterea cura ad pastoralis nostri officii sollicitudinem, & Ecclesiæ universalis gubernationem maximè pertinet, ut ad fidelium populorum utilitatem, Ecclesiis iam erectis, aut in posterum iustis de causis erigendis, de Episcopis & pastore idoneis, & fidelibus ac fructuosis, in vinea magni patris familias operariis salubriter in Domino provideamus.

Causa hujus instit.

§. 1. Quare aliam constituimus Cardinalium Congregationem, qui in primis cognoscant de legitimis causis erectionum novarum Ecclesiarum quarumcumque, Patriarchalium, Metropolitanarum, & Cathedralium, ac de cujusque earum dote, Capitulo, Clero, Populo, & aliis, quæ ad ejusmodi erectiones, juxta præscriptum sacri Concilii Tridentini, & sanctorum patrum decreta, necessaria erunt. Examinent præterea omnes difficultates de his incidentes, controversias quoque inter eas, quæ jam erectæ sunt, necnon dictarum Ecclesiarum, Diocesium, vel Monasteriorum uniones, dismembrationes, cessiones, permutationes, translationes, pensionum super illarum redditibus assignationes, Monasteriorum pluralitatem, dignitatum incompatibilitatem, præsentationes, & nominationes, electiones suffraganeorum, coadjutorumque deputaciones, cum futura successione, sive abique eadem successione, curamque adhibebunt solertem circa ætatem & qualitatem promovendorum, eaque censurâ, & examinâ, ad nos, Successoresque nostros referant, ut pro nostro, eorumve arbitrio, in Consistorio secreto juxta formam in hunc usque diem servatam proponantur.

Instituto tertia Congregationis & explicatio muneris Card.

Congregatio quarta, pro Ubertate Annona Statûs Ecclesiasticæ.

Huic Annonz præficitur à Summo Pontifice unus ex Clericis Rever. Cameræ Apostolicæ, ut videre est supra in Constitut. 35. Gregorii XIII. Inter cæteras, fol. 431. Et pro ejus Præsidio hic Pontifex scuta ducentum millia tribuit infra in Const. 78. Abundantes. Aliam Prælatorum Congregationem subordinavit Paulus V. in sua Constitut. 70. Pastoralis. Ubi alia notabo. Tom. 3. fol. 295.

Cumque ad providentiam nostram pertineat curare, ut populi Ecclesiasticæ ditioni subiecti, non solum pane verbi Dei reficiantur, sed hoc quoque terreno, quem etiam cum illo à Patre cœlesti nobis dari quotidie petimus, abundent, pauperes præsertim & egeni, quibus Parentis loco sumus, idcirco ut in omnibus Provinciis nostris, & in hac potissimum Alma Urbe, ad quam tanta hominum frequentia undique confluit, res frumentaria benè

Causa hujus instit.

Institutio
Congrega-
tionis & fa-
cultates
Card. de-
putatorum.

curata sit, & Annona publicæ copia benedicente Domino semper suppetat.

§. 1. Congregationem Cardinalium constitui-
mus, quæ omni studio curet, non solum in Ur-
be, sed in universo Statu Ecclesiastico temporali
copiam haberi frumenti, atque aliarum hujus ge-
neris frugum, quibus ad vitam humanam susten-
tandam indigemus, quæ si peccatis populi id pro-
merentibus ob terræ sterilitatem in ditione Eccle-
siastica aliquando, quod Deus avertat, deerunt,
aliunde commeatum pro locorum opportunitate,
convehi, comportarique studeat, civitatibus,
oppidis, locis, personis quibuscumque quavis
etiam Ecclesiastica atque Cardinalatus dignitate
fulgentibus, ea omnia, quæ, ad abundantiam
parandam, atque conservandam erunt opportu-
na, præcipiat. Commisarios ubique locorum,
prout exegerit necessitas, aut suaserit utilitas, de-
putet, contrâ impediētes aut negligentes, sive
Annonam extrahi vel abduci, per se ipsos, aut
per alios palam vel occultè procurantes, procedat,
aliâque faciat, quæ ad Annonæ ubertatem
omniñò pertinere videbuntur.

§. 2. Præcipuum verò curam, & diligentiam
adhibeat, ut pecuniæ summa, scutorum scilicet
ducentorum millium à nobis, tam salubri ac
necessario operi pauperum inprimis causâ pater-
nè assignata atque attributa, nec in alium usum
convertatur, & integra conservetur, quod si in
charitate Annonæ aliquid ex dicta summa de-
cesserit, illius recuperanda, ac reintegranda ra-
tionem quamprimum teneat, ut hoc publicum
præsidium & tamquam patrimonium pauperum,
eorundem Cardinalium prudentia, & sedulitate
perpetuò aservetur, & prout in alia con-
stitutione super hoc à nobis edita latius expli-
catur.

Congregatio Quinta, pro Sacris Ritibus & Ceremoniis.

Jam verò, cum sacri ritus & cæremoniæ, qui-
bus Ecclesia à Spiritu sancto edocta ex Apo-
stolica traditione, & disciplina utitur, in Sacra-
mentorum administratione, divinis officiis, om-
nique Dei, & Sanctorum veneratione magnam
Christiani populi eruditionem, veræque fidei pro-
testationem contineant, ærum sacrarum majes-
tatem commendant, fidelium mentes ad rerum
altissimarum meditationem sustollant, & devotio-
nis etiam igne inflamment, cupientes filiorum
Ecclesiæ pietatem & divinum cultum sacris riti-
bus, & cæremoniis conservandis, instaurandisque
magis augere.

§. 1. Quinque itidem Cardinales delegimus,
quibus hæc præcipue cura incumbere debeat, ut
veteres ritus sacri ubivis locorum, in omnibus
Urbis, Orbisque Ecclesiis, etiam in Capella no-
stra Pontificia, in Missis, divinis officiis, sacra-
mentorum administratione, cæterisque ad divi-
num cultum pertinentibus, à quibusvis personis
diligenter observentur, cæremoniæ si exoleverint,
restituuntur, si depravata fuerint, reformentur,
libros de sacris ritibus, & cæremoniis, inprimis
Pontificale, Rituale, Cæremoniale, prout opus
fuerit, reformet, & emendat, officia divina
de Sanctis patronis examinent & nobis prius con-
sultis, concedant. Diligentem quoque curam ad-
hibeant circa Sanctorum canonizationem, festo-
rumque dierum celebritatem, ut omnia ritè, &
rectè, & ex Patrum traditione fiant, & ut Reges
& Principes, eorumque Oratores, alique per-
sone, etiam Ecclesiasticæ, ad Urbem, Curiamque
Romanam venientes, pro Sedis Apostolicæ dig-
nitate ac benignitate honorificè more majorem
excipiantur cogitationem suscipiant, sedulôque
provident: Controversias de præcedentia in pro-
cessionibus, atque alibi, cæterasque in hujusmodi

sacris ritibus & cæremoniis incidentes difficulta-
tes cognoscant, summarie terminent & compo-
nant.

Congregatio Sexta, pro Classe paranda & servan- da, ad Status Ecclesiastici defensionem.

*Subsidium annuum scutorum ducentum millium &
quingentorum paravit & dedit hic Pontifex pro
manutentione parata Classis decem triremium, sed
ejus Bullam tamquam minus necessariam duxi præ-
termittendam.*

Praterea posteaquam Dei benignitate, nec
sine magno nostro labore & sumptu, peritio-
rum hominum licentiâ compressâ, publica tran-
quillitas in locis mediterraneis restituta est, ut
jam unicuique absque timore ullo sub vite sua,
& sub sicu sua quiescere liceat, cupientes ut lit-
tora quoque, & ore maritimæ ditionis nostræ,
superi inferique maris, à piratis ac prædonibus,
quantum fieri potest, tutæ sint, nedum ad no-
strorum subjectorum securitatem, verum ut ex-
teræ quoque nationes ad hanc fidei petram, com-
munemque fidelium matrem securè, pro eo quod
in nobis est, accedant, ne à piratis in miseram
servitutem, quod alias perlapse accidit, abdu-
cantur.

§. 1. Ob eas causas Cardinales quinque præ-
ficiamus triremibus numero decem parandis, ad-
ficiendis, ornandis, omniq. necessario nautico
& militari apparatu instruendis, caraque dili-
gentissima conservandis, quarum ope, & præsidio,
Deo adjutore, piratæ, & prædones coercen-
tur, & à nostris littoribus longè repellantur,
quare & earum triremium idoneos Duces ac Præ-
fectos, nobis tamen & pro tempore Romano
Pontifice consultis, deligant, & cætera omnia ad
ea quæ diximus celeriter utiliterque efficienda,
pro ipsorum prudentia & sedulitate disponant
atque expediant. Deinde operam adhibeant, ut
subsidium pecuniarum quodcumque ab iis, qui
nostro mandato huic tan necessario operi con-
tribuere tenentur, fideliter, integrè, maturè
que exigatur, exactum verò ac receptum ad su-
pradicta tantummodò opera perficienda ex vo-
luntatis nostræ præscripto fructuosè impendantur.
Illud autem Cardinales ipsos magnoperè admo-
nemus, curent diligenter, ut in his triremibus
Apostolicis, nautæ omnes & milites, non so-
lùm ex nautica militarique, sed multò magis ex
Christiana disciplina, piè & modestè vivant.
Quare viros religiosos, animarum corporumque cu-
ratores deligant, qui valentes ad pietatem in-
struant, ægrotos multo charitatis affectu, quo-
vis necessario adjumento genere, spirituali inpri-
mis recreent atque reficiant. Denique omni lo-
co à Præfectis, militibus, nautis ea piè viven-
di ratio, & institutio observetur, ut verè illos
Christianos ac Pontificios esse omnes agnoscant.

Congregatio Septima, pro Indice librorum pro- hibitorum.

*Ista Congregatio perfecit Indicem librorum hujusmo-
di alias à Pio IV. approbatum, ut videre est in
Clem. VIII. const. 36. Sacrosanctum, ubi de ejus
facultatibus etiam notabo.*

Quia verò hæresis morbus animæ pernicio-
sissimus ut cancer serpit, & filii tenebrarum
arceam Catholicæ veritatis omni machinationis ge-
nere oppugnant, libris præsertim hæresis veneno
infectis promulgandis, aliisque noxiâ doctrinâ as-
pergendis, corruptendisque postulat à nobis pa-
storalis officii sollicitudo, ut vulpes dolosas, &
lupos rapaces ab ovili CHRISTI omni vigi-
lantia arceamus.

Causa hujus
instit.

Institutio
Cong. ga-
tionis 6. de
exp. icatio-
n. uicenis
Cardd.

Causa hujus
instit.

Institutio
Congrega-
tionis 5. cum
facultatibus
Cardd.

Causa hujus
instit.

Institutio
Congrega-
tionis 7. &
explicatio
muneris Car-
dinalium.

§. 1. Quare ut Cardinales, qui ad libros prohibendos, expurgandove delecti sunt, in ea cura diligerent, ac majori cum fructu versentur, has illis facultates tribuimus, ut librorum ejusmodi catalogos, & indices, aut proximè confectos, eorumque regulas editas recognoscant, atque examinent, certorum auctorum libros prohibitos, aut quovis modo in prioribus indicibus suspensos diligenter excutiant, & prout expedire judicaverint, permittant libros, qui post Indicem Tridentini Conc. jussu editum prodierunt, Catholicæ doctrinæ, Christianorumque morum disciplinæ repugnantes, expendant & recognoscant, ac ubi nobis retulerint, nostra auctoritate rejiciant, hominum verò injuriâ & dolo depravatos emendant, eos libros, qui paucis erroribus reiectis, alioquin utiles studiosis esse possent, expurgandi, atque corrigendi modum ineant, indicisque expurgatorios conficiant, novos præterea libros approbandi, & imprimendi rationem præscribant. Universita um Parisiensem, Bononiensem, Salamantiniensem, Lovaniensem, aliarumque probatarum studia, ad librorum expurgationem & correctionem excitent, earumque diligentem operam & industriam requirant. Permittimus quoque eidem Congregationi, ut Theologis, Canonistis, aliisque peritis viris, piis atque idoneis, etiam aliunde accersitis, ad hoc omne negotium Reipublicæ Christianæ, tam in his temporibus necessarium adhibitis, eam ob rem tantum, nec verò aliis, libros vetitos tenendi legendique etiam absque nostra licentia impertiatur facultatem.

Congregatio Octava, pro Executione, & Interpretatione Concilii Tridentini.

Hujus Concilii indictionem, prosecutionem, & approbationem & hujus Congregationis institutionem vide sup. in Pii IV. constit. 23. Ad Ecclesia. fol. 36. & const. 81. Alias, fol. 119.

Causa hujus
insti.

DEO autem Patri misericordiarum gratias agentes, qui in Oecumenico Concilio Tridentino Spiritus sancti lumine diffuso, Catholicam veritatem omnibus patefecit, hæreses nostrorum temporum confutavit, mores & disciplinam restituit, ejusdemque Concilii decreta, ab omnibus observari volentes, cum ad singularem Romani Pontificis auctoritatem tantummodo spectet Generalia Concilia indicare, confirmare, interpretari, & ut ubique locorum serventur, curare ac præcipere.

Explicatio
muneris Car-
dinalium.

§. 1. Eorum quidem decretorum, quæ ad fidei dogmata pertinent, interpretationem nobis ipsis reservamus, Cardinalibus verò præfectis interpretationi, & executioni Concilii Tridentini, si quando in his quæ de morum reformatione, disciplina, ac moderatione, & Ecclesiasticis judiciis, aliisque hujusmodi statuta sunt, dubietas aut difficultas emerferit, interpretandi facultatem, nobis tamen consultis, impartimur. Et quoniam eodem Concilio Tridentino decretum est, Synodos Provinciales tertio quoque anno, Diocesanas singulis annis celebrari debere, id in executionis usum ab iis quorum interest, indacem eadem Congregatio providebit. Provincialium verò, ubivis terrarum illæ celebrentur, decreta ad se mitri præcipit, eaque singula expendit & recognoscet. Patriarcharum præterea, primatum, Archiepiscoporum & Episcoporum, (quibus beatorum Apostolorum limina certo constituto tempore visitare alia nostra sanctione jussum est) postulata audiat, & quæ Congregatio ipsa per se poterit, ex charitatis & justitiæ norma expediat, majora ad nos referat, qui Fratribus nostris Episcopis, quantum cum Domino licet, gratificari cupimus. Item ab iisdem Præsulibus

Ista constitutio de visitandis limitibus, Apost. habetur sup. in Tomo 1.

Ecclesiarum exposcat, quæ in Ecclesiis eorum curæ, ac fidei commissis, Cleri, Populique morum disciplina sit, quæ Concilii Tridentini decretorum, cum in omnibus, tum præsertim in residentia munere, executio, quæ item piæ consuetudines, & qui omnium denique in via Domini sint progressus, ipsique det literas ex formula præscripta in testimonium obitæ per eos visitationis liminum Sanctorum eorumdem Apostolorum. Habeat idem Congregatio auctoritatem promovendi reformationem Cleri & Populi, neminem in Urbe, & Statu Ecclesiastico temporali, sed etiam in universo Christiano Orbe, in iis quæ pertinent ad divinum cultum propagandum, devotionem excitandam, & mores Christiani populi ad præscriptum ejusdem Concilii componendos, atque ad rationes difficilissimis his, perturbatque temporibus necessarias confirmandos, quò uberius divinæ misericordie vim in nobis sentiamus, justamque iram, atque animadversionem effugiamus.

Congregatio Nona, pro Status Ecclesiastici Gravaminibus sublevandis.

Nec verò paternus noster affectus, quem erga populos nobis & huic sanctæ Sedi subiectos, tamquam erga peculiare filios gerimus, eo contentus est, quod Deo auctore, nostræque sollicitudine publica pace, & tranquillitate perfruuntur, quodque de eorum utilitate & quiete multis aliis modis præstanda & agenda assidue cogitamus, sed eos etiam ab exactionum oneribus ob temporum interdum difficultates, variisque publici boni rationes, à Prædecessoribus nostris impositis, magnopere, quantum fieri poterit, cupimus sublevare.

Causa hujus
insti.

§. 1. Quocirca novam instituiamus Cardinalium Congregationem, ut quæcumque gravamina veterum, pedagorum & tributorum ejusmodi quæ generis illa sint, eorumque exigendi rationes, Quæstorum injurias, si quas adesse comperint, Commissariorum extorſiones, judicii formam planè postpositâ, maturè audiat & cognoscat, atque si fieri posse videbitur, controversias moderetur & componat; quòd si rationibus hinc inde allatis, accuratè expensis, res transigi nequiverit, eam totam ad nos deferat, ut quod æquum & pium erit, ejus Congregationis consilio prudenter definire valeamus, causas verò in quibus judicialis ordo requiritur, propriis iudicibus de jure decidenda relinquat; Qui autem à iudicibus senserint se gravatos, ad Tribunalia, quæ his sunt ex antiqua institutione præposita, ac ad alia, ut moris est, juris remedia confugiant.

Institutio
Congrega-
tionis 9. cum
ejus facultatibus.

Congregatio Decima, pro Universitate Studii Romani.

De istius Romani Studii erectione, ejusque indultis & regimine, notavi sup. in Bonif. VIII. const. 92. In supremo, fol. 180.

Illud etiam cogitantes, quòd literarum cognitio, liberaleque doctrinæ & disciplinæ, quibus juvenus in publicis Gymnasiis instruitur & eruditur, magnam Christianæ Reipublicæ si cum pietate conjungantur, afferunt utilitatem: tunc enim Civitates & Regna optimè administrantur, cum sapientes atque intelligentes gubernacula possident, eo eam sanè causam Romani Gymnasii ejusque Universitatis ornandæ & amplificandæ curam meritò gerimus, undè & ipsam Universitatem ab ære alieno viginti duorum millium scutorum & aliis pluribus oneribus sublevavimus, ac planè liberavimus.

Causa hujus
insti.

Institutio
Congrega-
tionis 13. &
explicatio
facultatis
Cardi.

§. 1. Itaque ut illius rationibus quamoptime prospiciamus, Cardinales quinque eidem Gymnasio, & Universitati, illiusque reformationi praeficiamus, quibus facultatem concedimus, ut cum opus fuerit, præclaros Theologia Magistros, Jurisconsultos egregios, & liberalium artium Professores eximios undecumque ad juventutem erudiendam evocent, qui morum integritate, eruditione, atque elegantia literarum non minus præstant, quam peritia, usque docendi, assidue prælectionibus juvenes instruant, utque singulis scientiarum Magistris pro meritum ratione, re tamen nobilium, aut cum Successoribus nostris participata, stipendium constituant. Insuper cum in hac Alma Urbe nostra, singulari Dei beneficio inter alias discentium scholas Græcorum, Maronitarum, & Neophytorum, ingenti Pontificum liberalitate, atque munificentia, erecta sint Collegia, congruè redditibus dotata, in quibus sacra Theologia, liberalisque artes Hebraicæ, Græcæ, Arabicæ, & Chaldaicæ edocentur, eisdem Cardinalibus iungimus, ut horum Collegiorum Alumnos ad literarum studia ardentiori animo compellenda, quod ad fidei Catholice propagationem, & literarum ornamentum, & ingenia excolenda maxime pertinet, opportune pro eorum pietate & prudentia, omni adhibito studio, excitari curent. Denique cum in præcipuis Christiani Orbis partibus Sancta hæc Apostolica Sedes, ut pia mater, insignes quasdam Universitates, in quibus sacram literarum, legum, & artium præstantissima studia florent, olim in tutelam, & clientelam receperit, suam nimirum Parisiensem, Oxoniensem, Bononiensem, Salamantinam, ut in eis scilicet ex Apostolicæ Sedis protectione bonarum artium studia, tanto majori cum fructu excolerentur, nos & illas ipsas, & cæteras Catholicas Universitates paternæ benevolentia complectentes, nec ipsam Oxoniensem, quantum in nobis est, deferentes, sed ex intimo animi affectu ad matris gremium, & ad viam salutis revocantes, omnique intimo cordis affectu, & summâ benevolentia profectus, ac sub nostra & beati Petri Apostolorum Principis protectione iterum suscipientes, eidem Congregationi imponimus, ut earundem Universitatum, atque ad eas pertinentium negotiorum apud Sedem Apostolicam curam gerat, illarumque necessitates, nobis Successoribusque nostris ordine exponat, ut eis ex paternâ charitate opem & auxilium afferre valeamus, easque interdum per literas visitet, nostrorum nomine Catholicis viris Apostolicam benedictionem impetiat, illisque ut prospera cuncta eveniant, aliis verò spiritum consilii sanioris, à Deo Optimo Maximo deprecetur.

Congregatio undecima, pro Consultationibus Regularium.

Nec sanè minùs de Regularium Ordinibus liciti sumus, qui Ecclesiæ Dei magnum adjuvamentum atque ornamentum omni tempore præstiterunt, imò verò summomperè cupientes, eorum salutaria studia, progressivè ad pietatem promoveri, qui è fluctibus sæculi in portum regularis vitæ confugerunt, ob eam causam ut remotis impedimentis, & inanibus contentionibus amputatis, sub suavi Religionis iugo, & suorum institutorum observantia quietè vivant, gratumque Altissimo famulatum exhibeant.

§. 1. Quinque alios Cardinales delegimus, quibus facultatem concedimus, ut Regularium, Clausalium, Mendicantium, non Mendicantium, Hospitaliariorum, & Militarum, possidentium & non possidentium, cuiusvis demum Ordinis sint, controversiis, dubitationibus, consultationibusque propositis respondeant. Causas verò quas

inter ipsos religiosos oriri contigerit, juxta quancumque Religionum instituta, eorumque dispositionem, Superiores illorum definiant atque terminent. Dum autem inter Episcopos & Regulares dubitationes inciderint, quæ sub decretorum Concilii Tridentini dispositione aut interpretatione comprehendantur, eas ad eandem Congregationem Concilii remittant. Audiant item ac decendant prædicti Cardinales causas & controversias inter prædictos Ordines verrentes, five in universum five ratione particularium locorum, dummodò formam judicariam non requirant. Concedimus etiam, ut dictis Regularibus, non ad laxiorem, nec ad parem, sed ad arctiorem Religionem transeundi iis quos fervore spiritus incensos ad perfectioris vitæ statum transire velle consulerit, non obstantibus quibuscumque Prædecessorum nostrorum decretis, licentiam dare possint. Apostatarum quoque ejectorum, & præterea extrâ Monasteria degentium aut vagantium causam iidem Cardinales audiant & cognoscant, eosque coercendi potestatem habeant. Curent præterea visitationis Apostolicæ iussa, & constitutiones editas à Romanis Pontificibus circa ipsos Regulares exequendas, & in usum introducendas. Provideant insuper Regulares laudate vitæ, zelo Dei, & salutis animarum, & prudentia spiritus præditos, institutorumque Regularium Ordinibus, & laudabilium consuetudinum peritissimos, qui, cum necessitas exegerit, Provincias sui Ordinis, & non alterius, receptis à nobis literis ad Omnipotentis Dei laudem, & locorum utilitatem salubriter visitare valeant. Sub nomine autem Regularium etiam Moniales cuiusvis sint regulæ, & observantiæ comprehendendi volumus. Omne denique studium Cardinales ipsi impendant, ut ab inferioribus ergà superiores debita humilitas & obedientia, ac vicissim à superioribus ergà illos paternæ benevolentia in multa charitate & disciplina, in spiritu lenitatis adhibeatur, nevé dominantur inter Fratres, sed Superiores ipsi Patres se esse meminerint. Postremo eisdem Cardinalibus quasi Religiosorum omnium tutissimum perflugium esse volumus, ut eorum auctoritate & auxilio recreati, stadium religiosæ vitæ, & regularis perfectionis sine impedimento strenuè percurrant.

Congregatio duodecima, pro Consultationibus Episcoporum, & aliorum Prælatorum.

ET nos quidem ex Apostolicæ servitutis officio, omnibus Christifidelibus ad adificationem debitores sumus, sed tamen præcipuo charitatis affectu, in CHRISTO complectimur Venerabiles Fratres nostros Ecclesiarum Præfules & Pastores, qui ex præcepto Apostoli vigilant, in omnibus laborant, ministeriumque suum impleunt.

Causa hujus
initia.

§. 1. Quare ut ab Apostolicæ Sede, à qua, tanquam à matre honorem & jurisdictionem acceperunt, sibi, cum opus erit, auxilium, præsidiumque paratum esse intelligant, ut greges suos tantò fructuosius pascant, quinque iidem Cardinales præponimus Episcoporum & aliorum Prælatorum consultationibus audiendis. Quorum erit facultas, ut Patriarcharum, Præmatorum, Archiepiscoporum, Episcoporum, Prælatorum, & Ordinariorum quoruncumque etiam inferiorum, non tamen Regularium, petitiones audiant, propositisque difficultatibus, questionibus, ac controversiis, aliisque super quibus consulti fuerint, etiam per literas sedulo humanitèque respondeant, dubia, rationes, & causas Ecclesiarum, earumque dignitatis, jurisdictionis, exemptionis, immunitatis, iurium, privilegiorum, & laudabilium consuetudinum conservationem concernentes, summariè cognoscant, atque tam ex partium petitione, quam ex officio

Institutio
Congrega-
tionis 12. &
explicatio
muneris ejus
Cardi.

Causa hujus
initia.

Institutio
Congreg. 11.
un facultatis
Cardi.

componant, prout honestum, opportunumque eis videbitur. Causas item & controversias inter eisdem Prælatos de iurisdictione, aliave de causa exortas, item inter Capitula aut obtinentes dignitates, ac inter quascunque singulares personas, & Universitates, aut locorum in temporalibus Dominos, præter eas quæ Concilii Tridentini interpretationem exigunt, vel ordinem iudicarium re ipsa requirant, examinent, atque amicableiter desuper transigere, etiam per alios, si ita consultum videbitur, etiam extra diocesim curent. Ac propterea ad Ecclesias visitandas ubique locorum, in quibus Christiana viget religio, Visitatores nobis præsentent, ut exemplo B. Gregorii Magni, S. Leonis, & aliorum Summorum Pontificum Prædecessorum nostrorum, cum in Domino expedire videbitur, designare valeamus. Visitationis item formam illis præscribant, ut multo cum spirituali fructu, & fidelium ædificatione munus suum obeant, negotiorumque omnium tractationis modum assignent, ac negligentiam, si quando opus erit, emendent. Insuper, ubi necessitas exegerit, viros usu, & doctrina idoneos, rectos, & timentes DEUM deligant, qui nostrarum literarum auctoritate suffulti, Ecclesias ut Vicarii Apostolici regant. Denique eisdem Cardinales immunitatis Ecclesiarum defensores, ad tuendum ipsorum Prælatorum personas, res, & bona quacunque Ecclesiarum prædictarum, ab omnium iniuriis atque oppressionibus adversus quoscunque quavis auctoritate præfulescentes constituimus.

Congregatio decimatertia, pro Viis, Pontibus, & Aquis curandis.

Huic Congregationi curam hic Pont. demandavit Aqua Falcis mox ab eo ad Urbem conductæ, ut videre est infra in Constit. 101. Supremi.

Causa huius instit.

ET quoniam curæ & cognitiones nostræ ita in communis boni procuracione defixæ sunt, ut dùm graviora maiorque disponimus, eorum etiam quæ minora videntur, non obliviscamur, considerantes, quòd ad Almæ Urbis, locorumque ditionis nostræ Ecclesiasticæ ornamentum, aeris salubritatem, civium, incolarumque utilitatem, ac ad Peregrinorum, iterque agentium commoditatem, eorum præsertim qui ad hanc Apostolicam Sedem, & Apostolorum limina, totque sancta loca innumerabilium Martyrum sanguine consecrata pie visitanda concurrunt permagni interest Viarum, Pontium, & Aquarum curatio.

Institutio Congregationis 13. & explicatio facultatum ejus.

§. 1. Nos idcirco huic rei consulentes, Cardinales sex infra nominatos deputavimus, quibus facultatem damus vias curandi, aperiendi, muniendi, dirigendi, faciendæque tuendi, coarctatas dilatandi, veteres jam occupatas iterum in publicum usum vendicandi & redigendi. Pontes item tuendi, & ubi opus est, novos extruendi, veteresque ruinosos instaurandi, & jam collapsos, si ita necessitas tulerit, reficiendi. Aquarum præterea curam gerendi, illarum præsertim, quas nos tanta impensa, & labore in Urbem adduximus, illaque certa mensura ad publicum usum commoditatemque melius distribuenti, & ubi majori aquarum copia opus esse viderint, fontes aquarum magis uberes unde deduci possint, investigandi, deductiones, substructiones, castella, formas, aqueductus, receptaculæque earundem sacra tecta conservandi, omne impedimentum tollendi. Cameræ nostræ Apostolicæ Præfides & Ministros, quibus ea specialis cura data est, dirigendi, & ab contradictoribus protegendi, aliisque in his

necessaria & opportuna exequendi. Si qua verò difficultas, aut causa, tam contra Domicellos, Communitates, & Universitates, quam contra quoscunque alios etiam immunes atque exemptos, super his omnibus jam exorta sit, vel in posterum incidit, eam omnes summarie, sola facti veritate inspecta, ac re primum ad nos, & successores nostros relata, demum definiendi potestatem facimus. Qua Facultate iidem Cardinales nedum in Alma Urbe, verum in universa Ecclesiastica ditione temporalis uti posse statuimus.

Congregatio decimaquarta, pro Typographia Vaticana.

Hæc mox jussu Pauli V. qui eam Camerali Typographia univit, Cameralis nuncupatur.

Ceterum, cum ex omni antiquitatis memoria notum sit, quantum semper detrimenti attulerint hæreticorum, aliorumque veritatis hostium insidias, & doli in sacris libris, Sanctorumque Patrum monumentis, multis modis corumpendis, quantaque hoc potissimum sæculo animarum perniciem importaverint eorundem librorum mendosæ impressiones, atque editiones impuro & pestifero hæresium fermento, aliisque erroribus coinquantæ & corruptæ.

§. 1. Nos volentes pro nostra Pontificia solitudine, ut hæc præclara & salutaris nostra hereditas à majoribus accepta, inviolata conservetur, nuper ejus rei causâ non mediocri nostra impensâ Typographiam Vaticanam ereximus; nunc autem pro rei & negotii gravitate, infra scriptorum Cardinalium Congregationem statuimus, quibus imponimus, ut sacra Biblia Latine vulgatæ, Græcæ & Hebraicæ editionis; decretales Epistolæ, Concilia generalia, Sanctorum præcipuorum Ecclesiæ Doctorum opera, cæteros denique libros, quibus fidei Catholicæ doctrina traditionesque Ecclesiasticæ continentur & explicantur, quam emendatissime curent imprimendos. Quare mandamus, ut vetustis manuscriptis, emendatisque codicibus adhibitis, præsertim ex nobili & optimis libris referata Pontificia Vaticana Bibliotheca, adiumento etiam, studio atque opera doctissimorum hominum ex omnibus Christiani orbis nationibus, per nos aut Successores nostros selectorum, qui linguarum peritissimi sint, libros imprimendos, accuratè diligenterque conferant & recognoscant, ut eorum editio, quantum fieri poterit integra atque incorrupta prodeat. Sicque verò graviores dubitationes, & difficultates in veterum codicum auctoritate, librorum correctione & emendatione inciderint, rebus prius in Congregatione examinatis, ad nos referant, ut in lectionum varietate, id quod orthodoxæ veritati maximè consonum erit, ex speciali Dei privilegio huic sanctæ Sedi concessio, statuamus. Demum eadem Congregatio Typographos, & librorum recognitioni Præfatos in quibuscunque Christiani Orbis Regnis & Provinciis admonebit, ut diligentem opportunamque operam ad sua quæque officia fideliter atque integrè exequenda præstent, in librorumque hujusmodi editione accuratissime versentur, & ad Varicanæ impressionis præscriptum, ac normam omnino se conforment.

Congregatio decimaquinta, pro Consultationibus negotiorum Status Ecclesiastici.

Denique cum valde consentaneum sit, ut qui longinquos & externos in Domino complecti-

Causa huius instit.

Institutio Congregationis 14. cum suis facultatibus.

Causa huius instit.

mur, eorumque negotia breviter expediri curamus; domesticis & propinquis, qui sub nostra & Apostolica Sedis peculiari tutela sunt, hac quoque in re propensius consulamus, idcirco ut fideles Ecclesie Romanæ filii ditioni nostræ temporali subiecti, ad varia negotia, causas, necessitatesque suas proponendas per facilem aditum inveniunt, remediumque ex iustitiæ & aequitatis præscripto, opportunè celeriterque obtineant.

§. 1. Cardinales itidem quinque eorum consultationibus præsumimus ac præponimus, quorum iuris sit, consultationes, dubitationes, querelas super causis civilibus, criminalibus & mixtis ad forum seculare dumtaxat spectantes audire, illasque inter se statim diebus conferre, quod æquum esse, quòdque omnibus diligenter consideratis de maioris partis sententia expedire censerint, statuere & deliberare, iustitiam expedire, administrare, que decreta ac definita erunt, executioni tradi curare. Ipsisque facultatem concedimus, ut ipsi omnibus negotiis & causis, cuiuscumque generis illæ sint, etiam inter Piscopum & privatum, & inter privatos, Communitates, Universitates, Collegia, eorumque Rectores aut alios quoscumque etiam coram ditionis Ecclesiasticæ Magistratibus, & Ministris, introducant, & pendentes, quod iustum & æquum videbitur, præcipiant, causas ab eis, ubi id ius & ratio postulaverit auctoritate nostra avocent, aliisque iudicibus committant, Gubernatoribus, Prætoribus, cæterisque omnibus officia ex Sedis Apostolicæ auctoritate gerentibus, ut iusta & imperata ejus Congregationis exequantur significant, impositas penas sive multas, bonorum proscriptiones, seu confiscationes; corporis penas etiam capitis ultimique supplicii (nobis tamen prius de ea re consultis) moderentur, & commutent, ac eos qui in carcere erunt de loco ad locum, ubi id ita expedire iudicaverint, transferri mandent, cæteraque pro iustitiæ conservatione, subditorumque nostrorum quiete, & tranquillitate deliberent ac provideant.

Sequitur declaratio facultatum prædictarum Congregationum. Et alia habentur immediate post hanc bullam, & in ejus fine.

DENIQUE quo dictarum Congregationum expeditiones valide existant, Cardinales in qualibet Congregatione non sint pauciores tribus. Ad iudiciorum verò consilium evitandum, volumus, ut unaqueque Congregatio quando aliqua causa, questio vel consultatio ad eam delata fuerit, diligenter perpendat, an ad ipsam propriè ejus causæ, cognitio & expeditio pertineat, & si ad se minimè spectare cognoverit, eandem ad Iudices ordinarios, vel ad propriam Congregationem remittat.

§. 2. Itidem Cardinales dictarum Congregationum, proprios sigillatim habeant Secretarios, ab eisdem liberè deputandos, & ad res, quæ in dies geruntur, annotandas; & in publicam formam, si opus fuerit, redigendas.

§. 3. Et quoniam divinis oraculis admonemur, ubi multa consilia, ibi salutum, adesse eadem Congregationes pro earum arbitrio viros sacre Theologiæ, Pontificis, Cæsareique juris peritos, & rerum gerendarum usu pollescentes in consultationibus, advocent, atque adhibeant; ut causis, questionibus, & negotiis quam optime discussis, quæ Dei gloriæ, animarumque salutis, & iustitiæ, atque æquitati consentanea maxime erunt, decernantur: graviora verò quæcumque, ad nos vel successores nostros deferantur, ut quid secundum Deum expediat, ejus gratia adjuvante, maturè statuamus.

§. 4. Sicque & non aliter per quoscumque Iudices ordinarios & delegatos, etiam dictos Cardinales, ac sanarum Palatii Apostolici Auditores, sublati eis & eorum cunctis quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate, iudicari & definiti debere, irritumque & inane quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari, decernimus.

§. 5. Non obstantibus præmissis, ac quibuscumque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, privilegiis quoque, indultis & literis Apostolicis quibuscumque formulis illa sint concepta. Quibus omnibus etiam de illis, eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio aut quævis alia expressio habenda esset, eorum tenores, ac si ad verbum infereretur, presentibus pro expressis atque insertis habentes, illis aliis in suo robore permanens, hac vice dumtaxat specialiter, expressè, ac latissime derogamus, cæterisque contrariis quibuscumque.

§. 6. Demùm per paternam nostram charitatem & auctoritatem, quæ nobis à Christo Domino data est, admonemus, & per ipsum, per quem Reges regnant, obtestamur charissimos in Christo filios nostros in Imperatorem electum, omnesque Reges, ac dilectos filios nobiles viros Rerum Publicarum, aliisque Duces, ac cæteros seculares Principes, quos Deus in excelsis loco constituit, & temporali potestate communit: ut fidei Catholicæ propugnatores & defensores sint, de quorum pietate, & ergà Apostolicam Sedem observantia, atque obedientia magnopere in Domino confidimus, & quam etiam munitis argumentis perspiciam habemus.

§. 7. Alios verò ecclesiastica dignitate præditos per hæc Apostolica scripta, ac per debite obedientie vinculum, statimque sui sublimem conditionem, qua Deo arctius religati existunt, obstringimus, ut his nostris conatibus ad Dei laudem, fidei propagationem, fidelium commoditatem & salutem assistant, ac auctoritatem, quæ Ecclesiæ Præfultibus in Beati Petri persona à Christo Domino credita & collata fuit, ac fidei Catholicæ exaltationem & augmentum, prout ex eorum munere teneant, nosque eos pie facturos speramus, tueantur & defendant; ac operam dent, studiumque demùm omne conferant, ut eadem auctoritas Ecclesiastica omnino illæsa conservetur, ac Ecclesiæ Dei ministris, opem & auxilium in omnibus impendant, & de Sede Apostolica, ex sua majorumque suorum pietate, benè mereri non desinant; memores se in susceptione Imperialis, ac Regii diadematis & Principatus, ad id præ cæteris devinctos esse, ut inde in hac mortali vita felicitatem, nostramque & Sedis ejusdem benigntatem ac gratiam uberius valeant promereri, post exactum verò mortalis hujus vite curriculum, à Deo æternam gloriam & beatitudinem consequantur. Quod si secus ab eorum aliquo, quod minimè credimus, factum erit, divinam iram, donec sub potenti manu Dei humilientur, qui tarditatem penæ supplicii interdum gravitate compensat, se minimè eludere posse certo sciant.

§. 8. Ut autem hæc literæ quamprimum ubique locorum & gentium innotescant, quas inter alias Apostolicas, perpetuasque constitutiones annueramus, illas publicis in locis de more affigi, earumque exemplis, vel etiam impressis sigillo obfirmatæ, alicujus personæ Ecclesiasticæ dignitate præditæ, ac quibus Notarius publicus subscripserit, eandem fidem haberi volumus; quæ his exhibitis maxima cum reverentia omnino esset adhibenda.

§. 9. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrorum decretorum, constitutionum, assignationis, dationis, attributionis, confirmationis, corroboracionis, statutorum, approbationis, declarationis, delectionum, præfationis, tributionis, permissionis, reservationis, impartitionis, institutionis, concessionis, inunctionis, impositionis, voluntatum, mandati, præpositionis, derogationis, admonitionis, obtestationis, obstrictionis, & annumerationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare presumpserit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursurum.

Horatio ad
Principes
Christianos.

Monitiòque
ad quoscumque
Ecclesiasticas per-
sonas, ut in
præmissis fa-
veant & obe-
diant.

Hæc consti-
tutio sit per-
petua & in-
ter Apostolicas
constitutiones annu-
meretur.

Sanctis po-
nis.

1588.

Dat. P. An. 3.
die 22. Jan.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo octavo, undecimo Calend. Febr. Pont. nostri Anno 3.

Publicatio.

Anno à Nativitate Domini 1587. Indictione 15. die verò Mercurii 23. mensis Martii, Pontificatus Sanctissimi in Christo patris, & D. N. D. Sixti divina providentia Pape V. anno ejus tertio, retrospectæ literæ Apostolicæ affixæ, lectæ, & publicatæ fuerunt in valvis seu portis S. Joannis Lateranensis, & S. Petri Principis Apostolorum de Urbe, necnon Cancellariæ Apostolicæ, & in acie Campi Floræ, & per aliquod temporis spatium dimissæ, per nos Joan. Baptistam Bagni, & Hieron. Lutium S. D. N. Papa Curs.

Alex. Parabiacus Mag. Curs.

Sequuntur aliæ declarationes editæ in Consistorio die xi. Maji 1588. circa dubia in Congregationibus eveniendâ.

Institutio
Congregationum de
qua supra.

Sanctissimus D. N. quod postquam deputavit omnes Cardinales super diversis Congregationibus, ut vellent illis incumbere, & expedire negotia quæ ibi tractanda erunt, ut & ipse Sanctissimus à laboribus sublevetur, & partes civis expediantur.

Amotio dubitationum cum declarationibus subsequentibus.
Declaratio prima.

§. 1. Et ne in futurum dubitari contingat, super aliquibus dubiis, quæ oriri possunt super facultatibus ipsis Congregationibus datis. Idem Sanctissimus sua fecit quinque infrascriptas declarationes.

Declaratio secunda.

§. 2. Prima est, quod si ante inchoatum iudicium coram aliquo iudice, pars coram Congregatione conventa, tenuerit in illam consentire, & noluerit causam à Congregatione terminari, tunc ad iudicem competentem remittatur.

Declaratio tertia.

§. 3. Secunda est, quod si coram aliquo iudice inchoatum fuerit iudicium, & deinde partes concordēs Congregationem adiverint, tunc Congregatio causam decidat, & acta ad se transportari faciat.

Declaratio quarta.

§. 4. Tertia est, quod si causa coram Congregatione cepta fuerit, & deinde aliquod emergens supervenerit, tunc nedum illa causa cepta, verum etiam illud emergens à Congregatione expediatur.

Declaratio quinta.

§. 5. Quarta, quod si causa in ipsa Congregatione decisa, requiratur ut super illa expedietur supplicatio vel breve, tunc decrevit Sanctissimus sua, quod in ipsa supplicatione, vel in ipso breve fiat mentio, causam de Ordine Congregationis fuisse ita terminatam.

§. 6. Quinta, quod si alicui Congregationi occurrerit, pro rebus ad ipsam Congregationem spectantibus brachio seculari indigere, tunc recuratur ad Gubernatorem, Auditorem Camera, Vicarium, sive ad alium iudicem, qui præceptis ab ipsa Congregatione factis, obedire teneatur.

LXXV.

Prohibitio ad arma ex quibusvis causis, præter hic exceptas armatorum manus, aut cavalcatas, tumultuosasque hominum collectas in Statu Ecclesiastico congregandi.

De materia vide quæ sup. notavi ad const. 10. Joan. XXII. fol. 201. & etiam Pauli II. const. 4. Viros fol. 583. ac Alex. VII. const. 1. Inter, fol. 471. Tom. 1. Necnon constitutionem Marchie lib. 1. cap. 15. & lib. 4. cap. 42. Ac Urbis Statutum, lib. 2. cap. 34.

Edita An. D. 1588.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Causa hujus prohibitionis.

Dum pro communi totius gregis Domini salute fidei nostræ divinitus crediti, sollicitis studiis invigilamus, eam quasi peculiarem, & privatam populorum, nostro & Sanctæ Romanæ Ecclesiæ,

cui Deo auctore præsidemus temporali dominio subsectorum curam suscipimus, ut in quibuscumque ejusdem domini Provinciis, Civitatibus, Oppidis, & locis, armorum, tumultuum, & seditionum turba & strepitus conquescat; ac inde omnibus injuria, & violentiæ terror propulsetur, atque facinorosorum hominum audacia, & immanitate compressa, securitas, quies & tranquillitas, perpetuo vigeat & conservetur. Est enim rationi consentaneum, ut Sedes Apostolica, quæ cunctis mortalibus iustitiam ministrat, suos præcipuè subditos in officio contineat, & cuius auctoritas ab ipso Domino constituta, apud omnes etiam externas gentes, ac nationes, sacrosanctæ & inviolabilis permanet debitam obedientiam, & reverentiam, quam summi Reges & Principes ei præstant, magis ab iis exigat, qui ipsius regimini in temporalibus subiecti, neminem alium Principem, præter Romanum Pontificem agnoscunt, ut quæ denique universos fideles sublevare solet, has potissimum in suam tutelam specialiter receptos, ab omni injuria vindicet, atque illos defendat, & teneatur.

§. 1. Quare nos considerantes primum quidem in quantas rerum perturbaciones, in quam intolerabilem perditionem & sceleratorum hominum licentiam noster Pontificatus sui initio incidit, vel ad eas potius fuerit divina providentia reservatus; deinde verò quàm benigne favorit ceptis nostris divina majestas, quàm facile non obscura Dei Omnipotentis voluntate hæc, quæ fruimur, quies & tranquillitas sit consecuta, numquam cessamus quantas maximas animus noster capere potest eidem divine bonitati, in qua sola confidimus, gratias agere; & ne in aliquo pastoralis nostri officii desideretur, his quasi fundamentis constituenda Reipublicæ præclarè jactis, novis eam præsidii in dies magis ac magis confirmare & communire studemus. Cùm igitur inter alios, qui in temporali Statu nostro Ecclesiastico irreperant, quosque à nobis magna ex parte sublatos omnino abolere nitimur, pravos abusum, ille sit maxime damnabilis, ut Barones, Domicelli, aut Communitates vel Universitates, aut Magistratus Civitatum, Oppidorum, Terrarum, Castrorum, & locorum prædictæ Romanæ Ecclesiæ temporali ditioni subsectorum, sub prætextu recuperandæ, sive manutenendæ, aut adipiscendæ possessionis bonorum immobilium, finium, seu terminorum & limitum territorii, vel agrorum, quæ ad se legitime pertinere prætendunt, dum se ius suum tueri aut consequi velle, & bona sua ab illicitis detentoribus, vel occupatoribus vindicare proferuntur, ad arma populos convocare & incitare, tumultus facere, & commovere, armatorum hominum copias cogere non dubitent, ex quibus postmodum quandoque contigit, ut commotis seditionibus auxilium facinorosorum, seu etiam bannitorum evocent, imbecilliores per injuriam opprimant, agros vastent, aliena rapiant, & invadant, pacificos possessores expellant, quietem publicam perturbent, in Dei offensam, animarum perniciem, & scandalum plurimorum.

Nos attendentes ad hoc potissimum sanctæ hujus Sedis potestatem & auctoritatem in supremo iustitiæ throno, Deo disponente, collocatum, & viribus ad regendos subditos necessariis fuisse satis instructam, & roboratam, ut per Romanum Pontificem illi præsidendum cunctis æquali lance jure suum sine aliqua perturbatione tribuatur, ideoque minimè ferendum, ut quis temerè, vel vi adhibita, jure sibi dicat, sed magis talem improbitatem & audaciam, legum reverentia, & gravius poenis propositis compescendam, & coercendam esse censentes, habita cum Venerabilibus fratribus nostris Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalibus deliberatione maturata, de eorum consilio pariter, & assensu, hac nostra perpetuè valitura constitutione districtè interdiciamus & prohibemus, universis, & singulis Ducibus, Principibus, Marchionibus, Co-

Prohibitio convocandi ad arma & cavalcatas, seu adunatas faciendi p. quacumque Universitates seu personas quasvis dignitate fungentes S. R. E. mediatè & immediate subiectas in quibuscumque casibus, præter infra exceptos.

mitibus, Baronibus, & Domicellis quacumque etiam Ecclesiastica dignitate fungentibus, necnon Vicariis, Feudatariis, armorum ductoribus, Capitaneis, Magistratibus, Communitatibus, Universitatibus & Officialibus, ac aliis personis Civitatum, Oppidorum, Terrarum, Castrorum, & aliorum quorumcumque locorum ipsi Romana Ecclesia mediata in temporalibus subiectorum, cujuscumque status, gradus, & conditionis existentibus, ne posthac quisquam eorum, propter prædictas vel alias etiam urgentiores, & urgentissimas etiam consuetudine permittas causas, etiam si ab aliis provocati & lacerati fuerint, etiam propter, & adversus hujusmodi manifestas injurias, aut recuperandæ vel adipiscendæ possessionis, seu quasi dominiorum, statuum, feudorum, prædiorum, agrorum, finium, limitum, & terminorum, ac quorumcumque jurium, & bonorum ad eos, vel ad Ecclesias, Monasteria, Hospitalia, de eorum jurepatronatu, seu præsentandi, aut sub ipsorum cura, administratione, vel protectione recepta quomodolibet pertinentium sive violentæ, aut de facto recuperatæ, vel adeptæ, retinendæ & tuendæ, vel alio quovis prætextu, aut quæsto colore vel ingenio, militum copias cogere, comparare, vel ducere, nec populos, vel singularem singulares personas, publicè aut privatim, palam vel occultè ad arma, ut dictum est, convocare, conclamare, concitare, neque armorum manus, cætos, conventus, seu illicitas, & tumultuosas collectas vel etiam, ut vocant, cavalcatas vel adunatas facere, vel insinual congregare, aut aliquid hujusmodi, per se vel alium, moliri aut machinari audeat vel præsumat. Quare his præsentibus monemus tam dictos Duces, & reliquos quàm Communitates ac Universitates, quæ super possessione, seu quasi, aut super finibus, limitibus, seu terminis territorii, vel agrorum, aut aliis hujusmodi rebus, aliquas inter felices vel controversias habent, ut si illas extrajudicialiter aut amicaliter componere, seu super eis transigere commodè nequeant, easdem in iudicium deducant, sive deductas prosequantur, & donec legum ac iudicium auctoritate illæ definiantur, seu iustitiæ complementum sibi ministretur, æquo animo ferant, & expectent.

§. 2. Cæterum, quoniam interdum aliqua urgent occasio armatos homines colligendi, id tantum permittimus & concedimus in casibus infra scriptis, nempe ut prædicti Duces & alii prædicti, Communitates, & Universitates, suas Civitates, Oppida, Terras, Castra, Domos, Villas, dominia, loca & territoria à grassatoribus viarum, latronibus, sicariis & bannitis, aliisque similibus notoriis delinquentibus defendant, dum ab ipsis actu infestantur, vel ut secuta & expurgata custodiant, resolvè capiant, & apprehendant, vel capto & apprehensos Gubernatoribus, Potestatibus, Iudicibus, aliisque Magistratibus, & Officialibus tradant, sive ut Curie ministris adversus tales facinorosos auxilium & opem impendant, juxta constitutionem nostram alias super hoc editam, vel si ad tuenda, & propugnanda loca maritima, tam in Tyrrheni quàm Adriatici maris littore periculosis temporibus adversus Turcas, & piratas, vel alias ex nostro vel nostrorum successorum Romanorum Pontificum præcepto, ad arma eos concurrere contigerit. Sed & si quis alius ejusmodi casus ingruat, qui similiter armorum auxilium deponere videatur, noverint, nos, aut pro tempore existentem Romanum Pontificem quamprimum consulendos esse; à quibus, aut promptum subsidium, aut licentiam super præmissis citius impetrabunt. Si verò necessitas adeo urgeat, ut impellat, ut ad nos, aut ad successores nostros prædictos in tempore, vel opportunè recurri non possit, tunc Provinciarum, Civitatum, Oppidorum, Terrarum, & locorum Præsides, Gubernatores, Locatenen-

tes, & Officiales, à nobis & Sede Apostolica deputatos adeant, eisque hujusmodi necessitatis causas exponant, ac ab ipsis arma sumendi licentiam obtineant, ita ut tales armorum collectas, de aliquo ex superioribus prædictis permittit vel auctoritate factas fuisse manifestò constet.

§. 3. Quòd si quis contra præsentem nostram prohibitionem, & interdictum, directè vel indirectè quicquam attentare aut aliis mandare, vel transgressoribus adharere vel favere præsumperit, cum, si Dux, Princeps, Marchio, Comes, Baro, Domicellus, Vicarius, Feudatarius, aut quævis alia singularis persona extiterit, læsæ majestatis reatum verum, ac nulla juris, aut hominis fictione confictum crimen incurrisse, & ejusdem Romanæ rebellem, omnibusque & singulis privilegiis, gratiis, libertatibus, indultis, exemptionibus, immunitatibus, realibus, personalibus & mixtis, necnon Ducatibus, Principatibus, Marchionatibus, Comitibus, Civitatibus, Oppidis, Terris, Castris, Dominiis, Vicariatibus, Guberniis, locis, jurisdictionibus, dignitatibus etiam ecclesiasticis, honoribus, juribus, officiis, ac beneficiis, quorum per infra scriptam privationem vacantum collatio, provisto, & omnimoda dispositio nobis & Apostolicæ Sedi perpetuò reservata sit, & esse censetur, ita ut de illis per alium, quàm per nos, aut pro tempore existentem Romanum Pontificem disponi nullo modo possit aut debeat, necnon pensionibus & fructibus ecclesiasticis, ac etiam quibuscumque feudis & concessionibus, quæ à Romana prædicta, & aliis quibuscumque Ecclesiis obtinent, & in futurum obtinebit, cæterisque omnibus in Sedis Apostolicæ temporali dominio possessis, immobilibus, mobilibus, & se moventibus, bonis, juribus, & actionibus eo ipso privatum, ipsūque & illius filios ad illa & quælibet alia in posterum obtinenda, ac quoscumque actus legitimos exercendos inhabiles, & indignos fore, & esse. Ac præterea à dicto Statu ecclesiasticæ universi, unà cum sua familia perpetui exilii poena damnari debere, domosque, ædificia, arces, & fortalicia ejusdem demolenda, & solo æquanda, seu aliis Camera Apostolicæ juribus adscribenda esse, nec illis portam ullius dignitatis ecclesiasticæ vel mundanæ unquam patere statuimus, decernimus, & declaramus. Insuper Vassallos, Castlotes, Vicarios, Capitaneos, Potestates, Officiales, Populos & subditos eorumdem à fidelitatis juramento ac homagii & quocumque alio jure, quo ipsis quomodolibet adstricti fuerint, ex nunc penitus absolvimus & liberamus. Ducatus verò, Domina, Vicariatus, Gubernia, Feuda, Civitates, Oppida, Terras, Castra, & loca, cæteraque bona prædicta, necnon jura & actiones cum fructibus, redditibus, proventibus, & emolumentis eorumdem, Fisco nostro, & Camera prædictæ ipso facto, & absque aliqua declaratione, etiam in præjudicium filiorum & aliorum descendendum in investituris, concessionibus, seu aliis dispositionibus comprehendimus, in omnibus & per omnia, periodè ac si per lapsum temporis illorum concessionis, & finitam lineam ad ipsam Camera devoluta essent, confiscamus, & applicamus. Sin autem Communitates, & Universitates in præmissis communi consilio deliquerint, eas omnibus, & quibuscumque Castris, Villis, & jurisdictionibus, ac communibus bonis, rebus, & juribus ad illas pertinentibus, privilegiis, immunitatibus, exemptionibus, libertatibus, & indultis eis quomodolibet concessis similiter privamus, privatæque declaramus, ac dicta Castra, Villas, ac jurisdictiones, bona, res, & jura similiter Fisco, & Camera prædictis applicamus, & appropriamus. Statuentes etiam contra principales auctores & particulariter delinquentes tamquàm dicti criminalis læsæ majestatis reos, ut præsertim, procedi debere. Et nihilominus omnem & quacumque possessionem, seu quasi sic de facto contrā

Pœna contravenientium.

præsentem nostram constitutionem, cum manu seu collecta armatorum hominum in futurum pro tempore apprehensam, usurpatam, detentam, vel occupatam, sive adipiscendo, sive taliter adeptam retinendo, sive recuperando, omnisque actus possessorios, vel quasi quomodolibet factos, necnon super illis confecta instrumenta, rogatus, & alia acta, & inde secuta quæcumque annullamus, irritamus, & viribus evacuamus, necnon penitus cassamus, & abolemus, ac pro irritis, nullis & infectis, & merè attentatis habenda, nullisque roboris vel momenti esse, ac nullum inde jus, nullamque actionem cuiquam de novo acquiri, nasci, aut competere, neque postmodum lapsu temporis etiam longissimi ex huiusmodi possessione ab initio, ut præfertur, vitiosa, ullam præscriptionem sequi, cuiquam ullo tempore suffragari posse. Quinimò prædictis delinquentibus amotis & expulsi priorem possessionem, in primis & ante omnia in suam pristinam possessionem, seu quasi restituendum & plenarie reintegrandum, & donec & quousque cui illa de jure competat legitime decernatur, manutenendum esse, eisdemque delinquentes ad damna, expensas & quicquid interest parti læse reficienda, & resarcienda teneri, & obligatos existere, ac ad id cogi & compelli. Super præmissis verò omnibus & singulis per accusationem, delationem, inquisitionem, & quovis alio meliori modo, tam ad partis, & Fisci instantiam, quam ex mero officio civiliter, & criminaliter, aut mixtum procedi posse.

Decretum irritans.

§. 4. Sicque per quoscumque Iudices ordinarios & delegatos quavis auctoritate fungentes, etiam casum Palatii Apostolici Auditores, & S. R. E. Cardinales sublata eis, & eorum cuilibet aliter iudicandi, interpretandi facultate, & auctoritate, ubique iudicari, & definiri debere, ac quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter attentari contigerit, irritum & inane pariter decernimus & declaramus.

Clauſula derogatoria.

§. 5. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, statutisque, & consuetudinibus quarumvis Provincialium, Civitatum, Oppidorum, Terrarum, Caſtrorum & locorum, necnon privilegiis, indultis & literis Apostolicis ac investituris; & concessionibus prædictis quoquo modo factis, concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, eorum tenores præsentibus pro sufficienter expressis, illas alias in suo robore permanſuris, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, cæterisque contrariis quibuscumque.

Forma & effectus publicationis huius const.

§. 6. Volumus autem, ut eadem præsentem ad valvas Lateranen. & Principis Apostolorum de Urbe Basilicarum, & in acie Campi Floræ de more affigantur, & illis detractis transumpta inibi affixa relinquantur, factaque huiusmodi publicatione hic in Urbe, & in ejus districtu post quindecim, alibi verò post triginta dies, quoscumque perinde arceant, & afficiant, ac si eorum unicuique personaliter intimata fuissent. Sed & quo facilius possint ad univerſorum noticiam pervenire, mandamus omnibus, & singulis Vicelegatis, Præſidentibus & Gubernatoribus Provincialium, & Civitatum quarumque dictæ nostræ ditionis ecclesiasticæ, ut in sua quique residentia, Civitatibus, Oppidis, Terris, & Caſtris sibi benefiſis, curent easdem nostras literas in locis consuetis de more publicari.

Transumptum hinc, & sanctio penal.

§. 7. Et quia difficile foret illas ad eorum quemlibet & ad singula loca ubi opus erit deferre, decernimus transumptis ipsis etiam impressis, notarii publici manu subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate ecclesiastica constitutæ munitis, in iudicio & extrà illud, ubique eandem fidem adhibendam esse, quæ ipsis originalibus adhiberetur si essent exhibitæ vel ostensæ.

Nulli ergo &c.

Dat. P. An. 7. die 18. Febr.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo

octuagesimo octavo, undecimo Kal. Martii, Pont. nostri Anno 3.

Ego Sixtus Catholicæ Ecclesiæ Episcopus subscripsi.

PP. subscript.

Cardd. subsc.

Ego Alex. Cardinalis Farnesius Episcopus Ostien. Vicecancellarius.
Ego Jo. Antonius Episc. Portuen. Card. S. Georgii.
Ego Alph. Card. Gesualdus Episcopus Tufulanus.
Ego Inn. Avalos Card. de Arag. Episcopus Sabinen.
Ego Marcus Ant. Card. Columna Episc. Prænestin.
Ego Ptolemæus Cardinalis Comensis Episc. Albanensis.
Ego Marcus Sitticus Card. ab Altaemps tit. S. Mariæ Tranſiberim.
Ego P. Card. Sanctacrucius tit. Clementis.
Ego Gabr. Card. Paleottus tit. S. Mariæ super Minervam.
Ego Ludovicus tit. S. Anastasiæ presb. Card.
Ego Nic. de Pelleve tit. S. Prædix Card. Senonen.
Jul. Ant. tituli S. Bartholomæi in Insula presb. Card. S. Severinæ.
Ego Hieronymus Card. Rusticucius tit. S. Sufannæ.
Ego Jo. Hieron. Card. Alban. tit. S. Joannis ante portam Latinam.
Ego Hieronymus Card. Simoncellus tit. S. Priscæ.
Ego P. Card. Deza tit. S. Hieron. Illyricorum.
Ant. tit. SS. Joannis & Pauli presb. Card. Carafa.
Ego Jo. Antonius Card. SS. Quatuor.
Ego Jo. Baptista Card. tit. S. Marcelli.
Ego Franciscus Card. de Joyeuse tit. Sanctiss. Trinitatis in Monte Pincio.
Ego Julius Card. Cananus, tit. S. Eusebii.
Ego Nicolaus Card. Cremonen. tit. S. Cæcilie.
Ego Ant. Maria Card. Salviatus tit. S. Mariæ de Pace.
Ego Aug. Card. Veronen. tit. S. Marci.
Ego Vincentius tit. S. Mariæ in Via Card. Montis regalis.
Ego Philippus Card. Spinula tit. S. Sabina.
Ego Scipio tit. Sancti Salvatoris in Lauro Card. Lancellottus.
Ego Vincentius Card. Gonzaga tit. S. Alexii.
Ego Henricus Cardin. Cætanus tituli S. Pudencianæ, S. R. E. Camerarius.
Ego Joannes Baptista Cardinalis Castrucius, tituli S. Mariæ in Araceli.
Ego Federicus Card. Cornelius tit. S. Stephani in Monte Cælio.
Ego Dominicus tit. S. Laurentii Card. Pinellus.
Ego Hippolytus Card. Aldobrandinus tit. S. Pancratii, Major Penitentiarius.
Ego Hier. tit. S. Petri ad Vincula Card. de Ruvere.
Ego Philippus Card. de Lenoncourt. tit. S. Honuphrii.
Ego Fr. Hier. Card. Aſcul. tit. S. Thomæ in Parione.
Ego Antonius Maria tit. S. Agnetis in Agone Cardinalis Perusinus.
Ego Fr. Constantinus Card. Sarnanus tit. S. Petri in Monte Aureo.
Ego G. Card. Alanus tit. S. Martini in Montibus.
Ego Scipio tit. S. Mariæ de Populo Cardinalis Gonzaga.
Ego Antonius tit. S. Vitalis Card. Saulius.
Ego Evangelista tit. Sancti Matthæi in Merulana Card. Cusentinus.
Ego F. Stephanus tit. SS. Marcellini & Petri presb. Card. Aretinus.
Ego F. Card. Sfortia Diac. S. Nicolai in Carcere.
Ego Alexander Cardinalis Montaltus, Diaconus Sancti Eustachii.
Ego Hieronymus S. Mariæ in Cosmedin. Diaconus Cardinalis Matthæus.
Ego Benedictus S. Agathæ Diac. Justinianus.
Ego Aſcanius Sanctorum Viti, & Modesti & Crescentie Diaconus Card. Columna.
Ego Federicus Sanctæ Mariæ in Dominica Diaconus Borromæus.

Anno à Nativitate Dom. 1588. Indict. 1. die
verò Veneris undecima mensis Martii, Pontificatus
Sanctiss. in Christo Patris & D. N. D. Sixti divini
Providentia Papa V. anno ejus tertio retroscriptæ li-
teræ Apostolicæ affixæ, lectæ, & publicatæ fuerunt,
in valvis seu portis sancti Joannis Lateranensis, &
sancti Petri Principis Apostolorum ac Urbe, necnon
Cancellariæ Apostolicæ, & acie Campi Floræ, &
per aliquod temporis spatium dimissæ per nos Jo.
Baptistam Bagni, & Jo. Burluranti S. D. N. Papæ
cursores.

Alex. Parabiacus Mag. Curs.

LXXVI. Adscriptio S. Bonaventuræ Balneoregionensis inter
egregios sanctosque Catholica Ecclesiæ Docto-
res, cum Indulgentiis pro ejus festivitate die
14. Julii celebranda.

Canonizationem hujus Sancti præsumit Sixt. IV. ut
in sua const. 21. Superna. fol. 423. Tom. 1.

Aliorum Ecclesiæ Doctorum, & Evangelistarum
festa, duplici officio celebrari jussit Bonif. VIII.
in Extravag. 1. de Reliq. & ven. Sancti.

Edita A. D.
1588.

SIXTUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Universis venerabilibus
fratribus nostris Patriarchis, Primatibus,
Archiepiscopis, Episcopis, & dilectis filiis
aliarum Ecclesiarum Prelatis per univer-
sam Terrarum Orbem constitutis, salutem
& Apostolicam benedictionem.

Proœmium,
T Riumphantis Hierusalem gloriam sempiter-
nam, & sanctorum cum CHRISTO felicissi-
mè regnantium, nunquam marcescentes coronas
cum gaudio admirans Sancta mater Ecclesiæ, ad-
huc in terris militans, ad eandem verò justitiæ co-
ronam festinans, DEUM in Sanctis suis mirabilem
prædicare non cessat. Nec verò insignes tantum
victorias, & præclara Sanctorum merita eximiis
laudibus celebrat, sed eosdem Sanctos, quos
Deus mirificè honorificat, ipsa quoque pie vene-
ratur, ac colit, quorum nimirum prædicatione,
salutarique doctrina instituta, sanguine fundata,
illustribus charitatis operibus atque exemplis edu-
cata, ferventibus illorum apud Deum precibus
quotidie adjuvatur. Quamobrem debitis, etiam,
congruisque Honoribus unicuique Sanctorum sin-
gulariter tribuendis, ad celestis illius Hierarchiæ,
ubi omnia in charitate perfectæ ordinata sunt, nor-
mam atque imaginem sese conformare, quantum
quidem in hujus prætereuntis mundi exilio licet
maximè studet. Nam quemadmodum in magna illa
summi Patrisfamilias, bonisque omnibus cumulata
domo, mansiones multæ sunt, & beatæ illæ animæ
mira quadam varietate unius gloriæ beatitudine
perfruuntur, sic Catholica Ecclesiæ, quæ celestis
illius effigies est, ut castrorum acies ordinata, in
veneratione Sancti Dei adhibenda, sacros illos or-
dines, divino illustrata lumine agnoscit, atque dis-
tinguit. Itaque dum gloriosum Apostolorum Cho-
rum, dum Prophetarum laudabilem numerum,
dum fortissimorum Martyrum laudat exercitum,
cæterisque Sanctis suo loco, & ordine ritè honores
desert, in uno charitatis spiritu, & consimili piæ
devotionis affectu multipliciter exultat. Inter illos
verò beatissimos Sanctorum Choros, quorum me-
moriam à cunctis fidelibus religioso cultu meritò ce-
lebratur, insigni splendore elucet, sanctorum Do-
ctorum Ordo à Paulo Apostolo disertè enumera-
tus, cum ait; Et ipse dedit quosdam quidem
Apostolos, quosdam autem Prophetas, alios ve-
rò Evangelistas, alios autem Pastores & Docto-
res, quos vineæ suæ strenuos, fidelisque cultores
atque operarios constituit, ad consummationem
Sanctorum in opus ministerii, in ædificationem

Corporis CHRISTI. Hi sunt; de quibus divina
Sapientia clamat. Qui elocidant me, vitam æter-
nam habebunt: de his Angelus apud Danielem lo-
quitur: Qui autem docti fuerint, fulgebunt qua-
si splendor firmamenti, & qui ad justiciam eru-
diunt multos, quasi stellæ in perpetuas æternita-
tes, eos denique Salvator ipse CHRISTUS Domi-
nus insigni illo elogio ornavit. Qui fecerit, & do-
cuerit, hic magnus vocabitur in regno Cælorum.
Cum autem omnibus temporibus sacrorum Do-
ctorum studium, & doctrinam in Ecclesiæ Dei utilis,
& salutaris fuit, tum maxime fructuosam, & plane
necessariam esse res ipsa demonstravit, cum per-
secutorum Christiani nominis horribili furore res-
presso, in ipsa Ecclesiæ pace, teterrima hæresum
bella vehementius excitata sunt, tunc enim hæreti-
corum doli & fallaciæ, qui diabolo instigante in
agro Domini zizaniam superfeminare non intermit-
tunt, Doctorum cura, & diligentia detectæ, & pel-
tiferi ac detestabiles errores gladio spiritus ampu-
tati, & Catholicæ veritatis vi, sacris Doctoribus
administris mendacium prostratum, quare jure op-
timo Hyadum stellarum nomine Sancti Doctores
in Ecclesiâ designantur, qui perfrigida hyeme, &
longis infidelitatis noctibus expletis, & persecutio-
nis tempestate sedata, tunc clariores Sanctæ Ec-
clesiæ exorti sunt, cum veritatis sol per corda fide-
lium altius calefcere, & tamquam novo fidei verè
lucidior annus aperiret.

§. 1. Jam verò inter eos, quos Dominus mag-
nus spiritui intelligentiæ replere voluit, quique
tamquam imbres eloquia sapientiæ suæ in Ecclesiâ
Dei emisserunt, meritò numeratur S. BONA-
VENTURA Confessor, & Pontifex, & in eadem
Catholica Ecclesiâ Doctor eximius, quem felicis
recordationis Sixtus Papa Quartus prædeces-
sor noster, ob admirabilem vitæ sanctitatem, &
præcellentem doctrinam in Sanctorum numerum
adscripti.

§. 2. Is enim Balneoregii in Etruria natus, ut
piæ matris voto satisfaceret, adolescens Seraphi-
cam sancti Francisci Religionem esse ingressus, per
cujus vestigia recentia adhuc novus Christi miles
humiliter & constanter incedens, saluberrimam
regularium institutorum observantiam tanto animi
ardore, tantæ cordis aviditate auxit, ut summa
in eo sanctitas appareret, ac vitæ innocentia &
castitate, sancta humilitate, patientia, mansuetu-
dine, terrenarum rerum displicentia, celestium
desiderio omnibus, & exemplo, & admirationi
esset, tanta quoque spiritus dulcedine, & divini
amoris fervore inflammatus in Deum rapiebatur,
ut jam in cellam vinariam sponsi introducus & vi-
no optimo charitatis ebrius, JESUM CHRIS-
TUM Crucifixum, & patientem utique intue-
ri, & in ejus vulneribus habitare videretur. Ad
hanc verò eximiam vitæ sanctitatem vir Dei mag-
nam præstantis doctrinæ laudem adjunxit, quo
ita disponente, ut ad ejus gloriam, & Ecclesiæ uti-
litatem, non solum exemplo, sed verbo & eru-
ditione magnoperè proficeret. Itaque cum in sacra-
rum literarum studio Sanctorum Patrum lætione,
& Scholasticæ Theologiæ perneccessaria disciplina
Alexandro de Ales magistro, insigni illius ætatis
Theologo, diligentissimè versaretur brevi temporis
spatio excellentis ingenii bonitate, assiduo labo-
re, & quod caput est, gratia Spiritus sancti, qui
vas aureum in honorem electum omni ex parte
formabat, tantos progressus fecit, & ad tantam
doctrinæ perfectionem pervenit, ut Doctoris &
Magistri insignibus in celeberrimo Parisiens Gym-
nasio solemni more decoratus, sacram Theolo-
giam ibidem publicè professus sit.

§. 3. Tantam verò laudem in interpretandi mu-
nere, & in universæ Theologiæ scientia est con-
secutus, ut viri doctissimi ejus doctrinam & eru-
ditionem admirarentur. Et quidem multiplices
sancti viri lucubrationes, & præclata scripta, quæ
adhuc magna Ecclesiæ utilitate, & non mediocri

S. Bonaven-
turæ à Sixt. IV.
est canoniz-
atus ut in
rubr.

S. Bonaven-
turæ vita re-
censetur.

S. Bonaven-
turæ virtu-
tes, laudes &
præclara gesta
enarran-
tur.

Dei beneficio extant, quæque & nostræ, & superiorum ætatum viri eruditi multo cum fructu legerunt, & magnopere comprobant, quantus ille in Theologiam fuerit, satis declarant. Ea enim divini ingenii sui monumenta posteris reliquit, quibus perdifficiles, & multis obscuritatibus involutæ quæstiones, magna optimorum argumentorum copia, via, & ordine enucleatæ ac dilucidè explicantur, fidei Catholicæ veritas illustratur, perniciosi errores, & prophane hæreses profligantur, & pia fidelium mentes ad Dei amorem & cælestis patriæ desiderium admirabiliter inflammantur. Fuit enim in sancto Bonaventura id præcipuum & singulare, ut non solum argumentandi subtilitate, docendi facilitate, definiendi solertia præstaret, sed divina quadam animos permovendi vi excelleret, sic enim scribendo cum summa eruditione partem pietatis ardorem conjungit, ut lectorem docendo moveat, & intimos animi recessus illabatur, ac denique Seraphicus quibuscumque aculeis cor compungat, & mira devotionis dulcedine perfundat, quam sanè gratiam in ejus ore, & calamo diffusam admirans prædecessor noster Sixtus IV. Pontifex illud dicere non dubitavit, Spiritum sanctum in eo locutum videri.

S. Bonaventuræ Generalis Ministri, in ordine septimus post S. Franciscum creatus fuit.

§. 4. Cum igitur ferveo fidei tam multa, & præclara à Domino talenta essent credita, ut illis ad fratrum utilitatem exercendis & negotiandis, cælestis gratiæ thesaurus amplificaret, divino consilio, & summo totius sui Ordinis consensu, Romæ Minister generalis septimus post beatum Franciscum est factus, quo in officii munere non solum prudentiam, vigilantiam, sollicitudinem præstitit, sed tanto fraternæ charitatis ardore exarsit, tantæque Christianæ humilitatis dimissione fratribus inservivit, ut in eo illud Salvatoris agnosceretur, qui major est in vobis, sit vester minister.

Archiepiscopatus Eboracensis, à Clem. xv. ei oblatum & ab eo reservatum fuit.

§. 5. Quin & pie memoriæ prædecessor noster Clemens Papa Quartus, qui sanctum virum valde dilexit, & ejus doctrina mirificè est delectatus, ut tam excellens virtus, & prudentia ad multorum utilitatem latiori in campo excurreret, insignem Eboracensem Archiepiscopatum ei obtulit. Ille vero cum se à Seraphicæ paupertatis complexu divelli non faciliè pateretur, oblatam dignitatem modestè atque humiliter recusavit.

Ad generale Conc. Lugd. à Greg. x. vocatus, & humanissime exceptus fuit.

§. 6. Cæterum, cum Gregorius Decimus Summus Pontifex ob gravissimas Christianæ Reipublicæ causas Concilium generale Lugdunum indixisset, virisque sanctitate, doctrina, sapientia præstantes, perquireret, quorum forti & fideli opera ad rei maximæ tractationem, atque explanationem uteretur, duo in primis clarissima illius ætatis lumina, è duobus florentissimis Ordinibus Prædicatorum & Minorum delegit Sanctos Thomam, & Bonaventuram, quos ad se ire jussit. Sed cum alter in ipso itinere in morbum incidisset, atque ad gloriæ coronam feliciter evolasset, S. Bonaventura Lugdunum profectus, humanissime exceptus est à Romano Pontifice Gregorio, qui in ejus virtute, & sapientia ita acquiescebat, ut Concilii rectè dirigendi, & administrandi partes ei præcipuè tribuendas esse decerneret. Quare ex publica Ecclesiæ utilitate, & necessitate, ut majori cum dignitate, & auctoritate Concilii rebus non solum interesset, sed præset, statuit lucernam ardentem, & lucentem suprà excelsum candelabrum ponere, ut in domo Dei magis luceret.

Cardinalis, & Episcopus Alban. ab eodem Pont. ibi creatus fuit.

§. 7. Itaque Sanctum Bonaventuram nullos honores appetentem, fugientem potius, sed CHRISTI Vicario obtemperantem, nullisque pro Ecclesiæ laboribus subire recusantem, tamquam in totius Orbis terræ theatro in sacrum Cardinalium Collegium; & in Episcoporum Ordinem statim cooptavit, nam Ecclesiæ Albanen. illum præfecit, qui honos antiquioribus presbyteris Cardinalibus tribui solet. Quia ille amplissima

dignitate auctus universam in Dei gloriam, & Ecclesiæ utilitatem contulit, etenim in rebus Concilii arduis operam egregiam præstitit, Catholicam fidem constantissime defendit, pravas opiniones acerrimè refutavit, ejusdemque prudentia, doctrina, sanctitate, orationibus, Gregorii Pontificis pastoralis sollicitudo tantopere adjuncta est, ut sublato per Dei misericordiam schismatis dissidio, Michaël Palæologus Græcorum Imperator, Orientalisque Nationes, ad Apostolicæ Sedis obedientiam, unitatem, communionemque redierint, ac denique dignus habitus est, quem Græci Eutychii nomine appellarent.

§. 8. Merito igitur cum paulò post in eodem Concilio fortissimus CHRISTI Athleta ex hujus vitæ peregrinatione ad cælestem patriam emigrasset, omnes ejus mortem doluerunt, omnes communem jacturam deplorarunt, omnes illius funus lacrymis & laudibus ornarunt, sed unus præter cæteros viri sanctissimi vitam integerrimè actam mores probatissimos, labores per multos pro Ecclesiâ susceptos, doctrinam in illo ipso Concilio spectatam insigni laudatione verissime celebravit. Is fuit pie memoriæ Petrus Cardinalis à Tarantasia, vir eruditior & Christiana eloquentia præstans, qui postea ad Pontificatus fastigium evectus, Innocentius Papa Quintus est appellatus, ipse verò Summus Pontifex Gregorius Decimus ex intimi animi sensibus amissum fratrem, adiutorem, & consiliarium fidelissimum dolens, palam gravibus verbis testificatus est, Catholicam Ecclesiam, quæ ex tanti viri pietate & doctrina fructus uberimos acceperat, magnam illius morte jacturam fecisse. Sed verè à Spiritu sancto dictum est. In memoria æterna erit justus: nam qui in vita illustris fuerat, multò post mortem factus est illustrior, Deo, qui admirabilis & gloriosus est in Sanctis suis, signis compluribus, ac prodigiis & miraculis maximè insignibus Servi sui sanctitatem comprobante.

§. 9. Quorum miraculorum fama cum apud omnes percrebresceret, idem Sixtus prædecessor noster è sublimi Apostolicæ Sedis specula ea aspiciens, digitum Dei qui facit mirabilia magnafolus, ibi planè esse intellexit, itaque & sponte sua, & claræ memoriæ Federico Romanorum Imperatore, Regibus, Rebuspublicis, Ducibus, Civitatibusque permultis vehementer requirentibus, ac omnium ferè fidelium consensu effragante, de viro præstantissimo Bonaventura Episcopo Cardinali in Sanctos referendo, Pontifice Romano dignam cogitationem suscepit. Summa igitur cura, & diligentia, vite illius eximia sanctitate, & miraculorum veritate examinata atque comperta, omnibus denique, quæ ad eam rem pertinebant, ritè rectèque actis ad Dei gloriam & Ecclesiæ Catholicæ exaltationem, pro sua summa, eique à Deo in beato Petro Apostolo tradita potestate, eundem beatum Bonaventuram de fratrum suorum Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalium, & Prælatorum omnium consensu in Sanctos retulit, & in Sanctorum Confessorum Pontificum Doctorum numerum adscripsit, atque aggregavit, ejusque festum anniversarium diem, secundæ mensis Julii Dominica die celebrari, officiumque de eo, veluti de Confessore Pontifice Doctore in universa Ecclesia recitari jussit, aliis item decretis adjectis, quæ in ejusdem Sixti litteris plenius continentur.

§. 10. Et quamvis gloriosus hic Doctor S. Bonaventura, & in Ecclesiâ Catholicâ celeberrimus sit, & in Cælo maximè resplendens, ubi corona illa est coronatus, quam repromissit Deus diligentibus se, nec ulla humana re indigeat, qui bonis illis cum CHRISTO perfruitur, quæ nec oculis videt, nec in cor hominis ascendit, urget nos tamen charitas CHRISTI, & ardens quidam devotionis affectus, quo erga eum ab ineunte ferè ætate perpetuò exarsumus,

Et post multa ejus præclara gesta in rebus. Concilii & Fidei augmenti in eodem Concilio decrevit, & ad cælestem patriam migravit, & ejus miraculorum fama percrebuit.

De quibus vide in Bulla Sixti iv. citata in rubr.

Idem Sixtus iv. Bonaventuram in SS. Confessorum Pontificum Doctorum in numerum aggregavit.

Si modò hic Pontifex ex multis validissimis rationibus hic expressis, ad ejusdem S. Bonaventuræ sanctitatem & doctrinam illustrandam, animum applicavit.

ut de eius sanctitate & doctrina magis magisque propaganda, atque illustranda, quantum cum Domino possumus, rogemus. Movemur quidem, ut par est, sancta cum eo communione Seraphici Religionis nostrae, in qua educati, & tot annos versati sumus, & cui tamquam matri optimè merita, omnia pietatis & grati animi monumenta prestare debemus, sed multò magis movent nos Dei gloria, pastorale officium quod gerimus, viri sanctissimi pro Ecclesia Dei tot suscepti labores, tot illustria merita, tanta cum Romana Ecclesia conjunctio, in cujus amplissimo ordine, & Senatu summa cum laude confedit. Denique mover nos Ecclesiae universalis utilitas, quae ex tanti doctoris eruditione semper major & uberior capi potest, praesertim cum haereticorum infidiae, & diabolicae machinationes, quibus sacrae Theologiae, quae Scholastica appellatur, hoc luctuoso saeculo oppugnant, vehementissimè nos magnoperè admo- neant, ut eandem Theologiam, quae nihil Ecclesiae Dei fructuosius omni studio retineamus, illustremus, propagemus. Divino enim illius munere, qui solus dat spiritum scientiae & sapientiae, & intellectus, quique Ecclesiam suam per saeculorum aetates, prout opus est, novis beneficiis augeat, novis praesidiis instruit, inventa est à maioribus nostris sapientissimis viris Theologia Scholastica, quam duo potissimum gloriosi Doctores Angelicus Sanctus Thomas, & Seraphicus Sanctus Bonaventura clarissimi hujus facultatis professores, & primi inter eos qui in Sanctorum numerum relati sunt, excellenti ingenio, assiduo studio, magnis laboribus, & vigiliis excoluerunt atque ornavunt, eamque optimè dispositam, multisque modis praeclare explicatam posteris tradiderunt, & hujus quidem tam salutis scientiae cognitio & exercitatio, quae ab uberrimis divinarum literarum Summorum Pontificum, Sanctorum Patrum, & Conciliorum fontibus dimanat, semper certè maximum Ecclesiae adjumentum afferre potuit, sive ad scripturas ipsas verè, & sanè intelligendas, & interpretandas, sive ad patres sanctos, & utiles perlegendos, & explicandos, sive ad varios errores, & haereticos detegendas, & refellendas. His verò novissimis diebus, quibus jam advennerunt tempora illa periculosa ab Apostolo descripta & homines blasphemii, superbi sectatores proficiunt, in pejus errantes, & alios in errorem mittentes, sanae Catholicae fidei dogmatibus confirmandis, & haereticis confutandis perneccessaria est, & profectò rem ita se habere ipsimet veritatis inimici sunt iudices quibus Theologia Scholastica maximè est formidolosa, qui profectò intelligunt, apta illa, & inter se nexa rerum, & causarum coherencia, illo ordine & dispositione tamquam militum in pugnando instructione, illis dilucidis definitionibus, & distinctionibus, illa argumentorum firmitate, & acutissimis disputationibus lucem à tenebris, verum à falso distingui eorumque mendacia multis praestigiis, & fallaciis involuta, tamquam veste detracta patefieri, ac denudari. Quantò igitur magis illi hanc munitissimam Scholasticæ Theologiae arcem oppugnare, & evertere conantur, tantò magis nos decet hoc injunctum fidei propugnaculum defendere, & hereditatem patrum nostro conservare, & tueri, & acerrimis veritatis defensores meritis honoribus quantum possumus decorare.

S. 11. Quamobrem ut Seraphici Doctoris eruditio ad multorum utilitatem latius diffundatur, & ex ejus libris & operibus eruditi, & studiosi viri, copiosiores suaviorisque in dies fructus capiant, (quod ad ipsius Sancti quamquam in caelo beatissimi, gloriam aliquam facere non est dubitandum) primum quidem in Alma Urbe nostra in hac Basilica Sanctorum Duo-

decim Apostolorum, S. Bonaventurae nomine Collegium institutum, in quo ex hujus praecipue eximii, devotique Doctoris operibus, & commentariis, sacra Theologia publicè explicetur.

S. 12. Deinde etiam opera illius omnia, quae inveniri poterunt, partim nondum edita, nostrae auctoritate & impensis undique conquisita, parùm jam evulgata simul omnia decenti forma, & quam emendatissimè imprimi, & è Typographia nostra Vaticana in lucem emitti curamus. Quod autem ab ipso Pontificatus nostri initio, Deo ut piè credimus inspirante constanter proposuimus Sancti hujus Doctoris nomen, & merita gloriosa apud omnes pro viribus celebrare, fideliumque erga eum venerationem augere & amplificare.

S. 13. Sanè ad id quoque mediocriter excitati sumus exemplo sanctae memoriae Pii Papae Quinti praedecessoris nostri, de Christiana Republica optimè meriti, & quem ut parentem adhuc reveremur, & colimus. Is enim religiosa pietate, & singulari devotione permotus, quae affiebat erga Sanctum Thomam de Aquino Ordinis sui decus, & Ecclesiae Catholicae ornamentum, cupiens eodem modo eundem Sanctum eo ejus praestantissima in Catholica Ecclesia merita congruis honoribus exornare, praeter alia hoc jussit atque decrevit, ut illius festus dies quotannis duplici officii ritu ad instar Sanctorum quatuor Ecclesiae Doctorum perpetuò celebraretur, quod & S. Bonaventurae Doctori eximio tribui debere aequum profectò existimamus, cum tam multa inter eos virtutis, sanctitatis, doctrinae, meritorum conjunctio, & similitudo intercedat, his enim sunt duae olive & duo candelabra in domo Dei lucentia, qui & charitatis pinguedine, & scientiae luce totam Ecclesiam collustrant, hi singulari Dei providentia eodem tempore tamquam duae stellae exorientes ex duabus clarissimis Regularium Ordinum familiis prodierunt, quae Sanctae Ecclesiae ad Catholicam Religionem propugnandam maximè utiles, & ad omnes labores, & pericula pro orthodoxa fide subeunda paratè semper existunt, ex quibus tamquam ex fertili, & bene culta solo quotidie per Dei gratiam fecunda & fructuosa plantae procreantur, hoc est utriusque doctrinae & sanctitatis praestantes, qui Petri naviculae tot fluctibus agitatae, & Romano Pontifici, ejus clavum non sine magna sollicitudine tenenti, fortem, & fidelem opera navant. Hi duo Sancti cum essent coevi, iisdemque studiis dediti, discipuli, simul Magistri, pari ratione à Gregorio Decimo Summo Pontifice, cum ambo ad Concilium evocarentur, honorati, & in hujus vitae peregrinatione, fraterna charitate, spiritali familiaritate, sanctorum laborum societate valde conjuncti fuerunt, & denique pari gressu ad Coelestem patriam commigrantes pariter felices & gloriosi illa sempiterna beatitudine perfruuntur, ubi eodem charitatis affectu, ut piè credimus, pro nobis in hac lacrymarum valle laborantibus orant divinamque opem implorant, ut meritò idem Sixtus IV. hos duos Sanctos permissiles, & quasi geminos in CHRISTO fratres agnoscens, statuerit S. Bonaventuram consimili venerationis, & honoris prerogativa, atque S. Thomas decorandum esse.

S. 14. Quod igitur à nobis, & Seraphici Ordinis charitas, & Sancti Bonaventurae meritorium magnitudo, & Catholica Ecclesiae, cujus gubernacula nobis, licet immerentibus à Deo commissa sunt, utilitas, & aedificatio requirit, habita super his omnibus cum venerabilibus fratribus nostris Sanctae Romanae Ecclesiae Cardinalibus, deliberatione matura, de eorumdem consilio, & unanimi assensu, & ex certa nostra scientia, ac de attributis nobis Apostolicae potestatis plenitudine, hac nostra perpetuò valitura constitutione, doctrinam ipsius Sancti Bonaventurae à supraddictis praedecessoribus

Ejusque opera omnia simul & emendatissimè è Typographia Vaticana in lucem emitti curavit.

Etsi fuit Plus V. S. Thomam sui Ordinis Praedicatorum decus, exornare volens, ejus festum celebrari iussit, ita iste Pont. idem S. Bonaventurae sui Ordinis Conventualium S. Francisci ornamentum, debere existimavit ob multam inter ipsos Sanctos virtutis, sanctitatis, doctrinae & meritorum conjunctionem & similitudinem.

Et doctrinam S. Bonaventurae commendat, & ipsum inter egregios Ecclesiae Doctores enumerat.

Etsi idem Collegium S. Bonaventurae apud Basilicam SS. Apostolorum de Urbe instituit.

nostris Clemente Quarto, Gregorio Decimo, & Sixto Quarto laudatam in Concilio Lugdunensi maxime spectatam, in Florentino, etiam ad res difficiles explicandas adhibitam, gravissimorum virorum auctoritate testificatam, & commendatam, & eximio Ecclesie Doctore dignam, nos quoque plurimum in Domino laudamus & commendamus ac literas ejusdem Sixti Quarti quas pro expressis hoc loco haberi volumus, excepta ejus ordinatione de festo die S. Bonaventuræ secunda Dominica Julii celebrando, harum tenore approbantes & innovantes, ipsum Sanctum Bonaventuram jure Sanctorum Doctorem consortio ab eodem Sixto Quarto adscriptum, & connumeratum auctoritate Apostolica tenore præsentium inter præcipuos & primarios, qui Theologicæ facultatis magister excelluerunt habendum, ac venerandum esse decernimus, & declaramus.

Ejusque opera è Typographia Vaticana emittenda, publicè citari decernit.

§. 15. Atque ob eam causam sperantes in Domino, hujus Seraphici Doctoris lucubrationes ad doctrinam & devotionem quam in Clero populoque Christiano magnoperè lucere & ardere cupimus, maximo adjumento fore, illius libros, commentarios, opuscula, opera denique omnia, prout ex nostra Typographia Vaticana, quam emendatissima, ut supra dictum est, emittuntur, in aliorum Ecclesie Doctorem qui eximii sunt, non modò privatim, sed publicè Gymnasiis, Academicis, Scholis, Collegiis, lectionibus, disputationibus, interpretationibus, concionibus, sermonibus, omnibusque aliis Ecclesiasticis Studiis Christianisque exercitationibus citari, proferri, atque cum res postulaverit, adhiberi volumus & decernimus.

Festum die 14. Julii sub duplici officio celebrari jubet.

§. 16. Et nihilominus, ut sapientissimi hujus Doctoris gloriosa recordatio, si non pro ipsius dignitate, ac saltem pro humana tenuitate, ob ingentia illius merita ardentiori studio recolatur, scilicet record. prædecessorum nostrorum Bonifacii Papæ Octavi, qui de sanctis quatuor Doctoribus, & Pii Papæ Quinti, de prædicto Sancto Thoma eadem præceperunt, exemplo adducti præcipimus, ut ejusdem Sancti Bonaventuræ dies festus in omnibus Christiani orbis partibus sub duplici officio à cunctis personis, Ecclesiasticis, secularibus, & quorumvis Ordinum regularibus, tam publicè quam privatim pridie Idus Julii, (non obstante prædicta Sixti Quarti ordinatione de secunda Dominica dicti mensis) celebrari atque in Calendariis, cum Doctoris nomine, & Festi duplicis adjectione describi, & imprimi debeat, etiam si in novissimis Breviariis, & Missalis Romani reformationibus aliter dispositum fuerit, neque secus atque à nobis, ut supra, ordinatum fuit, per quoscunque quavis auctoritate præditos, censi aut interpretari posse decernimus.

Indulgentiæ die d. suæ festivitatis concedit.

§. 17. Hortantes universos utriusque sexus Christiani Civitatis Balneoregii, quæ clarissimum hoc edidit lumen, & illius diocesis, ut eodem die festo à servilibus, de sanctæ Ecclesie more, operibus abstineant. Ut autem Christiani devotio ad Seraphici hujus Doctoris diem festum colendum, ejusque opem piè implorandam, eò magis accendatur, quo ex hoc Cœlestis gratie dono se uberius confexerint esse refectos, de Omnipotentis Dei misericordia, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus auctoritate confisi, omnibus utriusque sexus Christianis, tam in dicta Civitate & diocesi Balneoregii quam in prælata Gallie Urbe Lugduno, ubi ille bono certamine legitime decertato, cursu consummato, fide servata, ex hoc calamitoso sæculo ad meritum suorum præmium, & coronam in Cælum feliciter migravit, in Almaque Urbe nostra, ubi in hac Basilica Sanctorum Duodecim Apostolorum Collegium, à nobis, ut jam diximus est erectum, constitutus, qui ejus festum hujusmodi, ut ceteras de præcepto Ecclesie servari solitas festivitates, devotè colentes, verè poenitentes, & sacramentali peccatorum suorum

confessione præmissa, eo die sanctissimum Eucharistiæ Sacramentum sumperint, plenaria omnium peccatorum suorum confessione præmissa, eo die sanctissimum Eucharistiæ Sacramentum sumperint, plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam, & remissionem misericorditer in Domino concedimus, & elargimur. Qui verò Ecclesias Fratrum Minorum S. FRANCISCI ipso die festo à primis vespere usque ad occasum Solis ejusdem diei devotè visitaverint, pias inibi ad Deum preces, prout sua cuique suggererent devotio, effundentes, decem annos & totidem quadragenas de injunctis eis, seu aliis quomodolibet debitis poenitentis per præsentem literas perpetuè duraturas, quas sub quibuscvis indulgentiarum revocationibus, vel limitationibus nullo modo comprehendere volumus, misericorditer in Domino relaxamus.

§. 18. Quocirca fraternitati, & discretioni vestræ per Apostolicam scriptam mandamus, ut præsentem literas, & in eis contenta quæcumque, in suis quilibet Provinciis, Civitatibus, Ecclesiis, & Diocesis solemnius publicari, & ab omnibus personis Ecclesiasticis, secularibus, & quorumvis Ordinum regularibus ubique locorum & gentium inviolatè perpetuè observari procurent.

§. 19. Volumus autem, ut earundem præsentium transumptis etiam impressis, manu alicujus Notarii publici subscriptis & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides ubique adhibeatur, quæ ipsi præsentibus adhiberetur si essent exhibitæ vel ostensæ.

§. 20. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrarum approbationis, innovationis, decretorum, declarationis, voluntatum, præcepti, concessionis, elargitionis, relaxationis, & mandati infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Datum Romæ apud Basilicam Sanctorum Duodecim Apostolorum, Anno Incarnationis Domini millesimo quingentesimo octuagesimo octavo, Pridie Idus Martii, Pontificatus nostri Anno tertio.

Ego Sixtus Catholicæ Ecclesie Episcopus subscripsi.

Ego Alex. Cardinalis Farnesius Vicecancellarius Episcopus Ostien.

Ego Joannes Antonius Episcopus Portuensis. Card. S. Georgii.

Ego Alph. Card. Gervaldus Episcopus Tusculanus.

Ego Innoc. Avalos Card. de Arag. Episcopus Sabin.

Ego Marcus Ant. Card. Columna Episcopus Prænestin.

Ego Ptolomæus Cardinalis Commenfis Episcopus Albanen.

Ego Marcus Sincus Card. ab Altaemps tit. S. Mariæ Transiberin.

Ego P. Card. Sanctacrucis tit. S. Clementis.

Ego Gabr. Cardin. Paleotus tit. S. Laurentii in Lucina.

Frater Michaël Bonellus Cardin. Alexandrinus tit. S. Mariæ super Minervam.

Ego Ludovicus tit. Anastasie presb. Card.

Ego Nic. de Pelleve tit. S. Praxedis Card. Senonen.

Jul. Ant. tituli S. Bartholomæi in Insula presbyt. Card. S. Severinæ.

Ego Hieronymus Card. Rusticucius tit. S. Sufannæ.

Ego Joan. Hieron. Card. Alban. tit. S. Joannis ante portam Latinam.

Ego Hieronymus Card. Simoncellus tit. S. Priscæ.

Ego P. Card. Deza tit. S. Hier. Illyricorum.

Ant. tt. SS. Joannis & Pauli presb. Card. Carafa.

Ego Joan. Antonius Card. SS. Quatuor.

Ego Joan. Baptista Card. tit. S. Marcelli.

Ego Franciscus Card. de Joyeuse tit. Sanctiss. Trinitatis in Monte Pincio.

Hanc constitutionem ubique promulgari & observari præcipit.

Ejusque exemplis credi jubet.

Sanctio poenalis.

Dat. P. An. 3. die 14. Mart.

Papæ subsc.

Card. subscripto.

Ego Julius Card. Cananus, tit. S. Eusebii.
Ego Nicolaus Card. Cremonen. tit. S. Cæcilie.
Ego Ant. Maria Card. Salviatus tit. S. Mariæ de Pace.
Ego Aug. Card. Veronen. tit. S. Marci.
Ego Vincentius tit. S. Mariæ in Via Card. Montis regalis.
Ego Philippus Card. Spinola tit. S. Sabine.
Ego Scipio Card. Lancellotus tit. Sancti Salvatoris in Lauro.
Ego Vincentius Card. Gonzaga tit. S. Alexii.
Ego Henricus Card. Cañoncourt tit. S. Pudentie S. R. E. Camerarius.
Ego Jo. Baptista Card. Castrucius, tituli S. Mariæ in Araceli.
Ego Federicus Card. Cornelius tit. S. Stephani in Monte Celio.
Ego Dominicus tit. S. Laurentii Card. Pinellus.
Ego Hippolytus Card. Aldobrandinus tit. S. Pancratii, Major Penitentiarius.
Ego Hier. tit. S. Petri ad Vincula Card. de Ruvere.
Ego Philippus Card. de Leoncourt tit. S. Honuphrii.
Ego Fr. Hier. Card. Afcul. tit. S. Thomæ in Parione.
Ego Antonius Maria tit. S. Agnetis in Agone Cardinalis Perusinus.
Ego Fr. Constantinus Car. Sarnanus tit. S. Petri in Monte Auro.
Ego G. Card. Alanus tit. S. Martini in Montibus.
Ego Scipio Cardinalis Gonzaga tit. S. Mariæ de Populo.
Ego Antonius Card. Saulius tit. S. Vitalis.
Ego Evangelista Card. Cufentinus tit. Sancti Matthæi in Merulana.
Ego F. Stephanus Card. Aretinus tit. SS. Marcellini & Petri.
Ego F. Card. Sfortia diac. S. Nicolai in Carcere.
Ego Alexander Cardinalis Montaltus, diaconus Sancti Eustachii.
Ego Hieronymus S. Mariæ in Cosmedin. Diaconus Cardinalis Matthæus.
Ego Benedictus S. Agathæ Diac. Card. Justinianus.
Ego Afcianus Sanctorum Viti, & Modesti, Diaconus Card. Columna.
Ego Federicus Sanctæ Mariæ in Dominica Diaconus Card. Borromæus.

rum Regularium Sancti Pauli decollati canonicè institutæ, petitio continebat, quod aliis per constitutiones dictæ Congregationis, quæ cum interuentu bon. mem. Caroli tituli Sanctæ Praxedis presbyteri Cardinalis Borromæi nuncupati, dum viveret Ecclesiæ Mediolanensis, ex dispensatione Apostolica Præfultis, necnon dilecti filii nostri Joannis Antonii Episcopi Portuen. sancti Georgii nuncupati ejusdem Congregationis Protectoris ad id accedente voto & consensu, factæ, & stabilitæ extiterunt, inter alia sancitum fuit, ne illegitimè nati, etiam per subsequens matrimonium postea legitimitati, æreque alieno gravati, & qui antea facinorosam vitam duxissent, in dicta Congregatione admitterentur, aliisque diligens super hoc inquisitio, ipsaque receptio volentium dictam Congregationem ingredi, in Civitate Mediolanensi, ad quam post longam probationem à locis in quibus præfati fuerint propterea mittuntur, à præposito generali, & quatuor Assistentibus ejusdem Congregationis fieret.

§. 1. Novissimè verò nostra in perpetuum valitura constitutione super hoc edita, statuimus ac volumus, ut antequàm quis in eadem Congregatione recipere, causæ hujusmodi examinarentur, ipsaque receptio in Capitulo generali, five provinciali dictæ Congregationis fieri deberet prout in singulis constitutionibus prædictis plenissimè dicitur contineri.

§. 3. Cùm autem sicut eadem petitio subjungebat, presbyteri, & clerici dictæ Congregationis nondum sint in Provinciis distincti, ac proinde numquàm Capitulum provinciale, generale verò singulo quoque triennio tantum facere ac celebrare soleat, sicque cupientes & petentes in ipsam Congregationem recipi, cogantur expectare, donec ipsum Capitulum fiat, mutataque postea eorum voluntate, & pia intentione, aliam vitam eligant, in maximum Congregationis hujusmodi damnum, præjudicium & incommodum.

§. 4. Quare Præpositus generalis, presbyteri & clerici prædicti nobis humiliter supplicari fecerunt, ut eis in præmissis opportune providere, de beniginitate Apostolica dignaremur.

§. 5. Nos igitur dictæ Congregationis amplitudinem, & singulorum in illa profectum, inter cæteras nostri pastoralis officii curas, tota animi propensione cupientes, ipsosque Præpositum generalem, presbyteros & clericos, à quibusvis excommunicationis, suspensionis & interdicti, aliusque ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, ac veriores nostræ & Congregationis constitutionum prædictarum tenores præsentibus præ expressis habentes, hujusmodi supplicationibus inclinati Præposito generali, presbyteris & clericis prædictis, quod ex nunc deinceps perpetuis futuris temporibus, modernis & pro tempore existens Præpositus generalis, illiusque Assistentes quoscunque cupientes in dicta Congregatione recipi, qui tamen à constitutione nostra prædicta nostra prohibeantur, non expectato Capitulo generali, sed quocunque alio tempore, de consensu omnium Assistentium, nemine penitus discrepante, recipere & admittere liberè & licitè valeant, Apostolica auctoritate tenore præsentium perpetuò indulgemus, elique desuper licentiam concedimus, & impartimur. Decernentes Præpositum generalem, presbyteros & clericos prædictos nullatenus unquam desuper per quoscunque quomodolibet molestari, vel impediri posse, ac ex nunc irritum & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

ratione illegitimè nati, vel alieno gravati, vel facinorosi, hanc religionem admittentur.

Et ab isto Pontifice prohibita fuit receptio extra Capitulum ut sup. in ejus constit. 71. Cum de omnibus.

Et quia ista Congregatio qualibet tertia triennio Coo. generalem celebrat, & provinciale nuncquam; Ideò receptio venientium ad religionem nimirum protrahitur.

Congregatio itaque à Papa provisionem petit.

Hic ideò Pont. dat. auctoritatem Præposito, ejusque Assistentibus, omni tempore venientes ad religionem & à qua cens. non prohibetur recipiendis.

Publicatio.

Anno à Nativitate Dom. 1588. Indiçti. 1. die verò Veneris decimaoctavamensis Martii, Pontificatus Sanctiss. in Christo Patris, & D.N.D. Sixti divini Providentiæ Papæ V. anno ejus tertio retrospectæ literæ Apostolicæ affixæ, lectæ & publicatæ fuerunt, in valois seu portis sancti Joannis Lateranensis, & Sancti Petri Principis Apostolorum de Urbe, necnon Cancellaria Apostolica, & acie Campi Floræ, & per aliquod temporis spatium dimissa, per nos Jo. Baptistam Bagui, & Jo. Burlaualt, S. D. N. Papæ cursores.
Alex. Parabiacus Mag. Cursf.

LXXVII.

Quomodo Clerici regulares S. Pauli decollati, novitios ad eorum Religionem admittere possint.

De institutione hujus Congregationis, & aliis que eam respiciunt, dixi plene ad const. 37. Clem. VII. Vota, vide in Tomo 1. fol. 691.

Edita An. D. 1588.

SIXTUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Exigit incumbitis nobis Apostolicæ servitutis officium ut Monasteriorum, & Regularium locorum quorumlibet propagationi, pauperumque clericorum in eis pro tempore recipiendorum pio desiderio, quantum cum Deo possumus providere studeamus.

§. 1. Exhibita siquidem nobis nuper pro parte dilectorum filiorum Præpositi generalis, ac presbyterorum & clericorum Congregationis Clerico-

Cavebunt in constitutionibus Congrega-

ANNO
1588.
Contrariis
derogat.

682

SIXTUS QUINTUS.

ANNO
1588.

§. 6. Non obstantibus nostra prædicta, ac quibuscumque aliis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, cæterisque contrariis quibuscumque.

Nulli ergo omnino &c. Si quis autem &c.

Dat. P. An. 3.
die 15. Mart.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo octuagesimo octavo, Idibus Martii, Pont. nostri Anno 3.

LXXVIII.

Institutio præsidii ducentorum millium scutorum, pro ubertate Annonæ in Urbe.

Congregationem Cardinalium super ista Annonæ instituit hic idem Pontifex, in constit. 74. Immenſa hic ſuprà in Congreg. 4. Et aliam Congregationem ſubordinavit Paulus V. in ſua conſt. 70. Paſtoralis ubi dicitur in Tomo 3. fol. 33.

Edita A. D.
1588.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad futuram rei memoriam.

Causa hujus
instituit.

Abundantes divinæ gratiæ divitias, & incredibilem benignitatis ubertatem sæpenumero recogitantes, quam super humilitatem nostram, ab ipso fulceptæ Apostolicæ servitutis initio, illa dignatus est ostendere, qui solus dives est in misericordia, cogimur multorum beneficiorum tamquam ingenti pondere oppressi, cum sancto Propheta exclamare. Quid retribuam Domino pro omnibus, quæ retribuit mihi? Etenim notum est omnibus, in quas rerum angustias & difficultates Pontificatus nostri initia inciderint, cum infinita quadam exulum & facinororum hominum licentia omnia perturbata essent, cum rei frumentariæ inopia omnis ferè ditio Sanctæ Romanæ Ecclesiæ in temporalibus subiecta, & ipsa potissimum Roma magnopere laboraret, cum denique Apostolicum Ærarium ita exinanitum reperissemus, ut in summa pecuniarum difficultate versaremur, quibus tot incommodis nequaquam deterri, sed Dei auxilio freti, cui bonâ omnia accepta referimus, in eas omnes curas eodem tempore alacriter incubuimus. Quare, & compressa improberum audacia tranquillitas publica restituta est, & Ærarium abundè instructum, & frumento statim non mediocri sumptu & labore suppeditato, Annonæ charitas ita sublevata est, ut eam copiam & abundantiam, quæ postea benedicente Domino consecuta est, & quæ nunc fruimur, æquo omnes animo expectare poterunt. Fatemur tamen, paterna viscera nostra, quibus omnes fideles, sed præcipuè eos, qui sunt in temporali Dominio nostro in CHRISTO complectimur, nulla re magis commota esse, quam illa Annonæ charitate, nam in Urbe hominibus refertissima, si fames ingruat, aut Annona durior sit, pauperes maxime, quorum ingens est multitudo, vehementius conflantur, quæ ex re quam multa mala dimanent, nihil necesse est multis verbis explicare; cum planè perspicuum sit humanarum calamitatum caput esse famem, & quovis mortis genere acerbior. Quod quidem, & miserabilis illa apud Prophetam lamentatio declarat, omnis populus ejus gemens & querens panem. Scientes igitur nos licet immeritos, ejus locum in terris tenere, qui non solum panem superfluentialem tribuit, quo anima reficitur, sed terrenum etiam panem; quo corpus quotidie sustentatur, quique in deserto semel & iterum misericordia motus est super turbas non habentes cibaria, ejusque Apostolos suos panem divinitus multiplicatum distribuere jussit. Nos quoque pro nostra pastoralis sollicitudine summo opere cupimus, quantum cum Domino possumus, quam longissime providere, ut hæc nostra Alma Urbs,

ad quam quotidie tamquam ad communem patriam Nationes omnes conflunt, quamque omnibus commodis, & ornamentis augere studemus, non solum rei frumentariæ inopia nequaquam vexetur, sed uberiore potius copia, & utilitate quantum fieri potest, perfruatur. Nec verò ignoramus bonorum omnium largiorem Deum, qui fructum frumenti, vini, & olei multiplicat, qui semen seminanti administrat, & panem ad manducandum præstat, sed illud etiam scimus a servo super familiam Domini constituto, & fidem & prudentiam requiri, ut det illi cibum in tempore, & in divinis scripturis pigram ad formicam mitti, ut discat in æstate parare quod in hyeme comedat, & denique humanæ providentiæ adjumenta illa merito laudanda esse, quæ ad Dei gloriam relata, ejus in primis ope nituntur, & in eo præcipuè conqueſcunt. Illud autem elemosynæ genus Deo gratissimum esse arbitramur, quod in commune distributum, ad omnium egestatem sublevandam maxime accommodatur. Quamobrem nullis quamvis magnis impensis parentes, & publice præsertim pauperum utilitati opportune providere cupientes, prægrandem pecuniâ seponere, & certo in loco collocare decrevimus, quæ annonæ & abundantia, quam appellat, perpetuò attributa sit, reique frumentariæ copiæ curandæ & comparandæ in posterum, perpetuò deserviat.

§. 1. Habita igitur super his cum venerabilibus fratribus nostris Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalibus deliberatione maturâ, de eorumdem fratrum consilio & assensu, ex certa nostra scientia, ac de nobis attributæ Apostolicæ potestatis plenitudine, ducenta millia scuta monetæ ad rationem decem juliorum pro quolibet scuto, ex pecuniis nostræ parsimonia & frugalitate, ac diligentia ad publicam utilitatem comparatis, apud dilectum filium Joannem Augustinum Pinellum laicum Genuesem, nostrarum & Cameræ Apostolicæ pecuniarum Depositarium, realiter & cum effectu deposita, & collocata, prout de eorum reali & actuali receptione ac confessione & quæratione ipsius Joannis Augustini publico instrumento per dilectum filium Tydeum de Marchis dictæ Cameræ Notarium desuper rogatum hodierno mane in eadem Camera confecto plenè constat prædictæ piæ causæ ad Annonam pertinenti perpetuò applicamus, appropriamus, & incorporamus, ac potiori cautela, titulo donationis, quæ dicitur inter vivos, perpetuò valitura, irrevocabiliter concedimus, donamus & clarigimur, atque omnem prædictæ pecuniæ proprietatem, jus, & dominium, etiam à nobismetipsis & Camera Apostolica penitus abdicantes, eadem ducenta millia scuta ad parandam Annonæ copiam, sive illius perjuriam, inopiam, & charitatem sublevandam duntaxat, nec in aliam causam, sive universam quantitatem, sive illius partem quamcumque illa fuerit, infundendam esse.

§. 2. Idque etiam si cujusvis alterius rei propositæ, aut de qua tunc esset agendum, major urgeret necessitas, vel aliud expectare, aut efflagitare præsens utilitas videretur, sanctè & religiosè omnino servari debere, de similibus consilio & assensu, auctoritate Apostolica tenore præsentium pariter perpetuò statuimus & ordinamus. Siquidem ad certas alias urgentes & graves, quæ contingere possent indigentis vel necessitates, Ærarium benedicente Domino locupletissimum, nostra etiam cura ac sollicitudine partum, & Deo dictum perpetuò exabit.

§. 3. De iisdem verò pecuniis ad hanc maxime piam causam, omnibûque in Urbe degentibus, atque ad illam undequaque confluentibus apprime salutarem, benignè & liberaliter jam per nos applicatis, donatis, atque elargitis, sicut de cæteris piis per nos factis largitionibus, aliter quam tunc præfertur, perpetuis futuris temporibus disponi striçè interdiciamus, & prohibemus, certa spe ducti Romanos Pontifices nostros pro tempore succes-

Ducenta millia scuta hic Pontifex à sui ipsius & Cam. Apost. dominio abdicat. & piæ causæ pro Annonæ scilicet ubertate perpetuò donat.

Eaque pro alia etiam vigentiori necessitate expendi prohibet. Nam pro aliis gravius indigentis locupletissimum provinciarum prædictum collegit, & in Arc. S. Angeli reposuit, ut in constit. 31. & 69.

Successores horantur ne dum hujusmodi pecuniam comminuant, sed in dies majora prædicta præparant.

fores,

fores, ad Annona incommoda sublevanda paratam hujusmodi pecuniam nedum imminutos, verum exemplo Patriarchae Joseph in Aegypto, dum ipsi veri Joseph, qui est CHRISTUS Dominus, pro injuncto munere locum obtinebunt in terris, nova adjumenta adversus famem, illiusque incommoda esse lauros, ac pro eo, quem erga CHRISTI pauperes universi Status Ecclesiastici, ac praecipue Sacerdotalem & Regulam hanc Urbem Christianae Religionis domicilium, beatissimorum Apostolorum Petri & Pauli pretioso martyrio consecratam, genere debent insigni affectu, alia in dies majora subsidia preparatos esse.

§. 4. Ac praeterea Congregationi venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. Cardinalium, super ubertate Annona, nunc & pro tempore deputatorum per nos nuper instituta, earundem pecuniarum ad rei frumentariae atque aliarum cuiusvis generis frugum, quibus ad vitae humanae sustentationem indigemus, copiam & ubertatem, tam in Urbe nostra, quam in universo Statu Ecclesiastico temporali parandam & providendam, adhibitis secum dilectis filiis Camerae Apostolice thesaurario generali. Ita tamen quod ipsa pecunia in hujusmodi Annona usus, ad nutum & iussionem ejusdem Congregationis, cum mandato à dicto Praefecto, prout adhuc servatum est, expedito, nec alias erogetur vel expendatur, ac rursus sic erogate vel expensae suo tempore recuperentur, liberam absolutamque administrationem, dictaque pecunias, si quando peccatis populi id promerentibus, terrae sterilitas, quod Deus avertat, in temporali Ecclesiastica ditione contigerit, ad convehendum aliunde commeatum, in toto vel in parte per eisdem thesaurarium, Annona Praefectum, & Commissarium erogari, ac rursus si quid tempore famis ex dicta summa defecerit, postea ubi temporis opportunitas tulerit, illam reintegrari, atque ubi expedire videbitur, in Atriarum Apostolicum Castrum S. Angeli referri & asseruari, atque inde, quoties occasio postula-verit, liberè depromi & extrahi eorum arbitrio faciendi. Ita tamen ut datorum & acceptorum rationes, & computa, in Camera Apostolica singulo trimestri, in ipsa verò Cardinalium Congregatione singulis annis integrè reddantur, plenam ac pariter liberam & omnimodam concedimus facultatem. Volentes eundem Joannem Augustinum & pro tempore existentem Depositarium dictae pecuniae ad Annona pertinentis, in erogandis aut exigendis vel in unum redigendis pecuniis praedictis eam ob causam exponendis, aliorum quam dictae Annona Praefecti mandato, in illis verò in dictum Atriarum redigendis, seu inde extrahendis, aliorum quam dictae Congregationis Cardinalium, aut eorum majoris partis ordinationibus & mandatis, etiam si quascumque penas aut censuras in se continerent, parere minime teneri, & quorumvis etiam aliorum Sanctae Romanae Ecclesiae Cardinalium, illiusque Collegii, ac Camerae Apostolicae iussa, & imperium impunè ea in re detrectare posse, quinimò ipsum Joannem Augustinum & pro tempore existentem Depositarium, ab omni cuiuscumque alterius Judicis aut Magistratus, quavis dignitate & auctoritate fungentis, superioritate, & jurisdictione, quoad negotia ipsam Annona concernentia, prorsus eximimus & liberamus, atque immunitatem constituimus. Inhibentes quibusvis Judicibus, Praesidentibus & Officialibus nec circa praemissa se intromittere vel ingerere, aut Joannem Augustinum vel Depositarium pro tempore existentem praedictos quomodolibet molestare, perturbare, aut inquietare audeant vel praesumant.

§. 5. Quocirca dictos Cardinales nunc & pro tempore in eadem Congregatione deputatos, ejusdem negotii Protectores atque defensores, ad hoc ut in omnibus, quae his literis continentur, auctori-

tatem suam interponant, ac difficultates quae suboriri possent removeant, perpetuò constitimus & deputamus; eisque per praesentes committimus & mandamus, ut quando & quoties opus fuerit, per se vel alium seu alios, praesentes literas, & in eis contenta quaecumque, solemniter publicantes, ac tam dicto Joanni Augustino, & Depositario, qui pro tempore erit, quam aliis quibuscumque, quos praemissa concernunt, & concernent in futurum, efficacis defensionis praedio assistentes, faciant omnia & quaecumque in eisdem praesentibus literis contenta, perpetuò firmiter & inviolabiliter observari; contraditores & rebelles, per sententias & censuras Ecclesiasticas, aliisque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita compescendo; invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 6. Si quis autem fortasse, quod vix nobis persuaderi potest, Successorum nostrorum huic nostro statuto & ordinationi, palam vel occultè contravererit, atque constitutam pecuniam in alium quam praescriptum usum verterit, aut ab aliis ejus auctoritate fretis id fieri passus fuerit, eum seriò admonemus, ut meminerit quam iobisimè ipsi quoad disponendum de hujusmodi pecuniis, nostra, ut praefertur, paritionia & sollicitudine ad hoc publicum & pium opus comparatis, & intuitu pietatis, atque ad sublevandas Christi pauperum necessitates per nos applicatis, & irrefragabilis donationis titulo, ut dictum est, concessis ac donatis, legem imposuimus, eandem etiam ab ipso, qui ex debito pastoralis officii annona ubertatem ad commune bonum subditorum summo studio procurare tenetur, inviolatè servari debere; alioquin se in districto Dei judicio suae administrationis, & hujus pecculi ad piam hujusmodi causam destinati, si illud temerè violaverit, ac damnorum & malorum quae inde provenient, rationem fore redditurum; & praeter actionem popularem, quae adversus eos omnes, qui eorumdem participes fuerint, proponimus, quoniam publica in hoc laederetur, utilitas, scire etiam volumus universos, post derogantis, aut contra statuentis aut mandantis obitum, quibusvis Romanis Pontificibus successoribus licere & liberum esse, iis quae contra statuta, aut mandata fuerint nequaquam obstantibus, etiam singulis de populo, sicuti in actionibus popularibus fit, ad agendum admissis, vel etiam nemine instante, pro refarcienda pecunia desumpta, illaque recuperanda, adversus Pontificis derogantis, & contra facientis, atque Cardinalium & aliorum quorumcumque qui ejus rei participes fuerint, posteros seu conjunctos omnes, quibus ab ipso Pontifice aut Cardinalibus, vel quibuscumque ex praedictis, bona quovis titulo, aut quavis de causa obvenierint, agere, & possessionem bonorum, quae ad ipsos testamento, vel ab intestato delata fuerint, apprehendere & retinere donec quicquid ex summa praedicta imminutus fuerit, id omne quam citissime, etiam per bonorum alienationem & distractionem reintegretur, ac in pristinum statum restituatur. Ac propterea omnia bona praecipue hic oneri, atque obligationi, cum ea quae publici juris sunt, privatorum commodis omnino praefertantur addita esse.

§. 7. Sique in praemissis universis & singulis per quoscumque Judices & Commissarios, ordinarios & delegatos, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Cardinales, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, in quavis causa & instantia, iudicari & definiri debere; necnon si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter attentari contigerit, irritum, & inane decernimus & declaramus.

§. 8. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac Camerae Apostolicae praedictae juramento, confirmatione Apostolica,

Successoribus indicat legem filii impostam & decernit, quod pro refarcienda pecunia hinc male de prompta licebit agere contra Pontificis contravenientis & Cardinalium ac aliorum qui participes erunt posterorum omnes ad quos eorum bona quovis modo pervenerint.

Decretum italicis apponit.

Clausulas derogatorias addit.

vel

Congregatione Cardinalem per ipsum Pontificem super ubertate Annona nuper instituta adhibitis secum thesaurario Clerico Annona Praefecto, & Commissario Camerae Apostolicae administrationem hujusmodi pecuniarum committit.

Cardinales ejusdem Congregationis executores hujus constituti deputat.

Formam &
effectum pu-
blicationis
huius consti-
tutionis sub-
nectit.Sanctionem
penalem
subijcit.Dat. P. A. 3.
die 16. Mar-
tii.

Papæ subsc.

Cardd. subsc.
criptio.

vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis quomodolibet concessis, approbatis & innovatis: quibus omnibus & singulis etiam si de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa & individua mentio, aut quavis alia expressio, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum infererentur, presentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanfuris, hac vice dumtaxat, specialiter & expresse derogamus; ceterisque contrariis quibuscumque.

§. 9. Ut autem presentes literæ ad omnium notitiam facilius perveniant, jubemus eas ad valvas Lateranen. & Principis Apostolorum de Urbe Basilicarum, & in acie Campi Floræ de more affigi, & inibi, ac in Camera Apostolica quamprimum publicari, ac earum exempla, tam in prædictis locis affixa relinqui, quam etiam in libris ipsius Camere describi, & ad perpetuam memoriam conservari. Quibus exemplis etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, ac sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eandem in iudicio & extra illud ubique adhiberi volumus, quæ eisdem presentibus literis adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensæ.

§. 10. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ applicationis, appropriationis, incorporationis, concessionum, donationis, enlargementis, abdicacionis, statuti, ordinationis, interdicti, prohibitionis, voluntatum, exemptionis, liberationis, constitutionum, inhibitionis, deputacionis, commissiois, mandati, admonitionis, propositionis, decreti, declarationis, derogationis, & iussionis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1588. XVII. Cal. Aprilis, Pontificatus nostri anno tertio.

Ego Sixtus Catholicæ Ecclesiæ Episcopus subscripsi.

Ego Alexander Card. Farnesius Episc. Ostien. Vicecancellarius.

Ego Jo. Ant. Episc. Portuen. Card. S. Georgii.

Ego Alphonsus Card. Gelsaldus Episc. Tusculan.

Ego Innic. Avalus Card. de Arag. Episc. Sabinen.

Ego Ptolemæus Card. Comensis Episc. Albanen.

Ego Marcus Sitticus Card. de Altaemps, tit. S. Mar-
tiz Transib.

Ego P. Card. Sanctacrucius tit. S. Clementis.

Ego Mich. Bonellus Card. Alexandrin. tit. S. Mar-
iz lup. Minervam.

Ego Ludovicus Card. Madrutius, tit. S. Anastasiz.

Ego Nic. Card. de Pelleve, tit. S. Praxedis.

Jul. Ant. tit. S. Bartholomæi in Insula, presb. Card.

Sanctæ Severinæ.

Ego Hieron. Card. Rusticiensis tit. S. Susannæ.

Ego Jo. Hieron. Card. Albanus, tit. S. Joan. ante
portam Latinam.

Ego Hieron. Card. Simoncellus.

Ego Petrus Card. Deza.

Ego Ant. tit. SS. Jo. & Pauli presb. Card. Carafa.

Ego Jo. Ant. Card. SS. Quatuor.

Ego Jo. Baptista Card. S. Marcelli.

Ego Franc. Card. de Joyeuse, tit. SS. Trinitatis in
Monte Pincio.

Ego Julius Card. Cananus, tit. S. Eusebii.

Ego Nicolaus, tit. S. Cæcilie Card. Cremonen.

Ego Anton. Maria Card. Salviatus, tit. S. Mariz de
Pace.

Ego Augustinus Card. Veron. tit. S. Marci.

Ego Vincentius tit. S. Mariz in Via Card. Montis
Regalis.

Ego Scipio Card. Lancellottus, tit. S. Salvatoris in
Lauro.

Ego Henricus tit. S. Pudentianæ Card. Caetan.
S. R. E. Camerar.

Ego Jo. Baptista tit. S. Mariz in Ara cæli Card. Ca-
strucius.

Ego Dominicus tit. S. Laurentii Card. Pinellus.

Ego Hippol. S. Pancratii Card. Aldobrandinus Ma-
jor Penit.

Ego Hieronym. tit. S. Petri ad Vincula Card. de
Ruvere.

Ego F. Hieronym. tit. S. Thomæ in Parione Card.
Afulan.

Ego Anton. Maria, tit. S. Agnetis in Agone presb.
Card. Perusin.

Ego F. Constant. Card. Sarnanus, tit. S. Petri in
Monte Aureo.

Ego G. Alanus, tit. S. Martini Card. Anglicani.

Ego Scipio, tit. S. Mariz de Populo presb. Card.
Gonzaga.

Ego Antonius Card. Saulius, tit. S. Vitalis.

Ego Evang. Card. Dufentinus, tit. S. Matthæi in
Merulana.

Ego Fr. Stephanus Card. Aretinus, tit. SS. Marcel-
lini & Petri.

Ego F. Card. Sfortia, diacon. S. Nicolai in
Carcere.

Ego A. diacon. S. Eustachii, Card. Montaltus.

Ego Hieron. S. Mariz in Cosmedin. diacon. Card.
Matthæus.

Ego Benedictus S. Agathæ diac. Card. Justinianus.

Ego Alf. SS. Viti Modesti, & Crescen. S. R. E. diac.
Column.

Ego Federicus S. Mariz in Dominica diac. Card.
Borromæus.

Anno à Nativitate Domini 1588. indicl. 1. die verò
Sabbati, 7. Mensis Maji, Pontificatus Sanctissimi in
Christo Patris, & D. N. D. Sixti, divina providen-
tia Papæ V. Anno ejus quarto, retrospectæ literæ A-
postolicæ affixæ, lectæ & publicatæ fuerunt in valvis
seu portis S. Joannis Lateranen. & S. Petri Princi-
pis Apostolorum de Urbe, necnon Cancellariæ Aposto-
licæ, & acies Campi Floræ, & per aliquod temporis
spatium dimisse, per nos Joan. Baptistam Bagni, &
Joan. Burjurant, S. D. N. Papæ Curf.

Alex. Parabiacus Mag. Curf.

Quòd vacant omnes Ecclesiæ & beneficia, eorum
qui ad dignitatem Cardinalatus promoventur.
Et quando eis datur retentio, intelligatur de be-
neficiis non requiruntibus residentiam in loco,
dictæ dignitati non convenienti.

Alia de Cardinalibus, notavi supra in const. 50.
Postquam.

Sanctissimi D. N. Sixtus Papa S. decrevit, quòd
per promotionem ad Cardinalatum vacant om-
nes Ecclesiæ, & omnia beneficia cujuscumque no-
minis, & tituli sint, nisi fuerit data retentio; quæ
concessa intelligatur, & data ad Patriarchales Me-
tropolitanas, & Cathedrales Ecclesias, ad Mona-
steria etiam commendata ad Prioratus, & ad cæte-
ra omnia alia beneficia: quæ videtur convenire
dignitati Cardinalatus.

§. Ad alia verò quæ videtur repugnare dignita-
ti & gradui Cardinalatus, puta Archipresbyteratus,
Archidiaconatus, Decanatus, Canonicius, &
similia beneficia non extendatur cum obtinentes
huiusmodi beneficia, teneantur residere in Choro,
& habere debeant locum post Episcopum, Cardi-
nalis dignitati non convenientem.

Actum Romæ apud Sanctum Petrum, die Mer-
curii decima sexta Martii, millesimo quingentesi-
mo octuagesimo octavo, in Consistorio.

Publicatio.

LXXIX.

Edita An. D.
1588.Vacant om-
nia beneficia
perpromoti-
nem ad Car-
dinalatum.Retentisque
concessa, in-
telligant, ut
in rubr.Dat. P. An. 3.
die 16. Marti.

De Tertiis decies centenis millibus nummum aureorum, in Arce Sancti Angeli repositis, inde nullo umquam tempore, nisi in præscriptis casibus, certaque desuper servata forma, deprecandis.

Alia decies centena millia hic Pont. pro S.R.E. præsidio in primo, & alia decies centena millia in secundo sui Pont. Anno collegit, & in eadem Arce reposit, indeque promi vetuit in const. 31. Ad clauum. & in const. 69. Anno. vide supra hic. Et has constituit. Pont. successores omnes confirmant.

Edita Am.D.
1588.

SIXTUS EPISCOPUS, Sævus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

ET si nos permultis superiorum temporum experimentis edocti, facis superque intelleximus, quot quantisque casibus humana sit obnoxia conditio, mens tamen nostra divina quadam inspiratione à Patre luminum Deo est tandem admonita, ad ea pro viribus paranda præsidia, quibus B. Petri Naviculus gubernacula nobis, licet immeritis, commissa sunt, inter varias miserabilis hujus vite procellas tuta incoluntque servari posset. Proinde cum ad res difficiles explicandas, ac maxima pericula, gravissimæque discrimina evitanda, pecuniarum copiam quamplurimum conferre dignoscere, primo nostri Pontificatus Anno decies centena nummum aureorum millia; altero verò, altera item decies centena millia in certum sanctiusque Ararium (quod in Pontificia S. Angeli Arce constitutum est) summa diligentia indultuque retulimus; ac de utrisque decies centenis millibus nummum perpetuò aservandis, nec ullo inde umquam tempore nisi ad præscriptos, maximeque necessarios usus deprecandis & erogandis binas constitutiones edidimus, quarum tenores tamen hic pro insertis, & expressis haberi volumus, illos nihilominus etiam de verbo ad verbum, quatenus opus sit, inferi mandamus.

§. 1. Verum tamen cum adversus ejusdem Apostolorum Principis Navem, novos quotidie concitari fluctus, ac Turcarum præcipue Tyrannum atrocissimum Christiani nominis hostem, ab immanissimis hæreticis & schismaticis, (qui jam non amplius de fide, aut de religione contendunt, sed de Catholicorum perniciæ & interitu, dies noctesque cogitant,) sollicitari audiamus, ut ingentem instruat classem, totisque viribus in Christianorum exitum insurgat, eosdemque Ecclesiæ Dei perduelles, nihil in dies enixius moliti, quam ut inconfutilem Christi JESU Redemptoris Tunicam (hoc est Catholicam Ecclesiam) discendant, ac Regna & Populos à Christianis Principibus teterrimo impietatis eorum schismate alienent. Quocirca ingentes & luctuosas turbas in florentissimo Galliarum Regno jamdiu excitatas quotidie magis alere atque constare non desistunt, atque adeo in variis Germaniæ locis, equitum pedumque collecta manu passim, ac impune acerbiores injurias, gravioraque damna minitantur. Venerabiles fratres nostri S. R. E. Cardinales, quibus cum à nobis hac de re sæpius actum est, animadvertentes, majoribus malis ingruentibus majori eriam pecuniarum præsidio Apostolicæ Sedi opus esse, operæ pretium duxerunt, ut à nobis alia decies centena nummum aureorum millia præter bina superiora Pontificio nostro in Arario collocaremus.

§. 2. Nos vero, qui non ignoramus, & Præsidem Civitatis frustra vigilare, nisi eam Dominus custodiat, & ipsum Dominum tentari, nisi qui præest vires nervosque omnes intendat, ut ea faciat & præstet, quæ ad Civitatem tuendam, servandamque pertineant, eorumdem fratrum nostrorum consilium summopere probantes, clementissimi Dei benignitate freti, ad hujusmodi pecuniarum summam cogendam, eamque in idem Pontificum Ararium referendam, mentem omnem animumque adjeci-

mus, Motu proprio igitur, & ex certa nostra scientia, ac habita super hoc cum eisdem venerabilibus fratribus nostris S. R. E. Cardinalibus in Consistorio nostro secreto, matura deliberatione, de eorum consilio, & unanimi consensu, hac præsentis nostra perpetuò valitura constitutione, dicta alia tertio loco decies centena millia nummum aureorum in eadem Arce nostra Pontificia S. Angeli, & sanctiori Arario nunc recondimus, reponimus, & collocamus, & ac Christo Domino nostro, B. MARIE semper Virgini, & Sanctis Apostolis Petro & Paulo offerimus & dicamus, iisdem omnino legibus & conditionibus, quæ in prioribus nostris superius descriptis constitutionibus, præscriptæ & præfixæ sunt. Declarantes nostræ voluntatis, mentisque esse, ut quod in ipsis prioribus constitutionibus de recuperatione Terræ Sanctæ, & generali expeditione contra Turcas dictum fuit, idem etiam locum obtineat, quoad omnes has Deo dicatas pecunias summas, in recuperatione Regnorum à quibuscumque Catholicæ Romanæ Ecclesiæ hostibus occupatorum, & in expeditione, quam contra eosdem decerni ac fieri contigerit.

§. 3. Ubi verò in præscriptis casibus pecuniarum aliquid summi necessitas postulerit, volumus ut de tota summa tam superioribus annis quam etiam nunc reposita, hoc prorsus, & non alio modo pecunie sumantur & erogentur: nimirum, ut in Consistorio secreto præscriptarum necessitatum qualitate, ac rerum & temporum ratione diligenter pensata, atque ita cogente, trium saltem ex quatuor partibus Cardinalium, qui Consistorio interfuerint, sicuti in præinserta constitutione nostra sancitum est, consensu, decreto, & subscriptione adhibitis, externis decies centenis millibus aureorum nummum à nobis repositis non ultra sextam partem, id est non ultra quingenta millia nummum promi liceat. Et ea quidem quingentorum millium summa, non tota simul, sed paulatim, moderatè & successivè deprecatur per certas portiones, quæ in eodem Consistorio, in quo de tota re deliberabitur à tribus partibus Cardinalium, ut dictum est, omnibus diligenter examinatis, decretæ & præfixit fuerint. Quod si ipsis quingentis millibus erogatis, & consumptis, præscripti casus & necessitates novam impensam requisierint, tunc iterum proposita & adhibita in Consistorio consultatione, si consensus, decretum, & subscriptio trium ex quatuor partibus Cardinalium, ut supra dictum est, acceperint, aliam summam, non tamen quingenta millia aureorum excedentem, illamque pariter non statim totam, sed moderatione ea servata, eoque quem diximus modo limitatam & præfixitam, sumi posse permittimus. Ceterum statuimus, prout aliis prioribus nostris constitutionibus ordinatum est, ut partes, & portiones pecunie supradictæ, quæ in aliquo ex præmissis casibus sumptæ fuerint, cum ejus impensæ faciendæ ratio cessaverit, omnino in ararium unde de promptæ fuerint, integrè restitui, ac reponi primo quoque tempore debeant.

§. 4. Has autem Deo dicatas pecunias nullo umquam tempore, nisi aliqua ex his quas diximus, necessitas urgeat, & requiratur, neque in totum neque ex aliqua parte amoveri, erogare quovis modo à nobis posse volumus, eamque amovendi & erogandi, potestatem & facultatem à nobis ipsis abdicamus. Idque successores nostros Romanos Pontifices proposito sibi tremendo iudicio, in quo summo patrifamilias de administrata villicatione exquisita reddetur ratio, eodem planè modo facturos esse confidimus & speramus. Tandemque Deo præsentem oblatam pecuniam, unà cum illa prioris integram, ut dictum est, conservaturos esse, ac perinde omnino, ac res & bona Ecclesiæ immobilia nos habituros promittimus, juramus & vovemus; & sicuti omnes Cardinales præsentis, & infra scripti voverunt, promiserunt ac jurarunt, ita per alios Cardinales nunc & pro tempore existentes

Formamque
deprecandi
pecuniam in
prædictis casibus hic apponit & servari præcipit.

Prædictaque
se observaturum
vovit, & sicut Card.
infra scripti
idem promiserunt,
& ita ab aliis Card.
pro tempore
idem promitti
juberet, pro
ut in const.
in rubr. cit.

Hic Pont.
pro S. R. E.
præsidio, in
primo sui
Pont. Anno
decies centena
millia nummum
aureorum,
& totidem
insecundo
collegit &
in Arce S.
Angeli reposit,
indeque
promi vetuit,
ut super
in ejus const.
cit. in rubr.

Et in hoc
tertio anno
ex aliis causis
hic evarianis
habita
de super cum
S. R. E. Card.
consultatione
alia decies
centena millia
nummum
aureorum
collegit.

Et modo in
dicta Arce
Sancti Angeli
repositis,
Deoque &
ejus Virgini
Mariæ,
ac SS. Apostolis
Petro & Paulo
dicatur, indeque
promi (præterquam in

Cetera omnia in d. conf. contenta denuo decernit & præcipit.

Successoribus contravenientibus indicit pecunias.

Sanctio poenalis.

Dat. P. An. 4. die 27. Apr.

Papæ subsc. & juramentum.

Card. subsc. & juramenta.

ac per successores nostros, quando & quoties superius ordinatum fuit, & juxta formam nunc traditam jurari, promitti, ac voveri debere decernimus.

§. 5. Denique cetera omnia & singula in eadem constitutione superscripta, quomodolibet expressa, constituta, & decreta, etiam in hac pecunia à nobis, ut præfertur, nunc collocata & recondita, & quoad præsentis nostras literas, in omnibus & per omnia, penitus, omnino, & inviolabiliter observari, & locum habere volumus, præcipimus & mandamus.

§. 6. Si quis autem fortasse nostrorum successorum, id quod minimè credimus, huic nostræ constitutioni omnino, aut aliqua ex parte derogare, aut contrà statuere voluerit, aut depromptam pecuniam, ut supra sancitum est, in idem Ærarium non restituerit, admonemus post derogantis, aut contrà statuentis, contràque facientis obitum, liberum esse successoribus, ea derogatione & quibuscvis aliis, quæ contrà statuta sunt, non obstantibus, pro pecunia contrà hujus constitutionis præscriptum, sumpta ac deprompta recuperanda, tam adversus Pontificis derogantis, & contrà facientis posteros seu conjunctos omnes, quam adversus Cardinales idem consentientes, aut quoscunque eorum heredes, quibus ab ipso Pontifice aut Cardinalibus bona, quovis titulo, vel quavis ratione obvenierint, agere, & possessionem bonorum, quæ ad ipsos posteros pervenerint, adipisci, retinerique donec quicquid pecunie depromptum est, id omne in Ærarium referatur, & restituatur, eaque ipsa bona siquo modo, ut supra dictum est, à forma per nos constituta recedi contigerit, hujusmodi obligationi, atque oneri obnoxia & addicta esse volumus, singulis quæ in nostris literis adversari possent, vel quocumquomodo obesse, penitus remotis, ac non obstantibus.

§. 7. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ reconditionis, repositionis, colloca- tionis, oblationis, dicationis, declarationis, permissionis, statuti, voluntatum, abdicationis, promissionis, juramenti, voti, decreti, præcepti, mandati, & admonitionis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1588. quinto Kal. Maji, Pontificatus nostri anno 4.

Ego Sixtus Catholica Ecclesiæ Episcopus, promitto, voveo & juro.

Ego A. Card. Farnesius Episc. Ostien. Vicecancellarius, promitto, voveo & juro.

Ego Jo. Antonius Episcopus Card. S. Georgii, promitto, voveo & juro.

Ego Alphonsus Card. Gelvaldus Episc. Tusculanus, promitto, voveo & juro.

Ego Imic. Avalos Card. de Arag. Episc. Sabinen. promitto, voveo & juro.

Ego Ptolemæus Card. Comensis Episcopus Albanen. promitto, voveo & juro.

Ego Marcus Sitticus Card. ab Altaemps tit. S. Mariæ Translyberim, promitto, voveo & juro.

Ego P. Card. Sanctæ crucis tit. S. Clementis, promitto, voveo & juro.

F. Mich. Bonellus Card. Alexandrin. tit. S. Mariæ super Minervam, promitto, voveo & juro.

Ego Ludovicus Card. Madrutius, tit. S. Anastasiæ, promitto, voveo & juro.

Ego Nic. Card. de Pelleve, tit. S. Praxedis, promitto, voveo & juro.

Jul. Ant. tit. S. Bartholomæi in Insula presb. Card. S. Severinæ, promitto, voveo & juro.

Ego Hieron. Card. Rusticucius, tituli S. Sufannæ, promitto, voveo & juro.

Ego Joan. Hieron. Card. Albanus, tit. S. Joan. ante portam Latinam, promitto, voveo & juro.

Ego Hieron. Card. Simoncellus, promitto, voveo & juro.

Ego Petrus Card. Deza, promitto, voveo & juro.

Ego Ant. tit. SS. Joan. & Pauli presb. Card. Carafa, promitto, voveo & juro.

Ego Jo. Ant. Card. SS. Quatuor, promitto, voveo & juro.

Ego Jo. Baptista Card. S. Marcelli, promitto, voveo & juro.

Ego Franc. Card. de Joyeuse, tit. S. Trinitatis in Monte Pincio, promitto, voveo & juro.

Ego Jul. Card. Cananius, tit. S. Eusebii, promitto, voveo & juro.

Ego Nicolaus tit. S. Cæcilie Card. Cremönen. promitto, voveo & juro.

Ego Antonius Maria Card. Salvatius, tit. S. Mariæ de Pace, promitto, voveo & juro.

Ego Augustinus Card. Veron. tit. S. Marci, promitto, voveo & juro.

Ego Vincentius tit. S. Mariæ in Via Card. Montis Regalis, promitto, voveo & juro.

Ego Scipio Card. Lancellottus, tit. S. Salvatoris in Lauro, promitto, voveo & juro.

Ego Henricus tit. S. Pudentianæ Card. Cætan. S. R. E. Camer. promitto, voveo & juro.

Ego Jo. Baptista, tit. S. Mariæ in Araceli, Card. Castrucius, promitto, voveo & juro.

Ego Dominicus tit. S. Laurentii Card. Pinellus, promitto, voveo & juro.

Ego Hieron. tit. S. Petri ad Vincula Card. de Ruvere, promitto, voveo & juro.

Ego F. Hieron. tit. S. Thomæ in Parione Card. Asculan. promitto, voveo & juro.

Ego Ant. Maria, tit. S. Agnetis in Agone presb. Card. Perusin. promitto, voveo & juro.

Ego F. Constan. Card. Sarnanus, tit. S. Petri in Monte aureo, promitto, voveo & juro.

Ego G. Alanus, tit. S. Martini Card. Anglican. promitto, voveo & juro.

Ego Scipio tit. S. Mariæ de Populo presb. Card. Gonzaga, promitto, voveo & juro.

Ego Ant. Card. Saulius, tit. S. Vitalis, promitto, voveo & juro.

Ego Evang. Card. Cusentinus, tit. S. Matthæi in Merulana, promitto, voveo & juro.

Ego F. Steph. tit. SS. Marcellini & Petri presb. Card. Aretinus, promitto, voveo & juro.

Ego F. Card. Sfortia, diac. S. Nicolai in Carcere, promitto, voveo & juro.

Ego A. Diaconus S. Eustachii, Card. Montastus, promitto, voveo & juro.

Ego Hieron. S. Mariæ in Cosmedin diac. Card. Mathæius, promitto, voveo & juro.

Ego Benedictus S. Agathæ, diaconus Card. Justinianus, promitto, voveo & juro.

Ego Asc. SS. Viti, Modesti, & Crescen. S. R. E. diaconus Card. Columna, promitto, voveo & juro.

Ego Federicus S. Mariæ in Dominica diac. Card. Borromæus.

Anno à Nativitate Domini 1588. indictione 1. die verò Sabbati 7. mensis Maji, Pontif. Sanctiss. in Christo patris, & D. N. D. Sixti divina providentia Papæ V. anno ejus 4. retroscripta literæ Apostolicæ affixæ, lectæ & publicatæ fuerunt in valvis seu portis Sancti Joannis Lateranensis, & Sancti Petri Principis Apostolorum de Urbe, necnon Cancellariæ Apostolicæ, & aciei Campi Floræ, & per aliquod temporis spatium dimissa per nos Joannem Baptistam Bagni, & Jo. Burlinault. S. D. N. Papæ Curf.

Alex. Parabiacus Mag. Curf.

Approbatio Congregationis Clericorum Regularium Minorum, cum aliquarum gratiarum concessione.

Alia dedit privilegia Greg. XIV. infra in const. 2. Romanus. Et omnia confirmavit Clem. VIII. ut ibi dicam in Tomo 3.

Publicatio.

LXXXI.

1588.
Contrariis
derogat.

Dat. P. A. 4.
die 1. Julii.

LXXII.

Edita An. D.
1588.

Proemium.

S. Didacus
Religionis
Fratrum Mi-
norum S.
Francisci
Professor
fuit.

§. 13. Non obstantibus scilicet recordationis Bonifacii Papæ Octavi prædecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, dummodò ultra tres dietas aliquis auctoritate præsentium ad iudicium non trahatur, aliisque Apostolicis, ac in provincialibus & synodalibus Conciliis editis generalibus vel specialibus, constitutionibus & ordinationibus contrariis quibuscumque; aut si aliquibus communiter vel divisim, ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per literas Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris, die primo Julii millesimo quingentesimo octuagesimo octavo, Pont. nostri Anno quarto.

Canonizatio S. Didaci Confessoris, Ordinis Fratrum Minorum S. Francisci de Observantia professionis, suæque Festivitatibus institutio pro die 12. mensis Novembris quotannis celebrandæ.

S I X T U S E P I S C O P U S ,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Rex Regum antè omnia sæcula Christus Dominus, qui propter perditum salutem hominis, forma servi accepta, in plenitudine temporis factus est homo, Ecclesiam suam unicè dilectam, suoque pretioso sanguine acquisitam, supra Beatissimum Apostolorum Principem Petrum, cui petreæ firmitatem dedit, in se ipso summo angulari lapide à Christianæ fide primordiis edificavit, & usque ad sæculi consummationem per omnes temporum ætates mirabiliter semper edificat, Divinum verò admirabilis huiusmodi ædificationis artificium, nec inflata mundi sapientia capit, nec terrena & carnalis prudentia ullo modo assequitur, Diaboli autem astutia & superbia contemnit. Nimirum quemadmodum ex pauperibus & contemptis plerumque hominibus, humili & obscuro loco natis, nullis artibus, nulla eloquentia instructis, nullo denique humanæ potentie præsidio communis, tamquam ex abjectis & reprobis lapidibus, tanta fiat moles, tam pulchra, tam ornata, tam fortis, tam stabilis, in tantam demùm confurgat altitudinem, ut ipsæ inferorum portæ, ejus robur ac firmamentum perhorrescant. Sed viæ Dei non sunt viæ hominum, nec cogitationes ejus sicut cogitationes eorum. Itaque non multi sapientes, secundum carnem, non multi potentes, non multi nobiles, sed quæ stulta sunt mundi eligit Deus, ut confundat fortia, & ignobilia mundi, & contemptibilia eligit Deus, & ea quæ non sunt, ut ea quæ sunt destrueret, ut non gloriaretur omnis caro in conspectu ejus. Sic omnipotens Deus per scandalum Crucis, & per stultitiam prædicationis salvos fecit credentes, sic ab ipsis nascentis Ecclesie initis per sapientem Apostolorum infantiam, & per fortissimam Martyrum infirmitatem, Græcorum sapientiam infatuavit, & gentium potentiam dejecit, atque prostravit; sic denique per succedentes ætates brachio fortitudinis suæ deposuit potentes de Sede, & exaltavit humiles Sanctos suos.

§. 1. Hinc superiori sæculo, & patrum nostrorum memoria valde propinquo, ex humili familia Fratrum Minorum S. Patris Francisci humilem Beatum Didacum, in Hispania natum, non doctrina præcellentem, sed quales primi illi nostri Magistri & Principes fuerunt sine literis humano studio comparatis, sed idiotam & in sancta Religionis professione laicum delegit, in quo ostenderet abundantes divitias gratiæ suæ; cujus admirabili vitæ sanctitate, & exemplo multos ad viam salutis perduceret, & senescentem, ac penè decrepitum Mundum magis magisque coarqueret, quia quod stultum est Dei, sapientius est hominibus, & quod infirmum est Dei fortius est hominibus.

§. 2. Itaque pater misericordiarum Deus, qui facit mirabilia magna solus, hunc servum suum parvulum, & demissum, celestibus donis suis adeo ornavit, tantòque Spiritus Sancti igne incendit, manumque suam ad sanitates & signa & prodigia, Beati Didaci meritis, cum in ejus vita, tum post mortem efficienda, tam mirificè extendit, ut is non solum apud suos in florentissimis Hispaniæ Regnis notus & clarus esset, sed apud exteros etiam ejus nomen magna cum gloria pervulgaretur. Justus enim & misericors Dominus servos suos fideles, quos antè Mundi constitutionem elegit & prædestinavit ad vitam, non solum in Cælo semper coronat, sed sæpè etiam in Terra, ubi fortiter & legitime certaverunt, multo gloriæ splendore cumulat atque illustrat. Nimirum, ut præclaras illas suas promissiones perfolvat, Dabo vos, inquit, nominatos, & in gloriam, & in laudem in cunctis Populis Terræ; ut se ipse in Sanctis suis mirabilem demonstret, & potentiam suam signis & virtutibus declaret, ut propolis Sanctorum gloriosis laboribus, & meritis, qui homines fuerunt nobis similes, circumdanti infirmitate, segnitie & tarditatem nostram in via virtutis excitet, & frigescentem charitatem accendat; ut hæreticorum pravitate coerceat, perverfitatem confundat, dum ad sacras eorum reliquias, divina virtute agroti curantur, Dæmones pelluntur; ut mortuos qui in Domino sunt mortui, beatos esse, & multò felicius vivere omnes intelligant. Postremò, ut amici Dei multò maxime honorentur, & qui Sancti sunt apud Deum, Sancti etiam ab hominibus habeantur, ad quorum nos opem confugientes, eosque pie invocantes, eorum suffragiis adjuti celestem misericordiam facilius impetremus. Merito igitur Beatum Didacum laudamus, quem Deus multis, & illustribus ostendit miraculis prædicandum; de cujus beati viri vita, & rebus gestis, purissimæ fidei integritate, morum excellenti sanctitate, signorum admirabiliter pauca quedam libenter pro nostro Pastoralis officio, Populo Dei proponimus, ut laudetur Deus in Sancto suo, & fidelium devotio tamquam salutari quodam & perjurando cibo nutriatur, omnesque Deo gratias agant, publico nostro, & hujus Sanctæ Apostolicæ Sedis testimonio, quæ à Spiritu Sancto gubernatur & regitur, Beati Didaci sanctitatem optimo jure declaratam esse & promulgatam.

§. 3. Natus est Beatus Didacus in Hispania, in Provincia Bethica, & in Oppido, cui nomen est Sanctus Nicolaus de Portu, quod est in diocesi Hispanensi. Et is quidem ut secundus ager celestis gratiæ imbre irrigatus uberes fructus citò protulit.

§. 4. Nam adolescens ex medio Babylonis fugiens, hoc est, ex laqueis & periculis sæculi, penitentis habitu indutus in propinquam solitariam Ecclesiam unà cum pio quodam sacerdote spiritualis vitæ duce, & socio cecessit; ubi novus Christi miles in hujus fallacis Mundi contemptione, & omnium humanarum rerum desipientia, in celestium contemplatione, in corpore edomando, & spiritui subjiciendo, se assidue exercens, magnam suorum oppidanorum ædificatione præclarum tyrocinium posuit.

§. 5. Post aliquot verò annos, ut se artioribus vinculis Christo adstringeret, & à Mundi tempestatibus quam longissime discederet, & sub suavi obedientie jugo, Deo securus & fructuosus serviret, in portum Seraphicæ S. Francisci Religionis confugit, eamque propè Cordubam in Conventu de Arrazafa, ut vocant, quem Fratres Minores, qui nunc de Observantia nominantur, incolunt, verbis expressis est professus. Hic jam Athleta Christi amplissimum virtutum stadium ingressus, tamquam obliviscens quæ retrò erant, & ad ea quæ sunt priora se extendens, cepit omni contentione corporis & spiritus persequi, divina gratia suffragante bravium supernæ vocationis. Summa cura & diligentia in Regulæ observatione versabatur, quam in

1588.
In Regnis
Hispan. virtutibus & miraculis claruit quantum virtutum alioque recentur.

B. Didacus
in Hispania
natus.

Adolescens
apud quem
dam pium
Sacerdotem
vixit.

Religionem
que S. Francisci
deinde
professus
fuit.

omni vita sanctè adeò inviolatèque servavit, ut ipse in cunctis Religiosis functionibus & officiis vivens, quadam & expressa regula esse videretur.

§. 6. In primis verò, quia sapientissimus Architectus Spiritus Sanctus, sublime regularis perfectionis ædificium in eo extruebat; altissimum humilitatis fundamentum jecit, & ut prudens ille adificator in Evangelio laudatus, fodit in altum, & ædificavit domum super petram: nihil sibi tribuens, nulli se anteponeus, quò plura à Deo accipiebat, eò demissius se gerens. Itaque nullæ tentationum procellæ, nulli superbiæ & inanis gloriæ venti, nullæ diaboli machinationes domum illam tam egregiè fundatam movere, aut labefactare potuerunt. Superiorum & Prælatorum mandata & iussa, tanta obedientia, tantæque alacritate exequiebatur, ac si Deum in eis loquentem audivisset. Sanctam pauperatatem Domini sui sponsam charissimam, quam diligentissimè custodiebat, omnia arbitratus ut sterco-
ra, ut Christum lucrificeret. Cùmque Sathanæ astutias non ignoraret, sed optimè intelligeret infensissimum humani generis adversarium, tamquam Leonem rabidum & rugientem, dies noctesque circuire, ut Christi oviculas dilaceret ac devoret, numquam otio, aut torpori se dabat, sed stabat succinctus lumbos suos in veritate, indutus lorica iustitiæ, galea salutis assumpta, & scuto fidei arrepto, in quo omnia posset ignita nequissimi hostis tela exingueret.

§. 7. Corpus igitur & carnem suam illecebram peccati labore, jejuniis ferè continuis, & flagellis castigabat & in servitium redigebat; præcipuè verò ad excelsum illam Arcem confugiebat, qua nulla fortiori, nulla munitiori, hoc est ad sanctæ Orationis præsidium; cuius alis in Cælum frequenter sublatus, terrenorum oblitus, suavissimo Dei colloquio fruebatur.

§. 8. In ea igitur schola divinitus eruditus vir alicui planè rudis, & literarum minimè sciens, admirandum in modum de rebus divinis loquebatur, sensusque mirificos proferebat, ità ut viri eruditissimi, qui in sacre Theologie studiis ætatem contriverant, summo perè oblupefcerent; illudque memorie traditum est, & gravi testimonio comprobatum, doctos & pios viros cùm abstrusas & perdifficiles quæstiones, ad res divinas, animarumque salutem pertinentes cum eo familiariter communicarent, id ab homine literarum expertè cumulatè didicisse quod in celeberrimis Academiis à magnis Doctores addicere nequiverant.

§. 9. Ille præterea Orationis fructus erat uberimus, quòd jam in benedictionibus dulcedinis præventus, & calicem illum præclarum, qui cor inebriat delibans, ardentis charitatis igne, ergà Deum & proximos toto pectore æstuabat; quare bonorum omnium auctorem Deum & Beatissimam Dei Genitricem semper Virginem humani generis Advocatam, quam summa devotione semper coluit, non pro se solo, sed pro omnibus hominibus, & præsertim pro peccatorum emendatione continenter, vehementissimeque orabat.

§. 10. Pauperes verò Jesu Christi tanto affectu diligebat, tantæque ergà eos misericordia commovebatur, ut omni studio, quantum ei licebat, eorum inopiam, & calamitates sublevare sedulo procuraret; quod si interdum præstare non posset, vim lacrymarum profundebat, eoque verbis amantissimis consolabatur.

§. 11. Agrotos fratres omnibus charitatis officiis prosequiebatur, assidere ad lectum, cibum ministrare, vigilare totas noctes, perferre omnes molestias, tanta patientia, tanta humilitate, ut quorundam purulentas plagas, non solum medicamentis curare, sed lingua quoque eas lambere & abstergere non abhorrebat; quo in genere eximia servi Dei charitas Romæ aliquando in Cenobio fratrum suorum, quod est ad Aram cœli, insigniter eluxit. Nam anno quinquagesimo superioris sæculi, cùm piæ memo-

ria Nicolaus Papa Quintus prædecessor noster sacrum Jubilæum de more celebraret, Romam venit Beatus Didacus, ut salutarem indulgentiam conficeretur, & Beatorum Apostolorum sepulchra, cæterorumque Sanctorum Martyrum illustres memorias religiosè veneraretur; magna erat annonæ inopia, gravibus & periculosis morbis Urbs laborabat, cùm Beatus Didacus agrotis curandis, quorum ingens erat numerus, à Guardiano, seu Cœnobii Præfecto, qui jam ejus sanctitatem degustaverat, est præpositus; cuius officii munus, tam fideliter feliciterque administravit, ut in publicis angustiis omnia apud pauperes Christi abundarent, omnesque in servo Dei, & copiosum charitatis spiritum, & singularem illius apud Deum gratiam, agnoscerent.

§. 12. Nec sanè mirandum est, virum Dei membris Christi Fratribus suis, in quibus Christus ipse ægrotabat, tanto charitatis studio inservisse, tam impigre ministrasse, qui eò jam perfectionis progressus erat, ut charitatem illam, qua nemo majorem habet, sponso animæ suæ præstare & perolvere concupisceret, & pro Christi nomine, & confessione, vitam & sanguinem profundere desideraret. Ea nimirum est perfecti amoris vis & natura, ut non facile conquelescat, sed majora semper & maxima appetat, & molietur, semperque actuosus & operosus sit. Itaque cùm aliquando ad Insulas Canariæ missus esset, ut Guardiani officio in illo Fratrum Minorum conventu fungeretur, servus Christi, cui vivere Christus erat, & mori lucrum, cepit Martyrii desiderio vehementer flagrare. Erat in eo, non solum columbæ simplicitas, sed & serpentis prudentia; quare multa cum vigilantia, & regularis disciplinæ observantia vir Dei in sua custodia excubabat in omni sanctitate & iustitia forma factus pusilli gregis sui, & fidelium Insulanorum, quibus bonus odor Christi erat ad vitam, ità ut frequentes eum adirent, ex ejusque spiritualibus colloquiis miram caperent consolationem & voluptatem.

§. 13. Magnam verò exercendæ charitatis legem in Insulis illis nactus, simulque consequendi martyrii spe incitatus, multos ex Canariensibus infideles, & impurus adhuc idolorum superstitionibus addictos, verbo, exemplo, orationibus ad Christi fidem perduxit, quo in munere dum strenuè veraretur, multa illi pericula in ea Canaria, quæ magna appellatur, diaboli invidia conspavit, sæpe in capitis & vitæ discrimen venit, ut sese jam Martirii palmam potiturum speraret; sed Deo aliter disponente, non Martyrio animus & voluntas, sed voluntati Martyrium defuit, ac certè gloria non defuit, cùm præclare à Beato Martyre Cypriano scriptum sit, ad coronam Dei promerendam ipsius testimonium solum sufficere, qui judicaturus est, qui arcana renum scrutatur, & cordis intuetur occulta. Ergò & purpuream de passione coronam aliquo modo accepit, & multas de bonis operibus candidas reportavit, reservatus à Deo ut multos Christo lucrificeret.

§. 14. Jam enim in universa Hispania clarissimum erat Beati Didaci nomen, magnanque apud omnes & venerationem & admirationem habebat, & tamquam Angelum quemdam in Terris agentem sic eum homines intuebantur; nihil illi lenius, nihil mansuetius, lac & mel sub lingua ejus, & cor ejus mundum, & simplex Christiana dulcedine redundabat: omnia in bonam partem accipere, de nemine malè judicare, nullum adversus aliquem verbum acerbius immittere. Si quem verò contrà legem Dei, & regularem disciplinam peccantem animadverteret, zelo Dei incensus, libere objurgabat, nulla tamen in re gloriam suam, sed Dei honorem, & fratrum utilitatem quarebat. Signis etiam & miraculis viventem servum suum illustravit Deus, ejusque excellentem fidem rebus mirabilibus efficiendis multipliciter patefecit. Elucebat in eo singularis gratia corationum, ità ut undique ad eum ejus rei causa quamplurimi confluerent; ille verò fide, quæ per Dei

Charitas in eo maxima erat.

Infideles multos ex Canariensibus ad fidem perduxit.

Miraculis quorum di- qua hic re- p- runt dum vixit emi- cuit.

dilectionem mirifica operatur, in Domino roboratus, cum digitum in lampadem, quæ ante sacram Beatissimæ Virginis imaginem collucebat, demississet, ex ejus oleo agrotos signo Crucis obsignatos perungebat, multorumque varios languores & morbos ejusdem Crucis virtute, in qua sola gloriabatur, mirabiliter sanabat. Accidit aliquando, ut è cenobio, in quo erat, ad oppidum Sancti Lucae de Barameda proficisceretur, fratre uno comite; cumque nullis cibariis acceptis jam sumendi cibi tempus advenisset, & ex itinere defessi essent, nec in proximo vico quidquam, quo ex aliena misericordia reficerentur, Deo ita disponente, reperire potuissent, ad comitem sereno vultu conversus Beatus Didacus, Eia, inquit, frater, in Domino confidamus, ipse nos pascet; cum iter strenuè prosequerentur, ecce in perampla plantitie candidam mappam inter herbas prope viam positam vident, propiusque accedentes album panem, pisces recentes coctos, & vini vasculum inveniunt; insunt servi Dei, & in latissimo campo undè in omnes partes liber erat prospectus, omnia oculis perlustrantes circumspiciunt, siquis fortè eo in loco prandium reliquisset; denique id quod erat rati, ad mensam sibi à Deo in deserto paratam veri Israelitæ accumbunt, ac cibo & potione, siti, famèque depulsa, quod superfluit, ibidem liquerunt, DEO patri misericordiarum gratias agentes, qui servis suis in eo sperantibus escam dederat in tempore opportuno. Quid, illud quod Hispani gestum est, quod magnæ fidei est argumentum? Nam cum septennis puer, qui à matre vapulare solitus erat, in furno, in quem ejus iracundiam fugiens se abdididerat, obdormisset, & furno ab ignara matre succenso experfactus clamaret, vir Dei exanimatam matrem, ejulatu omnia complementem, nec quo se verteret scientem, ad majorem Ecclesiam ire, ibique matrem misericordiarum devotè orare iussit, ipsa te, inquit, o mulier, adjuvabit; cum illa, quasi Dei Nuncium audivisset, pergeret, ipse ad furnum accedens puerum ex maximo periculo extrahit paulò post ad idem templum adduxit, matrique suæ salvum, & incolumem reddidit. Cæterum, cum iustus Judex DEUS Athletam suum tot victoriis illustrem carne, mundo, diabolo per Dei gratiam devicto, corona justitiæ, quæ illi ab omni æternitate repõta erat, coronare decrevisset, servumque multiplicatis talentis indultum, & in paucis fidelem suprà multa constituere, & in gaudium vellet Domini sui introducere, Beatus Didacus in senectute bona plenus dierum, & operum bonorum in Conventu Complutensi, in quo annos complures est commoratus, in supremum morbum incidit, in quo incredibilis patientiæ exemplum præbuit. Quadam autem nocte extrà se raptus, sensu omni & vitali motu amisso, ita ut à Medico, & qui adstant fratribus, mortuus planè crederetur, tandem soluta estasi, ter aut quater hæc verba locutus est: O quales flores habet Paradisus! In profundæ verò humilitatis statione, usque ad extremum vitæ spiritum servanda, ita firmus manebat, ita nupquam de suo loco decedebat, ut cum fratres singuli ab eo peterent, ut pro ipsis oraret, ipse contrà, se eorum orationibus vehementer commendabat, ut ipsis pro eo Deum orantibus, bonorum operum fructus, quem illi in sanctæ Religionis Obsequiis cumulerant, sibi quoque à Deo communicaretur, atque ita misericordiam impetraret.

S. Didacus in amplexu Crucis quam maxime diligebat, & in corde & corpore semper gestaverat, die 12. Novembr. 1463. in Domino obdormivit & cantavit

§. 15. Postremo cum se jam morituum intelligeret, comitis illius & adjutricis fidelissima, quæ illum in hujus vitæ peregrinatione nunquam deseruerat, hoc est sanctæ paupertatis, supremo vitæ die non oblitus, sed in ejus intimo sinu, quam maxime fieri posset, spiritum emittere cupiens, convocatis fratribus, eos obnixè rogavit, ut sibi vestem obsoleat & laceratam, habitumque omnium vilissimum in quo moreretur, concederent; quo impetrato, multis profusis lacrymis, ab his qui ad-

stant, offensionum atque errorum veniam postulavit; quibus copiosè collacrymantibus, ipse Cruce lignea quam ad caput habebat, arrepta, eamque amplexus & osculatus, utroque brachio in altum fortiter sublato (cum tamen alterum gravi apostemate tumens, ac debilitatum antea movere non potuisset) oculisque in vitale signum defixis, verba illa ex sacro Hymno magnòque pietatis spiritu pronuntiavit. Dulce lignum, dulces clavos, dulcia ferens pondera, quæ sola fuisti digna portare Regem Cælorum, & Dominum; quæ cum dixisset, in ipso salutiferæ Crucis complexu, quam unicè dilexerat, quam in corde & corpore semper gestaverat, in qua Christo confusus, & mundo crucifixus fuerat, animam efflavit, & in Domino obdormivit, pridè idus Novembris, Anno Domini 1463.

§. 16. Ad ejus corpus (Beati Didaci morte audita) magni undique concursus facti, illud devotè omnes contingere, amictus particulas præcindere, capillos devotionis causa evellere, demum Christiano ritu corpus honorificè humatum est. Hic jam statim Deus mortui servi sui, cui in vita cooperatus fuerat, eximiam sanctitatem signis sequentibus comprobavit. Nam corpus, quod jam quadriduo humi sepultum fuerat, iterum non absque miraculi interventu, effusum, non solum integrum, incorruptumque apparuit, sed cum per multos menses, ut pio studio fatisceret, & civium, & aliorum, qui ex diversis partibus accurrebant, insepultum jacuisset, non computruit, nullum tetrum odorem emisit. Imò verò corpus illud, quod vivens Spiritus Sancti templum fuerat, odorem suavissimum afflabat, quo omnes mirificè recreabantur; qui quidem & in hodiernum usque diem ex ejus sepulchro suaviter & jucundè spirans, à perisque sæpè sentitur. Illud quoque in Beati viri mortuo corpore mirum accessit, quod ejus membra & artus, vitali calore destituti non obriguerunt, nec duri aut rigidi tunc effecti, ut cadaverum solent, sed molles erant & flexibiles quocumque verterentur. Quocirca laudanda est pietas & magnificentia clara memoria Henrici Quarti Castellæ Regis, qui una cum filia periculose agrotans, & Beati Didaci precibus sanitate impetrata, nobile sacellum grati animi sui monumentum extruxit, ibique in Arca ferreis laminis diligenter communita Beati Didaci corpus decenter recondi iussit. Ad quod quidem sacellum, ut constat, non solum Complutenses cives, sed vicini & remotiores Populi, atque ex omni ferè Hispania fideles tanta devotione confluent, tam multi beati illius viri opem apud Deum implorant, tot ibi vigilie fiunt, tot sacrificia in eodem ejus sacello celebrantur, tam multa & illustria dona voti reddendi gratia offeruntur, ut hæc de Beati Didaci sanctitate non exigui temporis tamquam rumoris aura, sed per annos centum viginti & amplius constans, & perpetua fama & opinio, tantisque illorum fidelium, omnium generum, omnium ordinum consensus magni profecto, & illustri testimonio loco habendum sit ad Beati Didaci sanctimoniam comprobendam. Verum tamen multis quoque post obitum miraculis vir commemorabili sanctitate præditus claruit. Nam in actis transmissis centum ferè & triginta leguntur, Deo, qui glorificatur in Concilio sanctorum, signis & prodigiis testante, servum suum non solum morum, sed etiam signorum virtute, nec operibus modo pietatis in vita, sed etiam miraculorum luce post mortem, clarum & venerabilem esse. Durum oppidum est in Hispania, in diocesi Seguntina; ex eo Catherina Martini filia, virgo annos duodecim nata, cum ante aliquot menses subita vi morbi furda & muta evasisset, brachiis item pedibusque paralyti dissolutis incedere nequiret, ad Beati Didaci sacellum delata, cum ibi perigilaret, ejus tacta manu, & in Crucis formam consignata, illic & aurium sensum, & loquendi facultatem recepit, membrorumque usu resti-

Hymno, Dulce lignum &c.

Miraculis etiam multis, quorum aliqua hic recensentur, post obitum illustri fuit.

tuto, totoque corpore confirmato, liberè quā libuit, incessit, laudans & benedicens Deum. Adolefcentis quidam erat annorum fere viginti, Didacus de Lorca appellatus, filius Petri Gonzales viri nobilis, qui Deo permittebat, ab immundo spiritu annos complures vexabatur miserandum in modum, ita ut sæpius interdum in die arreptus, & ad terram allisus, horribiles corporis gestus ageret, & veluti mortuus relinqueretur; hic se Beato Didaco humiliter commendans, & in ejus sacello aliquamdiu invigilans à miserabili vexatione omnino est liberatus. Cùm Catharina Bartholomæi Sanchez uxor, expleto ad pariendum tempore, parere non posset, foetus enim in utero transversus alterum tantummodò pedem eduxerat, matremque misera ab aurora ad vesperam in eo cruciati permanens, in summo vitæ discrimine versaretur, & planè morti propinqua esset, focus ejus Maria Garzia uxor Jo. Garzæ incolæ Oppidi de Ambroz beati Viri in maximis angustis recordata, ad ejus opem confugit; itaque fructum amictus Beati Didaci, parumque pulveris à sepulchro suprà parturientem nurum imposuit, quæ subito mortuum foetum, edidit, ipsa salva. Manfit autem mortua puellula alicquot horarum spatio, sed ejusdem Avia Maria jam femel Beati Viri opem in matre experta, eum proneptis vita tanto fidentius orare non dubitavit; quod cùm devotè fecisset, alterum etiam beneficium impetravit, & puella sacro baptismi fonte abluta, & geminæ vitæ munere à Deo donata diu postea supervixit. Illud autem quod in Maria del Peñuela Petri Hermæ Complutensis filia, Dei virtute, per merita Beati Didaci mirificè effectum est, notum & valdè pervulgatum in Hispania, multique qui meminere super sunt. Invaleret virginem horribilis & deformissima paralyfis, tanta nervorum dissolutione & membrorum luxatione, brachii cruribusque distortis, totoque corpore convulso, ut non jam mulier, sed monstrum esset, & Medici se nihil unquam tale vidisse profiterentur; accedebant febres vehementes, & capitis dolores peracres & assidui, quibus misera gravissimè afflictabatur; ea igitur ad Beati Didaci corpus delata, cùm in ejus intercessione, & Dei misericordia confideret, & suppliciter oraret, voti compos, ab omni illa membrorum distortionem & depravatione, omnique corporis infirmitate est liberata: quæ tanti accepti beneficii non ingrata Deo virginitatem suam vovit, & sacrarum Virginum Collegio adjuncta, in Monasterio Sancti Joannis, quod A penitentia nominatur, sanctæ & religiosæ vitam duxit. Sed quod in principe Carolo charissimi in Christo filii nostri Philippi Hispaniarum Regis Catholici primogenito filio divinitus actum est, magnam apud omnes famæ celebritatem habet. Egrotabat Compluti adolescens Princeps Anno humanæ salutis millesimo quingentesimo sexagesimo secundo, qui cùm è scalis decidisset, gravissimum ex eo casu, & prolapsione in capite vulnus acceperat; omnia remedia, omnes curationes adhibita, quæ humana industria præstari poterant, ut in tanto Principe par erat; sed cùm nihil humanum proficeret, morbusque magis semper ingravesceret, jamque ejus gravitatem natura succumberet, Medici, Principis lætæ proflus desperata, certam imminens mortis horam præfiniunt, idque Regi patri, ne tam acerbo spectaculo interesset, denunciant. Cùm igitur omnis humani adjumenti spes defecisset, ad divinum, quod unum reliquum erat, præsidium confugiunt. Itaque devotionis ardore succensi à fratribus suis Beati Didaci corpus decenter & religiosè in Principis cubiculo affertur, post annos fere centum integrum & incorruptum; quod cum Princeps Beati Viri patrocinio se commendans devotè testigisset, eo inde amoto, vidit in somni quiete Beatum Didacum ante lectum stantem, & crucem arundineam manu gerentem, seque admonentem bono animo ut esset, & in Deo confideret,

fore enim ut ex ea egrotatione sanus fieret. Quare eo potissimum tempore, quo Medici Principem moriturum prædixerant, non solum melius habere cepit, sed paulò post ex omni illo vitæ discrimine divinis, ac suprà naturam adjumentis tam mirabiliter est ereptus, ut digitum Dei per meritum Beati Didaci ibi adfuisse omnes intelligerent. Sed præter cæteros Principes ipse, & Philippus pater, incredibili lætitia tamquam redivi filii affectus, id agnoscere, & Deum glorificando palam profiteri.

§. 17. Itaque pius Rex cùm charissimi & primogeniti filii vitam, summæ Dei clementiæ, per meritum & preces Beati Didaci ferret acceptam, cupereque, quacumque ratione posset gratiam aliquam Deo in Sancto suo referre, anno insequenti ad se. recordat. Pium Quartum prædecessorem nostrum, unā cum Principe filio, & cuncta ferè Hispania literas dedit, quibus ab eo suppliciter petebat, ut pro sua & sanctæ hujus Apostolicæ Sedis summa auctoritate Beatum Didacum tam excellenti sanctitate virum, & tanta miraculorum claritate illustrem in Sanctorum numerum referre vellet, atque ab universa Catholica Ecclesia pro Sancto venerandum esse statueret.

§. 18. Tām devotis, iteratisque Catholici Regis, aliorumque postulationibus permotus idem Pius prædecessor, de iis in consistorio suo secreto referri jussit, & quinque Cardinales, consilio & doctrina præstantes delegit, qui ejusmodi permagni momenti negotio præfessent; inter quos unus fuit Cardinalis Alexandrinus, cujus memoria in benedictione est, qui postea Pontifex factus, Pius ejus nominis Quintus est appellatus. Res suo ordine agi cæpta est sub Pio Quarto literis in Hispaniam transmissis, ad testes ex formula examinandos, adque ritè conficienda.

§. 19. Cùmque ipse Pius Quartus è vita migrasset, non destitit idem Philippus Rex apud succedentes Pontifices sanctæ recordationis Pium Quintum & Gregorium Decimum tertium itidem prædecessores nostros sedulo instare; sed Deo ita disponente, quamvis pleræque superioribus annis sint acta, res tamen ipsa perfici sub illis Pontificibus, atque absolvi non potuit. Cùm primum igitur humilitas nostra, non nostris meritis, sed divinæ clementiæ abundantia, in excelsa Apostolicæ solitudinis specula his difficillimis temporibus est constituta, statim idem Philippus Rex nulla ex parte restitūto aut refrigerato fidei suæ zelo, nobis per dilectum filium nobilem virum Henricum de Guzman Comitem de Olivares, suum apud nos & Sedem Apostolicam Oratorem, magnopere supplicandum curavit, ut posteaquam ea ferè omnia, quæ ad acta & processum B. Didaci pertinebant, ex hujus sanctæ Sedis præscripto confecta erant, Nos, quibus universalis Ecclesiæ cura esset credita, & ad quos solos ejus rei judicium pertineret, tam pio & tam ab ejus Majestate, totaque Hispania exoptato operi, quod est de eodem Beato Didaco Sanctorum Catalogo adscribendo, supremam manum imponere vellemus.

§. 20. Et nos quidem Regis ipsius religiosum studium & perseverantem hac in re sedulitatem commendantes, cupiebamus ejus pie petitioni, quantum cum Domino liceret, satisfacere; tamen pro nostro pastoralis muneris officio statuimus, in re tam gravi nulla præpropere festinatione utendum, sed omnia ex ecclesiastica disciplina, ex majorum nostrorum saluberrimis institutis, ex Apostolicæ Sedis circumspectione, diligentissime agenda esse; itaque duobus antiquioribus causarum Palatii nostri Auditoribus, doctrina & rerum usu præstantibus, ipsi ferè primis Pontificatus nostri diebus mandavimus, ut acta omnia, totumque processum summa cum diligentia perlegerent & examinarent; quo illi in munere menses complures sedulo, accuratèque versati; copiosam relationem omnium, suamque sententiam nobis scripto traderunt. Cùm

Res Hispaniarum Philippus unā cum Carolo filio, & tota Hispania, apud Pium IV. interstit, pro ipsius B. Didaci in Sanctorum numerum relatione.

Pius IV. huic negotio Card. deputavit, & res agi cæpta fuit.

Idem Rex apud Pium V. & Greg. XIII. pro hujus rei expeditione instituit, & etiam apud hunc Pontificem per ejus Oratorem curavit.

Hic igitur Pontif. pro tanti negotii abolitione, diligentissimè, omnia delib. per agenda, agi voluit, & imprimis processum duobus Auditoribus Palatii Apostol. examin. mandavit, illique relationem, & eorum sententiam eidem scripto tradiderunt.

Et postea
octo Card.
deputavit ad
acta de B.
Didaci vita,
moribus &
miraculis, ac
praedictorum
Auditorum
relatione ex-
pendenda.

autem Cardinales omnes ab eodem Pio Quarto huic negotio olim praepositi, viam essent universae carnis ingressi.

§. 21. Nos primo anni superioris mense, in Consistorio nostro secreto alios in eorum locum suffecimus, pietate, prudentia, eruditione, fide nobis probatos, adhuc autem & numero plures prioribus ut in gravi causa prudenti multorum gravium viro- rum iudicio adhibito, cuncta exquisitis discute- rentur. Hi verò fuerè more majorum, ex tribus Ordinibus dilecti venerabiles fratres Episcopi Alex- ander Ostiensis Farnesius, Marcus Antonius Pra- nestinus Columna, & dilecti filii nostri frater Mi- chaël sanctae MARIE super Minervam Alexandri- nus, Julius Antonius sancti Bartholomaei in Insula sanctae Severinae, Antonius SS. Joannis & Pauli Carafa, Frater Constantius sancti Petri in Monte Aureo titulum presbyteri Sarnanus, Ferdinandus sanctae MARIE in Via lata de Medicis, & Hiero- nymus sanctae MARIE in Cosmedin diaconi Mat- thaeus nuncupatus, sanctae Romanae Ecclesiae Car- dinales, quibus commisit, ut pro rei gravitate, proque ea, quae Deo cordium scrutatori, & nobis quoque in ejusmodi publico munere obeundo à pri- mariis Ecclesiae membris fidelitas & diligentia de- beretur, acta de fidei integritate, vita, moribus & miraculis beati DIDACI, & Auditorum nostrorum relationem, quanta maximi fieri posset diligentia inspicerent & expendere, atque ad nos opportuno tempore referrent, ut divina Spiritus sancti gratia illustrati, de ipsorum & cæterorum fratrum nostro rum consilio, quae Dei gloriae, qui iustitia & veritas est, consentanea forent, deliberare possemus.

Praefati Car-
dinales, qui
bulsum peri-
tissimis viis
in consilium
desuper ad-
hibitis, singu-
la examina-
runt, & in secreto
Consistorio,
omnibus re-
laris, votum
omnes pro
canonizatione
dederunt.

§. 22. Multis igitur elapsis mensibus cum interea Cardinales ipsi frequenter congregarentur, acta, processus, rerum gestarum series, testes, singula denique ad sacrorum Canonum praescriptum, mature & accurate considerarent, examinarent, atque inter se conferrent, viros etiam sacrae Theologiae & Pontificii juris scientia peritissimos in consilium ad- haberent, cum jam omnia parata esse intelligeremus, secretum Consistorium de more convocari iussimus, in quo venerabilis frater noster Marcus Antonius Episcopus Cardinalis Praenestinus, suo & Collegarum, qui ibidem assidebant, nomine, gravi & accommodata oratione de omnibus fideliter nobis re- tulit, quibus explicatis ad extremum dixit, quan- doquidem beati DIDACI fidei integritas, egregiae virtutes, praecara & insignia miracula optime essent comprobata, se & Collegas suos unanimes in eam sententiam venisse, si ita nobis videretur, ulterius nos progredi, & Beatum illum virum in Sancto- rum numero posse adscribere, quorum cum senten- tia etiam ceteri Fratres nostri Cardinales, cum à singulis graves sententiae dictae essent, ad unum omnes consenserunt.

Publicum
Consisto-
rium indixit
in quo Ari-
gonius Ad-
vocatus Con-
sistorialis ha-
bitu oratio-
nem de gestis
& miraculis
B. Didaci, &
denique Ca-
tholici Regis
& totius His-
paniae nomi-
ne supplica-
vit eidem
Pont. ut
eundem B.
Didacum in
SS. numerum
referre vel-
let, & ipse
mandavit
Card. & Epi-
scopis, ut om-
nia ad hanc
causam per-
tinentia, dili-
gentissime
perpende-
rent.

§. 23. Quae cum audisset gaudens erat cor no- strum in Domino, quod beati servi sui gloriam quo- tidie magis patefaceret, omniaque ipso benedicente tam feliciter procederent. Quare in tam sancto pio- que opere nihil omnino necessariae diligentiae praetermitterentes, ex more institutoque majorem decre- vimus, ut ad ulteriora procederetur. Ac diebus aliquot interpositis, publicum Consistorium indix- imus, in quo praeter Cardinales etiam Patriarchae, Archiepiscopi, Episcopi, & Praelati omnes, ac fa- miliares nostri de more interfuerunt. In eo verò di- lectus filius Pompeius Arigonius Romanus Aulæ nostrae Consistorialis Advocatus disertam orationem habuit de vitae sanctitate, rebus gestis & miraculis beati Didaci, & denique Catholici Regis, totius- que Hispaniae nomine, ut eundem beatum Didacum tantis meritis illustrem sanctorum numero ag- gregaremus, nobis humiliter supplicavit. Gaude- bamus etiam hoc loco in Domino, in cujus manu cor regis est, & quocumque voluerit inclinat illud. Etenim planè videbamus, non sine divino instinctu fieri, quod Catholicus Rex, cui multorum Regno- rum gravissima administratio à Deo est tradita, qui

que tot curarum onere premitur, tanto ardore in hoc beati Didaci negotio absolvendo versaretur, ut in magnis temporum difficultatibus, se usque Regna apud Deum novi patroni suffragiis, & pie & prudenter communiret. Quare respondimus Philip- pi Regis Catholici de beato Didaco, nostra & Apo- stolice Sedis auctoritate in Sanctis adscribendo, tam diuturnam & perseverantem postulationem dignam esse singulari ejus pietate, dignam perpetuè Catho- licae Religionis propagandae studio, letari nos & Deo gratias agere, quod Beatos servos suos, quos in caelis coronat, à nostra quoque tenuitate in terris honorari velit, eosque nobis ad auxilium & exem- plum proponat. Et nos quidem ad ipsum ejus deside- rium explendum propensiores esse, facere tamen rei gravissimae magnitudinem, ut de Regia petitione adhuc cum fratribus nostris Cardinalibus & Episco- pis, etiam atque etiam deliberandum censeremus, quare eosdem fratres hortati sumus, ut omnia quae ad hanc causam pertinerent, diligentissime confide- rant, quodque nos ipsi jam pridem faciebamus, Deum magnopere orarent, ut corda nostra suo lu- mine collustraret, totamque hanc actionem ad sui gloriam & Ecclesiae utilitatem disponderet & diri- geret.

§. 24. Haec cum essent acta, alterum item Con- sistorium secretum indiximus, in eoque etiam Pa- triarchas, Archiepiscopos, Episcopos in Romana Curia praesentes, Protonarios quoque nostros, qui ex numero dicuntur, & Rota Auditores in- teresse iussimus. Tunc non ipsi de sacrosanctae hujus Apostolicae Sedis, in qua Dei providentia sedemus, auctoritate & potestate, adque Spiritus sancti singu- lulari patrocinio, atque infallibili assensu à Deo in omnibus verbis suis fidei promissa, usque ad con- summationem saeculi perpetuè affuturam, quibus go- vernatur, ea diximus, quae causae & temporis ra- tio potissimum requirere videbatur. Demum à Fra- tribus nostris petivimus, ut quoniam alias statutum esset, ut ad ulteriora in hoc negotio procederetur, nunc praefice & expresse dicerent, an ex iis actis, quae ipsi viderant & audierant, beatus Didacus ef- fet canonizandus. Igitur à S. R. E. Cardinalibus, pri- mum, deinde à Patriarchis, Archiepiscopis & Episco- pis, pie, graviter & eruditè sententis dictis, omnes unanimes id ipsum sentientes, dixerunt sibi videri ex iis quae mature ipsi hac de re viderant & audie- rant, beatum Didacum à nobis merito inter Sanctos esse adscribendum.

§. 25. Deo autem, qui in domo sua fratres in unum habitare facit, gratias agentes de tanta Fra- trum nostrorum consensione, quodque ad servum & amicum suum, quantum nobis licet, honorandum corda nostra impelleret & illustraret, cum per ejus gratiam hucusque omnia rite atque ordine acta ef- sent, quod reliquum erat, diem canonizationis praestituimus ad Sextum Nonas Julii, quo die memoria Visitationis beatae MARIE semper Virginis ad san- ctam Elisabeth pie ab Ecclesia recolitur, ut ejus- dem humani generis Advocatae patrocinio, tandem pium hoc opus prosperè & salutariè à nobis ab- solveretur.

§. 26. Fratres interea nostros hortati sumus, ut intermedio tempore una nobiscum precibus, eleemo- synis, (quas nos & libenter & pie erogavimus, quemadmodum & Regis nomine ab ipsis Oratore factum fuit (sejuniis, sacrificiis Dei auxilium in- vocare non cessarent.

§. 27. Is igitur festus Visitationis dies, id est ho- diernum cum advenisset, Nos & fratres nostri Car- dinales, Patriarchae, Archiepiscopi & Episcopi fa- cir vestibus induti, inchoato per nos ipsos in nostra Pontificia Capella Hymno, Ave maris stella, Can- torumque choro prosequente, ut ipsa, quae ma- ter est gratiae, nobis praeiret & praelucet, cæ- teris etiam Romanæ Curiae Praelatis & officialibus, familiaribusque nostris, ac universo regulari & saeculari clero, longo devotoque ordine progredientibus, omnes simul accensos cereos in manibus

Deinde
Consisto-
rium indi-
xit, & multa
quae ad nego-
tium pertine-
bant, prenar-
ravit, & Car-
dinales, Pa-
triarchae, Ar-
chiepiscopi, &
Episcopi ad-
stantes
dixerunt
B. Didacum
in SS. nume-
rum adscri-
bendum esse.

Pontif. igitur
diem cano-
nizationis
pro die 2.
mensis Julii
constituit.

Hortaturque
Frates ad di-
vinum desu-
per auxilium
invocandum.

Ea die Pon-
tiffex, cum
solito appa-
ratu ad B. Vi-
sitationem S. Petri
processit &
ornavit.

gestantes in ejus honorem, qui est lux vera, gloria & splendor sanctorum & Palatio nostro Apostolico solemniter processimus ad antiquissimam & religiosissimam Basilicam Principis Apostolorum, in cujus medio per amplum suggestum Regio sumptu extructum erat, paratissime Altare ad sacram Pontificalem Missam celebrandam totaque templi facies in communi Ecclesie lætitia hilaris, & Pontificio apparatu decenter ornata, omniæque spiritualibus canticis personabant, funalia & faces circumquaque ardebant, & vexilla appensa, in quibus beati viri imago expressa erat, qui corpore erecto depictus, dextera manu coronam Beatissimæ Dei Genitricis, sinistra Crucem invictissimam gerit & intuetur, cujus nimirum auxilio hostes terribiles, carnem, mundum & diabolum superavit. Hic nos in maxima fidelis Populi, totiusque adstantis cleri frequentia, cœlestis illius & triumphantis Hierusalem effigiem quandam nobis ante oculos proponentes, & quantum in hac lacrymarum valle licet, intuentes, confensus gradibus, in suggestu ante Altare oravimus, mox in sublimi Apostolico Throno confidentes, fratres nostros Sanctæ Romanæ Ecclesie Cardinales & Episcopos omnes sacris vestibus ornatos & paratos, nobis obedientiam de more præstantes exceperimus.

§. 28. Tunc dilectus filius noster Petrus tituli Sancti Hieronymi Illyricorum presbyter Cardinalis Deza Hispanus, Catholici Regis Philippus, totiusque Hispaniæ nomine semel, iterum, & tertio suppliciter & instantissime à nobis petit, ut beatum Didacum in Sanctorum numerum adscriberemus, nosque ad singulas ejus petitiones, Regis pietate, & beati Viri meritis collaudatis, semper tamen per distincta intervalla, nostras totiusque Cleri & Populi orationes, litanias & sacros hymnos interposuimus. Demum cum jam nihil omnino ex his, quæ à majoribus, piæ sanctæque sunt hoc de genere instituta, esset prætermisissimum, imò potius matura deliberatio, summamque diligentia abundantius adhibita, invocato sancto Creatore Spiritu, cujus consilio & sapientia sancta Ecclesia columna & firmamentum veritatis regitur, ejusque nomen sæpe à nobis ex intimo corde multis etiam lacrymis imploratum, præfens adesse non dubitantes. Ad honorem sanctæ & individue Trinitatis Patris, & Filii, & Spiritus sancti, ad exaltationem superne & triumphantis Hierusalem matris nostræ, ad exaltationem catholicæ fidei, & Christianæ Religionis augmentum, auctoritate ejusdem sanctæ Trinitatis, beatorum Apostolorum Petri & Pauli, ac nostra, de venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. Cardinalium, omniumque Patriarcharum, Archiepiscoporum, & Episcoporum in Romana Curia existentium consilio & unanimi consensu beatum fratrem Didacum de Sancto Nicolao Provinciæ Bethicæ Hispanum, Ordinem Minorum Sancti Francisci expressè professum, sepultumque Compluti in Ecclesia Fratrum ejusdem Ordinis, de cujus fidei puritate, excellentia vitæ, & miraculorum in vita & post mortem claritate nobis plenissime constaret, in Sanctorum Confessorum numerum & Catalogum adscribendum esse decrevimus, & adscripsimus, prout per presentes decernimus & adscribimus, eumque ut Sanctum ab omnibus venerandum esse mandamus.

§. 29. Statuentes, ut ab universali Ecclesia anno quolibet die duodecima Novembris festum ipsius, & officium sicut pro uno Sancto Confessore tantum, ad formam in rubricis Romani Breviarii præscriptam, devotè celebraretur, quodque in ejus honorem Ecclesia & Altaria, in quibus Deo sacrificia offerantur, erigi & fundari possint, eademque auctoritate, omnibus vetè penitentibus & confessis, qui singulis annis eodem die festo supradictam Ecclesiam Oppidi Complutensis Toletanæ Diocesis, ubi ipsius corpus requiescit, necnon Altaria & Ecclesias, quæ in ejus honorem constructæ erunt, devotè visita-

verint, easdem Indulgentias, privilegia & gratias concessimus & elargiti sumus, quemadmodum concedimus & elargimur, quæ cæteris dicti Ordinis sanctorum Ecclesiis concessæ sunt.

§. 30. Quibus omnibus, quæ ad sancti DIDACI canonizationem pertinebant, absolutis, ac laudis & gratiarum actionis Hymno Deo decantato, ejusque auxilio per beati Didaci preces peculiari oratione, quam nos clara voce pronuntiavimus, impetrato, tandem eodem in loco & Altari, Missam solemnem de beatissimæ semper Virginis Visitatione cum Beati DIDACI commemoratione nos ipsi celebravimus, fidelibusque, qui tam piæ & religiosæ actioni, & sacrosancto sacrificio devotè interfuerat, ad Dei & Sancti sui gloriam & laudem plenariam indulgentiam concessimus.

§. 31. Omnes igitur Deum cœli benedicamus, & coram omnibus viventibus confiteamur ei, quia fecit nobiscum misericordiam suam, agnoscamusque non sine magna Dei providentia factum esse, ut hisce afflictis Christianæ Reipublicæ temporibus, quibus maxime multiplici Sanctorum suffragio indigemus, novus hic Suffragator & Patronus fidei Populo tribueretur: Et nos quoque, qui in hac pastoralis statione, in qua nos Deus collocavit, de universi gregis Domini salute anxii dies noctesque pervigilamus, Dei erga nos singulare clementiam agnoscimus, qui post tot annos, post tot beatissimos Pontifices prædecessores nostros nobis humilissimus hujus magni operis absolutionem referaverit, qui cum Sancto suo ejusdem Seraphicæ Religionis communione, consociati sumus. Quamobrem eundem Patrem misericordiarum, qui humiles exaltat, similiter deprecemur, ut per merita & intercessionem sancti DIDACI, Ecclesie sue pacem & tranquillitatem, Regibus & Principibus Christianis unionem, vitam & felicitatem, miseris & obsecratis hæreticis lucem Catholicæ veritatis largiatur.

§. 32. Cæterum, quia nimis difficile foret præsentibus nostras originales literas ad singula loca, ubi opus esset deferri, volumus ut earum transumptis etiam impressis, manu publici Notarii subscriptis, & sigillo alicujus persone in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem quæ ipsis præsentibus fides ubique adhibeatur.

§. 33. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostrorum decreti, adscriptionis, mandati, statuti, concessionis, elargitionis, & voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem Omnipotentis Dei ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo octuagesimo octavo, Non. Julii, Pontificatus nostri Anno quarto.

Ego Sixtus Catholicæ Ecclesie Episc.

Ego A. Card. Farnesius Vicecancellarius, Episcopus Ostien.

Ego Jo. Ant. Episc. Portuen. Card. S. Georgii.

Ego Alph. Card. Cervaldus, Episc. Tufculanus.

Ego Innoc. Avalus Card. de Arag. Episcopus Sabinen.

Ego Marcus Ant. Card. Columna, Episcopus Prænestin.

Ego Ptolemæus Card. Comensis, Episcopus Albanen.

Ego Marcus Sicicus Card. ab Altaemps tit. S. Mariæ Transtiberim.

Ego Prosper Card. Sanctacrucis tit. S. Clementis.

Ego Gabriel Card. Paleottus tit. S. Laurentii in Lucina.

Ego Frater Michaël Bonellus Card. Alexandrinus tit. S. Mariæ super Minervam.

Ego Ludovicus Card. Madrutius tit. S. Anastasie.

Ego N. Card. de Pellev erit. S. Prædixis.

Missam postea celebravit & adstantibus indulgentiam concessit.

Omnes deum hortalur ad Deo benedicendum, & pro hic relatis orandum.

Hujusque Bulla mandata transumptis dari fidentem.

Sanctionem adjicit pontificalem.

Dat. P. A. 4. die 5. Julii.

Papæ subscript.

Card. subscript.

Et iterum ad instantiam Regis requisitus S. Didacum Sanctum promunciat & canonizavit.

Festum ejus die 12. Novembris celebrari jussit.

Jul. Ant. tit. S. Bartholomæi in Insula presb. Card. S. Severina.
Ego Hieronymus Card. Rusticucus tit. S. Sufannæ.
Ego Jo. Hieron. Card. Alban. tit. S. Joannis antè portam Latinam.
Ego Hieron. Card. Simoncellus tit. S. Priscæ.
Ego P. Card. Deza tit. S. Hier. Illyricorum.
Ant. tit. SS. Joannis & Pauli Presb. Card. Carafa.
Ego Jo. Antonius Card. SS. Quattuor.
Ego Jo. Baptista Card. tit. S. Marcelli.
Ego Franciscus Card. de Joyeuse tit. S. Trinit. in Monte Pincio.
Ego Julius Card. Canonicus, tit. S. Eusebii.
Ego Nicolaus, tit. S. Cæcilie Card. Cremonen.
Ego Ant. Maria Card. Salvatus, tit. S. Mariæ de Pace.
Ego Aug. Card. de Verona, tit. S. Marci.
Ego Vincentius tit. S. Mariæ in Via Card. Montis regalis.
Ego Philippus Card. Spinula tit. S. Sabinæ.
Ego Scipio Card. Lancellotus, tit. S. Salvatoris in Lauro.
Ego Vincentius Card. Gonzaga tit. S. Alexii.
Ego Henricus tit. S. Pudencianæ Card. Cætanus S. R. E. Camerarius.
Ego Jo. Baptista tit. S. Mariæ in Araceli Card. Castrucius.
Ego F. Card. Cornel. tit. S. Stephani in Monte Celio.
Ego Dominicus tit. S. Laurentii Card. Pinellus.
Ego Hippolytus Card. Aldobrandinus tit. S. Pancratii, Major Pœnitentiarius.
Ego Hier. tit. S. Petri ad Vincula Card. de Ruvere.
Ego Philippus Card. de Lenoncourt, tit. S. Honuphrii.
Ego Fr. Hieron. tit. S. Thomæ in Parione, Card. Alcul.
Ego Ant. Maria tit. S. Agnetis in Agone Card. Perusinus.
Ego Fr. Constantius Card. Sarnanus tit. S. Petri in Monte Aureo.
Ego Guglielmus Alanus tit. S. Martini, Cardinalis Anglican.
Ego Scipio tit. S. Mariæ de Populo Cardinalis Gonzaga.
Ego Ant. Card. Saulius tit. S. Vitalis.
Ego Evangelista Card. Cusentinus tit. S. Matthæi in Merulana.
Ego F. Stephanus tit. S. Marcellini & Petri Card. Aretinus.
Ego Alexander diaconus S. Eustachii, Cardinalis Montaltus.
Ego Hieronymus S. Mariæ in Cosmedin. diacon. Card. Matthæius.
Ego Benedictus S. Agathæ diac. Card. Justinianus.
Ego Ascanius SS. Viti & Modesti, diac. Card. Columna.
Ego Federicus S. Mariæ in Dominica diacon. Card. Borromæus.

Publicatio.

Anno à Nativitate Domini 1588. Indictione 1. die verò Lunæ 5. mensis Septembris, Pontificatus Sanctiss. in Christo Patris, & D. N. Sixti divina providentia Papa V. anno ejus quarto, retrospectiva litera Apostolice affixe, lectæ, & publicatæ fuerunt ad valvas Basilicarum Principis Apostolorum, & Joannis Lateranensis de Urbe, & ad valvas Cancellaria Apostolice, & acie Campi Floræ per nos Horatium de Raynaldis, & Jo. Baptistam Bagui, ejusdem S. D. N. Papæ Curf.

Alex. Parabiachus Mag. Curf.

LXXXIII.

Institutio Archiviorum scripturarum, in quibus cumque Civitatibus & locis Status Ecclesiastici, Alma Urbe & Bononia exceptis; Et erectio officii Regentis dictorum Archiviorum, cum jurisdictionis & privilegiorum assignatione.

In Urbe extat Archivium, de quo habes sup. in const. 15. Jul. 2. Sicut, fol. 292. Tom. 1. Officium autem hujus

Regentis est hodie suppressum, & ejus loco quotannis deputatur unus ex Clericis Rever. Camera Apostolice.

Archivium sacri Collegii S. R. E. Cardinalium in Vaticano Palatio instituit S. D. N. Urban. VIII. const. 51. Admonet, infra, quam omnino videas, in Tomo 4.

SIXTUS EPISCOPUS, Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Sollicitudo pastoralis officii humeris nostris licet imparibus divina dispositione injuncti, assidue cor nostrum pulsat, & commovet, ut non solum ad ea quæ universi Christiani gregis nobis ex alto commissi animarum salutem respiciunt, verum etiam quæ ad populorum nostræ & Sedis Apostolicæ temporalitæ ditioni subditorum utilitatem, pacem, tranquillitatem, perpetuamque securitatem pertinere noscuntur, vigilantie nostræ aciem dirigamus, & præsertim noxiis illis quæ ob non adhibitam satis exactam diligentiam in conservandis tam publicis quam privatis scripturis, inter subditos nostros gravi cum nostra eorumque molestia fortunarumque suarum dispendio & jactura, frequenter exoriri, & vigere intelligimus, commoda aliqua ratione provideamus.

§. 1. Cum itaque ex diligentibus earumdem scripturarum custodia, fraudes & falsitates, quæ litibus, discordiis, ac periculis hujusmodi, ut plurimum viam præbent arceantur, dominia, possessiones & familiæ ipsæ conserventur, justitia denique cum animi certitudine, ac publica & privata omnium utilitate æquali lance administretur. Ac proinde publica Archivia, nedum in Europa sed etiam in pluribus aliis universi Orbis etiam Barbarici partibus, qui hac potissimum ratione commune bonum subditorum suorum, atque adeo Societatis humanæ vinculum inter se retinuerunt, accuratè instituta fuerint. Operæ pretium verò, & condecens sit, ut quod omnibus in exemplum salubrioris regiminis, & administrationis rerum publicari cedere dignoscitur, id ipsum nostro Statu Ecclesiastico cui superioribus illis sæculis ob bellicos tumultus, quibus ille ac universa ferè Italia tunc exarsit, tantum publicæ quietis beneficium impendi non potuit, nunc tandem nostræ provisionis ministerio salubriter introducat.

§. 2. Idcirco nos more pii patris & pastoris, hujusmodi quietem & utilitatem universalem subditis nostris afferre volentes, ad dictarum scripturarum conservationem, fidem, & securitatem, ac illarum deperditioni & falsitatibus obviandum, lites quoque, discordias, cæteraque pericula omnia tollendum, Motu proprio non ad alicujus super hoc nobis oblata petitionis instantiam, sed ex certa nostra scientia, meræque deliberatione, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, in toto Statu Ecclesiastico nobis & Sedi Apostolicæ mediâtè & immediatè subiecto hac Alma Urbe nostra, Civitatèque & Comitatu Bononien. dumtaxat exceptis, scilicet in quibusvis ipsius Status Provinciis, Civitatibus, Oppidis, Caltris, Villis, ac locis aliis, etiam quibusvis Metropolitanis, Cathedralibus, vel aliis Ecclesiis, etiam Monasteriis, Abbatibus, & aliis etiam regulatibus, ac piis locis subiectis, Archivia publica & generalia in quibus instrumenta, necnon apocryphæ, chirographa, aliæque scripturæ tam publicæ, quam privatæ, quas quomodolibet occasione quorumcumque contractuum, ex quibus actio seu receptio, etiam ad tempus resulset fieri contingerit, etiam à Notariis & Cancellariis, seu Notariis curialibus nuncupatis, ac officialibus quibuscumque, etiam à Camera nostra seu à nobis vel prædecessoribus nostris causam, etiam cum titulo oneroso habentibus, & quibusvis aliis particularibus personis cujuscumque dignitatis, officii, status, gradus, ordinis & conditionis fuerint, etiam clericali, vel alio quocumque etiam cum titulo oneroso, indulto, & privilegio potiantur jam confecta, &

deinceps

Edita A. D.
1588.

Proemium.

Causa constitutionis.

Institutio Archiviorum.

deinceps quovis nomine & titulo pro tempore conficienda, roganda & stipulanda, tam venditiones, emptiones, mutua, debita, credita, & quavis alias obligationes, societates, focidas, census, locationes, livellos, concordias, compositiones, transactiones, quascunque cujusvis generis sententias, compromissa, lauda, donationes, permutationes, cessiones, quietantias, delegationes, solutiones, dationes etiam in solutum, ac inter vivos & causa mortis donationes, inventaria, revocationes, hypothecationes, pignorationes etiam judiciales, mandata quaecunque, ratificationes, paces, substitutiones, divisiones, confessiones debitorum, tam in iudicio, quam extrâ, emancipationes, arrogationes, adoptiones, renunciationes, insinuationes, testamenta in scriptis & nuncupativa, codicillos, additiones & repudiationes hereditatum, fideicommissa, substitutiones, prohibitiones, possessiones bonorum continentia, quam quoscunque alios contractus, nominatos & innominatos, inter quaecunque, Ecclesiasticas & cujusvis Ordinis regulares & seculares personas, quavis Ecclesiastica aut seculari seu temporali vel mundana dignitate etiam Ducali præminencia fungentes, necnon Universitates, Ecclesias, Capitula, Collegia, Conventus, Monasteria, Hospitalia, & quaecunque alia pia & non pia loca, eorumque universales & particulares personas, necnon Ecclesiarum, & Monasteriorum huiusmodi, ac quoscunque alios Prælatos seu Priores pro tempore initos & celebratos, sub modo & forma in Capitulis quæ per dilectum filium nostrum Henricum tituli sanctæ Pudencie presbyterum Cardinalem Cætanum, nostrum & sanctæ Romanæ Ecclesiæ Camerarium, dictæque Cameræ Thesaurarium, Decanum, & Clericos, Præsidentes, aut eum vel eos qui à nobis vel successoribus nostris Romanis Pontificibus, super administratione & gubernio dictorum Archiviorum pro tempore deputabuntur, statuendis & declarandis, asportari, & respectu recipi, adnotari, & diligenter perpetuò conservari & custodiri debeant, Apostolica auctoritate tenore præsentium perpetuò erigimus & instituimus.

§. 3. Et si in aliquibus Provinciis, Civitatibus, & aliis locis prædictis, vigore quarumcumque facultatum desuper, etiam à nobis vel prædecessoribus nostris Romanis Pontificibus, aut Apostolicæ Sedis Legatis, Vicelegatis, Præsidentibus, Gubernatoribus, seu Officialibus, vel etiam à Camera Apostolica, & pro ea agentibus quibuscunque Provinciarum, Civitatum & locorum huiusmodi Communitatibus, Universitatibus, Collegiis, Capitulis, aut aliis etiam particularibus personis, & officialibus ac Cancellariis, & aliis præfatis, quavis causa vel occasione, ac ex titulo etiam oneroso concessarum aliqua Archivia, vel aliquid ad illorum instar ad præsens reperiantur, vel erigi deberent; illa, omnia & singula Archivia per præfatos erectis & institutis, ac earundem præsentium vigore instituendis & stabiliendis, etiam perpetuò aggregamus & incorporamus. Cum modificationibus tamen & limitationibus, ac declarationibus in dictis Capitulis juxta mentem nostram eisdem Henrico Camerario, & Cameræ præfate Clericis declaratis aliisque declarationibus, etiam futuris temporibus, tam per nos quam alium vel alios ad id à nobis vel successoribus nostris Romanis Pontificibus suis videbitur atque eorum arbitrio, toties quoties eis placuerit faciendis, & statuenis & reformandis.

§. 4. Facultates verò erigendi & instituendi Archivia, vel aliquid ad illorum instar aliis forsân, ut præmittitur, concessas, necnon privilegia, indulta, immunitates, seu exemptiones quascunque, etiam ex titulo oneroso, ac sub quibuscunque verborum formis & tenoribus, concessa fuerint, quorum omnium tenores, ac si de verba ad verbum infererentur, præsentibus haberi volumus pro

expressis, similiter perpetuò cassamus & annullamus.

§. 5. Necnon ut pro felici regimine & gubernio Archiviorum præfatorum aliqua persona ad hoc munus apta & idonea, in eorundem Archiviorum totius præfati Status Ecclesiastici Præfectum, vel sub quovis alio titulo nobis benè viso, ac per nos declarando, subque certa forma &c. habeatque plenam, liberam, & omnimodam facultatem, potestatem, & auctoritatem huiusmodi Archivia, in omnibus & singulis provinciis, civitatibus, terris, oppidis, & aliis locis antedictis ejusdem status, in quibus illa ex forma dictorum capitulorum constitui debere duxerit, toties quoties sibi videbitur, per se vel alium seu alios ad id ab eo deputandos constituendi & stabiliendi, eaque amovendi, transferendi, separandi, aggregandi, & incorporandi, ceteraque omnia & singula, in præmissis & circa ea necessaria, seu quomodolibet opportuna faciendi, gerendi, exercendi, & exequendi &c. Ac pro salubriori eorundem Archiviorum directione, successu, gubernio & administratione illa, omnia & singula per unum ex dictæ Cameræ Clericis, in Præsidentem, seu Præfectum annalem juxta ejusdem Cameræ instituta per ipsam Cameram forte extrahendum, seu alias eligendum &c. deputandum.

§. 6. Qui summa auctoritate & manu Regia, Notarios, Cancellarios, ac alios prædictos, & quascunque alias personas, tam Ecclesiasticas quam seculares, necnon Communitates, Universitates, Ecclesias, Capitula, Collegia, Conventus, Monasteria, Hospitalia, ceteraque alia etiam pia loca, eorumque universales & particulares personas, necnon Ecclesiarum & Monasteriorum huiusmodi, ac quoscunque alios Prælatos & Superiores, quacunque Ecclesiastica dignitate, aut mundana, ac temporali, etiam Ducali, aut Marchionali honore & præminencia fungentes, ut ad Archivia sic erecta & instituta, instrumenta & alias scripturas prædictas juxta dictorum Capitulorum formam deferant & asportent, Communitates verò ac Universitates Civitatum & locorum huiusmodi, illorumque Priores, & nostri & Cameræ prædictæ officiales, ut commodas ac idoneas mansiones pro scripturarum & instrumentorum prædictorum conservatione assignent, ceteraque in dictis capitulis, statuenda, declaranda, observare & adimplere debeant, cogat & compellat, causâque tam civiles quam criminales, metâque & mixtas, etiam si in eis obligationes quantumvis strictæ intervenerint, occasione Archiviorum huiusmodi, & ab ipsis quomodolibet dependentes, emergentes, annexas & connexas, etiam ratione terminorum seu pagarum solutionum occasione, subappaltus seu affictus contra quascunque personas, & inter quascunque particulares Archivistas, ac inter eum seu eos, & quascunque Communitates, Collegia, Universitates, & alias personas procedendo, ac etiam alias causas & differentias super præsentium, intelligentia, declaratione, ac ampliatione, & super omnibus privatè quoad omnes alios iudices ordinarios & extraordinarios, tam in Urbe quam extrâ, & in toto Ecclesiastico Statu, etiam summarè, simpliciter & de plano, & absque strepitu & figura iudicii &c. cognoscant, audiat, decidat, sinèque debito terminet, regi, gubernari, & administrari possit ac debere, statui, & ordinamus, necnon Archivia præfatis, ac personarum illorum manutentione ac stabilimento, necnon regimini, gubernio, & administrationi pro tempore incumbendum laboribus & salariis, omnia & singula jura, obventiones, emolumenta, & alia regalia in dictis capitulis specificanda pariter perpetuò applicamus & appropriamus &c.

§. 7. Decernentes quoque, eosdem præfatos nullo umquam tempore, de subreptionis, vel obreptionis, aut nullitatis vicio, seu intentionis nostræ, vel quovis alio defectu notari, impugnari, infringi, invalidari, aut in jus vel controversiam revocari

Jussu deputandi Præfectum Archiviorum.

Jurisdicção d. Præfecti.

Tu vide latius hic inf.

Clausula præservativa.

posse, sed illas semper perpetuo validas & efficaces fore, subque plenarios effectus sortiri, atque ita per quoscumque iudices etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac dictæ Camere Clericos, ac ejusdem S. R. E. Cardinales, sublata illis quavis aliter iudicandi vel interpretandi facultate & auctoritate, iudicari & definiri debere, irritum quoque & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Contrario-
rum deroga-
tio.

§. 8. Non obstantibus præmissis, ac nostra de non tollendo jus quæsitum, & foel. record. Pii Papæ Quarti prædecessoris nostri, sub datum videlicet octavo Idus Augusti, Pontificatus sui anno sexto edita, inter alia disponentis, quod forsitan similes gratiæ infra certum tunc expressum tempus, præsentari & registrari debeant, dummodo saltem intra bionium à data præsentium omnino regif- trentur, aliisque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon provincialium Status Ecclesiastici hujusmodi, ac quarumvis illius civitatum, locorum, districtuum, necnon Monasteriorum, Ecclesiarum, & aliorum piorum ac non piorum locorum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indul- tis, & literis Apostolicis, exemptionibus, immuni- tatibus, etiam cum titulo oneroso, tam à Camera quam à nobis, seu prædecessoribus nostris quomo- dolibet, etiam illis, eorumque Legatis, Vicelega- tis, Gubernatoribus, Iudicibus, Notariis, Cancel- lariis, & aliis præfatis quibuscumque Communita- tibus, Universitatibus, Camereque nostræ & illius Auditori generali, ac Fisco, aliisque etiam perso- nis, sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis, etiam Moru simili, etiam consistorialiter, ac aliis in contra- rium quomodolibet facientibus, & concessis, ac in futurum concedendis, quibus omnibus etiam de illis, illorumque totis tenoribus, specialis, speci- fica & expressa mentio habenda foret, tenores hu- jusmodi præsentibus pro sufficienter expressis ha- bentes, illis aliis in suo robore permanens, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, cæterisque contrariis quibuscumque.

Fides tran-
sumptorum.

§. 9. Volumus autem quod præsentium exem- plis etiam impressis, sigillòque ejusdem Camerarii obsignatis, ac manu unitus dictæ Camere Notarii subscriptis, ea prorsus fides adhibeatur, tam in iudicio quam extrà, quæ eidem præsentibus adhi- beretur, si exhiberentur ac ostenderentur.

Sanctio pœ-
nalis.

§. 10. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ erectionis, institutionis, aggre- gationis, incorporationis, voluntatum, cassatio- nis, annulationis, mandatorum, statuti, ordina- tionis, applicationis, appropriationis, decreti, & derogationis infringere, vel ei ausu temerario con- traire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incur- surum.

Dat. P. An. 4.
die 1. Aug.

Dat. Romæ apud S. Marcum, Anno Incarnatio- nis Dominicæ 1588. Kal. Aug. Pont. nostri Anno quarto.

Sequitur erectio Officii Regentis suprãdicti Archivi- cum jurisdictionis, & privilegiorum concessione.

Edita A. D.
1588.

SIXTUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

Exordium.

Sollicitudo ministerii pastoralis nos admonet & inducit, ut pro felici progressu eorum quæ ad communem Reipublicæ, & subditorum nostro- rum utilitatem & commodum per Nos ordinata fuerant, illorum curam egregiorum virorum pre- dentia demandemus, quorum opera & studio fac- lileter regantur & gubernentur, lites quoque & discordiæ quæcumque facilius decidentur & termi-

nentur, prout tam pro iustitiæ complemento, quam subditorum eorumdem quieti conspiciamus in Do- mino salubriter expedire.

§. 1. Cum itaque Nos super ad publicarum scripturarum conservationem, & illarum deperdi- tionem ac falsitatibus, quæ nisi diligens cura & solli- citudo adhibeatur circa eas, in fraudem iustitiæ, ac subditorum nostrorum grave præjudicium eve- nire possunt obvianum, lites quoque, discordias, & alia pericula, quæ dictarum scriptura- rum occasione inter eosdem subditos nostros in dies magna cum eorum iactura & læsione hæste- nus, motæ fuerunt extirpandum certisque aliis ra- tionabilibus animum nostrum moventibus, & tunc expressis causis in toto Statu Ecclesiastico Nobis & Sedi Apostolicæ mediâtè & immediatè subje- ctio (Alma Urbe nostra, ac Civitate & Comitatu Bo- nonien. dumtaxat exceptis) Archivia publica, in quibus dictæ scripturæ, ac instrumenta publica, alportari, & diligenter custodiri debeant, crexe- rimus & instituerimus &c.

§. 2. Operæ pretiumque duxerimus, ut pro sa- lubri directione, providoque gubernio dictorum Archiviorum, aliisque supremis Iudex, qui summa auctoritate, omnes & quascumque differentias, lites, querelas & controversias, tam inter particu- lares personas, & Archivistas &c. quam de & super taxis & mercedibus, nullitatibus & falsitatibus ac quibuscumque aliis rebus, ad præfata Archivia, illo- rumque administrationem, gubernium ac direc- tionem quomodolibet, & ex quavis causa pertinenti- bus oriri & suscitari contingerit, audiat, cognoscat, decidat, sineque debito terminet, constituitur & deputetur. Underi hujusmodi virum morum gra- vitate literarumque scientia conspiciamus præfere, & in præmissis providere summo perè cupientes, ac erectionis & institutionis Archiviorum, &c. nec non privilegiorum, indultorum, facultatum, exemptionum, & aliarum gratiarum, necnon qua- rumcumque literarum deluper concessarum, ac edictorum circa præmissa emanatorum, cæterorum- que præmissorum, ac inde secutorum tenores, etiam veriores, præsentibus pro expressis & in- fertis habentes.

§. 3. Mox proprio &c. Unum officium Regen- tis Archivi generalis Status nostri temporalis Eccle- siastici nuncupandum, pro uno Prelato, aut utrius- que seu alterius juris Doctore vel Licenciato, aut alia persona ad hoc munus habili & idonea, Regente Archivi generalis Status nostri præfati nuncupando, qui præfatas & quascumque alias differentias, lites, querelas, & controversias occasione dicto- rum Archiviorum, etiam ex obligatione in forma Camere Apostolicæ provenientes, etiam alias ac inter alios quam ut præmittitur suscitandas, & ju- diciariam indaginem, aut quamvis aliam cognitio- nem, decisionem, probationem, declarationem, interpretationem & executionem, qualitercumque & quomodocumque requirentes, pro tempore movendas, civiles, criminales, meras & mixtas, unâ cum incident. emergent. annexis & connexis, suprema auctoritate, & manu regia, tela judica- ria penitus omiſſa, solâque facti veritate inspecta, ac omni & quacumque appellatione, recurſu, & remissione, remotis etiam privativè quoad omnes alios iudices, ordinarios & extraordinarios, tam in Urbe quam extrà eam, totòque Statu præfato, jus dicendi, audire, cognoscere, terminare, decide- re, ac debet executioni demandare.

§. 4. Delinquentes quoque & quos falsi, & cu- jusvis alterius generis crimen vel errorem, aut delictum, in scripturarum & instrumentorum præfato- rum in Archivium registrationem, & ex eo transum- ptiōne, recollectione, custodia & conservatione, five taxarum illicita alteratione & exactione, præſenta- tione & subſignatione, ac alias in exercitio & admini- ſtratione dictorū Archiviorū quomodolibet com- miſſiſſe ac ſuſciti fuerint, eorūq; complices condigna punitione, & exemplari coëctione, ac

Nunc autem expedire vi- dens, offi- cium Regen- tis Archivi- rum prædic- torum cri- gere.

Illud erigit cum facultate qual- cumque cau- ſas movendas occasione Archivi- rum de ſtatu ſummariè &c. ac appella- tione remo- ta cognos- cendi.

Delinquen- tes etiam in præmiſſis, ejus arbitrio puniendi.

debitis penis in locis commissorum, ac si videbitur etiam in Urbe, & alijs ubilibet plecti, & arbitrio suo puniri & castigari facere, sententiarum, iudicare, condemnare, bonaque confiscare & confiscare, omniaque & singula alia, in praeiis & circa ea necessaria, & quomodolibet opportuna gerere, exerce, & exequi, per se vel alium, seu alios, omni & quacumque appellatione remota perpetuum silentium desuper imponere.

§. 5. Necnon edicta ac proclamationes & banna pro regimine, gubernio, & administratione Archiviarii, Archivistarum, & Rectorum aliorumque praefactorum suo sub nomine, penisque ejus arbitrio exprimen. &c. quoties sibi expedire videbitur, proponere & publicari facere. Illaque ac jam emanata declarare, interpretari, reformare, ampliare, & innovare, ac tam per eum edenda, quam alia desuper de mandato nostro quomodolibet &c. sub eisdem penis observari facere.

§. 6. Cum facultate deputandi & constituendi proprium notarium seu notarios, unum vel plures, tam in dicta Urbe quam extra eam, tamquam auctorios causarum ad officium Regentis hujusmodi quomodolibet spectantium, eoque singulos toties quoties eidem Regenti visum fuerit amovendi & ponendi, ac alios eorum loco substituendi.

§. 7. Commissarios quoad Archivia praefata visitandum cum simili aut limitata facultate necnon potestate & auctoritate, tam archivistas, & ab eis deputatos praefatos, quam notarios viventes ac eorum haeredes, qui vita functi fuerint, ceterosque eorumdem defunctorum quovis titulo successores, ac eorumdem scripturarum detentores, seu possessores. Necnon in quantum ad ipsa Archivia spectat, quoscumque contrahentes cujuscumque status, sexus, gradus, ordinis, & conditionis, etiam Collegium, Communitas, Universitas, Capitulum, etiam collegiarum & cathedralium, ac Metropolitanarum Ecclesiarum, earumque Praefules, Monasteriorum Abbates, conventus, & pia loca, eorumque Gubernatores & Officiales, ac Praesidentes, necnon Duces, Marchiones, Comites, aut alie personae quantumvis privilegiate, ac Ecclesiasticae, vel temporales & mundanae dignitate, excellentiae, & honore praefulgentes fuerint, ad scripturas & instrumenta pro tempore celebrata in eisdem Archiviis deportandum cogendi, aliisque quoad haec necessaria opportune faciendi & exequendi &c. toties quoties sibi videbitur deputare.

§. 8. Ac de praeiis omnibus & singulis, pro quibuscumque aliis suis in officio Regentis Archivi hujusmodi Ministris, ceterisque omnibus & quibuscumque ad praefatum officium, illiusque jurisdictionem, tam in Urbe quam extra eam quomodolibet spectant, & pertinent. patentes & quascumque alias literas, sub eodem nomine & sigillo suo, per unum vel duos Secretarios ab eo, simul vel successive nominandos (qui ad eorum vitam, ejus & in dicto officio successorum obsequiis, hac in parte insistere debeant, ac pro generali earum patetibus, hujusmodi a substitutis Commissariis, & Ministris suis hujusmodi, sine alicujus gravaminis nova impositione &c. aliqua regalia exigere & levare queat) confici & expediri facere, aliisque & singula officium, illiusque liberum exercitium, quomodolibet concernentia adimplere, liberè & licite possit & valeat.

§. 9. Ita etiam quod illud pro tempore obtinens, in archivistas, notarios, & alios praefatos in praeiis, & quoad ea quae officium hujusmodi concernunt tantum, supremam & omnimodam jurisdictionem & auctoritatem habeat, gerat, & exerceat. Illique ad eum dumtaxat pro iustitia complementum recurrere, ac ad ipsum reclamare debeant, eaque in parte curiae supposito censeantur. Nec cuiquam Tribunali aut moderno & pro tempore existenti Sanctae Romanae Ecclesiae Camerae, nec Camerae Apostolicae, minisque Curiae causarum dictae Camerae generali Auditori, aut cuivis alteri Judici, sed nobis & dictis successoribus nostris immediate subfit, & cat. cujus concessio & omnimoda dispositio, quoties illud quo-

vis modo vacare contigerit, ad Nos & eosdem Successores nostros in perpetuum spectet & pertineat, Apostolica auctoritate tenore praesentium &c. perpetuo erigimus & instituiamus. Decernentes &c. si, quae & non aliter &c. Quocirca &c.

§. 10. Non obstantibus praemissis, ac sael. record. Bonifacii Papae Octavi praedecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, dummodo ultra tres dietas aliquis auctoritate praesentium ad iudicium non trahatur, necnon quatenus opus sit regula de non tollendo jure quaesito, aliisque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon Provinciarum Status Ecclesiastici hujusmodi, ac quarumvis illarum civitatum, locorum, terrarum, districtuum, & aliorum locorum, dictaeque Urbis & quarumcumque Curiarum & Tribunalium suorum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, reformationibus, usibus, stabilitis, & naturis, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis, etiam illis, earumque Legatis, Vicelegatis, Gubernatoribus, Potestatibus, Iudicibus, Notariis, Communitatibus, Universitatibus, aliisque superioribus & personis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis, etiam Motu pari, etiam consistorialiter, ac aliis in contrarium quomodolibet praesentibus concessis, confirmatis, & innovatis. Quibus omnibus & singulis etiam si pro illarum sufficienti derogatione, de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa & individua, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, illorum omnium & singulorum tenores praesentibus pro sufficienter expressis, ac de verbo ad verbum insertis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat harum serie specialiter & expressè, Motu simili derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim, ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspensi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas, non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

§. 11. Volumus autem, quod earumdem praesentium transumptis, etiam impressis, Notarii publici manu subscriptis, ac sigillo ejusdem Regentis, vel cujusvis personae in ecclesiastica dignitate constitutae munitis, eadem prolixius fides in iudicio & extra illud adhibeatur, quae eidem praesentibus adhiberetur, si essent exhibitae vel ostensae. Nulli ergo &c.

Datum Romae apud S. Petrum, anno Incarnationis Dominicae 1588. Prid. Cal. Novemb. Pont. nostri anno 4.

Prohibitio conferendi Canonicatus & praebendas, ac dignitates Ecclesiae Valentinae, spuris, aut illegitimè natis, quamvis legitimatis, & natalibus restitutis.

Aliam prohibitionem admittendi ad beneficia Regni Valentinae alienigenas Regnorum Hispaniae editis hic idem Pont. in const. 64. in sacrosancto, supra. Et antea de Studii generalis Valentinae regimine dispositionem fecerat in const. 11. Copi. fus, ubi notavi.

SIXTUS PAPA V.

Ad futuram rei memoriam.

CUM Celestis ille Agricola vineam suam & agrum nobis custodiendum commiserit, ut ex illis tempore suo fructum afferamus, profecto nos ne in ea palmites fatui & infructuosi luxuriarent, neque in illo herbae inutiles, & spinae quae semen suffocant patrisfamilias, internascentur, omni studio curare debemus. Quod planè peragamus, divino favente auxilio, si in Ecclesiis quibuscumque Metropolitanis, insignibus tamquam in agro frugifero bene cultis, ne inimicus homo noxium interfeminer lolium, spu-

Derogatio
contrario-
rum.

Fides Tran-
sumptorum.

Dat. P. A. 4
die 31. Octob.
bris.

LXXXIV.

Edita An. D.
1588.

Causa hujus
constituit.

ANNO
1588.

SIXTUS QUINTUS.

699 ANNO

1588.

Hic Pont.
instituit Hos-
pitale Men-
dicorum.

Pont. modo
auctoritatem
ejus Admini-
stratoribus
caverandi
Mendican-
tes, per-
giantur.

Peregrino-
rumque re-
fektionen ju-
dicandi.

Judicem
quoque cau-
saram Hospi-
talis depu-
tandi.

Cui amplif-
sime facultas
hic con-
ceduntur, &
praefertim.

Et Sacrista
inhibet.

Huic sanctio-
ni hujus
clausulas
praeservati-
vas apponit.

Executores
ejus deputat.

Contrariis
derogat.

Data. P. An. 4.
die 27. Aug.

Edita A. D.
1588.

Exordium.

turum, pium & religiosum vivendi propositum vel-
trum, & quietem regularem desiderantes, ac te-
niores dictarum literarum praesentibus pro expressis
habentes, Motu proprio, & ex certa nostra scientia,
ac de Apostolica potestatis plenitudine, vos, Con-
gregationemque vestram & Capitulum ab omni ju-
risdictione, auctoritate, & judicio ipsius Sacristae
dictae auctoritate tenore praesentium in perpetuum
eximimus & liberamus, omnem ab eodem Hospi-
tali licentiam & facultatem mittendi Sacristam tam-
quam Superintendentem & Judicem ad Capitulum
vestrum, aut in gubernio & correctione vestra se
quoquomodo ingerendi, adimimus.

§. 3. Inhibentes dicto Sacristae in virtute sanctae
obedienciae, ac sub excommunicationis latae sen-
tentiae poena per contrafacientem eo ipso incurren-
da, ne praesentium, seu quovis alio praetextu seu
occasione vel causa, in dicto Capitulo, aut alibi in-
tervenire audeat seu praesumat.

§. 4. Decernentes praesentes literas nullo um-
quam tempore, de subreptionis, & seu inten-
tionis nostrae vel quovis alio defectu, etiam ex eo
quod dictum Hospitale ad praemissa vocatum non
fuerit, notari, impugnari, aut ad terminos juris
reduci, seu in jus vel controversiam revocari, ac irri-
tum & inane, quicquid fecerit super his a quoquam
quavis auctoritate, scienter vel ignoranter con-
tingerit attentari.

§. 5. Quocirca venerabilibus fratribus Archiepi-
scopo Capuano, & Episcopo Avellinon. ac dilecto
filio causarum Curiae Camerae Apostolicae generali
Auditori, per Apostolica scripta motu simili man-
damus, quatenus ipsi vel duo aut unus eorum, per
se vel alium seu alios praesentes literas, & in eis
contenta quaecumque, ubi, & quando opus fue-
rit, ac quoties super hoc pro parte vestra, vel ali-
cujus vestrum fuerint requisiti solemniter publica-
tes, vobisque in praemissis efficacis defensionis praes-
sidio assistentes, faciant auctoritate nostra ab om-
nibus ad quos spectat inviolabiliter observari, non
permittere vos, & Congregationem vestram per
dictum Hospitale, aut quolibet alios contra praesen-
tium continentiam ac tenorem quomodolibet in-
debitè molestari, contradicere quoslibet & rebel-
les, ac praemissis non parentes, per sententias, cen-
suras, & poenas Ecclesiasticas, aliisque opportuna
juris & facti remedia, appellatione postposita com-
pescendo, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit,
auxilio brachii secularis.

§. 6. Non obstantibus praemissis, ac quibuscumque
aliis constitutionibus & ordinationibus Apostoli-
cis, ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae, apud Sanctum Marcum sub an-
nulo Piscatoris, die 27. Augusti, millesimo quin-
gesimo octavo, Pontificatus nostri
Anno quarto.

LXXXVI.

Jurisdictio Judicis causarum & litium Hospitalis,
pro recipiendis pieque alendis Mendicis per Ur-
bem vagantibus. Et ampliatio exemptionis ei
concessae, auctoritateque Administratorum ejus.

Instituit d. Hospitale hic idem Pont. ut sup. in cons.
57. Quamvis.

Edita A. D.
1588.

SIXTUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

Postulat ratio pastoralis officii, nobis licet impa-
ribus meritis divina providentia commisit, ut
Hospitalibus, & piis locis, quae ad CHRISTI pau-
perum necessitates sublevandas nostra primum cu-
ra, & pastoralis vigilantia erectae & instituta fuerunt,
quo majora in dies ad DEI gloriam, & animarum
salutem, in spiritualibus & temporalibus suscipiant
incrementa, uberiora etiam subsidia, & ampliora
privilegia concedamus.

§. 1. Cum itaque nuper ingenti nostra pia tamen
impensa, in hac Alma Urbe, ne ulterius Mendici
per vias & plateas ejusdem Urbis &c.

Omnituitur residuum, quia totam const. habes supra in hoc
Tomo. Quamvis.

§. 2. Quoniam verò ea est perditorum quorum-
dam hominum impudentia, ut quamvis validi &
robusti sint, tamen interdum ficta aut simulata infir-
mitate aut alio praetextu, per segnitiam & socordiam,
malint incertis sedibus huc illuc vagando, ex men-
dicitate quam ex honestis laboribus & industria vi-
ctum sibi comparare, eisdem Hospitalis praefati Ad-
ministratores contra eos omnes, qui mendicare
per Urbem praesument Edicta & Banna proponendi
& publicandi, & inobedientes poenis tam pecuniariis
quam etiam corporis afflictivis, & tritemum, vel
aliis eorum arbitrio (non tamen ultimi supplicii)
punendi, plenam & liberam tribuimus potestatem.

§. 3. Tres autem refektionen Peregrinis per alias
nostras literas assignatas, iis dumtaxat dari volu-
mus, quos Congregatio Administratorum ipsius
Hospitalis verè pauperes judicaverit.

§. 4. Ceterum, cum idem Hospitale, ejusque Ad-
ministratores ob varias quaestiones, lites, & contro-
versias quae circa illius curam excitari in dies contingit,
etiam coram diversis Judicibus & Tribunalibus
magno cum dispendio vexentur, nos in hoc quoque
ejusdem Hospitalis indemnitati consulere volentes,
motu & scientia similibus, quod de cetero perpetuis
futuris temporibus, moderni & pro tempore exis-
tentes dicti Hospitalis Administratores, unum utriusque
juris Doctorem clericum, & si ita videbitur,
in dignitate Ecclesiastica constitutum, Judi-
cem causarum Hospitalis praedicti eligere seu de-
putare possint & valeant, Apostolica auctoritate re-
nere praesentium perpetuò statuumus & ordinamus.

§. 5. Ac eidem Doctores sic pro tempore electi &
deputati, ex nunc prout ex tunc, & è contra post
electionem & deputationem hujusmodi, omnes &
singulas causas, lites, quaestiones, & controversias,
inter dictum Hospitale sive illius Administratores,
Officiales & Ministros, nunc pro tempore exis-
tentes, ac quascumque alias, tam laicas quam Ecclesi-
sticas personas cujuscumque gradus, status, ordinis,
dignitatis, conditionis vel praesentiae existentes,
etiam Cardinalatus honore praesurgentes, Univer-
sitates, Societates, Congregationes, Collegia, ac
tam virorum quam mulierum, Monasteria, Hospi-
talia, aut alia loca pia, etiam coram nunc & pro
tempore existentibus S. R. E. Camerario, Clericis,
& Praesidentibus Camerae Apostolicae, & ejusdem
Camerae causarum Auditori generali, necnon Vica-
rio, Gubernatore & Senatore dictae Urbis, illorumque
Locatenentibus, Collateralibus Judicibus, ac
Appellationum curiae causarum Capitoli ejusdem
Urbis Capiteano, necnon causarum Palatii Aposto-
lici Auditoribus, ac ejusdem S. R. E. Cardinalibus &
aliis quibuscumque Judicibus ordinariis, à nobis &
successoribus nostris Romanis Pontificibus speciali-
ter quomodocumque Commissariis deputatis & de-
legatis, ac deputandis & delegandis, nunc & pro
tempore motas & pendendas, de & super quibuscumque
locationibus, venditionibus, donationibus,
legatis, fidei commissis, testamentis, heredi-
tatibus, & illarum discussionibus, ac quibuscumque
aliis dispositionibus ad favorem ejusdem Hospi-
talis, & quorumcumque juris & actionum cessioni-
bus, aliisque quibuscumque inter vivos, & causa
mortis, & quasi contrahibus, etiam vigore obli-
gationis in forma Camerae executionibus, revo-
cationibus, bonis, rebus, juribus & actionibus, Hospi-
talis, ejusque Administratorum Officialium, Mi-
nistrorum praefatorum, eorumque liris consortium,
tam conjunctim quam divisim, ac tam activè quam
passivè, ac tam secundario quam principaliter inter-
esse concernentes, & ad ipsum Hospitale, etiam
per viam necessariae defensionis, & alias quomodo-
libet spectantes & pertinentes in quacumque instan-
tia, quorum omnium status & merita, ac judicium

& colligantium nomina, cognomina, & qualitates, ceteraque, etiam de necessitate exprimenda, præsentibus pro expressis habemus in statu & terminis in quibus ad præsens reperiuntur, & quodcumque reperientur, harum serie ad nos & Sedem Apostolicam advocantes, illasque omnes & singulas alias similes, vel dissimiles causas, quomodolibet nunc & pro tempore motas & pendentes; ac quas dictum Hospitale, illiusque Administratores, Officiales, & Ministri, habere & monere volent contra eandem personas, Universitates, Societates, Congregationes, Collegia, Monasteria, Hospitalia, aut alia æquæ aut magis privilegiata pia loca, etiam quomodolibet, & qualitercumque privilegiata & exempta, pro ipsius Hospitalis rebus, bonis, hereditatibus, legatis iuribus, & actionibus huiusmodi, tam agendo, pro ipso Hospitali, & quacumque persona ab eo causam habente, quam etiam si contra ipsum Hospitale ad instantiam quarumcumque personarum qualitercumque qualificatarum & privilegiatarum quomodolibet agatur, eidem Doctore, ut præfertur, electo & deputato, una cum omnibus & singulis earum incidentibus, dependentibus, emergentibus, annexis & connexis, summarie, simpliciter de plano, & sola facti veritate inspecta, ac sine strepitu & figura iudicii, & absque tela iudiciaria, ac aliquorum terminorum etiam substantialium observatione, aut alicujus registri vel extractus confectio, per seipsum vel in ejus ad dicta Urbe absentia, aut alias ex quavis causa per alium ab eisdem Administratoribus durante absentia, aut alias quomodolibet eligendum, usque ad finalem sententiarii executionem inclusivè audiendas, cognoscendas, sineque debito terminandas, aut etiam alibi pro tempore introductas, seu commissas reassumendas, auctoritate & tenore prædictis, etiam perpetuò committimus & mandamus. Ipsumque Doctorem, ut præfertur, electum & deputatum in dictis causis, tam pro ipso Hospitali quam contra illum motis & pendentibus, & in futurum movendis, in iudicem ordinarium, & Apostolica auctoritate deputatum, cum facultate easdem causas usque ad finem alicujus propinæ receptione cognoscendi, decidendi atque terminandi, ac etiam cum potestate citandi & inhibendi, quos, quibus, & quoties opus fuerit, etiam per se vel alium seu alios quoscumque tam in Romana Curia quam extraneam, etiam per edictum publicum, consilio sibi etiam summarie de non tuto accessu, eisdemque & prædictis, ac quibuscumque aliis ejusdem Urbis Curiarum, seu Tribunalium iudicibus & personis, tam Ecclesiasticis quam etiam pecuniariis pœnis, prout sibi videbitur inhibendi, & in eventum non paritionis contra inobedientes contumaces & rebelles, ad declarationem incursum censurarum & penarum huiusmodi, illarumque aggravationes, & alias prout sibi melius expedire videbitur, seu placuerit servata forma Concilii Trident. procedendi, sententiasque seu mandata per eum pro tempore lata, seu relaxata debite executioniemandari faciendi. Contradictores quolibet & rebelles, ac præmissis quovis pretextu non parentes, per censuras Ecclesiasticas, ac etiam pecuniarias pœnas, aliasque opportuna juris & facti remedia appellatione postposita compescendo, auxiliumque brachii secularis ad hoc, si opus fuerit, invocandi; aliasque omnia & singula in præmissis, & circa ea quomodolibet necessaria & opportuna faciendi, dicendi, gerendi, exequendi, ac cum aliis facultatibus ad id quomodolibet necessariis, auctoritate & tenore prædictis similiter perpetuò facimus, constituimus, & deputamus, sibi que plenam, & liberam facultatem atque auctoritatem etiam concedimus & impartimus.

A cujus sententia semel tantum & devolutivè ad Gubernatorem Urbis appellari possit decernit.

§. 6. Decernentes quod ad pro tempore existentis Doctoris, ut præfertur electi & deputati sententiis, mandatis, ordinationibus & decretis, nullatenus suspensive appellari, reclamari, de nullitate dici, sive quomodolibet adversus illa ad effectum impediendi, seu suspendendi executionem aliquod remedium attentari possit devolutivè, aut semel tantum

pro qualibet parte liceat appellare, & alia remedia intentare coram pro tempore existenti Urbis Gubernatore, seu alio Iudice ab ipso Gubernatore nominando, ei vero parti, quæ semel appellavit, secundò vel ulterius sublatâ sit, omnis & quacumque appellatio, sed duz sententia conformes, plenariam executionem obtineant, ac firmæ & illibatae permanent, ac si essent tres conformes.

§. 7. Ac nullitas aliqua exceptis tribus substantialibus opponi nullo modo possit.

§. 8. Et licet ad instantiam quoruncumque hæredum, seu quorumlibet aliorum committatur in futurum, vel etiam modò pendeat commissâ causâ discussionis alicujus hereditatis & dicto Hospitali, seu illius Administratoribus vel Officialibus & Ministris, etiam virtute commissionis fuerit inhibiti, tamen ne exactio creditorum in præjudicium Hospitalis huiusmodi protrahatur, data idonea cautione per dictos Administratores, Officiales seu Ministros, de restituendo summam debitam in eventum succubentia, prioribus & posterioribus creditoribus, pro tempore existentibus Doctor prædictus eisdem hæredes, sive alios quoscumque debitores, seu ipsorum quemlibet, & ex quocumque titulo causam habentes ad satisfaciendum integraliter dicto Hospitali de ejus credito juris & facti remediis cogat & compellat.

§. 9. Ac in omnibus & singulis causis prædictis ad dictum Hospitale ut præfertur, quomodolibet spectantibus singulis diebus & horis feriatis & non feriatis, præterquam in honorem DEI procedat.

§. 10. Et Notarium actuarium per eisdem Administratores eligendum, ac ab eis eorum arbitrio, ac ad eorum nutum ponendum, & amovendum quem eis placerit habeat, qui teneatur dare idoneam cautionem eisdem Administratoribus in ejus deputatione, de restituendo absque aliqua pecuniarum solutione & fraude, & omni mora & dilatione atque exceptione seu exculatione postpositis, quoties ab eisdem Administratoribus ab huiusmodi Notariatus officio amotus fuerit, omnes & singulas scripturas ad dictum Hospitale, ut præfertur, quomodolibet spectantes, per eisdem Administratores facto de illis inventario, Notario successori ab eisdem Administratoribus deputato consignando, quodque citationis in causis prædictis, etiam per Curia Capitoli, seu alios quoscumque etiam dicti Hospitalis Mandatarios fieri possint.

§. 11. Ac quod quicumque executores Curiarum seu Tribunalium dictæ Urbis possint & debeant exequi, & effectualiter executioni demandare, omnes & singulas sententias, decreta & mandata pro tempore existentis Doctoris huiusmodi, sive in ejus absentia, aut alias ipso impedito, ab eisdem Administratoribus eligendi, quæ non obstant regola Cancellariæ, sub ejus parvo sigillo expediri possint.

§. 12. Ac insuper Hospitale prædictum, ejusque Administratores, officiales, & ministros, officiales, & alios ab eis causam habentes, ex nunc deinceps occasione præmissorum principaliter seu secundario alibi quam coram pro tempore existente Doctore, ut præfertur electo, & deputato conveniri, aut ad alios conveniendum constringi non posse, & processus, sententias, mandata & decreta, per alium seu alios, tam ordinarios quam etiam specialiter deputatos & delegatos Judices, quavis auctoritate fungentes, in causis prædictis quomodolibet pro tempore formatos in quacumque instantia latis & factis, cum inde secutis quibuscumque, nulla, irrita & momenti fore, inhibentes expressè moderno & pro tempore existenti Signaturæ Justitiæ Præfecto, aut aliis pro tempore Justitiæ Signaturam habentibus, necnon Regenti Cancellariæ qui pro tempore erit, omnibusque & singulis Referendaris, ne de cetero ad instantiam & requisitionem cujuscumque supplicationem aliquam recipere, referendaria, seu proponere Præfecto Signaturæ Justitiæ audeat vel præsumat, &

Nullitates tres substantiales allegari permittit. In causis discussionum data cautione de restituendo &c. Iudex Hospitalis debitor cogat ad solvendum.

Singulis diebus non feriatis in honorem Dei procedi mandatur.

Notarium actuarium ab Administratoribus deputari, & ab eo caveri de restituendo sumptibus absque pretio jubetur.

Executores omnes mandata hujusmodi executioni quantur.

Personæ Hospitalis &c. alibi conveniri non possunt, etiam vigore commissionis Signaturæ Justitiæ.

& similiter Signaturam facienti, non signet five advocatoriam, five simplicis iustitiæ, five appellatoriam & similem, neque in initio neque in medio litis, & quoddam signatæ nullius sint roboris & momenti nullamque tribuant jurisdictionem, neque ipse Iudex cui fuerint commissa audeat illarum virtute citare, inhibere, vel quomodolibet procedere, irritumque & inane quicquid scienter vel ignoranter fecerit factum fuerit, ipso iudice decernimus, salva semper nostra ac pro tempore Romani Pontificis manu propria signatura, sine qua omne rescriptum censetur, & sit invalidum, & à nostra voluntate alienum. Et nihilominus Doctor sic, ut præfertur, deputatus à prædicto Hospitali absque vitio attentatorum procedere possit & valeat.

§. 13. Exemptionem verò & immunitatem aliàs eidem Hospitali concessam extendentes & ampliantes, volumus ut tam ipsi Hospitale quam ejus personæ, necnon agri, possessiones, prædia, urbana & rustica, ac quæcumque res & bona, immobilia, mobilia & se convenientia, ubilibet gentium & locorum constituta, eorumque affiduarii & conductores, ratione quorumcumque fructuum, frugum & mercium, ac rerum ad victum aut vestitum, aut aliàs ad usus humanos pertinentium, qui in ipsius Hospitalis, agris, aut prædiis, colliguntur aut extrahuntur, aut ad usum Hospitalis aliunde importantur, tam in emendo quam in vendendo, aut de loco ad locum extrahendo, aut transferendo, etiam quoad tria pro centenario Dohanensis Riperi Urbis nostræ solvi solitis, & quoad Sal pro usu Hospitalis, quod gratis prout aliis locis piis dari solet, etiam prædicto Hospitali dari debeat, & à quibuscumque datis, portoriis, gabellis, dohanis, oneribus & actionibus, subsidii, talliis, collectis, angariis, ordinariis & extraordinariis quomodolibet nuncupatis, ex quacumque etiam urgentissima causa nunc & pro tempore impensis & imponendis, tam in dicta Urbe quam extram in quocumque loco ditionis nostræ temporali ecclesiasticæ, mediæ & immediatæ subiecto, prorsus libera, exempta & immunita sint ac censeantur, nec ad aliquam solutionem quoque modo cogi aut compelli possint.

§. 14. Districte autem interdiciamus, quibuscumque personis ad quas exactio huiusmodi onerum, gabellarum, collectarum, talliarum subsidii Dohanæ quomodolibet spectabit, ne quicquam quo prætextu contra nostram huiusmodi concessionem petere aut exigere, ipsamque Hospitale vel ejus ministros aut alios ab eo causam habentes molestare quoquo modo audeant vel presumant. Quinimo dilectis filiis modernis & pro tempore existentibus Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Camerario, necnon Cameræ Apostolicæ Clericis præsentibus pro præsentibus mandamus, quatenus ipsi vel eorum aliquis quoties pro parte Hospitalis prædicti fuerit requisitus, præsentem literas & in eis contenta quæcumque solemniter publicantes, eisque efficacis defensionis præsidio assistentes, Hospitale prædictum, ejusque ministros, affiduarios, & alios quoscumque pro eo agentes, faciant exemptione, immunitate, illisque extensione & ampliatione prædictis pacifice frui & gaudere. Non permitteant illos quovis modo indebitè molestari, contradicere pro opportuna juris & facti remedia compescendo, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis &c.

§. 15. Postremo statuimus & ordinamus, quod si quatuor Clerici seculares, qui nunc sunt pro Capellanis ad Missas celebrandas, sacramentaque ecclesiasticæ administranda in eodem Hospitali deputati, inde quoad vixerint, per modernos aut pro tempore existentes Administratores amoveri nullo modo possint nec debeant, quinimò eorum cuilibet nonaginta scuta monete Romanæ ex fructibus, redditibus, & proventibus dictarum Ecclesiarum Capellaniarum, & beneficiorum unitorum, per modernos & pro tempore existentes ipsius Hospitalis Administratores annuatim persolvantur, ac præsentem literas validæ & efficacis collationis & provisionis eorum cuilibet fac-

te vim & robur obtineant. Atque nunc in Capella ejusdem Hospitalis quatuor perpetuas sine cura, personalem tamen residentiam requirentes Capellaniis, necnon duo alia etiam sine cura personalem tamen residentiam requirentia beneficia ecclesiastica Clericatus nuncupanda, per præsentem perpetuò erigimus & instituimus, eisque sic erectis & institutis pro congrua dote ac dictorum etiam pro tempore existentium Capellanoium & Clericorum congrua sustentatione, qui videlicet Capellani in ipsa Capella Missas celebrare, ac personis Hospitalis prædicti, iuxta formam priorum nostrarum literarum super ipsius Hospitalis erectione editarum, sacramenta Ecclesiastica ministrare, Clerici verò eis in Altaris ministerio & sacramentorum administratione interesse debeant, singulis quidem Capellanis nonaginta, singulis verò beneficiis prædictis pro quolibet Clerico viginti scuta huiusmodi annuatim eorum cuilibet per ipsos Administratores, ut præfertur, ex dictis fructibus beneficiorum huiusmodi persolvenda. Si quid verò ex eisdem fructibus supererit, id omne sacrilicè ejusdem Capellæ perpetuò applicamus & appropriamus.

§. 16. In posterum verò quoties perpetuis futuris temporibus aliquod ex huiusmodi Capellanis vel beneficiis, Clericatus nuncupatis, ex Capellanoium eisdem Capellanis ad præsens obtinentium, vel eorum successorum quorumcumque personis quando & ubilibet vacare contigerit, tunc non ad nutum Administratorum, sed in titulum perpetui beneficii Ecclesiastici personalem residentiam requirentis ad presentationem Administratorum prædictorum, nec aliàs per Sedem Apostolicam dumtaxat conferatur.

§. 17. Decernentes præsentem literas sub quibusvis similibus vel dissimilibus concessionum & gratiarum revocationibus, suspensionibus & derogationibus minime comprehendendi, sed semper ab illis exceptas, & quoties emanabunt toties in pristinum statum restituta, & plenariè reintegratas esse & censeri. Sicque per quoscumque Iudices & Commissarios, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac Sanctæ R. E. Card. sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate, in quavis causâ & instantiâ iudicari & definiri debere, necnon irritum & inane, si secus super his à quocumque quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 18. Non obstant. const. & ordinationibus post. præfatisque Cam. juramento, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus privilegiis, eidem Cameræ necnon quibusvis Iudicibus & Tribunalibus etiam Auditori causarum ejusdem Cameræ quomodolibet concessis, Quibus omnibus & singulis etiam si de illis specialis, specifica & expressa mentio faciendâ, seu quavis expressio ad hoc servanda foret, illorum tenores ac si de verbo ad verbum infererentur, præsentibus pro sufficienter expressis habentes illis aliis in suo robore permanentis, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, cæterisque contrariis quibuscumque.

§. 19. Volumus autem quod præsentium transumptis etiam inexpressis, Notarii publici manu subscriptis, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides in iudicio & extrâ illud adhibeatur, quæ eisdem præsentibus adhiberetur si essent exhibitæ vel ostensæ. Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud S. Marcium, Anno Incarnacionis Dominicæ millesimo quingentesimo octuagesimo octavo, viii. Idus Septemb. Pontificatus nostri Anno quarto.

Contrà abortum quovis modo procurantes, aut sterilitatis potiones dantes vel fumentes, eisque auxilium, consilium siue consensum præstantes,

Capellanis ab præsertationem Administratorum de cetero concessatur.

Clausula præservativa hujus concessionis.

Clausula contrariorum derogatoria.

Fides Traslumptorum

Dat. P. A. 4. diei Septembris.

xxii.

Ampliatione exemptionis à solutione gabellarum & aliorum onerum & grave minus.

Prohibitio molestandi Hospitale seu per prædictis.

Capellani qui nunc sunt ab Administratores non amoveantur. Et eorum cuilibet habeat scut. 90. singulis annis.

Hæc Bulla in duobus ejus partibus moderata fuit à Gregorio XIV. infra in ejus const. 8. Sedes.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D.
1588.

Detestatio
criminis ab-
ortus.

Effrenatam perditiſſimorum hominum contra divinx legis præceptum de non occidendo, peccandi audaciam atque licentiam, ſanctiſſimis legibus, variſque conſtitutionibus ſapius reſpreſſam animadvertentes; cogimur nos quoque in ſupremo juſtitiæ throno à Domino conſtituti, juſtiſſima ratione ſuadente, vetera jura partim innovando, partim ampliando, eorum etiam immanitatem pari poena propoſita coërcere, qui immaturos foetus intra materna viſcera adhuc latentis crudeliſſimè necare non verentur; Quis enim non deteſtor tam execrandum facinus, per quod nedum corpus, ſed quod gravius eſt, etiam animam certa jactura ſequitur? Quis non graviſſimis ſupplicis damnet illius impietatem, qui animam Dei imagine inſcriptam; pro qua redimenda CHRISTUS Dominus noſter precioſum ſanguinem fudit, æternæ cæpæ beatitudinis, & ad conſortium Angelorum deſtinatam, à beata Dei viſione excluſit, reparationem celeſtium ſedium quæ in ipſo fuit impedit. Deo ſervitium ſuæ creaturæ ademittit? qui liberos prius vita privavit, quatenus illi à natura propriam lucem accipere, aut ſe materni cuſtodia corporis ab efferata ſervitia tegere poterint? Quis non abhorreat libidinoſam impiorum hominum crudelitatem, vel crudelem libidinem, quæ eo ulque proceſſit, ut etiam venena procuret ad conceptos foetus intra viſcera extinguendos & fundendos, etiam ſuam prolem prius interire quàm vivere, aut ſi jam vivebat, occidi antequàm naſci nefario ſcelere moliendo? Quis denique non damnet graviſſimis ſupplicis illorum ſcelera, qui venenis, potionibus, ac maleficiis mulieribus ſterilitatem inducunt, ut ne concipiant, nec pariant, maleficiis medicamentis impediunt? Maleficos, inquit Dominus, ad Moyleſen, non patieris vivere; nimis enim impudenter contra Dei voluntatem ſe opponunt qui, ut S. Hieronymus ait, dum natura recipit ſemen, receptum conſervat, conſortium corporat, corporatum in membra diſtinguit, dum inter ventris anguſtias, Dei manus ſemper operatur, idemque corporis creator & animæ eſt, impiè deſpicit bonitatem Figuli, id eſt Dei, qui hominem plantavit, ſecit & voluit, ſiquidem ut Sanctus teſtatur Ambroſius, non medio cre manus eſt DEI dare liberos propagatores generis. Divinam donum eſt ſecunditas patientis, eodemque tempore diro hoc flagitio privantur liberi parentes qui generaverant; vita filii qui generati ſunt, matres conjugi præmiis, terra quæ ab his coſoleetur, mundus qui ab eisdem cognoscetur, Eccleſia quæ devotæ numero plebis aucti gaudent. Unde non immerito ſexta Synodo Conſtanti-nopolitana ſancitum eſt, ut perſonæ quæ dant abortio-nem cientia medicamenta, & quæ foetus necantia venena accipiant, homicidæ poenis ſubſciantur, ſed & veteri Concilio Ilerdenſi cautum eſt, ut qui conceptos ex adulterio foetus necare ſtuderint, vel in ventribus matrum potionibus aliquibus coſiſerint, ſi poſtea poenitentes ad Eccleſiæ manſuetudinem recurrant, omni tempore vitæ ſuæ ſteſibus & humilitati inſiſtant, ſi verò Clerici fuerint, officium miniſtrandi eis recuperare non liceat, omneſque tam Eccleſiaſticæ quàm prophanæ leges gravibus poenis afficiunt eos, qui in utero matris puerperium interi-mi, aut ne mulieres concipiant, ſive ut conceptos foetus efficiant, nefariè machinantur.

Pœna homicidii, abortum procurantibus imponitur.

§. 1. Nos igitur poſt reſpreſſam eorum temeritatem, qui matrimonii jura violare, & quantum in ipſis eſt vinculum indiſſolubile diſſolvere præſumunt, quivè turpioribus quibuſdam inceſtis ſe inquinare non erubescunt, hoc quoque malum, quantum vicibus nobis à Domino traditis contendere noſ

ſumus, noſtris potiſſimum temporibus exterminare volentes: Omnes & quocumque tam viros quàm mulieres, cujuſcumque ſtatus, gradus, ac conditionis, etiam Clericos, ſeculares vel cujuſvis Ordinis regulares, quavis dignitate & præminetia, Eccleſiaſtica vel mundana fulgentes, qui de cætero per ſe, aut interpoſitas perſonas abortus ſeu foetus immaturi, tam animati quàm inanimati, formati vel informis ejectionem procuraverint, percuſionibus, venenis, medicamentis, potionibus, oneribus, laboribusque mulieri prægnanti impoſitis ac aliis etiam incognitis, vel maxime exquisitis rationibus, ita ut re ipſa abortus inde ſecutus fuerit, ac etiam prægnantes ipſas mulieres, quæ ſcienter præmiſſa fecerint, poenas tam divino quàm humano jure; ac tam per canonicas ſanctiones, & Apoſtolicas conſtitutiones, quàm civilia jura adverſus veros homicidas, qui homicidium voluntarium actu & re ipſa patravérunt, propoſitis & inſcriptis (quorum omnium tenores hiſ noſtris litteris pro expreſſis, & ad verbum inſeritis habemus) eo ipſo incurtere, hac noſtra perpetuè valitura conſtitutione ſtatuiamus & ordinamus, ipſasque poenas leges, & conſtitutiones ad cauſas præſcitas extendimus.

§. 2. Eos verò qui Clerici fuerint, omni privilegio clericali, officiis, dignitatibus & beneficiis Eccleſiaſticis, quæ ſic vacatura noſtræ & Sedis Apoſt. diſpoſitioni perpetuè reſervamus, ipſo facto privamus, & in futurum inhabiles ad ea ſuſcipienda decernimus, adeò ut illi qui hoc delictum commiſerint, non ſecus atque ij qui ſua voluntate homicidium perpetraverint juxta Concilii Tridentini decreta, etiamſi crimen id, nec ordine judiciario probatum, nec alia ratione publicum, ſed occultum fuerit, ad ſacros ordines promoveri, aut in ſuſceptis ordinibus miniſtrare nullo modo poſſint, nec illis aliqua Eccleſiaſtica beneficia, etiamſi curam non habeant animarum, conferri liceat, ſed omni ordine ac beneficio & officio perpetuè careant.

§. 3. Neenon & illos qui Clerici non fuerint, & talia perpetraverint, non ſolum poenas incurere ſuprà narratas, ſed etiam inhabiles ad ordines & alia prædicta decernimus & declaramus.

§. 4. Volentes quòd hi qui foro Eccleſiaſtico ſubjecti, ut præſertur, deliquiſſe comperti fuerint, per judicem Eccleſiaſticum depoſiti & degradati, curiæ & poteltati ſeculari tradantur, quæ de eis illud capiat ſupplicium, quod contra laicos verè homicidas per divinas leges, ac civilia jura eſt diſpoſitum.

§. 5. Præterea eisdem poenis teneri omnino ſtatui-mus eos, qui ſterilitatis potiones, ac venena potionibus propinaverint, & quo minus ſectum concipiant impedimentum præſtiterint, ac ea faciendâ, & exequenda curaverint, ſive quocumque modo in his conſulnerint, ac mulieres ipſas quæ eadem pocula ſpontè ac ſcienter ſumpſerint.

§. 6. Quocirca mandamus univerſis & ſingulis judicibus ordinariis & delegatis, tam Eccleſiaſticis quàm ſecularibus, quibus contra criminum reos etiam quoad cauſas hujusmodi, de jure vel ratione delicti, aut perſonarum legitime competet juſdictio, ita tamen ut inter eos præventionis locus ſit, ut in hiſ delictis, quæ ut plurimum in occulto perpetrantur, contra quocumque, non ſolum per accusationem & delationem, verum etiam per inquisitionem ac ſimplicem denunciationem procedant, ac ad illa probanda teſtes aliàs de jure inhabiles, eorumdem tamen Judicum arbitrio, habita ratione perſonarum, cauſarum & qualitatum illarum, ac circumſtantiarum quarumcumque, admittant, ac in eos qui culpabiles fuerint, prout per nos ſancitum eſt, denum admadvvertant.

§. 7. Insuper ut immaniſſimi hujus delicti gravitati, non ſolum temporalibus, verum etiam ſpiritalibus poenis proſpiciamus ac provideamus, omnes & ſingulos cujuſcumque ſtatus, gradus, & ordinis, vel conditionis exiſtentes, tam laicos quàm clericos, ſeculares & cujuſcumque Ordinis regulares, necnon mulieres ſeculares, vel quemcumque Ordinem

Clericisque additur poena privationis beneficiorum & inhabilitatis.

Laicis additur de poena inhabilitatis.

Et qui foro Eccleſiaſtico ſubjecti ſunt Curia ſeculari tradantur.

Sterilitatis potionibus dantes vel ſumentes, eorumque conſultores, ſiſtem poenis ſubſciantur.

Præventio inter Judices & eorum facultas in procedendi.

Excommunicatio in prædictis & eorum complices.

Tu vide moderatio-nem Gregor. IV. cit. in rub.

profefſas,

Reservatio
absolutionis.
Hoc immuta-
vit Gregor.
xiv. cit. in
rubric.

professas, qui vel quæ vel uti principales, vel ut sociæ conscribere ad tale facinus committendum opem, consilium, favorem, potionem, vel alia cuiuscunque generis medicamenta scienter dederint, ac etiam scribendo literas privatas vel apochas, vel alias verbis aut signis juverint aut consulerint, ultra supradictas penas, ipso facto, nunc prout ex tunc excommunicamus & pro excommunicatis declaramus.

§. 8. Decernentes ac declarantes, quod per quacunque Jubilæa & Indulgentias, per nos & successores nostros, etiam Anno Jubilæi, aut alio quovis temporis, etiam Cruciatæ sanctæ, Jubilæi, vel quovis alio titulo concessas & concedendas, necnon per quacunque literas Apostolicas quibuscvis Principibus, seu ad eorum instantiam per nos & successores nostros pariter concessas & concedendas, ac etiam vigore privilegiorum mare magnum vel alias quomodolibet nuncupatorum, quibuscvis Congregationibus Regularium, aut Episcopis vigore Concilii Trid. vel aliis, per nos & prædecessores nostros quomodocunque concessorum, vel in futurum concedendorum, nec personæ sic ut præfertur delinquentes & excommunicatæ, præterquam in mortis articulo absolvi valeant, nec cum iis clericis, qui huiusmodi delicta perpetraverint, etiam si eorum crimen occultum fuerit, super irregularitate præmissorum occasione contracta, nec per locorum Ordinarios, nec per alios quavis auctoritate fungentes, quam per nos & Rom. Pontificat. nostros successores, & tunc non nisi urgentissimis de causis dispensari possit. Ac tam absolventi quam dispensanti facultatem huiusmodi etiam quoad forum conscientie in casibus superius expressis, nobis & successoribus nostris duxit reservamus.

§. 9. Statuentes sic in præmissis universis & singulis per quoscunque Iudices ordinarios & delegatos, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, in quavis causâ & instantia iudicari & definiti debere, irritumque & inane quicquid seorsum super his à quoquam, quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 10. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, aut aliis legibus aliter forsan circa præmissa disponentibus, aut in casibus præfatis distinguendis, cæterisque contrariis quibuscunque.

§. 11. Volumus autem ut præsentium litterarum exemplis etiam impressis, manu N. tarii publici subscriptis, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem fides in iudicio & extrâ adhibeatur, quæ originalibus litteris adhibebitur. Quoque eadem ad valvas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, & in acie Campi Floræ, de more publicatæ & affixæ, dimissis inibi eorum exemplis, post quindecim dierum spatium à die huiusce publicationis numerandos, quemcumque afficiant, ac si uniuersique forent intimatæ, cum non sit verisimile quemquam ea posse ignorare, quæ palam ac publicè fuerint evulgata.

§. 12. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ constitutionis, statutorum, ordinationis, extensionis, decretorum, &c. Si quis autem hoc attentare presumpserit &c.

Datum Romæ in Monte Quirinali, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo octogesimo octavo, quarto Calend. Novembris, Pontificatus nostri Anno quarto

Anno à nativitate Domini 1588. in illis. 1. die verò 1. mensis Novemb. Pontificatus Sanctiss. in Christo patris & D. N. D. Sixti divini providentia Pape V. anno 4. Retroscriptæ litteræ Apostolicæ, affixæ. & publicatæ fuerunt in valvis Ecclesiarum S. Joannis Lateranensis, & S. Petri Principis Apostolorum de Urbe, nec non Cancellaria Apostolica, & acie campi Floræ, ut moris est, per nos Horatium de Reynaldis, & Officium Taglietum S. D. N. Pape curi. Alex. Parabiacus mag. curi.

Institutio Festivitatæ SS. Placidii & Socii sui Martyrum Professorum Ordinis Monachorum S. BENEDICTI, ubique simplicis, & in Messanen. Civitate duplici officio die 5. mensis Octobris celebrandæ, ac etiam die 4. mensis Augusti in Ecclesia Messanen. ubi eorum corpora nuper reperta fuerant.

SIXTUSEPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Dominus Omnipotens, qui suaviter cuncta disponit, misericordiarum Pater, & Deus totius consolationis, sacrosanctam ejus Ecclesiam pretioso unigeniti Filii sui sanguine acquiritam, & in Apostolicæ confessionis petra solidatam, voluit ne dum inerti mundi adversa & turbines, Sanctis Martyribus quasi fortissimis propugnatoribus tueri, verum eorumdem gloriosis trophæis ita in dies illustrari, ut non modò illi felicissimas de impiis persecutoribus & Christianæ fidei hostibus in hoc sæculo victorias reportando, eandem propagarent, sed mox ad æternam ipsi celestis patriæ beatitudinem evehi, piè apud Deum intercedendo, illum vel maxime juvarent, ac perpetuò juvent. Unde non immerito sacræ eorum reliquiæ, & eorumdem passionum monumenta, in terris relicta, Christianum populum ad laudandum in eis divinam majestatem, ad illorum salutaria exempla imitanda, ad rerum humanarum, & prætereuntis hujus sæculi despiciendam, ad eorum denique opem & patrocinium in tribulationibus & necessitatibus invocandum mirum in modum excitant.

§. 1. Inter hos verò ipsos quos Martyrii corona donatos Catholica invocet & veneratur Ecclesia, merito insignis honore celebranda est memoria sanctorum Placidii & sociorum martyrum, qui Justiniani Magni Imper. temporibus; cum S. Benedicti tunc adhuc viventis, Religionis zelum, & vitæ sanctitatem admirati, sub illius regali de Dei obsequiis cavissent, & in Monasterio cum Ecclesia S. Joannis Baptiste, propè muros Messanæ civitatis tunc recenter ab ipsomet Placido in paterno fundo extructo & instituto, cui idem Placidus à sancto Benedicto commissus, tanto Magistro dignus discipulus præerat, gratum Alissimo exhiberent famulatum; ad eam perfectionem brevi pervenerunt. ut cum eorum canonice fama longè latèque diffusa, etiam in Urbem Romanam pervasisset, impulit pios ipsius Placidi fratres germanos Euthychium, & Victorinum & virginem Flaviam eorumdem sororem, ad iter luscipendum Placidi fratris visendi causâ, sed divina providentia factum est, ut cum Messanam venissent, & apud eum vix per paucos dies morati essent, crudelissimi Sarsanenorum Regis, vel potius Tyranni Abdalæ classis, Christiano nomini nefarium bellum, Insule verò Siciliæ vastitatem, incendia, rapinas inferens, ad eandem Civitatem ex improviso appulserit. Ubi ejus classis Dux Mamucha cum in Monasterium irrupisset, cepit mira feritate contra eos omnes in vincula coniectos sævire, & acerbissimis quibusdam cruciatibus, exquisitisque tormentorum generibus conari, si qua ratione posset eos à Christiana Religione dimovere.

§. 2. Verum tamen ipsi adjuvante Spiritus Sancti gratia, & non modò in religiosis viris, sed in aliis quoque Placidi fratribus, atque adeo in sæxu fragili & virgineo pectore, suam divinam virtutem mirabiliter ostendente, cuncti in Christianæ fidei præclara confessione fortiter perseverantes, agnem suum glorioso Martyrio consummarunt. Cumque eorum quidem animæ triumphalem palmam ideptæ in cælum evolasent, corpora verò multis, ut antiquæ testantur historis, magnificè miraculis

Edicta A. D.
1588.

Martyrum
preclara sunt
merita.

S. Placidus
& ejus Socii
sub Regula
S. Benedicti
se Deo dica-
runt & in
Monasterio
apud Messa-
nam civita-
tem per ip-
sum Placitum
in paterno
fundo ex-
tructo famu-
latum Deo
exhibuerunt.

Martyrii quo
coronam
adepti fue-
runt, & eor-
um corpora
in Ecclesia
Joannis Mes-
sanen. sepul-
ta, multis
claruerunt,
& nuper ali-
qua eorum
reliquia, in
reparatione
d. Ecclesiæ
sunt reperta.

Decretum
irritans.

Clausulæ de-
rogatoriæ.

Forma & ef-
fectus publ.
huius const.

Sanctio po-
nalis.

Dat. P. A. A.
die 29. Octo-
bris.

Publicatio.

Archiepiscopus
de suorum pro
cessum forma-
vit, quem
Summus
Pontifex
Cardi-
nalis
reviden-
dum
commisit,
& ac aliorum
ex dictis fan-
ctis corpori-
bus invenio-
ne satis con-
fuit.

Summus ita-
que Pontifex
gratias pro-
pterea ingen-
tes Dei red-
didit, & eo-
rum Marty-
rum festum
die 4. Octo-
bris ubique
singulis an-
nis, & fe-
stum eorum
inventionis
in d. Eccle-
sia M. flanen-
die 4. Augu-
sti celebrari,
& in Calen-
darium ap-
poni man-
dat.

illustra, in Ecclesia Sancti Joannis Baptistae Messanen-
sis, quae postmodum successu temporis in Prioratum
Hospitalis ejusdem Sancti Joannis Hierosolymitan. fuit
erecta, pie sepulta, & recondita, temporum injuria
per multa saecula, ita inibi occulta lausissent, ut jam
nostra aetate licet ex pluribus antiquitatis monumentis
constaret, ea in praefata Ecclesia Sancti Joannis Bap-
tistae sepulta fuisse, tamen certis ejus Ecclesiae locus,
ubi sita forent, penitus ignoraretur, placuit tandem
divinae misericordiae sacra nonnullorum ex eis monu-
menta & reliquias, dum pro fundamentis in reparatio-
ne ipsius Ecclesiae faciendis humus effoderetur, post
longum temporis intervallum nuper in lucem proferres.

§. 3. Quare cum primum ex relatione Venerabilis
fratris Antonii Archiepiscopi Messanenensis compluribus
desuper examinatis testibus ac processu formato, & ad
nos transmissio id nobis significatum fuit. Nos atten-
dentes juxta antiquissimum Catholicae & Apostolicae
Ecclesiae usum, ad primaevis Christianae Religionis tem-
poribus receptum, Sanctorumque Patrum unanimem
consensum & sacrorum Conciliorum, ac novissi-
mè oecumenici Tridentini decreta, beatorum Marty-
rum, & aliorum cum CHRISTO in Caelis regnantium
intra corpora, per quae multa beneficia à Deo morta-
libus praestantur, congruo quidem honore veneranda
esset, fed eam adhibendam cautionem in sacrarum re-
liquiarum veneratione, ut omnis supersticio tollatur.
Ite novas reliquias recipiendas esse, nisi prius ab Epis-
copo recognita & approbatae fuerint; recognitionem
processus hujusmodi, venerabilibus fratribus nostris
S. R. E. Cardinalibus super interpretatione & execu-
tione dicti Concilii Tridentini deputatis duximus com-
mittendam, qui ipso processu diligenter, prout rei gra-
vitas postulat, considerato & recognito, necnon vo-
tato & audito eodem Antonio Archiepiscopo, qui
& sacras reliquias, & olia complura antiquitatis mo-
numenta in ea Ecclesia insepuit, & deinde ad nos
& beatorum Apostolorum limina visitanda in Urbem
venit, cum nobis retulissent satis constare de aliquo-
rum ex dictis sanctis corporibus inventione.

§. 4. Nos primum quidem ingentes Deo Omnipotenti
gratias egimus, quod inter cetera, quae his cala-
mitosis & turbulentis temporibus Christiano populo
in dies largitur plurima & maxima beneficia, hoc quo-
que insigni munere quasi pretiosissimo thesauro detec-
to, dignatus sit dictorum Placidi & sociorum Marty-
rum memoriam renovare.

§. 5. Nunc autem, ut pro nostro pastoralis officio,
quantum in nobis est, curemus ne invictorum Marty-
rum corpora, divina erga nos charitatis pignora, quae
viva membra fuerint CHRISTI & templa Spiritus
Sancti, ab ipso ad eternam vitam suscitanda & glori-
ficanda, diutius inobscure vetustas, aut ex animis
Christi fidelium delectat oblivio, sed ut potius eis om-
nium gentium & saeculorum praedicatione dignissimum
honore debitum, si non pro ipsorum dignitate ac me-
ritis, saltem pro nostra tenuitate tribuatur; simulque
excitentur iidem fideles ad eorum, vestigia pro cun-
ctis capta prosequenda, & ad invocandam opem illo-
rum, quos & ipsius Ecclesiae amantissimos, & propter
religiosae vitae professionem & observationem, casti-
moniam, sanctitatem, & constantem Christianae fidei
confessionem Martyrio consummatam Deo acceptissi-
mos esse intelligimus; ac denique, ut in eorumdem
veneratione, Dei qui per os David in Sanctis suis
laudari praecipit, immensa bonitas glorificetur, & pie
Christi fidelium mentes ad eorum memoriam recolendam
anniversaria commemoratione & celebritate ad-
moneantur; habita praedictorum Cardinalium relatio-
ne de eorum consilio & assensu, auctoritate Aposto-
lica, tenore praesentium, praecipimus, ut eorumdem
sanctorum Martyrum Placidi & sociorum dies festus,
quo ipsi bono & legitimo certamine pro CHRISTO
gloria absoluto, cursu consummato, fide servata,
nobilissima martyrii corona decorati, ad caelestem
patriam migraverunt, nimirum tercio Non. Octobris

in omnibus Christianis Orbis partibus sub officio sim-
plici, in Messanenensi verò civitate, dioecesi, & provin-
cia, duplici, & praeterea alter dies festus Inventionis
eorundem Pridi. Non. Augusti, in Ecclesia praefata S.
Joannis Baptistae Messanenensis, dumtaxat sub duplici
pariter officio à cunctis personis Ecclesiasticis, seculari-
bus, quorumvis Ordinum regularibus, de communi
plurimorum Martyrum, ubi proprium deerit, perpetuo
celebretur. Volumusque ut in Calendario, quo nunc
utimur, sicut in Romano Martyrologio, & antea in
quibusdam Calendariis habebatur, ad eum diem eorundem
Sanctorum nomina adscribantur, etiam in
novissima Missalis & Breviarii Romani editione ea fue-
rint praetermissi. Hortantes utriusque sexus Christi fi-
deles civitates Messanenensis incolae, ut eorumdem Mar-
tyrii diem festum pie ac religiose colant & observent,
& sicuti in reliquis diebus festis de praepcepto sanctae ma-
ris Ecclesiae moris est, à servilibus operibus abstinant.

§. 6. Ad eundem ad augendam Christiani populi
erga eosdem inclytos Martyres devotionem, utque
eo frequentius & ardentiori pietatis studio conflant
ad sacra eorum sepulchra, quo uberius cognoverint
se per hoc caelestis gratiae donis esse resectos, de Om-
nipotentis Dei misericordia & beatorum Petri &
Pauli Apostolorum ejus, auctoritate confisi, eisdem
Christifidelibus verè penitentibus, qui peccata sua
sacerdotibus idoneis ab Ordinaris locorum appro-
batis confessi fuerint, ac sanctissimum Eucharistiae
Sacramentum susceperint, & praedictae Inventionis
die festo dictam Ecclesiam, ubi eadem sancta Cor-
pora requiescunt, devotè visitaverint, atque inibi
pias ad Deum preces fuderint; plenariam omnium
peccatorum suorum indulgentiam & remissionem
perpetuò concessimus & largimur.

§. 7. Quocirca mandamus universis & singulis
venerabilibus fratribus nostris Patriarchis, Archie-
piscopis, & Episcopis, ceterisque Ecclesiarum Prae-
latis, ut praesentes literas in suis quilibet Provin-
ciis, civitatibus, & locis solemniter publicent, &
ab omnibus personis, Ecclesiasticis secularibus &
regularibus, ubique gentium & locorum inviolatè
observari curent.

§. 8. Volumus autem ut eorumdem praesentium
exempla, etiam impressa, Notarii publici manu
subscripta, & sigillo personae in dignitate Ecclesiasti-
ca constitutae obsignata, eandem prorsus ubique
fidem faciant, quam ipsae praesentes facerent, si
offenderent vel exhiberentur.

§. 9. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc
paginam nostrorum praepcepti, voluntatis, hortatio-
nis, concessionis largitionis, & mandati infringere,
vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem
hoc attentare praesumpserit, indignationem Omnipotenti-
s Dei ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum
ejus, se noverit incursum.

Datum Romae apud S. Petrum, Anno Incarnationis
Dominicae 1588. Id. Novembris Pont. nostri
Anno 4.

Collegii Montis Alti pro quinquaginta ex Provin-
cia Marchiae Scholaribus, in Civitate Bononiae
erectio, cum beneficiorum & annuorum reddi-
tuum, privilegiorumque & exemptionum elar-
gitione, iudicisque & Protectoris deputatione,
facultatibusque & jurisdictione.

Hunc Montem Altum, olim Oppidum, in Civitatem
sublimavit, & ejus Collegiatam Ecclesiam in Episco-
palem hic idem Pontifex erexit, ut supra in const. 48.
Super.

SIXTUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

I Nter ceteras sollicitudines quae nobis ex officio
dictae servituti incumbunt, illam libenter ample-
ctimur,

Indulgentiam d. Eccle-
siam Visi-
tationis con-
cedit.

Episcopis &
aliis mandata,
ut hanc con-
stitutionem
publicari &
observari fa-
ciant.

Transumptis
fidem praesta-
ri mandata.

Sanctionem
poenarum
subiecit.

Dat. P. A. 4.
die 13. No-
vemb.

LXXXIX.

Edita A. D.
1588.

Procurium.

fitur, per quam literarum studia, & adolescentium illis vacare volentium collegia ad fructuosam agri Dominicis culturam, & doctrinæ & sapientiæ incrementa ubique præsertim in locis temporali nostræ ditioni subiectis propagantur, ipsaque collegia pro illorum stabilitamento congruis facultatibus communiuntur, ut ex eis optimarum disciplinarum proventus, ad communem utilitatem & profectum valeant provenire.

§. 1. Dudum siquidem dum Cardinalatus honore fungeremur, pro erga dilectos filios Communitatis Civitatis Montis Alti unde originem duximus, necnon Universitates & homines Porculæ, ac Patriguoni, & Montis novem oppidorum Provinciae nostræ Anconitanæ, affectu, pacisque inter eos conservandæ & stabilendæ zelo ducti, in dicta civitate tunc oppido, & quibusdam domibus ad id per nos emptis, publicum Gymnasium in quo illius & aliorum oppidorum prædictorum juvenes religiosè educaretur, ac primis literarum rudimentis, aliarumque bonarum artium disciplinis instrueretur, assignatis etiam redditibus annuis ad mercedem ipsius juvenitatis præceptori, & uni Physico perfolvendam, nostris sumptibus magnificè constructi curavimus ac in his summam octo millium scutorum, vel circæ erogavimus.

§. 2. Et deinde immensa Redemptoris nostri benignitate ad Apostolicæ dignitatis fastigium evecti, ne juvenis ipsa ob rei familiaris angustiam & inopiam, ad altiora literarum studia progrediendi commoditate destitueretur, in civitate Bononiensi quæ omnium liberalium artium doctrinarumque studiis, semper floruit, & quibusdam ædibus de Zambeccariis nuncupatis per sacris recordationis Gregorius Papam XIII. prædecessorem nostrum, Camera Apostolicæ impensa pro Collegio ibidem instituendo, acquisitis, unum Collegium Scholarium ex civitatis Montis Alti, & oppidorum prædictorum indigenis, usque ad certum tunc præscriptum numerum eligendorum, duximus erigendum & instituendum. Postmodum verò erectionis & institutionis huiusmodi negotio maturius perpenso, aedes prædictas ad usum ipsius Collegii nondum reductas, ex certis causis venundari mandavimus, animo & intentione dictum Collegium in alio commodiori loco ejusdem civitatis Bononiensis stabilendi. Cum autem Prioratus S. Antonii Bononiensis Ordinis S. Augustini, ex eo quod dilectus filius Antonius Glaverinus seu Glaverinus illius Prior, eundem Prioratum quem tunc seu nuper obtinebat, aut in quo vel ad quem jus sibi competere asserbat resignavit, & seu juri sibi competenti huiusmodi cessit in manibus nostris spontè ad effectum infrascriptum, & alias liberè, nosque resignationem & seu cessionem huiusmodi duximus admittendam, per resignationem eandem apud Sedem Apostolicam vel alias certo modo, & sicut accepimus S. MARIE de Strata, aliàs della Strada, quod bonæ memor. Philippus S. Eustachii Diaconus Cardinalis Vastavillanus nuncupatus & alium S. Michaëlis de Castro Britonum quod similis mem. Alexander Episcopus Viglevanen. ac reliquum Monasteria Abbatie nuncupata sanctorum Fabiani & Sebastiani Vallis de Lavino S. Benedicti, vel alterius Ordinis Bononiensis dioc. quod quondam Vincentius Beccatellus, necnon Prioratus S. MARIE de Angelis propè & extramuros Bononiensis Camaldulens. Ordinis, quem quondam Achilles Torfanus, clericus, ex concessione & seu dispensatione Apostolica in commendam dum viverent, obtinebant, commendis huiusmodi per Philippum Cardinalem apud Sedem prædictam, Alexandri Episcopi, ac Vincentii, nec non Achillis prædictorum extrâ Romanam Curiam defunctorum respectivè obitus cessantibus, adhuc eo quo antè commendas ipsas vacabant modo, & una Oratorium nuncupata ejusdem S. Antonii de Diola, seu Diolo, quem etiam bonæ mem. Leonardus Episcopus Haulen. ex simili dispensatione, & altera plebania etiam nuncupata sine cura, Ecclesiæ seu Ca-

pellæ S. Joannis Evangelistæ de Pastino, aliàs de Pasto dictæ dioc. quam quondam Augustinus Bondiolus ipsius Ecclesiæ seu Capellæ S. Joannis Redictor, plebanus nuncupatus, necnon perpetua etiam sine Capellania sub S. Lazari in S. Petri propè & extrâ muros terræ Guastallæ, nullius dioc. provincie Mediolanen. quam quondam Augustinus Rette ibidem perpetuus Capellanus, ac unum sub S. Agathe intus & alterum perpetua simplicia beneficia Ecclesiastica sub Sanctorum Petri & Pauli invocationibus in Præpositura similiter nuncupata ejusdem S. Petri propè & extrâ muros oppidi Vitellianæ, seu Viadanæ Cremonen. dioc. parochialibus, vel aliis Ecclesiis, quæ quondam Herennius Perottus, Clericus in ultimo dictis duabus Ecclesiis perpetuus beneficiatus dum viverent obtinebant, pro Leonardi Episcopi, qui extrâ dictam Curiam & Augustini Rette, qui in loco à dicta Curia ultrâ duas dietas legales non distante, ubi proprium eius domicilium non existeret, ac Augustini Bondioli, & Herennii prædictorum, qui apud Sedem eandem diem vite clausurunt extremum, vacaverint & vacent ad præsens. Nullusque de Prioratu S. Antonii, quatenus per dictam resignationem vacet, ac Ecclesiæ seu Capellæ S. Joannis Evangelistæ, necnon Capellanæ & beneficiis præfatis, pro eo quod nos dudum omnes Prioratus, ac simplicia, cæteraque beneficia Ecclesiastica, cum cura & sine cura, secularia & quorumvis Ordinum regularia apud Sedem prædictam tunc vacantia & inaneat vacatura. Ac etiam quorumcumque ad dictam Curiam pro quibusvis negotiis venientium, seu ab ea recedentium, ac etiam Curialium recreationis, seu alia quacumque causa ad quævis loca secedentium, si eos in locis ultrâ duas dietas ab eadem Curia, ut præfertur, non remotis, dummodò eorum proprium domicilium ibidem non existeret, decedere contingeret, per eorum obitum huiusmodi etiam vacaturæ, collationi, & dispositioni reservavimus, ac ex tunc irritum & inane decrevimus, si secus super his à quoquam quavis scienter vel ignoranter contingeret attentari, hac vice disponente potuerit sive possit, reservatione & decreto huiusmodi obstantibus. Ipsiusque Prioratus S. Antonii in Meditullio dictæ civitatis Bononiensis consistentis aedes & ædificia jampridem iussu nostro à fundamentis eleganti ac sumptuoso opere pro dicto Collegio Montis Alti ibidem stabiliendo seu transferendo, ac illius Scholarium perpetuis usu & habitatione restaurata & accommodata existant. Nos pium & fructuosum opus huiusmodi quod dudum animo revolvimus tadem ad debitum effectum perducere, congruisque redditibus, ac specialibus favoribus & privilegiis communire, neque hanc nobis oblatam subditorum nostrorum commoditates & profectus procurandi & augendi occasione prætermittere volentes, ac Rectorem, Scholares, & singulares personas si qui sint Collegii huiusmodi à quibusvis excommunicationis, suspensionis & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententis, censuris & pœnis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibusvis quomodolibet innodati existunt, ad effectum præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes. Necnon emptionis & acquisitionis ædium de Zambeccariis, & illarum retrovenditionis, ac quarumcumque erectionum & institutionum ipsius Collegii Montis Alti, sive in ædibus de Zambeccariis, aut Prioratu S. Antonii huiusmodi, necnon unionum, annexionum, incorporationum, applicationum, appropriationum & concessionum eidem Collegio Montis Alti de prædictis & quibusvis aliis Monasteriis, Prioratibus, Ecclesiis & beneficiis, aliisque rebus & bonis quibuscumque hæcens quomodolibet factarum. Necnon literarum Apostolicarum tam sub plumbo quàm in forma brevis, etiam in favorem Camera seu Collegii huiusmodi, & aliàs desuper quomodolibet consecrarum, ac possessionum subsecutarum & quorumcumque instrumentorum desuper quomodolibet celebratorum tenores, fru-

Hic Pont. dum erat Cardinalis, in Civitate Montis Alti publicum Gymnasium pro juvenibus in bonis artibus instructione, & educatione, construxit.

Et ad summum Apostolorum asumptus, Collegium pro Scholaribus ex civitate Montis Alti, indigenis, in Civitate Bononiensi, instituit.

Et beneficia
hic expressa,
quorum an-
nui redditus
sunt ducato-
rum trium
millium in
circa supple-
mit, dicto-
que Collegio
unit &
assignat.

Quumque inde perceptorum quantitates et valores, verumque & ultimum Monasteriorum, Prioratum, Ecclesiarum sine cura, seu Capellarum, capellaniae & beneficiorum vacationis modum etiam ex illo quævis generalis reservatio, etiam in corpore juris clausa, etiam per obitum apud Sedem prædictam resulset. Necnon quacumque pensionum annuarum super illorum, seu alicujus eorum fructibus, redditibus & proventibus, seu ipsorum fructuum, reddituum, & proventuum, etiam cum facultate illos & illas transferendi, ac regressu, accessu, & ingressu ad Monasteria, Prioratus, Ecclesias sine cura seu Capellas, capellaniam & beneficia hujusmodi, etiam per cessum vel decessum, ac in quocumque alios eventus reservationum si quæ sint, ac facultatum, tenores, & pensionum hujusmodi quantitates, nominæ & cognomina, ac qualitates eorum, quibus pensiones, fructus, regressus, accessus, & ingressus hujusmodi reservati forsan existunt, præsentibus per sufficienter expressis habentes.

§. 3. Motu proprio non ad Rectoris & Scholarium prædictorum, vel quorumcumque aliorum super hoc nobis oblata petitionis instantiam, sed de mera deliberatione, & ex certa scientia nostra, ac de Apostolica potestatis plenitudine, siue Monasteria & Prioratus Ecclesiarum sine cura, seu Capellæ, capellania & beneficia prædicta, quorum infimul & illis forsan annexorum, fructus, redditus, & proventus, trium millium & sexcentorum ducatorum auri de Camera secundum communem valorem annuum, ut etiam accepimus non excedunt, præmissis siue aliis quibus modis, & ex aliorum quorumcumque personis, seu per similem Antonii vel liberæ Leonardi Episcopi & Achillis ac Augustini Rectoris, necnon Augustini Bondioli, & Herennii prædictorum, vel quorumvis aliorum de Prioratibus, Ecclesiis sine cura, seu Capellis, capellania & beneficiis prædictis, aut cessionis quorumvis, de regimine & administratione Monasteriorum hujusmodi, in dicta Curia, vel extrâ eam, etiam coram notario & testibus sponte factas, aut Prioratus, capellania & beneficia prædicta per affectionem aliorum beneficiorum Ecclesiasticorum, quavis auctoritate collatorum vacant, etiam si tanto tempore vacaverint, quod illorum respectivè collatio & proviso, juxta Lateranensem Statuta Concilii, aut alias canonicas sanctiones, ad Sedem præfatam legitime devoluta. Necnon Prioratus, Ecclesiarum sine cura, seu Capellæ, capellania & beneficia prædicta dispositioni Apostolicæ specialiter, vel aliâ generaliter reservata existent, & proviso Monasteriorum hujusmodi ex quavis causa ad Sedem eamdem specialiter vel generaliter pertineat, & ad dictos Prioratus confueverint, qui per electionem assumi, et sique curæ etiam jurisdictionalis immincat animarum, ac de ipsis Monasteriis, consistorialiter disponi consueverint, seu debeat, ac super eorum regimine & administratione, necnon Prioratibus, Ecclesiis sine cura, seu Capellis, capellania, & beneficiis prædictis inter aliquos lis, seu eorum possessorio molestia, cujus litis statum & merita causæ, ac nomina & cognomina Judicum & colligatorum, eorumque, necnon Antonii & defunctorum prædictorum, ac quorumcumque aliorum provisiones, commendas, concessionem, aliæque jura & titulos, etiam nullos & infectivos, causasque illorum annullativas & infectivas, etiam præsentibus haberi volumus pro expressis pendeat indecisa, Prioratum videlicet S. Antonii prædictum, illiusque nomen, titulum, & denominationem, ac quodcumque onus hospitalitatis ibidem forsan exercende, ac tam in eo quam Monasteriis & Prioratu S. MARIE hujusmodi, illorumque Ecclesiis, claustris, domibus, membris, ædificiis, & pertinentiis prædictos S. Augustini, & Benedicti, ac Camaldulensis & si qui sint alios Ordines, omnemque statum, essentiam, & dependentiam regulares, Apostolica auctoritate renore præsentium perpetuò suppressimus & extinguimus.

§. 4. Dictumque Collegium Montis Alti ex ædibus de Zambeccariis prædictis, quatenus ibidem erectum seu institutum dici vel censi possit, cum omnibus & singulis illius privilegiis, exemptionibus, libertatibus, immunitatibus, concessionibus, indulgentiis, favoribus & gratiis, tam spiritualibus, quam temporalibus, necnon juribus, actionibus, proprietatibus, censibus, montibus, seu illorum locis & portionibus, ac fructibus, aliisque rebus, & bonis illi concessis, & seu ad ejus usum & commodum acquisitis, unitis, applicatis, & appropriatis, ad dictum Prioratum S. Antonii sic suppressum, auctoritate & tenore prædictis, etiam perpetuò transferimus, & seu illud de novo in suppresso Prioratu S. Antonii, illiusque ædibus & ædificiis prædictis pro quinquaginta Scholaribus, quorum octo per ipsius Collegii Protectorem pro tempore existentem undecumque sibi placuerit, & alii octo per Montis Alti, & tres per Firman. & alii tres per Asculan. necnon alii tres per Camerarin. & duo per Ripan. Communitates, aliæque duo per Offidæ, & alii duo per Montis Elpari, necnon alii duo per Montis Floræ, & alii duo per Sanctæ Victorie, & alii duo per Porchia seu Porculæ, necnon alii duo per Montis novem, & alii duo per Patrignoni, aliæque duo per Grottarum ad Mare, ac alii duo per Castignani, & similiter duo per Forchia, alias Furcis, & alii duo per Montis Monachi, & reliquis per Cusignani terrarum seu oppidorum dictæ Provincie Universalitates & homines ex suis civitatibus, terris, seu oppidis hujusmodi, vel si tot ibidem idonei & apti non reperiantur, aliunde eorum respectivè arbitrio nostro, non tamen extrâ dictam Provinciam eligi & nominari.

§. 5. Sicque electi & nominati in eodem Collegio recipi, ac ibidem sub unius Rectoris cura, & gubernio ad septennium & non ultra alii, atque confoveri, ac in universitate Studii generalis ejusdem Civitatis Bonon. artium & Theologiæ, necnon utriusque juris & alii studiis, eis pro cuiusque capacitate præscribendis, operam navare debeant, cum Capella seu Ecclesia, Oratorio, Refectorio, mensa communi, sigillo, bibliotheca, archivio, cæterisque insignibus collegialibus ac membris & officinis necessariis, ac Omnipotentis Dei laudem & gloriam, ac militantis Ecclesiæ exaltationem, subditorumque nostrorum prædictorum in literarum studiis felicem progressum eisdem auctoritate & tenore similiter perpetuò erigimus & instituimus.

§. 6. Idemque Collegium sic translatum, & seu de novo erectum, in locum, jus, & actionem dicti Prioris collegii quoad privilegia, exemptiones, libertates, immunitates, concessionem, indulgentias, favores, gratias, proprietates, census, montes, loca, portiones, res, bona, & alia prædicta, in omnibus & per omnia, perinde ac si Collegio per præsentem erecto, specialiter & expressè ab initio concessa, unita, applicata & appropriata fuissent, ponimus, substituiamus, & subrogamus, ac erectionem & fundationem suppressi Prioratus hujusmodi, necnon hospitalitatis in eo forsan servandæ, cæteraque onera illi quomodolibet incumbencia, in dicti collegii functiones, ministeria & exercitia salvis tamen annversariis, missarum & divinarum officiorum, obligationibus & commissionibus, ac piis defunctorum suffragiis consuetis si quæ sint, ita ut illa per ipsius Collegii capellanos, aut alias congruè adimpleri debeant, convertimus & commutamus, eidemque Collegio Montis Alti, Ecclesiam superius Prioratus S. Antonii hujusmodi, cum sacristia, cimiterio, campanis, crucibus, calicibus, paravis aureis & argenteis, ac ornamentis, paramentis, aliisque sacra & non sacra suppellectile in ea existentibus, necnon ambitu, circuito, claustris, domibus, structuris, ædificiis, membris, adherentiis, annexis, & pertinentiis suis universis, auctoritate, & tempore similibus pariter perpetuò concedimus & assignamus. Monasteria verò & Prioratus S. MARIE de Angelis, ac vacantes Ecclesias seu Capellas, necnon capellaniam & beneficia

Et pro quinquaginta Scholaribus, quorum octo Civitas Montis Alti & alios alia Universitates hic nominatz eligere possint.

Studensibusque alimentis, ac etiam Ecclesiam, sigillum, mensam communem, ac alia insignia Collegia assignat.

Et huic Collegio gratias, indulgentias, & privilegia ac bona concedit.

prædicta, omniâque & singulâ illorum ac dicti præfati Prioratus S. Antonii, & eis respectivè annexorum fructus, redditus, proventus, proprietates, domos, villas, terras, agros, possessiones, fundos, census, decimas, prata, pascua, hortos, & alia bona quæcumque cum iuribus, jurisdictionibus, rebus, & pertinentiis suis quibuscumque etiam si aliâs Monasteria, Prioratus, Ecclesiæ, seu Capellæ vacantes, ac capellania & beneficia prædicta, vel eorum aliqua, ipsi Collegio in priori illius erectione & institutione hujusmodi, vel postea quodcumque unita & annexa forsan reperiantur, sine unionum & annexionum hujusmodi, ac juris illarum vigore quæsitæ præjudicio, sed juri addendo & accumulando, atque antiquum conservando, dictis auctoritate & tenore eisdem perpetuo unimus, anneximus, incorporamus, applicamus & appropriamus. Itâ quod liceat ipsius Collegii Montis Alti Rectori & Scholaribus pro tempore existentibus, illorum omnium corporalem, realem, & actualem possessionem, per se vel alium seu alios, eorum & dicti Collegii nominibus propria auctoritate, etiam abique aliquis iudicis mandato, decreto, aut ministerio ac spolii & attentatorum vitio, necnon aliquis censuræ vel pœnæ incurfu libere apprehendere, aut jam etiam Cameræ & seu Collegii hujusmodi nominibus, etiam litteris Apostol. desuper non expeditis apprehensam continuare, & perpetuo retinere, eaque regere & administrare, ac fructus, redditus, proventus, jura, obventiones, & emolumenta quæcumque inde provenientia percipere, exigere, & levare, ac in suos, dictique Collegii & illius Ecclesiæ seu capellæ usus, utilitatem, & necessitates convertere, necnon Monasteriis, Prioratibus, Ecclesiis, Capellis, Capellaniæ, & Beneficiis unitis prædictis per presbyteros seculares, vel de superiorum suorum licentia cujusvis Ordinis regulares, idoneos inibi juxta statuta desuper edenda ponendos & amovendos in divinis deserviri facere, diocesanorum locorum vel quorumvis aliorum licentia desuper minimè requirita.

§. 7. Insuper Collegium Montis Alti hujusmodi, illiusque pro tempore existentes Rectorem, Scholares, Capellanos, œconomos, Officiales, Ministros, & personas, ac bona mobilia & immobilia, præsentia & futura, cujuscumque qualitatē & quantitatis existentia, ac ubilibet consistentia, ab omni jurisdictione, dominio, superioritate & potestate pro tempore existentium, nostri & dictæ Sedis in prædicta civitate Bononiensis Legati de latere, & Archiepiscopi Bononiensis necnon Gubernatoris, Auditoris, Turoi, Antanorum, Vexilliferi, Potestatis, Quadraginta virorum reformatorum, ac Regiminis & Senatus ipsius civitatis Bononiensis. Necnon Rectoris Universitatis Studii generalis ejusdem, aliorumque Legatorum, Archiepiscoporum, Ordinariorum locorum, Gubernatorum, & Potestatum, eorumque Vicelegatorum, Locatenentium, Officialium, Judicum, & quorumcumque aliarum personarum ubilibet constitutarum, ac quavis auctoritate & dignitate, tam Ecclesiastica quam mundana, etiam Cardinalatus honore fulgentium, ac etiam aquis, fontibus & fluminibus præsentium, ac eorum curiarum & tribunaliū.

§. 8. Idemque Collegium ab Annatarum, quindenniorum, communium, minorum, ac aliorum iurium & servitorum dictæ Cameræ, & quibuscumque etiam S.R.E. Cardinalibus, & dictæ Curie officialibus, etiam in annatis, quindennis, communibus, minutis, & aliis iuribus prædictis participantibus, eorumque Collegiis, ratione prædictarum, & quorumcumque aliarum unionum, applicationum, & concessionum, eidem Collegio, & prædictis, & quibuscumque aliis Monasteriis, Prioratibus, Beneficiis, rebus, & bonis Ecclesiasticis hæcenus & deinceps quomodolibet pro tempore factarum, aut aliâs quomodolibet debitarum.

§. 9. Etiam ipsum Collegium in propriis suis bonis & rebus, presentibus & futuris, quoniam illius ratione Rectorem, Scholares, Capellanos, Œconomos,

officiales, & Ministros, ac cum eis contrahentes, & etiam pro parte atque portione colonica, quam ex proprietatibus & bonis ipsius Collegii pro tempore percipient, illius colonos, arrendatarios, censuarios, & emphyteutas, non tamen proprietates & bona hujusmodi in emphyteusim perpetuâ, aut ultrâ tertiam nominationem seu generationem, vel centum annos possidentes, à quorumcumque pedagiorum, dationum, vestigialium, gabellarum, angariarum, bullettinorum, talliarum, custodiarum, taxarum, equorum, tam vivorum quam mortuorum, quateni carnis, portus Anconitani, tertiariarum unius scuti & medii respectivè pro centenario, quartum, collectiarum, præbendarum, ponderum, molendinorum, focularium, pascuorum, herbaticorum, pecudum, & aliorum animalium, sicutum & subsidiorum, etiam triennialium, charitativorum, ac quorumcumque aliorum similium vel dissimilium, onerum & gravaminum, tam ordinariarum quam extraordinariorum, ac realium, personarum, & mixtorum, quibuscumque nominibus & vocabulis nuncupatorum, etiam hic de necessitate exprimendorum, per nos & quoscumque alios Romanos Pontifices prædecessores & successores nostros ac Sedem & Cameram prædictas, ipsiusque Sedis Legatos, Vicelegatos, Gubernatores, Commissarios & quoscumque alios, quavis auctoritate & potestate fungentes, etiam pro orthodoxæ fidei defensione, ac Status Sanctæ Romanæ Ecclesiæ conservatione, divini cultus augmento, necnon basilicæ Principis Apostolorum Fabrica, Cruciatæ sanctæ, ac expeditione contra Infideles & rebelles, necnon Ecclesiarum, murorum, pontium, viarum, & stratarum constructione & restauratione, ac aquarum, fontium, & fluminum deductione, pauperumque subventionem, necnon Sedis & Cameræ prædictarum necessitatibus, ac ex quibuscumque aliis cogitatis, inexcogitatis, etiam quantumvis maximis, urgentissimis, & privilegiatis causis, etiam Sedis & Cameræ eadem, ac quorumcumque provinciarum, civitatum, & terrarum, publicam utilitatem & commoditatem concernentibus, etiam motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, etiam consistorialiter, nunc & pro tempore quomodolibet impostorum & imponendorum, etiam à quibuscumque aliis similibus Collegiis, ac Hospitalibus & piis locis, quovis exemptionis privilegio gaudentibus, exigi & præstari solitorum, etiam ratione carniū, viorum, granorum, frumentorum, hordeorum, leguminum, frugum, lignorum, pannorum, librorum, chartarum, farinæ, & quorumcumque aliarum rerum ad dicti Collegii Montis Alti, & illius Ecclesiæ seu Capellæ, ac Rectoris Scholarium, Capellanorum, Œconomorum, Officialium, Ministrorum, & personarum pro tempore existentium usum, in quantumvis magna summa & quantitate emendorum, ac etiam ex toto Statu Ecclesiastico, & quibuscumque provinciis, civitatibus, & locis, tam intus quam extrâ dictum Statum consistentibus, sive per terram, sive per mare & aquam dulcem, & aliâs quomodolibet conducendorum, cujuscumque generis, quantitatis, qualitatis, valoris, & speciei fuerint, exactione, solutione, præstatione & contributione, necnon quorumcumque aliorum, etiam juxta Concilii Tridentini decreta, ubilibet institutorum & institutorum Collegiorum vel Seminariariorum puerorum Ecclesiasticorum & aliâs quomodolibet nuncupatorum, & qualificatorum, ac Hospitalium & piorum locorum subventionem, auctoritate & tenore prædictis etiam perpetuo eximimus & liberamus, ac sub B. Petri & dictæ Sedis, atque nostra & pro tempore existentis Romani Pontificis protectione fulcimus, nobisque & eidem Sedi immediatè subjicimus. Ac exemptionem, liberationem, susceptionem & subjectionem hujusmodi in quocumque foro & tribunali, ac dicta Camera, etiam respectu cujuscumque solutionis illi faciendæ, semper favorabiles censi debere, & de illis in quacumque causa, lite, & controversia eam interpretationem extensivam habendam esse, quæ pro aliâ quantumvis pia & privilegiata, ac ad

bonis, illiâque Rectoribus, Scholaribus, & officialibus omnes, & cum eis contrahentes, à pedagiis, & impostis ac subsidiorum solutione eximit.

Collegium prædictum, ejusque bona & personas, ab Archiepiscopi, & Legati Bononiensis, aliorumque iudicum jurisdictione eximit.

Exemptionem quoque ab Annatarum, & aliorum quorumcumque onerum solutione concedit.

Idemque Collegium in propriis

Privilegia
Studii & pio-
rum loco-
rum Bono-
nien. Colle-
gio elargi-
unt.

Ipsi etiam
& eorum co-
lonis & con-
ductibus &
emphyteu-
sis frumenta
& fruges, ex
possessioni-
bus d. Colle-
gii, d. om-
nibus locis
Status Ecce-
siastici absq;
licentia &
soluzione
extrahendi
ubique in d.
Statu ven-
dendi aucto-
ritate con-
cedit.

Tu vide con-
stit. 10. S. D.
N. Pauli V.

Proteſtorem
& iudicem
d. Collegii
Cardin. de
Monte Alto.
& poſt eum,
alii de ipſius
parentela, ſin
autem anti-
quorem
Card. ex Pro-
vincia, Mar-
chia, vel ſi
nullus fuerit
dum Card.
d. Collegio
ſominan-
tibus ex p-
conſtituit.

pios uſus deſtinata & applicata cauſa fieri poſſet de-
claramus.

§. 10. Ipſi quoque Collegio Montis Alti, ac il-
lius Reſtori, Scholaribus, Capellanis, Oeconomis,
Officialibus, Miniſtris, perſonis, ut omnibus &
ſingulis privilegiis, exemptionibus, libertatibus, fa-
voribus, cæteriſque gratis, tam ſpiritualibus quàm
temporalibus, quibus Univerſitas Studii generalis
Bononiensis huiusmodi, necnon alia collegia & pia
loca in diſta civitate Bononiensis inſtituta, illorum-
que Reſtores, Scholares, Capellani, Oeconomi, Of-
ficiales, Miniſtri, & perſonæ, de iure vel conſuetu-
dine, aut ex privilegio, vel alias quomodolibet u-
tuntur, potiuntur & gaudent, ac uti, potiri, & gau-
dere poſſunt & poterunt quomodolibet in futurum,
non ſolum ad eorum inſtar, ſed æquè principaliter,
ac pariſormiter, in omnibus & per omnia uti,
potiri, & gaudere.

§. 11. Necnon tam ipſi quàm eorum coloni, ar-
rendarii, livellarii, conductores, & emphyteu-
tæ præſati, vinum, triticum, hordeum, legumina,
blada, frumenta & cuſſis generis fruges, ac grana,
ex quibuscumque proprietatibus, poſſeſſionibus &
bonis diſti Collegii, illiſque membrorum & con-
nexionum quoruncumque provenientia, de quibus-
cumque provinciis, terris & locis, nobis & Roma-
ne Eccleſiæ mediata vel immediate ſubjectis, cuſſis
ſicentia deſuper minimè requiſita, & abſque ali-
cuius pecuniæ, vel alterius rei ſolutione, & præſta-
tione propterea faciendâ, aut cenſuræ, vel pœnæ
incurſu extrahere, & extrahi facere, ac ad dictum
Collegium pro illius uſu conducere, & etiam illa in
diſta civitate Bononiensis illiſque comitatu, nec-
non univerſo Statu Eccleſiaſtico vendere, diſtrahe-
re, & de illis ad eorum libitum diſponere liberè &
licite valeant, eiſdem auctoritate & tenore ſimiliter
perpetuò indulgemus. Diſtrictius quoque in virtute
ſanctæ obedientiæ inhibemus Legatis Archiepiſco-
pis, Episcopis, & aliis locorum Ordinariis, necnon
Gubernatoribus, Auditoribus, Antianis, Vexillife-
ro, Potellati, Quadraginta viris, Reformato-
ribus, Regimini, Senatui, Vicelegatis, Locatenentibus,
Vicariis, Officialibus, Iudicibus, & aliis præſatis,
eiſdemque S. Romanæ Eccleſiæ Camerario, ac di-
ſta Cameræ Theſaurario, Clericis, Præſidentibus
& Commiſſario, necnon Annona Præſectis, ac peda-
gogorum, dario-um, veſtigialium, gabellarum, an-
gariarum, bolletinorum, decimarum, tallæarum,
taxarum & aliorum onerum ac ſubſidiorum prædi-
ctorum Appaltatoribus, dohaneriis, exactoribus,
datariis, ac quibuſvis aliis perſonis cuſſuſcumque
ſtatus, gradus, ordinis, conditionis, & præminen-
tiæ exiſtentibus, ac quacumque auctoritate & po-
teſtate fungentibus, ne quoruncumque privilegio-
rum, indulgentiarum, & litterarum, eis ſub quibuſvis
tenoribus & formis conceſſorum & concedendorum,
ſeu etiam Annona vel abundantia, aut cuſſis
viſis neceſſitatis, vel quovis alio prætextu Collegium
Montis Alti, illiſque Reſtorem, Scholares, Capel-
lanos, Officialibus, Miniſtros, & perſonas huiusmodi,
ſeu eorum aliquem, ſuper præmiſſis quomodolibet
moſteſtare, perturbare, vel inquietare audeant ſeu
præſumant.

§. 12. Ut autem ipſius Collegii Montis Alti bo-
no regimini, gubernio, & conſervationi opportu-
nè conſulatur, dilectum ſilium noſtrum Alexan-
druſ S. Euſtaſchii diaconum Cardinalem de Monte
Alto nuncupatum, ex ſore germana ſecundum
carnem pronepotem noſtrum, & eo vita ſuncto,
alium eiſdem S. R. E. Cardinalem ex noſtra fami-
lia & parentela, vel in ejus defectum ex diſta Provin-
cia Marchiæ Anconitanæ oriendum antiquiorem
Cardinalem, ſeu, ſi nullus fuerit, alium ex eiſdem
Sanctæ Romanæ Eccleſiæ Cardinalibus quem Reſ-
tor & Scholares præſati, ſeu eorum major pars di-
xerint eligendum, eiſdem Collegii Montis Alti,
illiſque perſonarum, rerum, bonorum, iurum, &
privilegiorum Proteſtorem, defenſorem & conſer-
vato-rem, ac iudicem ordinarium, cuius conſilio &

ope omnia ſupradicta, & quæcumque alia in iis &
circa ea neceſſaria & opportuna, ſtatuantur & ordi-
nentur, conſtituimus & deputamus.

§. 13. Necnon Alexandro Cardinali, ac pro tem-
pore exiſtenti Proteſtori Collegii Montis Alti huius-
modi, illius Reſtorem, Capellanum, Oeconomum,
Officialibus, Advocatos, Procuratores, cæteriſque
miniſtros deputandi & amovendi, ac loco amoven-
dorum alios ſufficiendi.

§. Necnon quæcumque, ſtatuta & ordinatio-
nes, Capitula & decreta ad eiſdem Collegii Montis
Alti, illiſque perſonarum, rerum & bonorum
ſpiritualium & temporalium curam, regimen, gu-
bernium, directionem, & adminiſtrationem, ac
Scholarium prædictorum receptionem, admiſſio-
nem ætatem, qualitates, viſum, amicum, inſtruccio-
nem, diſciplinam, & ſtudii curſum pertinentia,
ſicita tamen & honeſta, ac ſacris Canonibus, & diſti
Concilii decretis non contraria, quæ eo ipſo Apo-
ſtolica auctoritate prædicta confirmata & approbata
ſint & eſſe cenſeantur, & ab omnibus ad quos pro
tempore ſpectabit, etiam ſub pœnis in contraveni-
entes ſtatue-ndis, obſervari debeant, faciendi & e-
dendi, ac illa quoties pro eorum & temporum qua-
litate, ſeu alias expediens videbitur immutandi,
correctendi, moderandi, reformandi, & etiam alia
ex integro condendi.

§. 15. Omneſque & ſingulas lites, cauſas & dif-
ferentias, tam civiles quàm criminales ac mixtas
dictum Collegium Montis Alti, illiſque res, bona,
& perſonas quomodolibet concernentes, tam active
quàm paſſive, etiam contra alia Collegia & pia lo-
ca etiam æquè vel magis privilegiata, eorumque
res, bona, & perſonas, vel è converſo, ac ultro ci-
troque ad invicem, vel aliàs quomodolibet motas
& movendas, ac etiam per appellationem, & in qua-
cumque inſtanti coram quibuſvis Iudicibus intro-
ductas & iudeiciſas pendentes, etiam illas ab ipſis
Iudicibus avocando, per ſe vel ejus Viceproteſto-
rem, aut alium ſeu alios quos ad hoc duxerit depu-
tandos, etiam ſummariè, ſimpliciter, & de plano, ac
ſine ſtrepitu & figura iudicii, ſed ſola facti veritate
inſpecta, ac etiam manu Regia cum omnibus & ſin-
gulis incidentibus, dependentibus, emergentibus,
annexis, & connexis, ac toto negotio principali,
etiam privativè quoad omnes & ſingulos Iudices
ordinarios & delegatos, eorumque curias & tribu-
nalia, Eccleſiaſtica vel ſecularia, audiendi, cognof-
cendi, & ſine debito terminandi.

§. 16. Necnon quocumque intereſſe habentes,
tam in diſta curia quàm extrà eam, etiam per edi-
ctum publicum, conſiſto ſibi ſummariè, de non tu-
to accèſſu citandi, & quibuſvis etiam eiſdem curiæ
Iudicibus & perſonis, quibus & quoties opus fuerit,
ſub ſententiis, cenſuris, & pœnis Eccleſiaſticis, ac
etiam pecuniariis de quibus eiſvidebitur inhibendi,
& in eventum non partitionis ad declarationem in-
curſus ſententiarum, cenſurarum, & pœnarum hu-
juſmodi procedendi, ac ſententias deſuper ferendas
debitæ executioni demandandi, ſeu demandari fa-
ciendi, contradictores quolibet & rebelles per ſi-
miles ſententias, cenſuras, & pœnas, aliæque op-
portuna iuris & facti remedia compellendi, ac etiam
auxilium brachii ſecularis ad hoc invocandi.

§. 17. Necnon quæcumque dubia & difficulta-
tes, ſi qua præmiſſorum occasione quomodolibet
oriiri contigerit, declarandi & interpretandi, omnia-
que & ſingula in eiſdem præmiſſis, & circa eas quo-
modolibet neceſſaria & opportuna faciendi, ge-
rendi, exercendi, & exequendi, etiam omni &
quacumque appellatione remota, plenam, liberam,
& omnimodam facultatem, poteſtatem, & aucto-
ritatem perpetuè tribuimus & elargimur.

§. 18. Decernentes, præſentes litteras & in eis
contenta quæcumque nullo umquam tempore, etià
pro eo quod cauſæ propter quas hæc omnia facta
fuerint coram locorum Ordinariis, etiam tam-
quam à Sede prædicta delegatis, vel alibi examina-
ta, verificata, & approbata, ac ipſorum Monafterio-

Proteſtoris
facultates, Of-
ficiales de-
putandi.

Statuta con-
dendi.

Lites d. Col-
legium, ejul-
que perſonas
& bona con-
cernentes,
tam active
quàm paſſive,
etiam contra alia
Collegia &
pia loca mag-
is privilegia-
ta &c. co-
gnofcendi.

Iudicibus &
aliis inhi-
bendi, &
inobedien-
tes coercen-
di.

Dubia præ-
miſſorum
occasione
ſutura decla-
randi.

Omnique
alia deſuper
neceſſaria
&c. faciendi.

Claufulas
præſervati-
vas huius con-
ceſſioni ap-
ponit.

rum, Prioratum, & Ordinum Superiores, & quicumque alii interesse habentes ad id vocati non fuerint, nec eisdem præmissis consenserunt, sive alias ex quibuscumque causis quantumvis legitimis & iudicis, de subreptionis vel obreptionis, aut nullitatis vitio, seu intentionis nostræ, vel quopiam alio defectu notari, impugnari, retractari, in jus vel controversiam revocari, ad terminos juris reduci, vel adversus illa quodcumque juris, facti, vel gratiæ remedium impetrari posse, neque sub quibuscumque similibus vel dissimilibus gratiarum etiam suppressionum, unionum, & applicationum, effectum suum plenarium nondum sortitarum, revocationibus, suspensionibus, limitationibus, aut aliis contrariis dispositionibus, per nos vel alios Romanos Pontifices successores nostros, etiam in crastinum assumptionis ipsorum successorum, ad summi Apostolatus apicem, sub quibuscumque verborum expressionibus & formis, etiam motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus pro tempore factis comprehendendi, sed tamquam pro fundatione & seu dotatione dicti Collegii Montis Alti ad bonarum artium cultum instituti concessa minimè comprehendendi, ac semper ab illis excipi, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum & eum in quo antea quomodolibet erant statum restituta, reposita, & plenariè reintegrata, ac de novo etiam sub datum per Protectorem, Rectorem, & Scholares pro tempore existentes præfatos quodcumque eligenda de novo concessa fore & esse, sumque plenarium effectum sortiri debere, nec quemquam ad easdem præfatas literas in Camera præfata juxta constitutionem pia memoris Pii Papæ IV. etiam prædecessoris nostri desuper editam, aut alias quodcumque præsentandum, insinuandum, & registrari faciendum teneri, neque illas propter irrisas, fed omnino valere & suffragari, perinde ac si constitutio prædicta, vel alia contraria minimè emanassent.

§. 19. Sique per quoscumque Judices ordinarios & d. legatos, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac prædictæ Sanctæ R. E. Cardinales etiam de latere Legatos, sublatæ eis & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, in quavis causa & instantia iudicari ac definiri debere, necnon quoad suppressum Prioratum S. Antonii quatenus per resignationem prædictam vacaverit, & Ecclesiam seu Capellam S. Joannis Baptiste ac capellaniam & beneficia hujusmodi prout est sibi attentatum forsan est hæcenus vel in posterum. Quo verò ad Monasteria ac Prioratum B. MARIE, & Ecclesiam seu Capellam S. Antonii de Diola, seu Diolo, omniâque alia præmissa, etsi alias quam per dictam resignationem vacet suppressum Prioratum hujusmodi ex nunc irritum & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 20. Quocirca venerabilibus fratribus nostris Archiepiscopo Bononiensi, & Episcopo Montis Alti, ac dilecto filio causarum Curie Cam. Apostolicæ generali Auditori, motu, scientia, & potestatis plenitudine paribus per Apostolica scripta mandamus, quatenus ipsi vel duo aut unus eorum, per se vel alium seu alios, præfentes literas & in eis contenta quæcumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte pro tempore existentium Protectoris, Rectoris, Scholarii, Capellani, Oeconomorum & personarum Collegii, ac aliorum interesse habentium prædictorum, vel aliqujus eorum fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra præfentes literas, & in eis contenta hujusmodi ab omnibus ad quos spectat, & pro tempore spectabit, inviolabiliter observari, ac pro tempore existentes Protectorem, Rectorem, Scholares, Capellanos, Oeconomos, & personas Collegii hujusmodi, ac alios interesse habentes illis pacificè frui & gau-

dere. Non permittentes, ipsos vel eorum quempiam per quoscumque desuper quomodolibet indebitè molestari, contradictores quoslibet & rebelles per sententias, censuras, & penas Ecclesiasticas, aliâque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita compellendo, necnon legitimis super his habendis servatis processibus sententias, censuras, & penas ipsas etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 21. Non obstantibus præmissis ac sæcl. recordat. Bonifacii Papæ Octavi etiam prædecessoris nostri, etiam qua cavetur expressè ne quis extrâ suam civitatem, vel diocesim nisi in certis exceptis casibus, & in illis ultrâ unam dietam à fine suæ diocesis ad iudicium evocetur, seu ne Judices à Sede prædicta deputati, extrâ civitatem vel diocesim in quibus deputati fuerint contrâ quoscumque procedere, aut alii vel alii vices suas committere audeant seu præsumant, & in consilio generali edita de duabus dietis, dummodò ultrâ tres dietas aliquis auctoritate præsentium ad iudicium non trahatur, ac nostris, de non tollendo jure quæsto & unionibus ad partes committendis vocatis quorum interest, & exprimendo valore etiam beneficii cui aliud uniri petitur, ac Lateranensis & aliorum etiam generalium & ultimo celebratorum Conciliorum, uniones perpetuas, nisi in casibus à jure permisis fieri, ac etiam beneficia unius diocesis cum aliis beneficiis, Ecclesiis, Collegiis, vel locis alterius diocesis uniri prohibentium, ac reg. mem. Pauli Secundi & Pauli Quarti, aliorumque Romanorum Pontificum similiter prædecessorum nostrorum de rebus Ecclesiæ non alienandis, & alienatis recuperandis. Necnon prædicti Pii de gratiis interesse dictæ Camere concernentibus infra certum tunc expresse tempus in ea registrandis, ac sanctæ mem. Julii Secundi ac Julii Tertii pariter Romanorum Pontificum prædecessorum nostrorum contrâ apprehendentes possessionem bonorum prætextu quarumcumque gratiarum, super quibus literæ Apostolicæ integraliter expeditæ non fuerint. Aliisque Apostolicis, ac in provincialibus, synodalibus, & universalibus Conciliis editis, specialibus vel generalibus constitutionibus & ordinationibus, necnon Camere Urbis civitatum, provinciarum, locorum, Monasteriorum etiam S. Antonii de Sancto Antonio à quo primo dictus Prioratus dependet, Prioratum & Ordinum præfatorum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque indultis, & literis Apostolicis, Dilecto filio nostro Gabrieli tit. S. Laurentii in Lucina presbytero Cardinali Paleoto nuncupato, super Monasteriis, Prioratibus, Præposituris, dignitatibus, cæterisque beneficiis Ecclesiasticis in civitate & diocesi Bononiensi, consilientibus, ad ejus collationem, provisionem, vel quamvis a'iam dispositionem ratione Ecclesiæ Bononiensis, cui ex dispensatione Apostolica præfides, vel alias quomodolibet pertinentibus, non nisi per eum vel Vicarium ab eo deputatum, seu de ipsius Gabrielis Cardinalis consensu conferendo, seu quæ de illis provideri vel disponi aliter non possit. Necnon Legatis, Archiepiscopis, Episcopis, Ordinariis, Gubernatoribus, Auditoribus, Antianis, Vexillifero, Potestatibus, Quadraginta viris reformatoribus, regimini Statui, Senatui, Vicelegatis, Locatentibus, Vicariis, Officialibus, Judicibus, Camerario, Præfidentibus, Clericis, Thesaurariis, Commissariis, Appaltatoribus, Dohanneriis, Dataris, Præfectis, Executoribus, & aliis personis prædictis, necnon ipsius Bononiensis, aliarumque civitatum & locorum, Communitatibus, Universitatibus, & hominibus, necnon Camere, Urbi, civitatibus, provinciis, oppidis, locis, monasteriis, prioratibus & ordinibus prædictis, ipsorumque Monasteriorum, Prioratum, & Ordinum Abbatibus, Superioribus, Conventibus & per-

Clausulas
derogatorias
subnecti.

Hanc Paul.
IV. conf. &
alias similes
indicavi in
ipsius conf.
I. fol. 819.
Tom. I.

Decretum
irritans ad-
dit.

Executores
hujus consti-
tutus deputat
& facultates
concedit.

sonis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, necnon irritantibus & aliis decretis, in genere vel in specie, per quoscumque Rom. Pontifices predecessores nostros, ac nos & Sedem prædictam, etiam motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, ac etiam consistorialiter, etiam ad Imperatoris, Regum, Reginarum, Ducum, vel aliorum Principum instantiam, vel eorum contemplatione & intuitu, ac alias quomodolibet, etiam iteratis & multiplicatis vicibus, etiam contra exemplum concessis, approbatis, & innovatis, etiam si in eis caveatur expresse quod illis etiam vigore clausulæ implicitæ derogationis latissime extendenda, ultra quam in suppositione desuper signata expressum fuerit, etiam per quoscumque literas Apostolicas, etiam qualvis clausulas, generales vel speciales, etiam derogatoriis derogatorias, efficaciores & insolitas, ac etiam irritantia & alia decreta, sub quacumque verborum expressione in se continentia, nullatenus derogari, neque derogatum censeri possit, nisi illorum tenores de verbo ad verbum nihil penitus omisso inserti, ac huiusmodi derogationes consistorialiter, & de Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalium consilio, ac cum expressione consensum in huiusmodi privilegiis & indultis, ac desuper confectis literis expressarum factæ, & per trinas distinctis vicibus iis quorum interest legitime intimata & insinuatæ fuerint, ac tunc demum ipsorum interesse habentium ad id expressum accesserint assensus, & aliter factæ derogationes nemini suffragentur. Quibus omnibus etiam si alias de illis, eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, expressa, & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda esset, tenores & formas, ac causas propter quas concessa fuerunt, necnon decreta in illis appposita præsentibus ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata inserti forent pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, ac sufficienter derogatum esse, & censeri decernimus, ita ut contraria quæcumque nullatenus obstant, contrariis quibuscumque; aut si aliqui super provisionibus sibi faciendis de Prioratibus, ac huiusmodi speciales vel aliis beneficiis Ecclesiasticis in illis partibus generales dictæ Sedis, vel Legatorum eius literas impetrarint, etiam si per eas, ad inhibitionem, reservationem & decretum, vel alias quomodolibet sit processum. Quas quidem literas & processus habitos per eandem & inde secuta quæcumque, ad Monasteria, Prioratus, Ecclesias sine cura, seu Capellas, Capellaniam & beneficia huiusmodi volumus non extendi, sed nullum per hoc eis quoad affectum Prioratum, sed beneficiorum aliorum præiudicium generari; seu si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per literas Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem. Et quibuslibet aliis privilegiis, indulgentiis, & literis Apostolicis, generalibus vel specialibus quorumcumque tenorem existant, per quæ præsentibus non expressa vel totaliter non inserta effectus eorum impediri valeat quomodolibet vel differri, & de quibus quorumque totis tenoribus de verbo ad verbum habenda sit in nostris literis mentio specialis. Proviso quod propter posteriores unionem, annexionem, incorporationem, nostras prædictas, Monasteria in spiritualibus non ledantur, & in temporalibus detrimenta non sustineant, ac Prioratus S. MARIE Ecclesiæ sine cura seu Capellæ, Capellanie & beneficia huiusmodi debitis non fraudentur obsequiis, & animarum cura in eis, si qua in illis imminet nullatenus negligatur, sed illorum ac Monasteriorum prædictorum congruè supportentur onera consueta. Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum Anno Incarnationis Dominicæ 1588. 15. Kal. Decembris, Pontificatus Nostri Anno quarto.

Fructus beneficiorum Regni Neapolis, tempore obitus Beneficiatorum, qui cum Camera Apost. super spoliis transegerunt, pendentes vel non exacti, non ad eorum hæredes, vel Capitulum & Clerum, sed ad ipsam Cameram spectant.

Ad materiam Spoliorum vide supra const. 7. Jul. II. Cùm sicut, fol. 793. tom. 1. cum aliis ibi indicatis.

SIXTUS PAPA V.

Ad perpetuam rei memoriam.

Cum sicut accepimus variz dubitationes, ac etiam contentiones inter modernum & pro tempore existentem nostrum & Sedis Apostolicæ Nuntium in Regno Neapolitano ex una, & Clerum singularem civitatum & diocesum ejusdem Regni, qui super spoliis clericorum & presbyterorum beneficiorum, ac aliorum dicti Regni ab humanis pro tempore decedentium, cùm nobis & Cam. nostra Apost. transegerunt, & concordarunt, eorumque hæredes, prætendentes fructus beneficiorum Ecclesiasticorum, clericorum & presbyterorum d. Regni ab humanis pro tempore decedentium tempore eorum obitus pendentes, & maturatos, etiam à solo minime separatos, seu à quibus id contingit nondum exactos, ad clerum seu capitulum, vel hæredes beneficiorum huiusmodi, non autem Cameram prædictam spectare, quamvis in cedulis transactionum super spoliis huiusmodi, mentis intentionisque nostræ fuerit eisdem fructus pendentes quorumcumque beneficia Ecclesiastica in quovis mense, pro tempore vacantium, etiam juxta fæl. record. Julii Papæ III. prædecessoris nostri constitutionem desuper editam, eidem Cameræ nostræ reservare, eoque à die obitus beneficiorum, usque ad diem capte possessionis per illorum successores in dictis beneficiis decurrendos, eidem Cam. applicare, in dies oriri soleant.

§. 1. Nos igitur pro nostri Pastoralis Officii munere, dubitationes & contentiones, seu controversias huiusmodi è in medio tollere volentes, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, omnes & singulos fructus, redditus, & proventus quorumcumque beneficiorum Ecclesiasticorum, cum cura & sine cura, secularium & etiam quorumvis Ordinum regularium in dicto Regno consistentium, etiam in quocumque mense pro tempore vacantium, tam antè obitum illorum possessorum pendentes, & maturatos, ac etiam à solo minime separatos, seu nondum exactos, quàm etiam post eorum obitum usque ad diem capte possessionis dictorum beneficiorum per successores in eis maturandos, & seu decurrendos, pro rata temporis à die adeptæ possessionis eorumdem beneficiorum, ad ipsam Cameram nostram spectare, illisque eidem Cameræ applicandos esse, & illos per venerabilem fratrem Marcum Antonium Episcopum Fulginatensem, modernum, & pro tempore existentem Nuntium Apostolicum in Regno prædicto, pro eadem Camera, & ejus nomine percipi, exigi, & levare, ac etiam pro faciliiori illorum exactione si videbitur in fine anni, cum successoribus in dictis beneficiis computandi, dividendi, & illorum sic divisorum, quemlibet eorumdem Notarii, seu ab eo deputatorum commissariorum in dictis beneficiis successorum ratas partes, modo & forma præmissis in dictis beneficiis respectivè tangentes, etiam percipere, exigere, & levare posse & debere declaramus. Ac de cætero perpetuis futuris temporibus, ita & non aliter in præmissis observari volumus, ac etiam perpetuè statuimus & ordinamus.

§. 2. Omnèque & singulas lites, causas, quaestiones, & controversias super præmissis fructibus, & illorum perceptione inter ipsum Nuntium ex una,

X C.

Edita A. D.
1588.

IDubium extortum circa spolia in Regno Neapolitano, an scilicet fructus beneficiorum pendentes, vel non exacti spectant ad Cam. Apostolicam.

Declaratio & decisio supra dicti dubii, ad favorem Cameræ.

Litium extinctio.

& quod

& quovis Cleros heredes, & successores dictorum beneficiariorum defunctorum, coram quibuscumque Judicibus, etiam ordinariis & delegatis hactenus quomodolibet introductas & adhuc indecise pendentes partibus, ex altera, in eisdem statu & terminis in quibus reperiuntur, ab eisdem Judicibus ad nos advocamus, illasque penitus extinguimus & annullamus, sicque per quoscumque Judices &c.

§. 3. Non obstantibus litis pendencia, & aliis premissis, ac quatenus opus sit nostra de non tollendo jure quæsto, & quibuscumque aliis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, cæterisque contrariis quibuscumque. Volumus autem &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die prima Januarii 1589. Pontificatus nostri anno quarto.

Dei vocatione, sed potius Sathanæ dolis decepti, prætextu devotionis & pietatis, rem quidem sacram & divinum munus, intempestive tamen & inordinatè affectantes, seu temporale aliquod commodum aut lucrum sibi proponentes, vel nimia simplicitate & imperitia, malitiavè aut fraude ad suscipiendum Clericalem characterem, aliisque ordines antè ætatem legitimam, vel à non suo Episcopo, aut non prævio debito examine & approbatione, sive alias minus ritè, vel etiam temerè se ingerant. Debent sanè Episcopi paterna charitate & prudencia eorum saluti, qui sæpe nesciunt quid petant, melius etiam quam ipsimet postulant, & salubrius consulere, nec quid flagitent, quam quid expediat considerare; summa verò diligentia providere, tum in alienæ diocesis subditis ordinandis, ne quemquam promoveant sine eorum Ordinarii literis dimissoriis, tum in recognoscendis ipsis literis, ne falso aut ab aliquo, qui auctoritatem illas concedendi non habeat, confectæ sint, cum denique in examinandis natalibus, ætate, vita, moribus, scientia, idoneitate, titulo, & reliquis qualitatibus, ne quid in sue vel alienæ diocesis personis, ad Clericalem honorem, & Ecclesiasticos ordines promovendis desideretur eorum; quæ ex præscripto sacrorum Canonum requiruntur.

§. 2. Ut igitur Præsules Ecclesiarum intelligant, si in re tam gravi & tanti momenti, culpa per negligentia peccaverint, se non modò in tremendo Dei iudicio, verum in hoc quoque sæculo Romani Pontifici suæ villicationis rationem fore reddituros, præfenti constitutione perpetuò statuimus & ordinamus, ut si in posterum Antistes aliqui, Episcopali, Archiepiscopali, Primatiali, vel etiam Patriarcali dignitate præfulgens, aut Abbas ad primam tonsuram, minorisque ordines suis subditis conferendos à Sede Apostolica auctoritatem habens, quemcumque secularem, vel cuiuscvis Ordinis aut militiæ regularem, ex aliquo crimine, vitio, aut defectu, seu aliâ inhabilem vel irregularem existentem, vel extrà tempora à jure statuta, vel absque veris dimissoriis seu Ordinarii literis, aut per saltum, vel furtivè, aut quoad seculares sine titulo sufficientis beneficii, vel patrimonii, aut antè ætatem per sacri generalis Trid. Concilii decreta, primæ tonsuræ, ac cuicque ordini præscriptam, aut non servatis temporum interstitiis, ità ut aliquis unico die seu continuatis diebus ad plures ordines sacros, vel post unum ordinem susceptum sine causa rationabili, antequàm tempus ab eodem Concilio Tridentino præfixum elabatur ad alium ordinem promoveatur, sine dispensatione, aut indulto Apostolico, Clericali characterem non legitime ingesserit, aut ad ordines majores vel sacros, ut præfatur, vel alias male promoverit, sive id scierit sive ignoranter fecerit, nisi debita diligentia adhibita iustus error, & probabilis facti ignorantia eam excuset, ut in quo deliquit in eo puniatur, à quorumcumque ordinum, atque adeò ipsius tonsuræ, & ab executione omnium numerum Pontificalium, eo ipso suspensus, & ab ingressu Ecclesiæ interdictus existat, aliisque gravioribus penis nostro & pro tempore existentis Rom. Pontificis arbitrio puniatur. Quod si spreta huiusmodi suspensione & interdicto, in premissis se temerè ingesserit, etiam à regimine & administratione suæ Ecclesiæ seu Monasterii, & à perceptione fructuum mensæ ejusdem, ac quorumcumque beneficiorum per eum, in titulum vel commendam; seu aliâs obtentorum suspensionem eo ipso incurrat, ejusque interdicti, aut suspensionis relaxationem, aut poenarum remissionem ab alio, quam à Romano Pontifice pro tempore existente nequeat obtinere.

§. 3. Et nihilominus sæl. record. Pii II. & aliorum Rom. Pontificum nostrorum prædecessorum, qui per suas constitutiones, aut in Cancellaria Apostolica publicatas regulas, contra huiusmodi clericos male promotos, diversas penas inflixerunt, vestigiis inherentes, eosdem clericos posthac male promo-

Pœna Episcopali vel alterius malè aliquos promoventis.

Pœn. malè promotorum.

Tu vide Bul. hic citatas. in rubr.

Clausulæ decretatoriz.

D. P. An. 3. die 1. Januarii.

XCI.

Contrà Clericos malè aut simoniacè promotos, & Episcopos, & alios in ordinum collatione peccantes.

Contrà hos malè promotos habes etiam const. 7 Pii II. Cùm ex. fol. 373. Tom. 1. Hæc autem Bulla ad terminos sacrorum Canonum & dicta const. Pii II. & Conc. Trid. (præterquam quoad simoniacè promotos & promoventes) reducta fuit à Clem. VII I. inf. in ejus const. 40. Romanum, in Tomo 3. fol. 60.

Non dissimilem contrà malè ad sacros, vel minores Ordines, seu Clericalem characterem ordinantes vel malè ordinatos, edidit const. S. D. N. Urb. VIII. quod est inf. Tom. 4. num. 33. incipiens, Secreto.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Edita A. D. 1588.

Præmium.

Sacrum & salutare sacri ordinis Sacramentum ab ipso Domino & Salvatore nostro JESU Christo institutum; beatisque Apostolis & eorum legitimis successoribus singulari divine bonitatis munere traditum, ità ad Dei Omnipotentis gloriam, salutemque animarum sanctè ac religiòse administrari decet, ut quæ vel ex typo & figura veteris legis, vel aliàs ex multa SS. Patrum providentia, circa ordinandum natales, ætatem, vitæ ac morum probitatem, sanctitatem, scientiam, & alias qualitates in sacris ordinationibus requisitas, per sacros Canones, vel Apostolicas constitutiones, aut generalium Conciliorum decreta salubriter statuta fuerunt, ea inviolatè observentur. Nam si in veteri testamento tam multa de integritate & munditia Sacerdotum & ministrorum Altaris, deque eorum præstantia & dignitate legimus, de quibus dixit Dominus per Malachiam Prophetam, Labia Sacerdotis custodiant scientiam, & legem requirunt ex ore ejus, quia Angelus Domini exercituum est, certè multò major ratio & diligentia adhibenda erit in promovendis, tam inferiorum graduum clericis, quam etiam presbyteris, qui ad consummationem Sanctorum in opus ministerii, in ædificationem corporis Christi constituuntur, prout de his ipsis & divino verbo & Beatorum Apostolorum præceptis, ac simul Sanctorum Patrum statutis sæpissimè traditum est.

§. 1. Quare nos pro ea quæ nobis à Domino in juncta est cunctarum Ecclesiarum cura & sollicitudine, ipsos Pastores & Præsules Ecclesiarum, quorum proprium munus est, personas idoneas Clericali militiæ adscribere, & ad minores majorisque ordines ritè promovere, auctoritate nostra duximus admonendos, ut in exequendo hac in parte suo pastoralis officio attentius posthac invigilent, canonicas functiones, ut par est, observent, ac ut nemini detur offensiois occasio, nevé eorum ministerium vituperetur, studeant vitare ea omnia scandala & absurda, quæ ex vitiosa & minus canonica Clericorum ordinatione cernimus cum magno animi nostri dolore frequentius exoriri. Cum enim multi etiam interdum inhabiles & indigni, non vocati sancta

Causa hujus constitut.

1588.

1588.

tos, ab executione, ministerio, exercitio ordinum susceptorum, & ab omni spe & facultate ascendendi ad alios superiores perpetuo suspensos, declaramus; & si in eis ministrare præsumperint, illos sic irregulares effectos, omnibus & quibuscumque per eos, in titulum, commendam, aut alias obtentis dignitatibus, officiis & beneficiis Ecclesiasticis, cum cura & sine cura, quomodocumque qualificatis, secularibus vel cuiusvis Ordinis aut militie regularibus, ac etiam si ipsi clerici regulares fuerint, activa & passiva voce, ipso facto privamus, & iis privatos, atque ad illa & alia, similia vel dissimilia in posterum obtinenda in perpetuum inhabiles & incapaces esse decernimus & declaramus; dignitatum, officiorum & beneficiorum huiusmodi, sic pro tempore vacantium dispositionem nobis & Apost. Sedi perpetuo reservantes.

Reservatio Summo Pontifici facultatis absolventi contravenientes præterquam in mortis articulo, & etiam super irregularitate dispensandi.

§. 4. Ut autem homines, qui nimia indulgentia & spe impunitatis, ac venie facilitate hæcenus fuerunt ad huiusmodi facinora procliviores, ea sublata & præclusa, ab his abstineant & caveant in futurum; tam absolventi quam dispensandi facultatem in casibus superius expressis, etiam in foro conscientie, Nobis & successoribus nostris dumtaxat auctoritate & tenore præmissis perpetuo reservamus. Inhibentes ne à quoquam seculari, vel cuiusvis Ordinis regulari presbytero vel Prelato, quavis auctoritate fungente, nec per quacumque Jubilæa & Indulgentias, etiam plenissimas & extraordinarias per nostros prædecessores, aut nosmetipsos vel successores nostros, anno Jubilæi, aut alio quovis tempore & Cruciatæ sanctæ, vel quocumque alio titulo, modo & forma, Motu proprio & consistorialiter, seu ad quorumcumque Principum, Regum, aut Imperatoris instantiam, eorumvè contemplatione & intuitu, cum quibuscumque amplissimis, in genere vel in specie derogatoriis clausulis concessa vel in posterum concedenda, nec vigore aut prætextu facultatum aut privilegiorum, Mare magnum, aut alias quomodolibet nuncupatorum quibuscumque Ordinibus, Congregationibus, aut personis regularibus, aut Episcopis, per decreta Concilii Tridentini, aut officio sacre Penitentiariæ Apostolicæ, vel Minoribus, aut etiam Majori Penitentiariis nostris, & Romani Pontificis pro tempore existentis, vel alias quomodolibet pro tempore concessorum personarum sicut præfertur delinquentes, tam scilicet, Antistes seu Abbates promoventes, quam Clerici male insigniti seu ordinati, & realibus & excessibus præfatis absolvi, præterquam in mortis articulo possint aut debeant. Nec cum iis super irregularitate propter præmissa contracta, etiam si crimen penitus occultum fuerit, quovis modo valeat dispensari.

Forma penitentis absolutio- nem & dispensationem à Rom. Pont. & prohibitio eas petendi per officium sacre Penitentiariæ.

§. 5. Verumtamen quia gravioribus morbis fortiora sunt adhibenda remedia, & juxta personarum, locorum ac temporum qualitates leges sunt immutandæ, pœnæque aggravandæ & emolliendæ; cum huiusmodi peccatum Satana suggerente, hominumque fragilitate assentiente, videatur jam ad culmen vitiatorum ascendisse, & in præcipitum esse. Idè ut homines saltem pœnæ timore, & proprii honoris confusione à peccato deterreantur, novum huic veneno antidotum cogimur præparare. Ac propterea volumus, ut qui absolutionem & dispensationem huiusmodi petent, semper, quamvis delictum adhuc occultum extiterit, non per officium sacre Penitentiariæ, sed à nobis & pro tempore existente Romano Pontifice in utroque foro absolutionem petere teneantur; aliquin ipsæ concessionis & absolutiones, etiam cum clausula quoddam præfatis constitutionis tenor, & alia prædicta habeantur pro expressis, prorsus nullæ, irritæ, & invalidæ existant, ac nemini penitus infringantur.

Pœnæ contra simoniacos promoventes, & promotos.

§. 6. Ceterum, si quis Antistes vel Abbas servatis quidem cunctis præmissis, & ceteris omnibus quæ in ipsis tonsuræ, & ordinum collatione observari debent, personas habiles & idoneas, sed tamen receptas ab iis, quibus tonsuram aut ordines conferret, pecunia, pretio, vel præmio, simoniacè in futurum insigniverit vel promoverit, volumus, ut præter alias censuras & pœnas contra simoniacè ordinatos & ordinatos à sacris Canonibus & constitutionibus Apostolicis aliis inflicta & irrogatas, quibus nequaquam derogare intendimus, etiam omnia & singula supradicta in sic promoventibus & promotis locum habeant.

neque, sed tamen receptas ab iis, quibus tonsuram aut ordines conferret, pecunia, pretio, vel præmio, simoniacè in futurum insigniverit vel promoverit, volumus, ut præter alias censuras & pœnas contra simoniacè ordinatos & ordinatos à sacris Canonibus & constitutionibus Apostolicis aliis inflicta & irrogatas, quibus nequaquam derogare intendimus, etiam omnia & singula supradicta in sic promoventibus & promotis locum habeant.

§. 7. Decernentes præfatas literas sub quibuscumque concessionibus, facultatibus, & gratiis, etiam in casibus quibuscumque Sedi Apostolicæ, quomodolibet, etiam in Bulla Cœnæ Domini reservatis, etiam sub nomine Jubilæi plenarii, vel Cruciatæ sanctæ absolventi facultatem quibuscumque personis generaliter vel specialiter tributibus minime comprehendendi, sed semper ab illis exceptas esse & censeri.

Clausulæ præfati- væ.

§. 8. Sicque in præmissis universis & singulis per quoscumque Iudices & Commissarios, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, & S.R.E. Cardinales, sublata eis & eorum cuilibet, quavis alteri iudicandi & interpretandi facultate, in quavis causa & instantia iudicari & definiti debere; ac irritum & inane, quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Decretum irritans.

§. 9. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac in Conciliis etiam generalibus editis; ceterisque contrariis quibuscumque.

Clausulæ derogatorie.

§. 10. Ut autem præfatas literas omnibus innoscescant, mandamus illas ad valvas S. Joan. Lateranensis & Principis Apostolorum de Urbe Basilicarum, & in acie Campi Floræ affigi & publicari, & post quindecim dies qui in Urbe sunt, qui verò extra eam & citrà Montes intrā quatuor menses, qui demum ultrā Montes erunt, intrā octo menses à die publicationis huiusmodi computari. perinde ac si eam, ac si eorum cuique personaliter intimatæ fuissent.

Forma & effectus publici huius consti-

§. 11. Ac earundem præsentium literarum exemplis etiam impressis, Notarii publici manu subscriptis, & sigillo personarum in dignitate Ecclesiastica constitutarum obsignatis, eandem fidem in iudicio & extrā illud adhiberi, quæ ipsis præfatis adhibetur, si essent exhibitæ vel ostensæ.

Fides Transumptorum.

§. 12. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostri statuti, ordinationis, declarationum, privationis, reservationum, inhibitionis, voluntatum decretorum, & mandati infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem omnipotentis Dei, ac beatorum Petri & Pauli Apostolorum eius, se noverit incursum.

Sanctio poenalis.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, 1588. Nonis Jan. Pontificatus nostri anno 4.

Dat. P. A. 4. die 5. Janu.

Anno à Nativitate Domini 1589. indictione 2. die verò 9. mensis Januarii, Pontificatus Sanctissimi in Christo patris, & D. N. D. Sixti divina providentia Papa V. Anno ejus quarto, retrospectæ literæ Apostolicæ affixa, & publicata fuerunt in valvis Basilicarum S. Joannis Lateranensis & Principis Apostolorum de Urbe, necnon Cancellariæ Apostolicæ, & acie Campi Floræ, ut moris est, per nos Hieronymum Lutium, & Pompeum Guernam S. D. N. Pap. Cur. Alex. Parabiaticus Mag. Cur.

Publicatio.

De habitu & tonsura Clericorum & Militum beneficiæ Ecclesiasticæ obtinentium.

XCII.

Ad hoc habes etiam Concil. Trid. in sess. 14. cap. 6. & sess. 23. cap. 6. & 17.

SIXTUS EPISCOPUS,

Edita A. D. 1589.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Cum sacrosanctam Dei Ecclesiam, quam Salvator noster suo preciosissimo sanguine acquisivit, sponsam sibi elegerit, & nobis licet indignis,

Exordium.

indignis custodiendam tradiderit, eidem sine ruga, sine macula, atque in omnibus suis membris placentem conservare debemus, ut in ea, omnia ordinata, singula distincta, cuncta interius exteriusque pietatem & devotionem redolentia inveniantur, & ut ineffabilis circumamicta varietatibus, speciosa in oculis suis appareat, quantum favente Deo valeamus, id ipsum munus exequi decrevimus.

Causa hujus
constitutionis.

§. 1. Quare animadvertentes, quòd qui in sortem Domini ad ejusdem Ecclesie decus & ornamentum sunt vocati, & ex eo Clerici nomen consecuti, quique censu Ecclesiastico vivunt, singulari aliquo signo, à reliquo populo distingui debent, ne cui eorum jure dici possit: Quomodo huc intrasti non habens vestem nuptialem? & ad hoc ipsum sollicitudinis nostre obtutus dirigentes, ne sanguis eorum de manu nostra requiratur, cum ingenti cordis nostri dolore invenimus complures supradicta Domini sententia iuste redarguendos. Nam eorum plerique Clericali honore neglecto, in vestibus laicalibus incedentes, eo se mirifico indignos privilegio reddiderunt. Quapropter licet sacris Canonibus, Conciliis generalibus, & Apostolicis constitutionibus, certus circa eorum, qui Clericali characterem insigniendi sunt, habitum, ætatem & alias qualitates sit præscriptus modus, & contra Clericos in habitu Clericali, & tonsura non incedentes imposita poena, nempe ut gratiis, immunitatibus & aliis privilegiis Clericalibus minime gaudeant, tamen cum injuria temporum, & forsitan dormientibus pastoribus, inimicus homo lethifera transgressionis zizania superseminaverit.

Præfinitio
habitus &
tonsura per
Clericos seu
Milites bene-
ficia vel
pensiones
obtinentes
de cetero
de ferend.
Hoc declarat
vox hic
inferius.

§. 2. Nos propterea his & aliis rationabilibus de causis adducti, ne quis nimia, sive pastorum sive temporum indulgentia & impunitate, seu oscitantia, cum religionis dedecore, nominis Dei contemptu, & propriæ salutis dispendio de cetero abutatur; hac nostra perpetuò valitura constitutione præcipimus & mandamus, omnibus & quibuscumque Clericis, non solum in sacris, sed etiam in aliis minoribus Ordinibus constitutis, & Clericali tantum tonsura insignitis, nedum beneficia Ecclesiastica qualicumque etiam simplicia, nunc & pro tempore obtinentibus, & in illis vel ad eas habentibus, verum etiam pensiones super quibusvis fructibus, redditibus, aut proventibus quarumvis Patriarchalium, Primatialium, Metropolitanarum, Cathedralium, & aliarum quarumcumque Ecclesiarum, seu Abbatialium Capitularium & Conventualium mensarum, necnon Monasteriorum, Præpositurarum, Præposituram, Prioratum, Præceptoriarum, Hospitalium, Canonicarum, præbendarum, dignitatum, personarum, administrationum, officiorum & beneficiorum quorumcumque Ecclesiasticorum, secularium, & quorumvis Ordinum regularium, seu illorum distributionibus quotidianis, ac iuribus, emolumentis & obventionibus universis sibi reservatas, aut fructus ipsos, prædiave, aut bona Ecclesiastica loco pensionum sibi assignatos, vel assignata, ex quacumque concessione, seu dispensatione Apostolica, percipientibus, etiam conjugatis, præsertim si iidem Clerici conjugati juxta constitutionem pie mem. Bonifacii Papæ Octavi prædecessoris nostri in Concilio Erid. innovatam, privilegii Clericalibus uti velint, tam in Romana Curia degentibus, quam extrà eam ubilibet gentium & locorum constitutis, ut ipsi & eorum quilibet quantumvis exempti existant, & quovis privilegio vel immunitate gaudeant, quacumque dilatione, aut tergiversatione postposita, debeant omnino qui in Urbe præsentibus fuerint, intrâ quindécim dies, qui verò citrà Montes constituti sunt, intra octo menses, à die publicationis præsentium literarum in Romana Curia faciendæ, tonsuram & habitum Clericalem, vestes scilicet tales, aut Milites infra dicendi, qui-

bis pensiones, aut fructus, aliavè bona Ecclesiastica reservata sunt, suæ Militiæ convenienter, quacumque remora excusatione assumere, & jugiter deferre. In futurum autem non nisi actu Clericis in habitu Clericali & tonsura, & Militibus infra dicendis in militari incedentibus, suæ militiæ propria, aut alia quacumque Ecclesiastica etiam simplicia beneficia respectivè conferantur aut commendentur, aut pensiones fructivæ aut bona Ecclesiastica referventur.

§. 3. Alioquin ipsos & ipsorum quemlibet, qui quoad gestandum habitum clericalem & militarem supradictum, lapsu hujusmodi tempore eorum unicuique ut supra dictum est, præfixo, nostris hujusmodi præcepto & mandato nunc & in posterum perpetuis futuris temporibus cum effectu non obdixerint, præter alias poenas contra eos inflictas, etiam quibuscumque dignitatibus, administrationibus, officiis, Canonicatibus & præbendis, ac beneficiis etiam simplicibus & præstimoniiis per eorum quemlibet in titulum, commendam, vel alias pro tempore obtentis, necnon pensionibus & fructibus, ac prædiis, bonisque Ecclesiasticis hujusmodi quocumque modo eis reservatis, vel reservandis, omnique jure sibi in eis vel ad ea quomodolibet competenti, harum serie ex certa nostra scientia, deque Apostolica potestatis plenitudine privamus, ac sine ulla alia monitione, citatione, Judicis decreto, aut ministerio ipso facto privatos declaramus; ac tam beneficia ipsa per privationem hujusmodi vacare, & liberè aliis conferri posse, quam etiam pensiones cassatas, extinctas esse & fore, ac fructuum, vel aliarum rerum reservationes cessare, & quemquam ulterius ad illorum solutionem minime teneri, & ob non solutionem, censuras & poenas aliquas incurrere non posse, nec debere decernimus; ipsasque dignitates, personatus, administrationes, officia, necnon Canonicatus & præbendas, & beneficia sic pro tempore vacantia, collationi, provisioni & dispositioni nostræ, & Rom. Pont. pro tempore existentis perpetuò reservamus.

Impositio
poenarum
contra ino-
bedientes.

§. 4. Statuentes sic in præmissis universis & singulis per quoscumque Judices & Commissarios, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, & S. R. E. Cardinales, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate, in quavis causa & instantia judicari & definiri debere, necnon irritum & inane, quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Decretum
irritans.

§. 5. Ceterum, Milites quarumvis Militiarum sub regula aliqua approbata canonicè institutarum, vel alios Romanæ Curie officialis, qui non uti Clerici, sed potius tamquam Milites juxta privilegia & dispensationes Apostolicas, eis in genere vel in specie, per nos aut prædecessores nostros nominatim concessa, & sub sæcl. rec. Pii Papæ V. prædecessoris nostri constitutione, quæ incipit, Sacrosanctum &c. hujusmodi privilegiorum forsitan revocatoria minime comprehendit, beneficia militiæ quam professi sunt regularia obtinent, seu pensiones super quibusvis fructibus, redditibus & proventibus Ecclesiasticis, etiam prædictarum Ecclesiarum & beneficiorum secularium, aut fructus ipsos sibi reservatos percipiunt, aut obtinebunt, vel percipient in futurum, sive clericali characterem insigniti sint, sive non sint, qui verò Clerici sunt, etiam ab initio tempore reservationis pensionum, seu fructuum hujusmodi, regularem habitum nondum suscepint, nec militiis officiorum Rom. Cur. adscripti fuerint, sed post factas eorum cuique reservationes, antè vel post publicationem præsentis constitutionis Milites effecti extierint, sub præcepto & mandato præfatis, de habitu & tonsura Clericali deferendis, nolumus comprehendendi; sed iis permitimus, ut regulari habitu Militiæ, quam professi sunt convenienter, vel si ipsi

Declaratio
circa eos Mi-
lites & alios
Rom. Cur.
Officiales qui
constitutio-
ne ista non
ligantur.
Alias de-
clara-
tiones sunt
hic inferius.

Milites Rom. Cur. officiales fuerint, qui pensiones, aut fructus, aliave prædia aut bona Ecclesiastica ex dispensatione seu privilegio Apostolico percipiant, habitu militari superscripto absque alicujus censuræ vel pœnæ Ecclesiasticæ incursum licite uti valeant; & nihilominus tam beneficia suæ Militiæ regularia retineant, quam etiam pensiones super Ecclesiarum & beneficiorum prædiorum etiam secularium fructibus, seu bona vel fructus præfatos sibi pro tempore reservatos percipiant.

Clause de
rogatoria:

§. 6. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon consuetudinibus, etiam longissimo & immemorabili tempore observatis, quæ abusu, & corruptele potius censende sunt; privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis quorumcumque tenorem existant, quæ omnia nolumus cuiquam adversus præmissa in aliquo suffragari.

Publicatio &
observantia
ab Episcopis
&c. curari
debet.

7. Mandamus verò universis & singulis venerabilibus fratribus nostris Patriarchis, Archiepiscopis, Episcopis, & aliis Prælati, ac locorum Ordinariis, ut in suis quilibet Ecclesiis, Civitatibus & diocesis præfatis literas, earumque exempla publicari & inviolatè observari.

Forma & A-
ctus publica-
tionis hujus
constit.

§. 8. Et ne quis præsentium literarum ignorantia fe valeat excusare, jubemus illas ad valvas Basilicarum S. Joannis Lateranen. & Principis Apostolorum de Urbe, & in acie Campi Floræ, & in Cancellaria Apostol. affigi & publicari, earumque exempla inibi affixa relinqui, & deinde in eadem Cancellaria Apostolica in libro Quinterno appellat, inter ceteras constitutiones perpetuas describi & registrari. Decernentes publicationem in Basilicis præfatis, & in acie Campi Floræ faciendam, post lapsum temporis superius præfixi unumquemque arcitare & afficere, perinde ac si ipsæ præfentes literæ singulis personis præfatis personaliter intimatæ fuissent.

Fides tran-
scriptorum
& Sanctio
pœnalis.

§. 9. Volumus quoque earundem præsentium transcriptis, etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ obsignatis, plenam & indubitam fidem in judicio & extrâ adhiberi, quæ ipsis originalibus adhiberetur si forent adhibita vel ostensa. Nulli ergo omnino hominum &c.

Dat. P. An. 4.
diei. Janu.

Datum Romæ apud S. Petrum Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo octuagesimo nono, quinto Idus Januarii, Pontificatus nostri anno quarto.

Publicatio.

Anno à Nativitate Domini 1589. indictione 2. die verò 18. mensis Januarii, Pontificatus Sanctissimi in Christo Patris, & D. N. D. Sixti Divina providentia Papa V. anno 4. retroscripta litera Apostolica affixa, & publicata fuerunt, in valvis Basilicarum S. Joannis Lateranen. & S. Petri Principis Apostolorum de Urbe, necnon Cancellariæ Apostolicæ, & acie Campi Floræ, ut moris est, per nos Hieronymum Latinum & Joannem Baptistam Bagni, Sanctiss. D. Nostri Papæ Curf.

Alex. Parabiacus Mag. Curf.

Sequitur declaratio quoad aliquos Papæ familiares, Militesque & officiales Romanæ Curie, & pensiones non ultra 60. ducatos obtinentes.

SIXTUS EPISCOPUS,

Edita An. D.
1589.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Compen-
dium constit.
præcedens.

Pastoralis est curæ nostræ, & ita æquum arbitramur, ut quanto possumus studio indemnitati & utilitati, tum pauperum Clericorum, tum etiam personarum quæ nostris obsequiis insistent, labores & incommoda assidue subire non cessant, consulere procuremus, ac earum necessitati prospiciamus; ne, dum promptè & expedire

ministeria eis injuncta obire conantur, non solum congrua præmia non recipiant, verum aliquid detrimenti patiantur. Cum itaque nostra nuper edita constitutione de habitu & tonsura, per clericos seu Milites beneficia vel pensiones obtinentes deferendis, quæ incipit, Cum Sacrosanctam, &c. præceperimus universis clericis, nedum beneficia Ecclesiastica obtinentibus, sed etiam pensiones super fructibus Ecclesiasticis, aut fructus ipsos sibi reservatos percipientibus, ut habitum & tonsuram clericalem, vestes scilicet talares Militibus verò ipsas pensiones aut beneficia suæ militiæ propria obtinentibus, ut habitum suæ militiæ convenientem jugiter deferant, pena privationis beneficiorum, pensionum, ac fructuum hujusmodi cuilibet inobedienti imposita, prout in eadem constitutione latius continetur.

Causa hujus
moderationis.

§. 1. Nonnulli verò ex Clericis præfatis pensiones aut fructus hujusmodi admodum tenues percipientes, alii quoque nostri familiares actu nobis inservientes, variis obsequiis & ministeriis addicti, qui ultrò citròque, ubi opus est commeari & accurere coguntur, id circò vix possint sine maximo incommodo, impedimento & dispendio, habitum clericalem superscriptum gestare.

Moderatio
d. constitu-
tionis pro
Clericis pen-
siones, fru-
ctus, aut bona
Ecclesiastica
60. duc.
auri de Cam.
non excede-
rentia obti-
nentibus.

§. 2. Nos eorum commodis opportune providere, eoque specialis gratiæ favore prosequi volentes, omnibus & quibuscumque clericis, tam in Romana Curia quam extrâ eam ubilibet gentium & locorum constitutis, qui pensiones, fructus, aut prædia vel bona ecclesiastica, sibi in una vel pluribus vicibus reservata & concessa, summam seu valorem annum sexaginta ducatorum auri de Camera insimul non excedentes seu excedentia, percipiunt aut percipient in futurum.

Et pro non-
nullis fami-
liaribus Pon-
tificis.
Aliam limi-
tatore habes
pro Conclavi
circ. in
const. 3. Pau-
li V. fol. 199.
Tom. 3.

§. 3. Ac præterea nostris familiaribus, nobis in quibuscumque inferioribus ministeriis, quales sunt qui à pedibus seu parafrenariis, mensæ dispositores, aut credentarii, aut dispensatores vulgò dicuntur, & aliis his similibus servitiis actu ministrantibus quive in futurum inserviant; necnon quibusvis nostrorum intimorum familiarium actu nobis in Palatio nostro Apostolico inservientium familiaribus, continuis commensalibus, præfentibus & futuris, qui pensiones aut fructus, bonave Ecclesiastica loco pensionum, usque ad quamcumque summam & valorem nunc percipiunt, aut in posterum pro tempore percipient, ut ipsi eorum quilibet in habitu & tonsura clericali incedere minimè teneantur, sed laicale habitu impunè & licite uti possint, quo sua munia promptius expediitque obire valeant, nec penis in eadem constitutione inflitis subiaceant, auctoritate Apostolica tenore præsentium de speciali gratia concedimus & indulgemus.

Prorogatio
termini in d.
const. perso-
nis in Urbe
degentib.
præfixi, ad
alios 15. dies.

§. 4. Reliquis autem nostris, aut personarum nobis inservientium familiaribus, continuis commensalibus, omnibusque & singulis aliis tam clericis quam militibus beneficia, fructuum vel bonorum Ecclesiasticorum reservationes ac pensiones obtinentibus, aut in ipsis beneficiis, vel ad ea jus habentibus in Urbe præfentibus tempus quindecim dierum in dicta constitutione præfixum, necdum elapsam, ad alios quindecim dies à fine primò dicti termini computandos extendimus & prorogamus.

Et pro mili-
tibus & aliis
in militari
habitu inci-
dere obliga-
tis.

§. 5. Ac demùm Militibus, tam Militiarum canonicè institutarum, quam Rom. Cur. Officialibus, qui juxta præfatam nostram constitutionem in Militari habitu incedere tenentur, ut vestibus communibus, cum insignibus tamen Crucis, aut Numismatis ipsius Militiæ propriis uti valeant, atque hac ratione ipsius constitutionis præcepto plenè satisfacere censeantur pariter indulgemus.

Declaratio
circa tempus
quo Clerici,
& Milites
habitu ge-
rere tene-
ntur.

§. 6. Eos verò Clericos aut Milites, quibus pensiones aut fructus, bonave, aut prædia Ecclesiastica ad quamcumque summam reservata, aut reservari concessa sunt, vel posthac reservabuntur,

non

Decretum irritans.

Transumptum fides.

Dat. P. An. 4 die 31. Jan.

XCII.

Edita A. D. 1588.

Procinium.

Paul. II. Of. fiscalib. prohibuit. remissionem poenarum ultra sex florenos.

Six. IV. ap. probavit. & processum circumdari prohibuit. libramque condemnationibus & gravis teneri iussit.

non aliter ad gerendum huiusmodi habitum teneri volumus, nisi postquam pensiones, fructus, aut alia praefata cum effectu exigere aut percipere coeperint, vel per eos steterit quo minus exigant vel percipiant.

§. 7. Decernentes sic in praemissis iudicari debere, necnon irritum & inane, quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari. Praefata constitutione nostra, quoad reliqua omnia praesentibus literis non excepta, nihilominus in suo robore perpetuo permanfura.

§. 8. Volumus autem praesentium transumptis etiam impressis, Notarii publici manu subscriptis, & sigillo personae in dignitate Ecclesiastica constitutae munitis, eandem fidem ubique, tam in dicta Curia & in iudicio, quam extra adhiberi, quae eisdem praesentibus adhiberetur, si essent exhibitae vel ostensa. Nulli ergo omnino hominum &c.

Datum Romae apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicae 1589. pridie Calen. Febr. Pontificatus nostri anno 4.

Poenae & confiscationes malefactorum, cuiusque Civitatis, & Terrae Status Ecclesiastici, locorumque ei subiectorum, applicantur R. Camerae Apostolicae, cum nonnullis statutis & ordinacionibus, circa earum executionem, atque distributionem observandis.

Circa praedicta, extant plures constitutiones Apostolicae quas indicavi in eorum apostillis, hic non repeto. Istam vero bullam in Urbe etiam servari iussit Clem. VIII. infra in ejus consil. 5. Inter ceteras fol. 2. com. 3.

SIXTUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

AD Romanum Pontificem pertinet, non modo uti communem Patrem ac Pastorem, totius Christianae Reipublicae generalem curam suscipere, sed privatim quoque Populorum ipsius S. R. E. ditioni, etiam in temporalibus subditorum prospero statui, ac bono regimini, simul etiam Camerae Apostolicae indemnitati, propria quadam & peculiari sollicitudine providere. Quod ita demum (Deo favente) feliciter eventurum speramus, si ii, qui in Civitatibus, & locis dicti Status temporalis Ecclesiastici jus dicunt, in officio contineantur, & quicumque eorum publica legum & Magistratum potestate abutendo, à recto Iustitiae tramite declinare, vel turpis lucri causa, Camerae Apostolicae jura improbe fraudare praesumpserint, se tandem in iudicio gravissimas poenas daturus intelligant. Ideoque nemini mirum videri debet, si cum quotidie insigant humani generis hoste, hominumque malicia in dies succrescente, novae fraudes, & corruptelae detegantur, nos quoque praedecessorum nostrorum exemplo, nova cogimus subsidia preparare.

§. 1. Bene siquidem, & prudenter fecit, record. Paulus Papa II. praedecessor noster prohibuit inter alia, ne Gubernatores, & quicumque Officiales Provinciarum, Civitatum, & locorum S. R. E. ditioni in temporalibus subiectorum, multas & poenas pecuniarias remittere, donare, ac gratiam de illis facere possent, ultra summam sex florenorum auri de Camera.

§. 2. Quam prohibitionem pia mem. Sixtus Papa Quartus, etiam praedecessor noster non modo approbavit, fed vetuit etiam ne in causis criminalibus, ante sententiarum prolationem, processus circumdari facerent, sed causas ipsas, prout Iustitia suaderet, terminarent, ac mandavit, ut omnes supplicationes in quibus persona delinquens, delictum ipsum, & poena ei de jure irroganda, ac demum gratia ei per Officiales facta, exprimi deberet, in libro speciali registrari facerent, librumque ipsum

in fine Officii per fidelem Nuntium Camerae Apostolicae mitterent. Ac pro refectione murorum, fontium, viarum, aliarumque rerum similium, seu illarum conservatione, non aliter Thesaurarios Camerae ad illarum solutionem teneri voluit, nisi verè actualiter in hoc erogaretur.

§. 3. Per aliam vero suam constitutionem mandavit, ut si verè in tales causas expendendi facultas & licentia à Sede Apostolica tributa foret, id tamen per manus Thesaurarii erogaretur; inhibendo ne eadem poenae, ac multae ad alterius quam Thesaurarii manus, etiam sub colore depositi, donec in praedictos usus erogarentur, ullo modo pervenirent.

§. 4. Ac demum recol. mem. Pius Papa Quartus noster itidem praedecessor statuit, quod omnes poenae, & multae pecuniariae, seu cuiusvis qualitatis bona, quarumcumque personarum in praedictis Civitatibus, & locis degentium, Camerae Apostolicae privative quoad omnes alios, etiam Communitates (exceptis tantum iis poenis, quae pro damnis, agris, & praediis rusticis illatis sunt inflictae) perpetuo integrè applicatae existerent, nec per alios, quam à Camera Apostolica, ad id specialiter deputatos officiales exigenterent; de quorum manibus eas reciperent, si qui titulo oneroso; aut ob aliquos pios vel supradictos, aut alios ejusmodi usus, illas sibi debere praetenderent.

§. 5. Id autem declaravit postea habere locum etiam in iis Terris, Castris & locis, quae non ipsi Romanae Ecclesiae immediatè, sed alicui Communitati Civitatum praefatarum subdite forent.

§. 6. Novissimè vero ordinavit, & praecipit, ut Officiales praedicti, decima tantum huiusmodi poenarum, accusator autem quarta partibus contenti forent, sed illorum nemo alias, quam de manu Depositarii dictae Camerae ullo modo exigerent, prout in praefatis, & aliis forsitan praedecessorum nostrorum desuper editis constitutionibus latius continetur.

§. 7. Sed quia postmodum successu temporis nonnulli ex illis, qui in Statu temporalis Ecclesiastico jus dicunt, varias artes, vel potius fraudes excogitarunt, quibus salubria huiusmodi statuta eluderent, & sub diversis praetextibus interdum per fordes, pretio, aut gratia corrupti, criminofos manifestos aut impunè dimitterent, aut multas Camerae Apostolicae debitas interverterent. Interdum vero illos plus aequo opprimentes, non tamen poenas ab eis exactas dictae Camerae referarunt, sed turpi lucro inhiantes sibi contra fas retinuerunt. Nos huic malo mederi, & malitiam quantum cum Domino possumus obviare cupientes, ac dictorum praedecessorum exempla imitari, auctoritate Apostolica decernimus & declaramus, omnes & quoscumque poenas pecuniarias, multas, & confiscationes omnium, seu cuiusvis partis bonorum, inflictas, & infligendas occasione cuiusvis criminis, excessus, maleficii, delicti, vel quasi, per quoscumque Praesides, Rectores, Gubernatores, quavis dignitate, etiam Episcopali, Archiepiscopali, vel alia majori fulgentes, etiam S. R. E. Cardinales & Sedis praedictae de latere Legatos, eorumque Vicelegatos, Locatenen. Commissarios, Potestates, & Officiales, qui in quibuscvis Provinciis, Civitatibus, Terris, Oppidis, Castris, Villis, & locis nostrae & S. R. E. ditioni temporalis subiectis quomodolibet jurisdictionem exercent, tum per sententias, decreta, processus, tum etiam per viam supplicationum, remissionum, absolutionum, liberationum, condonationum, compositionum, gratiarum, abolitionum, seu cassationum processum ab ipsis pro tempore concessarum, tam ex juris communis dispositione, quam juxta tenorem quarumcumque Apostolicarum, aut etiam Aegidianarum constitutionum, & ordinationum, vel statutorum, & consuetudinum cuiusvis Provinciae, Civitatis, aut loci particularium, aut in vim dictorum decretorum,

Et poenas ad alias quam Thesaurarii manus pervenire prohibuit.

Pius IV. applicavit Camerae Apostolicae omnes poenas & per ejus officiales exigi iussit in ejus Bull. 43. Decret. supra.

Et declaravit id servari etiam in locis S. Apost. immediatè subiectis, ut ibi. Postea decimam poenam partem, Gubernatori quartam vero accusatori assignavit, ut ibi.

Hic modò Pont. iterato quascumque poenas malefactorum Camera applicat.

bandimentorum, ab iisdem Officialibus seu eorum antecessoribus promulgatorum, Camera Apostolica realiter & cum effectu perpetuo applicatas esse, & fore, ipsique Camera, non autem quibuscumque Communitatibus, universitatibus, aut personis integrè debitis; penis damtaxat ratione damnorum in agris, vineis, possessionibus, silvis, pratis, aut quibuscumque prædiis illorum exceptis, quæ sicuti Communitati, aut Universitati applicatæ sunt, quicquam circa eas innovare nequaquam intendimus. Præmissa verò omnia locum habere volumus etiam in iis Terris, Oppidis, Burgis, Castris, Villis, & locis; quæ alicujus alterius Civitatis, aut Terræ, Communitati, vel Universitati, non autem immediatè Romano Pontifici subsunt.

Communitatibusque & aliis dictas penas præcedentibus terminum, adimplorantibus, & deluper sententiam in Cam. Apost. obtinent, præterit, quo elapso, omnes concessiones dictarum penarum etiam ex onerosis titulis eas facias, revocant.

§. 8. Cæterum volumus, ut quæcumque Communitates, Universitates, Collegia aut personæ, etiam Ecclesiasticæ quavis dignitate fulgentes, aut eorum Magistratus, penas, compositiones, aut multas prædictas, seu illarum portionem aliquam quovis titulo, etiam oneroso, occasione vel causa, etiam iustissima & pro reparatione, ac restitutione & fabrica, vel conservatione murorum, pontium, viarum, fontium, aut cujusvis publici boni, vel pii loci Ecclesiæ, aut Hospitalis intuitu, aut alias quomodolibet, sibi deberi vel applicatas esse prætendunt, debeant omnino intrà duos menses à die publicationis præsentium litterarum in Romana Curia faciendæ computandos, concessiones, & applicationes prædictas, suæque jura, & privilegia quæcumque habent in Camera Apostolica exhibere, deducere & allegare; quæ quidem Camera si ipsas concessiones validas ex oneroso titulo, vel ex urgentissima causa factas esse cognoverit & judicaverit, possit eas ad tempus quod ipsi Camera necessarium videbitur, confirmare, seu de novo concedere, & successivè Depositario ejusdem Cameræ in Provincia, seu Civitate in qua concessio hujusmodi facta & approbata fuerit, residenti specialiter & in scriptis committere & mandare, ac speciale mandatum deluper opportunitum relaxare, & penæ ipsæ, multæ, & compositiones hujusmodi, earumve pars ipsi Camera benè visa, dictis Communitatibus, & Universitatibus, seu Collegiis & personis solvantur, quas nimirum de manibus Depositarii prædicti, & præcedente speciali mandato, nec alias exigere possint, aut debeant. Revocantes, & annullantes omnes & quæcumque concessiones, applicationes, & assignationes dictarum multarum, penarum, & compositionum, quibuscumque Communitatibus, Universitatibus, Collegiis, personis etiam Ecclesiasticis extitulis etiam onerosis, aut causis prædictis, vel aliis etiam iustissimis factas, quæ intrà tempus supra dictum, ut præfertur in Camera Apostolica exhibitæ & productæ, aut deinde ab eadem Camera approbatæ & innovatæ non fuerint, etiam si sæpius per litteras Apostolicas à quibuscumque prædecessoribus nostris approbatæ & innovatæ sint, ipsæque Communitates, Universitates & Collegia in pacifica quasi possessione illas exigendi ab immemorabili tempore existant, & Camera Apostolica eas nunquam exegerit.

Officialibus etiam prohibet ut penas eorum sententis, editis, pratis, & abolitionibus contentis alteri quas Cam. Apost. applicent.

§. 9. Distinctè verò interdicens & prohibemus, ne in posterum quicumque Præses, Rector, aut Governor, quavis etiam Cardinalatus auctoritate & dignitate præfulgens, aut Sedis prædictæ Legatus, Vicelegatus, Locumtenens, aut Officialis ex supra dictis quovis prætextu, occasione, vel causa, etiam maxime rationabili, legitima, iustissima, & urgentissima, tam in sententiis, processibus, & decretis, bannis, proclamationibus, editis, quam in supplicationibus, gratiis, remissionibus, absolutionibus, abolitionibus, aut cassationibus processuum ab ipsorum quolibet editis vel edendis, penas, multas, aut compositiones, occasione maleficiorum, vel quasi, ab ipsis reis perfolendas in pecunia numerata, vel in bonis mobilibus, immobilibus aut se moventibus cujusvis generis, quali-

tatis, quantitatis etiam minimæ existens, in totum vel in parte, etiam minima, alias quam Cam. Apost. prædictæ concedere, aut applicare vel assignare quoquomodo audeant, vel præsumant.

§. 10. Quam ob causam universas & singulas penas, multas & compositiones prædictas, non possint nec debeant ullo modo solvi, exbursari, tradi, aut consignari facere in manibus cujusvis alterius personæ quam Thesaurarii seu Depositarii Camera prædictæ in qualibet Provincia residentis; seu ad majorem partium commoditatem in manibus Vicedepositarii, seu Vicethesaurarii in qualibet Civitate & loco deputandi; sed neque etiam valeant Gubernatores & Officiales prædicti etiam S. R. E. Cardinales, aut Fisci procuratores, vel accussatores, propria auctoritate retinere, aut à partibus exigere portionem, aut ratam ex hujusmodi multis sibi debitam, verum integrè & sine aliqua diminutione exbursari, tradi, solvi & consignari debeant in manibus Thesaurarii, Depositarii, aut substituti prædicti, ex quorum manibus, nec alias Gubernatores, Officiales, Fisci procuratores, accussatores eas recipiant.

§. 11. Quòd si vel penas ipsas alias quam Cam. Apost. applicaverint, vel propria auctoritate, & non de manibus prædictis exegerint, tam Gubernatores, Officiales, & alii prædicti etiam S. R. E. Cardinales quam Procuratores Fisci, & accussatores, & ipsorum quilibet contravenientes officiis per eos obtentis ipso facto, absque alia declaratione, aut ministerio Judicis privati, & ad illa, & alia de cætero obtinenda perpetuo inhabiles, & incapaces existant, & insuper penam trecentorum scutorum pro qualibet vice Cam. Apost. solvendorum eo ipso incurrant.

§. 12. Verum hujusmodi prohibitionem & interdictum ita extendimus, ut neque etiam ipsi delinquentes, aut rei, vel alii quicumque contrarios per viam Inquisitionis, accusationis, denunciationis, aut querelæ procedi ceptum fuerint, tam si condemnati, quam si absoluti extiterint, penas, aut multas pecuniarias, vel alias res, ad quas solvendas in quibusvis condemnationibus, absolutionibus, decretis, processuum cassationibus, seu abolitionibus, vel supplicationibus, ipsos, aut alios pro eis multari contigerit, in alterius quam Thesaurarii seu Depositarii, aut substitutorum prædictorum manibus solvere, aut tradere possint; vel debeant, etiam si in ipsis sententiis, absolutionibus, abolitionibus, decretis, aut supplicationibus aliter rescriptum existat. Alioquin si in aliorum manibus eas solverint, prædictæ sententiæ, & gratiæ, quoad ea quæ illorum favorem & commodum concernant, eo ipse nullæ, inanes, & irritæ, nulliusque roboris vel momenti sint; & tam ipsi rei, quam qui pro eis solverit, qualibet vice penam viginti quinque aureorum incurrant. Contra verò, si maluerint prædictis Thesaurariis, Depositariis, aut eorum substitutis solvere, quam eis personis, quibus forsitan solvere iussi fuerint, benè & rectè solvisse, eorumque gratiæ, absolutiones, & supplicationes integrum & plenarium effectum sortitæ censeantur, iisque plenè suffragentur.

§. 13. Mandamus præterea omnibus & singulis Legatis, Gubernatoribus & aliis Officialibus supra dictis, sub penis prædictis per inobedientes eo ipso incurrendis, ut quilibet eorum cum primum supplicationes signaverit & taxaverit, illas in manibus Thesaurarii, vel Depositarii, aut substituti hujusmodi consignet; à quibus supplicantes intrà decem dies à die datæ ipsarum supplicationum numerandos, soluta integrè summa, & taxa in eis descripta, illas exigere omnino teneantur. Alioquin lapsis decem diebus prædictis, gratiæ nullæ, irritæ ipso facto existant.

§. 14. Legati verò, Gubernatores & alii Officiales, prædicti, eorumque Cancellarii aut Notarii, supplicationes ipsas registrare, & in acta referre, processive cassare, vel abolere non præsumant,

Nec alii personis quam Depositariis solvi neque aliquem eorum partem per officiales retineri posse decernit.

Contravenientibusque penas imponit.

Delinquentibus prohibet, ne aliis quam depositariis penas solvant, etiam si aliter in sententiis vel supplicationibus effect rescriptum.

Officiales supplicationes ab eis signandas Thesaurariis consignent, & supplicantes intrà decem dies penas solvant.

Officiales Notarii supplicationes in actis reservant, & processus ante penas solutas non efficiunt.

Officiales & Baroncelli bona quæ carcerati tempore carcerationis deferrebant, eisdem Theſaurariis conſignent, ad effectum hic expreſſum.

nifi prius in calce ſupplicationis fidem ſolutionis jam factæ manu dictorum Theſaurarii, Depoſitarii, aut ſubſtituti ſubſcriptam viderint; ſecus ſi fecerint, viginti-quinque aureorum, & aliis arbitrio Superiorem imponendis penis plectantur.

§. 15. Omnia autem, & ſingula bona mobilia, gemmas, pecunias, quæ perſonæ ex quavis cauſa criminali in carcerem ductæ tempore carcerationis penes ſe geſtaverint, ac item ea quæ baniti, condemnati, homicidæ, & latrones tempore quo apprehenduntur penes ſe ſimiliter habuerint (archibuſis, & aliis offeniſivis armis tantum exceptis) ac denique ea quæ contrâ prohibitiones, & bona in fraudem deprehenduntur & capiuntur, ſtatim prædicti Gubernatores, & alii Officiales, eorundem Locatenes, Barigelli, Executores, Cuſtodes Carcerum, & Cancellarii in manibus eorundem Theſaurarii, Depoſitarii, aut ſubſtituti tradere, & conſignare debeant; aliis ipſi Gubernatores, & Officiales ducentorum, Barigelli verò executores Cancellarii, & alii prædicti quinquaginta aureorum penas qualibet vice incurrant. Quæ quidem bona, pecunias, & res, dicti Theſaurarii, Depoſitarii, aut ſubſtituti, depoſiti nomine tamdiu apud ſe conſervant, donec ipſi carcerati abſolvantur, aut veriorum Domini inveniantur. Quod ſi carceratos condemnari, & veros Dominos intra unius menſis ſpatium à die condemnationis non reperiri contingat, ſint cuncta & ſingula eo ipſo Cameræ prædictæ appropriata, & applicata, eque ipſius Cameræ nomine Theſaurarii, Depoſitarii, aut ſubſtituti prædicti illa præſcribere, hæſte ſubſicere, & plus offerenti vendere, & prætium eidem Cameræ acceptum ferre teneant. Mandantes Noſtariis actuariis iudicem illorum locorum in quibus Theſaurarii, aut alii Miniſtri ad rationes ejuſdem Cameræ retinendas, pecuniis exigendas deputati fuerint, ad hoc ut de his omnibus emolumentis certa ratio in Cameræ prædictæ reddi & haberi poſſit, ut librum rationum, & computorum ejuſdem Cameræ proventuum diſtinctum, & ſeparatum teneant; illūque in Cameræ annis ſingulis quando eorum computorum quietantia, & ſolidatio, ut moris eſt fiet, præſentent, ad hoc ut certa de omnibus prædictis haberi ratio poſſit; quod ſi librum prædictum non teneant, vel non verum, & integrum, illum ad omnia Cameræ prædictæ damna, & intereſſe, quæ ex præmiſſis pati contigerit, teneri volumus, & mandamus.

§. 16. In omnibus verò cauſis criminalibus, aut civilibus, in quibus criminaliter agitur, gravibus aut levibus, in quibus pena ordinaria, aut extraordinaria, vel arbitraria, ſeu pecuniaria imponenda veniat, Legati, Gubernatores, Rectores, aut alius quicumque ex ſuprà dictis Officialibus reos abſolvere, rehabilitare, reſtituere, vel eis gratiam facere, aut penam, ejuſve partem aliquam remittere aut condonare in quantum ipſius jus dicentis auctoritas ſe extendit, non alio modo poſſit aut debeat, niſi per ſententiam abſolutoriam in cauſis gravioribus, aut per decretum vim abſolutorie ſententiæ habens in levioribus, aut per ſupplicationem ab ipſo juſ dicente ſignatam. In quibus ſententiis, decretis, & ſupplicationibus teneantur iidem Gubernatores & alii Officiales adnotare integrè totam ſummam pecuniæ, quam à reo ſolvi debere taxaverint, declaraverint, aut damnaverint. Eaque condemnatio, & taxa in pecunia numerata, ut præſeruit in manibus Depoſitarii, Theſaurarii, aut ſubſtituti ſolvenda, nec alias, aut in alia re, vel ſpecie fieri debeat. Omnes autem abſolutiones, rehabilitationes, reſtitutiones, remiſſiones, gratiæ, quæ per ſimplicem proceſſum caſſationem, vel abolitionem, aut alio modo, ſine ſententia, ſine decreto, aut ſupplicatione ſient, eo ipſo nullæ, invalidæ, ac nullius roboris vel momenti ſint & cenſeantur; & quilibet Gubernator, aut Officialis contraveniens, qualibet vice ducentorum aureorum penam incurrat.

§. 17. Quoad ipſas verò ſententias & decretæ, tam merè abſolutorias, & gratioſas, quam mixtas, ſemper antequam ferantur, Procurator Fiſci, aut ejus ſubſtitutus, ſi in eo loco reſideat, alias ſaltem Theſaurarius, aut Depoſitarius, vel ſubſtitutus prædicti perſonaliter citari debeant; quorum unuſqueque ſi eadem abſolutiones injuſtas putaverit, debeat in actis poteſtatis; & abſque citatione prædictæ, ſententiæ, & decreta hujusmodi ipſo jure nulla, invalida, nulliſque roboris exiſtant.

§. 18. Inſuper omnia & quæcumque ſtatuta, decreta, conſuetudines, etiam inveterata, & à longiſſimo atque immemorabili tempore obſervata, cujuſvis Provinciæ, Civitatis, Terræ, aut loci Status noſtri prædicti, de cauſis criminalibus, aut civilibus in quibus criminaliter agitur, deque penis ratione delictorum, aut malefactorum quorumcumque (damnis in agris illatis tantum exceptis) quomodolibet diſponentia, quæ à ſecl. record. Paulo Papæ Quarto, aliſque poſt eum uſque ad noſtra tempora, noſtris prædeceſſoribus, aut à nobiſmet ipſis in ſpecie expreſſæ, & nominatim ac ſimpliciter, pure, abſolute, & abſque aliqua conditione, reſervatione, aut reſtrictiva, confirmata non fuerint, ipſo jure, & in vim Præſentis conſtitutionis antiquata, abrogata, ac irrita, & nulla effecta ſint, & cenſeantur. Ac pariter ea quæ ab ipſomet Paulo Quarto, & aliis uſque ad noſtri Pontificatus tempora ſucceſſoribus cum aliqua conditione, videlicet, dummodo juſta ſint, & rationabilia, vel juri communi, & rationi non repugnent, vel quatenus ſint in uſu, & ſacris Conciliis, & Canonibus non ſint contraria, vel cum aliis ſimilibus vel diſſimilibus clauſulis & limitationibus, comprobata exiſterint, ſimiliter quoad dictas cauſas & penas, nulla & irrita decernimus & declaramus. Ita ut neque Gubernatores & cæteri Officiales ſupràdicti ea obſervare, aut juxta illa judicare, aut decernere debeant; ipſique Officialibus quæcumque juramenta de illis obſervandis præſtita vel forſan præſtanda, ex nunc eo ipſo relaxamus, eoque in poſterum ad juramenta hujusmodi præſtanda adſtringi volumus.

§. 19. Declarantes quod in futurum in omnibus Provinciis, Civitatibus, Terris, & locis Status noſtri prædicti, quicumque Gubernatores, etiam Cardinales, & Legati prædicti, aut alii Officiales teneantur in primis & ante omnia, quoad cauſas criminales prædictas, conſtitutionibus, ordinibus & literis Rom. Pontificum noſtrorum prædeceſſorum, atque noſtris, & in caſibus in quibus ipſæ nihil diſponunt, ſtatutis locorum, ſi, ut præteritur valide & efficaciter confirmata fuerint, inviolabiliter inherere & parere; quod ſi ea valida non exiſterint, debeant judicare, procedere, abſolvere, condemnare, & ſententias ferre juxta tenorem Conſtitutionum Provinciæ Marchiæ à bon. mem. Paulo Papæ Tertio ſimiliter prædeceſſore noſtro per ejus expeditas literas confirmatarum, quas Pauli Tertii prædeceſſoris noſtris literas, per præſentes approbamus, & innovamus. In reliquis verò banna, & edicta in ipſis Provinciis, Civitatibus, & locis pro tempore publicata obſerventur.

§. 20. Legati autem, Vicelegati, Gubernatores, Locatenes, & alii ſupràdicti Officiales, non ultra decem pro centenario ex compoſitionibus, condemnationibus, peniſque & multis prædictis occasione malefactorum ſeu bannimentorum provenientibus, exigere valeant. Revocantes, & annullantes quæcumque ſuper hoc in contrarium edicta, ordinationes, privilegia, indulgentia, niſi forſan in illis portio minor quam decem prædictorum assignatur. Nam in iis in hac parte nequaquam derogare intendimus, ſed illa potius harum ſerie confirmamus, & innovamus. Ultra verò taxam eorumdem decem pro centenario, à partibus vel aliis perſonis quicquam emolumentum, aut pecuniæ, quovis prætextu, quaſito colore vel ingenio, directe vel indirecte recipere, etiam ſpontè oblatum nullo modo præſumant.

Fiſcus vel ſaltem Theſaurarius loci citetur in dictis cauſis.

Conſuetudines & ſtatuta quoad penas & cauſas criminales à Paulo IV ſucceſſoribus ſimpliciter confirmata vel cum clauſulis hic expreſſis, irrita ſint.

Officiales in cauſis criminalibus primo ſervent conſtitutiones Apoſt. ſtatuti locorum valide confirmata, & conſtitutiones Marchiæ, & in reliquis banna & edicta.

Decemque pro centenario ex dictis penis ac deſignu Theſaurarii percipere valeant, ubi miſus portio non ſit assignata.

In cauſis criminalibus Officiales non poſſunt reos abſolvere, aut gratiam eis facere aut penam condonare, niſi per ſententiam ſi aut ſupplicationes, cum adnotatione ſummæ à reo ſolvendæ.

1588.

Fiscus etiam vigesimam & acculator quartam partem de manu Theaurarii percipere possint juxta Bullam Pii IV.

Theaurarii nec aliter portiones prædictas solvere nec dictas poenas in alios usus expendere possint.

Decretum irritans.

Clausula derogatoria.

Exemplis hujus constitutionis plena fides adhibetur.

Transumptum vero vel ejus compendium in qualibet Civitate publicetur, & in Cancellariis affixum retineatur & Officialibus in ingressu servare jurent, & in eorum discessu contra eos pro transgressionibus procedatur.

§. 21. Sed & Procurator Fisci si aderit vigesima, & Acculator si intervenit quarta parte prædicta, juxta Pii Quarti prædecessoris constitutiones superius expressas contenti esse debeant, & nihil præterea, ut minimum petant, exigant aut accipiant; eaque omnes portiones Judicis, Procuratoris & Acculatoris semper de manu Theaurarii aut Depositarii, vel substituti, ut præfertur, exbursentur; ipseque Theaurarius, Depositarius, aut substitutus portiones Procuratorem Fisci, aut Acculatorem tangentes, non aliter solvant, nisi de expresso mandato Gubernatoris, aut Officialis inscriptis obtento, quod una cum chirographo recepti penes se retineant.

§. 22. Postremò dicti Theaurarii, Depositarii, aut substituti, quamlibet, vel minimam pecuniarum summam ex dictis confiscationibus & maleficiis provenientem, etiam de mandato & iussione expressa dictorum Legatorum, & Gubernatorum & Officialium, cuiquam personæ solvere aut tradere, aut in quoscunque usus erogare ullo modo nequeant, præter supradictam portionem, & præter impensas solitas ad exercitium & usum iustitiæ necessarias; pro quibus solvendis qualibet vice mandatum speciale ab ipsis Gubernatoribus, seu Officialibus subscribendum expectent. Quinimò extrà casus prædictos nullam pecuniarum summam expendere queant, nisi de mandato expresso Congregationis Consultæ negotiorum dicti Status, aut S. R. E. Camerarii, vel Generalis Theaurarii, aut Commissarii prædictæ Cameræ; si secus solverint, de suo erogasse censeantur, & in reddendis rationibus id eis computari nequaquam debeat.

§. 23. Decernentes sic in præmissis per quoscunque Judices, & Commissarios quavis auctoritate fungentes, sublati eis & eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari & definiti debere. Irritum quoque & inane si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 24. Non obstantibus præmissis, ac quibusvis aliis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, consuetudinibus etiam antiquissimis, necnon privilegiis, & indulgitiis & literis Apostolicis quorumcumque tenorum existant, & qualibet alia dictæ Sedis indulgentia & concessione, speciali vel generali, per quam eorumdem præsentium effectus impugnari, aut impediri quocunque modo valeat, & de quibus quorumque totis tenoribus habenda esset in nostris literis mentio specialis, cæterisque contrariis quibuscunque.

§. 21. Ut autem præsens constitutio perpetuis futuris temporibus observetur, nevé aliquis ejus ignorantiam prætere, seque excusare possit, volumus ut ejus exemplis etiam impressis Notarii publici manu subscriptis, & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus adhibeatur fides in judicio & extrà, quæ adhiberetur ipsis originalibus literis, si forent exhibitæ vel ostensæ.

§. 26. Ipsiusque transumptum in qualibet Civitate, Terra, Oppido, Castro, Villa, aut Burgo Status nostri prædicti, & ut melius intelligatur, ejus compendium, seu summarium vulgari lingua conscriptum affigatur & publicetur. Ac tam ipsius constitutionis, quam summarii transumptum in Cancellariis criminalibus, & in locis residentie Gubernatorum, & Officialium affixa perpetuò conferventur, & in ingressu novi Legati, Vicelegati, Gubernatoris aut cujuslibet Officialis ejus loci magistratus teneatur, ab eo intrà biduum de ea observanda jurjurandum exigere. In discessu autem, seu Syndicatus eorumdem, Legati, Vicelegati, Gubernatoris & Officialium, non solum debeant Procuratores Fisci, & Theaurarii, seu Depositarii aut substituti,

nomine Cameræ querelam exhibere, & denunciare contraventiones, & transgressiones hujus constitutionis, ab ipsis Gubernatoribus, & Officialibus factas, sed liceat cuilibet de populo id efficere. Quod si ipsis Syndicis ex rei inspectione, aut alia legitima probatione constiterit, de ipsa contraventione aut transgressionem, teneantur sub poena quingentorum aureorum par quemlibet Syndicum inobedientem eo ipso incurrenda, ad executionem ponarum in eadem nostra constitutione contentarum, sine ulla mora aut dilatione procedere.

Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo octuagesimo nono, Idibus Martii, Pontificatus nostri Anno quarto.

Die 16. mensis Apr. 1589. presentes literæ Apostolicæ in plena Camera præsentata fuerunt, & Camera ipsa ex decreto desuper facto illas admittit, ac in ipsius Camera libris registrari mandavit, prout successivè registrata fuerunt, scilicet libro tertio signaturarum S. D. N. apud me inscriptum ejusdem Cameræ Notarium.

Anno à Nativitate Domini 1589. indictione 2. die vero 26. mensis Aprilis. Pontif. Sanctiss. & D. N. D. Sixti divina providentia Papa V. anno ejus 1. presentes literæ affixæ, & publicatæ fuerunt ad valvas Cameræ, & Cancellariæ Apostolicæ, & aciei Campi Floræ ut moris est, dimissis copiis impressis affixis, per nos Joannem Freile, & Jo. Burluvale, S. D. N. Papa Curf. Alex. Parabiacus Mag. Curf.

Instituto Rotæ in Civitate Macerateni, Provinciae Marchiæ Status Ecclesiastici, ad cognoscendas lites dictæ Provinciae.

Jurisdictionem hujus Rotæ, quoad appellationes à sententiis, & decretis Episcoporum ejusdem Provinciae, declaravit Greg. XIV. inf. in sua const. 14. Romanum. Et quoad causas Mercatorum Civitatis Anconæ, limitavit Clem. VIII. inf. in sua const. 26. Ex Apostolica, fol. 38. Tom. 3.

SIXTUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam memoriam.

Romanus Pontifex supremi Judicis in Terris Vicarius, inter innumeras sibi imminentes curas, illam propensiori animo amplectitur per quam omnibus in locis, sed præsertim in Provinciis sibi & Apostolicæ Sedi immediate subiectis, pro iustitia unicuique æqua lance administranda Judices deputantur, & ad id necessaria tribunalia eriguntur & instituntur. Sanè etiam semper pro cunctarum Civitatum nostro dominio subditarum Statu pacifico, tranquillo ac prospero, felicique regimine cogitaverimus, ad Provinciam tamen nostram Marchiæ tantò accuratius aciem nostræ considerationis direximus, quantò illam (ex qua originem duximus) propensiori patriæ amore prosequimur, Et cum in ea etiam pro commode illius populorum, unum Tribunal Judicum, Rotam nuncupandum, instituire decrevissemus, nulla alia nobis commodior occurrat civitas, in qua id fieri possit, quam Civitas Maceraten, quæ aliis insignis existit, & fere in medio dictæ Provinciae, ac in Territorio secundo & ameno sita reperitur, solitaque Sedes Legatorum existit, celebrique Gymnasio, duplici Collegio clara, insignium insuper Doctorum copiosa, quæ experientia, scientia, & ordine dicendi, interpretandi, advocandi, patrocinandi eorum particulari studio præcellant.

§. 1. Hanc igitur cogitationem nostram ad effectum perducere statuentes, Motu proprio non ad alicujus nobis super hoc oblatæ petitionis instantiam, sed ex mera deliberatione & certa scientia

1588.

D. P. An 4. die 15. Mart.

Admissio & registratio in Cam. Apost.

Publicatio.

XCIV.

Edita A. D. 1588.

Causa hujus inst.

Erectio Tribunalis Rotæ in Civitate Maceraten ad deciden causas Provinciae Marchiæ.

tia nostris, deque Apostolicæ potestatis plenitudine, in dicta Civitate Maceraten. unum Tribunal Audientie causarum Rotam nuncupandum, perpetuis futuris temporibus duraturum, quod constare debeat quinque Judicibus, Auditoribus nuncupandis, Quatuor videlicet per nos, & Romanum Pontificem pro tempore existentem, & alio per Communitatem, & homines dictæ Civitatis Maceraten. eligendis, & deputandis, qui omnes & singulas Anconitan. Firman. Camerinen. Asculan. Fanen. Aſin. Maceraten. & Montis Alti, earumque jurisdictionum, cæterarumque & aliarum dictæ Provincie Civitatum, Terrarum, Oppidorum, Castellarum, Villarum, & locorum quorumcumque dictæ Provincie immediate subiectionum causas, lites & controversias civiles, tam profanas quam Ecclesiasticas, ac meras & mixtas, quomodolibet actitandas, necnon etiam criminales (in quibus appellationi locus fuerit) inter cives, incolas, districuales, habitatores, Ecclesiasticos, & Sacerdotes, ac Collegia tam regularium quam non regularium, ac Monasteria virorum, agricolas quoque, & alios subiectos sub dicta Provincia cognoscere, deridere, sineque debito terminare, ac judicare possint & debeant, Apostolica auctoritate tenere præsentium perpetuo erigimus, & instituiamus.

§. 2. Ut autem Tribunal huiusmodi constitutionibus & ordinationibus firmiter observandis fulciatur, per quas feliciter regi, & gubernari debeat, statuimus, mandamus & ordinamus quod dicti Auditores debeant esse Juris Utriusque Doctores excellentes, ac insignes usu, & peritia iudicandi præstantes, Clerici, & non uxorati, & qui in eadem Civitate Maceraten. saltem per integri anni spatium, cum eorum familiis non habitaverint, necnon ab alio Collegio Doctorum rite, prævio examine severo, ad Doctoratus lauream promoti fuerint, & per quinquennium, aut in aliquo publico Gymnasio legerint, aut in locis insignibus iudicandi officio functi fuerint, ac laudabiliter, & cum honore se gesserint.

§. 3. Duret eorum officium ad quinquennium, quo elapso non possint iterum eligi, nisi post quinquennium à die finiti officii. Præterea volumus quod dicti Auditores ipsorum officio durante, in eadem Civitate Maceraten. seu tota huiusmodi Provincia, aliquid aliud officium, sive publicum sive particulare nequeant exercere.

§. 4. Et postquam electi fuerint, in principio seu ante ingressum eorum officii, in manibus pro tempore existentium Legati sive Vicelegati dicti Provincie, vel Gubernatoris ejusdem Civitatis Maceraten. assistentibus in hoc Prioribus ipsius Civitatis iurejurando promittant, sese non contraveniunt præsentibus statutis, ac Civitatum, Terrarum, & aliorum locorum necnon provisionibus, & constitutionibus dictæ Provincie Marchie, sed illa (quatenus dicta Apostolica auctoritate comprobata, licita, honesta & in usu existant, ac sacris Canonibus, & præsertim Concilii Tridentini decretis atque Apostolicis constitutionibus contraria non sint), inviolabiliter observaturos, iustitiamque paribus administraturos, sub penis in statutis, & provisionibus dictæ Provincie expressis, ac in Syndicatu insipientis.

§. 5. Insuper ex eisdem quinque Auditoribus, quolibet anno, & in principio anni, forte extrahatur unus, qui sit Potestas ejusdem Civitatis Maceraten. & Rotæ Prætor, cum jurisdictione & terminationibus, ac oneribus & honoribus, salariis, & emolumentis, de quibus infra. Duret autem huiusmodi Potestatis & prætoris officium per annum, & eo lapsu, alius ex reliquis Auditoribus forte extrahendus in ejus locum succedat. Et nihilominus dicto anno elapso Auditor remaneat. Idemque Prætor teneatur quodcumque coram Notario Rotali, & duobus testibus ad instantiam petentis etiam parte non citata, forte extrahere singulos Auditores ad singulas causas sorte educandas, & causas prius ex-

trahantur, & deinde Auditores, dictæque extractio intelligatur facta salvis exceptionibus paribus & citra illarum præjudicium. Solus verò Prætor sit Judex in causis pupillorum, viduarum, carceratorum & miserabilium personarum, etiam si qualitates ipsorum non essent intentatæ, vel si non essent petitum secundum illa procedi, dummodo dictæ causæ sint valoris vel æstimationis centum scutis infra, & si dictum valorem excedant, adhibeatur in decisione illarum votum Auditorum, & in causa appellationis alius forte extrahatur. Sitque dictus Prætor Judex vestigalium, & damnorum datorum, adaptationis stratarum dictæ Provincie.

§. 6. Statuimus etiam quod Auditores prædicti cognoscere debeant omnes & quascumque causas cuiuscumque qualitatæ, & summe fuerint, Civitatis, ac Territorii, seu jurisdictionis Maceraten. in secunda & aliis instantiis non autem in prima, quæ coram suis Judicibus remaneant, prout hæcenus observatum fuit, nec quoad causas Ecclesiasticas, ac ad forum Ecclesiasticum quomodolibet spectantes, quæ in prima instantia ad Episcopum Maceraten. juxta dicti Concilii decreta pertineant, & in secunda verò, & aliis instantiis ad ipsos Auditores spectent. Totius verò Provincie causæ omnes etiam Ecclesiasticæ & ad forum Ecclesiasticum quomodolibet pertinentes, (dummodo non executivæ agatur in præjudicio facultatum Auditoris Cameræ Apostolicæ) summam, & æstimationem rei vel facti scutorum centum excedentes, post primam instantiam, quæ apud suos Judices pariter remaneat, in secunda & aliis instantiis cognosci debeant à prædictis Auditoribus, cum expressa tamen declaratione, quod propterea non sit nec censeatur esse derogatum, seu præjudicium privilegii seu indultis Apostolicis illarum Civitatum & locorum, quibus concessum est quod causæ in secunda instantia cognoscantur & decidentur ab illorum Judicibus seu Prædictis, nec ad alia loca trahi possint. Volumus enim quod tunc quoad secundam instantiam sit in potestate, & voluntate appellantium prosequi dictas causas appellationum juxta dicta indulta coram dictis Judicibus, vel coram dicta Rota. In ulterioribus verò instantiis coram dicta Rota privative quoad alios Judices, cognosci debeant, non obstantibus quoad prædicta debitis privilegiis & indultis Apostolicis, quavis occasione competentibus Universitatibus, & jurisdictionibus dictæ provincie Marchie, hæcenus concessis, & à nobis confirmatis de primis, & secundis instantiis, quibus per præsentem Rotæ erectionem censeatur quoad prædicta derogatum, ac si de verbo ad verbum de illis particularis mentio facta fuisset ad effectum devolvendi tantum causas appellationis ad ipsam Rotam, & non abunde.

§. 7. Habeant dicti Auditores jurisdictionem & potestatem procedendi, cognoscendi & decidendi dictas causas, ac in illis vota, prout juris esse videbitur præstandi, excepto eo, coram quo pendebat causa, qui in causis per ipsum proponendis votum non habeat nisi vota essent æqualiter divisa, quo casu debeat uni parti accedere, & sic semper obtinet illud quod major pars judicaverit.

§. 8. Sententiæ autem proferri debeant ab illo Auditore, coram quo processus formatus fuerit, in quibus proferendis illud observetur; quod illa sententiæ, quæ de consilio, & assensu Coauditorum data fuerint, legantur & alia intelligibili voce proferri, ut mox Notario causæ subscriptæ ab illo qui eas protulerit tradi debeant, aliàs sint ipso jure nullæ, ita quod tamen Judices Rotales prædicti in quavis causa, etiam à Sede Apostolica delegata aliquam definitivam sententiam non proferant absque ejus lecturâ & publicatione, & sententia aliter lata etiam de consensu partium non valeat nec jure subsistat, aut aliquo modo executioni demandari possit.

§. 9. Appellationes quoque & querelæ, & recursus, nullitates, in integrum restitutiones, in prædictis causis etiam tempore publicationis præsen-

Auditores
Causas Civitatis & Territorii Maceraten. in secunda & aliis instantiis, Provincie autem causas non executivas, & summam scutorum non excedentes, in prima & secunda instantia nisi obtineant locorum privilegia, ac etiam in aliis instantiis non obstantibus dictis privilegiis cognoscant.

Tu vide declarationes indicatas in rubr.

Vota in causis danda.

Sententiæ proferenda.

Appellationes, &c. interponenda à judicibus

Auditores
sint quinque
Clerici 1. U.
D. ab aliquo
Collegio
laureati, &
per quinquennium,
aliquo publico
Gymnasio
legerint.

Officium du-
ret quinquennium.

Iurent ista &
alia Provin-
cia statuta
servare, &
justitiam
omnibus mi-
nistrare.

Potestas ut-
nus ex quin-
que Audito-
ribus anno
quolibet &
ad annum
extrahatur
qui causas
aliis Audito-
ribus distri-
buat, &c.

1588⁷

Provincia
& ab ipsis
Auditoribus
ad Rotam sal-
vis locorum
privilegiis
devolvantur.

Auditor cau-
se appellat
quando de
votum.

In causis in-
frā summam
scut. centum
Auditor so-
lus iudicat,
& semel ap-
pellatur.

Dux senten-
tie facien-
tem iudica-
tam.

In causis à
centum infrā
summam &
à 50. infrā
summamissi-
mè proceda-
tur & bis ap-
pellari non
licet.

Causæ non
appellabiles
quomodo
cognoscantur.

tium nostrarum literarum quomodolibet penden-
tes, ab ipsis Auditoribus, seu ab aliis quibuscum-
que Iudicibus dictæ Provinciæ Marchiæ, necnon
etiam à prædictarum Civitatum Episcopis, eorum-
que Vicariis, seu Locatenentibus, ac etiam ab arbi-
tris, seu arbitratoribus conjunctim vel divisim in-
terponendæ, porrigendæ, petendæ, ac respectivè,
quomodolibet proponendæ, (privilegiis tamen, seu
indultis prædictis, ut præfertur semper salvis) ad
quemcumque interponendæ, ad eisdem Audito-
res omnes devolvantur, ac ipso jure devolutæ
esse intelligantur & cognoscantur, ac etiam si ad
nos & successores nostros Rom. Pontifices inter-
positæ fuerint, nihilominus per eosdem Auditores,
Rotæ cognoscei & decidi debeant per Iudicem extra-
hendum secundum ordinem præsentium, nec aliter,
aut alio modo, & fiant processus coram uno ex eis
forte extrahendo, excepto eo, coram quo fuit for-
matus in prima instantia, qui licet votum habere de-
beat in secunda & ulteriori instantiis, tamen coram
eo processus formari non possint.

§. 10. Et similiter Iudex extractus in secunda &
ulteriori instantiis, votum non habeat in causa, nisi
in casu de quo supra.

§. 11. In causis verò summam vel valorem scuto-
rum centum non excedentibus, quilibet Auditor
solus possit causam cognoscere, & iudicare, cum
distributione causarum per dictum Prætozem pro
tempore existentem forte faciendā. Et in prædi-
ctis causis liceat semel tantum appellare, & causam
appellationis, etiam quoad nos & Romanos Pon-
tifices devolvatur, tamen cognoscei & decidi possit
per ipsam Rotam, & per alterum ex prædictis Audi-
toribus similiter forte extrahendum.

§. 12. Quæ dux sententiæ si erunt conformes
transcant illiquè ut præfertur, in rem iudicatam, &
rei iudicatæ vim habeant, & ulterius appellare,
etiam ad summam Pontificem non liceat. Si verò
prædictæ dux sententiæ erunt difformes, & contigat
appellare, etiam ad summam Pontificem, appella-
tio nihilominus cognoscei & terminari queat per
aliquem ex tribus aliis Auditoribus, qui non iudica-
runt, ordine tamen de quo supra, nec liceat ulterius
ad summam Pontificem appellare.

§. 13. A summa verò aut valore scutorum cen-
tum infrā usque ad summam scutorum quinquaginta,
summariè, simpliciter & de plano, sine frep-
pita, & figura iudicii, sola facti veritate inspec-
ta quotidie (messibus, & vindemiis, ac aliis tempo-
ribus feriatis, & DEO dicatis tamen exceptis) per
Auditores prædictos, & in eorum domibus si-
ne extractione, Coauditorum intervenia proceda-
tur, terminatione illarum in Palatio ad eorum
Tribunalia respectivè sine Coauditorum votis faci-
enda, & semel tantum appellatio, recursus,
aut querela admittatur. Causas insuper civiles cu-
juscumque quantitatæ siue valoris scutorum quinquaginta
infrā, summarissimè, brevi manu singulis diebus &
horis, præterquam in honorem Dei feriatis, &
sine terminorum observatione & per breves dilata-
tiones ad summam duas, & etiam si negotium
patietur sine scriptis, quilibet ex Auditoribus
Rotæ, etiam sine extractione aditus audi-
at, cognoscat, & terminet, ac ab eorum termina-
tionibus semel tantum, ad Prætozem dumtaxat
appellatur, in casibus aliis non prohibitis
appellari ex forma statutorum, siue constitutionum
dictæ Provinciæ.

§. 14. Attamen omnes causæ, in quibus de
jure appellatio non debet admitti per omnes Iudices
supradictos conjunctim cognoscantur, & terminentur,
ita tamen quod coram uno eorumdem forte
extrahendo procedi possit, qui votum, ut supra
dictum est, nullatenus habeat, & si inter partes
fuerit discordia super natura & qualitate ipsius
causæ, videlicet verum appellatio de jure veniat ad-
mittenda, necne, prædicti Iudices antè omnia su-
per hoc pronuncient, & ab illorum pronuntiatione
tunc non detur appellatio.

§. 15. Omnes exceptiones juxta formam constitu-
tionis Provinciæ Marchiæ, referantur in fine li-
tis, & pro reservatis habeantur, etiam præsentis
constitutionis vigore abque aliqua Iudicis pronun-
tiatione.

§. 16. Nullitates etiam quæcumque processum
siue principaliter siue incidenter proponendæ, unā
cum appellatione proponantur. Et nihilominus
etiam si propositæ non fuerint, pro propositis intel-
ligantur, & de illis æqualiter cognoscei debeat juxta
constitutiones dictæ Provinciæ.

§. 17. In causis mercedum quarumcumque, ac
cibi, & potus, singuli Auditores procedendi pote-
statem habeant, & illa manu Regia, prout possit
Legatus Apostolicus à Latere, terminent, & decidan-
t, ac executioni demandent.

§. 18. Causæ ad puncta reducantur, & juxta si-
lum & morem Romanæ Curie examinentur ac decidan-
tur.

§. 19. Ut autem vota præstanda per supradictos
Auditores facilius præferantur, & omnibus patean-
t, Notarius ipse Rotæ, de eis rogari debeat.

§. 20. Decisiones autem Rotaes non publicen-
tur nisi per munus Notarii causæ, à quo diligentissi-
mè custodiri debeant, ut perpetuis futuris tempo-
ribus pro faciliiori litium expeditione invenian-
tur.

§. 21. Tamen autem Prætor quàm alii Auditores,
teneantur in causis coram eis vertentibus, præfer-
tim summam & valorem scutorum centum ex-
cedentibus, aut in quibus aliquid fieri petitur si-
ne certa expressione quantitatæ aut ubi probabiles
difficultates adesse apparebit, rationes & causas,
ac motiva, seu jura & allegationes in decisionibus
describere, ac partibus ad effectum ut super eis ab
Advocatis consultari possit tradere teneantur, sub
penis arbitrio Syndicatorum imponendis ipsis.

§. 22. Auditoribus in causis coram ipsis verten-
tibus, non possit dari adjunctus qui non sit de Rota,
& sic aliquo casu non possint Auditores prædicti cum
aliquo adjuncto extrā Rotam & qualibet ratione vel
causa iudicata, alius sententia quoad impetrantem
adjunctum, vel utentem tali rescripto sit ipso jure
nulla, ac de tali nullitate semper & quodcumque
opponi possit, non obstante quocumque & longissi-
mi temporis intervallo, & nihilominus Auditores
in iudicatu teneantur.

§. 23. Præterea quilibet ex Auditoribus, prote-
stationes quæcumque & sequestra, (de iure tamen
ex forma Constitutionum seu statutorum permissa)
cum clausula associationis, qualibet etiam
immisiones abque alia extractione de eis faciendā
committere possint, dummodò prædicta à causis,
coram aliquo extracto indecis pendentes non de-
pendeant, & in talibus causis à protestationibus, se-
questrationibus & associationibus inchoandis, si ul-
teriori processu egeant, fieri debeat extractio Iudi-
cis, & coram eo tunc extrahendo procedatur.

§. 24. Decernimus etiam quod pendentia iudicii
super absolutionibus à juramento, in obligationibus
appositis usuraria pravitare, fictione, simulatione,
ac dolo coram Iudice Ecclesiastico, non impediatur
processum inchoatum vel inchoandum à Rota su-
per executione instrumenti, nec executionem ip-
sam, præstita tamen per exequi volentem cautione
idonea juxta formam literarum Apostol. fœl. rec. Julii
Papæ II. prædecessoris nostri, quarum
literarum vis & effectus ad alios casus præmissos,
& similes extendatur.

§. 25. Auditor etiam qui ultimam sententiam tu-
lerit, expensas non taxatas taxarum, & sententias
definitivas, & interlocutorias vim rei iudicatæ for-
titas, in Rota vel extrā ipsam per quemcumque
etiam superiorem Iudicem latas, exequi possit, &
debeat. Et istud etiam fervetur in eventum quod
aliquis ex Auditoribus prædictis, propter aliquod
impedimentum, aut finitum officium deficeret per
successorem in locum prædictum, ut supra vacan-
tem.

1588.

Exceptiones
omnes in fi-
ne litis refer-
vare cen-
entur.

Nullitates
stent cum
appellatio-
ne.

Sed Clem.
VIII. tres
tantum iussit
attendi ut in-
frā in ejus
confil. 18.
fol. 25. Tom.
3.

In quibus
causis manu
Regia proce-
dat.

Causa exa-
minetur jux-
ta siylum
Rom. Curie.

Vota agen-
tur à Nota-
rio Rotæ.
Decisiones
publicentur
per Nota-
rium causæ.

Prætor &
Auditores ra-
tiones in deci-
sionibus
describant.

Auditoribus
adjunctis ex-
trā Rotam
dari non pos-
sit.

Sequestra, af-
fociationes,
&c. quæ de-
cerni possint.

Judicium su-
per absolu-
tione à jura-
mentis non
impedit
processum in
Rota data
de qua hic.

Auditor ul-
timo
pronuncians ex-
pensas taxat,
& rem iudi-
catam in Ro-
ta & extrā
exequi pos-
sit.

Decreta voluntarie jurisdictionis Auditor fieri prator interponat.	<p>§. 26. Decreta voluntarie jurisdictionis interponendi in Palatio, & extrâ Palatium, si dictis Auditoribus videbitur, & prout fuerint requisiti, ac dandi, & decernendi Tutores, & Curatores minoribus, singuli Auditores, sicut prator, potestatem habeant.</p> <p>§. 27. Auditores etiam predicti, singulis diebus convenire debeant, etiam si non sedeatur, semel in die pro commoditate litigantium, iis vero diebus quibus federe debeant & jus reddere, statim post pulsam Campanæ Rotæ audiant principales, & Protonotarios causarum, & hora post pulsam dictæ Campanæ statim dicti Auditores federe debeant per horam cum dimidia ad minus. Ad hæc iidem Auditores jus reddant in aula assignanda alternis diebus, videlicet Lunæ, & Mercurii, & Veneris, & si non potuerint predictis diebus jam ordinatis, sedeant, reliquis diebus, & si essent duo vel tres successive continui festorii dies, aut in principio, aut in fine hebdomadæ exceptis diebus feriatis, & diebus Sabbati.</p> <p>§. 28. Præterea non possit quoquomodo in Prætozem seu Auditores predictos, vel aliquem ex eis sub eorum nomine proprio compromitti, vel remitti in causis, coram eis pendentibus vel lite mota, quod tamen liceat quando iis non est adhuc judicialiter cepta, & si acciderit quod causæ hujusmodi sit ut supra compromissa, per laudem five sententiam à predictis Auditoribus terminari non possint, tunc ille seu illi Auditores qui fuerint arbitri in tali causa electi aliquo modo intervenire, seu concessum, aut votum præstare non debeant, sed solum alii, qui non fuerint arbitri causam prædictam cognoscere possunt, & judicare, excepto semper voto illius coram quo formatur processus.</p> <p>§. 29. Et ut fraudibus occurratur, non possint Auditores predicti advocare in Civitate Maceraten. aut consulere, aut consiliis aliorum se subscribere in aliqua causa civili Ecclesiastica, vel criminali, aut cuiuscunque generis, quæ directè vel indirectè concernat, vel concernere possit interesse alicujus districtualis, & provincialis, seu Universitatis, vel Collegii dictæ Provincie Marchie, aliàs si mutatis nominibus, vel quomodocunque fuerit huic capitulo contraventum, contraveniens statim amittat officium, & teneatur ad alias pœnas arbitrio Syndicatorum.</p> <p>§. 30. In causis etiam in dicta Rota vertentibus, nulla sententia ferri possit, nisi prius confecto registro.</p> <p>§. 31. Iidem autem Auditores, causas coram eis introductas expedire valeant prout de jure, & qualescunque inhibitiones post conclusum in causa eis præsentatas à quocunque, etiam à Romana Curia emanatas, rejicere possint, & admittere non teneantur.</p> <p>§. 32. Et, si contigerit obitus, vel absentia, aut infirmitas, vel aliud iustum impedimentum Prætoris, aut alicujus ex Auditoribus per octo dies continuos vel pauciores, causæ coram impedito, vel absente vertentes, stent in suspensio toto tempore octo dierum, & illis elapsis ulterius procedatur coram subrogatis, dummodò acta scribantur per Notarios deputatos dicti Judicis infirmi, vel absentis, aut aliàs impediti. Et si unus ex Collegio absens, vel impeditus fuerit ut supra, coram aliis presentibus causæ agitari possint, & Rota ipsa à tribus representetur.</p> <p>§. 33. Causæ omnes tam ordinariæ quàm Commissariæ etiam à Sede Apostolica ad referendum delegatæ, quæ tempore renovationis Rotæ pendebant indecisæ, intelligantur novis Auditoribus commissæ, qui in idem Tribunal, & sessionem juxta ordinem, & prioritatem Doctoratus successerint.</p> <p>§. 34. Non liceat autem ipsis Prætori, & Auditoribus, abesse extrâ Civitatem Maceraten. & districtum dictæ Provincie Marchie, nisi cum licentia Legati, Vicelegati seu Gubernatoris legitime obtenta, excepto tempore feriarum propter necessi-</p>	<p>tates hominum introductarum, quo tempore abesse possint per mensem, obtenta tamen prius saltem verbo licentia à predicto Gubernatore seu Vicelegato. Itâ tamen quod ipsorum Auditorum tempore predictarum feriarum, tres computato Prætoris in Civitate Maceraten. continuè residuant, quæ tamen licentia detur iuxta precedente causâ.</p> <p>§. 35. Præterea Prætor, & alii quatuor Auditores stare debeant in syndicato quolibet anno cum retentione salarii infra dicendi, vel debeant præstare cautiones de Judicio fisci, & judicatum solvendo in forma depositi in causâ syndicatus fieri debeat Kalendis Julii cuiuslibet anni, & successive prosequi, nec aliquo modo, vel causâ prætermittatur. Et quoniam multi forsitan non auderent querelare, cognoscentes finitum non esse eorum officium, præcludatur via, lesis, in fine quinquennii debeant stare syndicati de omnibus causis, tam ordinariis & Commissariis, quàm à Sede Apostolica delegatis, ac de omnibus gestis per eos, & eorum quemlibet respectivè toto tempore eorum officii exceptis iis de quibus querelatum, & judicatum fuisset in aliis syndicatis precedentibus eorum officii.</p> <p>§. 36. Syndici autem eligantur per consilium Creditiæ, & Gubernatore seu Vicelegato dictæ Civitatis Maceraten. qui in numero sint duo Doctores, de Consilio Creditiæ, duo causidici, & addantur duo mercatores pro majori & faciliori decisione causarum mercantilium si quæ erunt. Et contra tales syndicos sic electos, nulla exceptio neque etiam incompetencia opponi possit.</p> <p>§. 37. Et si quis de Auditorum numero fuerit condemnatus doli, fraudis, vel circumventionis, aut imposturæ seu baratariæ, sit privatus officio suo teneaturque de damno partis læsæ, & puniatur secundum formam constitutionum dictæ Provincie.</p> <p>§. 38. Et ad tollendam omnem dubitationem, Auditores predicti infra proximum diem à die extractionis five electionis Syndicorum, & intimationis nominum eorumdem, debeant proponere, allegare, & dicere coram Prioribus, & Legato, five illius Gubernatore predictis, omnes causas suspicionis quas singulariter vel conjunctim habuerint, contra aliquem ex predictis Syndicis, ut supra eligendis, quas ipsi iustificare debeant infra sex dies tunc proximè futuros, & predicti Priores, unâ cum Legato five Gubernatore d. Civitatis Maceraten. eas admittere vel rejicere, aut aliàs super illis providere, prout juri, æquitati, & honestati magis convenire videbitur, quibus sex diebus durantibus, omnia dicti Syndicatus stent in suspensio, in reliquis autem in Syndicato predicto termini, & alia substantialia juxta constitutiones dictæ Provincie observentur.</p> <p>§. 39. Ut autem habeant dicti Auditores ac Prætor undè sustentari possint, ordinamus quod ipse Prætor qui pro tempore fuerit, pro suo salario habeat scuta triginta monetæ Marchie quolibet mense, & insuper omnes redditus, proventus, emolumenta, regalia, & provisiones quæ juxta statuta dictæ Civitatis, vel ex approbata consuetudine Prætoribus dictæ Civitatis hæctenus præstari consueverunt, necnon quartam partem penarum malefactorum seu proventuum ex maleficiis, vel quasi, proventuum Cameræ dictæ Civitatis Maceraten. realiter & cum effectu incorporandorum, juxta statuta, & reformationes dictæ Civitatis Maceraten. ac concessionem super eisdem maleficiis per piæ mem. Pium Papam Quintum etiam prædecessorem nostrum emanatam, prout hæctenus observatum fuit.</p> <p>§. 40. Alii verò singuli Auditores habeant pro eorum salario quolibet mense pariter scuta triginta dictæ monetæ, & in causis Commissariis Apostolicis habeant sportulas juxta formam constitutionum provincie predictæ. In aliis verò causis, pro sportulis solvi debeat unum scutum auri pro quolibet</p>	<p>Syndicati- que anno quolibet & in fine offici cui debeant.</p> <p>Syndicato- reque eligantur ut hic.</p> <p>Condemnati in Syndicato pœnas hic expressas incurrant.</p> <p>Syndicandi contra Syn- dicos suspi- cionis causâ proponere & iustificare debeant.</p> <p>Præter sala- rium hic prescriptum percipiat.</p> <p>Auditores salarium hic signatum habeant.</p>
--	--	---	--

centenario estimationis causæ tractandæ in sorte principali utque ad summam mille scutorum, quod si æstimatio exceſſerit dictam summam mille scutorum, quod si æstimatio exceſſerit dictam summam in quacumque quantitate, nihilominus non amplius decem scutis juxta modum infraſcriptum distribuendis perſolvi debeat pro minori litigantium diſpendio. Et si contingat aliquem ex Auditoribus, pro inſpectione & viſione loci, ut facilius, & celerius poſſit cauſas decidere, illuc ſe conferre, ſi in Territorio Civitatis Maceraten. fuerit, habeat equum pro ſe & famulo, & dimidium ſcuti auri, ſin verò extrà, ità quòd eadem die redire non poſſit, habeat expenſas viſus pro ſe & famulis ac equis, ac ſcutum unum auri pro quolibet die.

§. 41. Et ad tollendum omne dubium, ſalarium ſive publicum ſtipendium prædictum, ipſi Auditores percipere debeant pro eo dumtaxat tempore, quo officium ſuum hujusmodi exercerint, ità quòd adveniente caſu vel mortis, vel ceſſionis, diſceſſus alicujus ipſorum Auditorum, nec ejus hæredes prætere, nec petere poſſint hujusmodi ſalarium, niſi pro tempore quo officium exercuerint, niſi aliquid forte deberetur pro reſiduo.

§. 42. Quo verò ad ea quæ Notarii, & Bajulorum, ſive Curſorum, ſive ſigilli mercedem, laborem, incommodum, & maximas expenſas, & detrimentum reſpiciunt, obſervetur taxa jam conſeſſa S.R.E. Camerario. Alterius Prætor qui pro tempore erit, facere debeat imbuſationem omnium nominum Cauſidicorum, & Advocatorum publicè exercentium in Civitate Maceraten. officium Procuratoris, & Advocati, & duas burſas retinere, in quibus erunt brevìa nominum prædictorum ſtatèque debeant penes dictum Prætorem, qui quolibet ſemeltre, & in principio ſemeltre coram duobus ſeſſibus, & ſuo Notario forte extrahat duo ex nominibus imbuſatis, quorum nomina forte extrahantur pro ſemeltre immediatè tunc ſecuturo, qui ſint, & appellari debeant Advocatus, & Procurator pauperum reſpectivè, & teneantur ſingulis diebus reſequiti coram quibuſcumque Judicibus gratis & amore DEI pro pauperibus, & miſerabilibus intercedere, & poſtulare, nec poſſint aliquid percipere, vel acceptare, per ſe vel alium ſeu alios etiam à ſponte dare volentibus niſi fuerint eſculenta, & poculenta, quæ triduo conſumi poſſint, & ſi quis extractus pauperum Procuratorum abſque cauſa legitima reſcuſaverit, vel ſe negligenter geſſerit, impietatis nota afficiatur, & extraordinariè arbitrio pro tempore exiſtentis Legati ſive Gubernatoris, aut Prætoris Rotæ puniatur.

§. 43. Poſtremò mandamus, quod cauſæ ſemel in dicta Rota introductæ, quovis modo niſi per nos & eoſdem ſucceſſores noſtros Rom. Pont. pro tempore exiſtentes, ac in vim commiſſionis per nos & eoſdem ſucceſſores noſtros, noſtra vel eorum propria manu, ſeu de mandato, vel in præſentia ſignatæ, niſi de utriuſque partis conſenſu avocari nequeant. Nec prætor, vel Auditores prædicti inhibitionibus ſeu mandatis, eis vigore commiſſionum aliter quàm ut præſertur ſignatarum, præſentatis, etiam vigore cujuſcumque ſententiæ, ac ſub cenſuris, penis etiam pecuniariis parere teneatur, & ob non partitionem inhibitionibus, & aliis prædictis aliquam penam minimè incurrant.

§. 44. Eiſdem quoque pro tempore exiſtentibus Rotæ hujusmodi Auditoribus ac Prætori, ut omnibus & ſingulis privilegiis, exemptionibus, immunitatibus, indulgiis, conſeſſionibus & gratiis, etiam circà auctoritatem judicandi, votandi, ſententiandi, ſequeſtra & mandata decernendi, reponendi, reſtituendi, apoſtolos concedendi, relaxandi, inhibendi, citandi etiam ſub cenſuris declarandi, aggravandi, reaggravandi, auxiliùmque brachii ſecularis invocandi, omnibuſque aliis & ſingulis facultatibus, & auctoritatibus quibus ſimiles Rotæ Bononiæ. Auditores uruntur; fruuntur, potiun-

tur, & gaudent (præterquàm in hiſ in hiſ qui præſentibus, aut aliis noſtris literis aliter diſpoſita reperiuntur) pariformiter uti, ſui, poti & gaudere omni tempore valeant concedimus, & indulgemus.

§. 45. Et ulterius, ut pro tempore exiſtentes Prætor, & Auditores, eorum officio durante à quibuſvis gabellis, & datis tam impoſitis quàm noviter, & in futurum quavis de cauſa imponendis, liberi, immunes, & exempti eſſe debeant pariter concedimus & indulgemus.

§. 46. Præterea Congregatione Collegionem Doctorem Curialium d. Provinciæ, & ipſius Civitatis Maceraten. & cum intervenſu moderni, ac pro tempore exiſtentis ejuſdem Civitatis Maceraten. Gubernatoris ſeu Provinciæ prædictæ Legati, ſeu Vicelegati, necnon priorum dictæ Civitatis Maceraten. quondocumque pro perſonarum, temporum, & locorum qualitate expedire melius videbitur, ſupràdicta ſtatuta, conſtitutiones, & ordinationes mutare, revocare, & alterare, ac alia de novo (licita tamen) & honeſta, ac ſacris Canonibus, necnon dicti Concilii decretis minimè contraria, per nos tamen & ſucceſſores noſtros confirmanda) illorum loco facere, ſtatuerè, & ordinare poſſint, & valeant, licentiam & facultatem concedimus, & impartimur.

§. 47. Ac ut omnis dubitationis, & diſſenſionis occaſio inter dictos Auditores, & alios quoad præcedentias, & publicæ ſeſſiones, vel incedendi loca adimatur, habeant dicti Auditores tam incedendo, quàm ſedendo, immediatum locum poſt Locatentes Legati ſeu Vicelegati, aut Gubernatoris dictæ Provinciæ, & Civitatis Maceraten.

§. 48. Demùm pro commodiori exactionis ſportularum cauſarum ordinariorum hujusmodi commoditate, unum Depoſitarium in eadem Civitate Maceraten. ad arbitrium dicti Gubernatoris ſeu Legati, vel Vicelegati eligendum, qui ſportulas prout ſuprà exigere, & conſervare debeat, ad hoc ut ex illis una maſſa communis conſtituatur, cujus medietas in ſolutionem ſtipendiorum Prætoris, & Auditorum convertatur ultra ſupràdictum ſtipendium deſuper conſtitutum ſcutorum triginta pro quolibet Auditore, & altera medietas Communitati, & hominibus d. Civitatis Macer. edat, videlicet pro expenſis domus Rotalis, & eorum Auditorum conſtituimus & deputamus.

§. 49. Cæterum, dilectum filium noſtrum Henricum Ct. S.S. Pudentianæ Preſbyterum Cardinalem titulum nuncupatum modernum, & pro tempore exiſtentem S.R.E. Camerarium in dicta Rota, & ejus Auditorum, earumque juriſ & privilegiorum ac indultorum quorumcumque Protectorem, cum omnimoda facultate & auctoritate omnia & ſingula quæ ad Prætoris officium quomodolibet de jure vel conſuetudine ſpectant & pertinent, & quæ alii ſimiles S.R.E. Cardinales protectores facere & exercere poſſunt & conſueverunt, faciendi, dicendi, & exercendi dicta auctoritate perpetuò etiam conſtituimus, & deputamus.

§. 50. Decernentes præſentes literas ex quacumque cauſa nullo umquàm tempore de ſubreptionis, vel obreptionis aut nullitatis vitio, ſeu intentionis noſtræ, vel quopiam alio defectu notari, ſive eas inſingulis, invalidari, ſeu revocari poſſe, ſed illas ſemper & perpetuò validas & efficaces exiſtere & fore, ſuoſque plenarios, & integros effectus ſortiri, & obtinere, necnon inviolabiliter perpetuò obſervare.

§. 51. Sique per quoscumque Judices & Commiſſarios etiam ejuſdem Palatii noſtri Apoſtol. cauſarum Auditores & ejuſdem Romanæ Eccleſiæ Cardinales, etiam de Latere Legatos ſeu Vicelegatos, aut Camera Apoſtolicæ Præſidentes & Clericos, vel quosvis alios, ſublata eis & eorum cuilibet quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, ubique locorum judicari, & deſiniri & in-

Exemptio-
que ab omni-
bus datis
&c.

Ordinationes
iſtæ corrigi
& tutari
poſſunt ut
hic.

Locus poſt
Locum tenentes
Legati aut Gubernatoris,
eiſdem Auditoribus
conceditur.

Sportularum
miſſa modo
hic expreſſio
ſieri debeat.

Protectores
Rotæ deputatio.

Cauſæ præſervativæ
hujusmodi
Rotæ.

Decretum
irritans.

terpre-

Salaria prædicta
pro tempore ſolum
quo quis
officium
exercuerit
petere poſſit.

Pauperum
Advocati &
Procuratores
quolibet ſemeltre
à prætor
elegantur,
& gratis
pro pauperibus
ſerviant & officium
recuſantes aut
negligenter
exercentes
puniantur.

Cauſa ſolida
per reſcripta
propria manu
Papæ ſignatæ
aut de conſenſu
partium avocari
poſſint.

Privilegia
Auditorum
Rotæ Bonon.
hujus Rotæ
conceduntur.

Officiales
Status Eccle-
siastici man-
data dictæ
Rote exequi
faciant.

terpretari debere, irritum quoque & inane quicquid fecus super his à quoquam, quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 52. Ac mandantes omnibus & singulis totius Status Ecclesiastici prædicti Gubernatoribus, Potestatibus & eorum Locatentibus, Legatis, Vicelegatis, necnon venerabilibus fratribus nostris, Archiepiscopis, & Episcopis, ac dilectis filiis eorum Vicariis in spiritualibus generalibus, & quoties super hoc fuerint requisiti, sententias, decreta, statuta, sequestra, mandata, executorialia literas, remissoriales, citationes & alia à dicta Rota, & ejus Auditoribus emananda pro tempore, omnibus opportunis remediis executioni demandari faciant realiter, & cum effectu prout opus fuerit, & eis commissum exiterit.

Clausula de-
rogatoria.

§. 53. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac etiam dictæ Provinciæ, & hujusmodi Civitatum, Oppidorum, Terrarum, Castrorum, Villarum, & locorum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, legibus etiam municipalibus, usibus & naturis, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis, etiam eisdem Provinciæ Civitatibus, Oppidis, Terris, Castris, Villis & locis, eorumque Communitatibus, Universitatibus, jurisdictionibus, Gubernatoribus, Potestatibus, Officialibus & incolis, & personis sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis, in contrarium forsan quomodolibet concessis, confirmatis & innovatis, quibus omnibus etiam si de illis eorumque totis tenoribus, specialis, specifica & expressa, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio ad hoc servanda foret, eorum omnium & singulorum tenores, ac si de verbo ad verbum exprimerentur, & infererentur, præsentibus pro sufficienter expressis, & insertis habentibus, illis alias in suo robore permanens, hac vice dumtaxat harum serie specialiter & expresse, motu, scientia & potestatis plenitudine paribus derogamus & derogatum esse volumus, cæterisque contrariis quibuscumque.

Nulli ergo, &c.

Dat. P. An. 4.
die 15. Mart.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1589. Idibus Martii, Pontificatus nostri Anno 4.

Admissio &
registratio in
Camera Apo-
stolica.

Die 21. Aprilis 1589. præsentibus literis Apostolicis in plena Camera præsentata fuerunt, & die 28. ejusdem Camera ipsa referente Reverend. D. Bartholomeo Casio dictæ Camere Clerico, & Judice ad hoc ab ipsa Camera specialiter deputato, citato prius R. P. D. dictæ Camere Generali Commissario, illas admisit, & registrari mandavit, prout successivè registrata fuerunt in ejusdem Camere libris, scilicet libro tertio signaturarum S. D. N. fol. 49. apud me infrascriptum dictæ Camere Notarium.

Tydeus de Marchis.

Sequitur tenor Constitutionis circa erectionem & concessionem Notariatuum, & Curatorum Rote.

SIXTUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

IN suprema Justitiæ Sede, & potestatis plenitudine à Domino constituti, ad ea libenter intendimus, per quæ acta causarum quarumlibet à personis idoneis in omnibus Tribunalibus, & præsertim à nobis erectis, & institutis, diligeret & diligenter cum litigantium commodo adnotentur.

Compendium præ-
ced. const.

§. 1. Cum itaque nos nuper ex certis rationalibus causis in Civitate nostra Maceraten. unum Tribunal Audientie causarum Rotam nuncupatum, perpetuis futuris temporibus duraturum, quinque Judicum Juris utriusque Doctorum, excellentia,

usique & peritia judicandi præstantium, qui omnes, & singulas totius Provinciæ Marchiæ, ac sub illa comprehensorum, illique immediate subiectorum Civitatum, Terrarum, Oppidorum, Castrorum & locorum, illorumque habitatorum & incolarum causas & lites, ac controversias civiles, tam prophanas quam Ecclesiasticas, ac meras & mixtas, quomodolibet aditandas, necnon etiam criminales in quibus appellationi locus foret, inter Cives, incolas, districtuales, Clericos & Sacerdotes, ac Collegia tam secularium quam regularium, necnon Monasteria virorum, agricolas quoque, & alios subditos sub dicta Provinciâ, tam in prima diocesi & jurisdictione Maceraten. quam secunda, & ulterioribus instantis, in causis appellationum totius Provinciæ hujusmodi, cognoscere, decidere, sinque debito terminare, ac judicare possent & deberent, Apostolica auctoritate, Motu proprio perpetuò erexerimus, & instituerimus, prout in nostris inde confectis plenius continetur.

§. 2. Nos erectionem, & institutionem hujusmodi ad effectum perducere statuentes, ac operæpretium esse reputantes, quo dictum Tribunal magis prosperè dirigatur, ac æquitati, & publicæ commoditati, utilitatisque salubris consulatur, providere volentes, Motu simili, non ad alium nobis super hoc oblate petitionis instantiam, sed ex mera deliberatione & certa scientia nostri, deque Apost. potestatis plenitudine, unum prædicti Tribunalis Notariatuum Officium à quinque æque idoneis Notariis exercendum, uno scilicet pro quolibet Auditore, & Prætoris, quod pro tempore obtineas omnium & singularum causarum, litium, & controversiarum civilium, tam prophanarum, quam Ecclesiasticarum, ac merarum, & mixtarum, coram ipsis Auditoribus pro tempore aditandarum, ac ab ipsis decidendarum, etiam omnium sententiarum tam definitivarum quam interlocutoriarum, ac decretorum, etiam vim definitivarum sententiarum habentium, ac denique quorumcumque actuum, instrumentorum, scripturarum, concessionum, gratiarum, privilegiorum, facultatum & executionum, in præmissorum executionem, aut aliis desuper faciendorum, & quorumvis aliorum ab eisdem Auditoribus tractandorum, definiendorum, decidendorum, & agendorum, sigillo tamen solius Prætoris, seu Potestatis ipsius Tribunalis sigillandorum, verus, & solus Notarius existat.

§. 3. Necnon octo Cursorii officia ejusdem Tribunalis, qui omnes & singulas personas, quascumque dignitates, status, gradus, ordinis, conditionis, præminentie & excellentie existentes, prout opportunum fuerit, citare, easque intimare, & inhibere, ac quoscumque alios actus ad Curses & Mandatarios Civitatis nostræ Bonon. de jure, usu, vel consuetudine aut alias quomodolibet spectantes & pertinentes facere, gerere, & exercere liberè ac licitè valeant, Apost. auctoritate prædicta tenore præsentium perpetuò erigimus, & instituimus.

§. 4. Illaque sic erecta & instituta, dilectis filiis, Communitatibus, & hominibus prædictæ Civitatis Maceraten. qui propter urgentes, quibus hoc tempore premimur necessitates, summam quatuor millium scutorum monetæ, ad rationem decem juliorum pro quolibet hujusmodi futo realiter perfolverunt, & cuilibet ex Auditoribus prædictis salarium mensurum triginta scutorum perfolvere promiserunt, cum omnibus & singulis illorum scripturis, honoribus, oneribus, salariis, privilegiis, prærogativis, & emolumentis confectis, Apost. auctoritate prædicta, etiam perpetuò concedimus & assignamus. Itaque quòd liceat Communitati & hominibus prædictis, Officia prædicta per substitutos idoneos, ad eorum nutum ponendos & amovendos, exerceri facere, aut illa personis sibi benevisis vendere, & alienare, seu ad vitam, vel ad tempus locare, arrendare, ad firmam dare,

Erectio Offi-
cium, &
Quinque No-
tariarum,
unus scilicet
pro quolibet
Auditore d.
Rote.

Erectio offi-
cium octo
Cursorum ad
citandum
&c. in causis
d. Rote.

Concessio
didorum
omnium Of-
ficiorum
Communitati
Maceraten.

necon de illis tanquam de re sua propria disponere, & ordinare, illorumque jura, pertinentias, obventiones, & emolumenta per dilectum filium nostrum Henricum p. t. S. Padentianæ presbyterum Cur. Caetanum nuncupatum S. R. E. Camerarium taxanda, & moderanda, percipere, exigere, & levare, ac in solutionem dicti salarii menstriui omnino convertere.

Concessio omnium privilegiorum concessorum Notariis & Curforibus Rotæ Bononiæ.

§. 5. Decernentes quod Communitates & homines prædicti dictaque Officia pro tempore obtinentes & exercentes omnibus & singulis privilegiis, immunitatibus, exemptionibus, facultatibus, prærogativis, honoribus, favoribus, gratiis & indulciis, quibus Notarii causarum Rotæ Bononiæ. Auditorum & prædicti illius Curfores de jure, consuetudine, vel privilegio, aut aliis quomodolibet utuntur, fruuntur, potiuntur & gaudent, ac uti fuerunt ubique frui, potiri, & gaudere possint, & poterunt, quomodolibet in futurum pariformiter & æquè principaliter, ac sine ulla prorsus differentia uri, frui, potiri & gaudere, illisque (quod nullus alius Notarius sententias, acta, iuve scripturas aliquas, coram dictis Prætoribus & Auditoribus in causis prædictis, & alias quomodolibet aditandas) rogare, scribere & subscribere valeat sub pena nullitatis sententiarum, & scripturarum hujusmodi.

Concessio facultatis per se vel aliam dicta officia exercendi.

Obligatio honorum Camera Apostolice pro observatione præmissorum.

§. 6. Insuper, quod officia prædicta obtinentes, illa per se, vel idoneos substitutos ab eis ponendos & amovendos, exercere possint, & valeant, eadem auctoritate & tenore indulgemus.

§. 7. Præterea pro Communitatis & hominum prædictorum securitate & cautela, præmissorum omnium observatione, & executione nomine loco damnorum & interesse, quæ per dictam Civitatem pati, aut sentire posse contigerit, omnia & singula ejusdem Camera jura, res & bona, tam præsentia quàm futura, nedum generaliter, etiam specialiter, & expressè ac amplissimè obligamus, & hypothecamus. Decernentes Camera prædictam omnino teneri & obligatam esse, Communitatem & homines, ac pro tempore officia hujusmodi obtinentes in quietâ & pacifica illorum possessione defendere & manutenere, præsentisque ad probandum plenè quod eadem summa in nostram & sedis Apostolicæ, ac ipsius Camera subventionem converta fuerit, aliisque præmissa ubique tam judicio quàm extrâ illud sufficere, nec ad id probationis alterius adminiculum requiri.

Clausula præservativa.

§. 8. Necnon easdem præsentibus nullo unquam tempore de subreptionis vel obreptionis, eu nullitatis vitio aut intentionis nostræ, vel quovis alio defectu notari, vel impugnari, aut aliis quomodolibet infringi vel retractari posse, sed illas semper validas & efficaces existere suolique plenarios & integros effectus fortiri debere, neque sub quibuscvis firilium vel dissimulium gratiarum revocationibus, suspensionibus, derogationibus, aut aliis contrariis dispositionibus, vel quascunque literas, vel constitutiones Apostolicas, seu Cancellariæ Apostolice Regulas, etiam per nos & successores nostros Rom. Pont. etiam notu, scientia, & potestatis plenitudine similis, ac consistorialiter, necnon sub quibuscunque tenoribus, & formis, ac cum quibuscvis clausulis pro tempore factis & concessis comprehendi, sed semper ab illis exceptas, necnon quoties illas revocari, vel limitari, aut suspendi, seu eis in aliquo derogari contigerit, toties in pristinum, & validissimum statum, etiam sub posteriori data restitutas, & plenariè reintegratas, ac de novo concessas esse, & censeri.

Decretum irritans.

§. 9. Irritum quoque & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Executorum deputatio.

§. 10. Quocirca dicto Henrico Cardinali & pro tempore existentibus Camerario, ac venerabili fratri nostro Petro Episcopo Spoletan. Officiorum Rom. Curie, & Status Ecclesiastici Præsidenti, ac dilecto

filio causarum Cur. Cam. Apostolicæ generali Auditori, motu pari, per Apostolica scripta mandamus, quatenus ipsi, vel duo aut unus eorum, per se vel alium seu alios, præsentibus literas & in eis contenta quæcumque solemniter publicantes, ac eisdem Communitati & hominibus in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes easdem præsentibus literas & in eis contenta hujusmodi debite executioni demandent, ac demandari, necnon ab omnibus, quos illa concernunt in violabiliter perpetuo observari faciant, mandent atque procurent. Nos permittentes Communitatem & homines prædictos atque officia hujusmodi pro tempore obtinentes seu exercentes de super per quoscunque contra earumdem præsentium tenorem quomodolibet indebitè molestari, perturbari vel impediri. Contradictores quoslibet & rebelles, ac præmissis non parentes per sententias & censuras Ecclesiasticas, ac etiam pecuniarias & alias penas, aliisque opportuna juris, & facti remedia, appellatione postposita compescendo, ac legitimis super his habendis servatis processibus, sententiis, censuras, & penas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc si opus fuerit auxilio brachii secularis.

§. 11. Non obstantibus præmissis, & quibuscvis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac Civitatis Maceraten. & Provincia prædictarum juramento, confirmatione Apostolica vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis Civitatis Maceraten. & Provincia hujusmodi, ac quibuscvis aliis superioribus, & personis sub quibuscunque tenoribus & formis, ac cum quibuscvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, efficacissimis & insolitis clausulis, irritantibusque & aliis decretis, in genere vel in specie, etiam motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, ac consistorialiter, necnon de fratrum nostrorum consilio, & unanimi assensu, ac aliis quomodolibet & quodcumque etiam pluris in contrarium forsan concessis, confirmatis, & innovatis. Quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa & individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, eorum omnium & singulorum tenores, ac si de verbo ad verbum exprimerentur & infererentur præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis in suo robore permansuris hac vice dumtaxat specialiter & expressè, harum serie motu simili derogamus, & sufficienter derogatum esse volumus, & decernimus & declaramus, contrariis quibuscunque, seu si aliquibus communiter aut divisim, ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per literas Apost. non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum, de indulto hujusmodi mentionem.

Nulli ergo, &c. Si quis, &c.

Dat. Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo octuagesimo nono, 11. Kal. Aprilis Pontific. nostri Anno 4.

Dat. P. An. 4. die 22. Mart.

Die 21. Aprilis 1589. Præsentibus literis Apostolicis in plena Camera præsentata fuerunt, & die 28. ejusdem, Camera ipsa referente Reverend. D. Bartholomæo Cassio Camera Apostolica Clerico, & Judice S. D. N. Papæ apud me infrascriptum dictæ Camera Notarium ad hoc ab ipsa Camera specialiter deputato, citato prius R. P. D. dictæ Camera Generali Commissario; illas admisit, & registrarî mandavit, prout registrata fuerunt libro tercio signaturarum.

Admissio & registratio in Cam. Apostolica.

Tydeus de Maribus.

Ere-

Ereção Ecclesiæ Episcopalis Civitatis Firmi, in Provincia Marchiæ, in Ecclesiâ Archiepiscopalem.

Similem erectionem de Ecclesia Senensi statuit Pius II. in const. 3. Triumphans. fol. 368. Tom. 1. & Greg. XIII. de Ecclesia Bononiensi in const. 79. Universi. fol. 494.

In hac Civitate Studium quoque generale invocavit hic idem Pontif. sup. in constit. 9. Muneris, hic supra.

S I X T U S E P I S C O P U S ,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D.
1589.

Proœmium.

U N I V E R S I O R B I S E C C L E S I A S , e o d i s p o n e n t e q u i c u n c t i s i m p e r a t , & c u i o m n i a o b e d i u n t , m e r i t i s l i c e t i m p a r i b u s p r æ d e n t e s i n o m n e s a g r i D o m i n i c i p a r t e s o c u l o s n o s t r æ m e n t i s , v i g i l i s m o r e P a s t o r i s , i n t e n d i m u s , i n s p i c i e n t e s q u i d E c c l e s i a r u m i p s a r u m , p r æ f e r t i m C a t h e d r a l i u m i n s i g n i u m , s t a t u i , & d e c o r i m a x i m e c o n v e n i a t , a t q u e h o c q u i d e m p r o z e l o c h a r i t a t i s n o s t r æ , t a n t o l i b e r a l i u s p r o m p t i u s q u e c u r a n d u m c e n s e m u s , q u a n t e m a g i s , n o n s o l u m p e t e n t i u m s u b d i t o r u m , & p r æ c e s , & m e r i t a i d d e p o n u n t , s e d n o s e t i a m a d O m n i p o t e n t i s D E I , & B e a t æ M A R I Æ V i r g i n i s g l o r i a m , a n i m a r u m q u e s a l u t e m , & f i d e l i u m d i s c i p l i n a m c o n f i r m a n d a m , n e c n o n E c c l e s i a r u m , q u i b u s p a t e r n a d i l e c t i o n e , A p o s t o l i c a q u e a u t o r i t a t e c o n s u l i m u s u t i l i t a t e s o r n a t i u m q u e p e r t i n e r e , & r e c t e i n D o m i n o c o g n o s c i m u s e x p e d i r e .

Civitatis Firmi antiquitas, nobilitas, fidelitas, & alie quamplures laudes recensentur.

§. 1. C ū m i t a q u e n o s c o m p e r t u m h a b e r e m u s , E c c l e s i a m F i r m a n a m S e d i A p o s t o l . i m m e d i a t e s u b j e c t a m , a c p r i d e m a n t e a n n u m a d p a r t u m V i r g i n e o q u i n g e n t e s i m u m , i n C a t h e d r a l e m e r e c t a m , c u i a l i a s n o n d ū m i n m i n o r i b u s c o n f l i c t u i e s s e m u s , & C a r d i n a l a t u s f u n g e r e m u r h o n o r e , l a u d a b i l i t e r p r æ f u i m u s , c u i q u e e t i a m h o d i e v e n e r a b i l i s f r a t e r n o s t e r S i g i s m u n d u s E p i s c o p u s F i r m a n u s p r æ s s e d i g n o f c i t u r , l a p i d i b u s m a r m o r e i s q u a d r a t i s c o n s t r u c t a m a d C o l l e m i n m e d i a C i v i t a t i s F i r m a n æ p a r t e c o l l o c a t a m s i n g u l a r e m a t q u e p u l c h e r i m a m s p e c t a n t i u m o c u l i s m u l t i s p a s s i b u s a d d i c t a m C i v i t a t e m F i r m a n a s e s e o f f e r e n t e m , i n t r a n q u i l l a a é r i s t e m p e r i e , i n l o c o d i s t a n t i a b U r b e s u p r a c e n t u m & t r i g i n t a m i l l i a r i a s i t a m , B e a t æ M A R I Æ V i r g i n i d i c a t a m , t r i b u s d i g n i t a t i b u s , v i d e l i c e t A r c h i d i a c o n a t u p r o u n o A r c h i d i a c o n o , & A r c h i p r e s b y t e r a t u p r o u n o A r c h i p r e s b y t e r o , & D e c a n a t u p r o u n o D e c a n o , n e c n o n d u o d e c i m C a n o n i c a t i b u s , & t o t i d e m p r æ b e n d i s p r o d u o d e c i m C a n o n i c i s , & o c t o p r æ t e r e a M a n f i o n a r i i s p r o o c t o M a n f i o n a r i i s , d u o b ū s q u e S a c r i s t i i s p r o d u o b u s S a c r i s t i i s i p s i E c c l e s i æ i n t e r v e n i e n t i b u s p r æ s t a r e , q u a m p l u r e s E p i s c o p o s p r æ t e r e a o r t h o d o x æ f i d e i d e f e n s o r e s , q u o r u m n o m i n a t ū m S a n c t i t a t i s o p i n i o n e , t ū m p r æ s t a n t i a s i n g u l a r i p r æ f u l s e r u n t , a l i o s q u e C a r d i n a l a t u s h o n o r e d e c o r a t o s , a l i o s e t i a m S a n c t æ R o m a n æ E c c l e s i æ m o d e r a m i n a a d m o t o s h a b u i s s e , & p r o t e m p o r e e x i s t e n t e m E p i s c o p u m F i r m a n u m , P r i n c i p a t u s i n s i g n i a , & o r n a m e n t a , p r æ v e n t i o n e m q u e i n m u l t i s c a u s a , q u o a d L e g a t o s , & G u b e r n a t o r e s r e t i n e r e , & o m n i m o d a m j u r i s d i c t i o n e m e x p r i v i l e g i i s A p o s t o l i c i s j a m p r i d e m e m a n a t i s , & a fœl. r e c . S i x t o P a p a Q u a r t o p r æ d e c e s s o r e n o s t r o u s q u e i n h æ c t e m p o r a p e r p e t u o c o n f i r m a t i s , i n s u o s C o m m e n s a l e s , F a m i l i a r e s , C o l o n o s , & O f f i c i a l e s e t i a m p r i v a t i v e q u o a d L e g a t o s , & G u b e r n a t o r e s q u o s c u m q u e a c M o n t e m V i r i d e m C a s t e l l u m i n o m n e m j u r i s d i c t i o n e m r e t i n e r e , n e c n o n F i r m u m , P i c e n i U r b e m R o m a n o r u m C o l o n i a m e x t i t i s s e , a c e x q u a u b i C h r i s t i a n a R e l i g i o n e i m b u t a f u i t , s u b D e c i o I m p e r a t o r e , s e p t u a g i n t a F i r m a n i M a r t y r e s p r o d i i s s e r e c e n s e n t u r , i n q u a m u l t a c o r p o r a S a n c t o r u m , a c i n n u m e r a b i l e s a l i æ r e l i q u i æ m a g n a c u m v e n e r a t i o n e a s s e r v a n t , m u l t i s p r i v i l e g i i s , & i n d u l t i s t a m a d p i e m e m o r i z

Gregorio Septimo, à quo tunc temporis existens Episcopus Firmanus, Crucis defendendæ facultatis confirmationem obtinuit, à Gregorio Octavo, Nono, X. Honorio III. qui eidem Episcopo, ut Principis nomen, jurisdictionemque spirituale & temporalem retinere concessit, Innocentio Tertio, & Septimo, Eugenio Quarto, & Callisto Tertio, ac quamplurimis aliis Romanis Pontificibus etiam prædecessoribus nostris, tūm claræ memoriæ Federico II. & Henrico III. multisq; aliis Rom. Imperatoribus illustratam, amplissimam in nihil ferè perspicitur, quod ejus longè altèque repetitam antiquitatem non præ se ferat, in Colle aëris saluberrimi, amcenitatis non exiguæ, in mediâ. Piceni parte, ad sinum Adriaticum, non longè ab Appenninis Montibus sitam, quemadmodum Firmum Picenum olim nominabatur, ità aliis temporibus Marchia Firmiana vocabatur, quod Firmum primaria Civitas in dictâ provincia existeret. Princeps quoque in suam jurisdictionem Marchiam vel receperint, vel redegerint in dictâ Civitate Sedem, domiciliumque collocasse, ac semper detinuisse, eodemque exemplo sub Romanis Pontificibus, multis annis Curiam generalem Legationis Marchiæ, tamquam in loco honorabiliori inibi reledisse, necnon generale Studium, ad instar Studii Bononiæ. à recol. mem. Bonifacio Papa VIII. similiter prædecessore nostro, & postea ab Eugenio IV. & Callisto III. prædecessoribus prædictis ac multis aliis Pontificibus confirmatum, & à nobis denuò erectum, & restitutum floruisse, & florere, in eaq; extare Collegium Jurisconsultorum jam inde ab immemorabili tempore ornatissimum, ac in numero & Doctorum præstantia insignis, hoc quidem tempore ultra septuaginta Doctores consecratos reperiri, eisdem modo, & ratione quamplurimos Procuratores & Notarios esse, in ea quoque Seminarium ex Conc. Trident. decreto institutum, aliorumque Illustrum virorum fide studiosissimum, pietati & religioni summo perè dediturum, necnon Episcopi, & pastores sui, officiosissimum, ut nihil unquam prætermiserint, quod ad ipsius Episcopi commoditatem, & dignitatem augendam facerent, ac multæ per Firmanos donationes etiam Castellorum prisicis illis temporibus Episcopo factæ reperiantur copia resectam, quibus plurimum semper delatum fuerit, tūm quod ipsa Civitas situ, loco, arcis munita, ac hominum robore, & fortitudine, ac ingenii acuminis & præstantia adeo ornata fuit, ut cæteris Marchiæ Civitatibus hujusmodi timorem maximum inficere soleat, multaque obsequia ergâ Sedem Apostolicam prædictam perpetuò præstiterit, atque propriis actibus ab Imperio Desiderii, Longobardorum Regis, se vindicarint, seque ac sua omnia similis mem. Adriano Papæ I. pariter prædecessori nostro, Sedique Apostolicæ prædictæ spontè dederint, ipsaque Civitas fidei causâ, & sincera devotionis gratia quam gerere solita est ergâ Sedem eamdem, cūm Federicum primum agnoscere noluisse, igne ferè absumpta fuerit, eademque de causâ, & aliâ sæpè multa damna, & detrimenta subierit, & in summas difficultates, & calamitates sæpius incidere, ut se ab eorum dominatu, qui Marchiam, in suam ditionem, contrâ Sedem Apostolicam redegerint, vindicaret, & ad ipsam Sedem ejusque Imperium redire posset, veluti sub Eugenio eodem, ac aliis Pontificibus prædecessoribus nostris, & novissimè in bello Ferrarini. similis mem. Julio II. & postea Clementi VII. Pontificibus Maximis pariter prædecessoribus nostris, præsto fuerint. Monasteriorum insuper tam virorum quam mulierum opulentissimorum æque atque in sævis alia Civitate, parochialium prætereâ Ecclesiarum, ac confraternitatum, & Hospitalium quamplurimorum frequentia commendabilem, diocesem denique Firmanam prædictam ita opulentam, & amplam extare, ut major in dictâ provincia non reperiat, agri ubertate fertilissimam, fru-

Hujus Pontificis bulla est supra num. 9: Muneris.

mento, vino, oleo, & frugibus, cum suis generis, vel etiam sale, & rebus omnibus ad victum necessariis adeo abundantem esse, ut non solum ceteris provinciæ Civitatibus suppeditare, sed ad Dalmatas, Illyricos, Venetos, ac alios transportare soleat, ita ut planè huic diocesi deferenda sit fertilitatis laus, quæ agro Piceno passim tribuitur. Necnon ejus Comitatum, Terras, & Castra sexaginta ferè habere, quo quidem Comitatu Firmum finitimum ac confine existit ceteris ferè omnibus Civitatibus dictæ provinciæ, cujus majorem partem occupare constat.

Erectio dicte Ecclesiæ Episcopalis Firmæ in Archiepiscopalem.

§. 2. Nos aliorum Romanorum Pontificum prædecessorum nostrorum, qui eodem honore decorati Ecclesiis, quibus olim in minoribus dum constituti essent, & Cardinalatus fungerentur honore præferuerat, vestigia sequuti, ad illam meritis honoribus augendam, & promovendam adducti, piis quoque supplicationibus dilectorum filiorum Communitatis, & hominum ejusdem Civitatis, nobis per dilectum filium Cæsarem Ottinellum, Civem Firmum U. J. D. eorum Procuratorem ad hoc ab eis specialiter constitutum desuper porrectis excitati, post habitam cum venerabilibus fratribus nostris prædictæ R. B. Cardinalibus maturam deliberationem, de eorum consilio, atque Apostolicæ potestatis plenitudine, Maceraten. Tolentin. Ripan. Montis Alti, S. Severini in dicta Provinciâ consistentes, necnon dictæ Sedi etiam immediatè subiectas Ecclesias, earumque Civitates, & dioceses, cum omnibus, & quibuscumque eorum territoris, & terminis, ac dilectos filios earum singularum Clerum & populum universum, cum suis Collegiatis, Parochialibus, & aliis Ecclesiis, necnon Monasteriis utriusque sexus, cæterisque beneficiis, & officiis ecclesiasticis cum cura & sine cura secularibus & quorumvis Ordinum, & Militarum regularibus, necnon Hospitalibus, domibus, Collegiis & locis religiosis quibuscumque, ab ejusdem Sedis immediata subiectione, Apostolica auctoritate, tenore præsentium perpetuò dividimus, & separamus, necnon à dictæ Sedis immediata subiectione, visitatione, correctione & omni & quacumque alia jurisdictione etiam perpetuò eximimus, & liberamus. Ipsamque Ecclesiam Firmam, ad laudem & honorem Omnipotentis DEI, ac B. Virginis MARIE, necnon fidei Catholicæ exaltationem, & totius militantis Ecclesiæ gloriam, in Metropolitanam Ecclesiam, & Sedem Episcopalem Firmam, in Archiepiscopalem, Archiepiscopalisque, & Metropolitanam. Prædictis Sedem & Provinciæ caput pro uno deinceps Archiepiscopo, qui pallii, & Crucis usum, aliorum Archiepiscoporum more habeat, omnibusque aliis insignibus Archiepiscopalibus, necnon privilegiis, honoribus & prærogativis, Archiepiscopis debitibus & concessis gaudeat, similiter perpetuò erigimus & instituimus, ac nomine, titulo, ac honore Archiepiscopali, & Metropolitan. decoramus.

Submissio aliarum Episcopaliū Ecclesiarum.

§. 3. Præterea Ecclesiæ prædictæ, Maceraten. Tolentin. Ripanen. Montis Alti, & Sancti Severini Ecclesias prædictas, modernòsque & pro tempore existentes illarum præfules, seu Administratores, pro tempore existentis Archiepiscopi Firmani Suffraganeis, qui tamquam membra capiti, eidem Archiepiscopo Firmano jure Metropolitan. subint, ita quòd Archiepiscopi Firmani, in eisdem Maceraten. Tolentin. Ripan. Montis Alti, & Sancti Severini Civitatibus, & diocesisbus ius Metropoliticum sibi vindicent, necnon Maceraten. Tolent. Ripan. Montis Alti, & Sancti Severini prædictæ, eidem Archiepiscopo, & Metropolitan. ad omnia & singula habeantur, & sint adstricti, ad quæ Suffragia suis Metropolitanis Ecclesiis, & Metropolitan. tenentur, & obligati sunt, ut indicentur secundum canonicas sanctiones, ac eidem Archiepiscopo Firmano prædictos suos Suffraganeos consecrandi, ac Provinciales Synodos evocandi, ac cum eis etiam Ecclesiastica negotia terminandi, earum Ecclesias disponendi juxta statuta sacrorum Canonum, omniaque alia & singula quæcumque quæ de jure vel consuetudi-

ne, aut aliis quoquomodo ad Archiepiscopos, & Archiepiscopale munus spectare, & pertinere solent, & debent, gerendi, faciendi, exercendi, plenam & omnimodam auctoritatem, & tenore præsentis concedimus facultatem. Provinciæ quoque Firmænæ Clerum, & populum universum, pro eorumdem Ecclesiæ, & Archiepiscopi Firmani Provincialibus pariter etiam perpetuò concedimus, & assignamus.

§. 4. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac Maceraten. Tolentin. Ripan. Montis Alti, & Sancti Severini Ecclesiarum prædictarum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis, eisdem Ecclesiis, illarumque Præfules, Administratores, & Capitulis, ac quibuscumque aliis personis, sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibusvis clausulis, & decretis, etiam Motu proprio, atque ex certa nostra scientia, deque Apostolicæ potestatis plenitudine, etiam consistorialiter & sub quibusvis verborum formis, ac aliis in contrarium quomodolibet concessis, confirmatis, & innovatis. Quibus omnibus & singulis, etiam si pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, & expressa & indivisa ac de verbo ad verbum non autem per clausulas generales idem importantes mentio seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, eorum omnium etiam tenores, ac si de verbo ad verbum exprimerentur & infererentur, præsentibus pro sufficienter expressis, & insertis habentes, illis aliis in suo robore permanens, hac vice dumtaxat, harum serie specialiter & expresse, Motu, scientia, & potestatis plenitudine paribus, derogamus cæterisque contrariis quibuscumque.

Nulli ergo &c. Si quis autem &c.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo octuagesimo nono, Nono Kalend. Junii, Pontif. nostri Anno quinto.

Derogatio contrariorum.

Dat. P. An. 5. die 24. Maji.

Quòd Fratres, & Moniales Ordinis Beatæ MARIE de Monte Carmelo Congregationis Disalceatorum in Italia, recitare valeant Horas canonicas juxta ritum Breviarii Romani reformati, prætermisso Ordinis usu, Et celebrandi festa Sanctorum dicti Ordinis etiam in Calendario Romano descriptorum.

XCVI.

De ejusmodi Breviario vide sup. in Pii V. const. 64. Quod à nobis, sup. fol. 278. Alia autem de toto Ordine Carmelitano, notavi sup. apud const. 8. Hon. III. Ut vivendi. fol. 70. Tom. 1. Et de hac Congregatione vide plenè sup. in constit. 64. Greg. XIII. Pia. fol. 476.

SIXTUS PAPA V.

Dilectis filiis professoribus Ordinis B. Mariæ de Monte Carmelo, Provinciæ, seu Congregationis Regularis Observantiæ Disalceatorum nuncupata.

Edita An. D. 1589.

EXimium quod in vobis elucet pietatis studium, & præcipua Observantiæ regularis discipline, quæ vestram Congregationem ad DEI gloriam, communemque Christiani populi utilitatem, in dies magis florere intelligimus, nos inducunt, ut cum multa ad eandem Congregationem feliciter regenda nuper à nobis statuta fuerunt, nunc quoque in honorem Sanctorum, quos ipsa Congregatio, quasi in eorum clientelam, recepta, jam pridem seculari quadam veneratione colit, piis vestris petitionibus libenter annuamus.

Proemium.

ANNO
1589.

SIXTUS QUINTUS.

727 ANNO
1585.

Concessit hic Pont. Congregationi facultatem recitandi officia, juxta ritum Breviarii Rom. reformati, prætermisso illius Congregationis.

Quæ d. ritum observari capit.

Modò autem supplicat humiliter celebrandi.

Pont. ideò d. facultatem elargitur.

Quibuscumque non obstantibus.

Dat. P. An. 5. die 27. Jun.

XCVII.

Edita An. D. 1585. 1586. 1587. 1589.

Exordium.

§. 1. Dumdum siquidem per alias nostras literas concessimus inter cætera & indulimus vobis, atque universis & singulis personis utriusque sexus vestrae Provinciae, ut Horas canonicas, diurnas, & nocturnas, secundum usum & ritum Romanæ Ecclesiæ, & Breviarii Romani ex decreto Concilii Tridentini reformati, & felicis recordationis Pii V. prædecessoris nostri iussu novissime editi, tam communiter quam divisim, etiam in singulis vestris Oratoriis, Monasteriis & domibus, dicere, & recitare licite possitis, & nihilominus præcepto atque obligationi plenè satisfactum per vos foret, neque ulterius ad sequendum in hujusmodi Officiis morem vestri Ordinis teneremini, prout in eisdem literis latius continetur.

§. 2. Quo quidem nostro indulto utentes, jam sicut nobis exponi curastis, ejusdem Romanæ Ecclesiæ ritum in divinis officiis servatis.

§. 3. Sed quia vetus jam diù viget in vestro Ordine laudabilis consuetudo, dies festos in honorem Beatæ MARIE, & quorundam Sanctorum solemniter celebrandi, ideò à nobis humiliter supplicari fecistis, ut religiosum istud institutum auctoritate Apostolica comprobare dignaremur.

§. 4. His itaque vestris supplicationibus inclinati, vobis, atque ad eò universis, & singulis Fratribus ac Monialibus vestrae Congregationis pro tempore existentibus, in quibusvis domibus, Monasteriis, Collegiis, & locis dictæ Congregationis, tam publicè quam privatè, communiter vel divisim, officium prædictorum festorum ubique recitare, & sic recitando obligationi satisfacere liberè & licite possitis (dammodo tam in Missa quam in recitandis Horis canonicis diurnis ac nocturnis, modum, & formam descriptam in quinto, seu libello per dilectos filios nostros Antonium SS. Joannis & Pauli Carassam, & Vincentium S. Mariæ in Via titularum presbyteros Cardinales Montis Regalis nuncupatos, de mandato nostro reviso, correcto, & approbato, inde observetis, & nihil penitus addatis, aut minuatis) plenam, & liberam licentiam, & facultatem, auctoritate Apostolica tenore presentium concedimus, & indulgemus.

§. 8. Non obstantibus dicti Pii prædecessoris super reformatione, & approbatione nonis Missalis, & Breviarii Romani, ac prædictis nostris literis, necnon aliis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, vestrique Ordinis juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, quodque hujusmodi dies festi in novissimo Calendario Romano descripti non sint, ceterisque contrariis quibuscumque.

Dat. Romæ apud S. Petrum, sub Annulo Piscatoris, die 27. Junii, 1589. Pont. Nostri Anno quinto.

Quod Archiconfraternitas pietatis Carceratorum à Greg. XIII. in Urbe instituta, habeat Officium provisorii condemnatorum ad triremes totius Status Ecclesiastici. Et etiam Officium Visitatoris Carcerum urbis, ab ejus præfecto exercen. postique annis singulis secunda Feria post j. Dominicam Quadragesimæ, unum carceratum etiam pro capitali crimine damnatum liberare.

Institutionem hujus Archiconfraternitatis habemus sup. in const. 56. Greg. XIII. fol. 462. Pii patris, ubi aliàs tibi indicavi.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

EX debito Ministerii Pastoralis, ad ea nostra operationis studia diligenter convertimus, per quæ pia fidelium vota, præsertim pauperum, & miserabilium personarum statum concernentia, optatum consequantur effectum, & quæ propterea per

fideles ipsos piè facta, & ordinata fuerunt, ut firma & illibata persistant, libenter Apostolico munimine roboramus.

§. 1. Considerantes itaque dilectos filios Confratres Confraternitatis Pietatis Carceratorum, per felicis recordationis Gregorium Papam XIII. prædecessorem nostrum in hac Urbe nostra institutæ, multa in dies onera sustinere. Volentesque Confratres, & Confraternitatem hujusmodi, cujus etiam nos, antequàm ad summi Apostolatus apicem assumere, Protectores eramus, specialibus favoribus, & gratis prosequi, ac de aliquis subventionis auxilio illis providere, ipsosque Confratres, à quibusvis excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis à jure vel ab homine quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum presentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, Motu proprio, non ad dictorum Confratrum, seu aliorum pro eis nobis desuper oblata petitionis instantiam, sed ex certa scientia nostra, institutionem dictæ Confraternitatis, necnon quascumque indulgentias, & peccatorum remissiones, aliàsque gratias & privilegia, Confraternitati, & Confratribus prædictis, illorumque intuitu per eundem Prædecessorem concessa, Apostolica auctoritate tenore presentium approbamus, & confirmamus, ac singulos defectus, si qui desuper quomodolibet intervenerint, supplementis.

§. 2. Necnon Confraternitati, & illius nomine Confratribus prædictis, unum Provisorii condemnatorum ad triremes, tam dictæ Urbis quam reliqui totius Status Ecclesiastici, ut videlicet illi condemnati, & transmissi ad triremes, postquam tempus ad quod condemnati erant, & erunt in futurum, finierint. Et alterum Visitatoris utroqueque Carcerum, Secretorum, & publicorum Urbis prædictæ, & Burgi Sancti Petri de dicta Urbe officia, per deputandos ab ipsis Confratribus exercenda, quæ dilectus filius Joannes Baptista Pafius nuper ad Sedis Apostolicæ beneplacitum, quod ex nunc Motu simili revocamus, & expirari decernimus, aut aliàs obtinebat, five per revocationem hujusmodi, five aliàs quovis modo, & ex cujuscumque persona, ad præsens vacantia, cum omnibus, & singulis eorum, & cujuslibet ipsorum honoribus, oneribus, privilegiis, facultatibus, prærogativis, & salariis, ac emolumentis solitis ac debitis, auctoritate, & tenore præmissis perpetuò concedimus, & assignamus, ac Confraternitatem, & Confratres prædictos, in locum præfati Joannis Baptistæ, quoad prædicta ambo officia, eorumque liberum exercitium, necnon honores, onera, privilegia, prærogativas, & emolumenta substituiamus, & subrogamus, eosdemque Confratres ex nunc ad ipsa duo officia, necnon exercitium, honores, onera, emolumenta, & prærogativas hujusmodi recipiendos, & admittendos fore, & esse, ac recipi & admitti, eisque, nomine dictæ Confraternitatis de salariis, & emolumentis prædictis integrè, & cum effectu responderi debere, ac eosdem Confratres & Confraternitatem nullo umquam tempore ab hujusmodi officiis, aut illorum altero, etiam per nos, seu pro tempore existentem Romanum Pontificem, vel quoscumque alios, ex quavis causa amoveri posse, neque debere decernimus.

§. 3. Mandantes dilectis filiis nostro Philippo Sancti Angeli in foro piscium Diacono Cardinali Flavillano nuncupato moderno, & pro tempore existenti Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Camerario, ac Cameræ Apostolicæ præsentibus, & Clericis, ac nostro, & pro tempore existentis Romani Pontificis Thesaurario, omnibusque aliis, ad quos id quomodolibet spectat ut Confratres, & Confraternitatem hujusmodi ad officia prædicta, sine ulla mora recipiant, & admittant, ac recipi, & admitti, necnon de emolumentis prædictis integrè eis responderi faciant, & respondeant cum effectu.

Confirmatio institutionis Confraternitatis & ejusque indulgentiarum.

Duo officia eidem Archiconfraternitati concessa, cum suis emolumentis. Tu scias Archiconfraternitatem gratia ex exercere ut habetur in declaratione sua secutura.

Officiales ad officia Confratres d. Archiconfraternitatis admittant.

1585.
1586.
& 1587.
Quibuscumque non obstantibus.

§. 4. Non obstantibus quibuscumque aliis de dictis officiis, seu eorum altero, cuiusque seu quibuscumque personis per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac forsan nos, seu quemcumque alium, etiam ex causa onerosa, aut alias quomodolibet, etiam Motu pari factis, seu faciendis, concessionibus, quas illarum tenores præsentibus pro expressis habentes, earumque vim, & effectum tenore earundem præsentium Motu simili revocamus, cassamus, & annullamus, ac nostra de non tollendo jure quæsto quatenus opus sit, aliisque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, necnon statutis dictæ Urbis, juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis quibuscumque personis sub quibuscumque tenoribus, & formis in contrarium forsan quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus etiam si de illis specialis, specifica, & expressa, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quavis alia expressio habenda foret, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, cæterisque contrariis quibuscumque.

Sanctio poenalis.

§. 5. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ absolutionis, approbationis, confirmationis, supplementationis, revocationum, decretorum, concessionis, assignationis, substitutionis, substitutionis, mandati, cassationis, annulationis, & derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare presumpserit, indignationem Omnipotentis Dei, ac beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursum.

D. P. An. t. die 7. Julii.

Datum Romæ, apud S. Marcum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo octuagesimo quinto, Calend. Julii, Pont. nostri Anno primo.

Sequitur declaratio dictæ Concessionis.

SIXTUS PAPA V. &c.

Edita An. D. 1586.

Archiconfraternitas dictæ officia gratis exercere declarat.

Cum nos nuper, &c. ut in prædecessores constitutione Nihilominus, quia dilectus filius Laurentius Caelius Notarius noster, & in utraque Signatura nostra Referendarius, dictæ Archiconfraternitatis Præfectus, & Confratres præfati nobis nuper exponi fecerunt, quod eorum pium institutum est, omni charitate, studio, & diligentia, ac gratis, & amore Dei, eadem officia per sufficientes, & habiles personas ejusdem Archiconfraternitatis exercere, nullam aliam inde mercedem quærentes, quam æternæ retributionis premium, nobis humiliter supplicari fecerunt, quatenus in præmissis opportune providere de benignitate Apostolica dignaremur.

Hic Pontifex collaudat.

§. 1. Nos igitur piis eorum votis annuentes, circumspectioni tuæ per præsentem committimus, & mandamus quatenus eisdem Confratres, & Archiconfraternitatem prædictam ad officia eadem gratis, & amore Dei absque salario, & emolumentis prædictis exercenda, omni mora rejecta, admittas, & recipias, illisque per quoscumque, ad quos spectat, sub excommunicationis lætæ sententiæ pæna ipso facto per contradictores incurrenda, amoto inde eodem Joanne Baptista, & appellatione quacumque rejecta, admitti facias.

Contraria tollit.

§. 2. Non obstantibus omnibus quæ in dictis literis volumus non obitare, cæterisque contrariis quibuscumque.

D. P. An. 2. die 20. Maii.

Datum Romæ apud sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris, die vigesima Maji, millesimo quingentesimo octuagesimo sexto, Pont. nostri Anno secundo.

Sequitur indulgentiam liberandi carceratum.

SIXTUS PAPA V.

Motu proprio, &c.

Edita An. D. 1587.

Indicatum anno quoties liberantur.

Dilectis filiis protectori, præfecto, assistentibus, ac aliis officialibus, & Confratribus Archi-

confraternitatis pietatis, Carceratorum de Urbe, in Ecclesia Sanctorum Cosmæ & Damiani Regionis Pincæ de eadem Urbe, piæ & canonicæ iustitiae, cuius dilectus filius noster Alexander S. Hieronymi Illiricorum diaconus Cardinalis de Monte Alto nuncupatus, noster secundum carnem ex sorore pronepos Protector existit, specialem gratiam facere volentes, Motu simili &c. ejusdem Archiconfraternitatis Protector, Præfecto, Assistantibus ac aliis Officialibus, & Confratribus nunc & pro tempore existentibus, ut de cætero perpetuis futuris temporibus qualiter secunda feria post primam Dominicam Quadragesimæ, anni cujuslibet, unum carceratum, & pro quocumque crimine & delicto, quantumcumque gravi, & enormi (præterquam læsæ majestatis, & assassini, ac propinati veneni, necnon falsificationis literarum, supplicationum, commissionum, & aliarum gratiarum Apostolicarum, vel monetæ) in carcere existentem, & ad thremes, ac etiam ultimo supplicio condemnatum, excarcerare, liberare, & absolvere, liberè & licite valeant, qui eo ipso absolutus sit, & esse censetur, a quibuscumque criminibus, præterquam prædictis exceptis, Apostolica auctoritate tenore præsentium perpetuo concedimus, & indulgemus, plenamque & liberam eis super præmissis licentiam & facultatem impartimur.

§. 1. Mandantes propterea dilectis filiis ejusdem Urbis Governatori, Senatori, curie causarum Camere Apostolicæ Auditori, & Vicario, aliisque Judicibus, & carcerum dictæ Urbis custodibus, nunc & pro tempore existentibus, ac eorum cuilibet quatenus visis præsentibus, seu literis Apostolicis desuper conficiendis, &c. omni mora & dilatione, ac exultatione postpositis, eisdem præsentibus, seu literis desuper conficiendis pareant, & obediant, ac illas observent, & observari faciant realiter & cum effectu.

§. 2. Non obstantibus præmissis, constitutionibus & ordinationibus Apostolicis necnon dictæ Urbis statutis &c. etiam juramento, &c. roboratis, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis eidem Governatori, Senatori, Auditori Camere, ac Vicario dictæ Urbis, illorumque Tribunalibus, ac Judicibus & quibuscumque aliis personis, sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque clausulis, & decretis, etiam Motu proprio &c. ac consistorialiter &c. & aliis in contrarium quomodolibet concessis, quibus omnibus etiam si de illis &c. expediendis latissime hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, cæterisque contrariis quibuscumque cum clausulis opportunis.

Fiat Motu proprio F.

Et cum absolutione a censuris, ad effectum &c. & de perpetuis concessione, indulto, licentia, impartitione, mandato, derogatione, aliisque præmissis ut supra, quæ hic pro sufficienter repetitis ad partem habeantur perpetuo, & ad perpetuam rei memoriam in forma gratiosa in literis latissime extendendis, & quod præmissorum omnium & singulorum etiam denominationum qualitatibus, aliorumque circa præmissa necessariorum, major & verior specificatio, & expressio fieri possit in literis, etiam cum ad perpetuam rei memoriam.

Fiat F.

Datum Romæ apud S. Marcum, decimosextimo Kalendas Maii, Anno 3.

Sequitur Privilegium Præfati hujus Archiconfraternitatis intercessendi Visitationibus Carcerum Urbis.

SIXTUS PAPA V.

Ad perpetuam rei memoriam.

Cum dilecti filii Confratres Archiconfraternitatis Pietatis Carceratorum in Ecclesia Sanctorum Cosmæ, & Damiani Regionis Pincæ de Urbe canonicæ institutione, plurima juxta laudabile eorum institutum Pietatis, & charitatis opera exercere consueverint, præsertim circa carceratos, eos ordinatim

1587.
& 1589.
di carceratum secunda feria post Dominicam primam Quadragesimæ.

Officiales illud observent.

Quibuscumque non obstantibus.

PP. subsc. Repetio clausularum.

Dat. P. An. 3. die 15. Apr.

Edita An. D. 1589.

Relatio operum Pietatis quæ Archiconfraternitas exercet, & concessionis duorum officiorum de quibus supra.

visitantur.

visitando, opere & consilio juvando, aliisque pia opera faciendo circa illorum, tum corporalem tum spirituale subventionem, prout etiam probe novimus dum in minoribus essemus, ac ejusdem Archiconfraternitatis Protectoris munere fungemur. Et propterea, cum nos divina bonitas ad summum Apostolatus apicem extulisset, initio nostri Pontificatus, officia Commissariatus condemnatorum ad trimes, necnon Visitatoris carcerum, tum publicorum tum secretorum ad Cameram Apostolicam tunc spectantia, ab eadem Camera dismembraverimus, necnon eidem Archiconfraternitati applicaverimus, & appropriaverimus, ipsaque officia hactenus maxima cum pietate per Confratres praedictos, etiam absque ulla mercede, antea per dictam Cameram Apostolicam propterea dari solvique solita, administrata fuerint.

§. 1. Nos considerantes, quod si in visitatione carcerum (pro tempore existentis ejusdem Archiconfraternitatis Praefectus) interveniret, ejus assentientia hujusmodi dictis carceratis in illis juvandis, ac Confratribus ad praedicta opera exercendum animandis, valde utilis, & proficua, quinimo etiam necessaria esset, in hoc igitur providere, ac confratres ipsos speciali hoc privilegio decorare volentes, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolica potestatis plenitudine, ut de cetero perpetuis futuris temporibus in visitationibus carcerum quoruncumque dictae Urbis, tam publicis quam privatis pro tempore faciendis, prout moris est, per personas ad id deputatas, pro tempore existentis dictae Archiconfraternitatis Praefectus intervenire, & interesse possit, cum voto consultivo, tamquam unus ex visitationis hujusmodi Praelatis, Apostolica auctoritate tenore praesentium perpetuo concedimus & indulgemus, ipsique Praefectum pro tempore existentem, in aliorum Visitorum numerum ex nunc recipimus, & admittimus, quodcumque in eisdem visitationibus, tam publicis quam secretis quibuscumque ac tam votando quam consulendo & sedendo, post Almae Urbis praedictae Gubernatorem, necnon ejusdem Camera Auditorem & carcerum eorumdem Praesidem, ac post omnes eas personas quae decisivum votum in visitatione hujusmodi habent, etiam si laicus esset, verum inter eos qui votum consultivum tantum habent, secundum Ecclesiasticam propriae personae dignitatem, ita ut Episcopus non Episcopo, ac similiter inter alias Ecclesiasticas dignitates obtinentes, majorem obtinent dignitatem, praecedere debeat, dicta auctoritate perpetuo statuimus, & ordinamus.

§. 2. Eundemque Praefectum sic assistendo, interveniendo, votando, consulendo, & sedendo, nullumquam tempore per alios dictae visitationis Praelatos, vel alios in ea assistentes, etiam vigore quoruncumque privilegiorum & indultorum, tam à Romanis Pontificibus praedecessoribus nostris, quam à nobis & Sede Apostolica vel aliis quacumque auctoritate, via, causa, & ex quavis occasione hactenus concessorum, & in posterum concedendorum molestari seu inquietari, aut loco, voce & voto, ac actione privari posse, praesentemque gratiam, & concessionem hancque literas semper & perpetuo validas existere, & fore, suisque plenarios & integros effectus foris & obtinere.

§. 3. Sique per quoscumque Judices ordinarios, & delegatos, sublati eis, & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, ubique judicari, & definiri debere, ac irritum, & inane, quicquid secus super his à quocumque quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari decernimus.

§. 4. Non obstantibus regula nostra de jure quaesito non tollendo, aliisque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis praedictis, Visitoribus, & cuilibet ipsorum, ac aliis quibuscumque, tam specialiter, quam generaliter, sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque clausulis, ac

derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis, in genere, vel in specie, etiam motu simili, ac consistorialiter, ac aliis in contrarium quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, necnon juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, usibus, & consuetudinibus etiam immemorabilibus, & naturis, quibus omnibus etiam si de illis specialis, specifica, & ad verbum expressa mentio habenda foret, illorum tenores praesentibus pro expressis habentes, hac vice dumtaxat specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romae in Monte Quirinali, sub Anno Piscatoris, die 22. Julii, millesimo quingentesimo octuagesimo nono, Pont. nostri Anno quinto.

De electione Prioris generalis, & aliorum Praelatorum Congregationis Canoniorum Regularium S. Salvatoris, Ordinis S. Augustini.

De hujusmodi electione est etiam supra fol. 375. constit. 141. Pii V. Inter ceteras. Et alia constit. 9. Greg. XIII. Qua inter, fol. 407. ubi alia de hac religione sunt indicata.

SIXTUS PAPA V.

Ad perpetuam rei memoriam.

EX varietate temporum ipsa quoque humana consilia quodcumque variantur.

Sanè felicitis recordationis Pius Papa V. praedecessor noster Capitulum generale Congregationis Canoniorum Regularium Sancti Salvatoris Bononiensis Ordinis Sancti Augustini, quod unoquoque anno celebrari consueverat, deinceps quolibet triennio celebrari, & in eo Priorem Generalem, Visitatores, ac Procuratorem generalem ad triennium similiter duraturos eligi debere per suas in forma brevis literas statuerat, & decreverat.

§. 1. Nosque iustis adhuc & rationabilibus causis adducti, eam ipsam Pii V. constitutionem mutantem idem Capitulum rursus quolibet anno celebrare, dictumque Priorem generalem, Visitatores, ac Procuratorem generalem, aliisque Officiales, & Ministros similiter singulis annis eligi debere statueramus, & decreveramus, prout in utriusque literis praefatis latius continetur.

§. 2. Verum cum postea Congregationem praefatam ingenti aere alieno gravatam esse, illudque dissolvi minime posse, nisi annuis, quas sustinet, impensis aliquo pacto sublevarer acceperimus, atque adeo consideraverimus quod si dictum Capitulum generale non amplius singulis annis, sed de triennio in triennium, ut antea consueverat, celebraretur, maximis sumptibus, qui in congregando dicto Capitulo fiunt quotannis, parceretur. Unde ipsum a alienum quod aliqui continuò augetur, facilius dissolvi, quinimo ipsi Canonici, qui propterea nimis frequenter vagari videbantur, in regularis observantiae studio melius contineri poterunt, ipsique Prior generalis de necessitatibus dictae Congregationis uberius dicto triennio durante se informare, eisdemque consultis, & salubribus providere similiter poterit, ejusdem Congregationis commodis, quantum possumus propiciis, literarum praefatarum tenores, ac si praesentibus infererentur, pro expressis habentes, Motu proprio, & ex certa nostra scientia ac de Apostolica potestatis plenitudine, tenore praesentium statuimus, & ordinamus, quod post hac perpetuis futuris temporibus Capitulum generale ejusdem Congregationis quolibet triennio, juxta formam literarum ejusdem Pii Quinti omnino celebrari debeat, & in eo Prior generalis, Visitatores, & Procurator generales, prout ipse Pius Quintus.

§. 3. Ac ceteri etiam Abbates, Priores, Vicarii & Praepositi ad triennium eligantur, recol. mem. Gregorius Papa Decimus tertius etiam praedecessor noster per similes literas, quarum etiam tenorem

Dat. P. An. s. die 22. Julii.

XCVIII.

Edita A. D. 1589.

Exordium.

Pius V. Capitulum generale quolibet triennio celebrari & in eo Priorem ad triennium eligi iuste in lita constit. in rubr.

Hic Pont. aliter statuit.

Nunc verò iustus de causis d. constitutionibus Pii V. innovat.

Ceteroque Abbates, Priores, Vicarios, Praepositos similiter ad triennium eligi mandati.

pro

Praefectus d. Archiconfraternitatis locum habet visitationibus Carcerum Urbis. De istorum Visitorum facultatibus vide in Pii V. constit. 68. Reverendi. supra fol. 282.

Munus ejusdem Praefecti in dictis visitationibus non perturbetur.

Clausulae sublatæ &c.

Clausulae derogatoriæ constit.

pro expresso haberi volumus, dispuserunt. Ita tamen quod dilecti filii moderni Prior generalis, Visitatores, Procurator generalis, & alii Officiales prædicti, per triennium à die eorum electionis computandum eorum officiis fungi debeant.

§. 4. Quòdque Prior generalis lapso triennio sui officii non possit de novo ad idem officium eligi, nisi lapso sexennio.

§. 5. Et si contingat aliquem ex dictis Officialibus intra triennium sui officii decedere, is qui in ipsius locum juxta formam constitutionum dictæ Congregationis successus fuerit, in officio usque ad proximum generale Capitulum perseveret.

§. 6. Volumus autem, ut negotia ejusdem Congregationis intra dictum triennium utiliùs, & diligentius pertractentur, quòd quotannis in loco commo-

modo, Conventus, quem dietam appellant, juxta præscriptum literarum ejusdem Pii Quinti habeatur, in quo Prior generalis, ac Visitatores, una cum duobus ex quatuor Congregationis prædictæ Canonicis in generali Capitulo ad hoc tanquam Consultores instar aliorum officialium specialiter eligendis, quorum hac prima vice moderno Priori generali, & Visitoribus, ac Procuratori generali electionem tribuimus, conveniant. In ipso verò Conventu potissimum examinetur an ipse Prior generalis, & reliqui ab acceptione munerum abstinerint, & an æs alienum juxta ordinem præscriptum dissolutum fuerit. Volumusque idè, ut idem Conventus quæ ad bonorum dilapidationem, ac munerum acceptionem pertinent, à quorum perceptione abstinere omnino cupimus, ea quæ scilicet idem Conventus etiam contra eundem Priorem generale occasione præmissorum remedio indigere duxerit, communi dicti Conventus consensu accedente, quamprimum ad nos, & successores nostros, vel ejusdem Congregationis pro tempore protectorem referri curet.

§. 7. Cæterum, in electionibus Prioris generalis, Visitorum, Procuratoris generalis, & aliorum Officialium prædictorum, ac in bonorum administratione, & rationum, computorumque redditione, formam in prædictis Pii prædecessoris literis traditam.

§. 8. In electione verò Discretorum, sive Sociorum, constitutiones, & regularia dictæ Congregationis instituta omnino servari debere, præcipimus, & mandamus.

§. 9. Decernentes Priorem generalem, Visitatores, Procuratorem generalem, ac alios Officiales, & canonicos dictæ Congregationis ad præmissorum omnium observationem teneri, & obligatos existere, & ad id per modernum, & pro tempore existentem protectorem prædictum, etiam per sententias, censuras & penas Ecclesiasticas, aliæque opportuna juris, & facti remedia, cogi, & compelli posse; Sicque & non aliter, per quoscumque Judices, quavis auctoritate fungentes, sublata eis, & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate judicari, & definiri debere, irritumque & inane, quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 10. Non obstantibus singulis literis prædictis, ac quibusvis constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac Congregationis, & Ordinis prædictorum juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, cæterisque contrariis quibuscumque.

§. 11. Volumus autem, ac in virtute sanctæ obedientiæ, & sub privatione quorumcumque officiorum, & dignitatum, aliis Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis arbitrio nostro infligendis ac moderandis, præcipimus ac inhibemus, omnibus & singulis Congregationis prædictæ Canonicis, ac aliis quibuscumque personis in eadem Congregatione degentibus, ne quis publicè vel privatim de triennali Capitulo, ac constitutione nostra hujusmodi, omnibusque præmissis in contrarium quomodolibet tractare audeat seu præsumat.

§. 12. Cæterum, quia difficile foret præsentibus nostras literas ad singula quæque loca deferri, volumus, ac Apostolica auctoritate decernimus, ut præsentium transumptis etiam impressis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, ac sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides in judicio, & extrà adhibeatur, quæ eisdem præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensa.

Datum Romæ in Monte Quirinali, sub annulo Piscatoris, die 23. Augusti, millesimo quingentesimo octuagesimo nono, Pontificatus nostri Anno quinto.

Suppressio instituti Fratrum Scalceatorum S. FRANCISCI in Italia, eorumque locorum concessio Fratribus Minoribus Conventualibus Reformatis, ordinis ejusdem Sancti FRANCISCI.

De his Reformatis, & toto Ordine Franciscano, vide sup. in constit. 68. Apostolici, & antea in constit. 5. Honor. III. Solut. fol. 66. Tom. 1.

SIXTUS V. PAPA.

Ad perpetuam rei memoriam.

Cum sicut ad aures nostras nuper pervenit, dilectus filius Joannes Baptista de Pisaro, professor Ordinis Fratrum Sancti FRANCISCI Scalceatorum nuncupatorum Regnorum Hispaniarum, in Italiam veniens, multis diversorum Ordinum Religiosos, tam Mendicantium ac Capuccinorum, quam non Mendicantium, & alias seculares personas in nonnulla loca, seu domos ipsius Italiæ per eum recepta, ad habitum per fratres Scalceatos hujusmodi gestari solitum suscipiendum, & professionem per eos emitte consuetam emittendam, Sede Apostolica omnino inconsulta receperit, eorumque plerique sic recepti, habitum susceperint, & professionem hujusmodi emisserint.

§. 1. Nos qui prædictorum Scalceatorum institutum hoc tempore in Italiam inducendum non censuimus; Considerantesque fratres, qui Reformati Conventuales, & de Observantia appellantur, in puritate ac simplicitate eorum Ordinum viventes in eadem Italia, benediciente, & incrementum dante Domino florere, Motu proprio, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolica potestatis plenitudine, institutum fratrum Scalceatorum hujusmodi in diversis locis, Ecclesiis, & Conventibus Italiæ receptum, & tam per dictum Joannem Baptistam, quam omnes, & singulos alios socios suos Scalceatorum introductum Apostolica auctoritate, tenore præsentium, extinguimus, supprimimus penitus, & abolemus.

§. 2. Ac loca, domos, Ecclesias, & conventus hujusmodi cum omnibus eorum ornamentis, & sacra fuppellectile & juribus universis, Ordini Fratrum Minorum Sancti Francisci Conventualium, Reformatorum nuncupatorum, perpetuò concedimus, & assignamus, seu unimus, anneximus, & incorporamus. Ità quod liceat ipsis fratribus Conventualibus Reformatis, nullius ad hoc requisita licentia, corporalem, realem, & actualem possessionem præfactorum locorum, Conventuum, & Ecclesiarum liberè apprehendere, in eisque juxta formam institutorum regularium, ac literarum Apostolicarum confirmationis, & approbationis ejusdem Ordinis Conventualium Reformatorum à nobis emanatarum, & per officium minoris gratiæ expeditarum, vitam ducere regularem.

§. 3. Necnon Joannem Baptistam, omnèsque alios ejus socios ac eorum singulos, ab omni apostatiz nota, ac quibusvis excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & etiam temporalibus penis, si quas propter præmissa omnia, vel illorum occasione, & etiam quia à Superioribus Ordinum licentiam inde exeundi non petierint aut aliàs quomodolibet

respectivè

Triennium præsentium officialium à die electionis currere declarat.

Eorum aliquo infra triennium decedente, ejus loco successus officiumque ad Capitulum tenet.

Dietam annuo quolibet teneri præcipit.

Formam electionis Prioris & aliorum à Pio V. traditam servari jubet.

Constitutiones aut in eligendis Discretis attendi mandant.

Observantiam hujus bullæ omnibus injungit.

Contrariis derogat.

Tractare de immutatione hujus bullæ prohibet.

Transumptis credi decernit.

Dat. P. An. c. die 23. Aug.

XCIX.

Edita An. D. 1589.

Causa hujus constituit.

Suppressio instituti Fratrum Scalceatorum in Italia.

Concessio locorum his Reformatis.

Permissio transeundi ad eosdem Reformatos.

respective incurrerint, necnon ab excessibus hujusmodi, in utroque foro, auctoritate, & tenore præmissis, absolvimus, ac totaliter liberamus, dictasque sententias, censuras & penas, eis & cuilibet eorum gratiose remittimus & condonamus, atque relaxamus. Ac cum eisdem super irregularitate, per eos & quemlibet eorum, qui interim ob præmissa, censuris innodati divinis, non tamen in contemptum clavium, quomodolibet sese respective immiscuerint, incurra, quodque illa, & aliis præmissis, non obstantibus clericali charactere, ac omnibus etiam sacris, & presbyteratus ordinibus, per eos, & quemlibet eorum respective aliis ritè susceptis, illorumque privilegiis uti, ac in eisdem Ordinibus, etiam in Altaris ministerio ministrare, liberè, & licitè valeant, dispensamus, omnemque inhabilitatis & infamiae maculam, sive notam contra eos & quemlibet eorum ex præmissis omnibus & singulis quomodolibet insurgentem, ab eisdem penitus abolemus, ipsosque in pristinum & eum in quo antè præmissa quomodolibet erant statum, in omnibus & per omnia restituiamus, reponimus, & plenariè reintegramus. Decernentes quod dictus Joannes Baptista, & alii qui in aliis religionibus prius professi fuerant, vel ad eandem redire teneantur, vel si fratres conventuales Reformatos prædictos transire maluerint ad eos transire, & ibidem recipi, & recepti permānere possint, dummodò prædicti aliarum Religionum professi, si ad dictos fratres conventuales Reformatos transire voluerint, professionem de novo emittant, & quæ ab una in aliam Religionem transsecentes servare tenentur, servant. Aliis verò secularibus, qui ab eodem Joanne Baptista, sive aliis sociis Scalceatis receptis, & ad professionem admissi fuerunt, in prædictorum fratrum conventualium Reformatorum, vel alias Religiones, pares vel æquiores à Sede prædicta approbatas, dummodò de novo novitatum faciant, ingrediendi licentiam & facultatem concedimus & impartimur. Decernentes etiam, omnes supradictas posse in supradictas Religiones recipi, etiam non expectato Capituli, vel Congregationis capitularis tempore juxta constitutionis à nobis noviter emanatæ formam, cui harum ferie, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus.

Communi-
catio privi-
legiorum
Fratrum
Conventua-
lium huic
Congrega-
tioni Refor-
matorum.

§. 4. Quodque ipsi omnes in prædictis Conventuales Reformatos, recepti, omnibus & singulis privilegiis, facultatibus, indulgentiis, & peccatorum remissionibus ac aliis gratiis, tam spiritualibus quam temporalibus, quibus ipsi fratres conventuales Reformati, utuntur, fruuntur, potiuntur, & gaudent, acuti, frui, potiri, & gaudere poterunt quomodolibet in futurum, pariformiter, & æque principaliter, uti, frui, potiri, & gaudere, liberè & licitè valeant, auctoritate & tenore præmissis de speciali gratia indulgentiam.

Deregatio
contrarium.

§. 5. Non obstantibus felicis recordationis Bonifacii Papæ Octavi prædecessoris nostri, quæ cavetur expresse, ne consulis Ordinis Mendicantium professores, loca ad inhabitandum recipere, seu recepta mutare, absque Sedis prædictæ licentia speciali de prohibitione expressam mentionem faciente, ac aliis quibuscumque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, dictorumque Ordinum juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indulgentiis, & literis Apostolicis, sub quibuscumque tenore & formis, ac cum quibuscumque clausulis & decretis, in genere vel in specie, ac aliis in contrarium quomodolibet concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, illorum tenores præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permāsuris, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Fides tran-
scriptorum.

§. 6. Volumus autem ut præsentium transumptis etiam impressis, manu tamen alicujus Notarii etiam in Archivio Romanæ Curie descriptis per dilectum filium nostrum Hieronymum tituli Sancti Petri ad Vincula, presbyterum Cardinalem de

Ruvere nuncupatum, totius Ordinis Fratrum Minorum Conventualium, etiam Reformatorum Sancti FRANCISCI hujusmodi Protectorem, oretenus deputati subscriptis, & sigillo ejusdem Hieronymi Cardinalis Protectoris munitis, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ adhiberetur præsentibus si forent exhibitæ vel ostensæ.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub Annulo Piscatoris, die vigesima Decembris, milleesimo quingentesimo octuagesimo nono, Pontificatus nostri Anno 5.

Dat. P. A. S.
die 20. De-
cembris.

Jurisdicção, & facultates Thesaurarii generalis, Romani Pontificis, & Collectoris Spoliorum ad Rever. Cameram Apostolicam quoquo modo spectantium.

Officium Thesaurarii liquet esse antiquissimum, ex lictura Bullæ 13. Eugen. IV. Inter. fol. 330. Tom. I. Et Thesaurarium verum Papæ familiarem pronunciat Calist. III. in const. 1. Qua laudabili. fol. 362. Et circa d. officii varias ediderunt nonnulli Pontificum constitutiones, quas tamquam minis necessarias (præter hic & in Apostolis indicatas) consulit præterit. Præsertim quod hæc Bulla plene omnia continet. At circa Cancellarias criminales Status Ecclesiastici, vide Thesaurarii auctoritatem, & in Cancellarios jurisdictionem, in consuet. 10. Pauli IV. Romanus, sup. fol. 827. & constitut. 83. Pii IV. Suprema, fol. 121.

Spoliorum autem appellatione veniunt, bona Ecclesiasticarum personarum sine licentia Sedis Apostolice de eis disponentium, juxta consuet. 19. & 46. Pauli III. sup. fol. 750. & 780. ac Pii 4. constitut. 8. fol. 9. Et acquisita ob illicitam negotiationem, juxta constitut. 19. Pii IV. fol. 31. Illegitimis relicta. Aut vacantia ut hic, & infra in constitut. 18. Pauli V. fol. 228. Tom. 3. Necnon bona Regularium extrâ claustra decedentium juxta constitut. 43. Greg. XIII. fol. 449. in hoc Tom. 3. Clericorumque extrâ residendum morientium juxta constitut. 91. Pii IV. fol. 240. Fructus beneficiorum Italie, Sedi Apostolice reservatorum vel affectorum, dum vacant, juxta constitut. 32. Pii IV. fol. 53. Bona decedentium extrâ residendum Fructusque beneficiorum inexacti, juxta constitut. 7. Julii III. fol. 793. Tom. 1. Vel antè literarum Apostolice expeditionem, aut alias malè percepti, ut hic. Quæ autem non veniant in spoliis, dicam in d. const. 18. Pauli V. fol. 226. Tom. 3.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Dilecto filio Magistro, Bartholomæo Casio Clerico Romano, utriusque juris Doctore, Camere Apostolicæ Thesaurario generali, ac Capellano & familiari nostro, salutem, & Apostolicam benedictionem.

Edita A. D.
1590.

IN conferendis præcipuis Romanæ Curie, & Camere Apostolicæ officiis, illud potissimum nobis curæ est, ut juxta commissum nobis de super Apostolicæ servitutis munus, salubri directioni, in demnitate, & conservationi arari Apostolice opportune consulatur, utque illius administratio talibus personis committatur, quarum opera, studio, industria, ac fide, & bona, res & jura prædictæ Camere providè, ac diligenter conferentur & augeantur.

Præmium,

§. 1. Dùm itaque officium Thesaurarii generalis ejusdem Camere quod dilectus filius noster Guido Sanctorum Cosmæ & Damiani dia. Cardinalis Populus nuncupatus, tempore assumptionis per nos de persona sua ad Cardinalatus honorem factæ nuper obtinebat, ex eo quod nos ipsum officium per assumptionem hujusmodi vacare decrevimus, vacaverit, & vacet ad præsens.

Officium
Thesauraria-
tus vacans.

Cælie familie laudabiles qualitates referuntur, & Officium Theſaurariæ, ac Collectoriæ ſpoliorum, & proventuum beneficiorum Eccleſiarum, & Monafteriorum in univerſa Italia, & bonorum in Urbe & toto Statu Eccleſiaſtico vacantium, aliſque illi annexis cum iuribus & emolumentis, ac gratis prædictis conceditur in perſonam Bartholomæi Cæſii Romani. Sed omniſi ponere has bullas præcedentes, quia ante omnia comprehendunt, quæ in eis continentur.

§. 1. Nos ad generis nobilitatem, eximiamque doctrinam, necnon fidei ac juſtitie zelum, integritatem, ac ſingularem probitatem, cæterasque virtutes quibus tu qui Notarius Apoſtolicus de numero participantium, & Cameræ præfatæ Clericus & in utraque Signatura noſtra Referendarius, ac Prælatus noſter domeſticus exiſtis, & ex nobili Cæſiorum Proſapia, ex qua quamplurimi Sanctæ Romanæ Eccleſiæ Cardinales, Epiſcopi, Prælati, & aliæ egregiæ perſonæ de Sede Apoſtolica benemerentes hætenus prodierunt, & in dies prodeunt, originem trahis clare dignoſceris, noſtræ dirigentes conſiderationis inquitum, & indubie ſperantes quod ea quæ tibi duxerimus committenda, ſumma cum prudentia & exacta diligentia exequeris, quodque dextera Domini tibi aſſiſtente propicia dictum officium poteris laudabiliter exercere, dignum quoniam poſſus debitum fore cenſemus, ut perſonam tuam nobis, & Apoſtolicæ Sedis admodum devotam condignis honoribus, & gratiis proſequamur. Te itaque à quibuſvis excommunicationis, ſuſpenſionis, & interdicti, aliſque Eccleſiaſticis ſententiis, cenſuris, & poenis, à jure vel ab homine, quavis occaſione vel cauſa laſis, ſi quibus quomodolibet innodatis exiſtis, ad effectum præſentium dumtaxat conſequendum, harum ſerie abſolventes, & abſolutum fore cenſentes, Motu proprio non ad tuam, vel alterius pro te nobis ſuper hoc oblatæ petitionis inſtantiam, ſed de mera liberalitate, & ex certa ſcientia noſtris, & deque Apoſtolicæ poteſtatis plenitudine, dictum officium per aſſumptionem prædictam, ſive alio quovis modo quem habere volumus pro expreſſo, aut ex alterius cujuſcumque perſona vacans, cum officio Collectoriæ etiam generalis ſpoliorum, ac fructuum, & proventuum quorumcumque beneficiorum Eccleſiaſticorum, necnon Eccleſiarum & Monafteriorum in univerſa Italia, ac bonorum in Urbe & toto Statu Eccleſiaſtico vacantium, aliſque illi annexis, necnon omnibus & ſingulis illius honoribus, privilegiis, necnon ex diſmembratione & ſeparatione (quinque milium ſcutorum annuorum monetæ ex fructibus dicti officii Theſaurariæ per nos nuper ex certis cauſis animum noſtrum moventibus factis, Montis Theſaurariæ per nos nuper erecto applicatorum, prout in noſtris inde conſectis literis plenius continetur remanentibus) iuribus, regalibus, & emolumentis conſuetis, ac facultatibus, juſriſdictionibus, exemptionibus, immunitatibus, præeminentiis, antelationibus, prærogativis, favoribus, indultis, & gratis tam eidem Guidoni, quàm dilecto filio noſtro Benedicte S. MARIE in Coſmedino diacono Juſtiniano nuncupato Cardinalibus, dum in minoribus conſtituti hujusmodi officium Theſaurariæ obtinerent, quàm certis omnibus ante eos generalibus Theſaurariis, & Collectoribus per quoscumque Romanos Pontifices prædeceſſores noſtros, ac nos, & Sedem prædictam, in genere vel in ſpecie, ac aliàs quomodolibet conceſſis, confirmatis, extenſis, & innovatis, ac aliàs ad Theſaurariæ generalis, & Collectoriæ hujusmodi officia, de jure, fundatione, privilegio, uſu, conſuetudine, vel alio quocumque modo, & titulo pertinentibus, cæteriſque omnibus, & ſingulis quibus Benedicte & Guido Cardinales prædicti dum hujusmodi officium Theſaurariæ obtinuerunt, & alii quicumque eorum in officiis hujusmodi antecęſſores, tam antiquis quàm modernis temporibus uſi, potiri, & gaviſi fuerunt, ac uſi, potiri, & gaudere poterunt, ſeu etiam debuerunt, ſive de illis per literas Apoſtolicas, vel patentes, aut ſcripturas, ſeu libros Cameralæ, vel quæcumque alia publica vel privata documenta, ſidem tamen facientia appareat, quæ omnia & ſingula illorum reiores præſentibus pro expreſſis ac de verbo ad verbum inſertis haberi nolumus harum ſerie Apoſtolicæ auctoritate confirmamus, approbamus, & innovamus tibi que de novo concedimus, ita ut tu illis, omnibus & ſingulis, uſi, potiri, & gaudere, liberè & licitè valeas,

in omnibus, & per omnia ac pariformiter & abſque ulla proluſu diſſentientia, perinde acſi per præſentes ſpecialiter & expreſſe conceſſa fuiſſent, eadem tibi auctoritate concedimus & aſſignamus. Tęque ad Theſaurariæ, & Collectoriæ officia hujusmodi, illorumque liberum exercitium ex nunc recipimus, & admittimus, ac in locum dicti Guidonis Cardinalis quoad officia hujusmodi ſubſtituimus, & ſubrogamus, ac noſtram, & Sedis ac Cameræ prædictæ Theſaurarium generalem conſtituimus, & deputamus, ac per dilectos filios ejuſdem Romanæ Eccleſiæ Camerarium, præfatęque Cameræ præſidentes, Clericos, aliſque ad quos ſpectat, & ſpectabit, tam in eadem Camera quàm abhi recipi, & admitti, tibi que de iuribus, regalibus, localibus, taxis, proventibus, obventionibus, & emolumentis quibuſcumque, ad Theſaurariæ, & Collectoriæ officia hujusmodi quomodolibet ſpectantibus, (dictis quinque milibus ſcutis, ut præſertur, diſmembratis pro eadem Camera remanentibus) integre reſponderi mandamus.

§. 3. Tibique quod in eadem Camera, aliſque actibus Cameralibus, ac quibuſcumque aliis locis in loco ſolito poſt Vicecamerarium immediatè, ſed in Capella noſtra & quibuſcumque ſeſſionibus, proceſſionibus, equitationibus, aliſque actibus tam publicis quàm privatis, in noſtro & pro tempore exiſtentis Romani Pontificis conſpectu, & præſentia, vel etiam abſentia faciendis, ante omnes Epiſcopos, Prælates & Patriarchas, immediatè tamen poſt Auditorem cauſarum curiæ Cameræ hujusmodi ſedere, & incedere.

§. 4. Ac in noſtra & pro tempore exiſtentis Romani Pontificis ſignatura continuo intervenire, & aſſiſtere.

§. 5. Ac omnibus, & quibuſcumque cameris, & Congregationibus, interſeſſe Cameræ præfatæ ſive generaliter ſive particulariter concernentibus, vocari, & aſſeſſe ac intervenire.

§. 6. Necnon capitula, & conventiones appaltuum, & jurium dictæ Cameræ, ac apochas ſuper illorum, & aliorum jurium conceſſione in dicta Camera conſignandas, ſervato ſtylo in eadem Camera ſervari ſolito, per te ipſum ad nos referre poſſis, & debeas, auctoritate & tenore prædictis indulgemus.

§. 7. Necnon ſcuta ducenta pro penſione domus, ac victum quotidianum Theſaurariis generalibus, pro ipſis & oſcio eorum familiaribus, ac duobus equis præſtari ſolita.

§. 8. Ac omnia, & ſingula jura, obventiones, proventus, ſalaria, regalia, ſpoliorum, etiam cum diverſis Capitulis & Cleris ſecularibus hætenus cum dicta Camera compoſitorum, & in poſterum componendorum.

§. 9. Ac bonorum vacantium, necnon reddituum & proventuum, literis non expeditis, aut alias malè & indebitè, ac contra formam conſtitutionis ſecularis recordationis Bonifacii Papæ Octavi, & Julii Secundi, Terti, & aliorum quorumcumque Romanorum Pontificum prædeceſſorum noſtrorum perceptorum.

§. 10. Ac etiam illicitæ negotiationis per quasvis perſonas quavis auctoritate fungentes, nunc & pro tempore factæ, & aliorum jurium, & fructuum inferius declarandorum, decimas, taxas, & etiam emolumenta, ordinaria & extraordinaria, unde cumque, & quomodocumque provenientia, quæ pro tempore exiſtentem dictæ Cameræ Theſaurarium, & Collectorem ſpoliorum, ac fructuum & bonorum ad eandem Cameram ſpectantium, exigi, & levare quomodocumque & quocumque titulo vel cauſa conſueverunt, ſeu etiam poterunt, & debuerunt.

§. 11. Dempſis tamen his, quæ per nunc & pro tempore exiſtentem, noſtrum, & Sedis prædictæ in Regno Neapolitano tam citrà quàm ultrà Pharam, Nuncium hætenus percipi, & colligi conſueverunt, niſi compoſitionem, aut cauſa terminationem in Curia fieri contingat, quo cauſa decima tibi

debeatur, XIII.

Locus in Camera, Capella, & aliis actibus datur.

Et in Signatura Gratiæ.

In Congregationibus que interſeſſe Cameræ tractantibus.

Facultas agendi cum Papa de actibus Cameræ conceditur.

Penſio domus & victus familia aſſignatur.

Proventus ſpoliorum.

Bonorum etiam vacantium, ac reddituum, non expeditis literis, aut alias malè perceptorum.

Illicitæ negotiationis.

De his ſpoliis vide ſupra in Pii IV. conſtit. 19. Decens, ubi notavi fol. 31.

Excipiuntur proventus per nuncium Regni Neap. percipi conſueti, vel quatuor Cancellerarius Annatarum aſſignati à Greg. XIII.

debeatur, necnon proventibus quatuor Cancellariis annatarum per pie mem. Gregorium Papam XIII. etiam prædecessorem nostrum constitutis & assignatis, ad quamcumque summam ascendant, consequi, exigere, & levare, ac realiter & cum effectu percipere possis, & valeas.

§. 12. Actum in Urbe, ejusque districtu, dominiòque temporali ejusdem Romanæ Ecclesiæ, quam tota Italia, omnia, & quæcumque bona, mobilia & immobilia, ac se moventia, necnon spolia, aliisque res & bona quomodolibet nuncupata.

§. 13. Necnon fructus, redditus, & proventus mensurarum Abbatialium, Episcopaliū, Archiepiscopaliū, Patriarchalium, & aliarum etiam Parochialium Ecclesiarum, & Monasteriorum, ac quorumcumque beneficiorum quomodocumque & qualitercumque qualificatorum, ex quovis titulo, etiam infecto, aut aliis male, & indebitè perceptos.

§. 14. Necnon bona sine hæredibus decedentium, aut alias in Curia prædicta, vel extrà eam ubique quomodolibet vacantia.

§. 15. Et de quibus contra constitutionem recolendæ memoriæ Pii Papæ Quinti similiter prædecessoris nostri contra illegitimos, etiam disponi contigerit, aut jam dispositum fuerit.

§. 16. Aut ex causa illicitæ negotiationis, vel alias male acquisito.

§. 17. Et quæ ea Apostatis, aut aliis extrà claustra degentibus Religiosis, tempore eorum obitus deinentur, & possidentur, quæque per obitum ipsorum Apostatarum, & aliorum regularium extrà claustra suorum Monasteriorum existentium, & aliis contra formam litterarum dicti Gregorii prædecessoris desuper editarum.

§. 18. Ac etiam illa, necnon ædificia & loca quæ ex fructibus, redditibus, & proventibus Ecclesiasticis profecta, ædificata, resecta, & restaurata fuerint, seu alias ex eisdem fructibus, redditibus & proventibus quomodolibet provenierint per obitum quorumcumque personarum Ecclesiasticarum beneficia Ecclesiastica etiam simplicia, de quorum tamen simplicium fructibus vel ex privilegio Apostolico, vel ex consuetudine legitime præscripta, dispositum non fuerit, tunc in titulum quam administrationem obtinentium, secularium, & quorumvis Ordinum regularium, quavis etiam Pontificali dignitate fulgentium in omni Italia parte per tempore decedentium.

§. 19. Necnon quarumvis personarum beneficia personalem residentiam requirunt obtinentium; extrà eandem residentiam, ac ubilibet etiam in dicta Curia decedentium remanens, etiam in auro, argento, gemmis, & aliis preciosis rebus quoscumque generis, qualitatis, & speciei fuerint.

§. 20. Ac etiam fructus, redditus, & proventus mensurarum Ecclesiarum, & Monasteriorum in ipsius Cameræ libris taxatorum, necnon beneficiorum etiam in dictis quæ pactum cum dicta Camera inierunt ex quacumque causa Sedi prædictæ reservatorum seu effectuum ex die vacationis usque ad diem præfectionis seu provisionis, & adeptæ possessionis illorum, seu commendæ de illis faciendæ, quos omnes fructus, redditus, & proventus, ad nos & dictam Cameram spectare, & pertinere volumus & decernimus, eidemque Cameræ applicamus, & appropriamus.

§. 21. Necnon omnia, & quæcumque bona relicta, & quoscumque hujusmodi fructus, redditus, & proventus male perceptos, quoscumque qualitatibus, & quantitatibus fuerint, etiam percipere, exigere, & recuperare possis, & valeas.

§. 22. Ac etiam tam ex officio curiæ tuæ, seu Cameræ prædictæ, illique adherentium, quam etiam ad solam instantiam, denunciantium, seu instigatorum inquirendi & investigandi omnibus viis & modis, tam super illis, quam aliis quibuscumque spoliis, quæ hæcenus ex bonis relictis, & fructibus hujusmodi per simulum personarum obitum aut alias ut præfertur, seu quomodolibet remanserunt, & indebitè quocumque

prætextu usurpantur, & usurpari contigerit, nostro & dictæ Cameræ nomine colligere, percipere, & exigere, etiam cum facultate pro faciliiori inquisitione quicumque personarum quoscumque dignitatis, status, gradus, ordinis, & præeminentiæ fuerint, etiam exemptas.

§. 23. Necnon præteritos & pro tempore existentes collectores & subcollectores vel officiales, coram te vel alio seu aliis à te deputando seu deputandis, ad reddendum computum & rationem de administratis, exactis & receptis ab eisdem.

§. 24. Illisque quorum testimonio indigere cognoveris, ad se examini subijciendum.

§. 25. Et spoliatorum, ac fructuum, reddituum, & proventuum ac bonorum hujusmodi occupatores & detentores ad spolia, fructus, redditus, & proventus hujusmodi restituendum, & relaxandum.

§. 26. Ac tibi ad effectum vendendi, subhastandi, deliberandi, distrahendi, & alienandi, arbitrio tuo in vim hujusmodi facultatum prout tibi visum fuerit, & etiam absque aliqua subhastatione, seu incantu, & absque interventu & instantia alterius officialia, etiam prædictæ Cameræ pro tempore existentes commissarii, in pecuniam convertendi, illa consignandum, & solvendum.

§. 27. Illisque, qui in præmissis vel circa ea, quomodolibet deliquerint, etiam ad personaliter, coram te, seu à te, deputando vel deputandis hujusmodi comparandum, sub confiscationis bonorum, & privationis beneficiorum, inhabilitatisque ad illa, & alia in posterum obtinenda, ac etiam pecuniariis, quæ tibi videbuntur, ac demum excommunicationis, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis, tuo arbitrio infligendis, moderandis, & applicandis, monendi, citandi, & compellendi, ac etiam carceribus mancipandi, ac quoties tibi videbitur relaxandi, contradicentes quolibet & rebelles, ac contumaces, penas ac censuras prædictas incurrisse declarandi, illasque etiam sæpius aggravandi, auxiliumque brachii sæcularis invocandi.

§. 28. Ac super eisdem spoliis, fructibus, redditibus & proventibus, ac bonis, toties quoties tibi videbitur, cum quibuscumque personis quacumque auctoritate fungentibus componendi, & concordandi, ac solventes de compositis, & solutis per eos, ac de receptis quietandi, liberandi, necnon ad cor reversos si id humiliter petierint de censuris & penis, prævia satisfactione simpliciter, & etiam alias cum reincidenti, seu ad cautelam, seu ad effectum agendi, absolviendi, & liberandi, ac à carceribus relaxandi.

§. 29. Et in præmissis omnibus & singulis, etiam summarie, simpliciter, & de plano, ac sine strepitu, & figura judicii, sola facti veritate inspecta, etiam privative quoad alios quoscumque quavis auctoritate fungentes, & functuros, procedendi, sententiandi, si neque debito terminandi.

§. 30. Causasque hujusmodi, etiam cum omnibus & singulis suis incidentibus, connexis, & annexis, à quibuscumque aliis iudicibus ordinariis, & delegatis, quacumque auctoritate fungentibus, & etiam causarum Palatii Apostolici Auditoribus, seu Locatenentibus, vigore suæ ordinariæ jurisdictionis, ac facultatis reassumendi, ac illis, aliisque quibus opus fuerit, etiam sub censuris Ecclesiasticis, & pecuniariis penis tuo arbitrio imponendis, moderandis, & applicandis, inhibendi, ipsasque censuras, & penas, quoties opus fuerit, incidisse declarandi, aggravandi, & reagravandi.

§. 31. Necnon Vicethesaurarium, aut Locumtenentem generalem, ac unum, vel plures Auditores loci tui, cum simili aut limitata potestate, toties quoties tibi expedire videbitur, & ad omne tuum beneplacitum deputandi, constituendi, & faciendi ac revocandi, necnon quoscumque collectores, subcollectores, commissarios, subcommissarios, ac depositarios & exactores pecuniarum, & jurum dictæ Cameræ, seu alios officiales hæcenus deputatos seu deputandos, revocandi seu confirmandi, & alios quoscumque

Officialesque ad reddendum rationem cogendi.

Testes ad se examinandum alstringendi. Occupatores spoliatorum coercendi. Illaque arbitrio tuo vendendi.

Delinquentes in præmissis puniendi.

Desuperque componendi.

Summarie procedendi.

Causas spoliatorum, easque annexas ab omnibus iudicibus reassumendi.

Vicethesaurarium Auditorum, Collectores, &c. deputandi & suo arbitrio reinovendi.

Spolia in Italia eidem Thesaurario assignantur.

Fructus beneficiorum male percepti.

Bona quocummodo vacantia.

Illegitimis relicta contra bullam 117. Pii V. quæ est supra fol. 346.

Male acquisita. Relicta per Religiosos extrà claustra degentes contra Bullam Gregorii XIII. num. 42. supra fol. 439.

Acquisita de fructibus Ecclesiasticis, de quibus legitime disponi non fuit.

Ad hoc vide Bullam Pauli V. cit. in rub.

Bona non residentium.

Hæc vide in Pii IV. constit. 91. fol. 140.

Fructus beneficiorum reservatorum, vel affectuorum, pro tempore quo vacant &c.

Ad hoc habes etiam supra Pii IV. constit. 72. fol. 48. ubi notavi.

Fructusque omnes male percepti.

Facultas Thesaurario datur procedendi etiam ex officio præmissis, & contra exemptos.

Causas Spoliorum & independentium, privatim quoad alios cognoscendi.

Appellationes à sententiis Nunciorum, Collectorum, & aliorum desuper ferendis, ad Thesaurarium solummodo conceduntur.

Appellatio à Thesaurario devolutione tantum conceditur non retardata executione.

Locorum Montium resignaciones, juxta solitum admittuntur, ab eodem & eadem venduntur.

Cura introitus & constructiones Civitatis Terracinen. eidem datur.

illorum loco per tuas literas tuo sigillo munitas, in quibuscumque civitatibus, oppidis, terris, & locis, deputandi, & subdelegandi, quoties tibi videbitur expedire, ceteraque omnia faciendi, gerendi, & exequendi, quæ in præmissis, & circa ea necessaria fuerint quomodolibet & opportuna, plenam sibi, & liberam per præsentem concedimus facultatem.

§. 32. Et insuper ut spoliorum, fructuum, reddituum & proventuum, ac bonorum, juriusque hujusmodi exactio celerius, commodiusque fiat, statuimus quod omnes & quæcumque similes lites, causæ, & controversiæ, super quibuscumque fructibus, redditibus, & proventibus, spoliis, bonis, & aliis prædictis, & illorum occasione, & aliæ quæ ab ipsis litibus, & causis quomodolibet dependent, seu cum illis connexitatem habuerint, nunc & pro tempore quocumque locorum pendentes, & si super spoliis seu fructibus male perceptis, & aliis prædictis fuerint facta compositio in Camera, & inter partes adhuc aliqua controversia pendeat, nullo alio quam à te ac tuis, seu aliis super spoliis, & fructibus, rebusque, bonis, ac aliis præmissis à te pro tempore deputandis, collectoribus, subcollectoribus, & aliis officialibus & ministris specialibus vel generalibus.

§. 33. Necnon causæ appellationum à sententiis latis per tuos commissarios, vel etiam pro tempore existentibus Sedis Apostolicæ Nunciis in Neapolitano, Hispaniarum, Portugaliæ, seu Algarbiorum Regnis, ac Ducatu Sabaudie, & Principatu Pedemontium, aliisque quibuscumque Regnis & Provinciis, ac ubique locorum residentibus, necnon Visitationibus, & aliis quibuscumque, quomodocumque, & qualitercumque, & sub quovis nomine, titulo, aut munere, & aliis collectoribus generalibus deputatis, & pro tempore, ad te solum, & tuos deputatos prædictos in secunda instantia, seu alia pertineant; omnesque appellationes desuper interpositas & interponendas, à te tuisque prædictis, & non ab alio, juxta formam dicti Gregorii prædecessoris cognosci, nec alteri nisi per commissionem manu nostra signatam, vel per nostras literas, & citato dictæ Camere Commissario generali, & Notario spoliorum, & causarum hujusmodi pro tempore à tempore à te deputato, cognosci & terminari possint. Quodque innotoria, citationes, inhibitiones, processus, sententiæ, & mandata, quæ alias quam ex citatione, commissione, vel literis nostris emanaverint, quoad earundem causarum introductionem, & litis pendentiam seu tuam tuorumque ministrorum ad id à te deputandorum jurisdictionis & processuum impedimentum, retardationem, vel perturbationem, nullius sint roboris vel momenti.

§. 34. Sed nec nisi præstita cautione idonea in forma depositi, à sententiis per te seu Locumtenentem vel Auditorem, seu Ministros prædictos, super præmissis pro tempore latis, ullo modo appellari, nisi post factam executionem ad effectum devolutivum tantum, nec eorum executio differri aut suspendi.

§. 35. Necnon quascumque resignaciones & cessiones quorumvis locorum seu creditorum Montium Julii, ac primi & secundi succursus Avinionen. aliorumve si quæ sint resignaciones, seu cessiones quas Thesaurarius pro tempore existens admittere consuevit, admittendi; & ipsa loca seu credita, tam per resignationem seu cessionem hujusmodi, quam per aliam quancumque dimissionem vel amissionem pro tempore vacantia conferendi & assignandi, juxta formam aliarum facultatum tuis antecessoribus concessarum, & quascumque patentes literas tuo sigillo munitas expediendi, ac Secretarium & Capellanum, ac Computistam, seu Ratiocinatorem, aliosque officiales juxta solitum quoties tibi videbitur deputandi & revocandi.

§. 36. Necnon curam & administrationem introitus Civitatis nostræ Terracinen. ac construendi Civitatem novam jam inceptam in loco salubriori, juxta formam aliarum facultatum tuis prædecessoribus

concessarum petendi licentiam, facultatem, potestatem & auctoritatem tenore earundem presentium concedimus & impartimur.

§. 37. Præterea, cum nonnulli, tam Prælati quam Urbis prædictæ cives & incolæ, & curiales, quam aliæ diversæ personæ totius ditionis nostræ Ecclesiasticæ, ære alieno quandoque gravati, & aliis necessitatibus oppressi pro eorum debitorum satisfactionibus, aut necessitatibus hujusmodi sublevamine, & aliis ipsorum arbitrio propria jocalia, aurumque & argentum, & alia bona, tam mobilia quam immobilia, domos, vineas, & alia quæcumque vendere cupientes, ut plurimum illa nisi satis minori pretio eorum veri valoris cum maximo eorum detrimento vendere; neque emptores invenire possint, tibi quibuscumque personis quibuscumque status, gradus, & conditionis existentibus, ut eorum jocalia, aurum, argentum, & alia bona, tam mobilia quam immobilia, ut supra sub sortibus quas lottos vocant, etiam cum bussula & pallis, aut alias tui arbitrio exponere, ac sortes seu lottos hujusmodi facere, publicare & exercere, prævia estimatione petitorum à te deputandorum; privatim ad quoscumque alios possis & valeas, soluta tamen Camere prædictæ rata & portione tibi bene visa; ac decima tibi, & iis qui sortes seu lottos hujusmodi fecerint, quascumque licentias concedendi, ipsique ut dictam ratam eidem Camere, ac decimam prædictam solvendam, unà cum expensis realibus, & necessariis desuper faciendis, in & super eisdem lottis recuperare possint, quibus tibi bene visum fuerit indulgendi, ac peritos estimatores eligendi & deputandi, & desuper edicta, seu publicationes, necnon quascumque patentes literas tibi bene visas, tam in dicta Urbe quam extra illam in quibuscumque civitatibus, oppidis & locis Status Ecclesiastici mediate vel immediate Sedi prædictæ subjectis publicandi, ac locis publicis affigendi, & tuo sub sigillo expediendi, necnon omnes & singulos qui hæcenus similes licentias obtinuerunt, sed solvendum ratam & portionem hujusmodi tibi bene visam, etiam si in eorum licentia aliter expressum sit cogendi, ac licentias hujusmodi, quoad illos qui illas solvere reculaverint, aut distulerint revocandi.

§. 38. Necnon omnes & singulas causas, lites, & controversias desuper, tam occasione spoliorum & bonorum vacantium, ac Montium, illorumque locorum ac fructuum, quam etiam Lottorum hujusmodi, aliorumque omnium & singulorum præmissorum, tam civiles quam criminales & mixtas, quomodolibet ortas, & quas pro tempore oriri contigerit inter quascumque personas, quancumque auctoritate, dignitate, & præminencia suffultas, unà cum omnibus & singulis suis incidentibus, dependentibus, emergentibus, annexis & connexis, & ex officio tuæ Curie simpliciter, summarie, & de plano, sola facti veritate inspecta audienda, cognoscendi, decidendi, sineque debito, omnia & quæcumque appellatione ad effectum suspensivum tantum, remo, terminandi & finiendi, ac quæcumque mandata executiva decernendi, relaxandi, & quancumque appellatione aut recursu vel inhibitione illius prætextu, seu alias forsan emanatæ non obstantibus, exequi faciendi privatim ad omnes & singulos alios; ita quod nullo etiam vigore commissionis, nisi manu nostra, aut pro tempore existentis Romani Pontificis signata fuerit, in causis hujusmodi sese intromittere possit & debeat.

§. 39. Ac etiam quascumque causas coram quibuscumque aliis iudicibus ordinariis vel delegatis, etiam nostri Palatii Auditoribus, seu Locumtenentibus, ut supra, nunc & pro tempore introductas, tuæ ordinariæ auctoritate, & in vim hujusmodi facultatum realium sumendi, illique quibus opus fuerit inhibendi.

§. 40. Ac tam in dictis lottis quam etiam causis & litibus ab eis quomodocumque & qualitercumque

depen-

Sortes & Lottos permittendi &c. eidem Thesaurario facultas datur.

Causa spoliorum, lottorum & aliorum prædictorum à Thesaurario cognoscuntur privatim quoad alios.

Reassumanturque ab omnibus aliis iudicibus.

Notarius unus in ejus causis deputetur.

dependentibus, etiam illorum extractionem, & illorum extractionem & præmiorum consignationem, unum ex Camera prædictæ Notariis tibi bene visum ad tuum beneplacitum, toties quoties tibi videbitur & placuerit, eligendi & deputandi, ac omnes & singulos hæcenus deputatos, & seu in futurum deputandos ad tuum libitum revocandi, ac alium seu alios similiter deputandi.

§. 41. Omnesque & singulas scripturas, instrumenta, & acta, tam lottos hujusmodi quam omnia & singula alia jurisdictionem generalis Thesaurarii, vel collectoris spoliatorum concernentia, tibi consignari faciendi, & quos opus fuerit cogendi & compellendi, motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, plenam liberam, & absolutam facultatem, potestatem & auctoritatem similiter concedimus & impertimur.

§. 42. Necnon ut accuratius & diligentius præmissis invigilare, ac personas, quæ præmissorum curam suscipere valeant, retinere valeas, tibi decimam omnium & singularem pecuniarum, seu aliarum rerum ex dictis fortibus, vel lottis, sub quibuscumque modo & forma hæcenus factis & publicatis, quam de cætero faciendis & publicandis, ad Cameram & Sedem prædictam provenientium assignamus, tibi decimam hujusmodi propria auctoritate retinere si, etiam absque aliquo alio mandato & ordinatione à quibus opus fuerit recipiendi, exigendi, levandi, ac in tuos usus & utilitatem convertendi facultatem pariter largimur. Præterea tibi, ut de omnibus compositionibus & incarcerationibus quomodolibet per te seu collectores, aliosque tuos officiales & ministros ex quacumque causa quomodolibet factis, & pro tempore faciendis, etiam pro fructibus, redditibus, & proventus male perceptis, ac aliis præmissis in quibuscumque locis & Tribunalibus, factis seu faciendis, ac etiam à Camerario, ejusque Auditoribus civiliter vel criminaliter quacumque ex causa expediendis, integram decimam illarum partem ultra ratam eidem Camerario tangentem habere & exigere possis & debeas, & ex iis incarcerationibus, & compositionibus, deducere & retinere pariter volumus & mandamus.

§. 43. Insuper quod tu quacumque edicta, bannimenta, literas seu ordinationes, super præmissis omnibus & singulis, & illorum observatione facere, edere, publicare & denuntiare, ac ad illorum observationem quoscumque in eis comprehensos.

§. 44. Necnon quovis Camera præfate, ex quavis causa vel occasione debitores, ad solvendum vel satisfaciendum omnibus viis, ac iuris & facti remediis, cogere & compellere.

§. 45. Propterea sigillo uti, in omnibus actibus & scriptis, quæ hæcenus sub sigillo Thesaurarii expediti consueverunt, emolumentum exinde provenientia, tam occasione literarum patentium commissariorum, depositariorum, & aliorum officialium, quam ex concessione, & assignatione quorumvis locorum Montium, & aliarum quorumcumque expeditionum, quibus sigillum tuum quomodolibet apponendum fuerit percipere, ad instar Thesaurariorum aliorum antecessorum tuorum, & juxta solitum, nec alias etiam liberè & licite valeas, licentiam eadem tibi auctoritate impertimur.

§. 46. Necnon ut quicumque loci Ordinarius, seu utriusque, seu alterius Signaturæ Referendarius, aut Metropolitanus, vel alterius Cathedralis aut collegiæ Ecclesiæ canonicus, seu persona in dignitate Ecclesiastica constituta, ad id per te eligendus seu eligenda, quascumque pensiones annuas super quarumvis mensarum Episcopatum seu Archiepiscopatum, seu aliarum Ecclesiarum, necnon Monasteriorum, Prioratuum, præpositurarum, dignitatum, aliorumque beneficiorum Ecclesiasticorum, cum cura & sine cura, secularium & quorumvis Ordinum, fructibus, redditibus & proventus, juribus, obventionibus, & emolumentis universis, necnon distributionibus quotidianis, seu illorum loco, fructibus, redditus, proven-

tus, jura, obventiones & emolumenta, ac distributiones hujusmodi tibi auctoritate prædicta reservatas, & reservata, ac reservandas & reservanda, etiam si pensionis seu fructuum hujusmodi solutiones, exactiones, successoribus beneficiarum, & Ecclesiarum aliorum prædictorum incipere habuerint, usque ad summam mille ducatorum auri, in auro de Camera novorum, in dicta curia vel extra eam, ubique locorum, etiam in Ecclesiis quas te obtinere, aut personam tuam illis præfate contigerit non residente, etiam in mortis articulo de tuo etiam post dimissionem officii Thesaurarii hujusmodi expresso consensu cassare, extinguere & annullare, & postquam cassæ, extinctæ, & annullatæ fuerint, alias similes pensiones annuas super eisdem fructibus, redditibus, proventus, juribus, obventionibus, emolumentis & distributionibus hujusmodi, seu fructibus, redditibus, proventus, juribus, obventionibus, emolumentis & distributionibus hujusmodi, seu fructus, redditus, proventus, jura, obventiones, emolumenta, & distributiones prædictas, usque ad eandem summam, uni seu pluribus personis ad id per te nominandis, & quacumque, quotcumque, & quacumque beneficia Ecclesiastica obtinentibus, eisdem modo, forma, conditionibus, ac cum immunitatibus, exemptionibus, libertatibus, donationibus, indultis, decretis, & aliis quibus tibi reservata, seu reservata fuerint, etiam absque consensu solvere habeatis, seu fructus, aut obtinentibus Ecclesiis, Monasteriis, Prioratibus, Præposituras, dignitates, & alia beneficia hujusmodi, dicta auctoritate reservare, concedere, construere, & assignare, ac etiam transferre libere & licite valeas, ac etiam reservationis seu translationis pensionum, seu fructuum hujusmodi vigore præsentium faciendæ valeat, plenamque roborem firmitatem obtineant, in omnibus & per omnia, perinde ac si per nos & pro tempore existentem Romanum Pontificem de consensu solvere habentis pensiones seu obtinentium Ecclesias, Monasteria, Prioratus, dignitates, & alia beneficia hujusmodi factæ fuissent.

§. 47. Tibique etiam, ut de singulis domibus, prædictis, possessionibus, oppidis, castris, terris, & aliis locis etiam jurisdictionalibus, aliisque bonis mobilibus & immobilibus, ac se moventibus, quiscumque qualitate, valoris, speciei, pretii, etiam notabilis & notabilissimi, ac conditionis existentibus, necnon pecuniis, juribus & actionibus ad te, tam ratione quarumvis etiam Patriarchatum & Cathedralium, ac Metropolitanarum Ecclesiarum, ac Monasteriorum etiam consistorialium, Prioratuum, Præpositurarum, dignitatum, & aliorum quorumcumque beneficiorum Ecclesiasticorum, cum cura & sine cura, secularium, & quorumvis Ordinum regularium, & etiam militarium, quæ ex quibuscumque concessionibus & dispensationibus Apostolicis, in titulum, commendam, administrationem, aut alias quomodolibet obtines, & in posterum obtinebis, ac ratione factuum, reddituum, & proventus Ecclesiasticorum quorumcumque mensarum Patriarchatum, Archiepiscopatum, Episcopatum, & Monasteriorum, Prioratuum, dignitatum, & aliorum beneficiorum, ut præfatur qualificatorum, ac pensionum annuarum, super similibus fructibus, redditibus, & proventus, nomine & forma præmissis reservatarum & assignatarum, ac reservandarum & assignandarum, quos & quas, percipis & percipies in futurum, necnon emolumenta Thesaurariatus, & aliorum quorumcumque ejusdem Curie officiorum & Montium, necnon legationum ac alias quocumque modo, via, forma, & occasione ad te spectantibus & pertinentibus, ac etiam de dictis, fructibus, redditibus, & proventus, ac pensionibus, necnon quomodolibet & undecumque licite acquisitis & acquirendis, ac alias quomodolibet etiam ex officiis quæ exercuisti, aut te exercere contigerit; & alia quavis occasione vel causa seu contemplatione ad te perventis & perventuris, etiam si in pecunia numerata, vocalibus, gemmis, aliisque preciosis re-

Testandique de bonis etiam in jurisdictionalibus, & acquisitionibus Ecclesiasticis &c.

Instrumenta &c. habentes quæ Thesaurarii jurisdictionem necnon, ei co signare cogatur.

Decima omnium decimarum proventuum, ei assignatur.

Bannimenta promulganda super præmissis Thesaurario facultas datur.

Debitoresque Camera ad solvendum cogendi.

Sigillo proprio utendi, & ejus emolumenta percipiendi.

Personas ut quæ ad scuta quatuor mille transferendi.

ANNO
1590.

736

SIXTUS QUINTUS.

ANNO
1590.

bustina Capella, illiusque ornamentis, vasis, & denique tota illius sacra suppellectili, tam in dicta Curia quam extra ubique locorum existentibus, quorum omnium qualitates & veros annuos valores, etiam si talia essent quae generali appellatione bonorum, vel suppellectilium non venirent, sed specialibus indigerent vocabulis, praesentibus, ac si specificè & sigillatim exprimerentur & denotarentur, pro sufficienter expressis & narratis habere volumus, ac etiam de ipsis proventibus & pensionibus debitis & debendis, ac etiam nondum perceptis & exactis, etiam si eorum solutionis terminus nondum adveniret, pro illa rata quae tibi debita erit usque ad quancumque & quantumvis maximam, ac notabilem & notabilissimam ac inexpectatam summam, tam pro decentibus & honestis impensis funeri tui, quam etiam remuneratione, illorumque tibi viventi inferuerunt, etiam ultra servitii meum, & in tuorum consanguineorum & affinium, ac etiam quarumvis aliarum personarum, etiam extranearum, necnon Conventuum, Universitatum, Collegiorum & aliorum, etiam non piorum locorum, dummodò non illegitimum, aut alias quomodolibet incapacium, & quoad Capellam tuam praedictam, dummodò in Ecclesiarum favorem & usum, & alias pro tuo arbitrio & voluntate absolutis testis, ac testamento, codi illis, fideicommissis, substitutionibus, legatis, donationibus, tam inter vivos quam causa mortis, & aliis quibuscumque modis & viis, etiam omnis quibuscumque solemnitatibus, etiam substitutionibus, & formis, tam de iure quam per nos, & quorumcumque aliorum Romanorum Pontificum constitutiones & ordinationes, necnon statuta ac consuetudines Urbis, civitatis, loci & provinciae, ubi id fieri, vel te in eadem voluntate permanente mori contigerit, tam verbo quam scriptura, etiam minus solemniter, & sine aliqua insinuatione seu subscriptione testium, aut etiam coram duobus vel tribus testibus tantum, aut etiamedula sola manu tua subscripta, ac aliis in omnibus & per omnia, prout tibi quomodolibet videbitur, & in ipsa Curia & extra eam, & ubique locorum, & in mortis articulo, & nulla facta mentione praesentis, vel aliarum tibi pro tempore concessarum similium facultatum, quibus per praesentes nullum praedictum esse decernimus, aut quod in vim illorum testis, & disponere velis & intendas, semel atque iterum, & pluries disponere, statuere, & ordinare, liberè & licite valeas, praedicta auctoritate, tenore earundem praesentium concedimus & indulgemus.

§. 48. Necnon quod omnes & singulas literas Apostolicas, sub plumbis, ac etiam in forma brevis, tam praesentes quam alias super quibuscumque gratis, indultis, concessionibus, facultatibus, tam gratiam quam iustitiam concernentibus per te ac Vicethesaurarium, seu Locumtenentem, & duos familiares tuos per te nominandos, & nobis & successoribus nostris aut sede praedicta pro tempore intratis, seu etiam motu simili concessis, in omnibus Cancellariae, Camerae, & Curiae praedictarum officiis, necnon plumbis & registro, ac Secretaria Apostolica, ac aliis ubilibet gratis, & absque ulla taxatione, annuorum, communium, minorum, servitorum, jocalium aut aliorum quorumcumque jurium, aut regiorum solutione expediri, & Receptoribus taxam literarum praedictarum, cum subscriptione Gratis pro persona Theaurarii, & aliorum praedictorum subscribere, ac tam ipse, quam alii Scriptores, Abbreviatores, Solicitatores litterarum praedictarum, Archivarii, Cubicularii & Scutiferi Apostolici, Portionarii, & Praefidentes Ripae, & Milites SS. Petri & Pauli, Cancellarii, Secretarii, Protonotarii Apostolici, & Summissi, necnon Magistri & plumbi, Collectores, ac Plumbatores, Registratores, & Vicecancellarios, & quicumque alii praedictae Curiae officiales, & expeditionum literarum huiusmodi tempore Praesidentes, eorumque Ministri, etiam in annis, communibus,

jocalibus, minutis, servitiis, regibus, & aliis iuribus, huiusmodi participantibus eadem literas, personam dicti Theaurarii, ejusque Vicethesaurarii & Locumtenentis, ac duorum familiarium suorum praedictorum concernentes, etiam post dimissionem officii Theaurarii, ita quod te semel fuisse Theaurarium, ad effectum omnium & singulorum praedictorum, tibi ac dictis tuis sufficiat, sub excommunicationis latae sententiae, & suspensionis ac privationis suorum officiorum, fructuumque & emolumentorum eorumdem amissionis poenis, per eos ad quos pertinerit, & qui eas gratis subscribere, vel concedere & expedire, noluerint, eo ipso incurrendis, absque alio nostro & successorum nostrorum, & Sedis praefatae ulteriori mandato omnino gratis, & absque alia taxatione, annuorum, communium, jocalium, minorum, servitorum, & aliorum praedictorum solutione & exactione in omnibus & per omnia usque ad plumbum & registrum, ipsarumque finalium expeditionem & relaxationem inclusive, omni contradictione cessante expediri, subscribi, ac relaxari facere & permittere debeant & teneantur, etiam si in eorum officiis & concessionibus caveatur expresse ut ad id non teneantur, & quod eorum officia fuerint eis concessa titulo oneroso, volumus & mandamus &c.

§. 49. Praesentibusque ibi in omnibus & per omnia suffragari debere, illisque & in eis contentis quaecumque nullo unquam tempore, de subreptionis, obreptionis, vel nullitatis vitio, seu intentionis nostrae defectu notari, impugnari, invalidari, aut ad terminos juris reduci, seu in jus vel controversiam revocari, aut adversus eas, quodcumque iuris aut facti vel gratiae remedium impetari, minimeque sub quibuscumque similibus vel dissimilibus gratiarum, revocationibus, suspensionibus, limitationibus, & aliis contrariis dispositionibus comprehendendi, sed semper ab illis exceptis, & quoties illae emanabunt, toties in pristinum, & eum in quo antequam illae emanarent, erant, statum restitutas, repositas, & plenarie reintegratas, ac de novo concessis, etiam sub quacumque data per te eligenda, validasque & efficaces semper fore & esse, vique validas & efficaces contractus inter nos & Sedem, ac Camerae praefatas ex una, & te ex altera partibus rite & rectè facti initi, & stipulati, ac etiam hinc inde acceptati, habere & obtinere, ac inviolabiliter observari, semperque validas & efficaces existere.

§. 50. Sique per quoscumque Judices & Commisarios, etiam S. R. E. Cardinales & Camerarium, vicique Camerae Praesidentes & Clericos, ac Palatii Apostolici Auditores praefatos, sub lata eis & eorum cultibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, in quavis causa & instantia, ac ubique locorum iudicari ac definiti debere, ac irritum & inane, si secus super his a quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, auctoritate & tenore praemissis decernimus.

§. 51. Quocirca venerabilibus fratribus nostris Americis & Taderis, Episcopis, ac dilecto filio Curiae causarum ejusdem Camerae generali Auditori, per Apostolica scripta mandamus, quatenus ipsi vel duo aut unus eorum, per se vel alium seu alios, praesentes literas & in eis contenta quaecumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte tua fuerint requisiti, sollemniter publicantes, tibi in praemissis efficacis defensionis praesidio assistentes, faciant te approbatione, confirmatione, concessione, assignatione, receptione, admissione, subrogatione, constitutione, mandato, singulis indultis, voluntate, decretis, statuto, imputatione, remissione, condonatione, obligatione, hypothecatione, aliisque praemissis pacifice frui, & gaudere. Non permitteas te per Camerarium, Praesidentes, ac Clericos praefatos, seu quoscumque alios, quavis auctoritate fungentes quomodolibet contra tenorem praesentium molestari, perturbari, in-

queterari.

Literas Apostolicas quaecumque tam gratiam quam iustitiam concernentes, etiam in Cancellaria, Camera, & Curiae officiis, pro se & Vicethesaurario seu Locumtenente, ac duobus familiaribus gratis etiam post officii Theaurarii dimissionem expediendi.

Clausula hujus Bullae praeservativa.

Clausula sublatæ &c. Decretum irritatis.

Executores deputati.

quietari, aut impediri. Contradictores quoslibet & rebelles, per sententias, censuras & penas Ecclesiasticas aliaque opportuna juris & facti remedia, appellacione postposita, compescendo; legitimisque super his habendis servatis processibus, sententias, censuras & penas ipsas etiam iteratis vicibus aggravando; invocato etiam ad hoc si opus fuerit auxilio brachii secularis. Non obstant. constitut. & ordinationibus Apost. nec non Ecclesiarum, Monasteriorum, locorum & Ordinum quorumcumque iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis, illis, illorumque Superioribus & personis, dictaque Camera Clericis & Collegio, ac quibuscumque aliis sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis irritantibusque & aliis decretis, etiam iteratis vicibus concessis, approbatis & innovatis quibus omnibus & singulis, etiam si pro illorum sufficienti derogatione de illis eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, individua, & expressa, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quavis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum, ac forma in illis tradita observata inserti forent, presentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat harum serie specialiter & expresse derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdici, suspendi vel excommunicari non possint per literas Apostol. non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§. 2. Volumus autem quod presentium transumptis, etiam impressis, ac Notarii publici manu subscriptis, tuoque sigillo obsignatis, eadem pro suis fides, ubique locorum in iudicio & extra adhibeat, quae ipsis presentibus adhiberetur, si essent exhibitae, vel offensae. Nulli ergo &c.

Datum Romae apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicae 1590. decimo Calend. Februarii, Pontificatus nostri anno quinto.

C I.

De Aquae Felicis mox ad Urbem conductae, ratione & cura demandata Congregationi S. R. E. Cardinalium instituta ad Aquas, Vias, Pontesque curandos. De Officio & munere Civium Romanorum ejusdem Aquae Visitatorum.

Huius Congregationis institutionem fecit hic Pont. in const. 74. Immensa, in Congr. 13. fol. 672. Et similem Aqua Paula ad Urbem adductionem, dotisque pro ejus conservatione assignationem statuit Paul. V. infra in ejus const. 75. In Sede, fol. 345. Tom. 3.

Edita An. D.
1590.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Exordium.

Supremi cura regiminis, divina nobis disponente clementia commissi, nos admonet, ut quicumque pro locorum usu & incremento, necnon pro hominum vite necessitatibus sublevandis, in dies perguntur, à nobis, ea, quae securiora diuturnioraque divina favente gratia permanent, providis solidisque legibus fulciantur statuamus.

§. 1. Cum igitur Urbem Romam Beatissimi Petri Apost. Principis firmam Sedem ac honorabilem thronum, Christianae Religionis domicilium, communem fidelium omnium patriam ac parentem, imò & cunctarum Nationum ad eam undique confluentium portum tutissimum, non solum sacris & spiritualibus praediis munitam, sed humanis etiam

ac temporalibus commodis ornamentisque decoratam esse debeat, idcirco ab ipso Pontificatus initio, publicis privatique Civium ac Incolarum Urbis necessitatibus consulere, ejus regiones sacrarum aedium privatarumque domorum aedificiis augere, & demum vetera renovando, nova perficiendo, & singula ad Omnipotentis Dei gloriam & sanctae Sedis hujus honorem referendo, totius Urbis amplitudinem atque ornatum, quantum in nobis esset, diutissime tueri ac conservare decrevimus.

§. 2. Quare, cum ejusdem Urbis colles praclarissimis olim Quiritum aedibus & foris, sublimibus inde Caesarum Palatiis superbissimisque theatris & thermis, longissimisque & mirabilibus Aquaeductibus, sacrosanctis denique Christi D. N. fide suscepta Christianorum Imperatorum, aliorumque piorum hominum Basilicis & Templis extructis insignes, frequentissime habitatos, deinde ob aqueductus; nonnullos quidem fera audacissimorum Barbarorum immanitate immanique crudelissimorum hostium feritate demolitos, nonnullos verò vetustatis injuria seu tempestatum vi collapsos, à peris quoque jam saeculis quasi desertos & habitatoribus desitutos esse animadvertimus, inferiora autem Urbis loca quamplurimis aedificiis referta, ob situs aërisque humiditatem minus salubria esse, quinimò crebris ac plerumque subditis Tyberis Fluvii, qui assiduus Aquarum imbribus & maris refluxu augetur, inundationibus patere, obruique experti fuimus, prout summo cum animi dolore oculis etiam nostris aliquando prospeximus. His moti rationibus de Aqua copiosa & salubri in ipsos colles & eminentiora Urbis loca inducenda, nullis difficultatibus nullaque impensa magnitudine deterriti agitare cepimus, eo nimirum consilio, ut fontibus restitutus, & Aquis, quae publicas privatque utilitates hominum societati praebent, salubritatemque corporibus afferunt, reductis iterum iidem colles habitentur, ipsorumque regiones, quae situs prospectu aëris salubritate, & loci amenitate praestant, frequentia populi, qui benedicente Domino in dies cumulatus augeatur, pristinae jucunditati atque securitati restituantur. Qua sanè deliberatione suscepta, longas laetaeque iactant per eosdem colles vias, magna nostra impensa aperuimus; domos & officinas ibidem extruximus, extruique ab aliis fecimus, nundinas commercii hominumque conventus causa a communem usum instituis; fontes publico usui servientes extruximus; aedificantes & habitantibus immunitates privilegiaque dedimus, sacrosanctas Basilicas in eisdem collibus à Religiosis quondam Imperatoribus, aliisque piissimis viris extructas, frequentioris visitationis eis debita causa instauravimus, & obeliscis, illustribus antiquorum monumentis, gentilitatis impuritate expiatis, Crucisque invictis felicius consecratis, ad earum limina operose magnificèque translati exornavimus.

§. 3. Atque, ut Urbis in ipsis collibus tandem incrementum acciperet, ab eodem Pontificatus nostri initio, Aquae illius, quae in agro Columinae via Praenestina sinistrorsum concipitur, quaeque omnium prima ab Appio Claudio Crasso Censore olim in Urbis inferiora & depressiora loca, nempe ad salinas adducta est, superiorem & puriorem portionem, compluribus Aquarum scaturiginibus auximus, & potissimum Aquae Martiae, quae quia gelida & salubris, idè omnium Aquarum jucundissima & apud veteres celeberrima cenfebatur, ramo, quem ex proprio Aquaeductu, magna tamen ex parte diruto desumpimus, uberioris Aquae copiae in Urbem adducendae causa conjunctum (quae simul junctae septingentarum & plurium unciarum quantitatem faciunt, & admirabilem specie pulchritudinem, immensamque hautu jucunditatem ostentant) ductu sinuoso à capite millium passuum duorum & viginti, à priori receptaculo viginti, cursu subterraneo antea tredecim, nunc verò extructis nuper à capite usque ad idem receptaculum subitis terram fornicibus quindecim, supra terram verò arcuato

Aquam in emittentibus ejus locis reduci curavit, ad frequentioris Urbis habitantiam ultra alia egregia opera hic enumeranda.

Ab agro igitur Columenium, ad Montem Quirinali Urbis conduxit, eamque Felicem de proprio ejus nomine appellavit.

Hic Pont. Urbis ornatus.

opere septem commeari fecimus, eamque per duos arcus insignis in eodem Aquæductu ad perpetuum rei monumentum erectos, alterum nimirum duobus ab Urbe miliaribus, in loco qui vulgò ad Formas dicitur, alterum verò intrà Urbem ad portam S. Laurentii transire iussimus, & summatotius Urbis lætitia atque hilaritate in Montem Quirinalem ad plateam S. Sufannæ tandem adduximus, & adductam de proprio nostro nomine Felicem appellavimus.

Fontem pro-
preum in pla-
teâ S. Sufan-
næ, orna-
tum consti-
xit.

§. 4. In platea autem S. Sufannæ Fontem primarium quatuor columnis & tribus arcibus splendide ornatum extruximus; in quem Aquæductus, tres perennes latices per totidem ostia, larga Aquarum defluentium copia, sonoroque strepitu effundit. Super ostiis verò in arcu medio stat marmorea statua Moysis, qui petram, undè divinitus olim fluxerunt Aquæ, virga percussit; in dextero item arcu Sacerdos Aaron marmorea tabula, quæ multorum capita refert, expressus, populum Judaicum sitientem ad Aquas ducit; à sinistro verò figurâ Gedeonis Israëlitarum Ducis cernitur, qui iussu Domini milites ex bibendi modo probat. In ejusdem verò Fontis conspectu quatuor Leones, quorum duo ex albo, duo item ex nigro marmore sculpti, ore aquam ad commodiorem usum & publicum oblectamentum emittunt. Quo verò fons ipse in majore se ostendat conspectu, & publico usui commodior & jucundior redderetur, dictam S. Sufannæ plateam rudibus undequaque refertam, & maceris plurimis inæqualem ac deformem, quantum opus fuit, depressimus, terram effodimus, atque ad vicinâ ejusdem plateæ loca decliviora, ut æquarentur, transportari fecimus.

Vias & pla-
teas adiacen-
tes aquavit,
&c.

§. 5. Verum, ne adjacentes viæ, plateæ, fontique prominentes, & prospectum & aditum offenderent, viam utramque æquavimus, tam eam, quæ à conspectu fontis ad Palatium Apostolicum, quod in eodem colle Quirinali ædificavimus, tendit, & quæ à tergo ad portam Piam ducit, quam eam, quæ à latere ad templum S. MARIE Angelorum in Thermis Diocletianis vergit, ambasque depressimus, terram effodientes, macerisque diruentes, & latericiis hinc inde deambulatoriis, altitudinis duorum pedum, latitudinis septem circiter, penes domicilia fulcivimus, ut eas viatoribus faciliores exhiberemus; imò plerisque fontibus, locis magis idoneis eas decoravimus. In hujus autem adducendæ Aquæ ratione, providos vigileque Ecclesiæ Pastores imitari sumus, qui, cum ex Domini præcepto populos sibi subiectos pascere teneantur, non solum spiritualia, sed & corporis usus necessaria alimenta, ut totum hominem verè pascant, subministrare conantur.

Pro d. Aquæ
conservatio-
ne, ejus cu-
ram & custo-
diam remittit
Congregati-
oni Cardinalium
pro Viis, Pontib.
& Aquis cu-
randis insti-
tuta, ut su-
pra in bullâ
74. Invenia-
tur, fol. 672. in
Congr. 13.

§. 6. Denique cum non satis sit tantum opus summo labore, & tam largo sumptu absolvisse, nisi in eo conservando exacta quoque diligentia adhibeatur, præcipue cum nullum ædificium diligentibus legibus custodiri oporteat, quam quod Aquas substinere debet, ut Populus Romanus, cæteri; qui Urbis & loca præsertim editiora incolunt, hoc publico commodum quam diutissime perfruantur, ad nostram Pontificalem providentiam pertinere arbitrati sumus, ut, quæ ad illius conservationem necessaria sunt, sive ad temporis sive ad hominum injurias repellendas, quamprimum providè & exactè statuamus. Habita igitur super his cum venerabilibus fratribus nostris S. R. Eccl. Card. matura deliberatione, de eorumdem fratrum consilio & assensu, ex certa nostra scientia deque Apost. potestatis plenitudine, hac nostra perpetuè valitura constitutione, universam ipsius Aquæductus fontiumque custodiam & curam, Congregationi S. R. E. Card. pro viis, pontibus, & Aquis curandis instituta; per præsentem committimus, & demandamus; eisque in omnibus, quæ ad illorum conservationem & reparacionem nunc spectant & in futurum quomodolibet spectabunt, plenariam & omnimodam potestatem atque auctoritatem tribuimus; necnon

de & super præmissis & eorum occasione, inter & contra quascumque personas cujuscvis status, ordinis, & conditionis, ac tam Ecclesiasticam quam temporali dignitate titulo & honore fulgentes, summarie, simpliciter & de plano manûque regia, & sola facti veritate inspecta, cognoscendi, in illisque procedendi, judicandi & definiendi, ac quoscumque, qui aliquid adversus hanc nostram Constitutionem commiserint citandi, ipsisque quatenus opus fuerit, inhibendi & penas eorum arbitrio pecuniarias injungendi, atque ad illarum incursum declarationem & executionem, omni & quacumque appellatione penitus remota, procedendi procedique mandandi & faciendi, aliisque necessaria & opportuna, etiam privatim quoad quoscumque Judices & Officiales, gerendi & exequendi, plenam & liberam facultatem perpetuè concedimus & impartimur. Si verò ipsa Congregatio ob causas eidem benè visas in aliquibus casibus ad graviorem penarum declarationem procedendum duxerit, tunc eidem Congregationi auctoritatem concedimus, Gubernatori Urbis nunc & pro tempore existenti committendi & mandandi, ut in hujusmodi casibus, prout eidem Congregationi visum fuerit, contra quoscumque delinquentes ad alias penas etiam corporis afflictivas, omni & quacumque appellatione remota, procedat.

§. 7. Cum verò in hujusmodi Aquæductu & Fontibus conservandis, & cum opus erit reparandis, quamplures impensæ necessariæ futuræ sint. Nos de aliquo certo & ad id destinato preventu providere cupientes, hac eadem nostra Constitutione ac de eorumdem fratrum nostrorum consilio & assensu, loca nonaginta & unum Montis Religionis nuncupati per nostras de super expeditas literas certis modo & forma nuper acti, annuum redditum scutorum septingentorum monetæ & bononensorum septuaginta constituentia, eidem Aquæductus & Fontium operi, eorumque custodiae & restauracioni perpetuè concedimus & assignamus; ea nimirum lege, ut dictus annuus redditus illiusque fors numquam imminuatur, neque in alios usus convertatur. Quod si quandoque ipsum opus refarcire non fuerit necesse, tunc præfatus annuus redditus fori accrescat, & in emptionem aliorum locorum ejusdem Montis in fortis augmentum convertatur. Administrationem autem præfati redditus & augmenti, necnon illius liberam dispositionem nunc & perpetuè penes eandem Congregationem esse volumus; prædictumque redditum in toto vel in parte, aliis quam per dictâ Congregationis mandata Depositario ejusdem Montis nunc & pro tempore existenti dirigenda, exponi & per dictum Depositarium sine ejusdem Congregationis mandatis solvi omnino prohibemus.

Annuumque
proventum
pro Aquædu-
ctus & Fonti-
um conserva-
tione assi-
gnat.

§. 8. Cæterum, ut præmissa, quæ debite executioni demandari cupimus, per aliquos diligentes ac solertes viros, qui huic operi sæpius assistant, prout omnino necessarium est, accuratè perficiantur, ex nunc duos Cives Romanos ad munus visitationis dictorum Aquæductus & Fontium obeundum, per nos & successores nostros annuatim in principio cujuslibet anni, tempore quo cæteri Pop. Rom. Officiales eligi ac deputari, & per eos fidelitatis juramentum in manibus nostris & successorum nostrorum de more per alios Officiales præstari solitum, præstari volumus.

Visitatores
quotannis
duos Cives
Romanos
eligi jubet.

§. 9. Eorum autem prædictum munus sit, singulis tribus mensibus semel saltem ipsum Aquæ caput per se ipsos inspicere, singula receptacula, omnes portas, quas ibidem ad purgandos alveos extruximus, quasque, ne faciliè irruptioni pateant, ferro munivimus, puteisque & foramina inspicere, deinde ipsas Aquæductus partes quæ specubus continentur, & quæ nec gelicidii, nec calidioris expostæ, limo in crustam durefcente, iter Aquæ coarctare aut in alveum delapsæ aquam corrumpere videbuntur, sæpius perlustrare, & fordibus egessis repurgari facere, & ne Aqua, quæ alveo suo purissimo labitur, pluviis Cælo cadentibus, aut humo fluenti-

Visitatorum
munus præ-
scribit.

bus Aquis inficiatur, providè cavere, fornicèscque supra terram, parietèscque universos usque ad præfactum Fontem S. Sulanæ, & ipsos fontes diligenter integros tueri atque curare. Quæcumque verò ipsi Visitatores in qualibet visitatione reparatione indigere repererint, ea quamprimum Congregationi prædictæ Cardinalium, in qua, quotiescumque opus fuerit, interveniant, referre debeant; ipsa verò Congregatio nos & successores nostros, in rebus gravioribus consulere teneatur. Quod si eorundem Visitorum culpa & negligentia aliquid incommodi Aquæductus forma contraxerit, aut id quod contractum erit, confestim reparatum non fuerit, id totum ipsum Visitorum sumptibus reparetur. Ne autem ipsa reparatio diutius protrahatur, quocumque tempore aliquod reparari oportuerit; confestim reparetur, ne modica irruptio majorem consequentem dissolutionem gignens, totum, ut solet, Aquæ alveum diruat. Quod ut opportuna semper celeritate fiat, camenta & alia necessaria antea præparentur. Artificibus verò operi destinatis liceat ex agris privatorum, terram, limum, lapides, testam, arenam, ligna, cæteraque quibus ad eam rem opus est, undequaque earum proximè tollere & transportare, dominis prius pretio perfoluto; talia verò exportantibus inierina & alia ubique liberè pateant. Præterea spatia circa ductum ejusdem Aquæ, tam intra quam extrâ Urbem existentia, ædificiis quibus vicinum opus obstruitur, & arboribus quarum radicibus concamerationes & latera solvuntur, viginti ad minus pedes, ne rivi violentur, utraque ex parte vacent; ipsique fontes, fornicès & muri vacui totidem pedes similiter pateant. Si quæ item nunc arbores intra id spatium, aut si quæ falsicia, arundineta, vepres, vites, caprifici aut fentes sunt, infra mensem à die publicationis præsentium computandum, statim excidentur & eradicentur. Si quæ autem in posterum solis calore & humore Aquarum, aut alia causa accedente, occultitè seminibus autæ, aut confertæ adnascuntur, statim in Visitacione reciduntur. Putei etiam ad aeris exhalationem & faciliorem Aquæductus expurgationem asservati, & ex polito lapide obducti, præter necessitatem publicam non aperiantur, nec formæ specus perforentur, nec Aqua sine clandestinè, nec palam per vim propria auctoritate à quoquam alio derivetur; nec amplius quam imperatrum fuerit, & non aliunde quam ex supradicto Fonte primario, aut ex fontibus minoribus infrascriptis; videlicet primò, in loco extrâ portam S. Jo. in supra nominato loco, qui dicitur ad formas, ad viarum commodum; secundò, ad portam S. Laurentii; tertio, ad portam Majorem ad usum transeuntium à nobis extructis, nec ex his absque dictæ Congregationis Cardinalium consensu, & sine nostro vel successorum nostrorum concessu, nec latiore modulo aut fistula deducatur.

§. 10. Et, ut universa ista, quæ ad unguem observari cupimus, poena contravenientibus irrogata ab omnibus diligentissimè custodiantur, hac eadem nostra constitutione perpetuò sancimus; ut, qui sciens dolo malo rivi, quod abest, noxiis foribus infecerit, aut Aquam ad Corporum perniciem corrumperit, bonorum omnium amissione & capitali sententia per dictam Urbis Gubernatorem nunc & pro tempore existentem ferenda plectatur. Si quis item contrà ea quæ supra dicta sunt, aliquid commiserit, in primis damnum quod Aquæductui, culpa ipsius illatum fuerit, ejus sumptibus quamprimum sarcitur. Qui verò, quacumque Aquæductus commeat, formas utrimque præscripto, ut præsertur, spatio vacuas reddere & integras conservare neglexerit, ultrà ædificiorum demolitionem & arborum eradicationem, prædicti adjacentis privatione mulsetur. Qui lenique Aquam propria auctoritate derivare, aut aliunde quam ex præscriptis fontibus aut alio quam supra statutum est, modo elicere præsumpserit, si domicellus fuerit, mille, si inferioris ordinis, quingentorum aureorum poena in singulis casibus

hujusmodi sine ulla remissionis spe exigenda, & in supradicti operis reparationem convertenda puniatur.

§. 11. Volumus etiam & ita mandamus, quod si quis etiam pretio vel liberali largitione à nobis vel successoribus nostris Aquam obtinuerit, teneatur eidem Congregationi Cardinalium rescipitum exhibere, & infra mensem ibi registrari facere; quo non exhibito & non registrato, gratia omnino privatus censeatur.

§. 12. Et in his omnibus ac aliis similibus casibus nulli super hujusmodi poena veniam aut remissionem liceat impetrare. Si quid autem etiam jure communi Urbisque statutis, de custodiendo Aquæductu sub quibusvis penis constitutum est, id omne hac præsentis nostre constitutione perpetuò innovamus.

§. 13. Et, ut in omnibus casibus supra expressis, ea, quæ statuta sunt observentur, & contrà inobedientes omnino procedatur, volumus, ut præfati duo Cives Romani Visitatores, præmissa diligenter custodiri curent; & quoties casus contraventionis evenierit, coram dicta Congregatione Cardinalium comparere, & contrà transgressores pro damni reparatione, & præfatarum poenarum in eosdem inflictarum executione, ex officio inflare teneantur.

§. 14. Etsi autem præfatos Cives suæ & patriæ causa omnia semper, & hac præsertim quæ ad Urbis ornatum & ipsorum ac aliorum Civium Rom. commoditatem maximè spectant, sponte sua curaturos, diligenterque & fideliter executuros planè confidamus, tamen ut in eo munere obeundo minus dispendii quam fieri possit, patiantur, loca sexdecim ejusdem Montis Religionis à nobis, ut præsertur, aucti annum redditum scutorum centum viginti trium & bononorum viginti consentientia, per Depositarium ejusdem Montis de ordine & mandato dictæ Congregationis persolvendum, & inter eos æquis portionibus dividendum perpetuò concedimus & assignamus.

§. 15. Decernentes præmissa omnia & singula, per eos ad quos spectat & in futurum spectabit, firmiter & inviolate perpetuò observari debere, ac irritum & inane, si secus super his à quoquam, quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 16. Non obstantibus constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac ipsius Camere ordinationibus & privilegiis juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus, & longi temporis præscriptione, cæterisque contrariis quibuscumque. Volumus insuper præsentès literas in valvis Lateranen. Principisque Apostolorum de Urbe Basilicarum, ut moris est, affigi & publicari, & in Camera Apostolica inter cæteras perpetuò valituras constitutiones describi & registrari, earundemque præsentium transcriptis, etiam impressis, manu Notarii publici subscriptis, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ obnignatis, plenam in judicio & extrâ illud fidem adhiberi perinde ac ipsis originalibus adhiberetur, si essent exhibitæ vel ostensæ.

Nulli ergo &c.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo nonagesimo, 11. Calen. Martii, Pontificatus nostri anno quinto.

Ego Sixtus Catholicæ Ecclesiæ Episcopus
subscripti.

De ventre matris mea tu es Deus Protector meus.

Ego Joannes Episc. Ostien. Card. S. Georgii.

Ego Alph. Episc. Portuen. Card. Gelvaldis.

Ego Inn. Episcopus Tusculan. Card. de Arag.

Ego Marcus Ant. Episcopus Prænestin. Card. Columna.

Ego Ptolemæus Episcopus Sabinen. Cardinalis Comensis.

Ego Gabr. Episc. Albanen. Card. Paleottus.

Aquam prædictam de cætero impetrantes id Congregationi Cardinalium significent.

Veteres poenæ, contrà inobedientes innuat.

Visitatores de contraventionibus curent.

Quibus propter salarium constituit.

Clausulæ præfati apponit.

Clausulas derogatorias addit.

Dat. P. A. n. 5. die 19. Febr.

Papa subscript.

Card. subscriptiones.

Contra-venientibus his quæ hic præcipiuntur, poenas imponit.

Ego Marcus Sitticus tit. Sanctæ Mariæ Transiberim.
Card. ab Altaemps.
Ego F. Michael Bonellus tit. S. Laurentii in Lucina,
Card. Alexandrinus.
Ego Ludovicus tit. S. Anastasie Card. Madrutius.
Ego Nic. tit. S. Praxedis Card. Senonen.
Ego Jul. Ant. tit. S. Bartholomæi in Insula Card. S.
Severinæ.
Ego Hieronymus tit. S. Sufannæ Card. Rusticucus.
Ego Jo. Hieron. tit. S. Joannis antè portam Lati-
nam, Card. Albanus.
Ego Hieronymus tit. S. Priscæ Card. Simoncellus.
Ego P. tit. S. Hieron. Illyricorum Card. Deza.
Ego Ant. tit. SS. Joannis & Pauli Card. Carafa.
Ego Jo. Antonius Card. SS. Quatuor.
Ego Jo. Baptista Card. S. Marcelli.
Ego Julius tit. S. Eusebii Card. Cananus.
Ego Ant. Maria tit. S. Mariæ de Pace Card. Sal-
viatus.
Ego Vincentius tit. S. Clementis, Card. Montis
Regalis.
Ego Philippus tit. S. Sabinæ, Card. Spinula.
Ego Scipio tit. S. Salvatoris in Lauro Card. Lan-
cellottus.
Ego Vincentius tit. S. Alexii, Card. Gonzaga.
Ego Joannes Baptista tit. S. Mariæ in Araceli Card.
Castrucius, Sign. Just. Præfæctus.
Ego Federicus tit. S. Stephani in Monte Cælio,
Card. Cornelius.
Ego Dominicus tit. S. Laurentii in Pane Perna,
Card. Pinellus, S. Mariæ Majoris Archipr.
Ego Hippolytus tit. S. Pancratii, Card. Aldobran-
dinus, Major Pœnitentiarius.
Ego Hier. tit. S. Petri ad Vincula Card. de Ruvere.
Ego F. Constantinus tit. S. Petri in Monte Aureo,
Card. Sarnanus.
Ego G. tit. S. Martini in Montibus, Card. Alanus.
Ego Scipio tit. S. Mariæ de Populo Card. Gonzaga.
Ego Antonius tit. S. Vitalis Card. Saulus.
Ego Evangelista tit. Sancti Matthæi in Merulana,
Card. Cusentinus, Archipresb. S. Petri.
Ego Joan. tit. S. Mariæ Transpontinæ, Card. de
Mendoza.
Ego Marianus Perbenedictus, tit. SS. Petri & Mar-
cellini, Card. de Camerino.
Ego E. S. Mariæ in Via Lata, diac. Card. Sfortia.
Ego Alexander, S. Laurentii in Damaso, diac. Card.
Montaltus, Vicecancellarius.
Ego Hieron. S. Eustachii, diac. Card. Matthæus.
Ego Benedictus S. Mariæ in Cosmedin, Card. Ju-
stinianus.
Ego Ascanius S. Nicolai in Carcere, diac. Card.
Columna.
Ego Federicus S. Agathæ, diac. Card. Borromæus.
Ego August. S. Adriani diac. Card. Cusanus.
Ego Franc. Maria, S. Mariæ in Dominica, diac.
Card. à Monte.
Ego Guido SS. Cosmæ & Damiani, diac. Card.
Pepulus.

CII.

Jurisdicção S.R.E. Cardinalis Archipresbyteri Eccle-
siæ S. Petri de Urbe, cognoscendi causas, tam d.
Ecclesiam ejusque personas, quam ejusdem Fab-
ricam quomodolibet concernentes.

*Quoad primam jurisdictionem, habes infra concess-
sionem Clem. VII. in ejus const. 3. Admonet. fol.
643. Et quoad secundam habes etiam infra con-
cessionem Paul. III. in sua const. 35. Cum dilectus.
fol. 764.*

S I X T U S E P I S C O P U S ,

*Servus Servorum Dei. Dilecto filio Evangelis-
tæ tit. S. Matthæi in Merulana, Presbytero
Card. Cusentino, Salutem, & Apostolicam
benedictionem.*

Exordium.

Cum ex debito Pastoralis officii, omnium Esce-
siarum indemnitati, utilitati & bono regimini

salubriter consulere teneamur, tum verò ad vene-
randam sanctamque Principis Apostolorum in Alma
Urbe nostra Basilicam, condiligentiori studio aciem
dirigimus nostræ mentis, quo & illa dignitate ac
præstantia cæteris antecellit, & noster singularis
quam gerimus erga eundem Beatum Petrum, ad
cujus Cathedram, licet imparibus meritis, à Domi-
no vocati sumus sinceræ devotionis affectus id im-
pensius requirit.

§. 1. Quare ejusdem Basilicæ, ac dilectorum filo-
rum illius Capituli Canonicorum, & Ministrorum
commodis, ac jurium conservationi, ac ne ad diver-
sa Tribunalia personæ prædictæ trahantur, earum
quieti & litium dispendio providere cupientes, de-
que tua integritate, prudentia & circumspectione,
cui nuper Archipresbyteratum ejusdem Basilicæ tunc
vacante, ad vitam commendavimus, plurimum
in Domino confidentes, Motu proprio non ad tuam,
vel eorundem Capituli, & Canonicorum, aut pro
te aut pro illis oblatæ nobis petitionis instantiam,
sed ex mera nostra deliberatione, & ex certa scien-
tia, omnes & singulas jurisdictiones, potestates &
privilegia, exemptiones, libertates, prerogativas,
antelationes, indulta, etiam super collatione be-
neficiorum quorumcumque Ecclesiasticorum au-
thoritates & facultates per fel. rec. Paulum III. Pium
IV. & alios quoscumque Romanos Pontifices præ-
decessores nostros bon. mem. Alexandro Episcopo
Officem. Cardinali Farnesio nuncupato, aliis dictæ
Basilicæ, & prius uti Ecclesiæ S. Mariæ Majoris etiam
de Urbe Archipresbytero, quoad Basilicam, & Ec-
clesiam prædictas respectivè, & illius personæ in-
tuitu, & ad ejus vitam dumtaxat, in genere vel in
specie concessa, ad te quamdiu Archipresbyterat-
um prædictum obtinueris, tumque & dictæ Ba-
silicæ Vicarium, per te nunc forsân deputatum, &
pro tempore à te deputandum, tenore præsentium
extendimus & ampliamus.

§. 2. Et nihilominus motu & scientia similibus,
omnes & singulas causas, & benefices, Ecclesiæ,
spirituales, meras, prophanas & mixtas, etiam
compromissas, tam civiles quam criminales (citrà
tamen penam sanguinis, & corporis afflictivam)
inter dictos Canonicos & Capitulum, & Beneficia-
tos & Clericos, necnon Capellanos, Ministros, &
Servientes respectivè, seu quemcumque eorum ex
una, & quascumque alias personas quiscumque sta-
tus, gradus, ordinis, conditionis, dignitatis &
præminentie existentes, necnon hospitalia, pia
loca, & Collegia, Communitates, vel Universitates,
ex altera partibus, five inter dictos Capitulum, &
Canonicos prædictos vel eorum quemlibet, ac be-
neficiatos, clericos, seu capellanos prædictos, vel
quoscumque eorum, coràm quibuscumque Judici-
bus ordinariis, extraordinariis, Commissariis, &
Executoribus, etiam S. R. E. Cardinalibus, ac
Rotæ, & causarum Curie Cameræ Apostolicæ Au-
ditoribus, & Locatenentibus, super quibuscumque
rebus, bonis, & pecuniarum summis, etiam vi-
gore obligationis in forma Cameræ Apostolicæ ven-
rentes & pendentes respectivè, omnium & singula-
rum statos, & merita, nominatim & cognomina &
qualitates, tam partium & personarum prædictarum,
quam etiam rerum super quibus pendet, pro
expressis habentes, ad nos per præfentes avocantes,
illaque in statu & terminis in quibus ad præfens re-
peritur, & quas in futurum moveri de novo con-
tingerit, tam activè quam passivè, etiam per prædi-
ctos Canonicos, Capitulum, beneficiatos, clericos,
& Capellanos, seu eorum quemlibet contrà quascum-
que personas, Conventus, Collegia, Capitula, Uni-
versitates, Societates, Hospitalia & loca quorum-
que, secularia & quorumvis Ordinum, Militiarum,
& Hospitalium Regularia, privilegiata etiam per
prædictos Canonicos, & Capitulum contrà benefi-
ciatos, Clericos, & Capellanos prædictos, super qui-
buscunque pecuniarum summis, beneficiis ecclesi-
asticis, censibus, canonibus tritici, grani, vini, pecu-
nariarum, aut aliarum rerum responsonibus, præ-

Confirmatio
jurisdictionis
aliàs à Paulo
III. & Pio IV.
concessa Car-
dinali Archi-
presbytero
S. Petri.

Confirmatio
amplioris ju-
risdictionis,
in causis co-
gnoscendis,
Canonicorum,
Beneficiato-
rum, Clerico-
rum & alio-
rum.

Edita An. D.
1590.

diis, rebusque & bonis ad quaecumque pecuniarum summam, numerum, quantitate, & valorem ascendebus, ad dictam Basilicam, aut illi unitas, vel annexas Ecclesias, & Parochiales, seu ejus Capitulum, Canonicos, beneficiatos, Clericos & Ministros, etiam privatim, ac ratione singularum personarum quomodolibet spectantibus aut eorum interesse, directè vel indirectè communiter vel divisim, ac eorum cujuslibet concernentibus, rebusque aliis in actis causæ & causarum hujusmodi latius deductis & deducendis, & illorum occasione, cum omnibus & singulis suis incidentibus, dependens, emergens, annexis, & connexis, tibi que tuque prædicto Vicario nunc & pro tempore per te deputato.

§. 3. Summarie, simpliciter & de plano sine strepitu & figura judicii, sola veritate facti inspecta, & quatenus opus sit, exequutivè, etiam manu regia, absque terminorum substantiarum, & aliquis telæ judicarie observatione, sive confessione regestri sive extractis, quacumque appellatione postposita, etiam non frivola, audiendas, cognoscendas, decidendas, si neque debito terminandas, auctoritate Apostolica tenore eorumdem præsentium committimus, & mandamus eisque præsentibus perpetuis temporibus duraturis.

§. 4. Cum potestate dictas partes respectivè, & alios omnes quos opus fuerit, sua communiter vel divisim interesse putantes, in executione citationis nominandos, in Romana Curia, & extra eam, etiam per editum publicum, confito summarie & extra judicialiter de non tuto accessu, citandi.

§. 5. Ac omnibus Judicibus supradictis, & quibus, & quous opus fuerit, & sub censuris Ecclesiasticis, & pecuniariis penis, tuo arbitrio moderandis & applicandis, etiam per simile editum inhibendi, causisque ipsas eorum quibusvis eorum de facto forsan introductas, seu introducendas, ab eis advocandi, & reassumendi, & in eventum non proutionis, penas & censuras prædictas damnabiliter incurrisse, & incidisse declarandi, illisque etiam iteratis vicibus aggravandi, & reaggrovandi, interdum Ecclesiasticum apponendi, & brachii secularis auxilium invocandi.

§. 6. Loco vero sententiarum seu sententiarum prædictarum, & mandata exequutiva, in forma solita & consueta decernendi, illamque vel illa, & quicquid per te, & Vicarium prædictum, vel alterum vestrum judicatum fuerit, exequendi.

§. 7. Expensas quascumque taxandi, ac moderandi.

§. 8. Atque in causis omnibus, & singulis præmissis, vel eorum quolibet, seu quomodolibet præmissorum, etiam singulis diebus, & horis, præterquam in honorem Dei feriatis procedendi.

§. 9. Neque non Canonicos, & Capitulum, ac beneficiatos, Clericos, & Capellanos prædictos, sive eorum quolibet, a vinculo juramenti, ad effectum agendi, alique censuris Ecclesiasticis, & penis quatenus oportuerit, absolvendi.

§. 10. Omni-que & singula alia faciendi, gerendi, & exercendi in præmissis necessaria seu quomodolibet opportuna.

§. 11. Ac insuper, ne in præjudicium auctoritatis, jurisdictionis, & facultatum prædictarum contingat causis sub diversis prætextibus, à te, seu tuo Vicario advocari, ac aliis Judicibus committi, omnes & quascumque commissiones tam gratie quam justitie, in interesse Basilicæ, Capituli, & personarum prædictarum quomodolibet concernentes, aliter quam manu nostra, & pro tempore existentis Romani Pontificis, reque ad id vocato signatis, & inhibitionibus earum prætextu emanandas, processusque per easdem habendos, & inde pro tempore sequuta quacumque nullius roboris vel momenti esse, ac illis non obstantibus, te tuumque Vicarium, ad ulteriora in causis hujusmodi procedere posse, atque ad parendum commissionibus prædictis, earumque prætextu emanatis inhibitionibus minime teneri, ac ob non proutionem, censuras aut penas aliquas minime incurrere posse decernimus & declaramus.

§. 12. Dantes etiam tui facultatem exercendi in omnia Pontificalia in Basilica prædicta, ac ordinari in etiam in spiritualibus jurisdictionem, super Canonici, Beneficiatis, Clericis ac Ministris prædictis, ita ut à te vel de tua licentia tantum, nec aliàs à quocumque Catholico Antistite, gratiam & communionem Sedis Apostolicæ habente, per te deputando, ad omnes etiam sacros & presbyteratus ordines promoveri. Tuque & Antistites hujusmodi eos promovere absque nostra, vel successorum nostrorum, aut Vicarii, vel cujusvis alterius Ordinarii licentia, dimissoria, aut examine, licetè possitis, ac debeatis.

§. 13. Postremò attendentes quod licet alijs pie mem. Clemens Papa VII. prædecessor noster, unum Collegium deputatorum Fabricæ prædictæ Basilicæ nuncupati exerit, ac tam ipse, quam diversi alii Rom. Pontifices nostri prædecessores ipsi Collegio Officiales creandi, causas privatè quoad omnes & quoscumque alios Indices cognoscendi, & plures amplissimas facultates, jurisdictiones, exemptiones, immunitates, indult & privilegia concesserint, ac in specie Collegium, & Fabricam hujusmodi, illiusque personas, sub immediata sua, & pro tempore existentis Rom. Pontificis & Sedis Apostolicæ protectione suscepit, sibi que Sedi prædictæ, ita ut nullum illium, quam Romanum Pontificem Superiorem recognoscerent, immediatè subjecerint, eximendo Fabricam & Collegium hujusmodi etiam ab ipsius Archiepiscopi dictæ Basilicæ pro tempore existentis, omnimoda superioritate, & jurisdictione; nihil minus valde expedit, ut tu Fabricæ prædictæ tua auctoritate, consilio, & laudabili studio incumbas, te quandiu vixeris, & Archiepiscopatuum prædictum obtuleris, Fabricæ & ejus Collegii prædicti Protectorem & Superiorem, auctoritate Apostolica tenore præsentium committimus, & deputamus. Dantes & concedentes tibi, & tuo Vicario, plenam & liberam, ac omnimodam facultatem Congregariis Collegii prædicti, ubi, quando & quoties tibi videbitur convocandi, in eisdem præsidendi, Officiales, Deputatos, Ministros, ac personas dictæ Fabricæ reformandi, & corrigendi, & ab eis, administrationis, & muneris cui libet contra commissi, ac tam accepti quam expensis, rationes exigendi, salaria cum consilio Collegii prædicti constituendi, minuendi, & si opus fuerit augendi, eosque qui in causis Fabricam prædictam concernentibus sententias tulerint, aut alias judicaverint syndicandi, & in creationibus Officialium, & ad missionibus personarum, seu deputatorum Collegii prædicti suffragium ferendi, ita ut tu si aderis suffragium duplex habeas, abusus quoscumque tollendi, statuta cum consilio ejusdem Collegii de novo condati, immutandi, declarandi, & corrigendi.

§. 14. Causas quascumque interesse dictæ Fabricæ tribunali pendentes, tam motas quam movendas, personarum, seu personis tibi bene visis, de ejusdem tamen Fabricæ Collegio existentibus committendi, easque si videbitur etiam ab iis eorum quibus introductæ & instructæ fuerint advocandi, & per te ipsum cognoscendi, audiendi, terminandi, seu alii vel aliis ejusdem Collegii Fabricæ personis committendi, omniaque in præmissis & circa ea necessaria, & quomodolibet opportuna faciendi, gerendi, mandatum decernendi, & exequendi.

§. 15. Decernentes quoque præsentibus ad vitam tuam, seu quandiu Archiepiscopatum hujusmodi obtinueris tam nostris quam etiam successorum nostrorum Romanorum Pontificum temporibus dura re, suamque vim, & roboris firmitatem obtinere, nec easdem præsentibus sub quibusvis similibus vel dissimilibus facultatum & gratiarum derogationibus, revocationibus, aut aliis contrariis dispositionibus per nos vel successores nostros Romanos Pontifices pro tempore, & motu simili certa scientia, & de Apostolicæ potestatis plenitudine edendis comprehendi, nec per eas immutari,

suspendi,

1590.
Pontificalia
munia & ju-
risdictionem
ordinariam
super cano-
nicos &c.
exercendi.

Collegii Fa-
bricæ S. Petri
superiorita-
tem habendi
officiales
reformati &c.

Causas dictæ
Fabricæ in-
teresse con-
cernentes co-
gnoscendi.

Tu vide bull.
Clem. V. ci-
tatam in rub.

Clauſula d.
concessionis
præſervativa

Cum potest-
te tuam
&c. & appella-
tione post-
posita proce-
dendi.

In Curia &
extra eam ci-
tandi.

Judicibus in-
hibendi, &
causis avo-
candi, & re-
assumendi.

Mandata exe-
cutiva decer-
nendi & exe-
quendi.

Expensas fa-
ciendi.
Singulis die-
bus in hono-
rem Dei non
feriatis proce-
dendi.

Canonicos
& alios à ju-
ramento ab-
solvendi ad
effectum ag-
endi &c.

Arreptione
in præmissis
faciendi.

Commissio-
nes causarum
non signatas
manu Pontificis
non attendendi.

Clausulae fab-
blatae &c.Clausulae
contrario-
rum deroga-
toriae.Dat. P.A. 5.
die 4. Mart.

CIII.

Edita A. D.
1590.

Proemium.

Causa hujus
concessionis.

suspensi, limitari, moderari, aut terminos juris re-
duci posse, sed easdem praesentes perpetuo validas &
efficaces fore; & quoties hujusmodi contraria eman-
bunt, toties illas in pristinum, & validissimum, &
eum in quo antea erant statum restitutas, & sub pos-
teriori data, per te seu Vicarium tuum eligenda, de
novo concessas censeri, & quicquid illarum vigore
aliis rite gestum, statutum, factum, mandatum, in-
dultum, & exequutum fuerit, perpetuam vim, &
roboris firmitatem obtinere.

§. 16. Sicque per quoscumque Judices, & causa-
rum Palatii Apostolici Auditores, etiam S. R. E. Car-
dinales, sublata eis, & eorum cuilibet, quavis aliter
judicandi & interpretandi facultate in quavis cau-
sa & instantia, judicari & definiiri debere. Necnon
irritum & inane, si secus super his à quoquam, quavis
auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 17. Non obstantibus constitutionibus, & ordi-
nationibus Apostolicis, ac in Conciliis etiam genera-
libus editis. Sylo Palatii, regula Cancellariae Aposto-
licae prohibente mandata exequutiva aliis quam sub
plumbo expediti, facultatibus, & jurisdictionibus
praedictae Fabricae illiusque Collegio, deputatis, Offi-
cialibus, necnon Vicario nostro in Alma Urbe, ac
Senatori, Auditorum causarum Curiae Camerae Apo-
stolicae, seu Cardinalibus, & quibuscumque Urbis Judi-
cibus supradictis, sub quavis verborum forma, & ex
causis urgentissimis per nos eisdem concessis & inno-
vatis, quas etiam si in eis caveatur expresse, quod il-
lis aut nonnulli certis modo & forma in eis expressis,
derogari valeat, illorum tenores, ac si de verbo ad
verbum specialis mentio facta foret, praesentibus pro
expressis habentes, specialiter & expresse derogamus,
ceterique contrariis quibuscumque. Nulli ergo &c.

Dat. Romae apud S. Petrum, anno Incarnationis
Dominicae 1590. 4. Nonas Martii, Pont. nostri an-
no 5.

Ereccio Burgi Felicis, S. Bernardi in Religione Mon-
tium Almae Urbis, & privilegia pro inibi Fabri-
cantibus, & Edificantibus.

*Hac privilegia vide supra in constitut. 66. Decet. ubi
etiam notavit.*

SIXTUS PAPA V. Ad perpetuam rei memoriam.

DUM ad uberes, salutarisferoque fructus, quos be-
nedicente Domino praecipue circa pauperes pu-
ellulas educandas, & Deo consecrandas, venerabilis di-
lectorum filiorum Sacerdotum, & aliorum utriusque
sexus Christi fidelium S. Bernardi Confraternitas in
hac Alma Urbe nostra in dies proferre non cessat, at-
tendimus, facere nullo modo possumus, quin eos
speciali quadam hujus Sedis benevolentia prosequen-
tes, ea sibi favorabiliter concedamus, per quae eo-
rum, ac Monasterii Monialium, & Collegii Puella-
rum per ipsam Confraternitatem apud Ecclesiam S.
Suzannae de dicta Urbe institutorum utilitati, cum
dictae Urbis ornatu valeat subriter provideri.

§. 1. Exponi siquidem nobis nuper fecerunt dilecti
filii Officiales, & Confratres praedictae Confraterni-
tatis, quod ipsi pro ejusdem Monasterii commodita-
te, ac illius, & dicti Collegii cum officinis necessa-
riis constructione quamdam partem vineae existentis
in Regione Trivii in loco nuncupato Caput Domo-
rum, à dilecto fratre nostro Henrico S. R. E. Came-
rario Cardinali Cajetano nuncupato, & venerabili
fratre Camillo Putriarcha Alexandrino, ac dilecto fi-
lio nobili viro Honorato Duce Sermonetae, fratri-
bus germanis de Cajetanis, pretio duorum millium
& quingentorum; deinde residuum dictae vineae cum
illis domo, viridario, & aliis quibuscumque suis ju-
ribus, & pertinentiis pretio duodecim millium, &

quingentorum scutorum monetæ emerunt; pro qui-
bus solvendis nonnulli ex dictae Confraternitatis Con-
fratres impoferunt super eorum bonis stabilibus diver-
sos census, sub accessionibus etiam propriis nomi-
nibus dilectorum filiorum Petri Fulvii U. J. D. Prioris,
& Francisci Contugii, ac Dominici Hattioni Custodum,
necnon Ludovici Rivaldi Camerarii, ac Marcelli de
Sancta Cruce & Andreae Alberini Officialium, ac alio-
rum Confratrum dictae Confraternitatis; quorum bonam
fidem ipsa Confraternitas cum promissione rele-
vationis indemnitis recognovit; residuum vero dic-
torum quindecim millium scutorum interim ad cen-
sum accipere; pro quorum extinctione alios Cano-
nes, & repositiones dictae Confraternitatis extingue-
re, necnon residuum dictae vineae stratis, viis publi-
cis ac ornatu dictae Urbis, & fabricare volentium
commoditatem diversis personis, aut liberum vende-
re, aut ad fabricandum in emphyteusum sub annuo
Canone concedere intendunt, & jam forsitan vendide-
runt, & seu concefferunt, prout in singulis instru-
mentis publicis, ac aliis scripturis forsitan desuper con-
fectis plenius dicitur contineri. Cumque dicti Officia-
les, & Confratres cupiant, ut homines ad fabrican-
dum in situ dictae vineae aliquibus privilegiis, & gra-
tis decoratum in Burgum Felicem S. Bernardi nuncu-
pandum erigi, Nobis humiliter supplicari fecerunt,
quatenus eorum desiderio hujusmodi annuere, aliisque
in praemissis opportune providere de benignitate
Apostolica dignaremur.

§. 2. Nos ut in Monte Quirinalli, & apud etiam
viam Felicem per nos annis praeteritis apertam, qua-
si nova Civitas construat, ac propterea homines
inibi pro tempore habitantes seu edificantes, specia-
libus favoribus, & gratis invitare volentes, ac dictae
vineae qualitates & veros annuos valores, ac singulo-
rum instrumentorum, & scripturarum desuper for-
san consecrarum, aliorumque de necessitate expri-
mendorum, & inde secutorum quorumcumque teno-
res etiam vires, praesentibus, pro expressis habentes,
hujusmodi supplicationibus inclinati, Emptionem
dictae vineae, censuum impositiones, venditiones,
fideiussiones, recognitiones bonae fidei; necnon
etiam dictae vineae divisiones, venditiones, libera-
concessionem etiam in emphyteusum factas & facien-
das sub pactis hinc inde conventis & conveniendis,
ac cum omnibus inde secutis Apostolica auctoritate
tenore praesentium approbamus, ac confirmamus; ac
omnes, & singulos tam juris quam facti, ac solem-
nitatum quarumcumque etiam de jure, aut ex for-
ma statutorum dictae Urbis, vel alias quomodolibet
requiritur, & omittarum, aliisque defectus, si qui
forsitan intervenerint, in eisdem supplemus; dictasque
emptiones validas, & bene factas fuisse, & esse de-
claramus, dictaque vineam cum viis publicis aper-
tam & divisam, in Burgum Felicem S. Bernardi nuncu-
pandum, auctoritate & tenore praedictis perpetuo
erigimus, & instituimus.

§. 3. Illique sic erecto & instituto, ac omnibus
utriusque sexus personis cujuscumque status, gradus,
ordinis, vel conditionis existentibus in eo, & tota
via Pia nuncupata usque ad portam Piam, ac etiam in
aliis viis prope, & circa supradictas forsitan aperiendas,
nunc & pro tempore fabricantibus vel habitantibus,
omnia & singula privilegia, gratias, favores, & pra-
rogativas, ac indulta domibus, & aedificiis facta &
fienda, ac fabricantibus, & habitantibus in Monte
Quirinalli, & in via Felici per alias nostras literas sub
dat. videlicet Idibus Septembris, Pontificatus nostri
anno tertio concessa, eisdem auctoritate & tenore per-
petuo concedimus, eaque omnia & singula, ac si
praesentibus expressa, ac de verbo ad verbum inserta
fuissent ad dictum Burgum Felicem S. Bernardi, &
in eo, ac rota via Pia, usque ad portam Piam hujus-
modi fabricantes, & habitantes extendimus, illisque
omnibus & singulis uti, frui potiri, & gaudere posse
volumus & declaramus, atque decernimus.

Ereccio Bur-
gi Felicis.Privilegia
fabricantium
vel habitan-
tium in eo.

Facultas
Confraterni-
tatis S. Ber-
nardi locandi
quarumcum-
que bona
&c.

§. 4. Præterea ipsius Confraternitatis Priori, Custodibus, & Officialibus nunc & pro tempore existentibus, quæcumque alia bona stabilia, & immobilia, seu quasi stabilia quicquidque qualitatis, quantitatis, & valoris, & in quocumque loco existentia, ad Confraternitatem, Monasterium, & Collegium huiusmodi quomodolibet spectantia, pro pretio vel affectu, ac sub pactis, & conditionibus hinc inde conveniendis, in emphyteusim seu ad libellum aut locationem ad longum, vel aliud tempus concedere, ac pecunie inde redigendæ in extinctionem censuum pro solutione dictorum quindecim millium scutorum impostorum, vel in emptionem aliorum bonorum stabiliam in Confraternitatis Monasterii, & Collegii prædictorum commodum vel utilitatem convertere, liberè & licitè possint & valeant, etiam concedimus & indulgemus.

Decretum ir-
ritum.

§. 5. Decernentes omnia, & singula præmissa valida perpetuè, & efficacia fore, siquæ plenarios effectus sortiri, ac singulis quos illa concernunt, & pro tempore concernere poterunt suffragari, siquæ & non aliter per quoscumque Iudices & Commisarios, ordinarios & delegatos, etiam S. R. E. Cardinales, necnon Camerarium, & Cameræ Apostolicæ Thesaurarium, Præsidentes, & Clericos, & causarum Palatii Apostolici Auditores, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, iudicari & definiti debere; irritum quoque & inane, quicquid secus super his à quocumque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Executorum
deputatio.

§. 6. Quocirca dilectis filiis dictæ Romanæ Ecclesiæ Camerario, Præsidentibus, & Clericis, nunc & pro tempore existentibus, per presentes committimus & mandamus, quatenus ipsi per se vel alium seu alios præsentem literas, & in eis contenta quæcumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Officialium & Confratrum prædictorum, aut alicujus eorum, quos illæ concernunt: & concernent quomodolibet in futurum, fuerint requisiti solemniter publicantes, ac domorum, seu ædificiorum in Burgo Felici S. Bernardi, & tota via Pia huiusmodi hæcenus factorum, & pro tempore construendorum, illorumque conductuibus, habitatoribus, incolis, dominiis, eorumque hæreditibus & successoribus, artificibus, & quibuscumque aliis in Burgo Felici S. Bernardi, & via Pia huiusmodi quomodolibet ædificantibus, vel habitantibus, in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra easdem presentes, & in eis contenta quæcumque, per eos ad quos spectat, & spectabit in futurum, perpetuè firmiter & inviolabiliter observari, illasque debite executioni demandari procurent. Contradictores per censuras Ecclesiasticas, aliàsque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita, compellendo; invocato ad hoc etiam si opus fuerit auxilio brachio seculari.

Derogatio
contrario-
rum.

§. 7. Non obstantibus constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac dictæ Urbis juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis alia firmitate roboratis, statutis, consuetudinibus, & novis reformationibus; privilegiis quoque indultis, & literis Apostolicis eidem Populo Romano, ejusque Magistratibus, & Consulibus Artium, aut illarum Consulibus, & quibuscumque aliis personis quomodolibet concessis, confirmatis & innovatis; quibus omnibus etiam si pro illorum sufficienti derogatione de illis, eorumque totis tenoribus, specielis, specifica, expressa, & individua mentio habenda, seu quævis alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi, ac si de verbo ad verbum exprimerentur & infererentur, præsentibus pro sufficienter expressis & insertis habentes, illis aliis in suo robore permanens, hac vice dumtaxat harum serie specialiter & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque. Nulli ergo omnino, &c. Si quis, &c.

D. P. An. 5.
die 11. April.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub annulo Piscatoris, die 11. Aprilis, 1590. Pontificatus nostri anno quinto.

Anno à Nativitate D. 1590. indictione 3. die vero 13. mensis Aprilis, tempore Pontificatus ejusdem SS. in Christo Patris & D. N. D. Sixti divina providentia Papa V. anno ejus quinto, retrospectiva littera Apostolica, & omnia & singula in eis contenta, affixa & publicata fuerunt ad valvas Ecclesiarum Basilicarum S. Joannis Laterani, S. Petri de Urbe, ac Cancellariæ Apostolicæ, & acie Campi Floræ, ut moris est per me Nicolaum Druyn, & Ollavium Taglietum, S. D. N. Papæ Curs.

Pompeus Guerra Mag. Curs.

Privilegium Fratrum Militum S. Stephani, quo etiam bigami, & absque habitu Clericali incedentes, annuas pensiones Ecclesiasticas, usque ad ducatos ducentum retinere & transferre possint.

Institutionem & alia de hac Militia vide supra in conf. 60. Pii IV. His quæ fol. 91. ubi notavi. Et approbationem & extensionem hujus privilegii mox edixit Paul. V. in ejus conf. 46. Dum generosa. fol. 566. Tom. 3.

SIXTUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam memoriam.

Circumspecta Romani Pontificis providentia, gratias, quæ ex benignitate Sedis Apostolicæ emanarunt, & ibenter corroborat; & in pristinum ac validum statum reponit; cum præsertim per eas, & Catholicorum, nobiliumque, & Magnorum Principum honoris, ac iustis desiderii, & fortium Christianæ Religionis, & Catholicæ fidei propagationem, sub approbati alicujus Ordinis Regula & Instituto, pro Christo adversus infideles militantium, qui pro ejusdem Religionis, & fidei defensione, & propagatione, suam vitam, & opes promptè quibuscumque periculis exponunt, commodis & congruæ sustentationi oportune consulitur.

§. 1. Cum itaque aliis fel. rec. Pius Papa IV. prædecessor post erectionem, & institutionem Militiæ S. Stephani, sub Regula S. Benedicti, per claræ mem. Cosmum, tunc Florentiæ, & Senatui Ducem, in Ducatu Florentino, de licentia Sedis Apostolicæ, ipsi Cosmo Duci per litteras ejusdem Pii prædecessoris attributa antea factam, ipsi Cosmo Duci Magno Magistro, necnon Conventui, Militibus, Priori, cæterisque Ministris Ecclesiæ dicti Conventus, & aliis personis, etiam in facris, & Presbyteratus ordinibus constitutis, etiam quæcumque, quoscumque, & qualicumque cum cura & sine cura, beneficia Ecclesiastica obtinentibus, eorumque beneficiis, commendis, rebus, & bonis diversas exemptiones, etiam à jurisdictione Ordinariorum libertates, immunitates, etiam à contributione decimarum, & onerum, indulta, privilegia, facultates, indulgentias & gratias spirituales, & temporales benignè concesserit; atque elargitus fuerit.

§. 2. Atque in specie hoc quoque inter alia indulserit omnibus & singulis dictæ Militiæ S. Stephani Militibus confugatis, ac etiam bigamis, aliisque Presbyteris, ut singulas pensiones annuas, usque ad summam ducentorum ducatorum auri de Camera, super quarumvis Cathedralium, & Metropolitani, & aliarum Ecclesiarum, Monasteriorum, Prioratuum, Canoniarum, & Præbendarum: dignitatum, personatum, administrationum, & officiorum, aliorumque beneficiorum Ecclesiasticorum, cum cura & sine cura, secularium, & quarumvis Ordinum Regularium, & secularium, redditibus, proventibus, juribus, obventionibus, & emolumentis, aliis sibi canonicè reservandas, quas illos ex quovis alio privilegio Apostolico pro tempore percipere, exigere, & levare, ac in suis usus & utilitatem convertere libere & licitè valerent, prout in ejusdem Pii IV. prædecessoris binis literis, prioribus nimirum sub datis Calen-

CIV.

Edita A. D.
1590.

Præmium.

Pius IV. Milites istos exemit à jurisdictione Ordinarii non solum, neque decimarum, aliisque indulta concessit ut in ejus conf. 60. His quæ supra fol. 287.

Facultatem quoque de die militibus, etiam bigamis, pensiones obtinendi & transferendi usque ad summam cent. 100. auri de Camera, ut ibidem.

Pius verò V. ejusmodi indulta generaliter revocavit ut in ejus constit. 73. Sacrosanctum. fol. 287.

Hic autem Pontifex causas hic expressas approbat ante dictas Pii IV. constitutiones, & Pii V. Bullam revocat, quod istos Milites, & quoad dictas pensiones. Mox Paul. V. ampliavit hic supra in rub.

nis Februarii, posterioribus verò sub dat. Nonis Julii, Pontific. sui anno iij. consecutis plenius continetur.

§. 3. Postmodum verò pie mem. Pius Papa V. etiam prædecessor noster, per suam quæ incipit: Sacrosanctum; desuper editam constitutionem inter cætera revocaverit, & aboleverit omnia & quæcumque privilegia, facultates, dispensationes, & indulta obtinendi similes pensiones, fructus, & alias res Ecclesiarum, Monasteriorum, & aliorum beneficiorum, & officiorum Ecclesiasticorum secularium & regularium dictæ S. Stephani, cæterisque Militibus, ac Hospitalibus, earumque Militibus, Fratribus, & personis, tam Clericis quam conjugatis, quibuscumque modo & forma, ac quibuscumque de causis concessa, & approbata, ita quod ipsi, sive conjugati sive bigami, sive Clerici sive etiam presbyteri, nullas de cætero recipere, sed eas solas quas tunc habebant, retinere, & ea quoque per futurum contractum Matrimonii extinctæ censuerunt, prout in eadem constitutione latius continetur.

§. 4. Nos animadvertentes, nostris potissimum temporibus hujusmodi Milites, pro Dei, & Christiani nominis gloria, ac fidei Catholicæ defensione, non solum sæpius, in diversis expeditionibus contra infideles fortiter, & magna cum laude dimicasse, sed eorum triremes, & maritimas copias, ad Maris Mediterranei, & oræ maritimæ totius fere Italiæ ruinationem, ad coercendas Turcarum, & aliorum Piratarum incurfiones, magnum jugiter adjuvamentum afferre, ipsamque Militiam nunc maxime sub felici regimine & gubernio dilecti filii nobilis viri Ferdinandi Magni Etruriæ sibi subjectæ Ducis, ac moderni Magni Magistri in dies magis florere, & complurium Militum, qui regularem illius habitum susceperunt nobilitate, opibus, & virtute præstantium, quasi egregio, ac numerofo fœtu multiplicatam auctam esse, & quotidie augeri, ac præterea tam ipsam Ferdinandum Magnum Ducem, armis, opibus, potentia, virtute indyrtarum Civitatum, & Populorum ejus ditioni subjectorum amplitudine, ac Militum copiis inter Christianæ Reipublicæ Principes valde insignem, præcipua verò erga nos, & Sedem Apostolicam reverentia & devotione, summoque Catholicæ fidei tuendæ & propagandæ zelo ac censam, quam etiam eosdem Milites, qui in tam egregio & laudabili exercitio non solum ingentes sumptus assidue faciunt seu sanguinem ipsum & vitam cum se offert occasio, promptè & libenter profundunt, pro nostra erga illos paternæ charitatis, Apostolica beneficentia & gratia dignos reputantes, aliisque iustis, & rationabilibus de causis adducti, eosdemque Ferdinandum Magnum Ducem, & singulos Milites, à quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & interdicti aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis, à jure vel ab homine quavis occasione, vel causa litis, si quibus quomodolibet innodati existant, ad effectum præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes & absolutos fore censentes, ac tenores dictarum Pii IV. prædecessoris literarum, præsentibus pro sufficienter expressis habentes, Motu proprio, non ad alicujus nobis oblatæ petitionis instantiam, sed ex mera nostra liberalitate, & certa scientia, deque Apostolicæ potestatis plenitudine, facultatem & indultum, percipiendi & exigendi pensiones annuas præfatas, usque ad summas hujusmodi ducentorum auri de Camera, Militibus præfatis conjugatis etiam bigamis, aliisque etiam presbyteris, etiam accumulativè cum quibuscumque aliis pensionibus annuis, quas illos ex quovis alio privilegio Apostolico pro tempore contigerit, aut contingerit in futurum habere, ut præfatur, per Pium IV. prædecessorem concessa, & deinde per Pium V. etiam prædecessorem, ut diximus revocatam, adversus ipsam revocationem, abolitionem, prohibitionem, & constitutionem dicti Pii V. prædecessoris, cujus tenorem pariter præsentibus haberi volumus proexpresso, in integrum pristinum, & validissimum, & cum, in quo antequam constitutio ipsa emanaret, quomodolibet erant, statum, non solum juxta formam, continentiam, & tenorem dictarum Pii IV. prædecessoris literarum, sed omni meliori, validiori, atque ampliori modo, & forma plenarie Apostolica auctoritate tenore præsentium restituimus, reponimus, reintegramus, & revalidamus, ipsamque Pii Quinti prædecessoris constitutionem, quoad dictos Milites S. Stephani, præfatos & futuros, locum non habere, eisque minime obesse, ac nihil prorsus præjudicii afferre posse decernimus, & declaramus, quinimò dictæ constitutioni ad effectum præmissorum dumtaxat, latissime derogamus, eisque plenè & sufficienter derogatum esse volumus.

§. 5. Et nihilominus, eisdem Militibus, omnibus & singulis, etiam conjugatis, & bigamis, aliisque etiam presbyteris, ut singulas pensiones, usque ad summam prædictam ducentorum ducatorum auri de Camera super hujusmodi fructibus, redditibus, & proventus Ecclesiasticis, aliisque prædictis aliis sibi canonicè reservandas, accumulativè cum quibuscumque aliis pensionibus annuis, quas eos ex quovis alio privilegio, seu indulto, aut dispensatione Apostolica eis in genere & communiter, seu eorum cuilibet nominatim, & sigillatim, etiam in una non facta mentione de alia, vel aliis, antè vel post datam præsentium quandocumque concessa aut concedenda, usque ad quamcumque summam, etiam dictis ducentis ducatis longè majorem, pro tempore percipere contigerit, & contingat ad vitam percipere, exigere, & levare, inque suos usus & utilitatem convertere libere & licite valeant, in omnibus & per omnia, perinde ac si ipsa revocatio, abolitio, & constitutio dicti Pii V. prædecessoris non emanasset, aut ipsi Milites S. Stephani sub ea comprehensi non essent, de novo concedimus; & indulgemus.

§. 6. Decernentes nihilominus & declarantes, eosdem Milites, tam laicos quam Clericos, etiam conjugatos, & non conjugatos, pensiones super quibuscumque præfatarum Cathedralium, & Metropolitanarum, aut aliarum Ecclesiarum, Monasteriorum, Prioratuum, Canoniciarum, præbendarum, dignitatum, personatum, & administrationum, officiorum, aliorumque beneficiorum Ecclesiasticorum, cum cura & sine cura, secularium & quorumvis Ordinum Regularium fructibus, redditibus, proventus, iuribus, obventionibus, & emolumentis, ac distributionibus etiam quotidianis, aliis eis canonicè, & ex præfato, vel alio quocumque privilegio, aut indulto Apostolico, ad quamcumque summam, se, ipsos fructus, redditus, & proventus, eorumque partem aliquam loco pensionum earundem sibi reservatos aut assignatos, percipientes ad incedendum in habitu & tonsura Clericali, deferendumque vestes talares juxta nostram desuper editam constitutionem, quæ incipit: Sacrosanctum, cujus pariter tenorem præsentibus haberi volumus expresso, minime teneri, neque ad id obligatos existere, aut aliqua ratione cogi, aut compelli posse. Neque ipsas pensiones, aut illarum, vel fructuum, reddituum, & proventus hujusmodi reservationes, per non delationem habitus, tonsuræ, aut vestitum hujusmodi, aut per contractum matrimonii vel per bigamiam quamcumque super venientem, aut per exercitium Militiæ, & quocumque actus bellicos, Clericis, & Ecclesiasticis personis, de jure & per sacros Canones prohibitos, nimirum Militares: etiam sanguinis effusione, membrorum mutilatione, & morte infidelium subsecuta minime cessare, expirare, aut cassatas, vel extinctas dici, aut censeri posse, sed ipsos Milites nihilominus ut prius illas percipere, & exigere possent & debere, & dummodò habitum Militarem, vestes nimirum communes laicales, cum insignibus Crucis ejus Militiæ, consecutis, juxta alias nostras super declaratione

Indultumque circa eas pensiones iterum concedit.

Exemtionem ab onere deferendi habitum & tonsuram Clericalem: necnon et concedit, per contractum matrimonii, & exercitium Militiæ, pensiones non vacare.

Clausulas
huius con-
cessionis præ-
servativas ap-
ponit.

huiusmodi habitus Militaris, sub Dat. ultimo Prid. Calen. Februarii, Pont. nostri Anno IV. quæ etiam incipit : Pastoralis, editas literas deferant, utique constitutioni nostræ plenè satisfacere.

§. 7. Nec præmissa, aut præsentis literas, de subreptionis, obreptionis, aut nullitatis vicio, intentionis nostræ, vel quovis alio defectu notari, impugnari, invalidari, aut ad terminos juris reduci posse, aut debere, nec sub quibuscumque similibus vel dissimilibus gratiarum suspensionibus, revocationibus, limitationibus, aliisque contrariis dispositionibus, à nobis & successoribus nostris, ac Sede præfata, quavis de causa, quantumcumque iura, pro tempore emanatis & emanandis, comprehendendi, sed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties eisdem præsentis in pristinum statum relictas, repositas, & de novo concessas esse, & censeri. Sicque per quoscumque Iudices, & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Cardinales, sublata eis, & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi, & interpretandi facultate & auctoritate, ubique iudicari & desiniri debere, necnon irritum & inane quicquid secus super his à quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Executores
deputat.

§. 8. Quocirca venerabilibus fratribus nostris Florentino, & Pisano Archiepiscopis, ac dilecto filio causarum Curie Camera Apostolicæ generali Auditor, per Apostolica scripta mandamus, quatenus ipsi, vel duo aut unus eorum, ubi & quoties pro parte ipsorum Ferdinandi Magni Ducis, & Militum, seu alicuius eorum fuerint requisiti, per se vel alium seu alios præsentis literas, & in eis contenta quæcumque, solemniter publicantes, easque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant eos, & eorum quælibet, eisdem præsentibus, ac in eis contentis quibuscumque pacificè frui, & gaudere non permittentibus, eos desuper à quoquam quomodolibet indebitè molestari. Contradiutores per censuras Ecclesiasticas, aliæque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita, compellendo, invocato etiam ad hoc si opus fuerit auxilio brachii sæcularis.

Contrariis
derogat.

§. 9. Non obstantibus recol. mem. Bonifacii Papæ VIII. pariter prædecessoris nostri de una, & in Concilio generali edita, de duabus dietis, dummodò ultra tres dietas aliquis vigore præsentium, ad iudicium non trahatur, ac dicti Pii V. prædecessoris, qua inter alia voluit, gratias huiusmodi suis explodi temporibus, & quod sibi licere non est passus, id suis successoribus indicavit, necnon præfatis, & quibuscumque aliis Constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac in Conciliis etiam generalibus editis, & quæcumque Ecclesiarum, Monasteriorum, & Ordinum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, literis Apostolicis eisdem Ordinibus, Ecclesiæ, & Monasteriis, eorumque Capitulis, Conventibus, Superioribus, Prælatibus, & personis sub quibuscumque tenoribus, & formis concessis, etiam sæpius approbatis & innovatis. Quibus omnibus & singulis, etiam si de illis eorumque totis tenoribus, specialibus, specificis, expressis & individua, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quavis alia expressio habenda foret, illorum tenores præsentibus pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice duntaxat specialiter & expresse derogamus contrariis quibuscumque, aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdici, suspendi, vel excommunicari non possint, per literas Apostolicas non facientes plenam & expressam, de indulto huiusmodi mentionem. Nulli ergo &c.

Dat. P. An. 6.
die 24. Mart.

Datum Romæ in Monte Quirinali, Anno Incarnationis Dominicæ 1590. decimo Calen. Junii, Pontificatus nostri Anno sexto.

Instituto Præpositi, Sacristæ, Capellanorum, Clericorum, & Ostitarii, ad Scalas Sanctas, præp. Basilicam S. Joannis Lateranensem, de Urbe.

SIXTUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

§. 1.

Cum singularum rerum, quas Dominus nosse Jēsus Christus, pro nostra omniumque salute gessit, aut passus est, pia & assidua meditatio cunctis fidelibus mirificè fructuosas, ac propemodum salutares existat, atque ad miseris peccatores à recta via aberrantes ad veram penitentiam revocandos, justos verò ad ardentioris devotionis fervorem inflammados, vehementem vim habeat, idcirco præcipuo nitendum est studio, quo sancta illarum memoria cunctorum mentibus piorum fortius imprimatur, & tenacius retineatur. Hinc sancta mater Ecclesia non modò jugi Prædicatorum verbi Dei admonitione, aliisque multis & variis cohortationibus, verum etiam per Sanctissimæ Passionis Dominicæ veneranda mysteria, salutifera monumenta, sacrasque Imagines, quæ nostris oculis devotè contemplanda proponit, intimis cordis nostri visceribus id ipsum perpetuò foveri & conservari pia cogitatione procurat. Cum itaque ex sacris illis locis per quæ transiens ipse Christus Dominus humanæ salutis mysterium operabatur, inter cætera quàm plurima monumenta, singulari Dei beneficio, Almaz huic Urbi jampridem concessa, sit etiam illud præclarum atque insigne quasi egregium divinæ erga nos charitatis pignus, Scalæ nimirum Sanctæ, quæ ejusdem Salvatoris nostri, dum multa mar passus, morti appropinquaret, sacris, & pretiosissimo ejus cuore resperis vestigiis calcata, & juxta antiquissimam Patrum traditionem pietatis causa ab Hierosolymis è Prætorio ubi Pilatus præfuerat Romam advectæ, apud venerabilem S. Joannis Lateranensis Basilicam aservantur, easque intueremur propter superiorum temporum injurias, Urbis excidia, direptiones, & alias calamitates facere quodammodo in loco abjecto, sicut & squalore ac sordibus obstituto, vetustate penè collapsio, atque ad excurrentis ac transeuntis turbæ tumultum omnifariè patenti, atque palam exposito, ut ex hoc ipso utriusque sexus personarum summo non populi modo Romani, sed ex terrarum quoque nationum ex remotissimis regionibus concursu, & celebritate ad eas confluentium, mentes à pia meditatione non mediocriter abducerentur, ac distraherentur, & earum devotio maximam perturbationem, molestiam, atque impedimentum pateretur, illud potissimum nobis cordi fuit, ut nullis parcentes impensis, eas integrè, diligenter, ac omni qua potuit, religione transferri curaremus. Id verò ut decenter, ac debita cum reverentia perficeretur, ac ne Sanctos illos gradus non aliter quàm supplicum genibus contractari liceret, cum aliqua irreverentia immundis opificum pedibus profano quodammodo teri, & conculcari contingeret, Deo illuminante excogitavimus nostròque solerti studio curavimus in ipsa translatione eam diligentem adhiberi cautionem, ut qui gradus Salarum earundem Sanctarum infimo in loco veteris structuræ situs & collocatus erat, is nunc omnium primus suo loco motus, ac transferentium numeris impositus summo, ac supremo in loco constitutus fuerit, & similiter qui antea post ascensum infimi gradus secundus erat, is modò infra summum & supremum Scalæ Sanctæ gradum proximus, eique immediatè conjunctus habeatur, ac idem prorsus ordo præpostera huiusmodi commutatione hac de causa inversus, eademque series, & consideratio gradatim & sigillatim in tertio, quarto, ac deinceps reliquis singulis ejusdem Scalæ Sanctæ gradibus transferendis, collocandis & adiungendis servati extiterint, sicque ipsas Scalas Sanctas pedibus mortu-

XV.

Edita A. D.
1590.

Hic Pont. ex
causis hic ex-
pressis, Scalam Sanctam
decentiori &
sanctiori lo-
co, ante au-
gustissimam
Salvatoris nostri Capel-
lam præp. Basili-
cam Sancti Joannis
Lateranen-
reposit, &
non Opificum
pedibus
dicte Scalæ
gradus, cal-
carentur. modum hic
enarratum ob-
servavit.

lium intactis, minimèque calcatas, juxta insignem illam ac præcipua sanctitate toto terrarum orbe inter omnia Urbis & orbis sanctiora loca celeberrimam Capellam, quæ antiquissima & maxima majorum nostrum veneratione jam inde ab ipsa crescentis Ecclesie præfata ætate Sancta Sanctorum appellatur, & quàm ob loci religione prorsus intactam, suæque primæ Sede immotam reliquimus, decentiori, ac sanctiori, atque à multitudinis cursantis strepitu magis remoto, & ad excitandam devotionem apertiore in loco reponeremus. Ubi & qui per ipsas flexis genibus prostrati, ut moris est, pie Deum precantes ascendunt, nihil prorsus ante oculos habent, quod eorum animum à devota contemplatione avocet, sed potius augustissimam Salvatoris Imaginem, quæ in prædicta sanctiori Capella singulari, & ex omni antiquitate longissima plurimum sæculorum serie repetita memoria, summæque Patrum religione collocatæ, intuentes ipsa loci Sanctitate, ad exhibendum ferventiori studio, sinceròque cordis effectui Divinæ Majestati cultum, majorem in modum accendantur, & eadem Scalæ, & in eam qua par est, dignitatem ac splendorem restitutæ ad æternam posteritatis memoriam debito cum honore & reverentia conserventur. Etenim si præcipua veneratione dignissima sunt ea omnia, quæ per contactum sacratissimi Corporis Domini nostri JESU CHRISTI, in quo omnis plenitudo divinitatis corporaliter inhabitat, sanctificata jure optimo censentur, quanta demùm reverentia, animique dimissione colebunt, quanta etiam honorificentia & decore ornandæ & aservandæ erunt hæc sacrosanctæ Scalæ, quas idem Dominus ac Redemptor noster jam antea flagellatus, & spinea corona caput circum vulneratus, non modò nudis sacrorum pedum plantis, sed eo ipso quem pro nobis effundebat, inestimabili sanguine aspersit simulque gloriosis beatorum Pedum, & cruoris ex sanctis vulneribus copiosè manantis vestigiis, quæ adhuc extant, impressas ac notatas reliquit? Adorabimus, inquit Propheta, in loco, ubi steterunt pedes ejus, & rursus: Adorate scabellum pedum ejus, quoniam sanctum est. Apud Isaiam quoque legimus, Locum pedum meorum glorificabo, & ad Sanctam Civitatem Hierusalem adorabunt vestigia pedum tuorum; & apud Ezechielem, Locus solii mei, & locus vestigiorum pedum meorum.

Porticum antè d. Scalam
fatis ornatum extruxit.

§. 2. Hoc igitur pro opera tandem, licet ingenti sumptu, feliciter Dei benignitate absoluto, porticum quoque antè eas satis amplum atque ornatum extruximus, càmque ingentibus, solidioribus, ac robustioribus ferreis cratibus ad singula illius intercolumnia positis, undequaque septam, ut par erat clausimus, & communivimus, clavèque illis aptari, ut congruis horis, & temporibus ostia aperiri & observari queant, opportunè curavimus. Alteras præterea scalas, binas videlicet ad dexteram, ac totidem ad sinistram, ne quis per easdem Scalas Sanctas alia quàm orandi causa & genibus flexis congrua cum reverentia transcat, neve ob confertam Populorum ex omnibus Mundi partibus eo concurrentium multitudinem, summamque frequentiam in ascensu & descensu Christi-fideles se invicem impediunt latas, atque amplas.

Sacella duo
apud ad Capellam
Salvatoris edificavit.

§. 3. Superius autem Sacella duo à lateribus dictæ sanctioris Capellæ magna impensa edificavimus, necnon Altare in uno ex dictis Sacellis sub S. Laurentii Martyris in uno ex dictis Sacellis sub S. Silvestri invocationibus ereximus. Illas verò omnes opere testorio marmoreo eoque etiam inaurato, piis & ad devotionem Christi-fidelium excitandam accommodatis picturis exornavimus. Ea nimirum ratione habita, ut in gradibus hinc inde positis, eorumque forme figuræ veteris Testamenti, futuræ nostræ redemptionis symbola sint depicta.

In parietibus
juxta d. Scalam,
Passionis Domini
Mysteria depingi fecit.

§. 4. In ipsis verò Scalis Sanctis ejusdem Sacratissimæ Passionis mysteria fuerint expressa, atque hoc modo qui eas, ut diximus genibus flexis devotè ascendunt, religiosissimam eodem tempore Sal-

vatoris Imaginem adorent, & quoque se vertant, undequaque salutiferæ Crucis & passionis Domini monumenta, pia contemplatione meditentur.

§. 5. Quoniam verò maxime convenit, ut in sacro hujusmodi loco, Dominicæ Crucis & Passionis memoria non solum in marmore, ac lapidibus, picturisque & Imaginibus, sed multò etiam magis in tremendo illo Missæ sacrificio, veraque & actuali Corporis & sanguinis D. N. JESU CHRISTI oblatione perpetuò recolatur, divinitusque cultus non temporalibus modò, sed spiritualibus quoque edificiis augeatur, primùm quidem eadem Sacella & Altaria, eorumque Sacrificia, paramentis atque ornamentis Ecclesiasticis, sacris nimirum vestibus, solis, manipulis, amictibus, pluvialibus, casulis, cæterisque indumentis Sacerdotalibus, necnon calicebus, patenis, corporalibus, candelabris, lampadibus, urceolis, vasculis, mantilibus, linteis, palliis, ac etiam Missalibus, cæterisque sacris libris, atque Ecclesiasticæ suppellectili, & utensilibus omnibus necessariis, abundè instruximus atque ornavimus.

§. 6. Mox etiam decrevimus inibi unam Præposituram ad Scalas Sanctas appellandam, unum Sacrificii Officium, necnon quatuor capellanas, & quatuor Beneficia Ecclesiastica Clericatus nuncupata, & unum Oltiarium erigere. Ex redditibus verò novorum locorum Montis Religionum, quæ ultra assignationem Aquæ Felicis perpetuæ conservationi per nos factam, superfluit, unquam antea Cam. Apost. applicatis, neque incorporatis, sed nostra diligentia, industria & cura, sine ullo Cam. Apostolicæ, aut cuiusvis alterius gravamine, vel detrimento, de novo juvenis, ac pensionem annua perpetua quadringentorum scutorum monetæ super fructibus, redditibus, proventus, ac distributionibus, etiam quotidianis, Prioratus Ecclesiæ Aline per nos ad hunc effectum reservata, & assignata, Dotem Præposituræ, Sacrificii, Capellanis, & Beneficiis prædictis assignari posse censuimus, Mox igitur proprio, non ad alium super hoc oblata petitionis instantiam, sed ex mera nostra deliberatione, ac certa scientia, deque Apostolicæ potestatis plenitudine, ad laudem & gloriam Omnipotentis Dei, ac in honorem & memoriam Passionis Domini Salvatoris nostri JESU CHRISTI, divinitus cultus ad Scalas Sanctas, ac in novis Sacellis prædictis incrementum; unam Præposituram, quæ inibi dignitas censeatur pro uno Præposito in presbyteratus ordine constituto, vel qui in ea etate sit, ut intrā annum promoveri ad presbyteratum possit & debeat, qui capellanorum, & clericorum hujusmodi caput existat, ibidemque præsit, ac præterea perpetuum Sacrificii Officium pro uno Sacrificia, qui curam Altarium Scalarum Sanctarum, ac ipsius Sacrificii gerere, illamque custodire, atque ut omnia nitida, sancta, tecta, ut par est, custodita sint, diligenter providere, necnon quatuor Capellanas, pro totidem perpetuis Capellanis Presbyteris, seu intrā annum pariter ad presbyteratum promovendis & quatuor Clericatus nuncupanda Beneficia Ecclesiastica, pro totidem Clericis in minoribus ordinibus constitutis ad Scalas Sanctas appellandis.

§. 7. Qui quidem Præpositus, Sacrificia, & Capellani Terni qualibet hebdomada, & sic unusquisque eorum alternis hebdomadis Missam in novis Sacellis prædictis per se ipsos, aut si quo die ejusdem Præpositi arbitrio legitime impediti fuerint, per alium presbyterum ab ipso Præposito ad hoc specialiter approbandum, celebrare, ac ministrare, Clerici autem illis inservire, ac unum Oltiarium pro Oltiario ad nutum Sacrificii deputando & amovendo, qui ipsas Scalas, omniaque Sacella, & altaria, ac Porticum mundare, congruisque horis, & temporibus ostia, & fenestras claudere & aperire, aliisque juxta providam ordinationem à Dilecto filio nostro in Alma Urbe Vicario nunc à pro tempore existente eis designandam, facere & exequi, dictoque

Sacella prædicta eorumque Sacrificia ornamentis Ecclesiasticis ornavit.

Modò unam Præposituram, unius Sacrificii Officium, Quatuor Capellanas, Quatuor Clericatus unumque oltiarium, ibidem instituit.

Manns eorum cuique præscribit.

Annus quo
redditus eis-
dem assigna-

Præposito tamquam membra capiti obedire debeant, & teneantur, tenore præsentium perpetuo erigimus & instituimus.

§. 8. Eisque sic erectis & institutis, pro illorum dote, ac illa obtinentium congrua sustentatione, ultrâ pensionem superius expressam, etiam Centum nova loca Montis Religionum prædictæ per nos erecta, sive annua emolumenta iadè provenientia, & insimul ad mille centum & septuaginta scuta monetæ Romanæ annuatim ascendentia, ex eis nimirum Præposituræ prædictæ Ducenta, Sacristiæ verò pro tempore existenti Centum quadraginta scuta monetæ (ex quibus tamen idem Sacristia triginta pro mercede seu salario Offitarii quotannis erogare debeat) singulis verò Capellanis centum decem, ac denique singulis Clericis prædictis, quinquaginta scuta etiam monetæ similia annua, motu, scientia, ac auctoritate similibus perpetuo applicamus & appropriamus. Quod verò ex illis reliquum erit, ad centum & nonaginta scuta singulis annis ascendens, id ipsis novis Sacellis pro divino cultu manutendo & augendo, & in ea quæ pro tempore reficienda erunt, paramenta, ac ornamenta ecclesiastica, sive in reparationem, & conservationem Salarum & Porticus, ac totus continentis ædificii erogandum pariter perpetuo concedimus & assignamus. Quibus quidem impensis deductis, totum id quod supererit in emptionem aliorum locorum Montium non vacabilium quotannis converti, & eorum fructus pro rata supradictæ proportionis ratione habita, inter ipsos Præpositum, Sacristam, Capellanos, & Clericos distribui volumus. Necnon Præposito, Sacristæ, Capellanis, & Clericis emolumenta locorum Montium hujusmodi, ac pensionem eis assignatam, per se vel Procuratorem legitimum, & si eis videbitur, per Camerarium, qui de eorum gremio existat, & ad quem peculiaris cura recuperationis, exactiois, distributionis, & repartitionis fructuum, reddituum, ac proventuum hujusmodi ad communem massam pertinentium spectet, (ita tamen, ut de receptis & administratis, rationem & computa ipsi Collegio reddere teneatur) per eos, eorumque majorem partem, pro tempore depurandum à priore Ecclesiæ Assinæ, necnon Depositario prædicti nunc & pro tempore existentibus respectivè, qui sine ulla mora, aut contradictione, etiam absque aliquo Judicis decreto aut ministerio, & sine alia nostra aut pro tempore existentis Romani Pontificis, aut Cameræ Apostolicæ, ejusve Ministri-
orum licentia, aut mandato, seu Patentium expeditione, vigore præsentium literarum persolvere debeant, exigendi, & percipiendi, ac inter se ut præsertur, distribuendi, plenam & liberam per præsentem facultatem concedimus & impartimur. Volentes ipsum Collegium, ejusque singulares personas, nimirum Præpositum, Sacristam, Capellanos, & clericos prædictos, quoad centum loca dicti Montis, eis ut dictum est, assignata, & applicata, eorum fructus, seu emolumenta eisdem privilegiis, immunitatibus, exemptionibus, necnon juribus etiam anterioribus, & potioribus actionibus, hypothecis, obligationibus generalibus & specialibus, antelationibus, & facultatibus (non tamen illa alienandi) perpetuo uti, frui, potiri & gaudere, quibus ceteri ejusdem Montis locorum, seu portionum emptores, aut quovis titulo etiam oneroso creditores seu montifæ, quoad loca & portiones ad eos pertinentia, utuntur, potiuntur & gaudent, five uti, frui, potiri & gaudere quomodolibet poterunt in futurum, non solum ad eorum inslar, sed pariformiter & æquè principaliter, & sine ulla prorsus differentia, perinde ac si ipsi quoque Præpositus, Sacrista, Capellani, & Clerici, verè & realiter persoluto pretio, illa titulo oneroso acquisivissent.

§. 9. Ac insuper statuimus & ordinamus, ut de cætero perpetuis futuris temporibus, omnes & quæcumque piorum Christianidelum oblationes, & elemosynæ, dictis Scalis Sanctis, & Sacellis, &

Altaribus largiendæ, per unum vel duos ex dictis Sacrista, Capellanis, & Clericis pro tempore ad hoc deputandos, fideliter custodiantur, & asserventur, & sexto quoque mense partim in Sacristiæ usus & divini cultus augmentum erogentur, partim verò inter ipsum Præpositum, Sacristam, Capellanos, & Clericos dictis Scalis Sanctis & Sacellis in divinis personaliter intervenient tantum, atque inibi assistentes, ultra portionem ordinariam prædictam eis applicatam, quasi distributionum quotidianarum loco, juxta ordinationem dicti Urbis Vicarii super hoc faciendam dividantur.

§. 10. Postremò, Juspatronatus, & præsentandi personas idoneas etiam alienigenas ad Præposituram, Officium Sacristiæ, quatuor Capellanas, & alia beneficia Clericatus nuncupata hujusmodi dilecto filio nobili adolescenti Michaeli Peretto Marchioni de Encisa, nunc autem Burgi Sancti Petri, Militumque Custodiæ nostræ Practicæ, nostro secundum carnem ex sorore Pronepoti ejusque masculis ex masculis descendentes legitimis & naturalibus, ac ex legitimo matrimonio natis, & procreatis, ita tamen quod præsentatio fieri debeat solum à primogenito, & ipsius primogeniti primogenito, ulque in infinitum, & ejusque deficientibus, ad secundogeniti, & aliorum successivè lineas, & denique in masculorum omnium defectum, jus hujusmodi ad feminas, earumque descendentes transeat, eisdem modo & forma, quibus præsentatio ad aliam Præposituram, Sacristiam, Capellanas, & Beneficia per nos in Capella ad Præfere Domini in Ecclesiâ S. Mariæ Majoris erecta, ejusdem Michaelis etiam illorum Patroni descendentes reservata fuit, prout in literis Apostolicis desuper expeditis, quarum tenorem haberi volumus pro expresso, ac ad verbum inserto, plenius continetur. Et postmodum si defecerint omnes à dicto Michaeli descendentes, juspatronatus & præsentandi hujusmodi transeat ad dilectam in Christo filiam Flaviam etiam Perettam dictam Michaelis sororem germanam, si extabit, & post eam, vel si ipsa non extabit, ad filios masculos descendentes, usque in infinitum, & cessantibus masculis, ad feminas à dictis masculis descendentes, & cessantibus omnibus tam masculis quam feminis descendentes à dicta Flavia, succedat dilecta in Christo filia Ursina similiter Peretta ejusdem Michaelis etiam soror germana, & post eam, vel si ipsa tunc non extabit, ejus filii masculi ex masculis descendentes. Deficientibus autem omnibus & singulis masculis & feminis descendentes à dictis Michaeli, Flavia, & Ursina, tunc succedat in juspatronatus, qui nobis fuerit sanguine proximior, servato semper in omnibus casibus supradicto ordine primogenituræ, transiendo scilicet de primogenito in primogenitum, & præferendo lineam primogeniti lineæ secundogeniti, & masculos ex masculis descendentes natis ex feminis, ac masculo ex feminis ipsis feminis, ac aliis in omnibus & per omnia prout in linea filiorum, & descenduntium à dicto Michaeli, ut præsertur, aliis in literis prædictis ordinatum est. Itaque quod jus præsentandi hujusmodi ad unum solum successorem in solidum, & post illum ad alium semper deveniat, absque eo quod inter plures successores dividi possit.

§. 11. Institutio verò ad præsentationem hujusmodi Vicario Urbis prædicto quoad Præposituram tantum, quoad Sacristiam verò, Capellanas, & beneficia seu clericatus hujusmodi, ipsi Præposito pro tempore existenti concessa sit, & ad eos pertinere censeatur, ac in forma solita fieri debeat, idque tam hac prima vice, & ab eorum primavæ erectione & institutione, quam quoties ex nunc in futurum, illas & illa, quibusvis modis & ex quorumcumque personis, etiam nostris aut Romani Pontificis pro tempore existentis, seu cujusvis Cardinalis etiam tunc viventis familiaribus,

Juspatronatus & præsentandi ad dicta Beneficia, Michaeli Peretto ejus pronepoti, & deficientibus masculis aliisque hic nominatis concedit.

Collationem Præposituræ, Vicario Urbis, aliorum autem beneficiorum ipsi Præposito tribuit.

Elemosinas
ibi largien-
dus certo mo-
do distribu-
endas esse de-
cernit.

continuis commenfibus, feu Romanæ Curia Officialibus, aut aliis quomodolibet reservatione inducentibus, feu per liberar, vel ex caufa permutationis refignationes, de illis in dicta Curia vel extrâ eam quomodolibet factas, & admiffas, affecutionem alterius beneficii ecclefiaftici quavis auctoritate collati, fed illa pro tempore obtinentium decessum, feu quamvis aliam dimiffionem, miffionem, privationem, matrimonii contractum, Religionis ingreffum, aut aliâs quomodocumque, etiam apud Sedem prædictam fimul vel fucceffivè vacare contigerit, motu & fcientia fimilibus, auctoritate & tenore prædictis, pariter, perpetuò refervamus, concedimus, & assignamus. Decernentes jufpatronatus & præfentandi hujufmodi, laicorum Nobilium & Illuftrium exiftere, ac Michaëli, & aliis futuris Patroni prædictis, & eorum cuilibet perpetuò fuffragari debere in omnibus & per omnia, abfque ulla proflus differentia, perinde ac fi illis & eorundem cuilibet, ratione veræ, realis, actualis, plenæ, & integræ fundationis, ac perpetuæ donationis per eos de eorum propriis, & merè patrimonialibus laicalibus bonis dumtaxat competeret, & concessum effer, ac ut tale fub quacumque derogatione, etiam cum quibufvis prægnantiffimis efficaciffimisque verbis, claufulis, & decretis, cum claufula. Quorum tenores in quacumque difpofitione, etiam per viam Conftitutionis, legis, regulæ Cancellariæ Apoftolicæ, aut aliâs quomodocumque facta, nullatenus comprehendit, nec illi umquam quovis tempore, etiam ratione cujufvis litis pendentia, vel vacationis Præpofitura, Sacristiæ, Capellanarum, & aliorum beneficiorum hujufmodi apud Sedem prædictam, etiam ex caufa permutationis, vel devolutionis, feu alio quocumque prætextu, ex quacumque caufa quantumvis urgenti & legitima, per nos feu quoscumque alios Romanos Pontifices pro tempore exiftentes, vel Sedem prædictam, aut illius Legatos etiam de latere, etiam motu, fcientia, & potestatis plenitudine fimilibus, feu cujufvis intuitu & contemplatione, per quascumque literas Apoftolicas etiam in forma Brevis, & quavis etiam derogatoriæ derogatorias, ac fortiores & infolitas claufulas, necnon irritantia, & alia contraria decreta quacumque derogari, aut derogatum cenferi poffe, neque debere, nifi in illis de toto tenore, ac Data præfentium, necnon Patroni pro tempore exiftentis nomine, cognomine ac qualitate, fpecialis, fpecifica, & individua mentio facta fuerit, ac ejufdem Patroni pro tempore exiftentis ad hoc expreffus accefferit affenfus; & aliter factas derogationes, necnon quascumque collationes, provisiones, commendas, præfentationes, institutiones vel alias difpofitiones, de Præpofitura, Sacristia, Capellanis, & aliis beneficiis prædictis ut præfertur, & alio quovis modo, etiam apud Sedem eandem pro tempore vacantibus, quibufvis perfonis aliâs quàm ad præfentationem Michaëlis, & aliorum Patronorum prædictorum, feu de eorum expreffo confenfu, etiam cum fpeciali & expreffa derogatione Jurispatronatus hujufmodi pro tempore factas, processusque de fuper habitos, ac inde pro tempore fecuta quacumque, nulla & invalida, nulliusque roboris vel momenti fore & effer, ac pro nullis & infectis haberi & cenferi, nec jus, aut coloratum titulum poffidendi cuiquam tribuere, vel per illa acquiri poffe: fed præfentationes per Michaëlem, & alios futuros patronos prædictos pro tempore factas, & fubfecutas institutiones, validas & efficaces fore, fuosque effectus fortiri, ipfis præfentatis & institutis, tale jus in re & ad rem acquiri debere, quale acquirunt præfentatis & institutis ad beneficia de vero & reali jure patronatus laicorum nobilium & illuftrium, ratione primæ & integræ fundationis, ac perpetuæ donationis ex bonis merè laicalibus & patrimonialibus dumtaxat exiftentia.

Claufula præfervativa apponitur.

§. 12. Necnon Præpofituram, Sacristiam, Capellanias, aliisque beneficia Clericatus nuncupata

hujufmodi per nos erecta, fub quibufvis fpecialibus vel generalibus reservationibus, unionibus, annexionibus, incorporationibus, fuppreffionibus etiam perpetuis vel temporalibus, expectativis, & aliis etiam præventivis gratis, ac uniendi, annexendi & incorporandi, necnon conferendi, providendi, & aliis facultatibus, concessionibus, literis, mandatis etiam de providendo, & indultis quibuscumque, illorūque & illarum revalidationibus, quibufvis perfonis, etiam prædictæ Rom. Ecclefia Cardinalibus, etiam motu, fcientia & potestatis plenitudine fimilibus, ac cum quibufvis fuppreffivis refitutivis, ac etiam derogatoriæ derogatoriis claufulis, irritantibusque & aliis, etiam vim contractus inducentibus decretis, atque aliâs quomodolibet nunc & pro tempore concessis, necnon quibufvis conftitutionibus, & ordinationibus Apoftolicis, ac dictæ Cancellariæ regulis, quomodolibet & cum quibufvis claufulis & decretis, quantumvis ampliffimis ac prægnantibus, & cum claufula quorum tenores editis & edendis, nullatenus comprehendit effer, aut fore, minimeque comprehendi poffe aut debere, fed femper ab illis excepta & exclufa effer, & cenferi debere, ac omnia & fingula præmiſſa, necnon præfentes literas, nullo umquam tempore de fubreptionis vel obreptionis feu nullitatis vitio, aut intentionis noſtræ, vel alio quovis defectu, etiam ex eo quodd caufæ propter quas eadem præmiſſa facta funt, coram locorum Ordinariis, vel alio Judice examinata, verificata, & approbata, ac interefſe forſan habentes ad id vocati non fuerint, nec deſuper fuum confenfum præſtiterint, feu ex quavis alia caufa, vel quocumque prætextu quaſito colore vel ingenio notari, impugnari, invalidari, retraſtari, ad terminos juris reduci, feu in jus, vel controverſiam revocari, aut adverſus illa quodcumque juris, facti, vel gratia remedium impetrari, & attento quod noſtra cura, ut præfertur, dos ipſa locorum Montium prædictorum inventa eſt, in Camera prædictæ præjudicium nequaquam redundare dici aut cenferi poffe, nec fub ullis fimilibus vel diſſimilibus gratiarum revocationibus, limitationibus aut aliis contrariis difpofitionibus comprehendit, fed femper ab illis exceptas, & quoties illa emanabunt, toties in priſtinum, & eum in quo antea erant ſtatum reſtituta, reſpoſita & plenariè reintegrata, ac de novo etiam ſub Data per eos quorum intererit quandoque eligenda conceſſa, valida & efficacia fore, fuosque plenarios & integros effectus fortiri, ac perpetuò fuffragari, perinde ac ſi in Conſiſtorio noſtro ſecreto de unanimi fratrum noſtrorum conſilio emanafſent.

§. 13. Sicque in præmiſſis univerſis per quocumque & ſingulos Judices ordinarios & delegatos, etiam cauſarum Palatii Apoſt. Auditores, ac S. R. E. Cardinales, ſublata eis & eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, in quavis caufa & inſtantia judicari & definiri debere, irritum quoque & inane, ſi ſecus ſuper his à quoquam quavis auctoritate, ſcienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 14. Quocirca venerabilibus fratribus noſtris Offien. Sabinen. & Tuſculan. Episcopis, motu ſimili per Apoſtolica ſcripta mandamus, quatenus ipſi, vel duo aut unus eorum, per ſe vel alium ſeu alios, præſentes literas & in eis contenta quacumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte pro tempore exiſtentium Patroni necnon Præpoſiti, Sacriſtæ, Capellanorum & Beneficiatorum hujufmodi, ſeu aliqujus eorum fuerint requiſiti, ſolemniter publicantes, eique in præmiſſis efficacis defenſionis præſidio aſſiſtentes, faciant auctoritate noſtra præſentes literas, & in eis contenta quacumque ab omnibus ad quos ſpectat, & pro tempore ſpectabit inviolabiliter obſervari, necnon Patronum, Præpoſitum, Sacriſtam,

Decretum irritans addit.

Executores hujus conſtit. deputat.

Capellanos, & Beneficiatos pro tempore existentes prædictos, eorumque singulos, illis pacifice frui, & gaudere, eisque de emolumentis locorum seu portionum Montis hujusmodi, & pensione prædicta, perpetuo & integrè responderi, & solutiones eis faciendas tam à Camera Apostolica ejusque Ministris, quam ab aliis, ad quos spectat aut spectabit in futurum, ratas haberi, etiam alio particulari, aut novo mandato, licentia, aut decreto, minime expectato nec requisito. Non permittentes, ipsos vel quempiam ex eis per quoscumque desuper quomodolibet molestari, perturbari & inquietari. Contradictores quolibet & rebelles, per sententias, censuras & penas ecclesiasticas aliæque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita compescendo, ac legitimis super his habendis servatis processibus, sententiis, censuras & penas ipsas etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 15. Nōn obstantibus præmissis, ac piæ memoriæ Bonifacii Papæ VIII. similiter prædecessoris nostri, qua cavetur, ne quis extrā suam Civitatem, vel Diocēsim nisi in certis expressis casibus, & in illis ultrā unam diētam à fine suæ Diocēsis ad judicium evocetur, seu ne Judices à Sede prædicta deputati, extrā Civitatem vel Diocēsim in quibus deputati fuerint, contrā quoscumque procedere, aut alii vel aliis vices suas committere audeant, seu præsumant & in Concilio generali edita de duabus dietis, necnon quatenus opus sit Lateranensis Concilii novissimè celebrati super bonis Romanæ Ecclesiæ, & Sedis earumdem nunquam, aut nisi ex certis tunc expressis causis alienandis, ac sanctæ memoriæ Symmachi, Non liceat Papæ, ac Innocentii Octavi, Volentes incipien. & Pauli Secundi, necnon Pii Quarti, super gratiis interesse Camere prædictæ concernentibus in eadem Camera registrandis. Itā ut præfentes literæ etiam si in dicta Camera intrā certum in ea præfixum tempus, aut registratæ fuerint, nihilominus perpetuo valeant, ac etiam lapsu hujusmodi tempore, iis quos concernunt suffragentur non secus ac si insinuatæ, admittæ, & registratæ fuissent, ac nostra de Unionibus committendis ad partes vocatis quorum interest, & dicti Lateranen. novissimi, & aliorum generalium Conciliorum Uniones perpetuas nisi in casibus à jure permittis fieri, aut unius Diocēsis beneficia alterius Diocēsis beneficiis uniri prohibentium, necnon aliorum Romanorum Pontificum nostrorum prædecessorum, ceterisque nostris Apostolicis, ac in Provincialibus, & Synodalibus Conciliis editis & edendis, specialibus vel generalibus constitutionibus & ordinationibus, necnon Basilicæ Sancti Joannis Lateranen. Ecclesiæque Aſinæ, ac Congregationum, & Ordinum, Montisque Religionum, & Camere prædictarum, etiam juramento confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, primævisque foundationibus, erectionibus, & institutionibus, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis Archiepiscopo & Capitulo Basilicæ prædictæ, ac Priori Eſtioni, Præfidentibusque, Clericis & quibusvis Ministris & Officialibus, Camere, seu Collegio Montis Religionum hujusmodi, ac dilectis filiis Senatui, Populoque Romano super dignitatibus, Capellanis, & Beneficiis in ipsa Urbe constitutis, illa aliis quam Civibus Romanis originariis conferri prohibentibus, & quibusvis aliis concessis. Quibus omnibus & singulis, etiam si de illis eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, & individua mentio, seu quævis alia expressio habenda, vel forma ad hoc servanda foret, tenores hujusmodi pro expressis habentes, illis aliis in suo robore permanens, hac vice ad effectum præsentium dumtaxat derogamus, contrariis quibuscumque, aut si aliquibus communiter vel divisim ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per literas Apostolicas non facien-

tes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

§. 16. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ erectionis, institutionis, applicationis, appropriationis, impartitionis, statuti, ordinationis, reservationis, concessionum, assignationum, voluntatum, decreti, mandati, & derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare, &c.

Dat. Romæ in Monte Quirinali, Anno Incarnationis Dominicæ 1590. 4. Non. Junii, Pont. nostri anno sexto.

Alienationes Officiorum, seu jurium, & emolumentorum, Officiis etiam majoribus S. R. E. annexorum, ab officialibus contrā formam eorum primævæ erectionis factæ rescinduntur, & in posterum fieri prohibentur.

Quoad Officia à primævæ erectione annexa Officio Vicecancellarii, attende const. 16. Sixti IV. fol. 416. Tom. 1. in §. 25, lib. 1. & declarationem hujusmet Pontificis sub ista constitutione locatam.

Facultates disponendi de Officiis vacabilibus Romanæ Curie, eorumque pretio revocavit S. D. N. Urban. VIII. Const. 20. Sanctissimus, inf. Tom. 4. & etiam revocavit concessionem diversorum Officiorum, Privilegiorum, & Indultorum in præjudicium Sedis & Camere Apostolicæ emanatas, in const. 28. Superni in d. Tom. 4.

SIXTUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Cum pro suprema injuncta nobis sollicitudinis cura, atque ea quæ Rom. Pont. peculiaris existit in tuendis S. R. E. Ecclesiæ rebus providentia ejusdem Ecclesiæ jura, & emolumenta integra conservare, naturali, Divinæque mandato moniti teneamur. Cūque ne ea contrā antiquam Rom. Pont. vel aliorum, ad quos pro tempore spectat consuetudinem, aliter quā concedenda sunt concedantur, aut in alias personas contrā concedentium voluntatem, attributamque ipsis facultatem transferantur, omni studio cavere debeamus. Nulli mirum videri debet, si pleraque jura, atque emolumenta S. R. E. officiis etiam majoribus annexa, ab obtinentibus dicta officia, qui tamquam fideles, & prudentes servi; talenta à Domino accepta dando super lucrari, vel saltem utendo communicare, non autem distrahenda consumere debent, hætenus indebitè alienare, recuperare, & ne in posterum alienentur prohibere optima ratione decernamus.

§. 1. Cū igitur sint aliqua munera, aut officia, seu potius jura, regalia, & emolumenta majoribus officiis annexa, quæ aliquibus personis in laborum, & meritum remunerationem ab ipsis Officialibus gratiosè concedi ab initio consueverunt, & omnino debuerunt, & nonnulla similiter officia per se existant, quæ personis inopia laborantibus ad honestam eorum dumtaxat vitæ aut familiæ sustentationem à Sede Apostolica liberaliter tributa sunt, Nos, ut modus in hujusmodi concessionibus servari debitus, hætenus immutatus restitatur, & ne in posterum aliquo pacto immutetur, atque ut beneficii accepti memoria pretii aut oneris impositione non lædatur, & ne officiorum concessorum emolumenta è personis aut familiis, quibus ad eorum sustentationem concessa sunt, egrediantur, aut ipsorum necessitatibus ullo tempore subtrahantur, & ne ulterius Camera Apostolica aliquam iacturam patiatur, quantum in nobis est, statuendum atque consulendum

Sanctio postal.

Dat. P. An. 6. die 2. Junii.

CVI.

Edita An. D. 1589. & 1590.

Exordium.

Causa hujus const. tit.

duximus. Summo itaque animi dolore nuper accepimus (id quod magna etiam cordis perturbatione & iusta indignatione commoti vix cogitatione revolvare, nedum verbis recensere possumus) quosdam ad Apostolicæ Sedis Officia, etiam præcipua à Romano Pontifice adscitos, quos Officiorum prætorum jura & emolumenta conservare, & ut cæteris inferioribus Officialibus fidei & industriæ exemplo essent, amplificare oportebat, propriæ salutis immemores, ea contra antiquam majorum consuetudinem & attributam facultatem, & contra ejus qui contulit, voluntatem, & in damnum Sedis & Cam. Apost. suorumque in prædictis Officiis successorum alienare; pecuniisque inde collectas in proprios usus convertere non dubitasse. Nec sine majori animi molestia compertimus, eos hujusmodi alienationes subreptitiis & obreptitiis confirmationibus Apostolicis approbari procurasse, & se eo pacto tueri, & quodam modo exulare voluisse. Qua quidem in re non possumus non summo per detestari hujusmodi hominum ingrati animi vitium, dum insignem Apostolicæ Sedis liberalitatem experti, res eorum fidei creditas, & ipsi in usum, fructumve tantum concessas, in alios transferre ausi fuerunt; tum sacrilegium eorumdem, quod bona, ac jura Deo, ejusque Sponsæ Sacrosanctæ Ecclesiæ dedicata præripere veriti non fuerunt; demum impietatem, quod ea, quæ pauperibus educandis, quæ viris religione ac doctrina claris, sedulamque ipsi Ecclesiæ operam navantibus fovendis destinata sunt, cupidè exhaurire, & ad propria commoda convertere non timerunt. Invenimus præterea nonnullos tum in variis Status nostri temporalis Ecclesiastici locis, tum præsertim in hac Alma Urbe nostra, in qua Romani Pontifices prædecessores nostri erga ejusdem Urbis Cives & Incolas liberales & munificos se sæpius exhibuerunt, qui diversa Officia, donec ipsi vivant vel eorum familiæ extant, in laborum & meritum remunerationem, vel ad sublevandam eorum indigentiam ab ipsis prædecessoribus nostris acceperunt, Apostolica benignitate abutentes, attributæque alimenta negligentes, quasi per injuriam benefactoris memoriam ingrati animi vitio delere, taliæque sibi elargita Officia in alios transferre veritos non fuisse. Nonnullos etiam diversarum nostræ & Sanctæ Romanæ Ecclesiæ temporali ditioni subjezarum Provinciarum, Civitatum & locorum Legatos, Vicelegatos, Gubernatores, Magistratus, & Romanæ Curie Officialium Collegia, hujusmodi inferiora Officia, sive eorum jura, & emolumenta mediante pretio vel responsione concedere quandoque præsumpsisse.

Irritatio alienationum de quibus in rubrica.

§. 2. Undè nos detestabiles hujusmodi abusus, ne, latius serpent, prohibendos, justissimæque & severissimæ sanctione coercendos, & ex Romana Curia, Statutisque temporali Ecclesiastico prorsus, eliminandos esse censentes, habita super his cum venerabilibus fratribus nostris S. R. E. Cardinalibus matura deliberatione, de eorumdem fratrum consilio & assensu, ex certa nostra scientia, deque Apostolicæ potestatis plenitudine, hac nostra perpetuò valitura constitutione rescindimus & irritamus, quinimò maledicimus & execramur omnes & quascumque venditiones, distractiones, pignorationes, hypothecas, necnon deputationes & concessiones ex titulo oneroso ab omnibus super nominatis quomodolibet factas, quorumcumque ab ipso initio fidei primæva erectione, ex indulto Apostolico non alienabilium jurium & emolumentorum quibuscumque Officiis coherentium, etiam majoribus, nempe Majoris Pœnitentiarii, Vicecancellarii, Camerarii, Summatoris literarum Apostolicarum, Causarum Curie Cameræ Apostolicæ Generalis Auditoris, nostri & pro tempore existentis Rom. Pont. in Urbe Vicarii, & ejusdem Urbis Gubernatoris, ac Senatoris, aut aliorum quorumcumque, sub sigilli Secretariatus, Vicariatus,

exercitii, deputationis, custodiæ aut alio quovis nomine & vocabulo comprehensorum, etiam sub prætextu compensationis aut remunerationis obsequiorum per dictos Officiales majores Sedi Apost. impensorum aut expensarum, vel damnorum per eosdem ex quavis causa passorum, vel sub quovis necessitatis & indigentia quæsito colore, in favorem quarumvis personarum, ut præfertur, factas, ac omnium etiam Officiorum, administrationum & jurium, quæ vel à prædecessoribus nostris aliquibus personis seu familiis gratiosè concessa, vel à prædictis Legatis, Vicelegatis, Gubernatoribus, Magistratibus, Officialibus, aut Collegiis, pretio seu gratia ut præfertur, concessa fuerunt, etiam contractu ultro citroque obligatorio, publicoque instrumento ipsorum concedentium, & successorum suorum nominibus solemniter inito & stipulato, necnon prætenso juramento aut quacumque confirmatione Apostolica postea etiam iteratis aut multiplicatis vicibus subsecuto roboratas, quarum omnium & singularum ac instrumentorum & confirmationum hujusmodi tenores præsentibus haberi volumus pro plenè & sufficienter expressis.

§. 3. Declarantes nemini liceisse, nec licere hujusmodi conventiones, contractus & pacta, ultra facultatum ipsis concessarum limites in detrimentum Sedis & Cameræ Apostolicæ, suorumque in Officiis per eos obtentis successorum, super præmissis inire & celebrare. Ideoque tam ipsos contractus, conventiones, pacta & quæcumque instrumenta inita & celebrata, nulla, invalida, ac viribus omnino vacua existere, quàm etiam juramenta super contractibus hujusmodi præstita ex hoc ipso illicita, & nequaquam servanda esse, ac super illis editas à prædecessoribus nostris confirmationes, quibuscumque præservativis, restitutivis, mentis attestativis, derogatoriis derogatoriis, aut aliis fortioribus, insolitis atque efficacissimis clausulis, irritantibusque & aliis decretis munitas, tamquam in fraudem decretorum & canonicarum sanctionum per subreptionem vel obreptionem seu ut dicitur per præoccupationem extortas verius, quàm obtentas, ac pariter nullas & irritas esse & censeri. Cum nequaquam credendum sit, quempiam ex eisdem prædecessoribus nostris voluisse confirmare quod non licet, nec verisimile sit (prout aliàs à quibusdam in similibus gratiarum confirmationibus expressum, ac narratum fuisse accepimus) pro solvenda vel restituenda dictis Officialibus alienantibus exigua pecuniarium summa, pro servitiis Sedi Apostolicæ præstitis, aut sumptibus ejusdem Sedis causa susceptis erogata, ipsius Cameræ, Sediisque Apostolicæ Ararium ad eo umquam exhaustum fuisse, aut iis angustis laborasse, ut necesse fuerit ad hujusmodi alienationes, earumque confirmationes tam perniciosas devenire. Cumque ex hoc ipso satis appareat, ipsos prædecessores subdola & fallaci impetrantium calliditate circumventos fuisse, non autem verè id approbasse, quòd ut diximus, non ipsius Cameræ, sed eorumdem alienantium lucro cessit, qui præsertim eodem tempore se planè ingratos & Apostolicæ Sedis beneficiis prorsus indignos demonstrarunt. Si enim Dominus ejiciendum censuit in tenebras exteriores servum malum, pigrum & inutilem, quia traditum sibi talentum fodiens in terram abscondit, ac superlucari omisit, sed tamen quod accepit, integrum sine ulla diminutione servavit & reddidit, quanto gravius supplicio eum affecisset, qui illud ipsum defraudare, defraudatimque Apostolicæ confirmatione tegumento celare, fraudemque mendicato ab ea approbationis prætextu pertinaciter tueri ausus esset? Præterea, si Ananiam de pretio proprii agri fraudata parte mentitur, illic in fraudis penam, ad Apostolorum pedes procidentem expirasse legimus, eos qui sacræ Romanæ Ecclesiæ jura integra in suam utilitatem convertere, nedum de suis aliquid retinere student iis & gravioribus poenis afficiendos esse non censuimus?

Et omnium instrumentorum delusoriorum quæcumque cautela munitur.

Possessio cui-
cumque sta-
tim aufera-
tur.

§. 4. Ac propterea illos, qui prædicta jura, regalia, administrationes atque emolumenta alienata aut quomodolibet gravata detinent, uti intrusos & detentores ab illis, eorumque exercitio, præsentia etiam immemorabili possessione seu quasi per superiores Officiales à quibus dependent, vel alios ad quos spectat, propria auctoritate, manu regia, de facto, sine aliqua monitione, citatione, causæ cognitione, Judicis decreto, declaratione aut ministerio, & absque ulla pecuniarum aut pretii vel pignoris restitutione, & sine spoliis vel attentatorum vitio ejici, expelli, amoveri & privari, & ad tradendas & consignandas quascumque scripturas ad hujusmodi Officia spectantes, quas penes se habent, necnon ad restitutionem fructuum dictorum Officiorum à die obitus earum personarum, quæ illa, ut præfertur vel alias, eis vendiderunt aut concesserunt, decursum, & ab iis forsan perceptorum, aut penes quoscumque existentium cogi & compelli, & alio in eorum locum, gratis tamen nec alias, subrogari liberè & licitè posse, ac omnino debere, eoque tantum actionem repetendi pretii aut pignoris, vel delendæ & extinguendæ obligationis contra eorum Personas cum quibus ipsi ab initio contraxerint, eorumve hæredes & bona, si quæ extente, habere, ipsosque, qui pretia vel pecunias ipsas sic indebitè receperint, eorumve hæredes ad restitutionem teneri, atque ad id juris & facti remedium opportunis cogi & compelli posse. Officia verò & administrationes ultimo dicta gratuita ut dictum est, certis personis, eorumve familiis concessa, & deinde ab eis de facto alienata, eo ipso Cameræ Apostolicæ applicata, & ad eam devoluta esse & censeri nec solum emptores, verum etiam venditores omni jure sibi in eis vel ad ea quomodolibet competenti cecidisse.

Sic & non
aliter judice-
tur.

§. 5. Sicque per quoscumque Judices & Commissarios etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, Cameræ Apostolicæ Clericos, Præsidentes, ac S. R. E. Cardinales in quibuscumque causis & instantiis motis & movendis, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate, judicari & definiri debere, si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter attentatum forsan est hæcenus, in futurum attentari contigerit, irritum & inane decernimus & declaramus.

Prohibitio
de cætero il-
la alienandi.

§. 6. In posterum verò, ne quis & superius nominatis, aut quacumque etiam Episcopali, Archiepiscopali, Patriarchali vel alia majori etiam Cardinalatus dignitate præfulgens, tale crimen attentare, aut quicquam ex præmissis vendere, alienare, pignoriare, obligare aut hypothecare, vel sub repositionis aut mercedis promissionis receptione ad dictorum officiorum exercitia quæpiam deputare audeat seu præsumat, sub interminatione divini iudicii, ac maledictionis æternæ districtius interdiciamus & prohibemus.

Officia in-
gra Sedi &
Cam. Apost.
conferen-
tur.

§. 7. Volentes, quòd omnino ipsa Officia, prout cuicque ab initio per Sedem Apostolicam concessa sunt, ita etiam integra & intacta, cum omnibus suis juribus & emolumentis, pertinentiis, annexis & connexis retineantur, ac Sedi & Cameræ Apostolicæ perpetuò conferantur.

Transgresso-
res multis
penis ligam-
tur.

§. 8. Si quis autem extiterit præsentis nostræ constitutionis in aliquo violator, non solum prædictas vendiciones, alienationes, hypothecas, pignorationes, concessiones, assignationes, vel deputaciones, aliàsque similes vel dissimiles conventiones posthac de cætero faciendas, ac quicquid illarum prætextu secutum fuerit, etiam Apostolica vel alia quavis auctoritate roboratum, pariter ex nunc prout ex tunc, & è contra annullamus, rescindimus & irritamus, declarationesque & decreta, ac facultates, & alia quæcumque superius expressa, ad illas in omnibus & per omnia exten-
dimus & ampliamus, verum etiam eos, qui fue-
rint nostræ hujus Prohibitionis de facto transgresso-

res, ipso jure omnibus & quibuscumque per eos obtentis seu obtinendis Ecclesiasticis officiis, beneficiis, muneribus, gradibus, honoribus, dignitatibus, attento quòd illis sese tanto facinore perpetrato indignos reddiderunt, privamus, necnon privatos, ac ad ea & alia postea obtinenda perpetuò inhabiles & incapaces, infames, ignominiosos, ac perpetuè infamiz & ignominiz labe & macula eis injusta notatos atque intestabiles declaramus, ita ut illis portæ numquam pateant dignitatum, quinimò in sempiternæ maledictionis & anathematis poenam in æternum condemnati; & traditi censeantur.

§. 9. Non obstantibus præmissis, ac de jure quæ-
sito non tollendo, Cancellariæ Apostolicæ regula,
& quibuscumque statutis, aut diuturnis & pacificis pos-
sessionibus, seu quasi, quæ usurpationes censeri de-
bent, necnon pro illorum confirmatione, etiam Motu
proprio, & ex certa scientia ac titulo oneroso
præmissis, vel aliis gravioribus & urgentioribus
de causis sub quibuscumque tenoribus & formis, &
cum prædictis vel aliis efficacioribus, validioribus,
ac prorsus inexcogitatis clausulis, & verborum con-
ceptionibus per quoscumque nostros prædecessores,
aut nosmetipsos & Sedem prædictam concessis
gratiis aut literis Apostolicis, etiam sæpius appro-
batis & innovatis. Quibus omnibus, & singulis,
etiã in eis caveatur expresse, quòd illis nonnisi
corum tenoribus ad verbum inseritis, ac modis &
formis inibi traditis ad unguem servatis, aut non
nisi certarum, quarum interest personarum expresse
ad id accedente consensu, vel eis saltem prius satis-
facto, derogari ullo modo possit, aliter facta, de-
rogationes nullius sint roboris vel momenti, tenores
hujusmodi perinde ac si forma requisita plenè
adimpleta & observata, ad verbum inserti forent,
præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis
alias in suo robore permanens, specialiter & ex-
presse derogamus, cæterisque contrariis quibuscumque.

Contraria
omnia rem-
ventur.

§. 10. Nostræ tamen mentis atque intentionis
non est, per præsentem in aliquo immutare statum
Officiorum, quæ majoribus Officiis annexa ab ip-
so initio ex indulto Apostolico, pretio vel recogni-
tione aliqua interveniente conceduntur, & vacabi-
lia sunt, quorum cum pro tempore vacant, collatio
sive titulo oneroso concessio, seu quavis alia
dispositio ad ipsos Officiales hæcenus pertinere
consequitur, in quibus, quo minis ipsi Officiales, ut
prius illa concedere, pretiumque inde percipere,
seu alias de eis disponere valeant, nullum in poste-
rùm præjudicium generari volumus.

Statu anti-
quus Offi-
corum pro-
ipsis
Officialibus
majoribus
præservatur.

§. 11. Ut autem præsentem literæ omnibus in-
notescant, mandamus illas ad valvas Basilicæ La-
teranen. & Principis Apost. de Urbe, necnon Cancell.
Apostolicæ de more affigi & publicari, eorumque
exemplis etiam impressis, Notarii publici manu
subscriptis, eandem prorsus fidem adhiberi
quæ ipsis originalibus adhiberetur, exhibitis vel
ostensis.

Iussu hanc
Bullam pub-
licandi.

§. 12. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc
paginam nostræ rescissionis, irritationis, maledi-
ctionis, executionis, declarationis, decreti, man-
dati, concessionis, interdicti, prohibitionis, vo-
luntatum, annulationis, extensionis, & privatio-
nis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si
quis autem, &c.

Sanctio po-
nalis.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnati-
onis Dominicæ 1589. 18. Kal. Februarii, Pont.
nostri Anno 5.

Dat. P. An. 5.
die 15. Jan.

Ego Sixtus Catholicæ Ecclesiæ Episcopus
subscripti.

Papæ subscr.

De ventre matris meæ tu es Deus protector meus.
Ego Jo. Episcopus Ostien. Card. S. Georgii.
Ego Alph. Episcopus Portuen. Card. Gelvaldus.
Ego Innicus Episcopus Tuscul. Card. de Arag.

Cardd. sub-
scriptiones.

Ego Mar. Ant. Episc. Prænest. Card. Columna.
 Ego Ptolomæus Episc. Sabinen. Card. Comen.
 Ego Gabriel Episc. Alban. Card. Palæottus.
 Ego Marcus Sircius, tit. S. Mariæ Transtiberim,
 Card. de Altaemps.
 Ego F. Michaël Bonellus, tit. S. Laurentii in Luci-
 na, Card. Alexandrinus.
 Ego Lud. tit. S. Anastasiæ, Card. Madrutius.
 Ego Nicolaus, tit. S. Praxedis, Card. Senon.
 Ego Julius Antonius, tit. S. Bartholomæi in Insu-
 la, Card. Sanctæ Severinæ.
 Ego Hieronymus, tit. S. Sufannæ, Card. Rust.
 Ego Jo. Hieronymus, tit. S. Jo. antè portam Lati-
 nam, Card. Albanus.
 Ego Hieronymus tit. S. Priscæ, Card. Simoncellus.
 Ego Petrus, tit. S. Hier. Illiric. Card. Deza.
 Ego Ant. tit. S. Jo. & Paul. Card. Carafa.
 Ego Jo. Ant. Card. Sanctorum quatuor.
 Ego Jo. Bapt. Card. Sancti Marcelli.
 Ego Julius, tit. S. Eusebii, Card. Cananus.
 Ego Nicolaus, tit. S. Cæcilie, Card. Cremon.
 Ego Ant. Maria, tit. S. Mariæ de Pace, Card. Sal-
 viatus.
 Ego Vincentius, tit. S. Clementis, Card. Montis
 Regalis.
 Ego Philippus, tit. S. Sabinæ, Card. Spinula.
 Ego Scipio, tit. S. Salvatoris in Lauro, Card. Lan-
 cellottus.
 Ego Vincentius, tit. Alexii, Card. Gonzaga.
 Ego Jo. Baptista, tit. S. Mariæ in Araceli, Card. Ca-
 strucci, Sig. Justitiæ Præfectus.
 Ego Federicus, tit. S. Stephani in Monte Cælio,
 Card. Cornelius.
 Ego Dominicus, tit. S. Laur. in Pane perna, Card.
 Pinellus, S. M. Majoris Archipresbyter.
 Ego Hippolytus, tit. S. Pancratii, Card. Aldobran-
 dinus, Major Pœnitentiarius.
 Ego Hieronymus, tit. S. Petri ad Vincula, Card. de
 Ruvere.
 Ego F. Hier. tit. S. Mariæ super Minervam, Card.
 Asculanus.
 Ego F. Constantius, tit. S. Petri in Monte Aureo,
 Card. Sarnanus.
 Ego Guilelmus, tit. S. Martini in Montibus, Card.
 Alanus.
 Ego Scipio, tit. S. Mariæ de Populo, Card. Gon-
 zaga.
 Ego Antonius, tit. S. Vitalis, Card. Saulius.
 Ego Evangelista, tit. S. Matthæi in Merulan. Card.
 Cusentin. Archipresbyter S. Petri.
 Ego Joannes, tit. S. Mariæ Transpontinæ, Card. de
 Mendoza.
 Ego Marianus Perbenedictus SS. Petri, & Marcelli-
 ni, Card. de Camerino.
 Ego Franciscus, S. Mariæ in Via Lata, Diac. Card.
 Sfortia.
 Ego Alexander, S. Laurentii in Damaso Diac. Card.
 Montaltus, Vicecancellarius.
 Ego Hier. S. Eust. Diac. Card. Matthæjus.
 Ego Benedictus, S. Mariæ in Cosmedin Diac. Card.
 Justinianus.
 Ego Ascanius, S. Nicolai in Carcere, Diac. Card.
 Columna.
 Ego Federicus, Sanctæ Agathæ, Diac. Card. Bor-
 romæus.
 Ego Aug. S. Adriani, Diac. Card. Cufanus.
 Ego Franciscus Maria, S. Mariæ in Dominica, Diac.
 Card. à Monte.
 Ego Guido, SS. Cosmæ & Damiani, Diac. Card.
 Pepulus.

Publicatio.

Anno à nativitate Domini 1590. Indiç. 3. die verò
 28. mensis Jan. Pontificatus SS. in Christo Patris &
 D. N. D. Sixti divina Providentia Papa V. anno 5.
 Retroscripta litteræ Apostolicæ, affixæ, & publicatæ fue-
 runt in valvis Basilicæ Lateranensis, ac Principis Apo-
 stolorum de Urbe, necnon Cancellariæ Apostolicæ, per
 me Franciscum Baron ejusdem SS. D. N. Papa Curf.
 Pompens Guerra Mag. Curf.

Sequitur declaratio & confirmatio Officiorum Vicecan-
 cellarij Sanctæ Romanæ Ecclesiæ.

S I X T U S V. P A P A .

Motu proprio, &c.

§. 1.

Cum Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Vicecancellarius
 pro tempore existens, Regentis Cancellariæ
 Apostolicæ, ac lex majoris cum assignatione emolumentorum Officii minoris gratiæ, & quindecim
 minoris Præfidentie Abbreviatorum, & viginti
 quinque Solicitatorum literarum Apostolicarum,
 ac duodecim Notariorum Auditorum causarum
 Palatii Apostolici, ac tria Cubiculariorum, & sep-
 tem Scutiferorum de numero Participantium, ac
 viginti sex S. Petri, & tredecim S. Pauli, necnon
 duo de Lilio, & viginti Piorum Militum, ac Custo-
 dis Notariatusque & Ostiarii ejusdem Cancellariæ,
 atque unum Notarium contradictorum, & aliud
 de Confectis nuncupata, ac nonnulla alia ipsius
 Vicecancellarii seu Cancellariæ Officia, tam per
 obitum, resignationem & privationem, quam for-
 sã aliàs pro tempore vacantia, personis eidem
 Vicecancellario beneficis ad vitam recipientium
 conferre & assignare, neque illis ad ejusdem Vice-
 cancellarii libitum, simili modo quo Romanus
 Pontifex de aliis Romanæ Curie Officiis dispo-
 nere solet, dispo- nere consueverit, & in possessione seu
 quasi disponendi de eisdem Officiis, ut præfertur
 expressione Rom. Pontificum, vel forsã concessio-
 ne five indulto Apostolico, per plures annos
 fuerit, prout est etiam de præsent.

§. 2. Nos ad quorum notitiam devenit, Vicecan-
 cellarium pro tempore existentem consuevisse, &
 solum fuisse de dictis Officiis etiam pacto pretio
 ad libitum suum ut præfertur dispo- nere, dignitati
 prædicti Officii Vicecancellariatus ad illud pro
 tempore obtinentis, necnon ab eo officia prædicta
 recipientium quieti, & securitati in præmissis pro-
 videre volentes, Motu simili, non ad dilecti filii
 nostri Alexandri S. Laurentii in Damaso Diaconi
 Cardinalis Montalti ejusdem S. R. E. Vicecancellarii,
 ac etiam literarum Apostolicarum Summatore-
 ris, nostri secundum carnem ex Sorore pronepo-
 tis, vel alterius pro eo nobis desuper oblata peti-
 tionis instantiam, sed ex mera liberalitate, certã
 scientia nostris, ac de Apostolicæ potestatis
 plenitudine, concessionem, indulta, consuetudine,
 permissionem & possessionem hujusmodi
 (etiam de applicatione dictorum Officiorum aut
 aliquorum ipsorum eidem Vicecancellariatus Offi-
 cio, aut facultate, five concessione vel indulto;
 illa aut aliqua ipsorum, vendendi aut ad libitum
 suum de eis disponendi non apparet, ac etiam
 quandoque conflet, præfatum Vicecancellarium
 de prædictis Officiis aut eorum aliquo, semel tan-
 tum, aut bis vel pluries disposuisse, & in suppres-
 sione eorum vel aliquorum ex eis, novaque erec-
 tione, nullam eidem Vicecancellario de illis dis-
 ponendi facultatem fuisse concessam Apostolica
 auctoritate confirmamus & approbamus, ac præ-
 sentis scripti patrocinio communimus, supplettes
 omnes & singulos, tam juris quam facti, & alia-
 rum solemnitarum omniarum defectus, si qui in-
 tervenerint in eisdem.

§. 3. Et nihilominus potiori pro cautela, ne quic-
 quam præmissorum in dubium aliquo tẽpore revo-
 cari contingat, Motu, scientia & potestatis plenitu-
 dine similibus, statuimus & ordinamus, eidemque
 Alexandro Cardinali, & pro tempore existenti Vice-
 cancellario cõcedimus & indulgemus, ut quoties-
 cumque officia præfata, quorum omnium quantita-
 tes, qualitates & jura, institutiones, & erectiones,
 cum quibusvis qualitatibus, decretis, conditionibus,
 & formis, præsentibus haberi volumus pro expressis,
 per cessum vel decessum, aut promotionem, priva-
 tionem seu quamvis aliam dimissionem eorum qui
 Officia præfata pro tẽpore obtinebant vacare conti-
 gerit, quæ omnia & singula officia præfatis vacatio-

Edita A. D. 1590.

Vicecancellarius habet, & ad sui commodum concedit, Officia hinc designata.

Quoad Officiū Abbreviatorum extra clau-
 si IV. assignatio in ejus confit. 16. fol. 416. §. 25. Tom. 1.

Hic Pontifex hujusmodi Vicecancellarii facultatem comprobabat.

Ampliatque & extendit.

nibus

nibus quemadmodum Officia nostra subiecta sunt, etiam subiungere volumus, decernimus & declaramus, illa omnia ad liberam ipsius Alexandri Cardinalis, & pro tempore existentis Vicecancellarii voluntatem & dispositionem, etiam pacto pretio, pertinere. Possitque idem Alexander Cardinalis & pro tempore existens Vicecancellarius aut per eum ad hoc specialiter deputatus, illorum omnium & singulorum, capta solita impositione, resignationes recipere & admittere, ac per suas literas suo sigillo pendente munitas de illis dum pro tempore vacaverint, etiam illa eorumque emolumenta ab initio five in eorum prima erectione ex indulto Apostolico alienabilia non sint, & quodcumque appareat de huiusmodi officiis aut aliquo eorum, Roman. Pont. disposuisse, per se ipsum aut eius Locumtenentem, aut ad hoc speciale mandatum habentem, quibusvis personis, cum quorumcumque constitutionum & literarum Apostolicarum in contrarium facientium derogatione, in omnibus & per omnia ad instar Rom. Pontificis providere, seu illa vendere & alienare absque penarum & censurarum etiam Ecclesiasticarum incurfu, & exigentibus personarum meritis & sufficientia, super earumdem personarum quibus ipse providerit de huiusmodi officiis requisitarum qualitatium defectu, cum sibi placuerit dispensare, & easdem personas ad ipsa Officia, constitutionibus prefatis, quarum tenorem non obstant, habilitare, & illi quibus de eisdem Officiis dictus Alexander Cardinalis & pro tempore existens Vicecancellarius seu deputandus, suis literis duxerit providendum, ad Officia ipsa, absque aliqua contradictione, aut aliarum literarum expeditione recipiantur & admittantur, ita quod littere prefati Alexandri Cardinalis seu deputati, vel pro tempore existentis Vicecancellarii valeant, & perpetue firmitatis robur obtineant, & his quibus concessa sunt plenissime suffragentur, ac si super predictis Officiis, littere Apostolicæ concessæ & expeditæ fuissent.

Clauſulas
preſervati-
vas apponit.

§. 4. Decernentes dictum Alexandrum, & Cardinalem pro tempore existentem Vicecancellarium, super dispositione dictorum Officiorum, ut præfertur facienda, proviſoque ab eo de illis per nos aut successores nostros Romanos Pontifices, eorumque Datarios, & eisdem Romanæ Ecclesiæ Camerarium, vel Cameræ Apostolicæ Præsidentes, Clericos, alioſque quoscumque quavis auctoritate & potestate fungentes, nullo umquam tempore quavis occasione vel causa etiam iusta vel iniusta impediri, inquietari, vel molestari non posse neque debere. Minusque præsentem gratiam, & si videbitur desuper faciendas literas quovis prætextu, & ex quocumque capite, de subreptionis, vel obreptionis vicio, aut intentionis nostræ vel alio quovis defectu notari, impugnari, invalidari, in jus vel controversiam revocari, ad terminos juris reduci, aut adversus illas, quodcumque juris, facti vel gratiæ remedium impetrari posse, neque sub quibusvis similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, aut aliis contrariis dispositionibus per nos vel successores nostros Roman. Pont. aut dictam Sedem ex quibusvis causis, etiam motu, scientia & potestatis plenitudine similibus, etiam consistorialiter pro tempore factis & faciendis, comprehendi, & comprehensas censi, sed semper ab illis exceptas, & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum & validum statum restitutas, repositas & plenarie reintegratas, ac de novo etiam sub data posteriori, per dictum Alexandrum Cardinalem & pro tempore existentem Vicecancellarium quodcumque eligenda, concessas, ac validas & efficaces adversus quascumque impugnationes & revocationes existere. Ipsiusque Alexandrum Cardinalem & pro tempore existentem Vicecancellarium, ad superius expressa & prænarata, in loco vel parte verificandum seu probandum, aut præsentem gratiam, & literas

desuper faciendas quodcumque purificandum minime teneri, sed sola præsentium narrativa, absque alia probatione seu verificatione aut purificatione sufficere, eique in iudicio & extrâ ubique stari, sed nec aliquam probationem quiscumque naturæ & speciei illa sit vel fuerit in Camerarium adduci vel admitti. Quinimò etiam si superius expressa & narrata huiusmodi minus vera sint, & contrarium quodcumque probari contingat, nihilominus præsentis & desuper faciendas literas suum plenarium effectum consequi, prædictumque Alexandrum Cardinalem & pro tempore existentem Vicecancellarium, illis & eorum effectui potiri & gaudere.

§. 5. Sicque in præmissis omnibus & singulis per quoscumque Iudices, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac eisdem Sanctæ Ecclesiæ Cardinales, sublata &c. iudicari & definiti debere, irritumque & inane, quicquid secus in contrarium præmissorum, absque dicti Alexandri Cardinalis & pro tempore existentis Vicecancellarii, etiam in Consistorio de fratrum consilio contigerit attentari.

§. 9. Non obstantibus de iure quæſito non tollendo, & gratis ad instar non concedendis, aliisque Cancellariæ Apostolicæ regulis editis, etiam in crastinam assumptionis quiscumque Rom. Pontificis ad summi Apostolatus apicem edendis. Necnon Symmachi, Pauli II. Innocentii VIII. Pauli IV. & Pii V. ac quorumcumque aliorum Romanorum Pontificum prædecessorum nostrorum de rebus Ecclesiæ seu Cameræ & Sedis Apost. non alienandis, ac malè alienatis recuperandis, necnon Pii etiam IV. de similibus gratis in Camera infra certum tempus à die illarum concessionis computandum, registrandis & insinuandis, ita quod ad præsentem gratiam registrandum & insinuandum idem Alexander Cardinalis, & pro tempore existens Vicecancellarius, nullo umquam tempore teneatur, nec propterea illa nulla sit, aliisque Apostolicis, ac in generalibus Conciliis specialiter vel generaliter contra præmissa vel eorum aliqua quomodolibet, etiam per nos consistorialiter, & de fratrum consilio, & præsertim nostra sub Dat. videlicet 18. Kalend. Februarii, Pont. nostri Anno Quinto disponente ne Officialia Officia, eorumque emolumenta eorum Officiis annexa alienare possint, editis & edendis, aliisque constitutionibus & ordinationibus, ac Officium huiusmodi erection. & fundacion. ac Cameræ præfatorum etiam iuramento &c. roboratis, statutis, & consuetudinibus, usibus, naturis, stabilitis & etiam novis reservationibus, eorumque innovationibus, privilegiis quoque, indultis & literis Apostolicis per præfatos & quorumcumque alios Rom. Pontifices prædecessores, ac nos & dictam Sedem, etiam motu, scientia & potestatis plenitudine similibus, ac consistorialiter & per viam generalis legis & statuti perpetui, ac ex quantumcumque gravibus & onerosis causis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, etiam vim contrarius inducentibus, ac etiam irritantibus, & aliis decretis in genere vel in specie, ac aliis quomodolibet etiam iteratis vicibus concessis, approbatis & innovatis, & quocumque tempore etiam longissimo observatis, etiam præmissa fieri specialiter & expresse prohibentibus. Quibus omnibus etiam si de illis &c. eorum tenores &c. latissime hac vice dumtaxat specialiter & expresse, motu, scientia & potestatis plenitudine paribus derogamus, eaque omnia in quantum præmissis obesse, aut illorum executionem & effectum retardare possent, omnino tollimus & abrogamus, ac pro sublatis & abrogatis habere volumus, cæterisque contrariis quibuscumque.

§. 7. Volumus autem, quod præsentis cedulæ sola signatura sufficiat, & ubique fidem faciat etiam absque data & registratura ac publicatione.

Clauſula ſub-
ſc. ad. ad-
dit.

Clauſulas de-
rogatorias
annectit.
Iſte conſi-
ſunt à me in-
dicatæ ſuprà
in Pii V.
conſ. 35.
Admonet.
fol. 236.

Hæc Bulla
quæ præce-
dit.

Solamque
ſignaturam
ſufficere de-
cernit.

Quod-

Quodque si videbitur, huiusmodi cedula in quinquaginta annis & ultra ex quo Militia seu Ordo Militaris huiusmodi defecit, unus Administrator constitui, & per eundem Administratorem illud seu illa gubernari, ac per ipsum de eiusdem Domus fructibus, redditibus & proventibus disponi consuevit, fructibus, redditibus & proventibus huiusmodi dicta auctoritate sub certis modo & forma tunc expressis constituit & assignavit, volens, ut quodcumque & quotiescumque dictus Carolus Archidux vel eius successores aliqua alia bona etiam Monasterii seu Domus huiusmodi quorum annui redditus de dictis oneribus ad parem valorem ascenderent, ipsi Collegio assignavissent, pensio prefata cassata & nulla censeretur eo ipso, assignatio verò cum applicatione eadem auctoritate facta obtineret, prout in eisdem predecessoris literis desuper confectis plenius continetur.

Subscr. Papæ.

Placet & ita Motu proprio mandamus.

Publ. P. A. 5.
die 3. April.

Lectæ & publicatae sunt suprad. Const. Romæ in Canc. Apost. Anno Incarnat. Dominice 1590. die verò 3. mensis Aprilis Pont. S. D. N. D. Sixti divina providentia Papa V. Anno 5.

CVII.

Institutio Universitatis Studii generalis, diversarum scientiarum & bonarum artium, in Collegio Presbyterorum Societatis Jesu, à Carolo Austria Archiduce in Oppido Græcen. Salzbουργensis Diocesis fundato, & à Gregorio XIII. erecto, cum reddituum assignatione & privilegiorum elargitione.

Edita A. D.
1590.

SIXTUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Proemium.

Cœlestis Patris providentia ad summi Apostolatus apicem evecti, tamquam de excelso monte ad ima agri irrigui militantis Ecclesiæ nostrum dirigentes intuitum, ac considerantes quod per literarum studia, ad bene beatæque vivendum via præbetur, veritas agnoscitur, iustitia colitur, cæteræque virtutes illustrantur, ac humanæ prosperitatis conditio augeatur, fides Catholica, & cultus divinus præstentur ad ea per quæ studia huiusmodi ubilibet, maxime in regionibus ubi major necessitas urget, propagentur & humiles personæ ad excelsum felicitatis fastigium pervenire cupientes in hoc pro eorum proposito utiliùs confoveri, ac laborum suorum honores & præmia consequi valeant, præferunt dum Principum Christianorum vota id expescunt, libenter intendimus, & in his partes Apostolicæ providentiæ impendimus, prout in Domino conspicimus salubriter expedire.

Carolus Archidux Austria ad fidem Catholicam retinendam & augendam in Oppido Græcen. Salzbουργensis Diocesis Collegium Presbyterorum Societatis Jesu fundavit, & Greg. XIII. illud erexit & instituit.

§. 1. Sanè exhibita nobis nuper parte dilecti filii nobilis viri Caroli Archiducis Austria, qui etiam Styriæ, Carinthiæ & Carniolæ Dux existit, petitio continebat, quod aliàs scilicet. rec. Gregorius Papa XIII. prædecessor noster, in Oppido Græcen. Salzbουργen. Dioc. dicti Caroli Archiducis dominio in temporalibus subiecto, Collegium Presbyterorum Societatis JESU propriis sumptibus ipse Carolus Archiducis fundatum & extructum, auctoritate Apostolica perpetuò erexit & instituit, ac inter alia eidem Collegio pro illius Magistrorum, Scholarum & aliorum d. Societatis Religiosorum sustentatione, pensionem annuam duorum millium & ducentorum Florenorum Remensium super Monasterii, seu Domus de Mildate nuncupati ejusdem Dioc. quod seu quæ olim Cisterciens. seu alterius Ordinis, postea verò Ordine ipso ac statu & essentia regularibus, necnon Conventualitate, ac forsan nomine Monasterii in eo suppressis & extinctis, Militiæ seu Ordinis Militaris S. Gregorii etiam tunc forsan extinctæ seu extincti, licet aliquot Sacerdotes in Militia seu Ordine Militari huiusmodi adhuc tunc remanerent, & quod seu quæ de iure patronatus ejusdem Caroli ac pro tempore existentis Austria Archiducis, & seu prædictæ Carinthiæ Ducis ex fundatione, vel dotatione aut ex privilegio Apostolico, cui non est hæc tunc in aliquo derogatum esse dignoscitur, ac in quo seu quæ à qua-

draginta annis & ultra ex quo Militia seu Ordo Militaris huiusmodi defecit, unus Administrator constitui, & per eundem Administratorem illud seu illa gubernari, ac per ipsum de eiusdem Domus fructibus, redditibus & proventibus disponi consuevit, fructibus, redditibus & proventibus huiusmodi dicta auctoritate sub certis modo & forma tunc expressis constituit & assignavit, volens, ut quodcumque & quotiescumque dictus Carolus Archidux vel eius successores aliqua alia bona etiam Monasterii seu Domus huiusmodi quorum annui redditus de dictis oneribus ad parem valorem ascenderent, ipsi Collegio assignavissent, pensio prefata cassata & nulla censeretur eo ipso, assignatio verò cum applicatione eadem auctoritate facta obtineret, prout in eisdem predecessoris literis desuper confectis plenius continetur.

§. 2. Cum autem prædictus Carolus Archidux, avitam à majoribus suis acceptam Catholicam religionem sanctam, rectam & inviolatam in locis sibi subiectis ubi viget conservare, sicuti verò collapsa est, hac potissimum ratione restituere suisque subiectos quamplurimos ad literarum studia, navandamque bonis artibus operam excitare cupiens, atque utraque in re prædictæ Societatis operam, & industriam, laborisque eadem causa suis eptos valde utiles & fructuosos in dies magis expertus, & ampliores manipuli, & diversarum Nationum aut linguarum agris, quarum Provincia dictus Carolus Archidux possidet opitulante Deo colligi possint, Studii generalis Universitatem in d. Collegio potissimum auctoritate prædicta erigi, ejusque cura ac regimen prædictæ Societati committi & mandari desiderat, ipseque ad hunc effectum, etiam hortum ipsi Collegio contiguum pleno jure ad prædictum Carolum Archiducem spectantem, & certam etiam tunc expressam quantitatem Salis, ex Salinis ibidem ad eundem Carolum Archiducem pertinentibus per ejus Ministros eidem Collegio quotannis in certis terminis similiter tunc expressis porrigendam partem, etiam tunc designatam Mure Fluvii Oppidi Græcen. præfati, cum omnibus suis emolumentis, commodis & juribus, ut piscium copia eis non deeret, eidemque Collegio piè ac liberaliter in perpetuum concesserit, & amplioribus etiam immunitatibus, exemptionibus, libertatibus, privilegiis & gratis ipsum Collegium & Studium generale sic erigen, ornare & cumulari, ac ad sustinenda onera, impenasque pro ipsius Studii generalis conservatione & amplitudine Collegii præfati redditus annuos augendos esse necessariò existimet, ac quantum in eo est sedulo providere intendat. Propterea nobis humiliter supplicari fecit, quatenus subditorum suorum salutem & commodum consulentes, in præfato Oppido & Aedibus d. Collegii, Studii generalis Universitatem, in qua Societatis religiosi huiusmodi Theologiam, Philosophiam, ac ingenuas artes publice profiterentur, & juvenes quoscumque docerent, auctoritate prædicta perpetuò erigere & instituere, aliisque in præmissis opportunè providere de benigne Apost. dignaremur.

§. 3. Nos igitur qui dudum inter alia volumus & ordinavimus, quòd literæ reservationis vel assignationis cujusvis pensionis annuæ, super aliquo beneficii Apostolici fructibus expediri non possent, nisi de consensu illius qui d. pensionem perolvere tunc haberet, præfatum Carolum Archiducem à quibuscumque expunctionis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis censuris, sententiis & pœnis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes & absolutum fore censentes, huiusmodi suspensionibus inclinati, in Oppido prædicto & Aedibus dicti Collegii ubi nunc Scholæ sunt, seu forsan in ampliorem formam construentur, Uni-

Et modò idem Carolus huic Pontifici pro erectione Studii generalis in d. Collegio ad majorem ejus profectum instituit.

Illud erigit ab regimine d. Societatis Jesu.

versitatem Studii generalis, in qua Religiosi Societatis hujusmodi Theologiam, Philosophiam & ingenuas artes publice proutentur, ac juvenes quoscunque doceant, ad instar aliarum Universitatum Studiorum generalium tam in transalpinis Provinciis & Regnis, quam alias ubilibet erectorum, auctoritate Apostolica tenore presentium sine alicujus praedictio perpetuo erigimus & instituiamus, ipsamque Universitatem, ac Studium generale sic erectam & instructam, curae regimini & administrationi Rectoris Collegii hujusmodi pro tempore existentis, qui totius Universitatis Rector exultat, praedicta auctoritate etiam perpetuo supponimus, & submittimus.

Privilegia
que aliorum
Studiorum
generalium
conceduntur.

§. 4. Ac eidem Universitati illiusque Rectori, Magistris, Scholasticis, aliisque praefatis universis & singulis, ut omnibus & quibuscumque privilegiis, indulgentiis, libertatibus, immunitatibus, exemptionibus, favoribus, gratis, prerogativis, honoribus & praeminentiis, hujusmodi Universitatibus illarumque pro tempore existent. Rectoribus, Magistris, Doctoribus, Lectoribus, Praeceptoribus, Scholasticis, Procuratoribus, Bidellis, Nunciis, Officialibus, Ministris & aliis personis in genere vel in specie, tam praefata quam Imperiali, Regia, aut Ducali auctoritatibus, & alias quomodolibet pro tempore concessis, non solum ad eorum instar, & pariformiter & aequè principaliter in omnibus & per omnia, uti, potiri & gaudere. Insuper Rectori ejusdem Universitatis & Collegii pro tempore existent. ut illos quos in ipsa erecta Universitate, vel etiam alibi in quavis alia per debitum tempus studuisse, ac scientia & moribus idoneos esse repererint, in praefatis facultatibus artium & Theologiae ad Baccalaureatus etiam formati, Licentiaturs, Lauree, Doctoratusque & Magisterii gradus, servata forma Viennensis Concilii, & alias juxta Universitatum aliorum Studiorum generalium consuetudines, & erectae Universitatis statuta promovere, & ipsorum graduum solita insignia eis exhibere, utque ad dictos gradus sic per illum promoti postea publice & privatim, etiam in omnibus aliis Universitatibus Studiorum generalium facultates praefatas, interpretari & alios docere, & de eis disputare, gradui seu gradibus hujusmodi convenientes actus exercere ac in omnibus privilegiis, gratis, favoribus, prerogativis, & indulgentiis quibus alii in praedictis, seu aliis Universitatibus & alibi juxta illarum constitutiones & mores ad gradus praefatos promoti deur vel de consuetudine utuntur, potiuntur & gaudent, ac uti, potiri & gaudere poterunt in futurum, in omnibus & per omnia, perinde ac si gradus ipse in Universitatibus hujusmodi juxta illarum mores & consuetudines rite suscepissent, uti, potiri & gaudere.

Proposito
generali i.
Societatis d.
facultatem
laurea pro d.
in iusticiis
regimine eden-
di.

§. 5. Necnon moderno & pro tempore existentis dictae Societatis Proposito generali, ut per se vel d. Collegii & erectae Universitatis Rectorem aut alium seu alios pro salubri & felici directione dictae Universitatis erectae, ac Rectoris, Magistrorum, Procuratorum, Bidellorum, Nunciorum & aliorum Ministrorum & Officialium muneribus & functionibus modoque & forma docendi, & alias sua officia exercendi, ac Scholasticorum manutentione, quaecumque statuta & ordinationes licita & honesta, ac sacris Canonibus & Concilii Tridentini decretis non contraria edere & promulgare, eaque pro temporum, rerum & personarum qualitate mutare, corrigere & reformare, seu illa cassare & abrogare, ac alia de novo edere, & sub illorum observatione penas ejus arbitrio imponere.

Lectori-
que & Offi-
ciales omnes
eligendi.

§. 6. Dictaeque erectae Universitatis Doctores, Magistros, Lectores, Scholasticos, Procuratores, Bidellos aliosque Ministros & Officiales eligere & amovere, seu electiones factas confirmare licite valeant, auctoritate Apostolica tenore presentium hujusmodi etiam perpetuo concedimus & indulgemus.

§. 7. Demum bona & jura a praedicto Carolo Archiduce, ut praefatur, Collegio & illius Universitati per praesentes erectae praedictis concessa & donata, auctoritate & tenore praefatis similiter perpetuo applicatis, applicamus & appropiamus.

§. 8. Praterea in augmentum dotis Collegii & erectae Universitatis hujusmodi, utque d. Societatis Presbyteri, ac alii inibi pro tempore degentes commodius sustentari valeant, eis de alicujus subventionis auxilio providentes, ultra praedictam jam ut praefatur assignatam aliam pensionem annuam aliorum duorum millium florenorum etiam Remensium, ita ut utraque pensio hujusmodi in universum & insimul ad summam quatuor millium & ducentorum florenorum similibus ascendat, super Monasterii seu Domus hujusmodi fructibus, redditibus & proventibus, et si super illis aliae pensiones annuae aliis personis assignatae existant, ac omnes pensiones hujusmodi insimul eorundem fructuum & proventuum medietatem excedant ac omnes illos absorbeat, pro tempore existentis Rectori vel alteri Superiori Collegii, & erectae Universitatis hujusmodi vel ejus Procuratori ad hoc ab eo speciale mandatum habenti, pro tempore existent. Monasterii seu Domus hujusmodi Administratorem, & ejus successoris Monasterium seu Domus hujusmodi pro tempore quomodolibet obtinentes, ac eorundem fructuum, reddituum & proventuum fideiarios seu alios Monasterii seu Domus hujusmodi Officiales annis singulis in quatuor terminis singulo videlicet trimestri pro quarta parte pensionis quatuor millium & ducentorum florenorum hujusmodi prima solutione in principio mensis Januarii proximè praeteriti incipien. & sic deinceps pro quarta parte pensionis 4200. florenorum hujusmodi de trimestri in trimestri, in fine cujuslibet trimestris non obstante quacumque mutatione ipsorum fructuum, reddituum & proventuum, aut aliorum quoruncumque ad Monasterium seu Domus hujusmodi pertinent. quibuscumque temporibus vel causis contingente, quam propterea quocumque modo aut titulo fieri contigerit, & quatenus eorundem Collegii & erectae Universitatis fundationi, ac ejusdem Caroli Archiducis ordinationi, ac pensionis hujusmodi reservationibus, Constitutionibus & assignationibus, praedictis, subreptitiam, irritam & inanem nullumque profus roboris vel momenti esse decernimus integrè perolvendam auctoritate Apost. tenore presentium hujusmodi pariter perpetuo reservamus, constituimus & assignamus, decernentesque priorem pensionem à d. praedecessore, ut praefatur reservatam etiam, non obstante ejusdem praedecessoris decreto praefato per ipsum appposito, propter praemissa minimè cessare, neque priorem pensionem hujusmodi cassatam vel extinctam esse aut fore, sed alias juxta prioris reservationis formam & tenorem in dictis terminis perfolvi debere, & in suo robore permanere, perinde ac si decretum praedecessoris hujusmodi appositum ab initio non fuisset.

§. 9. Ac praesentes literas nullo tempore de subreptionis vel obreptionis vicio, aut intentionis nostrae vel alio quovis defectu notari seu impugnari posse, sicque in praemissis universis & singulis per quoscumque Judices ordinarios & delegatos quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S. R. E. Cardinales sublata ejus & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate, judicari & definiti debere; irritum quoque & inane si secus super his & quocumque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, necnon Administratorem praefatum, & Monasterii seu Domus hujusmodi pro tempore existentem ad integram solutionem pensionis quatuor millium & ducentorum florenorum hujusmodi praedictis Rectori & Superiori Collegii, & erectae Universitatis hujusmodi facien. juxta posterius

1585.
Bona per Ca-
rolum Colle-
giū donata
hic Pont.
perpetuū ei-
dem applica-
cat.

Annuumque
redd. ann. al-
signat.

Clausulas
hujus consti-
tutionis pra-
servandas ap-
ponit.

reservationis, constitutionis & assignationis prædictarum in tenore non fore efficaciter obligatos, ac volentes & eadem auctoritate Apostolica statuentes, quod ille ex Administratore & successoribus præfatis, qui in dictis terminis vel saltem intra triginta dies illorum singulos immediatè sequent. pensionem quatuor millium & ducentorum florenorum hujusmodi per eum tunc debitam non perolverit, lapsis diebus eisdem sententiam excommunicationis incurrat, à qua donec Rectori vel Superiori Collegii, & erectæ Universitatis hujusmodi vel eorum Procuratori præfatis de pensione quatuor millium & ducentorum florenorum hujusmodi per eum tunc debita integrè satisfactum, aut alias cum dictis Rectore seu Superiore vel eorum Procuratore præfato super hoc amicabiliter concordatum fuerit, præterquam in articulo mortis constitutus, absolutionis beneficium nequeat obtinere. Si verò per sex menses dicti triginta dies immediatè sequent. sententiam ipsam animo quod absit substituerit indurato, ex tunc effluxis mensibus prædictis ipsis regimine & administratione Monasterii seu Domus hujusmodi perpetuò privatus existat, illudque seu illa vacare censeatur eo ipso.

Executores ubique deputat.

§. 10. Quocirca venerabilibus fratribus nostris Salzburgenſi & Amerinenſi Episcopis, ac dilecto filio causarum Curia Cameræ Apostolicæ generali Auditori per Apostolica scripta mandamus, quatenus ipsi vel duo aut unus eorum per se vel alium seu alios, faciant pensionem quatuor millium & ducentorum florenorum hujusmodi Rectori vel Superiori seu eorum Procuratori præfatis juxta posterioris reservationis, constitutionis & assignationis, & decreti tenorem integrè perſolvi, & nihilominus quemlibet ex administratore Monasterii seu Domus & successoribus suis præfatis, quem hujusmodi excommunicationis sententiam incurrisse eis constiterit, quoties super hoc pro parte Rectoris vel Superioris prædictorum fuerint requisiti, easdem præfentes & in eis contenta quæcumque solemniter publicantes, tamdiu Dominicis & aliis festivis diebus in Ecclesiis cum major inibi populi multitudo ad divina conveniret, excommunicationem publicè nunciant, ac faciant ab aliis nunciari, ac ab omnibus archiis observari & evitari, donec Rectori vel Superiori aut Procuratori præfatis de pensione quatuor millium & ducentorum florenorum hujusmodi tunc debita fuerit integrè satisfactum, ipsèque excommunicatus ab hujusmodi excommunicationis sententia absolutionis beneficium meruerit obtinere. Contradiçtores per censuras & penas Ecclesiasticas, aliæque opportuna juris & facti remedia appellatione postposita compescendo.

Contrariis quibuscumque derogat.

§. 11. Non obstantibus voluntate priori & ordinationibus nostris præfatis, necnon constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac Monasterii seu Domus & illius Ordinis, ac Universitate præfatorum, juramento, confirmatione Apostolica vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, cæterisque contrariis quibuscumque. Aut si Administratori & successoribus suis præfatis, vel quibuscvis aliis communiter vel divisim ab Apostolica fit Sede in lulum, quod ad præstationem vel pensionem aliqujus minime teneantur, & ad id compelli aut quod interdici, suspendi vel excommunicari non possint per literas Apostolicas, non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem, & qualibet alia dictæ Sedis indulgentia generali vel speciali cujusque tenoris existat, per quam præsentibus non expressam vel totaliter non insertam, effectus hujusmodi gratiæ impediri valeat quomodolibet vel differri & de qua cujusque toto tenore habenda sit in nostris literis mentio specialis.

Sanctionem poenalem subijciat.

§. 12. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ absolutionis, erectionis, institutionis, suppositionis, submissionis, indulti, applicationis, appropriationis, reservationis, constitu-

tionis, assignationis, decreti, voluntatis, statuti & mandati infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem Omnipotentis Dei, ac Beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursum.

Datum Romæ, apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1585. Kal. Januarii, Pont. nostri Anno 1.

Dat. P. An. I. die 1. Jan.

URBANUS VII. PONT. CCXXXII. ANNO DOMINI MDXC.

Urbanus Septimus, civis Romanus, Joannes Baptista Castanea antea dictus, patre Cosmo Januensi, Archiepiscopus Rosanensis, presbyter Cardinalis tituli Sancti Marcelli. Creatus Romæ 17. Kalendas Octobris, Anno Domini 1590. Vixit dies duodecim. Nullos creavit Cardinales. Obiit quinto Kalendas Octobris. Ejus cadaver in Basilica S. Petri sepultum fuit. Vacavit Sedes menses duos, dies octo.

ANNO 1590.

GREGORIUS XIV. PONT. CCXXXIII. ANNO DOMINI MDXC.

Gregorius Decimus quartus, Mediolanensis, Nicolaus Siondrarus antea dictus, Patre Francisco, presbyter Cardinalis tituli S. Cæcilie, creatus Romæ nonis Decembris. Coronatus sexto Idus ejusdem mensis, & anni 1590. Vixit menses decem, dies totidem. Creavit Cardinales quinque. Obiit Romæ in Palatio Sancti Marci, Idibus Octobris, anno Domini 1591. Ejus Cadaver in Basilica S. Petri sepultum est in sacello Gregoriano. Vacavit Sedes dies quatuordecim.

ANNO 1590.

Confirmatio constitutionis Pii V. de non alienandis & infeudandis Terris & locis S. R. E.

Hæc Pii V. constitutio est 35. sup. fol. 236. ubi tibi indicavi ejus declarationes, & extensiones.

Eandem constitutionem certo modo declaravit etiam iste Gregorius in Consistorio secreto, sed eam declarationem rejecit Clemens 8. ut infra in sua constituit. 1. Ad Romani.

Adverte addita sup. lib. 1. ad Leon. 1. Com. Tom. 1.

GREGORIUS EPISCOPUS, Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Edita A. D. 1590.

Romanus Pontifex, pro Pastoralis sibi divinitus injuncti muneris debito, inter cæteras quas pro communi bono Christianæ Reipublice suscipit curas, etiam ad ea confirmanda quæ ad statum Ecclesiasticum, & S. R. E. ditionem, etiam temporalem in primis tuendam & conservandam, à prædecessoribus suis non minus prudenter ac sapienter, quam ritè & rectè gesta & constituta fuerunt incumbere solet; & quo firmitus illa subsistant, & sanctius ab omnibus observentur suæ comprobationis & muniminis partes libenter ac maturè adhibet, prout in Domino conspicit salubriter expedire.

Exordium.

§. 1. Sanè jam pridem scilicet. Pius Papæ V. prædecessor noster tenoris subsequents literas edidit. Omittitur insertio hujus Bullæ, quia habes eam supra.

Pii V. constitutio hic est indicata.

§. 2. Nos igitur recol. mem. Gregorii XIII. ac Sixti V. Rom. Pontificum similiter prædecessorum nostrorum exempla, ac pium in tuendis S. R. E. juriſbus zelum imitantes, easdem literas, & in

Confirmatio de qua in rubrica.

ANNO
1590. &
1591.

GREGORIUS DECIMUS-QUARTUS.

757 ANNO
1591.

eis contenta quæcumque, ex certa nostra scientia, ac de nobis à Deo attributa potestatis plenitudine, tenore præsentium approbamus, confirmamus, atque etiam innovamus, eaque, & ea omnia inconcussa, ac validissimæ firmitatis robur perpetuis futuris temporibus obtinere, & à cunctis quos illa quomodolibet concernunt, inviolabiliter observari debere decernimus, præcipimus atque mandamus.

Nulli ergo omnino hominum liceat, &c. Si quis autem hoc attentare, &c.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ millesimo quingentesimo nonagesimo, 14. Calend. Januarii, Pontificatus nostri Anno primo.

Dat. P. A. à
die 19. Decembris.

II.

Quod Congregatio Clericorum Regularium Minorum, omnibus gratiis, prærogativis & privilegiis Congregationis Clericorum Regularium Theatinorum perfruatur.

Istam Congregationem primò approbavit Six. V. ut supra in sua constit. 81. Sacra, fol. 687. Et omnes ejus gratias & privilegia confirmavit Clemens VIII. die 1. Junii 1592. sed hanc Bullam tanquam simpliciter confirmatoriam consulo prætermitti.

GREGORIUS PAPA XIV.

Ad perpetuam rei memoriam.

Romanus Pontifex personarum Ecclesiasticarum quarumlibet, præsertim Regularium vota, Religionis propagationem & augmentum respicientium, ad exauditionis gratiam libenter admittit, prout consipit in Domino salubriter expedire.

§. 1. Sanè pro parte dilectorum filiorum Presbyterorum & Clericorum Congregationis Clericorum Regularium Minorum nuncupatorum, nobis exhibita petitio continebat, quod cum ipsi cupiant pro illorum Congregationis augmento, ut ipsi in via Domini sui suavi Religionis jugo Deo dante plenarium proficere possint, omnia privilegia, gratias, facultates tam spirituales quam temporales, ac indulta Congregationi Presbyterorum Theatinorum nuncupatorum concessa, eorum Congregationi hujusmodi concedi, nobis humiliter supplicari fecerunt; quatenus eorum desiderio hujusmodi annuere, aliisque in præmissis opportunè providere de benigentia Apostolica dignemur.

§. 2. Nos igitur hujusmodi supplicationibus inclinati, omnia & singula privilegia, prærogativas, concessiones, facultates, exemptiones, immunitates, indulgentias, & peccatorum remissiones cæterasque gratias spirituales & temporales, ac tam conjunctim quam divisim etiam per viam communicationis, vel extensionis aut alias quomodolibet dictæ Congregationi Presbyterorum Theatinorum nuncupatorum, illiusque Generali, aliisque Superioribus, Officialibus, Ministris, & personis, eorumque domibus Regularibus quibuscumque concessa, ac quibus dicta Congregatio Theatinorum, ejusque domus Regulares, necnon Generales, Superiores, Officiales, Ministri, & alia quæcumque illius personæ, de jure, usu, consuetudine, privilegio aut concessione Apostolica, vel alias quomodolibet etiam per viam communicationis & extensionis utuntur, fruuntur, potiuntur & gaudent, ac uti, frui, potiri & gaudere possunt, & poterunt quomodolibet in futurum, eidem Congregationi Clericorum Minorum, illiusque domibus Regularibus, necnon Præposito generali, aliisque Superioribus, Officialibus, Ministris, & aliis quibuscumque illius personis nunc & pro tempore existentibus, Apostolica auctoritate tenore præsentium perpetuò concedimus, illaque omnia & singula ad dictam Congregationem Clericorum Minorum, illiusque domos Regulares, necnon Præpositum generalem, Superiores, Officiales,

Ministros, & personas prædictas, ita ut dicta Congregatio Clericorum Minorum, ejusque Regulares domos, illorumque Generalis, Superiores, Officiales, Ministri, & personæ nunc & pro tempore existentes, præmissis omnibus & singulis, æquè & pariformiter, & sine aliqua differentia, uti, frui, potiri & gaudere libere & licite possint, perinde ac si singula præmissa illis specialiter & expresse ac principaliter non autem ad instar concessa, & præsentibus expressa, ac de verbo ad verbum nihil penitus omisso inserta fuissent, auctoritate & tenore prædictis extendimus, illaque omnia & singula dictæ Congregationi Clericorum Minorum, illiusque domibus regularibus & personis prædictis communicamus.

§. 3. Decernentes præsentibus literas de subreptionis aut obreptionis vicio, seu intentionis nostræ, vel quovis alio defectu, notari, impugnari, aut alias quomodolibet infringi nullatenus umquam posse, sed illas semper & perpetuò validas & efficaces existere, subque plenariis & integros effectus sortiri.

§. 4. Sicque & non aliter per quoscumque Judices quavis auctoritate fungentes, etiam S. R. E. Cardinales, & causarum Palatii Apostolici Auditores, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate, & auctoritate, judicari & definiri debere, irritum quoque & inane, quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 5. Non obstantibus nostræ de non concedendo indulgentiis ad instar, ac quibusvis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac dictæ Congregationis Theatinorum, etiam juramento, confirmatione Apostolica vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, privilegiis quoque indultis, & literis Apostolicis dictæ Congregationi Theatinorum, ejusque Superioribus & personis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, ac irritantibus & aliis decretis, in genere vel in specie, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, ac aliis in contrarium præmissorum quomodolibet concessis, confirmatis & innovatis, quibus omnibus illorum omnium tenores ac de verbo ad verbum infererentur præsentibus pro sufficienter insertis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, harum serie specialiter & expresse derogamus, cæterisque contrariis quibuscumque.

§. 6. Volumus autem quòd præsentium transumptis, etiam impressis, manu alicujus Superioris dictæ Congregationis Minorum subscriptis, & sigillo dictæ Congregationis munitis, eadem prorsus fides in judicio & extra illud adhibeatur, quæ eisdem præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Nulli ergo omnino hominum, &c. Si quis, &c. Datum Romæ apud Sanctum Petrum, sub annulo Piscatoris, die 18. Februarii, millesimo quingentesimo nonagesimo primo, Pontificatus nostri Anno primo.

Moderatio duarum Constitutionum Sixti V. super receptione Novitiorum illegitimatorum ad Ordines Regulares.

Quoad Novitiorum receptionem & educationem vide Bullam Clem. VIII. infra num. 83. In suprema. Tom. 3. fol. 144.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Circumspecta Romani Pontificis providentia, ea quæ rationabilibus causis, auctoritate Apost.

Clausula præservativa.

Clausula subblata, &c.

Clausula derogatoria.

Fides transumptorum.

Dat. P. A. à die 18. Feb.

III.

Edita An. D. 1591.

Exordium.

Sixtus V. sub
forma reci-
piendi Reli-
giosos duas
edidit consti-
t. quæ sunt
sup. fol. 656.
Cum de. n. m.
71.

Quas hic
Pont. ad ter-
minos juris
reducit.

Quam redu-
ctionem hic
declarat.

fancita fuerunt, ipsa rerum experientia suadente, ex aliis interdum non minus iustis causis moderatur & immutat, prout in Domino conspicit salubriter expedire.

§. 1. Sanè liceat aliàs felicis recordationis Sixtus Papa V. prædecessor noster, nonnulla circa qualitates, modum, & formam admittendi Religiosos ad quoscunque Ordines, salubriter statuerit, prout in duabus desuper, prima videlicet sub Datum sexto Calendas Decembris, Anno Tertio, & altera sub Datum duodecimo Kal. Novembr. Anno Quarto sui Pontificatus editis constitutionibus latius continetur. Quia tamen usu comprobata est, multa inventa fuisse impedimenta, propter quæ ea quæ in præmissis statuta fuerunt, executioni mandari minimè poterunt. Undè quamplures literis, & pietate insignes viri, à sancto proposito Regula rem ducendi vitam adducti ac impediti, atque etiam alii diu cum maxima eorum laude in Religione versati ab illius dignitatibus, honoribus, prælaturis, cum non modico Religiosis & Ordinum huiusmodi detrimento repulsi & inhabiles penitus redditu fuerint.

§. 2. Nos igitur ea quæ docuit experientia salubriter fuisse constituta confirmare, quæ verò moderate ratione aliqua indigere moderari volentes, ac dictarum constitutionum, & inde sequutorum quorumcumque tenores etiam veriores, præsentibus pro expressis habentes, habita cum venerabilibus fratribus nostris Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalibus, super negotiis & consultationibus Regularium deputatis matura deliberatione, de eorundem consilio prædictas constitutiones in ea parte qua cavetur, ne illegitimi ex certo inibi expresso damnato thorole complexu, ad quamcumque Religionem, neque ad habitum, aut professionem regulares, sed tantum ad habitum Conventorum, aut famulorum, in Monasteriis aliisque locis regularibus servitium admittantur, & si post dictam Constitutionem professionem emitterent, voluit illam nullum esse momenti. Et in altera parte, in qua illegitimè genitos, etiam antè ipsas Constitutiones professos vigore privilegiorum, aut indultorum Apostolicorum, cuiusvis Ordini, Religioni, Monasterio aut Congregationi, eorumvè Superioribus, in genere vel in specie concessorum, etiam ipsi per ingressum Religionis, vel per eisdem Superiores legitimatos, seu ad gradus, honores, & dignitates habitatos seu integratos, ab honoribus, gradibus, & dignitatibus quibuscumque, tam antiquis, quam aliis privilegiis, literis Apostolicis, indultis, aut declarationibus non obstantibus, excludi, ac dispensationes quasque aut legitimaciones non suffragari, neque in futurum cum his nisi à Sede Apostolica, privilegiis quibuscumque non obstantibus, dispensare posse voluit, auctoritate Apostolica tenore præsentium ad terminos juris reducimus, & moderamus, ac omnes dispensationes & habilitationes, vigore privilegiorum aut indultorum Apostolicorum, cuiusvis Ordini, Religioni, Monasterio, aut Congregationi, eorumvè Superioribus, in genere vel in specie, ut præfertur, concessorum, quæ tempore constitutionum huiusmodi usu recepta, & non sub ullis aliis revocationibus comprehensa erunt per quoscumque eorum Superiores factas, in pristinum statum, & validitatem, in quibus antè ipsas constitutiones existebant, restituimus & reintegramus. Volentes, iisdem constitutionibus non obstantibus, eos qui quovis modo illegitimi procreati fuerint ad habitum & professionem regulares admitti posse quemadmodum admitti poterant, si supradictæ constitutiones editæ non fuissent.

§. 3. Ità tamen, ut cum de recipiendis quomodocumque illegitimè natis, ad habitum & professionem Ordinum quorumcumque agetur, id ad quos huiusmodi receptio spectat, præter alia, de quibus ex dictarum constitutionum præcepto circa quoscumque etiam legitimos disquirere debent, di-

ligenter eorum vitam & mores inquirent, & ità demum recipiant, si tamen bonam indolem, & virtutis specimen præstulerint, ac tot eis merita suffragentur, ut natalium supplementum defecum, eorumque receptio Religiosis commodo & utilitati profutura videatur. Et super hoc ipso id ad quos, ut dictum est, pertinet huiusmodi receptio, matura deliberatione habita, ità censuerint & indicaverint, dummodò tam filius illegitimus, in Religione in qua pater, sive antè sive post natiuitatem dicti filii professus fuerit, ipso patre vivente non admittatur, quod expresse prohibemus.

§. 4. Volumus quoque ac statuimus, licere Generali, aut Provinciali singulorum Ordinum, aut Congregationum, aut Hospitalium, ad quos dicta dispensatio spectat iuxta tenorem privilegiorum & indultorum Apostolicorum eis concessorum quæ, dummodò usu recepta nec aliàs sub ullis revocationibus comprehensa sint, ut præfertur, in hac parte revalidamus cum illegitimis, quos dictus Generalis, aut Provincialis, cum Generali Provinciali seu intermedio Capitulo & non aliàs, suffragantibus meritis dignos iudicaverint, ad honores, gradus, & dignitates obtinendas dispensare, ac dispensationes huiusmodi pro tempore ità facias, & inde sequuta quæcumque ut antè valere & tenere, perinde ac si supradictæ constitutiones non emanassent.

§. 5. Cæterum cum accepimus, nonnullarum Religionum & Ordinum, præsertim Monachalium Monasteria ità instituta esse, ut in eis perpetua quadam filiatione constituatur: ideoque receptio Novitiorum in unoquoque Monasterio ad superiorem Prælatum, & Capitulum ejusdem Monasterii tantum pertinere, quæ etiam Monasteria, ut plurimum inter se longè distant, nec Generalia, Provincialia, aut intermedia Capitula nisi rarò celebrare solent. Ideò statuimus, ut Superiores illorum Monasteriorum de consensu sui Capituli præhabita simul cum his de quibus in unaquaque Religione aut Monasterio, juxta ejus constitutiones recipiendus interrogari solet, aliqua informatione super his quæ in dictis constitutionibus continentur ad receptionem huiusmodi procedere valeant, dum tamen antequàm ad professionem admittantur, plenaria, & eo modo, prout in dictis constitutionibus habetur, inquisitio fiat, quæ postea ab his, à quibus in prædictis Monasteriis examinari solent, diligenter examinetur, & approbetur, & demum omnia in dicto Capitulo coràm Superiore referantur. Volentes, quòd Superiores prædicti cum eorum Capitulo, aut ubi consuetudo non fuerit celebrandi Capitula, cum tribus aut quatuor ad id in Generali Congregatione per vota secreta deputatis, servatis eorum regularibus institutis ac supradictis omnibus, eandem in recipiendis Novitiis habeant auctoritatem, quæ per dictas constitutiones Provincialibus Capitulis est attributa.

§. 6. Decernentes, sic & non aliter per quoscumque Judices & Commissarios quavis auctoritate fungentes, etiam ejusdem Romanæ Curie Cardinales, & causarum Palatii Apostolici Auditores, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate, ubique iudicari & definiri debere. Irritum quoque & inane, quicquid secus super his à quocumque, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 7. Non obstantibus præmissis, ac quibuscumque aliis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, cæterisque contrariis quibuscumque. Volumus autem, quòd præsentium transumptis, etiam impressis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus Prælati, vel personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ obsignatis, eadem prorsus fides, in iudicio & extrà illud adhibeatur, quæ eisdem præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensæ.

Nulli ergò &c. Si quis, &c.

Generalibus vel Provincialibus Ordinibus, concedit auctoritatem dispensandi illegitimis ad dignitates juxta eorum privilegia usu recepta.

Superioribus Ordinum concedit Novitios prævia informatione ad Religionem recipere posse.

Adquod vide Bullam Clementis VIII. citatam hic in rubrica,

Claufula sublata, &c.

Claufulæ derogatorie.

1591.

1591.

Dat. P. A. r.
die 15. Mart.

Datum Roma apud Sanctum Petrum, Anno incarnationis Domini, 1591, Id. Martii, Pontificatus nostri Anno primo.

IV.

Damnatio Sponsionum, seu Excommisurarum, super vita, morte, & futura electione Summi Romani Pontificis, ac promotionibus S. R. E. Cardinalium.

De Materia Cardinalium latè dixi supra ad const. 70. Sixti V. Postquam, fol. 609.

Edita A. D.
1591.

GREGORIUS EPISCOPUS.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Excommis-
surum usus,
multa mala
maximaque
damna parit.

Cogit nos depravata miseri hujus sæculi corruptela, ut vel in ipso nostri Pontificatus ingressu severioribus penis illorum coerceremus audaciam, qui cæca ducti cupiditate gravioribus peccatis divinam Majestatem ledere, ac sacrosanctæ Ecclesiæ Dei, mala & scandala perniciose inferre non perhorrescunt. Qualia multa cum ingenti animi nostri dolore sensimus manare ex frequenti sponsionum illarum usu, quæ Excommisuræ vulgò dictæ, super futura electione, aut vita & morte Romani Pontificis, aut promotionibus Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalium fieri consueverunt. Nam si rem ipsam, quæ nedum Ecclesiastica, sed & sacra & merè spiritualis est, spectemus, profanatio quædam rei sacræ, & sacrilegium quoddam inde propterea committi videtur, dum electionibus & promotionibus sacris, ac planè spiritualibus, fors pecuniarum immiscetur, & turpissimæ nundinationis genus cohæret, siue gravissima peccata earum occasione perpetrari solita, & detrimenta inde proveniant, sponsiones hujusmodi, quæ super prædictis sunt omnino damnandæ & prohibendæ, atque à Christifidelium commercio prorsus exterminandæ arbitramur. Multi siquidem cupiditate, aut metu jacturæ pecuniarum illicitis modis, directè vel indirectè per se vel alium, electiones seu promotiones impedire, aut retardare conantur. Alii eligendorum, aut promovendorum honorem, & famam, & exultationem, impiis, falsis, ac prorsus iniquis detractionibus aut diffamationibus ledere, ac dilacerare non erubescunt. Orationes verò, & vota, ac pias preces Christiani populi, quas eo potissimum tempore, summo devotionis fervore ex intimo cordis affectu, ab universo fidelium cætu Deo omnipotenti offerri par esset, ut hujusmodi electionibus ac promotionibus Spiritus sanctus assisteret, non mediocriter hæc de causa impediri, perturbari, ac refrigerare necesse est, dum multi temporalibus lucris intenti, aut obliviscuntur quæ Dei sunt, aut certe desiderant se penumero, & procurant ut eligantur non ii qui optimi sunt, sed ex quorum electione plurimum lucri se consecuturos animadvertunt. Nec desunt, qui innumerabiles fraudes, ac perniciose mendacia, dolos & fallacias comminiscuntur, dum sponsionum pretia augere aut imminuere, calidè & versutè satagunt. Nonnulli quoque manifesta injuria peccant, dum sere certi eorum qui eligendi, aut promovendi sunt, conventiones seu sponsiones ineundo, ab aliis id ignorantibus pecunias per fraudem extorquent. Multi præterea dum vana spe universum patrimonium suum in discrimen temerè deducunt, repente & ex improvviso ad inopiam rediguntur, ex quo & abominabiles contra Deum blasphemie, & plurima scandala, & peccata atrocita consequuntur, quod autem deterius est, miseri quidam ad nefandas Dæmonum invocationes, ac prohibita fortilegia, damnataque divinandi genera confugiunt, ut futura, si id fieri posset, prænotando, minori cum periculo, aut quemadmodum ipsi yana spe decepti sibi persua-

dens, certiore eventu sponsiones ineant, illud denique omnibus notissimum est, magnum hoc esse avaritiæ fomentum, & ex eo vehementem quærit cupiditatem, quandoque etiam in Ecclesiasticis, ac religiosis personis excitari.

§. 1. Nos igitur, qui hoc præcipuum munus ad pastorem nostram sollicitudinem maximè pertinere existimamus, ut gregem Dominicum fidei nostræ creditum ab omni offensione, atque æternæ vitæ periculo securum, in viam salutis, divina favente gratia, dirigamus, pestiferi hujus morbi contagionem, prorsus in communem fideliæ perniciem latius serpat, quantum in nobis est, tollere, necnon delicti & scandali inde ut plurimum provenientis occasionem penitus & ubique submovere cupientes, ac simul æquum censentes ut in quo frequenter & graviter peccatur, id ad tollendum scandali periculum generatim, & peræque omnibus interdicatur, fel. record. Pii Papæ Quarti prædecessoris nostri, qui pariter hoc ipsum super futura Pontificis electione fieri prohibuit, vestigiis inhærentes, de tribus nobis à Domino potestatis Apostolicæ plenitudine, hæc nostra in perpetuum valitura constitutio damnamus & reprobamus omnes & quascunque sponsiones, promissiones, stipulationes, conventiones, aut pacta, Excommisuras vulgò dictas, quovis nomine, aut vocabulo appellatas, Quas, siue per cedulas, ut ajunt, vel apochas, aut alio quocunque, publicæ aut privatæ scripturæ, aut choreographi genere, vel per Menlariorum, aut Mercatorum libros, aut paritatis, ut dicunt, seu verbo tantum data fide, aut facto deposito certæ pecuniarum summe, vel casulvis alterius rei pretio extimabilis, aut alijs quocummodo, vel sub quavis nominati aut innominati contractus forma aut conditione, in eventum vitæ aut mortis, vel futuræ creationis Romani Pontificis, tam eo vivente quàm Apostolica Sede vacante, aut in eventum promotionum S. R. E. Cardinalium, posthac in quibuscumque Christiani Orbis Regnis, Dominiis, Provinciis, Civitatibus, Terris & locis, ubilibet gentium aut locorum infiri quodcumque contigerit, ipsosque contractus, sponsiones, aut pacta, si quæ post hanc nostram prohibitionem inita fuerint, vel etiam antea, quarum tamen vel quorum exitus adhuc expectantur, damnata prorsus illicita & invalida decernimus, & declaramus, illaque ex nunc prout ex tunc & contra, harum serie rescindimus, & annullamus, ac ne de cætero fiant districte interdicimus, & prohibemus, Decernentes ex eis tamquam damnatis, & reprobatis, etiam si juramento, quod pariter illicitum, & tamquam contra bonos mores præstitum nihil operari, in hoc casu declaramus, aut instrumento in forma Camere Apostolicæ, vel alijs quomodolibet roborata fuerint, nullam prorsus obligationem oriri, nullamque actionem, realem aut personalem, aut Judicis officium in foro exteriori neque extrà illud, nec etiam quoad forum conscientie, provenire, neque exceptionem, aut aliud quodcumque jus cuiquam competere.

§. 2. Quinimò statuimus, & declaramus, & prædictis damnatis sponsionibus nullum talium pecuniarum dominium, etiam si solutæ, aut datæ, seu remissæ, vel condonatæ hæc de causa fuerint, cuiquam acquiri, sed quicquid pecuniarum, aut casulvis alterius rei, in contractus seu sponsiones hujusmodi deductum fuerit, siue datum & acceptum, siue tantummodò promissum, vel ut præfertur condonatum, aut etiam ut ab alijs solvatur mandatum existat, eo ipso pijs locis ejus Civitatis aut Oppidi ubi sponsionis ipsæ initæ, vel ubi primum detectæ fuerint, etiam si prius alibi initæ sint, acquisitum censeri, & ipsos contrahentes ad restitutionem, siue elargitionem eisdem pijs locis in utroque foro teneri, & in foro exteriori ad id per Episcopum (cujus conscientiam super hoc oneramus) opportunis juris & facti remediis, etiam sub censuris & penis Ecclesiasticis, cogi & compelli debere.

Hic ideb
Pont. inhe-
rendo con-
stitutioni 63.
Pii IV. in
eligendis
(sup. fol. 97.
omnis ex-
commisuræ
super vita,
morte aut
creatione
Summi Pont.
vel promo-
tionis Card.
publique pro-
hibet.

Et quicquid
in excommis-
suris deductum
fuerit pijs
locis applicat.

& non solum Procuratoribus, seu administratoribus, sed cuilibet personæ, actionem popularem nomine eorumdem piorum locorum pro ipsis pecuniis consequendis competere. Itā tamen, ut si plura loca pia in Oppido seu Civitate huiusmodi existant, inter ipsa loca is præferatur, & pecunias integrè lucratur, qui prior agere cœperit.

§. 3. Nec componere, transigere, aut concordare cuni ipsis delinquentibus, aut illis partem aliquam pœnæ remittere, aut condonare quoquomodo liceat, sed integrè ab ipsis locis piis exigatur, quod si de facto concordatum fuerit, tunc eo ipso concordia, compositio, aut transactio irrita sit & nulla, & actio pro reliqua summa non exacta ad alia loca pia devoluta censetur, donec pœna prædicta integrè ab ipsis transgressoribus fuerit perfoluta.

§. 4. Personas vero Ecclesiasticas, si quæ forsitan, quod non credimus, tale aliquod pactum aut sponsonem, contra hanc nostram prohibitionem inire præsumpserit, tam seculares quam cuiusvis Ordinis aut Militiæ regulares, cuiuscumque status, gradus, vel conditionis fuerint, etiam si Episcopi, Archiepiscopi, Primitiales, Patriarchali, aut alia quacumque, etiam S. R. E. Cardinalatus præfugeant dignitate (præter supradictam, & alias in præsentī Constitutione contentas pœnas) omnibus, & quibuscumque per eas obtentis beneficiis, cum cura & sine cura, secularibus, & quorumvis Ordinum, aut Militiarum regularibus, ex tunc eo ipso per præsentē in utroque foro privamus, & privatas, ac ad illa & quacumque in posterum obtinenda, perpetuò inhabiles & incapaces declaramus, eaque omnia juxta præsentem Constitutionem ipso facto vacare, deque illis liberè per Sedem Apostolicam vel per ordinarios Collatores aliis providere posse, ac etiam si alioquin nostræ, Sedis Apostolicæ seu Rom. Pontificis tantum, dispositioni ex quavis reservatione generali, etiam in corpore juris clausa, seu aliàs quomodolibet reservata seu affecta fuerint, nihilominus per ordinarios Collatores, ad quos eisdem reservationibus, seu affectionibus Apostolicis cessantibus, pertineret, liberè & licitè conferri, & de eis perinde ac si reservata aut affecta non essent, disponi posse volumus & declaramus.

§. 5. Ulterius etiam in eos, qui talia patrare, & huic nostræ Constitutioni contravenire præsumpserint, tam si prædictis, quæ hic pro expressis habeantur, quam si quibuscumque mundanis etiam Ducibus, Regibus, Imperialibus dignitatibus fungantur, ac etiam in eosdem, vel alios, qui id in Terris, Locis, Civitatibus, ac Dominis sibi subiectis, tacitè vel expressè fieri permiserint, eorumque Consiliarios, Magistratus, Potestates, Gubernatores, Præfectos, aut Locatenentes, eorumque singulos qui pariter consensum, auxilium, consilium, vel favorem in præmissis præstiterint ac in quocumque proxenetas, vel mediatores, excommunicationis sententiam per eisdem præsentē ferimus, & promulgamus, eosque ipso facto absque aliqua monitione, aut declaratione, seu Judicis decreto aut ministerio, excommunicationis sententiam incurrere volumus, à qua eorum nullus ab alio quam à Romano Pontifice, pro tempore existente, nisi in mortis articulo, & quoad eos qui pecunias, vel aliud quidpiam præmissorum occasione perceperint, etiam prævia restitutione integræ pecuniarum ejusmodi occasione perceptarum, absolvi possit aut debeat.

§. 6. Sicque in omnibus & singulis superius expressis, per quoscumque Judices, ordinarios & delegatos, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac ejusdem S. R. E. Cardinales, sublara eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, in quavis causa & instantia, judicari & definiri debere. Irritum quoque & inane decernimus, si secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel

ignoranter contigerit attentari. Quocirca universis locorum Ordinariis, ubilibet constitutis, per Apostolica scripta mandamus, ut præsentē litteras in suis quisque Ecclesiis, Civitatibus, Diocesis, & locis ab omnibus inviolatè observari curent. Et contra quoscumque præsentis Constitutionis transgressores ad declarationem censuram & pœnarum huiusmodi procedant, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 7. Non obstantibus quibuscumque constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, ac Cancellariæ Apostolicæ regulis, necnon Regnorum, Provinciarum, Civitatum, Oppidorum & locorum, jramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus, etiam quantumvis longissimo tempore observatis, ac legibus etiam municipalibus, & pragmaticis, aliisque sanctionibus, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis, quorumcumque tenorum existent, per quæ præsentibus non expressa, vel ad verbum non inserta, effectus earum impediri valeat vel differri, & de quibus, quorumcumque totis tenoribus habenda sit in nostris literis mentio specialis. Aut si aliquibus, communiter vel divisim ab eadem sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per litteras Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto huiusmodi mentionem.

§. 8. Cæterum, ut præmissa, ac eadem præsentē litteræ ad eorum quorum interest noticiam deducantur, nullusque possit aliquam illorum ignorantiam prætere, vel excusationem allegare, Volumus ut eadem præsentē in Basilicâ Principis Apostolorum de Urbe ac Cancellariæ Apostolicæ valvis, & acie Campi Floræ, per aliquem ex Curforibus nostris affixæ, copia illarum ibidem dimissa, ab eadem die, quoad eos qui in Urbe sunt, quo verò ad eos qui citrà montes sunt, post viginti dies, quo verò ad eos qui ultrà montes, post duos menses à die publicationis prædictæ numerandos, omnes & singulos perinde afficiant & ardeant, ac si illis ipsis fuissent personaliter intimatæ. Quodque earum exemplis etiam impressis, manu Notarii publici & sigillo alicujus personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem proflus fides adhibeatur in iudicio & extrâ, quæ ipsis præsentibus originalibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostendat.

Nulli ergo omnino, &c. Si quis, &c.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ 1591. duodecimo Calend. Aprilis, Pontificatus nostri Anno primo.

Anno à Nativitate Domini 1591. Indictione 4. die verò 28. mensis Martii, Pontificatus Sanctiss. in Christo patris, & D. N. D. Gregorii divina providentia Papæ XIV. anno 1. retroscripta littera Apostolica affixa, & publicata fuerunt ad valvas Basilicæ Principis Apostolorum de Urbe, Cancellariæ Apostolicæ, & acie Campi Floræ, ut movis est, per nos Joannem Gance, & Catherinam Menandi Curf.

Pompæus Guerra Mag. Curfor.

Confirmatio exemptionis Fratrum Militum Sancti Joannis Hierosolymitani, eorumque Familiarium, & cæ. à solutione decimarum, & aliorum onerum; Et extensio facultatis M. Magistri, & Conventus, quoad dispositionem beneficiorum. Ac præservatio Ordinariorum, quoad personas curam animarum habentes.

Hanc exemptionem, & præservationem firmavit primo loco Pius V. in sua constit. 77. Et si cuncta. suprâ fol. 292. ubi videas quæ notavi.

GREGO.

Quibus de
super transi-
gere aut se
concordare
posse vetat.

Ecclesiasti-
cique perso-
nis Excommu-
nicatis facien-
tibus pœnam
privacionis be-
nificiorum im-
ponit.

Et tam eis
quàm aliis
huic prohibi-
tioni contra-
venientibus
excommuni-
cationis pœ-
nam infligit.

Clausula
sublata, &
decretum ite-
ritans.

Clausula
contrario-
rum deroga-
toria.

Forma & ef-
fectus pub-
lic. hujus
const.

D. P. An. 1.
die 21. Mart.

Publicatio.

V.

Edita An. D.
1591.

GREGORIUS PAPA. XIV.

Ad futuram rei memoriam.

Procerum.

Quanta Christianæ Reipublicæ commoda atque ornamenta, omni tempore attulerit Hospitalis S. Joannis Hierosolymitani amplissimus Ordo, insignia quæ assidue præstitit pietatis & charitatis officia, jam latè testantur summo ardentique studio, vel initio fidei Ecclesiæ in Civitate Sancta Hierusalem, in qua Christi pedes steterunt, & ubi Deus Rex noster antè sæcula salutem in medio terræ dignatus est operari complexa, & usque modo, prout tempora tulerunt, variis in locis continuata, quæ nunc potissimum elucet eo in Hospitali, quod in Insula Melitæ B. Pauli Apostoli, cujus in tutela est, multis celebrata miraculis ab eo Ordine constitutum fuit, in quo ejusdem Pauli auctoritate permoti ejus Hospitalis curam gerentes re ipsa comprobant, jactis fidei & spei fundamentis, inter præcipuas virtutes quæ Theologicæ dicuntur, charitatem principem obtinere locum neque his piis actionibus, quas iidem assiduis officiis & hospitalitatis studiis in proximis exercent planè secundæ aut postremæ sunt res, ab eis ad divini nominis gloriam & exaltationem præclarè gestæ, quarum longè latèque fama pervagatur. Dùm tamquàm veri Christi athletæ Machabæorum æmulati morem, assumpta galea salutis adversus Christiani nominis hostes, & præsertim impios Mahometis sectatores arma sumunt, fortiterque dimicant. Nos igitur religionem floridam paternis contemplantes affectibus, ea quæ eis pro eorum prospero statu, commodo & quiete per Romanos Pontifices prudenter concessa reperimus, ut illibata firmaque perpetuò subsistant, libenter approbationis nostræ munimine roboramus.

Privilegio-
rum multo-
rum conce-
ssio à Præde-
cessoribus, &
præsertim
à solutione
decimarum
&c.

§. 1. Cùm itaque, sicut accepimus, licet aliàs fel. rec. Leo X. Clemens VII. Paulus II. Pius IV. & Pius V. Gregorius XIII. & Sixtus V. Romani Pontifices prædecessores nostri, inter alia privilegia & indulta dilectis filiis Magistro & Conventui Hospitalis S. Joannis Hierosolymitani à Sede Apostolica concessa, eundem & pro tempore existentem Magistrum, Bajulivos, Castellani Empolæ, Priores, Præceptores, Milites, Familiares, aliisque personas Hospitalis hujusmodi: necnon eorum Subditos, Vassallos, Colonos, & Servitores, & alios in eorum obsequiis, & dicti Hospitalis beneficiis quomodolibet nuncupatis existent. etiam presbyteros curam animarum exercentes, quandiu illam exercent, & in illorum obsequiis forent, illorumque animalia, prædia, domos, molendina, & bona quæcumque, quæ obtinebant, ac in posterum obtinerent & possiderent, à solutione & exactione decimarum, censuum, jurium, etiam Synodali, & Canoniarum portionum, seu charitativi subsidii, aut jucundi adventus, seu quartæ, aut aliàs quomodolibet, aut aliorum quorumcumque onerum sub certis modo & forma, exemerint & liberaverint, prout in diversis ipsorum prædecessorum desuper confectis literis plenius continetur.

Ordinario-
rum mole-
stia super
prædictis
gratis.

§. 2. Et licet ipsi Milites, & aliæ personæ præfatæ, non debuissent neque deberent, à quoquam contra dictorum privilegiorum tenorem & formam molestari, perturbari, vel inquietari, cùm ipsi non modò eorum facultatibus & fortunis, verum etiam sanguini & vitæ pro tuitione fidei Catholice non parant; nihilominus diversi locorum Ordinarii, & Parochiales Ecclesiarum Rectores, & multe Capitulares personæ id sibi omnino juxta sacri Concilii Tridentini decretalicer affectes, eosdem Magistrum, Bajulivos, Castellani Empolæ, Priores, Præceptores, Milites, & personas, diversis oneribus contra eorum privilegia prægravare, illosque ad decimas, census, subsidia, etiam charitativa, congruas portiones, jucundum adventum, pastor bonus, aut alias nuncupata

onera, etiam jura synodalia cogere præsumant, in grave ipsius Hospitalis detrimentum & gravamen.

§. 3. Nos igitur attendentes, Hospitalis præfati multa esse in fidem Catholicam, & Sedem Apostolicam merita, nobis & venerabilibus fratribus nostris S. R. E. Cardinalibus, non incognita, Cardinalem Magnum Magistrum, Bajulivos, Castellani Empolæ, Præceptores, Milites, Frates, Familiares, & eorum singulos, ac singulares dicti Hospitalis personas, à quibusvis excommunicationis, suspensionis & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris & penis, à jure vel ab homine quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum præsentium dumtaxat consequendum harum serie absolutentes, & absolutos fore censentes, necnon omnium & singulorum privilegiorum, indultorum, facultatum, exemptionum, immunitatum, libertatum, & gratiarum per præfatos, & alios quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac Sedem Apostolicam Hospitali, illiusque Magistro, Conventui & Fratribus, Militibus, aliisque personis præfatis hæcenus concessorum, ac literarum desuper confectarum tenores præsentibus pro expressis habentes. Motu proprio, non ad Cardinalis Magni Magistri & Conventus Hospitalis hujusmodi, aut alicujus alterius super hoc pro eis nobis oblata petitionis instantiam, sed ex certa scientia, & de mera nostra liberalitate, ac Apostolicæ potestatis plenitudine, omnia & singula privilegia, indulta, facultates, exemptiones, immunitates, libertates, & alias gratias eidem Magistro & Conventui quomodolibet concessa, Apostolica auctoritate tenore præsentium confirmamus, approbamus, illisque perpetuæ & inviolabilis firmitatis robur adjicimus, ac omnes & singulos tam juris quam facti defectus, si qui forsàn intervenerint in eisdem, supplemus.

§. 4. Cùm autem felices recordationis Pius Papa IV. prædecessor noster, eidem Magistro & Conventui inter cetera privilegia, Prioratus, Bajulivatus, Castellani Empolæ, Commendas, ac alia ejusdem Hospitalis beneficia, liberè uniendi & dismembrandi facultatem concesserit. Et nihilominus à quibusdam quandoque dubitatum fuerit, an antè vel post mortem possessorum, unio seu dismembratio ipsa fieri posset ac deberet.

§. 5. Nos ad tollendum omne dubium & ambiguitatem, quæ in præmissis in futurum oriri posset, ut quodcumque eis videbitur, five antè five post mortem possessorum, Prioratus, Bajulivatus, Castellani Empolæ, ac alia ejusdem Ordinis beneficia unire & dismembrare, liberè & licitè possint & valeant, Necnon omnia & singula privilegia, & exemptiones præfatas, etiam ad Confratres & Donatos ejusdem Hospitalis extendi debere, auctoritate præfata decernimus & declaramus.

§. 6. Decernentes, præfatas literas nullo unquam tempore, de subreptionis vel obreptionis vitio aut intentionis nostræ, vel quopiam alio defectu, etiam ex eo, quod locorum Ordinarii vocati non fuerint, notari, impugnari, vel invalidari minimè posse, minisque sub quibuscumque similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, limitationibus, restrictionibus, & derogationibus comprehendi posse, sed semper ab illis exceptas, & quot es illæ emanabunt, toties in pristinum statum restitutas, repositas, & plenariè reintegratas esse.

§. 7. Sicque ab omnibus censeri, & ita per quoscumque Judices & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate, judicari & definiri debere, ac irritum & inane, si secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

Hujus Pon-
tif. Confir-
matio d. etor-
um privile-
giorum.Quæ tamen
intellige ut
hic in hæc.Pii V. con-
cessio, unien-
di & dis-
membrandi
beneficia.Hujus Pon-
tentio d.
confir. Pii
IV.Claufulæ
præservati-
væ.Fides exem-
plorum.

ANNO
1591.
Executores
hujus concilii.

762

GREGORIUS DECIMUS - QUARTUS.

ANNO
1591.
VI.

§. 8. Quocirca dilectis filiis in Regnis Hispaniarum, & Neapolitani, nostris & Sedis Apostolicæ pro tempore existentibus Nuntius, aut Curie causarum Cameræ Apostolicæ generali Auditori per præsentem Motu simili mandamus, quatenus ipsi vel duo aut unus eorum, per se vel alium seu alios, præsentibus literas & in eis contenta quæcumque, ubi & quando opus fuerit, ac quoties pro parte eorundem Cardinalis Magni Magistri & Conventus fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra eisdem Magistrum & Conventum, confirmatione, approbatione, adjectione, supplementatione, decreto, & aliis præmissis pacifice uti, frui, & gaudere. Non permittentes eos per Ordinarios prædictos, aut quoscumque alios, contra præsentium tenorem quomodolibet molestari, perturbari, aut inquietari, contradictores quoslibet & rebelles, per sententias, censuras, & penas Ecclesiasticas appellatione postposita compescendo; ac legitimis super his habendis servatis processibus, sententias, censuras & penas hujusmodi incurrisse declarari, illasque etiam iteratis vicibus aggravari. Interdictumque Ecclesiasticum apponere, invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

Clausula derogatoriæ.

§. 9. Non obstantibus piæ memoriæ Bonifacii Papæ Octavi prædecessoris nostri de una, & Concilii generalis de duabus dietis, dummodò ultra tres dietas aliquis auctoritate præsentium ad iudicium non extrahatur, ac aliis quibuscumque Apostolicis, necnon in Provincialibus & Synodalibus Conciliis editis, specialibus vel generalibus constitutionibus & ordinationibus, necnon juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus; privilegiis quoque, indulgitiis, & literis Apostolicis, quibuscumque personis, etiam præfatis locorum Ordinariis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis, etiam Motu & scientia similibus, etiam Consistorialibus, & de fratribus nostrorum consilio in contrarium quomodolibet concessis, confirmatis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, etiam de illis eorumque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua mentio, seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia forma ad hoc servanda foret, illorum tenores ac si de verbo ad verbum inserti forent, præsentibus pro sufficienter expressis & insertis habentes illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter & expressè derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim, ab eadem sit Sede indultum, quòd interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per literas Apostolicas, non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Præservatio
constit. Pii V.
Greg. XIII.
& Concilii
Tridentini.

§. 10. Volumus autem quòd fel. record. Pii Quinti 22. Septembris, Anno sexto, ac Gregorii Decimi tertii prædecessorum nostrorum literis, sub Anno Piscatoris 25. Novembris, Anno nono Pontificatum suorum expeditis, in suo robore & efficacia permanentibus, præsentibus literis non comprehendant; Neque Ecclesias neque personas, in his quæ ad curam animarum pertinent, in quibus decreta Concilii Tridentini hujusmodi omnino servari debeant.

Fides transumptorum.

§. 11. Declarantes insuper ac præcipientes, quòd præsentium literarum transumptis, manu aliquus Notarii publici subscriptis, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, in iudicio & extrà illud ubique locorum plena & indubitata, eademque prorsus fides adhibeatur, quæ ipsis præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Dat. P. An. t.
die 30. April.

Datum Romæ apud S. Petrum, sub Anno Piscatoris, die ultima Aprilis, millesimo quingentesimo nonagesimo primo, Pont. nostri anno primo.

Forma promovendi ex præscripto Concilii Tridentini, ad regimina Ecclesiarum Cathedralium, & aliarum dignitatum, de quibus consistorialiter providetur.

De his agitur in Conc. Tridentin. sess. 7. cap. 1. sess. 24. cap. 2. & sess. 25. cap. 1. & antea in Leonis X. const. 7. Superna. fol. 543. Tom. 1. & postremò in Six. V. const. 74. Immensa. in 3. Congreg. supra in hoc Tom. 2. fol. 668.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Edita An. D.
1591.

ONUS Apostolicæ servitutis, ad quos nuper nos dignatio divina provexit, assidue admonet, in eam potissimum curam nobis esse pastoralis sollicitudine incumbendum, ut quæ à sacris ecumenicisque Conciliis pro communi totius Christiani populi salute, piè prudenterque statuta sunt, nulla aut temeritate violentur, aut negligentia deserantur; ea præsertim quæ ad bonos, idoneosque Pastores Cathedralibus, ac Superioribus Ecclesiis gubernandis præficiendos pertinent; nam si in quibusvis Ecclesiæ gradibus & Ministris, curandum est tales eligi, qui in Religione & sanctitate fideles ædificent, multò certè magis elaborandum est, ne in ejus electione erretur, qui supra omnes gradus constituitur, cui tamquam servo fideli & prudenti totius familiarum cura traditur, qui ad omnem virtutem & mandatorum Dei observantiam aliorum forma esse debet, cum certum sit gregis salutem magnoperè pendere ex boni Pastoris præstanti vita & doctrina.

Salus gregis
pendet à bono pastore.

§. 1. Sanè venerabiles patres, qui ex toto Terrarum Orbe ad sacrum generale Tridentinum Concilium à Summis Pontificibus prædecessoribus nostris evocati magna frequentia convenerunt, cum in aliis rebus multis præclarum studium ad corrigendos depravatos mores, & collapsam Ecclesiasticam disciplinam restituendam ostenderunt, tum in eo potissimum insigni zelo, & magnâque cum laude laborarunt, ut rationem invenirent, qua viri doctrinæ, pietate, prudentiæque excellentes, & in Ecclesiasticis functionibus diù multumque versati, Ecclesiis Cathedralibus præficerentur.

Concilium itaque Trid. insignes viros ad Cathedralis Ecclesiæ eligi decrevit in locis citatis in subrica.

§. 2. Nos igitur, qui cum minoribus constituti, Cremonen. Ecclesiæ regeremus, in eodem Concilio cum sanctis & egregiis illis Patribus interfuimus, & Concilio absoluto ad Ecclesiæ nostram reversi magno semper desiderio flagravimus, ut tam salubria generalis Concilii decreta executioni debitæ mandarentur, atque ut id fieret pro virili parte curavimus. Multò nunc magis, cum disponente Domino omnium Ecclesiarum cura & sollicitudo nos premit, summo desiderio tenemur, ut Pastores in præfiantur Ecclesiis, qui opus suum & ministerium impleant, & de ovium salute nos in Domino lætificent.

Hic Pont. uti Episc. Cremonen. d. Concilio interfuit, & illud ex quo exoptat.

§. 3. Illud autem in hoc saluberrimo & pernecessario negotio, quod est de Episcopis eligendis & præficiendis videtur esse præcipuum, ut instructio, examen, & inquisitio, de fide, vita, moribus, doctrina, & prudentia promovendorum, tam accuratè, fideliter ac serio instituitur, ut omnis fallacia fuso semoto, certò confidere valeamus, tales à nobis Christi gregi præfendo esse præpositos, quales tantum onus, Angelicus videlicet humeris formidandum, exigat, & quales ille expetit, qui pro iisdem ovibus redimendis propriæ vitæ ac sanguini non periclitetur. Et quidem in hac parte providentia disti Concilii Tridentini minime defuit, cum statuerit ac mandaverit, ut in Provinciali Synodo per Metropolitanum habenda, præscriberetur quibusque locis & Provinciis, propria examinis, seu Inquisitionis, aut instructionis faciende forma, Romani Pontificis arbitrio approbanda, quæ magis eisdem locis utilis atque opportuna esse videretur.

Concilium mandavit, ut in quibuscumque locis per Metropolitanum in Synodo præscriberetur forma examinis & instructionis.

Sed in pau-
cissimis locis
id executum
fuit.

Hic ideo
Pont. defig-
nat personas,
quibus com-
mittenda erit
instructio, &
examen extra
Curiam.

§. 4. Verum neque id hæcenus nisi à paucissimis factum est, neque ipse est, nisi longissimo tempo-
ris spatio, ut ab omnibus fiat; atque interim, dum
certa examinis sive inquisitionis ratio à Provinciali-
bus Conciliis expectatur, perit uber ille fructus,
qui ex tam utilibus Concilii generalis decretis spe-
rari posse videbatur, & experientia ipsa docuit per
tot annos à publicatione Concilii prædicti elapsos,
quid in unaquaque Provincia opus sit, quidve pos-
sit fieri.

§. 5. Habita igitur cum Venerabilibus fratribus
nostris Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalibus ma-
tura deliberatione, ac de eorum unanimi consilio
& assensu, præsentis nostri perpetuò valitura con-
stitutione decernimus, ut cum extra Romanam Cu-
riam, examen, instructio sive inquisitio facienda
erit, nemo omnino cuiuscumque status, gradus,
conditionisve fuerit, inquisitionem prædictam sibi
arrogare præsumat, sed integrum hoc negotium iis
qui à prædicto Tridentino Concilio designantur, à
Apostolicæ videlicet Sedis Legatis seu Nunciis Pro-
vinciarum, aut ejus de quo inquisitio fit, Ordina-
rio, eoque deficiente, Ordinariis vicinioribus re-
linquatur; nisi iustis de causis, nobis aut pro tem-
pore existentis Romano Pontifici per speciale man-
datum alicui alteri hoc munus quandoque com-
mittendum esse visum fuerit. Quod si forte aliquis
prædictorum, consanguinitate aut affinitate usque
ad tertium gradum inclusivè promovendum con-
tingeret, ut omnis suspicio carnalis affectus à tam
sacro negotio repellatur, ille quidem eo casu cen-
seatur exclusus, atque ad eum qui proximè sequi-
tur hoc est, si Legatus excludendus erit, ad Nun-
cium, si Nuncius ad Ordinarium, si Ordinarius, ad
viciniorum Ordinarium inquisitionis officium de-
feratur.

Et in Curia.

§. 6. In Curia verò hæc functio spectet, vel ad
eos Cardinales qui à nobis vel pro tempore existen-
te Romano Pontifice deligentur, vel ad Cardinales
earum Provinciarum seu Regnorum, apud nos &
Sedem Apostolicam Protectores, in quibus Eccle-
siæ ipsæ consistunt, si tamen ad ipsos hujusmodi van-
tium Ecclesiarum relatio pertinebit: quòd si de
Episcopo vel Metropolitano extra Romanam Cu-
riam degente, ab una Ecclesia ad aliam ex aliqua
gravi & iusta causa transferendo agatur, hoc mun-
us deficientibus Legato vel Nuncio Apostolico ejus
Provinciæ aut Regni, ubi Ecclesia ipsa à qua trans-
fertur sita erit, ad Metropolitanum si Episcopus, ad
Suffraganeum verò antiquiorem residentem, si
Metropolitanus transferendus erit, pertinere de-
claramus.

Formisque
instructiois
& examinis
prescribit.

§. 7. Deinde, qui sacrum Tridentinum Conci-
lium, non sine magna ratione eminentes personas,
& quæ negotii magnitudinem probè intelligerent,
ad hoc officium nominavit. Declaramus & statu-
mus, tam Legatos sive Nuncios, quam Ordinarios,
vel alios ab hac sancta Sede fortè delegandos, non
per Auditores aut Vicarios, aliosve ministros, sed
per seipsos inquirendi munus exercere debere,
quamvis ab hujusmodi personis, aliisque viris pe-
ritis adjuvari possint. Et si Prælati inquirens, per
se non posset ob locorum distantiam testes exami-
nare circa articulum aliquem, ut legitimos natales,
vel ætatem aut aliquid ejusmodi, licebit ei articu-
lum illum alteri personæ in dignitate Ecclesiastica
constitutæ subdelegare, non autem universam in-
quisitionem. Quod si fortè contingat, aliquem su-
prædictorum legitime impediri, ut per se hoc mun-
us præstare non possit, ad alios ea cura transfer-
tur, qui sunt ab eodem Concilio Tridentino ad hoc
officium designati, ut supra dictum est, de iis qui
ob consanguinitatem vel affinitatem ab hoc mune-
re excluduntur. Ad hæc, ut mens ejusdem sacri
Concilii rectæ ac fideliter debitæ executioni man-
detur, & tale sit examen quale requiritur in negotio
tanti ponderis, declaramus ac statuimus, non ef-
fe in vita ac doctrina promovendi investiganda eam
rationem adhibendam, ut ab ipso promovendo ar-

ticuli offerantur, ac testes producantur, sed oport-
ere ut Prælati qui munus inquirendi suscepit,
articulos conscribat, atque ipse ex officio suo il-
los testes vocet atque examinet, quos de rebus
inquirendis sincerum ac fidele testimonium datur-
os esse existimet. Verum, ut inquisitio prædicta
facilius ac plenius perfici atque expediri queat,
utile erit, si Prælati qui inquisitionem faciurus
est, vel à promovendo, vel ab alio aliquo confici
curet schedulam, in qua sint ordine descripta no-
men promovendi, cognomen, patria, parentes,
ordo, gradus, professio, functio, si quam is fortè
exercuit, loca in quibus, aut Theologiæ, vel iuri
canonico operam dederit, aut longo tempore
versatus fuerit, denique amici ac familiares, qui
tam ipsum quam parentes ejus intime norint.
Quod si promovendus documentum aliquid ex-
hibere voluerit, undè ipsius ætas, gradus, digni-
tas, sacri ordines, functio, officia, munerisque
aut aliquid ejusmodi comprobetur, admittendum,
ac processui inferendum erit, modò documentum
publicum seu authenticum fuerit.

Quivè testes
desuper reci-
pi possint.

§. 8. Illud quoque prohibendum censuimus,
ac expresse prohibemus, ne ad testimonium di-
cendum de fide Catholica, vita, moribus, doctrina,
atque aptitudine, ad regendam Ecclesiam qui-
libet homines admittantur; sed viri tantum gra-
ves, pii, prudentes, docti, qui de qualitatibus
promovendorum rectum judicium ferre valeant,
ac ut supra diximus, sincerum, ac fidele testi-
monium dare velint. Proinde tam cognati, ac ni-
mium familiares, quam inimici atque æmuli ex-
cludendi erunt. Porro testes ejusmodi, Prælati
qui examen seu inquisitionem habiturus erit, seor-
sum ac sigillatim examinabit; & si quando judicave-
rit expedire, eis ad memoriam reducet tum ju-
ramenti vim, perjurii gravitatem, eosdem etiam
seriò & graviter admonere, ipsos reos futuros
apud Omnipotentem Deum eorum omnium, quo-
rum vel committendo vel omitendo rei erunt,
qui promovebantur, si vel falsa narranto, vel re-
ticendo vera, in causa erunt ut homines indigni,
vel minù idonei ejusmodi Ecclesiis præficiantur.
Diligenter etiam testium qualitates cognoscere stu-
debit, ac potissimum quam sint ad promovendos
affecti, ut inde conciat utrum ex affectu, an ex
veritate testimonium dicant. Denique cum testes
de qualitatibus promovendi interrogabit, dabit
operam, ut quoad ejus fieri poterit, omnia & sin-
gula quæ ad prædictam inquisitionem facere vi-
debuntur; per ipsos exprimat.

§. 9. Quamvis autem qualitates omnes pro-
movendorum, quæ in generalium Synodorum de-
cretis, aliisque canonicis sanctionibus continen-
tur, probè cognita esse debeant iis, quibus in-
quisitionis officium demandatum est, quales sunt na-
tum esse ex legitimo matrimonio, atque ex paren-
tibus Catholicis, annum trigessimum jam exple-
visse, sacris ordinibus, saltem ante sex menses
initiatum esse, gradum Doctoratus, aut licentiæ
in Theologia, vel jure canonico, aut certè publi-
cum alicujus Academiæ testimonium obtinuisse,
quoad alios docendos idoneus esse declaratur, ad
hæc in Ecclesiasticis functionibus diu esse versa-
tum, item fidei puritate, innocentia vite, præ-
sentia, usu rerum, integra fama, doctrina deni-
què præditum esse; tamen quia circa doctrinam
plures fraudes committi solent, & sæpè contin-
git, ut nonnulli scientia vacui, de solo Doctoris
titulo, aut privilegio glorientur, volumus, ut
de eorum etiam doctrina diligenter inquireatur,
qui vel Doctoratus, aut licentiæ titulis & privile-
giis gaudent, vel etiam à publicis Academiis testi-
monium habuerint quòd idonei essent ad alios
docendos, nisi fortè aliquorum insignis doctrina,
ex publica ipsorum functione notoria esset. Ità ve-
rò inquisitio facienda erit, ut quibus in locis,
quanto tempore, & quo fructu Theologiæ, vel

Qualitatet.
que promo-
vendum,
quæ probari
debeant.

Non ab re vi-
deri posset
constit. co.
Six. V. supra
fol. 609.

iuri canonico promovendus operam dederit cognoscatur. Et quoniam in quibusdam Provinciis nulla sunt studia generalia, neque ullæ publicæ scholæ, neque usus habet ut qui studiis operam navant, ullis Doctoratus aut licentiæ insignibus decorentur, declaramus in ejusmodi locis sufficere, si testimonio virorum gravium, & sacræ Theologiæ, vel juris canonici peritorum constet, promovendos ea scientia Theologiæ, vel Canonum verè pollere, ut idonei sint ad ea docenda, quæ populum Christianum scire oportet, ac muneris sibi injungendi necessitati valeant satisfacere. Testes præterea deponant se de scientia promovendorum certos redditos esse ex eo, quòd prædictos promovendos, specimen suæ doctrinæ, publicè vel privatim dedisse cognoverint. Quod autem ad Regulares pertinet, cum ad Ecclesias Cathedrales promovendi fuerint, ne fraus ulla subrepre possit in eo quod idem Tridentinum Concilium statuit, ut regulares à suis Superioribus sufficientis doctrinæ testimonium habeant. Declaramus, nomine Superiorum eos dumtaxat intelligendos esse, qui nullum sui Ordinis Superiorem agnoscunt, sive ii cuiusvis Ordinis Abbates, Magistri, aut Ministri, Præpositi generales, aut quorumlibet Congregationum Præfidentes, sive Definidores, aut Visitatores Capitulum generale representantes, sive alii quocumque vocabulo nominentur, & in eorum absentia ipsorum Vicarii seu Commissarii generales, vel in Romana Curia Procuratores Ordinum, aut Congregationum generales in hac parte succedant. Et nihilominus præter Superiorum testimonium, qui fidem facient ejusmodi regulares ad alios docendos idoneos esse, volumus ea servari, quæ de his diximus, qui publicum suæ doctrinæ ab aliqua Academia testimonium habent; ut videlicet seriò inquiratur an regulares ad Cathedrales Ecclesias promovendi, eos progressus in studiis fecerint, qui in futuro Antiflite requiruntur.

Abolitis
prædictis, &
etiam simili
inquisitione
de statu Ec-
clesiæ, pro-
fessionem ho-
ri à promo-
vendis jubet,
juxta bullam
Pii IV. num.
82. quæ est
suprà fol. 138.

§. 10. Post inquisitionem verò de fide, vita, moribus, doctrina, & prudentia promovendi, necnon informationem de statu Ecclesiæ, aliisque necessariis rebus, quæ pariter coram superiùs expressis Prælati, juxta ejusdem Concilii decreta fieri debet, profectio fidei Catholice à promovendo facienda erit; quam quidem ab eo dumtaxat recipiendam esse declaramus, ad quem inquisitio pertinebit, nisi fortè qui professionem emisit, à Prælato inquirente longè distet; tunc enim is Prælati ex subdelegatione inquirentis, professionem admittere debet, cui promovendus vicinior erit; quod idem intelligatur de informatione de statu Ecclesiæ accipienda, si quando contingeret, ut in alia Provincia sive Regno esset Ecclesia in alio promovendus. Recipiet autem Prælati professionem promovendi, præsentante Notario publico, ac testibus, atque eam à se admissam, ac receptam, propriæ manus subscriptione testabitur. Is quoque qui professionem ejusmodi fecerit, in eo loco ubi proprium nomen profitentis exprimi solet, nomen suum manu propria adscribet. Denique his peractis, Notarius publico instrumento fidem faciet de professione prædicta adhibitis testibus ut præfertur. Ubi verò totum examen seu inquisitio de persona promovenda perfecta fuerit, ea in instrumentum publicum redacta, cum toto testimonio ac professione fidei emissâ, ad hanc sanctam Sedem, ut Concilium statuit, quamprimum clausa & obligata in forma authentica transmittenda erit. In qua re observari volumus, ut professio fidei iisdem omnino verbis descripta sit, quæ in ea forma continentur, quam felicis recordationis Pius Papa Quartus prædecessor noster statuit observandam; & ut Prælati, qui instructionem, examen, & inquisitionem fecit, vel per literas separatas simul tamen cum processu mittendas, vel per subscriptionem dicti processus significet, quanta fides testibus examinatis, eorumque dictis & scripturis productis suo iudicio habenda sit, simul etiam quid de promovendo ipse sentiat.

§. 11. Processus autem sic formati, & ad Curiam transmissi, à Cardinale qui proponendi munus incumbet & à tribus Prioribus Ordinum Cardinalibus, ut moris est, juxta formam Concilii prædicti subscribentur & expeditur. Volumus autem, ut Cardinalis relator, moneat promovendum si præfens in Curia fuerit, ut juxta Concilium Lateranense novissimè celebratum, omnes Cardinales, sive majorem partem Collegii adeat antequàm Ecclesiam proponat, ut quæ à referente Collega sint audituri, oculata fide quantum ad personam promovendi attinet, cognoscere possint.

§. 12. Hac porro omnia, quæ de promovendis ad Ecclesias Cathedrales dicta sunt, ad eos etiam pertinere, atque in eorum promotione servanda esse declaramus & decernimus, qui nominati, præfentari, aut electi fuerint ad dignitates Abbatiales, ac Prioratus, seu Præpositus, Monasteriorum regimina, aut alias regularium cuiusvis Ordinis, ut etiam secularium præfaturas, de quibus consistorialiter provideri contigerit; atque eos præfentari, quibus præter curam & regimen Monachorum aut canonicorum clericorumque, regularium vel secularium, annexa est in populum jurisdictionis spiritualis, vel temporalis; excepta tamen ætate circa quam nihil innovamus.

§. 13. Quo verò ad doctrinam, cum generalia Concilia non statuunt ut personæ promovendæ ad regulares dignitates, Doctoratus sive licentiæ gradum suscipere, vel publicum testimonium ab Academia aliqua habere teneantur, & tamen æquum sit, ut ea doctrina polleant qua onus sibi imponendum sustinere valeant, declaramus & statuimus, ut Prælati qui inquirendi munus suscepturi sunt, studiosè ac diligenter inquirent, super doctrina ejusmodi personarum, juxta modum & formam superiùs præscriptam, ut nos & pro tempore futuri Romani Pontifices, habita de illis vera informatione per processum qui ab inquirente transmittetur, certò statuere, ac judicare possimus, an persona promovenda vera sit talis qualem dignitas illa ad quam provehenda est, exigit & requirit.

§. 14. Hortamur verò in visceribus Domini nostri JESU Christi, ac paternæ caritate monemus eos omnes, qui ab hac sancta Sede nominandi, præfentandi, vel etiam eligendi futuros Episcopos vel Abbates jus habent, ut seriò apud se cogitent quanti momenti sit hoc negotium, ex quo salus animarum, tranquillitas Reipublicæ, incolumitas Religionis, propagatio fidei, aliæque permulta & maxima bona dependent. Illud etiam sæpè & sæpius ad mentem revocent, quod sancta Tridentina Synodus admonet, nihil se ad Dei gloriam, & populorum salutem utilius posse facere, quam si bonos pastores, & Ecclesiæ gubernandæ idoneos promoveri studeant, eosque alienis peccatis communicantes mortaliter peccare, nisi quos digniores, & Ecclesiæ magis utiles ipsi judicaverint, non quidem precibus vel humano affectu aut ambientium cupiditatibus, sed eorum exigentibus meritis præfici diligenter curaverint. De nominandis verò, præfentandis, vel eligendis ad regulares dignitates præter ea, quæ superiùs observanda esse declaramus, illud quoque paternis his nostris hortationibus & monitionibus adjiciendum censuimus, ut nominationis, præfentationis vel electionis jus habentes, eos diligere studeant, atque omnino contentur, qui non modo eundem Ordinem sint antè profecti, sed in eodem etiam satis diù laudabiliter versati; neque enim decet, ut Magistri aliorum esse incipiant, qui non fuerint antè discipuli, & subditis imperare præsumant, qui prius non didicerint Superioribus obedire.

§. 15. Eos denique qui vel examinando, & inquirendo, vel testimonium ferendo, operam suam in hac re præstabant seriò admonemus, ut ea fide ac diligentia in negotio tanti momenti versentur, ut à Deo & à nobis laudem pro bono opere expectare valeant.

Inquisitionis
processus, à
Card. Priori-
bus Ordini-
um in Curia,
postea
examinari
præcipit.

Eandemque
inquisitionem
fieri
mandat, de
promoven-
dis ad Eccle-
sias, de quibus
consistorialiter
providetur, tum
certis declara-
tionibus.

Jus præfentandi vel eligendi habentes, pie hortatur ad idoneos præfentandum & eligendum.

Inquisitores
prædictorum
ad diligenter
exequendum
monet.

Sanctio pce-
nalis.

§. 16. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostre prohibitionis, voluntatis, declarationis, decreti, statuti, hortationis, & monitionis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem Omnipotentis DEI, ac Beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursum.

Dat. P. A. 1.
die 15. Maii.

Dat. Romæ in Monte Quirinali, Anno Incarnationis Dominicæ 1591. Idibus Maji, Pontif. nostri anno 1.

VII.

De Immunitate Ecclesiarum, quibusdam exceptis casibus, inviolabiliter observanda.

Ad quod habes etiam dispositionem Concilii Tridentini sess. 25. cap. 20. & bullam 1. Joan. XXII. Ex parte. sup. fol. 191. ubi notavi, in Tom. I.

GREGORIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Cum aliis, nonnulli prædecessores nostri, & præsertim fel. recordat. Sixtus Papa Quartus, necnon Pius etiam Quintus, sancto zelo ducti, diversas facultates & indulta extrahendi, etiam in casibus quibusdam à jure non permittis, ex Ecclesiis criminosos & delinquentes, compluribus secularibus Principibus, eorumque Curis & Magistratibus sub variis modis & formis concesserint, prout in illis plenius continetur.

§. 1. Experientia postmodum docuit, tum ob diversitatem & differentiam hujusmodi indultorum, tum quia plerique eorumdem Principum Ministri ex hoc ipso illa diversimodè, etiam latius quam par erat, & ad suum libitum interpretandi occasionem arripuerunt illisque abuti cœperunt, subortum esse non mediocrem in aliquibus locis, libertatis & immunitatis Ecclesiasticæ perturbationem & confusione, alibi verò ne ipsos quidem laicos indultis hujusmodi uti voluisse aut potuisse, quod Populis, inveterata erga Ecclesiæ reverentia, devotis, & assuetis, scandali potius quam quietis occasionem præberent. Illud etiam absurdum & innumerò fecutum est, ut infimæ interdum conditionis laici, non modò juris, sed etiam literarum penitus ignari & imperiti, dum, quæ potestates, aut Ministri Curie secularis in aliquo Castro, aut Oppidulo jurisdictionem exercebant, facultatum & indultorum hujusmodi limites longè excesserint, eaque suo arbitratu in sensus minus rectos, & ab intentione concedentis omnino alienos, detorserint, & illorum prætextu quicquid sibi in mentem venit attentare præsumperint, in grave jurisdictionis & immunitatis Ecclesiasticæ præjudicium, locorum, & personarum divino cultui dicatarum contemptum, ipsius divinæ majestatis offensam, & scandalum plurimorum. Quare pro commissio nobis à Domino Pastoralis officii munere, prædictis absurdis & scandalis obviare, ac differentias hujusmodi ad uniformem regulam reducere, omnemque dubitandi, ac perperam interpretandi occasionem dilucida declaratione submovere, abusus tollere, & ne Ecclesiastica jura planè conculcentur & negligantur, opportune providere decrevimus, prout etiam dictus Sixtus prædecessor noster isdem de causis motu statuere decreverat, licet morte præventus hoc adimplere nequiverit; ita tamen, ut quando præsens temporum calamitas, & nimia, quæ jam invaluit perverforum hominum malicia id exposcit, aliquand, etiam ad terrorem delinquentium, & ad coercendam illorum facinorâ, ultra id quod prædicta illorum majorum disciplina, & vetus sacrorum canonum norma præscripserat in quibusdam casibus congrua moderatione adhibita, permittamus.

§. 2. Hac itaque nostra perpetuò valitura constitutione, omnia & quæcumque privilegia, indulta, & gratias, tam prædictum Sixtum ac Pium Quintum, quam alios quoscumque nostros prædecessores, aut nosmetipsos, Sedem Apostolicamque ejusque Legatos, super abducendis, vel extrahendis ab Ecclesiis, Monasteriis, Sacellis, domibus, regularibus & secularibus, locisve sacris aut Religiosis, aliisque in casibus à jure permittis, hominibus certorum tunc expressorum vel non expressorum criminum reis, aut fraudulentis decoctoribus, etiam in odium certorum delictorum, & pro bono, pace, & quiete publica, & ex causis urgentissimis ac necessariis & aquipollentibus casibus in jure expressis, atque ex paritate, identitate, aut majoritate rationis extensis, perpetuò vel ad certum nondum elapsum tempus, seu ad vitam alicujus Principis, aut beneplacitum, seu alias quomodolibet concessa, etiam iteratis, aut multiplicatis vicibus approbata, & innovata, ac usu recepta, literarumque Apostolicarum sub plumbos, aut in forma Brevis seu aliis quomodocumque desuper confectas, quarum tenores hic haberi volumus pro expressis, ac ad verbum insertis, sublata penitus omni differentia, ita ad unam tantum formam reducimus, & moderamus.

§. 3. Ut laicis, ad Ecclesias, locaque sacra, & religiosa prædicta confugientibus, si fuerint publici latrones, viarumque grassatores, qui itinera frequentata, vel publicas stratas obfident, ac viatores ex insidiis aggrediuntur, aut depopulatores agrorum, quique homicidia, & mutilationes membrorum in ipsis Ecclesiis earumve Cæmeteriis committere non verentur, aut qui proditoriò proximum suum occiderint, aut Assassini vel hæresis, aut læsæ Majestatis in personâ ipsiusmet Principis rei, immunitas Ecclesiastica non suffragetur. Sed universis & singulis venerabilibus fratribus nostris Patriarchis, Primatibus, Archiepiscopis, Episcopis, cæterisque Ecclesiarum, & Monasteriorum Prælatibus, tam secularibus quam cujusvis Ordinis Regularibus, districte præcipiendo mandamus, & præcipimus, ut laicos in casibus prædictis delinquentes, ad eorum Ecclesias, Monasteria, domos, & alia loca suprascripta sacra, seu Religiosa respectivè confugientes, & in eis se recipientes atque morantes, qui prædicta delicta, eorumve aliquod, judio suo commisisse videbuntur, quando à Curia seculari fuerint requisiti, & quilibet eorum fuerit requisitus, Ministris, & Officialibus Curie secularis absque irregularitatis nota, aut alicujus censuræ Ecclesiasticæ incurso, tradi, & consignari curent, & faciant, & quilibet eorum curet & faciat.

§. 4. Ne autem Curia secularis prædicta Ministri facultate illos per se & propria auctoritate extrahendi, & abducendi sibi olim, ut præfetur, attributa, & per præfentes revocata, abutantur, Volumus, districte auctoritate decernimus, & declaramus, ut Curia secularis ejusque Judices & Officiales, ab Ecclesiis, Monasteriis, locisque sacris prædictis, laicum aliquem ut præfetur, delinquentem in nullo ex casibus suprascriptis sine expressa licentia Episcopi, vel ejus Officialis, & cum interventu personæ Ecclesiasticæ ab eo auctoritatem habentis, ad quos solos, & non alios, Episcopis inferiores, etiam si alii Ordinarii sint, aut nullius Diocesis, aut Conservatores ab hac Sede specialiter vel generaliter deputati, prædictam licentiam dandi, facultas pertineat. Occurrente autem casu in loco exempto, & nullius diocesis, tunc ad Episcopum viciniorem devolvatur hæc cognitio, & non ad alios, capere, extrahere, aut incarceratione non possint, nisi eo casu, quo ipse Episcopus, & districte personæ Ecclesiasticæ requirite illos in delictis superius expressis culpabiles, tradere, aut captivæ & carcerationi intervenire, & assistere recusaverint; tuncque reverentia Ecclesiarum, & locis sacris debite memores, prædictos delinquentes, minori quo id fieri poterit cum scandalo & tumultu, extrahere curent.

Hic itaque Pont. hujusmodi facultates revocat, & immunitatem Ecclesiarum observari præcipit.

Certos tamen casus hic expressos excipit, in quibus licet delinquentes Curie seculari requirere remitti debent.

Quoad hæreticos habes etiam supra XXII. cit. in sub.

Et Curia secularis absque licentia Judicis Ecclesiastici nullo pacto accipiat.

1591.

Sed Ecclesiasticus prius videat an carceratus aliquod ex criminibus exceptis commiserit.

Criminis hæresis cognitio totaliter fit fori Ecclesiastici.

Et omnium personarum Regularium in omnibus casibus.

Contravenientes poenas hic enarratas incurrant.

Clausula sublata &c.

Clausula derogat.

§. 5. Quodque delinquentes laici prædicti, postquam, ut præfatur ab Ecclesiis, locisve sacris extracti & capti fuerint, ad carceres Curie Ecclesiasticæ reponi, & inibi sub tuto & firmo carcere ac opportuna custodia, data illis, si opus fuerit, per Curiam sæcularem, detineri debeant, nec inde extrahi, Curiaque sæculari prædictæ consignari nec tradi possint, nisi cognito prius per Episcopum, seu ab eo deputatum, an ipsi verè crimina superius expressa commiserint; tuncque demùm de mandato Episcopi per Judicem Ecclesiasticum Curie sæculari, quacumque appellatione postposita, consignentur.

§. 6. De crimine verò hæresis, cognitio ad forum Ecclesiasticum tota pertineat, neque in ea Curia sæculari fit quoquomodo intromittat.

§. 7. Sicuti etiam prohibemus, ne contrà Ecclesiasticas personas, sæculares aut cuiusvis Ordinis, vel Militiæ etiam Sancti Joannis Hierosolymitani regulares quoquomodo etiam vigore prædictorum privilegiorum, indultorum, aut concessionum, quæ omnia ad terminos juris per præfentes reducimus, procedant, aut se intromittant, illasve ab Ecclesiis, Monasteriis, Domibus, locisque sacris, aut religiosis, etiam in casibus in hac constitutione expressis, extrahere, abducere, capere, carcerare, aut cognoscere de criminibus ad forum Ecclesiasticum pertinentibus, aliàs quàm de jure, & per privilegia eisdem Ordinibus, aut militiis concessa permittitur, quomodolibet præsumant.

§. 8. Quod si quis quacumque dignitate & auctoritate prædictis, præmissorum, aut alio quovis prætextu, quicquam præter aut contrà hujus nostre constitutionis tenorem attentare præsumpserit, declaramus eum ipso facto, censuras & poenas easdem incurre, quæ, contra libertatis, juris & immunitatis Ecclesiasticæ violatores per sacros Canones, & Conciliorum generalium, nostrorumque prædecessorum constitutiones sunt promulgatæ.

§. 9. Sique per quoscumque Judices, ordinarios & delegatos, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, & S. R. E. Cardinales, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter iudicandi & interpretandi facultate, in quavis causa & instantia, iudicari, & definiti debere, necnon irritum decernimus & inane si secus super his, per quoscumque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter, contigerit attentari.

§. 10. Non obstantibus præmissis, tam Sixti, & Pii V. quàm aliorum quorumcumque prædecessorum nostrorum literis Apostolicis, privilegiis, indultis & facultatibus, quibuscumque personis etiam Imperiali, Regia, Ducali, aut alia quavis dignitate & auctoritate fulgentibus, aut Rebus publicis, Dominis, Regnis, Provinciis, Civitatibus, Terris, & locis, eorumve Curis, Parlamentis, Senatibus, Consiliis, Communitatibus, Universitatibus, Collegiis, aut Præfidentibus, Proregibus, Gubernatoribus, Locatenentibus, Vicariis, Potestatibus, aliisque Magistratibus, Officialibus, Ministris, aut Consiliariis, ex prædictis, vel aliis etiam gravioribus, & urgentioribus causis; tam illorum intuitu & contemplatione, sive ad eorum preces, & instantiam, quàm etiam Mortu proprio, & ex certa scientia deque Apostolica potestatis plenitudine, ac per modum statuti & legis perpetuæ, etiam in vim contractus, & fratrum nostrorum consilio, sub quibuscumque tenoribus & formis, & cum quibuscumque præservativis, reſtitutivis, mentis attestativis, derogationum derogatoriis, aliisque validissimis, efficacissimis, & insolitis clausulis, necnon irritantibus, & aliis decretis, etiam si inibi caveatur expresse, quod illis, nisi sub certis modis & formis, & nisi de expresso eorum consensu ad quorum favorem concessa fuerint, derogari possit, & aliter factæ derogationes nullius sint roboris vel momenti, & aliàs quomodolibet concessis etiam sæpius approbatis, & innovatis. Quæ omnia, & singula, ac illorum re-

nones pro expressis habentes, quatenus præmissis in aliquo advenſentur, aut plures quàm superius expressos casus contineant, auctoritate & tenore præmissis omnino, ac perpetuò tollimus, & abrogamus, ac ad terminos præfentis Constitutionis, quoad superius descripta dumtaxat, reducimus: & nolumus cuiquam de cetero suffragari, & quilibet alia dictæ sedis indulgentia generali vel speciali, per quæ præfentibus non expressa, vel ad verbum non inserta effectus earum quomodolibet valeat impediri.

§. 11. Ut autem præfentes literæ ad omnium notitiam facilius deducantur, mandamus illas in valvis S. Joannis Lateranen. & Principis Apostolorum, Basilicarum de Urbe, necnon Cancellariæ Apostolicæ de more affigi, & publicari; earum etiam exemplis inibi affixis & dimissis, ac post publicationem hujusmodi volumus & decernimus, ut omnes & singulos quos concernunt, & concernent in futurum, perinde ardeant, & afficiant, ac si eorum cuilibet personaliter intimatæ fuissent. Earumdem verò præfentium transcriptis, etiam impressis, Notarii publici manu subscriptis, eandem fidem in iudicio, & extra illud ubique gentium & locorum haberi volumus, quæ eisdem originalibus literis haberetur, si essent exhibitæ vel ostensæ.

§. 12. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostre moderationis, præcepti, mandatorum, decretorum, reductionum, declarationum, prohibitionis, sublationis, abrogationis, & voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire, si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem Omnipotentis DEI, ac Beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incurſurum.

Datum Romæ in Monte Quirinæ, Anno Incarnationis Domini millesimo quingentesimo nonagesimo primo, nono Calen. Junii, Pontificatus nostri anno primo.

Anno à Nativitate Domini 1591. indictione 4. die vero 28. mensis Maji, Pontificatus Sanctissimi in Christo patris, & D. N. D. Gregorii divina Providentia Pape XIV. Anno ejus primo, retroscripta literæ Apostolicæ affixæ, & publicatæ fuerunt in valvis Basilicarum Principis Apostolorum de Urbe, & S. Joannis Lateranen. & necnon Cancellariæ Apostolicæ, & acie Campi Flore, ut moris est, per nos Caterinum Menandi, & Nicolaum Drouyn Curſ.

Pompeus Guerra Mag. Curſ.

Moderatio Constitutionis à Sixto V. editæ, contrà Abortum quovis modo procurantes, & eorum complices.

GREGORIUS EPISCOPUS, Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Sedes Apostolica pia mater assidue sentiens ponderis sibi incumbentis in procuranda salute animarum, pretioso Christi Domini sanguine redemptarum, gravitatem, & magnitudinem, in re tanti momenti, ut par est, magis in dies sollicita, eundemque optimum finem semper ante oculos propositum habens, nihil umquam intentatum prætermittit eorum, quæ ad fidelium animas in viam salutis dirigendas iudicari pertinere. Quare nemini mirum videri debet, si interdum quidem contumacium fidelium audaciam poenarum ferveritate deterret. Rursus eisdem, si ad cor redire velint, & peccati veniam humiliter exposcere, matrem aperit sinum, viamque ad penitentiam eis sternit faciliorem, ac mansuetudine congrua rigorem temperat, prout in Domino conspicit salubriter expedire.

§. 1. Dudum siquidem fel. rec. Sixtus Papa V. prædecessor noster, iusticiæ zelo accensus, contrà procurantes abortum factus tam animati, quàm inanimis, ejusque gravissimi sceleris participes & adiutores, necnon contrà eos qui

Publicatione hujus constitutionis demandat.

Sanctionem poenalem adſcit.

Dot. P. A. y. die 24. Maii.

Publicatio.

VIII.

Edita A. D. 1591.

Causa hujus moderationis.

malie

Six. V. contra
abortum pro-
curantes edi-
dit bullam
quæ 87. est
supra fol.
702. Effrena-
tam.

mulierum fecunditatem impeditur, & sterilitatis potiones seu venena præberent, constitutionem edidit, sub dat. iv. Kal. Novembris, Pontificatus sui anno tertio, per quam ultra diversas, spirituales & temporales penas, etiam inter alia excommunicationis sententiam contra eos promulgavit, sibi quæ & successoribus suis tantum absolvendi facultatem reservavit, prout in eadem constitutione plenius continetur.

§. 2. Cum igitur postmodum experientia docuerit, ex remedio hujusmodi, non eam quæ sperabatur, utilitatem & fructum provenisse, verum potius multis Satanæ malitia ad peccandum inductis, difficiliiori ob solâ Apostolicæ reservatam absolvendi facultatem, reddito ad poenitentiam aditu, eos à nefariis hujusmodi flagitiis perpetrandis non solum non retraxisse, sed etiam plurimorum sacrilegiorum, gravissimorumque peccatorum, & scelerum occasione dedisse: Nos propterea animadvertentes, gladium Ecclesiasticæ disciplinæ, præsertim quoad censuras & penas spirituales, ita exercendum esse, ut ad medicinam tendat, non ad perniciem animarum, æternumque Pastorem, cujus vires in terris gerimus, quantum (divina ejus gratia adjutrice) possumus, imitari volentes, qui venit animas hominum salvare non perdere, neminique quantumcumque graviter, & enormiter deliquerit, viam salutis præclust, quin potius ad eam assequendam copiosa remedia adhibuit, ac nobis reliquit, & simul utilis censentes, ubi nec de homicidio, nec de animato fœtu agitur, penas non imponere duriores iis, quæ per sacros Canones, & leges prophanas sunt infligæ, habita super hoc cum Venerabilibus fratribus nostris S. R. E. Cardinalibus, super negotiis & consultationibus Episcoporum deputatis, matura deliberatione, de eorum consilio, constitutionem prædictam sic duximus moderandam, ut à peccato, & excommunicatione contra personas ibi expressas lata, tam quoad eos qui hæcenus deliquerunt, quam quoad illos qui post nostram constitutionem in eisdem casibus deliquerint, quilibet presbyter, tam secularis, quam cujusvis Ordinis regularis ad Christifidelium confessiones audiendas, & ad hos casus specialiter per loci Ordinarium deputatus, plenam & liberam in foro conscientie tantum, absolvendi habeat facultatem, eandem prorsus quam idem Sixtus prædecessor, sibi ac suis successoribus reservavit.

§. 3. Quo verò ad penas procurantium abortum fœtus inanimis, aut exhibentium mulieribus, vel sumentium, venena, sterilitatis aut quocumque modo auxilium, vel consilium eis dantium, in prædicta constitutione contentas, constitutionem præfatam, in ea parte ubi de his agit, ad terminos juris communis, ac sacrorum Canonum, & Concilii Tridentini dispositionem, auctoritate Apostolica tenore præsentium, tam quoad præterita, quam quoad futura, perpetuò reducimus, perinde ac si eadem constitutio in hujusmodi parte nunquam emanasset.

§. 4. Non obstantibus eadem prædecessoris nostri constitutione, quam quoad reliqua omnia, præter contenta in hac nostra constitutione in suo robore omnino permanere volumus, cæterisque contrariis quibuscumque.

§. 5. Volumus autem, ut præsentium transumptis, Notarii publici manu subscriptis, & sigillo Prælati Ecclesiastici munitis eadem prorsus fides habeatur, in judicio & extrâ illud, quæ eisdem originalibus haberetur exhibitis vel ostensis.

§. 6. Nulli ergo omnino hominum liceat hac paginam nostrarum moderationis, reductionis, & voluntatum infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem Omnipotentis DEI, ac Beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursum.

Datum Romæ in Monte Quirinali, Anno Incarnationis Dominicæ 1591. prid. Cal. Jun. Pontificatus nostri anno 1.

Concessio usus bireti rubri, S. R. E. Cardinalibus, ex Ordinibus Regularium assumptis.

De materia Cardinalium, satis dixi ad const. 50. Six. V. supra fol. 609. Postquam, ibi videas.

Sanctissimus D. N. D. Gregorius Papa XIV. vocavit ad Sedem, Dominos Cardinales, eisquæ proposuit, de concedendo usu rubri bireti, DD. Cardinalibus ex Ordinibus regularium assumptis, & sententias eorum audivit, die 26. Aprilis 1591. Romæ apud S. Petrum in Consistorio secreto.

§. 1. Postea die Dominico 9. Junii festo Sanctissimæ Trinitatis, Sanctissimus D. N. Romæ in ædibus Hortorum Quirinalium, antequam descenderet ad SS. Apostolorum proximam Basilicam, ad Capellam celebrandam, dedit rubra bireta infrascriptis DD. Cardinalibus ex Ordinibus regularium, quæ perpetuò deferrent more aliorum, habitu in cæteris nihil immutato. Cardinales hi fuere.

Frater Michael Alexandrinus.) Ambo ex Ordine Hieronymi Alesanus.) ne Predicat.
Frater Constantius Sarnanus, ex Ordine Minorum Conventualium.

Frater Gregorius de Montelparo nuncupatus, ex Ordine Eremitarum S. Augustini.

Approbatio quarta instituti & Religionis Clericorum Regularium Societatis JESU, cum aliquarum impugnationum rejectione.

Hanc Religionem primò approbavit Paul. III. ut supra in ejus const. 25. Regimini. Tom. I. fol. 743. ubi etiam cætera plenè adnotavi, ibi videas.

GREGORIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Ecclesiæ Catholicæ, cui DEO auctore præsumus, decoraque utilitas postulat, ut cum in omnibus illius membris fovendis atque orandis, assidue nobis laborandum sit; in illa tamen præcipuam vigilantie nostræ partem impendere debeamus, quæ non modò ipsa per se, robur, ac pulchritudinem corpori huic mystico afferunt; sed cæteras etiam ejusdem partes vel disruptas consolidat, vel integras custodire, vel fœdatas eluere, atque etiam ornare valeant. Inter hæc autem quem locum obtineant Religiosi Ordines, præsertim verò qui proximorum utilitati deserviant, non obscurè perspicimus, cum & superiora tempora, & præsentia diligenter attendimus.

§. 1. In his verò Religio Societatis JESU, quam novissimis hæc diebus divina providentia excitavit, adeò strenuè laboravit, ac sine intermissione laborat, ut illius vel turbationem, & infirmitatem, ad commune Ecclesiæ damnum, vel pacem atque integritatem, ad ejusdem utilitatem maximè pertinere putemus. Et quoniam neque tranquillitati, neque firmitati hujusmodi Ordinum prospectum esse poterit, nisi eorum instituta firmiter inconcussa servantur, iisdemque modis feliciter progrediantur & crescant, quibus à Fundatoribus, Domino inspirante, atque hac sancta Sede approbante, primò fundati sunt, necessarium duximus, ea quæ ab Ignatio, hujus Ordinis Fundatore, ordinata, & à prædecessoribus nostris Rom. Pont. circa ejusdem Societatis Institutum sancta sunt, Apostolicæ firmitatis munimine denuò roborare.

§. 2. Quamvis enim præfatæ Societatis Institutum jam inde ab ejus primordiis fuerit per se, re. Paul. III. & Julium etiam III. Romanos Pontifices prædecessores nostros approbatum; & à fel. rec. Gregor. XIII. etiam prædecessore nostro primo per ejus quasdam literas sub Dat. Cal. Febr. Pont. ejus anno undecimo: deinde copiosius per Constitutionem, quæ incipit, Ascendente Domino, confirmatum; Nihilominus tamen non ideo defuerunt, qui adhuc sub zeli, & boni specie, aliqua ex

Edita An. D.
1591.

Hic Pont. votis Cardinalium auditis,

Usus bireti rubri Cardinalibus, ex Ordinibus Regularium assumptis concessit.

Nomina Cardinalium qui d. biretum tunc receperunt.

X.

Edita An. D.
1591.

Prooemium.

Societas commendatur.

Paul. III. Jul. III. & Greg. XIII. Societatis institutum approbavit, ut notavi in d. Pauli cit. in rubr.

Quam hic Pont. moderatur quoad reservationem abolitionis ab excommunicatione.

Clausula derogatoria.

Fides exemplorum.

Sanctio poenalis.

Dat. P. An. t. die 31. Maji.

is quæ in dictis Pontificiis approbationibus & confirmationibus continentur, & alia etiam quæ ad institutum, & rationem gubernandi dictæ Societatis pertinent, variis modis impugnare.

Illud tamen nonnulli improbant multis modis hic relatis.

§. 3. Quinetiam apud piæ memoriæ Sixtum Papam V. prædecessorem item nostrum oblati libellis, & variis excogitatis modis traducere & calumniari, atque ut ea quæ consultiſſimè sancita erant infringentur, conari veriti non fuerint. Instantes scilicet ut res & negotia Societatis non per Superiores, ut hæcenus juxta illius Constitutiones Apostolica diplomata factum est, sed per Capitula, seu Congregationes definiantur. Ut electiones tam Provincialium quàm Superiorum localium non à Præposito Generali juxta hujusmodi Constitutiones ac diplomata, sed in Capitulis eisdem fiant. Ut Novitii in Societatem & ad vota Scholasticorum, peracto biennio Novitiatu in Capitulis eisdem admittantur. Ut professioni certum ac præfixum tempus statuatur, quo exacto, per suffragia Congregationis Religiosi hujusmodi ad professionem admittantur. Ut qui juxta Institutum ac formulam ipsam votorum, quæ voverunt, sanctæque huius Sedis approbationem à Societate dimittuntur, non nisi ordinarii iudicii forma servata dimittantur. Illa etiam in controversiam adducit, nempe. Nomen ipsum Societatis JESU quòd non esset ita deinceps vocanda. Religiosos non professos non debere ad sacros ordines promoveri. Hujusmodi Religiosos non esse prohibendos, quin ad alios Regulares Ordines transire; similiter nec laicos, ut ad Sacerdotium, nec alios non professos, ut ad professionem, aut ad gradus mutationem aspirare possint. Facultatem præterea, eos qui professi non sunt, dimittendi non probari. Quibus & hujusmodi aliis novis impugnanti inveniis si aditus pateret, universa Societatis structura labefaceretur, atque convelleretur.

Hic ideò Pont. impugnationes recipit multis rationibus hic enunciat.

§. 4. Nos igitur hujusmodi impugnacionibus diligenter consideratis, & perpensis circa reliqua, quæ in controversiam & examen deducta fuerant, nonnullorum Venerabilium fratrum nostrorum S. R. E. Cardinalium iudicio, qui ex mandato ejusdem Sixti prædecessoris, illa accuratè discusserant, & examinauerant. Simul etiam perpendentes, primam quidem quòd modus ille, res & negotia per Capitula definiendi, optimum Societatis ordinem, ac universam gubernandi rationem prorsus everteret. Illam enim Ignacius Fundator quamvis Superiorum consilium, prudentiamque ac rerum experientiam adjuvare, & promovere curaverit, adhibitis scilicet tam Generali Præposito, quàm singulis aliis Superioribus, tum Provincialibus tum localibus suis, ex selectioribus, Consiliariis, atque Admonitoribus, monarchicam tamen & in definitionibus, unius Superioris arbitrio contentam esse decrevit. Deinde quòd ratio Capitularium electionum maxima ipsi Societati afferret incommoda. In qua licet electiones quadam primariæ, cuiusmodi sunt Generalis Præpositi, ac illius Assistentium & Admonitorum, in generalibus Congregationibus, in Provincialibus verò tam eorum qui Generalem Præpositum eligere, vel generali ipsi Congregationi, cum iure suffragii interesse, quàm Procuratorum etiam, qui & singulis Provinciis quolibet triennio in Urbem ad Procuratorum Congregationem mittuntur, & ejusmodi quadam aliæ electiones per secreta scrutinia, & decisiva suffragia fiant. In reliquis nihilominus proprii cuiusque gradus iudicium, & officiorum discretio ac distributio, juxta Constitutiones easdem & Apostolica diplomata ipsius instituti confirmatoria, prædictorum Pauli III. ac Julii etiam III. prædecessorum nostrorum, tota est in ipsius Præpositi Generalis manu. Quàm Præpositi Generalis, ac reliquorum illi subordinatorum Superiorum auctoritatem nonnulli impugnatores multis modis contrahere, ac enervare tentarunt. Denique quòd in ipsorum dimissionibus, qui jux-

tà formulam Votorum simplicium in constitutionibus expressam voverunt, quosque in Societate retinere non expedit, nec contractus vitiose claudicet, nec ulla alia interveniat injustitia. Considerantes insuper, quòd in regulari disciplina, ac spirituali perfectionis non exiguum detrimentum, totiusque Ordinis perturbationem maximam, atque perniciosam vergeret, si ea quæ à Fundatoribus sanctè statuta sunt, atque ab universo Ordine sapienter in illius generalibus Congregationibus recepta & approbata, & quod præcipuum est, ab hac sancta Sede sancita & confirmata sunt, non solùm mutari, sed quocumque prætextu impugnari ac labefactari cōtingat. Omni nobis studio curandum esse duximus ejusmodi novitatibus, ac temerariis impugnantiis presumptionibus omnem aditum præcludere, ac Societatis indemnitati prospicere, ut hac ratione Societas ipsa nostro & Apostolicæ Sedis præsidio munita, atque in sui Instituti puritate, & Regularis discipline integritate, quietè ac pace conservata, uberores in dies fructus in agro Domini pergat, ipso Domino adjuvante, alacriter & absque impedimento proferre.

§. 5. Motu igitur proprio, & ex certa scientia nostra deque Apostolicæ potestatis plenitudine, laudabile ipsius Societatis Institutum, Constitutionesque omnes ac statuta, & decreta, & quæ illud concernunt præmissa omnia & singula, prædictaque ac quæcumque alia ejus privilegia, facultates, exemptiones, immunitates, gratias & indulgentias prædictis seu etiam ab aliis prædecessoribus nostris, etiam per communicationem concessa, qualiacumque illa, ac si ad verbum præsentibus infererentur, pro expressis habentes, tenore præsentium approbamus & confirmamus; suppletis omnes juris ac facti defectus siqui intervenierint in eisdem.

§. 6. Et nihilominus hac nostra perpetuò valitura constitutione, motu, scientia & potestatis plenitudine similibus statuimus, & decernimus, & ordinamus.

§. 7. Ut in Societatis prædictæ Congregationibus quibuscumque, eo prorsus modo procedatur, acque ea tantum tractentur & definiantur, quæ in Constitutionibus ac Congregationum generalium decretis statutum jam est, vel in posterum statuatur, ut in eisdem Congregationibus tractentur & definiantur.

§. 8. Electio verò Superiorum, tam Provincialium & Visitatorum, quàm quorumcumque localium, tota sit penes Præpositum Generalem juxta Constitutiones easdem, prout penes ipsum esse & conservari districtè præcipimus; cum potestate illorum facultatem revocandi, restringendi, & etiam augendi, ac administrationis rationem ab illis exigendi, & eosdem ab officio removendi, prout in Domino judicaverit expedire.

§. 9. Novitios etiam tam in eorum admissione ad Societatem, quàm ad Scholasticorum vota, post biennium Novitiatu juxta Societatis morem, per Superiores admittendos esse.

§. 10. Graduum etiam discretio & iudicium, ac Coadjutorum tam spiritualium quàm temporalium simulque & Professorum promotio, juxta hujusmodi Constitutiones similiter sit in manu Præpositi Generalis.

§. 11. Tempus autem promotionis ad hujusmodi gradus, nullo modo volumus certum seu determinatum esse, sed Constitutiones ac diplomata prædicta hac etiam in parte omnino observari volumus & mandamus; quæ statuunt, selectos tantum spiritus, & doctrinæ viros, & multum diuque exercitatos, ac in variis probationibus virtutis, & abnegationis sui ipsorum, cum omnium edificatione, & satisfactione satis cognitos, ad Professionem vel admittendos, & denique nonnisi cum Societati vel

Distinque Institutum, & Societatis privilegia omnia approbat.

Et de novo Ratuit quòd

In Congregationibus procedatur, juxta Constitutiones, & decreta.

Superiorum electio tota sit penes præpositum.

Novitii ad Societatem & ad Scholasticorum vota per Superiores admittantur. Graduum discretio, ac in Coadjutoribus formatos & profectos promotio sit in manu Præpositi generalis.

Tempus promotionis ad ejusmodi gradus quòd sit.

Omnis auctoritas omnes facultates Præpositi concessæ, inviolate conserventur ex causis hic expressis.

Forma iudiciali in dimissionibus non intervenit, sed forma constitutionum.

Omnis facultates ad correctionem & punitionem aliis Ordinibus concessas Societati ejusque Præposito concessas sunt.

Nomen Societatis IESU retineatur.

Societatis Religiosi emissis votis simplicibus, ad sacros ordines promovendi possint. Et ad nullum Ordinem (Carthusiensium excepto) eis transire liceat. Ad Sacerdotium, vel ad Professionem aut cuiusvis gradus mutationem aliam praeferre non debeant. Potestas dimittendi tamquam res momenti ad Societatis conservationem omnino retineatur. Perturbatum coarceatur.

eius Præposito Generali fuerit ab eis plene in Domino satisfactum.

§. 12. Omnis verò auctoritas, omnes denique facultates per dictæ Societatis Constitutiones & Apostolica diplomata Præposito Generali concessæ, tam in iis quæ ipse per se exercere debet, quam in communicatione Provincialibus & Visitatoribus, ac aliis quibuscumque Superioribus per ipsum faciendâ, integrè & inviolatè conserventur, quoniam ut ratio ipsa docet, & Ignatius Fundator prudenter animadvertit, ad hoc ut Societas benè gubernetur, valdè expedit, ut Præpositus Generalis omnem habeat in ea auctoritatem ad adificationem, ex qua præter cætera quamplurima, illud sequetur commodi, ut universus Ordo ad monarchicam gubernationem compositus maximè servetur unitus, ipsiusque membra per universum Orbem dispersa, per omnimodam hanc subordinationem suo capiti colligata, promptius atque facilius à summo capite Christi in Terris Viçario, ad varias functiones juxta eorum peculiarem vocationem, ac speciale votum dirigi, atque moveri possint.

§. 13. Quod verò attinet ad dimissionem, Declaramus formam iudicariam adhibendam non esse, sed modum in Constitutionibus præscriptum, & hæcenus in ipsa Societate servatum de cætero servari volumus; nempe ut etiam sine aliquo processu, tela, aut ordine iudiciario, ac nullis terminis etiam substantialibus servatis, sola facti veritate inspecta, culpæ vel rationabilis causæ tantum ratione habita, ac personarum aliarumque circumstantiarum, quarum consideratione fit cum charitate & prudentia conjuncta, procedi possit, auctoritate prædicta declaramus & decernimus.

§. 14. Quin etiam omnes facultates, omnemque jurisdictionem, quod ad subditorum correctionem & punitionem pertinet, quibuscumque Ordinibus eorundem Generalibus hæcenus concessas, non ad instar, sed æquè principaliter ipsi Societati, ejusque Præposito Generali concedimus & elargimur. Quò verò ad reliqua quæ in Controversiam vocata erant, sic statuimus.

§. 15. Nomen Societatis IESU, quo laudabilis hic Ordo nascens à Sede Apostolica nominatus est, & hæcenus insignitus, perpetuis futuris temporibus in ea retinendum esse.

§. 16. Ac religiosos hujusmodi post emissâ vota, etsi simplicia, ad sacros etiam presbyteratus ordines juxta Summorum Pontificum concessionem promovendi posse.

§. 17. Eisdemque emissis hujusmodi votis ad quemvis alium Ordinem Mendicantium vel non mendicantium (Carthusiensium dumtaxat excepto) transire minimè licere.

§. 18. Laicos vel alios non Sacerdotes, ad Sacerdotium, vel eisdem aut qui Sacerdotes sunt, ad professionem, aut cuiusvis alterius gradus mutationem aspirare non debere.

§. 19. Potestatem quoque à Societate dimittendi quovis non professos, ab hac Sede Apostolica sæpius approbatam, eoque ab omni obligatione votorum juxta Constitutiones & diplomata hujusmodi emissorum, per dimissionem ipsam, per quam vota prædicta cessant liberandi, tamquam rem magni momenti ad Societatis puritatem & conservationem retinendam, omnino ratam, intactam & illibatam esse volumus.

§. 20. Et ut perturbatum & contradicentium audacia coarceatur, ac nec ipsi vel periculo eorum exemplo alii in posterum quæ ab hac Apostolica Sede semel stabilita sunt, præcipuè circa Regularium Ordinum institutionem & confirmationem, in quibus aliquoties ad eandem Sedem tantum manus apponere spectat, impugnare aut enervare impune præsumant, aut ullo modo valeant. Præcipimus in virtute sanctæ Obædientiæ universis & singulis personis, tam secularibus quam quo-

rumvis Ordinum regularibus, cuiuscumque status, gradus & præeminentiæ existant, etiam si Episcopi, Archiepiscopi, Patriarchali, aut alia majori ecclesiastica dignitate seu Cardinalatu honore vel mundana quavis auctoritate, seu excellentia præfulgeant, ipsis verò Regularibus etiam dictæ Societatis Religiosis sub penis excommunicationis lata sententiæ, necnon inhabilitatis ad quævis officia & dignitates, vocisque tam activæ quam passivæ privationis, eo ipso absque alia declaratione incurrendis, quarum absolutionem Nobis ac Successoribus nostris dumtaxat reservamus; ne dictæ Societatis Institutum.

§. 21. Constitutiones aut decreta, vel ex eis quidpiam, aut ex præmissis omnibus articulum quemlibet, vel aliud quid supradicta concernens majoris boni, aut zeli seu quovis alio quæsto colore aut prætextu directè vel indirectè impugnare, vel immutari, alterari, aut formam aliam seu rationem circa ea induci curare, aut contrà vel præter ea seu quavis alia ipsius instituti substantialia agere vel quidpiam ulli alii, præterquam Nobis aut Romano Pontifici pro tempore existenti, idque immediatè vel per nostrum aut Sedis Apostolicæ Legatum seu Nuncium vel ipsius Societatis generali Congregationi aut Præposito Generali, addendum, minuendum, aut immutandum; sive alterandum proponere quoquomodo audeant vel præsumant.

§. 22. Penas denique omnes in Gregorii XIII. prædecessoris prædicti Constitutione, Alcedente Domino, contentas, ac Constitutionem eandem cum omnibus & singulis in ea contentis, ac si ea omnia ad verbum præsentibus infererentur, per præsentibus approbamus & innovamus.

§. 23. Decernentes præmissa omnia & singula, necnon præsentibus ac in eis contenta quæcumque, nullo umquam tempore, etiam ex eo quod interesse forsan habentes ad id vocari non fuerint, vel alio quocumque prætextu, & ex quavis causa quantumvis urgenti, legitima, & rationabili, de subreptionis vel obreptionis vitio, aut intentionis nostræ vel alio quovis defectu notari, impugnari, invalidari, retractari, annullari, revocari, ad viam juris reduci, in dubium vel controversiam revocari, aut adversus illa quocumque juris, facti, vel gratiæ remedium impetrari posse vel debere.

§. 24. Nec sub quibuscumque similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, modificationibus, derogationibus, aut aliis contrariis dispositionibus comprehendendi, sed ab illis semper excepta, & quoties emanabunt, toties in pristinum & eum in quo antea quomodolibet erant, statum restituta, reposita & plenariè reintegrata, ac de novo etiam sub Dat. per Societatem illiusque Præpositum Generalem, & alios Superiores prædictos quocumque eligendo, de novo concessa, ac etiam confirmata, & approbata, validaque, efficacia, & illibata, etiam absque eo quod desuper à dicta Sede illorum ulterior restitutio, revalidatio, confirmatio, seu nova concessio impetranda sit, fore & esse, suosque plenarios & integros effectus fortiri, & obtinere, ac eandem præsentibus literas ad probandum plenè omnia & singula præmissa sufficere, nec ad id alterius probationis adminiculum requiri.

§. 25. Sicque in præmissis omnibus, & singulis per quoscumque Iudices, & Commissarios, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, ac S.R.E. Cardinales, etiam de latere Legatos, in quavis causa & instantia, sublata eis, & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi, & interpretandi facultate & auctoritate, iudicari, & definiri debere. Necnon irritum & inane quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Constitutiones Societatis non immutentur.

Innovamus prædecessoris prædicti Constitutione, Alcedente Domino, contentas, ac Constitutionem eandem cum omnibus & singulis in ea contentis, ac si ea omnia ad verbum præsentibus infererentur, per præsentibus approbamus & innovamus.

Præsentibus de subreptionis vitio notari non possunt.

Nec sub quibuscumque similibus vel dissimilibus gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, modificationibus, derogationibus, aut aliis contrariis dispositionibus comprehendendi, sed ab illis semper excepta, & quoties emanabunt, toties in pristinum & eum in quo antea quomodolibet erant, statum restituta, reposita & plenariè reintegrata, ac de novo etiam sub Dat. per Societatem illiusque Præpositum Generalem, & alios Superiores prædictos quocumque eligendo, de novo concessa, ac etiam confirmata, & approbata, validaque, efficacia, & illibata, etiam absque eo quod desuper à dicta Sede illorum ulterior restitutio, revalidatio, confirmatio, seu nova concessio impetranda sit, fore & esse, suosque plenarios & integros effectus fortiri, & obtinere, ac eandem præsentibus literas ad probandum plenè omnia & singula præmissa sufficere, nec ad id alterius probationis adminiculum requiri.

Et ita iudicari debeat.

1591.

Ordinarii
current obser-
vantiam hic
mandato-
rum.

§. 16. Mandantes universis, & singulis Patriar-
chis, Archiepiscopis, Episcopis, ac ceteris Eccle-
siarum, & locorum etiam Regularium praelatis per
universum Orbem constitutis, ut præsentes literas
in suis quisque Ecclesiis, provinciis, Civitatibus,
Dioecesis, & jurisdictionibus ab omnibus invio-
late observari curent. Quin etiam præpositum, ac
personas Societatis hujusmodi defendant, eosque
præmissis omnibus, & pacifice frui faciant & gau-
dere, non permittentes ipsos per quoscunque quo-
modolibet molestari. Contradictores per censuras
ecclesiasticas, & alia juris, & facti remedia opportuna
appellatione postposita, compescendo, invocato ad
hoc etiam si opus fuerit auxilio brachii secularis.

Quibuscom-
que non ob-
stantibus.

§. 17. Non obstantibus tam ipsius Sixti præde-
cessoris super modo, & forma admittendi Novi-
tios ad Religionem, quam aliis quibuscunque con-
stitutionibus, & ordinationibus Apostolicis aut decretis
per eundem, vel quolibet alios prædecessores nos-
tros, etiam vivæ vocis oraculo, aut aliis quomo-
dolibet editis, ac etiam aliorum Ordinum jura-
mento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmi-
tate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus,
privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis,
quibuscunque hujusmodi Ordinibus, Universitati-
bus, locis aut personis per quoscunque Romanos
Pontifices prædecessores nostros, ac Nos, & Sedem
prædicam, etiam Motu proprio, & ex certa scien-
tia, ac de Apostolica potestatis plenitudine, & cum
quibuscunque irritatoris, annullativis, cassativis, revo-
catis, modificatis, preservativis, exceptivis, de-
clarativis, mentis attestativis, ac derogatoriis de-
rogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausu-
lis, irritantibusque, & aliis decretis in genere vel in
specie, ac alias quomodolibet etiam pluries concessis,
confirmatis, & innovatis. Quibus omnibus, &
singulis, etiam si in eis caveatur expresse, quod illis
nullatenus, aut non nisi sub certis modo, & forma
in illis expressis derogari possit, pro illorum suffi-
cienti derogatione de illis eorumque totis tenori-
bus specialis, specifica & expressa mentio habenda,
seu aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda fo-
ret, tenores hujusmodi præsentibus pro sufficienter
expressis habentes, illis aliis in suo robore perman-
suris, hac vice dumtaxat, specialiter, & expresse
derogamus, contrariis quibuscunque. Aut si ali-
quibus communitur vel divisim ab eadem Sede sit
indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommu-
nicari non possint per literas Apostolicas non fa-
cientes plenam & expressam, ac de verbo ad ver-
bum de indulto hujusmodi mentionem.

Præsentis con-
cessio aliis
non commu-
nicatur.

§. 18. Præsentis autem constitutionis, & gra-
tiae communicationem, omnibus aliis qui sua pri-
vilegia cum ipsa Societate copiose participant,
participareque poterunt quomodolibet in futu-
rum, fieri omnino prohibemus.

Transumptis
fides datur.

§. 19. Ceterum volumus, ut præsentium tran-
scriptis etiam impressis, manu Secretarii dicte So-
cietatis vel Notarii publici subscriptis, & sigillo
præpositi Generalis ejusdem Societatis, vel alterius
personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ mu-
nitis, eadem omnino fides habeatur in judicio
& extra illud, quæ literis ipsis originalibus habe-
retur, si essent exhibitæ vel ostensæ.

Nulli ergo &c.

Dat. P. A. I.
die 28. Jun.

Datum Romæ apud S. Petrum, Anno Incarna-
tionis Dominicæ 1591. Quarto Kal. Julii, Pontif.
nostri Ann. 1.

XI.

Quod nec Fratres Reformati Fratrum Minorum
Conventualium S. Francisci, neque alii Reli-
giosi, Capucium & habitum Capuccinorum, vel
alium ei consimilem deferre possint.

Capuccinorum institutionem, & alia eos concernen-
tia, notavi supra ad const. 21. Clem. VII. Reli-
gionis. fol. 673. Tom. 1. Et ibi etiam de voto Or-
dine Fratrum Minorum remissive dixi.

Hanc constitut. innovavit, & declaravit Gregor.
XV. Constitut. 15. Ex injuncto. tom. 3. fol. 449.

GREGORIUS PAPA XIV.

Ad perpetuam rei memoriam.

BEati Francisci Confessoris Sodalitas ab uno fun-
datore instituta, & ad eundem DEI finem or-
dinata, utriusque Seraphicæ Religionis nomine
nuncupata, in plures Sodalitates, & membra Apo-
stolica permissione dividitur, & quasi circumamicta
varietate, prout pietas diversimodè suadet, corde
uno, & anima una Deum colit, & instar agri Do-
minici varios atque uberes fructus quotidie pro-
fert, & distinctiores, & abundantiores, ut confidimus,
in dies proferre non cessat.

§. 1. Sanè cum ad aures nostras pervenerit, alias
fel. rec. Paulum Papam III. prædecessorem nostrum
inter alia per suas in forma Brevis literas, quibuscunque
personis, cujuscunque conditionis existerent, sub
excommunicationis latæ sententia pena eo ipso in-
currenda, ne habitum per Fratres Ordinis Minorum
Sancti Francisci Capuccinorum nuncupatorum ges-
tari solitum nisi in eadem Congregatione essent, &
sub moderni, & pro tēpore existentis Generalis ejus-
dem Ordinis obedientia, & cura permanerent, gesta-
re quomodo præsumerent, restrictis inhibuisse.

§. 2. Et pia memorie Pium Papam IV. etiam
prædecessorem nostrum, literas ejusdem Pauli præde-
cessoris confirmando, insuper non solum ne ha-
bitum prædictum juxta literarum ipsius Pauli Præde-
cessoris hujusmodi tenorem, veram etiam, nec
ita consimilem, quod propter eum possent credi
Fratres Congregationis Capuccinorum gestare de-
berent, sub eadem excommunicationis pena eo
ipso incurrenda, prohibuisse.

§. 3. Et similiter fel. rec. Gregorium Papam
XIII. etiam prædecessorem nostrum, literas præde-
cessorum hujusmodi, & in eis contenta quacun-
que pro expressis habendo, & innovando, Motu
proprio, & ex certa ejus scientia, eosdem Fratres,
qui Tertiarii, ex Ordine Conventualium dicuntur,
non solum Capucium rotundum, sed etiam habi-
tum coloris Beretini, vel Subcinericii ad instar
Fratrum eorumdem Conventualium, deferre debe-
rent, ita ut à Fratribus Capuccinis facile discerne-
rentur, sub eisdem Pauli III. & Pii IV. penis post sex
menses ipso facto incurrendis statuisset, & ordinasset.

§. 4. Verum quia iidem Fratres, qui Reformati
Conventualium dicuntur, ita consimiles eisdem Fra-
tribus Capuccinis incedere præsumunt, ut passim à
populo pro Capuccinis habeantur ac illis tamquam
Capuccinis, elemosynæ, & oblationes conferun-
tur, non sine gravi plebis offensione & scandalo,
dum reputantur Capuccini esse. Idcirco rationabile
existimantes, ut qui ex instituto regulæ, atque in
vitæ regularis observantia uniformes non sunt etiam
habitus distinctione dignoscantur, utque prædeces-
sorum hujusmodi literarum contemptus, & contu-
macia, severioris discipline censuram inveniat, ad
evitandas etiam confusiones, & contentiones, quæ
exinde oriri possent, hac nostra perpetuè valitura
constitutione, singulas prædecessorum hujusmodi
literas, & in eis contenta quacunque pro expressis
habentes, & harum serie approbantes, & confir-
mantes, atque etiam innovantes, Motu etiam simi-
li, & ex certa scientia nostra statuimus, & ordina-
mus, quod ex nunc de cætero perpetuis futuris
temporibus, hujusmodi Fratres Reformati non solum
in Urbe, sed etiam ubique locorum per uni-
versum Orbem existentes, ut verè & realiter à Cap-
uccinis distinguantur, & dignoscantur, præter Cap-
ucium penitus rotundum, & colorem Beretinum
vel Subcinericium, ut præmissum est, etiam man-
tillum longius ad Conventualium longitudinem
deferre, & mozzettam latam & longam non sub
mantello, sed supra gestare teneantur.

§. 5. Insuper strictiori Capuccinorum prædicto-
rum vitæ consulescentes, ne ab eisdem Reformatis ipsi
Capuccini admitti, vel recipi possint sub eadem

1591.
Edita A. D.
1591.

Franciscane
Religionis
commenda-
tio.

Paulus III
habitu Cap-
uccinorum
gestare aliis
venit, sup.
in ejus const.
11. Exponi,
fol. 720.
Tom. 1.

Pius IV. con-
similem ha-
bitum pariter
prohibuit, die 2.
Aprilis 1560.
in sua bulla
quam præ-
termissi ut
plenè hic re-
latum.

Gregorius
XIII. consi-
miliem ha-
bitum Fratri-
bus Tertii
Ordinis pro-
hibuit die 19.
Octob. 1581.
sed ejus Bullam
ex ratione
non posui.

Hic modò
Pont. Fratri-
bus Conventu-
alibus Reformatis d.
prohibitionem
innovat,
& illorum
habitu de-
signat.

Receptio-
nemque Ca-
puccinorum
eisdem Re-
formatis in-
terdicit.

EXCOM-

1591.

1591.

Hoc idem interdictum Praetribus Minimis Pius V. in cond. 45. Sedis, sup. fol. 157.

Habitum Capuccinorum, ceteris omnibus iterato prohibet.

Inobedientes coerceri mandat.

Quibuscumque non obstantibus.

Fides transumptum.

Dat. P. A. I. die 6. Julii.

XII.

Jurisdictione S. R. E. Cardinalis Protectoris, & Judicis causarum, interesse monasterii Monialium S. Marthae de Urbe tangentium.

Hoc Monasterium seu potius domus erat probationis dudum & refrigerii, mulierum vitae culpabilis, ut in nupta Moniales fierent, vel matrimonio copularentur, nupta vero propriis viris restituerentur. Sed hoc pium opus, ad Monasterium Domus Pie nuncupatum, olim translatum fuit, ut videre est supra

in Gregorii XIII. constitut. 52. Cupientes. fol. 452. Hoc autem Monasterium, Virgines tantum hodie recipit, & valde floret.

GREGORIUS PAPA XIV.

Ad perpetuam rei memoriam.

S Alubrem Monasteriorum omnium praesertim Urbis nostrae de quibus peculiarem curam habemus, statum desiderantes, non modò quæ illis concessa sunt libenter confirmamus, & approbamus, verum etiam quæ expressiore sensum postulare videntur, re diligenter perspecta, ita declaramus, ut omnis dubitatio de piis Christi fidelium mentibus evellatur.

§. 1. Dudum siquidem fel. rec. Paulus Papa Tertius quandam in Urbe domum pro mulieribus, tam conjugatis quam solutis, vitae culpabilis, recipiendis, ibique retinendis, etiam sub claustra, donec vel Moniales fierent, vel matrimonio copularentur si innuptæ, vel si nuptæ essent, propriis viris restituerentur deputavit. Ac pro gubernio mulierum, & Domus hujusmodi, Confraternitatem de Gratia nuncupatam, cum Ecclesia, Dormitorio, & aliis necessariis ad praedicta, & facultate condendi quaecumque statuta licita, & honesta.

§. 2. Ac pie memorie Rodolphus tituli Sanctae Mariae Transiberim Presbyter Cardinalis, de Carpo nuncupatus, necnon similis memor. Raynuntius tituli S. Angeli Presbyter Cardinalis, Ravenatensis, nuncupatus, & major Penitentiariorum, comperto quod multæ ex dictis mulieribus, locum in aliis Monasteriis commodè non reperiebant ubi Moniales fieri voluissent, habita fidei informatione à Confratribus dictae Confraternitatis, illorumque supplicationibus inclinat, auctoritate Apostolica, & de mandato ejusdem praedecessoris, partem dictae Domus in Monasterium Monialium, sub invocatione Sanctae Marthae, per Protectorem, & Confratres praedictos electam cum Ecclesia, Claustro, Dormitorio, & aliis necessariis pro una Abbatisa per eundem Rodolphum Cardinalem, & pro tempore existentem Protectorem ipsius Confraternitatis, perpetuò seu ad tempus, prout ipsi Protectori videretur eligenda, ac per ceteras Moniales confirmanda, & aliis mulieribus ad dictam Domum accessuris, & Religionem ingressuris, sub certis modo, & forma, tunc latius expressis perpetuò erexit, & instituit, & Abbatissam eligendi, & Monialibus habitum exhibendi, ac professionem recipiendi, eidem Rodolpho Cardinali Protectori per eundem praedecessorem plena facultas concessa fuit. Necnon Confraternitatem, Domum, & Monasterium S. Marthae hujusmodi, eorumque bona sub Protectione Romani Pontificis, & pro tempore existentis Protectoris recepti, ac obedientiae, correctioni, & visitationi illius Vicarii Generalis subiecta, fore, & esse, decrevit, & declaravit.

§. 3. Et deinde pie mem. Julius Papa etiam III. pro majori dictarum mulierum quiete, eidem Rodolpho Presbytero Cardinali, & pro tempore existentii Protectori, ac Viceprotectori Monasterii, Domus, & Confraternitatis praedictae, omnes, & singulas causas, questiones, & controverfias, civiles & criminales, ac mixtas, super dotibus, rebus, & bonis quibuscumque mulierum, & Monasterii hujusmodi, ac illorum occasione, coram quibuscumque Judicibus, tam Ecclesiasticis quam saecularibus dictae Urbis quomodolibet motas, & movendas, tam activè quam passivè, cum omnibus, & singulis earum incident. dependens. emergens. annexis, & connexis, pravia opportuna avocatione per se vel alium ab eo, & pro tempore existentem Protectore deputandum, summariè, simpliciter & de plano, sine strepitu, & figura iudicii, sola facti veritate inspecta, audiendi, cognoscendi, decidendi, & fine debito terminandi, ac quicquid decrevisset debet

Edita A. D. 1591.

Exordium.

Paulus III. Domum in Urbe de nupta ad recipiendum mulieres, vitae culpabilis, & Confraternitatem delinquer instituit.

Et postea erectum ibidem fuit Monasterium pro recipiendis, quæ ex praedictis mulieribus Moniales esse volebant.

Julius III. jurisdictionem cognoscendi causas, mulierum Monialium & nasterii praedictorum, concessit cum

Facultate summariè &c. proce. audi.

executioni mandandi, ac demandari faciendi, ac indemnitati partium consulendo in causis ipsis, ac omnibus negotiis, Domum, ac Moniales, & Confraternitatem huiusmodi pro tempore concernentem, etiam nullo penitus Juris ordine, seu Camera Apostolica stylo, vel consuetudine servatis, sed sola facti veritate inspecta, de bono & aequo quodcumque ei visum foret, de facto, manu regia, velo levato, & aliis pro ejus arbitrio procedendi, & judicandi, necnon excommunicationis, & alias censuras, & penas desuper promulgandi & relaxandi, & ab eis absolvendi, & brachium saculare invocandi, & etiam quascumque personas, quacumque auctoritate & dignitate fungentes, & Moniales, & mulieres ipsas contra voluntatem dicti Rodulphi Cardinalis, & pro tempore existentis Protectoris, seu Viceprotectoris alibi quam coram eo, seu ejus deputato, quomodolibet molestari, & denique omnia & singula in praemissis, & circa ea, quomodolibet necessaria, & opportuna, etiam unica sententia, ita quod ab ea, & aliis praemissis nullo umquam tempore appellare liceret, etiam per viam mandati executivi, facien. geren. & exequen. in omnibus & per omnia, ac si tres sententiae conformes desuper latae essent, sublata quacumque appellandi, & de nullitate dicendi, plenam, liberam, & omnimodam facultatem concessit, distantes causas, ut praefertur audien. cognoscen. & deciden. eidem Rodolpho Cardinali, & pro tempore existentis Protectori, & Viceprotectori, seu ab eis deputando in omnibus, & per omnia commisit. Decernens processus, & sententias sic ferendas, nullatenus impugnari, seu revocari, nisi motu proprio, & ipso Protectore semper vocato & audito ac eo consentiente, impediri non posse. Et sic per quoscumque Judices, & Commissarios quavis auctoritate fungentes, sublata aliter judicandi, & interpretandi facultate, judicari, & definiri, ac irritum & inane quicquid secus super his à quocumque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari, decrevit.

Appellatio-
neque remo-
ta.

Congregatio
XIII. iussit in
d. Monaste-
rio non am-
plius recipi
mulieres
corruptas,
sed Virgines
tantum ex
causa hic ex-
pressa.

Sed dubita-
tum fuit an
Protector &
Congregatio
haberent om-
nimodum re-
gimen d. Mo-
nasterii, ob-
mutationem
de qua su-
pra.

§. 4. Demum recol. me. Gregorius PP. XIII. praedecessor noster cum accepisset, quod huiusmodi mulieres corruptae, quae in Moniales recipi solite erant admitti desierant, & earum loco Virgines recipi consueverunt, quae tamen aliquando remissius ibi Moniales se habent, & subinde institutam hoc Virgines recipiendi minuebatur, ne promiscue cum corruptis reciperentur, devotioni ac maiori augmento dicti Monasterii consulens, ac cedentibus maxime supplicationibus Abbatissae dicti Monasterii, ac illud gubernancium, statuit & decrevit, quod ex tunc de cetero perpetuis futuris temporibus, aliae quam Virgines, & mulieres honestae vitae, & famae, in Moniales dicti Monasterii à quoquam quavis auctoritate fungente, & quacumque etiam Cardinalatus honore fulgent, admitti, vel recipi non valerent, cum irritantis appositione decreti, prout in singulis dictorum Pauli III. Julii etiam III. ac Gregorii XIII. praedecessorum, & Raynuttii Cardinalis, literis desuper concessis plenius continetur.

§. 5. Cum autem sicut nuper accepimus, quantum Monasterium huiusmodi à primivo illius statu, in bonitate & observantia creverit ad honorem Omnipotentis DEI, & dictae Urbis utilitatem, non sine vigilantibus cura pro tempore existentis Protectoris, & Congregationis praedictae, & quomodo in dies magis & magis hoc opus crescat, etiam à Rodolpho Cardinali, & aliis pro tempore existentibus Protectoribus usitatum sciamus, in universum per se, & dictam Congregationem huiusmodi Monasterium, in spiritualibus & temporalibus regi, & gubernari, statuta ad id necessaria & opportuna conceden. mulieres ad monachan. virgines educan. recipien. moniales praedictas examinan. illisque habitum exhiben. ad professionem recipien. licentiasque ingrediendi dictum Monasterium, eisdem virginibus opus esset conceden. per se vel alium ab eo

deputatum, confessarios eligen. & alia facien. geren. & exercen. quae sibi in praemissis omnibus, & singulis facultatibus concessa reperiuntur, vel quae sibi bene visa forent, & quae Ordinarii locorum ex forma Juris, & Decretorum Concilii Tridentini facere soliti sunt, facultatem habere. Tamen nonnulli nimium scrupulosi de praedictorum potestate, & aliquibus ab eis gestis vel gerendis dubitarunt, & dubitant, quarentes causam ex ipsismet facultatibus non admodum explicitis, & aliis.

§. 6. Nos omnem in praemissis dubitandi materiam remove cupien. ac dictarum literarum tenores, ac si de verbo ad verbum infererentur praesentibus pro expressis habent. Motu proprio, & ex certa nostra scientia, ac de Apostolica potestate plenitudine concessiones ac literas praedictas Apostolica auctoritate tenore praesentium approbamus, & confirmamus.

§. 7. Et quatenus opus sit, illas innovamus, & ad tollen. omne dubium, & aliis ad omnem alium meliorem finem, & effectum, decernimus, & declaramus integrum & plenarium gubernium dicti Monasterii Monialium spectare & pertinere ad Protectorem pro tempore existentem dicti Monasterii, illique seu Viceprotectori, vel ab eis deputando, licuisse & licere mulieres monachandas recipere, receptas probare, probatas examinare, examinatas in moniales admittere, vel rejicere, admissis habitum exhibere, & ad professiones admittere, puellas ad educationem recipere, receptas intronitare, & retinere, retentas suis loco & tempore dimittere, ipsisque & aliis personis dictum Monasterium ingredi voluntibus, pro rebus ac negotiis necessariis licentiam concedere, confessarios, & alios Ministros deputare, & demum omnia, & singula circa gubernium, & regimen dicti Monasterii facere, gerere, & exercere, quae in Monasteriis Monialium suarum diocesum Ordinarii locorum, tam in vim juris communis, quam dicti Concilii, & approbatæ consuetudinis in dicta Urbe respective facere soliti sunt, consueverunt, & possunt. Reservata dilecto filio nostro Hieronymo tit. S. Sufanæ Presbytero Card. Rusticuccio nuncupato, & pro tempore existenti Vicario nostro in dicta Urbe, & ejus districtu generali d. Monasterii visitatione, & ita de cetero fieri, & observari volumus, & mandamus. Necnon Protectorem, & Congregationem praedictas, ad antiquum eorum statum, & observantiam, & facultatem, quatenus opus sit, restituiamus, & plenarie reintegramus, ac restitutos, & reintegratos esse statuimus, & ordinamus.

§. 8. Necnon praesentes literas, & in eis contenta quacumque valida, & efficacia fore, suosque plenarios, & integros effectus sortiti, inviolabiliter observari debere, nec de subreptionis vel obreptionis, aut nullitatis vitio, seu intentionis nostrae defectu, quovis quavis colore, pretextu, vel ingenio notari vel impugnari, nec per nos, vel Sedem Apostolicam ullo umquam tempore revocari, aut aliis illis derogari posse, & quoties illa revocari, aut aliis illis derogari contigerit, toties in pristinum statum restitui, & de novo, etiam sub posteriori data per ipsos Protectorem, Congregationem eligen. concessa, & stabilia esse.

§. 9. Sique per quoscumque Judices & Commissarios, etiam causarum Palatii Apost. Auditores, & S. R. E. Cardinales sublata eis, & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, ubique judicari, & definiri debere, necnon irritum, & inane decernimus, si secus super his à quoquam, quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 10. Non obstant. praemissis, & constitutionibus, & ordinacionibus Apost. & statutis, & consuetudinibus dicti Monasterii iuramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, privilegiis quoque indultis, & literis Apostolicis,

Hic ideò
Pont. aucto-
ritatem Pro-
tectoris, &
Congrega-
tionis con-
firmat.

Innovatque
& iterum
concedit &
ampliat.

Clausula
praeservati-
va.

Clausula
sublata &c.

Derogatio
contrario-
rum.

quibuscumque Rom. Cur. Tribunalibus, Curis, Magistratibus, Iudicibus, præsertim dicto Vicario, & aliis quibuscumque personis, sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscumque clausulis, formulis, & decretis, etiam motu simili, & consistorialiter concessis, approbatis, & innovatis, quibus omnibus, eorum tenores præsentibus pro expressis habent. Illis alias in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Datum Romæ in Monte Quirinali, sub annulo Pontificatoris, die 18. Julii, Pontificatus nostri Anno 1.

XIII.

Confirmatio privilegiorum Ordinis Fratrum Cruciferorum, & communicatio gratiarum Ordinibus Religiosorum Mendicantium concessorum, & concedendorum.

De hoc Ordine, dixi supra in constit. 1. Urbani III. Cùm antecessor. fol. 47. in Tomo I.

GREGORIUS PAPA XIV.

Ad futuram rei memoriam.

Romanus Pontifex Religiosis Altissimo famulantibus concessa privilegia, nedum confirmare, sed & alia Congregationum Regularium personis concessa, ad eos quandoque extendere consuevit, prout eorumdem Religiosorum vota exposcunt, & ipse conspiciat in Domino salubriter expedire.

§. 1. Sanè dilecti filii Magister Generalis, & Fratres Congregationis Cruciferorum nobis nuper exponi fecerunt, quòd cum eidem Congregationi, quæ per beatum Clerum instituta, & per fel. recordationis Alexandrum Tertium Romanos Pontifices prædecessores nostros, reformata fuit, & in qua ad præsens quam plures factæ Theologiae Magistris, & Verbi Dei Concionatores reperiunt, diversa privilegia, gratias, & indulta concessa, & per eosdem ac alios Romanos Pontifices etiam prædecessores nostros, confirmata, & innovata fuerint, prout in diversis literis desuper confectis plenius continetur, Cupiant Magister Generalis, & fratres prædicti privilegia, gratias, & indulta huiusmodi, pro illorum subsistentia firmiori per nos confirmari, & approbari, nec non alia, tam Mendicantium, quam non mendicantium Ordinibus, & Congregationibus, ac eorum Monasteriis, domibus, & locis ac personis, per quoscumque Romanos Pontifices, & præsertim præmem. Pium Quintum prædecessores nostros quomodolibet concessa, privilegia, facultates, & gratias, ad dictam Cruciferorum Congregationem, illiusque Fratres, & personas extendi, illaque eis communicari. Quare pro parte Magistris Generalis, & Fratrum prædictorum nobis fuit humiliter supplicatum, quatenus eorum desiderio annuere, aliisque in præmissis opportune providere de beniguitate Apostolica dignæmur.

§. 2. Nos igitur Congregationem Cruciferorum prædictam, ejusque Fratres, & personas quascumque, ob eorum regularem disciplinam specialibus favoribus, & gratiis prosequi volentes ac singulorum privilegiorum, & gratiarum, ac literarum desuper confectarum huiusmodi tenores præsentibus pro sufficienter expressis habentes, huiusmodi supplicationibus inclinati, omnia, & singula privilegia, prerogativas, concessiones, facultates, exemptiones, libertates, immunitates, indulta, indulgentias, ceteraque gratias spirituales, & temporales dictæ Congregationi Cruciferorum, omnibusque & singulis illius tam virorum quam mulierum Monasteriis, Hospitalibus, domibus, & Conventibus, necnon illorum Prioribus, Superioribus, Officialibus, & personis, tam in genere quam in specie, ac aliis quomodolibet, & quodcumque, tam per prædictos quam alios quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac Sedem Apostolicam quomodolibet concessa, necnon desuper confectas literas, & scripturas quascumque, quatenus in usu sint, & decretis Concilii Tridentini non adven-

tur, Apostolica auctoritate tenore præsentium perpetuò approbamus, & confirmamus, illisque perpetuè, & inviolabilis firmitatis robur adijcimus, ac omnes, & singulos juris, & facti defectus, si qui forsitan intervenerunt in eisdem supplementis, & nihilominus pro potiori cautela, illa omnia dictæ Cruciferorum Congregationi singulisque illius Monasteriis, Hospitalibus, domibus, Conventibus, Prioribus, & Superioribus, & personis, eisdem auctoritate, & tenore, de novo concedimus.

§. 3. Et insuper omnia & singula privilegia, prerogativas, concessiones, facultates, exemptiones, immunitates, indulta, indulgentias, ceterasque gratias, spirituales & temporales, ac tam conjunctim quam divisim, & alias quomodolibet quibuscumque Mendicantium, & non Mendicantium Ordinum Congregationibus, ac tam virorum, quam mulierum Monasteriis, domibus, & regularibus locis in quibuscumque mundi partibus consistentibus, illorumque Superioribus, Fratribus, Monachis, & personis per dictum Pium Quintum, & alios quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac nos, & Sedem eandem, etiam per viam communicationis, vel extensionis, aut aliis concessa, decretis ejusdem Concilii minime contraria, ac quibus singula Congregationes prædictæ eorumque Monasteria, domus, & loca, ac Superiores, Fratres, Monachi, & personæ huiusmodi, de jure, usu, consuetudine, vel privilegio, aut concessione Apostolica, vel alia quacumque auctoritate, aut aliis quomodolibet utuntur, fruuntur, potiuntur, & gaudent, ac uti, frui, potiri, & gaudere possint, & poterunt quomodolibet in futurum, ad prædictam Cruciferorum Congregationem, ita ut illa ejusque tam virorum quam mulierum Monasteria, Hospitalia, Conventus, seu regulares domus, illorumque Priores, Superiores, Officiales, Fratres, Ministri, & alie personæ nunc, & pro tempore existentes, præmissis omnibus, & singulis, æque ac pariformiter, & sine ulla proflus differentia, uti, frui, potiri, & gaudere libere, & licite, possint, ac si illa dictæ Cruciferorum Congregationi, illiusque Monasteriis, Hospitalibus, Conventibus, ac domibus regularibus, ac Superioribus, Officialibus, Fratribus, ministris, & aliis personis prædictis, specialiter, & expresse, ac principaliter, non autem ad instar, concessa, ac præsentibus de verbo ad verbum inserta fuissent, auctoritate, & tenore prædictis perpetuò extendimus, illaque omnia, & singula dictæ Cruciferorum Congregationi, illiusque Monasteriis, Hospitalibus, Conventibus, ac Regularibus, domibus, necnon Prioribus, Superioribus, Officialibus, Fratribus, ministris, & personis prædictis quibuscumque communicamus.

§. 4. Decernentes, sic, & non aliter per quoscumque Judices quavis auctoritate fungentes, etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, subalata eis, & eorum cuilibet quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, indicari, & definiti debere, irritum quoque, & inane, quicquid secus super his à quocumque, quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 5. Quocirca dilecto filio, moderno & pro tempore existenti Cruciferorum Congregationis Protectori, per præsentes committimus, & mandamus, quatenus, per se vel alium seu alios, præsentis literas, & in eis contenta quacumque ubi, & quando opus fuerit, solemniter publicando, ac dictæ Cruciferorum Congregationis Fratribus, in præmissis efficacis defensionis præsidio assistendo, faciant auctoritate nostra, præsentis & in eis contenta huiusmodi firmiter observari, ac singulos quos ipsæ literæ concernunt, illis pacifice frui, & gaudere. Non permittentes, eos vel eorum aliquem desuper contrà præsentium tenorem per quoscumque, etiam locorum Ordinarios, quomodolibet indebitè molestari, perturbari vel impediri. Contradictores quoslibet, & rebelles, ac præmissis non parentes, per sententias, ac censuras Ecclesiasticas, ac etiam pecuniarias

Communicatio privilegiorum quibuscumque Ordinibus Mendicantium concessorum, & concedendorum quatenus &c.

Clausula subalata &c.

Executorum deputatio.

Dat. P. An. 1.
die 18. Julii.

Edita An. D.
1591.

Exordium.

Petitione Congregationis.

Pontificis confirmatio indulgentiarum Ordinis, quatenus sint in usu, & Concilio Tridentino non contrariantur.

Tu quoad indulgentias, vide revocationem, & novam concessionem in S. D. N. Pauli V. constit. 21. Romanus, fol. 229. Tom. 3.

Clausula
contrario-
rum deroga-
tio.

penas, aliâque opportuna juris, & facti remedia, quacumque appellatione postposita, compescendo, invocato etiam ad hoc si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

§. 6. Non obstantibus quibuscvis Apostolicis, ac in Provincialibus, Synodalibus, generalibus Conciliis editis, generalibus vel specialibus constitutionibus, & ordinationibus, necnon mendicantium & non mendicantium Ordinum, Congregationum, Monasteriorum, & Regularium domorum, etiam iuramento, confirmatione Apostolorum, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis, & consuetudinibus, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolorum, illis eorumque Superioribus, & personis, sub quibuscumque tenoribus, & formis, ac cum quibuscvis etiam derogationum derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, irritantibusque & aliis decretis in genere vel in specie, etiam motu proprio, & ex certa scientia, ac de Apostolica potestatis plenitudine, ac aliis in contrarium quomodolibet concessis, confirmatis, & innovatis. Quibus omnibus, illorum omnium tenores, ac si de verbo ad verbum exprimerentur & infererentur presentibus pro sufficienter expressis, & insertis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat, harum serie specialiter, & expresse derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque.

Transumptio-
rum fides.

§. 7. Volumus autem, quod presentium transumptis, etiam impressis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo dictæ Cruciferorum Congregationis, vel illius Protectoris obsignatis, eadem prorsus fides adhibeatur, quæ eisdem presentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel offensæ.

Dat. P. An. i.
die 12. Julii.

Datum Romæ in Monte Quirinali, sub Annulo Piscatoris, die 12. Julii, Pont. nostri Anno primo.

XIV.

Confirmatio & declaratio jurisdictionis, & privilegiorum Rotæ Civitatis Maceratæ, status Ecclesiastici.

Hanc Rotam instituit Sixtus V. ut supra in ejus cons. 94. Romanus. fol. 694.

Edita An. D.
1591.

GREGORIUS EPISCOPUS,
Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.

Procedium.

Romanum decet Pontificem, æqui bonique supremum Afferentem, ad ea quæ per ejus prædecessores in subsidium, & utilitatem pauperum, in quibuscvis locis, sed præsertim in Provinciis suæ, & Apostolicæ Sedis ditioni immediate subiectis degentium, necnon faciliorem jurium suorum consecutionem providè instituta fuerunt, sollicitè intendere, ac ut firma, & illibata persistant, efficaciusque observentur, suæ confirmationis præsidio propensius roborare. Si verò aliqua in alieni juris præjudicium tendere, aut discordiam, ac litum dissensionem dispendia afferre possent reperiantur, ita declarationis suæ adminiculo elucidare ac moderari, ut unicuique quod suum est remaneat, nec debita justitiæ administratio impediatur, ac aliàs desuper dispendere, prout in Domino conspicit salubriter expedire.

Sixtus V. instituit Rotam in Civitate Maceraten. Status Ecclesiastici, aut supra in ejus cons. 94. Romanus, fol. 694.

§. 1. Cum itaque felicitis recordationis Sixtus P. prædecessor noster per suas sub plumbo expeditas literas in subsidium & utilitatem pauperum Provincie nostræ Marchiæ, ac ex certis aliis rationabilibus causis, in Civitate Maceraten. quæ aliis satis celebris & insignis, ac ferè in medio dictæ Provincie, ac in Territorio fecundo & ameno sita, solitaque Sedes Legatorum existit, unum Tribunal Audientie cabalarum Rotam nuncupandum, quinque Judicem Juris Utriusque Doctorum, qui omnes, & singulas totius Provincie prædictæ, ac Civitatum, Terrarum, Oppidorum, Castrorum, & aliorum locorum sub eadem Provincia comprehensorum, necnon incolarum in illis habitantium, causas, lites, & controversias civiles, tam profanas, quam Ecclesiasticas, merasque & mixtas, necnon

etiam criminales, in quibus appellationi locus foret, tam in prima in Diocesi, ac jurisdictione Maceraten. quàm in secunda, & ulterioribus instantiis in causis appellationis totius Provincie hujusmodi cognoscere, decidere, sinèque debito terminare, ac judicare possent, & deberent, motu proprio perpetuò crexerit, & insinuerit.

§. 2. Ac inter alia disposuerit, quod Auditores Rotæ hujusmodi, in causis appellationum, & gravaminum à sententiis, & gravaminibus per Episcopos dictæ Provincie illatis, procedere ac jurisdictionem habere possent.

§. 3. Cùmque vigore seu prætextu istius facultatis, Venerabiles fratres Episcopi dictæ Provincie conquesti fuerint, prædictos Auditores, etiam in causis ad Forum Ecclesiasticum spectantibus, morumque correctionem concernentibus, ac in illis in quibus appellationi suspensivæ locus non est, processisse.

§. 4. Ac proinde habito pro parte dictorum Episcoporum recursum ad Congregationem Venerabilium Fratrum nostrorum S. R. E. Cardinalium super negotiis Episcoporum deputatorum literas eorum nomine, etiam de mandato nostro decretas obtinuerunt, per quas Auditoribus mandabatur, ne in prædictis, & aliis Episcoporum eorundem causis procederent, prout in singulis literis prædictis plenius continetur.

§. 5. Verùm sicut nobis postea innotuit, & dilecti filii homines Provincie Marchiæ, necnon Communitas Civitatis Maceraten. prædictarum, per dilectos filios Phæbum Rotundum Provincie, & Antonium Franciscum Pellicanum, Nicolaum, Hercolum, & Voluminum Picutum, Civitatis Maceraten. hujusmodi Oratores ad gratulandum nobis, ac præstati. Jam debitam obedientiam destinatos, quos libenter audivimus, nobis exponi fecerunt, litteras dictæ Congregationis, ipsi, & prædicto Tribunali, ac privilegiis, & facultatibus illius Judicis concessis, grave damnum, & præjudicium inferre.

§. 6. Idcirco Nos, quibus in primis semper cordi fuit iustitiam unicuique æqua lance administrare, ac Episcoporum decori simul, & pauperum subsidium nostrorum commodis & utilitati consulere, lites & differentias, quæ occasione literarum prædictæ Congregationis exoriri possent præcidere cæque moderari, & elucidare, ac alias in præmissis omnibus de opportuno remedio salubriter, & maturè providere volentes, ac literarum earundem tenores presentibus pro plenè, & sufficienter expressis habentes. Motu proprio, non ad hominum, aut Communitatis vel Oratorum prædictorum, seu alicujus ipsorum aut eujusvis, seu quorumvis aliorum pro eis super hoc oblata petitionis instantiam, sed de mera voluntate, & matura deliberatione, ac ex certa scientia nostra, deque Apostolicæ potestatis plenitudine, auctoritate Apostolica, tenore presentium, decernimus, & declaramus, modernis & pro tempore existentes Auditores Rotæ, ac Tribunalis totius Provincie Marchiæ hujusmodi, etiam vigore dictarum literarum Sixti prædecessoris causas appellationum, seu recursum, & querelas, quæ ab Ordinariis locorum dictæ Provincie, circa ea quæ pertinent ad Visitationem aut morum correctionem interponuntur, cognoscere, ac etiam in iis casibus, in quibus ab eorumdem Ordinariorum decretis, seu interlocutoriis, sententiis, aut ordinationibus, ex forma Sacrorum Canonum, & decretorum Concilii Tridentini, necnon etiam Constitutionum Apostolicarum, appellationes, recursum, & querelas, quoad effectum suspensivum prohibentur, procedere non posse nec debere, ac Rotam & illius Auditores prædictos in istis casibus nullam prorsus jurisdictionem habere. Inhibitiones quoque in hujusmodi causis per eosdem Auditores concessas, & concedendas, cum processibus, ac omnibus inde secutis, nullius roboris vel momenti fore, & esse.

§. 7. In reliquis verò, omnibus & singulis erectionem ac institutionem prædictæ Rotæ, necnon pri-

Ad quam etiam ab Episcopis Provincie appellari permittitur, ut ibid.

Episcopi conquesti sunt, dari appellationem etiam in concensionem correctionem morum &c.

Congregationi super negotiis Episcoporum Rota inhibuit.

Civitas Maceraten. ad Papam habitum recurrit.

Qui modò Rotæ facultatem restringit, quoad dictas appellationes.

In reliquis verò ejus jurisdictionem

vilegia

vilegia, facultates, & indulta quæcumque. eidem Rotæ ejusque Auditoribus seu Judicibus, necnon Notariis, Curforibus ac aliis Officialibus & personis, per literas ipsius erectionis ac alias quomodolibet concessa, eademque literas, necnon omnia, & singula capitula, ordinationes, reformationes, & statuta, ceteraque in vim literarum erectionis hujusmodi, ac facultatis ad hoc in illis attributz, etiam circa taxas, mercedes, ac salaria eorundem officialium facta, & in eis contenta quæcumque Apostolica auctoritate prædicta perpetuò approbamus, & confirmamus, ac eis plenarie, & inviolabilis firmitatis Apostolicæ robur adjicimus, ac præsentis scripti patrocinio communimus, omnesque & singulos, tam juris quàm facti defectus, si qui in præmissis quomodolibet intervenerint, supplemus.

§. 8. Decernentes erectionem Rotæ hujusmodi, ac privilegia, facultates, indulta, & alia præmissa valida & efficacia esse, & perpetuò fore, suosque plenarios & integros effectus sortiri, & obtinere, ac omnibus quos concernunt & concernent, quomodolibet in futurum inviolabiliter perpetuò observari, sicque ab omnibus censeri, atque ita per prædictos, & quoscumque alios Judices ordinarios vel delegatos, etiam causarum nostri Palatii Apostolici Auditores, eorumque Locatentes, ac ejusdem Sanctæ R. Ecclesiæ Cardinales, etiam de latere Legatos, & Vicelegatos, necnon Cameræ Apostolicæ Præsidentes & Clericos, aut quovis alios, sublati eis & ipsorum cuilibet, quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate & auctoritate, ubique locorū judicari, definiti, & interpretari debere, irritum quoque, & inane quicquid fecis super his & quoquam quavis auctoritate seierit vel ignoranter contigerit actuari.

§. 9. Quocirca dilecto filio Henrico tituli Sanctæ Pudenzianæ Presbytero Cardinali Cæetano nuncupato, Camerario nostro moderno, & pro tempore existenti Rotæ & Auditori, Privilegiariorumque & indultorum prædictorum, Protectori, motu, scientia ac potestate plenitudine similibus per præsentem committimus, & mandamus, quatenus ipse per se vel alium seu alios, easdem præsentis & in eis contenta quæcumque solemniter publicans, ac Rotæ ac ejus Auditoribus, necnon officialibus prædictis in præmissis efficacis defensionis præsidio assistens, ipsas præsentis literas, ac in eis contenta hujusmodi debite executioni demandet, ac demandati faciat, necnon ab illis omnibus quos ille concernunt, inviolabiliter perpetuò observari faciat, mædet, atque procuret, non permitrens Auditores, Notarios, Curfores ac alios Officiales Rotæ, necnon Homines Provincie hujusmodi desuper per quoscumque, contra præsentium tenorem quomodolibet indebite molestari, perturbari, vel impediri. Contradictores quoslibet, & rebelles, ac præmissis non parentes, per sententias, & censuras Ecclesiasticas, ac etiam pecuniarias, & alias pœnas, ceteraque opportuna juris, & facti remedia, appellatione postposita compescendo, ac legitimis super his habendis servatis processibus, sententias, censuras & pœnas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando. Invocato etiam ad hoc si opus fuerit auxilio brachii secularis.

§. 10. Non obstantibus præmissis, ac constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon Cameræ, & Provincie, Civitatum, & locorum, etiam juramento, confirmatione Apostolica vel quavis firmitate alia roboratis statutis, consuetudinibus, ac usibus, & naturis, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis, etiam illis, ac quibuscvis superioribus, & personis, sub quibuscumque tenoribus ac formis, ac cum quibuscvis clausulis, & decretis, etiam motu pari, ac alias in contrarium quomodolibet facientibus, ac concessis, confirmatis, & innovatis. Quibus omnibus, etiam si pro illorum sufficienti derogatione de illis eorūque, totis tenoribus, specialis, expressa, & individua mentio habenda foret, eorum omnium, & singulorum tenores, ac fide verbo ad verbum exprimerentur, inferrentur, præsentibus pro sufficienter expressis habentes

illis aliis in suo robore permanens hac vice dumtaxat specialiter, & expresse harum serie Motu simili derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque; seu si aliquibus, communiter vel divisim ab Apostolica sit Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per literas Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Datum Romæ, in Monte Quirinali, sub Anno Piscatoris, die duodecimo Julii millesimo quingentesimo nonagesimo primo, Pontif. nostri Anno primo.

Dispensatio Societatis JESU, recipiendi Novitios, etiam non servata forma constitutionis à Sixto Quinto desuper editæ.

Hæc Six. V. const. est 71. sup. fol. 656. Et de materia hujus Societatis plenè dixi sup. in constitut. 25. Pauli III. Regimini. fol. 743. Tom. I.

GREGORIUS PAPA XIV.

Ad perpetuam rei memoriam.

Exponi nobis nuper fecit dilectus filius Claudius Aquaviva, Societatis JESU Præpositus Generalis, quod cum in ipsa Societate juxta illius institutum Apostolica auctoritate confirmatum, nec conventus, seu Congregationes generales nisi ad Præpositum Generalem eligendum, & alias rarissime, & ex causis tantum magni momenti, neque Provinciales in quibus juxta felices recordationis Sixti Papæ Quinti Prædecessoris nostri priorem de Novitiis admittendis constitutionem, quæ incipit: Cum de omnibus, Novitii ipsi admitti deberent, frequentius quàm singulis triennii cogantur. Et dùm hæc cogantur, duodecim ad summum dies durare, in quibus non de Novitiis admittendis, sed graviora alia, juxta Societatis ejusdem constitutiones, tractari debent. Ratio verò deputandi eos, qui Novitios extrâ Congregationes ipsas, juxta posteriorem ejusdem Prædecessoris declarationem, admittere possint, primum quidem valde difficulter, & incommode in proximam deduci possit, præsertim in regionibus Aquilonariis, & Vitramarinis propter magnam Collegiorum inter se distantiam, & sæpissime etiam propter itinerum difficultates, bellâque, & alia pericula. Denique etiam in universonum modus ille minus exactus sit eo modo, quem Societas ipsa sequitur, cùm in illo duo vel tres deputati sufficiant, in hoc plures communiter interveniant. Et postremò, cùm ratio illa decernendi, valde differat à modo, quem Societatis constitutiones, & Apostolica diplomata in deliberationibus faciendis, ac universa illius gubernatione præscribunt, juxta quæ modum, Superior (auditis in rebus aliquos momenti Consultoribus) decernit, quod sibi ad majorem Dei gloriam facere videtur. Admissio autem illa per deputatos, cùm ad eorum suffragia non consultiva (ut sunt in Societate) sed decisiva fieri debeat, diversitatem non parvam in Societate inducit.

§. 1. Quare nobis humiliter supplicari fecit dilectus Claudius quatenus statui, & indemnitati dicte Societatis consentes, in præmissis opportunè providere, de benignitate Apostolica dignaremur.

§. 2. Nos igitur, qui Societatem prædictam, propter ejus in Ecclesia Dei uberes fructus sinceris semper amplexi sumus affectibus, atque, ut uberriores in dies proferre valeat, integram, & intactam illi suos Novitios admittendi, & tam cum illis, quàm cum veteranis illegitimè dispensandi, facultatem servari cupimus, prædictum Claudium specialibus favoribus, & gratis prosequi volentes, & à quibuscvis excommunicationibus, suspensionibus, & interdictis, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & pœnis à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis si quibus quomodolibet innodatus existit, ad effectum præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutum fore censentes, hujusmodi supplicationibus inclinati,

Dar. P. A. r.
die 12. Julii.

XV.

Edita Ob. D.
1591.

Propositio
causarum ob
quas Societas
seu observare
nequit
const. Six. de
Novit. recip.
quæ est supra
fol. 656.

Supplicatio
præpositi
pro habenda
desuper provi-
sione.

Pontificis
dispensatio
recipiendi
novitios, &
cum eis dis-
pensan. &c.
Quoad ulti-
mam partem
vide constit.
Clem. VIII.
n. 125. Quæ-
cumque, fol.
182. Tom. 3.

Clausulas
præservati-
vas apponit.

Executores
& Protecto-
rem deputat.

Claus. déro-
gat. subijcit.

Derogatio
contrario-
rum.Fides tran-
scriptorum.Dat. P. A. r.
die 30. Aug.

XVI.

Edita An. D.
1591.

Exordium.

Petitio Con-
gregationis
S. Bernardi
pro confir-
matione gra-
tiarum à
Summis
Pont. ei con-
cessarum, &
pro commu-
nicatione in-
dultorum
aliorum
Congrega-
tionum Or-
dinis Cister-
ciensis.

Societati prædictæ, ut ex nunc deinceps perpetuis futuris temporibus, tam in Novitiis, etiam cujuscunque generis illegitimis admittendis, quam in dispensationibus ad quolibet officia, gradus & dignitates in Societate obtinenda, ipsis cujuscunque generis illegitimis concedendis formam, & rationem omnimodam in illius Apostolicis diplomatis, ac privilegiis quibuscunque, necnon, & in constitutionibus, decretis, & regulis expressam, liberè, & licitè prosequi, & retinere valeat, Apostolica auctoritate decernimus, & quatenus opus sit, etiam de novo concedimus, & indulgemus, eamque perpetuò observari volumus, & mandamus.

§. 3. Prædictis, ac nostra nuper edita, quæ incipit, Circumspecta, aliisque constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis non obstantibus quibuscunque.

§. 4. Volumus autem, quòd præsentium transcriptis, etiam impressis, manu dictæ Societatis Secretarii, aut Notarii publici subscriptis, ac personæ alicuius in Ecclesiastica dignitate constitutæ, seu Præpositi Generalis pro tempore existentis, ejusdem Societatis sigillo munitis, eadem prorsus fides, ubique locorum in iudicio, & extrà illud adhibeatur, quæ eisdem præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Datum Romæ apud Sanctum Marcum, sub annulo Piscatoris, die 30. Augusti, millesimo quingentesimo nonagesimo primo, Pont. nostri Anno primo.

Confirmatio gratiarum, & privilegiorum Monachorum Ordinis Cisterciensis, Congregationis S. Bernardi in Italia regularis observantiæ. Et communicatio omnium indultorum aliis Congregationibus d. Ordinis concessorum, & concedendorum.

Istam Congregationem instituit Alex. VI. sup. in const. 7. Plantatus. fol. 457. ubi plenè notavi, in Tomo I.

Quæ autem sint privilegia Ordinis Cisterciensis, tibi indicavi supra in constit. 1. Paschal. 2. Desiderium. fol. 30. Tom. 1.

GREGORIUS PAPA XIV.

Ad perpetuam rei memoriam.

Romanus Pontifex Religiosorum Congregationibus, illarumque personis sub Regulari reformatione Altissimo famulan. à Sede Apostolica concessa, privilegia, nedum confirmare, & approbare; sed & alia aliorum Ordinum Regularibus personis, & locis concessa, ad eos quodcumque extendere consuevit, prout eorundem Religiosorum vota exposcunt, & ipse conspiciat in Domino salubriter expedire.

§. 1. Sanè dilecti filii Præfident, Definitor, Visitatores, Abbates, & Priores Congregationis Sancti Bernardi in Italia, Cisterciensis Ordinis Provinciarum Tusciæ, & Lombardiæ, nobis nuper exponi fecerunt. Quod cum alias per fel. record. Alexandrum vi. Julium ii. Gregorium xiii. Sixtum v. nonnullisque alios Romanos Pontifices prædecessores nostros, & seu Sedem prædictam, diversâ privilegia, & indulta, dicto Ordini Cisterciensi, ac eidem Congregationi Sancti Bernardi, ejusque Monasteriis, Domibus, & locis, ac Præfidenti, Definitoribus, Visitatoribus, Abbatibus, Prioribus, & personis, generaliter, & particulariter, concessa, & seu forsan confirmata, approbata, & innovata fuerint, prout in literis Apostolicis desuper confectis plenius continetur. Cumque aliz sint ejusdem Ordinis Cisterciensis Congregationes, & Monasteria in diversis Mundi partibus constitentia, & omnia sint unius corporis membra, & instituti, cupiunt Præfident, Definitor, Visitatores, Abbates, & Priores prædicti, privilegia, gratias, & indulta hujusmodi pro illorum subsistentia firmiori, per nos confirmari, & approbari, necnon alia eidem Cisterciensi Ordini, ejusque singulis Congregationibus, Monasteriis, domibus, & locis illorum,

illarumque Generalibus, Abbatibus, Præfidentibus, Superioribus, Capitulis, Officialibus, & personis concessa privilegia, facultates, & indulta, ad dictam Congregationem S. Bernardi in Italia, illisquæ Monasteria, Domos, & loca, ac Præfidentem, Definitor, Visitatores, Abbates, Priores, & personas, & utrumque eorum extendi, illisque eis communicari. Quare pro parte dictorum Præfidentis, Definitorum, Visitatorum, Abbatum, & Priorum, nobis fuit humiliter supplicatum, quatenus eorum desiderio annuere, aliisque in præmissis opportunè providere de benignitate Apostolica dignemur.

§. 2. Nos singulorum privilegiorum, gratiarum, & indultorum, ac desuper concessarum literarum hujusmodi tenores præsentibus pro expressis habentes, necnon Præfidentem, Definitor, Visitatores, Abbates, & Priores, eorumque singulares personas, & quibuscunque excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum præsentium dumtaxat consequendum, harum serie absolventes, & absolutos fore censentes, hujusmodi supplicationibus inclinati, omnia & singula cujuscunque generis, privilegia, prerogativas, concessiones, facultates, exemptiones, libertates, conservatorias, immunitates, indulta, ac indulgentias, etiam plenarias, & peccatorum remissiones, ceterasque gratias, spirituales, & temporales, etiam per modum communicationis, & extensionis, Ordini Cisterciensi, & Congregationi Sancti Bernardi hujusmodi, illarumque Monasteriis, Domibus, locis, rebus, & bonis, ac Abbati Generali, & Præfidenti, Definitoribus, Visitatoribus, Capitulis, Abbatibus, Prioribus, Officialibus, Ministris, Monachis, ac illius singularibus personis, & cuilibet eorum, tam in genere vel in specie, & tam conjunctim quam divisim, aut alias quomodolibet tam per prædictos, & quoscunque alios Rom. Pontifices prædecessores nostros, & seu Sedem eandem. quam etiam Imperatores, Reges, Archiepiscopos, Episcopos, & alios quoscunque etiam ad quorumvis instantiam concessa, necnon desuper confectas literas, & scripturas quascunque, Apostolica auctoritate tenore præsentium perpetuò approbamus, & confirmamus, illisque perpetuè, & invariabilis firmitatis robur adjicimus, ac omnes, & singulos tam juris, & facti solemnitates, quarumcumque quomodolibet omittarum, aliisque defectus, si qui forsan intervenerint in eisdem, supplemus.

§. 3. Eaque omnia, & singula in eis contenta, ac comprehensa, cum illorum extensionibus, communicationibus, & ampliacionibus dicto Ordini, & Congregationi S. Bernardi in Italia, singulisque ejus Monasteriis, Domibus, locis, rebus, & bonis, Abbati Generali, & Præfidenti, Definitoribus, Visitatoribus, Abbatibus, Prioribus, Superioribus, Prælatibus, Officialibus, Ministris, & personis eorumque Capitulis, etiam Generalibus, & cuilibet eorum, auctoritate, & tenore prædictis, etiam de novo, etiam Motu proprio, & ex certa scientia nostra, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine, perpetuò concedimus.

§. 4. Et insuper, omnia, & singula privilegia, prerogativas, concessiones, jurisdictiones, antea- lationes, favores, facultates, declarationes, dispensationes, conservatorias, immunitates, exemptiones, libertates, præeminencias, & indulta, cujuscunque generis existentia, necnon indulgentias etiam plenarias, & peccatorum remissiones, ceterasque gratias, spirituales, & temporales, tam eidem Cisterciensi Ordini, ejusque Capitulo, & Abbati etiam Generali, ac quibuscunque illius, etiam quatuor primis Abbatibus scilicet Clavællis, Morimundi, Pontigniaci, & Firmatis, quam etiam ejusdem Ordinis Congregationibus in Regnis Hispaniæ, Portugalliæ, ac quibuscunque aliis, eorumque, & aliorum, tam virorum quam mulierum,

Confirmatio
Pontificia
omnium gra-
tiarum à qui-
buscumque
concessarum
d. Congreg.
S. Bernardi.Iteratæque
concessio-
e eorumdem
gratiarum.Communica-
tio quorum-
cumque In-
dultorum
Ord. Ciste-
rciensis
quomodolibet
concessorum
& concedendorum
ia quantum
d. Congreg.
S. Bernard.
expediat, &
eius Ordina-
tionibus non
sint contra-
ria.

Monasteriis,

Monasteriis, Domibus, Ecclesiis, locis, rebus, & bonis, necnon Capitulis eorum, etiam Generalibus, Definitoribus, Abbatibus, & aliis quibuscumque Superioribus, Prælatibus, Officialibus, Ministris, Monachis, Novitiis, Fratribus, & Conversis, ac personis quibuscumque tam in Urbe quam quibuscumque mundi partibus consistentibus, etiam illorum, & illarum intuitu, aut aliis quomodolibet, & sub quacumque forma, & expressione verborum concessa, & concedenda, ac quibus de jure, usu, consuetudine, vel privilegio, aut concessione Apostolica, Regia, Imperiali, Archiepiscopali, Episcopali, in genere vel in specie, ac tam conjunctim, quam divisim, etiam per viam communicationis, & extensionis, aut aliis quomodolibet utuntur, potiuntur, & gaudent, ac uti, potiri, & gaudere quomodolibet possunt, & poterunt in futurum, etiam si talia sint vel fuerint, quæ specialiter, & individuum requirent mentionem, seu in præsentibus de verbo ad verbum insertionem, seu in particularem concessionem, ad prædictam Congregationem S. Bernardi in Italia, illiusque Monasteria, Domos, loca, res, & bona, necnon Præfidentem, Definidores, Visitatores, & Capitula, Abbates, Priores, Officiales, Ministros, Monachos, & singulares personas, ita quod dictæ Congregationis S. Bernardi Monasteria, Domos, loca, Conventus, & Capitula, etiam generalia, Præfidentem, Definidores, Visitatores, Abbates, Priores, Officiales, Ministri, Monachi, Noviti, Fratres, Conversi, donati, oblato, & alia illius singulares personæ, ac eorum res, & bona, sub eorum cura, & secundum ejusdem Congregationis instituta, nunc, & pro tempore viventes, & existentia, præmissis omnibus, & singulis æque pariformiter, & absque ulla penitus differentia, perinde ac si illis, & eorum singulis principaliter, & specialiter & expressè, ac nominatim, & non ad instar concessa fuissent (in quantum eidem Congregationi expediat, ejusque gubernio, privilegiis, Constitutionibus, & designationibus non adversentur) uti, frui, potiri, & gaudere, liberè, & licitè possint, & valeant, auctoritate, & tenore prædictis, etiam perpetuò extendimus, illaque omnia, & singula præmissa, eis, & eorum cuilibet eidem auctoritate, & tenore, similiter perpetuò communicamus, & concedimus.

§. 5. Decernentes, sic & non aliter, per quocumque Judices, quavis auctoritate fungens, etiam locorum ordinarios, ac Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, etiam de latere Legatos, Vicelegatos, Sedis Apostolicæ Nuncios & Causarum Palatii Apostolici Auditores, sublata eis, & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate, judicari, & definiri debere, irritum quoque & inane, quicquid secus super his à quocumque quavis auctoritate scienter, vel ignoranter contigerit attentari.

§. 6. Et nihilominus dilecto filio nostro ipsius Congregationis S. Bernardi in Italia moderno, & pro tempore existent. Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinali Protectori, ac Venerabili Fratri Episcopo Papien. necnon dilecto filio Curie Causarum Cameræ Apostolicæ Generali Auditori, per præfentes committimus, & mandamus, quatenus ipsi, vel duo aut unus eorum, per se vel alium, seu alios, præfentes literas ubi, & quando opus fuerit, ac quoties pro parte Præfidentis, Definitorum, Visitatorum, Abbatum, & Priorum prædictorum, aut alicujus eorum fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra easdem præfentes literas, & in eis contenta quæcumque inviolabiliter observari, ac plenum effectum fortiri, necnon Præfidentem, Definidores, Visitatores, Abbates, Priores, aliosque prædictos, & eorum singulos, omnibus præmissis pacificè frui, & gaudere. Non permittentes eos, & eorum quemlibet desuper contra præsentium tenorem, sub quovis prætextu

etiam subreptionis, vel obreptionis, aut nullitatis vitio, & etiam defectu intentionis nostræ per quocumque quomodolibet molestari, perturbari, vel impediri. Contradictores quoslibet & rebelles, etiam per sententias, censuras, & penas Ecclesiasticas, aliaque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita compescendo, ac legitimis super his habendis, servatis processibus, sententias, censuras, & penas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando, invocato etiam ad hoc si opus fuerit auxilio brachii secularis.

§. 7. Non obstant. nostræ de non conceden. Indulgentiis ad instar, ac pia mem. Bonifacii Papæ Octavi, etiam prædecessoris nostri de una, & in Concilio generali edita de duabus dietis, aliisque Apostolicis, ac in Provincialibus, & synodalibus Conciliis editis, generalibus vel specialibus Constitutionibus, & ordinationibus, ac dicti Sancti Bernardi in Italia aliorum, aliarumque Congregationum dicti Ordinis prædictarum, etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis statutis, & consuetudinibus, declarationibus inhibitionibus, & decretis, privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis, Legatis, Nunciis, & Ordinariis, ac Congregationibus, & Ordinibus prædictis, illorumque Abbatibus, etiam generalibus, aliisque Superioribus, & personis, sub quibuscumque tenoribus, & formis, etiam in illarum foundationibus, & erectionibus obtentis, ac cum quibuscumque, etiam derogationum derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, irritantibusque, & aliis decretis in genere vel in specie, per quoscumque Rom. Pont. similiter prædecessores nostros, ac nos, Sedemque Apostolicam prædictam etiam Motu simili, & Consistorialiter, aut aliis quomodolibet concessis, & etiam iteratis vicibus approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, & singulis, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de illis, eorumque totis tenoribus, specialis, specifica, & expressa, ac individua, ac de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis alia expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, etiam si in eis caveretur expressè quod illis nullatenus, aut nonnisi sub certis modo, & forma derogari possit, illorum omnium & singulorum tenores, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata inserti forent præsentibus pro sufficienti expressis habentes, illis aliis in suo robore permansuris, hac vice dumtaxat, harum serie ad effectum præmissorum derogamus, illisque ad plenum derogatum esse volumus, & declaramus, ceterisque contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter aut divisim, ab eadem si Sede indultum, quod interdicti, suspendi, vel excommunicari non possint per literas Apostolicas, non facientes plenam, & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

§. 8. Volumus autem, quod earumdem præsentium transumptis, etiam impressis, manu alicujus ex Scribis prædictorum Abbatum, aut Prælatorum, aut Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus Monasterii dictæ Congregationis S. Bernardi in Italia, aut alterius personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides in judicio, & extrà illud, ac ubique adhibeatur, quæ eidem præsentibus adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Datum Romæ apud S. Marcum, sub annulo Piscatoris, die sexta Septembris, 1591. Pont. nostri Anno primo.

Approbatio Regulæ Congregationis Clericorum regularium Ministrantium Infirmis, cum gratiarum, & privilegiorum concessione.

Congregationem istam confirmavit Sixtus V. supra in ejus const. 25. Ex omnibus. fol. 563. Et hanc regulam reformavit Clemens 8. infra in constitut. 75. Superna. fol. 119. Tom. 3.

Derogatio omnium contrarium.

Fides danda transumptis hujus Bullæ.

Dat. P.A. 1. die 6. Septembris.

XVII.

Clausula sublata, &c.

Defensorum & executorum hujus Bullæ deputatio.

GREGORIUS EPISCOPUS,

*Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei
memoriam.*Edita A. D.
1591.

Proemium.

Ilius, qui pro gregis dominici salute in ara Crucis immolari non abnuvit, vices, quamvis immeriti gerentes in terris, curis urgemur assiduus, & continua meditatione pulsamur circa ea quæ pro pauperum Christi infirmorum necessitatibus necdum corporalibus, sed etiam spiritualibus adjuvandis; in hac Urbe nostra pie instituta sunt, omni studio intendere, & quæ propterea providè facta fuisse dicuntur ut firma perpetuò, & illibata persistant, Apostolico munimine roboramus, & ut ad præmissa peragenda Christi fideles libentius concurrant, fideles ipsos spiritualibus muneribus prosequimur, ut exinde reddantur divinæ gratiæ aptiores, ac charitatis, & misericordiæ fervor in dies amplius augeatur in eis, aliisque desuper concedimus, prout conspiciamus in Domino salubriter expedire.

Sixtus Congregationem approbavit in cons. cit. rubr.

§. 1. Cum itaque dudum fel. rec. Sixtus Papa Quintus prædecessor noster, certis causis adductus ex certa sua scientia, Congregationem sub vocabulo, seu nomine Ministrantium Infirmis, in Urbe tunc constitutam, per suas in forma Brevis desuper confectas literas perpetuò approbaverit, & confirmaverit prout in ipsis literis plenius continetur.

Congregatio post Regulam constituitur.

§. 2. Et sicut accepimus, dilecti filii Camillus de Lellis, modernus ipsius Congregationis Præfectus, & alii ejus socii, cupientes in charitatis vinculo persistere, & majori cum animi quiete Deo servire, & ad perficiendam, & conservandam eorum Congregationis in Christo unionem quandam vivendi formulam, juxta ea quæ ad propositum sibi finem conducere usu dicerunt, ediderint, factumque sit, ut eorum Camilli, & sociorum vitæ institutum, sub dicta formula comprehensum, fidelibus gratum, & acceptum, ac ad proximi subventionem adeò utile, & necessarium existat, & ipsa Congregatio numero sociorum admodum creverit, & quamplures Christifideles summo desiderio, & affectu, in dictam Congregationem recipi, & admitti plurimum exoptent.

Formula autem prædicta tenor sequitur, qui talis est.

§. 3.

Cujus tenor hic inferitur.

De Quatuor votis.

Ad hæc vide bullam Clement. VIII. cit. in rubric.

Quiscunque decrevit se huic charitatis muneri in perpetuum addicere, statuit se mundo, rebusque omnibus sæculi esse mortuum, & Christo soli vivere, seque nobis aggreget, ut admittat peccata expiet, sub iugo suavissimo perpetuæ paupertatis, castitatis, & obedientiæ, & sub perenni ministerio ægotantium, quos etiam pestis incesserit, non solum in Nosocomiis, sed etiam in Carcerem valetudinariis, ubi ægroti magna, tam corporaliū quam spiritualium rerum angustia premuntur. Ac de his universis (Deo adjuvante) præcepta dabuntur in Constitutionibus suo tempore edendis, quibus sub ullius peccati poenâ obstringi non intendimus, iis tamen exceptis ad quæ observanda votorum vinculis obligamur.

Paupertas.

§. 4. Paupertatem nostram ita interpretamur, ut Religiosorum sit paupertas mendicantium eorum, qui nec singuli nec universi fructus ullos ac redditus capiant, quæ verò necessaria erunt, ea ex humili exercitio ostiatim emendicandi, vel ex elemosynis fidelium nobis spontè oblati comparabimus, nemo per se, & arbitratu suo quaritabit, sed ii soli quibus ob communem usum ab obedientia id oneris imponetur.

Generalis & Consultorum officio.

§. 5. Totius Congregationis superior, Præfectus Generalis appellatur, cujus officium perpetuum erit quoad vivet. Socios autem habebit quatuor, qui Consultores dicuntur. Creabuntur autem hi cum

Congregatio majorem numerum erit nata idoneorum hominum, iique pariter officium perpetuum gerent, dum Generalis Præfectus erit superles. Votum eorum æquè ac Præfecti, decisivum erit, præterquam quod Præfectus duplex habebit, singuli illi simplex. Nihil eorum, de quibus secundum constitutiones factas, aut faciendas, cum Consultoribus decernendum est, statuatur, nisi de illorum consilio, & sententia major verò pars sententiarum vincet. Ne autem ex sententiarum æqualitate res in dubium veniat; ad id vitæ gravis de Congregatione deputetur, qui voto suo (prout necessitas postulerit) alterius quam meliorem censuerit, partis numerum augeat. Præfectus unà cum sociis potestatem habebit, tunc interpretandi, & ea explicandi, de quibus super instituto nostro (quod hic summam comprehenditur) dubitatio fuerit orta, tunc constitutionem ad optimam Congregationis disciplinam faciendam, Constitutiones autem, experiendo primùm atque utendo expendantur, deinde à Capitulo, five Congregatione generali, prout expedire videbitur, admittentur, Præfectus Generalis ac socii, Præfectos aliorum locorum, ubi Congregatio sedem habuit, & Provinciales, & Visitatores, quos oportuerit, eligent.

§. 6. Electio verò Generalis Præfecti, & Consultorum, posthac in Congregatione generali facienda est. In præsens quidem Generalis creabitur suffragis majoris eorum partis, qui nunc Crucem gerunt, ac juxta formam statuendam. Idem statim ac renunciatus Generalis fuerit, quatuor votorum professione, obedientiæ scilicet, paupertatis, castitatis, & quod præcipuum hujus instituti scopum continet, perennis (ut dictum est) ministerii ægotantium solemnitè se obstringet, tuncque apud ipsum, aut eum cui is hoc negotii dederit, eodem modo profitebuntur omnes qui specimen sui dederint, & idonei, ac digni iudicati fuerint.

§. 7. Volumus autem nostros in Nosocomiis, cum Superiorum suorum iussu, (consentientibus eorumdem Nosocomiorum Præfectis) mittentur, ita operam navare, ut nulla publica officia, magistratusve, aut reddituum administrationem in iis suscipiant, verum omnes curam ægotantium, tam corporis tam animæ gerant; & aliquot ex ipsis nocturnas excubias diurnaque ibi ducant, atque ægrotis agonizantibus, donec ex hac vita migrent, nusquam desint. Quod si nobis, ut cæteris pauperibus Nosocomiorum patroni, aut administratores, aliquid elemosinæ, five quotidianæ, five mensuræ, five annuæ, five in plures annos largiri voluerint. Congregatio nostra jus nullum habeat id exigendi, sed quæ dabuntur liberalitè cum gratiarum actione accipiet. Nos enim curæ ægotantium incumbimus nulla mercede vel spe temporali adducti; sed ex instituti nostri obligatione.

§. 8. Itaque ab ægrotis Hospitalium nulla munera, nihil pecuniæ, nullam omninò rem nostri capiant, ac ne per submissas quidem personas, Legata ab iis, qui in Nosocomiis defuncti fuerint, in rem nostram relicta, non admittantur.

§. 9. Qui in Hospitalibus sunt Nosocomiorum Officiales, & famuli, in Congregationem nostram non recipiantur, sine assensu eorum, qui illis in locis præfecti sunt.

§. 10. Experiendo didicimus, plurimis maximisque difficultatibus, & incommodis, animæ præsertim, eos consiliari, qui extra Nosocomia, & Carceres in aliis locis ægotant, ac potissimum tenues, & plebejos homines, exteròsque qui conducto degunt. Quare volumus (adjuvante Domino nostro JESU CHRISTO) à nostris eos invisi & iis, quoad heri poterit, adhiberi consolationem, exhortationem, & alia hujusmodi juxta Constitutiones edendas, prout quàm verò illi sensum usum emittant, adducant, pro cuiusque conditione, & natura, ad protestationes, secundum formam Ecclesiæ Sanctæ faciendas, cumque ingravescet morbus, diu noctuque apud eos excubent nostri, animamque commendent,

Generalis electione & votis ab eo emittendis.

Officio ministrorum ad Hospitalia. Hoc laicus est dispositum in cons. Clem. VIII. cit. in rubr.

Munerum receptione prohibita.

Officiales in Hospit. quando recipiunt in Congreg.

Infirmorum extra Hosp. visitatione, & curatione.

ac salutaribus monitis opitulentur, magnūque ponatur in eo studium, ut hortationibus piis informetur, ne tentationibus succumbant, & in illo formidoloso vitæ exitu confortentur, ut benè, ac diligenter commendentur animæ.

§. 11. Caveant autem maximè, ne quisquam eorum, qui ad visendos per ejusmodi loca ægrotos, & ad charitatem iis præstandam, opemque offerendam, mittentur, ob labores suos ullum munus, aut rem, pecuniarve accipiat, nec ullam vel exiguā stipem, atque elemosynam, sed omnia ad solam Domini Dei gloriam, animarūque salutem fiant, atque administrantur. Quinimò ut nostrarum utilitatum ratio omnis prætermittatur, nec quisquam proprio emolumento studeat, neutiquam nostri ægrotis auctores sint, neque consilium dent, aut hortentur, ut aliquid erogent elemosynæ, aut testamentum faciant, aut legata relinquunt in rem atque utilitatem nostram.

§. 12. Propter multas instituti nostri occupationes, qui nostrum sacris ordinibus initiati erunt, divinum officium quotidie recitabant, non in choro, sed privatim ac sigillatim, ceteri tertiam Beatissimæ Virginis Rosarii partem, vel ejus Officium parvum.

§. 13. Processiones etiam solemnissimas, ceteraque solemnitates (quibus piè alii Religiosi Ordines interfunt) ipsi non obibunt, ut liberius, magisque assidue ægrotis operam navent, quo in ministerio perseverare cupimus, immediate subditi curæ animadversioni, speciali protectioni ac defensioni Sanctissimi D. N. Papæ, Sanctæque Sedis Apostolicæ.

§. 14. Ut autem spiritum nostrum recreent, ac pascant, possintque tantam divine gratiæ ubertatem adipisci, ut munera, & officia sua cum charitate exequantur, exercebunt se in oratione mentali & vocali; tūm in examine conscientiæ, sequè sapientissimè munient Sacramento confessionis, & communicatione Corporis CHRISTI, nonnullis item abstinentiis, quæ omnia constitutionibus particulatim exponuntur.

§. 15. Ac quoniam nostris, ut alterius saluti consulant, cum proximis assidue conversandum est, volumus Novitios, secundum formam eandem constitutionum jam admisso, præter accuratam examinationem per biennium antè probari, quam ad professionem admittantur, qui à Præfectis, juxta modum in eisdem constitutionibus statuendum, idonei æstimati fuerint, exacto biennio, profectebuntur.

§. 16. Vestis erit pauperum atque honestorum Sacerdotum nigri coloris, pallio autem, ac tunica duntaxat, qui professionem fecerint, affuerit ad dexteram Crux oblonga ad palmi mensuram, ex panno castanei coloris qui vulgò tanens dicitur.

§. 17. Nostræ instituti ratio postulat, ut longè major esse debeat Laicorum quàm Sacerdotum numerus. Idcirco statuimus eos tantum esse sacris ordinibus destinandos, quos Præfectus Generalis, atque una Consultores, vel de eorum licentia alii Superiores, non aptos modò ad ipsos sacros ordines, sed etiam ad ministerium nostrum, ex constitutionum præscripto, congruentes ac necessarios judicant.

§. 18. Idemque servandum decernimus erga Clericos qui ad studium admittentur. Ii verò in eo se ex ipsarum constitutionum regulis exercebunt, ut ità literis vacent, ne mortificationis, & ægrotorum juvandarum (prout Præfectis visum fuerit) studia omittantur.

§. 19. Propterquæ quoddam hæc exercitia cum disciplina spiritali conjuncta, ærumnas, & incommoda afferunt, quòdque gravia sunt nobis, & ac terra loca frequentanda, experti sumus, eorum tuendæ valetudinis causa, quæ his officiis in Domino functi fuerint, aliquo loco opus esse ubi puro, libero, ac salubri aère, gravis odor, & putor conceptus,

expurgetur nostrique è multis laboribus ac vigiliis respirent, quem etiam locum destinari cupimus nostris ex invalitudine se resicientibus, quò citius afflicta vires recuperentur. Quare ejusmodi locum habere Congregatio poterit, idque fore interpretamur, salva, & integra, cui dediti sumus, paupertate, ejus autem loci qualitas constitutionibus definietur.

§. 20. Quibus præterea in Urbibus, & Oppidis Congregatio Novitios educabit, possit habitationem habere separatam à professorum domo.

§. 21. Cùm autem, sicut accepimus, in præmissis nihil, quod pium non sit, aut salutare reperiat. Nos ut Camillus & Socii præfati in eorum vel vivendi proposito, eò promptiores reddantur, quò se majori Sedis Apostolicæ gratia & favore complecti animadverterint; & præmissa dictæ Sedis patrocinio communi, & corroborari viderint, providere volentes, ad Camillum, & Socios prædictos à quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque Ecclesiasticis sententiis, censuris, & penis, à jure vel ab homine quavis occasione, vel causa latis, si quibus quomodolibet innodati existunt, ad effectum præsentium duntaxat consequendum harum serie absolventes & absolutos fore censentes. Necnon dictarum literarum Datam ac præmissorum omnium, & singulorum veriores, etiam totos tenores, ac occasiones, & causas, ac circumstantias, etiam hic de necessitate exprimendas, præsentibus pro plenè, & sufficienter expressis & insertis habentes, Motu proprio, non ad dictorum Camilli, & Sociorum præfatorum, aut aliorum pro eis nobis desuper oblate petitionis instantiam, sed ex certa scientia nostra, & de Apostolicæ potestatis plenitudine, præmissa omnia, & singula, tamquàm ad spirituales profectum animarum pertinentia, & opportuna, Apostolica auctoritate tenore præsentium perpetuò approbamus, & confirmamus, ac illis perpetuè, & inviolabilis firmitatis robur, & patrocinium adjicimus, & apponimus, omnesque, & singulos, tam juris quàm facti, ac quarumcumque solemnitatum, etiam substantialium, hic forsàn de necessitate exprimendarum, & inferendarum defectus, perpetuò supplemus.

§. 22. Dictosque Camillum, & socios, ac ipsam congregationem, illiusque membra omnia, nunc, & pro tempore in quibuscumque locis consistentia, sub nostra, & hujus sanctæ Sedis Apostolicæ, ac Beati Petri speciali & immediata protectione suscipimus, & admittimus.

§. 23. Et nihilominus potiori pro cautela, Camillo, & sociis præfatis ac eorum cuilibet, ut quandocumque eis visum fuerit, possint prædicta substantialia religiosæ vitæ, paupertatis, videlicet, castitatis, & obedientiæ, & perennis ministerii agrotantium vota, juxta præfata formulæ tenorem emittere. Et præfectus hac prima vice eligendus, in manibus cujuscumque personæ in dignitate seu administratione Ecclesiastica constitutæ, secularis vel cuiusvis Ordinis Regularis solemniter profiteri, & tam ipse quàm alii pro tempore existentes Præfecti, & Socii ejusdem Congregationis, sub nomine, & nuncupatione Clericorum Regularium Ministrantium Infirmis, in communi, & de communi viventibus, in locis sibi forsàn jam concessis vel in futurum concedendis, sub dicta immo edicta & speciali protectione in unum habitare, & ex eis inter se Superiorem, Præfectum nuncupandum, eligere, ut præfertur, juxta eorum formulam hujusmodi.

§. 24. Et quoscumque alios seculares Clericos, quavis dignitate fungentes, seu Laicos, qui, Deo inspirante, ad hujusmodi propositum, & communem vivendi modum se conferre, & conformare voluerint, recipere, & post approbationem, juxta prædictam eorum formulam, ad hujusmodi votorum professionem, in manibus eorum Superioris, seu

Novitiorum
habitatione.

Pontificis
confirmatio
suprà dictarum
regulatum.

Sub Sedis
Apost. protectione
receptio.

Licentia
omittendi
suprà dicta
quatuor vota.

Et alios in
Religionem
recipien.

Præfecti

Emolumento
ab eis non
querendo.

Officii divini
recitatione.

Exemptione
à processio-
nibus.

Orationis &
Sacramento-
rum frequen-
tia.

Novitios re-
cipiendis.
Tu vide bul-
lam Clem.
VIII. cit. in
rubr.

Sacerdotum
Habitu.
Hoc habes in
Sixti constit.
cit. in rubr.

Laicorum &
Sacerdotum
numero.
Tu vide d.
const. Clem.
VIII.

Studentibus.

Locus recrea-
tionis.

Statutisq[ue] faciendi.

Præfetti emittendam, & ad communem vivendi modum admittere.

§. 25. Necnon inter eos quascumque constitutiones particulares, quas ad hujusmodi congregationis, seu Religionis finem & Omnipotentis Dei gloriam, proximique utilitatem conformes esse, & conducere, judicaverint, & condere, & tam hæc factas quam in posterum faciendas constitutiones ipsas, juxta temporum & locorum ac rerum qualitatem, & varietatem mutare, alterare, seu in totum cassare, & aliis de novo condere, facere, & edere possint, & valeant, quæ postquam mutata seu de novo condita, edita, ac ab Urbis Vicario examinata, & approbata fuerint, eo ipso, dicta Apostolica auctoritate confirmata, & approbata, ac etiam de novo concessa, etiam sub quacumque data, per Præfectum, & seu alios Superiores dictæ Congregationis eligenda, sint, & esse censcantur, dummodo tamen sacris Canonibus, & Concilii Tridentini decretis, ipsiusque Congregationis Regularibus institutis non contrariantur, quas, ut præfertur, sine nova approbatione Sedis Apostolicæ, vel primò conditas vel mutatas servare in omnibus teneantur, secundum instituti rationem.

Privilegiis concessis.

§. 26. Necnon etiam eidem Camillo, & sociis, ac pro tempore existentibus Præfectis Generalibus, aliisque omnibus, & singulis personis dictæ Congregationis, ut omnibus, & singulis quibuscumque etiam speciali nota dignis, privilegiis, exemptionibus, immunitatibus, indulgentiis, facultatibus, libertatibus, auctoritatibus, indultis, favoribus, prerogativis, concessionibus, & gratiis quorumvis, etiam Cisterciensium, Cluniacensium, ac Sancti Benedicti Monachis, Clericis regularibus, & presbyteris Collegialibus Societatis JESU & Canonicis Congregationis Lateranensis, ac quibuscumque aliis Clericis Regularibus & aliorum, tam Mendicantium quam non Mendicantium, Ordinum, & Congregationum fratrum & personarum, tam in spiritualibus quam in temporalibus, in specie vel in genere, etiam communicativè, per quoscumque Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac Sedem præfatam quomodolibet concessis, quæ tamen sunt in usu, nec ullis revocationibus, comprehensione, neque decretis dicti Concilii, nec ipsius Congregationis Regularibus institutis contraria, & quibus illi, tam in vita quam in mortis articulo, etiam circa peccatorum remissiones, & injunctarum penitentiarum relaxationes, aut alias quomodolibet uti, potiri, frui & gaudere possunt aut poterunt, quomodolibet in futurum perpetuis futuris temporibus uti, potiri, frui, & gaudere, ac illorum omnium participes esse possint, & debeant pariformiter, & æquè principaliter, absque ulla prorsus differentia, perinde ac si Congregationis, Præfectis, Sociis, ac personis, & eorum domibus & Ecclesiis vel Oratoriis hujusmodi nominatim & specialiter ac generaliter concessa fuissent.

Facultas generalis omnium subditorum abfolvendi, &c.

Tu vide constit. Clem. VIII. Quæcumque, n. 114. Tom. 3. fol. 182.

§. 27. Ac pro tempore existenti Præfecto generali hujusmodi, ut per se vel alium seu alios, ad id per eum pro tempore deputatum seu deputatos, omnèque & singulos ejusdem Congregationis Socios, & personas sub ejus obedientia, disciplina, & correctione pro tempore degentes, ab omnibus & singulis eorum peccatis, antè vel post ingressum in dictam Congregationem per eos commissis, necnon à quibuscumque excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque ecclesiasticis, & secularibus sententiis, censuris & penis, à jure vel ab homine, non tamen nominatim, quomodolibet latis & promulgatis, & hujusmodi sententiis innodatos, aut in locis ecclesiasticis interdicto suppositis, divina officia celebrantes & suscipientes, & censuris hujusmodi sic ligatos, & propterea, aut alias ex quocumque capite vel causa, præterquam homicidii voluntarii, bigamie, ac membrorum mutilationis irregularitatem incurrentes, Apostolica auctoritate in foro conscientie tantum abolvere, necnon

cum eis, si opus fuerit, etiam cum rehabilitatione & absterione inhabilitatis & infamie macule dispensare, ita tamen, quòd sic absoluti & dispensati pro tempore, si ab hujusmodi Congregatione quandocumque egrediantur, eo ipso in pristinas sententias & censuras à quibus eos abfolvi contigerit, relabantur, & reincidant.

§. 28. Ipsique Sociis, & Fratribus expressè professis Congregationis hujusmodi, & eorum singulis ut à quibuscumque maluerint Catholicis Antistitibus gratiam & communionem dictæ Sedis habentibus, ad sacros, etiam presbyteratus ordines, sub titulo paupertatis Congregationis hujusmodi promoveri, de licentia tamen Præfecti, seu alterius eorum Superioris, secundum eorum constitutiones, ipsique Antistites ordines ipsos hujusmodi Sociis, absque obedientia, & omni alia promissione vel obligatione conferre.

§. 29. Ac dicto Præfecto generali pro tempore exilenti, seu de illius licentia Præfecti, inferioribus aliorum locorum, seu Provincialibus dictæ Congregationis pro tempore existentibus, & illorum Vicariis, ac Locatenentibus ut cum ejusdem Congregationis personis defectum natalium, etiam ex adulterio, sacrilegio, incestu, & quovis alio nefario & illicito, ac prohibito, & damnato coitatu provenientes patientibus, postquam in dicta Congregatione vota emiserint, ut defectu hujusmodi non obstante ad quoscumque sacros, etiam presbyteratus ordines promoveri, & in illis, etiam in Altaris ministerio ministrare, necnon ad quascumque administrationes, personatus, preeminentias, & officia dictæ Congregationis eligi, admitti, & assumi, illaque gerere, & exercere.

§. 30. Ac Præfecto & Sociis Congregationis hujusmodi, ut quæcumque loca, & domus ad inhabitandum eis donata, vel ab illis quomodolibet habita, in domos & Oratoria Ordinis, & Congregationis hujusmodi erigere, facere seu erigi procurare, absque nova dictæ Sedis desuper obtinenda approbatione, liberè, & licitè possint & valeant. Necnon si contingat Præfectum, & Socios ipsos aliquam domum, Ecclesiam, Oratorium, seu quævis alium locum dictæ Congregationis edificare, & construere, seu id per aliquis personam testamentum mandari, vel quovis modo offerri domum, Ecclesiam, seu Oratoria, vel loca hujusmodi, cum omnibus ad id necessariis & opportunis construi, & edificari, ac locum pro hujusmodi constructione oblatum recipi posse, ipsasque domos, Ecclesias, Oratoria, & cellas ubilibet per dictos socios pro tempore constructa, vel eis donata, eo ipso quo edificata vel donata fuerint Apostolica auctoritate erecta, approbata, & confirmata, ac bonà quæcumque pro domorum vel Oratoriorum hujusmodi vel personarum inibi commorantium sustentatione & manutentione, per quosque Christiani fideles pro tempore donata, relicta, & legata, eo ipso, prædicta auctoritate, perpetuò applicata, & appropriata esse, & censeri, Ecclesiasticæ, & Oratoria præfata cum cæmeteriis per quoscumque Episcopos, benedicti seu consecrari, & quovis modo polluta reconciliari possint, & debeant perpetuo concedimus & indulgemus, statuimus, & ordinamus.

§. 31. Et volumus quòd à correctione regulæ Congregationis hujusmodi, secundum ordinarios factas, ut vigor discipline melius conservetur, appellari, aut talis appellatio per illum Judicem admitti, nec ab officio absolutio, aut privatio peti nullatenus possit.

§. 32. Nec Præfectus generalis dictæ Congregationis pro tempore existens, aliquam dignitatem extrà Religionem seu Congregationem ipsam, sine ejusdem, seu illius Congregationis expressa licentia, nec aliquis ex sociis hujusmodi, absque consensu dicti Præfecti generalis, & expressa licentia, quæ dari non valeat, nisi ad id à Romano Pontifice per obedientiam præceptum pro tempore fuerint

Facultas omnium profectorum suscipien. Ordines à quocumque Antistite.

Facultas Generalis penam sup. defectu natalium.

Aliaque loca recipiendi.

Tu vide Bullam 99. Clem. VIII. Quoniam, Tom. 3. fol. 162.

Appellatio à correctione prohibetur.

Et impetratio Prelaturarum. Tu ad hoc vide Bullam Clem. VIII. cit. in rub.

Et alteri
quam Præfec-
to consen-
di.

Ad aliōsque
Ordines
transfundi.

Apostolatē
coercentur.

Congrega-
tiones loco-
rum recipi
possunt.
Tu vide Bul-
lam 115.
Clem. VIII.
Quæcum-
que. fol. 112.
Tom. 3.

Divina officia
celebrantur.

Exemptio
ab Ordina-
torum iupe-
rioritate jux-
ta Concilii
Tridentini.

Privilegia
omnium Or-
dinum.

Indulgentia.

coacti, prælatū, vel quancumque aliam dignitatem acceptare, vel ad illam assumi queat.

§. 33. Necnon quod quilibet ex Sociis Congregationis hujusmodi peccata sua proprio Præfecto, vel ab eo deputato seu deputatis, & aliis, secundum ordinationes Congregationis præfatæ designatis seu designandis, confiteri debeat, nisi super hoc à dicto proprio Præfecto alium Confessorem eligendi facultatem habuerit.

§. 34. Ac inhibemus, ne quis post emissā vota, secundum constitutiones seu ordinationes ejusdem Congregationis, ad quemvis alium Ordinem, etiam per Sedem præfatam approbatum (Carthusiensium Ordine dumtaxat excepto), transferri egressi verò aliis, quam, ut præfertur, de Ordine seu consortio hujusmodi, in nullo alio præterquam Carthusiensium Ordine prædicto admitti, recipi vel retineri possint.

§. 35. Ipsi Præfectus generalis, & alii inferiores Præfecti ejusdem Congregationis, per se vel alios, illos sic egressos, & alios quoscumque dictæ Congregationis Apostatas, & etiam alios quosvis insolentes, & qui id mereri videbuntur, in quocumque habitu Apostatas præfatos contingere reperiri, excommunicare, capere, incarceratione, coercere, & alias fidei disciplinæ submittere, necnon ad id, si opus fuerit, auxilium brachii secularis invocare.

§. 36. Insuper Præfecto generali, vel de ejus licentia, aliis locorum Præfectis seu Superioribus dictæ Congregationis, etiam pro tempore existentibus, ut in sua Congregatione quoscumque alios faculares, laicos, clericos seu in presbyteratus ordine constitutos aggregare, & adicere, pro piis misericordiarum, & charitatis operibus hujusmodi exercendis, qui sic aggregari, omnibus, & singulis indulgentiis, & gratiis ejusdem Congregationis gaudeant, & potiantur, & gaudere ac potiri debeant, & illas consequantur, dummodo ea opera faciant, & exercent, quæ pro eisdem indulgentiis, & gratiis consequendis fuerint præscripta.

§. 37. Necnon præfecto generali, & aliis Superioribus, necnon de eorum etiam facultate, universis fratribus, & sociis Congregationis Ministrantium Infirmit hujusmodi, in presbyteratus ordine constitutis, ut in locis ubi degunt, & eos pro tempore morati contigerit, habere Oratoria, & in eis Missas & alia divina officia celebrare, ac Ecclesiastica Sacramenta recipere, libere, & licite possint, & valeant respectivè etiam concedimus, & indulgemus.

§. 38. Ipsamque Congregationem Ministrantium Infirmit, & universos illos socios, & personas singulas, ac eorum bona, & res quascumque ab omni Superioritate, jurisdictione, correctione, & visitatione quoruncumque locorum Ordinariorum, & Episcoporum, salva tamen decretorum dicti Concilii dispositione, eximimus, & penitus liberamus.

§. 39. Necnon privilegia, indulgentias, prærogativas, exemptiones, immunitates, gratias, & indulta, Monachis, & Fratribus, ac Societati JESU, & Canonici, aliisque personis supradictis, tam in spiritualibus quam in temporalibus, tam in specie quam in genere, etiam communicativè concessa, ut præfertur, ad Præfectum generalem etiam pro tempore existentem, aliōque socios & etiam particulares Congregationis hujusmodi Ministrantium Infirmit, perpetuò extendimus, & ampliamus, ac in eis locum habere, & suum plenarium effectum fortiri debere decernimus, & declaramus.

§. 40. Et insuper animarum profectui providere volentes, de Omnipotentis Dei misericordia, ac beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus auctoritate confisi, omnibus, & singulis Christi fidelibus verè penitentibus, & confessis, ac sacra communione refectis, qui dictam Congregationem pro

tempore ingredientur, die primi illorum ingressus, & receptionis ac emissionis professionis, necnon qui similiter penitentes, & confessi, si id commodè fieri poterit, ac dicta communione refecti, in dicta Congregatione pro tempore decesserint, in eorum mortis articulo, præsertim in proximi subventionem, ratione pestis, seu cujuscumque alterius morbi contagiosi, in forma Jubilæi Anni Sancti Romæ concedi soliti, Necnon etiam verè penitentibus, & confessis, ac Sanctissimo Eucharistiæ Sacramento refectis in piorum operum misericordiarum, & charitatis exercitio perseverantibus, singulis primis diebus Dominis cujuslibet mensis, plenariam omnium peccatorum suorum indulgentiam, & remissionem misericorditer in Domino concedimus, & elargimur. Ac eisdem Sociis, & Religiosis dictæ Congregationis, & in ea aggregatis, ut etiam omnibus, ut præfertur, & singulis indulgentiis, quibus ipsimet Religiosi gaudent, & eos gaudere, ac potiri volumus, quociescumque Infirmit præfata fuerint, ac illos noctu visitaverint, & curaverint, eorumque lectos faciendo, ac illis ad manducandum porrigendo, & auxiliando ac disponendo ad bene moriendum, & viam salutis, ac Doctrinam Christianam illos docendo, ac denique omnia officia charitatis, vel spiritualia vel corporalia, quæ ad animarum edificationem pertinent, exercendo, & Sacramenta Ecclesiastica administrando, ceteraque similia præstiterint, pro quolibet præmissorum piorum operum, necnon omnibus & singulis officialibus, & ministris, ac aliis personis dictæ Congregationis ob infirmitatem, vel propter obedientiam, seu alia de causa domi remanentibus, si quinquies Orationem Dominicam, & toties salutationem Angelicam devotè recitaverint, etiam viginti annos, & totidem quadragenas de eis iniunctis, & aliis quomolibet debitis penitentis misericorditer in Domino relaxamus, ac quod omnes, & singuli utriusque sexus benefactores hujus Congregationis, possint esse participes omnium operum meritoriorum quæ in Congregatione hujusmodi pro tempore fiunt, etiam concedimus, & indulgemus.

§. 41. Decernentes easdem presentes literas, sub quibuscumque similibus vel dissimilibus indultiarum, vel aliarum gratiarum revocationibus, suspensionibus, limitationibus, derogationibus, & aliis contrariis dispositionibus, etiam in favorem Basilicæ Principis Apostolorum de dicta Urbe, seu Cruciatæ Sanctæ, aut etiam per nos seu per alios Romanos Pontifices prædecessores nostros, ac dictam Sedem, etiam motu, & potestatis plenitudine similibus, sed ad quorumvis Imperatorum & Regum instantiam, pro tempore quomodolibet factis, minimè comprehendendi, sed semper ab illis exceptas & quoties illæ emanabunt, toties in pristinum statum restitutas, repositas, & plenariè reintegratas, ac de novo concessas esse, & censeri debere.

§. 42. Sicque per quoscumque Judices, & Commissarios, quavis auctoritate fungentes, etiam Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, & causarum Palatii Apostolici Auditores, sublatæ eis, & eorum cuilibet quavis aliter iudicandi, & interpretandi facultate, & auctoritate ubique judicari, & definiri debere, irritum quoque, & inane si fecus super his à quoquam, quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 43. Quocirca Venerabilibus fratribus nostris Ostien. & Tusculan. Episcopis, ac dilecto filio causarum Curie Cameræ Apostolicæ generali Auditori per Apostolicam scripta, Motu pari mandamus, quatenus ipsi vel duo aut unus eorum, per se vel alium seu alios, presentes literas, ac omnia, & singula in eis contenta, ubi & quando expedierit, ac quoties pro parte Præfecti, & Sociorum prædictorum fuerint requisiti, solemniter publicantes, eisque in præfatis efficacis defensionis presidio assistentes, faciant auctoritate nostra præmissa om-

Clausulæ
præservative.

Clausulæ
sublatæ &c.

Executores
desunt.

nia observari. Non permittentes Præfectum, ac socios præfatos desuper à quouam quomodolibet molestati seu inquietari, contradictores dictæ auctoritate nostra appellatione postposita compellendo.

Derogatio
contratio-
rum.

§. 44. Non obstantibus piæ memoriæ Bonifacii Papæ Octavi etiam prædecessoris nostri, qua caveatur, ne Mendicantes loca ad inhabitandum recipere seu recepta mutare præsumant, absque dictæ Sedis licentia speciali, de prohibitione hujusmodi expressam mentionem faciente; Necnon dicti Sixti prædecessoris, ac Pictavien. Concilii, contra illegitimos, & quorumcumque aliorum Romanorum Pontificum prædecessorum nostrorum, ac nostra, de non concedendis indulgentiis ad instar constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, ac Cisterciens. Cluniacens. Sancti Benedicti, Mendicantium, & Societatis JESU, & Canonicorum Lateranen. Ordinum hujusmodi, juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia roboratis, statutis & consuetudinibus privilegiis quoque indultis, & literis Apostolicis, quibusvis personis per quoscumque Roman. Pontif. prædecessores nostros præfatos, ac nos & dictam Sedem, etiam Motu, scientia, & potestatis plenitudine similibus, ac quibusvis etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus, & insolitis clausulis, irritantibusque & aliis decretis, in genere vel in specie ac aliis quomodolibet etiam pluries concessis, approbatis, & innovatis. Quibus omnibus, & singulis, etiam si de illis eorundemque totis tenoribus specialis, specifica, expressa, & individua, non autem per clausulas generales idem importantes mentio seu quavis alia expressio habenda foret, illorum tenores presentibus pro expressis habentes illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat specialiter, & expresse, Motu pari derogamus, contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim, ab eadem sit Sede indultum, quod interdici, suspendi, vel excommunicari non possint, per literas Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum de indulto hujusmodi mentionem.

Fides tran-
sumptorum.

§. 45. Volumus autem, quod earundem præsentium transcriptis, etiam impressis, manu alicujus Notarii publici subscriptis, & sigillo alicujus Canonici Metropolitane vel alterius Cathedralis Ecclesiæ, seu personæ in dignitate ecclesiastica constitutæ munitis, eadem prorsus fides in iudicio, & extra adhibeatur, quæ presentibus eisdem adhiberetur, si forent exhibitæ vel ostense.

Sanctio po-
nalis.

§. 46. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc paginam nostræ absolutionis, approbationis, confirmationis, adjectionis, appositionis, suspensionis, admissionis, concessionis, indulti, statuti, ordinationis, exemptionis, liberationis, extensionis, ampliationis, decreti, declarationis, relaxationis, mandati, derogationis, & voluntatis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumperit, indignationem Omnipotentis Dei, ac Beatorum Petri, & Pauli Apostolorum ejus se noverit incursum.

Dat. P. A. 1.
die 21. Sep-
tembris.

Datum Romæ apud S. Marcum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo nonagesimo primo, undecimo Kal. Octobris, Pont. nostri Anno quarto.

XVIII.

Confirmatio gratiarum, & indultorum Eremitæ Camaldulensis, Congregationisque dicti Eremitæ, & S. Michaelis de Murano Ordinis Camaldulens. sub Regula S. Benedicti. Cum privilegiorum quibuscumque aliorum Religiosorum, etiam Mendicantium Ordinibus concessorum & concedendorum, communicatione.

Alia de hoc Ordine Camaldulensi, judicavi sup. in consilio. i. Alexandri II. Nulli, fol. 26. Tom. 1. Pri-

vilegia autem signantur vide sup. fol. 113. in Alexand. IV. constit. xi. Officii, & in Leon. X. constit. 2. Et si a, fol. 528. in d. Tomo 1. ac Pii V. constit. 41. Et si mendicantium, in. fin. fol. 243.

GREGORIUS PAPA XIV.

Ad futuram rei memoriam.

EX injuncto nobis desuper Apostolicæ servitutis officio, ad ea, quæ à prædecessoribus nostris pro ecclesiasticorum, præsertim Regularium personarum, quæ sub suavi Religionis jugo Altissimo famulantur, directione, & tranquillitate, statuta, & concessa fuerunt, conservanda, & augenda, libenter inducimur, ut Apostolicis gratis, & favorabiliter circumsepti, & muniti, cum majori quiete, ac devotionis fervore, sub regularis vitæ observantia, ac Monastica disciplina, vivere, ac Deo optimo Maximo preces fundere liberius valeant.

§. 1. Sanè pro parte dilectorum filiorum Generalis & Visitatorum, ac Prioris Eremitæ, necnon Congregationis ejusdem Eremitæ, & S. Michaelis de Murano Camaldulens. Ordinis, nobis nuper exhibitæ petitio continebat, quod aliis felicis recordationis Leo Decimus, Clemens Septimus, Paulus Tertius, Julius etiam Tertius, Gregorius Decimus Tertius, & Sixtus Quintus, ac alii etiam Romani Pontifices prædecessores nostri, tunc existens, Generali & Visitatoribus, ac Priori Eremitæ, necnon Congregationis ejusdem Eremitæ, & S. Michaelis de Murano, diversa privilegia, facultates, & indulta, ac gratias spirituales & temporales concesserunt, omniaque & singula privilegia, indulta, facultates, & gratias, ac concessionis ipsi, ac personis, domibus & bonis eorumdem eatenus, tam Apostolica quam Ordinaria, Imperiali vel Regia auctoritatibus quomodolibet concessa, & consuetudine legitima præscripta, acquisita, Apostol. auctoritate, certis modo & forma, confirmaverunt.

§. 2. Ac inter alia statuerunt & voluerunt, quod Monasteria, Prioratus, Ecclesiæ, Hospitalia, Capellæ, & loca dicti Ordinis & Congregationis, tunc & pro tempore existentia, ac eorum quodlibet, necnon Abbates, Priores, Abbatissæ, Fratres & Sorores, ac personæ in eis degentes, in jus & protectionem Beati Petri & Sedis Apostolicæ, ac sub eorum & sua protectione essent.

§. 3. Eademque Monasteria, Ecclesiæ, Prioratus, & loca manualia, grantiæ, possessiones, & bona, ac Prælati & personæ Congregationis prædictæ, ab omni impositione, exactione, collecta, decima, charitativo subsidio, ac alio quocumque reali ac personali, mixto munere, vel gravamine, omnino immunes essent & exempti.

§. 4. Statuto præterea, quod omnia & singula Monasteria, Hospitalia, Prioratus, & beneficia Ecclesiastica, & loca eidem Congregationi unita & aggregata, seu in posterum aggreganda per quoscumque, cujusvis dignitatis fuerint, in titulum vel commendam obtenta, cum primùm per cessum vel decessum illa obtinentium vacarent, ad eundem Ordinem effectualiter reverterentur, & Congregationi prædictæ hujusmodi pleno jure, & cum effectu aggregarentur, possentque Prælati & alii, qui beneficia & loca aliqua dicti Ordinis, in titulum vel commendam haberent, titulo & administrationi dictorum locorum, in manibus Generalis, & Capituli cedere; qui possessiones hujusmodi admittendi potestatem habere intelligerentur ad hoc, ut eidem Congregationi unirentur, & effectualiter aggregarentur, ita tamen, ut loca, quæ sic applicari contingeret, Monachis dictæ Religionis juxta eorum instituta concedenda, debitis propterea non fraudarentur obsequiis, sed per Prælatos Monasteriorum vel locorum quibus applicata forent, & annexa, onera & officia consuecta implerentur.

Edita A. D.
1591.

Præmium.

Plures Romani Pont. Congregationi indulta concesserunt.

Et loca ejusdem sub S. Sedis Apostol. protectione susceperunt.

Exemeruntque ab omni collecta, decima &c.

Loca omnia Congregationi juncta, per ejus prælatos conferri mandarent.

Praetorium ejusdem Monasterii pro sefforum numero taxant.

Generali potestatem absolvendi Monachos &c. amplissimam dederant. Tu vide moderationem Clem. VIII. in ejus bulla 1. 5. fol. 181. Tom. 3.

Priori & Eremitis Camaldulensium omnia indulta Eremiti S. Romualdi communicant.

Dubiaeque desuper oriunda, in favorem Congreg. interpretari decreverunt.

Hic modò Pont. prædicta omnia confirmat.

§. 5. Insuper statuerunt & ordinarunt, quòd & ejusdem & Ordinis Praetorium numerus augeri non possit, nec plures essent quàm septem qui essent ejusdem Monasterii professi; excepto tamen Generali, qui in dicto numero non comprehenderetur.

§. 6. Ac præterea eidem Generali pro tempore existentis ut Monachos ac Moniales de Congregationibus, à quibusvis etiam majoris excommunicationis, suspensionis, & interdicti, aliisque ecclesiasticis sententiis, censuris & penis, à jure vel ab homine, quavis occasione vel causa latis, & quibus pro tempore irretiti forent, etiam illorum absolutio dictæ Sedi specialiter vel generaliter reservata foret, satisfactio tamen iis ad quorum instantiam censuræ ipsæ forsitan emanaverant; ac à quibusvis irregularitatibus, tam de jure quàm ex ipsius Eremiti constitutionibus, & regularibus institutis, quomodolibet provenientibus, & quibuscumque aliis peccatis, criminibus, excessibus, & delictis quantumcumque gravibus & enormibus, etiam talibus, quòd de illis esset Sedes prædicta merito consulenda, & dictæ Sedi qualitercumque reservatis, exceptis contentis in Bulla in die Cenæ Domini legi consuecta; quoties opportunum foret, eorum confessionibus diligenter auditis, absolvere, ac eis pro commissis penitentiam salutarem injungere, ac seipsum, etiam à quocumque alio Praetato vel Eremita Sacerdote vices suas illi committendo; absolvi facere liberè & licitè possit, facultatem concesserunt.

§. 7. Eisdemque Priori & Eremitis Eremiti hujusmodi, quòd omnibus & singulis privilegiis, indultis, concessionibus, indulgentiis, & gratiis, Eremitis S. Romualdi, aliàs de Monialio in genere quomodolibet concessis, approbatis & innovatis, ac quibus Eremitæ Congregationis S. Romualdi hujusmodi utebantur, potiebantur, & gauderant, ac uti, potiri, & gaudere poterant quomodolibet in futurum, uti, gaudere, & potiri, liberè & licitè possent.

§. 8. Et quod quicquid dubii in dictis privilegiis, concessionibus, & gratiis emerisset, id, data verborum ambiguitate, ac iuris peritorum interpretatione, in favorem Congregationis, & locorum particularium ejusdem interpretari deberet, statuerunt & ordinarunt, prout in diversis dictorum prædecessorum desuper confectis literis & ordinationibus vivæ vocis oraculo factis, plenius continetur.

§. 9. Quare pro parte Generalis, & Visitatorum, ac Prioris Eremiti, necnon Congregationis ejusdem Eremiti, ac S. Michaelis de Murano hujusmodi nobis fuit humiliter supplicatum, ut singulis prædictis, cæterisque in eisdem literis contentis robor nostræ approbationis adjicere, & aliàs in præmissis opportune providere, de benigntate Apost. dignemur. Nos igitur eosdem Generales & Visitatores, ac Priorem Eremiti, necnon Congregationem ejusdem Eremiti, & S. Michaelis de Murano, ac singulares personas Monasteriorum & locorum eorumdem, specialibus favoribus & gratiis prosequi volentes, precipis etiam Venerabilis fratris nostri Protoprii Episcopi Tusculanen. S. R. E. Cardinalis Comensis nuncupati, ejusdem Ordinis & Religionis Camaldulensis Protectoris inclinati, eosdem Generalem, Visitatores prædictos à quibusvis excommunicationibus & censuris, ac singularum literarum prædictarum virescentes tenores, ac si de verbo ad verbum, nihil penitus omisso, inferunt, præsentibus pro expressis habentes, cessiones, uniones, aggregationes, & incorporationes singularum Monasteriorum, Ecclesiarum, Hospitalium, beneficiorum & locorum quorumcumque, in eisdem prædecessorum literis, & præsertim Leonis X. expressorum, eidem vestræ Congregationi vigore eorumdem indultorum Apostolicorum, & facultatum hujusmodi hucusque factas, & quæ effectum sortitæ sunt, taxas & validas, ac efficaces existere, decernimus & declaramus. Necnon uniones & aggregationes hujusmodi, ac omnia & singula

privilegia, facultates & indulta præmissa, prout expressa sunt, necnon omnia & quaecumque alia privilegia, indulta, concessionibus, exemptiones, immunitates, facultates & gratias, tam spirituales, quàm temporales, Generali, Visitatoribus, Priori, & Congregationi, ac Ordini prædicto, necnon Monasteriis, Ecclesiis, domibus & locis, illorumque singularibus personis, tam per dictos prædecessores, quàm alias quomodolibet dicta auctoritate Apostolica concessa, necnon singulas dictorum prædecessorum literas, ac omnia & singula in illis contenta, & inde secuta quaecumque quatenus sint in usu, & prout hactenus observata fuerunt, Apostolica auctoritate prædicta, ex certa nostra scientia tenore præsentium approbamus, confirmamus & innovamus, illisque perpetuè ac inviolabilis firmitatis robur adjicimus, ac omnes & singulos, tam juris quàm facti, ac solemnitate quarumcumque quomodolibet omittarum, aliosque defectus, si qui forsitan intervenerint in eisdem supplemus; unionesque & aggregationes, ac omnia alia & singula præmissa, & in eisdem literis contenta, & comprehensa, ac superius expressa, eisdem Generali, Visitatoribus, Priori, & Congregationi, ac prædictis, eorumque personis & Ministris, & cuilibet eorum, auctoritate & tenore prædictis, etiam de novo, etiam Motu proprio, & ex certa scientia nostra, ac de Apostolica potestatis plenitudine perpetuò concedimus & indulgemus.

§. 10. Ac districtius præciendo mandamus, quibusvis Archiepiscopis, Episcopis, ac locorum Ordinariis quibuscumque, ut super privilegiis, exemptionibus, immunitatibus, facultatibus, gratiis hujusmodi, tam spiritualibus quàm temporalibus, eosdem Generalem & Abbates, etiam ratione Venerationis, correctionis, aut alio quovis pretextu etiam respectu Monasteriorum Monialium ejusdem Ordinis, sub cura & gubernio Generalis, & Abbatis prædictorum existentium, ullatenus molestare, inquietare, vel perturbare audeant vel presumant.

§. 11. Ac præterea volentes, eosdem Generalem, Visitatores, Priorem Eremiti, necnon Congregationis ejusdem Eremiti, ac S. Michaelis de Murano, ac Ordinem prædictum Camaldulensem amplioribus favoribus & gratiis prosequi, ejusdem Generali, Visitatoribus, Priori, Monasteriis, domibus, & locis, Ordinis & Congregationis prædictæ, omnia & singula privilegia, prerogativas, concessionibus, jurisdictiones, cautelaciones, favores, facultates, declarationes, depositiones, immunitates, exemptiones, indulta, cunctisque generis existentia, necnon indulgentias etiam plenarias, ac peccatorum remissiones, ceteras gratias spirituales & temporales, quibusvis aliis Regularium Congregationum Ordinibus, eorumque Monasteriis, tam virorum quàm mulierum, eorumque Generalibus, Abbatibus, aliisque Superioribus & personis eorumdem, in quibuscumque Mundi partibus existentibus, aliàs quomodolibet concessa, & concedenda, ac quibus de jure, usu, consuetudine, vel privilegio, aut concessione Apostolica, Regia, Imperiali, Archiepiscopali, Episcopali, in genere vel in specie, tam conjunctim, quàm divisim, etiam per viam communicationis & extensionis aliàs quomodolibet utuntur, potiuntur, & gaudent, ac uti, potiri, & gaudere quomodolibet possunt & poterunt in futurum, etiam si talia sint vel fuerint, quæ specialem & individuum requirerent mentionem, seu in præsentibus de verbo ad verbum insertionem, & seu particularem concessionem eisdem auctoritate & tenore perpetuò communicamus, extendimus & concedimus. Ita quòd iidem Generales, Visitatores, Monasteria, & loca prædicta, ut præsertim, ac eorum Praetati, Fratres, & personæ prædictæ, ac eorum res & bona, sub eorum cura, & secundum ejusdem Congregationis instituta, nunc & pro tempore viventes & existentes, præmissis omni-

Ut Ordinariis in prædictis Congregationibus faciant jubet.

Indulta quomodocumque Regularium Congregationum largiuntur.

Quoad indulgentias vide immutationem in Bulla 16. Pauli V. Romanus. Tom. 3. fol. 223.

bus & singulis æquè pariformiter, & absque alia penitus differentia, perinde ac si illis, & eorum singulis personaliter & specialiter, & expressè ac nominatim, necnon ad instar concessa essent, in quantum eidem Congregationi expediat, (dummodò ejusdem Congregationis regularibus Ordinibus, ejusque gubernio, privilegiis, constitutionibus & definitionibus non adveniantur) uti, frui, potiri, & gaudere, liberè & licitè possint & valeant.

Prelatorum
numerum
ejusdem Mo-
nasterii pro-
fessorum au-
get.

§. 12. Insuper cum ejusdem Ordinis & Congregationis Prelati, qui sint ejusdem Monasterii professi, plures quàm septem, excepto Generali, qui in dicto numero non computatur, Ordinationibus Apostolicis minimè esse valeant, tenore presentium, eadem Apostolica auctoritate numerum Prelatorum dictæ Congregationis augemus; ità quòd futuris temporibus octo Prelati ejusdem Monasterii professi (excepto Generali, quem in dicto numero volumus non comprehendì) esse possint & valeant; ac præsertim in his dictæ suæ Congregationis Monasteriis, & Ecclesiis, videlicet, Sanctæ Mariæ à Puteo Stratz, Taurinensis, Sancti Viti in Carcubio Mediolanensi, Sanctorum Catherinæ & Romualdi Cremonensium, necnon S. Augustini de Bassiano de Abrutio, & etiam S. Nicolai de Cornu ejusdem Provinciæ Abrutii Pennen. suos Abbates & Prælatos eligere, deputare, ac instituire, ut & in aliis suis Monasteriis dictæ Congregationis, possint & valeant.

Clausula
sublata. &c.

§. 13. Decernentes sic & non aliter per quoscumque Judices, quavis auctoritate fungentes, etiam locorum Ordinarios, ac S. R. E. Cardinales, etiam de latere Legatos, Vicelegatos, Sedis Apostolicæ Nuncios, & causarum Palatii Apostolici Auditores, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter judicandi & interpretandi facultate & auctoritate ubique judicari & definiri debere, irritum quoque & inane, quicquid secus super his à quoquam quavis auctoritate scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Executorum
deputatio.

§. 14. Et nihilominus eidem Venerabili fratri nostro Ptolomæo Episcopo Tusculan. S. R. E. Cardin. Comensi ejusdem Congregationis & Ordinis Protectori nunc & pro tempore existenti, ac dilecto filio Curiz causarum Cam. Apostolicæ generali Auditori, per præsentem committimus & mandamus, quatenus ipsi vel duo aut unus eorum, per se vel alium seu alios: præsentem literas, ubi, & quando opus fuerit, ac quoties pro parte eorumdem Generalis, Visitatorum, Prioris Bremi, & Congregationis prædictæ, aut alicujus eorum fuerint requisiti solemniter publicantes, eisque in præmissis efficacis defensionis præsidio assistentes, faciant auctoritate nostra eisdem præsentem literas, & in eis quæcumque inviolabiliter observari, ac plenum effectum sortiri, necnon Generalem, Visitatores, Abbates, Priores, & Monachos prædictos, & eorum singulos o. n. i. b. u. s. præmissis pacificè frui & gaudere, non permittentes eos & eorum quemlibet desuper contrà præsentium tenorem, sub quovis prætextu, etiam subreptionis vel obreptionis aut nullitatis vitio, etiam defectu intentionis nostræ, per quoscumque quomodolibet molestari, perturbari, vel impediri. Contradiçtores quomodolibet & rebelles, etiam per sententias, censuras, & penas Ecclesiasticas, aliæque opportuna juris & facti remedia, appellatione postposita compescendo; legitimisq; super his habendis, servatis processibus, sententiis, censuras, & penas ipsas, etiam iteratis vicibus aggravando; invocato etiam ad hoc, si opus fuerit, auxilio brachii secularis.

Clausula de-
rogatoria.

§. 15. Non obstant. nostra de non concedendis indulgentiis ad instar, ac scilicet recordat. Bonifacii Papæ Octavi prædecessoris nostri de una, & in Concilio generali edita de duabus dietis, aliisque Apostolicis, & in Provincialibus & Synodalibus Conciliis editis, generalibus vel specialibus constitutionibus & ordinationibus; etiam juramento, confirmatione Apostolica, vel quavis firmitate alia

roboratis, statutis, consuetudinibus, declarationibus, inhibitionibus & decretis; privilegiis quoque, indultis, & literis Apostolicis, Legatis, Nuntiis, & Ordinariis, ac Congregationibus & Ordinibus prædictis, sub quibuscumque tenoribus & formis, ac cum quibuscumque etiam derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacioribus & insolitis clausulis, & decretis irritantibus, in genere vel in specie, per quoscumque Rom. Pont. prædecessores nostros, ac nos & Sedem Apostolicam, etiam Motu simili, & consistorialiter, aut aliàs quomodolibet concessis, & etiam iteratis vicibus approbatis & innovatis. Quibus omnibus & singulis, etiam si pro illorum sufficienti derogatione, de illis eorumque tenoribus & formis specialis, specifica, expressa, & individua, ac si de verbo ad verbum, non autem per clausulas generales idem importantes, mentio seu quævis expressio habenda, aut aliqua alia exquisita forma ad hoc servanda foret, etiam si in eis caveretur expressè, quòd illis nullatenus, aut non nisi sub certis modo & formis derogari possint, illorum omnium & singulorum tenores, ac si de verbo ad verbum nihil penitus omisso, & forma in illis tradita observata, inserti forent, præsentibus pro sufficienter expressis habentes, illis aliis in suo robore permanentibus, hac vice dumtaxat, harum serie ad effectum præmissorum derogamus, ceterisque contrariis quibuscumque. Aut si aliquibus communiter vel divisim ab eadem sic Sede indultum, quòd interdicti, suspensi, vel excommunicati non possint per literas Apostolicas non facientes plenam & expressam, ac de verbo ad verbum, de indulto hujusmodi mentionem.

Clausula
præservati-
væ.

§. 16. Volumus autem, ut presentibus nostris literis, per quoscumque revocationes, seu Apostolicas constitutiones, sub quibuscumque verborum formis, etiam si Motu proprio, & ex certa scientia, ac de Apostolicæ potestatis plenitudine emanaverint, derogari non possint, nisi eorumdem privilegiorum, & presentium totius tenor de verbo ad verbum inferatur, ac de omnibus & singulis dictæ Congregationis Monasteriis nominatim, specifica mentio fiat.

Transumptio-
rum fides.

§. 17. Quòdque earundem presentium transumptis, etiam impressis, manu alicujus Prelati dicti Ordinis, aut Protectoris, ac Notarii publici subscriptis, & sigillo dictæ Congregationis, aut alterius personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ munitis, eadem fides adhibeatur, in judicio & extra, quæ eisdem presentibus adhibeatur, si forent exhibitæ vel ostensæ.

Datum Romæ apud S. Marcum, sub Annulo Piscatoris die 24. Septembris, millesimo quingentesimo nonagesimo primo, Pontificatus nostri anno primo.

A. Dat. P. i.
die 24. Sep-
tembris.

Moderatio indultorum S. R. E. Cardinalium, super collatione beneficiorum.

XIX.

Aliam moderationem edidit Pius V. sup. in ejus const. 37. Sanctissimus, fol. 239. Et aliam quam videas edidit, postremò. Paulus V. in sua const. 58. Sanctissimus, ubi notabo, in Tomo 5. fol. 269.

Quod Capitula Ecclesiarum Cathedralium quibus S. R. Eccl. Cardinales præsent, ex indultis conferendi Beneficia Ecclesiastica reservata vel affecta eisdem Cardinalibus concessis, nullum vis præterire possint, declaravit Sanctiss. D. N. Urban. VIII. const. 59. Accepto, inf. tom. 4. Qui const. 60. Licet, declaravit, quòd S. R. E. Cardinales Ecclesiarum Præsules, indulto conferendi Beneficia Ecclesiastica ratione Ecclesiarum, quibus præsent, vel quarum regimini ultimo loco reserunt, dumtaxat uti possint.

Sanctissimus in Christo Pater & D. N. D. Gregorius divina providentia Papa XIV. ex quibusdam contrà dispositionem juris communis Sanctæ Rom. Eccl. Cardinalibus, super collatione bene-

Edita A. D.
1591.

ficiorum

ficiorum Ecclesiasticorum apud Sedem Apostolicam vacantium concessis indulgē & facultatibus, sæpe numero impeditus quod minus solitam Sedis hujus benignitatem ergā pauperes, & benemeritos liberaliter exercere possit, ac simul volens libitibus obviare, quæ super illorum interpretatione oriuntur, fecit, recordat. Pii Papæ V. sui prædecessoris vestigiis in hac parte inherendo.

§. 1. Omnia & quæcumque indulta, concessiones, facultates, & privilegia, conferendi quæcumque apud Sedem Apostolicam vacantia, aut in posterum vacatura beneficia Ecclesiastica, cum cura & sine cura, secularia & quorumvis Ordinum regularia, quomodocumque qualificata, ad collationem, provisionem, presentationem, electionem, & quæcumque aliam dispositionem, tam dictorum Cardinalium ratione, Patriarchalium, Metropolitanorum, & aliarum Cathedralium Ecclesiarum, non tamen earum quibus in titulum aut denominationem sui Cardinalatus præsumt, circa quæ aliquid de novo disponere non intendit, necnon Monasteriorum, Prioratuum, dignitatum, & aliorum quorumcumque beneficiorum Ecclesiasticorum, quæ quomodolibet obtinent, & in posterum obtinebunt, ac etiam quorum collatio, provisio, & quævis alia dispositio illis ex causa factæ per eos cessionis, regiminis, & administrationis, seu commendæ, aut reſignationis Ecclesiarum, Monasteriorum, & aliorum hujusmodi beneficiorum, Apostolica auctoritate reservata, &c. existit, vel in posterum reservabitur; quàm etiam aliorum quorumcumque inferiorum collatorum, aut collatricum, conjunctim vel divisim, de jure, privilegio, consuetudine, aut aliâ quomodolibet pertinentia, ac etiam illa commendandi, ac aliâs de eis disponendi, vel de consensu ipsorum Cardinalium requirendo in provisione eorumdem beneficiorum apud Sedem prædictam, ut præfertur vacantium, per Sanctitatem suam faciendâ, & quod sine consensu hujusmodi factæ provisiones, aut quævis aliæ dispositiones nullæ & irritæ sint, omnibus & singulis Cardinalibus prædictis per quoscumque Romanos Pontifices, ac Sanctitatem suam, & dictam Sedem, etiam Motu proprio, & ex certa scientia, deque Apostolica potestatis plenitudine, & consistorialiter, ac etiam ex pactis inter dictos Pontifices & Cardinales diversis temporibus factis, firmatis, & juratis, ac quibuscumque onerosis, & aliis causis concessa, etiam iteratis aut multiplicatis vicibus approbata, innovata ac extensa, quibuscumque concepta formulis, ac etiam reſtitutivis, mentis attestativis, præservativis, derogatoriis derogatoriis, aliisque efficacissimis & insolitis clausulis, necnon vim contractus inducentibus, ac irritanti, & quod sine eorum consensu derogationes pro tempore factæ nemini suffragentur, aliisque decretis suffulta, quorum omnium tenores Sanctitas sua haberi voluit pro expressis, specialiter & expresse revocavit, literâque Apostolicas desuper concessas, & quoad ea in quibus illa effectum nondum sortita erant, & inde secuta quæcumque cassavit, annullavit, virisque & effectum de cætero non habere decrevit.

Moderatio
indulgentiarum
Sanctæ R. E.
Card. sub
collatione
beneficio-
rum.

Declaratio.

§. 2. Salva tamen remanente facultate consensus per ipsos Cardinales in provisionibus Apostolicis beneficiorum per obitum familiarium continuorum commensalium eorumdem Cardinalium, etiam apud Sedem prædictam vacantium, præstandi, juxta formam Regulæ Cancellariæ Apostolicæ super hoc editæ, & in casibus tantum in ipsa Regula expressis. Volens ulterius quod eadem beneficia per obitum familiarium continuorum commensalium eorumdem Cardinalium posthâc, tam apud eandem Sedem quàm extra Romanam Curiam vacantia, etiam si ad aliquis alterius Cardinalis collationem, vel aliam dispositionem pertinere deberent, etiam si tunc cessent aliæ Apostolicæ reservationes hæcenus editæ, nihilominus in posterum dispositioni Sanctitatis suæ reservata censeantur;

itâ ut in provisionibus talium beneficiorum super expeditionibus literarum illius Cardinalis, cujus familiaris defunctus extitit, si ipse Cardinalis tunc præfens in eadem Curia fuerit, consensu requiri omnino debeat, non autem beneficia hujusmodi ad collationem, seu quamvis aliam dispositionem Cardinalis ordinarii collatoris ullo modo pertineant, nec ejusdem Cardinalis ordinarii collatoris, etiam si in Romana Curia præfens fuerit, consensus quoquomodo requiratur. Eisdemque constitutiones, & Regulas Cancellariæ, etiam declaratorias super beneficiis familiarium prædictorum Cardinalium editas, tam quoad Cardinales indulta hujusmodi habentes, quàm non habentes, atque adeo indulta ipsa ad terminos præfentis constitutionis reduxit & moderatus fuit.

§. 3. Decernens sic in iis, cæterisque omnibus præmissis per quoscumque, &c. etiam causarum Palatii Apostolici Auditores, & eosdem Cardinales, sublata, &c. necnon irritum & inane quicquid secus super his, per quoscumque etiam prætexu facultatum, indultorum & concessionum hujusmodi, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

§. 4. Prædictis & quibuscumque aliis Regulis, constitutionibus, & ordinationibus Apostolicis, cæterisque contrariis quibuscumque non obstantibus, Placet, publicetur & describatur. N.

Decretum
irritans.

Derogatio
contrario-
rum.

Papæ subſcri-

INNOCENTIUS IX. PONT. CCXXXIV.

ANNO DOMINI MDXCI.

Innocentius Papa Nonus, Bononiensis, Joannes Antonius Fachenetus antea dictus, presbyter Cardinalis tituli Sanctiorum Quatuor Coronatorum, Creatus tertio Kalendas Novembris. Coronatus tertio Nonas Novembris, Anno Domini 1591. Vixit menses duos. Creavit Cardinales duos. Obiit tertio Kalendas Januarii, Anno Domini 1592. Sepultus fuit in Basilica Principis Apostolorum. Vacavit sedes dies triginta.

ANNO
1591.

Confirmatio & extensio constitutionis Pii V. à Gregorio XIII. Sixto V. & Gregorio XIV. comprobata, de non alienandis & inſeudandis Civitatibus & aliis locis Sedis Apostolicæ.

I.

Hæc Pii V. prohibitio est in ejus bulla 35. Admonet. fol. 236. ubi plenè tibi indicavi ejus declarationes & ampliationes. Et constitutio Gregorii XIII. est 3. supra fol. 390. ac Sixti V. est 26. supra fol. 614. & Gregorii XIV. est supra fol. 738.

Vide addita ad Leon. I. const. suprâ lib. 1. fol. 7.

INNOCENTIUS EPISCOPUS,

Servus Servorum Dei, Ad perpetuam rei memoriam.

Edita A. D.
1591.

QUAE ab hac Sancta Sede, cui licet indigni, auctore Domino præsumemus, piè & salubriter sancta & ordinata noscuntur, ea ut perpetuò firma, illibataque permaneant, non solum consensus, approbationis & innovationis nostræ munimine roboranda, sed etiam declarationis præsidio quatenus expedire visum sit faciendâ censemus. Et præcipue muneris nostri esse ducimus, ea quæ à prædecessoribus nostris Romanis Pontificibus, ad patrimonium, dignitatis, & amplitudinis Sanctæ hujus Sedis conservationem & incrementum laudabiliter disposita, & constituta sunt, in nobismet ipsis servare & aliis servanda tradere & demonstrare.

Exordium.

ANNO
1591.

786

I N N O C E N T I U S N O N U S .

ANNO
1591.

Pii V. con-
stitutio est
inducta in
rub.

§. 1. Sanè scilicet. Pius Papa V. prædecessor
noster, de consilio & assensu venerabilium fratrum
suorum tunc Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinalium,
optimam & saluberrimam Constitutionem edidit,
& promulgavit tenoris subsequentis.

Omittitur insertio huius Bullæ cum ea sit posita in loco
tibi in rub. cit.

Confirma-
tiones Gre-
gorii, Sixti &
a terius Gre-
gorii sunt
citata in rub.

§. 2. Quam quidem Constitutionem pia mem.
Gregorius XIII. Sixtus V. & Gregorius XIV. Ro-
mani Pontifices pariter prædecessores nostri, sicuti
in ea cavetur, servare iuraverunt, ac per eorum li-
teras approbaverunt, & confirmaverunt & innovaverunt,
prout in illis plenius continetur.

Approbatio
huius Pont.

§. 3. Nos itaque officii & conscientie nostre de-
bito satisfacere cupientes, Motu proprio, non ad
alicuius supplicationem, vel super hoc oblata pe-
titionis instantiam, sed ex certa scientia merique
deliberatione nostra in hoc primo secreto Confito-
rio, quod cum venerabilibus fratribus nostris S. R.
E. Cardinalibus habemus constitutionem prædic-
tam, & omnia in ea contenta auctoritate Apo-
stolica, tenore præsentium confirmamus, appro-
bamus & innovamus, eamque inviolabilis firmita-
tis robur obtinere plenamque executionem & effec-
tum perpetuis futuris temporibus habere decerni-
mus. Ac præterea eisdem Motu proprio, scientia,
deliberatione, & auctoritate assentientibus, & ap-
probantibus eisdem Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Car-
dinalibus.

Extensio
eiusdem.

§. 4. Declaramus eadem Constitutione prohibi-
tam fuisse, ac prohiberi, omnem & quamcumque
infeudationem, & alienationem Civitatum, Ter-
rarum, Oppidorum, & Locorum prædictorum,
eisdem Sedi tam immediate quam mediate subiecto-
rum, non solum non fiat, nevententetur post eo-
rum devolutionem, sed etiam antequam devolvan-
tur, ac omnem & quamcumque in perpetuum vel
ad tempus prorogationem, & extensionem infeu-
dationum, investiturarum, ac concessionum de
dictis Civitatibus, Terris, Oppidis, & Locis,
nondum finitarum, ipsorumque incorporationem,
quoad effectum impediendæ alienationis, proroga-
tionis, & extensionis huiusmodi, non à die eorum
devolutionis, sed à die ipsius Constitutionis, &
etiam antequam illa devolvantur, ipso iure cum
omnibus clausulis & decretis in prædicta Consti-
tutione contentis, Camera & Sedi Apostolicæ fac-
tam censi.

Promissio
Cardinalium
circa obser-
vantiam.

§. 5. Insuper volumus & declaramus, ut præ-
missio, & iuramentum præstitum & præstandum,
de servanda eadem Pii prædecessoris præfati Consti-
tutione per nos, & Romanos Pontifices successores
nostros, ac Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardina-
les, intelligatur de ipsa Pii prædecessoris Consti-
tutione, ut supra per nos declarata, & secundum
hanc nostram declarationem eandem Constitutionem
ad unguem & inviolatè observari oportere ac
debere, sicuti & nos servatores esse promittimus,
ac sanctè & solemniter more iuramus.

Clausulæ su-
blatæ.

§. 6. Et ita per quoscumque Iudices, ordina-
rios & delegatos, quavis auctoritate fungentes,
etiam Camera præfata Præsidentes, Clericos,
causarum Palatii Apostolici Auditores, ac Sanctæ
Romanæ Ecclesiæ Cardinales, in quavis causa & in-
stantia, sublata eis & eorum cuilibet, quavis aliter
iudicandi & interpretandi facultate & auctoritate,
iudicari, declarari & definituri debere; ac irritum &
inane, si secus super his per quoscumque, quavis
auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit at-
tentari.

Iussio descri-
bendi hanc
bullam juxta
bullam Pii
V.

§. 7. Ac præsentibus nostras literas, in libello in
quo ipsa Constitutio Pii prædecessoris continetur,
ac in libro Quinterno appellato Cancellariæ Apo-
stolicæ, describi mandamus.

Clausulæ de-
rogatoriz.

§. 8. Non obstantibus iis, quæ idem Pius præde-
cessor voluit non obstat, cæterisque in contra-
rium facientibus quibuscumque.

Sanctio pec-
nalis.

§. 9. Nulli ergo omnino hominum liceat hanc
paginam nostræ approbationis, confirmationis, inno-

vationis, declarationis, voluntatis, decreti, prom-
issionis, iuramenti, & mandati infringere, vel
ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc
attentare præsumpserit, indignationem Omnipoten-
tis Dei, ac Beatorum Petri, & Pauli Apostolorum,
ejus se noverit incursurum.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno In-
carnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo
nonagesimo primo, pridie Non. Novembris, Ponti-
ficatus nostri anno 1.

Ego Innocentius Catholicæ Ecclesiæ Episcopus.

Ego Alph. Episcopus Offien. Card. Gefvaldus.
Ego Inn. Episcopus Portuen. Card. de Arag.
Ego Marcus Ant. Episcopus. Prænestin. Card. Columna.
Ego Ptolemæus Episcopus Tusculan. Cardinalis
Comensis.

Ego Gabr. Episcopus Sabinen. Card. Paleottus.
F. Michaël Bonellus Episcopus Albanen. Alexandrinus.
Marcus Sitticus Cardin. ab Altaemps.
Ludovicus tituli S. Laurentii in Lucina, presbyter
Cardinalis Madrutius.

Nic. de Pelleve Cardin. presbyter, tit. S. Prædixis,
vulgo de Sens.

Jul. Antonius Sanctiorius, tituli S. Bartholomæi in
Insula, presbyt. Card. S. Severinæ.

Hieronymus Card. Rusticcius tit. S. Sufannæ.
Hieronymus Card. Simoncellus, tit. S. Priscæ.

Petrus Card. Deza, tit. S. Hier.

Alex. Card. Floren. tit. SS. Joannis & Pauli.
Julius Card. Cananus, tit. S. Anastasæ.

Ant. Maria Card. Salvatius, tit. S. Mariæ de Pace.
Aug. Card. tit. S. Marci de Verona.

Ego Vincentius tit. S. Clementis, Card. Montius
Regalis.

Ego Philippus Card. Spinula tit. S. Sabinæ.
Ego Georgius, tit. S. Sixti Card. Radzivil.

Ego Simeon Card. de Terranova, tit. S. Mariæ An-
gelorum.

Ego Scipio tit. Sancti Salvatoris in Lauro Cardin.
Lancellotus.

Ego Henricus tit. S. Pudencianæ Card. Cætanus
S. R. Ecc. Camerarius.

Ego Joannes Baptista Cardin. Castrucius.
Ego Dominicus, tit. S. Chrylogoni Card. Pinellus.

Ego Hippolytus tit. S. Pancratii, presbyt. Card.
Aldobrandinus, Major Penitentiarius.

Ego Hieronymus tit. S. Petri ad Vincula, S. R. Ecc.
presbyter Card. de Ruvere.

Ego Frater Hieronymus, tit. S. Mariæ super Miner-
vam S. R. E. presb. Card. Alfui.

Ant. Maria, tit. S. Agnetis in Agone, Card. Perus.
F. Constantius Card. Sarnanus, tit. S. Petri in Monte
Aureo.

Ego Gul. Card. Alanus, tit. S. Martini in Montibus.
Ego Scipio tit. S. Mariæ de Populo Cardinalis Gon-
zaga.

Ego Antonius tit. S. Stephani, Card. Saulius.
Ego Evangelista tituli Sancti Matthæi in Merulana,
presbyter Card. Cusentinus.

Ego Joan. Franciscus, tit. S. Mariæ in Via, pres-
byter Card. Maurocenus.

Marianus tituli SS. Marcellini & Petri, presbyter
Cardin. de Camerino.

Ego Frater Gregorius Card. à Monteparo, tit. S. Au-
gustini.

Ego P. Card. Sfondratus, tit. S. Cæcil.
Ego Benedictus Justinianus, tit. S. Marcelli.

Ego Augustinus, tit. S. Laurentii in Pane & Perna,
presbyter Card. Cusanus.

Ego Fr. Maria. Card. SS. Quirici, & Julitæ.
Ego Octavius Card. S. Joan. ante portam Latinam.

Ego F. Card. S. Mariæ in Via Lata.
Ego Alexander S. Laurentii in Damaso, diac. Card.

Montalvus, S. R. E. Vicecancellarius.
Ego Hieron. S. Eustachii, diac. Card. Matthæus.

Ego Ascanius, S. Mariæ in Cosmedin, Sanctæ Ro-
manæ Ecclesiæ diac. Card. Columna.

Dat. P. A.
I. die 4. No-
vemb.

Papæ subsc.

Cardd. subsc.

Publicatio.

Ego Federicus S. Nicolai in Carcere, diac. Card. Borromæus.
Ego Guido, SS. Cosmæ, & Damiani, diac. Card. Populus.
Ego Odoardus S. Adriani diac. Card. Farnesius.
Ego Octavius Sancti Georgii in Velabro, diaconus Cardinalis de Aquaviva.
Ego Flaminius S. Mariæ in Dominica.
*Anno à Nativitate Domini Nostri JESU CHRISTI 1592. indictione 4. die verò 2. mensis Januarii, tempore Sedis vacantis, per obitum bona memor. Innocentii Noni, superscriptæ literæ affixæ & publicatæ fuerunt ad valvas Principis Apostolorum de Urbe, & Cancellariæ Apostolicæ, & in Acie Campi Floris, per nos Laërtium Cocchetum, & Marcum Antonium Antonium, Sanctissimi D. Nostri Papæ Curæ.
Hieronymus Lutius Mag. Curæ.*

II.

Indulta Inclyti Senatus Populique Romani, de reis non condemnandis vigore alicujus rescritti contrâ formam juris, & non confiscatâ legitima filiorum viventibus eorum genitoribus, & neque arbitraria compositione recipienda in Dataria, pro licentia dandi dotem, suprâ summam à Statuto taxatam.
Quoad d. legitimam, contrarium remanet decisum extra Urbem, ex bulla Pii IV. num. 2. Et si cuncta, §. 8. & consonat constitutio Sixti IV. num. 24. Curæ. sup. fol. 429. Summam verò Dotis à Statuto taxatam esse ad 5.500. liguet ex bulla Sixti V. num. 52. Cum in una, in fine.

I N N O C E N T I U S E P I S C O P U S .

Edita A. D.
1591.

Servus Servorum Dei. Ad perpetuam rei memoriam.

Causa hujus
concessionis.

AD Romanum spectat Pontificem, inter multas & graves, quas pro communi Christianæ Reipublicæ bono, suscipit curas, in eam quoque precipuo studio incumbere, ut ejus in temporalibus subditi, præsertim verò dilecti filii S. P. Q. R. quorum propria & peculiaris cura ei specialiter commissa est, non solum à quocumque gravamine, quoad fieri potest, immunes reddantur, sed privilegiis & gratiis in dies amplioribus onentur. Quare nos, & muneris nostri debito satisfacere, & paternam charitatem, ac benevolentiam quam jam pridem ergâ eos gerimus, insigni aliquo monumento testatam esse cupientes, quo & ipsi benignitatem nostram experti, & alii eorum exemplo in fide, obedientia, ac devotione Sanctæ hujus Sedis alacriori animo perseverent, atque ad promerendam uberem nostram & illius gratiam in dies magis invitentur.

Prohibitio
reos condem
nandi contrâ
jus vigore
alicujus re
scripti.

§. 1. Primum quidem hac nostra perpetuè valitura Constitutione, abolemus & ab hac inclyta Urbe, nostris volumus exulare temporibus, modum illum procedendi contrâ reos alicujus criminis aut delicti, qui licet juxta dispositionem Juris communis & sacrarum Constitutionum, ac ejusdem Urbis statutorum, pœna capitis plecti non debeant, tamen vigore specialis mandati & rescritti per Roman. Pontif. Motu proprio, seu aliâ signati, pœna ultimi supplicii damnatur; & quod nobis licere non patimur, id etiam nostris successoribus indicamus, districtius prohibentes ne in posterum Judices quicumque quavis auctoritate fungentes, reum aliquem contrâ Juris communis, & Apostolicarum sanctionum & statutorum Urbis tenorem, vigore seu pretexto rescrittorum hujusmodi, quæ contrâ intentionem concedentes per subreptionem extorta censcantur, capitaliter condemnare præsumant.

Prohibitio
conficari legi
timam fi
liorum in vi
ta parentum
in Urbe.

§. 2. Præterea volumus ac præsentium tenore decernimus, quod in eadem Urbe nostra, si contingat filios viventibus eorum genitoribus, delictum aliquod committere, ipsi parentes quoad vixerint, ad solvendam seu tradendam legitimam por

tionem de propriis bonis, eisdem filiis de jure debitam, minime cogi aut compelli possint, nec contrâ ipsos delinquentium genitores ad legitimæ portionis prædictæ confiscationem, per quovis Judices procedi debeat; sed in quibuscumque criminalibus causis juris communis dispositio, & statuta Urbis omnino serventur; necnon quascumque prædecessorum nostrorum Constitutiones in contrarium forsan desuper editas, quarum tenores præsentibus haberi volumus pro expressis, ad terminos juris, ac dictorum statutorum, harum serie reducimus, & moderamus; statutaque ipsa in hac parte approbantes, illa adversus quancumque contrarium usum aut Constitutionem restituimus & revalidamus.

Prohibitio
exigendi
compositionem
pro licentia Do
tem supra
summam ab
Urbis Statu
taxatam.

§. 3. Et insuper, quia etiam accepimus usu receptum esse ut pro obtinenda derogatione statuti, seu reformationem ejusdem Urbis, super certa Dotium puellarum quæ pro tempore nubunt summa & quantitate editarum, compositio non certa, sed arbitria, iis qui in Dataria, & materiis componendis pro tempore præsentibus solvatur. Nos ipsius Urbis Cives & Incolas specialibus favoribus & gratiis consequentes, illos à solutione compositionis hujusmodi perpetuè eximimus & liberamus, immunesque & exemptos esse volumus; districtè interdicens dilecto filio Datario, nunc & pro tempore existentis, ac Præfecto compositionum, ceterisque Ministris & Officialibus, ne ab iis qui in dicta Urbe cum aliqua ampliori dote matrimonialia contrahentes, derogationem hujusmodi à nobis, vel successoribus nostris impetrabant, etiam si Barones, Domicelli, & Nobiles fuerint, dōtque ipsa longè ultrâ taxam prædictam ad quamcumque summam excessiva existerit, quidquam vel minimum pro simili compositione ullo modo exigant, neque ad eam quovis pretexto cuicumque solvendum compellant; statuto tamen ipso super taxa dictarum Dotium nihilominus in suo robore permanfuro.

Clausulæ
preservativæ.

§. 4. Decernentes præsentis literas, &c. ex quavis causa ex quocumque capite de subreptionis vel obreptionis, seu nullitatis vicio, aut quopiam alio defectu notari, impugnari seu invalidari, vel revocari, aut aliâs quomodolibet infringi, seu adversus illas quodcumque juris, gratiæ, vel facti remedium impetrari nullatenus posse, sed illas semper validas & efficaces existere, suosque Plenarios effectus sortiri obtinere, ac ab omnibus inviolabiliter observari & adimpleri.

Clausulæ
sublatæ.

§. 5. Sicque & non aliâs per quoscumque Judices & Commissarios, & causarum Palatii Apostolici Auditores & Sanctæ Romanæ Ecclesiæ Cardinales, sublata eis & eorum cuilibet quavis aliter judicandi & interpretandi facultate in quavis causa & instantia judicari & definiri debere; ac irritum & inane si secus super his à quocumque quavis auctoritate, scienter vel ignoranter contigerit attentari.

Clausulæ de
rogatoriæ.

§. 6. Quocirca dilectis filiis modernis ac pro tempore existentibus S. R. E. Camerario, ac Vicecamerario, Thesaurario & Clericis Præsentibus Cameræ Apostolicæ, necnon Gubernatori, & Senatori ejusdem Urbis per Apostolica scripta mandamus, quatenus ipsi vel quilibet eorum faciant præfatos S. P. Q. R. atque adeo singulares illorum personas, ceterosque omnes & singulos quos præmissa concernunt, & concernent in futurum, illis pacifice frui & gaudere; non permittentibus illos desuper à quocumque quomodolibet indebitè molestari; contradictores per opportuna juris, & facti remedia compescendo.

Derogatio
contrario
rum.

§. 7. Non obstantibus præmissis, ac quatenus opus sit nostra de non tollendo jure quæsito, quatenus præmissorum occasione cum publico detrimento jus alicui quæsitum dici aut censi quomodo possit; & quibuscumque illis constitutionibus & ordinationibus Apostolicis, necnon statutis, legibus & consuetudinibus; privilegiis quoque, indulcis, ac Sixti Quinti, Gregorii IV. concessio

nibus super præmissis quomodolibet emanatis, aliisque literis Apostolicis tam supradictis quam quibuscumque, aliis personis sub quibuscumque tenoribus ac formis, ac cum quibuscumque derogationum derogationis, ac aliis efficacissimis clausulis & decretis, etiam Motu proprio, & ex certa scientia & deque Apostolica potestatis plenitudine, ac consistorialiter, & aliis in contrarium quomodolibet concessis, approbatis & innovatis. Quibus omnibus etiam si de illis eorumque totis tenoribus, specialis, expressa, ac specifica mentio seu expressio habenda, aut quævis alia exquisita forma ad hoc servanda foret, tenores huiusmodi pro expressis, ac ad verbum insertis habentes, illis aliis in suo robore permansuris; hac vice & ad effectum præmissorum dumtaxat, specialiter & expressè derogamus, ac derogatam esse volumus; ceterisque contrariis quibuscumque.

Fides exemplorum.

§. 8. Volumus autem, ut præsentium transcriptis etiam impressis, Notarii publici manu sub-

scriptis, & sigillo personæ in dignitate Ecclesiastica constitutæ obsignatis, eadem prorsus fides in iudicio & extrà illud habeatur, quæ eisdem originalibus haberetur exhibitis vel ostensis.

§. 9. Nulli ergò omnino hominum liceat hanc paginam nostrorum abolitionum, voluntatum, decretorum, reductionis, moderationis, restitutionis, revalidationis, prohibitionis, interdicti, inhibitionis, revocationis, cassationis, annulationis, extinctionis, ac derogationis infringere, vel ei ausu temerario contraire. Si quis autem hoc attentare præsumpserit, indignationem Omnipotentis Dei, ac Beatorum Petri & Pauli Apostolorum ejus, se noverit incursum.

Datum Romæ apud Sanctum Petrum, Anno Incarnationis Dominicæ, millesimo quingentesimo nonagesimo primo, Cal. Decembris, Pontificatus nostri anno primo.

Dat. P. A. I.
die 1. Decembris.

FINIS SECUNDI TOMI.



